घुसरी, घुसली-स्त्री० [देश] रज, धुलि, रेणु।
घुस्सौ-देखो 'घूसौ'।
घू-१ देखो 'घू'। २ देखो 'घुवौ'।
घूआघार (घोर)-देखो 'घुआघोर'।
घूआरव-पु० [स० धूम रव] धूम धूआ।
घूई-१ देखो 'घुई'। २ देखो 'घूणी'।
घूऔ-देखो 'घुवौ'।
घूकरणी-देखो 'घौंकरणी'।
घंकणौ (बौ)-क्रि० १ गर्जना दहाडना। २ जोर से बोलना। ३ जोश मे बोलना।
घूकर-स्त्री०[देश०]१ जोश पूर्ण आवाज। २ फटकार, डाट।
घूकळ-पु० [देश] १ युद्ध, लडाई। २ उपद्रव, उत्पात। ३ टटा, फिसाद, बखेडा।
घूंकळणौ (बौ)-देखो 'घौंकळणौ' (बौ)।
घूकळसी, घूकळी-वि० साहसी, वीर।
घूकार, घूकारव-१ देखो 'घौंकार'। २ देखो 'घुकार'।
घूंखळ-देखो 'घूकळ'।
घूखळणौ (बौ)-देखो 'घौंकलणौ' (बौ)।
घूगरि-पु० १ वृक्ष विशेष। २ शाक विशेष।
घूगार-देखो 'घुगार'।
घूगारणौ (बौ)-देखो 'घुगारणौ' (बौ)।
घूण-स्त्री० [स० अर्द्ध] १ आधा मन का एक तौल विशेष। २ आधा मन की मात्रा। [स० ध्या] ३ घौंकनी। ४ प्रवृत्ति, ध्यान। -वि० १ आधा मन। २ देखो 'घूंन'।
घूणणौ (बौ)-देखो 'धुणणौ' (बौ)।
घूणव-स्त्री० शरीर को झकझोरने या झटका देने की क्रिया या भाव।
घूणि, धूणी (णौ)-स्त्री० [स० धूम] १ साधु-फकीरो के आश्रम मे बना छोटा अग्नि कुण्ड। २ उक्त अग्नि कुण्ड मे जलाई जाने वाली अग्नि। ३ उक्त अग्नि कुण्ड की राख। ४ नाथ सम्प्रदाय के फकीरो का निवास स्थान। ५ एक शाक विशेष। ६ देखो 'घुई'। ७ देखो 'घनु'।
घूद, घूध-१ देखो 'घुध'। २ देखो 'तुद'।
घूधळ-१ देखो 'घूधळौ'। २ देखो 'घुधळ'।
घूधळणौ (बौ)-क्रि० [स० धूम-आलुच] १ धुआ, गर्द, कुहरा आदि छाने से कुछ अधेरा होना। २ अस्पष्ट होना, धुधला होना।
घूधळि-देखो 'घुधळी'।
घूधळीमल्ल, (माल)-पु० एक सिद्ध विशेष।
घूधळौ-वि० [स० धूम-आलुच] (स्त्री० घूधळी) १ धुआ, गर्द या कुहरे मे आच्छादित। २ अस्पष्ट, धुधला। ३ जो साफ दिखाई न दे। ४ मटमैले या भूरे रग का। ५ बहुत कम प्रकाश वाला।
घूधाड़ौ-पु० धूए या गर्द का समूह।
घूधाणौ (बौ)-क्रि० [देश०] १ तेज चलाना। २ तेजी से श्वास लेना। ३ जल्दी मचाना।
घूधाळ (ळौ)-वि० [स०तुद-आलुच] (स्त्री० घूधाळी) १ तोंद वाला। २ मोटा-ताजा। ३ धूम या धूलि युक्त।
घूधावणौ (बौ)-देखो 'घूधाणौ' (बौ)।
घूधि-स्त्री० [देश०] १ आख का एक रोग। २ धुंधलापन, अस्पष्टता। ३ देखो 'घूंधी'।
घूधियौ-वि० १ मद दृष्टि वाला। २ जिसे कम दिखता हो।
घूधी-स्त्री० १ उमग, जोश। २ कपन, झनझनाहट। ३ धडधडी।
घूघूकार-१ देखो 'घुधकार'। २ देखो 'घुघुकार'।
घूघूणी (नी)-देखो 'घघूणी'।
घूधेड, घूंधौ-पु० चौहान वश की एक शाखा व इनका व्यक्ति।
घूंन-वि० [देश०] १ बढिया श्रेष्ठ, उत्तम। २ देखो 'घूण'।
घूनि-पु० १ एक वृक्ष विशेष। २ देखो 'घूणि'।
घूंप-देखो 'धूप'।
घूपियौ-देखो 'धूपियौ'।
घूपेडौ-देखो 'धूपियौ'।
घूव-पु० [फा० दुम] १ बैल के पिछले पावो का ऊपरी भाग। २ नर भेड की पूछ पर एकत्रित माम पिण्ड। ३ देखो 'दूबौ'।
घूबडौ-१ 'धूमडौ'। २ देखो दूबौ'।
घूंबड-वि० [स० धूमट] १ तीव्र प्रचण्ड। २ देखो दूबौ'।
घूबौ-१ देखो 'धूव'। २ देखो दूबौ'।
घूबौ-देखो 'दूबौ'।
घूमर-पु० [स० धुर्] शिर, मस्तक।
घू'र-स्त्री० [स० धूग्ररी] १ कोहरा। २ गर्द।
घूवाडौ-देखो 'धूवौ'।
घूवारवण-पु० धूआ, धूए का वातावरण।
घूवावाछ, घूवावास-पु० [देश०] एक प्रकार का कर।
घूंवौ-देखो 'धूऔ'।
घूस-स्त्री० [स० ध्वस] १ वाद्यो की ध्वनि, घोष। २ राजा की सेवा मे जागीरदारो द्वारा भेजे जाने वाले कर्मचारी। ३ प्रभाव, रौब। ४ आतक, भय, डर, धाक। ५ धमकी, घुडकी। [स० ध्वसिनी] ६ फौज, सेना। ७ समूह, झुंड। ८ नगाडे पर डके की चोट। ९ देखो घूसौ'।
घूसणौ (बौ)-क्रि० [स० ध्वंसनम्] १ ध्वस करना, नाश करना। २ गर्जना, गुर्राना। ३ गिर कर चूर होना। ४ गिर पडना। ५ डूबना।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रथांक 156

राजस्थानी-हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश

प्रथम–खण्ड

['अ' से 'न']

सम्पादक

'पद्मश्री' सीताराम लालस

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1986

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रबन्ध-सम्पादक

डा० पद्मधर पाठक

ग्रन्थाङ्क 156

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

मुद्रक

श्री पुखराज जांगिड, पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर

समर्पण

पूज्य नानाजी स्व. श्री सार्दूलसिहजी बोगसा
सरवड़ी, मित्रवर ठा. गोरधनसिहजी
मेड़तिया आई.ए.एस., तथा कर्नल
ठा. श्यामसिहजी रोडला की
पावन स्मृति मे समर्पित

—सीताराम लालस

प्रबन्ध सम्पादकीय

'पद्मश्री' श्री सीताराम लालस द्वारा सकलित कर सम्पादित किये गये सक्षिप्त राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश के मुद्रण एव प्रकाशन का उत्तरदायित्व इस विभाग को सौंपा गया था । उक्त कोश को दो खण्डो मे प्रकाशित कर विद्वानो के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमे अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

प्रस्तुत कोश का कलेवर विस्तृत होते हुए भी उसे पूर्वत. उपलब्ध अन्यान्य कोशो की तुलना मे सकलनकर्ता ने सक्षिप्त नाम से अभिहित किया है । दूसरे, इस कोश मे यद्यपि सस्कृत और अरबी-फारसी के कतिपय शब्दो का यथावत् समावेश किया गया है, परन्तु वह सकलनकर्ता की अपनी दृष्टि है, उसकी अपनी मान्यताएं हैं । विश्वास है, प्रस्तुत कोश से विद्वान् एव अध्येता-छात्र लाभान्वित होगे ।

प्रूफ-सशोधन आदि का कार्य स्वय श्री लालस द्वारा किया गया है । उनका परिश्रम निस्सदेह प्रेरणास्पद है ।

पकज प्रेस, जोधपुर के व्यवस्थापक श्री पुखराज जागिड ने मुद्रण में पर्याप्त तत्परता एव लगन से काम किया है जिसका यहाँ उल्लेख औपचारिक धन्यवाद से हट कर है ।

दूसरे खण्ड का मुद्रण भी प्रायः समाप्ति पर है ।

गंगा-दशहरा
ज्येष्ठ शुक्ल १० सवत् २०४३
जोधपुर

पद्मधर पाठक
निदेशक

सकेत-चिह्न

सकेत	पूर्ण
पु०	सज्ञा पु लिंग
स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
वि०	विशेषण
क्रि०	क्रिया
यौ०	यौगिक
अव्य०	अव्यय
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
स०	सस्कृत
अ०	अरबी
फा०	फारसी
देश०	देशज शब्दावली
(=)	देखो

❀

राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह, संरक्षण, शोधपूर्ण सम्पादन एवं **राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला** के अन्तर्गत महत्वपूर्ण ग्रन्थो का प्रकाशन ।

शोधार्थियो के लिए विविध विपयक हस्तलिखित ग्रन्थों, सन्दर्भ पुस्तको, जीरोक्स फोटो स्टेट, एवं माइक्रोफिलम की पूर्ण सुविधा ।

प्रतिष्ठान-पत्रिका

[वार्षिकी]

वर्ष १९८५ से विशिष्ट शोधपूर्ण सामग्री सहित नियमित प्रकाशन । मूल्य रु. 31/-

निदेशक

राजस्थानी-हिन्दी संक्षिप्त शब्द-कोश

—अ—

अ—देवनागरी वर्णमाला का पहला स्वर-वर्ण । इसका उच्चारण कण्ठ से होता है । समस्त व्यजनो का उच्चारण इसी की सहायता से होता है । भापा वैज्ञानिक दृष्टि से इसके तीन भेद—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तथा अठारह अवातर भेद होते हैं ।

अ—पु० [स०] १ कमल । २ पूर्ण ब्रह्म । ३ दुख । ४ विरक्ति । ५ शभु । ६ भक्ति । ७ श्री कृष्ण ।

अउकार, अऊकार—देखो 'ओकार'

अक—पु० [स०] १ प्रारब्ध, भाग्य । २ जन्मान्तर । ३ दुख । ४ अपराध । ५ पाप । ६ एहसान । ७ शरीर, अग । ८ कटि प्रदेश, कमर । ९ गोद, कोड । १० चिह्न, निशान ११ ० से ९ तक की सख्या । १२ दाग, धब्बा । १३ अक्षर, वर्ण । १४ लिखावट, लेख । १५ पत्र, चिट्ठी । १६ अश, भाग । १७ अध्याय । १८ नाम । १९ छाप, मुहर, मुद्रा । २० सामयिक पत्र-पत्रिका का कोई भाग । २१ परीक्षा की योग्यता सूचक इकाइया । २२ नौ की सख्या* । २३ पार्श्व, बगल । २४ पर्वत । —**कार**-गणितज्ञ । —**गणित**-सख्याओ की जोड-बाकी से फल निकालने की विद्या । —**धारी**-वि० मुद्रा धारित, चिह्नित । —**पाळी**-स्त्री० धाय । माता, माँ । पालित कन्या । —**माळ, माळा, माला**-स्त्री० कठ मे लगाने, भेटने अथवा गोद मे लेने की क्रिया, आलिंगन, परिरभन । —**विद्या**-स्त्री० गणित शास्त्र ।

अकडो—१ देखो 'आख' । २ देखो ''अकाडो' ।

अकडो—वि० [स० अक+रा०प्र०डो] १ वीर, वहादुर । २ टेढा; वक्र । ३ देखो 'अकोडो' ४ देखो 'आकडो' ।

अंकज—पु० [स०] एक देश का नाम । वि० जो अक से उत्पन्न हो ।

अकणी—देखो 'आकणी' ।

अकणौ—देखो 'आकणी' ।

अकणौ, (बौ)—देखो 'आकणौ (बौ)' ।

अंकधारण—पु० यौ० [स०] मुद्राकित या चिह्नित करने की क्रिया ।

अंकरास—देखो 'उकरास' ।

अकवाळो—वि०—१ असीम, अधिक, बेहद । २ जिसमे अक हो ।

अकविचार—पु० [स०] ६४ कलाओ मे से एक ।

अकस—देखो 'अकुस' ।

अकस्थ—वि० [स० अंक+स्थित] १ गोद लिया हुआ, दत्तक । २ गोद मे बैठा हुआ ।

अकहूंतलेखाळ—पु० यौ०—मत्री, दीवान ।

अंका, अंका'—स्त्री०—१ हद, सीमा । २ चरम सीमा, पराकाष्ठा । ३ देखो 'आकास'

अंकाई—१ नाप-तौल, परिमाण, मूल्य आदि का अनुमान करने की क्रिया या भाव । २ मूल्याकन । ३ मुद्राकन । ४ दागने या चिह्नित करने की क्रिया ।

अका'गाडी—स्त्री० [स० आकाश+शकटिक] वायुयान, हवाई-जहाज ।

अकाणौ, (बौ) क्रि०स० १ मूल्य या परिमाण का अनुमान कराना । २ मूल्याकन कराना । ३ चिह्नित कराना । ४ मुद्राकन कराना । ५ दाग लगवाना ।

अकामूठ—स्त्री० एक देशी खेल ।

अकायत—वि० [स० अक+रा०प्र० आयत] गोद लिया हुआ, दत्तक । —पु० दत्तक पुत्र ।

अंकारणौ (बौ), अकावणौ (बौ)—देखो 'अकाणौ (बौ)' ।

अकाळौ (लौ)—पु० [स० अर्क+आलुच्] १ आक की लकडी का छिलका । २ दत्तक पुत्र ।—वि० [स० अक+आलुच] दत्तक ।

अकित—वि० [स०] १ वर्णित, लिखित । २ चिह्नित । ३ दागा हुआ । ४ चित्रित । ५ शोभित ।

अकुडी—देखो 'अकोडो' ।

अकुडीदार—वि० काटा या हुक लगा हुआ ।

अकुडी—देखो 'अकोडी' ।

अंकुर—पु० स० १ नवोद्भव प्ररोह, अखुवा । २ डाभ, कल्ला, कोंपल, कनखा । ३ नोक । ४ कली । ५ नव पल्लव, किसलय । ६ आशा । ७ माम के छोटे दाने । ८ देखो 'अक्रूर' । ९ मुखद भविष्य के सूचक चिह्न । १० संतान, संतति । ११ रक्त, खून । १२ रोम, लोम । १३ मनोगत भाव ।

अंकुरणौ, (बौ) क्रि० अ० [स० अंकुर] १ अंकुरित होना, उगना, उपजना । २ पल्लवित होना, फलना । ३ बजना, ध्वनित होना । ४ बालो का खडा होना ।

अंकुरित—वि० [स०] १ उगा हुआ, प्रस्फुटित । २ पल्लवित ।

अंकुस—पु० [स० अंकुश] १ हाथी को हाकने का छोटा कांटा, अंकुश । २ नियंत्रण, दबाव । ३ प्रतिबंध, रोक । ४, भय, डर, आतंक । ५ शंका, लिहाज, शर्म । ६ मर्यादा, सीमा । ७ एक प्रकार का शस्त्र । ८ तीन लघु मात्रा का नाम । ९ एक प्रकार का सामुद्रिक चिह्न ।

—**ग्रह**—पु० फीलवान, महावत ।—**दंती, दंतौ**—पु० एक दांत झुका तथा दूसरा सीधे दांत वाला हाथी ।—**दुरधर**—पु० उन्मत्त व मस्त हाथी ।—**धारी**—पु० महावत, फीलवान । —**मुख**—पु० रथ ।

अंकुसणौ, (बौ) —क्रि०—१ चुभना । २ दर्द होना, सालना । ३ कसकना ।

अक्रूर—देखो 'अंकुर' ।

अंकूरौ—पु०—१ बडे कार्य का प्रारंभिक सूक्ष्म रूप । २ जन्माक्षरी ।

अंकेई—क्रि० वि०—१ अंको मे । २ देखो 'अगेई' ।

अंकोट—पु०—१ रहट मे 'ऊंवडियौ' के ऊपर लगा रहने वाला लकडी का मोटा डंडा । २ रहट के चक्र के बीच लकडी के स्तंभ को नियंत्रित करने वाला उपकरण । ३ देखो 'अंकोडौ' ।

अंकोडियौ, अंकोडौ—पु०—१ किसी लंबे बांस के सिरे पर लगा रहने वाला लोहे का हंसियानुमा कांटा । २ लोहे का कांटा । ३ तीर का टेढा फल । ४ टेढी वस्तु जिसमे कुछ अटकाया जा सके ।

अंकोट, अंकोल—पु०—१ ढेरा नामक जंगली वृक्ष । २ पिश्ते का पेड ।

अंको—देखो 'आंकौ' ।

अंख, अंखडी—देखो 'आंख' ।

अंखफोड—देखो 'आंखफोड' ।

अंखमीचणी—देखो 'आंखमीचणी' ।

अंखि, अंखी—देखो 'आंख' ।

अंग—पु० [स०] १ शरीर, देह । २ देह का कोई भाग, अवयव । ३ भाग, हिस्सा, खण्ड, अंश । ४ मन, इच्छा, वृत्ति । ५ प्रकृति, आदत, स्वभाव । ६ उपाय, तरकीब । ७ पक्ष । ८ मित्र, साथी, सहायक । ९ तरह, भांति, प्रकार । १० वेद के छः अंग । ११ सेना के चार अंग । १२ पार्श्व, बगल । १३ राजनीति के सात अंग । १४ कार्य का साधन । १५ छः की संख्या ।* १६ आठ की संख्या ।* १७ एक प्राचीन देश का नाम । १८ जैन शास्त्र विशेष, वि०—प्रिय ।

—**उधार**—पु० बिना रेहन के लिया जाने वाला ऋण । —**ओळग**—पु० अंग रक्षक । अनुचर ।—**खंभ**—पु० हाथी, गज । —**गय**—पु० कामदेव, मदन ।—**ग्रह**—पु० शारीरिक पीडा । —**ज, जात**—पु० शरीर मे उत्पन्न । पुत्र, बेटा । बाल, रोम । पसीना । मद । रोग । कामदेव । काम, क्रोध आदि विकार । जू ।—**जा**—स्त्री० पुत्री, बेटी ।—**त्राण**—पु० कवच । अंगरखा, कुरता । —**दान**—पु० संभोग के लिये समर्पण ।—**दार**—वि० स्वाभिमानी । —**द्वार**—पु० शरीर के दश द्वार । नौ की संख्या* ।—**धारी**—पु० प्राणी ।

—**पाळ**—वि० अंग रक्षक । —**फूटणी**—स्त्री० शारीरिक दर्द, पीडा ।—**बळ**—पु० घी, घृत ।—**बूंत**—शरीर के टुकडे, खण्ड ।—**भंग, भंगी**—वि० खंडित, अपाहिज । स्त्री० वशीकरणिक शारीरिक चेष्टा ।—**भाव**—पु० भाव—भंगिमा । —**भू**—पु०—वंशज । पुत्र, बेटा । —**भूत**—वि० आन्तरिक, भीतरी । —पु० पुत्र, बेटा । —**मरदन**—स्त्री० मालिश । रति क्रिया, ७२ कलाओं मे से एक । —**रक्ष, रक्षक**—पु० अंग रक्षक ।—**रंख, रखी**—स्त्री०—कवच ।—**रळी**—स्त्री० आनन्द, मौज । संभोग । —**राग**—पु० सुगंधित उबटन । वस्त्राभूषण । शृंगार । सुगन्धित बुकनी । —**राज, राजा**—पु० कर्ण । —**ळज**—वि० मूर्ख, अज्ञानी । —**बट**—पु० प्रकृति, स्वभाव ।—**वायु**—पु० घोडो का एक रोग । —**वारौ**—पु० किसानो का पारस्परिक सहयोग । —**विक्रति, विक्रती, विक्रिती**—स्त्री० अपस्मार, मृगीरोग, मूर्छा, पक्षाघात । **विक्षेप, विखेप**—पु० अंगो की मटकन । नृत्य, नर्तन । कलाबाज ।—**विद्या**—स्त्री० सामुद्रिक शास्त्र ।—**वोट**—पु० देह का गठन, ढांचा ।— **संग**—पु० स्पर्श । संभोग ।—**संसकार**—पु० स्वभाव, प्रकृति ।—**सुद्धि**—स्त्री० शरीर की सफाई । —**सेवक**—पु० अंतरंग सेवक । —**हीण**—पु० कामदेव । वि० अपूर्ण । खंडित ।—**होमा**—स्त्री० सती ।

अगडाई–स्त्री० १ आलस्य या जम्भाई के साथ देह मे होने वाला तनाव। २ देह की टूटन। ३ करवट।

अगडाणौ, (बौ)–क्रि० १ अगडाई लेना, आलस्य मे शरीर को तानना। २ करवट लेना।

अगचालन–पु० शरीर का सचालन।

अगजितमल्ल, अंगजीतमल्ल–वि० शत्रु के मर्मस्थलो पर जान बूझ कर चोट करने वाला।

अंगठ–पु० वैलगाडी के थाटे के नीचे का उपकरण जो घोडे के सुम की आकृति का होता है।

अगण, अंगणि १ देखो 'आगणौ'। २ देखो अगना'।

अगद, अगद्द–स०पु० १ बाहु का आभूषण। २ नूपुर। ३ वालि नामक वानर का पुत्र। ४ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।

अंगन–देखो 'आगण'।

अगना–स्त्री० [स०] सुन्दर स्त्री। सुन्दरी। २ गाय, गौ। ३ उत्तर दिग्वर्ती हाथी की हथिनी। ४ वामन नामक दिग्गज की पत्नी।

अंगनि–देखो 'अगनि'।

अगन्यास–पु० मत्र पढते हुए अगो का स्पर्श।

अंगफूटणी–स्त्री० एक रोग विशेष।

अगमणौ, (बौ) देखो 'आगमणौ, (बौ)'।

अंगमरद, अगमरदन–पु० १ हड्डियो का दर्द। २ हाथ-पैर दवाने वाला नौकर। ६ शरीर के अगो को दबाने की क्रिया। ४ मालिश।

अगमाठ–वि० १ बलिष्ठ, बलवान। २ दृढ, मजबूत। ३ कृपण, कजूस।

अगरक्षा–स्त्री० [स० अग+रक्षा] शरीर की रक्षा।

अगरखी, अगरखौ–पु० [स० अग+रक्षक] १ एक प्रकार का कमीज या कुर्ता। २ अचकन। ३ वडे किले के चारो ओर बने हुए पनाह लेने के छोटे गड्ढो मे से एक।

अग-रखौ–पु० अदने स्वभाव का व्यक्ति (स्त्री० अग-रखी)।

अगरण–पु० [स० अग+रा प्रा रण] वस्त्र।

अगरस–पु० [स०] १ किसी पत्ती या फली का रस (वैद्यक)। २ सभोग, सुरति।

अगरह–पु० व्यायाम करने का स्थान, अखाडा।

अगराज–पु० १ राजा लोम पाद। २ राजा कर्ण।

अगरी–पु० १ कवच, सनाह। २ गोह के चमडे का दस्ताना जो धनुप चलाते समय पहना जाता था।

अगरू–पु० पुत्र, वेटा।

अगरेज–पु० [पुर्त० इग्लेज] १ इग्लैंट का निवासी। २ आग्ल जाति।

अग्रेजी–स्त्री० इग्लैड की भापा। वि० अग्रेजो का, अग्रेजो सबधी। विलायती।

अगरेल–पु० एक सुगधित पदार्थ। २ देखो 'अगरवत्ती'।

अगरौ–पु० १ बैलो का एक रोग। २ देखो 'अगारौ'

अंगळ–देखो 'आगळ'।

अगळी–देखो 'आगळी'।

अंगळीलंग–पु० हस।

अगलेखक–पु० राज्य पदाधिकारी विशेष।

अगलेडौ–पु० अगुलियो पर होने वाला एक फोडा।

अंगवारौ–पु० किसानो द्वारा पारस्परिक सहयोग से कृपि कार्य करने की प्रथा, क्रिया।

अंगसंपेख–पु० [स० अगसप्रेक्ष] अग देश का एक नाम।

अंगसी–स्त्री [स० अकुश] १ हलका फल। २ स्वर्णकारो की छोटी वकनाल।

अंगसूत्र–पु० जैन साधुओ के आचरण सूत्रो मे से एक।

अगा, अगा–देखो 'अगे'।

अंगागी–पु० [स० अगागी] १ शारीरिक अवयवो का पारस्परिक सबध। २ अश का पूर्ण से सबध।

अगाठी–देखो 'अगारी'।

अंगार–पु० स० १ अग्निकण, अगारा। २ अग्नि, आग। ३ अगीठी। ४ लाल रग। ५ एक राजा। ६ मगल ग्रह। ७ जैन मन मे एक दोष।

—**करम**–पु० अग्नि सस्कार, दाह क्रिया —**पुसप, पुसब, पुस्प**–लाल पुष्प। इगुदी का वृक्ष। —**मण, मणि, मणी**–स्त्री० लाल मणि, मूगा। —**मति**–कर्ण की स्त्री। —**वली**–चिरमी, घुघची।

अगारक–पु० [स०] १ सूर्य, रवि। २ मगल ग्रह। ३ एक असुर का नाम। ४ कोयला। ५ चिनगारी।

अगारक-चौथ–स्त्री० माघ शुक्ला चतुर्थी तिथि व इस तिथि का व्रत।

अगारी–स्त्री० गायो के स्तनो का एक रोग।

अगारुउ, अगारौ देखो 'अगार'।

अगि–१ देखो 'अग'। २ देखो 'अगी'।

अगिका–देखो 'अगिया'।

अगिखट–पु० [स० पट्+अग] वेदो के छै अग।

अगित–देखो 'इगित'।

अगिना–देखो 'अगनी'।

अगिया–स्त्री० [स० अगिका] कचुकी, चौली, अगिका।

अगियौ देखो 'अगरखौ'। देखो 'जामौ'

अगिरस–पु० १ एक प्रजापति। २ एक प्राचीन ऋषि। ३ वृहस्पति। ४ तारा। ५ 'अगिरासहिता' के रचयिता ऋषि। ६ अथर्ववेद के चौथे खण्ड का नाम। ७ एक देव गण।

अगी–वि० [स० अग+ई] १ शरीर धारी। २ देखो 'अग'।

अगीकरणौ, (बौ)–देखो 'अगीकारणौ, (बौ)।

अंगीकार–पु० [स०] १ स्वीकार करना, मजूर करना। २ ग्रहण करना, लेना।

अगीकारणौ (बौ)–क्रि० [स० अगीकरणम्] १ स्वीकार करना, मजूर करना। ग्रहण करना, लेना।

अगीकृत–वि० [स० अगीकृत] १ मजूरशुदा, स्वीकृत। २ गृहीत।

अगीकृति–स्त्री० मजूरी, स्वीकृति।

अगीठ–पु० [स० अग्निस्था[१ अगारा। स्त्री० २ अग्नि, आग। ३ दाह जलन। ४ देखो 'अगीठी'—वि०–अग्नि की तरह लाल।

अगीठी–स्त्री० [स० अग्निस्था, प्रा० अग्गिठा] १ कोयले जला कर भोजन बनाने का चूल्हा। २ भट्टी।

अगीरौ–देखो 'अगारौ'।

अंगीलौ–पु० रस्सी बनाने मे काम आने वाली खूटी, मेख। वि०–(स्त्री० अगीली) स्वभाव के विरुद्ध आचरण को सहन न करने वाला, स्वाभिमानी।

अगुछौ–देखो 'अगोछौ'।

अगुठी–देखो 'अगूठी'।

अगुठौ–देखो 'अगूठौ'।

अगुरी–देखो 'अगूरी'।

अगुरिया–देखो 'अगूरिया'।

अगुळ, अगुल–पु० [स० अगुल] १ अगुली, अगूठा। २ अगुली के बराबर की लम्बाई। ३ आठ जौ के बराबर का माप। ४ ग्राम का बारहवा भाग (ज्योतिष)। ५ हाथी की सूड का अग्र भाग।

अगुळि, अंगुळी, अगुळीय–स्त्री० [स० अगुलि] १ हाथ या पाव की उगली। २ हाथी की सूड की नोक। ३ नाप विशेष। ४ अगुठी, मुद्रिका। —त्राण–पु० अगुली की टोपी। —यक–स्त्री० अगूठी।

अगुसट, अंगुस्ट–देखो 'अगूठौ'।

अगुस्ठासण, अगुस्ठासन–पु० [स० अगुष्ठासन] योग के चौरासी आसनो मे से एक।

अगू–देखो 'अग'।

अगूठ, अगूठउ–देखो 'अगूठौ'।

अंगूठी–स्त्री० १ मुद्रिका, अगूठी। २ स्त्रियो के पाव की अगुली का आभूषण। ३ दर्जी की अगुली की टोपी।

अगूठौ–पु० [स० अगुष्ठ] हाथ या पावो की मोटी अगुली, अगूठा।

अगूयली, अगूयलीयक–स्त्री० मुद्रिका, अगूठी।

अंगूयळौ–पु० अगूठे मे पहनने का आभूषण।

अगूर–पु० [फा०] १ गोली या कच्ची दाख, किशमिश या मुनक्का। २ उक्त फल की बेल।

अंगूरियौ–देखो 'अगूरी'।

अगूरी–वि० १ अगूर का, अगूर से सम्बन्धित। २ अगूरो से बना हुआ। ३ अगूर के समान रग का।
—पु० १ अगूर का शर्बत। २ अगूर जैसे रग का वस्त्र।
—स्त्री० ३ अगूर की शराब।

अगूलीयक–स्त्री० अगूठी, मुद्रा (जैन)।

अगे, अगेई–क्रि० वि० १ कतई, नितान्त, बिल्कुल। २ किंचित, थोडा, लेशमात्र। ३ वास्तव मे, वस्तुत। ४ स्वभाव से, प्रकृति से।

अगेजणौ, (बौ)–क्रि० १ स्वीकार या मजूर करना। २ लेना, ग्रहण करना। ३ धारण करना, मानना। ४ जिम्मेदारी लेना।

अगेठी–देखो 'अगीठी'।

अगै, अगैई–देखो 'अगे'।

अगोअग, अगोअगि–क्रि० वि० १ देह के अनुसार, मन के अनुसार। २ पूर्णरूपेण। ३ अग-प्रत्यग से।
—वि० युक्तियुक्त, ठीक, उचित। २ सम्पूर्ण, पूर्ण।

अगोछ, अगोछियौ, अगोछौ–पु० [स० अग-प्रोछण] १ तौलिया, गमछा। २ उपवस्त्र।

अंगोट, अगोटौ, अगोठ–वि० अडिग, दृढ, अटल।
—पु० १ अग-प्रत्यग। २ शारीरिक गठन, सुडौलता।

अगोठी–देखो 'अगूठी'।

अगोठौ–देखो 'अगूठौ'।

अगोपाग–पु० [स० अग+उपाग] अग-उपाग। अग-प्रत्यग।

अगोभव, अगोभ्रम–पु० पुत्र, बेटा।

अगोल, अगोलगू–पु० १ पुत्र, बेटा। २ अग रक्षक।

अगोळणौ (बौ)–क्रि० स्नान करना, नहाना, धोना।

अगोळिया–स्त्री० नाइयो की एक शाखा।

अगोळियौ–पु० १ स्नानघर। २ पेशाबघर। ३ 'अगोळिया' जाति का नाई।

अगोळी–स्त्री० १ स्नान, मज्जन । २ स्नानागार । ३ पेशावघर ।
अंग्रेज–देखो 'अगरेज' ।
अंग्रेजी–देखो 'अगरेजी' ।
अघड–पु० [स० अघ्रि] निम्नवर्गीय स्त्रियो के पैर के अगूठे का जेवर ।
अघियौ–पु० जाघिया नामक अधोवस्त्र ।
अघ्रप–पु० [स० अघ्रिप] वृक्ष, पेड ।
अघ्रि, अघ्रिप, अघ्रियस, अंघ्री, अंघ्रीयस–पु० [स०अघ्रि] १ पैर चरण । २ चतुर्थांश । ३ वृक्ष । ४ वृक्ष की जड ।
अच–देखो 'आच' ।
अचणौ (बौ)–क्रि० [स० अच्] १ वाधना, लटकाना । २ लगाना, भूषित करना । ३ पूजना, आराधना करना । ४ लेपन करना ।
अचळ, अचल–पु० [स० अचल] १ वस्त्र का छोर, पल्ला । २ वस्त्र । ३ सीमात भाग । ४ किनारा, तट । ५ गठ-वधन । ६ वक्षस्थल पर रहने वाला स्त्रियो की ओढणी का पल्ला । ७ कुच, स्तन । ८ सीमा, हद ।
—**बध**–पु० वर-वधू का गठ-वधन ।
अचळौ–पु० १ साधु-सन्यासियो का ढीला व मोटा कुर्ता, चोला । २ देखो 'अचल' ।
अचित–वि० [स०] १ पूजा हुआ, पूजित । २ प्रतिष्ठित, सम्मानित । ३ मुडा हुआ, झुका हुआ । ४ सिला हुआ, वना हुआ । ५ तप्त, तपाया हुआ ।
अच्या, अछा–देखो 'इच्छा' ।
अछावस–वि० [स० इच्छा-वश] लोभी, लालची ।
अछावाळौ–वि० लोभी ।
अछया–देखो 'इच्छा' ।
अछया-सपत–पु० यौ० [स० इच्छा-सम्पति] धनपति कुवेर ।
अजण–१ देखो 'अजन' । २ देखो 'इजन' ।
अजणकेस–पु० [स० अजन-केश] दीपक ।
अजणा–देखो 'अजना' ।
अजणी–देखो 'अजनी' ।
अजणेव–पु० अजनी पुत्र, हनुमान ।
अजणौ (बौ)–देखो आजणौ (बौ) ।
अजन–पु० [स०] १ सुरमा । २ काजल । ३ लेप । ४ रात्रि रात । ५ स्याही । ६ माया । ७ पश्चिम दिशा । ८ इस दिशा का हस्ती । ९ एक सर्प विशेष । १० एक पर्वत का नाम । ११ वृक्ष विशेष । १२ अग्नि । १३ एक प्रकार काजल (अजन) विशेप जिसको आखो मे लगाने वाला अदृश्य हो जाता है ।
—**अरिस्ट**–पु० रत्न ।
—**केस**–पु० दीपक, दीया । —**केसी**–वि० काजल के समान काले केशो वाला (वाली) । —**योग**–पु० ६४ कलाओ मे से एक । —**सळाक, सळाका**–स्त्री० सुरमा सारने की सलाका, सलाई ।
अंजनवादी–वि० जिसकी आखो मे अदृश्य कर देने वाला अजन लगा हो । २ जिसने अदृश्य कर देने वाला अजन वनाया हो ।
अंजनामिका–स्त्री० नेत्रो का एक रोग ।
अजना–स्त्री० [स०] हनुमान की माता ।
—**नद, नंदन**–पु० हनुमान ।
अजनी–पु० [स०] १ काला अजन । २ कटुक वृक्ष । ३ घोडो का एक अशुभ चिह्न । ४ उक्त चिह्न वाला घोडा ।
—स्त्री०–५ गध पदार्थों का लेपन करने वाली स्त्री । ६ आख की पलक पर होने वाली फुसी, गुहजनी । ७ हनुमान की माता । ८ चौथे नरक का नाम (जैन)
—**ज, नदन, पूत**–पु० हनुमान ।
अजरि, अंजरी–देखो 'अजळी' ।
अजरूत–पु० गोद ।
अजळ–१ देखो 'अन्नजळ' । २ देखो 'अजली' ।
अजळउ–देखो 'अचळ' ।
अजळि, अंजळी, अजली–स्त्री० [स० अजलि] १ दोनो हथेलियो को कनिष्ठाओ की ओर से सटाकर वनायी हुई मुद्रा । २ इस मुद्रा का एक परिमाण । ३ इस मुद्रा मे समाने लायक वस्तु । ४ इस मुद्रा मे भरा जाने वाला जल जो पितृ-तर्पण के काम आता है । ५ कर सपुट ।
—**उपेत**–वि० करवद्ध ।
—**गत**–वि० हस्तगत प्राप्त ।
—**पुट**–पु० कर सपुट ।
—**बध, बध**–वि० करवद्ध , हाथ मे आया हुआ प्राप्त ।
–क्रि० वि० हाथजोडकर ।
अजस–पु० १ अभिमान, गर्व । २ खुशी, प्रसन्नता । ३ यश, कीर्ति । –वि० गौरवान्वित, अकुटिल, सीधा ।
अजसणौ (बौ)–क्रि० १ गर्व या अभिमान करना । २ खुशी मनाना । ३ गर्वोन्नत होना ।
अजसा–क्रि० वि० [स०] १ शीघ्रता मे, तुरन्त । २ सीधाई मे । ३ सच्चाई मे । ४ उचित ढग मे ।
–स्त्री० १ वेग, तेजी । २ नम्रता । ३ सच्चाई ।
अजाण–देखो 'अजाण' ।

अजाणौ–देखो 'अजाणौ'।
अजाम–पु० [फा०] १ परिणाम, नतीजा, फल। २ समाप्ति, अन्त। ३ पूर्ति। ४ इच्छा-सम्पत्ति।
अजार–पु० एक तीर्थ का नाम।
अजीर–पु० [फा०] १ गूलर जाति का एक वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल जो रेचक होता है।
अजील–देखो 'टजील'।
अजुरणौ, (बौ)–क्रि० अंकुरित होना।
अजुळि, अजुळी, अजूळि, अजूळी–देखो 'अजळी'।
अज्या–देखो 'अजा'।
अट–पु० १ भाग्य के लेख। २ अधिकार, कब्जा। ३ कलम की नोक। ४ कलम। ५ लिखावट, लेख। ६ कवच का हुक। ७ कमर के ऊपर धोती की लपेट, ऐंठन। ८ शरारत, बदमाशी। ९ काटा या फाम निकालने की क्रिया। १० ऐंठन।
अट-संट–वि० १ व्यर्थ, निरर्थक। २ अस्त-व्यस्त।
अटाणौ, (बौ)–क्रि० १ छल-बल से किसी वस्तु या धन को कब्जे मे करना। २ छीनना।
अटि, अंटी–स्त्री० [सं० अड या अण्ठि, प्रा० अट्टि] १ कमर के ऊपर धोती की लपेट, ऐंठन। २ अगुलियो के बीच की जगह। ३ तर्जनी पर मध्यमा को चढाने से बनने वाली मुद्रा। ४ चलने या भागने वाले को दी जाने वाली पैर की आड। ५ सूत या रेशम की गुडी। ६ सूत लपेटने की लकडी। ७ अधिकार, कब्जा। ८ क्षमता। ९ विरोध। १० लडाई, झगडा। ११ बिगाड, नुकसान। १२ कुश्ती का दाव।
अड–पु० [सं० अड] १ अडा। २ अडकोश। ३ ब्रह्माड। ४ शिव का एक नामान्तर। ५ मृग-नाभि। ६ वीर्य। ७ कस्तूरी। ८ कामदेव। ९ कोश। १० सुवृत्त।
—कटाह–पु० ब्रह्माड, विश्व।
—कोस–पु० वृषण, फोता।
—ज, ज्ज–पु० ब्रह्मा। अडो से पैदा होने वाले जीव।
अडबड–पु० ऊटपटाग, असम्बद्ध, व्यर्थ का।
अडब्रद्धि, अडब्रधी, अंडब्रद्धि, अडबधी–स्त्री० [सं० अडवृद्धि] अडकोश बढने का एक रोग विशेष।
अडाकार, अंडाकृति–वि० [सं०] अड के समान गोल।
अडियौ–वि० १ नपुसक। २ कमजोर, निर्बल। ३ देखो 'अडौ' ४ देखो 'आट'।
अडी–देखो 'अन्डी'।
अडे–अव्य यहा।
अडौ–पु० [सं० अड] १ वह गोला या पिंड जिसमे अडज प्राणियो की उत्पत्ति होती है, अडा। २ शरीर, देह, पिड। ३ देवालय के शिखर का कलश।
अढौ–पु० दिन का तीसरा प्रहर।
अणंद–देखो 'आणद'
अणराय–देखो 'अणराय'
अणहार–देखो 'उणियार'
अणियाळ–देखो 'अणियाळी'
अणि, अणी–देखो 'अणि'। देखो 'अणी'।
अत–पु० [सं०] १ समाप्ति, पूर्णता, इति, अवसान। २ मृत्यु। ३ नाश, खातमा। ४ सीमा, हद। ५ छोर, किनारा। ६ चरमसीमा। ७ वस्त्र का आचल। ८ सामीप्य, नजदीकी। ९ पडोस। १० उपस्थिति। ११ पिछला भाग। १२ जीवन की समाप्ति। १३ परिणाम, नतीजा १४ शब्द का अतिम अक्षर। १५ प्रकृति, स्वभाव। १६ प्रलय। १७ अन्त करण, अन्तरात्मा। १८ यमराज, अ तक। १९ पूर्ति। २० अतिम भाग
वि० १ समाप्त, पूर्ण। २ नष्ट, खत्म। ३ अधीर। ४ निकृष्ट, नीच। ५ असीम, अपार। ६ अत्यधिक, बहुत। ७ सुन्दर, प्यारा। ८ लघुतम, छोटा। ९ पीछे का, पिछला।
क्रि० वि० १ अन्त मे, आखिरकार। २ देखो 'आत'
—अक्षरू-आखर–पु० पद, शब्द या वर्णमाला का अन्तिम वर्ण।
—करण–पु० हृदय, मन, अन्तरात्मा। वि०–नाश करने वाला, सहारक।
—करम–पु० अन्त्येष्टि क्रिया, अतिम सस्कार।
—कार, कारक–पु० यमराज। –वि० सहार करने वाला।
—काळ–पु० अन्तिम समय, अवसान, इति। मृत्यु का समय।
—किरिया–स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया, अन्तिम सस्कार।
—कुटिळ–वि० कपटी, धोखेबाज।
—क्रत, क्रित–पु० यमराज। वि० सहारक।
—क्रिया–स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया।–क्षर–'अत आखर'
—गत–वि० मुक्ति प्राप्त करने वाला। पु० मोक्ष, निर्वाण। एक सूत्र।
—गति–स्त्री० मौत, मृत्यु। अन्तिम दशा। वि० अन्त को प्राप्त होने वाला। नष्ट होने वाला।
—घाती–वि० दगाबाज, कुटिल, घातक।
—चर–पु० सीमा पर जाने वाला, कार्य पूरा करने वाला।
—ज–पु० न्यून कुलीन व्यक्ति, शूद्र। वि० अछूत। अन्त का, अन्तिम।

—**जथा**–स्त्री० डिंगल काव्य रचना की एक प्रणाली।
—**दिन**–पु० मृत्यु दिन, आयु का अन्तिम दिन।
—**पाळ**–पु० द्वारपाल। संतरी। दरवान। सीमांत प्रहरी। प्रतिहार।
—**पुर**–पु० रनिवास हरम।
—**पुळ**–पु० अन्तिम समय।
—**बरण, वरण**–पु०अन्तिम वर्ण।
—**मेळ**–पु० दोहा नामक छन्द जिसके प्रथम चरण और अंतिम चरण का तुकांत मिलता है।
—**विदारण**–पु० सूर्य व चन्द्र के दश प्रकार के मोक्षो मे से एक।
—**समय, समै समौ**–पु० अंतिम समय, अवसान काल
—**स्नांन**–पु० अवभृथ-स्नान। —**हीण**–वि० असीम, अपार।

अंतक, अंतकराय–पु० [सं० अंतक-राज] १ यमराज। २ शनिश्चर। ३ डर भय। ४ महादेव, रुद्र। ५ मृत्यु। मौत। ६ सन्निपातक ज्वर।–वि० नाश करने वाला।
—**लोक**–पु० यमपुरी।

अंतकापुर, अंतकापुरी स्त्री०१ तीर्थ स्थान।२ देखो'अंतकलोक'

अंतग–वि० [सं० अंतक] १ पारगत, निपुण। २ संहारक। पु० यमराज।

अंतगउ–पु० १ जन्म मरण से मुक्त तीर्थंकर। २ एक सूत्र का नाम (जैन) ३ मोक्ष, निर्वाण।

अंतत–अव्य० [सं०] १ आखिरकार, अंत मे। २ सब से पीछे ३ कुछ-कुछ। ४ अन्दर, भीतर।

अंतरग, अंतरगी–वि० १ अभिन्न, घनिष्ठ। २ विश्वस्त। ३ अतिप्रिय। ४ भीतरी, आन्तरिक। ५ मानसिक। ६ भेदिया।–पु० घनिष्ठ मित्र। २ भीतरी अंग, हृदय, मन। ३ विश्वस्त व्यक्ति।
—क्रि० वि० बीच मे, दरम्यान।

अंतर–पु० [सं०] १ भेद, फर्क। २ अलगाव। ३ भीतरी भाग। ४ आत्मा, मन, हृदय। ५ अवकाश। ६ अवधि, काल। ७ भिन्नता, विभेद। ८ फासला, दूरी। ९ ओट, आड़। १० परदा। ११ छिद्र, छेद, रंध्र। १२ जल, पानी। १३ समय, अवधि। १४ विछोह, वियोग। १५ पार्थक्य, जुदाई। १६ छल, कपट। १७ नर्क की मंजिल। १८ अग्नि। १९ अन्त पुर। २० हेरफेर, परिवर्तन। २१ भेदभाव परायापन। २२ हिसाब की भूल। २३ विषमता। २४ शेषांश। २५ इत्र। वि० १ भीतरी। २ प्रिय, प्यारा। ३ अन्तर्धान, अलोप ४ भिन्न, दूसरा। ५ समान।
क्रि० वि० अन्दर, भीतर। २ समीप, पास मे। ३ मध्य मे, बीच मे।
—**आतमा, आत्मा**–स्त्री० मन, आत्मा, अन्त करण। ब्रह्म। मूलतत्व। सार।
—**काण, काणम, काणी**–स्त्री० तराजू के संतुलन का दोष या फर्क
—**गत**–वि० भीतरी, अन्तर्भूत। अधीन। सम्मिलित। गुप्त आत्मिक, मानसिक। –क्रि०वि० बीच मे, दरम्यान।
—**गति**–स्त्री० आन्तरिक दशा। मन का भाव, चित्त वृत्ति। भावना, इच्छा।
—**गिरा**–स्त्री० अन्त करण की आवाज।
—**ग्यान**–पु० आत्मज्ञान, सूक्ष्मज्ञान।
—**घट**–पु० हृदय, अन्त करण।
—**चकर, चक्र**–पु० शरीरस्थ छः चक्र। पक्षियो की आवाज के अनुसार शकुन विचारने की विद्या।
—**छाळ**–स्त्री० वृक्ष की छाल के नीचे की झिल्ली।
—**जांमी**,–वि० मन की बात को जानने वाला। भूत,भविष्य को जानने वाला,त्रिकालदर्शी।–पु०ईश्वर।
—**दवार, द्वार**–पु० गुहा-द्वार। खिडकी।
—**दसा**–स्त्री० मन की अवस्था। ग्रहो की चाल का विधान। (ज्योतिष)
—**दाह**–स्त्री० भीतरी जलन (रोग)। विरह की आग। कष्ट, पीड़ा। ईर्ष्या, द्वेष।
—**दिस, दिसा**–स्त्री० विदिशा, कोण।
—**द्रस्टी, द्रस्ठी**–स्त्री० आंतरिक सूक्ष्म। आत्मचिंतन।
—**धान, ध्यांन**–वि०अलोप, ओझल। तल्लीन, मग्न।
—**पट**–पु० परदा, आड, ओट। छिपाव, दुराव। औषधि का संपुट। आड बनाने का वस्त्र।
—**पणौ**–पु० घनिष्ठता, आत्मीयता, अपनत्व।
—**पुरख, पुरस**–पु० ईश्वर। आत्मा।
—**पुरी**–स्त्री० स्वर्ग, वैकुण्ठ।
—**बध**–पु० आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
—**बळी**–वि० आत्मबलि।
—**भाव, भावना**–पु० मन का भाव। आशय। प्रयोजन। भावना। आत्मावलोकन। आत्मचिंतन।
—**भूत**–वि० मिला हुआ। संयुक्त अस्तित्व वाला। मध्यगत पु० जीवात्मा।
—**मुख**–वि० जिसका मुख भीतर की ओर हो।–पु० आन्त-

अजाणँ–देखो 'अजाणौ' ।
अजाम–पु० [फा०] १ परिणाम, नतीजा, फल । २ समाप्ति, अंत । ३ पूर्ति । ४ इच्छा-सम्पत्ति ।
अजार–पु० एक तीर्थ का नाम ।
अजीर–पु० [फा०] १ गूलर जाति का एक वृक्ष । २ इस वृक्ष का फल जो रेचक होता है ।
अजील–देखो 'इजील' ।
अजुरणौ, (बौ)–क्रि० अंकुरित होना ।
अजुळि, अजुळी, अजूळि, अजूळी–देखो अजळी' ।
अज्या–देखो 'अजा' ।
अट–पु० १ भाग्य के लेख । २ अधिकार, कब्जा । ३ कलम की नोक । ४ कलम । ५ लिखावट, लेख । ६ कवच का हुक । ७ कमर के ऊपर धोती की लपेट, ऐंठन । ८ शरारत, बदमाशी । ९ काटा या फास निकालने की क्रिया ।१० ऐंठन ।
अट-सट–वि० १ व्यर्थ, निरर्थक । २ अस्त-व्यस्त ।
अटाणौ, (बौ)–क्रि० १ छल-बल से किसी वस्तु या धन को कब्जे मे करना । २ छीनना ।
अटि, अंटी–स्त्री० [स० अड या अण्ठि, प्रा० अट्ठि] १ कमर के ऊपर धोती की लपेट, ऐंठन । २ अगुलियो के बीच की जगह । ३ तर्जनी पर मध्यमा को चढाने से बनने वाली मुद्रा । ४ चलने या भागने वाले को दी जाने वाली पैर की आड । ५ सूत या रेशम की गुडी । ६ सूत लपेटने की लकडी । ७ अधिकार, कब्जा । ८ क्षमता । ९ विरोध । १० लडाई, झगडा । ११ बिगाड, नुकसान । १२ कुश्ती का दाव ।
अड–पु० [स० अड] १ अडा । २ अडकोश । ३ ब्रह्माड । ४ शिव का एक नामान्तर । ५ मृग-नाभि । ६ वीर्य । ७ कस्तूरी । ८ कामदेव । ९ कोश । १० सुवृत्त ।
—**कटाह**–पु० ब्रह्माड, विश्व ।
—**कोस**–पु० वृषण, फोता ।
—**ज, ज्ज**–पु० ब्रह्मा । अडो से पैदा होने वाले जीव ।
अडवड–पु० ऊटपटाग, असम्बद्ध, व्यर्थ का ।
अडवृद्धि, अंडव्रधी, अडव्रद्धि, अडव्रधी–स्त्री० [स० अडवृद्धि] अडकोश बढने का एक रोग विशेष ।
अडाकार, अडाकृति–वि० [स०] अडे के समान गोल ।
अडियौ–वि० १ नपुसक । २ कमजोर, निर्बल । ३ देखो 'अडो' ४ देखो 'आड' ।
अडी–देखो 'गरडी' ।
अडे–अव्य यहा ।
अडो–पु० [स० अड] १ वह गोला या पिड जिसमे अडज प्राणियो की उत्पत्ति होती है, अडा । २ शरीर, देह, पिड । ३ देवालय के शिखर का कलश ।
अढो–पु० दिन का तीसरा प्रहर ।
अणद–देखो 'आणद'
अणराय–देखो 'अणराय'
अणहार–देखो 'उणियार'
अणियाळ–देखो 'अणियाळी'
अणि, अणी–देखो 'अणि' । देखो 'अणी' ।
अत–पु० [स०] १ समाप्ति, पूर्णता, इति, अवसान । २ मृत्यु । ३ नाश, खात्मा । ४ सीमा, हद । ५ छोर, किनारा । ६ चरमसीमा । ७ वस्त्र का आचल । ८ सामीप्य, नजदीकी । ९ पडोस । १० उपस्थिति । ११ पिछला भाग । १२ जीवन की समाप्ति । १३ परिणाम, नतीजा १४ शब्द का अतिम अक्षर । १५ प्रकृति, स्वभाव । १६ प्रलय । १७ अन्त करण, अन्तरात्मा । १८ यमराज, अ तक । १९ पूर्ति । २० अतिम भाग
वि० १ समाप्त, पूर्ण । २ नष्ट, खत्म । ३ अखीर । ४ निकृष्ट, नीच । ५ असीम, अपार । ६ अत्यधिक, बहुत । ७ सुन्दर, प्यारा । ८ लघुतम, छोटा । ९ पीछे का, पिछला ।
क्रि० वि० १ अन्त मे, आखिरकार । २ देखो 'आत'
—**अक्षरू-आखर**–पु०पद,शब्दया वर्णमाला का अन्तिम वर्ण ।
—**करण**–पु० हृदय, मन, अन्तरात्मा । वि०–नाश करने वाला, सहारक ।
—**करम**–पु० अन्त्येष्टि क्रिया, अतिम सस्कार ।
—**कार, कारक**–पु० यमराज । –वि० सहार करने वाला ।
—**काळ**–पु०अन्तिम समय,अवसान, इति । मृत्यु का समय ।
—**किरिया**–स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया, अन्तिम सस्कार ।
—**कुटिळ**–वि० कपटी, धोखेबाज ।
—**कृत, क्रित**–पु० यमराज । वि० सहारक ।
—**क्रिया**–स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया ।–**क्षर**–'अत आखर'
—**गत**–वि० मुक्ति प्राप्त करने वाला । पु०मोक्ष, निर्वाण । एक सूत्र ।
—**गति**–स्त्री० मौत, मृत्यु । अन्तिम दशा । वि० अन्त को प्राप्त होने वाला । नष्ट होने वाला ।
—**घाती**–वि० दगाबाज, कुटिल, घातक ।
—**चर**–पु० सीमा पर जाने वाला, कार्य पूरा करने वाला ।
—**ज**–पु० न्यून कुलीन व्यक्ति, शूद्र । वि० अछूत । अन्त का, अन्तिम ।

—जथा–स्त्री० डिंगल काव्य रचना की एक प्रणाली।
—दिन–पु० मृत्यु दिन, आयु का अन्तिम दिन।
—पाळ–पु० द्वारपाल। सतरी। दरबान। सीमात प्रहरी। प्रतिहार।
—पुर–पु० रनिवास हरम।
—पुळ–पु० अन्तिम समय।
—बरण, वरण–पु० अन्तिम वर्ण।
—मेळ–पु० दोहा नामक छन्द जिसके प्रथम चरण और अतिम चरण का तुकात मिलना है।
—विवारण–पु० सूर्य व चन्द्र के दश प्रकार के मोक्षो मे से एक।
—समय, समै समौ–पु० अतिम समय, अवसान काल
—स्नान–पु० अवभृथ-स्नान। —हीण–वि० असीम, अपार।

अतक, अतकराय–पु० [स० अतक-राज] १ यमराज। २ शनिश्चर। ३ डर भय। ४ महादेव, रुद्र। ५ मृत्यु। मौत। ६ सन्निपातक ज्वर। –वि० नाश करने वाला।
—लोक–पु० यमपुरी।

अतकापुर, अतकापुरी स्त्री० १ तीर्थ स्थान। २ देखो 'अतकलोक'

अंतग–वि० [स० अतक] १ पारगत, निपुण। २ सहारक। पु० यमराज।

अतगउ–पु० १ जन्म मरण से मुक्त तीर्थंकर। २ एक सूत्र का नाम (जैन) ३ मोक्ष, निर्वाण।

अतत–अव्य० [स०] १ आखिरकार, अत मे। २ सब से पीछे ३ कुछ-कुछ। ४ अन्दर, भीतर।

अतरग, अतरगी–वि० १ अभिन्न, घनिष्ठ। २ विश्वस्त। ३ अतिप्रिय। ४ भीतरी, आन्तरिक। ५ मानसिक। ६ भेदिया। –पु० घनिष्ठ मित्र। २ भीतरी अग, हृदय, मन। ३ विश्वस्त व्यक्ति।
—क्रि० वि० बीच मे, दरम्यान।

अतर–पु० [स०] १ भेद, फर्क। २ अलगाव। ३ भीतरी भाग। ४ आत्मा, मन, हृदय। ५ अवकाश। ६ अवधि, काल। ७ भिन्नता, विभेद। ८ फासला, दूरी। ९ ओट, आड। १० परदा। ११ छिद्र, छेद, रध्र। १२ जल, पानी। १३ समय, अवधि। १४ विछोह, वियोग। १५ पार्थक्य, जुदाई। १६ छल, कपट। १७ नर्क की मजिल। १८ अग्नि। १९ अन्त पुर। २० हेरफेर, परिवर्तन। २१ भेदभाव परायापन। २२ हिसाव की भूल। २३ विषमता। २४ शेषाश। २५ इत्र। वि० १ भीतरी। २ प्रिय, प्यारा। ३ अन्तर्धान, अलोप ४ भिन्न, दूसरा। ५ समान।
क्रि० वि० अन्दर, भीतर। २ समीप, पास मे। ३ मध्य मे, बीच मे।
—आतमा, आत्मा–स्त्री० मन, आत्मा, अन्त करण। ब्रह्म। मूलतत्व। सार।
—काण, काणम, काणी–स्त्री० तराजू के सतुलन का दोष या फर्क
—गत–वि० भीतरी, अन्तर्भूत। अधीन। सम्मिलित। गुप्त आत्मिक, मानसिक। –क्रि०वि० बीच मे, दरम्यान।
—गति–स्त्री० आन्तरिक दशा। मन का भाव, चित्त वृत्ति। भावना, इच्छा।
—गिरा–स्त्री० अन्त करण की आवाज।
—ग्यान–पु० आत्मज्ञान, सूक्ष्मज्ञान।
—घट–पु० हृदय, अन्त करण।
—चकर, चक्र–पु० शरीरस्थ छै चक्र। पक्षियो की आवाज के अनुसार शकुन विचारने की विद्या।
—छाळ–स्त्री० वृक्ष की छाल के नीचे की झिल्ली।
—जामी,–वि० मन की वात को जानने वाला। भूत, भविष्य को जानने वाला, त्रिकालदर्शी। –पु० ईश्वर।
—दवार, द्वार–पु० गुहा-द्वार। खिडकी।
—दसा–स्त्री० मन की अवस्था। ग्रहो की चाल का विधान। (ज्योतिष)
—दाह–स्त्री० भीतरी जलन (रोग)। विरह की आग। कष्ट, पीडा। ईर्ष्या, द्वेष।
—दिस, दिसा–स्त्री० विदिशा, कोण।
—द्रस्टी, द्रस्ठी–स्त्री० आतरिक सूक्ष्म। आत्मचितन।
—धान, ध्यान–वि० अलोप, ओझल। तल्लीन, मग्न।
—पट–पु० परदा, आड, ओट। छिपाव, दुराव। औषधि का सपुट। आड बनाने का वस्त्र।
—पणौ–पु० घनिष्ठता, आत्मीयता, अपनत्व।
—पुरख, पुरस–पु० ईश्वर। आत्मा।
—पुरी–स्त्री० स्वर्ग, वैकुण्ठ।
—बध–पु० आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
—बळी–वि० आत्मबलि।
—भाव, भावना–पु० मन का भाव। आशय। प्रयोजन। भावना। आत्मावलोकन। आत्मचिंतन।
—भूत–वि० मिला हुआ। सयुक्त अस्तित्व वाला। मध्यगत पु० जीवात्मा।
—मुख–वि० जिसका मुख भीतर की ओर हो। –पु० आन्त-

रिक फोडा या फुंसी। शल्य चिकित्सा की कैंची।
क्रि० वि० भीतर की ओर उन्मुख।

—यामी–'अतरजामी'

—रत, रति–स्त्री० रति क्रिया का एक आसन।

—लीण, लीन–वि० जो आत्म चिन्तन मे लीन हो। ध्यानावस्थित। भीतर छुपा हुआ।

—वस्त्र–पु० मुख्य वस्त्र के नीचे का वस्त्र। अधोवस्त्र।

—विकार–पु० भूख-प्यास आदि शारीरिक धर्म। मन का विकार।

—वेग–पु० उत्साह, स्फूर्ति। उमग। अशाति, चिंता। छींक, पसीना आदि आन्तरिक वेग। ज्वर विशेष।

—वेदना–स्त्री०अशाति, दुःख, कष्ट पीडा। मानसिक कष्ट।

—सचारी–पु० वे अस्थिर मनोविकार जो काव्य मे रस-सिद्धि करते है।

—सपाडौ, सनान–पु० यज्ञान्त स्नान, अवभृत, स्नान।

अतर-अयण—पु० १ एक देश का नाम। २ तीर्थ की परिक्रमा। ३ तीर्थ यात्रा।

अतरउ–१ देखो 'आतरौ'। २ देखो 'अतरौ'। ३ देखो 'अतर'।

अतरलापिका–स्त्री० यौ० वह पहेली जिसका अर्थ उसी के शब्दो मे होता है।

अतरवेद, अतरवेध–पु०यौ० [स० अन्तर्वेद] गगा यमुना के मध्य मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।

अतरवेदी–पु० [स० अन्तर्वेदी] उक्त प्रदेश का निवासी।

अतरसेवौ–देखो 'अतरेवौ'

अतराई, अतराय–स्त्री० [स० अतरय या अतराय] १ विघ्न, बाधा। २ दूरी, फासला। ३ भेद, भिन्नता। ४ समय अवधि। ५ दो घटनाओ के बीच का समय, अवकाश। ६ अडचन, दिक्कत। ७ योग सिद्धि की नौ बाधाएँ–व्याधि, स्त्यान, प्रमाद, सशय, आलस्य, अविरति भ्राति-दर्शन, अलब्ध भूमिकत्व व अनवस्थित तत्व। ८ विपन्नावस्था १० आठवा कर्म जो आत्मा के अनन्त वीर्य रूप गुण का घातक होता है।(जैन) ११ रुकावट, रोक। १२ मनमुटाव।

अतरायण–वि० नजरबद, मोह मे आबद्ध।

अतरायाम–पु० एक प्रकार का वात रोग।

अतराळ, अतराळि–पु० [स० अन्तरालम्] १ आकाश, नभ। २ घेरा, मडल। ३ घिरा हुआ या बीच का स्थान या भाग। ४ बीच का समय, मध्यान्तर। पु० अभ्यतर।
—क्रि० वि० १ बीच मे। २ देखो 'अत्र'।

अतरावळ (ळी)–देखो 'अत्र'।

अतरास–देखो 'अतराय'

अतरि–देखो 'अतर'

अतरिक, अतरिक्ख, अंतरिक्ष, अतरिख, अतरिखि, अतरिच्छ, अतरिछ–पु० [स० अन्तरिक्ष] १ आकाश, अन्तरिक्ष। २ स्वर्ग, वैकुण्ठ। ३ एक केतु। ४ एक प्रसिद्ध योगेश्वर। ५ ऊचा स्थान। ६ झूला।
—वि० गुप्त, अप्रगट। २ अतर्धान, लुप्त।

अतरित–वि० १ अन्तर्धान, लुप्त। २ भीतर रखा हुआ। ३ ढका हुआ।

अतरी–वि० भीतर की। २ मार्मिक। ३ कठोर।

अतरीक, अतरीख–देखो 'अतरिक'

अतरीज–पु० [स० अत करण] हृदय, अन्त करण।

अतरीप–पु०[स०] १ द्वीप, टापू। २ समुद्र मे दूर तक गया हुआ पृथ्वी का भाग।

अतरीय–पु० [स०] अधोवस्त्र।

अतरे–देखो 'आतरै'।

अतरेख–देखो 'अतरिक'

अतरेवौ–पु०लहगे की लम्बाई कम करने के लिये बीच मे लगाया जाने वाला टाका।

अतरै–देखो 'आतरै'।

अतरौ–पु० गाये जाने वाले पद का चरण। २ देखो 'आत' ३ देखो 'आतरौ' ४ देखो 'अतर'।

अतवप–पु० रावण का एक योद्धा।

अतवरण–पु० शूद्रवर्ण। २ अन्तिम वर्ण या अक्षर।

अतस–पु० [स०] १ हृदय, मन, अन्त करण। २ चित्त वृत्ति, भावना। ३ हार्दिक इच्छा। ४ बुद्धि।

अतस्थ–वि० [स०] अन्दर की ओर स्थित, भीतरी।
—पु० य,र,ल,व वर्ण जो स्पर्श और उष्म वर्णो के बीच के माने जाते हैं।

अतहकरण–पु०यौ०[स० अत करण] १ हृदय, मन, अन्तरात्मा। २ भावना। ३ बुद्धि, विवेक। ४ अन्दर की इन्द्रिया।

अतहपरिजन, अतहपरीजन–पु० यौ० अत पुर के दास-दासी।

अतहपुर, अतहपुरग्रह, अतहपुरि, अतहपुरी–पु०यौ०[स०अत पुर] रनिवास, जनानखाना।

अताक्षरी, अताखरी–स्त्री० [स० अत्याक्षरी] पूर्व पठित छद या कविता के अतिम वर्ण से अगला पद्य आरभ करने की प्रतियोगिता।

अताळ, अतावळ, अतावळि अतावळी–देखो 'उतावळ'।

अतावळौ–देखो 'उतावळौ' (स्त्री० अतावळी)

अति–वि० [स० अत्यन्त] अतिशय, बहुत।

—क्रि० वि० आखिरकार, अत मे।

अतिक–क्रि०वि० [स०] पास, समीप, निकट।–वि० पास का, अन्त तक पहुचने वाला।

—पु० पडोस, सामिप्य, सानिध्य।

अतिम–वि० [स०] १ सब से पीछे या अन्त का, आखिरी। २ सब से बढकर।

—जातरा, जात्रा, यातरा, यात्रा–स्त्री० महा प्रस्थान, मरण, मृत्यु।

अतेउर, अतेउरि, अतेउरी, अतेवर, अतेवरि, अतेवरी–स्त्री० १ अन्त पुर की रानी, ठकुरानी। २ स्त्री, पत्नी, भार्या।

—पु० ३ अन्त पुर।

अतेवासी–पु० [स० अन्ते-वास] १ शिक्षार्थ गुरु के पास रहने वाला शिष्य। २ भगी, हरिजन।

अतेस्टि, अतेस्टी–देखो 'अत्येस्टी'।

अतैपुर–देखो 'अतहपुर'।

अत्यज–पु० [स०] अन्तिम वर्ण मे उत्पन्न व्यक्ति, शूद्र।

—वि० नीच, दुष्ट।

अत्यवरण–पु० [स०] १ अतिम वर्ण, शूद्र वर्ण। २ वर्णमाला का अतिम वर्ण। ३ किसी कविता या छद का अन्तिम अक्षर।

अत्यविपुळा–स्त्री० [स०] आर्याछिन्द का एक भेद।

अत्याक्षरिका, अत्याक्षरी–स्त्री० [स०] ६४ कलाओ मे से एक।

अत्यानुपरास, अत्यानुप्रास–पु० [स० अत्यानुप्रास] किसी छन्द या कविता की पक्तियो मे तुकात मेल से बनने वाला एक शब्दालकार।

अत्येस्टि, अत्येस्टी–स्त्री० [स० अन्त्येष्टि] दाह-सस्कार, अतिम सस्कार।

अत्र, अत्रक, अत्राळ–स्त्री० आत, आते।

—कूज, कूजन—पु० आतो की गडगडाहट। आतो की आवाज।

—वृद्धि, वधी–स्त्री० आतो का रोग, अडकोश वृद्धि का एक रोग।

अत्राळजी–स्त्री० [स० अत्रालजी] वात-कफ से होने वाली फुसी, फोडा।

अत्रावळ, अत्रावळि, अत्रावळी, अत्रावाळ, अत्रि–देखो 'अत्र'।

अद–पु० १ दोप, पाप। २ देखो 'इद्र'। ३ देखो 'अध'। ४ देखो अदुक ५ देखो 'अधक'।

—अद राजा–पु० एक देशी खेल विशेप।

अदक–१ देखो 'अधक'। २ देखो 'अदुक'।

अदर–क्रि०वि०[फा०]१जो बाहर न हो, भीतर। २ देखो 'इन्द्र'।

अदरी-वि० [फा०] १ आन्तरिक, भीतरी। २ देखो 'इन्द्री'।

अदरुणी, अदरूनी–वि० [फा अदरूनी] भीतरी, आन्तरिक।

अदाउळी–देखो 'अधाहुळी'।

अदाज–पु० [फा०] १ अनुमान। २ ढग, तरीका। ३ युक्ति, अटकल। ४ करीब, लगभग। ५ नाप-तौल। ६ हाव-भाव, चेष्टा। ७ उचित मात्रा।

अदाजन–क्रि०वि० [फा०] करीबन, अनुमानत, अनुमान मे।

अदाजौ–देखो 'अदाज'।

अदाता–देखो 'अन्नदाता'।

अदादु द–देखो 'अवाधु ध'।

अदार, अदारी– देखो 'अधारी'।

अदाळी–देखो 'अधारी'।

अदाळौ–देखो 'अधारौ'।

अदाहुळी, अदाहोळी–देखो 'आधाहुळी'।

अदियारौ–देखो 'अधारौ'।

अदु, अदुऔ–देखो 'अदुक'।

अदुक–पु० [स०] १ हाथी का पैर बांधने का रस्सा, साकल, शृखला। २ हाथी के पैर मे डालने का काटेदार यत्र। ३ स्त्रियो के पैर का आभूषण, पायजेव।

अदेस, अदेसौ–पु० [फा० अदेशा] १ सशय सदेह। २ भ्रम, भ्राति। ३ आशका, सभावना, भय। ४ अनुमान, अदाज। ५ चिंता, फिक्र, सोच। ६ असमजस, आगापीछा।

अदोर—पु० कोलाहल, शोर।

अदोळणौ (बौ)–क्रि० १ आदोलित करना, विलोडना। २ हिलाना। ३ इधर-उधर करना।

अदोह–पु० १ दु ख, सताप। २ खटका खतरा। ३ चिंता, फिक्र। ४ खेद।–वि० दुखद।

अदौ–देखो 'आधौ'।

अद्र–पु०–१ देखो 'आध्र'। २ देखो 'इद्र'।

अद्रजीत–देखो 'इद्रजीत'।

अद्रसस्त्र–देखो 'इद्रसस्त्र'।

अद्रायण–देखो इद्रायण'।

अद्रासण–देखो 'इद्रासण'।

अद्रि, अद्रिय, अद्री, अद्रीय–देखो 'इद्री'।

अध–वि० [स०] १ दृष्टि हीन, अधा। २ अचेत, असावधान। ३ निर्बुद्धि, जड बुद्धि। ४ उन्मत्त, पागल।

—पु० १ अधा प्राणी। २ अधेरा, अधकार। ३ जल, पानी। ४ एक मुनि। ५ अधकासुर-दैत्य। ६ शिकारी। ७ डिंगल गीतो का काव्य सबधी एक दोप। ८ देखो 'आध्र'।

—क–पु० १ एक दैत्य। २ नेत्र ज्योतिहीन व्यक्ति।

—कार–पु० १ अधेरा। २ पाताल। ३ शिव। ४ अज्ञान। ५ मोह।–**कारी**–पु० १ शिव, महादेव। २ एक रागिनी।

—कूप-पु०१ घास-फूस से भरा सूखा कुआ। २ एक नरक का

नाम । ३ अज्ञान । ४ घोर अंधकार ।—**खोपड़ी**–वि० बुद्धि रहित मस्तिष्क वाला, मूर्ख ।—**घाती, घातीक**–पु० शिव । सूर्य । चन्द्रमा । अग्नि । दीपक । —**ड**–पु० आंधी, तूफान ।—**ण**–स्त्री० अन्धता । अंधापन । —**तमस**–पु० घोर अंधकार ।—**ता**–स्त्री० दृष्टिहीनता की स्थिति, अन्धापन । नेत्रों का एक रोग । मूर्खता, अज्ञानता ।—**तामस, तामिस्त्र**–पु० घने अंधकार वाला एक नरक । घोर अंधेरा ।—**परंपरा**–स्त्री० अंधानुकरण मात्र । भेड चाल ।—**पूतना**–स्त्री० बालकों का एक रोग । —**विसवास, विस्वास**–पु० रूढिगत संस्कार । विवेकहीन धारणा ।—**सुत**–पु० धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव ।

अंधक–पु० [स०] कश्यप व दिति का पुत्र एक दैत्य । —**रप, रिप, रिपु, रिम**–पु० शिव, महादेव । **व्रिस्णि**–पु० मौर देश का राजा व कुंति का पिता ।

अंधकार–पु० [स] १ अंधेरा । २ पाताल । ३ शिव, शंकर । ४ अज्ञान, मोह ।

अंधकारयुग–पु० इतिहास का अज्ञातकाल ।

अंधाधुंध–क्रि० वि० १ बिना किसी नियम या सिलसिले के । २ बेहताशा । ३ बिना विचार के । ४ अधिकता से । —पु० १ अव्यवस्था, गडबड़ी । २ अन्याय । ३ धींगामस्ती । ४ घोर अंधकार ।

अंधारक–पु० [स०] अंधेरा, तिमिर ।

अंधारी–स्त्री० १ हाथी के कुंभस्थल का आवरण । २ अंधड आंधी । ३ अंधेरा, अंधकार । ४ दृष्टिहीनता की दशा । ४ मूर्च्छा । ६ कृष्णपक्ष की रात्रि । ७ योगियों द्वारा रखी जाने वाली चिमटी । ८ बैल की आंखों पर बांधने की पट्टी । —वि० अंधकारमय ।

अंधारू, अंधारु, अंधारू, अंधारौ, अंधियार, अंधियारौ–पु० [स० अंधकार, प्रा०-अंध्यार] १ अंधेरा, अंधकार । २ धुंधलापन । —**पख**–पु०–कृष्ण पक्ष ।

अंधियारणौ (बौ)–क्रि० अंधेरा होना, अंधेरा करना ।

अंधियावणौ–वि० धुंधला, अंधकार पूर्ण, ।

अंधीझाड, अंधीझाडी–देखो 'आंधीझाडी' ।

अंधेर–देखो 'अंधारौ'

अंधेरखातौ–पु० [स० अंधकार+फा० खातौ] १ अव्यवस्था, कुप्रबंध । २ व्यतिक्रम । ३ अविवेक । ४ अनाचार ।

अंधेरी–स्त्री० बैलों के आंखों पर की पट्टी (मेवात) २ देखो 'अंधारी'

अंधेरौ–देखो 'अंधारौ' ।

अंधौ–देखो 'आंधौ' ।

अंध्य–देखो 'आंध्र' ।

अंध्यारौ–देखो 'अंधारी' ।

अंध्र–देखो 'आंध्र'

अंध्रय–पु० एक देश का नाम ।

अंन–देखो 'अन्न' ।—**दाता, दातार**='अन्नदाता' । —**पूरणा**='अन्न पूरणा' ।

अंनार–देखो 'अनार' ।

अंनि, अंनेरौ–देखो 'अन्य' ।

अंनेसडौ–देखो 'अंनेसौ' ।

अंब, अंबक–पु०–[स०] १ शिव, महादेव । २ चन्द्रमा । ३ आभा, कांति । ४ देखो 'अंबिका' । ५ देखो 'अंबुधि' । ६ देखो 'अंबु' । ७ देखो 'अंबुद' । ८ देखो 'आंबौ' । ९ देखो 'अंबर' । १० देखो 'अंबा' । ११ पिता । १२ आंख, नेत्र ।

अंबकास, (खास)–देखो 'आमखास' ।

अंबकेसर, (केस्वर)–देखो 'अंबिकेस्वर' ।

अंबज–देखो 'अंबुज' ।

अंबजंत्र–पु० फव्वारा ।

अंबध (धि)–देखो 'अंबुधि' ।

अंबनिध (निधि)–देखो 'अंबुनिधि' ।

अंबर–पु०–[स०] १ आकाश, नभ । २ वस्त्र । ३ कपास । ४ केसर । ५ इत्र । ६ एक सुगंधित द्रव्य विशेष । ७ अमृत । ८ अभ्रक । ९ आमेर नगर । १० घेरा, परिधि । ११ पड़ोस । १२ पाप । १३ शून्य । १४ बादल । १५ देखो 'आंबौ' । —**चर**–पु० पक्षी । आकाश में घूमने वाला ।—**डंबर**–पु० सूर्यास्त का समय । सन्ध्या की लालिमा ।—**मणि**–पु० सूर्य । —**राव**–पु० सूर्य ।

अंबरबेल, (बेलि)–देखो 'अमरबेल' ।

अंबराई–स्त्री० [सं आम्र-राजि] आम वृक्षों की पंक्ति, समूह ।

अंबराळ–पु० [स० अंबर+रा+आळ] आसमान, आकाश ।

अंबरि–देखो 'अंबर' ।

अंबरीक, (ख, स), अंबरीसक–पु० [स० अंबरीष] १ विष्णु । २ शिव, महादेव । ३ सूर्य, सूरज । ४ एक सूर्यवंशी राजा । ५ भाड । ६ एक सर्प ।

अंबवेळा–पु० [स० अम्बु–वेला] । समुद्र, सागर ।

अंबस्ठ–पु० [स० अम्बष्ठ] १ चिनाव नदी के पास बसा एक प्राचीन जनपद । २ उक्त स्थान का निवासी ।

अंबस्ठा–स्त्री० [स० अम्बष्ठा] मालती ।

अंबहर, अंबहरि–पु० [स० अम्बुधर] १ इन्द्र । २ बादल । ३ समुद्र, सागर । ४ आकाश, आसमान । ५ देखो 'अंबुहर' ।

अंबा–स्त्री० [स०] १ देवी, दुर्गा, शक्ति । २ माता, जननी । ३ पार्वती, उमा । ४ काशीराज की बडी पुत्री । ५ शीतला मातृका । ६ पृथ्वी, धरती । ७ आम । ८ यमुना की एक सहायक नदी ।—**देवी**–स्त्री० देवी, दुर्गा ।—**पौहण**–पु० शीतला

की सवारी, गधा। —य, यजी–स्त्री० दाता राज्य की आराध्या देवी।

अबाडी–स्त्री० १ हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला हौदा। २ पौधा विशेष जिसकी छाल से रस्सी बनती है।

अवाडौ–वि० मिलने वाला।

अबार–पु० [फा०] ढेर, समूह। राशि।

अबारत, अबारथ–देखो 'इमारत'।

अबारी–देखो 'अवाडी'।

अवाळा, अवाळिका, अबाळी—स्त्री०[स० अवालिका] १ काशी नरेश की कन्या। २ मालती लता। ३ जननी, माता।

अवि, अबिक, अविका, अबिकी– स्त्री० [स० अम्बिका] १ माता, जननी, दुर्गा, पार्वती। ३ माधवी लता। ४ काशीराज की मध्यमा पुत्री। ५ जैनियो की एक देवी। —आलय–पु० देवी का मन्दिर।—नाथ पत, पति–पु० शिव, महादेव।—वन–पु० पुराण प्रसिद्ध इलावृत खण्ड जहा जाने से पुरुप स्त्री हो जाते थे।—सुत–पु० धृतराष्ट्र।

अबिल—देखो 'आमिल'।

अबीहळद (दी)—देखो 'आवाहळदी'।

अबु—पु० [स०] १ पानी, जल। २ रक्त का जलीय अश। ३ जन्मकुडली का चतुर्थ स्थान।—स्त्री० ४ कान्ति। ५ चार की सख्या।—ज–पु० चन्द्रमा। कमल। बेंत। शख। कपूर। सारस पक्षी। घोघा। ब्रह्मा। वस्त्र। श्वेत वर्ण। एक सामुद्रिक चिह्न। जल से उत्पन्न प्राणी। –वि० जल से उत्पन्न।—जात—पु० कमल। —द–पु० मेघ, वादल। —धर–पु० वादल, मेघ। इन्द्र। —धि–पु० समुद्र, जल निधि। जलपात्र। —नाथ–पु० समुद्र, सागर।—निध, निधि–पु० समुद्र, सागर। वादल, मेघ।—प–पु० समुद्र। वरुण। शतभिषा नक्षत्र।–वि० पानी पीने वाला।—पत, पति, पती, राज–पु०–सागर, समुद्र। वरुण। —बाह, वाह–पु० वादल। —रासि, रासी–पु० समुद्र। —सायी–पु० विष्णु। असुर। पितर। चार की सख्या*। —हर–पु० सूर्य, अग्नि।

अबुऔ—'अबुवौ'

अबुज-सुत–पु० यौ० [स०] ब्रह्मा, विरचि।

अबुजा–स्त्री० [स०] १ एक रागिनी विशेप। २ कमलिनी। ३ कुमुदिनी।

अबुजासण, अबुजासन–पु० [स०] १ ब्रह्मा जिनका आसन कमल है। २ सरस्वती। ३ कमलासन।

अबुजासना–स्त्री० [स०] लक्ष्मी जिसका आसन कमल है।

अबुवा, अबुवौ–वि० १ आम्र के रग का। २ खट्टा।

अबुवाळ–वि० तेजस्वी कातिवान। –पु० पाबू राठौड का नामान्तर।

अबु–देखो अबु'।

अबूऔदही–पु० खट्टा दही।

अबूडौ–देख 'आवौ'।

अबोड़उ, अबोडौ–पु० [स० आम्र-चूडक]–१ केरीनुमा चोटी, वेणि। २ एक प्रकार का जूडा।

अबोद–देखो अबुद'।

अभ–पु० [स० अभस्] १ जल, पानी। २ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। ३ आकाश, नभ। ४ लग्न से चौथी राशि। ५ चार की सख्या। ६ देव। ७ असुर। ८ पितर। ९ राशि। १० वादल। ११ देखो 'अवा'।—ज–पु० चन्द्रमा। सारस पक्षी। कमल।—द, धर–पु० वादल, मेघ। —धि, निध, निधि, रासि–पु०समुद्र,सागर। —रुह,रू,रूह–पु० कमल। सारस।

अभा–देखो 'अवा'।

अभोज, अम्भज–पु० १ कमल। २ चन्द्रमा। ३ मोती। ४ शख। ५ घोघा। ६ वज्र। ७ जल से उत्पन्न वस्तु। ८ ब्रह्मा। ९ बेंत। १० सारस पक्षी। ११ ब्रह्मा की उपाधि।

अभोद—पु० [स०] वादल, मेघ।

अभोनिध, (निधि, रासि)–पु० समुद्र, सागर।

अभोरु, अभोरुह, अभोरू, अभोरूह–पु० [स० अभोरूह] कमल।

अमणीमाण–देखो 'अमलीमाण'।

अमीहळद (दी) देखो 'आवाहळदी'।

अम्रत–देखो 'अमरत'।

अम्हा—सर्व० हम।

अवर—१ देखो 'अवर'। २ देखो 'अवर'।

अवळउ, अवळऊ—देखो 'अवळौ'।

अवळाई—स्त्री० १ चक्कर, घुमाव, २ टेढापन, वक्रता। ३ कुटिलता। ४ दुरूहता।

अवळौ—वि० (स्त्री० अवळी) १ विरुद्ध, विपरीत। २ कष्ट-दायक, दुखदाई। ३ वक्र, टेढा, तिरछा। ४ दुर्गम, दुरूह। ५ घुमावदार, चक्करदार। ६ सुन्दर। ७ अद्भुत, विचित्र। —पु० १ शत्रु। २ गिरवी रखा हुआ माल। ३ प्रसव के समय बच्चे का गर्भ मे ही टेढा होने की क्रिया या स्थिति। ४ बुरा समय, आपाद् स्थिति।

अवार–स्त्री० १ विलब, देर। २ अवसर, मौका, । ३ शीघ्रता, त्वरा। ३ झड बेरी के कटे पौधो का बडा गोला।

अवारणौ–देखो 'वारणौ'

अवारिया, अवारिये–स्त्री० एक प्रकार की अचेतावस्था (रोग)

जिसमे किसी व्यक्ति का जीव कुछ अवधि तक विभिन्न लोको में भ्रमण कर पुन लौट आता है। (रूढि)

अवेर–स्त्री० १ देखभाल, निगरानी। २ हिफाजत, सुरक्षा ३ विलब, देरी। ४ निवृत्ति। ५ समेटना क्रिया।

अवेरणौ (बौ)–क्रि० १ देखभाल करना, निगरानी करना। २ हिफाजत या सुरक्षा करना। ३ समेटना, पूर्ण करना।

अस–पु० [स० अश–अस] १ भाग, हिस्सा। २ भाज्य अक। ३ भिन्न का अश (लकीर के ऊपर का अक)। ४ सोलहवा भाग। ५ चौथा भाग। ६ वृत्त की परिधि का ३६० वा भाग (रेखा ग.) ७ लाभ का हिस्सा। ८ बारह आदित्यो मे से एक। ९ दिन। १० कधा। ११ कला। १२ वशज। १३ वीर्य। १४ शक्ति। १५ अक्षाश। १६ देखो 'असु'। —**कूट**–स्त्री० कूबड, ककुद। —**धारी**–वि० दैवि शक्ति से युक्त। अवतारी। वशज। बलवान, शक्तिशाली, वीर, बहादुर। हिस्सेदार, भागीदार।

असक–पु० [स० अशक] १ मेष आदि राशि का तीसवा भाग। २ अशधारी। ३ भाग, हिस्सा। ४ दिवस, दिन।

असळी–वि० अश का।

असाप, (फ)–देखो 'इसाफ'।

असावतार–पु० [स० अश—अवतार] वह पुरुष जिसमे ईश्वरी शक्ति का अश हो।

असी–वि० अशधारी, हिस्सेदार।

असु–पु० [स० अशु] १ सूर्य। २ तेज। ३ किरण, रश्मि। ४ दीप्ति, काति, ज्योति। ५ छोर, सिरा। ६ सूक्ष्माश, परमाणु। ७ किंचित, लेशमात्र। ८ वेग। ९ पोशाक। १० गति, रफ्तार। ११ देखो 'आसु'।
—**जाळ**–पु० किरणजाल, समूह। —**घर, धारी**–पु० सूर्य। अग्नि। चन्द्रमा। दीपक। ब्रह्मा। देवता। वीर पुरुष। वशज। —**पति, पती**–पु० सूर्य। चन्द्रमा।
—**भरतार**-पु० सूर्य। —**माण, मान**–पु० सूर्य। चन्द्रमा। सूर्यवशी राजा सगर का पौत्र। —**माळी**–पु० सूर्य। चन्द्रमा। अग्नि। दीपक। देवता। —**वन**–पु० आसू, अश्रु।

असुक–पु० [स० अशुक] १ बारीक या महीन वस्त्र। २ रेशमी वस्त्र।

असुपात–पु० अश्रुपात।

असू—१ देखो 'असु'। २ देखो 'आसु'

अह अहतम–पु० [स०अहम्, अहति] १ बाधा, रुकावट, विघ्न। २ कष्ट, पीडा। ३ दुख, चिन्ता। ४ व्याकुलता, त्वरा। ५ अपमान, अनादर। ६ पाप। सर्व०–मैं। अनु०–खासने या टसकने का शब्द।

अहति–स्त्री० [स०] १ बलिदान, त्याग। २ दान। ३ रोग, व्याधि। ४ कष्ट, पीडा। ५ अभिमान, गर्व।

अ, अ–उप० [स०] सज्ञा या विशेषण शब्दो के पूर्व मे लग कर विपरीत अर्थ सूचित करने वाला उपसर्ग। स्वर शब्दो के पूर्व लगते समय इसका रूप 'अन्' हो जाता है।
—पु० १ विष्णु, ब्रह्म। २ ब्रह्मा। ३ अग्नि। ४ इन्द्र। ५ वायु। ६ कुबेर। ७ अमृत। ८ विश्व। ९ ललाट। १० शिव। ११ कृष्ण। १२ सूर्य। १३ चन्द्रमा। १४ प्राण। १५ सुख। १६ समय का भाग। १७ यश। कीर्ति। १८ प्रजा। १९ शिखा। २० पादपूरक वर्ण।

अइघाण—देखो 'ईंघण'।

अइसउ–देखो 'ऐसौ' (स्त्री० अइसी)

अइ–देखो 'अति', 'अई'।

अइसउं–सर्व० १ यह, ये। २ इसकी, इनकी।

अइयाळ–देखो 'अयाळ'।

अइयौ–देखो 'अईयौ'।

अइराक, अइराकि, (की) १ देखो 'ऐराक'। २ देखो 'ऐराकी'।

अइरापत, अइरापति, अइरापती–देखो 'ऐरावत'।

अइरावती–देखो 'ऐरावती'।

अइरेग–देखो 'अतिरेक'।

अइसि–देखो 'ऐसी'।

अइहइ–क्रि० वि० ऐसा, ऐसी।

अइहवि–क्रि०वि० [स० अर्वाक] १ अब। २ ऐसे।

अई, अईज–क्रि०वि० १ व्यर्थ, फिजुल, बेमतलब। २ ऐसे ही।

अई, अईयौ–अव्य [स० अपि] १ अरे, हे। (सबोधन) २ वाह-वाह। (ध्वनि)

अउ–सर्व० १ ओ का प्राचीन रूप, वह। २ यह।

अउक–पु० गर्भवती स्त्री का जी मचलाने की अवस्था या भाव।

अउगाढ–देखो 'अवगाढ'।

अउगाळ—१ देखो 'अवगाळ'। २ देखो 'ओगाळ'।

अउगुण–देखो 'अवगुण'।

अउडी–देखो 'अहोडी'।

अउछाड–देखो 'ओछाड'।

अउज–स्त्री० अयोध्या।

अउझकई–क्रि०वि० [प्रा०] अकस्मात, अचानक, सहसा।

अउझणई, अउझणं–पु० १ दहेज। २ देखो 'उजमणी'।

अउटणौ, (बौ)–क्रि० १ देखो 'ओहटणौ'। २ देखो 'ऊठणौ (बौ) ३ देखो 'औटणौ (बौ)।

अउठ–देखो 'आठ'। २ देखो 'ऊठ'।

अउत–देखो 'अऊत'।

अउथि, अउथी–देखो 'ओथ'।

अउधारिक–पु० आधार।

अउब–वि० [स० अद्भुत], आश्चर्यजनक, अद्भुत, विलक्षण।

—गत, गति, गत्ति–स्त्री० विचित्र गति, अद्भुत रीति।
—भत–क्रि०वि०–विचित्र ढग से।
अउबणौ–१ कापना, थर्राना। २ देखो 'ऊवणौ' (बौ)
अउर–१ देखो 'श्रौर'। २ देखो 'उर'। ३ देखो 'श्रोर'। ४ देखो 'अपर'।
अउरति–देखो 'औरत'।
अउरसिहर–पु० एक प्रकार का भवन।
अउळगउ, अउळगऊं,–क्रि०वि० [प्रा०] १ अतिदूर, दूर। २ अलग।–पु० प्रवास।
अउळगण—पु० [प्रा०] प्रवास। यात्रा।–स्त्री० प्रवास मे साथ रहने वाली स्त्री।
अउळजणौ,(बौ)–देखो 'उळझणौ, (बौ)'
अउळौ–देखो 'अवळौ'।
अउसर–देखो 'अवसर'।
अऊकार–१ देखो 'ओकार'। २ देखो 'आवकार'।
अऊळौ–देखो 'अवळौ' (स्त्री० अऊळी)
अऊग्राहणौ, (बौ) देखो 'उगाणौ (बौ)।
अऊठ (ठौ) देखो 'हूठा'।
अऊत, अऊतियौ–वि० [स० अपुत्रक] १ नि सतान, ना औलाद। [स० अयुक्त] २ अयोग्य (सतान)(कुपुत्र)। ३ अनुचित। ४ वेवकूफ। ५ अधोगति गया हुआ।
अऊब–देखो १ 'अउब' २ देखो 'ऊब'।
अओडौ–देखो 'ओहडौ'।
अकटक–वि० [स०] १ निर्विघ्न, निष्कटक। २ शत्रुहीन।
अकपण, (न)–वि० [स० अकपन] कपन रहित, स्थिर। –पु० १ कपन का अभाव। २ रावण की सेना का एक योद्धा।
अक–पु० [स०] १ रज, चिंता। २ कष्ट, पीडा, दु ख। ३ पाप, अधर्म।—**बक**–स्त्री० बकवास, प्रलाप। धडका, खटका। चतुराई।–वि० निस्तब्ध, भौंचक्का। देखो 'अरक'।
अकड–स्त्री० १ ऐंठन, तनाव। २ अहकार, घमड, स्वाभिमान। ३ ढिठाई,बेशर्मी। ४ हठ, जिद्द, दुराग्रह। ५ वक्रता, बाकापन। ६ लडाई। ७ बधन।
—**बाई, वाई, वायु, वाव**–स्त्री० एक वात-रोग जिसमे शरीर की नसो मे तनाव आजाता है।—**बाज**-वि० हेकडीबाज, शेखीबाज। घमडी।—**बाजी**–स्त्री० हेकडी, शेखी, ऐंठ, घमड।—**मकड**–स्त्री० ऐंठन, ताव, गर्व, तेजी, आन-वान।
अकडणौ, (बौ)–क्रि० १ सूखने के कारण सिकुड कर ऐंठ जाना। २ ऐठन या तनाव पडना, मरोड खाना। ३ कडा पड जाना, मस्त हो जाना। ४ सर्दी से ठिठुरना। ५ सुन्न होना। ६ टेढा होना, वक्र होना। ७ शरीर को तानना, तान कर चलना। ८ हठ या जिद करना। ९ अभिमान या गर्व करना। १० किसी बात पर अडजाना। ११ गुस्सा या क्रोध करना। १२ धमकी देना, डराना, रौब दिखाना। १३ धृष्टता करना।
अकडाई–देखो 'अकड'।
अकडाळ–वि० १ जबरदस्त। २ हेकड, अडियल। ३ घमडी।
अकडाव–पु० अकडने की अवस्था या भाव, ऐंठन, तनाव।
अकड़ी (डी)–वि० शक्तिशाली, बलवान।
अकडू, अकडूबाज–देखो 'अकडबाज'।
अकडैत–देखो 'अखडैत'।
अकडौ–देखो 'आकडौ'।
अकच–वि० [स०] केश रहित, गजा।—पु० १ केतु का नामान्तर। २ जैन साधु।
अकच्छ–वि० नगा, नग्न। २ व्यभिचारी, लपट।
अकज, अकज्ज–देखो 'अकाज'।
अकठ–स्त्री० वह मादा पशु जिसका दूध आसानी से निकलता हो।
अकठौ–देखो 'ऊकठौ'।
अकडोडियौ–देखो 'आकडोडियौ'।
अकढ, अकढियोड़ौ, अकढियौ—वि० [स० अक्वथित] बिना गर्म किया हुआ। (दूध)
अकतार, अकतियार, अकत्यार—देखो 'इखत्यार'।
अकत्थ, अकथ–वि० [स० अ+कथ्] १ न कहने योग्य। न कहा जा सके, अवर्णनीय। २ कथन या वर्णन शक्ति से परे।—**कथ, कथा**–स्त्री० अकथनीय बात या कहानी।
अकथा–स्त्री०[स०] १ कुकथा। २ अपभाषा, बुरीबात।
अकथ्थ,अकथ्य–देखो 'अकथ'।
अकनकवार स्त्री०[स०अखण्ड+कौमार्य] १ कुवारापन, कौमार्य, अविवाहिता अवस्था। [स० अखण्ड–कुमारी] २ कुआरी कन्या, अविवाहिता कन्या।–वि० अविवाहिता, कुमारी, अक्षत योनि।
अकन कुमारो, अकन कुंवारो वि० [स० अखण्ड+कौमार्य] (स्त्री० अकन कुमारी, अकन कुवारी) १ अविवाहित, कुवारा। २ अखड कौमार्य व्रत धारण करने वाला।
अकपट–वि० [स०] १ कपट रहित, निश्छल। २ सरल, सीधा।
अकबक–वि० अवाक, निस्तब्ध।–स्त्री० व्यर्थ बकझक, असबद्ध प्रलाप।
अकबकणौ (बौ), अकबक्कणौ (बौ)–क्रि १ व्यर्थ प्रलाप करना। २ व्याकुल होना, चिंता करना। ३ अवाक् या निस्तब्ध रह जाना।

अकवरी—स्त्री० प्राचीन सोने का सिक्का। २ एक प्रकार की मिठाई। ३ लकडी पर की जाने वाली खुदाई।
—वि० अकवर का, अकवर सवधी।

अकवार—देखो, 'अखवार'।

अकवाल—देखो 'इकवाल'।

अकयत्य, अकयथ, अकयथ्य—वि० [प्रा] अकार्य, व्यर्थ।

अकर—वि० [स०] १ कर रहित, विना हाथो का। २ जो कुछ करने योग्य न हो, अकर्मण्य। ३ न करने योग्य। ४ कठिन, दुष्कर। ५ जिस पर कोई कर या महशूल न हो, कर मुक्त। ६ जवरदस्त, भयकर। ७ पराक्रमी। ८ निष्पाप।

अकरण—पु० [स०] १ इन्द्रियो से रहित, परमात्मा। २ फल रहित कर्म। ३ न करने योग्य कार्य। ४ पाप।
[स० अ+कर्ण] ५ सर्प, साप। ६ वहरा व्यक्ति।
-वि० [स० अ+कर्ण] १ कर्ण रहित, विना कानो का। २ वहरा स० [अ+कारण] ३ विना कारण का। ४ असभाव्य।—**करण**-पु० ईश्वर परमात्मा।

अकरता—वि० [स० अ+कर्ता] १ कर्म न करने वाला, अकर्मण्य। २ जो कर्मो से निर्लिप्त हो। कर्म मुक्त।

करव—पु०—वृश्चिक राशि। २ मुख पर श्वेत वालो वाला अशुभ घोडा। ३ विच्छु।

अकरम—पु० [स० अ+कर्म] १ न करने योग्य कार्य, अनुचित कार्य। २ वुरा काम, पाप अधर्म। ३ अपराध, भूल। ४ वुरा आचरण या व्यवहार। ५ सन्यास। ६ काम न की दशा।
—वि० [स० अक्रम] १ वेकार, काम रहित, अकर्मण्य। २ विना क्रम का, अस्त-व्यस्त। २ निष्क्रिय, आलसी, निकम्मा ४ क्रमहीन।

अकरमक—स्त्री० [स० अकर्मक] एक प्रकार की क्रिया जिसमे कर्म की आवश्यकता नही होती।—पु० कर्म से परे तत्त्व, ईश्वर।

अकरमण्य, अकरमण्य—वि० [स० अकर्मण्य] १ निकम्मा, आलसी। २ कर्म रहित, वेकार, निठल्ला। ३ किसी कार्य के प्रति अयोग्य। ४ पापी, दुष्कर्मी। ५ अपराधी।

अकरमी—वि० [स० अ+कर्मिन्] १ वुरा काम करने वाला। २ पापी, दुष्कर्मी। ३ अपराधी। ४ सुस्त, आलसी। ५ पतित, नीच। ६ अयोग्य। ७ जो कर्म न करता हो, सन्यासी।

अकरम्म—देखो 'अकरम'।

अकराइजणो, (बो)—क्रि० ककरयुक्त ठोस जमीन पर नगे पाव अधिक चलने से पैरो के तलो मे विकार होना, तनाव होना।

अकरार—वि० कमजोर, अशक्त, निर्वल।

अकराळ—देखो 'विकराळ'।

अकरास—देखो 'उकरास'।

अकरितौ—देखो 'अकरतौ'।

अकरुण—वि० [स०] १ जिसमे करुणा न हो, दयाहीन। २ जिसमे कोमलता न हो, सख्त, ठोस। ३ निर्दयी, हृदय हीन, क्रूर। ४ करुण रस से हीन।

अकरूर, अकरूरि-देखो 'अक्रूर'।

अकराळणो (बो) अकरेळणो (बो)—देखो 'उकराळणो, (बो)।

अकळक—वि० [स० अ-कलङ्क] १ कलक रहित, निष्कलक। २ दोष रहित, निर्दोष। ३ वेदाग, स्वच्छ।
—**ता**—स्त्री० निष्कलकता। निर्दोषता। स्वच्छता।

अकळ—पु० [स० अकल] १ ईश्वर, परब्रह्म। २ शिव। ३ परब्रह्म की उपाधि विशेष।
—वि० १ जो विभक्त न हो सके, अविभाज्य, पूर्ण,। २ अपार, असीम विशाल। ३ अगम्य। ४ अगोचर। ५ निराकार, निर्गुण। ६ अखिल, सम्पूर्ण। ७ समर्थ, शक्तिशाली। जवरदस्त। ८ वीर, वहादुर। ९ व्याकुलता रहित। १० दोष रहित निर्दोष। ११ व्याकुल, आतुर। १२ अविचल। १३ पूर्ण, पूरा। १४ चतुर, निपुण। १५ भव्य। १६ चचल। १७ दृढ, अटल। १८ भयकर, भयावह। १९ निष्कलक—**गति**—स्त्री० वह अवस्था या गति जिसका ज्ञान मनुष्य न लगा सके।

अकल—स्त्री० [अ० अक्ल] १ वुद्धि, ज्ञान, समझ। २ युक्ति। ३ चतुराई।
—**दाड, दाढ**—स्त्री० वयस्क होने पर निकलने वाली दाढ विशेष।—**दार**—वि० वुद्धिमान,समझदार।—**नधान, निधान**—वि० वुद्धिमान। चतुर। पडित।—**वायरौ**—वि० मूर्ख, अज्ञानी। —**मद**—वि० वुद्धिमान, समझदार। चतुर।
—**मदी**—स्त्री० वुद्धिमानी, चतुराई—**वान, वाळौ**—वि० वुद्धिमान।

अकलकरो—पु० [स० आकर-करभ] एक प्रकार की औषधि विशेष।

अकळकुमारी—स्त्री० यौ० [स० अखण्ड-कुमारी] पृथ्वी, धरती।
—वि० अखण्ड कौमार्य व्रत धारण करने वाली।

अकलपनीक—वि० साधु की मर्यादा के विरुद्ध या विपरीत (जैन)

अकल्मस—वि० [स० अ+कल्मष] निष्पाप, निष्कलक।

अकळा—स्त्री० विजली।

अकळाणो, (वणो)—वि० घवराहट पैदा करने वाला, अकुला देने वाला। (स्त्री० अकळावणी)

अकळाणो, (बो)—क्रि० १ व्याकुल होना, आतुर होना। २ घवराना, भयभीत होना।

अकळावणौ, (बौ)–घबराहट पैदा करना, अकुला देना ।

अकलाळौ–देखो 'अकलवाळौ' ।

अकलि–देखो 'अक़ल' ।

अकळीम–पु [अ० अकलीम] १ देश, राष्ट्र, राज्य । २ बादशाहत, शासन । ३ ऊपर का सातवा लोक ।

अकलीस, अकलेस–पु० [स० अ–क्लेश] दुख का विपर्याय, सुख । —वि० क्लेश रहित, सुखी । देखो 'अखिलेस' ।

अकलेसर, अकलेसुर, अकलेस्वर–देखो 'अखिलेस' ।

अकळौ–पु० १ गर्मी, उष्णता । २ उमस, तपन ।

अकल्पत, अकल्पित–वि० [स० अकल्पित] १ जो कल्पित न हो, सच्चा, वास्तविक । २ जो कल्पना से बाहर हो या परे हो ।

अकल्पनीक–देखो 'अकलपनीक' ।

अकल्यवत–वि० बुद्धिमान ।

अकल्याण–पु० [स० अकल्याण]१ अमगल, अशुभ । २ अहित ।

अकवानन्द–पु० भीम ।

अकवीस–देखो 'इक्कीस' ।

अकस–पु० [अ०] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह । २ विरोध, वैर, शत्रुता । ३ कोप, क्रोध । ४ अमर्ष । ५ ममता, बराबरी । ६ गर्व, घमड । ७ जोश । ८ शौर्य, पराक्रम [फा०अक्स] । ९ छाया । १० प्रतिबिंब । ११ चित्र, तस्वीर । १२ प्रभाव । –[स०आकाश] १३ व्योम, आकाश ।–क्रि०वि० १ गर्व से । २ ऐंठन के साथ ।३ ईर्ष्या से, द्वेष से ।

अकसणौ, (बौ)–देखो 'अकस्सणौ' (बौ) ।

अकसमात–देखो 'अकस्मात' ।

अकसर–क्रि०वि० [अ०] प्राय , बहधा, अधिकतर ।

अकसीर–स्त्री० [अ० अक्सीर] १ रसायन, कीमिया । ३ सब रोगो को नष्ट करने वाली दवा—वि० १ अचूक, अमोघ, अव्यर्थ । २ निश्चित प्रभाववाली ।

अकसौ–देखो 'अकस' ।

अकस्मात–क्रि०वि० [स०] १ सहसा, यकायक, अनायास । २ सयोगवश ।

अकस्स–देखो 'अकस' ।

अकस्सण–वि० [अ० अकस] १ कोप करने वाला । २ ईर्ष्या करने वाला ।

अकस्सणौ, (बौ)–क्रि० १ कोप करना । २ ईर्ष्या करना । ३ जोश मे आना ।

अकह–देखो 'अकथ' ।

अकह्यौ–वि० बिना कहा हुआ, बिना आज्ञा का ।

अकापा–वि० [स अ+कम्पित] १ न कापने वाला, कपन रहित । २ जितेन्द्रिय ।

अकाम–पु० [स० अकाम] १ बुरा कार्य, दुष्कर्म । २ विघ्न । ३ नाश, सहार ।—वि० १ कामना रहित, निष्काम, इच्छा रहित । २ उदासीन । ३ अकारण, व्यर्थ । ४ देखो 'अकाज' ।

अकामी–वि० [स० अ–कामिन्] १ कामना रहित, निष्काम, निस्पृह । २ जितेन्द्रिय । ३ बेकाम, निकम्मा ।

अकाई–वि० पूर्ण, सम्पूर्ण ।

अकाज–पु० [स अ+कार्य] १ कार्य की हानि, हर्जा, नुकसान । २ अनिष्ट, अहित, अमगल । ३ विघ्न, बाधा, अडचन । ४ बुरा कार्य, कुकर्म । ५ नाश, ध्वस । ६ मृत्यु, अवसान । ७ दुख, कष्ट, पीडा । ८ अधर्म । ९ देखो 'अकाम' । –वि० १ बुरा, खराब । २ कायर, डरपोक ।–क्रि०वि०बिना मतलब से, व्यर्थ मे ।

अकाजि, अकाजी–वि० १ 'अकाज' करने वाला । २ देखो 'अकाज' ।

अकाथ–क्रि०वि० १ अकारण, वृथा । २ देखो 'अकथ' । –वि० [स० अकथ] अकथनीय ।

अकाय–वि० [स०] १ काया या देह, रहित, अदेह, निर्गुण, निराकार । २ जन्म न लेने वाला, अजन्मा । —पु० १ ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म । २ कामदेव । ३ पवन । ४ शक्ति, बल ।

अकार–पु० [स०] १ 'अ' वर्ण । २ देखो 'आकार' । —वि० [स०अ+कार=सीमा] १ मर्यादा रहित, सीमा रहित, बेहद । २ बेकार, बेकाम ।

अकारज–देखो 'अकाज' ।

अकारण, अकारणीक, अकारनीक–वि० १ बिना कारण का, हेतु रहित । २ स्वयभू । —क्रि० वि० बिना कारण के, व्यर्थ मे, बेसबबसे ।

अकारथ–वि० [स० अकार्य्यार्थ] बेकार, व्यर्थ, फिजूल ।

अकारिम–वि० [स०अ+कार्मिक] अकृत्रिम, स्वाभाविक ।

अकारी–स्त्री० कूएे पर बैलो को बारी-बारी से जोतने का निरधारित समय ।–वि० १ बुरी, खराब । २ दर्द करने वाली, दर्दनाक । ३ तेज, तीव्र ।

अकारौ–वि० (स्त्री० अकारी) १ तीव्र, तेज । २ कठोर, कडा सख्त । ३ महातेजस्वी, ओजस्वी । ४ बलवान, शक्तिशाली । ५ समर्थ, सक्षम । ६ भयकर, भीषण । ७ तीक्ष्ण, तेज ८ अत्यधिक, ज्यादा । ९ विकट, सकट पूर्ण, ।

अकारय–देखो 'अकाज' ।

अकाळ–पु० [स० अकाल] १ दुर्भिक्ष, दुष्काल । २ कुसमय, असमय । ३ अनुपयुक्त समय, अशुभ समय । ४ अनुपयुक्त अवसर । ५ घाटा, टोटा, कमी । ६ मौत, मृत्यु । ७ काल मे परे, परमात्मा । ८ अमर ।

–क्रि०वि० असामयिक, वेसमय । —कुसम, कुसुम–पु० विना मौसम या ऋतु का फूल ।—जळद–पु० असमय के बादल । —पुरस, पुरुस–पु० सिक्ख धर्म का ईश्वर । —पुसप, पुस्प= 'अकाल कुसुम' —मूरत–पु० अविनाशी पुरुष, ईश्वर ।— मौत,म्रतु,म्रित्यु–स्त्री० असामयिक निधन, अल्पायु की मृत्यु ।—वरसटो, वरसठी, व्रस्टी, व्रस्ठी —स्त्री० असमय की वर्षा ।

अकाळकी–स्त्री० विजली, विद्युत ।

अकाळणी–स्त्री० काली सर्पिणी ।

अकालि, अकाळी–पु० [सं० अकाल+ई] १ सिक्खों का एक सम्प्रदाय । २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।—वि० १ भयंकर, भीषण, कराल । २ जो श्याम वर्ण का न हो, श्वेत ।

अकाळी–वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ जो श्याम न हो ।

अकास–देखो 'आकास' ।

अकासवाणी, अकासवानी–देखो 'आकासवाणी' ।

अकासवेल, अकासवेल–देखो 'आकासवेल' ।

अकासविरत–देखो 'आकासव्रत्ति' ।

अकासि, अकासी–देखो 'आकासी' ।

अकिंचन, अकिंचनक–वि० [सं० अकिंचन] १ निर्धन, कंगाल, दीन । २ असमर्थ । ३ तुच्छ, न्यून । ४ कर्मशून्य, अपरिग्रही । ५ महत्वहीन ।

अकियारथ–देखो 'अकारथ' ।

अकिल–१ देखो 'अखिल' । २ देखो 'अकल' ।

अकिलज्योति–देखो 'अखिल ज्योति' ।

अकिलदाड, अकिलदाढ–देखो 'अकलदाढ' ।

अकीक, अकीकी–पु० [फा० अकीक] एक प्रकार का लाल पत्थर । जो गंडा-तावीज में काम आता है ।

अकीन–पु० [अ० यकीन] विश्वास, भरोसा ।

अकीनी–वि० [अ० यकीनी] १ विश्वास करने योग्य, विश्वासी । २ निश्चित ।

अकीरत, अकीरति, अकीरती–देखो 'अपकीरति' ।

अकीरतिकर अकीरतीकर–वि० [सं० अ–कीर्तिकर] अपयशकारी, बदनामी करने वाला ।

अकीरत्त–देखो 'अपकीरति' ।

अकुंठ, अकुंठत, अकुंठित–वि० [सं० अकुंठ] १ तीक्ष्ण, पैना । २ तीव्र, वेगवान । ३ खरा, उत्तम । ४ खुला हुआ । ५ स्वतन्त्र । ६ निर्दिष्ट । ७ अत्यधिक । ८ जो कुंठित न हो ।

अकुटिल–वि० [सं०] १ जो टेढा न हो, वक्र न हो । २ सीधा । ३ सरल, सहज ।

अकुपार–पु० [सं० अकूपार] १ सागर, समुद्र । २ सूर्य भानु । ३ बडा, कच्छप । ४ वह विशाल कछुआ जिसकी पीठ पर भूमि टिकी हुई है ।

अकुरूड–वि० १ अक्रूर, अकठोर । २ अक्रोधी । ३ सरलचित्त । —पु० १ नीच कुल । २ शिव का एक नाम ।

अकुळ–वि० [सं० अकुल] १ परिवार हीन । २ नीच कुल का, अकुलीन ।—पु० १ नीच कुल । २ परमात्मा, परमेश्वर ।

अकुळणी–वि० १ व्यभिचारिणी । २ नीच कुल की ।

अकुळणौ, (बौ)–देखो 'आकुळणौ, (बौ) ।

अकुळाणौ–वि० १ उत्तेजित । २ आतुर, व्यग्र । ३ भयभीत । ४ शीघ्र आवेश वाला ।

अकुळाणौ, (बौ), अकुळावणौ (बौ)–क्रि० १ व्याकुल होना, आतुर होना, व्यग्र होना । २ घबराना । ३ विह्वल होना । ४ उत्तेजित होना । ५ क्रुद्ध होना । ६ सज्ञाहीन या चेतना हीन होना । ७ ऊबना, उकताना । ८ दुःखी होना ।

अकुळी, अकुळीण, अकुळीन, अकुलीन–वि० [सं० अकुलीन] १ नीच कुल का, कुजाति । २ वर्ण संकर । ३ शूद्र । ४ कमीना, नीच, अधम ।

अकुसळ–वि० [सं अकुशल] १ अमंगलकारी, अशुभ, बुरा । २ अनाडी, अदक्ष । ३ भाग्यहीन, हतभाग्य । ४ गुणहीन । ५ अयोग्य ।

अकुसळता स्त्री०–[सं० अकुशलता] १ अमंगलता, अशुभता । २ अदक्षता, अनाडीपन । ३ अयोग्यता । ४ गुणहीनता ।

अकुसळी–वि० १ कौशलहीन । २ अप्रसन्न, नाखुश । ३ अयोग्य, गुणहीन ।

अकूणौ–वि० १ पूर्ण, पूरा । २ अधिक । ३ निपुण, दक्ष ।

अकूंत, अकूंतण–वि० अपार, अपरिमित ।

अकूठ, अकूत, अकूतण–वि० अपरिमित, अत्यधिक ।

अकूपार–देखो, 'अकुपार' ।

अकूरडी–देखो 'उकरडी' ।

अकेल, अकेलौ–देखो 'एकलौ' (स्त्री० अकेली)

अकेवडियौ, अकेवडौ अकेवळौ–देखो 'इकेवडौ' ।

अकोट–वि० [सं० अ+कोटि] १ करोड तक । २ करोड से कम । ३ विना कोट का । ४ जहां परकोटा न हो ।

अकोतर–देखो 'इकोतर' ।

अकोतरसौ–देखो 'इकोतरसौ' ।

अकोतरौ–देखो 'इकोतरौ' ।

अकोर–पु० १ भेंट उपहार । २ उत्सर्ग, बलि ।

अकोविद–वि० [सं०] १ मूर्ख, नासमझ, अज्ञानी । २ अपठित । ३ अनाडी ।

अक्क–१ देखो 'आक' । २ देखो 'अरक' ।

अक्कल–देखो 'अकल' ।

अक्कळा–स्त्री० भयंकर रूप धारण करने वाली देवी । दुर्गा, कालिका । —वि० अंगहीन, खण्डित ।

अक्खड़–वि० उद्धत, शरारती, उद्दंड। २ बात-बात पर अकड़ने वाला। ३ झगडालू। ४ असभ्य, बदतमीज। ५ निर्भय, निडर। ६ स्पष्ट वक्ता, खरा। ७ मस्त, मौजी। ८ पका-, हुआ।

अक्खणौ (बौ)– देखो 'आखणौ' (बौ)

अक्खत–देखो 'अक्षत'।

अक्खर–देखो 'अक्षर'।

अक्खरावळी—देखो 'अक्षरावळी'।

अक्खरू–देखो 'अक्षर'।

अक्खाया–पु० १ अनाज के कण। २ तीर्थंकर (जैन)

अक्खेवड–देखो 'अक्षयवट'।

अक्यारथ, अक्यारथौ–देखो 'अकारथ'।

अक्रम–देखो 'अकरम'।

अक्र–स्त्री० १ नृत्य की एक पद मुद्रा। २ नृत्य का एक भाव।

अक्रत–पु० [स० अ+कृत्य] पाप, अपराध, कुकृत्य, दुष्कर्म। अकर्म। —वि० [स० अ+कृत] १ विना किया हुआ। २ बिगडा हुआ। २ स्वयभू।

अक्रतघण–वि० [स० अकृतघ्न] कृतज्ञ।

अक्रति–स्त्री० [स० अ+कृति] बुरी करनी, अकार्य, कुकृत्य।

अक्रतिम, अक्रत्रिम–वि० [स० अकृत्रिम] १ जो बनावटी न हो, प्राकृतिक। २ स्वाभाविक। ३ वास्तविक।

अक्रम—पु० १ समय वेला। २ क्रम का अभाव।–वि० १ क्रम हीन बिना क्रम का। २देखो 'अकरम'।

अक्रमण्य—देखो 'अकरमण्य'।

अक्रमावालू त–वि० पाप नष्ट करने वाला। (ईश्वर)

अक्रम्म–१ देखो 'अकरम'। २ देखो 'अक्रम'।

अक्रात–पु० आक्रमण, हमला।–वि० अपराजित।

अक्रित–देखो 'अक्रत'।

अक्रिति, अक्रिती–देखो 'अक्रति'।

अक्रित्रिम–देखो 'अक्रत्रिम'।

अक्रिय–वि० निरूप निराकार।–पु० परमात्मा। ईश्वर।

अक्रीत–वि० [स०] १ जो खरीदा हुआ न हो। २ देखो 'अकीरति'

अक्रूर, अक्रूरियौ, अक्रूरौ–पु० एक यादव जो कृष्ण के चाचा थे। —वि० क्रूर न हो, दयालु, सहृदय।

अक्रोध–पु० क्रोध का अभाव।

अक्रोधा–वि० [स०] क्रोध रहित, शान्त।

अक्ष–पु० [स०] १ चौसर का खेल। २ चौसर का पासा। ३ चक्र। ४ धुरी। ५ पृथ्वी की धुरी। ६ पृथ्वी की अक्षाश रेखा ७ गाडी। ८ रुद्राक्ष। ९ तराजू की डाडी। १० सोलह माशे का एक तोला, कर्ष। ११ एक पैमाना। १२ कानून। १३ मुकद्दमा। १४ आख, नेत्र। १५ ज्ञान। १६ ज्ञानेंद्रिय। १७ आत्मा। १८ प्रतिबिंब, छाया। १९ तस्वीर। २० गरुड। २१ तूंतिया। २२ सुहागा। २३ बेहडा। २४ सर्प। २५ अक्षयकुमार।
—क–पु० बेहडा।—**कुमार**–पु० रावण का एक पुत्र।
—**माळा**–स्त्री० रुद्राक्ष की माला।

अक्षत–वि० [स०] १ बिना टूटा हुआ, अखडित। २ जिसकी क्षति न हो। २ समूचा। ३ जो विभाजित न हो, अविभाजित।—पु० १ शिव। २ चावल। ३ अनाज, अन्न। ४ यव, जौ। ५ कल्याण, मगल। ६ हिंजडा नपुंसक।
—**जोनि, योनि**–स्त्री० वह युवती या स्त्री, जिसका पुरुष से समागम न हुआ हो।

अक्षम–वि० [स०] १ क्षमता रहित, असमर्थ। २ अशक्त, कमजोर। ३ विवश, लाचार। ४ अधीर, आतुर। ५ क्षमा रहित, असहिष्णु। ६ ईर्ष्यालु।—**ता**–स्त्री० असामर्थ्य, असमर्थता। अशक्तता, कमजोरी। विवशता, लाचारी। अधीरता,। असहिष्णुता। ईर्ष्या।

अक्षय–वि० [स०] १ अनश्वर, अविनाशी। २ सदा बना रहने वाला, स्थाई। ३ जिसकी क्षति न हो। ४ जो कभी समाप्त न हो। ५ अमर।—पु० परमात्मा, ईश्वर।
—**अमावस**–स्त्री० वैशाख की अमावस्या।—**कुमार**–पु० रावण के एक पुत्र का नाम।—**त्रितिया, तीज**–स्त्री० वैशाख शुक्ला तृतीया।—**धाम**–पु० मोक्ष, वैकुण्ठ।—**नम, नमी, नवमी**–स्त्री० श्राद्धपक्ष की नवमी तिथि। कार्तिक शुक्ला नवमी तिथि।—**पाद**–पु० गौतम ऋषि।—**वड, वट**–पु० प्रयाग (गया) में स्थित वट वृक्ष जो अक्षय माना गया है।

अक्षर–पु० [स०] १ अक्षर, वर्ण, हर्फ। २ ध्वनि सकेत, स्वर। ३ शब्द। ४ आकाशादि तत्त्व। ५ परमानन्द, मोक्ष। ६ शिव। ७ विष्णु। ८ ब्रह्म। ९ आत्मा। १० आकाश। ११ खड्ग। १२ जल। १३ तपस्या। १४ सत्य। १५ इद्रा सन। १६ प्रारब्ध, भाग्य।—क्रि०वि० १ प्राय अक्सर। २ अचानक, सहसा।–वि० १ अविनाशी, अनश्वर, अक्षय। २ अपरिवर्तनशील, स्थिर। ३ नित्य। ४ अच्युत। ५ सत्य। निर्विकार।
—**अवली**–स्त्री० अक्षरो की पंक्ति, अक्षर समूह।
—**कळा**–स्त्री० ६४ कलाओ मे से एक।—**गणित**–स्त्री० बीजगणित।—**च, चण, चु**—पु०–लेखक। प्रतिलिपि कार। लिपिक।—**च्युतक**–पु० किसी अक्षर के जोड देने से किसी शब्द का भिन्न अर्थ करना। एक खेल विशेष।
—**भवन**–पु० भाल, ललाट। भाग्य।
—**मुस्टिका कथन**–पु० चौसठ कलाओ मे से एक। अगुलियो के सकेत द्वारा बोलना।

अक्षरस्रुत—पु० श्रुतज्ञान के चौदह भेदों मे से प्रथम। (जैन)

अक्षास—पु० [सं० अक्षांश] १ भूमध्य रेखा से उत्तर-दक्षिण का अन्तर। २ किसी मानचित्र में उत्तर से दक्षिण की ओर खिंची हुई रेखा या उस रेखा का अंश। ३ भूमंडल पर पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली कल्पित रेखा।

अक्षि—स्त्री० [सं०] १ आंख, नेत्र। २ दो की संख्या।

अक्षिर—देखो 'अक्षर'।

अक्षी—देखो 'अक्षि'।

अक्षीण—वि० [सं०] १ क्षीण का विपर्याय, मोटा ताजा, पुष्ट। २ सबल। ३ सक्षम। ४ अविनाशी, अनश्वर। —**महाणसी, महाणसी, माणसी**—स्त्री० अन्नपूर्णा शक्ति, दान के लिये खाद्यान्न अक्षय रहने की सिद्धि।

अक्षुण—वि० [सं० अक्षुण्ण] १ कभी न खुटने वाला, कभी समाप्त न होने वाला। २ अनन्त, असीम। ३ अखण्डित, अभग्न। ४ समस्त, समूचा। ५ अपराजित। ६ अनाड़ी, अकुशल। ७ असाधारण, विशिष्ट। ८ सदैव व निरन्तर रहने वाला।

अक्षोभ—पु० [सं०] १ दुख, शोक या कष्ट के अभाव की अवस्था। २ शान्ति। ३ स्थिरता, दृढ़ता। ४ धीरता। ५ लोभ रहित अवस्था। —वि० १ स्थिर। २ धीर, गंभीर शान्त।

अक्षौहिणी—स्त्री० [सं०] १ पूरी चतुरंगिनी सेना। २ सेना का एक परिमाण या संख्या जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े २१८७० रथ व २१८७० हाथी होते थे।

अखग—पु० १ वेदांग पशु। २ देखो 'अखड'।

अखड—वि० [सं०] १ जो खण्डित न हो, अभग्न। २ कभी न टूटने वाला, अटूट। ३ जो निरन्तर हो, अविच्छिन्न, अबाध। ४ अविभक्त। ५ सम्पूर्ण, समूचा। ६ अजर, अमर, अनश्वर। —पु० १ ईश्वर, परमात्मा। —स्त्री० २ गिरिजा, पार्वती। —**कुमारी**—स्त्री० गिरिजा, पार्वती, कुमारी कन्या।

अखडत—देखो 'अखडित'।

अखडन—वि० [सं० अखण्डन] १ जिसका खण्डन न हो, अखण्डित। २ पूर्ण, पूरा। ३ स्वीकृत, मंजूर। —पु० १ जहां खण्डन का अभाव हो। २ परमात्मा, ईश्वर। ३ काल, समय।

अखंडळ, अखउळीस—देखो 'आखडळ'।

अखडित—वि० [सं०] १ जो खण्डित न हो, अभग्न। २ पूरा, समूचा। ३ जो निरन्तर हो, जिसका क्रम न टूटता हो, अटूट, निर्बाध। ४ विभाग रहित, अविच्छिन्न।

अखडियाळि—स्त्री० अक्षतयोनि स्त्री, कौमारिका।

अखडी, अखडो—देखो 'अखट'।

अखड—पु० बाग, बगीचा।

अखगरियो—पु० [फा० अखगरिया] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

अखड—स्त्री० बिना जोती हुई भूमि, परती। —पु० १ एक अशुभ घोड़ा जो ठोकर खाकर चलता है। २ देखो 'अक्खड़'।

अखडणो (बो)—देखो 'अकडणो (बो)'।

अखडभूत—पु० घोड़ों का एक रोग।

अखडैत, अखडैत—वि० १ अकड़ने वाला। २ अड़ियल, झगड़ालू। ३ बलवान, शक्तिशाली। ४ योद्धा, वीर। —पु० पहलवान मल्ल।

अखज, अखज्ज—वि० [सं० अखाद्य] जो खाने योग्य न हो, अखाद्य, कुपथ्य।

अखट—पु० अकड़ता हुआ चलने वाला घोड़ा (शा. हो.)

अखडी—पु० अक्षर।

अखण—पु० मुख, मुंह।

अखणी—स्त्री० १ मांस का शोरवा। २ यक्षिणी। ३ जिह्वा, जीभ। ४ कहती, कथनी।

अखणो, (बो)—देखो 'आखणो' (बो)।

अखणियो—वि० कहने वाला।

अखत—वि० १ अटल, स्थिर, निश्चल। २ देखो 'अक्षत'।

अखतपीळा—देखो 'पीळाआखा'

अखतियार, अखत्यार, अख्तियार—देखो 'इखत्यार'।

अखत्यारपण, (पणो)—पु० १ स्वत्वाधिकार की भावना। २ अधिकार की भावना।

अखत्र—वि० १ भयंकर, भयावह। २ अगणित, अपार। ३ देखो 'अक्षत्र'।

अखन—देखो 'अखड'।

अखनकंवारी—देखो 'अकनकुंवारी'। (स्त्री०अखन कवारी,कुमारी)।

अखनी—पु० [फा० यख्नी] १ पका हुआ मांस या मांस का शोरवा। २ संचित अन्न या धन राशि।

अखबार—पु० [अ०] दैनिक समाचारपत्र, सामायिक समाचारपत्र। —**नवीस**—पु० पत्रकार।

अखम—वि० १ दृष्टिहीन, अंधा। २ देखो 'अक्षम'।

अखमता—देखो 'अक्षमता'।

अखमाळा—स्त्री० १ वशिष्ठ की पत्नी अरुंधती। २ देखो 'अक्षमाळा'।

अखय—देखो 'अक्षय'।

अखयकुमार—देखो 'अक्षयकुमार'।

अखयकुमारी—देखो 'अकन कवारी'।

अखयवड़ (वड, वट)—देखो 'अक्षयवट'।

अखया—स्त्री० [सं० अक्षया] १ देवी, दुर्गा, महामाया। २ देखो 'अक्षय'।

अखर—देखो 'अक्षर'।

अखरणो, (बो)—क्रि० १ बुरा महसूस होना, खलना। २ खटकना। चुभना। ३ कष्ट प्रद लगना। ४ पसद न आना।

अखरब—वि० अत्यधिक, अपार।

अखरावळि, (वळी)—देखो 'अक्षरावळि'।

अखरे, अखरै—वि० [स० अक्षर] १ अपरिवर्तनीय, निश्चित। २ दृढ पक्का। ३ अविनाशी। ४ अको की बजाय अक्षरो मे लिखित।

अखरोट—पु० [स० अक्षोट] १ एक प्रकार का सूखा मेवा। २ इस मेवे का वृक्ष। ३ जायफल। ४ जायफल का वृक्ष। ५ वयण सगाई का एक भेद।

अखरौ—वि० १ जो खरा न हो, खोटा। २ झूठा। ३ कृत्रिम।

अखल—वि० [स० अ+खल] १ जो दुष्ट या खल न हो। २ देखो 'अखिल'।

अखलीस, अखलेस, अखलेसवर, अखलेसुर, अखलेस्वर—देखो 'अखिलेस'।

अखव—देखो 'अखिल'।

अखसत्र—देखो 'अक्षत'।

अखा—देखो 'अक्षत'।

अखाड—१ देखो 'अखाडौ' २ देखो 'आसाढ'।

अखाडमल, (मल्ल), अखाडसिद्ध, अखाडसिध (ध्ध)—पु० १पहलवान मल्ल। २ योद्धा, वीर। ३ वलवान, शक्तिशाली व्यक्ति ४ महापुरुप, महात्मा।

अखाडामड—पु० योद्धा, वीर।

अखाड़ौ—पु० [स अक्षवाट] १ कुश्ती या मल्ल-युद्ध करने का स्थान, व्यायामशाला। २ साधु-मडली। ३ साधु-सम्प्रदाय का मठ। ४ गाने वजाने या तमाशा दिखाने वालो की जमात। ५ दल-समूह। ६ सभा, दरवार। ७ रग भूमि, नाट्यशाला। ८ अड्डा। ९ युद्धस्थल। १० युद्ध। ११ चमत्कारपूर्ण कार्य। १२ दगल।

अखाडियौ—वि० 'अखाडे' मे खेलने वाला, दगली।

अखाज, अखाध—देखो 'अखज'।

अखाड (ढ़) देखो 'आसाढ'।

अखाडउ—देखो 'अखाडौ'।

अखि—१ देखो 'अक्षि'। २ देखो 'अक्षय'। ३ देखो 'अखिल'।

अखिआत, अखिआति—देखो 'अखियात'।

अखित—देखो 'अक्षत'।

अखियात—स्त्री [स० अख्याति] १ कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि। २ अद्भुत या आश्चर्यजनक वात। ३ अपकीर्ति, वदनामी। ४ स्मरणीय वात या कार्य।—वि० १ प्रसिद्ध, मशहूर। २ अद्भुत, अनोखा। ३ चिरस्थायी अविनाशी। ४ देखो 'अख्याति'।

अखिर—१ देखो 'आखिर'। २ देखो 'अक्षर'।

अखिल, अखिलि—वि० [स०] १ पूर्ण, सम्पूर्ण। २ अखण्ड।

अखिलज्योति—पु० परब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर।

अखिलेसर, अखिलेस्वर—पु० [स० अखिलेश, अखिलेश्वर] १ ईश्वर, परमात्मा। २ परब्रह्म ३ श्रीकृष्ण। ४ श्रीरामचद्र।

अखी—वि० विख्यात, प्रसिद्ध।—स्त्री० १ विजय, जीत। २ देखो 'अक्षि'। ३ देखो 'अक्षय'।

अखीअमावस—देखो 'अक्षयअमावस'।

अखीवड—देखो 'अक्षयवट'।

अखीण—देखो 'अक्षीण'।

अखीर—देखो 'आखिर'।

अखूतौ—वि० (स्त्री० अखूती) १ उतावला। २ आतुर।—पु० योद्धा।

अखूनी—स्त्री० १ यवनो की एक जाति। २ इस जाति का व्यक्ति, मुसलमान।

अखूट, अखूठ—वि० [स० अ+क्षुत] (स्त्री० अखूटी) १ कभी न खुटने वाला, अक्षुण्ण। २ अत्यधिक, अपार। ३ अखण्डित, अभग्न। ४ समस्त, समूचा। ५ निरन्तर, अटूट।

अखेग, अखेगौ—देखो 'अखग'।

अखे—देखो 'अक्षय'।

अखेद—पु० [स० अखेद] प्रसन्नता, शाति। शोक या खेद का अभाव।

अखेनम—देखो 'अक्षयनम'।

अखेपाद—देखो 'अक्षयपाद'।

अखेवड, अखेयवड, अखेयवट, (वड)—देखो 'अक्षयवड'।

अखेट—देखो 'आखेट'।

अखेटक—देखो 'आखेटक'।

अखेल—वि० १ न खेलने वाला ईश्वर। २ देखो 'अखिल'।

अखेली, अखेलौ—वि० [स० अ+कल्प] १ रुग्णावस्था से वेचैन व्याकुल। २ जो खेलता न हो। ३ विचित्र अद्भुत। ४ जो खेला न जा सके।

अखेस—वि० [स० अ+क्षम] १ युद्ध से निर्लिप्त। [स० अ+शेष] २ शाश्वत, नित्य। ३ परब्रह्म, ईश्वर।

अखेह, अखेहय—वि० १ जिस पर रज न हो, निर्मल, साफ। २ देखो 'अक्षय'।

अखैग, अखैगौ—देखो 'अखग'।

अखै—१ देखो 'अक्षय'। २ देखो 'अक्ष'।

अखैकुमार—देखो 'अक्षयकुमार'।

अखैपाद—देखो 'अक्षयपाद'।

अखैवड़, अखैवड, अखैवट—देखो 'अक्षयवट'।

अखैमाळ—देखो 'अक्षमाळा'।

अखोड, अखोड—१ देखो 'अखरोट'। २ देखो 'अखोट'।

अखोण, अखोणी, अखोहरिण, अखोहणी, अखोहिण, अखोहिरिण, अखोहीणी—देखो 'अक्षौहिणी'।

अखौ—१ देखो 'आखौ' (स्त्री० अखी)। २ देखो 'अक्षयकुमार'।

अखोड—वि० [स०अ+ग खोड] १ सज्जन, साधु, भद्र। २ निर्दोष निष्कलक। ३ सुन्दर। ४ अवगुण रहित। ५ देखो 'अखरोट'।

अखौण, अखौणी, अखौहण, अखौहरिण, अखौहिण, अखौहिरिण, अखौहिणी, अखौहीरिण, अखौहीणी—देखो 'अक्षौहिणी'।

अख्खणौ, (बौ)—देखो 'आखणौ' (बौ)।

अख्खर—देखो 'अक्षर'।

अख्तावर, अख्त्तावर—पु० [फा० आख्त] वह घोडा जिसके जन्म से ही अण्डकोश की कौडी न हो। बधिया घोडा।

अख्यर—देखो 'अक्षर'।

अख्यात—वि० [स० अख्याति] १ जो प्रसिद्ध या मशहूर न हो। २ अविदित, अनजाना। ३ बदनाम, निंद्य ४ देखो 'अखियात'।

अख्याति, अख्याती—स्त्री० [स० अख्याति] १ अपकीर्ति, बदनामी, निंदा। २ अप्रसिद्धि। ३ देखो 'अखियात'।

अख्यारत—देखो 'अख्यारथ'।

अगज, अगजण, अगजणौ—वि० [स० अगजन] १ जिसके पास कोई पहुच न सके, अगम्य। २ जिसे कोई जीत न सके, अजेय। ३ वीर योद्धा। —पु० १ काम देव। २ देखो 'अगजो'।

अगजणौ, (बौ)—क्रि० स० [स० अगञ्जनम्] विजय करना, जीतना।

अगजो—पु० [स० अगञ्जन] १ गढ। २ देखो 'अगज'। —गज, गजणौ—वि० अजेय को जीतने वाला, अप्रतिहत।

अगजो—देखो 'अगज'।

अगभ—वि० [स० अ+गर्भ]जो गर्भाशय वास न करे, अयनारी। —पु० १ ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ महेश, शिव।

अग—वि० [स०] १ चलने मे असमर्थ। २ जिसके पास कोई पहुच न सके। अगम्य। ३ स्थावर। ४ वक्रगति। —पु० [स० अग] १ पहाड। २ पेड, वृक्ष। ३ घडा, घट। ४ सूर्य, रवि। ५ सर्प, साप। ६ सात की सख्या। ७ देखो अघ। ८ देखो 'अग्य'। ९ देखो 'अग्र'। १० देखो 'अग्नि'। ११ यश कीर्ति। १२ मर्यादा, सीमा। —ज—वि० पहाड मे उत्पन्न। पहाडो मे रहने वाला। वृक्ष पर रहने वाला। —पु० सिंह। हाथी। पक्षी। शिलाजीत। —जा—स्त्री० पार्वती। —नग— 'अग्नि-नग'। —जीत—वि० जो जीता न जा सके, अजेय। विजय मे अग्रणी। देखो 'अघजीत'—भू='अग्निभू'। —हर='अघहर'। —हरणी='अघहरणी'।

अगइ—देखो 'अगाडी'।

अगउवौ—देखो 'अगुवौ'।

अगड़—वि० [स० अघटनम्] १ अघटित। २ अगम्य। ३ भयकर। ४ आगे रहने वाला, अग्रणी।—पु० १ दर्प, ऐठ। —क्रि०वि०—१ अगाडी, आगे। २ देखो 'अगड'।—बगड—वि० व्यर्थ, निरर्थक। असम्बद्ध, क्रमहीन। —पु० व्यर्थ प्रलाप।

अगड, अगड्ड, अगड़्ढ—पु० [देश] १ रोक, आड, ओट। २ बाध, बध, अवरोध। ३ प्रतिबध, रुकावट, मनाही। ४ व्यवधान, बाधा। ५ मर्यादा, सीमा। ६ दो हाथियो के बीच की दीवार। ७ हाथी का बधस्थल। ८ हाथियो का अखाडा। ९ देखो 'अकड'।—झाट—वि० भयकर, डरावना। कुरूप।

अगढाळ, अगढाळियौ—पु० १ मकान के अग्र भाग पर बना ढलुवा छप्पर। २ ढलुवा छप्पर वाला भाग।

अगणत—देखो 'अगणित'।

अगण—पु० [स०] १ काव्य रचना मे अशुभ माने जाने वाले गण। २ देखो 'अग्नि'। ३ देखो 'अग्र'। ४ देखो 'अगण्य'।

अगणत, अगणित—वि० [स० अगणित] १ जिसकी गणना न की जा सके। २ असख्य, अपार।

अगणी—देखो 'अगनी'।

अगणौ—वि० [स० अग्र+रा णौ] पूर्व का, पहले का, प्राचीन, अगला।

अगण्य—वि० १ जिसकी गणना न हो। २ देखो 'अगण'।

अगत, अगति, अगती—स्त्री० [स० अगति] १ दुर्गति, दुर्दशा। २ प्रेत योनि। ३ नरक वास। ४ दाहादि क्रिया। ५ जीव की अधोगति मे होने की अवस्था। ६ जडता, स्थिरता। —वि० १ जिसमे गति न हो, गतिहीन। २ उपाय रहित। ३ मोक्ष से वचित। ४ प्रेत योनि प्राप्त। ५ बुरी गति का। ६ स्थिर। ७ दीर्घ सूत्री, आलसी।

अगतियार—देखो 'इखत्यार'।

अगतियौ, अगतीयौ—वि० [स० अगति+रा यौ] १ जिसकी गति या मोक्ष न हुआ हो, मोक्ष से वचित। २ प्रेत योनि मे गया हुआ।

अगतौ—पु० [देश] १ अहिंसा या देव पूजा की दृष्टि से किया जाने वाला कार्यावकाश। २ मजदूरो का अवकाश दिवस।

अगत्य, अगत्यि, अगथ, अगथि, अगथी, अगथ्य, अगथ्यौ, अगथ्थी— देखो 'अगस्त'।

अगद—पु० [स०]। १ स्वास्थ्य २ विष नाश करने का विज्ञान। ३ वैद्य। ४ दवा, औषधि। —वि० १ स्वस्थ, निरोग। २ न बोलने वाला, मौनी।—राज—पु० अमृत, सुधा।

अगन–स्त्री० १ दक्षिण-पूर्व के मध्य की दिशा, आग्नेय। २ इस दिशा का दिक्‌पाल। ३ देखो 'अगनी'।–**कण**='अगनी-कण'। –**कीट** = 'अगनीकीट'। –**कुंड** = 'अगनीकुंड'। –**कुळ**='अगनीकुल'। –**कूंण, कोण**='अगनीकोण'।

अगनग–पु० [सं० अग्नि–नग] ज्वाला मुखी पर्वत।

अगनियौ–पु० १ एक कांटेदार वृक्ष विशेष। २ एक रोग विशेष। ३ देखो 'आगियौ'।

अगनि, अगनी–वि० १ काला, श्याम। २ रक्त मिश्रित रंग का –स्त्री० [सं० अग्नि] १ आग, अग्नि। २ गार्हपत्य, आह्वनीय तथा दाक्षिण तीन प्रकार की हवन की अग्नि। ३ उदरस्थ पाचन शक्ति, जठराग्नि, वैश्वानर। ४ पंच तत्वों में से एक, तेज, प्रकाश। ५ गरमी, उष्णता। ६ पित्तनामक दोष। ७ अग्नि-देव। ८ माया। ९ सोना, स्वर्ण। १० चित्रक, चीता। ११ भिलावा। १२ नीबू। १३ घोड़े के मध्ये की भौंरी। १४ तीन की सख्या। १५ 'र' का प्रतीक। १६ अग्निकोण का देवता।

–**अगार, आगार**–पु० अग्निदेव का मन्दिर, आग का घर। –**अस्त्र** पु० एक प्राचीनकालीन अस्त्र जिसे मंत्र से चलाने पर आग की वर्षा होती थी। तोप। बन्दूक। –**आधान**–पु० अग्नि की विधिवत स्थापना। अग्निहोत्र। –**उत्पात**–पु० अग्नि का कोई अशुभ संकेत। अग्नि का उपद्रव। उल्कापात।–**कंवर, कवार, कुंमर, कुमार, कुंवर, कुंवार, कुमार**–पु० स्वामिकार्त्तिकेय, षडानन। एक रसौषधि। –**कण**–पु० अंगारा, शोला, चिनगारी। –**करम**–पु० आग का पूजन। अग्निहोत्र, हवन। शवदाह। –**काठ, कास्ठ**–पु० अगर का वृक्ष व लकड़ी। –**किरिया, क्रिया**–स्त्री० दाह सस्कार, अत्येष्टि क्रिया। –**कीट**–पु० आग में निवास करने वाला समदर नामक कीड़ा। –**कुंड**–पु० आग जलाने का कुण्ड। यज्ञ कुण्ड। गर्म जल का सोता। एक तीर्थ का नाम।–**कुळ**–पु० एक क्षत्रिय वंश।–**कूंण, कोण**–पु० दक्षिण-पूर्व का कोण, आग्नेय दिशा।–**केत, केतु**–पु०–शिव का एक नामान्तर। धूम, धूंआ।–**क्रिया**–स्त्री० दाहसस्कार। –**क्रीडा**–स्त्री० आतिशबाजी। प्रकाश, दीपमालिका, रोशनी।–**गरव, गरभ**–वि० जिसके भीतर आग हो।–पु० शमीवृक्ष। पृथ्वी, धरती। सूर्यकांत मणि। –**जतर, जंत्र**,–पु० बंदूक, तोपादि अस्त्र। –**ज, जात**–वि० आग से उत्पन्न।–पु० सोना, स्वर्ण। विष्णु। षडानन।–**जीभ** –स्त्री० आग की लपट या लौ। अग्नि की सात जिह्वा– कराली, धूमिनी, श्वेता, लोहिता, नील लोहिता, सुवर्णा और पद्मरागा। –**जुग, जुग**–पु० ज्योतिष के पांच-पांच वर्ष के १२ युगों में से एक।

–**ज्वाळ, झाळ**–स्त्री० १ आग की लपट ज्वाला। कलिहारी नामक पौधा, धव वृक्ष।–**दाग, दाह** –पु० अग्नि सस्कार। दग्ध करने की क्रिया –**दीपक, दीपण**–पु० पाचन शक्ति बढाने वाली औषधि। –**देवा**–स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र। –**नग**–पु० ज्वालामुखी पहाड़।–**पत्थर**–पु० चकमक का पत्थर।–**परीक्षा**–स्त्री०, अग्नि-स्नान। सोना, चांदी आदि को तपाने की क्रिया। –**पुराण**–पु० अठारह पुराणों में से एक। –**प्रतिस्ठा, प्रतीस्ठा**–स्त्री० विवाहादि मांगलिक कार्यों पर अग्नि की विधिवत् स्थापना। –**प्रवेस, प्रवेसण**–पु० सती होने की क्रिया। –**बाण**–पु० वह तीर जो अग्नि की वर्षा करे। तोप। बंदूक। –**बाय, बाव, वायु**–स्त्री० चौपायों, विशेषकर घोड़ों का एक वात रोग। –**वाहु**–पु० धुंआ, धूम्र। –**बीज**–पु० सोना, स्वर्ण।'र' वर्ण। -**बोट**–पु० भाप से चलने वाली नाव, छोटा स्टीमर। –**भ, भु, भू**–पु० कृत्तिका नक्षत्र। सोना, स्वर्ण। जल, स्वामिकार्त्तिकेय का एक नामान्तर।–**मथ**–पु० यज्ञ के लिए आग निकालने का अरणी नामक वृक्ष। –**मण, मणि, मणी, मिण, मिणि, मिणी** –स्त्री० सूर्यकान्त मणि। आतशी, शीशा, आरसी। –**माद** -पु० मदाग्निरोग–**मुख**-पु० देवता। ब्राह्मण। प्रेत। खटमल। –**रोहणी, रोहिणी**–स्त्री० कांख का एक फोड़ा जिससे तीव्र जलन होती है। –**वंस**–पु० अग्निकुल। –**वाह**–पु० धूम्र, धुंआ। –**वीरज**–पु० सोना, स्वर्ण। –वि० शक्तिशाली। –**ससकार, सस्कार**–पु० दाह सस्कार, अत्येष्टि सस्कार। शव दाह। –**सखा–सहाय**– पु० पवन, हवा। वीर अर्जुन। जंगली कबूतर। धुंआ, धूम्र। –**साक्षी, साख**–स्त्री० अग्नि (यज्ञ की) की साक्ष्य में किया जाने वाला शुभाशुभ कार्य। –**साळ, साळा**–स्त्री० वह स्थान जहां पवित्र अग्नि रखी जाय। हवनस्थल। –**सिखा**–स्त्री० आग की लपट, लौ, ज्वाला। –**सुद्धि, सुधी**–स्त्री० अग्नि स्पर्श से शुद्धिकरण। अग्नि-स्नान।–**होतर, होत्र**–पु० नियमपूर्वक किया जाने वाला वैदिक कर्म। यज्ञ। –**होतरी, होत्री** –वि० अग्निहोत्र या यज्ञ करने वाला। –पु० ब्राह्मणों का एक वंश।

अगनीव्रत–पु० [सं० अग्निव्रत] वेद की एक ऋचा का नाम।

अगनीव्रति–स्त्री० जैनों के ८८ ग्रहों में से ७९ वां ग्रह।

अगन्न–देखो 'अगनी'।

अगन्या–देखो 'अगिना'।

अगम–वि० [सं] १ जो चलने में असमर्थ हो। २ जिसके पास कोई जा न सके। ३ पहले का। ४ दूरदर्शी। [सं० अगम्य] ५ जहां कोई पहुंच न सके, पहुंच से परे।

दुर्गम। ६ दुर्बोध, बुद्धि से परे। ७ न जानने योग्य। ८ कठिन। ९ विकट। १० दुर्लभ्य। ११ अप्राप्य। १२ विकट। १३ बहुत गहरा, अथाह। १४ अत्यधिक, अपार।—पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ पर्वत, पहाड़। ३ वृक्ष, पेड़। ४ मार्ग, रास्ता। ५ भविष्यतकाल। ६ दूरदर्शिता। ७ सर्प।—गम-पु० भीम।—द्रस्टी, बुद्धि, बुद्धी बुधी-वि० दूरदर्शी। भविष्यद्दृष्टा। —भाखी-वि० भविष्य वक्ता।

अगमागम-वि० [स०] १ अथाह, अपार। २ अगम्य। -पु० भीम।

अगमू, अगम्न, अगम्य-देखो 'अगम'।

अगम्या-स्त्री० सभोग या मैथुन के लिए अयोग्य या निषिद्ध स्त्री।

अगर-पु० [स० अगरु] १ एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगधित होती है। २ एक औषधि। ३ चंदन। ४ वेनिरा मारवाड़ का एक भेद। ५ एक छद विशेष। —अव्य० [फा] १ यदि। जो, मगर। २ देखो 'अग्र'। —चे-अव्य० यद्यपि। —दान-पु० सुगधित अगर रखने का स्थान। —बती, वत्ती, वती वत्ती-देखो 'अगरवत्ती'।

अगरगणी, (गामी)-वि० [स० अग्रगण्य] १ प्रधान मुखिया। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ अगुआ।

अगरणी-देखो 'आगरणी'।

अगरचै-मगरचै-क्रि० वि० आगे पीछे, यथा विधि।

अगरव अगरभ-वि० [स० अ—गर्भ] १ जिसने गर्भाशय मे वास न किया हो, अवतारी। [स० अ-गर्व] २ गर्व रहित। —पु० ब्रह्म, ईश्वर। स्वयभू।

अगरवत्ती-स्त्री० अगर आदि मे बनी सुगधित वर्तिका।

अगरवाळ-पु० एक वैश्य-जाति। इस जाति का व्यक्ति।

अगराजणौ, (बौ)-देखो 'अग्राजणी, (बौ)।

अगरासण-देखो 'अग्रासण'।

अगरेजी-पु० एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

अगरेळ-पु० [स० अगरु] ऊद। अगर।

अगळ-स्त्री०[स० अर्गला] १ अर्गला। २ पार्श्व।—ज-वि० मूर्ख। —बध-पु० एक प्रकार का आभूषण।—बगळ-क्रि० वि० इधर -उधर, आस-पास, पार्श्व मे।

अगळ-डगळ-पु० अटसट अनर्गल प्रलाप।

अगळू णो, अगळूणी-वि०[स० अग्र+रा लूणी](स्त्री० अगळू णी अगळूणी)। १ पूर्व का, पहले का। २ प्राचीन, पुराना।

अगळो-देखो 'अगलो' (स्त्री० अगली)।

अगवाण-वि० [स० अग्र+रा वाण] १ अगुवा, आगे वाला। २ प्रधान, नेता, प्रमुख। ३ अगवानी करने वाला।

अगवाणी, अगवाई-स्त्री० [स० अग्र+रा वाणी] १ स्वागत, अगवाणी। २ नेतागिरी, नेतृत्व। —क्रि० अगुवा, अग्रणी नेता।

अगवाडौ, अगवार, अगवारौ-पु० [स० अग्र-पाटक] घर के आगे का भाग। पिछवाडा, पृष्ठ भाग।

अगवारे, अगवारै-क्रि० वि० आगे, अगाडी, सामने, सम्मुख।

अगस, अगसत, अगसत्त, अगसथ, अगसथ्य, अगस्त, अगस्ति, अगस्तिय, अगस्त्यौ, अगस्य, अगस्थियौ-पु० [स अगस्ति, अगस्त्य) १ एक पौराणिक ऋषि, कुम्भज। २ एक तारा। ३ एक पेड विशेष।

अगहट, अगहटौ-देखो 'आगाहट'।

अगहण, अगहन-पु० [स० अग्रहायन] मार्ग-शीर्ष मास।

अगहर-वि० १ प्रथम, पहला। २ देखो 'अघहर'।

अगाणी-पु० [देश] रहट के किनारे पर रखी जाने वाली शिला या बड़ा पत्थर।

अगाळी-स्त्री० [देश] लीपने (लेपन करने) की क्रिया।

अगा- देखो 'आगे'।

अगाउ, अगाऊ-देखो 'आगाऊ'।

अगाडी क्रि० वि० [स० अग्र, प्रा० अग्ग+रा डी] १ आगे। २ सामने, सम्मुख। ३ भविष्य मे। ४ पूर्व, पहले। ५ पास नजदीक। -पु० १ घोड़े के अगले पैर का बंधन। २ आगे का भाग। ३ सेना का प्रथम आक्रमण। —पिछाडी, पीछाडी- क्रि० वि० आगे-पीछे। —स्त्री० घोडे के अगले व पिछले पैरो मे बाधी जाने वाली साकल या रस्सी।

अगाजणौ, (बौ) देखो, अग्राजणौ, (बौ)।

अगाढ, अगाद, अगाध-वि० [स० अगाध] १ बहुत गहरा, अथाह। २ असीम, अपार। ३ अत्यधिक, बहुत। ४ घनिष्ठ, घना, गाढा। गहन। ५ दुर्बोध्य। ६ बलवान शक्तिशाली। ७ गभीर। —जळ-पु० अथाह-जल। तालाब, सरोवर। —वि० अतलस्पर्शी। अगाध जल वाला। —पण-पु० गहराई, गभीरता, गहनता, घनापन। असीमता।

अगात-वि० शरीर रहित, निराकार। —पु० काम देव। परब्रह्म, ब्रह्म।

अगार-देखो 'आगार'।

अगाळ-वि० १ अत्यधिक, बहुत। २ विशेष, खारा। ३ देखो 'अकाळ'।

अगालग-क्रि०वि० निरतर।

अगाळा-स्त्री० [देश] बरछी।

अगास-देखो 'आकास'।

अगासुर-देखो 'अघासुर'।

अगाह–वि० [फा० आगाह] १ प्रगट, विदित। २ अनश्वर, अविनाशी। ३ जो जीता न जा सके, अजेय। [स० गृ] ४ ग्रहण किया जाने वाला। —पु० परब्रह्म, ईश्वर। क्रि० वि०– १ आगे से, आईन्दा। २ पहले से। ३ अगाडी।

अगाहठ, अगाठ–देखो 'आगाहठ'।

अगि–१ देखो 'अग्नि'। २ देखो 'आगै'।

अगिअर–देखो 'अजगर'।

अगिआन–देखो 'अग्यान'।

अगिआनी–देखो 'अग्यानी'।

अगिना–स्त्री० [स० अघ्न्या] १ गाय, गौ। २ देखो 'अगनी'।

अगिनाभू–देखो 'अगनीभू'।

अगियान–देखो 'अग्यान'।

अगियानी- देखो 'अग्यानी'।

अगिया–देखो 'आग्या'।

अगियार, अगियारै–देखो 'इग्यारै'।

अगिलौ, अगिल्ल–देखो 'आगलौ' (स्त्री० आगिली)।

अगिवाण–देखो 'आगीवाण'।

अगिहिळ–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

अगी–देखो 'अग्नि'।

अगीत–वि० १ न गाये जाने योग्य। २ न गाया जाने वाला।

अगुंवौ, अगुऔ–वि० १ आगे चलने वाला, अग्रगण्य, अग्रणी। २ मुखिया, प्रधान। ३ नेता। ४ श्रेष्ठ। ५ मार्ग दर्शक। —क्रि० वि० अगाडी, आगे।

अगुण–वि० [स] १ जिसमे कोई गुण न हो, गुणहीन, निगुंण। २ जिसमे कोई सद्‌गुण न हो, अवगुणी। ३ निकम्मा। ४ मूर्ख। ५ अनाडी। —पु० १ अपराध, दोष। २ खराबी, बुराई। ३ देखो 'उगूण'।

अगुप्त–वि० १ [स] जो आत्मा का गोपन न करें। २ जो गुप्त न हो, प्रगट।

अगुवाणी–देखो 'अगवाणी'।

अगुवौ–देखो 'अगुंवौ'।

अगूझ–वि० मूर्ख, मूढ।

अगूढ़–वि० [स०] १ जो गूढ या रहस्य मय न हो, सीधा, सरल। २ जो छिपा न हो, प्रगट। ३ स्पष्ट।

अगूण–१ देखो 'अगुण'। २ देखो 'उगूण'।

अगेंदर, अगेंद्र–पु० [स० अगेन्द्र] १ हिमालय। २ सुमेरु पर्वत।

अगे–देखो 'आगे'।

अगेती–वि० अग्रगामी, अग्रणी।

अगेम–वि० [स० अ+गेम] निष्कलंक, बेदाग।

अगेरणौ (बौ)–देखो 'उगेरणौ (बौ)'।

अगै–देखो 'आगै'।

अगैह–वि० [स० अ+गृह] जिसका कोई घर न हो, बेघरबार। —पु० परब्रह्म, ईश्वर।

अगोअगा–क्रि०वि० १ आगे, अगाडी। २ पूर्व, पहले।

अगोखड़ौ–पु० [स० अग्र+वाट] घर का अग्रभाग।

अगोचर–वि० [सं०] जिसका अनुभव इन्द्रियो से न हो इन्द्रियातीत। २ अप्रत्यक्ष। ३ अप्रगट, अदृश्य। —पु० विष्णु, ईश्वर, परमात्मा। परब्रह्म।

अगोणी–देखो 'उगुणी'।

अगौलग–देखो 'आगोलग'।

अग्ग–१ देखो 'अग्र'। २ देखो 'अगनी'। ३ देखो 'अघ'। ४ देखो 'अग'।

अग्गणी–देखो 'अगनी'।

अग्गमबुद्धि, अग्गमबुद्धी–देखो 'अगमबुद्धि'।

अग्गर–१ देखो 'अगर'। २ देखो 'आगार'।

अग्गळ, अग्गळी–क्रि०वि० १ सम्मुख, समक्ष। २ देखो 'आगळ'।

अग्गळौ–देखो 'आगल' (स्त्री० अग्गळी,)।

अग्गलौ–देखो 'अग्गलौ' (स्त्री० अग्गळी)।

अग्गस्त–देखो 'अगस्त'।

अग्गालि, अग्गाळी–देखो 'अकाळ'।

अग्गि–देखो 'अगनी'। २ देखो 'अग्र'।

अग्गिआन, अग्गियांण–देखो 'अग्यान'। २ देखो 'आगीवाण'।

अग्गी, अग्नि–देखो 'अगनी'।

अग्य-वि० [स० अज्ञ] १ अनपढ, अपढ। २ जड बुद्धि, मूर्ख। ३ अविवेकी। ४ ज्ञान हीन, अनुभव हीन। —**ता०**–स्त्री० अज्ञानता। जडता। मूर्खता।

अग्यांन–पु० [स० अज्ञान] १ नासमझी, नादानी २ मूर्खता, जडता। ३ अविद्या। ४ मिथ्या ज्ञान। ५ ज्ञानहीन-अवस्था।

अग्यानी–वि० [स० अज्ञानी] १ नासमझ, नादान। २ जड-बुद्धि, मूर्ख। ३ अपठित, अनाडी। ४ मिथ्या ज्ञानी।

अग्या–देखो 'आग्या'।

अग्यात–वि० [स० अज्ञात] १ जो ज्ञात न हो। २ गुप्त, छुपा हुआ। ३ अपरिचित। ४ बेसुध। ५ अज्ञानी। —**जोवण, यौवणा**–स्त्री० उभरते यौवन के प्रति बेसुध, मुग्धानायिका। —**वास**–पु० गुप्त निवास स्थान, गुप्तवास।

अग्यारस (सि, सी)–देखो 'एकादसी'।

अग्येय–वि० [स० अज्ञेय] १ जो जानने योग्य न हो, जिसे जाना न जा सके। २ जो बुद्धि से परे हो, ज्ञानातीत। दुर्बोध।

अग्र–वि० [स०] १ आगे का, अगला । २ सामने का, सम्मुख का । ३ प्रथम, पहला । ४ पूर्व का आगे का । ५ श्रेष्ठ उत्तम। -क्रि०वि० १ आगे, अगाडी।२ सामने, सम्मुख।३ पहले, पूर्व । —पु० १ आगे का भाग, सिरा । २ अवलबन, सहारा । ३ समूह । ४ शिखर । ५ नेता, नायक । ६ आहार की मात्रा । ७ प्रारभ, शुरुआत । ८ मोर के ४८ अडों के बराबर का तौल ।—**कर**–पु० अगुली । पहली किरण । —**कारी**–वि० अग्रणी, अगुवा ।—**ग, गण्य, गन्य**–वि० गणना मे प्रथम । मुख्य । नेता, नायक ।—**गामी**–वि० आगे चलने वाला, अगुवा । प्रधान, नेता ।—**ज, जनमा, जन्मा, जात, ज्ज**–पु० बडाभाई । ब्रह्मा । ब्राह्मण नेता, नायक ।–वि० प्रथम जन्मा । श्रेष्ठ, उत्तम । प्रधान । —**जाति, जाती**–पु० ब्राह्मण ।—**दानी**–वि० प्रथम दान करने वाला ।-पु० मृत-कर्म मे दान लेने वाला पतित ब्राह्मण ।—**दूत**–पु० आगे चलने वाला दूत, हलकारा । —**भाग**–पु० आगे का हिस्सा । सिरा, नोक । शेष भाग । —**भागी**–वि० प्रथम भाग का अधिकारी ।—**महिसी**–स्त्री० पटरानी ।—**लेख**–पु० मुख्य लेख, खास समाचार—**वाण, वाणी**–वि० अग्रगण्य । नेता, प्रधान—**सध्या**–स्त्री० प्रात काल, सवेरा ।–**स**–क्रि० वि० प्रारभ से ।–**सर**–वि० अग्रगण्य । अगुवा । प्रारभ करने वाला । मुख्य प्रधान ।–अव्य० आगे की ओर । आगे-आगे ।—**साळ, साळा**–स्त्री० सायवान, ओसारा ।—**सोचि, सोची**–वि० दूरदर्शी ।—**स्थान**–पु० प्रथम स्थान ।—**हस्त**–पु० अगुली । हाथी की सूड । —**हायण**–पु० अगहन मास ।

अग्रणी–वि० आगे चलने वाला, अगुवा, नेता, श्रेष्ठ, उत्तम ।

अग्रम–देखो 'अग्रिम' ।

अग्रवाळ–देखो 'अगरवाळ' ।

अग्रसरण–देखो 'अग्रासरण' ।

अग्राज–स्त्री० [स० अ+गर्जनम्] जोश पूर्ण आवाज गर्जन, दहाड । हु कार ।

अग्राजणौ, (बौ)–क्रि० स० जोश पूर्ण आवाज करना, गर्जना, दहाडना, हुकार करना ।

अग्रासण–पु० [स० अग्रासन] १ भोजन का अश जो देवता, गौ आदि के लिये सर्व प्रथम निकाला जाय । [स० अग्रासन] २ सम्मान पूर्ण आसन या स्थान ।

अग्राह्य–वि० [स०] १ जो ग्रहण करने योग्य न हो । २ जो धारण करने योग्य न हो, त्याज्य । ३ जो विचार करने मान, स्वीकारने योग्य न हो । ४ अविश्वसनीय ।

अग्रि–देखो 'अग्र' ।

अग्रिम–वि० [स०] १ पेशगी, एडवास । २ पहला, पूर्व का । ३ अगला, बादका । ४ उत्तम श्रेष्ठ । ५ प्रधान मुख्य । ६ सब से बडा । —पु०, बडा भाई ।

अग्रे–क्रि० वि० [स०] १ आगे, अगाडी । २ सामने सम्मुख । ३ आदि मे, पहले । —**ण**–क्रि० वि० अग्र भाग से । —**सर**–वि० अगुवा । मुख्य, प्रधान । प्रारम्भ कर्ता । –क्रि० वि० आगे की ओर, आगे ।—**सुर, स्वर**–पु० गणेश, गजानन ।

अघ–पु० [स० अघ] १ अधर्म, पाप । २ अपराध, जुल्म । ३ कुकर्म, दुष्कर्म । ४ व्यसन । ५ अशौच, सूतक । ६ दुःख, विपत्ति । [सं० अघ] ७ कस का सेनापति, अघासुर । —वि० १ खराब, बुरा, निकृष्ट । २ दुष्ट, पापी, अधम, नीच । —**जीत**–वि० धर्मात्मा । पापियो को जीतने वाला । –पु० श्रीकृष्ण । —**डडी**-पु० ईश्वर । यमराज । न्यायाधीश । —**नासक, मार, मारण, मारन, मोचण, मोचन**—वि० पापो का नाश करने वाला ।—पु० विष्णु । श्रीकृष्ण, दान, जप ।—स्त्री० गगा ।—**वान** वि० पापी । —**वारण**–वि० पापो का निवारण करने वाला । —**हता**–पु० श्रीकृष्ण, विष्णु । ईश्वर, श्रीराम । —**हर, हरण**–वि० पापो का हरण करने वाला । —पु० ईश्वर ।—**हरणी**–स्त्री० महादेवी । दुर्गा । गगा ।—**हाता**–स्त्री० पापो का नाशकर मोक्ष देने वाली गगा देवी । —**हारी**–वि० पापो का हरण करने वाला । —पु० ईश्वर, विष्णु ।

अघड–देखो 'अणघड' ।

अघट–वि० १ घट रहित, जो घटित न हो, न होने योग्य, कठिन दुर्घट, जो ठीक न घटे अनुपयुक्त ।२ अक्षय ।३ देखो 'अघटित ।'

अघटणौ, (बौ)–क्रि० वि० [स० अ+घटनम्] विचित्र ढग से होना, अद्भुत तरीके से घटना ।

अघटित, अघट्ट–वि० [स० अघटित] १ जो घटित न हुआ हो । २ जिसका घटना सभव न हो । ३ असभव । ४ अवश्य होने वाला, अनिवार्य । ५ अनुचित अयोग्य । ६ अनुपयुक्त । ७ अद्भुत, अनोखा, अपूर्व । ८ अपार, असीम, बहुत ।

अघट्टणौ, (बौ)–देखो 'अघटणौ' (बौ) ।

अघण, अघन–१ देखो 'अगनी' । २ देखो 'अगहन' ।

अघरणी–देखो 'आगरणी' ।

अघरायण–वि० [देश] भयकर, भीषण । —स्त्री० अत्यधिक गर्म व तेज वायु, लू ।

अघहट–देखो 'आगाहट' ।

अघहण–पु० मार्ग शीर्ष का मास, अगहन ।

अघाणौ (बौ)–क्रि० [स० आघ्राण] तृप्त होना, अघाना ।

अघात–देखो 'आघात' ।

अघारि, अघारी–पु० [सं अघ+अरि] १ श्रीकृष्ण। २ विष्णु, ईश्वर।–वि० पापो का नाश करने वाला।

अघावणौ (बौ)–देखो 'अघाणौ (बौ)'।

अघासुर–पु० [स०] कस का सेनापति व पूतना का भाई एक राक्षस।

अघि, अघी–वि० १ पापी, दुराचारी। २ देखो 'अघ'।

अघोर–वि० [स०] १ जो घोर न हो। २ सौम्य, सुहावना। ३ प्रिय, प्यारा। ४ मुलायम, नाजुक। ५ देखो 'अघोरी'। –पु० १ शिव का एक रूप। २ एक शैव सम्प्रदाय। ३ तद्रा। —**कुंड**–पु० एक तीर्थ का नाम। —**नाथ**–पु० शिव, महादेव। अघोर पथ का मुखिया। —वि० भयकर, डरावना। —**पथ**–पु० एक शैव सम्प्रदाय। -**पथी**–पु० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

अघोरा–स्त्री० [स०] भादव कृष्णा चतुर्दशी।

अघोरियौ–देखो 'अघोरी'।

अघोरी, अघोरौ–पु० [स० अघोरी] १ एक प्रकार का शैव सम्प्रदाय जो गर्हित-तान्त्रिक क्रियाऐं करवाता है। २ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी जो गर्हित पदार्थों का सेवन करता है। औघड। —वि० १ असभ्यता से खाने वाला। २ घृणित, गदा।

अघोस–वि० [स० अघोष] १ जो शब्द, ध्वनि या घोष रहित हो, नीरव। २ अल्प ध्वनियुक्त। —पु० १ एक वर्ण समूह जिसके प्रत्येक वर्ग के प्रथम दो अक्षर तथा 'स' होते हैं। २ प्लुत स्वर।

अघौ–देखो 'आगौ'।

अघ्घ–देखो 'अघ'।

अघ्घोर–देखो 'अघोर'।

अघ्घोरी–देखो 'अघोरी'।

अघ्रमाण–देखो 'आगेवाण'।

अघ्राण–देखो 'आघ्राण'।

अघ्रायण–देखो 'अघरायण'।

अडगावाज–वि० विघ्न कारक।

अडगी–वि० १ असभ्य, मूर्ख, अनाडी। २ रोडा लगाने वाला।

अडगौ–पु० [देश] १ विघ्न, बाधा। २ अवरोध, रुकावट। ३ ढोग, पाखड। ४ हस्तक्षेप। ५ स्वार्थसिद्धि की युक्ति। ६ हथकडा।

अड–स्त्री० [देश] १ वह सीधी लकडी जो कूऐ पर पाट के नीचे लगती है। २ फलसे के द्वार पर लगाया जाने वाला लट्ठा। ३ विघ्न, बाधा। ४ रोक, रुकावट। ५ जिद्द, हठ। ६ टेक, प्रतिज्ञा, प्रण। ७ लडाई, झगडा। –वि० १ उद्दण्ड, अडियल। २ जिद्दी। ३ अशुद्ध। —**कौ, कीलौ**–वि० उद्दण्ड, बदमाश, गवार। हठी, जिद्दी। —**दार**–वि० अडियल। ऐंठदार, मस्त, मतवाला। —**प**–स्त्री० हठ, दुराग्रह। साहस, बल, शक्ति। प्रतिस्पर्द्धा, होड। प्रभाव, रौब। —**पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती**–वि० हठी, जिद्दी। —अरबपति, अडियल। उद्दण्ड, उपद्रवी। साहसी, वीर। —**बक, बग, बंगी, भग, भगी**–वि० शक्तिशाली, जबरदस्त, दृढ, अटल, अडिग। हठी, जिद्दी। उद्दण्ड, कठिन, विकट। टेढा-मेढा, ऊचा-नीचा, ऊबड-खाबड। विचित्र, अनोखा। चचल, चपल। —**बध**–पु० कब्जियत। —**बी, वी**–स्त्री० विघ्न, बाधा। आपत्ति विपत्ति। हठ, विरोध। झगडा। वैर, शत्रुता। बहस। —**बीलौ**–वि० विघ्नकारक, बाधक। हठी, जिद्दी। (स्त्री० अडबीली)।

अडक–पु० १ बिना बोये स्वत उगने वाला कदन्न। २ कडवी बादाम।

अडकण–देखो 'अडोकण'।

अडकणी–स्त्री० किसान स्त्रियो की बाह का चादी का आभूषण।

अडकणौ, (बौ)–क्रि [देश०] १ छूआ जाना, स्पर्श होना। २ चिढना। ३ अडना।

अडकन–देखो 'अडोकण'।

अडकाड़णौ (बौ), अडकाणौ (बौ), अड़कावणौ, (बौ)–क्रि० १ सहारा देना। २ अड़ाना, रोकना। ३ द्रव पदार्थ को एकाएक उडेलना।

अडकियौ–देखो 'अडक'।

अडखज–देखो 'अडखजौ'।

अडखजावाज–वि० १ आडबर या ढोग करने वाला। २ बहु धधी। ३ उद्यम करने वाला, उद्यमी।

अडखजौ–पु० १ आडम्बर, ढोग। २ प्रपच, बखेडा। ३ उद्योग, धधा। ४ अडगा।

अडड, अडडाट–स्त्री० [अनु०] १ सजाकर रक्खी वस्तुओ या दीवार के गिरने की ध्वनि। २ लगातार अड-अड की ध्वनि। ३ बरसने की क्रिया व ध्वनि।

अड़चण, अड़चन–स्त्री० [देश] १ बाधा, रुकावट। २ विघ्न, व्यवधान। ३ दिक्कत, कठिनाई, परेशानी। ४ रोडा, अटकाव।

अडचल–स्त्री० [देश] १ कष्ट, तकलीफ। २ कठिनाई, दिक्कत। ३ विघ्न। ४ बीमारी, रोग।

अडणौ, (बौ)–क्रि० [देश०] १ अटकना। २ स्पर्श होना। ३ सटजाना, लग जाना। ४ जुड जाना। ५ उलझना। ६ अटल या अडिग होना। ७ अपनी बात पर दृढ होना। ८ रुकना। ९ फस जाना। १० भिडना, टक्कर लेना। ११ हठ करना, जिद्द करना।

अड़ताळीस–वि० [स० अष्टचत्वारिंशत्[१ सैंतालीस से आगे या बाद का। २ चालीस और आठ।—पु० १ चालीस व आठ की सख्या। २ इस सख्या का अक यथा–४८।

अडताळीसौ, अडताळौ–पु० अडतालीसवा वर्ष।

अडतीस–वि० [स० अष्टत्रिंशत्] १ सैंतीस से आगे या बाद का। २ तीस और आठ।—पु० १ तीस व आठ की सख्या। २ उक्त सख्या का अक–३८।

अडतीसौ–पु० अडतीसवा वर्ष।

अड़तौ–वि० (स्त्री० अडती) स्पर्श करता हुआ। क्रि० वि० छूते हुऐ, स्पर्श करते हुऐ।

अडयडणौ (बौ)–देखो 'अडवडणौ' (बौ)।

अडद्द–पु० १ उत्पात, उपद्रव। २ पाखड, ढोग। ३ माहौल।

अडप–स्त्री० १ साहस। २ बलशक्ति। ३ हठ, जिद्द। ४ प्रभाव रौब। ५ होड, स्पर्द्धा।

अडपणौ, (बौ)–देखो 'अडपणौ, (बौ)।

अडपाई–स्त्री० १ हठ, जिद्द। २ प्रतिष्ठा, मान। —वि० १ हठी, जिद्दी। २ आन पर मरने वाला।

अड़पायत, अडपायती, अडपावती, अड़पायल, अडपाल–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ भयकर। ३ जबरदस्त। ४ वीर, योद्धा। ५ निडर, निर्भीक। ६ साहसी। ७ हठी, जिद्दी। ८ अडियल। ९ स्थायी, टिकाऊ।

अड़प्पणौ (बौ), अड़फ्फणौ (बौ)–देखो 'अडपणौ' (बौ)।

अडव–देखो 'अरव'।

अडवडणौ, (बौ)–देखो 'अडवडणौ' (बौ)।

अडवडाट–देखो 'अडवडाट'।

अडवडियौ–देखो 'अडवडियौ'।

अडवडी–देखो 'अडवडी'।

अडव-पसाव–देखो 'अरवपसाव'।

अडवी–स्त्री० १ विघ्न, बाधा, रुकावट। २ विरोध। ३ प्रतिस्पर्द्धा।

अडव–देखो 'अरव'।

अडवड–स्त्री० ध्वनि, विशेष।—वि० १ आतुर, व्याकुल। २ कठिन, दुर्गम। ३ अटपटा।

अडवडणौ (बौ)–क्रि० १ धक्कम्-पेल करना, एक के ऊपर एक चढना। २ हड़बडाना, घबराना। ३ एक साथ चलना। ४ आतुर होना, व्याकुल होना। ५ शीघ्रता करना।

अडवडाट–पु० १ भीड-भाड। २ सामान या कार्य की उलझन। ३ ध्वनि, विशेष।

अडवडाणौ (बौ)–क्रि० १ तेज चलाना या हाकना। २ शीघ्रता या ताकीद करना। ३ डाट-फटकार लगाना। ४ तग करना, जोश दिलाना।

अडवडियौ–वि० उतावला, आतुर।

अडवड़ी–देखो 'अड़वड'।

अडवाड–स्त्री० बराबर दौड आगे से घेरना क्रिया, भाग आना क्रिया।—क्रि० वि० सामने सम्मुख।

अडवी–देखो 'अडवी'।

अड़वौ–पु० खेत में फसल की सुरक्षार्थ एव पशु-पक्षियों को डराने के लिए खड़ा किया जाने वाला पुतला। —वि० विघ्न कारक, व्यर्थ व्यवधान डालने वाला।

अडस–स्त्री० १ डाह, ईर्ष्या। २ कोप, क्रोध। ३ रोष।

अडस, अडसट्ठ, अडसट्ठ, अडसट्ठि, अड़सठ–वि० [स० अष्टषष्टि] १ 'सडसठ' के आगे या बाद का। २ साठ व आठ। —पु० १ साठ व आठ की सख्या। २ इस सख्या का अक–६८।

अडसटौ, अडसठौ–पु० अडसठवा वर्ष।

अड़मल, अडसाल, अडसालौ–वि० [स० अरि+शल्य] १ जो शत्रुओ के लिए शल्य रूप हो। २ वीर, बहादुर। ३ ईर्ष्यालु। ४ हठी, जिद्दी।

अडसूल–देखो 'अडू'।

अडा–स्त्री० [देश] लडाई, झगडा। २ युद्ध, समर। —ई–स्त्री० बाधा, विघ्न। अटकाव। रुकावट।—क, को, कू, ग–वि० १ अकडने वाला, अकडू। २ जिद्दी। ३ अडियल। ४ शक्तिशाली, बलवान। जबरदस्त, भयकर। —खटौ–स्त्री० लडाई, टटा, फिसाद। ईर्ष्या, द्वेष। व्यर्थ की परेशानी। —भडो, भीड–स्त्री० भीड, समूह। –वि० शस्त्र सुसज्जित। —यत, यतौ, यतौ–वि० शक्तिशाली, बलवान। अडियल। हठी, जिद्दी। ओट करने वाला, आड करने वाला। —ल–वि० अडियल।

अड़ाड–देखो 'अडाट'।

अडाझड (भड)–स्त्री० ध्वनि विशेष।–क्रि० वि० निरन्तर, लगातार।

अड़ाट–पु० १ तेज प्रवाह या गति की ध्वनि। २ तेज वायु की ध्वनि।

अडाणौ (बौ)–क्रि० १ अटकाना। २ स्पर्श कराना, छुआना। ३ सटाना, सलग्न करना। ४ जोडना। ५ उलझाना। ६ अडिग या अटल करना। ७ फसाना, भिडाना। ८ भिडाना, टक्कर लिराना। ९ हठ या जिद्द करने के लिए प्रेरित करना।

अडापडी–वि० साधारण, मामूली।

अडामड़–स्त्री० ध्वनि विशेष।

अडाळ–पु० मयूर नृत्य।

अडाव (बौ)–पु० १ विघ्न, बाधा। २ प्रतिबंध रोक। ३ रोक, मनाही। ४ परहेज। ५ आवश्यकता, जरूरत। ६ गरज। ७ परती छोडा हुआ खेत। ८ देखो 'अडणौ'।

अडावणौ (बौ)–देखो 'अडावौ' (बौ)।

अड़ि, अडी–स्त्री० १ अत्यन्त आवश्यकता, सख्त जरूरत। २ जिद्द, हठ, दुराग्रह। ३ दिक्कत, परेशानी। ४ बाधा, रोक। ५ मौका। ६ लडाई, झगडा। ७ दगा, फिसाद। ८ विरोध, शत्रुता। **—खम**–वि० शक्तिशाली, बलवान। हृष्ट-पुष्ट, तगडा। अडिग, अटल, अचल। **—जत**–वि० मजबूत, दृढ। सावधान, तैयार। **—जोध**–वि०–योद्धा, वीर, महावीर। **—यल, यल्ल, याल**–वि० अभिमानी, घमण्डी। अडियल, अकडू। उद्दण्ड। जिद्दी, हठी, वीर, बहादुर। रुक-रुक कर चलने वाला। **—लौ**–पु० अस्त-व्यस्त या बिखरा हुआ सामान। योद्धा, वीर। देखो, 'अडियल'।

अडीसल, अडीसाल, अडीसालौ–देखो 'अडसल'।

अडूऔ–देखो 'अडूसौ'।

अडूड–पु० खेत मे स्वत उगने वाली कटीली झाडिया। २ उक्त झाडियो को काटने की क्रिया।–वि० १ जोरदार, जबरदस्त। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ अत्यधिक।

अडूवौ, अडूसौ–पु० [स० आटरूष] १ एक प्रकार का वृक्ष। २ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तिया औषधि के काम आती हैं।

अडेगडे, अडेगडे–वि० समान, सदृश।—क्रि० वि० आस-पास, लगभग, करीब।

अडेच, अडेज–१ प्रति बध, परहेज। २ देखो 'अडचण'।

अडेल, अडेल–देखो 'अडियल'।

अडोई–स्त्री० गौ-चारक ग्वाले को दिया जाने वाला भोजन।

अडोस-पडोस–देखो 'आडोस-पाडोस'।

अडोसी-पडोसी–देखो 'आडोसी-पडोसी'।

अचक–देखो 'अचाणक'।

अचचळ–वि० [स० अ+चचल] १ धीर, गभीर। २ शान्त। ३ स्थिर।

अचट–पु० रुपया।—वि० सीधा-सादा, सरल।

अचड–वि० [स०] १ जो उग्र न हो, शान्त। २ सुशील सीधा-सादा।

अचडी–स्त्री० [स०] १ सीधी गौ। २ शान्त स्त्री।

अचब, अचभ–देखो 'अचभौ'।

अचभणौ, (बौ)–क्रि० चकित होना, दग रहना।

अचभम, अचभव–देखो 'अचभौ'।

अचभित–वि० [स० स्तभित] चकित, विस्मित, स्तभित।

अचभौ, अचभ्रम–पु० [प्रा० अच्चब्भूअ] १ आश्चर्य, विस्मय। २ अद्भुत या विचित्र वस्तु, कार्य या घटना।

अच–पु० [सं० अच्] १ स्वर वर्ण। २ देखो 'आच'।

अचकन–पु० [स० कञ्चुक प्रा० अचुक] लबा अगा, चोगा।

अचगळ, अचगळी, अचग्गळ, अचग्गळौ–देखो 'अचागळ'।

अचड, अचड–वि० १ श्रेष्ठ उत्तम। २ महान, बडा। ३ अचल, स्थिर।—स्त्री० १ उत्तम कार्य। कीर्ति, यश।

अचणौ, (बौ)–क्रि० [स०आचमनम्] १ आचमन करना। २ खाना, भोजन करना।

अचपडा–पु० ब. व चेचक से मिलता-जुलता एक रोग।

अचपळाई–स्त्री० १ चचलता, चपलता, २ शैतानी, उद्दण्डता।

अचपळ, अचपळउ, अचपळौ अचप्पळ, अचप्पळउ, अचप्पळौ–वि० [स० चपल] (स्त्री अचपळी) १ नटखट, चचल, चपल। २ उद्दण्ड, बदमाश। ३ उत्पाती, उपद्रवी।

अचमन–देखो 'आचमन'।

अचर–वि० [स०] १ न चलने वाला, स्थिर, ठहरा हुआ। २ जड। ३ स्थावर।–पु० १ ऊट का एक रोग। २ देखो 'अप्सरा'।

अचरज, अचरज्ज, अचरिज, अचरिज्ज–पु० [स० आश्चर्य] आश्चर्य, विस्मय।

अचरजणौ (बौ)–क्रि० आश्चर्य युक्त होना, चकित होना।

अचरियौ-बचरियौ–पु० १ मिश्रण। २ सूर्य पूजा के दिन प्रसूता के लिये बनाया जाने वाला विभिन्न सब्जियो का मिश्रण।

अचळ, अचळल–वि०[स० अचल]१ जो चलायमान न हो, स्थिर। २ गमन शक्ति हीन। ३ अडिग, अटल। ४ दृढ, पक्का। —पु० [स० अचल] १ पर्वत, पहाड। २ सूर्य। ३ इन्द्रासन। ४ ध्रुव। ५ सुमेरू पर्वत। ६ यश, कीर्ति। ७ श्रेष्ठ व उत्तम कार्य। ८ ब्रह्म, ईश्वर। ९ जैनियो के प्रथम तीर्थ कर। १० सात की सख्या।**—कीला**–स्त्री० पृथ्वी, धरती।

अचळा–स्त्री० [स० अचला] पृथ्वी, धरती।

अचळेस, अचळेसर, अचळेसुर, अचळेसुरध-पु० [स० अचलेश्वर] १ शिव, महादेव। २ आबू पर्वत का शिव मन्दिर।

अचल्लणौ–वि० पीछे न हटने वाला।

अचवन–देखो 'आचमन'।

अचाचक, अचाण, अचाणक, अचाणचक, अचाणचूकौ, अचाणजक, अचाणी, अचान, अचानक, अचाक–क्रि० वि० अकस्मात, यकायक, अचानक, सहसा एक दम।

अचागळ, अचागळौ–वि० [स० अतिकर्ण] १ नटखट, चचल चपल। २ उद्दण्ड, बदमाश। ३ तेज, फुर्तीला। ४ प्रचण्ड, भयकर। ५ वीर बहादुर। [स० अच्छ] ६ यशस्वी,

कीर्तिवान। ७ उदार, दातार। ८ विचारवान, बुद्धिमान [स० अचल] ९ अटल, अडिग, दृढ, मजबूत।

अचाचूक–देखो 'अचाणक'।

अचाणौ, (बौ)–देखो 'अचणौ' (बौ)।

अचार–पु० १ मिर्च मसालों के साथ तेल में डाल कर तैयार किया गया आम की केरी, निंबू आदि का चटपटा खाद्य। २ देखो 'आचार'।

अचारज–देखो 'आचारज'।

अचारवती, अचारवान–वि० जिसका आचरण शुद्ध हो।

अचारवेदी–देखो 'आचार वेदी'।

अचाळ–वि० १ अत्यधिक बहुत, । २ भयंकर, प्रचंड। ३ तेज, तीव्र। ४ देखो 'अचळ'।

अचित, अचितणीय, अचितणीय, अचितु–वि० [स० अचिन्त्य, अचितनीय] १ मन और बुद्धि से परे। २ अबोध गम्य, अज्ञेय। ३ कल्पनातीत। ४ अतुल, असीम। ५ आशा से अधिक।—पु० १ ब्रह्म। २ शिव।

अचित्यौ–वि० [स० अचिंतित] १ जिसका विचार न किया गया हो, बिना सोचा हुआ, । २ आकस्मिक।

अचित–वि० [स०] १ जो सोचा न गया हो, अविचारित। २ अनेकत्रित, बिखरा हुआ। ३ गया हुआ। ४ नासमझ, विवेकशून्य। ५ धर्म विचारशून्य। ६ उल्टा, औंधा। ७ निर्जीव। (जैन)।

अचिरज, अचिरज्ज, अचिरिज, अचिरिज्ज–देखो 'अचरज'।

अचींत–देखो 'अचित'।

अचींतौ–देखो 'अणचीतौ' (स्त्री० अचीती)।

अचीत–देखो 'अचित'।

अचीतौ–देखो 'अणचीतौ'। (स्त्री० अचीती)।

अचूक, अचूकौ–देखो 'अचूक'।

अचूड, अचूडौ–देखो 'अचड'।

अचूक–वि०[स० अच्युत्क]१ जिसमें कोई चूक न हो, भूल न हो। २ कभी न चूकने वाला, लक्ष्य सिद्ध। ३ अमोघ। ४ कारगर। ५ भ्रम रहित। ६ अव्यर्थ। ७ निश्चित, सही।

अचूकौ–वि० [स० अच्युत्क] १ अद्भुत, अनोखा, विचित्र। २ निश्चित, निःशंक।

अचूकाळ, अचूगाळ–वि० जो स्वच्छता का विशेष ध्यान रखे, सफाई पसंद।

अचेत, अचेतण, अचेतन, अचेतौ–वि० [स० अचेतन] १ चेतना रहित, बेहोश, मूर्च्छित। २ संज्ञा शून्य। ३ जड, मूढ। ४ ज्ञानहीन। ५ असावधान, गाफिल। ६ ना समझ। ७ माया रत। ८ विकल, व्याकुल बेचैन। ९ निर्जीव।—पु० १ जड पदार्थ। २ प्रकृति। ३ अज्ञान। ४ माया।

अचेलय–वि० [स० अचेलक] वस्त्रहीन, नंगा।

अचैन, अचैनू–वि [स० अ+शयन] विकल, बेचैन। —स्त्री० १ विकलता, बेचैनी। २ अशान्ति। ३ परेशानी। ४ कष्ट।

अचोट–पु० [स० अ+चुट=काटना] किला गढ।

अचोळ–वि० १ शिथिल, सुस्त, आलसी। २ जो लाल न हो।

अचौ–पु० मवेशी के बालों में रहने वाला कीडा, कीट।

अच्चंकारी, अच्चंकी–वि० सहसा उत्तेजित होने वाली।

अच्चजणौ (बौ)–क्रि० आश्चर्ययुक्त होना।

अच्छ–वि० [स०] १ स्वच्छ, निर्मल। २ विशुद्ध, पवित्र। ३ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ सुन्दर।—पु० १ स्फटिक। २ रीछ, भालू। ३ स्वच्छ जल। ४ देखो 'अक्ष'।

अच्छड–देखो 'अछड'।

अच्छकछक–देखो 'अछकछक'।

अच्छड–देखो 'अचड'।

अच्छत–देखो 'अछत'।

अच्छता–स्त्री० [स० अच्छ+प्र. ता] १ स्वच्छता, निर्मलता। २ पवित्रता, विशुद्धता। ३ श्रेष्ठता। ४ सुन्दरता।

अच्छती–देखो 'अछती'।

अच्छर–वि० [स० अच्छ] १ उत्तम, अच्छा। २ देखो 'अक्षर'। ३ देखो 'अप्सरा'।

अच्छरा, अच्छरि, अच्छरी–देखो 'अप्सरा'।

अच्छाई–स्त्री० १ अच्छापन। २ भलाई। ३ विशेषता, खासियत। ४ महत्ता। ५ सुंदरता, सुघराई। ६ श्रेष्ठता।

अच्छारी–देखो 'अच्छ'।

अच्छिज्जदोस–पु० किसी दुर्बल पर दबाव डाल कर आहार दिलाने का दोष।

अच्छूगाळ–देखो 'अचूगाळ'।

अच्छी–१ देखो 'आछी'। २ देखो–आख।

अच्छूतौ–देखो 'अछूतौ'।

अच्छेप–देखो 'अछेप'।

अच्छेर–देखो 'अद्धसेर'।

अच्छेरु, अच्छेरु–देखो 'अछेरु'।

अच्छेहौ–देखो 'अछेहौ'।

अच्छोहीणी–देखो अक्षौहिणी'।

अच्छौ–देखो 'आछौ'।

अच्युत–वि० [स०] १ अटल, दृढ। २ अविनाशी, अनश्वर। —पु० १ विष्णु। २ श्री कृष्ण। ३ परमेश्वर। ४ वैमानिक श्रेणी के कल्पभव देवताओं का एक भेद (जैन)।

—अग्रज–पु० बलराम, बलभद्र ।—आनंद–पु० परब्रह्म, ईश्वर ।–वि० जिसका आनन्द नित्य हो ।

अच्चज, अच्चज्ज–देखो 'अचरज' ।

अछंट–वि० १ अलग, पृथक । २ दूर ।–क्रि० वि० अचानक, अकस्मात ।

अछइ (ई)–वि० [स० अस्] है, वर्तमान, मौजूद ।

अछक–वि० [स० अ+चक=तृप्तौ] १ न छका हुआ, अतृप्त । २ भूखा । ३ उन्मत्त, मस्त । —छक–वि० अपार, असीम ।

अछकणौ, (बौ), अछक्कणौ, (बौ)–क्रि० १ अतृप्त रहना । २ भूखा रहना । ३ उन्मत्त होना ।

अछड़–देखो 'अचड' ।

अछडी–स्त्री० सफेद रग की घटिया किस्म की ज्वार ।

अछत–वि० १ छिपा हुआ, गुप्त । २ अविद्यमान ।—क्रि० वि० १ विद्यमानता मे, उपस्थिति मे । २ सिवाय, अलावा । ३ होते हुए । —स्त्री० अभिलाषा इच्छा कामना । २ सम्मान । ३ विद्यमानता । ४ देखो 'अक्षत' ।

अछतौ–वि०(स्त्री० अछती)१ निर्बल, दुर्बल । २ गायब, अलोप । ३ निर्धन, गरीब । ४ अभूतपूर्व, अनोखा । ५ असभव ।

अछर–१ देखो 'अक्षर' २ देखो 'अच्छर' ३ देखो 'अप्सरा'।

अछर-वर, अछरावर–पु० [स० अप्सरा+वर] वीर, योद्धा ।

अछराणि, अछरा, अछरायण, अछरायन, अछरी–देखो 'अपसरा' ।

अछरीक–वि० बहुत, अधिक ।

अछरोट–देखो 'अखरोट' ।

अछळ–पु० [स० अ+छल] १ छल का विपर्याय । २ कपटहीन अवस्था या भाव ।–वि० छल-कपट से रहित ।

अछानौ–वि० (स्त्री० अछानी) १ जो छुपा या गुप्त न हो । २ प्रगट । ३ प्रसिद्ध । ४ परिचित । ५ अज्ञात ।

अछाड–वि० आहत, घायल ।

अछाय, अछायौ–वि० १ आच्छादित । २ भरा हुआ परिपूर्ण । ३ व्याप्त । ४ जोशीला । ५ प्रसिद्ध, मशहूर । ६ स्वाभिमानी ।

अछिप–देखो 'अछानौ' ।

अछी–देखो 'अपसरा' ।

अछीज–वि० जिसकी क्षति न हो । —पु० ईश्वर ।

अछु, अछूं–क्रि० वि० हू ।

अछूत–वि० [स० अ+छुप्त, प्रा० अछुत्त] १ विना छुआ हुआ । २ कोरा, नया । ३ पवित्र, शुद्ध । ४ अस्पृश्य । —पु० अन्त्यज, शूद्र ।

अछूतौ–वि० (स्त्री० अछूती) १ नया, ताजा, २ जो बरता न गया हो । ३ विना छुआ हुआ । ४ कोरा । ४ पवित्र, शुद्ध । ६ अस्पृश्य । ७ अक्षय, अखण्ड । ८ अभूतपूर्व, अपूर्व । —पु० स्पर्श करने का भाव ।

अछेक–वि० [स० अछिद्र] १ छिद्र रहित । २ अभग । ३ अखण्डित । ४ निर्दोष, त्रुटि रहित । ५ जो चोटिल न हो ।

अछेद–वि० [सं० अछेद्य] १ जिसे छेदा न जा सके, अभेद्य । २ अखण्ड । ३ निष्कपट ।

अछेप–वि० अछूत, अस्पृश्य ।

अछेर–देखो 'अद्धसेर' ।

अछेरु, अछेरू–वि० [सं० अच्छ] १ अपेक्षाकृत बढिया श्रेष्ठ । —पु० आश्चर्य, विस्मय ।

अछेह, अछेहौ–वि० १ अनन्त, अथाह । २ अत्यधिक । ३ मर्यादा या सीमा रहित । ४ अखण्डित । ५ छेह न देने वाला । —क्रि० वि० लगातार, निरन्तर ।–पु० परब्रह्म ।

अछै–देखो 'छै' ।

अछोडी–देखो 'आछी' ।

अछोतौ–देखो 'अछूतौ' ।

अछोभ–देखो 'अक्षोभ' ।

अछोर–वि० [स०] जिसका कोई छोर या सीमा न हो, असीम ।

अछोह–देखो 'अक्षोभ' ।

अछ्यौ–देखो 'आछौ' ।

अजप–वि० अकथनीय, अवर्णनीय ।

अज–वि० [सं०] १ जन्म रहित, स्वयंभू । २ अजर, अमर । ३ अनादि । ४ क्रूर ।–पु० १ ब्रह्म । २ ईश्वर । ३ विष्णु । ४ शिव । ५ श्रीकृष्ण । ६ ब्रह्मा । ७ देवता । ८ कामदेव । ९ श्रीराम के पितामह का नाम । १० बकरा । ११ मेढा, मेष ।–स्त्री० १२ माया, शक्ति । १३ शुक्र की गति से तीन नक्षत्रो की वीथी । १४ छाया । –क्रि० वि० [स० अद्य प्रा अज्ज] १ अत्र । २ अभी तक । ३ आज ।—गलका, गल्लका, गल्लिका–स्त्री० बच्चो का एक रोग ।—देवता–पु० अग्नि । पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र ।—नद, नदन–पु० राजा दशरथ । —पत, पति, पती–पु० मगल । सब से ऊचा बकरा । —पथ–वीथि, वीथी–पु० अजवीथी, छायापथ । —पाळ–पु० राजा दशरथ के पिता । गडरिया । —बधु–वि० मूर्ख, मूढ ।–भक्ष, भख–पु० बबूल का पेड । झड बेरी के सूखे पत्ते । शमी वृक्ष के सूखे पत्ते । –मडल–पु० आर्यावर्त्त, भारत ।—मार–पु० कसाई । अजमेर ।–मीढ–पु० अजमेर का एक नाम । युधिष्ठिर की उपाधि । पुरुवशीय हस्ति का बडा पुत्र ।—मुखी–स्त्री० अशोक वाटिका की एक राक्षसी । —मोद–पु० अजवायन का एक भेद ।

—सुत—पु० शिव, महादेव। राजा दशरथ।
अजइपुर—पु० अजमेर का एक नाम।
अजक—१ बेचैनी, घबराहट। २ देखो 'अजगा'।
अजकरण, अजकरणक, अजकव, अजकाव—पु० [सं० अजकव] १ असन वृक्ष। २ साल वृक्ष। ३ देखो 'अजगाव'।
अजकी—वि० (स्त्री० अजकी) १ व्याकुल, बेचैन। २ चपल, चपल। ३ सतर्क। ४ वीर।—अजगं—स्त्री० १ व्याकुलता, बेचैनी। २ चंचलता, चपलता। ३ सतर्कता।—क्रि० वि० १ चंचलता में। २ सतर्कता में।
—णो—वि० चंचल चपल। उद्यत तैयार।
अजगंधका, (गंधणी, गंधा, गंधिनी)—स्त्री० वन तुलसी, अजमोदा, अजवायन पौधा।
अजगर—पु० [सं०] १ एक जाति विशेष का मोटा सर्प। २ आलसी व्यक्ति।—वरती, व्रत्ति, व्रित्ती—स्त्री० अकर्मण्यता, आलस्य।
अजगरियो—वि० अजगर या अजमेर संबंधी।
अजगरी—स्त्री० अकर्मण्यता आलस्य।
अजगव, अजगाव—पु० [सं० अजगवा, अजगाव] शिव का धनुष, पिनाक।
अजाणेब अजगैब—क्रि० वि० अकस्मात, अचानक। अनजाने।
अजड़, अजड़ो अजड़ अजड़ौ—वि० [सं० अ + जड] १ जो जड न हो। २ सजीव। ३ मूर्ख, ना समझ। ४ उद्दण्ड। ५ असभ्य। ६ स्वर्ण जटित (मेवात)।
—पु० अशिक्षित बैल, ऊंट या भैंसा।
अजड़ —देखो 'अजाणा'।
अजटा—वि० जटा या जटा रहित।
अजत, अजत—वि० [सं०] १ अजन्मा, स्वयंभू। २ सुनसान, निर्जन।—पु० १ निर्जन स्थान। २ सहस्रार्जुन। ३ ब्रह्मा।
अजांबी—वि० [फा०] अपरिचित, अजात।
अजनम अजनमो—वि० [सं० अजन्मा] १ जन्म रहित, स्वयंभू, अजन्मा। २ नित्य, अनादि। ३ अनश्वर, अविनाशी।—पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ सूर्य।
अजनी—स्त्री० [सं० अजा] १ बकरी। २ देखो 'अजनी'।
अजन्न—देखो 'अजन'।
अजन्म—देखो 'अजनम'।
अजप, अजपो—पु० [सं० अजप] १ परब्रह्म। २ गायत्री मंत्र जिसका बार श्वास-प्रश्वास होता है। ४ ब्राह्मण। ५ [illegible] ६ एक नास्तिक मत। [illegible]। ८ दरिद्र।
अजप्प [illegible]
अजब, अजब्ब—वि० [अ०] अद्‌भुत, आश्चर्यजनक, विलक्षण।
—घर—पु० प्राचीन व अद्‌भुत वस्तुओं का प्रदर्शनालय।
अजमत, (ति)—स्त्री० [अ०] १ शान, प्रतिष्ठा, गौरव। २ सम्मान, इज्जत आदर। ३ बड़ाई, महत्व। ४ बुजुर्गी। ५ प्रताप, प्रभाव। ६ चमत्कार।
अजमाइस, अजमाईस—देखो आजमाइस'।
अजमाणी, (बौ)—देखो 'आजमाणी' (बौ)।
अजमेरा—पु० १ चौहान राजपूत वंश। २ गौड राजपूत वंश।
अजमेरी—वि० अजमेर का, अजमेर सम्बन्धी।—पु० १ अजमेर का निवासी।—स्त्री० २ अजमेर प्रदेश की बोली।
अजमेरो—पु० १ चौहान वंशीय क्षत्रिय। २ गौड वंशीय क्षत्रिय। ३ अजमेर का निवासी। ४ अजमेर प्रदेश का बैल। ५ देखो 'अजमेरी'।
अजमो—पु० [सं० यवनिका] १ अजवायन। २ अजवायन का पौधा। ३ एक लोक गीत।
अजय—वि० [सं०] १ जो जीता न जा सके, अविजित। २ जो कभी पराजित न हो, जो हार न माने।—स्त्री० १ हार, पराजय। २ एक नदी।—पु० ३ विष्णु। ४ अग्नि। ५ एक छन्द।
अजयगढ—पु० अजमेर का किला।
अजयण, अजयणा—स्त्री० [सं० अयत्नता] १ हिंसा। २ असावधानी, अयत्नता। ३ जैन धर्म के विपरीत आचरण।—वि० विवेक रहित
अजयपाळ—पु० [सं० अजयपाल] १ एक राजा का नाम। २ जमाल घोटा।
अजया—स्त्री० [सं०] १ दुर्गा देवी। २ माया। ३ भाग, विजिया। ४ बकरी।—वि० जो जीति न जा सके, अविजित।
अजर—वि० [सं०] १ जरा रहित, सदैव युवा। अनश्वर, अविनाशी ३ जिसका कभी क्षय न हो, अमर, स्थाई। ४ बलवान, जबरदस्त। ५ अविजित। ६ सुन्दर। ७ जो हजम न हो सके।—पु० १ देवता। २ परब्रह्म, ईश्वर। ३ शिव, महादेव। ४ विष्णु। ५ श्री कृष्ण। ६ हनुमान। ७ आत्मा। ८ एक आभूषण।—अमर—वि० जरावस्था व मृत्यु से रहित।—पु० ईश्वर। आशीर्वचन।
अजरख—स्त्री० नहमद, लुंगी।
अजरट, अजरठ—वि० [सं० अ+जरठ] १ नर्म, नाजुक, मुलायम। २ युवा। ३ बलवान। ४ कच्चा। ५ सहृदय।
अजरामरा—स्त्री० एक महा विद्या।
अजरायक, अजरायळ, अजराळ, अजरायर, अजरावळ, अजरेत, अजरेळ, अजरंत, अजरंळ, अजरो—वि० [सं० अजर+रा प्र आयन] १ सदा नवीन।

२ अपरिवर्तनीय । ३ पक्का, दृढ । ४ अमिट । ५ चिर स्थाई । ६ निर्भय, निडर, निशक । ६ शक्तिशाली । ८ चचल, नटखट । ९ उद्दण्ड, उत्पाती । १० पहलवान । ११ वीर, योद्धा । १२ जोशीला । १३ भयकर, भयावह ।

अजवाण, अजवाणी, अजवाइन, अजवायण, अजवायणि, अजवायन–स्त्री० अजवायन, अजमा ।

अजवाळ–१ देखो 'उजळ' । २ देखो 'उजाळौ' ।

अजवाळणौ (बौ)–देखो 'उजाळणौ (बौ) ।

अजवाळी–देखो 'उजाळी' ।

अजस–पु० [स० अ-यश] १ अपयश, अपकीर्ति, बदनामी । २ निंदा, बुराई ।

अजसी–वि० १ यश या कीर्ति विहीन २ निंदित । ३ जो विख्यात न हो ।

अजस्र–क्रि० वि० [स०] १ सदा, सर्वदा । २ निरन्तर, लगातार ।–वि० चिरस्थाई ।

अजहति, अजहत्स्वारथा–स्त्री [स० अजहत्वार्था] लक्षणा शब्द शक्ति का एक भेद ।

अजहद–वि० [फा०] अत्यधिक, अपार, असीम ।

अजहु, अजा–क्रि० वि० अभी तक । अब तक ।

अजाण–वि० [स० अज्ञान] १ अनभिज्ञ, अनजान, अपरिचित । ३ मूर्ख । अज्ञानी । ४ ना समझ ।–ता–स्त्री० अनभिज्ञता, अपरिचय । मूर्खता, अज्ञानता ना समझी ।

अजाणभुग–देखो 'आजान बाहु' ।

अजाणवक, अजाणजक, अजाणजख–देखो 'अचाणक' ।

अजाणवौ, अजाणु–देखो 'अजाण' ।

अजाणियौ, अजाण्यौ–वि० [स० अज्ञान] (स्त्री० अजाणी) १ अपरिचित । २ अज्ञात । ३ अज्ञानी, मूर्ख । ४ जिसे जानकारी न हो ।–क्रि० वि० १ विना जाने ही । २ अकस्मात, अचानक ।

अजान–स्त्री० [अ० अजान] नमाज के लिये मुल्ला द्वारा लगाई जाने वाली आवाज ।–वि० [स० अ+फा० जान] १ प्राणरहित, निर्जीव । २ देखो 'अजाण' ।

अजानभुग, अजानवाह, अजानबाहु–देखो 'आजानबाहु' ।

अजाबिका–स्त्री० १ भादव कृष्णा एकादशी । २ इस तिथि का व्रत ।

अजा–स्त्री० [स०] १ माया शक्ति । २ दुर्गा, पार्वती । ३ प्रकृति । ४ बकरी । ५ भादव कृष्णा एकादशी । ६ इस तिथि का व्रत । [अ०] ७ शोक, मातम, मातमपुर्सी । –वि० जन्म रहित, जो उत्पन्न न की गई हो ।

अजाच, अजाचक, अजाची–वि० [सं० अ+याचक, अ+याची] जो कभी याचना न करे, जिसे कुछ मागने की आवश्यकता न हो । सम्पन्न ।

अजाजती, अजाजिती–स्त्री [फा०] इजाजत, आज्ञा, हुक्म, आदेश । –क्रि० वि० आज्ञा से, हुक्म से ।

अजात–वि० [स०] १ जो अभी उत्पन्न न हुआ हो, अनुत्पन्न । अजन्मा २ जातिहीन, अजातीय । ३ अविकसित ।
—**अरि, सत्र, सत्रु**–वि० जिसका कोई शत्रु न हो । —पु० युधिष्ठिर की एक उपाधि । शिव का एक नामान्तर । मगध नरेश बिंबसार का पुत्र ।

अजाति, अजाती–वि० १ जातिहीन, अजातीय । २ अन्य जाति का, विजातीय । ३ जातिच्युत या बहिष्कृत । ४ पतित ।

अजाथर–पु० [देश] बोझा, वजन । २ सकट, दुख । ३ कलक ।

अजाप–देखो 'अजप' ।

अजामळ, अजामिळ, अजामीळ, अजामेळ–पु० [स० अजामिल] एक पापी ब्राह्मण जो अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेकर तर गया ।

अजामेघ–पु० [स०] एक यज्ञ जिसमे बकरे की बलि दी जाती है ।

अजायब–देखो 'अजब' ।

अजायबखानौ, अजायबघर–देखो 'अजबघर' ।

अजायबी–स्त्री० विचित्रता ।

अजायौ–वि० [स० अजात] जन्म न लेने वाला, अजन्मा । –पु० ईश्वर ।

अजारी–देखो 'इजारी' ।

अजिउ–देखो 'अजै' ।

अजिठा–स्त्री० मृगछाला ।

अजित–वि० [स०] जो जीता न जासके, अजय ।–पु० १ विष्णु । २ शिव । ३ कृष्ण । ४ बुद्ध । ५ अजितनाथ । दूसरा तीर्थकर (जैन) ।—**वीरज, वीरय**–पु० २०वें विहरमान तीर्थ कर ।

अजितेंद्रिय, अजितेंद्रीय–वि० [स० अ-जितेन्द्रिय] इन्द्रियो का वशी भूत, इन्द्रियासक्त, इन्द्रियलोलुप ।

अजिन–स्त्री० [स० अजिनम्] मृगचर्म, मृग छाला ।

अजिय–देखो 'अजित' ।

अजिया–देखो 'अजा' ।

अजीय, अजीयउ–क्रि० वि० यद्यापि अभी, ठीक अभी इस समय ।

अजिर–पु० [स०] १ आगन, सहन । २ चौक । ३ अखाडा । ४ शरीर । ५ इन्द्रियगम्य कोई पदार्थ । ६ पवन, हवा । ७ मेढक ।–वि० १ तेज, तीव्र । २ फुर्तीला, चुस्त ।

अजिहम–पु० [स० अजिह्म] मेढक, दादुर ।–वि० [स अजिह्म] १ सीधा-सादा, सरल । २ ईमानदार । ३ निष्कलंक, बेदाग ।

अजिहमग–पु० [स० अजिह्मग] तीर वाण ।–वि० [स० अजिह्मग] अपनी सीध मे जाने वाला ।

अजीं–देखो 'अजै' ।

अजी–अव्य [स० अयि] १ सम्बोधन सूचक अव्यय शब्द, अरे, ए । २ देखो 'अजै' ।

अजीउ–देखो 'अजै' ।

अजीज–वि० [अ०] १ प्रिय, प्यारा । २ सम्माननीय, प्रतिष्ठित ।–पु० १ मित्र दोस्त । २ सम्बन्धी, रिश्तेदार । ३ देखो 'आजिजी' ।

अजीठौ–पु० स्वर्णकारो का औजार विशेष ।

अजीत–देखो 'अजित' ।

अजीतनाथ–देखो 'अजितनाथ' ।

अजीब–वि० [अ०] १ विलक्षण, विचित्र, अनूठा । २ वह स्थिति जिसके हम आदि न हो । ३ असमान्य अनुभूति ।

अजीय–१ देखो 'अजित' । २ देखो 'अजै' ।

अजीया–देखो 'अजा' ।

अजीरण, अजीरण्ण अजीरण–पु० [स० अजीर्ण] १ अपच, बदहजमी । २ मंदाग्नि । ३ वीर्य । ४ शक्ति, पराक्रम । ५ ओज, पौरुष । —वि० १ पचा हुआ । २ जो जीर्ण न हो, नया ।

अजीरनग्रह–पु०यौ० पारसियो की तीसरी नमाज का अपराह्नकाल ।

अजीव, अजीवन–वि० [स०] १ जीव या प्राण रहित, निर्जीव । २ मृत, मरा हुआ । ३ चेतना, शून्य, मूर्छित । —पु० मृत्यु, मौत ।

अजु–अव्य० १ और, अन्य । २ जो । ३ देखो 'अजे' ।

अजुआळ–देखो 'अजुआळ' ।

अजुआळणौ (बौ)–क्रि १ प्रकाशित करना, रोशन करना, २ उज्ज्वल करना ।

अजुआळौ, (वाळौ)–देखो 'उजाळौ' ।

अजुक्त, अजुगत–वि० [स० अयुक्त] १ जो युक्तियुक्त न हो, अनुचित । २ अयोग्य । ३ जो मिला हुआ न हो, जुडा हुआ न हो । ४ अलग । ५ असत्य, झूठा ।

अजुगति–स्त्री० [स० अयुक्ति] असगत बात । अनुचित बात ।

अजुध्या–देखो 'अयोध्या' ।

अजुसार–पु० वेग ।

अजू–देखो १ 'अजु' । २ देखो 'अजै' ।

अजूणौ–वि० भयकर, डरावना ।

अजूंस–देखो 'अजेस'

अजू–१ देखो 'अजै' । २ देखो 'अजु' ।

अजूआळ–देखो 'उजाळौ' ।

अजूणी–देखो 'अजोणी' ।

अजूबा (बौ)–वि० [अ०] अनोखा, अद्भूत, विचित्र ।

अजूयाळ–देखो 'उजुआळ' ।

अजूयाळउ–देखो 'उजाळौ' ।

अजूह–पु० १ युद्ध, लडाई । २ समूह, यूथ ।

अजे–देखो १ 'अजै' । २ देखो 'अजय' ।

अजेज–क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त अविलंब ।

अजेजौ–वि० जो शीघ्रता करे, उतावला ।

अजेन–देखो 'अजित' ।

अजेय–वि० [स०] जो जीता न जा सके ।

अजेव–१ देखो 'अजीव' । २ 'अजेय' ।

अजेस, अजै क्रि०वि० [स० अद्य] १ अब तक । २ अभी तक ।

अजैण–देखो 'अजयण' ।

अजैपाळ अजैपाळिपौ अजैपाळ्यौ–देखो 'अजयपाल' ।

अजै-विजै, अजै-विजै–देखो 'इजै-विजै' ।

अजोकती, अजोगती–वि० जो युक्तियुक्त न हो । असगत । अप्रासगिक ।—स्त्री० अप्रत्याशित तीर-तुक्का वाली बात ।

अजोग–१ देखो 'अयोग्य' २ देखो अयोग' ।

अजोगाई–स्त्री० [स० अयोग्यता] १ नाकाबलित, अयोग्यता । २ अभाव कमी ।

अजोगौ–देखो 'अयोग्य' ।

अजोग्य देखो 'अयोग्य' ।

अजोग्य-जोग्य-जथा–पु० डिंगल गीत रचना का एक नियम जिसमे अयोग्य के साथ योग्य का वर्णन हो ।

अजोड, अजोडौ–वि० [स० अ+युग्म] १ अद्वितीय, बेजोड । २ अद्भुत, विशेष । ३ विरुद्ध ।

अजोणानाथ–देखो 'अजोणीनाथ' ।

अजोणिय, अजोणी (नी)–वि० [स० अयोनि] १ जिसकी कोई योनि न हो । २ जो उत्पन्न न हुआ हो ।—पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ शिव । ३ ब्रह्मा । –**नाथ**–पु० शकर, ब्रह्म ।

अजोत–वि० ज्योतिहीन ।

अजोधिया, अजोधीया, अजोध्या–स्त्री० [स० अयोध्या]–सरयू नदी के किनारे बसा एक प्राचीन नगर । —**नाथ**–पु० श्रीरामचन्द्र ।

अजोरी–वि० अद्वितीय ।

अजोरौ–वि० निर्बल, कमजोर, अशक्त ।

अजौं–क्रि० वि० [स० अद्य] अब तक, अब भी ।

अजौ—वि० [स० अज+रा० औ] १ अजन्मा, जन्मरहित। [फा० अजव] २ अजव, अद्‌भुत। —पु० १ ब्रह्मा। २ वकरा।

अज्ज—पु० [स० आर्यावर्त्त] १ भारतवर्ष। २ देखो 'अज'।

अज्जण—देखो 'अजन'।

अज्जमडल—पु० भारतवर्ष।

अज्जव—देखो 'अजव'।

अज्जाणचक, अज्जाणजक, अज्जाणजक—देखो 'अचाणक'।

अज्जाणवौ—देखो 'अजाण'।

अज्जा, अज्या—देखो 'अजा'।

अज्जुण—देखो 'अरजुण'।

अज्यास, अज्यासौ—पु० १ अशाति। २ असतोप। ३ अविश्वास। ४ क्षोभ। ५ अस्थिरता। ६ अनिश्चय।

अझड़, अझर—वि० १ न वरसने वाला। २ न झडने वाला।

अझळकणौ (बौ)—क्रि० उत्तेजित होना, आपे मे न रहना।

अझाळ—वि० १ देदीप्यमान, तेजस्वी। २ ज्वालास्वरूप। ३ पराक्रमी।

अटकौ—वि० १ निशक, निडर। २ जवरदस्त। ३ अधिक।

अटक—स्त्री० १ रुकावट, रोक। २ वाधा, अडचन। ३ उलझन दुविधा, हिचक। ४ सिंधु नदी का नाम। ५ परहेज। ६ कारागृह, जेल।

अटकण, अटकणी—स्त्री० १ रोक या वाधा देने वाली वस्तु। २ सहारा। ३ अर्गला, रोक।

अटकण-वटकण—पु० यौ० एक देशी खेल।

अटकणौ, (बौ)—क्रि० १ रुकना, अटकना। २ उलझना, फसना। ३ रुक-रुक कर वोलना, हकलाना। ४ अडना। ५ डिगना ६ रोकना।

अटकळ, (पच्चू)—स्त्री० १ तरकीव, युक्ति। २ अनुमान, अदाज। ३ कल्पना।

अटकळणौ (बौ)—क्रि० १ तरकीव या युक्ति लगाना, उपाय करना। २ अनुमान या अन्दाज लगाना। ३ कल्पना करना।

अटकाण—देखो 'अटकण'।

अटकाणौ (वौ)—क्रि० १ रोकना, अटकाना। २ उलझाना, फसाना। ३ अडाना। ४ डिगाना।

अटकाव—पु० १ रुकावट। २ वाधा। ३ विघ्न। ४ परहेज़। ५ अडचन।

अटकावणौ, (बौ)—देखो 'अटकाणौ, (वौ)।

अटकौ—पु० देव-मदिरो मे नैवेद्य वनाने का वडा पात्र व नैवेद्य। २ देखो 'अटकाव'।

अटक्कणौ, (बौ)—देखो 'अटकणौ' (वौ)।

अटखेल, (ली)—[स० अष्ट-क्रीडा] १ मनोरजन, दिल वहलाव। २ खेल, क्रीडा। ३ कौतुक। ४ मखौल, मजाक। ५ ढीठाई, चचलता। ६ मस्तचाल।

अटण—पु० [स० अतन] १ पैर, चरण। २ पर्यटक, यात्री।

अटणौ (वौ)—क्रि० [स० अतनम्] १ चलना, फिरना। २ घूमना। ३ यात्रा या भ्रमण करना।

अटपट—१ देखो 'अटपटौ'। २ देखो 'अटपटी'।

अटपटाई—स्त्री० १ अडचन, असुविधा। २ झुंझलाहट। ३ असुहावनी। ४ हिचक।

अटपटाणौ, (बौ), अटपटावणौ, (बौ)—क्रि० १ अटपटा लगना। २ झुझलाहट होना। ३ हिचकना। ४ घवराना। ५ असुविधा होना।

अटपटी—वि० १ तिरछी, टेढी। २ नटखट, चचल। ३ विचित्र, अद्‌भुत। ४ चुभने वाली, असुहावनी। ५ उलझन वाली।

अटपटौ—वि० १ टेढा-मेढा। २ कठिन, विकट, दुस्तर, गूढ गहरा। ३ अनुचित, अनोखा।

अटम-सटम—वि० यौ० १ अंट-सट। २ वेतरतीव।

अटयासी—देखो 'इठियासी'।

अटयासीयौ—देखो 'इठियासियौ'।

अटळ, अटल—वि० [स० अटल] १ न टलने वाला, अडिग। २ दृढ, पक्का। ३ ध्रुव। ४ नित्य, शाश्वत। ५ अवश्यभावी। ६ अचल, स्थिर।

अटळज—स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

अटल्ल—देखो 'अटल'।

अटवि, (वी)—स्त्री० [स०] १ वन, जगल। २ हिंस्र जतुओ का आवास स्थान।

अटव्यासण (न)—पु० जगल का निवास, वनवास।

अटसट—देखो 'अडसठ'।

अटान—देखो 'अटा'।

अटामण—देखो 'अटायन'।

अटा—स्त्री० १ अटारी। २ वादलो की घटा।

अटाट्ट—वि० १ विलकुल, नितान्त। २ अत्यधिक।

अटाटोप—वि० १ आच्छादित। २ आवृत्त।

अटायण (न)—स्त्री० खाट की निवार।

अटारी—स्त्री० [स० अट्टाल] १ मकान की दूसरी मजिल। २ प्रासाद, महल।

अटाळ—स्त्री० [स० अट्टाल] १ ऊचा स्थान। २ वुर्ज, मीनार। ३ कोठा। ४ मचान। ५ विवाह के अवसर पर उपयोग मे लिया जाने वाला एक प्रकार का उवटन। ६ देखो 'औटाल'।

अटाळि, अटाळिका—स्त्री० [स० अट्टालि, अट्टालिका] १ महल, भवन। २ राज्य-प्रासाद। ३ अटारी।

अटाळौ–पु० [स० अट्टाल] १ बेकार वस्तुओं का ढेर। २ कचरा, कूड़ा।

अटूटळ (ळौ)–वि० (स्त्री० अटूटळी) १ अपाहिज। २ पगु।

अटूट–वि० [स० अ+त्रुट] १ न टूटने वाला, अखड। २ निरन्तर। ३ दृढ, मजबूत। ४ अपार, अनत। ५ अजेय।

अटे, (टै)–देखो 'अडै'।

अटेर–वि० १ न मुडने वाला। २ विजयी।

अटेरण, अटेरणौ–पु० सूत की लच्छी बनाने का उपकरण।

अटेरणौ, (बौ)–क्रि० १ सूत को लपेटना, लच्छी बनाना। २ अधिक भोजन या नशा करना।

अट्ट–देखो 'अटारी'।

अट्टहास, (स्य)–पु० [स० अट्टहास, अट्टहास्यम्] अत्यधिक जोर से हसने की क्रिया, भाव या शब्द, ठहाका।

अट्टी–स्त्री० १ सूत की लच्छी। २ आधी दमडी। ३ देखो 'आटी'। ४ देखो 'अठी'।

अट्टौ–पु० [स० अट्टम्] १ मचान। २ अदल-बदल। ३ देखो 'अट्टी'।

अट्ठ-देखो 'आठ'।

अट्ठाणमौ–वि० अठाणू के स्थान वाला।

अट्ठाणू–वि० नव्वे और आठ के योग के बराबर। —पु० नव्वे और आठ के योग की सख्या, ९८।

अट्ठाणूक–वि० अट्ठानवे के लगभग।

अट्ठाइस, अट्ठाईस–वि० [स० अष्टविंशति] बीस और आठ के बराबर। बीस और आठ के योग की सख्या, २८।

अट्ठाइसौ–पु० अट्ठाइसवा वर्ष।

अट्ठोत्तर, अट्ठोत्तरसउ अट्ठोत्तरसौ–पु० [स० अष्ट-उत्तर-शत] एक सौ आठ की सख्या।

अठतर–देखो 'इठतर'।

अठतरौ–देखो 'इठतरौ'।

अठ–देखो 'आठ'।

अठप–वि० [देशज] १ चचल। २ न रुकने वाला। ३ दृढ।

अठकळ–देखो 'अटकल'।

अठकेल, (ली), अठखेल, (ली)–देखो 'अटखेल'।

अठडोतर–पु० एक सौ आठ की सख्या।

अठताळौ–पु० १ डिंगल का एक गीत या छन्द। २ देखो 'अडताळौ'।

अठतीस (त्रीस) देखो 'अडतीस'।

अठत्तर–देखो 'इठतर'।

अठत्तरमौ–देखो 'इठतरमौ'।

अठपेटू–वि० [स० अष्ट-पटल] आठ पार्श्व या कोने वाला। —पु० १ अठपहला। २ अष्ट भुजा।

अठमासियौ, अठमासौ–पु० १ आठ मासे का तोल। २ गर्भ के आठवें मास से उत्पन्न शिशु।—वि० आठ महीने का।

अठयासियौ–देखो 'इठियासियौ'।

अठयासी–देखो 'इठियासी'

अठळाणौ (बौ), अठळावणौ, (बौ)–क्रि० १ इठलाना, इतराना। २ नखरे करना, चोचले करना। ३ गर्व करना। ४ मदोन्मत्त होना।

अठवाडौ–पु० १ आठ दिन का समय या अवधि। २ आठवा दिन।

अठवाळी–स्त्री० [स० अष्ट+आलुच] आठ कहारो द्वारा उठाई जाने वाली डोली।

अठसठ, (ठि)–देखो 'अडसठ'।

अठस्रवण–पु० [स० अष्ट-श्रवण] ब्रह्मा। —वि० आठ कानो वाला।

अठाणवौ–देखो 'अट्ठाणमौ'।

अठाणी–वि० [स० अष्ठगु] १ दृढ, मजबूत, अडिग। २ आठ। ३ बलवान, शक्तिशाली। ४ अधिक, बहुत।

अठाणू–देखो 'अट्ठाणू'।

अठाणूक–देखो 'अट्ठाणूक'।

अठास–वि० १ दृढ, मजबूत। २ गभीर। ३ वीर।

अठाइ, अठाई–स्त्री० अष्ट दिवसीय व्रत। (जैन) २ देखो 'अट्ठाइस'।

अठाइसौ–देखो 'अट्ठाइसौ'।

अठाउ, अठाऊ–क्रि० वि० यहा से, इधर से।

अठाणू–देखो 'अट्ठाणू'।

अठार, (रे)–वि० [स० अष्टादश] दस और आठ के बराबर। —पु० १ दस और आठ की सख्या। २ पुराणो की सख्या–सूचक शब्द। ३ चौसर का एक दाव।

अठारटकी देखो 'अढारटकी'।

अठारभार–पु० अष्टादश भार वनस्पति।

अठारह–वि० दस व आठ के बराबर। —पु० दस व आठ के योग की सख्या, १८।

अठारौ–पु० अठारह का वर्ष।

अठालग–क्रि०वि० यहा तक।

अठावन–वि० पचास व आठ। —पु० अट्ठावन की सख्या, ५८।

अठावनौ–पु० अठावन का वर्ष।

अठावीस–देखो 'अट्ठाइस'

अठासी–देखो 'इठियासी'।

अठि (ठी)–क्रि०वि० [स० इतस्] १ यहा। २ इधर। —वि० [स० अष्ट] १ आठ। २ देखो 'आठी'।

अठिकाणी–(नी)–क्रि० वि० इधर, इधर से, इधर की ओर।

अठिनाउ (ऊ)–क्रि०वि० यहा से, इधर से।

अठी–क्रि०वि० इधर, यहाँ।

अठी-उठी–क्रि०वि० [अनु०] यहा-वहा, इधर-उधर।
अठीक–वि० झूठ, मिथ्या।
अठीनलौ, अठीलौ–वि० (स्त्री० अठीनली, अठीली) इधर का।
अठीनै–क्रि०वि० इस तरफ, इस ओर।
अठीफौ–वि० (स्त्री० अठीफी) हृष्ट-पुष्ट, मजबूत।
अठीलौ–वि० (स्त्री० अठीली) इस ओर का, इधर का।
अठे (ठै)–क्रि०वि० यहा, यहा पर।
अठेल, अठेलमौ–वि० १ जिसे हटाया न जा सके, अचल। २ वीर ३ बहुत, अपार।
अठोकौ–वि० १ शक्तिशाली, बलवान। २ दृढ, मजबूत। ३ वीर।
अठोट, अठोठ–वि० १ पढा-लिखा। २ विद्वान्।
अठोतर–देखो 'इठतर'।
अठोतरसौ–पु० [स० अष्ट-शत] १०८ की सख्या।
अठोतरी-स्त्री० १०८ मनिको की माला।
अठोतरौ–देखो 'इठतरौ'।
अठोर, अठोरी–वि० दृढ, मजबूत। २ तीव्र, तेज।
अठ्ठी–१–देखो आठी'। २ देखो 'अठि'।
अठ्ठे, अठ्ठै–देखो 'अठे'।
अठ्ठौ–पु० डिंगल का एक गीत (छद)।
अडगावाज–देखो 'अडगावाज'।
अडगौ–देखो 'अदगौ'।
अडड–देखो १ 'अदड'। २ देखो 'उदड'।
अडंडणीय–वि० [स० अदण्डनीय] जो दड पाने योग्य न हो, अदण्ड्य।
अडडा-डड–वि० जिसको दण्ड देने की सामर्थ्य न हो, उसे भी दण्ड देने वाला।–पु० ईश्वर।
अडबर–देखो 'आडबर'।
अडकारणौ, (बौ)–क्रि० १ मारना, वध करना। २ खाना, हजम कर जाना।
अडग, अडगी–देखो 'अडिग'।
अडगनियौ– देखो 'ओगनियौ' (मेवात)।
अडपणौ (बौ)–क्रि० १ हठ या जिद्द करना। २ साहस करना। ३ अपनी वात पर अडिग रहना।
अडपेंच, अडपेच–पु० पगडी की पडी लपेट।
अडवध–देखो 'आडवध'।
अडर–वि० डररहित, निडर।
अडळ–पु० सोलह मात्रा का छद जिसमे लघु-दीर्घ का नियम न हो।
अडवाणी–स्त्री० १ सिंचाई की क्रिया। २ सिंचाई की भूमि।
अडवाळणौ (बौ) -क्रि० अधिकार या वश मे करना।
अडांण–पु० १ मकान वनाते समय लट्ठे वाध कर वनाया जाने वाला चढने-उतरने का रास्ता। २ ऊची एव खडी दीवार पर पुताई आदि करते समय रस्से वाध कर वनाया जाने वाला आधार। ३ कमजोर छत के नीचे लगाया जाने वाला सहारा।
अडाणी, अडाणू, अडाणौ–वि० गिरवी, रेहन।—स्त्री० १ गिरवी रखने की क्रिया या भाव। २ गिरवी रखी हुई वस्तु।
अडाइ, अडाई–देखो 'अढाई'।
अडागर–पु० एक प्रकार की नागरवेल व उसका पत्ता।
अडायटौ–पु० ओढने का सूती वस्त्र।
अडारगिर–देखो 'अढारगिर'।
अडारटकी–देखो 'अढारटकी'।
अडारौ–पु० अजीर्ण, अपच।
अडिग–वि० १ स्थिर, अचल। २ दृढ, मजबूत। ३ वीर।
अडिला, अडिल्ला–पु० सोलह मात्राओ का छद जिसमे 'जगण' वर्जित है।
अडींग–वि० १ जवरदस्त, भयकर। २ वलवान।
अडीक–देखो 'उडीक'।
अडीकणौ (बौ)–देखो 'उडीकणौ' (वौ)।
अडीठ–वि० [स० अदृश्य] १ अदृश्य, लुप्त। २ छुपा हुआ, गुप्त। ३ दृष्टि से परे। ४ अन्तर्धान। —पु० १ एक प्रकार का विषैला फोडा। २ दुर्भाग्य। ३ प्राकृतिक उत्पात। **–चकर**, चक्र-पु० दैवी प्रकोप। भाग्य का चक्र।
अडीरळ–वि० १ वीर, वहादुर। २ भयकर।
अडील (लौ)–वि० १ विना शरीर का, देहविहीन। २ दृढ।
अडूर–वि० १ अत्यधिक, वहुत। २ निडर, निर्भय।
अडेल–वि० १ अडियल। २ सुस्त।
अडोकण–पु० लुढकने वाली वस्तु को स्थिर रखने के लिए लगायी जाने वाली वस्तु, रोक।
अडोळ (ळौ)–वि० (स्त्री० अडोळी) १ अचल स्थिर। २ स्तब्ध ३ विना गढ़ा हुआ। ४ सूखा हुआ। ५ आभूषण रहित। —पु० १ पहाड। २ वडा पत्थर।
अडोळणौ (बौ)–क्रि० १ मारना, वध करना। २ भक्षण करना खाना। ३ भ्रमण करना। ४ देखो 'डोळणौ' (वौ)।
अड्डौ–पु० ठहरने का स्थान। २ जूआरियो या आवारा व्यक्तियो के बैठने का स्थान। ३ वेश्याओ का स्थान, चकला। ४ केन्द्र स्थान। ५ वास की पट्टी का गोला जिसमे कपडा फसा कर कसीदा किया जाता है। ६ स्वर्णकारो का औजार विशेष।
अढगाण, अढंगी, अढगौ–वि० १ विकट, दुर्गम। २ भयकर। ३ अनोखा, विचित्र। —पु० कामदेव।
अढढढ–अव्य० खेद, क्लेश, शोक या आश्चर्य सूचक ध्वनि।
अढ़तौ–वि० १ समान, वरावर। २ विशिष्ट।

अढर–वि० १ सुदर । २ दृढ, मजबूत ।
अढरह–देखो 'अठारह' ।
अढ़ळक–वि० उदार ।
अढवौ–वि० १ अधिक । २ विशेष । ३ अद्‌भुत ।
अढ़ाई–वि० दो आधे के बराबर, ढाई । —पु० ढाई की सख्या, २॥ या २½ ।
अढाइटौ–देखो 'अडायटौ' ।
अढ़ायौ–पु० ढाई का पहाडा ।
अढ़ार–वि० १ अत्यधिक । २ देखो 'अठारह'—टक, टंकी–धनुष विशेष ।
अढ़ारगर, (गिर, गिरि, गिरी)–पु० १ आबू पर्वत का एक नाम । २ अठारह भार वनस्पति वाला पर्वत ।
अढ़ारदानी–स्त्री० एक प्रकार का दीपक ।
अढ़ारभार–देखो 'अठारभार' ।
अढ़ारियौ–वि० लफगा ।
अढ़ारे (रै)–देखो 'अठारह' ।
अण–देखो 'अणु' ।
अणक–पु० गर्व अभिमान ।—ळ–वि० दोप रहित, निष्कलक । निर्भय, निडर । वीर । स्वाधीन, स्वतत्र । अपार, असीम ।
अणजर–पु० ईश्वर ।
अणत–देखो 'अनत' ।
अणतचोदस (चौदस)–देखो 'अनतचतुरदसी' ।
अणद–देखो 'आनद' ।
अणवर–देखो 'अणवर' ।
अण–वि० विना, वगैर ।—वि० अन्य, दूसरा । देखो 'इण' । —अजन–पु० ईश्वर । —अपराध–पु० निरपराध । —अवसर–पु० कुअवसर, वेमौका । अवकाश का अभाव । —उदम–पु–वेकारी । —कमाऊ–वि० निठल्ला, निकम्मा । —कळळ–पु० विष्णु । शिव । —कूत–वि० विना आका हुआ । —खीलियौ, खीलौ–वि० वधन रहित ।—खूट–वि० अक्षय ।—गणत, गिणत, गिणती–वि० अगणित, विना गिना —गंम, गम, गम्य–वि० अगम्य ।—गेम–वि० निष्पाप, अपार, वहुत । निष्कलक ।—चर–वि० अचर, जड ।—चायौ, —चाहत, चाहौ–वि० अनीच्छित ।—चेत–वि० अचेत । —छेह–वि० अपार ।--जाण–वि० अनजान ।--जाची–वि० अयाची । —जीत–वि० अपराजित ।–जीमियौ–वि० भूखा । —जेज–क्रि०वि० अविलव । —डग–वि० अडिग । —डीठ–वि० अदृश्य । —डोल, डोलक–वि० अचल, स्थिर । —तोल–वि० अपरिमित । शक्तिशाली, वलवान । —थग, थाग, थाह–वि० अथाह, गभीर । —थिर–वि० अस्थिर, चचल । —दगियौ, दव, दाग, दागळ —वि० वेदाग, अदग्ध । —दिट्ठौ–वि० अदृश्य । —देह,देही–वि० निराकार । अशरीर ।-धार–वि०निराधार । —अधिकार–वि० अनधिकृत । —धीर–वि० अधीर । —ध्याय–पु० अवकाश, छुट्टी । —नाथ–वि० लावारिस । —नमियौ, नामी–वि० अनम्र । हठी, जिद्दी । वीर । —नीतौ–वि० अन्यायी —पढ़, पढ़ियौ–वि० अपठित । अनपढ । मूर्ख । —पाण–वि० अत्यधिक शक्तिशाली । —पार–वि० अपार । —पीणग–वि० न पीने वाला । —फेर–वि० न फिरने वाला, वीर । —बध–वि० अपार । —वधव–वि० वधु या मित्र रहित । —बीह–वि० निडर । —वोल, बोलियौ, बोलौ–वि० मौन, मौनी । गू गा, मूक । —भग, भंगी, भंगौ—वि० अखड । अमिट । अटूट । वीर । —पु० सिह, शेर । गरुड । —भग–वि० न भागने वाला । —भजियौ–वि० नास्तिक । —भणियौ–वि० अनपढ । —भाय, भावतौ- भावियौ–वि० अवाछित । —मानेतण, —मानेती–वि० मान्यताहीन । दुहागिन । [—माप, मापौ, मापै–वि० असीम, अपार —मायौ, माव, मावतौ–वि० असीम, अपार । —मिळिया–क्रि० वि० वगैर मिलै । —मीत–वि० अपार, असीम । —मोल, मोलौ–वि० अमूल्य । —रतौ, रागी -वि० वैरागी, विरक्त । मादा । —रुचि–स्त्री० अरुचि । —रूप–वि० निराकार । —लेख, लेखे–वि० अगोचर । अपार । —वंछक, वछी–वि० शत्रु । अवाछनीय । —वारीया–क्रि० वि० इस समय, अभी । विद्या—स्त्री० अविद्या । —विलोयौ–वि० विना मथा हुआ । — सकौ, सख–वि० निशक । —सोम–वि० असौम्य । —हद–वि० वेहद । —हित–पु० अहित । —हितु, हितू–वि० शत्रु । —हुतौ, हूत–वि० अनहोनी । गैर वाजिव । असभव । —हूतौ–अशोभनीय ।—हूंणी, होणी—वि० अनहोनी ।
अणक–वि० [स०] १ कुत्सित, निंदित । २ छोटा तुच्छ । ३ अधम, नीच । ४ अभागा ।
अणकळ–वि० १ वीर । २ निष्कलक । वेदाग । ३ शुभ्र । ४ अपार । ५ वेचैन । ६ स्वतत्र, निर्भय, निर्भीक । —क्रि०वि० विना विचारे ।
अणकानी–क्रि०वि० इस ओर ।
अणकीलौ–वि० १ तुनक मीजाज । २ ईर्ष्यालु ।
अणख–पु० [स० अनक्ष] १ क्रोध, कोप । २ दुख । ३ ग्लानि । ४ ईर्ष्या । ५ भुझलाहट । ६ नजर ।
अणखणाट–स्त्री० नाराजगी, उदासीनता, अट-पटी ।
अणखणौ (बौ)– क्रि० १ ईर्ष्या करना । २ टोकना । ३ चिढाना । ४ तिरस्कार करना ।
अणखरव–वि० १ वहुत, अधिक । २ अपार ।
अणखळी–स्त्री० भूगी, चापड ।

अणखादी, (धी)–क्रि॰वि॰ अकारण, बेकार में।
अणखावणा, (णौ) वि॰ १ अप्रिय। २ खिन्नचित्त।
अणखीं (लौ)–वि॰ १ क्रोधी। २ ईर्ष्यालु। ३ खिन्न।
अणगज–पु॰ १ कामदेव। २ वीर।
अणगम–देखो 'अगम'।
अणगळ–वि॰ १ बिना छना हुआ। २ अपार, असीम।
अणगारौ–पु॰ १ साधु। २ त्यागी।
अणगाळ–वि॰ वीर।
अणगिरा (त)–वि॰ अपार, असीम, बेहद।
अणगेम–वि॰ निष्कलक, बेदाग।
अणगौ–पु॰ श्रावण शुक्ला चतुर्दशी का आयोजित एक नागव्रत।
अणघड–वि॰ बेडौल।
अणचिंत, अणचिंतव्यौ, अणचित्यौ, अणचींतौ, अणचींत्यौ–वि॰ १ अकस्मात, अचानक, सहसा। २ असभव, अनहोनी।
अणचूक–देखो 'अचूक'।
अणचेत–देखो 'अचेत'।
अणछक–क्रि॰वि॰ अकस्मात, सहसा। वि॰ अपार, असीम।
अणछाणियौ (छांण्यौ)–वि॰यौ॰ बिना छाना हुआ।
अणडंड–वि॰ अदंडनीय।
अणत–पु॰ [स॰ अनन्त] १ भुजा पर बाधने का ताम्राभूषण। २ चौदह गाठो वाला सूत का गडा। ३ देखो 'अनत'।
—**मूळ**–पु॰ जगली चमेली। एक औषधि।
—**विजय**–पु॰ युधिष्ठिर के शख का नाम।
अणतियौ–वि॰ अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखने वाला।
अणदी–स्त्री॰ [देश] कुए की मोट के रस्से से जुडा लकडी का एक उपकरण।
अणदोह–देखो 'अदोह'।
अणपार–देखो 'अपार'।
अणबूझ–देखो 'अबूझ'।
अणभिग, अणभिग्य–वि॰ [स॰ अनभिज्ञ] १ अज्ञानी। २ अनजान। ३ अनाडी। –**ता**–स्त्री॰ अज्ञानता। अनाडीपन।
अणभेव, (भं, भेव)– वि॰ १ प्रत्युत्पन्नमति। २ विचित्र, अद्‌भुत। ३ निडर, निर्भय। ४ मौलिक उपज वाला।
अणमण, (णौ)–देखो 'उनमनौ'।
अणमा–देखो 'अणिमा'।
अणमौत–क्रि॰ वि॰ बेमौत, अकाल, असमय।
अणराय–देखो 'अणाय'।
अणरेस, अणरेह, अणरेहौ–वि॰ [स॰ अन्-रेखा] १ अपार, असीम। २ निराकार। ३ रेखाहीन। ४ निष्कलक। ५ विजयी। –स्त्री॰ पराजय।
अणवण, (त)–स्त्री॰ १ अनबन, खटपट। २ विरोध। ३ मनमुटाव।
अणवर–पु॰ विवाह के समय साथ रहने वाला दुल्हे का साथी या दुल्हिन की साथिन।
अणसभ, (व)–देखो 'असभव'।
अणसाधु–देखो 'असाधु'।
अणसार–देखो 'असार'।
अणसुणियौ, (णी, णौ)–वि॰ बिना सुना, अनसुना, अश्रुत।
अणसुभ (सुभ)–देखो 'असुभ'।
अणसूया–देखो 'अनसूया'।
अणसैंदाई–स्त्री॰ अपरिचय, वि॰ अपरिचित।
अणसैंदौ (धौ)–वि॰ अपरिचित, अजनबी।
अणहद (नाद)–१ देखो 'अनहद'। २ देखो 'अनाहत'।
अणहार–पु॰ १ अनाहार व्रत। २ जय-विजय।
अणहार (हारी)–देखो 'उणियार'।
अणागम–पु॰ [सं॰ अनागम] १ आगमन का अभाव। २ अज्ञान।
अणाद, (दि)–देखो 'अनादि'।
अणादर–पु॰ अनादर।
अणाय–स्त्री॰ याद, स्मृति।
अणाळ–पु॰ झूठ, असत्य।
अणावडौ, (णौ)–पु॰ [देश॰] याद, स्मृति।
अणावौ–१ देखो 'आणौ'। २ देखो 'अणावडौ'।
अणास–स्त्री॰ कठिनाई।
अणाहार–पु॰ अभक्ष्य पदार्थ (जैन)।
अणि, (णी)–स्त्री॰ [स॰] १ सुई, भाला आदि की नोक। २ शस्त्र की धार। ३ किनारा, कौना। ४ सीमा, हद। ५ सिरा। ६ भाला। ७ धुरी। ८ शिखर। [स॰ अनीक] ९ सेना, फौज। १० सेना का अग्रभाग। ११ देखो 'इण'।
—**आळी**–स्त्री॰ कटार, टिटहरी। —**पति**–पु॰ सेनापति।
—**पाणी**–स्त्री॰ मान प्रतिष्ठा, बल। –**भमर, मल**–वि॰ वीर।
—**मेळ**–पु॰ शस्त्र सघर्ष भिडत, टक्कर। –**यार**–वि॰ नुकीला, पैना। —स्त्री॰ आकृति, शक्ल। —**याळा, याळौ**–वि॰ नोकदार, तीक्ष्ण। –पु॰ ऊट, भाला।
अणिमा–स्त्री॰ [स॰] १ लघुता। २ अष्ट सिद्धियो मे से एक। ३ अति सूक्ष्म परिमाण।
अणिय–पु॰ १ कानो का अग्रभाग। २ देखो 'अणि'।
अणियाभमर, (भवर)–पु॰ १ सेनापति। २ योद्धा। ३ शौकीन व्यक्ति।
अणियारे (रै)–अव्य॰ शक्ल से मिलता-जुलता।
अणिहारौ–पु॰ शक्ल, सूरत, चेहरा।
अणीक–स्त्री॰ [स॰ अनीक] १ सेना, फौज। २ झुण्ड, दल। —वि॰ बुरा, खराब।
अणीखा, (खौ)–वि॰ [स॰ अनक्ष] १ भयानक, भयकर। २ जिसके सामने न देखा जा सके।

अणुंताई–स्त्री० १ हद से बाहर बात । २ अन्याय । ३ उद्दण्डता ।
अणुंतो–वि० स्त्री० अणूती, अति करने वाला, उद्दण्ड ।
अणु (णू)–पु० [सं० अणु] १ परमाणु सबंधी । २ कण, जर्रा । ३ रजकण । ४ लेश मात्र । ५ विष्णु । ६ शिव । ७ नैयायिकों द्वारा स्वीकृत पदार्थ विशेष जो पदार्थों का मूल कारण होता है । —वि० १ अत्यल्प । २ सूक्ष्म । ३ लघुतम । —पातक–पु० ब्रह्म हत्या के बराबर पाप । —बंध–देखो 'अनुबंध' । —भामा–स्त्री० विद्युत । —राव–पु० अनुकरण । —वाद–पु० दर्शन शास्त्र का सिद्धांत । —वीक्षण–पु० सूक्ष्म पदार्थ देखने का यन्त्र । —हाणौ–वि० नंगे पैर ।
अणुकंपा–देखो 'अनुकंपा' ।
अनुबंध–देखो 'अनुबंध' ।
अणुवाद–सं पु० [सं० अणुवाद] १ सिद्धान्त विशेष जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया है २ सिद्धान्त विशेष जिसमें पदार्थों के अणु नित्य माने गये हैं । ३ देखो 'अनुवाद' ।
अणुव्रत–पु० श्रावक के बारह व्रतों में से प्रथम पांच व्रत ।
अणुहार–देखो 'उणियार' ।
अणुहारौ–देखो 'उणियारौ' ।
अणूंत–स्त्री० १ शैतानी, बदमाशी । २ अन्याय । ३ असम्भव कार्य । ४ अभाव ५ बेहद ।
अणूंतौ (अणूंतौ)–वि० (स्त्री० अणूंती) १ बदमाश, उद्दण्ड । २ अन्यायी, आतताई । ३ चंचल, चपल । ४ अत्यधिक ।
अणूहार–देखो 'उणियार' ।
अणूहारौ–देखो 'उणियारौ' ।
अणे, (णै)–पु० रथ ।—अव्य० और ।–तौ–वि० असभव ।
अणेवर–स्त्री० दुल्हिन की सहचरी ।
अणेसौ–पु० १ दुःख, शोक । २ मानसिक कष्ट । ३ विरह । ४ आशंका । ५ ईर्ष्या, डाह ।
अणोआई, अणोई, (हाई)–स्त्री० श्वास रोग, दमा ।
अणोखौ–देखो 'अनोखौ' ।
अणोटपोळ–पु० स्त्रियों के पांव का आभूषण ।
अतक–देखो 'आतंक' ।
अतग–वि० दक्ष, निपुण ।
अतत–देखो 'अत्यत' ।
अतद्र–वि० १ निरालस्य, चंचल । २ विकल, आतुर ।
अत, (त)–वि० [सं० अति] १ अत्यधिक, बहुत । २ उच्चतर, श्रेष्ठतर । ३ बेहद । —स्त्री० १ अधिकता । २ शीघ्रता । —पु० ३ ईश्वर, परब्रह्म । ४ अधिकता सूचक उपसर्ग । —क्रि०वि० यहां, इस जगह ।–एव–क्रि०वि० इसलिये, इस प्रकार । —खम–पु० भाला । —ताई–वि० आततायी । —प्रसंग–पु० अत्यन्त मेल । अति विस्तार । व्यभिचार । —प्राण–वि० बलवान, शक्तिशाली ।–बेध–पु० युद्ध, समर । —सय–वि० अतिशय ।
अतंग, (गौ)–वि० [सं० उत्तुंग] ऊंचा, उच्च ।
अतट, अतड–पु० १ पर्वत-शिखर, चोटी । २ टीला । ३ समुद्र, सागर ।
अतण, (णौ)–पु० [सं० अतन] १ कामदेव । २ ईश्वर, ब्रह्म । —वि०१ तन रहित । २ निर्बल । ३ पुंसत्वहीन ।
अतमभवन, अतमभू–देखो 'आतमभू' ।
अतरंग–वि० १ तरंग रहित । २ शान्त । —पु०शान्त समुद्र ।
अतर (ह)– वि० १ अधिक, बहुत । २ तिरने में कठिन । —पु० १ समुद्री । २ देखो 'अत्तर' । ३ देखो 'इतर' ।
अतरुज–देखो 'अतळूज' ।
अतरे (रैं)–क्रि०वि० १ इतने में । २ इस अवसर पर ।
अतरोक–वि० [स्त्री० अतरी] १ इतना । २ अधिक ।
अतरौ–वि० [स्त्री० अतर] १ इतना । २ अधिक ।
अतळ, (ळौ)–वि० [सं० अतल] १ तल रहित । २ बिना पेंदे का । ३ अधिक । ४ निकृष्ट । —पु० [सं० अतलम्] दूसरा पाताल ।
अतळस, (स्स)– पु० [अ०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
अतळसी–वि० अतलस का, अतलस संबंधी । –पु० खोजाओं का एक भेद ।
अतळा–स्त्री० [सं० अचला] १ भूमि । २ नेत्रों की सुन्दरता ।
अतळाग–स्त्री० [देश०] याद ।
अतळीवळ (वर)– देखो 'अनिवळ' ।
अतळुज–स्त्री० श्वास नली में होने वाली खरखराहट ।
अतळौ–वि० १ आधार शून्य, खराब, बुरा ।
अतवार–वि० १ बेहद, अपार । २ देखो 'आदितवार' । ३ देखो 'एतबार' ।
अतस, अतसय–पु० [सं० अतिशय] बहुत, अधिक, अपार ।
अतसी–स्त्री० अलसी ।
अता–देखो 'इता' ।
अताई–वि० १ अधिक । २ आततायी । ३ देखो 'इत्तई' ४ देखो 'इताई' ।
अताक–वि० गुप्त ।
अताग–वि० [सं० अत्याज्य] १ त्यागने योग्य । २ देखो 'अथाग'
अतागे, (गैं)– क्रि०वि० जल्दी, शीघ्र ।
अतात–वि० निराश्रित, अनाथ । –पु० ईश्वर ।

अतार–पु० (स्त्री० अतारी) १ पसारी । २ आततायी, दुष्ट । ३ मुसलमान । ४ देखो 'अत्तार' ।

अतारा (रा)–क्रि०वि० इतने मे ।

अतारी–वि० १ शीघ्रगामी, तेज । २ चचल ।

अतारु, (रू)–देखो 'अतेरु' ।

अतारौ–वि० अधिक, बहुत ।

अताळ–वि० १ अत्यधिक । २ भयकर । ३ तीव्र । ४ शीघ्र ।

अताळी–वि० (स्त्री० अनाळी) १ बलवान । २ दृढ, मजबूत । ३ भयकर । ४ तीक्ष्ण । ५ देखो 'उतावळी' ।

अति–वि० [स०] अधिक, ज्यादा ।–स्त्री० अधिकता, ज्यादती । **—कम, कमरण, क्रम, क्रमरण**–पु० सीमोल्लघन । अपमान । **—काय**–वि० मोटा, स्थूल । **—कांत**–वि० अत्यन्त कातिवान, बीता हुआ । **—गज**–पु० ज्योतिष का एक योग । **—गत, गति**–स्त्री० १ अत्याचार । २ मोक्ष । **—चार**–पु० दोष । विघात, व्यतिक्रम (जैन) । ग्रहो की शीघ्र चाल । व्रत भग की चार श्रेणियो मे से तीसरी (जैन) । किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी मे समय से पूर्व गमन । **—चारी**–वि० अत्याचारी । अन्यायकारी । **—चाह**–स्त्री० उत्कण्ठा । –वि० आतुर । **—दरप**–वि० घमण्डी, गर्विला । **—देव**–पु० शिव । विष्णु । बडा देवता । **—पात**–पु० अव्यवस्था । **—पातक**–वि० महापापी । **—प्रसग**–देखो 'अतप्रसग' । **—प्राण**–देखो 'अतप्राण' । **—बरसण**–स्त्री० अतिवृष्टि । **—बळ**–वि० योद्धा शक्तिशाली, बलवान । **—बळा**–स्त्री० एक प्रचीन युद्ध विद्या । ककई नामक पौधा ।**—मूत्र**–पु० बहुमूत्र रोग । **—रंग**–पु० अत्यन्त आनन्द । घनिष्ठ प्रेम । **—रजन**–स्त्री० अत्युक्ति । अधिक प्रसन्नता । **—रथि, (थी)**–पु० एक प्रकार का महारथी । **—रय**–पु० तीव्र वेग । **—वाद**–पु० डीग, शेखी । कटोक्ति, सच्चीबात । **—वादक (वादी)**–वि० सत्यवक्ता । कटुवादी । डीग मारने वाला । **—सय**–वि० अत्यधिक । **—सार**–पु० पेचिश, दस्त विकार । **—हसित**–पु० अट्टहास ।

अतिकातभावनीय–पु०यौ० वैराग्य सम्पन्न योगी ।

अतियाचार–देखो 'अत्याचार' ।

अतिथि–पु० [स०] १ मेहमान । २ एक स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरने वाला सन्यासी ।**–पूजा**–स्त्री० ऐसे सन्यासी का सत्कार । अतिथि का सत्कार ।

अतरिक्त, अतिरिगत–क्रि०वि० [स० अतिरिक्त] सिवाय, अलावा ।

अतरेक–पु० [स] आधिक्य, अतिशयता ।

अतींद्रियग्यान–पु [स० अतीन्द्रियज्ञान] इन्द्रियो के ऊपर का ज्ञान ।

अती–अव्य० १ इतनी । २ देखो 'अति' ।

अतीत–पु० [स०]१ भूत काल । २ ईश्वर ।–वि० १ बीता हुआ, विगत, भूत । २ पुराना । ३ विरक्त, निर्लेप । ४ पृथक्, अलग ।–क्रि०वि० बाहर, परे । देखो 'अतिथि' ।

अतीत्य, अतीथ–देखो 'अतिथि' ।

अतीर–पु० समुद्र, सागर ।

अतीसीळ–पु० हस्ती, गज ।

अतु–देखो १ 'अति' । २ देखो 'अतू' ।

अतुर–देखो 'आतुर' ।

अतुराई–देखो 'आतुराई' ।

अतुळ–वि० [स० अतुल] १ जिसकी तुलना न की जा सके, अनुपम । २ जिसे तौला या मापा न जा सके, असीम, अपार । ३ जबरदस्त ।**–बळ**–वि० अत्यधिक शक्तिशाली, वीर, योद्धा ।

अतुळित–वि० [स० अतुलित] १ अपरिमित, अपार । २ असख्य, अगणित । ३ अनुपम, अद्वितीय ।

अतुळीबळ–देखो 'अतिबळ' ।

अतू–१ देखो 'अति' । २ देखो 'अत्तू' ।

अतूट, अतूठ, (ठौ)–वि० [स० अ+तुष्ट] १ अप्रसन्न, नाराज । अतुष्ट । २ जो तुष्टमान न हो । [स० अ+त्रुटित] ३ अखण्ड, अपार । न टूटने वाला ।

अतेरु, (रू)–वि० जो तैरना न जानता हो ।–पु० सागर, समुद्र ।

अतै–देखो 'इतै' ।

अतोट–पु० १ वज्र । २ देखो 'अतूट' ।

अतोताइयौ–वि० (स्त्री० अतोताई) १ अधिक प्यार के कारण उन्मत्त । २ उद्दण्ड । ३ उन्मत्त । ४ मस्ताना । ५ पागल ।

अतोर–वि० १ न टूटने वाला, दृढ । २ अभग ।

अतोल, अतोली, अतौल, अतौळी, (ळौ)–१ पहाड, पर्वत । २ देखो 'अतुल' ।

अत्त–देखो 'अत' ।

अत्तर–पु० [फा० इत्र] पुष्पसार, इत्र ।

अत्ता–देखो 'इता' ।

अत्तार–पु० इत्र या तेल बेचने वाला ।

अत्ति (त्ती) देखो अति । देखो 'इती' ।

अत्तीत–देखो 'अतीत' ।

अत्तू–स्त्री० खाते की अवधि से पूर्व कर्ज पेटे जमा की जाने वाली रकम ।

अत्तोता, (यौ)–वि० (स्त्री० अत्तोताई) १ उतावला । २ इतराया हुआ । ३ देखो 'आतताई' ।

अत्थ–क्रि०वि० १ अब । २ देखो 'अथ' ।

अत्यटी–देखो 'अग्थ'।
अत्याकार–पु० [म०] हार, पराजय।
अत्याचार–पु० [म०] १ अन्याय। २ अतिक्रमण। ३ ज्यादती। ४ आडंबर, ढकोसला। ५ विरुद्ध आचरण।
अत्याचारी–वि० [म०] १ अत्याचार करने वाला, आततायी। २ उद्दण्ड।
अत्र–क्रि०वि० [म०] यहा, इस जगह। —सण–वि० निर्लोभी। —स्य–वि० यहाँ का।
अत्रय, अत्रि–पु० [म० अत्रि] १ सप्तऋषियो मे से एक। २ सप्तऋषि मंडल का एक तारा। —ज, जात–पु० अत्रि के पुत्र, चन्द्रमा, दत्तात्रेय, दुर्वासा। —प्रिया–स्त्री० सती अनुसूया।
अत्रिपत–वि० [म० अतृप्त] अतृप्त, असतुष्ट।
अथ–म०पु० [स०] १ शुभारंभ। २ ग्रथ या लेख का मगल सूचक प्रारंभिक शब्द। ३ मगल। ४ संदेह, सशय। ५ पूर्णता। —क्रि०वि० १ अब, इस समय। २ तदनन्तर। ३ प्रारंभ मे। ४ देखो 'अरथ'। ५ देखो 'अस्त'।
अथइणी (बो) देखो 'आथमणी' (बो)।
अथऊ–पु० सूर्यास्त से पूर्व का भोजन। (जैन)
अथक–क्रि०वि० बिना रुके, बिना थके,। —वि० न थकने वाला। अथाह।
अथग–पु० १ हाथी। २ समुद्र। ३ अथाह।
अथगणी, (बो) क्रि० रुकना, (सूर्य)। ठहरना।
अथग्गरी–पु० [म० अर्थग्रह] चोर डाकू।
अथडणी, (बो) देखो आथडणी' (बो)।
अथमणी–पु० पश्चिम।
अथमणी, (बो) देखो 'आथमणी' (बो)।
अथर–वि० अस्थिर
अथरव, (ण) [म० अथर्व] १ अथर्ववेद। २ उस वेद का एक मन्त्र। —सिर–पु० यज्ञ वेदी की ईंट। —सिरा–स्त्री० वेद की ऋचा।
अथरवण, (णि,न)–पु० [म० अथर्वन्] १ शिव, महादेव। २ एक ऋषि। ३ अथर्ववेद मे निष्णात ब्राह्मण।
अथरवणी–पु० [स० अथर्वणि] कर्मकाण्डी पुरोहित।
अथरूज, (ळूज)–देखो 'अतळूज'।
अथळ–स्त्री० लगान पर दी जाने वाली भूमि।
अथळस–स्त्री० १ घोडे की लिंगेंद्रिय सहलाने की क्रिया। २ हस्त-मैथुन।
अथवा–अव्य० [म०] या, वा, किंवा।
अथहा–देखो 'अथाह'।
अथाणु, (णो)–पु० केरी, मिर्च, नीबू आदि का आचार।
अथामणी (बो)–देखो 'आथमणी' (बो)।
अथाई–देखो 'हताई'।
अथाग, (गौ, घ, व)–देखो 'अथाह'।
अथार–पु० योनि, भग।
अथाल, अथाह–वि० [स० अथाह] १ अत्यधिक गहरा, अगाध। २ अपार, अपरिमित। ३ गभीर, गूढ। ४ बढिया। ५ अगम्य। —पु० १ सागर, समुद्र। २ बडा जलाशय। ३ गड्ढा। ४ गहराई।
अथि, (थी)–वि० [स० अर्थिन्] –१ धनी, धनाढ्य। २ देखो 'अरथ'।
अथिर–वि० [स० अस्थिर] १ जो स्थिर न हो, चलायमान। २ नाशवान। ३ जंगम।
अथूळ–वि० [स०अ०+स्थूल] १ जो स्थूल न हो, पतला। २ न्यून।
अथोग–देखो 'अथाह'।
अथ्य–देखो 'अथ'।
अदंक–पु० [स० आतंक] आतंक, डर, भय।
अदंग–वि० [स० अदग्ध] १ बेदाग। २ निर्दोष। ३ शुद्ध, पवित्र। ४ आतंकित। ५ स्तंभित। ६ सुखी।
अदंड–वि० [स० अ+दण्ड] १ जिसे दंड न दिया जा सके, अदंडनीय। २ दंड रहित। ३ निर्भय।
अदंत–वि० [स० अदष्ट्र] १ दन्त रहित। २ दुधमुहा, अबोध। ३ अत्यधिक वृद्ध। –पु० १ युवावस्था के दांत न आया हुआ ऊंट या बछड़ा २ विष दंत रहित सर्प। ३ जोंक।
अदंतिका–स्त्री० एक देवी का नाम।
अदंभ, (भी)–पु० [स० अ + दंभ] १ शिव। २ दंभ का अभाव। –वि० १ सच्चा, निश्छल। २ सीधा, सरल। ३ नम्र। ४ शिष्ट।
अदंस–वि० [स० अ+दंश] १ दंत क्षत रहित। २ विषैले कीडों के दंत क्षत रहित। ३ बिना घाव का।
अद–पु० [स०] १ भोजन, खाना। २ आहार। ३ प्रतिष्ठा। ४ देखो 'अध'।
अदग, (घ)–वि० १ अस्पष्ट। २ बचा हुआ। ३ देखो 'अदग'।
अदति, (ती)–देखो 'अदिति'।
अदतीपूत, (सुत)–देखो 'अदितिसुत'।
अदतेव–पु० [स० आदितेव] अदिति की संतान, देवता, सुर।
अदतौ–वि० कृपण, कंजूस।
अदत्त, (तू) वि० [स०] १ न दिया हुआ। २ न देने योग्य। ३ अनुचित ढंग से दिया हुआ। ४ कृपण, कंजूस। —पु० मुकरा हुआ दान। —दांन–पु० चोरी। अपहरण।
अदन–पु० [स०] १ भक्षण, आहार। २ भोजन, खाना। ३ अरब सागर का बंदरगाह। —वि० १ हतभाग्य। २ देखो 'अदिन'। —बदन–क्रि०वि० इधर-उधर।
अदनासियो–वि० १ खिन्न-चित्त, दुखी। २ दुष्ट। ३ नग्न।

अदनौ, (ह) वि० [अ० अदना] (स्त्री० अदनी) १ तुच्छ, साधारण। २ शूद्र, नीच।

अदन्न-१ देखो 'अदन'। २ देखो 'अदिन'।

अदपत, (पति, पती) देखो 'अधपति'।

अदफर-पु० १ पहाड या टीबे के बीच का हिस्सा। २ मध्य भाग। -क्रि०वि० १ बीच मे। २ आधी दूरी तक। ३ देखो 'अधर'।

अदब-पु० [अ] १ शिष्टाचार, विनय। २ अनुशासन। ३ मान, सम्मान, आदर। ४ लिहाज।

अदबदाकर-क्रि०वि० १ हठ करके। २ अवश्य।

अदबी-वि० अदव सवधी।

अदबे, अदबै-क्रि०वि० १ सभवत। २ अपेक्षाकृत।

अदब्भुत, (भुत, भूत)-वि० [स० अद्‌भुत] १ विलक्षण, विचित्र, अनोखा। २ सुन्दर। ३ आश्चर्यजनक। —पु० काव्य के नौ रसो मे से एक।

अदभुज-देखो 'उदभिज'।

अदभुतालय-पु० अजायवघर।

अदभ्र-वि० [स०] असीम, अपार।

अदम, (मु)-वि० १ दमन रहित। २ इन्द्रिय-निग्रह न करने का भाव। ३ स्वतत्र, स्वाधीन। ४ दम रहित, निरर्थक। ५ देखो 'अदम्य'। -पु० [अ०] अनस्तित्व, अभाव **—पता**-पु० अनिश्चित दशा। **—पैरवी**-स्त्री० विना कार्यवाही का मुकद्दमा। **—सबूत**-पु० प्रमाण का अभाव। **—हाजरी**-स्त्री० अनुपस्थिति।

अदमू, अदमौ-वि० (स्त्री० अदमी) १ तुच्छ, छोटा। २ नीच।

अदम्य-वि० [स०] १ जिसका दमन न किया जा सके। २ प्रचड, प्रवल। ३ उत्कृष्ट।

अदय-वि० निर्दय, निष्ठुर।

अदरग-पु० घोडो का एक रोग।

अदर-पु० १ तीर, वाण। २ देखो 'अधर'।

अदरक-स्त्री० [फा०] कच्ची व गीली सोठ, एक औषधि। **—की**-स्त्री० सोठ व गुड से बनाई जाने वाली एक दवा।

अदरस-वि० [स० अदृश्य] १ जो दिखाई न दे, ओझल। २ लुप्त, गायव, अलोप।

अदरसण, (णि)-पु०[स० अदर्शनम्] १ अविद्यमानता। २ लोप। ३ विनाश।

अदरा-देखो 'आद्रा'।

अदळ (ल)-पु० [अ०] न्याय, इन्साफ। —वि० १ न्यायशील। २ मुख्य। ३ बढिया। ४ दिव्य। **—इनसाफ**-पु० न्याय। **—बदळ**-पु० हेरफेर, विनिमय।

अदळद, (ळिद्र) वि० [स० अ + दारिद्र्य] धनवान। —पु० खुशहाली।

अदळी (ली)-वि० [स० अ + दल] १ विना पत्तो का। २ विना सेना का। [अ०] ३ न्यायी। **—पातसा**-वि० १ मस्त। २ ब्रह्मज्ञानी। ३ न्याय कर्ता।

अदल्ल-देखो 'अदल'।

अदव, (वौ)-वि० कृपण, कजूस।

अदवीटौ-वि० अधूरा, आधा।

अदात-देखो 'अदत'।

अदान, (नौ)-वि० १ कृपण, कजूस। २ नादान, नासमझ। ३ अनजान।

अदाव, (दाव)-पु० [अ०] १ बुरा दाव। २ असमजस, कठिनाई। —वि० कृपण, सूम।

अदा, (ह)-स्त्री० [अ०] १ हाव-भाव, नखरा। २ आकर्षक चेष्टा। ३ ढग। —वि० १ चुकता, भुगताया हुआ। २ पूर्ण, प्रस्तुत। ३ कथित, कहा हुआ। **—वान**-वि० नखरे करने वाला।

अदाग, (गी)-वि० [स० अ०+दग्ध] १ निष्कलक, वेदाग। २ निर्दोष। ३ पवित्र, शुद्ध। ४ स्पष्ट। —पु० पशुओ का सकेत चिन्ह।

अदात, (ता, तार)-वि० कृपण।

अदाप-वि० १ दर्पहीन, निरभिमानी। २ शिष्ट, सज्जन। —पु० १ नम्रता। २ निरभिमान।

अदाब-देखो 'अदब'।

अदावद, (दी)-स्त्री० १ प्रतिस्पर्धा, होड। २ ईर्ष्या।

अदायगी-स्त्री० चुकारा।

अदालत-स्त्री० [अ०] न्यायालय, कचहरी।

अदालति, (ती)-वि० न्यायालय सवधी।

अदावत, (ती)-स्त्री० दुश्मनी।

अदिठ-देखो 'अडीठ'।

अदिति, (ती)-स्त्री० [स० अदिति] १ कश्यप की पत्नी एव देवताओ की माता। २ पृथ्वी। ३ प्रकृति। ४ गौ। ५ वाणी। ६ मृत्यु। ७ निर्धनता। ८ असीमता। ९ स्वतन्त्रता। १० ईश्वर का एक विशेषण। ११ दूध। १२ पुनर्वसु नक्षत्र। १३ अतरिक्ष। १४ माता-पिता। **—नदन, सुत**-पु० देवता, सुर। सूर्य।

अदिन-पु० [स०] १ बुरा दिन। २ आपातकालीन समय। ३ अभाग्य।

अदिपुरख, (पुरस)-देखो 'आदिपुरख'।

अदियण-वि० कृपण।

अदिव्य-वि० [स०] (स्त्री०-अदिव्या) १ लौकिक, साधारण। २ बुरा। —पु० लौकिक नायक।

अदिस–वि० दिशा रहित।
अदिस्ट–वि० [स० अदृष्ट] न दिखने वाला, लुप्त, गुप्त।
अदिस्टी–स्त्री० [स० अ+दृष्टि] १ अन्धापन। २ बुरी दृष्टि। ३ अदूरदर्शिता। —वि० १ दृष्टिहीन, अन्धा। २ अदूरदर्शी। ३ मूर्ख। ४ अभागा।
अदीठ, (ठो)–देखो 'अडीठ'।
अदीठि (ठी) देखो 'अदिस्टी'।
अदीत–देखो 'आदित्य'। —वार–देखो 'आदित्यवार'।
अदीति, (ती)–देखो 'अदिति'।
अदीन–वि० [स०] १ धनवान, सम्पन्न। [अ०] २ अनम्र। ३ नास्तिक।
अदीयण–देखो 'अदियण'।
अदीस्टं,(स्ठे, स्ठं)–वि० अविष्ठित।
अदीह–पु० [स० अ+दिवस] दिवस का अभाव। —[स० अ+दीर्घ] जो लम्बा न हो, छोटा।
अदुंद (दूद)–पु० [स अद्वन्द्व] १ द्वन्द्व का अभाव, निर्द्वन्द्व। २ शांति। ३ सुलह। —वि० १ निश्चित। २ अद्वितीय, बेजोड।
अदुखति, अदुखित–वि० [स० अदूषित] १ दोष रहित, निर्दोष। २ शुद्ध, पवित्र। ३ स्वतन्त्र।
अदुतिय, अदूत–वि० [स० अद्वितीय] बेजोड।
अदूखण (सण) [स० अ+दूषण] दूषण रहित।
अदूर–क्रि० वि० [स०] निकट, पास, समीप। —दरसी–वि० स्थूल बुद्धिवाला, अदूरदर्शी।
अदेख, अदेखी–वि० १ जो न देखा गया। २ जो देखा न जा सके। ३ छिपा हुआ। ४ न देखने योग्य। ५ अदृश्य। ६ ईर्ष्यालु।
अदेली–देखो 'अगेली'।
अदेलो–देखो 'अगेलो'।
अदेव–पु० १ शिव, महादेव। २ वायु। ३ मनुष्य। ४ असुर राक्षस। ५ मुसलमान।—वि० कृपण, कजूस।
अदेवाळ–वि० १ न देने वाला। १ देने मे असमर्थ। ३ कृपण।
अदेस–पु० [स० अ+देश] १ पराया देश, विदेश। २ देखो 'आदेश'।
अदेह–पु० [स० अ+देह] १ परमात्मा। १ कामदेव। २ [illegible] शब्द। —वि० १ देह रहित, विदेह। ३ कृपण, कजूस।
अदोख, (स)–पु० [स० अ+दोष] अग्नि, आग।—वि० निर्दोष। निर्विकार। निष्कलक। निरपराध।
अदोखो (सो)–वि० १ जो शत्रु न हो, मित्र। २ देखो 'अदोख'।
अदोडी–पु० मृत गाय या बैल का साफ किया हुआ आधा चमड़ा।
अदोत–पु० [स० उद्योत] १ प्रकाश। २ शोभा, काति। ३ उन्नति, विकास। ४ वृद्धि। —वि० १ द्युतिमान, प्रकाशित। २ शुभ्र, स्वच्छ। ३ उत्तम, श्रेष्ठ।
अदोरौ–वि० सुखी। आराममय।
अदोळी–स्त्री० १ घी, तेल, दूध आदि लेने का कटोरीनुमा उपकरण। २ फसल मे होने वाला आधा हिस्सा। ३ देखो 'अदोडी'।
अदौफर–देखो 'अदफर'।
अदोह–पु० १ दुख, शोक। २ चिन्ता, सोच। ३ पश्चाताप।
अद्दण–वि० १ खाने वाला। २ देखो 'आदण'।
अद्ध–१ देखो 'आध'। २ देखो 'अध'।
अद्धरयण–देखो 'आधीरात'।
अद्धिकारी–देखो 'अधिकारी'।
अद्धियावणौ–देखो अधियावणौ'। (स्त्री० अद्धियावणी)।
अद्धी–देखो 'आधी'।
अद्धौ–वि० आधा।–रुक, रूक–पु० लहगा।
अद्य–क्रि०वि० [स०] आज, अब, अभी। —पु० प्रारंभ। —अप, अवधि–क्रि०वि० आजतक।
अद्यूत–देखो 'अदूत'।
अद्र, (नि)–पु० [स० अद्रि] १ पर्वत, पहाड। २ वृक्ष। ३ सूर्य। —जा–स्त्री० १ पार्वती, गिरिजा। २ गगा। जमुना। ३ नदी।
अद्रक–देखो 'अदरक'।
अद्रकौ–पु० डर, भय, आतक।
अद्रमणौ–देखो 'अधियावणौ' (स्त्री० अद्रमणी)
अद्रस्ट–देखो 'अडीठ'।
अद्राजणौ, (बौ) क्रि० नगाडा बजना।
अद्रि, (न), अद्री–देखो 'अद्र'।
अद्रियामणौ–देखो 'अधियावणौ' (स्त्री० अद्रियामणी)
अद्वितिय, (तीय, द्वीत)–वि० [स० अद्वितीय] १ बेजोड। २ अपूर्व। ३ अनुपम। ४ अतुल्य। ५ अद्भुत। ६ एकाकी, अकेला। ७ प्रधान, मुख्य।
अद्वैत,(द्वैत)–वि०[स० अद्वैत]१ द्वैत भाव से रहित।२ द्वितीय शून्य। ३ अपरिवर्तनशील। ४ अनुपम। ५ बेजोड़। ६ एकाकी। —पु० १ जीव व ब्रह्म के बीच ऐक्य का भाव। २ जीव-ब्रह्म के ऐक्य संबंधी शकराचार्य का मत। ३ ब्रह्म। ४ सत्य। —वाद–पु० ब्रह्म-जीव मे ऐक्य मानने का दर्शन। —वादी–पु० उक्त दर्शन का अनुयायी।
अधंतर–देखो 'आधंतर'।

अध–वि० [स० अर्ध, अर्द्ध] १ आधा, आधे का सूक्ष्म रूप। २ तुल्य, सम। —क्रि०वि० [स० अधस्, अध;] १ नीचे, नीचे की ओर। २ तल मे, तले।—पु० १ तल, पाताल। २ नीचे की ओर की दिशा।

—आनौ–पु० अधन्नी। **—कचरियौ, कचरौ**–वि० अधूरा। आधा कुचला हुआ। आधा कुटा या पीसा हुआ। आधा जानकार। **—कच्चौ, काचौ**–वि० अपरिपक्व। **—कपाळी**–पु० आधे सिर का दर्द, सूर्यावर्त्त। **—कर** —वि० प्रौढ, अधेड।**—कालौ**–वि० आधा पागल मूर्ख। **—कोस**–पु० एक मील की दूरी। **—खड**='अधकर'। **—खण**-पु० आधा क्षण। **—खरी**– स्त्री० अर्द्धरात्रि। **—खायौ**–वि० आधा खाया, आधा पेट। **—खिलौ**–वि० आधा खिलती, अर्द्ध विकसित।**—खुलौ**–वि० आधा खुला। **—गति, गती**–स्त्री० अधोगति। **—गावळौ**–वि० अगहीन, निकम्मा, नपुंसक। **—गेलौ**–वि० अर्द्धविक्षिप्त, मूर्ख, पागल। **—चरौ**–वि० आधा चराया हुआ। (चौपाया) **—प**–वि० अतृप्त, असतुष्ट।–स्त्री० तृष्णा, आकाक्षा। **—पई, पाई**–स्त्री० एक सेर का आठवा भाग। आधी पाई। **पत, पति, पती, पत्त, पत्ती, प्पत**–पु० अधिपति।**—पतन, पतन्न, पात**–पु० अध पतन। दुर्गति। दुर्दशा। **—फर, फरौ**=अदफर। **—विच बीच**-क्रि०वि० मध्य मे। **—विचलौ, वीचलौ**–वि० बीच का मध्य का मध्यस्थ। **—वीठौ**–वि० अधूरा, अपूर्ण। पृथक्, भिन्न।**—बुद्धि बुध** —वि० अर्द्ध शिक्षित। **—बूढ़, बूढौ**–वि० प्रौढ। अधेड।**—मण, मणिकौ**–पु० आधा मन का तौल। **—मरियौ, मरौ, मुआ, मुवौ**–वि० अधमरा, मृत प्राय, अत्यधिक घायल।**—मोलौ**–वि० आधे मूल्य का। **—राणौ**- वि० आधा पुराना।**—रत, रात, रेनि, रैणी**– —स्त्री० अर्द्धरात्रि।**—रतियौ, रातियौ**–वि० आधी रात को होने वाला। —पु० आधी रात का भोजन। **—राजियौ**–वि० आधे राज का स्वामी **—लोक**–पु० पाताल। **—वसन**–पु० अधोवस्त्र।**—वीटौ, वीठौ, वीधौ**–देखो 'अदवीठो' **—सिर, सिरौ**–पु० त्रिसकु। **—सेर, सेरौ**–वि० आधा सेर।–पु० आधा सेर का वाट।

अधक–देखो 'अधिक'। **—मास**–देखो 'अधिकमास'।

अधकाणी, (नी)–वि० अत्यधिक।

अधकाई–देखो 'अधिकाई'।

अधकार, (री) देखो 'अधिकार'।

अधकाव–वि० अधिक, ज्यादा। —पु० अधिकता, विशेषता।

अधकावणौ, (बौ)–क्रि० अधिक करना।

अधकि, (की)–स्त्री० विशेषता। अधिकता।

अधकौ, (डौ)–देखो 'अधिकौ'। (स्त्री० अधकी)।

अधक्ष–देखो 'अध्यक्ष'।

अधडचौ–पु० शत्रु, दुश्मन।

अधधपत, (पति,पती)–पु० [स० उदधिपति] समुद्र, सागर।

अधनौ–देखो 'अदनौ'। (स्त्री० अधनी)।

अधप–वि० भूखा, अतृप्त।—पु० १ भूखा सिंह। [सं० अधिप] २ पति, स्वामी। ३ राजा। ४ प्रभु। ५ सरदार।

अधफर–देखो 'अदफर'।

अधभुत-देखो 'अदभुत'।

अधम-वि० [स०] (स्त्री० अधमा) १ नीच, निकृष्ट, क्षुद्र। २ पापी, पातकी। ३ दुष्ट। ४ निर्लज्ज, धूर्त। ५ निंदित। **—उधारण**–पु० ईश्वर, विष्णु। **—रति**–स्त्री० स्वार्थजन्य प्रेम।

अधमई, (माई)–स्त्री० नीचता, दुष्टता।

अधमता–स्त्री० अधम होने की अवस्था या भाव। तुच्छता, नीचता।

अधमा-स्त्री० [स०] १ दुष्टा स्वामिनी। २ कलहप्रिय स्त्री। ३ कटुवचनो मे सदेश देने वाली दूती। ४ देखो 'अधम'।

अधर–पु० [स०] १ नीचे का होठ। २ विना आधार का स्थान। ३ अतरिक्ष। ४ अधस्थल। ५ खड, विभाग। ६ पाताल। ७ रतिगृह। ८ योनि। ९ दक्षिण दिशा। १० बीच का स्थान। ११ शरीर का अधोभाग। १२ होठ। १३ अग्नि, आग। —क्रि०वि० १ बीच मे। २ विना आधार से।–वि० ३ नीच, बुरा। ४ घटिया। ५ पराभूत, पराजित। ६ चुप किया हुआ। ७ चचल। ८ रक्ताभ, लाल। **—रज**–स्त्री० होठों की लाली। **—पान**–पु० होठों का चुम्बन एक रति क्रिया। **—बव**-क्रि०वि० त्रिसकु की तरह, बीच मे। **—बिंब**–पु० बिंबफल जैसे होठ। **—मधु अ्रत**–पु० अधरामृत।**—राणौ**–पुराना। **—लोक** पाताल।

अधरम–पु० [स० अधर्म] १ धर्म का विपर्यय, धर्म विरुद्ध कार्य। २ दुष्कर्म, पाप। ३ अन्याय।**—आचार**–पु० अधर्म का कार्य या व्यवहार।**—काय**–पु० पाप। द्रव्य के छ. भेदो मे से एक।

अधरमास्तिकाय–पु० छ द्रव्यो मे से दूसरा द्रव्य (जैन)।

अधरमी–वि० [स० अधर्मिन्] १ पापी, अन्यायी। २ अधर्म करने वाला।

अधराज–देखो 'अधिराज'।

अधल–देखो 'अदल'।

अधव, (वा)–वि० [स० अ + धव] १ विना पति की, विधवा। २ विना स्वामी का।—पु० [स० अध्व] पथ, रास्ता, मार्ग।

अधवर–पु० [स० अध्वर] १ यज्ञ । २ आकाश । ३ वायु । —वि० १ सीधा, सरल । २ अबाध या निरन्तर चलने वाला ।

अधवाचर–पु० भ्रमर, भौंरा ।

अधसाय–पु० श्रीकृष्ण ।

अधाम–वि० [स० अ + धाम] १ जिसका कोई स्थान न हो । स्थान रहित । २ सर्वत्र मिलने वाला । —पु० परब्रह्म ।

अधाप–वि० १ अतृप्त, भूखा । २ देखो 'अधिप' ।

अधायउ, (योडौ, यौ)–वि० (स्त्री० अधायोडी) १ भूखा, अतृप्त । २ असतुष्ट । ३ बिना दौडा हुआ ।

अधार–देखो 'आधार' ।

अधारणौ (बौ)–देखो 'आधारणौ' (बौ)

अधारमिक–वि० [स० अधार्मिक] १ पापी, दुष्ट । २ नास्तिक । ३ धर्म को न मानने वाला ।

अधि–उप० [स०] शब्दो के पूर्व लगने वाला उपसर्ग जो ऊचा, ऊपर प्रमुख आदि अर्थों का बोध कराता है ।—**करण**– पु० व्याकरण का सातवा कारक । —**देव, देवता**–पु० इष्टदेव, कुलदेवता ।—**नाथ, नायक**–पु० स्वामी । सरदार । —**रति**–स्त्री० अर्द्धरात्रि । —**रथ**–पु० रथ का सारथी । कर्ण का पिता । बडा रथ । —वि० रथारूढ ।—**राज, राजा**–पु०सम्राट्, राजा । अधीक्षक । —**रोहण**–पु० चढना, चढाना, फहराना आदि की क्रिया । —वि० चढने वाला । सवार होने वाला । ऊपर उठने वाला । —**रोहणी, रोहिणी**–स्त्री० निसैणी । सीढी । जीना ।—**लोक**–पु० ससार । ब्रह्माण्ड ।—**वर**– देखो 'अधवर' । —**वास**–पु० निवास स्थान । —स्त्री० सुगध ।—**वासी**–वि० निवासी । —**वेसन**–पु० समारोह, सभा ।—**सथान, स्थान**–पु० शहर, नगर ।

अधिक, (उ, त)–वि० [स०] १ बहुत, ज्यादा, विशेष । २ बढकर । ३ उत्कृष्ट । ४ अतिरिक्त । ५ घना, गाढा । ६ विशिष्टतम । —**अंस**–वि० ज्यादातर । —**जथा**– देखो 'इधकजथा' । —**तम**–वि० सर्वाधिक । —**तर**–वि० अत्यधिक । –क्रि०वि० प्राय । —**ता**–स्त्री० बाहुल्य । बढोतरी, वृद्धि । —**दत, दतौ, दतौ**–वि० अधिक दात वाला । —पु० एक प्रकार का अशुभ घोडा । —**मास**–पु० भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक तीसरे वर्ष पडने वाला पुरुषोत्तम मास, मल-मास ।

अधिकाई–स्त्री० १ विशेषता । २ अधिकता । ३ महिमा । ४ बडप्पन ।

अधिकार–पु०– [स०] १ हक, स्वत्व । २ कब्जा । ३ आधिपत्य, स्वामित्व । ४ शक्ति, सामर्थ्य । ५ योग्यता । ६ ज्ञान । ७ कर्तव्य । ८ प्रभुत्व । ९ पद । १० स्थान । ११ राज्य । १२ नाटक मे पात्र की विकसित स्थिति । १३ मुख्य नियम । १४ मान, प्रतिष्ठा ।

अधिकारी–वि० [स०] १ हकदार, दावेदार । २ स्वामी, मालिक । ३ कब्जा करने वाला । —पु०–१ किसी सस्था या विभाग का अफसर । २ शासक । ३ अधिकार प्राप्त व्यक्ति । ४ किसी कार्य के प्रति विशेष योग्यता वाला व्यक्ति । ५ प्रधान फल प्राप्त करने वाला नाटक का पात्र ।

अधिकौ–देखो 'अधिक' । (स्त्री० अधिकी)

अधिक्षिपत्र–वि० तगडाया हुआ ।

अधिटौ–देखो 'आवेटौ' ।

अधिदेव (ता)–पु० १ इष्टदेव, प्रधानदेव । २ पदार्थों के अधिष्ठाता देवता, रक्षक देव ।

अधिदैव–पु० [स० अधिदैव] १ दैविक । २ आकस्मिक । ३ देखो 'अधिदैवत' ।

अधिदैवत–पु० [स० अधिदैवतम्] १ किसी पदार्थ का अधिष्ठाता देवता । २ अनेक पदार्थो मे रहने वाला मूल तत्व ।

अधिप, (पत, पति, पती)–पु० [स० अधिप, अधिपति] १ राजा । २ नायक, सरदार । ३ स्वामी, मालिक । ४ ईश्वर, प्रभु । ५ हकदार ।

अधिभूत–पु० सब प्राणियो की नाम रूपात्मक नाशवान स्थिति का नाम ।

अधिमाख–देखो 'अधिकमास' ।

अधियग–पु० [स० अधियज्ञ] १ परमेश्वर । २ प्रधान यज्ञ ।

अधियामण, (णौ)–देखो 'अधियावणौ' । (स्त्री-अधियामणी)

अधियाळ–वि० आधा, अर्द्ध ।

अधियावण, (णौ)–वि० (स्त्री० अधियावणी) १ वीर, बहादुर ।

अधियावणी–स्त्री० कटार, कटारी । २ प्रचड, भयकर । ३ चमत्कारी ।

अधियौ–पु० १ अर्द्धभाग, आधा हिस्सा । २ गाव मे आधी पट्टी का जमीदार । ३ फसल का आधा भाग । ४ छोटी रेलगाडी ।–वि० आधा, अर्द्ध ।

अधिस्टाता, (स्ठाता)–वि०[स०अधिष्ठाता](स्त्री० अधिस्टात्री) १ अध्यक्ष । २ मुखिया, प्रधान । ३ रक्षक । ४ स्वामी । —पु०–ईश्वर, परमात्मा ।

अधिस्टात्री, (स्ठात्री)–स्त्री० [स० अधिष्ठात्री] १ देवी, दुर्गा । २ देखो 'अधिस्टाता' (स्त्री०)

अधिस्रपणी, अधिस्रयणी स्त्री० [स० अधिश्रपणी, अधिश्रयणी] चूल्हा, अगीठी ।

अधी–देखो 'अधि' ।

अधीठ–देखो 'अडीठ' ।

अधीत–वि० [स०] पढा हुआ, पठित ।

अधीन–वि० [स०] १ वशीभूत, वशवर्ती । २ आश्रित । ३ मातहत । ४ नीचे । ५ आज्ञाकारी । ६ पराधीन । ७ स्वाधिकार युक्त । ८ दीन । —**ता, त्ता**–स्त्री० 'अधीन' होने की दशा या भाव । विवशता । वशवर्तित्व । नम्रता ।

अधीर, (रौ)–वि० [स०] (स्त्री० अधीरा) १ धैर्यहीन, आतुर, उद्विग्न । २ भयभीत, घबराया हुआ । ३ उतावला । ४ असतोषी । ५ चचल । ६ विह्वल ।

अधीरज–पु० [स० अधैर्य्य] १ धैर्य का अभाव । २ त्वरा । ३ चचलता । ४ घबराहट । –वि० चचल ।

अधीरा–स्त्री० [स०] १ विद्युत । २ मध्या या प्रौढा नायिका का एक भेद । ३ नायक को पर-नारी-रत देखकर प्रत्यक्ष कोप करने वाली नायिका ।

अधीस, (र)–पु० [स० अधीश] १ स्वामी, मालिक । २ अधीश्वर, मडलेश्वर । ३ अध्यक्ष । ४ राजा, नृप ।

अधुना–क्रि०वि० [स०] १ आजकल । २ इस समय ।

अधुर–देखो 'अधर' ।

अधूत–वि० [स०] १ अकपित । २ निर्भय, निडर । ३ सज्जन । ४ उचक्का ।

अधूरौ–वि० (स्त्री० अधूरी) १ अपूर्ण । २ अर्द्धपूर्ण । ३ वाकी रहा हुआ । ४ विचाराधीन । —पु० अपरिपक्व गर्भ ।

अधेड–वि० प्रौढ ।

अधेटौ–देखो 'आधेटौ' ।

अधेली–स्त्री० आधा रुपये का सिक्का, अठन्नी ।

अधेलौ–पु० १ आधा पैसा । २ लगभग एक तौले का एक प्राचीन तौल ।

अधोक–पु० प्रणाम, नमस्कार ।

अधोक्षज, अधोखज–पु० [स० अधोक्षज] १ परब्रह्म । २ विष्णु । ३ कृष्ण । —वि० इन्द्रियातीत ।

अधोगत, (गति, गती)–वि० अवनत, पतित । —स्त्री० १ पतन, अवनति । २ दुर्गति, अध पतन । ३ भूत, प्रेत आदि गति ।

अधोगमण, (न)–पु० [स० अधोगमन] पतन, अध पतन ।

अधोगामी–वि० [स० अधोगामिन्] १ अधोगति को प्राप्त होने वाला । २ पतित ।

अधोडी–देखो 'अदोडी' ।

अधोफर–देखो 'अदफर' ।

अधोभवण, (भवन, भुवन)–पु० [स० अधोभवन] पाताल ।

अधोमारग–पु० [स० अधोमार्ग] १ पतन का मार्ग । २ नीचे का रास्ता । ३ सुरग का रास्ता ४ गुदा ।

अधोमुख–वि० [स०] जिसका मुख नीचे हो, उल्टा, औंधा । —क्रि० वि० नीचे मुह किये हुए, मुह के वल ।

अधोवाय, (वायु)–स्त्री० अपान वायु ।

अधौ, (ध्धौ,–पु० [स० अध] १ नरक । २ आधा भाग । ३ आधे का पहाडा ४ आधानाप । —अव्य०– १ नीचे । २ तले । ३ देखो 'आधौ' ।

अध्धे–वि० [स० ऊर्ध्व] १ ऊपर । २ उल्टा ।

अध्यक्ष–पु० [स०] (स्त्री० अध्यक्षा) १ स्वामी, मालिक । २ सरदार, नायक । ३ मुखिया, प्रधान । ४ अधिष्ठाता ।

अध्यक्षर–क्रि० वि० अक्षरश , अक्षर-अक्षर ।

अध्ययन–पु० [स०] पठन-पाठन, पढना क्रिया ।

अध्यामण, (णौ)–देखो 'अधियावणौ' । (स्त्री० अध्यामणी) ।

अध्यातम, (त्म)–पु० [स० अध्यात्म] १ प्रत्येक शरीर मे रहने वाली परमात्मा या परब्रह्म की सत्ता का नाम । २ आत्मा, मन व देह । —**विद्या**–स्त्री० ब्रह्मविद्या । आत्मतत्व विषयक शास्त्र ।

अध्यातमिक–वि० [स० अध्यात्मिक] अध्यात्म सवधी । आत्मा सवधी ।

अध्यापक–पु० [स०] (स्त्री० अध्यापिका) विद्यागुरु । शिक्षक । मास्टर ।

अध्यापकी, (पिकी)–स्त्री० पढाने का व्यवसाय व कार्य ।

अध्यापण,(न)–पु०[स०अध्यापन]अध्यापक का कार्य । शिक्षण ।

अध्याहार–पु० [स०] १ तर्क-वितर्क, बहस । २ अस्पष्ट को स्पष्ट करने की क्रिया ।

अध्येय-पु० [स०] १ पठन-पाठन । २ निरुद्देश्य ।

अध्रम–देखो 'अधरम' ।

अध्रयामण, (णौ), अध्रियामण, (णौ) अध्रीयांमण, (णौ) अध्रीयावण, (णौ)–देखो 'अधियावणौ' [स्त्री० अध्रियामणी] ।

अध्रुव–वि० [स० अ+ध्रुव] १ अस्थिर । २ चलायमान ।

अध्व–पु० [स०] १ माग, रास्ता । २ देखो 'अध्वर' । —**ग**–पु० पथिक, राही । सूर्य । ऊट । खच्चर ।

अध्वर–पु० [स०] १ यज्ञ । २ वसुभेद । ३ सावधान । ४ अन्तरिक्ष । —**यु**–पु० यज्ञ मे यजुर्वेद पढने वाला ब्राह्मण ।

अध्वासण, (न)–पु० [सं०] चौरासी आसनो मे से एक ।

अनक–पु० १ परब्रह्म । २ नगाडा । —वि० चिह्न रहित ।

अनग–पु० १ [स०] ब्रह्म । २ कामदेव । ३ आकाश । ४ मन । ५ पवन-वि० १ विना देह का । २ आकृतिहीन । ३ अगहीन । —**क्रीडा**–स्त्री० रति, समोग, मैथुन । —पु० मुक्तक नामक विषम वृत्त । —**तेरस**–स्त्री० चैत्र शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी । —**वती**–स्त्री० कामवती । —**सेखर**–पु० दण्डक वर्ण वृत्त का एक भेद । —**सेना**–स्त्री० पिंगला का एक नामान्तर ।

अनगारि, (री)–पु० [स० अनगारि] शिव, महादेव ।

अनगी–देखो 'अनग' ।

अनजळ–देखो 'अन्नजळ' ।

अनंजा–देखो 'अनुजा'।

अनत–पु० [स० अन् + अत] १ विष्णु। २ शेषनाग। ३ लक्ष्मण। ४ बलराम। ५ आकाश। ६ श्रीकृष्ण। ७ शिव, महादेव। ८ रुद्र। ९ शब्द। १० वासुकि। ११ बादल। १२ अभ्रक। १३ श्रवण नक्षत्र। १४ तात्रिक सूत्र, गंडा। १५ एक आभूषण। —वि०-(स्त्री०अनता) १ अन्त रहित। २ अपार, असीम। ३ बेहद। ४ अक्षय, अखण्ड। —चतुरदसी, चवदस–स्त्री० भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी, एक पर्व दिन। —दरसण, दरसन–पु० सम्यक दर्शन (जैन) —नाथ–पु० चौदहवे तीर्थकर (जैन)। —मूळ–पु० एक रक्त शोधक वनस्पति। —वात–पु० शिर का एक रोग। —विजय–पु० युधिष्ठिर के शख का नाम। —व्रत–पु० अनन्त चतुर्दशी का व्रत।

अनतर–क्रि०वि० [स०] १ पीछे, उपरात, बाद मे। २ बावजूद। ३ पास, समीप। ४ निरतर, लगातार।

अनता–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी। २ पार्वती। ३ पीपल। ४ दूर्वा, दूब। ५ अनत मूल। ६ अनत-सूत्र। —पति पती,–पु० राजा नृप।

अनद–पु० १ भोजन, खाना। २ हर्ष, खुशी। —वि० १ विना पुत्र का। २ देखो 'आनद'।

अनदी–वि० आनन्द युक्त।

अनद्री–पु० देवता।

अन–पु० [स०] १ श्वास। २ कुछ शब्दो के पूर्व मे लगने वाला निषेध या अभाव सूचक उपसर्ग। —क्रि० वि० १ विना, बगैर। २ और, तथा। ३ देखो 'अन्न'। ४ देखो 'अन्य'। ५ देखो 'आन'। —अवसर —क्रि०वि० बेमौके, असमय। —इच्छा–स्त्री० अरुचि। —कार, कारौ–वि० वीर, योद्धा। —कूट, कोट–पु० दीपावली के दूसरे रोज या कुछ दिन बाद तक मनाया जाने वाला पर्व। इस पर्व मे भगवान के भोग के लिए बनाये जाने वाले विभिन्न व्यजन। —कूळ–देखो 'अनुकूळ'। —गड, गढ–वि० विना गढा हुआ, बेडौल, भद्दा। —चाहत–वि० न चाहने वाला निर्मोही। —चाहे —क्रि० वि० बेमन मे।

अनइ, (ई)–क्रि०वि० और।

अनख–पु० [स० अनक्ष] १ क्रोध, रोष। २ अप्रसन्नता, नाराजगी। ३ खिन्नता दुःख। ४ ग्लानि। ५ ईर्ष्या, द्वेष। ६ झझट। —वि० विना नून या नख का।

अनग–पु० १ आश्चर्य, विस्मय। २ देखो 'अनघ'।

अनघ–वि० [स०] १ अघ रहित, निष्पाप। २ निर्मल, पवित्र। ३ पुण्यवान। —पु० पुण्य।

अनड–वि० [स० अनन्द अनड्] १ वीर, बलवान। २ अनम्र उद्दड। ३ न झुकने वाला। ४ बन्धन रहित, स्वतन्त्र। —पु० १ किला, गढ। २ पहाड, पर्वत। ३ राजा। ४ हाथी। ५ साड, वृषभ। ६ सदैव आकाश मे उडने वाला पक्षी, अनलपक्षी। —नड–वि० वीरातिवीर। उद्दडो को वश मे करने वाला। —पख, पखेरू–पु० एक प्रकार का कल्पित आकाशी पक्षी, अनलपक्षी। —पण, पणौ–पु० शौर्य, वीरता। उद्दण्डता, बदमाशी। स्वतत्रता। —पै, राज–पु० सुमेरु पर्वत।

अनडी–स्त्री० मूर्खता, अनाडीपन। —वि० मूर्ख, अनाड़ी।

अनचार–देखो अनाचार'।

अनजळ–देखो' अन्नजळ'।

अनज्ज–देखो 'अनुज'।

अनज्जवस–पु० अनार्यवश।

अनडवाण, (वान, वाण वान)–वि० [स० अनड्वान] बधन मे रहने का अनभ्यस्त। —पु० साड, वृषभ।

अनडर–वि० १ निडर, निर्भय २ बलवान।

अनडीठ–वि० विना देखा।

अनडुह, (हौ)–पु० [स० अनुडुह] बैल, वृषभ।

अनड्ड–पु० दुर्ग, किला, गढ।

अनत–वि० [स०] [स्त्री० अनता]—१ न झुका हुआ, सीधा। २ अनम्र, नम्रता रहित।–क्रि० वि० १ अन्यत्र, कहीं और। २ देखो 'अनत'।

अनता–देखो 'अनता'।

अनथ, (थू)– वि० १ विना नाथा हुआ, स्वतत्र। २ उद्दड। ३ देखो 'अनरथ'।

अनथानथौ–वि० १ अनाथो का नाथ, स्वामी। २ उद्दण्डो को काबू मे करने वाला।

अनदान–पु० अन्न का दान।

अनदाता (र) देखो 'अन्नदाता'।

अनदास–वि० १ भोजन भट्ट, पेटू। २ खुदगर्ज।

अनधिकार–वि० [स०] १ अधिकार रहित। २ अनुचित। —पु० १ बेबसी। २ अयोग्यता। —चेस्टा–स्त्री० अनुचित हरकत।

अनप्रास–देखो 'अनायास'।

अनन्य–वि० [स०] १ अभिन्न। २ एकनिष्ठ। ३ एकाश्रयी। ४ घनिष्ठ। ५ अविभक्त। ६ अद्वितीय।

अनपच–देखो 'अपच'।

अनपाणी–देखो 'अन्नजळ'।

अनपूरण, (णा)– देखो 'अन्नपूरणा'।

अनमे–देखो 'अगणमे'।

अनमद, (मध, मधौ, मथौ)–वि० १ अपार, असख्य। २ वीर,

बहादुर । ३ स्वतंत्र, आजाद । —पु० १ परमेश्वर, ईश्वर । २ शत्रु, दुश्मन ।

अनम–वि० [स० अनम्र] १ न नमने वाला, अनम्र । २ उद्धत बली । ३ उद्दंड । ४ जिसमे नमी न हो, शुष्क ।–पु० ब्राह्मण ।

अनमख–पु० [स० अनमिप] समय ।

अनमद–वि० मद या अहकार रहित ।

अनमांन–देखो 'अनुमान' ।

अनमांनांम–वि० उद्दण्डो को झुकाने की सामर्थ्य रखने वाला ।

अनमाई–स्त्री० अनम्रता ।

अनमाप, (मापौ)–वि० जो नापा न जा सके । अपार, असीम ।

अनमिख, (मेख)–वि० [स० अनिमेष] निमेष रहित, निर्निमेष । —क्रि०वि० १ एक टक । २ निरंतर । —पु० १ देवता । २ मछली । ३ सर्प ।

अनमित, (मिति)–वि० अपरिमित अपार, असीम ।

अनमत्ति, अनमित्ती–वि० १ अप्रमाण, अनिदर्शन । २ देखो 'अनमित' ।

अनमियौ, अनमी, (मौ)–वि० १ अनम्र, उद्दंड । २ न झुकने वाला । ३ बलवान, शक्तिशाली । —**खंध**–वि० जो अपना कधा न झुकने दे । शक्तिशाली बलवान ।

अनमुखाव–देखो 'अनमिख' ।

अनमुनी–स्त्री०[स० उन्मुनी] हठयोग मे अगविन्यास की मुद्रा ।

अनमेळ–पु० शत्रु, दुश्मन । –वि० बेमेल ।

अनम्म, (म्मी)–देखो 'अनम' । —**खध**–देखो 'अनमीखध' ।

अनम्र–वि० [स०] १ अविनीत । २ धृष्ट । ३ उद्दण्ड ।

अनय–पु० [स० अन्याय] अनीति, अन्याय ।

अनयास–देखो 'अनायास' ।

अनरगळ–वि० [स० अनर्गल] १ बेहूदा । २ व्यर्थ । ३ बेरोक, बेधडक । ४ विचारहीन । ५ मनमाना । ६ लगातार । ७ अनियन्त्रित, निरकुश ।

अनरत–पु० [स० अनृत] झूठ, असत्य । –वि० झूठा ।

अनरत्थ, अनरथ–पु० [स० अनर्थ] १ उपद्रव । २ अन्याय । ३ अत्यधिक हानि । ४ विनाश । ५ सरासर मिथ्या । ६ अत्याचार । ७ अधर्म का कार्य । ८ खराबी । —वि० १ जिसका कोई अर्थ नही, निरर्थक । २ व्यर्थ । —**क**–वि० निरर्थक । व्यर्थ । —**कारी**–वि० अनिष्टकारी, उपद्रवी, उलटा मतलब निकालने वाला ।

अनरध–देखो 'अनिरुद्ध' ।

अनरस (रसा, रसौ)–पु० १ रसहीनता, शुष्कता, रुखाई । २ कोप । ३ मनोमालिन्य, फूट । ४ दुख, खेद, रज । ५ उदासी । ६ अन्य रस ।

अनरूप–वि० १ कुरूप, भद्दा । २ असदृश ।

अनळ–स्त्री० [स० अनल] १ अग्नि, आग । २ पित्त । ३ तीन की सख्या । –**कुंड**–देखो 'अगनी कुड' ।–**चूरण**–बारूद । —**पख**–देखो 'अनडपख' । —**पखचार**–पु० हाथी । —**पुड़**–पु० पहाड । —**मुख**–देवता । ब्राह्मण । —वि० जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ले । २ देखो 'अनिल' ।

अनळप–देखो 'अनल्प' ।

अनळस–वि० [स० अनला] आलस्य रहित, परिश्रमी ।

अनळा–स्त्री० १ कश्यप ऋषि की एक पत्नी । २ माल्यवान राक्षस की कन्या । ३ देखो 'अनळ' । ४ देखो 'अनिळ' ।

अनल्प–वि० [स०] अत्यधिक, अपार ।

अनवय–पु० [स० अन्वय] १ वश, कुल । २ वाक्य विन्यास ।

अनवार–वि० अन्य दूसरा ।

अनवी–वि० १ नही नमने वाला । २ वीर ।

अनसन–पु० [स० अनशन] १ निराहार व्रत, उपवास । २ भूख हडताल ।

अनसवर–वि० [स० अनश्वर] १ अनश्वर, अविनाशी । २ अटल । ३ नित्य, सनातन । —पु० ईश्वर, परमात्मा ।

अनसार–पु० भोजन ।

अनसूया, अनसोया–स्त्री० [स० अनसूया] १ अत्रि ऋषि की पत्नी । २ शकुन्तला की एक सखी । ३ अन्-ईर्ष्या । द्वेष भावना का अभाव ।

अनस्व–पु० [स० अनश्व] गधा, गर्दभ ।

अनस्वार–देखो 'अनुस्वार' ।

अनहद, (द्द)–वि० जिसकी कोई हद नही, अपार, बेहद । —पु० अनाहत नाद ।

अनाम, (मी)–वि० [स० अनाम] १ विना नाम का । २ अप्रसिद्ध । २ देखो 'इनाम' ।

अनामति (ती)–वि० [स० अनन्यमति] कुशलबुद्धि, चतुर ।

अनामय- वि० [स० अनामय] निरोग, तन्दुरुस्त ।

अनामा,अनामिका–स्त्री० [स० अनामिका] मध्यमा के बाद की उंगली ।

अनाक–क्रि० वि० नाहक, व्यर्थ । —**कर, कार**–वि० निराकार ।

अनाकानी–देखो 'आनाकानी' ।

अनागत-वि० [स०] १ अनुपस्थित । २ आगे आने वाला । ३ अज्ञात । ४ होनहार । ५ अनादि, अजन्मा । ६ अपूर्व । ७ अद्भुत ।

अनाग्रह–क्रि० वि० विना आग्रह के । —पु० आग्रह का अभाव ।

अनाघात–वि० [स०] १ आघात या चोट रहित । २ अकारण ।

अनाड–देखो 'अनड' ।

अनाड़वी, अनाडी–वि० १ अनाडी । २ मूर्ख नासमझ । ३ नादान । ४ अकुशल । —**पण, पणौ**–पु० मूर्खता, नासमझी, उद्दडता ।

अनाडौ–देखो 'अनड' ।

अनाचार–पु० [स०] १ दुराचार, पापाचार। २ अन्याय, अंधेर। ३ अत्याचार। —ता–स्त्री० दुराचारिता, कुरीति, बुरा आचरण।
अनाज–पु० [स० अन्न] अन्न, धान्य।
अनातप–पु० [स०] धूप या गर्मी का अभाव। —वि० ताप रहित, शीतल।
अनातम–वि० [स० अनात्म] आत्मा रहित, जड।
अनाथ–वि० [स०] १ जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो, लावारिस। २ असहाय, अशरण। ३ माता-पिता से हीन। ४ दीन, दुखी। –आलय, आस्रम–पु० लावारिस बच्चों को रखने का स्थान, यतीमखाना। —नाथ–वि० ईश्वर, विष्णु। —वि० अनाथों का सहायक।
अनायी, (यौ)–वि० १ बिना नाथ का। २ उद्दण्ड। ३ स्वतन्त्र। ४ अनाथ।
अनाद–देखो 'अनादि'।
अनादर–पु० [स०] अपमान, अवज्ञा, तिरस्कार, अवहेलना।
अनादि (दी)–वि० [स०] १ उत्पत्ति रहित, स्वयभू। २ नित्य सनातन। ३ परम्परागत। —जोगी योगी–पु० शिव, महादेव।
अनाधार–वि० [स०] १ आधार रहित, निराधार। ३ बेसहारा।
अनानास–पु० एक फल विशेष।
अनाप–पु० [स० अन्न+अप्] अन्नजल। –वि० १ नाप रहित। २ अपार। —सनाप–वि० बेहद, अपार। ऊट-पटाग। निरर्थक। —पु० व्यर्थ प्रलाप।
अनायक–वि० १ नायक रहित। २ रक्षक रहित।
अनायत–देखो 'इनायत'।
अनायास–क्रि० वि० [स०] १ बिना प्रयास के, सहज में। २ अचानक, सहसा।
अनार–पु० [फा०] लाल दानों वाला फल दाडिम। —दाणौ —पु० अनार का दाना।
अनारज, अनारिज–पु० [स० अनार्य] अनार्य, असुर, दस्यु। —वि० नीच, न्यून।
अनारी–देखो 'अनाडी'।
अनाळ–वि० सर्वत्र।
अनाळसी–वि० चुस्त। परिश्रमी।
अनावस्यक–वि० [स० अनावश्यक] व्यर्थ, निरर्थक। —ता–स्त्री० जरूरत का अभाव।
अनाव्रत, (व्रित)–वि० [स० अनावृत्त] आवरण रहित, खुला।
अनाव्रस्टि, (व्रस्टी, व्रिस्टी)–स्त्री० [स० अनावृष्टि] वर्षा का अभाव, अकाल। जलकष्ट।
अनास–पु० १ एक प्रकार का फल। २ देव वृक्ष। —वि० कायर।
अनासती–स्त्री० १ सतीत्वहीनस्त्री। २ कुसमय। —वि० १ बुरा। २ दुखप्रद। ३ कायर।
अनासिक–वि० नाक रहित, नकटा।
अनासुरति (ती)–क्रि० वि० अकस्मात्, अचानक।
अनास्था–स्त्री० [स०] १ आस्था का अभाव, अश्रद्धा। २ अविश्वास। ३ अप्रतिष्ठा। ४ अनादर।
अनास्रम–वि० १ आश्रयहीन। २ पतित। ३ बिना श्रम का।
अनास्रमी–वि० [स० अनाश्रमी] आश्रम भ्रष्ट, पतित।
अनास्रय, अनास्रित–वि० [स० अनाश्रय] १ निराश्रय, निरालब। २ दीन, अनाथ।
अनाह–पु० [स० आनाह] कब्ज का रोग, आफरा। देखो 'अनाथ' —क–क्रि०वि० नाहक, व्यर्थ में।
अनाहत,(हद)–वि० [स०] जो आहत न हो। —पु० १ दोनों कानों को बद करने पर सुनाई देने वाला शब्द। (योग) २ योग के आठ कमल चक्रों में से एक। ३ इन्द्रियों को अतर्मुखी कर सुनी जाने वाली मन्त्र ध्वनि। —नाद–पु० प्रकृति में व्याप्त ध्वनि। —वाणी–स्त्री० आकाशवाणी या देववाणी।
अनाहार–पु० [स०] १ भोजन का अभाव या त्याग। २ निराहार व्रत। —वि० १ निराहार, भूखा। २ विजयी।
अनिंद, (द्य)–वि० [स० अनिंद्य] १ जो निंदा योग्य न हो। २ दोष रहित। ३ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ जिसे नींद न आती हो। —क–वि० जो किसी की निंदा न करे।
अनिंदित–वि० [स०] १ जिसकी निंदा न हो। २ उत्तम।
अनिंद्रा–पु० १ देवता। २ अनिद्रा का रोग।
अनिंद्री, अनिंद्रीपित–पु० [स० इन्द्रियपति] मन।
अनि–सर्व० १ अन्य, दूसरा। २ भिन्न।
अनिअनी–क्रि०वि० १ भिन्न-भिन्न। २ तरह-तरह से।
अनिआई, (याई)–देखो 'अन्यायी'।
अनिकार–पु० वीर, योद्धा।
अनिच्छ–स्त्री० [स०] इच्छा का अभाव। —वि० १ इच्छा रहित। २ न चाहने वाला। ३ अनिश्चित।
अनिच्छा–स्त्री० १ इच्छा का अभाव। २ अरुचि।
अनित्य–वि० [स०] १ जो सदा न रहे। २ नश्वर। ३ क्षणिक। ४ अनियमित। ५ असत्य, झूठा। ६ अस्थायी। ७ अस्थिर। —ता–स्त्री० नश्वरता। अस्थिरता।
अनिनज–पु० [स० अनन्यज] कामदेव, मदन।
अनिप, (पति,पती)–पु० [स०] सेनापति, सेना नायक।
अनिपुण–वि० [स०] १ अकुशल, अपटु। २ अनाडी।

अनिबंध, (धी, धौ), अनिमध, धी धौ)—देखो 'अनमध' ।
अनिमिख—देखो 'अनमिख' ।
अनिमित, (त्त)—वि० [सं० अ-निमित्त] १ विना-निमित्त का, हेतु रहित । २ अकारण ।
अनिमिस, (मेख)—देखो 'अनमिख' ।
अनियत—वि० [सं०] १ अनिश्चित । २ अस्थिर । ३ अनित्य ।
अनियाई, (यायी)—देखो 'अन्यायी' ।
अनियाऊ, (याव)—देखो 'अन्याय' ।
अनिरणय—पु० [सं० अनिर्णय] १ निर्णय का अभाव । २ दुविधा । ३ संशय, संदेह ।
अनिरत, (रित)—पु० [सं० अनृतम्] झूठ, असत्य ।
अनिरुद्ध, (रुध, रुध्ध)—पु० [सं० अनिरुद्ध] श्रीकृष्ण का पौत्र व उषा का पति । —वि० जो अवरुद्ध न हो । —**पिता** कामदेव, मदन, प्रद्युम्न ।
अनिळ—स्त्री० [सं० अनिल] वायु, पवन, हवा । —**कुमार**—पु० भीम, हनुमान ।
अनिळासी—पु० [सं० अनिलाशिन्] १ सर्प । २ एक व्रत विशेष । ३ केवल वायु के आधार पर रहने वाला प्राणी ।
अनिवारित—वि० [सं०] जिसका निवारण न हो सके ।
अनिस—क्रि०वि० [सं० अनिश] निरन्तर, लगातार । —वि० निशा रहित ।
अनिसचित—वि० [सं० अनिश्चित] १ जिसका निश्चय न हो । २ अनियत । ३ अनिर्दिष्ट ।
अनिस्ट—वि० [सं० अनिष्ट] जो इष्ट न हो, अवांछित । —पु० १ अमंगल, अहित । २ बुराई । ३ विनाश, हानि । —**कर, कार, कारी**—वि० अहितकर । अमंगलकारी । हानिकारक ।
अनिस्ठुर—वि० [सं० अनिष्ठुर] दयावान, सरलचित्त ।
अनिस्ठा—स्त्री० [सं० अ + निष्ठा] १ अश्रद्धा, अविश्वास । २ विराग । ३ अप्रतिष्ठा । —वि० अवांछित ।
अनिहद—देखो 'अनाहत' ।
अनींद—देखो 'अनिंद' ।
अनींद्र—देखो 'अनिद्रा' ।
अनी—१ देखो 'अणि' । २ देखो 'इण' । देखो 'अनि' ।
अनीक—पु० [सं० अनीक अनीकम्] १ सैन्य-समूह । २ युद्ध । ३ योद्धा, ४ साथी । सुभट । ५ भागीदार । —वि० जो ठीक न हो । बुरा ।
अनीकनी—स्त्री० [सं० अनीकिनी] १ सेना, फौज । २ अक्षौहिणी सेना का दशांश ।
अनीच—वि० [सं०] १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ ऊंचा, उच्च । ३ जो तुलना मे कम न हो ।
अनीठ—देखो 'अनिस्ट' ।
अनीत, (नीति)—स्त्री० [सं० अनीति] १ अन्याय, बेइन्साफ । २ अत्याचार । ३ अव्यवस्था, अन्धेर ।
अनीतौ—वि० (स्त्री० अनीती) १ अन्यायी । २ आततायी । ३ दुराचारी । ४ दुष्ट । ५ चचल ।
अनीप—देखो 'अनिप' ।
अनीम—वि० [सं० अनम्र] १ न झुकने वाला । २ वीर ।
अनीयाव—देखो 'अन्याय' ।
अनीळबाजी, (वाजी)—पु० जिसके घोडे श्वेत हो, अर्जुन ।
अनीस—वि० [सं० अनीश] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि । २ जो किसी का स्वामी न हो । ३ लावारिस, अनाथ ।—पु० १ विष्णु । २ जीव । ३ माया । ४ सेनापति ।
अनीस्वर—वि० [सं० अनीश्वर] १ असयत । २ अयोग्य । ३ नास्तिक । ४ जो ईश्वर सबधी नही हो ।
अनीह—वि० [सं०] १ निःस्पृह, निरपेक्ष । २ अनिच्छुक । ३ निर्लोभी ४ निष्काम । ५ निश्चेष्ट । ६ आलसी । ६ निराश । —पु० समय, वक्त ।
अनीहा—स्त्री० [सं०] अनिच्छा ।
अनुंद्यमी—देखो 'अन्युद्यमी' ।
अनु—अव्य० [सं०] १ शब्दो के आगे लगने वाला उपसर्ग । २ हा, ठीक । ३ अब । ४ आगे । ५ पीछे, पश्चात् । ६ साथ, पास-पास । ७ ओर, तरफ । ८ एक के बाद एक, क्रमश —**कपा**—स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह । सहानुभूति । करुणा । —**कथण (न)**—पु० बाद का कथन । वार्तालाप । अनुकूल कथन । पुनरुक्ति कथन । —**करण**—पु० नकल । प्रतिरूपकरण । देखा-देखी कार्य । —**करणीय**—वि० अनुकरण करने योग्य । —**करता**—वि० नकल करने वाला । —**कार**—वि० समान, तुल्य, सदृश, बराबर । —**गमन**—पु० अनुसरण । समान आचरण । सहगमन । स्त्री का सती होना ।
अनुकूळ—वि० [सं० अनुकूल] १ मुआफिक, मनोज्ञ । २ पक्ष मे, तरफदार । ३ प्रसन्न, खुश । ४ सदय, दोस्त । ५ समर्थनीय । ६ विश्वस्त । ७ हितकर । —पु० विवाहिता स्त्री मे ही अनुरक्त नायक । —**ता**—स्त्री० पक्षपात । सहायता । प्रसन्नता । हित होने की दशा ।
अनुकूला—स्त्री० एक प्रकार का छद ।
अनुकोस—पु० [सं० अनुक्रोश] कृपा, दया, अनुग्रह ।
अनुक्रम—पु० [सं०] १ क्रम, सिलसिला । २ यथाक्रम, तरतीब । ३ परिपाटी । ४ विषय सूची ।
अनुक्रमणिका, (णीका)—स्त्री० [सं०] १ विषय सूची । २ सूची, फहरिस्त, तालिका ।
अनुक्रमि—क्रि० वि० अनुक्रम से, क्रमश ।

अनुग, (गत)–वि० [स०] १ अनुगत, अनुगामी । २ अनुयायी । ३ आज्ञाकारी । ४ साथी, सहचर । ५ पिछलग्गु । ६ अनुकूल, माफिक । —पु० १ नौकर, अनुचर । २ दास, सेवक । ३ शिष्य ।

अनुग्या, (गिया)–स्त्री० [स० अनुज्ञा] आज्ञा, आदेश ।

अनुग्रह–पु० [स०] १ दया, कृपा । २ प्रसन्नता । ३ अनिष्ट-निवारण । ४ करुणा ।

अनुचर–पु० [स०] १ नौकर, सेवक, दास । २ अनुयायी, अनुगामी । ३ साथी । ४ पिछलग्गु ।

अनुचित–वि० [स०] १ जो उचित न हो, गैरवाजिब । २ बुरा, अयोग्य । ३ नीति विरुद्ध । ४ अयुक्त । ५ असाधारण ।

अनुज, (ज्ज)–पु० [स०] (स्त्री० अनुजा) छोटा भाई । —वि० १ छोटा । २ पीछे जन्मा । ३ पिछला ।

अनुजीवी–वि० [स०] १ पराधीन, पराश्रित । २ परावलम्बी । ३ आश्रित । —पु० दास, नौकर ।

अनुताप–पु० [स०] १ ताप, तपन । २ दाह, जलन । ३ दुःख, रंज । ४ पश्चाताप । ५ अफसोस, खेद ।

अनुद्यमी–वि० [स०] १ जो श्रम न करे, आलसी । २ उद्यम रहित, बेकार, ठाला ।

अनुद्रुत–पु० [स०] संगीत मे ताल का एक भेद ।

अनुधावण, (न)–पु० [स०] १ अनुगमन । २ अनुसरण । ३ अनुसन्धान । ४ पीछा ।

अनुनय–पु० [स०] १ विनय, प्रार्थना । २ विनम्र कथन । ३ सान्त्वना ।

अनुनासिक–वि० [स०] नासिका की सहायता से उच्चारित होने वाले वर्ण ।

अनुप, (पम)–वि० [स०] १ अद्वितीय, बेजोड । २ अतुल्य । ३ अनोखा, अद्‌भुत ।

अनुपयुक्त–वि० [स०] १ जो उपयुक्त न हो । २ अयोग्य । ३ असगत, अनुचित ।

अनुपात–पु० [स०] १ गणित की त्रैराशिक क्रिया, गणना । २ मात्रा । ३ माप ।

अनुपातक–पु० ब्रह्महत्या के बराबर का पाप ।

अनुपादक–पु० [स०] आकाश मे भी सूक्ष्म एक तत्व । (तत्र)

अनुप्रास–पु० [स०] एक प्रकार का शब्दालकार ।

अनुबंध–पु० [स०] १ बंधन, लगाव । २ इत्सञ्ज्ञक वर्ण । ३ सिलसिला, आरंभ । ४ क्रम । ५ बयान । ६ टेका । ७ इरादा, उद्देश्य ।

अनुभव, (भाव)–वि० [सं० अनुभव] १ साक्षात् करने पर प्राप्त हुआ ज्ञान । २ व्यावहारिक ज्ञान । ३ समझ । ४ संवेदन ।

अनुभवी–वि० [स०] व्यावहारिक या प्रत्यक्ष ज्ञान वाला, तजरबेदार, भुक्त-भोगी ।

अनुभाव–पु० [स०] १ महिमा, बडाई । २ चमक-दमक । ३ अधिकार । ४ प्रभाव । ५ काव्य-रस के चार अंगो मे से एक । ६ निश्चय ।

अनुभूत–वि० [स०] १ अनुभव किया हुआ । २ परीक्षित । ३ भोगा हुआ ।

अनुभूति–स्त्री० [स०] प्रत्यक्ष अनुभव, परिज्ञान, बोध ।

अनुमत, अनुमति–स्त्री० [सं० अनुमतम्, अनुमति] १ इजाजत । २ स्वीकृति । ३ सहमति । ४ सम्मति । ५ चतुर्दशी के योग की पूर्णिमा ।

अनुमरण–पु० [स०] १ सहमरण । २ सती होना, पीछे मरना ।

अनुमांन–पु० [स० अनुमान] १ अटकल, अंदाजा । २ कल्पना । ३ न्याय शास्त्र के चार प्रमाणो मे से एक । –वि० समान, तुल्य, बराबर । —क्रि०वि० अनुसार ।

अनुमित, (मिति)–देखो 'अनुमति' ।

अनुमोदक–वि० [स०] समर्थक, अनुमोदनकर्त्ता ।

अनुमोदन–पु० [स०] १ समर्थन, सहमति । २ स्वीकृति । ३ प्रसन्नता का प्रकाशन ।

अनुमोदित–वि० [स०] १ समर्थित । २ स्वीकृत ।

अनुयायी–वि० [स०] १ अनुगामी । २ अनुकरण करने वाला । ३ पीछे चलने वाला । —पु० १ नौकर, सेवक । २ शिष्य ।

अनुयोग–पु० [स०] १ योग, जोड । २ प्रश्न । ३ खोज, शोध । ४ परीक्षा । ५ भर्त्सना । ६ याचना । ७ प्रयान । ८ चिंतन ।

अनुयोजन–पु० [स०] १ प्रश्न, जिज्ञासा । २ शोध, खोज ।

अनुरंजण (न)–पु० [स०] १ मनोरंजन । २ अनुराग, प्रीति ।

अनुरक्त, (रत, रति)–वि० [स०] १ आसक्त, लीन, रत । २ अनुराग युक्त ।

अनुराग,(ग्ग)–पु० [स०] १ प्रेम, प्यार, मोह । २ आसक्ति । ३ भक्ति । ४ सराग, रति । ५ प्रशमा । ६ ललाई ।

अनुरागी–वि० [स०] १ अनुराग करने वाला, प्रेमी । २ आसक्त, अनुरक्त ।

अनुराधा–स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रो मे से १७ वा नक्षत्र ।

अनुरूप–वि०[स०]१ सदृश, समान । २ एक जैसा । ३ उपयुक्त । ४ अनुकूल ।

अनुरूपक–पु० [स०] प्रतिमूर्ति, प्रतिबिंब ।

अनुरूपता–स्त्री० [स०] १ समानता, सादृश्य । २ अनुकूलता ।

अनुरोध–पु० [स० अनुरोध, अनुरोधम्] १ विनय, प्रार्थना । २ आग्रह । ३ प्रेरणा । ४ उत्तेजना । ५ बाधा, रुकावट । ६ दबाव । ७ अनुवर्त्तन ।

अनुलोम–वि० [स०] १ केश सहित । २ क्रमानुसार । ३ अनुकूल । ४ संकर । ५ अविलोम, सीधा । ६ नियमित ।

—पु० १ नीचे उतरने का कार्य। २ स्वरों का अवरोह (संगीत)।—ज–वि० उच्चवर्णीय पुरुष तथा निम्न वर्णीय स्त्री की संतान। वर्णसंकर।

अनुलोमनी–स्त्री० [सं०] दस्तावर दवा।

अनुवाद–पु० [सं०] १ भाषांतर। उल्था। तर्जुमा। २ पुनरुक्ति, दोहराना।—क–पु० अनुवाद करने वाला। —दित–वि० अनुवाद किया हुआ।

अनुसंधान–पु० [सं०] शोध, अन्वेषण, खोज।

अनुसर–पु० [सं० अनुसर] १ अनुगामी। २ साथी। ३ अनुचर।

अनुसरण–पु० [सं० अनुसरणम्] अनुगमन, पीछा करना।

अनुसार–क्रि० वि० [सं०] १ मुताबिक। २ अनुरूप। ३ समान, सदृश।

अनुसासक–पु० [सं० अनुशासक] १ अनुशासन करने वाला अधिकारी। २ शिक्षक। ३ निर्देशक।–वि० १ शासक। २ हुकम देने वाला। ३ प्रबन्धक।

अनुसासण, (न)–पु० [सं० अनुशासन] १ आज्ञा, आदेश। २ शिक्षा, उपदेश। ३ नियम पालन। ४ मर्यादा। ५ शिष्टता पूर्ण व्यवहार।

अनुसीलण–पु० [सं० अनुशीलन] १ चिंतन, मनन। २ अभ्यास।

अनुस्टप (स्टुप)–पु० [सं० अनुष्टुप] एक प्रकार का वर्ण वृत्त।

अनुस्टान, (स्ठान)–पु० [सं० अनुष्ठान] कार्य सिद्धि निमित्त देव विशेष की पूजा।

अनुहरणौ (बौ)–क्रि० समान होना, तुल्य होना, समानता करना।

अनुहार–स्त्री० [सं०] १ आकृति, शक्ल। २ देखो 'अनुसार'।

अनूतौ–देखो 'अणूतौ' (स्त्री० अनूती)।

अनूकंपा–देखो 'अनुकंपा'।

अनूग्रह–देखो 'अनुग्रह'।

अनूठौ–वि० [सं० अनुत्य, प्रा० अनुट्ठ] (स्त्री० अनूठी) १ अनोखा, अद्‌भुत, विचित्र। २ उत्तम बढ़िया।

अनूढ–वि० [सं०] (स्त्री० अनूढा) १ अविवाहित, कुंआरा। २ न ढोया हुआ। —पु० क्वारा व्यक्ति।

अनूढ़ा–स्त्री० [सं०] १ किसी पुरुष से प्रेम संबंध रखने वाली अविवाहिता स्त्री। २ वेश्या। ३ एक प्रकार की नायिका। —गामी–वि० व्यभिचारी, वेश्यागामी। अविवाहित स्त्री से व्यभिचार करने वाला।

अनूप, अनूपम–वि० अतुल्य, अनोखा। —जथा–स्त्री० डिंगळ छंद रचना का एक विधान।
—तर–पु० आम का पेड़ व फल।

अनूपा, (पे, पौ)–देखो 'अनूप'।

अनूरौ–वि० नूर रहित, कांतिहीन।

अने–क्रि०वि० और, तथा। —पु० आज्ञा, आदेश।

अनेक (के, कै)–वि० [सं० अनेक] १ एक से अधिक। २ बहु संख्यक। ३ अगणित, अपार। ४ भिन्न-भिन्न। ५ वियुक्त, जो नेक न हो, बदमाश। —अरथ, अरथी–वि० जिसके कई अर्थ हो। (शब्द) —ता–स्त्री० अधिकता, बाहुल्य। भेद-विभेद। मताधिक्य। —प–पु० हाथी, गज। —लोचन–पु० इन्द्र। कार्तिकस्याम।

अनेकांत–वि० १ जो एकान्त न हो। २ चचल। ३ अनियत, अनिश्चित। ४ वास्तविक। ५ अनन्त धर्मों के समन्वित रूप को पूर्ण सत्य मानने का भाव (जैन) —वाद–पु० जैन दर्शन, आर्हत दर्शन।

अनेकी–स्त्री० १ बुराई। २ अपकार। ३ अन्याय। ४ बदमाशी।

अनेड़–वि० [सं० अनेड] १ निकम्मा। २ टेढा, तिरछा। ३ खराब, बुरा। ४ उद्दण्ड। ५ मूर्ख, अनाडी।

अनेत–वि० [सं० नेति] अंतहीन। नेति।

अनेम–वि० [सं० अ-नियम] जिसका कोई नियम न हो, नियम रहित।

अनेर, (री, रौ)–वि० [सं० अन्य] अन्य, दूसरा, अपर।

अनेरण–वि० १ न झुकने वाला। २ अजेय।

अनेस–वि० १ स्नेह रहित। २ घर रहित। ३ अनेक।

अनेसी–स्त्री० खोटी बात, बुरी बात। —वि० १ अद्‌भुत, अनोखी। २ अतुल्य, बेजोड़।

अनेसौ–पु० १ शक, संदेह। २ दुःख, खेद। ३ देखो 'अनैसौ'।

अनेह–पु० [सं० अ-स्नेह] १ स्नेह या प्रेम का अभाव। २ विरक्ति। ३ समय, काल।

अनेहा–पु० [सं०] १ समय, काल। २ अवसर, मौका।

अनेही–वि० शत्रुता रखने वाला, द्वेषी।

अनेहौ–वि० शत्रुता रखने वाली, द्वेषी।

अनै–पु० [सं० अनय] अनीति, अन्याय। —अव्य० १ फिर, पुनः। २ और, तथा।

अनैस–देखो 'अनेस'।

अनैसी–देखो 'अनेसी'।

अनैसौ–वि० १ दूर। २ अपरिचित ३। लापरवाह। ४ निशंक, निर्भय। ५ अप्रिय। बुरा। ६ देखो 'अनेसौ'।

अनोअन, (अन्न)–क्रि०वि० [सं० अन्योन्य] परस्पर, आपस में।

अनोकह, (कुह)–वि० [सं०] १ अपना स्थान न छोड़ने वाला। २ स्थावर। —पु० वृक्ष, पेड़।

अनोख, (खौ)–वि० (स्त्री०-अनोखी) १ सुन्दर, खूबसूरत। २ अनूठा, निराला, अद्‌भुत। ३ विचित्र। —पण, पाणौ–पु० सुन्दरता, अनूठापन।

अनोड–देखो 'अनड'।

अनोप, (पम)—देखो 'अनुपम'।

अन्न—पु० [सं०] १ अनाज, धान। २ भोजन खाना। ३ खाद्य पदार्थ। ४ भात। ५ विष्णु। ६ सूर्य। ७ जल। ८ पृथ्वी। ९ देखो 'अन्य'। —कूट—पु० अन्न का पहाड़। देखो 'अन्नकूट'। —क्षेत्र, सत्र—पु० भूखों को भोजन देने का स्थान। —जळ—पु० अन्न-जल। खाने-पीने का योग। —जी, जी, वाजी—पु० भोजन। —ड—देखो 'अनड'। —था—देखो 'अन्यथा'। —दान—पु० अन्न का दान। —दाता—वि० पोषक, परिपालक, अन्न का दान देने वाला। —दास—पु० भोजन-भट्ट, पट्ठ। —पाणी—'अन्नजळ'। —पूरण (णा)—स्त्री० अन्न की अधिष्ठात्री देवी। काशीश्वरी, विश्वेश्वरी, वरवडी देवी का नाम। दुर्गा, पार्वती का एक नाम। —प्रतग्या, प्रतिग्या—स्त्री० अन्न त्याग का संकल्प। —प्रासन—पु० अन्न खिलाने का प्रथम संस्कार। —मयकोस—पु० त्वचा से वीर्य्य तक का समुदाय। पंचकोशों में से प्रथम।

अन्नण-चन्नण—पु० यौ० चन्दन का ईंधन।

अन्नल, (ला)—देखो 'अनळ'।

अन्नाद—देखो 'अनादि'।

अन्नाहत—देखो 'अनाहत'।

अन्निवध—देखो 'अनमद'।

अन्नेक—देखो 'अनेक'।

अन्य—वि० [सं०] १ दूसरा। भिन्न, २ विचित्र। ३ पराया, गैर। ४ अतिरिक्त। ५ नया। ६ अधिक। —क्रीत—वि० दूसरों का खरीदा हुआ। —पुरुस—पु० सर्वनाम का तीसरा भेद। दूसरा व्यक्ति।

अन्यत्र—क्रि०वि० [सं०] १ दूसरी जगह पर। २ कहीं और।

अन्यथा—क्रि० वि० [सं०] १ नहीं तो। २ प्रकारान्तर से।

अन्याई, (यी)—वि० [सं० अन्यायी] १ अन्याय व अत्याचार करने वाला। २ आततायी। ३ पक्षपात करने वाला।

अन्याय, (व)—पु० [सं०] १ न्याय का अभाव। २ अत्याचार, जुल्म। ३ नीति विरुद्ध आचरण।

अन्योक्ति—स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का अर्थालंकार। २ अप्रत्यक्ष कथन।

अन्योन्य—क्रि०वि० [सं०] आपस में, परस्पर। —आस्रय—पु० परस्पर आश्रित होने की दशा या भाव। सापेक्ष ज्ञान। एक अर्थालंकार।

अन्वय—पु० [सं०] १ परस्पर संबंध। २ संयोग, मेल। ३ कार्य कारण संबंध। ४ वंश।

अन्वेसक—वि० [सं० अन्वेषक] १ शोधार्थी, गवेषक। २ खोज करने वाला।

अन्वेसण—पु० [सं० अन्वेषण] अनुसंधान, खोज, शोध। तलाश।

अन्हायतर—स्त्री० शीघ्रता।

अन्हेरौ—वि० (स्त्री० अन्हेरी) अन्य, दूसरा।

अपग—वि० [सं० अपांग] (स्त्री० अपगा, अपगी) १ अंगहीन। २ लंगडा, लूला। ३ अशक्त, निर्बल। ४ असमर्थ, असहाय।

अपंथ—पु० [सं० अपथ] १ कुपथ, कुमार्ग। २ बीहड रास्ता, विकट मार्ग, ३ पथ का अभाव।

अपपर—देखो 'अपरपार'।

अप—अव्य० [सं०] शब्दों के आगे लगकर विरुद्ध या उलटा अर्थ देने वाला उपसर्ग। सर्व० आप, अपने। —वि० बुरा, अशुभ। —पु० [सं० अप्] पानी, जल। —अप्प, आप—क्रि०वि० अपने आप, स्वयमेव। —इण—सर्व० अपना। —कठ—पु० बालक। —क—पु० पानी। —कज—क्रि०वि० अपने लिये। —करण—पु० दुराचार। अनुचित कार्य। —करता—वि० हानिकारक। अनिष्ट कारक। पापी। —करम—पु० दुष्कर्म, कुकर्म। —काजी—वि० स्वार्थी। —कार—पु० बुराई। हानि। क्षति। अनिष्ट। निरादर, अपमान। दुर्व्यवहार। —कारक कारी—वि० दुष्कर्मी। नीच। विरोधी। अनिष्ट कारक। द्वेषी। —कीरत, कीरति, कीरती—स्त्री० अपयश। बदनामी। निंदा। हमी। —पक्ख—पक्ष रहित। असहाय। पंख रहित। —क्रति—स्त्री० निरादर। अपमान। हानि बुराई। अपकार। —घन—पु० शरीर, देह। —घातक, घातीक—वि० हत्यारा, हिंसक, आत्मघातक। —घात—स्त्री० आत्महत्या। हिंसा हत्या। धोखा। —चय—पु० नाश, संहार। —चाल—स्त्री० बुरी चाल। खोटाई। —चित—वि० पूज्य। —छद—वि० कुमार्गगामी। —जय—स्त्री० पराजय। —जस—पु० अपयश। —जोग—पु० बुरा योग, कुसमय, अशुभयोग। —जोर—पु० सामर्थ्य। —जोरौ—वि० निरंकुश। —तंत्र—पु० एक प्रकार का वात रोग। —तर—वि० नीच, पतित। कृतघ्न। —स्त्री० न जोती हुई भूमि। —ताई—स्त्री० निर्लज्जता। नीचता। —तानक—पु० गर्भपात से होने वाला रोग। —ताप—पु० सूर्य। —वि० नीच। —दत, दत्त—वि० अपना दिया। धात, ध्यात—पु० चन्द्रमा। —ध्वस—पु० अध पतन। नाश। अप्रतिष्ठा। —नाम—पु० अपकीर्ति। शिकायत।

अपक्षपात—पु० [सं०] १ पक्षपात का अभाव। तटस्थ नीति। २ न्याय। ३ न्याय पूर्ण निर्णय।

अपखी—वि० जिसका कोई पक्षधर न हो; असहाय।

अपगा—देखो 'आपगा'।

अपगौ—वि० (स्त्री० अपगी) १ अविश्वासी। २ देखो 'अपग'।

अपडणौ, (बौ)—क्रि० [सं० आपलृ] १ पकडना। २ रोकना,

थामना। ३ वदी करना। ४ दौड मे किसी के वरावर या आगे जाना।

अपच, (चौ)–पु० [स० अपच] १ अजीर्ण, वदहजमी। २ वद परहेजी। ३ कुपथ्य। ४ अपथ्य। ५ मन मे कोई वात न रहने की दशा (लाक्षणिक)।

अपची–स्त्री० कण्ठ का एक रोग।

अपछंदायण–वि० स्वतत्र, आजाद।

अपच्छर, (च्छरा, छर, छरा)–स्त्री० [स० अप्सरा] १ स्वर्ग लोक या इन्द्रलोक की नर्तकी; अप्सरा, परी। २ सुन्दर स्त्री। —**लोक**–पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग। —**वर**–पु० इन्द्र। वीर गति प्राप्त योद्धा।

अपछर–पु० अफसर, अधिकारी।

अपजससोर–पु० यौ० अपकीर्ति का फैलाव। वदनामी।

अपट–वि० १ वेहद, अपार। २ मर्यादा रहित। ३ वस्त्रहीन। ४ नगा, दिगंवर।

अपटणौ, (बौ)–क्रि० १ मर्यादा से वाहर होना। २ उमडना, उवकना। ३ उपलब्धि न होना। ४ वसूली न होना। ५ मन-मुटाव होना।

अपटा–क्रि०वि० वेहद मात्रा मे, खूब।

अपटाव–स्त्री० रोग, बीमारी। —पु० मन-मुटाव।

अपटी–स्त्री० [स०] १ कनात। २ शामियाना। ३ पर्दा। ४ आवरण। ५ वस्त्र।

अपटु–वि० [स०] १ अदक्ष, अचतुर। २ निर्बुद्धि, अनाडी। ३ रोगी। ४ सुस्त। —**ता**–स्त्री० कुशलता या चतुराई का अभाव।

अपठ, (ड, ढ़)–वि० [स० अपठित] १ अनपढ, अनाडी, मूर्ख। २ अशिक्षित।

अपड–वि० अजेय वीर।

अपण,(णउ, णू, णौ)–वि० [स० आत्मन्] (स्त्री० अपणी) अपना, निज का, निजी। –पु० आत्मीयजन, स्वजन।

अपणात, अपणाइत, (ईतु यत) –स्त्री० अपनत्व का भाव।

अपणाणौ, (बौ)–क्रि० १ अपनाना। २ ग्रहण करना। ३ सभाल लेना। ४ अपना वना लेना। ५ अपने अधिकार मे या सरक्षण मे रखना। ६ सहारा देना।

अपणापण (पणौ)–पु० अपनत्व।

अपणास, अपणेस–पु० अपनापन, अपनत्व।

अपणे, (णं)–सर्व० अपना।

अपत–वि० [स० अ + पत्र] १ पत्र या पत्तो से हीन। २ आच्छादन या आवरण रहित। ३ नग्न, नगा। ४ अधम, नीच। ५ निर्लज्ज। ६ अविश्वासी। ७ कायर, कमजोर। ८ नपु सक। ९ पतनोन्मुख। –पु०[स० अ + पत्य] १ पुत्र। २ सतान, औलाद। ३ अप्रतिष्ठा। ४ देखो 'अप्ति'।

अपति–स्त्री० [सं०] १ अग्नि, आग। २ देखो 'अपती'।

अपतियारौ–पु० अविश्वास।

अपतियौ–वि० अविश्वासपात्र, नीच।

अपती–वि० [स० अ + पत्ती] १ पापी, दुराचारी। २ प्रमादी। ३ कायर। ४ कृतघ्न। ५ आततायी। [स० अ + पति] ६ पति विहीना। —स्त्री० १ दुर्गति, दुर्दशा। २ आपत्ति। ३ अग्नि, आग। ४ अनादर।

अपथ–पु० [स०] १ कुमार्ग। २ कुपथ्य। —**गामी, चारी** —वि० दुराचारी, कुमार्गी।

अपथ्य– पु० [स०] कुपथ्य।

अपद–पु० [स०] १ विना पैर वाला प्राणी, उरग। २ रेंगने वाला जतु। ३ सर्प। —वि० १ पद रहित, पगु। २ कर्मच्युत। ३ पैदल। —क्रि०वि० १ अनुचित रूप से। २ देखो 'आपदा'।

अपवरजन–पु० [स० अपवर्जनम्] १ दान। २ त्याग, उत्सर्ग।

अपबाहुक–पु० वाहु का एक वात रोग।

अपभड–पु० योद्धा, वीर।

अपभ्रंस, (सौ)–स्त्री० [स० अपभ्रंश] १ प्राकृत भाषा का परवर्ती रूप जिससे पुरानी राजस्थानी व हिन्दी की व्युत्पत्ति मानी जाती है। —पु० २ पतन, गिराव। ३ विगाड, विकृति।

अपमल, (ल्ल, ल्लौ)–वि० १ मतवाला, मस्त, २ उद्दड।

अपमान–पु० [स० अपमान] १ अनादार, तिरस्कार। २ अवहेलना। ३ फटकार, दुत्कार।

अपमानी–वि० तिरस्कार या अनादर करने वाला।

अपमारग–पु० [स० अपमार्ग] कुमार्ग।

अपरच–अव्य० १ आगे। २ और भी। ३ पुन। ४ अत। ५ उपरात।

अपरपर, (परू, पार)–पु० ईश्वर, परमेश्वर। २ महादेव शिव। ३ विष्णु, अनत। —वि० अपार, असीम, वेहद।

अपर–वि० [स०] १ पूर्व का, पहला। २ इतर, अन्य, दूसरा, भिन्न। ३ पिछला। ४ अपकृष्ट, नीचा। ५ गैर। ६ देखो 'अपार'। —**पक्ष**–पु० कृष्णपक्ष। प्रतिपक्ष। —**बळ बळी**–पु० दूसरे का वल। —वि० असीम शक्तिशाली।

अपरचन–वि० गुप्त।

अपरचौ–अविश्वास।

अपरणा, (णा)–स्त्री० [स० अपर्णा] १ गिरिजा, पार्वती। २ देवी, दुर्गा। —वि० [सं० अपर्ण] पत्ता विहीन।

अपरती–पु० १ स्वार्थ। २ अविश्वास। ३ शका। ४ बर्डमानी।

अपरमाण–देखो 'अप्परमाण'।

अपरस–वि० [स० अ + स्पर्श] १ जो किसी का छुआ न हो। २ न छूने योग्य, अस्पृश्य। ३ पवित्र, शुद्ध। ४ अछूत, शूद्र।

अपराठौ– देखो 'अपूठौ'। (स्त्री०अपराठी)।

अपरा–स्त्री० [स०] १ लौकिक विद्या। २ पश्चिम दिशा। ३ गर्भाशय की झिल्ली। —एकादसी–स्त्री० ज्येष्ठ कृष्णा एकादशी।

अपराजित–वि० [स०] १ जो पराजित न हो, अजेय। २ विजयी। —पु० १ विष्णु। २ शिव।

अपराजिता–स्त्री० १ विष्णु कान्ता लता। २ दुर्गा। ३ कोयल। ४ ईशान कोण।

अपराद, अपराध–पु० [स० अपराध] १ गल्ती, भूल। २ दोष, दूषण। ३ चूक। ४ जुर्म। ५ अनीति। ६ पाप। ७ दुष्कर्म।

अपराधी–वि० [स०] १ अपराध करने वाला। २ कसूरवार, दोषी। ३ पापी। ४ आततायी।

अपराधीन–वि० [स०] स्वतत्र, स्वाधीन।

अपरिग्रह–पु० [स० अपरिग्रह] १ अस्वीकृति। २ गर्गवी, अभाव। ३ धन का त्याग। —वि० रक, गरीब।

अपरोगी–वि० (स्त्री० अपरोगी) १ डरावना, भयकर। २ अजनबी, अपरिचित ३ अप्रिय, अरुचिकर। ५ अमिलनसार। ६ रुखी प्रकृति वाला।

अपलग–वि० (स्त्री० अपलगी) निर्बल, कमजोर, अशक्त।

अपल–वि० १ बेहद, असीम। २ दानी, दातार। ३ योद्धा वीर।

अपलच्छ, (लच्छण)–पु० [स० अपलक्षण] १ कुलक्षण। २ बुरा चिह्न। ३ अवगुण।

अपलाणियौ, (लाणौ)–पु० विना चार जामाकसा (ऊट)।

अपलाप–पु० मिथ्या बात। बकवाद, वाग्जाल।

अपल्ल–देखो 'अपल'।

अपवन–पु० [स० उपवन] वगीचा उद्यान।

अपवरग, (ग्ग)–पु० [स० अपवर्ग] १ मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति। २ त्याग, दान। ३ एक स्वर्ग का नाम। ४ पूर्णता, समाप्ति। ५ स्वर्गीय आनन्द। ६ त्याग।

अपवस–वि० [स० अपवश] स्ववश, स्वाधीन।

अपवाद–पु० [स०] १ अपकीर्ति, अपयश,। २ दोष, कमी। ३ साधारण नियमो मे विपरीत नियम। ४ खण्डन।

अपवार–पु० अत्यधिक कार्य।

अपवाहक–वि० एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने वाला।

अपवाहुक–देखो 'अपवाहुक'।

अपवितर, अपवित्र–वि० [स० अपवित्र] अशुद्ध, गदा। नापाक। —ता–स्त्री० अशुद्धि, गदगी।

अपव्यय–पु० [स०] निरर्थक व्यय, फिजूलखर्ची।

अपस–पु० १ मृगी नामक रोग, अपस्मार। २ डिंगल गीतो की रचना का एक दोष। ३ कार्य करने मे असमर्थ व्यक्ति। —वि० आलसी, सुस्त।

अपसकुन, (सगन, सगुन)–पु० [स० अपशकुन] १ बुरा शकुन। २ अशुभ चिह्न। ३ अमगल के लक्षण।

अपसद, (सद्द)–वि० [स० अपसद] नीच, अधम।

अपसब्द–पु० [स० अपशब्द] बुराशब्द, गाली, कुवाक्य।

अपसर, (सरा)–पु० [स० अप्सरा] १ देवागना, अप्सरा। २ एक देव जाति।

अपसवारथी–वि० स्वार्थी, खुदगर्ज।

अपसांण, अपसुकन–देखो 'अपसकुन'।

अपसोस–देखो 'अफसोस'।

अपस्ठ–पु० [स० अपस्ठं] अकुश का अग्रभाग।

अपस्मार, (री)–पु० त्रिदोष (कुपित) से होने वाला एक वात रोग।

अपहड–पु० १ राजा। २ दानी पुरुष। ३ योद्धा। —वि० १ दानी, दानवीर। २ उदारचित। ३ अप्रतिहत। ४ अजेय। ५ पूर्ण। ६ जो धोखा न दे।

अपहरण–पु० [स०] १ बलात् कुछ ले के भागने की क्रिया, हरण, चोरी। २ लूट। ३ छिपाव। ४ छीना झपटी।

अपहरता–वि० [स० अपहर्त्ता] अपहरण करने वाला, वीर, लुटेरा।

अपहार–पु० त्याग।

अपहास–देखो 'उपहास'।

अपह्नुति–पु० [स०] एक काव्यालकार।

अपा–देखो 'आपा'।

अपाग–पु० [स] १ कटाक्ष। २ आख की कोर। ३ देखो 'आपगा'। ४ देखो 'अपंग'।

अपाण–वि० [स० अ+पाणि] १ विना हाथ का। २ विना कलप लगा। ३ धारहीन (शस्त्र)। [सं० अ+प्राण] ४ अशक्त। ५ अतृप्त। —पु० बल, शक्ति।

अपाणै–देखो 'आपणै'।

अपान–पु० [स० अपान] १ पाच वायुओ मे से एक। २ अपान-वायु। ३ गुदा। —वायु–स्त्री० अपानवायु, पाद।

अपा–स्त्री० १ गर्व, गुमान। २ आत्मभाव। —क्रि० वि० दूर। अलग। —मारग–पु० चिचडा नामक एक झाडी।

अपाटव–वि० अपटु। —स्त्री० मूर्खता। बोदापन।

अपात्र–वि० कुपात्र। मूर्ख।

अपादान–पु० [स० अपादान] व्याकरण मे एक कारक ।

अपाप–पु० [स०] १ पुण्य । २ शुभ कार्य । ३ धर्म ।

अपायत– देखो 'आपायत' ।

अपार (रण)–वि० १ सीमा रहित, असीम, अनत, वेहद । २ जो नजदीक न हो, दूर । ३ असंख्य ।

अपारथ–वि० [स० अपार्थ] अर्थहीन, निरर्थक ।

अपारा, अपारांय–वि० अनेक, वहुत ।

अपाळ–वि० १ जिसका पालन करने वाला न हो । २ जिसका पालन न किया जाता हो ।

अपाल–वि० रुकने वाला । २ वेरोक-टोक । ३ रोकने वाला । ४ वहुत, अधिक, अपार ।

अपावन–वि० [स०] अपवित्र, अशुद्ध । मलिन ।

अपाहिज-वि० [स अपभज] १ लूला, लंगडा, अपग । २ वहुत ही असमर्थ । ३ अशक्त । ४ आलसी ।

अपि, अपी–पु० सूर्य ।

अपीतजा–स्त्री० अग्नि, आग ।

अपीधौ–वि० (स्त्री० अपीधी) तृषित, प्यासा । विना पिया ।

अपुत्र (क)–[स०] (स्त्री० अपुत्री) १ पुत्रहीन । २ सतान रहित । ३ निर्वंश । ४ अपने वश को कलकित करने वाला वुरे आचरण वाला पुत्र, कुपुत्र ।

अपुनीत–वि० [स०] १ अपवित्र, अशुद्ध । २ दूषित, गदा ।

अपूठ–वि० १ उल्टा । २ पीठ की ओर का । ३ पीछे का । ४ अप्रसन्न ।

अपूठौ–वि० (स्त्री० अपूठी) १ पीठ घुमाया हुआ । २ विमुख । ३ उल्टा । ४ विरुद्ध । ५ पीठ फेरकर वैठने वाला । —क्रि०वि० उल्टे पैरो से वापिस ।

अपूणौ–वि० पूर्ण, पूरा ।

अपूत–वि० [स० अपुत्र] १ कुपुत्र, कपूत । २ पुत्रहीन । [स० अपूत] ३ अशुद्ध, अपवित्र ।

अपूर–वि० भरपूर, पूरा ।

अपूरण–वि० [स० अपूर्ण] १ जो पूर्ण न हो, अधूरा, अपूर्ण । २ कम होने वाला । —ता–स्त्री० अधूरापन, कमी । —भूत–पु० वह भूतकाल जिसकी क्रिया की समाप्ति न हुई हो ।

अपूरणौ, (बौ)–क्रि० १ पूर्ण करना । २ कम करना । ३ कम होना ।

अपूरब, (पूरव, वौ)–वि० [स० अपूर्व] १ विलक्षण, अनोखा । २ अपूर्व, अद्वितीय । ३ उत्तम श्रेष्ठ । ४ पूर्व जन्म का, पहले का । —ता–स्त्री० अनोखापन, अद्वितीयता ।

अपेक्षा–स्त्री० [स०] १ आकाक्षा, अभिलापा, इच्छा । २ आशा, उम्मीद । ३ तुलना, मुकावला । ४ आवश्यकता ।

अपेक्षित–वि० [म०] १ इच्छित, वाछित । २ आवश्यक ।

अपेय–वि० [स० अ + पेय] न पीने योग्य ।

अपेल–वि० १ अटल, स्थिर, दृढ़ । २ वहुत, अपार, असीम ।

अपैठ–वि० [स० अप्रविष्ठ] १ दुर्गम, अगम । २ कठिन । दु साध्य । ३ अविश्वासी । —स्त्री० अविश्वास ।

अपोढ़ी–स्त्री० निद्रा से उठने की क्रिया या भाव ।

अपौचणौ, अपौचियौ, अपौचौ–वि० (स्त्री० अपौचणी, अपौची) १ अपरिश्रमी । २ आलसी, सुस्त । ३ निर्वल, अशक्त ।

अप्प, अप्पण,अप्पणू अप्पणू, अप्पणौ (न्नू)–सर्व०[स० आत्मन्] मैं हम, अपन । –वि० अपना, निजका ।

अप्पणौ (बौ)–देखो 'आपणौ' (वौ) ।

अप्परमाण–वि० [स० अप्रमाण] १ प्रमाण रहित, अविश्वस्त । २ असीम, वेहद । ३ अप्रामाणिक । ४ जो प्रमाण के रूप मे न माना जाय । ५ अदृष्टान्त ।

अप्पलाणियौ, (लांणौ)–देखो 'अपलाणौ' ।

अप्पवासी–पु० १ जल जतु । २ जल के प्राणी । —वि० गुप्त रूप से रहने वाला ।

अप्पित्त–स्त्री० अग्नि, आग ।

अप्रच–देखो 'अपरच' ।

अप्रपर–देखो 'अपरपार' ।

अप्रंप्रम–पु० परब्रह्म । ईश्वर । —वि० वहुत ।

अप्रकास–पु० [स० अ + प्रकाश] १ अधकार । २ अज्ञान । —क्रि०वि० छिपकर, गुप्त रूप से ।

अप्रकासित-वि० [स० अ + प्रकाशित] १ गुप्त, छिपा हुआ । २ तिमिराच्छन्न । ३ ढका हुआ ।

अप्रकास्य–वि० [स० अप्रकाश्य] जो प्रकट करने योग्य न हो, गोपनीय ।

अप्रखर–वि० [स०] मृदु, कोमल । २ नर्म । ३ मद ।

अप्रछन, (छन्न)–वि० [स० अप्रछन्न] १ गुप्त, छिपा हुआ । २ प्रकट । ३ दुष्ट ।

अप्रजौ–वि० अपार वल वाला ।

अप्रतिबध–पु० [स०] प्रतिवध का अभाव, स्वच्छन्दता ।

अप्रतिभ–वि० [सं०] १ प्रतिभा शून्य । २ जवाव देने मे असमर्थ । ३ अप्रत्युत्पन्नमति । ४ चेष्टाहीन । ५ उदास । ६ सुस्त । शीलवान । ७ लजालु । ८ मद ।

अप्रतिम–वि० [स०] अद्वितीय, वेजोड ।

अप्रतिस्ठ, (तिस्ठित)-वि० [स० अप्रतिष्ठत] १ जिसकी प्रतिष्ठा न हो । २ अप्रसिद्ध । ३ तिरस्कृत । ४ अलोकप्रिय ।

अप्रतीत–पु० काव्य रचना का एक दोप । —वि० अविश्वस्त ।

अप्रत्यक्ष–वि० [स०] परोक्ष ।

अप्रधान–वि० गौण ।

अप्रबळ–वि० १ अति प्रवल, शक्तिशाली । २ महान पराक्रमी । ३ जो प्रवल न हो, निर्वल । —पु० दैत्य ।

अप्रंभसी–देखो 'अपभ्रंस' ।

अप्रमत्त–वि० सदा सावधान ।

अप्रमत्तावस्था–स्त्री० आत्म विकास के लिए सतत् जागरूकता । २ चौदह गुण स्थानो मे से ७ से १४ तक गुण स्थानो मे जीव की अवस्था । ३ सावधानी । ४ अप्रमाद (जैन) ।

अप्रमाण–देखो 'अप्परमाण' ।

अप्रमाद–पु० चुस्ती, स्फूर्ति । —वि० १ प्रमाद रहित, चुस्त । २ गर्व रहित ।

अप्रमित–वि० [स० अपरिमित] अपार असीम ।

अप्रमेह–वि० [स० अप्रमेय] अथाह, असीम ।

अप्रम्म–पु० परब्रह्म, ईश्वर ।

अप्रयुक्त–पु० एक साहित्यक दोष । —वि० जो काम मे न लिया गया हो । अव्यवहृत ।

अप्रवीत–देखो 'अपवित्र' ।

अप्रसन्न–वि० [स०] १ नाखुश । २ उदास, खिन्न, सुस्त । ३ असतुष्ट । ४ गदला ५ मलिन । —**ता**–स्त्री० ना खुशी । उदासी, खिन्नता । सुस्ती, मलिनता ।

अप्रस्तुत–वि० [स०] १ जो प्रस्तुत या उपस्थित न हो । २ जो तैयार न हो । ३ अप्रासगिक, गौण । —**प्रससा**–पु० एक अर्थालकार ।

अप्राप्त–वि० [स०] १ जो प्राप्त या उपलब्ध न हो । २ जो सुलभ न हो । ३ अप्रस्तुत ।

अप्रिय–वि० [स०] १ जो प्रिय न हो । २ अरुचिकर ।

अप्रीति–स्त्री० [स०] १ प्रीति या प्रेम का अभाव । २ शत्रुता, विरोध ।

अप्रेह–वि० अद्भुत, विलक्षण ।

अप्रोगी–देखो 'अपरंगो' (स्त्री० अप्रोगी) ।

अप्रोगी–देखो 'अपरोगी' (स्त्री० अप्रोगी) ।

अप्रौढ–वि० [स०] १ जो प्रौढ न हो, युवा या वृद्ध । २ नाबालिग ।

अप्सर–१ देखो 'अफसर' । २ देखो 'अपछरा' ।

अप्सरा–देखो 'अपछरा' ।

अफड, (डो)–पु० १ धूर्तता, ठगी । २ पाखड, ढकोसला । ३ ढोग, स्वाग । ४ अडगा, बाधा । ५ झगडा, टटा । ६ बवडर ।

अफडी–वि० १ अफड करने वाला, धूर्त, पाखडी । २ स्वाग रचने वाला, ढोगी । ३ झगडालु ।

अफद–पु० १ बधन रहित, २ बाधा रहित ।

अफडणौ, (बौ)–क्रि० भिडना, टक्कर लेना ।

अफछर, (छरा)–देखो 'अपछरा' ।

अफताब–देखो 'आफताब' ।

अफताबी–वि० सूर्य सबधी, आफताबी ।

अफफर–वि० न मुडने वाला, न फिरने वाला ।

अफर–स्त्री० १ पीठ, पृष्ठ । २ पृष्ठभाग । ३ शत्रुता, वैर । ४ द्वेष, ईर्ष्या । —वि० १ न मुडने वाला । २ न फाडा जाने वाला ।

अफराठौ–देखो 'अपूठौ' (स्त्री० अफरूंठी) ।

अफरा, (री)–स्त्री० बडी सेना ।–वि० १ न मुडने वाली । २ शक्तिशाली ।

अफरीदी–स्त्री० पठानो की एक जाति ।

अफरूंटौ (ठौ)–देखो 'अपूठौ' । (स्त्री अफरूठी) ।

अफळ–वि०[स० अफल] १ फलहीन, बिना फल का । २ निष्फल, निरर्थक ।

अफलातू, (तून)–वि० १ अत्यधिक घमडी । २ बेपरवाह । ३ बेहद, असीम । ४ अत्यधिक, बहुत ।–पु०–प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो का नामान्तर ।

अफवा, (वाह)–स्त्री० [अ०] १ उडती बात । २ झूठी खबर । ३ गप्प । ४ किंवदती, जनश्रुति ।

अफवाज–स्त्री० [अ०] १ वीरता । २ फौज, सेना ।

अफसर–पु० [फा] बडे ओहदे का नायक, सरदार, अधिकारी, प्रधान ।

अफसरी–स्त्री० अधिकार, हुकूमत, ठकुराई, शासन ।

अफसोस–पु० [फा०] खेद, रज, दुख ।

अफारौ–वि० १ बहुत अधिक । २ शक्तिशाली । ३ बहादुर । ४ कुपित, क्रुद्ध । ५ भयानक । ६ अपार । ७ विस्तृत । ८ श्रेष्ठ बढिया ।

अफाळणौ, (बौ),–क्रि० १ तेजी से चलना/चलाना । २ देखो 'आफळणौ' (बौ) ।

अफीण, अफीम–पु० [स० अहिफेन, अ० अफयून] १ पोस्त के ढोड का रस जो नशे व ओषधि के काम आता है । २ अमल ३ विष । —**ची**–वि० अफीम का नशेबाज ।

अफीणी–वि०–अफीम का अफीम सबधी ।

अफुल्ल–वि० [स०] १ बिना फूला हुआ, अविकसित । २ पुष्प रहित ।

अफूटौ, (ठौ)–देखो 'अपूटौ' । (स्त्री०–अफूटी, ठी) ।

अफेर, (रौ)–वि० १ नही फिरने वाला, न मुडने वाला । २ योद्धा ।

अफौ–पु० एक कटीला क्षुप ।

अबक, (कौ)–वि० [स० अ-वक्र] (स्त्री० अबकी) १ जो वक्र या टेढा न हो, सीधा । २ सरल, सहज । ३ सीधा-सादा ।

अबद, (बध)–वि० [स० अबध] १ बन्धन रहित, खुला, मुक्त । २ विकसित, खिला हुआ ।

अब–क्रि०वि०–१ अभी, इसी समय । २ फिलहाल । ३ तदनन्तर, ४ तत्पश्चात् ।

अवक–वि० [स० अ-वच्] न कहने योग्य, अकथ्य । –ली, लै क्रि०वि०-इस बार । दूसरी बार । पुन ।

अबकाइ, (ई)–स्त्री० १ अडचन, बाधा । २ कठिनाई । ३ आपत्ति । ४ भार या बोझ । ५ रजो दर्शन । (स्त्रिया) ।

अबकी–क्रि०वि० १ इस बार । २ दूसरी बार । ३ पुन । वि० १ दुर्गम, दुरूह । २ सकटमय ।

अबके, (कै)–देखो 'अबकी' (क्रि० वि०) ।

अबको, (खो)–वि० (स्त्री० अबकी, अबखी) १ कठिन, मुश्किल । २ टेढा । ३ दुर्गम, दुरूह । ४ सकटमय ।

अबखाणो (बो)–देखो 'आबखणो' (बो) ।

अबखाई–देखो 'अबकाई' ।

अबगरो–देखो 'अभिग्रह' ।

अबगात–वि० वेदाग, निष्कलक ।

अबचळ, (छळ)–वि०[स० अविचल] १ अटल दृढ़ । २ निश्चल, अविचल । ३ निष्कंटक । ४ स्थाई । ५ निरन्तर ।

अबछर–देखो 'अपसरा' ।

अबछाड–वि० १ सहायक, मददगार । २ रक्षक ।

अबज–देखो 'अब्ज' ।

अबजात–पु० दुश्मन, शत्रु ।

अबझळणो, (बो)– क्रि० १ जोश करना । २ उत्साह करना । ३ आकाश छूने की इच्छा करना ।

अबट–पु० (स० अ+वट) १ बुरा रास्ता । २ विटक मार्ग । ३ कुसगति ।

अबड, (डो)–वि०(स्त्री०अबडी) १ बलवान, साहसी । २ निडर । ३ इतना । ४ बिना कटा या काटा हुआ ।

अबणासी–देखो 'अविनासी' ।

अबदार–स्त्री० शराब, मदिरा ।

अबदाळ–पु० १ महान ईश्वर भक्त, जिनकी सख्या तीस मानी गई है । (मुसलमान) २ यवन, मुसलमान । ३ शत्रु, दुश्मन । –वि० १ महान, श्रेष्ठ । २ उदार ।

अबदूर–क्रि०वि० पास, समीप ।

अबद्ध–वि० [स०] बधन रहित, मुक्त ।

अबधु, (धूत)–देखो 'अवधूत' ।

अबध्य–देखो 'अवध्य' ।

अबनमो, (निमो, नीमो)–देखो 'अभनमो' ।

अबनाड–पु० पर्वत, पहाड ।—वि० १ अनम्र । २ वीर ।

अबरक, (ख)–देखो 'अभ्रक' ।

अबरके, (कै)–देखो 'अबके' ।

अबरण–देखो अवरण' ।

अबरस–पु० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ घोडा का एक रग ।

अबरी–१देखो 'अभरी' । २ देखो 'अवरी' ।

अबरोसियो, अबरोसो– देखो 'अभरोसो' ।

अबळ–वि० [स०-अ-वल] १ निर्बल, कमजोर, अशक्त । २ दुर्बल, कृश । ३ असमर्थ ।— पु०१ बल का अभाव । २ देखो 'अबळा' ।

अबलक, (को)–पु० [स० अवलक्ष] सफेद या काला, या सफेद या लाल रग का घोडा ।—वि० १ चितकबरा । २ सफेद व लाल रग का ।

अबलका, (खा)–स्त्री०[स० अभिलाषा] १ इच्छा, अभिलाषा । २ आशा ।

अबलख, (खो)–देखो 'अबलक' ।

अबलखा–स्त्री० १ एक चिड़िया विशेष । २ देखो 'अबलका' ।

अबळण–वि० १ सत्य । २ अटूट । ३ घमडी ।—स्त्री० १ एक गति । २ लौटना क्रिया या भाव । ३ न लौटना ।

अबळांबकी–वि० १ निर्बल का बल, सहारा । २ निर्बल, अशक्त ।

अबळा–स्त्री० [स० अबला] स्त्री, औरत, नारी । वि०—बल हीना ।—**मूल**–स्त्री० सोलह श्रृंगार युक्त महिला ।—पु० अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित योद्धा । —**पण, पणौ**–पु० स्त्रीत्व । कमजोरी, निर्बलता । —**सेन**–पु० रतिपति, कामदेव ।

अबलाकी–देखो 'अभिलासी' ।

अबळो–वि० (स्त्री० अबळा) कमजोर, अशक्त, निर्बल ।

अबवेल–स्त्री० १ सहायता मदद । २ रक्षा, सुरक्षा ।

अबात–वि० [स० अ-वात] १ वातहीन, वायु रहित, निर्वात । २ वार्तालाप या वृत्तात रहित ।

अबाबील–स्त्री० [फा०] काले रग की एक चिड़िया ।

अबार, (रू)–क्रि०वि० १ अभी, इसी समय । २ तुरत, शीघ्र ।

अबाळ–वि० १ बिना बालक का । २ बाल्यावस्था रहित, जवान, युवा । —क्रि०वि० बालक पर्यन्त ।

अबास–वि० (स० अ+वास) १ आवास रहित, विश्राम रहित । २ गध रहित । ३ सुगध रहित । ४ देखो 'आवास' ।

अबिणास (नास)–देखो 'अविनास' ।

अबिणासी, (नासी)–देखो 'अविनासी' ।

अबिरच–वि० १ प्रसन्न, खुश । २ अनुकूल ।

अबिरचणो, (बो)–क्रि० –१ प्रसन्न होना, खुश होना । २ अनुकूल होना ।

अबिरळ–देखो 'अविरळ' ।

अबींद–वि० [स० अविद्ध] १ बिना बेधा हुआ । २ अछिद्रित । ३ अक्षत । ४ निष्कलक ।

अबीढ़ो–वि० (स्त्री० अबीढी) १ अद्भुत, अनोखा । २ दुर्गम, दुरूह । ३ कठिन, टेढा । ४ भयकर । ५ जोशीला । ६ ओजस्वी, वीररस पूर्ण ।

अबीर, (री)–पु० पीली गुलाल । —मई, मय, मयो–वि० अबीर-गुलाल से युक्त । कायरता युक्त ।

अबीरी–वि० अबीर के रंग का।
अबीह, अबीहौ–वि० [सं० अ + भय] १ निडर, निशंक, निर्भय। २ महान, जबरदस्त।
अबु वा–देखो 'अबुवा'।
अबुध–वि० [सं०अ+बुद्ध] १ निर्बुद्धि, अज्ञानी। २ मूर्ख अनाड़ी।
अबूज, (झ)–वि० [सं० अ + बुद्ध] १ अबोध, नादान। २ सूझ-बूझ से हीन। ३ मूर्ख। —[सं० अ–पृच्छ] ४ विना पूछा हुआ, विना जाना हुआ। ५ अज्ञेय। —पण, (णौ) १ मूर्खता, नादानी। २ अज्ञान।
अबूझणौ, (बौ)–१ देखो 'अमूझणौ' (बौ)। २ देखो-'बूझणौ' (बौ)।
अबूझौ–वि० अचतुर, अदक्ष।
अबेध–वि० [सं० अविद्ध] १ जिसे बेधा न जा सके। २ विना बेधा हुआ। ३ अछिद्रित।
अबेर–स्त्री० [सं० अवेला] १ विलंब, देर। २ कुसमय। ३ सम्हाल, देखरेख। —क्रि०वि० अविलंब, शीघ्र।
अबेरणौ, (बौ)–क्रि० १ सम्हालना, देखरेख करना। २ सुव्यवस्थित करना, संवारना।
अबेरौ–पु० देखभाल करने की क्रिया।
अबेळा, (ळौ, ळौ)–स्त्री० १ असमय, कुसमय। २ विलंब, देरी।
अबेस–वि० [फा० वेश] १ अधिक, ज्यादा। २ आयु रहित। ३ वेश रहित, नंगा। —पु० जोश, आवेश।
अबेह, अबै–क्रि०वि० १ असमय कुसमय। २ अब, इस समय। ३ इस बार।
अबोचन–देखो 'अवोचन'।
अबोट–वि० १ पवित्र, शुद्ध। २ साफ, स्वच्छ। ३ अछूता। ४ अखंड। ५ बिल्कुल नया। ६ तथ्यहीन।
अबोटी–स्त्री० १ पवित्र वस्त्र। २ शाकद्वीपीय ब्राह्मणों का एक गोत्र।
अबोद, (ध)–वि० [सं० अबोध] १ जिसे बोध न हो। २ अवयस्क, नादान। ३ ना समझ, मूर्ख। ४ अज्ञानी।
अबोल, (लौ)–पु० (स्त्री० अबोली) १ मौन, चुप्पी। २ शांति। —क्रि०वि० विना बोले, चुपचाप।
अबोलणौ–वि० नहीं बोलने वाला, मूक। —पु० १ परस्पर न बोलने की अवस्था या भाव। २ शत्रु, वैरी। ३ पशु। ४ शत्रुता।
अब्ज–वि० [सं० अब्जम्] १ जल में उत्पन्न हुआ जलज। २ कमल। ३ श्वेत। ४ रक्तवर्ण।
अब्द–पु० [सं० अब्द] १ मेघ। २ आकाश। ३ वर्ष साल।
अब्धि–पु० [सं०] समुद्र, सागर।
अब्बल–देखो 'अवल'।
अब्बळा–देखो 'अबळा'।
अब्बिहि–वि० निडर, निर्भय, निशंक।
अब्बी–पु० [फा० आब] पानी, जल। —क्रि० वि० अभी, इसी समय।
अब्बीर–देखो 'अबीर'।
अब्भ–देखो 'आभौ'।
अब्भिमान–देखो 'अभिमान'।
अब्याई–वि० १ बिना प्रसव की (मादा पशु)। २ कुआरी।
अब्यागत–देखो 'अभ्यागत'।
अभ्रक–देखो 'अभ्रक'।
अब्रद्ध–वि० [सं० अ–वृद्ध] १ जो वृद्ध न हो। २ युवा। ३ बालक।
अब्री–स्त्री० पुस्तकों आदि की जिल्द पर लगाने का छींटदार कागज।
अभंग–वि० [सं०] १ जो भंग न हुआ हो, अखंड, अटूट। २ अक्षत। ३ पूर्ण। ४ वीर, बहादुर। ५ निर्भय, निश्चित। ६ बेहद, असीम। —पु० १ सिंह, शेर। २ पद, भजन। —पद–पु० श्लेष अलंकार का एक भेद।
अभंगी, (य)–वि० [सं० अभंगिन्] १ न भागने वाला, अडिग। २ देखो 'अभंग'।
अभंगुर–वि० [सं०] अखण्ड, अटूट। २ दृढ़ मजबूत। ३ न मिटने वाला।
अभंज, (न)–वि० [सं०] अखण्ड, अटूट।
अभ–देखो 'आभौ'।
अभक्त–वि०[सं०]१ जो भक्त न हो। २ नास्तिक। ३ अश्रद्धालु।
अभक्ख, (क्ष, क्ष्य, ख, खज)–वि० [सं० अभक्ष्य] १ न खाने योग्य, अखाद्य। २ जिसका खाना निषिद्ध हो।
अभग्गौ–देखो 'अभागौ'। (स्त्री० अभग्गी)।
अभड़छेट, (छोत)–देखो 'आभडछोत'।
अभडीजणौ (बौ)–देखो 'आभडणौ' (बौ)।
अभडीजियोडी–वि० रजस्वला।
अभधूत–देखो 'अवधूत'।
अभनम–पु० १ वंशज। २ पौत्र, प्रपौत्र। ३ देखो 'अभिनव'।
अभनमौ, अभनवौ–पु० १ अपने पूर्वजों के गुण धारण करने वाला। २ दूसरा, द्वितीय। ३ समान, सदृश। ४ अभिनत। ५ वंशज।
अभभूप–पु० [सं० आभा-भूप] कवि।
अभमन, अभमान–देखो 'अभिमान'।
अभमानव–देखो 'अभिमन्यु'।
अभमानी–देखो 'अभिमानी'।
अभमातो–पु० [सं० अभ्यमित्र] शत्रु, दुश्मन।
अभय–पु० [सं०] १ भयहीनता। २ शरण। ३ कुशलता। ४ निश्चितता। —वि० निर्भय, निडर, कुशल। —धाम–

पु० मोक्ष, निर्वाण। स्वर्ग, वैकुण्ठ। —**पद**-पु० मोक्ष, मुक्ति। निर्भय-पद। —**वचन**-पु० रक्षा का वचन। अभयदान।

अभया-स्त्री० [स०] १ दुर्गा, देवी, भगवती। २ आर्या, साध्वी। ३ कन्या। ४ हरीतकी, हर्रे।

अभयास-देखो 'अभ्यास'।

अभर-वि० [स०] १ निहाल, कृतकृत्य। २ दुर्भर, दुर्वह, गुरुतर। ३ खाली, रिक्त। ४ अपूर्ण।

अभरण-पु० १ अंत गुरु की चार मात्रा का नाम। '॥ऽ' २ देखो 'आभरण'।

अभराण-वि० धन-धान्य पूर्ण, सम्पन्न।

अभरांभरण-वि० १ भूखों को भोजन देने वाला। २ अपूर्ण को पूर्ण करने वाला।

अभरी-वि० [स० आभरीणौ] १ धनाढ्य, सपत्तिशाली। २ सतुष्ट, तृप्त। ३ देखो 'अभ्री'।

अभरोसौ-पु० अविश्वास, शक, सन्देह।

अभल-वि० जो भला न हो, बुरा, अश्रेष्ठ।

अभलाक, (ख)-देखो 'अभिलासा'।

अभलाकी, (खी)-देखो 'अभिलासी'।

अभलेखा, (लेखौ)-देखो 'अभिलासा'।

अभवनमत-पु० [स०] काव्य का एक दोष।

अभवहार-पु० [स० अभ्यवहार] भोजन, खाना।

अभवी-वि० [स० अभव्य] १ न होने योग्य। २ विलक्षण, अद्भुत। ३ भद्दा, बुरा। ४ अशुभ।

अभाए-वि० [स० अभात] १ असुहावना। २ अरुचिकर।

अभाग-पु० [स० अभाग्य] १ दुर्भाग्य, बुरा भाग्य। २ मद भाग्य।

अभागियौ, (गी, गौ, ग्यौ)-वि० [स० अभगिन्]—(स्त्री० अभागण, अभागिण) १ भाग्यहीन, वद किस्मत। ३ हतभाग्य या मदभाग्य वाला।

अभायौ-वि० १ अप्रिय, खराव। २ अरुचिकर। ३-बुरा। ४ भययुक्त।

अभाळ-वि० [स० अ+भाल्य] १ न देखने योग्य। २ जो न देखा जा सके। ३ अप्राप्त। —स्त्री० ललाट, भाल।

अभाळौ-वि० विना देखा, अनदेखा।

अभाव-पु० [स०] १ कमी, अभाव। २ घाटा, टोटा। ३ त्रुटि। ४ अविद्यमानता, असत्ता। ५ अपूर्णता खामी। ६ विरोध। ७ बुरा भाव। ८ नाश। ९ मृत्यु।

अभावण, (वणी)-पु० (स्त्री० अभावणी) १ अरुचि। २ इच्छा का अभाव। —वि० १ अप्रिय। २ अरुचिकर। ३ असुहावना।

अभावणौ, (वौ)-क्रि० १ असह्य होना। २ अरुचिकर होना।

अभावी-वि० [सं०] न होने वाली।

अभावौ-वि० [स० अभात] १ अप्रिय, अरुचिकर। २ भयावह।

अभितरेण-क्रि० वि० [स० अभ्यतर] भीतर।

अभि-अव्य० [स०] १ शब्दो के आगे लगकर ओर, तरफ, बोधक उपसर्ग। २ देखो 'अभी'। —**अंतर**-क्रि०वि० भीतर।

अभिखेक-देखो 'अभिसेक'।

अभिगम, अभिग्गम (ग्रह)-[स० अभिग्रह] आहारादि ग्रहण करने सबधी कठिन से कठिन प्रतिज्ञा। (जैन)

अभिचार-पु० [स० अभिचार] तात्रिक प्रयोग। अनुष्ठान।

अभिचारक, अभिचारी- [स०] अनुष्ठानकर्ता, जादूगर, तात्रिक।

अभिच्छ-वि० [स० अभिक्षा] याचना रहित।

अभिजण (न)-पु० १ कुल, वश, कुनवा। २ पूर्वजो का निवास स्थान। ३ जन्मभूमि, जन्म स्थान।

अभिजाणण-वि० कुशल, दक्ष, पटु।

अभिजात-वि० (स०) १ कुलीन। २ शिष्ट। ३ उत्तम। ४ सुन्दर। ५ पडित।

अभिजित-वि० विजयी। —पु० १ श्रवण नक्षत्र के प्रथम चार दण्ड। २ उत्तरासाढा नक्षत्र के अतिम पन्द्रह दण्ड। ३ तीन तारो वाला एक नक्षत्र। ४ विष्णु का एक नाम।

अभिणासी-देखो 'अविनासी'।

अभित्ति-वि० निर्भय, निडर, निशक।

अभिधान-पु० [स० अभिधानम्] १ कथन। २ शब्दकोश। ३ नाम।

अभिधानी-वि० नामधारी।

अभिधा-स्त्री० [स०] १ तीन प्रकार की शब्द शक्तियो मे से एक। २ नाम। ३ उपाधि। ४ वाचक शब्द।

अभिधेय-वि० [स०] १ नाम लेने योग्य। २ निरूपित।

अभिनदन-पु० [स०] १ स्वागत। २ प्रशसा। ३ वधाई। ४ अभिवादन।

अभिन-देखो 'अभिन्न'।

अभिनमौ, (वौ)-देखो 'अभनमौ'।

अभिनय-पु० [स०] १ किसी नाटक या खेल के पात्र का कार्य। २ स्वाग। ३ किसी की वोल-चाल या हाव-भाव की नकल।

अभिनव-वि० [स०] १ नवीन, नया। २ कोरा।

अभिन्न-वि० [स०] १ एकाकार, एकमय। २ जो पृथक् न हो सके। ३ सटा हुआ, चिपका हुआ। ४ अपरिवर्तित। ५ घनिष्ठ। —**ता**-स्त्री० अपार्थक्य। लगाव। संवध। घनिष्ठता।

अभिप्राय-पु० [स०] १ आशय, मतलब। २ अर्थ, तात्पर्य।

अभिवादन–पु० देखो 'अभिवादन' ।

अभिभव–पु० [स०]१ पराजय, हार । २ हीनता । ३ तिरस्कार, अनादर । ४ वश, काबू । ५ दमन ।

अभिमत–पु० [स०] १ अर्थ, आशय । २ सम्मति । ३ इच्छा, अभिलाषा ।

अभिमन, (मन्न, मन्यु)–पु० [स० अभिमन्यु] अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु ।

अभिमाण, (मान)–पु० [स० अभिमान] १ अहंकार, गर्व, घमड । २ व्यक्तित्व ।

अभिमाणी, (मानी)–वि० [स० अभिमानी] घमडी, अहकारी । —पु०–शत्रु, दुश्मन ।

अभिमुख–वि०[स०]१ सम्मुख, सामने । २ समीप । ३ अनुकूल । —क्रि०वि० १ आमने-सामने । २ ओर, तरफ ।

अभिया–देखो 'अभया' ।

अभियागत–देखो 'अभ्यागत' ।

अभियास–देखो 'अभ्यास' ।

अभियुक्त–पु० [स०] दोषी, अपराधी ।

अभियोग–पु० [स०] १ अपराध । २ मुकद्दमा ।

अभियोगी–वि० [स०] अभियोग चलाने वाला ।

अभिराम, (रामा)–वि० [स० अभिराम] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य । २ प्रिय । —पु० १ आनन्द, हर्ष । २ प्रमोद । ३ अत गुरु की चार मात्रा का नाम ।

अभिरामी–वि० [स० अभिरामिन्] रमणकर्त्ता ।

अभिरुचि, (ची)–स्त्री० [स०] १ पसद । २ चाह, इच्छा, अभिलाषा । ३ यश की चाह । ४ महत्वाकाक्षा ।

अभिरुता–स्त्री० [स०] १ सगीत की एक मूर्च्छना । २ आवाज, पुकार ।

अभिरूप–वि० [स० अभिरूप] १ मनोहर, सुन्दर । २ सदृश । ३ प्रिय । —पु० १ विष्णु । २ शिव । ३ चन्द्रमा । ४ कामदेव । ५ पडित । ६ वीर ।

अभिलाखणौ (बौ)–देखो 'अभिलासणौ' (बौ) ।

अभिलाख, (खा)–देखो 'अभिलासा' ।

अभिलाखी–देखो 'अभिलासी' ।

अभिलाखुक, (सक)–वि० [स० अभिलाषुक] १ अभिलाषा करने वाला । २ लोभी । ३ इच्छुक ।

अभिलाप–पु० [स०] १ कथन । २ वाक्य । ३ वार्तालाप ।

अभिलास–देखो 'अभिलासा' ।

अभिलासणौ, (बौ)–क्रि० १ आशा करना, अभिलाषा करना । २ इच्छा करना, चाहना ।

अभिलासा–स्त्री० [स० अभिलाषा] १ इच्छा, आकाक्षा, कामना, चाह । २ आशा, अभिलाषा ।

अभिलासी–वि० [स० अभिलाषी] अभिलाषा करने वाला, इच्छुक ।

अभिवादन–पु० [स०] १ प्रणाम, नमस्कार । २ सम्मान, स्वागत । ३ वदना ।

अभिवहार– देखो 'अभवहार' ।

अभिव्यक्ति–स्त्री० [स०] १ प्रगटी करण, प्रागट्य । २ प्रकाशन, प्रदर्शन । ३ स्पष्टीकरण । ४ साक्षात्कार ।

अभिसप्प–वि० [स० अभिशप्त] १ जिसे शाप लगा हो, शापित । २ मिथ्या दोष से आरोपित ।

अभिसव–पु० [स० अभिषव] १ एक प्रकार की शराब । २ अभिषेक ।

अभिसाप–पु० [स० अभिशाप] १ शाप २ बद्दुआ, दुराशीष । ३ बडा इल्जाम, दोष । ४ झूठा दोषारोपण ।

अभिसार–पु० [स०] १ युद्ध । २ हमला, आक्रमण । ३ प्रेमी-प्रेमिका के मिलन के लिए सकेत स्थान पर गमन । ४ प्रेमी-प्रेमिका के सकेत स्थान पर मिलने का समय ।

अभिसारिका, अभिसारिणी–स्त्री० [स०] साकेतिक स्थान पर नायक से मिलने जाने वाली नायिका ।

अभिसेक (ख)–पु० [स० अभिषेक] १ जल से सिंचन । २ छिडकाव । ३ जल सिंचन एव मत्रो से किया जाने वाला शिव पूजन । ४ राजतिलक की क्रिया । ५ ऊपर से जल डालते हुए किया जाने वाला स्नान ।

अभिस्ट–देखो 'अभीस्ट' ।

अभिहडदोस–पु० [स० अभिवृहृतदोष] रास्ते मे सम्मुख लाकर भोजन देने का दोष (जैन) ।

अभिहाण–देखो 'अभिधान' ।

अभी–क्रि०वि० ठीक इसी समय, इसी क्षण । —वि० निडर, निर्भय । —ड़ौ–वि० असुहावना, अरुचिकर । कटु । जोशपूर्ण । —च–वि० वीर । —पु० योद्धा, सुभट । —त, ति, ती, तौ–वि० निडर, निशक । साहसी । —पु० शत्रु, दुश्मन ।

अभीनमौ–देखो 'अभनमौ' ।

अभीमत–देखो 'अभिमत' ।

अभीमता–स्त्री० अभिमान, गर्व ।

अभीमान–देखो 'अभिमान' ।

अभीमुख–देखो 'अभिमुख' ।

अभीयास–देखो 'अभ्यास' ।

अभीर–वि० जिसका कोई सहायक न हो, बेसहारा । —पु० १ गोप, अहीर । २ प्रत्येक चरण मे ग्यारह मात्रा का छद ।

अभीस्ट–वि० [स० अभीष्ट] १ वाछित, इच्छित । २ मन चाहा ।

पसद, इच्छानुरूप । ३ प्रिय, प्यारा । ४ कृपापात्र । —पु० मनोरथ, कामना ।

अभुत–देखो 'अभूत' ।

अभुखरण, (न)–देखो 'आभूसरण' ।

अभूत, (तो)–वि० [स० अभूत, अद्‌भुत,] १ अनस्तित्व । २ अद्‌भुत, विचित्र । ३ अपूर्व, अद्वितीय । **—पूरब (वी)** —वि० अपूर्व, अद्वितीय ।

अभूनी–देखो 'अभिमन्यु' ।

अभूनौ–वि० (स्त्री० अभूनी) १ सुनसान, निर्जन । २ विना मुना हुआ । ३ मूर्ख । ४ उटपटाग ।

अभूमौ–वि० (स्त्री० अभूमी) १ विचार शक्ति शून्य । २ मूर्ख, अज्ञानी । ३ अनाडी ।

अभूलणौ, (बौ)–क्रि० याद या स्मरण रखना, न भूलना ।

अभेख–वि० [स० अभेप] १ असाधु । २ दुष्ट । ३ निर्वेश ।

अभेडौ–वि० कठिन, मुश्किल, दुश्तर ।

अभेद–पु० [स०] १ एकत्व, अभिन्नता । २ भेद या दुराव का अभाव । ३ घनिष्टता । ४ अतिसमानता । ५ रूपक अलकार का एक भेद । —वि० १ अभिन्न । २ एक सा । ३ अविभक्त । ४ समान, सदृश । **—वादी**–वि० अद्वैतवादी ।

अभेधाम–देखो 'अभयधाम' ।

अभेळणौ, (बौ)–क्रि० १ न लूटना । २ न मिलाना या मिश्रण करना ।

अभेव–देखो 'अभेद' ।

अभै–देखो 'अभय' । **–दांन**='अभयदान' । **–पद**='अभयपद' । **—वचन**='अभयवचन' ।

अभैमुनि–देखो 'अभिमन्यु' ।

अभोक्ता–वि० [स०] १ जो भोग न करे । २ जो व्यवहार न करे ।

अभोखरण–१ देखो 'आभूसरण' । २ देखो 'अवोचन ।

अभोग, (गत)–पु० १ विस्तार, फैलाव । २ भोग का अभाव । ३ विलास का अभाव । —वि० [स० अभोग्य] १ जो भोगने योग्य न हो । २ जिसका भोग न किया गया हो । ३ अनुपयोगी, अप्रयोज्य । ४ जो कार्य या व्यवहार मे न आया हो ।

अभोगी–वि० [स०] इन्द्रिय-सुख से उदासीन, विरक्त ।

अभोचन–देखो अवोचन' ।

अभौ–देखो 'आभौ' ।

अभौतिक–वि० [स०] १ अगोचर । २ पचभूतो से सबधित न हो ।

अभ्भ–देखो 'आभौ' ।

अभ्भरी–देखो 'अभरी' ।

अभ्यतर–पु० [स०] १ मध्य, बीच । २ हृदय । —क्रि०वि० १ भीतर । २ निकट, समीप । ३ दरम्यान ।

अभ्यसणौ, (बौ)–क्रि० अभ्यास करना, साधना करना ।

अभ्यस्त–वि० [स०] १ आदी । २ अभ्यास किया हुआ । ३ दक्ष, निपुण ।

अभ्यागत–वि० [स० अभ्यागत] १ गरीब, दरिद्र । २ अशक्त, निर्बल । ३ असमर्थ । —पु० १ अतिथि, मेहमान । २ सन्यासी ।

अभ्यागम–पु० [सं० अभि+आगम] १ युद्ध, समर । २ शत्रुता, वैर ।

अभ्यामरद–पु०[स० अभ्यामर्द] १ युद्ध । २ दगल । ३ हमला, आक्रमण ।

अभ्यास–पु० [स०] १ कोई विद्या या कला सीखने का निरन्तर प्रयास । २ साधना । ३ परिश्रम, श्रम । ४ प्रयत्न, कोशिश । ५ आदत, टेव । ६ पाठ, अध्ययन । ७ कसरत । ८ युद्ध, समर । **—कळा**–स्त्री० योग की चार कलाओ मे से एक ।

अभ्यासी–देखो 'अभ्यस्त' ।

अभ्युदय–पु० [स०] १ उदय । २ उत्थान । ३ प्रादुर्भाव । ४ तरक्की ।

अभ्र, (य)–पु० १ मेघ, बादल । २ आकाश । ३ स्वर्ण । ४ अभ्रक, धातु । ५ धन । ६ जीरो का अक । शून्य । —वि० श्वेत । **—क**–पु० एक धातु । एक रसौषधि । —वि० श्वेत-श्याम । **—त,त्त**–वि० पालन-पोषण रहित । भाई रहित । सेवक रहित । अपार । **—मारग**–पु० आकाश ।

अभ्रमाण, (मान)–देखो 'अभिमान' ।

अभ्रम, (म्म)–पु० भ्रम का अभाव ।

अभ्रस्याम, (स्यामी)–पु० [स० अभ्रस्वामी] इन्द्र ।

अभ्रात–वि० [सं०] १ भ्रम या भ्राति रहित । २ स्थिर ।

अभ्राति–स्त्री०[स०]१ भ्रम या भ्राति का अभाव । २ स्थिरता ।

अमख–देखो 'आमिख' ।

अमखाचरेळ–पु० १ पलचर, मासाहारी । २ सिंह । ३ गिद्ध ।

अमग, (रण)–वि० १ न मागने वाला, अयाचक । २ न मागने योग्य ।

अमगळ–पु० [स० अमगल] १ अकल्याण, अनिष्ट । २ कष्ट, दुख । –वि० अशुभ ।

अमत्र द–पु० [स० अमित्र + इद्र] शत्रु, रिपु, वैरी ।

अमद, (दी, ध)–१ तीव्र तेज । २ चचल । ३ वेग पूर्ण । ४ उद्यमी । ५ चुस्त । ६ उत्तम, श्रेष्ठ । ७ बडे जोर का ।

८ बुद्धिमान । ९ स्वस्थ, निरोगी । १० उग्र । ११ दृढ़ । १२ प्रतिभावान ।

मलीमाण-वि० १ ऐश्वर्य व अधिकारों को भोगने वाला । २ दातार, दानी ।

म-सर्व० [स० अस्मद] हम, हमारा, मेरा, अपना ।

अमईणौ-सर्व० (स्त्री० अमईणी) हमारा, अपना, मेरा ।

अमकडियौ, अमकडौ-देखो 'अमुक' ।

अमकै-देखो 'अवकै' ।

अमख-देखो 'आमिख' । —चर, चरी='आमिखचर' ।

अमग, (ग्ग)-पु० [स० अ + मार्ग] १ कुमार्ग, बुरा मार्ग । २ अधर्म ।

अमडौ-पु० वृक्ष विशेष । (मेवात) ।

अमचूर-पु० [स० आम्र चूर्ण] १ कच्चे आम की सूखी फांकें । २ इन फांकों का चूर्ण ।

अमट, (ट्ट), अमठ-वि० १ दातार, उदारचित । २ देखो 'अमिट' ।

अमणौ-सर्व०[स० अस्माकम्](स्त्री० अमणी) हमारा, अपना । हमको, हमें ।

अमत्र-पु० [स०] वर्तन, पात्र ।

अमद-वि० [स०] मद या गर्व रहित ।

अमदूत-देखो 'यमदूत' ।

अमन-पु० [अ०] १ चैन, आराम । २ शांति । ३ रक्षा, बचाव ।

अमम-स्त्री० ममता । -वि० निर्मम ।

अमर-वि० [स० अमर] १ जो न मरे, चिरजीवी । २ अविनाशी, अनश्वर । ३ चिरस्थायी । ४ नित्य । -पु० [स० अमर] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ देवता । ३ गंधर्व । ४ सुवर्ण । ५ पारा । ६ कुलिश । ७ आकाश । ८ पृथ्वी । ९ अमरकोश । १० हड्डियों का ढेर । ११ उनचास पवनों में से एक । १२ डिंगल के वेलियो सांणोर का एक भेद । १३ अवध्य माना जाने वाला बकरा । १४ तेंतीस की संख्या । —आपगा-स्त्री० देवनदी, गंगा । —कंटक-पु० सोन व नर्मदा नदियों का संगम स्थल । —गिर-पु० आमेर का किला । आमेर का पर्वत । सुमेरु पर्वत । —नदी- स्त्री०गंगा, सुरसरी । —नामौ-पु० यश, कीर्ति । -वि० जिसका नाम अमर हो । —नाथ-पु० काश्मीर का एक प्रसिद्ध तीर्थ । —पख-वि० पितृ पक्ष । —पति-पु० विष्णु । इन्द्र । —पद-पु० मोक्ष, निर्वाण । देव पद । स्वर्ग, वैकुण्ठ । —पुर, पुरी, पुरौ-पु० देव लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ । —बेल, वेल-स्त्री० बिना जड व पत्तों वाली लता । —भुवण (न)-पु० वैकुण्ठ । —भेंट-पु० नारियल । —मुख-पु० अग्नि । —लोक-पु० देवलोक, इन्द्रपुरी । स्वर्ग । —वंस-पु० देव वंश । जो वंश अमर हो । —सुहाग-पु० अखण्ड सुहाग । सुहाग पूर्ण समस्त जीवन । सतीत्व । —सुहागण-स्त्री० जीवन पर्यन्त सुहागण रहने वाली स्त्री । सती । वेश्या ।

अमरकोट-पु० सिंध का एक नगर ।

अमरक-देखो 'अमरख' ।

अमरकै-देखो 'अवकै' ।

अमरक्ख-देखो 'अमरख' ।

अमरक्खणौ, (बौ)-देखो 'अमरखणौ' (बौ) ।

अमरख-पु० [स० अमर्ष] १ क्रोध, गुस्सा । २ जोश उत्साह । ३ असहिष्णुता । ४ प्रतिशोध की सामर्थ्य । ५ एक संचारी भाव ।

अमरखणौ (बौ)-क्रि० १ क्रोध या गुस्सा करना । २ उत्साहित होना । ३ प्रतिशोध लेना ।

अमरखी-वि० [स० अमर्षिन्] १ क्रोधी, गुस्सैल । २ जोशीला, उत्साही । ३ असहिष्णु । ४ प्रतिशोधक ।

अमरत, (त्त)-पु० [स० अमृत] १ अमरत्व देने वाला पेय पदार्थ । २ अत्यन्त मधुर एवं स्वादिष्ट पेय । ३ अन्न । ४ दूध । ५ औषधि । ६ विष । ७ वत्सनाग । ८ पारा । ९ स्वर्ण । १० धन । ११ मीठी वस्तु । १२ देवता । १३ यज्ञ की अवशिष्ट सामग्री । १४ वन मूंग । १५ सोमरस । १६ जल । १७ घी । १८ स्वर्ग । १९ ब्रह्म । २० धन्वन्तरी । -वि० जो मृत न हो, अमर । —कर-पु० चन्द्रमा । —का-स्त्री० हरीतकी, हर्रे । —दान-पु० सुधा दान । घी आदि रखने का चीनी का पात्र । —धारा-स्त्री० पीपरमेंट, अजवायन के फूल व कपूर के योग से बनने वाली औषधि ।

अमरता-स्त्री० [स० अमरत्व, अमृता] १ अमर रहने की अवस्था या भाव, अमरत्व । २ स्वादुत्व । ३ गिलोय । ४ दूर्वा । ५ तुलसी । ६ मदिरा । ७ आमलकी । ८ हरीतकी । ९ पिप्पली ।

अमरति,, (ती)-वि० [स० अ-मृत] १ अमर । २ देखो 'इमरती' ।

अमरस-पु० [स० आम्र-रस] १ आम का रस । २ देखो अमरत्व' ।

अमरापुर, (पुरी)-देखो 'अमरालोक' ।

अमरामाळ-स्त्री० [स अमरमाला] १ देव पंक्ति । २ देव वृंद या समूह ।

अमरालोक-पु० देव लोक । अमरलोक ।

अमराई-स्त्री० [स० आम्रराजि] १ आम का बाग । २ आमों के वृक्षों का झुरमुट । ३ अमरत्व ।

अमराखिख–देखो 'अमरख' ।

अमराभुज–पु० दैत्य ।

अमरालय–पु० [स०] १ देवालय । २ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

अमराव–पु० [अ० अमीर] १ सामत, सरदार । २ प्रतिष्ठित व्यक्ति । ३ धनाढ्य, अमीर । ४ उदार । ५ कार्याधिकार रखने वाला ।

अमरावती–स्त्री० १ देवलोक, इन्द्रपुरी । २ स्वर्ग ।

अमरित–देखो 'अमरत' ।

अमरियौ–पु० वह बकरा जो बलि नहीं किया जाता हो । २ देखो 'अमर' ।

अमरी–स्त्री० [स०] १ देवागना, देवपत्नी । २ देवकन्या । ३ अप्सरा । ४ दूर्वा, दूब । ५ एक वृक्ष । ६ आसन । ७ गिलोय । ८ वहत्तर कलाओ मे से एक ।

अमरीक, (ख)–पु० [स० अमरीष] एक सूर्यवशी ईश्वर भक्त राजा ।

अमरु (रू)–देखो 'अमर' ।

अमरूद–पु० १ जामफल नामक फल, सफरी । २ इसका वृक्ष ।

अमरेस, (स्वर)–पु० [स० अमरेश] देवराज इन्द्र ।

अमरौ–पु० [स० अमरा] १ दूब । २ थूहर । ३ काली कोयल । ४ गर्भस्थ शिशु पर लिपटी रहने वाली झिल्ली । ५ आवला । ६ देखो 'अमर' ।

अमळ–वि० [स० अ+मल] (स्त्री० अमळा) १ मल रहित । २ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ । ३ निष्कलक । ४ सफेद । ५ चमकदार ।

अमल, (ल्ल)–पु० [अ०] १ अधिकार, शासन । २ व्यवहार । ३ आदत, टेव । ४ प्रभाव, असर । ५ समय, वक्त । ६ नीला रग । ७ आरभ । ८ अफीम । ९ कार्य । १० विश्राम । ११ सिंह । १२ कपूर । १३ अभ्रक । १४ व्यसन, नशा । —वि० [स० अम्ल] खट्टा, तुर्श । **–दस्तूर**–पु० राज्याभिषेक की रश्म । **–दार**–वि० अफीमची । **—दारी**–स्त्री० राज्य । शासन । अधिकार । अफीम का आदी होने की अवस्था । **—पट्टौ**–पु० अधिकार-पत्र । **—पित**–पु० अम्ल पित्त, अजीर्ण ।

अमलडौ–देखो 'अमल' ।

अमलरी चिट्ठी–स्त्री० किसी जागीर के अधिकार के सबध मे राजा द्वारा चौधरियो को लिखा जाने वाला पत्र ।

अमलतास–पु० १ एक औषधि विशेष । २ इसका वृक्ष ।

अमलाचाक–वि० अफीम के नशे मे चूर ।

अमळा–स्त्री० [स० अमला] १ लक्ष्मी । २ पृथ्वी । ३ देखो 'आवळा' ।

अमलियौ, अमली, अमलीड़, (डौ)– अफीमची नशेबाज ।

अमलीमांण–देखो 'अमलीमाण' ।

अमलौ–पु० [अ० अमला] १ कार्याधिकारी । २ कर्मचारी, कारिंदा । [स० आम्र] ३ आम ।

अमवौ–पु० [स० आम्र] आम ।

अमां–सर्व० [स० अस्मद्] हम, हमारे, हमको । —अव्य० ऐ, अरे ।

अमाण, (णौ)–वि० [देश०] १ बिना हिलाये-डुलाये, सीधा । २ देखो 'अमान' । –सर्व० हमारा, मेरा ।

अमान–वि० [स० अमान] १ बहुत, बेशुमार । २ अपार, असीम । ३ दृढ, मजबूत । ४ अटल, स्थिर । ५ निरभिमान । ६ अप्रमाण, प्रमाण रहित । ७ मान रहित, तिरस्कृत । ८ तुच्छ । –पु० १ पाडु पुत्र भीम । २ रक्षा शरण । ३ देखो 'अमानत' ।

अमानत–स्त्री० [अ० अमानत] धरोहर, थाती । **—दार**–वि० जिसके पास कोई धरोहर रखी जाय ।

अमांनी–वि० जिसे अभिमान न हो । –पु० १ मज़दूरी से काम करने का ढग विशेष कर जिसमे केवल दैनिक मजदूरी दी जाती है, काम का कोई मान निश्चित नही होती । २ अनुमान या कूत के आधार पर लगान मे दी जाने वाली छूट ।

अमानुस–वि० [स० अमानुष] १ जो मनुष्य सबधी न हो । अमानवीय । २ अलौकिक । ३ अपौरुषेय । ४ हैवान । ५ जो मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर हो ।

अमानुसी–वि० [स० अमानुषीय] मानव स्वभाव के विपरीत ।

अमानेतण, (न)–स्त्री० दुहागिन ।

अमाम–वि० १ बढिया, श्रेष्ठ । २ तमाम, सब । ३ बहुत, अपार । ४ अद्‌भुत, विचित्र । **—दस्तौ**–देखो 'हमामदस्तौ' ।

अमामौ–वि० (स्त्री० अमामी) १ अपार, असीम । २ अद्‌भुत, विचित्र । ३ बहुत । ४ वीर बहादुर । ५ अपार शक्ति वाला ।

अमा–स्त्री० [स०] १ अमावस्या की तिथि । २ माता, मा ।

अमाई–वि० अप्रमाण ।

अमाडौ–पु० युद्ध ।

अमात्य–पु० [स०] मत्री, सचिव ।

अमाप, (पियौ, पी)–वि० [स० अमापनम्] जो मापा न जा सके, अपार, असीम ।

अमार–देखो 'अवार' ।

अमारग–पु० १ बुरा मार्ग, कुमार्ग । २ कुसगति ।

अमारड़ौ–सर्व० (स्त्री० अमारडी) हमारा, मेरा ।

अमारी–१ देखो 'हमारी' । २ देखो 'अवाडी' ।

अमारू–वि० दूसरा अन्य । –क्रि०वि० अभी, अब ।
अमारौ–सर्व० हमारा, मेरा ।
अमाव–वि० १ अत्यधिक, असीम, बेहद । २ योद्धा, सुभट । ३ शक्तिशाली । ४ सहनशील ।
अमावड–१ देखो 'अमाव' । २ देखो 'अमावस' ।
अमावस, (वस्या वास्या)–स्त्री० [सं० अमावस्या] प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि ।
अमास–पु० [सं० आवास] १ निवास स्थान, आवास । २ देखो 'आमखास' । ३ देखो 'अमाव' ।
अमासव–देखो 'अमावस' ।
अमास्ती–सर्व० हम, हमारे ।
अमिट (ट्ट)–वि० १ न मिटने वाला, स्थायी । २ दृढ, पक्का ।
अमित, (त्ती)–वि० अपरिमित, अपार, असीम । –पु० १ अमृत । २ थूक । ३ शत्रु, दुश्मन ।
अमित्र–वि० [सं०] १ जो मित्र न हो । २ शत्रु, वैरी । —ता–स्त्री० मित्रता का अभाव । शत्रुता ।
अमिय–पु० [सं० अमृत] अमृत, सुधा ।
अमिरत, (ति, तौ)–देखो 'अमरत' ।
अमिळणौ (बौ)–क्रि० १ न मिलना । २ प्राप्त न होना ।
अमिळी–वि० १ न मिलने योग्य । २ बेमेल । ३ बेजोड ।
अमी–पु० [प्रा० अमिअ] १ अमृत, सुधा । २ दूध । ३ थूक । ४ पानी । –सर्व० मैं, मेरा, मुझे । हम, हमारा, हमे ।
अमीठौ–वि० (स्त्री० अमीठी) जो मीठा न हो । कडुवा ।
अमीणौ, (य) - सर्व० (स्त्री० अमीणि, णी) हमारा, मेरा ।
अमीत–देखो 'अमित्र' ।
अमीन–पु० [अ०] १ अदालत का कर्मचारी । २ भू-प्रबंध विभाग का कर्मचारी । –वि० पंडित । चतुर ।
अमीया–१ देखो 'अमी' । २ देखो 'उमा' ।
अमीर, (ळ)–पु० [अ० अमीर] १ सामंत, सरदार । २ शासनाधिकारी । ३ धनवान । ४ अफगानिस्तान के शाह की उपाधि । —पण, पणौ–पु० अमीर होने की अवस्था या भाव । अमीरो का स्वभाव ।
अमीरस–पु० अमृत ।
अमीरानौ–वि० अमीरो के समान ।
अमीरायत, (अमीरी–स्त्री० १ दौलतमंदी, सपन्नता, अमीरी । २ उदारता । ३ रईसी, अमीर होने का भाव ।
अमुक–वि० १ फलां । २ कोई खास । ३ ऐसा-ऐसा ।
अमुख–देखो 'आमिख' । —चर= 'आमिखचर' ।
अमूंजणी–स्त्री० [सं० अ+मुह्यति] १ अल्प मूर्छा का रोग । २ घुटन । ३ अचेतन अवस्था ।
अमूंजणौ, (बौ)–देखो अमूंभणौ (बौ) ।
अमूक–वि० [सं०] जो १ गूंगा न हो, वाक्, वक्ता । २ चतुर ।
अमूकणौ (बौ)–क्रि० निकालना ।
अमूकाणौ (बौ)–क्रि० निकलवाना ।
अमूजणौ–(बौ)–देखो 'अमूझणौ' ।
अमूजौ–देखो 'अमूझौ' ।
अमूझणी, –देखो 'अमूंजणी' ।
अमूझणौ, (बौ), अमूझाणौ (बौ)–क्रि० १ दम घुटना । २ मूर्छा आना । ३ दिल घबराना । ४ अत्यन्त गर्मी होना । ५ उमस होना ।
अमूझौ–पु० १ दम घुटने का भाव । २ उमस, गर्मी । ३ तपन ।
अमूढ़–वि० [सं०] जो मूढ न हो । चतुर ।
अमूमन–क्रि० वि० प्राय , बहुधा ।
अमूळ–वि० [सं० अमूल] १ मूल रहित, निर्मूल । २ कारण रहित, अकारण । ३ अमूल्य । ४ निराधार ।
अमूल, (क, लिक, मूल्य)–वि० [सं० अमूल्य] १ बहु मूल्य, २ अनमोल ।
अमे–सर्व० मेरा हम । –क्रि० वि० अब ।
अमेद–देखो 'उमेद' ।
अमेध–पु० [सं० अमेध्य] १ मूर्ख । २ मल, विष्ठा । ३ अपवित्र वस्तु । —वि० अपवित्र ।
अमेयु–वि० [सं० अमेय] असीम, अपार, अमाप ।
अमेळ–पु० १ मेल या मैत्री का अभाव । २ तनाव, मन-मुटाव । ३ विरोध, शत्रुता । ४ शत्रु, दुश्मन । ५ डिंगल के छोटे साणोर छन्द का एक भेद । —वि० १ बेमेल । २ बेतरतीब । ३ भद्दा ।
अमै (मैं)–क्रि० वि० अब, अभी । -सर्व० हम ।
अमेव–वि० १ असीम । २ अज्ञेय । —पु० अभिमान, घमंड ।
अमोगौ, अमोघ, (घौ)–वि० [सं० अमोघ] १ श्रेष्ठ, बढिया । २ अपार । ३ अचूक । ४ अव्यर्थ । ५ समर्थ । ३ पूर्ण । ७ भरपूर । —पु० १ शिव । २ विष्णु । ३ समुद्र ।
अमोड़ौ–वि० १ न मुडने वाला । १ पीछे न हटने वाला । २ वीर, योद्धा ।
अमोल (लक, लख, लिख) अमोल्य–देखो 'अमूल्य' ।
अमोघ–देखो 'अमोघ' ।
अम्नाय–देखो 'आमना' ।
अम्मर–देखो 'अमर' ।
अम्मराईसर–देखो 'अमरेस्वर' ।
अम्मरी–देखो 'अमरी' ।
अम्मलीमाण–देखो 'अमलीमाण' ।
अम्मा–स्त्री० जन्मदात्री, जननी, माता ।
अम्रकोस–पु० [सं० अमरकोश] १ मृगनाभि । २ अमरकोश ।
अम्रत–देखो 'अमरत' । —कर='अमरतकर' ।

अम्रतचरण—पु० यौ. [स० अमृत चरण] गरुड ।
अम्रतदान—देखो 'अमरतदान' ।
अम्रतधारा—देखो 'अमरतधारा' ।
अम्रतधुनि, (ध्वनि)—स्त्री० यौ० [स० अमृत-ध्वनि]—चौबीस मात्राओ का एक छद ।
अम्रतबधु—पु० यौ० [स०] देवता ।
अम्रतमई, (मय)—पु० यौ० चन्द्रमा ।
अम्रतलोक—पु० यौ० स्वर्ग ।
अम्रतसिद्धियोग—पु० यौ० [स० अमृतसिद्धयोग] एक प्रकार का शुभ योग ।
अम्रतास, (तेस)—पु० [स० अमृताश] देवता ।
अम्रित—पु० अमृत, सुधा । –वि० मधुर, मीठा । —**वैणी**—वि० मधुभाषिनी । मधुरकण्ठी ।
अम्लपित्त—देखो 'अमलपित्त' ।
अम्ह, (अम्हा)—सर्व० [स० अस्माक, अस्मदीय] हम हमारे, मेरे, मेरी, मैं, मैने । —**तणी**—सर्व० हमारी, मेरी ।
अम्हक—वि० [स० अहमक] मूर्ख । उद्दण्ड ।
अम्हस्यू—सर्व० हमसे ।
अम्हारउ—सर्व हमारा, मेरा ।
अम्हि—सर्व० हम ।
अम्हिणी, अम्हीणी—सर्व० (स्त्री० अम्हिणी अम्हीणी) हमारा, मेरा ।
अम्हे, अम्हे—सर्व० हम, हमे । मेरे ।
अय—पु० [स० अयस्] १ शस्त्र, हथियार । २ लोहा । २ अग्नि । —वि० आगे आने वाला ।
अयण, (न)—पु० [स० अयन] १ गति, चाल । २ दिन । ३ राशि चक्र की गति । ४ आश्रम, स्थान ५ घर । ६ ज्योतिषशास्त्र । ७ काल, समय । ८ अश । ९ पैर, चरण । १० दो की सख्या । —**क**—पु० मार्ग, रास्ता । —**काळ**—पु० लगभग छ मास का समय । —**सक्रम, सक्राति**—स्त्री० मकर व कर्क की सक्राति ।
अयणी—सर्व० अपना ।
अयत—देखो 'अयुत' ।
अयथा—वि० [स०] १ झूठा, मिथ्या । २ अयोग्य ।
अयराक—देखो 'ऐराका' ।
अयरावई, अयरापति— देखो 'ऐरावत' ।
अयस—स्त्री० १ आज्ञा, हुक्म । २ आममान । ३ अपयश, निंदा । ४ देखो 'अय' ।
अयाण, (न), अयाणो, (नो)—वि० [स० अज्ञान] (स्त्री० अयाणी) १ अज्ञानी, मूर्ख । २ अनाडी, असभ्य –पु० अज्ञान, अज्ञानता ।
अयाचक, (ची)—वि० [स० अयाचिन्] १ जिसने कभी कुछ मागा न हो । २ जिसे मागने की जरूरत न हो । ३ समृद्ध, सम्पन्न ।
अयार—वि० शत्रु, दुश्मन । अमित्र ।
अयाळ—पु० घोडे या सिंह के गर्दन के बाल ।
अयास, (सि)—पु० [स० आकाश] १ आकाश, आसमान । २ चिह्न, लक्षण । ३ देखो 'आदेश' ।
अयो—अव्य० १ अरे ! हे । २ ओह, हाय । ३ आहा ।
अयुक्त—वि० [स०] युक्ति सगत न हो, अनुचित, असगत । अयोग्य ।
अयुत—पु० [स०] दश हजार की सख्या व उसका स्थान ।
अयोग—पु० [स०] १ सयोग का अभाव । २ कुसमय । ३ दुष्काल ४ सकट, कठिनाई ।
अयोग्य—वि० [सं०] १ जो योग्य न हो, अनुपयुक्त । २ अनुचित । ३ अपात्र, निकम्मा । ४ असमर्थ, अक्षम । ५ अप्रशस्त, बुरा ।
अयोध्या—देखो 'अजोध्या' ।
अयोनि, (नी) वि० [स०] १ जिसकी कोई योनि न हो । २ अजन्मा । ३ नित्य । —पु० [स० अयोनि] १ शिव । २ ईश्वर । ३ विष्णु । ४ ब्रह्मा ।
अयोसा—पु० [स० अयोषा] पुरुष, नर ।
अरग, (गो)—पु० सुगध का झोका । —वि० १ बिना रग का । २ आनन्द रहित । ३ भयावह ।
अरड—देखो 'एरड' ।
अरंडोळी, अरंडोल्या—स्त्री० एरड के बीज या डोडा ।
अरढ, अरढो— देखो 'अढो' ।
अरत—वि० [स० अरि-हतृ] १ शत्रुओ का नाश करने वाला । २ युद्ध मे अडने वाला ।
अरद, (दो, द्र)—पु० [स० अरि-इन्द्र] शत्रु, दुश्मन ।
अर—अव्य० १ और । २ अरे, अरें । —पु०[स० अरि] १ अरि, शत्रु । —स्त्री० २ शीघ्रता । —वि० पीला ।
अरक—पु० [स०अर्क] १ सूर्य । २ इन्द्र । ३ तावा । ४ स्फटिक । ५ पडित । ६ ज्येष्ठ भ्राता । ७ रविवार । ८ आक या मदार वृक्ष । ९ विष्णु । १० बारह की सख्या । ११ शराब । १२ नदी । १३ एक पुष्प विशेष । –वि० १ तेज । २ उतारा हुआ, निचोडा हुआ । —**गीर**—पु० जीन कसने का उपकरण । —**ज, सुत**—पु० यम, शनि । अश्विनी कुमार । सुग्रीव । कर्ण । नार्वाण मनु । —**जा**—स्त्री० यमुना व ताप्ती नदी ।
अरकाद—पु० सूर्य ।
अरकासार—पु० तालाब, वापी ।
अरक्क—देखो 'अरग' ।

अरखी–क्रि०वि० शीघ्र, फौरन।
अरग–स्त्री० [सं० आरिग] तलवार।
अरगजौ–पु० सुगंधित उबटन।
अरगणौ (बौ)–देखो 'अरघणौ' (बौ)।
अरगत, (ती, तौ)–पु० लोहा छीलने या घिसने का उपकरण।
अरगनी–स्त्री० [देश०] कपडा सुखाने के लिए लटकाई जाने वाली रस्सी या लकडी।
अरगळा–स्त्री० [सं० अर्गला] दोनो कपाटो के बीच लगाई जाने वाली रोक, अर्गला।
अरघ–पु० [सं० अर्घ] १ पूजन की एक विधि, अर्घ्य। २ जल की अजलि। —पात्र–पु० पूजन का जल-पात्र।
अरघणौ, (बौ)–क्रि० जल के अर्घ्य से पूजा करना।
अरघळ-परघळ–क्रि०वि० [अनु०] प्रचुर, बहुत।
अरघौ–पु० पूजन का जल-पात्र।
अरड–स्त्री० १ पेड या मोटी लकडी टूटने की ध्वनि। २ भैंस या ऊट की आवाज। ३ बलात् घसने की क्रिया। ४ भय, आतक।
अरडणौ, (बौ)–देखो 'अरडाणौ' (बौ)।
अरडाण–पु० रुदन, विलाप।
अरडाट, (टौ)–पु० १ आधी की आवाज। २ तेज वर्षा की आवाज। ३ दर्द या दुःख भरी आवाज। ४ भैंस या ऊट की आवाज।
अरडाणौ, (बौ), अरडावणौ, (बौ)–क्रि० १ चिल्लाना, चीखना। २ दर्द या दुःख भरी आवाज करना। ३ धसाना, फसाना। ४ भैंस या ऊट का दर्द पूर्ण आवाज करना।
अरडाव–पु० १ चीख, चिल्लाहट। २ ध्वनि।
अरडिंग, (डींग, डींगौ)–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ सहनशील। ३ योद्धा, शूरवीर। –पु० व्यवधान।
अरडूओ, (सौ)–देखो अडूसौ'।
अरडौ–वि० बलात् घुसने वाला। –पु० धक्का।
अरचणौ, (बौ)–क्रि०[सं० अर्चनम्] पूजन करना, पूजा करना। अर्चना करना।
अरचन–पु० [सं० अर्चनम्] पूजन, अर्चन।
अरचा–स्त्री० [सं० अर्चा] १ पूजा। २ शृगार। ३ मूर्ति या प्रतिमा। ४ चर्चा।
अरचाणौ, (बौ), अरचावणौ (बौ)–क्रि० पूजा कराना।
अरचित–वि० [सं० अर्चित] पूजित, पूजा हुआ।
अरच्चणौ (बौ)–देखो 'अरचणौ'।
अरज–स्त्री० [अ० अर्ज] १ प्रार्थना, निवेदन, अर्जी। २ चौडाई। –पु० ३ राजा। ४ अर्जुन।
अरजण, (न, न्न)–पु० [सं० अर्जनम्] १ उपार्जन, आय, कमाई। २ उपलब्धि, प्राप्ति। ३ सग्रह। ४ देखो 'अरजुण'।
अरजणौ (बौ)–क्रि० उपार्जन करना, कमाना, प्राप्त करना।
अरजनपता, (पिता)–पु० १ इन्द्र का नामान्तर। २ पाडु।
अरजनी–स्त्री० गाय, गौ।
अरजमा–पु० [सं० अर्यमा] सूर्य। –वि० अजन्मा।
अरजळ–वि० १ व्याकुल। २ घायल। –पु० घोडा, जिसका एक पाव श्वेत हो।
अरजाऊ–वि० अर्ज करने वाला, प्रार्थी, निवेदक।
अरजित–वि० [सं० अर्जित] १ कमाया हुआ, उपार्जित। २ जोडा हुआ, सगृहीत। ३ प्राप्त।
अरजी–स्त्री० [फा० अर्जी] १ प्रार्थना, निवेदन। २ फरियाद। ३ प्रार्थना-पत्र। —दावौ–पु० दीवानी दावे का आवेदन-पत्र।
अरजुण (न, न्न)–पु० [सं० अर्जुन] १ पाच पाडवो मे से एक। २ सहस्रार्जुन। ३ स्वर्ण। ४ चादी। ५ एक वृक्ष विशेष। –वि० १ श्वेत, सफेद। २ काला-श्याम –धुज, ध्वज–पु० हनुमान का नाम। —सखा–पु० श्रीकृष्ण।
अरजुनी–स्त्री० [सं० अर्जुनी] गाय।
अरज्ज–देखो 'अरज'।
अरज्जण, (ज्जन, ज्जुण)–देखो 'अरजुण'।
अरज्जुला–स्त्री० जमीन।
अरट, अरटियौ, अरट्ठ–पु० [सं० अरघट्ट] १ कुऐ से पानी निकालने का मालाकार यत्र। रहट। २ डिंगल का एक गीत (छद)। ३ एक प्रकार की बन्दूक। ४ सूत कातने का चरखा। ५ एक लोक गीत विशेष।
अरडींग–देखो 'अरडीग'।
अरडूओ (सौ)–१ एक प्रकार का क्षुप विशेष। २ इस क्षुप के समान पत्तो वाला वृक्ष। (मेवात)
अरण, (ण्य)–पु० [सं० अरण्य] १ वन, जगल। [सं० अरणि] २ अग्नि, आग। ३ युद्ध। ४ चादी। ५ देखो 'अरुण'। ६ देखो 'ऐरण'।
अरणव–पु० [सं० अर्णव] १ समुद्र, सागर। २ इन्द्र। ३ सूर्य। —मदिर–पु० वरुणदेव।
अरणि, (णी)–स्त्री० [सं० अरणि, अरणी] १ काष्ठ से उत्पन्न अग्नि। २ औषध बूटी। ३ अग्निमथ। ४ सूर्य। ५ एक लोकगीत विशेष। —अगनी–स्त्री० यज्ञाग्नि। दावानल।
अरणौ–पु० [सं० अरण्य] १ जोधपुर के दक्षिण मे स्थित एक तीर्थ कुड। २ जगली भैंसा। [सं० अरणि] ३ छेकुर का वृक्ष या उसकी लकडी। —वि० [सं० आरण्य] जगल का, जगल सबधी।
अरणोद, अरणोदय–पु० [सं० अरुणोदय] १ उषाकाल, अरुणोदय। २ सूर्य, भानु।

अरण्य, (ण्यु, ण्यू)–पु० [स०] १ दशनामी गोस्वामियो का एक भेद। २ कायफल । ३ वन। ४ देखो 'अरणी'। —**सस्टी**–स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी का व्रत ।

अरत–पु० [स० अराति] १ शत्रु, वैरी। २ देखो 'आरत'।

अरतिमर–पु० यौ० [स० अरि+तिमिर] सूर्य।

अरत्त–वि० [स०] १ जो लीन न हो, विरक्त, अलिप्त। २ जो रक्त वर्ण न हो। ३ देखो 'अरत'।

अरत्थ, (त्थि), अरथ–पु० [स० अर्थ] १ शब्द का अभिप्राय, माने। २ प्रयोजन, मतलब, आशय। ३ कारण, हेतु। ४ आधार, जरिया। ५ इद्रियो का विषय। ६ धन, सपत्ति। —क्रि०वि० लिये, वास्ते। —**कर**–वि० लाभकारी। फायदे मद। —**ग**–क्रि०वि० लिये, वास्ते। —**मत्री**–पु० वित्त सचिव, वित्तमंत्री। —**वाद**–पु० तीन प्रकार के वाक्यो मे से एक। —**सचिव**–पु० वित्त सचिव।

अरथातरन्यास–पु० [स०] एक अर्थालंकार।

अरथाऊ–क्रि०वि० उदाहरण के तौर पर।

अरथाणौ, (बौ)–क्रि० १ अर्थ करना, व्याख्या करना। २ अर्थ समझाना। ३ विवेचन करना।

अरथात–अव्य० [स० अर्थात्] यानि, अर्थात्, फलत।

अरथाभास–पु० [स० अर्थाभास] १ शब्दार्थ का आभास। २ अर्थ का प्रभाव।

अरथालकार–पु० [स० अर्थालकार] एक साहित्यिक अलकार।

अरथावणौ (बौ)– देखो 'अरथाणौ (बौ)।

अरथि, अरथी, (न)–पु० १ वादी, प्रार्थी, मुद्दई। २ सेवक। ३ याचक। ४ धनी। –स्त्री० ५ मृतक को श्मशान ले जाने की बास की सीढी, मृतक यान। —वि० १ चाहने वाला, इच्छित। २ पैदल। ३ देखो 'अरथ'।

अरथ्य (थ्य)–देखो 'अरथ'।

अरद–देखो 'अरध'।

अरदली–पु० सेवक, कर्मचारी। हाजरिया।

अरदास (दासा)–स्त्री० प्रार्थना, अर्ज, विनती, स्तुति।

अरदित–वि० [स० अर्दित] १ पीडित। २ दुखित, हिंसित। –पु० १ मुख का एक वात रोग विशेष। २ लकवा।

अरद्धग–देखो 'अरधगा'।

अरद्ध–वि० [स० अर्द्ध] १ आधा। २ खड, टुकडा। —**चद्र**–पु० आधा चन्द्रमा। एक प्रकार का त्रिपुड। हथेली की एक मुद्रा। —**समव्रत**–पु० एक वर्ण वृत्त।

अरद्धागणी, (गिणी)–स्त्री० [स० अर्द्धागिनी] स्त्री, पत्नी, भार्या।

अरद्धाली–स्त्री० दो चरण की या आधी चौपाई।

अरधग–स्त्री० [स० अर्द्धागिनी] १ स्त्री, भार्या, पत्नी। –पु० [स०अर्धंग] २ शिव। ३ अर्धागवात का रोग, पक्षाघात।

अरधंगा, (गि, गी)–स्त्री० [स० अर्द्धागिनी] स्त्री, भार्या, पत्नी।

अरध–वि० [स० अर्द्ध, अध] आधा। –क्रि०वि० अदर, भीतर, नीचे। —**कूरमासन**–पु० एक योगासन। —**गोख, गोखौ**–पु० डिंगल का एक गीत या छद। —**चद, चद्र**–देखो 'अरद्धचद'। – **नाराच**–पु० नाराच छद का एक भेद। —**निसा**–स्त्री० अर्धरात्रि। —**पादासण**–पु० एक योगासन। —**पुंड**–पु० सन्यासियो का खडा तिलक। —**भाख**–पु० डिंगल का एक छन्द या गीत। —**सरीरी**–स्त्री० अर्द्धागिनी। —पु० आधे शरीर का शिव, महादेव। —**सावझडौ**–पु० एक डिंगल गीत।

अरधांग, (गि, गी)–देखो 'अरधग'।

अरधाभेदक–पु० [स० अर्द्धावभेदक] अर्ध शिरशूल। सूर्यावृत्त।

अरधियौ, अरधौ–देखो 'आधौ'।

अरधी–देखो 'अरध'।

अरधूंस–स्त्री० [स० अरिध्वस] सेना, फौज।

अरनाद–पु० सूर्य।

अरनी–स्त्री० १ विद्युत, बिजली। २ देखो 'अरणि'।

अरपण, (न)–पु० [स० अर्पण] १ भेंट, नजर। २ दान। ३ समर्पण, देना। ४ त्याग। ५ वापसी।

अरपणौ, (बौ)–क्रि० १ भेंट या नजर करना। २ दान देना। ३ समर्पण करना। ४ त्यागना। ५ वापस करना, लौटाना।

अरबद–देखो 'अरविंद'।

अरब–पु० [स० अर्बुद] १ सौ करोड की सख्या। [अ०] २ दक्षिण एशिया का एक रेगिस्तानी प्रदेश। ३ इस देश का व्यक्ति। ४ इस देश का घोडा। —**पसाव**–पु० करोड का पुरस्कार।

अरबजियौ, (वजियौ)–पु० साधारण काटेदार वृक्ष विशेष।

अरबद (दियौ, दीयौ, अरबद्द)–पु० [स० अर्बुद] १ अरावली पहाड का एक हिस्सा। २ आबू पहाड। —**गिर**–पु० आबू पहाड।

अरबद्ध–पु० १ गठिया रोग। २ देखो 'अरबद'।

अरबिंद (ब्यद)–देखो 'अरविंद'।

अरबी, (ब्बी)–वि० [अ०] अरब देश का, अरब सबधी। –पु० १ अरब का घोडा। –स्त्री० २ अरब की भाषा।

अरबुद–देखो 'अरबद'।

अरभ, (क)–पु० [स० अर्भक] बालक।

अरमान–पु० [तु० अरमान] इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना।

अरयद-देखो 'अरिंद'।
अरय्यमा-पु० [स० अर्यमन] बारह आदित्यों मे से एक।
अरर-अव्य पु० [स० अररे] दर्द, शोक, आश्चर्य व व्यग्रता सूचक अव्यय ध्वनि। -पु० [स०] कपाट, किवाड।
अरराट (टौ)-पु० [अनु०] १ घोर ध्वनि। २ दर्द की आवाज, कराहट।
अरळ-स्त्री० १ अर्गला, ब्योडा। २ शत्रु।
अरळाणौ, (बौ), अरळावणौ (बौ)-देखो 'अरडावणौ'।
अरळु-स्त्री० १ कडवी लौकी। २ एक औषधि का नाम। ३ एक फल।
अरवत, अरवा-पु० [स० अर्वन] घोडा, अश्व।
अरवळ-पु० घोडे के कान की जड मे होने वाली भौंरी।
अरवाचीन-वि० [स० अर्वाचीन] १ आधुनिक। २ नवीन।
अरविंद-पु० [स०] १ कमल। २ सारस। ३ तावा। ४ कमल का फूल। —**नयन**-पु० विष्णु। कमल नयन। —**नाभ**-पु० विष्णु। —**बधु**-पु० सूर्य। —**योनि**-पु० ब्रह्मा। —**लोचन**-पु० विष्णु। कमल नयन।
अरवी-स्त्री० एक प्रकार का कद जिसकी तरकारी बनती है।
अरस, (सि)-पु० १ आकाश। २ सबसे ऊचा स्वर्ग जहा ईश्वर रहता है। [स० अर्शस्] ३ बवासीर रोग। ४ छत, पटाव। ५ महल। -वि० [स०] १ रसहीन, नीरस। २ फीका। ३ मंद, निस्तेज। ४ निर्बल। ५ अगुणकारी। ६ शुष्क।
अरस-परस-पु० [स० दर्श-स्पर्श] १ दर्शन, साक्षात्कार। २ आख मिचौनी का खेल। -क्रि०वि० प्रत्यक्ष, रूबरू।
अरसाधनी-स्त्री० [स० अरिसाधिनी] सेना, फौज।
अरसाल, (लौ)-पु० [स० अरि-शल्य] १ गढ, दुर्ग, किला। २ राजा कर्ण। ३ वीर, योद्धा।
अरसिक-वि० [स०] १ जो रसिक न हो। २ विरक्त। ३ रूखा, शुष्क। ४ अभावुक।
अरसौ-पु० [अ० अर्सा] १ समय, अवधि। २ विलब, देर।
अरस्स, (ए), अरस्सि-देखो 'अरस'।
अरहंत-देखो 'अरिहत'।
अरहट, (ट्ट, ठ)-देखो 'अरट'।
अरहटणौ-वि० शत्रुओ का नाश करने वाला।
अरहटणौ, (बौ)-क्रि० शत्रुओ का नाश करना।
अरहड-देखो 'अरहर'।
अरहण-देखो 'अरिहत'।
अरहणा-स्त्री० [स० अर्हणा] १ पूजा, अर्चना। २ उपासना। ३ सम्मान। ४ शिष्ट व्यवहार।
अरहत-देखो 'अरिहत'।
अरहर-पु० [स० आढकी] १ एक द्विदल मोटा अनाज, तूर। २ शत्रु, रिपु।
अरहित-वि० [स० अर्हित] पूजित, अर्चित।
अरहौ-पु० [स० अर्ह] अत्यावश्यक कार्य।
अराणि-पु० [स० रण] युद्ध।
अरान, (नी)-पु० [स० अरि] १ रिपु, शत्रु। २ ऐबवाला घोडा।
अरानी-पु० बहादुर, वीर।
अरांम-देखो 'आराम'। —**खोर**='आरामखोर'।
अराई-स्त्री० [स० अहार्य] घास-फूस की गेंडुरी, इडुरी।
अराक-वि० १ अकडने वाला। २ देखो 'ऐराक'।
अरडाणौ (बौ)-१ ऊट, भैंस आदि पशुओ द्वारा कष्ट मे कराहना, आवाज करना। २ जोर से रोना, चिल्लाना।
अराज-वि० बिना राज्य का। -पु० राज्य का अभाव।
अराजक-वि० [स०] १ राजा या शासन विहीन। २ उपद्रवी, विद्रोही।
अराजकता-स्त्री० [स०] १ शासन का अभाव। २ अशान्ति। ३ क्रान्ति।
अराट-पु० [स० अरि + राट्] १ शत्रु-राजा २ देखो 'अरराट'।
अरात, (ति, ती)-पु० [स० आराति] १ शत्रु, दुश्मन। २ रात्रि का अभाव। ३ दुष्ट, आततायी। ४ फलित ज्योतिष मे कुडली का छठा स्थान।
अरातौ-वि० विरक्त, उदासीन।
अरादौ-देखो 'इरादौ'।
अराधक-देखो 'आराधक'।
अराधणा-देखो 'आराधना'।
अराधणौ (बौ)-देखो 'आराधणौ' (बौ)।
अरापत-देखो 'ऐरावत'।
अराब, अराबा, अराबी-स्त्री० [फा०] १ तोप रखने की गाडी। २ फौज की टुकडी। ३ एक प्रकार की छोटी तोप। ४ युद्ध वाद्य विशेष।
अरावळ-पु० [फा० हरावल] सेना का अग्र भाग।
अरावौ-पु० साप की कुडली।
अराह-स्त्री० कुमार्ग।
अरिंद-पु० [स० अरि + इन्द्र] शत्रु, दुश्मन।
अरि-पु० [स०] १ शत्रु, वैरी, रिपु। २ काम, क्रोधादि आन्तरिक शत्रु। ३ पहिया, चक्र। -अव्य० और। —**अण, यण, यारण**-पु० शत्रुगण। —**क**-पु० सदेह, शका। —**केसी**-पु० श्रीकृष्ण। —**घड**-पु० शत्रुदल। —**घन**-पु० शत्रुघ्न। —**जण, ज्जण**-पु० शत्रुगण। —**थड, याट**-पु० शत्रु समूह। —**द**-पु० शत्रु। —**दम**-वि० शत्रुओ का दमन करने वाला। —**दळ**-पु० शत्रु सेना। —**भजण**-वि० शत्रुओ का सहार करने वाला

—राज–पु० शत्रु राजा । शत्रुओ का नेता । —साल –वि० शत्रुओ के लिये शूल-समान । —हंत–पु० जैनियो के तीर्थकर । —वि० शत्रुओ का हनन करने वाला । पूजनीय । —हंतनर–पु० ईश्वर ।—हण, हन–पु० शत्रुघ्न ।

अरिया–स्त्री० १ तर ककडी । २ फुसी ।

अरियौ–पु० फोडा ।

अरिल्ल–पु० एक मात्रिक छद ।

अरिस्ट–पु० [स० अरिष्ट, अरिष्ठ] १ दुःख, कष्ट । २ पीडा, वेदना । ३ विपत्ति, आपत्ति । ४ दुर्भाग्य । ५ अमगल, अहित, ६ उत्पात, उपद्रव । ७ पौष्टिक मद्य (वैद्यक) । ८ नीम । ९ कौआ । १० गिद्ध । ११ दही का मट्ठा । १२ लहसुन । १३ वृषभासुर । १४ सूतिका गृह । १५ शराव । —वि० १ दृढ, पक्का । २ अनश्वर । ३ बुरा, अशुभ । —नेमि–पु० दक्ष प्रजापति का नाम । जैनियो के तीर्थकर ।

अरिस्टा–स्त्री० [स० अरिष्टा] दक्ष प्रजापति की पुत्री ।

अरिहर, (हरि, हरौ)–पु० शत्रु वश का व्यक्ति । शत्रु ।

अरिहा–पु० [स० अरिघ्न] शत्रुघ्न ।

अरी–अव्य० १ स्त्री वाचक सबोधन । २ बुलाने की साकेतिक ध्वनि । ३ देखो 'अरि' । —अधार–पु० सूर्य ।

अरीझ–वि० जो प्रसन्न न हो ।

अरीठौ–देखो 'अरेठौ' ।

अरीढ़–वि० पीठ न दिखाने वाला वीर ।

अरीत–स्त्री० [स० अरीति] कुरीति, बुरी रश्म ।

अरीपुलोम–पु० यौ० इन्द्र ।

अरबधु–पु० चन्द्रमा ।

अरीयण, (याण, हण)–देखो 'अरिअण' ।

अरीहरि–देखो 'अरिहर' ।

अरुखिका–स्त्री० शिर के वाल उडने का रोग ।

अरुंधती–स्त्री० [स०] १ वशिष्ठ मुनि की पत्नी । २ दक्ष प्रजापति की कन्या । ३ नासिका का अग्रभाग । ४ सप्तर्षि मडल का छोटा तारा । ५ जिह्वा । —ईस–पु० वशिष्ठ मुनि ।

अरु–अव्य० १ और । २ पुनः, फिर । –ख–वि० विरुद्ध, विमुख ।

अरुचि–स्त्री० [स] १ अनिच्छा । २ अग्नि माद्य रोग । ३ घृणा, नफरत । ४ विरक्ति, उदासीनता । —कर–वि० अरुचि पैदा करने वाला । जो रुचिकर न हो ।

अरुचिख–स्त्री० अग्नि, आग ।

अरुज–वि० [स०] निरोग, स्वस्थ ।

अरुजण, (न)–देखो 'अरजुण' ।

अरुझण–देखो 'उलझण' ।

अरुझणी, (बौ)–देखो 'उळझणौ' ।

अरुझाणी, (बौ)–देखो उळझाणौ' ।

अरुण–पु० [स० अरुण] १ सूर्य । २ सूर्य का सारथी । ३ गुड । ४ कुमकुम । ४ सिन्दूर । ६ सध्याराग । ७ आक, मदार । ८ अव्यक्त राग । ९ कुष्ट रोग । ७ माघ मास का सूर्य । ११ सुवर्ण । १२ लाल रग । १३ रौप्य । १४ केसर । १५ युद्ध । —वि० [स० अरुण] लाल, रक्ताभ । —चूड– पु० मुर्गा, कुक्कुट । —ता–स्त्री० लालिमा, ललाई । —प्रिया–स्त्री० सूर्य पत्नी । अप्सरा । —सिखा–पु० मुर्गा ।

अरुणा–स्त्री० १ मजीठ । २ इन्द्रायण । ३ उषा । —वरज–पु० गरूड ।

अरुणाई–स्त्री० लालिमा ।

अरुणी–स्त्री० १ ललाई । २ मेहदी ।

अरुणोद, (दय)–पु० [स० अरुणोदय] १ उषाकाल । २ ब्राह्म मुहूर्त ।

अरुणोदधि–पु० मिश्र व अरव के बीच का लाल सागर ।

अरुठ–देखो 'अरथ' । ४ देखो 'आरुढ' ।

अरू–अव्य० और ।

अरूह–वि० १ अत्यधिक । २ बढिया, श्रेष्ठ ।

अरूडणौ, (बौ)–क्रि० १ धक्का मार के भीड मे घुसना । २ आवश्यकता से अधिक घुसना ।

अरूच–देखो 'अरुचि' ।

अरूढ–वि० १ क्रुद्ध, नाराज । २ वलवान, जबरदस्त । ३ प्रसन्न, खुश ।

अरूढ़णौ (बौ), अरूहणौ (बौ)–देखो 'आरूढणौ' ।

अरूप–वि० १ रूप रहित, निराकार । २ कुरूप । –पु० विष्णु ।

अरूपी, अरूवी–वि० १ जिसमे वर्ण, रस, गध और स्पर्श भौतिक गुण न हो (जैन) । २ जिसमे रूप का अभाव हो ।

अरे–अव्य० आश्चर्यमय सबोधन ।

अरेठौ (ठौ)–पु० [स० अरिष्टक] १ रीठा का वृक्ष, अरेटा । २ इस वृक्ष का डोडा ।

अरेत–वि० [अ०अ + रय्यत] दूसरो की प्रजा । –स्त्री० धूलि रहित ।

अरेध–देखो 'आराधना' ।

अरेस–वि० १ निष्कलक, दाग रहित । २ शत्रु, दुश्मन । ३ पराजित न होने वाला । –पु० १ आकाश, आसमान । २ जीत, विजय ।

अरेह, (हण, हौ)–वि० १ निष्कलक, वेदाग । २ नही नमने वाला वीर ।

अरेहौ–पु० दुश्मन, शत्रु ।

अरैंट–देखो 'अरट' ।

अरैं–अव्य० सम्वोधन व आश्चर्य वोधक अव्यय ।

अरोग–वि० [सं० आरोग्य] रोग रहित, निरोग, स्वस्थ। –पु० १ सुख। २ रोग का अभाव। ३ खाना क्रिया।
अरोगण–देखो 'आरोगण'।
अरोगणो–वि० (स्त्री० अरोगणी) भोजन करने वाला, खाने वाला। भक्षण करने वाला।
अरोगणो (बो)–क्रि० [सं० आरोग्य] खाना, भोजन करना, भक्षण करना।
अरोगाणो, (बो)–क्रि० भोजन कराना, खाना, खिलाना।
अरोगी–वि० १ निरोग, स्वस्थ। २ देखो 'आरोगी'।
अरोड (ड़ो)–वि० १ जबरदस्त। २ न रुकने वाला। ३ वीर बहादुर। ४ बहुत, अधिक। ५ समुदाय, झुंड। ६ देखो 'अरोडो'।
अरोड़णो–वि० (स्त्री० अरोडणी) रोकने वाला।
अरोपा–वि० दृढ, मजबूत।
अरोम–वि० [सं०] रोम या बाल रहित, निलोम।
अरोळ, अरोळी–पु० [फा० हरावल] सेना का अग्रभाग, हरावल।
अरोहक–देखो 'आरोहक'।
अरोहण–देखो 'आरोहण'।
अरोहणो, (बो)– देखो 'आरोहणो' (बो)।
अरोहित, अरोही– देखो 'आरोहित'।
अरौ–पु० बैल गाडी के पहिये का एक अवयव।
अरौड़–पु० १ वेग। २ देखो 'अरोड'।
अलंकार–पु० [सं०] १ आभूषण, जेवर। २ काव्य रचना की चमत्कारिक विधि। ३ साहित्य के अलंकार। ४ नायिका के सौंदर्य को बढ़ाने वाले हाव-भाव। ५ बहत्तर कलाओं में से एक। ६ प्रथम गुरु सहित चार मात्रा का नाम। ७ उपाधि विशेष।
अलंकृत, (क्रित)–वि० [सं० अलंकृत] १ सजाया हुआ, शृंगारित। २ आभूषण या उपाधि धारित। ३ काव्यालकार युक्त। ४ चारु, चमत्कृत।
अलंक्रिती–वि० [सं० अलंकृति] अलंकारों का जानकार। –पु० १ सजावट। २ आभूषण।
अलग, (गो), अलगा, (ए)–पु० १ सेना का पक्ष। २ दिशा। ३ आलिंगन। –वि० [सं० अनुलंघय] १ ऊंचा, उत्तग। २ पहुंच से परे। ३ बहुत। –क्रि०वि० ४ ऊपर, दूर। ५ अतिदूर।
अलगणो, (बो)–देखो 'आलिंगणो' (बो)।
अलगाणो, (बो)-देखो 'आलिंगणो' (बो)।
अलगार–पु० योद्धा वीर।
अलगी–देखो 'अळग'।
अलघा-क्रि०वि० दूर, अति दूर।
अलत–वि० व्यर्थ, निरर्थक।
अलब, अलंबे–वि० [सं० अवलंबित] आश्रित, अवलंबित, निर्भर।
अलबुसा–स्त्री० [सं० अलंबुषा] १ गोरख मुंडी। २ स्वर्ग की एक अप्सरा।
अळ–देखो 'इळा'।
अल–वि० [सं० अलम्] व्यर्थ, निरर्थक। –पु० [सं० अलि] १ भ्रमर, भौंरा। २ बिच्छु का डंक। ३ बिच्छु। ४ पानी, जल। ५ वश, गांव।
अल-अली–वि० काला, श्याम।
अलआर, (रो)–वि० निस्सार, निरर्थक।
अळइयो–देखो 'अळियो'।
अलक–स्त्री० [सं०] १ घुंघराले बालों की लटिका। जुल्फ। २ घुंघराले बाल। ३ हरताल। ४ मदार। ५ महावर। ६ केसर का उबटन। —अवली–स्त्री० बालों की राशि, बालों का समूह। बालों की पंक्ति। —नंदा–स्त्री० गढवाल की नदी। —मध्य–पु० भाल, ललाट। —लडैतो–वि० प्यारा, दुलारा।
अलका–स्त्री० [सं०] १ कुबेर-नगरी। २ बालों की लटिका, अलक, जुल्फ। ३ केश। —धारी–पु० श्रीकृष्ण। —नगरी–स्त्री० कुबेरपुरी। —पत, पति–पु० कुबेर। आठ दिग्पालों में से एक। —पुरी–स्त्री० कुबेरपुरी। —वळ, वळि–स्त्री० केशों की लटिकाएं।
अलकाब–पु० [अ० अल्काब] उपाधि, पदवी।
अलक्क–देखो 'अलक'।
अलक्ख, अलक्ष (क्षो)–वि० [सं० अलक्ष, अलक्ष्य] १ जो लक्ष या लाख के बराबर हो, लाख। २ न देखा हुआ, अलक्षित। ३ अदृश्य, अज्ञात। –पु० १ ईश्वर, परमेश्वर। २ दश नामी सन्यासियों द्वारा भिक्षा मांगते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द।
अलक्षण–पु० [सं०] अशुभ, बुरा लक्षण। –वि० लक्षण रहित।
अलक्ष्य–देखो 'अलक्ख'।
अलख-पु० १ तीर। २ एक प्रकार का रोग। —पुरख–पु० ईश्वर। —भवन, भुवण–पु० स्वर्ग।
अलखलडैतो, अलखलडो–वि० (स्त्री० अलखलडी) प्यारा, प्रिय, प्रियतम।
अलखाणण–स्त्री० १ शरारत, उद्दण्डता। २ उदासीनता, खिन्नता।
अलखामणो, (वणो)–वि० (स्त्री० अलखामणी) १ अप्रिय, अरुचिकर। २ बुरा, खराब। ३ खिन्न-चित। ४ उद्दण्ड, शरारती। ५ अजनबी। ६ अनोखा, अमह्य।

अळखेलियौ—पु० योद्धा, वीर ।

अलग—वि० [स० अलग्न] १ पृथक् । २ दूर, अति दूर ।

अलगगीर—पु० घोडे की जीन के नीचे की कवल ।

अलगचौ—देखो 'अलगोजौ' ।

अलगरज, (जी)—वि० [अ. अलगर] मस्त, उन्मत्त, बेपरवाह।

अलगरद—पु० [स अलगर्द] विषहीन जल-जतु ।

अलगोजौ—पु० एक प्रकार की वासुरी ।

अळगौ, (ग्ग, ग्गौ) अळघ, (घौ)—क्रि० वि० दूर, अलग । (स्त्री० अळगी) ।

अलड—वि० १ जो लडा न हो । २ लापरवाह, अल्हड ।

अलड़-बलड—वि० १ अट-सट । २ अव्यवस्थित ।

अलडौ—वि० (स्त्री० अलडी) १ मन मौजी, मस्त । २ लापरवाह । ३ भोला ।

अलज—वि० बुरा, खराव ।

अळजउ—पु० १ मन-मुटाव । २ देखो 'अलजौ' ।

अळजगउ (जयउ] क्रि० वि० १ दूर, फासले पर । २ पृथक् से ।

अलजौ—पु० १ विरह-स्मरण, वियोग-दु:ख । —स्त्री० २ चिन्ता, उद्विग्नता । ३ उत्कठा, अभिलाषा ।

अलज्ज—वि० [स०] निर्लज्ज, वेशर्म ।

अलट—वि० वलवान, शक्तिशाली ।

अलट-पलट—देखो, 'उलट-पलट' ।

अलटौ—पु० १ जुलम । २ कलक ।

अलता, अलत्ता—स्त्री० [स० अलक्तक] मेहदी, महावर ।

अलतौ, अलत्तौ—पु० ध्वस, नाश ।

अळथा—वि० १ वहुत, अधिक । २ देखो 'अलता' ।

अलद्ध—वि० [स० अलब्ध] १ अप्राप्य । २ पृथक् अलग, भिन्न ।

अळप—वि० ध्वनि रहित ।

अलप, (प्प)—वि० [स० अल्प] थोडा, किंचित् । —**ता, ताई**—स्त्री० कमी न्यूनता । छोटाई, सूक्ष्मता, तुच्छता, ओछापन । शैतानी ।

अलपतौ—वि० (स्त्री० अलपती) १ चचल, २ वदमाश, उद्दड, उत्पाती ।

अलफ—पु० पिछले पावो पर खडा होने का भाव या क्रिया (घोडा) ।

अलबत्त, (ता, त्त, त्ता)—क्रि० वि० (अ० अलवत्ता) १ निस्सदेह, वेशक, २ हालाकि, यद्यपि । ३ किन्तु, परन्तु, लेकिन, —वि० ४ किंचित, न्यून । ५ कुछ, थोडा ।

अलबतौ—वि० १ घुमाया हुआ, हिलाया हुआ । २ उद्दण्ड । ३ देखो 'अलपतौ' ।

अलबेलियौ, अलबेलौ—वि० (स्त्री० अलवेली) १ छैल-छवीला, वाका । २ सुन्दर, मनोहर । ३ वना-ठना । ४ अनोखा । ५ अल्हड, मन-मौजी ।

अलवेस—पु० १ पहनावा, वेश । २ वेश-भूषा ।

अलवेसर—वि० अत्यन्त सुन्दर ।

अलभ्य—वि० [स०] १ न मिलने योग्य, अप्राप्य । २ दुर्लभ्य, दुष्प्राप्य । ३ अमूल्य ।

अलम—पु० [अ०] १ रंज, दुख । २ झडा, पताका । ३ पहाड, पर्वत । ४ भीड, समूह । ५ सामर्थ्य । ६ निषेध । —वि० १ व्यर्थ, निरर्थक । २ बहुत । [स० अलम्] ३ यथेष्ट, पूर्ण । ४ पर्याप्त ।

अलमसत—वि० मौजी-मस्त ।

अलमारी—स्त्री० (पु० अलमारियौ) पदार्थों को रखने के लिए खानादार वडा लबा सदूक या दीवार मे बना आलय ।

अलमित्र—पु० गरुड ।

अलरक—पु० [स० अलर्क] १ पागल कुत्ता । २ सफेद आक ।

अलल, अलल्ल, (ल्लौ)—पु० [देश] १ घोडा । २ भाला । क्रि०वि० ऊपरा-ऊपरी । —**टप्पू**—वि० वेहिसाब, अदाजिया । थोडा । —**हिसाब**—पु० अदाज से गिना जाने वाला हिसाब ।

अलवदौ—पु० १ आफत । २ कलक । ३ वोझ ।

अळवळाट—स्त्री० १ वकवास । २ निरर्थक कार्य । ३ भीड । ४ चचलता ।

अळवळियौ—वि० १ शौकीन । २ सुन्दर, मनोहर ।

अळवाणौ—वि० [स० अनुपनाह] (स्त्री० अळवाणी) नगे पैर । बिना जूते पहने ।

अलवावळी—स्त्री० [स० अलिअवली] भौरो की पक्ति ।

अलवेलौ—देखो 'अलवेलौ' । (स्त्री० अलवेली)

अलवौ—वि० (स्त्री० अलवी) १ चचल, नटखट । २ निरर्थक बातें करने वाला । ३ अविश्वास पात्र । ४ अजीव ।

अलस—पु० १ अजीर्ण रोग । २ देखो 'आळस' । ३ देखो 'आळसी' ।

अलसक—पु० एक प्रकार का कुष्ट रोग ।

अळसणौ, (बौ)—क्रि० १ आलस्य करना, सुस्ताना । २ प्रमाद करना ।

अळसाक—देखो 'आळस' ।

अलसाणौ, (बौ)—क्रि० १ आलस्य करना, सुस्ताना । २ मुरझाना, कुम्हलाना ।

अळसियौ—पु० केंचुआ नामक वरसाती कीडा ।

अळसी—स्त्री० [स० अतसी] एक पौधा विशेष व उसके वीज ।

अळसीडौ—पु० कूडा कचरा, घास-फूस ।

अळसूद—देखो 'अतरूज' ।

अळसेट—स्त्री० [स० अलस] १ लापरवाही । २ सुस्ती, ढिलाई । ३ देर । ४ टालमटूल ।

अळसोटौ—पु० फसल के साथ होने वाला घास ।

अळुजाड़, (झाड़, झाड़ौ)–पु० १ गुत्थी, उलझन। २ बाधाए, रुकावटें। ३ अव्यवस्थित सामान का ढेर। ४ झाडी समूह। ५ परस्पर उलझा होने की अवस्था या भाव।

अळुज्झ–स्त्री० उलझन, गुत्थी।-वि० १ उलझा हुआ। २ फैला हुआ, व्यापक।

अळुवावणौ (बौ)–क्रि० निद्रायुक्त होना, उनिन्दा होना।

अळूचणौ (बौ)–क्रि० किसी देवता के नाम पर सकल्प करके कोई वस्तु रखना।

अळू जाड़ौ–देखो 'अळुजाड'।

अलूक–देखो 'उलूक'।

अलूकी–स्त्री० [स० उलूपी] मछली।

अळूज (झ)–स्त्री० उलझन।

अळूजणौ, (बौ), अळूझणौ (बौ)–क्रि० १ उलझना। २ किसी उलझन मे फसना। ३ फसना, अटकना। ४ विवाद मे पडना। ५ लडना, भिडना। ६ ध्वस्त होना। ७ लपेट मे आना। ८ कठिनाई मे पडना। ९ प्रेम में फसना १० समस्या मे पडना।

अळूजाणौ, (बौ) अळूझाणौ (बौ)–क्रि०१ उलझाना। २ किसी उलझन मे फसाना। ३ फसाना, अटकाना। ४ विवाद मे पटकना। ५ लडाना, भिडाना।

अळूझाड, (डौ)–देखो 'अळुजाड'।

अलूणौ–वि० [स० अलावणिक] (स्त्री० अलूणी) १ नमक रहित, अलौना, फीका। २ नीरस, सारहीन। ३ लावण्य या कान्तिहीन। ४ विना ऊन कटी (भेड)।

अळूधणौ, (बौ)–क्रि० फदे मे फसना, उलझना।

अळूधाणौ (बौ)–क्रि० फदे मे फसाना, उलझाना।

अलूप–देखो 'अलोप'।

अळूळ-जळूळ–वि० ऊल-जलूल, उटपटाग।

अलेख, (खा, खू)–वि० [स० अ+लिख्, अलेख्य] १ जो लक्ष्य न किया जा सके। अज्ञेय, दुर्बोध। २ जो लिखने योग्य न हो। ३ अगणित, अपार। ४ अदृश्य। ५ व्यर्थ। —पु० १ बुरा लेख। २ ईश्वर।

अलेखी–वि० १ आततायी, अन्यायी। २ असख्य, अगणित।

अलेप–वि० १ निर्लिप्त, विरक्त। २ निर्दोष।

अळेवण–पु० [स० आलेपन] १ सामग्री, सामान। २ वैभव, धन। ३ शरीर की बनावट। ४ ढग।

अलेह–वि० १ लेन-देन रहित। २ विरक्त।

अलैया–स्त्री० एक रागिनी।

अलैहरी–पु० एक ककुद वाला अरबी ऊट।

अलोक–वि० [स० अ+लोक] १ निर्जन। २ जो इस लोक से सबध न रक्खे। ३ अदृश्य। -पु० १ पातालादि लोक। २ काति, दीप्ति, प्रभा। ३ देखो 'अलौकिक'।

अलोकिक–देखो 'अलौकिक'।

अलोखणौ (बौ)–देखो ओळखणौ (बौ)।

अलोच–देखो 'आलोच'।

अलोज–वि० स्वस्थ, निरोग।

अलोणौ (बौ)–क्रि० [स० आलेपन] १ मिलाना, मिश्रित करना। २ आटा, मेदा आदि मे पानी डालकर गीला करना।

अलोप–वि० [सं० आलुप्त] १ लुप्त, अन्तर्धान, अदृश्य। २ अप्रगट, गुप्त। -पु० परमेश्वर, ब्रह्म।

अलोपणौ (बौ)–१ उल्लघन करना, लाघना। २ लुप्त होना।

अलोम–वि० [स०] लोम या बाल रहित।

अलोय–वि० [स० अलोचन] १ आख रहित। नेत्रहीन। २ अनुचित।

अलोळ–वि०[स० अलोल] १ स्थिर, अचचल। २ दृढ, पक्का। ३ युवा, जवान।

अलोवणौ (बौ)–देखो 'अलोणौ'।

अलोह–वि० १ शस्त्रो के घावो से रहित। २ शस्त्र रहित।

अलोहित–पु० लाल कमल।

अलौकिक–वि० [स०] १ जो इस लोक का न हो, लोकोत्तर। २ अद्भुत, अनोखा। ३ अपूर्व, अद्वितीय। ४ चमत्कारिक। ५ अमानुषी, दैवी। ६ दिव्य।

अल्प, (क, अल्पां)–वि० [स० अल्प] १ बहुत कम, अत्यल्प। २ न्यूनतम। ३ तुच्छ, छोटा। —**जीवी**–वि० अल्पायु।

अल्पग्य–वि० [स०अल्पज्ञ] १ कम बुद्धि वाला। २ सीमित ज्ञान वाला। ३ नासमझ। —**ता**–स्त्री० नासमझी। ज्ञान की कमी।

अल्पता–स्त्री० [स०] कमी, छोटापन, न्यूनता।

अल्पायु–वि० [स०] कम आयु वाला।

अल्यगन–पु० आलिगन।

अल्ल–देखो 'अल'।

अल्लाम–देखो 'अलाम'।

अल्ला, (ह)–पु० [अ०] ईश्वर, खुदा।

अल्लू–देखो 'उल्लू'।

अल्हड–वि० १ लापरवाह। २ मनमौजी, मस्त। ३ अनगढ। ४ भोला।—**पण, पणौ**–पु० लापरवाही। मस्ती। भोलापन। —**बल्हड**–अनु० अट-सट।

अवको–वि० [स० अ—वक्र] १ अवक्र, सीधा। २ सहज, सरल। ३ निधडक, वीर।

अवत, (ति), अवंतिका, अवती–स्त्री० [स० अवति, अवती] उज्जैन नगरी का प्राचीन नाम।

अव–उप० [स०] एक उपसर्ग जो निश्चय, अनादर, ईपत्,

नीचाई आदि अर्थों का बोध कराता है। —अत्त–देखो 'अव्यक्त'। —कद, (ध)–पु० १ डाकू। ३ वीर, बहादुर। —कर–पु० कचरा, कूड़ा करकट। —कार–वि० विकार रहित। –पु० ईश्वर। —कास–पु० समय। अवसर। छुट्टी। खाली समय आकाश। शून्य स्थान। दूरी, फासला। —कीरण–वि० फैलाया या छितराया हुआ। ध्वस्त, नष्ट। —कीरणी–वि० वृत्त तोडने वाला।

अवकी–देखो 'अवकी'।

अवखकीबाण–स्त्री० [स० अवाच्यवचन] न कहने योग्य वचन या वाणी।

अवक्र–वि० [स०] जो वक्र न हो, सीधा। सरल, सहज।

अवखय–वि० अक्षय। (जैन)

अवखळणौ (खळ्ळ)–देखो 'ओखळणौ'।

अवखाण, (णौ)–देखो 'उखाणौ'।

अवखा–स्त्री० [स० अभिख्या] १ नाम। २ कीर्ति, यश। ३ चमक-दमक सौन्दर्य।

अवखाळणौ–वि० १ प्रसिद्ध। २ वीर, बहादुर।

अवगत, (त्त)–वि० [स० अवगत] १ विदित, ज्ञात। ३ जाना हुआ, परिचित। ३ गिरा हुआ। ४ अज्ञात। ५ विचित्र, अदभुत। –पु० १ विष्णु। २ ईश्वर। ३ वेग। ४ लीला, रचना। ५ अधोगति।

अवगति–स्त्री० [स० अवगति] १ बुद्धि, समझ, ज्ञान। २ धारणा। ३ बुरी गति। ४ देखो 'अवगत'।

अवगन–पु० [स० अगुन] १ ईश्वर। २ निर्गुण।

अवगाढ–पु० [स०] युद्ध, समर। —वि० १ वीर, बहादुर। २ प्रबल, समर्थ, शक्तिशाली। ३ गंभीर, महान। ४ निमज्जित। ५ छिपा हुआ। ६ घना, गाढा। ७ अथाह, गहरा।

अवगात–वि० निष्कलंक, बेदाग।

अवगाळ–पु० [स० उद्गार] १ ताना, व्यंग। २ कलंक, दोष। ३ निन्दा। ४ शर्म, लज्जा। ५ देखो 'ओगाळ'।

अवगाह–पु० [स०] १ हाथी का ललाट। २ युद्ध। ३ कठिनाई। ४ संकट का स्थान। ५ अवगाहण।

अवगाहण, (न)–पु० [स० अवगाहन] १ स्नान, निमज्जन। २ जल में डुबकी या गोता। ३ लीन होने या तल्लीन होने की क्रिया। ४ खोज, छानबीन। ५ ग्रहण। ६ अथाह जल। ७ गहरा स्थान।

अवगाहणौ, (बौ)–क्रि० १ नहाना, स्नान करना। २ डुबकी या गोता लगाना। ३ लीन या तल्लीन होना। ४ खोज या छानबीन करना। ५ ग्रहण करना। ६ देखना, विचारना। ७ पार करना। ८ हिलाना, विचलित करना। ९ मारना। १० चलाना। ११ ध्वस्त करना, नाश करना। १२ टटोलना। १३ तपासना, जांच करना।

अवगुंठन–पु० १ घूंघट। २ पर्दा, आवरण। ३ छिपाव।

अवगुण–पु० [स०] १ दोष, बुराई, ऐब। २ दुर्गुण, बुरे गुण। –वाद–पु० निन्दा।

अवगुणगारौ (ळौ)–देखो 'ओगुणगारौ'।

अवगुणी–वि० १ दोषी, ऐबी, । दुर्गुणी। २ कृतघ्न, कुकर्मी।

अवग्या–स्त्री० [स० अवज्ञा] १ आज्ञा की उपेक्षा, अवहेलना। २ अपमान, अनादर। ३ पराजय, हार। ४ एक अलंकार विशेष।

अवग्रह–पु० [स० अवग्रह] १ रुकावट, अड़चन, रोक, बाधा। २ गज समूह। ३ हाथी का माथा।

अवघट–देखो 'ओघट'।

अवड़ौ– १ देखो 'ओहड़ौ'। २ देखो 'अवडौ'।

अवचळ–देखो 'अविचळ'।

अवचार–देखो 'आचार'।

अवचीत–वि० अचिंतित। –क्रि०वि० अचानक, अकस्मात।

अवछन्न–वि० [स० अविच्छिन्न] १ जो अलग-अलग न हो, टुकड़ों में न हो। बिना टूटा। २ सीमा बद्ध। ३ अविभाजित। ४ बाधारहित, निर्बाध। ५ निरन्तर, लगातार। ६ विशेष गुणयुक्त। ७ गुप्त।

अवछर, (रा)–देखो 'अपसरा'।

अवछळ–वि० [स० अविचल] १ अटल, अविचलित। २ निरन्तर। ३ स्थाई। ४ कपट या छल रहित।

अवछाड–देखो 'ओछाड'।

अवछाणौ (बौ)–क्रि० छाना, आच्छादित करना/होना।

अवछाह–पु० [स० उत्साह] उत्साह, जोश, तुर्रा।

अवजक्षा–देखो 'अयोध्या'।

अवजाती, (जीत)–पु० [स० अपजाति] शत्रु, वैरी।

अवजास–देखो 'उजास'।

अवजासणौ (बौ)–देखो 'उजासणौ' (बौ)।

अवजोग–देखो 'अपजोग'।

अवज्ज–देखो 'आवाज'।

अवज्झड, अवझड, (झाड)–देखो 'ओझाड'।

अवझाडणौ, (बौ)–देखो 'ओझाडणौ' (बौ)।

अवटक–देखो 'उपटक'।

अवट–क्रि०वि० [स० अवर्त्म] १ बिना रास्ते, बेरास्ते। २ कुमार्ग में। –पु० १ कुमार्ग, कुराह। २ रास्ते का अभाव। ३ पाताल। ४ आयु, उम्र। ५ गर्व, घमंड। ६ गड्ढा। ७ हाथी को फसाने का गर्त। ८ बुरी दशा। –वि० असीम, अपार।

अवटणौ, (बौ)–क्रि० [सं० अपवर्तयति] १ युद्ध करना। २ घूमना, फिरना। ३ चक्कर लगाना। ४ देखो 'आवटणौ'।

अवटाणौ, (बौ) (वणौ, बौ)–क्रि० [सं० अपवर्तापयति] १ उबालना। २ ताप देकर द्रव पदार्थ को कम करना। ३ हैरान करना।

अवठाणौ (बौ)–क्रि० पराजित करना, हराना। देखो 'अवटाणौ'

अवठौ–वि० कटु। कड़ुआ। तीक्ष्ण। –पु० उपालब। कटु शब्द।

अवड, (ढ), अवड़ियौ–वि० जो कटा न हो।

अवडौ, (ढौ)–सर्व० (स्त्री० अवडी, अवढी) १ ऐसा। २ इतना। –वि० १ बहुत बडा। २ भयकर। ३ विचित्र। ४ कठिन, दुर्गम। ५ टेढा, तिरछा। ६ सकटमय।

अवणासी–देखो 'अविणासी'।

अवणि (णी)–देखो 'अवनि'।

अवतस–पु० [सं०] १ भूषण, अलकार। २ शिरोभूषण टीका। ३ सिरपेच। ४ श्रेष्ठ व्यक्ति। ५ दूल्हा। ६ सबसे उत्तम हार। ७ मुकुट। –वि० निष्कलक, पवित्र।

अवतमस–पु० [सं० अवतमसम्] अधेरा, तम।

अवतरण–पु० [सं० अवतरणम्] १ तरना, उतरना, पार होना क्रिया। २ जन्म ग्रहण करना। ३ अवरोहण। ४ नमूना। ५ प्रतिकृति, नकल। ६ प्रादुर्भाव, उदय। ७ उद्धरण। अवतार।

अवतरणी–स्त्री [सं०] १ ग्रथ की भूमिका, प्रस्तावना। २ परिपाटी।

अवतरणौ (बौ)–क्रि० [सं० अवरतणम्] १ प्रगट होगा। २ उत्पन्न होना, जन्म लेना। ३ अवतार लेना। ४ पार होना, तरना। ५ उतरना। ६ उदय या प्रादुर्भाव होना। ७ उद्धरित होना।

अवतार (रौ)–पु० [सं०] १ ईश्वर या किसी देवता द्वारा शरीर धारने की अवस्था। २ जन्म। ३ नीचे आना या उतरना क्रिया। ४ आगमन। ५ प्रादुर्भाव। ६ आकार। ७ चौबीस की सख्या। ८ दश की सख्या।

अवतारणौ (बौ)–क्रि० [सं० अवतारणम्] १ ईश्वर या देवता का शरीर धारण करना। २ दिव्य शक्तियो सहित जन्मना। ३ नीचे आना, उतरना। ४ आगमन होना। ५ प्रादुर्भाव होना। ६ रचना करना।

अवतारी–वि० [सं०] १ अवतार लिया हुआ। २ दिव्य शक्ति सम्पन्न।

अवतोका-स्त्री० [सं० अवतोका] वह स्त्री या गाय जिसका कारणवश गर्भपात हुआ हो।

अवत्थी–स्त्री० [सं० अपस्थानम्] पराजय, हार।

अवथरि, (री)–क्रि० वि० तीव्र वेग से।

अवदंस–पु० [सं० अवदश] १ मद्यपान पर अच्छा लगने वाला नमकीन पदार्थ। २ गजक। ३ बलवर्द्धक पदार्थ।

अवदान–पु० [सं० अवदान, अपदान] १ अच्छा कार्य। २ शुद्ध आचरण। ३ तोड-फोड, खण्डन। ४ त्याग, उत्सर्ग। ५ कुत्सित दान। ६ वध। ७ आच्छादन।

अवदात, (दीत)–वि० [सं० अवदात] १ साफ, स्वच्छ। २ सुन्दर। ३ बेदाग। ४ सफेद। ५ पीला। ६ शुभ्र, उज्ज्वल। ७ चितरगा। ८ पुण्यात्मा। ९ शुद्ध, निर्मल। –पु० [अवदात] १ हस। २ एक मात्रिक छद। ३ शुक्ल वर्ण, गौरवर्ण। ४ श्रेष्ठता। ५ चरित्र। ६ नतीजा, परिणाम। —चळ–पु० हस।

अवदारण (क)–पु० [सं०] १ फावडा। २ कुदाल। ३ खुरपा।

अवदाळ–देखो 'अवदाळ'।

अवदिसा–स्त्री० [सं० विदिशा] १ विपरीत दिशा। २ दिशा। ३ दिशाओ के बीच का कोण।

अवदीक–पु० युद्ध, समर।

अवदोह, (ण)–पु० [सं० अवदोह] १ दूध। २ दोहन।

अवद्ध–देखो 'अवद्ध'।

अवद्या–देखो 'अविद्या'।

अवध, (धि, धी)–स्त्री० [सं० अयोध्या] १ अयोध्या नगरी। २ अवध की भाषा। [सं० आयुध] ३ शस्त्र, अस्त्र। [सं० अवधि] ४ अवधि, समय। –क्रि०वि० अल्प काल के लिये। —**ईस, नरेस, पति, पती, राज**–पु० अवधेश, श्रीरामचन्द्र। अयोध्या के राजा। —**पुर, पुरी**–स्त्री० अयोध्या नगरी।

अवधान–पु० [सं० अवधान] १ चित की एकाग्रता, मनोयोग। २ समाधि। ३ सावधानी, चौकसी। [सं० आधान] ४ गर्भ। [सं० अभिधाम्] ५ नाम। ६ कथन, निरूपण।

अवधा–स्त्री० [सं० अभिधा] १ नाम। २ अभिधा।

अवधार–पु० [सं० अवधार] १ सहायक, रक्षक। २ निश्चित, निर्णय। ३ निश्चित मत।

अवधारण–वि० सीमा बद्ध करने वाला, बधन बाधने वाला।

अवधारणौ (बौ)–क्रि० [सं० अवधारणम्] १ धारण करना। ग्रहण करना। २ मानना, स्वीकार करना। ३ पूजन करना। ४ नमस्कार करना। ५ विचार करना, निश्चय करना। ६ सहायता करना।

अवधि, (धी)–स्त्री० [सं० अवधि] १ समय, काल। २ मियाद। ३ अत समय। ४ सीमा। ५ अयोध्या। ६ अवध प्रदेश की भाषा। –अव्य० तक, पर्यन्त। –ग्यान पु० अतीन्द्रिय ज्ञान। —मान–पु० सागर, सिंधु।

अवधू, अवधूत–पु० [सं० अवधूत] १ योगी, सन्यासी।

२ त्यागी पुरुष । ३ तन्मतानुयायी साधु । ४ दशनामी सन्यासी, गोस्वामी । –वि० कपित । उदासीन । मस्त । (स्त्री० अवधूतण अवधूताणी) ।

अवधेस, (र)–पु० [स० अवधेश, अवधेश्वर] १ अवधपति । २ श्रीरामचन्द्र ।

अवध्यौ, अवध्य–वि० [स० अवध्य] १ जो वध करने व मारने योग्य न हो । २ अनाहत ।

अवध्वस–पु० [स०] १ त्याग, परित्याग । २ निंदा । ३ कचूमर करना । ४ सहार, नाश । ५ असम्मान, भर्त्सना ।

अवन–देखो 'अवनि' ।

अवनत–वि० [स०] १ झुका हुआ । २ गिरा हुआ, पतित । ३ नम्र । ४ दुर्दशाग्रस्त । ५ अस्त ।

अवनति, (ती)–स्त्री० [स०] १ अधोगति, पतन । २ दुर्दशा । ३ झुकाव । ४ न्यूनता, कमी । ५ प्रणाम, नम्रता । ६ अस्त होने की क्रिया ।

अवनाड–देखो 'अनड' ।

अवनि, अवनी–स्त्री० [स० अवनि] १ पृथ्वी, धरती । २ नदी । —**अमर**–पु० ब्राह्मण । —**ईस**–पु० राजा । —**नाथ**–पु० पृथ्वी पति, राजा । —**प, पत, पति, पती**–राजा, नृप ।

अवनीत–वि० [स० अविनीत] अविनम्र । अशिष्ट । (जैन) ।

अवनीता–स्त्री० [स० अ + विनीता] कुलटा ।

अवन्न, (न्नी)–देखो 'अवनि' ।

अवप, अवपु–पु० [स० अवपु] १ कामदेव । २ ईश्वर ।

अवपाटिक–पु० पुरुषेन्द्रिय सबधी रोग ।

अवपात–पु० [स० अवपात] १ हाथियो को फसाने का गड्ढा । २ पतन, अध पतन ।

अवबोध–पु० १ जागन । २ बोध, ज्ञान ।

अवभामिनी–स्त्री० [स० अवभामिनी] ऊपरी त्वचा ।

अवभ्रथ–पु० [स० अवभृथ] १ यज्ञ के बाद का शेष कर्म । २ यज्ञान्त स्नान ।

अवमरद–पु० [स० अवमर्द] युद्ध लडाई । —**ग्रहण**–पु० एक प्रकार का ग्रहण ।

अवयव-पु० [स०] १ अश, भाग, हिस्सा । २ शरीर के अग-प्रत्यग । ३ तर्क पूर्ण वाक्य का एक भेद ।

अवर–वि० [स० अवर] १ आयु मे छोटा । २ अनुवर्ती । ३ अपेक्षा कृत नीचा, घटिया । ४ नीच । ५ देखो 'अपर' । —ज–पु० छोटा भाई । शूद्र, नीच ।

अवरजा–स्त्री० छोटी वहन ।

अवरण, (णी)–वि० [स० अवर्ण] १ वर्ण रहित । २ रगरहित । ३ बदरग । ४ अवर्णनीय । ५ हीन जाति वाला । —**वरण**–पु० ईश्वर ।

अवरणवाद–पु० निन्दा (जैन) ।

अवरती–स्त्री० [स० अवर्ती] घोड़ी ।

अवरळ–देखो 'अविरळ' ।

अवरसण, (णौ)–पु० [स० अवर्षण] दुष्काल, अनावृष्टि ।

अवरसरप–पु० [स० अवसर्प] १ जासूस, भेदिया । २ राजदूत, एलची ।

अवराह–देखो 'अपराध' ।

अवरी–स्त्री० १ कुमारी कन्या । २ अप्सरा । ३ नाग कन्या । ४ सुसज्जित सेना ।

अवरेख–पु० [स० अवलेख] १ लेख, लेखन । २ विचार, ध्यान । ३ प्रतिज्ञा । ४ लकीर पक्ति । ५ निश्चय ।

अवरेखणौ(बौ)–क्रि० १ देखना, अवलोकन करना । २ लिखना । ३ विचार करना, सोचना, अनुमान करना । ४ निश्चय करना । ५ प्रतिज्ञा करना ।

अवरेण–वि० अन्य, दूसरा, पराया ।

अवरेब–स्त्री० १ कपडे की तिरछी काट, उरेब । २ पेंच, उलझन ।

अवरोध, (न)–पु० [स०] १ रुकावट, रोक । २ बाधा, अडचन । ३ घेरा । ४ अन्त पुर । ५ अनुरोध । —**क**–वि० बाधा डालने वाला, बाधक ।

अवरोपण–पु० [स० अवरोपण] उखाडना क्रिया ।

अवरोसौ–देखो 'अमरोसौ' ।

अवरोह–पु० १ उतार । २ पतन । ३ सीढ़ी, सोपान । ४ स्वरो का उतार ।

अवलब, (लबण, लबन)–पु० [स०] १ आश्रय, सहारा । २ सहायता । ३ सरक्षण । ४ आधार । ५ पाच प्रकार के कफ मे से एक ।

अवलबणौ (बौ)–क्रि० १ आश्रय या सहारा लेना । २ सहायता लेना । ३ सरक्षण प्राप्त करना । ४ आधार पाना । ५ लटकना ।

अवलबत–वि० [स० अविलबित] शीघ्र, तुरन्त । –पु० वेग ।

अवलबित–वि० [स०] १ आश्रित । २ आधारित । ३ लटका हुआ । ४ सरक्षित ।

अवलबी–वि० १ सहारा, आश्रय देने वाला । सहायक । २ सरक्षक ।

अवल–वि० [अ० अव्वल] १ प्रथम, सर्व प्रथम । २ उत्तम, श्रेष्ठ । ३ पहला । –क्रि०वि० आदि या प्रारभ मे ।

अवळणौ, (बौ)–क्रि० १ वापस मुडना, लौटना । २ न लौटना ।

अवळा–देखो 'अबळा' ।

अवळाई–देखो 'अबळाई' ।

अवलाद–देखो 'औलाद' ।

अवलिग्रो, अवलियौ–वि० १ महान, श्रेष्ठ । २ उदार । –पु० सिद्ध पुरुष । —**पातसा, पुरख, पुरस**–पु० ब्रह्मज्ञानी । सिद्ध पुरुष । मस्ताना ।

अवळी–१ देखो 'अवळी' । २ देखो 'ओळी' । ३ देखो 'अमली' ।

अवळीमाण–देखो 'अमलीमाण' ।

अवलुंचन–पु० [स०] १ काटना क्रिया । २ छेदना क्रिया । ३ उखाडना या नोचना क्रिया ।

अवळू (डौ)–देखो 'ओळू' ।

अवलू–देखो 'अवळौ' ।

अवलेप, (पन)–पु० [स०] १ उबटन, मालिश । २ लेपन । ३ पुताई । ४ उपर्युक्त कार्य सबधी पदार्थ ।

अवलेह–पु० [स०] १ चटनी, माजून । २ गाढा द्रव पदार्थ । ३ लेई ।

अवळै–देखो 'ओळै' ।

अवलोकणौ (बौ)–क्रि० १ देख-भाल करना । २ निरीक्षण करना । ३ दृष्टिपात करना ।

अवलोकन–पु० [स०] १ देख-भाल । २ निरीक्षण । ३ दृष्टि-पात ।

अवळौ–देखो 'अवळी' (स्त्री० अवळी) ।

अवल्ल–देखो 'अवल' ।

अववेल–स्त्री० सहायता, मदद ।

अवस–वि० [स० अ + वश] १ विवश, लाचार । २ पराधीन । ३ असमर्थ । ४ बेकाबू । ५ देखो 'अवस्य' । —**ता**–स्त्री० विवशता, लाचारी । पराधीनता ।

अवसप्पिणि–देखो 'अवसरपिणी' ।

अवसमिव, अवसमेव–क्रि० वि० [स० अवश्यमेव] निश्चय ही, अवश्य ही ।

अवसयाय–पु० [स० अवश्याय[बर्फ, पाला, हिम ।

अवसर–पु० [स०] १ समय । २ मौका । ३ अवकाश, फुरसत । ४ विश्राम, विराम । ५ महफिल, सभा । ६ प्रस्ताव । ७ मत्र विशेप । ८ वार, दफा । –क्रि०वि० भीतर, अदर । —**वादी**–वि० स्वार्थी । मौके का फायदा उठाने वाला ।

अवसरप–पु० [स० अवसर्प] १ गुप्त दूत । जासूस । २ राजप्रतिनिधि । ३ एलची ।

अवसरपिणी–स्त्री० [स० अवमर्पिणी] दश कोडाकोडी सागरोपम । प्रमाण (समय) समय-समय पर हानि दिखलाने वाला छ आरा परिमित काल विभाग, उतरता समय (काल) (जैन) ।

अवसाण, (णौ) (सान)–पु० [स० अवसान] १ अवसर मौका । २ समय । ३ विश्राम, विराम, अवकाश । ४ अत । ५ सीमा, हद । ६ मरण मृत्यु । ७ सायकाल । ८ चेतना, होश, सज्ञा । ९ एहसान । १० युद्ध । —**सध, सध, सिद्ध, सिध्ध, सुध**–वि० समय पर कार्य सिद्ध करने वाला । युद्ध मे विजयी । वीर गति प्राप्त करने वाला ।

अवसान–पु० १ भोजन । २ युद्ध । ३ देखो 'अवसाण' ।

अवसाऊ–वि० आवश्यक, जरूरी । –क्रि०वि० अवश्य । अकस्मात ।

अवसाद (न)–पु० [स० अवसाद] १ विषाद, दुख । २ दीनता । ३ नाश, क्षय ।

अवसाप–देखो 'ओसाप' ।

अवसायिता–स्त्री० अष्ट सिद्धियो मे से एक ।

अवसि (सी)–१ पराधीनता । २ असहाय अवस्था । ३ देखो 'अवस्य' ।

अवसिस्ट–वि० [स० अवशिष्ट] बचा हुआ, शेष ।

अवसेख–क्रि०वि० अवश्यमेव । –वि० [स० अवशेष] १ बचा हुआ । २ देखो 'अभिसेक' ।

अवसेचण–पु० [स०] १ सीचन, पानी देना । २ पसीना ।

अवसेस–पु० [स० अवशेष] १ शेष, बाकी । २ अन्त समाप्ति । –वि० १ बचा हुआ । २ धर्म रहित । ३ भेदक । ४ तुल्य समान । ५ देखो 'अभिसेक' ।

अवस्कद–पु० [सं० अवस्कद] १ सेना का पडाव, शिविर । २ आक्रमण, हमला ।

अवस्ता, अवस्था–स्त्री० [स० अवस्था] १ दशा, हालत । २ परिस्थिति । ३ आयु, उम्र । ४ जीवन की आठ दशायें । ५ चार की सख्या ।

अवस्य–क्रि०वि० [स० अवश्य] १ निस्सन्देह, जरूर, अवश्य । २ सर्वथा, सभव । ३ निश्चित रूप से ।

अवस्स–१ देखो 'अवस्य' । २ देखो 'अवस' ।

अवस्साण १ देखो 'अवसाण' । २ देखो 'अवसान' ।

अवहरण–पु० १ दूर हटाना । २ चुरा लेना । ३ लूट लेना । ४ सेना का पीछे हटकर ठहरना । ५ देखो 'अपहरण' ।

अवहार–पु० [स० अवहार] १ बधन । २ नक्र, मगर । ३ चोर । ४ शर्क मछली ।

अवहि–देखो 'अवधि' ।

अवहित्था अवहिया–स्त्री० [स० अवहित्था] साहित्य का एक सचारी भाव ।

अवहिनाण–देखो 'अवधिग्यान' ।

अवहेलण (न, ना) अवहेला–स्त्री० [स० अवहेलना] १ अवज्ञा । २ तिरस्कार, अपमान । ३ लापरवाही ।

अवातर–क्रि० वि० [स०] मध्य, भीतर ।

अवारिया, अवारियै–देखो 'अवारिया' ।

अवास–देखो 'आवास' ।

अवाई–स्त्री० १ आगमन । २ खवर, सदेश । ३ ध्वनि, शब्द । ४ गहरी जुताई ।

अवाक, (कि, की)–वि० १ विस्मित, स्थभित। २ चुप, मौन। ३ वहादुर, वलवान। ४ अप्रामाणिक। –पु० शत्रु, वैरी।
अवाड–पु० चोरो के पद चिह्नों की खोज।
अवाडी, (डू)–वि० चोरो के पद चिह्नों की खोज करने वाला। –पु० चिकित्सक।
अवाडौ–पु० १ कूऐ के समीप वना पशुओ के जल पीने का स्थान। २ देखो 'उवाडौ'।
अवाचक–पु० काव्य का एक दोष।
अवाचा–पु० वादा या वचन का निरस्तीकरण।
अवाचि, (ची)–स्त्री० [स० अवाचि] दक्षिण दिशा।
अवाच्य–वि० [स०] १ जो कहा न जा सके, अकथ्य। २ अनिंदित। ३ विशुद्ध। ४ मौनी, चुप। ५ नीच, अधम। –पु० कुवाक्य, गाली।
अवाज–देखो 'आवाज'।
अवाडू, (डौ)–वि० १ विपरीत, विलोम, उल्टा। २ द्वेष रखने वाला। ३ वुरा।
अवात–वि० [स०] जहा वायु न लगे, वातशून्य।
अवादौ–पु० मियाद, अवधि।
अवाप–पु० [स० आवापक] कर-भूषण, कगन।
अवार–देखो 'अवार'।
अवारणौ (वौ)–देखो 'वारणौ' (वौ)।
अवारु (रू)–देखो 'अवार'।
अवार्या, अवार्यं–देखो 'अवारिया'।
अवाळ–१ रहट के चक्रो के कगूरेदार भाग के मिलने की क्रिया। २ रहट के चक्र के सिरे। ३ जल प्रवाह के साथ आने वाला कूडा।
अवाळौ–देखो 'अवाडौ'।
अवास–वि० १ आवास रहित। २ गध रहित। –पु० [स० उपवास] १ व्रत, उपवास, लघन। २ देखो 'आवास'। ३ देखो 'आभास'।
अवाह–पु० १ ईंटो का वना वडा चूल्हा, भट्टी। २ वर्तन पकाने का कुम्हार का आवा। ३ योगिनी का खप्पर। –वि० जिस पर प्रहार न हो सके। –क्रि०वि० [स० अवाध] निरतर, लगातार।
अवाहण–देखो 'आवाहण'।
अविंद, (विंध)–वि० अछिद्रित, अविद्ध।
अवि–पु० [स०] १ वकरा। २ भेड। —अट, अट्ट, अट्ठ, आट–पु० युद्ध। योद्धा, वीर। झुण्ड, समूह, दल। –स्त्री० तलवार, कृपाण। –वि० ललित, मनोहर। —अविकळ–वि० [स० अविकल] १ ज्यो का त्यो। परिवर्तनरहित। २ सम्पूर्ण, पूरा। ३ नियमित। ४ निरन्तर। ५ निश्चल, शात। ५ व्याकुल। ६ वीर।
अविकार–वि० [स०] १ विकार रहित, निर्विकार। २ निर्मल, स्वच्छ। ३ पवित्र। ४ जन्म-मरणादि से रहित। –पु० १ विकार का अभाव। २ ईश्वर, ब्रह्म।
अविकारी–वि० [स०] १ जिसमे कोई विकार न हो। २ परिवर्तन शून्य। ३ अविकृत। ४ सदा एक रस रहने वाला। –पु० ईश्वर, ब्रह्म।
अविकुळ (ल)–वि० पूर्ण, पूरा।
अविगत, (ति, ती)–वि० १ जिसकी गति जानी न जा सके। २ जो नष्ट न हो। ३ शाश्वत, नित्य। –पु० ईश्वर।
अविग्रह–वि० १ जो स्पष्ट रूप से जाना न जा सके। २ निराकार।
अविचळ–वि० [स० अविचल] १ अचल, अटल। २ अमर। ३ स्थिर। ४ जो विचलित न हो, निडर, धीर, वीर।
अविचार–पु० [स०] १ विचार का अभाव। २ अविवेक। ३ अन्याय।
अविच्छिन्न–वि० [स०] १ अटूट, अखड। २ निरन्तर, लगातार।
अविच्छेद–पु० [स०] अखण्डता, निरन्तरता।
अविढौ–वि० १ दुर्गम, टेढामेढा। २ वीर, वाकुरा। ३ देखो 'अवढौ'।
अविणास, (नास)–पु० [स० अविनाश] १ विनाश का विपर्याय। २ अक्षयता, स्थायित्व। ३ ईश्वर, ब्रह्म।
अविणासी, (नासी)–वि० [स० अविनाशी] १ जो नाश को प्राप्त न हो, अक्षय, अमर। २ नित्य, शाश्वत। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ शिव।
अवितस–देखो 'अवतस'।
अविदित–वि० [स०] अज्ञात। गुप्त।
अविध–देखो 'अवधि'।
अविधान–पु० १ विधान का अभाव, नियम का अभाव। २ देखो 'अभिधान'।
अविधा–देखो 'अभिधा'।
अविधुत–देखो 'अवधूत'।
अविन–देखो 'अवनि'।
अविनय–पु० [स०] १ अवज्ञा, अनम्रता। २ उद्दण्डता, उशृंखलता। ३ अशिष्टता।
अविनासी–वि० [स० अविनाशिन्] १ जिसका नाश न हो, अनाशवान। २ अक्षय, नित्य, शाश्वत –पु० १ ईश्वर, परब्रह्म। २ जीव। ३ प्रकृति।
अविनीत–वि० [स०] जो नम्र न हो, ढीट, अशिष्ट।
अविबुध–पु० [स०] असुर, दैत्य, राक्षस।
अविभक्त–वि० जिसका विभाजन न हो। अभिन्न। २ सयुक्त।
अविम्रस्य-विधेयस–पु० साहित्य का एक दोष।

अवियट, अवियाट–देखो 'अविग्रट' ।

अविरया–क्रि०वि० वृथा, फिजूल ।

अविरळ–वि० [स० अविरल] १ मिलाहुआ, अपृथक । २ अभिन्न । ३ घना, सघन । ४ निरतर, लगातार । ५ स्थूल, मोटा । ६ जिसमे टूट या व्यवधान न हो ।

अविराम–क्रि०वि० [स० अविराम] १ बिना रुके । २ बिना विश्राम किये । ३ निरतर, लगातार । ४ शीघ्र, जल्दी ।

अविरद्ध–वि० [स०] १ जो विरुद्ध न हो, पक्ष मे । २ स्पष्ट ।

अविरोध–पु० [स०] १ विरोध का अभाव । २ मैत्री । ३ साम्य, सादृश्य । ४ एकता ।

अविलबत–क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त ।

अविळ–वि० टेढा, तिरछा । –क्रि० वि० १ शीघ्र । २ देखो 'अवल' ।

अविवेक–पु० [स०] १ विवेक का अभाव । २ अज्ञान । ३ नासमझी, नादानी । ४ अन्याय ।

अविसेख–देखो 'अभिसेख' ।

अविस्वास–पु० विश्वास का अभाव ।

अविस्वासी–वि० [स० अविश्वासी] १ जिसका विश्वास न हो । २ जो किसी पर विश्वास न करे ।

अविह–वि० निडर निर्भीक ।

अविहड–वि० [सं० अविघट] १ दृढ, मजबूत । २ अखड, अटूट । ३ अभग्न, सातत्ययुक्त । –सर्व० ऐसा ।

अवींध–देखो 'अवींद' ।

अवी–देखो 'अवि' ।

अवीअट–देखो 'अविग्रट' ।

अवीचि–पु० [स०] एक नरक का नाम ।

अवीदात–देखो 'अवदात' ।

अवीयाट–देखो 'अविग्रट' ।

अवीहड–देखो 'अविहड' ।

अवूठणौ(बौ)–क्रि० वर्षा न होना, अनावृष्टि रहना ।

अवेखणौ (बौ), अवेखिणौ (बौ)–क्रि० [स० अवेक्षणम्] देखना, ध्यान लगाना ।

अवेडौ–वि० १ प्रतिकूल । २ एकान्त ।

अवेर–१ देखो 'अवेर' । २ 'देखो अवेर' ।

अवेरणौ (बौ)–देखो 'अवेरणौ' ।

अवेरौ–क्रि०वि० १ वेवक्त, असमय । –पु० निवृत्ति, समाप्ति । २ देखो 'अवेरौ' ।

अवेळौ–पु०[स०अवेला] १ देर, विलव । २ असमय । ३ रात्रि । –क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त ।

अवेव–पु० भेद, रहस्य । –वि० निर्बल, दुर्बल ।

अवेस–देखो 'अवेस' ।

अवं–सर्व० उसने । –क्रि० वि० अब ।

अवैतनिक–वि० विना वेतन कार्य करने वाला ।

अवोडौ–देखो 'ओहडौ' ।

अवोचण (न)–पु०[स०अवचन] पर्दानसीन औरतो के शिर पर ओढने का श्वेत वस्त्र ।

अव्यक्त–वि० [स०] १ जो प्रत्यक्ष न हो, अप्रत्यक्ष । २ अदृश्य, अगोचर । ३ अज्ञात । ४ अनिर्वचनीय । ५ अस्पष्ट । ६ अप्रकाशित । ७ अनुत्पन्न । ८ अचिन्त्य । ९ जो अवगत न हो । –पु० [स० अव्यक्त] १ विष्णु । २ शिव । ३ कामदेव । ४ मूल प्रकृति (साख्य) । ५ परमात्मा । ६ आत्मा । ७ क्रिया रहित ब्रह्म, जीव, सूक्ष्म शरीर ।

अव्यय–वि० [स०] १ सदा एकसा रहने वाला । २ अविकारी । ३ नित्य । ४ आद्यतहीन । ५ अनश्वर । ६ अक्षय । ७ जो व्यय न किया गया हो । ८ मितव्ययी । –पु० १ ब्रह्म । २ विष्णु ३ शिव । ४ व्याकरण का वह शब्द जो सब लिंगो, विभक्तियो और वचनो मे समान रूप से प्रयुक्त हो ।

अव्ययीभाव–पु० यौ० [स०] समास का एक भेद ।

अव्यवस्थित–वि० [स०] १ जिसकी कोई व्यवस्था न हो, अस्त-व्यस्त । २ असगठित । ३ शास्त्र मर्यादा रहित । ४ चचल अस्थिर ।

अव्यापी–वि० [स०] १ जो सब जगह पाया जाय । २ जिसका सर्वत्र गमन न हो ।

अव्रत–वि० व्रत का अभाव ।

अव्वर–१ देखो 'अपर' । २ देखो 'अवर' ।

अव्वल–देखो 'अवल' ।

असक–वि० [स० अशक] १ निर्भय, निशक । [स० असख्य] २ असख्य, बहुत । –पु० १ युधिष्ठिर । २ भय, आतक ।

असका–देखो 'आसका' ।

असकित, असकौ–वि० [स० अशकित] १ निर्भय, निडर । २ शका रहित ।

असख, (खी, खं,) असंख्य, (ख्यात)–वि० [स० असख्य] अपार, अगणित, असख्य ।

असग–वि० [स०] १ सग रहित, अलग । २ विरक्त, निर्लिप्त । ३ एकाकी, अकेला । ४ जबरदस्त, बलवान । ५ अपार, असख्य । –पु० १ बुरासग, कुसग । २ वृक्ष, पेड ।

असगति–स्त्री० १ कुसगति, बुरी सोहबत । २ असगतता । ३ वेमिलमिलापन ।

असगी–वि० जो किसी सग की परवाह न करे ।

असग्यो–वि० १ जिसको सज्ञा न हो । २ चेतना शून्य । –पु० चेतना शून्य प्राणी ।

असजती–वि० असयमी ।

असंजोग–पु० [सं० असंयोग] १ बुरा संयोग । कुयोग ।
२ अनायास घटित । ३ भिन्नता, पार्थक्य ।

असंत–वि० [सं०] १ असाधु । २ खल, नीच, दुष्ट । ३ दुर्जन ।

असंतुस्ट–वि० [सं० असंतुष्ट] १ जिसे संतोष न हो ।
२ अप्रसन्न । ३ अतृप्त ।

असंतुस्टि, (स्टी)–स्त्री० १ असंतोष होने की दशा या भाव ।
२ अप्रसन्नता । ३ अतृप्ति ।

असंतोस–पु०[सं० असंतोष]१ संतोष का अभाव । २ अप्रसन्नता ।
३ अतृप्ति ।

असंतोसी–वि० जिसे संतोष न हो । अप्रसन्न । अतृप्त ।

असंध, (धौ)–पु० [सं० असन्नद्ध] कवच, सनाह । –वि०
१ कवच धारी । २ कवच रहित । ३ हथियार रहित ।
[सं० असनद्ध, असंधि] ४ संधि या जोड रहित ।
५ न मिला हुआ । ६ बंधन रहित, स्वतंत्र ।
[सं० असंधिक] ७ अपूर्व अद्वितीय ।

असंधणौ (बौ)–वियोग होना, पृथक होना ।

असंधौ–वि० १ असहमत । २ देखो 'असेंधौ' (स्त्री० असंधी) ।

असंप–पु० स्नेहाभाव । विरोध । शत्रुता ।

असंपड़–वि० [सं० असंपुट] १ असंभव । २ बिना स्नान किया हुआ ।

असंभ–वि० [सं० अ+संभाति अ+संभृ] १ भयंकर, भयावह ।
२ बहुत, अपार । ३ वीर, बहादुर । –पु० १ युद्ध, लडाई ।
२ देखो 'असंभव' ।

असंभम, असंभव (वौ)–वि० [सं० असंभव] १ जो संभव या
मुमकिन न हो, नामुमकिन । २ अजन्मा, अज, स्वयंभू ।
३ वीर, बहादुर । ४ अद्वितीय, अपूर्व । ५ जन्म व उत्पत्ति
से रहित । –पु० एक प्रकार का अलंकार ।

असंभावना–स्त्री० [सं०] १ संभावना का अभाव, अभवितव्यता,
अनहोनापन । २ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष ।

असंभै–देखो 'असंभव' ।

असंम–वि० राग रहित ।

असंयती–देखो 'असजती' ।

असंसय–वि० [सं० असंशय] १ संशय रहित । २ निश्चित ।
३ यथार्थ ।

असंसारी वि० [सं०] १ अलौकिक । २ विरक्त, वैरागी ।

अस–वि०[सं० ईदृश]१ ऐसा, इस प्रकार का । २ तुल्य, समान ।
–क्रि०वि० १ इस तरह इस भांति, ऐसे । २ देखो 'अश्व' ।
३ देखो 'अस्त्र' । –साळ, साळा–स्त्री० अश्वशाला ।

असई–स्त्री० [सं० असती] कुलटा, व्यभिचारिणी ।

असकत–[illegible] [illegible] ।

असक[illegible] [illegible] ।

असकन्नी–पु० तलवार की म्यान साफ करने का लोहे का एक
औजार ।

असकाज–पु० भाला । बरछा ।

असकुन, (सगुन)–पु० [सं० अशकुन] अमंगल, सूचक लक्षण
अपशकुन ।

असकेल–देखो 'असखेल' ।

असक्त–वि० [सं० अशक्त] निर्बल, कमजोर, दुर्बल ।

असखपणौ–पु० धनुष से तीर चलाने की क्रिया ।

असखेल–स्त्री० १ हंसी मजाक, मखौल । २ लापरवाही,
असावधानी । ३ मौज, मस्ती, खेल ।

असगंध–स्त्री० [सं० अश्वगंधा] गर्म देशों में होने वाली एक
औषधि ।

असगौ, (गौ)–वि० १ जो रिश्तेदार या संबंधी न हो । २ शत्रु ।

असडौ (डौ)–देखो 'इसडौ' (स्त्री० असडी) ।

असज्जन–वि० [सं०] दुष्ट, नीच, खल ।

असज्य–वि० [सं० असह्य] जो सहने योग्य न हो, असह्य ।

असटंग–देखो 'असटांग' ।

असटंगी–देखो 'असटांगी' ।

असट–वि० [सं० अष्ट] आठ । –पु० आठ की संख्या ।
—कुळ–पु० सर्पों के आठ कुल । —कुळी–पु० सर्प ।
—पद, पदी–स्त्री० मकडी । आठ पदों का छंद या गीत ।
सिंह, शेर स्वर्ण, सोना । —पात–पु० शरभ, शार्दूल ।
मकडी । —पौंर–पु० अष्ट प्रहर । —विधान–पु०
काव्य के आठ चमत्कार । एक साथ विभिन्न आठ कार्य
करने की क्षमता ।

असटमी–देखो 'अस्टमी' ।

असटांक–पु० [सं० अष्टांग] १ योग की क्रियाओं के आठ भेद ।
२ आयुर्वेद के आठ विभाग । ३ शरीर के आठ अंग या
अवयव ।

असटापद, असटापाद–पु० देखो 'अस्टपद' ।

असण (न)–पु० [सं० अशन] १ भोजन, खाना । २ आहार,
भक्षण । ३ चिमक, भिलावा । ४ तीर, बाण । ५ सवार
६ आग्रह । ७ जिद्द । ८ गड्ढा । ९ वर्षा ।१०देखो असणी' ।

असणी–पु० [सं० अशनि, असन्] १ इंद्रास्त्र, वज्र । २ विद्युत,
बिजली । ३ अस्त्र । ४ भाला, बरछा । ५ शस्त्र की नोक ।
६ इन्द्र । ७ अग्नि । ८ देखो 'अस्नती' ।

असत (त्त)–वि० [सं० असत्] १ मिथ्या, झूठ, असत्य ।
२ असाधु । ३ अन्यायी, अधर्मी । ४ अनुचित, गलत ।
५ खराब, बुरा । ६ दूषित । ७ पापी । ८ कायर, डरपोक ।
९ श्याम, काला । १० छिपा हुआ, तिरोहित । ११ नष्ट ।
१२ शत्रु, दुश्मन । १३ दुष्ट, पतित, नीच । –पु०
झूठी बात, मिथ्या वचन ।

असत–पु० १ अनस्तित्व । २ जड प्रकृति । ३ सत का अभाव । ४ देखो 'अस्त' । ५ देखो 'अस्थि' ।

असतन–देखो 'स्तन' ।

असतर–पु० [स० अस्त्र] १ फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार । २ फैंके हुए हथियार को रोकने का उपकरण । ३ मत्र द्वारा चलने वाला हथियार । ४ शल्य चिकित्सा के उपकरण । ५ खच्चर । ६ देखो 'अस्तर' ।

असतरी–१ देखो 'स्त्री' । २ देखो 'इस्त्री' ।

असतळ–देखो 'अस्थळ' ।

असता–देखो 'असाति' ।

असताचळ–देखो 'अस्ताचळ' ।

असति, असती–वि० [स० अ + सती, अ + सत्] १ जिसका सतीत्व भग हो गया हो । २ कुलटा व्यभिचारिणी । ३ अधर्मी, पापी, दुराचारी । ४ कायर, डरपोक । ५ अशक्त, कमजोर । ६ काला, श्याम । –पु० १ असुर, राक्षस । २ देखो 'असत' ।

असतूत, (ति, ती)–स्त्री० [स० स्तुति] १ स्तवन, कीर्तन । २ प्रार्थना, विनती, स्तुति । ३ यशोगान, गुणगान । ४ प्रशसा, बडाई ।

असतूळ–देखो 'स्थूळ' ।

असतोत्र–पु० [स० स्तोत्र] १ स्तुति, स्तवन, कीर्तन । २ किसी देवता को प्रसन्न करने का मत्र या छन्द ।

असतौ–वि० निर्लेप ।

असत्र–पु० [देश] १ सूअर, शूकर । २ तीर, बाण । –वि० [स०अ+शस्त्र] १ निहत्था, नि शस्त्र । [स० अ+ शत्रु] २ मित्र, दोस्त । ३ देखो 'असतर' ।

असत्री–देखो 'स्त्री' ।

असथन–पु० मज्जा ।

असथळ–देखो 'अस्थळ' ।

असथान–पु० [स० स्थान] स्थान, जगह ।

असथामा–देखो 'अस्वथामा' ।

असथि, असथी–स्त्री० [स० अस्थि] अस्थि, हड्डी । —पजर–पु० हड्डियो का ढाचा, ककाल ।

असद–वि० [स०] दुष्ट, नीच ।

असन–वि० [स० अस्न] १ मूर्ख । २ देखो 'असण' ।

असनान–पु० [स० स्नान] नहाना क्रिया, स्नान, मज्जन ।

असनि, (नी)–१ देखो 'असणी' । २ देखो 'अश्विनी' । —कवार, कुमार='अस्विनी कुमार' ।

असनेह–पु० [स० अस्नेह] १ स्नेह का अभाव । २ शत्रुता, दुश्मनी ।

असन्न–क्रि०वि० १ पास मे, पास, निकट । २ देखो 'आसीन' । ३ देखो 'असण' ।

असन्नी–वि० [स० असज्ञिन्] मन की संज्ञा रहित, मनोज्ञान से रहित । सम्यग दृष्टि भिन्न ।

असन्नू, (न्नू)–पु० १ असुर, राक्षस । २ देखो 'असण' ।

असप–पु० [स० अश्व] घोडा, अश्व । —पत, पति, पती–पु० घोडे का स्वामी । बादशाह । रिसालदार ।

असपका–स्त्री० [स० अश्वपक्ति] घोडो की पक्ति ।

असपताळ–पु० औषधालय, चिकित्सालय ।

असपतिराइ, (राय, राव) असपतीराई, (राय, राव) असपत्त, (पत्ति, पत्तो)–पु० [स० अश्वपतिराज] १ घुड सेनापति । २ बादशाह । ३ मुसलमान ।

असपथ–पु० [स० अश्वत्थ] पीपल ।

असपरा–पु० [स० अस्परा] देवता । –स्त्री० [स० अप्सरा] देवागना ।

असप्पति–देखो 'असपति' ।

असबझ–देखो 'असमझ' ।

असबाव–१ सामान, सामग्री । २ अप्रयोज्य वस्तुए ।

असभ्य–वि० [स०] १ अशिष्ट, गवार २ अनाडी । ३ उद्दण्ड । ४ अशिक्षित ।

असमजत–पु० एक सूर्यवशी अत्याचारी राजा ।

असमजस–पु०[स०]पशोपेश, दुविधा । हिचकिचाहट । सकोच ।

असमद्र-देखो 'आसमुद्र' ।

असम–पु०[स०अश्मन्]१ प्रस्थर,पत्थर । २ एक अलकार विशेष । स्त्री० [स० अ + शम] ३ लुब्धता । ४ अशाति । ५ आग, अग्नि । –वि० [स०] १ विपम, २ ऊबड-खाबड, ऊ चा-नीचा ।

असमझ–स्त्री० १ समझ की कमी । २ अज्ञानता । मूर्खता । –वि० वेसमझ, मूर्ख ।

असमत्थ, असमथ–देखो 'असमरथ' ।

असमनेत्र–वि० जिसके नेत्र विषम हो । –पु० शिव, महादेव ।

असमय–पु० [स०] १ विपत्तिकाल, कुसमय । २ कुअवसर । –वि० सिद्धान्तहीन, प्रतिज्ञाहीन ।

असमर–स्त्री० १ तलवार, खड्ग । २ देखो 'स्मर' ।

असमरथ असमरथ्य–वि० [स० असमर्थ] १ अशक्त, दुर्बल, कमजोर । २ अयोग्य । ३ अक्षम ।

असमसाण असमसर-पु० कामदेव ।

असमाण, (न)–देखो 'आसमान' ।

असमाणि–(णी नी)–देखो 'आसमाणी' ।

असमाथ–देखो 'असमरथ' ।

असमाध–स्त्री० [स० असमाधि] १ बीमारी, रोग । २ कष्ट, पीडा । ३ उपद्रव, कलह । ४ अशाति । ५ युद्ध ।

असमाधणी (बौ)–क्रि० मरणा, अवसान होना ।

असमाधि, (धी)–देखो 'असमाव'।
असमाधियौ–वि० १ बीमार, रुग्ण। २ अशांत, बेचैन।
असमाप्त–वि० १ अपूर्ण। २ बाकी रहा हुआ। ३ कभी समाप्त न होने वाला।
असमाहित–स्त्री० चित की अस्थिरता। —वि० चचल।
असमेद (मेध)–देखो 'अस्वमेघ'।
असम्मर, असम्मी–देखो 'असमर'।
असयानो–वि० १ नादान, नाबालिक। २ सीधा-सादा।
असर–पु० [अ] १ प्रभाव, दबाव। २ लाभ फायदा। ३ गुण। [स० असृज] ४ खून, रुधिर। ५ देखो 'असुर'।
असरचौ–पु० झगडा, टटा। तकरार। तनातनी।
असरण–वि० [स० अशरण] १ निराश्रय, निरालब। २ अनाथ। —सरण–पु० ईश्वर।
असरधा–स्त्री० [देश] १ रुग्णता। २ कमजोरी। [स० अश्रद्धा] ३ श्रद्धा का अभाव, अश्रद्धा।
असरफी–स्त्री० [फा० अशरफी] १ सोने की मोहर। २ स्वर्ण मुद्रा, सोने का सिक्का। —पु० ३ पीले रग का एक फूल।
असरम, (म्म)–स्त्री० शर्म या लज्जा का अभाव। –वि० बेशर्म, निर्लज्ज।
असराण–पु० [स० असुर] १ असुर। २ यवन, मुसलमान। ३ बादशाह।
असराफ–वि० [अ० अशराफ] शरीफ, भद्र, सज्जन। सभ्य।
असरायळ–देखो, 'अस्सराळ'।
असरार–पु० [स० असुरारि] १ देवता। २ देखो, अस्सराळ'।
असरियौ–देखो 'आसरो'।
असरीखौ (उ)–वि० [स० असदृश] असामान्य, असाधारण।
असराळ–देखो 'अस्सराळ'।
असल–वि० [अ०] १ सही, वास्तविक। २ सच्चा। ३ शुद्ध, खालिस। ४ कुलीन। ५ प्राकृतिक। ६ मूल। –पु० १ जड मूल। २ बुनियाद। ३ मूलधन।
असलस–देखो 'आळस'।
असळ-सळ–स्त्री० घोडा की चाल मे उत्पन्न ध्वनि।
असळाक, (ख, ग)–देखो 'आळस'।
असलियत (लीयत)–स्त्री० [अ०] १ वास्तविकता, सच्चाई। २ बुनियाद। ३ सार, तत्व।
असली, (न)–वि० [अ०] १ सच्चा, वास्तविक। २ खरा। ३ शुद्ध। ४ प्रकृतिक। —जदा–पु० श्रेष्ठ कुल का, कुलीन।
असलील–वि० [स० अश्लील] अशिष्ट, भद्दा, असभ्य। नगा। —ता–स्त्री० अशिष्टता, भद्दापन। फूहडपन, नगापन।
असलेखा (सा)–पु० [स० अश्लेषा] सत्ताईस नक्षत्रों मे से एक।
असल्ली–देखो 'असली'।
असव–देखो 'अस्व'।
असवत, (त्थ)–देखो 'अस्वत्थ'।
असवनी–देखो 'अस्विनी'।
असवान–देखो 'असमाण'।
असवाडं-पसवाडं- देखो, 'आ'डै,-पा'डै'।
असवार–पु० [स० अश्ववार] १ सवार। २ चढना क्रिया।
असवारगी–स्त्री० १ फैलने का भाव। २ सवारी।
असवारी–स्त्री० १ चढना क्रिया। २ सवारी।
असवेत–देखो 'अस्वेत'।
असव्वार–देखो 'असवार'।
असह, (ण)–वि० [स० असह्य] जो सहन न किया जा सके, असहह्य, दुस्सह। —पु० १ शत्रु। २ दुश्मन। ३ यवन, मुसलमान। ४ हृदय। ५ अग्नि, आग। ६ पीडा। ७ घोडा।
असहत (न)–पु० [स० असहन] दुश्मन, शत्रु।
असहाय(यौ)–वि० निराश्रय। अनाथ।
असही–देखो 'असह'।
असहौ–वि० [स० असह्य] असहनीय, बुरा, खराब।
असाच–वि० सत्य, झूठ।
असाजन–सर्व० हमारा, अपना।
असात, (सांयत)–वि० [स० अशात] जो शात न हो, चचल, व्याकुल, अस्थिर। असतुष्ट।
असाति, (ती)–स्त्री० [सं० अशाति] शाति का अभाव, व्याकुलता। चचलता। अस्थिरता। असन्तोप।
असामरथ–वि० सामर्थ्यहीन, असमर्थ।
असामान्य–वि० असाधारण। विशेप।
असाउळी–स्त्री० [स० अश्वाली] अश्व सेना।
असाकल–पु० [स० अशाकल्य] अखड।
असाक्षी–पु० [स०] १ धर्म मे जिसकी गवाही वर्जित हो। २ साक्ष्य का अभाव।
असाड (डौ, ढ़)–देखो 'आसाढ'।
असाडी (ढी)–देखो 'आसाढी'।
असात–पु० [स० अशात] १ अपयश, अपकीर्ति। २ दुःख।
असातना, असाता–स्त्री० १ साता का अभाव। २ बेचैनी, अशान्ति, कष्ट। (जैन)
असातावेदनीय–पु० १ वेदनीय कर्म का एक भेद (जैन)। २ कष्ट एव दुःखप्रद अवस्था (जैन)।
असाद (दु)–वि० १ असमाध्य, दुस्साध्य। २ देखो 'असाध्य'।
असाद्धि–वि० असाध्य।

असाध, (धु)–वि० [सं०असाधु, असाध्य, असाधीय] १ असज्जन, बुरा, दुष्ट, असाधु। २ प्रचंडकाय। ३ असाध्य, दुस्तर। कठिन। ४ असंभव। —**ता**–स्त्री० अशिष्टता, दुष्टता, खोटाई।

असाधारण–वि० विशेष।

असाधि, असाध्य–वि० [सं० असाध्य] १ जो साधा न जा सके, दुस्साध्य। २ कठिन। ३ जिस पर काबू न पाया जा सके। ४ कठोर, तेज, तीव्र।

असार–वि० [सं०] १ सार रहित, निसार। २ तुच्छ। ३ बेमतलब, फालतू। –पु० १ चिह्न, लक्षण। २ देखो 'आसार'। —**ता**–स्त्री० निसारता। तुच्छता।

असारो–देखो 'इसारो'।

असालत–स्त्री० [अ०] १ कुलीनता। २ सच्चाई।

असाळियो, असाल्यू–पु० [सं० अहालिसम] चन्द्रसूर, हाली।

असावधान–वि० [सं० असावधान] १ जो सचेत न हो, गाफिल, लापरवाह। २ बेखबर। ३ अनजान। —**ता**–स्त्री० असावधानी।

असावधानी–स्त्री० [सं० असावधानी] १ सतर्कता का अभाव। २ बेपरवाही, लापरवाही। ३ अज्ञानता।

असावरी–देखो 'आसावरी'।

असास–वि० श्वास रहित, निःश्वास। –पु० आशीर्वाद।

असाह–वि० निर्धन, कंगाल। –पु० वायु, पवन।

असि–पु० स्त्री० [सं०] १ तलवार, खड्ग। [सं० अश्व] २ घोडा, अश्व। –वि० [सं० अश्वेत ईदृश] १ काला, श्याम। २ ऐसी। —**धारण**–वि० तलवार धारी। –**धावक, धारव**–पु० सिकलीगर। —**हत्य**–पु० खड्गधारी योद्धा।

असिक्षित–वि० [सं० अशिक्षित] १ अनपढ, अज्ञानी। २ उज्जड, अनाडी।

असिणि–देखो 'अस्वनी'। २ देखो 'असणी'।

असित–वि० [सं०] १ काला, श्याम। २ दुष्ट, बुरा, कुटिल। –पु० कृष्ण पक्ष। —**अंग**–वि० श्याम वर्ण का, काले रंग का।

असिता–स्त्री० यमुना नदी।

असिद्ध–वि० [सं०] १ जो सिद्ध न हो। २ अप्रामाणिक। ३ व्यर्थ।

असिद्धि–स्त्री०[सं०] १ अप्राप्ति। २ अपूर्णता। ३ कच्चापन।

असिनी–स्त्री० [सं० अश्विनी] १ घोडी। २ एक नक्षत्र विशेष।

असिपति, (पत्ति)–देखो 'असपति'।

असिवर, असिमर, (मरि)–स्त्री० तलवार, खड्ग।

असिमेध–देखो 'अस्वमेध'।

असिम्म–देखो 'असीम'।

असिम्मर–देखो 'असिवर'।

असिय–पु० [सं० अश्व] १ घोडा।–स्त्री० २ अस्सी की संख्या। वि० अस्सी।

असियो–पु० अस्सी का वर्ष। –वि० अस्सी के स्थान वाला।

असिव–वि० [सं० अशिव] अशुभ, अमंगल।

असिवर–वि० १ तलवार चलाने वाला वीर। २ योद्धा। ३ देखो 'असिबर'।

असिसेत–पु० [सं० असिसेतु] गरुड।

असी–स्त्री० [सं० अश्विनी] १ घोडी। २ काशी के दक्षिण की एक नदी। –क्रि०वि० १ ऐसी। २ देखो 'असि'। ३ देखो 'अस्सी'। —**अख**–पु० पीपल का वृक्ष।

असीख–स्त्री० [सं० अ + शिक्षा] १ शिक्षा का अभाव। २ बुरी सलाह, बुरी शिक्षा। ३ बिना सीखी हुई बात।

असीत–वि० [सं० अशीत] १ शीत रहित, गर्म। २ तीव्र, तेज।

असीम–वि०[सं०]१ सीमा रहित, बेहद। २ अपार। ३ असंख्य।

असील–वि० [सं० अशील] १ शील रहित। [अ० अशील] २ खरा। ३ सच्चा। ४ सुशील। ५ कुलीन। –पु० [सं० असिल] १ योद्धा। २ एक प्रकार का शस्त्र।

असीस–स्त्री० [सं० असि] १ गदा। २ आशीष, आशीर्वाद। –वि० बिना शिर का।

असीसणौ (बौ)–क्रि० १ आशीर्वाद देना। २ दुआ देना।

असु–पु० [सं० अश्व] १ अश्व, घोडा। [सं० असु] २ प्राण, प्राण वायु। ३ जीवन। —**क**–पु० रक्त, खून।

असुकन, (सुगन)–पु० [सं० अशकुन] १ बुरा शकुन, अपशकुन। २ अमांगलिक चिह्न। ३ बुरे लक्षण या चिह्न।

असुख–पु० वैर, शत्रुता, दुश्मनी।

असुच, असुचि, (ची)–वि० [सं० अशुचि] १ अपवित्र, अशुद्ध। २ गंदा, मैला। ३ काला। –पु० १ अपवित्रता। २ सूतक। ३ गंदगी।

असुद्ध–वि० [सं० अशुद्ध] १ अपवित्र। २ असंस्कृत। ३ दोष या गलती युक्त। ४ गलत। ५ गंदा। —**ता**–स्त्री० अपवित्रता। गलती, दोष। गंदगी।

असुद्धि–स्त्री० [सं० अशुद्धि] १ अपवित्रता। २ दोष, भूल, गलती। ३ गंदगी।

असुध–पु० बालक। –वि० १ बेसुध, बेहोश, २ अशुद्ध।

असुन–पु० [सं० श्वान] कुत्ता, श्वान।

असुभ–वि० [सं० अशुभ] अमंगलकारी, बुरा, खराब। –पु० १ अमंगल, अनिष्ट। २ अहित। ३ अपराध, पाप। —**मवर**–पु० वह घोडा जिसके शरीर का रंग श्याम हो।

असुभकारियौ, (कारी)–वि० अशुभ करने वाला । –पु० वणिक, वनिया ।

असुर–पु०[सं०असुर] १ दैत्य, राक्षस । २ नीच वृत्ति का पुरुष । ३ भूत, प्रेत । ४ सूर्य । ५ बादल । ६ राहु की उपाधि । ७ विधर्मी । ८ यवन । ९ आठ दिक्पालो मे से एक, नैऋत्य । १० बुरा स्वर, अस्वर । –स्त्री० [सं० असुरा] ११ रात्रि । १२ वेश्या । –वि० काला, श्याम । —**गुर, गुरु**–पु० शुक्राचार्य । –**पत पति, पती**–पु० रावण । कंस । हिरण्यकश्यप । यवन बादशाह । —**पुरोहित**–पु० शुक्राचार्य । —**लोक**–पु० राक्षसो का लोक, लंका, पाताल । —**वहण**–पु० श्रीकृष्ण । विष्णु । श्रीरामचन्द्र ।

असुराड़–देखो 'असुर' ।

असुराण, (रामण रायण, राइण, रायण, राई)–पु० [सं० असुरराट्] (स्त्री० असुराणी) १ यवन बादशाह । २ राक्षस राजा । ३ यवन ।

असुरारि, (री)–पु० [सं०] १ श्रीविष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ श्रीरामचन्द्र । ४ लक्ष्मण । ५ देवता ।

असुरी–स्त्री०,दानवी, राक्षसी, असुर की स्त्री ।

असुरेसुर–पु० [सं० असुरेश्वर] १ दानवेन्द्र, असुरराज । २ यवन बादशाह ।

असुविधा–स्त्री० [सं०] सुविधा की कमी । २ अड़चन, कठिनाई, दिक्कत ।

असुहर–पु० शत्रु, रिपु, वैरी ।

असुहाइ, (ई)–वि० असुहावनी, दुःसह ।

असुहाणौ–वि०[सं० अशोभन]१ अप्रिय, दुखद । २ अरुचिकर ।

असुहाणौ (बौ), **असुहावणौ**, (**बौ**)–क्रि० अप्रिय या अरुचिकर लगना ।

असू–स्त्री०[सं० अंशु]१ किरण, रश्मि, प्रभा । २ देखो 'असु' ।

असूजतौ, **असूझतौ**–वि० शुद्धता रहित । अपवित्र (जैन)

असूया–स्त्री० [सं०] १ ईर्ष्या, डाह । २ निंदा, आलोचना । ३ अपवाद । ४ असहिष्णुता । ५ क्रोध, रोप । ६ निंदावाद । ७ साहित्य मे एक संचारी भाव ।

असूर–वि० [सं० अशूर] जो शूर न हो, कायर, डरपोक ।

असूल–देखो 'उसूल' ।

असूस–वि० पूर्ण तृप्त ।

असेंदौ, (धौ)–वि० [सं० अ + संधि] (स्त्री० असेंदी) अपरिचित, अजनबी ।

असेख–वि० [सं० अशेष] १ पूर्ण, पूरा समस्त । २ अधिक, बहुत । ३ जिसका शेष कुछ न हो ।

असेत–वि० [सं० अश्वेत] १ जो श्वेत न हो । २ काला, श्याम ।

असेयौ–वि० [सं० असह्य] १ असह्य, जो सहन न हो । २ शत्रु, वैरी ।

असेर–देखो 'आसेर' ।

असेवतौ, **असेवौ**–वि० गहरा, अगाध ।

असेस–देखो 'असेख' ।

असै–क्रि०वि० ऐसे ।

असैंदौ (धौ)–देखो असेंदौ' । (स्त्री० असैंदी) ।

असैधाई–स्त्री० अजनबीपन, अपरिचय ।

असैं–स्त्री० असाध्वी, असती, कुलटा ।

असोक (ग)–वि० [सं० अशोक] १ शोक रहित । २ लाल । –पु० १ विष्णु । २ एक वृक्ष विशेष । ३ पारद । ४ एक मौर्य वंशीय प्रसिद्ध सम्राट —**छठ**–स्त्री० चैत्र शुक्ल पक्ष की षष्ठी । —**वाटिका**–स्त्री० लंका का एक बाग विशेष । (पौराणिक)

असोगी–वि० शोक रहित ।

असोज–देखो 'आसोज' ।

असोभ–वि० [सं० अशोभा] १ शोभा रहित । २ कुरूप, बुरा । ३ अनगढ, भद्दा । स्त्री० अशोभा ।

असोभता, **असोभा**–स्त्री० [सं० अशोभा] १ शोभा का अभाव । २ भद्दापन, कुरूपता । ३ बेइज्जती, हंसी । ४ अपकीर्ति ।

असोम–वि० [सं० असौम्य] १ गर्म । २ बुरा, अप्रिय । ३ भयानक । ४ भद्दा । ५ अकोमल, ठोस । ६ अशुभ ।

असोनजत्र–पु० १ बन्दूक । २ तोप । ३ नारदमुनि की वीणा ।

असौ–क्रि०वि० १ ऐसा, तैसा । २ देखो 'आसौ' ।

अस्खलित–वि० धारा प्रवाह । (जैन)

अस्टग–देखो 'असदाग' ।

अस्ट–वि० [सं० अष्ट] आठ । –स्त्री० आठ की संख्या, ८ । —**क**–पु० आठ वस्तुओ का संग्रह । आठ छंदो का काव्य । —**कमळ**–पु० हठयोग के अनुसार शरीरस्थ आठ चक्र । —**कुळ**='असटकुळ' । —**कुळी**='असटकुळी' । —**कोण**–पु० आठ कोण वाला क्षेत्र, भवन या कक्ष । —**दळ**–पु० आठ दलो वाला कमल । —**दिसा**–स्त्री० आठ दिशाएँ । —**द्रव्य**–पु० हवन के काम आने वाले आठ पदार्थ । —**धातु**–पु० आठ मुख्य धातुएँ । —**पदी**–स्त्री० मकडी । आठ पदो का छंद । —**भुजा**–स्त्री० दुर्गादेवी । —**मंगळ**–पु० आठ मांगलिक वस्तुएँ । —**मंगळीक**–पु० शुभ लक्षणो वाला घोडा । —**मूरती**–पु० शिव का एक नामान्तर । —**वरग**–पु० आठ औषधियो का समाहार । —**वळी**–क्रि०वि० आठो दिशाओ मे । —**सिद्धि**, **सिधि**–स्त्री० योग की आठ सिद्धियां ।

अस्टांग (जोग)–देखो 'असटांग' ।

अस्टाक्षर, (खर)–पु० [सं० अष्टाक्षर] आठ अक्षरो का मंत्र ।

अस्टापद–पु० १ स्वर्ण, सोना । २ सिंह । ३ शरभनामक मृग ।

४ मकडी । ५ धतूरा । ६ आदिगुरु की चार मात्रा का नाम । –वि० १ पीत, पीला । २ पीत-श्वेत ।

अस्टावक्र–पु० [स० अष्टावक्र] एक ऋषि जिनका शरीर आठ से स्थानो से वक्र था ।

अस्टीलो–एक प्रकार का रोग ।

अस्त–वि० [सं०] १ छिपा हुआ, डूबा हुआ, तिरोहित । २ ह्रासोन्मुख । ३ अदृश्य, ओझल । –पु० १ अवसान । २ पतन । ३ लोप । ४ अदर्शन । —**मित**–स्त्री० अस्त होने की क्रिया । —**मुख**–पु० कुत्ता, श्वान ।

अस्तबळ–पु० घुडशाला ।

अस्तर–पु० [फा०] १ मुख्य वस्त्र के नीचे लगने वाला वस्त्र । २ अतरण्ट । ३ देखो 'असतर' ।

अस्तळ–देखो 'अस्थळ' ।

अस्तस्वू–पु० एक शुभ रग का घोडा ।

अस्ताचळ–पु० [स० अस्ताचल] वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य अस्त होता है, पश्चिमाचल ।

अस्तीफो–देखो 'इस्तीफो' ।

अस्तु–अव्य० [स०] १ खैर, अच्छा । २ चाहे जो हो । ३ ऐसा ही हो ।

अस्तुति–देखो 'असतुति' ।

अस्तेय–पु० चोरी न करना क्रिया ।

अस्त्र–पु० [स०] १ हथियार, आयुध । २ देखो 'अस्तर' ।

अस्त्रकार–पु० हथियार बनाने वाला ।

अस्त्रचिकित्सा–स्त्री० शल्य चिकित्सा ।

अस्त्रसाळा–स्त्री० हथियार रखने का कक्ष । शस्त्रागार ।

अस्त्रिय, (स्त्री, स्त्रीय)–देखो 'स्त्री' ।

अस्थळ, (ळि)–पु० [स० अस्थल] १ दादू पथियो का गुरुद्वारा या राम द्वारा । २ मैदान । ३ बुरा स्थान, कुठौर ।

अस्थानस्यनपद–पु०यौ० काव्य का एक दोष ।–क्रि०वि० अनुचित स्थान मे ।

अस्थाई–वि० [स० अस्थायी] १ जो स्थाई न हो, अस्थिर । २ क्षणिक ।

अस्थि–स्त्री० [स०] १ हड्डी । २ फल का छिलका या गुठली । —**संसकार-संस्कार**–पु० हड्डियो का गगा मे विसर्जन ।

अस्थिकुड–पु०यौ० [स०] एक नरक का नाम ।

अस्थिर–वि०[स०] १ जो स्थिर न हो । २ चचल, चलायमान ।

अस्थिरा–वि० [स०] चचला । –स्त्री० लक्ष्मी ।

अस्पताल–देखो 'असपताळ' ।

अस्मरी–स्त्री० [स० अश्मरी] मूत्रेन्द्रिय का एक रोग ।

अस्मिता–स्त्री० [स०] पाच प्रकार के क्लेशो मे एक (योग) ।

अस्र–पु० [सं०] १ रक्त, रुधिर । २ आसू । —**पीवणी**–स्त्री० जोक ।

अस्रानिक–पु० [स० अश्रमिक] बलभद्र ।

अस्रु–पु० [स० अश्रु] आसू । —**पात**–आसु गिराना, रुदन ।

अस्रुत–वि० [स० अश्रुत] जो सुना हुआ न हो ।

अस्ली–देखो 'असली' ।

अस्लील–देखो 'असलील' । —**ता**='असलीलता' ।

अस्लेस–पु० १ श्लेपाभाव, अपरिहास । २ श्लेषभिन्न । ३ देखो 'अस्लेसा' ।

अस्लेसा–पु० [स० अश्लेषा] २७ नक्षत्रो मे से नौवा नक्षत्र ।

अस्व–पु० [स० अश्व] १ घोडा, अश्व । २ सात की सख्या । –वि० १ सात । [स० अस्व] २ गरीब, अकिंचन । –**पति**–पु० घुड सेनापति । बादशाह । अश्विनी कुमार । –**बध**–पु० एक प्रकार का चित्रकाव्य । –**वळ**–पु० अश्वशाला । —**मुख**–पु० किन्नर । —**मेध**–पु० चक्रवर्ती राजा द्वारा किया जाने वाला बडा यज्ञ । —**रूढ़**–पु० रथ । —**विद्या**–स्त्री० घुडसवारी सबधी विद्या ।

अस्वक्रांता–स्त्री० [स० अश्वक्रान्ता] सगीत मे एक मूर्च्छना ।

अस्वत्थामा–पु० [स० अश्वत्थामा] द्रोणाचार्य का पुत्र ।

अस्वत्य (थ)–पु० [स० अश्वत्थ] पीपल का पेड ।

अस्वनी–स्त्री० [स० अश्विनी] १ सत्ताइश नक्षत्रो मे से प्रथम नक्षत्र । २ घोडी । ३ सूर्य की पत्नी ।–**कुमार**–पु० सूर्यके दो पुत्र जो देवताओ के वैद्य माने गये हैं । —**तात**–पु० सूर्य ।

अस्वप्न–पु० [स०] १ सुर, देवता । २ यथार्थ ।

अस्वस्थ–वि० [स०] रोगी बीमार ।

अस्वार–देखो 'असवार' ।

अस्वालब–पु० [स० अश्वालभ] यज्ञोपरात किया जाने वाला अश्व-दान ।

अस्विनी–देखो 'अस्वनी' । —**कुमार**='अस्वनी कुमार' ।

अस्वीकार–पु० [स०] इन्कार, नामजूरी ।

अस्वीकुमार–देखो 'अस्वनी कुमार' ।

अस्वेत–वि० [स० अश्वेत] काला, श्याम ।

अस्स–१ देखो 'अस्व' । २ देखो 'अस' ।

अस्सणि, अस्सणी–१ देखो 'असणी' । २ देखो 'अस्वनी' ।

अस्सर–देखो 'असर' ।

अस्सराळ (ळू)–वि० [स० आशरारु] १ भयकर, भयानक । २ शक्तिशाली । ३ घातक । ४ बहुत । ५ चचल, चपल । ६ अविरल, निरतर ।

अस्सवार–देखो 'असवार' ।

अस्साड–सर्व० हमारे, मेरे ।

अस्सि–१ देखो 'असव'। २ देखो 'अस्सी'।

अस्सी–वि० [स० अशीति] सत्तर और दश का योग। –स्त्री० उक्त योग की संख्या, ८०।

अह–सर्व [सं० अहम्] मैं, स्वय। –वि० आत्म संबंधी। –पु० १ अहंकार, घमड। २ पाप, दुष्कर्म, अपराध। ३ विघ्न, बाधा। ४ क्रोध। ५ दुख। —**कार, कारज**-पु० अहकार, घमड, गर्व। —**कारण, कारिणी**-वि० घमडी, गर्विला —**कार तन**–पु० योद्धा। —**कारी**–वि० गर्विला। —**वाद**–पु० शेखी, डीग। आत्मश्लाघा।

अहचो–पु० १ आश्चर्य, अचभा। २ देखो 'आची'।

अहड–वि० [स० अहिंड] लगडा।

अहता–स्त्री० [स०] अहकार, घमड।

अहति, (ती)–पु० दान।

अहसी–देखो 'आइसी'।

अह–पु० [स० अहन्, अह, अहि] १ दिन। २ विष्णु। ३ सूर्य। ४ शेषनाग। ५ सर्प। ६ राहु। ७ वृत्तासुर। ८ हाथी। –स्त्री० ९ चोटी, वेणी। १० देखो 'आह'। –सर्व० यह। देखो अहि। देखो 'अव'। देखो 'अय'। —**कर**–पु० सूर्य, भानु। —**काम**–पु० नियम। हुक्म। —**कार**–पु० अहकार। —**गळी**–क्रि०वि० सम्मुख सामने, अगाडी। —**डस**–पु० तनाव। वैमनस्य। —**चळ**–पु० शेषनाग। –वि० अचल। निश्चल। —**छुनौ**–वि० चचल। —**टाणौ-(वौ)**–क्रि० पता लगाना। आहट करना। —**देव**–पु० शेषनाग। सूर्य। —**नाण**–पु० निशान। चिह्न। —**नाथ**–पु० शेषनाग। सूर्य। —**पत, पति, पती**–पु० सूर्य, भानु। —**पखाळ, पंखाळौ**–पु० उडना, सर्प, पखधारी सर्प। —**पर, पुर**–पु० नागलोक। पाताल लोक। नागौर नगर का नाम। —**प्रभु**–पु० शेषनाग। —**फीण, फीन, फेण, फेन**–पु० अफीम, अमल। सर्प के मुख की लार। —**वेल**–स्त्री० नाग लता। —**मण, मणि**–पु० सूर्य। —**मात**–स्त्री० देवी, शक्ति। सर्पों की माता। —**राण, राउ, राज, राव**–पु० शेषनाग। —**लोक, लौक**–पु० ससार। नागलोक। —**वाळ**–पु० चिह्न, निशान। सकेत। वृत्तात, कथा, चरित्र।

अहक–पु० [स० ईहा] इच्छा, आकाक्षा, कामना।

अहडौ–वि० [अहडो] ऐसा।

अहड–देखो 'आमेट'।

अहत्य, अहय–पु० [स० अहित] अहित, अनर्थ, बुरा काम।

अहद–पु० [अ०] १ वादा, प्रतिज्ञा, सकल्प। २ शासन, राज्य। ३ एक प्रकार का राज्य कर। —**दार**–पु० राज्याधिकारी। —**नामौ**–पु० प्रतिज्ञापत्र, इकरार नामा।

अहदी (धी)–वि० [अ० अह्दी] १ आलसी। २ अकर्मण्य, निठल्ला। —पु० बादशाही अनुचर विशेष।

अहनाण–देखो 'ऐनाण'।

अहनाय–क्रि० वि० [स० अह्नाय] शीघ्र तुरन्त।

अहनिस, (निसा, निसी)–अव्य० [स० अहर्निश] रात-दिन, सदा, नित्य। लगातार, निरन्तर। —पु० रात व दिन।

अहम–देखो 'अधम'। देखो, 'अह'।

अहमक–वि० [अ०] मूर्ख, बेवकूफ।

अहमकर, अहिमकर–पु० [स० अहिमकर] सूर्य, भानु।

अहमत, (ति)–पु० [स० अहम्मति] गर्व, अहम्, अहकार।

अहमह–सर्व [स० अहमस्मि] मैं। –पु० गर्व, अहकार।

अहमेव–पु० अभिमान, गर्व।

अहर-पु० [स० अधर] १ अधर, होठ। २ नीचे का होठ। ३ दिन। —वि० [स० अफल] १ व्यर्थ, फिजूल। २ असमर्थ, बेकाम। ३ नीचे। ४ अन्य, दूसरा। —**अळग**–पु० छप्पय छन्द का एक भेद।

अहरण (णि)–पु० [स० अर्णव] १ समुद्र, सागर। २ देखो 'एरण'।

अहरनिस–देखो 'अहनिस'।

अहरु, (रू)–देखो 'ऐरू'।

अहळ, (ळु)–वि० [स० अफल] व्यर्थ, बेकार। —क्रि० वि० व्यर्थ मे।

अहलकार–पु० [फा०] कर्मचारी, कारिंदा।

अहलणौ, (वौ)–क्रि० हिलना-डुलना। कापना।

अहलमद–पु० [अ. अहलमेद] अदालत का कर्मचारी।

अहलाण–देखो 'ऐनाण'।

अहला–देखो 'अहिल्या'।

अहलाद–पु० [स० आह्लाद] प्रसन्नता, खुशी।

अहलो–देखो 'ऐलो'।

अहल्या–स्त्री० [स०] गौतम ऋषि की पत्नी का नाम।

अहव–१ देखो 'आहव'। २ देखो 'अथवा'।

अहवानियौ–वि० १ श्याम, काला। २ अभिनन्दनीय। —पु० योद्धा, वीर।

अहवात–देखो 'अहिवात'।

अहवारियै–देखो 'अवारियै'।

अहवाळ–पु० [अ० हाल का बहु] १ वृत्तान्त, विवरण, हालात। २ चिह्न, निशान, लक्षण।

अहवास–पु० [स० आवास] मकान, भवन।

अहवि–देखो 'आहव'।

अहवी–वि० (स्त्री० अहवी) ऐसा।

अहसकर–पु० [स० अहस्कर] सूर्य, रवि।

अहसांण (न)–देखो 'एहसान'। **—मंद**='एहसानमद'।

अहह अहा–अव्य० आश्चर्य, खेद, दुख के भाव प्रगट करने वाली ध्वनि।

अहातौ–पु० [अ० अहाता] १ घेरा, अहाता। २ चहार दीवारी, प्राचीर।

अहार–देखो 'आहार'।

अहारणौ, (बौ)–क्रि० १ आहार करना। २ आचमन करना।

अहारा–स्त्री० अगीठी (मेवात)।

अहारी–देखो 'आहारी'।

अहिंकार–देखो 'अहकार'।

अहिंकारि, (री)–देखो 'अहकारी'।

अहिंसक–वि० [स०] १ जो हिंसा न करे। २ जो कष्ट दायक न हो।

अहिंसा–स्त्री० [स०] १ हिंसा का अभाव। २ ऐसा कार्य जिसमे किसी को कष्ट न हो।

अहि–पु० [स०] १ सर्प, नाग। २ सूर्य, भानु। ३ बादल, मेघ। ४ राहु। ५ जल, पानी। ६ पृथ्वी। —स्त्री० ७ गौ, गाय। ८ नाभि। ९ ठगण का छठा भेद। १० इक्कीस अक्षरो के वृत्तो का एक भेद। ११ आठ की सख्या। १२ ककेटिक नाग। १३ दिन, दिवस। —वि० १ कुटिल, दुष्ट। २ दगाबाज, धोखेबाज। ३ भोगी। ४ देखो 'अह'। **—कर**='अहकर'। **—क्षेत्र**–पु० दक्षिण पाचाल की राजधानी। **—गण**–पु० सर्पगण। विष्णु। ठगण का सातवा भेद। वेलियौ साणोर का एक नाम (डिंगल)। **—गति**–स्त्री० सर्प चाल। **—गाह**–पु० गरुड। **—ग्राव, ग्रीव**–पु० शिव, महादेव। **—पत, पति**–पु० १ शेष नाग, वासुकि। **—पिय, प्रिय**–पु० चदन। **—पुर, पुराह, पुरौ, प्पुर**='अहपुर'। **—फीरण, फेरण**–'अहफीण'। **—बंध**–पु० डिंगल का एक छद। **—वाण**–पु० घोडो की एक जाति। **—बेल**–स्त्री० नाग लता। **—भक, भख**–पु० मोर मयूर। **—मत्री**–पु० मत्रवादी, गारुडी। **—मन**–पु० चदन। **—माळी**–पु० शिव। **—मिण**–स्त्री० नागमणि। **—मुख**–पु० अशुभ घोडा। **—मेध**–पु० सर्प यज्ञ। **—राट, राव**–पु० शेष नाग। लक्ष्मण। **—रिपु**–पु० गरुड। **—लोक**–अहलोक। पाताल। **—लोळ**–पु० समुद्र। **—वल्लभ**–पु० चदन। **—सुता**–स्त्री० नागकन्या।

अहिगतजथा–स्त्री० यौ० डिंगल गीत रचना का एक नियम।

अहिडो (डी)–देखो 'आहेडी'।

अहिठाण–देखो 'आइठाण'।

अहित–पु० [स०] १ हित का अभाव। २ अनिष्ट, अमगल, नुकसान, हानि। ३ शत्रुता। —वि० शत्रु, वैरी। हानिकारक।

अहितू–वि० १ अहित करने या चाहने वाला। २ शत्रु दुश्मन।

अहिधर, (धरण)–पु० [स०] १ शिव, महादेव। २ शेष नाग।

अहिनाण, (नाणी)–देखो 'ऐनाण'।

अहिनाथ, (नाह)–पु० १ शेष नाग। ३ महादेव।

अहिनिस, (निसी)–देखो 'अहनिस'।

अहिमकर–पु० [स०] सूर्य, रवि।

अहिमती, अहिमेव–देखो 'अहमत'।

अहिर–१ देखो 'अहीर'। २ देखो 'अहर'।

अहिरण–देखो 'एरण'।

अहिळ–देखो 'अहळ'।

अहिलांण–देखो 'ऐनाण'।

अहिला, अहिलिक–देखो 'अहल्या'।

अहिवात–पु० [स० अहिवात] स्त्री का सौभाग्य, सधवापन।

अहीं, अहींज–वि० व्यर्थ, बेकार।

अही–पु० [स० अहि] १ ठगण की छ मात्रा के छठे भेद का नाम। २ देखो 'अहि' **—राजा, राव**='अहिराज'।

अहीठाण–देखो 'आइठाण'।

अहीणौ–पु० [स० अधेनुक] दूध देने वाले मवेशी का अभाव।

अहीयाह–सर्व० इन।

अहीर–पु० [स० आभीर] १ पशु पालन व दूध दही का व्यवसाय करने वाली जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। ३ एक मात्रिक छद।

अहीवलभ–देखो 'अहिवल्लभ'।

अहीस–पु० [स० अहीश] शेषनाग।

अहुड–पु० १ युद्ध। २ टक्कर, भिडत।

अहुटणौ (बौ)–क्रि० १ हटना। २ दूर होना, अलग होना। ३ वापस लौटना।

अहुटाणौ (बौ)–क्रि० १ हटाना, अलग करना। २ दूर करना। ३ वापस लौटाना।

अहुठ–वि० [स० अध्युष्ठ] तीन और आधा, साढे तीन।

अहुड–देखो 'अहुड'।

अहुडणौ (बौ)–क्रि० भिडना, लडना। युद्ध करना।

अहुणी–देखो 'अहोणी'।

अहुरमज्द–पु० [फा०] ईश्वर का एक नाम (पारसी)।

अहू–सर्व० [स० अहम्] मैं।

अहूठ–देखो 'अहुठ'।

अहूत–देखो 'अपुत्र'।

अहेड–देखो 'आखेट'।

अहेडी (डी)–देखो 'आहेडी'।

अहेड़ो, अहेडो–वि० ऐसा, इस तरह का। —क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार।

ग्रहेज–क्रि० वि० १ इसी समय, ग्रभी । २ स्नेह छोडकर ।
ग्रहेत–पु० १ प्रेम का ग्रभाव । २ वैर, वैमनस्य ।
ग्रहेतु–पु० १ कारण या हेतु का ग्रभाव । २ देखो 'ग्रहितु' ।
ग्रहेर–देखो 'ग्राखेट' ।
ग्रहेवौं–क्रि० वि० ऐसे । —वि० ऐसा ।
ग्रहेस–पु० [स० ग्रथ+ईश] १ गणेश, गजानन । २ देखो 'ग्रहीस' ।
ग्रहेसुर, (स्वर)–पु० [स० ग्रहि+ईश्वर, ग्रह+ईश्वर] १ शेषनाग । २ सूर्य ।
ग्रहो, ग्रहों–देखो 'ग्रहह' ।
ग्रहोडौ–देखो 'गोहडौ' ।
ग्रहोणौ–वि० १ ग्रसभव । २ ग्रयोग्य ।
ग्रहोनस, (निस, निसि)–देखो 'ग्रहनिस' ।
ग्रहोभाग, (ग्य)–पु० ग्रच्छा भाग्य, सौभाग्य ।
ग्रहोरात, (रात्रि)–क्रि० वि० ग्रहर्निश, रात दिन, लगातार नित्य ।
ग्रह्मीणौ–सर्व० (स्त्री० ग्रह्मीणी) हमारा, मेरा ।

–आ–

ग्रा–पु० वर्णमाला का द्वितीय स्वर जो 'ग्र' का दीर्घ रूप है ।
ग्रा, ग्रां–सर्व० इन, इन्होने । —पु० [ग्रनु०] बच्चो के रोने का स्वर ।
ग्राइटण–देखो 'ग्राइठण' ।
ग्राइणी–स्त्री० वह गाय या भैंस जो दूध देने की ग्रवस्था मे न हो ।
ग्राइणौ–देखो 'ग्रहीणौ' ।
ग्राऊ–पु० ग्रहकार, गर्व ।
ग्राक–पु० [स० ग्रक] १ भाग्य, भाग्य के लेख । २ चिह्न, निशान । ३ पशुग्रो के शरीर पर दागा जाने वाला चिह्न । ४ ग्रक्षर । ५ स्वर्णकारो का ग्रौजार विशेष । ६ सख्या के ग्रक, ० से ९ तक । ७ लिखावट । ८ प्रतीक ।
ग्राकडी–स्त्री० १ पक्ति, चरण (पद्य) २ देखो 'ग्राख' ।
ग्राकडौ–पु० [स०ग्रक+रा प्र डौ] १ ग्राय-व्यय का लेख पत्र । २ ग्राय-व्यय की राशिया । ३ भाला । ४ चन्द्राकार तीर या शस्त्र । ५ देखो 'ग्रकोडौ' ।
ग्राकणी–स्त्री [स० ग्रकनिका] कविता या पद का प्रथम स्थायी पद जो टेक के रूप होता मे है, टेक ।
ग्राकणौ–वि० ग्रकित करने वाला, दागने वाला । —पु० ग्रकित करने का उपकरण ।
ग्राकणौ, (बौ)–क्रि० १ ग्रकित करना । २ दागना । ३ चिह्न लगाना । ४ नाप-तौल का ग्रनुमान लगाना । ५ जाचना, परखना । ७ ठहराना, निश्चित करना ।
ग्राकल (ल्ल)–वि० [स० ग्रकल] १ ग्रकित किया हुग्रा । २ दागा हुग्रा । ३ व्यभिचारी । ४ साहसी, वीर । ५ चिह्नित । —पु० दागा हुग्रा या चिह्नित पशु ।
ग्रांकलणौ, (बौ)–देखो 'ग्राकणौ (बौ)' ।
ग्रांकवणौ (बौ)–देखो 'ग्राकणौ (बौ)' ।
ग्राकस–देखो 'ग्रकुस' ।
ग्राकाणौ, (बौ) प्रे० क्रि० १ ग्रकित कराना । २ दगवाना । ३ चिह्न लगवाना । ४ नाप तौल का ग्रनुमान कराना । ५ जाच कराना, परखाना । ६ निश्चित कराना ।
ग्राकित–वि० ग्रकित, चिह्नित ।
ग्राकुडौ–देखो 'अकोडौ' ।
ग्राकुर–पु० [स०] ग्रकुर ।
ग्राकुस–देखो 'ग्रकुस' ।
ग्राकूर, (कोर)–देखो 'ग्रकुर' ।
ग्राकेल–देखो 'ग्राकल' ।
ग्रांकोडियौ–देखो 'ग्रकोडौ' ।
ग्राकौ–पु० १ होनी, भवितव्यता । २ अत, समाप्ति ।
ग्राख, ग्राखडली, ग्राखड़िय, ग्राखड़ी–स्त्री० [स० ग्रक्षि] १ प्राणियो के शरीर की वह इन्द्रिय जिससे देखने की शक्ति होती है । नेत्र, नयन, दृग, लोचन । २ नजर, दृष्टि । ३ ग्रालु, जमीकद, ग्रादि का ग्रर्वाकुरित भाग । ४ पेड पौधो का सधिस्थल । ५ बास की ग्रथि का वशलोचन निकलने वाला भाग । ६ केमरे ग्रादि यत्रो का दर्पण युक्त भाग । ७ इमारती लकडी मे पडने वाली ग्रथि । ८ फोडे का मुह । ९ सुई का छेद । १० मोर पख का चदोवा । ११ चरस (मोट) के किनारे का छेद । १२ नारियल के मुह पर बना गड्ढा ।

आखड़ी–पु० १ कोल्हू के बैल की आंखो का ढक्कन। २ देखो 'आख'।
आखफूटणी, आखफोड–स्त्री० एक प्रकार की लता व उसका फल।
आखमीचणी–स्त्री० आख-मिचौनी का खेल।
आखरातवर–पु० ऊट।
आखालाल–स्त्री० १ कमेडी, पडुकी। –पु० २ ऊट।
आखि, आखी–देखो 'आख'।
आखुडणौ, (बौ)–देखो 'आखडणौ' (बौ)।
आग–पु० [स० अग] शरीर, अग।
आगडियौ–वि० अगरक्षक।
आगण, (णउ)–पु० [स०अगण] १ घर का भीतरी भाग, सहन, चौक। २ घरातल। ३ गुनाह, अपराध।
आगणारीडावडी–स्त्री० दासी, परिचारिका।
आगणियौ, आगणौ–देखो 'आगण'।
आगणौ (बौ)–देखो 'आगमणौ' (बौ)।
आगनियौ–पु० स्त्रियो के कान का आभूषण।
आगम, (ण)–पु० १ साहस। २ उत्साह। ३ शक्ति, बल। ४ निश्चय। ५ काबू अधिकार। ६ विचार। ७ स्वीकृति, स्वीकार। –वि० दबाने वाला।
आगमणी–स्त्री० १ अधीनता। २ पराजय। ३ अधिकार। ४ देखो 'आगमण'।
आगमणौ, (बौ)–क्रि० [स० अभ्युपगमनम्] १ निश्चय करना। २ साहस करना। ३ सहन या बरदाश्त करना। ४ [illegible] समझना गालिब होना। ५ पराजित करना, [illegible]। ६ स्वीकार करना। ७ विचार करना। ८ अधिकार मे करना।
आंगळ–पु० [स० अगुल] १ अगुली की मोटाई। [illegible] अगुली। ३ आठ जव के बराबर का नाप। –वि० अगुली की मोटाई के बराबर का माप।
आगळडी, आगळी–देखो 'अगुली'।
आगळीझल–पु० पुनर्विवाह मे स्त्री के साथ [illegible] वाली पूर्व पति की सतान।
आगवण–देखो 'आगमण'।
आगवणौ,(वाणौ)–देखो 'आगमणौ'।
आगस–देखो 'अकुस'।
आगिमिण–देखो 'आगमणौ'।
आगी–१ अगिया, चोली, कचुकी। २ [illegible] का एक पहनावा। ३ जन मूर्ति का पहनावा।
आगीठ–देखो 'अगीठ'।
आगुठौ–देखो 'अगूठौ'।
आगुळ–देखो 'आगुळ'।
आगुळी, आगूळी–देखो 'अगुळी'।
आगू आगौ–पु० १ स्वभाव, प्रकृति। २ कवच, बख्तर। ३ शरीर, अग। ४ कृषि कार्य मे हिस्सा। ५ रूप, स्वरूप।
आच–स्त्री० [स० अर्चिस्] १ आग अग्नि। २ आग की लौ। ३ ताप, गरमी। ४ प्रकाश तेज। ५ जोर, भार। ६ कष्ट। ७ परेशानी। ८ हानि। ९ चोट, प्रहार। १० भय, डर। ११ क्रोध। १२ जोश। –वि० किंचित थोडा।
आचभ (भौ)–देखो 'अचभौ'।
आचळ–पु० [स० अचल] १ उरोज, स्तन। २ देखो 'अचळ'।
आचळणौ,(बौ)–क्रि० १ आच्छादित करना। २ प्रक्षालन करना।
आचळी–देखो 'अचळ'।
आचाताणौ–वि० ऐंचाताना।
आचै–क्रि०वि० तेज, शीघ्र, शीघ्रता से।
आचौ (छौ)–पु० शीघ्रता, ताकीद।
आछू–पु० आभूषण विशेष।
आजणी–स्त्री० आख की पलको पर होने वाली फुसी।
आजणौ–पु० दहेज। (जाट)।
आजणौ, (बौ)–क्रि० १ आखो मे अजन लगाना। २ साफ करना।
आजळी–देखो 'अजळी'।
आजस–देखो 'अजस'।
आजसणौ (बौ)–देखो 'अजसणौ' (बौ)।
आजुळी–देखो 'अजळी'।
आट, आटडी–स्त्री० १ ऐंठन, तनाव। २ क्रोध। ३ शत्रुता, दुश्मनी। ४ हेकडी। ५ हठ, जिद्द। ६ [illegible]। ७ दाव, वश। ८ प्रतिज्ञा, सकल्प। ९ मोड, घुमाव। १० बाकुरापन, वीरता। ११ घमड, गर्व। १२ मनमुटाव। १३ अगूठा और तर्जनी के मध्य [illegible] १५ [illegible] आटा। १६ देखो 'अटी'।
आडण–पु०[स० अट्टन]१ गाठ, ग्रथि। २ ऐंठन। ३ चर्मग्रथि।
आटरोकोट–पु० यौ० आन-वाला वीर।
आटल–वि० १ शत्रु, दुश्मन। २ द्वेषी। ३ नीच, दुष्ट।
आट-साट–स्त्री०यौ० १ गुप्त अभिसधि, साजिश। २ मेल-जोल।
आंटा–क्रि०वि० निमित्त, लिए, वास्ते। —दार–वि० घुमावदार, वक्र। लपेटदार। वीर।
आटायत, (तौ)–पु० (स्त्री० आटायती) शत्रु, दुश्मन।
आटियौ–पु० कपडा को जोडने की कडी।
आटी–स्त्री० [स० अड] १ ईर्ष्या, द्वेष। २ शत्रुता, बैर। ३ ऐंठन, तनाव। ४ उलझन, फदा। ५ कुश्ती का एक दाव। –वि० १ टेढी, तिरछी, वक्र। २ ऐंठनभरी। ३ घुमावदार। ४ देखो 'अटी'। —पण पणौ–पु० शत्रुता, बैर। बैर, शत्रुता। द्वेष। —लौ–वि० ऐंठन भरी।

मान-मर्यादा वाला । रूठने वाला । वैर लेने वाला । लपेटदार, लपेटवा । (स्त्री० आंटीली) ।

आंटी-टांटी–स्त्री० एक देशी खेल ।

आंटे, (टै)–क्रि०वि० लिऐ, वास्ते, निमित्त । वदले ।

आंटेल–देखो 'आंटीलो' ।

आंटो–पु० [स० अट्ट] (स्त्री० आंटी) १ वदला । २ शत्रुता, वैर । ३ लपेटा । ४ युद्ध । ५ घुमाव, चक्कर । ६ उलझन ७ वचन । ८ कोई ऐसा पदार्थ या वात जिसके उद्देश्य से या उसके प्रति कोई कार्य या प्रक्रिया की जाती है । –वि० १ जैसा का तैसा । २ वक्र,टेढा । ३ उलझन भरा । --**अंवळो** —वि० टेढा-तिरछा । दुखी । —**टूटो, टेढ़ो**–वि० टेढा-मेढा । जीर्ण-शीर्ण ।

आंठ-गांठ–वि० १ पूर्ण, पूरा । २ सब तरह से वढिया ।

आंठू–पु० १ चौपाये जानवरों के अगले पैर व छाती के जोड का स्थान । २ साहस, हिम्मत ।

आंठेव, (व)–पु० सहायक, रक्षक ।

आंड–पु० [स० अड] अडकोश ।

आंडळ–वि० १ वडे अण्डकोश वाला । २ आलसी सुस्त ।

आंडिया–पु० अण्डकोश ।

आंडू–वि० अण्डकोश युक्त ।

आंढू–पु० करील का काला फल ।

आंण–स्त्री० [स० आज्ञा] १ शपथ, सौगध । २ घोषणा दुहाई । ३ आज्ञा, आदेश । ४ हुकूमत । [स०अधुना] ५ चालू वर्ष । ६ वायु । –वि० अन्य, दूसरा । सर्व० इन, इस, यह । —**डांण**–स्त्री० दुहाई, सौगंध । —**दवाई, दांण, दुआई, दुवाई**–स्त्री० दुहाई, आज्ञा, आदेश ।

[illegible] –देखो 'आसरण' ।

आंणण–[illegible] = 'आनन पात्र' ।

आंणणो, (बो)–क्रि० [स० आनयन] १ लाना २ उपलब्ध करना ।

आंण-मांण–पु० इज्जत, मान, प्रतिष्ठा ।

आंणा–स्त्री० [स० आज्ञा] हुक्म, आदेश, आज्ञा ।

आंणाणो (बो)–प्रे०क्रि० १ मगवाना । २ उपलब्ध कराना ।

आंणियो, आंणो–पु० १ गौना, विदाई । २ वहू को सुसराल व वेटी को मायके ले जाने का वुलावा । ३ वुलावा । —**एडो. टांणो**–मांगलिक अवसर । विवाह आदि विशेष उत्सवों का समय । —**मुकळावो**–पु०गौना, द्विरागमन ।

आंत, आंतड, (डो, ड़ो)–पु० [स० अन्त्र] १ प्राणियो के शरीर मे होने वाली पेट मे गुदा तक की नली, अतडी, अत्र । २ ममता ।

आंतर–१ देखो 'अतर' । २ देखो 'आंत' ।

आंतरउ–देखो 'आंतरो' ।

आंतरडो–१ देखो 'आंत' । २ देखो 'अतर' ।

आंतरगढी, (गूथ, गेढ़ी)–स्त्री० पशुओं के आंतों की वल देकर गूथी हुई पिंडी जिसे सेंक कर खाया जाता है ।

आंतराळ–देखो 'आन' ।

आंतरियो–१ देखो 'अति' । २ देखो 'अतर'

आंतरी–देखो 'आंत' ।

आंतरे, (रै)–क्रि०वि० [स० अन्तर] दूर, दूरी पर, परे ।

आंतरो, आंतारो, आंतिरो–पु० [सं० अन्तर] १ फासला, दूरी । २ वियोग, विछोह । ३ विलम्ब । ४ देखो 'आंत' ।

आंती–वि० तग, हैरान, परेशान । –पु० कष्ट, दुख ।

आंतेरो–पु० काटेदार लाल वृक्ष जिसके पत्ते वात रोग मे काम आते हैं ।

आंतेलो–पु० पशुओ की पीठ पर लादे भार का असतुलन ।

आंत्र, आंत्रवळ–देखो 'आंत' ।

आंथण–देखो 'आथण' ।

आंदळघोटो–देखो 'आंधळघोटो' ।

आंदळियो, आंदळो–देखो 'आंधो' ।

[illegible]**दाउली, (हुली)**–देखो 'आंधाउली' ।

[illegible]**दाझाडो**–देखो 'आंधाझाडो' ।

[illegible]**दाहोळी**–देखो 'आंधाउळी' ।

आंदी–देखो 'आंधी' । —**आरसी**='आंधीआरसी' । —**खोपडी** ='आंधी खोपडी' । -**झाड़ो** = 'आंधा झाडो' । -**डूळ, डबर** ='आंधी डडूळ' । —**वाई** = 'आंधी वाई' ।

आंदोळ, आंदोळन–पु० [स० आंदोलन] १ उथल-पुथल, हलचल । २ धूमधाम । ३ विद्रोहात्मक कार्य । ४ वार-वार हिलाव-डुलाव ।

आंदोवाळ–पु०नहरुआ रोग जिसका कीडा वाहर नही निकलता ।

आंदो–देखो 'आंधो' ।

आंधयावणी–वि० 'अधेरी' ।

आंधरो, आंध–देखो आंधो ।

आंधळघोटो–पु० एक खिलाडी की आखें वाधकर खेला जाने वाला एक खेल ।

आंधळियो, आंधळो–देखो आंधो ।

आंधाउळी–स्त्री० [० अध पुष्पी] १ लटजीरा या चिडचिडा नामक क्षुप जो उलटा कर उगने वाली वनस्पति होती है वह औषधि के काम आती है ।

आंधाझाडो, आंधीझाडो–पु० अपामार्ग नामक पौधा ।

आंधाहुळी, आंधाहोळी–देखो 'आंधाउळी' ।

आंधी–स्त्री० १ प्रखर व तीव्र वात चक्र जिससे जमीन की गर्द उडकर आकाश मे छा जाती है, तूफान, झझावात ।

२ अंधी । —आरसी–स्त्री० धुंधला दर्पण । —खोपडी–वि० मूर्ख, भोंदू, निर्बुद्धि । —डूंडळ, डबर–पु० तूफान, झंझावात । —बाई–स्त्री० नेत्रहीन स्त्री । एक वात रोग विशेष ।

आंधौ–वि० [सं० अंध] (स्त्री० आंधी) १ नेत्र हीन, दृष्टिहीन, अंधा । २ विवेकहीन, अज्ञानी । ३ लापरवाह, बेपरवाह । ४ धुंधला, अस्पष्ट । –पु० वह प्राणी जिसकी आंखो मे ज्योति न हो । —काच–पु० धुंधला काच । —कूऔ–पु० अंधकूप । —भैंसौ–पु० एक देशी खेल ।

आंध्यारी–देखो 'अंधारी' ।

आंध्यारौ–देखो 'अंधारौ' (स्त्री० अंधियारी) ।

आंध्र–पु० भारत का एक प्रान्त ।

आंन–स्त्री० [सं० आणि] १ मर्यादा, प्रतिष्ठा । २ शान-शौकत । ३ अदब-लिहाज । ४ टेक, इज्जत । ५ प्रतिज्ञा, प्रण । –वि० अन्य, दूसरा । —क–पु० नगारा, ढोल । मृदंग । भेरी, दुंदुभी । गरजता बादल । —द्ध, ध–पु० नगारा, ढोल । –वि० मढा हुआ, कसा हुआ ।

आंनन–पु० [सं० आनन] चेहरा, मुख, शक्ल । —पाच–पु० सिंह, शेर । महादेव शिव ।

आंनाकांनी–स्त्री० १ अस्वीकृति । २ टालमटूल । ३ सुनी-अनसुनी । ४ मनाही । –क्रि०वि० इधर-उधर ।

आंनाड–देखो 'अनड' ।

आंनादेस–पु० [सं० अन्यदेश] अन्य देश, विदेश, पराया देश ।

आंनी-कांनी–क्रि०वि० इधर-उधर, सर्वत्र ।

आंनुपूरवी–स्त्री० [सं० आनुपूर्वी] नाम कर्म की १४ प्रकृतियो मे से एक जो वक्रगति मे जन्मातर गमन के समय जीव को आकाश प्रदेश की श्रेणी के अनुसार गमन कराती है (जैन)

आंन–१ इनको, इन्हे । २ देखो 'आंनौ' ।

आंनेक–देखो 'अनेक' ।

आंनै–सर्व० इन्हे, इनको ।

आंनौ–पु० [सं० आणक] १ एक सिक्का जो रुपये का सोलहवा हिस्सा होता था, इकन्नी । २ एक सेर का सोलहवा भाग, एक तौल । छटाक ।

आंन्या–देखो 'आण' ।

आंप (ण)–सर्व० अपने ।

आंपणौ, (आंपाणौ)–सर्व० [सं० आत्मन्] (स्त्री० आंपणी आंपाणी) अपना ।

आंपा–सर्व० अपन, हम ।

आंपारौ–सर्व० अपना, हमारा ।

आंपे, आंपै–सर्व० हम, अपन । –क्रि०वि० स्वत ।

आंब–देखो 'आंम' । —खास = 'आंमखास' ।

आंबर–देखो 'अंबर' ।

आंबली–देखो 'आंमली' ।

आंबाडी–देखो 'अंबाडी' ।

आंबाहळद, (हळदी)–स्त्री० कपूर हल्दी जो औषधि मे काम आती है ।

आंबिल–पु० [सं० आचाम्ल] १ व्रत विशेष जिसमे रूखा-सूखा दिन मे एक बार खाया जाता है । (जैन) २ रस परित्याग नामक तप का एक भेद ।

आंबिल वरधमान–एक प्रकार की तपस्या । (जैन) ।

आंबीजणौ, (बौ)–क्रि० १ शरीर मे ऐंठन आना । २ पेट मे विकार होना । ३ खटाई आना । ४ दातो मे खटाई बैठना । ५ ककरीली भूमि मे चलने से पैरो का सुन्न होना ।

आंबीहळद–देखो 'आंबाहळदी' ।

आंबौ–पु० [सं० आम्र] १ आम का वृक्ष एव फल । २ पुत्री की विदाई पर गाया जाने वाला लोक गीत ।

आंमख–देखो 'आमिख' ।

आंम–पु० [सं० आम्र, आम] १ एक सुप्रसिद्ध रसीला एव स्वादिष्ट फल, व इसका वृक्ष । २ आमाशय का रोग । ३ अपचकृत मल, आव । ४ रोग । [अ० आम] ५ जन साधारण । ६ साधारण । —खानौ–पु० दरबार आम, राज सभा । —खास–पु० राज महल का भीतरी प्रकोष्ठ वह राज सभा जिसमे सब जा सके । —गोम–पु० असमंजस । —जीरण–पु० अजीर्ण रोग । —रख रस–पु० आम का रस । —रसतौ, रासतौ–पु० राजपथ, सार्वजनिक मार्ग । —वात–पु० रोग विशेष । —सूल–पु० रोग विशेष ।

आंमक (ख)–देखो 'आमिस' ।

आंमटी–स्त्री० भय, आतक, डर ।

आंमडणौ, (बौ)–क्रि० मिटना, नष्ट होना ।

आंमण-दूमण(दूमणौ)–वि० (स्त्री० आमणा-दूमणी) खिन्न, उदास, विक्षिप्त ।

आंमणा दूमणा–स्त्री० उदासीनता ।

आंमणा (य)–देखो 'आंमना' ।

आंमदा, (दनी, दांनी)–स्त्री० [फा० आमद] १ आमदनी, आय । २ आवागमन ।

आंमदरफत–पु० [फा० आमदरफत] आवागमन, आना-जाना ।

आंमना (य)–स्त्री० [सं० आम्नाय] १ इच्छा कामना । २ प्रण, प्रतिज्ञा । ३ अभ्यास । ४ पुण्य । ५ वेद, श्रुति । ६ ब्राह्मण, उपनिषद् तथा आरण्यक सहिता । ७ परम्परा प्राप्त प्रचलन, कुल या राष्ट्रीय प्रथाए । ८ परामर्श या शिक्षण ।

आंमने-सामने–क्रि०वि० एक दूसरे के सामने, प्रत्यक्ष, साक्षात्, मुखातिब ।

आंमनौ–पु० १ कोर । २ वैमनस्य । ३ ऐहसान ।

आमनौ-सामनौ–पु० परस्पर मुकाबला ।
आममारग–पु० आम रास्ता । राज पथ ।
आंमय–पु० [सं० आमय] १ रोग, बीमारी । २ आघात, चोट । सर्व० इनमे ।
आमल–पु० माला । २ राज्य कर्मचारी । ३ छोटी फौज ।
आमळणौ (बौ)–क्रि० १ जोश बताना । २ भुजा ठोकना । ३ उत्तेजित होना ।
आमलवाणी, (वाणौ)–स्त्री० गुड मिला इमली का रस ।
आंमळी–वि० निर्मल, विमल ।
आंमली–स्त्री० [सं० इम्लिका] १ इमली का पेड या फली । २ जटित सिरपेच ।
आमसामहा, आमौ-सामही–क्रि०वि० मुखातिब, प्रत्यक्ष, सामने ।
आमाजीरण–आव के कारण होने वाली बदहजमी ।
आमास–पु०[सं० आवास]१ आवास, घर, मकान । २ आकाश । ३ आमखास ।
आमासय–पु० [सं० आमाशय] पेट के अन्दर की वह थैली जिसमें भोजन एकत्रित होकर पचता है ।
आमिक्ख,आमिख-देखो'आमिस' ।–**चर, आहारी** = 'आमिसचर' ।
आमिल–पु० [अ० आमिल] १ हाकिम, अधिकारी । २ दक्ष, कारीगर । ३ जादू टोना करने वाला । ४ देखो 'आबिल' ।
आमिस–पु० [सं० आमिष] मांस, गोस्त ।
–**अहार, चर, हार**–वि० मांसाहारी, मांस भक्षी ।
आमिहणी–देखो 'अम्हीणौ' (स्त्री० आमिहणी) ।
आमीजणौ, (बौ)–देखो 'आवीजणौ' ।
आंमीणौ (हणौ)–देखो 'अम्हीणौ' ।
आमुख–पु० [सं० आमुख] १ किसी रचना की प्रस्तावना । २ देखो 'आमिस' ।
आमू–देखो 'आम' ।
आमोद–पु० [सं० आमोद] १ मनोरंजन, दिल-बहलाव । २ आनन्द, हर्ष । ३ सौरभ, सुगंध । —**प्रमोद**–पु० मनोरंजन । भोग विलास । हंसी-खुशी ।
आमौ-सामहौ–क्रि०वि० सम्मुख, सामने ।
आम्नाय–देखो 'आमना' (य) ।
आम्रकूट, (गिरि)–पु० एक पर्वत विशेष ।
आम्हौ-साम्हौ, (सामा, साम्हौ)–देखो 'आमने-सामने' ।
आयणी, आयिणी–देखो 'आडणी' ।
आयणौ–देखो 'अहीणौ' ।
आर–पु० आंसू, अश्रु ।
आरे–सर्व० इनके ।
आरौ–सर्व० (स्त्री० आरी) इनका ।
आव–पु० [सं० आम] १ कच्चा व अपक्व मल । २ एक रोग । ३ देखो 'आम' ।
आंवण–१ देखो 'जावण' । २ देखो 'आवळ' ।
आवरत–पु० १ सेना का घेरा । २ युद्ध ।
आवळ–पु० १ गर्भस्थ शिशु पर लिपटी रहने वाली झिल्ली । २ एक पौधा विशेष । ३ बैल गाडी के पहिये का एक उपकरण । ४ देखो 'आवळ' । —**नाळ**–पु० जरायु, जर ।
आवळणौ, (बौ)–क्रि० १ मरोडना, ऐंठना । २ घुमाना । ३ लपेटना ।
आवळा–पु० १ स्त्रियो के पैर व हाथो मे धारण करने वाला सोना या चादी का आभूषण । २ औषधि के काम आने वाला एक फल । —**इग्यारस**–स्त्री० फाल्गुन शुक्ला एकादशी । —**फूल**–वि० शृंगार युक्त । सुसज्जित । योद्धा । —**नम, मी, नौमी**–स्त्री० कार्तिक शुक्ला नवमी । —**सार, सार गधक**–पु० साफ किया हुआ पारदर्शक गधक ।
आवळी–स्त्री० १ गुदा की नलिका । २ देखो 'आवळ' ।
आवळौ–पु० [सं० आमलक] १ औषधि मे काम आने वाला एक फल व उसका वृक्ष । २ स्त्रियो के पैरो का आभूषण । ३ बैलगाडी के पहिए पर बाधा जाने वाला डडा । ४ देखो 'अवळी' (स्त्री० आवळी) ।
आवा, आवा–पु० कुम्हारो का, बर्तन पकाने का गड्ढा ।
आसढियौ–पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।
आसू, (आंसूड़ा,) आसूडौ–पु० [सं० अश्रु] अश्रु, आसू । —**ढाग**–स्त्री० घोडे के नेत्र के नीचे की अशुभ भौरी ।
आहचौ–देखो 'आचौ' ।
आहा–अव्य० नकारात्मक ध्वनि, इन्कार ।
आहीणी–देखो 'आडणी' ।
आहीणौ–देखो 'अहीणौ' ।
आ–पु० [सं०] १ शिव । २ कल्पवृक्ष । ३ ब्रह्मा । ४ चन्द्रमा । ५ चाणक्य । ६ पितामह । ७ हाथी । ८ घोडा । ९ परिश्रम । १० नेत्र ।–स्त्री० ११ स्तुति । १२ लक्ष्मी । –वि० श्वेत ।–क्रि०वि० १ और । २ इसको । ३ शब्दो के पूर्व लगने वाला उपसर्ग । –सर्व० यह । (स्त्री०)
आअरौ–देखो 'आसरौ' ।
आइंदा–पु० [फा० आइन्द] आने वाला समय, भविष्य । क्रि० वि० भविष्य मे, आगे से, दुबारा, फिर से । –वि० आगतुक ।
आइ–सर्व० यह ।–क्रि०वि० १ इस प्रकार, ऐसे । २ देखो 'आई' ।
आइइता–क्रि०वि० १ आदि, इत्यादि । २ इसी प्रकार ।
आइडौ–पु० वर्णमाला का 'अ' स्वर ।
आइठणा, आइठाण–पु० [सं० अधिष्ठानम्] १ हाथ या पाव की अगुलियो मे अधिक कार्य या रगड से सुन्न होकर पडने वाली चमडी की ग्रथि, चर्मग्रथि । २ चिह्न, नकेत ।

आइणौ-देखो 'आईनौ'।

आइयळ-स्त्री० [सं० आर्या] १ देवी, दुर्गा, शक्ति। २ आवड देवी। ३ करणीदेवी।

आइयौ-अव्य० [सं० अपि] ऐ, अरे, हे।

आइस-पु० [सं० आदेश] १ आदेश, आज्ञा। २ साधु, फकीर, सन्यासी। ३ आशीर्वाद। ४ आशा। देखो 'आयस' ५ देखो 'आयास'।

आइसा, आइसु-स्त्री० १ आज्ञा। २ आयु।

आईंडौ-पु० वृक्ष विशेष।

आई रौ-पु० [सं० आश्रम] कच्चा मकान, कोठा।

आई-स्त्री० [सं० आर्या] १ देवी, दुर्गा, शक्ति। २ करणीदेवी। ३ आवड देवी। ४ विलाडा की देवी। ५ साकल, शृंखला। ६ उपमाता, धाय ७ माता, जननी। —सर्व० यही, यह।

आईइता-देखो 'आइइता'।

आईओ-अव्य० हे, ओ, अरे।

आईड़ (डी, डौ)-देखो 'आहेडी'।

आईठाण-देखो 'आइठाण'।

आईनौ-पु० [फा०आइना] १ शीशा, दर्पण। २ देखो 'अहीणौ'।

आईपंथ-पु० 'आई' देवी का सम्प्रदाय। —**पथी**-पु० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

आईरौ-देखो 'आसरौ'।

आईवाळौ-देखो, 'आहीवाळौ'।

आईस-१ देखो 'आइस'। २ देखो 'आयास'।

आउ-देखो 'आयु'।

आउखउ (खौ)-देखो 'आवखौ' (स्त्री० आउखी)।

आउगाळ-पु० १ वर्षा ऋतु का आगमन। २ उत्तराषाढा नक्षत्र।

आउगौ-देखो 'आखौ'। (स्त्री० आउगी)।

आउज-पु० वाद्य विशेष।

आउठमौ-वि० आठवा।

आउदौ-देखो 'आसूधौ'। (स्त्री० आउदी)

आउध-देखो 'आयुध'।

आउधि-वि० ताजा, स्वस्थ। —पु० आयुध। युद्ध।

आउधिक, (धीक)-वि० शस्त्र धारण करने वाला, योद्धा।

आउधौ-देखो 'आसूधौ'।

आउपवोस-पु० आमन्त्रित होकर किसी के घर का भोजन करने का दोष (जैन)।

आउरवा-देखो 'आवडदा'।

आऊखाण-पु० १ मवेशी का चमडा। २ चमडे पर लिया जाने वाला कर।

आऊ-देखो 'आयु'।

आऊखद, आऊखौ-देखो, 'आवखौ'।

आऊठाण-देखो 'आइठाण'।

आएडी-देखो 'आहेडी'।

आकप-पु० भय, घबराहट।

आकपणौ, (बौ)-क्रि० कापना, धूजना।

आक, आकड, (डौ)-पु० [सं० अर्क] १ आक, मदार। २ बैलगाडी के थाटे के नीचे लगाया जाने वाला एक अवयव। —**डोडियौ**-पु० आक का डोडा।

आकडा-काकडा-पु० हल्की चेचक।

आकडियौ-पु० १ गेहू के साथ होने वाला एक घास। २ देखो 'आक'।

आकर-पु० [सं०] १ खदान,खान। २ झुड, समूह। ३ खजाना। ४ भेद, किस्म, जाति। ५ देखो 'आखर'। —**ग्यान**-पु० ६४ कलाओ मे से एक।

आकरखण-देखो 'आकरसण'।

आकरखणौ, (बौ)-देखो 'आकरसणौ (बौ)।

आकरणात-क्रि० वि० कान तक।

आकरती-देखो 'आकृती'।

आकरस-पु० [सं० आकर्ष] १ खिचाव, तनाव। २ वशीकरण। ३ पासे का खेल व पासा। ४ ज्ञानेन्द्रिय। ५ कसौटी।

आकरसक-वि० [सं० आकर्षक] १ खीचने वाला। २ मोहने वाला। ३ सुन्दर —पु० चुम्बक पत्थर।

आकरसण-पु० [सं० आकर्षण] १ खिचाव, तनाव। २ मोहने की क्षमता, मोहकता। ३ वशीकरण। ४ काम के पाच बाणो मे से एक। —**क्रीडा**-स्त्री० ६४ कलाओ मे एक कला।

आकरसणौ, (बौ)-क्रि० १ खीचना, तानना। २ अपनी ओर आकर्षित करना। ३ केन्द्रित करना। ४ समेटना।

आकरी-स्त्री० १ खान खोदने की क्रिया। २ देखो 'आकरौ'। ३ देखो 'आखरी'।

आकरौ-वि० (स्त्री० आकरी) १ बहुत, अत्यधिक। २ अमूल्य, ३ खरा, शुद्ध। ४ श्रेष्ठ, उत्तम। ५ कठोर। ६ क्रूर। ७ भयकर। ८ अप्रिय। ९ हठी, जिद्दी। १० उग्र। ११ तेज, तीव्र। १२ बहादुर। १३ महगा।

आकल-वि० १ बुद्धिमान, मेधावी। २ देखो 'आकुल'। —**वाकळ**-वि० व्याकुल।

आकलकरौ-देखो 'अकलकरौ'।

आकळणौ (बौ)-१ युद्ध करना, भिडना। २ समझना। ३ देखो 'आकुळणौ' (बौ)।

आकवाक-वि० हक्का-बक्का, विस्मित।

अकसमात–देखो 'अकस्मात'।

आकांक्षा–स्त्री० [स०] अभिलाषा, इच्छा।

आकांक्षी–वि० [स०] इच्छुक, प्रत्याशी।

आकाडकाठ–वि० १ क्रोध मे अपनी मर्यादा छोड़ देने वाला। २ अनतुलित।

आकाय–स्त्री० १ चिता की अग्नि। २ चिता। ३ शक्ति, बल। ४ हिम्मत, साहस। ५ वीरता, शौर्य। –वि० १ भीमकाय, प्रबल काय। २ वीर, बहादुर।

आकार (रौ)–पु० [स० आकार] १ स्वरूप। २ आकृति, शक्ल। ३ डीलडौल। ४ कद। ५ बनावट। ६ ढाचा। ७ 'आ' अक्षर। ८ पाताल। ९ आह्वान, बुलावा। **—स्थान**–पु० चौंसठ कलाओं मे से एक।

आकारीठ, (रीठौ)–पु० [प्रा० आखारिट्ठ] १ युद्ध, सग्राम। २ शस्त्र प्रहार। ३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि। –वि० १ अत्यन्त तीक्ष्ण स्वभाव वाला। २ जबरदस्त, बलवान।

आकाळकी–स्त्री० [स० आकालिकी] बिजली।

आकास–पु० [स० आकाश] १ आसमान, नभ, गगन। २ आकाश तत्व। ३ शून्य स्थान। ४ स्थान। ५ ब्रह्म। ६ प्रकाश। ७ स्वच्छता। ८ अभ्रक। ९ सूर्य, भानु। **—गगा**–स्त्री० आकाश मे उत्तर-दक्षिण मे फैला हुआ तारा समूह। **—गाड़ी**–स्त्री० हवाई जहाज। **—चारी**–पु० पक्षी। आकाश मे विचरण करने वाला, विमान। **—नदी**–स्त्री० आकाश गगा। **—बाणी, वाणी**–स्त्री० देव वाणी। **—बेल, वेल**–स्त्री० अमर बेल नामक लता। **—मंडळ**–पु० खगोल। **—मुखी**–पु० नभ की ओर मुह करके तप करने वाला। **—लोचन**–पु० ग्रहो की गति व स्थिति देखने का स्थान। **—व्रत्ति**–स्त्री० अनिश्चित आय।

आकासी–स्त्री० १ धूप से बचने के लिए तानी जाने वाली चादर। २ चील। –पु० बादल, मेघ। –वि० १ आकाश का, आकाश संबधी। २ ईश्वरीय, दैवी। **—विरत** = 'आकास व्रति'।

आकींद, आकीन–पु० [फा० यकीन] विश्वास, एतबार, यकीन। **—दार**–वि० विश्वसनीय।

आकुळ, (ळी, ळेव)–वि० [स० आकुल] १ व्यग्र, व्याकुल। २ दुखी, क्षुब्ध। ३ विह्वल, कातर। **—ता**–स्त्री० व्याकुलता, घबराहट।

आकुळणौ, (बौ)–क्रि० १ व्याकुल होना, विकल होना। २ दुखी होना। ३ विह्वल होना। ४ तड़फड़ाना। ५ क्षुब्ध होना।

आकूत–पु० १ आशय, अभिप्राय। २ भावना, इच्छा। ३ आश्चर्य।

आकेड–स्त्री० उत्तर और वायव्य कोण के मध्य (सप्तऋषि के अस्त स्थान) मे चलने वाली वायु जो फसल को हानि पहुँचाती है।

आकेलौ–देखो 'एकलौ'।

आक्रंद, (दन)–पु० १ रुदन, विलाप। २ चीख, चिल्लाहट। ३ तीक्ष्ण शब्द। ४ बुलावे की आवाज। ५ पुकार, फरियाद। ६ युद्ध, सग्राम।

आक्रत, (ति, ती) आक्रित, (ति, ती)–स्त्री० [स० आकृति] १ सूरत, शक्ल। २ बनावट, ढाचा। ३ गठन। ४ स्वरूप। ५ मुख। ६ मूर्ति रूप। ७ आकार। ८ चेष्टा। ९ भाव। १० बाईस अक्षरो का एक वर्ण वृत्त।

आक्रम–पु० १ पराक्रम, शौर्य। शक्ति, साहस, बल। २ आक्रमण चढाई।

आक्रमण–पु० [स०] १ हमला, धावा। २ सीमोल्लघन।

आक्रांत–वि० [स०] १ जिस पर आक्रमण हो। २ घिरा हुआ। ३ पराजित। ४ वशीभूत। ५ ग्रसित। ६ दुखी।

आक्षेप–पु० [स०] १ आरोप, दोष। २ अपराध। ३ आपत्ति। ४ कटु व्यग, ताना। ५ ग्रंथ का अध्याय। ६ कोशिश, प्रयत्न। **—क**–वि० आक्षेप करने या लगाने वाला।

आखंडळ–पु० [स० आखडल] इन्द्र, सुरेश। -वि० सपूर्ण, पूर्ण।

आखडळी–स्त्री० १ इन्द्राणी। पु० २ इन्द्र। –क्रि०वि० आगे, आगाडी।

आखड़णौ, (बौ)–क्रि० [स० आस्खलनम्] १ ठोकर खाना। २ ठोकर खाकर गिरना। ३ गिरना, स्खलित होना। ४ लड़खड़ाना।

आखडा–स्त्री० उदासीनता।

आखडी–स्त्री० [स० अस्खलित] १ प्रतिज्ञा, प्रण। २ त्याग। ३ सौगन्ध। ४ सिद्धान्त।

आखणक–पु० [स०] सूअर।

आखणौ (बौ)–क्रि० [स० आख्यानम्] कहना, बयान करना।

आखत–स्त्री० [स० आख्यात] १ बयान, कथन। २ आख्यान। **—क्रि० वि०** तेजी से।

आखतां-पाखतां-क्रि० वि० अगल-बगल, पार्श्व मे। निकट।

आखतौ–वि० [स्त्री० आखती] १ द्रुतगामी, उतावला। २ तेज, तीव्र। ३ उग्र, क्रोधी। ४ अधीर, व्यग्र। ५ ऊबा हुआ, परेशान। [फा० आखत] ६ बधिया किया हुआ। **—क्रि० वि०** शीघ्र, तेज।

आखर–पु० [स० अक्षर] १ किसी भाषा या लिपि के वर्ण, हरुफ। २ अक। ३ देखो 'आखिर' ४ देखो 'अखर'। **—वत**–पु० अतिम समय।

आखर-डाई-आखणी–स्त्री० डाकिनी, प्रेतनी।

आखरी–स्त्री० १ पशुओं का रात्रि विश्राम स्थल । २ कूऐ से पानी निकालने का समय । ३ देखो 'आखिरी' ।

आखळी–स्त्री० १ पत्थर बेचने का स्थान । २ पथरीले रास्ते का गड्ढा ।

आखा–पु० [स०अक्षत] १ मांगलिक अवसर पर काम आने वाले चावल या गेहूं के दाने । २ भिक्षा मे दिया जाने वाला अनाज । ३ अक्षय तृतीया —वि० [स० अखिल] समस्त, सम्पूर्ण । —**तीज, त्रीज**–स्त्री० वैशाख शुक्ला तृतीया । उक्त तिथि को राजस्थान मे मनाया, जाने वाला त्यौहार । —**नवमी**–स्त्री० कार्तिल शुक्ला नवमी ।

आखाई–पु० अनेक युद्धो मे विजयी योद्धा । —वि० सम्पूर्ण ।

आखाड, आखाडौ–देखो 'अखाडौ' ।

आखाडमळ, (मल्ल, सिद्ध सिध्ध)–देखो 'अखाडमल' ।

आखाड (ढ़)–देखो 'आसाढ' ।

आखापाती–देखो 'आखा' ।

आखारीठ–देखो 'आफारीठ' ।

आखिर, (खीर)–क्रि० वि०— १ अन्त मे, आखिर को, अतत । २ अवश्य । ३ मगर । -पु० १ अंत, समाप्ति । २ सीमा । ३ परिणाम । —वि० १ अंतिम, पिछला । २ पीछे का । —**कार**–क्रि० वि०— अतत , अन्त मे, खैर । अवश्य ।

आखिरी–वि० [अ०] १ अन्तिम । २ सब से पीछे का ।

आखी–देखो 'आखौ' ।

आखी-अणी–वि० १ अटल । २ सम्पूर्ण । ३ अग्रगण्य ।

आखु आखू–पु० [स० आखु] १ चूहा, मूसा । २ छछूदर । ३ सूअर । ४ चोर ।

आखेट, (ठ), आखेंट–पु० [स० आखेट] शिकार, मृगया । —**टक, टी**–पु० शिकारी ।

आखेप–पु० १ कटाक्ष, नजारा । २ देखो 'आक्षेप' ।

आखौ–वि० [स० अक्षत] (स्त्री०आखी) १ अखण्ड । २ अक्षय । ३ पूरा, समूचा । —पु० १ अन्न का दाना । २ अवधिया नर पशु ।

आख्यान, (क)–पु० [स० आख्यान] १ वृत्तात, कथन । २ कहानी । ३ पौराणिक कथा । —वि० १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ कहा हुआ ।

आगतुक–वि० [स०] १ आने वाला । २ भूला-भटका आया हुआ । ३ अकस्मात आने वाला । ४ आकस्मिक । —पु० १ अतिथि । २ आगन्तुक व्यक्ति या प्राणी । ३ अकस्मात होने वाला रोग ।

आग–स्त्री० [स० अग्नि] १ आग, ज्वाला । २ जलन, ताप । ३ कामाग्नि । ४ देखो 'आघ' । —**कुड**–पु० यज्ञकुड । —**जतर, जत्र**–पु० तोप, बन्दूक । —**झळ, झाळा**–स्त्री० अग्नि की ज्वाला, लौ । —**बह**–पु० धूम्र, धूआ । —**बोट**–पु० अग्निबोट । —**मई**–वि० अग्निमय ।

आगइ, आगई–क्रि० वि० आगे, अगाडी ।

आगड–पु० चूल्हे के आगे का स्थान या घेरा ।

आगडदि, (दी), आगडै–क्रि० वि० आगाडी, सम्मुख ।

आगडौ–क्रि० वि० दूर । अलग । —पु० १ कुए पर लगी गिर्री मे रस्सी से पडा हुआ गड्ढा । २ अनुमान, अन्दाज ।

आगण–पु० १ मार्गशीर्ष मास । २ देखो, 'आगड' ।

आगत–वि० [स०] १ आया हुआ, प्राप्त । २ आने वाला । ३ उपस्थित । —स्त्री० १ सबसे पहले बोई हुई फसल । ३ देखो 'आगतरी' । –**स्वागत**–पु० आने वाले का सत्कार ।

आगतरौ–वि० (स्त्री० आगतरी) समय के कुछ पूर्व बोया गया । (अनाज)

आगतौ–देखो 'आखतौ' (स्त्री० आगती) ।

आगन–देखो 'आग' ।

आगना, (न्या)–स्त्री० [स० आज्ञा] १ आदेश, हुक्म । २ आज्ञा, २ इजाजत ।

आगनि, (नी)–देखो 'अगनी' ।

आगम, (म्म)–पु० [स० आगम] १ आना, आगमन । २ आमदनी अर्थागम । ३ भविष्य । ४ भवितव्यता, होनी । ५ शास्त्र । ६ पद सिद्धि मे आया हुआ वर्ण । ७ बहत्तर कलाओ मे से एक । ८ जन्म, उत्पत्ति । ९ वेद । १० परम्परागत सिद्धान्त । ११ ज्ञान । –वि० प्रथम, पहला । —**ग्यानी, जाण जाणी**–पु० भविष्य को जानने वाला । वेदाती । शास्त्रज्ञ । —**वक्ता**–वि० भविष्य की कहने वाला । —**वाणी**–स्त्री० भविष्य वाणी । वेद वाक्य । —**दिसट, दिसटी**–स्त्री०दूरदर्शिता । –**सोची**–वि० दूरदर्शी, अग्रसोची ।

आगमण (णौ), आगमन–पु० १ आने की क्रिया या भाव, आना । २ आमद । ३ प्राप्ति ।

आगमि, (मी)–१ देखो 'आगामी' २ देखो 'आगम' ।

आगमियाकाळ–पु० भविष्यकाल ।

आगर–१ देखो 'आकर' । २ देखो 'आगार' ।

आगरणी–स्त्री० गर्भवती स्त्री को दिया जाने वाला पौष्टिक व स्वादिष्ट भोजन ।

आगरवध–पु० रोग विशेष, कठमाला ।

आगळ–स्त्री० [स० अर्गला] १ अर्गला । २ रोक । –वि० १ रक्षा करने वाला, रक्षक । २ विशेष, अधिक । –क्रि०वि० अगाडी, सम्मुख । —**कूची**–स्त्री० अर्गला की कुजी । —**खूंटी**–पु० बुनाई मे काम आने वाली खूटी ।

आगलउ, आगलडौ-वि० (स्त्री० आगलडी) आगे का, अगला ।

आगळणौ (बौ)–क्रि० ऊंट का कूदना ।

आगळनू, (नौ)–वि० (स्त्री० आगळती) १ अधिक, आवश्यकता मे अधिक, विशेष । २ व्यर्थ, फिजूल ।

आगळसींगो–पु० (स्त्री० आगळसींगी) आगाडी झुके हुए सींगो वाला बैल ।
आगळि (ळी)–देखो 'आगळ' ।
आगळिगार, (याळ),आगळिहार–वि० अगुवा, अग्रगण्य, अग्रणी ।
आगळू (च)–देखो 'आगळत्' ।
आगळे, आगळै (लै)–वि० पहले के, पूर्व के । –क्रि० वि० आगे, आगाडी ।
आगळौ–देखो 'आगळ' (स्त्री०) ।
आगलौ–वि० (स्त्री० आगली) १ अगला, आगे का । २ अगुवा, अग्रगण्य । ३ विशेष, अधिक । ४ दूसरा, अन्य, अपर । ५ पूर्व का, पूर्व जन्म का । ६ विगत, पुराना । ७ आगामी । –क्रि०वि० सामने, सम्मुख ।
आगवरण–देखो 'आगमरग' ।
आगवौ–देखो 'अगुवौ' ।
आगस–पु० १ अग्नि, आग । २ दोष, अपराध ।
आगस्त, आगस्ति–देखो 'अगस्त' ।
आगह–क्रि०वि० पहले, पूर्व ।
आगामि, (मी)–वि० [स० आगामिन्] १ आगे आने वाला । २ भविष्य मे होने वाला ।
आगाऊ–पु० सेना का अग्र भाग, हरावल । –वि० १ आगाडी का, प्रथम । २ अग्रिम ।
आगाडी–देखो 'अगाडी' ।
आगाज–पु० १ क्रोध, रोष । –स्त्री० २ गर्जना ध्वनि ।
आगा-पाछी–स्त्री० १ चुगली । २ निन्दा । ३ परस्पर भिडाने की बात ।
आगार–पु० [स०] १ आवासस्थान, घर । २ स्थल, स्थान । ३ खजाना । ४ भण्डार । ५ छूट (जैन) ।
आगालो–वि० (स्त्री० आगाली) १ आगे का, अगला । २ अधिक, विशेष ।
आगासि, (सी)–१ देखो 'आकास' । २ देखो 'आकासी' ।
आगाहट, (ठ)–पु०[स० अघात्य]चारणो की जागीरी के गाव ।
आगि–क्रि०वि० १ आगे, आगाडी । २ पहिले पूर्व । ३ देखो 'आग' ।
आगिना-देखो 'आग्या' ।
आगिमि, (मी)–देखो 'आगामी' ।
आगियौ–पु० १ जुगनू । २ एक तान्त्रिक मंत्र । ३ छोटे बच्चो का एक रोग । ४ एक प्रकार का पशुओ का रोग । ५ एक प्रकार की घास ।
आगिलौ–देखो 'आगलौ' । (स्त्री० आगली) ।
आगी–वि० १ ऋतुमती, रजस्वला । २ देखो 'आगौ' । —वाण –वि० अग्रगण्य, नेता ।
आगीपाछ, आगीपाछी–देखो 'आगापाछी' ।
आगू च–क्रि०वि० १ पहले से, पूर्व मे । २ अग्रिम, पेशगी ।
आगू–क्रि०वि० १ पहले से, पेशगी । २ आगाडी । –वि० मार्ग दिखाने वाला, अगुवा । —कथ–स्त्री० भविष्यवाणी ।
आगूत,(तौ)–क्रि०वि०१ आगे, आगाडी । २ अग्रिम । ३ सामने ।
आगूनं–क्रि०वि० आगे की ओर, आगाडी ।
आगे (गै)–क्रि०वि० आगाडी, आगे । भविष्य मे, सामने । बाद मे । —वांण–वि० अग्रगण्य । नेता ।
आगेटी–स्त्री० १ सेकने या तापने की धीमी अग्नि । २ देखो 'अंगीठी' ।
आगोतर–पु० १ पहला जन्म, पूर्वजन्म । २ भविष्य मे होने वाला जन्म ।
आगोर–स्त्री० १ जलाशय के आस-पास की पडती भूमि जिसके वृक्षादि काटे नही जाते । २ जलाशय या खेत की परिसीमा । ३ सारगी मे ठाठ की ओर से पहिला तार ।
आगौ–देखो 'आघौ' ।
आगौकढ़ियौ–पु० बेगार । बेमन का कार्य ।
आगौ-पाछौ–क्रि० वि० १ इधर-उधर । २ कभी आगे कभी पीछे । ३ हस्तान्तरण । ४ देखो 'आगौपीछौ' ।
आगौपीछौ–पु० १ शरीर या वस्तु का अगला या पिछला भाग । २ आगे पीछे का विचार ।
आगौलग, (लगा)–क्रि० वि० १ निरन्तर, लगातार । २ बराबर । ३ क्रमश ।
आग्या–स्त्री० [स० आज्ञा] १ आदेश, हुक्म । २ अनुमति, स्वीकृति । ३ शासन । ४ आदेश-पत्र । —कारी–वि० आदेश का पालन करने वाला । —चक्र–पु० योग के आठ चक्रो मे से छठा । —पत्र–पु० आदेश-पत्र ।
आग्रह–पु० [स०] १ अनुरोध, मनुहार । २ हठ, जिद्द । ३ तत्परता ।
आग्राज–स्त्री० जोश पूर्ण आवाज । गर्जना ।
आग्राजणौ, (बौ)–क्रि० गर्जना करना, दहाडना ।
आघ (घि)–पु० [स० अर्घ] १ मान, प्रतिष्ठा । २ आदर, सत्कार । ३ देखो 'अघ' । —उ–देखो 'आघौ' । —रत–पु० आदर, सत्कार ।
आघड, आघडौ–देखो 'आघौ' । (स्त्री० आघडी) ।
आघण–देखो 'आगण' । २ देखो 'आगड' ।
आघतौ–देखो 'आखतौ' (स्त्री० आघती) ।
आघमण (णौ, न, नौ)–वि० १ अग्रणी । २ उदारचित । ३ उत्साह युक्त । ४स्वागत करने वाला । ५ देखो'आगमण' ।
आघसणौ (बौ)–क्रि० घर्षण करना, घिसना ।

आघसतड़ी–देखो 'अगस्त' ।

आघागुण, (घुण)–पु० भौरा, भ्रमर ।

आघात–पु० [स०] १ प्रहार, चोट । २ आक्रमण; हमला, वार । ३ धक्का, टक्कर । ४ दुःख, कष्ट । ५ ध्वनि । –वि० भयकर । —**क**–वि० चोट पहुचाने वाला, घातक ।

आघार–पु० [स०] १ घी, घृत । २ छिड़काव । ३ हवि । ४ हवि-मत्र ।

आघाहट–देखो 'आगाहट' ।

आघेरौ–वि० (स्त्री० आघेरी) दूर ।

आघै–देखो 'आगै' ।

आघौ–वि० (स्त्री० आघी) १ आगे, आगाडी । २ दूर, फासले पर । ३ पृथक, अलग । ४ परे ।

आघ्राण–स्त्री० १ गध, महक । २ गध ग्रहण । ३ सूघना, वास लेना क्रिया ।

आघ्रात–पु० [स०] ग्रहण का एक भेद ।

आड़ग–पु० १ वर्षा-आगमन के पूर्व की उमस, गर्मी । २ वर्षा के लक्षण ।

आड़त–स्त्री० अन्य व्यापारी का माल अपने स्तर पर वेचने का कार्य । दलाली । २ उक्त कार्य मे मिलने वाला कमीशन । ३ पुराने समय का एक लगान । ४ गरज, आवश्यकता, मतलब ।

आडतियौ–पु० आडत का कार्य करने वाला व्यापारी । दलाल ।

आडाजीत–पु० देखो, 'आडाजीत' ।

आडी–स्त्री० १ वरावर की जोड़ी, युग्म । २ तवला या मृदग वजाने का ढग । २ कलह, लडाई । —**गारौ**–वि० कलह-प्रिय । झगडालू । —**वाळ**–वि० वरावर का । समान । समवयस्क ।

आडू–वि० १ उद्दड, वदमाश । २ अड़ियल । ३ हठी, जिद्दी । ४ उज्जड, गवार, असभ्य । —पु० १ एक प्रकार का फल । २ एक प्रकार का पत्थर जो सवारा नही जा सकता है ।

आंडे-पांडे–क्रि० वि० १ अगल-वगल मे, इधर-उधर । आस-पास, निकट ।

आडोस-पाड़ोस–पु० अगल-बगल के घर, स्थान आदि ।

आडोसी-पाडोसी–वि० अडोस-पडोस मे रहने वाला ।

आढौ–पु० १ हठ, जिद्द । २ वालहठ । ३ किसी वस्तु के लिए वरावर रुदन । ४ युद्ध । ५ चमडा साफ करने वालो मे लिया जाने वाला कर । ६ मवेशी खेत मे घुसने पर लिया जाने वाला दण्ड ।

आचत–वि० शोभायमान; सुशोभित —क्रि० वि० हे ।

आच–पु० १ हाथ, हस्त । २ समुद्र, सागर । —**गळ, गळौ**–देखो 'अचागळ' । —**प्रभव**-पु० क्षत्रिय, राजपूत । —**मण**='आचमन' ।

आचमणौ (बौ)–क्रि० १ भोजन के वाद हाथ धोना, कुल्ला करना, आचमन करना । २ भक्षण करना ।

आचमन, (न्न)–पु० [स० आचमनम्] १ भोजनोपरात जल से हाथ-मुंह की सफाई, आचमन । २ अनुष्ठान या पूजन के प्रारम्भ मे दाहिनी हथेली से जलपान ।

आचमनी–स्त्री० पूजा का छोटा चम्मच जिससे आचमन करते तथा चरणामृत आदि देते हैं ।

आचरज–पु० १ आश्चर्य, विस्मय । २ आचार्य ।

आचरण–पु० [स० आचरणम्] १ व्यवहार, वर्ताव । २ चाल-चलन । ३ आचार-विचार । ४ रीति-नीति । ५ चिह्न, लक्षण ।

आचरणौ (बौ)–क्रि० १ व्यवहार या वर्ताव करना । २ विचार करना । ३ भक्षण करना, खाना । ४ उपयोग करना । ५ आचमन करना ।

आचवणौ (बौ)–क्रि० आचमन करना ।

आचवन–देखो 'आचमन' ।

आचार–पु० [सं०] १ व्यवहार, बर्ताव । २ चरित्र । ३ रीति रिवाज । ४ सदाचार, शील । ५ स्नान । ६ आचमन । ७ दान-पुण्य । ८ नियम । ९ लक्षण । १० शुद्धि । ११ धार्मिक नियमो उप-नियमो का पालन करना (जैन) । १२ देखो 'अचार' । —**गळ-गळौ**–देखो 'अचागळ' । —**वांन**–वि० सदाचारी, शीलवान । पवित्रता रखने वाला ।

आचारज–पु० [स० आचार्य] १ गुरु, आचार्य, पडित, विद्वान । २ शुक्राचार्य । ३ कवि । ४ मृतक के पीछे कर्म कराने वाला । ५ उपाधि विशेष । ६ पुरोहित ।

आचारजी–स्त्री० १ आचार्य । २ आचार्य का काम ।

आचारणौ (बौ)–देखो 'आचरणौ' (बौ) ।

आचार-विचार–पु० [स०] १ सोचना-समझना । २ विवेक । ३ सद्‌भाव, चरित्र । ४ व्यवहार । ५ शौच ।

आचारवेदी–पु० [स०] भारतवर्ष ।

आचारहीण–वि० आचरण-भ्रष्ट । अचरित्रवान ।

आचारि–देखो 'आचार' ।

आचारिज–देखो 'आचारज' ।

आचारी, (क)–वि० [स० आचारिन्] १ आचारवान् । २ शास्त्रानुगामी । ३ चतुर, दक्ष । ४ चरित्रवान । ५ समान, तुल्य । ६ दातार, उदार ।

आची, (चू)–देखो 'आच' ।

आचूगाळ–देखो 'अचूगाळ' ।

आच्छादन–पु० [स०] १ ढकना, ढक्कन । २ छप्पर । ३ आवरण । ४ वस्त्र; कपडा ।

आच्छौ–देखो 'आछौ' (स्त्री० आच्छी) ।

आछटणौ (बौ)–क्रि० १ दूर फैंकना । २ छिटकाना । ३ पछाड़ना । ४ प्रहार करना । ५ टकराना ।

आछ–स्त्री० छाछ या तक्र के ऊपर आने वाला पीला पानी ।

आछइ, (ई)–देखो 'अछइ' ।

आछउ–देखो 'आछौ' ।

आछट–स्त्री० १ झटका, धक्का । २ पछाड । ३ आघात, चोट । –क्रि०वि० तीव्र वेग से ।

आछटणौ (बौ)–देखो 'आछटणौ' ।

आछण(णी)–देखो 'आछ' ।

आछत–स्त्री० [स० आच्छन्न] छिप कर रहने का भाव । –क्रि०वि०होते हुए ।

आछन्न–क्रि०वि० [स० आसन्न] पास, निकट ।

आछयौ–देखो 'आछौ' ।

आछाबूच (श)–क्रि०वि० अचानक, अकस्मात ।

आछाद, (वित)–वि० [स० आच्छादित] १ ढका हुआ । २ आवृत्त । ३ छिपा हुआ, तिरोहित ।

आछादणौ (बौ)–क्रि० १ ढकना । आवृत्त करना । २ छिपाना । ३ छा देना ।

आछी–स्त्री० १ भलाई, अच्छाई । २ आवड देवी की वहिन । ३ ज्वार नामक अन्न । ४ देखो 'आछौ' । —**सिल**–वि० स्फटिक मिला । स्फटिक मणि ।

आछेलौ–वि० (स्त्री० आछेली) श्रेष्ठ उत्तम, अच्छा ।

आछोड़ी–स्त्री० १ वालू रेत । २ चीनी शक्कर । ३ ज्वार । ४ देखो 'आछी' ।

आछोड़ौ, आछौ–वि० [स० अच्छ] १ अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ । २ सुन्दर । ३ पवित्र, शुद्ध । ४ स्वस्थ, निरोग । ५ श्वेत, सफेद ।

आज–क्रि०वि० [स० अद्य, प्रा० अज्ज] १ जो दिन वर्तमान है, नित्य, वर्तमान मे । २ अब । –पु० [स० आजि] १ घृत । २ युद्ध । —**कल**, काल–क्रि०वि० इन दिनो, इस समय । —**जुगाद**–क्रि०वि० परम्परा से ।

आजगव–देखो 'अजगव' ।

आजन्म–क्रि०वि० [स०] जीवनपर्यन्त, आजीवन ।

आजमखानी–पु० एक राजकीय विभाग विशेष ।

आजमाइस–स्त्री० [फा० आजमाइश] परीक्षा, जाच, परख ।

आजमाणौ (बौ), आजमावणौ (बौ)–क्रि० परखना, परीक्षण करना । काम लेकर देखना ।

आजलू–क्रि०वि० आज तक, अब तक ।

आजान, आजानु–वि० [स० आजानु] १ जाघ या घुटने तक लबा । २ आजानबाहु । —**देव**–पु० सृष्टि के आदि देवता । —**कर, करग, बाह, बाहु, वाहू, भुज**–पु० जानु तक लबी बाहो वाला, विशालबाहु ।

आजाजीत–वि० [स० आज्यजित] १ अजेय, अपराजित । २ वलवान, शक्तिशाली । ३ उत्पात करने वाला, उद्दड । ४ चचल ।

आजाद–वि० [फा०] १ स्वतन्त्र, मुक्त । २ उन्मुक्त, मस्त । ३ निडर, निर्भय । ४ स्पष्ट वक्ता । ५ सूफी फकीर ।

आजादगी, आजादी–स्त्री० [फा०] १ स्वतत्रता, स्वाधीनता । २ मुक्ति । ३ छूट ।

आजानेय–पु० घोडो की एक श्रेष्ठ जाति व इस जाति का घोडा ।

आजार–पु० [फा० आजार] १ रोग, बीमारी, व्याधि । २ लक्षण, चिह्न ।

आजि–पु० [स० आजि] १ लडाई, युद्ध । २ गति, गमन । ३ घी, घृत । ४ देखो 'आज' ।

आजिज–वि० [अ०] १ विनम्र, नम्र । २ दीन । ३ हैरान ।

आजिजी–स्त्री० [अ०] १ नम्रता । २ दीनता । ३ हैरानी ।

आजी–देखो 'आजि' ।

आजीजी–देखो 'आजिजी' ।

आजीवका, (विका) आजुका–स्त्री० [स० आजीविका] १ रोजगार, रोजी । २ जीवन का सहारा । ३ जागीर ।

आजीवन–क्रि०वि० [स०] जीवन पर्यन्त, जीवन भर ।

आजुत–पु० [स० आयुत] दश हजार की सख्या । –वि० दश हजार ।

आजूणौ, (जूणौ)–वि० (स्त्री० आजूणी, आजूणी) आज का । –क्रि०वि० जीवन पर्यन्त ।

आजू–पु० वेगार । विना आय का श्रम । –क्रि०वि० अभी तक ।

आजूणई–वि० आज का, नवीन । –क्रि०वि० आज ।

आजूबाजू–क्रि०वि० आस-पास, अगल-बगल ।

आजे–क्रि०वि० आज ही, आज से ।

आजौ–पु० १ वल, पौरुष । २ साहस, हिम्मत । ३ आत्मवल । ४ विश्वास, भरोसा । ५ सहारा । ६ आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को दोहित्र द्वारा सम्पन्न किया जाने वाला नाना-नानी की श्राद्ध ।

आजौको–वि० आज का ।

आजौळी–स्त्री० जलती लकडी से किया जाने वाला प्रकाश ।

आज्यस्थाळी–स्त्री० एक यज्ञ-पात्र ।

आझा–स्त्री० इच्छा, कामना ।

आझाड़ौ–वि० १ काटने वाला, मारने वाला । २ योद्धा, वीर ।

आझाळ–स्त्री० [स० ज्वाला] आग की लपट, ज्वाला ।

आझाळौ–वि०(स्त्री० आझाळी) १ वीर वहादुर । २ जोशीला । ३ तेजस्वी, ज्वाजल्यमान । ४ मार-काट करने वाला ।

आझौ–पु० १ साहस, उत्साह, जोश । २ शक्ति, वल, पराक्रम । ३ दोष, कलक । –वि० १ निकटतम, घनिष्ठ । २ वहुत गहरा । ३ उदार ।

आट–देखो 'अटाळिका'।

आटड्यौ, आटड़ियौ–देखो 'आटौ'।

आटपाटां, आटापाटा–क्रि०वि० १ दोनो किनारो से ऊपर होकर भरपूर अवस्था मे (नदी)। २ ओत-प्रोत।

आटबाट (वाट, वाटा)–क्रि०वि० इधर-उधर।

आटियौ–देखो 'आटौ'।

आटौ–स्त्री० १ सूत की गुडी। २ वेणी। ३ वेणी की डोरी। —**बद**-पु० रहट की माला का एक वध।

आटोडियौ, आटौ–पु० १ अनाज का पिसा हुआ चूर्ण, चून, पिसान। २ चूर्ण, बुकनी। —**साटौ**-पु० वस्तु विनिमय। अदला-वदली।

आठ (क) वि० [स० अष्ट] सात और एक का योग। –स्त्री० उक्त योग की सख्या, ८। —**आंनी**-स्त्री० पचास पैसे का सिक्का। —**क**-वि० आठ के वरावर, लगभग। —**करम**-पु० आठ प्रकार के कर्म (जैन)। —**ग्रगन**-पु० ब्रह्मा, विरचि। —**पग**-पु० सिंह। मकडी। अष्टापद। —**पुहर, पौहर**-क्रि० वि० अष्ट प्रहर, दिन-रात, हर समय।

आठकि–पु० प्रहार, आघात।

आठम, (मि, मी)–स्त्री० अष्टमी तिथि।

आठमौं (वौं)–वि० (स्त्री० आठमीं, वी) सात के वाद वाला, आठवा।

आठवाट–वि० नष्ट।

आठांजाम–क्रि०वि० [स० अष्ट-याम] अष्ट प्रहर, हर समय।

आठानी–देखो 'आठआनी'।

आठा-पौहर–देखो 'आठपौहर'।

आठांभुजा–स्त्री० [स० अष्ट + भुजा] १ देवी, दुर्गा, पार्वती। २ आठ भुजा वाली।

आठियौ–पु० १ ऊट पर कसी जाने वाली वडे मुह की वदूक। २ छोटी वदूक।

आठी–स्त्री० १ आठ चिह्नो वाला ताश का पत्ता। २ देखो 'आटी'।

आठू–वि० [स० अष्ट] आठो ही।

आठू जाम–देखो 'आठाजाम'।

आठूंपहर–देखो 'आठपौहर'।

आठूंवळा–क्रि०वि० आठो दिशाओ मे, सव तरफ।

आठू वेळा–क्रि०वि० हर समय।

आठौ–पु० [स० अष्ट] १ आठ का अक। २ आठ की सख्या का वर्ष। ३ आठ वूटी वाला ताश का पत्ता।

आडगौ–पु० वैलगाडी का चमडे का नाडा।

आडंबर–पु० [स०] १ ढोग, पाखड। २ दिखावा, वनावटीपन। ३ सजावट, शृगार। ४ गभीर आवाज, गर्जन। ५ तुरही की आवाज। ६ अभिमान, मद। ७ रोष, क्रोध। ८ हर्ष, खुशी। ९ तडक-भडक। १० तवू। ११ युद्ध वाद्य। १२ युद्ध की घोषणा। १३ ललकार। १४ हाथियो की चिंघाड। १५ तैयारी।

आडबरी–वि० [स०] आडवर करने वाला, ढोगी, पाखडी।

आड, (ई)–स्त्री० १ ओट, सहारा। २ परदा। ३ रोक, बाधा। ४ सीमा, हद ५ आश्रय, सहारा, मदद। ६ वहाना। ७ आशा। ८ लम्बी टिकली। ९ स्त्रियो का कठा भूषण। १० मस्तक का आडा तिलक। ११ रक्षा, शरण। १२ आधार। १३ तालाव मे पानी आने की छोटी कच्ची नहर। १४ वतख। १५ सेतु। १६ पाल। १७ केसर या चदन का तिलक। १८ सहायक। १९ सन्यासियो का कमर वध। २० फलसा मे लगाई जाने वाली पडी सीधी लकडी। —क्रि० वि० ओर, तरफ। —**पलाण, पिलांण** –पु० ऊट पर दोनो पैर एक ओर करके बैठने का ढग।

आड झौया (फा)–स्त्री० उछल कूद।

आडण, (णी)–स्त्री० १ ढाल। २ आड। ३ अन्तर पर। ४ जूआ की वाजी, दाव। ५ चार पाये वाला चौकोर आसन, छोटा तख्त, चौकी। ६ पहेली।

आडणौ (बौ)–क्रि० १ जूआ मे दाव लगाना। २ देखो अरडाणौ (बौ)।

आडत–देखो 'आडत'।

आडतियौ–देखो 'आडतियौ'।

आडबद, (बध)–पु० १ लगोटी। २ कटिवध या कोपीन की रस्सी ३ दुल्हे की लालपगडी पर वाधा जाने वाला सफेद वस्त्र (भाभी)।

आडबाहरु–वि० १ हद तोडने वाला। २ अपने आपको रोकने वाला।

आडवळौ–पु० [स० अर्बुदावलि] अरावली पर्वत माला।

आडवाहौ–वि० सम्मुख, सामने।

आडागिर (रि)–पु० विंध्याचल पर्वत।

आडाचौताळौ–पु० १४ मात्राओ की एक ताल।

आडाजीत–वि० वीर, वहादुर, शक्तिशाली।

आडाडबर–देखो 'आडवर'।

आडायती–स्त्री० [स० अर्गला] १ किंवाड के पीछे लगने वाली आडी लकडी, अर्गला, व्योडा। २ कपाट। ३ अवरोध। ४ कल्लोल। ५ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय दिखने वाले वादल। ६ तलवार।

आडावळ (ळौ)–देखो 'आडवळौ'।

आडि–१ देखो 'आड'। २ देखो 'आडी'।

आडिया-काठिया–वि० वाधक।

आडियौ–पु० १ सामान लादते समय गाडी के आगे लगाया जाने वाला डंडा। २ एक प्रकार का आरा। ३ बांह से नाक पोंछने की क्रिया या भाव। —वि० समान, बराबर।

आडी–स्त्री० १ पहेली। २ धरातल के साथ लम्बाई। ३ देखो 'आड'। ४ देखो 'आडौ'। ५ देखो 'आडी'। —ओळ–क्रि० समस्त, सम्पूर्ण। —टाग–स्त्री० रास्ता रोकने या चढ़ने हुए को गिराने हेतु लगाई जाने वाली पाव की रोक, लत्ती। २ बाधा, विघ्न। —धार–स्त्री० तलवार की धार। —माळ–स्त्री० गाव की सरहद की समस्त कृषि भूमि। इस भूमि मे होने वाली एक सी फसल। —लीक, लीह–वि० हद से ज्यादा, असीम।

आडीयौ–देखो 'आडियौ'।

आडू–पु० १ लकड़ी या पत्थर चीरने का लौह का बडा औजार। २ खट्टे-मीठे स्वादवाला एक प्रकार का फल। –क्रि० वि० सम्मुख, आगे।

आडेअक–वि० बेहद, अपार।

आडेकट–क्रि० वि० १ आम लोगो के लिए। २ आम तौर पर। —वि० समस्त, सम्पूर्ण।

आडेखडे–वि० १ निर्बाध, खुला। २ स्वतन्त्र। ३ विरुद्ध। —क्रि० वि० बेरोक-टोक।

आडेछाज–पु० सूप से अनाज साफ करने की क्रिया विशेष।

आडेफरे–पु० रेतीले टीबे या पहाड का मध्य भाग।

आडेअक–देखो 'आडेअक'।

आडोवळी–देखो 'आडवळो'।

आडोस-पाडोस–'आडोस-पाडोस'।

आडोहल्लणौ (बौ)–क्रि० १ मदद करना। २ विरुद्ध चलना।

आडौ–वि० (स्त्री० आडी) १ विरुद्ध, विमुख। २ चौडाई के पार-पार। ३ सम्मुख, सामने। ४ सहायक, मददगार। ५ रक्षक। ६ रोकने वाला, बाधक। ७ धरातर के समानान्तर। —पु० १ द्वार, दरवाजा। २ कपाट, किंवाड। ३ ओट, पर्दा। ४ शयन। ५ निंदायुक्त कविता। ६ रोग। —क्रि० वि० बीच मे, मध्य मे। अंवळौ–क्रि० वि० इधर-उधर। जैसे-तैसे। —वि० टेढा। –तिरछा। आडि, आडी–क्रि० वि० रुकावट डालते हुऐ। –खेमटौ–पु० मृदग की तरह मात्रीय ताल —धंस='आडौ मारग'। —चौताळौ ठेकौ–पु० एक ताल। —मारग–पु० आगे के समानान्तर दाएँ-बाएँ ओर का मार्ग।

आडत–देखो 'आडत'।

आढातियौ–देखो 'आडतियौ'।

आणद–पु० [स०आनन्द] १ हर्ष, खुशी। २ मनोरजन, आमोद-प्रमोद। ३ उत्साह। ४ विष्णु, ईश्वर। ५ 'नेनियाँ नागोर' का एक भेद। ६ एक वर्णिक छद। ७ प्रथम ढगण के भेद का नाम। —उद्‌भवन–पु० वीर्य। —कंद–पु० ईश्वर, विष्णु। –कर, कारी–वि० सुखकर, हर्षप्रद। —घण–पु० ईश्वर। श्रीकृष्ण। श्रीविष्णु। —निध, निधी–पु० ईश्वर। आनन्द का सागर।

आणदणौ–वि० आनन्द देने वाला।

आणदणौ (बौ)–क्रि० आनन्दित होना, हर्षित होना।

आणदित–वि० [स० आनन्दित] हर्षित, प्रसन्न।

आंण–देखो 'आमन'।

आणौ, (बौ)–क्रि० १ आना, आगमन होना। २ उपस्थित होना। ३ जन्मना, अवतरित होना। ४ प्राप्त होना। ५ लौटना। ६ जानना, समझना। ७ किसी कार्य की क्रिया याद होना। ८ सीख लेना।

आतक, (ख, ग)–पु० [स० आतक] १ भय, डर। २ प्रभाव, रौब। ३ तनाव जोश। ४ उपद्रव। ५ वेग। ६ क्रोध, गुस्सा। ७ रोग, पीडा।

आतकरी–वि० भयानक, डरावना, आतकित करने वाला।

आतंगी–पु० यमराज।

आत–देखो 'आथ'।

आतणी–स्त्री० १ पुजारिन। २ देखो 'आथणी'।

आतताई, (तायी)–वि० [स० आततायी] १ अत्याचार करने वाला, सताने वाला। २ क्रूर शासक। ३ हत्यारा। ४ दुष्ट, अत्याचारी। –पु० डाकू।

आतप–पु० [स०] १ धूप, घाम। २ गर्मी, उष्णता। ३ प्रकाश। ४ आच, ताप। ५ ज्वर। –वारण–पु० छत्र, चवर, छाजा।

आतपत्र–पु० [स०] १ छत्र, चवर। २ छतरी।

आतम–पु० [स० आत्मन्] १ आत्मा। २ अधकार, अज्ञान। ३ मन। ४ अहकार। ५ धर्म। ६ स्वभाव। ७ बुद्धि, चित। ८ ससार। ९ परमात्मा। १० ब्रह्म। ११ जीव। [स० आत्मज] १२ सतान। –वि० निजी, अपना। आत्म, स्वकीय। —ग्यान–पु० जीव और ब्रह्म के विषय मे जानकारी, ज्ञान। सत्यज्ञान। —ग्यानी–पु० आत्म ज्ञानी, ऋषि, ज्ञानी। —घात–स्त्री० आत्महत्या। —घातक, घाती–वि० आत्महत्या करने वाला। —ज, जात–पु० पुत्र, लडका। कामदेव। रुधिर। शरीर। —जोणी–पु० ब्रह्मा। विष्णु। शिव। कामदेव। आत्मजात। —त्याग–पु० स्वार्थों का त्याग। —दरस, दरसण–पु० समाधि द्वारा आत्मा व परमात्मा का दर्शन शीशा, दर्पण। —द्रोही–वि० स्वय को कष्ट देने वाला। —भु, भू–वि० स्वत उत्पन्न, स्वयभू। –पु० ब्रह्मा। विष्णु। कामदेव। पुत्र। —राम–पु० परमात्मा। आत्मज्ञान से तृप्त योगी।

जीव। ब्रह्म। तोता। –सर्व० स्वय, खुद। —**विद्या**–स्त्री० ग्रातम या ग्रध्यात्म विद्या। ब्रह्म विद्या। —**समुद्भव**— पु० ब्रह्मा। विष्णु। शिव। कामदेव। —**साक्षी**–पु० जीव द्रष्टा। —**सिद्ध**–वि० विना प्रयास से होने वाला। स्वय सिद्ध। —**सिद्धि**–स्त्री० मुक्ति। —**हत्या**–स्त्री० खुदकुशी।

ग्रामता–स्त्री० ग्रात्मा। —**ग्रानद**–पु० ग्रातम ज्ञान का सुख। —**राम**–पु० खुद, स्वय।

ग्रातमासी–स्त्री० मछली, मीन।

ग्रातमिक–वि० [स० ग्रात्मिक[ग्रात्मा सवधी। मानसिक।

ग्रातमीय–वि० [स० ग्रात्मीय[१ निजी, ग्रपना। २ ग्रतरग, घनिष्ठ। ३ ग्रात्मा का, ग्रात्मा सवधी। –पु० नजदीकी रिश्तेदार।

ग्रातर–देखो 'ग्रातुर'।

ग्रातरणौ (बौ)–क्रि० निकालना, वाहर करना।

ग्रातन्नीबळ–देखो 'ग्रतिवळ'।

ग्रातळौ–वि० (स्त्री० ग्रातळी) दुष्ट, ग्राततायी।

ग्रातस (स्स)–स्त्री० [फा० ग्रातश] १ ग्रग्नि, ग्राग। २ गर्मी उष्णता। ३ क्रोध गुस्सा। ४ सूर्यमुखी। ५ ग्रातिशवाजी। ६ तोप, वन्दूक। —**क**–स्त्री० फिरगरोग। —**खानौ**–पु० ग्रग्नि का भण्डार। ग्रातिशवाजी का भण्डार। –**बाज**–पु० वारूद के पटाखे वनाने वाला। –**बाजी**–स्त्री० वारूद के पटाखे। —**फूल**–पु० सूर्यमुखी का फूल।

ग्रातसी–वि० [फा० ग्रातशी] १ ग्रग्नि सवधी। २ ग्रग्नि-उत्पादक।

ग्राताप–देखो 'ग्रातप'।

ग्रातापना–स्त्री० १ धूप मे वैठकर तपस्या करना, तपना। २ धूप मे बैठना क्रिया। (जैन)

ग्रातापी–स्त्री० [स० ग्रातापिन्] १ चील पक्षी। २ एक ग्रसुर।

ग्रातापूजी, ग्रातापोती (पोथी)–देखो 'ग्राथापूजी'।

ग्राताळ, (ळौ)–वि० [स० उत्ताल] १ शीघ्रगामी, तेज। २ उतावला। ३ ग्रातुर, व्यग्र। ४ तेज मिजाज। ५ भयकर। –क्रि०वि० तेजी से।

ग्रातिथ, (थ्य) ग्रातीथ–पु० [स० ग्रातिथ्य] ग्रतिथि सत्कार, मेहमानदारी।

ग्रातिम, (मि)–देखो 'ग्रातमा'।

ग्रातुर–वि० [स० ग्रातुर] १ व्याकुल, ग्रधीर। २ घवराया हुग्रा, उद्विग्न। ३ उत्कठा युक्त। ४ घायल। ५ उतावला। ६ उत्सुक। ७ दुखी, कातर। ८ रोगी। ९ निर्वल, कमजोर। १० ग्रस्थिर। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी। —**ता**–स्त्री० ग्रधीरता। घवराहट। उत्सुकता। दुख कातरता, वीमारी। कमजोरी। शीघ्रता।

ग्रातुराई–स्त्री० ग्रधीरता।

ग्रात्तोताइयौ, (तायौ)–देखो 'ग्रतोतायौ' (स्त्री० ग्रात्तोतायी)

ग्रात्मज–पु० [स०] १ पुत्र। २ कामदेव। ३ रुधिर।

ग्रात्मिक–वि० [स०] ग्रात्मा सवधी, मानसिक।

ग्राथ–पु० [स० ग्रर्थ] १ दौलत, द्रव्य, धन। २ ग्राशय, मतलव। ३ सुथार, कुम्हार, नाई ग्रादि जातियो को वर्ष भर के कार्य के वदले किसानो द्वारा दिया जाने वाला ग्रनाज।

ग्राथडणौ (बौ)–क्रि० १ युद्ध करना, लडना। २ भिडना, टक्कर लेना। ३ सघर्ष करना। ४ लडखडाना। ५ ग्रधाधुध चलना। ६ उमडना।

ग्राथण–स्त्री० [स० ग्रस्तमन्] १ सध्या, साझ। २ निवास स्थान, घर।

ग्राथणलौ–वि० (स्त्री० ग्राथणली) सध्या सवधी, सायंकालका।

ग्राथणी–स्त्री० १ दूध जमाने का पात्र। २ देखो 'ग्राथण'।

ग्राथध–पु० लगान, कर।

ग्राथमण, (मण, मणी, णौ)–स्त्री० [स० ग्रस्तमन्] १ पश्चिम दिशा। २ सायकाल, सध्या। ३ ग्रस्त होने की क्रिया।

ग्राथमणियौ–वि० १ ग्रस्त होने वाला। २ पश्चिम दिशा का।

ग्राथमणौ (बौ), ग्राथम्मणौ (बौ) ग्राथम्मिणौ (बौ)–क्रि० [स० ग्रस्तमन] १ ग्रस्त होना, तिरोहित होना। २ ग्रवसान होना। ३ समाप्त होना। ४ लोप होना।

ग्राथमाण–देखो 'ग्राथमण'।

ग्राथमाणी–वि० द्रव्य का उपभोग करने वाला।

ग्राथर (रियौ)–स्त्री० [स० ग्रास्तर] १ सर्दी से बचाव के लिये मवेशियो की पीठ पर डाला जाने वाला वस्त्र। २ जीन के नीचे देने का वस्त्र। ३ चादर। ४ विछौना।

ग्राथवण–देखो 'ग्राथमण'।

ग्राथवणौ (बौ)–देखो 'ग्राथमणौ' (बौ)।

ग्राथाण, (णि, णी)–पु० [स० स्थानम्] १ स्थान, जगह। २ नगर, शहर। ३ घर। ४ गढ किला। ५ सिंह की माद। ६ राजधानी। ७ पश्चिम दिशा।

ग्राथापूजी, (पोती) स्त्री० १ जमीन, जायदाद। २ सम्पूर्ण सम्पति। ३ घर का सामान। ४ वैभव, ऐश्वर्य।

ग्राथिभुक–पु० मोती।

ग्राथिमणौ, (बौ)–देखो 'ग्राथमणौ' (बौ)।

ग्राथीडौ-साथीडौ–पु० दोस्त, मित्र ग्रादि।

ग्राथीत–देखो 'ग्रातिथ'।

ग्राधुडणौ (बौ)–देखो 'ग्राथडणौ' (बौ)।

ग्राधुण–१ देखो 'ग्राथूण'। २ देखो 'ग्राथाण'।

ग्राथुस–पु० लोहा।

ग्राथूण, ग्राथूणी–स्त्री० पश्चिम दिशा। —क्रि० वि० पश्चिम की ग्रोर।

आधूणू, (णी)–क्रि० वि० पश्चिम की ओर।
आधू–पु० 'आथ' के बदले कृपक का कार्य करने वाला व्यक्ति।
आधूण–देखो 'आधूणू'।
आयोमण, (मणौ)–वि० प्रयोजन वाला।
आद त–क्रि० वि० [स० आद्यत] प्रारम्भ से अन्त तक। —वि० आदि तथा अन्त।
आद तर–देखो 'आवतर'।
आद–१ देखो 'आद्रा'। २ देखो 'आदि'। ३ देखो 'इत्यादि'।
आदक–वि० [स० आदिक] १ आदि, प्रथम। २ प्रारम्भ का, शुरू का। ३ नितात। —पु० एक प्रकार का रोग। —वादक–अव्य० इत्यादि।
आदकवि (कवी)–देखो 'आदिकवि'।
आवजया–स्त्री० डिंगल गीतों की रचना का एक नियम।
आदजुगाद, (दि, दी)–देखो 'आदिजुगाद'।
आदण–पु० [स० अदहन] दाल, चावल आदि पकाने के लिए गर्म किया जाने वाला पानी।
आवत, (ति)–स्त्री० [अ०] १ स्वभाव, प्रकृति। २ अभ्यास। ३ टेव।
आदतिया आदत्या–पु० [स० आदितेय] देवता।
आददे–क्रि० वि० आदि, इत्यादि।
आदपखणी, (चक्रेस्वरी)–स्त्री० राठौडों की कुल देवी।
आदपख, आदमपख–पु० [स० आदिपक्ष] कृष्ण पक्ष।
आदपुरख, (रस)–देखो 'आदिपुरख' (स)।
आदम–पु० [अ] १ मानव सृष्टि का आदि पुरुष। २ मनु। ३ महादेव। —चस्म–पु० मनुष्य की सी आखो वाला घोडा।
आदमी–पु० [अ०] (स्त्री० आदमण) १ आदम की संतान, मनुष्य, मानव। २ पति। ३ मजदूर।
आदर–पु० [स०] १ सम्मान, इज्जत। २ आस्था, श्रद्धा। ३ सत्कार, शिष्टाचार।
आदरणौ (बौ)–क्रि० १ सम्मान व इज्जत करना। २ सत्कार करना। ३ श्रद्धा रखना। ४ महत्व देना। ५ स्वीकार करना। ६ निश्चय करना, दृढ करना। ७ प्रारम्भ करना।
आदरस–पु० [स० आदर्श] १ दर्पण, शीशा। २ अनुकरणीय कार्य। ३ नमूना।
आदरा (रियौ)–देखो 'आद्रा'।
आदली–स्त्री० [अ० अदल] न्याय, इन्साफ।
आदवराह–देखो 'आदिवराह'।
आदसगत–देखो 'आदियासगत'।
आदान–पु० [स० आदान] ग्रहण, स्वीकार। —प्रदान–पु० परस्पर लेन-देन। वस्तु विनिमय।

आदाव–पु० [अ०] १ नियम, कायदा। २ लिहाज, इज्जत। ३ अभिवादन। —अरज–पु० निवेदन।
आदासीसी–देखो 'आवासीमी'।
आदि–वि० [स०] १ प्रथम, पहला। २ प्रारम्भ का। ३ बिलकुल, नितात ४ मूल अग्र। —पु० १ उत्पत्ति स्थान। २ प्रारम्भ। ३ बुनियाद। ४ मूलकारण ५ ईश्वर। ६ पृथ्वी। —अव्य० इत्यादि। वगैरह।
आदिकवि–पु० [स०] वालमीकि ऋषि जिन्होंने सर्व प्रथम छदोबद्ध काव्य की रचना की थी। २ शुक्राचार्य।
आदिकारण–पु० [स०] मूलकारण, पूर्वनिश्चित बात।
आदिजुगाद (दि)–क्रि० वि० सृष्टि के प्रारम्भ से अत तक।
आदित, (दित्त,दित्य)–पु० [स०आदित्य] १ सूर्य। २ इन्द्रादिक देवता। ३ द्वादश आदित्य। ४ विष्णु का पाचवा अवतार। —पुत्र, सुतु पु० अदिति पुत्र, देवता। सूर्यपुत्र। मग ब्राह्मण। —वार–पु० रविवार।
आदिपक्ख, (ख)–देखो 'आदपख'।
आदिपुरुक्ख, (पुरस)–पु० [स० आदिपुरुष] १ विष्णु, ईश्वर। २ ब्रह्मा।
आदिम–देखो 'आदम'।
आदियासकत, आदियासगत (ती)–स्त्री० [स० आद्यशक्ति] १ दुर्गा, देवी। २ पार्वती।
आदियाळ, आदियौं–देखो 'आधियौ'।
आदिरस–देखो 'आदरस'।
आदिल–वि० [अ०] १ उदार। २ न्यायी।
आदिवराह–पु० [स०] १ विष्णु का वराह अवतार। २ शूकर, सूअर।
आदिविपुळा–स्त्री० आर्या छन्द का एक भेद।
आदिसराध–पु० [स० आदिश्राद्ध] मृत्योपरान्त मृतक के पीछे ग्यारहवें दिन किया जाने वाला श्राद्ध।
आदी–वि०[अ०]१ अभ्यस्त। २ आदत वाला। ३ देखो 'आदि'।
आदीत, आदीता (तौ)–देखो 'आदित'।
आदीस्वर–पु० [स० आदीश्वर] १ जैनियो के प्रथम तीर्थंकर। २ ईश्वर। ३ आदि पुरुष।
आदू–वि०[स० आदि]१ प्रारभका, आदिकालक। २ बुनियादी। —खरा–वि० निर्दोष, स्वच्छ।
आदूणौ–वि० (स्त्री० आदूणी) परम्परागत।
आदूपंथी–पु० 'रूढिवादी'।
आदूपण, (पणौ)–पु० गुरूआगत, आदि।
आदेस (सि)–पु० [स० आदेश] १ आज्ञा, हुक्म। २ उपदेश। ३ नमस्कार, प्रणाम। ४ निर्देश। ५ ग्रहो का फल। ६ अक्षर परिवर्तन। (व्याकरण)

आदेसणौ, (बौ)–क्रि० १ आज्ञा देना । २ अभिवादन करना ।

आदोड़ी–देखो 'आधोडी' ।

आदोत–देखो 'आदित' ।

आदोफर–देखो 'अदफर' ।

आदौ–पु० [स० अद्रक] १ कच्ची सोठ, अदरक । २ देखो 'आधौ' ।

आद्र–वि० [स० आर्द्र] १ गीला, नम । २ हरा ।
—**क**–पु० भय, आतक ।

आद्रकणौ, (बौ)–क्रि० भयभीत होना, डरना ।

आद्रा–स्त्री० [स० आर्द्रा] सताईस नक्षत्रो मे से एक, इस नक्षत्र मे होने का सूर्य का समय ।

आधतर,(तरि,धर)–वि० १ आकाश के मध्य का । २ बीच का । ३ आधा, अर्द्ध । –क्रि०वि० १ बीच मे, मध्य मे । २ ऊचाई पर । ३ आकाश मे । –पु० १ आकाश । २ सुमेरु पर्वत ।

आध–पु० [स० अर्द्ध] १ ठीक आधा हिस्सा, भाग या अश । २ आधी सम्पत्ति या आय का हक । [स० आधि] ३ चिंता, व्यथा । –वि० आधा । —**ख**–पु० प्रभुत्व, अधिकार । —**खड़**–पु० अवेड । —**पति, पती**–पु० अधिपति, राजा । —**रत्त, रत्ति**–स्त्री० अर्धरात्रि ।

आधण–देखो 'आदण' ।

आधम–देखो 'अधम' ।

आधमी–स्त्री० १ उपज का आधा भाग कृपक व आधा मालिक को, इस शर्त पर की जाने वाली खेती । २ आधे मूल्य पर व पालने के लिए सौंपा जाने वाला पशु ।

आधरै–क्रि०वि० धीरे, आहिस्ता ।

आधान पु० [स० आधान] १ गर्भाधान, गर्भ । २ स्थापना, रखाव । ३ गिरवी, रेहन । —**वती**–स्त्री० गर्भवती ।

आधाईक–वि० आधा, अर्द्ध । आधे के लगभग ।

आधाकम्म, आधाकरम–पु० भिक्षाचार सवधी ४७ दोषो मे से प्रथम दोष जो गृहस्थ की तरफ से लगता है ।

आधाकरमी–वि० आधाकरम दोष युक्त ।

आधार–पु० [स०] १ आश्रय, अवलव । २ मूलाधार । ३ बुनियाद । ४ उपाय, तरकीव । ५ सहारा, मदद । ६ वाध । ७ नहर । ८ योग के अनुसार मूलाधार । ९ अधिकरण कारक । –वि० आश्रय दाता ।

आधारणौ (बौ)–क्रि० १ सहारा व आश्रय देना । २ उठाना । ३ लगाना । ४ सम्हालना । ५ सहारा देकर रखना । ६ धनुप की प्रत्यचा चढाना ।

आधारि, (री)–वि० सहारे पर रहने वाला । आश्रित ।

आधासी, आधासीसी–स्त्री० [स० अर्द्ध + शीर्ष] आधे सिर की पीडा, अधकपाली । सूर्यावृत्त ।

आधि–स्त्री० [स०] १ मानसिक पीडा । २ विपत्ति, वाधा । ३ चिन्ता, शोक ।

आधि-पत्य–पु० अधिकार, स्वामित्व ।

आधिओ, (यौ)–पु० आधे अश का भागीदार ।

आधिदेव, (दैव, दैविक)–वि० [स० आधिदैविक] १ देवता की प्रेरणा से होने वाला । २ प्रारब्ध से होने वाला । ३ प्रेत वाधा से उत्पन्न । ४ प्राकृतिक । ५ स्वभाव वल कृत । –स्त्री० उक्त सभी कारणो से उत्पन्न विपत्ति ।

आधिभूतक, (भूतग, भौतिक)–पु० [स० आधिभौतिक] भौतिक कारणो से उत्पन्न सकट ।

आधियाळ, आधियाळी, आधियाळौ–१ आधा हिस्सा या भाग । २ देखो 'आधिओ' ।

आधी–वि० [स० अर्द्ध] १ अपूर्ण । २ देखो 'आधौ' । –स्त्री० १ अर्ध रात्रि । २ देखो 'आधि' ।

आधीन–देखो 'अधीन' ।

आधीनता, आधीनी–देखो 'अधीनता' ।

आधीपौ–पु० १ उपज का आधा भाग । २ आधा अंश । ३ आधे भाग की मिल्कियत ।

आधीरात–स्त्री० अर्द्ध रात्रि ।

आधुनिक–वि० [स०] वर्तमान, नवीन ।

आधु–वि० आधे हिस्से के लिए कार्य करने वाला ।

आधुआध–देखो 'आधौआध' ।

आधूअऊखै–क्रि०वि० आधी कीमत मे ।

आधेटौ–पु० दूरी या लवाई का मध्य भाग । मध्य स्थान ।

आधेपै–क्रि० वि० आधे हिस्से की वुनियाद पर ।

आधेय–वि० किसी आधार पर टिकी हुई ।

आधोआध, (आधि)–देखो 'आधौआध' ।

आधोक, आधोकेक–वि० आधे के लगभग ।

आधोडी–स्त्री० मृत गाय या भैंस का साफ किया हुआ आधा चमडा ।

आधोफर, (फरई, फरौ)–देखो 'अदफर' ।

आधोफेर–पु० १ छज्जा । २ ढालू, जमीन । ३ उपत्यिका । –क्रि० वि० पृथ्वी-आकाश के वीच वहुत ऊचाई पर ।

आधोरण–पु० [स०] महावत ।

आधोळी–स्त्री० १ लकडी की गोलाई देखने का उपकरण । २ देखो 'आधोडी' ।

आधोसलै–क्रि० वि० आर-पार ।

आधौ–वि० [स० अर्द्ध] (स्त्री० आधी) १ आधा, अर्द्ध । २ अपूर्ण । –पु० आधा भाग या हिस्सा । —**आध, गाधि**–क्रि० वि० वरावर दो भागो मे । —**मनौ**–वि० दिल टूटा हुआ, कायर, डरपोक

आध्मान, आध्यमान–पु० [स० अध्यमान] एक वात रोग, अफरा ।

आध्यात्मिक–वि० [स०] १ आतमा सवधी । २ ब्रह्म और जीव सवधी ।

आनद, (दो)–पु० [स० आनद] १ हर्ष, खुशी, प्रसन्नता। २ सुख। ३ मस्ती। ४ उत्साह। ५ फलित ज्योतिष का एक योग। —**कद**–पु० ईश्वर। श्रीकृष्ण। —**दत, दाता**–वि० आनन्ददायक। –स्त्री० प्रसन्नता। —**बधाई**–स्त्री० मागलिक उत्सव। –**भैरव**–पु० एक रसौषधि। —**भैरवी**–स्त्री० एक रागिनी। —**मदिरासण**–पु० चौरासी आसनों में से एक।

आप–सर्व० [स० आत्मन, अप्] १ स्वय खुद। २ तुम और वह का आदर सूचक। –पु० जल, पानी। –**करमी**–वि० भाग्यशाली, स्वकर्मी। —**गरजी**–वि० स्वार्थी। —**घात**–पु० आत्म हत्या। —**घाती**–वि० आत्म हत्यारा। —**च**–स्त्री० आत्म हत्या। —**चक**–स्त्री० घबराहट, बेचैनी, भय।

आपगा–स्त्री० [स०] नदी, सरिता।

आपडणौ (बौ)–क्रि० १ पकड़ना। २ दौड़कर पहुंचना।

आपडाणौ (बौ)–प्रे० क्रि० पकड़ाना।

आपण–स्त्री० [स०] १ दूकान, हाट। २ बाजार। –पु० [स० अर्पण] ३ श्रद्धा पूर्वक दान। –सर्व० [स० आत्मन्] अपना, अपने, अपन।

आपणउ–सर्व० अपना।

आपणडौ–वि० (स्त्री० आपणडी) अपने वाला।

आपणपू (पौ)–पु० अपनत्व, ममत्व।

आपणा (णे)–सर्व० अपने, अपना।

आपणाणौ (बौ), आपणावणौ (बौ)–क्रि० १ अपनाना, स्वीकार करना। २ अधिकार में करना।

आपणियौ–वि० अर्पण करने वाला।

आपणौ–सर्व (स्त्री० आपणि, आपणी) अपना, हमारा।

आपणौ (बौ)–क्रि० १ देना। २ अर्पण करना, भेंट करना। ३ हुक्म देना। ४ धारण करना।

आपत–क्रि० वि० आपस मे, परस्पर। –स्त्री० [स० आपत्ति] सकट, विपत्ति, कष्ट। —**हार, हारी** वि०–विपत्ति व सकट का हरण करने वाला।

आपताप, (ताव)–देखो 'आफताव'।

आपती–सर्व०-अपन, स्वय। आप।

आपत्ति–स्त्री० [स०] १ विपत्ति, सकट। २ दुःख, क्लेश। ३ विघ्न, बाधा। ४ दोषारोपण। ५ ऐतराज, उज्र। ६ दुर्गति, दुर्दशा कष्ट काल।

आपयी-आप–सर्व० अपने-आप, स्वय।

आपद–देखो 'आपत्ति'।

आपदत्त–पु० दत्तात्रेय मुनि।

आपदथित–वि० [स० आपादग्रस्त] विपत्ति में फसा हुआ।

आपदा–स्त्री० आफत। अड़चन।

आपद्धरम–पु० आपात्कालीन धर्म।

आपनामी–वि० [स० आत्मन्, नाम्न] अपने नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, लब्ध प्रतिष्ठित।

आपन्न–वि० [स०] १ प्राप्त, उत्पन्न। २ गिरा हुआ। ३ आपाद् ग्रस्त।

आपपर, आपबीच–क्रि०वि० आपस मे, परस्पर।

आपमणौ–वि० सतर्क, सचेत।

आपमल (लौ)–वि० [स० आत्ममल्ल] १ अपनी इच्छा से कार्य करने वाला। २ स्वतत्र। ३ योद्धा, वीर।

आपमाहे–क्रि०वि० परस्पर, आपस में।

आपमुरादी, (दो); आपरगी–वि० १ स्वेच्छाचारी। २ स्वतत्र, आजाद। ३ अपने हाल में मस्त।

आपरूप–वि० मूर्तिमान, साक्षात्।

आपरोळ–स्त्री० सहज स्वभाव, मस्ती।

आपस–पु० १ परस्पर। २ निज सबध, नाता। ३ भाई चारा। ४ साथ। ५ अत्यधिक श्रम। ६ गुस्सा।

आपसवारथी, आपस्वारथी–वि० अपनी स्वार्थ सिद्धि में तत्पर।

आपहनामी–देखो 'आपनामी'।

आपहमलौ–देखो 'आपमलौ'।

आपां–सर्व० हम।

आपाण–पु० [स० आ+प्राण] १ शक्ति, बल, साहस। २ अपनापन। –वि० उन्मत्त, मस्त।

आपाणी–वि० बलवान, शक्तिशाली, पराक्रमी। –सर्व० अपनी।

आपांणौ–सर्व० (स्त्री० आपाणी) अपना।

आपांन–वि० १ उन्मत्त, मस्त। २ देखो 'अपान'।

आपाउपेहर, (रो)–वि० १ अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य करने वाला। २ जोशीला। ३ सवेग, तीव्र।

आपापयी–वि० १ कुमार्गी। २ स्वार्थी। ३ मनमानी करने वाला।

आपापणौ–पु० अपनत्व।

आपावळी–वि० शक्तिशाली, अपार बली।

आपायत, (तो, तौ)–वि० [स० आप्यायित] १ बलवान, शक्तिशाली। २ साहसी। ३ वीर बहादुर। ४ असयत, असयमी। ५ स्वेच्छाचारी। ६ उद्दड। ७ अदम्य। ८ दुष्ट।

आपाळणौ, (बौ)–क्रि० १ टकराना। २ देखो 'आफळणौ'।

आपित–स्त्री० [स० अर्पित] अग्नि, आग।

आपुपा–वि० अपने आप, स्वत कार्य कराने वाला।

आपूआप, आपे, आपेज, आपै–सर्व० अपने आप, स्वत।

आपैटणकी–वि० (स्त्री० आपैटणकी) बलवान, वीर।

आपोआप, आपोपै–क्रि०वि० अपने आप, स्वत।

आपोपरि–क्रि०वि० परस्पर, आपस में।

आपो–पु० १ स्वत्व । २ अस्तित्व । ३ अपना असली रूप । ४ अपनी सत्ता । ५ आतमा । ६ ब्रह्म । ७ भरोसा, विश्वास । ८ अहकार, गर्व । ९ जोश । १० होश-हवास । ११ शक्तिबल । १२ अवतार । **—आप**–सर्व० अपने आप स्वत ।

आप्त–वि० [स०] १ प्राप्त । २ किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता, कुशल । ३ विश्वस्त । ४ पूर्ण तत्वज्ञ का कहा हुआ प्रामाणिक । –पु० ऋषि ।

आफत–स्त्री० [अ०] १ विपत्ति, सकट । २ परेशानी, उलझन । ३ दुख, कष्ट । ४ बाधा, रुकावट ।

आफताब–पु० [फा०] सूर्य ।

आफताबगीरी–स्त्री० एक प्रकार का राज्य छत्र, सूरजमुखी ।

आफताबी–वि० १ सूर्य सबधी । २ कातिमान, चमकीला । –पु० पान के आकार का पखा जिस पर सूर्य का चिह्न हो ।

आफरणौ, (बौ)–क्रि० १ वायु प्रकोप से पेट फूलना । आफरा आना । २ सूजन आना ।

आफरीबाद (वाद)–पु० धन्यवाद, साधुवाद ।

आफरो–पु० [सं० आस्फार] १ पेट का वायु प्रकोप, आफा, गैस । २ अजीर्ण ।

आफळ–स्त्री० १ प्रयत्न, कोशिश । २ युक्ति उपाय ।

आफळणौ, (बौ)–क्रि० [स० आस्फारणम्] १ श्रम करना, परिश्रम करना । २ प्रयत्न करना, प्रयास करना । ३ चेष्टा करना । ४ तडफना । ५ हैरान होना, तग होना । ६ टक्कर लेना, भिडना । ७ लडना । ८ तेजी से चलाना ।

आफू–पु० अफीम, अमल ।

आफूआफे, आफेई, आफे–क्रि०वि० अपने-आप, स्वत ।

आफ्रीबाद–देखो 'आफरीवाद' ।

आबद, (वद)–स्त्री० आमदनी, आय ।

आब–पु० [फा०] १ पानी, जल । २ चमक आभा, कान्ति । ३ शोभा, रौनक, छवि । ४ प्रतिष्ठा, मान । ५ तलवार की चमक का पानी । ६ शराब । **-कार**-पु० शराब का व्यापारी, कलाल । **—कारी**–स्त्री० शराब का व्यवसाय । इस व्यवसाय पर निगरानी रखने वाला विभाग । **—खोरौ**–पु० जल पात्र । **—दार**–वि० चमकीला । कान्तिमान । –पु० तोपो की देखभाल करने वाला । पानी पिलाने वाला नौकर ।

आबडणौ (बौ)–क्रि० १ परिश्रम करना । २ युद्ध करना । ३ टक्कर लेना ।

आबडछेट (छोट)–देखो 'आभडछेट' ।

आबदारखांनौ–पु० १ पेयजल कक्ष या स्थान । २ महाराजा या राजा के पेयजल के प्रबध का विभाग ।

आबध–देखो 'आयुध' ।

आबनूस–पु० [फा०] एक प्रकार का जगली वृक्ष ।

आबनूसी–वि० १ काला । २ आबनूस की लकडी का ।

आबपासी–स्त्री० सिंचाई ।

आबरत–देखो 'आवरत' ।

आबरी–वि० प्रतिष्ठित ।

आबरु (रू)–स्त्री० [फा०] इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । **—दार**–वि० इज्जतदार, प्रतिष्ठित ।

आबळ–स्त्री० [स० बल] शक्ति, बल, सामर्थ्य । **—बायरौ**–वि० अशक्त, कमजोर ।

आबहवा–स्त्री० [फा०] जलवायु, मौसम ।

आबाद–वि० [फा०] १ बसा हुआ । २ प्रसन्न, खुश । ३ उपजाऊ ।

आबादी–स्त्री० [फा०] १ बस्ती, जन-स्थान । ३ जनसख्या ।

आबी–वि०[फा०] १ पेयजल सबधी । २ हल्के रग का, फीका । –स्त्री० १ चमक-दमक । २ तलवार का पानी ।

आबू, आबूडौ–पु० [स० अर्बुद] १ अरावली पहाड का एक हिस्सा अर्बुदाचल । २ इसके समीप बसा एक नगर ।

आबूव–पु० १ आबू पहाड । २ इस प्रदेश के निवासी ।

आबौ–देखो 'आभौ' ।

आभ–१ देखो 'आभा' । २ देखो 'आव' । ३ देखो 'आभौ' ।

आभअधारी–स्त्री०स्त्रियो की कचुकी बनाने का बहुमूल्य कपडा ।

आभइयौ–देखो 'आभौ' ।

आभड,(चेट, छेट, छौत)–पु० १ अछूतोस्पर्श का दोष, अशौच । २ स्पर्श ।

आभड़णौ, (बौ)–क्रि० १ छूना, स्पर्श करना । २ व्याप्त होना । ३ लिपटना, आलिंगन करना । ४ भिडना, टक्कर लेना । ५ अशौच लगना ।

आभमडल–पु० आकाश मडल ।

आभय -पु०[सं० अभ्रम्] १ बादल, मेघ । २ आकाश, आसमान ।

आभरण, आभूरण, अभूसण (णौ)–पु० [स० आभरणम्] आभूषण, गहना ।

आभा–स्त्री० [स०] १ चमक, दमक, कान्ति । २ रूप, सौंदर्य । ३ झलक, छवि । ४ ज्योति, प्रकाश । ५ शोभा । ६ प्रतिबिंब । ७ बादल मेघ ।

आभानरा–स्त्री० तलवार ।

आभार–पु० [स०] एहसान, उपकार । धन्यवाद ।

आभारी–वि० [स०] एहसान मद, उपकार मानने वाला । कृतज्ञ ।

आभास–पु० [स० आभास] १ मालुम, पता । २ ज्ञान, जानकारी । ३ सकेत । ४ आभा, चमक । ५ भावना । ६ समानता सादृश्य । ७ तात्पर्य, अभिप्राय । ८ झलक ।

आभि–देखो 'आभी' ।

आभीर–पु० [स०] १ अहीर, ग्वाला । २ एक प्रकार का राग । ३ एक देश विशेष । ४ प्रत्येक चरण मे ११ मात्रा व अत मे जगण का एक छन्द । —नट–पु० एक सकर राग ।

आभीरी–स्त्री० भारत की एक प्राचीन् भाषा ।

आभील–पु० [स० आभीलम्] दुख, क्लेश, कष्ट । –वि० भयानक, भयप्रद ।

आभुखण, आभूखण, (सण)–पु० [स० आभूषण] १ गहना, जेवर, आभूषण । २ वेलियो साणोर का एक भेद ।

आभूखत–वि०[स० आभूपित] १ अलकृत, सजा हुआ, आभूपणो से युक्त । २ विराजमान ।

आभोग–पु० [स० आभोग] १ पूर्ण लक्षण । २ किसी पद्य के बीच कवि के नाम का उल्लेख । ३ भोगने की क्रिया या भाव । ४ ध्रुपद का चौथा भाग जिसमे वाग्गेयकार का नाम होना है । ५ विस्तार, घेरा,परिधि । ६ भोग विलास ।

आभ्रौ–पु० [स० अभ्र] आकाश, आसमान, नभ, गगन ।

आभ्रण–देखो 'आभरण' ।

आमत्रण–पु० निमत्रण, बुलावा । आह्वान ।

आमियाजी-कितरणौ-पाणी–पु० एक देशी खेल ।

आमूझणौ (वौ)–देखो 'अमूझणौ' ।

आयंदा–देखो 'आइदा' ।

आयविल–देखो 'आविल' ।

आय–स्त्री० [स०] १ आमदनी, धनागम । २ प्राप्ति, उपलब्धि । ३ लाभ नफा । ४ आगमन । [स० आयु] ५ आयु । उम्र । —कर–पु० आमदनी पर लगने वाला कर, टेक्स ।

आयटण (ठण)–देखो 'आइठण' ।

आयण–वि० [स० अज्ञान] मूर्ख, अज्ञानी । –पु० अज्ञान ।

आयणौ–वि०(स्त्री० आयणी) १ आने वाला । २ देखो 'अहीणी' ।

आयत, (ति)–वि० [स० आयत, आयत] १ विस्तृत । २ लबा-चौडा, विशाल । ३ लबा । ४ जिसकी सीमा हो, छोटा । ५ रुद्ध, मुडा हुआ । –पु० [स०] १ समानान्तर चतुर्भुज क्षेत्र । –स्त्री० [अ०] २ आवेष्टन, घेरा, परिधि । ३ कुरान का वाक्य । ४ शब्दो के पीछे लगाने वाला एक प्रत्यय । ५ देखो 'आयत्त'

आयत्त (तर)–वि०[म०] १ अवलवित, आश्रित । २ पराधीन । ३ विचारणीय । ४ नम्र ।

आयत्तन–पु० स्थान, जगह । (जैन)

आयबळ–देखो 'आयुबळ' ।

आयंविल–देखो 'आविल', (जैन)

आयवौ–पु० एक प्रकार का घास ।

आयरिय–पु० [स० आचार्य] आचार्य, गुरु ।

आयरिस–पु० [स० आदर्श] दर्पण, आईना, काच ।

आयल–स्त्री० [स० आर्या] १ पुश्चली स्त्री । २ आवड या करनी देवी का एक नाम । ३ देवी, दुर्गा । ४ एक लोक गीत । ५ मां, माता ।

आयलड–देखो 'आगळीझल' ।

आयव–पु० शब्द, ध्वनि ।

आयवात–पु० एक प्रकार का रोग ।

आयस, (सी, सु)–पु० [स०आयस, आयसम्] १ लोहा । २ लोहे का कवच । ३ लोहे की वस्तु । ४ हथियार, शस्त्र । ५ नाथ सम्प्रदाय के फकीरो की पदवी । ६ सिद्ध, तपस्वी । ७ जोगियो का एक भेद । ८ आज्ञा, आदेश ।

आया–देखो, 'आयु' ।

आयात–पु० [स०] विदेशी सामान मगाने की क्रिया, आगम ।

आयास, (सि, सी)–वि० काला, श्याम –पु० आकाश, गगन ।

आयी–देखो 'आई' ।

आयु–स्त्री० [स०] १ उम्र, वय । २ जीवन, जिंदगी ।

आयुख–स्त्री० [स० आयुप] उम्र, आयु ।

आयुत–देखो 'आयत' ।

आयुद्ध, आयुध–पु० [स० आयुध] १ अस्त्र-शस्त्र, हथियार । २ ढाल । ३ उपस्थ । ४ लिंग । ५ पाच मात्रा का एक नाम ।

आयुधन–देखो 'आयोधन' ।

आयुबळ–पु० आयु, उम्र, आयुबल ।

आयुरवेद, (वेद)–पु० [स० आयुर्वेद] १ चिकित्सा शास्त्र । २ धन्वन्तरी प्रणीत आयुर्विद्या । ३ अथर्ववेद का उपवेद ।

आयुस–स्त्री० [स० आयुस] १ उम्र, आयु [स० आदेश] २ आज्ञा, आदेश ।

आयेदिन–क्रि० वि० प्रति दिन, नित्य, हमेशा ।

आयोधन, आयोधन–पु० [स० आयोधनं] सग्राम, रण ।

आरक–वि० समान, सदृश ।

आरग-पुर–पु० [स०] मकान का ऊपरी भाग, छत ।

आरब-राय–पु० राठोडो की कुलदेवी ।

आरभ–पु० [स०] १ प्रारभ, शुरूआत । २ आदि । ३ प्राथमिक अवस्था । ४ भूमिका । ५ बडा कार्य । ६ उपद्रव । ७ युद्ध । ८ उत्सव, जलसा । ९ तैयारी । १० वैभव । ११ शीघ्रता, तेजी । १२ चेष्टा, प्रयत्न । १३ वध, हनन । —राम–पु०–श्रीराम की तरह कार्य करने वाला व्यक्ति ।

आरंभणो, (बो)–क्रि० १ प्रारभ करना, शुरू करना। २ युद्ध करना, चढ़ाई करना। ३ युद्धार्थ तैयार होना।

आर–पु० [स०] १ अस्वच्छ या अशुद्ध लोहा। २ किनारा, कोना। ३ पहिए का आरा। ४ काटा। ५ अकुश। ६ पतली कील। ७ नुकीली वस्तु। ८ हरताल। ९ शनि। १० तावा। ११ पीतल। १२ विच्छु या मधुमक्खी का डक। १३ मगल ग्रह। १४ हठ, जिद्द। १५ चमडा सीने का सूआ। १६ देखो 'आस्य'। (५)

आरकगिरी–पु० [स० आरक गिरि] सुमेरु पर्वत।

आरकूट–पु० [स०] पीतल।

आरक्ख–देखो, 'आरख'

आरक्त–वि० [स०] लाल। —**ता**–स्त्री०–लालिमा।

आरक्षक–पु०[स०]१ गज-कुभ के नीचे का भाग। २ चौकीदार, सतरी। ३ सुरक्षा करने वाला। ४ देहाती न्यायाधीश। ५ पुलिस।

आरख, आरखड़–वि० समान, तुल्य। –स्त्री० १ दशा अवस्था। २ चिह्न, निशान। ३ गुण। ४ शक्ति, बल। ५ जोश। ६ परीक्षा। ७ प्रभाव।

आरखो–वि० (स्त्री० आरखी) समान, सदृश।

आरगत (त्त)–देखो 'आरक्त'।

आरगबध–पु० अमलतास।

आरड़णो, (बो)–देखो 'अरडाणो'।

आरज–पु० [स०आर्य] (स्त्री० आरजिया) १ श्रेष्ठ पुरुष, उच्च कुलीन। २ सर्वप्रथम सभ्यता प्राप्त करने वाली मानव-जाति। ३ हिन्दू तथा ईरानियो का नाम। ४ ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण। ५ गुरु, शिक्षक। ६ मित्र। –वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ वडा। ३ प्रतिष्ठित। —**धरम**–पु० हिन्दू-धर्म, आर्य-धर्म। —**भोम**–स्त्री० आर्य भूमि, भारतवर्ष। —**वस**–पु० आर्यवश, आर्य। —**वरत**–पु० उत्तरी भारत का प्राचीन नाम।

आरजिया–स्त्री० [स० आर्या] जैन साध्वी।

आरजू–स्त्री० [फा०] १ अनुनय, विनय, विनती। २ इच्छा, वाछा।

आरट (ट्ट, ट्टी)–स्त्री० सेना, फौज।

आरण–पु० [स०आरणि, अरण्य] १ युद्ध, समर। २ लुहार की भट्टी। ३ तलवार। ४ प्रेत मडली। ५ वन, जगल,अरण्य। ६ ऐरन। ७ अग्नि, आग। ८ देखो 'आरणो'।

आरणियो-छाणो–पु० सूखा हुआ गोबर, कडा।

आरणो–पु० [स० आरण्य] १ कडा। २ जगली भैंसा। –वि० जगल सवधी।

आरण्य–वि० [स०] १ जगल का, वन सवधी, जगली। २ देखो 'अरण्य'। —**रुदन**–पु० कानन-रुदन।

आरत–पु० [स० आर्त] १ दुख, पीडा, कष्ट। २ करुणा जनक पुकार। ३ परिश्रम। ४ क्रोध। ५ आपदा, विपत्ति। ६ देखो, 'आरती'। –वि० १ दुखी, व्याकुल। २ दीन। ३ अस्वस्थ, पीडित। —**नाद**–पु० वेदना भरा शब्द।

आरतडी–देखो 'आरती'।

आरतड़ो–देखो 'आरत'।

आरति, (ती)–स्त्री० [स०आरात्रिक] १ किसी मूर्ति या तस्वीर की धूप-दीप के साथ की जाने वाली पूजा। २ किसी पात्र मे धूप-दीप रख कर, घंटा-ध्वनि व स्तोत्र गायन के साथ घुमाने की क्रिया। ३ धूप-दीप करने का पात्र। ४ आरती का स्तोत्र या कविता। ५ अभिलाषा, इच्छा। ६ दुख। ७ आर्त वाणी। ८ देखो 'आरत'। ९ तोरण द्वार पर दूल्हे की जाने वाली नीराजन।

आरतो, आरत्त–देखो 'आरत'।

आरत्तव–पु० [स० आर्त्तव] स्त्रियो का रज। –वि० ऋतु सबधी।

आरत्ती–देखो, 'आरती'।

आरद्रा–देखो 'आद्रा'।

आरदास–देखो 'अरदास'।

आरद्र–वि० [स० आर्द्र] गीला, नम। —**क**–स्त्री० अदरक। —**ता**–स्त्री० गीलापन, नमी।

आरद्रा–देखो 'आद्रा'।

आरनौ–पु० १ चादी साफ करने का राख का पात्र। २ देखो 'आरणो'।

आरपार–क्रि० वि० १ एक छोर से दूसरे छोर तक। २ सतह को चीरते हुऐ पार। ३ एक तल से दूसरे तल तक। —वि० सीधा। —पु० दोनो किनारे।

आरब–पु० [स०आरव] १ शब्द, आवाज। २ आहट। ३ तोप। ४ तोप रखने की गाडी। ५ मुसलमान। ६ युद्ध। ७ एक देश का नाम। –वि० भयकर, कष्टजनक।

आरबळ–पु० [स० आयु + बल] १ शक्ति, बल। २ आयु, उम्र। –वि० अरब देश का।

आरबी (य)–पु० १ घोडा, अश्व। २ अरब देश का घोडा। ३ एक यवन जाति। ४ अरबी भाषा। ५ कुरान शरीफ। ६ युद्ध का वाद्य। –वि० अरब सबधी।

आरबौ–पु० १ युद्ध सामग्री। २ अस्त्र-शस्त्र। ३ [illegible]। ४ छोटी तोप। ५ तोपो का समूह।

आरब्ब–देखो 'आरब'।

आरब्बी–देखो 'आरबी'।

आरभट–पु० एक म्लेच्छ जाति।

ारयामत–पु० आर्य समाज की विचारधारा।

ारय्या–स्त्री० [स० आर्य्या] १ एक प्रकार का अर्द्ध मात्रिक छन्द। २ जैन साध्वी। —गीत–पु० आर्य्या छद का एक भेद। —वरत–पु० आर्यावर्त्त।

ारव–देखो 'आरव'।

ारवार–पु० [स०] भौम या मगलवार।

ारस–पु० [स० आर्ष, आर्षम्, आर्ष] ऋषि प्रणीत ग्रथ। –वि० लाल, रक्ताभ।

ारसि,(सी)–स्त्री० १ शीशा, दर्पण। २ शीशा जडा आभूषण। ३ स्त्रियों के हाथ का आभूषण।

आरहट–पु० १ युद्ध, समर। २ तोप। ३ तोप चक्र। ४ शत्रु, दुश्मन। ५ सेना।

आराक–पु० निशान, चिह्न, सकेत।

आराण, (णि, णी, णौ), आरान–पु० [स० अर्णव] १ युद्ध भूमि, रणागण। २ युद्ध, समर। ३ सागर, समुद्र। ४ सूर्य। ५ श्मशान। ६ आगन। –वि० [स० अरण्य] १ जगल का। २ शून्य निर्जन।

आराम–पु० [स० आराम] १ उपवन, वाटिका। २ मकान, निवास स्थान। [फा०] ३ चैन, सुख। ४ विश्राम, शाति। ५ चगापन, स्वस्थता। —कुरसी–स्त्री० एक प्रकार की लम्बी कुरसी जिस पर लेटा जा सकता। —खोर– –वि० आराम तलब आराम करने वाला। —तळब–वि० सुख की इच्छा रखने वाला। सुस्त, आलसी।

आरा–पु० भोजन (जैन)

आराडौ–देखो 'आराहडौ'।

आरात–क्रि०वि०, [स० आरात्] १ निकट, पास, समीप। २ दूर फासले पर।

आराति–पु० [स० आराति] शत्रु, दुश्मन।

आराध, (ण)–देखो 'आराधना'।

आराधक–वि० [स०] आराधना करने वाला।

आराधणौ, (बौ)–क्रि० १ प्रार्थना करना, स्तुति करना। २ पूजा करना। ३ रक्षा करना। ४ वश मे करना, अधीन करना। ५ ध्यान देना। ६ प्रसन्न करना।

आराधना–स्त्री० [स०] १ प्रार्थना, स्तुति। २ सेवा, पूजा। ३ पुकार, फरियाद।

आराबा–स्त्री० तोप।

आराबौ–पु० तोपें ले जाने का शकट।

आरालिक–पु० [स० आरालिक] रसोईदार।

आरावौ–पु० १ गोला बारुद। २ देखो 'आरुब'। ३ देखो 'आरौ'।

आरास–स्त्री० १ सजावट। २ देखो 'आरसी'।

आराहडौ–वि० [स० आराहडी] शक्तिशाली, बलवान।

आराहणा–देखो 'आराधना'।

आराहणौ, (बौ), आराहिणौ (बौ)–देखो 'आराधणौ'।

आरि–स्त्री० १ एक प्रकार की चिडिया। २ झिल्ली। ३ देखो 'आरी'।

आरिख,(खि, खे)–वि० समान, बराबर, सदृश। –पु० १ निशान, चिह्न, सकेत। २ रक्षा-स्थान।

आरिज–देखो 'आरज'।

आरिजधर–पु० आर्यावर्त्त, भारतवर्ष।

आरितवत, (य)–वि० १ दुखी, पीडित। २ कातर। ३ अस्वस्थ।

आरियण–देखो 'आरीयण'।

आरिया–स्त्री० एक प्रकार की ककडी।

आरियापथ–पु० आर्य समाज।

आरियामत–पु० आर्य समाज की विचारधारा।

आरिस्ट–देखो 'अरिम्ट'।

आरी–स्त्री० [स० आरा] १ लकडी चीरने का उपकरण। २ छोटा आरा। ३ छोटी करोती। ४ देखो 'गेंडुरी'। ५ देखो 'आर'। ६ देखो 'आरि'। —कारी–स्त्री० कार्य। व्यवस्था। ढग। उपाय।

आरीख, (खं)–देखो 'आरिख'।

आरीयण–पु० [स० आर्यजन] १ आर्यस्थान, भारत। २ आर्यजन, हिन्दू। [स० अरिजन] ३ शत्रु, दुश्मन।

आरीस, (उ)–देखो 'आरसि'।

आरूड, आरूढ–वि० [सं० आरूढ] १ चढा हुआ, सवार। २ दृढ, स्थिर। ३ सन्नद्ध, तत्पर। —हस–पु० ब्रह्मा। –स्त्री० सरस्वती।

आरूढणौ, (बौ) आरूहणौ (बौ), आरूहिणौ, (बौ)–क्रि० १ सवार होना, सवारी करना, चढाई करना। २ आक्रमण करना।

आरे–अव्य० [स० उररीकृत] १ स्वीकार, मजूर। –पु० १ तट, किनारा। २ अधिकार, वश।

आरेख–देखो 'आरिख'।

आरेटौ, (ठौ)–देखो 'अरेठौ'।

आरेण–देखो 'आराण'।

आरै–देखो 'आरे'।

आरैल–पु० एक प्रकार का मोटे दाने का अनाज।

आरोगण–पु० १ भोजन करने या खाने की क्रिया। २ आहार, भोजन।

आरोगणौ–देखो 'अरोगणौ'। (स्त्री० आरोगणी)।

आरोगणौ (बौ)–देखो 'अरोगणौ' (बौ)।

आरोगाणौ, (बौ)–देखो 'अरोगाणौ' (बौ)।

आरोगी–स्त्री० चिता।

आरोगीदन–स्त्री० [फा० आरिगीदना] उद्गार, डकार ।

आरोड, आरोडी, आरोडो–वि० बलवान, वीर ।

आरोडणो (बो)–क्रि० रोकना, छेकना ।

आरोडी–पु० केसर कस्तूरी युक्त अफीम ।

आरोध–१ देखो 'अवरोध' । २ देखो 'आयुध' ।

आरोधणो (बो)–क्रि० १ रोकना । २ छेकना । ३ आड देना ।

आरोप–पु० [स०] १ कलक, दोष, इल्जाम । २ सस्थापन, स्थापन । ३ लगाना क्रिया । ४ थोपना क्रिया । ५ रोपन, जमाव । ६ मढना क्रिया । ७ कल्पना । ८ भ्रम । ९ प्रत्यारोपण । **—क**–वि० आरोप लगाने वाला ।

आरोपण–पु० [स०] आरोपित करने की क्रिया या भाव ।

आरोपणो, (बो)–क्रि० १ आरोपित करना । २ स्थापित करना । ३ लगाना, जमाना । ४ मढना । ५ रोपना । ६ धारण करना । ७ शोभित होना । ८ दोष लगाना, कलकित करना ।

आरोपा–वि० दृढ, अटल ।

आरोपित–वि० [सं०] लगाया हुआ, स्थापित, मढा हुआ, रोपा हुआ ।

आरोपो–पु० १ चमत्कार, देवप्रभा । २ बडा या उत्तम कार्य । ३ देखो 'आरोप' ।

आरोमार–पु० स्तनो से दूध सूखने की क्रिया या भाव । –वि० लुप्त ।

आरोह–पु० [स०] १ चढाई । २ आक्रमण । ३ सवारी । ४ क्रमश उत्तमोत्तम योनि । ५ विकास, उत्थान । ६ आविर्भाव । ७ नितव । ८ स्वरो का चढाव । ९ सीढी । १० ग्रहण के दश भेदो मे से एक । ११ सवार । **—क**–पु० सवार, आरोही । **—ण**–पु० सवारी, चढाई । प्रादुर्भाव । सीढी, निसेनी ।

आरोहणो (बो)–१ आरूढ होना, सवार होना । २ चढना । ३ प्रादुर्भाव होना । ४ अकुरित होना ।

आरोहा–स्त्री० सवारी । चढाई ।

आरोहित–वि० चढा हुआ, ऊपर गया हुआ ।

आरोही–पु० १ चढा हुआ सवार । २ आरोहण करने वाला । ३ संगीत मे स्वर साधन का भेद विशेष ।

आरोहो–पु० तीर, बाण । २ चढने वाला, सवार ।

आरोह्य–देखो 'आरोह' ।

आरो–पु० [स० आरक] १ बडी गेडुरी । २ भट्टी का चूल्हा । ३ नर्ग की कुडली । ४ चक्र । ५ कपडे या रस्सी का चक्र । ६ बैलगाडी के पहिये का एक भाग । ७ रुदना, आवाज । ८ समय । ९ जैनियो द्वारा माने गये दस काल विभागो मे से एक । १० देखो 'आर' ।

आर्य–पु० [स०] हिंदुओ और ईरानियो का नाम ।

आर्यावरत–पु० [स० आर्यावर्त्त] भारतवर्ष ।

आर्यावरती–पु० [स० आर्यावर्त्ती] भारतवासी ।

आलक्त–देखो 'अलक्त' ।

आलग–स्त्री० घोडी की मस्ती । –क्रि० वि० १ दूर, जुदा । २ पृथक, भिन्न ।

आलगण–देखो 'आलिंगण' ।

आलगणो (बो)–देखो 'आलिंगणो' (बो) ।

आलबण, (न)–पु० [स० आलंबन] १ आश्रय, अवलबन । २ सहारा । ३ साहित्यिक रस का एक विभाग ।

आलबणो, (बो)–क्रि० १ आश्रय, अवलबन लेना । २ सहारा लेना । ३ लटकना ।

आलभण, (न)–पु० १ छूना, स्पर्श । २ पकड । ३ मिलन । ४ वध ।

आळ–स्त्री० १ युद्ध, लडाई । २ झझट, बखेडा । ३ झूठ, असत्य । ४ मोर, मयूर । ६ खेल, केलि । ७ छेड-छाड । ८ आलस्य । ९ मादा पशुओ की योनि । १० घोसला । ११ कलक । १२ विपदा । १३ ससार चक्र । –वि० व्यर्थ, फिजूल । सामान्य, साधारण । **–जजाळ, झझाळ**–पु० प्रपच, मायामोह, मोहजाल स्वप्न, जजाल ।

आल–स्त्री० १ हरताल । २ एक पौधा जिसकी जड व छाल से लाल रग बनता है । ३ इस पौधे से बना रग । ४ लौकी, घीया । ५ गीलापन, आर्द्रता । ६ लडकी की सतान । ७ आसू । **—औलाद**–स्त्री० बाल–बच्चे, परिवार । वंश । एक कीडा ।

आलका–स्त्री० छिपने की क्रिया या भाव ।

आळग–देखो 'अळग' ।

आळगणो, (बो)–क्रि० [स० आलग्न] १ मन लगना, बहलना । २ सतोष या चैन मिलना । ३ अच्छा लगना, सुहाना लगना ।

आळटोळ–स्त्री० टालमटोल, बहाना ।

आलण–पु० [स० आद्रण] १ खीच मे दाल का मिश्रण । २ रसदार सब्जी मे दही व बेसन का मिश्रण । ३ आलस्य ।

आळणो (बो)–क्रि० १ आलस्य करना । २ थकना, निराश होना । ३ पराजित होना, हार मानना ।

आलणो (बो)–क्रि० १ देना । २ गमन करना, जाना । ३ कहना । ४ छोडना, त्यागना ।

आलत–स्त्री० हँसी-मजाक ।

आलतो–वि० लाल ।

आलथी-पालथी–स्त्री० पालथी ।

आळपपाळ–देखो 'आळ पंपाळ' ।

आलप–देखो 'अल्प' ।

आलवणो (बो)–पु० देखो 'आलवणो'।
आळ-बाळ–पु० पाखंड। २ देखो 'अलिबाळ'।
आलम, (डो), आलमो, आलम्म–पु० [अ० आलम] १ दुनिया, ससार, विश्व। २ जनता, जन-समूह। ३ दशा, अवस्था। ४ खुदा, ईश्वर। ५ तमाशा, नकल। ६ नगाडा, निशान। ७ ढोली। ८ स्वामी बादशाह। ९ मुसलमान। १० पंडित। –खानो–पु० राजाओं के समय का एक विभाग विशेष जिसमें गाने वाली जातियों को दिये जाने वाले दान आदि का विवरण रहता था। नगार खाना। –गीर–पु० विश्वविजयी। विश्व-व्यापी। औरंगजेब का नाम। —पत, पति, पती–पु० बादशाह, राजा। ईश्वर। —पना, पनाह–पु० ससार को शरण देने वाला, बादशाह, ईश्वर।
आलमारी–देखो 'अलमारी'।
आलमीन–पु० 'आलम' का बहुवचन।
आलय–पु० [स०] १ घर, मकान, आवासस्थान। २ कक्ष। ३ स्थान, जगह। ४ आधार।
आलर–पु० १ दान। २ उदारता।
आलरणो (बो)–१ वर्षा होना। २ दान देना। ३ फिसलना। ४ द्रवित होना।
आलवणो (बो)–देखो 'आलापणो' (बो)।
आळवाळ–पु० [स० आलवाल] १ वृक्ष के चारों ओर का घेरा, थावला, थाला। २ घेरा, मडल, वृत्त।
आळस, (सो)–पु० [स० आलस्य] १ सुस्ती, आलस्य, प्रमाद। २ वेपरवाही। ३ अकर्मण्यता।
आळसणो (बो)–क्रि० १ आलस्य करना। २ वेपरवाही करना। ३ विलंब करना।
आळसवो, आळसी–वि० [स० आलस] सुस्त, आलसी, काहिल, अकर्मण्य।
आळसुवाय–स्त्री० सद्यप्रसूता गाय।
आळसेट–क्रि०वि० १ आनन्द के लिये। २ देखो 'अळसेट'।
आलस्य–पु० [स०] सुस्ती प्रमाद।
आलाण, (न)–पु० [स० आलानम्] १ हाथी को बाधने का स्तंभ या खूंटा। २ हाथी को बाधने का स्थान। ३ हाथी के बाधने का रस्सा, बेडी। ४ जजीर, सकडी। ५ बधन।
आळाणो–पु० १ निश्चय या इरादे का स्थगन। २ आलस्य।
आला–वि० [अ० अअला] श्रेष्ठ, बढिया, उत्तम।
आलाक्क–वि० दुष्ट, नीच।
आळाणो (बो)–प्रे०क्रि० १ हराना। २ थकाना।
आलात–स्त्री० जलती हुई लकडी।
आलाप–स्त्री०[स०] १ सभापण, बात-चीत। २ कथोपकथन। ३ रागालाप, तान। राग विस्तार। ४ सात स्वरों का साधन। ५ वाणी। –वि० बोलने वाला। —चारी–स्त्री० स्वर साधन की क्रिया, स्वरों का आलाप करने की क्रिया। —पक–वि० बोलने वाला।
आलापक–पु०[स०]१एक ही सबध के वाक्यों का समूह। (जैन) २ ग्रथ का थोडा भाग। (जैन) –वि० १ वार्तालाप करने वाला। २ गाने वाला। ३ बातचीत करने वाला।
आलापणो (बो)–१ बोलना, सभापण करना। २ स्वर खींचना, गाना। ३ ध्वनि या आवाज करना।
आलापी–वि० गाने वाला।
आला-मुसाब–पु० १ राजा का प्रधानमत्री। २ श्रेष्ठ दरबारी। ३ खास आदमी।
आळावणो (बो)–क्रि० १ जुगाली करते समय ऊंट के दांतों का टकराकर आवाज करना। २ देखो 'आळाणो' (बो)। ३ देखो 'आलापणो' (बो)।
आलावरत–पु० [स० आर्द्रावर्त्त] पखा, पखी।
आलिंग, (गण, गन)–पु० [स० आलिंगन] १ स्पर्श, छूना क्रिया। २ परिरंभण, सप्रीति। ३ परस्पर मिलन। ४ लिपटना या चिपटना क्रिया। ५ भेंट। ६ रतिक्रिया।
आलिंगणो, (बो)–क्रि० १ लिपटना। २ स्पर्श करना, छूना। ३ परस्पर मिलना। ४ हृदय लगाकर भेंटना। ५ लिप्त होना। ६ रतिक्रिया करना।
आलिंगी–वि० आलिंगन करने वाला।
आलि–स्त्री० १ मधु मक्खी। २ बिच्छु। ३ पंक्ति, अवली, रेखा। ४ भ्रमरी। ५ सेतु। ६ तुच्छ वस्तु। ७ देखो 'आली'। –वि० १ ईमानदार। २ सुस्त, निकम्मा।
आलिगणो (बो)–देखो 'आलिंगणो'।
आलिम–देखो 'आलम'।
आळियो–१ देखो 'अनाळियो'। २ देखो 'आळो'।
आली–स्त्री० १ सखी, सहेली। २ रेखा, पंक्ति। ३ सेतु, बाध। –वि० १ गीली, नम, आर्द्र। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ बडा, उच्च।
आलीगारो, आलीजो–वि० (स्त्री० आलीगारी, आलीजी) १ शौकीन, छैला। २ रसिक। ३ मस्त, मौजी। ४ उदार।
आलींगन–देखो, 'आलिंगन'।
आलीणो–वि० [सं० आलीन] १ तन्मय, लीन। २ अनुरक्त। ३ लिप्त।
आलीनक–पु० कलई, रागा।
आळीमाट–वि० व्यर्थ, निरर्थक।
आलीसान–वि० [अ० आलीशान] १ भव्य, सुन्दर। २ विशाल। ३ श्रेष्ठ, उत्तम।
आलीह–पु० शर सधान के समय का आसन। –वि० मुक्त।
आलुक–पु० १ शेष नाग। २ सर्प। ३ छेड-छाड।

आलूंधणौ, (बौ)–क्रि० उलझना ।
आलू– पु० गोलाकार एक प्रसिद्ध कद ।
आळूजणौ,(बौ)–क्रि० उलझना ।
आळूझ, (ण)–स्त्री० [स० अवरुद्धनम्] १ उलझन, अटकाव । २ गिरह, ग्रथि । ३ बाधा, रुकावट । ४ पेच । ५ ऐंठन । ६ फेर, चक्कर । ७ समस्या । ८ टकराव, लडाई ।
आळूझणौ (बौ)–क्रि० १ उलझना, फसना, अटकना । २ लपेट मे आना । ३ तकरार या लडाई करना । ४ काम मे फसना ।
आळूद, (दौ)–वि० (स्त्री० आळूदी) सजा हुआ, बना-ठना ।
आळूधणौ (बौ)–देखो 'आळूधणौ (बौ) ।
आलूबुखारा–पु० [फा०] आलुच नामक वृक्ष का फल ।
आले–क्रि० वि० [स० अद्य-कल्य] आज-कल, इस समय । –वि० अव्वल, बढिया, प्रथम ।
आलेख–पु० [स०] १ लिखावट, लिपि । २ ईश्वर । ३ देखो 'अलख' ।
आलेडौ–पु० [स० आर्द्रता] १ गीलापन, नमी, तरी । २ कीचड ।
आलेप–पु० मलहम, लेपन ।
आळेमाट, आळैमाट,–वि० व्यर्थ, निरर्थक ।
आळं–पु० उत्सर्ग, त्याग, दान । –क्रि० वि० इधर । पास । —**नाहर**–पु०–सिंह की माद ।
आलोक–पु० [स०] १ प्रकाश, उजाला । २ चमक, द्युति । ३ सदर्भ । —**भोमका**–स्त्री० लोकोत्तर क्षेत्र ।
आलोकन–पु० १ दर्शन । २ अवलोकन ।
आळोच, आलोच–पु० [स० आलोच] १ सोच, चिन्ता । २ सोच-विचार, मनन । ३ सलाह, मत्रणा । ४ हाल, वृत्तान्त । ५ विवेचन । ६ गुप्त रहस्य । ७ उद्विग्नता । ८ आलु चन, बीनाई । ९ दर्शन ।
आलोचक–वि० [स०] १ देखने वाला । २ समीक्षक । ३ निन्दक ।
आलोचण, (णा)–स्त्री० [स० आलोचन] १ गुण दोष निरूपण, समीक्षा । २ निन्दा । ३ दर्शन । ४ गुप्तमत्रणा ।
आलोचणौ (बौ)-क्रि० १ आलोचना करना, समीक्षा करना । २ निन्दा करना । ३ समझना, विचार-विमर्श करना ।
आलोचना–स्त्री० [स०] समीक्षा, विवेचन, निन्दा ।
आलोज, आलोझ–पु० १ बात-चीत । २ सकल्प,प्रण । ३ भाव, विचार । –क्रि० वि० सोच कर, समझ-विचार कर ।
आलोजणौ,(बौ), आलोझणौ,(बौ) देखो । 'आलोचणौ' (बौ) ।
आळो-दीवाळौ–पु० ताक ।
आलोप–देखो 'अलोप' ।
आळो-भोळौ–वि० नासमझ ।
आलोमल्ल–वि० १ शौकीन, छैल छबीला । २ वीर, योद्धा ।
आलोयण–देखो 'आलोचना' ।
आलोळ–वि० चचल, चपल, अस्थिर ।
आलोवणा–स्त्री० [स० आलोचना] १ अपने पापो को गुरु के सम्मुख अपने ही मुख से यथा रूप वर्णन करनेकी क्रिया । (जैन) २ आलोचना ।
आळौ–पु० [स० आलय, आलुच] १ ताक, आला । २ घोसला । –वि० अपरिपक्व । अव्य० का । क्रियान्तक प्रत्यय । —**रींटौ**–पु० कच्ची ककडी ।
आलौ–वि० [स० आर्द्र] (स्त्री० आली) १ गीला, नम । २ बढिया, अद्वितीय । ३ ताजा । —पु० १ प्रकार का घास,का कीडा । २ आलस्य ।
आलौ-लिगतर-पु० एक देशी खेल ।
आल्यंगन–देखो 'आलिंगन' ।
आल्हाद–पु० प्रसन्नता खुशी ।
आवंण–१ देखो 'आवल' । २ देखो 'जावण' ।
आवतइ, आवता–वि० आगामी, भावी ।
आवद–देखो 'आमदनी' ।
आव–पु० १ उत्साह । २ आव-भगत, अतिथि सत्कार । ३ आयु । ४ आय । —**आदर**–पु० स्वागत, सत्कार ।
आवकार–पु० १ एक सरकारी लगान । २ सत्कार ।
आवखान–पु० मवेशी का साफ किया हुआ चमडा ।
आवखौ–वि० (स्त्री० आवखी) १ पूरा, पूर्ण । २ अखडित । ३ बिना बधिया किया । –पु० [स०आयुष्म] जीवन, आयु ।
आवगमन–देखो 'आवागमन' ।
आवगौ–वि० १ स्वय का, निजी । २ देखो 'आवखौ' । (स्त्री० आवगी) ।
आवड (ड़ा)–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न देवी विशेष जो भाटी राजवश की इष्टदेवी है ।
आवडणौ, (बौ)–क्रि० [स० आपटन] १ मन लगना, सुहाना । २ अटपटी महसूस न होना । ३ युद्ध करना ।
आवडदा (रदा)–स्त्री० [स० आयु] आयु, उम्र ।
आवड़ी–स्त्री० [स० आवृत्ति] १ एक दिन मे जोतने लायक खेत का भाग । २ फसल की कटाई के लिए क्रमश बनाई जाने वाली लम्बाई । ३ एक कल्पित लम्बाई । ४ आयु,उम्र ।
आवडौ–वि० भयकर ।
आवट–पु० [स० आवर्त्त] १ नाश, सहार । २ युद्ध । ३ सेना । ४ इच्छा । ५ हलचल ।
आवटकूट (टौ)–पु० १ सहार, नाश । २ युद्ध ।
आवटणौ, (बौ)–क्रि० [स० आवर्त्त] १ गर्म होना, उबलना । २ औटना । ३ क्रुद्ध होना, कुढना । ४ जलना, भस्म होना । ५ युद्ध मे मरना या मारना । ६ दुखी होना । ७ नष्ट होना ।

ावटना–पु० [सं० आवर्त्त] १ हलचल, उथल-पुथल । २ डावा-डोलपन, अस्थिरता । ३ जलन, कुढन ।
ावटियळ–वि० वीर, योद्धा ।
ावट्ट–देखो 'आवट' ।
ावट्टणो (बो)–देखो 'आवटणो' (बो) ।
ावढ देखो 'आवडी' ।
ावण–देखो 'आवल' । (३)
ावणियौ-कूदावणियौ–पु० एक देशी खेल ।
ावणू–वि० आगन्तुक ।
ावणो (बो)–देखो 'आणो' (बो) ।
ावदानी–स्त्री० १ प्रवेश । २ देखो 'आमदानी' ।
ावदा–स्त्री० आयु, उम्र ।
ावद्ध, (द्धि), आवध–पु० [सं० आयुध] १ हथियार, शस्त्र । २ आय, आमद । —नख–पु० सिंह, शेर । —पाण–पु० गणेश, गजानन । —माजण–पु० सिकलीघर ।
आवधान–देखो 'आधान' ।
आवधी, (क)–वि० [सं० आयुधिक] १ शस्त्र रखने वाला । शस्त्रधारी । २ वीर, योद्धा ।
आवभगत, (भाव)–स्त्री० आदर-सत्कार ।
आवबळ–पु० [सं० आयुर्बल] आयु का बल ।
आवर–देखो 'अवर' ।
आवरण–पु० [सं०] १ परदा । २ आच्छादन । ३ ढक्कन । ४ ढाल । ५ दीवार आदि का घेरा । ६ अज्ञान । —सक्ति, सगती–स्त्री० आत्म व चैतन्य की दृष्टि पर परदा डालने वाली शक्ति ।
आवरत–पु० [सं० आवर्त, आवृत्त] १ पानी का भवर । २ चक्कर, फेर, घुमाव । ३ न बरसने वाला बादल । ४ चिंता, सोच । ५ प्रलयकाल । ६ एक प्रकार का रत्न । ७ ससार । ८ हस्ती । ९ झुड, समूह । १० सेना, फौज । ११ समुद्र, सागर । १२ घनी बस्ती । १३ सोना मक्खी । १४ युद्ध, सग्राम । १५ सहार ध्वस । १६ देखो 'आवरती' ।
आवरतक–वि० [सं० आवर्तक] १ आने वाला । २ नियमित प्राप्त होने वाला ।
आवरती–स्त्री० [सं० आवृत्ति] १ परिक्रमा । २ किसी कार्य की पुनरावृत्ति । ३ चक्कर । ४ बार-बार जन्म-मरण । ५ बार-बार किसी बात का अभ्यास । ६ प्रत्यावर्तन । ७ पलटाव । ८ पाठ पढना ।
आवरत्त–देखो 'आवरत' ।
आवरदा–देखो 'आवडदा' ।
आवरित–देखो 'आव्रत' ।
आवरौ–पु० १ आय का स्रोत । २ आमदनी ।
आवळ–पु० १ शक्ति, बल, पुरुषार्थ । २ देखो 'आवळ' ।
आवळफूल–देखो 'आवळाफूल' ।
आवळणो, (बो)–क्रि० १ बट देना, ऐंठन देना । २ तनाव देना । ३ मोडना ।
आवळियौ–वि० गर्व या अभिमान रहित । –पु० एक देशी खेल ।
आवळी–वि० भयकर । –स्त्री०१ पारी, बारी (ट्रिप) । २ आयु । ३ अभिलाषा । ४ पक्ति, श्रेणी । ५ वह विधि जिसके द्वारा उपज का अनुमान किया जाता हो । —घडा–स्त्री० सुसज्जित सेना । विकट सेना ।
आवळौ–वि० १ मस्त उन्मत्त । २ देखो 'अवळौ' ।(स्त्री० अवळी)
आवस–१ देखो 'अवस्य' । २ देखो 'आवास' ।
आवस्यक–वि० [सं० आवश्यक] जरूरी । सापेक्ष ।
आवस्यकता–स्त्री० [सं० आवश्यकता] जरूरत । मतलब ।
आवह–पु० [सं० आहव] युद्ध ।
आवा–पु० [सं० आपाक] बर्तन पकाने का कुम्हारों का गड्डा ।
आवागम, (गमण, गमन, गवन, गौन)–पु० [सं० आवागमन] १ आवागमन, आना-जाना । आमदरफ्त । २ बारम्बार जन्म-मरण ।
आवाचि, आवाचौ–देखो 'अवाची'
आवाज (जि)–स्त्री० [फा० आवाज] १ शब्द, ध्वनि, नाद । २ बोली, वाणी । ३ शोर ।
आवाजणो (बो)–क्रि० १ आवाज होना, २ ध्वनि होना । ३ बोलना, बजना ।
आवाजाण–देखो 'आवागमन' ।
आवादानी–स्त्री० आय, आमदनी ।
आवान–पु० [सं० आह्वान] बुलावा, आह्वान, आमन्त्रण ।
आवाप–पु० [सं० आवाप] थावला, थाला ।
आवारा, आवारौ–वि० [फा०] (स्त्री० आवारी) १ निकम्मा, निठल्ला । २ गुडा, बदमाश, लुच्चा । —गरद–वि० व्यर्थ घूमने या गुडापन करने वाला । –गरदी–स्त्री० व्यर्थ भटकने या उद्दण्डता करने की क्रिया ।
आवास (सि)–पु० [सं० आवास] १ घर, मकान । २ निवास स्थान । ३ निवास, रहवास । ४ विश्राम ५ आसमान । ६ आभास । ७ चिह्न, लक्षण ।
आवाह–देखो 'आवह' ।
आवाहण, (हन)–पु० [सं० आह्वान] १ बुलावा, आमत्रण । २ आह्वान मत्र ।
आवाह्णो (बो)–क्रि० १ आह्वान करना, बुलाना । २ प्रहार करना, शस्त्र चलाना
आविढ़ा–वि० वीर, बाकुरा ।
आविद्धा–स्त्री० तलवार चलाने की एक कला ।
आविल–वि० [सं०] गदा, गदला ।

आविस्कार–पु० [स० आविष्कार] कोई ऐसा पदार्थ तैयार जो पहिले न हो, ईजाद।

आविस्कारक–पु० [सं० आविष्कारक] आविष्कारकर्त्ता।

आवेग–पु० [स०] १ जोश, उत्साह। २ साहित्य का सचारी भाव। ३ उद्विग्नता।

आवेर–स्त्री० देख भाल, सभाल।

आवेरणौ (बौ)–देखो 'अवेरणौ' (बौ)।

आवेस–पु० [स० आवेश] १ जोश, उत्साह। २ प्रेरणा। ३ वेग। ४ रोष, क्रोध। ५ अहकार। ६ प्रेतबाधा। ७ मृगी रोग।

आवेसटन–पु० [स० आवेष्टन] खोल, घेरा, लपेटने या ढकने की वस्तु।

आव्रत, आव्रति–स्त्री०[स०आवृत्ति]१ परिक्रमा। २ प्रत्यावर्तन। ३ पुनरावृत्ति। ४ चक्कर, फेरा। ५ दोनो हाथो से चरण स्पर्श कर अपने शिर पर लगाकर की गई वदना। ६ पाठ। –वि० [स० आवृत्त] १ घिरा हुआ। २ छिपा हुआ। ३ लिपटा हुआ। –पु० युद्ध समर।

आसका, आसंक्या–स्त्री० [स०आशका] १ डर, भय। २ सदेह, शक। ३ सभावना। ४ त्रास, आतक।

आसग–पु० १ साथ, सग, ससर्ग। २ सबध, लगाव। ३ आसक्ति, अनुराग। ४ हिम्मत, साहस। ५ सामर्थ्य। ६ बल, शक्ति, पराक्रम।

आसगणौ, (बौ)–क्रि० १ साहस करना। २ दिल बहलना, मन लगना। ३ स्वीकार करना। ४ अधिकार या वश मे करना।

आसगरू-वि० शक्तिशाली, समर्थ।

आसगायत–वि० आश्रमवर्ती, अधीन। (जैन)

आसगिरी–स्त्री० साहस।

आसगीर–वि०१आशावान। २ साहसी। ३ बलवान, शक्तिशाली।

आसगौ–पु० १ विश्वास, भरोसा। २ बल, पौरुष। ३ साहस, हिम्मत ४ आशा।

आस–स्त्री०[सं०आशा] १ आशा, लालसा, उम्मीद। २ काच। ३ वेग। ४ दम। ५ युद्ध। ६ तावा। ७ देखो 'आस्य'। ८ देखो 'आसा'। —इखु, ईखु–पु० धनुप। —उदर–स्त्री० अग्नि, जठराग्नि। —कद–देखो-'आसगध'। —क–वि०– आशिक, प्रेमी। —कर, कारियौ–पु० याचक, भिखारी। आशावान। –गध–स्त्री० अश्वगधा। –गिरी–स्त्री० आशा, उम्मीद। —गीर–वि० आशावान। —पण, पणौ–पु० आस्तिकपन। —पास–क्रि० वि० इधर-उधर, निकट समीप, चारो ओर।

आसका–स्त्री० [स० आस्यका] १ विभूति, राख। २ अगरवत्ती, धूप या महात्माओ की धूनी की राख।

आसक्त–वि० [स०] १ अनुरक्त, मुग्ध। २ लीन, लिप्त। ३ आशिक, प्रेमी।

आसक्ति–स्त्री० [स०] १ अनुरक्ति, मुग्धता। २ लगाव, लिप्तता। ३ इश्क, प्रेम।

आसचरज–पु०[स०आश्चर्य]१ विस्मय, आश्चर्य। २ चमत्कार। ३ विलक्षणता। –वि० अद्भुत, अलौकिक, विचित्र।

आसण, (न), आसणियौ–पु० [स० आसन] १ बैठने की विधि, बैठक। २ बैठते समय बिछाने की वस्तु, चटाई, मृगचर्म। ३ पीढा, तिपाई। ४ ८४ योगासनो मे से एक। ५ रतिक्रिया का एक ढग। ६ अष्टागयोग का तीसरा अग। ७ घोडे, ऊट, हाथी आदि की पीठ। ८ घोड़े ऊट हाथी की पीठ,पर डाला जाने वाला वस्त्र। ९ निवास डेरा। ९ तितव। १० शत्रु के मुकाबले की फौज। ११ सवारी, वाहन। १२ दशनामी सन्यासियो का मठ।

आसणोट–पु० घोडे की पीठ का तग।

आसत–पु० [स० अस्] १ अस्तित्व। २ सामर्थ्य, सत्ता। ३ देखो 'आसथा'। ४ देखो 'आसतिक'।

आसता–देखो 'आसथा'।

आसति–स्त्री० [स० आस्तिकता] १ आस्तिकता, श्रद्धा, आस्था। २ शक्ति, बल। ३ सत्यता। ४ देखो 'आसथा'।

आसतिक, (तीक)–वि० [स० आस्तिक] १ ईश्वर व धर्म ग्रथो मे आस्था, श्रद्धा व विश्वास रखने वाला। २ सच्चा, पवित्र। ३ श्रद्धालु। ४ समर्थ, शक्तिशाली।

आसती–वि० १ शक्तिशाली, समर्थ। २ अच्छा, सुन्दर, उत्तम। ३ आस्तिक। –पु० १ अस्तित्व का भाव। २ समय। —पण, पणौ–पु० बहादुरी, शौर्य। सत्यता। अस्तित्व। आस्तिकता।

आसते, (तै)–क्रि०वि० [फा० आहिस्ता] धीरे-धीरे, आहिस्ता, शनै शनै।

आसथान–पु० [स० स्थान] १ बैठने का स्थान, बैठक। २ सभा, समाज।

आसथा–स्त्री० [स० आस्था] १ श्रद्धा, पूज्य भाव। २ विश्वास, भरोसा। ३ आशा। ४ सहारा, आश्रय। ४ समारोह। ५ सभा। ६ शक्ति, बल। ७ अगीकार।

आसना–स्त्री० [फा० आशना] चाहने वाली, प्रेमिका।

आसनाई,आसनाही–स्त्री०[फा०आशनाई]पर स्त्री से प्रेम सबध।

आसनोट–देखो 'आसणोट'।

आसनौ–पु० [स० आश्रयण] आश्रय स्थल। –क्रि०वि० निकट, समीप।

आसन्न, (न्नौ)-वि० १ निकटवर्ती, समीपस्थ । २ पास बैठा हुआ । ३ शेष । ४ उपस्थित । -पु० अवसान ।—सिद्धि -वि० सिद्धि के निकट मोक्षगामी । (जैन)

आसप-देखो 'आसव' ।

आसपद-पु० [सं० आस्पद] घर, सदन ।

आसव-देखो 'आसव' ।

आसमाण, (मान)-पु० [फा० आसमान] १ आकाश, गगन, व्योम । २ स्वर्ग, देवलोक ।

आसमाणी, (मानी)-वि० [फा० आसमानी] १ आसमान जैसा, हल्का नीला । २ आसमान संबंधी । ३ दैवी । -क्रि०वि० अकस्मात्, अचानक ।

आसमुद्र-क्रि०वि० समुद्र तक, समुद्र पर्यन्त ।

आसमेद, (मेध मेधी)-देखो 'अस्वमेध' ।

आसय-पु० [सं० आशय] १ अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य । २ नीयत, कामना । ३ वासना । ४ बुद्धि । ५ शयन गृह, विश्रामस्थल । ६ घर । ७ स्थान । ८ मन, हृदय । ९ प्रारब्ध ।

आसर-पु० १ अंत । २ असुर । ३ श्मशान भूमि । ४ अवसर । ५ देखो 'आसार' ।

आसरम-पु० आश्रम ।

आसरित-वि० [सं० आश्रित] १ सहारा पाया हुआ, आश्रित, निर्भर । २ भरोसे पर रहने वाला । ३ अधीन । ४ सेवक, नौकर ।

आसरियौ-देखो 'आसरौ' ।

आसरी-वचन,(वाद, वाद)-देखो 'आसीरवाद' ।

आसरन-१ देखो 'असुर' । २ देखो 'आसरौ' ।

आसरौ-पु० [सं० आश्रय] १ सहारा, आश्रय, अवलंब । २ भरोसा, विश्वास । ३ आशा । ४ जीवन निर्वाह का हेतु । ५ सहायता का विश्वास । [सं० आश्रम] ६ मकान, घर । ७ मकान का छोटा भाग जो चारों ओर से आच्छादित हो । ८ शरण, पनाह । ९ प्रतीक्षा, इन्तजार । १० अनुमान अंदाजा ।

आसल-पु० हमला, आक्रमण ।

आसलेट-स्त्री० मकान की दीवार के कोने या बीच में लगाये जाने वाले चौड़े पत्थर, स्तंभ ।

आसव-पु० [सं०] १ भभके से खींच कर बनाया हुआ बढ़िया व उत्तम शराब, मद्य । २ फलों का खमीर । ३ अर्क । ४ काढ़ा ।

आसवार-पु० सवार ।

आससणौ (बौ)-देखो 'आसीसणौ' (बौ) ।

आसहणौ (बौ)-क्रि० आक्रमण करना, धावा बोलना ।

आसांण, (न)-वि० [फा० आसान] सरल, सुगम, सीधा । -पु० [फा० एहसान] उपकार, एहसान ।

आसाणी (नी)-स्त्री० [फा० आसानी] सरलता, सुगमता । सुभीता ।

आसामी-पु० [फा० आसामी] १ अभियुक्त । २ देनदार । ३ काश्तकार । ४ धनवान या प्रतिष्ठित व्यक्ति । ५ लगान पर खेत जोतने वाला किसान । ६ व्यक्ति विशेष । —दार-पु० मुखिया, प्रधान ।

आसा-स्त्री० [सं० आशा] १ अभिलाषा, इच्छा, कामना । २ भरोसा, उम्मीद । ३ दिशा । ४ दक्ष प्रजापति की कन्या । ५ एक देवी का नाम । ६ गर्भ ।

आसाऊ-वि० आशावान, आशार्थी, उम्मीदवार ।

आसागज-पु० [सं० आशागज] दिक्पाल ।

आसागीर-देखो 'आसगीर' ।

आसाढ-पु० [सं०] वर्षा ऋतु का प्रथम मास ।

आसाढाऊ, आसाढी-वि० आसाढ का, आसाढ संबंधी । -पु० १ खरीफ की फसल । २ आसाढ की पूर्णिमा ।

आसानना-स्त्री० सत्कार न करना, मान न देना क्रिया ।

आसापाळौ-पु० अशोक वृक्ष ।

आसापुरा-स्त्री० बरवड़ी देवी ।

आसापुरी-पु० देव पूजन में काम आने वाला धूप । -स्त्री० चौहानों की कुल देवी । दुर्गा ।

आसाभरी-वि० आशावान ।

आसामुखी-वि० उम्मीदवार ।

आसार-पु० [अ०] १ चिह्न, लक्षण । २ दीवार की नींव की मोटाई । ३ दीवार की चौड़ाई । ४ अतिवृष्टि । ५ आश्रय ।

आसाळु, आसालुध्धी, (लू ध, लू धौ) आसाळू (त)-वि० १ आशावान, उम्मीदवार । २ प्रेमातुर ।

आसावत-वि० आशावान ।

आसावरी-स्त्री० [सं०] १ श्री नामक प्रसिद्ध राग । -पु० २ एकप्रकार का सुगंधित पदार्थ । ३ एक प्रकार का कबूतर । ४ एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा ।

आसावार-स्त्री० आशापूर्णा देवी ।

आसिक-वि० [सं० आशिक] (स्त्री० आसिका) १ इश्क करने वाला, प्रेमी । २ अनुरक्त, मुग्ध ।

आसिख-१ देखो 'आसीस' । २ देखो 'आसिक' ।

आसि-पासि-देखो 'आस-पास' ।

आसिरौ-देखो 'आसरौ' ।

आसी-स्त्री० सर्प की दाढ़ ।

आसींगणौ (बौ)-क्रि० मन लगना, दिल बहलना ।

आसीन–वि० [सं०] १ बैठा हुआ, विराजमान। २ उपस्थित। ३ स्थित। ४ सुशोभित।

आसीरवाद, (वाद)–पु० [सं० आशीर्वाद] १ शुभकामना सूचक शब्द। २ वरदान। ३ दुआ, आशिस।

आसीविख, (स)–पु० [सं० आशीविष] सर्प, साप।

आसीस (डी)–स्त्री० [सं० आशिस] आशीर्वाद, मगल कामना। दुआ।

आसीसणौ (बौ)–क्रि० १ आशीर्वाद देना, दुआ देना। २ मंगल कामना करना। ३ वरदान देना।

आसु–क्रि० वि० [सं० आशु] जल्दी, शीघ्र, तत्काल। –पु० १ वर्षाकालीन एक धान्य। २ प्राण। ३ आश्विन मास। —**कवि**–पु० तत्काल कविता रचने वाला व्यक्ति। कवि।

आसुग–पु० [सं० आशुग] १ बाण, शर, तीर। २ वायु। ३ मन। —वि० द्रुतगामी। —**आसन**–पु० धनुष।

आसुती–स्त्री० [सं० आसुति] शराब, आसव।

आसुतोस–वि० [सं० आशुतोष] शीघ्र तुष्टमान होने वाला। —पु० शिव, महादेव।

आसुपाळी–देखो 'आसापाळी'।

आसुर–पु० [सं० अस्र] १ रक्त, खून। २ देखो 'असुर'। —वि० असुर सबधी।

आसुराण–देखो असुर'।

आसुरी–वि० [सं०] असुर सबधी, राक्षसी। —स्त्री० १ सख्या। २ राक्षसी, पिशाचनी। ३ शल्य चिकित्सा। —**धरम**–पु० असुरो की प्रकृति, स्वभाव, धर्म।

आसू–पु० [सं० आश्विन] १ आश्विन मास, आसोज। २ देखो 'आसू'। ३ देखो 'आसु'।

आसूदगी–स्त्री० सम्पन्नता, वैभव।

आसूदौ (धौ)–वि० [फा० आसूद] (स्त्री० आसूदी, धी) १ आलसी, अकर्मण्य। २ सतुष्ट तृप्त। ३ सम्पन्न। ४ भरा-पूरा। ५ बिना जुना। ६ थकान रहित।

आसूरण–पु० मुसलमान।

आसूसुखण–स्त्री० [सं० आशुशुक्षणि] अग्नि, आग।

आसे–देखो 'आसय'।

आसेर–पु० १ किला, गढ़। २ एक राजपूत वश।

आसोज–पु० [सं० अश्वयुज] आश्विन या क्वार मास।

आसोजी–वि० उक्त मास सबधी। —स्त्री० उक्त मास की तिथि।

आसौ–पु० [सं० आसव, आश्रय] १ लाल रग की एक शराब विशेष। २ नपस्या के समय काम आने वाला काष्ठ का उपकरण। ३ सोने या चादी से मढा डडा। ४ औषधियो का अर्क। ५ बढई का एक उपकरण। ६ यम पाश। ७ एक राग विशेष।

आस्त–पु० आपत्ति, कष्ट, विपदा, दुख। —वि० आस्तिक।

आस्तर–पु० [सं० अस्तर] बिछौना।

आस्तिक–वि० [सं०] ईश्वर व धर्म मे आस्था रखने वाला।

आस्तिकता–स्त्री० [सं०] ईश्वर व धर्म मे आस्था।

आस्थान–पु० [सं० स्थान] १ बैठने का स्थान। २ सभा, बैठक, मडप।

आस्था–स्त्री० [सं०] श्रद्धा, भक्ति।

आस्थिसस्कार–पु० एक प्रकार का दाह सस्कार।

आस्पद–पु० [सं० आस्पदम्] १ स्थान। २ कारण। ३ प्रतीक।

आस्फाळ–पु० [सं०] १ भुजा ठोकने की आवाज। २ हाथी के कानो की फडफडाहट।

आस्य–पु० [सं० आस्य] १ मुख। २ डाढ। ३ चेहरा, शक्ल। ४ छेद। ५ कमजोर गाय के गर्भाशय का भाग जो प्रसव के बाद बाहर निकल जाता है। ६ छाछ के ऊपर आने वाला पानी। [सं आशय] ७ प्रयोजन, मतलब, तात्पर्य।

आस्यप–देखो 'आसौ'।

आस्या–स्त्री० आशा, अभिलाषा। —**पुरी**–स्त्री० एक देवी। —**भग**–स्त्री० निराशा।

आस्त्रम, (म्म)–पु० [सं० आश्रम] १ ऋषि-मुनियो का निवास स्थान, तपोवन। २ कुटिया। ३ मठ। ४ विश्राम स्थान। ५ स्थान। ६ आर्यों के जीवन की चार अवस्थाऐ। ७ विद्यालय। ८ वन, उपवन। ९ चार की सख्या। —वि० चार।

आस्त्रय–पु० [सं० आश्रय] १ आधार, अवलम्ब। २ सहारा, मदद। ३ आधार वस्तु। ४ शरण, पनाह। ५ घर, मकान।

आस्त्रययास–स्त्री० [सं० आश्रयाश] अग्नि, आग।

आस्त्रव–पु० [सं० आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश द्वार, कर्म बध। हिंसा आदि। २ दोष। ३ प्रण।

आस्त्रवकाळ (ळ)–पु० यौ० समय की ऐसी अवधि जब नवीन कर्म पुद्गल आत्मा के द्वारा गृहीत होते हैं।

आस्त्रित–वि० [सं० आश्रित] १ किसी पर आधारित, अवलबित। २ शरणागत। —पु० सेवक, दास।

आस्त्रीवाद–देखो 'आसीरवाद'।

आस्वाद–पु० [सं०] स्वाद, जायका।

आस्वासन–पु० [सं०] चखना या स्वाद लेना क्रिया।

आस्वासन–पु० [सं० आश्वासन] सात्वना, तसल्ली। ढाढस।

आहचणौ (बौ)–क्रि० [सं० अभ्यचन] १ झटका देना, धक्का देना। २ मारना, ध्वस करना। ३ छीनना, झपटना।

आहंचि–वि० अभिमानी, गर्विला ।
आहस–पु० [स० अभ्यश] १ साहस, हिम्मत । २ शक्ति बल, पराक्रम ।
आहंसणौ (बौ)–क्रि० १ साहस व हिम्मत करना । २ बल प्रयोग करना ।
आहसी (क)–वि० साहसी, बलवान, शक्तिशाली ।
आह–सर्व० यह । –अव्य०– पीडा व शोक सूचक ध्वनि । –स्त्री० १ तडपन, उसास ठडी सांस । २ हाय । —क्रि० वि० १ अभी, अब । २ देखो 'आम्य' ।
आहडण–स्त्री० १ सेना, फौज । २ युद्ध, समर ।
आहडी (आहेडी)–पु० [स० आखेटक] १ शिकारी । २ भील ।
आहड-साहड–क्रि० वि० अगळ-बगळ, आसपास ।
आहचणौ (बौ)–देखो 'आहत्रणौ' (बौ)
आहज (ज्ज)–पु० [स० आज्य] १ घृत, घी । २ आहुति ।
आहट–स्त्री० १ ध्वनि, शब्द । २ खटका ।
आहटणौ (बौ), आहट्टणौ (बौ)–क्रि० पीछे हटना, पराजित होना ।
आहण–पु० [स० आहानम्] १ युद्ध । २ प्रहार । ३ यज्ञ, होम । ४ देखो 'आसन' ।
आहणणौ (बौ)–क्रि० वार करना । प्रहार करना ।
आहणि, (य) आहणी–स्त्री० १ फौज, सेना । २ युद्ध, समर ।
आहणौ, (बौ)–क्रि० १ युद्ध करना । २ वार करना । ३ मारना ४ हनन करना ।
आहत–वि० [स०] १ घायल । २ कुचला हुआ । ३ चोट खाया हुआ, पिटा हुआ । ४ मरा हुआ ।
आहमौ-साहमौ–देखो 'आमौ-सामहौ' ।
आहर–पु० [स० अह] १ समय, वक्त, काल । २ दिन । ३ देखो 'आहव' ।
आहरट, (ट्ट)–पु० १ फौज सेना । २ युद्ध । ३ सहार ।
आहरण–पु० १ हरण, अपहरण । २ छीना-झपटी, लूट । ३ हस्तान्तरण । ४ ग्रहण, प्राप्ति । ५ दहेज । ६ आभूषण ।
आहरणौ (बौ)–क्रि० १ युद्ध करना, भिडना । २ टक्कर लेना ।
आहरौ–पु० १ घास-फूस की कुटिया । २ देखो 'आसरौ' ।
आहळाणौ–देखो 'आळाणौ' ।
आहव–पु० [स० आहव] युद्ध रण ।
आहवान–पु० [स० आह्वान] १ निमत्रण, बुलावा । २ देवताओं का आह्वान ।
आहवि, (वी)–पु० १ योद्धा, वीर । २ देखो 'आहव' ।
आहा–अव्य० [स० अहह] १ हर्ष-विस्मय युक्त ध्वनि । २ खेद सूचक ध्वनि ।
आहाड़ाखड–पु० मेदपाट, मेवाड ।
आहाट–देखो 'आहट' ।
आहार–पु० [स०] १ भोजन, खाना । २ भक्षण । ३ खाद्य पदार्थ । [स० आधार] ४ घी, घृत ।
आहारज्ज, (राज, रिज)–पु० पहाड, पर्वत ।
आहारी–वि० भोजन करने वाला ।
आहाल–पु० चिह्न, निशान ।
आहावि–देखो 'आहव' ।
आहि–देखो 'अहि' ।
आहिज, (जि)–१ देखो 'आही' । २ देखो 'आहज' ।
आही, (ज)–सर्व० यही ।
आहीडी (डौ)–देखो 'आईड' (डी) ।
आहीठाण (न)–देखो 'आठाण' ।
आहीर–देखो 'अहीर' ।
आहीवाळौ–पु० ऋण सबधी शर्तनामा ।
आहु, आहुई–देखो 'आहव' ।
आहुड–पु० युद्ध, सग्राम ।
आहुड़णौ (बौ)–क्रि० युद्ध करना, लडना, भिडना ।
आहुट–पु० युद्ध, समर । आहट ।
आहुटणौ (बौ)–क्रि० १ वीर गति प्राप्त होना । २ युद्ध करना । ३ मिटना, नष्ट होना । ४ भिडना, टक्कर लेना । ५ हटना, दूर होना । ६ वापिस मुडना ।
आहुटि–देखो 'आहट' ।
आहुडणौ (बौ)–देखो 'आहुडणौ' (बौ) ।
आहुति, (ती)–स्त्री० [स० आहुति] १ मत्रोच्चारण के साथ यज्ञाग्नि मे साकल्य डालने की क्रिया । २ साकल्य की वह मात्रा जो एक बार मे यज्ञ मे डाली जाय । ३ हवन यज्ञ । ४ हवन सामग्री । ५ आह्वान, आमत्रण ।
आहूत–वि० १ बुलाया हुआ, निमत्रित । २ देखो 'आहुति' ।
आहूतण–स्त्री० आग ।
आहूति (ती)–देखो आहुती ।
आहे–क्रि०वि० है ।
आहेड़ (डा)–स्त्री० [स०आखेट] शिकार । –पु० [स०आखेटक] १ शिकारी । २ भील । ३ देखो 'आहेडी' ।
आहेडियौ, आहेडो–पु० [स० आखेटक] १ शिकारी । २ भील । ३ लुब्धक नामक तारा । ४ आर्द्रा नक्षत्र का नाम ।
आहेस–पु० [स० अहीश] १ शेषनाग । २ नशा । ३ अफीम ।
आहोडणौ, (बौ)–क्रि० चलाना, निशान लगाना ।
आहोटणौ, (बौ)–देखो 'आहुटणौ' (बौ) ।
आह्लाद–पु० [स०] अत्यन्त हर्ष, आनन्द ।
आह्वडणौ (बौ)–क्रि० आक्रमण करना ।
आह्वन–वि० आगतुक, अतिथि ।
आह्वय–पु० १ नाम । २ तीतर-बटेर आदि की लडाई ।
आह्वान–पु० [स०] १बुलावा, निमत्रण । २ देवताओं का आह्वान ।

—इ—

इ–देव नागरी लिपि का तीसरा स्वर ।
इ–सर्व० इस, इसने । –क्रि०वि० व्यर्थ मे, वेकार मे ।
इउ, (ऊ)–क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे ।
इकलाव–पु० [अ०] १ कोई वडा परिवर्तन । २ क्राति ।
इग, इगन–पु० १ कपन, हिलना । २ चिह्न, सकेत ।
इगरेज–देखो 'अगरेज' ।
इगलयान (सतान)–पु० अग्रेजो का देश, इग्लिस्तान, इग्लैंड ।
इगलस, (लिस)–स्त्री० अग्रेजी ।
इगळा–स्त्री० इडा नामक नाडी ।
इगलैंड–स्त्री० अगरेजो के देश का नाम ।
इगार–पु० अग्निकरण, अगारा ।
इगाल–पु० एक प्रकार का आहार सवधी दोप । (जैन)
इगित–पु० [स०] सकेत, चिह्न ।
इच–पु० [अ०] एक छोटा नाप ।
इछा–स्त्री० इच्छा ।
इजन–पु० १ किसी मशीन को चलाने वाला यत्र । २ रेल का इजन ।
इजीनियर–पु० [अ०] यत्र विद्या का पूरा जानकार । यात्रिक, अभियता ।
इजील–स्त्री० ईसाइयो की धर्म पुस्तक ।
इठे, इठै–क्रि०वि० यहा ।
इडकाकड़ी–देखो 'रड काकडी' ।
इडाणी–देखो 'इडाणी' ।
इडियौ–देखो 'एरड' ।
इडौ–पु० अडा, गोला ।
इढ़ी–देखो 'इडाणी' ।
इण, इणि-सर्व० इसने ।
इतकाळ–देखो 'अतकाळ' ।
इतजाम–पु० प्रवध, व्यवस्था ।
इतजार–स्त्री० [अ०] प्रतीक्षा ।
इद–पु०१इन्द्र,सुरेश । २ चद्रमा शशि । ३ छप्पय छद का बारहवा भेद । ४ एक की सख्या । —अरि–पु० असुर, दैत्य । —गोप–पु० १ वीर बहूटी नामक कीडा । २ जुगनू । —पत्थ–पु० इन्द्रप्रस्थ । —पुरी–स्त्री० स्वर्ग । —पूत–पु० जयत, वालि । अर्जुन । —वधू–स्त्री० शची । वीर वहूटी । —लोक–स्त्री० इद्रपुरी । —ससतर–पु० वज्र ।
इदजव–पु० [स० इद्रजव] कूडे या कुटज के बीज ।
इदण (णी)–देखो 'इधण' ।
इदर–देखो 'इन्द्र' । –जाळ='इद्रजाळ' । –धनक='इद्र धनुख' । —लोक=इद्रलोक ।
इदरा–देखो 'इदिरा' । —वर='इदिरावर' ।
इदराउ–पु० कपाटो मे लगने की आडी लकडी ।
इदरी–देखो 'इद्री' ।
इदव–पु० एक छन्द विशेष ।
इदसेन—देखो 'इद्रसेन' ।
इंद्वारौ–देखो 'अधारौ' ।
इदिरा–स्त्री० [स०] १ लक्ष्मी । २ शोभा । ३ आभा, काति । —वर–पु० लक्ष्मीपति विष्णु । आश्विन के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।
इंदीवर–पु० [स०] कमल ।
इदु–पु० [स०] १ चन्द्रमा । २ देखो 'इद्र' । —क='अदुक' । —जा–स्त्री० नर्वदा नदी । —वदना–स्त्री० चन्द्रमुखी, सुन्दरी । —वार–पु० सोमवार । ज्योतिष का एक योग ।
इंद्र–पु० [स०] १ देवताओ का राजा । २ स्वामी, पति । ३ पूर्व दिशा । ४ पूर्व दिशा का दिग्गज । ५ आठ दिग्पालो मे से एक । ६ छप्पय छद का वारहवा भेद । ७ एक की सख्या । —जाळ–पु० जादूगरी, नजरवदी की कला । मायाजाल । बहत्तर कलाओ मे से एक । –अरि–पु० असुर राक्षस –गोप–पु० वीरबहूटी नामक जतु । —जाळक–पु० जादूगर, ऐंद्रजालिक । —जीत–पु० मेघनाद । —जीत, जेत–पु० लक्ष्मण । —धनुख, धनुस, धानक–पु० वर्षाकालिक विविध रगीय इन्द्र धनुष । —पुर, पुरी–पु० स्वर्ग । –वधू–स्त्री० वीर बहूटी । शची । –मडळ–पु० सात नक्षत्रो का समूह । —लुप्त–पु० शिर के वाल उडने का रोग । —लोक–पु० स्वर्ग । —वाडी–स्त्री० नन्दनवन । —वाहण–पु० १ ऐरावत । २ गज हाथी । —ससतर–सस्त्र —पु० वज्र । —सुत–पु० बालि, जयत, अर्जुन ।
इंद्रकील–स्त्री० हिमालय का एक शिखर ।
इद्रजव–देखो 'इदजव' ।
इद्रध्वज–पु०१ एक वहुत ऊचा ध्वज जिस पर हजार छोटी-छोटी झण्डियो होती हैं । (जैन) २ तीर्थकरो के चौतीस अतिशयो मे दसवा अतिशय ।
इद्राण, (णी), इद्रा–स्त्री० [स० इद्राणी] १ इन्द्र-पत्नी शची । २ देवी, दुर्गा ।
इद्राणिक–पु० [स० इन्द्राणिक] एक शृगरिक आसन ।
इद्रानुज–पु० [स०] १ विष्णु, हरि । २ श्री कृष्ण । ३ वामन ।
इद्रापुर (री)–देखो 'इद्रपुर' ।
इद्रायण (णी)–स्त्री० [स० इद्रायन] एक प्रकार की लता व उसका फल ।
इद्रावध–पु० [स० इन्द्रायुध] इन्द्र का वज्र ।

इंद्रावरज–पु० [स०] ईश्वर।
इद्रावाहण–देखो 'इद्रवाहण'।
इद्रासण–पु० [स० इन्द्रासन] १ स्वर्ग का राज्य। २ इन्द्र का सिंहासन। ३ ढगण के प्रथम भेद का नाम।
इद्रि, इद्रिय, इद्री–स्त्री० [स० इन्द्रिय] १ पचेन्द्रिय जिनसे ज्ञान प्राप्त होता है। २ शारीरिक शक्ति। ३ वीर्य। ४ शिश्न, लिंग। ५ शक्ति, बल। ६ पाच की सख्या। ७ दस की सख्या। —जुलाब–पु० मूत्र विरेचन। —सुर–पु० इन्द्रियो के देवता।
इद्रोको–पु० एक वृक्ष विशेष।
इद्री–देखो 'इद्र'।
इधण (धाण, णो)–पु० [स० इधन] जलाने की लकडी, कडा, तेल आदि।
इधारी–देखो 'अधारी'।
इधारीजणो (बो)–क्रि० अधकार मय होना।
इधारो–देखो 'अधारो'।
इनण, इंनणो–देखो 'इधण'।
इयु–अव्य० यो, ऐसे।
इंसान–पु० [अ०] मनुष्य।
इसाफ–पु० [अ०] १ न्याय। २ फैसला, निर्णय।
इहकार–देखो 'अहकार'।
इहकारी–देखो 'अहकारी'।
इ–पु०[स०]१भेद। २ कोप। ३ खेद,सताप दु ख। ४ अनुकम्पा। ५ अपाकरण खडन। ६ भावना। ७ पवित्रता। ८ कामदेव। ९ गणेश। १० शिव। ११ सूर्य। १२ स्वामि कार्त्तिकेय। १३ ब्रह्मा। १४ इन्द्र। १५ चन्द्रमा। १६ सर्प। १८ दया। —सर्व० इन, इसने। इस। —अव्य० १ आश्चर्य, दया, क्रोध-सूचक ध्वनि। २ निश्चयार्थ सूचक शब्द। २ पादपूर्त्यक प्रत्ययशब्द। —वि० व्यर्थ।
इअ, इए—सर्व० यह। —अव्य० इतने मे। इससे।
इउ, (ऊ)–क्रि० वि० इस तरह, ऐसे। —वि० व्यर्थ।
इकत इकात–देखो 'एकात'।
इक (को)–वि० [स० एक] एक। —टक–क्रि० वि० अपलक, निस्पद नेत्रो से, लगातार। —डंकी–स्त्री० एक छत्रता। —डंडी–वि० एकाधिकारी। —ढाळियो–वि० एक तरफ ढालू छत वाला। —साखियो–पु० खरीफ की फसल वाला।
इकखरी–पु० डिगल का एक गीत, (छद)।
इकठो, इकठो (ट्ठो)–वि० एकत्र, सगृहीत।
इकडंको–स्त्री० एक छत्रता, एकाधिकार।
इकतर (त्तर)–वि० १ सत्तर से एक अधिक। २ एकत्र। —स्त्री० सत्तर व एक की सख्या, ७१।
इकतरफी–वि० एक ही पक्ष का, पक्षपातपूर्ण।
इकता–देखो 'एकता'।
इकतार–वि० एक रस, समान, बराबर। —क्रि० वि० निरन्तर।
इकतारो–पु० १ एक तार का वाद्य। २ इकहरे सूत का वस्त्र।
इकताळ–पु० १ एक क्षण, पल। २ बारह मात्राओ की ताल।
इकताळो (स)–वि० चालीस व एक। –पु० चालीस व एक की सख्या, ४१। —क्रि० वि० जल्दी।
इकताळीसो, ईकताळो–पु० ४१ का वर्ष।
इकतीस–वि० तीस व एक। —पु० तीस व एक की सख्या, ३१।
इकतीसो–पु० ३१ का वर्ष।
इकदरी–पु० १ पुरानी इमारतो के नीचे बना तहखाना। २ एक दरवाजे का कमरा या कोठडी।
इकपतनी–स्त्री० पतिव्रता।
इकपदी–स्त्री० राह, रास्ता, मार्ग।
इकपोत्यो–पु० एक ग्रथि वाला लहसुन।
इकबाल–पु० १ स्वीकार, कबूल। २ भाग्य। ३ प्रताप।
इकमन्ना–वि० एक मत वाला, सगठित।
इकमात-भाई, ईकमायो–पु० यौ० सहोदर। भाई।
इकमोलो–वि० एक ही मूल्य का।
इकयासियो–पु० ८१ वा वर्ष।
इकयासो–वि० अस्सी और एक की सख्या के बराबर।
इकरगो–वि० समान रग का।
इकर, इकरा–क्रि० वि० एक बार।
इकरख्खो–वि० (स्त्री० इकरख्खी) सदा एकसा स्वभाव वाला।
इकरथ–वि० व्यर्थ।
इकरदन–पु० यौ० गजानन,, गणेश।
इकरवा (चाप)–स्त्री० दीवार मे लगाया जाने वाला सीधा पत्थर।
इकराणवो–पु० ९१ का वर्ष।
इकराणु, (णू)–वि० नव्वे व एक। —पु० नव्वे व एक की सख्या, ९१।
इकराणूमो–वि० इक्काणवे के स्थान वाला।
इकरार–पु० [अ०] वादा, प्रण, सकल्प। —नामो–पु० प्रतिज्ञा पत्र, शर्तनामा।
इकरारा–क्रि० वि० १ एक बार। २ तेजी से।
इकलग–क्रि० वि० लगातार, निरन्तर। २ देखो 'एकलिंग'।

इकळवाइ (ई)–पु० स्वर्णकारो का एक औजार।

इकलाण–वि० एकात, निर्जन। –क्रि०वि० १ एक दफा, एक वार। २ देखो 'इकळासियौ'।

इकळाई–स्त्री० १ वढई का एक औजार। २ मोची का एक औजार। ३ एक तह वाला वस्त्र। ४ अकेलापन।

इकलाप (पौ)–वि० अकेला, एकाकी (स्त्री० इकालापी)।

इकळायौ–देखो 'इकळासियौ'।

इकलाळियौ–वि० १ समान स्वभाव वाला। २ एकता और प्रेम का वर्ताव करने वाला। ३ देखो 'इकळासियौ'।

इकळास–पु० [अ० इखलास] १ प्रेम, मेल, मित्रता। २ देखो 'इकळासियौ'।

इकळासियौ–पु० एक सवारी का ऊट।

इकलिंग–देखो 'एकलिंग'।

इकलियौ–देखो 'एकलियौ'।

इकलीम–देखो 'अकळीम'।

इकलोयण–पु०[स० एक लोचन]१ कौआ, काग। २ शुक्राचार्य। ३ काना-व्यक्ति। –वि० एक नेत्र वाला।

इकळोतौ–पु० (स्त्री० इकळोती) मा-बाप का अकेला पुत्र।

इकवीस–देखो 'इक्कीस'।

इकस–देखो 'अकस'।

इकसठ–वि० [स० एकपष्टि] साठ व एक। —पु० साठ व एक की सख्या, ६१।

इकसठौ–पु० इकसठ का वर्ष।

इकसासियौ–क्रि० वि० १ विना विश्राम या सास लिये। २ तेजी से। –वि० ३ एक सास मे सब काम करने वाला। ४ वहुत तेज।

इकसाखियौ–वि० एक फसल वाला।

इकसार (रौ)–वि० समान, एक जैसा। —क्रि० वि० लगातार, निरन्तर।

इकसूत–वि० एक साथ, एक सूत्र मे।

इकहतर (त्तर)–देखो 'इकोतर'।

इकहती (त्ती, त्थी, थी)–स्त्री० शस्त्र विशेष।

इकांणमौं, (वौं)–वि० नव्वे के वाद वाला। —पु० इक्काणू का वर्ष।

इकाणू–वि० नव्वे व एक। —पु० नव्वे व एक की सख्या, ९१।

इकात–देखो 'एकात'।

इकात, (रै)–क्रि० वि० एक दिन छोड कर।

इकातरौ–देखो 'एकातरो'।

इकाई–स्त्री० १ एक की सख्या। २ एक अश या विभाग।

इकावहादुर–पु० एकेला व्यक्ति।

इकार–पु० वर्णमाला का तृतीय स्वर, 'इ'। —क्रि० वि० एक दफा, एक वार।

इकावन–वि० पचास व एक। —पु० उक्त की सख्या, ५१।

इकावनौ–पु० इक्कावन का वर्ष।

इकियासियौ–पु० इक्यासी का वर्ष।

इकियासी–वि० अस्सी व एक। —पु० अस्सी व एक की संख्या, ८१।

इकी इकीस–देखो 'इक्कीस'।

इकीसौ–पु० २१ का वर्ष। —वि० पूर्णतया विश्वस्त, खरा।

इकेलौ–देखो 'एकलौ' (स्त्री० इकेली)।

इकेवड–स्त्री० १ एक धागे की रस्सी। २ वस्त्र की एक परत।

इकेवडी ताजीम–स्त्री० राजा महाराजाओ द्वारा दिया जाने वाला सम्मान विशेष।

इकेवडौ–वि० १ एक तह वाला। २ एक परत वाला। ३ एक धागे वाला। ४ इकहरा। ५ समाज मे एकाकी।

इकोतर–वि० [स० एक सप्तति] सत्तर व एक, इकहत्तर। —पु० सत्तर व एक की सख्या, ७१।

इकोतरौ–पु० इकहत्तरवा वर्ष।

इकौ–देखो 'इक्कौ'।

इक्क–वि० एक।

इक्कबाल–पु० [अ० एकबाल] एक ग्रहयोग। (ताजक ज्योतिष)।

इक्कड़--विक्कड–पु० १ एक देशी खेल। २ इस खेल के वोल।

इक्कल–वि० एक, अकेला।

इक्काणमौ (वौ)–देखो 'इकाणमौ'।

इक्कावन–वि० पच्चास व एक। —पु० पच्चास व एक का अक, ५१।

इक्कावनौ–पु० इकावन की सख्या का वर्ष।

इक्कावान–पु० इक्का (तागा) चलाने वाला।

इक्की–स्त्री० १ कटार रखने की चमडे की पेटी। २ एक।

इक्कीस–वि० १ वीस व एक। २ वढिया, श्रेष्ठ, उत्तम। —पु० वीस व एक का अक, २१।

इक्कीसौ–पु० २१ का वर्ष।

इक्केकई–वि० एक।

इक्कौ–पु० १ शस्त्र विद्या मे प्रवीण वडे-वडे काम करने वाला योद्धा। २ अपने झुड से विछुड जाने वाला पशु। ३ अकेला वैल। ४ तागा। ५ एक वूटी वाला ताश का पत्ता। —वि० १ अकेला, एकाकी। २ अद्वितीय, वेजोड।

इक्खणौ (वौ)–क्रि० देखना, अवलोकन करना।

इक्यावन–देखो 'इक्कावन'।

इक्यावनौ–देखो 'इक्कावनौ'।
इक्यासी–देखो 'उकियासी'।
इक्ष्वाक, इक्ष्वाकु–पु० [स० इक्ष्वाकु] १ सूर्यवंश का प्रथम राजा। २ इस नाम से चलने वाला वंश।
इखणौ (बौ)–देखो 'इक्खणौ' (बौ)।
इखत्यार, (री)–पु० [अ० इख्तियार] १ अधिकार, काबू, वश। २ प्रभुत्व। —क्रि० वि० अधिकार मे, वश मे।
इखधाळ–पु० तीर।
इखळास–देखो 'इकळास'।
इखु, ईखू–पु० [स० इषु] तीर; वाण।
इख्य–स्त्री० [स० इष्य] वसंत ऋतु।
इख्यारत, (थ)–वि० व्यर्थ, निष्फल।
इगताळी, (स)–देखो 'इकताळी'।
इगताळीसौ, इगताळौ–देखो 'इकताळीसौ'।
इगतीस–देखो 'इकतीस'।
इगतीसौ–देखो 'इकतीसौ'।
इगसट (ठ)–देखो 'इकसठ'।
इगसटौ (ठौ)–देखो 'इकसठौ'।
इगियार–देखो 'इग्यारे'।
इगियारस–देखो 'एकादसी'।
इगियारे (रै)–देखो 'इग्यारे'।
इगियारौ–देखो 'इग्यारौ'।
इगुणहत्तरि–वि० १ साठ और नौ के योग के बराबर, उनहत्तर। २ उनहत्तर की संख्या, ६९।
इगुणीस–देखो 'उगणीस'।
इग्या–देखो 'आग्या'। —कारी– देखो 'आग्याकारी'।
इग्यारस (सि)–देखो 'एकादसी'।
इग्यारे(रै)–वि० दश व एक। –पु० दश व एक की संख्या, ११।
इग्यारोतरौ, इग्यारौ–पु० ग्यारह का वर्ष।
इडा–स्त्री०[स०इडा]१ शरीर मे वाम भाग मे रहने वाली नाडी। २ श्वास नली। ३ बुध की पत्नी। ४ पृथ्वी। ५ वाणी। ६ गौ। ७ दुर्गा, पार्वती। ८ सरस्वती। ९ स्तुति।
इडौ–देखो 'ऐडौ'।
इचरज–पु० आश्चर्य, विस्मय। —वंत–वि० आश्चर्यान्वित।
इच्छ–देखो 'इच्छा'।
इच्छणौ, (बौ)–क्रि० १ इच्छा करना, चाहना। २ अभिलाषा रखना।
इच्छना–देखो 'इच्छा'।
इच्छा–स्त्री०[स०]१ चाह, कामना, अभिलाषा। २ मनोवृत्ति। ३ भावना। —भेदी–स्त्री० जुलाव की औषधि।
इच्छु (छू)–पु० [स० इक्षु] १ ईख। २ गुड।
इच्छुक–वि० [स०] चाहने वाला, अभिलाषी। –पु० ईख।
इछणौ (बौ)–क्रि० चाहना, इच्छा करना।
इज–देखो 'ईज'।
इजगर–देखो 'अजगर'।
इजत, (ति)-देखो 'इज्जत'।
इजमौ–देखो 'अजमौ'।
इजराय–पु० [अ०] १ जारी करना। २ अमल में लाना। ३ प्रचार करना।
इजळकणौ (बौ)–क्रि० छलकना, मर्यादा बाहर होना।
इजळकौ–पु० छलकने की क्रिया या भाव। उफान।
इजळास–पु० [अ०] १ बैठक। २ न्यायालय।
इजहार–पु० [अ०] १ प्रकाशन। २ बयान, गवाही।
इजाजत,(ती)–स्त्री०[अ० इजाजत] आज्ञा, स्वीकृति, अनुमति।
इजाफे, (फै, फौ)–पु० [अ० इजाफा] १ तरक्की, बढोतरी। २ बचत।
इजार–पु० [अ०] पायजामा, सूथल। –बंध–पु० नाडा, नारा।
इजारदार, इजारेदार–पु० ठेकेदार।
इजारानामौ–पु० [अ० + फा० नाम] इजारे का शर्तनामा।
इजारौ–पु० [अ० इजार] १ उधार या किराये पर देने का अधिकार। २ छत के ऊपर उठी हुई मकान की दीवार।
इजै-बिजै–वि० बराबर, समान, लगभग।
इज्जत–स्त्री० [अ०] मान, प्रतिष्ठा, आदर।
इटियासी–देखो 'इठियासी'।
इटीडाड, इट्टी–स्त्री० गुल्ली।
इठंतर–वि० [स० अष्टसप्तति] सत्तर व आठ। –पु० सत्तर व आठ की संख्या, ७८।
इठतरौ पु० इठत्तर का वर्ष।
इठत्तर–देखो 'इठतर'।
इठाणमौ (वौ)–देखो 'अठाणवौ'।
इठाणू–देखो 'अठाणू'।
इठासी–देखो 'इठियासी'।
इठियासियौ–पु० ८८ का वर्ष।
इठियासी–वि० [स० अष्टाशीति] अस्सी व आठ। –पु० अस्सी व आठ का योग।
इठै (ठं)–क्रि०वि० यहा, इस जगह।
इडकरी–वि० मस्त।
इडग–देखो 'अडिग'।
इडाणी इडूणी इढाणी–स्त्री० माथे पर जलपात्र के नीचे रखने की कपडे की गोल चकरी, गिर्री, गेंडुरी। २ गेंडुरी के आकार का मस्तक मे बालो का चक्र। ३ गेंडुरी के आकार की बनी रोटी जो आग मे सेक कर खाई जाती है।

इडं–क्रि०वि० यहा, यो।

इण–सर्व० इसने, इस । –क्रि०वि० इधर, यहा । —**गत**–क्रि०वि० इस प्रकार । —**गी**–क्रि०वि० इस ओर, इधर। —**बीच**–क्रि०वि० इतने मे ।

इणा–सर्व० इन्होने, इन । –क्रि०वि० इधर, यहा ।

इणि, (णी)–सर्व० इसीने । इसी । –क्रि०वि० इसमे ।

इणिया-गिणिया–वि० इने-गिने, कुछेक ।

इणियाळौ–देखो 'अणियाळौ' (स्त्री० इणियाळी) ।

इणी–देखो 'अणी' । देखो 'अणी-पाणी' ।

इत, इतकूं–क्रि० वि० १ इधर, इस ओर । २ यहा ।

इतणी–सर्व० इतनी ।

इतफाक–पु० [अ० इत्तफाक] १ मौका, अवसर । २ सयोग । ३ सहमति । ४ सहयोग ।

इतफाकी–क्रि० वि० सयोग से होने वाला ।

इतबार–देखो 'एतबार' ।

इतबारी–देखो 'एतबारी' ।

इतमांम–पु०[अ०एहतमाम]१ व्यवस्था, प्रबन्ध । २ बादशाह की सवारी के आगे नकीब की आवाज । –क्रि०वि० वेरोकटोक ।

इतमीनान–पु० [अ० इतमीनान] विश्वास, भरोसा, सतोष ।

इतमीनानी–वि० विश्वास पात्र ।

इतर, (त)–वि० [सं०] १ दूसरा । २ अपर, अन्य । ३ भिन्न । ४ साधारण । ५ पामर, नीच, ६ देखो 'इत्र' ।

इतरणौ (बौ)–क्रि० इठलाना, मचलना । घमड करना ।

इतराज–देखो 'एतराज' ।

इतराणौ (बौ), इतरावणौ (बौ)–देखो 'इतरणौ' (बौ) ।

इतरे, (रै)–क्रि० वि० इतने मे ।

इतरौ–वि० (स्त्री० इतरी) इतना ।

इतळड–वि० इतनी मात्रा का ।

इतला–स्त्री० सूचना । —**नामौ**–पु० सूचना पत्र ।

इतलै–क्रि० वि० इतने मे ।

इतवरी–स्त्री० [स० इत्वरी] १ कुलटा या छिनाल स्त्री ।

इतवार, इत्तवार–१ देखो 'आदित्यवार' । २ देखो 'एतबार' ।

इता (ता, ई)–वि० इतने । —सर्व० इन्होंने । —क्रि० वि० इतने मे ।

इति–स्त्री० समाप्ति, अत, पूर्णता । —अव्य० समाप्ति सूचक ध्वनि ।

इतियाचार–देखो 'अत्याचार' ।

इतियास, इतिहास–पु० [स० इतिहास] १ पूर्व वृत्तात । २ पूर्व काल का वर्णन । ३ वह पुस्तक जिसमे बीते युग का वृत्तान्त लिखा हो । ४ बहत्तर कलाओ मे से एक ।

इतिहासी–वि० ऐतिहासिक ।

इती–वि० इतनी ।

इतेइ–क्रि० वि० इतने मे ।

इतै–क्रि०वि०१ इतने मे । २ तब तक । ३ अब तक । ४ इधर ।

इतोलणौ (बौ)–देखो 'उत्तोलणौ' (बौ) ।

इतौ (त्त, त्तौ)–वि० (स्त्री० इती) इतना ।

इत्तला–स्त्री० [अ० इत्तलाअ] खबर, सूचना, समाचार ।

इत्ते(इ), इत्तौ–देखो 'इतै' ।

इत्यतरौ–क्रि० वि० [स०] इस समय, ऐसे मौके पर ।

इत्य–क्रि० वि० [स०] ऐसे, यो, इस तरह । —**साल**–पु० कुडली मे सोलह योगो मे से एक ।

इत्याचार–देखो 'अत्याचार' ।

इत्याद, (दि, दिक, दिका, दीक)–अव्य० [सं० इत्यादिक] आदि, प्रभृति, और ।

इत्र–पु० [अ०] पुष्पसार, अत्तर ।

इथ, इथिये (यै)–क्रि० वि० यहा ।

इदक, (कौ)–देखो 'अधिक' ।—**मास**–देखो 'अधिकमास' ।

इदकाइ (इधकाइ)–देखो 'अधिकाई' ।

इदकार (इधकार)–देखो 'अधिकार' ।

इदत, इद्ध–वि० प्रकाश मान, शोभित ।

इधक–देखो 'अधिक' ।

इधकजया–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि ।

इधकार–देखो 'अधिकार' ।

इधकारौ–पु० मान, सम्मान ।

इधकेरौ, इधकौ–वि० (स्त्री० इधकेरी) अधिक, विशेष ।

इधणहार–पु० लकडहारा ।

इधराणौ (बौ), इधरावणौ (बौ)–देखो 'उद्धारणौ' (बौ) ।

इधाण–पु० [स०अभिज्ञान] १ निशान, चिह्न । २ देखो 'इधण' ।

इनकार–स्त्री० [अ०] नामजूरी, मनाही ।

इनसान–पु० मनुष्य ।

इनसानियत–स्त्री० मनुष्यत्व, मलमनसाहत ।

इनसाफ–देखो 'इसाफ' ।

इनाम–पु० [फा० इनआम] पुरस्कार, पारितोषिक ।

इनायत–स्त्री० [अ०] १ कृपा, अनुग्रह । २ एहसान । ३ न्योछावर । ४ बकशीस करने की क्रिया । ५ तुष्टमान होने का भाव । —**नामौ**–पु० कृपापूर्वक दी हुई वस्तु का लेख-पत्र ।

इनायाय, (माव)–देखो 'अन्याय' ।

इने, इनै–सर्व० इसे, इसको । —क्रि० वि० इस ओर, इन तरफ ।

इन्यांम–देखो 'इनाम' ।

इफरात–वि० [अ०] अधिकता, बाहुल्य । –वि० बहुत, अधिक ।
इब–क्रि० वि० १ ऐसे । २ देखो 'अब' ।
इबडौ–वि० (स्त्री० इबडी) इतना, ऐसा ।
इबादत–स्त्री० [अ०] ईश्वर की उपासना। पूजा, अर्चना । —खानौ–पु० इबादतगृह, मंदिर ।
इबारत–स्त्री०[अ०]१ लिखावट । २ लेखन शैली । ३ गद्यलेख । ४ मजमून ।
इबारती–वि० गद्यात्मक ।
इभ–पु० [सं०] (स्त्री० इभी) १ हाथी । २ तलवार । —कोस–पु० तलवार की म्यान । —रमणौ–पु० हस्ती क्रीडा ।
इभचार–पु० [सं० इभ्य =राजा+चर] गुप्तचर ।
इभीयाळियौ, इभ्याळियौ (ळौ)–पु० (स्त्री०इभीयाळी, इभ्याळी) माता-पिता रहित गरीब बच्चा । –वि०१ अशक्त,कमजोर । २ दया पात्र । ३ मातृ-पितृ हीन ।
इम–क्रि० वि० इन प्रकार, ऐसे ।
इमतिहान, इमत्यांन,–पु० [अ० इम्तहान] परीक्षा, जाच ।
इमदाद–स्त्री० मदद, सहायता ।
इमरत–देखो 'अमरत' ।
इमरतियौ–पु० गिलट का बना हुक्का ।
इमरती–स्त्री० कंगननुमा बनी रसदार मिठाई ।
इमरस–देखो 'अमरख' ।
इमरित–देखो 'अमरत' ।
इमली–स्त्री० १ पेरेदार, फलीनुमा खट्टा फल । २ इसका वृक्ष ।
इमाम–पु० [अ०] पथप्रदर्शक, नेता । —वाडौ–पु० ताजिए दफनाने व उनका मातम मनाने का स्थान ।
इमारत–स्त्री० बडा और पक्का मकान, बडा भवन ।
इमि, (मी)–क्रि वि० ऐसे, इस प्रकार । देखो 'अमी' ।
इमिया–देखो 'उमा' ।
इम्रत–देखो 'अमरत' ।
इम्रति–देखो 'इमरती' ।
इया–क्रि० वि० १ ऐसे, इस तरह । २ इधर ।
इयाजी–स्त्री० समवियो की दासी ।
इयार–देखो 'अयार' ।
इयाळौ–वि० (स्त्री० इयाळी) इधर का ।
इयु (यू)–क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार ।
इये, (यै)–सर्व० इस, इसने । —वि० ऐसा । —क्रि० वि० १ यहा, इधर । २ ऐसे ।
इरड–पु० एरड । —काकडी–स्त्री० पपीता ।
इरकाणी, (इरकी)–स्त्री० १ ऊट के घुटने के ऊपर का भाग । २ कोहनी ।
इरकियौ–पु० अगले पांव के ऊपरी भाग (इरकी) से जख्मी ऊंट ।
इरकुणी–देखो 'इरकाणी' ।
इरखा–देखो 'ईरसा' ।
इरची-मिरची–पु० एक देशी खेल ।
इरद-गिरद–क्रि० वि० १ चारो ओर । २ आस-पास । ३ इधर-उधर ।
इरमद–स्त्री० [सं०] मेघज्योति, बिजली ।
इराणी, (रांनी)–वि० ईरान का, ईरान संबंधी । –पु० १ ईरान का निवासी । —स्त्री० २ ईरान की भाषा ।
इरा–स्त्री० [सं०] १ बृहस्पति की माता । २ पृथ्वी । ३ वाणी । ४ भाषा । ५ शराब । ६ सरस्वती । ७ जल । ८ भोज्य पदार्थ ।
इराक–पु० पश्चिम एशिया का एक देश ।
इराकी–पु० इराक का निवासी । देखो 'एराकी' ।
इरादौ–पु० १ विचार, उद्देश्य, मसूबा, । २ सकल्प । ३ प्रेम, मित्रता ।
इरावत–पु० [सं० इरावत्] १ एक पर्वत का नाम । २ एक सर्प का नाम । ३ नाग कन्या । ४ उलूपी व अर्जुन का पुत्र । ५ सागर, समुद्र ।
इरावती–स्त्री० १ कश्यप की एक कन्या । २ ब्रह्म देश की एक नदी ।
इरिण–स्त्री० [सं० इरिणम्] बंजर भूमि ।
इळ–देखो 'इळा' ।
इलकाव, (काव)–देखो 'अलकाव' ।
इलकार, इळगार–पु० १ जोश, उत्साह । २ गर्व, घमंड । ३ हर्ष, प्रसन्नता । ४ प्रस्थान, कूच ।
इळगौ–वि० १ अलग, जुदा, पृथक । २ भिन्न ।
इळचक्र–पु० [सं० इलाचक्र] १ क्षितिज, जहा पृथ्वी-आकाश मिलते नजर आते हैं । २ धूमिल वेला ।
इलजांम इल्जांम–पु० [अ० इलजाम] १ दोष, कलक । २ आक्षेप । ३ अभियोग ।
इळजौ–पु० मेहदी ।
इळपत (ति)–देखो 'इळापति' ।
इळपतौ–देखो 'अलपतौ' ।
इळपुड–पु० पृथ्वीतल । सतह ।
इलम–पु० [अ० इल्म] १ विद्या, ज्ञान । २ कला, हुनर, ३ जानकारी, आभास । —गीर, दार–वि० ज्ञानी, पडित । कलाकार । जानने वाला । चतुर ।
इलमी–वि० 'इलम' जानने वाला ।
इलम्म–देखो 'इलम' ।

इलल्ला, (ह)-पु० [अ० इल्लिल्लाह] १ ईश्वर, खुदा । २ खुदा को याद करने का शब्द (ईश्वर सहायता करे) ।
इलविला-स्त्री० कुवेर की माता । २ पुलस्त्य की पत्नी ।
इलवीस-पु० आदम के पास रहने वाला शैतान ।
इळा-स्त्री० [स० इला] १ पृथ्वी, भूमि । २ धूलि, रजकरण । ३ हठयोग मे इडा नामक नाडी । —कंत, पत, पति-पु० राजा, वादशाह । —थभ-पु० राजा । शेषनाग । —व्रत-पु० जम्बूद्वीप के नौ खण्डो मे से एक ।
इला-स्त्री० खेल से दूर रहने के लिए उच्चरित शब्द ।
इलाको-पु० [अ० इलाका] १ अपना क्षेत्र २ रियासत । ३ अधिकार क्षेत्र । २ कोई क्षेत्र विशेष ।
इलाज-पु० [अ०] १ चिकित्सा । २ उपाय । ३ प्रवन्ध, इन्तजाम ।
इलाजी-वि० १ चिकित्सक । २ प्रवन्धक ।
इलापणी (वौ)-देखो 'आलापणौ' (वौ) ।
इलायची-स्त्री० [स० एला+ची] १ तीव्र सुगध वाले वीजो का टोडानुमा सूखा फल । २ इस फल का पौधा । ३ एक प्रकार का घोडा ।
इलायचौ-पु० एक प्रकार का कीमती वस्त्र ।
इलालौ-विलालौ-वि० (स्त्री० इलाली-विलाली) शौकीन, रसिक, छैला ।
इलाह-पु० [अ०] खुदा, ईश्वर । —गज-पु० अकवर वादशाह का चलाया हुआ गज जो ३३ ३/५ इन्च लम्बा होता था और इमारतो के निर्माण मे काम आता था । —सन-पु० वादशाह अकवर का चलाया हुआ सन् ।
इळि-देखो 'इळा' ।
इली-देखो 'इल्ली' ।
इलूरी-पु० एक प्रकार का पत्थर ।
इलोजी-पु० १ होली पर वनाई जाने वाली मनुष्य की विशाल नगी मूर्ति । २ मूर्ख व्यक्ति ।
इलोळ-स्त्री० १ चाल, गति । २ ढग, रीति । ३ लहर, तरग ।
इल्जाम-देखो 'इलजाम' ।
इल्म-देखो 'इलम' ।
इल्लत-स्त्री० [अ०] १ रोग, बीमारी । २ झझट, बखेडा । ३ फालतू का वोझ । ४ जवरदस्ती का कार्य ।
इल्ली-स्त्री० १ एक छोटा कीटाणु जो अनाज, आटा, मेदा आदि मे पैदा हो जाता है । २ एक प्रकार का आभूपण ।
इल्ली-बिल्ली-पु० १ एक देशी खेल । २ अस्थि-पजर ।
इल्वल-पु० एक असुर विशेष ।
इल्वला-स्त्री० पाच तारो का एक समूह ।
इव-अव्य० सादृश्यार्थक अव्यय । —क्रि० वि० १ ऐसे, ऐसा । २ अव ।

इवड़उ, इवडौ (डौ)-वि० (स्त्री० इवडी) ऐसा ।
इवा-सर्व० वह ।
इवे, इवै-क्रि० वि० अव । —सर्व० वे ।
इव्वाक-देखो 'इक्ष्वाकु' ।
इस-क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे । —पु० [स० इप] आश्विन मास ।
इसइ (उ)-अव्य० ऐसे । —वि० ऐसा, ऐसी ।
इसकदर-देखो 'सिकदर' ।
इसक-पु० [अ० इश्क] प्रेम, मुहव्वत ।—वि० आशिक, माशूक ।
इसकपेचौ-पु० एक प्रकार की लता ।
इसकी-वि० [अ० इश्की] इश्क करने वाला, आशिक । रसिक ।
इसकेल-देखो 'असखेल' ।
इसउं, (सै)-क्रि० वि० १ ऐसे, इस प्रकार । २ इतने मे ।
इसडौ-वि० (स्त्री० इसडी) ऐसा ।
इसट-देखो 'इस्ट' ।
इसवगुळ (गोळ)-देखो 'इसवगुळ' ।
इसान-क्रि० वि० ऐसे । —पु० अहसान ।
इसा-वि० ऐसे ।
इसारत, इसारौ-पु० [अ० इशारा] १ सकेत, सैन । २ सक्षिप्त कथन । ३ सूक्ष्म आधार । ४ गुप्त प्रेरणा । ५ सूचना ।
इसि-पु० [स० ऋषि] ऋषि, मुनि । (जैन)
इसिइ, इसी-वि० ऐसी ।
इसु-पु० [स० इपु] वाण, तीर ।
इसुध-पु० ठगण की पाच मात्राओ के तृतीय भेद का नाम ।
इसुधी-पु० [स० इपुधि] तूणीर, तरकस ।
इसूं-वि० ऐसा ।
इसूपळ-स्त्री० [स० इपूपल] किले के द्वार पर रहने वाली तोप विशेप ।
इसै-क्रि० वि० ऐसे, इस तरह ।
इसोसोक-वि० ऐसा, इस प्रकार का ।
इसौ-वि० (स्त्री० इसी) ऐसा । इस प्रकार का ।
इस्कूल-स्त्री० स्कूल, पाठशाला ।
इस्ट-वि० [स० इष्ट] १ चाहा हुआ, अभीष्ट । २ पूज्य, पूजित । ३ अनुकूल ४ प्रिय । ५ उद्दिष्ट । ६ मान्य । ७ कृपापात्र । —पु० १ यज्ञादि शुभ कर्म । २ इष्टदेव । ३ कुलदेव । ४ मित्र । ५ अधिकार । ६ पति । —कर-पु० एक प्रकार का घोडा । —काळ-पु० किसी घटना का ठीक समय । —देव, देवता-पु० आराध्यदेव । कुल देवता ।
इस्टि, (टी)-वि० [स० इष्टि] इष्ट रखने वाला । —पु० १ पति । २ यज्ञ ।
इस्तरी-देखो 'इस्त्री' ।

इस्तिहार–पु० [अ० इश्तहार] १ विज्ञापन। २ सूचना, नोटिस।
इस्तीफो–पु० [अ० अस्त अफ=स्तैफा] त्याग-पत्र।
इस्तोयार, इस्तीहार–देखो 'इस्तिहार'।
इस्तेमाल–पु० [अ०] उपयोग, व्यवहार।
इस्त्री–स्त्री० १ कपडो की तह वैठाने का धोवियो, दर्जियो का उपकरण विशेष। २ देखो 'स्त्री'।
इस्वी–वि० ऐसी। —सर्व० इसकी।
इस्यउ–देखो 'इस्यो'।
इस्यू–क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे।
इस्यो–वि० ऐसा।
इस्लाम–पु० [अ० इस्लाम] १ मुस्लिम धर्म। २ मुसलमान।
इहकार–देखो 'अहकार'।
इहंकारी–देखो 'अहकारी'।
इह–सर्व० [स० एप] यह। इस। —वि० ऐसी, ऐसा। —क्रि० वि० [स०] १ यहा, इस स्थान पर। २ इस समय। ३ इस प्रकार। ४ देखो 'अहि'।
इहडो–वि० (स्त्री० इहडी) ऐसा।
इहनाण–देखो 'ऐनाण'।
इहलौकिक–वि० इस लोक से सबधित।
इहा, इह्या–क्रि० वि० यहा, इस ओर, इधर।
इहि–देखो १ 'इह'। २ देखो 'अहि'।
इहे, इहै–सर्व० इस, यह।
इहो–क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार। —वि० ऐसा। —सर्व० यह, इस।

—ई—

ई–देवनागरी वर्णमाला का चौथा स्वर।
ई–सर्व० इसने, इस, यह। —क्रि० वि० विना काम के। वैसे ही, योही।
ईगुर–पु० [प्रा० इंगुल] चटकीली ललाई लिये हुये एक खनिज पदार्थ। हिंगुल।
ईट, ईटोडी–स्त्री० १ चिकनी मिट्टी का पकाकर तैयार किया खण्ड। २ ताश मे एक रग।
ईठो–देखो 'ऐंठो'।
ईडो–देखो 'अडो'।
ईढ–स्त्री० [स० ईदृश] समानता, वरावरी।
ईढाणी, ईढा, ईढी, ईढूणी–देखो 'इढाणी'।
ईत–स्त्री० पशुओ के शरीर से चिपक कर खून चूसने वाला एक कीडा।
ईद–देखो 'इद्र'।
ईदरापुर–देखो 'इद्रपुर'।
ईदीवर–पु० कमल।
ईंधण (न), ईधणी (णो)–देखो 'इधण'।
ईने–क्रि०वि० इधर, इस ओर। —सर्व० इसने। इसको। इस।
ईसू–सर्व० इससे।
ई–पु० १ कामदेव। २ महादेव। ३ ईश्वर। ४ काच। ५ टेढापन। ६ वगुला। —स्त्री० ७ लक्ष्मी। ८ पुत्रवती। ९ वाझ स्त्री। १० शका। ११ स्मृति। १२ उदासी। १३ दुख। १४ देखो 'ईस'। —वि० लाल, अरुण। —सर्व० यह, इस, यही। —अव्य० किसी शब्द पर जोर देने की ध्वनि। भी।
ई'–देखो 'ईस'।
ईऊ–क्रि०वि० ऐसे।
ईए–सर्व० इस, इसी, ये।
ईकत–देखो 'एकात'।
ईकड–पु० एक प्रकार का पौधा।
ईकरको–देखो 'एकरको'। (स्त्री० इकरकी)
ईकार–पु० 'ई' अक्षर। —क्रि०वि० एक वार।
ईख–स्त्री० [स० इक्षु] गन्ने की फसल, गन्ना।
ईखण–पु० [स० ईक्षणम्] नेत्र, चक्षु।
ईखणो (बो)–क्रि० देखना।
ईखद–वि० [स० ईपत्] तनिक।
ईग्या–देखो 'आग्या'।
ईडा–देखो 'इडा'।
ईछणो (बो)–क्रि० इच्छा करना, अभिलाषा करना।
ईज–अव्य० निश्चयात्मक ध्वनि, ही।
ईजत, (ति, ती)–देखो 'इज्जत'।
ईटकोळ–पु० १ गेंद वल्ले का एक देशी खेल। २ एक प्रकार का क्षुप। ३ अर्गला।
ईठ–देखो 'इस्ट'।
ईठि–स्त्री० मित्रता, दोस्ती।
ईठी–पु० भाला।
ईठे, (ठै)–क्रि०वि० यहा।
ईड–देखो 'ईढ'।
ईडक–पु० नगाडा।
ईडगरो–देखो 'ईढगरो'।
ईडर–पु० ऊट की छाती पर वना गद्दी के आकार का चिह्न।
ईडरियो–पु० १ वह ऊट जिसके ईडर मे जख्म हो। २ ईडर प्रदेश का निवासी।

ईडरौ–देखो 'ईढरौ'। (स्त्री० ईडरी)।
ईडै–क्रि०वि० यहा (मेवात)।
ईढ–स्त्री० १ बराबरी। २ नकल। ३ चेष्टा। ४ ईर्ष्या, डाह। ५ शत्रुता। ६ जिद्, हठ। —वि० समान, बराबर, तुल्य। —गर, गरौ, दार–वि० बराबरी करने वाला, ईर्ष्यालु।
ईढरौ–वि० (स्त्री० ईढरी) १ ईर्ष्यालु। २ समान बराबर का।
ईढाणी, ईढूंणी–देखो 'इडाणी'।
ईण, ईणि, (णी), ईणै–वि० यह। —भव–पु० यह जन्म, इहलोक।
ईत, (ति, ती)–पु० [स० ईति] फसल के लिये हानिकारक उपद्रवी तत्व।
ईतर–वि० १ इतराने वाला। २ गुस्ताख, ढीठ। ३ नीच। ४ देखो 'इत्र'।
ईद–स्त्री० [अ०] मुसलमानो का एक त्यौहार। –गा–स्त्री० ईद की नमाज पढने का स्थान।
ईदी–स्त्री० [अ०] १ त्यौहार का तोहफा। २ त्यौहार सबधी कविता।
ईधकाई–देखो 'अधिकाई'।
ईनणी–देखो 'इधण'।
ईनन्नौ–वि० (स्त्री० ईननी) इधर का, इस ओर का।
ईम–देखो 'इम'।
ईमरति (ती)–देखो 'इमरती'।
ईमान–पु० [अ०] १ धर्म। २ धर्म सबधी विश्वास। ३ आस्तिकता। ४ सच्चाई। ५ कर्त्तव्य परायणता। ६ सद्वृत्ति। —दार–वि० कर्त्तव्य परायण एव सच्चा। धार्मिक। —दारी–स्त्री० ईमानदार होने की क्रिया या भाव।
ईमी–देखो 'अमी'।
ईय–सर्व० इस। —क्रि० वि० ऐसे। यहा, इधर।
ईया–सर्व० इन्होने।
ईया–क्रि० वि० इधर, यहा ऐसे।
ईये (यें)–सर्व० इसने। —वळ–क्रि० वि० इस तरफ।
ईरखा (खी)–देखो 'ईरसा'।
ईरखावाळ, ईरखाळू–देखो 'ईरसाळू'।
ईरसा–स्त्री० [स० ईर्ष्या] डाह, जलन, कुढन।
ईरसाळू–वि० [स० ईर्ष्यालु] १ दूसरे का उत्कर्ष देखकर जलने वाला। २ डाह करने वाला। ३ ईर्ष्या करने या रखने वाला।
ईल–स्त्री० १ मर्यादा। २ दुख।
ईला–वि० १ दुखी। २ देखो 'इला'।
ईली–देखो 'इल्ली'।
ईव–देखो 'इव'।
ईस–पु० [स० ईश, ईष] १ ईश्वर, परमात्मा। २ इष्ट देव। ३ प्रभु, मालिक। ४ पति। ५ शिव, महादेव। ६ राजा। ७ प्रधान, मुखिया। ८ अधिष्ठाता, अधिकारी। ९शासक। १०पारा। ११आर्द्रा नक्षत्र। १२ आश्विन मास। —स्त्री० १३ खाट की लम्बाई। १४ लम्बाई। १५ गाडी की एक बाजू। १६ ग्यारह की सख्या। —प–पु० राजा। —सख–पु० कुबेर।
ईसउ–देखो 'इसउ'।
ईसकौ–पु० द्वेष, ईर्ष्या। २ बराबरी। ३ नकल।
ईसतत्व–पु० [सं० ईशत्व] यज्ञ।
ईसता, (ति, ती)–स्त्री० [स० ईशिता] आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक।
ईसबगुळ, (गोळ)–पु० १ फारस की एक झाडी जिसके बीज दवाइयो मे काम आते हैं। २ एक औषधि।
ईसबर–देखो 'ईश्वर'।
ईसर, (जी)–पु० १ 'गणगौर' पर्व पर बनाई जाने वाली ईश्वर या शिव की प्रतीकात्मक मूर्ति। २ देखो 'ईस्वर'।
ईसरता–देखो 'ईसता'।
ईसरि (री)–देखो 'ईस्वरी'।
ईसरेस–पु० [स० ईश्वर] शिव, महादेव।
ईसवर (रु, रू)–देखो 'ईश्वर'।
ईसवरी–देखो 'ईश्वरी'।
ईसवी–वि० ईसा सबधी। —स्त्री० ईसा सवत्।
ईससीस–स्त्री [स० ईश-शीश] गगा।
ईसाण, ईसान–पु० [स० ईशान] १ शिव। २ विष्णु ३ सूर्य। ४ राजा। ५ उत्तर-पूर्व मध्य की दिशा। —स्त्री० ६ गिरिजा, पार्वती। ५ एहसान। —का–स्त्री० देवी, दुर्गा, पार्वती।
ईसानका–स्त्री० देवी, दुर्गा, भवानी।
ईसा–वि० लम्बा। –क्रि० वि० ऐसा। —पु० १ ईसा मशीह। [सं० ईषा] २ हल का लम्बा लकडा, हरीसा।
ईसाई–पु० ईसामशीह द्वारा चलाया हुआ, धर्म। २ इस धर्म का अनुयायी।
ईसाणद–पु० [स० ईशान] १ शिव, महादेव। २ विष्णु। ३ शासक।
ईसार–पु० [स० ईश+अरि] कामदेव।
ईसालय–पु० शिवालय, देवालय।
ईसासुदत–पु० लम्बे दात वाला हाथी।
ईसिता–देखो 'ईसता'।
ईसीय–वि० ऐसी।

ईसुर–देखो 'ईस्वर'।
ईसुरी–देखो 'ईस्वरी'।
ईसून–देखो 'ईसान'।
ईसौ–देखो 'इसौ'। (स्त्री० ईसी)
ईस्वर–पु० [स० ईश्वर] १ परमेश्वर, ईश्वर। २ शिव महादेव। ३ स्वामी। ४ राजा। ५ धनी, धनवान। ६ समर्थ पुरुष। —ता–स्त्री० प्रभुत्व, ईश्वरत्व।
ईस्वरी–स्त्री० [स० ईश्वरी] १ दुर्गा, भगवती, महामाया। २ पार्वती। ३ श्रीकरणी देवी। ४ श्रीआवड देवी।
ईह–सर्व० १ यह। २ देखो 'ईहा'।
ईहग–पु० १ कवि। २ चारण।
ईहड़ौ–वि० (स्त्री० ईहडी) ऐसा।
ईहण–पु० १ कवि। २ चारण।
ईहणौ (बौ)–क्रि० इच्छा करना, चाहना।
ईहा–स्त्री० [स०] १ इच्छा, कामना। २ चेष्टा, प्रयत्न। —वि० ऐसा।
ईहित–वि० [स०] इच्छित, अभीष्ट।

—उ—

उ–नागरी वर्णमाला का पाचवा स्वर।
उ–अव्य० [स०] विरोध, कष्ट आदि भाव प्रगट करने वाली ध्वनि।
उगस्तनी–स्त्री० जादू का अगूठे का छल्ला [मेवात]।
उचाई–देखो 'ऊचाई'।
उचाणौ–देखो 'ऊचाणौ' (बौ)।
उचास–देखो 'ऊचास'।
उछदती–पु० एक दात की कमीवाला घोडा।
उडाग, उडाई, उडायत–देखो 'ऊडवण'।
उण–देखो 'ऊण'।
उणौ–देखो 'ऊणौ'।
उतावळ, उतावळी, उताळ, उतावळ उतावळी–देखो 'उतावळ'।
उतावळू, (ळौ)–देखो 'उतावळौ'।—(स्त्री० उतावळी)।
उदर (रौ)–देखो 'ऊदर'।
उदायलौ–देखो 'ऊधायलौ'।
उधाडकौ–देखो ऊधाडकौ (स्त्री० उधाडकी)।
उधाहुडौ-पु० वह घोडा जिसके अगले पैर लम्बे हो।
उधीखोपडी–वि० नासमझ, मूर्ख। जिद्दी।
उनमन–पु० मनस्थैर्य। –वि० मनका, मन सबधी।
उबर, उबुर–स्त्री० [स० उम्बर, उम्बुर] १ चौखट के ऊपर वाली लकडी। २ देखो 'उमर'।
उबरण–पु० एक बडा वृक्ष जिसका तना सफेद व फल नीम्बू जैसे होते है।
उबरी–स्त्री० एक काटेदार वृक्ष।
उबरौ–१ देखो 'अमराव'। २ देखो 'ऊमरौ'।
उबाडू–पु० जलाने की लकडियो का गट्ठर।
उबी–देखो 'ऊबी'।
उबार–देखो 'अबार'।
उबारणौ, (बौ)–देखो 'वारणौ' (बौ)।
उह्न–देखो 'ऊह्न'।
उ–पु० [स० उ] १ ब्रह्म। २ शिव। ३ नारद। ४ प्रजापति। ५ सूर्य। ६ स्वामिकार्तिकेय। ७ सार। ८ आशीर्वाद। ९ रावण। १० काल। ११ त्रिकाल सध्या १२ त्रिगुण। १३ बिजली। १४ पार्वती। –वि० अधीन। –सर्व० वह। –अव्य० अनुकम्पा, नियोग, पादपूर्ति या स्वीकृति सूचक अव्यय।
उअकार–पु० प्रणवमत्र, ऊकार।
उअर, (अरि, अवर)–देखो 'उर'।
उअल्लौ–वि० (स्त्री० उअल्ली) इस ओर का।
उअह–पु० [स० उदधि] सागर, समुद्र।
उअहाणउ–देखो 'उखाणौ'।
उआ–सर्व० अ का विकारी रूप, वह, उस (स्त्री)।
उआडौ–१ देखो 'उवाडौ'। २ देखो 'अवाड़ौ'।
उआरण–वि० रक्षा करने वाला। –(स्त्री० न्यौछावर)।
उआरणौ–पु० १ न्यौछावर, बलैया। २ रक्षक।
उआरणौ (बौ)–क्रि० [स० अवतारणम्] न्यौछावर करना, २ बलैया लेना। ३ रक्षा करना। बचाना।
उइखणौ (बौ)–क्रि० उपदेश करना।
उइल्लौ–वि० (स्त्री० उइल्ली) इस ओर का।
उओल–देखो 'अवाळ'।
उकडच्छी–वि० १ उत्कट इच्छा वाली। २ बडी आखो वाली।
उकडणौ (बौ)–देखो 'उकटणौ' (बौ)।
उकडू (डू)–पु० [स०उत्कुतोरु] पावो पर बैठने का एक ढग। –वि० उक्त प्रकार से बैठा हुआ।
उकटणौ (बौ)–क्रि० १ कमिया जाना। २ क्रोध करना। ३ बार-बार कहना। ४ स्थान छोड कर निकलना। ५ भागना। ६ तलवार निकालना। ७ आक्रमण करना, हमला करना। ८ आगे बढना। ९ सूख जाना। १० उत्पन्न होना। ११ बढना।

उकट्ट–पु० १ जोश। २ एहसान।

उकट्टणौ (बौ), उकठणौ (बौ) देखो 'उकटणौ'।

उकटक्षी–वि० [सं० उत्कट+अक्षी] मादक नेत्रों वाली।

उकढ़णौ (बौ), (ढ़ढणौ, बौ)–क्रि० १ बाहर निकलना, कढना। २ आक्रमण करना। ३ चमकना। ४ निकालना।

उकत–१ देखो 'उक्त'। २ देखो 'उकति'।

उकताणौ (बौ)–क्रि० १ ऊबना, उकता जाना। २ खीजना। ३ अधीर होना। ४ जल्दी मचाना।

उकति–स्त्री० [सं० उक्ति] १ चमत्कार पूर्ण कथन। २ वाक्य, वचन। ३ भाव व्यक्त करने की शक्ति। —वांन–वि० चमत्कार पूर्ण वचन कहने वाला।

उकतौ–वि० शस्त्र युक्त व प्रहार करने को उद्यत।

उकत्ती–देखो 'उकति'।

उकर–पु० तीर, बाण।

उकरड़ी, उकरड़ौ–स्त्री० [सं० उत्करी] फूस, कचरा आदि का बड़ा ढेर। —खत, खरच–पु० गाव के सामूहिक खर्च का पचायत का खत।

उकराळणौ (बौ), उकरेळणौ (बौ)–क्रि० १ जमी हुई राख आदि को खोदना, कुरेदना। २ ढेर को इधर उधर करना।

उकरास–पु० १ उपाय, युक्ति। २ मौका, अवसर। ३ खेल का दाव।

उकळणौ (बौ)–क्रि० १ खौलना। २ उबलना। ३ क्रोध करना। ४ अकुलाना। ५ ऊपर उठना। ६ विकट रूप होना।

उकलणौ (बौ)–क्रि० १ दिमाग मे उपजना। २ समझ मे आना। ३ उघडना। ४ उच्चारण करना। ५ अलग होना, उखडना।

उकळाणौ (बौ), उकळावणौ (बौ)–१ खौलाना, गर्म करना। २ उबालना। ३ क्रोध कराना। ४ अकुलाहट पैदा करना। ५ ऊपर उठाना। ६ विकट बनाना।

उकस–पु० १ जोश। २ अभिलाषा, लालसा।

उकसणौ (बौ)–क्रि० १ जोश आना, उत्तेजित होना। २ उभरना, ऊपर उठना। ३ निकलना, अकुरित होना। ४ उघडना, खुलना। ५ शत्रुता रखना। ६ उचकना। ऊचा होना। ७ ऊपर उठना।

उकसाणौ (बौ), उकसावणौ (बौ)–प्रे०क्रि० १ जोश दिलाना, उत्तेजित करना। २ उभारना। उठाना। ३ निकालना। ४ उखेडना, खोलना। ५ शत्रुता कराना। ६ उचकाना।

उकानह–पु० [सं० उकानह] लाल और पीले रग का घोडा।

उकाब–पु० [अ०] १ बडा गिद्ध। २ गरुड। –वि० चालाक, धूर्त।

उकाळणौ, (बौ)–क्रि० १ खौलाना, गर्म करना। २ उबालना। ३ गिराना। ४ डिगाना।

उकाळी–स्त्री० काष्ठादि औषधि का काढा, क्वाथ।

उकाळौ–पु० उबाल।

उकासणौ (बौ)–देखो 'उकसाणौ' (बौ)।

उकीरौ–पु० गोबर का कीडा।

उकील–देखो 'वकील'।

उकीलायत–देखो 'वकालात'।

उकुसणौ (बौ)–क्रि० १ उजाडना। २ उखेडना। ३ देखो 'उकसणौ' (बौ)।

उकेकळ–वि० मुक्त।

उकेरणौ (बौ)–क्रि० कोरना, चित्र बनाना।

उकेरौ–देखो 'उकीरौ'।

उकेलणौ–देखो 'उखेलणौ'।

उक्कंठणौ (बौ)–क्रि० उत्कठित होना।

उक्कबणौ (बौ)–क्रि० ऊ ची गर्दन करना।

उक्कति (ती)–देखो 'उकति'।

उक्कोस–वि० १ उत्कृष्ट। २ उत्क्रोस, ऊचा।

उक्त–वि० ऊपर कथित, पूर्व कथित। कहा हुआ। –स्त्री० डिंगल छद रचना का एक नियम।

उक्रणौ (बौ)–क्रि० १ जोश बताना। २ गर्जना, दहाडना।

उक्रमणौ (बौ)–क्रि० १ कूदना। २ नृत्य करना। ४ छलाग लगाना।

उक्रसणौ, (बौ)–देखो 'उकसणौ' (बौ)।

उक्ष, उख–पु० [सं० उक्षन्] १ बैल। सूर्य। २ देखो 'ऊख'।

उखड़णौ (बौ)–क्रि० १ जमी हुई वस्तु का स्थान से हटना, उखडना। २ जड सहित निकलना। ३ जमी हुई स्थिति का बदलना। ४ चाल मे भेद पडना। ५ हटना, अलग होना। ६ क्रोध करना। ७ हारना। ८ श्वास की गति बिगडना।

उखडियोडौ–पु० जानु (घुटने) मे कसर वाला ऊंट।

उखणणौ (बौ)–क्रि० १ बोझा सिर पर उठाना। २ ऊपर उठाना। ३ उत्तरदायित्व लेना। ४ नोचना। ५ शस्त्र उठाना। ६ खोदना।

उखणा–स्त्री० [सं० ऊषणा] काली मिर्च।

उखणाणौ (बौ), उखणावणौ, (बौ)–प्रे० क्रि० १ सिर पर बोझा उठवाना। २ ऊपर उठवाना। ३ उत्तरदायित्व डालना। ४ नुचवाना। ५ शस्त्र उठवाना। ६ खुदवाना।

उखध–देखो 'ओखध'।

उखरडी, (डौ)–देखो 'उकरडी'।

उखरबिध, (बुध, विध)–स्त्री० [सं० उपर्बुध] अग्नि, आग।

उखराटौ, उखरामटौ, (राटौ)–वि० (स्त्री० उखराटी) विस्तर रहित ।

उखराळी–स्त्री० १ विना विस्तर की खाट । २ ऐसी खाट पर सोने वाली स्त्री । ३ कुत्ते आदि की गुसाली, खड्डा । ३ उथल-पुथल ।

उखळणौ, (बौ)–देखो 'उकळणौ' ।

उखलणौ (बौ)–देखो 'उकलणौ' (बौ) ।

उखाखियौ–वि० १ जोशीला, जोश पूर्ण । २ वीर, साहसी । ३ क्रुद्ध ।

उखाण, (णू, णौ)–पु० [स० उपाख्यान] १ कहावत उक्ति । २ दृष्टान्त । ३ मुहावरा ।

उखा–स्त्री० [स० उषा] १ सवेरा, तडका, प्रभात । २ अरुणोदय का प्रकाश । ३ वाणासुर की कन्या । ४ रात्रि । ५ गाय । —ईस, पत, पति, पती–पु० अनिरुद्ध । कामदेव ।

उखाड–स्त्री० [स० उत्खात] १ उखाडने या हटाने की क्रिया । २ अलगाव, पार्थक्य । ३ दाव-पेच । –पछाड़, पिछाड–स्त्री० उथल-पुथल, उलटपलट करने की क्रिया । उत्पात । जोड-तोड, दाव-पेच ।

उखाड़णौ (बौ)–प्रे० क्रि० [स० उत्खातनम्] १ जमी हुई वस्तु को स्थान से हटाना, उखाडना । २ जड सहित निकालना । ३ जमी हुई दशा को मिटाना । ४ हटाना, अलग करना । ५ क्रोध दिलाना । ६ हराना । ७ नष्ट करना, ध्वस्त करना । ८ खोदकर निकालना । ९ खोलना ।

उखि–देखो 'उख' ।

उखेडणौ (बौ), उखेडणौ (बौ)–देखो 'उखाडणौ' (बौ) ।

उखेल (लौ)–पु० [स० उत्खेल] १ युद्ध । २ उत्पात । ३ कलह । ४ उपद्रव, उत्पात । ५ देखो 'उखाड' ।

उखेलण–वि० उखाडने वाला, मिटाने वाला ।

उखेलणौ (बौ)–देखो 'उखाडणौ (बौ) ।

उखेवणौ (बौ)–क्रि० देवताओ के आगे धूप-दीप करना ।

उगटणौ (बौ)–क्रि० [स० उद्घटन] १ उदय होना । २ प्रगट होना । ३ कमिया जाना । ४ देखो 'उकटणौ' (बौ) ।

उगट्ठि (ट्ठी)–वि० प्रगट, प्रत्यक्ष, उत्पन्न ।

उगणतरौ–देखो 'गुणतरौ' ।

उगणतीसौ–देखो 'उनतीसौ' ।

उगणाऊ–देखो 'उगुणी' ।

उगणिस, (णीस)–वि० दस और ९ के योग के समान । —पु० दश और नौ के योग की सख्या, १९ ।

उगणीसौ–पु० १९ का वर्ष ।

उगत–स्त्री० १ युक्ति, उपाय । २ बुद्धि, ज्ञान । ३ उद्भव, उत्पत्ति, जन्म । ४ ढग, तरीका । ५ न्याय, नीति । ६ उक्ति । ७ कथन ।

उगति, (ती)–देखो 'उकति' ।

उगनियौ (नीयौ)–देखो 'ओगनियौ' ।

उगम–पु० [स० उद्गम] १ आविर्भाव, उदय । २ अंकुर । ३ उत्पत्ति स्थान । ४ सूर्योदय के समय का प्रकाश । ५ मादा पशुओ के स्तन का रोग विशेष ।

उगमण–स्त्री० १ पूर्व दिशा । २ देखो 'उगम' ।

उगमणियौ–देखो 'ऊगमणियौ' ।

उगमणी–देखो 'ऊगमणी' ।

उगमणू–पु० पूर्व दिशा । —क्रि० वि० पूर्व दिशा की ओर ।

उगमणौ–वि० पूर्व का, पूर्व दिशा सबधी । —पु० पूर्व दिशा ।

उगमणौ (बौ)–देखो 'ऊगणौ' ।

उगरणौ (बौ)–क्रि० १ बचना । २ शेप रहना । ३ गाना प्रारम्भ करना । ४ देखो 'ऊगारणौ' (बौ) ।

उगराटी–देखो 'उखराटी' (स्त्री० उगराटी) ।

उगरामणौ (बौ)–क्रि० [स० उद्ग्रहणम्] १ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना । २ प्रहार करने को उद्यत होना ।

उगराणौ (बौ) उगरावणौ, (बौ) उगराहणौ (बौ)–क्रि० १ वसूल करना । २ बदला लेना । ३ प्राप्त करना । ४ दण्ड स्वरूप लेना । ५ बकाया लेना । ६ रक्षा करना । बचाना ।

उगळ–स्त्री० [स० उद्गल] १ रुपये-पैसे व सामान की अधिकता । २ आवश्यकता ।

उगळणौ (बौ)–क्रि० [स० उद्गलन्] १ वस्तु या बात मुंह से निकालना, उगल देना । २ उल्टी करना, कै करना । ३ गुप्त बात प्रगट करना । ४ पुन लौटाना । ५ भीतर से बाहर निकालना । ६ गर्भपात होना ।

उगळतू (तौ)–देखो 'आगळतू' ।

उगळाची–स्त्री० [स० उत्कचुकि] विना कचुकी खुले स्तन वाली स्त्री ।

उगळाची, उगळाणी–वि० [स्त्री० उगलाणी] निर्वस्त्र, नगा ।

उगळाणौ (बौ)–प्रे०क्रि० १ बात या वस्तु मुह से निकलवाना, उगलवाना । २ उल्टी कराना, कै कराना । ३ गुप्त भेद लेना । ४ भीतर से बाहर निकलवाना ।

उगळी–स्त्री० उल्टी, वमन, कै ।

उगवणौ–क्रि०वि० पूर्व की ओर । –पु० पूर्व ।

उगसाणौ (बौ)–देखो 'उकसाणौ' (बौ) ।

उगहणौ (बौ)–देखो 'ऊगणौ' (बौ) ।

उगाची–देखो 'उगाळाची' ।

उगाण–देखो 'ऊगाण' ।

उगाई–स्त्री० १ वसूली । २ वसूली का धन । ३ ऊगने की क्रिया ।
उगाड़–पु० १ समझ । २ खुलासा । ३ प्रागट्य । ४ निराकरण ।
उगाड़णौ, (बौ)–देखो 'उघाडणौ' (बौ) ।
उगाडौ–वि० (स्त्री० अगाडी) १ खुलासा । २ नगा, निर्वस्त्र । ३ निरावरण । ४ स्पष्ट ।
उगाणौ (बौ)–क्रि० १ उगाना, उत्पन्न करना । २ अकुरित करना । ३ उदित करना । ४ प्रगट करना । ५ वसूल करना । ६ तानना । ७ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना ।
उगारणौ (बौ)– देखो 'उवारणौ' (बौ) ।
उगाळ–१ देखो 'ओगाळ' । २ देखो 'जुगाळ' ।
उगाळणौ (बौ)–देखो 'ओगाळणौ' (बौ) ।
उगाळदान–पु० पीकदान, थूकदान ।
उगाळबध–देखो 'ओगाळबध' ।
उगाळी–स्त्री० १ सूर्योदय । २ जुगाली ।
उगाव–पु० १ उदय । २ अकुरण ।
उगावणौ, (बौ)–देखो 'उगाणौ' (बौ) ।
उगाह, (हा, हौ)–देखो 'उग्गाह' ।
उगाहणौ (बौ)–देखो 'उगाणौ' (बौ) ।
उगाही–देखो 'उगाई' ।
उगाहौ–पु० १ 'उगाई' करने वाला । २ देखो 'उग्गाह' ।
उगुण, उगूण–स्त्री० पूर्व दिशा ।
उगुणौ, उगूणाऊ, उगूणौ, उगूणौ–क्रि०वि० पूर्व की ओर । –वि० पूर्व का, पूर्व दिशा सबधी ।
उगेरणौ (बौ)–क्रि० गाना प्रारभ करना ।
उगेरे, उगैरे–अव्य० इत्यादि, वगैरह ।
उगेळ–१ देखो 'ओगाळ' । २ देखो 'उगळ' ।
उगेळणौ(बौ)-१रक्षा करना,बचाना । २ देखो'ओगाळणौ'(बौ)।
उगोडौ–वि० (स्त्री० उगोडी) १ उत्पन्न, अकुरित । २ उदित । ३ वसूल ।
उग्गमणौ (बौ)–देखो 'ऊगणौ' (बौ) ।
उग्गाह–पु० आर्या छन्द का एक भेद ।
उग्घाडकवाड-पु० द्वार खुला कर भिक्षा लेने का एक दोष । (जैन)
उग्र–वि० [स०] १ क्रोधी । २ तेज मिजाज । ३ प्रचड । ४ तेज, तीव्र । ५ भयानक । ६ कठिन । ७ निष्ठुर । ८ हिंसक । ९ बलवान । १० तीक्ष्ण । ११ उच्च कुलीन । –पु० १ शिव, महादेव । २ वच्छनाग । ३ सूर्य । ४ ऊचा स्वर । ५ रौद्र रस । —कारी–वि० भयकर । वीर । —गध–पु० चपा का वृक्ष । चमेली । लहसुन । हीग । –वि० तेज महक या गध वाला । —गधा–स्त्री० अजवाइन । वच । —गति, गती–पु० हस । गरुड । —चडा–स्त्री० दुर्गा, शक्ति । —तप–पु० कठिन तपस्या । ऋषि, मुनि, तपस्वी । —ता, ताई–स्त्री० तेजी, प्रचण्डता, तीव्रता । कठोरता । शौर्य । —तारा–स्त्री० मातगिनी नामक देवी की मूर्ति । —ताळ–वि० भाग्यशाली । —धन, धनु–पु० इन्द्र । शिव । —भागी–वि० भाग्यवान ।
उग्रणौ (बौ)–देखो 'उग्रहणौ' (बौ) ।
उग्रभ–वि० तेजस्वी, पराक्रमी । —पु० तेज, पराक्रम ।
उग्रसेण (न)–पु० मथुरा का राजा व कस का पिता ।
उग्रहणौ (बौ)–क्रि० [स० उद्ग्रहणम्] १ छोडना, मुक्तकरना । २ रक्षा करना । ३ बदला लेना । ४ ग्रहण करना । ५ खाना, भक्षण करना ।
उग्रा–स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ कर्कशा स्त्री । ३ अजवाइन । ४ वच । ५ धनिया ।
उग्रावणौ (बौ)–देखो 'उग्राहणौ' (बौ) ।
उग्राहणारि–पु० भाला ।
उग्राहणौ (बौ)–देखो 'उगराणौ' (बौ) ।
उघउ (घौ)–देखो 'ओघौ' ।
उघडणौ, (बौ)–क्रि० [स० उद्घाटनम्] १ अनावरण या निरावरण होना । २ खुलना । ३ नग्न होना । ४ प्रगट होना, प्रकाशित होना । ५ दिखने योग्य होना । ६ भण्डा फूटना । ७ भेद खुलना । ८ परिचय देना ।
उघट–पु० [स० उत्कथन] १ सगीत मे ताल या सम । २ उछाल । ३ उदय ।
उघटणौ (बौ)–क्रि० १ उदय होना । २ उभरना । ३ उछलना । ४ कसिया जाना । ५ क्रोध करना ।
उघरणौ (बौ)–क्रि० प्रवेश करना ।
उघरामणौ (बौ)–देखो 'उगरामणौ' (बौ) ।
उघराणौ (बौ), उघरावणौ (बौ)–देखो 'उगराणौ' (बौ) ।
उघाई–देखो 'उगाई' ।
उघाड–देखो 'उगाड' ।
उघाडणौ–वि० १ खोलने वाला । २ निरावण या नगा करने वाला । ३ काटने वाला ।
उघाड़णौ (बौ)–क्रि० १ निरावरण, अनावरण करना । २ खोलना । ३ नगा करना । ४ प्रगट करना प्रकाशित करना । ५ भेद खोलना, भण्डा फोडना । ६ परिचय देना ।
उघाडौ–देखो 'उगाडौ' । (स्त्री० उगाडी) ।
उघाणौ (बौ)–देखो 'उगाणौ' (बौ) ।
उघेरणौ (बौ)–देखो 'उगेरणौ' (बौ) ।
उछघड–देखो 'अणगड' ।
उडद–पु० एक प्रकार का मोटा अनाज, द्विदल अनाज । —परणी='उदयपरणी' । —रेख, रेखा–स्त्री० पैर के

तलवे की सीधी रेखा। —वेगण, विगण वेगण, वेगणा, वेगाणी, वेगी, वैगण–स्त्री० मर्दाने वेश में रहने वाली शाही दासी, शैतान स्त्री।

उड़दावौ–पु० १ घोडो का एक खाद्य पदार्थ। २ घोडों को खिलाने के लिए तैयार किया हुआ चारा।

उडदी–स्त्री० वर्दी, पोशाक।

उडदू–पु० १ बडा जलसा। २ उर्दू भाषा। ३ सेना, फौज। ४ छावनी का बाजार। ५ देखो 'अडदू'।

उड़ागर–पु० अनल पक्षी। पक्षी।

उडी–१ ऐसी। वैसी। २ देखो 'उडी'।

उचगौ–वि० (स्त्री० उचगी) उचक्का, उठाईगीर। अजनवी।

उचडणौ (बौ)–क्रि० १ ऊपर फेंकना, उछालना। २ उडना, आकाश में फैलना।

उच–देखो 'उच्च'।

उचकणौ (बौ)–क्रि० १ उचकना। २ ऊपर उठना। ३ उछलना। ४ आक्रामक होकर आना। ५ चौंकना, चमकना।

उचकन-खोरावाय–पु० यौ० आंखों से आंसू गिरते रहने वाला घोडा।

उचकाणौ (बौ) उचकावणौ (बौ)–प्रे० क्रि० १ उचकाना। २ ऊपर उठाना। ३ उछालना। ४ आक्रमण कराना। ५ चोर लेना, चोरी करना।

उचक्कणौ (बौ)–देखो 'उचकणौ' (बौ)।

उचक्कौ–वि० १ चोर। २ ठग। ३ बदमाश, उद्दंड। ४ छली, पाखंडी। ५ ऊंचा, तेज।

उचडणौ (बौ)–क्रि० १ जमी हुई या चिपकी हुई वस्तु का अलग होना। २ पृथक् होना। ३ जाना भागना।

उचजणौ (बौ) उचझणौ (बौ)–क्रि० १ उछल कर वार करना, होना झपटना। २ शस्त्र उठाना। ३ वार करना।

उचटणौ (बौ)–क्रि० [स० उच्चाटनम्] १ जमी हुई वस्तु का उखडना, उचडना। २ उखडना। ३ अलग होना। पृथक होना। ४ भडकना, चमकना। ५ विरक्त होना। ६ उदास होना। ७ मन न लगना। ८ विचकना, चौंकना।

उचट्ट–देखो 'उचाट'।

उचणौ (बौ)–क्रि० [स० वच्] १ कहना, कथना। २ बोलना।

उचत–देखो उचित'।

उचरग–देखो 'उच्छरग'।

उचरणौ (बौ)–देखो 'उच्चारणौ' (बौ)।

उचरी–स्त्री० कीर्ति, प्रशसा, यश।

उचळणौ (बौ)–क्रि० १ चलायमान होना, कंपित होना। २ देखो 'उछळणौ' (बौ)।

उचस्ट–देखो 'उच्छिस्ट'।

उचात, उचायत–स्त्री० ऊचाई, ऊंचापन।

उचात (टण, टन) उचाटी–वि० [स० उच्चाट] १ विरक्त। २ खिन्न उदास। ३ पीडित। ४ व्याकुल। ५ चिंतित। —स्त्री० १ चिंता व्यग्रता। २ उदासीनता, उदासी, विरक्ति। ३ कै, वमन।

उचाणौ (बौ)–देखो 'ऊंचाणौ' (बौ)।

उचार, उचारण–देखो 'उच्चारण'।

उचारणौ (बौ)–देखो 'उच्चारणौ' (बौ)।

उचारिण–पु० [स० उत्तमर्ण] १ कुबेर। २ सेठ, महाजन।

उचाळउ, उचाळौ–देखो 'उछाळौ'।

उचाळणौ, (बौ)–देखो 'उछाळणौ' (बौ)।

उचास–देखो 'उच्चीस्रवा'।

उचासिरौ–देखो 'ऊचासरौ'।

उचित–वि० [स०] १ ठीक, मुनासिब, वाजिब। २ योग्य। समीचीन।

उचिता–स्त्री० प्रकृति, कुदरत। —पति–पु० ईश्वर।

उचिस्रव, उचीस्रव–देखो 'उच्चीस्रवा'।

उचूळ–वि० [स० उच्चूल] ऊचा।

उचेस्रव, उचैस्रव–देखो 'उच्चीस्रवा'।

उच्चडणौ (बौ)–देखो 'उचडणौ' (बौ)।

उच्च–वि० [स०] १ श्रेष्ठ, महान, ऊंचा। २ उन्नत, उत्तुंग। ३ उत्तम, बढिया। ४ बडा। —ता–स्त्री० श्रेष्ठता, महानता। ऊचाई। उत्तमता, बडाई। —मन, मनौ–वि० ऊंचे विचारो वाला। उदार हृदय।

उच्चय–पु० [स० उच्चय] १ कटिबंध, नाडा। २ साडी। ३ लहगा।

उच्चरणौ (बौ)–देखो 'उच्चारणौ' (बौ)।

उच्चळचित्तौ–वि० अस्थिर-चित्त वाला।

उच्चाट–देखो 'उचाट'।

उच्चाटण (न)–पु० एक तांत्रिक अभिचार या मत्र।

उच्चातुर–पु० [स०] राक्षस।

उच्चार, उच्चारण–पु० [स० उच्चार] १ मुह से निकले वाली किसी शब्द की आवाज। २ कथन, वर्णन। ३ निरुपण। ४ विसर्जन। ५ मल, विष्टा। (जैन)

उच्चारणौ (बौ)–क्रि० उच्चारण करना, बोलना। कहना।

उच्चीस, उच्चीस्रवा, उच्चैस्रवा–पु० [स० उच्चैश्रवा] इन्द्र का घोडा। –वि० १ बडे बडे कानो वाला। २ बहरा।

उच्चोल–पु० [स० उल्लोच] १ चन्द्रातप, वितान। २ शामियाना। ३ राजछत्र।

उच्छग, (गौ)–देखो 'उछग'।

उच्छक–वि० [स० उत्सुक] १ आतुर, उद्विग्न, व्याकुल। २ उत्कठित।

उच्छटणौ(बौ)–क्रि०१ टूटना, टूटकर दूर पडना। २ उछलना।

उच्छव–देखो 'उत्सव'।

उच्छरंग–१ देखो 'उछरंग'। २ देखो 'उत्सव'।

उच्छरणौ (बौ)–क्रि० १ बडा होना। २ पुष्ट होना। ३ उछलना। ४ उच्चारण करना। ५ उखाडना। ६ देखो 'उछरणौ' (बौ)।

उच्छलग–पु० उत्सव।

उच्छळणौ (बौ)–देखो 'उछळणौ'।

उच्छव–देखो 'उत्सव'।

उच्छवाह, उच्छाव, उच्ळाह–पु०[स०उत्साह] १ उत्साह, जोश। २ हर्ष, उमग। ३ धूम-धाम, उत्सव।

उच्छाळणौ (बौ)–देखो 'उछाळणौ' (बौ)।

उच्छित–वि० [स० उच्छ्रित] ऊचा, उन्नत।

उच्छिस्ट–पु० जूठन एँठन। –वि० जूठा।

उच्छेवणौ(बौ)–क्रि० १ छेदन करना। २ तोडना। ३ उखाडना। ४ सीमोल्लघन करना।

उच्छेरणौ (बौ)–देखो 'उछेरणौ' (बौ)।

उच्छ्रखल–वि० [स०उच्छृखल] १ चचल। २ उद्दण्ड,वदमाश। ३ स्वेच्छाचारी। ४ उछल कूद करने वाला।

उच्छ्राय–पु० १ पर्वत, वृक्षादि की ऊचाई। २ उच्च परिणाम।

उछंग (गति)–पु० [स० उत्सग] १ गोदी, अक। २ मध्य भाग। ३ ऊपरी भाग। [स०उत्सुक] १ निर्लिप्त, विरक्त। २ उत्सुक, उत्कठित।

उछछल–देखो, 'चचल'।

उछटी–वि० १ अधिक। २ बडी।

उछडणौ (बौ)–क्रि० छोडना, त्यागना।

उछड–देखो 'ओछौ'।

उछक–स्त्री० १ मस्ती, उन्मत्तता। २ देखो 'उच्छक'।

उछक-छाक–वि० मदोन्मत्त।

उछकणौ (बौ)–देखो 'उचकणौ' (बौ)।

उछगणौ (बौ)–क्रि० १ जोश मे आना। २ फूलना।

उछट–स्त्री० १ तरग, लहर। २ गति, चाल। ३ उदारता। –वि० अधिक।

उछटणौ (बौ)–क्रि० १ कूदना, उछलना। २ कटना। ३ खण्डित होना।

उछव–देखो 'उत्सव'।

उछरग (गि, गौ)–स्त्री० [स० उत्सव+रग] १ इच्छा, अभिलाषा। २ उत्सव। ३ हर्ष, आनन्द। ४ उत्साह, जोश। ५ सुखद मनोवेग, उमग। –वि० १ उत्सुक। २ ऊचा, उन्नत।

उछरगणौ (बौ)–क्रि० १ भयकर युद्ध करना। २ प्रबल पराक्रम दिखाना। ३ प्रलय नृत्य करना। ४ उच्छृखल होना। ५ प्रसन्न होना। ६ उत्साह दिखाना।

उछरजण, (न)–पु० [स० उत्सर्जन] दान। उत्सर्ग। —त्याग–पु० दान।

उछरणौ, (बौ)–क्रि० १ जन्मना, उत्पन्न होना। २ उछलना, कूदना। ३ पोषण पाना। ४ चरने के लिए जगल मे जाना(मवेशी)। ५ लम्बी दूर जाने के लिए रवाना होना।

उछराणौ (बौ)–प्र० क्रि० १ उछालना, कुदाना। २ पैदा करना। ३ पोषण करना। ४ चराने के लिए जगल मे ले जाना।

उछरेळ–वि० जवरदस्त, वलवान।

उछळंग–देखो 'उच्छृखल'।

उछळ–स्त्री० १ छलाग, कुदान। २ लाभ वाला हिस्सा। ३ चुनाव मे प्राथमिकता। –वि० बढिया, श्रेष्ठ। —कूद–स्त्री० खेलकूद। अत्यधिक प्रयास। हलचल। दौड-धूप। अधीरता। चचलता। गडवडी। —पांती–स्त्री० लाभ वाला हिस्सा। प्रथम इच्छा।

उछळग–पु० १ उत्सव। २ देखो 'उच्छृखल'।

उछळणौ (बौ)–क्रि०१उछलना,कूदना। २ फादना। ३ झटके के साथ ऊपर उठना। ४ आह्लादित होना, प्रसन्न होना। ५ चौंकना, चमकना। ६ क्रोध मे बकना। ७ टूट कर पृथक गिरना, दूर पडना।

उछव–देखो 'उत्सव'।

उछवाह–१ देखो 'उच्छवाह'। २ देखो 'उत्सव'।

उछाछळौ (वळौ)–वि० (स्त्री० उछाछळी, उछावळी) चचल, चपल। २ मग्न। ३ मदोन्मत्त।

उछाट–स्त्री० १ इच्छा, उत्कठा। २ प्रवलता। ३ शक्तिवल ४ वमन, उल्टी, कै।

उछावळौ–देखो 'उछाछळौ'।

उछाजणौ (बौ)–देखो 'उछाळणौ' (बौ)।

उछारक–पु० [स० उत्सारक] द्वारपाल, प्रतिहार।

उछाळ–स्त्री० १ सहसा ऊपर उठने की क्रिया या भाव। २ कुदान, छलाग। ३ उछलने की सीमा। ४ वृष्टि, वर्षा। ५ ऊपर फेंकने की क्रिया। ६ पानी का छींटा। ७ लहर, तरग। ८ उल्टी, वमन। ९ शव आदि के प्रस्थान पर ऊपर फेंका जाने वाला रुपया पैसा।

उछाळणौ (बौ)–क्रि० १ कुदाना। २ ऊपर उठाना। ३ ऊपर फेंकना। ४ वर्षा करना। ५ उत्साहित या प्रेरित करना। ६ प्रकट करना। ७ वात का प्रचार करना।

उछाळौ–पु० १ उछालने की क्रिया या भाव । २ इमारत की कुर्सी । ३ सामूहिक पलायन । ४ पलायन । ५ क्रोध आवेश । ६ वमन, कै, उल्टी ।

उछाव (ह)–देखो 'उत्साह' । २ देखो उत्सव ।

उछाही–देखो 'उत्साही' ।

उछिस्ट–देखो 'उच्छिस्ट'

उछीरौ–पु० [स० असृक] खून, रक्त ।

उछेट–पु० सीना ।

उछेद–पु० [स० उच्छेद] १ खण्डन, नाश । २ छेदन ।

उछेर–पु० वश । सतान । औलाद । –वि० चलाने वाला ।

उछेरणौ(बौ)–क्रि० १ चराने निमित्त मवेशियो को एकत्र करके जगल मे ले जाना । २ भेजना । ३ हाकना ।

उछ्रित–वि० [स०] १ ऊचा, उत्तुग । २ बढ़ा हुआ, उन्नत । ३ उठा हुआ ऊचा किया हुआ । ४ ऊपर गया हुआ ।

उजक–वि० १ नि शक, साहसी । २ उद्दण्ड ।

उज–पु० [स० अश्रु] आसू ।

उजआळ (ळौ)–देखो 'उजाळौ' ।

उजड–१ देखो 'ऊजड' । २ देखो 'उजाड' ।

उजड़णौ (बौ)–क्रि० १ वीरान होना, सूना होना । २ उखडना । ३ ध्वस्त होना, नष्ट होना । ४ विखरना । ५ पृथक होना । ६ फट जाना ।

उजडौ–वि० उजडा हुआ, वीरान । २ विनष्ट ।

उजड, **उजड्ड**–वि० १ मूर्ख, अनाडी । २ असभ्य । ३ ढीट । ४ अदक्ष । ५ निरकुश । —पण, पणौ–पु० मूर्खता । असभ्यता । ढीटाई । अदक्षता ।

उजदार–पु० वजीर, मत्री ।

उजवक, (को), **उजवक्क** (क्को)–पु० १ तातारियो की एक जाति । २ एक प्रकार की घास । ३ एक प्रकार का घोडा । –वि० मूर्ख, अनाडी । उद्दण्ड, आततायी । –क्रि०वि० विचित्र ढग से ।

उजमणौ–पु० [स० उद्यापन] १ किसी व्रत का उद्यापन । २ उद्यापन का उत्सव ।

उजमणौ (बौ)–क्रि० १वर्षा होना । २ छटा छाना । ३ आच्छादित होना । ४ उद्यापन करना ।

उजयाळी–देखो 'उजाळी' । (स्त्री० उजयाळी)

उजर–पु० [अ० उज्र] १ विरोध, आपत्ति । २ विरुद्ध कथन, वक्तव्य या विनय । ३ हक दावा, स्वत्व । ४ अधिकार ।

उजरत–पु० १ 'उजर' के वदले दिया जाने वाला द्रव्य । २ पारिश्रमिक ।

उजळ(ळो)–वि० [स०उज्ज्वल] (स्त्री० उजळी) १ दीप्तिमान, कातिमान, प्रकाशित । २ शुभ्र, स्वच्छ । ३ श्वेत । ४ निर्मल । ५ वढिया । ६ यशस्वी । ७ पवित्र, शुद्ध । ८ सुन्दर, मनोहर । —ता–स्त्री० काति, दीप्ति । स्वच्छता । सफेदी ।

उजळी–स्त्री० सरस्वती, शारदा ।

उजळणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकाशित होना । २ स्वच्छ होना । चमकना । ४ निर्मल होना । ५ गौरवान्वित होना । ६ कीर्ति वढाना । ७ उद्धार करना ।

उजळाई–स्त्री० १ काति, दीप्ति, चमक । २ स्वच्छता । ३ शौचादि की निवृत्ति के उपरात की जाने वाली सफाई, आवदस्त ।

उजळाणौ (बौ)–प्रे०क्रि० १ प्रकाशित करना । २ स्वच्छ करना । ३ चमकाना । ४ गौरवान्वित करना ।

उजळी-लोहडी–देखो 'ऊजळीलोह' ।

उजवणौ–देखो 'उजमणौ' ।

उजवळ. (वाळ)–देखो 'उजळ' (बौ) ।

उजवाळणौ (बौ –देखो 'उजाळणौ' (बौ) ।

उजवाळी–देखो 'उजाळी' ।

उजवाळौ–देखो 'उजाळौ' । (स्त्री० उजवाळी)

उजा–स्त्री०१ हिम्मत, साहस । २ शक्ति पुरुषार्थ । –वि० वाहदुर साहसी, वीर ।

उजागर–वि० १ जगमगाता हुआ, प्रकाशित । २ उज्ज्वल । ३ प्रसिद्ध, विख्यात । ४ लब्ध प्रतिष्ठित । ५ समर्थ, शक्ति शाली । ६ उदार । ७ अद्भुत, विचित्र । ८ जागृत करने वाला, जगाने वाला । ९ उज्ज्वल करने वाला । –पु० १ सूर्य । २ प्रकाश, तेज ।

उजाड़–वि० १ निर्जन, वीरान । २ ध्वस्त, नष्ट, वर्वाद । ऊसर । –पु० नुकसान, हानि । विनाश ।

उजाड़णौ (बौ)–क्रि० १ वीरान करना, जन शून्य करना । २ नष्ट करना, वर्वाद करना । ३ नुकसान करना । ४ विखेरना, छिन्न-भिन्न करना । ५ उधेडना ।

उजायर–पु० १ वोझा, भार । २ सकट । ३ तलवार । ३ देखो 'उजागर' ।

उजार–स्त्री० १ रोशनी, प्रकाश । २ देखो 'उजाड' ।

उजारौ–देखो 'उजाळौ' ।

उजाळ–पु० [स० उज्ज्वल] १ उजलापन, चमक । २ उज्ज्वल करने की क्रिया । ३ उजाला, प्रकाश । ४ कान्ति, दीप्ति । ५ रोशनी, प्रकाश । ६ हस । –वि० १ प्रकाशमान, उज्ज्वल । २ कीर्ति वढाने वाला । —क–वि० उज्ज्वल करने वाला ।

उजाळउ–देखो 'उजाळौ' ।

उजाळणौ–वि० उज्ज्वल करने वाला ।

उजाळणो (बो)–क्रि० उज्ज्वल करना, प्रकाशित करना। २ साफ करना, निर्मल करना। ३ जलाना। ४ यश, कीर्ति या गौरव बढाना।

उजाळदान–पु० रोशनदान।

उजाळी–स्त्री० घोडे के आंखो पर डाली जाने वाली जाली। –वि० १ उज्ज्वल, प्रकाशित। २ शुक्ल पक्ष की, शुक्ल पक्ष सबंधी।

उजाळो–पु० [सं० उज्ज्वल] १ प्रकाश, उजाला, रोशनी। २ तेज। ३ कुल जाति से श्रेष्ठ व्यक्ति। ४ एक प्रकार का घोडा। ५ चादनी, चद्रिका। ६ कुल का दीपक। –वि० १ उज्ज्वल, प्रकाशित। २ उज्ज्वल करने वाला। ३ श्रेष्ठ उत्तम। —पख–पु० शुक्ल पक्ष। –वि० निष्कलक।

उजास, (डौ, णौ)–पु० [सं० उद्‌भास] १ प्रकाश रोशनी। २ काति दीप्ति। ३ किरण। ४ तेज। ५ हस।

उजासणो (बो)–क्रि० १ प्रकाशित करना, चमकाना। २ उज्ज्वल करना। ३ प्रज्वलित होना।

उजासी–स्त्री० रोशनी, प्रकाश।

उजियार–१ देखो 'उजागर'। २ देखो 'उजास'।

उजियारो, (याळो)–देखो 'उजाळो'।

उजियास–देखो 'उजास'।

उजीर–देखो 'वजीर'।

उजुआळ–वि० १ उज्ज्वल करने वाला। २ देखो 'उजाळो'।

उजुयाळो–देखो 'उजाळो' (स्त्री० उजुयाळी)।

उजूबा–पु० [अ० अजूवा] बैंगनी रग का एक पत्थर विशेष।

उजेड–वि० बिगाड या विनाश करने वाला।

उजेळो–देखो 'उजाळो'।

उजै–पु० प्रकार, तरह।

उजोत–पु० [स० उद्योत] १ प्रकाश, चमक। २ काति। ३ ग्रथ का अध्याय। –वि० उज्ज्वल।

उजौ–पु० साहस, पुरुषार्थ, शक्ति।

उज्जळ–क्रि०वि० १ नदी के चढ़ाव की ओर। २ देखो 'उजळ'।

उज्जळो–देखो 'उजळो'।

उज्जाण–पु० समूह, दल।

उज्जागर–देखो 'उजागर'।

उज्जोतकरन–वि० [स० उद्योतकर] प्रकाश करने वाला।

उज्जड (ड)–वि० १ [illegible]की, बरबादी। २ उद्धत। ३ मूर्ख। ४ मन मौजी। ५ देखो 'ऊजड'।

उज्झेल, (सत)–देखो ऊझेल'।

उज्यागर–देखो उजागर।

उज्यास–देखो 'उजास'।

उज्र–देखो 'उजर'।

उज्वळण–देखो 'उजळ'।

उझकणो, (बो) उझक्कणो, (बो)–क्रि० १ झिझकना। २ चौकना। ३ उछलना, कूदना। ४ ऊपर उठना। ५ उभरना।

उझड–१ देखो 'उज्झड'। २ देखो 'ऊजड'।

उझणो–देखो 'ऊझणो'।

उझळणो (बो)–क्रि० १ छलकना। २ छिल-छिलकर निकलना। ३ छिछोरापन करना। ४ आवेग मे आना। ५ हद या मर्यादा से बाहर होना। ६ उमडना, बढ़ना। ७ पति को छोडकर अन्य पुरुष के साथ जाना।

उझळळ–देखो 'उज्झेल'।

उझाकणो (बो)–क्रि० १ झाकना, ताकना। २ ऊपर सिर करके देखना।

उझाखो–पु० उजाला, प्रकाश।

उझाळ–स्त्री० [स० ज्वाला] १ आग की लपट, ज्वाला। २ देखो 'उज्झेल'।

उझाळणो (बो)–क्रि० १ छलकाना। २ बहाना। ३ देखो 'उजाळणो' (बो)।

उझेळणो (बो)–क्रि० १ उमडना। २ मर्यादा का उल्लघन करना आगे बढना। ३ बढना, अग्रसर होना। ४ तेजी से बढ़ना। ५ तरबतर होना। ६ मस्ती मे आना। ६ खुश होना। ८ दान देना।

उझेळ–देखो ऊझेळ।

उझेल–स्त्री० उछलने की क्रिया या भाव।

उटज–स्त्री० [स०] पर्णकुटी, झोंपडी।

उटिंगण–पु० उद्वेग।

उठग–पु० [स० उत्तभ] तकिया।

उठंतरी–देखो 'उठातरी'।

उठ–१ देखो 'ऊट'। २ देखो 'ऊठ'।

उठणो (बो)–देखो 'ऊठणो' (बो)।

उठावणी–स्त्री० [illegible]। २ देखो 'उठावणी'।

उठाण, (न)–स्त्री० [स० उत्थान] १ उठने की क्रिया या भाव। २ उत्थान उन्नति। ३ वृद्धि, [illegible]। ४ [illegible]। ५ [illegible]। ६ [illegible]। ७ [illegible]। ८ [illegible]। ९ हर्ष, आनन्द। १० [illegible]। ११ [illegible]। १२ [illegible]। १३ [illegible]। १४ [illegible]। १५ [illegible]। १६ [illegible]। १७ [illegible]। १८ [illegible]। १९ [illegible]। २० [illegible]।

उठाणो–देखो [illegible]।

उठातरी–स्त्री० [स० उत्थान्तरम्] १ उठाने की क्रिया या भाव। २ मौकूफ, खारिज, विसर्जित। ३ नाश। ४ जागीरदार की भूमि जब्त हो जाने पर उसे पुन अधिकार में लेने की राजाज्ञा।

उठामणी–देखो 'उठावणी'।

उठाईगीर, (गीरौ)–वि० (स्त्री० उठाईगीरी) चोर, उचक्का, बदमाश ठग।

उठाईगीरी–स्त्री० १ किसी के पदार्थों को उठा कर ले जाने की क्रिया, चोरी। २ देखो 'उठाइगीर'।

उठाउं (ऊ)–क्रि०वि० वहा से।

उठाउ (ऊ)–वि० १ उठाने वाला उचक्का। २ हस्तान्तरण योग्य।

उठा–क्रि०वि० उधर वहा। –क–वि० उठाने वाला। –पु० शीघ्र उठाने की क्रिया या भाव।

उठाडणौ (बौ), उठाणौ (बौ)–प्रे०क्रि० [स० उत्थानम्] १ उठाना, खडा करना। २ जगाना। ३ पडे हुऐ को हाथ में लेना। ४ नीचे से ऊपर करना। ५ धारण करना। ६ वहन करना। ७ अपने ऊपर लेना। ८ निकालना। ९ ऊपर किये रहना। १० उन्नत करना, बढाना। ११ चढाना। १२ गोद मे लेना। १३ प्रारम्भ करना। १४ तैयार करना, उद्यत करना। १५ उत्साहित करना। १६ बंद करना। १७ समाप्त करना, पूर्ण करना। १८ खर्च करना। १९ किराये पर देना। २० भोग करना। २१ अनुभव करना। २२ कुछ लेकर सकल्प करना। २३ उधार देना। २४ लगान पर देना। २५ जिम्मेदारी लेना। २६ सहन या वर्दाश्त करना। २७ स्वीकार करना। २८ प्राप्त करना। २९ खोलना। ३० हटाना।

उठाव–देखो 'उठाण'।

उठावणी–स्त्री० १ तेजी से लपकने की क्रिया। २ आक्रमण, हमला। ३ नेतापन।

उठावणौ–पु० मृतक के पीछे रखी जाने वाली तीन या बारह दिवसीय बैठक की समाप्ति।

उठावणौ (बौ)–देखो 'उठाणौ' (बौ)।

उठावौ–वि० १ जिसका कोई स्थान निश्चित न हो। २ जो उठाया जाता हो। ३ उठाने वाला। ४ चुपके से उठाकर चलने वाला।

उठी–क्रि०वि० उधर, उस ओर।

उठे (ठै)–क्रि०वि० वहा, उस जगह, उधर।

उठेल–पु० फेंकने की क्रिया या भाव।

उडकू–वि० १ उडने वाला, उडने योग्य। २ चलने, फिरने या डोलने वाला।

उडग, उडड, उडडाणी–देखो 'ऊडड'।

उडत–पु० कुश्ती का एक दाव। –क्रि० वि० उड़ता हुआ।

उडंबर–पु० गूलर।

उडवरी–स्त्री० एक तार वाद्य विशेष।

उड–पु० [स० उडु] तारा, नक्षत्र। —गण, गन, गांण–पु० तारागण, नक्षत्रगण। —पत, पति, पती–पु० चन्द्रमा, शशि। —माळ–स्त्री० तारागण। नक्षत्र, सितारे। —राज–पु० चन्द्रमा।

उडण–स्त्री० उडने की क्रिया। –वि० उडने वाला। —खटोलड़ौ, खटोळणी, खटोळौ–पु० छोटा विमान। हेलीकोप्टर।

उडणौ (बौ)–क्रि० [सं० उड्डयन] १ पख, मत्र शक्ति या मशीन के जरिये आकाश मे विचरण करना, उडना। २ हवा मे तैरना। ३ लम्बी छलाग भरना। ४ शून्याकाश मे वायु के सहारे बहना। ५ बहुत तेज चलना। ६ कट कर अलग होना। ७ कपूर आदि पदार्थों का गैस बन कर अदृश्य होना, समाप्त होना। ८ रगादि का फीका पडना। ९ अफवाह आदि का फैलना। १० हवा मे फहरना। ११ वायु के सहारे आकाश मे फैलना। १२ अलोप या गायब होना। १३ खर्च होना। १४ भोगा जाना। १५ मार या आघात पडना। १६ धोखा या चकमा देना। १७ बारूद आदि से नष्ट होना, ध्वस्त होना।

उडप–देखो 'उडुप'।

उडळमरि (मरी)–पु० हाथी, गज।

उडवा–स्त्री० [स० उटज] कुटी, झोपडी।

उडांण, (डांन, य)–स्त्री० [स० उड्डयन] १ उडने की क्रिया या भाव। २ छलाग। ३ कवि तर्क।

उडाऊ–वि० १ उड़ने वाला। २ उडाने वाला। ३ अपव्ययी।

उडाक–वि० उडने मे निपुण।

उडाड़णौ, (बौ) उडाणौ (बौ)–प्रे०क्रि० १ पखो द्वारा, मत्र शक्ति या मशीन के जरिये आकाश मे उड़ने को प्रेरित करना, उडाना। २ हवा मे तैरना। ३ वायु मे ऊचा उठाना। ४ हवा मे फेंकना। ५ लम्बी छलाग भराना। ६ काट कर अलग करना। ७ गायब करना, चुराना। ८ छक कर खाना। ९ प्रहार करना, मारना। १० बर्बाद करना। ११ खर्च करना। १२ हवा मे फहराना। १३ धोखा देना। १४ बात को टालना। १५ निंदा या मखौल द्वारा हतोत्साहित करना। १६ तेज दौडाना, भगाना। १७ फरार करना, भगाना। १८ प्रतिस्पर्द्धा कराना।

उडायण–क्रि०वि० १ अत्यन्त तीव्र गति से। २ देखो 'उडियण'।

उडाळणौ (बौ)–देखो 'उ ळणौ' (बौ)।

उडावणौ (बौ)–देखो 'उडाणौ' (बौ)।

उडि, उडी–पु० १ पक्षी। –स्त्री० २ आकाश मे उडने वाली धूलि। —यण–पु० तारे, पक्षी, पखेरू। —उडियाण–पु०

आकाश, आसमान । ओढने का वस्त्र । हठ योग का एक बध विशेष, कटि पर का लगोटी का बध ।

उडीक–स्त्री० [स० उदीक्षा] १ प्रतीक्षा, इतजार । २ चिंता । ३ पूर्व व आग्नेय के मध्य की दिशा । ४ चाह, अभिलाषा ।

उडीकणौ (बौ)–क्रि० [सं० उदीक्षण] १ प्रतीक्षा व इतजार करना । २ चिंता करना ।

उडु (डू)–पु० [स०] १ तारा, नक्षत्र । २ पक्षी । [स० उदक] ३ जल, पानी । –वि० सफेद, श्वेत । —पत, पति, राज, –पु० चन्द्रमा, चाद । —पथ–पु० आकाश, गगन ।

उडुप–पु० [स०] १ चन्द्रमा, शशि । २ गरुड । ३ बडा पक्षी । ४ आकाश, नभ । ५ तारा, नक्षत्र । ६ नाव, डोगी । ७ नाविक । ८ नृत्य का एक भेद । —पत, पति, राज–पु० चन्द्रमा । प्रथम लघु व दो दीर्घ मात्रा का नाम ।

उडुस, उडूस–पु० खटमल ।

उडेल–स्त्री० १ हल के पीछे लगने वाली छोटी लकडी । २ घास,फूस ।

उडेलणौ (बौ)-क्रि० १ एक बर्तन से दूसरे मे डालना, उडेलना । २ ढालना । ३ गिराना, ढुलकाना । ४ रिक्त या खाली करना ।

उडेळभरी–देखो 'उडळमरि' ।

उडै–क्रि०वि० वैसे ।

उडुणौ (बौ)–देखो 'उडणौ' (बौ) ।

उड्डयन, उड्डीयन–स्त्री० १ उडान । २ देखो 'उडि (डी) याण' ।

उढग–वि० अत्यन्त ऊचा । उन्नत ।

उढगौ–वि० (स्त्री० उढगी) १ ऊचे शरीर वाला । २ वेढगा ।

उणतरौ–देखो 'गुणतरौ' ।

उण–सर्व० उस, उसने । वह ।

उणगी–क्रि०वि० उस ओर, उधर ।

उणत (प)–स्त्री० [स० ऊनत्व] १ कमी । कसर । २ याद, स्मृति । ३ अभिलाषा, इच्छा । ४ निर्धनता ।

उणमण,(मणियौ, मणौ)–वि०[स० उन्मनस्](स्त्री० उणमणी) १ खिन्नचित्त, उदास । २ व्याकुल, वेचैन ।

उणमुख (मुखौ)–वि०[स०उन्मुख] (स्त्री० उणमुखी) १ उदास, खिन्न । २ चिंतित । ३ उत्सुक । —ता–स्त्री० उदासी । चिन्ता । उत्सुकता ।

उणहार (रि)–देखो 'उणियार' ।

उणायत (रत, रय)–देखो 'उणत' ।

उणि–सर्व० उस, उसी, उसीने । वही ।

उणियार, उनियार, उणियारौ,उणिहार (रौ)–वि०१ हमशक्ल । बरावर । ३ उपयुक्त । ४ अनुकूल । –स्त्री० १ शक्ल,सूरत । आकृति, मुखाकृति, चेहरा । २ समानता ।

उणी–देखो 'उणि' ।

उणीयार, उणीयारौ, उणीहार, उणीहारौ–देखो 'उणियारौ' ।

उणौ–पु० [स० ऊन] १ अपरिपक्व गर्भ । २ देखो 'ऊणौ' । —पूणौ–वि० अपूर्ण ।

उण्यारौ–देखो 'उणियारौ' ।

उतंक–पु० [स० उत्तक] १ वेदमुनि के शिष्य । २ गौतम ऋषि के शिष्य ३ देखो 'उत्तुग' ।

उतग (ह)–पु० सूर्य । देखो 'उत्तुग' ।

उत–उप०एक उपसर्ग । –क्रि० वि० १ वही । २ उधर । ३ उस ओर । –पु० [स० वत्स] पुत्र, लडका ।

उतकंठ—वि० [स० उत्कठ] १ ऊपर की गर्दन उठाए हुए । २ तत्पर । ३ उत्सुक ।

उतकठा–देखो 'उत्कठा' ।

उतकठित–देखो 'उत्कठित' ।

उतकठिता–देखो 'उत्कठिता' ।

उतकट–देखो 'उत्कट' ।

उतकळिका–स्त्री० [स० उत्कलिका] १ उत्कठा । २ लहर, तरग । ३ फूल की कली ।

उतकस्ट–देखो 'उत्क्रस्ट' ।

उतकू–क्रि० वि० वहा ।

उतथ्य–पु० [स०] १ अगिरा के पुत्र एक मुनि । २ वृहस्पति के ज्येष्ठ सहोदर ।

उतन, उतन्न–पु० [अ० वतन] १ अपना देश । २ जन्म-भूमि ।

उतनौ–वि० (स्त्री० उतनी) निश्चित मात्रा का ।

उतपत, (पति, पती, पत्ती)–देखो 'उत्पत्ति' ।

उतपन, (न्न)–देखो 'उत्पन्न' ।

उतपनणौ (बौ)–क्रि० उत्पन्न होना, पैदा होना ।

उतपळ–देखो 'उत्पळ' ।

उतपात–देखो 'उत्पात' ।

उतपाती–देखो 'उत्पाती' ।

उतफुल–वि० [स० उत्फुल्ल] विकसित, प्रफुल्लित, खिला हुआ ।

उतवग, उतमग–देखो 'उत्तमाग' ।

उत्तम (मि)–देखो 'उत्तम' । —तर–देखो 'उत्तम-तर' । —दशा–देखो 'उत्तम-दशा' —रस–देखो 'उत्तम-रस' ।

उतरग–पु० मकान के दरवाजे के ऊपर-नीचे लगने वाला पत्थर ।

उतर–देखो 'उत्तर' ।

उतरण–स्त्री० १ उतरा हुआ वस्त्र । २ उतरन । ३ पुराना वस्तु । ४ उतरने की क्रिया ।

उतरणौ (बौ)–क्रि० [स० अवतरण] १ ऊचाई से नीचे आना; नीचे उतरना। २ अवनति पर होना। ३ ढलना। ४ हड्डियो का सधिस्थल से हटना। ५ फीका पडना। ६ लज्जित या उदास होना। ७ काति या दीप्ति मद पडना। ८ घटना, कम होना। ९ उद्वेग कम होना। १० पूर्ण होना; समाप्त होना। ११ बेसुरा होना। १२ काम मे आने योग्य न रहना। १३ खोला या हटाया जाना (वस्त्र)। १४ ढल कर या निर्मित होकर आना। १५ कम होना; घटना (भाव)। १६ पकना (रोटी, फल)। १७ डेरा देना, पडाव डालना। १८ लेख वद्ध या नकल होना। १९ विशिष्ट क्रिया से तैयार होना। २० माप-तौल मे ठीक बैठना। २१ चूकता होना। २२ एकत्रित होना। २३ जागीरी जब्त होना। २४ पद से हटना। २५ अरुचिकर होना। २६ पार होना। २७ भूलना, भूल मे पड जाना। २८ कट-कर अलग होना, कटना। २९ ऊपर बहना, चलना। ३० जाना, गमन करना। ३१ देव मूर्ति के आगे धूप दीप आदि घुमाया जाना।

उतराण–देखो 'उत्तरायण'।

उतरा–देखो 'उत्तरा'।

उतराई–स्त्री० १ उतरने की क्रिया। २ नदी पार करने का पारिश्रमिक। ३ नदी पार करने की क्रिया। ४ ढलान; निचाई।

उतराद (ध)–स्त्री० उत्तर दिशा। —क्रि० वि० उत्तर दिशा मे।

उतरादौ (धौ)–वि० (स्त्री० उतरादी) उत्तर दिशा की ओर।

उतरादी–वि० उत्तर दिशा का, उत्तर, दिशा सबधी।

उतराधू, (धौ)–देखो 'उतरादौ'।

उतराफाळगुणी (नी)–देखो उत्तराफालगुनी।

उतरायण–देखो 'उत्तरायण'।

उतरायी–देखो 'उतराई'।

उतराव–देखो 'उतार'।

उतरासग–पु० कंधे पर के दुपट्टे को हाथ मे लेकर साधु मे वदना करना [जैन]।

उतरासण (णि, णौ)–पु० १ गृह-द्वार के छज्जे के नीचे समानातर लगने वाला पत्थर। २ देखो 'उतरासग'।

उत्तरेस–पु० [स० उत्तर+ईश] कुबेर।

उतरोक, उतरौ–वि० (स्त्री० उतरी) उतना, उतना-सा।

उतळ–स्त्री० उदारता की प्रत्याशा।

उतळीवळ–देखो 'अतिवळ'।

उतवग–देखो 'उत्तमाग'।

उतसरजन–देखो 'उत्सरजन'।

उतसरपणा–स्त्री० [स० उत्सर्पणा] दश कोडा-कोडी सागरोपम प्रमाण समय। उत्कर्ष या उन्नति बतलाने वाले छ आरा परिमित काल विभाग। (जैन)

उतसारक–पु० [स० उत्सारक] १ प्रतिहार, द्वारपाल। २ सिपाही। ३ चौकीदार।

उतसाह–देखो 'उत्साह'।

उतसुक–देखो 'उत्सुक'।

उतसूर–पु० [स० उत्सूर] सध्याकाल, शाम।

उतान–पु० ध्रुव के पिता। –जात– पु० ध्रुव। देखो 'उत्तान'।

उतानसहाय, (सइ, सही)–पु० [स० उत्तानशय] बालक।

उतामळी (उतावल)–देखो 'उतावळ'।

उतामळउ (ळौ)–देखो 'उतावळौ'। (स्त्री० उतामळी)।

उताग्रह–वि० जल्दी करने वाला।

उताप, (पौ)–देखो 'उत्ताप'।

उतायळ, उतायळी (वळी)–वि० १ आतुर, जल्दवाज। –स्त्री० २ शीघ्रता। ३ देखो 'उतायळी'।

उतार–पु० १ उतरने या क्रमश नीचे आने की क्रिया। २ उतरने योग्य स्थान। ३ क्रमश होने वाली कमी। ४ घटाव, कमी। ५ समुद्र का भाटा। ६ ढालू भूमि, ढलान। ७ उतारन, त्यक्त। ८ न्यौछावर। ९ प्रभावशून्य करने वाली वस्तु। १० बहाव। ११ पतन, अवनति। १२ चढाई का विपर्याय। १३ नदी पार करने की आसान जगह। १४ उद्वेग मे कमी। १५ पूर्णता या समाप्ति की अवस्था।

उतारण (णौ)–वि० १ उतार वाला। २ पहुचाने वाला। ३ मिटाने वाला।

उतारणौ (बौ)–क्रि० १ ऊचाई से नीचे लाना, उतारना। २ अवनति करना। ३ ढलाना। ४ हड्डियो को सधि-स्थल से हटाना। ५ फीका पटकना। ६ लज्जित करना। ७ उदास करना। ८ श्रीहीन करना। ९ घटाना, कम करना। १० आवेश या उद्वेग कम करना। ११ ढीला या बेसुरा करना। (वाद्य) १२ काम मे आने योग्य न रखना। १३ खोलना, हटाना। १४ ढालना, निर्मित करना। १५ पकाना। (रोटी आदि) १३ डेरा दिरवाना, ठहराना। १७ लेख वद्ध या नकल करना। १८ विशिष्ट क्रिया से तैयार करना। १९ माप-तौल मे ठीक बैठाना। २० चुकाना। २१ एकत्र करना। २२ जागीरी जब्त करना। २३ पद से हटाना। २४ पार करना। २५ भुलाना, भूल मे डालना। २६ काट कर अलग करना। २७ छीलना। २८ चित्राकित करना। २९ उखाडना। ३० पृथक् करना। ३१ प्रभावशून्य करना। ३२ न्यौछावर

करना। ३३ पीना। ३४ नजरो से गिराना। ३५ तोडना, चुनना। ३६ मुकाबले मे लाना। ३७ कष्ट निवारणार्थ कोई वस्तु वारणा। ३८ आरती करना, देवमूर्ति के आगे धूप, ज्योति आदि घुमाना।

उतारू (रू)—वि० १ उद्यत, तैयार, तत्पर। २ उतरा हुआ। ३ काम मे लिया हुआ।

उतारौ—पु० १ ठहरने का स्थान, पडाव डेरा। २ ठहरने की क्रिया। ३ नदी पार करने की क्रिया। ४ नदी पार कराने पर दिया जाने वाला पारिश्रमिक। ५ टोना का दस्तूर। ६ नकल। ७ फहरिश्त।

उताळ—देखो 'उतावळ'।

उताळै—क्रि० वि० शीघ्र जल्दी।

उताळौ—देखो 'उतावळौ'। (स्त्री० उतावळी)

उतावळ (ळि, ळी)—स्त्री० जल्दी, शीघ्रता, त्वरा।

उतावळौ—वि० (स्त्री० उतावळी) १ आतुर। २ जो हर काम मे शीघ्रता करता हो। ३ उत्सुक। ४ विना विचारे शीघ्रता करने वाला।

उतिग—पु० चीटियो का घर।

उतिम, उतिम, उतीम—पु० १ पाच सगण व एक ह्रस्व का छन्द विशेष। २ देखो 'उत्तम'। —रस—देखो 'उत्तमरस'।

उतिपति—देखो 'उत्पति'।

उतुळीबळ—देखो 'अतिबळ'।

उतै—क्रि० वि० वहा, उधर, उस ओर।

उतोलणौ (बौ)—क्रि० १ तौलना। २ शस्त्र उठाना। ३ मारना, वध करना।

उतौ—वि० (स्त्री० उती) उतना।

उत्कठा—स्त्री० [स०] १ प्रबल इच्छा, अभिलाषा, त्वरा। २ खेद। ३ एक प्रकार का सचारी भाव।

उत्कठित—वि० [स०] १ उत्सुक, चितित। २ व्याकुल आतुर। ३ प्रबल इच्छा वाला।

उत्कठिता—स्त्री० [सं०] उत्सुका-नायिका।

उत्कट—पु० [स०] १ हाथी का मद। २ मदमाता हाथी। —वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ लम्बा चौडा, विस्तृत। ३ शक्तिशाली। ४ विकट, भयकर। ५ उग्र। ६ अत्यधिक। ७ नशे मे चूर, मदोन्मत्त। ८ विषम। ९ प्रबल, तीव्र। —आसण—पु० एक योगासन।

उत्करस—पु० [स० उत्कर्ष] १ श्रेष्ठता, उत्तमोत्तम गुण। २ बडाई, प्रशसा। ३ उन्नति। ४ प्रसिद्धि। ५ समृद्धि। ६ उदय, विकास। ७ हर्ष, आनन्द। ८ अहकार। ९ प्रभाव। १० प्रचुरता।

उत्क्रमण—पु० [स०] १ अतिक्रमण, उल्लघन। २ मृत्यु।

उत्क्रस्ट—वि० [स० उत्कृष्ट] श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उत्क्रस्टता—स्त्री० [स० उत्कृष्टता] श्रेष्ठता, वडप्पन।

उत्तग, (गौ)—देखो 'उत्तुंग'।

उत्त—पु० [स० उत्] १ आश्चर्य, सदेह। २ पुत्र, लडका। —क्रि०वि० उधर, उस ओर।

उत्तन—पु० [अ० वतन] १ वतन, देश। २ जन्म भूमि।

उत्तपत्त (त्ति)—देखो 'उत्पत्ति'।

उत्तपाती—देखो 'उत्पाती'।

उत्तप्त—वि० [स०] १ खूब तपा हुआ। २ सतप्त, सतप्त। ३ दुःखी पीडित। ४ दग्ध। ५ चिंतित।

उत्तमग—देखो 'उत्तमाग'।

उत्तम—वि० [स०] १ श्रेष्ठ, बढिया। २ पवित्र, शुद्ध। ३ मुख्य, प्रधान। ४ सर्वोच्च। ५ सबसे बडा। ६ प्रथम। —पु० १ विष्णु का नाम। २ श्रेष्ठ नायक। ३ राजा उत्तानपाद व सुरुचि का पुत्र। —अग—पु० मस्तक, शिर। —गंधा—स्त्री० मालती —तया—क्रि० वि० भली प्रकार, अच्छी तरह। —तर, तरु—पु० चदन-वृक्ष। —ता, ताई—स्त्री० श्रेष्ठता। पवित्रता। मुख्यता, प्रधानता। सर्वोच्चता। भलाई। उत्कृष्टता। —दसा—स्त्री० ज्योति। दीपक। श्रेष्ठ दशा। —पद—पु० श्रेष्ठ पद, मोक्ष। —पुरुष—पु० सर्वनाम के अनुसार प्रथम पुरुष; कर्त्ता। ईश्वर। —रस—पु० दूध। —सग्रह—पु० सम्यक् सग्रह। एकात मे पर स्त्री से आलिगन।

उत्तमाग—पु० [स०] मस्तक, शिर।

उत्तमा—स्त्री० [सं०] सर्वश्रेष्ठ स्त्री।

उत्तमाई—स्त्री० उत्तमता, पवित्रता।

उत्तर—पु० [स०] १ दक्षिण के सामने की दिशा। २ प्रश्न, वात या पत्र का जवाब। ३ अस्वीकृति, मनाही। ४ माग के बदले किया जाने वाला कार्य। ५ बहाना, मिस, व्याज। ६ प्रतिकार। ७ एक प्रकार का अलंकार। ८ उत्तर दिशा का पवन। ९ शिव। १० विष्णु। ११ भविष्य। १२ राजा विराट का पुत्र। —वि० १ पिछला, बाद का। २ ऊपर का। ३ श्रेष्ठ। ४ तेज, तीव्रगामी। ५ अपेक्षाकृत ऊचा। ६ बाया। ७ सम्पन्न। —क्रि०वि० पीछे, बाद मे, अनन्तर। —आखाडा—स्त्री० आषढ़ा नामक २१ वा नक्षत्र। —कळा—स्त्री० बहत्तर कलाओ मे से एक। —काळ—पु० भविष्यत् काल। —कासी—स्त्री० उत्तर का एक तीर्थ स्थान। —कुरु, कुरू—पु० जम्बू द्वीप के नव वर्षों से एक, जनपद, देश। —क्रिया—स्त्री० अन्त्येष्टि क्रिया। पितृकर्म, श्राद्ध। जीवन के अतिम समय मे की जाने वाली प्रतिज्ञा।

(जैन) अस्थायी रूप से ली जाने वाली प्रतिज्ञाएं (जैन)। —दाता-वि० जवाब देने वाला। —दायित्व-पु० जिम्मेदारी। —दायी-वि० जिम्मेदार। —दिकपति, दिसपति-पु० कुवेर। वायु। —पक्ष, पख-पु० जवाब की दलील। —पति-पु० कुवेर। वायु। —पथ-पु० देवयान। —पद-पु० यौगिग शब्द का अंतिम अंश। —फालगुनी-बारहवां नक्षत्र। —भाद्रपद-पु० छब्वीसवां नक्षत्र। —मानस-पु० गया तीर्थ का एक सरोवर। —मीमांसा-स्त्री० वेदान्त दर्शन। —मोड-पु० उत्तर दिशा का रक्षक। हिमालय।

उत्तरणौ (बौ)-देखो 'उतरणौ' (बौ)।

उत्तरा-स्त्री० [सं०] १ उत्तर दिशा। २ विराट की कन्या का नाम। —खंड-पु० भारत का उत्तरी प्रान्त।

उत्तराऊ-स्त्री० उत्तर दिशा की ओर से आने वाली हवा।

उत्तरांद, (ध)-देखो 'उतराध'।

उत्तरादी (धी)-देखो 'उतरादी'।

उत्तरायण-पु० [सं०] १ वे छः मास जिनमें सूर्य की गति उत्तर की ओर झुकी हुई होती है। २ मकर से मिथुन तक के सूर्य का छः मास का समय व अवस्था। सूर्य की मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर की गति। ३ छः मास का ऐसा समय जब सूर्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढता है।

उत्तरासण-देखो 'उतरासण'।

उत्तरियाण-वि० १ उत्तराखंड का, उत्तर भारत का। २ देखो 'उतरायण'।

उत्तरी-स्त्री० उत्तर दिशा की वायु। -वि० उत्तर की।

उत्तरु-देखो 'उत्तर'।

उत्तान-वि० [सं०उत्तान] ऊर्ध्व मुख, चित्त। -पु० राजा उत्तान पाद का नाम। —जात-पु० ध्रुव। —पाद-पु० ध्रुव के पिता का नाम।

उत्ता-सर्व० उतने।

उत्ताप-पु० [सं०] १ कष्ट, पीड़ा। २ ज्वर, बुखार। ३ उष्णता, ताप।

उत्तारणौ (बौ)-देखो 'उतारणौ' (बौ)।

उत्ताळ-वि० [सं० उत्ताल] १ उत्कट। २ भयानक। ३ उग्र, तेज। ४ दुरूह, कठिन। ५ ऊंचा, लंबा। ६ त्वरित। -स्त्री० शीघ्रता, त्वरा।

उत्ताळौ, (उत्तावळौ)-देखो 'उतावळौ'। (स्त्री० उतावळी)

उत्तावळी-स्त्री० आतुरता, जल्दबाजी, शीघ्रता।

उत्तिमंग-देखो 'उत्तमांग'।

उत्तिम-देखो 'उत्तम'।

उत्तिमाग-देखो 'उत्तमांग'।

उत्तीरण-वि० [सं० उत्तीर्ण] १ परीक्षा या प्रतियोगिता में सफल, पास। २ पारगत। ३ पार गया हुआ।

उत्तुंग, उत्तुंगि(गी)-पु० [सं०उत्तुंग] घोडा अश्व। -वि० १ बहुत, ऊंचा। २ लंबा। ३ दीर्घ। ४ बढिया, श्रेष्ठ। ५ बुलंद।

उत्तू-पु० [फा०] कसीदे के कार्य का एक औजार।

उत्ते-क्रि०वि० १ तब तक। २ वहां तक। -सर्व० उतने।

उत्थय-पु० १ उखडने की क्रिया या भाव। २ देखो 'उत्थाप'।

उत्थपणौ (बौ)-देखो 'उथपणौ' (बौ)।

उत्थळणौ (बौ)-देखो 'उथळणौ' (बौ)।

उत्थवणौ (बौ)-देखो 'उथपणौ' (बौ)।

उत्थान-पु० [सं० उत्थान] १ उठने का कार्य, उठान। २ उन्नति, बढोतरी। ३ विकास। ४ आरंभ। ५ समृद्धि। ६ वृद्धि। ७ जागृति। —एकादसी-स्त्री० कार्तिक शुक्ला एकादशी।

उत्थाप-पु० मिटाने या हटाने की क्रिया। -वि० उन्मूलन करने वाला।

उत्थापन-पु० [सं०] १ उठाना, खड़ा करने की क्रिया। २ भडकाने की क्रिया। ३ जगाना। ४ वमन, कै।

उत्पत्ति-स्त्री०[सं०] १ जन्म। २ उद्‌गम। ३ सृष्टि। निर्माण। ४ प्रारंभ। ५ उदय। ६ लाभ, मुनाफा। ७ उद्‌गम स्थल। —एकादसी-स्त्री० मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

उत्पन्न-वि० [सं०] १ जन्मा हुआ। २ उदित। उगा हुआ। ३ निर्मित, सृजित।

उत्पन्ना स्त्री० [सं०] अगहन कृष्णा एकादशी।

उत्पळ-पु० [सं०] नील कमल।

उत्पात-पु० [सं०] १ उपद्रव, दंगा। २ ऊधम, बदमाशी। ३ विद्रोह, क्रान्ति। ४ अशान्ति। ५ आकस्मिक दुर्घटना। ६ शरारत। ७ अशुभ सूचक चिह्न।

उत्पातक पु० [सं०] कान का एक रोग। -वि० उत्पात करने वाला।

उत्पाती-वि० [सं० उत्पातित्] उत्पात या बदमाशी करने वाला, उपद्रवी।

उत्पादक-वि० [सं०] उत्पन्न करने वाला, सृष्टा।

उत्पादन-पु० [सं०] १ पैदावार, उपज। २ उत्पत्ति, जन्म। ३ निर्माण, सृजन।

उत्यमतर-देखो 'उत्तमतरु'।

उत्रा स्त्री० उत्तरा। —ग्रभ-पु० परीक्षित।

उत्संग (गि)-स्त्री० गोद, क्रोड।

उत्सरंग-पु० उत्सव, आनन्द, उमंग।

उत्सरग–पु० [सं० उत्सर्ग] १ त्याग । २ न्यौछावर । ३ दान । ४ समाप्ति । ५ प्राणदान ।

उतसरजन–पु० [स० उतसर्जन] त्याग । दान ।

उत्सव (वु)–पु० [स०] १ मागलिक महोत्सव । २ हर्ष आनन्द या खुशी का कार्य । ३ त्योहार, पर्व । ४ जलसा । ५ आमाद-प्रमोद ।

उत्साह–पु० [स०] १ उमग, जोश । २ साहस, हिम्मत । ३ वीर रस का स्थायी भाव ।

उत्साही–वि० [सं०] साहसी । उमगी । जोशीला ।

उत्सुक–वि० [स०] अत्यन्त इच्छुक, आतुर । उत्कठित ।

उत्सुकता–स्त्री०[स०] १ प्रवल इच्छा, उत्कठा । २ व्याकुलता । ३ एक प्रकार का सचारी भाव ।

उथ, उथक–क्रि० त्रि० वहा ।

उथकणौ (बौ)–क्रि० कूदना, छलाग लगाना ।

उथडकणौ, (बौ), उथडणौ (बौ)–क्रि० १ गिरना, गिर पडना । २ गिराना, पटकना ।

उथप–देखो 'उत्थाप' ।

उथपणौ (बौ), उथप्पणौ (बौ)–क्रि० १ ऊपर उठाना । २ तानना । ३ मिटाना,नाश करना । ४ आज्ञा का उल्लघन करना । ४ उटलना । ५ अनुष्ठान करना । ७ आरम्भ करना । ७ उन्मूलन करना ।

उथळ(ल्ल)–स्त्री० १ चाल गति । २ मस्तिष्क की उपज शक्ति । ३ गिरने का भाव । —**पथल, पयल्ल, पुथल, पूथल**–स्त्री० उलट-फेर । हेरा-फेरी ।

उथलणौ (बौ), उथल्लणो (बौ)–क्रि० १ उलटना, फेर देना । २ डगमगाना । ३ उलट फेर होना । ४ पानी का कम होना । ५ औंधा कर देना । ६ गिराना । ७ मारना । ८ उडना । ९ गिरना । १० मादा पशु की पुन गर्भ धारण करने की कामेच्छा होना ।

उथलौ–वि० १ कम गहरा, छिछला । २ उल्टा । –पु० १ उल्टा गिराने का भाव । २ मादा पशुग्रो के प्रथम समागम मे गर्भ न रहने पर होने वाली कामेच्छा । ४ अनुवाद, मापातर ।

उथांमणौ (बौ)–क्रि० १ उण्डेलना । २ उखेलना । ३ उन्मूलन करना । ४ गिराना ।

उथाप–पु० उन्मूलन । नाश । उलट-फेर । प्रतिरोधात्मक कार्य ।

उथापण–वि० उन्मूलन करने वाला, मिटाने वाला । –स्त्री० उन्मूलन की क्रिया या भाव ।

उथापणौ–वि० १ मिटाने वाला । २ उन्मूलन करने वाला, ध्वस करने वाला ।

उथापणौ (बौ)–क्रि० १ उन्मूलन करना । मिटाना । २ उलटना, उल्टा करना । ३ उखाडना । ४ जब्त करना छीनना ।

उथापना–स्त्री० नवरात्रि मे अष्टमी का दिन ।

उथापिथाप–वि० बनाने-बिगाडने वाला । स्थापित करने और उन्मूलन करने की शक्तिवाला ।

उथापौ–वि० उलटने वाला । उन्मूलन करने वाला ।

उथाल–स्त्री० १ उन्मूलन, नाश । २ उखाड-पछाड । ३ मस्तिष्क की उपज ।

उथालणौ (बौ)–देखो'उथापणौ' (बौ) । देखो'उथेलणौ' (बौ) ।

उथालौ–देखो 'उथेलौ' ।

उथि, उथियं–क्रि० वि० वहा ।

उथेडणौ (बौ)–देखो 'उथेलणौ' (बौ) ।

उथेल–वि० पछाडने वाला । उन्मूलन करने वाला । –स्त्री० १ पछाडने की क्रिया । २ उलटने पलटने की क्रिया । ३ मस्तिष्क ।

उथेलणौ (बौ) उथेलणौ (बौ)–क्रि०१ पछाडना । २ गिराना । ३ उल्टा या औंधा करना । ४ उठाना । ५ हटाना । ६ मिटाना ।

उथेलौ–पु० १ जवाब, प्रत्युत्तर । २ प्रत्याक्रमण । ३ पुन स्मरण । ४ उलटना, गिराना या पछाडने की क्रिया ।

उथैं–क्रि० वि० वहा ।

उथोपणौ (बौ)–१ निश्चय करना । २ स्थापित करना । ३ देखो 'उथापणौ' (बौ) ।

उदगळ–पु० १ उत्पात, उपद्रव । २ दंगा, फिसाद । ३ लडाई युद्ध । ४ झमेळा, टटा, विवाद ।

उदड–वि० [स० उद्दड] १ बदमाश, चट, उद्दड । ३ अनाडी, उज्जड । ३ निडर, निर्भीक । ४ भयकर, डरावना । ५ प्रचण्ड ।

उदडौ–वि० (स्त्री० उद्डी) १ उद्दड व्यक्तियो को दण्ड देने वाला । २ बदमाशो का उस्ताद । ३ देखो 'उदड' ।

उदत-वि० [स० अदत] १ जिसके दात न हो, दत रहित । २ वृहद्‌त, दतुला । –पु० शिशु । २ वृत्तात, विवरण । ३ देखो अदत' ।

उदबर, उदमर–पु० [स० उदुम्बर] १ अट्ठारह प्रकार के कुष्ठ रोगो मे से एक । २ एक ब्राह्मण वश । –पु० तावा, गूलर ।

उदइगिरि–पु० उदयगिरि पर्वत ।

उदई स्त्री० चीटीनुमा एक श्वेत कीडा । दीमक ।

उदक–पु० [स०] १ जल, पानी । २ शासन । ३ माफ की हुई दान की भूमि । ४ सकल्प लेकर दी हुई वस्तु । —**अजळि**— —स्त्री० जलाजलि, जल तर्पण । —**अद्रि**–पु० हिमालय पर्वत । —**क्रिया**–स्त्री० जलतर्पण, तिलाजलि । —**घात**– स्त्री० बहत्तर कलाओ मे से एक । —**ज**–पु० मोती । कमल । —**धरा**–स्त्री०–जल सकल्प द्वारा दान की हुई

भूमि। —परीक्षा–स्त्री० हाथ मे पानी लेकर दी जाने वाली शपथ। —वाद्य–पु० चौमठ कलाओ मे से एक।

उदकणौ (बौ)–क्रि० १ निमित्त लेकर त्यागना। त्याग देना। २ जल लेकर सकल्प लेना। ३ काम आना। ४ उछलना, कूदना।

उदकाणी–स्त्री० जल सकल्प द्वारा दी हुई भूमि। 'देखो उदकी'।

उदकी–वि० [स० उदक+रा प्र ई] उक्त प्रकार की भूमि को ग्रहण करने वाला।

उदक्क (क्की)–देखो उदक'।

उदग–देखो 'उदक'।

उदगणौ (बौ)–क्रि० १ उगलना। २ देखो 'उदकणौ' (बौ)।

उदगम–पु० [स० उद्गम] १ उदय आविर्भाव। २ उत्पत्ति स्थान। ३ प्रस्थान। ४ उत्पत्ति, सृष्टि। ५ ऊचाई, ऊचा स्थान। ६ पौधे का अकुर। ७ वमन, कै। ८ नदी का निकास।

उदगमन–पु० [स०] ऊपर जाना। ऊर्ध्वगमन।

उदगरनणौ (बौ)–क्रि० १ देने का विचार करना। २ सकल्प करना। ३ सकल्प द्वारा छोडना।

उदगाता–पु० [स० उद्गातृ] यज्ञ के चार प्रकार के ऋत्विजो से एक।

उदगाथा–स्त्री० आर्या छन्द का एक भेद।

उदगार–पु० [स० उद्गार] १ मन के भाव। २ इन भावो का सहसा प्रगटीकरण। ३ उबाल, उफान। ४ वमन, कै। ५ डकार। ६ थूक। ७ बाढ।

उदगारणौ [बौ]–क्रि० १ मन के भाव व्यक्त करना। २ बाहर निकालना। ३ फेंकना। ४ उभाडना, उत्तेजित करना। ५ डकार लेना। ६ कै करना। ७ उगलना।

उदगारी–पु० [स] बृहस्पति के बारहवें युग का द्वितीय वर्ष।

उदगारू–वि० १ जल सकल्प द्वारा दान देने वाला। २ दान देने वाला। –पु० प्रारब्ध का फल।

उदगीत, (गीति)–पु० आर्या छद का एक भेद। –वि० उच्च स्वर से गाया हुआ।

उदगीरणौ (बौ)–देखो 'उदगारणौ (बौ)'।

उदग्ग–देखो 'उदक'।

उदग्गण, (ग्गनि, ग्गिनि)–वि० १ ऊचा। २ उन्नत। ३ नगी (तलवार)। ४ उग्र, प्रचड।

उदग्र–वि० [स०] १ ऊचा। उन्नत। ऊचा उठा हुआ। २ बाहर निकला हुआ। ३ चौडा प्रशस्त। ४ बूढा। ५ मुख्य, प्रसिद्ध। ६ प्रचण्ड। ७ भयानक, कराल। —दती–पु० लबे व ऊचे दातो वाला हाथी।

उदघटणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकट होना। २ उदय होना। ३ निकलना। ४ उद्घटित होना।

उदघाटक–वि० [स० उद्घाटक] १ उद्घाटन करने वाला। २ प्रकाशक। ३ खोलने वाला।

उदघाटणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकट करना। २ प्रकाशित करना। खोलना। ३ उद्घाटन करना।

उदघातक–वि० [स०] १ धक्का या ठोकर मारने वाला। २ आरभ करने वाला।

उदणौ (बौ)–क्रि० उदय होना, प्रकट होना।

उदद, उदद्ध, उदध (धि, धी) उदध्ध (ध्धि)–पु० [स० उदधि] १ समुद्र। २ तालाब। ३ झील। –खीर–पु० क्षीर-सागर। —मत–वि० गभीर बुद्धि वाला। —मेखळा–स्त्री० पृथ्वी। —सुत– पु० चन्द्रमा। अमृत। —सुता–स्त्री० लक्ष्मी। रभा। कामधेनु।

उदनमत (वत, वान)–पु० [स० उदनवत्] समुद्र, सागर।

उदवाह–पु० विवाह, शादी।

उदवुद, (दि), उदवुध–वि० [स० अद्भुत, उद्बुद्ध] १ विचित्र, अद्भुत। २ विकसित, प्रबुद्ध, चैतन्य। –स्त्री० माया।

उदवेग–पु० [स० उद्वेग] १ उद्वेग, भय। २ कपन। ३ आशका। ४ चिंता। ५ आश्चर्य।

उदभज–देखो 'उदभिज'।

उदभट–वि० [स० उद्भट] प्रबल। श्रेष्ठ। दातार।

उदभणौ (बौ)–क्रि० प्रकट होना, उद्भव होना।

उदभव–पु० [स० उद्भव] १ उत्पत्ति, जन्म। २ निर्माण, सृष्टि। ३ विकास। ४ वृद्धि। —रतन–पु० सागर।

उदभावना–स्त्री० [स० उद्भावना] १ उत्पत्ति। २ प्रकाश। ३ मन की उपज, कल्पना। ४ रचना। ५ तिरस्कार।

उदभास–पु० [स० उद्भास] १ प्रकाश, दीप्ति, आभा। २ मन मे किसी बात का उदय।

उदभिज–पु० [स० उद्भिज] भूमि को फोडकर निकलने वाले पेड पौधे, वृक्षादि।

उदभूत–वि० उत्पन्न, निकला हुआ, अकुरित। देखो 'अद्भुत'।

उदभेद (भेदन)–पु० १ अकुरन। २ उद्घाटन। ३ प्रगटीकरना, प्रकाशन।

उदभ्रात–वि० [स०] १ घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ। २ भूला-भटका। ३ भ्रमित। ४ भौंचक्का।

उदम–पु० [सं० उद्दाम, उद्यम] १ बधन रहित पशु। २ स्वतन्त्र। ३ प्रयास, उद्योग। ४ उत्साह। ५ काम धधा। ६ अध्यवसाय। ७ परिश्रम। ८ देखो 'उदवर'।

उदमणौ (बौ)–देखो 'ऊधमणौ' (बौ)।

उदमाद–स्त्री० १ हर्ष, प्रसन्नता, आनद। २ उमग। ३ उत्साह, जोश। ४ कामक्रीडा, सुरति। ५ इच्छा, अभिलाषा। ६ खलबली। ७ उन्मत्तता, मस्ती, व्याकुलता। ८ उद्योग, परिश्रम। ९ प्रबल कामेच्छा। १० देखो 'उनमाद'।

उदमादणौ (बौ)–देखो 'ऊधमणौ' (बौ)।

उदमादियौ, (मादी)–वि० (स्त्री० उदमादण) १ मतवाला, मस्त। २ ग्रामोद-प्रमोद करने वाला। ३ उत्पाती, उपद्रवी।

उदमी–वि० उद्यम करने वाला, परिश्रमी, उद्योगशील।

उदय–पु० [सं०] १ प्रागट्य, उद्गम। २ निकाल, निकास। ३ उत्पत्ति। ४ विकास। ५ वृद्धि, बढोतरी। ६ उद्गम स्थान। ७ उदयाचल। ८ प्रकाश। ९ मगल। १० उपज। ११ पदोन्नति, उन्नति। १२ सृष्टि। १३ लाभ, नफा। १४ व्याज। १५ काति, दीप्ति। १६ ग्राय। १७ ग्रागमन। **ग्रचल (गिरि)**–पु० उदयगिरी। **—ग्रद्रि**–पु० उदयाचल पर्वत। **—काल**–पु० प्रभात काल। **—परणी**–स्त्री० एक जडी विशेप।

उदयणौ (बौ)–क्रि० उदय होना, निकलना।

उदयागिरि, उदयाचल–देखो 'उदयगिरि'।

उदयातिथि–स्त्री० सूर्योदय से प्रारभ होने वाली तिथि।

उदयावीतइ–पु० सूर्योदय।

उदयोतकर–वि० [स० उद्योतकर] दीपायमान, प्रकाश युक्त।

उदर–पु० [स०] १ पेट। जठर। २ गर्भ। ३ वस्तु का मध्य भाग। **—ज्वाला**–स्त्री० जठराग्नि, भूख। **—त्राण**–पु० कमर पेटी।

उदरक–पु० [स० उदर्क] १ भविष्यत्काल। २ भविष्य का परिणाम।

उदरच–स्त्री० अग्नि, ग्राग।

उदराग्नि–स्त्री० [स०] जठराग्नि, भूख।

उदरि, (रिल) उदरी–वि० १ बडे पेट वाला, तोदू। २ देखो 'उदर'।

उदलणौ (बौ)–देखो 'ऊदळणौ' (बौ)।

उदवात–पु० [स० उदवात] मद उतरा हुग्रा हाथी।

उदस–पु० [स० उदश्वित] १ दही, दधि। २ सूखी खासी।

उदसटियौ–वि० बुद्धिहीन, मूर्ख।

उदस्त–देखो 'उदस'।

उदान–पु० [स० उदान] १ शरीरस्थ १२ प्रकार के वायु मे से एक। २ एक सर्प विशेष।

उदाम–वि० [स० उद्दाम] १ श्रेष्ठ, महान। २ उद्दड, शैतान। ३ वधन रहित, स्वतत्र। –पु० वरुण।

उदाई–देखो 'उदई'।

उदात, (दाता), उदात्त–वि० [स० उदात्त] १ ऊचे स्वर से उच्चारित। २ कृपालु, दयालु। ३ दातार। ४ श्रेष्ठ। ५ पवित्र, निर्मल। ६ उन्नत। ७ प्रख्यात। –पु० १ वेद-मत्रोच्चारण का एक स्वर भेद। २ दान। ३ त्याग। ४ दया।

उदाधि, (ध्धि)–देखो 'उदधि'।

उदायन–पु० [स० उद्यान] उद्यान, बगीचा।

उदार–वि० [स०] १ दाता, दानी, दानशील। २ श्रेष्ठ, महान्। ३ ऊचे विचार वाला। ४ सरल, सीधा। ५ ग्रनुकूल। ६ धर्मात्मा। ७ ईमानदार। ८ विशाल हृदय। –पु० १ शिव, महादेव। २ एक काव्यालकार। ३ २८ वर्ण का एक छद विशेष। ३ देखो 'उधार'। **—चरित**–वि० ऊचे दिल वाला। स्वभाव से ही दानी। **—चेता**–वि० उदार हृदय। कृपालु, दयालु। **—ता, पण, पणौ**–पु० दानशीलता। सहृदयता। उच्च विचार।

उदाळौ–वि० उन्मूलन करने वाला। –पु० प्रकाश, रोशनी।

उदावरत, (त)–पु० १ गुदा का एक रोग, गुदा ग्रह। २ एक रग विशेष का घोडा।

उदास–वि० [सं०] १ खिन्नचित्त, चिंतित। २ दुखी, परेशान। ३ विरक्त। ४ निरपेक्ष, तटस्थ। ५ दार्शनिक। ६ मुरझाया हुग्रा। ७ निर्जन, शून्य।

उदासत–पु० तेज।

उदासन–वि० तटस्थ।

उदासी, (न)–वि० [स०] १ विरक्त, वैरागी। २ त्यागी। ३ सन्यासी। ४ एकानवासी। ५ खिन्नचित्त। –पु० नानक शाही साधु। –स्त्री० १ खिन्नता, चिन्ता। २ निरुत्साह। ३ काति का ग्रभाव।

उदाहरण–पु० [स०] १ मिसाल, ग्रादर्श। २ कीर्तिमान। ३ सबूत। ४ दृष्टात, निदर्शन। ५ तर्क के पाच ग्रवयवो मे से तीसरा। ६ एक साहित्यालकार विशेष।

उदिचित–स्त्री० [स० उदश्वित] छाछ, तक्र। दधि।

उदित–वि० [स०] १ जो उदय हो गया हो, उद्गत। २ प्रकाशित, ग्रालोकित। ३ उज्ज्वल, स्वच्छ। ४ प्रफुल्लित। ५ प्रसन्न। ६ कथित। ७ उगा हुग्रा। ८ उत्पन्न। ९ ऊचा, लवा। १० उच्च रित। **—जोवना**–स्त्री० मुग्धा नायिका।

उदियणौ (बौ)–देखो 'उदयणौ' (बौ)।

उदियान–पु० विकट वन, घना जगल।

उदियामणौ–देखो 'उदियावणौ'। (स्त्री० उदियामणी)।

उदियाडौ–पु० बुरा समय, बर्बाद होने का समय।

उदियारण–देखो 'उदाहरण'।

उदियावणौ–वि० (स्त्री० उदायवणी) भयप्रद, भयावना। उदासीन खिन्नचित्त।

उदीच–वि० उत्तर दिशा का उत्तर दिशा सवधी। –पु० ब्राह्मणो की एक शाखा।

उदीचि (ची)–स्त्री० उत्तर दिशा।

उदीपण, (पन)–देखो 'उद्दीपन'।

उदीरण–पु० कथन। वाक्य। उच्चारण। –स्त्री० सत्तागत कर्मोंके प्रयत्न विशेष से खींचकर नियत समय से पहिले ही उनके फल का भोग [जैन]। –वि० दातार।

उदु वर–पु० [स०] १ ताम्र, तांवा। २ गूलर। ३ देहली, ड्योढी। ४ कुष्ठ रोग। –वि० नपु सक।

उदुखळ–पु० ओखली।

उदे–देखो 'उदय'।

उदेई–देखो 'उदई'।

उदेक, उदेग–देखो 'उद्वेग'।

उदेतुरंग(वाज)–पु०रग विशेष का घोडा। घोडों की एक जाति।

उदै–देखो 'उदय'। —**अद्र**='उदयअद्रि'।

उदोगर–पु० उदयगिरि।

उदोत–वि० [स० उद्योत] प्रकाशित —**कर**–वि० प्रकाशमान। —**धाम**–पु० दीपक।

उदोता-वि० प्रकाशित करने वाला।

उदोति–पु० १ प्रकाश, उजाला। २ चमक, आभा। ३ उदय। –स्त्री० ३ वृद्धि, वढोतरी। –वि० १ उदित, प्रकाशित। २ प्रगट।

उदौ–पु० [स० उदय] १ उदय। २ अच्छा समय। ३ प्रारब्ध, होनहार।

उद्दंड-वि० [स०] १ चट, वदमाश। २ शैतान, झगडालु। ३ अडियल। ४ निर्भीक।

उद्द त–वि० [स०] १ वृहद्दत, दतुला। २ देखो 'उदत'।

उद्दम–देखो 'उद्यम'।

उद्दमी उद्दम्मी–देखो 'उद्यमी'।

उद्दान–पु० वधन।

उद्दाम–वि० [स० उद्दाम] १ वधन रहित, स्वतन्त्र। २ निरकुश। ३ उग्र। ४ प्रवल। ५ उद्दण्ड। ६ गम्भीर। ७ महान। ८ अकथित। –पु० १ वरुण। २ एक प्रकार का दडक वृत्त।

उद्दालक–पु० [स०] १ आरुणि नामक एक प्राचीन ऋषि। २ एक व्रत विशेष।

उद्दास–देखो 'उदास'।

उद्दित–देखो 'उदित'।

उद्दिम–देखो 'उद्यम'।

उद्दिस्ट–वि० [स० उद्दिष्ट] १ दिखाया हुआ। २ इगित किया हुआ। ३ अभिप्रेत, सम्मत। –पु० पिंगळ (छंदशास्त्र) के प्रत्ययो मे से एक।

उद्दीपक–वि० उत्तेजक।

उद्दीपण (न)–पु० [स० उद्दीपन] १ भडकाने व उत्तेजित करने की क्रिया। २ रस सिद्धान्त मे एक विभाव। ३ भडकाने वाली वस्तु।

उद्दे स, उद्दे स्य–पु० [स० उद्देश्य] १ इच्छा, अभिलाषा। २ मशा, आशय। ३ मतलब, प्रयोजन, स्वार्थ। ४ हेतु, कारण। ५ अन्वेषण। ६ नाम निर्देश पूर्वक वस्तु निरूपण। ७ लक्ष्य।

उद्दोत–पु० [स०] १ प्रकाश। २ उदय, वृद्धि। –वि०१ प्रकाशित। २ उदित। ३ प्रगटित। ४ देखो 'उद्योत'।

उद्ध–क्रि० वि० ऊपर।

उद्धणौ (वौ)–क्रि० ऊपर उठना, फैलना।

उद्धत–वि० [स०] १ चट, उद्दड। २ उग्र प्रचण्ड। ३ अडियल। ४ धृष्ट दुष्ट। ५ असभ्य, अनम्र। ६ निडर, निर्भीक। ७ अभिमानी। –पु० चालीस मात्रा का एक छद।

उद्धरण–पु० [स०] १ उद्धार, त्राण। २ पुस्तक या लेख का अश जो उदाहरण के तौर पर लिखा गया हो। –वि० उद्धारक।

उद्धरणौ (वौ)–क्रि० [स० उद्धरणम्] १ करना। २ धारण करना। ३ तरना, पार होना। ४ उद्धार करना। ५ छूटना, त्राण पाना। ६ अलग होना। ७ मुक्त होना।

उद्धरौ–देखो 'ऊधरौ'।

उद्धव–पु०[स०]१उत्सव। २ आमोद-प्रमोद। ३ यज्ञ की अग्नि। ४ श्रीकृष्ण का मित्र।

उद्धार–पु० [स०] १ मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, त्राण। २ रक्षा, वचाव। ३ सुधार। ४ विकास, उन्नति। ५ दुरुस्ती, मरम्मत। —**क**–वि० उद्धार करने वाला।

उद्धारणौ (वौ)–क्रि० १ तारना, पार करना। २ मुक्ति देना छुटकारा देना। ३ उवारना, वचाना। ४ अलग करना। ५ सुधारना। ६ विकसित करना। ७ ऊपर उठाना।

उद्धोर–पु० एक छद विशेष।

उद्वधण–पु० वधन फदा, जाल।

उद्वोधक–वि० [स०] १ वोध कराने वाला। २ चेताने वाला। ३ जगाने वाला। ४ सूचित करने वाला। ५ उत्तेजित करने ५ वाला। ६ प्रेरक। ७ प्रकाशक। –पु० सूर्य का एक नाम।

उद्भिज (भिद)- देखो 'उदभिज'।

उद्यत–वि० [स०] १ तैयार। २ तत्पर, सावधान। ३ ऊपर उठा हुआ। ४ उत्सुक। ५ तुला हुआ। ६ तना हुआ।

उद्यम–पु० [स०] १ काम धन्धा। २ रोजगार। ३ व्यवसाय। ४ उद्योग, प्रयास। ५ परिश्रम। ६ अध्यवसाय। ७ तैयारी।

उद्यमी–वि० [स०] उद्यम करने वाला। परिश्रमी।

उद्यान–पु० वाग, वगीचा।

उद्यापन–पु० [सं०] किसी व्रत की समाप्ति का उत्सव ।
उद्योग–पु० [सं०] १ काम, धधा । २ व्यवसाय । ३ व्यापारिक सामान का निर्माण । ४ प्रयत्न । ५ परिश्रम । ६ उपाय ।
उद्योगी–वि० [सं०] उद्योग करने वाला ।
उद्योत (ति, ती)–पु० [सं०] १ ज्योति, प्रकाश । २ दीपक । ३ शोभा, काति । ४ उन्नति, वृद्धि । –वि० प्रकाशित, प्रदीप्त । –वत–वि० दीप्तिवान, कातिवान, प्रकाशवान ।
उद्र–पु० [सं०] १ उदविलाव । २ उदर, पेट । ३ गर्भ । —वट–वि० अत्यधिक ।
उद्रक–पु० [सं०] १ भय, डर । २ आधिक्य ।
उद्राव–पु० भय, आतक ।
उद्रावणौ, उद्रिग्रामण, उद्रियावणौ–देखो 'अधियामणौ' ।
उद्रीधकौ–पु० छूटते समय सीने मे धक्का मारने वाली बन्दूक ।
उद्रेक–पु० [सं०] १ वृद्धि, बढोतरी । २ ज्यादती । ३ उन्नति, उत्थान । ४ प्रारम्भ । ५ उपक्रम । ६ काव्यालंकार विशेष ।
उद्वाह–पु० विवाह ।
उद्विग्न–वि० [सं०] उत्तेजित । व्याकुल, व्यग्र । चिंतित । —ता–स्त्री० उत्तेजना । व्यग्रता । चिंता ।
उद्वेग, (गौ)–पु० [सं०] १ मन की अकुलाहट, आतुरता । २ घबराहट । ३ चिंता । ४ आवेश जोश, उत्तेजना । ५ तीव्र वृत्ति । ६ एक सचारी भाव । ७ सात प्रकार के चौघडियो मे से एक ।
उद्वेगी–वि० जो उद्विग्न हो आतुर ।
उधडणौ (बौ)–क्रि० १ सिलाई खुलना, टाके खुलना । २ चिपका या जमा हुआ न रहना । ३ अलग होना पृथक होना । ४ उखडना । ५ उजडना । ६ कटना कट, कर दूर पडना । ७ खुलना ।
उधडवाई–स्त्री० १ उधेडने की क्रिया या भाव । २ उधेड़ने की मजदूरी ।
उधध (पति)–देखो 'उदद' ।
उधम–पु० [सं० उद्धम] १ बदमाशी, शैतानी, उद्दण्डता, उत्पात । २ चचलता, नटखटपन । ३ हल्लागुल्ला । ४ देखो 'उद्यम' ।
उधर–क्रि० वि० उस ओर, उस तरफ, दूसरी तरफ ।
उधरणौ, (बौ)–देखो 'उद्धरणौ' (बौ) ।
उधरत–स्त्री० १ बिना लिखा पढ़ी का ऋण । २ ऋण, उधार । ३ ऋण का धन ।
उधरती–स्त्री० उद्धार, मुक्ति, छुटकारा । २ देखो 'उधरत' ।
उधराणौ (बौ)–क्रि० [सं० उद्धरण] १ हवा मे छितराना । २ बिखेरना, तितर-बितर करना । ३ ऊधम मचाना । ४ उन्मत्त होना ।
उधरौ–देखो 'ऊधरौ' (स्त्री० उधरी) ।
उधळणौ, (बौ)–देखो 'ऊदळणौ' (बौ) ।
उधसि, (सी)–पु० [सं० ऊधस्य] दुग्ध, दूध ।
उधामणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार के लिए शस्त्र उठाना । २ प्रहार करना । ३ उदास होना । ४ आनन्द, उप भोग या उदारता से द्रव्य खर्च करना ।
उधाड–पु० कुश्ती का एक दाव ।
उधात–पु० अशुद्ध धातु ।
उधार–पु० [सं० उद्धार] १ मुक्ति, मोक्ष । २ ऋण, कर्ज । ३ खाते मे नाम लिखकर सामान देने की क्रिया । ४ ग्राहको की तरफ बकाया रकम । ५ अमानत के रूप मे दी जाने वाली वस्तु । –वि० १ जो नगद न हो । २ बकाया, शेष । ३ बेकार, निकम्मा, कायर ।
उधारक–वि० [सं० उद्धारक] उद्धार करने वाला, मुक्ति दिलाने वाला ।
उधारण–वि०उद्धार करने वाला । —पु० समुद्र, सागर ।
उधारणी–वि० (स्त्री० उद्धारणी) उद्धार करने वाला ।
उधारणौ (बौ)–देखो 'उद्धारणौ' (बौ) ।
उधारियौ–वि० उधार लेने वाला ।
उधारौ–पु०१ उधार दी गई वस्तु या रकम । ३ देखो 'उधार' ।
उधाळ–वि० उल्टा, औंधा ।
उधि–देखो 'अवधि' ।
उधियार–देखो 'उधार' ।
उधेड़णौ, (बौ), उधेरणौ, (बौ)–क्रि० १ सिलाई या टाके खोलना । २ चीरना काटना । ३ लगाया हुआ वापस हटाना । ४ छितराना । ५ भग करना । ६ तह या परत हटाना । ७ खाल उतारना ।
उधेड़बुन–पु० यौ० १ सोच-विचार । उहापोह । २ उलझन ।
उधोर–वि० १ श्रेष्ठ वीर । २ उद्धारक । –पु० बारह या चौदह मात्रा का छद जिसके अन्त मे जगण होता है ।
उध्यान–देखो 'उद्यान' ।
उनग–वि० १ बिना म्यान की तलवार । २ शस्त्र उठाने की क्रिया ।
उनगणौ (बौ)–क्रि० प्रहार हेतु शस्त्र उठाना ।
उनगौ, (नगौ)–वि० [सं० नग्न] (स्त्री० उनगी) १ नंगा । २ म्यान रहित तलवार या कटार ।
उनद्र–वि० [सं० उन्निद्र] १ निद्रा रहित, जागृत । २ कलियो से युक्त, फैला हुआ ।
उनमणौ (बौ)–देखो 'उमडणौ' (बौ) ।
उन्ज–देखो 'अनुज' ।

उनताळिस (ळीस)-वि० [सं० ऊनचत्वारिंशत्] तीस और नौ का योग। -पु० तीस व नौ के योग की संख्या, ३९।
उनताळीसौ-पु० उनचालीसवां वर्ष।
उनतीनाह-पु० [सं० उन्नतिनाथ] पक्षीराज गरुड़।
उनतीस-वि० तीस में एक कम। -पु० बीस व नौ के योग की संख्या, २९।
उनतीसौ-पु० उन्तीसवां वर्ष।
उनत्थ, उनथ-वि० [सं० उन्नाथ] १ बंधन, रहित, स्वतन्त्र। २ उद्दंड। —नथ-वि० बंधन रहित को बंधन में डालने वाला।
उनमदा-देखो 'उमदा'।
उनमणौ, उनमन, (मनौ)-वि० [सं०उन्मनस] (स्त्री० उनमणी) उदास, खिन्न चिंतित। विकळ-व्याकुल, बेचैन उद्विग्न, प्रिय वियोग से संतप्त।
उनमत (त्त)-वि० [सं० उन्मत्त] १ मस्त, मौजी। २ मदमस्त। ३ मदान्ध। ४ पागल।
उनमती-देखो 'उनमुनी'।
उनमान-देखो 'अनुमान'।
उनमाद-पु० [सं० उन्माद] १ पागलपन, विक्षिप्तावस्था। २ नशा। ३ उन्मत्तता मस्ती। ४ शैतानी, शरारत। ३३ संचारी भावों में से एक। -वि० [सं० उन्माद] पागल, सनकी, डावांडोल।
उनमादक-वि० [सं० उन्मादक] १ उन्मत्त करने वाला। २ नशा युक्त, नशीला। ३ पागल या भ्रमित करने वाला। ४ हर्ष प्रद। -पु० काम के पांच बाणों में से एक।
उनमादी-वि०१उन्माद रोग से पीडित। २ पागल। ३ विक्षिप्त।
उनमुनी-स्त्री० हठ योग की एक मुद्रा विशेष।
उनमुनौ-देखो 'उनमणौ' (स्त्री० उनमुनी)।
उनमूळण (न)-पु० नष्ट करने, मिटाने या उखाड़ने की क्रिया या भाव।
उनमूळणौ (बौ)-क्रि० नष्ट करना। मिटाना। उखाड़ना।
उनसट (ठ)-वि० [सं० ऊनषष्ठि] साठ से एक कम। -पु० पचास व नौ की संख्या, ५९।
उनसठौ-पु० उनसाठवां वर्ष।
उनहणौ (बौ)-क्रि० उमड़ना, उमड़ कर छा जाना। घना होना। सघन होना। उमड़-घुमड़कर आना।
उनहौओ (डौ)-वि० सघन। घनघोर (स्त्री० उनहीओडी)।
उनाम (व)-पु० १ वर्षा के जल की फसल वाला खेत। २ वर्षा का जल एकत्र होने का स्थान।
उनाग-देखो 'उनगौ'।
उनारण-पु० उष्ण पदार्थ।
उनाळ-पु० १ उष्णकाल, गर्मी। २ अग्नि, आग।
उनाळी (ळू)-स्त्री० १ रबी की फसल। २ दक्षिण पश्चिम की हवा। -वि० ग्रीष्मऋतु की। —साख-स्त्री० रबी की फसल। इस पर लिया जाने वाला सरकारी लगान।
उनाळौ-पु० [सं० उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु। गर्मी का मौसम।
उनासाही-स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
उनि-सर्व० उन। उसने।
उनींदौ, (द्रौ)-वि० [सं० उनिद्र] नींद से भरा हुआ, ऊंघता हुआ। निद्रित।
उने (नैं)-क्रि० वि० उस ओर, उस तरफ।
उनोदरी-पु० बारह प्रकार तप में से दूसरे प्रकार का तप जिसमें जितनी भूख हो उससे कम आहार किया जाता है।
उनौ-देखो, ऊनौ (स्त्री० ऊनी)।
उन्नत-वि० [सं०] १ ऊंचा, उत्तुंग। २ ऊपर, उठा हुआ। ३ श्रेष्ठ, उच्च। ४ विकसित। ५ विख्यात, प्रसिद्ध। ६ उन्नति पाया हुआ। ७ किसी कला या विद्या में निपुण।
उन्नता उन्नति-स्त्री० [सं० उन्नति] १ तरक्की, बढ़ोतरी, वृद्धि। २ ऊंचाई, चढ़ाव। ३ समृद्धि।
उन्नतोदर-पु० [सं०] १ गणेश, गजानन। २ चाप या वृत्त का ऊपरी भाग।
उन्नयन-पु० [सं०] १ ऊर्ध्व प्रयाण। २ ऊपर का खिंचाव। ३ विचार, अटकल।
उन्नाब-पु० [अ०] बेरनुमा एक औषधि।
उन्नाबी-वि० [अ० उन्नाब + रा. प्र + ई] उन्नाब के रंग का, कालापन लिए हुए लाल।
उन्नायक-वि० [सं०] उन्नत करने वाला।
उन्नाळौ-देखो 'उनाळौ'।
उन्नासी-वि० [सं० ऊनाशीति, प्रा० एगूणासीइ] अस्सी से एक कम। -स्त्री० सत्तर व नौ के योग की संख्या, ७९।
उन्मत्त-वि० [सं०] मदमाता, नशे में चूर, पागल, सिड़ी।
उन्मत्ता-स्त्री० [सं० उन्मत्तता] उन्मत्त होने की दशा या भाव, पागलपन, मस्ती। नशा।
उन्मन-वि० मनस्थैर्य। मन का, मन संबंधी।
उन्मथ-पु० [सं०] कर्ण लुंच का एक रोग।
उन्माद-देखो 'उनमाद'।
उन्मादक, (ण)-देखो 'उनमादक'।
उन्मादी-देखो 'उनमादी'।

उन्मीलित–वि० [सं०] १ खुला हुआ । २ विकसित । ३ प्रस्फुटित । ४ तना हुआ । ५ जागृत । –पु० एक प्रकार का अर्थालंकार ।

उन्मेस–पु० [स० उन्मेष] १ विकास । २ खिलावट । ३ वृद्धि, बढाव, विकास । ४ रोशनी, प्रकाश । ५ चमक, काति । ६ जागृति । ७ ज्ञानवृद्धि । ८ पलक ।

उन्याळौ–देखो 'उनाळौ' ।

उन्हड–देखो 'ऊनौ' (स्त्री० उन्ही) ।

उन्हाणौ, (बौ)–क्रि० तपाना, गर्म करना । गर्मी देना ।

उन्हाळ, (ळउ, ळसी) उन्हाळौ–देखो 'उनाळौ' ।

उन्हू, उन्हौ–सर्व० १ उसका । २ देखो 'ऊनौ' । (स्त्री० उन्ही)

उपखी–पु० पक्षी, पछी ।

उपग–पु० [स० उपाग] १ शरीर का अवयव । २ अवयवो की पूर्ति करने वाली वस्तु । ३ तिलक, टीका । ४ एक प्राचीन वाद्य । ५ उद्धव के पिता का नाम ।

उपगी–वि० १ नसतरग बजाने वाला । २ देखो 'उपग' ।

उपत–देखो 'ऊपात' ।

उप–उप० [स०]१ शब्दो के पूर्व लगने वाला उपसर्ग जो शब्द के अर्थ को प्रभावित करता है । [स०अप०]२ पानी, जल । ३ देखो 'वपु' । –क्रि०वि० निकट, समीप । **—कंठ, कंठइ**–पु० किनारा, तट । सामीप्य । पडोस । –क्रि०वि० निकट, पास, पडोस मे । **—करण**–पु० औजार । सामग्री । साज-बाज । शोधक वस्तु । राजसीचिह्न । गौण वस्तु या द्रव्य । पूजन सामग्री ।

उपकार (रौ,त)–पु० [स०] १ भलाई, नेकी, हित । २ सलूक । ३ लाभ, फायदा । ४ सहायता, मदद । ५ कृपा, अनुग्रह । ६ शृगार । ७ 'आभार' ।

उपकारक, (कारी)–वि० [स०] १ उपकार करने वाला, हितैषी । २ सहायक, मददगार ।

उपकूप, (क)–पु० वापिका ।

उपकृत–वि० [स०] कृतज्ञ ।

उपक्रम–पु० कार्यारभ । प्रयत्न । आयोजन । भूमिका ।

उपक्रमणिका–स्त्री० पुस्तक की विषय सूची ।

उपक्रमणौ (बौ)–क्रि० उछलना, कूदना, छलाग लगाना ।

उपखीण–पु० [स० उपक्षीण] शोक सूचक वस्त्र ।

उपगत–वि० १ प्राप्त । २ स्वीकृत । अगीकृत । ३ ज्ञात ।

उपगरण–पु०[स० उपकरण] साधु के काम आने वाले उपकरण, रजोहरणादि (जैन) ।

उपगरणौ (बौ)–क्रि० १ ग्रहण करना, लेना । २ पकडना । ३ उपकार करना ।

उपगार–देखो 'उपकार' ।

उपगारी, उपगारू–देखो 'उपकारी' । २ देखो 'उपकार' ।

उपगीत, (गीति)–पु० १ आर्या छन्द का एक भेद ।

उपगूहन–पु० आलींगन, भेंट ।

उपग्रह–पु० [स०] १ छोटा ग्रह (राहु,केतु) । २ प्रधान ग्रह के आस-पास रहने वाला कोई छोटा ग्रह । ३ वैज्ञानिक परीक्षण से छोडे गये कृत्रिम उपग्रह । ४ उपद्रव । ५ कैद, पकड । ६ हार, पराजय ७ बदी, कैदी । ८ अनुग्रह । ९ योग । १० प्रोत्साहन ।

उपघात–पु० १ नाश करने की क्रिया । २ रोग, पीडा । ३ आघात । ४ आक्रमण । ५ छल, कपट ।

उपडणौ (बौ)–क्रि० १ खर्च होना । २ समाप्त होना, खत्म होना । ३ उठना । ४ उभरना (चोर) । ५ उखडना । ६ उड़ना, आकाश मे छा जाना । ७ वीरगति प्राप्त, होना, रणागन में युद्ध करते मरना ।

उपडाणौ (बौ)–क्रि० १ उन्मूलन करना, मिटाना । २ उमडाना । ३ ऊभारना । ४ भार उठाना । ५ उठाना । ६ दौडाना । ७ व्यय कराना । ८ समाप्त कराना । ९ उखाडना ।

उपचय–पु० [स०] १ उन्नति, तरक्की । २ वृद्धि । ३ सचय सग्रह । ४ परिणाम, ढेर । ५ जन्म कुंडली मे लग्न से तीसरा, छठवा और ग्यारहवा स्थान ।

उपचार–पु० [स०] १ इलाज, चिकित्सा । २ सेवा शुश्रूषा । ३ व्यवहार, प्रयोग । ४ परिचर्या । ५ पूजन । ६ सत्कार । ७ नमस्कार, प्रणाम । ८ उपाय । ९ व्यवस्था, प्रबन्ध । १० रीतिरिवाज ।

उपचारक–वि० [स०] १ चिकित्सक । २ उपचार करने वाला । ३ सेवा करने वाला ।

उपचारणौ (बौ)–क्रि० १ व्यवहार मे लाना । प्रयोग मे लाना । काम में लेना । २ सेवा करना, परिचर्या करना । ३ चिकित्सा करना ।

उपचारी–देखो 'उपचारक' ।

उपछद–पु० चौबीस से अधिक मात्राओ का छद ।

उपछर–देखो 'अपछर' ।

उपज–स्त्री० १ उत्पत्ति, उद्‌भव । २ पैदावार । ३ सूझ-बूझ । ४ काल्पनिक बात । ५ स्फूर्ति, स्फुरण ।

उपजण–पु० जन्म ।

उपजणौ (बौ)–क्रि० १ जन्मना । २ उपजना, उगना, पैदा होना । ३ उत्पन्न होना । ४ सूझना । ५ होना ।

उपजलपण (न)–पु० [स० उपजल्पनम्] वार्तालाप ।

उपजस–वि० १ काला, श्याम । २ देखो 'अपजस' ।

उपजाऊ–वि० जहां पैदावार अच्छी हो, उर्वरक।

उपजाणौ, (बौ) उपजावणौ, (बौ)–क्रि० १ पैदा करना, उत्पन्न करना। उगाना। २ सुझाना।

उपजाप–पु० [स० उपजाप] कानाफूसी, चुपचाप कान मे कहना।

उपजीविका–स्त्री० [स०] रोजी, जीविका।

उपजीहा–स्त्री० दीपक।

उपज्जणौ (बौ)–देखो 'उपजणौ' (बौ)।

उपझूलणा–पु० एक प्रकार का छद।

उपटक–पु० उपाधि, खिताब।

उपट–पु० १ दान। २ उतारना। ३ लिखावट के निशान। —क्रि० वि० ऊपर। —घट–क्रि० वि० ऊपर तक।

उपटणौ (बौ)–क्रि० १ उभरना, निशान पडना। २ उखड़ना। ४ उमडना। ४ मर्यादा या हद से बाहर होना। ५ उछलना। ६ उत्पन्न होना।

उपटा–क्रि० वि० ऊपर से। विशेष तौर पर। –वि० विशेष।

उपट्टणौ (बौ)–देखो 'उपटणौ' (बौ)।

उपणौ (बौ)–क्रि० उत्पन्न होना, पैदा होना।

उपत–१ देखो 'ओपत'। २ देखो 'उत्पत्ति'।

उपतणौ (बौ)–क्रि० कष्ट पाना, दुखी होना।

उपताप–पु० [स०] व्याधि, बीमारी।

उपतारौ–स्त्री० १ क्षुद्र नक्षत्र। २ नेत्रो की गोलक।

उपति–देखो 'उत्पत्ति'।

उपत्यका–स्त्री० [स०] पर्वत के निकट की भूमि, तराई, घाटी।

उपदस–पु० [स० उपदश] १ सर्प दश। २ डक की मार। ३ गर्मी का रोग। ४ भूख-प्यास बढाने वाली वस्तु। ५ शराब के बाद खाई जाने वाली गजक।

उपदरौ–देखो 'उपद्रव'।

उपदा–स्त्री० [स०] १ भेंट, नजराना। २ दर्शन। ३ पीडा। ४ बाधा।

उपदिसा–स्त्री० मुख्य दिशाओ के बीच का कोण।

उपदिस्ट–वि० [स० उपदिष्ठ] उपदेशित। ज्ञापित।

उपदुहौ (दूहौ)–पु० दोहा छद का एक भेद।

उपदेस (सि)–पु० [स० उपदेश] १ शिक्षा, ज्ञान। २ हित की बात। ३ नसीहत, सीख। ४ गुरुमत्र, दीक्षा। ५ धर्म का उपदेश।

उपदेसक–वि० [स० उपदेशक] १ शिक्षा या ज्ञान की बात कहने वाला। २ हितैषी। ३ नसीहत या सीख देने वाला।

उपदेसणौ (बौ)–क्रि० १ शिक्षा देना, ज्ञान देना। २ हित की बात कहना। ३ धर्म के सिद्धान्त समझाना। ४ सीख या नसीहत देना।

उपदेहिका–स्त्री० दीमक।

उपद्रव–पु० [स०] १ उत्पात, गडबडी। २ विप्लव, गदर। ३ दगा-फसाद। ४ रोग विकार। ५ अत्याचार। ६ विपत्ति, सकट।

उपद्रवी–वि० [स०] उपद्रव करने वाला। क्रान्तिकारी। झगडालू।

उपध–१ देखो 'उपाधि'। २ देखो 'उपधा'।

उपधान–पु० [स०] १ ऊपर रखने या ठहराने की क्रिया। २ सहारे की वस्तु। ३ तकिया, सिरहाना। ४ तप विशेष। (जैन) —आसन–पु० चौरासी आसनो मे से एक।

उपधा–स्त्री० [स०] १ प्रवचना, छल। २ उपाधि। ३ ईमानदारी की परीक्षा।

उपधात, उपधातु–स्त्री० [स० उपधातु] १ प्रधान धातु का मेल। २ चर्बी। ३ पसीना।

उपधि–पु० छल, कपट।

उपनणौ (बौ)–देखो 'ऊपनणौ' (बौ)।

उपनय, (नयण, नयन)–पु० [स० उपनयन] १ यज्ञोपवीत-सस्कार। २ यज्ञोपवीत।

उपनह–स्त्री० 'उपनाह'।

उपनाम–पु० [स० उपनाम्] जाति, पदवी या उपाधि के कारण प्रचलित अतिरिक्त नाम।

उपनाय–देखो 'उपनय'।

उपनायक–पु० नायक का सहायक।

उपनाह–पु० [स०] १ सितार, वीणा आदि की खूटी। २ मरहम पट्टी। ४ मलहम, लेपन। ४ उबटन।

उपनिभ–पु० [स०] छल, कपट।

उपनिसत (सद), उपनीसत–पु० [स० उपनिषद] वेदो के वे अश जिनमे ब्रह्म विद्या का निरूपण है।

उपनौ–देखो 'ऊपनौ' (स्त्री० उपनी)।

उपन्नणौ (बौ)–देखो 'ऊपनणौ' (बौ)।

उपपत, (पति)–पु० [स० उपपति] किसी स्त्री का यार, प्रेमी। जार।

उपपतनी (पत्नी)–स्त्री० [स० उपपत्नी] वेश्या, रखैल। प्रेमिका।

उपबरतन (वरतन)–पु० [स० उपवर्तन] १ देश, वतन। २ जिला परगना। ३ अखाड़ा।

उपबसथ (वसथ)–पु० [स० उपवसथ] १ ग्राम, बस्ती। २ यज्ञ करने से पूर्व का दिन।

उपबाह्य (वाह्य)–पु० [स० उपवाह्य] १ राजा की सवारी का हाथी। २ राजा की सवारी।

उपभोग–पु० [स० उपभोग] १ वस्तु का भोग, उपयोग। २ आनन्द। ३ आस्वादन। ४ भोजन। ५ भोग-विलास, सहवास। ६ सुख की सामग्री।

उपमजाणौ(बौ)–१उपमर्दन करना। २ देखो 'उपजाणौ' (बौ)।

उपमाण, (मान)–पु० [स० उपमान] वह वस्तु जिसको उपमा दी जाती है।

उपमा–स्त्री० [स०] १ तुलना, समानता। २ एक प्रकार का अर्थालंकार।

उपमेय–वि० [स०] १ जिसकी उपमा दी जाय। २ वर्ण्य।

उपयंद्र–पु० [स० उपेन्द्र] १ इन्द्र का छोटा भाई। २ वामन। ३ विष्णु। ४ श्रीकृष्ण।

उपयम, (यांम)–पु० [स० उपयम] विवाह।

उपयुक्त–वि० [स०] ठीक, उचित, यथायोग्य।

उपयोग–पु० [स०] १ व्यवहार प्रयोग। इस्तेमाल। २ आवश्यकता। ३ योग्यता। ४ लाभ, फायदा। ५ प्रयोजन।

उपयोगिता–स्त्री० [स०] १ आवश्यकता। २ काम मे आने की योग्यता, क्षमता। ३ लाभकारिता। ४ महत्व।

उपयोगी–वि० [स०] १ महत्वपूर्ण। २ काम मे आने योग्य। ३ लाभकारी। ४ अनुकूल।

उपरंच–क्रि० वि० इसके बाद, पश्चात्।

उपरत–देखो 'उपरात'।

उपर–देखो 'ऊपर'।

उपरक्षण, (रच्छण)–[स० उपरक्षण] १ चौकी, पहरा। २ सेना की चढाई।

उपरति–स्त्री० [स० उपरति] १ विषय से वैराग्य, विरति। २ उदासीनता। ३ मृत्यु, मौत। ४ त्याग, निवृत्ति। ५ सभोग से अरुचि।

उपरम–पु० [स० उपरम] १ अदृश्यता, विलीनीकरण। २ विरति, वैराग्य। ३ मृत्यु।

उपरमणौ (बौ)–क्रि० विलीन होना, अन्तर्धान होना।

उपरमाड (वाडो)–क्रि० वि० ऊपर ही ऊपर। –स्त्री० महाजनी गणित की एक प्रक्रिया।

उपरमाडौ–देखो 'उपरवाडौ'।

उपरलिया (ल्यां)–देखो 'मावलिया'।

उपरवाडी, उपरवाडौ–पु० [स०उपरि-वाट] १ हिसाव या गुणन की एक विधि विशेष। २ ऊपर का मार्ग ३ गुप्त मार्ग। सूक्ष्म मार्ग। ४ पिछवाडे या बगल का वह स्थान जहा से अनुचित रूप से आना-जाना हो।

उपरवार–पु० नदी किनारे की भूमि। बागर जमीन।

उपरस–पु० [स०] गधक आदि पदार्थ।

उपराठ,(राठउ,राठियौ,राठौ)–देखो'अपूठौ'। (स्त्री०उपराठी)।

उपरांत (ति, तौ)-क्रि०वि० १ तदनन्तर, वाद मे। २ ऊपर से। ३ फिर।

उपराम–पु० [स० उपराम] १ निवृत्ति। २ विरक्ति। ३ उदासीनता। ४ विराम, आराम। ५ मृत्यु।

उपरायत–वि० अधिक, विशेष। उपरात।

उपरा–क्रि० वि० ऊपर। **—उपरी**–क्रि० वि० एक पर एक। निरन्तर। **—चढ़ी**–स्त्री० प्रतिद्वंद्विता, स्पर्द्धा।

उपराठौ–१ चितालु। २ चिंतित। ३ देखो 'अपूठौ'। (स्त्री० उपराठी)।

उपराध–देखो 'अपराध'।

उपरायण–क्रि०वि० १ ऊपर से। २ शीघ्रता पूर्वक।

उपराळौ–पु० १ पक्ष ग्रहण। २ सहायता, मदद।

उपरावटौ–वि० (स्त्री० उपरावटी) १ गर्वोन्नित। २ अकडा हुआ। ३ देखो 'अपूठौ' (स्त्री० उपरावटी)।

उपरास–क्रि०वि० ऊपर से, ऊपरी। –वि० अधिक, विशेष।

उपरि–वि० ऊपर का।

उपरियाळ–वि० एक से एक बढकर। विशेष, अधिक।

उपरीजणौ (बौ)–क्रि० बच्चे का रोग ग्रस्त होना।

उपरेचौ–पु० दरवाजे पर लगने वाला काष्ठ का डण्डा।

उपरोक्त–वि० [स० उपर्युक्त] जो ऊपर कहा गया हो।

उपरोध–पु० [स०] १ अवरोध, अटकाव। २ रुकावट। ३ आच्छादन, ढक्कन। ४ आड। ५ आज्ञा, आदेश।

उपलगी–पु० [स०] पर्वत, पहाड।

उपल–पु० [स०] १ पत्थर। २ ओला। ३ रत्न। ४ वालू। ५ घास विशेष। ६ चट्टान।

उपलक्ष–पु० [स०] १ चिह्न, सकेत। २ उद्देश्य, कारण। ३ दृष्टि। ४ खुशी।

उपलक्षित–वि० [स०] १ चिह्नित, लक्षित। २ सूचित।

उपलब्ध–वि० [स०] १ प्राप्त। २ जाना हुआ।

उपलब्धि (ब्धी)–स्त्री० [स] १ प्राप्ति। २ वृद्धि। ३ ज्ञान। ४ अनुभव।

उपलेप–पु० १ मरहम, लेपन। २ लीपा-पोती। ३ लेपन करने की वस्तु।

उपलेपण (न)–पु० [स] लेपन का कार्य।

उपलौ–वि० (स्त्री० उपली) ऊपर का, ऊपरी। –पु० जलाने का कडा, उपला।

उपव–देखो 'उपमेय'।

उपवन–पु० [स०] १ वाग, वगीचा। २ छोटा जगल। ३ कृत्रिम वन।

उपवरतन, (नौ)–देखो 'उपवरतन'।

उपवसत–देखो 'उपवसथ'।

उपवास–पु० [स०] व्रत, लघन। अनशन।

उपवासी–वि० उपवास करने वाला, व्रती।

उपवाह्य–देखो 'उपवाह्य'।
उपविद्या–स्त्री० [स०] शिल्प कला। शिल्प।
उपविस–पु० [स० उपविष] १ हलका विष। २ धतूरा। ३ अफीम। ४ कुचेला।
उपविस्ट–वि० [स० उपविष्ट] बैठा हुआ, आसीन।
उपवीत–पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ। —उतार–पु० तलवार का एक प्रहार।
उपवेद–पु० [स०] वेदो से निकले हुए शास्त्र। धनुर्वेद, गधर्ववेद, आयुर्वेद तथा स्थापत्य।
उपसख्यान–पु० १ अधोवस्त्र। २ साडी के नीचे का वस्त्र।
उपसपादक–पु० [स०] सहायक सपादक।
उपसहार–पु० [स०] १ समाप्ति, पूर्णता। २ नाश। ३ निष्कर्ष। ४ शेष अश। ५ किसी लेख या पुस्तक का अतिम अश।
उपसणी (बौ)–क्रि० १ फूलना। २ उभरना।
उपसप्पिणि–देखो 'उसरपिणी'।
उपसम–पु० [स० उपशम] १ इन्द्रिय निग्रह। २ शाति। ३ क्षमा। ४ प्रतिकार। ५ सत्तागत कर्मों का उदय बिल्कुल रुक जाने पर होने वाली आत्मशुद्धि। ६ आवेश का समन (जैन)।
उपसमण (न)–पु० इन्द्रिय निग्रह की क्रिया। दमन। निवारण।
उपसय–पु० [स० उपशय] निदान।
उपसरग–पु० [स० उपसर्ग] १ किसी शब्द के आगे लगने वाला अव्यय शब्द। २ एक रोग। ३ उत्पात, उपद्रव। ४ दैविक प्रकोप। ५ विघ्न। ६ कष्ट। ७ साधना में डाला जाने वाला विघ्न। ८ शुभाशुभ सूचक चिह्न। ९ साधना मे मग्न व्यक्ति को साधना से विचलित करने के उपाय (जैन)।
उपसरजन–पु० [स० उपसर्जन] १ ढलाई। २ उडेलना। ३ उपद्रव। ४ दैविक उत्पात। ५ त्याग। ६ गौण वस्तु।
उपसरपण–पु० [स० उपसर्पण] १ उपासना। २ अनुवृत्ति।
उपसरो–पु० सहायता, मदद।
उपसास–पु० [स० उपश्वास] नि श्वास। आह।
उपस्त्री–स्त्री० [स०] रखैल।
उपस्थ–पु० [स० उपस्थ] १ मध्य या नीचे का भाग। २ पुरुष चिह्न, लिंग। [स० उपस्थम्] ३ स्त्री चिह्न, योनि।
उपस्थळ–पु० [स० उपस्थल] चूतड, कूल्हा, पेडू।
उपस्थित–वि० [स०] १ हाजर, मौजूद। २ वर्तमान, विद्यमान। ३ निकट बैठा हुआ।
उपस्थिति–स्त्री० [स०] १ हाजरी। २ मौजूदगी।
उपहत–वि० [स०] १ नष्ट, बरबाद। २ बिगडा हुआ। ३ क्षत-विक्षत। ४ निर्बल।
उपहार–पु० [स०] १ भेंट, नजराना दक्षिणा। २ दान। ३ पुरस्कार। ४ सम्मान। ५ सामग्री। ६ गीत। ७ नृत्य। ८ मेहमानों में बाटा हुआ भोजन। ९ बलि पशु।
उपहारीभूत–पु० यौ० भेंट, उपहार।
उपहास–पु० [स०] १ परिहास, हसी। २ मजाक, मखौल। ३ निन्दा, आलोचना।
उपहवर–पु० [स० उपह्वर] एकान्त स्थान।
उपाग–पु० [स०] अवयव, अंग।
उपान (नत, नह)–पु० [स० उपानह] जूता, जूती।
उपापळी–वि० (स्त्री० उपापळी) १ उत्पाती। २ नटखट, चचल। ३ व्यग्र, चिंतित।
उपाइक–वि० उत्पन्न करने वाला। २ यत्न करने वाला।
उपाई, उपाउ (ऊ) देखो 'उपाय'।
उपाड़–देखो 'ऊपाड'।
उपाडणौ (बौ), उपाड़िणौ (बौ)–क्रि० १ उठाना। २ उखाडना, उन्मूलन करना। ३ खर्च, व्यय करना। ४ अधिकार मे करना। ५ बोझ उठाना। ६ भूडकाना। बल पूर्वक आगे बढाना, झोकना।
उपाडू–वि० खर्चीला। जोशीला।
उपाडो–पु० १ खर्चा, व्यय। २ बोझा, वजन। ३ झड बेरी के डठलो का समूह।
उपाणो–पु० [स० उत्पन्न] आय।
उपाणौ (बौ)–क्रि० १ उत्पन्न करना, पैदा करना। २ उपार्जन करना। ३ रचना, बनाना।
उपादान–पु० [स० उपादन] १ प्राप्ति। २ ग्रहण। ३ स्वीकार। ४ अपने अपने विषयो की ओर इन्द्रियो का गमन। ५ कारण।
उपाध, उपाधि–स्त्री० [स० उपाधि] १ उपद्रव। २ अन्याय, छल, कपट। ३ युद्ध। ४ विघ्न, बाधा। ५ पदवी, खिताब। ६ उपन्यास।
उपाय–पु० [स० उपानह] १ युक्ति, तदबीर। २ इलाज। ३ व्यवस्था। ४ नीति। ५ उपचार। ६ प्रयत्न। ७ साधन। ८ निकट पहुंचने की क्रिया। ९ मार्ग, रास्ता।
उपायण–वि० चार। –स्त्री० [स० उपायनम्] १ मान्यता, प्रण, प्रतिज्ञा। २ निकट पहुचना, शिष्यबनना।
उपायन–पु० [स० उपायनम्] १ उपहार, भेंट। २ मान्यता। ३ प्रण, प्रतिज्ञा। ४ निकट पहुचना। ५ शिष्य बनना।
उपारजन (न)–पु० [स० उपार्जन] १ कमाई, आमदनी, अर्जन। २ लाभ, नफा। ३ एकत्रीकरण, सचय।
उपालभ, (न)–पु० [स० उपालभ] उलाहना, शिकायत, निंदा।
उपाळी–वि० (स्त्री० उपाळी) १ नगे पैर। २ पैदल।
उपाव–पु० १ उत्पात, बखेडा, उपद्रव। २ देखो 'उपाय'।

उपावण–वि० उत्पन्न करने वाला ।
उपावणौ (बौ)–देखो उपाणौ (बौ) ।
उपासग–पु० तर्कश ।
उपास–देखो 'उपवास' ।
उपासक–वि० पूजा, उपासना करने वाला ।
उपासण,(न)–पु० १सेवा शुश्रूषा । २ आराधना । -वि०उपासना करने वाला ।
उपासणा (ना)–स्त्री० [स० उपासना] १ पूजा, आराधना । २ सेवा परिचर्या । ३ ध्यान ।
उपासणौ (बौ)–क्रि० उपासना करना । आराधना करना । सेवा करना ।
उपासरौ–पु० [स० उपाश्रय] जैन यतियो का निवास स्थान ।
उपासी, (क), उपासु, (सू)–वि० उपासक ।
उपास्य–वि० [स०] १ उपासक या पूजा करने योग्य । २ आराध्य, सेव्य । ३ पूजनीय ।
उपस्रय–देखो 'उपासरौ' ।
उपाहौ–पु० उपालभ ।
उंपिद्र–पु० [स० उपेन्द्र] ईश्वर ।
उपियळगाह–पु० गाथा छद का एक भेद ।
उपूठौ–देखो 'अपूठौ' (स्त्री० उपूठी) ।
उपेंद्रवज्रा–पु० एक वर्ण वृत्त ।
उपेक्षण–पु० [स०] १ विरक्ति का भाव । २ किनारा । ३ खिचाव । ४ तिरस्कार ।
उपेक्षा–स्त्री० [स०] १ अवहेलना, लापरवाही । २ असम्मान । ३ अस्वीकृति । ४ त्याग । ५ विरक्ति, उदासीनता । ३ तिरस्कार ।
उपेक्षित–वि० [स०] तिरस्कृत । निंदित । त्यक्त ।
उपेट, उपेत–वि० सहित, युक्त । एकत्रित ।
उपोदघात–पु० [स० उपोद्घात] प्रस्तावना, भूमिका । प्रारम्भ ।
उप्परि–देखो 'ऊपर' ।
उप्पाडणौ (बौ)–देखो 'उपाडणौ' (बौ) ।
उप्रवट, (व्राट)–वि० अधिक, विशेष ।
उफ–अव्य० [अ०] अफसोस सूचक ध्वनि । ओह ।
उफणणौ (बौ)–देखो 'ऊफणणौ' (बौ) ।
उफांण, (न)–पु० १ उबाल । उफान । २ जोश । ३ क्रोध । ४ आडम्बर । ५ फेन ।
उफारवा–वि० बडा दिखने वाला ।
उफारौ–पु० अहकार ।
उबध–देखो 'ऊवध' ।
उबबर (बरौ)–देखो 'ऊबवर' ।
उबकणौ, (बौ), उबक्कणौ (बौ)–देखो 'ऊबकणौ' (बौ) ।
उबडखाबड–वि० ऊचा-नीचा, विषम । असमतल ।
उबडाक–स्त्री० उबकाई, मिचली, वमन ।
उबडियौ–देखो 'ऊबड़ियौ' ।
उबट–देखो 'ऊबट' ।
उबटण, (टन, टणौ)–पु० [सं० उद्वर्तन] १ शरीर पर मलने का सुगधित लेपन । २ मालिश ।
उबटणौ (बौ)–क्रि० १ शरीर पर सुगधित द्रव्य मलना, मालिश करना । २ रग उडना । ३ उत्पन्न होना । ४ कसैला होना ।
उबरण (न)–पु० [स० उदुम्वर] गूलर का वृक्ष या फल ।
उबरागणौ (बौ) –क्रि० शस्त्र, लाठी, हाथ आदि प्रहार के लिए उठाना ।
उबराणौ–देखो 'उबाणौ' (स्त्री० उबराणी) ।
उबरेड़ौ, (रेलौ)–पु० १ वर्षा के उपरात बादलो की छंटनी । २ वर्षा के बाद होने वाला कुछ कुछ सूखापन ।
उब्रौ–देखो 'अमीर' ।
उबळणौ (बौ)–क्रि० खौलना । उफनना । पानी मे उबल कर पकना ।
उबाणणौ (बौ)–१ प्रहार के निमित्त । उठाना । २ खडा रखना, करना ।
उबाणौ (हणौ)–वि० (स्त्री० उबाणी) १ विना जूते पहने हुए । २ नगे पैर । ३ नग्न । –क्रि० वि० ४ नगी तलवार लिये ।
उबावरौ–देखो 'ऊबावरौ' ।
उबाई–स्त्री० जभाई ।
उबाक–स्त्री० वमन, कै ।
उबाड–स्त्री० चीर-फाड । दरार ।
उबाडि–देखो 'उबाड' ।
उबार–पु० [स० उद्धारण] १ छुटकारा, उद्धार, निस्तार । २ रक्षा, बचाव ।
उबारक, (णौ), उबारण (णौ)–वि० उबारने वाला, बचाने वाला, रक्षक ।
उबारणौ (बौ)–क्रि० उबारना, तारना, बचाना । रक्षा करना । शेष रखना । उन्मुक्त करना, छोडना ।
उबारु–वि० १ रक्षक । २ बचाने वाला, हिफाजत करने वाला ।
उबारौ–पु०१ बचा हुआ सामान । २ रक्षा, सहायता । बचाव ।
उबाळ–पु० उफान, जोश ।
उबाळणौ (बौ)–क्रि० १ ताप देकर खौलाना । १ उबालकर पकाना । ३ जोश दिलाना । ४ पसीजना ।
उबासणौ (बौ)–क्रि० जभाई लेना, उबासी लेना ।
उबासी–स्त्री० जभाई ।

उवाहणौ (बौ)–क्रि० प्रहार हेतु उठाना । उलीचना । उभारना ।
उवेड–पु० कूऐ के पानी का उठाव । गहराई ।
उवेडणौ (बौ)–क्रि० १ उन्मूलन करना, उखाडना । २ टांके खोलना । ३ तोडना । ४ चीरना ।
उवेडौ–देखो 'ऊवडौ' ।
उवेधौ–वि० उद्दण्ड । दुष्ट । उत्पाती । असुर ।
उवेल, लण)–देखो 'ऊवेळ' (ल) ।
उवेळणौ (बौ)–क्रि० १ रस्सी की ऐंठन खोलना । २ सीमा रहित करना ।
उवेलणौ (बौ)–क्रि० सहायता, मदद करना । रक्षा करना । बचाना ।
उवेळू–देखो 'ऊवेळू' ।
उवै–देखो 'अभय' ।
उवैलौ–देखो ऊवेल' ।
उव्वटणौ (बौ)–देखो 'उवटणौ' (बौ) ।
उव्म–देखो 'ऊमौ' ।
उव्मै–देखो 'उभय' ।
उमई–देखो 'उभय' ।
उमडणौ (बौ)–क्रि० उभरना । ऊचा उठना । वहकना । भडकना ।
उभभत–पु० विचित्र, अद्भुत ।
उभय–वि० [स०] दो, दोनो । **—वादी**–वि० द्विपक्षी । स्वर ताल दोनों का बोध कराने वाला । **—विपुला**–स्त्री० आर्या छद का एक भेद ।
उभराण, (राणी)–देखो 'उवाणौ' । (स्त्री० उभराणी) ।
उभाखरियौ, उभाखरौ–वि० (स्त्री० उभाखरी) १ भ्रमणशील । २ योद्धा, वीर ।
उभाणौ–देखो 'उवाणौ' । (स्त्री० उभाणी) ।
उभावरौ–देखो ऊवावरौ' ।
उभाड़, उभार–पु० [स० उद्भिदन] १ उठान, ऊचाई । २ ओज । ३ विकास । ४ जोश । **—दार**–वि० उभरा हुआ ।
उभारणौ (बौ)–क्रि० १ ऊपर उठाना, ऊचा करना । २ प्रगट करना । ३ स्पष्ट करना । ४ विकसित, करना । ५ उठाये रखना । ६ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना । ७ उकसाना, उत्तेजित करना । ८ मुछ पर हाथ रखना, ताव देना । ९ बचाना, रक्षा करना ।
उभोकोल–स्त्री० सीधी जड । मूसला जड ।
उमै, उम्मयै, उम्मै–देखो 'उभय' ।
उमंग–स्त्री० १ चित्त का उभाड, सुखद मनोवेग, उत्साह । २ जोश । ३ आनन्द, उल्लास । ४ अभिलाषा, इच्छा । ५ एक डिंगल गीत ।
उमंगणौ (बौ)–क्रि० १ उत्साहित होना, सुखद मनो भाव जागृत होना । २ जोश आना । ३ आनन्दित होना । ४ अभिलाषा या इच्छा करना । ५ उमडना, ऊपर उठना । ६ आवेश युक्त होना । ७ छा जाना, आच्छादित होना । ८ वढना ।
उमंडणौ (बौ)–क्रि०अ० १ उमडना, ऊपर उठना । २ आवेश मे आना । ३ वढना । ४ खोलना । ५ छाना, आच्छादित होना । ६ दान देना ।
उमत (त्त)–१ देखो 'उनमत्त' । २ देखो 'उमत' ।
उमंदा–देखो 'उमदा' ।
उमग–देखो 'उमग' ।
उमगणौ (बौ), उमगाणौ (बौ)–देखो 'उमगणौ' (बौ) ।
उमग–विना मार्ग उवट ।
उमड़ (ण)–पु० १ बाट, बढाव । २ भराव । ३ घेराव, धावा । ४ उठान ।
उमड़णौ (बौ), उमटणौ (बौ)–क्रि० १ जोर से बढना, बढकर आना । २ ऊपर उठना । ३ छाना, आच्छादित होना । ४ फैलना । ५ घेरना । ६ आवेश मे आना ।
उमण दूमणौ–देखो ऊमणदूमणौ' । (स्त्री० उमण दूमणी)
उमत–पु० [अ० उम्मत] १ धर्म विशेष के अनुयायी । २ देखो उनमत ।
उमदा–वि० [फा० उम्दा] १ श्रेष्ठ उत्तम, बढिया । २ अच्छी जाति का । –पु० ऊट ।
उमया–देखो 'उमा' । **—ईस्ट, वर**–पु० शिव ।
उमर–स्त्री० [अ० उम्र] १ अवस्था, वय, आयु । २ एक प्रकार का वृक्ष ।
उमराव, उमरौ–देखो 'अमराव' ।
उमस–स्त्री० उष्णता, गर्मी । अत्यधिक गर्मी । २ वर्षा सूचक गर्मी ।
उमा–स्त्री० [स०] १ पार्वती, देवी, दुर्गा । २ कान्ति, दीप्ति । ३ कीर्ति । ४ शाति । ५ रात्रि । ६ हल्दी । ७ अलसी । **—कवर, कुमार**–पु० कार्तिकेय । गणेश । **—गुरु**–पु० हिमाचल । **—धव, पत, पति**–पु० शिव ।
उमाज–पु० उनमाद ।
उमादे–पु० राजस्थानी लोक गीत ।
उमायौ–वि० (स्त्री० उमायी) उमगित ।
उमाव (ड़ौ), उमावौ–पु० १ उत्साह, उमग । २ उत्कण्ठा । ३ अभिलाषा । ४ याद, स्मरण । –वि० उत्कठित । उत्साहित । उत्सुक ।
उमावणौ (बौ)–देखो 'उमाहणौ' (बौ) ।
उमास–स्त्री० १ उमग । २ उमस ।

उमाह, (हउ)–देखो 'उमाव' ।

उमाहड (हडो)–देखो 'उमाव' ।

उमाहणौ (बौ) उमाहिणौ (बौ)–क्रि० १ उत्साहित होना, उमगित होना । २ हर्षित होना, प्रसन्न होना । ३ आवेश मे आना, जोश मे आना । ४ कटिबद्ध होना । ५ उत्कट इच्छा करना । ६ उमगित होना ।

उमाहौ–देखो 'उमावौ' ।

उमिया–स्त्री० उमा । —**पत, पति, वर**–पु० शिव ।

उमिरायत–देखो 'अमीरायत' ।

उमीर–देखो 'अमीर' ।

उमीरी–देखो 'अमीरी' ।

उमेद–स्त्री० [फा० उम्मीद] १ आशा, भरोसा । २ आश्रय । ३ एक प्रकार का घोडा । —**वार**–पु० आशार्थी । परीक्षार्थी । रग विशेष का घोडा ।

उमेलणौ (बौ)–क्रि० [सं० उन्मेलनम्] उठाना ।

उमेस–पु० [सं० उमा+ईश] १ शिव, महादेव । २ गर्व, घमड ।

उम्दा–देखो 'उमदा' ।

उम्मया–देखो 'उमा' ।

उम्मी–स्त्री० गेहू या 'जौ' की बाली ।

उम्मीद, उम्मेद–देखो 'उमेद' । —**वार**='उमेदवार' ।

उम्हाणौ (बौ)–देखो 'उमाहणौ' (बौ) ।

उयइ- सर्व० उस ।

उयबर–पु० तकिया ।

उया-सर्व० उन, उन्होने ।

उयै–सर्व० इस ।

उरग, (गम)–पु० [स० उरग] सर्प, साप ।

उर–पु० [स० उरस्] १ हृदय । २ मन । ३ वक्ष स्थल, छाती । ४ स्तन, कुच । [स० उर] ५ भेड ।

उरग–पु० [स०] सर्प, साप । —**अरि**–पु० गरुड ।

उरगाद–पु० गरुड ।

उरगाधीप–पु० शेषनाग ।

उरड (डौ)–स्त्री० १ युद्ध, लडाई । २ आक्रमण, हमला । ३ साहस, पराक्रम । ४ जोश, आवेश । ५ उमग । ६ जबर दस्ती । ७ निर्भीकता । ८ ध्वनि विशेष । ९ उत्कठा । १० शक्ति, बल । —**उरड**–क्रि०वि०–धीगामस्ती से । –वि० अधिक, बहुत ।

उरडणौ (बौ)–क्रि० १ आगे बढना । २ जोश मे आना । ३ साहस करना । ४ लडाई या आक्रमण करना । ५ उत्साहित होना । ६ बलात् धसना ।

उरडौ–पु० जबरदस्ती धसने का भाव । –वि० जबरदस्ती धसने वाला ।

उरज–पु० [स० ऊर्ज] १ कार्त्तिक मास । २ देखो 'उरोज' ।

उरजस–पु० [स० ऊर्जस्] १ अवसर, मौका । २ सामर्थ्य । –वि० समर्थ शक्तिशाली ।

उरण–पु० [स० उरण.] १ भेड, मेष । २ बादल । ३ भेड की ऊन । ४ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था । ५ यूरेनस-ग्रह । –वि० [स० उऋण] ऋणमुक्त ।

उरणियौ–पु० भेड का बच्चा । मेमना ।

उरतल–पु० [स०] १ वक्षस्थल के नीचे का भाग । २ स्तन ।

उरवी–देखो 'उडदी' ।

उरवुत–पु० स्तन ।

उरद्ध–वि० [स० ऊर्ध्व] १ उन्नत, ऊचा । २ उल्टा, विपरीत । ३ उठा हुआ, उभरा हुआ । ४ खडा हुआ, सीधा । ५ टूटा हुआ । –पु० आकाश । –क्रि० वि० ऊपर, ऊपर की ओर । —**लोक**–पु० देवलोक, स्वर्ग ।

उरद्धर–पु० हृदय, दिल ।

उरध–देखो 'उरद्ध' ।

उरधओक–पु० अट्टालिका । अटारी ।

उरधगत (गति)–स्त्री० १ ऊर्ध्व गति । २ स्वर्ग । –वि० ऊचा ।

उरधपिड–पु० इन्द्र ।

उरधबाहू–देखो 'ऊरधबाहु' ।

उरधमूळ–पु० शिर ।

उरधलिंग–पु० शिव ।

उरधसास–पु० ऊर्ध्व श्वास, उल्टी श्वास ।

उरध्यानी–पु० ऋषि ।

उरन–१ देखो 'उरण' । २ देखो उरिण' ।

उरनेम–स्त्री० सती ।

उरनौ–पु० भेड का बच्चा (मेवात) ।

उरप–पु० एक प्रकार का नृत्य ।

उरबरा–स्त्री० [स० उर्वरा] १ उपजाऊ भूमि । २ पृथ्वी । ३ एक अप्सरा ।

उरबळ (ळळ)–पु० १ साहस । २ शौर्य । बहादुरी ।

उरबसी (ब्बसी)–स्त्री० [स० उर्वशी] १ एक अप्सरा का नाम २ अप्सरा ।

उरबाणौ, (भाणौ)–देखो 'उवाणौ' (स्त्री० उरबाणी) ।

उरबो (ब्बिय)–देखो 'उरवी' ।

उरमडण, (मडन माडण)–पु० स्तन, उरोज ।

उरम–देखो 'ऊरमी' ।

उरमळ–पु० अज्ञान ।

उरमला, (मिला)–स्त्री० [स० उर्मिला] लक्ष्मण की पत्नी का नाम ।

उरमी–देखो 'ऊरमी'। –माळ, माळा, माळी–देखो 'ऊरमीमाळ'।

उरमउ (ळौ)–वि० (स्त्री० उरळी) १ उदार। २ विशाल, विस्तीर्ण। ३ हल्का, शात।

उरलाण उरळाई–स्त्री० १ अधिकता। २ विस्तीर्णता। ३ खुला मैदान। –स्त्री० ४ अवकाश, फुर्सत। ५ सुविधा। ५ विस्तार चौडाई।

उरले-परले–क्रि०वि० इधर-उधर। इस ओर से उस ओर।

उरळौ–वि० (स्त्री० उरळी) १ चौडा, विस्तृत। २ खुला। ३ हल्का। ४ भार मुक्त।

उरलौ–क्रि० वि० (स्त्री० उरली) नजदीक, पास, निकट। इधर नजदीक का, इधर का।

उरवड (व्वड़)–पु० १ ध्वनि, कोलाहल। २ पशु समूह की तेज चाल की ध्वनि। ३ ऊपरा-ऊपरी धसने की क्रिया। ४ एक साथ लगने की क्रिया। ५ आक्रमण। –वि० सन्नद्ध, तैयार।

उरवसियौ–पु० प्रेमी, आशिक, प्यारा।

उरवसी–देखो 'उरवमी'।

उरवाणौ–देखो 'उवाणौ'।

उरवार–पु० आकाश का मध्य भाग।

उरवार-पार–क्रि० वि० आर-पार।

उरवि–स्त्री० [स०उर्वी] भूमि, पृथ्वी। –ईस, ईस्वर, धव, पति –पु० राजा नृप।

उरविज–पु० [स० उर्वीज] मगल ग्रह।

उरवी–स्त्री० भूमि। —जा–स्त्री० सीता।

उरव्वडणौ (बौ)–१ एक साथ भागना। २ ऊपरा-ऊपरी घुसना, धसना। ३ शीघ्र चलना। ४ आक्रमण करना। ५ तडफडाना।

उरस–पु० [स० उरस्] १ आकाश। २ स्वर्ग। ३ वक्षस्थल, छाती। ४ हृदय, मन। [अ० उर्स] ५ मुसलमान पीरो का मेला या उत्सव। ६ मरण तिथि पर होने वाला उत्सव। (मुसलमान) ७ किसी की मरण तिथि पर दिया जाने वाला भोजन। (मुसलमान) —थळ, थळी, स्थळ, स्थळि– पु० सीना, छाती। स्तन, कुच।

उरहाणौ–पु० १ उलाहना, उपालभ। २ देखो 'उवाणौ'। –क्रि०वि० इधर।

उरहौ–देखो 'उरौ'। (स्त्री० उरही)

उराणौ–देखो 'उवाणौ'। (स्त्री० उराणी)

उरा–क्रि०वि० इधर, इस ओर। –वि० थोडा, अल्प। –स्त्री०पृथ्वी।

उराट, उराळ–पु० हृदय, छाती, सीना।

उरासेव–पु० बंधन, पाश।

उराह–पु० [सं०] काली पिंडलियों वाला श्वेत घोड़ा।

उराहौ–पु० वचन।

उरि (री)–१ देखो 'उर'। २ देखो 'अरि'।

उरिण (न)–वि० [स० उऋण] १ ऋण मुक्त, एहसान मुक्त। २ जिम्मेदारी से मुक्त।

उरिया–क्रि०वि० १ इधर, इस ओर। २ पास, नजदीक।

उरीस–देखो 'उरस'।

उरु–वि० [स०] १ विस्तृत, बडा। चौड़ा। २ देखो 'ऊरू'।

उरुद्धि, (ध)–पु० १ वक्षस्थल, छाती। २ हृदय। –वि० ऊचा, ऊपर, उर्ध्व।

उरुस्तंभ–पु० एक रोग विशेष।

उरू–देखो 'ऊरु'।

उरे (रं)–क्रि०वि० इस ओर, इधर।

उरेड़णौ (बौ)–क्रि० ढकेलना, धक्का देना।

उरेड़ौ–देखो 'ऊरडौ'।

उरेव (रंव)–पु० [स० उर] हृदय। –वि० [फा०] १ टेढ़ा, तिरछा। २ वृर्ततापूर्ण।

उरोड़ौ–देखो 'ऊरेडौ'।

उरोज–पु० [स०] स्तन, कुच।

उरोहौ, उरौ–वि० (स्त्री० उरी) १ यहा। इधर। २ वापस। ३ नजदीक पास।

उलंगणौ (बौ) उलघणौ (बौ)–क्रि० १ लाघना, फादना। २ उल्लघन करना। ३ यशगान करना। ४ गीत गाना।

उलडणौ (बौ)–क्रि० १ त्यागना, छोडना। २ उल्लघन करना।

उलदे–क्रि०वि० इस तरफ।

उलभौ–देखो 'ओळभौ'।

उलक–१ देखो 'उलूक'। २ देखो 'उल्का'। –पात='उल्कापात'।

उलका–देखो 'उल्का'। —पात='उल्कापात'। —पाती= 'उल्कापाती'।

उळखणौ (बौ)–देखो 'ओळखणौ' (बौ)।

उळखाणौ(बौ)उळखावणौ (ळवणौ(बौ)–देखो'ओळखाणौ'(बौ)।

उलग (गई, गई)–स्त्री० १ सेवा, चाकरी। २ कीर्तिगान। ३ परदेश, विदेश।

उळगणौ (बौ)–क्रि० १ गायन करना, गाना। २ यशगान करना। ३ वशावली पढना।

उलगाणौ–वि० प्रवासी प्रीतम।

उलगि, (गी)–पु० १ विदेश, परदेश। २ एकान्त।

उलड़णौ (बौ)–क्रि० उमडना, उलटना।

उलच–पु० [स० उल्लोच] वितान, चदोवा।

उळवणी (बौ)–देखो 'उळीचणी' (बौ)।

उळजणी (बौ)–देखो 'उळझणी' (बौ)।

उळजाणी (बौ)–देखो 'उळझाणी' (बौ)।

उळझण (न)–स्त्री० १ बाधा, रुकावट। २ समस्या। ३ गाठ। ४ फसाव ५ चिंता। ६ झगडा।

उळझणी (बौ)–क्रि० १ फसना, अटकना। २ रुकना। ३ बाधा मे पडना। ४ लपेट मे आना। ५ व्यस्त होना। ६ लडाई, तकरार होना। ७ कठिनाई मे पडना। ८ प्रेम मे फसना। ९ समस्या पडना।

उळझाड–देखो 'अळुझाड'।

उळझाणी (बौ)–क्रि० १ फसाना, अटकाना। २ रोकना। ३ बाधा मे पटकना। ४ लपेटना। ५ काम मे उलझाना। ६ लडाई करना। ७ कठिनाई मे पटकना। ८ प्रेम मे फसाना। ९ समस्या मे डालना।

उळझाव–पु० १ बाधा, रुकावट। २ समस्या। ३ गाठ। ४ फसाव। ५ झगडा। ३ चिंता। ७ चक्कर।

उलट–पु० १ परिवर्तन। २ तब्दीली। ३ उलटने की क्रिया या भाव।

उलटणी (बौ)–क्रि० १ नीचे-ऊपर करना। २ औंधा या उल्टा करना। ३ बदलना, पलटना। ४ पीछे मुडना। ५ घुमाना। ६ उमडना, टूट पडना। ७ उफन कर आना। ८ विरुद्ध होना। ९ अस्त-व्यस्त होना। १० इतराना। ११ घमंड करना। १२ औंधा गिराना। १३ दोहराना। १४ वमन करना। १५ आक्रमण करना।

उलट-पलट (पालट, पुलट), उलटफेर–पु० १ अदल-बदल। २ परिवर्तन। ३ अव्यवस्था।

उलटाणी (बौ)–क्रि० १ नीचे-ऊपर कराना। २ औंधा या उल्टा कराना। ३ बदलाना, पलटाना। ४ पीछे मोडना। ५ लौटाना। ६ शराब को औटाना। ७ विरुद्ध करना।

उलटापलटी, (पलटौ)–देखो 'उलट-पलट'।

उलटी–स्त्री० वमन, कै। –वि० विरुद्ध, विपरीत। –क्रि०वि० वापस।

उलटीखडी–स्त्री० एक प्रकार की कसरत।

उलटौ–वि० (स्त्री० उलटी) १ औंधा, उल्टा। २ विरुद्ध, विपरीत। ३ पीठ की ओर का। –क्रि०वि० विरुद्ध क्रम से। बेठिकाने। विपरीत [illegible]। –पु० कलंक, दोष।

उलट्टणी (बौ)–देखो 'उलटणी' (बौ)।

उळणी (बौ)–क्रि० १ फलों का पकना। २ [illegible]। ३ [illegible] मे [illegible]। ४ [illegible]।

उलत–स्त्री० [illegible]।

उलसा–वि० [illegible]।

उलथौ–पु० अनुवाद, खुलासा। निवारण।

उलथिणी (बौ)–क्रि० १ उलटना, पलटना। २ उतारना। ३ भार मुक्त होना। ४ अनुवाद करना।

उळवग–स्त्री० अजान। पुकार।

उलमुक (ख)–पु० [सं० उल्मुक] कोयला, सोरा, अंगार।

उलरणी (बौ)–देखो 'ओलरणी (बौ)'।

उलळणी (बौ)–क्रि० १ कूदना, फादना। २ उछलना, [illegible]। ३ हमला करना। ४ कमजोर, निर्बल होना। ५ [illegible] पडना। ६ भार का सन्तुलन बिगडने से उल्टा होना, झुकना। ७ हुमस कर आना। ८ किसी पर [illegible] झुकना। ९ बधन ढीला होना।

उलळी–वि० ढीलो।

उळवड–वि० प्रच्छन्न, गुप्त।

उलवण–वि० [सं० उल्वण] १ प्रगट। २ स्पष्ट। ३ [illegible], रोशन।

उळवाणी–देखो 'उवाणी'।

उलसणी (बौ)–देखो 'उल्लसणी' (बौ)।

उलहाणी–देखो 'उवाणी'।

उलहौ–पु० उत्साह, उमंग। हर्ष।

उला–क्रि० वि० इस तरफ।

उलागाणउ–वि० विदेशी, प्रवासी।

उलागणी, (बौ), उलाघणी, (बौ) उलाडणी, (बौ)–क्रि० [सं० उल्लंघनम्] १ लांघना, फांदना। २ [illegible] करना।

उलाण–वि० शान्ति, चैन।

उलाम–देखो 'अलाम'।

उला–वि० १ इधर का, इस ओर का। [illegible]। २ [illegible]। –क्रि० वि० इधर।

उलाअलयेतो–वि० (स्त्री० [illegible]) [illegible]।

उलाक–स्त्री० [illegible]।

उलाकणी (बौ)–क्रि० [illegible]।

उलाट–पु० [illegible]।

उलाटणी (बौ)–क्रि० [illegible]।

उला-पेला–वि० [illegible]। –क्रि० वि० [illegible]।

उलाठ–पु० १ [illegible]।

उलाडणी (बौ)–क्रि० [illegible]।

उलाल्यौ–पु० चडस या मोट के साथ बाधा जाने वाला वजन ।
उलावणौ (बौ)–क्रि० [स०अलापनम्] १ पुकारना आवाज देना । बुलाना । २ जपना । ३ ध्वनि करना । ४ उपभोग करना । मौज करना । ५ देना । ६ कामना करना । ७ उछालना, फेंकना ।
उलास–देखो 'उल्लास' ।
उलासित–देखो 'उल्लासित' ।
उलाहणौ (नौ)–पु० [प्रा० उवालहन] उपालभ, उलाहना । मानभरी शिकायत ।
उलिगण (गणउ, गांणइ, गांणउ, गांणौ)–वि० विदेशी, परदेशी, प्रवासी ।
उळियोकाचर–१ एक राजस्थानी लोक गीत । २ परिपक्व ककडी ।
उळी–देखो 'ओळी' ।
उलीग (गाण, गाणौ)–देखो 'उलिगण' ।
उळीचणौ (बौ)–क्रि० १ अजली या तगारी भर कर बाहर फेंकना (पानी) । २ दान करना ।
उलीपैली–वि० इधर-उधर की । दोनो ओर की । ऐसी-वैसी ।
उळीसुळी–वि० भली बुरी । खरी-खोटी ।
उलुकी–स्त्री० मछली ।
उलुक्क, उलूक–पु० [स० उलूक] १ उल्लू नामक पक्षी । २ कणादि मुनि का एक नाम । ३ लूता के समान आकाश का धूम समूह । –वि० क्रूर ।
उलूत–पु० अजगर जाति का साप ।
उलेपासै–क्रि०वि० इस तरफ ।
उलेळ–स्त्री० १ तरग, हिलोर । २ उमग । ३ जोश ।
उलै–क्रि०वि० इस ओर । नजदीक ।
उलोचि–पु० [स० उल्लोच] राजछत्र ।
उलौ–देखो 'ऊलौ' ।
उल्लघणौ (बौ)–देखो 'उलवणौ' (बौ) ।
उल्का–स्त्री० [स०] १ आकाश से गिरने वाला अग्नि खण्ड । २ अग्नि, आग । ३ प्रकाश, रोशनी । ४ मशाल, चिराग । ५ दीपक । —पात–पु० आकाश से टूट कर अग्नि खण्ड गिरने की क्रिया । —मुख–पु० शिव । गीदड, प्रेत ।
उल्टी–देखो 'उलटी' ।
उल्लट–पु० हर्ष, प्रसन्नता ।
उल्लटणौ (बौ)–देखो 'उलटणौ' (बौ) ।
उल्लस–देखो 'उल्लास' ।
उल्लसण (न)–स्त्री० आनन्द, हर्ष आदि की क्रिया या भाव । रोमाच ।
उल्लसणौ (बौ)–क्रि० १ उत्साहित होना, उमगित होना । २ उत्कठित होना । ३ प्रफुल्लित हर्षित होना । ४ जोश मे आना । ५ ऊचा उठना, ऊपर उठना । ६ चमकना, दमकना । ७ प्रभावान होना, कातिवान होना । ८ आनदित होना, प्रसन्न होना । ९ वर्षा का होना, बरसना ।
उल्लाई–क्रि०वि० इस ओर के भी । –स्त्री० स्थान की सुविधा ।
उल्लाळ–पु० १ एक मात्रिक छंद । २ देखो 'उलाळ' ।
उल्लाळणौ (बौ)–देखो 'उलाळणौ' (बौ) ।
उल्लाळौ–पु० धक्का, झटका ।
उल्लालौ–पु० एक मात्रिक छद ।
उल्लावणौ (बौ)–देखो 'उलावणौ' (बौ) ।
उल्लास–पु० [स०] १ हर्ष आनन्द । २ चमक-दमक, आभा दीप्ति । ३ उत्साह, उमग । ४ आलस्य । ५ ग्रंथ का एक भाग । ६ एक अर्थालकार ।
उल्लासक–वि० हर्षित । हर्ष-प्रद ।
उल्लू–पु० [स० उलूक] दिन मे अधा रहने वाला एक पक्षी । –वि० मूर्ख, बुद्धू ।
उल्लेख–पु०[स०] १ जिक्र, चर्चा, हवाला, दाखिला । २ वर्णन । ३ एक काव्यालकार ।
उल्हण–पु० मद्यपात्र ।
उल्हरणौ (बौ)–देखो 'ओलरणौ' (बौ) ।
उल्हवण–वि० हर्ष-प्रद, मनोरजक ।
उल्हसणौ (बौ)–देखो 'उल्लसणौ' (बौ) ।
उल्हास–देखो 'उल्लास' ।
उवग–देखो 'उमग' ।
उवध–देखो 'उवध' ।
उवचरणौ (बौ)–देखो 'उच्चारणौ' (बौ) ।
उवट–१ देखो 'अवट' । २ देखो 'उव्रट' ।
उवटण (णौ)–देखो 'उबटन' ।
उवटणौ (बौ)–देखो 'उबटणौ' (बौ) ।
उवएस–देखो 'उपदेश' ।
उवर,(रि री)–पु० [स० उर] हृदय, उर । –क्रि०वि० ऊपर । –वि० १ ऊचा । २ दूसरा, अपर ।
उवलखणौ (बौ)–देखो ओळखणौ' (बौ) ।
उवसग्ग–देखो 'उपसरग' ।
उवह–सर्व० वह । उसे । –पु० [स० उदधि] समुद्र, सागर ।
उवां–सर्व० उन्होने, उन, उसी, उस, उन्ही, वह । –क्रि०वि० वहा ।
उवारणौ (बौ)–देखो 'वारणौ' (बौ) ।
उवाड–पु० १ पद-चिह्न । २ विचार ।

उवाडौ–पु० [स० ऊधस] १ गाय, भैंस आदि का ऐन। २ देखो 'अवाडौ'।
उवारणा-पु० बलैया, न्योछावर।
उवारणौ (बौ)–देखो 'वारणौ' (बौ)।
उवारसी–स्त्री० सहायता, मदद। –वि० मददगार।
उवारौ–वि० १ रहित, वंचित। २ देखो 'उवारौ'।
उवासी–देखो 'उवासी'।
उवे–सर्व० वे, उन, उस। उसने।
उवेलणौ (बौ)–देखो 'उवेलणौ' (बौ)।
उवेलौ–पु० १ विलंब। २ देखो 'ऊवेळ'।
उवै–सर्व० १ वह, वे। २ उस, उन।
उवौ–सर्व० वह, उस।
उस–सर्व० १ वह का विभक्ति रूप। २ देखो 'ऊस'।
उसडौ–वि० (स्त्री० उसडी) १ वैसा। ऐसा। २ देखो 'ऊस'।
उसण(न)–वि० गर्म, [उष्ण] –**आगम**–स्त्री०ग्रीष्म ऋतु।
उसतरी–देखो 'इस्त्री'।
उसतरौ–पु० बाल साफ करने का उपकरण, उस्तरा।
उसताज, उसताव–पु० १ युद्ध लडाई। २ उस्ताव, गुरु। –वि० १ दक्ष, चतुर। २ चालाक, धूर्त।
उसध–देखो 'औसध'।
उसन–देखो 'उस्ण'।
उसनरसम–पु० [स० उष्ण-रश्मि] सूर्य।
उसना–पु० [स० उशनस्] १ शुक्र ग्रह। २ शुक्राचार्य।
उसप्पिणि–देखो 'उस्सप्पिणी'।
उसभ–पु० [स० ऋषभ] ऋषभ।
उसर–पु० [स० ओप्सरस] १ नाच नृत्य। २ देखो 'ऊसर'। ३ देखो 'असुर'।
उसरणौ (बौ)–क्रि० १ गर्म पानी मे पकना। २ वर्षा का होना। ३ कूऐ के पानी मे उतरना (बर्तन)। ४ बटोरना, एकत्र करना। ५ निकालना। ६ पीछे रवाना होना, जाना। ७ हटना, टलना। ८ बीतना, गुजरना। ९ आक्रमण करना। १० भूलना। ११ फैलना, व्यापना।
उसराण (यण)–देखो 'असुर'।
उसरु (रू)-देखो 'असुर'।
उसवास–पु० [स० उच्छ्वास] उच्छ्वास, उसास।
उससणौ (बौ)–देखो 'ऊमसणौ' (बौ)।
उसाटणौ (बौ)–क्रि० उठाना, ऊचा करना।
उसास–देखो 'उसास'।
उसा–स्त्री० [स० उस्रा] १ गाय। २ तडका, भोर। [स० उषा] ३ बाणासुर की पुत्री का नाम। –**काळ**–पु० प्रात काल। –**पति**–पु० अनिरुद्ध कामदेव।
उसाडौ–देखो 'उवाडौ'।
उसारणौ (बौ)–क्रि० १ गर्म पानी मे पकाना। २ कूऐ मे उतारना, पानी मे उतारना (पात्र)। ३ बटोरना एकत्र करना। ४ निकालना (चक्की मे से चून)। ५ पीछे रवाना करना, भेजना। ६ हटाना, टालना। ७ कुए से पात्र द्वारा पानी निकालना। ८ आक्रमण कराना।
उसास, उसासौ–पु० [स० उच्छ्वास] १ लबी सास, निश्वास। २ उच्छ्वास, आह। ३ ठडी सास। ४ श्वास।
उसीनर–पु० [स० उशीनर] १ शिवि का पिता एक राजा। २ गाधार देश। ३ इस देश का निवासी।
उसीर (क)–पु० [स० उशीर] गाडरनामक घास, खसखस।
उसीलौ–पु० वसीला, सहायता, मदद। जरिया।
उसीस (सौ)–पु० [स० उत्शीर्ष या उपशीर्ष] तकिया।
उसीसणौ (बौ)–क्रि० देवता के निमित्त सकल्प पूर्वक कुछ वस्तु रखना।
उसूल–पु० सिद्धान्त।
उस्ट्र–पु० [स०उष्ट्र] ऊट। –**आसन**–पु० चौरासी आसनो मे से एक। –**ग्रीव**–पु० भगदर रोग। –**स्रगी**–पु० एक प्रकार का घोडा।
उस्ण–वि० [स० उष्ण] १ गर्म, उष्म। २ तेज, तीव्र। ३ फुर्तीला। ३ तीक्ष्ण। –स्त्री० १ अग्नि। २ गर्मी। ३ ताप। ४ धूप। ५ ग्रीष्म ऋतु। –**कटिबंध**–पु० कर्क और मकर रेखाओ के बीच का भू-भाग। –**ता**–स्त्री०गर्मी, ताप, धूप।
उस्णासू–पु०[स० उष्णासू] सूर्य, रवि।
उस्णारस्म–पु० [स० उष्णरश्मि] सूर्य, रवि।
उस्रा–स्त्री० [स०] गाय। –पु० तडका। प्रकाश।
उस्सपि उस्सपिणि(णी)–पु० [स० उत्सपिणी] चढता छ आरा पूर्ण होने का समय, काल।
उह–सर्व० वह।
उहकाळणौ (बौ)–क्रि० १ उछालना, कुदाना। २ डिगाना।
उहदौ–देखो 'ओहदौ'।
उहव–वि० १ त्याज्य। २ देखो 'उह'।
उहा–क्रि० वि० वहा, उधर। –सर्व० उन्होंने। उन।
उहाळ–देखो 'ओहाळ'।
उहास (त)–१ प्रकाश, चमक। २ विद्युत रेखा। ३ तेज। ४ उत्साह। –**हास**–पु० परिहास।
उहासियौ–वि० उमगित उत्साहित। जोशीला।
उंहि उहि उही (ज) उहे–सर्व० वही, वह। उस, उसी। –क्रि० वि० वहीं।
उहुण उहूण–क्रि० वि० [स० अधुना] इस वर्ष, इस साल।

--ऊ--

ऊ–पु० [स०] देवनागरी वर्णमाला का छठा स्वर वर्ण ।

ऊ–सर्व० उस । वह । –क्रि० वि० ऐसे । उधर । उस तरफ । –स्त्री० १ बच्चो के रोने की ध्वनि । २ निषेधात्मक ध्वनि । –पु० ब्रह्मा ।

ऊकार–देखो 'ओकार' ।

ऊखळ (ळी)–देखो 'ऊखळ' ।

ऊग–देखो 'ऊघ' ।

ऊगट, (ठ, ठी)–देखो 'अमठ' ।

ऊगण (गणियौ)–देखो 'ऊघण' ।

ऊगणौ (बौ)–देखो 'ऊवणौ' (बौ) ।

ऊंगौ–पु० एक प्रकार का काटेदार घास ।

ऊघ–स्त्री० तन्द्रा, नींद की झपकी ।

ऊघड, ऊघण–वि० निद्रालु । तन्द्रा मे रहने वाला । –पु० रहंट पर लगने वाला एक डडा ।

ऊघणौ–पु० निद्रा । –वि० उनिंदा, तन्द्रायुक्त ।

ऊघणौ (बौ)–क्रि० १ नीद की झपकी लेना, ऊघना । २ नीद लेना । ३ सुस्ती से कार्य करना ।

ऊघाई–स्त्री० तन्द्रा, झपकी । निद्रा ।

ऊघाकळौ–देखो 'ऊघण' । (स्त्री० ऊघाकळी) ।

ऊघाळु–वि० निद्रालु, तन्द्रा मे रहने वाला ।

ऊच–स्त्री० [स० उच्च] १ ऊचापन, ऊचाई । २ श्रेष्ठता । –वि० (स्त्री० ऊची) उच्च, श्रेष्ठ, कुलीन । —**पण, पणौ**–पु० ऊचाई । उच्चता । वडप्पन ।

ऊचणौ (बौ)–क्रि० १ वोझ उठाया जाना । २ कोई वस्तु उठा कर सिर या कन्धे पर रखना । ३ उठाना ।

ऊचमोलौ–वि० कीमती, वहुमूल्य । अमूल्य ।

ऊचरतौ–वि० [स० उच्चरित] १ भाग्यशाली । २ महत्वाकाक्षी ।

ऊचळ–पु० [स० उच्चल] मन, अन्त करण ।

ऊचलौ–वि० (स्त्री० ऊचली) ऊपर वाला ।

ऊचवहौ–वि० [स० उच्चवह] १ ऊर्ध्व स्कध । २ वोझा उठाने वाला । ३ सहिष्णु ।

ऊचात, ऊचाई–स्त्री० १ उच्चता, ऊचापन । २ लम्वाई । ३ वडाई । ४ ऊपर उठी हुई भूमि । ५ गौरव ।

ऊचाणौ (बौ)–क्रि० १ उठाना, उठाकर सिर पर रखना । २ ऊपर करना ।

ऊचावौ, ऊचास (सौ) ऊचाहौ–१ पु० ऊचाई । २ ऊचास्थल । ३ देखो 'उच्चीस्रवा' ।

ऊचासरौ (सिरौ)–पु० [स० उच्चाश्रय] १ पूर्वजो का निवास स्थान । २ ऊचा आश्रय । –वि० उदारचित्त । वीर । श्रेष्ठ । गर्वोन्नत ।

ऊचासौ–देखो 'उच्चीस्रवा' ।

ऊचियाण–स्त्री० विलम्व से गर्भवती होने वाली मादा पशु ।

ऊची–वि० उच्च, लवी । –क्रि० वि० ऊपर, ऊंचाई पर । —**ताण**–स्त्री० महत्वाकाक्षा । —**धरा**–स्त्री० महत्वाकाक्षी, उदारचित्त ।

ऊचीस्रवस–देखो 'उच्चीस्रवा' ।

ऊचीस्रवाह–पु०यौ० [स० उच्चैश्रवाह] इद्र, सुरेश ।

ऊचू–देखो 'ऊचौ' ।

ऊचे-क्रि०वि० १ ऊचाई पर, ऊपर । २ ऊपर की ओर । ३ जोर से ।

ऊचेरौ, ऊचोडौ, ऊचौ–वि० [स०उच्च] (स्त्री० ऊंची, ऊचेरी, ऊचोडी) १ कुछ ऊचा । २ ऊपर वाला । ३ ऊपर उठा हुआ, उन्नत । ४ उत्तम, श्रेष्ठ, वढिया । ५ महान । ६ बुलद । ७ कुलीन ।

ऊझाडेह–वि० औंधा, उल्टा ।

ऊट–पु० [स० उष्ट्र] (स्त्री० ऊटडी, ऊटणी) ऊट उष्ट्र । —**कटाळी, कटोळौ**–पु० कटीली झाडी विशेष । —**गाडी-दलाली**–स्त्री० एक प्राचीन सरकारी कर । —**फोग**–पु० एक प्रकार का फोग ।

ऊटडी, ऊटडौ, ऊटणी, ऊटियौ–पु० १ वैलगाडी के अग्रभाग का एक उपकरण । २ देखो 'ऊट' ।

ऊटादेवी–स्त्री० एक देवी ।

ऊठ–पु० [स० उष्ट्र] लवी गर्दन व लवे पाव वाला प्रसिद्ध मरु देशीय चौपाया जानवर ।

ऊठियौ-पु० २ एक जाति विशेष का सिंह । २ देखो 'ऊठ' ।

ऊंठे–देखो 'उठै' ।

ऊठ्यामणौ–पु० मकान के वाहर जूठे वर्तन माजने का स्थान ।

ऊठ्यावडी (यावडी)–स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री ।

ऊठयावडौ (यावडौ)-पु० (स्त्री० ऊठयावडी) १ उच्छिष्ट (जूठन) खाने वाला व्यक्ति । २ उच्छिष्ट वर्तन साफ करने तथा उठाकर रखने वाला ।

ऊ ड–स्त्री० १ गहराई। २ सिंचाई की नाली।

ऊंडळ–पु० १ मोट पर लगा लकडी का उपकरण। २ गोद, अक। ३ बाहुपाश। ४ बैलगाडी के नीचे लगाया जाने वाला डंडा। –वि० वशीभूत आधीन।

ऊ डवण, ऊ डाण, ऊ डात, ऊ डायण, ऊ डायत, ऊंडाई–स्त्री० गहराई। नीची भूमि। गभीरता।

ऊंडाळकी–स्त्री० नीची भूमि।

ऊ डाळकौ (ळौ)–वि० (स्त्री० ऊ डाळकी (ळी) गहरा।

ऊ डियण–वि० गहरा, अथाह।

ऊ डौ–वि० (स्त्री० ऊ डी) १ गहरा। २ गभीर। ३ अगाध, अथाह। –पु० तहखाना।

ऊ ण–अव्य० [म० अधुना] इस वर्ष।

ऊ णत, ऊ णारत–देखो 'उणत'।

ऊ णौ–वि० (स्त्री० ऊ णी) १ निर्धारित समय से पूर्व जन्मा। २ अधूरा, अपूर्ण। ३ उदास, खिन्न। –पु० छोटा बच्चा। —पूणौ–वि० अपूर्ण, अपरिपक्व (बालक)।

ऊ ताळ (वळ)–देखो 'उतावळ'।

ऊ तावळौ–देखो 'उतावळौ'। (स्त्री० ऊ तावली)

ऊ तोळ–स्त्री० सहार, वध, नाश।

ऊ तोळणौ (बौ)–देखो 'उतोळणौ' (बौ)।

ऊ दफोग–पु० एक प्रकार का फोग।

ऊ दर (रियो) ऊ दरौ–पु० (स्त्री० ऊ दरी) १ चूहा, मूसा। २ दोहा छद का एक भेद।

ऊ दरी–स्त्री० १ शिर के बाल उडने का एक रोग। २ मादा चूहा।

ऊ दायली–देखो 'ऊ दायळौ'।

ऊ ध–स्त्री० उत्तर और वायव्य के मध्य की दिशा।

ऊ धाडकौ–वि० (स्त्री० ऊ धाडकी) उल्टे या अनुचित कार्य करने वाला। विपरीत बुद्धि वाला।

ऊ धाफूली–देखो 'आधाहुली'।

ऊ धायलौ–पु० १ उल्टा गाड कर शकरकद सेकने का पात्र। २ उल्टा चढाया जाने वाला तवा। ३ छाजन के मध्य का खपरैल। –वि० (स्त्री० ऊ धायली) विरुद्ध बुद्धि का, भोंदू, मूर्ख।

ऊ धौ–वि० (स्त्री० ऊ धी) १ औंधा, उल्टा। २ विलोम, विपरीत। —ऊ धीखोपडी–देखो 'आधीखोपडी'। —चू धौ–वि० उल्टा-सीधा।

ऊ न–देखो 'ऊन'।

ऊ नतभद्रा–स्त्री० तुगभद्रा नदी।

ऊ नाळ–देखो 'उनाळौ'।

ऊ नाळौ–देखो 'उनाळौ'।

ऊ नियौ (नीयौ)–देखो 'ऊनियौ'।

ऊ नी–देखो 'ऊनी'।

ऊ नै (नैं)–देखो 'उनै'।

ऊ नौ–देखो ऊनौ'।

ऊ ब–पु० कम जल वाला बादल जो प्राय दक्षिण से उत्तर या पश्चिम से पूर्व गति वाला होता है।

ऊंबरौ–देखो 'ऊमरौ'।

ऊ बा-लू बा–पु० ऊ ट के चारजामे मे लगने वाले फू दे।

ऊ बी, ऊ मी–स्त्री० गेहू की बाल।

ऊ ळौ–१ देखो 'अवळौ'। २ देखो 'ऊळौ'। (स्त्री० ऊळी)

ऊ ही–सर्व० उसी, वही। –क्रि० वि० वैसे ही।

ऊ हु, ऊ हू–अव्य० निषेधात्मक शब्द या ध्वनि।

ऊ–सर्व० वह। उस। –पु० १ शिव। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ चन्द्रमा। ५ पवन। ६ आकाश। ७ अग्नि। ८ मोक्ष। ९ प्रेत। १० कुत्ता। ११ शेषनाग। १२ मुनि। १३ स्थल। १४ भाव। १५ निर्धनता। १६ रक्षा। –वि० १ मुख्य, प्रधान। २ दातार। ३ सुखी। ४ व्यभिचारी। ५ लघु, छोटा। –अव्य० १ विभक्ति चिह्न, से। २ आरम्भ सूचक ध्वनि।

ऊअर–देखो 'उर'।

ऊग्रह–देखो 'उग्रह'।

ऊईज–सर्व० वही।

ऊएले–वि० इधर के।

ऊक–पु० १ बन्दर। २ देखो 'ओक'।

ऊकटणौ, (बौ), ऊकटिणौ, (बौ) ऊकठिणौ, (बौ)– १ देखो उगटणौ (बौ) २ देखो 'उकटणौ' (बौ)।

ऊकटौ, ऊकठौ–पु० घोडे व ऊंट का चारजामा कसने का चमडे का फीता।

ऊकडौ–देखो 'उकडू'।

ऊकरड–पु० एक पर एक का ढेर। २ जबरदस्ती उग्रसने का भाव। ३ देखो 'उकरडी'।

ऊकराटौ–वि०(स्त्री०ऊकराटी)१ चितातुर। २ बिना बिस्तर के, बिना बिछोने के।

ऊकलवणौ (बौ)–क्रि० औंधा लटकना।

ऊकळ–स्त्री० ध्वनि, आवाज।

ऊकळणौ (बौ)–देखो 'उकळणौ' (बौ)।

ऊकलणौ (बौ)–देखो 'उकलणौ' (बौ)।

ऊकळापात–स्त्री० बेचैनी, घबराहट।

ऊकस–देखो 'उकस'।

ऊकसणौ (बौ)–देखो 'उकसणौ' (बौ) ।
ऊकाटउ, ऊकांटौ–वि० [सं० उत्कठ] (स्त्री० ऊकाटी) उत्साह का उद्रेक, रोमाच युक्त ।
ऊकाळणौ (बौ)–देखो 'उकाळणौ' (बौ) ।
ऊकू–स्त्री० ऊट के चारजामे के आगे लगी खूंटी ।
ऊख–पु० [स० इक्षु] १ गन्ना, ईख । २ वन, जगल । ३ मादा पशुओ के स्तन । —**रस**–पु० गन्ने का रस, दूध ।
ऊखड़णौ (बौ)–देखो 'उखडणौ' (बौ) ।
ऊखणणौ (बौ) (णिणो, बौ)–देखो 'उखणणौ' (बौ) । १ देखो 'उखडणौ' (बौ) ।
ऊखणौ (बौ)–क्रि० उखडना, उठना ।
ऊखध, ऊखधी–देखो 'ओखध' ।
ऊखमल (मेलौ)–पु० १ युद्ध, लडाई । २ उपद्रव, उत्पात । ३ योद्धा, वीर ।
ऊखळ–पु० [स० उदूखल] मूसल से अनाज कूटने का पात्र या खड्डा, ओखली ।
ऊखलणौ(बौ)–देखो 'उकलणौ' (बौ) । देखो'उखलणौ' (बौ) ।
ऊखळी–स्त्री० लोहे की चूल । चूल का पत्थर । देखो 'उखळ' ।
ऊखवणौ (बौ)–क्रि० १ दौडना । २ देखो 'खेवणौ' (बौ) ।
ऊखाखणौ (बौ)–क्रि० १ कोप करना । २ जोश मे आना ।
ऊखाणौ–देखो 'उखाणौ' ।
ऊखा–देखो 'उखा' ।
ऊखापति–देखो 'उखापति' ।
ऊखाडणौ (बौ), **ऊखेडणौ**, (बौ)–उखाडणौ (बौ) ।
ऊखेल (लौ)–देखो 'उखेल' ।
ऊखेलणौ (बौ)–देखो 'उखाडणौ' (बौ) ।
ऊखेवणौ (बौ)–देखो 'उखेवणौ' (बौ) ।
ऊगडणौ (बौ)–देखो 'उघडणौ (बौ) ।
ऊगट, ऊगठ (णौ)–पु० सुगधित लेप, उबटन ।
ऊगटणौ, (बौ) **ऊगठणौ**, (बौ)–देखो 'उगटणौ' (बौ) ।
ऊगटि–देखो 'उबटण' ।
ऊगटौ (ठौ)–देखो 'ऊकठौ' ।
ऊगण–पु० १ उदय काल । २ पूर्वदिशा । ३ रहट चलाने वाले के बैठने के स्थान के पीछे का डडा ।
ऊगणौ (बौ)–क्रि० १ उदय होना, निकलना । २ अंकुरित होना । ३ पैदा होना । ४ नशा आना ।
ऊगत–१ देखो 'उगत' । २ देखो 'उकति' ।
ऊगम–देखो 'उगम' ।
ऊगमण–देखो 'उगमण' ।
ऊगमणियौ–वि० १ उदय होने वाला, उगने वाला । २ पूर्व दिशा का,पूर्व दिशा सबधी । –पु० पूर्व दिशा का निवासी ।
ऊगमणी–स्त्री० १ पूर्व दिशा । २ अकुरित होने की क्रिया । ३ उदय काल ।
ऊगमणौ–१ देखो 'ऊगणौ' । २ देखो 'उगमणौ' ।
ऊगमणौ (बौ)–देखो 'ऊगणौ' (बौ) ।
ऊगरण–पु० उपकरण (जैन) ।
ऊगरणौ(बौ)–क्रि०१ गिरना, पडना । २ देखो 'उगरणौ' (बौ) ।
ऊगळणौ (बौ)–देखो 'ओगाळणौ' (बौ) ।
ऊगळतू–देखो 'आगळतू' ।
ऊगवण–पु० १ उदय । २ देखो 'उगूण' ।
ऊगवणौ–देखो 'उगवणौ' ।
ऊगवणौ, (बौ), **ऊगव्वणौ**, (बौ)–देखो 'ऊगणौ' (बौ) ।
ऊगसणौ (बौ)–क्रि० ऊपर उठना, ऊचा होना ।
ऊगाण–पु० १ उदय । २ उदयकाल । ३ अकुरित होने की क्रिया ।
ऊगाणौ (बौ)–क्रि० सुकाना । उगाना ।
ऊगारणौ (बौ)–देखो 'उबारणौ' (बौ) ।
ऊगाळ–१ देखो 'उगाळ' । २ देखो 'जुगाळ' ।
ऊगाळणौ (बौ)–देखो 'ओगाळणौ' (बौ) ।
ऊगाव–पु० उदय, उदयकाल ।
ऊगूण (णी, णौ)–देखो 'उगूण' ।
ऊगेरणौ (बौ)–देखो 'उगेरणौ' (बौ) ।
ऊग्रहणौ (बौ)–क्रि० १ उगलित करना । २ कहना । ३ कथन । ४ कै करना । ५ देखो 'उग्रहणौ' (बौ) ।
ऊघड़णौ (बौ)–देखो 'उघडणौ' (बौ) ।
ऊघण–वि०१नगा,नग्न । २ खुला । ३ स्पष्ट । –स्त्री०उपजशक्ति ।
ऊघटणौ (बौ)–देखो 'उघटणौ' (बौ) ।
ऊघसणौ (बौ)–देखो 'ओघसणौ' (बौ) ।
ऊघाड़ऊ, ऊघाड़ौ–वि० देखो 'उगाडौ' । [स्त्री० ऊघाडी]
ऊघाड़णौ–देखो 'उघाडणौ' ।
ऊघाडणौ (बौ)–देखो उघाडणौ (बौ) ।
ऊड़क–पु० वाद्य विशेष (बाजा) ।
ऊड़ीयद–पु० [स० उडु–इन्द्र] चन्द्रमा ।
ऊडौ–वि० (स्त्री० उडी) ऐसा, वैसा ।
ऊचंउ–देखो 'ऊचौ' ।
ऊचड़णौ(बौ)–१ देखो'उचडणौ'(बौ) । २ देखो उचडणौ(बौ) ।
ऊचरणौ (बौ)–देखो 'उच्चारणौ' (बौ) ।
ऊचवहौ–देखो 'ऊचवहौ' ।
ऊचार–वि० १ बडा । २ ऊचा । ३ उतम, श्रेष्ठ ।
ऊचाट–देखो 'उचाट' ।

ऊचाळउ, ऊचाळौ–देखो 'उछाळौ'।
ऊचासरी–देखो 'ऊचासरी'।
ऊचीस्रव (स्रवा)–देखो 'ऊच्चीस्रवा'।
ऊचेडणौ (बौ)–देखो 'उखाडणौ' (बौ)।
ऊचेस्रव, ऊचैस्रव, ऊच्चीस्रव, (वा)–पु० [स० उच्चै श्रवस्] घोडे का नाम।
ऊच्छकणौ, (बौ)–देखो 'उचकणौ' (बौ)।
ऊच्छरणौ (बौ)–देखो 'उछरणौ' (बौ)।
ऊच्छरांवर–वि० [स० अप्सरा+वर] युद्ध मे वीर गति प्राप्त करने वाला योद्धा, वीर।
ऊच्छव–देखो 'उत्सव'।
ऊच्छेरणौ (बौ)–देखो 'उछेरणौ' (बौ)।
ऊछजणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार हेतु शस्त्रादि उठाना। २ देखो 'उछजणौ' (बौ)।
ऊछटणौ (बौ)–देखो 'उछटणौ' (बौ)।
ऊछरणौ (बौ)–देखो 'उछरणौ' (बौ)।
ऊछळणौ (बौ)–देखो 'उछळणौ' (बौ)।
ऊछव–देखो 'उत्सव'।
ऊछाछळ (ळौ)–देखो 'उछाछळी'।
ऊछाळणौ (बौ)–देखो 'उछाळणौ' (बौ)।
ऊछाळौ–देखो 'उछाळौ'।
ऊछाह–१ देखो 'उत्साह'। २ देखो 'उत्सव'।
ऊछेर–देखो 'उछेर'।
ऊजड–वि० निर्जन, जन शून्य। –क्रि० वि० राह छोडकर। विना मार्ग के। –पु० १ मार्ग का अभाव। २ देखो 'ऊझड'।
ऊजडणौ (बौ)–देखो 'उजडणौ' (बौ)।
ऊजटैल–वि० १ चचल। तेज। २ जबरदस्त। ३ वीर, बहादुर।
ऊजम–पु० १ उत्साह। २ देखो 'उद्यम'।
ऊजमणौ–देखो 'उजमणौ'।
ऊजळ(ळौ)-वि०[स०उज्ज्वल](स्त्री०ऊजळी)१ उजला,चमकीला। २ देखो 'उजळ'। —दान–पु० रोशनदान। —पख, पाख–पु० शुक्ल पक्ष।
ऊजळणौ (बौ)–देखो उजळणौ (बौ)।
ऊजळो-ळोह–पु० यौ० १ तलवार। २ अच्छे लोहे का शस्त्र।
ऊजवाळौ–देखो 'उजाळौ'।
ऊजाणणौ (बौ)–क्रि० अवज्ञा करना।
ऊजाळगर–वि० १ उज्ज्वल करने वाला, चमकाने वाला। २ स्वच्छ व निर्मल करने वाला। ३ कीर्ति व मान बढाने वाला। —पु० रोशनदान।
ऊजाळणौ (बौ)–देखो 'उजाळणौ' (बौ)।
ऊजाळौ–देखो 'उजालौ'।
ऊजास–देखो 'उजास'।
ऊजासडउ (डौ)–देखो 'उजास'।
ऊजासह, ऊजासौ–देखो 'उजास'।
ऊजौ–वि० शक्तिशाली, बलवान। –पु० साहस हिम्मत।
ऊझ–देखो 'ओज'।
ऊझड–वि० १ विकट, दुर्गम। २ ऊचा-नीचा, ऊबड-खावड। ४ असभ्य। ४ देखो 'ऊजड'।
ऊझटैल–देखो 'ऊजटैल'।
ऊझणउ, ऊझणौ–पु० पुत्री के द्विरागमन के समय दिया जाने वाला वस्त्रादि सामान।
ऊझणौ (बौ)–देखो 'उजमणौ' (बौ)।
ऊझळ (ळौ)–१ देखो 'उजळ'। २ देखो 'उज्झेल'।
ऊझळणौ (बौ)–देखो 'उझळणौ' (बौ)।
ऊझाळ–पु० समूह।
ऊझेल–पु० १ तूफान, अधड। २ टक्कर। ३ प्रहार। ४ दान। ५ तरग, हिलोर। –वि० अपार, असीम, अत्यधिक। –क्रि० वि० पूर्ण जोश से।
ऊझेलणौ (बौ)–देखो 'उझेळणौ' (बौ)।
ऊटपटाग–वि० अव्यवस्थित। अट-सट। बेमेल।
ऊठ–स्त्री० [स० उट] १ उठने की क्रिया या भाव। २ स्फूर्ति, चचलता। ३ पुरुषार्थ। ४ शक्ति, बल। ५ आभा, कान्ति। ६ तिनका, तृण। ७ ऊर्ण, पत्ता। ८ देखो 'ऊठ'।
ऊठणौ (बौ)–क्रि० १ उदय होना। २ ऊपर उठना, ऊचा उठना। ३ उन्नत होना। ४ चढना। ५ खडा होना। ६ जागना। ७ उद्गम होना। ८ हटना। ९ आकाश मे छा जाना। १० उछलना। ११ निकलना। १२ उभरना। १३ सहना आरम्भ होना। १४ उत्पन्न या पैदा होना। १५ चैतन्य होना। १६ तैयार, उद्यत होना। १७ उन्नति करना। १८ उफनना, खमीर आना। १९ बद होना। २० टूटना। २१ चल पडना। २२ दूर होना, मिटना। २३ व्यय होना। २४ उपजना, याद आना। २५ क्रमश ऊपर उठना, जुडना। २६ जवान होना। २७ उद्दीप्त होना। २८ तन्दुरुस्त होना।
ऊठतड–वि० फुर्तिला।
ऊठमणी (वणी)–देखो 'उठावणी'।
ऊठाणौ, ऊठावण (णौ)–देखो 'उठावणी'।
ऊठी–देखो 'ओठी'।
ऊडगळ–पु० तेज स्वर, ध्वनि, शब्द।
ऊडड–पु० घोडा, अश्व।
ऊडण–स्त्री० दान।

ऊडणी (बौ)–देखो 'उडणी' (बौ)।

ऊडवणौ (बौ)–क्रि० अ० १ प्रहार करना। २ देखो 'उडणौ' (बौ)।

ऊडाण–स्त्री० उडने की क्रिया, तेजचाल, छलाग, कुदान।

ऊढगौ–देखो 'उढगौ' (स्त्री० ऊढगी)।

ऊढ–पु० [स० ऊढ] (स्त्री० ऊढा) १ दूल्हा। २ विवाहित पुरुष। ३ पर स्त्री मे प्रेम करने वाला नायक।

ऊढणौ–देखो 'ओढणौ'।

ऊढणौ (बौ)–देखो 'ओढणौ' (बौ)।

ऊढा–स्त्री० १ विवाहिता स्त्री। २ विवाहिता किन्तु अन्य पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री।

ऊण–क्रि० वि० [स० अधुना] इस वर्ष, इस साल।

ऊणत, ऊणायती, ऊणायत, ऊणारत–देखो 'उणत'।

ऊणमणौ, ऊणमनौ–देखो 'उणमण' (स्त्री० ऊणमणी)।

ऊणिया–स्त्री० १ भाले की नोक। २ हरावल। ३ आवश्यकता।

ऊणियारौ, ऊणीयारौ, ऊणीयाळौ, (हार, हारौ)–देखो 'उणियारौ'।

ऊणौ–वि० [स० ऊन] (स्त्री० ऊणी) १ कम, न्यून। २ अधूरा, अपूर्ण। ३ उदास, खिन्न। –सर्व० उसका। –अव्य० का।

ऊतग–देखो 'उत्तुग'।

ऊत–वि० [स० अपुत्र] १ निसतान, निपूता। २ मूर्ख। ३ उज्जड, असभ्य। ४ भूत प्रेतादि की योनी वाला।

ऊतजणौ (बौ)–क्रि० त्यागना, छोडना।

ऊतर–देखो 'उत्तर'।

ऊतरणौ (बौ)–देखो 'उतरणौ' (बौ)।

ऊतरायणि–देखो 'उत्तरायण'।

ऊतळीवळ–देखो 'अतिवळ'।

ऊतारणौ (बौ)–देखो उतारणौ (बौ)।

ऊतारौ–देखो 'उतारौ'।

ऊताळौ–देखो 'उतावळौ' (स्त्री० ऊताळी)।

ऊतावळी (ली)–देखो 'उतावळी'।

उतावळु, उतावळौ–देखो 'उतावळौ'। (स्त्री० उतावळी)।

ऊतिम–देखो 'उत्तम'।

ऊतोलणौ (बौ)–देखो 'उतोलणौ' (बौ)।

ऊतील–वि० अत्यधिक, भरपूर।

ऊथ–क्रि० वि० वहा।

ऊथपणौ–वि० (स्त्री० उथपणी) मिटाने वाला, उन्मूलन करने वाला, नाश या नष्ट करने वाला।

ऊथपणौ, (बौ), ऊथप्पणौ, (बौ)–देखो 'उथपणौ' (बौ)।

ऊथल–देखो 'उथल'।

ऊथलणौ (बौ)–देखो 'उथलणौ' (बौ)।

ऊथल-पथल (पुथल, पूथल)–देखो 'उथल-पुथल'।

ऊथापणौ (बौ)–देखो 'उथापणौ' (बौ)।

ऊथालणौ (बौ)–१ देखो 'उथेलणौ' (बौ)। २ देखो 'उथापणौ' (बौ)।

ऊथि (थी)–देखो 'उथि'।

ऊथेडणौ (बौ)–देखो 'उथेलणौ' (बौ)।

ऊथेल–देखो 'उथेल'।

ऊथेलणौ (बौ)–देखो 'उथेलणौ' (बौ)।

ऊदगळ–देखो 'उदगळ'।

ऊद (ण)–पु० १ गाडी का मुख्य उपकरण। २ ओंडौ, घोपणा। ३ देखो 'ऊदविलाव'।

ऊदक–पु० १ आतक। २ देखो 'उदक'।

ऊदड़ौ (डौ)–वि० एक मुश्त, एक साथ।

ऊदधि–देखो 'उदधि'।

ऊदविलाव–पु० विलाव नामक प्राणी।

ऊदम–देखो 'उदम'।

ऊदमाद–देखो 'उदमाद'।

ऊदळणौ (बौ)–क्रि० १ स्त्री का किसी पर पुरुष के साथ भाग जाना। २ आवारा फिरना या घूमना ३ अपहरण होना।

ऊदळवाली–वि० असामाजिक ढग से किसी के साथ भाग जाने वाली युवती।

ऊदाळ, ऊदाळू–वि० उद्योगी, परिश्रमी।

ऊदाळणौ (बौ)–क्रि० [स० उद्दलित] बलात् छीन कर लेना। छीन लेना।

ऊदेइ (ई)–देखो 'उदई'।

ऊदेक–देखो 'उद्रेक'।

ऊद्रमणौ (बौ)–क्रि० दौडना, भागना।

ऊधगी–वि० कलह प्रिय। उत्पाति।

ऊध–पु० १ मादा पशुओ का ऐन। २ देखो 'ऊद'।

ऊधडणौ (बौ)–देखो 'उधडणौ' (बौ)।

ऊधडौ–वि० १ एक मुश्त। २ सामूहिक। ३ ठेके मे। ४ सब समस्त। –क्रि० वि० बिना तौल व भाव किये।

ऊधम–१ देखो 'उधम'। २ देखो 'उद्यम'।

ऊधमणौ–वि० १ मस्त, मन-मौजी। २ दानी।

ऊधमणौ (बौ)–क्रि० १ दान करना। २ आमोद-प्रमोद मे खर्चा करना। ३ बहादुरी दिखाना। ४ उद्दडता या उपद्रव करना।

ऊधमा–स्त्री० १ मौज, मस्ती। २ उत्सव।

ऊधमी–वि० १ उपद्रवी, उद्दंड । २ बहादुर । ३ देखो 'उद्यमी' ।
ऊधरण, (णौ)–देखो 'उद्धरण' ।
ऊधरणौ (बौ)–देखो 'उद्धरणौ' (बौ) ।
ऊधरौ–वि० (स्त्री० ऊधरी) १ उत्तुंग, ऊंचा । २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ । ३ बहुत, अधिक, अपार । ४ जोशपूर्ण । ५ तीव्र विकट उग्र । ६ दानशील, दानी । ७ सरल सीधा, अनुकूल । –सं० पु० मस्तक ऊपर उठाए हुए चलने वाला बैल ।
ऊधळणौ (बौ)–देखो 'ऊदळणौ' (बौ) ।
ऊधस–पु० [सं० ऊधस्, ऊधस्य, ऊर्ध्व] १ दूध, पय । २ पशुओं के स्तन । ३ ऊंचा, उच्च । ४ सूखी खांसी । ५ देखो 'उधार' ।
ऊधसणौ (बौ)–क्रि० १ स्पर्श करना, छूना, रगड़खाना । २ लड़खड़ाना, लड़खड़ाकर गिरना ।
ऊधामणौ (बौ)–देखो 'उधामणौ' (बौ) ।
ऊधारणौ (बौ)–देखो 'उद्धारणौ' (बौ) ।
ऊधारियौ–देखो 'उधारियौ' ।
ऊधूळ–वि० वीर बहादुर ।
ऊधोळणौ (बौ)–क्रि० धूलि से ढकना, आच्छादित करना ।
ऊधौ–पु० [सं० उद्धव] श्रीकृष्ण का मित्र, उद्धव ।
ऊध्वनी–स्त्री० ऊंची या तेज ध्वनि ।
ऊनग–देखो 'उनग' ।
ऊन–स्त्री० [सं० ऊर्ण] १ भेड़-बकरी के बाल । २ इन बालों का ढेर । ३ इन बालों का डोरा । ४ उष्णता । ५ जोश, आवेग । ६ क्रोध । ७ ज्वर । [सं० ऊन्] ८ छोटी तलवार –वि० कम, थोड़ा, अल्प । –अधोडी–स्त्री० एक प्राचीन सरकारी लगान ।
ऊनकूळ–देखो 'अनुकूल' ।
ऊनणौ, (बौ) ऊनमणौ, (बौ)–देखो 'उमडणौ' (बौ) ।
ऊनथ–देखो 'उनथ' ।
ऊनयु–वि० [सं० उन्नत] 'उन्नत' ।
ऊनवणौ (बौ)–देखो 'उमडणौ' (बौ) ।
ऊनागी–देखो 'उनग' ।
ऊना–स्त्री० एक प्रकार की ईरानी तलवार । –क्रि० वि० इस ओर, इधर ।
ऊनागणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार के लिए शस्त्र निकालना । २ नंगा होना । निरावरण होना ।
ऊनागौ–देखो 'उनगौ' (स्त्री० ऊनागी) ।
ऊनाळ–देखो 'उनाळौ' ।
ऊनाळी (ळु)–देखो 'उनाळौ' ।
ऊनाळौ–देखो 'उनाळौ' ।
ऊनियौ–[सं० ऊर्ण] छोटा मेढा, भेड का बच्चा ।
ऊनी–वि० १ ऊन का, ऊन सबंधी । २ ऊन का बना । ३ गर्म उष्ण । ४ देखो 'उनि' ।
ऊनोदरी–स्त्री० बारह प्रकार के तप में दूसरा तप जिसके अन्तर्गत जितनी भूख हो उससे कम आहार किया जाता है । (जैन)
ऊनौ–वि० [सं० उष्ण] (स्त्री० ऊनी) उष्ण, गर्म ।
ऊन्याळौ–देखो 'उनाळौ' ।
ऊन्हा–क्रि० वि० उस तरफ ।
ऊन्हाळइ (ळउ, ळौ)–देखो 'उन्हाळौ' ।
ऊन्हाळागम–पु० [सं०उष्णकालागम] ग्रीष्म ऋतु, उष्णकाल ।
ऊन्हाळौ (ह)–देखो 'उनाळौ' ।
ऊन्हौ–देखो 'ऊनौ' ।
ऊप–वि० [सं० उपम] १ समान, तुल्य । २ उपमा लायक । –क्रि० वि० ऊपर ।
ऊपडणौ (बौ)–देखो 'उपडणौ' (बौ) ।
ऊपजणौ (बौ)–देखो उपजणौ (बौ) ।
ऊपजस–देखो 'अपजस' ।
ऊपजाणौ (बौ)–देखो 'उपजाणौ' (बौ) ।
ऊपटणौ, (बौ) ऊपट्टणौ, (बौ)–देखो 'उपटणौ' (बौ) ।
ऊपनणौ, (बौ), ऊपन्नणौ, (बौ)–क्रि० १ उत्पन्न होना, पैदा होना । २ उपार्जन होना । ३ उपजना ।
ऊपनौ–वि० (स्त्री० ऊपनी) १ पैदा हुवा हुआ । २ अंकुरित । –पु० विक्रय की आय ।
ऊपम–देखो 'उपमा' ।
ऊपर (रि)–क्रि० वि० [सं० उपरि] १ ऊंचाई या ऊंचे स्थान पर । २ आकाश की ओर । ३ आधार या सहारे पर । ४ ऊपर की ओर । ५ ऊपरी सतह पर । ६ प्रकट या सामने । ७ उच्च श्रेणी में । ८ तट पर । ९ अतिरिक्त तौर पर । १० प्रथम, पहले । –स्त्री०१ सहायता मदद । २ रक्षा । ३ दया, कृपा । ४ संरक्षण । –वि० १ अधिक, ज्यादा । २ अतिरिक्त । ३ प्रतिकूल । —छूटली, छूटौ–वि० अतिरिक्त । —तळै–क्रि० वि० एक पर एक, लगातार । —नेत, नैत–स्त्री० एक प्रकार की भेंट । —माळ–स्त्री० पहाड़ के ऊपर की भूमि । —वट–पु० दो में से एक पक्ष । स्त्री० अधिकता । –क्रि० वि० बढ़कर । —वाडी='उपरवाडी' । —वाडौ='उपरवाडौ' । —सापर–स्त्री० निगरानी । देखभाल । सहायता ।
ऊपरकीन्या–स्त्री० स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष ।
ऊपरचौ–पु० १ सहायता, मदद । २ रक्षा ।
ऊपरट–वि० विशेष, अधिक ।
ऊपरणी–स्त्री० पगड़ी पर बांधा जाने वाला वस्त्र ।
ऊपरलीपुळ, (रुत)–स्त्री० १ वर्षा ऋतु । २ इस ऋतु के पूर्व या पश्चात् का समय । ३ दैनिक अवसर । ४ अवसर ।

ऊपरली–पु० ईश्वर, परमात्मा। –वि० (स्त्री० ऊपरली) १ ऊपर वाला। २ ऊपर का। ३ उस्ताद। ४ बलवान।

ऊपरवाड (डौ)–वि० १ श्रेष्ठ, बढ़िया। २ देखो 'उपरवाडी'। ३ देखो 'उपरवाडौ'।

ऊपराऊपरी–देखो 'उपराऊपरी'।

ऊपराटौ–१ देखो 'उपराठौ'। २ देखो 'ग्रपूठौ'।

ऊपरा–देखो 'ऊपर'।

ऊपरि, (रौ)–वि० १ ऊपर का। २ अतिरिक्त। ३ मुख्य के सिवाय। ४ बाहरी। ५ विदेशी। ६ पराया। ७ देखो 'ऊपर'।

ऊपरे (रं)–क्रि० वि० ऊपर, पर।

ऊपळी (ळौ)–स्त्री० १ गाडी के थाटे या खाट में चौडाई की ओर लगने वाली लकडी। २ चौडाई का हिस्सा।

ऊपल्हांणौ–वि० बिना चारजामा का ऊंट या घोडा।

ऊपसणौ (बौ)–क्रि० रोटी का आंच पाकर फूलना, ऊपर उठना। २ क्रोध करना। ३ आवेग में आना। ४ चोट लगने से अंग की चमडी फूलना।

ऊपहरौ–वि० १ विशेष, अधिक। २ पृथक, दूर, अलग।

ऊपात–वि० [स० उपात्य] अन्त वाले से पूर्व का। —तिथि–स्त्री० मासांत की चतुर्दशी। मासांत के पहले का दिन।

ऊपान–वि० क्रुद्ध, कुपित।

ऊपाई–देखो 'उपाय'।

ऊपाड–पु० १ नाश, विनाश। २ सृजन। ३ फोडा। ४ खर्च।

ऊपाड़णौ (बौ)–देखो 'उपाडणौ' (बौ)।

ऊपाणौ(बौ)–क्रि०१ उत्पन्न करना, पैदा करना, उपार्जन करना। २ देखो उपाणौ' (बौ)।

ऊपाव–१ देखो 'उपाय'। २ देखो 'उपाव'।

ऊपावणौ (बौ)–देखो उपावणौ (बौ)।

ऊप्रवट–देखो उप्रवट'।

ऊफणणौ(बौ)–क्रि०[स०उत्फणनम्] १ उबलना, उफान आना। २ अनाज को हवा में उछाल कर साफ करना। ३ जोश में आना। ४ उमडना। ५ कोप करना। ६ हद से बाहर होना।

ऊफतणौ (बौ)–क्रि० हैरान होना, परेशान होना, तंग होना।

ऊफराठउ (ठौ)–देखो 'अपूठौ' (स्त्री० ऊफराठी)।

ऊफराटौ (ठौ)–वि० (स्त्री० ऊफराटी) चितातुर, उद्विग्न।

ऊबंध (धि, धौ)–वि० [स० उद्वधन] १ बंधन रहित, मुक्त। ३ अमर्यादित। २ अपार, असीम। ४ उद्दण्ड, बदमाश।

ऊबबर (रौ, रौ)–वि० १ ऊंचा। २ बहादुर। ३ शक्तिशाली, समर्थ। ४ ओजस्वी। ५ कांतिवान। ६ साहसी।

ऊब–स्त्री० १ खिन्नता, उकताहट। २ अरुचि। ३ परेशानी। ४ आकुलता। ५ घबराहट। ६ धीमी गति से लगातार बरसने वाले बादल। ७ खडा रहने का ढंग। —छठ–स्त्री० भादव कृष्णा षष्ठी। इस तिथि का व्रत।

ऊबकणौ (बौ)–क्रि०१ कै करना, वमन करना। २ जोश करना। ३ ऊंचा होना। ४ उगलना। ५ उमड़ना। ६ द्रव पदार्थ का आधिक्य के कारण ऊपर उठना।

ऊबकौ–पु० ओकाई, मिचली की पूर्वावस्था।

ऊबगणौ (बौ)–देखो 'ऊबकणौ' (बौ)।

ऊबड़खाबड़–देखो 'उबडखाबड'।

ऊबडणौ (बौ)–क्रि० १ उखडना। २ खुलना। ३ उभरना, ऊपर उठना। ४ फटना। दरार पडना। ५ विदीर्ण होना।

ऊबड़ियौ–पु० रहट के चक्र के मध्य का सीधा लम्बवत काष्ट या लोहका दण्ड।

ऊबड़ी–स्त्री० एक प्रकार की घास।

ऊबट–क्रि० वि० [स० उद्वृत्त] १ बिना रास्ते, बेवाट। २ उज्जड। –वि० विरुद्ध, विपरीत।

ऊबटणौ–देखो 'उबटणौ'।

ऊबटणौ (बौ)–देखो 'उबटणौ' (बौ)।

ऊबटौ–पु० चारजामे का रस्सा।

ऊबणौ (बौ)–क्रि० १ खिन्न होना २ उदास होना। ३ परेशान होना। ४ अरुचि की दशा में होना। ५ उकताना। ६ देखो 'ऊभणौ' (बौ)।

ऊबता (ताळ)–स्त्री० हाथ उठा कर खडे मनुष्य की ऊंचाई का माप, पुरुष।

ऊबताल–क्रि० वि० यकायक।

ऊबर–१ देखो 'ऊपर'। २ देखो 'अमीर'।

ऊबरणौ–पु० रक्षा बचाव।

ऊबरणौ (बौ)–क्रि०१ उद्धार पाना। २ मृत्यु होना। ३ बचना, रक्षा पाना। ४ अमर होना, बचना, शेष रहना।

ऊबराव–देखो 'अमराव'।

ऊबरियौ–देखो 'ऊबडियौ'।

ऊबळ–वि० चंचल।

ऊबह–पु० [स० उदधि] समुद्र।

ऊबांणणौ (बौ)–देखो 'उबाणणौ' (बौ)।

ऊबाणी–देखो 'उबाणौ'। (स्त्री० ऊबाणी)।

ऊबांबर (रौ)–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ साहसी। ३ वीर बहादुर।

ऊबाऊब–क्रि० वि० यकायक, खडे-खडे, अचानक।

ऊबाड़णौ (बौ)–क्रि० १ खडा करना। २ उखेडना। उन्मूलन करना।

ऊबाडो–पु० कुवचन, अपशब्द । –वि० १ अपशब्द कहने वाला । २ विरुद्ध, विपरीत ।
ऊवाणौ (बौ)–देखो 'ऊभाणौ' (बौ) ।
ऊबारणौ (बौ)–देखो उबारणौ' (बौ) ।
ऊवारौ–देखो 'उवारौ' ।
ऊबास (सी, सौ)–देखो उबासी' ।
ऊवाहणौ–१ देखो 'उबाणौ' ।
ऊबियोबगार–पु० विना छौंक का साग ।
ऊबीठ–वि० निबिड, गाढा, घना ।
ऊबेडखम–वि० बलवान, शक्तिशाली ।
ऊबेडणौ (बौ)–देखो 'उखेडणौ' (बौ) ।
ऊबेडौ–वि०१दाहिनी ओर से आने वाला (भेडिया) । २ दाहिनी ओर से बोलने वाला (तीतर) । ३ विरुद्ध, विमुख ।
ऊबेधाज–पु० [स० उच्छूर्पण] अनाज साफ करने की एक क्रिया ।
ऊबेल–स्त्री० १ सहायता, मदद । २ रक्षा । ३ शरण । –वि० रक्षक । सहायक ।
ऊवेलणौ (बौ)–देखो 'उवेलणौ' (बौ) ।
ऊवेलू–वि० सहायक, रक्षक ।
ऊबेलौ–देखो 'उवेल' ।
ऊबोडौ–देखो 'ऊभोडौ' (स्त्री० ऊबोडी) ।
ऊव्हाणौ–देखो 'उवाणौ' (स्त्री० उव्हाणी) ।
ऊभ–स्त्री० १ खडे होने की क्रिया या भाव । २ देखो 'ऊब' ।
ऊभणौ (बौ)–क्रि० १ खडा होना । २ ठहरना ।
ऊभति–पु० [स० उद्भक्ति] खराब भात ।
ऊभरणौ (बौ)–क्रि० १ धारण करना । उठाए हुए रखना । २ उठाना । ३ शोभा देना ।
ऊभराणौ–देखो 'उबाणौ' । (स्त्री० ऊभराणी) ।
ऊभसूक–पु० खडा हुआ सूखा वृक्ष ।
ऊभाणौ (बौ)–क्रि० १ खडा करना । २ ठहराना ।
ऊभापगा, ऊभीताळ–क्रि० वि० अचानक, सहसा । तुरन्त । खडे-खडे ।
ऊभारणौ (बौ)–देखो 'उभरणौ' (बौ) ।
ऊभीकटाळी–स्त्री० वृहती कटाली ।
ऊभोडौ, ऊभौ–वि० (स्त्री० ऊभी, ऊभोडी) १ खडा हुआ । २ सीधा ऊपर उठा हुआ ।
ऊमगणौ (बौ)–देखो 'उमगणौ' (बौ) ।
ऊमड–स्त्री० [स० उन्मण्डन] १ बाढ, बढ़ाव । २ घिराव । ३ धावा, हमला । ४ आवेश ।
ऊमडणौ (बौ)–देखो 'उमडणौ' (बौ) ।
ऊम–देखो 'ऊम' ।
ऊमडणौ, (बौ), ऊमटणौ, (बौ)–देखो उमडणौ' (बौ)

ऊमण–वि० १ उत्सुक, व्याकुल । २ उदासीन, चिंतित । ३ खिन्न । —दूमणौ (णौ)–वि० खिन्न, उदास ।
ऊमतौ–देखो 'उनमत्त' ।
ऊमदा–देखो 'उमदा' ।
ऊमर–१ देखो 'उमर' । २ देखो 'अमीर' ।
ऊमरड–वि० १ जोश पूर्ण । बलवान, शक्तिशाली । २ विरुद्ध । —पण, पणौ–पु० जोश । बल । आतक ।
ऊमरवराज–वि० दीर्घायु ।
ऊमरौ–पु० १ हल की लकीर, सीता । २ देखो 'अमराव' ।
ऊमस–देखो 'उमस' ।
ऊमहणौ (बौ)–क्रि० १ उमगित होना, उत्साहित होना । २ उमडना । ३ उठना, उभरना । ४ उत्साह युक्त होना, उमग युक्त होना ।
ऊमाणौ (बौ)–देखो 'उमाहणौ' (बौ) ।
ऊमाह, ऊमाहौ–देखो 'उमाव' ।
ऊमिया–देखो 'उमा' ।
ऊमी–देखो 'उम्मी' ।
ऊमीणौ–देखो 'उमीणौ' (स्त्री० ऊमीणी) ।
ऊयइ–सर्व० उस, वह ।
ऊरग–देखो 'उर' । देखो 'उरग' ।
ऊरगी–वि० खिन्नचित्त, उदास ।
ऊरड (ड)–देखो 'उरड' ।
ऊर–वि०[स०ऊर]और । अपर । स्त्री०जघा, जाघ । देखो'उर' ।
ऊरज–वि० [स० ऊर्ज] बलवान । जबरदस्त ।
ऊरजस–देखो 'उरजस' ।
ऊरण–पु० [सं० ऊरण] १ मेंढा, मेष । २ देखो 'उरण' देखो 'उरिण' । —नाभ–स्त्री० मकडी ।
ऊरणा–स्त्री० [स० ऊर्णा] १ ऊन । २ चित्ररथ-गधर्व की स्त्री ।
ऊरणियौ–देखो 'उरणियौ' ।
ऊरणी–स्त्री० १ मादा भेड । २ एक प्रकार का ओठो का रोग ।
ऊरणौ (बौ)–क्रि० १ चक्की मे अनाज डालना । २ खेत मे अनाज बोना । ३ युद्ध मे घोडे भोकना । ४ मुट्ठिया भर-भर खाना । ५ आक्रमण करना । ६ गिराना, डालना ।
ऊरध–देखो 'उरद्ध' ।
ऊरधपाद–पु० एक प्रकार का आसन । एक कीडा विशेष ।
ऊरधपुड–पु० ललाट का खडा तिलक ।
ऊरधबाहु–वि० एक बाहु ऊपर उठाकर तपस्या करने वाला ।
ऊरवाणौ–देखो 'उवाणौ' (स्त्री० ऊरवाणी) ।
ऊरबौ–पु० १ आशा, उम्मीद । २ भरोसा विश्वास । ३ इज्जत ।

ऊरमि, (मी) ऊरम्म–स्त्री० [स० ऊर्मी] १ लहर, तरग। २ कपडे की सलवट। ३ पीडा, कष्ट। ४ दुःख की मर्यादा।
—माळ माळा, माळी, म्माळ–पु० समुद्र सागर।
ऊरवड (व्वड)–देखो 'उरव्वड'।
ऊरवाणी–देखो 'उवाणी' (स्त्री० ऊरवाणी)।
ऊरि–देखो 'उर'।
ऊरिण–देखो 'उरग'।
ऊरु (रू)–स्त्री०[स०] जाघ, जघा। –ज–वि० जाघ से उत्पन्न। –पु० वैश्य जाति। वन। —त्र–स्त्री० रान। रान का कवच।
ऊरेडो, ऊरेडो–पु० वलात् घसने की क्रिया।
ऊळ–पु० नेत्रो मे होने वाला वात नाडी शूल।
ऊल–स्त्री० १ चमडे की झिल्ली। २ जिह्वा का मैल।
ऊलकणौ (बौ)–क्रि० कुदाना, छलाग भराना।
ऊळखणौ (बौ)–देखो 'ओळखणौ' (बौ)।
ऊलग–देखो 'अलग'।
ऊलजणौ (बौ) ऊळझणौ (बौ)–देखो 'अळझणौ' (बौ)।
ऊलजाणौ (बौ) ऊलझाणौ (बौ)–देखो 'अळझाणौ' (बौ)।
ऊलजुलूल–वि० अट-सट। असबद्ध। नासमझ, असभ्य।
ऊलट–पु० उमग, जोश, उत्साह, आवेग।
ऊलटणौ (बौ)–देखो 'उलटणौ' (बौ)।
ऊलफैल–पु० १ उत्पात, उपद्रव। २ नखरा। ३ अनावश्यक खर्च।
ऊलरणौ (बौ)–देखो 'ओलरणौ' (बौ)।
ऊलळणौ (बौ), ऊललणौ (बौ)–देखो 'उलळणौ' (बौ)।
ऊल्लसणौ (बौ), ऊल्लहणौ (बौ)–देखो 'उल्लसणौ (बौ)।
ऊला–वि० १ निकट पास, नजदीक। २ विपरीत, उल्टा। –क्रि० वि० इधर।
ऊलाळणौ, (बौ), ऊलाळिणौ, (बौ)–देखो 'उलाळणौ' (बौ)।
ऊली–क्रि० वि० इस ओर। –वि० इस ओर की, इधर की, नजदीक वाली। –सर्व० इस।
ऊलेचणौ (बौ)–देखो 'उलीचणौ' (बौ)।
ऊलेमोउ–देखो 'ओळभौ'।
ऊलेरन–पु० गर्व, दर्प।
ऊलोडौ, ऊलौ–वि० (स्त्री० ऊलोडी, ऊली) १ इधर वाला। २ नजदीक वाला। —पैलौ–वि० इधर-उधर का।
ऊलोच–पु० चदोवा।
ऊल्क–देखो 'उल्का'।
ऊवकणौ (बौ)–देखो ऊवकणौ (बौ)।
ऊवट–देखो 'ऊवट'।
ऊवटणौ (बौ)–देखो 'उवटणौ' (बौ)।
ऊवट्ट–देखो 'ऊवट'।
ऊवडणौ (बौ)–देखो 'उमडणौ' (बौ)।
ऊवरणौ (बौ)–देखो 'ऊजरणौ' (बौ)।
ऊवर, ऊवरि–देखो 'ऊर'।
ऊवळणौ (बौ)–१ बचना शेष रहना। २ देखो 'उवळणौ' (बौ)।
ऊवस्स–वि० [स० उद्वस्त] निर्जन, जनशून्य।
ऊवहणौ (बौ)–क्रि० १ ऊचा होना। २ बचना।
ऊवा, ऊवा–सर्व० वे, उन्होंने। –क्रि० वि० वहा।
ऊवाडौ–१ देखो 'उवाडौ'। २ देखो 'प्रवाडौ'।
ऊवारणौ (बौ)–देखो 'उवारणौ' (बौ)।
ऊवाळ–१ देखो 'ऊफाळ'। २ देखो 'ओळ'।
ऊवेउणौ (बौ)–क्रि० उपेक्षा करना।
ऊवेनणौ (बौ)–देखो 'उवेनणौ' (बौ)।
ऊवेळौ–वि० (स्त्री० ऊवेळी) ऋण-मुक्त, उऋण।
ऊवै–सर्व० वे।
ऊवौ–सर्व० वह, उस।
ऊस–पु० १ मादा पशु का थन। २ क्षार। ३ ऊसर।
ऊसनउ–वि० [स० उत्सन्न] उत्सुक, खिन्न, अप्रसन्न।
ऊसमक–पु० [स० उष्मक] १ गरमी, ताप, तपन। २ ग्रीष्म ऋतु।
ऊसर–पु० १ अनउपजाऊ भूमि। २ असुर –वि० कटु, कडवा।
ऊसरणौ (बौ)–देखो 'उसरणौ' (बौ)।
ऊसराण–देखो 'असुर'।
ऊसस–पु० १ जोश, आवेग।
ऊससणौ (बौ)–क्रि० [स० उत्–श्वसति] १ जोश मे आना। २ उठना। ३ जोश मे शरीर का फूलना, फैलना बढना। ४ बढना। ५ उमग युक्त होना। ६ जोश मे आना। ७ तेज गति मे श्वास लेना।
ऊसा–देखो 'उसा'।
ऊसारणौ (बौ)–देखो 'उसारणौ' (बौ)।
ऊसारौ–पु० बरामदा।
ऊसासणौ (बौ)–क्रि० बाध या किनारे फोड कर निकलना। तेजी से श्वास लेना।
ऊसीसौ–देखो 'ओसीसौ'।
ऊह–पु० तर्क। विचार। –सर्व० यह।
ऊहरण–देखो 'एरण'।
ऊहविणौ (बौ)–क्रि० विचार करना। तर्क-वितर्क करना।
ऊहा–अव्य०ओह,आह(ध्वनि)। –पु० १ अनुमान। २ विचार। ३ तर्क, दलील। ४ किंवदती।
ऊहाडौ–देखो 'उवाडौ'।
ऊहाळ–पु० [स० उहावलि] जल के साथ बहने वाला कूडा।
ऊहो–क्रि० वि० उस तरफ। –सर्व० वही।

--ए--

ए–देवनागरी वर्णमाला का सातवा स्वर-वर्ण ।

एकार, एकारौ, एंठ–पु० १ मन मुटाव । २ अनादर सूचक सबोधन । ३ अस्पष्ट ध्वनि । ४ देखो 'ऐंठ' ।

एंधाण–देखो 'इधण' ।

एबूलेंस–स्त्री० [अ०] रोगीवाहन ।

ए–पु० [स०] १ विष्णु । २ सूर्य । ३ शेषनाग । ४ जीव । ५ द्विज । ६ बालक । ७ दानव । ८ बाण । –स्त्री० ९ अनुसूया । १० अनुकम्पा । –वि० १ सबधी । २ सिद्ध । ३ बुद्धिमान । ४ उद्यत, तैयार । ५ द्वेषी । –अव्य० हे, अरे । –सर्व० ये, यह, इस ।

एअ, एउ–सर्व० यह, इस । –क्रि० वि० ऐसा ।

एककार–देखो 'एकाकार' ।

एकग–वि० एकाग, अकेला ।

एकगी–वि० (स्त्री० एकगी) एक ही रग व एक ही स्वभाव मे रहने वाला ।

एकत, (ति, तौ, तु), एकथ–देखो 'एकात' ।

एक–पु० [स०] १ अक माला की प्रथम इकाई, एक की सख्या, १ । २ इकाई । ३ विष्णु –वि० १ दो से आधा, एक केवल । २ जो इकाई के रूप में हो । ३ पहला, प्रथम । ४ अद्वितीय, बेजोड । ५ मुख्य, प्रधान । ६ अकेला, एकाकी । ७ सत्य । ८ भेद रहित, एक रूप । ९ इकहरा । १० दृढ । ११ अपरिवर्तित । १२ समान । १३ कोई । —**क**–वि० अकेला । असहाय । निराला । —**कारण**–पु० शिव, महादेव । —**कुडळ**–पु० शेषनाग । —**ग**–क्रि० वि० एक साथ । —**प्र**='एकाग्र' । —**चक्र**–पु० सूर्य । सूर्य का रथ । चक्रवर्ती । —**चख**–वि० एक आख वाला । काना । –पु० काग । शिव का नामान्तर । शुक्राचार्य । —**छत्र**–पु० वह राज्य या राजा जिस पर किसी का अधिकार न हो । पूर्ण स्वतन्त्र । –क्रि० वि० एकाधिकार से, निरन्तर । —**ज**–पु० अब्राह्मण, शूद्र । राजा । –वि० एक-मात्र —**टगो**–वि० लगडा । —**टक**–क्रि० वि० निर्निमेष, लगातार । —**टकी**–स्त्री० टकटकी । स्तब्धदृष्टि । —**डकी**='इकडकी' । —**डाळ**–स्त्री० मूठ सहित एक धातु की कटार । —**ढाळ**–वि० एक समान, सदृश्य, तुल्य । —**ढाळियो**–पु० कच्चे मकान के किसी कक्ष के आगे बना ढलवा छप्पर । —**तरफो**–वि० एक पक्ष का । पक्षपात युक्त । एकरुखा । —**ता**–स्त्री० प्रेम, मेल-जोल । सगठन की भावना । समानता । —**तारो**–पु० एक तार का वाद्य । —**ताळ**–पु० एक रस, एक स्वर, समताल । —**दत, दतौ, दसन**–पु० गजानन, गणेश । हाथी विशेष । एक की सख्या । —**नयन**–पु० कौआ । कुबेर । शुक्राचार्य । काना । —**पग, पिग**–पु० कुबेर । —**पत, पति**–स्त्री० पतिव्रता । —**मडळ**–पु० वह घोडा जिसके नेत्र की पुतली सफेद हो । —**मते, मतै**–क्रि०वि० एक मत से । सगठन से । —**मनौ**–वि० एक मत । सगठित । —**मुखो**–वि० एक मुख या छिद्र वाला । —**रंग, रगी रगौ**–वि० समान, तुल्य । निष्कपट । एक सा । एकीभूत । आनन्दित । एक ही स्वभाव या प्रकृति वाला । —**रखी, रखौ**–वि० एक रग या स्वभाव वाला । —**रदन**–पु० गणेश, गजानन । —**रवा**–पु० एक तरफ से टाचा हुआ पत्थर । –**वार**–क्रि०वि० एक दफा, एक बार । –**रस**='एकरग' । –**रूप**='एक रग' । —**वचन**–पु० इकाई सूचक शब्द । —**वेणी**–स्त्री० विरहणी । विधवा । —**सग**–पु० विष्णु । सहवास । —**सथ**–पु० एकमत । —**सरा**–वि० सब एक साथ ।

एकड–पु० [अ०] ४८४० वर्ग गज के बराबर कृषि भूमि का एक नाप ।

एकचित–वि० एकाग्रचित्त, तन्मय ।

एकट, (ठ), एकठौ–वि० [सं० एकस्थक] (स्त्री० एकठी) एकत्रित, इकट्ठा । —क्रि० वि० एक साथ, साथ-साथ ।

एकडा–क्रि० वि० एक स्थान पर । –वि० एकत्रित, इकट्ठा ।

एकण (णि, णी)–वि० १ एक, एकही । २ अकेला । ३ अद्वितीय । —**मल्ल**–वि० अद्वितीय वीर । —**साथ**–क्रि० वि० अकस्मात । एकदम । एक साथ । समग्र ।

एकताळीस–देखो 'इकताळीस' ।

एकताळीसौ–देखो 'इकताळीसौ' ।

एकत्र–वि० [स०] १ एक स्थान पर । २ साथ-साथ । ३ सब एक साथ । ४ इकट्ठा ।

एकत्रित–वि० सगृहीत । एकत्र किया हुआ । जमा ।

एकदम–क्रि० वि० १ यकायक, एकाएक, अकस्मात । २ निरतर, लगातार ।

एकदाई–१ सम-वयस्क । २ देखो 'एकदा' ।

एकदा–क्रि० वि० एक वार । एक समय ।

एकपत (ति, ती)–स्त्री० पतिव्रता, साध्वी स्त्री ।

एकबारगी–क्रि० वि० १ एक बार मे, बिल्कुल । २ अकस्मात । ३ एक दफा ।

एकवाल–पु० [अ० इकवाल] १ प्रताप, ऐश्वर्य। २ सौभाग्य। ३ इकवाल स्वीकार।
एकवीज (जौ)–पु० फल मे एक ही बीज वाला वृक्ष।
एकम–स्त्री० प्रत्येक मास की प्रतिपदा तिथि।
एकमेक–वि० १ वरावर, समान, तुल्य। २ एकाकार। ३ रूप, गुण,वर्ण की दृष्टि से भिन्न न हो। ४ अभिन्न, घुले-मिले।
एकर, एकरा (रा, र्यो)–क्रि० वि० एक वार।
एकरखो–वि०१निरन्तर एक ही स्वभाव या प्रकृति मे रहने वाला २ सदा एक ही रूप या अवस्था मे रहने वाला।
एकरसी (सु. सू)–क्रि० वि० एक वार, एक दफा। लगातार।
एकरार–देखो 'इकरार'।
ऐकरिये, एकरू–क्रि० वि० एक वार, एक दफा।
एकल (उ)–पु० अकेला रहने वाला सूअर, वडा सूअर। –वि० १ अकेला, एकाकी। २ अद्वितीय वीर।
एकलखोरो–वि० (स्त्री० एकलखोरी) १ एकान्तवासी। २ सदा अकेला रहने वाला। २ स्वार्थी, ईर्ष्यालु।
एकलगिड–पु० सूअर वराह। २ देखो 'एकल'।
एकलडो–वि० (स्त्री० एकलडी) १ अकेला। २ एक लटिका या पटवाला।
एकलवंणो–पु० डिंगल का एक गीत विशेष।
एकलमल (ल्ल)–पु० परब्रह्म, विष्णु। –वि० १ अकेला। २ अद्वितीय वीर।
एकलवाई–स्त्री० लुहार, मोची वढई आदि का औजार विशेष।
एकलवाड़–पु० वडा व शक्तिशाली सूअर।
एकलव्यु–द्रोणाचार्य के शिष्य एक भील का नाम।
एकलापो,(लापो)–वि०(स्त्री०एकलापी) १अकेला। २ असहाय। –पु० १ अकेला कार्यकर्त्ता। २ अकेलापन।
एकलिंग–पु० शिव का एक रूप।
एकलि (ली)–वि० एक।
एकलियो–वि० १ अकेला। २ एक से सवंधित। –पु० एक वैल का हल।
एकलीम–देखो 'अकलीम'।
एकलोतो–देखो 'इकलोतो'।
एकलो–वि० (स्त्री० एकली) अकेला, एकाकी।
एकल्लमल्ल–देखो 'एकलमल'।
एकल्लो–देखो 'एकलो'।
एकवीस–देखो 'इक्कीस'।
एकसांस, एकसासियो–देखो 'इकसासियो'।
एकसाखियो–देखो 'इकसाखियो'।
एकसो-वि० (स्त्री० एकसी) एक जैसा, समान, तुल्य।

एकहत्थी (थी)–देखो 'इकहत्थी'।
एकाग, (गी)–वि० [स०] १ एक अग का। एक पक्ष का। २ एक ओर का। ३ हठी।
एकांण (णि)–वि० एक।
एकांणव (वैं), एकाणवों–पु० इकवानवा वर्ष। इकावन।
एकाणो–देखो 'एकासणो'।
एकात (ति, ती)–वि० निर्जन, शून्य। सूना। पृथक, अलग। –पु० शून्य-स्थान।
एकातरकोण–पु० एक तरफ का कोण।
एकातरो–पु० [स० एक+अन्तर] १ एक दिन छोड कर आने वाला दिन। २ एक दिन छोडकर आने वाला ज्वर। ३ एक के अन्तर से चलने वाला क्रम।
एकाती–पु० अनन्य भक्त।
एकायत, एकायत–देखो 'एकात'।
एका–स्त्री० दुर्गा। वि० एक।
एकाई–देखो 'इकाई'।
एकाउळि (लि)–देखो 'एकावळहार'।
एकाएक (की)–क्रि० वि० अचानक, अकस्मात। –वि० इकलौता।
एकाकार–पु०[स०] १ रूप, गुण, आकार की दृष्टि से अभिन्नता की अवस्था या भाव। –वि० एक रूप। समान, तुल्य।
एकाकी–वि० अकेला।
एकाक्ष–वि० काना। –पु० कौआ। २ शुक्राचार्य।
एकाक्षरी–वि० एक अक्षर का। –पु० १ एक अक्षर का मंत्र, ओंकार। २ एकाक्षरी छन्द।
एकागर–देखो 'एकाग'।
एकागार (गारक, गारो)–वि० [स० एकागारिक] १ दुष्ट, नीच, पतित। २ चोर।
एकाग्र–वि० [स०] १ अचचल, स्थिर। २ ध्यानावस्थित। ३ एकाग्रचित्त। —**चित्त**–वि० चित्त या वृत्ति को एक जगह केन्द्रित किए हुए। ध्यानावस्थित। —**ता**–स्त्री० चित्त की स्थिरता। स्थिरता। मनोयोग।
एकातपत्र–वि० एक छत्र। सार्वभौम। चक्रवर्ती।
एकात्मा–स्त्री० एकता, अभिन्नता, एक रूपता। आत्मिक एकता।
एकावस–वि० [स० एकादश] दश और एक, ग्यारह। –पु० ग्यारह की सख्या, ११। —**रुद्र**–पु० हनुमान। रुद्रगण।
एकावसी–स्त्री० [स० एकादशी] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवी तिथि, ग्यारस।
एकाधपत, एकाधपति, एकाधपत्त, एकाधपत्ति, एकाधिपत्य–पु० [स० एकाधिपत्य] १ पूर्ण प्रभुत्व की अवस्था, एकाधिकार। २ महान योद्धा। ३ चक्रवर्ती सम्राट।

एकाबादर, एकाबाहदर–देखो 'इकाबहादुर'।
एकार–पु० १ वर्णमाला का 'ए' स्वर। २ देखो 'एकाकार'।
एकारको–वि० (स्त्री० एकारकी) एक वार की। एक दफा की।
एकारा, एकारू–क्रि०वि० एक वार। एक समय।
एकावन–देखो 'इकावन'।
एकावनो–देखो 'इकावनो'।
एकावळहार–पु० एक प्रकार का अमूल्यहार।
एकावळि, (ळी)–स्त्री० १ एक से सौ तक की गिनती। २ एक-लडी की माला। ३ एक प्रकार का अर्थालकार। ४ एक प्रकार का आभूषण।
एकावणो, एकासणो–पु० १ दिन मे एक वार एक आसन से किया जाने वाला भोजन। २ उक्त प्रकार का व्रत।
एकासणी–वि० एकासना व्रत रखने वाला।
एकासियो–देखो 'इकियासियो'।
एकास्रित–वि० एक पर ही आधारित, आश्रित।
एकाल्ली–वि० अकेला।
एकाह्रिक–वि० एक दिन का, एक दिवसीय।
एकी–स्त्री० १ इकाई। २ अविभाज्य सख्या। ३ छात्र द्वारा एक अगुली उठा कर अध्यापक को दिया जाने वाला पेशाब का सकेत। –वि० एक। —करण–पु० एकत्रीकरण, सग्रह। मिलाकर एक करने की क्रिया। —बेकी–पु० एक राजस्थानी खेल।
एकीस–देखो 'इक्कीस'।
एकीसार–वि० समान, एकसा।
एकूको–क्रि०वि० एक-एक करके, क्रमश। एक ही। –वि० (स्त्री० एकूकी) प्रत्येक, हरेक।
एकेंद्रिय (द्री)–वि० [स०] १ अपनी इन्द्रियो को विपयो से हटाकर मन मे केन्द्रित करने वाला। २ एक ही इन्द्रिय वाला।
एके, एकै–वि० एक। एक और एक। एक मत, एक राय।
एकोतड, एकोतडो–वि० एक सौ एक। –पु० उक्त प्रकार की सख्या, १०१। २ देखो 'इकोतर'।
एकोतर–देखो 'इकोतर'।
एकोतरसो–वि० एक सौ एक। –पु० १ एक सौ एक की सख्या, १०१। २ सात हजार एक सौ की सख्या, ७१००।
एकोतरो–देखो 'इकोतरो'।
एकोळाई–स्त्री० बढई का एक औजार।
एक्को (क्को)–पु० १ एक का अक, १। २ एकता, सगठन। ३ देखो 'इक्को'।
एक्कावान–देखो 'इक्कावान'।

एखट, एखटो–वि० [स० एकस्थ] (स्त्री० एखटी) एकत्रित, एक स्थान पर इकट्ठा किया हुआ।
एगरउ–क्रि०वि० एक वार, एक समय।
एगारह–देखो 'ग्यारह'।
एडणो (बो)–क्रि० एकत्र करना, सगृहीत करना, जोडना। झुड बनाना।
एडं-छेडं–क्रि०वि० इधर-उधर। ओर-छोर पर। आसपास।
एडो–देखो 'ऐडो'।
एडो-बेडो–क्रि० वि० ऊपर-नीचे। –वि० ऐसा-वैसा। –पु० द्विघटक। गगरी।
एछी–स्त्री० आवडदेवी की बहन।
एठित–देखो 'ऐंठित'।
एडक (डक)–पु० [स० एडक] मेढा, भेडा।
एड–पु० [स०] नर भेड। –स्त्री० ऐडी।
एडगज–पु० [स०] पुवाड, चकवड।
एड़ी–स्त्री० १ पाव तले का पिछला भाग, एड। २ नीचला शिरा।
एडो–पु० १ हर्ष या शोक का अवसर। २ ईर्ष्या, द्वेप। ३ वैर।
एढ़ो–पु० विशेष अवसर। खास मौका।
एण–पु० [स० एण] (स्त्री० एणी) १ एक जाति विशेप का हरिण, कृष्णमृग। २ हरिण। ३ मृगचर्म, मृगछाला। [स० अयन] ४ घर, मकान। –सर्व० [स० एतेन] इस यह। इन। —पताका–स्त्री० चन्द्रमा। —सार–पु० मृगमद, कस्तूरी।
एणि (णी)–१ देखो 'इणि'। २ देखो 'एण'।
एतडा (डा)–वि० इतने।
एतत–सर्व० [स०] यह। –वि० इतना।
एतबार–पु० [अ०] भरोसा, विश्वास।
एतबारी–वि० [अ०] जिस पर विश्वास किया जाय, विश्वसनीय।
एतराज (जी)–पु० [अ०] आपत्ति, विरोध।
एतलई, एतले (लै)–वि० इतने। –क्रि० वि० तब तक, अब तक।
एतलो–वि० (स्त्री० एतली) इतना। ऐसा।
एता, एता–सर्व० इतने।
एति, एती–वि० इतनी, ऐसी। –सर्व० इस।
एतेह–वि० इतना।
एतो–वि० [स० इयत्] (स्त्री० एती) इतना।
एथ, (ऐथि) एथियै, एथी, एथीयै–क्रि० वि० यहां, इस ओर, इधर।
एधस–पु० [स०] १ यज्ञ का इधन। २ इधन।

एधाण–१ देखो 'इधण'। २ देखो 'इधाण'।
एपूळो–देखो 'ऐबूळो' (स्त्री० एबूळी)।
एन–पु० [सं० अयन] १ रास्ता, मार्ग। [सं० एनम्] २ पाप। –क्रि०वि० [अ०] ठीक से। विशेष या खास मौके पर।
एनाण–देखो 'ऐनाण'।
एम–क्रि०वि० इस प्रकार ऐसे। सर्व० यह, इस।
एमौ–क्रि०वि० इस ओर।
एम्रत–देखो 'अमरत'।
एरंड, एरंडियौ–पु० [सं० एरंड] १ रेंडी का पौधा। २ पपीता का पौधा।
एरंडकाकड़ी–स्त्री० पपीता।
एरंडी–स्त्री० ओढने का वस्त्र विशेष।
एरंडोळी–स्त्री० एरंड का बीज।
एरण–पु० [सं० आहरण] लोहे की चौकी जिस पर लोहार लोहा व सुनार सोना-चांदी पीटता है।
एरस (सौ)–देखो 'ऐरसौ'। (स्त्री० एरसी)
एराक–देखो 'ऐराक'।
एराकी, एराकौ–देखो 'ऐराकी'।
एरापत–देखो 'ऐरावत'।
एरावण (णु, वत)–देखो 'ऐरावण'।
एरिसौ, एरेसौ–वि० (स्त्री० एरसी) इतना। ऐसा।
एरौ–वि० ऐसा। –अव्य० हे, अरी।
एरौ–पु० [सं० एरक] एक प्रकार की घास। –सर्व० ऐसा।
एळ–१ देखो 'एला'। २ देखो 'इळा'।
एलची–पु० [तु०] १ राजदूत। २ पत्रवाहक। ३ देखो 'इलायची'।
एलम–देखो 'इलम'। —गीर='इलमगीर'।
एलवळ (विळौ)–पु० [सं० एलविल] कुबेर।
एलाण–१ देखो 'ऐलान'। २ देखो 'ऐनाण'।
एळा–देखो 'इळा'।
एला–स्त्री० [सं० एला] इलायची।
एलाज–देखो 'इलाज'।
एलावेला, (वेलौ)–क्रि०वि० परस्पर विपरीत दिशा में।
एळियौ, (ळुवौ)–पु० घी-कुमार-रस एक औषधि विशेष।
एव, एव–क्रि०वि० [सं०] इसी प्रकार, ऐसे, ही। और, तथा। भी। निश्चय ही। –स्त्री० सादृश्य, समानता।
एवड–पु० [सं० अजपटल] १ भेड़ों का झुण्ड, समूह। २ भेड़ चराने वालों से लिया जाने वाला प्राचीन कर।
एवडछेवड़–क्रि०वि० अगल-बगल। आस-पास। किनारे पर।
एवज–पु० [अ०] १ प्रतिफल। २ प्रतिकार, बदला। ३ स्थानापन्न।
एवजानौ–पु० १ प्रतिफल। २ बदला। ३ हरजाना।
एवजी–स्त्री० १ बदले में काम करने की क्रिया या भाव। २ बदले में काम करने वाला। ३ देखो 'एवज'।
एवड, (डु, डौ)–वि० [सं० इयत्] (स्त्री० एवडी) १ इतना। ऐसा। २ देखो 'एवड'।
एवहौ–वि० (स्त्री० एवही) ऐसा।
एवाडौ–पु० भेड़-बकरी-समूह को रात्रि में बैठाने या रखने का स्थान।
एवाळ (ळियौ, ळौ)–पु० [सं० अजापाल] १ भेड़ चराने वाला गड़रिया। २ ग्वाला। ३ जलाशय के किनारे एकत्र होने वाला कूड़ा-करकट।
एवास–देखो 'आवास'।
एवासी–पु० निवासी।
एवाहौ, एवू–वि० (स्त्री० एवाही) ऐसा।
एवे (वै)–सर्व० वे।
एस–सर्व० यह। इसका। –क्रि० वि० इस वर्ष।
एसणासुमति–स्त्री० [सं० एषणा समिति] ४२ प्रकार के दूषण दूर कर शुद्ध आहार प्राप्त करने की गवेषणा।
एसरव–पु० मुसलमानों का तीर्थ स्थान विशेष।
एसान–देखो 'एहसान'।
एह–सर्व० [सं० एष] १ यह, ये। २ इस। –वि० ऐसा।
एहड़लौ (ड़ौ)–वि० (स्त्री० एहड़ली) १ ऐसा। २ व्यर्थ।
एहज–सर्व० ये, यही। —वि० इसी। सही।
एहवूं, एहवौ–वि० (स्त्री० एहवा, एहवी) ऐसा।
एहलाण–पु० निशान, चिह्न। स्मृति-चिह्न।
एहळौ–वि० [सं० अफल] (स्त्री० एहळी) निष्फल, व्यर्थ।
एहवउ (वां, वूं, वौ)–वि० (स्त्री० एहवी) ऐसा।
एहसाण (सान)–पु० [अ०] १ उपकार। २ भलाई। ३ नेकी। —मंद–वि० उपकृत।
एहास–वि० [सं० एतादृश] ऐसा।
एहि एहिवू, (ही)–वि० १ ये, यही। २ ऐसा।
एहु, एहू–वि० यह। ऐसा। इस प्रकार का।
एहौ–वि० (स्त्री० ऐही) ऐसा, इस प्रकार का। –अव्य० हे, अरे (संबोधन)

--ऐ--

ऐ-वर्णमाला का आठवा स्वर वर्ण ।

ऐं-अव्य० आश्चर्य सूचक या प्रश्न वाचक अव्यय ध्वनि ।

ऐंचण-स्त्री० खिचाव, तनाव ।

ऐंचणो (बो)-क्रि० खीचना, तानना । ऐंठना ।

ऐंचाताणो-वि० (स्त्री० ऐचाताणी) तिरछा या टेढा देखने वाला ।

ऐंट-देखो 'ऐंठ' ।

ऐंटो-देखो 'ऐंठो' ।

ऐंठ (ण)-स्त्री० १ अकड, ऐंठन । २ गर्व । ३ राग-द्वेप, विरोध । ४ जूठन ।

ऐंठणो (बो)-क्रि० १ जूठा करना । २ चखना । ३ मरोडना, बल देना । ४ बलात् वसूल करना । ५ अकडना । ६ तानना, खीचना ।

ऐंठवाडी-स्त्री०१व्यभिचारिणी स्त्री० । २ जूठन । ३ जूठा पात्र ।

ऐंठवाड़ो-पु० १ जूठा, उच्छिष्ट । २ जूठन ।

ऐंठाणो(बो),ऐंठावणो (बो)-क्रि०१ जूठा कराना । २ चखाना । ३ बल दिराना । ४ बलात् वसूल कराना । ५ तनवाना, खिचवाना ।

ऐंठाळ (ळो) -वि० दुष्ट, पाजी, चुगलखोर ।

ऐंठित-वि० [स० उच्छिष्ट] जूठा, उच्छिष्ट । -पु० जूठन ।

ऐंठियोडो, ऐंठोडो, ऐंठो-वि० (स्त्री० ऐंठी) जूठा । उच्छिष्ट । -पु० जूठन । --चूंटो, चूंठो, छूंठो-पु० जूठन । जूठा पदार्थ ।

ऐंडणो (बो)-क्रि० चलना, विचरना ।

ऐंड-बेंड-वि० १ अट-सट, निरर्थक । २ अस्त-व्यस्त । ३ अनाप-सनाप ।

ऐंडो-बेंडो-वि० (स्त्री० ऐंडीबेंडी) उल्टा सीधा, अट-सट ।

ऐंडो, ऐंढो-पु० १ अदाज, अनुमान । २ भोजन के समय साथ ले जाया जाने वाला बालक । -वि० १ ऊबड-खावड, दुर्गम । विकट, भयावह । २ टेढा-मेढा, अकडा हुआ । ३ विरुद्ध । ४ साथ वाला ।

ऐंण-देखो 'एण' ।

ऐंद्र-पु० ज्योतिप का एक योग ।

ऐंद्रि (द्री)-स्त्री० [म०] चौसठ मे से अट्ठावनवी योगिनी ।

ऐंळो-देखो 'ऐळो' (स्त्री० ऐंळी) ।

ऐ-पु० [म० ऐ] १ शिव । २ कामदेव । ३ बालक । ४ कपि, वदर । ५ असुर । ६ ऊट । ७ निमत्रण । ८ वचन । ९ बीज । १० राजा । ११ विश्व । १२ कुम्हार । -स्त्री०१३सरस्वती । १४ मुक्ति । -वि०१मूर्ख । २ विषम । ३ व्यापक । ४ पूज्य । ५ एकत्र । -सर्व० यह, ये । -अव्य० सबोधन सूचक शब्द, हे, अरे ।

ऐक्य-पु० [स० ऐक्य] १ समता का भाव । २ एकत्व । ३ प्रेम, मेल । ४ अभेद । ५ जोड, योग ।

ऐड-पु० हठ, दुराग्रह ।

ऐडियो-वि० ऐसा ।

ऐडो-वि० (स्त्री० ऐडी) ऐसा, इस प्रकार का ।

ऐजन-अव्य० [अ०] तथा, और, तदैव ।

ऐजनगाळो-वि० (स्त्री० ऐजन-गाळी) नखराला, छैला ।

ऐठति, ऐठित-देखो 'ऐंठित' ।

ऐठ-पैठ-स्त्री० १ परिचय । २ विश्वास ३ इज्जत । ४ साख ।

ऐठो-देखो 'ऐंठो' ।

ऐढ़ो-पु० अवसर, मौका । --मेढ़ो-वि० तिरछा, टेढा ।

ऐण-१ देखो 'अयन' । २ देखो 'एण' । ३ देखो 'ऐन' । ४ देखो 'इण' ।

ऐतडो-देखो 'ऐतो' ।

ऐतराज-देखो 'एतराज' ।

ऐते-क्रि० वि० इतने मे ।

ऐतो-वि० इतना । (स्त्री० ऐती)

ऐथ, ऐथी-देखो 'अथ' ।

ऐदी (धी)-देखो 'अहदी' ।

ऐधुत-देखो 'अवधूत' ।

ऐधूळो-वि० (स्त्री० ऐधूळी) शौकीन, छैला । मस्त । वीर, बहादुर ।

ऐन-पु० [स० अयन] १ घर, मकान । २ नेत्र नयन । -वि० [अ०] १ ठीक, उपयुक्त । २ खास । ३ बिलकुल । ४ पूरा । ५ निश्चित ।

ऐनक-पु० आख का चश्मा ।

ऐनाण-पु० १ निशान चिह्न । २ देखो 'ऐलाण' ।

ऐफेण-पु० मादक वस्तु । अफीम ।

ऐब-पु० [अ०] १ अवगुण, बुराई, दोष । २ कलक । ३ बुरी आदत । ४ गुनाह, दोप । --गैब-क्रि०वि० अचानक । गुप्त रूप से । -वि० अट-सट । अनोखा ।

ऐबाकी-वि० १ जबरदस्त । २ विशाल । ३ प्रचड । ४ भयभीत करने वाला ।

ऐबात-देखो 'अहवात' ।

ऐबी, ऐबीलो–वि० (स्त्री० ऐबरण) १ अवगुणी, बुरा, दोषी। २ कलंकित। ३ बुरी आदत वाला। ४ गुनाहगार, दोषी। ५ दुष्ट। ६ विकलांग।

ऐम–क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे।

ऐमक–वि० [अ० अहमक] बेवकूफ, मूर्ख।

ऐमो–क्रि०वि० १ इधर, इस ओर। २ इस प्रकार।

ऐयार–वि० [अ० ऐय्यार] १ धूर्त, चालाक। २ छलिया, ठग। ३ मायावी, प्रपंची।

ऐयास (सी)–वि० [अ०] १ विषयी, भोगी। २ लंपट। –पु० भोग-विलास।

ऐरंगपत्तो–पु० स्त्रियों के कान का आभूषण।

ऐरड–देखो 'एरंड'।

ऐरण, ऐरन–देखो 'एरण'।

ऐरपत–देखो 'ऐरावत'।

एरसो–वि० (स्त्री० ऐरसी) ऐसा। –क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे।

ऐराक–पु० १ एक प्रकार की शराब। २ एक रण वाद्य विशेष। ३ घोडा। ४ अरब देशोत्पन्न घोडा। ५ अरब देश। ६ तलवार। –वि० १तेज,प्रचंड। २ भयंकर। ३ जबरदस्त। —राग–स्त्री० सिंधु राग का एक नाम।

ऐराकी–वि० १ ईराक देश का, ईराक देश संबंधी। २ अरबी। पु० घोडा। देखो 'ऐराक'।

ऐरापत (डो) ऐरापति–देखो 'ऐरावत'।

ऐराव–स्त्री० १ एक छोटी तोप। २ शतरंज की एक चाल।

ऐरावण–वि० [सं० ऐरावण] इंद्र का हाथी।

ऐरावत–पु० [सं० ऐरावत] १ इंद्र का हाथी। २ हाथी। ३ पूर्व दिशा का दिग्गज। ४ इंद्र धनुष। ५ बिजली से चमकता बादल। ६ बिजली। ७ प्रथम लघु व दो दीर्घ (पांच) मात्राओं का नाम। ८ पाताल निवासी नाग जाति का मुखिया। –वि० श्वेत, सफेद।

ऐरावता (ती)–स्त्री० [सं० ऐरावती] १ बिजली, विद्युत। २ हथिनी। ३ पंजाब की रावी नदी का नाम।

ऐरिसा–क्रि०वि० एतादृश, इस प्रकार।

ऐरीमैंसो–पु०यौ० जंगली भैंसा। बिना बधिया किया भैंसा।

ऐरू–पु० [सं० अहिरूप] सब जाति के सर्प। —भाजरू–पु० विषैले जंतु।

ऐळ–देखो 'इळा'।

ऐल–स्त्री० १ किंचित क्षति। २ साधारण जोर, दबाव या कष्ट। ३ हल्का झटका, धक्का। ४ प्रवाह, बाढ़।

ऐलकार–पु० [अ० अहलकार] कर्मचारी, सरकारी कर्मचारी।

ऐलके–क्रि० वि० इस समय, अभी।

ऐलची–पु० राजदूत।

ऐलमद–पु० किसी विभाग का प्रथम कर्मचारी।

ऐलांण, ऐलांन–पु० १ घोषणा। २ विज्ञापन, प्रकाशन। ३ निशान, चिह्न। ४ लक्षण, गुण।

ऐळा–देखो 'इळा'।

ऐळो–वि० (स्त्री० ऐळी) निष्फल, व्यर्थ।

ऐवविह–क्रि०वि० [सं० एवंविधि] इस प्रकार, इस तरह।

ऐवडउ (डो)–क्रि०वि० ऐसा। सर्व० इतना।

ऐवाकी–देखो 'ऐवाकी'।

ऐवात–देखो 'अहिवात'।

ऐवाळ–देखो 'एवाळ'।

ऐवाळियो–देखो 'एवाळियो'।

ऐवास–देखो 'आवास'।

ऐवेहे, ऐवेंहें–सर्व० वे।

ऐवो–सर्व० वह। –वि० ऐसा। (स्त्री० ऐवा, ऐवी)

ऐस–अव्य० [सं० ऐषम] इस वर्ष। इस मौके। –पु० [अ० ऐश] आराम, चैन। भोग-विलास। [सं० अश्व] घोडा।

ऐसांन–देखो 'अहसान'।

ऐसे–वि० इस प्रकार के। –क्रि०वि० इस तरह। इस प्रकार।

ऐसो, ऐह, ऐहड़ो–वि० ऐसा, इस तरह का। (स्त्री० ऐसी, ऐहडी, ऐही)

ऐहकार–देखो 'अहकार'।

ऐहढ़ो–वि० (स्त्री० ऐहढी) १ विकट, दुर्गम। २ भयानक। ३ देखो 'ऐढो'।

ऐहमकाई–स्त्री० मूर्खता। बेवकूफी।

ऐहरो–वि० ऐसा। (स्त्री० ऐहरी)

ऐहळ–देखो 'ऐल'।

ऐहलांण–देखो 'ऐलाण'।

ऐहळो–देखो 'ऐळो'। (स्त्री० ऐहळी)

ऐहवात–देखो 'अहिवात'।

ऐहवो–वि० ऐसा। (स्त्री० ऐहवी)

ऐहिक–वि० [सं०] लौकिक, सांसारिक।

ऐहो–वि० ऐसा। (स्त्री० ऐही)

—ओ—

ओ—देव नागरी वर्णमाला का नौंवा स्वर-वर्ण ।

ओं—अव्य० स्वीकृति सूचक ध्वनि । —पु० ओ३म् का सूक्ष्म रूप ।

ओकड़ो—पु० कोल्हू के बैल की आखें बाधने का चमड़े का उपकरण ।

ओकार—पु० [स०] परब्रह्म वाचक प्रणव मत्र —**नाथ**—पु० शिव का एक लिंग ।

ओगणौ (बौ)—देखो ओंगणौ (बौ) ।

ओबली—स्त्री० १ बैल गाडी के थाटे के अगल-बगल लगने वाले हुक । २ देखो 'आमली' ।

ओ—पु० [स०] १ परब्रह्म । २ विष्णु । ३ ब्रह्मा । ४ शेषनाग । ५ बलराम । —सर्व० वह । यह ।

ओअंहकार—देखो 'ओंकार' ।

ओअरी—देखो 'ओरी' ।

ओइचणौ (बौ)—देखो 'ओहीचणौ' (बौ) ।

ओईजाळौ—पु०[स० अवधिजाल] १ वस्तुओ का अव्यवस्थित ढेर । २ वह स्थान जहां पर अव्यवस्थित सामान का ढेर हो ।

ओईयाळौ—देखो 'ओयाळौ' । (स्त्री० ओईयाळी)

ओक—पु० [स० ओक] १ घर, मकान । २ छाया । ३ बचाव, आड । ४ शरण, आश्रय । ५ पक्षी । ६ शूद्र । ७ स्थान, जगह । ८ त्याग, परहेज । ९ नक्षत्र समूह । १० देखो 'वूक' ।

ओकखग—पु० वृक्ष ।

ओकड़—स्त्री० सप्तर्षि के अस्त होने के स्थान से चलने वाली वायु ।

ओकड़ो—देखो 'ऊकटौ' ।

ओकणौ (बौ)—क्रि० १ शस्त्र प्रहार करना । २ क्रूरता से देखना ।

ओकर—पु० १ ताना, व्यग । २ तू कहकर पुकारने का शब्द, अवज्ञा सूचक शब्द । ३ देखो 'ओखर' ।

ओकरणौ (बौ)—देखो 'ओखरणौ' (बौ) ।

ओकळ, ओकळी—स्त्री० [स० उत्कलिका] १ अधिक भूखा रहने या गर्मी मे फिरने से होने वाली उष्णता । २ हवा के कारण उड उड कर बनने वाली धूल की लबी ढेरिया ।

ओकली—स्त्री० [स० उत्कलिका] १ हेला, क्रीडा विशेष । २ लहर । ३ कली । ४ उत्कंठा, चिंता, विकलता ।

ओका—पु० १ देवी का खप्पर । २ देखो 'वूक' ।

ओकाई (ओकारी)—स्त्री० वमन, कै ।

ओकात—देखो 'औकात' ।

ओकीरो—पु० [म० अवकीट] गोबर-कीट ।

ओकूब—वि० बुद्धिमान ।

ओकेळ—देखो 'ओकळ' ।

ओखगी—देखो 'ओखगी' ।

ओखंभणौ (बौ)—क्रि० चलायमान करना, चलाना ।

ओखड—पु० चांक मे अन्न राशि का उतरना, सीमा रेखा टूटना ।

ओखड़मल—देखो 'अखाडमल' ।

ओखड़ो (डौ)—पु० सडा हुआ नारियल या गिरी ।

ओखण—पु० अनाज कूटने का मूसल, मस्तूल ।

ओखद (दि, दी), **ओखध**, **ओखधी**—स्त्री० [स० औषधि] १ औषधि, दवा । २ जडी-बूटी । —**अधीस**—पु० चन्द्रमा । —**पत, पति**—पु० चन्द्रमा ।

ओखर—पु० मल, विष्टा, गू ।

ओखराईयौ—पु० (स्त्री० ओखराई) वह पशु जिसे विष्टा खाने की आदत हो ।

ओखरी—स्त्री० ओखली, ऊखल ।

ओखळ—पु० १ प्रहार, वार । २ देखो 'ऊखळ' ।

ओखंळणौ—पु० [स० अपस्खलनम्] अपस्खलन, पतन, गिरावट ।

ओखळणौ (बौ)—क्रि० १ गिरना, फिसलना । २ पथ भ्रष्ट होना । ३ उत्तेजित होना । ४ ठोकर खाना । ५ प्रहार करना या होना । ६ मारना ।

ओखळमेळौ—देखो 'उखळमेळौ' ।

ओखळ, ओखळी— १ देखो 'ओकळी' २ देखो 'ऊखळ' ।

ओखाण (णौ)—देखो 'उखाणौ' ।

ओखागिर—पु० गिरि-कदरा । पहाडी गुफा ।

ओखापुरी (मडळ)—पु० द्वारिका का एक नाम ।

ओखाळ—पु० [स० ओखाल] १ युद्ध, रण । २ विरेचन ।

ओखाळमल—देखो 'अखाडमल' ।

ओखिद—देखो 'ओखद' ।

ओखौ—वि०(स्त्री० ओखी) १ अटपटा । २ भद्दा । ३ अनुचित । ४ व्यर्थ का निन्दक । ५ कठिन । ६ भयकर, विकट । ७ खराब, बुरा ।

ओग—स्त्री० १ ताप, आच । २ जलन, दाह ।

ओगड़-दोगड—वि० अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त ।

ओगण—देखो 'अवगुण' ।

ओगणगारो—वि० १ अवगुणी, दोष पूर्ण, दुर्गुण युक्त । २ कृतघ्न ।

ओगणियौ–देखो 'ओगनियौ'।
ओगणी, ओगणौ–वि० १ कृतघ्न। २ नीच।
ओगणीस–देखो 'उगणीस'।
ओगणौ (बौ)–क्रि० तग करना। घर्षण करना।
ओगत–स्त्री० अधोगति, बुरी गति। अगति।
ओगतियौ–वि० अधोगति को प्राप्त।
ओगनियौ–पु० स्त्रियो के कान का आभूषण।
ओगम–देखो 'उगम'।
ओगळी–स्त्री० बाजरी के कटे पौधो का ढेर।
ओगा–स्त्री० अपामार्ग का पौधा।
ओगाजणौ (बौ)–क्रि० गरजना।
ओगाढ–देखो 'अवगाढ'।
ओगाळ–पु० १ पशुओ की जुगाली। २ ताना, व्यग। ३ कलक। ४ अपयश।
ओगाळणौ (बौ)–क्रि० १ पशुओ का जुगाली करना। २ वमन करना। ३ कै करना।
ओगाळ-बध–पु० चौपाये पशु का एक रोग जिसमे वह जुगाली करना बदकर देता है।
ओगाळौ–पु० पशुओ द्वारा चरने के पश्चात छोडा हुआ चारे का अवशिष्ट भाग।
ओगुण–पु० अवगुण, दोष। —गारौ='ओगणगारौ'।
ओघ–पु० [स०ओघ] १ समूह, ढेर। २ बाढ। ३ जल प्रवाह या धार। ४ बहाव। ५ सतोष–स्त्री० ६ गर्मी, ताप, आच।
ओघउ–देखो 'ओघौ'।
ओघड–पु० १ जोगियो की एक शाखा। २ परब्रह्म ज्ञान प्राप्त सन्यासी –वि० निकृष्ट, घृणित।
ओघट–स्त्री० १ बुरी घटना। २ विपत्ति, सकट। ३ मृत्यु। ४ विकट स्थान। ५ दुर्गम-पथ। वि०–१ अघटित। २ विकट, भयकर। ३ अद्भुत, विचित्र। –घाट–पु० दुर्गम-पथ। –वि० भयकर। –स्त्री० हिचकिचाहट।
ओघनियौ–देखो 'ओगनियौ'।
ओघसणौ (बौ)–क्रि०[स० अवघर्षण] १ खुजली मिटाने के लिये किसी वस्तु से शरीर को रगडना। २ रगडना, घिसना। ३ जोश मे भरना।
ओघौ–पु० [स ओघ] जैन साधुओ के हाथ मे रहने का चवर-नुमा झाडू।
ओड– क्रि० वि० ओर तरफ। –पार–क्रि० वि० चारो ओर। वि० समान, बराबर।
ओडा–क्रि०वि० ऐसे, इस प्रकार। वि० ऐसा।
ओड़ियाल, ओडी–पु० १ ऊट के ईडर मे होने वाली ग्रथि। २ इस रोग से पीडित ऊट।
ओडू–पु० कुऐ पर बना कोठा, कुण्ड।
ओडे–वि० समान, तुल्य, सदृश।
ओडौ–पु० १ पनाह स्थान,आड। २ देखो 'ओहडौ'।
ओचक्कणौ (बौ)–क्रि० १ चौंकना। २ उचकना। ३ लपकना।
ओचरणौ (बौ)–क्रि० उच्चारण करना, बोलना।
ओचारणौ (बौ)–क्रि० मनोगत भावो मे परिवर्तन होना।
ओछडणौ (बौ)–क्रि० त्यागना छोडना।
ओछ–स्त्री० लघुता। २ कमी। ३ तुच्छता। ४ क्षुद्रता। ५ तुच्छ भावना।
ओछड, ओछउ–देखो 'ओछौ'।
ओछणौ–वि० तुच्छ या ओछी भावना वाला।
ओछणौ (बौ)–क्रि० कम होना, घट जाना।
ओछव (व)–देखो 'उत्सव'।
ओछाड–देखो 'ओछाड'।
ओछाड़णौ (बौ)–देखो 'मोछाडणौ' (बौ)।
ओछाण–पु० प्रहार के लिए शस्त्र उठाने का भाव।
ओछाणौ (बौ)–देखो 'ओछाणौ' (बौ)।
ओछापण(पणौ)–पु० १ ओछापन, क्षुद्रता, तुच्छता। २ छोटापन, लघुता। ३ कमी। ४ नीचता।
ओछाबोलौ–वि० १ अपशब्द बोलने वाला। २ असभ्य।
ओछाळौ–देखो 'उछाळौ'।
ओछाह–पु० १ आच्छादन। २ देखो 'उत्साह'। ३ देखो 'उत्सव'।
ओछाहणौ (बौ)–क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना। २ उत्सव करना, हर्ष करना।
ओछीजणौ (बौ)–क्रि० कम पडना, घटना। कम होना। सिकुडना।
ओछीढाण–स्त्री० ऊट की एक चाल विशेष।
ओछीनजर–स्त्री०यौ० १ अदूरदर्शिता। २ न्यून या हेय भावना। ३ दूसरे के प्रति असम्मान का दृष्टिकोण।
ओछ्ठ ओछेरडू, ओछेरडौ, ओछौ–वि० (स्त्री० ओछी) १ जो गहरा न हो, छिछला। २ शक्तिहीन, कमजोर, निर्बल। ३ तुच्छ, ओछा। ४ क्षुद्र, नीच। ५ ठिगना, बौना। ६ जो लबा न हो। ७ छोटा लघु। ८ अल्प कम। ९ अपूर्ण। १० सूक्ष्म। ११ छोटी भावना वाला। —मोछौ–वि० काम चलाऊ। जैसा-तैसा।
ओज–पु० [स० ओजस्] १ बल, पराक्रम शक्ति, प्राण बल। २ कौशल। ३ आभा, कान्ति, दीप्ति। ४ काव्यगुण विशेष। ५ जल। ६ उजाला, प्रकाश। ७ शरीरस्थ रसो का सार भाग। ८ पेट। ९ मृत पशुओ के पेट का मैला। १० उष्णता, गर्मी। -वि०विषम। ऊचा। –आहार–पु० एक

जन्म समाप्त करने के बाद जन्मातर को धारण करने के समय ग्रहण किया जाने वाला आहार।

ओजक–स्त्री० १ घबराहट, बेचैनी। २ झिझक। ३ चौकने की क्रिया या भाव। –वि० चौकन्ना।

ओजकणौ (बौ)–क्रि० १ चौकना, चमकना। २ घबराना, बेचैन होना। ३ कापना। ४ भयभीत होना।

ओजकौ (गौ)–पु० १ रात्रि भर का जागरण। २ इस जागरण से उत्पन्न थकावट।

ओजग–देखो 'ओजक'।

ओजगौ–पु० रात्रि मे जागरण करने वाला व्यक्ति। –स्त्री० रात्रि के जागरण की थकावट।

ओजणौ (बौ)–क्रि० १ जचना, फबना, शोभित होना। २ देखो 'ओदणौ' (बौ)।

ओजर (रौ)–पु० [स० उदर] पेट।

ओजरी–स्त्री० [स० उदर + रा प्र ई] १ आमाशय। २ पेट। ३ पेट की थैली।

ओजळा–पु० विना सिंचाई से अकुरित होने वाले गेहूँ या जौ।

ओजागणौ (बौ)–क्रि० १ रात भर जगना। जागरण करना। २ नीद न लेना।

ओजास–पु० १ अपयश, निंदा। २ देखो 'उजास'।

ओजासणौ (बौ)–क्रि० अपयश होना। देखो 'उजासणौ' (बौ)।

ओजासो–देखो 'उजासो'।

ओजियाळौ–देखो 'ओईजाळौ'।

ओजींगणी–स्त्री० पतली लकडी जिसको जलाकर दीपक का काम लिया जाता है।

ओजू (जू)–क्रि०वि० अब भी। फिर, पुन। अभी तक। दुबारा।

ओजु–पु० [अ० वुजू] नमाज पढने पूर्व शुद्धि के लिए हाथ पाव धोने की क्रिया।

ओजोळी–स्त्री० बढई का एक औजार।

ओजौ–पु० बहाना, मिस।

ओझ–देखो 'ओज'।

ओझक–देखो 'ओजक'।

ओझकणौ (बौ)–देखो 'ओजकणौ' (बौ)।

ओझकौ–पु० १ स्मृति, स्मरण। २ देखो 'ओजकौ'।

ओझख–स्त्री० लचक।

ओझड (ड)–वि० १ भयकर, प्रबल। २ अपार, असख्य, अथाह। –पु० १ प्रहार, चोट। २ देखो 'ओजर'।

ओझडी–देखो 'ओजरी'।

ओझडो–पु० १ झटका, धक्का। २ देखो 'ओजरी'।

ओझण (णु, णौ)–पु० १ कन्या की विदाई के समय दिया जाने वाला सामान। २ दहेज। ३ गौना।

ओझर–देखो 'ओजर'।

ओझरी–देखो 'ओजरी'।

ओझळ–वि० [स० अवरुन्धन] १ अदृश्य, लुप्त। २ गुप्त। ३ दूर। ४ छुपा हुआ। –पु० ओट, आड।

ओझळणौ (बौ)–क्रि० १ कूदना, फादना। २ चौंकना। ३ मिटना, नष्ट होना। ४ अदृश्य होना। ५ छुपना।

ओझळा–स्त्री० अग्नि की लपट। आग।

ओझाड–१ देखो 'औझाड'। २ देखो 'उजाड'।

ओझाडणौ (बौ)–देखो 'औझाडणौ' (बौ)।

ओझाड़ो–पु० १ गुस्से मे डाटना। २ प्रताडना। ३ झिडकी। ४ धक्का, झटका।

ओझाट–देखो 'ओझाड'।

ओझाळ–देखो 'औझाळ'।

ओझाळौ–वि० (स्त्री० ओझाळी) १ तेजस्वी। २ देखो 'औझाळ'।

ओझावौ–पु० झलक। (स्त्री० ओझाळी)

ओझीसाळौ–देखो 'ओईजाळौ'।

ओझौ–पु० १ खतरा। २ बहाना। ३ उपाध्याय।

ओट–स्त्री० १ आड, रोक। २ शरण, आश्रय। ३ सहारा, आधार। ४ बाधा, व्यवधान। ५ दोष। ६ किनारे की गोट। ७ घास-फूस।

ओटण, ओटणी–स्त्री० १ चरखे का एक उपकरण। २ ओटाना क्रिया। ३ राख या मिट्टी से आग को दबाने की क्रिया। ४ वस्त्र का छोर जरासा मोड कर की जाने वाली सिलाई।

ओटणौ (बौ)–क्रि० [स० आवर्तन] १ रूई और बिनौले अलग अलग करना। २ पुनरुक्ति करना। ३ चूर्ण बनाना, पीसना। ४ कष्ट देना। ५ वस्त्र के छोर को किंचित मोड कर सिलाई करना। ६ राख या धूल के नीचे आग दबाना। ७ आच पर उबाल कर गाढ़ा करना। ८ पैर के नीचे दबाना। ९ ओढना। १० अधिकार मे करना।

ओटपौ–वि० (स्त्री० ओटपी) विचित्र, अद्भुत।

ओटरौ–वि० शरणागत।

ओटवणौ (बौ)–देखो 'ओटणौ' (बौ)।

ओटवौ–देखो 'ओटपौ'।

ओटाळ–देखो 'ओटाळ'।

ओटि (टी)–१ देखो 'ओट'। २ देखो 'ओठी'।

ओटीजट–देखो 'ओठीजट'।

ओटो–पु० १ जलाशय का वह नाला जिसमे से आवश्यकता से अधिक पानी आने पर स्वत बाहर निकल जाता है। मोरा। २ ऊचा स्थान। ३ देखो 'ओठौ'।

ओठंगो, ओठंभ, ओठभौ, ओठण, (ठम)–पु० [स० अवष्टम्भ] १ सहारा, अटकन। २ आश्रय। ३ महायक। ४ रक्षक। ५ रक्षा का स्थान।

ओठ–पु० [स० ओष्ठ] अधर, ओठ। देखो 'ओट'।

ओठाणौ (बौ)–देखो 'ओठावणौ' (बौ)।

ओठार (रू)–पु० ऊट।

ओठावणौ (बौ)–क्रि० १ ऐंठा करना, ऐंठाना। २ दृष्टात देना। ३ देखो 'उठावणौ' (बौ)।

ओठियौ, ओठी (ड़ी)–पु० [स० औष्ट्रिक] १ ऊट सवार। २ ऊट पर सरकारी डाक आदि ले जाने वाला व्यक्ति। ३ ऊटो वाला डाकू।

ओठीजट–स्त्री० ऊट के बाल। ऊट की जटा।

ओठीपो–पु० १ लूट का माल। २ ओठी। ३ ओठी के ऊट का पालन पोपण।

ओठी-बाळदौ–पु०यौ० १ ऊट व बैल की जोड़ी। २ अनमेळ, असमानता। ३ अनमेल कार्य।

ओठैम–देखो 'ओठभ'।

ओठै–क्रि०वि० वहा। ओट मे।

ओठौ–पु० १ आड, ओट। २ रक्षा, बचाव। ३ आश्रय, शरण। ४ सहारा। ५ विषय। ६ किसी देवता का छोटा चबूतरा। ७ भाव। ८ अभिप्राय। ९ मौका, अवसर। १० ऊचा स्थान। ११ दृष्टान्त। १२ ऊट। १३ मादा ऊट का दूध। –वि० विपरीत, विरुद्ध।

ओडंडी–वि० जो दडित न किया जाय। –स्त्री० मुष्टिका।

ओडंडीस–वि० [म० ऊददडीश] बलवान, जबरदस्त।

ओड–पु० (स्त्री० ओडण, ओडणी) १ कूऐ पर बना घास-फूस का छप्पर। २ तालाब की मिट्टी निकालने व पत्थर तोडने का कार्य करने वाली जाति। ३ उक्त जाति का व्यक्ति। –क्रि०वि० ओर, तरफ। –वि० समान, तुल्य।

ओडक–स्त्री० १ भेड की ऋतुमति होने की अवस्था। २ इस अवस्था की भेड।

ओडकआवणौ (बौ)–क्रि० भेड का ऋतुमति होना।

ओडण(णि, णी)–स्त्री० १ ढाल। २ निधि, खजाना। ३ आलय, घर। ४ देखो 'ओढण'। ५ ओड जाति की स्त्री।

ओडणी–देखो 'ओढ़णी'।

ओडणौ (बौ)–क्रि० १ सहन करना। २ झेलना। ३ स्पर्श करना छूना ४ हाथ फैलाना ५ स्पर्धा करना, होड लगाना ६ रथ आदि मे बैलो को जोडना। ७ सम्भालना। ८ धारण करना। उठालेना, उठाना। देखो 'ओढणौ'(बौ)

ओडव–स्त्री० १ ढाल, फलक। २ एक राग विशेष।

ओडवण–देखो 'ओडण'।

ओडवणौ (बौ) ओडाणौ (बौ)–१ देखो 'ओढणौ'(बौ) २ देखो 'ओडणौ' (बौ)।

ओडाळणौ (बौ)–क्रि० १ कपाट देना, थोड़ा बद करना। २ कब्जे मे करना।

ओडावणी (नी)–स्त्री० विशेष अवसरो पर कन्या के पिता द्वारा, कन्या व उसके पति के परिवार को दिया जाने वाला वस्त्राभूषण।

ओडावणौ (बौ)–देखो 'ओढाणौ' (बौ)

ओडियाळ (ओडी)–देखो 'ओडियाळ'।

ओडियौ, ओडी–स्त्री०१ वास की खपचियो की छोटी-बडी डलिया। टोकरी। २ कूऐ पर बनी घास की झोपडी। क्रि०वि० १ ओर, तरफ। २ देखो 'ओडौ'।

ओडू–देखो 'ओड़ू'।

ओडे, ओडै–क्रि०वि० शरण व आश्रय मे। –वि० समान, बराबर।

ओडौ–पु० १ टोकरा, खाचा। २ आश्रय, पनाह, शरण।

ओढण–स्त्री० १ ओढने की क्रिया या भाव। २ ओढ़ने का वस्त्र। ३ रक्षक। ४ देखो 'ओडण'।

ओढणियौ (णौ)–देखो 'ओढणौ'।

ओढणी–१ चादर। उपरैनी। २ देखो 'ओडणी'।

ओढणौ–पु० स्त्रियो के शिर (शरीर) पर धारण करने का वस्त्र। –वि० धारण करने वाला।

ओढणौ (बौ)–क्रि० शरीर को वस्त्र से ढकना। २ पहनना धारण करना। ३ आवेष्टित करना। ४ रक्षा करना। ५ जिम्मेदारी लेना।

ओढवण–वि० १ धारण करने वाला। २ देखो 'ओडण'।

ओढाणौ (बौ), ओढावणौ(बौ)–१ शरीर को वस्त्र से ढकवाना। २ पहिनाना, धारण कराना। ३ आवेष्टित कराना। ४ रक्षा कराना। ५ जिम्मेदारी डालना या उत्तरदायित्व लेना या देना।

ओढौ–वि० (स्त्री० ओढी) १ विकट। २ टेढा। ३ भयकर, डरावना। –पु० १ मौका, अवसर। २ देखो 'ओडौ'।

ओण–पु० [सं० एण] १ कृष्णमृग। २ हरिण। ३ देखो 'ओरण'। ४ देखो 'ओयण'।

ओतपोत–वि० १ बहुत उलझा हुआ। २ गु था हुआ। ३ फैला हुआ, व्याप्त। ४ भरा हुआ। ५ मना हुआ।

ओतार–१ देखो 'अवतार'। २ देखो 'उतारौ'।

ओतारौ–१ देखो 'उतारौ'। २ देखो 'अवतार'।

ओताळ–देखो 'उतावळ'।
ओताळिणौ (बौ)–क्रि० प्रहार करना, आघात करना।
ओतु–पु० [सं०] विलाव, विल्ली।
ओतोळणौ (बौ), ओतोळिणौ (बौ)–क्रि० १ झोकना, डालना। २ प्रहार करना, वार करना।
ओथ, ओयर्क–क्रि०वि० वहा।
ओथणौ (बौ)–क्रि०वि० [स० अस्तमन] १ अस्त होना। अवसान होना। २ बुरे दिन आना। [स० असुत्थ] ३ उकताना, ऊवना।
ओथिय, ओथी, ओथै–क्रि०वि० वहा, उस जगह।
ओद–स्त्री० १ वश, खानदान। २ औलाद।
ओदक–वि० १ भयभीत, डरा हुआ। २ चौकन्ना। –पु० डर, भय, आतक।
ओदकणौ (बौ)–देखो 'ओद्रकणौ' (वौ)।
ओदण (धण)–पु० गाडी के तख्ते के नीचे लगी, लंवी पूरी दो मोटी लकडिया।
ओवद, ओवध–पु० [स० उदधि] समुद्र।
ओदन–पु० [स०] १ अन्न। २ भोजन। ३ खाद्य पदार्थ। ४ एक प्रकार का चावल। ५ देखो 'ओदण'।
ओदनिक–पु० [स० औदनिक] रसोईया, पाक-शास्त्री।
ओदसा–स्त्री० [स० अपदशा] १ बुरी दशा या हालत। २ फूहड कुलक्षणी स्त्री।
ओदावार, (ओहदेवार)–पु० [अ० ओहद + फा. दार] पदाधिकारी।
ओदायत–पु० [अ० ओहद + रा प्र. आयत] पदाधिकारी।
ओदी–स्त्री० १ शिकार के लिए बैठने का स्थान। २ मोर्चा। ३ सेंध। ४ भुई आवला का पौधा या फल।
ओदीजणौ (बौ)–क्रि० अधिक आच व पानी की कमी के कारण, पकने वाले पदार्थ का बर्तन के पेंदे मे चिपककर जल जाना। वेस्वाद हो जाना, विकृत होना।
ओदौ–पु० (स्त्री० ओदी) १ तीव्र आच के कारण पकते समय पात्र के पेंदे मे चिपक कर जला व जले की बदबू वाला खाद्य पदार्थ। २ देखो 'ओघौ'।
ओद्यम–देखो 'उद्यम'।
ओद्रकणौ (वौ)–क्रि०वि० १ डरना, भयभीत होना। २ चौंकना। ३ झिझकना।
ओद्रक, ओद्रकौ, ओद्रव, ओद्राव, ओद्रावौ–पु० १ डर, भय, आतक। २ झिझक। ३ धाक। ४ प्रभाव।
ओद्रास, ओद्राह–पु० १ सहार, नाश। २ आतक।
ओध–१ देखो 'ओद'। २ देखो 'ओदण'।
ओधकणौ (बौ)–देखो 'ओद्रकणौ' (वौ)।
ओधण–देखो 'ओदण'।
ओधवार, ओधवाळ–वि० उत्तम वंश का, कुलीन।
ओधादार–देखो 'ओदादार'।
ओधायत–देखो 'ओदायत'।
ओधार, ओधारौ–१ देखो 'उधार'। २ देखो 'उधारौ'।
ओधि (धी)–वि० १ धूर्त, चालाक। २ वशज। ३ देखो 'ओद'। ४ देखो 'अवधि'। ५ देखो 'अवध'।
ओधूळ, ओधूळौ–पु० १ आनद, मौज, मस्ती। २ देखो 'ऐधूळौ'।
ओधूळणौ (बौ)–क्रि० धूलि से आच्छादित होना या करना। (स्त्री० ओधूळी)
ओधेदार–देखो 'आदादार'।
ओधौ–पु० १ पद। २ अधिकार। ३ दर्जा। ४ देखो 'ओदौ'।
ओनाड़ (ड़ौ)–देखो 'अनड'।
ओप (ण)–स्त्री० १ काति, दीप्ति, चमक। २ शोभा छबि। ४ रंग-रोगन। ४ उपमा। ५ जिरह, कवच। –वि० समान, अनुरूप। शोभायमान। —**ची**–पु० कवच धारी योद्धा। —**धार**–पु० दीपक।
ओपणत–पु० ऊपर का होठ।
ओपणाणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना। २ धार पैनी करना। ३ उज्ज्वल करना।
ओपणी (णौ)–स्त्री० १ सोने पर घिसाई करने का पत्थर। २ स्वर्णकारो का लोहे का एक लबा समतल नौकार खड (औजार) जो काठ की डडी मे कसा जाता है। ३ शस्त्र पैना करने की सिल्ली, शान। ४ चमक, काति। ५ शोभा। ६ कवच, जिरह।
ओपणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, झलकना। २ शोभित होना, फबना। ३ उज्ज्वल करना, साफ करना। ४ धार देना, पैना करना।
ओपत–स्त्री० [स० उत्पत्ति] १ आय, आमदनी। २ उत्पादन। ३ धन, सम्पत्ति। ४ उत्पत्ति।
ओपतौ–वि० (स्त्री० ओपती) १ शोभित, फबती। २ उपयुक्त। ३ देखो 'ओपत'।
ओपन–स्त्री० वहुमूल्य नग वाली अगूठी।
ओपम–पु० १ जेवर, आभूषण। २ उपमा। –वि० १ सुन्दर, अनुपम। २ समान, सदृश।
ओपमा–देखो 'उपमा'।
ओपमाणौ (बौ)–क्रि० १ उपमा देना। २ प्रशसा करना।
ओपर–देखो 'ऊपर'।
ओपरौ (हरौ)–वि० (स्त्री० ओपरी) १ अपरिचित, अजनबी। २ नया। ३ व्यगात्मक, टेढा। ४ भयकर, भयावह।
ओपवणत–पु० ओठ, ओष्ठ।
ओपवणौ (बौ)–देखो 'ओपणौ' (वौ)।

ओपवान–वि० शोभायमान, शोभित ।

ओपाणौ (बौ), ओपावणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना, झलकाना । २ शोभायमान करना । ३ स्वच्छ व उज्ज्वल करना । ४ सजाना ।

ओफ–अव्य० पीडा या खेद सूचक ध्वनि ।

ओबरडी, ओबरी–पु० १ पक्की कोठरी, ओरा । २ पीजरा ।

ओबासणौ (बौ)–क्रि० जमुहाई लेना, सुस्ताना ।

ओबासी–देखो 'उबासी' ।

ओम (ओ३म) ओमकार–पु० [स०] १ प्रणव मत्र, ओंकार । २ ईश्वर, ब्रह्म ।

ओमगोम–वि० १ गुप्त । २ अचानक ।

ओमजी-मोमजी-पु० साधारण व्यक्ति, अमुक, फला ।

ओमाहणौ (बौ)–देखो 'उमाहणौ' (बौ) ।

ओमाहौ–देखो 'उमावौ' ।

ओय–देखो 'ओह' ।

ओयडौ–पु० १ कृषको द्वारा, जागीरदार या उसके प्रतिनिधियो को खलिहान मे दिया जाने वाला भोज । २ सरकारी कार्य मे गाव मे आने वाले कर्मचारियो को दिया जाने वाला भोजन । ३ गाव वालो की तरफ से ग्वाले को दिया जाने वाला भोजन ।

ओयण, ओयणु, ओयणौ–पु० [स० उपवन] १ शूद्र । २ उपवन । ३ पैर, चरण । ४ देखो 'ओरण' ।

ओयाळौ–वि० [स० आज्ञापालक] स्त्री० ओयाळी (दबकर) रहने वाला, दब्बू ।

ओर–पु० १ नियत स्थान से अतिरिक्त शेष विस्तार । २ दिशा । ३ पक्ष । ४ किनारा, छोर । ५ आरभ, आदि । ६ स्वीकार । –क्रि०वि० १ तरफ । २ देखो 'ओर' ।

ओरडियो (ओरडो)–वि० १ अन्य, दूसरा । २ देखो 'ओरौ' ।

ओरडी–१ देखो 'ओरी' । २ देखो 'ओरौ' ।

ओरठै–क्रि० वि० अन्य स्थान पर, दूसरी जगह ।

ओरण–पु० [स० उपारण्य] किसी देवस्थान या देवालय के आस-पास की गोचर-भूमि जहा की लकडी काटना वर्जित होता है ।

ओरणौ–पु० १ स्त्रियो की ओढनी, लूगडी । २ अनाज बोने की बीजनी । ३ अनाज बीजने का ढग ।

ओरणौ (बौ), ओवरणौ (बौ)–क्रि० १ वर्षा शुरू होना । २ वृष्टि होना, बरसना । ३ देखो 'ऊरणौ' (बौ) ।

ओरबसौ–देखो 'उरबसी' ।

ओरस–स्त्री० १ लज्जा, शर्म । २ पश्चाताप । खेद । ३ देखो 'ओरीसौ' । ४ देखो 'ओरम' ।

ओरसियौ–देखो 'ओरीसौ' ।

ओरिया–क्रि०वि० इस ओर, इधर ।

ओरियौ–देखो 'ओरौ' ।

ओरी–स्त्री० १ हल्की चेचक का रोग । २ मकान मे अन्दर की ओर का छोटा कक्ष ।

ओरीसौ–पु० [स० अवघर्ष] केसर-चंदन घिसने का छोटा चकला (पत्थर) ।

ओरु, ओरु, (रू)–क्रि० वि० पुन दुबारा ।

ओरूणौ–पु० वर्षा के अभाव मे कूऐ के पानी से की जाने वाली साधारण सिंचाई ।

ओरेम–पु० केवट ।

ओरौ–पु० मकान का भीतरी कक्ष । स्टोर ।

ओळग, ओळगणौ, ओळगू–पु० १ परिचय, पहिचान । २ कन्या या वधू के लिये बुलावा । ३ पृथकता, दूरी । प्रवास । ४ ढोली गायक । –वि० (स्त्री० ओळगाणी) वियोगी । पृथक, दूर ।

ओळंदी, (ओळूदी)–स्त्री० [सं० उपनदिनी] नव वधू के साथ जाने वाली लडकी या स्त्री । सखी ।

ओळंबौ, (भ, भौ)–देखो 'ओळबौ' ।

ओळ–पु० [स० ओलल] १ जमानती व्यक्ति । [स० अवलि] २ हल की रेखा, सीता । ३ पक्ति, लकीर । ४ पैतृक परपरा, सस्कार, गुण । ५ लिखावट । –वि० सामान, तुल्य । –क्रि०वि० तरह से, भाति ।

ओलइ (इ)–देखो 'ओलै' ।

ओळक्खणौ (बौ)–देखो 'ओळखणौ' (बौ) ।

ओळख, ओळखण, (णा, णी)–स्त्री० जानकारी, ज्ञान । देखो 'ओळखाण' ।

ओळखणौ–वि० प्रसिद्ध, विख्यात । (स्त्री० ओळखणी)

ओळखणौ (बौ)–क्रि० १ पहिचानना, जानना । २ शिनाख्त करना ।

ओळखाण (णत)–स्त्री० १ परिचय, पहिचान । २ प्रसिद्धि । ३ पहिचान के चिह्न, सकेत । ४ ज्ञान । –वि० १ परिचित । २ देखो 'ओलखण' ।

ओळखाणौ (बौ) ओळखावणौ (बौ) –क्रि० १ परिचय कराना, पहिचान कराना । २ शिनाख्त कराना ।

ओळख्खणौ (बौ)–देखो 'ओळखणौ' (बौ) ।

ओळग (गण)–स्त्री० १ स्मृति, याद । २ कीर्ति, यश । ३ स्तुति । ४ सेवा । ५ विदेश । ६ प्रवास । –क्रि०वि० दूर, अलग । –वि० कीर्ति गाने वाला ।

ओळगणी (गाणी)–स्त्री० वियोगिनी ।

ओळगणौ (बौ)–क्रि० १ यशोगान करना । २ गायन करना । ३ स्तुति करना । ४ यात्रा करना, प्रवास करना ।

ओळगि (गी), ओळगियौ–वि० १ प्रवासी । २ देखो 'ओळग' ।

ओळगुवौ, ओळगू–पु० १ वशावली गाने वाला । २ कीर्ति गाने वाला । ३ स्तुति करने वाला । ३ प्रवासी ।
ओळग्ग–देखो 'ओळग' ।
ओळग्गणौ (बौ)–देखो 'ओळगणौ' (बौ) ।
ओलज, (ज्ज)–स्त्री० लज्जा, शर्म । लिहाज ।
ओलण, ओलणियौ–पु० रोटी के साथ लगा कर खाया जाने वाला पदार्थ ।
ओलणौ (बौ)–क्रि० १ मिलाना, मिश्रित करना । २ अवलेह की तरह बनाना । ३ भिगोना । तर करना । ४ छिपाना ।
ओळनाल–स्त्री० वह झिल्ली जिसमे बधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है जरायु ।
ओळबौ (भौ, मौ)–पु० [सं० उपालभ] १ उपालभ, उलाहना । २ शिकायत । ३ कलक, बदनामी । ४ कसूर । ५ विलब ।
ओळमोळा–वि० समान, तुल्य ।
ओलरणौ (बौ)–क्रि० १ झुकना । २ झुककर बरसना । ३ आच्छादित होना । ४ तरग या लहर उठना । ५ मडराना उमडना ।
ओलवणौ (बौ)–देखो 'ओलरणौ' (बौ) ।
ओलस–वि० उमडा हुआ ।
ओलाडणौ (बौ)–क्रि० उल्लघन करना । त्यागना ।
ओळा, ओला–क्रि०वि० [सं० उपल] १ वर्षा मे गिरने वाले हिम कण । २ बिनौला । ३ मिश्री या दाणा शक्कर के लड्डू । ४ वज्र । ५ आश्रय, सहारा । –क्रि०वि० इधर, इस ओर । —**ओळ**–वि० सब, समस्त । —**दोळा, दौळा**–क्रि०वि० आस-पास, चारो ओर, इर्द-गिर्द । —**मोळा**–वि० समान, बराबर । –पु० भ्रम ।
ओलाटणौ (बौ)–क्रि० १ लौटना, वापस आना । २ लुटना, लोट-पोट करना ।
ओलाणौ–पु० बहाना ।
ओलाणौ (बौ)–क्रि० १ मिलवाना, मिश्रित कराना । २ अवलेह बनवाना । ३ तर कराना ।
ओलाद–देखो 'औलाद' ।
ओलाळ–स्त्री० १ नन्ही बूदो की मामूली वर्षा । २ देखो 'उलाळ' ।
ओळावौ–पु० बहाना, मिस ।
ओळि–देखो 'ओळी' ।
ओळिया–पु० गेहूं बोने का एक ढग ।
ओळियौ–पु० १ लिखने का लम्बा पत्र चिट्ठी पर्चा । २ खत । ३ गिरवी रहने वाला व्यक्ति ।
ओलियौ–देखो 'अवलियौ' ।
ओलींचणौ (बौ)–देखो 'उलीचणौ' (बौ)। देखो 'ओहीचणौ' (बौ) ।
ओलींझणौ (बौ)–क्रि० विचार मे पडना, उलझना ।
ओलींडणौ (बौ)–क्रि० १ ऊपर चढना । २ उल्लघन करना । लाघना । ३ पशुओ का सभोग करना ।
ओलींदी–देखो 'ओलदी' ।
ओळी–स्त्री० [सं० अवली] १ पक्ति, रेखा । २ लिखावट । ३ हल की सीता । ४ कतार ।—**दोळी**–क्रि० वि० आस-पास । चारो ओर ।
ओली, ओलीकानी–क्रि० वि० इधर, इस ओर । नजदीक ।
ओलीझणौ (बौ)–क्रि० विचार करना, विचार मे पडना ।
ओळुंवौ (भौ), ओळूंवौ–पु० १ बिच्छू के डक लगाने से होने वाला दर्द । २ देखो 'ओळवौ' ।
ओळूं (डी), ओळू (डी)–स्त्री० [सं० अवलय] १ याद, स्मृति । २ प्रिय की याद, वियोग । ३ इस वियोग मे गाया जाने वाला गीत ।
ओळूदी–देखो 'ओळदी' ।
ओळूदोळूं–देखो 'ओळादोळा' ।
ओळे, ओले–क्रि० वि० आड या पर्दे मे—**दोळे**– क्रि० वि० चारो ओर । आस-पास ।
ओलेडौ–वि० (स्त्री० ओलेडी) १ जूठा । २ जगह-जगह जूठा करने वाला । ३ मुह मारने वाला ।
ओळै, ओलै–क्रि० वि० १ आड या ओट मे । २ परदे मे । ३ शरण मे । ४ छुप कर । ५ इस ओर इधर । ६ गुप्त रूप से । —**दोळै-दोळै**–क्रि० वि० आस-पास । अगल-बगल । चारो ओर ।
ओळोझणौ (बौ)–क्रि० १ उलझना । २ विचार करना ।
ओळौ–पु० [सं० उपल] १ वर्षा मे गिरने वाला हिम-कण । २ मिश्री या शक्कर का लड्डू । ३ बिनौला । ४ वज्र । ५ रक्षा, बचाव ।—**ओळ**–वि० पक्ति-बद्ध । क्रमश । पूर्ण ।
ओलौ (ओ'लौ)–पु० १ ओट, आड । २ बचाव । ३ रक्षा, शरण । ४ आश्रय । ५ सर्दी से बचाव के लिये की जाने वाली व्यवस्था ।
ओळौ-दोळौ–क्रि० वि० चारो ओर आस-पास ।
ओल्यूं, (डी)–देखो 'ओळूं' ।
ओल्हरणौ (बौ)–देखो 'ओलरणौ' (बौ) ।
ओवड़-छेवड–पु० ओर-छोर, आदि और अत ।
ओवडणौ (बौ)–देखो 'ओलरणौ' (बौ) ।
ओवण–१ देखो ओयण । २ देखो 'ओरण' ।
ओवौ–पु० हाथी-फसाने का बडा गड्ढा ।
ओसकणौ (बौ), ओसकणौ (बौ)–क्रि० १ हारना, पराजित होना । २ शका खाना, झिझकना । ३ स्थान छोडना, स्थान पर न आना (जानवर) । ४ त्यागना ।

ओस–पु० [सं० अवश्याय] वाष्प के कारण रात मे गिरने वाले जलकण जो सूर्योदय से पूर्व तक रहते हैं, शबनम। –क्रि०वि० अवश्य।

ओसण–वि० [सं० ओषण] कड़ुवा, कटु। अप्रिय। –स्त्री० चरपराहट, तीक्ष्णता।

ओसणणौ (बौ)–क्रि० गूंदना, भिगोना (आटा)।

ओसता (था)–देखो 'अवस्था'।

ओसध (धि धी)–देखो 'ओखध'।

ओसधीस–देखो 'ओखधीस'।

ओसप्पिणि–स्त्री० [सं० अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी] गिरने का समय, अध पतन का समय।

ओसर–पु० १ मृतक के पीछे किये जाने वाला विशेष भोज। २ अवसर, मौका। ३ असुर।

ओसरणौ (बौ)–क्रि० १ वर्षा प्रारंभ होना, बरसना, वृष्टि होना। २ तृप्त होना, अघाना। ३ गिरना, पड़ना। ४ देखो 'उसरणौ' (बौ)।

ओसरौ–पु० १ एक दिन छोड कर आने वाला ज्वर। २ किसी कार्य के लिए क्रमश आने वाला अवसर, पारी।

ओसळ–वि० बराबर, समान, तुल्य।

ओसळणौ (बौ)–क्रि० १ डरना, भयभीत होना। २ भागना, युद्ध स्थल छोड कर भागना।

ओसविण–पु० चावलों का पानी।

ओसाण–पु० १ एहसान, उपकार, अनुग्रह। २ अवसर, मौका। ३ विश्राम, अवकाश। ४ अवसान।

ओसाप–पु० १ शौर्य, पराक्रम। २ साहस, हिम्मत। ३ शक्ति, बल। ४ वदान्यता, उदारता। ५ प्रभाव, धाक। ६ दान। ६ कीर्ति, महिमा। ७ एहसान।

ओसारौ–पु० बरामदा, दालान।

ओसावण–पु० किसी खाद्य पदार्थ के साथ उबाला हुआ पानी।

ओसास–पु० निश्वास।

ओसियाळ, ओसियाळौ–देखो 'ओयाळौ'। (स्त्री० ओसियाळी)

ओसींकण, ओसींखल–पु० वारना लेना, बलैया लेना क्रिया। उपकृत होना क्रिया।

ओसीसव, ओसीसूं, ओसीसौ–देखो 'उसीसौ'।

ओसुर–देखो 'असुर'।

ओसौ–पु० [सं० अवसव] १ आंखों का सुरमा। २ अंजन, काजल। ३ दवा, औषध।

ओहं–सर्व० मैं। वह।

ओह–अव्य० शोक, पीडा या खेद सूचक ध्वनि। –सर्व० यह।

ओहडणौ (बौ)–क्रि० [सं० अवहिंडनम्] १ पीछे हटाना। २ रोकना, बाधा देना। ३ पराजित करना। ४ हतोत्साहित करना।

ओहडौ–पु० [सं० अवहेडनम्] १ टोकना, वर्जन आदि का भाव। २ कटु उत्तर। ३ प्रत्युत्तर। ४ उपालंभ।

ओहटणौ (बौ), **ओहट्टणौ** (बौ)–क्रि० [सं० अवटक] १ ढकना, आच्छादित करना। २ हटाना। ३ थामना, रोकना, थमना। रुकना। ४ पीछे लौटाना।

ओहणौ (बौ)–क्रि० होना।

ओहयणौ (बौ)–क्रि० १ अस्त होना। २ बुरे दिन आना। ३ पराजित होना। ४ अवसान होना, मरना।

ओहदादार, ओहदेदार–देखो 'ओदादार'

ओहदौ–देखो 'ओदौ'।

ओहरियौ–पु० [सं० आश्रम] १ मकान, घर। देखो 'ओरौ'।

ओहरिसौ–देखो 'ओरीसौ'।

ओहसणौ (बौ)–देखो 'ओहोसणौ' (बौ)।

ओहार–पु० [सं० अवधार] रथ या पालकी का पर्दा।

ओहाळ–पु० [सं० ऊहावलि] पानी के साथ बहने या ऊपर तैरने वाला कूडा करकट।

ओहासणौ (बौ)–क्रि० धूप-अगरबत्ती जलाना। सुवासित करना।

ओहि, ओहिज, ओही–सर्व० १ निश्चय यही। २ देखो 'ओह'।

ओहिचणौ (बौ), **ओहीचणौ** (बौ)–देखो 'अळूचणौ' (बौ)।

ओहिनाण–देखो 'अवधिग्यान'।

ओहिनाणी–वि० [सं० अवधिज्ञानी] अवधिज्ञानी (जैन)।

ओहीनौ–वि० [सं० अवहीन] १ न्यून, छोटा। २ देखो 'ओखाणौ'।

ओहोडौ–देखो 'ओहडौ'।

ओहोसणौ (बौ)–क्रि० १ उद्भासित होना, प्रगट होना। २ उदय होना। ३ प्रकाशित होना।

—औ—

औ–वर्णमाला का दशवा स्वर वर्ण।
औंकार–देखो 'ओंकार'।
औंकारणौ (बो)–देखो 'हुकारणौ' (बो)।
औंडौ–वि० गहरा। (स्त्री० औंडी)
औ–पु० [स०] १ परब्रह्म। २ शेषनाग। ३ अभिमान। ४ पृथ्वी। ५ शब्द। –अव्य० १ सबोधन, आश्चर्य, शोक आदि भावो की सूचक ध्वनि। २ अरे, हे, ओ। –सर्व० वह। यह। उस। –वि० और, अनन्त।
औक–स्त्री० किसी मागलिक अवसर (त्यौहार) के बाद या समाप्ति के पूर्व यदि किसी सबधी या कौटुम्बिक व्यक्ति की मृत्यु से अहर्ष की दशा हो।
औकट्ट–पु० संहार, ध्वस।
औकात–स्त्री० [अ० 'वक्त' का बहुव] १ सामर्थ्य। शक्ति। २ हैसियत, बिसात,। ३ वक्त, समय।
औखगी–वि० [स० अभिपग] १ भयकर, भयावह। २ टेढा, तिरछा।
औख–वि० जबरदस्त, जोरदार। –स्त्री० त्याग, परहेज। देखो 'औक'।
औखणणौ (बो)–क्रि० सूखा अनाज कूटना।
औखद (ध, धी)–देखो 'ओखध'। —**ईस**='ओखधीस'।
औखर–देखो 'ओखर'।
औखळणौ–वि० [स० अपस्खलनं] वीर, बहादुर, टक्कर लेने वाला।
औखाणौ–देखो 'उखाणौ'।
औग–देखो 'ओग'।
औगण–देखो 'अवगुण'।
औगत–१ देखो 'अवगत'। २ देखो 'अवगति'।
औगाढ़–देखो 'अवगाढ़'।
औगाळ–देखो 'ओगाळ'।
औगाळणौ (बो)–देखो 'ओगाळणौ' (बो)।
औगाळौ–देखो 'ओगाळौ'।
औगाहणौ (बो)–देखो 'अवगाहणौ' (बो)।
औगुण (न)–पु० [स० अवगुण] दोष, बुराई। —**गारौ**–वि० कृतघ्नी, अवगुणी। —**गाळौ**–वि० अवगुणो का नाश करने वाला।
औगो–देखो 'ओघो'।
औग्रह–देखो 'उग्र'।
औघ–देखो 'ओघ'।
औघड–देखो 'ओघड'।
औघट–देखो 'ओघट'। —**घाट**='ओघट-घाट'।
औघाट–देखो 'ओघट'।
औघौ–देखो 'ओघौ'।
औडौ–देखो 'ओहडौ'।
औचट–स्त्री० १ कठिनाई। २ सकट। ३ धर्म सकट, असमजस। –क्रि०वि० सहसा, अचानक।
औचाट–देखो 'उचाट'।
औछंडणौ (बो)–देखो 'ओछडणौ' (बो)।
औछ–देखो 'ओछ'।
औछाड़ (णौ)–पु० १ उमग, लहर, तरग। २ पर्दा। ३ उफान, उबाल। ४ आच्छादन। ५ छाया। ६ रक्षक। ७ वस्त्र विशेष।
औछाडणौ (बौ)–१ आच्छादित करना, ढकना। २ रक्षा करना, बचाना।
औछाणौ (बो)–क्रि० छाना, आच्छादित करना या होना, ढकना, ढका जाना।
औछारणौ (बो)–क्रि० १ चुराना। २ गायब करना। ३ आकर्षित करना। ४ देखो 'उछारणौ' (बो)।
औछाव, औछाह–१ देखो 'उत्साह'। २ देखो 'उत्सव'।
औज–देखो 'ओज'।
औजार–पु० [अ०] १ कारीगरी मे काम आने वाले उपकरण। २ हथियार।
औजास–देखो 'उजास'।
औजासणौ (बो)–देखो 'उजासणौ' (बो)।
औजौ–देखो 'ओजौ'।
औझड (झाड)–पु० १ तलवार का तिरछा प्रहार। २ प्रहार, चोट। ३ धक्का, झटका। ४ टक्कर। ५ प्रताडना, निंदा। ६ झिडकी। –क्रि०वि० लगातार, निरन्तर।
औझडणौ (बो)–क्रि० [स० अवझटनम्] १ तलवार का तिरछा प्रहार करना। २ धक्का या झटका देना। ३ टक्कर लेना। ४ युद्ध करना।

औझाडणौ (बौ)–क्रि० १ चीरना । २ काटना । ३ मारना, सहार करना । ४ प्रहार करना, वार करना । ५ आक्रमण करना । ६ आड करना, रोकना । ७ अस्त-व्यस्त करना, विखेरना । ८ प्रताडना देना, झिडकना ।

औझाट–स्त्री० झपट, उलटा प्रहार ।

औझाळ–स्त्री० १ आग की ऊची लपट, तेज लपट । २ देखो 'ओझाळ' ।

औटणौ (बौ)–देखो 'ओटणौ' (बौ) ।

औटाणौ (बौ)–देखो 'ओटाणौ' (बौ) ।

औटाळ–वि० धूर्त, चालाक, बदमाश ।

औटौ–देखो 'ओटौ' ।

औठंभण, औठम–देखो ओठभ' ।

औठौ–देखो 'ओठौ' ।

औड–क्रि०वि० १ ओर, तरफ । २ ऐसे, इस तरह । –स्त्री० १ जाति, प्रकार । २ देखो 'ओड' ।

औडणौ (बौ)–देखो 'ओडणौ' (बौ) ।

औढणौ–देखो 'ओढणौ' ।

औढर–वि० मनमौजी, स्वच्छन्द ।

औढाळ–पु० ढलुवा भाग ।

औढौ–देखो 'ओढौ' ।

औण–१ देखो 'ओयण' २ देखो 'ओरण' ।

औतार–देखो 'अवतार' ।

औतारी–देखो 'अवतारी' ।

औतारौ–१ देखो 'उतारौ' । २ देखो 'अवतार' ।

औत्तमि–पु० [स० औत्तमि] चौदह मन्वन्तरो मे से तीसरा ।

औथरणौ (बौ)–क्रि० फैलना, विस्तार पाना ।

औथि–क्रि०वि० वहा ।

औदनिक–पु० [स०] सूपकार, रसोईया ।

औदयिक–पु० कर्मों के विपाकानुभव रूप होने वाली आत्मा की वैभाविक स्थिति ।

औदसा– 'ओदसा' ।

औदात–वि० [स० अवदान] श्वेत, गौर ।

औदुवर–पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।

औदौ–१ देखो 'ओहदौ' । २ देखो 'ओदौ' ।

औद्रकणौ (बौ)–देखो 'ओद्रकणौ' (बौ) ।

औद्रव, औद्राव–देखो 'ओद्रव' ।

औद्राह, (हौ)–पु० भय, आतक ।

औध–१ देखो 'अवध' । २ देखो 'अवधि' । ३ देखो 'ओद' ।

औधकणौ (बौ)–देखो ओजकणौ (बौ) ।

औधमोहरौ–पु० ऊचा मुह करके चलने वाला हाथी ।

औधूळणौ (बौ)–देखो 'ओधूळणौ' (बौ) ।

औघूळियौ–वि० मस्त, उन्मत्त । वेपरवाह ।

औघेस–देखो 'अवधेस ।

औनाड़ (डौ)–देखो 'अनड' ।

औनींदौ–देखो 'उनीदौ' ।

औपणौ (बौ)–देखो 'ओपणौ' (बौ) ।

औपत–देखो 'ओपत' ।

औपम (मा)–१ देखो 'ओपम' । २ देखो 'उपमा' ।

औवासणौ (बौ)–देखो 'ओवासणौ' (बौ) ।

औवासी–स्त्री० उवासी, जम्हाई ।

औमाह–देखो 'उमाव' ।

औमाहणौ (बौ)–देखो 'उमाहणौ' (बौ) ।

औयण–१ देखो 'ओयण' । २ देखो 'ओरण' ।

औरंग–पु० [अ०] १ सिंहासन । २ भिन्न रग ।

औ'र–पु० पशु के मरने के बाद निकलने वाला पशु का मल ।

और–वि०[स० अपर]१ अन्य, दूसरा । २ भिन्न । ३ अतिरिक्त, अलावा । ४ अधिक, ज्यादा । –अव्य० १ पुनः पुन । २ सयोजक शब्द, अरु ।

औरठै–क्रि०वि० अन्यत्र, दूसरी जगह पर ।

औरणौ (नौ)–देखो 'ओरणौ' ।

औरणौ (बौ)–देखो 'ओरणौ' (बौ) ।

औरत–स्त्री० [अ०] १ स्त्री, महिला । २ पत्नी, भार्या ।

औरतौ–पु० [स० उरस्ताप] १ शक, सदेह । २ दुख, शोक । ३ खेद, पश्चाताप ।

औरस–पु० [सं०] १ वारह प्रकार के पुत्रो मे से श्रेष्ठ पुत्र जो अपनी धर्मपत्नी के गर्भ से पैदा हुआ हो । २ देखो 'ओरस' ।

औरहकणौ (बौ)–क्रि० वीररसपूर्ण राग गाना ।

औरां–वि० दूसरे, अन्य । –क्रि०वि० फिर, पुन ।

औराळ–वि० भयकर, प्रचड ।

औरावौ, (सौ)–पु० [स० अवरोध] उद्दंड पशुओ को वाधने का लम्बा रस्सा ।

औरु (रू, रौ)–१ देखो 'ओरा' । २ देखो 'ओर' ।

औळगु (गू) औळग–देखो 'ओळगू' ।

औळगणौ (बौ)–देखो 'ओळगणौ' (बौ) ।

औळगि (गी)–देखो 'ओळगू' ।

औलरणौ (बौ)–देखो 'ओलरणौ' (बौ) ।

औलस–क्रि०वि० इर्द-गिर्द, आस-पास । चारो ओर ।

औलाडणौ (बौ)–देखो 'उलटणौ (बौ) ।

औलाद–स्त्री० [अ०] सतान, सनति । नस्ल ।

औलियौ–देखो 'अवलियौ' ।

औळि (ळी)–देखो 'ओळी' ।

औले (लै)–देखो 'ओलै' ।

औवात–पु० वियोग, विरह। विच्छोह।

औसणणौ (बौ)–देखो 'ओसणणौ' (बौ)।

औसत–पु० [अ०] समष्टि का सम विभाग। अनुपात। –वि० सामान्य, साधारण। माध्यमिक।

औसध (धि)–देखो 'ओखध'।

औसर (औसर-मौसर)–देखो 'ओसर'।

औसरणौ (बौ)–देखो 'ओसरणौ'-(बौ)।

औसरि (री)–१ देखो 'अवसर'। २ देखो 'ओसर'।

औसांण (न)–१ देखो 'अवसान'। २ देखो 'एहसान'।

औसाप–देखो 'ओसाप'।

औसार–देखो 'आसार'।

औसास–देखो 'ओसास'।

औस्था–देखो 'अवस्था'।

औहथणौ (बौ)–देखो 'ओहथणौ' (बौ)।

औहरी–देखो 'ओरी'।

औहिज (हीज)–देखो 'ओहीज'।

–क–

क–देव नागरी वर्ण माला का प्रथम व्यजन-वर्ण।

कं–पु० [स० कम्] १ कामदेव। २ कमल। ३ कार्य। ४ शिर। ५ जल। ६ सुख। ७ स्वर्ण। ८ दूध। ९ हर्ष। १० दुख। ११ विष। १२ अग्नि। –वि० शुभ।

कइं (इ)–देखो 'कई'।

कइया–क्रि०वि० [स० कियत] १ कब तक। [स० कथम्] २ कैसे, किस तरह।

कंई (ई), कंईक–सर्व० [स० किम्] जिज्ञासासूचक सर्वनाम, क्या, कैसे, कैसी। –वि० १ बहुत अच्छा। २ कितना। [स० किंचित्] ३ तनिक, थोडा।

कक–पु० [स०] (स्त्री० कंकी) १ श्वेत चील। २ एक मासाहारी पक्षी। ३ बगुला, बक। ४ यमराज। ५ नर ककाल। ६ बाण, तीर। ७ क्षत्रिय। ८ अज्ञातवास मे युधिष्ठिर का नाम। ९ सूर्य। १० शिव। ११ युद्ध। १२ शृगाल। १३ कौआ। १४ युद्ध। १५ कस का भाई। १६ वनावटी, ब्राह्मण। १७ एक की सख्या। –वि० १ तग। २ थका हुआ। ३ एक। —पत्र–पु० तीर, बाण।

ककआळण–देखो 'ककाळण'।

ककड–पु० [स० कर्कर] १ पत्थर का छोटा खड। २ धूलि कण, रवा। ३ नगीना।

ककडीलौ–पु० [स० कर्करिल] ककड युक्त स्थान या भूमि।

ककट–पु० [स० ककट] १ कवच सैनिक उपकरण। २ असुर, राक्षस। ३ अकुश। –वि० दुष्ट, आततायी।

ककण–पु० [स० ककण] १ कलाई पर धारण करने का आभूषण, कडा, चूडी। २ विवाह सूत्र। ३ चोटी, कलगी। ४ एक प्रकार का राग। ५ एक प्रकार का डिंगल गीत। ६ देखो 'कोंकण'। –वि० कुटिल।

ककणी (नी, नीय)–स्त्री० [स० कका] १ ग्रीवनी [स० ककणी] २ पायल। ३ घुंघरू, नूपुर। ४ वजने वाला आभूषण।

ककतक–पु० [स०] केश-मार्जक, कघा।

ककर–१ देखो 'ककड'। २ देखो 'कंकरीट'।

कंकरी–१ देखो 'ककर'। २ देखो 'ककरीट'।

ककरीट–स्त्री० [अ० कांक्रीट] १ छोटे-छोटे ककरो का समूह। २ छत बनाने का मसाला।

ककला–स्त्री० शोभा।

ककाणी–देखो 'ककणी'।

कका–स्त्री० [म०] १ कस की बहिन का नाम। २ देखो 'ककणी'।

ककाडौ–देखो 'ककेडौ'।

ककाळ–पु० [स० ककाल] १ अस्थिपजर, ठठरी। २ युद्ध। ३ कलह। ४ सिह। —मालण–स्त्री० पार्वती, दुर्गा। –माळी–पु० शिव, महादेव।

ककाळण, ककाळी–स्त्री० १ दुर्गा का एक रूप। २ कलहगारी स्त्री। ३ भैरवी। –वि० झगडालू, कलहप्रिय।

ककु (म)–देखो 'कुकुम'।

ककुपत्री–देखो 'कुकुमपत्रिका'।

ककूदमान (वान)–देखो 'ककुदमान'।

ककेड, ककेडौ–पु० १ करेले की जाति का छोटा शाक, इसकी लता प्राय केर वृक्ष पर छितरा कर फलती है। २ एक प्रकार का काटेदार वृक्ष।

ककेळी–पु० [स० ककेलि] अशोक वृक्ष।

ककोडौ–देखो 'ककेडौ'।

ककोतरी (त्री)–देखो 'कुकुम पत्रिका'।

ककोळ–पु० शीतल चीनी के वृक्ष का एक भेद।

कंखणी–देखो 'ककणी'।

कंखअर–पु० पीला वस्त्र। –वि० पीला।

कंखा–स्त्री० [सं० आकांक्षा] इच्छा।

कंखी–वि० [सं०आकांक्षिन्] इच्छुक, कामना करने वाला।

कंग–देखो 'कंगळ'।

कंगड़ारीराय–देखो 'कागडारीराय'।

कंगडौ–देखो 'कागडौ'।

कंगण (न)–देखो 'ककण'।

कंगर, कंगार (रौ)–पु० १ दीवार पर बना नोकदार किनारा। २ किनारा।

कंगळ (ल्ल)–पु० [सं० ककट] कवच।

कंगली–वि०[सं० ककालु] (स्त्री० कगली) १ कगाल, निर्धन। २ दरिद्र। ३ अशक्त निर्बल।

कंगवा–स्त्री० १ श्वेत रंग की ज्वार। २ ज्वार की फसल का एक रोग।

कंगवौ–पु० खडी फसल मे अनाज विकृत होने का एक रोग।

कंगस–पु० १ कवच। २ देखो 'कागसी'।

कंगहडौ–पु० वृक्ष विशेष।

कंगसी–देखो 'कागसी'।

कंगाल–वि० [सं० कंकाल] (स्त्री० कगालण, कगालणी) निर्धन, दरिद्र, गरीब।

कंगाली–स्त्री० निर्धनता, गरीबी।

कंगी (घी)–स्त्री० [सं० कक्ती] १ स्त्रियो के केश सजाने का छोटा उपकरण, कघी। २ कपडा बुनने का एक उपकरण।

कंगूर, (रौ)–पु० [फा० कुगर] १ मुकुट-मणि। २ आभूषणो पर बना छोटा रवा। ३ शिखर। ४ दीवार पर लगे तीक्ष्ण प्रस्तर-खण्ड।

कंगौ, कंघौ–पु० [सं० ककतक] १ बाल बनाने का उपकरण, केश-मार्जक, कघा। २ करघे मे भरनी के तागो को कसने का एक यत्र।

कंचउ, कंचकी–देखो 'कचुकी'।

कंचण (न)–पु० [सं० कचन] १ स्वर्ण, सोना। २ धतूरा। ३ धन, दौलत। –वि० निर्मल, निरोग। —गिर,गिरि–पु० सुमेरु पर्वत। २ लका का पर्वत। ३ जालोर का पर्वत। –वन्नी, व्रन्न–वि० सुनहरा। –शिखर–पु० १ सुमेरु पर्वत।

कंचणी (नी)–स्त्री० १ वेश्या। २ नर्तकी। ३ वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियो का एक वर्ग।

कंचरी, कंचळी कंचली(वी)–स्त्री० १ मुसलमान वेश्याओ का एक भेद। २ देखो 'काचळी'। ३ देखो 'कचुकी'।

कंची–१ देखो 'कचुकी'। २ देखो 'काची'।

कंचु, कंचुक, कंचुकी, कंचुवी, कंचुवौ, कंचूकी–स्त्री० [सं० कचुक] १ अगिया, चोली। २ सर्प चम, केंचुल। ३ पोशाक। ४ कवच। ५ अचकन। ६ अत.पुर का नपुसक चौकीदार। ७ साप, भुजग। ८ वह घोडा जिसका घुटने पर मे एक पैर सफेद हो।

कंचोळौ–देखो 'कचोळौ'।

कंज–पु० [सं०] १ कमल। २ ब्रह्मा। ३ ब्रह्म। ४ महादेव। ५ अमृत। ६ फूल। ७ सिर के बाल। ८ चरण की एक रेखा। ९ दोष। –वि० रक्त-वर्ण, लाल। —अरि–पु० चन्द्रमा। —कल्याणी–स्त्री० कमल नाल। —ज–पु० पु० विधि, ब्रह्मा। —जुण, जोनी–पु० ब्रह्मा, विधि। —विकास–पु० सूर्य।

कंजर, कंजार–पु० [सं० कंजर, कजार] (स्त्री० कजरी) १ चन्द्रमा। २ हाथी। ३ ब्रह्मा की उपाधि। ४ उदर, पेट। ५ एक पिछडी जाति व इस जाति का व्यक्ति।

कंजासण (न)–पु० [सं०] ब्रह्मा, विधि।

कंजुलिक–पु० [सं० किंजल्क] १ कमल का फूल। २ फूल। ३ फूल का रेशा।

कंजूस–वि० कृपण, सूम।

कंजूसी–स्त्री० कृपणता।

कंझ–पु० १ क्रौंच पक्षी। २ देखो 'कुंज'।

कंझणौ (बौ)–क्रि० १ कब्ज की दशा मे शौच के लिए अधिक जोर करना। २ उक्त प्रकार से जोर करते समय मुंह से टसकने की ध्वनि।

कंटक, (कि, कौ)–पु० [सं० ककट] १ काटा। २ डंक। ३ नख। ४ नोक। ५ लोहे का अकुर। ६ सूल। ७ बाधा, विघ्न। ८ कष्ट। ९ जन्म कुडली मे पहला, चौथा, सातवा व दसवा स्थान। १० अकुर। ११ असुर, राक्षस। १२ रावण। १३ शत्रु। –वि० १ दुष्ट। २ कठोर, निर्दयी। ३ बाधक। ४ छोटा, लघु। —अरि (रौ)–पु० श्रीराम। उपानह,जूता। –असण–पु० विष्णु। ऊट। देवी।

कंटाळ, कंटाळउ, (कंटाळौ)–वि० (स्त्री० कटाळी) काटेदार, कटीला। –पु० एक प्रकार का घास।

कंटाळियौ–पु० ऊट का चारजामा विशेष जो बोझा लादने के समय उपयोग मे लिया जाता है।

कंटाळी–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति।

कंटि, कंटी–१ देखो 'काटी'। २ देखो 'कठी'।

कंटीर–देखो 'कठीर'।

कंटीलौ–वि० (स्त्री० कटीली) काटेदार, काटो वाला।

कंटेस्वरी–स्त्री० सोलकियो की कुल देवी।

कंटोळियौ–पु० गोखरू काटी नामक औषधि या इसका फल।

कंठ–पु०[सं०कठ]१ग्रीवा,गला। २ टेंटुवा। ३ स्वर, आवाज। ४ शब्द। ५ अनुप्रास। ६ तलवार की मूठ की चकरी।

७ पात्र का किनारा । ८ पडोस । ९ तलवार । —वि० १ अच्छे स्वर वाला सुस्वर । २ बैंगनिया रग का । —आभरण—पु० गले का हार, माला । —त्राण—पु० गले का कवच, जाली, पट्टी । —मरिण—स्त्री० घोडे के कठ पर होने वाली भवरी (शुभ) । —माळ,माळा—स्त्री० गले का हार । गले का एक रोग । —सूळ—पु० घोडे के कठ पर होने वाली भौंरी (अशुभ) । कठ का रोग विशेष ।

क ठळ(ळा,ळिय,ळी)—पु०१ गले का आभूषण । २ देखो 'काठळ' ।

क ठळी—देखो 'काठळी' ।

कंठसरी—स्त्री० [स० कठश्री] गले का हार, माला ।

कंठस्थ—वि० [स० कठस्थ] १ जबानी याद, कठाग्र । २ कठ से उच्चारण किया जाने वाला । ३ कठगत । ४ गले मे अटका हुआ ।

क ठाग्र, कंठाग्रहण—पु० आलिगन । —वि० कठस्थ ।

क ठाळ (क)—पु० ऊट ।

क ठाळो—वि० १ बलवान । २ मधुर राग से गाने वाला । ३ देखो 'कठाळक' ।

क ठि (का, य)—स्त्री० १ तट । २ कगार । ३ देखो 'कठी' । —राव—पु० सिंह, व्याघ्र ।

कंठी—स्त्री० [स०] १ गर्दन । २ गले की माला । ३ गले का आभूषण । ४ रक्त चदन की माला । ५ कुछ पक्षियो के गले की लकीर । ६ तलवार की म्यान का एक भाग । ७ गुज, पट्टा । ८ कालर । —बध—वि० अनुयायी, शिष्य । —र, रव—पु० सिंह, शेर । कबूतर । मादा हथिनी । —रण, रणी—स्त्री० सिहनी । —रल, रवौ,रीश्रो—पु० सिंह ।

क ठौ—पु० मणियो का हार । २ बडे मनिको की माला । ३ कठ का आभूषण । ४ गला, कठ ।

कंड, (म)—वि० १ चालाक, धूर्त । २ पाखडी, ढोगी । ३ बेकार, व्यर्थ । ४ सवृत्त ।

क डाळ—पु० [स० करनाल] तुरही नामक वाद्य ।

क डी—स्त्री० टोकरी ।

कंडीउ—पु० १ पत्थर की चुनाई करने वाला । २ देखो 'कडियो' ।

क डीर—वि० (स्त्री० कडीरण) १ भयकर, भयावह । २ पेटू, बहु भक्षी । ३ बडा अफीमची । —स्त्री० करवीर ।

क डुकर—पु० [स०] कपि कच्छु नामक लता, कउंच ।

कंडू, (य) क डूया—स्त्री० [स० कडूया] खुजली ।

क ण-देखो 'कण' ।

क णदोरी—देखो 'कणदोरो' ।

क णयर—देखो 'कणेर' ।

क णारो—देखो 'कणसारो' ।

कंत, (डौ) (तौ)-पु० [स० कांत] १ पति । २ ईश्वर । ३ स्वामी, मालिक । ४ सात मात्राओ का एक मात्रिक छद । —हरख—स्त्री० शय्या, सेज ।

कंता—स्त्री० [स० काता] स्त्री, पत्नी ।

कंतार, कंतारक—देखो 'कातार' ।

क तुकी—स्त्री० केतकी ।

क तेर—पु० १ खलिहान मे पडा रहने वाला भूसा । २ एक कटीला वृक्ष विशेष । ३ देखो 'कातार' ।

कंतौ, कंथ (थौ)—देखो 'कंत' ।

क थड (ड़ो)—पु० १ नाथ सम्प्रदाय का साधु । २ देखो 'कत' ।

क थड़ी, कंथी—स्त्री० चीथडो को जोडकर बनाया हुआ पहनने का वस्त्र । २ फकीरो का चोगा । ३ गुदडी । —धार, धारी—पु० शिव, महादेव, सन्यासी ।

क द—पु०[स०]१ आलू, मूली, गाजर आदि जडीय पदार्थ । मूल, जड । २ गुलाब के फूल चीनी के साथ जमा कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ (गुलकद) । ३ मेघ, बादल । ४ योनि का एकरोग । ५ एक वर्ण वृत्त । ६ छप्पय छद का एक भेद । ७ दुःख, उदासी । ८ कलक । ९ श्यामता । १० नौ निधियो मे से एक । ११ समूह । १२ कंधा । —वि० मूर्ख । —क-पु० वितान, चदोवा । —चर—पु० सूअर । —मूळ—पु० जडीय पदार्थ ।

कंदण (न)—१ देखो 'कदळ' । २ देखो 'कु दन' ।

कंदप, क दरप—पु० [स० कदर्प] १ कामदेव । २ श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम । ३ पौरुष, पु सत्व । —वि० कुत्सित दर्पवाला, अभिमानी । —अह—स्त्री० त्रयोदशी ।

कंदरा (री)—स्त्री० [स० कदरा] गुफा, गुप्त स्थान । —कर—पु० पर्वत, पहाड ।

क दळ—पु० [स० कदल] १ नाश, सहार, ध्वस । २ युद्ध, कलह । ३ शोरगुल । ४ सोना, स्वर्ण । ५ टुकडा । ६ समूह ।

कंदळी—स्त्री० १ ध्वजा, पताका । २ देव वृक्ष । ३ छठी बार निकाला गया तेज शराब । ४ एक प्रकार का हरिण । ५ युद्ध, समर । ६ देखो 'कदळी' ।

क दार—देखो 'गधार' ।

क दारो—पु० पथ, रास्ता ।

क दाळ—पु० [स० स्कधालय] धनुष ।

कंदीजणो (बो)—देखो 'किंदणो' (बो) ।

क दील—पु० अखुआ, नोक, तीर ।

क दुक—पु० [कदुक] गेंद ।

कंदू, कंदूडो—पु० ज्वार या तिल के कटे पौधों का व्यवस्थित-ढेर । गज ।

कंदोई–पु० [सं० कान्दविक] हलवाई । —लाग–स्त्री० हलवाइयों से लिया जाने वाला कर ।

कंदोरावंध–त्रि० मेखला धारण करने वाला । –पु० वह व्यक्ति या बालक जिसके करधनी बंधी हो ।

कंदोरो–देखो 'कणदोरो' ।

कंदौ–देखो 'कुंदौ' ।

कंद्रप–देखो 'कंदरप' ।

कंध (डक)–पु० [सं० स्कंध] १ कंधा, अंश । २ गर्दन, ग्रीवा । ३ डाली । ४ आश्रय, सहारा । —क–पु० गला, गर्दन । —च्छा–स्त्री० एक देवी विशेष ।

कंधर–पु० १ तालाब । २ देखो 'गधार' । ३ देखो 'कधौ' ।

कंधाळधुर–पु० बैल ।

कंधुर, कंधौ–पु० [सं० स्कंध] कंधा, अंश ।

कंन–१ देखो 'कसण' । २ देखो 'कान' ।

कंनीर–देखो 'कणेर' ।

कंप (ण, णी, न)–स्त्री० [सं० कम्प] १ कंपन, थरथराहट । २ चंचलता । ३ धड़कन । ४ कंपकंपी । ५ दोष, कलंक । ६ महीन धूलि, रज । ७ भय, डर । ८ शृंगार का एक सात्विक स्थाई भाव । —कंपी–स्त्री० थरथराहट, भय ।

कंपटुयण–स्त्री० कउच नामक लता ।

कंपणौ (बौ)–देखो 'कांपणौ' (बौ) ।

कंपणी (नी)–स्त्री० [अं०] १ व्यावसायिक संघ । २ मित्र मंडली ।

कंपाणौ (बौ)–प्रे०क्रि० १ कंपन, पैदा करना । २ डराना । ३ हिलाना । ४ झकझोर करना ।

कंपाळ–देखो 'कपाळ' ।

कंपावणौ (बौ)–देखो 'कंपाणौ' (बौ) ।

कंपास–पु० १ दिशा ज्ञान कराने वाला एक यंत्र । २ पैमाइश में काम आने वाला यंत्र । ३ बढ़ई का एक औजार ।

कंपित–वि० [सं०] कंपायमान, कांपने वाला । २ चंचल, अस्थिर । ३ भयभीत, डरा हुआ ।

कंपी–स्त्री० १ कंपन, थरांहट । २ कंपकंपी । ३ महीनतम, रज, धूलि ।

कंपु (पू)–पु० १ सेना, फौज । २ सैन्य शिविर । ३ जन समूह । ४ देखो 'कप' ।

कंब–स्त्री० [सं० कंबा] १ छडी । २ देखो 'कबू' ।

कंबड़ी–देखो 'कावडी' ।

कंबंध–देखो 'कवध' ।

कंबर, कंबळ (ळि, ळी)–स्त्री० [सं० कम्बल] १ ऊन का मोटा वस्त्र, कम्बल । २ गाय के गर्दन के नीचे लटकने वाला मांस । ३ एक प्रकार का हिरन । ४ दीवार ।

कंबाइस–स्त्री० छड़ी, बेंत ।

कंबु (बू)–पु० [सं० कम्बु] १ शंख । २ हाथी । ३ घोंघा । ४ गर्दन । —ठाण–पु० हाथी बांधने का स्थान, हाथी बांधने का स्तंभ ।

कंबोज–पु० [सं० कम्बोज] १ घोड़ा । २ पंजाब से अफगानिस्तान तक का भू भाग (प्राचीन) । ३ उक्त प्रदेश का घोड़ा । ४ हाथी ।

कंभ–१ देखो 'कम' । २ देखो 'कुंभ' ।

कंमी–स्त्री० पिघले हुए सोने या चांदी की बनी सलाका ।

कंमन–वि० [सं० कमनीय] सुन्दर, मनोहर ।

कंमळा–देखो 'कमळा' ।

कंमाड–देखो 'कपाट' ।

कंमाळ–स्त्री० मुंडमाला ।

कंमेड़ी–पु० कपोत ।

कंय–देखो 'काय' ।

कंवर–देखो 'कुमार' ।

कंवर-कलेवौ–पु० दूल्हे को तोरण द्वार पर कराया जाने वाला स्वल्पाहार । २ दूल्हे का नाश्ता ।

कंवरपद (पदौ)–पु० कुमारावस्था ।

कंवराणी–स्त्री० १ युवराज की पत्नी । २ पुत्र वधू ।

कंवरापति–पु० राजकुमार ।

कंवराई–स्त्री० कुमारावस्था ।

कंवराईपणौ–पु० कुमारावस्था या भाव ।

कंवरियौ–देखो 'कुमार' ।

कंवरी–देखो 'कुमारी' ।

कंवळ–१ देखो 'कमळ' । २ देखो 'कवळ' । ३ देखो 'कौल' ।

कंवळ पूजा–देखो 'कमळ पूजा' ।

कंवळा–देखो 'कमळा' ।

कंवळापति–देखो 'कमळापति' ।

कंवळासड़ी–वि० कोमल ।

कंवळियौ–पु० १ कामला रोग । २ देखो 'कंवळौ' । ३ देखो 'कमळ' ।

कंवळी–स्त्री० दरवाजे या खिडकी में चौखट के पीछे लगने वाला खडा पत्थर ।

कंवळौ–वि० (स्त्री० कवळी) कोमल, नरम, नाजुक । –पु० १ मुख्य द्वार में लगा खड़ा पत्थर । २ सफेद गिद्ध । ३ बिना मात्रा का व्यंजन । ४ देखो 'कमळ' ।

कंवाड़–देखो 'कपाट' ।

कंवाडौ–स्त्री० १ छोटी कुल्हाडी । २ छोटे दरवाजे, खिडकी या आले का कपाट ।

कंवार–स्त्री० १ कौमार्यावस्था। २ कुमारी। ३ देखो 'कुमार'। —**छळ**–स्त्री० वेश्या की कुमारावस्था। —**पणौ**–पु० कुमारावस्था।

कंवारी–स्त्री० [सं० कुमारी] १ अविवाहित लडकी। २ कुमारी। –वि० अविवाहिता। —**घड, घड़ा**–स्त्री० युद्ध के लिए सुसज्जित सेना। –**जान**–स्त्री० विवाह के एक समय या एक दिन पूर्व आने वाली वरात व इस वारात को दिया जाने वाला भोजन। –**भाती, लापसी**–स्त्री० विवाह से पूर्व वरात को दिया जाने वाला भोज।

कंवारौ–पु० [सं० कुमार] (स्त्री० कवारी) कुमार, लडका। –वि० अविवाहित। —**भात**–पु० पाणिग्रहण से पूर्व वरात का भोज।

कंस–पु० [सं०] १ राजा उग्रसेन का पुत्र व श्रीकृष्ण का मामा। २ कास्य-पात्र। ३ पीने का पात्र। ४ भाभ-मजीरा। ५ कसीस नामक धातु। –**निकंदण (न)**–पु० श्रीकृष्ण। विष्णु। —**विधुंसी**–स्त्री० विजली, विद्युत। –पु० श्रीकृष्ण।

कंसरौ–पु० कासी-पीतल के बर्तन बनाने वाला कारीगर।

कंसळौ–पु० कनखजूरा नामक जतु।

कंसार–पु० [सं० कसारि] १ श्रीकृष्ण। २ देखो 'कसार'।

कंसारी–स्त्री० १ घरो मे पाया जाने वाला छोटा जतु विशेष, कसारी। २ देखो 'कसार'। ३ देखो 'कसरौ'।

कंसाळ–पु० कासी आदि मिश्र धातु का बना वाजा।

कंसास–देखो 'कस'।

कंसासुर–पु० [सं०] कस।

क–पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ सूर्य। ४ अग्नि। ५ प्रकाश। ६ कामदेव। ७ दक्ष प्रजापति। ८ वायु। ९ राजा। १० यम। ११ आतमा। १२ मन। १३ शरीर। १४ काल। १५ धन। १६ मोर। १७ शब्द। १८ जल। १९ ग्रंथि, गाठ। २० शिर। २१ मुख। २२ केश। २३ वन। २४ निवास। २५ दास। २६ ज्योतिषी। २७ पक्षी। २८ वादल, मेघ। २९ स्वर, शब्द। –अव्य० १ अथवा, या। २ कब। ३ पादपूर्ति अव्यय। –सर्व० क्या।

कइ–अव्य० क्यो।

कइ–अव्य० १ सवध कारक चिह्न, का। २ अथवा, या। ३ देखो 'कई'।

कइक (यक)–वि० [सं० कतिपय] कई, अनेक। –क्रि०वि० कही। –सर्व० किसी। कोई।

कइकाण–देखो 'केकाण'।

कइसा–वि० कैसा।

कइय–क्रि०वि० कव, कदा। –सर्व० किन, कौन, कोई।

कइयां–क्रि०वि० कैसे, क्यो। –सर्व० कई।

कइर–देखो 'करीर'।

कइळि–देखो 'कदळी'।

कइवार–देखो 'कंवार'।

कइसइ–क्रि०वि० कैसे।

कईक–वि० १ थोडा, किंचित। २ देखो 'कइक'।

कई–वि० [सं० कति] १ अनेक, वहुत। २ कुछ। –क्रि० वि० कभी। देखो 'कस्सी'।

कईक–देखो 'कइक'।

कईवरत (वरतक)–पु० [सं० कैवर्तक] मल्लाह।

कउण–सर्व० [सं० किम्] १ कौन। २ क्या।

कउ–स्त्री० १ तापने की आग का छोटा गड्ढा। २ संन्यासिया की धुनि। –सर्व० १ क्या। २ कोई। –अव्य० सबधकारक चिह्न, का।

कउग्रौ (कऊवौ)–पु० [सं० काक] कौआ।

कउडि (डी)–देखो 'करोड'।

कउण–सर्व० १ कौन। २ क्या।

कउतिग (ग्ग)–देखो 'कौतक'।

कउतेय–देखो 'कौंतेय'।

कउरव–देखो 'कौरव'।

कउल–१ देखो 'कवल'। २ देखो 'कौल'।

ककखट–देखो 'कक्खट'।

ककडाजोग–देखो 'करकटजोग'।

ककडौ–पु० १ दाढी-मूछो के लाल-केश। २ ज्योतिष का एक अशुभयोग।

ककट–पु० दंत-कटाकट।

ककरेजियां–पु० स्याही लिए हुए रग से रगा कपडा।

ककसौ–पु० [सं० कक्ष, कक्षा] १ ग्रहो का भ्रमण-मार्ग। २ परिधि। ३ बराबरी, समानता। ४ श्रेणी। ५ देहली। ६ काछ-कछोटा। –वि० वरावर, तुल्य।

ककाण–पु० १ देश विशेष। २ देखो 'केकाण'।

ककी–पु० [सं० केकी] १ मोर, मयूर। २ मादा कौआ। —**लक**–पु० कवच।

ककुद–पु० [सं०] वैल के कधे का कूबड। —**मान**–पु० वैल।

ककुभ, ककुभा–स्त्री० [सं० ककुभ्] १ दिशा। २ दक्ष की पुत्री व धर्म की पत्नी। [सं० ककुभ] ३ वीणा की खूटी की लकडी।

ककुभाळी–स्त्री० आधी, तूफान।

ककोडौ–देखो 'ककेडी'।

ककौ, कक्कौ–पु० १ 'क' वर्ण। २ व्यजन। –सर्व० कोई।

कक्खट–वि० [सं०] १ कडा, कठोर सख्त। २ दृढ, पक्का।

कक्ष–पु० [स०] १ वगल, काख । २ दर्जा, श्रेणी । ३ वर्ग । ४ पार्श्व, भाग । ५ कमरा, भवन का कोई भाग । ६ अत पुर । ७ वन, जगल । ८ जगल का भीतरी भाग । ९ सूखा घास । १० मैंमा । ११ फाटक ।

कख–पु० १ आख का कोना । २ कसौटी, परीक्षा । ३ एक प्रकार का पत्थर । ४ देखो 'कक्ष' ।

कखती-मगरी–स्त्री०यौ० एक प्रकार की तलवार ।

कखवा–पु० [स० कक्षवान] वन, जगल ।

कग (ग्ग)–पु० [स० काक] १ कौआ, काग । २ देखो 'कगळ' ।

कगण्ण–पु० १ कर्ण । २ देखो 'कगळ' ।

कगर–देखो 'कागज' ।

कगळो–देखो 'काक' ।

कगल्ल–देखो 'कगळ' ।

कगवा–देखो 'कगवा' ।

कगार–पु० [देश] नदी या जलाशय का ऊचा स्थान, तट ।

कग्गर, कग्गळ–पु० १ किनारा तट । २ देखो 'कगल' । ३ देखो 'कागज' ।

कग्गौ–देखो 'काक' ।

कड–स्त्री० [स० कटि] १ कमर, कटि । २ करवट, पक्ष । ३ तट, किनारा । ४ पास, निकट । ५ चूतड, नितव ।

कडक–स्त्री० १ क्रोध, कोप । २ क्रोध या रोबीली आवाज । ३ विजली की गर्जना । ४ विजली । ५ वदूक की आवाज । ६ शक्ति, सामर्थ्य । ७ कडापन, दृढता । ८ चटकन । ९ देखो 'किड़क' । –वि० सख्त, कडा, कच्चा, ठोस ।

कडकड–स्त्री० १ मुश्ती या गुडिया शक्कर । २ कडकने की ध्वनि ।

कडकडाट–स्त्री० कडकडाहट ।

कडकडी–देखो 'किडकिडो' ।

कडकणौ (बौ)–क्रि० १ जोश मे दात पीसना । २ क्रोध मे गरजना । ३ विजली का जोर से चमक कर गरजना । ४ डाटते हुए वोलना ।

कड़कनाळ–स्त्री० भयानक शब्द करने वाली तोप ।

कडकम–पु० पुरुषो के कान का आभूषण ।

कडकाणौ (बौ)–क्रि० १ जोश दिलाना । २ कडकने लिए प्रेरित करना ।

कडकोलौ, कडकोल्यौ–१ देखो 'ठोलौ' । २ देखो 'कडखौ' ।

कडकौ–१ अगुलियो के चटकने की आवाज । २ जोर का शब्द । ३ ताकत, वल । ४ जोर का झटका । ५ युद्ध का गीत । ६ विजली । ७ कविता । ८ लधन, उपवास । ९ निर्धन ।

कडक्क–देखो 'कडक' ।

कडक्कड-देखो 'कडकड' ।

कडक्कणौ (बौ)–देखो कडकणौ (बौ) ।

कडख–पु० किनारा । तट ।

कडखिणौ (बौ)–देखो 'कडकणौ' (बौ) ।

कडखौ–पु० १ नदी तट का उभरा हुआ भाग । २ एक छद विशेष । ३ विजय-गान ।

कडड–स्त्री० लकडी के लट्ठे के चिरने या विजली के गरजने की आवाज ।

कडडणौ (बौ)–क्रि० १ लकडी का लट्ठा जोर मे फटना । २ फटने की आवाज होना । ३ विजली का गरजना ।

कडड़ाट–देखो 'कडड' ।

कडच–क्रि०वि० १ जल्दी, शीघ्र । २ देखो 'कडच्छ' ।

कडचणौ (बौ)–देखो 'कडछणौ' (बौ) ।

कडच्छ–पु० वध, वधन । –वि० तैयार, सन्नद्ध । सुसज्जित ।

कडछ–स्त्री० कटाक्ष ।

कडछणौ(बौ)–क्रि० १ तैयार होना । २ सन्नद्ध होना, सावधान होना । ३ शस्त्र सुसज्जित होना । ४ आक्रमण के लिए लपकना ।

कडछलौ (ल्यौ)–पु० १ वडा करछुल । २ छोटा कडाहला ।

कडछू–पु० काठ का बना चम्मच (मि० टोई)

कडजोडौ–पु० कवच, सनाह ।

कडढौ–पु० खड्डा, गर्त ।

कडतल (त्तल)–स्त्री० [स० कटि + तल] १ तलवार, खड्ग । २ झाला राजपूतो का विरुद ।

कडतू–स्त्री० कटि, कमर ।

कडतोडौ–पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ कमर पर भौंरी वाला वैल । ३ आभूषण विशेष । –वि० १ कमर तोडने वाला । २ भयकर । ३ दुर्गम ।

कडथल–पु० १ सहार, नाश । २ देखो 'कडतल' ।

कडदौ–१ किसी द्रव पदार्थ के नीचे जमने वाला मैल । २ सोने चादी के साथ मिलाया जाने वाला विजातीय धातु ।

कडप–पु० खिजाव ।

कडपौ–पु० १ खेत मे काम करने वाले मजदूरो को दिया जाने वाला गेहूं का पुआल । २ मुट्ठी मे आवे उतना घासादि ।

कडप्रोथ–पु० [स० कटि-प्रोथ] नितव, कूल्हा ।

कडबध–पु० १ कटिवध आभूषण । २ करधनी । ३ कमर वध । ४ तलवार ।

कडब–स्त्री० ज्वार का सूखा पौधा जिस पर से अनाज की वाल काट दी गई हो । —**चेन**–स्त्री० एक प्रकार की जजीर ।

कडबाध–स्त्री० मूज की करधनी ।

कडबोडी–स्त्री० ज्वार के चारे से भरी गाडी ।

कडब्बणौ (बौ)–क्रि० प्रकुपित होना ।

कड़मूळ–स्त्री० [स० कलि-मूल] सेना, फौज।

कड़लियौ–पु० १ मिट्टी का वर्तन। २ मिट्टी का दीपक। ३ देखो 'कडौ'।

कडलोला–पु० [स० कटिलोलनम्] थकावट मिटाने के लिए किया जाने वाला विश्राम।

कडलौ–पु० स्त्रियो के पाव का चादी का मोटा कडा।

कडव, कड़वाई, कडवापरा, कड़वास–पु० १ कडवापन, खारापन, कटुता। २ कठोरता।

कड़वीरोटी–स्त्री० किसी की मृत्यु के दिन उसके पडोसियो द्वारा शोक सतप्त परिवार को भेजी जाने वाली रोटी।

कडवू–देखो 'कडवौ'।

कड़वौ–वि० [स० कटु] (स्त्री० कडवी) १ कड़ुवा, खारा। २ कटु, अप्रिय। ३ स्वाद की दृष्टि से तीक्ष्ण। ४ तीक्ष्ण प्रकृति वाला। ५ एक वडा वृक्ष। —**तेल**–पु० सरसो या जाम्बे का तेल।

कडाई–स्त्री० [स० कटाह] १ अधिक मात्रा मे भोजन वनाने का लोहे का चौडा पात्र। २ कडापन, सस्ती। ३ तलुए का फोडा। ४ देखो 'कराई'।

कडाऊ–पु० १ दीवार की चुनाई का एक ढग। २ ऐसी चुनाई मे लगने वाला चौडा पत्थर।

कड़ाक द–देखो 'कळाकद'।

कड़ाकड़–स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।

कडाकौ–पु० १ टकराने की ध्वनि। २ देखो 'कडकौ'।

कड़ाछी–स्त्री० वडा व मोटा चम्मच।

कड़ाजूड (भूड), कडाजूज (भूक्ष)–वि० १ पहन-ओढ कर तैयार। २ सन्नद्ध। ३ कटिवद्ध। ४ शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित।

कड़ावध–वि० १ आवेष्टित। २ घिरा हुआ, घेरा हुआ। ३ सज्जित।

कड़ाबीरा, (बीन)–स्त्री० [तु० कुरावीन] चौडे मुह की एक प्रकार की वन्दूक।

कडाभीड–स्त्री० भीड-भाड। जमघट। –वि० सुसज्जित।

कड़ाय,कडायलियौ,कडायलौ–१ देखो 'कडाव'। २ देखो 'कडायौ'।

कडायौ–पु० १ लाल तने वाला एक वृक्ष। २ छोटी कडाही।

कडाळ–पु० कवच।

कड़ाव–पु० [स० कटाह] वडे भोज का भोजन वनाने का लोहे का वडा पात्र।

कडावलौ, कड़ावौ–पु० १ छोटी कडाही। २ देखो 'कडायौ'।

कड़ाह (हौ)–देखो 'कडाय'।

कड़ि (य, हि)–स्त्री० [स० कटि] १ कमर, कटि। २ अध खिला फूल। ३ ककरा, कडा। ४ शृ खला का एक घटक। ५ स्त्रियो के पैर का आभूपरा, कडी। ६ गोद। —**बाधी**–स्त्री० कटार।

कडियळ (याळ)–पु० १ कवचधारी योद्धा। २ कवच।

कड़ियां–स्त्री० [स० कटि] १ कमर, कटि। २ स्त्रियो के पैरो मे धारण करने का आभूषण।

कड़िया–देखो 'करिया'।

कडियाळी–स्त्री० १ घोडे की लगाम। २ लोहे की कडिया लगा डडा।

कडियाळौ–पु० १ अमलताश का वृक्ष। २ देखो 'कडियळ'।

कड़ियौ–पु० १ चुनाई करने वाला कारीगर। २ छोटा खेत।

कडी–स्त्री० [स० कटक] १ हाथ या पैर का आभूषण। २ लोहे की कडी। ३ लगाम। ४ कवच। ५ कमर, कटि। ६ हुक्का। ७ मोटा रस्सा। ८ छद का एक चरण। –वि० १ तेज, तीव्र, तीक्ष्ण। २ कठोर। ३ भयकर। —**रुत**–स्त्री० ग्रीष्म व शीत ऋतु।

कड़ीकडी–स्त्री० १ दो वकरो या मेढो को परस्पर लडाने के निमित्त जोश दिलाने का शब्द। २ जोश दिलाने का शब्द।

कडीड–पु० १ प्रहार, चोट। २ प्रहार की ध्वनि।

कडू ब (बौ)–देखो 'कुटुम्ब'।

कडू बवाळ–पु० किसान। –वि० जिसका कुटुम्ब वडा हो।

कडूग्रौ, कडूग्रो–देखो 'कडवौ'।

कडूळौ–पु० कडा (आभूपरा)।

कडेली–स्त्री० सफेद पावो वाली वकरी।

कडै–क्रि०वि० पास, निकट, नजदीक। —**छट**–स्त्री० मस्ती मे आए हुए ऊट का पेशाव करते समय पू छ झटकना क्रिया।

कडैली–स्त्री० मिट्टी का तवा।

कडोपो–वि० वदसूरत, भद्दा।

कडोमो–देखो 'कुटु व'।

कड़ोलियौ–पु० १ दोनों आखो मे कु डली वाला वैल। २ कडा।

कडौ–पु० [स० कटक] १ किसी धातु का गोल कडा। २ ऐसा कडा जो किसी देवता के नाम से पहना जाता है। ३ स्त्रियो की भुजा का स्वर्णाभूपरा। पहूँची। ४ पैरो व हाथो मे धारण करने का आभूषण। ५ कगन। ६ पत्थरो को जोड कर बनाया जाने वाला अर्ध चन्द्राकार। ७ आवेष्टन, घेरा। ८ किसी उपकरण का पकडने का गोलाकार भाग। ९ छत का चूना। १० झु ड, समूह। ११ तट, किनारा। १२ चक्र, पहिया। १३ वृत्त। –वि० (स्त्री० कडी) १ कठोर, सख्त। २ कटु, अप्रिय। ३ असह्य। ४ दृढ, मजवूत। ५ अडियल। ६ तेज। ७ धीर, गभीर।

कडौट–स्त्री० पक्ति उलटने की क्रिया या भाव (काव्य)।

कडौमो–देखो 'कुटु व'।

कच—पु० [स०] १ केश, वाल । २ रोम । ३ चोटी, शिखा । ४ सूखा हुआ जख्म । ५ झुड । ६ अगरखे का भाग । ७ काच । ८ देखो 'कुच' । —वि० १ कच्चा । २ श्याम । ३ देखो 'कच्छ' । —कवरी—स्त्री० वालो मे पुष्प गू थने की क्रिया । —कोळी—स्त्री० काच की चूडी । —वीडी—स्त्री० लाख की चूडी जिसमे काच जडे हो । —मेडी—स्त्री० रग महल । —लूण—पु० एक प्रकार का नमक ।

कचनार—पु० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ इस वृक्ष का पुष्प ।

कचपच, (पिच)—स्त्री० अस्पप्ट ध्वनि या आवाज ।

कचर—पु० १ कूडा-कचरा । २ कुचल कर किया गया चूरा । ३ कोल्हू मे अध कचरे तिलो का समूह ।

कचरघण, (घन, घाण)—पु० कुचल कर किया गया चूरा । २ कचूमर । ३ कीचड । ४ सहार, नाश । ५ विध्वस । ६ अधकचरी अवस्था ।

कचरणौ (बौ)—क्रि० १ कुचलना । २ मसलना । ३ चूरा करना ।

कचरावौ (ह)—पु० ध्वस, सहार ।

कचरोळौ—पु० १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला । २ कचरा ।

कचरौ—पु० १ कूडा-करकट । २ व्यर्थ सामान का ढेर । ३ कच्चा खरवूजा । ४ निरर्थक वस्तु, फूस ।

कचहड़ी—देखो 'कचेडी' ।

कचाई—स्त्री० १ कच्चापन, कच्चाई । २ कमजोरी । ३ अनुभव की कमी ।

कचारा—स्त्री० काच की चूडी वनाने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

कचारौ—पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।

कचिया—स्त्री० कचुकी ।

कचूंवरि—स्त्री० वालो का जूडा ।

कचूर—पु० हल्दी की जाति की एक औपधि विशेप । नर कचूर ।

कचेड़ी, कचैड़ी—स्त्री० न्यायालय, अदालत । दरवार ।

कचोट—स्त्री० घातक प्रहार । आघात ।

कचोरी, कचौरी—स्त्री० [स० कचूंरिका] नमकीन खाद्य पदार्थ विशेप ।

कचोळ (उ, डौ)—१ निंदा, वुराई । २ देखो 'कचोळौ' ।

कचोलड़ी कचोलड़ौ कचौलडु, कचौली,कचौलु—स्त्री० १ कटोरी । २ तश्तरी । ३ चिलम के नीचे का हिस्सा । ४ काच की चूडी ।

कचोळौ—पु० १ कटोरा, प्याला । २ निंदा, अपवाद ।

कच्चर—वि० [स०] १ मलिन, मैला । २ दूपित । ३ अस्वस्थ । ४ देखो 'कचर' ।

कच्ची कुड़क (को)—स्त्री० किसी मुकद्दमे के फैसले से पहले जारी किया जाने वाला आदेश जिससे जायदाद मे हेरा-फेरी न हो ।

कच्चीनकल (रोकड़)—स्त्री० एक प्रकार की वही जिसमे व्यापारी दैनिक आय-व्यय का हिसाव रखता है ।

कच्चीपक्की—स्त्री० एक देशी खेल ।

कच्चौ—देखो 'काचौ' ।

कच्छ—पु० [स०कच्छ, कक्ष] १ काख, वगल । २ पार्श्व ३ तट, किनारा । ४ हाशिया । ५ सीमा । ६ गोट, मग्जी । ७ नाव का एक हिस्सा । ८ सूखी घास । ९ जगल । १० भूमि । ११ घर । १२ काख का फोडा । १३ पाप, दोप । १४ काछ । १५जलप्राय देश । १६ नदी या समुद्र किनारे की भूमि । १७ गुजरात के समीप एक प्रदेश । १८ धोती की लाग । १९ छप्पय छद का एक भेद । २० देखो 'कच' । २१ देखो 'कच्छप' । २२ देखो 'काछी' ।

कच्छप—पु० [स० कच्छप] १ कछुआ । २ विष्णु के चौवीस अवतारो मे से एक । ३ कुवेर की नौ निधियो मे से एक । ४ दोहे छद का एक भेद । ५ घोडे के मस्तक का एक रोग । —वस—पु० कछवाहा वश ।

कच्छपी—स्त्री० [स०] १ सरस्वती की वीणा । २ कछुवी ।

कच्छियौ—१ देखो 'कच्छप' । २ देखो 'कछियौ' ।

कच्छी—स्त्री० १ जाघिया । २ एक प्रकार की सलवार । ३ कच्छ का निवासी । ४ कच्छ का घोड़ा । ५ कच्छ का ऊट या मादा ऊट ।

कछ—१ देखो 'कच्छप' । २ देखो 'कच्छ' । ३ देखो 'काछ' । ४ देखो 'कुछ' ।

कछणौ—देखो 'कसणौ' ।

कछणौ(बौ)—क्रि० १ शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना । २ कसना । ३ वाधना ।

कछदाद—पु० पेडू के सविस्थल व अण्डकोश पर होने वाला दद्रू रोग ।

कछनी—स्त्री० १ कच्छी, जाघिया । २ कछौटा ।

कछप—देखो 'कच्छप' ।

कछपी (बी)—देखो 'कच्छपी' ।

कछर—पु० [स० कच्छुर] १ दुख, क्लेश । २ कष्ट, पीडा । ३ पाप का दुख ।

कछव—देखो 'कच्छप' ।

कछवी—पु० १ घोडो का एक रोग । २ देखो 'कच्छपी'

कछाट—स्त्री० कठिनाई से दूध देने वाली गाय या भैंस ।

कछियाणी—स्त्री० १ कच्छ देशोत्पन्न देवी । २ आवड या सैणी देवी ।

कछियौ—पु० जाघिया, कच्छा । —वि० रसिक ।

कछी—देखो 'कच्छी' ।

कछोटियो–देखो 'कछोटी'।

कछोटी (टो)–स्त्री० लगोट। कच्छा।

कछो–पु० ऊट।

कछ्छ–देखो 'कच्छ'।

कज–पु० [स० क + ज] १ बाल, केश। २ रोम। ३ ब्रह्मा। [फा०] ४ टेढापन। ५ दोष। ६ कार्यक्रम। ७ युद्ध। –क्रि०वि० लिये, वास्ते, निमित्त।

कजळ–पु० काजळ। —ग्रक–पु० दीपक, चिराग। ज्योति।

कजळाणौ (बौ)–क्रि० कातिहीन होना। बुझना।

कजळियो–वि० १ श्याम, काला। २ देखो 'काजळ'।

कजळी–स्त्री०[स० कदली]१ केला, कदली। २ केले की फली। ३ एक प्रकार का हिरन। ४ गधक व पारे की एक साथ पिसी बुकनी। ५ कालिख। ६ अगारे के ऊपर की राख। —तीज–स्त्री० भादव कृष्णा तृतीया। —वन, बन–पु० केले का जगल। ग्रासाम का एक जगल।

कजळीजणौ (बौ)–क्रि० १ दहकते अगारे ठडे पडना। २ ठडा पडना।

कजा–स्त्री० [ग्र०] १ मृत्यु, मौत। २ वद किस्मत, दुर्भाग्य। ३ ग्राफत।

कजाई–स्त्री० घोडे के चारजामे का उपकरण।

कजाग्रौ–पु० [फा० पजाव] १ ईट की भट्टी। २ खडिया मिट्टी पकाने का एक ढग।

कजाक–वि० [तु० कज्ज़ाक] १ मारने वाला, हिंसक। २ ग्राततायी। ३ लुटेरा। ४ उद्दण्ड। ५ वलवान। ६ भयकर। ७ योद्धा। –पु० [ग्र० कजाकद[एक प्रकार का पहनावा जिस पर रेशम लपेटा होता है। इस पर तलवार के प्रहार का ग्रसर नही होता।

कजाकरिण (णी)–स्त्री० साकिनी, पिशाचिनी।

कजाकी–वि०[ग्र० कज्जाकी]१ नीच, पतित। २ देखो 'कजाक'। –स्त्री० लूटमार, डकैती।

कजावो–पु० १ ऊट का चारजामा विशेष। २ देखो 'कजाग्रौ'।

कजि–वि० १ लाचार, बेवस। २ देखो 'काज'। ३ देखो 'कज'।

कजियाखोर–वि० [ग्र० कजीय + फा० खोर] झगडालु। कलहप्रिय।

कजियौ–पु० [ग्र० कजीय] १ युद्ध, लडाई। २ दगा-फिसाद। ३ कलह।

कजी–स्त्री०[फा०]१ हानि,नुकसान। २ दोष। ३ देखो 'कजि'। ४ देखो 'कज'। ५ देखो 'काज'।

कजे, (जै)–देखो 'कज'।

कज्ज–१ देखो 'कज'। २ देखो 'काज'।

कज्जळ–१ देखो 'काजळ'। २ देखो 'कजळी'। —वन='कजळीवन'।

कज्जा–देखो 'कजा'।

कज्जि(ज्जी)–१ देखो 'कजि'। २ देखो 'कजी'। ३ देखो 'कज'। ४ देखो 'काज'।

कज्जे (ज्जै)–देखो 'कज'।

कझळाणौ (बौ)–देखो 'कजळाणौ' (बौ)।

कट–पु० [स० कट] पु० १ कमर कटि। २ मेखला, करधनी। ३ हाथी का गडस्थल। ४ चटाई। ५ शव, मुर्दा। ६ कटने की क्रिया या भाव। ७ शव-वाहन। ८ समाप्ति। ९ तीर, बाण।

कटक–पु० [स० कटक] १ सेना, फौज। २ झुड, समूह। ३ लुटेरो का गिरोह। ४ कगन, कडा। ५ राज-शिविर। ६ समुद्री नमक। ७ पहिया, चक्र। ८ नितव। ९ पहाड के बीच का भाग। १० हाथी दात का गहना। ११ सेंधा नमक। १२ घास की चटाई। १३ काबुल की एक नदी। १४ मेखला। १५ चढाई। १६ उपत्यका। १७ राजधानी। १८ घर, मकान। १९ वृत्त, घेरा। २० पीठ, पृष्ठ भाग। —ईस–पु० सेनापति। —बंध–स्त्री० सुसज्जित सेना।

कटकडी–स्त्री० [स० कटन] सेना, फौज।

कटकडौ–पु० सोना-चादी के तारो पर खुदाई करने का उपकरण।

कटकटाहट–स्त्री० [ग्रनु०] १ परस्पर टकराने की ध्वनि। २ दत कटाकट।

कटकण–वि० क्रोधी।

कटकणौ (बौ)–क्रि० १ कडकना। २ बिजली का जोर से चमकना। ३ क्रोध करना। ४ ग्राक्रमण करना। ५ उचक कर ग्राना।

कटकारौ–पु० किसी के प्रस्थान के समय 'कठै' का उच्चारण।

कटकि–ग्रव्य० ग्राश्चर्य ग्रौर प्रशसा बोधक ग्रव्यय। देखो 'कटक'।

कटकियौ–पु० गाव-गांव फिर कर फुटकर व्यापार करने वाला बिसाती।

कटकी–स्त्री० १ सेना। २ कोप। ३ वज्रपात। ४ ग्राक्रमण।

कटकेस–पु० सेनापति।

कटकौ–पु० १ ग्रगुली या किसी ग्रग के चटकने का शब्द। २ टुकडा, खण्ड।

कटक्क–देखो 'कटक'।

कटक्कट–देखो 'कटकटाहट'।

कटक्या–स्त्री० क्रोध मे दात कटकटाने की ध्वनि। २ क्रोध, कोप।

कटखडी–स्त्री० कुए से पानी निकालने का काष्ठ का पात्र।

कटखडौ, कटघरौ–देखो 'कटहडौ'।

कटणी-स्त्री० १ आभूषणों पर खुदाई करने का औजार। २ ऐंठन। ३ पेट की मरोड।

कटणौ (बौ)-क्रि० १ किसी शस्त्रादि से टुकड़े होना, कटना। २ समाप्त होना, बीतना, गुजरना। ३ कतराना, दूर रहना। ४ मोहित होना। ५ पेट में मरोड चलना। ६ जलन होना। ७ फीटा पडना, झेंपना। ८ व्यर्थ व्यय होना। ९ फटना। १० काट-छाट होना।

कटफाड़-स्त्री० [स० काष्ठ पट्टिका] १ लकडी। २ लकडी की पट्टी। ३ जलाने की लबी लकडी।

कटमी-देखो 'कटवी'।

कटमेखळा-स्त्री० करधनी, मेखला।

कटरि-अव्य० आश्चर्य और प्रशसा बोधक अव्यय।

कटळौ-पु० रद्दी सामान, रद्दी सामान बिकने का स्थान।

कटवण (न)-वि० निंदक।

कटवळ (कठवळ)-पु० मोठ, ग्वार, चौंला, मू ग आदि द्विदल अनाज।

कटवाड़-स्त्री० काटो का अहाता।

कटवी-स्त्री० निंदा, बुराई, अलोचना।

कटसेली-देखो 'कटसैली'।

कटहड़ौ-पु० १ कठघरा। २ राज सिंहासन के इर्द-गिर्द बनी काठ की प्रवेष्टिनी। ३ हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला काठ का बना चारजामा।

कटहळ-पु० कांटेदार बडे फल वाला वृक्ष व इसका फल।

कटाकड़ि-स्त्री० प्रहार की ध्वनि

कटा-स्त्री० १ कटारी। २ कत्ले आम। ३ छटा, शोभा।

कटाईजणौ (बौ)-क्रि० जग लगना।

कटाकट (टि)-स्त्री० १ दातो की किट-किट। २ किट-किट की ध्वनि। ३ तू-तूं-मैं-मैं। ४ काटने की क्रिया या भाव।

कटाक्ष, कटाख-पु० [स० कटाक्ष] १ दृष्टि, नजर। २ तिरछी चितवन। ३ भृकुटिविलास। ४ नेत्रो का सकेत। ५ व्यंग, आक्षेप। ६ वक्र दृष्टि। ७ नयन, नेत्र। -वि० अति तीक्ष्ण।

कटाड़णौ (बौ)-देखो 'कटाणौ' (बौ)

कटाड़ी-देखो 'कटारी'।

कटाच्छ, कटाछ (छि)-देखो 'कटाक्ष'।

कटाणौ (बौ)-क्रि० १ किसी शस्त्रादि से टुकडे कराना, खण्ड कराना, कटवाना। २ समाप्त कराना। ३ हटवाना, निरस्त करवाना। ४ व्यर्थ खर्चा कराना। ५ फडवाना। ६ काट-छाट कराना।

कटायत-वि० वीर गति प्राप्त करने वाला।

कटार-स्त्री० १ कटारी, छुरी। २ मोचियो, चमारो, पिंजारो आदि का सिलाई का एक औजार विशेष। —डढ,डढ़ौ-वि० तीक्ष्ण दातो वाला। कटार के समान दातो वाला। —मल -पु० कटारी रखने वाला योद्धा। एक प्रकार का घोडा।

कटारियाभांत, कटारीभात-पु० एक प्रकार का वस्त्र।

कटारी-स्त्री० [स० कट्टार] एक बालिश्त लबा, तिकोना और दुधारा हथियार।

कटाळी-स्त्री० १ भूईरिगणी, भटकटैया। २ देखो 'कट्याळी'।

कटाव-पु० १ कटने-काटने की क्रिया या भाव। २ भू-क्षरण। ३ अत्यन्त तेज शराब। ४ देखो 'कटणी'।

कटि (टी)-स्त्री० [स०] १ कमर, कटि। २ नितम्ब। ३ पीपल। —काळी-स्त्री० कडियो की पक्ति। —ग्रह-पु० कमर का एक रोग। —बध-पु० कमरबध। —मेखळा -स्त्री० करधनी। —सजियौ-वि० सन्नद्ध, तैयार।

कटियाळी- देखो 'कट्याळी'।

कटियौ-पु० छोटी बोरी।

कटीर (क)-पु० [कटीर, स० कटीरकम्] १ चूतड, नितंब। २ गुफा, कंदरा। ३ कटि, कमर। ४ खोखलापन।

कटु (उ, क,)-वि० [स०] १ कडवा, खारा। २ कसैला। ३ अप्रिय। ४ चरपरा, तीक्ष्ण। ५ ईर्ष्यालु। ६ तेज, तीव्र। ७ प्रचण्ड। —फळ-पु० बेहडा नामक वृक्ष व इसका फल।

कटुंबर (री)-पु० मध्य आकार का वृक्ष विशेष व इसका फल।

कटुंम-देखो 'कुटुंब'।

कटेडौ-पु० [स० काष्ठ+हिंड] १ बच्चे का झूला। २ हाथी का चारजामा। ३ खिड़कियो मे लगने वाला झूलता हुआ तख्ता। ४ कठघरा। ५ घास काटकर महीन करने का स्थान।

कटेल-वि० १ कटा हुआ। २ वीर गति पाया हुआ।

कटैड़ौ-देखो 'कटेडौ'।

कटैल-देखो 'कटेल'।

कटोर-पु० १ तलवार की मूठ का एक भाग। २ देखो 'कटोरौ' ३ देखो 'कठोर'।

कटोरदान-पु० रोटी आदि रखने का ढक्कनदार, वर्तन।

कटोरी-स्त्री० १ छोटा प्याला, बटकी, कटोरी। २ पुष्पदल के बाहर की ओर हरि पत्तियो की प्यालीनुमा आकृति।

कटोरौ-पु० १ चौडे पेंदे का खुले मुंह का धातु का पात्र, प्याला, कटोरा। २ तलवार की मूठ का एक भाग।

कटोल-देखो कटवल।

कट्ट-देखो 'कट'।

कट्टक-देखो 'कटक'।

कट्टण-वि० कृपण।

कट्टाधार-वि० कटारीधारी योद्धा।

कट्टार-देखो 'कटार'।

कट्टि–देखो 'कटि'।
कट्टिण–देखो 'कठिन'।
कट्ठ–१ देखो 'कोढ'। २ देखो 'कष्ट'।
कट्याळी–स्त्री० कांटेदार छोटा क्षुप जो औषधि मे काम आता है।
कठजर (रौ)–देखो 'कठपींजरौ'।
कठ–१ देखो 'काठ'। २ देखो 'क्रट'।
कठकालर–स्त्री० कठोर व ककरीली भूमि।
कठचित्र, चीत्र–पु० लकडी में खुदा चित्र, पुतली।
कठमंडळ (मंदिर)–पु० चिता।
कठकारौ–देखो 'कटकारौ'।
कठट्ठणौ (बौ)–देखो 'कठठणौ' (बौ)।
कठठ–स्त्री० [अनु०] सेना या बोझ से लदी गाडी के चलने पर होने वाली 'कट-कट' की ध्वनि।
कठठणौ (बौ), कठठ्ठणौ (बौ)–क्रि० १ निकलना, बाहर आना। २ चलते समय कट-कट की ध्वनि होना। ३ जोश मे आकर चलना। ४ ऐंठना।
कठठौ–वि० १ बलवान। २ कठोर।
कठण (न)–वि० कठिन, कठोर। —काचळी–स्त्री० नारियल। —ता–स्त्री० कठिनता, कठोरता।
कठणी (नी)–स्त्री० [स० कठिनी] सफेद मिट्टी, खडिया मिट्टी।
कठपींजरौ–पु० [स० काष्ठ पजर] काठ का बना पिंजरा।
कठपूतळी (ळी)–स्त्री० १ काष्ठ की बनी पुतली। २ तार द्वारा नचाई जाने वाली गुडिया।
कठफोडौ–पु० पेडो की छाल छेदने वाली एक चिडिया।
कठबध (बधण)–पु० [स० कठबधन] हाथी के गर्दन का रस्सा।
कठरूप–वि० कुरूप, बदशक्ल।
कठवल–देखो 'कटवल'।
कठसेडी–स्त्री० कठोर स्तनो वाली गाय या भैंस।
कठसेली–स्त्री० काले पीले पुष्प का पौधा विशेष।
कठहडौ–देखो कटहडौ'।
कठा–क्रि०वि० कहां। किस जगह।
कठाई–क्रि०वि० कही भी।
कठाजरौ, कठातरौ–देखो 'कठपींजरौ'।
कठा—क्रि०वि० १ कहा। २ कब।
कठाई–स्त्री० ओठो पर या दातो पर जमने वाला मैल। –क्रि०वि० कही भी।
कठाऊ–क्रि०वि० कहा से।
कठाती–क्रि०वि० कहा से।
कठामठौ–वि० कृपण, कजूम।
कठालग–क्रि०वि० कहा तक।
कठासू–क्रि०वि० कहा से।
कठाही–क्रि०वि० कही।
कठिण (न)–वि० [स० कठिन] १ कडा, सख्त। २ कठोर, ठोस। ३ दृढ, मजबूत। ४ दुर्गम। ५ निष्ठुर, निर्दयी। ६ अनार्द्र। ७ उग्र, प्रचण्ड। ८ कष्टकारक। ९ दुष्कर, दुसाध्य। १० तीक्ष्ण। —स०पु० १ वन, जगल। २ बेहडा। ३ दु ख, कष्ट।
कठिनाऊ–क्रि०वि० कहा से।
कठियळ–पु० खडाऊ, पादुका।
कठियारा–स्त्री० १ लकडी काटने का कार्य करने वाली जाति। २ श्मशान मे लकडी बेचने वाली जाति।
कठियारौ–पु० 'कठियारा' जाति का व्यक्ति।
कठियावाडी–देखो 'काठियावाडी'।
कठी–क्रि०वि० १ कहा, किस ओर। २ किधर।
कठीक–क्रि०वि० १ कही, कही। २ किधर।
कठीड–पु० लकडी का हुक्का।
कठीयाणौ–देखो 'काठियावाडी'।
कठू मर–देखो 'कटू बर'।
कठेडौ–देखो 'कटहडौ'।
कठेयक–देखो 'कठैक'।
कठै–क्रि०वि० कहा, किधर।
कठैई(क)कठैक, कठैय(क)–क्रि०वि० १ कही-कही। २ कही भी।
कठोर–वि० [स०] १ कडा, सख्त। २ दृढ, पक्का। ३ मजबूत। ४ निष्ठुर। ५ तीक्ष्ण। ६ सम्पूर्ण। ७ सुसस्कारित।
कठौंतरौ–देखो 'कठपींजरौ'।
कठौती–स्त्री० [स० काष्ठपात्री] १ काष्ठ की परात। २ काष्ठ-पात्र।
कडकडतौ–वि० (स्त्री० कडकडती) निर्दोष, शुद्ध, पवित्र।
कडक्क–देखो 'कटक'।
कडक्ख, कडख–पु० कटाक्ष।
कडम–देखो 'कदम'।
कडाळ, कडाहौ– १ देखो 'कडाई'। २ देखो 'कडाळ'।
कडि–स्त्री० कटि, कमर। —चीर, चीरु–पु० अधोवस्त्र।
कडियाळ–देखो 'कडियाळ'।
कडीलौ–पु० मिट्टी का बना तवा।
कडुवौ–वि० १ कठोर। २ देखो 'कडवौ'।
कडुणौ (बौ)–देखो 'कढणौ' (बौ)।
कढ–पु० १ पानी का बहाव। २ पानी का नाला। ३ जगल, वन। ४ खलिहान मे भूसा गिराने का स्थान। ५ घास-फूस का कच्चा मकान। ६ ऊसर भूमि। ७ निकाल।
कढ़णौ (बौ)–क्रि० १ निकलना, निकल कर आना। २ म्यान से तलवार निकाला जाना। ३ खेत मे लकडी आदि काट कर साफ करना। ४ दूध ओटाना।

कढमांणी (नी) कढ़ांमणी कढ़ावणी–स्त्री० दूध औटाने का पात्र।
कढाई–देखो 'कडाही'।
कढाणी (बौ), कढावणौ (बौ)–क्रि० १ निकलवाना। २ म्यान से तलवार निकलवाना। ३ खेत मे लकडी आदि कटा कर साफ कराना। ४ दूध औटाना।
कढार–पु० कोल्हू के ऊपर चारो ओर लगे तख्ते।
कढी–स्त्री० छाछ मे वेसन व मसाले मिलाकर वनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ। माग।
कढौणी–पु० घी या तेल मे तल कर वनाये जाने वाले खाद्य पदार्थ।
कण–पु० [स०] १ अनाज का दाना, कण। २ अनाज। ३ सार भाग। ४ अणु, जर्रा। ५ स्वल्प परिमाण। ६ रज कण। ७ वूंद, कतरा। ८ अगारा। ९ गुजाईश। १० खडित अश। ११ हीरा या जवाहरात। १२ रत्न। १३ मोती। १४ अनाज की वाल। १५ राजा कर्ण। १६ चावल का टुकडा। १७ तीर, वाण। १८ युद्ध, रण। १९ सेना, फौज। २० साहस, हिम्मत। २१ पायल की ध्वनि। २२ भिक्षा। २३ वृद्धि। २४ वीज का अनाज। २५ कचन, स्वर्ण। –सर्व० कौन, किस।
कणइअर–वि० किंचित, अल्प। देखो 'कणेर'।
कणइट्ठ (एठिय, एठी)–देखो 'कणेठीय'।
कणक–पु० १ सफेद गेहूँ। २ देखो 'कनक'।
कण-कण–क्रि०वि० [अनु०] १ खड-खंड। २ दाना-दाना अलग। ३ तितर-वितर। –स्त्री० ध्वनि विशेप।
कणकती–देखो 'कणगती'।
कणकलौ–देखो 'कणाकलौ'। (स्त्री० कणाकली)
कणकामण–पु० जादू-टोना।
कणको–पु० १ कण, रवा, जर्रा, सूक्ष्माश। २ साहस। ३ योग्यता। ४ क्षमता। ५ शक्ति, वल।
कणक्कण–देखो 'कण-कण'।
कणगज–स्त्री० एक औपधि।
कणगती–स्त्री० १ कमर मे वाधी जाने वाली डोरी। २ करधनी।
कणगावळि–स्त्री० [स० कनक + अवलि] १ एक प्रकार की तपस्या। २ कटि प्रदेश का आभूपण।
कणगिर (गिरि)–पु०[सं० कचनगिरि] १ सुमेरु पर्वत। २ लका का गढ। ३ जालौर का किला।
कणगूगळ (ळौ)–पु० दानेदार गुग्गल।
कणगेट्यो–पु० छिपकली जाति का एक जीव, गिरगिट।
कणछणौ(बौ)–क्रि० काटना, मारना। २ देखो 'कमणौ' (वौ)।
कणज–पु० एक प्रकार का वृक्ष।
कणडोर–पु० विवाह के ममय वर-वधू के हाथ-पावो मे वाधे जाने वाले डोरे।
कणणंकणौ (बौ), कणणणौ(बौ)–क्रि० १ युद्धार्थ उत्तेजित करने लिए जोश पूर्ण ध्वनि करना। २ दहाडना, गरजना। ३ वीरों द्वारा जोश पूर्ण ध्वनि करना।
कणणाट–स्त्री० जोश पूर्ण ध्वनि, दहाड, गरजन। वकवाद।
कणदोरावंध–देखो 'कदोरावध'।
कणदोरौ–पु० कमर का आभूपण, करधनी।
कणपांण–वि० श्रेष्ठ, वढिया। –स्त्री० वढिया लोहे की पैनी तलवार।
कणबार–देखो 'कणवार'।
कणबारियौ–देखो 'कणवारियौ'।
कणबीक–देखो 'कुणवी'।
कणमणौ (बौ)–क्रि० १ हिलना-डुलना। २ गुन गुनाना। ३ दर्द भरी आवाज करना।
कणमुठी–स्त्री० मुट्ठी भर अनाज की मात्रा।
कणय–देखो 'कनक'।
कणयर–देखो 'कणेर'।
कणयाचल–पु० [स० कनक-अचल] १ सुमेरु पर्वत। २ जालौर का एक पर्वत।
कणलाल–पु० अनार।
कणवार–स्त्री० १ 'कणवारिये' का पद व इस पद का वेतन। २ सहायता या सदेश देने की क्रिया।
कणवारियौ–पु० किसी जागीरदार का चतुर्थ श्रेणी का नौकर।
कणसारौ–पु० गोवर व वास की खपचियो का वना अनाज भरने का कोठा।
कणसि (सी)–पु० एक प्रकार का शस्त्र।
कणा–क्रि०वि० कव। कव से।
कणाई–क्रि०वि० कभी भी।
कणाकलौ (कणाकलौ)–वि० कभी का। (स्त्री० कणाकली)
कणा–स्त्री० [सं० कृष्ण] पीपल। –क्रि० वि० कव।
कणाउळि (ळी)–स्त्री० भिक्षा।
कणाद–पु० [स०] वैशेपिक शास्त्र के रचयिता एक मुनि का कुत्सित नाम।
कणापीच–स्त्री० फसल की मिचाई के लिये क्यारियों के वीच वनाई जाने वाली नाली।
कणारी–स्त्री० झींगुर।
कणारौ–देखो 'कणसारौ'।
कणावा–पु० खेत का किनारा।
कणिआगरौ–देखो 'कणियागर'।
कणियर–देखो 'कणेर'।

कणियाणू–वि० शक्तिशाली, बुद्धिमान ।

कणियागर (गरौ, गिर, गिरि, गीरौ) कणियाचळ–पु० [स० कनक-गिरि] १ सुमेरु पर्वत । २ जालौर का एक पर्वत । ३ सोनगरा चौहान ।

कणियौ–पु० १ पतंग की खडी खपची में बंध कर त्रिकोण बनाने वाला डोरा । २ पाये की आडी लकडी में लगने वाला कीला ३ कुऐ से पानी निकालने के चक्र की धुरी । ४ देखो 'कणी' ।

कणी–स्त्री० १ खपरैल या छाजन में लगने वाला मोटा सीधा लट्ठा । २ कनेर का पौधा या पुष्प । ३ चावल के टुकडे, कण । ४ एक खाद्य पदार्थ विशेष । ५ टुकडा, कण । ६ तराजू की नोक पर बंधी रहने वाली छोटी डोरी जो पलडे की डोरी से बधी रहती है । सर्व०–१ किस । २ कौन । —कु ड–पु० एक तीर्थ स्थान ।

कणीसक–पु० [स० कणिश] अनाज की वाल, भुट्टा ।

कणूकौ–१ देखो 'कण' । २ देखो 'कणकौ' ।

कणे–क्रि० वि० कब । कब तक । –सर्व० किसने ।

कणेई–क्रि० वि० कभी का । बहुत पहले ।

कणेठ (ठी ठौ) कणेठिय–पु० [स० कनिष्ठ] छोटा भाई, कनिष्ठ । वि० १ हीन, निकृष्ट । २ छोटा, लघु । ३ तुच्छ ।

कणेर–पु० १ प्राय बाग बगीचो मे लगाया जाने वाला पौधा । २ इस पौधे का फूल ।

कणेरीपाव (व)–पु० [स० कृष्णपाद] नाथ सम्प्रदाय के एक महात्मा, कृष्णपाद ।

कणं–पु० [स० कचन] सोना स्वर्ण ।

कणंई–देखो 'कणेई' ।

कणंगढ़–पु० [स० कचन-गढ़] १ जालौर का किला । २ सुमेरु पर्वत । ३ लका ।

कणंगिर, कणंगिरौ–देखो 'कणियागिर' ।

कणौ–पु०–१ खेत की सीमा । २ सीमा पर डाले हुऐ झाडी के डठल । ३ क्यारियो की सिंचाई के लिये बनी नाली । ४ गेहूं का सूखा दलिया । ५ पहुंचा, कलाई ।

कत–क्रि० वि० १ कहाँ । २ कब । ३ कैसे, क्यों । –पु० १ मूछों की कतरन । २ कतावट ।

कतई–क्रि० वि० नितात, बिल्कुल ।

कतक–पु० केतकी के पुष्प ।

कतरण–स्त्री० १ काट-छाट करने की क्रिया या भाव । ३ कटाई की कला । ३ वस्त्रादि को काटने के बाद रहने वाला छोटा टुकडा (कुरपण) ।

कतरणी (नी)–स्त्री० कैंची ।

कतरणौ (बौ)–क्रि० १ काटना । २ काट कर टुकडे करना । ३ मारना, सहार करना ।

कतरांक (हेक)–वि० [स० कियत्] (स्त्री० कतरीक) कितने ।

कतराणौ (बौ), कतरावणौ (बौ)–क्रि० १ कटाई कराना, कटवाना । २ काटने के लिये प्रेरित करना । ३ किसी की निगाह बचा कर चलना ।

कतरौ–पु० जलकण, बूंद, कतरा । –वि० (स्त्री० कतरी) कितना ।

कतळ (ल)–स्त्री० [अ० कत्ल] वध, हत्या, सहार ।
—आम='कतले-आम' ।

कतले-आम–पु० [अ कत्लेआम] आम-जनता का सामूहिक कतल । संहार, वध ।

कतल्ल–देखो कतळ' ।

कतवारी-स्त्री० सूत कातने वाली ।

कताई–स्त्री० १ कातने का कार्य । २ कातने का पारिश्रमिक । –वि० कितने ही ।

कतार–स्त्री० [अ० किंतार] १ पंक्ति । २ पक्तिबद्ध चलने वाला काफिला ।

कतारियौ–पु० ऊंटो के काफिले से सामान ढोने वाला व्यक्ति ।

कति–स्त्री० क्रीडा ।

कतियाण, कतियाणी–देखो 'कात्याणी' ।

कतिया–स्त्री० एक प्रकार की छुरी ।

कतियौ–पु० १ छोटी कैंची । २ धातु काटने का एक औजार ।

कतिलौ–पु० एक प्रकार का महीन कपडा । २ एक प्रकार का गोंद ।

कती–वि० कितनी । –स्त्री० १ एक प्रकार का शस्त्र । २ छोटी तलवार । ३ तलवार । ४ छुरी । ५ कटारी ।

कतीन–पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

कतीरामपुरी–स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

कतीरौ-पु० एक प्रकार का गोंद ।

कतूळ, कतूहळ(ळि)–देखो 'कुतुहल' ।

कतेई–अव्य० [अ० कतई] नितात, बिल्कुल ।

कतेड–वि० कताई के कार्य मे निपुण ।

कतेब–पु० १ वेद । २ शास्त्र । ३ पुराण । ४ किताब ।

कतोदई, कतोदईव–क्रि० वि० शायद, कदाचित ।

कतौ–देखो 'कितौ' । (स्त्री०, कती)

कत्तळी–स्त्री० १ कतरन, टुकडे । २ सहार, नाश ।

कत्तिन–स्त्री० एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

कत्तियांणी–देखो 'कात्याणी' ।

कत्ती–देखो 'कती' ।

कत्तेव–देखो 'कतेव' ।

कत्तौ–देखो 'कितौ' । (स्त्री० कत्ती)

कत्थ–देखो 'कथ' ।

कत्थई–पु० कत्थे की तरह का रग । –वि० उक्त रग का ।
कत्थणौ (बौ)–देखो 'कथणौ' (बौ) ।
कत्य–पु० [सं० कृत्य] अतिम सस्कार ।
कत्यांणी, कत्याइणी–देखो 'कात्याणी' ।
कत्रदाकौ–पु० सफेद पावो वाला पीले रग का घोडा ।
कथ–स्त्री० [स० कथा, कत्थ्य] १ कथा, वार्ता । २ वृत्तान्त, हाल । ३ विवरण । ४ वचन, शब्द । ५ कीर्ति, यश । ६ धन, द्रव्य । ७ कहावत । ८ बकझक ।
कथक (क्कड)–वि० [स०] १ नर्तक । २ कथावाचक । ३ वक्ता । ४ वादी । ५ बडी लवी चौडी कथा कहने वाला ।
कथणी–स्त्री० १ कथन, कहने की क्रिया । २ वातचीत । ३ कहने का ढग । ४ बकवाद, हुज्जत । ५ रचना, काव्य ।
कथणौ (बौ)–क्रि० [स० कथ्] १ कहना २ वर्णन करना । ३ जपना । ४ काव्य-रचना करना ।
कथन–पु० [स०] १ कहने की क्रिया या भाव । २ वर्णन, निरूपण । ३ विवरण । ४ उक्ति । ५ वयान । ६ वचन, शब्द, वोल । ७ हुक्म ।
कथा–स्त्री० [स०] १ कहानी । २ इतिवृत्त । ३ वृत्तान्त । ४ वर्णन । ५ किस्सा ६ वार्तालाप ७ आख्यायिका । ८ धार्मिक प्रसग । ९ पुराणादि का पठन, पाठ या सुनाने की क्रिया । १० चर्चा, जिक्र । ११ कीर्ति, यश ।
कथित–वि० [स०] कहा हुआ ।
कथीपौ–पु० १ मडप का वस्त्र । २ एक प्रकार का वढिया रेशमी वस्त्र ।
कथीर (रू)–पु० वर्तनो पर कलाई करने का एक सफेद नर्म धातु । जस्ता ।
कथेव–देखो 'कतेव' ।
कथ्थ–१ देखो 'कथ' । २ देखो 'कथा' ।
कथ्थणौ (बौ)–देखो 'कथणौ (बौ)' ।
कदंच–क्रि० वि० कभी ।
कदंब–पु० [स०] १ एक सदा वहार वृक्ष । २ घास विशेष । ३ समूह, ढेर । ४ हल्दी । ५ सेना, फौज ।
कदबरी–देखो 'कादवरी' ।
कद–पु० [अ०] १ ऊचाई । २ शरीर की लम्बाई । ३ माप । –क्रि० वि० १ कव । २ कभी ।
कदई–क्रि० वि० कभी ।
कदक–पु० [स० कदक] १ डेरा, खेमा, शिविर । २ चदोवा, वितान ।
कदकोई, कदकौ–वि० कभी का ।
कदच–देखो 'कदाचित' ।
कदताणी–क्रि० वि० कव तक ।
कदध्व–पु० [स० कदध्वा] कुमार्ग, कुपथ ।
कदन–पु० [सं० कदनम्] १ दु ख । २ युद्ध । ३ नाश, ध्वस । ४ पाप । ५ वध, हत्या ।
कदन्न–पु० [सं०] मोटा अनाज ।
कदम, कदमूं, कदम्म–पु० [अ 'कदम] १ डग २ पाव । ३ गति । ४ घोडे की एक चाल । ५ कदव । ६ एक डिंगल छद । ७ पदचिह्न ।
कदर–स्त्री० [अ० कद्र] १इज्जत, मान, प्रतिष्ठा । २ श्रद्धा, आदर । ३ मात्रा । ४ माप ।
कदरज–वि० [स० कदर्य्य] १ नीच कुलोत्पन्न । २ पतित, नीच । ३ कायर । ४ कृपण । –स्त्री० धूल, मिट्टी ।
कदरदांन–वि० [अ०कद्र + फा दात] गुण ग्राहक । कदर करने वाला ।
कदराय–स्त्री० कायरता ।
कदरौ–वि० (स्त्री० कदरी) कभी का ।
कदळी–पु० [स० कदली] १ केला । २ एक हिरन । ३ हाथी पर रखने का झडा । ४ झडा, ध्वज । –खड, बन–पु० केले का जगल ।
कदवद–वि० [स० कद्वद] मूर्ख ।
कदा–क्रि०वि० कव, कभी ।
कदाक, कदाच, कदाचि, कदाचित्–क्रि०वि० कदाचित्, शायद । कभी ।
कदापि–क्रि०वि० हरगिज, किसी सूरत मे, कभी भी ।
कदास–देखो 'कदाच' ।
कदि–देखो 'कदी' ।
कदियक–क्रि०वि० कव, कभी ।
कदियाड़–क्रि०वि० किसी दिन ।
कदियौ–पु० घी भरने या परोसने की कटोरी ।
कदी, कदीक–क्रि०वि० १ कभी । २ किसी दिन । ३ कब ।
कदीकौ–वि० कभी का । (स्त्री० कदीकी)
कदीम–क्रि०वि० [अ० कदीम] १ परम्परा से, सदैव । –वि० १ प्राचीन । २ परपरागत ।
कदीमी–वि० परपरागत । प्राचीन ।
कदीय–क्रि०वि० कभी ।
कदीरौ–वि० (स्त्री० कदीरी) कभी का ।
कदीसेक–क्रि०वि० कभी-कभी ।
कदू–पु० लौकी, घीया । कुष्माडु ।
कदे, कदेइक, कदेई–देखो 'कदे' ।
कदेईन–क्रि०वि० कभी भी ।
कदेक–क्रि०वि० कव तक ।
कदेकण–क्रि०वि० कभी ।

कदेकरो, कदेको–वि० कभी का । (स्त्री० कदेकरी)

कदेय–क्रि०वि० कभी ।

कदेरोई, कदेरो–वि० कभी का । (स्त्री० कदेरी)

कदेव–पु० कृपण, कजूस ।

कदेहिक, कदेहीक–क्रि०वि० कभी ।

कदै (ई)–क्रि०वि० कब । कभी भी ।

कदैईसेक–क्रि०वि० कभी-कभी ।

कदैक–देखो 'कदेक' ।

कदैकदास, कदोकोई, कदोको–वि० कभी का । (स्त्री० कदोकी)

कद्दौ–वि० श्याम, कृष्ण, काला ।

कद्रदान–देखो 'क़दरदान' ।

कन–अव्य० १ या, अथवा । २ ओर, तरफ । –पु० [सं० कर्ण] १ कान । २ राजा कर्ण । ३ श्रीकृष्ण । —**बाल**–पु० कान के बाल या केश ।

कनक (क्क)–पु० [स० कनक़] १ सोना, स्वर्ण । [स० कनक] २ धतूरा । ३ एक प्रकार का घोडा । ४ पलाश । ५ छप्पय छद का एक भेद । ६ वेलियो साणोर छद का एक भेद । –वि० पीत, पीला । —**अचळ**–पु० सुमेरु पर्वत । —**केसर**–पु० एक रग विशेष का घोडा । —**गढ़**–पु० लका । जालौर का किला । —**गिर, गिरि**–पु० सुमेरु पर्वत । जालौर का पर्वत । —**लता**–स्त्री० स्वर्णलता । —**वरीसण**–पु० सूर्य पुत्र कर्ण । —**वेल, लि, लो**–स्त्री० स्वर्णलता । –**श्रवण**–पु० स्वर्णदान करने वाला राजा कर्ण ।

कनकुकडो–स्त्री० १ कान के ऊपर का भाग जहा वाली पहनी जाती है । २ इस पर पहनी जाने वाली वाली ।

कनखळ–पु० १ हरिद्वार के पास का एक तीर्थ स्थान । २ हगामा, शोरगुल ।

कनड़–पु० श्रीकृष्ण ।

कनडो–स्त्री० एक राग विशेष ।

कनडो–पु० १ वस्त्र का छोर । २ कान । ३ देखो 'कानडो' ।

कनन–वि० [स०] एकाक्षी, काना ।

कनपडी, कनपटी, कनपट्टी, कनफडी–स्त्री० कान के आगे का भाग ।

कनफडो–पु० १ कनफटा गोरखपथी योगी । २ देखो 'कनपडी' ।

कनफटो–पु० नाथ सप्रदाय का सन्यासी ।

कनफूळ–पु० [स० कर्ण-फूल] कान का आभूषण, कर्ण फूल ।

कनमूळ–पु० कान के पास होने वाला एक ग्रथि-रोग ।

कनलो–वि० (स्त्री० कनली) पास का, निकट का ।

कनवत–पु० घोडे के कान ।

कनसळाई–देखो 'कानसळाई' ।

कनसुरि (रो)–पु० कान के आगे का हिस्सा, कनपटी ।

कनस्ट–देखो 'कनिस्ठ' ।

कना–क्रि०वि० [स० कर्ण] १ निकट, पास । २ या, अथवा । ३ मानो, सभवत ।

कनाग्रण–पु० घोडे के कान ।

कनाई–पु० श्रीकृष्ण । –क्रि०वि० पास, निकट ।

कनात (थ)–स्त्री० [तु०] १ तीन तरफ से घेर कर किया जाने वाला आडा पर्दा । २ छोर, किनारा ।

कनार–पु० १ घोडे का एक रोग । २ देखो 'किनार' ।

कनारी–देखो 'किनार' ।

कनारो–देखो 'किनारो' ।

कनिग्रान, कनिग्रो (यो)–पु० छोटा भाई ।

कनियांण, (णि, णी)–देखो 'किनियाणी' ।

कनिस्ट (स्ठ)–पु० [स० कनिष्ठ] छोटा भाई । –वि० १ सबसे छोटा । २ छोटा, लघु । ३ कम ।

कनी–स्त्री० [स०] १ कन्या, बालिका । २ सेना, फौज । ३ हीरे का छोटा टुकडा । ४ देखो 'कणी' ।

कनीग्रस–देखो 'कनीयस' ।

कनीपाव–पु० गुरु कृष्णपाद ।

कनीयस–पु० [स० अकनीयस] तावा ।

कनीर–देखो 'कणेर' ।

कनूर (रो)–पु० १ कान, कर्ण । २ कनपटी ।

कनेउर–पु० कान का आभूषण विशेष ।

कनै–क्रि०वि० १ समीप, पास । २ कब्जे मे । ३ साथ में । ४ निकट ।

कनैयो–पु० १ श्रीकृष्ण । २ एक छोटा पक्षी ।

कनैलं, कनोती, कनौती–स्त्री० १ घोडे का कान । २ कान की नोक । ३ कान का आभूषण ।

कन्न–पु० [स० कर्ण] १ कान, कर्ण । २ राजा कर्ण । ३ श्रीकृष्ण । ४ देखो 'कन्या' ।

कन्नफड–देखो 'कनफडो' ।

कन्नि, कन्नी–पु० [स० कर्ण] १ कान । २ छोटी पतग ।

कन्यका, कन्या–स्त्री० [स०] १ बालिका, कन्या लडकी । २ अविवाहिता लडकी । ३ पद्य-काव्य की नायिका । ४ एक राशि । ५ दुर्गा का नाम । ६ बडी इलायची । ७ पुत्री । ८ घृतकुमारी । ९ अक्षत योनि की स्त्री । १० दिशा । ११ पांच की सख्या । —**काळ**–पु० कन्या का का कु वारापन । लडकी की रजोदर्शन के पूर्व की अवस्था । लडकियो का अभाव । —**दांन**–पु० कन्या का विवाह या दान । दहेज । गऊदान । —**वळ, हळ**–पु० कन्या के विवाह के दिन पाणिग्रहण होने तक रखा जाने वाला व्रत । कन्यादान ।

कन्ह–पु० १ श्रीकृष्ण का एक नाम । २ देखो 'कान' । –क्रि०वि० या, अथवा ।

कन्हई, कन्हई–क्रि०वि० १ पास, निकट । २ समीप । ३ अगाडी ।

कन्हड, (डौ, ड, डौ)–१ देखो 'कानडी' । २ देखो 'कान्ह' ।

कन्हर–पु० श्रीकृष्ण ।

कन्हलौ–वि० (स्त्री० कन्हली) पास का, निकट का ।

कन्हा–क्रि०वि० पास मे ।

कन्है–क्रि०वि० पास मे ।

कन्हैयौ (इयौ)–देखो 'कनैयौ' ।

कप–पु० [अ०] १ प्याला । २ देखो 'कपि' ।

कपड–पु० कपडा, वस्त्र । —कोट–पु० पहिनने का वस्त्र । तबू, खेमा । —छाण–पु० बारीक कपडे से छानने की क्रिया । बारीक कपडे से छाना हुआ पदार्थ । —दार, विदार–पु० दर्जी ।

कपडद्वारौ–पु० १ वस्त्रागार । २ राजा महाराजा, की राजकीय पोशाक, जेवर, रोकड, जवाहरात सबधी सामान को सुरक्षित रखने व उसकी व्यवस्था करने का विभाग विशेष । (जयपुर)

कपडा-रो-कोठार (भडार)–पु० राजा महाराजाओ के वस्त्र सबधी एक विभाग का नाम ।

कपडा–पु० १ वस्त्र । २ रजस्वला स्त्री का दूषित रक्त । ३ रक्त प्रदर रोग ।

कपडाणौ (वौ)–क्रि० १ कपडा लपेट कर किसी सचे मे फिट करना । २ पकडाना ।

कपडौ–पु० [स० कर्पट] १ वस्त्र । २ वस्त्र खण्ड । ३ चीर पट । ४ पोशाख ।

कपट (ता, ताई)–पु० [स०] १ धोखा, छल । २ पाखण्ड । ३ दुराव । ४ बनावट । ५ लुकाव-छिपाव । ६ बहत्तर कलाओ में से एक । ७ चालाकी, धूर्तता ।

कपटी–वि० [स०] (स्त्री० कपटण) १ धोखेबाज, छलिया । २ पाखण्डी । ३ बनावटी । ४ कुटिल ।

कपणियौ–पु० दीपक की लौ से काजल बनाने का मिट्टी का बना उपकरण ।

कपणौ–वि० काटने वाला, मिटाने वाला ।

कपणौ (वौ)–क्रि० १ कटना, नाश होना, मिटना । २ देखो 'खपणौ (वौ)' । ३ देखो कपणौ (वौ) ।

कपरदी, कपरदोस–पु० [स० कपर्दी] शकर, शिव ।

कपरौ–पु० १ नमक पैदा होने की भूमि । २ पानी के पडाव का स्थान ।

कपल–देखो 'कपिल' ।

कपला–देखो 'कपिला' ।

कपाण–स्त्री० [स० कृपाण] १ कटार, कृपाण । २ तलवार, खड्ग ।

कपाट–पु० [सं०] १ द्वार-पट । २ दरवाजे का पल्ला, किवाड । ३ आड ।

कपाणौ (वौ)–क्रि० कटाना, कतराना ।

कपायौ–पु० [स० कर्पास] १ कपास का बीज । २ हाथ या पैर-तले मे होने वाली चर्म ग्रथि । ३ मस्तिष्क का सार भाग ।

कपाळ–पु० [स० कपाल] १ शिर का ऊपरी भाग । २ शिर, मस्तक । ३ ललाट, भाल । ४ भाग्य । ५ मिट्टी का भिक्षा-पात्र । ६ याज्ञिक देवताओ का पुरोडाश पकाने का पात्र । ७ खप्पर । ८ प्याला । ९ ढक्कन । —किरिया, क्रिया–स्त्री०–दाह सस्कार के समय शव के मस्तक को क्षत करने की क्रिया ।

कपाळी (क)–वि० [सं० कपालिन्] १ कपालधारी । २ खप्पर धारी । ३ खोपडी का कनफटी से जुडने वाला भाग । –पु० १ शिव, महादेव । २ एक नीच जाति । ३ देखो कपाल' ।

कपाळेस्वर–पु० [स० कपालेश्वर] शिव, महादेव ।

कपालोडी स्त्री० ऊंट के शिर मे होने वाली एक ग्रथि ।

कपावणौ(वौ)–१ देखो 'खपाणौ(वौ)' । २ देखो 'कपाणौ' (वौ) ।

कपास–पु० [स० कर्पास] १ रूई व बिनौले का पौधा । २ रूई । ३ बिनौला ।

कपासियौ– १ देखो 'कपायौ' । २ देखो 'कपास' ।

कपासी–स्त्री० एक प्रकार का झाड-वृक्ष ।

कपिंद–पु० [स० कपि+इन्द्र] १ सिह । २ हनुमान । ३ सुग्रीव । ४ जाम्बवत ।

कपि–पु० [सं०] १ बदर, लगूर । २ हाथी । ३ हनुमान । ४ सुग्रीव । —केत, धाय, धुज, धुजा–पु० अर्जुन । —पत्त–पु०–सुग्रीव । —रथ–पु० श्रीराम । अर्जुन । —राज, राय–पु० सुग्रीव । हनुमान । बालि ।

कपित्थ–पु० कैथा ।

कपिळ (ल)–पु० [स० कपिळ] १ साख्य शास्त्र के रचियता एक मुनि । २ शिव, महादेव । ३ वानर । ४ अग्नि । ५ चूहा । ६ कुत्ता । ७ धूप । ८ मट मैला रग । ९ देखो 'कपिला' –वि० पीला, पीत ।

कपिळा (ला)–स्त्री० [स० कपिला] १ सफेद गाय । २ कामधेनु । ३ पुडरीक दिग्गज की पत्नी व दक्ष की पुत्री । ४ शिलाजीत । ५ मटमैले रग की गाय ।

कपी–पु० १ सूर्य भानु । २ देखो 'कपि' । —केत='कपिकेत' । —मुखौ–वि० बदर जैसे मुख वाला । —राज, राय='कपिराज' ।

कपीलौ—पु० [सं० कम्पिल्ल] एक प्रकार का छोटा वृक्ष व इसके फल।

कपीस (स्वर)—पु० [स० कपीश, कपीश्वर] १ वानरराज वाली, सुग्रीव। २ हनुमान।

कपूत—पु० [स० कुपुत्र] दुराचारी या निठल्ला पुत्र।

कपूती—स्त्री० कपूत का कार्य या गुण। कपूत होने का भाव।

कपूर—पु० [स० कर्पूर] १ स्फटिक रग का एक गंध-द्रव्य। २ कपूरी रग का घोडा। ३ सोलह वर्णों का एक छद। —वि० १ श्वेत। २ काला।

कपूरियौ—पु० बकरे, नर भेड, (मेप) के अडकोश का मास या अडकोश।

कपूरि, क़पूरी—पु० १ एक प्रकार का पान। २ एक प्रकार का घोडा। ३ देखो 'कपूर'।

कपेलौ—पु० लाल मिट्टी।

कपोत—पु० [स०] १ कबूतर। २ पडुकी ३ चिडिया। ४ पक्षी। —वि० वैंगनी रग का। —**वाय**—पु० घोडे का एक रोग।

कपोळ—पु० १ गाल। २ हाथी का गडस्थल।

कप्पड, कप्पडौ—देखो 'कपडौ'।

कप्पड-कोट—देखो 'कपडकोट'।

कप्पणौ—वि० [स० कल्पन] काटना, कतरना।

कप्पोळ, कप्पौळ—देखो 'कपोळ'।

कफ—पु० [स०] १ श्लेष्मा, बलगम। २ शरीरस्थ त्रिधातुओ में से एक। ३ फेन, झाग।

कफ़त—वि० [स० कफ्त] अयोग्य।

कफन—पु० शव को लपेटने का वस्त्र।

कफनी—स्त्री० [फा०] साधुओ का चोगा।

कफळ—स्त्री० [स० कफल] सुपारी।

कफोणी—स्त्री० [सं० कफोणि] हाथ व बाहु के जोड की हड्डी, कोहनी।

कबध—पु० [स० कवध] १ शिर कटा धड। २ पेट। ३ बादल ४ धूमकेतु। ५ जल। ६ राहु। ७ एक राक्षस। ८ राठौड़ वश का उपटक।

कब—क्रि० वि० १ किस समय। २ देखो 'कवि'।

कबज—१ देखो 'कब्जी'। २ देखो 'कबजौ'।

कबजी—स्त्री० [अ० कब्ज] १ मलावरोध का रोग। २ कोष्ठ-बद्धता।

कबजौ—पु० [अ० कब्जा] १ अधिकार, आधिपत्य। २ नियत्रण, काबू। ३ बाजू। ४ दस्ता, बेंट। ५ पीतल या लोहे का पुर्जा। ६ स्त्रियो का वक्षस्थल ढकने का वस्त्र।

कबडाळौ—पु० १ चितकबरा साप। २ कोडियो से बना ऊट का गहना। —वि० (स्त्री० कवडाळी) चितकबरा।

कबडियौ—पु० एक प्रकार का पक्षी।

कबडी (ड्डी)—पु० १ एक खेल विशेष, कबड्डी। २ कौडी।

कबडौ—देखो 'कोडौ'।

कबध्य—वि० [स० कुबुद्धि] नीच, दुष्ट, कुबुद्धि वाला।

कबर—स्त्री० [अ० कब्र] शव दफनाने का गड्ढा या स्थान। —**असतान, अस्तान**—पु० शव दफनाने का क्षेत्र।

कबराजा—देखो 'कविराजा'।

कबरी—स्त्री० [सं०] चोटी, वेणी।

कबरौ—पु० एक पक्षी विशेष। —वि० चितकबरा। (स्त्री० कबरी)

कबळ (ळौ)—पु० ग्रास, कौर।

किबलेजहान, कबलेजिहान—पु० [अ किबल + फा जहान] बादशाहो के प्रति सबोधन शब्द।

कबल्लौ—पु० १ घोडा। २ सूअर।

कबाण (न)—पु० [फा० कमान] १ धनुष। २ लबी टहनियो का एक क्षुप। ३ धनुषाकार चुनाई।

कबाणी—स्त्री० ऐंठन देकर नलीदार बनाया हुआ तार जो फैलता व सिकुडता रहता है। २ बढई के काम आने वाला उपकरण। —**क़तियौ**—पु० बढई का एक औज़ार —**दार**—वि० जिसमे कमानी लगी हो। धनुषाकार।

कबाड़—पु० [अ० कबा] चोगा।

कबाडणौ (बौ)—क्रि० १ चतुराई से प्राप्त करना। २ दुर्लभ्य वस्तु ढूढ कर प्राप्त करना।

कबाडी—पु० १ रद्दी सामान का व्यापारी। २ लकडहारा। —वि० दुर्लभ्य वस्तुएँ प्राप्त करने वाला। २ चतुर, निपुण। ३ प्रपची।

कबाडौ—पु० १ कचरा-सामान, अटाला। रद्दी वस्तुओ का ढेर। २ दक्षता का कार्य। ३ उपद्रव, बखेडा। ४ प्रपच।

क़बाब (बौ)—पु० [अ० कबाब] १ कीमे का तला हुआ मास टिकिया या सीखे पर भुना मास। २ मसाले के साथ बनाए हुए चावल। ३ चावल की मसालेदार खिचडी।

कबाबचीनी—स्त्री० [फा०] एक प्रसिद्ध बीज, शीतल चीनी।

कबाबी—वि० १ 'कबाब' बेचने वाला या खाने वाला। २ मासाहारी। —वि० कबाब सबधी।

कबाय—पु० प्राचीन-कालीन एक वस्त्र।

कबि—१ देखो 'कवि'। देखो 'कभी'।

कबिका—स्त्री० [स० कविका] लगाम।

कबी—१ देखो 'कभी'। २ देखो 'कवि'। ३ देखो 'कविका'।

कबीर—पु० [फा०] सुप्रसिद्ध निर्गुण पथी महात्मा। —**पथ**—पु० कबीर का मत। —**पथी**—पु० कबीर के अनुयायी। —वि० महान, बडा, महात्मा।

कबीरी—स्त्री० उदरपूर्णार्थ किया जाने वाला छोटा-मोटा उद्यम।

कबीलौ—पु० [अ० कबील] १ वश। २ कुटुम्ब। ३ अन्त पुर का स्त्री समाज। ४ एक वृक्ष विशेष। ५ देखो 'कपीलौ'।

कबुडी—क्रि० वि० कभी।

कबू–१ देखो 'कब' । २ देखो 'कबूतर' ।
कबूडो–देखो 'कबूतर' । (स्त्री० कबूडी)
कबूठाण–स्त्री० [सं० कुंभिस्थान] हाथी बांधने का स्थान ।
कबूतर (रो)–पु०[फा०]१ एक प्रसिद्ध निरामिष पक्षी, कपोत । २ नट जाति या नट जाति का व्यक्ति । (स्त्री० कबूतरी) ३ कबूतर के रंग का घोडा ।
कबूतरखानो–पु० १ कबूतर पाल कर रखे जाने का स्थान । २ एक राजकीय विभाग जिसमें नटवादी या इस प्रकार के खेल खेलने वाली जातियों के पुरस्कार आदि का प्रबंध रहता था तथा इनके झगडे, टंटे मिटाने का प्रबंध रहता था । ३ अनाथालय ।
कबूल–वि० [अ० कुबूल] स्वीकार, मंजूर ।
कबूलणो (बो)–क्रि० १ स्वीकार करना, मंजूर करना । २ अंगीकार करना ।
कबूलाइत, कबूलायत–स्त्री० कबूल करने की क्रिया या भाव । २ मनौती । ३ जागीर के उपलक्ष में सामंत द्वारा स्वीकार की गई सेवाएँ ।
कबूली–स्त्री० १ मांस-मसाले डाल कर पकाये हुए चावल । २ स्वीकृति ।
कबोल–देखो 'कुबोल' ।
कब्जो–देखो 'कब्जो' ।
कब्ब–१ देखो 'काव्य' । २ देखो 'कवि' । ३ देखो 'कव' ।
कब्बरो–१ देखो 'कवरो' । २ देखो 'कावरो' ।
कमंडळ–पु० [सं० कमंडलु] साधु सन्यासियों का जलपात्र ।
कमंद (दज, धज)–१ देखो 'कबंध' । २ देखो 'कमद्धज' ।
कम–वि० [फा०] थोडा, कम, न्यून । सर्व०–कौन, किस । –क्रि०वि०१ कैसे । २ देखो 'करम' । ३ देखो 'क्रम' । **—असल, अस्ल**–वि० दोगला । वर्णसंकर । **—खरची, खरचीलो**–वि०–मितव्ययी । **—नसीब**–वि० हतभाग्य । **—बोली**–वि० मितभाषी ।
कमक–पु० १ मानूपण । २ देखो 'कुमक' ।
कमकमो (म्मो)–देखो 'कुमकुमो' ।
कमख–पु० [सं० कल्मष] १ पाप । २ देखो 'कुमक' ।
कमखाब–पु० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
कमगर–वि० १ निरन्तर कार्य करने वाला । २ कार्य कुशल, चतुर, दक्ष ।
कमची–स्त्री० एक धार दार शस्त्र विशेष ।
कमजा–देखो 'कमज्या' ।
कमजोर–वि० [फा०] १ दुर्बल, अशक्त । २ दुबला-पतला । [illegible] रोग ।
कमजोरी–स्त्री० [फा०] निर्बलता, कमजोरी, दुर्बलता ।
कमज्या–स्त्री० [सं० कर्मार्जन] १ कर्म, कार्य, कर्त्तव्य । २ प्रारब्ध ।
कमट्ठ, कमठ–पु० [सं० कमठ] १ कच्छप, कछुआ । २ धनुष, कमान । ३ बांस । ४ घडा । ५ एक दैत्य । ६ एक प्रकार का बाजा ।
कमठांण (णो)–पु० [सं० कुंभिस्थान] १ हाथी बांधने का स्थान या स्तंभ । २ भवन-निर्माण-कार्य । ३ शरीर का ढांचा । ४ भवन ।
कमठाकृत-हरि, कमठाधररूप–पु० यौ० विष्णु का कच्छपावतार ।
कमठाळ, कमठाळय–पु०१ हाथी । २ धनुषधारी योद्धा । ३ भील ।
कमठेस–पु० कच्छपावतार ।
कमठौ–पु० [सं० कमठ] १ धनुष । २ कच्छप । ३ भवन-निर्माण-कार्य ।
कमण, कमणि–सर्व० [सं०किम्] १ कौन । २ किस । –वि० १ कितना । २ देखो 'कवाण' ।
कमणीगर–पु० धनुष बनाने वाला ।
कमणैत–देखो 'कमनैत' ।
कमतर–पु० १ काम, धंधा । २ व्यवसाय, पेशा । ३ परिश्रम । ४ सामग्री ।
कमतरी (रियो)–पु० १ कमतर करने वाला । २ श्रमिक ।
कमती–वि० [फा०] कम, अल्प । निश्चित से कम ।
कमद, कमध–देखो 'कवध' ।
कमदणी–देखो 'कमोदणी' ।
कमद्धज (धज, धजियो, धज्ज, धाणी, ध्वज)–पु० १ राठौड वंशीय क्षत्रियों का उपटक । २ राठौड । ३ पति, खाविंद ।
कमन–वि० [सं०] १ विषयी, कामी । २ लम्पट । ३ सुन्दर मनोहर । ४ बढिया श्रेष्ठ । –पु० १ कामदेव । २ अशोक वृक्ष । ३ ब्रह्मा ।
कमनीय–वि० [सं०] १ सुन्दर, मनोहर । २ वाञ्छनीय । ३ प्रिय ४ कोमल, नाजुक ।
कमनेत (नैत)–वि० तीरंदाज ।
कममिख्यण–पु० [सं० कर्मावीक्षण, कर्माभिक्षण] यम ।
कमर–स्त्री० [फा०] १ कटि, कटि प्रदेश । २ शरीर का मध्य भाग (पशु) । **—बड़ी**–स्त्री० तलवार । **—बाप**–स्त्री० दीवार के बीच लगने वाली पत्थर की पट्टी । **—तोड**–पु० एक प्रकार की पौष्टिक औषधि । **—दुकूळ, पछेवड़ो**–पु० कटिबंध । कटि में बांधने का वस्त्र । **—पटो, पट्टो**–पु० कमर बंध । **—पेटी**–स्त्री० कमर का कवच । **—बंद, बंध, बंधो**–पु० कटिबंधन, साफा, पगडी ।
कमरख–पु० १ एक प्रकार का वृक्ष जिसमें पीले फूल लगते हैं । २ [illegible]

कमरासचोका–वि० कटिवद्ध, तैयार।

कमरी–स्त्री० १ ऊट का एक प्रकार का वात रोग। २ इस रोग से पीडित ऊट। ३ एक प्रकार की कुरती, अगरखी।

कमरो–पु० [लै० कैमेरा] बैठक का कक्ष। कक्ष।

कमळ–पु० [स० कमल] १ जलाशयो मे होने वाला एक प्रसिद्ध पौधा व इसका पुष्प। २ जल। ३ तावा। ४ अर्क या दवा विशेप। ५ सारस पक्षी। ६ मूत्रस्थली। ७ मुख, बदन। ८ एक हिरन विशेप। ९ ब्रह्मा। १० शिव। ११ मस्तक। १२ आकाश। १३ योग के अनुसार शरीरस्थ चक्र। १४ डिंगल का एक छद। १५ छप्पय छद का २९ वा भेद। १६ वेलियो साणोर का एक भेद। १७ मछली। १८ चन्द्रमा। १९ सूर्य। २० शख। २१ मोती। २२ समुद्र। २३ एक प्रकार का घोडा। २४ ऊट। २५ पृथ्वी। –वि० १ कोमल। २ श्वेत। ३ लाल, रक्ताभ। —**कोसरौ**–वि० पीला, पीत। —**गट्टौ**–पु० कमल का वीज। —**ज, जूण, जोण, जोणी, जोनी**–पु० ब्रह्मा। —**तन, मीतू**–पु० चन्द्रमा। —**दळ**–पु० कमल का पत्ता। —**नयण, नियण**–पु० विष्णु। –वि० कमल के फूल के समान नेत्रो वाला, सुन्दर। —**नाळ**–स्त्री० कमल का डंठल। —**पूजा**–स्त्री० देवी के सम्मुख शिर काट कर अर्पण कर की जाने वाली देवी की पूजा। —**भव, भू**–पु० ब्रह्मा। —**योनि**–पु० ब्रह्मा। —**रंग**–पु० एक प्रकार का घोडा। —**विकास, विकासण**–पु० सूर्य। —**सुत, सुतन** पु० ब्रह्मा। —**सुरग**–पु० एक प्रकार का घोडा।

कमळणी, कमालिणी (नी)–स्त्री० [स० कमलिनी] १ कमल का फूल। २ छोटा कमल। ३ अधिक कमलो वाला स्थान। ४ कमल समूह।

कमला–स्त्री० [स० कमला] १ सर्वोत्तम स्त्री। २ लक्ष्मी। ३ देवी, शक्ति। ४ धन सम्पत्ति। ५ भूमि। ६ एक नदी का नाम। ७ महामाया। ८ एक वर्ण वृत्त। ९ एक लोक गीत। १० अतगुरु की चार मात्रा का नाम। —**एकावसी** –स्त्री० चैत्र शुक्ला एकादशी। —**कंत**–पु० विष्णु। श्रीकृष्ण। राजा। —**कर**–पु० विष्णु। छप्पय का ४६ वा भेद। —**गेह, ग्रह**–पु० लक्ष्मी का निवास, लक्ष्मी का घर। **पत, पति**–पु०–विष्णु। श्रीकृष्ण। राजा। —**सण, सन** –पु० ब्रह्मा।

कमलाणौ (बौ), कमलावणौ (बौ)–देखो 'कुमलाणौ' (बो)।

कमलि–स्त्री० १ कमला। २ पृथ्वी। —**चख**–पु० कमल-चक्षु। विष्णु।

कमळिणी (नी)–देखो 'कमलनी'।

कमळियौ–पु० [स० कामला] रक्त की कमी के कारण होने वाला एक रोग।

कमळीक–पु० एक नाग वश व इस वश का नाग।

कमळू–देखो 'कमल'।

कमळौ–पु० १ ऊंट। २ देखो 'कवळौ'। ३ देखो 'कमळ'।

कमसल–देखो 'कमअसल'।

कमसीस–पु० १ शिरस्त्राण, शिर कवच। २ गढ का कगुरा।

कमहत–पु० बादल।

कमाण (न)–पु० १ धनुष, कमान। २ कमाई। ३ मेहराब। ४ आज्ञा, आदेश। ५ फौज का नेतृत्व।

कमाणी–देखो 'कवाणी'।

कमाई–स्त्री० १ परिश्रम द्वारा की जाने वाली आय, अर्जन, उपार्जन। २ अर्जित धन। ३ लाभ, मुनाफा। ४ कार्य, व्यवसाय। –वि० अर्जित।

कमाऊ–वि० १ कमाने वाला, उपार्जन करने वाला। २ उद्यमी।

कमागर–स्त्री० शस्त्र बनाने का कार्य करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति।

कमाड–देखो 'कपाट'।

कमाडी–देखो 'किवाडी'।

कमाणौ (बौ), कमावणौ (बौ)–क्रि० १ परिश्रम द्वारा आमदनी करना, कमाना। अर्जन करना। २ काम लायक करना, सुधारना। ३ उत्पादन करना। ४ मुनाफा करना। ५ घटाना, कम करना। ६ मास साफ करना।

कमावणियौ–वि० उपार्जन करने वाला कमाई करने वाला।

कमायचौ–पु० एक वाद्य विशेष।

कमायी–देखो 'कमाई'।

कमाळ–स्त्री० मुडमाला। –पु० ऊट।

कमाल–पु० [अ०] १ अद्‌भुत व चमत्कारी कार्य। २ पूर्णता, पर्याप्तता। ३ निपुणता, कुशलता। ४ कारीगरी। ५ ऊंट। ६ गुण, खूबी। ७ कला, फन। ८ चालाकी, धूर्तता। ९ विद्वत्ता, काबलियत। –वि० १ अद्‌भुत, विचित्र। २ अधिक बहुत।

कमाळी–पु० १ शिव, महादेव। २ भैरव। ३ भिखारी। ४ मुगल। ५ द्वार के ऊपर का काठ।

कमावू–देखो 'कमाऊ'।

कमी–स्त्री० १ कटौती। २ न्यूनता। ३ घाटा, हानि।

कमीज–पु० [फा०] शरीर पर धारण करने का मर्दानी वस्त्र।

कमीण–वि० [फा० कमीन] १ नीच, शूद्र। २ तुच्छ बुद्धि वाला। ३ धूर्त, पाजी। ४ अकुलीन। [स० कार्मण] ५ किसी कार्य को सुचारु रूप से पूरा करने वाला।

कमीण-कार (कारू)–पु० [सं० कार्मण + कारु] १ सुथार, दर्जी, कुम्हार आदि वर्ग। २ शिल्प का कार्य करने वाला शिल्पी। ३ किसी कार्य विशेष मे निपुण व्यक्ति। ४ नौकर, सेवक।

कमुद–१ देखो 'कुमुद'। २ देखो 'कमोद'।

कमेडी–स्त्री० १ फाख्ता नामक पक्षी, पंडुखी। २ पशुओं के सींग का एक रोग।

कमेडो–पु० १ ऊंटो के खाने का एक सफेद फूलो वाला पौधा। २ नर पंडुक पक्षी। ३ चक्कर।

कमेत, कमेतीय–पु० लाल रग का घोडा। —पिलंग–पु० शुभ रग का घोडा। —सोनहरी–पु० शुभ रंग घोडा।

कमेदूधारी–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

कमेर–पु० कुबेर।

कमैत–देखो 'कमेत'।

कमैरो–पु० कृषि मजदूर।

कमोद–पु० १ कुई। २ रंग विशेष का घोडा। ३ तेरहवी वार उलट कर बनाया हुआ शराव। ३ एक प्रकार का बढिया चावल। ४ देखो 'कुमुद'।

कमोदण (दणि, दणी, नी)–स्त्री० [स० कुमुदिनी] १ सफेद कमल का पौधा। २ कुई। ३ कुमुद पुष्पो का समूह। ४ चादनी। —हितू–पु० चन्द्रमा।

कमोदी–पु० [स० कुमुदिन] चन्द्रमा।

कम्म–१ देखो 'करम'। २ देखो 'क्रम'।

कम्मर–स्त्री० कटि, कमर। —सूत–पु० करधनी, मेखला।

कम्मळ–१ देखो 'कवळ'। २ देखो 'कमळ'।

कम्मेडी–देखो 'कमेडी'।

कय–स्त्री० [स०] कनपटी।

कयकाण–देखो 'केकाण'।

कयर–देखो 'कैर'।

कयळी–देखो 'कायळी'।

कयवार–देखो 'कैवार'।

कया–क्रि०वि० १ कैसे, किस तरह, क्यो। २ देखो 'काया'।

कयाहीक–क्रि०वि० [स० कीदृश] कैसे ही। कभी। –वि० १ कुछेक। २ कितनेक।

कयागरी–वि० आज्ञाकारी।

कयामत–स्त्री० [अ०] १ प्रलय। २ भयकर विपत्ति। ३ बहुत बडी हलचल। ४ सृष्टि का अत, जब मुर्दे उठ खडे होगे।

कयास–पु० [अ०] १ खयाल, ध्यान, विचार। २ अनुमान।

कयाहिक–देखो 'कयाहिक'।

कयो–सर्व० कौनसा।

करक (उ, उड़, ड़ो)–पु० १ अस्थिपंजर, ककाल। २ रीढ की हड्डी। ३ पशुओं के बोलने का शब्द। ४ सूखी हड्डी।

करग–देखो 'कुरग'।

करगळ–देखो 'कागळ'।

करड (क)–पु० [स करण्ड] १ पान की पिटारी। २ लकडी की पेटी जिसमे देवता की मूर्ति रखी जाती है। ३ मजूषा। ४ नक्कार।

करंडव–पु० हस-जाति का एक पक्षी।

करडियौ–देखो 'करड'।

करंद्रराज–पु० [स० करि-इद्र-राज] गजराज ऐरावत।

करंबक–देखो 'करबौ'।

करबित–पु० फूलो का ढेर या गुच्छा।

कर–पु० [स०] १ हाथ। २ हाथ का अगला भाग। ३ किरण। ४ हाथी की सूड। ५ चुंगी, लगान। ६ ओका। ७ चौबीस अगुल का एक माप। ८ हस्त नक्षत्र। ९ हाथी। १० झरना। ११ विषयवासना। १२ रहट का एक पुर्जा। —अल, आले–प्र० करतल, हथेली सज्ञा शब्दो के अगाडी लगने वाला प्रत्यय। —कथु–पु० बदरी फल, बेर। —कडौ–पु० रीढ की हड्डी। अस्थिपजर। —कारू–पु० कुम्हडा। —काळ–पु० साप, सर्प। —कोच–पु० कर कवच। हाथ का दस्ताना। —ग, गि ग्गा–पु० हाथ। लगाम। कटारी। तलवार। —ग्रहण–पु० पाणिग्रहण। —ग्राही–वि० कर-ग्रहण करने वाला। —ठाळ, ठाळग–स्त्री० तलवार। भाला। —डंड–पु० तीर। —तळ–स्त्री० हथेली। सिंह का पजा। अत गुरु की चार मात्रा। छप्पय छद का ४५ वा भेद। —ताळ, —ताळीक–स्त्री० तलवार, खड्ग। प्रथम गुरु ढगण के भेद का नाम। एक वाद्य विशेष। —ताळी–स्त्री० दोनो हथेलियो से की जाने वाली आवाज। —धार–स्त्री० शस्त्र। —पल्लव–पु० हाथ की अगुली। —बाळ–स्त्री० तलवार। —भूसण–पु० हाथ का गहना। कगन। —मठ–पु० कृपण, कजूस। —माळ, माळी, म्याळ–स्त्री० तलवार। —साख, साखा–स्त्री० अगुली। —सीकर–पु० हाथी की सूड का पानी।

करअळ, (ळि, यळ)–देखो 'करतळ'।

करक–पु० [स० करक कर्क] १ कमडल। २ करवा। ३ नारियल की खोपडी। ४ अनार। ५ हाथ। ६ मौलसिरी। ७ कचनार। ८ करील वृक्ष। ९ महशूल। १० एक पक्षी। ११ ओला। उपल। १२ पृथ्वी की विषुवत् रेखा के उत्तर या दक्षिण मे २३ अक्षाश पर निकलने वाली कल्पित रेखाऐं। १३ बारह राशियो मे से एक। १४ केंकडा। १५ अग्नि। १६ जलपात्र। १७ आईना। १८ सफेद घोडा। १९ एक लग्न। २० शक्ति बल। २१ खेत। २२ चीस, पीडा, दर्द। २३ खटकन। २४ सूखी हड्डी, करक। २५ गीद

करकडी–पु० १ रीढ की हड्डी। २ हड्डी अस्थि।

करकट (क)–पु० [स० कर्कट] १ केंकडा। २ गिरगिट। ३ कर्क राशि। ४ सारस पक्षी। ५ लौकी, घीया। ६ कमल की मोटी जड। ७ कूडा करकट। ८ घास-फूस। ९ सफेद रग का घोडा। —जोग, योग–पु० ज्योतिष का अशुभ योग।

करकटणौ (बौ)–क्रि० १ मरना। २ कटना।

करकटिका (कटी)–स्त्री० ककडी।

करकणौ (बौ)–क्रि० १ दर्द से चिल्लाना। २ कराहना। ३ कसकना। ४ रगड लगना। ५ फटना। ६ खटकना।

करकर–स्त्री० [स० कर्कर] १ समुद्री नमक। २ हड्डी। ३ ककर। ४ धूलि कण। ५ करीर-वृक्ष।

करकस–वि० [स० कर्कश] १ कठोर। सख्त। २ क्रूर, तेज। ३ तीक्ष्ण। ४ अप्रिय। ५ कलह प्रिय।

करकसा–स्त्री० [स० कर्कशा] १ असदाचारिणी, असती अपतिव्रता स्त्री। २ कलह प्रिय।

करकाठ–स्त्री० अगूठा फैलाकर, मुष्टिका जितनी लवाई का नाप।

करका–वि० श्वेत, सफेद।

करकौ–देखो 'किरकौ'।

करक्कणौ (बौ)–देखो 'करकणौ' (बौ)।

करख–पु०[सं०कर्ष] १ खिचाव, तनाव। २ हठ,जिद्द। ३ क्रोध, रोप। ४ दुख,कष्ट। ५ एक तौल। —**धज**–पु० दीपक।

करखणौ (बौ),करखिणौ (बौ)–क्रि० [स० कर्षणम्] खीचना। तानना।

करगसा–देखो 'करकसा'।

करड–स्त्री० १ लवे तंतुदार एक घास। २ कटि, कमर। ३ ध्वनि विशेष। ४ ऊट के वालो का बना विछाने का वस्त्र जिसे गंदा (गद्दा) भी कहते हैं। –वि० दृढ़, मजबूत। —**कौ**–पु० कठोर वस्तु को खाने, तोडने आदि से उत्पन्न ध्वनि। —**दंतौ**–वि० मजबूत दातो वाला। —**धज**–वि० जवरदस्त शक्तिशाली। गर्विला। सजा हुआ। —**पटीलौ, बटीलौ**–वि० चितकवरा। —**मरड**–स्त्री० चू चर्मर की ध्वनि। —**वाळ**–पु० दाढ़ी के श्वेत-श्याम बाल।

करडकणौ (बौ)–क्रि० १ दातो से काट कर खाना। २ टूटना। ३ टूटने समय ध्वनि होना।

करडाण, करड़ाई, करड़ाट, करड़ापण (णौ) करडावण–स्त्री० १ कडाई, कठोरता। २ अभिमान, गर्व। ३ कटुता। ४ एक ध्वनि विशेप।

करडाणौ (बौ), करडावणौ (बौ)–क्रि० १ अकडना, ऐंठना। २ दातो से काटना। ३ कुचलना।

करडीछाकां–स्त्री० रात्रि का द्वितीय प्रहर।

करडीमूठ–स्त्री० १ कृपणता, कजूसी। २ कठोरता। –वि० कृपण।

करडू–पु० अनाज का वह दाना जो पकाने पर भी पकता न हो।

करड़ौ–वि० (स्त्री० करडी) १ कठोर, सख्त। २ दृढ मजबूत। ३ कठिन, दुष्कर। ४ उग्र। ५ ठोस। ६ निष्ठुर। ७ चुस्त। ८ अडियल। ९ अप्रिय। –पु० १ एक प्रकार का घोडा जो अरबी-तुरकी का वर्णसकर होता है। २ श्वेत अश्व। ३ एक प्रकार का सर्प। —**लकड़, लक्कड**–वि० लकडी के समान ठोस।

करज (जौ)–पु० [स० करज] १ नाखून, नख। २ एक सुगधित द्रव्य। ३ प्रकाश। [अ०कर्ज] ४ ऋण। —**दार**–वि० ऋणी। —**दारी**–स्त्री० ऋण। लेनदारी।

करजायत–पु० कर्ज लेने-देने वाला।

करजडी–देखो 'कुरज'।

करझाळ–स्त्री० तलवार।

करट–पु० [स० करट] १ कौवा। २ हाथी का कपोल। ३ पतित ब्राह्मण। –वि० १ दुष्ट। २ नास्तिक।

करठी–स्त्री० कठ।

करड़ू–देखो 'करडू'।

करण–पु० [स०] १ करने की क्रिया या भाव। २ हथियार। ३ दश इन्द्रिय मन, बुद्धि और अहकार। ४ देह। ५ क्रिया, कार्य। ६ स्थान। ७ हेतु। ८ कान। ९ राजा कर्ण। १० दो गुरु की मात्रा का नाम, ऽऽ। ११ हाथ। १२ छप्पय छन्द का एक भेद। १३ व्याकरण का तीसरा कारक। १४ धनुष। १५ किरण। १६ समूह। १७ ज्योतिष मे तिथियो का एक विभाग। १८ ज्योतिष की एक गणित। १९ लिखित दस्तावेज। —**अस्त्र**–पु० धनुष। —**कंडू**–पु० कान का एक रोग। —**कारक**–पु० साधन वताने वाला कारक। —**कारण**–पु० कारण रूप ईश्वर। —**त्राण**–पु० शिर, मस्तक। —**नाद**–पु० कान का एक रोग। —**पत्रभग**–पु० कानो के गहने वनाने का कार्य। ६४ कलाओ मे से एक। —**पसाव**–पु० सुनने का भाव। —**पाण**–पु० तीर, बाण। —**पाक**–पु० कान का एक रोग। —**पित, पिता**–पु० सूर्य, भानु। —**पिसाचिनी**–स्त्री० एक प्रकार की साधना। —**पुरी**–स्त्री० चपापुरी। —**पोत**–पु० भाला। —**फूल**–पु० कान का एक आभूषण। एक पुष्प विशेष। —**बिबाह**–पु० पति। —**मूळ**–पु० कान के मूल मे होने वाला ग्रथि-रोग। —**रस**='करुणरस'। —**रोगवाय**–पु० घोडे का एक रोग। —**लब**–पु० गधा। –वि० लवे कानो वाला। —**सत्र**–पु० अर्जुन। —**सूळ**–पु० कान का रोग। —**सोच**–वि० कायर, डरपोक। —**स्राव**–कान का रोग। —**हार**–पु० ईश्वर।

करणा–देखो 'करुणा'।

करणाकर (कार)–पु० [स० करुणाकर] ईश्वर।

करणाधपत–पु०[स० करुणाधिपति] १ ईश्वर। २ सूर्य, भानु।

करणानिधान–पु० [स० करुणानिधान] १ ईश्वर। २ दयालु, कृपालु।

करणामई,करणामय–वि० [स० करुणामय] करुणा, दया करने वाला । –पु० ईश्वर ।

करणाळ–पु०[स० करुणालय] १ ईश्वर । [स०करण+आलुच] २ सूर्य भानु । ३ करनी देवी । ४ एक वाद्य विशेष ।

करणि–पु० १ कणेर का पुष्प । २ कनक । ३ कार्य, करनी । –क्रि०वि० करने के लिए । देखो 'करणी' ।

करणिका–स्त्री० [स० कर्णिका] १ सूड की नोक । २ अगुली का सिरा ।

करणिकार–पु० १ कणेर का पौधा । २ कनक चपा का वृक्ष ।

करणियौ–देखो 'किरणियौ' ।

करणी–स्त्री० १ कार्य । २ करतूत, हरकत । ३ लीला, रचना । ४ खुरपी । ५ मृतक-सस्कार । ६ हथिनी । ७ सार्थक दिनचर्या । ८ चाल-चलन, व्यवहार । ९ चूना या सिमेंट की लिपाई करने का उपकरण । १० एक वृक्ष विशेष । ११ एक प्रसिद्ध देवी । —गर–पु० ईश्वर । कर्त्ता ।

करणेजप–वि० [स० कर्णेजप] १ दुष्ट, खल । २ चुगलखोर । –पु० सर्प, साप ।

करणौ–पु० एक प्रकार का वृक्ष । –वि० करने वाला ।

करणौ (बौ)–क्रि० १ कोई कार्य या कुछ करना । २ काम पूरा कर देना । ३ किसी क्रिया या कार्य मे संलग्न रहना । ४ जुट जाना ।

करतब–पु० [सं० कर्त्तव्य] १ कार्य, कर्त्तव्य । २ धर्म । ३ उपाय, प्रयत्न । ४ दान । ५ कौशल, हुनर । ६ प्रारब्ध । ७ जादू के चमत्कार । [सं०करित्तव्य] ८ छल कपट । ८ पाप कर्म । १० विस्तार, फैलाव ।

करतबी–वि० १ करतब करने वाला । २ प्रपची, छली । ३ जादूगर । ४ पापी ।

करतमकरता–वि० १ किसी कार्य को पूरा करने का अधिकारी । २ अंतिम-निर्णायक, कर्त्ता-धर्ता । ३ मुखिया ।

करतरी–स्त्री० १ कैंची । २ कटारी । ३ बाण का पिछला हिस्सा । ४ एक शस्त्र विशेष ।

करतव्य–देखो 'करतव' ।

करतां–स्त्री० अपेक्षा, तुलना, मुकाबिला, बनिस्पत ।

करता–वि० [स० कर्त्ता] १ करने वाला । २ बनाने वाला । ३ निर्माता । –वि० १ ईश्वर । २ ब्रह्मा, विधाता । ३ शिव की उपाधि । ४ श्रीकृष्ण । ५ व्याकरण का प्रथम कारक । ६ दुर्गा । ७ पार्वती । —पुरस, पुरिस, पुरुस–पु०–रचनाकार ईश्वर । —वर–पु०–ईश्वर ।

करतार–पु० [स० कर्त्तार] ईश्वर, विधाता । रचनाकार ।

करतारथ–देखो 'कृतारथ' ।

करताळ (ळीक)–स्त्री० १ तलवार, खड्ग । २ एक वाद्य विशेष । ३ प्रथम गुरु ढगण के भेद का नाम ।

करताळी–स्त्री० दोनो हाथो से बजाई जाने वाली ताली ।

करतिम–देखो 'कृत्रिम' ।

करतुत, करतूत (ति, तौ)–स्त्री० [स० कर्तृत्व] १ काम, कार्य । २कर्त्तव्य । ३ हरकत । ४ शरारत, बदमाशी । ५ छल, प्रपच । ६ कला ।

करतोया (यार)–स्त्री० जलपाइगुडी के जगलो से निकलने वाली नदी ।

करत्यां–देखो 'कृतिका' ।

करद–पु० [स०कर्दम] १ कीचड । २ गाढा द्रव पदार्थ । ३ मैल । ४ कूडा । ५ तलवार । ६ कटार, छुरा । –वि० [स० कर+दा] १ करदाता । २ सहायक ।

करदमेस्वर–पु० [स० करमदेश्वर] काशी का मदिर ।

करद्द (द्दम)–१ देखो 'करद' । २ देखो 'करदम' ।

करधणी (नी)–स्त्री० [स० कटि+घुनि] कटि का आभूषण, मेखला ।

करधार–स्त्री० १ शस्त्र । २ तलवार ।

करन–देखो 'करण' ।

करनल (ला, ल्ल)–स्त्री० करणीदेवी ।

करनाटकीघोप–स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

करनाद–पु० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ करनीदेवी ।

करनादे–स्त्री० करणीदेवी ।

करनाळ (ळि, ळी)–पु० १ एक प्रकार की तोप । २ एक वाद्य विशेष, भोंपू । ३ एक प्रकार का ढोल । ४ सूर्य ।

करनाळौ–पु० वनस्पति विशेष ।

करनी–देखो 'करणी' ।

करनौ–पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

करपट–पु० [स० कर्पट] १ वस्त्र, कपडा । २ पुराना कपडा ।

करपण–पु०वि० [स० कृपण] १ कजूस, सूम । २ दीन । ३ देखो 'कुरपण' ।

करपणता–देखो 'कृपणता' ।

करपत (पत्रक, पत्री)–देखो 'करोत' ।

करपर–पु० [स० कर्पर] भीख मागने का खप्पर । —दास–पु० शिव, महादेव ।

करपाण (पांन)–वि० १ कृपण, कजूस । २ बढिया । ३ देखो 'कृपाण' ।

करपा–देखो 'कृपा' ।

करपाळ–देखो 'कृपाळ' ।

करपास–पु० [स० कर्पास] कपास ।

करपूर, (पूरक)–देखो 'कपूर' ।

करपौ–देखो 'कडपौ' ।

करब–पु० वन, जगल ।

करबक–पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

करवट–पु० [स० कर्वट] कुनगर जिसके चारो ओर दो-दो कोस तक कोई वस्ती न हो।

करवळ–पु० शिकार के लिए सिंह की खबर देने वाला।

करवला–स्त्री० [अ०] १ अरव का वह स्थान जहा हुसैन मारा गया। २ ताजिये दफनाने का स्थान।

करवाळ–देखो 'करवाळ'।

करवीकर–पु० श्मशान।

करबुर–पु०[स० कर्वुर]१ धतुरा। २ सोना, स्वर्ण। ३ राक्षस। ४ प्रेत। ५ शैतान। ६ चितकवरा रग। ७ पाप। –वि० १ भूरा। २ कवूतरिया। ३ चितकवरा।

करबुरक–पु० ८८ ग्रहो मे से १६ वा ग्रह (जैन)।

करवौ–पु० [स० करव या करभ] १ छाछ या दही मे उवले हुए चावल डाल कर बनाया जाने वाला पेय पदार्थ। २ एक प्रकार का कीट या कीडा जो अनाज को हानि पहुँचाता है।

करभ–पु० [स० करभ]१ ऊट। २ हाथी। ३ हाथी का वच्चा। ४ हाथ का, मणिवध से कनिष्ठा तक का पृष्ठ भाग। ५ दोहा नामक छंद का भेद। –वि० १ क्रूर। २ वैंगनी रग का।

करभाजन–पु० नौ योगेश्वरो मे से एक।

करमवौ–पु० काटेदार छोटा क्षुप जिसके फल मीठे होते हैं।

करम–पु० [स० कर्म] १ कार्य, काम। २ कर्त्तव्य। ३ मृतक-सस्कार। ४ भाग्य, प्रारब्ध। ५ ललाट, भाल। ६ अभिलाषा, मनोरथ। ७ सचितकर्म। ८ पाप, दुष्कर्म। ९ यज्ञ। १० वह शब्द जिसके वाच्य पर क्रिया का फल गिरे। ११ लक्ष्मी, धन। १२ नित्य क्रिया। १३ धधा। १४ आचरण। १५ देखो 'क्रम'। —**कमाई**–स्त्री० भाग्य, प्रारब्ध। पूर्व सचित अच्छे कर्मों का फल। —**कर**–पु० अनुचर सेवक। —**काड**–पु० यज्ञादि विधान। धार्मिक कर्म। —**गत**–स्त्री० कर्म की गति। भवितव्यता। —**चवियौ**–पु० सिर, मस्तक। ललाट। भाग्य। —**चड़ी, छडी**–स्त्री० तलवार। —**जाळ**–पु० कर्म का वधन। —**जोग**–पु० शुभ सयोग। देवयोग। —**ठोक**–वि० हतभाग्य, वदनसीब। —**ध्वज**–वि० अपने कर्म से पहिचाना जाने वाला। —**वध, वधन**–पु० जन्मादि का वधन। —**साखी**–पु० सूर्य। —**सिद्धि**–स्त्री० सफलता, मनोरथ की सफलता। —**हीण**–वि० हतभाग्य, वदनसीव।

करमक–वि० शुद्धाचरण करने वाला। –पु० शुद्धाचरण।

करमकलौ–स्त्री० वद गोभी।

करमट–(ठ)–वि०[स० कर्मठ] १ कर्म निष्ठ। २ कार्य कुशल। ३ परिश्रमी। ४ धार्मिक अनुष्ठानो मे लीन।

करमण–पु० [स० क्रमण] सेवक दास।

करमदौ–पु० छोटा झाडीदार एक गुल्म।

करमनासा–स्त्री० [स० कर्मनाशा] एक नदी का नाम।

करमप्रसाद–वि० भाग्यशाली, खुशकिस्मत।

करमर–स्त्री० तलवार।

करमांतरी–पु० मृतक के पीछे क्रियाकर्म कराने वाला ब्राह्मण।

करमाळ (ळी)–पु० १ तलवार। २ सूर्य।

करमाळौ–पु० अमलताश वृक्ष।

करमी–वि०[स० कर्मिन्]१ कार्य निष्ठ, कर्मठ। २ भाग्यशाली। ३ अत्याचारी।

करमैत–वि० १ वश मे उत्कृष्ट, कर्म करने वाला। २ वीर, वहादुर।

करम्म–१ देखो 'करम'। २ देखो 'क्रम'।

करयल–देखो 'करतळ'।

करयावर, करियावर–देखो 'क्यावर'।

करयावरी, करियावरी–देखो 'क्यावरी'।

कररावणौ (बौ)–क्रि० १ कराहना। २ चिल्लाना।

करळ–पु० १ हथेली का अग्रभाग। २ मुट्ठी मे आवे उतना पदार्थ। ३ देखो 'कराळ'। ४ देखो 'कुरळ'।

करळणौ (बौ)–देखो 'कुरळणौ' (बौ)।

करळव–देखो 'कलरव'।

करळाटौ–देखो 'कुरळाटौ'।

करळाणौ (बौ), करळावणौ (बौ)–देखो 'कुरळणौ' (बौ)।

करलौ–पु० १ युवा ऊंट। २ देखो 'कुरली'।

करवडाचौथ–देखो 'करवाचौथ'।

करवट–स्त्री० [स० करवर्त] १ पार्श्व, बगल। २ पार्श्व पर सोने की क्रिया। ३ सोते हुए पार्श्व बदलने की क्रिया।

करवत (तौ, वत्त)–देखो 'करोत'।

करवतीमगरी–स्त्री० यौ० दुधारी तलवार।

करवरसणौ–वि० १ उदार, दानी। ३ अधिक खर्चीला।

करवरौ–पु० साधारण फसल वाला वर्ष।

करवलौ–पु० छोटा ऊट।

करवाण–देखो 'कृपाण'।

करवान (क)–पु० एक प्रकार का पक्षी।

करवाचौथ–स्त्री० १ कार्तिक कृष्णा चतुर्थी। २ इस तिथी का व्रत।

करवाळ (ळक, वाळा ळी)–स्त्री० [स० करवाल] तलवार खड्ग।

करवीराक्ष–पु० खर नामक असुर का सेनापति।

करवौ–पु० [स० करक, करभ] १ छोटा जल-पात्र, शिकोरा। २ छोटा ऊट। ३ देखो 'करवौ'।

करस–पु० [सं० कर्ष] १ सोना चांदी तोलने का बाट। २ तौल, बाट। ३ खिंचाव तनाव। –वि० [सं०कृश] १ दुबला। २ पतला। ३ क्षीण। ४ सूक्ष्म। ५ निर्बल। ६ तुच्छ, निर्धन। ७ सूखे गोबर का चूरा।

करसक–पु० [सं० कृषक] किसान, खेतीहर।
–वि० खींचने वाला।

करसण–पु० [सं० कर्षण] १ खेती। २ कृषि कार्य। ३ बागवानी का कार्य। ४ किसान। –स्त्री० ५ खिंचाव, तनाव।

करसणी–स्त्री० १ कृपक जाति। २ कृपक स्त्री।
–पु० [सं० कर्पणम्] किसान, कृपक।

करसणीक–पु० किसान, कृपक।

करसणौ (बौ)–क्रि० [सं० कर्पणम्] १ खींचतान करना, खेंचना। २ केन्द्रित करना। ३ एकत्र करना। ४ मन मुटाव होना। ५ तनाव बढना।

करसल–स्त्री० १ दीवार का निचला शिरा। २ आंगन में लगने वाली पत्थर की गच। ३ देखो 'करमलौ'।

करसलियौ, करसलौ–पु० ऊंट।

करसाण–देखो 'किसान'।

करसाख, (खा)–स्त्री० [सं० करशाखा] अंगुली।

करसुक (सूक)–पु० [सं० करशूक] १ नाखून। २ किसान।

करसोडी–स्त्री० मादा ऊंट।

करसौ–पु० १ ऊंट। २ बाजरी की बाल में होने वाला कीडा। ३ किसान, कृपक। ४ बैलों द्वारा खींचा जाने वाला एक प्रकार का शकट।

करहच–पु० एक छंद विशेष।

करह (उ, लउ, लौ) करहौ–पु० [सं० करभ.] १ ऊंट। २ ऊंट का बच्चा। ३ हाथी का बच्चा। ४ फूल की कली। ५ दोहा छंद का सातवा भेद।

करहेलडी–स्त्री० मादा ऊंट।

करा–क्रि०वि० कब, कब तक।

कराई–क्रि०वि० कभी भी।

कराक–स्त्री० काख में होने वाली ग्रंथि।
–क्रि०वि० कब तक।

कराकियौ–पु० बाजरी के पौधे की ग्रंथि से निकलने वाला अंकुर।

करागणी–स्त्री० कंगनी नामक अन्न।

करागी–पु० एक प्रकार का कवच।

कराचणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, मारना। २ चिल्लाना। ३ जोर करना।

कराध–स्त्री० छलांग।

करामत, करामात,करामाति–स्त्री० [अ०करामात] १ चमत्कार, प्रभाव। २ कौशल।

करामाती (क)–वि० १ चमत्कार पूर्ण। २ प्रभावशाली। ३ निपुण।

कराइ (ई)–स्त्री० १ सुरक्षित रखा घास का ढेर। २ कुछ करवाने का पारिश्रमिक। ३ खेत की मेढ या पाली बनाने का उपकरण। ४ देखो 'कडाई'।

कराखी–स्त्री० पहनने के वस्त्र का वह भाग जो काख में लगाया जाता है।

कराग–पु० [सं० कराग्र] १ हाथ का अग्र भाग। २ अंगुली। ३ अंगुली की नोक। ४ हाथ।

करागी–स्त्री० तलवार।

कराड़–वि० १ प्रबल। २ तेज, तीव्र। ३ अधिक।–स्त्री० १ सीमा, हद। २ देखो 'किराड़'।

कराड़ौ–देखो 'किराड'।

करादौ–पु० आग पर तेज सिकी रोटी।

कराणौ (बौ)–क्रि० १ कोई कार्य या कुछ करवाना। २ कार्य पूरा कराना। ३ संलग्न करना।

करावीण (वीणी, वीन)–स्त्री० [तु० करावीन] १ चौडे मुंह की तोडादार पुरानी बंदूक। २ एक प्रकार की छोटी बंदूक।

करार–पु० १ बल, शक्ति। २ जोश। ३ धैर्य। ४ नदी का किनारा। ५ इकरार, कौल, वादा।

करारौ–वि० (स्त्री० करारी) १ बलवान, शक्तिशाली। २ समर्थ। ३ हृष्ट-पुष्ट। ४ दृढचित्त। ५ जोशीला। ६ धैर्यवान। ७ कठोर, कडा। ८ दृढ, मजबूत। ९ भयंकर। १० कठिन, दुष्कर। ११ तेज सिका हुआ।
–पु० १ विश्वास। २ किनारा। ३ कौवा।

कराळ, (उ)–स० [सं० कराल]१ भयानक, भयंकर। २ लंबा-चौडा, विशाल। ३ अत्यधिक फटा हुआ या खुला हुआ। ४ विपम। ५ नुकीला। ६ बडे बडे दांतो वाला। –पु० १ हथेली का अग्र भाग। २ गाडी या शकट का अग्र भाग। —**कुमळ**–पु० नीचे से लंबे जबड़े वाला घोडा। —**तेज**–पु० मोटी ठोडी वाला घोडा। —**दंतौ**–पु० बडे दांतो वाला घोड़ा।

कराळक (ळिक)–पु० [सं० करालिक] वृक्ष।

कराळी–स्त्री० १ भूमि को समतल बनाने का उपकरण। २ देखो 'कराळ'।

कराळू (ळौ)–देखो 'कराळ'। (स्त्री० कराळी)

करावळ–पु० [तु० करावल] १ सेना का मध्य भाग। २ घुड सवार। ३ पहरेदार, संतरी। ४ सेना के वे सिपाही जो शत्रु

का भेद लेने जाते है। ५ युद्ध के मैदान को ठीक करने वाले सिपाही। ६ वदूक से शिकार करने वाला शिकारी।
करिंद (दौ)–पु० [स० करीन्द्र] हाथी। –अव्य० १ करण और अपादानकारक चिह्न, से।
करि–देखो 'कर'।
करिग्रळ (ळि, ळी)–देखो 'करतळ'।
करिगि–देखो 'कराग'।
करिछय–पु० कामदेव।
करिणि (णी)–स्त्री० हथिनी।
करिबत–देखो 'करोत'।
करिमरि, करिमाळ–स्त्री० १ कृपाण। २ तलवार।
करिया–पु० कुए के वाहर लगे लट्ठे जो मोट से पानी निकालने के काम देते हैं।
करियावर–देखो 'क्यावर'।
करियौ–पु० छोटा ऊट, करहा।
करिवाण, करिवाल (ल)–स्त्री० [स० कृपाण]तलवार, कृपाण।
करिसण–देखो 'करसण'।
करींद–देखो 'करिंद'।
करी–पु० [सं०] १ हाथी, गज। –स्त्री० २ पथ्य, परहेज। ३ छत पाटने का शहतीर। ४ कृषक स्त्री। –अव्य० करण या अपादान कारक, का। विभक्ति चिह्न, से।
करीट–देखो 'किरीट'।
करीटी–देखो 'किरीटी'।
करीठ–वि० अत्यन्त काला।
करीनि (नी)–देखो 'करिणी'।
करीब–क्रि० वि० [अ०] १ पास, समीप, नजदीक। २ लगभग। ३ प्राय।
करीम (मौ)–पु० [अ करीम] ईश्वर का विशेषण। –वि० १ दयालु, कृपालु। २ उदार, दाता।
करीमार–पु० सिंह।
करीमी–स्त्री० [अ०] दया, कृपा, ईश्वर की माया।
करीयळी-देखो 'करतळ'।
करीर (रौ)–पु० [स० करीर] १ बास का नया वल्ला। २ करील वृक्ष।
करीळ–पु०[स० करीर]झाडीदार व विना पत्ते का वृक्ष, केर।
करीवर–पु० हाथी, गज।
करीस–पु० [स० करीष] १ उपला, कडा। २ उपलो का चूर्ण ३ महीनतम चूर्ण। [स० करीश] ४ श्रेष्ठ हाथी, गजराज। —आग–स्त्री० उपलो की अग्नि।
करु–पु० १ एक प्रकार का धान। २ देखो 'तिरू'।
करुण–वि० [स०] १ कोमल। २ दया पात्र। ३ दुखी। ४ करुणा जगाने वाला। –पु० [स० करुण] १ दया, रहम, कृपा। २ अनुग्रह। ३ दुख, शोक। ४ साहित्य मे एक रस। ५ ईश्वर।
करुणा–स्त्री० [स०] १ कृपा, मेहरवानी, दया। २ दुख, कष्ट। ३ वियोग। ४ आर्त्त-पुकार। ५ अनुनय-विनय। —**कर, करण, करि**–वि० दया करने वाला। –पु० ईश्वर, विष्णु श्रीकृष्ण। —**निध, निधान, निधि**–पु० ईश्वर। –वि० दया का भण्डार। —**निलय**–पु० दया का घर। ईश्वर। —**मय, मै**–वि० कृपालु, दयालु। —**सिंधु**–पु० दया का सागर। ईश्वर।
करुप (पक)–देखो 'कुरूप'।
करूंदौ–पु० वेर के आकार का खट्टा फल। इस फल का पौधा।
करू–देखो 'करु'।
करूकणौ (बौ)–क्रि० १ कौवे का वोलना। २ चिल्लाना।
करूर–देखो 'क्रूर'।
करें–क्रि० वि० कव। कव तक।
करेंकी–वि० [स० करेंकी] कभी का।
करेणपती–पु० [स० करेणु -पति] हाथी, गज।
करेणी–स्त्री० [स० करेणु,] हथिनी।
करेणूपती–देखो 'करेणपती'।
करे-रौ-रोग–पु० पशुओ के अगले पावो मे होने वाला भयकर रोग।
करेलडौ–पु० १ ऊट। २ एक राजस्थानी लोक गीत।
करेलियौ, करेलौ–पु० १ तरकारी के काम का एक कडवा फल। २ करील वृक्ष। ३ देखो 'करलौ'।
करेवौ–पु० भूलिंग पक्षी।
करै–देखो 'करें'।
करैक–क्रि० वि० १ कव तक। २ कभी कभी।
करैवौ-पु० १ एक प्रकार का घोडा। २ देखो 'करेवौ'।
करोई–देखो 'किरोई'।
करोड–वि० [स० कोटि] लाख का सौ गुना। –पु० लाख की सौ गुनी सख्या, १,००००००० —**पति**–पु० धनवान, वैभवशाली, करोडो की सम्पत्ति वाला।
करोडी–वि० १ करोड की सख्या का स्वामी। २ देखो 'किरोडी'। —**धज, मल**–पु० करोडपति।
करोट–स्त्री० १ सहायता। २ रक्षा। ३ करवट। ४ देखो 'करोटि'।
करोटि–स्त्री० [स० करोटि, करोटि] मस्तक की हड्डी।
करोत (तौ)–पु० [स० करपत्र] लकडी चीरने का दातेदार पत्ती, आरा। करोती।

करोती–देखो 'करोत'।

करोल–पु० [तु०] १ शिकार को घेरने वाला व्यक्ति। २ वन-रक्षक। —वि० कराल।

करोली–स्त्री० एक प्रकार की कृपाण। –वि० शिकार का पीछा करने वाला।

करो–पु० [सं० कृषक] (स्त्री० करी) १ किसान, कृषक। २ अनाज का एक कीडा। ३ गिड गिडी फसाने का गड्ढा।

करौट–स्त्री० करवट।

करौळ–देखो 'करोल'।

कळंक–पु० [स० कलंक] १ दाग, धब्बा। २ बदनामी, अपयश। ३ लाञ्छन, आक्षेप। ४ काला दाग। ५ दोष, त्रुटि। ६ पाप। –वि० काला, श्याम।

कळंकी–वि० [स० कलंकिन्] १ दोष युक्त। २ दोषी, अपराधी। ३ बदनाम। ४ पापी। ५ दाग युक्त। –पु० [स० कल्कि] विष्णु का चौवीसवा अवतार, कल्कि।

कलंग–स्त्री० १ हिंदवाणी। २ एक पक्षी विशेष। ३ कलिंग देश। ४ एक राग विशेष। ५ भृंगी नामक कीट-पतंग।

कलंगी–स्त्री० [म० कलगी] १ शुतुर्मुर्ग आदि चिडिया के पख २ मोती या सोने का आभूषण। ३ पक्षियो के सिर पर की चोटी। ४ इमारत का शिखर।

कलण–पु० कष्ट, दुख।

कलदर–पु० [फा०] १ एक प्रकार के फकीर जो मस्त रहते है, मस्त साधु। २ आजाद, मस्त। ३ सूफी साधु। ४ योगी। ५ मदारी। –स्त्री० ६ निर्धनता, गरीवी।

कळदरी, कळद्री–पु० १ एक प्रकार का तीर। २ देखो 'कालिंदी'।

कलब–पु० [स० कलम्ब] १ बाण, तीर। २ लोहे की कील। ३ कदम वृक्ष।

कलवी–देखो 'कुनवी'।

कळ–पु० [स० कल, कल, कलि] १ यश,कीर्ति। २ चैन, सुख, शाति। ३ सतोष। ४ विश्राम। ५ यत्र, पुर्जा। ६ दुख, सकट। ७ कलह। ८ युद्ध, लडाई। ९ प्रभाव, दवाव। १० कलियुग। ११ इतिवृत्त, कथा। १२ शत्रु, दुश्मन। १३ वीर्य। १४ राक्षस। १५ ससार, जगत। १६ योद्धा, वीर। १७ कुल, वश। १८ कामदेव। १९ उपद्रव। २० कपट,छल। २१ बन्दूक का घोडा। २२ बल, पराक्रम। २३ समय, वक्त। २४ कल-कल ध्वनि। २५ कला। २६ युक्ति, तरकीब। २७ काति दीप्ति। २८ कृपा, दया। २९ टगण के नौवें भेद का नाम। ३० छद शास्त्रानुसार मात्रा। –वि० १ सुन्दर, मनोहर, प्रिय। २ मधुर। ३ स्वस्थ। ४ काला, श्याम। –क्रि० वि० तरह से, भाति, प्रकार मे। —अगली, आगली–वि० सेना मे अग्रणी। –पु० सेनापति। —कंठ–वि० मधुर भाषिनी। –स्त्री० कोयल।

कल–पु० [स० कल्य] १ आगामी दिवस। २ विगत दिन। –क्रि० वि० १ अगले दिन। २ पिछले दिन। ३ कुछ दिन पूर्व।

कळकंठी–पु० १ पक्षी। २ कोयल।

कलक–देखो 'किलक'।

कळकणी (बौ)–क्रि० १ प्रकाशमान होना, चमकना। २ गर्म होना, खौलना। ३ कडकना, गरजना, दहाडना। ४ आवाज करना। ५ संतप्त होना।

कळ-कळ, कल-कल–स्त्री० [अनु०] कल-कल ध्वनि। –वि० अति उष्ण।

कळकळणी (बौ)–देखो 'कळकणी' (बौ)।

कळकळाट–स्त्री० १ कलह, लडाई। २ कष्ट, पीडा।

कळकळी–स्त्री० गर्मी, उष्णता।

कळकळौ–वि० उष्ण, गर्म। –पु० कलह, उत्पात।

कळका–स्त्री० [स० कलिका] कांच नामक लता व फली।

कळकार–देखो 'किलकारी'।

कळकाळ–स्त्री० कटारी।

कळकी–पु० [स० कल्कि] विष्णु का चौवीसवा अवतार।

कळकौ–पु० पानी या द्रव पदार्थ की खौलने की अवस्था, उबाल, उफान।

कळवक–देखो 'किलक'।

कलक्कल–देखो 'कलकल'।

कळक्कणी (बौ)–देखो 'कळकणी' (बौ)।

कळखारी–वि० कलहप्रिय, झगडालु।

कळगलणी (बौ)–क्रि० जोश पूर्ण आवाज करना।

कळचाळ (ळौ)–पु० १ युद्ध, झगडा। २ युद्ध प्रिय योद्धा। ३ छेड-छाड। ४ उत्पात, उपद्रव। ५ कलह उत्पन्न करने वाला, चुगलखोर।

कळजळ–देखो 'कळभळ'।

कळजुग–पु० [स० कलियुग] १ चार युगो मे से अतिम व बुरा युग। २ बुरा समय।

कळजुगियौ(जुगी)–वि० १ कलियुग सबधी। २ दुराचारी,पापी।

कळझळ–स्त्री० १ कलह। २ बकझक। ३ दुख। ४ रुदन। ५ विलाप। ६ चिन्ता।

कळण–स्त्री० वडे-पकोडे बनाने हेतु मूग, मोठ आदि को भिगो कर बनाई हुई चटनी। २ कष्ट, दुख। ३ दल-दल।

कळणी (बौ)–क्रि० मूग मोठ आदि को भिगोकर पीसना। २ नाश होना, मिटना। ३ दल-दल मे फसना। ४ डूबना।

कलणौ (बौ)–क्रि० १ पहिचानना, जानना । २ विचार करना समझना ।

कळत–देखो 'कळत्र' ।

कळतकंठ–पु० [सं० कलित कंठ] पपीहा ।

कळतरौ–पु० लोहे की तगारी ।

कळतान–पु० १ ऊपर तानने या बिछाने का वस्त्र । २ जूट का पतला वस्त्र, टाट । ३ महीनतम पीसने की क्रिया ।

कळतीतर–पु० एक प्रकार का तीतर पक्षी ।

कळत्त, कळत्र–स्त्री० [सं० कलत्र] १ स्त्री, पत्नी । २ कटि कमर । ३ कूल्हा ।

कळदार–वि० जिसमे यंत्र, पुर्जे आदि लगे हो । –पु० रुपये का सिक्का ।

कळधन–पु० दीपक, ज्योति ।

कळधारण (न)–पु० इन्द्र ।

कळधूत (धोत, धौत)–पु० [सं० कलधौत] १ सोना, स्वर्ण । २ चादी ।

कळन–देखो 'कळण' ।

कळपंत–देखो 'कळपात' ।

कळप, कलप–पु० [सं० कल्प] १ वेद के छै अंगो में से एक । २ धर्मशास्त्र का आदेश । ३ ब्रह्मा का एक दिवस । ४ समय का एक विभाग जो ४३२००००००० वर्षों के बराबर माना गया है । ५ निर्दिष्ट या ऐच्छिक नियम । ६ सकल्प । ७ विधान । ८ रीति, ढग । ९ प्रस्ताव । १० कल्प वृक्ष । ११ प्रलय । १२ दिन । १३ चिकित्सा विधि । १४ प्रकाश । १५ बुद्धि । १६ कपट । १७ रथ । १८ सकल्प-विकल्प । १९ साधु का आचार-व्यवहार, मर्यादा (जैन) । —**तर, तरु, तरू, तरुवर, तरोवर, तरौ, द्रुम**–पु० कल्पवृक्ष । —**बेलि, लता, वेलि**–स्त्री० स्वर्गीय लता विशेष । —**बिरख व्रक्ष, व्रख, विख, ब्रिछ**–पु० कल्पवृक्ष ।

कळपणौ (बौ)–क्रि० [सं० कल्पनम्] १ विलाप करना, रोना, बिलखना । २ दुःखी होना । ३ कुढना, चिढना । ४ वियोग मे तरसना । ५ त्यागना । सकल्प करना । ६ चिल्लाना । ७ देखो 'कलपणौ' (बौ) ।

कलपणौ (बौ)–क्रि० १ कल्पना करना । २ अदाज लगाना । ३ सकल्प करना । ४ साधु का आचार-व्यवहार और मर्यादा के अनुसार कर्त्तव्य करना (जैन) । ५ देखो 'कळपणौ' (बौ) ।

कलपत–पु० दोष, कलक ।

कलपना–स्त्री० [सं० कल्पना] १ कल्पना, कल्पित भावना । २ सभावना । ३ रचना । ४ उद्‌भावना । ५ अध्यारोप, रचना । ६ मन की उडान ।

कलपनी–स्त्री० [सं० कल्पनी] कैंची ।

कळपात, (तर)–पु० [सं० कल्पात] १ कल्प का अन्त, युगातकाल । २ प्रलय । ३ नाश, सहार । ४ ब्रह्मा का दिवावसान ।

कळपाणौ (बौ)–क्रि० १ तरसाना, सताना । २ दुःख देना । ३ कुढाना । ४ विलाप कराना, रुलाना । ५ सकल्प कराना ।

कळपित–वि० [सं० कल्पित] १ मनगढंत । २ कल्पना से बनाया हुआ । ३ नकली । ४ प्रतीकरूप ।

कळपौ–पु० फसलयुक्त जोती हुई भूमि मे से बैल जोत कर घास काटने का एक उपकरण विशेष ।

कळबल्ली–वि० करुणा जनक पुकार या आवाज ।

कळबांणी–देखो 'कळवाणी' ।

कळबी–देखो 'कुनबी' ।

कळब्रछपता–पु० [सं० कल्पवृक्षपिता] समुद्र ।

कळभ–पु० [सं० कलभ] १ हाथी का बच्चा । २ ऊट का बच्चा, करभ । ३ हाथी । ४ धतूरे का पेड । ५ आश्रय । ६ शीघ्रता । ७ शकुन । ८ आकाश । ९ भादवमास ।

कलम–स्त्री० [अ०] १ लेखनी, कलम । २ भाषा । ३ किसी पौधे की हरी टहनी जो काट कर अन्यत्र लगाई जाय । ४ मान, प्रतिष्ठा । [अ० कलम] ५ कलमा पढने वाला मुसलमान । ६ स्वर्णाभूषणो मे जडाई करने का औजार । ७ रग भरने की कूची । ८ कनपटी पर रहने वाले बाल । ९ इस्लाम का मूल मत्र । —**कसाई**–वि० लिखावट मे मारने वाला ।

कलमख–देखो 'कलमस' ।

कळमत–पु० युद्ध ।

कळमळणौ (बौ)–क्रि० १ भुंभलाना । २ कुलबुलाना । ३ कराहना । ४ अपने अगो को घुमाना ।

कलमस–पु० [सं० कल्मष] १ पाप । २ मैल । ३ नरक । ४ श्याम वर्ण । –वि० [सं० कल्मष] १ पापी, दुष्ट । २ मैला, गदा । ३ श्याम, काला ।

कलमाछात, कलमाण, कलमांयण–पु० १ बादशाह । २ मुसलमान ।

कलमा–पु० वह बात, वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है ।

कलमास–वि० [सं० कल्माष] चितकबरा, सफेद और काले रग वाला ।

कलमी–स्त्री० १ श्याम रग की घोडी । २ आमो की एक जाति ।

कलमुख–देखो 'कलमस' ।

कळमूळ–पु० [सं० कलिमूल] १ सेना, फौज । २ सेनापति । ३ झगडे का मुख्य कारण ।

कलमेपाक (पाख)–वि० कलमा पढ़ कर पवित्र ।

कलमौ–पु० [अ० कलम] १ मुसलमान धर्म का मूल मत्र । २ कलमा पढने वाला मुसलमान ।

कळयळ–१ देखो 'कळकळ' । २ देखो 'कळवळ' ।
कळयुग–देखो 'कळजुग' ।
कळरव–पु० [स० कलरव] १ मद-मधुर-ध्वनि । २ हल्का कोलाहल । ३ कूजन, गु जन । ४ करुण ध्वनि । ५ कल-कल ध्वनि । ६ कपोत, कबूतर । ७ ऊसर भूमि ।
कळळ (स)–पु० [अनु०] १ युद्ध । २ युद्ध का शोर । ३ कोलाहल । ४ युद्ध का वाद्य । ५ ध्वनि विशेष । ६ हिनहिनाहट । [भ० कलल] ७ योनि, गर्भ की झिल्ली ।
कळळणौ (बौ)–क्रि० १ युद्ध का शोर होना । २ कोलाहल होना । ३ हिनहिनाना ।
कळळ-हूंकळ–देखो 'हूंकळकळळ' ।
कळळाट (टौ हट)–पु० हाहाकार, चीत्कार ।
कळवकळ–वि० १ भयभीत । २ अस्थिर चित्त घबराया हुआ । ३ विवेकशून्य ।
कलवर–पु० [स० कलेवर] १ शरीर, देह ।
कळवरी–स्त्री० रहट की माल की कील ।
कळवळ–स्त्री० अस्पष्ट ध्वनि ।
कळवाणी–स्त्री० १ गदा पानी । २ मत्रित जल । ३ जल पात्र मे हाथ डालकर गदा करने की क्रिया ।
कळव्रख, (व्रच्छ, व्रछ)–पु० [स० कल्पवृक्ष] कल्पवृक्ष । —**केळी**–पु० इन्द्र ।
कळस (सौ)–पु० [स० कलश] १ कु भ, घडा, गगरी । २ मगल-कलश । ३ मदिर आदि के शिखर पर लगे धातु के पात्र । ४ चोटी, सिरा । ५ प्रधान अग । ६ श्रेष्ठ व्यक्ति । ७ नृत्य की एक वर्तनी । ८ काव्य या ग्रथ के उपसहार की कविता । ९ देवी का अर्चित जल । १० प्रत्येक चरण मे २० मात्रा का मात्रिक छन्द । ११ डिंगल का एक छन्द । १२ कु भ राशि । १३ सुवृत्त॰ । —**भव**–पु० अगस्त्य ऋषि ।
कळसियौ–पु० १ छोटा जल-पात्र, लोटा । २ बैलो की पीठ का ककुद । ३ तलवार की मूठ पर लगा उपकरण । ४ देखो 'कलस' ।
कळसी–स्त्री० आठ मन अनाज का एक माप । २ मिट्टी का बडा जल-पात्र । ३ कु भ राशि । ४ देखो 'कळस' ।
कळसौ–देखो 'कळस' ।
कळहस (क)–पु० [स० कलहस]१ परमात्मा । २ ब्रह्मा । ३ श्रेष्ठ राजा । ४ राजहस । ५ हस । ६ बतक । ७ क्षत्रियो की एक शाखा । –वि० सुस्वर॰ ।
कळहंत–पु० [स० कलिहत] युद्ध, समर ।
कळह (हण, हणि, हु)–पु० [स० कलह] १ झगडा, विवाद । २ युद्ध, समर । ३ तू-तू मैं-मैं । ४ दाव-पेच, घात-प्रतिघात । ५ छल-कपट । ६ झूठ । ७ प्रहार, चोट । ८ रास्ता । ९ नारद की उपाधि । १० दलदल । –वि० काला, श्याम॰ । —**क्रित**–स्त्री० युद्ध की प्रशमा । —**गुर**–पु० योद्धा, वीर । नारद मुनि । —**प्री**–वि० झगडालु, कलहप्रिय । —**प्रेमा**–स्त्री० रण पिशाचिनी, महाकाली । —**वरीस**–पु० योद्धा । कलहप्रिय ।
कळहणौ (बौ)–क्रि० युद्ध करना, झगडा करना ।
कळहळ–१ देखो 'कोलाहळ' । २ देखो 'कळ-कळ' । २ देखो 'कळळ' ।
कळहळणौ (बौ)–क्रि० १ कोलाहल करना । शोर करना । २ चमकना, दमकना ।
कळहारी–देखो 'कळिहारी' ।
कळहिळ–पु० [स० कटुहिल] शत्रु, दुश्मन ।
कळहिवा–पु० योद्धा ।
कळही–वि० १ झगडालु । २ देखो 'कळसी' ।
कळहीण (हीणौ)–वि० [स० कला-हीन] जिसमे कोई कला न हो, कलाहीन । २ अशक्त, कमजोर ।
कळहौ–देखो 'कळह' ।
कला–वि० [फा०] बडा, बडे वाला ।
कळातर–पु० व्याज ।
कळाम–पु०[अ० कलाम]१ बातचीत, कथन । २ वाक्य, वचन । ३ प्रतिज्ञा, वादा । ४ उज्र, एतराज, आपत्ति । ५ उक्ति । ६ रचना ।
कळा–स्त्री० [स० कला] १ अ श, भाग । । २ चन्द्रमा का सोलहवा भाग, चन्द्रकला । ३ सूर्य का बारहवा भाग । ४ चतुराई । ५ कौशल,निपुणता । ६ प्रतिभा । ७ समय का विभाग । ८ कोई धन्धा । ९ सामर्थ्य, शक्ति । १० नौका । ११ विभूति, तेज । १२ चन्द्रमा । १३ शोभा, छटा, प्रभा । १४ कीर्ति, यश । १५ स्त्री का रज । १६ शरीरस्थ सात विशेष झिल्लिया । १७ तीस काष्टा के समय का एक विभाग । १८ राशि के तीसवें अश का सातवा भाग । १९ वृत्त की डिग्री का । २० वा भाग । २० कौतुक, लीला, खेल । २१ छल, कपट । २२ अग्नि मडल का एक भाग । २३ किसी छद की मात्रा । २४ मनुष्य शरीर के सोलह आध्यात्मिक विभाग । २५ तन्त्रानुसार वर्ण या अक्षर । २६ नटो की विद्या । २७ युक्ति, ढग । २८ चमत्कार । २९ पुरुषो की ७२ कलाएँ । ३० कामशास्त्र की ६४ कलाऐं । ३१ बन्दूक चलाने की विद्या । ३२ बन्दूक छोडने का खटका । ३३ कली । ३४ दीपक ३५ दीपक की लौ, ज्योति । ३६ किरण । ३७ व्याज । ३८ अणु । ३९ भ्रूण । ४० सगीत, काव्य आदि ललित कला । ४१ अक्षर, वर्ण । ४२ शिव का नाम । ४३ सवध । ४४ जीभ, जिह्वा । ४५ एक प्रकार का नृत्य ।

—धर–पु० चन्द्रमा, सूर्य, शिव, कलावत । —धारी –वि० शक्तिशाली । वंशज । कलाधर । —धिप–पु० चन्द्रमा । —निध, निधि, निधी–पु० चन्द्रमा । कलाविद् । —ग्रतमंडी–पु० मोर, मयूर । —पाती–वि० नटखट । उद्दण्ड । —पी–पु० मयूर, मोर । —बाज–कला-विद् । नट । —बाजी–स्त्री० नट क्रिया, खेल । चाल । –लीक–पु० भौंरा, भ्रमर । –वत, वत, वान–वि० कलाओ का ज्ञाता । कलाकार । चतुर, बुद्धिमान, समर्थ, शक्तिशाली सगीतज्ञ, गवैया । —हीरा–वि० कलाहीन, कमजोर, अशक्त, अयोग्य ।

कळाइरा, (रिग, ईरा)–देखो 'कळायरा' ।

कळाइरणौ (बौ)–क्रि० शोर करना, कोलाहल करना ।

कळाइयौ–पु० न्यौछावर ।

कळाई–स्त्री० [स० कलाची] १ हाथ की कलाई, मरिणबध, गट्टा । २ कोठरी । ३ कोठरियो के बीच का आगन । ४ तरह प्रकार, भाति ।

कळाउ–देखो 'कळाप' ।

कळाकद–पु० [फा०] खोये की मिठाई ।

कलाक–पु० [अं० क्लॉक] १ समय का विभाग । २ घडी ।

कळातरौ–१ देखो 'कळातरौ' । २ देखो 'कातरौ' ।

कळाद–पु० [स०] स्वर्णकार ।

कळाप–पु० [सं० कलाप] १ समूह, ढेर । २ झुण्ड । ३ गठडी, गाठ । ४ सग्रह । ५ मोर की पूंछ । ६ करधनी । ७ पायल । ८ तूणीर । ९ हाथी की गर्दन की रस्सी । १० तीर, वारा । ११ चन्द्रमा । १२ चतुर मनुष्य । १३ भौंरा, भ्रमर । १४ वेद की एक शाखा । १५ एक अर्द्धचन्द्राकार शस्त्र । १६ भूषरा । १७ प्रयत्न, कोशिश । १८ प्रपच, जाल । १९ प्रक्रिया । २० विलाप, रुदन । २१ एक ही छन्द की रचना ।

कळापक–पु० [स० कलाप] हाथी की गर्दन का रस्सा ।

कलापी–पु० [स० कलापिन्] मोर, मयूर । –वि० १ प्रयत्न करने वाला । २ प्रपच करने वाला । ३ धूर्त चालाक ।

कलाबाज–पु० १ कलापूर्ण ढग से खेल दिखाने या खेलने वाला व्यक्ति । –वि० धूर्त, चालाक ।

कलाबाजी–स्त्री० कलाबाज की कोई क्रिया या खेल ।

कळाबूत–पु० [तु० कलाबतून] १ रेशम के डोरे पर चढाया हुआ पतला सुनहरा तार । २ रेशम का सुनहरा तार लपेट कर बनाया हुआ डोरा ।

कलाबौ–पु० १ कपाट के ऊपर चूल फसाने का गड्ढा । २ देखो 'कलाव' ।

कलायखज–पु० एक प्रकार का वात रोग ।

कळाय, कळायरा (न) कळायर–पु० १ श्याम घन घटा । २ मोर, मयूर, विवाह ।

कलार–पु० १ सग्रहीत घास का लम्बा ढेर । २ एक प्रकार का वृक्ष । ३ एक प्रकार का पुष्प ।

कलारी–स्त्री० जमीन को समतल बनाने का उपकरण ।

कलाळ–स्त्री० (स्त्री० कलाळी, कलाळरा) १ शराब बेचने का कार्य करने वाली एक जाति । –पु० २ इस जाति का व्यक्ति ।

कलाळी–स्त्री० १ शराब, मदिरा । २ एक राजस्थानी लोकगीत । ३ एक सुगधित पौधा । ४ कलाल जाति की स्त्री ।

कळाव, कळावरा, कळावौ–पु० [स० कलापक] १ हाथी की गर्दन । २ हाथी की गर्दन पर बाधने का रस्सा । ३ मोर-पखो का छत्र । ४ दल-दल । ५ रेतीली जमीन ।

कळावान, कळावादी-वि० १ कलाओ का जानकार । २ चतुर, दक्ष ।

कळास–पु० [स० कलास] कलुआ । –वि० समान, तुल्य ।

कळासरणौ (बौ)–क्रि० १ मल्ल युद्ध करना । २ कुश्ती लडना । ३ मारना, वध करना ।

कलाहक–पु० [स] युद्ध के समय बजाया जाने वाला बाजा ।

कळाहळ–देखो 'कळह' ।

कलिग–पु० १ पुरुषो के सिर का आभूषण, कलगी । २ एक प्राचीन देश । ३ एक पक्षी विशेष । ४ भ्रमर ।

कलिगडा–स्त्री० एक राग विशेष ।

कलिद–पु० [स०] १ सूर्य, रवि । २ वह पहाड जिससे जमुना नदी निकलती है ।

कलिदा–स्त्री० [स० कलिद+जा] यमुना नदी । –वि० शीतल॥

कळि–पु० [स० कलि] १ लडाई, झगडा, कलह । २ युद्ध, समर । ३ कलियुग । ४ क्लेश, दुख । ५ तीर, वारा । ६ योद्धा, वीर । ७ शिव । ८ पाप । ९ कला । १० छदशास्त्र मे मात्रा का नाम । ११ टगरा की छै मात्रा के नौवें भेद का नाम (ऽऽ।।) । १२ बहेडा-वृक्ष । १३ देखो 'कळी' । –वि० काला, श्याम॥ । —अळ–पु०–करुणरव । मधुर ध्वनि । —कछ–पु० श्वेत-काले मुह वाला घोडा । —का–स्त्री० एकवर्णिक छद । कली । —कारक–पु० नारद । –वि० कलह प्रिय । —चाळ, चाळौ–पु०–युद्ध । योद्धा । नारद । —जुग –पु० कलियुग । —जुगि, जुगी–वि०–कलियुग का, कलियुग सबधी । —मूळ–देखो 'कळमूळ' ।

कळिज्जरणौ (बौ)–देखो 'कळीजरणौ' (बौ) ।

कळिष्ट–वि० [स० क्लिष्ट] क्लिष्ट ।

कलित (त्र)–वि० [स०] १ सुन्दर, मनोहर। २ विकसित, उन्नत । -स्त्री० [स० कलत्र] १ स्त्री। २ कटि, कमर। ३ पत्नी, भार्या। —**कंठ**–पु०–चातक।

कळिद्रुम (व्रख)–पु० [स० कलिवृक्ष] बहेडा वृक्ष।

कळिम–पु० १ कलियुग। २ पाप।

कळिमत्थ (थ)–पु० १ योद्धा। २ वीर, बहादुर। ३ युद्ध।

कळिमूळ–पु० योद्धा, वीर।

कलियर–पु० कलियुग।

कळियळ–पु० कलरव।

कळियसी–वि० कलियुगी।

कलियाण–देखो 'कल्याण'।

कलिग्रार–स्त्री० [स० कलिचार] सेना।

कळियुग–पु० [सं० कलियुग] चार युगो मे चौथा युग।

कळयुगि (गी)–वि० कलियुग का, कलियुग सबधी।

कळियो–पु० १ वेमन का काम। २ देखो 'कळसौ'।

कळिराज–पु० कलियुग।

कलिल–पु० पाप।

कळिहण–पु० युद्ध, समर।

कळिहारी–वि० कलह प्रिय, झगडालू।

कळी–स्त्री० [सं० कलिका] १ बिना खिला फूल, कलिका। २ कन्या। ३ अक्षत योनि युवती या स्त्री। ४ स्त्रियो के लहगे की परत। ५ छवि, शोभा। ६ वृक्ष। ७ बीज। ८ गप्प। ९ बाल, केश। १० नाक से बाल उखाडने का नाइयो का एक उपकरण। ११ शिव। १२ युद्ध। १३ कीर्ति, यश। १४ प्रकाश। १५ कला। १६ जस्ते या रागे का बना हुक्का। १७ छन्दशास्त्र मे मात्रा का नाम। १८ टगण का एक भेद (ऽऽ।।)। १९ मिट्टी का बडा जल-पात्र। -वि० १ आततायी। २ अनर्थकारी ३ अद्भुत कार्य करने वाला। ४ विकारग्रस्त। ५ समान, सदृश। ६ काला श्याम। -क्रि०वि० इस तरह से।—**दार**–वि० जिसमे कलिया हो।

कली–स्त्री० १ चूना जो कलाई के काम आता है। २ कलई, रोगन। ३ चमक-दमक। ४ देखो 'कळी'। —**कोठार**–पु० भवन व्यवस्था का सरकारी दफ्तर। —**दार**–वि० जिसके कली की गई हो। चमकदार।

कळीट–वि० काला-कलूटा।

कळीयंक–देखो 'कळक'।

कळीयण–पु० युद्ध, समर।

कलीळ–पु० [स० कलिल] पाप।

कलीव–पु० [स० क्लीव] १ हिंजडा, नपुसक। २ कायर, डरपोक।

कळुग्रार–पु० कलियुग।

कळुख–पु० [स० कलुष] १ कलंक, दोष। २ पाप। ३ दाग। ४ मलिनता।

कळुजी–पु० कलियुग। वि० १ पापी। २ दुष्ट।

कलुल–पु० पाप। दोष।

कळुस–पु० १ गंदा पानी। २ देखो 'कलुख'।

कळूंदर, कळूंदरौ–देखो 'कळोदरौ'।

कळू–पु० [स० कलि] १ कलियुग। २ बुरा समय। ३ देखो 'कळा'। —**काळ**–पु०–कलिकाल, कलियुग।

कलूरौ–पु० एक घास विशेष।

कलूला–स्त्री० भोजन का नशा या भोजन के बाद का विश्राम।

कळूस–१ देखो 'कळुख'। २ देखो 'कळुस'।

कळेधन–पु० [स० कला+इन्धन] दीपक।

कळेज (उ)–देखो 'काळजौ'।

कळेजी–स्त्री० कलेजे का मांस।

कळेजौ–देखो 'काळजौ'।

कलेवडौ–देखो 'कलेवौ'।

कलेवर–पु० [स०] १ शरीर, देह। २ आकार, प्रकार। ३ आकृति, शक्ल।

कलेवौ–पु० [स० कल्यवर्त] १ नाश्ता, जलपान। २ स्वल्पाहार। ३ पाथेय।

कळेस–पु० [स० क्लेश] १ दुख, कष्ट। २ पीडा, वेदना। ३ कलह, झगडा। ४ परिश्रम।

कळैगारौ–वि० (स्त्री० कळैगारी) कलहप्रिय, झगडालू।

कलोदरौ–पु० बैलगाडी के थाटे मे लगने का लोहे का उपकरण।

कलोठ–स्त्री० करवट (मेवात)।

कलोतर–पु० अज्ञान।

कळोधर–पु० [स० कुल+धर] १ पुत्र। २ वशज।

कलोळ (ल)–पु० [स० कल्लोल] १ आमोद-प्रमोद। २ क्रीडा, केलि। ३ उल्हास, खुशी, हर्ष। ४ मौज, मस्ती। ५ अठखेलि। ६ लहर, तरग। ७ शत्रु।

कळोहळ–देखो 'कोलाहळ'।

कळौंजी–स्त्री० कालाजीरा।

कळौ–देखो 'कळह'।

कलौ–पु० १ आभूषण बनाने का एक औजार। २ फेंफडा। ३ देखो 'किलौ'।

कल्कि, कल्की–पु० [स० कल्किन्] विष्णु का भावी दशवा अवतार जो कलियुग के अन्त मे कुमारी कन्या के गर्भ से सभल (मुरादाबाद) मे होगा। (कल्पना)

कल्डू–पु० रहट की माल मे लगने वाला लकडी का गुटका।

कल्पंत–देखो 'कळपात'।

कल्प–१ देखो 'कळप'। २ देखो 'कलप'।

कल्पण (न), कल्पणा (ना)—देखो 'कलपना'।

कल्पणी (बौ)—१ देखो 'कळपणी' (बौ)। २ देखो 'कलपणी' (बौ)।

कल्पत—पु० १ ईर्ष्या, द्वेष। २ वैर, शत्रुता।

कल्पतरौ (द्रुम, रूंख)—देखो 'कळपतरु'।

कल्पात—देखो 'कळपात'।

कल्पित—पु० १ दुष्ट, हाथी। २ देखो 'कलपित'।

कल्पी—वि० १ कल्पना करने वाला। २ काव्य शास्त्र का रचयिता। ३ आचार व्यवहार का विशेष ध्यान रखने वाला साधु (जैन)।

कल्मी—देखो 'कलमी'।

कल्याण—पु० [स० कल्याण] १ मोक्ष, मुक्ति। २ मगंल, कुशल। ३ सुख। ४ सौभाग्य। ५ भलाई। ६ शुभ कर्म। ७ स्वर्ग। ८ अभ्युदय। ९ सोना। १० विष्णु। ११ ईश्वर। १२ जल, पानी। १३ एक घोडा विशेष। १४ एक राग विशेष। १५ एक प्रकार का छद। —**कळस**—पु० मगल-कलश। —**कुंवर**—स्त्री० पवार वशोत्पन्न एक देवी।

कल्याणी—स्त्री० [स० कल्याणी] सौभाग्यवती स्त्री, सधवा।

कल्ल—पु० एक प्रकार की घास।

कल्लर—पु० १ एक प्रकार का छोटा कीडा। २ खट्टी छाछ का बना एक पेय पदार्थ। ३ एक प्रकार का रण-वाद्य।

कल्हण—पु० १ युद्ध। २ सस्कृत का एक प्राचीन पण्डित।

कल्हार—पु० १ पुष्प। २ श्वेत एव सुगधित कमल।

कवंद—१ देखो 'कविंद'। २ देखो 'कवि'।

कवक—पु० १ ग्रास, निवाला। २ वादा, वचन। —क्रि० वि० १ कभी। २ कब। ३ कैसे।

कवच—पु० [स०] १ वर्म, सन्नाह, जिरह-बख्तर। २ आवरण। ३ तावीज। ४ छाल। ५ बडा नगाडा। ६ शरीराग रक्षार्थ मत्र द्वारा प्रार्थना। ७ ऐसी रक्षा का मत्र या मत्रयुक्त तावीज। ९ क्रौंच। —**दीप**—पु० क्रौंचद्वीप।

कवडपच—पु० [स० कपट+प्रपच] कपट जाल, षड्यन्त्र।

कयडाळी, कवडियौ—वि० [स० कपर्दिक] १ कौडियो जैसे छापे वाला। २ कौडियो से युक्त। ३ उमग युक्त। —पु० १ एक पक्षी विशेष। २ कौडी छाप सर्प। ३ ऊंट की सजावट का कपर्दिका युक्त उपकरण।

कवडी—१ देखो 'कौडी'। २ देखो 'कवड्डी'।

कवडौ, कवड्डु—पु० १ बडी कौडी, कौडा। २ कौडी के रग का घोडा।

कवड्डी—१ देखो 'कबड्डी'। २ देखो 'कौडी'।

कवण (न)—देखो 'कमण'।

कवत—देखो 'कवित्त'।

कवता—देखो 'कविता'।

कवर—देखो 'कुमार'।

कवररस—पु० [स० कमल-रस] हस।

कवरागुर—पु० [स० कुमार-गुरु] १ प्रधान राजकुमार। २ राजकुमार का गुरु।

कवराणी—देखो 'कवराणी'।

कवरांपत (पति)—पु० युवराज।

कवराज (राजा, राय, राव)—देखो 'कविराजा'।

कवळ, कवल—पु० [सं० कवल] १ कौर, ग्रास। २ देखो, 'कमल'। ३ देखो 'कौल'। —**धात**—पु० सूर्य।

कवळापति-देखो 'कमलापति'।

कवलास-देखो 'कैलास'।

कवलियौ—पु० १ आभूषणो मे खुदाई करने का औजार। २ कामला रोग।

कवळी—स्त्री० [स० कपिला] १ एक प्रकार की गाय, कपिला। २ देखो 'कंवळी'।

कवळौ—पु० १ बैल। २ सूअर। ३ सफेद रग का सूअर। ४ योद्धा। ५ देखो 'कवळौ'। —क्रि० वि० १ पास, निकट। २ देखो 'कौल'।

कवल्यापीड—देखो 'कुवलयापीड'।

कवल्यासव—देखो 'कुवल्यासव'।

कवल्ली—पु० कुवेर।

कवसलेंद—पु० [स० कौशलेन्द्र] श्रीरामचन्द्र।

कवसल्या—स्त्री० [स० कौशल्या] श्रीराम की माता का नाम।

कवाण (न)—देखो 'कमान'।

कवार-पाठौ—देखो 'कुमार पाठौ'।

कवाड—देखो 'कपाट'।

कवाड, पण, पणौ—पु० रक्षा करने का भाव।

कवाडियौ, कवाडी (डौ)—पु० १ छोटी कुल्हाडी। २ छोटा कपाट। ३ लकडियो की बनी रोक। ४ अनाज को खाने वाला कीट।

कवाज—स्त्री० [अ० कवायद] १ सेना का युद्धाभ्यास, परेड। २ नियम, कायदा।

कवाद—पु० १ कवि। २ सीग के टुकडो का घनुष। ३ कवायद

कवादु (दू)—स्त्री० कवायद। —वि० जिसे कवायद का अभ्यास हो।

कवार—१ देखो 'कुमार'। २ देखो 'कवार'। —**पाठौ**—'कुमार-पाठौ'।

कवारी—देखो 'कवारी'। —**घड**—देखो 'कवारीघड'।

कवारौ—देखो 'कवारौ'। (स्त्री० कवारी)।

कविंद—पु०[स०कवीन्द्र]१ कवियो मे श्रेष्ठ। २ श्रेष्ठ काव्यकार।

कवि–पु० [सं०] १ कविता, काव्य या पद्यों का रचयिता। काव्यकार, शायर। २ पंडित। ३ आदि कवि वाल्मीकि। ४ बृहस्पति। ५ शुक्राचार्य। ६ व्यासदेव। ७ ब्रह्मा। ८ सूर्य। ९ घोडा। १० लगाम। –वि० १ बुद्धिमान, चतुर। २ विवेकशील। ३ सर्वज्ञ। ४ श्लाघ्य। ५ प्रतिभाशाली। —अण, यण–पु० पंडित समुदाय। कविजन। —रजा राज, राना, राय राव–पु० श्रेष्ठ कवि या काव्यकार श्रेष्ठ वैद्य (उपाधि)।

कविईलोळ–पु० डिंगल का एक छंद।

कवित (त्त)–पु० [सं० कवित्त] १ छप्पय छन्द। २ इकत्तीस अथवा बत्तीस अक्षरों का एक वृत्त। ३ कविता।

कविता (ई)–स्त्री० [स०] १ कोई पद्यमय रचना। २ काव्य। ३ पद्य। ४ गीत। ५ काव्य रचना की शक्ति।

कविति–१ देखो 'कविता'। २ देखो 'कवित्त'।

कविळास, (ळासि, ळासौ)–देखो 'कैळास'।

कविलौ–पु० रंग विशेष का घोडा।

कवींद (द्र)–देखो 'कविंद'।

कवी–स्त्री० १ मादा कौआ। २ देखो 'कवि'।

कवीयद–देखो 'कविंद'।

कवीयण, यांण–देखो 'कविअण'।

कवीलौ–देखो 'कवीलौ'।

कवीस, कवीसर, कवीस्वर–पु० [स० कवीश्वर] १ श्रेष्ठ कवि, कविराज। २ महर्षि।

कवेरजा–स्त्री० कावेरी नदी।

कवेळ–पु० [स० कैवल्य] १ श्रीकृष्ण। २ मोक्ष।

कवेळा (ळौ)–देखो 'कुवेळा'।

कवेळू–देखो 'केळू'।

कवेस, (सर, सुर)–देखो 'कवीस्वर'।

कवौ–पु० [स० कवल] ग्रास, कौर, निवाला।

कव्यद–देखो 'कविंद'।

कव्य–पु० पितरों के प्रति तैयार किया जाने वाला अन्न।

कव्वाल–पु० [अ०] १ मुसलमान गायक। २ 'कव्वाली' गाने वाला गायक।

कव्वाली–स्त्री० [अ०] १ मुसलमान पीरों की स्मृति में गाया जाने वाला विशिष्ट गाना। २ इस राग का कोई गीत, गजल।

कस–पु० [स० कश, कशा, कष] १ मार, निचोड। २ तत्व। ३ रस। ४ छिनगए हुए छोटे२ वादल। ५ वश। ६ शक्ति, ताकत। ७ कचुकी आदि बांधने की डोरी। ८ बांधने के लिये किसी वस्त्र के लगी डोरी। ९ कसौटी। १० चाबुक, कोडा। ११ खिंचाव। १२ कमी। १३ फायदा। १४ गुंजाईश। १५ मितव्ययता। १६ तलवार की लचक। –वि० थोडा, कम।

कसक–स्त्री० १ पीडा, वेदना, दर्द। २ टीस। ३ कसीस धातु। ४ चुभन।

कसकणौ (बौ)–क्रि० १ दर्द से कराहना, टीस उठना। २ टलना। हटना। ३ भागना। ४ लचकना।

कसकत–देखो 'कसक'।

कसट (टि)–देखो 'कस्ट'।

कसटणौ (बौ)–देखो 'कस्टणौ' (बौ)।

कसण–पु० [सं० कृशानु] १ आग, अग्नि। २ कचुकी का बंधन। ३ बंधन। ४ कसावट। ५ देखो 'कसणौ'।

कसणक (बक)–पु० कवच।

कसणी(णौ)–स्त्री० १ कसौटी। २ कसौटी का पत्थर। ३ परीक्षा। ४ रगड। ५ कष्ट, तकलीफ। ६ चारजामे का बंधन। ७ बंधन। ८ कचुकी, डोरी। ९ कवच का हूक। १० कसने का उपकरण। ११ सर्प की गर्दन। १२ फीता।

कसणौ(बौ)–क्रि० १ डोरी से खींच कर बांधना। २ मजबूती से गठित करना। ३ मजबूत, बांधना। ४ कसौटी पर घिसना। रगडना। ५ दबाना, भींचना। ६ कटिबद्ध होना। ७ सख्ती से काम लेना। ८ प्रत्यंचा चढाना। ९ तनाव देना। १० यंत्र के पुर्जे कसना। ११ कमिया जाना। १२ कम होना, घटना।

कसतूरियौ–वि० १ कस्तूरी का, कस्तूरी संबंधी। २ कस्तूरी रंग का। –पु० कस्तूरी रंग का घोडा। —म्रग, म्रिग, म्रघ–पु० कस्तूरी वाला हरिन।

कसतूरिय(रीय, थूरी)कसत्तूरी, कसत्तूरीय–स्त्री० [स० कस्तूरी] एक सुगंधित द्रव्य, मृगमद, मुश्क।

कसतौ–पु० कम तोलने की क्रिया या भाव, कम नापने की क्रिया। –वि० कम।

कसन–१ देखो 'कस्ण'। २ देखो 'कसण'।

कसनाग (नागर, नागरौ)–देखो 'किसनागर'।

कसनावास–पु० [स० कृष्ण + आवास] पीपल-वृक्ष।

कसप–पु० कश्यप। —तनु–पु० गरुड।

कसपरजवाळी–स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

कसब–पु० १ वेश्या वृत्ति। २ व्यभिचार की कमाई। ३ धंधा, पेशा। ४ एक प्रकार की बढिया मलमल।

कसबन–स्त्री० १ वेश्या। २ वेश्या वृत्ति करने वाली स्त्री।

कसबी–स्त्री० १ ऊंट के चारजामे का फीता या रस्सी। २ एक प्रकार का बढिया रेशमी वस्त्र।

कसबोई (बोय, बोह, बौ)–देखो 'खसबू'।

कसबौ–पु० [अ० कस्बा] १ छोटा शहर। बडा गांव। २ एक प्राचीन कर। ३ देखो 'खसबू'।

कसम–स्त्री० [अ०] १ शपथ, सौगंध । २ प्रतिज्ञा, साक्षी । –पु० [अ० खसम] ३ पति, खाविंद ।

कसमल–पु० [सं० कश्मल] पाप, दुष्कर्म । —**प्रिय**–पु० भौंरा, भ्रमर । पापी ।

कसमसणौ (बौ), कसमस्सणौ (बौ)–क्रि० १ हिचकिचाना । २ बेचैन होना, घबराना । ३ परेशान होना । ४ उलझन मे पडना । ५ दबना, झुकना ।

कसमसाट–स्त्री० १ हिचकिचाहट । २ उलझन । ३ परेशानी । ४ बेचैनी ।

कसमार–पु० दोनो ओर से बाधने का फीता, वक्कल ।

कसमीर–पु० [सं० कश्मीर] भारत के उत्तर मे स्थित एक प्रदेश । कश्मीर । —**ज**–पु० केसर । कश्मीर मे पैदा हुआ । —**सी**–स्त्री० शारदा, सरस्वती ।

कसमीरी (मेरि, मेरी)–स्त्री० १ सरस्वती । २ कश्मीर का निवासी । –वि० कश्मीर का, कश्मीर सबधी ।

कसर–स्त्री० [अ०] १ कमी, न्यूनता । २ खोट, दोष । ३ वैर द्वेष । ४ हानि, घाटा । ५ त्रुटि ।

कसरत–स्त्री० [अ०] १ व्यायाम, दण्ड-बैठक । २ शारीरिक या मानसिक श्रम ।

कसरायत–स्त्री० १ कमी, कसर । २ फसलो को पशुओ द्वारा हानि पहुँचाने सबधी एक प्राचीन सरकारी कर । –वि० कमी रखने वाला ।

कसरायलौ–वि० (स्त्री० कसरायली) दोष पूर्ण, कसर वाला ।

कसरियौ–पु० बढई का एक औजार ।

कसरौ–पु० निशान, चिह्न ।

कसवटी–देखो 'कसौटी' ।

कसवण–पु० [सं० कु + शकुन] अपशकुन ।

कसवर–पु० [सं० कस्वर] द्रव्य, धन, सम्पत्ति ।

कसवाड़ं–पु० १ कमी । २ अभाव । ३ कसर । ४ देरी, विलब ।

कससणौ (बौ), कसस्सणौ (बौ)–क्रि० १ जोश मे एक साथ चलना । २ एक के आगे एक चलने की कोशिश करना । ३ आगे बढना ।

कसांबर (वर)–पु० पीताम्बर वस्त्र, भगवा वस्त्र ।

कसा–स्त्री० अभिमान, घमड । –सर्व० कौनसा ।

कसाइलौ–वि० १ कसैला, दूषित, विकृत । २ निर्धन । –स्त्री० निर्धनावस्था ।

कसाई–पु० [अ०] १ वधिक, बूचड । २ मास का व्यवसाय करने वाली एक मुस्लिम जाति । –वि० १ क्रूर, निर्दयी । २ हत्यारा । —**खानौ**–पु० बूचड खाना । वह स्थान जहा जानवरो को काटा जाता है । —**वाडौ**–पु० कसाइयो का मुहल्ला ।

कसाणौ (बौ)–क्रि० १ डोरी या रस्सी से बधवाना । २ मजबूती से गठित कराना । ३ मजबूत बधवाना । ४ कसौटी पर घिसवाना । रगडवाना । ५ सख्ती करवाना । ६ प्रत्यचा चढवाना । ७ दबवाना । ८ कटिबद्ध कराना । ९ तनाव दिराना । १० किसी यत्र के पुर्जे कसवाना ।

कसाय–पु० [सं० कषाय] क्रोध, मान, माया और लोभ । (जैन)

कसाय (ज, लौ)–वि० कसैला ।

कसार–पु० [सं०] घी मे सिके आटे मे गुड या चीनी मिलाकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

कसारा–पु० धातु के बर्तन बनाने वाली जाति, ठठेरा ।

कसारी–स्त्री० १ झिंगुर नामक जतु । २ कसारा जाति की स्त्री ।

कसारौ–पु० (स्त्री० कसारी) १ ठठेरा । २ देखो 'कसार' ।

कसाल (लौ)–पु० १ निर्धनता, कगाली । २ कष्ट, तकलीफ । ३ सकट । ४ अभाव । —**दार**–वि० निर्धन, दरिद्र ।

कसि–१ देखो 'कसौटी' । २ देखो 'कसी' ।

कसिपु–पु० [सं० कशिपु] १ पलंग शय्या । २ तकिया । ४ अन्न भात । ४ प्रह्लाद का पिता हिरण्यकशिपु ।

कसियौ–वि० १ कटिबद्ध, सन्नद्ध, तैयार । २ देखो 'कस्सी' ।

कसी–स्त्री० १ कसौटी । २ कसौटी का पत्थर । ३ एक प्रकार का शस्त्र । ४ देखो 'कस्सी' । –सर्व० १ कैसी । २ कौनसी ।

कसीजणौ (बौ)–क्रि० कसैला होना, विकृत होना ।

कसीनालौ–स्त्री० दीवार के सहारे छत का पानी नीचे उतार का नल ।

कसीनाळौ–पु० छत पर बना नाला ।

कसीस (क)–पु० १ विधवा स्त्रियो के ओढने का वस्त्र । २ एक रग विशेष । ३ कसीस नामक धातु ।

कसीसणौ (बौ)–क्रि० १ कसा जाना । २ प्रत्यचा चढाना । ३ फिसलना ।

कसुंबौ–पु० १ पानी मे गला हुआ अफीम । २ लाल रंग ।

कसुटी–देखो 'कसौटी' ।

कसूंण–पु० अपशकुन ।

कसूणी–वि० अपशकुनी ।

कसूंबल–वि० १ लाल । २ लाल रग का । –पु० १ लाल रग । २ लाल रग का वस्त्र ।

कसूंबौ (भौ, मौ)–पु० १ वह क्षुप जिसमे से लाल रग निकलता है । २ लाल रग । ३ गला हुआ अफीम । ४ अफीम । ४ एक रग विशेष का घोडा । –वि० लाल रग का ।

कसूंमी–वि० कुसुम के समान लाल।
कसूमल–देखो 'कसूंवल'।
कसूत–वि० सीधा न चलने वाला।
कसूम–देखो 'कुसुम'।
कसूमल–देखो 'कसूवल'।
कसूमो–देखो 'कसूवो'।
कसूर–पु० [अ०] १ अपराध, गुनाह। २ दोष, बुराई। ३ अवगुण। ४ त्रुटि, कमी। ५ भूल। —वार–वि० गुनाहगार, अपराधी।
कसेरु (रू)–पु० [स० कशेरु] १ पीठ के मध्य की हड्डी मेरुदण्ड। २ एक प्रकार का तृण। ३ जल मे उत्पन्न होने वाला एक फल विशेष।
कसेल–वि० योद्धा, वीर।
कसोणो (बो)–क्रि० १ बिछाना। २ कसना।
कसोभी–वि० अशोभनीय।
कसोयरी–वि० [स० कृशोदरी] पतली कमर वाली।
कसो–वि० कैसा। –सर्व० कौनसा। देखो 'कस्सो'।
कसोटए, कसौटी–स्त्री० १ सोना, चांदी का परीक्षण करने का पत्थर। २ परख जाच, परीक्षा। ३ कसौटी पर रखने की क्रिया या भाव। ४ दुख। ५ कष्ट।
कसौटो–पु० [स० कष्ट] १ कष्ट, दुख २ सकट।
कस्ट–पु० [स० कष्ट] १ दर्द, पीडा, वेदना। २ दुख। ३ आफत, सकट, विपत्ति। ३ अडचन, कठिनाई। ५ पाप। ६ दुष्टता। ७ तकलीफ, परिश्रम।
कस्टणो(बो), कस्टीजणो (बो)–क्रि० १ कष्ट मे पीडित होना। २ प्रसव पीडा से ग्रस्त होना। ३ आफत या कठिनाई मे पडना।
कस्टी–वि० [स० कष्ट] दुखी, पीडित।
कस्तूरियौ–देखो 'कसतूरियौ'।
कस्तूरी–देखो 'कसतूरी'।
कस्तो–देखो 'कसतो'।
कस्मल–वि० गदा, मैला, घृणित।
कस्यप–पु० [स० कश्यप] १ कछुआ। २ दिति व अदिति के पति एक ऋषि। ३ देखो 'कसिपु'।
—आत्मज, सुत सुतन–पु० सूर्य। गरुड।
कस्स–१ देखो 'कस'। २ देखो 'कसर'।
कस्सण–देखो 'कसण'।
कस्सणो (बो)–देखो 'कसणो' (बो)।
कस्सी–स्त्री० १ एक प्रकार की खुरपी जिससे फसल के साथ उगे घास को साफ किया जाता है। २ वधियाकरण (बैल आदि)। ३ देखो 'कसी'।
कस्सो–सर्व० कौनसा। –पु० फीता।
कह–पु० [सं० कथ्] १ कोलाहल, शोर। २ कल-कल ध्वनि। ३ कथा।
कहक–स्त्री० [स० कुहुक] १ मोर, कोकिल आदि की बोली। २ कलरव। ३ कोयल की कूक। ४ बिजली की चमक।
कहकहाट, कहकहो, कहक्कह–पु० [अ० कहकाह] जोर की हसी, ठट्ठा।
कहडो–वि० (स्त्री० कहडी) कैसा।
कहण–स्त्री० [सं० कथन] १ कहना क्रिया या भाव। २ उक्ति। ३ वचन, वाक्य। ४ कहावत। ५ वर्णन, निरूपण। –सर्व० किस।
कहणनु–क्रि० वि० १ किसलिये, क्यो। २ कहने के लिए।
कहणार–वि० १ कहने वाला। २ कहने योग्य।
कहणावत–देखो 'कहावत'।
कहणी–स्त्री० [स० कथन] १ कहने की क्रिया या भाव। २ कहावत। ३ चर्चा, कथनी।
कहणो–पु० [स० कथन] १ अपयश। २ डाट-फटकार। ३ आज्ञा, आदेश। ४ कथन। ५ अनुरोध।
कहणो (बो)–क्रि० [स०कथनम्] १ बोलकर अपनी बात कहना, बोलना। २ व्यक्त करना, प्रगट करना। ३ उच्चारण करना। ४ समझाना। ५ कहा-सुनी करना, डाटना। ६ सूचना करना, खबर देना। ७ पुकारना। ८ बहकाना, भुलाना।
कहत–पु० [अ० कहत] १ दुर्भिक्ष, अकाल। २ अभाव, कमी, किल्लत।
कहनाण–पु० [स० कथन] कहने योग्य बात, शब्द, कथन।
कहवत–देखो 'कहावत'।
कहर–पु० [अ० कह्र] १ प्रलय। २ घोर विपत्ति, सकट। ३ रीढ की हड्डी। ४ दर्द, कष्ट। ५ वज्राघात। ६ युद्ध। ७ क्रोध, कोप। ८ विष जहर। ९ रोब, प्रभाव। १० तलवार। ११ शत्रु, दुश्मन। १२ दुर्भिक्ष, अकाल। १३ कुआ। १४ नक्कारा-वाद्य। १५ भय, आतक। १६ जोशपूर्ण ध्वनि, गरजन। १७ सातवीं बार उलट कर बनाया गया शराब। १८ दैवी विपत्ति। १९ अमानुषिक कार्य। २० अत्याचार। २१ मौत, मृत्यु। –वि० १ भयानक, भयावह। २ जबरदस्त। ३ महान्। ४ अत्यधिक, बहुत। ५ तीव्र, तेज। ६ उग्र। ७ दुष्ट। ८ नीच, ओछा।
कहरवा–स्त्री० १ एक ताल विशेष। २ एक पत्थर विशेष।
कहरी–पु० एक प्रकार का घोडा।
कहवत–देखो 'कहावत'।
कहवो–पु० [अ० कहवा] एक वृक्ष विशेष का बीज।

कहांणी (नी)–स्त्री० [सं० कथानिका] १ कोई किस्सा, आख्यायिका । २ कथा, वार्त्ता । ३ गल्प, मन गढंत बात । ४ काल्पनिक कथा ।

कहारेक (रेके)–क्रि० वि० १ कभी । २ कभी न कभी ।

कहार (र)–पु० १ पानी भरने व पालकी उठाने का व्यवसाय करने वाली जाति । २ उक्त जाति का व्यक्ति । ३ बोझा उठाने वाला ।

कहाव, कहावत (ति, ती)–स्त्री० १ लोकोक्ति, उक्ति । २ संदेश खबर । ३ वचन, शब्द, कथन । ४ अपयश, कलंक । ५ प्रचलित बात ।

कहि–सर्व० १ किस । २ कोई ।

कहिके (कै)–सर्व० किसी ।

कहिणी–स्त्री० कथनी ।

कहिम–अव्य० चाहे ।

कहियौ–पु० कहना, आज्ञा, आदेश ।

कहिर–पु० [सं० कधरा] १ गर्दन । २ कंधा । ३ देखो 'कहर' ।

कही–सर्व० १ कोई । २ किसी ।

कहीग्र–क्रि० वि० कहां ।

कहीक–सर्व० किसी ।

कहीका–क्रि० वि० कहीं ।

कहीकै–अव्य० किसी ।

कहीयं–क्रि० वि० कभी ।

कहीयौ–पु० कथन, कहना, आज्ञा, आदेश ।

कहु (हूं)–क्रि० वि० कहीं-कहीं । कहीं पर ।

कहुकणौ (बौ), कहूकणौ (बौ)–क्रि० १ कोयल का बोलना । २ पक्षियों का कूजन करना । ३ ऊंट का बोलना ।

कहूकौ–देखो 'कुहुक' ।

कहूर–पु० मोठ, ग्वार आदि के फूल ।

कहेण–पु० [सं० कथन] कथन ।

का–अव्य० १ का, के आदि संयोजक अव्यय । २ क्या, कैसे । –सर्व० ३ क्यों, किसलिए ।

कांइ (क)–सर्व० [सं० किम्] क्या । –क्रि० वि० क्यों, कैसे । –वि० कुछ, कुछेक, तनिक ।

काइणी–स्त्री० प्लेग की गांठ ।

काइणौ–पु० १ संधिस्थलों पर पड़ने वाली मोच । २ तराजू या पतंग का कौना ।

कांई (क)–देखो 'काइक' ।

कांऊं–स्त्री० कौवे के बोलने का शब्द, कौवे की आवाज़ ।

काक–१ देखो 'कक' । २ देखो 'काख' ।

कांकड–पु० [सं० कक्कट] १ जंगल, वन । २ कृषि भूमि, खेत आदि । ३ सीमा, सरहद । ४ क्षेत्रफल ।

काकड़ेल–वि० १ सरहद पर रहने वाला । २ योद्धा, वीर ।

कांकण–पु० [सं० कंकण] १ कंगन, कंकण । २ विवाह के समय वर-वधू के हाथ-पांवों में बांधे जाने वाले मांगलिक सूत्र । ३ युद्ध । —डोर, डोरडौ, डोरणौ–पु० विवाह संबंधी मांगलिक सूत्र । —छोड़, छोडणौ–पु० एक वैवाहिक रस्म ।

काकणस, काकणियौ–पु० स्त्रियों की चोटी में गुंथी जाने वाली ऊन की डोरी ।

काकणी–स्त्री० हाथ की कलाई का आभूषण । कंगन ।

कांकर–स्त्री० [सं० कर्कर] १ छोटे-छोटे कंकरों का समूह जो इमारत की छत, आंगन आदि में काम आता है । २ छोटा कंकड । ३ कंकरीली भूमि । ४ एक झाडीनुमा पौधा जिसके फल मीठे होते हैं । –क्रि० वि० कैसे, किस तरह ।

कांकरडी, कांकरी–देखो 'कांकर' । देखो 'कांकरण' ।

कांकरौ–देखो 'कंकड' ।

कांकळ–पु० [सं० किंकल] १ युद्ध । २ सरहद । ३ देखो 'कांकड ।

काकी, काकै–सर्व० किसकी, किसके ।

कांख–स्त्री० [सं० कक्ष] १ बगल, कांख । २ पार्श्व ।

कांगड़ारीराय–स्त्री० ज्वालामुखी देवी ।

कांगडौ–पु० १ पश्चिमी हिमालय का एक प्रदेश । २ मटमैले रंग का एक पक्षी ।

कांगणी–स्त्री० १ माल कांगणी । २ एक प्रकार का कदन्न ।

कांगणौ–देखो 'कांकण' ।

कांगरि–देखो 'कांगरौ ।

कांगरु (वेस)–देखो 'कामरूप' ।

कांगरौ–पु० [फा० कंगूर] १ बुर्ज । २ कंगुरा ।

कागळ–देखो 'कागज' ।

कांगसियौ–पु० १ कंघा । २ एक राजस्थानी लोकगीत ।

कांगसी–स्त्री० [सं० कंकती] स्त्रियों के केश संवारने की कंघी ।

कांगाई–स्त्री० १ दरिद्रता, कंगाली । २ याचकता । ३ नीचता । ४ बुरा स्वभाव । ५ झगडा ।

कांगारोळी, कांगीरोळौ–पु० १ झगडा, फिसाद । २ तू-तू-मैं-मैं । ३ कलह ।

कांगी–देखो 'कांगसी' ।

कांगुरौ–देखो 'कांगरौ' ।

कांगौ–वि० (स्त्री० कांगी) १ कंगाल, निर्धन । २ याचक । ३ बुरे स्वभाववाला ।

कांच–स्त्री० [सं० कक्ष] १ गुदेन्द्रिय का भीतरी भाग । २ देखो 'काच' ।

कांचणौ (बौ)–क्रि० अधिक कब्जियत की दशा में शौच जाने के लिये जोर लगाना, कांखना ।

काचळ, काचळियौ—देखो 'काचळी'।

काचळग्रचळ—पु० सुमेरुपर्वत।

कांचळपंथ—पु० वाम मार्ग का एक भेद।

काचळी (ळौ), काचव (उ, वौ)—स्त्री० [स० कचुक] १ सर्पादि के शरीर पर होने वाली झिल्ली, केचुल। २ स्त्रियो की कचुकी।

कांचि, कांची—स्त्री० १ करधनी,मेखला। २ कोग्रा। ३ सप्तपुरियो म से एक। —पद—पु० कमर, कटि।

काचु (ग्रो) काचू—पु० [स० कचुक] कचुकी।

काचौ—पु० कौग्रा।

काछा—स्त्री० [स० काक्षा] १ इच्छा, ग्रभिलापा,चाह। २ लोभ।

काजर, काजरियौ—पु० (स्त्री० काजरी) कजर जाति का व्यक्ति।

काजिक, काजी—स्त्री० [स० काजिकम्] एक हाजमेदार पेय पदार्थ।

काजीवडौ—पु० एक देशी खेल।

काझर—वि० नीच।

काट—स्त्री० [स०कटक] १ घास के महीन काटे। २ ग्वार, मोठ ग्रादि का भूसा। ३ काटो के टुकडे व ढेर। —कटीलौ—वि० काटेदार। —कांटाळौ, किंटाळौ—वि० काटेदार, काटो से परिपूर्ण।

काटरखी—स्त्री० जूती, पगरक्षिका।

काटाळ, (ळौ)—पु० [स० कटक] १ काटेदार घास जिसे ऊट खाता है। २ सिंह ३ सर्प, विच्छु ग्रादि। ४ वीर, योद्धा। —वि० काटेदार, कटीला।

कांटावेड़—पु० काटेदार ग्राहता वाला मकान।

काटियौ—पु० १ लोहे का एक हुकदार उपकरण। २ हसिया। ३ हसली की हड्डी। ४ हृदय, दिल। ५ कफन।

काटी—स्त्री० १ भूमि पर छितराने वाला काटेदार घास। २ छोटा तराजू। ३ काटो का समूह। —वि० समान, सदृश।

काटौ—पु० [स० कटक] १ पेड या घास का काटा। २ लोहे का नुकीला खण्ड। ३ ग्रकुश। ४ ग्रकुडा। ५ विषैले जीव। ६ विच्छु का डक। ७ बडा तराजू। ८ स्त्रियो के नाक का ग्राभूषण। ९ स्वर्णकारो का ग्रौजार विशेष। १० वाधा। ११ शूल। १२ कष्ट,पीडा। १३ राक्षस। —वि० १ वाधक। २ दुखदाई तत्व। ३ ग्रातातायी, दुष्ट। —काढ़णियौ, काढ़णौ—पु० बारीक काटा निकालने का उपकरण।

का'टौ—पु० १ दरवाजे की कुडी। २ ग्रातुरता।

काठळ (ळि, ळी)—स्त्री० काली घन घटा।

काठसियौ, काठळौ—पु० १ गले का ग्राभूषण, कठा। २ हाथी के कठ का ग्राभूषण।

काठायत—वि० १ नदी किनारे रहने वाला। २ ग्ररावली पहाड का निवासी। ३ लुटेरा।

काठै—क्रि० वि० नजदीक, पास।

काठैलियौ—पु० १ पहाड के पास रहकर लूट-पाट का कार्य करने वाला व्यक्ति। २ देखो काठायत'।

काठौ—पु० १ सीमा,सरहद। २ किनारा,तट। —क्रि०वि० समीप, पास, निकट।

काड (डौ)—पु० [स० काण्डम्] १ भाग, ग्रश। २ किसी ग्रथ का ग्रध्याय, परिच्छेद। ३ दुर्घटना, घटना। ४ धनुष के बीच का मोटा भाग। ५ तीर, बाण। ६ हाथ या पाव की सीधी लबी हड्डी। —वि० कुत्सित, बुरा। —पट—पु० यवनिका, पर्दा।

काडी, काडीरय—पु० [स० काडीर] १ भील। २ धनुष। —वि० धनुर्धारी।

काण (णि)—स्त्री० [स० काण] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। २ शर्म, लिहाज। ३ मर्यादा। ४ तराजू के सतुलन का ग्रन्तर। ५ महत्व, बडाई। ६ मृत प्राणी के परिवार वालो को दी जाने वाली सात्वना। ७ कानापन। ८ सकोच। ९ सीमा, हद। १० फलो का एक रोग। ११ ग्रट्ठाईस योगा मे से एक। १२ देखो 'काणौ'। —क्रि०वि० लिये, वास्ते। —कुरब—स्त्री० मान, प्रतिष्ठा।

काणेटौ, काणोटौ—देखो 'कागेठौ'।

काणण—पु० [स० कानन] वन, जगल। —राण, राव—पु० सिंह, शेर।

काणम—स्त्री० तराजू के संतुलन का ग्रतर।

काणाद—पु० १ वैशेषिक शास्त्र। २ देखो 'कणाद'।

काणि—देखो 'काण'।

काणियर—पु० १ कणेर। २ कनक चम्पा।

का'णी—देखो 'कहाणी'।

काणीदीवाळी—स्त्री० दीपावली का पूर्व दिवस।

काणेटौ, काणोटौ—पु० मध्य का दात।

काणौ—वि० [स० काण] (स्त्री० काणी) १ एक नेत्र वाला, एकाक्षी। २ कीडे पडा हुग्रा (फल)। —पु० १ शुक्राचार्य। २ कौग्रा। —घूघट, घूघटौ—पु० दो ग्रगुलियो को बीच मे डाल कर बनाई जाने वाली घूंघट की स्थिति जिसमे केवल एक ग्राख खुली रहती है। —सूकर—पु० शुक्राचार्य।

काण्हडौ—पु० [प्रा कण्ह] १ श्रीकृष्ण। २ एक राग विशेष।

कात—पु० [स० कात] (स्त्री० काता) १ पति, प्रियतम। २ ग्राशिक। ३ पक्षी विशेष। —वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ प्रिय, प्यारा। ३ दुष्ट। ४ देखो 'काति'। —मणि—वि० श्वेत, सफेद※। —लोह—पु० वढिया लोहा।

कातर–पु० वरुण ।

कांता–स्त्री० [स०] १ पत्नी, प्रिया । २ सुन्दर स्त्री । ३ प्रियगुवेल । ४ बड़ी इलायची । ५ पृथ्वी । –वि० सुन्दरी ।

कांतार–पु० [स०] १ सघन-वन, महावन । २ निर्जन वन । ३ ऊवड-खावड सडक या रास्ता । ४ गड्ढा । ५ एक प्रकार का ईख ।

काति, कांती–स्त्री० [सं० काति] १ आभा, चमक, दीप्ति । २ प्रकाश, रोशनी । ३ यश, कीर्ति । ४ सौदर्य, मनोहरता । ५ कामना, इच्छा । ६ सुन्दर स्त्री । ७ दुर्गा की एक उपाधि । ८ रुक्मिणी की एक सखी ।

कातेर (रण)–स्त्री० कटीली-झाडी ।

कायडी–स्त्री० [स० कथा] सन्यासियो की कथडी, झोला ।

कादसीक–वि० [स० कान्दिशीक] भयभीत ।

कादियौ–देखो 'काधियौ' ।

कादौ–पु० [स० कद] १ प्याज । २ देखो 'काधौ' ।

काध–स्त्री० [स० स्कध] १ कधा । २ शवयान या अर्थी को दिया जाने वाला कधा । —**मल**–वि० वीर, योद्धा । सहायक ।

काधार–देखो 'गधार' ।

काधाळ–वि० १ बडे कधो वाला । २ वीर ।

काधियौ–वि० [स० स्काधिक] शवयान को कंधो पर उठा कर श्मशान ले जाने वाला ।

काधी-स्त्री० [सं० स्कध] १ बैल की गर्दन जहा जुआ रक्खा जाता है । २ इस स्थान पर होने वाला रोग । ३ कधा ।

काधेलो, काधोटौ-पु० १ सर्दी से बचाव के लिए घोडे को ओढ़ाया जाने वाला वस्त्र । २ कधे का सहारा ।

काधोधर–वि० १ बडे कधो वाला । २ वीर, योद्धा ।

काधौ–पु० [स० स्कध] कधा ।

कान–पु० [स० कर्ण] १ श्रवणेन्द्रिय, कर्ण, कान । २ बन्दूक की नली पर टोपी रखने का स्थान । [स०कृष्ण, प्रा०काण्ह] ३ श्रीकृष्ण । ४ देखो 'कान्ह' । —**कुचरणियौ, कुरेदणी** –पु० कानो का मैल साफ करने का उपकरण । —**खजूरौ** –पु० अत्यधिक पावो वाला रेंगने वाला जानवर । —**गाय** –स्त्री० कान्ह गाय । बाझ गाय । –वि० कायर, डरपोक । —**झड**–स्त्री० सुनकर याद की गई कविता । –वि० श्रुतिनिष्ठ । —**पसाव**–पु० कर्णगोचर । —**फाड़**–पु० नाथ सम्प्रदाय का कनफडा योगी ।

कानड़ (ड़ौ), कानजी–पु० [स०कृष्ण] १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर । ३ देखो 'कान्हडौ' । ४ देखो 'कान' ।

कानन–पु० [स०कानन] वन, जगल । —**चारी**–वि० बनवासी । ऋषि, मुनि । —**भ्रखी**–स्त्री० हरिणी ।

कानलौ–वि० (स्त्री० कानली) ओर की, तरफ की ।

कानवौ, कानव्हौ–पु० श्रीकृष्ण ।

कानस–स्त्री० १ अर्द्धवृत्ताकार आकृति । २ लोहा साफ करने का औजार । ३ दीवार का कगुरा ।

कानसळाई (सळायौ)–पु० कनखजूरा नामक जानवर ।

कानाकउमत–स्त्री० आ की मात्रा ।

कानाफूसी–स्त्री० १ गुप्तगू । २ गुप्त वार्त्ता, ३ फुसफुसाहट ।

कानामात (मात्रा)–स्त्री० १ वर्ण के आगे की खड़ी पाई 'ा' । २ आ की मात्रा ।

कानिया, कांनी–क्रि० वि० ओर, तरफ । स्त्री० किनारा, छोर ।

कानियौ, कांनुड़ौ, (डौ) कानू–पु० १श्रीकृष्ण । २ किनारा, छोर । ३ पृथकत्व, अलगाव । ४ देखो 'कानौ' ।

कानूगो–पु० १ जमीन-बन्दोवस्त-विभाग का कर्मचारी । २ कानून का जानकार ।

कानूडौ (डौ)–पु० श्रीकृष्ण ।

कानून–पु० [अ० कानून] १ राज्य का विधान, नियम । २ न्याय की विधि ।

कानै–क्रि० वि० १ तरफ, ओर । २ पास, नजदीक । ३ दूर, दूरी पर ।

कांनौ–पु० १ 'आ' की मात्रा का चिह्न । २ बर्तन का किनारा । ३ पार्श्व, बगल । ४ किनारा । ५ तटस्थता । ६ श्रीकृष्ण । ७ पगडी का एक प्रकार का बधन जिसका बाया भाग नुकीला होता था । –वि० अलग, दूर, पृथक ।

कान्यकुब्ज–पु०१ कन्नौज के आस-पास का प्रदेश । २ इस स्थान के ब्राह्मण ।

कांन्ह–१ देखो, 'कन्ह' । २ देखो 'कानगाय' ।

कांन्ह (हु)–देखो 'कन्ह' ।

कान्हड़ी–स्त्री० दीपक राग की स्त्री एक राग ।

कान्हडौ–पु० १ एक राग जो मेघराग का पुत्र माना जाता है । २ कान, कर्ण । ३ देखो 'कन्ह' ।

कान्हरौ, कान्हौ–पु० १ श्रीकृष्ण । २ कृष्ण का वशज । ३ यादव ।

कान्ही, कान्है–क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ पास, निकट ।

कान्हू, कान्हौ–पु० १ श्रीकृष्ण । २ 'आ' की मात्रा ।

काप–स्त्री० तालाब आदि का पानी सूखने पर जमने वाली पपडी ।

कापणी–स्त्री० १ कपकपी । २ एक वात रोग ।

कापणौ (बौ)–क्रि० १ कापना, थर्राना । २ डरना, घबराना । ३ रोग से धूजना ।

काउ (ऊ)–सर्व० कौन। क्या । किस। –पु० कौवे की आवाज, काव-काव।

काउसग (ग्ग)–पु० [म० कायोत्सर्ग] १ शारीरिक व्यापार का त्याग। २ शरीर की ममता का त्याग। (जैन)

काक–पु० [स०] १ कौआ। २ बोतल का डाट। –वि० श्वेत। श्याम॰। —कंठ–वि० धूम्रवर्ण। —ड–पु० कूकर। कच्चे बेर। —ड़ा–पु० कपास के बीज । एक वृक्ष विशेष। —नदी–स्त्री० जैसलमेर की एक नदी।

काकड–पु० शृगाल, सियार ।

काकड़ासिंगी–स्त्री० [स० कर्कट श्रृंगी] एक प्रकार की पर जीवी वनस्पति जो काकड़ा वृक्ष पर चढ़कर फैलती है।

काकड़ियो–पु० १ एक प्रकार का सुगधित घास। २ छोटी काकडी। ३ ककर ।

काकडी–स्त्री० [स० कर्कटी] ककड़ी-फल।

काकड़ो–पु० १ एक प्रकार का वृक्ष। २ एक प्रकार का हिरन। ३ कपास का बीज।

काकपद–पु० [स०] छूटे हुऐ शब्द के लिए प्रयुक्त चिह्न।

काकपुसट–स्त्री० [सं० काकपुष्ट] कोयल, कोकिला।

काकब–पु० ओटा कर गाढा किया हुआ गन्ने का रस।

काकवळी–स्त्री० [सं० काकवलि] श्राद्ध के दिन कौवो को खिलाया जाने वाला भोजन।

काकवांझ (डी)–स्त्री० [सं० काकवध्या] एक संतान के बाद वध्या होने वाली स्त्री।

काकभुसुंडी–पु० [सं० काकमुशुंडि] एक ब्राह्मण, जो लोमश ऋषि के शाप से कौवा हो गये।

काकर–स्त्री० [स० कर्कर] १ कपडा धोने की सिला। २ ककर।

काकरी–देखो 'काकरी'।

काकरेची–स्त्री० एक प्रकार का घोड़ा। २ एक प्रकार का रग।

काकरो–देखो 'काकरो'।

काकळ–पु० युद्ध, सग्राम।

काकळहरी–स्त्री० एक झाडी विशेष।

काकस–स्त्री० चचेरी सास।

काकसरो–पु० चचिया श्वसुर।

काकाणी–वि० १ काका के वशज। २ चचेरा।

काका–स्त्री० १ मसी। २ काकोली।

काकाई–वि० चचेरा।

काकातुग्रो–पु० तोते की जाति का एक सफेद पक्षी।

काकाळका–स्त्री० [म० काकालिका] हरड़े।

काकाह–पु० [स०] सफेद घोडा।

काकींडो–पु० गिरगिट।

काकी–स्त्री० १ चाची। २ मादा कौवा। —बडिया–स्त्री० चाचियाव ताइया। –सासू–स्त्री० चचेरी सास। —सुसरो –पु० चचिया श्वसुर।

काकुसथ (स्त, स्थ)–पु० [स० काकुस्थ] १ श्रीरामचन्द। २ एक सूर्यवशी राजा, ककुस्थ। —कुळ–पु० श्रीराम।

काकूं–सर्व० किससे, किसको।

काकोजी–पु० चाचा।

काकोदर (धर)–पु० [स० काकोदर.] (स्त्री० काकोदरी) सर्प, साप।

काकोरो–पु० छोटा ककर।

काको–पु० १ पिता का अनुज, चाचा। २ कौवा।

काख–स्त्री० काख। —विलाय–पु० काख का फोटा।

काखंयक–स्त्री० [स० कौक्षयक] तलवार।

काखोळाई–स्त्री० [सं० कक्षालात] काख का फोडा, कखवार।

काग–वि० सतर्क, सावधान। देखो 'काक'। देखो 'कागज'।

कागडो–पु० एक रग विशेष का घोडा।

कागज–पु० [फा०] सन, बास, रूई आदि को गला कर बनाया हुआ पदार्थ विशेष जो लिखने व छापने के काम आता है, पत्र। २ चिट्ठी, पत्र। ३ समाचार-पत्र। ४ प्रामाणिक दस्तावेज। ५ एक लोक गीत।

कागजी–वि० १ कागज का, कागज सबधी। २ लिखित। ३ कागज का बना। ४ दिखावटी। —नींबू–पु० पतले छिलके का रसदार नीबू। —बादाम–स्त्री० पतले छिलके की बादाम। —सबूत–पु० लिखित साक्ष्य। प्रमाण।

कागडदि (बी)–वि० कठोर।

कागडोड–पु० द्रोण काक।

कागण–पु० १ ज्वार की फसल का एक रोग। २ कागज-पत्र।

कागणी–देखो 'कागणी'।

कागद (इयो)–पु० कागज। —बाई–स्त्री० कागज की लिखा-पढ़ी।

कागबीजवांन–वि० निर्बल, अशक्त।

कागनर–पु० अरावली पहाड़ मे होने वाला एक पौधा।

कागबास, (डी)–देखो 'काकवाझ'।

कागभसुंड, (भुसड, भुसुंड)–देखो 'काकभुसुडी'।

कागमुखीसडासी–स्त्री० एक प्रकार की सडासी।

कागमुखो (मुहो)–पु० आगे से तीखा व लम्बा मकान। –वि० कौवे के मुख के समान।

कागर, कागल–देखो 'कागज'।

कागलियो–पु० [म० काकलक] १ तालु के पीछे गले मे लटकने वाला मास, गल तुंडिका। २ कौवा। ३ बादल का छोटा खण्ड। ४ देखो 'कागज'।

कागळी–स्त्री० चिट्ठी-पत्री।

कागलौ–पु० [स० काक] (स्त्री० कागली) कौवा।

कागल्यौ–१ देखो 'कागलियौ'। २ देखो 'कागलौ'।

कागवाय (वाव)–पु० ऊटो का एक रोग।

कागवौ–पु० बैलगाडी की नोक।

कागारोटी–स्त्री० घास विशेष।

कागारोळ (ळौ)–पु० १ शोरगुल, हुल्लड़। २ कौवो की काव काव की ध्वनि।

कागोळ–स्त्री० श्राद्ध के दिन कौवो को खिलाया जाने वाला भोजन।

कागोलड–पु० छोटे-छोटे बादल।

कागौ–पु० १ जोधपुर का एक तीर्थ स्थान। २ देखो 'काक'।

काडालौ–देखो 'कडाह'।

काच–पु० [स० काच] १ दर्पण, आइना, शीशा। २ एक पार दर्शक पदार्थ जो कई काम आता है। ३ जाघ। ४ नेत्रो का एक रोग। ५ मोम। ३ खारी मिट्टी। –वि० काला, कृष्ण॰।

काचडकूटो, (गारौ)–वि० (स्त्री० काचडकूटी (गारी) १ निंदक, चुगल खोर। २ वेगारी। ३ किसी कार्य मे घास काटने वाला। –पु० १ बेमेल वस्तुओ का मिश्रण। २ अव्यवस्थित कार्य।

काचड़ौ–पु० १ निंदा, अपयश। २ चुगली, शिकायत।

काचबीड़ी–स्त्री० काच के छोटे टुकडे जडी हुई लाख की चूडी।

काचमय (मै)–वि० काच युक्त, काच के योग से बना।

काचर (रियौ, रौ)–पु० १ ककडी जाति का छोटा-फल। २ शोरवेदार मास। ३ एक प्रकार का शिरोभूषण।

काचळ–वि० १ काच का, काच संबधी। २ कायर डरपोक।

काचौ–वि० (स्त्री० काची) १ अपरिपक्व, कच्चा। २ अपूर्ण, अधूरा। ३ अस्थिर। ४ अशक्त, कमजोर। ५ नीच पतित। ६ कायर, डरपोक। ७ अनुभवहीन। ८ जो आच पर न पका हो। ९ असत्य, झूठ। १० निराधार। ११ तिकृष्ट। १२ अस्थाई। १३ नया। —**कुररौ**–पु० अच्छी फसल न होने वाला वर्ष। कच्चा।

काच्छिलौ–वि० १ कच्छ देश का। २ कच्छ सवधी। –पु० १ कच्छ का निवासी। २ कच्छ का चारण।

काछ (रिग)–स्त्री० [स० कक्ष] १ जाघो का सधिस्थल। २ अडकोश। ३ लगोट। ४ घोती की लाग। ५ छोटी नेकर, कच्छी। [स कच्छ] ६ जल के पास की भूमि। ७ कच्छ देश। ८ कच्छ की एक देवी। ९ सगणी देवी का एक नाम। १० कच्छ देश का एक घोडा। —**जती**–वि० जितेन्द्रिय। चरित्रवान। —**द्रढ द्रढौ**–वि० चरित्रवान। —**पंचाळ (ळी)**–स्त्री० कच्छ और कच्छ के पास का पचाल प्रदेश। उक्त प्रदेशोत्पन्नदेवी। —**पाक**–वि० जितेन्द्रिय। सच्चरित्र। —**राय**–स्त्री० आवड देवी का नाम। —**वांचू**–वि० जितेन्द्रिय।

काछड, काछडियौ (डौ)–पु० १ गाय का नवजात वछडा। २ घुटनो तक का पहनावा, कच्छा।

काछरग–स्त्री० कच्छ प्रदेश की घोडी।

काछनी–स्त्री० १ छोटी कच्छी। २ घोती, कछोटा। ३ कटि, कमर।

काछब, काछबियौ, काछबौ (वौ)–पु० [स० कच्छप] १ कच्छप। २ ऊमर कोट का एक राजा। ३ उक्त राजा की प्रशस्ती का एक लोक गीत। ४ कच्छप अवतार।

काछिबौ–पु० १ कछुए की पीठ के रंग का घोडा। २ देखो 'काछवौ'।

काछियौ–पु० कछनी, कच्छा, पुरुषो का छोटा अधोवस्त्र।

काछी–वि० कच्छ का, कच्छ सवधी। –पु० १ घोडा, अश्व। २ कच्छ का घोडा। ३ एक जाति विशेष। ४ ऊंट। —**कुरंग**–पु० हिरन के रंग का कच्छ का घोडा। –**कुरियौ**–पु० ऊट। एक लोकगीत। —**मंगळ**–पु० जामुनी रग का घोडा।

काछु, काछू–देखो 'काछ'।

काछेल–स्त्री० काछेला चारणो की देवी। –वि० कच्छ का।

काछेला–स्त्री० चारणों की एक जाति। –वि० कच्छ का।

काछौ–पु० डिंगल का एक गीत (छद) विशेष।

काज–पु० [स० कार्य] १ कार्य, काम। २ कर्म, कर्तव्य, व्यवसाय, उद्योग। ३ प्रयोजन, उद्देश्य। ४ सोलह संस्कारो के अन्तर्गत एक। ५ पहिनने के वस्त्रो मे बना बटन का छेद। –क्रि०वि० लिये, वास्ते, निमित्त। —**किरयावर, किरियावर**–पु० सोलह सस्कारो के अन्तर्गत महत्वपूर्ण कार्य। —**मैन**–पु० मुसलमानो का एक तीर्थ स्थान।

काजकिरायवरो, काजकिरियावरो–वि० श्रेष्ठ कार्य करने में यश प्राप्त व्यक्ति।

काजळ–पु० [स० कज्जल] १ दीपक के धुंए की कालिख जो आख मे डाली जाती है, अजन। २ सुरमा। ३ नील कमल। ४ बादल। ५ एक पर्वत। ६ श्याम रगी गाय। –वि० काला, श्याम॰। —**कर**–पु० दीपक, ज्योति। —**गिर, गिरि**–पु० काला पहाड। —**घलाई**–स्त्री० विवाह सवधी एक रश्म। —**धुजा, ध्वजा**–पु० दीपक।

काजळिया (ळी)–वि० काले रग की, श्याम वर्णी। —**तीज**–स्त्री० भादव कृष्णा तृतीया।

काजळियो–पु० काले रग का वस्त्र । –वि० काले रग का ।

काजळी–स्त्री० १ काली घटा । २ काजलियातीज ।

काजी–पु० [अ०] १ न्यायकर्त्ता, मुसिफ । २ निकाह पढने वाला । ३ उपदेश देने वाला ।

काजू–पु० एक प्रकार का सूखा मेवा ।

काजे, (जै)–क्रि०वि० लिए, वास्ते ।

काट–पु० [स० किट्ट] १ लोहे का मैल, जग । २ कलक, दोष । ३ दाग । ४ दुर्गुण, ऐब । ५ विरोध । ६ निंदा । ७ वैर । ८ कपट, छल । ९ पाप । १० क्रोध । ११ खण्डन । १२ काटने की क्रिया या भाव । १३ कमी । १४ ताश के खेल मे तुरुप का रंग —क–वि० क्रोधी, उग्र । शक्तिशाली ।

काटक–वि० १ जबरदस्त, शक्तिशाली । २ देखो 'कटक' ।

काटकडी–स्त्री० कटाकट की ध्वनि ।

काटकणौ (बौ)–क्रि० १ क्रोध करना । २ आक्रामक होकर आना । ३ कडकना ।

काटकि (की)–स्त्री० विद्युत, विजली ।

काटकूटौ–पु० मार-काट । ध्वस, विनाश ।

काटण–स्त्री० १ काटने की क्रिया या भाव । २ काटने का औजार । –वि० १ काटने वाला । २ नीच, दुष्ट ।

काटणौ (बौ)–क्रि० [स० कर्तन] १ किसी औजार या कैंची से काटना, कतरना । २ काट-छाट करना, कमी वेशी करना । ३ लिखावट पर कलम फेरना । ४ खण्डित करना । ५ पीसना । ६ रगडना । ७ निकालना, हटाना । ८ विच्छिन्न करना । ९ घाव करना । १० डक मारना । ११ डसना । १२ विभाजन करना । १३ फाडना । १४ रद्द करना ।

काटळ–वि० १ जग लगा हुआ । मुरचा युक्त । २ कपटी । ३ नीच दुष्ट ।

काटी–पु० १ पहलवान । २ हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा बैल । ३ जग । –वि० १ शक्तिशाली । २ देखो 'काठी' ।

काटीजणौ (बौ)–क्रि० १ जग खाना, जग लगना । २ काटा जाना । ३ कसैला होना ।

काटौ–पु० १ रुपया या वस्तु के लेन-देन मे कमी करके अलग किया जाने वाला अश । कमी । कटौती । २ रसीद देने पर लिया जाने वाला कर ।

काठ–पु० [स० काष्ठ] १ लकडी, सूखी लकडी । २ शव दाह की लकडी । ३ देव वृक्ष । ४ कैदी को यातना देने का मोटा लट्ठा । ५ नाव, डोगी । –वि० कठोर । —**काट**–पु० लकड-हारा, वढई, जग खाने वाला । —**गढ़**–पु० लकडी का दुर्ग । —**गणगोर**–पु० एक प्रकार का छोटा वृक्ष । —**गुणौ**–पु० दीवार की चुनाई मापने का उपकरण । —**पैरी**–स्त्री० काठ की चकरी । —**भखण**–पु० अग्नि । लकडी का कीडा । —**भ्रमणी**–स्त्री० काठ चकरी । —**सेडी, सेढ़ी**–स्त्री० कठोर स्तनो वाली गाय या भैंस ।

काठडियो–पु० भैंस का बच्चा ।

काठमाडू–पु० [स० काष्ठ-मण्डप] १ नेपाल की राजधानी का नगर । २ लकडी का मण्डप ।

काठा–स्त्री० १ वादाम की एक किस्म । २ गेहू की एक किस्म । ३ ढोलियो की एक शाखा ।

काठि (माण, मांणी)- पु० १ काठियावाड की एक जाति । २ घोडा । –वि० काठियावाड का, काठियावाड सवधी ।

काठिया–पु०[सं०कष्टिक] १ जिन कारण से जीव हित का कार्य न कर सके । २ बिना सिंचाई के होने वाले लाल गेहू ।

काठियावाड–पु० १ गुजरात का एक प्रदेश । २ घोडा ।

काठियावाड़ी–वि० काठियावाड सवधी । –पु० १ उक्त प्रदेश का घोडा । २ उक्त प्रदेश का निवासी ।

काठी–स्त्री० १ घोडे का चारजामा, जीन । २ लकडियों का गट्ठर, भारी । ३ शरीर का गठन । ४ लकडहारा । ५ म्यान । ६ एक जाति । ७ एक राजपूत वश । ८ काठियावाड का घोडा । –वि० १ सख्त । २ कजूस ३ कठोर हृदय । ४ दृढ, मजबूत । ५ काठियावाड का ।

काठीओ (यौ)–पु० [स० कष्टिक प्रा. कट्ठिअ] द्वारपाल । –वि० जीव के हितकारी कार्य मे विघ्न डालने वाला ।

काठेड़ौ, काठेड़ियो–पु० १ नवजात भैंसा । २ जयपुर राज्यान्तर्गत एक प्रदेश ।

काठोडौ–देखो 'काठौ' (स्त्री० काठोडी) ।

काठोतरी–पु० आटा गूदने का काष्ठ का पात्र, परात ।

काठौ–वि० (स्त्री० काठी) १ कृपण, कजूस । २ मितव्ययी । ३ सख्त, कठोर । ४ दृढ । ५ तग, सकुचित । ६ मोटा, गाढा । ७ कम लचीला । ८ वहुत, अधिक । ९ पूर्ण, पूरा ।

काड–पु० शिश्न । उपस्थ ।

काडणौ (बौ)–क्रि० १ निकालना । २ वाहर करना । ३ निरावरण करना । ४ खोलकर दिखाना । ५ अलग करना । ६ ढूढ निकालना । ७ घी या तेल मे तलना । ८ वाकी निकालना । ९ कपडो पर वेलवूटे वनाना ।

काडौ–देखो 'काढ़ौ' ।

काढ़–स्त्री० निकालने की क्रिया या भाव ।

काढणौ (बौ)–देखो 'काडणौ' (बौ) ।

काढ़ाक–वि० खोजने, निकालने मे निपुण ।

कढेची–स्त्री० एक देवी विशेष ।

काढ़ौ–पु० [स० क्वाथ] काष्ठादि औषधियो का क्वाथ ।

काणंखी–वि० कानी, एकाक्षी ।

कात–स्त्री० १ काटने का औजार । २ कतिया । ३ कैंची । ४ एक प्रकार का शस्त्र । ५ कतरने का ढग या क्रिया । ६ काता हुआ धागा । —क-पु० कातने वाला । कार्तिकेय ।

कातकसांम–पु० स्वामि कार्तिकेय ।

कातकी–स्त्री० [स० कार्तिकी] कार्तिकी पूर्णिमा । –वि० कार्त्तिक सबधी ।

कातणौ (बौ)–क्रि० चरखे, तकली या 'ढेरे' पर रूई, ऊन, कच्चे सूत आदि का डोरा बनाना ।

कातर–पु० १ भेड या ऊट की ऊन काटने की वडी कैंची । २ वैंची । ३ कतरन । ४ एक प्रकार का शस्त्र । –वि० [स०] १ कायर, डरपोक । २ अधीर, व्याकुल ।

कातरठी–देखो 'काठोतरी' ।

कातरियौ–पु० १ स्त्रियो के भुजा का आभूषण । २ गाडी के पहियो का लोहे का घेरा । ३ देखो 'कातरौ' ।

कातरौ–पु० खरीफ की फसल के साथ उत्पन्न होने वाला एक रेंगने वाला कीडा जो फसल को हानि पहुचाता है ।

कातरया–स्त्री० हजामत ।

कातळ–स्त्री० १ पर्त, परत । २ पत्थर की पट्टी का खण्ड । ३ वनजारो द्वारा रखा जाने वाला लकडी का एक शस्त्र । ४ देखो 'कातिल' ।

कातळी–स्त्री० शरीर की वनावट ।

कातळौ–पु० १ कतरा । २ तकुआ ।

कातिक, कातिग, कातिग्ग, कातिय–पु० [सं० कार्त्तिक] कार्त्तिक मास । —सुर–स्वामिकार्त्तिकेय ।

कातियौ (तीयौ)–पु० जबडा, जवडे की हड्डी ।

कातिळ–वि० [अ० कातिल] वध करने वाला, मारने वाला, वधिक, हत्यारा ।

काती–पु० [स० कार्त्तिक] १ कार्त्तिक मास । २ शस्त्र विशेष ।

कातीन–पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

कातीरौ, कातीसरौ–पु० [स० कार्तिक+राज सरौ] खरीफ की फसल ।

कातुर–वि० [स०] कायर, भीरु ।

कात्याइन, कात्याइणी कात्याणी, कात्यायणी–स्त्री० [स० कात्यायणी] १ उमा, पार्वती । २ नौ दुर्गाओ मे से एक । ३ चौसठ योगिनियो मे से नौवी योगिनी । ४ कापाय वस्त्र धारी स्त्री । ५ अधेड आयु की विधवा ।

कात्र–देखो 'कातर' ।

काथ–पु० १ शरीर । २ सामर्थ्य, शक्ति । ३ क्षमता । ४ चरित्र । ५ वृत्तात, कथा । ६ वैभव । ७ शीघ्रता । ८ क्वाथ, काढा । –क्रि० वि० शीघ्र तुरत ।

कायरटी–देखो 'काठोतरी' ।

काथरौ–वि० १ शीघ्रता करने वाला । २ स्थिर रहने वाला ।

कायळी–स्त्री० मिट्टी का घडा, मटकी ।

काथौ–पु० [फा० कत्था] खैर की लकडियो का काढा जो पान मे खाया जाता है । –वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ भयकर, जवरदस्त । ३ तेज, तीव्र । ४ शीघ्रता करने वाला । ५ व्यग्र, आतुर । –क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त ।

कादंब–पु० [स० कदम्ब] १ मेघ, बादल । २ तीर, बाण । ३ देखो 'कदंब' । ४ देखो 'कादंवनी' ।

कादबनी–स्त्री० [स० कादम्बिनी] मेघमाला ।

कादवरी–स्त्री० [स०] १ कदम्ब के पुष्पो की खीची शराब । २ शराब ।

कादंवाणी (विणी, बिनी)–स्त्री० [सं० कादम्बिनी] मेघमाला ।

कादम (म्म)–पु० [स० कर्दम] १ कीचड, दलदल । २ देखो 'कादवनी' ।

कादमियोबुखार–पु०यौ० जीर्ण ज्वर ।

कादमी–स्त्री० १ कमजोरी से होने वाला पसीना । २ बौने के लिए कृषि भूमि दी जाने के उपलक्ष मे ली जाने वाली रकम ।

कादर–वि० [स० कायर] कायर, डरपोक ।

कादरियौ–पु० सूफियो का एक सम्प्रदाय ।

कादरी–स्त्री० १ पहिनने का एक वस्त्र विशेष । २ कवच ।

कादव–पु० [स० कर्दम] कीचड, पक ।

कादागौ–स्त्री० [सं० कर्दम गोधा] कीचड मे रहने वाली गोह ।

कादिम कादू, कादौ–पु० [स० कर्दम] १ कीचड, पक, कादा । २ कूडा, कचरा । ३ मैल । ४ द्रव पदार्थ का मैल । ५ सोने-चादी में मिलाया जाने वाला विजातीय धातु ।

काद्रवेय–पु० [स०] नाग, सर्प ।

काप–पु० १ वस्त्रो की कटाई । २ सिलाई के आगे छोडा जाने वाला या अन्दर दबाया जाने वाला वस्त्र का अश ।

कापड–पु० कपडा, वस्त्र । —छाण-पु० महीन वस्त्र से छानने की क्रिया । –वि० महीन वस्त्र से छना हुआ ।

कापडिया–स्त्री० भाटो की एक शाखा ।

कापडी–स्त्री० गणगौर का उत्सव मनाने वाली क्वारी कन्या । २ देखो 'कापडिया' ।

कापडौ–पु० कपडा, वस्त्र ।

कापण (णो)–वि० १ काटने वाला । २ नष्ट करने वाला, मिटाने वाला । ३ सहार करने वाला ।

कापणौ (बौ)–क्रि० १ काटना कतरना । २ नष्ट करना, मिटाना । ३ सहार करना, मारना । ४ कम करना । ५ व्यय करना । ६ खण्ड-खण्ड करना ।

कापथ–पु० [स०] १ खराब मडक । २ कुपथ कुमार्ग ।

कापरौ–पु० कपडा, वस्त्र ।

कापाळ (ळिक)–पु० [स० कापालिक] शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत तान्त्रिक एव अघोरी साधु ।

कापी–स्त्री० पजिका ।

कापुर–वि० १ तुच्छ, हीन । २ नीच, दुष्ट । ३ नगण्य ।

कापुरख, कापुरस (पुरुष)–वि० [स० कापुरुष] १ कायर, डरपोक । २ कृपण, कजूस । ३ नीच, पतित । ४ हीन ।

काफर–वि० [अ० काफिर] १ भिन्नधर्मावलवी । २ नास्तिक ।

काफरी–स्त्री० एक बहुमूल्य वन्दूक ।

काफलौ, काफिलौ–पु० [अ० काफिल] यात्रियों का समूह, झुड ।

काफी–स्त्री० १ एक राग विशेष । २ कहवा । –वि० पर्याप्त, बहुत ।

कावर–स्त्री० १ एक प्रकार का पक्षी । २ देखो 'कावरी' ।

कावरडौ–पु० चितकवरा साप । –वि० चितकवरा ।

कावरियौ–पु० १ कबूतर के आकार का एक पक्षी । २ कवरा कुत्ता । ३ एक प्रकार का सर्प । –वि० (स्त्री० कावरी, कावरकी) चितकवरे रग का ।

कावरी–स्त्री० १ कवरी गाय । २ कवरी चिडिया ।

कावरौ–पु० कवरा सर्प । –वि० चितकवरा ।

कावल–१ देखो 'काविल' । २ देखो 'कावुल' ।

कावलियौ–पु० १ मुसलमान, यवन । २ कावुल का निवासी ।

कावलियत–स्त्री० योग्यता, विद्वत्ता, पाडित्य ।

काबली–वि० कावुल का, कावुल सबधी । –पु० १ सफेद चना । २ कावुल का घोडा ।

काबा–स्त्री० १ एक लुटेरी जाति । २ चूहो की एक जाति । ३ छोटा बच्चा ।

कावाड़ी–देखो 'कवाडी' ।

काविज, काविल-वि० [अ०] १ योग्य, लायक । २ विद्वान, पडित । ३ योग्य, अधिकारी, हकदार ।

काबिली, काबिलीयत–स्त्री० कावलियत, योग्यता ।

काबो–स्त्री० [फा० कावा] कुश्ती का एक दाव ।

काबुल–पु० [फा०] १ अफगानिस्तान की राजधानी का नगर । २ इस नगर के पास वाली नदी ।

काबुली–देखो 'कावली' ।

काबू–पु० [तु०] १ अधिकार । २ वश, जोर । ३ अधीनता । ४ दवाव ।

काय–स्त्री० [स०] १ देह, तन, काया । २ तना । ३ मूल धन । ४ समुदाय । ५ तार रहित वीणा । ६ सग्रह । ७ घर । ८ डेरा । ९ स्वभाव, प्रकृति । –क्रि०वि० [स० किम्] क्यो, कैसे । –अव्य० या, अथवा, क्योकि । –सर्व० क्या । कौन । किस । कोई । –वि० १ थोडा, कुछ । २ काया सबधी, दैहिक ।

कायजौ–पु०१ सवारी के लिए घोडे को सुसज्जित, करने का ढग । २ सुसज्जित घोडे की लगाम को खीच कर दुमची मे बाधने की क्रिया । ३ इस प्रकार बाध कर तैयार किया हुआ घोडा ।

कायथ–पु० कायस्थ ।

काययण–पु० १ ऐश्वर्य, वैभव । २ मलवा ।

कायथा–स्त्री० [स० कायस्था] हरीतकी, हर्रे ।

कायदाई–वि० नियम सबधी ।

कायदौ–पु० [अ० कायद] १ नियम । २ कानून । ३ परम्परा, रीति । ४ रस्म । ५ मान, प्रतिष्ठा, शर्म । –**कुरब**–पु० प्रतिष्ठा, इज्जत ।

कायफळ–पु० [स० कट्फल] एक वृक्ष विशेष की छाल जो औषधि मे काम आती है ।

कायव (वौ)–देखो 'काव्य' ।

कायम–वि० [अ०] १ ठहरा हुआ, स्थिर । २ तय शुदा, निश्चित । ३ मौजूद तैयार । ४ दृढ़, पक्का, ठोस । –क्रि०वि० अधिकार मे । –**मुकाम**–वि० एवजी, स्थानापन्न ।

कायमान–स्त्री० घास-फूस की झोपडी ।

कायमौ–वि० (स्त्री० कायमी) १ अशक्त, कमजोर । २ अयोग्य । ३ दुर्बल । ४ कायर ।

कायम्म–देखो 'कायम' ।

कायर–वि० [स० कातर] १ डरपोक, भीरु । २ कमजोर । ३ नपुसक ।

कायरता (कायरी)–स्त्री० [सं०] १ भीरुता, डर । २ कमजोरी । ३ नपुसकता ।

कायरौ–वि० (स्त्री० कायरी) भूरी आखो वाला । –पु० एक प्रकार का घोडा ।

कायल–वि० [अ०] १ तर्क-वितर्क मे परास्त । २ हार मानने वाला । ३ कायर, भीरु । ४ प्रभावित । ५ डरपोक । ६ हैरान, तग, पीडित ।

कायलाणौ–पु० १ ऐसा वन जहा जलाशय होता है तथा सब प्रकार के प्राणियो की शिकार मिल सकती है । २ इस वन के मध्य का तालाव ।

कायली–स्त्री० [अ० काहिली] १ सुस्ती, आलस्य । २ थकावट, कमजोरी । ३ लज्जा, ग्लानि । ४ शराव का नशा उतरने के वाद की थकान या सुस्ती । ५ मटकी ।

कायस–स्त्री० १ चिढने से होने वाला दुख । २ दाह, जलन । ३ बक-झक ।

कायसथा–स्त्री० [सं० कायस्था] हरीतकी, हर्रे।

काया–स्त्री० [सं०] १ शरीर, देह, तन। २ तना, पेड। ३ एक प्रकार की छुरी। —**कल्प**–पु० उपचार। चिकित्सा से शरीर मे आने वाला निखार। —**गव-हरणी**–स्त्री० हर्रे, हरीतकी। —**चाळौ**–पु० युद्ध। —**जळ**–पु० नेत्र, नयन। —**धर, धार**–पु० मनुष्य। —**पलट**–पु० नव निर्माण। —**लज**–पु० नेत्र, नयन।

कायौ–वि० (स्त्री० कायी) हेरान, परेशान, तग।

कारजौ–पु० एक वृक्ष विशेष।

कारड, कारंडव–पु० [सं० कारडव] १ एक प्रकार की बतख। २ एक प्रकार का हस।

कार–स्त्री० [सं० कारा] १ सीमा, सरहद। २ सीमा रेखा। ३ मर्यादा। ४ काम, कार्य। ५ मदद, सहायता। ६ असर। ७ कगार। ८ दूत, चर। ९ कुछ शब्दो के आगे लगकर सज्ञत्व बोध कराने वाला प्रत्यय। १० छोटी मोटर। —**आमद**–वि० उपयोगी। —**गर**–वि० असरदार। —**गुजार**–पु० भली प्रकार कर्त्तव्य पालन। कार्य कौशल। —**चोभ**–पु० जरीतारी का कार्य। —**बार**–पु० व्यवसाय, व्यापार। —**मुख**–पु० अर्जुन। धनुष। —**साजी**–स्त्री० कार्य बनाने की कला। होशियारी, चालाकी।

कारक–पु० [सं०] १ व्याकरण मे सात प्रकार के कारको मे से कोई एक। २ सज्ञा व सर्वनाम का क्रिया से सबध जोडने वाला शब्द। ३ विधाता, विधि। ४ शब्दो के आगे लगकर गुणबोध कराने वाला प्रत्यय। –वि० करने वाला। —**दीपक**–पु० एक अर्थालकार।

कारकून–पु० [फा०] १ लिपिक, लेखक (क्लर्क)। २ किसी के प्रतिनिधि रूप मे काम करने वाला। ३ किसी की ओर से प्रबन्ध करने वाला।

कारख–स्त्री० [सं० कालुष्य] १ राख, भस्मी। २ कारिख, कालिख। ३ विद्वेष। ४ विद्वेषजन्य बुरी भावना। ५ मन का मैल।

कारखांनौ–पु० [फा० कारखाना] १ लकडी, लोहा आदि का व्यापारिक सामान बनाने की दुकान या यन्त्रशाला। २ निर्माण-कक्ष। ३ उद्योग-स्थल। ४ कारबार, व्यवसाय। ५ खजाना, धनागार। ६ टकशाल। ७ जवाहिर खाना। ८ अतःपुर विशेष। ९ विभाग, महकमा। १० निजी, निवास के अतिरिक्त भवन।

कारड–देखो 'कारट'।

कारज (जौ)–पु० [सं० कार्य] १ काम, कार्य। २ कर्त्तव्य। ३ उद्देश्य, मतलब। ४ मृत्यु भोज। ५ अन्तिम सस्कार।

कारट–पु० १ मृतक-सस्कार कराने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति। २ खेल मे दिया जाने वाला चकमा। ३ पोस्टकार्ड।

कारटून–पु० हास्य चित्र।

कारण (णियौ)–पु० [सं०] १ वह आधार जिस पर किसी बात का निर्णय अवलम्बित हो। २ वजह। ३ हेतु, निमित्त। ४ प्रयोजन, उद्देश्य। ५ साधन जरिया। ६ तत्व, सार। ७ मूल बात। ८ कर्त्ता, जनक। ९ गर्भ, आधान। १० वशज। ११ प्रीति, प्रेम। १२ इन्द्रिय। १३ शरीर। १४ चिह्न। १५ दस्तावेज, प्रमाण। १६ निदान, हल। १७ विष्णु। १८ शिव। १९ श्रीकृष्ण। २० मान, प्रतिष्ठा। २१ गौरव। —**करण**–पु० ईश्वर। —**माळा**–स्त्री० एक अर्थालकार। —**सरीर**–पु० नैमित्तिक शरीर (वेदान्त)।

कारणई–देखो 'कारणी'।

कारणीक–वि० १ कुछ करने योग्य। २ बुद्धिमान, चतुर। ३ अद्भुत, विचित्र। ४ काम करने वाला। ५ कारण उत्पन्न करने वाला। ६ प्रतिष्ठावान, प्रभावशाली। ७ चालाक, धूर्त। ८ उत्पाती।

कारणै–क्रि० वि० कारण से, वास्ते, लिए।

कारणोपाधि- पु० ईश्वर।

कारतक–देखो 'कारतिक'।

कारतबीरज (वीरज)–पु० कृतवीर्य का पुत्र सहस्रबाहु।

कारतिक–पु० [सं० कार्तिक] १ स्वामिकार्त्तिकेय। २ कार्त्तिक मास।

कारतूस–पु० बन्दूक की गोली।

कारत्तिक–देखो 'कारतिक'।

कारनीक–देखो 'कारणीक'।

कारमुकासण (न)–पु० [सं० कार्मुकासन] चौरासी आसनो मे से एक।

कारमौ–वि० (स्त्री० कारमी) १ कमजोर अशक्त। २ कायर, भीरु। ३ व्यर्थ बेकार।

कारय, कार्‌य–देखो 'कारज'।

कार्‌यारथी–वि० [सं० कार्यार्थिन्] १ अपने कार्य को सफल करने का इच्छुक। २ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील। ३ प्रार्थी। ४ किसी दावे की वकालात करने वाला।

कारवा, (न)–पु० [फा०] यात्री-समूह, काफिला।

कारस्कर–पु० [सं० कारस्कर] किंपाक नामक वृक्ष।

कारा–स्त्री० १ कैद। २ बधन। ३ कैदखाना, कारागार। ४ पीडा, क्लेश। [सं० काष्ठ] ५ गोबर का महीनतम सूखा चूरा। —**गार, ग्रह**–पु० कैदखाना, जेल। —**ग्रह-राक्षस**–पु० इन्द्र। —**सदन**–पु० कारागार।

कारायण–पु० १ भाग्य, नसीब । २ मस्तिष्क ।
कारिंदो–पु० [फा० कारिंद] कर्मचारी । गुमाश्ता ।
कारिज (जौ)–देखो 'कारज' ।
कारिमो–देखो 'कारमो' (स्त्री० कारिमी) ।
कारी–स्त्री० १ युक्ति, उपाय । २ समाधान । ३ इलाज, चिकित्सा । ४ आख की शल्य चिकित्सा । ५ फटे वस्त्र या टूटे-फूटे बर्तनो में लगाया जाने वाला जोड । ६ हस्त-कौशल ।
कारीगर–पु० [फा०] १ शिल्पी । २ कलाकार । ३ मिस्त्री ।
कारीगरी–स्त्री० [फा०] १ कला । २ शिल्प । ३ कौशल, दक्षता । ४ चतुराई । ५ कारीगर का कार्य । ६ कारीगर का पारिश्रमिक ।
कारीस–पु० [स० कारीष] उपलो का चूरा ।
कारुणसिंध, (सिंधु)–देखो 'करुणासिंधु' ।
कारू–पु० [स० कारु] १ करने वाला, कर्त्ता । २ कारिंदा, नौकर । ३ कलावाला कारीगर । ४ युवा हाथी या हाथी का बच्चा ।
कारो–पु० १ झगडा, तकरार । २ दगा, फिसाद । ३ निंदा, अपकीर्ति । ४ शिकायत । ५ एक जाति विशेष का घोड़ा ।
कालक (ग)–पु० कल्कि अवतार ।
कालंतर–देखो 'कालांतर' ।
काळंदर (दार)–देखो 'काळिंदर' ।
काळंदी, काळद्री–स्त्री० जमुना । —सोदर–पु० यमराज ।
काळ–पु० [स० काल] १ यमराज, महाकाल । २ मृत्यु, मौत । ३ अंतिम समय । ४ शनिग्रह । ५ शिव । ६ विष्णु । ७ सर्प, साप । ८ लोहा । ९ अकाल, दुष्काल । १० समय । ११ समय का विभाग । १२ सिंह । १३ तीन की संख्या* । १४ सातवा चौघडिया । १५ वीररस । १६ व्याकरण मे क्रियाओ के रूपो से सूचित होने का समय । –वि० १ काला । २ क्रूर । ३ तीन* । —अजनी–पु० सीने पर श्याम रग की भवरी वाला घोडा । —आखरी–पु० मृत्यु सदेशक । मृत्यु की खबर का पत्र । —कूट–पु० विष, जहर, भयकर विष । काला वृच्छनाग । सीगिया जाति का पौधा । —कोठड़ी (री)–स्त्री० कैद खाने की बहुत तग और अधेरी कोठरी जहा कैदी रखे जाते थे । —क्रीट–पु० यमराज । —गत–वि० मृत । भूत । व्यतीत । –स्त्री० काल गति, चक्र । —चक्कर, (चक्क, चक्र)–पु० समय का फेर । —जीपण–पु० मृत्यु जय । —झप, झपो, झापो–वि० मौत से लडने वाला । —दंड–पु० ज्योतिष का एक योग । —दूत–पु० यमदूत । —रयण, रात, रात्रि, रात्री–स्त्री० कालरात्रि । अमावस्या की रात । भयकर अधेरी रात । प्रलय की रात । दीपावली के पूर्व की रात । शिवरात्रि । चौसठ मे से बाईसवी योगिनी ।
काल (उ)–पु० [स० कल्य] १ तडका, सवेरा । २ आने वाला दिन, अगला दिन । ३ तुतला कर बोलने की क्रिया । –वि० तुतला कर बोलने वाला ।
काळउ–१ देखो 'काळो' । २ देखो 'काळ' ।
काळकध–पु० [स० कालस्कध] तमाल-पत्र ।
काळक–देखो 'काळिका' ।
काळकडो–देखो 'काळो' । (स्त्री० काळकडी)
काळका–देखो 'काळिका' ।
कालको–वि० १ पगली । २ कल की ।
काळकी–देखो 'काळी' ।
काळक्क, काळक्ख, काळख, काळग–पु० [सं० कलुष, कल्मष] १ कालिमा । २ काला रंग । ३ तवे की कालिख । [स० कालिकम्] ४ कलक, दोष, पाप । ५ कृष्ण चदन ।
काळचाळहो (चाळो)–पु० १ युद्ध । २ युद्धोन्मत्त योद्धा ।
काळज–देखो 'काळजो' ।
काळजवन–पु० १ कालयवन, राक्षस । २ गोपाली अप्सरा व गर्ग ऋषि के प्रयोग से उत्पन्न एक यवनराज ।
काळजुर (ज्वर)–पु० घोडे का एक रोग-विशेष ।
काळजियो–देखो 'काळजो' ।
काळजीवो (जीभो)–वि० (स्त्री० काळजीवी) १ काली जिह्वा वाला । २ अशुभ भाषी ।
काळजो–पु० [स० कलेज] १ प्राणी के शरीर का रक्त सचारक प्रमुख अवयव, दिल, हृदय । २ छाती, वक्षस्थल । ३ हिम्मत, साहस । ४ मन ।
काळणि–स्त्री० अधेरी, अधकार ।
काळदार–देखो 'काळिदार' ।
काळद्री–देखो 'काळिंदी' ।
काळनळ–देखो 'काळानळ' ।
काळप–स्त्री० १ दुष्काल की अवस्था या भाव । २ दया, करुणा ।
कालप–स्त्री० पागलपन ।
काळपी–स्त्री० मिश्री का एक भेद ।
काळपूछियो–वि० १ शैतान, जबरदस्त । २ काली पूछ वाला । –पु० १ काली पूछ का सर्प । २ काले बालो वाली पूछ का बैल ।
काळपूछी–स्त्री० काले बालो वाली पूछ की भैंस ।
काळब–पु० १ श्वेत शरीर व काले पावों वाला घोडा । २ यमदूत ।

काळबूट–पु० [फा० कालवुत] चमारो के काम आने वाला एक लकडी का गट्टा।

काळबेलियौ–पु० १ सपेरा, गारुड़ी। २ काळवेलिया जाति का व्यक्ति।

काळव्रंतक–पु० [सं० कालवृन्तक] उडद की तरह एक मोटा अनाज।

काळम–देखो 'काळिमा'।

कालम–पु० १ पागलपन। २ मस्ती। ३ कोष्ठक।

काळमा–देखो 'काळिमा'।

काळमी–स्त्री० श्याम रग की घोडी।

काळमुंह, (मुंखौ, मुंहौ)–पु० काले मस्तक व मुह वाला घोडा।

काळमूक–पु० अर्जुन।

काळमेछ–पु० कालयवन।

काळमोख–स्त्री० दाख, द्राक्ष।

काळयौ–देखो 'काळौ'।

कालर–पु० १ घास का सग्रह या ढेर। २ पत्थर का एक कीडा। ३ स्त्रियो के पैरो का एक आभूषण विशेष। ४ खराव भूमि। ५ ऊसर भूमि। ६ कीचड, पक। ७ पहनने के वस्त्र मे गले के ऊपर लगने वाली पट्टी। ८ स्त्रियो का कण्ठाभरण।

काळव–पु० [स० काल] महाकाल, मृत्यु, मौत।

काळवाचक, काळवाची–वि० [स० कालवाचक कालवाच्य] समय सूचक, समय वोधक (व्याकरण)।

काळवादी–वि० १ जगत को काल कृत मानने वाला। २ काल (समय) की पक्ष करने वाला। (जैन)

काळवी–देखो 'काळमी'।

काळस–स्त्री० [स० कालुष्य] १ कालिमा, कालिख। २ कलक, दोप।

काळसार–पु० [स० कालसार] काले रग का हिरन, कृष्णमृग।

काळसेय–पु० [स० कालेशयम्] १ दही। २ मट्ठा, छाछ।

काळाण (न)–पु० १ एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकडी मजवूत होती है। २ देखो 'कळायण'।

काळातर–पु० उल्लिखित समय से भिन्न या वाद का समय।

काळाआखरियौ, काळाआखरी–पु० मत्यु का समाचार देने वाला पत्र तथा इस पत्र का वाहक।

कालाई–स्त्री० १ पागलपन। २ नादानी। ३ मूर्खता।

काळाकवल–पु० १ करणीदेवी का एक नाम। २ काली ऊन का वस्त्र।

काळाकेस (बाळ)–पु० १ गुप्तेन्द्रिय के बाल। २ युवावस्था के बाल।

काळाखरी–देखो 'काळाआखरी'।

काळागर–पु० अफीम।

काळानळ (अळ)–पु० [स० काल-अनल] १ मृत्यु की अग्नि। २ प्रलय की अग्नि। ३ काल, मौत। ४ योगियो के अग्निकुण्ड की आग।

काळायण–देखो 'कळायण'।

काळायस–पु० [स० कालायस] १ लोह। २ देखो 'काळास'।

काळाहणि (हणी)–वि० [स० काल-अयन] १ प्रलय कारिणी। २ देखो 'कळायण'।

काळिंक (ग), काळिंगडौ, काळिंगौ–पु० १ उषा कालीन एक राग विशेष। २ तरवूज की जाति का वर्षा ऋतु मे होने वाला एक फल विशेष। ३ एक पक्षी विशेष। ४ देखो 'कल्कि'।

काळिंदर, काळिंदार–पु० १ सर्प, साप। २ काला सर्प।

काळिंदी (द्री)–स्त्री० [स० कालिन्दी] १ यमुना नदी। २ श्रीकृष्ण की एक पटरानी। ३ एक रागिनी।

काळिका (क्का)–स्त्री० [स० कालिका] १ शक्ति, देवी, महाकाली। २ कालिका देवी। ३ दुर्गा देवी। ४ कालिख। ४ स्याहि, मसि। ५ शराव मदिरा। ६ आख की पुतली। ७ चार वर्ष की कन्या। ८ दक्ष की कन्या। ९ कश्यप ऋषि की पत्नी। १० हर्रे, हरीतकी। –वि० श्याम रग की।

काळिज, (जौ)–देखो 'काळजौ'।

काळियर, काळियार–पु० १ कृष्ण मृग। २ कृष्ण सर्प। –वि० कपटी धूर्त।

काळियौ–पु० १ अफीम। २ काली नाग। ३ श्रीकृष्ण। ४ साधारण घास। ५ शिरीष जाति का एक वडा वृक्ष। –वि० काला, श्याम।

काळींगडौ, काळींगौ–देखो 'काळिंगडौ'।

काळींदर–देखो 'काळिंदर'।

काळी–पु० १ काली नाग। २ नाग, सर्प। ३ अफीम। –स्त्री० ३ महाकाली, दुर्गा। ४ काली माता। –वि० १ कृष्ण वर्णी, काला। २ जवरदस्त। —काठळ, घटा–स्त्री० श्याम घटा। —दमण–पु० श्रीकृष्ण।

काली–वि० पगली, पागल।

काळीउ–पु० एक प्रकार का आभूषण।

काळीचकर (चक्र)–पु० महाकाली का अस्त्र।

काळीचीठी–स्त्री० १ राजाओ द्वारा राजपूत को पुरस्कार मे दी गई भूमि का प्रमाण-पत्र। २ मृत्यु सदेश-पत्र।

काळीजीरी–स्त्री० एक औषधि विशेष।

काळीताली–स्त्री० अकाल के समय लिया जाने वाला एक लगान विशेष।

काळीदह (दाह, दो, द्रह)–पु० १ वृन्दावन के पास यमुना नदी का एक कुण्ड। २ अत्यन्त काला।
काळीधार (द्रह)–क्रि०वि० १ बहुत बुरे ढग मे। २ देखो 'काळीदह'।
कालीनदी–स्त्री० १ यमुना। २ मालवा की एक नदी का नाम।
काळीपहाड (पाड)–पु० एक प्रकार का पहाडी पौधा विशेप।
काळीपीळी (बोळी)–वि० १ अशुभ एव भयकर। २ क्रोधावेश युक्त। –स्त्री० १ भयकर व गहरी आधी। २ अधेरी।
काळीवूई–स्त्री० एक प्रकार का क्षुप विशेप।
कालीमिरच–स्त्री० काली एव गोल मिरच।
काळीमूसली–स्त्री० एक औपधी विशेप।
कालीरात–देखो 'काळरात्रि'।
काळीसर–स्त्री० कृष्ण सारिवा।
काळीसिंध–स्त्री० चम्वल की एक सहायक नदी।
कळीसीतळा–स्त्री० एक प्रकार की चेचक।
काळीसुतन–पु० गणेश, गजानन।
कालुओ–पु०–एक प्रकार का घोडा।
काळू डी–स्त्री० [स० कालतुण्ड + रा. प्र ई] १ बदनामी, अपकीर्ति। २ कलक, दोप।
कालूओ–देखो 'कालुओ'।
काळूस–देखो 'काळस'।
काले–क्रि० वि० [स० कल्य] १ आने वाले या गत दिवस को। २ कल।
कालेज–पु० [अ०] स्नातक एव उससे ऊपर की पढ़ाई का विद्यालय।
कालेयक–पु० [स० कालेयम्, कालीयक] १ केसर। २ कलेजा। ३ एक प्रकार का चदन।
काळेरो–पु० काला हिरन।
काळेनळ–पु० कालाग्नि।
काल्है–देखो 'काले'।
कलोप–वि० काल या यमराज के सदृश, भयकर, भयावह।
काळोवा, काळोवाव–पु० पशुओ का एक वात रोग।
काळो–पु० [म० काल] १ काला सर्प। २ हाथी। ३ काला रग। ४ अफीम। ५ श्रीकृष्ण। ६ कलक। ७ काला भैरव। ८ काला पदार्थ। ९ अपयश का या अवैधानिक कार्य। १० अनिष्टकारी कार्य। ११ घोडा विशेप। १२ ऊट विशेप। –वि० १ कृष्ण वर्णी, श्याम, काला। २ प्रकाशहीन,अधकार युक्त। ३ कपटी, धूर्त। ४ वदनाम, कुख्यात। ५ अस्वच्छ, मलिन। ६ निदनीय, बुरा। ७ योद्धा, वीर। ८ अशुभ, भयकर, ९ नीला। १० महान, जवरदस्त। **—कट, कीट, कुट**–वि० अत्यन्त काला। **—खेत**–पु० काली मिट्टी की उपजाऊ भूमि। वर्पा के पानी से फसल होने वाले खेत। **—जुर**–पु० काला-ज्वर। **–वुड, द्रह**–वि० गहरा काला। **—नमक**–पु० एक प्रकार का नमक। **—पटो**–पु० नौकरी के उपलक्ष मे मिलने वाली जागीर की 'सनद'। **—पांणी**–पु० एक प्रकार की सजा। अडमान निकोवार। **–भजरंग, भू छ, मिट**–वि० अत्यन्त काला। **–भागड़ो**–पु० कृष्ण भृ गराज। **–भोडल**–पु०कृष्ण अभ्रक। **–मूंडो**–पु० अपकीर्ति, कलक। देश निकाला। हमेशा के लिये स्थान का त्याग। **–लूण**='काळोनमक'। **–सुरमो**–पु० कृष्णाजन।
कालो–वि० (स्त्री० काली) १ पागल। २ उन्मत्त। **—पाणी** शराव, मदिरा।
काल्ह, काल्हि, काल्है–देखो 'काल या कल'।
कावड (डि)–स्त्री० १ काष्ठ पट्टियो की चित्रित पुस्तिका। २ इस पुस्तिका सवधी कविता। ३ टोकरियो का तराजू वहगी। ४ एक जाति विशेप। –वि० १ कुटिल। २ बुरा। ३ कुवडा।
कावडियो–वि० १ कावड दिखाने वाला। २ वहगी मे वोझा ढोने वाला।
कावतरो–पु० धोका, छल, कपट, प्रपच।
कावर–देखो 'कावर'।
कावरजाळो–वि० कपटी। धूर्त।
कावळ–वि० १ वुरा। २ निकृष्ट। ३ विपरीत।
कावळयार–वि० १ कपटी, छलिया। २ धूर्त, चालाक। ३ उत्पाती। ४ विघ्नकारक। ५ कुटिल। ६ पाखडी। ७ दोपी। ८ खोटा।
कावळयारी,कावळाई–स्त्री०१ चालकी, धूर्तता। २ छल, कपट। ३ उत्पात। ४ विघ्न, वाधा। ५ कुटिलता। ६ पाखड। ७ दोप। ८ खोट।
कावळियार, कावळियाळ, कावळियो–देखो 'कावळयार'।
कावळी–स्त्री० १ वगडी, चूडी। २ देखो कावली।
कावळो–वि० (स्त्री० कावळी) भयंकर, भीपण। –पु० १ एक प्रकार का रण वाद्य। २ कौवा।
कावेरी–स्त्री० [सं०] १ रडी, वेश्या। २ हल्दी। ३ दक्षिण भारत की एक नदी। ४ एक रागिनी विशेप।
कावो–पु० [फा० कावा] १ घोडे को वृत्त मे घुमाने की क्रिया। २ चक्कर, फेरा।
काव्य–पु० [स०] १ पद्य मय कोई रचना। २ कविता, शायरी। ३ कविता या पद्य मय रचना की पुस्तक। ४ पद्य मय कथा या इतिवृत्त। ५ कोई रसात्मक वाक्य या पक्ति। [स० काव्य] ६ शुक्राचार्य का एक नाम। ७ कवि।

८ प्रसन्नता । ९ स्वस्थता । १० बुद्धि । ११ ईश्वरीय प्रेरणा । १२ स्फूर्ति । १३ विद्वान, पण्डित । १४ चौवीस मात्राओ का एक छद विशेष । १५ वहत्तर कलाओ मे से एक ।

कास–पु० [स० काश या काशम्] १ एक तृण विशेष । २ इस तृण का पुष्प । ३ खासी रोग । –वि० श्वेत॰ ।

कासग–सर्व० १ किसका, किसकी । २ देखो 'काउसग' ।

कासगरहींउ, कासगि–देखो 'काउसग' ।

कासप (व)–पु० [स० कश्यप] १ कश्यप ऋषि । २ मास । ३ कछुआ । —**सुतन**–पु० सूर्य । गरुड, अरुण का नाम ।

कासपी–पु० [स० काश्यपि] १ गरुड । २ सूर्य ।

कासवाणी–पु० १ सूर्य । २ गरुड । ३ गरुड़ का वडा भाई ।

कासमेरी–स्त्री० १ एक देवी का नाम । २ काश्मीरी ऊन का वस्त्र । –वि० काश्मीर का ।

कासर–पु० [स० कासर] १ जगली भैंसा । २ देखो 'कासार' ।

कासळक (क्क)–देखो 'क्रासलक' ।

कासार–पु० [स० कासार] १ तालाव । २ देखो 'कासर' ।

कासारी-स्त्री० [स० कासर] भैंस, महिषी ।

कासि–देखो 'कासी' ।

कासिका–स्त्री० पाणिनीय व्याकरण पर एक प्रसिद्ध वृत्ति ग्रथ ।

कासिदा (सींद)–पु० १ सदेश वाहक । १ दूत । २ इरादा करने वाला ।

कासिदी, कासींदी–स्त्री० १ सदेश वाहक का कार्य । २ इस कार्य सवधी पद । ३ दूतकर्म । ४ उक्त कार्य की मजदूरी ।

कासी–स्त्री० [स० काशी] १ सप्त मोक्ष पुरियो मे से एक पुरी । २ आधुनिक वनारस का नाम । ३ उत्तर भारत का एक तीर्थ । ४ कास रोग, खासी । –वि० विपुल, वहुत । —**करवत, करवत, करोत**–पु० काशी का एक तीर्थ स्थान । मोक्ष के लिए काशी मे जाकर कटने का आरा । —**पत, पति**–पु० शिव, महादेव । —**फळ**–पु० कुम्हडा, कद्दू ।

कासीद (क)–देखो 'कासिद' ।

कासीदी–देखो 'कासिदी' ।

कासीस (क)–पु० एक धातु विशेष ।

कासुं, कासूं, कासू–क्रि० वि० १ कैसे, किस प्रकार से । २ किस कारण से । ३ क्या । –स्त्री० [सं० कासू] १ वरछी । २ शक्ति नामक शस्त्र ।

कासौ–पु० [फा० कास] मुसलमान फकीरो का भिक्षापात्र ।

कास्टघटन–पु० वहत्तर कलाओ मे से एक ।

कास्टफळ–पु० दाख, द्राक्षा ।

कास्टा–स्त्री० दिशा । –वि० कष्ट प्रद । देखो 'कास्ठा' ।

कास्ठ–पु० [स० काष्ठ] १ लकडी, काष्ठ । २ इन्धन ।

कास्ठा–स्त्री० [स० काष्ठा] १ अवधि । २ सीमा, हद । ३ चरम सीमा । ४ उत्कर्ष । ५ ऊचाई, चोटी । ६ अट्ठारह पल का समय या काल का ३०वा भाग । ७ चन्द्रमा की कला । ८ दिशा ।

कास्त–पु० [फा० काश्त] १ कृषि कार्य । २ जुताई । —**कार**–पु० कृषक । खेतिहर ।

कास्मीरौ–पु० एक प्रकार का वस्त्र । –वि० काश्मीर का, काश्मीर सवधी ।

कास्यावत–पु० एक प्रकार का घोडा ।

काह–स्त्री० [स० काश] नदी किनारे दल-दल मे होने वाली घास । —क्रि० वि० १ कहा से । २ अथवा, या । –सर्व० १ कौनसा । २ क्या ।

काहण–क्रि० वि० क्यो, किसलिये ।

काहरउ (ऊ)–पु० काढा, क्वाथ ।

काहरां–क्रि० वि० १ कव, किस समय । २ कहा ।

काहल–पु० [स० काहल] १ युद्ध मे वजने वाला वडा ढोल । २ दो लघु के गणगण के द्वितीय भेद का नाम । ३ शीघ्रता । ४ भय ।

काहलणौ (बौ)–क्रि० १ डरना, भयभीत होना । २ कापना, धूजना ।

काहलाई–देखो 'कालाई' ।

काहलि–वि० [अ० काहिल] १ डरपोक, कायर । २ काहिल, सुस्त । ३ अधीर, व्यग्र । [स० काहल] ४ परेशान । ५ सूखा । ६ मुरझाया हुआ । ७ उत्पाती । ८ देखो 'कायली' ।

काहली–स्त्री० [स०] युवती । युवास्त्री ।

काहिक–सर्व० कौनसी, किस ।

काहिण–क्रि० वि० किसलिए ।

काहिणी–स्त्री० [स० कथनी] कथन, कथनी, वचन ।

काहिल (ली)–देखो 'काहलि' ।

काही–सर्व० किसी ।

काहुल–देखो 'काहलि' ।

काहुलणौ (बौ)–क्रि० [स० क्रोध-विह्वलम्] १ क्रोध करना, जोश करना । २ युद्ध करना । ३ भिडना ।

काहू-सर्व० १ क्या । २ कैसा । ३ कोई । ४ किसी । -वि० कुछ ।

काहूल–देखो 'काहलि' ।

काहे, काहेर–क्रि० वि० क्यो ।

काहेक–सर्व० किस, कुछ ।

काहेली–स्त्री० [स० काहेऽऽलय] १ मटकी । २ शराव की खुमारी ।

किं–सर्व० [स किम्] क्या ।
किंउं कि–वि० १ कुछ । २ क्योंकि ।
किंकण (णि, णी)–स्त्री० [स० किंकिणी] १ करधनी, मेखला । २ छोटी घंटी ।
किंकर–पु०[स०](स्त्री०किंकरि,री)१ सेवक, दास । २ अनुचर । ३ राक्षसो की एक जाति । ४ घोडा । ५ कामदेव । ६ भ्रमर । ७ लाल रंग ।
किंकिनी–देखो 'किंकणी' ।
किंचित–वि० [स०] १ थोडा, अत्यल्प । २ तनिक । ३ न्यून ।
किंचुळ–पु० [स० किंचुलुक] केंचवा ।
किंजळक (ळिक)–पु० [स० किंजल्क] १ केसर । २ पराग, पुष्प रज । ३ कमल का पुष्प । ४ पुष्प का रेशा ।
किंदणौ (बौ)–क्रि० हरे पौधे या नमी वाले पदार्थों का दबे रहने या उमस वाले स्थान पर अधिक रहने के कारण सडना ।
किंदर–१ देखो 'कंदरा । २ देखो 'किन्नर' ।
किंदरग्रह–पु० कंदरा निवासी, सिंह ।
किंदू, किंदूडी–देखो 'कंदूडी' ।
किंधू–अव्य० १ अथवा, या । २ मानो ।
किंनरेस–पु० [स० किन्नर+ईश] कुबेर ।
किंपाक–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
किंपि–वि० [स० किम्–अपि] कुछ, कुछ भी ।
किंपुरखेस (खेसर) किंपुरुख, किंपुरुस, किंपुरुसेस–पु० [स० किंपुरुष] १ कुबेर । २ किन्नर ।
किंवाडी–देखो 'किंवाडी' ।
किंमाड़–देखो 'कपाट' ।
किंवदंती–स्त्री० [स०] १ जन-श्रुति । दंतकथा । २ कहावत ।
किंवाड–देखो 'कपाट' ।
किंवाड़ियौ–पु० [स० कपाट] १ छोटा कपाट । २ वक्ष स्थल के एक बाजू का हिस्सा ।
किंवाड़िया (रिया) दोस–पु० कपाट खोलकर भिक्षा लेने के लिए अन्दर जाने व बाहर आने पर लगने वाला दोष ।
किंवाडी–स्त्री० १ खपचियो या पट्टियो का छोटा दरवाजा, कपाट । २ छोटा कपाट । ३ पशुओ के बाडो पर लिया जाने वाला कर ।
किंसारी–देखो 'कसारी' ।
किंसुक, (ख)–पु० [स० किंशुक] १ पलाश, ढाक । २ तोता, सूआ । –वि० १ कुछ । २ लाल※ ।
किंह किंहो–सर्व० किसी । कोई ।
कि–पु० १ श्रीकृष्ण । २ इंद्र । ३ सूर्य । ४ शिकारी । ५ गुण । ६ विचार । –स्त्री० ७ लक्ष्मी । ८ अग्नि । ९ निंदा । १० जुगुप्सा । –वि० १ प्रसन्न । २ तुच्छ । ३ वृथा । –अव्य० १ मानो । २ या, अथवा । ३ किस तरह, कैसे । –सर्व० क्या ।
किआवर–देखो 'क्यावर' ।
किआवरी–देखो 'क्यावरी' ।
किउं, किऊं–क्रि०वि० १ क्यों । २ कैसे, किस तरह । –वि० कुछ ।
किकंध–देखो 'किस्किंधा' ।
किकर–क्रि०वि० कैसे ।–वि० कैसी, किस प्रकार की ।
किकौ–देखो 'कीकौ' ।
किखि–पु० [सं० कीश] बंदर । –वि० [सं० कृश] दुर्बल, कृश ।
किड़क–स्त्री० १ उचक कर या चमक कर भागने की क्रिया या भाव । २ देखो 'कडक' ।
किटकणौ (बौ)–देखो 'कडकणौ' (बौ) ।
किड़किड़ी–स्त्री० १ क्रोध मे दांत पीसने की क्रिया या भाव । २ सर्दी के कारण होने वाली दांतो की किट-किट । ३ जोश, आवेश । ४ साहस, हिम्मत । ५ बल शक्ति । ६ देखो 'कडीकडी' ।
किड़कौ–देखो 'कडकौ' ।
किड़वा–स्त्री० किसी के आने-जाने, बोलने-चालने, हिलने-डुलने से होने वाला धीमा शब्द, आहट ।
किचकारी–स्त्री० पशुओ को हांकने के लिए मुंह से की जाने वाली किचकिच ध्वनि ।
किचकारौ–देखो 'किचकारी' ।
किचकिच, किचकिचाहट–स्त्री० १ पशुओ को हांकने की ध्वनि । २ स्त्रियो की सांकेतिक ध्वनि । ३ किसी बात पर असहमति या नकारात्मक उत्तर देने की ध्वनि । ४ विवाद, तकरार । ५ चर्चा ।
किचकिची–स्त्री० १ क्रोध मे दांत पीसने की क्रिया । २ साहस, हिम्मत । ३ जोश आवेश । ४ अरुचि ।
किचपिच–देखो 'कचपिच' ।
किचरणौ (बौ)–क्रि० १ रोंदना, कुचलना । २ चबाना ।
किचळावणौ (बौ)–क्रि० रद्द होना ।
किटकड़ौ–पु० १ शिर, मस्तक । २ खोपडी ।
किटकली–स्त्री० जलाने की छोटी लकडी ।
किटकिट–स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ दंत कटाकट । ३ देखो 'किचकिच' ।
किटिम–पु० [सं०] १ मत्कुण, मच्छर । २ खटमल । ३ जूं ।
किट्टी–स्त्री० [स० किट्ट] १ कान का मैल । २ तलछट ।
किठडं–क्रि०वि० कहां, किस जगह ।

किरण-सर्व० [स० किम] १ किस, किसने । २ कौन । -पु० [सं० किरण] १ 'आईठाण' नामक निशान । २ जखम भरने के बाद रहने वाला निशान ।
किरणकती-स्त्री० १ करधनी । २ कमर पर बधी पतली डोरी ।
क्रिणको-पु० १ दाना, कण । २ टुकडा, खण्ड । ३ पतग । ४ शक्ति बल ।
किरणगच-स्त्री० एक प्रकार की झाडी, करज ।
किरणवणी (बौ)-क्रि० १ बार-बार चिढ़ना । २ कृपणता दिखाना । ३ टसकना । ४ पछतावा करना ।
किरणचाणी (बौ), क्रिणचावणो (बौ)-क्रि० १ बार-बार चिढाना । २ कृपणता कराना । ३ पछतावा कराना । ४ टसकना ।
किरणजणी (बौ)-क्रि० १ टसकना । २ जोर लगाना ।
किरणयक-सर्व० १ किसी । २ किसीने । ३ कोई । -क्रि० वि० कभी ।
किरणसारी-देखो 'कसारी' ।
किरणहिक (हीक, हेक)-देखो 'किरणयक' ।
किरणा-क्रि० वि० किधर ।
किरणारौ-देखो 'कणसारौ' ।
किरिण-सर्व० १ किस, किसीने । २ कोई । ३ कौन । -क्रि० वि० कभी ।
किरिणयन-सर्व० किसी ने ।
किरिणयागर (गिरी)-देखो 'करिणयागर' ।
किरिणयौ-देखो 'करिणयौ' ।
किरणी, किरणीक-देखो 'किरिण' ।
किरणीयक-देखो 'किरणयक' ।
किर्ण-सर्व० किस, किसको, किसने ।
किरणौ-सर्व० किसका ।
कित-क्रि० वि० कहा, किधर ।
कितएक-सर्व० कितने ।
कितवक-१ देखो 'कृतिका' । २ देखो 'कितना' ।
कितणा (ना)-वि० कितने ।
कितमक-स्त्री० किसमत, भाग्य ।
कितरउ-सर्व० कितना ।
कितराइक, कितराई, कितराक, कितरायक, (हिक, हेक) -वि० १ कितनेक । २ कितने ही । ३ कुछेक ।
कितरो'क-वि० कितनी ।
कितरेक, कितरैक (हेक)-वि० कितने ।
कितरोइ, कितरोइक, कितरो'क कितरो, कितरोहेक, कितलाइक, कितलो-वि० कितना ।
कितव-वि० [स० कितव] १ छली, कपटी । २ लपट, लबार । ३ जुआरी । ४ गुण्डा ।
किता, किता-वि० (स्त्री० किती) कितने ।
किताइ, किताइक, (ई, ईक, एक) किताक-वि० कितने ही ।
किताब-स्त्री० [अ०] १ किताब पुस्तक । २ ग्रन्थ । ३ पजिका । ४ वही । ५ देखो 'खिताब' । -खानौ-पु० पुस्तकालय । किताबें रखने का स्थान ।
किताबी-वि० १ पुस्तक का, पुस्तक सबंधी । २ केवल पुस्तक तक सीमित ।
किति-देखो 'कीरति' ।
किति, कितिइक, कितिक, कितियक किती, कितीइक, कितीक कितीयक, कितीयेक, कितेएक, कित्तेक, कित्तेयक, कित्तयेक (हेक) -वि० १ कितनी, कितनी ही । २ ज्यादातर । ३ बहुत, कितने ।
किते (एक), कितेक (हेक)-क्रि० वि० १ कहा, किधर । २ देखो 'कितेक' ।
कितेब-देखो 'कतेब' ।
कितौ-वि० (स्त्री० किती) कितना ।
कितोइक, (एक) कितौ'क, कितौयक, (रोक)-वि० कितना'क ।
कितौसीक, कितौसोक-वि० कितना सा, थोडा सा ।
कित्त-देखो 'कित' ।
कित्ती-१ देखो 'कीरति' २ देखो 'किती' ।
कित्तौ-देखो 'कितौ' । (स्त्री० कित्ती) ।
कित्तौइक, कित्तौएक, कित्तौक, कित्तौयक-देखो 'कितौक' ।
किथ-वि० कहा ।
किथा-सर्व० क्या ।
किथिए, किथियै, कियीय, कियें, कियैं, कियौ-क्रि० वि० कहा ।
किधर-क्रि० वि० कहा, किस ओर ।
किधु, (धु) किधूं-अव्य० १ या, अथवा । २ मानो ।
किन-सर्व० कौन, किस का बहुवचन । -क्रि० वि० कहा । अथवा, या ।
किनक किनको-पु० १ पतग । २ देखो 'किणको' ।
किनर-देखो 'किन्नर' । -पत, पति (ती)= किन्नरपति' ।
किनरेस-देखो 'किन्नरेस' ।
किना, किना-क्रि० वि० १ या, अथवा । २ मानो । -सर्व० १ क्या । २ किसका ।
किनारी-स्त्री० १ छोर, किनारा । २ वस्त्र के छोर पर लगने वाली जरी, गोट आदि ।
किनारौ-पु० [फा० किनारा] १ नदी या जलाशय की ओर, किनारा, तट । २ वस्त्रादि का छोर । ३ सीमा हद ४ हाशिया । ४ लम्बाई की ओर की कोर । ५ पार्श्व, बगल । ३ तटस्थता । -क्रि० वि० तरफ, ओर ।
किनियाणी-स्त्री० करणी देवी का एक नाम ।

किनिया–देखो 'कन्या'। —वळ–देखो 'कन्यावळ'।

किनै–सर्व० किसे, किसको। –क्रि० वि० किस तरफ। पास, निकट।

किन्न–देखो 'कसरा'।

किन्नर–पु० [स० किन्नर] (स्त्री० किन्नरी) १ संगीत विद्या मे कुशल एक अश्वानर देव जाति। २ इस जाति का देवता। ३ गाने बजाने वाली एक जाति।

किन्नरी–स्त्री० १ सारगी। २ एक प्रकार की छोटी तंबूरी। ३ किन्नर जाति की स्त्री।

किन्नरेस–पु० [स० किन्नरेश] धनपति, कुबेर।

किन्नाँ–१ देखो 'किना'। २ देखो 'कन्या'।

किन्नो–स्त्री० पतग के मध्य का डोरा जिस पर मझा बाधा जाता है।

किन्या–देखो 'कन्या' —वळ, वळ='कन्यावळ'। —रास, रासि, (सी)='कन्याराशि'।

किप–देखो 'कपि'।

किपरा–देखो 'कपरा'।

किफायत–स्त्री० १ काफी व अमित होने का भाव। २ कम खर्च। ३ थोडे मे काम चलने की स्थिति। ४ वचत।

किफायती–वि० कम खर्च करने वाला, मितव्ययी।

किबला–स्त्री० [अ०] १ पश्चिम दिशा। २ मक्का नामक पवित्र स्थान।

किपि–वि० कुछ, कुछ भी।

किम–सर्व० [सं० किम्] क्या। –क्रि०वि० कैसे।

किमए–क्रि०वि० महान कष्ट से।

किमकरि, किमत्र–क्रि०वि० कैसे।

किमाड़, किम्माड़–देखो 'कपाट'।

किमाडी–देखो 'किवाडी'।

किमि–वि० कम। २ देखो 'किम'।

किम्हइ–क्रि०वि० कैसे।

कियकर–देखो 'किंकर'।

कियां, किया–क्रि०वि० १ कैसे। २ क्यों, क्योंकर। ३ किधर।

कियारथ–देखो 'कृतारथ'।

कियारी (रो)–स्त्री० [स० केदार] क्यारी, केदार।

कियावर–देखो 'क्यावर'।

कियावरी (रो)–देखो 'क्यावरि'। (रो)

कियाह–पु० लाल रग का घोडा। –क्रि०वि० कहा।

किये, कियै–क्रि०वि० कहा।

कियो–पु० १ कहने का कार्य। २ आदेश। –सर्व० कौनसा।

किरंटी–पु० [स० किरीटी] १ इन्द्र। २ अर्जुन। –वि० –वि० मुकुटधारी।

किरड–देखो 'करड'।

किरंडो–पु० सर्प, सांप।

किर–अव्य० मानो। –पु० १ निश्चय। [सं० किरि] २ सूअर, वराह। ३ किरण। ४ पृथ्वी।

किरइ–स्त्री० रहट की माल या रस्से को जोडने के काम आने वाली लकडी।

किरक–१ दर्द। २ अस्थियों की पीड। ३ देखो 'करक'।

किरकटो–पु० गिरगिट।

किरकर–देखो 'किरकिर'।

किरकांट (ठ)–१ देखो 'करकांट'। २ देखो 'कुरकाट'।

किरकांट, (कांटियो, कांट्यो, कांठियो, कांठो)–पु० १ गिरगिट। २ एक देशी खेल (शेखावाटी)।

किरकिर, (रो)–स्त्री० [सं०कर्कर] १ पिसे हुए आटे या चूर्ण के अन्दर रह जाने वाले धूलि कण। २ वारीक धूलि कण। ३ निंदाजनक या हास्यास्पद अवस्था। ४ हसी।

किरकिरी खांनो–पु० [तु० किरकिराकखान.] १ ऊन। २ ऊनी वस्त्र ३ वादशाह या राजा के सब प्रकार के विना सिले कपडो का सग्रह स्थान। ४ इस प्रकार के कपडो संबधी विभाग।

किरकिरो–वि० [स० कर्कर] (स्त्री० किरकिरी) १ कंकर या धूलिकणो से युक्त। २ ककरीला। ३ वेस्वाद। –पु० मोटे लोहे मे छेद करने का एक औजार।

किरकोळ–पु० परचून या फुटकर सामान।

किरको–पु० १ टुकडा, खण्ड, दाना। २ शक्ति, बल। ३ साहस।

किरकोड–स्त्री० ककाल, अस्थिपजर।

किरखी–स्त्री० [सं० कृषि] खेती, कृषि।

किरग–पु० [स० करटी] हाथी।

किरगाठियो–देखो 'किरकाटियो'।

किरड़णो (बो)–क्रि० १ किसी ठोस वस्तु को दांतों से चवाना। २ क्रोध या निद्रावस्था मे दात पीसना। ३ दात पीसने से ध्वनि उत्पन्न होना।

किरड़ा–स्त्री० [स० क्रीड़ा] क्रीडा, खेल, आमोद-प्रमोद।

किरड़ियो–देखो 'किरडो'।

किरड़ो–पु० १ गिरगिट। २ हाथी।

किरडू–स्त्री० १ रहट का रस्सा जोड़ने की काष्ठ की कील। २ अनाज को भिगोने या पकाने पर भी सूखा या सख्त रह जाने वाला दाना।

किरडो–पु० गिरगिट।

किरच–स्त्री० १एक प्रकार की सीधी तलवार। २ टुकडा या खण्ड।

किरची–स्त्री० १ रेशम की लच्छी। २ कोई लवूतरा टुकडा, खण्ड। ३ टुकडा, खण्ड।

किरचौ–पु० १ टुकडा, खण्ड, करण। २ सुपारी का टुकडा।

किरट, किरठ–वि० श्याम, काला।

किरड–देखो 'किरडू'।

किरण–स्त्री० [स०] १ सूर्य, चन्द्रमा या दीपक आदि से निकलने वाली प्रकाश की सूक्ष्म रेखा, रश्मि। प्रभा। २ रजकरण। —**उजळ, ऊजळ**–पु० चन्द्रमा। —**केतु**–पु० सूर्य। —**झाळ**–पु० तपता सूर्य। —**पत, पति, पती**–पु० सूर्य। —**थाळ**–पु० एक प्रकार का घोडा। —**माळी**–पु० सूर्य। –**सेत**–पु० चाद, चन्द्रमा।

किरणांपत (पति, पती) किरणार–पु० सूर्य।

किरणाळ (र)–वि० १ तेजस्वी। २ वीर, योद्धा। –पु० सूर्य।

किरणाळी–पु० [सं० किरण-आलुच्] सूर्य।

किरणावळी–स्त्री० किरण समूह।

किरणि–देखो 'किरण'।

किरणियौ–पु० १ छाता। २ सकेत देने का उपकरण। ३ एक बडा वृत्ताकार पखा जो राज्य चिह्न होता है और जिस पर सूर्य का चित्र होता है।

किरत–वि० [स० कृत] किया हुआ, कृत। –पु० १ नितंब के ऊपर का हिस्सा। २ स्तन का ऊपरि भाग। ३ कार्य, काम। ४ जाल, प्रपंच। —**गुणी**–वि० कृतघ्न, उपकार न मानने वाला, गुणचोर।

किरतका–देखो 'कृतिका'।

किरतब (व, ब्ब)–देखो 'करतब'।

किरतबी–देखो 'करतबी'।

किरतम–वि० बनावटी, कृत्रिम।

किरतार–देखो 'करतार'।

किरतारथ–देखो 'कृतारथ'।

किरति, किरतियां, किरती (यु)–देखो 'कृतिका'।

किरतू–पु० दो रस्सो को परस्पर जोडने की काष्ठ की कील।

किरत्या–देखो 'कृतिका'।

किरन–देखो 'किरण'।

किरनाळ–देखो 'किरणाळ'।

किरपण–देखो 'कृपण'।

किरपाण (णी)–वि० मजबूत, दृढ़। देखो 'कृपाण'।

किरपा–देखो 'कृपा'।

किरपाळ–देखो 'कृपाळ'।

किरबांण (न)–देखो 'करवाळ'।

किरम–पु० [स० कृमि] कीट, कीडा।

किरमचौ–पु० १ मट मैला या करोदिया रग। २ इस रग का कपडा। ३ इस रग का घोडा।

किरमर (म्मर)–स्त्री० १ तलवार, कृपाण। २ मुसलमान।

किरमाळ–स्त्री०[स० करवाल] १ तलवार। [स० किरणमाली] २ सूर्य, भानु।

किरमाळौ–पु० [सं० कृतमाल] अमलताश।

किरमिज–पु० १ एक प्रकार का रग। २ इस रंग का घोडा। ३ किरिमदाने का चूर्ण।

किरमिजी–वि० [सं० कृमिज] १ किरमिज रग का। २ चितकवरा।

किरमिर–पु० [स० किर्मीर] १ भीम द्वारा वधित एक राक्षस। २ पाडु पुत्र भीम।

किरम्माळ किरम्माळा–स्त्री० तलवार।

किरळक्क, किरळी–स्त्री० १ चीत्कार, चिल्लाहट। २ किलकारी।

किरळावणौ (बौ)–क्रि० १ चिल्लाना, चीत्कार करना। २ किलकना।

किरवांणी–देखो 'करवाळ'।

किरसाण (न)–१ देखो 'किसांन'। २ देखो 'कमाण'।

किरसाणी (नी)–देखो 'किसाणी'।

किराणौ–पु० [स० क्रयण] १ नमक, तेल, मसाले आदि पसारी का सामान। २ इस वर्ग की कोई एक वस्तु।

किरात–स्त्री० [स० क्राति] शोभा, प्रकाश।

किराड–पु० १ वैश्य, बनिया, व्यापारी। २ नदी का तट।

किराडी–पु० पशुओ का एक चर्म रोग।

किराड़ौ–देखो 'किराड'।

किरात–पु० [स०] (स्त्री० किरातणी, किरातिणी) १ एक प्राचीन जगली जाति, भील। २ चिरायता। ३ एक प्राचीन प्रदेश। ४ सईस, घुडसवार। ५ शिव। —**पत, पति**–पु० शिव।

किरातासी–पु० [स० किरताशी] गरुड।

किराती–स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २ स्वर्ग गगा। ३ चंवर डुलाने वाली स्त्री। ४ जटामासी। ५ किरात जाति की स्त्री।

किरायचौ (तौ)–पु० प्याज के काले बीज जो आचार मे डाले जाते हैं।

किरायणौ (बौ)–क्रि० १ चिल्लाना, चीत्कार करना। २ कराहना। ३ रोना।

किरायाभट्टी–स्त्री० चूने के भट्टो के मालिको से लिया जाने वाला कर।

किरायौ–पु० [अ० किराया] १ मकान, सवारी आदि का भाडा। २ ढोवाई। ३ किसी वस्तु के उपयोग के बदले दिया जाने वाला धन।

किरावर–देखो 'क्यावर'।

किरावळ–देखो करवाळ।

किरि–अव्य० १ मानो, जैसे। २ देखो 'किरी'। ३ देखो 'केरी'।

किरिट्ठ, (ठ)–देखो 'किरट'।
किरिण–देखो 'किरण'।
किरित्यां–देखो 'कृतिका'।
किरियांणो–पु० पौष्टिक पदार्थों का बना पाक, अवलेह या लड्डू।
किरिया–देखो 'क्रिया'। –करम='क्रियाकरम'।
किरियावर–देखो 'क्यावर'।
किरियावरी–देखो 'क्यावरी'।
किरियावरौ–देखो 'क्यावरौ'।
किरिराज–पु० [स० करीराज] १ वडा हाथी। २ अजन नामक दिग्गज।
किरी–स्त्री० काष्ठ का भीतरी ठोस भाग।
किरीट–पु० [स० किरीट] मुकुट, ताज।
किरीटी–वि० [स० किरिटिन्] मुकुट धारी। –पु० १ इन्द्र। २ अर्जुन। ३ राजा। ४ मुर्गा। ५ मुकुट। ६ २४ वर्णों का एक छद।
किरुण–देखो 'करुण'।
किरू–पु० १ हिन्दुवाणी या इन्द्रायण के फलों का ढेर। २ छाजन के सहारे के लिए लगाई जाने वाली लकडी।
किरे (रै)–अव्य० मानो, जैसे।
किरोई–स्त्री० १ सधि स्थान की नर्म हड्डी। २ वक्षस्थल के मध्य की हड्डी जो पसलियों को जोडती है।
किरोड़–देखो 'करोड'।
किरोडी–पु० १ राज्य के लिए माल गुजारी उगाहने वाला कर्मचारी। –वि० १ करोड, कोटि। २ देखो 'करोडी'।
किरोध–देखो 'क्रोध'।
किरोळी–स्त्री० रहट की माल मे लगने वाली लकडी की छोटी कील।
किरौ–पु० अगारेयुक्त राख का ढेर।
किलंका–देखो 'किल्क'।
किलंग–पु० [स० कल्कि] १ विष्णु का १० वा कल्कि अवतार। २ कलिंग का निवासी।
किलगी–देखो 'कलगी'।
किलगौ–पु० एक प्रकार का पुष्प।
किलंब (बि, व, वि)–पु० [अ० कलमः] यवन, मुसलमान। —राइ, राय–पु० वादशाह।
किळ, किल–अव्य०[स०किल] १ निस्सन्देह, निश्चय ही, जरूर। २ उसी प्रकार वैसे, ही।
किलक,(का)–स्त्री०१ हर्षध्वनि, खिलखिलाहट। २ किलकारी। ३ कलरव। ४ कोलाहल। ५ कल्लोल, क्रीडा।
किळकटारी–स्त्री० गिलहरी।
किलकणौ (बौ)–क्रि० खिलखिला कर हसना। २ किलकारी मारना। ३ कलरव करना। ४ कोलाहल करना। ५ कल्लोल या क्रीडा करना। ६ पक्षियों (चीलादि) का बोलना।
किलकार, (रो, री)–स्त्री० १ खिल-खिलाहट। २ जोर की हर्षध्वनि। ३ चीख, चिल्लाहट। ४ पुकार या तीखी आवाज।
किलकिंचित–पु० सयोग शृगार के ११ हावों मे से एक।
किलकिल–देखो 'खिलखिल'।
किलकिलणौ (बौ)–क्रि० खिलखिलाना, हर्ष ध्वनि करना।
किलकिला (लो)–स्त्री० [स० किलकिला] १ हर्ष ध्वनि, किलकारी। २ एक प्रकार की बडी तोप। ३ समुद्र का वह भाग जहा लहरें भयकर शब्द करती हैं। ४ मछलियों पर झपट्टा मारने वाली चिडिया। ५ गुदगुदी।
किलकिलाट (हट)–स्त्री० किलकिलकी ध्वनि, खिलखिलाहट।
किलकी–पु० १ एक प्रकार का बाण। २ देखो 'किलक'। ३ देखो 'कलकी'।
किलक्क–देखो 'किलक'।
किलक्कणौ (बौ)–देखो 'किलकणौ' (बौ)।
किळचु–पु० एक प्रकार का पक्षी।
किलणौ (बौ)–देखो 'कीलणौ' (बौ)।
किलब (वाइण) किलम, किलमाण, किलमायण, किलमी, किलमीर, किलम्म–पु० [अ० कलम] १ मुसलमानों का धार्मिक मूल मन्त्र, कलमा। २ उक्त मन्त्र का पाठ करने वाला मुसलमान। ३ मुसलमान। —नाथ, पत, पति, राइ, रा –पु० वादशाह।
किललोळ–स्त्री० केलि, क्रीडा, कल्लोल।
किलवाक–पु० कावुल देशोत्पन्न एक घोडा।
किलवाण (णी)–वि० मुसलमान सबधी।
किलविख (स)–पु० [स० किल्विष] पाप, कल्मष।
किलाण–देखो 'कल्याण'।
किलाणी–स्त्री० [स० कल्याणी] १ पार्वती। २ दुर्गा, देवी।
किलाजात–पु० किले या दुर्गों के प्रबध सबधी एक विभाग। (जयपुर)
किलादार–पु० किले का अधिकारी।
किलाबदी–स्त्री०१ दुर्ग का निर्माण। २ व्यूह रचना। ३ सुरक्षा ४ शतरंज मे वादशाह की सुरक्षा।
किलावौ–पु० १ स्वर्णकारो का एक औजार। २ हाथी के गले मे बधा रहने वाला रस्सा।
किलि–अव्य० निश्चय ही।
किलिविख–देखो 'किलविख'।

किलिच्चि, (च्छ)–पु० १ असुर। २ मुसलमान।
किलीखांनो–पु० १ लोह के उपकरण अस्त्र-शस्त्र बनाने का कारखाना। २ औजारो की खरीद व उनके मरम्मत आदि की व्यवस्था करने वाला विभाग।
किलेदार–देखो 'किलादार'।
किलोड़ो–पु० छोटा बैल।
किलोळ–देखो 'कलोळ'।
किलोहड़ो–देखो 'किळोडो'।
किलोळी–पु० वर्षा उपल, गिडा। हिमकण।
किलो–पु० [अ० किला] १ दुर्ग, गढ, किला। २ सुरक्षित स्थान।
किलो-लूटणो–पु० एक देशी खेल।
किल्याण (ल्लाण)–देखो 'कल्याण'।
किल्लणो (बो)–देखो 'कीलणो' (बो)।
किल्लादार–देखो 'किलादार'।
किल्लाहर–पु० पुष्प।
किल्लेदार–देखो 'किलादार'।
किल्लो–देखो 'किलो'।
किव–क्रि० वि० १ किस, कारण, क्यो। २ देखो 'कृपाचार्य'। ३ देखो 'कवि'। —**राज, राय**='कविराज'।
किवळो–अव्य० केवल।
किवहरि–पु० १ विना मात्रा का व्यजन। [स० कृपाचार्य गृह] २ कृपाचार्य का भवन।
किवाण (णी)–स्त्री० [सं० कृपाण] तलवार खड्ग।
किवाड़–देखो 'कपाट'।
किवाड़ी–देखो 'किवाडी'।
किवाचार–पु० [सं० क्लीव+आचार्य] क्लीवाचार्य।
किवि–वि० [स० किमपि] कुछ, कुछ भी।
किवे–वि० [स० क्लीव] क्लीव, नपुसक, हिजडा।
किस–सर्व० कौन। क्या। विभक्ति का पूर्व रूप।
किसइ (ई)–वि० कौनसा। –क्रि० वि० किस प्रकार।
किसउ–वि० १ कौनसा। २ कैसा।
किसकवा, किसकंधा–देखो 'किस्किधा'।
किसडी, किसड़ो'क–वि० कैसी। कौनसी।
किसडं, किसडो–वि० कैसा। कौनसा।
किसण, किसणो–१ देखो 'किसन'। २ देखो 'क्रसणपक्ष'।
किसत–देखो 'किस्त'।
किसतूरी (थूरी)–देखो 'कसतूरी'।
किसन–वि० १ काला श्याम। २ देखो 'क्रसण'। –**ताळु, ताळू** –पु० काले नालु का घोडा या हाथी। –**वरण**–पु० श्याम, काला। —**हर**–पु० वर्षा ऋतु का एक लोक गीत।

किसना–पु० [स० कृष्णा] १ दक्षिण भारत की एक नदी। २ द्रौपदी। ३ देवी, दुर्गा। –वि० काली, श्यामा। —**गर, गरि**–पु० १ अफीम, अमल। २ एक प्रकार का सुगधित पदार्थ विशेष। —**मिख**–पु० लोहा।
किसनियो, किसन्न–देखो 'किसन'।
किसब–पु० [अ० कस्ब] १ वेश्यावृत्ति, व्यभिचार। २ व्यभिचार की कमाई। ३ व्यवसाय, धधा। ४ भावाभिव्यक्ति।
किसबण (न)–स्त्री० १ वेश्या, रडी। २ व्यभिचारिणी स्त्री।
किसम–देखो 'किस्म'।
किसमत–देखो 'किस्मत'।
किसमिस–स्त्री० [फा० किशमिश] सूखा अगूर, दाख, द्राक्षा।
किसमिसी–वि० १ किशमिश का, किशमिश से बना। २ अगूरी रग का –पु० १ इस रग का घोडा। २ देखो 'किसमिस'।
किसांक–वि० कैसा।
किसांण (न)–पु० [स० कृषाण] १ कृषि कार्य करने वाला, कृषक, किसान। २ रहस्य सम्प्रदाय मे शरीर की इन्द्रिया।
किसाणी (नी)–वि० १ किसान का, किसान सबधी। २ कृषि सबधी। ३ देखो 'क्रसाण'।
किसाक, (उ) किसायक, किसाहिक (हीक, हेक)–वि० १ कैसा। २ कौनसा। ३ किसका। –क्रि० वि० कैसे, किस तरह।
किसारी–देखो 'कसारी'।
किसियक, किसी (क, यक)–सर्व० १ कौन, कौनसी। २ कोई। ३ कैसी। ४ कुछ।
किसूं–सर्व० क्या, कौन। –वि० कैसा, कौनसा। –क्रि० वि० किसी तरह।
किसूक–सर्व० कोई।
किसोइ, किसोइक, (ईकी) किसोक, किसोयक–वि० [सं० किदृश] १ कैसा। २ कौनसा।। ३ किसका।
किसोयरी–पु० [स० कृशोदरी] पतली कमर वाली स्त्री।
किसोर–पु० [सं० किशोर] (स्त्री० किशोरी) १ ग्यारह से पन्द्रह वर्ष की आयु का लडका। २ पुत्र, बेटा। ३ घोडे का बच्चा। ४ बछडा। ५ सूर्य। ६ एक मात्रिक छद। –वि० किशोरावस्था सबधी।
किसोरया–स्त्री० १ एक प्रकार की जडी। २ एक पक्षी विशेष।
किसो, किसो'क–वि० [स० किदृश] (स्त्री० किसी) १ कौनसा। २ कैसा। –सर्व० १ कौन। २ देखो 'किस्सो'।
किस्किध (धा)–पु० [स० किष्किधा] १ मैसूर के आस-पास का एक प्राचीन प्रदेश। २ इस प्रदेश की राजधानी। ३ इस प्रदेश के पास का एक पर्वत। ४ रामचरित मानस का एक काण्ड।
किस्टाण (न)–वि० ईसाई मत का अनुयायी।

किस्त–स्त्री० [अ०] १ सम्पूर्ण ऋण का चुकाया जाने वाला एक निश्चित अंश। २ उक्त प्रकार से अंशो मे ऋण चुकाने की विधि। ३ बकाया या जमा राशि मे से निर्धारित समय मे प्राप्त होने वाला अंश। ४ पराजय, हार। ५ शतरंज मे बादशाह की कमजोर स्थिति। —**बंदी**–स्त्री० छोटे-छोटे टुकडो मे ऋण चुकाने की व्यवस्था।—**वार**–पु० पटवारियो के भूमि संबंधी दस्तावेज। –क्रि० वि० किश्तो मे। किश्तो पर।

किस्ती–स्त्री० [फा० किश्ती] छोटी नाव, नौका। —**नुमा**–वि० नाव के आकार का।

किस्म–स्त्री० [फा०] १ जाति, श्रेणी। २ प्रकार, भेद। ३ ढग, रीति। ४ तरह भाति। ५ चाल; तर्ज।

किस्मत–स्त्री० [अ०] भाग्य, तकदीर। प्रारब्ध। —**वर**–वि० भाग्यशाली।

किस्मती–वि० १ भाग्यवान। २ किस्मत संबंधी।

किस्यउ, किस्या, (क) किस्यु, किस्यौ (क)–वि० १ कैसा। २ कौनसा।

किस्सौ–पु० [अ० किस्स] १ कहानी, कथा। २ आख्यान। ३ घटना का विवरण। ४ हाल, वृत्तान्त। ५ समाचार। ६ झगडा, तकरार।

किहडौ–वि० (स्त्री० किहडी) कैसा।

किहां (ई)–क्रि० वि० कहा, किधर, किस जगह। कही पर।

किहांण–सर्व० कौन। किस।

किहाणनू–वि० कौनको, किसको। –क्रि० वि० किसलिये।

किहाड़ौ–वि० (स्त्री० किहाडी) कैसा। –पु० घोडो की एक जाति।

किहारि–क्रि० वि० १ किस ओर, किस तरफ। २ किस समय।

किहि–क्रि० वि० कहा, किधर।

किहिक–सर्व० कोई। किस। –वि० कुछ, जरा।

किहि (ही)–सर्व० १ किसी। २ कोई।

किहिक, किहीक–देखो 'किहिक'।

किहिण, किहीण–पु० कथन, कहना।

कह्या–क्रि० वि० कही पर।

कीं–वि० [स० किम्] कुछ, जरा, किंचित्। –सर्व० किम।

कींक–वि० कुछ तो, जरा, किंचित।

कींकर–क्रि० वि० [स० किंकर] कैसे, किस प्रकार। –पु० नौकर। दास। गुलाम।

कींकू–सर्व० किमको। –पु० कुंकुम। –**पत्री**–स्त्री० वैवाहिक या मागलिक निमंत्रण-पत्र।

कींकोडौ–देखो 'ककेडौ'।

कींजरो, कींझरो–पु० १ कलक, दोष। २ कुल–कलक। ३ लाछन।

कींट–पु० १ बच्चा, शिशु। २ औलाद, संतान। ३ फल।

कींठे, कींठै, कींडे–क्रि० वि० कहा, किस जगह, कहा मे।

कींहीं–वि० कुछ।

की–पु० १ घोडा। २ हाथी। ३ सर्प। ४ वृषभ। ५ गुलाबी रंग। ६ व्यभिचारी व्यक्ति। ७ पुरुष। ८ वास। ९ कुल। १० क्रोध। –स्त्री० ११ पृथ्वी। १२ कमला १३ चीटी। १४ जिह्वा। १५ कुबुद्धि। १६ कुंजी। –अव्य० १ एक विभक्ति। २ या, अथवा। –सर्व० क्या। –वि० कौनसा, कौनसी।

कीउ (ऊ) (क)–क्रि०वि० क्यो। –वि० कुछ।

कीकट–पु० [सं० कीकट] १ कीडा। २ निर्धनता, कंगाली। ३ मगध देश। –वि० निर्धन, कगाल।

कीकर–क्रि० वि० १ कैसे, किस प्रकार। २ देखो 'कीकरियौ'।

कीकरियौ–पु० बबूल का वृक्ष।

कीकस–पु० [सं० कीकसम्] १ हड्डी, अँस्थि। २ क्षुद्र कीट। –वि० [सं० कीकस] दृढ, मजबूत।

कीकी–स्त्री० १ आख की पुतली। २ बच्ची, लडकी। ३ पुत्री, बेटी।

कीकौ–पु० (स्त्री० कीकी) १ बच्चा, शिशु। २ लड़का, बेटा।

कीड़–स्त्री० [स० क्रीडा] केलि, क्रीडा।

कीड़ापरवत–पु०यौ० [सं० कीट-पर्वत] दीमक द्वारा बनाया गया मिट्टी का ढेर। टीबा। वल्मीक।

कीडी–स्त्री० [स० कीटी] १ चीटी, पीपिलिका। २ ज्वार के पौधे का एक कीडा। —**नगरौ**–पु० वह स्थान जहा कीडिया अधिक मात्रा मे रहती हैं। चीटियों का घर। अगुलि पर्व या पैर के तले मे होने वाला एक रोग।

कीडीरीखाल–स्त्री० १ कुलाचें मार कर खेला जाने वाला एक खेल। २ कठिन कार्य।

कीडौ–पु० [स० कीट] १ कीडा, चीटा, मकौडा। २ कीट, कृमि। ३ गिरगिट। ४ साप। ५ जू। ६ खटमल। ७ थोडे दिनो का बच्चा। ८ पशुओ के रक्त विकार का एक रोग।

कीच–पु० १ कीचड, पक, कादा। २ दलदल। ३ गाढा द्रव पदार्थ, मैला। ४ मेथी को भिगोकर तैयार किया गया स्वर्ण-कण चिपकाने का पानी। ५ कीचक। –वि० काला, श्याम।

कीचक–पु० [स०] १ विराट राजा का साला जो भीम द्वारा मारा गया। २ खोखला बास। ३ कीचड। —**अरि, अरी, मारण**–पु० भीम। रिपि, रिपु, सूदन–पाडुपुत्र भीम का नाम।

कीचड (ल)–पु० दलदल, कीच, पक। २ गदी बात।

कीट–पु० [सं०] १ रेंगने वाला या उडने वाला छोटा जीव, कीडा । २ बच्चा । ३ तेल या घी का मैल जो वर्तनो पर जम जाता है । –वि० काला, श्याम॰ ।
कीटी–स्त्री० १ दूध का खौआ । २ देखो 'कीट' ।
कीटौ–देखो 'कीट' ।
कीठ–पु० १ लोहे का शिरस्त्राण । २ देखो 'कीट' ।
कीठे (ठै)–क्रि०वि० कहा ।
कीडीऊ, कीडीऔ–पु० मोती विशेष, 'चीड' ।
कीणौ–पु० [स० क्रयण] शाक, तरकारी आदि खरीदने के वदले दिया जाने वाला अन्न ।
कीत–१ देखो 'कीरति' । २ देखो 'कित' । ३ देखो 'क्रीत' ।
कीतबर (वर)–देखो 'कीरतवर' ।
कीति (ती)–देखो 'कीरती' ।
कीन–पु० कृत । –पु० मास ।
कीनास–पु० [स० कीनाश] १ यमराज । २ एक प्रकार का वन्दर । ३ किसान ।
कीनू (नै, नौ, न्हौ)–सर्व० किसको ।
कीप–पु० कीचड, पक । २ रस,आनद । –वि० काला, श्याम॰ ।
कीपला–स्त्री० [स० करपीठ] कोई छोटा सिक्का ।
कीम–सर्व० कैसे, किस प्रकार ।
कीमखाव–पु० स्वर्ण-चादी के तारो से युक्त एक कीमती वस्त्र ।
कीमत–पु० [अ०] १ मूल्य, दाम । २ महत्व ।
कीमति (ती)–वि०[अ०] १ मूल्यवान, वहुमूल्य । २ महत्वपूर्ण । ३ परीक्षक ।
कीमियागर–वि० रासायनिक ।
कीमियागरी–स्त्री० रासायनिक विद्या ।
कीमियौ–पु० १ रासायनिक क्रिया । २ देखो 'कीमियागर' ।
कीमौ–पु० [अ० कीमा] हड्डी रहित खाने का गोश्त ।
कीयौ–वि० कौनसा ।
कीर–पु० [स०] १ तोता, शुक । २ धीवर, केवट । ३ कहार । ४ वहेलिया, व्याध । [स० कीरम] ५ मास, गोश्त ।
कीरड़णौ (बौ)–देखो 'किरडणौ' (बौ) ।
कीरत–देखो 'कीरति' ।
कीरतका–देखो 'कृतिका' ।
कीरतन–पु० [स० कीर्तन] १ भगवत भजन, कथा, कीर्तन । २ यशोगान, कीर्तिगान । ३ जाप, जप । ४ किसी के नाम को वार-वार कहने की क्रिया ।
कीरतनियौ (तन्यौ)–वि० [स० कीर्तनम्] १ भगवान की कथा भजन आदि करने वाला । २ रामलीला के खेल करने वाला व्यक्ति ।
कीरतवर (वर राय)–पु० [स० कीर्तिवर या राज] १ उदार, यशस्वी । २ त्यागी ।
कीरति (ती, त्ती)–स्त्री० [स० कीर्ति] १ यश, वडाई, प्रशसा । २ ख्याति, प्रसिद्धि । ३ अनुग्रह । ४ विस्तार, फैलाव । ५ पुण्य । ६ प्रसाद । ७ सीता की एक सखी । ८ राधा की माता । ९ दक्ष की कन्या व धर्म की पत्नी । १० एक मातृका । ११ दीप्ति, काति, आभा । १२ आवाज । १३ कीचड, पक । १४ शब्द । १५ आर्या छन्द का एक भेद । १६ दश अक्षरो का एक वृत्त । –वि० १ श्वेत, सफेद । २ उज्ज्वल । —थंभ, थंभ, स्तंभ–पु० कीर्ति का आधार या प्रतीक ।
कील–स्त्री० [स०] १ कील, परेक, खील । २ पिन । ३ काटा, अकुश । ४ जड । ५ खूटा । ६ धुरी । ७ खूटी । ८ एक तात्रिक देव । ९ स्तम्भ, खभा । १० अनाज पीसने की चक्की के मध्य की खूटी । ११ काटा लगने से या जूती की कील पैर मे गडने से होने वाली मास ग्रथि । १२ देखो 'खील' ।
कीलक–पु० [स० कीलक] १ किसी मत्र की शक्ति या उसके प्रभाव का नाशक मत्र । २ स्तभित करने वाला ।
कीलणौ (बौ)–क्रि० [स० कील वधन] १ कीलें लगाकर मजवूत करना, सुरक्षित करना । २ मत्रो से वश मे करना । ३ देखो 'खीलणौ' (बौ) ।
कीला–स्त्री० [स० क्रीडा] १ केलि, क्रीडा । २ खेल, कौतुक । ३ निसाणी छद का एक भेद । ४ अग्नि, आग । ५ ताप, आच । —नद–पु० प्रत्येक चरण मे छ यगण का एक वर्ण वृत्त । —पति–पु० सूर्य, भानु ।
कीलाल–पु० [स०] १ अमृत । २ शहद । ३ जल, पानी । ४ हैवान । ५ जानवर । ६ खून, रक्त । ७ सोमरस ।
कीलालप–पु० भ्रमर ।
कीलित–वि० [स०] १ मत्र से स्तभित या रोका हुआ । २ सुरक्षित । ३ कील से जडा हुआ ।
कीलियौ–पु० मोट के रस्से मे कील लगाने व निकालने वाला ।
कीली–स्त्री० [स० कीलिका] धुरी, कील ।
कीस–पु० [स०कीश] १ वदर । २ चिड़िया । ३ सूर्य । ४ पक्षी । ५ गाय या भैस का प्रथम वार दुहा हुआ दूध । —वर, वर–पु० हनुमान ।
कीसउ–वि० १ कौनसा । २ कैसा ।
कीसक–स्त्री० [स० कीकस] हड्डी, अस्थि ।
कीसु (सू, सौ)–सर्व० [स० कीदृश] कैसा, क्यो ।
कीह, कीहा–क्रि० वि० कहा ।
कीहुक–वि० तनिक, जरा थोडा ।
कुं–क्रि०वि० १ क्यो । २ कैसे । ३ [illegible] । –वि० कुछ ।
कुंअर (र)–देखो 'कुमार' ।
कुंअरी–देखो 'कुमारी' ।
कुंअठ (ठौ)–१ देखो '[illegible]' । २ देखो '[illegible]' ।

कुंग्रार-स्त्री० [सं० कौमार्य] १ कुंवारापन, कौमार्य । २ देखो 'कुमार' । ३ देखो 'कुग्रार' ।

कुंग्रार मग-पु० ग्राकाश गगा ।

कुंग्रारी-देखो 'कुमारी' । —घड़, घडा-देखो 'कुमारीघडा' ।

कुंग्रारौ-वि० [सं० कुमार] ग्रविवाहित ।

कुंई, कुंईक-वि० कुद्ध ।

कुंग्रो-देखो 'कूवौ' ।

कुंकूडती-देखो 'कुकुमपत्री' ।

कुंकण-पु० दक्षिण भारत का एक प्रदेश, कोंकण ।

कुंकम, कुंकु, कुंकु, कुंकुम-पु० [सं० कुकुमम्] १ केसर । २ कुंकुम, रोली । ३ हाथी । ४ कश्मीर । —पत्रिका, पत्री —स्त्री० विवाह ग्रादि मागलिक ग्रवसरो का निमत्रण-पत्र ।

कुंकुमी-वि० १ केसरिया । २ कुकुम के रग का ।

कुंगळ-देखो 'कंगळ' ।

कुंचकी, कुंचवउ-देखो 'कचुकी' ।

कुंचित-वि० [सं०] १ वक्र, टेढा । २ सिकुडा हुग्रा । ३ मुडा हुग्रा, झुका हुग्रा ।

कुंचुक, कुंचूक-देखो 'कचुकी' ।

कुंज-पु० [सं०] १ वृक्ष व लताग्रो से परिवेष्टित सघन स्थल, लतागृह । २ हाथी का दात । ३ मगल ग्रह । ४ कमल । ५ क्रौंच पक्षी । ६ ग्रनाज रखने की मिट्टी की कोठी -वि० लाल, रक्तवर्ण॰ । —क-पु० कचुकी । —कुटीर-पु० लतावेष्टित कुटीर । —गळी-स्त्री० लतावीथी । तग गली, रास्ता । —विहारी विहारी-पु० ईश्वर । श्रीकृष्ण । —माळा-स्त्री० वनमाला, फुलमाला ।

कुंजटियो-पु० घिसा हुग्रा व छोटा झाडू ।

कुंजर-पु० [सं०] १ हाथी । २ एक नाग । ३ वाल, केश । ४ एक पर्वत । ५ छप्पय छन्द का इक्कीसवा भेद । -वि० श्रेष्ठ, उत्तम । —ग्ररि, ग्रराति-पु० सिह । —ग्रसरा, ग्रसन-पु० पीपल का पेड । —ग्रारोह-पु० महावत ।

कुंजरच्छाय-पु० ज्योतिप का एक योग ।

कुंजळ-पु० १ छाछ, मट्ठा । २ हाथी, गज ।

कुंजा-देखो 'कुरज' ।

कुंजी-स्त्री० [सं० कुचिका] १ चावी, ताली । २ किसी पुस्तक की टीका । ३ उपाय ।

कुंजो-पु० [ग्र० कूजा] १ पुरवा, चुक्कड । २ सुराही ।

कुंझ-देखो 'कुंज' ।

कुंट-पु० [सं० कुट] वृक्ष ।

कुंठ, कुंठित-वि० [सं० कुंठित] १ जो तीक्ष्ण न हो, भोटा । २ स्थूल बुद्धि । ३ मूर्ख । ५ उदास । ६ मद, फीका । ७ निकम्मा ।

कुंड-पु० [सं० कुण्ड.] १ छोटा जलाशय । २ हौज । ३ चौडे मुंह का गहरा वर्तन । ४ ग्रग्निहोत्र करने का गड्ढा या पात्र । ५ लोहे का टोप । ६ चन्द्रमा या सूर्य के चारो ग्रोर का वृत्त विशेष । ७ खप्पर । ८ कूप । ९ तगारी । १० शिव । ११ एक नाग । १२ चन्द्र मण्डल का एक भेद । १३ ग्रग्नि, ग्राग । १४ पर पुरुप की संतान । १५ कौमार्यावस्था की सन्तान । —कीट-पु० चार्वाक मत का ग्रनुयायी । पतित ब्राह्मण । —दामोदर-पु० द्वारका के निकट एक तीर्थ ।

कुंडळ-पु० [सं० कुंडल] १ मडलाकार कान का ग्राभूषण । २ वाला । ३ मुरकी । ४ सन्यासियो के कान का भूषण । ५ कोल्हू के चारो ग्रोर लगा वंद । ६ सूर्य या चन्द्रमा का वृत्त । ७ मोट के मुंह पर लगा रहने वाला मोटा गोल छल्ला । ८ ढोल पर लगाया जाने वाला गोल कडा, छल्ला । ९ शेपनाग । १० सर्प । ११ नाभि । १२ छन्द मे द्विमातृक गरा । १३ वाईस मात्रा का एक छन्द । १४ ग्राख का गड्ढा ।

कुंडळणी (नी)-स्त्री० [सं० कुण्डलिनी] १ हठयोग के ग्रनुसार नाभि के नीचे प्राय. सुपुप्तावस्था मे रहने वाली एक शक्ति । २ इमरती नामक मिठाई । ३ मोमलता । ४ हाथी की सूंड । ५ डिंगल का एक छद ।

कुंडळिका-स्त्री० [सं० कुण्डलिका] दोहा व रोला युक्त एक डिंगल छंद ।

कुंडळियौ-पु० १ वृत्ताकार रेखा । २ घेरा, वृत्त, गोला । ३ एक मात्रिक छंद ।

कुंडळी-स्त्री० [सं० कुंडली] १ जलेवी या इमरती-मिठाई । २ कचनार । ३ जन्म पत्री । ४ जन्म काल के ग्रहो की स्थिति वताने वाला चक्र । ५ सर्प की वैठक । ६ गेंडुरी । ७ सर्प । ८ विष्णु । ९ मोर । १० वनुप । ११ मुर्रा भैंस । १२ भैंस के सीगो की वनावट । १३ वरुण । १४ एक वाद्य । १५ चितकवरा हिरन । १६ कुंडल । १७ लोहे मे छेद करने का ग्रौजार । १८ पशुग्रो का वृत्ताकार दाग । १९ ग्राखों का एक रोग । २० ग्रगूंठी के ऊपर का घेरा ।

कुंडळीक-पु० सुदर्शन चक्र ।

कुंडसूरज-पु० सूर्य कुण्ड नामक तीर्थ ।

कुंडादडी-स्त्री० गेंद का एक खेल ।

कुंडापथ-पु० वाम मार्ग का एक भेद या शाखा ।

कुंडापथी-वि० कुंडापथ का ग्रनुयायी ।

कुंडारी-देखो 'कुंडळी' ।

कुंडाळी-स्त्री० १ चौडे मुंह का मिट्टी का पात्र । २ मुर्रा भैंस ।

कुंडाळ (ळियो), कुंडाळो-पु० १ गोल चक्र । २ घेरा, वृत्त । ३ मिट्टी का बना चौडा व गहरा जल पात्र । ४ नगारा ।

कुंडियौ–देखो 'कूंडियौ'।
कुंडी–स्त्री० १ घोड़ा। २ मच्छी पकड़ने का यन्त्र। ३ मिट्टी या पत्थर का बना गोलाकार पात्र।
कुंडेळ-पु० [स० कुण्ड] चन्द्रमा या सूर्य के इर्द-गिर्द बना वृत्त जो वर्षा या वायु का सूचक माना जाता है।
कुंडोदर-पु० शिव का एक गण।
कुंडौ–देखो 'कूंडौ'।
कुंण–सर्व० कौन।
कुंत–पु० [स०] भाला, बरछी। —अग्र–पु० भाले की नोक। —ग्रह–पु० वीर। योद्धा।
कुंतळ–पु० [स० कुंतल] १ सिर के बाल। २ बरछी। ३ सम्पूर्ण जाति का एक राग। ४ बहुरूपिया। ५ एक प्राचीन देश। —मुखी–स्त्री० कटार।
कुंता–देखो 'कुंती'।
कुंतिभोज–पु० [स०] पृथा को गोद लेने वाला राजा।
कुंती–स्त्री० [स०] १ कुरु नरेश पाण्डु की ज्येष्ठ पत्नी। पृथा। २ बरछी।
कुंतल–देखो 'कुंतळ'।
कुंथवौ–देखो 'कूंथवौ'।
कुंद–पु० [सं०] १ कुबेर की नौ निधियों मे से एक। २ सफेद फूलो का पौधा। ३ एक पर्वत का नाम। ४ विष्णु। ५ कमल। ६ मोगरा। ७ नौ की सख्या※। –वि० [फा०] १ उदास, मद। २ खिन्न। ३ कुण्ठित। ४ श्वेत, सफेद। —लता–स्त्री० छब्बीस अक्षरो की एक वर्णवृत्ति।
कुंदण, (न)–पु० [स० कुंदन] १ स्वच्छ एवं उत्तम स्वर्ण। २ शुद्ध सोने का पत्र। ३ इस रंग का घोड़ा। –वि० १ खालिश, शुद्ध। २ स्वच्छ। ३ उत्तम। ४ स्वर्णिम। —साज–पु० सोने के स्वच्छ पत्तर बनाने वाला।
कुंदणी (नी)–वि० सुवर्ण का, सोने का।
कुंदम–पु० [स०] १ कुन्द पुष्प। २ बिल्ली।
कुंदाळ–पु० एक प्रकार का शस्त्र विशेष।
कुंदी–स्त्री० १ धुले या रंगे हुए वस्त्र को लकड़ी से पीट कर तह जमाने की क्रिया। २ कूट-पीट। —गर-पु० उक्त कार्य करने वाला व्यक्ति।
कुंदेरणौ (बौ)–क्रि० १ छीलना। २ खरोंचना। ३ कुरेदना।
कुंदौ–पु० १ बन्दूक का पृष्ठ भाग, कुंदा। २ आभूषणों मे मोती पिरोने के लिए लगाया जाने वाला घेरा। ३ दरवाजे का कुंडा। –वि० (स्त्री० कुंदी) १ दृढ़, मजबूत। २ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।
कुंधुंध-बंधु–पु० चन्द्रमा।
कुंब–देखो 'कुंभ'।
कुंबाण–स्त्री० १ बुरी व खोटी आदत। २ देखो 'कबाण'।
कुंबायळ–देखो 'कुंभायळ'।
कुंबारियौ–देखो 'कुंभारियौ'।
कुंबी–देखो 'कुंभी'।
कुंभ–पु० [स० कुंभ] १ मिट्टी का घड़ा, मटका। २ हाथी के शिर के दोनो ओर उभरे हुए भाग। ३ बारह राशियो मे से एक। ४ प्राणायाम का एक भाग। ५ प्रति बारहवें वर्ष पड़ने वाला एक पर्व मेला। ६ गुग्गल। ७ सपूर्ण जाति का एक राग। ८ उन्नीसवें अर्हंत। ९ प्रह्लाद का पुत्र। १० कुंभकरण। ११ कुंभकरण का पुत्र। १२ एक वानर। १३ वेश्यापति। १४ अगस्त्य ऋषि। १५ मोर, मयूर। १६ हाथी। १७ हाथी का मस्तक। १८ घन। १९ आर्या गीत का एक भेद। २० शिव का एक गण। २१ देखो 'कुंभीपाक'। —कंदन–पु० श्री रामचन्द्र। —क–पु० प्राणायाम का एक भाग। —करण–पु० रावण का छोटा भाई। —कदन–पु० ईश्वर। श्रीराम। —करन='कुंभकरण'। —कळस–पु० विवाहादि मे वदाने के काम आने वाला मागलिक कलश। —कार–पु० मिट्टी के पात्र बनाने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। कुक्कट, मुर्गा। —कारी–स्त्री० कुलथी नामक औषधि। कुंभकार स्त्री। —क्रन (न्न)='कुंभकरण'। —ज, जात–पु० —सभ्रम–अगस्त्य। द्रोणाचार्य। वसिष्ठ। कुंभकरण। —थळ–पु० हाथी का गडस्थल। —दासी–स्त्री० दूती, कुटनी। —नरक–पु० कुंभीपाक नरक। —नी–स्त्री० पृथ्वी, धरती। मच्छी फसाने का यंत्र। —ळा–स्त्री० गोरखमुंडी औषधि। —सधि–पु० हाथी के मस्तक के बीच का गड्ढा। —स्थळ, स्थळि–पु० हाथी का गडस्थल। —हनु–पु० रावण दल का एक राक्षस।
कुंभायळ–पु० [स० कुंभस्थल] हाथी का गडस्थल।
कुंभार–पु० [स० कुंभकार] (स्त्री० कुंभारी) मिट्टी के बर्तन बनाने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति।
कुंभारियौ–पु० १ सिन्दूरिया रंग का एक विषैला सर्प। २ देखो 'कुंभार'।
कुंभि (भी)–पु० [सं० कुंभी] १ हाथी। २ मगर। ३ एक विषैला कीड़ा। ४ कुंभ सक्राति। ५ बच्चो का एक रोग। ६ सर्प। ७ कुंभीपाक नरक। ८ कायफल। ९ छोटा घड़ा। १० हंडिया।
कुंभिक–स्त्री० एक प्रकार का नपुंसक।
कुंभिका–स्त्री० [स०] १ वेश्या। २ कुंभी। ३ कायफल। ४ आंख का एक रोग। ५ सूक रोग। ६ परवल की लता।
कुंभिनी–स्त्री० [स०] पृथ्वी, भूमि।
कुंभिला–स्त्री० राक्षसो की एक देवी।

कुंभी-देखो 'कुंभि' ।
कुंभीक-पु० [सं०] १ जल कुंभी । २ पुन्नाग वृक्ष । ३ एक प्रकार का नपुंसक ।
कुंभीधांन्य-पु० एक मटका अनाज ।
कुंभीनस-पु० [सं०] १ क्रूर साप । २ एक विषैला कीडा । ३ रावण ।
कुंभीपाक-पु० [सं०] १ एक नरक विशेष । २ एक प्रकार का सन्निपात ।
कुंभीपाळक-पु० हाथीवान, फीलवान, महावत ।
कुंभीपुर-पु० [सं०] हस्तिनापुर का प्राचीन नाम ।
कुंभीमुख-पु० [सं०] चरक मतानुसार का एक फोडा ।
कुंभीर-पु० [सं०] १ मगर, नक्र । २ एक प्रकार का कीडा । —आसण (न)-पु० एक प्रकार का योगासन ।
कुंभेण (भैण)-देखो 'कुंभकरण' ।
कुंभोदर-पु० [सं०] शिव का एक गण ।
कुंभोलूक-पु० [सं०] बडा उल्लू ।
कुंभौ-देखो 'कुंभ' ।
कुंमकुंमपत्री-देखो 'कुंकुपत्री' ।
कुंमळाणौ (बौ)-क्रि० १ मुरझा जाना, कुम्हलाना । २ सुस्त होना, उदास होना । ३ फीका या मंद पडना ।
कुंमुंद-देखो 'कुमुदिनी' ।
कुंयर-१ देखो 'कुमार' । २ देखो 'कुमारी' ।
कुंयुंई-क्रि० वि० क्यो ।
कुंळ-१ देखो 'कोमळ' । २ देखो 'कमळ' । (स्त्री० कुंळी) ।
कुंवर-देखो 'कुमार' । —कलेवौ=देखो 'कवरकलेवौ' ।
कुंवरी-देखो 'कुमारी' ।
कुंवरेस-पु० [सं० कुमार+ईश] ज्येष्ठ पुत्र ।
कुंवळ-१ देखो 'कमळ' । २ देखो 'कोमळ' ।
कुंवाड-देखो 'कपाट' ।
कुंवाड़ी-स्त्री० १ छोटी कुल्हाडी । २ देखो 'कपाट' ।
कुंवार-पु० १ आश्विन मास । २ देखो 'कुमार' ।
कुंवारी-देखो 'कुमारी' । —घड़ा='कवारीघडा' ।
कुंवारौ-देखो 'कवारौ' ।
कु-पु० [सं० कु] १ पृथ्वी । २ हृदय । ३ पोखर, ताल । ४ तट । ५ सरसशब्द । -वि० तनिक, थोडा । —उप० संज्ञा शब्दो के आगे लगने वाला एक उपसर्ग ।
कुअर-देखो 'कुमार' ।
कुअरि-पु० [सं० कु + अरि] १ वैरी, शत्रु, दुश्मन । २ देखो 'कुमारी' ।
कुअवर-देखो 'कुमार' ।
कुआड़ौ, कुआड़ियौ-देखो 'कवाडियौ' ।
कुआर-पु० १ आश्विन मास । २ देखो 'कुमार' ।
कुआरौ-देखो 'कंवारौ' । (स्त्री० कुआरी) ।
कुइलौ-देखो 'कोयलौ' ।
कुईजणौ (बौ)-क्रि० सडना खुमार उठना, विकृत होना । (फल, हरि सब्जी आदि) ।
कुओ-देखो 'कूवौ' ।
कुकडलौ-पु० १ दामाद सबधी एक लोक गीत । २ देखो 'कूकडौ' ।
कुकड़ी-स्त्री० १ सूत की लच्छी । २ काले वालो वाली भेड । ३ मुर्गी ।
कुकडौ-देखो 'कूकडौ' ।
कुकर (रियौ)-पु० [सं० कुक्कर] (स्त्री० कुकरी) १ कुत्ता, श्वान । २ कुत्ती का बच्चा ।
कुकरडी-स्त्री० १ एक प्रकार का पौधा । २ कुतिया ।
कुकरडौ-पु० कुत्ता, श्वान (बच्चा) ।
कुकरम-पु० [सं० कुकर्म] बुरा कर्म, पाप, कुकृत्य ।
कुकरमी-वि० बुरे कर्म करने वाला, पाप कृत्य करने वाला ।
कुकरीनेपाली-स्त्री० एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।
कुकव (वि, वी)-पु० मूर्ख कवि ।
कुकस-पु० १ अभक्ष्य एव निकृष्ट अन्न, कदन्न । २ भूसी चारा ।
कुकसाई-वि० १ नीच, दुष्ट । २ निर्दयी । ३ हत्यारा, वधिक ।
कुकाई-स्त्री० १ कूकने की क्रिया या भाव । २ चिल्लाहट, पुकार ।
कुकाउ (ऊ)-वि० पुकारते, चिल्लाने या कूकने वाला ।
कुकुंदर-पु० १ चूतड का गड्ढा । २ कुकरोंधा ।
कुकुद (क)-पु० [सं० ककुद] बैल का कूबड । —वांन-पु० बैल, वृषभ ।
कुकुभ-पु० [सं०] १ एक राग विशेष । २ एक मात्रिक छन्द विशेष ।
कुकुर-पु० [सं०] १ एक साप । २ कुत्ता । —खांसी-स्त्री० सूखी खासी ।
कुकुळ-पु० [सं० कुकूल] १ तुषाग्नि । २ नीच वश ।
कुकुस्त-देखो 'काकुस्थ' ।
कुकोह-पु० [सं० कुक्रोध] १ अनुचित क्रोध । २ पर्वत ।
कुक्क-देखो 'कूक' ।
कुक्कटवाहणी-स्त्री० वहीचरा देवी ।
कुक्कुट-पु० [सं०] मुर्गा । —आसण (न)-पु० एक योगासन । —पाद-पु० एक प्राचीन पर्वत । —व्रत-पु० भादव शुक्ला सप्तमी का व्रत । —सिखा-वि० रक्ताभ, लाल ।
कुक्कुर-पु० [सं०] १ कुत्ता, श्वान । २ एक ऋषि ।
कुक्याउ, कुक्याऊ-देखो 'कुकाउ' ।
कुक्ष, कुक्षि, कुख, कुखि-स्त्री० [सं० कुक्षि] १ पेट, उदर । २ कोख, गर्भ । ३ गोद । ४ भीतरी हिस्सा । —भेद-पु० ग्रहण-मोक्ष का एक भेद ।

कुखेत–पु० बुरी भूमि । कुठौर ।
कुख्यात–वि० [स०] बदनाम, निंदित ।
कुख्याति–स्त्री० [स०] बदनामी, निंदा ।
कुगति (ती)–स्त्री० दुर्दशा, दुर्गति ।
कुगात–पु० बेडौल, बुरा शरीर ।
कुघट, कुघाट–पु० १ बुरा शरीर, बेडौल । २ विनाश, नाश । –वि० १ कुरूप । २ बेढंगा । भद्दा ।
कुघात–स्त्री० [सं०] १ कुअवसर । २ छल-कपट ।
कुड़–पु० १ हिरन पकडने का लोहे का यंत्र, फंदा । २ कूप, कूआ (मेवाड) ।
कुड़क, (कुड़की)–स्त्री० [फा० कुर्क] १ ऋणी व्यक्ति की चल या अचल संपत्ति जब्त करने का आदेश । २ कान मे डाला जाने वाला तार का छल्ला । ३ कान का बाला । ४ जानवरो को फंसाने का फंदा । ५ नौ नाग वंशो मे से एक । ६ इस वंश का नाग । ७ मुर्गी की, कुछ समय के लिये अंडे देना बंद कर देने की अवस्था । —अमीन–पु० सम्पत्ति कुर्क करने वाला राज्य कर्मचारी
कुड़कली–स्त्री० कान का आभूषण विशेष, बाली ।
कुड़कुड़ती–स्त्री० एक प्रकार की चिडिया ।
कुड़को–पु० कठोर वस्तु चबाने से होने वाला शब्द ।
कुड़चियो–पु० छोटा चम्मच ।
कुड़चो, कुडच्छो, कुड़छो–स्त्री० बडा चम्मच ।
कुड़णो (बो)–क्रि० १ कमर से झुक जाना । २ मोठ या ज्वार का पौधा अत्यधिक सूख जाना ।
कुड़ती–देखो 'कुरती' ।
कुड़तो (त्यो)–देखो 'कुरतो' ।
कुड़बडो–पु० चडस के बीच लगने वाली लकडी ।
कुड़सी–देखो 'कुरसी' ।
कुड़ाछाल–स्त्री० कुटज की छाल ।
कुड़ंबो–देखो 'कुटुंब' ।
कुड़ो–पु० (स्त्री० कुडी) १ लडका, पुत्र । २ देखो 'कूडो' ।
कुचंदण (न)–पु० [सं०] १ रक्त चंदन । २ कुंकुम ।
कुच–पु० [स०] १ स्तन, उरोज । २ वक्ष स्थल, छाती । –वि० १ संकुचित । २ कठोर । ३ कृपण, कंजूस । ४ अति तीक्ष्ण※ ।
कुचकुचमोगणी–स्त्री० एक देशी खेल ।
कुचक्र–पु० [स०] षड्यन्त्र ।
कुचक्री–वि० [स०] षड्यन्त्रकारी ।
कुचमाद–स्त्री० १ चालकी, धूर्तता । २ बदमाशी । ३ छेड-छाड ।
कुचमादी–वि० (स्त्री० कुचमादण) १ चालाक, धूर्त । २ बदमाश । ३ छेड-छाड करने वाला ।
कुचरकी, कुचरड़ी, कुचरी–स्त्री० ईंधन की पतली लकडी ।
कुचरड़ो–पु० १ अपयश, निंदा । २ देखो 'कुचरकी' ।
कुचरणो (बो)–क्रि० १ घाव को खरोचना, कुचरना । २ रगड कर साफ करना ।
कुचरो–देखो 'कुचरकी' ।
कुचळणो(बो)–क्रि० १ पैरो से रोंदना । २ मसलना । ३ तोड़ना-फोडना, कूटना ।
कुचार, कुचाल, कुचाली–वि० १ दुष्ट, नीच । २ उद्दण्ड । ३ कुमार्गी । –स्त्री० १ बदमाशी, शैतानी । २ कुचाल । ३ बुरा आचरण, दुष्टता ।
कुचालक–वि० जिसकी चाल या आचरण बुरा हो ।
कुचाव–पु० १ बुरा शौक । २ बुरी भावना ।
कुचित–वि० १ वक्र, टेढ़ा, तिरछा । २ कुटिल । ३ छलिया ।
कुचियादडी–स्त्री० एक देशी खेल ।
कुचिल–वि० कुमार्गी ।
कुचील–वि० [सं० कुचेल] (स्त्री० कुचीलणी) १ गंदा, मलिन । २ मैले वस्त्रो वाला । ३ दुष्ट । ४ नीच, पतित । –स्त्री० दुष्टता, नीचता ।
कुचीलो–पु० एक काष्ठोषधि विशेष ।
कुचेन–पु० १ दु'ख । २ व्याकुलता, व्यग्रता ।
कुचेस्टा–स्त्री० [सं० कुचेष्टा] १ बुरी चेष्टाएें । २ बुरी चाल । ३ बुरे भाव ।
कुचोप–वि० खराब, बुरा । –पु० असुर ।
कुच्चडढो–वि० कूंची के समान दाढ़ी वाला ।
कुछ–वि० [स० किंचित्] १ तनिक, थोडा । २ कम मात्रा या संख्या मे । –सर्व० [स० किश्चित्] कोई । –पु० कुश ।
कुछाट–देखो 'कछाट' ।
कुछित–वि० [स० कुत्सित] निंदनीय, कुत्सित ।
कुछेक–वि० जरासा, थोडा बहुत ।
कुज–पु० [स०] १ मंगल ग्रह । २ वृक्ष । ३ नरकासुर । –सर्व० कोई । –वि० १ कुछ । २ रक्त वर्ण, लाल※ । –कोई–वि० हरेक, प्रत्येक । साधारण, सामान्य । तुच्छ, छोटा । —वार–पु० मंगलवार ।
कुजरबो–वि० (स्त्री० कुजरबी) १ बुरा, खराब । २ विकट, ३ अतिभयकर ।
कुजळपणो–पु० [स० कु+जल्पन] बकवास ।
कुजस–पु० [स० कुयश] अपयश, अपकीर्ति, बदनामी ।
कुजाणी–वि० भ्रम मे डालने वाली ।
कुजा–स्त्री० [स०] सीता, जानकी ।
कुजात–स्त्री० १ नीच जाति, शूद्र जाति । २ बकरी । –पु० ३ पतित पुरुष ।
कुजाब–पु० १ अपशब्द, गाली । २ अनुचित जवाब ।

कुजीव (वौ)–पु० (स्त्री० कुजीवी) नीच या बुरा जीव, दुष्ट।
कुजोग–पु० [स० कुयोग] १ बुरायोग; बुरा संयोग। २ अशुभ योग।
कुज्जो–पु० [फा० कूजा] १ मिट्टी का प्याला। २ मिश्री का डला, खंड। ३ देखो 'कुजौ'।
कुटव–देखो 'कुटुंव'। –**जातरा, जात्रा, यात्रा**='कुटुंवयात्रा'।
कुट–पु० [स० कुट] १ गृह, घर। २ गढ, कोट। ३ घडा, कलश, जलपात्र। ४ हथौडा। ५ घन। ६ वृक्ष। ७ पर्वत। ८ एक वडी झाडी।
कुटक (कौ, क्क)–पु० १ विष, जहर। २ एक औषधि विशेष। ३ हल के पीछे हलवानी के साथ लगने वाली लकडी। ४ एक लता की जड। ५ खट्टा टुकडा। ६ खण्ड, टुकडा।
कुटकड़ौ–पु० स्वर्णकारो का पीतल का वना साचा जिसमे तारो की विभिन्न डिजाइनें खुदी रहती हैं।
कुटज–पु० १ एक वृक्ष का नाम। २ अगस्त्य ऋषि का नाम। ३ द्रोणाचार्य का नाम।
कुटकणौ (बौ)–क्रि० चवाना।
कुटकी–स्त्री० १पहाडी प्रदेशो मे होने वाला एक क्षुप। २ टुकडा।
कुटकौ–पु० १ खण्ड, टुकडा। २ विभाग। ३ छोटा कण। ४ सुपारी का टुकडा।
कुटणी (नी)–स्त्री० [सं० कट्टनी] १ दूती, कुट्टनी। २ भली स्त्रियो को वहका कर भ्रष्ट करने वाली स्त्री। ३ कूटने का हथियार। ४ कूटने की क्रिया।
कुटम–देखो 'कुटुंव'।
कुटळ–वि० [स० कुटिल] १ वक्र, टेढा तिरछा। २ छली, कपटी। ३ दुखदायी, क्रूर, दुष्ट। ४ मुडा हुआ। ५ झुका हुआ। ६ वेईमान। ७ चचल। ८ श्वेत, पीत और लाल नेत्रो वाला। –पु० नगर का फूल। —**पण, पणौ**–पु० टेढापन। खोटाई। छल कपट।
कुटलाण, (लाई)–स्त्री० कुटिलता। छल, कपट।
कुटाई–स्त्री० १ कूटने की क्रिया या भाव। २ कूटने का पारिश्रमिक।
कुटाणौ (बौ)–क्रि० कुटवाना, पिटवाना।
कुटिळ–देखो 'कुटळ'।
कुटिळकीट–पु० [सं० कुटिलकीट] साप।
कुटिळता–स्त्री० [सं० कुटिलता] १ टेढ़ापन। २ खोटाई। ३ छल, कपट।
कुटिळा–स्त्री० [स० कुटिला] १ सरस्वती नदी। २ एक प्राचीन लिपि।
कुटी, कुटीरड़ौ–स्त्री० [स०] १ कुटिया, पर्णशाला। झोपडी। २ घास का भूसा, चूरा।
कुटुंव–पु० [स०] १ परिवार। २ वश, कुल। –**जातरा, जात्रा, यात्रा**–स्त्री० सन्यास लेने के पश्चात् भिक्षार्थ पुन परिवार मे आकर भिक्षा मागने की प्रथा।
कुटेव, (टंव)–स्त्री० बुरी आदत, बुरा स्वभाव।
कुट्टण–वि० १ पाजी, दुष्ट, वदमाश। २ मारने वाला। ३ मियो मुसलमानो की गाली।
कुट्टिम–पु० [स०] १ पक्का आगन, फर्श। २ अनार, दाडिम।
कुट्टी–स्त्री० घास की कतरन, भूसा।
कुठाम–पु० [स० कु+स्थान] १ बुरा स्थान, कुठौर। २ अनुचित जगह। ३ नाजुक जगह। ४ अपात्र, कुपात्र। ५ देखो 'कुठौर'।
कुठार–स्त्री० [स० कुठार] १ कुल्हाडी, परसा। २ विध्वंसक। ३ कठिनाई मे दूध देने वाली भैंस या गाय।
कुठाळियौ–देखो 'पलाणियौ'।
कुठाली–स्त्री० स्वर्णकारो का औजार विशेष।
कुठोड़ (ठौड़, ठौर)–स्त्री० १ बुरा स्थान। २ गुप्ताग। ३ देखो 'कुठाम'।
कुडंड–देखो 'कोदड'।
कुड–स्त्री० चट्टान, शिला।
कुडावड़ी–देखो 'कुंडादडी'।
कुडाव–पु० घातक या बुरा दाव, कुदाव।
कुडुव (उ)–देखो 'कुटुंव'।
कुडौ–पु० १ साफ किये अन्न की खलिहान मे पडी ढेरी। २ इन्द्रयव का वृक्ष। ३ देखो 'कूडौ'।
कुड्यापट्टी–स्त्री० १ घोडे को गोल चक्र मे दौडाने का ढग। २ इन्द्रयव का वृक्ष।
कुढंग–पु० १ बुरा ढग, कुरीति। २ कुचाल। ३ अनुचित प्रणाली। –वि० १ खराव। २ वेढगा। ३ भद्दा।
कुढ़ंगौ–वि० (स्त्री० कुढंगी) १ कुमार्गी, चरित्रहीन। २ बेढगा। ३ कुरूप, भद्दा।
कुढ–१ देखो 'कुढण'। २ देखो 'कढ'।
कुढ़ण (न)–स्त्री० १ मन मे दवा हुआ क्रोध। २ घुटन। ३ चिढ, ईर्ष्या। ४ आन्तरिक दुख।
कुढ़णौ (बौ)–क्रि० १ मन ही मन क्रोध करना। २ खीजना, चिढना। ३ मन मसोसना। ४ डाह करना। ५ बुरा मानना। ६ शरीर को समेट कर चलना।
कुढव–देखो 'कुढग'।
कुढाणौ (बौ), कुढ़ावणौ (बौ)–क्रि० १ मन ही मन क्रोध हो, ऐसी हरकत करना। २ खीजाना, चिढाना। ३ दुख देना, तरसाना। ४ उडेलवाना, डलवाना।
कुड़ियौ–पु० कूए पर काम करने वाला।

कुण–सर्व० १ कौन । २ किस । [स० क्वरण] –पु० शब्द, आवाज ।
कुणका–पु० अन्न, अनाज ।
कुणकाई, कुणकी–स्त्री० 'मा' का अपमान सूचक सबोधन ।
कुणकियौ–पु० 'पिता' का अपमान सूचक सबोधन ।
कुणकुण, कुणकुणाहट–स्त्री० १. कुनकुनाहट, गुनगुनाहट । २ कलह ।
कुणकणौ–वि० (स्त्री० कुणकुणी) गुनगुना, कम गर्म ।
कुणकौ–पु० अनाज का दाना ।
कुणछल्यौ–पु० छोटी कडाई ।
कुणव–पु० [स० क्वणन] शब्द, आवाज ।
कुणप–पु० [स०] मृत शरीर, शव ।
कुणबी–पु० एक कृपक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
कुणबु, कुणबौ–पु० कुटुंब ।
कुणरियौ–पु० बालक की दर्दपूर्ण आवाज ।
कुणसोडौ कुणसौ–वि० कौनसा ।
कुणि–देखो 'कुण' ।
कुणेनूं–सर्व० किसे, किसको ।
कुणे–सर्व० कौन, किसे ।
कुण्यां–देखो 'कुण' ।
कुत–देखो 'कृत' ।
कुतक, कुतकौ–पु० १ डडा । २ छोटी लकडी ।
कुतडौ–देखो 'कुत्तौ' (स्त्री० कुतडी) ।
कुतदबौ–पु० एक प्रकार का घोडा ।
कुतप–पु० [स० कुतप, कुतुप] १ मध्याह्न मे होने वाला आठवा मुहूर्त्त । २ तेल डालने का चमडे का बना कुप्पा ।
कुतब (ब्ब)–पु० [अ० कुत्ब] १ मुसलमान महात्मा विशेष । २ कुतुब मीनार । ३ ध्रुव तारा ।
कुतर–पु० १ वस्त्रो के चिपकने वाली घास । २ ज्वार-बाजरी के डठलो के कटे हुए छोटे टुकडो का ढेर । ३ कतरन । –वि० नीच, दुष्ट ।
कुतरक–पु० [स० कुतर्क] १ बुरा तर्क, वेढगी दलील । २ बकवाद । ३ वितडावाद ।
कुतरडौ–देखो 'कुत्तौ' । (स्त्री० कुतरडी) ।
कुतरवेड–पु० कुत्तो का समूह ।
कुतरौ–देखो 'कुत्तौ' ।
कुतवार–पु० १फसल का कूता करने वाला व्यक्ति । २ कोतवाल ।
कुतवी–पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ, चूरमा ।
कुतवारी–स्त्री० कोतवाल का पद या कार्य ।
कुताघासी–देखो' कुकरखासी' ।
कुतालिकणी–स्त्री० एक प्रकार का ठुड्डी (हिचकी) पर होने वाला रोग । २ कुत्तो के खाने पीने के लिए रोटी आदि डालने का पत्थर का पात्र ।
कुतिक, (ज)-देखो 'कौतुक' ।
कुतियौ–देखो 'कुत्तौ' ।
कुतुक–देखो 'कौतुक' ।
कुतुवनुमा–पु० दिशा निर्देश करने वाला यंत्र ।
कुतुहळ, कुतूहळ–पु० [स० कुतूहल] १ कुछ जानने या देखने की उत्कठा, उत्सुकता । २ अभिलाषा । ३ क्रीडा, विनोद, कौतुक । ४ विस्मय, आश्चर्य । ५ विनोदपूर्ण खेल ।
कुत्तर–देखो 'कुतर' ।
कुत्ता मिस्री–स्त्री० एक देशी बेल ।
कुत्तौ–पु० [स० कुक्कुर] (स्त्री० कुत्ती) १ प्राय ग्राम या नगरो मे रहने वाला, मास व अन्न भक्षी चौपाया छोटा जानवर, श्वान, कुत्ता । २ पाइप आदि कसने का रिंच ।
कुत्र-क्रि० वि० कहा, कहा पर ।
कुथ–पु० [स० कुथ] १ गिलाफ, खोल । २ कुश, दर्भ । ३ हाथी की झूल । ४ गलीचा ।
कुथपणौ (बौ)–क्रि० १ विलोम या विपरीत होना या करना । २ खराब होना ।
कुथांन–देखो 'कुठाम' ।
कुथाळ–वि० १ विपरीत, उल्टा । २ खराब । ३ विपरीत दिशा मे ।
कुथि–पु० एक सूर्यवशी राजा ।
कुदतार, कुदतौ–वि० १ कृपण, कजूस । २ नीच ।
कुदरत, (ता)–स्त्री० [अ०] १ प्रकृति, पचभौतिक प्रकृति । २ माया, लीला । ३ अदृश्य शक्ति । ४ महिमा, प्रभाव । ५ स्वभाव, आदत । ६ बनावट, आकार । —**पत, पति**–पु० ईश्वर ।
कुदरती–वि० [अ०] १ प्राकृतिक । २ स्वत निर्मित । ३ स्वाभाविक । ४ दैवी, ईश्वरीय ।
कुदरसणौ (नौ)–वि० दिखने मे भद्दा, अशुभ ।
कुदान–पु० [स० कु-दान] १ बुरा दान । २ अपात्र को दिया जाने वाला दान । ३ कूदने की क्रिया या भाव । ४ एक छलाग की दूरी । ५ पैर की जूती ।
कुदाणौ (बौ)–क्रि० १ कूदने के लिए प्रेरित करना । २ उछालना ।
कुदात–वि० कृपण, कजूस ।
कुदार, कुदारा–स्त्री० [स० कुदारा] १ बदचलन स्त्री, पतिता । २ कलहगारी स्त्री ।

कुदाळ, (ळी, ळो)–स्त्री० [सं० कुद्दाल] १ मिट्टी खोदने का बडा उपकरण। २ कुदाली, फावडा। –इतो–पु० १ लम्बे जबडे का घोडा। (अशुभ) २ देखो 'कुदाळ'।

कुदाव–पु० [सं०] १ बुरा व घातक दाव। २ बुरा अवसर। ३ बुरी चाल।

कुदिन–पु० [सं०] १ बुरा दिन। २ आपात् कालीन समय। ३ दुःख का दिन। ४ एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच का समय।

कुदिस्टी–स्त्री० [सं० कुदृष्टि] १ बुरी नजर। २ क्रोप दृष्टि। ३ पाप भरी नजर।

कुदीळ–देखो 'कुदाळ'।

कुदेव–पु० [सं० कु+देव] १ भूदेव, ब्राह्मण। [सं० कुदेव] २ दैत्य, राक्षस।

कुदौ–देखो 'कूदौ' (स्त्री० कुदी)।

कुद्दाळ–देखो 'कुदाळ'।

कुधन–पु० [सं०] १ पाप की कमाई। २ काला धन। ३ लूट का माल। ४ बकरी।

कुधर–पु० [सं० कु+धर] पहाड, पर्वत।

कुधार–वि० १ क्रोधी। २ क्रुद्ध।

कुधिक–वि० क्रुद्ध।

कुधी–वि० मंद बुद्धि, मूर्ख।

कुनख–पु० नाखून का फोडा।

कुनटी–स्त्री० [सं०] मन शिल, मैनशिल।

कुनण–१ देखो 'कुंदन'। २ देखो 'कुनैन'।

कुनणपुर–पु० १एक प्राचीन नगर। २ लंका का एक नाम।

कुनफो–पु० नुकसान, हानि।

कुनबी–देखो 'कुणबी'।

कुनबो–देखो 'कुटुंब'।

कुनर–पु० बुरा आदमी।

कुनाम (नाव)–वि० बदनाम, निंदित।

कुनामि–पु० धन, द्रव्य।

कुनार–स्त्री० [सं० कुनारी] पतिता स्त्री।

कुनै–क्रि०वि० किस तरफ।

कुनैन–पु० बुखार की कड़वी औषधि।

कुन्नण–देखो 'कुंदन'।

कुन्याय–पु० १ पक्षपात पूर्ण न्याय। २ अन्याय।

कुपथ–पु० कुमार्ग।

कुपथी–वि० कुमार्गी।

कुपडी–देखो 'कुप्पी'।

कुपथ्य, कुपथ, कुपथ्य–पु० [सं० कुपथ्य] १ स्वास्थ्य के लिए हानि-कारक पदार्थ। २ गरिष्ट भोजन। ३ कुपथ, कुमार्ग।

कुपळी–स्त्री० कोपल।

कुपह–पु० [सं० कुप्रभु] १ दुष्ट व अन्यायी राजा। २ कुपथ, कुमार्ग।

कुपही–वि० [सं० कुपथ+ई] कुमार्ग पर चलने वाला, दुष्ट, नीच।

कुपातर (पात्र)–वि० [सं० कुपात्र] १ अयोग्य, कुपात्र। २ जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो। ३ कपूत।

कुपाती–वि० १ कुपथगामी, नीच, पामर। २ उद्दण्ड। ३ उत्पात करने वाला।

कुपाळी–स्त्री० [सं० कपाल] १ खोपड़ी, कपाल। –पु० २ [सं० कापालिक] श्मशान योगी।

कुपि–देखो 'कुप्पी'।

कुपियौ–पु० १ सुराईनुमा मिट्टी का जल-पात्र। २ मशीनों में तेल देने का पतले व लंबे मुंह का पात्र। ३ कुप्पा।

कुपी (प्पी)–स्त्री० [सं० कुतुप] १ मशीनों में तेल देने की कुप्पी। २ छोटे व सकरे मुंह वाला मिट्टी या धातु का बना जलपात्र।

कुपीच–पु० १ कष्ट। संकट। २ यातना। ३ कुपथ्य।

कुपुरिस–पु० १ कापुरुष। २ कुपुरुष।

कुफंड–पु० धूर्तता, पाखंड, ठगी।

कुफंडी–वि० धूर्त, पाखंडी, ठग।

कुबंग, (गौ)–वि० विरुद्ध।

कुबड़–देखो 'कूबड'।

कुबडौ–देखो 'कूबडौ'। (स्त्री० कुबडी)।

कुबज–वि० १ नीच २ नीचा। ३ टेढा, वक्र। ४ कुबडा। –पु० एक वात रोग विशेष।

कुबजक–पु० १ कुंज। २ कूजा नामक वृक्ष।

कुबजका, कुबजा, कुबजीका, कुबज्जा, कुबज्या–स्त्री० [सं० कुब्जिका] १ दुर्गा का एक नाम। २ आठ वर्ष की कन्या। ३ कंस की एक कुबडी दासी।

कुबणैत–पु० बाण विद्या में निपुण।

कुबत–स्त्री० [अ० कुव्वत] १ बुद्धि, अक्ल। २ उपज। ३ बुरी बात। ४ चालाकी।

कुबद (ध)–स्त्री० [सं० कुबुद्धि] १ धूर्तता, नीचता। २ चालाकी बदमाशी। ३ छेड-छाड। ४ मूर्खता, खराब बुद्धि। —मूळ–वि० चोर। कलह प्रिय।

कुबदी, कुबदीडो, कुबधिडो, कुबधी–वि० [सं० कु+बुद्धि] १ धूर्त, चालाक। २ नीच, शैतान। ३ उद्दण्ड, नटखट। ४ पाखंडी। –पु० चोर।

कुबलय–वि० नीला, आसमानी।

कुवलयापीड–पु० कंस का एक हाथी ।

कुवळयासव–पु० [स० कुवलयाश्व] १ सूर्य वंशी राजा धुंधुभार का नाम । २ पाताल केतु को मारने वाला घोडा ।

कुबस–वि० अमांगलिक, अशुभ ।

कुवाण–स्त्री० १ बुरी आदत । २ अशुभ वाणी । ३ देखो 'कवाण' ।

कुवाक–पु० [स० कुवाक्य] कटु वचन ।

कुबुध–देखो 'कुवद' ।

कुबुधि–देखो 'कुवदी' ।

कुबेणी (नी)–स्त्री० [स० कुवेनी] १ मछली फसाने का यंत्र । २ शिकार की मछली रखने की डलिया ।

कुबेर–पु० [स०] नौ निधियों के भण्डारी व यक्षो के राजा एक देवता ।

कुबेरिया–देखो 'कुवेळा' ।

कुबेरी–स्त्री० १ कुबेर की स्त्री । २ दुर्गा का एक नाम । ३ लक्ष्मी ।

कुवेळा–स्त्री० [स० कु + वेला] १ असमय, कुसमय । २ अनुपयुक्त समय ।

कुबैण–पु० [स० कु-वचन] बुरे व कडुवे वचन । अपशब्द ।

कुबोध–पु० [सं० कु + बुद्धि] १ मूर्खता, नासमझी । २ ज्ञानाभाव । ३ दुर्बोध ।

कुबोल–देखो 'कुवैण' ।

कुबोलो–वि० (स्त्री० कुबोली) अपशब्द कहने वाला । कटुभाषी ।

कुबो–वि० (स्त्री० कुबी) मुडा या झुका हुआ । कुबडा ।

कुब्ज–पु० वात विकार से होने वाला कूबड का रोग ।

कुभच्छ–वि० अभक्ष्य । कुपथ्य ।

कुभट–वि० कायर, डरपोक ।

कुभरो–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

कुभारजा–स्त्री० [स० कुभार्या] १ कुपत्नी, कलह प्रिय स्त्री । २ पतिता स्त्री ।

कुमखी–वि० क्रोध करने वाला ।

कुमख्या–स्त्री० आसाम की कामख्या देवी ।

कुमत्री–पु० [स०] बुरी सलाह देने वाला अमात्य ।

कुमक–स्त्री० [तु० कुमुकी] १ सैनिक कार्यों के लिए दी जाने वाली सहायता । २ सेना, फौज । ३ सेना द्वारा दी जाने वाली मदद । ४ किसी प्रकार की मदद या सहायता ।

कुमकणी (बो) कुमखणो (बो)–क्रि० कोप करना ।

कुमकी–स्त्री० [तु० कुमक] १ हाथियो को पकडने मे सहायता देने वाली हथिनी । २ देखो 'कुमक' ।

कुमकुमई–देखो 'कुमकुमो' ।

कुमकुमी–स्त्री० मस्ती, उन्मत्तता ।

कुमकुमो (कुमकुम्मो)–पु० [तु० कुमकुमा] १ लाख का खोखला गोला । २ कुंकुम । ३ सिंदूर । ४ रग विशेष का घोडा । ५ गुलाव । ६ केसर, कस्तूरी, कपूर को मिलाकर घिसा हुआ चदन । ७ मकान की छत मे लटकाए जाने वाला काच का गोला ।

कुमक्ख, कुमख–स्त्री० १ क्रोध, गुस्सा । २ हीरा । ३ देखो 'कुमक' ।

कुमखणो (बो), कुमक्खणो (बो)–क्रि० कोप करना, क्रोध करना ।

कुमखा–स्त्री० १ कुदृष्टि । २ प्रकोप ।

कुमजा–देखो 'कमज्या' ।

कुमट, कुमटियो–पु० १ एक काटेदार वृक्ष जिसकी फली के बीजो का शाक बनता है । २ उक्त वृक्ष का बीज ।

कुमणा–स्त्री० क्रोध, गुस्सा ।

कुमणेती–स्त्री० बाण विद्या में निपुणता ।

कुमत, (ति,ती)–स्त्री० [स० कुमति] कुबुद्धि, दुर्बुद्धि । उल्टी मति ।

कुमद–देखो 'कुमुद' ।

कुमदणी–देखो 'कमोदणी' ।

कुमदवंती–पु० नैऋत्य दिशा का दिग्गज ।

कुमदनि (नी)–देखो 'कमोदनी' ।

कुमदबंधु–पु० [स० कुमुदबंधु] चद्रमा, चाद ।

कुमया–स्त्री० नाराजगी, गुस्सा ।

कुमर–देखो 'कुमार' ।

कुमरक–पु० [स० कुबरक] भयानक गड्ढा ।

कुमरांणी–स्त्री० [स० कुमार-रानी] १ राजकुमार की पत्नी । २ राजकुमारी ।

कुमरि–स्त्री० राजकन्या, राजकुमारी । कुमारी ।

कुमरिया–स्त्री० हाथियो की एक उत्तम जाति ।

कुमल, कुमलय–पु० कमल ।

कुमळणो (बो) कुमलाणो (बो) कुमलावणो (बो)–क्रि० कुम्हलाना, मुरझाना ।

कुमलियापीड–देखो 'कुवलियापीड' ।

कुमली–वि० महामलिन, नीच ।

कुमांण, (णस)–पु० [स० कु-मानस] १ बुरा व नीच मनुष्य । २ राक्षस । –वि० १ दुष्ट । २ क्रूर, निर्दयी । ३ कपटी, छलिया । ४ पतित ।

कुमानेतण–वि० दुहागिन ।

कुमाई–देखो 'कमाई' ।

कुमाया–स्त्री० ढोंग ।

कुमाणो (बो), कुमावणो (बो)–देखो 'कमाणो' (बो) ।

कुमार–पु० [सं०] (स्त्री० कुमारी) १ पाच वर्ष की आयु तक का वालक। २ पुत्र, वेटा। ३ वह लडका जिसका पिता जीवित हो। ४ युवराज। ५ राजकुमार। ६ स्वामि कार्त्तिकेय। ७ अग्नि। ८ तोता। ९ सिन्धु नद। १० मगल-ग्रह। ११ एक प्रजापति। १२ सनत्कुमार। १३ वालकों पर असर करने वाला एक ग्रह। १४ सोना, स्वर्ण। १५ अविवाहित अवस्था। १६ देखो 'कुंभार'। –वि० अविवाहित, कुंवारा। —पण, पणौ–पु० कुमारावस्था। कौमार्यावस्था। —मग–पु० आकाश गगा। —महि, मही–पु० मगल।

कुमारग–पु० [सं० कुमार्ग] १ बुरा मार्ग, बुरी राह। २ बुरा कर्म। ३ बुरा आचरण। ४ जीवन की असामाजिक दिशा। ५ अधर्म। —गामी–वि० बुरे रास्ते जाने वाला। वदचलन। अधर्मी।

कुमारडी–देखो 'कुमारी'।

कुमारपाठौ–पु० घृतकुमारी का क्षुप।

कुमारिका—देखो 'कुमारी'।

कुमारिकाखेत्र, (मण्डळ)–पु० वर्ण व्यवस्था वाला देश, भारतवर्ष।

कुमारियौ–पु० १ एक प्रकार का सर्प। २ देखो 'कुमार'।

कुमारिल-भट्ट–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध मीमासक।

कुमारी–स्त्री० [सं०] १ वारह वर्ष तक की लडकी, कन्या। २ घीकुआर। ३ श्यामा पक्षी। ४ सीताजी का एक नाम। ५ राजकुमारी। ६ पार्वती। ७ दुर्गा। ८ चमेली। ९ वडी इलायची। १० नव मल्लिका। ११ एक नदी। १२ भारत के दक्षिण का एक अन्तरीप। द्वीप। १३ कुंभकार स्त्री, कुम्हारी। १४ एक प्रकार की मक्खी। –वि० अविवाहिता। —घड़ घड़–स्त्री० विना युद्ध की हुई सेना। —पूजन–पु० देवी पूजा के समय कुमारी वालिकाओं का पूजन।

कुमारु (रू)–देखो 'कुमार'।

कुमी–देखो 'कमी'।

कुमीठ–स्त्री० कुदृष्टि।

कुमुख–पु० [सं०] १ दुर्मुख नामक रावण का एक योद्धा। २ सूअर। ३ देखो 'कुमक्ख'। –वि० भद्दे चेहरे वाला, कुरूप।

कुमुद–पु० १ विष्णु। २ एक दैत्य। ३ कमल, कोका। ४ एक द्वीप। ५ आठ दिग्गजो में से एक। ६ एक केतु तारा। ७ चादी। ८ कपूर। ९ एक नाग। १० एक वन्दर। ११ श्वेत कमल। १२ रक्त कमल।

कुमुदणी (नी)–देखो 'कमोदनी'।

कुमेड़ियौ–पु० एक छोटी जाति का हाथी।

कुमेत, (मैंत)–पु० स्याही लिए हुए लाल रग का घोड़ा।

कुमेर(रौ)–स्त्री० १ पाठ नामक लता। २ महत्त्वानी का अभाव। ३ देखो 'कुवेर'।

कुमेळ–पु० १ अनवन, द्वेप, वैमनस्य। २ बेमेल। ३ शत्रु।

कुमोवणी–देखो 'कमोदण'।

कुमोज–पु० १ कष्ट, दुख। २ नाखुशी। ३ अनिच्छा। ४ अशिष्ट क्रीडा।

कुमौत–पु० अकाल मृत्यु, वेमौत।

कुम्म–पु० [सं० कूर्म] कच्छप, कछुआ।

कुम्मायळ–देखो 'कुम्भस्थळ'।

कुम्मेद–देखो 'कुमेत'।

कुम्मेर–देखो 'कुवेर'।

कुम्हलणौ, (वौ), कुम्हलाणौ (वौ)–क्रि० १ मुरझाना, कुम्हलाना। २ सूखना। ३ उदास या खिन्न होना।

कुम्हार–देखो 'कुंभार'। (स्त्री० कुम्हारी)।

कुम्हारियौ–पु० १ अत्यन्त जहरीला सर्प। २ देखो 'कुंभार'।

कुयीजणौ (वौ)–क्रि० खमीर उठना, सडना।

कुयोग–पु० १ बुरायोग, कुअवसर। २ बुरा मौका। ३ अशुभ योग। –वि० अयोग्य।

कुरंग (गाण) (गि, गी)–पु० [सं० कुरग] १ हिरन, मृग। २ 'कुमेत' रग का घोड़ा। ३ ससार। ४ पतग। ५ अशुभ या बुरा रंग। –वि० १ वदरग। २ असुहावना। ३ चचल।

कुरज–पु० क्रौंच पक्षी।

कुरड–स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष व उसकी छाल।

कुरद (दा, द्रा)–स्त्री० निर्धनता, दरिद्रता।

कुरब–देखो 'कुरव'।

कुरभ–पु० [सं० निकुरभ] समूह।

कुरंमौ, कुरम (म्म)–देखो 'कूरम'।

कुर–१ देखो 'कुरु'। २ देखो 'कौरव'।

कुरक–देखो 'कुड़क'। —नांमौ='कुडकनामौ'।

कूरकाट (कांठ)–देखो 'करकाट'।

कुरकर–पु० १ कुत्ता, श्वान २ शब्द, ध्वनि। ३ कडी वस्तु के टूटने की आवाज।

कुरकरी–स्त्री० लाव या वरत के छोर पर लगाई जाने वाली वह कील जो लाव को वैलो के जुए से जोडती है।

कुरकुरी–स्त्री० १ घोडो का एक रोग। २ पेट का दर्द।

कुरकरौ–वि० दरदरा, मोटा।

कुरकौ-डंकौ–पु० एक देशी खेल।

कुरख–पु० [सं० कुलक्षय] १ क्रोध। २ कवच का टुक। ३ शत्रु। ४ राजा, नृप।

कुरखेत (खेतर)–देखो 'कुरुखेत'।
कुरड–स्त्री० १ पीठ, पृष्ठ। २ देखो 'कोरड'। ३ देखो 'करंड'।
कुरडौ–पु० १ अरबी व तुरकी जाति के घोडे-घोडी के सयोग से उत्पन्न घोडा। २ देखो 'कुरळौ'।
कुरचणौ (बौ)–देखो 'खुरचणौ' (बौ)।
कुरचिल–पु० [सं० कुरचिल्ल) केंकडा।
कुरछी–स्त्री० गोल चम्मच। कलछी।
कुरज–स्त्री० १ क्रौंच पक्षी। २ एक राजस्थानी लोक गीत।
कुरजणियो, कुरजणौ, कुरजिणौ–पु० एक राजस्थानी लोकगीत। २ एक वरसाती घास।
कुरजीत–पु० [स० कुरु-जित्] युधिष्ठिर।
कुज्झ, कुरझ (ण, झी)–देखो 'कुरज'।
कुरट–वि० काला, श्याम। –स्त्री० दातो से कुतरने की क्रिया या भाव।
कुरटणौ (बौ)–क्रि० १ दातो से कुतरना। २ छोटे-छोटे टुकडे करना।
कुरणा–स्त्री० १ हल्का-वुखार। २ आलस्य, सुस्ती। ३ देखो 'करुणा'।
कुरणाटौ–पु० १ वक-झक करने की क्रिया। २ रह-रह कर कराहना।
कुरणी–स्त्री० [स० करेणु] हथिनी।
कुरत–स्त्री० [सं० कु+ऋतु] वेमौसम।
कुरती–स्त्री० औरतो की कमीज, बडा कब्जा।
कुरतौ–पु० पुरुषो की कमीज, कुर्ता, चौला।
कुरदसियौ–वि० कुलक्षणो वाला।
कुरदातळी–स्त्री० एक प्रकार की चिडिया।
कुरवाळ (ळी)–स्त्री० चावल, दाल का भोजन।
कुरनस–पु० [तु० कुर्नुश] प्रणाम, अभिवादन।
कुरबक–पु० वस्त्र या चमडे के कटे हुए छोटे टुकडे, कतरन। –वि० कृपण, कजूस।
कुरपत, कुरपति–पु० [स० कुरु-पति] कौरव पति। दुर्योधन।
कुरपौ–पु० वस्त्र या चमडे का वेकार टुकडा।
कुरब–पु० १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। २ सत्कार। ३ राजा के दरवार मे आने पर राजा द्वारा हाथ उठाकर सम्मान देने की क्रिया या सकेत।
कुरपण–पु० [स० कुरवक] एक काटेदार पौधा।
कुरबरा–स्त्री० इज्जत प्रतिष्ठा।
कुरबांण (न)–वि० १ न्योछावर। २ वलिदान। –पु० एक प्रकार का धातु का बना बर्तन विशेष।
कुरबांणी (नी)–स्त्री० १ त्याग। २ वलिदान। ३ उत्सर्ग।
कुरव्व–देखो 'कुरव'।
कुरम (म्म)–देखो 'कूरम'।
कुरराव–पु० कुरुराव। कौरवराज, दुर्योधन।
कुररि, (री)–स्त्री० [सं० कुररी] १ मादा, भेड। २ एक पक्षी विशेष। ३ क्रौंच पक्षी। ४ आर्या छद का एक भेद।
कुररौ–वि० १ अप्रिय, कटु। २ कच्चा। ३ तीक्ष्ण। ४ देखो 'करवरौ'।
कुरळ–पु० लाल रग। –वि० लाल रग का, लाल।
कुरळणौ (बौ)–क्रि० १ दर्द से चिल्लाना। २ कराहना। ३ चीखना। ४ कलह करना। ५ रुदन करना, रोना। ६ व्याकुल होना। ७ कलरव करना, किल्लोल करना।
कुरळाट (टौ), कुरळाहट–पु० रुदन विलाप।
कुरळाणौ (बौ)कुरळावणौ (बौ)–देखो 'कुरळणौ' (बौ)।
कुरलौ–पु० [स० कुरल] १ गरारा, कुल्ला। २ आचमन। ३ देखो 'कडपौ'।
कुरवशी–पु० कुरुवशी, कौरव-पाडव।
कुरव–१ देखो 'कौरव'। २ देखो 'कुरब'।
कुरवावरत–पु० घोडे का एक अशुभ चिह्न।
कुरसी–स्त्री० [अ०] १ सिंहासननुमा बैठने एक आसन। चौकी। २ किसी इमारत की नीचे की सतह। ३ पीढी, वश। ४ पद। –नामौ–पु० वशावली। –बध–वि० सदा पास रहने वाला सेवक।
कुरस्तौ–पु० बुरा रास्ता, कुमार्ग।
कुरहाणौ (बौ), कुरहावणौ (बौ)–क्रि० [स० कुश्लाघनम्] १ नापसद करना। २ अवगुण वताना, दोप वताना। ३ वदनाम करना। ४ अपयश देना। ५ घृणा करना।
कुराड-स्त्री० १ बदचलन स्त्री। २ कलहगारी स्त्री।
कुराण (न)–पु० [अ० कुरान] मुसलमानो का प्रमुख धार्मिक ग्रंथ।
कुराणिन, कुराणी–पु० कुरान के अनुयायी, मुसलमान।
कुरापाती–वि० (स्त्री० कुरापातण) १ दुष्ट प्रकृति या स्वभाव वाला २ उपद्रव करने वाला। ३ उत्पाती।
कुरापिड–पु० चावल या आटे के पिंड।
कुरावणौ (बौ)–देखो कुरहाणौ' (बौ)।
कुराह–स्त्री० [स० कु + श्लाघा] १ अपयश, अपकीर्ति। निंदा। २ कुमार्ग, बुरी राह।
कुराही–वि० वदचलन। दुराचारी।
कुरिंद, कुरियद–पु० [स० कुध्र] १ पहाड। २ निर्धनता, गरीवी। ३ भील। [स० कुरुद्रेन्द्र] ४ रुद्र, महादेव। –वि० दरिद्र, निर्धन।
कुरियौ–पु० १ ऊट का वच्चा। २ देखो 'करवरौ'।

कुरी–पु० १ शत्रु, दुश्मन । २ दुष्ट, नीच । ३ एक प्रकार का घास ।

कुरीजणौ (बौ)–क्रि० चित्रित होना, रेखांकित होना, कोरा जाना । २ मडित होना, खींचा जाना ।

कुरीति–स्त्री० १ कुप्रथा । २ गलत परपरा ।

कुरु–पु० [स०] १ दिल्ली के आस पास का एक प्राचीन प्रदेश । २ उक्त प्रदेश का राजा । ३ देखो 'कौरव' । —**ईस, नाथ** –पु० कुरु राज । युधिष्ठर, दुर्योधन । भीष्म । -**खेत, खेत्र, (त्रि)**–पु० एक प्राचीन प्रदेश । एक तीर्थ स्थान । कुरुक्षेत्र । —**दळ**–पु० कौरव सेना ।

कुरुकुत्तौ–पु० जंगली कुत्ता विशेष ।

कुरुख–पु० बेरुखी, नाराजगी ।

कुरुगुट्ट–पु० [सं० कुक्कुट] मुर्गा ।

कुरुजगल–पु० पाचाल के पश्चिम का एक प्रदेश ।

कुरुदेव कुरुनरिंद–पु० १ भीष्म । २ कुरुनरेश ।

कुरुव–१ देखो 'कौरव' । २ देखो 'कुरव' ।

कुररी–पु० १ मच्छी खाने वाला एक प्रकार का पक्षी । २ देखो 'कुररी' ।

कुरुल–पु० [स० कुरल] घाकुरे केश बाल ।

कुरू–पु० एक प्रकार का जगली काला कुत्ता जिसका मु ह लवा होता है ।

कुरूड़ौ–पु० कूए पर कार्य करने वाला । –वि० बुरा ।

कुरूप–वि० [स०] बदसूरत, बदशक्ल । भद्दा, बेडौल ।

कुरूपत (ति)–देखो 'कुरपति' ।

कुरूपता–स्त्री० बदशक्ल होने की अवस्था या भाव । भद्दापन ।

कुरेमौ–पु० एक प्रकार का व्यजन ।

कुरेस, कुरेसी–स्त्री० मुसलमानो की एक जाति ।

कुरोगी–वि० भयकर रोग से पीडित ।

कुलक कुलग–पु० [फा० कुलग] १ लाल शिर व मटमैले रग का पक्षी । २ शिर पर वार करने का हथियार विशेष । ३ मुर्गा ।

कुलछण–पु० १ अपराधियो व दासो को दागने का उपकरण । २ देखो 'कुलक्षण' ।

कुलंजन–पु० [स०] १ अदरक की जाति का एक पौधा । २ नागरबेल की जड ।

कुळ (कुल)–पु० [स० कुल] १ वश, खानदान । २ जाति गोत्र । ३ घर, घराना । ४ घर, मकान । ५ स्थान । ६ झुड, समूह । ७ सघ । ८ देश । ९ शरीर । १० अग्र भाग । ११ समुदाय । १२ तत्र के अनुसार भौतिक तत्त्व । १३ संगीत मे एक ताल । १४ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम । —**ऊधोर**–वि० वश का गौरव बढाने वाला । —**कटक**–वि० परिवार का दु खदायी । —**करता (त्ता)**–वि० कुल या वश का सस्थापक । –पु० आदि पुरुष । —**काण**–स्त्री० वश का गौरव । —**काट**–वि० कुल को कलकित करने वाला ।—**किरण**–पु० सूर्य वश । —**कु डळिणी (नी)**–स्त्री० तत्रानुसार एक महाशक्ति । —**क्षय, खपक, खायक**–त्रि० कुल का क्षय करने वाला । –स्त्री० मछली । —**गाम, गांव**–पु० छोटा ग्राम । —**गुर, गुरु (रू)**–पु० वश का गुरु, पुरोहित । —**चार, चाळौ**–पु० वश मर्यादा के अनुसार कार्य । —**जा**–स्त्री० पुत्री । —**डसण**–पु० एक प्रकार का महाविषैला सर्प । —**थम**–पु० कुल स्तम्भ, कुल रक्षक । —**दीत**–पु० श्रीराम । —**देव, देवता**–पु० वश परम्परा से माना जाने वाला देव । —**देवी**–स्त्री० वश परम्परा से पूज्य देवी, कुल की देवी । —**ध**–स्त्री० श्रेष्ठ कुलीन । –**धर**–पु० वश का नाम चलाने वाला,पुत्र । –**नायिका**–स्त्री० वाम मार्ग मे पूजी जाने वाली स्त्री । —**पत, पति**–पु० घर का मालिक । सरदार । अधिष्ठाता । वश का गौरव रखने वाला । महत ।—**पाति**–स्त्री० वश । —**पाजा, पाजू**–स्त्री० कुल की प्रतिष्ठा । —**बधू बहू**–पु० कुलीन स्त्री । घर की नव वधू । —**बाहिरौ**–वि० कुल हीना । जाति बहिष्कृत । —**ब्रती**–स्त्री०–कुल का व्यवहार । —**भऊ**='कुळबधू' । —**भाण**–पु० कुल दीपक । सूर्य वश । —**भार**–वि० वश का उत्तरदायित्व लेने वाला । —**मंड, मडण**–स्त्री० अग्नि –वि० कुल मे श्रेष्ठ व्यक्ति । —**लोक**–स्त्री० वश परम्परा । वश गौरव । —**वट (वट्ट)**–स्त्री० वश परम्परा । वश गौरव । —**वधू, वहू**='कुळवधू' । —**वाट**='कुळवट' । —**सार**–पु० कुलधर्म । कुलरीति । –**स्वासणी**–स्त्री० पुत्री । –**हांणी**–स्त्री० कुल का विनाश ।

कुल–वि० [अ०] सब, समस्त, सम्पूर्ण, पूर्ण, पूरा ।

कुळक–स्त्री०१ खुजली, पीडा । २ रति क्रीडा की प्रबल इच्छा । –पु० [स०] २ किसी गुट का प्रधान । २ बाबी । ३ समूह । ४ जोडा (सेट) ।

कुलकत–स्त्री० गायन की मधुर ध्वनि ।

कुलक्खण, कुलखण–पु० [सं० कुलक्षण] १ बुरा लक्षण । २ बुरी आदत । ३ बुरा चिह्न । ४ अवगुण, ऐब ।

कुलक्खणौ, कुलखणौ-वि० (स्त्री० कुलखणी) १ बुरी आदतो वाला । २ दुराचारी । ३ अवगुणी ।

कुळगच्छ (चि,छि)कुळगुचियौ–पु० १ चिकना ककड । २ कुरज ।

कुलड, कुलडियौ, कुलडौ–पु० [सं० कुम्भक] मिट्टी का छोटा पात्र, कुल्हड ।

कुलच–पु० अवगुण, दोष, कुलक्षण ।

कुलचौ–पु० पिछले पैर से लगडा कर चलने वाला ऊट ।

कुलच्छवंत, कुलच्छणी–देखो 'कुलखणी' । (स्त्री० कुलच्छणी) ।

कुलछ, कुलछण–देखो 'कुलच' ।

कुळट (टा)–स्त्री० [स० कुलटा] १ व्यभिचारिणी स्त्री । २ नृत्य मे पैरो की एक मुद्रा । ३ वेश्या । ४ घोडे की एक चाल । ५ नृत्य, नाच । ६ टेढी आकृति । ७ जमीन, भूमि । –वि० चचल॥ ।

कुलटाई–स्त्री० नीचता, दुष्टता । बुराई ।

कुळणी (बौ)–क्रि० टीस मारना, दर्द करना ।

कुलत–स्त्री० बुरी आदत, ऐब । अवगुण ।

कुलतियौ–वि० बुरी आदत वाला, ऐबी । अवगुणी ।

कुळत्थ, कुळथ–१ देखो 'कुलत' । २ देखो 'कुलथी' ।

कुळथी (थो)–स्त्री० उरद की तरह का एक मोटा अन्न ।

कुळथ्यौ–पु० कुलथ के रंग का घोडा ।

कुळदातरी–स्त्री० श्याम रग की चिडिया ।

कुळदेवली–देखो 'कुळदेवी' ।

कुळनास (नास)–पु० ऊट ।

कुलप (फ)–पु० १ ताला । २ पालतू चीतो की आखो पर बाधने की पट्टी । ३ मोट को लाव से जोडने का कडा ।

कुलफी–स्त्री० १ मीठा पानी, दूध या रबडी का वैज्ञानिक तरीके से जमाया हुआ खण्ड । २ पेंच ।

कुळबधु–स्त्री० मर्यादा मे रहने वाली स्त्री ।

कुलबसणी (बौ)–क्रि० १ छोटे जीवो के हिलने-डुलने से आहट होना । २ व्याकुल होना । ३ चचल होना ।

कुलबै–क्रि० वि० गुप्त रूप से ।

कुळमी–पु० १ एक कृषक जाति । २ इस जाति का व्यक्ति ।

कुलय (या)–स्त्री० [स० कुल्या] १ छोटी नदी । २ नदी ।

कुळराईजणी (बौ)–क्रि० व्याकुल होना, आतुर होना ।

कुलल–पु० [स० कलिल] पाप ।

कुलळी–वि० (स्त्री० कुलळी) १ असभ्य गवार । २ अश्रेष्ठ । ३ अश्लील । –पु० फूहडबोलचाल, गाली ।

कुळवत (ति, ती, वान)–वि० [स० कुलवान्] (स्त्री० कुलवती) श्रेष्ठ कुल का कुलीन ।

कुलवट–पु० कुटुम्ब के रीति रश्म कुटुम्ब के शुभगुण ।

कुलवै–देखो 'कुलबै' ।

कुळसकुळ–पु० [स० कुल सकुल] एक नरक का नाम ।

कुळस–पु० [स० कुलिश] वज्र ।

कुळसणी–देखो 'कुलखणी' (स्त्री० कुलसणी) ।

कुळसिणगार (री)–वि० कुल मे श्रेष्ठ, कुल को सम्मानित करने वाला ।

कुळसुद्ध (सुध)–वि० उच्च कुल का, कुलीन । –पु० उच्चकुल, श्रेष्ठ कुल ।

कुळाच (छ)–स्त्री० छलाग, कुदान, फलाँग ।

कुळाकुळ–पु० [स० कुलाकुल] तन्त्र के अनुसार कुछ निश्चित नक्षत्र, वार और तिथिया ।

कुळाच (छ)–देखो 'कुलाच' ।

कुळाचणी (बौ)–क्रि० छलाग, मारना, कूदना ।

कुळाचल–पु० एक पर्वत का नाम, कुल पर्वत ।

कुळातरौ–पु० १ मकडी नामक जीव । २ मनुष्य के ओठो का एक रोग । ३ देखो 'कातरौ' ।

कुळाध्रम (म्म)–देखो 'कुळधरम' ।

कुळाबौ–पु० १ कपाट के चूल का कडा । २ हुक्के की नलिका का बद । ३ तलवार की मूठ की धनुषाकार शलाका ।

कुळायतौ–देखो 'कुळातरौ' ।

कुलाळ–पु० [स० कुलाल] १ कुम्हार, कुम्भकार । २ ब्रह्मा, विधाता । ३ जगली मुर्गा, हुक ।

कुलालच–पु० अतिशय लोभ ।

कुलालची–वि० अत्यन्त लोभी (बुरा) ।

कुलाळी–स्त्री० दूरबीन ।

कुळावळ–स्त्री० सधिस्थानो मे होने वाली ग्रथि ।

कुळाह–पु० [स० कुलाह] १ घुटने के नीचे से काले पैरो वाला भूरा घोडा । २ श्वेत घुटने का पीला घोडा ।

कुळाहळ–देखो 'कोलाहळ' ।

कुलिंग (क)–पु० १ एक प्रकार की चमकीली नर चिडिया । २ चटकचिडा ।

कुलिजन–देखो 'कुलजन' ।

कुळि–१ देखो 'कुळ' । २ देखो 'कुळी' ।

कुळि–गांमडौ–पु० छोटा ग्राम ।

कुलित–वि० निन्दनीय, कुत्सित ।

कुळि–मड–वि० कुल रक्षक । –स्त्री० अग्नि, आग ।

कुळियौ–पु० १ धूल का गुब्बारा । २ स्त्री पुरुष के गुप्तेन्द्रिय के आगे का उभरा हुआ भाग ।

कुलिर–देखो 'कुलीर' ।

कुळिस–पु० [स० कुलिश] १ इन्द्र का वज्र । २ नोक । ३ हीरा । ४ बिजली । ५ कुठार । ६ गर्जन, गाज । —**कोण**–पु० छ की सख्या॥ । —**ज्वर**–पु० घोडे का एक रोग । —**धर**–पु० इन्द्र ।

कुळिसी–स्त्री० एक देवोक्त आकाशीय नदी ।

कुळी–पु० [तु० कुली] १ यात्रियो का सामान ढोने वाला मजदूर । २ गूदा, मिगी । ३ बीज, दाना । ४ पुष्प, फूल । ५ तरबूज के आकार का एक लता-फल । ६ कृषि भूमि को उर्वरक व पोली बनाने का उपकरण । ७ देखो 'कुळ' —**नस**–पु० जल, पानी ।

कुळीक (ण, न)–वि० [सं० कुलीन] १ वंश का, वंश संबंधी। २ उच्च वंशीय। –पु० अच्छी नस्ल का घोडा। –ता–स्त्री० उत्तम कुल के लक्षण।

कुलीर–पु० [सं०] १ केंकडा, कर्क। २ कर्क राशि।

कुळु–देखो 'कुळ'।

कुळेस–देखो 'कुळिस'।

कुलोक–पु० १ बुरा आदमी। २ बुरा लोक।

कुल्यकका, कुल्यकर, कुल्या–स्त्री० [सं० कुल्यकपा कुल्या] नदी।

कुल्लो–पु० [सं० कुरल] १ मुंह साफ करने के लिए मुंह में भरा जाने वाला पानी। २ उक्त प्रकार से पानी भर कर थूकने की क्रिया। ३ आचमन।

कुल्हड, कुल्हडियो, (ड़ो)–पु० मिट्टी का छोटा पात्र।

कुल्हाड़ो–पु० कुठार, गडासा।

कुवक पु० टेढापन, वाकापन।

कुवडी–स्त्री० छोटा कूआ।

कुवच (वचन)–पु० १ कटुवचन। २ अपशब्द।

कुकवज–देखो 'कमलज'।

कुवजा–स्त्री० कुब्जा।

कुवट–पु० बुरा रास्ता, बुरा पथ।

कुवटो–पु० कूआ।

कुवयण–देखो 'कुवचन'।

कुवरपद (पदो)–देखो 'कुंवरपद'।

कुवंळ–पु० [सं० कुवल] १ कमल विशेष। २ मोती।

कुवलय–पु० [सं० कुवलयम्] १ नील कमल। २ पृथ्वी। ३ कमल।

कुवलयापीड–देखो 'कुवलयापीड'।

कुवळयास्व–देखो 'कुवलयास्व'।

कुवळी–स्त्री० [सं० कुवली] बेरी।

कुवल्यापीड़–देखो 'कुवलयापीड'।

कुवा–स्त्री० कावेरी नदी का प्राचीन नाम।

कुवांण–स्त्री० [फा०कवाण] १ कमान, धनुष। २ तलवार। [सं०कु+वाच्] ३ कुवाक्य। ४ बुरी आदत।

कुवाड़–देखो 'कपाट'।

कुवाड़ियाफाड़–वि० १ बकवादी। २ कटुभाषी। ३ कुल्हाड़ी से फाड़ा हुआ।

कुवाड़ियो, कुवाड़ी, कुवाडो–देखो 'कवाडियो'।

कुवाच–देखो 'कुवच'।

कुवाट–स्त्री० १ कुमार्ग, बुरा पथ। २ देखो 'कपाट'।

कुवादोवाद–पु० शत्रु।

कुवाव–स्त्री० विपरीत हवा।

कुवेळा–स्त्री० १ असमय, बुरा समय। २ संकट कालीन स्थिति।

कुवो–पु० [सं० कूप, सं० कवल] १ कूआ, कूप। २ ग्रास, कौर।

कुसंग (संगत)–स्त्री० १ बुरी संगति, बुरी सोहबत। २ बुरे लोगो से मित्रता।

कुसंगी–वि० १ बुरा संग करने वाला। २ बुरे लोगो में बैठने वाला।

कुसंप–पु० द्वेष, वैर, वैमनस्य।

कुसंस्कार–पु० बुरे संस्कार, बुरी भावना।

कुस–पु० [सं० कुश] १ जल। २ एक पवित्र घास, तृण, दर्भ, डाभ। ३ सात द्वीपो में से एक। ४ लोहे का लम्बा व नुकीला कीला। ५ फाल, कुसिया, कुसी। ६ श्रीराम के बडे पुत्र का नाम। –वि० १ मस्त, मतवाला। २ पापी। —कुंडिका–स्त्री० वेदी पर अग्नि स्थापना का अनुष्ठान। —ताळु–पु० मस्तक पर काले चकत्ते वाला घोडा। —वीप, द्वीप–पु० सात द्वीपो में से एक। —द्धज, धुज, ध्वज–पु० राजा जनक के छोटे भाई।

कुसड़ो–पु० कूए पर काम करने वाला।

कुसती–वि० १ पतिता, कुल्टा। २ असत्यवादी। ३ कायर, डरपोक। ५ देखो 'कुस्ती'।

कुसनेही–वि० १ कपटी, छलिया। २ अहितैषी।

कुसब–वि० [सं० कुशुभ] अशुभ।

कुसम (क)–पु० [सं० कुसुम] १ फूल, पुष्प। २ लाल फूल। ३ आख का एक रोग। ४ रजोदर्शन। ५ एक मात्रिक छन्द विशेष। ६ छप्पय का साठवा भेद। ७ ठगण का छठा भेद।

कुसमगर–पु० कुसुमो का ढेर।

कुसमद–पु० पेड, वृक्ष।

कुसमळप्रिय–पु० भौंरा, भ्रमर।

कुसमसर–पु० [सं० कुसुमशर] कामदेव।

कुसमांडा–स्त्री० १ नौ दुर्गाओ में से एक। २ शिव का एक अनुचर। ३ कुम्हडा।

कुसमाक (र) कुसमागर–पु० [सं० कुसुम+आगर] १ कुसुमो का घर। २ वसंत।

कुसमाद–पु० १ फूल वाले वृक्ष या पौधे। २ धूर्तता, चालाकी।

कुसमायुध देखो 'कुसुमायुध'।

कुसमाळय–पु० भौंरा, भ्रमर।

कुसमावळत–पु० [सं० कुसुमावर्त] वसंत।

कुसमावळी–पु० [सं० कुसुमावलिट्] भौंरा, भ्रमर।

कुसमाहिम–पु० चंपा।

कुसमित–वि० १ प्रफुल्लित। २ फूलो से पूर्ण।

कुसमै–क्रि० वि० [सं० कु+समा] कुसमय, बुरे समय।

कुसम्मो–पु० [सं० कु+समा] १ दुर्भिक्ष, दुष्काल। २ बुरा समय।

कुसराणौ (बौ), कुसरावणौ (बौ)–क्रि० दोष बताना, अप्रशंसा, करना। निंदा करना, भर्त्सना करना।

कुसळ–वि० [सं० कुशल] चतुर, दक्ष, निपुण, श्रेष्ठ, भला। –पु० १ कुशल-मंगल, खैरियत। २ शिव का एक नाम। –**खेम**–स्त्री० खैरियत। –**ता**–स्त्री० चतुराई, निपुणता। योग्यता। खैरियत। –**पाग**–पु० मोर, मयूर। –**समाध**–स्त्री० कुशल-मंगल।

कुसळा, कुसळाई, कुसळात, कुसळाता, कुसळायत–देखो 'कुसळता'।

कुसळी–स्त्री० [सं० शकुली] मछली।

कुसवावळ–स्त्री० [सं० कुसुमावली] १ पुष्प, कुसुम। २ पुष्प माला।

कुससयळी, (स्थळी)–स्त्री० द्वारका का एक नाम।

कुसागडो–पु० अकुशल गाडीवान।

कुसाग्र–वि० [सं० कुशाग्र] १ नुकीला, पैना। २ तीक्ष्ण तेज। –पु० कोरडा चाबुक।

कुसामद–देखो 'खुशामद'।

कुसामदी–देखो 'खुशामदी'।

कुसावरत–पु० हरिद्वार के पास का एक तीर्थ।

कुसासन–पु० १ कुश का आसन। २ बुरा शासन।

कुसिक–पु० [सं० कुशिक] १ एक प्राचीन आर्य वंश। २ हल का फाल।

कुसियो–पु० स्वर्णकारो का एक औजार विशेष।

कुसी–स्त्री० १ घास काटने का औजार। २ वीणा। ३ देखो 'खुसी'।

कुसीक–क्रि०वि० खुशी से।

कुसीलि, कुसील, कुसीलो–वि० [सं० कुशील] १ दुराचारी, पतित। २ आचार मर्यादा को भंग करने वाला (जैन)।

कुसुम, कुसुंमी–वि० लाल रंग का, लाल।

कुसुधउ–पु० अपशकुन।

कुसुम–वि० १ लाल, रक्त वर्ण। २ कोमल। ३ देखो 'कुसम'।

कुसुमायुध–पु० [सं०] १ कामदेव। २ कामदेव का बाण।

कुसू–पु० केंचुआ।

कुसेसय–पु० [सं० कुशेशय] कमल।

कुसोभा–वि० अपयश, अपकीर्ति।

कुस्ट–पु० [सं० कुष्ठ] रक्त विकार जनित एक रोग।

कुस्तमकुस्ता–पु० गुत्थमगुत्था, लडाई मुठभेड।

कुस्ती–स्त्री० [फा० कुश्ती] १ मल्ल युद्ध। २ द्वन्द्व युद्ध। ३ दो व्यक्तियो की लडाई। ४ दगल। –**गीर, बाज**–पु० पहलवान, दगली। योद्धा।

कुस्तो–पु० [फा० कुश्त] रासायनिक क्रिया द्वारा धातुओ को फूंककर बनाई गई भस्म।

कुस्याळी–स्त्री० खुशहाली, खैरियत।

कुस्त्री–स्त्री० [सं०] बुरी या कलह प्रिय स्त्री।

कुस्रती–स्त्री० [सं० कुसृति] १ ठगाई, धूर्तता। २ माया, इन्द्रजाल।

कुस्वारथ–पु० [सं० कु + स्वार्थ] अहित, बुरा स्वार्थ।

कुस्सम–देखो 'कुसम'।

कुह–स्त्री० [सं० कुहू] १ मधुर स्वर या ध्वनि। २ अमावस्या। ३ कोयल की बोली। ४ पक्षियो की ध्वनि। [सं० कुह] ५ कुबेर।

कुहक– [सं० कुहक] १ माया, इन्द्रजाल। २ धोखा, छल। ३ धूर्तता, मक्कारी। ४ मेढक। ५ नाग विशेष। ६ एक अस्त्र विशेष। ७ मुर्गा। ८ मदारी। ९ ऐन्द्रजालिक। १० नाजायज हक। ११ मोर या कोयल की आवाज। १२ भय। –वि० धूर्त, ठग। –**बांण**–पु० एक बाण विशेष। अग्निबाण। एक तोप विशेष।

कुहकणी–स्त्री० १ कोयल। २ कफोणि, कोहनी।

कुहकणौ (बौ)–क्रि० १ कोयल का बोलना। २ पक्षियो का चहकना।

कुहक्क, कुहक्कडो–पु० १ जोर की आवाज, आवाज। २ करुण क्रदन। ३ रुदन, विलाप।

कुहड़ि–देखो 'कूड'।

कुहटणौ (बौ)–क्रि० बधन मे करना, बाधना।

कुहटाऊ–पु० हुक के समान एक उपकरण।

कुहणि (नी)–स्त्री० [सं० कफोणि] कोहनी।

कुहन–वि० मक्कार। ईर्ष्यालु। –पु० [सं० कुहन,] १ चूहा। २ साप। [सं० कुहनम्] ३ मिट्टी का पात्र। ४ शीशे का पात्र।

कुहनी-उडान–पु० कुश्ती का एक पेच।

कुहर–पु० [सं० कुहर] १ अमावस्या की रात। २ अमावस्या की देवी। ३ प्लक्ष द्वीप की एक नदी। ४ अंधेरा। ५ पाताल। ६ कुहरा। ७ कूआ। ८ रध्र, छिद्र। ९ गुफा, बिल।

कुहाडउ, कुहाडो–पु० [सं० कुठार] १ विध्वसक। २ विरुद्ध। ३ कुल्हाडी।

कुहींक–वि० कुछ, कुछेक।

कुही–स्त्री० १ एक शिकारी पक्षी। २ एक घोडा विशेष।

कुहु, (हू)–स्त्री० [सं० कहु., कहू] १ अमावस्या, अमावस। २ अमावस्या की देवी। ३ अमावस्या की रात्रि। ४ कोकिल की कूक।

कुहूक-स्त्री० १ कोकिल या मोर की आवाज। २ देखो 'कुहक'।

कू–अव्य० द्वितीया विभक्ति, को, षष्टि विभक्ति, की। –वि० कुछ। –सर्व० कोई।

कूंग्रर–१ देखो 'कुमार'। २ देखो 'कुमारी'।
कूग्ररी–देखो 'कुमारी'।
कूंकडो–पु० १ ऊंट के मस्तक का एक रोग। २ एक प्रकार का घोडा। ३ मुर्गा।
कूंकरण–देखो 'कुंकरण'।
कूंकरणौ (बौ)–देखो 'कूकरणौ' (बौ)।
कूंकतडी–देखो 'कुंकमपत्री'।
कूंकम–देखो 'कुंकम'।
कूंकावटी–पु० कंकुम का पात्र।
कूंकूं–पु० कुंकुम। —**पत्री**–स्त्री० विवाह का निमंत्रण-पत्र। —**वरणी**–वि० कुंकुम के रंग की।
कूंक्कय–देखो 'कुंकुम'।
कूंख, (खि, खो)–देखो 'कुक्ष'।
कूंखौ–पु० १ काला पदार्थ विशेष (जैन)। २ देखो 'कूंगचौ'।
कूंगचौ (सौ), कूंगौ–पु० इमली का बीज।
कूंघौ–पु० इमली का बीज।
कूंच–देखो 'कूच'।
कूंचला–पु० दाढ व सामने के दांतो के बीच के दांत।
कूंची (य)–स्त्री० १ ताले की चाबी, ताली। २ छोटा ब्रुश। ३ मकान की पुताई करने का झाडू। ४ ऊंट का चारजामा। ५ ऊंट का शिश्न। ६ अर्गला खोलने का उपकरण। ७ गूढ विषय या रहस्य समझने की विधि। ८ जड क्रीडा का एक प्रकार। —**कस**–पु० चाबियां डालने की कडी।
कूंचौ–पु० १ छोटा मार्ग, गली। २ वनस्पति समूह। ३ एक प्रकार का तृण विशेष जिसकी सरकी या मूंज बनती है।
कूंज–पु० १ एक मिट्टी का बर्तन विशेष। २ देखो 'कुरज'।
कूंजडा–स्त्री० सब्जी बेचने वाली जाति विशेष।
कूंजड़ि (डी)–१ देखो 'कुरज'। २ देखो 'कूंजडौ' (स्त्री)।
कूंजडौ–पु० (स्त्री० कूंजडी) कूंजडा जाति का व्यक्ति।
कूंजरणौ (बौ)–देखो 'कूजरणौ' (बौ)।
कूंजा-बरदार–पु० पानी पिलाने वाला सेवक।
कूंझ, (झी)–देखो 'कुरज'।
कूंट–स्त्री० १ कोरण, दिशा। २ किनारा, छोर। ३ ऊंट के पैर का बंधन। ४ देखो 'कूंटी'। —**कूंटाळौ**–वि० चित्रित। कोनेदार। —**दार**–स्त्री० एक प्रकार की जूती विशेष।
कूंटरणौ (बौ)–क्रि० १ ऊंट का एक पैर मोड कर बांधना। २ बंधन में रखना। ३ ऊंट के पैरों में बंधन डालना। ४ बांधना।
कूंटाळौ–देखो 'कूंटदार'।
कूंटियो–पु० १ अंकुश, अंकुश नुमा कीला। २ देखो 'कूंटी'।
कूंटी–स्त्री० किसी की वेशभूषा, स्वांग। रहन-सहन, हाव-भाव का ज्यों का त्यों अनुकरण।
कूंटौ, कूंठ, कूंठौ–पु० [सं० कुण्ठ] १ दरवाजे का कुन्दा। २ द्वार बंद का ताला लगाने की शृंखला। ३ जंजीर की कडी। ४ दाढ और सामने के दांत के मध्य का दांत। ५ लकडी आदि छीलने व काटने का ओजार।
कूंड–पु० १ लोहे का टोप। २ देखो 'कुण्ट'।
कूंडळ–देखो 'कुंडळ'।
कूंडळी–पु० १ घोडा। २ देखो 'कुंडळी'।
कूंडळौ–देखो 'कुंडळ'।
कूंडाळी–देखो 'कुंडाळी'।
कूंडाळिय, कूंडियै–स्त्री० वृत्ताकार घूमने या घुमाने की क्रिया।
कूंडाळियौ–देखो 'कूंडौ'।
कूंडियौ–पु० [सं० कुंड] १ घेरा, वृत्त। २ गोल मैदान। ३ चक्र। ४ चौडे मुंह का मिट्टी का पात्र। ५ घोडे को गोल घुमाने की क्रिया। ६ गोल घुमाने से बनने वाला चिह्न। ७ देखो 'कूंडौ'।
कूंडी–स्त्री० [सं० कुंडी] १ घोडा। २ मिट्टी या पत्थर का गोल चौडा पात्र। ३ अग्निहोत्र करने का स्थान। ४ जंजीर की कडी।
कूंडौ–पु० [सं० कुंड] १ लोहे या मिट्टी का चौडा व गोल पात्र। २ कुण्ड। ३ वृत्त, घेरा।
कूंढळी–देखो 'कुंडळी'।
कूंढी–स्त्री० १ गोल सींगो वाली भैंस। २ देखो 'कूंडी'।
कूंरण–१ देखो 'कूरण'। २ देखो 'कुरण'।
कूंरणी–देखो 'खुंरणी'।
कूंत(डी)–स्त्री० १ पांडु की पत्नी, कुंती। २ करामात, चमत्कार। ३ तंत्र। ४ अनुमान, अंदाज। ५ अक्ल, बुद्धि। ६ भाला, बरछी। ७ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। ८ कीर्ति, यश।
कूंतरणौ (बौ)–क्रि० १ अनुमान करना, अंदाज करना। २ नाप-तौल निर्धारित करना।
कूंतळ–देखो 'कुंतळ'।
कूंतहर–पु० भाला, बरछी।
कूंता–देखो 'कुंती'।
कूंताई–स्त्री० १ 'कूंतौ' करने की क्रिया या ढंग। २ इसका पारिश्रमिक। ३ एक देशी खेल।
कूंतारणौ (बौ)–क्रि० १ अंदाज या अनुमान कराना। २ माप-तौल तय करवाना।
कूंति (ती)–देखो 'कुंती'।
कूंतौ–पु० १ खडी फसल का तय किया जाने वाला परिणाम। २ अंदाज, अनुमान।
कूंथवौ, कूंथुवौ–पु० एक त्रीन्द्रीय अति सूक्ष्म जीव। (जैन)

कूंद–स्त्री० गोल लकडी के बने चक्र पर लबा पडा रहने वाला लट्ठा जिसके एक सिरे पर वैल जोते जाते हैं ।

कूंवडो, कूंदवौ–पु० घास का छोटा ढेर ।

कूंन–१ देखो 'कूण' । २ देखो 'कुण' ।

कूंपळ (ळो)–पु० [स० कुपल्लव] १ वृक्ष या पौधे की नई पत्ती । २ अंकुर । ३ पसलियो के सधिस्थल पर रहने वाली छाती की हड्डी ।

कूंपल, (ली, लौ)–पु० स्त्रियो को काजल रखने की काष्ठ की डिबिया ।

कूंपळणौ (बौ)–क्रि० वृक्षो, पौधो का पल्लवित या अंकुरित होना ।

कूंपी–स्त्री० तेल की कुप्पी ।

कूंपू–स्त्री० [स० कपनी] सेना, फौज ।

[illegible] ० मस्तक, शिर ।

कूंवरी–वि० कोमलागी ।

कूंभ–देखो 'कुंभ' । –**कळस**–देखो 'कुंभकळस' । —**सभ्रम** देखो 'कुंभसभ्रम' ।

कूंभख–देखो 'कुंभक' ।

कूंभट–पु० एक प्रकार का काटेदार वृक्ष ।

कूंभाथ, कूंभाथळ (ळौ)–देखो 'कुंभस्थळ' ।

कूंभार–देखो 'कुंभार' ।

कूंभिला–स्त्री० एक देवी विशेष ।

कूंभौ–देखो 'कुंभ' ।

कूंम–देखो 'कौम' ।

कूंयर (र)–देखो 'कुमार' (स्त्री० कूंयरी) ।

कूंयार–देखो 'कुमार' ।

कूंयारि (री)–देखो 'कुमारी' ।

कूंळ–पु० कमल ।

कूंळौ–देखो 'कवळौ' । (स्त्री० कूंळी) ।

कूंवळी–देखो 'कवळी' ।

कूंस–वि० दुष्ट ।

कूंहटौ–देखो 'कूंटौ' ।

कू–पु० १ कूआ । २ राजा । ३ कुंभ । ४ कारण । ५ कार्य । ६ द्रव्य । ७ प्रकाश । ८ कूजने का शब्द । ९ भूमि । –वि० १ गम्भीर । २ मद । –अव्य० द्वितीय विभक्ति का चिह्न, का ।

कूअत (ति)–स्त्री० [अ० कुअत] बुद्धि ।

कूअळउ (ळौ)–देखो 'कवळौ' (स्त्री० कूअळी) ।

कूई–स्त्री० छोटा कूप ।

कूऔ–पु० कूप ।

कूक–स्त्री० १ चिल्लाहट, चीख । २ पुकार, फरियाद । ३ लम्बी आवाज । ४ रुदन । ५ कराह । ६ त्राहि-त्राहि । ७ कोयल की बोली । ८ हल्ला ।

कूकड़–पु० [स० कुक्कुट] मुर्गा, कुक्कुट । —**कंध, कंधौ**–पु० मुर्गे की गर्दन की आकृति वाला घोडा ।

कूकडली–स्त्री० एक बरसाती पौधा जिसके पत्तो का साग बनता है ।

कूकड़लौ– १ देखो 'कुकडनौ' । २ देखो 'कूकडौ' । ३ देखो 'कोकडी' ।

कूकडियौ, कूकडीयौ–१ देखो 'कूकडौ' । २ देखो 'कोकडी' ।

कूकडौ–पु० [स०कुक्कुट] १ सोने-चादी को गलाने का पीतल का गोला । २ मुर्गा । ३ पशुओ के शिर का एक रोग । ४ ऊट के कठ का एक रोग । ५ लोकगीत विशेष ।

कूकणौ (बौ)–क्रि० १ चिल्लाना, चीखना । २ त्राहि-त्राहि करना । ३ रोना । ४ कराहना । ५ पुकार या फरियाद करना । ६ हल्ला करना । ७ लम्बी आवाज करना । ८ कोयल, मोर आदि का बोलना ।

कूकबौ–देखो 'कूकवौ' ।

कूकर, (डो) कूकरियौ, कूकरौ–पु० [स० कुक्कुर] १ श्वान, कुत्ता । २ छोटा कुत्ता । ३ कुती का बच्चा । –**खासी**–स्त्री० सूखी या काली खासी । —**बगरौ, भागरौ**–पु० बरसात मे होने वाली एक जड ओषधि, ककरौंधा ।

कूकवौ–पु० दर्द भरी आवाज, त्राहि-त्राहि ।

कूकस–देखो 'कुकस' ।

कूका–स्त्री० नानकशाही सम्प्रदाय की एक शाखा ।

कूकाऊ–वि० आर्त पुकार करने वाला । रोने वाला । त्राहि त्राहि करने वाला ।

कूकाणौ (बौ)–क्रि० १ कूकने या चीखने के लिए मजबूर करना । २ रुलाना । ३ हल्ला कराना । ४ पुकार या फरियाद कराना । ५ लम्बी आवाज कराना ।

कूकारोळ, कूकारोळौ–पु० चीख-चिल्लाहट । रोना-धोना रुदन । हल्ला ।

कूकियौ–पु० १ चीत्कार, चीख । २ हल्ला ।

कूकी–स्त्री० लडकी ।

कूकुल–पु० बर्फ, तुषार ।

कूकुआट (टौ)–पु० १ चिल्लाहट । २ आवाज, कोलाहल ।

कूकौ–पु० (स्त्री० कुकी) १ शिशु । २ लडका । ३ देखो 'कूक' ।

कूक्याऊ–देखो 'कूकाऊ' ।

कूख,कूखडली,कूखि–स्त्री० कुक्षि, कोख । –**धारण**–स्त्री० माता ।

कूड–पु० [स० कूट, कपटम्] १ झूठ, मिथ्या, असत्य । २ कुऐ के मुह पर लगा पत्थर जिस पर मोट खाली किया जाता है । ३ रहट मे लगने वाला एक काष्ठ का डंडा । ४ कुबडापन ।

५ ऊंट या बैल का ककुद । ६ कपट, छल ।—चाळौ-स्त्री० कपटी । मिथ्यावादी ।

कूड़मूड-अव्य० बिना किसी आधार के, झूठमूठ ।

कूड़ापण-स्त्री० झूठापन, असत्यता ।

कूडाबोलौ-वि० (स्त्री० कूडाबोली) मिथ्या भाषी ।

कूड़ियौ-पु० कुए पर घूमने वाले चक्र (भूण) की धुरी रखने की लकडी । २ ऊट के चमडे का कुप्पा ।

कूडौ-वि० (स्त्री० कूडी) १ झूठा, मिथ्यावादी । २ असत्य, गलत । ३ निकम्मा । ४ शैतान, जबरदस्त । ५ कपटी, छली, धोखेबाज । -पु० १ कचरा, करकट । २ बुरा समय । ३ कूआ । ४ कुटज । ५ देखो 'कूडौ' ।

कूच(उ)-पु०[तु०] १ रवानगी, प्रस्थान । २ फौज का प्रयाण । ३ ठुड्डी पर की दाढी । [स० कूर्च] ४ मृत्यु, मौत । ५ देखो 'कुच' ।

कूचबदिया-स्त्री० एक पिछडी जाति ।

कूचा-स्त्री० [फा०] सकरा रास्ता, गली ।

कूचील-वि० गदा, मैला ।

कूचीलौ-देखो 'कुचीलौ' ।

कूचौ-पु० १ नास, भूसा । २ मुहल्ला ।

कूजणौ (बौ)-क्रि० [स० कूज्] १ मधुर ध्वनि मे बोलना । २ चहकना ।

कूजा-पु० १ मोतिया या बेले का फूल । -स्त्री० २ क्रौंच पक्षी ।

कूजित-वि० [स०] ध्वनित ।

कूट-पु० [स०] १ अनाज का ढेर या संग्रह । २ हथौडा । ३ छल, कपट । ४ गुप्त वैर । ५ म्यान मे छुपा हथियार । ६ गुप्त रहस्य । ७ नगर का द्वार । ८ व्यंग । ९ अगस्त्य मुनि का एक नाम । १० आखों के ऊपर का भाग । ११ नकल, चिढाने का भाव । १२ किनारा । १३ शिखर । १४ ऊंट के पैर का बंधन । १५ पहाड । १६ वृक्ष । १७ एक औषधि विशेष । १८ कूटने-पीटने की क्रिया या भाव । १९ कुटी, झोपडी । -वि० १ झूठा । २ छलिया, कपटी । ३ दुष्ट । ४ बनावटी, नकली । —जुद्ध-पु० कपट युद्ध । राजनीतिक लडाई ।

कूटणउ-वि० [स० कूट्टनम्] दुर्वचन ।

कूटणौ (बौ)-क्रि० १ मारना, पीटना । २ आघात करना, चोट मारना । ३ किसी उपकरण के आघात से छोटे-छोटे खण्ड या बारीक टुकडे करना । ४ सिल या चक्की टाचना । ५ बंधन मे डालना ।

कूटपाठ-पु० मृदंग के चार अंगो मे से एक ।

कूटरउ (डौ)-पु० १ कूडा, कचरा । २ रद्दी कागजों की लुगदी ।

कूटि (टौ)-स्त्री० १ ऊंट के पैर का बंधन । २ देखो 'कूंटौ' ।

कूटौ-पु० १ रद्दी कागज या चिथडो की लुगदी । २ हरि मिर्च की सब्जी । ३ देखो 'कूंटौ' ।

कूठ-पु० कुष्ठ ।

कूठोड़-देखो 'कुठोड़' ।

कूड-पु० १ कुए के मुंह पर लगा पत्थर जिस पर मोठ खाली होता है । २ रहट मे लगने वाला काष्ठ का डंडा । ३ देखो 'कूड' ।

कूडीउ-वि० [स० कूटिक] कपटी, छली, धोखेबाज ।

कूडौ-पु० खलिहान मे पडा अनाज का ढेर ।

कूण-स्त्री० १ दिशा । २ कोना । ३ देखो 'कुण' ।

कूणन-स्त्री० [स० क्वणन] शब्द, ध्वनि ।

कूणिका-स्त्री० [स०] वीणा, सितार आदि तारो की खूटी ।

कूणी-देखो 'खूणी' ।

कूणौ-पु० कोना, कोण ।

कूत-पु० १ एक छोटा मच्छर । २ एक प्रकार की घास ।

कूतणौ (बौ)-देखो 'कूंतणौ' (बौ) ।

कूतर (ड़ौ)-१ देखो 'कुतर' । २ देखो 'कुत्तौ' ।

कूतरडौ-देखो 'कुत्तौ' । (स्त्री० कूतरडी)

कूतरियौ-वि० १ घास की कुट्टी करने वाला । २ देखो 'कुत्तौ' ।

कूतरौ, कूत्तिरौ, कूथरौ-देखो 'कुत्तौ' । (स्त्री० कूतरी)

कूदणी-स्त्री० बच्चो का एक खेल ।

कूदणौ-पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ कूदने की क्रिया या भाव । -वि० कूदने के स्वभाव वाला ।

कूदणौ (बौ)-क्रि० [स० कूर्दन] १ उछलना, छलाग लगाना, फादना । २ उछल कर नीचे आना । ३ अत्यन्त प्रसन्न होना । ४ गुस्से मे तमकना । ५ लाघना, पार करना । ६ एकाएक हस्तक्षेप करना ।

कूदायण-स्त्री० कूदने या छलाग मारने का भाव ।

कूदारण-स्त्री० कुदाली ।

कूधर-पु० [स०] पर्वत, पहाड ।

कूप (क)-पु० [सं०] १ कूआ । २ गड्ढा । ३ छेद । ४ नदी के बीच अवस्थित वृक्ष या चट्टान । ५ मस्तूल । ६ कृपाचार्य ।

कूपर-देखो 'कूरपर' ।

कूपल, कूपली-स्त्री० १ काजल रखने की डिबिया । २ देखो 'कूंपल' ।

कूपार-पु० [स० कपार] समुद्र ।

कूबड़-स्त्री० [स० कुब्ज] १ पीठ का टेढापन । २ वक्रता । ३ नाथ सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध साधु ।

कूबड़ी–स्त्री० कुब्जा, नामक कस की दासी ।

कूबडो–वि० [स० कुब्ज] (स्त्री० कूबडी) झुकी हुई या उठी हुई पीठ का कुब्ज । वक्र ।

कूबियो, कूबो–वि० (स्त्री० कूबी) १ जिसका पीठ, मुह टेढा या मुडा हुआ हो । २ कुबडा ।

कूमटो–पु० एक प्रकार का कटीला वृक्ष ।

कूमी–स्त्री० [स० कुम्भिका] छोटा पात्र ।

कूम–देखो 'कौम' ।

कूमेतकसमीरी–पु०यौ० एक प्रकार का शुभ रग का घोडा ।

कूमेव–पु० एक प्रकार का शुभ रग का घोडा ।

कूमोत–देखो 'कुमोत' ।

कूया–सर्व० कोई भी ।

कूरंम–देखो 'कूरम' ।

कूर–पु० [स० कूर] १ भोजन, खाना । २ भात । ३ चावल । –वि० [स० क्रूर] १ निर्दयी, क्रूर । २ नीच, दुष्ट । ३ बुरा, खोटा । ४ कुमार्गी । ५ झूठा, असत्य । ६ भयकर, डरावना । —**कपूर**–पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ । —**पर**–स्त्री० कोहनी ।

कूरका–स्त्री० एक देशी खेल ।

कूरड़ी–देखो 'उकरडी' ।

कूरवाण–पु० एक प्रकार का पात्र विशेष ।

कूरम (म्म)–पु० [स० कूर्म] १ कच्छप, कछुआ । २ विष्णु का कच्छप अवतार । ३ पृथ्वी । ४ प्रजापति का एक अवतार । ५ नाभिचक्र के पास की नाडी । ६ एक प्रसिद्ध राजपूत वश । ७ शरीरस्थ दश वायुओं मे से एक । ८ एक तात्रिक मुद्रा । ९ छप्पय छन्द का एक भेद । —**चक्र**–पु० एक तात्रिक चक्र । —**द्वादसी**–स्त्री० कच्छप अवतार की पौष शुक्ला द्वादशी की तिथि । —**पुराण**–पु० एक पुराण । —**वस**–पु० कच्छवाहा वंश ।

कूरमा–स्त्री० एक प्रकार की वीणा ।

कूरमासण (न)–पु० [स० कूर्मासन] चौरासी आसनों मे से एक ।

कूरम्म, कोरम्म–देखो 'कूरम' ।

कूरि (री)–स्त्री० एक प्रकार की घास ।

कूरो–पु० मेवाड की तरफ होने वाला एक अनाज ।

कूळ(ळ)–पु० [स० कूल] १ तट, किनारा । २ सेना का पृष्ठ भाग । ३ बडा नाला । ४ तालाब । –क्रि०वि० पास, समीप ।

कूलडी (डो)–मिट्टी का छोटा पात्र ।

कूळातरो–देखो 'कुळातरो' ।

कूलीय–पु० [स० कवलिका] कौर, ग्रास ।

कूलीर–पु० केंकडा ।

कूल्यस–देखो 'कुळिस' ।

कूल्हणो (बो)–क्रि० तिरछी निगाहें या आखों को कुछ छोटी करके एकटक देखना ।

कूल्हर–स्त्री० घी मे भुना व शक्कर मिला आटा ।

कूल्ही–स्त्री० आखो पर बाधने की पट्टी ।

कूल्हो–पु० जाघ का सधि स्थान । नितब ।

कूवडी (डी)–स्त्री० छोटा व सकरा कुआ ।

कूवाळी–वि० कुआ संबधी ।

कूवो–पु० [स० कूप] कूप । कुआ । –सर्व० कौन ।

कूसमाड–पु० कुम्हडा, कोला ।

कूह–१ देखो 'कुहर' । २ देखो 'कुह' ।

केंकडो–पु० [स० कर्कट] आठ पावो का एक जतु ।

केंगार–स्त्री० मोर के बोलने की ध्वनि, मोर की आवाज ।

केंडी–स्त्री०स्वर्णकारो का एक औजार ।

केंडो–पु० बढई का एक औजार ।

केंद्र–पु० [स०] १ किसी वृत्त के ठीक बीच का बिन्दु । २ किसी क्षेत्र का मध्यस्थल । ३ मुख्यस्थान । ४ किसी कार्य या शासन का प्रमुख स्थान । ५ ज्योतिष मे ग्रहो का केन्द्र । ६ जन्म कुंडली मे प्रथम, चतुर्थ, सप्तम व दशम स्थान । ७ बीच का स्थान ।

केंवच–स्त्री० एक प्रकार की औषधि ।

के–पु० १ रत्न । २ खान । ३ मयूर । ४ प्राण । –वि० १ कुछ । २ कितने, कई । –सर्व० १ कौन । २ किस । ३ क्या । –प्रत्य० १ सबध कारक का विभक्ति चिह्न, का का बहुवचन । २ देखो 'कै' ।

केइक–वि० कितने ही, अनेक ।

केई–वि० १ अनेक, बहुत, कई । २ कितने ही । –सर्व० किस, किसी ।

केईक–वि० कितने ही अनेको । कुछेक ।

केउर–देखो 'केयूर' ।

केकद, केकध–देखो 'किस्किधा' ।

केक–पु० मोर, मयूर । –वि० कुछ । कितने कई, बहुत । –सर्व० १ किसी । २ देखो 'केकी' ।

केकय–पु० [स०] १ एक प्राचीन देश । २ इस देश का राजा ।

केकयी–स्त्री० [स०] १ केकय देश के राजा की पुत्री । २ भरत की माता ।

केकांण–पु० (स्त्री० केकाणी) घोडा, अश्व ।

केका–स्त्री० मादा मोर, मोरनी ।

केंकिवा, केंकिंधा–देखो 'किस्किंधा'।
केकी–पु० [स० केकिन्] (स्त्री० केका) १ मोर, मयूर। २ सुस्वर।
केगइ–देखो 'केकयी'।
केगर–पु० एक वृक्ष विशेष जिसकी लकडी मदिर के ध्वज दण्ड मे काम आती है।
केगहि (ही)–देखो 'केकयी'।
केड़–पु० १ वंश। २ पीछा।
केड़ाइत, केडायत–वि० वशज।
केडै–क्रि०वि० १ पीछे। २ वाद मे, पश्चात्।
केडो–पु० १ वछडा। २ घास का ढेर। ३ पीछा। ४ वश।
केच–पु० एक देश विशेष।
केची–पु० कच्छ देशोत्पन्न घोडा।
केजम (म्म)–देखो 'कैंजम'।
केरण–सर्व० १ कौन। २ किस, किसने।
केरिणका–स्त्री० खेमा।
केत–स्त्री० [स० केत] १ वस्ती, आवादी। २ घर, मकान। ३ जगह स्थान। ४ झंडा, पताका। ५ सकल्प। ६ मत्रणा। ७ वुद्धि, विवेक। ८ धन। ९ आकाश। १० निमत्रण। ११ केतु।
केतक–पु० [सं०] १ केवडा, केतकी। २ केतकी का फूल। ३ पताका। –वि० कितने। बहुत। –क्रि०वि० किस कदर।
केतकी–स्त्री० [स०] १ एक पुष्प वृक्ष, केवडा। २ इसका पुष्प। ३ केवडा जल। ४ यात्रा मे साथ रखने का जल-पात्र। ५ श्वेत-सुगधित पुष्प।
केतड़ो (डा)–वि० [स० केतन्] कितना, कितने।
केतन–पु० [स०[१ निमत्रण, आह्वान। २ ध्वजा। ३ चिह्न। ४ अनिवार्य कर्म। ५ घर। ६ स्थान।
केतमक–पु० [स० मक्र-केतु] कामदेव।
केतळउ–वि० (स्त्री० केतळी) कितने।
केतलायक, केतलायक–वि० कितने।
केतली–स्त्री० यात्रा मे साथ रखने का जलपात्र। –वि० कितनी।
केतलत, केतली–वि० (स्त्री० केतली) कितना।
केता, केला–वि० कितने, कितना।
केताई, केतिय–वि० कितने ही। –क्रि० वि० कहा तक।
केती–वि० कितनी।
केतु–पु० [स० केतु.] १ ध्वजा, पताका। २ चिह्न, निशान। ३ दीप्ति, प्रकाश। ४ पुच्छल तारा। ५ नौ ग्रहो मे से एक ६ एक राक्षस का कवध। —कुंडळी–स्त्री०–वारह कोष्ठो का एक चक्र जिससे प्रत्येक वर्ष का स्वामी देखा जाता है। (ज्योतिष) —मांन–वि०– तेजवान, तेजस्वी। वुद्धिमान। —माळ–पु०– जवू द्वीप के नौ खडो मे से एक। —वृक्ष पु०–एक पौराणिक वृक्ष।
केतुहल–देखो 'कुतूहळ'।
केतू–वि० १ विध्वसक। २ श्रेष्ठ। ३ देखो 'केतु'।
केतूडो–देखो 'केतु'।
केतेऊ–वि० [स० कियत्] कितना।
केतेक–वि० कितने। –पु० केतकी, केवडा।
केतोइक, केतो–वि० कितने।
केथ, केथि (थी, थे)–क्रि०वि० १ कहा, किधर। २ कहीं।
केथो–पु० एक प्रकार का कटीला वृक्ष। –क्रि०वि० क्या।
केदार (रि, री)–पु० [स० केदार.] १ एक प्रसिद्ध तीर्थ। २ हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी। ३ शिव का एक रूप। ४ पर्वत, शिखर। ५ पानी से भरा खेत। ६ चारागाह। ७ एक प्रसिद्ध राग। —नट–पु० एक सकर राग विशेप। –नाथ–पु० हिमालय स्थित एक तीर्थ। शिव का एक रूप।
केदारि (री)–स्त्री० १ दीपक राग की पाचवी रागिनी। २ एक जाति विशेप।
केदारेस्वर–पु० [स० केदारेश्वर] काशी स्थित शिव मदिर।
केदारो–पु० १ राग विशेष। २ पोचापन, दिवालियापन।
केन–पु० केन उपनिपद। –सर्व० किस।
केबत–देखो 'कहावत'।
केबाण–देखो 'कवाण'।
केबी–देखो 'केवि'।
केम–क्रि०वि० [स० किम्] १ किस प्रकार, कैसे। २ कहा, किधर। —द्रुम–पु० ज्योतिष मे चन्द्रमा का एक योग।
केमर (री)–पु०[स०कामुंक]१ धनुष। २ झाडीनुमा छोटा वृक्ष।
केमि–देखो 'केम'।
केमु (मू)–क्रि०वि० कहा, किधर।
केय (क)–देखो 'केइक'।
केयुर (यूर)–पु० [स० केयूर.] १ वाजूवद। २ तावीज।
केरटी (ठी)–पु० [स० केरठी] १ मत्स्य, मकर। २ मछली। ३ देखो 'किरीटी'।
केर–अव्य० १ सवध सूचक अव्यय, का, के, की। २ देखो 'कैर'। ३ देखो 'केड'।
केरक–पु० [स०] हाथी।
केरड़, केरडियो, केरडो–पु० १ वछडा। २ देखो 'कैर'।
केरल–पु० भारत का एक दक्षिणी प्रान्त।
केरव–पु० १ रहट का एक पत्थर। २ देखो 'कौरव'।

केराटी (ठी)–देखो 'केरटी'।

केरा–अव्य० १ सबध सूचक अव्यय का, के। २ जैसा, समान।

केरी–स्त्री० १ कच्चा आम। २ जुलाहे की एक लकडी। ३ निवार लपेटने की एक लकडी। –अव्य० सबध सूचक शब्द, की।

केरु, केरू–देखो 'कौरव'।

केरूडी–स्त्री० १ मिट्टी का बना छोटा पात्र विशेष। २ मिट्टी का बना रोटी पकाने का तवा।

केरे–देखो 'कैर'।

केरो–अव्य० सबध बोधक अव्यय। –सर्व० किसका।

केळ–पु० १ भाला। २ कामदेव। –स्त्री० [स० कदली] १ केले का वृक्ष व फल। २ किसी वृक्ष की शाखा, डाली। ३ केले का चित्र। ४ कोपल। ५ देखो 'केळि'।

केलडी–स्त्री० मिट्टी का तवा।

केळरसक्यारी–स्त्री० काम क्रीडा का साधन, योनि।

केळवणो (बो)–क्रि० १ सुधार करना। २ शुद्ध करना।

केळवर–पु० [स० कलेवर] शरीर, देह, ढाचा।

केळा, केळि (ळी)–स्त्री० [स० केलि] १ स्त्री प्रसग, सभोग, रति क्रीडा। २ क्रीडा, खेल। ३ मनोरजन, आमोद-प्रमोद। ४ हंसी-मजाक। ५ हर्ष, खुशी, आनन्द। ६ पृथ्वी। ७ एक प्रकार का घोडा। —थम–पु० केले का तना। —ग्रह–पु० रतिगृह, शयनागार। क्रीडा स्थल।

केळिनि (नी)–स्त्री० [स० कदली] केले का वृक्ष तथा फल।

केळियौ–पु० १ छोटा शमी वृक्ष। २ अकुर निकला हुआ छोटा पौधा।

केळिहर–पु० [सं० केलिगृह] केलिघर।

केळू, केळूडो–देखो 'केळौ'।

केलू, केलूडो (रौ)–पु० खपरैल।

केळौ–पु० [स० कदली] १ केले का वृक्ष या फल। २ छोटा शमी वृक्ष।

केवडो–पु० १ खुशबूदार सफेद फूलो वाला पौधा। २ इसका फूल। ३ इसके फूलो का आसव, केवडा जल। ४ एक लोक गीत।

केवट–पु० [स० कैवर्त्त] १ मल्लाह, नाविक। २ एक वर्ण-सकर जाति।

केवटणो (बो)–क्रि० १ निभाना, निर्वाह करना। २ बटोरना, सभालना। ३ चतुराई से काम लेना। ४ मास को कमा कर तैयार करना। ५ देखभाल, हिफाजत करना। ६ मितव्ययता करना।

केवटियो–देखो 'केवट'।

केवटू–वि० १ निभाने वाला। २ सभालने या बटोरने वाला। ३ सुधारने वाला। ४ चतुराई से काम लेने वाला। ५ देखभाल करने वाला। ६ मितव्ययी।

केवडीआळी–देखो 'कवडाळी'।

केवडी–देखो 'केतकी'।

केवडो–वि० (स्त्री० केवडी) कितना, कैसा।

केवत–स्त्री० यश-अपयश। कहावत।

केवळ–पु० [स० केवल] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ कल्याण, मोक्ष। ४ सर्व श्रेष्ठज्ञान। ५ एक छद विशेष। –वि० १ विशिष्ट। २ एक मात्र, अकेला। ३ अद्वितीय, बेजोड। ४ समस्त, समूचा। ५ बिना ढका, खुला। ६ शुद्ध, साफ। ७ अमिश्रित। –अव्य० [स० केवलम्] सिर्फ, मात्र, फकत। —गत, गति–स्त्री० चार प्रकार की मुक्तियो मे से एक। —ग्याणी (नी) –पु० कैवल्य ज्ञान प्राप्त महात्मा। २ निकटस्थ और दूरस्थ रहते हुए भी अन्य की प्रकृति को जान लेने का ज्ञान (जैन)। —ग्यान–पु० आत्म-परमात्म सबधी ज्ञान। दु.खो की निवृत्ति। निरहंकार की भावना। अद्वितीय ब्रह्म भाव की प्राप्ति।

केवळी–पु० १ केवल ज्ञानी। २ ब्रह्मात्म ज्ञानी। ३ मुक्ति का अधिकारी। ४ तीर्थंकर और सिद्ध भगवान (जैन)। —विधिकळा–स्त्री० बहत्तर कलाओ मे से एक।

केवाण, केवाणी–देखो 'कृपाण'।

केवा–स्त्री० १ आपत्ति, दु ख, कष्ट। २ द्वेष, शत्रुता। ३ कसर, कमी। ४ दोष, अवगुण। ५ कलंक। ६ कहावत। ७ युद्ध झगडा। ८ दगा, फिसाद। ९ कलह।

केवाड–देखो 'कपाट'।

केवाट–पु० [स० किवृत्तम्] १ वृत्तात, हाल। २ समाचार, खबर।

केविय, केवी(वी)–पु० शत्रु। –क्रि०वि० कैसी। –वि० कोई भी।

केवौ–पु० १ प्रतिकार, बदला, वैर। २ देखो 'केवा'।

केस–पु० [स० केश] १ बाल। २ अयाल। ३ जानवरो के बाल। ४ विश्व। ५ सूर्य। ६ विष्णु। ७ केशी नामक दैत्य। —काट–पु० नाई, नापित। —कार–पु० बाल सवारने वाला हज्जाम। —वाळ वाळी–स्त्री० घोडे की गर्दन के बालो के पक्ति। घोडे की गर्दन का जालीनुमा आभूषण। —मारजन–पु० कघा।

केसट–पु० [स० केशट] १ कामदेव का एक बाण। २ विष्णु। ३ भाई। ४ बकरा। ५ खटमल।

केसर–स्त्री० [स०] १ ठडे मुल्को मे होने वाला एक पौधा जिसके फूलो के रेशे स्याई सुगध व पीले रंग के लिये प्रसिद्ध हैं, जाफरान। २ फूलो के बीच के रेशे। ३ सिंह की गर्दन के वाल। ४ नाग केसर। ५ वकुल। ६ मौलश्री। ७ स्वर्ग। ८ देववृक्ष। –वि० लाल, रक्तवर्ण॥। —**आळौ** –वि० केसरिया रग का। —**बाई** –स्त्री० करणी देवी की वडी वहन।

केसरवक–देखो 'कासळक'।

केसरिपूत–पु० हनुमान, वजरंग।

केसरियाकंवर–पु० १ राजस्थान के एक लोक देवता। २ पति।

केसरियौ–पु० १ अफीम। २ नायक, रसिक। –वि० केसर जैसे रग का।

केसरी–पु० [स० केसरिन्] १ सिंह। २ घोडा। ३ नाग केसर। ४ पुन्नाग। ५ विजौरा नींवू। ६ हनुमान के पिता। ७ एक प्रकार का वगुला। ८ सर्वोत्तम व्यक्ति। –वि० केसरिया रग का, पीला। —**नदन** (नि, नी), पूत–पु० हनुमान।

केसव (वु')–पु० [स० केशव] १ परमेश्वर, व्रह्म। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ विष्णु की एक मूर्ति। —**राइ**–पु० श्रीकृष्ण।

केसवाळी–स्त्री० [सं० केश + अवली] १ केश राशि। केशो पक्ति। अलक। २ देखो 'केसवाळी'।

केसवौ–देखो 'केसव'।

केसि–देखो 'कसी'।

केसिनी–स्त्री० [स० केशिनी] १ जटामासी। २ सुन्दर व वडे वालो वाली स्त्री। ३ एक अप्सरा। ४ रावण की माता का नाम। ५ दुर्गा।

केसियौ–पु० १ सिर के आजू-वाजू वालो मे लगाया जाने वाला ...ल। २ रसिक।

केसी–पु० [स० केशिन्] १ सिंह। २ घोडा। ३ श्रीकृष्ण द्वारा वधित एक राक्षस। ४ इन्द्र द्वारा वधित एक अन्य राक्षस। ५ श्रीकृष्ण। ६ एक यादव। –वि० १ प्रकाश वाला। २ अच्छे वालो वाला।

केसू, केसूल (लौ)–पु० १ पलाश वृक्ष, टेसू। २ पलाश का पुष्प।

केह–सर्व० कौन, किस। कुछ।

केहइ–वि० कौनसा, ऐसा। कुछ।

केहडलौ–वि० (स्त्री० केहडली) कैसा, कैसी।

केहडौ–वि० (स्त्री० केहडी) कैसा।

केहर–पु० [स० केसरी] १ सिंह, शेर। २ वाल, केश।

केहरि (री)–देखो 'केसरी'।

केहवौ–वि० (स्त्री० केहवी) कैसा। कौनसा।

केहा–वि० कैसा। –क्रि०वि० कैसे।

केहि (ही)–सर्व० किस। कौन। क्या। –वि० कौनसा, कैसा। अनेक, कई।

केहेक–वि० कुछ। थोडा।

केहौ–वि० (स्त्री० केही) कैसा। कौनसा। –सर्व० क्या। क्रि० वि० क्यो।

कैंकौ–सर्व० (स्त्री० कैंकी) किसका।

कैंची–स्त्री० [तु०] १ वस्त्रादि काटने का उपकरण, कतरणी। २ परस्पर तिरछी करके रखी गई तीलिया या लकडिया। ३ क्रोस चिह्न। ४ कुश्ती का एक दाव। ५ मालखभ की एक कसरत। ६ दोहरी समस्या।

कैंउं–क्रि० वि० कहा।

कैंत–पु० कपित्थ का वृक्ष।

कैंपा–पु० इमली के वीज।

कैंवार–स्त्री० [सं० कीर्ति+वार] कीर्ति, यश। प्रशंसा, स्तुति।

कै–न० १ हिजडा, क्लीव। –पु० २ मर्द। ३ पुरुष। ४ वायु। ५ शब्द। –स्त्री० ६ सरस्वती। ७ वाणी। ८ वमन, कै, उल्टी। –वि० १ वलवान, शक्तिशाली। २ पवित्र, शुद्ध। ३ नम्र। ४ कितने, कितना। –अव्य० [सं० किम्] या, अथवा। से। –सर्व० १ किस। २ क्या।

कैई–वि० कई, अनेक, कितने ही।

कैक–वि० कितने।

कैकळ–पु० एक प्रकार का गारा।

कैड़ौ (क)–वि० (स्त्री० कैडी) कैसा।

कैजम (म्म)–पु० १ घोडे की झूल। २ युद्ध के समय घोडे को धारण कराया जाने वाला कवच या पाखर।

कैटभ–पु० [स०] मधु नामक दैत्य का छोटा भाई। —**अरि**, कदन, कदन, जित, रिपु, हन्–पु० विष्णु। ईश्वर।

कैण–स्त्री० १ चमडे की छोटी रस्सी। २ देखो 'केण'।

कैणा–सर्व० क्या।

कैणावत–स्त्री० १ कहावत। २ किंवदती।

कै'णी–स्त्री० [स० कथ्] १ कहने की क्रिया, भाव या ढंग। २ कथनी, चर्चा। ३ कहावत।

कै'णौ (बौ)–देखो 'कहणौ' (वौ)।

कैतन–देखो 'केतन'।

कैतलैयक–वि० कितने, कितना।

कैतव–पु० [स० कैतव] १ छल, कपट, धोखा। २ जुआ, द्यूत। ३ वहाना। ४ ठग, छलिया। ५ धतुरा। ६ वैदूर्यमणि। ७ मूगा। ८ चिरायता।

कैतवापनति–स्त्री० [सं० कैतवापह्नुति] एक अर्थालंकार।

कैतसाली–स्त्री० [अ० कहत+फा साली] अकाल, दुष्काल।

कैतूहळ–देखो 'कुतूहल'।

कंथ–पु० १ कपित्य वृक्ष। २ देखो 'कैथ'।

कंद–स्त्री० [अ०] १ कारावास, जेल। २ बधन। ३ अवरोध, रुकावट। ४ शर्त, प्रतिबंध। **—खानौ**–पु० बंदीगृह, जेलखाना। **—तनहाई**–स्त्री० जेल की काल कोठरी मे अकेले रहने की सजा। **—महज**–स्त्री० सादी कैद।

कंबारी–स्त्री० वासुदेवा नामक भाटो की जाति।

कंवी-पु० [अ०] वदी।

कंधौं–अव्य० या, अथवा, मानो।

कंन–सर्व० कौन।

कंनु, कंने–सर्व० किसको।

कंफ–पु० [अ०] १ नशा, मद। २ अफीम। ३ माजून। ४ आनद, हर्ष।

कंफियत–स्त्री० [अ०] समाचार, हाल, विवरण।

कंबर–पु० तीर, बाण।

कंम–पु० १ एक वृक्ष विशेष। २ देखो 'कैम'।

कंमखानी–पु० १ राजपूत से मुसलमान हुई एक जाति। २ इस जाति का व्यक्ति, क्यामखानी।

कंमर (री)–पु० धनुष।

कंमल–पु० [स० क्रमेलक] ऊट।

कंयां–क्रि० वि० कैसे, किस तरह।

कंर (ड़ियौ)–पु० १ एक काटेदार झाड़ी, करील वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल। ३ देखो 'केर'।

कंरव–पु० [सं० कैरव] १ जुआरी। २ ठग, प्रवचक। ३ शत्रु। ४ सफेद कमल। ५ कुमुद, कुई। ६ देखो 'कौरव'। **—दळण**–पु० भीम। **—बंधु**–पु० चन्द्रमा।

कंरवि (वी)–पु० [स० कैरविन्, कैरवी] १ चन्द्रमा। २ कुमुदिनी। ३ चन्द्रमा की चादनी, जुन्हाई।

कंरसाली–स्त्री० दुर्भिक्ष, दुष्काल।

कंरी–पु० १ आख मे वलय कुडली वाला अशुभ बैल। २ एक आख से चक्र वाला घोडा। ३ कच्चा आम। –वि० भूरे रग की। २ तिरछी (आख)। –सर्व० किसकी।

कंरू–पु० कौरव।

कंरूंदौ–पु० वेर के आकार का एक खट्टा फल व इसका वृक्ष।

कंरूड़ी–स्त्री० मिट्टी का छोटा तवा।

कंरौं–वि० १ भूरे रग का। २ तिरछा। –सर्व० १ किसका। २ देखो 'कौरव'।

कंलड़ी–स्त्री० मिट्टी का तवा।

कंळास–पु० [स० कैलास] १ हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत मे है। २ शिव का निवास स्थान। **—उथाळ**–पु० रावण। **—नाथ**–पु० शिव। कुवेर। **—प**–पु० महादेव, शिव। कुवेर। **—पत, पति, पती**–पु० महादेव, शिव। कुवेर।

कंळासी–पु० [सं० कैलासिन्] १ कैलासनिवासी शिव। २ कुवेर।

कंळि–देखो 'केळि'।

कंलू–पु० खपरैल।

कंवच–देखो 'कँवच'।

कंवणौ (बौ)–देखो 'कहणौ' (बौ)।

कंवत–स्त्री० १ कहावत। २ किवदंती।

कंवल्य–पु० [स० कैवल्यम्] १ मोक्ष विशेष। २ एकत्व।

कंवा–देखो 'केवा'।

कंवाणौ (बौ)–देखो 'कहाणौ' (बौ)।

कंवार–पु० १ डिगल का एक गीत। २ एक मात्रिक छद विशेष। ३ स्तुति, प्रशसा। ४ देखो 'कँवार'।

कंवावणौ (बौ)–देखो 'कहाणौ' (बौ)।

कंवौ–देखो 'केवा'।

कंसिकी–स्त्री० नाटक की चार प्रमुख वृत्तियों मे से एक।

कंसीक–वि० कैसी।

कंसोहेक–वि० कैसा।

कंहवत–देखो 'कैवत'।

कंही–वि० १ कैसी। कैसा। २ कई। –सर्व० कौनसी।

कोंकण–स्त्री० १ परशुराम की माता रेणुका का एक नाम। २ दक्षिण भारत एक प्रदेश।

कोकणियार–स्त्री० रहट पर लगने वाली एक लकडी की कील।

कोंकणी–स्त्री० [स०] १ कोकण देश की भाषा जो आर्य एव द्रविड भाषा के मेल से बनी है। २ चादी का एक कगन विशेष।

कोंकर–क्रि०वि० क्योकर, कैसे।

कोंचा–स्त्री० वहेलियो की चिडिया फंसाने की छड।

कोण–सर्व० कौन।

को–पु० १ शोक। २ सोना। ३ चातक। ४ वालक। ५ क्रोध। ६ वाज पक्षी। –सर्व० [सं० कोऽपि] कोई, कौन, कुछ, कितना। –क्रि०वि० कभी नहीं। –अव्य० सवध सूचक अव्यय, का।

कों–१ देखो 'कोह'। २ देखो 'कोस'। ३ देखो 'कोनी'।

कोअरण–देखो 'कोयरण'।

कोइ, कोइक (यक)–सर्व० [स० कोऽपि] कोई।

कोइट (टौ)–देखो 'कोयटौ'।

कोइड़ौ–देखो 'कोयडौ'।

कोइयन–सर्व० कोई नही।

कोइयौ–देखो 'कोयौ'।

कोइल (लो)–स्त्री० [स० कोकिल] कोयल।

कोई (क)–सर्व० [सं० कोऽपि] १ ऐसा एक जो अनिर्दिष्ट व अज्ञात हो। २ बहुतो मे से जो चाहे एक। –क्रि०वि० १ एक भी। २ लगभग, करीब।
कोईको–वि० (स्त्री० कोइकी) कोईसा।
कोईठौ–देखो 'कोयठौ'।
कोईरौ–देखो 'कोहिरौ'। (स्त्री० कोईरी)
कोईली–१ देखो 'कोइल'। २ देखो 'कोयली'।
कोईलौ–देखो 'कोयलौ'।
कोउ (ऊ, क)–सर्व० [स० कोऽपि] कोई। –स्त्री० [स० कुपक] अग्निकुड।
कोक–पु० [स०] (स्त्री०कोकी) १ चक्रवाक पक्षी। २ कोकिल। ३ मेंढक। ४ भेडिया। ५ विष्णु। ६ रतिविद्या। ७ काम शास्त्र। ८ काम शास्त्र का ज्ञाता, पडित। ९ सगीत का छठा भेद। –सर्व० कोई। —**कळा**–स्त्री० रति विद्या, काम कला। काम शास्त्र। सभोग। —**देव**–पु० कोक शास्त्र का पडित। —**नद**–पु० लाल कमल। कमल। श्वेत कमल। —**सार, सास्त्र**–पु० काम शास्त्र, रतिशास्त्र।
कोकड–पु० [स० कौकुट] १ वाल-बच्चे। २ पीलू के सूखे फल।
कोकडियौ–देखो 'कोकडी'।
कोकडी–स्त्री० १ कच्चे सूत की लच्छी। २ डोरे की गिट्टी। ३ मदार का डोडा या फल। ४ पीलू के सूखे फल। ५ वंधन। ६ वाहु (भुजा) की मास पेशी। ७ देखो 'कोकरडी'।
कोकणौ (बौ)–क्रि० १ कच्ची सिलाई करना। २ प्रहार हेतु शस्त्र उठाना। ३ बुलाना। ४ भाले से छेदना। ५ मारना।
कोकन, कोकन–पु० दक्षिण भारत का एक प्रदेश।
कोकर–पु० ककड।
कोकरडी–स्त्री०१ छोटे कानो की वकरी। २ कान कटी वकरी। ३ देखो 'कोकडी'।
कोकरी–स्त्री० हल के जूऐ के मध्य लगने वाली काष्ठ की कीली।
कोकरू (रू)–पु० स्त्रियो के कान का आभूषण।
कोकरौ–पु० रहट के जूऐ मे लगा कीला।
कोकळ–स्त्री० वाल-बच्चे।
कोकल, (ला)–स्त्री० [म० कोकिल] १ कोयल। २ ककडी के सूखे टुकडे।
कोकव–पु० [स०] एक सकर राग विशेष।
कोका–स्त्री० [म०] १ एक वृक्ष की सूखी पत्तिया जो चाय की तरह मानी जाती हैं। २ ककड।
कोकारी–स्त्री० १ चीत्कार, चीख। २ तेज आवाज।
कोकाह–पु० सफेद रग का घोडा।
कोकिल, (ला)–स्त्री० [स० कोकिला] १ कोयल। २ छप्पय छंद का उन्नीसवां भेद। ३ जलता हुआ अगारा। ४ युद्धप्रिय वावन वीरो मे से एक। —**आसण (न)** –पु० चौरासी आसनो मे से एक।
कोकी–स्त्री० चकवी।
कोकीन–स्त्री० कोका वृक्ष की पत्तियो से बनी एक तेज औषधि।
कोकौ–वि० १ थोथा, पोला, खोखला। –पु० नाक का एक आभूषण विशेष।
कोख–स्त्री० [सं० कुक्षि] १ उदर, पेट। २ गोद। ३ गर्भाशय। —**जली**–स्त्री० वह स्त्री जिसके सतान होकर मर जाती है। —**वद, बंध**–स्त्री० वध्या स्त्री, वाझ।
कोखयक–स्त्री० [सं० कौक्षेयक] तलवार। कृपाण।
कोखा–पु० गेहूं का भूसा।
कोगत–स्त्री० [म० कौतुक] हंसी, मजाक, दिल्लगी।
कोगति, (ती)–वि० मजाकिया, दिल्लगी करने वाला। –स्त्री० बुरी गति, अधोगति।
कोड़, (डि)–वि० [स०कोटि] करोड, कोटि। –स्त्री० १ करोड की सख्या। [स० क्रोड] २ वक्षस्थल, गोद। ३ सूअर। —**पसाव**–पु० करोड रुपयो का दान, पुरस्कार। –**वरीस** –वि० उक्त पुरस्कार देने वाला।
कोड़िक–पु० [स० कोटिक] कसाई।
कोड़िटंकावळी–वि० करोड रुपयो के मूल्य का।
कोड़ी–पु० [सं० क्रोड] १ सूअर। २ वीस की संख्या। —**आळ**–पु० सूअर। —**डढ्ढौ**–पु० सूअर, वराह। –**धज** –पु० करोडपति।
कोडीक, (ग)–वि० [सं० कोटिक] १ करोड, अगणित। २ करोड रुपये के मूल्य का, अमूल्य।
कोडू, कोड़ेक–वि० करोड के लगभग, करोड।
कोडेसरी–पु० [स० कोटि+ईश्वर+ई] करोडपति।
कोच–पु० [अ०] १ गद्देदार सीटो वाली गाडी या डिव्बा। २ देखो 'कवच'। —**वकस, बकस, बगस**—पु० घोडागाडी का वह ऊचा स्थान जहा पर चालक वैठता है। —**वान** –पु० घोडागाडी का चालक।
कोचर–पु० १ कोचरी। २ दातो मे होने वाला छेद। ३ सुराख। ४ कोटर।
कोचरणौ (बौ)–देखो 'कुचरणौ' (बौ)।
कोचरी–स्त्री० उल्लू की जाति की एक चिडिया।
कोचीन–पु० दक्षिण भारत की एक प्राचीन रियासत।
कोज–सर्व० कोई।
कोजळिया–पु० विना धोया लट्ठा।
कोजागरीपूनम–स्त्री० आश्विन मास की पूर्णिमा।

कोजौ (झौ)–वि० (स्त्री० कोजी) १ कुरूप, भद्दा । २ बुरा, अनिष्टकारी ।

कोट–पु० [स० कोट्ट] १ दुर्ग, गढ, किला । २ शहर-पनाह, प्राचीर । ३ करोड की सख्या । ४ कमीज पर पहनने का, पूरी वाहों का मोटा वस्त्र । ५ शहर, नगर । ६ विल, कोटर । [अ० कोर्ट] ७ ताश का खेल । –वि० रक्षक । **—चक्र**–पु० शुभाशुभ जानने का एक तान्त्रिक चक्र । **—पाळ**–पु० किलेदार ।

कोटक–वि० [स० कोटिश] करोड ।

कोटडी (क)–स्त्री० [स० कोट्टम्] १ छोटा कमरा, कक्ष । २ वैठक । ३ छोटे जागीरदार की कचहरी । ४ छोटी जागीर । **—खरच**–पु० जागीरदारो द्वारा वसूल किया जाने वाला एक कर । **—दावौ**–पु० आतिथ्य । मेजवानी ।

कोटववर–पु० युद्ध मे कटे वीरो के शिरो का ढेर ।

कोटर–पु० [सं० कोटर] १ पेड का खोखला भाग, विल । २ दुर्ग की रक्षार्थ चारो ओर का कृत्रिम वन ।

कोटरा–स्त्री० वाणासुर की माता का नाम ।

कोटवाळ–पु० [स० कोट्टपाल] १ दुर्गरक्षक, किलेदार । २ कोतवाल । ३ नगर न्यायाधीश । ४ फक्कडो का चिमटा । ५ पिंजारा जाति की एक शाखा ।

कोटवाळी–पु० १ नगर न्यायाधीश का कार्यालय । २ कोतवाल या किलेदार का कार्य । ३ देखो 'कोतवाली' ।

कोटसलेम–पु० राजा या जागीरदार को वदी वनाकर रखने का स्थान । सलेमकोट ।

कोटाण–पु० करोड ।

कोटि (टी)–स्त्री० [स० कोटि] १ धनुष का शिरा, नोक । २ शस्त्र की नोक या धार । ३ समूह, जत्था । ४ वर्ग, श्रेणी । ५ श्रेष्ठता, उत्कृष्टता । ६ अग्र भाग । ७ घाट या तीर । ८ चरम सीमा या विन्दु । ९ चन्द्रकला । १० करोड की सख्या । ११ राज्य या सल्तनत । १२ कोना । –वि० करोड ।

कोटिक (क्क)–वि० [स०] १ करोडो । २ असख्य, बहुत । –पु० १ एक तरह का मेढक । २ इन्द्रगोप, वीर बहूटी । ३ मास वेचने वाला कसाई । ४ खटीक । **—तीरथ**–पु० एक तीर्थ विशेष ।

कोटीक–देखो 'कोटिक' ।

कोटीर–पु० [स० कोटीर] १ मुकुट, ताज । २ कलगी । ३ चोटी ।

कोटेसर (स्वर)–पु० [स० कोटीश्वर] १ शिव का एक रूप । २ धनवान, करोडपति ।

कोट्टवी–स्त्री० [स०] १ वाल खोले नगी स्त्री । २ दुर्गा । ३ वाणासुर की माता ।

कोठ–पु० [स०] १ एक प्रकार का कोढ । २ कोष्ठक, खाना । –वि० कुंठित ।

कोठडं–क्रि० वि० कहाँ ।

कोठलियौ–पु० मिट्टी की वनी छोटी कोठी, टकी ।

कोठाकुचाल–पु० हाथियो का एक उदर रोग ।

कोठानील–पु० रगरेजो से लिया जाने वाला कर ।

कोठार, कोठारियौ–पु० १ अन्नादि का भण्डार कक्ष, कोष । २ गाडी के नीचे बना सामान रखने का कोठा । ३ कुठार, कुल्हाडी ।

कोठारी–पु० भण्डारी, कोषाध्यक्ष, कोष प्रवधक ।

कोठाळियौ–देखो 'कोठार' ।

कोठी–स्त्री० १ वडा व पक्का मकान, भवन, हवेली, वगला । २ वडी दुकान । ३ लोहे, मिट्टी या सीमेंट की टकी, अनाज डालने का लवोतरा मिट्टी का वडा पात्र । ४ वन्दूक मे वारूद रखने का भाग । ५ म्यान की साम । ६ वडा व गोल पात्र । ७ कूआ, कूप । ८ कोल्हू मे तिल डालने का स्थान । ९ कूए के नीचे का भाग । **—चल**–स्त्री० एक प्रकार की वन्दूक । **—वाली, वाळ**–पु० साहूकार, कारोवारी । महाजनी अक्षर ।

कोठे, कोठेड–क्रि० वि० कहाँ, किधर ।

कोठेसर (स्वर)–पु० [स० कोठेश्वर] शिव, महादेव ।

कोठै–देखो 'कोठे' ।

कोठौ–पु० [स० कोष्ठक] १ वडा व चौडा कक्ष, कमरा । २ कोष, भण्डार । ३ भवन का ऊपरी कमरा, अटारी । ४ उदर, पेट । ५ गर्भाशय । ६ खाना, कोष्ठक, घर । ७ किसी एक अक का पहाडा । ८ शरीर या मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग । ९ जलकुण्ड, हौज । १० अनाज आदि के लिये बना गृह या तलगृह ।

कोठ्यार–देखो 'कोठार' ।

कोडड–पु० [स० कोदण्ड] १ धनुष, कमान । २ भौं । **—धर**–पु० धनुर्धारी योद्धा ।

कोडंडी (स)–पु० [स० कोदण्ड+ईश] १ अर्जुन का गाडीव धनुष । २ वडा धनुष । ३ धनुष ।

कोड–पु० १ चाव, उत्साह, उमग, जोश । २ हर्ष, खुशी । ३ उत्कण्ठा, अभिलाषा । ४ लाड, प्यार । ५ शौक । ६ सत्कार । ७ सूअर, वराह । ८ करोड की सख्या । ९ कोढ ।

कोडयाळी–स्त्री० १ ज्वार (अन्न) की एक किस्म । २ देखो 'कोडायलो' (पु०) ।

कोडाणौ (वौ)–क्रि० हर्ष करना, उमगित होना ।

कोडायतो, कोडायतौ, कोडायौ कोडायलौ–वि० (स्त्री० कोडायती कोडाई, कोडायली) १ उमगित, उत्साहित । २ जोशीला । ३ हर्षित, खुश, शौकीन ।

कोडाळौ–वि० (स्त्री० कोडाळी) १ स्वागत करने वाला। २ प्यार करने वाला। ३ उमगित। –पु० १ एक प्रकार का धब्बेदार सर्प। २ ऊट के गले का आभूषण। ३ छोटा शख।

कोडि–स्त्री० १ किनारा तट, कोर। २ देखो 'कोडी'।

कोडिग्राळ (ळौ)–पु० [स० क्रोड-पाल] १ सूग्रर, वराह। २ वराह ग्रवतार। ३ देखो 'कोडायतौ'।

कोडियाळी–स्त्री० १ कौडियो की माला। २ एक प्रकार की चिडिया। ३ देखो 'कोडयाळी'।

कोडियौ–पु० १ कुम्हार का एक उपकरण। २ घास विशेप।

कोंडियौ–देखो 'कोढियौ'।

कोडी–स्त्री० [स० कपर्दिका] १ कौडी, कपर्दिका। २ ग्रांख के ग्रदर का श्वेत भाग। ३ ग्राख का ढेला। ४ उमग, उत्साह। ५ तट, किनारा। –वि० १ हर्षित, प्रसन्न। २ ग्रभिलाषी, उमगित। ३ श्वेत, सफेद॥। ४ देखो 'करोड'। ५ देखो 'कौडी'।

कोडीकौ (ळौ)–वि० (स्त्री० कोडीली) हर्षित, उमंगित, शौकीन।

कोडे, (डँ)–क्रि०वि०१ उत्साह से, उत्सुकता से। २ कहा किधर।

कोडौ–पु० १ एक प्रकार का धब्बेदार सर्प। २ बडी कौडी। ३ बच्चा, बालक। ४ कुढन, जलन। ५ वर्षा की छोटी छोटी बूदें।

कोड्याळी–देखो 'कोडियाळी'।

कोढ़–स्त्री० [स० कुष्ठ] रक्त एव त्वचा सबधी एक संक्रामक रोग, कुष्ठरोग।

कोढ़ण (णी)–स्त्री० कुष्ठ रोग से पीडित कोई स्त्री। –वि० दुष्टा।

कोढियौ कोढी–पु० (स्त्री० कोढणी) कुष्ठ का रोगी। –वि० दुष्ट।

कोण–पु० १ कोना। २ दो रेखाग्रो के बीच का ग्रतर। ३ दिशा। ४ दो दिशाग्रो के बीच की विदिशा। ५ सितार बजाने की नखिया। ६ मगल ग्रह। ७ शनिग्रह। ८ तलवार ग्रादि शस्त्रों की पैनी धार। ९ जन्म कुडली मे लग्न से नवम् व पचम् स्थान। **—दंड**–स्त्री० घर के कोने में की जाने वाली कसरत। **—लग**–पु० चलते हुए लगडाने वाला घोडा। **—संकु**–पु० सूर्य की एक स्थिति जब वह न तो कोणवृत्त मे होता है न उन्मडल मे।

कोणप–पु० [स० कोणप] १ राक्षस, ग्रसुर, दैत्य। २ शव, मुर्दा। **—कोण**–पु० नैर्ऋत्य कोण।

कोणस्त–पु० शनिश्चर।

कोणाकोणी–क्रि०वि० एक कोने मे दूसरे कोने तक।

कोणाघात–पु० [सं०] एक लाख डुडक व दस हजार ढोलो की एक साथ बजने की ग्रावाज।

कोत–पु० बन्दूको का जूडा।

कोतक (ग)–देखो 'कौतुक'।

कोतकी (गी)–देखो 'कौतकी'।

कोतणौ (वौ)–देखो 'कूतणौ' (वौ)।

कोतल–पु० [फा०] १ विना सवार का सजा-सजाया घोडा। २ राजा की सवारी का घोडा। ३ ग्रावश्यकता के लिए तैयार रहने वाला ग्रन्य घोडा।

कोतवाळ–पु० [सं० कोट्टपाल] १ नगर रक्षक, पुलिस ग्रधिकारी। २ साधु का चिमटा। ३ कुत्ता। ४ देखो 'कोटवाळ'।

कोतवाळी–स्त्री० १ कोतवाल का पद। २ कोतवाल का कार्य। ३ कोतवाल के कार्य करने का दफ्तर।

कोता–वि० [फा० कोतह] १ छोटा, लघु। २ कम, ग्रल्प। **—खानी**–स्त्री० एक प्रकार की कटार।

कोताई–स्त्री० [फा० कोताही] १ कमी, ग्रल्पता। २ लघुता, छोटापन। ३ भूल, गफलत। ४ लापरवाही।

कोताडी–स्त्री० छोटे कानो की बकरी।

कोतिक (क, ग)–देखो 'कौतुक'।

कोतिल–देखो 'कोतल'।

कोतुक–देखो 'कौतुक'।

कोतुहळ (हल)–देखो 'कौतुहळ'।

कोथळियौ, कोथळी–स्त्री०१ कपडे की छोटी थैली। २ ऐसी थैली मे भरा सामान।

कोथळौ–पु० १ बडा थैला। २ जाटो की एक वैवाहिक प्रथा।

कोथी–स्त्री० म्यान के शिरे पर लगा धातु का छल्ला।

कोदंड–पु० [स०] धनुष।

कोद–स्त्री० १ दिशा। २ कोना। ३ नोक। –क्रि०वि० ग्रोर, तरफ।

कोदाळ–पु० १ एक प्रकार का ग्रशुभ घोडा। २ कुदाल।

कोदाळी (ळौ)–देखो 'कुदाळी'।

कोद्रू–पु० कोंदा नामक हल्का ग्रनाज।

कोन, कोनन–देखो 'कोण'।

कोनार–स्त्री० किसानो से लिया जाने वाला एक कर।

कोनी (कोन्यां)–क्रि०वि० नही, कभी नही।

कोनीयौ–पु० चौकोर वस्तु की मजबूती के लिए चारो ग्रोर लगाया जाने वाला लोहे की पत्ती का बद।

कोप–पु० [स०] १ क्रोध, गुस्सा, रोष। २ रूठने का भाव। ३ नायिका का मान। ४ नाराजगी। **—भवन**–पु० राज महल का एक कक्ष जिसमे रानियां रूठ कर जाती थी।

कोपट–पु० सहार, ध्वंस।

कोपणौ (बौ)–क्रि० [स० कुप्] १ कुपित होना, क्रोध करना। २ नाराज होना। ३ क्रूर दृष्टि डालना।

कोपनळ–पु० कोपाग्नि। क्रोधाग्नि

कोपर, कोपरियौ, कोपरी–पु० १ पत्थर का छोटा खण्ड। २ मकान के द्वार मे दोनो ओर लगाये जाने वाले चपटे पत्थर। –स्त्री० [स० कूर्पर] ३ कोहनी। ४ बढई का एक औजार।

कोपवाळ–पु० क्रोधी व्यक्ति, गुस्सैल।

को'पान–पु० [स० कोशपान] खुद को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अभियुक्त द्वारा किया जाने वाला देव-कलश का जलपान।

कोपानळि–स्त्री० क्रोधाग्नि।

कोपायत–वि० क्रुद्ध।

कोपि (पी)–वि० क्रोधी, गुस्सैल। कोई भी।

कोपीन–पु० [स० कौपीन] साधु या ब्रह्मचारी की लगोटी, कच्छा।

कोफळा–पु० १ बकरा, बकरी। २ ककडी के सूखे टुकडे।

कोफत–पु० [फा०] १ लोहे पर सोने-चादी की पच्चीकारी। २ पके मास का सालन विशेष। ३ रज, दु ख, खेद। ४ हैरानी। —**गरी**–स्त्री० पच्चीकारी का कार्य।

कोफतौ–पु० [फा० कोफ्ता] मास व अन्य मसालो के योग से बना एक गेंदनुमा नमकीन व्यजन।

कोबिद–देखो 'कोविद'।

कोबीदार–पु० [स० कोविदार] कचनार का वृक्ष।

कोमंकी, कोमखी–वि० [स० कोपाकी] १ क्रोधी स्वभाव वाला। २ उग्र योद्धा।

कोमड–देखो 'कोदड'।

कोम–पु० [स० कूर्म] १ कछुआ, कच्छप। २ कूर्मावतार। ३ देखो 'कौम'।

कोमळ–वि० [स० कोमल] १ मुलायम, नरम। २ मृदु, मधुर। ३ मद, धीमा। ४ सुकुमार। ५ सुन्दर, मनोहर। ६ कच्चा। –पु० सगीत मे एक स्वर भेद। —**ता**–स्त्री० मुलायमी, नरमी। मधुरता, मृदुलता। धीमापन। सुकुमारता। सुन्दरता।

कोमाच–पु० १ एक प्रकार का चमकीला काच। २ सफाई।

कोमारी–देखो 'कुमारी'।

कोमु ड–देखो 'कोदड'।

कोय–सर्व० १ कोई। २ किसी को। –वि० कुछ।

कोयक–सर्व० कोई एक, कोईसा।

कोयडौ–पु० १ एक प्रकार का चावुक। २ कपडे की बनी गेंद। ३ एक देशी खेल विशेष। ४ देखो 'कोयौ'।

कोयटौ (ठौ)–पु० [स० कूपोत्थर] चरस से पानी सीचा जाने वाला कूआ।

कोयण (न)–पु० [सं० कोचन] १ आख का कोना। २ आख का डेला। ३ आख, नेत्र। [स० कोपन] ४ शत्रु।

कोयनी–देखो 'कोनी'।

कोयनळ–देखो 'कोपानळ'।

कोयर–देखो 'कोहर'।

कोयरौ–देखो 'कोईरौ'। (स्त्री० कोयरी)

कोयल (डी)–स्त्री० [स० कोकिल] १ काले रग की एक मधुर भाषी चिडिया। २ सफेद व नीले फूलो की एक लता विशेष। ३ एक लोक गीत।

कोयलक–पु० [स० कौलकेय] कुत्ता, श्वान।

कोयलारांणी–स्त्री०यौ० १ लक्ष्मी। २ एक देवी विशेष।

कोयली–स्त्री०१ बाहुमूल के नीचे पीठ मे होने वाली एक ग्रंथि। २ इस ग्र थि से व्यर्थ होने वाला शरीराग। ३ रस्सी के सिरे मे अटका रहने वाला लकडी का एक टुकडा। ४ अपराजिता। ५ देखो 'कोयल'।

कोयलौ–पु० [स० कोकिल] १ अधजली लकडी का खड या बुझा हुआ अगारा जो दुबारा जलाने के काम आता है। २ रेल के इजन या अंगीठी मे जलाने का एक खनिज पदार्थ।

कोयी–देखो 'कोई'।

कोयौ–पु०[स० कोच]१ आख का कोना। २ आख की पुतली। ३ सूत की छोटी लच्छी या गट्टा।

कोरम–पु० १ मिट्टी का वर्तन, कुंभ। २ देखो 'कूरम'।

कोर–स्त्री०[स० कोटि]१ किनारा, छोर। २ सिरा। ३ सीमा। ४ पक्ति, कतार। ५ दृष्टि। ६ कोना। ७ अंतराल। ८ हासिया। ९ दोष, ऐब। १० हथियार की धार। ११ द्वेष, वैर। १२ स्त्रियो के वस्त्रो मे लगने वाला तार गोटा। —**कतरणी**–स्त्री० एक देशी खेल। —**कसर**–स्त्री० कमी, दोष, ऐब। —**गोटौ**–पु० तार-गोटे का फीता। —**पाण (णौ)**–वि० माड लगा या विना धुला (कपडा)। –स्त्री० रबी की फसल की प्रथम सिंचाई।

कोरक–पु० [स० कोरक] १ कली (पुष्प)। २ सुगध द्रव्य विशेष।

कोरड (डी)–पु० १ एक प्रकार का घास। २ मोठ की फली, दाना आदि सहित मोठ का चारा।

कोरडू–पु० भिगोने या आच पर पकाने पर भी सूखा रह जाने वाला द्विदल अनाज का दाना।

कोरडौ–पु० १ लकडी का दस्ता लगा चावुक। २ उत्तेजक बात। ३ मर्म की बात। ४ कुश्ती का एक दाव। –क्रि०वि० मात्र, सिर्फ।

कोरट–पु०[अं० कोर्ट] १ अदालत, कचहरी। [रा०] २ कटारी।

कोरड–देखो 'कोरड'।

कोरण–पु० १ काले बादल के किनारे का श्वेत बादल। २ धूल की आंधी।

कोरणावटी–स्त्री० मारवाड के अन्तर्गत एक प्रदेश।

कोरणियौ–पु० वधू के मामा की ओर से दी जाने वाली पोशाक विशेष।

कोरणी (नी)–स्त्री० [स० कोटनी] १ चित्रकारी। २ पत्थर पर खुदाई, संगतराशी। ३ एक प्रकार की हजामत। —**दार**–वि० चित्रित।

कोरणौ (बौ)–क्रि० [स० कोटनम्] १ चित्रकारी करना २ पत्थर पर खुदाई करना। ३ आडी, तिरछी रेखाए खीचना।

कोरम–पु० [अ०] १ किसी सभा या समिति के सदस्यो की अपेक्षित सख्या। २ देखो 'कूरम'।

कोरमौ–पु० १ खलिहान मे अनाज साफ करने पर अवशिष्ट रहा अनाज व भूसा। २ मूग या चने की दाल का चूरा। ३ एक प्रकार का भुना हुआ मास। –वि० (स्त्री० कोरमी) चित्रित।

कोराह् वाइट–पु० एक प्रकार का बारूद विशेष।

कोरवाण–देखो 'कोरपाण'।

कोराई– स्त्री० १ रूखापन, रूखाई। २ चित्रकारी या नक्काशी का कार्य। ३ चित्रकारी का पारिश्रमिक।

कोराडौ–पु० आकाश मे बादलो के हट जाने पर सूखा दृश्य।

कोराणौ (बौ), कोरावणौ (बौ)–क्रि० १ चित्रकारी कराना। २ पत्थर पर खुदाई कराना।

कोरौ–वि० (स्त्री० कोरी) १ जिसका अभी उपयोग न हुआ हो। नया, अछूता। २ जिस पर लिखा न गया हो, खाली, रिक्त, सादा। ३ साफ। ४ जिससे जल-स्पर्श न हुआ हो। ५ वचित, रहित। ६ निर्दोष, बेदाग, निष्कलक। ७ शुष्क, रूखा। ८ रूखे स्वभाव का। ९ उदासीन। १० अशिक्षित, मूढ। ११ निरोग। —**गोफियौ**–पु० एक प्रकार का शस्त्र। —**मोरौ**– वि०– बिल्कुल कोरा। टकासा।

कोलबक–पु० [स०] वीणा का डडा व तू बा। वीणा का ढाचा।

कोळ, कोल–पु० [स० कोल] १ सूअर, वराह। २ वराह अवतार। ३ नाव। ४ बेडा। ५ वक्षस्थल। ६ गोद। ७ कूल्हा। ८ बूबड। ९ आलिगन। १० शनिग्रह। ११ एक जगली जाति। १२ एक प्राचीन प्रदेश। १३ पुरुवशीय राजा आक्रीड का पुत्र। १४ एक तोले का तौल। १५ एक प्रकार का बेर। १६ काली या गोल मिर्च। १७ कौच नामक लता विशेष। १८ देखो 'कौल'। —**मुखी**– स्त्री० सूअर के समान मुंह वाली एक तोप।

कोलक–पु० [स०] १ अखरोट का वृक्ष। २ काली मिर्च। ३ आरी तेज करने का एक औजार।

कोळखेम–देखो 'कुसळ-क्षेम'।

कोलगिरि–पु० [सं०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

कोळजोळियौ–पु० विवाह के समय दुल्हिन के पहनने का वस्त्र।

कोलणौ (बौ)–क्रि० खोदना, गहरा करना।

कोलर–पु० हड्डी, अस्थि।

कोळाण–पु० गुलाबी फूलो वाला एक छोटा वृक्ष।

कोळांमण–पु० वर्षा ऋतु का भूरा बादल।

कोलात, (यत)–पु० [स० कपिलपद] बीकानेर के पास स्थित कपिल मुनि का एक आश्रम जो तीर्थ माना जाता है। –स्त्री० कुशलक्षेम।

कोलाल, (क)–पु० [सं० कुलाल] १ कुम्भकार, कुम्हार। २ जगली मुर्गा।

कोलाळी–पु० [स० कुलाल] १ ब्रह्मा। २ उल्लू। ३ जंगली मुर्गा। ४ कुम्हार। ५ एक पक्षी विशेष।

कोलाहट–पु० [स०] नृत्य कला मे प्रवीण व्यक्ति।

कोलाहळ (ळु)–पु० [स० कोलाहल] १ शोर गुल, हल्ला-गुल्ला। २ चीख, चिल्लाहट। ३ जोर की अस्पष्ट ध्वनि, आवाज।

कोळियौ–पु० [स० कवलक] पशु के मुह मे एक साथ घास आदि का दिया जाने वाला भाग।

कोलियौ, कोली–वि० १ छोटी आख वाला। २ तिरछी आख से देखने वाला।

कोळी–स्त्री० १ एक जगली जाति। २ काठियावाड की एक शासक जाति। ३ मुजबंध। —**कादौ**–पु० एक औषधि विशेष। —**बाड**–स्त्री० मकडी।

कोळू–पु० पश्चिमी राजस्थान का एक स्थान जहा प्रसिद्ध वीर पाबू राठौड का स्मारक है।

कोलेयक–पु० [सं० कौलकेय] कुत्ता, श्वान।

कोळै–क्रि० वि० सकुशल, कुशलता पूर्वक।

कोंळौ–पु० १ कुष्माड नामक फल, कुम्हडा। २ सूअर।

कोल्हू–पु० १ तेल निकालने या ऊख पेलने का यन्त्र। २ खपरैल।

कोवड–देखो 'कोदड'।

कोवस–पु० [स० को-वंश्य] श्राद्ध के दिन कौओ को खाने के लिये बुलाने की आवाज।

कोविद–वि० [स०] १ बुद्धिमान, पडित, विद्वान। २ अनुभवी। ३ चतुर, दक्ष।

कोस–पु० [स० क्रोश] १ प्राय दो मील की दूरी का नाप। [स० केश, कोप] २ पंच पात्र नामक पूजा का पात्र। ३ तलवार की म्यान । ४ वह ग्रथ जिसमे किसी भाषा के शब्दो का ग्रर्थ सहित क्रमश. संग्रह किया गया हो । ५शब्द सग्रह । ६ सग्रह । ७ खजाना,भण्डार । ८ अण्डकोश । ९ आवरण, खोला । १० अण्डा । ११ गर्भाशय । १२ योनि । १३ लिंग । १४ गोला । १५ गेंद । १६ फल की गुठली । १७ फूल की कली । १८ जायफल । १९ सुपारी । २० कठौती । २१ बाल्टी । २२ सदूक । २३ धन, दौलत । २४ सोना-चादी । २५ वेदान्त के अनुसार पाच प्रकार के कोश । २६ मोट, चरस । २७ रेशम का कोया । २८ कपट-छल । २९ ऊट का गुल्ला । —**कार**–पु० शब्दकोश बनाने वाला । म्यान बनाने वाला। —**नायक, पति**–पु० कोपाध्यक्ष, खजाची ।

कोसक–देखो ' कौसिक ' ।

कोसणौ (बौ)–क्रि० १ छीनना, झपटना । २ लूटना । ३ भला-बुरा कहना । ४ विलाप करना, रोना । ५ शाप देना । ६ निंदा करना ।

कोसल, कोसल्या–पु० [स० कोशल] १ अयोध्या का एक नाम । २ देखो 'कौसल्या' । —**नंदण (न)**–पु० श्रीरामचन्द्र ।

कोसातकी–स्त्री० तोराई, तोरू ।

कोसाध्यक्ष–पु० [सं० कोपाध्यक्ष] खजाची, कोप का अधिकारी ।

कोसिक–देखो 'कौसिक' ।

कोसी–स्त्री० [स० कौशिकी] १ नेपाल के पहाडो से निकलने वाली एक नदी । २ एक राग विशेष । [स० कोशी] ३ फली ।

कोसीटौ–देखो 'कोयटौ' ।

कोसीद–पु० [स० कौसीद्यम्] आलस्य, सुस्ती ।

कोसीस–पु० [सं० कपि-शीर्पक] १ किले या गढ की दीवार के कगूरे । २ शिखर । [फा० कोशिश] ३ प्रयत्न, प्रयास ।

कोसे'क–क्रि०वि० कोस के लगभग ।

कोसेय–पु० [स० कौशेय] रेशम ।

कोसौ–पु० कोल्हू मे से खली हटाने का लोह दण्ड । २ बादल मे पानी का सग्रह । ३ देखो 'कोस' ।

कोस्तब–देखो 'कौस्तुभ' ।

कोह–पु० [फा०] १ पर्वत, पहाड [स० कोपपान] २ अपराध या कलक से मुक्ति हेतु किया जाने वाला देवजल का पान । ३ क्रोध, गुस्सा । ४ धूल, रज । —**काफ**–पु० यूरोप व एशिया के बीच का पहाड । देखो 'कोम' ।

कोहक–देखो 'कुहक' ।

कोहग्गि–स्त्री० [स० क्रोधाग्नि] क्रोधाग्नि । गुस्सा ।

कोहनूर–पु० १ एक प्रसिद्ध हीरा, कोहिनूर । २ मुसलमानो का एक तीर्थ स्थान ।

कोहमद–पु० कोदड ।

कोहमा–स्त्री० धूलि, रज ।

कोहर–पु० [स० अकूपार] कूप, कूआ ।

कोहा–सर्व० कौन ।

कोहिक–सर्व० कोई ।

कोहिर–देखो 'कोहर' ।

कोहीरौ–वि० [स० क्रोधी] १ क्रोधी स्वभाव का । २ तुच्छ विचारो वाला । ३ मन ही मन कुढने वाला । ४ द्वेषी, ईर्ष्यालु ।

कोहेलुवानान–पु० मुसलमानो का एक तीर्थ स्थान ।

कौंअर–देखो 'कुमार' ।

कौंकुम–पु० [स०] पुच्छल तारा ।

कौंच (छ, छि)–पु० १ कौंच नामक लता । २ क्रौंच पक्षी ।

कौंण–१ देखो 'कोण' । २ देखो 'कौन' ।

कौंतयस, कौंतेय–पु० [स० कौंतेय] कुन्ती का कोई पुत्र ।

कौंपळ–देखो 'कोपळ' ।

कौंभ–पु० [स०] सौ वर्ष पुराना घी ।

कौंसलर–पु० [अ०] परामर्श दाता, सलाहकार । पार्षद ।

कौंसिल–स्त्री० [अ०] सलाहकार समिति, परिषद् ।

कौ–पु० १ वृषभ । २ नर । ३ कामदेव । ४ यम । ५ कार्य, कर्म । –वि० धृष्ट । –सर्व० कोई । –अव्य० सबंध सूचक अव्यय, का ।

कौगत–स्त्री० हसी, मजाक, दिल्लगी ।

कौगतियौ, कौगती–वि० १ हसी मजाक करने वाला । २ ठिठोली करने वाला ।

कौडि–१ देखो 'कौडी' । २ देखो 'कोडि' ।

कौडियाळौ–वि० (स्त्री० कौडियाळी) १ कौडियो से युक्त । २ कौडी के रग का । –पु० १ केंकई रग । २ एक विषैला सर्प ।

कौडियौ, कौडीयौ–पु० खजरीट नामक पक्षी ।

कौच–पु० कवच, बख्तर ।

कौचुमार–पु० कुरूप को सुन्दर बनाने की विद्या ।

कौडी–स्त्री० [स० कर्पादिका] १ कर्पादिका, कौडी । २ सबसे कम मूल्य का एक प्राचीन सिक्का । ३ आख का डेला । ४ पसलियो का सधिस्थल ।

कौण–१ देखो 'कौन' । २ देखो 'कोण' ।

कौतक–देखो 'कौतुक' ।

कौतकी–वि० [स० कौतुक + ई] १ कौतुक करने वाला । २ विदूपक । ३ हसी मजाक करने वाला ।

कौतल–देखो 'कोतल' ।

कौतिक, कौतीक (ग) कौतुक–पु० [स०कौतुकं] १ खेल, तमाशा। २ क्रीडा, आमोद-प्रमोद। ३ हसी, मजाक। ४ हर्ष आह्लाद। ५ महोत्सव।

कौतुहळ, कौतूहळ–पु० [स० कौतुहल] १ कौतुक, उत्सुकता। २ कौतुहल। ३ आश्चर्य, विस्मय। –वि० १ अद्भुत, विलक्षण। २ श्लाघ्य, प्रसिद्ध।

कौदाळ–देखो 'कुदाळ'।

कौन–सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम।

कौनस–पु० बढई का एक औजार।

कौफ–देखो 'खौफ'।

कौफरी–वि० काफिर की, काफिर सबधी।

कौम–स्त्री० [अ०] १ जाति वर्ण। २ वर्ग।

कौमदी–स्त्री० [स० कौमुदी] १ चादनी। २ प्रकाश देने वाला पदार्थ। ३ कार्त्तिक मास की पूर्णिमा।

कौमार–देखो 'कुमार'।

कौमारी–स्त्री० १ -६४ योगनियो मे से एक। २ देखो 'कुमारी'।

कौमियत–स्त्री० [अ०] जातीय भावना। –क्रि० वि० कौम के बारे मे।

कौमी–वि० कौम या जाति सबधी।

कौरव–पु० [स०] १ राजा कुरु की सतान। २ धृतराष्ट्र के सौ पुत्र। —**दळण**– पु० भीम।

कौळ–१ स्त्री० एक प्रकार बडा चूहा। २ देखो 'कोळ'।

कौल–पु० [अ०] १ वादा, वचन, इकरार। २ प्रण, प्रतिज्ञा। ३ कथन। ४ प्रतिज्ञापत्र। [स] ५ वाम मार्ग के सिद्धात। ६ वाम मार्ग का तान्त्रिक। ७ ब्रह्मज्ञानी। –वि० १ कुलीन। २ पैतृक। ३ देखो 'कोल'। —**नामौ**–पु० इकरारनामा।

कौलका–स्त्री० [स० कोलक] कालीमिर्च।

कौलखेम–देखो 'कुसलक्षेम'।

कौलव–पु० ज्योतिष मे एक करण।

कौला–स्त्री० [स० कोला] पिप्पली।

कौळियौ–पु० १ बैल के मुख मे हाथ से एक साथ खिलाया जाने वाला घास। २ ग्राम, कौर।

कौसक–पु० इन्द्र। —**वाहण, वाहन**–पु० इन्द्र का हाथी ऐरावत।

कौसकी–देखो 'कौसिकी'।

कौसतव, कौसतम–देखो 'कौस्तुभ'।

कौसया–स्त्री० कुश की शय्या।

कौसळ–पु० [स० कौशल] १ कुशलक्षेम, प्रसन्नता। २ समृद्धि। ३ कुशलता, दक्षता, चतुराई।

कौसलि, कौसल्या–स्त्री० [स० कौशल्या] श्रीराम की माता।

कौसिक–पु० [स० कौशिक] १ विश्वामित्र। २ इन्द्र। ३ उल्लू। ४ कोशकार। ५ सपेरा। ६ नेवला। ७ गूगल। ८ गूदा, मज्जा, सार। ९ शृगार। १० एक राग विशेष।

कौसिकी–स्त्री० [स० कौशिकी] १ बिहार की एक नदी। २ एक रागिनी। ३ काव्य मे एक वृत्ति। ४ दुर्गा देवी। ५ चौसठ योगिनियो मे से त्रेपनवी योगिनी।

कौसीतकी–स्त्री० [स० कौषीतकी] १ अगस्त्य की स्त्री। २ ऋग्वेद की एक शाखा।

कौसेय (या)–वि० [स० कौशेय] रेशम का, रेशमी। –पु० रेशमी वस्त्र, लहगा। –स्त्री० [स० कु-शय्या] बुरी शय्या।

कौस्तुभ–स्त्री० [स०] १ समुद्र मथन से प्राप्त एक प्रसिद्ध मणि। २ विष्णु की एक उपाधि। ३ एक तान्त्रिक मुद्रा।

क्यउं, क्यऊं–क्रि० वि० क्यो, किसलिये। किस प्रकार।

क्यम–देखो 'किम'।

क्यव–देखो 'कवि'। —**राज**='कविराज'।

क्या–क्रि० वि० क्यो, किसलिये। –सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम। किस। कौन।

क्यांमखानी, क्यामळकुळ–देखो 'कैमखानी'

क्यार–क्रि० वि० कैसे। —वि० कैसा।

क्यांहरी–वि० (स्त्री० क्याहरी) कैसा। किस बात का। –सर्व० किसका।

क्याहि, क्यांही, क्यांहीक–सर्व० किस, कौन। –वि० कुछ। –क्रि० वि० किधर, कही।

क्या–सर्व० [सं० किम्] एक प्रश्न वाचक सर्वनाम।

क्याड–क्रि० वि० १ किस प्रकार, कैसे। २ देखो 'कपाट'।

क्याडी–देखो 'किंवाडी'।

क्यावर–देखो 'क्यावर'।

क्यावरौ–देखो 'क्यावरौ'।

क्यारी–स्त्री० [स० केदार] खेत या बगीचे की क्यारी।

क्यारौ–सर्व० किसका। –पु० खेत या बगीचे का क्यारा।

क्यावर–पु० १ कार्य, काम, बडा काम। २ दान। ३ एहसान, उपकार। ४ उदारता। ५ यश, गौरव। ६ यशस्वी कार्य।

क्यावरि (री, रौ)–वि० १ उदार, दातार। २ यशस्वी। ३ बडा काम करने वाला। ४ देखो 'क्यावर'।

क्याहई–क्रि० वि० कही-कही पर।

क्यु, क्यूं, क्यों, क्यौं–अव्य० [स० किम्] क्यो, किसलिए। वि० कुछ।

क्रंग्रड, क्रंगळ–पु० कवच।

क्रंजी, क्रंझी–स्त्री० क्रौंचपक्षी, कुरज।

क्रंत–देखो 'काति'।

क्रखि (खी)–स्त्री० कृषि, खेती।

क्रंदन–पु० [स० क्रंदन] १ रुदन, रोना, विलाप। २ पारस्परिक ललकार (युद्ध)।

क्रग (ग्ग)–देखो 'करग'।

क्रगल, क्रगलियू (ल्ल)–देखो 'कगल'।

क्रण–१ देखो 'करण'। २ देखो 'कण'।

क्रतंत–पु० [सं० कृताात] १ यमराज, काल। २ मृत्यु, मौत। ३ शनिग्रह। ४ शनिवार। ५ देवता। ६ पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मफल, प्रारब्ध। ७ सिद्धात। ८ पाप। ९ भरणी नक्षत्र। १० दो की सख्या। –वि० अन्त करने वाला।

क्रत–पु० [स० कृत, कृत्य] १ कार्य, कर्म। २ शुभ कार्य। ३ कर्त्तव्य। ४ सेवा। ५ क्रिया। ६ फल, परिणाम। ७ प्रयोजन, उद्देश्य। ८ चार युगो मे प्रथम, युग। सतयुग। ९ चार की संख्या। १० कपट, छल। [स० कृतिन् कृती] ११ कवि, पडित। १२ विद्वान व्यक्ति। १३ देवता। –स्त्री० १४ कीर्ति। –वि० [कृत, कृत] १ किया हुआ। २ करने योग्य, उपयुक्त। ३ सभव-साध्य। ४ विश्वासघाती। —**गुण**–वि० भाला या उपकार करने वाला, उपकारक। —**घरण, घणी, घन, घनी, घ्न, घ्नी**–वि० उपकार न मानने वाला कृतघ्न। —**जुग**–पु० सतयुग। —**त्रुखार**–पु० इद्र। —**धंती, धुसी, ध्वसी**–पु० शिव, महादेव। —**पूर**–शोभायुक्त। —**भुज**–पु० देवता। —**माळा**–स्त्री० दक्षिण की एक छोटी नदी। —**मुख**–वि० कुशल। पुण्यात्मा। —**वासा**–पु० शिव, महादेव।

क्रतका–देखो 'क्रतिका'।

क्रतव–देखो 'करतव'।

क्रतवरमा–पु० [स० कृतवर्मन्] कौरव पक्षीय एक योद्धा।

क्रतवीरज (य)–पु० [स० कृतवीर्य] कृतवर्मा का भाई।

क्रतात–देखो 'क्रतत'।

क्रतांन–स्त्री० [स० कृत्वन्न] अग्नि।

क्रतारथ (थी)–वि० [स० कृतार्थ] १ सफल। २ सतुष्ट। ३ प्रसन्न। ४ निहाल। ५ कृतकृत्य। ६ दक्ष, चतुर।

क्रति–स्त्री० [स० कृति] १ काम, कार्य। २ रचना। ३ करतूत। ४ पुरुषार्थ। ५ चोट। ६ जादू टोना, इन्द्रजाल। ७ पडित, विद्वान। ८ बीस की सख्या।

क्रतिका–स्त्री० [सं० कृत्तिका] १ सत्ताईश नक्षत्रो मे से तीसरा। २ इस नक्षत्र के तारो का समूह। —**नद**–पु० स्वामि कार्तिकेय। —**सुत, सूत**–पु० स्वामिकार्त्तिकेय।

क्रतिम–वि० बनावटी, नकली।

क्रती–देखो 'क्रति'।

क्रतु (तू)–पु० [स० क्रतु] १ विष्णु की एक उपाधि। २ विष्णु। ३ निश्चय, सकल्प। ४ इच्छा, कामना। ५ विवेक, प्रज्ञा। ६ इद्रिय जीव। ७ आषाढ। ८ धर्म, पुण्य। ९ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र। १० सतयुग। ११ यज्ञ। —**ध्वसी**–पु० शिव, महादेव। —**पशु**–पु० घोडा, अश्व। —**भखण**–पु० देवता, सुर।

क्रतिकाजि–पु० [स०] अश्वमेघ यज्ञ के घोडे का शकटाकार तिलक।

क्रत्तिका–देखो 'क्रतिका'।

क्रत्य–१ देखो 'क्रत'। २ देखो 'क्रतिका'।

क्रत्या–स्त्री० [स० कृत्या] १ एक देवी विशेष। २ तान्त्रिको की एक राक्षसी। ३ दुष्टा व कर्कशा स्त्री। ४ अभिचार।

क्रन–देखो 'करण'।

क्रनतात–पु० [स० कर्णतात] सूर्य। रवि

क्रनाण–१ देखो 'किरण'। २ देखो 'किरणाळ'।

क्रनाळ–स्त्री० १ बदूक। २ देखो 'करणाळ'।

क्रन्न–देखो 'करण'।

क्रन्ना–स्त्री० [स० कृष्णा] १ यमुना नदी। २ द्रौपदी।

क्रप–वि० [स० कृप] दयालु –पु० १ कृपाचार्य। –स्त्री० २ कृपा, दया।

क्रपण (न)–वि० [स० कृपण] १ कजूस, सूम। २ कायर, डरपोक। ३ क्षुद्र, नीच। —**ता**–स्त्री० कजूसी, नीचता।

क्रपणासय–पु० कजूसी, कृपणता।

क्रपया–क्रि०वि० कृपा करके, अनुग्रह पूर्वक।

क्रपर (दोस)–देखो 'करपरदोस'।

क्रपांण (क), क्रपांणिका, क्रपांणी–स्त्री० [स० कृपाण] १ तलवार। २ कटार। ३ बाण, तीर। ४ कैंची। ५ दडक वृत्त का एक भेद।

क्रपा–स्त्री० [स० कृपा] १ दया, अनुग्रह। २ क्षमा, माफी। ३ भलाई, हित। —**आचार्य**–पु० कृपाचार्य। —**नाथ, निधान, निधि**–पु० ईश्वर। –वि० दयावान। —**पात्र**–वि० दया या कृपा का अधिकारी। जिस पर दया की गई या की जाती है। —**सिंधु**–पु० ईश्वर। विष्णु। श्रीकृष्ण। –वि० दयालु, दया का भण्डार।

क्रपाळ(ळु, ळू)–वि० [स० कृपालु] दयावान, दयालु। –पु० ईश्वर, परमात्मा। —**ता**–स्त्री० दया, अनुग्रह।

क्रपाळी–देखो 'कपाळी'।

क्रपी–स्त्री० [स० कृपी] द्रोणाचार्य की स्त्री।

क्रपीट–पु० [स० कृपीटम्] नीर, जल।

क्रम-पु० [सं० क्रम] १ पैर रखने या क्रमश चलने की क्रिया। २ किसी कार्य की गति। ३ वस्तु या कार्यों के आगे पीछे का नियम। ४ नियम। ५ शैली, प्रणाली। ६ सिलसिला, अनुक्रम। ७ लीला, रचना। ८ कार्य, क्रिया। ९ वेद पढने की शैली। १० पैर, चरण। ११ डग, कदम। १२ मार्ग, रास्ता। १३ तरीका, ढग। १४ पकड। १५ तैयारी, तत्परता। १६ शक्ति, वल। १७ देखो 'करम'। —कम-क्रि० वि० क्रमश शनै शनै। —गत-स्त्री० प्रारब्ध वि० क्रमश मिलने वाला। —जा-स्त्री० लाख।

क्रमण-पु० [स० क्रमण, क्रमण] १ पैर, कदम। २ गति, चाल। ३ गमन। ४ उल्लंघन, भग। ५ घोडा, अश्व।

क्रमणा-स्त्री० [स० कर्मणा] काम।

क्रमणौ (बौ)-क्रि० [स० क्रम] १ जाना। २ चलना। ३ वार करना। ४ गुजरना। ५ निकल जाना। ६ कूदना। ७ चढना। ८ कब्जा करना। ९ ढकना। १० वढ जाना। ११ पूरा करना, सम्पन्न करना। १२ स्त्री मैथुन करना।

क्रमनासा-देखो, 'करमनासा'।

क्रमपासी-पु० [स० कर्मपाशी] यमराज।

क्रमसाखी-देखो 'करमसाखी'।

क्रमांणक-पु० [सं० क्रमणक] घोडा, अश्व।

क्रमाळ-देखो 'करमाळ'।

क्रमाळी-स्त्री० [स० क्रमेलक] मादा ऊट। ऊंटनी।

क्रमि (मी)-पु० [स० कृमि] १ रोग का कीटाणु। २ कीडा। ३ चीटी। ४ पेट मे कृमि पैदा होने का रोग। ५ मकडी। ६ गधा। ७ लाख। ८ देखो 'करमी'।

क्रमिक-वि० [स०] १ क्रमश. होने वाला। २ सिलसिले वार। ३ पैतृक, पुश्तैनी।

क्रमिजा-देखो 'क्रमजा'।

क्रमिक्रमि-क्रि० वि० क्रमश।

क्रमु, क्रमुक-पु० [स० क्रमु, क्रमुक] १ सुपारी का पेड। २ सुपारी। ३ नागर मोथा। ४ कपास। ५ शहतूत।

क्रमेल (क)-पु० [सं० क्रमेल] ऊट, शुतुर।

क्रम्म-१ देखो 'क्रम'। २ देखो, 'करम'।

क्रय (ण)-पु० [स०] खरीद।

क्रव्य-पु० [सं०] कच्चा मास।

क्रव्याद-पु० [स०] १ मासाहारी। २ राक्षस असुर। ३ चिता की आग। ४ ढूंढ नामक राक्षस।

क्रस-वि० [स० कृश] १ दुवला-पतला, क्षीण-काय। २ तुच्छ, अल्प, थोडा। ३ निर्धन। ४ देखो 'करस'। ५ देखो 'क्रमि' —भाव- पु० दुवलापन।

क्रसक-पु० [सं० कृषक] १ किसान, कृषक। २ हल का फाल।

क्रसण (न)-पु० [स० कृष्ण, कृष्णम्] १ श्रीकृष्ण। २ वेद व्यास। ३ अर्जुन। ४ कोयल। ५ काक, कौआ। ६ लोहा। ७ सुरमा। ८ कालिख। ९ आख की पुतली। १० सीसा। ११ कलियुग। १२ कृष्ण पक्ष। १३ काली मिर्च। १४ काला मृग। १५ काला रग। १६ अगर की लकडी। १७ छप्पय छद का एक भेद। १८ देखो 'क्रसण-पक्ष'। -वि० १ श्याम, काला। २ दुष्ट, नीच। —अचल-पु० रैवतक व नीलगीरि पर्वत। -अभिसारिका-स्त्री० एक प्रकार की नायिका। —अस्टमी-स्त्री० भादव कृष्ण अष्टमी। —द्वैपायन-पु० वेदव्यास। —पक्ष, पख-पु० अधेरापक्ष। —वरण-वि० काला। —सखा-पु० अर्जुन।

क्रसणा (ना)-स्त्री० [स० कृष्णा] १ द्रौपदी। २ यमुना। ३ पीपल। ४ काली दाख। ५ काली देवी। ६ पार्वती। ७ एक योगिनी। ८ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। ९ दक्षिण की एक नदी। —पित, पिता-पु० सूर्य। —पुळा-स्त्री० काली मिरच।

क्रसनी-स्त्री० [कर्षणी] विजली, विद्युत।

क्रसन्न-देखो 'क्रसण'।

क्रसांण (न, नु)-स्त्री० [स० कृशानु] १ आग, अग्नि। २ किसान, हलधर। —द्रग, रेता-पु० शिव।

क्रसि (सी)-स्त्री० [स० कृषि] खेती का काम। काश्त।

क्रसिक-स्त्री० हल की हलवानी।

क्रस्ट (स्टि, स्टी)-पु० [स० कृष्टि] पडित, कवि, विद्वान।

क्रस्ण (न)-पु०[स० कृष्ण] १ श्रीकृष्ण। २ अर्जुन। ३ कृष्ण पक्ष। ४ अग्नि, आग। ५ शनिश्चर। —पिगळा-स्त्री० चौसठ योगिनियो मे से एक। —मुख-पु० लोहा। -वि० विमुख।

क्रस्णाग्रज-पु० [सं० कृष्ण + अग्रज] वलराम।

क्रस्णला-स्त्री० [स० कृष्णला] घूंगची, गुंजा।

क्रस्णवरतमा-स्त्री० [सं० कृष्णवर्त्मन] अग्नि, आग।

क्रस्णा-देखो 'क्रसणा'।

क्रहकणौ (बौ)-क्रि० भूत-प्रेत का युद्ध के समय प्रसन्न होना।

क्रहक्कह, क्रहकह-पु० [अ० कहकाह] १ भूत प्रेत की हसी। कहकहा। २ अट्टहास ध्वनि। -स्त्री० ३ चमक-दमक। ४ प्रभा, काति।

क्रहूका-स्त्री० ऊट की आवाज।

क्राइत, क्रायंती, क्रांइक-स्त्री० काति, दीप्ति।

क्रात-वि० [स०] १ वीता हुआ। २ लाघा हुआ। ३ दवा हुआ। ४ चढा हुआ। ५ गया हुआ, गत। ६ सुन्दर,

मनोहर। ७ भयभीत। ८ ग्रस्त। -पु० १ घोडा। २ पैर। ३ देखो 'काति'।

क्रांति-स्त्री० [स०] १ उपद्रव। २ विद्रोह। ३ आन्दोलन। ४ उलटफेर। ५ भारी परिवर्तन। ६ आक्रमण। ७ गति। ८ अग्रगमन। ९ पग, कदम। १० विपुवत रेखा से किसी ग्रह मण्डल की दूरी। ११ एक कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य भूमि के चारों ओर भ्रमण करता है।

क्रातिसाम्य-पु० [स०] ज्योतिष मे ग्रहो की तुल्य क्राति।

क्रामत (ति, ती)-स्त्री० १ चमत्कार, करामात। २ शौर्य, पराक्रम। ३ युद्ध। ४ देखो 'काति'।

क्रायंती-१ देखो 'क्राति'। २ देखो 'काति'।

क्राय-क्राय, क्राव-क्रांव-स्त्री० कौवे की बोली, काव-काव।

क्राय-पु० [स०] १ एक नाग का नाम। २ एक वदर।

क्रासळक (क्क)-पु० मस्ती मे आए हुए ऊट के दातो के टकराने की ध्वनि।

क्रासलकौ (क्कौ)-पु० मस्ती मे दात वजाने वाला ऊंट।

क्राह-स्त्री० पशुओं को वाधने की रस्सी, पाश, राम।

क्राहि-स्त्री० करुण क्रन्दन, त्राहि-त्राहि।

क्रिखि (खी)-देखो 'क्रसि'।

क्रिगळ-देखो 'कगळ'।

क्रित-देखो 'क्रत'।

क्रितक्क-देखो 'क्रतिका'।

क्रित-क्रित-देखो 'क्रतक्रत्य'।

क्रितमन-पु० [स० क्रतुमना] इन्द्र।

क्रिताअंत-देखो 'क्रतात'।

क्रितारथ-देखो 'क्रतारथ'।

क्रितारथी-क्रि० वि० १ लिए वास्ते। २ देखो 'क्रतारथी'।

क्रिति-देखो 'क्रति'।

क्रिपण-देखो 'क्रपण'।

क्रिपाण-देखो 'क्रपाण'।

क्रिपा-देखो 'क्रपा'। —**नाथ**= 'क्रपानाथ'।

क्रियमाण-वि० [स० क्रियमाण] १ करने योग्य। २ किया जाने वाला। -पु० १ कर्म के चार भेदो मे से एक। २ वे कर्म जो वर्तमान समय किए जाते हो।

क्रिया-स्त्री० [स०] १ कोई कार्य, कर्म। २ प्रयास, प्रयत्न, चेष्टा। ३ प्रक्रिया, विधि। ४ अनुष्ठान। ५ प्रारभ। ६ शौचादि नित्य कर्म। ७ प्रायश्चित। ८ उद्यम, उद्योग, व्यापार। ९ उपाय। १० उपचार। ११ परिश्रम। १२ शिक्षण। १३ व्याकरण का एक अग। १४ मृतक-सस्कार। १५ अभ्यास। १६ श्राद्ध आदि कर्म। १७ न्याय या विचार का साधन। १८ पूजन। १९ शुभाशुभ कर्म। २० व्याकरण मे वे शब्द जो किसी कार्य,घटना आदि के होने या किये जाने के वाचक हो, खाणौ, सोणौ आदि। -**करम**-पु० मृतक-सस्कार। -**काड**-पु० कर्म काड का शास्त्र। —**जोग**-पु० देव पूजन। देवालय निर्माण। —**फळ**-पु० कर्मानुसार फल। —**सक्ति**-स्त्री० कार्य करने की क्षमता। ईश्वरीय शक्ति। -**सुन्य**-वि० कर्मशून्य, कर्महीन। —**स्नान** -स्त्री० स्नान की एक विधि।

क्रिस-देखो 'क्रस'।

क्रिसन-देखो 'क्रसण'।

क्रिसनवरतमा-स्त्री० [स० कृष्णवर्त्मन्] अग्नि, आग।

क्रिसनागर (रौ)-देखो 'किसनागर'।

क्रिसाण (न, नु)-स्त्री० [स० कृशानु] १ अग्नि। २ किसान, कृपक।

क्रिसोदरीय-वि० [स० कृशोदरी] पतली कमर या कटि की।

क्रिस्णागर (रौ)-देखो 'क्रिसनागर'।

क्रिस्स-देखो 'क्रस'।

क्रीडणौ (बौ)-क्रि० क्रीडा करना, खेलना।

क्रीडा-स्त्री० [सं०] १ केलि, कल्लोल। २ खेल। ३ आमोद-प्रमोद। ४ रति-क्रीडा, सम्भोग। ५ मजाक, दिल्लगी। —**प्रिय**-वि० विलासी। रसिक।

क्रीट-१ देखो 'किरीट'। २ देखो 'कीट'।

क्रीडणौ (बौ)-क्रि० क्रीडा करना, खेलना।

क्रीत-वि०[स०]खरीदा हुआ। मोल लिया हुआ। -पु० १ बारह प्रकार के पुत्रो मे से खरीदा हुआ पुत्र। २ देखो 'कीरती'।

क्रीतडी-देखो 'कीरती'।

क्रीला-देखो 'क्रीडा'।

क्रीस-स्त्री० चिंघाड।

क्रुचपद-पु० एक वर्णिक छन्द विशेष।

क्रुंझडी क्रुझि क्रुंझी, क्रुझ-देखो, 'कुरज'।

क्रुद्ध, क्रुध-वि० [सं०] कुपित, क्रोध युक्त।

क्रुधांगणी (नी)-स्त्री० क्रोधाग्नि।

क्रुधार-वि० क्रोधी।

क्रुमुक-देखो 'क्रमुक'।

क्रूंझ (डी)-देखो 'कुरज'।

क्रूर-वि० [स०] १ निर्दयी। २ नृशस। ३ परपीडक। ४ आततायी। ५ नीच, बुरा। ६ घोर। ७ तीक्ष्ण, तीखा। ८ उष्ण, गरम। ९ भयानक। -पु० १ ज्योतिष मे विषम राशिया। २ पाप ग्रह। —**दती**-स्त्री० दुर्गा का एक नाम। —**ग्रह**-पु० शनिग्रह। मगलग्रह। -वि० दुष्ट, नीच।

क्रेता-वि० [स० क्रेतृ] खरीददार। -पु० [स० क्रतु] सतयुग।

क्रेय-वि० खरीदने योग्य।

क्रेलडौ-पु० ऊट।

क्रोंच–पु० [स०] १ हिमालय की एक पर्वत श्रेणी । २ देखो 'क्रौंच'।

क्रोड (ड)–स्त्री० [स० क्रोड] १ वक्षस्थल । २ गोद । ३ सूअर । ४ मध्य भाग । ५ वृक्ष का खोहर । ६ वराह अवतार । ७ देखो 'करोड'। —**पग**–पु० कछुआ ।

क्रोधंगी–वि० गुस्सैल, क्रोधी । वीर योद्धा ।

क्रोध–पु० [स० क्रोध] १ कोप, गुस्सा, रोष । २ कृष्ण पक्ष । —**अनळ**–स्त्री० क्रोधाग्नि । —**आळा**–स्त्री० क्रोधाग्नि । क्रोधी, गुस्सैल । —**वसा**–स्त्री० दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

क्रोधार, (ळ, ळु)–वि० [सं० क्रोधालु] क्रोधी, क्रुद्ध ।

क्रोधी–वि० [स०] क्रोध करने वाला । गुस्सैल । –पु० क्रोध नामक सवत्सर ।

क्रौंच–पु० [स०] १ कुरर पक्षी । २ एक पर्वत । —**दार**– पु० स्वामिकार्त्तिकेय । —**दीप**–पु० सप्त महाद्वीपो मे से एक ।

क्रौंचार–पु० [स० क्रौंचारि] स्वामिकार्त्तिकेय ।

क्रौंची–स्त्री० [स०] कश्यप व ताम्रा की पाच कन्याओ मे से एक ।

क्रौड़–१ देखो 'करोड'। २ देखो 'क्रोड'।

क्लांत–वि० [सं०] १ थकित, परिश्रान्त । २ कुम्हलाया हुआ । ३ उदास । ४ निर्बल ।

क्लाति–स्त्री० [स०] थकावट । परिश्रम । कमजोरी

क्लामना–स्त्री० १ थकावट, मुरझाहट, उदासी । २ पीडा, कष्ट (जैन)

क्लिस्ट–वि० [स० क्लिष्ट] १ कठिन, मुश्किल । २ दुस्साध्य । ३ क्लेशयुक्त ४ दु खी । ५ मुरझाया हुआ ।

क्लीव–वि० [सं०] १ नपु सक, हिंजडा, नामर्द । २ कायर, डरपोक । ३ सुस्त, काहिल ।

क्लेदरण (न)–पु० पाच प्रकार के कफो मे से एक ।

क्लेस–पु० [स० क्लेश] १ कलह, लडाई, झगडा । २ दु ख, कष्ट । ३ व्यथा, वेदना, दर्द । ४ क्रोध । ५ झंझट ।

क्वरण–पु० [स०] १ वीणा की झंकार । २ घु घुरू की ध्वनि ।

क्वांर–देखो 'कवर' ।

क्वांरो–देखो 'कवारो'। (–स्त्री० क्वारी)

क्वाड–पु० १ कुल्हाडी । २ देखो 'कपाट'।

क्वाथ–पु० [स०] औषधि का काढा ।

क्वार–पु० १ आश्विन माम । २ देखो 'कुमार ।

क्षण, क्षणि–पु० [म] १ समय का अत्यल्प भाग, पल । लहमा । २ अवसर, मौका । ३ समय वक्त । ४ अवकाश, फुर्सत । —**दा**–स्त्री० रात्रि । —**दाकार**–पु० चन्द्रमा । —**भगुर**– –वि० क्षण मे नष्ट होने वाला । क्षणिक ।

क्षणिक–वि० [सं०] क्षण भर का, दम भर का । —**ता**–स्त्री० अस्थिरता, क्षण भर की वात ।

क्षणिका–स्त्री० [स०] बिजली, विद्यु त ।

क्षत–पु० घाव, जख्म । २ फोडा । ३ भय । ४ दु:ख । ५ खतरा । –वि० १ घायल । २ टूटा हुआ । ३ कटा हुआ । ४ भग । ५ चीरा हुआ । —**ज**–वि० घाव से उत्पन्न । लाल, सुर्ख । –पु० एक प्रकार की खासी ।

क्षतज–देखो 'क्षितिज'।

क्षत्रिय, क्षत्री–पु० [स क्षत्रिय] चार वर्णों मे दूसरे वर्ण का पुरुष, राजपूत ।

क्षत्रवट–पु० क्षत्रित्व ।

क्षत्री–पु० [म० क्षत्रिय] क्षत्रिय, राजपूत ।

क्षपण, क्षपणक–वि० [स०] निर्लज्ज । बेशर्म । पु०–१बौद्ध सन्यासी या भिक्षुक । २ जैन यति । ३ विक्रमादित्य की सभा का एक रत्न ।

क्षपा–स्त्री० [स०] १ रात, रजनी । २ हल्दी । —**कर, नाथ**– –पु० चन्द्रमा । कपूर ।

क्षमा–स्त्री० [स०] १ माफी, प्रतिकार की दया । २ धैर्य, सहन शीलता । ३ पृथ्वी । ४ दक्ष की एक कन्या । ५ दुर्गा का एक नाम । —**प**–पु० भूमि और जल ।

क्षय–पु० [स०] १ यक्ष्मा रोग, टी बी । २ ह्रास, कमी । ३ नाश, अत । ४ प्रलय ।

क्षयी–पु० [सं० क्षयिन्] १ चन्द्रमा । २ क्षय रोग । –वि० क्षय का रोगी ।

क्षाताकारी–वि० [सं० क्षातिकारी] १ क्षमा करने वाला । २ सहनशील, शात ।

क्षार–पु० [स०] १ खार, नमक । २ पानी, जल । ३ रस, सार ४ औषधियो के लिए तैयार किया हुआ नमक । ५ औषधि विशेष । ६ सज्जी खार । ७ भस्म राख । ८ सुहागा । ९ शोरा । १० खारापन । –वि० खारा । कडवा ।

क्षिति–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि । २ गृह, निवास स्थान । ३ हानि, नाश । ४ प्रलय । —**ज**–पु० आकाश । वृक्ष । केंचुआ । मगल ग्रह । —**जा**–स्त्री० सीता ।

क्षीण–वि० [स०] १ दुबला, पतला, कृश । २ नाजुक । ३ स्वल्प, थोडा । ४ धनहीन । ५ निर्बल ।

क्षीरदरी–पु० [स० क्षीरहृद] दूध की झील, दूध का हौज ।

क्षीरोदक क्षीरोदधि–पु० क्षीर सागर ।

क्षु णी–स्त्री० [स० क्षोणी] पृथ्वी, भूमि ।

क्षु धा–स्त्री० [स०] १ भोजन की इच्छा, भूख । २ अभिलाषा ।

क्षेत्र–पु० [सं क्षेत्रम्] १ खेत, मैदान, भूमि । २ भू-सम्पत्ति । ३ स्थान, आवास । ४ पुण्य स्थान तीर्थ । ५ जन्म स्थान । ६ स्त्री ।

क्षेत्रपाळ–पु० [स०] १ एक देव विशेष। २ खेत का रखवाला। ३ ४९ भैरवो मे से एक। ४ द्वारपाल। ५ व्यवस्थापक।
क्षेत्रफळ–पु० [स०] स्थान की लम्बाई-चौडाई का परिमाण।
क्षेप–स्त्री० [स०] १ उछाल, कुदान। २ फेंकना क्रिया। ३ ठोकर। ४ निंदा, अपकीर्ति। ५ कलक। ६ दूरी। ७ अक्षाश। ८ गुजारना, बिताना। ९ चालान। १० पर्यटन, भ्रमण। ११ समूह। १२ आवृत्ति।
क्षेपणी–स्त्री० [स०] १ नाव की वल्ली, डाड। २ जाल। ३ एक प्रकार का शस्त्र।
क्षेमंकरी–स्त्री० १ एक चिडिया विशेष। २ देखो 'क्षेमकरी'।
क्षेम–पु० [स०] १ सुरक्षा, प्राप्त वस्तु की रक्षा। २ कुशल।
क्षेमकरण–पु० अर्जुन का एक पौत्र।
क्षेमकरी–स्त्री० [स०] १ श्वेत गले की चील। २ एक देवी, कुशल करने वाली।
क्षेमकल्याण–पु० १ कुशलक्षेम। २ एक राग विशेष।
क्षेमकारी–देखो 'क्षेमकरी'।
क्षोण, (णा, णी)–स्त्री० [स० क्षौणि] १ पृथ्वी, भूमि। २ एक की सख्या।
क्षोणिप–पु० [स०] राजा।
क्षोहण (णि णी)–देखो 'अक्षोहिणी'।

– ख –

ख–नागरी वर्णमाला का द्वितीय व्यजन वर्ण।
खक–देखो 'खख'।
खकार (रो)–देखो 'खखार'।
खंख–स्त्री० [स० ख+अ क] बादल या धूंए की तरह उठने वाले धूल के बारीक कण-समूह। गर्द, रज।
खंखर (रो)–वि० १ बहुत पुराना। २ अति वृद्ध। ३ सूखा हुआ व थोथा। ४ जो आकर्षक न हो। ५ निर्जन, उजाड।
खंखळ, खखाड–स्त्री० [स० खखोल] आधी।
खखाट–स्त्री० तेज आधी की आवाज।
खखार (रो)–पु० १ धीमे से खासने की क्रिया या भाव। २ हल्की खासी। ३ गाढा थूक, बलगम, कफ। ४ नाश, ध्वस।
खखाळ–देखो 'खखळ'।
खखाळणो (बो)–देखो 'खखोळणो (बो)।
खखेरणो (बो)–क्रि० १ पकड कर जोर से हिलाना। २ झक-झोरना। ३ झाडना।
खंखोळणो (बो)–क्रि० [स० क्षालन] १ पानी मे डुबो कर निकाल लेना। २ हल्के से धोना। ३ प्रक्षालन करना। ४ स्नान करना।
खखोळी (ळो)–स्त्री० १ स्नान। २ स्नान के लिए लगाई जाने वाली डुबकी।
खग–देखो 'खग'।
खगवाळो–देखो 'खु गाळो'।
खगापति (ती)–देखो 'खगापत'।
खगाळ–पु० १ तीर, बाण। २ नाश, ध्वस।
खगालणो–वि० सहार या नाश करने वाला।
खगाळणो (बो)–क्रि० सहार या नाश करना।
खगेल–देखो 'खगैल'।
खच–स्त्री० [स० कर्ष] १ खिचावट, तनाव। २ कमी। ३ तगी। ४ मन-मुटाव। ५ शत्रुता। ६ तिरछापन। ७ भौंह का तनाव। ८ खीच-तान। ९ आग्रह, मनुहार।
खंचणो (बो)–क्रि० [स० कर्षणम्] १ खिचना, खीचा जाना। २ तन जाना। ३ ऐंठ जाना। ४ चिह्नित या मडित होना। ५ तंगी या कमी सहना।
खचमास–स्त्री० अर्द्ध मडलाकार पत्थर की चपटी गढन।
खचाणो (बो)–क्रि० १ खिचवाना। २ तनवाना। ३ ऐठन डलवाना। ४ चिह्नित या मण्डित कराना। ५ तगी या कमी मे रखना।
खज, खजक–वि० [स० खज] १ लगडा, पगु। २ रुका हुआ। –पु० १ पैर जकड जाने का एक रोग। २ खजन पक्षी। ३ एक खेल विशेष।
खजडी–देखो 'खजरी'।
खजन–पु० [स०] सुन्दर आखो वाला एक पक्षी विशेष। वि० काला, श्याम। —आसन–पु० चौरासी आसनो मे से एक।
खजर–पु० [फा०] १ एक प्रकार का शस्त्र। छुरा। २ वृद्ध, बूढा। ३ देखो 'खजन'।
खजरी–स्त्री० १ छोटी डफली। २ स्त्री के हाथ का आभूषण विशेष।

खजरीट (र)–पु० [सं०] १ खंजन पक्षी। २ एक प्रकार की ताल।

खजा–पु० एक मात्रिक छद विशेष।

खजौ–वि०(स्त्री० खजी) वह जिसके सिर के बाल न हों, गजा।

खड–पु० [सं० खड; खडम्] १ विभाग, अनुभाग। २ हिस्सा, भाग, अ श। ३ टुकड़ा। ४ अध्याय, सर्ग। ५ समूह, झुण्ड। ६ शक्कर, चीनी। ७ रत्न का दोप। ८ देश, मुल्क। ९ काला नमक। १० दिशा। ११ वन। १२ मजिल। १३ महादेव। १४ परिच्छेद। १५ तलवार। १६ मास। १७ नौ की सख्या॰। —काव्य–पु० काव्य का अश। लघु काव्य। —पति–पु० राजा। —परस, परसु–पु० शिव, महादेव। परशुराम। विष्णु। राहू। दात टूटा हुआ हाथी। —पीन–स्त्री० मछली। —पुरी–स्त्री० मीठी पुडी (पूरी)। —प्रळय–पु० ब्रह्मा का एक दिन बीतने पर होने वाला प्रलय। —फरण–पु० एक प्रकार का माप। —बड, विहड, विहड–पु० विध्वस, नाश। वि०–अपूर्ण। टूक-टूक। —मेरु–पु० पिंगल की एक रीति।

खडण (न)–पु० [सं० खण्डन] १ तोड-फोड की क्रिया। २ छेदन। ३ किसी बात या सिद्धात की काट, निराकरण। ४ विरोध। ५ विप्लव। ६ विसर्जन। –वि० १ तोडा हुआ। २ टूटा हुआ। ३ कटा हुआ। ४ विभाजित।

खडणौ (बौ)–क्रि० [सं० खण्डनम्] १ टूट-फूट होना, टूटना। खडित होना। २ कम होना, घटना। ३ विभक्त हो जाना। ४ खडन करना, तोडना। ५ नष्ट करना। ६ सहार करना। ७ मारना। ८ निराकरण करना। ९ साथी को छोड देना। १० पृथक होना।

खडत–देखो 'खडित'।

खंडर–पु० १ नाश, संहार, ध्वस। २ देखो 'खडहर'।

खडरणौ (बौ)–क्रि० १ विध्वंस या नाश करना। २ मारना, सहार करना।

खडळ–पु० [सं० खडल] १ खड्गधारी योद्धा, वीर। २ देखो 'खड'।

खंडव–देखो 'खाडव'।

खडवाळियौ–पु० [सं० खड+आलुच] खान मे पत्थर निकालने वाला श्रमिक।

खंडहर–पु० [सं० खड+घर] इमारत का भग्नावशेष। टूटा मकान।

खंडा–स्त्री० [सं० खड] तलवार, खड्ग।

खडाक–वि० [सं० खड+रा० प्र० आक] सहार करने वाला।

खडाखीण (पीण)–स्त्री० [सं० क्षुद्राण्डपीन] मछली।

खडार–देखो 'खडहर'।

खडाळि–स्त्री० [सं० खड+आलि] १ तेल का एक नाप। २ सरोवर, झील। ३ देवी, दुर्गा। ४ कामेच्छा वाली स्त्री।

खंडाळौ–पु० [सं० खड+आलुच] खड्गधारी योद्धा।

खडाहळ–स्त्री० [सं० खड+अवली] नगी तलवारों की पक्ति।

खडिक–स्त्री० [सं०] कुक्षि, काख।

खडित–वि० [सं०] १ टूटा हुआ, भग्न। २ अपूर्ण।

खडिता–स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका पति अन्यत्र रात्रि व्यतीत करता हो। २ आठ प्रकार की नायिकाओं मे से एक।

खडिनी–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि।

खंडिवन–देखो 'खाडव'।

खडी–स्त्री० [सं० खडिनी] १ पृथ्वी। २ एक प्रकार का व्यजन। ३ देखो 'खड'। ४ देखो 'खाडव'। ५ देखो 'खाड'।

खडीवन–पु० खाडववन। —खावक–पु० अग्नि, आग।

खडोखडि–वि० खंड-खड, टूक-टूक।

खडौ–पु० [सं० खण्ड] १ चुनाई का पत्थर। २ देखो 'खंड'। ३ देखो 'खाडौ'।

खणकौ–पु० १ धातु के बर्तनों की आवाज। २ झणझणाहट। [सं० खनक] ३ चूहा।

खत–स्त्री० १ अभिलाषा, इच्छा, उत्कण्ठा। २ दाढी। ३ देखो 'खत'।

खति (ती)–स्त्री० १ लगन, इच्छा, अभिलाषा। २ होश, चेतना। ३ देखो 'खाति'।

खतौ–देखो 'खातौ'।

खंदक (डी)–स्त्री० [अ०] १ शहर या किले के चारों ओर खोदी हुई खाई। २ खदान। ३ खाई, खड्डा, गर्त।

खदाखिणौ–देखो 'खंधौ'।

खदाखोळ–स्त्री० गदहमस्ती, हाथापाई।

खदार–देखो 'गाधार'।

खदी–देखो 'खधी'।

खदेड़ी (ड़ौ)–देखो 'खानेडौ'।

खदौ–देखो 'खंधौ'।

खध–पु० [सं० स्कध] १ कधा, अ श। २ शवयान के कधा देने की क्रिया। ३ शरीर। ४ गर्दन। ५ काव्य छन्द का एक भेद। ६ आर्या छन्द का एक भेद।

खंधवालि–वि० [स्कध+वाल] वह जिसके कधे पर बाल बिखरे हुए हों।

खधाण (न)–पु० [सं० स्कधानम्] गाहा छन्द का एक भेद।

खधागळि–स्त्री० [सं० स्कधकलि] एक प्रकार का खेल।

खधावार, खधार–पु० [सं० स्कंधावार] १ राजधानी। २ सैन्य शिविर। ३ फौज, सेना। ४ घोडा। ५ राजा, सरदार। ६ एक प्राचीन देश, 'काधार'।

खधारी (रौ)–वि० कधार का, कधार सवधी। –पु० कधार का घोडा।
खधियौ–पु० १ मकान के बाहर की छोटी दीवार। २ देखो 'खधौ'।
खधी–स्त्री० [स० स्कधक] ऋण की किश्त। —**वाळ**–वि० किश्त देने वाला ऋणी।
खधेड (डी, ड़ौ)–देखो 'खावेडौ'।
खधौ–पु० १ मकान की त्रिकोणात्मक ऊची दीवार। २ देखो 'खाधौ'।
खब (भ)–पु० [स० स्कम्भ] १ स्तभ, खबा। २ सहारा, आश्रय। ३ पहाड की तलहटी का मध्य भाग। ४ कंधा। ५ टेढापन, तिरछापन। ६ गुफा, कदरा। ७ हाथी।
खंबायची–१ देखो 'खम्माच'। २ देखो 'खमायची'।
खंबौ–देखो 'खब'।
खभउ–देखो 'खब'।
खभट–पु० नौकर, सेवक।
खभणौ (बौ)–क्रि० रोकना, अवरुद्ध करना।
खंभायच (ची)–१ देखो 'खम्माच'। २ देखो 'खमायची'।
खभारौ–पु० हाथी बाधने का स्थान।
खभूठाण (णौ)–पु० [स० कुभी+स्थान] हाथी बाधने का स्थान।
खभौ–देखो 'खब'।
खवद–देखो 'खाविंद'।
खंधौ–पु० [स० स्कध] १ कधा। २ रहट के मध्य का स्तभ।
खंसणौ (बौ)–१ देखो 'खसणौ'(बौ)। देखो 'खांसणौ' (बौ)'।
ख–पु० [स० ख, ख]-१ सूर्य। २ स्वर्ग। ३ आकाश। ४ शून्य। ५ गड्ढा, गर्त। ६ छेद, विल। ७ कुआ। ८ इन्द्रिय। ९ कर्म। १० मुख। ११ बिन्दु। १२ शब्द। १३ ब्रह्मा। १४ सुख, आनन्द। १५ कमल। १६ पहाड। १७ प्रलय। १८ निर्गम, निकास। १९ अनुस्वार। २० ज्ञान। २१ ब्राह्मण। २२ घाव। २३ अवरक। २४ लक्ष्मी। २५ पृथ्वी। २६ खाई।
खइग–पु० [फा० खिग] घोडा, अश्व।
खइ–देखो 'क्षय'।
खड्ग–पु० खड्ग, तलवार।
खइरु (रौ)–देखो 'खैर'।
खई–स्त्री० कटीली झाडियो का ढेर।
खईस–वि० [स० ख+शीर्ष] १ नीच, पापी, दुष्ट। २ उद्दण्ड, आततायी। ३ परिश्रमी। ४ बेशिर का, भूत, प्रेत।
खउदालिम (मि)–देखो 'खूदालिम'।
खकट–वि० १ सख्त, कठोर। २ अतिवृद्ध, बूढा।
खकर–पु० मोर।
खकार–पु० १ 'ख' वर्ण। २ खखार।
खक्खड–देखो 'खखड'।
खख–देखो 'खख'।
खखड—पु० [स० ख+खड] १ आकाश। २ कुक्कुट। –वि० १ जोरदार, जवरदस्त। २ वृद्ध। —**धज**–वि० प्रचड। बलशाली, वृद्ध।
खखपति–वि० कगाल, निर्धन।
खखळ–स्त्री० कलकल की ध्वनि।
खखाटी–स्त्री० खासी, खरखरी।
खगद–देखो 'खगेंद्र'।
खग–पु० [स०] १ पक्षी, पछी। २ चिडिया। ३ मोर। ४ पवन। ५ टिड्डा। ६ बादल। ७ तारा। ८ चन्द्रमा। ९ ग्रह। १० सूर्य। ११ देवता। १२ गरुड। १३ खड्ग तलवार। १४ तीर, बाण। १५ गिद्धनी। १६ सूअर व ऊट के मध्य के दात। १७ गधर्व। १८ गेंडे की थूथन के अगाडी का अवयव विशेष। —**ईस, ईसवर**–पु० गरुड। —**खेल**–पु० लडाई, युद्ध। —**चाळौ**–पु० युद्ध। –**झलौ, झलणौ धर**–पु० खड्गधारी योद्धा। —**धार**–पु० तलवार। —**पथ, पथ**–पु० आकाश। —**पत, पति, पती**–पु० पक्षिराज, गरुड। —**मेळ**–पु० युद्ध। —**राज, राजा, राय, राव**—पु० गरुड। —**वाट**–पु० युद्ध, समर। —**वाह, वाहौ**–पु० तलवार चलाने मे निपुण, योद्धा।
खगट–वि० उदार, दातार।
खगणौ (बौ)–क्रि० नाश करना। खडित करना।
खगाधर–पु० १ पेड वृक्ष। २ म्यान।
खगांधीस, (पत,पती,राज)–पु० [स० खग+अधीश] गरुड।
खगाट–स्त्री० १ तलवार, खड्ग। २ योद्धा, वीर।
खगाधिप–पु० गरुड।
खगारण–पु० गरुड।
खगाळी–स्त्री० देवी। –वि० खड्ग धारण करने वाली।
खगिंद, खगिंद्र खगींद्र–देखो 'खगेंद्र'।
खगि, खगू–देखो 'खग'।
खगेंद्र–पु० [स०] गरुड।
खगेल (खगैल)–पु० १ सूअर। २ लम्बे दांतो वाला हाथी। ३ योद्धा वीर।
खगेस (र)–पु० [स० खगेश] गरुड। —**अर, अरि**–पु० शेषनाग।
खगोल–पु० [स०] १ आकाश मण्डल। २ ज्योतिर्विद्या।
खग्ग, (ग्गि, ग्गौ)–पु० १ तलवार। २ पक्षी। –**वग्ग**–पु० तलवार का युद्ध। —**बांणी, वाणी**–स्त्री० तलवारो की झनझनाहट। पक्षियो का कलरव। –**वारी**–स्त्री० तलवार की धार। —**वाहौ**–देखो 'खगवाहौ'।

खगाट–देखो 'खगाट'।
खग्रास–पु० सूर्य, चद्र का पूर्ण ग्रहण।
खड–स्त्री० [स० खड] १ घास। २ सोनापाठा वृक्ष। ३ वन, जगल। ४ एक ऋषि। ५ खर। ६ पयाल। ७ गति, चाल। ८ हाकना क्रिया।
खडक–स्त्री० १ जलाशय या नदी तट। २ वाघ। ३ चिता। ४ एक प्रकार का खाद्य, पदार्थ। ५ खटका, ध्वनि।
खड़कणौ (बौ)–क्रि० [स० खिट्] १ खडकना, झकृत होना। २ वजना। ३ ध्वनि करते हुए वहना। ४ तह पर तह लगाना। ५ खटकना। ६ खट-पट होना। ७ उत्तरदायित्व देना।
खडकाचर–पु० वडा काचर, छोटी ककडी।
खडकाणौ (बौ)–क्रि० १ वजाना। २ झकृत करना। ३ आवाज या ध्वनि करना। ४ खटकाना। ५ ऊपरा ऊपरि रखाना, चुनाना।
खडकारौ–पु० १ खटका, शब्द। २ इशारा, कटाक्ष।
खड़कियापाग–देखो 'खिडकियापाग'।
खडकी–स्त्री० १ घर का मुख्य द्वार, मुख्य द्वार वद करने के कपाट। २ खिडकी।
खडकौ–पु० १ खटका, ध्वनि। २ नदी, तट, किनारा। ३ मृत्यु-भोज के वाद वजने वाला ढोल।
खडक्कणौ (बौ)–देखो 'खडकणौ (बौ)।
खडक्खड–देखो 'खडखड'।
खडख–देखो 'खडक'।
खडखड–स्त्री० खट-खट ध्वनि।
खडखडाट (त)–स्त्री० खड-खड ध्वनि।
खडखडियौ–पु० १ पालकी, पीनस। २ घोडागाडी, तागा। ३ टूटी गाडी। –वि० खड-खड करने वाला।
खड़खडी (डौ)–स्त्री० कपकपी।
खड़खड़–देखो 'खडखड'।
खड़ग (गी, ग्ग)–पु० [स० षड्ज] १ सरगम का प्रथम या चतुर्थ स्वर षडज। –स्त्री० [स० खड्ग] २ तलवार, कृपाण। ३ गेंडा, हाथी। —खेल्ह–पु० युद्ध। —झल, झल्ल–पु० योद्धा, वीर। —धर, धारी–पु० योद्धा। —धारणी–स्त्री० दुर्गा। —सिंध–पु० वीर। —हत, हय–वि० योद्धा, शस्त्र से आहत वीर।
खडगी–पु० [स० खड्गिन्] १ गेंडा। २ योद्धा।
खडड–स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।
खड़ड़णौ (बौ)–क्रि० १ घवराना, हडवडाना। २ भवनादि का गिरना। ३ इस प्रकार गिरने से ध्वनि होना।
खडचर–पु० पशु, मवेशी।
खड़चराई–स्त्री० एक प्रकार का प्राचीन लगान।
खड़जत्र–पु० षडयन्त्र।
खडज–पु० [स० षडज] सगीत के सात स्वरों मे प्रथम स्वर।
खड़णौ (नौ)–स्त्री० [सं० खेटनम्] १ खेत की जुताई। २ वाहन चलाने की क्रिया या ढग।
खड़णौ (बौ)–क्रि० [स० खेटनम्] १ खेत की जुताई करना। २ चलाना, हाकना। ३ मरना।
खडदोखड, (डौ)–पु० यौ० चारे के अभाव वाला वर्ष। दुर्भिक्ष।
खडवड–स्त्री० १ खट-खट ध्वनि। २ व्यतिक्रम, उलटफेर। ३ हलचल। ४ बोलचाल, लडाई।
खडवडणौ (बौ) क्रि० १ खट-खट होना। २ हलचल होना। ३ लडाई होना। ४ उतावला होना। ५ चौंकना। ६ सतर्क होना।
खड़वडाहट, खड़वडी–देखो 'खडवड'।
खडवूझौ–देखो 'खरबूझौ'।
खड़वौ–पु० १ मोटा लौंग। २ छीलकर उतारा हुआ भाग। ३ हिंदवानी का विकृत फल।
खडब्मड, खडमड– देखो 'खडवड'।
खड़मड़णौ(बौ)–देखो 'खडवडणौ (बौ)।
खडवा–स्त्री० १ जोती हुई भूमि। २ पशु की चाल। ३ यात्रा।
खडसल–स्त्री० चार पहियों का रथ।
खड़हड़–स्त्री० १ एक वारगी ऊपर से नीचे, कूदने या गिरने की ध्वनि। २ देखो 'खडवड़'।
खड़हडणौ (बौ) -क्रि० १ लडखडाना। २ गिरना। ३ विजली चमकना। ४ ध्वनि होना। ५ देखो 'खडवडणौ (बौ)।
खडहरौ–स्त्री० एक प्रकार की गाडी, शकट।
खडहियौ, खडहीयौ–देखो 'खडियौ'।
खडाऊ–स्त्री० काष्ठ की चरण पादुका।
खडाक-क्रि० वि० १ एक ही झटके से, खट्ट से। २ सहसा, अचानक। –वि० सीधा, खडा।
खडाखड–स्त्री० १ शस्त्रों के टकराने की ध्वनि। २ शस्त्र प्रहार। –क्रि०वि० तेजी से, तुरत-फुरत। फटा-फट।
खडाखड़ी–क्रि० वि० १ खडे-खडे ही। २ एकाएक। –स्त्री० १ खट-पट, लडाई। २ शत्रुता। ३ ध्वनि विशेष।
खडाखर–पु० [सं० षडाक्षर] छ वर्ण का मत्र या जाप।
खडाणौ (बौ), खडावणौ (बौ)–क्रि० [स० खेटनम्] १ जुताई करना। २ चलवाना, हकवाना। ३ खिलाना।
खड़ि–स्त्री० खडिया मिट्टी। –वि० सफेद, श्वेत।
खड़ियौ–पु० याचकों का झोला।
खड़ीखम–वि० १ पूर्ण स्वस्थ। २ शक्तिशाली, बलवान। ३ खडा, सीधा।
खडीड–पु० भारी वस्तु के गिरने का शब्द।

खडीडंकी–स्त्री० मालखभ की एक कसरत।

खडीए–स्त्री० वर्षा का पानी एकत्र होने वाली नीची भूमि।

खडूंलौ–देखो 'खेडूलौ'।

खडौ–वि० [सं० खड्क] (स्त्री० खडी) १ पृथ्वी पर पैर रखकर शिर आकाश की ओर करके सीधा, खडा। २ एक शिरा धरती पर दूसरा आसमान मे रहने की दशा मे। ३ जो आडा न हो, ऊभा। ४ ऊपर उठा हुआ। ५ उन्नत। ६ सीधा तना हुआ। ७ प्रस्तुत, उपस्थित। ८ तैयार, सन्नद्ध। ९ जो गतिमान न हो, ठहरा हुआ। १० बनावट के अनुसार अपनी सही दशा मे स्थित। ११ आरभ, जारी। १२ बिना कटा। १३ समूचा, पूरा। १४ चैतन्य। १५ उठाया हुआ, विचाराधीन। १६ जलाशय की मिट्टी की जमी हुई तह।

खचत–वि० [स० खचित] १ लिखित। २ चित्रित, अ कित। ३ जडित। ४ निर्मित।

खचर–पु० [स०] १ सूर्य, रवि। २ बादल। ३ हवा। ४ पक्षी। ५ आकाशचारी। ६ देखो 'खच्चर'।

खचाखच–क्रि० वि० ठसाठम। लबालब।

खच्चर–पु० गधे व घोडी के सयोग से उत्पन्न पशु।

खज–पु० [स० खाद्य] १ खाद्य पदार्थ। २ देखो 'खाज'।

खजक–पु० [स०] मथनी।

खजमत–स्त्री० [अ० खिदमत] १ हजामत। २ देखो 'खिदमत'।

खजर–वि० क्रोधित, क्रुद्ध।

खजलौ–पु० खाजा।

खजानची–पु० खजाने का अधिकारी। केसियर।

खजानाबेहळ–पु० कपडद्वार का अनुभाग विशेष जिसमे ऐसी रकम रहती थी जिसके खर्च का हिसाब नही पूछा जाता था। (जयपुर)

खजानासार–पु० धन, दौलत। सपत्ति।

खजानू, (नौ)–पु० [अ० खजान] १ धनागार, कोष, खजाना। २ तलवार का एक भाग।

खजाणौ (बौ)–क्रि० १ खिजाना, चिढाना। २ क्रोधित करना।

खजार–स्त्री० वध्या बकरी।

खजीनौ–देखो 'खजानौ'।

खजूर, खजूरडी, खजूरि–पु० [स० खर्जूर] छुहारे का पेड, छुहारा, खजूर।

खजूरियौ–पु० जलाशय मे छितरने वाली घास विशेष के फल।

खजूरियौबावळ–पु० खजूर के वृक्ष जैसा लबोतरा बबूल।

खटग–पु० [स० षडाग] वेद के छ अग।

खट–वि० [स० षट] छ। –पु० खटका, आवाज। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

खटक–पु० १ खटका, आवाज। २ दर्द, कष्ट। ३ मानसिक कष्ट। कसक। ४ द्वेष। ५ शत्रुता। ६ प्रहार। ७ आशका। ८ चिंता। ९ त्रुटि, गलती।

खटकड़, खटकण–देखो 'खटकळ'।

खटकणौ (बौ)–क्रि० १ गिरने, पडने या टकराने से खटका होना, शब्द होना। २ चुभना। ३ दर्द या कष्ट होना। ४ बुरा लगना। ५ विरक्त होना। ६ डरना। ७ प्रहार होना। ८ अनिष्ट की आशका होना। ९ न सुहाना।

खटक्रम–पु० [स० षटकर्म] ब्राह्मणो के छ कर्म।

खटकळ–स्त्री० १ दरवाजे पर लगी छोटी फाटक। २ छ मात्रा का समूह (पिंगल)।

खटकाय–पु० जीया-जूण।

खटकूणौ–पु० [स० षट्कोणी] वज्र।

खटकोण–वि० छ कोणो का। –पु० वज्र।

खटकौ–पु० १ 'खट' की आवाज, खटका। २ भय, डर। ३ चिंता आशका। ४ 'खट' से खुलने वाला पेच। ५ चिटकणी।

खटखट–स्त्री० खटखट का शब्द। झझट, झमेला। झगडा, तकरार।

खटखटाणौ (बौ)–क्रि० १ दरवाजे पर खट-खट करना। २ स्मरण करना। ३ पुकारना।

खटचक्कर (चक्र)–पु० [सं० षट्-चक्र] शरीरस्थ छ चक्र यथा-आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि और प्रज्ञा।

खटचरण (चलण)–पु० [स० षट् चरण] भौंरा, भ्रमर। टिड्डी।

खटजती–पु० [स० षट्-यति] लक्ष्मण, हनुमान, भीष्म, भैरव, दत्त और गोरख छ यति।

खटजाति–वि० छ प्रकार की जातिए।

खटणी–स्त्री० १ खडिया मिट्टी। २ सहनशक्ति, सहनशीलता।

खटणौ (बौ)–क्रि० १ समाना। २ निभना। ३ सहन होना। ४ पर्याप्त होना। ५ हजम होना। ६ जरूरत होना। ७ उपार्जित करना, प्राप्त करना। ८ जीतना।

खटदरसण–पु० [स० षट्दर्शन] १ छ प्रकार के दर्शन न्याय, वैशेषिक, साख्य मीमासा, वेदान्त योग। २ छ की सख्या। ३ ब्राह्मण, जोगी, जगम, भाट, सन्यासी और साध इन छ जातियो का समूह। ४ इन जातियो से सबधित एक विभाग।

खटदरसणी–पु० [स० षट्दर्शनी] १ छ प्रकार के दर्शनो का ज्ञाता, पडित। २ छ दर्शन समूह से सबधित ज्ञान। १ छ जातियो से सबधित।

खटपट–स्त्री० १ लडाई, अनबन। २ काम, कार्य। ३ टकराहट का शब्द।

खटपटणौ (बौ)–क्रि० १ टकराना। २ लडना, झगडना।

खटपटियौ, खटपटौ–वि० १ झगडालू। २ प्रपची।

खटपटो–पु० १ काम, कार्य । २ देखो 'खटपट' ।
खटपद–पु० [सं० षट्-पद] १ छ चरण । २ भौंरा, भ्रमर । ३ टिड्डी । ४ छ की सख्या* ।
खटपदी–पु०[सं० षट्-पदी] १ जू । २ भौंरा, भ्रमर । ३ टिड्डी । ४ छप्पय छद ।
खटब्रन (ब्रन्न)–देखो 'षटदरसण' ।
खटभाख, (भाखा)–स्त्री० [सं० षट-भाषा] छ भाषाएं-सस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती, नागरापभ्र श ।
खटमल–पु० [सं० खट्वा-मल] १ खाट मे रहने वाला मटमैले रग का कीडा, उडुस । २ एक राजस्थानी लोक गीत ।
खटमात,(माता, मातुर)–पु० [सं० षाणमातुर] स्वामि कार्त्तिकेय ।
खटमिट्ठो (मिठो, मीठो)–वि० खट्टे व मीठे स्वाद का ।
खटमुख–पु० [सं० षट्-मुख] स्वामि कार्त्तिकेय ।
खटरस–पु० [सं० षट्-रस] १ खाद्य पदार्थों के माने गये छ रस, स्वाद । २ छ रसो से युक्त आचार । ३ खटाई ।
खटराग (राम)–स्त्री० [सं० षट-राग] १ सगीत के प्रसिद्ध छ राग । २ झझट । ३ झगडा । ४ छ की सख्या* ।
खटरित (तु)–स्त्री० [सं० षट्ऋतु] छ ऋतुए ।
खटरी–देखो 'खाटरी' । (स्त्री० खटरी)
खटवदन–पु० [सं० षट्वदन] स्वामि कार्त्तिकेय ।
खटवाग–पु० [सं०] १ एक शस्त्र विशेष । २ एक सूर्यवशी राजा । ३ चारपाई का पाया या पट्टी । ४ एक तान्त्रिक मुद्रा ।
खटवागी–पु० [सं०] शिव, महादेव ।
खटवाटी–स्त्री० १ जिद्द, हठ । २ प्रण, प्रतिज्ञा ।
खटाई–स्त्री० १ अम्लता, खट्टापन । २ खट्टा पदार्थ । ३ छल, कपट । ४ वैमनस्य, मन-मुटाव ।
खटाऊ–वि० १ प्राप्त करने वाला । २ सहन करने वाला । ३ निभने वाला । ४ समाने वाला ।
खटाक, खटाखट–क्रि०वि० १ खटके के साथ । २ तुरन्त, शीघ्र । ३ जल्दी-जल्दी । –स्त्री० खटखट ध्वनि ।
खटाखरी–पु० [सं० षडाक्षरी] छ अक्षरों का मत्र ।
खटाणो (बो)–क्रि० १ समाहित कर देना । २ निभाना । ३ सहन करना । ४ उपार्जन करना । ५ समझाना ।
खटापट (पटो)–देखो 'खटपट' ।
खटायत–देखो 'खटाऊ' ।
खटाळियो, खटाळो खटाल्यो–वि० [सं० खट् वासन] १ टूटा-फूटा । २ जीर्ण-शीर्ण । ३ व्यर्थ, बेकार । ४ खट-खट करके चलने वाला । –पु० ऊट पर पत्थर ढोते समय चार जामा [illegible] लगाया जाने वाला उपकरण ।
खटाव (वण)–पु० १ निर्वाह, गुजर-बसर । २ सहनशीलता, धैर्य । शांति । ३ देर, विलम्ब । ४ प्रतीक्षा, इतजार । ५ प्रतीक्षा करने की क्षमता ।
खटावणो (बो)–देखो 'खटाणो' (बो) ।
खटास–पु० १ खट्टापन, खटाई । २ मन-मुटाव । ३ तनाव, खिचाव ।
खटासियो–पु० पशुओ के शरीर मे होने वाली एक थैली ।
खटि (टी)–स्त्री० खडिया मिट्टी । –वि० पाच के बाद का, छठा ।
खटीक–पु० (स्त्री० खटीकण) १ एक अनुसूचित जाति । २ चमडा बेचने वाली एक जाति या उसका व्यक्ति । ३ कसाई ।
खटीकण–पु०दूध जमाने के लिए दूध मे या शाक का स्वाद बढाने के लिए शाक मे डाला जाने वाला खटा पदार्थ ।
खटूंबर–पु० एक वृक्ष विशेष ।
खटूंबरो–वि० खट्टा ।
खटैत–वि० योद्धा, वीर ।
खटोलडी (णी), खटोलियो, खटोली–स्त्री० १ छोटी खाट, खटिया । २ उडन-खटोला ।
खटोलवो, खटोळो–पु० १ खाट, पलग । २ वायुयान ।
खट्ट–देखो 'खट' ।
खट्टणो (बो)–देखो 'खटणो' (बो) ।
खट्टाचक–वि० अत्यधिक खट्टा ।
खट्टू–पु० जैसलमेर मे पाया जाने वाला पीले रग का पत्थर ।
खडगी–पु० [सं० षडाग] षडाग शास्त्र ।
खडजा–स्त्री० ईंटो की खडी चुनाई ।
खड–पु० वन ।
खडकणो (बो)–देखो 'खडकणो' (बो) ।
खडकी–देखो 'खडकी' ।
खडखडणो (बो)–देखो 'खडखडणो' (बो) ।
खडखाटी–पु० घास संबधी एक प्राचीन कर ।
खडखीण (पीण)–स्त्री० [सं० षटक्षीण] मछली ।
खडग–देखो 'खडग' ।
खडगी (गो)–पु० [सं० खड्ग] नाक पर पैने सीग वाला गेंडा ।
खडज–देखो 'खडज' ।
खडबूजो–देखो 'खरबूजो ।
खडहड–देखो 'खरहड' ।
खडान–स्त्री० १ नीची भूमि । २ गड्ढा ।
खडाळ (खडाल)–पु० १ ४९ क्षेत्रपालो मे से ४७वा । २ जैसलमेर का एक प्रदेश ।
खडालो–पु० खडाल का निवासी ।

खडावूज–देखो 'खाडावूज'।
खडियाळौ–पु० अधिक दातो वाला घोडा।
खडी–स्त्री० खडिया मिट्टी।
खडुग्रौ–पु० सिर का साफा।
खडूलौ–पु० वर्षा ऋतु मे होने वाला एक कद।
खडोग्रली–स्त्री० १ आमोद-प्रमोद के लिए बनाया हुआ जल कुंड। २ मनोरजन के लिए बनी छोटी नाव।
खडौ, खड्डु, खड्डौ–पु० [स० खात्] गड्ढा, गर्त, खड्डा।
खड्ग–पु० तलवार, खाडा।
खड्डू–पु० मध्य आकार का एक वृक्ष विशेष।
खणक–स्त्री० ध्वनि, झकार।
खणकरणौ (बौ)–क्रि० १ बजना, झकृत होना। २ तलवार का प्रहार होना। ३ तलवारो के प्रहार की ध्वनि होना।
खरण (णु)–पु० [स०] १ प्रण, व्रत, सकल्प। [सं० क्षण] २ पल, क्षण। ३ समय, वक्त। [स० खण्ड] ४ खड, विभाग। ५ मजिल। ६ कोष्ठक, कोठा। ७ घर। ८ एक विषैला जीव। —**नाडिका**–पु० धर्म घडी। शुभ या मागलिक समय।
खणक–स्त्री० [स० खनक] १ झकार, ध्वनि। २ चूहा, मूसा। ३ कनछ, कैंवच। –वि० नितान्त सूखा।
खणका–स्त्री० [स० क्षणिका] बिजली, विद्युत।
खणकारौ–पु० खटका, ध्वनि।
खणकरण, खणखण, खणखणाट, खणखणाटौ, खणखणाहट–स्त्री० १ खन खन ध्वनि, झकार। २ शस्त्राघात। ३ द्रव पदार्थों का उबाल, उबाल की ध्वनि।
खणणौ (बौ)–क्रि० १ खोदना। २ कुचरना, खिनना। ३ टीका लगाना (शीतला)।
खणत–वि० नीचा, अध।
खणदा–स्त्री० [सं० क्षणदा] रात्रि।
खणस (सौ)–पु० १ शत्रुता, दुश्मनी। २ नाराजगी। ३ खटक।
खणाणौ (बौ)–क्रि० १ खुदवाना। २ कुचराना, खिनाना। ३ टीका लगवाना।
खणिज–पु० [स० खनिज] १ खदान। २ खनिज पदार्थ। ३ खजाता।
खणु–देखो 'क्षण'।
खणोतरौ–पु० मिट्टी खोदने का ग्रौजार।
खतग–वि० [स० क्षत-अग] १ निडर, नि शक। २ साहसी। ३ शक्तिशाली पराक्रमी। ४ तीक्ष्ण, तेज। ५ घायल। ६ आश्चर्यजनक। ७ श्रेष्ठ, उत्तम। ८ सतान रहित। ९ अग हीन। –पु० १ आकाश। २ विष-बाण। ३ बाण तीर। ४ घोडा। ५ अभिमान। ६ एक कबूतर विशेष।
खत–पु० [अ० खत] १ चिट्ठी, पत्र। २ लिखावट, अक्षर। ३ ऋण-पत्र, दस्तावेज। ४ दाढी के बाल, दाढी। [स०क्षत्र] ५ घाव, जखम। [स०क्षिति] ६ पृथ्वी, जमीन। ७ क्षत्रियत्व।
खतकस–पु० बढई का एक औजार।
खतजात–पु० [स० क्षतजात] रुधिर, खून।
खतणौ (नौ)–पु० [अ० खत्न] सुन्नत।
खतमडौ–पु० श्वेत व श्याम, पूछ के बालो वाला बैल। (अशुभ)
खतम–वि० [अ० खत्म] १ अत, समाप्त। २ नष्ट। ३ पूर्ण। ४ अत्यन्त।
खतमाळ–पु० धूआ।
खतमेटण–पु० लाख, लाक्षा।
खतम्म–देखो 'खतम'।
खतरनाक–वि० [अ०] १ भयानक, डरावना। २ उद्दण्ड, बदमाश। ३ अनिष्टकारी। ४ धोखेबाज, कपटी। ५ वीर, बहादुर।
खतरौ–पु० [अ० खतर] १ डर, भय। २ जोखिम (रिस्क)। ३ आशका, सभावना। ४ सकट, आफत।
खतवट (ट्ट)–पु० [स० क्षत्रियत्व] १ क्षत्रियत्व। २ बहादुरी, शौर्य, पराक्रम।
खता–स्त्री० [अ०] १ अपराध, कसूर। २ भूल, गलती। ३ बदमाशी, उद्दण्डता। ४ धोखा, फरेब। ५ धक्का, झटका। ६ दण्ड, सजा। ७ झगडा, फिसाद।
खतावण (वणी)–स्त्री० खाता बही का कार्य।
खतावणौ (बौ)–क्रि० खाता बही का कार्य करना।
खति (ती)–स्त्री० [स० क्षति] १ हानि, नुकसान। २ कमी, घाटा। ३ ह्रास। ४ विनाश। ५ तलवार की मूठ के नीचे का भाग। [स० क्षिति] ६ पृथ्वी, भूमि।
खतिया–पु० लोह-कीट, जग।
खतेड–देखो 'खातरोड'।
खतीब–वि० [अ०] १ खुतबा पढने वाला। २ लोगो को सबोधन करके कुछ कहने वाला।
खतोती–देखो 'खतावणी'।
खतौ–पु० १ एक घटिया ऊनी वस्त्र। २ मुसलमानो का अधोवस्त्र।
खत्ती–स्त्री० [स०क्षत्रिय] क्षत्रियानी, राजपूत स्त्री।
खत्थे (थै)–क्रि० वि० शीघ्रता से, तेजी से।
खत्यौ–१ देखो 'खाथौ'। २ देखो 'खतौ'।
खत्र–पु० [स० क्षत्र] (स्त्री० खत्रणी, खत्राणी) १ क्षत्रियत्व, वीरता। २ शत्रु, दुश्मन। ३ युद्ध। ४ क्षत्रिय। ५ प्रभुता, अधिकार। –वि० श्रेष्ठ, उत्तम बढिया, अच्छा। —**वाव, वौट, वट, वाट**–पु० क्षत्रित्व, बहादुरी। —**वेध**–पु० युद्ध।

खरखरी–स्त्री० गले मे होने वाली खरास ।

खरखोदरियो, खरखोदरो–पु० १ वृक्ष का खोखला भाग । २ घर का छोटा-मोटा कार्य, गृहकार्य ।

खरगडो–पु० एक प्राचीन लगान ।

खरगू (गो), खरगोस–पु० शशक, खरहा ।

खरड (क, को)–स्त्री० १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । २ अफीम का बुरादा । ३ बडी दरी, जाजम । ४ रगड घर्पण । ५ घसीट की लिखावट । ६ ऊंट के बालो का वस्त्र, गदा । ७ पानी बहने की ध्वनि, कलकल ।

खरड़कणो (बो)–क्रि० १ टकराना । २ चुभना, खटकना । ३ कसकना ।

खरडणो (बो), खरड़िणो (बो)–क्रि० १ कुचलना । २ कुचल कर मैल दूर करना । ३ घसीट मे लिखना । ४ खरोचना । ५ वेदना से तडफना ।

खरडो–पु० १ ऋण का दस्तावेज । २ सूचना पत्र । ३ लबा पत्र । ४ एक प्रकार का प्राचीन कर । ५ घसीट मे लिखा लबा पत्र ।

खरच–पु० [फा० खर्च] १ व्यय । २ लागत । ३ ह्रास, कमी । ४ त्याग । ५ क्षय, नाश । ६ मृत्यु-भोज ।

खरचणो (बो)–क्रि० खर्च करना, व्यय करना ।

खरची–स्त्री० १ निर्वाह योग्य धन । २ यात्रा-व्यय, खर्ची ।

खरचीलो–वि० (स्त्री० खरचीली) १ अधिक व्यय करने वाला । २ अधिक खर्च का ।

खरचो–देखो 'खरच' ।

खरजूर–पु० [स० खर्जूर] १ रजत, चादी । २ हरताल । ३ खजूर का वृक्ष । —वेध–पु० ज्योतिष का एक योग ।

खरजूरी–स्त्री० [स० खर्जूरी] खजूर का वृक्ष ।

खरड–पु० निकृष्ट कोटि का व्यक्ति, नीच व्यक्ति ।

खरड्वो–पु० गेहूं की फसल मे होने वाला एक घास ।

खरण–स्त्री० १ शस्त्र पैना करने की सान । २ उबलने की ध्वनि ।

खरणियो–देखो 'खिरणियो' ।

खरणी–स्त्री० १ मुखबरी करने के लिये चोरो को दिया जाने वाला गुप्त धन । [स० क्षीरणी] २ मौलश्री का वृक्ष व फल । ३ राजाओ द्वारा दिया जाने वाला कर ।

खरणो–पु० [स० क्षरण] वश, कुल, गोत्र ।

खरणो (बो)–क्रि० [स० क्षरण] १ वीर गति प्राप्त होना, मरना । २ गिरना, पडना । ३ झडना । ४ रिसना, टपकना ।

खरतर–पु० तेजस्विता का भाव । –वि० १ तेज, तीक्ष्ण । २ कठिन, अतिकठिन । —गच्छ–पु० एक जैन सम्प्रदाय ।

खरतरी–वि० (स्त्री० खरतरी) तेज, तीक्ष्ण ।

खरदावणो–पु० स्त्रियो का एक आभूपण ।

खरधरो–देखो 'खुरदरो' । (स्त्री० खरधरी)

खरपट, खरपटो–वि० [सं० खर्पट] १ अति वृद्ध । २ देखो 'खुरपो' ।

खरपतवार–पु० निराई के समय खेत से निकाला जाने वाला घास-फूस ।

खरपाट–स्त्री० बास आदि का महीन या बारीक खड जो शरीर मे घुस जाता है, कमाची । फास

खरब–वि० [स० खर्व] १ सौ अरब । २ नीच, बुरा । ३ नाटा, बौना, वामन । ४ छोटा लघु । –पु० १ सौ अरब की सख्या । २ नव निधियों मे से एक । —साख–वि० नाटा, बौना ।

खरबूजो–पु० [फा० खर्बूजा] ककडी जाति का एक लता-फल ।

खरळ–स्त्री० [स० खल] १ औपधिया कूटने की पत्थर आदि की नावनुमा कुण्डी । २ एक दिशा ।

खरळकणो–पु० एक ध्वनि विशेप ।

खरळकणो (बो), खरळक्कणो (बो)–क्रि० १ ध्वनि करना, खडकना । २ खिसकना । ३ निकलना । ४ कलकल की ध्वनि करते हुए बहना ।

खरळी–स्त्री० १ स्नान । २ खेत मे पानी देने की नाली । ३ बरबादी, हानि । ४ नाश ।

खरव–देखो 'खरब' ।

खरवळा–पु० पैर, खुरयुक्त पैर ।

खरवास–पु० [स० खरमास] पौप व चैत्र मास ।

खरविता–स्त्री० [सं० खर्विता] १ चतुर्दशी मिली अमावस्या । २ कम कालमान की तिथि ।

खरसडियो–पु० एक प्रकार का बैल ।

खरसणियो, खरसणो–पु० १ शमी, करील आदि वृक्ष की झाडी । २ एक प्रकार का क्षुप ।

खरसल–स्त्री० एक प्रकार की गाडी ।

खरसुमो–पु० गधे के समान सुमो वाला घोडा ।

खरहड खरहंन,(हड्ड)–पु० १ घोडा । २ सेना, फौज । ३ चिता । ४ युद्ध मे शस्त्र खण्डन ।

खरहर–स्त्री० [प्रा०] खरखराहट, ध्वनि विशेप ।

खराङक–पु० शिव का एक अनुचर

खरांसु–पु० [स० खराशु] सूर्य ।

खराई–स्त्री० १ खरा होने का भाव । २ पक्कापन । ३ विशुद्धता ।

खराखर (री)–१ पक्का । दृढ । २ ठीक, उचित, सही । ३ कठिन, मुश्किल । –स्त्री० १ दृढ-निश्चय । २ कठिनाई ।

खराडणो (बो)–क्रि० १ खिलाना । २ पक्का कराना ।

खराड़ो–पु० पशुओ का एक सक्रामक रोग ।

खराणौ (बौ)–क्रि० १ किसी बात पर पक्का व दृढ़ करना। २ वचन लेना।

खराद–पु० [फा०] १ लकडी या धातु की सतह चिकनी करने का औजार। –स्त्री० २ बनावट, ढग।

खरादणौ (बौ)–क्रि० १ खराद लगाकर साफ करना। २ सुडौल बनाना।

खरावी–देखो 'खैराती'।

खरापण (णौ)–पु० १ पक्कापन, दृढता। २ सत्यता। ३ विशुद्धता।

खराब–वि० [अ०] १ बुरा, नीच। २ निकृष्ट, हीन। ३ भ्रष्ट। ४ नष्ट, बर्बाद। ५ दुर्दशाग्रस्त। ६ पतित।

खराबी (बौ)–स्त्री० [अ०] १ बुराई, नीचता। २ दोष, अवगुण। ३ दुरावस्था। ४ गदगी। ५ क्षति, हानि, बर्बादी। ६ दुर्दशा।

खरारि (री)–पु० [स०] १ विष्णु। २ श्रीराम। ३ श्रीकृष्ण। ४ ईश्वर। ५ बलराम।

खरारौ–पु० एक क्षुप विशेष का झाड।

खरास–स्त्री० खरोंच, रगड।

खरियळ–वि० खरी कमाई करने वाला।

खरी–वि० १ निश्चय। २ देखो 'खरौ'।

खरीकौ (खौ)–वि० (स्त्री० खरीकी, खी) स्पष्टवादी, सच्चा।

खरीघाहि–पु० विश्वास।

खरीटिया–स्त्री० बकरी की एक जाति।

खरीटियौ–पु० खरीटिया जाति का एक बकरा।

खरीटी–देखो 'खिरैटी'।

खरीतौ–पु० [अ० खरीत] १ थैला, थैली। २ जेब, खीसा। ३ आज्ञापत्र का लिफाफा।

खरीद–स्त्री० १ क्रय, क्रयण। २ क्रय की गई वस्तु।

खरीदणौ (बौ)–क्रि० क्रय करना, मोल लेना।

खरीददार–वि० १ क्रय करने वाला, ग्राहक। २ चाहने वाला, इच्छुक।

खरीददारी–स्त्री० सामान क्रय करने की क्रिया।

खरीदौ–पु० खरीददार ग्राहक।

खरूखानळ–पु० ४९ क्षेत्रपालो मे से अठारहवा क्षेत्रपाल।

खरू–देखो 'खरौ'।

खरूट–पु० फोडे-फुसी पर जमने वाली सूखी पपडी।

खरेडो–स्त्री० घास-फूस का छप्पर।

खरेवरकत, खरेलाम–पु० शुभारभ।

खरै–क्रि० वि० निश्चय ही।

खरैटी–स्त्री० [स० खरयष्टिका] अष्टवर्ग की एक औषधि विशेष।

खरोच–स्त्री० [स० क्षुरण] १ जोर से लगने वाली रगड। २ ऐसी रगड से पडने वाला चिह्न।

खरोडी–स्त्री० घास से भरी गाडी।

खरोट–देखो 'खरोच'।

खरोटौ–पु० १ एक प्रकार का जागीरदारी कर। २ लेपन के लिये गोबर के साथ मिलाई जाने वाली मिट्टी विशेष। ३ देखो 'खरोच'।

खरोदक–पु० [स० क्षीरोद] १ समुद्र। २ श्वेत वस्त्र।

खरौ–वि० (स्त्री० खरी) १ विशुद्ध, खालिश। २ सच्चा, स्पष्टवादी। ३ तीखा, तेज। ४ सेका हुआ, करारा। ५ पक्का, दृढ़। ६ सख्त, कडा। ७ नकद। ८ ईमानदार। ९ कटु सत्यवादी। १० श्यामल, गेहूआ। ११ महान, जबरदस्त। १२ निश्चित।

खळ–वि० [स० खल] १ नीच, दुष्ट, पापी। २ क्रूर। ३ चुगलखोर। ४ धोखेबाज, कपटी। ५ शत्रु, विरोधी। ६ मूर्ख। –पु० १ सूर्य। २ रावण। ३ राक्षस। ४ खलिहान। ५ युद्ध भूमि। ६ खरल। [स० खलि] ७ तिलो की खली। ८ अफीम का बुरादा।

खलक–पु० [अ०] १ सृष्टि, जगत, दुनिया। २ अधिक भीड या समूह।

खळकट (ट्ट)–पु० सहार, विध्वस।

खळकणौ (बौ)–क्रि० १ बहना, प्रवाहित होना। २ छलकना। ३ कलकल ध्वनि करना। ४ निकलना। ५ खडकना, खनकना। ६ ढहना। ७ बहना।

खळकत–देखो 'खलक'।

खळकळौ–वि० (स्त्री० खळकळी) ढीलाढाला, ढिलढिला।

खळकाणौ (बौ), खळकावणौ (बौ)–क्रि० १ बहाना, प्रवाहित करना। २ उडेलना। ३ छलकाना। ४ निकालना। ५ खडकाना, खनकाना। ६ ढहाना। ७ प्रहार करना। ८ वधन मे डालना। ९ खौलाना। १० कह डालना, कह देना।

खळकाल–पु० १ श्रीकृष्ण। २ श्रीरामचन्द्र। ३ तलवार।

खळकी–स्त्री० स्नान।

खळकुलीक–वि० नीच, दुष्ट, क्रूर।

खळकौ, खलकौ–पु० १ कुर्ता, झगा। २ नाला। ३ प्रवाह। ४ स्नान। ५ कल-कल ध्वनि। ६ देखो 'खिलकौ'।

खलक्क–देखो 'खलक'।

खळक्कणौ (बौ)–देखो 'खळकणौ' (बौ)।

खळखट–देखो 'खळकट'।

खळखळ–पु० [स० कलकल] १ पानी आदि पदार्थ का कलकल कर बहने की क्रिया। २ ऐसे बहाव से उत्पन्न ध्वनि।

खळखळणौ (बौ)–क्रि० कलकल करते हुए बहना।

खळखळो–वि० (स्त्री० खळखळी) १ कुछ ढीला । २ आसानी से पिरोने लायक । ३ अधिक विशेष । ४ पर्याप्त । ५ उदारता पूर्ण ।
खळखल्ल–१ देखो 'खिलखिल' । २ देखो 'खळखळ' ।
खळखायक–वि० दुष्टों का सहार करने वाला ।
खळखेदू–पु० १ ईश्वर । २ विष्णु ।
खलखुला–पु० ससार (मेवात) ।
खळखखळ–देखो 'खळखळ' ।
खळगट (ट्ट)–देखो 'खळकट' ।
खलडी–स्त्री० [म० खल्ल] १ छाल । २ चमडी ।
खळचणो (बो)–क्रि० मारना, नाश करना ।
खळजारण–पु० [सं०] १ मुदर्शन चक्र । २ दुष्ट सहारक ।
खळणो (बो)–क्रि० [म० स्खलन] १ हिलना-डुलना । २ विचलित होना, डिगना । ३ गिरना, पतन होना । ४ अधीर होना । ५ विगड़ना । ६ पथभ्रष्ट होना । ७ मरना । ८ संहार करना । ९ मिटाना ।
खळधान–पु० [म० खल-स्थान] खलिहान ।
खळवट–पु० [स०] १ युद्ध । २ सहार, नाश ।
खळवत–स्त्री० १ प्रेमालाप । २ मेल-जोल । ३ गोष्ठी ।
खळवधकर–पु० शिव, महादेव।
खळवळ–स्त्री० १ हलचल, कुलवुलाहट । २ शोर, हल्लागुल्ला । ३ अशाति, वेचैनी, घवराहट । ४ पेट मे होने वाला विकार ।
खळवळणो (बो), खळवळाणो (बो)–क्रि० १ हलचल होना, कुलवुलाना । २ शोर गुल या हल्ला होना । ३ वेचैन होना, घवराना । ४ वात विकार से पेट कुरकुराना । ५ खौलना । ६ हिलना-डुलना । ७ विचलित होना । ८ चौंकना । ९ चमकना ।
खळवळी, खळमळ–देखो 'खळवळ' ।
खळमळणो (बो)–देखो 'खळवळणो' (वो) ।
खळमळी, खळम्मळ–देखो 'खळवळ' ।
खलल–स्त्री० [अ०] १ रिक्तता । २ कमी । ३ रोक, बाधा । ४ विघ्न । ५ टूट । ६ व्यवधान । ७ गलती, भूल । ८ हसी मजाक ।
खळळ, खळळाट–स्त्री० १ तेज प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि । २ छनछनाहट ।
खळवट–पु० युद्ध ।
खळसाल–पु० [स० खल-शल्य] १ युद्ध । २ वज्र । ३ विष्णु । ४ श्रीराम । ५ रावण ।
खळसेरणो (बो)–देखो 'खसेरणो' (वो) ।
खळहळ–स्त्री० १ कलकल ध्वनि । २ देखो 'खळवळ' ।
खळहळणो (बो)–क्रि० १ कलकल करके वहना । २ देखो 'खळवळणो' (वो) ।
खळहाणो (बो)–क्रि० १ नष्ट करना । २ सहार करना ।
खळहिउ–पु० दूसरों द्वारा दिया जाने वाला कष्ट ।
खळाडळा–वि० खड-खड ।
खळांहळ–स्त्री० कलकल ध्वनि ।
खळात–पु० दुष्टों का अत । शत्रुओं का विनाश ।
खळाभयंकर–पु० ईश्वर, परमेश्वर ।
खळाहळि–स्त्री० कलकल ध्वनि ।
खळाक–पु० [स० स्खलन] १ चिकित्सा के अनन्तर परहेज तोडने की क्रिया या भाव । २ कपडा वुनने की नली से उत्पन्न शब्द । ३ वर्ष भर की वेगार के वदले फसल पर दिया जाने वाला अनाज ।
खळाट–पु० [स० खल] २ वैरी, शत्रु । २ दुष्ट, खल ।
खळाडला–वि० खण्ड-खण्ड ।
खलावर–स्त्री० धौंकनी ।
खलास–वि० [अ०] १ खतम, समाप्त । २ रिक्त, खाली । ३ छूटा हुआ, मुक्त ।
खलासी–स्त्री०[अ०]१ समाप्ति, खातमा । २ रिक्तता, रीतापन । ३ मुक्ति, छुटकारा । –पु० ४ यंत्र या मोटर चालक का सहायक । ५ तोपची ।
खलिंद (दौ)–पु० [अनु०] १ ऊपर से गिरने से होने वाली, ध्वनि । २ नाश, ध्वश ।
खळि–पु० [सं० स्खलि] १ पाप, दोप । २ देखो 'खळी' ।
खळित–वि० [म० स्खलित] १ गिरा हुआ । २ टपका हुआ । ३ पतित, भ्रष्ट । ४ उत्तेजित । ५ चलायमान । ६ चचल । –पु० [अ० खिलअत] राजा द्वारा सम्मानार्थ दिया जाने वाला वस्त्र ।
खलियौ–पु० छोटे वच्चे की जूती ।
खळींगणो (बो)–क्रि० १ उडेलना । २ खाली करना । ३ खोलना ।
खलींदौ–पु० १ नाश, चकनाचूर । २ गिरने पर होने वाली ध्वनि ।
खळी–स्त्री० [सं० खलि] १ ग्वार, मोठ आदि के फूस का ढेर । २ मिचलाहट । ३ गिलहरी । ४ देखो 'खळ' । ५ देखो 'खल' ।
खलीता–वि० व्यर्थ, निरर्थक ।
खलीतो–देखो 'खलेची' ।
खलीतौ–पु० [अ० खरीत] १ थैला । २ जेव । ३ आज्ञा-पत्र का लिफाफा ।
खलीन–स्त्री० [स०] लगाम, रास ।

खलीफा–पु० [अ० खलीफ] १ अध्यक्ष। २ अधिकारी। ३ कोई बूढा व्यक्ति। ४ हज्जाम, नाई। ५ उत्तराधिकारी। ६ अनुयायी। ७ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी।
खलील, खलीलू–वि० [अ० खलील] १ वीर, योद्धा। २ ज़ोरदार, जबरदस्त। ३ सच्चा मित्र। ४ देखो 'खलीन'।
खळू–१ देखो 'खळ'। २ देखो 'खाळू'।
खलेची (चौ)–स्त्री० त्रिकोणात्मक मुह का ढक्कनदार एक थैला विशेष।
खळौ–पु० [स० खल] १ खलिहान। २ खलिहान मे पडा हुआ अनाज। ३ राशि, ढेर। ४ युद्धस्थल। ५ सहार, नाश।
खलौ–पु० १ जूता, जूती। २ राज्य की तरफ से मिलने वाला भोजन।
खल्ल, खल्लड– १ देखो 'खल'। २ देखो 'खाल'।
खल्लासर–पु० [स०] ज्योतिष मे दसवा योग।
खल्ली–पु० [स०] चौरासी प्रकार के वात रोगो मे से एक।
खल्लीट–पु० [स०] १ गजा होने का रोग। २ गजापन।
खल्लौ–देखो 'खलौ'।
खल्व, खल्वाट–वि० [स० खल्वाट] गजा।
खल्हौ–देखो 'खलौ'।
खवणौ (बौ)–१ देखो 'खोणौ' (बौ)। २ देखो 'खिवणौ'(बौ)।
खवाखाच–वि० [सं० स्कध-खचित] कधे तक का।
खवानी–पु० सरदार, खान आदि लोग।
खवाणौ (बौ)–क्रि० १ खिलाना, खाने के लिए प्रेरित करना। २ खाने के लिए देना।
खवाब–पु० [अ० ख्वाब] स्वप्न।
खवार (री)–स्त्री० [फा० ख्वारी] १ बरबादी, नाश, दुर्दशा। २ धोखा, कपट। ३ बुरा काम। ४ बदनामी। ५ दुख।
खवारू–वि० [फा० ख्वार + रा ऊ] दुर्दशाग्रस्त। बदहाल।
खवास–पु० [अ० खवास] (स्त्री० खवासण) १ राजा रईसो का खिदमतगार। २ नाई, हज्जाम। ३ दासी, सेविका। ४ उप-पत्नी, रखैल। —वाळ–पु० १ रखैल स्त्री की सतान। २ रखैल स्त्री।
खवासि, (सी)–स्त्री० [अ०] १ खवास का कार्य, चाकरी। २ इस कार्य की मजदूरी। ३ हाथी के होदे के पीछे का स्थान। ४ देखो 'खवास'।
खवासीण–पु० १ उपपत्नी की सतान। २ उपपत्नी युक्त (राजा)।
खवीस–देखो 'खवीस'।
खवैयौ–वि० १ खाने वाला। २ खेवैया, नाविक।
खवौ–देखो 'खवौ'।
खतग–पु० [स० ख + सग] हवा, वायु।
खस–पु० [फा०] १ एक प्रकार की सुगधित घास की जड। २ एक देश का नाम।
खसकणौ (बौ)–क्रि० १ धीरे से चल देना। २ स्थान छोड देना। ३ इधर-उधर हो जाना। ४ सरक जाना। ५ विचलित होना।
खसकाणौ (बौ)–क्रि० १ धीरे से या चुपके से जाने के लिए प्रेरित करना। २ स्थान छुडा देना। ३ इधर-उधर कर देना। ४ खिसकाना, सरकाना, धकेलना। ५ विचलित करना।
खसखस–पु० [स० खसखस] पोस्त के दाने।
खसखसणौ (बौ)–क्रि० परास्त होना, पराजित होना।
खसखसिया, खसखसी–वि० खसखस की, खसखस सबधी, खसखस युक्त। –स्त्री० १ खसखस की भाग। २ खरखराहट।
खसडकौ–पु० १ रगड, खरोच। २ घसीट की लिखावट।
खसण–स्त्री० १ खिसकने की क्रिया या भाव। २ लडाई, युद्ध।
खसणौ (बौ)–क्रि० [स० कष्=हिंसायाम्] १ लडना, भिडना। २ युद्ध करना। ३ खुजालने के लिए रगड खाना। ४ प्रयत्न या कोशिश करना। ५ खिसकना। ६ गिरना, ढह जाना।
खसपोस–पु० खस का पर्दा।
खसबोई, खसबोय खसबोह खसबौ–देखो 'खुसबू'।
खसम–पु० [अ० खस्म] १ पति, खाविद। २ स्वामी।
खसर–पु० युद्ध, लडाई।
खसरौ–पु० [अ०] १ राजकीय अभिलेख मे प्रत्येक खेत का नाप व सख्या। २ किसी हिसाब का कच्चा चिट्ठा। ३ सिर का सूखा मैल।
खसाखस–स्त्री० १ लडाई। २ कलह। ३ वैमनस्य। ४ खीचतान। –क्रि०वि० ठसाठस।
खसियौ–वि० बधिया।
खसूं–स्त्री० खासने की ध्वनि।
खसेरण–स्त्री० [स० ख + क्षरण] रजकण, धूलिका।
खसोलणौ (बौ)–क्रि० किसी मे कुछ घुमाना, फसाना।
खसौ–पु० नाश, संहार।
खस्ता–स्त्री० [फा० खस्त] टक्कर भिडत। –वि० १ नाजुक। २ कमजोर। ३ दयनीय। ३ टूटा हुआ, भग्न। ४ दबाने से जल्दी टूट जाने वाला, भुरभुरा। ५ घायल। ६ दुखी, खिन्न।
खस्म–देखो 'खसम'।
खहड–पु० १ अश्व, घोडा। २ सेना। ३ देखो 'खड'।
खह–पु० [स० ख] १ आकाश, व्योम। २ रव, ध्वनि। ३ गर्म राख।
खहक–पु० प्रहार।
खहण (णि, णी)–पु० युद्ध।

खहणौ (बौ)–देखो 'खसणौ' (बौ)।
खहदळ–पु० आकाश, गगन।
खह-सुधार-पु० [स० क्षत + सुधार] घी।
खहाव्रत–वि० धूल से आच्छादित।
खहीडणौ (बौ)-क्रि० मारना, पीटना।
खहेड–वि० वलवान, जवरदस्त।
खा–पु० [फा०] १ मुसलमानो के नाम के आगे लगने वाला शब्द, खान। २ मुसलमानो का एक सम्बोधन। ३ देखो 'खान'।
खाक (ख)–१ देखो 'काख'। २ देखो 'खाखर'।
खाकोळाई–स्त्री० [स० कुक्ष+अलात्] वगल मे होने वाली ग्रथि।
खाखर–स्त्री० १ एक प्रकार का शस्त्र। २ वह मादा ऊट जिसने एक वार ही वच्चा दिया हो। –वि० १ वृद्ध, वुड्ढा। २ अत्यन्त पुराना। ३ जीर्ण-शीर्ण।
खांखरियौ, खाखरौ–देखो 'खाखरौ'।
खाखरी–स्त्री० वध्या ऊटनी।
खाखळ–स्त्री० आकाश मे छा जाने वाली गर्द, रज, धूलि।
खाखळणौ (बौ)–क्रि० धूलियुक्त होना। धूलि छा जाना।
खाखी–देखो 'खाखर'।
खाखोळणौ (बौ)–देखो 'खखोळणौ (बौ)।
खाखौ–पु० (स्त्री० खाखी) १ वृद्ध पुरुप। २ वीर पुरुप।
खागडौ–वि० १ टेढा। २ अडियल, अक्खड। ३ उद्दण्ड, वदमाश। ४ योद्धा, वीर। ५ अटल, अडिग।
खागीवध–पु० १ साफा वाधने का एक ढग। २ इस ढग से साफा वाधने वाला व्यक्ति। ३ राठौड।
खागौ, खाघडौ, खाघौ–देखो 'खागडौ'।
खाच–स्त्री० [सं० खच] १ वाहु पर धारण करने का स्त्रियो का चूडा। २ आग्रह, मनुहार।
खाचणौ (बौ)–देखो 'खींचणौ' (बौ)।
खाचाताण (णी, न, नी)–देखो 'खीचाताण'।
खाचौ–पु० १ सधि स्थान, जोड। २ कोना। ३ वीच की खाली जगह। ४ खीच कर वनाया हुआ निशान, गठन। ५ तनाव, खिचाव।
खाद–स्त्री० १ आसानी से न दुहाने वाली गाय। –वि० असभ्य, जगली।
खाड (डी)–स्त्री० [स० खड] १ विना साफ की हुई चीनी, कच्ची शक्कर। २ सहार, विनाश।
खाडखोपरौ–पु० मृत्युभोज के पश्चात् पुत्री या वहन द्वारा पिता (स्वर्गस्थ) के नाम पर छोटी २ कन्याओ को शक्कर भरकर दिया जाने वाला खोपरा।
खाडखोरौ–पु० शक्कर खाने का आदी।
खाडगळी–पु० एक देशी खेल।
खाडणोत–वि० सहारने वाला, मारने वाला।
खाखणौ, खाडणियौ, खाडण्यूं–पु० मूसल।
खाडणौ (बौ)–क्रि० १ मूसल से कूटना। २ मारना। ३ काटना।
खांडतारौ–देखो 'खाड खोपरौ'।
खाडवारौ–पु० मृतक के पीछे द्वादशे का भोज।
खाडभील–पु० एक पहाडी जाति विशेप।
खांडरणौ (बौ)–१ देखो 'खाडणौ'(बौ)। २ देखो 'खडणौ'(बौ)।
खांडलौ, खाटल्यू–देखो 'खाडियौ'।
खाडव–पु० [स० खाडवम्] १ कुरुक्षेत्र के समीप इन्द्र का एक प्राचीन वन। [स० खाडव] २ मिश्री, कद।
खाडहल–स्त्री० तलवार।
खाडादेवळराय–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी, खूवड देवी।
खाडाधर (धार), खाडायत–पु० [स० खड्ग-धारिन्] तलवार-धारी, योद्धा।
खाडाळी–स्त्री० टूटे सीग की गाय या भैंस।
खाडा सरभु–पु० तलवार से युद्ध करने वाला, तलवार से मुकावला करने वाला।
खाडियौ–पु० १ टूटे सीग वाला पशु। २ एक कृषि उपकरण। –वि० खण्डित।
खाडीव–देखो 'खाडव'।
खाडू–देखो 'खाडौ'।
खाडेराउ–पु० खड्गधारी योद्धा।
खाडेल (लौ)–पु० १ होली जलाने के लिए प्रत्येक घर से डाला जाने वाला लकडी का डडा। २ जगली जमीकद विशेप। ३ देखो 'खाडौ'।
खाडौ–पु० [सं० खड्ग] १ तलवार। २ दुधारी तलवार। ३ टूटे सीग का पशु। –वि० खण्डित, भग्न।
खाण–पु० [स० खाद्य, खान] १ भोजन सामग्री, भोजन, खाना। २ भोजन का ढग। स्त्री० [सं० खनि] ३ धातु-पत्थर आदि का खदान, खान। ४ उत्पत्ति स्थान। ५ भण्डार, खजाना। ६ चार प्रकार की सृष्टि। ७ कुए की सफाई।
खाणकी–देखो 'खानगी'।
खाणखडौ (बौ), खाणगडौ–वि० (स्त्री० खाणखडी, खाणगडी) भोजन-प्रिय, भोजन भट्ट।
खाणघर–पु० १ रसोईघर। २ लोहा।
खाणास–वि० १ खाने वाला। २ नाश करने वाला।
खाणि (णी)–स्त्री० १ खाने का ढग, रीति। २ जाति। ३ प्रकार, ढग। ४ खान, खदान।
खाणूंकरण–पु० हलवाई, कदोई।
खाणेराव–पु० वादशाह।
खांण्य–देखो 'खाण'।

खांत (ति, ती) खातिइ–स्त्री० [सं० ख + अत] १ खयाल, विचार, ध्यान। २ चतुराई, बुद्धिमानी। ३ इच्छा, रुचि। ४ व्यवस्था। ५ उमग। ६ लगन। ७ बुद्धि। ८ सावधानी। ९ भिन्नता, भेद। १० धैर्य। –क्रि० वि० १ गौर से। २ विचार पूर्वक।

खातिलो, खातीलो–वि० (स्त्री० खातीली) १ चतुर, बुद्धिमान। प्रवीण, निपुण।

खांदियौ (खांधियौ)–पु० १ अर्थी के कधा देने वाला। २ दाह संस्कार मे जाने वाला।

खावी–स्त्री० राज मिस्त्रियो से लिया जाने वाला कर।

खावेडी (डौ)–देखो 'खावेडौ'।

खाध–स्त्री० [सं० स्कध] १ अर्थी के कधा देने की क्रिया या भाव। २ कधा।

खाघडौ–पु० कधा।

खाधीवाळ (ळौ)–वि० किश्तो मे ऋण चुकाने वाला।

खाघेडौ–पु० मिट्टी का खदान।

खाधौ–पु० [सं० स्कध] १ कंधा, अंस। २ पीठ। ३ गर्दन।

खान–पु० [फा० खान] १ फारस और पठान सरदारो की उपाधि। २ कई ग्रामो का सरदार। ३ देखो 'खाण'। ४ देखो 'खा'।

खांनाखान–पु० [अ० खानखाना] १ वहुत बडा सरदार। २ बादशाह द्वारा मुगलो को दी जाने वाली उपाधि।

खांनगी–वि० [फा० खानगी] १ घरेलू, निजका। २ आतरिक।

खांनड़ौ–वि० वीर, वहादुर। –पु० मुसलमान, यवन।

खांनजादौ–पु० १ मुसलमान शाहजादा। २ अमीर घराने का पुत्र। ३ मुसलमान बना अच्छी जाति का हिन्दू।

खानवान–पु० [फा० खान्दान] कुल, वश।

खांनदानी–वि० [फा० खान्दानी] १ ऊचे कुल का, कुलीन। २ परपरागत, पुश्तैनी, पैतृक।

खानपान–पु० १ खाना-पीना। २ खाने-पीने का ढग।

खानबहादुर–पु० [फा०] ब्रिटिश काल की उपाधि विशेष।

खांनसामौ–पु० [फा०] रसोइया।

खानाणौ–पु० १ भोजन। २ भोज्य पदार्थ। ३ एक यवन प्रदेश।

खानाखराब–वि० [फा० खानाखराब] १ विगाड करने वाला। २ चौपट करने वाला। ३ आवारा, लफगा। ४ पथ-भ्रष्ट। ५ दोगला। ६ अभागा।

खानाजग (गौ)–पु० १ आपसी लडाई। २ गृहकलह।

खानाजाद–पु० १ घर मे पला-पोसा या पैदा हुआ। २ सेवक, दास, गुलाम।

खानातळासी–स्त्री० [फा० खानातलाशी] खोई हुई चीज के लिए मकान मे तलाशी करना।

खानापूरी–स्त्री० [फा०] किसी चक्र या सारणी मे माप, स्थान, शब्द या सख्या लिखना, नक्शा भरना। क्रिया।

खानाबदोस–वि० [फा० खानावदोश] १ अपनी गृहस्थी का सामान कधे या सिर पर रखकर इधर-उधर घूमने वाला। २ वह जिसका घर बार न हो।

खांनासुमारी–स्त्री० [फा० खानाशुमारी] किसी शहर, ग्राम या कस्बे के मकानो की गणना।

खानी–क्रि०वि० ओर, तरफ।

खानेजाद–देखो 'खानाजाद'।

खानौ–पु० [फा० खान] १ वश, कुल। २ घर, मकान। ३ आलमारी का खण, विभाग। ४ कोष्ठक। ५ सारणी या चक्र का विभाग।

खाप–स्त्री० १ गोत्र, वश। २ वर्ण, भेद, जाति। ३ शाखा। ४ तलवार। ५ तलवार की म्यान।

खापण–पु० [अ० कफन] कफन। [सं० क्षपण] बौद्ध या जैन साधु, बौद्ध भिक्षुक। कमी, अभाव।

खांपांछिक–पु० १ विनाश, सत्यानाश। २ सहार।

खापौ–वि० १ कलहप्रिय, लड़ाकू। २ विघ्नकारक। ३ लकडी आदि की फास, घोचा। —**खरडौ, खीलौ**–वि० उद्दण्ड, आजाद, आवारा, दुष्ट।

खांम–देखो 'खव'।

खांमणौ (बौ), खामिणौ (बौ)–क्रि० १ मारना, सहार करना। २ रोकना।

खामी–पु० कुए पर वैल हाकने वाला।

खामंद–देखो 'खावद'।

खाम–स्त्री० [सं० स्कम्भ] १ सधि जोडने की क्रिया या भाव। २ रोक, अवरोध। ३ चपडी आदि लगाकर मुहरबंद करना। ४ सीमेट, चूना आदि लगाकर बद कर देना। ५ खान। ६ पहाड की कदरा। ७ दल सेना। ८ वह माल गुजारी जो आधी दर से वसूल की जाती है।

खामखा, (मी)–क्रि०वि० व्यर्थ ही, बेकार मे।

खामचाई–स्त्री० चतुराई, हस्तकौशल।

खांमची–वि० चतुर, दक्ष।

खांमण–देखो 'खाम'।

खामणियौ–पु० १ छोटा गड्ढा। २ चूल्हे के आगे वर्तन रखने का स्थान। –वि० मुहर वद करने वाला। रोकने वाला।

खामणौ–पु० १ कद। २ देह।

खामणौ (बौ)–क्रि०वि० [सं० स्कम्भ्] १ सधि जोडना। २ रोकना। ३ मुहर वद करना। ४ सीमेट आदि लगाकर बद करना।

खामी–स्त्री० [फा० खामी] १ कमी, कसर। २ दोष, अवगुण। ३ कच्चावट। ४ अभाव।

खामेडौ–पु० लाव की कील जोडने वाला । कुए पर बैल हांकने वाला ।

खामोखांम, खामोखा–देखो 'खामखा' ।

खामोस–वि० [फा० खामोश] १ चुप, मौन । २ शांत ।

खामोसी–स्त्री० [फा० खामोशी] १ चुप्पी, मौन । २ शान्ति ।

खावद, खाविद–पु० [फा० खाविंद] १ पति, भर्ता । २ स्वामी, मालिक ।

खासडौ–देखो 'खूंसडौ' ।

खासणौ (बौ)–क्रि० [स० कासनम्] १ खासी लेना, खासना । २ खखारा करना ।

खासी–स्त्री० [स० कास] १ कफ या जुखाम से गले मे होने वाली खरास । २ खखारा । ३ जुकाम । ४ छींक ।

खा–स्त्री० १ लक्ष्मी । २ पृथ्वी । ३ खाई । –पु० ४ पहाड । ५ कमल ।

खाग्रडौ–देखो 'खूमडौ' ।

खाइकी–'खायकी' ।

खाइयाळ–वि० १ खाने वाला । २ कपटी । ३ दुष्ट ।

खाई–स्त्री० [स० खानि] १ लम्बा बडा खड्डा, गड्ढा । २ खदक ।

खाउकडौ–देखो 'खाऊ' ।

खाऊ–वि० १ बहुत खाने वाला, पेटू । २ कुछ खाने के लिए लालायित रहने वाला । ३ रिश्वतखोर । ४ मुह से काटने वाला ।

खाओ (बौ)–पु० मूरत, शक्ल ।

खाक–स्त्री० [फा०] १ धूल, रज । २ राख, भस्म । ३ पृथ्वी भूमि । ४ देखो 'काख' । –वि० अकिंचन, तुच्छ । —रोब –पु० झाडू देने वाला भगी ।

खाकलौ–देखो खाखलौ' ।

खाकी–पु० १ शिव, महादेव । २ भस्मी रमाने वाला साधु । ३ वैरागी साधुओ का एक सम्प्रदाय । ४ मटिया रंग । –वि० मटिया रग का ।

खाकौ–पु० [फा०] १ मानचित्र । २ ढाचा । ३ तखमीना । ४ कच्चा चिट्ठा, मस्विदा । ५ डौल । ६ सूरत, शक्ल ।

खाख–१ देखो 'खाक' । २ देखो 'काख' ।

खाखण–स्त्री० भस्मी लगाने वाली स्त्री ।

खाखरियौ, खाखरौ–पु० [स० खरखर] १ चना या मोठ की बनी पतली रोटी । २ गेहूँ की सूखी रोटी । ३ पलाश वृक्ष । ४ खेत मे चिडिया उडाने का, ऊट के चमडे का बना उपकरण विशेष । ५ होली का दूसरा दिन, धुलेंडी । ६ गोवरद्धन पूजा के दिन गाय व भैंस मे मस्ती आने का भाव ।

खाखलौ–पु० गेहूं का भूसा ।

खाखसि–स्त्री० जभाई ।

खाखी–देखो 'खाकी' ।

खाखोळाई–स्त्री० कांख के अदर होने वाली गंध ।

खाखौ–देखो 'खाकौ' ।

खाखौ-विलखौ–वि० व्याकुल, बेचैन, उदास ।

खाग–पु० [स० खड्ग] खड्ग, तलवार । —बद–वि० योद्धा, वीर । —वळ–पु० तलवार का बल । —हथ, हथौ–वि० तलवारधारी, योद्धा ।

खागडेल–पु० १ सूअर । २ गेंडा । ३ योद्धा ।

खागचाळौ–देखो 'खगचाळौ' ।

खागणौ (बौ)–क्रि० तलवार चलाना, तलवार का प्रहार करना । तलवार मे मारना, सहार करना ।

खागरणी–स्त्री० तलवार ।

खागवळ–स्त्री० तलवार, कृपाण ।

खागवाहौ–देखो 'खगवाहौ' ।

खागाट–स्त्री० तलवार, खड्ग ।

खागेल–पु० [सं० खग + ऐल] १ सूअर । २ ऊट । ३ गेंडा । ४ योद्धा ।

खाडेतो–पु० १ गाडी हाकने वाला, चालक । २ हलधर ।

खाडौ–देखो 'खारडौ' ।

खाज–स्त्री० [सं० खुर्ज] १ खुजली, चुनचुनाहट । २ गुदगुदी । [स० खाद्य] ३ खाद्य पदार्थ । –वि० १ निकम्मा । २ डरपोक, कायर । ३ दीन ।

खाजटणौ (बौ)–क्रि० १ खाना, भक्षण करना । २ झिडकी भरना ।

खाजरू–पु० मास खाने के लिए मारा जाने वाला बकरा ।

खाजल्यौ–पु० बूढा घोडा ।

खाजौ–पु० [स० खाद्य] १ खाद्य पदार्थ, खाद्य । २ मेदे की छोटी पुडी ।

खाट–स्त्री० [स० खट्वा] चारपाई, खाट, पलग ।

खाटक–वि० १ खटकाने वाला । २ प्राप्त करने वाला । ३ महान् । ४ प्रचड, जबरदस्त । ५ वीर, योद्धा । –स्त्री० १ टक्कर, भिडत । २ खटक, कसक ।

खाटकणौ (बौ)–क्रि० [स०] १ प्राप्त करना । २ प्रहार करना । ३ कोप करना ।

खाटकाई–स्त्री० पैतृक सपत्ति, जायदाद ।

खाटकौ–पु० [स० खट्टिक] बूचड, पशुओ को काटने वाला ।

खाटखड, (डि, डी)–स्त्री० खटखट ध्वनि ।

खाटड्खलौ–पु० पुरानी व ढीली-ढाली खाट ।

खाटण (णौ)–वि० खाने वाला । प्राप्त करने वाला ।

खाटणौ (बौ)–क्रि० १ प्राप्त करना । उपार्जन करना । २ अधिकार मे करना ।
खाटम,(मा)–स्त्री० १ धन लक्ष्मी । २ उपार्जन । ३ कीर्ति, यश ।
खाटरौ–वि० (स्त्री० खाटरी) १ ठिंगना, नाटा । २ बौना, वामन ।
खाटलौ–पु० खाट ।
खाटी–स्त्री० १ कीर्ति, यश । २ वैभव । –वि० खट्टी ।
खाटूं–देखो 'खाटौ' । (स्त्री० खाटी)
खाटूंल–पु० पहाडो मे होने वाला एक छोटा वृक्ष ।
खाटौ–वि० (स्त्री० खाटी) १ खट्टा, अम्ल । २ वेमजे, वेस्वाद । ३ वेरस । ४ उत्साह रहित, खिन्न । –पु० १ छाछवेसन की वनी कढी । २ मिश्रण । ३ एक प्रकार की वनस्पति । —**तूड, बडछ, बडस**–वि० अत्यन्त खट्टा ।
खाटचौ–पु० एक प्रकार का हल्का शराव ।
खाड–स्त्री० [स० खात्] १ गड्ढा, गर्त । २ बडी कदरा ।
खाडखौ–पु० उवड-खावड भूमि ।
खाडरौ–देखो 'खाड' ।
खाडव–स्त्री० [सं० षाडव] १ राग की एक जाति जिसमे केवल छ स्वर (स रे ग म प ध) लगते हैं । २ सगीत ।
खाडावूज (वूम)–वि० [स० खात + रा. वूफ] जमीदोज । भूमिगत ।
खाडाळियौ–पु० खाडाल प्रदेश का एक प्रकार का ऊट ।
खाडळी–स्त्री० भैस ।
खाडी–स्त्री० [स० खात] १ नीची भूमि, जिसमे वर्षा का पानी एकत्र होता है । २ समुद्र का एक भाग ।
खाडू–पु० भैंसो का समूह । —**कर**–पु० उक्त समूह की देख-रेख करने वाला ।
खाडेनी–स्त्री० स्वर्णकारो का एक चिनी मिट्टी का पात्र ।
खाडौ–पु० गड्ढा, गर्त ।
खाणकी (गी)–स्त्री० रिश्वत, घूम । –वि० काटने के स्वभाव वाली ।
खाणौ–पु० [स० खादन] १ भोजन । २ देखो 'खावणौ' । (स्त्री० खाणी)
खाणौ (बौ)–क्रि० [स० खादन्] १ कुछ खाना, भक्षण करना । २ भोजन करना । ३ काटना, डक लगाना, दशना ।
खात–स्त्री० १ खेत मे डालने का खाद । २ गोबर का सूखा चूरा । ३ सेंध ।
खातक–पु० छोटा जलाशय ।
खातमौ–पु० [अ० खातिम] १ अत, समाप्ति, खात्मा । २ विनाश । ३ मृत्यु ।
खातर–स्त्री० [अ० खातिर] १ विश्वास, भरोसा । २ साख । ३ इच्छा, मर्जी । ४ आदर, सम्मान । ५ स्वागत । ६ दया, कृपा । ७ ध्यान, विचार । ८ खाद । –क्रि० वि० लिये, निमित्त । —**दारी**–स्त्री०–मेहमानी, स्वागत ।
खातरजमा–देखो 'खातिरजमा' ।
खातरी–स्त्री० १ स्वागत । २ मान मनुहार, आवभगत । ३ सम्मान, आदर । ४ सेवा, बदगी । ५ देखो 'खातर' ।
खातरोड–स्त्री० १ बढई के कष्ठादि का धधा करने का स्थान । २ बढई से लिया जाने वाला कर ।
खाताबई (बही, वही)–स्त्री० व्यक्तिवार लेखो की पुस्तिका, खाता वही (लेजर बुक) ।
खाताई, खाताळ (वळ)–देखो 'खाथाई' ।
खाताळौ (वळौ)–वि० (स्त्री० खाताळी, खातावळी) तेज चाल से चलने वाला, शीघ्रगामी शीघ्रता करने वाला, त्वरायुक्त ।
खातिका–स्त्री० खाई ।
खातिर–देखो 'खातर' ।
खातिरजमा–स्त्री० तसल्ली, सतोष ।
खातिरदारी–देखो 'खातरदारी' ।
खाती–स्त्री० (स्त्री० खातण, खातणी) १ बढ़ई जाति । २ इस जाति का व्यक्ति, सुथार । —**खानौ**–पु० बढ़ई के बैठने व काम करने का स्थान । —**चिड़ा, चीडौ**–पु० तीखी चोच का पक्षी विशेष । —**छोड**–पु० एक देशी खेल ।
खातून–स्त्री० [तु] भले घर की स्त्री, भद्र स्त्री ।
खातोड–स्त्री० १ बढ़इयो, खातियो से लिया जाने वाला राजकीय कर । २ देखो 'खातरोड' ।
खातौ–पु० १ व्यक्तिगत हिसाब । २ मद, विभाग । ३ निजी खातो की वही । ४ रहट का एक भाग । ५ कटा हुआ स्थान, खाचा । ६ देखो 'खाथौ' । —**पीतौ**–वि०–सम्पन्न ।
खाथाई, खाथाळ (वळ, वळौ)–स्त्री० शीघ्रता, उतावली, त्वरा ।
खाथौ–वि० (स्त्री० खाथी) १ शीघ्र गति का, तेज, तीव्र । उतावला । क्रि०वि० १ शीघ्र, जल्दी । २ तेजी से ।
खाद–पु० [स० खाद्य] १ खेत मे डालने का एक उर्वरक पदार्थ । २ सूखे गोवर का चूरा । ३ देखो 'खाद्य' ।
खादण (न)–पु० [स० खादन्] १ भोजन । २ भक्षण । ३ दात । ४ खाने की क्रिया या भाव ।
खादर–स्त्री० कछार या तराई की भूमि ।
खादरौ–पु० [स० खातक] छोटा गड्ढा, पोखर ।
खाविडियाझटकौ–पु० घोडे के पैरो के मुर्चे मे शोथ होने का रोग ।
खावी–स्त्री० सूती वस्त्र की एक किस्म ।
खाध–स्त्री० १ भोजन । २ खुराक । ३ खाद्य पदार्थ । ४ देखो 'खाद' ।

खाधोकड़–वि० (स्त्री० खाधोकडी) १ भोजन भट्ट। २ चटोरा। ३ महत्वपूर्ण।
खाप–स्त्री० १ तलवार। २ म्यान की पट्टी। –वि० स्वच्छ उज्ज्वल※।
खापगर–पु० घोडो की काठी वनाने वाला (वागड)।
खापगा–स्त्री० [स० ख+आपगा] गगा, सुरसरी।
खापडौ–देखो 'खाप'।
खापट–स्त्री० १ वास पट्टी। २ प्रस्तर पट्टिका।
खापटारोकोठार–पु० जवाहर खाना।
खापटौ–पु० १ एक शस्त्र विशेष। २ पत्थर की लवी चौडी शिला।
खापन–१ देखो 'खाप'। २ देखो 'खापण'।
खापर–देखो 'काफिर'।
खापरियौ–पु० [स० खर्पर] १ धूर्त, वदमाश। २ चोर, ठग। ३ अनाज का एक कीडा। ४ भूरे रग का एक खनिज।
खापरी–स्त्री० खडिया मिट्टी का वना स्वर्णकारो का एक ममाला।
खापी–स्त्री० आवश्यकता जरूरत।
खाफर–देखो 'काफिर'।
खावकौ–पु० १ शाहीदरवार। २ राजारानी की निजी मजलिश। ३ उक्त मजलिश करने का स्थान। ४ राजा-रानी का शयनगार।
खावडौ–पु० पोखर, गड्ढा।
खावेडौ–वि० वायें हाथ से कार्य करने का अभ्यस्त। –पु० वाया हाथ।
खावोचियौ–पु० १ पानी का गड्ढा। २ योनि।
खाभौ–पु० १ पाव का पजा। २ एक सींग ऊपर एक नीचे मुडा पशु। –वि० १ ऐंचाताना। २ वाया। ३ वीर, वलवान।
खायक–वि० १ खाने वाला, चवैया। २ नाश करने वाला, मारने वाला।
खायकी–स्त्री० १ रिश्वत, घूस। २ खयानत, गवन।
खायस–स्त्री० [फा०ख्वाहिश] चाह, इच्छा, लालसा।
खार–पु० [फा०] १ क्रोध, गुस्सा। २ ईर्ष्या द्वेष। ३ काटा, कटक। ४ रज, धूलि। ५ राख। ६ खारापन। ७ नमक। ८ अम्लता। ९ वदूक की नाल मे पडी हुई तिरछी व सीधी धारिया, जिन पर छोटी-छोटी विदिया होती हैं।
खारक–स्त्री० १ सूखा खजूर, छुहारा। २ देव वृक्ष। **—तोडियौ**–पु० एक प्रकार का लोग गीत।
खारकियाबोर–पु० छुहारे के आकार के मीठे वेर।
खारखध (धौ)–वि० अति क्रोधी।
खारडौ–पु० पुराना जूता। जूता।
खारच–स्त्री० [स० क्षार + स्थल] खारी व वजर भूमि।
खारचियौ–पु० खारे पानी से उत्पन्न गेहूं। -वि० खारे पानी का।
खारज–वि० [अ० खारिज] १ रद्द, निरस्त। २ निकाला हुआ, वहिष्कृत। ३ अलग, भिन्न।
खारण–पु० अजवाइन।
खारतोळ्ई–स्त्री० एक देशी खेल।
खारमगणा (मजण,मंजणा)–पु० १ अफीम लेने के वाद मीठे का सेवन। २ गजक, चुरवुण।
खारवाळ–पु० १ नमक का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। २ एक प्रकार का देशी खेल।
खारवौ–पु० पानी या कीचड मे पाव रहने से होने वाला चर्म विकार।
खारसमुद–पु० [स० क्षार-समुद्र] लवणोद, समुद्र।
खारास–पु० खारापन, तीखापन, कडवाहट।
खारिक–देखो 'खारक'।
खारियौ–पु० १ वाजरी का सूखा पौधा। २ चने के सूखे पत्ते। ३ पशुओ को घास डालने का टोकरा। ४ क्षार युक्त पदार्थ। ५ एक देशी खेल।
खारी–स्त्री० १ वह चौकोर छवडा या डलिया जो किसानो के अनाज या अनाज की वालें भरने के काम आता है। २ वाजरी के सूखे डठल। ३ अनाज आदि का एक निश्चित माप। ४ वनास की सहायक एक नदी। ५ खराव नमक। **—माट**–स्त्री० नील का रग तैयार करने का एक ढग। **—लूण**–पु० एक प्रकार का नमक।
खारीलौ–वि० (स्त्री० खारीली) क्रोधी, गुस्सैल।
खारीवा–पु० [सं० क्षीरवाह] केवट।
खारीवार–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
खारोटियौ, खारौ–पु० [स० क्षार] १ नमक। २ क्षार। ३ पापड वनाने का क्षार। ४ कटु वचन। ५ वड़ा टोकरा। ६ चनो का भूसा। ७ मैथुन। –वि० १ कडवा, कटु। २ अप्रिय। ३ अनिष्टकर। ४ अरुचिकर। ५ जोशीला। ६ तेज, तीव्र। ७ क्रोधी, क्रूर। ८ कड़ा, कठोर। ९ भयकर।
खारौळ–देखो 'खारवाळ'।
खाळ–पु० १ नीची भूमि। २ मोरी। ३ गहरा खड्डा। ४ नाला। ५ छोटी नदी। ६ कवड्डी मे खेल का स्थान। ७ 'चीखड' नामक खेल मे क्रीडको द्वारा वनाया जाने वाला दाव।
खाल–स्त्री० [स० खल्ल] १ किसी जानवर की चमडी। २ त्वचा। ३ खाली जगह। ४ देखो 'ख्याल'।
खालक–देखो खालिक'।
खालड (डौ)–पु० १ जूता। २ वृद्ध, वुड्ढा। ३ देखो 'खाल'।
खालणौ–पु० स्वर्णकारो का औजार विशेप।

खालसाई–वि० १ सरकारी । २ खालसा सबंधी ।

खालसौ–पु० १ सरकारी भूमि या सम्पत्ति । २ सिक्खो का एक सम्प्रदाय । ३ सिख ।

खाला–स्त्री० [अ० खाल] १ मौसी । २ वेश्या, गणिका ।

खाळाखोळौ–पु० वर्तन को साफ करने के बाद का पानी ।

खाळाय–देखो 'खाळौ' ।

खालि–देखो 'खाली' ।

खालिक (कि,क्री)–पु० [अ०] १ सृष्टिकर्त्ता, ईश्वर । २ ससार ।

खाळियौ–पु० पानी वहने का छोटा नाला । नाली ।

खाळी–स्त्री०[स० क्षालक] १ छोटी नाली २ मोरी ।

खाली–वि० १ जिसमे कुछ न हो, रिक्त । २ जहा कोई न हो, शून्य, सूना । ३ रहित, विहीन । ४ कार्यहीन, निकम्मा । ५ जिसके पास कुछ न हो, रिक्त-हाथ । ६ जो काम मे न आ रहा हो, निरर्थक । ७ व्यर्थ, निष्फल । ८ अशुभ । –क्रि०वि० केवल, मात्र, सिर्फ । –पु० तबला ।

खालीचोपरण–स्त्री० आभूषणो पर नक्काशी करने का औजार ।

खाळू–पु० १ कबड्डी खेल का नायक । २ टोली-नायक । ३ चीखड या चीकू नामक खेल का वह क्रीडक जिसमे दाव होता है ।

खालेड–वि० १ आवारा । २ रिक्त, खाली । –पु० १ व्यर्थ गया प्रयत्न । २ शिकार की निराशा । ३ देखो 'खालड' ।

खालेड़णौ (बौ)–क्रि० मरे पशु की खाल उतारना ।

खाळौ, खाल्यौ–पु० १ वर्षा के पानी का प्रवाह । २ वडा नाला, मोरा । ३ स्रोत । ४ प्रवाह से पडा हुआ खड्डा ।

खालौ–वि० (स्त्री० खाली) १ खाली, रिक्त । २ निकम्मा । –पु० स्वर्णकारो का औजार विशेष ।

खावद–देखो 'खाविंद' ।

खावण–स्त्री० १ खाने की क्रिया या भाव । २ खाने का ढग । —खडौ, खरौ–वि० चटोरा, भोजनभट्ट ।

खावणौ–वि० (स्त्री० खावणी) १ खाने वाला । २ खाने या काटने के स्वभाव वाला । ३ नाश करने वाला ।

खावणौ (बौ)–देखो खाणौ' (बौ) ।

खाविंद–पु० [फा०] १ पति, भर्तार । २ स्वामी, मालिक ।

खास–वि० [अ०] १ मुख्य, प्रधान । २ विशेष । ३ निजी, निज का । ४ प्रिय । ५ आत्मीय । ६ ठेठ । **—खजानौ**–पु० शासक निजी खजाना, राज कोषागार । **—खेळी**–स्त्री० मडली । **—जात**–पु० प्रधान अधिकारी । **—दोवडा**–पु० एक पकवान विशेष । **—नवीस**–पु० राजा या वादशाह का मुख्य । लेखक । **—बरदार**–पु० वह जो राजा या बादशाह के अस्त्र-शस्त्र लेकर चलता हो । **—बाडौ, वाडौ**–पु० मुख्य नेरा ।

खासकर–क्रि०वि० विशेषत विशेषरूप से ।

खासडौ (द)–पु० जूता, उपानह ।

खासमहल–पु० १ वह महल जिसमे विवाहित रानी रहती हो । २ विवाहिता रानी ।

खासरसोडौ–पु० राजा के निमित्त भोजन बनने का स्थान ।

खासरुक्कौ–पु० शासक द्वारा भेजा जाने वाला पत्र ।

खाससवारी–स्त्री० राजा के लिए आरक्षित सवारी ।

खासियत–स्त्री० [अ०] १ विशेषता । २ महत्ता । ३ प्रधानता । ४ स्वभाव प्रकृति, आदत । ५ गुण ।

खासी–स्त्री० राजा की खास वस्तु ।

खासौ–वि० [अ० खास] (स्त्री० खासी) १ बहुत, अधिक । २ पर्याप्त, पूर्ण । ३ अच्छा भला । ४ उत्तम । ५ मध्यम श्रेणी का । ६ सुडौल, स्वस्थ । –पु० १ राजा का भोजन । २ राजा की सवारी का हाथी या घोडा । ३ एक प्रकार का सूती वस्त्र । ४ राजा या बादशाह का निजी अस्तबल । ५ स्वभाव, प्रकृति ।

खाहड़ौ–देखो 'खासडौ' ।

खाहणौ (बौ)–देखो 'खाणौ' (बौ) ।

खाही–देखो 'खाई' ।

खाहेडियौ–पु० १ कोचवान । २ सारथी ।

खिग्राळ, खिग्राळौ–पु० कोयला ।

खिखर–स्त्री० हसी, मजाक, मशकरी, छेडछाड ।

खिंग–पु० सफेद रग का एक घोड़ा विशेष जिसके मुह पर पट्टा हो और चारो पैर गुलाबीपन लिए सफेद हो ।

खिजर–देखो 'खजन' ।

खिटर, खिटोर–पु० व्यर्थ मे तग करने की क्रिया या भाव । छेडछाड ।

खिडणौ (बौ)–क्रि० १ धीरे-धीरे छटना, बिखरना । २ जाना । ३ भेजना ।

खिडाणौ (बौ), खिडावणौ (बौ)–क्रि० १ धीरे-धीरे छटाना, बिखेरना । ३ भेजना । ४ खडित करना ।

खिदाणौ (बौ) खिदावणौ (बौ)–देखो 'खिडाणौ' (बौ) ।

खिबता, खिमिया–स्त्री० [स० क्षमा] क्षमा, दया ।

खियाळ–पु० वह ऊट जिसके अगले पाव चलते समय रगड खाते हो ।

खियाळौ–देखो 'खिग्राळौ' ।

खिवण–स्त्री० १ चमक, दमक । २ प्रकाश, रोशनी । ३ बिजली । ४ भाला । ५ आक्रामक दृष्टि । ६ सहन करना क्रिया ।

खिवणो (बो)—क्रि० १ चमकना, दमकना। २ प्रकाशित होना। ३ बिजली चमकना। ४ आक्रामक दृष्टि रखना। ५ महन करना।
खि—पु० [म० ख्रिन्] इन्द्र।
खिग्राति—देखो 'ख्याति'।
खिंखिद (दा)—देखो 'किस्कधा'।
खिखेरु (रू)—वि० १ बिखेरने वाला, छितराने वाला, फैलाने वाला। २ तितर-बितर करने वाला।
खिडक—पु० १ दरवाजा, कपाट। २ द्वार। ३ खिडकी।
खिडकणो (बो)—क्रि० तह पर तह जमाना।
खिडकियापाग—स्त्री० १ सिर पर धारण करने की एक प्रकार की पगडी। २ सिर पर पगडी का बधन या धारण करने की एक प्रकार का क्रिया या ढग।
खिडकी—स्त्री० १ गवाक्ष। २ द्वार के कपाट। ३ छोटी बारी।
खिडणो (बो)—क्रि० १ टीका लगाना। २ बिखरना, इधर-उधर होना। ३ हाकना। ४ कुआ खोदना। ५ खिडकना, जमाना।
खिडविड़णो (बो)—क्रि० टकराना, भिडना, लडना।
खिड़ाणो (बो)—क्रि० १ टीका लगवाना। २ बिखेरना, इधर, उधर करना। ३ हाकना। ४ भगाना। ५ खुदवाना। ६ खिडकवाना, जमवाना।
खिचड़ी—स्त्री० [स० कृसर] १ मूग की दाल व चावलो को मिश्रित कर पकाया हुआ भोजन। २ मिरच ममालो के साथ बनाई हुई चावलो की त्यारी। ३ कबूली। ४ काली व सफेद वस्तुओ का मिश्रण। ५ मिश्रण। —लाग—पु० जागीरदार द्वारा अपने जागीर मे दौरा करने के निमित्त किसानो से लिया जाने वाला कर।
खिजणो (बो)—देखो 'खीजणो' (बो)।
खिजमत (ति, ती)—स्त्री० १ हजामत। २ देखो 'खिदमत'।
खिजाणो (बो), खिजावणो (बो)—क्रि० १ क्रोधित करना, गुस्सा दिलाना। २ तग करना, छेडना।
खिजाब—पु० श्वेत बालो को काला करने की औषधि।
खिटणो (बो)—क्रि० १ क्रोध करना। २ द्वेष करना।
खिटाणो (बो), खिटावणो (बो)—क्रि० १ गुस्सा दिलाना। २ द्वेष कराना।
खिडकी—देखो 'खडकी'।
खिड्डलो—पु० जगली जमीकद।
खिणक—पु० १ चूहा। २ गोदने वाला। ३ क्षणभगुर।
खिण—स्त्री० [स० क्षण] १ क्षण, पल। २ बिजली।
खिणक—वि० [स० क्षणिक] १ क्षण का, क्षणभगुर। २ अनित्य, अस्थाई। —स्त्री० क्षण, पल।
खिणकर—पु० सिह।
खिणका—स्त्री० [स० क्षणिका] बिजली, विद्युत।
खिणणो (बो)—क्रि० १ टीका लगाना। २ खुजलाना, कुचरना। ३ खोदना।
खिणदा, खिणदर—स्त्री० [स० क्षणदा] रात्रि।
खिणप्रभा—स्त्री० [स० क्षणप्रभा] बिजली, विद्युत।
खिणबाळो—स्त्री० भूमि।
खिणभंग—वि० क्षण भंगुर, अनित्य।
खिणमत—क्रि०वि० क्षण मात्र।
खिणवाणो (बो), खिणाणो (बो)—क्रि० १ टीका लगवाना। २ खुजलवाना, कुचराना। ३ खुदवाना।
खिणारो—पु० १ टीके लगाने वाला। २ खोदने वाला।
खिणि—देखो 'क्षण'।
खित—स्त्री० [स० क्षिति] १ पृथ्वी, भूमि। २ द्रव्य, धन। [स० क्षति] ३ हानि, नुकसान। ४ क्षति, कमी। ५ घोडा, अश्व। —ग= खितग'। —जात—पु० रुधिर, खून। —डसण—पु० भाला, बरछी। —धर, धारी, नाथ, पति—पु० राजा, नृप। —पुड—पु० पृथ्वीतल। —रुह—पु० वृक्ष।
खितवा—स्त्री० [अ० खुत्व] प्रशसा, तारीफ।
खिताब—पु० [अ०] पदवी, उपाधि।
खिति (ती)—स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी, धरती।
खितिज—पु० [स० क्षितिज] अन्तरिक्ष जहा पृथ्वी-आकाश मिले दिखते हो।
खितिरु—देखो 'खितरुह'।
खित्रवट—देखो 'खत्रवट'।
खित्री—देखो 'खत्री'। —वट='खत्रीवट'।
खिदमत—स्त्री० [अ०] १ सेवा, टहल, चाकरी। —गार—पु० सेवक, नौकर। हज्जाम।
खिदर—पु० खैर का वृक्ष।
खिनणी—स्त्री० बिजली, विद्युत।
खिनणो (बो)—देखो 'खिणणो' (बो)।
खिनाणो (बो), खिनावणो (बो)—क्रि० १ भेजना, पहुँचाना। २ देखो 'खिणाणो' (बो)।
खिपा—स्त्री० [स० क्षिपा] रात्रि।
खिपणो (बो)—देखो 'खपणो' (बो)।
खिप्र—क्रि०वि० [सं० क्षिप्र] शीघ्र, तुरन्त।
खिमण—स्त्री० १ सहनशीलता। २ देखो 'खिवण'।
खिमणो (बो)—देखो 'खिवणो' (बो)।
खिमत (ता)—स्त्री० [स० क्षमता] १ सामर्थ्य, शक्ति। २ सहनशीलता। ३ क्षमता, धैर्य।
खिमावत—वि० [स० क्षमावान्] दयालु, कृपालु।
खिमा, खिमिया, खिम्या—स्त्री० [सं० क्षमा] १ दुर्गा का एक नाम। २ क्षमा।

खियाळौ–देखो 'खिहाळौ'।
खियौ–पु० १ प्लीहा, तिल्ली रोग। २ जेव, खीसा।
खिर–देखो 'खैर'।
खिरक (का)–स्त्री० [अ०] १ बुनाई का एक उपकरण, खरकरवट। २ मुसलमान फकीरो की गुदडी। ३ साधु, त्यागी। ४ देखो 'खरक'।
खिरकोळियौ, खिरकोळी–पु० बुनाई के उपकरण का खूटा।
खिरजूर–देखो 'खजूर'।
खिरणियौ–वि० १ कच्चा। २ जिसका स्वत क्षय हो। –पु० सूखी झाडी या कटीला वृक्ष।
खिरणी–देखो 'खरणी'।
खिरणौ (बौ)–क्रि० १ स्वत टूट कर गिरना। २ गिरना। ३ मरना।
खिराज–पु० [अ० खिराज] राजस्व कर, माल गुजारी।
खिरेंटी–स्त्री० [स० खरयष्टिका] वीजवद, बला।
खिल–स्त्री० १ पडत की भूमि की प्रथम जुताई। २ नई भूमि।
खिलअत–पु० [अ०] किसी के सम्मानार्थ राजा या वादशाह की ओर से दिया जाने वाला वस्त्र।
खिलकत–स्त्री० [अ० खिल्कत] १ सृष्टि, ससार। २ भीड, समूह।
खिलकौ–पु० १ खेल, तमाशा। २ हसी, दिल्लगी। ३ विनोद।
खिलखिल (लाट, हट)–स्त्री० मुक्त हास्य, खिलखिलाहट।
खिलखिलणौ (बौ)–क्रि० १ खिलखिलाकर हसना। २ प्रफुल्लित होना।
खिलखिली–स्त्री० १ हसी, मजाक। २ देखो 'खिलखिलाट'।
खिलणौ (बौ)–क्रि० [स० स्खल] १ खिलना, विकसित होना। २ प्रसन्न होना, खुश होना। ३ जचना, शोभित होना। ४ खेलना।
खिलत–देखो 'खिलअत'।
खिलवत (वत)–स्त्री० १ साथ रहने का भाव, सग। २ सभा-समाज। ३ मैत्री। ४ हसी, मजाक। ५ खिलवाड। ६ केलि, क्रीडा। ७ एकान्त स्थान। –वि० निज का, निजी। खानगी।
खिलवाड, (खिलस)–पु० १ खेल, तमाशा। २ हसी, दिल्लगी। ३ विनोद। ४ कौतुक।
खिलवार–स्त्री० हसी, मजाक, दिल्लगी।
खिलसणौ (बौ)–क्रि० १ क्रीडा करना, खेल करना। २ हसी करना, मजाक करना। ३ खुश होना।
खिलहरी–देखो 'खिलोरी'।
खिलाई–स्त्री० खिलाने का कार्य।
खिलाडी–वि० १ खेलने वाला। २ खेलने मे दक्ष। ३ जादूगर। ४ चतुर।
खिलाणौ (बौ), खिलावणौ (बौ)–क्रि० १ भोजन कराना। २ खाने के लिए देना। ३ खेलाना। ४ विकसित करना। ५ प्रसन्न करना। ६ सजाना, शोभित करना।
खिलाफ–वि० [अ०] १ विरुद्ध, विपरीत। २ सामने, प्रतिकूल। –क्रि०वि० मुकाबले मे। —त–स्त्री० विरोध। सामना, मुकाबला। प्रतिकार।
खिलाहर–वि० १ योद्धा, वीर। २ खेलने वाला। ३ खिलाने वाला।
खिलियार–पु० १ खिलाडी। २ देखो 'खिलवाड'।
खिलोरी–पु० [स० खिलचारी] गडरिया। –वि० १ असभ्य, जगली। २ मूर्ख।
खिलौणौ–पु० १ किसी धातु या पदार्थ की बनी बच्चो के खेलने की वस्तु, खिलौना। २ दूसरो के हाथो मे नाचने वाला।
खिल्लत–देखो 'खिलअत'।
खिल्ली–स्त्री० १ किसी का उपहास। २ हसी दिल्लगी।
खिल्लौ-खिल्ल–वि० १ एकाकार। २ घुले-मिले। ३ प्रफुल्ल, प्रसन्न।
खिवण–देखो 'खिवण'।
खिवणी–स्त्री० १ बिजली, विद्युत। २ सहनशक्ति।
खिवणौ (बौ)–देखो 'खिवणौ (बौ)'।
खिसकणौ (बौ)–देखो 'खसकणौ' (बौ)।
खिसकाणौ (बौ), खिसकावणौ (बौ)–देखो 'खसकाणौ' (बौ)।
खिसणौ (बौ)–क्रि० १ पीछे हटना। २ अलग होना, दूर होना। ३ फिसलना। ४ क्रोध करना। ५ खिसियाना। ६ भागना। ७ लज्जित होना। ८ झेंपना।
खिसाण, खिसाणौ–वि० लज्जित, शर्मिंदा।
खिसाणौ (बौ) खिसावणौ (बौ)–क्रि० १ पीछे हटाना। २ अलग करना, दूर करना। ३ फिसलाना। ४ क्रोध कराना। ५ लज्जित करना, झेंपाना। ६ भगाना।
खिसिणौ (बौ)–देखो 'खिसणौ' (बौ)।
खिसौ–सर्व० १ कौनसा। २ देखो 'खीसौ'।
खिहाळौ–पु० कोयला।
खिहालौ–पु० खाद्य वस्तु विशेष।
खीं–देखो 'खी'।
खींचणौ (बौ)–क्रि० [स० कर्षणम्] १ किसी वस्तु को पकड कर अपनी ओर बढाना, करना, खीचना। २ किसी वस्तु के आगे होकर चलाते या घसीटते हुए कही ले जाना। ३ बलपूर्वक कही ले जाना। ४ आकर्षित करना। ५ बाहर निकालना। ६ तानना, तनाव देना। ७ खोसना, छीनना। ८ सोखना, चूसना। ९ अर्क निकालना। १० सत्व निकालना। ११ रेखाकित या चित्राकित करना।

१२ आवरण वस्त्र आदि हटाना। १३ रोक रखना। १४ व्यापार का माल मगाना। १५ चारो ओर से एकत्र कर लेना। १६ किसी वात पर अड जाना।

खींचताण (न), खींचाताणी (नी)–स्त्री० १ खींचा-खींची। खीचातान। २ गूढ विषय पर विचार विमर्श, अर्थ निकालने का प्रयास। ३ प्रयास, प्रयत्न। ४ जोड-तोड। ५ आग्रह पूर्वक मनुहार। ६ आपाधापी।

खींचाणौ (बौ), खींचावणौ (बौ)–क्रि० १ पकड कर अपनी ओर बढवाना। २ घसीटवाना, चलाने के लिए खिचवाना। ३ लेजाने के लिए प्रेरित करना। ४ आकर्षित कराना। ५ वाहर निकलवाना। ६ तनाव दिराना, तनवाना। ७ सोखाना, चूसाना। ८ अर्क निकलवाना। ९ सत्व निकलवाना। १० रेखाकित या चित्राकित कराना। ११ आवरण हटवाना। १२ रुकवाना। १३ व्यापारिक माल मगवाना। १४ एकत्र कराना। १५ वात अडाना।

खींटणौ (बौ)–देखो 'खिटणौ' (बौ)।

खींटली–स्त्री० स्त्रियो के कान का आभूषण।

खींणौ–वि० १ नष्ट, नाश। २ देखो 'खीण' (णौ)।

खींप–पु० मरुस्थल मे होने वाला एक ततुदार क्षुप।

खींपोळी–स्त्री० 'खींप' की फली।

खींयाळ–देखो 'खियाळ'।

खींवर–देखो 'खीवर'।

खींवली–स्त्री० गले का एक आभूषण विशेष।

खी–पु० १ विधि, विधाता। २ कामदेव। ३ इन्द्र। ४ कुशल क्षेम। ५ शृगाल। ६ अप्सरा।

खीखा–स्त्री० १ क्षति, हानि। २ हसी, मजाक, मखौल।

खीच, खीचड़–पु० [स० कृसर] १ वाजरी या गेहूँ आदि को ओखली मे कूट कर पकाया हुआ खाद्य पदार्थ। २ जाल, करील, नीम आदि वृक्षो का वौर। ३ वेर के वृक्ष पर होने वाला विकृत पदार्थ।

खीचडी–देखो 'खिचडी'।

खीचड़ो–देखो 'खीच'।

खीचणौ (बौ)–देखो 'खींचणौ' (बौ)।

खीचाणौ (बौ)–देखो 'खींचाणौ' (बौ)।

खीचियौ–पु० [सं० क्षार + चित्] साजी या क्षार के पानी मे आटे को पका कर बनाया हुआ छोटा पापड।

खीज–स्त्री० [स०क्षीज] १ कोप, क्रोध। २ चिढ। ३ झल्लाहट, झिडकी। ४ शीतकाल मे होने वाली ऊट की मस्ती।

खीजणौ (बौ)–क्रि० [स० क्षीज्] १ क्रोध करना, गुस्सा करना। २ चिडना, खीजना। ३ झल्लाना। ४ झुंझलाना। ५ निरुत्साहित करना या होना। ६ ऊट का मस्ती मे आना।

खीजाणौ (बौ), खीजावणौ (बौ)–क्रि० १ क्रोध दिराना। २ चिढाना, खिजाना।

खीजाळ–वि० १ खीजने वाला। २ आतक जमाने वाला।

खीझ–देखो 'खीज'।

खीटणौ (बौ)–देखो 'खिटणौ' (बौ)।

खीटली–देखो 'खीटली'।

खीटाणौ (बौ)–देखो 'खिटाणौ' (बौ)।

खीण (णौ)–वि० [स० क्षीण] १ दुर्वल, निर्वल, कृश। २ अत्यन्त पतला। ३ सूक्ष्म, वारीक। ४ मद, मध्यम। ५ उदासीन, चिंतित। —ता–स्त्री० दुर्वलता, निर्वलता। पतलापन। सूक्ष्मता। मदापन।

खीनखाप–पु० एक जरीदार वढिया रेशमी वस्त्र।

खीवर, खीमर–देखो 'खीवर'।

खीर (रि)–स्त्री० [स० क्षीर] १ दूध। २ दूध मे चावल-शक्कर डालकर बनाया हुआ पकवान। ३ पानी। ४ आर्य गीत या कथाण का भेद विशेष। —कंठ–पु० बालक। —काकोली–स्त्री० एक औषधि विशेष। —ज–पु० दही, दधि, घृत, घी। —दध–पु० समुद्र। क्षीर-सागर। —दधि, पत, पति, पनी–पु० समुद्र। —संध, समद, समुद्र, सागर–पु० क्षीर सागर।

खीरड़ी–स्त्री० १ एक पौधा विशेष। २ देखो 'खीर'।

खीरसागर–पु० १ खीर परोसने का पात्र। २ क्षीर समुद्र।

खीरू–देखो 'खीर'।

खीरोद–पु० [स० क्षीरोद] समुद्र, सागर।

खीरोदक–देखो 'क्षीरोदक'।

खीरौ–पु० [स० क्षरण] १ जलता हुआ कोयला, अगारा। २ एक प्रकार की लकडी। ३ दूधिया दात वाला वैल।

खीरौलियौ(लौ)–पु० १ एक प्रकार का जगली प्याज। २ वाजरी के आटे की खीर।

खील–स्त्री० [स० कील] १ लोहे या काष्ठ का कीला, कील। २ खूटी। ३ नुकीला फोडा या फुंसी। ४ रहट का स्तभ। ५ चक्की की धुरी। ६ भूंज कर फुलाए हुए चावल, जौ आदि।

खीलण–स्त्री० १ दो वस्त्रो को परस्पर जोडने की क्रिया। २ एक प्रकार की सिलाई। ३ अकुश। ४ मत्रो द्वारा किया जाने वाला वशीकरण।

खीलणौ (बौ)–क्रि० १ दो वस्त्रो परस्पर जोडना। २ सिलाई करना, टाकना। ३ वाधना। ४ जूती गाठना सीना। ५ मत्रो द्वारा वश में करना।

खीलहरी–देखो 'खिलोरी'।

खीलाड़णौ (बौ), खीलाणौ (बौ), खीलावणौ (बौ)–क्रि० १ दो वस्त्रो को परस्पर जुडवाना । २ मिलाई करवाना । ३ वधवाना । ४ जूनी गठवाना । ५ वण मे कराना ।

खीलौ–देखो 'खील' ।

खीलीखानौ–पु० १ वढई का कारखाना । २ देखो 'किलीखानौ' ।

खीलोरी, खीलोहरी, खील्योरी, खीलहैरी–देखो 'खिलोरी' ।

खीव–पु० [स० क्षीवृ] योद्धा, शूरवीर ।

खीवण–पु० १ स्त्रियो के नाक का आभूषण विशेष । २ देखो खिवण' ।

खीवर–देखो 'खीव' ।

खीस–पु० गाय या भैस का प्रसव के वाद पहली वार निकाला जाने वाला दूध ।

खीसाणौ (बौ), खीसावणौ (बौ)–देखो 'खिसाणौ' (बौ) ।

खीसौ–पु० [अ० कीस] १ जेव, खीसा, पाकेट । २ थैला, खलीता । ३ ओठो के वाहर निकला हुआ दात ।

खुंजाळणौ (बौ)–देखो 'खुजाळणौ' (बौ) ।

खुंट–वि० १ दुष्ट, पतित, नीच । २ निरकुश, स्वतत्र । ३ देखो 'खूट' ।

खुटणौ (बौ)–देखो 'खू टणौ' (बौ) ।

खुंडासींग, खुडौ–पु० १ वृत्ताकार मुडे हुए सीगो वाला पशु । २ मुडा हुआ सींग ।

खु द–देखो 'खू द' ।

खु दवाणौ (बौ)–क्रि० १ पावो से दबवाना । २ पावो से रोदाना ।

खु दाळिम–देखो 'खू दालिम' ।

खु प–पु० सिर का पुष्प शृ गार ।

खुंभी–स्त्री० स्तभ की आधारशिला ।

खुंवणी–स्त्री० क्षमाशीलता, सहनशीलता ।

खु–पु० १ कामदेव । २ विकल या दु खी व्यक्ति । ३ उल्लू । ४ व्रह्मा । ५ स्थान । ६ सिखावन । ७ खद्योत ।

खुक–स्त्री० १ प्यास । २ प्यास की अवस्था मे सूखा मुख ।

खुखरी–स्त्री० एक प्रकार की छुरी ।

खुगाहड़ौ–पु० एक प्रकार का घोडा ।

खुड–पु० १ पाद चिह्न । २ ऐडी । ३ पैर । —**खोज**–पु० पावो के निशान ।

खुड़क–पु० १ जलाशय या नदी तट । २ पशुओ का एक सक्रामक रोग । ३ खटका । ४ पर्वत की तलहटी ।

खुडकणौ (बौ)–क्रि० १ खटखट ध्वनि होना । २ खटकना ।

खुडकाणौ (बौ), (वणौ) (बौ)–क्रि० १ खुड-खुडकी ध्वनि करना । २ हुक्का पीना । ३ हुक्के की ध्वनि करना ।

खुडकौ–पु० १ खटका, आहट । २ देखो खडकौ' ।

खुडद–पु० १ सहार नाश । २ खुरद । —**बीन**=खुरदवीन' ।

खुडदसाणौर–पु० डिगल गीत का एक भेद ।

खुडदा–स्त्री० [फा० खुर्द] १ छोटी-मोटी वस्तु । २ छोटा सिक्का । ३ सूक्ष्म चीज । —**फोस**–पु० फुटकर सामान वेचने वाला व्यापारी ।

खुडदियौ–पु० [फा० खुर्द] रेजगारी, कौडी आदि छोटे सिक्को का विनिमय करने वाला बनिया ।

खुडाणौ (बौ), खुडावणौ (बौ)–क्रि० लगडा कर चलना । लगडाना ।

खुडियौ-खाती–पु० पक्षी विशेष ।

खुडी–स्त्री० ऐडी ।

खुचखुचियं–क्रि०वि० छोटे डग या कदम से । (चाल मे) –स्त्री० चलते की एक क्रिया ।

खुचणौ (बौ)–क्रि० १ धसना, फसना । २ चुभना ।

खुचरौ–पु० १ वस्त्र विशेष । २ देखो 'कुचरौ' ।

खुचाणौ (बौ)–क्रि० १ धसाना, फसाना । २ चुभाना ।

खुजळणौ (बौ)–देखो 'खुजाळणौ' (बौ) ।

खुजळाणौ (बौ)–देखो 'खुजाळणौ' (बौ) ।

खुजळी खुजाळ (ळि)–स्त्री० १ खाज, खुजलाहट । २ एक चर्म रोग ।

खुजाळणौ (बौ), खुजावणौ (बौ)–क्रि० नाखून से कुचरना, खुजालाना ।

खुटक–देखो 'खटक' ।

खुटकणौ (बौ)- क्रि० १ कसकना, दर्द करना, पीव पडना । २ ठोकर खाना, लडखडाना ।

खुटणौ (बौ)–क्रि० १ नष्ट होना, वर्वाद होना । २ समाप्त होना । ३ खुलना । ४ मुक्त होना । ५ मिटना ।

खुटहड–वि० १ जवरदस्त, शक्तिशाली । २ उन्मत्त, मस्त ।

खुटाणौ (बौ)–क्रि० १ नष्ट करना, वरवाद करना । २ समाप्त करना । ३ खोलना, मुक्त करना । ४ मिटाना ।

खुटिया–स्त्री० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

खुटोडौ–देखो 'खूटोडौ' । (स्त्री० खुटोडी) ।

खुट्टणौ (बौ)–देखो 'खुटणौ' (बौ) ।

खुडौ–पु० १ वर्तन विशेष । २ देखो 'खुडी' ।

खुडौ, खुड्डौ–पु० [स० खात] १ मुर्गा आदि रखने का कठघरा, दडवा । २ गुफा आदि का मुख, द्वार । ३ ऊची भूमि । ४ छोटा टीवा ।

खुढ्ढौ–पु० १ कुत्ते की गुवाली, माद । २ छोटा घर । ३ गुफा ।

खुणखुणियौ–पु० १ खन-खन वोलने वाला खिलौना । २ योनि ।

खुणचियौ, खुणचौ–पु० अजली । चुल्लू ।

खुणणौ (बौ)–देखो 'खिणणौ' (बौ) ।

खुणस–स्त्री० १ क्रोध, गुस्सा, रोष । २ मन-मुटाव ।
खुणौ–पु० कोना ।
खुतग–देखो 'खतग' ।
खुतराळी–स्त्री० पशु द्वारा खुर से जमीन कुचरने की क्रिया ।
खुथौ–पु० बकरी के बालो की दरी जो कृषि कार्य मे उपयोगी होती है। पट्टू ।
खुदग–पु० एक प्राचीन देश ।
खुद–अव्य० [फा०] स्वय । आप । **—कास्त**–स्त्री० निजी खेती । निजी खेती की भूमि । **—कुसी**–स्त्री० आत्महत्या । खुदकशी । **—गरज**–वि० स्वार्थी । **—गरजी**–स्त्री० स्वार्थीपन । **—मुख्तार**–वि० अनिरुद्ध । स्वछन्द । स्वतंत्र । **—मुख्तारी**–स्त्री० स्वच्छन्दता ।
खुदड़णौ (बौ)–क्रि० [स० क्षुदिरम्] १ कुचलना, रोदना । २ कुचरना, खुजलाना ।
खुदणौ (बौ)–क्रि० खोदा जाना । स्वत खुद जाना ।
खुदरौ–पु० [फा०] अपने आप उगने वाला (पौधा या वृक्ष)।
खुदवाई–स्त्री० १ खुदाई का कार्य । २ खुदाई की मजदूरी ।
खुदाई–स्त्री० [फा०] १ ईश्वरत्व । २ ससार सृष्टि । ३ खोदने का कार्य । ४ खोदने की मजदूरी ।
खुदा (य)–पु० [फा०] १ ईश्वर, परमात्मा, स्वयम्भू । २ दक्ष निर्माता ।
खुदाणौ (बौ), खुदावणौ (बौ)–क्रि० खुदवाना ।
खुदायबद–पु० १ ईश्वर, खुदा । २ स्वामी मालिक।
खुदाळ–पु० १ रथ । २ सूर्य का रथ, वाहन ।
खुदाळम–देखो 'खु दाळम' ।
खुदिया, खुद्या, खुधा–स्त्री० [स० क्षुधा] क्षुधा, भूख ।
खुधार, खुधाळ, खुधावत–वि० क्षुधित, भूखा ।
खुधियारत–वि० [स० क्षुधार्त] भूखा, क्षुधा पीडित ।
खुध्या–देखो 'खुधा' ।
खुन्यायौ–वि० हल्का गर्म, गुनगुना ।
खुपणौ (बौ)–देखो 'खुबणौ' (बौ) ।
खुपरी–स्त्री० १ खोपडी । २ तरबूज की खपरी ।
खुपाणौ (बौ), खुपावणौ (बौ)–देखो 'खुबाणौ' (बौ) ।
खुफिया–वि० [अ० खुफीय] १ गुप्त । २ गूढ, पेचीदा । –पु० पुलिस का एक विभाग ।
खुफियौ–पु० [अ० खुफीय] १ गुप्तचर, भेदिया । २ जासूस ।
खुब–स्त्री० धोबी की भट्टी ।
खुबक–पु० घोडो का एक रोग विशेष ।
खुबणौ (बौ)–क्रि० १ चुभना । २ धसना, गडना । ३ रुपना ।
खुभणौ(बौ)–क्रि० १ उत्तेजित होना, करना । २ क्षुब्ध होना, करना । ३ आदोलन करना, हिलना ।
खुबाणौ (बौ), खुबावणौ (बौ), खुभाणौ (बौ), खुभावणौ (बौ)–१ चुभाना । २ धसाना, गडाना । ३ रोपना ।
खुमर–स्त्री० जलन, दाह, ईर्ष्या (मेवात) ।
खुमरी–स्त्री० एक चिडिया विशेष ।
खुमार (री)–पु० [अ०] १ हल्का नशा, उन्माद । २ मस्ती । ३ नशे के उतार की अवस्था । ४ जागरण की उदासी । ५ गर्मी मे भिगो कर ओढने का वस्त्र ।
खुरट–पु० [स० क्षुर + अड] १ घाव पर जमने वाली सूखी पपडी । २ कष्ट बात, जो दब चुकी हो ।
खुर–पु० [स० खुर] १ चौपाये जानवरो के पैरो का निचला सख्त भाग, खुर, टाप । २ नख नामक गंध द्रव्य । ३ पैर, चरण । ४ छुरा, उस्तरा । ५ तीर, बाण ।
खुरखुराणौ (बौ), खुरखुरावणौ(बौ)–देखो 'खरखराणौ' (बौ) ।
खुरखुरी–स्त्री० रहट के स्वामियो से लिया जाने वाला कर ।
खुरखुरौ–वि० खुरदरा, दरदरा । –पु० पशु की चाल विशेष ।
खुरखू–स्त्री० पृथ्वी ।
खुरड़णौ (बौ)–क्रि० १ वमीटना । २ कुचरना । ३ छटपटाना ।
खुरडौ–पु० पैर, चरण ।
खुरचण (णी)–स्त्री० [स० कूर्चनम्] १ बचा-खुचा सामान । २ किसी पदार्थ का पकाते समय वर्तन मे चिपका रहने जाने वाला भाग । ३ इस प्रकार कुचरकर एकत्र किया गया पदार्थ । ४ एक औजार विशेष ।
खुरचणियौ, खुरचणौ–पु० कुचरने का उपकरण । छोटी खुरपी ।
खुरचणौ (बौ)–क्रि० [स० क्षुरण] १ कुचरना, कुचर कर एकत्र करना । २ कुरेदना । ३ कुरेद कर अलग करना ।
खुरज–स्त्री० खाज, खुजली ।
खुरजी–स्त्री० घोडे पर दोनो ओर लटका रहने वाला थैला, झोला ।
खुरणोख–स्त्री० धूलि, रज, गर्द ।
खुरतार, खुरताळ, (ळि, ळी, ळु)–स्त्री० [स० क्षुरत्राण] १ घोडे या गधे की टाप, सुम । २ सुम के नीचे लगने वाली लोहे की नाल । ३ जूती की मजबूती के लिए उसके तल मे लगाई जाने वाली लोहे की नाल ।
खुरद–देखो 'खुडद' ।
खुरदम, खुरप–पु० गधा, खर ।
खुरपी–स्त्री० १ कुरेदने या कुचरने का एक छोटा उपकरण । २ एक औजार विशेष ।
खुरपौ (फौ)–पु० १ कडाई मे पकवान बनाते समय हिलाने का उपकरण । खुरपा । २ तलवार ।
खुरप्र–पु० तीर, बाण ।
खुरबांणी–देखो 'खुबानी' ।

खुरमी–पु० छोटा, वछड़ा। –वि० १ कायर, डरपोक। २ कमजोर, निर्वल।
खुरमलौ–पु० खाद्य पदार्थ विशेष।
खुरमुरी–स्त्री० १ जोश, आवेश। २ होशियारी सावधानी।
खुरमौ–पु० [अ० खुरमा] १ एक प्रकार का पकवान, चूरमा। २ छुहारा। ३ एक प्रकार का घोडा।
खुरराट–वि० [स० खुर्राट] १ बूढा, वृद्ध। २ अनुभवी। ३ चालाक होशियार।
खुररौ–पु० [स० क्षुरक] १ पशुओ की पीठ से मेल उतारने का उपकरण। २ पशुओ की पीठ से मेल उतारने की क्रिया। ३ ऊची भूमि पर चढने का ढलुआ रास्ता।
खुरळणौ (बौ)–क्रि० नाखून या क्षुरो से खोदना।
खुरलियौ–पु० खाद ढोते समय गाडी पर लगाया जाने वाला उपकरण।
खुरळी–स्त्री० शस्त्र विद्या।
खुरसनी–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
खुरसळी–स्त्री० चौपाये पशुओ के खुर।
खुरसाण–पु० १ तलवार। २ यवन, मुसलमान। ३ घोडा। ४ तीर वाण। ५ सेना, फौज। ६ बादशाह। ७ शस्त्र पैना करने का उपकरण। ८ देखो 'खुरासाण'।
खुरसाणज–पु० तीर, वाण।
खुरसाणियौ–वि० १ शस्त्र पैना करने वाला। २ खुरसाण का निवासी।
खुरसाणी–पु० १ खुरसान देश का निवासी। २ खुरसान का घोडा। ३ एक प्रकार का अजमा। –वि० मुसलमान।
खुरसान–देखो 'खुरसाण'।
खुरसाडौ–पु० पशुओ के खुरो मे होने वाला एक रोग।
खुरसी–देखो 'कुरसी'। —बध='कुरसीवध'।
खुराई–स्त्री० १ पशुओ के दोनो पैर परस्पर बाधने की रस्सी। २ उद्दण्ड बैल को पकडने का फदा।
खुराक–स्त्री० [फा०] १ भोजन की क्षमता। २ भोजन, आहार। ३ एक बार मे ली जाने वाली औषधि की मात्रा। ४ एक समय का भोजन।
खुराकी–स्त्री० भोजन का नकद-भुगतान। –वि० अधिक खाने वाला। अच्छी खुराक वाला।
खुराट–देखो 'खुरराट'।
खुराफात–स्त्री० [स०] १ बेहूदी या भद्दी हरकत। २ उद्दण्डता, वदमाशी। ३ छेड़-छाड। ४ झगडा, कलह। ५ उपद्रव।
खुराफाती–वि० 'खुरापात' करने वाला।
खुराळणौ (बौ)–क्रि० नाखून या क्षुरो से खोदना।
खुरासाण (न)–पु० १ अफगानिस्तान का एक प्रान्त। २ मुसलमान, यवन। ३ सेना, फौज। ४ बादशाह। ५ इस देश का घोडा। ६ एक प्रकार की तलवार। ७ देखो 'खुरसाण'।
खुरियौखाती–पु० एक देशी खेल।
खुरी–स्त्री० १ चुराए हुवे पशुओ को लौटाने के लिये दिया जाने वाला गुप्त धन। २ खुरो से जमीन खोदने की क्रिया। ३ मौज, आनन्द। ४ घोडा फेरने की क्रिया विशेष। ५ खुर, सुम। ६ खुर वाला पशु। ७ घोडा, अश्व।
खुरौ–पु० १ फर्श, आगन। २ ऊची भूमि। ३ शिर का मेल।
खुलखुलणौ (बौ), खुळखुळाणौ (बौ)–क्रि० कोडियो को या पैसो को हाथ मे लेकर बजाना, हिलाना या हिलाते हुए डालना।
खुलखुलियौ–पु० कुक्कर खासी।
खुळखुळी–स्त्री० १ अव्यवस्था। २ खासी। ३ शीघ्रता, उतावली। ४ गुदगुदी।
खुळणौ (बौ)–क्रि० १ पानी से धोया जाना। २ दाव फेंका जाना। ३ मुट्ठी मे डालकर हिलाना।
खुलणौ (बौ)–क्रि० १ ढक्कन आदि का खुलना, अलग होना। २ जुडा हुआ अलग होना। ३ बधन मुक्त होना। ४ दरार पडना, फटना। ५ चालु होना। ६ प्रारम्भ होना। ७ जारी होना। ८ प्रतिवन्ध हटना। ९ शिकार के पशु की चमडी उतरना। १० बात प्रकट होना, रहस्य खुलना। ११ भेद देना। १२ मन की बात साफ कहना। १३ शोभित होना, खिलना। १४ निकलना, उदय होना। १५ स्थापित होना। १६ अवरोध हटने से साफ होना।
खुलमखुल्ला–क्रि० वि० खुले आम, चौडे मे। प्रगट रूप मे।
खुलाणौ (बौ), खुलावणौ (बौ)–क्रि० १ खोलाना अलग कराना। २ जुडाहुआ अलग कराना। ३ दरार पटकाना, फडवा देना। ४ चालु कराना। ५ प्रारभ कराना। ६ जारी कराना। ७ बधन मुक्त कराना, खोलाना। ८ प्रतिवध हटवाना। ९ शिकार के पशु की चमडी उतराना। १० वात प्रगट कराना, रहस्य खुलाना। ११ भेद दिलाना। १२ मन की वात कहाना। १३ खिलाना, शोभित कराना।
खुळाणौ (बौ)–क्रि० १ धुलाना। २ दाव फेंकाना। ३ मुट्ठी मे डालकर सारी आदि हिलाना।
खुलासाळ–स्त्री० वरामदा। खुला वरडा।
खुलासौ–पु० [अ० खुलास] १ साराश, सक्षेप। २ निपटारा। ३ फैसला। ४ स्पष्टीकरण। ५ व्याख्या। ६ खुली वात।
खुलेपगा–वि० १ मुक्त आजाद। २ उच्छृखल।
खुलौ–वि० (स्त्री० खुली) १ वधन रहित, मुक्त। २ आवरण रहित। ३ स्वच्छन्द। ४ स्पष्ट, प्रगट।
खुल्यौ–वि० पथ भ्रष्ट, पतित।
खुल्लमखुल्ल–क्रि० वि० खुले आम, चौडे मे। –वि० १ अव्यवस्थित। २ अट सट। –पु० वेकार सामान, अटाला।

खुल्लमखुल्ला–देखो 'खुलमखुल्ला'।
खुल्हणौ (बौ)–देखो 'खुलणौ' (बौ)।
खुवाणौ (बौ)–देखो 'खवाणौ' (बौ)।
खुवार–पु० [फा० खव्वार] १ खराबी, दोष। २ नशा। ३ विध्वस, नाश। ४ अनर्थ। –वि० खराब।
खुस–वि० [फा० खुश] १ प्रसन्न, खुश। २ हर्षित आनन्दित। ३ मस्त, मग्न। ४ अच्छा। —**किस्मत**–वि० भाग्यशाली। —**खत**–वि० सुन्दर लिखावट वाला। —**खबरी**–स्त्री० शुभ समाचार। अच्छी खबर। —**दिल**–वि० प्रसन्नचित्त। मस्त रहने वाला। मसखरा। —**नवीस**='खुसखत'। —**नवीसी**–स्त्री० सुन्दर लिखावट। लेखन कला। —**नसीब**–वि० भाग्यशाली। —**नसीबी**–स्त्री० सौभाग्य। —**नुमा**–वि० सुन्दर, मनोहर। —**मिजाज**–वि० विनोद प्रिय। खुशदिल। —**रंग**–वि० चटकीले रंगो वाला। सुन्दर। —**हाल**–वि० सुखी। सम्पन्न। —**हाली**–स्त्री० सम्पन्नता। सुख। अच्छी दशा।
खुसकी–देखो 'खुस्की'।
खुसणौ (बौ)–क्रि० निकट पहुचना, नजदीक आना, बरबाद करना, लुटजाना।
खुसबू (बोय, बोह)–स्त्री० [फा० खुशबू] सुगध, सुगधित हवा। —**दार**–वि० सुगधित, अच्छी ख़ुशबू वाला।
खुसामद, खुसामद–स्त्री० [फा० खुशामद] १ गरज, जी हजूरी। २ चापलूसी। ३ झूठी प्रशसा। —**गोय**–वि० खुशामदी।
खुसामदी, खुसामदी–वि० चापलूस, चाटुकार।
खुसाळ–देखो 'खुस्याळ'।
खुसाळी–देखो 'खुस्याळी'।
खुसियाळ, सुखियावळ (हाळ)–देखो 'खुस्याळ'।
खुसियाळी (हाळी)–देखो 'खुस्याळी'।
खुसी–स्त्री० [फा० खुशी] १ प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द। २ शुभ घटना।
खुसुरफुसुर–स्त्री० कानाफूसी, गुप्तगू।
खुस्क–वि० [फा० खुश्क] १ सूखा। २ नीरस। ३ रूखे स्वभाव वाला।
खुस्की–स्त्री० [फा० खुश्की] १ सूखापन। २ नीरसता। ३ रूखापन। ४ शारीरिक खुश्की। ५ स्थल या मरुभूमि। ६ पैदल यात्रा। ७ अकाल, अवर्षण।
खुस्याळ–वि० [फा० खुशहाल] १ प्रसन्न, खुश, आनन्दित। २ सुखी, सम्पन्न। –पु० एक प्रकार का घोडा।
खुस्याळी–स्त्री० [फा० खुशहाली] १ प्रसन्नता, हर्ष। २ सुख, सम्पन्नता।
खुहम–पु० तीर, बाण।
खूकियो, खूको–वि० वह जिसका टूटा हुआ हाथ पुन: जोडने पर टेढापन रहा हुआ हो।
खूखाट–पु० तेज हवा या आधी की आवाज, सॅखाट।
खूखाणौ (बौ)–क्रि० १ तीव्र ध्वनि करना। २ तीव्र गति से चलाना।
खूंखार–वि० [फा० खुंख्वार] १ क्रूर, क्रोधी। २ प्रचड, भयकर। ३ रक्त पिपासु। ४ निर्दयी। –पु० विनाश, ध्वस।
खूगाळी–स्त्री० गले का एक आभूषण विशेष।
खूंगाळी–देखो 'खूगाळी'।
खूंच–स्त्री० गधे की चाल।
खूचणौ–पु० दोष, अवगुण, ऐब।
खूजियो, खूजीयो, खूंजो–पु० खीसा, जेब।
खूज्यो–पु० १ विना बधिया किया बैल, साड बैल। २ देखो 'कूट'। ३ देखो खुट। ४ देखो 'खूटो'। ५ देखो 'खूंजो'।
खूंटणी–स्त्री० १ चुनाई। २ चुनने या बीनने की क्रिया या भाव। ३ तोडने योग्य होने की अवस्था।
खूंटणौ (बौ)–क्रि० [सं० चुट-छेदने] १ तोडना, चुनना, बीनना। २ तोडना।
खूंटाउखाड (उखेड़)–वि० वश मिटाने वाला। निकम्मा।
खूटाउपाड़ (ऊपाड़)–पु० १ वक्षस्थल पर भौंरी वाला घोडा। २ घोडे के वक्षस्थल पर होने वाली भौंरी।
खूटागाड–स्त्री० घोडे के घुटने के नीचे होने वाली भौंरी।
खूटाचिटकण–पु० पावो से चट-चट आवाज करने वाला बैल।
खूंटाडाणचराई–स्त्री० एक प्रकार का जागीरदारी कर।
खूटाणौ(बौ), खूटावणौ (बौ)–क्रि० १ तुडवाना। २ चुनवाना, बीनाना।
खूटापाड–पु० घोडे की जाघ के सधिस्थल की भौंरी।
खूटारोप–पु० एक प्रकार का घोडा। (शुभ)
खूंटियो–पु० खेती मे काम लिया जाने वाला बधिया किया हुआ बैल।
खूटी–स्त्री० १ दीवार मे लगने वाली लकडी की कील। २ कील, परेक। ३ ज्वार-बाजरी के डठलो का खड। ४ बालो का नुक्का। —**उखाड, गाड**–पु० घोडे की एक भौंरी।
खूटो–पु० १ पशुओ को बाधने के लिए रोपी जाने वाली मोटी लकडी। २ पशुओ को बांधने का स्थान। ३ ज्वार बाजरी आदि के पौधे काटने पर पीछे रहा नुक्का।

खूंडियो—पु० एक तरफ से मुडी हुई लाठी ।

खूंडी—स्त्री० मुडे हुए सीगो वाली भैस ।

खूंणी—स्त्री० कोहनी ।

खूंणो—पु० १ कोना । २ कोण ।

खूंद—पु० [फा० खाविंद] १ बादशाह, राजा । २ स्वामी मालिक । ३ पावो से दबाने की क्रिया या भाव । ४ कष्ट तकलीफ । ५ रोदने की क्रिया या भाव । ६ योद्धा । ७ सहनशील । —**कार**—पु० बादशाह । मुसलमान ।

खूंदणो (बो)—क्रि० १ रोदना, कुचलना । २ पावो से दबाना ।

खूंदळम, (मो)—देखो 'खूंदाळम' ।

खूंदाडणो (बो), खूंदाणो (बो), खूंदावणो (बो)—क्रि० १ पावो से रोदाना । कुचलाना । २ पावो से दबवाना ।

खूंदाळम, खूंदाळिम—पु० [फा० खुदा-आलय] १ बादशाह, राजा । २ मुसलमान । –वि० सहनशील । वीर । विनम्र ।

खूंन-देखो 'खून' ।

खूंनणो (बो)—देखो 'खूंदणो' (बो) ।

खूंनी—देखो 'खूनी' ।

खूंपणो (बो)—क्रि० गोता लगाना ।

खूंपु—पु०पुष्पो का सेहरा जो दुल्हिन या दूल्हे को धारण कराया जाता है ।

खूंबी (भी)—स्त्री० १ वर्षा ऋतु मे स्वत. पैदा होने वाला बिना पत्ते का एक पौधा, भूफोड । २ शिखर, गुबज ।

खूंम—देखो 'खूम' ।

खूंसडी (ड़ी)—स्त्री० जूती ।

खू—पु० १ कविजन । २ बृहस्पति । ३ सूर्य । ४ जीव । ५ किनारा । ६ पृथ्वी के जीव । ७ देखो 'खूव' ।

खूखू—पु० सूअर, शूकर ।

खूजियो, खूजो—देखो 'खूंजियो' ।

खूट—स्त्री० १ समाप्ति, खातमा । २ पूर्णता । ३ मौत मृत्यु ।

खूटणो (बो)—क्रि० १ समाप्त होना, खत्म होना । २ पूर्ण होना, पूरा होना । ३ चुक जाना, चुकता होना । ४ मरना । ५ नष्ट होना । ६ बधन मुक्त होना । ७ हारना । ८ फहरना ।

खूटळ—वि० निर्लज्ज, वेशर्म ।

खूटवण—वि० समाप्त या सहार करने वाला ।

खूटवणो (बो)—क्रि० समाप्त करना, शिक्षा देना ।

खूटाणो (बो), खूटावणो (बो)—क्रि० १ समाप्त करना, खत्म करना । २ पूर्ण करना, पूरा करना । ३ चुकता करना । ४ मारना । ५ नाश करना । ६ बधन मुक्त करना । ७ हराना । ८ फहराना । ९ निंदाजनक कार्य करना ।

खूटोड़ो—वि० (स्त्री० खूटोडी) १ समाप्त । २ मृतक । ३ निकम्मा ।

खूटो—वि० (स्त्री० खूटी) १ भूखा । २ बधन मुक्त ।

खूड—स्त्री० १ हल की रेखा, सीता । २ देखो 'कूड' ।

खूण—स्त्री० [स० कोण] १ कोना । २ कोण । ३ नदी का एक भाग । ४ पहाड की गुफा, कदरा । ५ मकान का एक तरफ का अधिक लबा भाग ।

खूणियो—पु० १ रहट का एक किनारा । २ देखो 'खूंणो' ।

खूणी—देखो 'खूंणी' ।

खूणीदार—वि० कोणधारी, कोने वाला ।

खूणू—देखो 'खूंणो' ।

खूणो—देखो 'खूंणो' ।

खूतणो (बो)—क्रि० डुबकी लगाना । गोता लगाना ।

खूद—पु० १ हरे जव जो घोडो को खिलाए जाते हैं । २ देखो 'खूंद' । ३ देखो 'युद्ध' ।

खूदणो (बो)—१ देखो 'खूंदणो' (बो) । २ देखो 'खोदणो' (बो)

खूदाळम, खूद्दाळम—देखो 'खूंदाळम' ।

खून—पु० [फा०] १ रक्त, रुधिर, लहू । २ वध, हत्या । ३ अपराध, गुनाह । —**लिप**—स्त्री० रक्त-प्लीहा ।

खूनि (नी)—वि० [फा०] १ हत्यारा, कातिल, मारने वाला । २ अपराधी, गुनहगार । ३ जालिम, अत्याचारी । ४ क्रुद्ध । —पु० १ बवासीर । २ सिंह ।

खूब—वि० [फा०] १ अधिक, वहुत । २ बढिया, उत्तम । ३ भला । ५ तारीफ लायक । –क्रि०वि० अच्छी तरह, भली प्रकार ।

खूबकळा—स्त्री० पोस्त की तरह की एक औपधि व इसका पौधा ।

खूबड़—स्त्री० एक देवी विशेष ।

खूबड-खाबड़—वि० ऊवड-खाबड ।

खूबसुरग—पु० एक प्रकार का घोडा ।

खूबसूरत—वि० [फा०] सुन्दर, रूपवान । मनोहर ।

खूबसूरती—स्त्री० सुन्दरता । सौन्दर्य ।

खूबाणी (नी)—स्त्री० [फा० खूबानी] जरदालू नामक फल ।

खूबी—स्त्री० [फा०] १ अच्छाई, अच्छापन । २ गुण, विशेषता । ३ विलक्षणता । ४ आनन्द, मौज । ५ भलाई । ६ शाति ।

खूम—पु० १ मुसलमान । २ एक प्रकार का सूती साफा । ३ वास की खपचियो की बनी एक प्रकार की डलिया । ४ हिस्सा, विभाग । ५ गुच्छा ।

खूमचो—पु० १ चाट-नमकीन या फल आदि वेचने का ठेला । २ ऐसी ही वस्तुओ का पात्र । खोचा ।

खूमपोस—पु० थाल आदि पर ढकने का वस्त्र ।

खूमांणी—वि० १ भयकर, अनिष्टकारी । २ देखो 'खूवाणी' ।

खूर–पु० १ घोडा । २ फौज, दल। ३ समूह, झुड । ४ वाण, तीर। ५ सेना, फौज । –वि० १ घना, अधिक। २ देखो 'खुर'। —दम–पु० गधा, गर्दभ।
खूरन–स्त्री० हाथी के पावो की बीमारी।
खूसडी (डौ)–देखो 'खूसडी'।
खूसणौ (बौ)–क्रि० १ बढाना, अगाडी करना। २ छीनना। ३ ठूसना। ४ देखो 'खोसणौ' (बौ)।
खूसाणौ (बौ), खूसावणौ (बौ)–देखो 'खोसाणौ' (बौ)।
खूह–पु० १ कूआ कूप। २ देखो 'कूड'।
खें-खें–देखो 'खैं-खैं'।
खेंखार–देखो 'खखार'।
खेंखाट–पु० १ तीव्र वायु का झोंका। २ तीव्र वायु की ध्वनि।
खेंखारौ–देखो 'खखारौ'।
खेंगरणौ (बौ)–क्रि० नाश करना, मारना, सहार करना।
खेंच–स्त्री० खीचने की क्रिया या भाव, खिचाव, तनाव।
खे–पु० १ कवि । २ पक्षी । ३ दुख, खेद । ४ सभा द्वार। ५ नभचर। ६ प्राण। ७ तलवार। ८ शिव। ९ आकाश। १० धूल, गर्द। ११ राख। १२ अगारो का ढेर।
खेई–स्त्री० झड वेरी के सूखे डठलो का समूह 'पाई'।
खेउ–पु० खेद, रज, उदासीनता।
खेकौ (खी)–पु० वडा अफीमची।
खेगाळ–पु० १ तेज प्रवाह। २ तेज गति। ३ देखो 'खोगाळ'।
खेड–स्त्री० १ वडा भोज । २ खेत की जुताई । ३ यात्रा की दूरी। ४ एकत्रीकरण।
खेडणौ (बौ)–क्रि० १ चलना। २ चलाना, हाकना। २ खेत की जुताई करना। ४ एकत्र करना । ५ दूरी तय करना।
खेड़ा–स्त्री० १ कुछ-कुछ दिनो के फासले से होने वाली वर्षा। २ कण।
खेडाऊ–पु० अकाल पडने पर मवेशियो को चारा-पानी के लिए अन्य प्रदेश मे ले जाने वाला।
खेडी–स्त्री० १ पक्का लोहा, फौलाद। २ युद्ध।
खेडालाग–पु० नए वसे हुए गावो व ढाणियो वालो से लिया जाने वाला कर।
खेडू–वि० हाकने वाला, चलाने वाला।
खेडूनौ–पु० एक प्रकार का कद विशेष।
खेडेच, खेडेचउ, खेडेचौ–पु० राठौड राजपूत।
खेडौ–पु० [स० क्षेत्र] छोटी ढाणी या वसा हुआ छोटा गाव।
खेचर (रु)–पु० [स०] १ नभचारी । २ सूर्य, चन्द्रादि ग्रह। ३ तारागण। ४ देवता। ५ विमान। ६ पक्षी। ७ बादल। ८ राक्षस । ९ शिव । १० भूत-प्रेत । ११ कसीस। १२ चौसठ भैरवो के अन्तर्गत एक। १३ वायु। –स्त्री० १४ अप्सरा । १५ दुर्गा । १६ पिशाचिनी। १७ योगिनी। १८ बहत्तर कलाओं मे से एक।
—गुटका, गुटिका–स्त्री० तान्त्रिक योग सिद्धि की गोली।
—मुद्रा–स्त्री० तान्त्रिक मुद्रा विशेष।
खेचरी–स्त्री० जीभ को तालु मे लगाने की एक मुद्रा।
खेचल–स्त्री० १ श्रम, परिश्रम । २ कष्ट, तकलीफ। ३ तगी, परेशानी।
खेचलणौ (बौ)–क्रि० १ थकाना । २ कष्ट देना। ३ परेशान करना। ४ चलाना।
खेचाई, खेचौ–स्त्री० १ ईर्ष्या, द्वेष । २ शत्रुता, वैर। ३ व्यग, ताना। ४ मखौल, दिल्लगी।
खेज–पु० खाद्य पदार्थ।
खेजड, खेजड़लौ, खेजडियौ, खेजड़ौ, खेजडौ–पु० छोटी पत्ती व छोटे काटेदार एक मरुप्रदेशीय वृक्ष, शमी।
खेट–पु० [स०] १ सूर्यादि ग्रह । २ घोडा । ३ ढाल। ४ चमडा । ५ एक अस्त्र विशेष । ६ युद्ध, सग्राम। ७ आयुध रूप मूसल। ८ कफ । ९ वह वस्ती जिसके चारो ओर धूल का कोट हो।
खेटक–पु० [स०] १ बलरामजी का मूसल, गदा। २ ढाल। –वि० १ शक्तिशाली, समर्थ। २ देखो 'खेट'।
खेटकी–स्त्री० ढाल। –पु० योद्धा।
खेटणौ (बौ)–क्रि० १ नाश करना, सहार करना। २ हराना।
खेटर, (खल)–पु० फटा पुराना जूता।
खेटाणौ (बौ), खेटावणौ (बौ)–क्रि० १ हराना, पराजित करना। २ क्रोधित करना।
खेटायत–वि० वीर, बहादुर।
खेटी–वि० [स० खेटिन्] १ नागर। २ कामुक।
खेटौ–पु० [स० खेट] १ युद्ध, झगडा। २ ईर्ष्या, द्वेष।
खेड–पु० १ तीर, वाण। २ युद्ध।
खेडणौ (बौ)–देखो 'खेडणौ' (बौ)।
खेडार–वि० ग्रामवासी, देहाती।
खेडूर–वि० वहादुर, जबरदस्त।
खेडूलौ–पु० एक प्रकार का कद।
खेडौ–पु० खड्ग, तलवार।
खेणौ (बौ)–क्रि०स० [स० खेवृ] १ नाव चलाना, खेना। २ काल क्षेप करना, समय विताना। ३ देव पूजन के लिए धूप दान करना।
खेत (डौ), खेतर–पु० [स० क्षेत्र] १ वह भूखण्ड जिसमे किसी प्रकार की खेती की जाती है। २ खेत मे खडी फसल। ३ उत्पत्ति स्थान या प्रदेश । ४ रण क्षेत्र, युद्धस्थल। ५ श्मशान भूमि। ६ वश, खानदान। ७ पृथ्वी। ८ तलवार की धार का मध्य भाग। ९ भूखण्ड। —गर–पु० किसान।

योद्धा, वीर । —जीव-पु० किसान, कृषक । —पाळ-पु० क्षेत्रपाल, ये ४९ माने गये हैं ।

खेतल, (खेतलौ)–पु० १ क्षेत्रपाल । २ द्वारपाल । —**ग्रस, रथ, वाहण**–पु० श्वान, कुत्ता ।

खेतिहर–पु० [स० क्षेत्रधर] किसान, कृषक ।

खेती–स्त्री० [स० क्षेत्र, कृषि] १ कृषि कार्य, काश्तकारी ग्रनाज की बोवाई । २ फसल । —**गर**–पु० किसान । कुम्हारो की एक जाति । —**पाती**–स्त्री० कृषि, काश्तकारी । —**बळ**–किसान, काश्तकार । —**बाडी, वाडी**–स्त्री० कृषि कार्य ।

खेतु (तू)–देखो 'खेत' ।

खेत्तर, खेत्र–१ देखो 'क्षेत्र' । २ देखो 'खेत' ।

खेत्रज–पु० १ क्षेत्रज सतान, । २ सोलकियो की ग्राराध्य देवी ।

खेत्रपाळ–देखो 'खेतर-पाळ' ।

खेत्राडौ–देखो 'खोत्राडो' ।

खेत्रि (त्री)–१ देखो 'खेती' । २ देखो 'खेत' ।

खेद–पु० [स०] १ ग्रफसोस, कष्ट, पीडा । २ रज । ३ पश्चाताप । ४ ग्लानि, घृणा । ५ थकान । ६ उदासी, खिन्नता । ७ ईर्ष्या, द्वेष ।

खेदज्वर–पु० घोडो का ज्वर विशेष ।

खेदणौ (बौ)–क्रि० १ भागना । २ पीछा करना । ३ खदेडना । ४ तग करना । ५ कष्ट या पीडा देना ।

खेदाई–स्त्री० १ खदेडने की क्रिया । २ खदेडने का पारिश्रमिक । ३ वैमनस्य ४ ईर्ष्या ।

खेदित–वि० [स०] दुखी । खिन्न ।

खेदौ–पु० [स० खेद] १ हठ, जिद्द । २ शिकार, ग्राखेट । ३ पीछा । ४ शिकार का हाका । ५ देखो 'खेद' ।

खेध–पु० १ विरोध । २ युद्ध, रण । ३ क्रोध । ४ वाद-विवाद । ५ देखो 'खेद' ।

खेधाऊ–वि० १ क्रोध करने वाला । २ ईर्ष्या करने वाला । ३ विरोध करने वाला ।

खेधी–पु० शत्रु, वैरी, दुश्मन ।

खेधौ–देखो 'खेदौ' ।

खेप–स्त्री० [स० क्षेप] १ ग्रातक, भय, डर । २ गाडी या नाव की एक बार की यात्रा । ३ एक बार मे लाई-लेजाई जाने वाली वस्तु । ४ थोक । ५ नर भेडो का समूह । ६ खजाना । ७ मिल्कियत, जायदाद ।

खेपणी–स्त्री० नाव की बल्ली, डाड ।

खेब–देखो 'खेप' ।

खेम–पु० [स० क्षेम] १ रक्षा, सुरक्षा । २ कुशलता, ग्रानन्द मगल । —**करी, कल्याणी**–स्त्री० श्वेत रग की चील । —**कुसळ**–पु० कुशल क्षेम । ग्रानन्द मगल । —**खाप**–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

खेमा–स्त्री० [स० क्षमा] पृथ्वी, भूमि । खेत, क्षेत्र ।

खेमाळ–स्त्री० तलवार ।

खेमौ–पु० [ग्र० खेमा] तबू, डेरा, शिविर ।

खेयारा–पु० [स० खचार] नक्षत्र ।

खेरज–पु० रजत, चादी ।

खेरण–वि० [स० क्षरण] १ नाश करने वाला । २ तोडकर गिराने वाला । ३ बचा-खुचा । –पु० १ बचा-खुचा या ग्रवशिष्ट भाग । २ वार, प्रहार । ३ चलनी । ४ एक प्रकार का वृक्ष ।

खेरणियौ–पु० १ हिन्दू लुहार, सिकलीगर । २ ग्रनाज साफ करने का उपकरण । ३ छोटी चलनी ।

खेरणी–स्त्री० १ चलनी । २ देखो 'खेरण' ।

खेरणौ–पु० बडी चलनी ।

खेरणौ (बौ)–क्रि० [स० क्षरण] १ गिराना, टपकाना । २ उखाडना, पटकना । ३ तोडना । ४ संहार करना, मारना । ५ वृक्ष को जोर से हिलाकर फल-फूल, पत्ते गिराना ।

खेराणौ (बौ)–क्रि० १ गिरवाना, टपकवाना । २ उखडवाना, पटकवाना । ३ तुडवाना । ४ सहार कराना, मरवाना । ५ वृक्ष को हिला कर फल-फूल व पत्ते गिरवाना ।

खेरी–पु० १ एक प्रकार का पुष्प । २ देखो 'खेडी' ।

खेरू, खेरू–पु० १ नष्ट, ध्वस । २ क्रोध । ३ गिराने या पटकने की क्रिया । ४ व्यर्थ में खर्च, क्षय या कमी होने की दशा । ५ पशुग्रो द्वारा पाव से धूल उछालने की क्रिया । –वि० ध्वस्त, बर्बाद, विकृत ।

खेरौ–पु० ग्रश, कण ।

खेळ–पु० १ कुल-भेद । २ देखो 'खेळी' ।

खेल (ण)–पु० [स०] १ क्रीडा, ग्रामोद-प्रमोद । २ कोई खेल विशेष । ३ नाटक ग्रभिनय । ४ चल-चित्र सिनेमा । ५ हसी, दिल्लगी, मनोरजन । ६ काम-क्रीडा । विषय विहार । ७ लीला, रचना, माया । ८ कोई ग्रद्भुत कार्य । ९ पक्ति, परम्परा । —**कबूतरी**–स्त्री० नट-विद्या । नटो का खेल ।

खेलडौ–देखो 'खेलरौ' ।

खेलणौ (बौ)–क्रि० १ ग्रामोद-प्रमोद करना, क्रीडा करना । २ कोई विशेष प्रकार का खेल खेलना । ३ नाटक करना, ग्रभिनय करना । ४ हसी करना, दिल्लगी करना । ५ रतिक्रीडा या सभोग करना । ६ लीला करना, रचना करना । ७ ग्रद्भुत कार्य करना ।

खेलर, खेलरौ–पु० [स० खेल] १ ककडी ग्रादि का फाटकर सुखाया हुग्रा टुकडा । –वि० कृशकाय । ग्रत्यन्त सूखा ।

खेलवाड–पु० [स० केलि] खिलवाड, क्रीडा, तमाशा ।

खेला-स्त्री० [स० केलि] क्रीडा, कौतुक ।

खेलाई-स्त्री० १ खेलने की क्रिया । २ खेलने का पारिश्रमिक ।

खेलाडी-देखो 'खिलाडी' ।

खेलाणौ, (बौ), खेलावणौ, (बौ)-क्रि० १ खिलाना । २ खेलने के लिए प्रेरित करना । ३ नाटक या अभिनय करना । ४ विशिष्ट खेलो मे मार्गदर्शन या नियन्त्रण करना । ५ हसी-मजाक कराना । ६ रतिक्रीडा या सभोग के लिए प्रेरित करना । ७ लीला या रचना कराना ।

खेळी-स्त्री० १ मवेशियो के लिए पानी पीने का छोटा-कुण्ड । २ पत्थर की कुण्डी । ३ सहेली, सखी । ४ मस्त-स्त्री । ५ मित्र मडली ।

खेळू-वि० १ मुख्य, प्रधान । २ देखो 'खाळू' ।

खेलूर-वि० अति-वृद्ध ।

खेळौ-पु० १ लडका । २ नौजवान, पट्ठा । -वि० १ मूर्ख, नासमझ । २ पागल । ३ मस्त ।

खेलौ-पु० कौतुक, तमाशा ।

खेल्हणौ (बौ)-देखो 'खेलणौ' (बौ) ।

खेव-क्रि० वि० १ शीघ्र तुरन्त । २ देखो 'खेप' ।

खेवट-पु० १ परिश्रम, कोशिश । २ देखो 'केवट' ।

खेवटियौ-देखो 'केवट' ।

खेवटणौ (बौ)-क्रि० नाव खेना । नदी पार करना, पार कराना ।

खेवण, खेवणी-देखो 'खेपणी' ।

खेवणौ (बौ)-देखो 'खेणौ' (बौ) ।

खेवाई-स्त्री० [स० खेवृ] १ नाव चलाने का कार्य । २ नाव का किराया । ३ नदी पार करने का पारिश्रमिक । ४ धूप-दीप करने का कार्य ।

खेवाणौ, (बौ) खेवावणौ, (बौ)-क्रि० १ नाव चलवाना, खेवाना । २ पार कराना । ३ धूपदीन करना ।

खेवी-वि० खेनेवाला, केवट ।

खेस-पु० १ दो सूती वस्त्र । २ ऐसे वस्त्र की चादर । ३ मिटना क्रिया । ३ द्वेष, वैमनस्य । ४ क्षति, कमी, अभाव । -वि० १ नष्ट । २ लुप्त । ३ समाप्त, खतम ।

खेसणौ (बौ)-क्रि० १ नष्ट करना, मिटाना । २ विनाश करना, ध्वस करना । ३ मारना, सहार कराना । ४ समाप्त करना, खत्म करना । ५ हराना, पराजित करना । ६ युद्ध करना, ७ पीछे हटाना । ८ धक्का देना । ९ छीनना ।

खेसलियौ, खेसलौ-पु० १ दो सूती तार का चादरा, वस्त्र । २ सूत व ऊन के मिश्रण से बना मोटा वस्त्र ।

खेसवणौ (बौ)-देखो 'खेसणौ' (बौ)

खेसोत-वि० सहार या विनाश करने वाला ।

खेसौ-पु० १ एक प्रकार का अशुभ घोडा । २ वैर । ३ द्वेष, डाह ।

खेह-स्त्री० १ धूल, मिट्टी, रज, गर्द । २ खाक, राख, भस्म । ३ गर्म राख । ४ मस्ती, उन्मत्तता ।

खेहउणौ (बौ)-क्रि० कर्त्तव्य पर चलाना, कर्त्तव्य निभाना ।

खेहडली, खेहूडौ-देखो 'खेह' ।

खेहटियौ-वि० मिट्टी का बना । —विनायक-पु० विवाह के अवसर पर प्रतिष्ठित की जाने वाली गजानन की मिट्टी की मूर्ति ।

खेहरी-१ देखो 'केहरी' । २ देखो 'खेह' ।

खेहा, खेहाट-स्त्री० रज, धूलि ।

खेहाडबर (रव, रवण)-पु० १ धूल का बादल । २ प्रचंड आधी ।

खेहू-देखो 'खेह' ।

खंकार-देखो 'धूकार' ।

खंकाळ-देखो 'खंगाळ' ।

खंखाउ (ट)-देखो 'खंखाट' ।

खंखार-देखो 'खखार' ।

खंखारौ-देखो 'खखारौ' ।

खं खं-स्त्री० तेज हवा या आधी की आवाज ।

खंग-देखो 'खंग' ।

खंगरणौ (बौ)-देखो 'खंगरणौ' (बौ) ।

खंगाळ (ळौ)-पु० १ सहार नाश । २ ध्वस । ३ वध । -वि० विनाश लीला करने वाला ।

खंच (चौ)-१ स्त्रियो के सिर का आभूषण । २ देखो 'खाच' । ३ देखो 'खंच' ।

खंचणौ (बौ)-देखो 'खंचणौ' (बौ) ।

खंचाताण (णी)-देखो 'खींचाताण' ।

खंदूर-वि० शक्तिशाली व बलवान योद्धा ।

खंण-देखो 'क्षय' ।

खंपाण-पु० १ मुसलमान यवन । २ सहार, नाश । -वि० वृद्ध ।

खं-पु० १ शिव । २ नदीगण । ३ भाई । ४ लडका । [स० क्षय] ५ क्षय । ६ नाश ७ सहार, नाश, ध्वस । ८ देखो 'खे' ।

खंकार-वि० [स० क्षयकार] १ नष्ट । २ ध्वस्त । -पु० १ नाश, २ सहार । ३ गाकाश ।

खंकारी-वि० [स० क्षयकारी] विनाश करने वाला ।

खंकाळ-पु० १ नाश, सहार । २ युद्ध सग्राम ।

खंगमल-पु० घोडा ।

खंगरणौ-वि० विनाश करने वाला ।

खंगरणौ (बौ)-क्रि० १ सहार करना, मारना । २ विनाश करना ।

खंगाळ-वि० सहारक । -पु० सहार, विनाश ।

खगोळ-देखो 'खगोळ' ।

खंडेच-देखो 'खेडेच' ।

खेड़ी–पु० [स० खेट] १ छोटा गाव । २ गाव के पास वाला खेत । ३ वर्र, ततैया का छत्ता । ४ मृत्युपरात का भोज । ५ एक प्रकार का सरकारी कर ।
खैवर–पु० हिमालय का पश्चिमी दर्रा ।
खैमाण (न)–वि० [स० क्षयवान] नाश होने लायक । –पु० नाश, ध्वस, सहार ।
खैयग–पु० [फा० खिग] घोडा ।
खैर–पु० [स० खदिर] १ ववूल की जाति का एक वृक्ष । २ कत्थे का वृक्ष व इस वृक्ष का गोद । ३ कत्था । [फा०] ४ दान । ५ पुण्य । –क्रि०वि० अस्तु, खेर, कोई वात नही । —**खाह, खवा**–पु० भलाई चाहने वाला, शुभ चितक । —**खाही**–स्त्री० शुभ चितन । भलाई । —**सार**–पु० खैर, वृक्ष का रस, कत्था ।
खैराइत–देखो 'खैरात' ।
खैराइती–देखो 'खैराती' ।
खैरात–स्त्री० [अ०] दान, पुण्य ।
खैराती–वि० दान लेने वाला । –पु० खराद का कार्य करने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
खैराद–पु० १ हाथी दात की चूडी वनाने या लकडी के खिलौने आदि वनाने का यत्र । २ देखो 'खैरात' ।
खैरादी–पु० १ चूडी आदि वनाने का कार्य करने वाला कारीगर । २ मुसलमानो की एक जाति । ३ बढई । ४ देखो 'खैराती' ।
खैरायत–देखो 'खैरात' ।
खैरायति (ती)–देखो 'खैराती' ।
खैरी–पु० १ एक फूल विशेप । २ एक वृक्ष विशेप । —**गूद**–पु० खैर वृक्ष का गोद ।
खैरू–देखो 'खेरू' ।
खैरौ–पु० क्रोध पूर्ण दृष्टि से देखने का भाव ।
खैसचर (चार)–देखो 'खेचर' ।
खैसवणौ (बौ)–देखो 'खेसणौ' (बौ) ।
खैह–देखो 'खेह' ।
खोंग्रो–पु० खासने का शब्द ।
खोंगाह–पु० पीलापन लिये सफेद रग का घोडा ।
खो–पु० १ खजन । २ सूर्य । ३ पुण्य । ४ सम्मान । ५ भय । ६ नाश, सहार । ७ गर्त, गड्ढा । ८ एक प्रकार का खेल ।
खो'–स्त्री० १ खोज । २ गुफा, कदरा । ३ एक देशी खेल ।
खो खौ–पु० दूध का खोया, मावा कीटी ।
खोखौ–पु० १ हल्की या पुरानी लकडी की पेटी जिसमे सामान पेक किया जाता है । २ खाली पात्र । ३ शमी वृक्ष की फली ।
खोखळौ–वि० (स्त्री० खोखळी) पोला, खाली, शून्य ।
खोखाळ–देखो 'खोगाळ' ।
खोखाळणौ (बौ)–क्रि० पोला करना, खाली करना ।
खोखौ–पु० १ एक प्रकार का खेल । २ देखो 'खोकौ' ।
खोगळ–स्त्री० १ वृक्ष के तने का मोटा खड्डा, पोला भाग । २ कदरा, गुफा । ३ माद ।
खोगलींगी–पु० तलुवो मे भौरी वाला घोडा ।
खोगाळ–स्त्री० १ सहार, नाश । २ खोखलापन । ३ गुफा, माद ।
खोगीड (र)–पु० [फा० खोगीर] घोडे के चारजामे के नीचे लगाया जाने वाला ऊनी वस्त्र ।
खोड–स्त्री० [स० क्ष्वोट] १ ऐव, बुरी आदत । २ दोप अवगुण । ३ कमी, कसर । ४ शत्रु सेना । ५ धूर्तता, चालाकी । ६ कलक । ७ बुरी बीमारी । ८ देखो 'खोळ' । ९ देखो 'खोड' ।
खोडकौ-वि० लगडी । –स्त्री० १ बच्चो का एक खेल । २ बैलो का एक रोग ।
खोड़चौ–पु० सुनार, लुहारो के ऐरन के नीचे लगा रहने वाला मोटा लकडा । –वि० लगडा ।
खोडस–देखो 'मोडस' ।
खोडाणौ (बौ), खोडावतौ (बौ)–क्रि० लगडाना ।
खोडियाळ–स्त्री० चारण वशोत्पन्न एक देवी । –वि० वाधक विघ्नकारक ।
खोडियौ–पु० [स०खोलू] १ हनुमान । २ कधा । ३ देखो 'खोडौ' ।
खोडी–स्त्री० खेत की मेढ पर वनी पगडडी या सकरा रास्ता ।
खोडीलाई–स्त्री० १ व्यर्थ की छेड-छाड । २ परेशान करने की क्रिया । ३ शरारत, शैतानी, दुष्टता । ४ विघ्न, वाधा ।
खोडीलौ–वि० (स्त्री० खोडीली) १ व्यर्थ की छेड-छाड करने वाला । २ वाधा डालने वाला, व्यवधान डालने वाला । ३ चिड-चिडे स्वभाववाला । ४ शरारती, शैतान, दुष्ट । ५ विघ्नकारक, वाधक ।
खोडू, खोडौ–वि० (स्त्री० खोडी) लंगडा । –पु० कैदी का पाव डालकर कैद किया जाने वाला एक उपकरण ।
खोज–स्त्री० १ तलाश, छान-वीन । २ अनुसधान, शोध । ३ पदचिह्न । ४ निशान, चिह्न । ५ पता, ठिकाना । ६ पूछ-ताछ । ७ वश, कुल ।
खोजक–वि० १ तलाश करने वाला । २ शोधकर्त्ता, गवेपक ।
खोजणौ (बौ)–क्रि० १ तलाश करना ढूढना । २ अनुसधान, शोध करना । ३ पद चिह्न देखना ।
खोजाणौ (बौ), खोजावणौ (बौ)–क्रि० १ तलाश कराना, ढुढयाना । २ शोध कराना । ३ पद चिह्न दिखाना ।

खोजी–वि० १ ढूंढने, तलाश करने वाला । २ पद चिह्न-विशेषज्ञ । –पु० वह ऊंट जिसके जन्म से ही अंडकोश की गोली न हो ।

खोजौ–पु० [फा० ख्वाजा] १ नपुंसक व्यक्ति जो मुसलमानी रनिवास का द्वाररक्षक होता था । २ बकरी के बालों की दरी । ३ नपुंसक व्यक्ति । ४ बिना गोली के अंडकोशों वाला ऊंट । ५ सेवक, अनुचर । -वि० वह जो महलों में सेवा करने के लिए हिंजडा बनाया गया हो ।

खों'जौ, खोज्यौ–पु० [फा० खज] १ जेब । २ छोटा थैला ।

खोटगौ–वि० (स्त्री० खोटगी) १ छली, कपटी, धूर्त । २ अंगहीन, अंग-भंग ।

खोट–स्त्री० [सं० क्षोट] १ भूल, गलती । २ अशुद्धि । ३ दोष अवगुण । ४ मिलावट । ५ कपट, छल । ६ पाप । ७ अपराध । ८ हानि, क्षय, कमी । ९ कलंक । १० काम से जी चुराने का भाव । ११ असत्य, झूठ । –वि० १ लंगडा । २ मिथ्यावादी । ३ नाशवान । —**अंगौ**–वि० छली, कपटी, धूर्त । अंगहीन । —**करमौ, करमौ**–वि०–दूषित कर्म करने वाला, पापी । छली कपटी । व्यभिचारी । —**खबाड़**–स्त्री० भूल-चूक ।

खोटड़–वि० बलवान, शक्तिशाली ।

खोटण–स्त्री० बालों को कूटकर अनाज निकालने का डंडा ।

खोटणौ (बौ)–क्रि० १ ठोकना । २ पीटना ।

खोटवौ, खोटमौ, (वौ)–पु० १ गुप्तांग के बाल । २ शौच क्रिया ।

खोट-रखौ–वि० कपटी, धूर्त, छलिया ।

खोटहड, खोटहडियौ–वि० १ वीर, बहादुर । २ फूला हुआ । ३ विस्तृत ।

खोटाई–स्त्री० १ बुराई, अवगुण । २ क्षुद्रता, तुच्छता । ३ मिलावट । ४ कपट, छल । ५ हरामखोरी । ६ आलस्य ।

खोटि–स्त्री० सीमा, हद ।

खोटी–क्रि० वि० १ प्रतीक्षा में, इन्तजार में । २ व्यर्थ में । –स्त्री० प्रतीक्षा, इन्तजार । –वि० दोषपूर्ण । खराब । —**कथ**–स्त्री० झूठी बात ।

खोटीपौ–पु० १ विलम्ब, देर । २ कार्य का व्यवधान । ३ कार्य रुके रहने की दशा । ४ प्रतीक्षा में व्यर्थ गवाया हुआ समय ।

खोटौ–वि० (स्त्री० खोटी) १ अवगुणी, दोषी । २ बुरा, अनुचित । ३ मिथ्यावादी, झूठा । ४ कामचोर । ५ निकम्मा । ६ विकट, भयंकर । ७ भाग्यहीन, अभागा । ८ जो खरा न हो । ९ अशुद्ध ।

खोड–पु० [सं०] १ नाश होने वाली वस्तु । २ शंख । ३ शरीर । ४ जंगल । –स्त्री० ५ खेतों में क्यारी बनाने की विधि । ६ देखो 'खेड' । ७ लकडी, काष्ठ । –वि० १ नाशवान । २ लंगडा ।

खोडसोपचार–देखो 'सोडसोपचार' ।

खोडि, (डी)–स्त्री० १ कमी न्यूनता । २ चूरा, भूसा । ३ दाढ़ी बनाने का रेजर । ४ एक कृषि उपकरण । ५ बेरों को कूटकर महीन किया हुआ चूर्ण । ६ मुरट नामक घास के बीज । ७ देखो 'खोडी' ।

खोडौ–पु० १ खेत की क्यारी । २ नमक की क्यारी । ३ खाद्य पदार्थ विशेष ।

खोण, खौणा, (णि, णी)–स्त्री० [सं० क्षोणि] पृथ्वी, धरती ।

खो'णौ (बौ)–देखो 'खोसणौ' (बौ) ।

खोणौ (बौ)–क्रि० १ गवाना, खोना । २ नष्ट करना, नाश करना । ३ हाथ से निकल जाने देना ।

खोत–देखो 'खोथ' ।

खोतरणौ (बौ)–क्रि० कुरेदना । कुचरना । रगडना ।

खोतलौ–देखो, 'खोथलौ' ।

खोतरौ (लौ)–पु० वह ऊंट जिसके शरीर के बाल उड गये हों ।

खोतौ–पु० १ ऊन के अन्दर का मैल । २ गधा । –वि० १ जाति च्युत । २ देखो 'खोथौ' ।

खोत्राडौ–पु० [सं० क्षोणि-त्रोड] १ सूअर । २ वीर बहादुर ।

खोथ–पु० ऊंट या बकरी के बाल उडने का एक रोग ।

खोथळौ, खोथौ–पु० (स्त्री० खोथी, खोथली) १ बिना साफ की हुई ऊन का गुच्छा । २ खोथ रोग से पीडित ऊंट या बकरी । ३ नपुंसक, हिंजडा ।

खोद–पु० [फा०] १ लोह का टोप, शिरस्त्राण । २ खुदाई ।

खोदणौ (बौ)–क्रि० [सं० खन्] १ जमीन या किसी स्थान की खुदाई करना । २ उखाडना । ३ बर्तनों आदि पर खुदाई का कार्य करना, नक्काशी करना ।

खोदरडौ–पु० गृहस्थ सबंधी कार्यों का सिलसिला ।

खोदाई–स्त्री० १ उद्दंडता, उज्जडपन, अडियलपन । २ देखो 'खुदाई' ।

खोदाणौ (बौ), खोदावणौ (बौ)–क्रि० १ जमीन या किसी स्थान की खुदाई कराना । २ उखडवाना । ३ बर्तनों पर नक्काशी कराना ।

खोदालाग–स्त्री० नये आबाद गांवों व ढाणियों वालों से वसूल किया जाने वाला एक कर ।

खोदौ, खोद्यौ–देखो 'खोदौ' ।

खोध–पु० क्रोध, रोष, गुस्सा ।

खोनेड़ी–स्त्री० [सं० खन्] मिट्टी की खदान खान ।

खोपडी–स्त्री० [सं० कर्पर] १ शिर का ऊपरी भाग, ऊपरी हड्डी । २ कपाल । ३ मस्तक । ४ बूढी गाय ।

खोपड़ौ–पु० १ नारियल । २ नारियल की गिरी का आधा भाग । ३ सिर कपाल ४ बूढा बैल ।

खोपणौ (बौ)–क्रि० १ रोपना, गाडना । २ चुभाना । ४ धसाना ।

खोपरी–देखो 'खोपडी' ।

खोपरेल–पु० नारियल का तेल ।

खोपरौ–देखो 'खोपडौ' ।

खोपाणौ (बौ) खोपावणौ (बौ)–क्रि० १ रोपाना, रुपवाना । गडवाना । २ चुभवाना । ३ धसवाना ।

खोपी–स्त्री० मस्तक का ऊपरी भाग ।

खोपौ–पु० (स्त्री० खोपी) वृद्ध बैल ।

खोबाबाजी–स्त्री० अफीम का पानी चुल्लू मे भर कर पीने या पिलाने की क्रिया ।

खोबौ–पु० अजली ।

खोभ–पु० [स० क्षोभ] १ भय, घबराहट । २ दुख, रज । ३ शोक, पश्चाताप । ४ क्रोध । ५ सोच, फिक्र । ६ रोपाई, रोप ।

खोभणौ (बौ)–क्रि० १ घबराना । २ दुख या रज करना । ३ शोक या पश्चाताप करना । ४ क्रोध करना । ५ फिक्र करना । ६ रोपना ।

खोम–स्त्री० बुर्ज ।

खोमणी–स्त्री० सोने या चादी की गोली बनाने का उपकरण ।

खोय–पु० दोष, कलक ।

खोयण–स्त्री० अक्षौहिनी सेना ।

खोर–पु० १ बाल कटाई, क्षौर कर्म, हजामत । २ कुग्रों के मालिको से लिया जाने वाला कर । ३ देखो 'खौर' । –वि० १ लगडा । २ शब्दो के आगे लग कर 'वाला' अर्थ देने वाला प्रत्यय ।

खोरडौ–पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ वृद्ध ।

खोरौ–देखो 'खौरौ' ।

खोळ–पु० १ पर्वतो का दर्रा । २ शरीर, गात । ३ अक, गोद । ४ आवरण, गिलाफ । ५ खोखला भाग । ६ दुल्हिन की झोली भरने की क्रिया या रस्म । ७ सिंह की माद । ८ देखो 'खोळी' ।

खोलड (डौ)–पु० खडहर ।

खोलजोळियौ–देखो 'कोळजोळियौ' ।

खोळण–पु० १ देवमूर्ति का प्रक्षालन कराया हुआ जल, चरणामृत । २ धोवण । ३ पात्रादि को धोकर लिया गया जल ।

खोलणौ (बौ)–देखो 'खखोळणौ' (बौ) ।

खोलणौ (बौ)–क्रि० १ ढक्कन हटाना, खुला करना । २ जुडे हुए को अलग करना । ३ अवरोध या रोक हटाना । ४ आवरण हटाना । ५ बधन मुक्त करना । ६ फाडना । ७ चालु करना, जारी करना । ८ प्रारम्भ करना । ९ शिकार के पशु की चमडी उतारना । १० भेद, रहस्य प्रगट करना । ११ मन की बात कहना । १२ नष्ट करना । १३ वस्त्र आदि उतारना ।

खोलवी–स्त्री० धनाढ्यो या गैर कृपको से लिया जाने वाला कर ।

खोळाणौ (बौ) देखो 'खखोळाणौ' (बौ) ।

खोलाणौ (बौ), खोलावणौ (बौ)-क्रि० १ ढक्कन हटवाना, खुला कराना । २ जुडे हुऐ को अलग करवाना । ३ अवरोध हटवाना, रोक हटवाना । ४ आवरण हटवाना । ५ बधन मुक्त करवाना । ६ फडवाना । ७ चालु करवाना । ८ प्रारम्भ करवाना । ९ शिकार के पशु की चमडी उतरवाना । १० मन की बात उगलवाना । ११ भेद या रहस्य खुलवाना । १२ नष्ट कराना । १३ वस्त्रादि उतरवाना ।

खोळायत (तौ)–वि० गोदलिया हुआ, दत्तक ।

खोळीयौ–देखो 'खोळी' ।

खोळी–स्त्री० १ गिलाफ, आवरण । २ झोली । ३ केसर का शरीर पर किया हुआ लेप । ३ ऊट के चारजामे का एक वस्त्र विशेप ।

खोळीडी–स्त्री० बोने के बीज की थैली जो कृपक के कमर मे बधी रहती है ।

खोळौ–पु० १ शरीर, गात । २ गोद, अक । ३ आवरण । ४ गिलाफ । ५ भैस । ६ देखो 'खौळी' ।

खोवणौ–वि० १ नाश करने वाला । २ गुमाने वाला ।

खोवणौ (बौ)–देखो 'खोणौ' (बौ) ।

खों'वणौ (बौ)–देखो 'खोसणौ' (बौ) ।

खोवाखूबौ–पु० १ लूट-पाट । २ छीना-झपटी । ३ मारकाट ।

खोवाणौ (बौ)–क्रि० १ नष्ट कराना, नाश कराना । २ हाथ से निकल जाने का अवसर देना । ३ गुम कराना, गमवाना ।

खों'वाणौ (बौ)–क्रि० १ नष्ट कराना । २ देखो 'खोसाणौ' (बौ) ।

खोसणौ (बौ)–क्रि० १ छीनना, झपटना । २ लूटना, डाका डालना । ३ जबरदस्ती ले लेना । ४ गुमाना, खो देना ।

खोसरौ–पु० वेश्या का दलाल ।

खोसाणौ (बौ), खोसावणौ (बौ)–क्रि० १ छीना-झपटी कराना । २ लुटवाना, डाका डलवाना । ३ जबरदस्ती लिवा लेना ।

खोसौ–पु० लुटेरा, डाकू ।

खोह–स्त्री० [स० गुहा] १ गुफा, कन्दरा । २ बडे पेड के तने का खोखलापन । ३ मुडने, सोजने या झुलसने का भाव ।

खोहण (णी)–स्त्री० अक्षौहिणी सेना ।

खोहल-देखो 'खोह' ।

खोहळौ–पु० १ पानी का गड्ढा । २ जलाशय । ३ देखो 'खाळौ' ।

खोहिण (णि, णी)–देखो 'खोहण' ।

खौगाळ–देखो 'गोगाळ' ।

खोडौ–देखो 'खाडौ' ।
खोखाट–देखो 'खेंखाट' ।
खोड़ौ–१ देखो 'खोड' । २ देखो 'खोळ' ।
खोड–पु० १ शख । २ देखो 'खोडौ' ।
खोडियौ–पु० खजूर नामक फल ।
खोडी-देखो 'खोडी' ।
खोडौ–देखो 'खोडौ' ।
खोदौ–पु० विना बधिया किया बैल, साड, बिजार । २ उद्दण्ड एव बदमाश व्यक्ति । ३ उज्जड, अडियल ।
खोप (फ)–पु० [अ० खौफ] १ डर, भय, आतक । २ सदमा । ३ खतरा, जोखम । ४ सदेह, सुबहा ।
खोर—स्त्री० १ वृद्ध मादा ऊट, वृद्ध ऊटनी । देखो 'खोर' ।
खोरौ–पु० १ खुजली का एक रोग । २ वालो के नीचे जमने वाला मैल । ३ भैस । ४ वृद्ध ऊटनी ।
खोळ, खो'ळ–स्त्री० १ कोमल घास । २ टीका । ३ पर्वत की गुफा । ४ देखो 'खोळ' ।
खोळायत (ती)–देखो 'खोळायत' ।
खोळियौ–पु० १ शरीर, देह । २ देखो 'खोळौ' ।
खोळौ, खो'ळौ–पु० १ गोद, अक । २ पहने हुए वस्त्र का कुछ डालने के लिए बनाया हुआ झोला । ३ इस झोले मे आने वाला सामान । ४ देखो 'खोळ' ।
खोहरण–देखो 'खोहरण' ।
ख्यत्री–१ देखो 'क्षत्री' । २ देखो 'खत्री' ।
ख्यात–देखो 'खात' ।
ख्यातीलौ–देखो 'खांतीलौ' । (स्त्री० ख्यांतीली)
ख्यात–स्त्री० [सं०] १ इतिहास सबधी विवरण । २ प्रशस्ति सूचक रचना । ३ वृत्तान्त, वर्णन । ४ कथा । ५ वन । ६ यश, ख्याति । –वि० १ प्रसिद्ध । २ विदित ।
ख्यातवौ, ख्याति–स्त्री० [स० ख्यात.] १ प्रसिद्धि, यश । शोहरत । २ गौरव । ३ पदवी, उपाधि । ४ प्रशसा । ५ वर्णन । ६ ज्ञान ।
ख्याल–पु० [अ० खयाल] १ ध्यान, विचार स्मृति, याद । २ अनुमान, अदाज, कल्पना । ३ भाव, सम्मति । ४ आदर, लिहाज । ५ एक गायन विशेष । ६ खेल, क्रीडा । ७ नाच-गाना । ८ हसी-मजाक । ९ इतिवृत्तात्मक प्रेमगाथा जो अभिनय के साथ नाच-गा के सुनाई जाय ।
ख्यालक–वि० १ ख्याल करने वाला । २ कलाकार । ३ वाद्यकार ।
ख्यालवती–स्त्री० हंसी, दिल्लगी करने वाली ।
ख्याली–वि० [अ० खयाली] १ मन-गढन्त, कल्पित । २ फर्जी, झूठी । ३ खब्ती, सनकी । ४ ख्याल सबंधी ।
ख्योणी–स्त्री० [स० क्षोणी] पृथ्वी, धरा । —पति-पु० राजा, नरेश ।
ख्रव–देखो 'खरव' ।
ख्वाजा–पु० [फा०] १ मालिक सरदार । २ ऊचा फकीर । ३ नवावो के हरम का नपुंसक प्रहरी । ४ अजमेर की एक दरगाह । ५ एक वादशाही पद ।
ख्वाजेसरौ–पु० वादशाह के हरम का नपुंसक प्रहरी ।
ख्वाब–पु० [फा०] स्वप्न ।
ख्वार–वि० [फा०] १ नष्ट, बर्वाद । २ खराब, वेकार । ३ तिरस्कृत । ४ दुर्दशाग्रस्त ।
ख्वारी–स्त्री० [फा०] १ खरावी । २ बरवादी, विनाश । ३ अनादार, तिरस्कार । ४ दुर्दशा ।
ख्वास–देखो 'खवास' ।
ख्वाहिस–स्त्री० [फा०] इच्छा, अभिलाषा । —मंद–वि० इच्छुक, अभिलाषी ।

— ग —

ग–नागरी लिपि के क वर्ग का तीसरा वर्ण ।
गं–पु० [स] भजन, गीत ।
गऊं (डौ)–पु० [स० गोधूम] गेहू ।
गंऊंग्राळ (वाळ)–देखो 'गवाळ' ।
गंग–पु० १ अकवर कालीन एक कवि । २ नाक का दाहिना छिद्र (योग) । ३ तीर, वांण । ४ गगा नदी । ५ मकान की नीव । —काज–पु० भीष्म । —गरधर–पु० शिव, महादेव । —जळ–पु०गगाजल । —धर–पु० शिव, महादेव । —वर–पु०सागर, समुद्र । —वरु–पु० शिव, महादेव । —वार–पु०–गगाजल । —सिर, सीस–पु० शिव, महादेव ।
गगई–स्त्री० मैना जाति की चिडिया ।
गगला–स्त्री० एक का प्रकार शलजम ।
गगा–स्त्री० [स०] १ भारत की एक प्रधान नदी जो हिमालय से निकल कर बगाल की खाडी मे गिरती है । २ राजा शातनु की स्त्री, भीष्म की माता । –वि० श्वेत, सफेद,

उज्ज्वल※। —गड़दी, गड़्दी–स्त्री०–हुकार की ग्रावाज। —जमना, जमनी–स्त्री०–दो पदार्थो के मेल से बनी वस्तु। एक प्रकार की चिलम। एक वस्त्र विशेष। एक प्रकार का ग्राभूषण विशेष। एक देशी खेल। –वि०दुरगा, श्वेत–श्याम※। —जळ–पु०गगा नदी का पवित्र जल। घोडो की एक जाति, उक्त जाति का घोडा। एक उत्तम श्रेणी का वस्त्र। डिंगल के वेलियो साणोर का एक भेद। —जळी–पु०कांच या धातु का बना एक पात्र विशेष। टोटीदार जल पात्र। एक प्रकार का ग्रश्व। मृतक की ग्रस्थिया गगा प्रवेश करने के उपरात निश्चित समय पर किया जाने वाला भोज। —जात्रा–स्त्री०गगा की यात्रा। मृत्यु के समय गगा की ग्रोर गमन। मृत्यु। —दसमी–स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ला दशमी। —द्वार–पु० गगा का उद्गम स्थल। हरिद्वार। —धर–पु० शिव महादेव। एक ग्रौषधि विशेष। चौवीस ग्रक्षरो का एक वर्णवृत्त। —नंद, नंदण–पु० स्वामिकार्त्तिकेय। भीष्म। —पथ–पु० गगा का रास्ता। ग्राकाश, व्योम। ग्राकाश गगा। —पुत्र–पु० भीष्म। स्वामिकार्त्तिकेय। गगाघाट के पडे। गगा नदी से प्राप्त छोटे-छोटे पत्थर। —मग–पु० ग्राकाश। तीन की सख्या※। —सपतमी, सप्तमी–स्त्री० वैशाख शुक्ला सप्तमी। —सागर–पु० कलकत्ते के पास का एक तीर्थ जहा गगा समुद्र मे मिलती है। एक टोटीदार जल पात्र। —सुत–पु० भीष्म। स्वामिकार्त्तिकेय।

गंगिकाज–पु० १ गगा सुत, भीष्म। २ स्वामिकार्त्तिकेय।

गंगेउ (ऊ)–देखो 'गागेय'।

गंगेड–स्त्री० १ नशा। २ नशे की दशा मे ग्राने वाला चक्र।

गंगेडियो, गगड़ो–१ देखो 'घड़ोटियो'। २ देखो 'गागूडो'।

गंगेटियो–पु०१ जाति विशेष का घोडा। २ देखो 'घडोटियो'।

गंगेय–देखो, 'गागेय'।

गंगेरण–पु० [स० गागेरुकी] नागवला।

गंगेव–देखो 'गागेय'।

गंगेस–पु० [स० गगेश] शिव, महादेव।

गंगोतरी–स्त्री० [स० गगावतार] गगा का उद्गम स्थल।

गंगोद (दक)–पु० [स०] १ गगाजल। २ चौवीस ग्रक्षरो का एक वर्ण वृत्त।

गंगोळियो–पु० एक प्रकार का नीवू।

गज–पु० [स० कज] १ शिर के वाल उडने का एक रोग। २ शरीर मे फु सिया उठने का एक रोग। ३ चौवीस ग्रक्षरो का एक वर्ण वृत्त। ४ काव्य छद का एक भेद। ५ ज्योतिष के २७ योगो मे से एक। [स गजा] ६ शराव। ७ शरावघर। ८ ढेर, समूह। ९ घुघची। १० ऊट। ११ युद्ध। १२ कोप, खजाना।

गजका–स्त्री० एक वर्णिक छद विशेष।

गजगोळो–पु० तोप का वह गोला जिसमे छोटी-छोटी गोलिया भरी हो।

गजण (न)–पु० [स० गजन] सगीत का एक ताल भेद। –वि० १नाश करने वाला, मिटाने वाला। २ पराजित करने वाला। ३ दबाने वाला।

गजणरोर–पु० १ मेघ, बादल। २ ईश्वर। ३ दातार।

गजणी–देखो 'गजण'।

गजणो (बो)–क्रि० १ नाश करना, नष्ट करना, मारना। २ जीतना पराजित करना। ३ दवाना, दमन करना।

गजबाळ–वि० १ पराजित करने वाला। २ नष्ट करने वाला।

गजा–स्त्री० खदान, खान।

गजाग्रह–पु० [स गजागृह] शराब खाना।

गजार–स्त्री० १ तोप की ग्रावाज। २ देखो 'गु जार'।

गजी–स्त्री० १ कपडे की सिली हुई बनियान। २ गुड ग्रौर चावल के साथ बना खाद्य पदार्थ (मेवात)। ३ बिना बालो की।

गजीफा–पु० [फा०] ताश का एक खेल विशेष।

गजेकेश–पु० भीम।

गजेडी–वि० गाजे का नशेबाज।

गजो–वि० [स० कज] गज रोग से उडे वालो वाला, गजा। –पु० गाजा।

गंठ–देखो 'गाठ'।

गठकटो–वि० जेब कतरा, चोर।

गठडी–देखो 'गाठ'।

गंठडो–देखो 'गठो'।

गठजोडो–देखो 'गठजोडो'।

गठणो (बो)–क्रि० [स० ग्रथन्] १ गाठा जाना। २ मित्रता होना। ३ धन प्राप्त होना, मिलना। ४ जूती की सिलाई किया जाना। ५ कस कर बधना।

गठाई–स्त्री० १ गाठने या सीने का कार्य। २ ऐसे कार्य की मजदूरी। ३ मित्रता।

गठाणो (बो), गठावणो (बो)–क्रि० १ गठवाना। २ मित्रता कराना। ३ धन प्राप्त कराना। ४ जूता सिलवाना। ५ कस कर बधवाना।

गठि–देखो 'गाठ'।

गठियो, गठीलियो–पु० [स० ग्रथिल] १ जमीन पर छितराने वाला एक घास। २ एक प्रकार का वात रोग। ३ देखो 'गाठियो'।

गठैली–वि० गाठ वाला।

गठो–पु० [स० ग्रथिक] १ गाठ, गट्ठर, बोझा। २ ऊंट पर लादा जाने वाला लकडियो का गट्ठर।

गंड–पु० [सं०] १ कनपटी, गंडस्थल । २ हाथी का कुम्भस्थल । ३ तावीज, गंडा । ४ मलद्वार, गुदा ।

गंडक (डौ)–पु० (स्त्री० गंडकी, गंडकडी) कुत्ता, श्वान ।

गंडकी–स्त्री० १ भारत की एक नदी । २ एक ताल विशेष । ३ कुतिया ।

गंडमाळ–स्त्री० [सं० गंडमाला] १ गले में ग्रंथियां होने का एक रोग । २ घोड़े का एक रोग ।

गंडसूर–पु० ग्राम शूकर, टट्टी खाने वाला सूअर ।

गंडासी (सौ)–स्त्री० १ किसी वस्तु को पकड़ने का औजार । सडासी । २ एक प्रकार शस्त्र । ३ झाड़ी आदि काटने का उपकरण ।

गंडियौ–देखो 'गाडू' ।

गंडी–स्त्री० १ दीपावली पर बनी मोर पंख की माला । (मेवात) । २ मूर्ख स्त्री । ३ देखो 'गाड' ।

गंडूपदभव–पु० [सं०] १ शीशा नामक धातु । २ जस्ता ।

गंडूपदी–पु० एक कीट विशेष, गिजाई ।

गंडौ–पु० [सं० गंडक] १ गांठ, ग्रंथि । २ तावीज के लिए बांधा जाने वाला गांठदार धागा, तावीज, गंडा । ३ घोड़े की गर्दन का बंध । ४ ईख का पौधा ।

गंतव्य–वि० [सं०] १ जानने योग्य । २ गम्य । ३ निर्धारित लक्ष्य ।

गंता–वि० राहगीर, यात्री ।

गंदक–देखो 'गंधक' ।

गंदगी–स्त्री० [फा०] १ मलिनता, मैलापन । २ मल, मैल । ३ कूड़ा, कचरा । ४ अशुद्धता, अपवित्रता । ५ दुर्गन्ध । ६ भ्रष्टता ।

गंदणौ (बौ)–देखो 'गोंदणौ' (बौ)

गंदरप–१ देखो 'गंधरव' । २ देखो 'गंधक' ।

गंदळ–स्त्री० [सं० कंदल] १ कोंपल, किसलय । २ मूली, प्याज आदि की रसदार कच्ची नाल ।

गंदळौ–वि० (स्त्री० गंदळी) १ मैला, कुचैला । २ गंदा । ३ अपवित्र । –पु० गंदला पानी ।

गंदाबगळ–पु० दोनों बगल में भौंरियों वाला घोड़ा ।

गंदियौ-पु० १ गेहूं की फसल के साथ होने वाला एक घास । २ वर्षा ऋतु में होने वाला एक कीट । ३ देखो 'गंदौ' ।

गंदीवाडौ–पु० १ गंदगी मैलापन । २ किसी स्थान पर पड़ा हुआ कूड़ा, कचरा, मैल । ३ भ्रष्टाचार ।

गंदेली, गंदोली–स्त्री० एक खुशबूदार घास ।

गंदौ–वि० [फा० गंदा] (स्त्री० गंदी) १ मैला, कुचैला, गंदा । २ मलिन, अशुद्ध । ३ घिनौना । ४ गंदे कार्य करने वाला, भ्रष्ट । ५ सड़ा हुआ, बदबूदार । –पु० ऊंट के बालों की बनी दरी । —पाणी–पु० शराब, मद्य । धातु, वीर्य ।

गंद्रप, गंद्रब– १ देखो 'गंधक' । २ देखो 'गंधरव' ।

गंध–स्त्री० [सं०] १ वास, बू । २ सुगंध । ३ बदबू । ४ पृथ्वी तत्त्व का गुण । ५ गंधक । ६ सुगंधित द्रव्य । ७ चंदन । —रस-पाळक–पु० भौंरा, भ्रमर ।

गंधक–स्त्री० [सं०] १ एक पीला खनिज पदार्थ जो औषधि व बारूद बनाने के काम आता है । –वि० पीत, पीला ।

—**वटी**–स्त्री० एक औषधि विशेष ।

गंधगज–पु० [सं०] मस्त हाथी ।

गंधगात–पु० [सं०] चंदन ।

गंधग्राही (जाण)–स्त्री० घ्राणेन्द्रिय, नासिका ।

गंधपत्र–पु० तमाल-पत्र ।

गंधवह–देखो 'गंधवाह' ।

गंधमद, गंधमाद–पु० हाथी, गंज ।

गंधमादन–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत का नाम ।

गंधमायण–देखो 'गंधमादन' ।

गंधम्रग–पु० [सं० गंधमृग] कस्तूरी मृग ।

गंधरब (व), गंधब–पु० [सं० गंधर्व] १ एक देव जाति जो गायन कार्य करते थी । २ घोड़ा । ३ गवैयों का भेद । ४ कस्तूरी मृग । ५ काली कोयल । ६ एक जाति जिसकी कन्यायें वेश्यावृत्ति व गायन करती हैं । —**विद्या**–स्त्री० संगीत । —**विवाह**–पु० प्रेम विवाह । —**वेद**–पु० चार उपवेदों में से एक ।

गंधवती–स्त्री० एक पौराणिक नगरी ।

गंधवह, (वहण)–पु० [सं० गंधवाह] १ वायु, हवा । २ नाक, नासिका ।

गंधवाद–पु० बहत्तर कलाओं में से एक ।

गंधवाह–पु० [सं०] १ वायु, पवन । २ नाक, नासिका । —**सुत**–पु० भीम । हनुमान ।

गंधविरोजा–पु० चीड़ वृक्ष का गोंद ।

गंधसार–पु० [सं०] चंदन ।

गंधसुख–पु० [सं०] भ्रमर, मधुप ।

गंधहर–पु० [सं०] नासिका, नाक ।

गंधहस्ती–पु० [सं०] मदोन्मत्त हस्ती ।

गंधार–स्त्री० [सं० गांधार] १ सिंधु नदी के पश्चिम का प्रदेश । २ इस प्रदेश का निवासी । ३ संगीत में एक स्वर । ४ प्राणवायु । ५ स्वरस्थान, नासिका । ६ एक राग

विशेष। —पचम–स्त्री० एक मागलिक राग। —भैरव–पु० एक राग विशेष।

गधारि (री)–स्त्री० [स० गाधारी] १ गाधार देश की राज कन्या। २ धृतराष्ट्र की पत्नी व कौरवो की माता। ३ मेघराग। ४ गाजा। [सं० गधहारिन्] ५ हवा, पवन। ६ शरीरस्थ नौ नाडियो मे से एक।

गधिनी–स्त्री० मदिरा, शराब।

गधियौ–देखो 'गदियौ'।

गंधी–देखो 'गाधी'।

गधोलौ–१ देखो 'गदौ'। २ देखो 'गदियौ'।

गधोवाड़ौ–देखो 'गदीवाडौ'।

गधेल, (धेल)–पु० एक खुशबूदार घास।

गध्रप, (ब, व)–देखो 'गधरव'।

गंध्रवपति, (पती)–पु० गंधर्व पति, कुबेर।

गभारी–स्त्री० [स०] एक वृक्ष विशेष।

गभारौ–पु० गर्भ-गृह।

गंभीर–वि० [स०] १ गहरा, अथाह। २ सघन, घना, गहन। ३ गूढ, जटिल। ४ घोर, महा, भारी। ५ शात, सौम्य। २ सगीन। ७ दृढ। ८ दुरभिगम्य। –पु० १ समुद्र। २ कमल। ३ शिव। ४ एक राग। ५ गुदा मे होने वाला एक फोडा। ६ नीम्बू।

गभीरता–स्त्री० १ गहराई। २ गहनता, घनत्व। ३ गूढता। ४ घोर व सगीन होने की दशा। ५ शाति, सौम्यता। ६ दृढ़ता। ७ वडप्पन, गौरव। ८ दुर्गम्यता।

गंभीरवेदी–पु० अकुश की परवाह न करने वाला हाथी।

गंभीरा–स्त्री० एक नदी विशेष।

गभीरिमा–स्त्री० गभीरता, गहरापन।

गभीरी–पु० समुद्र।

गमर–पु० गर्व, दर्प।

गमार, गवार–वि० [स० ग्राम्य] (स्त्री० गवारी) १ ग्रामीण, देहाती। २ असभ्य, अनाडी। ३ मूर्ख। ४ अनजान। अज्ञानी।

गवारिया–स्त्री० चूडी, काच, कघे का व्यवसाय करने वाली एक जाति।

गवारी–स्त्री० १ गवारपन, देहातीपन, ग्रामीणता। २ मूर्खता। ३ अज्ञानता।

गवारू–वि० १ गवार की तरह। २ गंवार जैसा। ३असम्यता पूर्ण।

गवाळ–पु० [स० गोधूममाल] रवी की फमल की भूमि।

गस–स्त्री० १ क्रोध, गुस्सा। २ ईर्ष्या, द्वेष। ३ ग्रथि, गाठ। ४ कसक। ५ व्यग्योक्ति, ताना।

ग–पु० [स] १ श्रीकृष्ण। २ गणेश। ३ प्रधान व्यक्ति। ४ हाथ। ५ पक्षी। ६ प्राण। ७ जल। ८ एक राग। ९ वायु। १० गध। ११ प्रीति १२ छदशास्त्र मे गुरु-बोध सूचक अक्षर। १३ गधर्व।

गइ द, गइ वरु (रू)–पु० [स गजेन्द्र, गजवर] हाथी, गज।

गइ–१ देखो 'गति' २ देखो, 'गज'।

गइजूह–पु० [स० गज-यूथ] हस्ती समूह, गज-समूह।

गइणग गइणग, गइणाग (गि, णि) देखो 'गगन'

गइन–१ देखो, 'गजेंद्र' २ देखो, गहन ३ देखो 'गगन'।

गइली–स्त्री० सवारी। –वि० पगली।

गइलौ–पु० रास्ता, पथ। –वि० पागल।

गई द (ध)–देखो 'गइ द'

गई–स्त्री० [स० गति] १ गति। २ गमन। ३ मार्ग। ४ उपाय। ५ दशा। ६ वूप। ७ किसी बात को छोड देने की क्रिया या भाव। —वाळ–वि० अयोग्य। अपात्र। —वाळण–वि० गुमी हुई को प्राप्त करने वाला।

गउ–देखो 'गऊ'–खानौ='गऊखानौ'

गउख–देखो'गऊख'

गउधूळक–देखो 'गोधूळिक'।

गउर (उ)–पु० [स० गौरव] १ वर के सम्मानार्थ कन्यापक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोजन। –स्त्री० [स० गौ] २ पृथ्वी, भूमि। ३ देखो 'गवर'। ४ देखो 'गऊ'।

गउव–देखो 'गऊ'।

गऊं–पु० गेहू नामक अनाज।

गऊ (व)–स्त्री० [स० गौ] गाय, गौ। —खानौ–पु० गौशाला। २ वैलगाडिया, रथ आदि रखने का स्थान व इनकी व्यवस्था करने का राजकीय विभाग। —चरौ–पु० गोचर। —दान–पु० गाय का दान, गौदान। —भेक, भेख–वि० भोला भाला, सीधा सादा। कायर। —मुख='गोमुख'। —मुखो='गोमुखी'।

गऊडी–स्त्री० [स० गौ] गाय का वशज। वैल। –वि० गरीव, निर्वल।

गएण, गगण (न, न्न)–पु० [स० गगन] १ आकाश, नभ। २ अन्तरिक्ष। ३ शून्य। ४ स्वर्ग। ५ छप्पय छद का ६१ वा भेद। ६ आर्या का एक भेद। —कुसुम–पु० आकाश पुष्प। —गति,चर–पु० नभचारी। पक्षी। विमान। सूर्य, चन्द्रादि ग्रह। देवता। असुर। वादल। —ध्वज–पु० सूर्य। वादल। —पति–पु० इन्द्र। —भेदी–वि० अधिक ऊचा। अधिक जोर का। —मडळ–पु० नभमडल। मस्तिष्क। —मिण–पु० सूर्य। —वटी–पु० सूर्य। —वाणी–स्त्री० आकाशवाणी। —स्परसी–वि० गगनचुम्बी।

गगनागना–स्त्री० देवागना, अप्सरा।

५ एक प्रकार का सर्प । ६ बदूक मे बारूद जमाने की छड । ७ वस्त्र नापने का उपकरण । ८ बैलगाडी के पहिये मे लगने वाली एक पतली लकडी । ९ सारगी बजाने का धनुषाकार उपकरण । १० ज्योतिष की नक्षत्र वीथियो मे से एक । ११ आठ की सख्या । १२ चार मात्रा के डगण के प्रथम भेद का नाम । १३ अत गुरु की चार मात्रा का नाम । **—आनन**–पु० गणेश । **—अर, अरि**–पु० सिंह । **—उछाळ, उपाड**–पु० भीम । –वि० बलवान, शक्तिशाली । **—उज़ळ**–पु० सफेद हाथी । इन्द्र का हाथी । **—कान**–वि० चंचल । **—कुंभ**–पु० हाथी के मस्तक के दोनो ओर उठे हुए भाग । **—खंभ**–पु० शक्तिशाली, बलवान, प्रचड प्रबल वीर । **—गत, गति**–स्त्री० हाथी की चाल । मस्त चाल । डिंगल का एक गीत । एक छद विशेष । रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा मे शुक्र की स्थिति या गति । **—गमणी, गवणी, गामिणी**–स्त्री० हाथी की तरह मस्त चाल से चलने वाली स्त्री । **—गह, गा, गाव, गाह, ग्राह**–स्त्री० हाथी की झूल । घोडे के चारजामे के साथ बाधा जाने वाला उपकरण । युद्ध । सहार, नाश, ध्वस । हाथियो का दल । वीर पुरुष । एक प्रकार का घोडा । हाथी का दान । –वि० गजगामिनी । **—गोरी**–स्त्री० बढिया लोहा । **—घडा**–स्त्री० हस्ती सेना । **—च्छाया**–स्त्री० ज्योतिष का एक योग । **—जिबा**–स्त्री० योग की नौ नाड़ियों मे से एक । **—झल, (ल्ल)**–वि० जबरदस्त, शक्तिशाली । **—ठेल**–वि० शक्तिशाली, बलवान । **—ढल्ल, ढाल**–स्त्री० हाथी के मस्तक का कवच । **—तार, तारण**–पु० विष्णु । **—थट्ठ, थाट**–पु० हस्ती सेना । **—दत**–पु० हाथी का दात । दात पर निकला दात । एक प्रकार का घोडा । नृत्य की एक मुद्रा । **—दती**–वि० हाथी दात का बना । **—दसा**–स्त्री० गणित ज्योतिष मे ग्रह की दशा । **—धर**–पु० मकान बनाने वाला मिस्त्री । दर्जी । सरकारी बढई । एक प्रकार की बनावट का भवन विशेष । **—नामौ**–पु० हाथी चलाने का अकुश । **—नाळ, नाळी**–स्त्री० एक बडी तोप । हाथी पर रखी जाने वाली एक अन्य तोप । **—पत, पति, पत्ति**–पु० हाथियो वाला राजा । ऐरावत हाथी । –स्त्री० बुद्धि, अक्ल । मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम । **—पात**–पु० वह कवि जिसे राजा द्वारा हाथी दिया गया हो । **—पाळ**–वि० महावत । **—पीपर, पीपळ (ळी)** –स्त्री० मझोले कद का पौधा विशेष । बडी पीपल । **—पुट**–पु० धातुओ को फूकने की प्रक्रिया । **—पुर**–पु० हस्तिनापुर । **—बद, बध**–पु० एक प्रकार का चित्रकाव्य । हाथी वाला । **—बधो**–वि० हाथी रखने मे समर्थ । **—बदन**–पु० गणेश । **—बध**–पु० भीम का एक नामान्तर । **—बाक, बाग**–पु० हाथी का अकुश । **—बीथी**–स्त्री० शुक्र की गति । **—बेल**–पु० कातिसार, लोहा । **—बोह, बौह**= 'गजाबोह' । **—भात**–पु० एक प्रकार का वस्त्र । **—भार, भारा**–पु० हाथियो का दल । **—भीम**–वीर, योद्धा । **—भ्रमी**–पु० भीम । **—मणी, मुक्ता**–स्त्री० हाथी के मस्तक से निकलने वाली एक मणि, मोती । **—मुख, मुखी** –पु० गणेश । गजानन । एक तोप विशेष । –वि० हाथी के समान मुह वाली । **—मोचण**–पु० विष्णु । **—मोती**='गजमुक्ता' । **—रथ**–पु० हाथी से चलने वाला रथ । **—रद**–पु० हस्तीदत । **—राज**–पु० बडा हाथी । ऐरावत । डिंगल के वेलियो 'साणोर' का एक भेद । **—रिपु**–पु० सिंह, ग्राह । **—वदन**–पु० गणेश । **—वान**–पु० महावत । **—वाग**–पु० अकुश । **—विभाड**–पु० हाथी को पछाडने वाला वीर । **—वेळ, वेळि**= गजवेल' । **—साळा**–स्त्री० हस्तीशाला । **—सिक्षा**–स्त्री० बहत्तर कलाओ मे से एक ।

गजक (ग)–स्त्री० १ शराब आदि पीने के बाद मुह का स्वाद सुधारने के लिए खाई जाने वाली वस्तु । २ तिलपट्टी, तिलशकरी । ३ भोजन ।

गजट–पु० [अ०] सरकारी समाचार-पत्र ।

गजणौ–वि० १ गर्जने वाला । २ नाश करने वाला ।

गजणौ (बौ)–क्रि० १ गर्जना करना, गर्जना । २ क्रोध से बोलना । ३ नाश करना ।

गजनीय–स्त्री० नीव ।

गजब (बी, ब्ब)–पु० [अ० गजब] (स्त्री० गजबण) १ कोप, गुस्सा । २ खौफनाक कार्य या घटना । ३ आफत, विपत्ति । ४ दैवी प्रकोप । ५ आश्चर्यजनक बात । ६ आश्चर्य । –वि० १ अद्भुत, अजीब । २ भयकर, प्रचण्ड । ३ अत्यन्त अधिक । ४ विशेष । ५ अद्भुत कार्य करने वाला ।

गजर–पु० [स० गर्जन] १ निरन्तर होने वाला प्रहार । २ ऐसे प्रहार से उत्पन्न ध्वनि । ३ खट-खट ध्वनि । ४ प्रहर का घटा बजने का स्वर । ५ प्रात काल, उषाकाल । ६ हसी, मजाक । ७ तमाशा । ८ नगाडा । ९ शोरगुल, कोलाहल । १० गर्जन । ११ प्रात चार बजे का घटा । –वि० विशाल, बडा । **—प्रबध**–पु० स्वर साधने की क्रिया ।

गजरी–स्त्री० १ स्त्रियो की कलई का आभूषण । २ छोटी गाजर ।

गजरौ–पु० १ फूलो की माला । २ एक आभूषण विशेष । ३ गाजर का पत्ता ।

गजल–स्त्री० [अ०] ऊर्दू-फारसी मे शृगार रस की कविता ।

गजवड–पु० एक प्रकार का बढ़िया कपडा ।

गजाबोह–पु० [स० गज-व्यूह] गजव्यूह, हाथीदल ।

गडगड–स्त्री० द्रव पदार्थ के पीने से होने वाली ध्वनि ।

गडगडणौ (बौ)–देखो 'गडगडणौ' (बौ)।

गडणौ (बौ)–क्रि० १ धसना, चुभना । २ मिट्टी के नीचे दबना । ३ जमीन मे धंसना । ४ समाना, पैठना ।

गडत–स्त्री० हलकी नीद, तंद्रा ।

गडत्थल, गडथल (ल्ल)–देखो 'गडूथळ' ।

गडदार–पु० मदोन्मत्त हाथी के साथ भाला लेकर चलने वाला व्यक्ति ।

गडमडणौ (बौ)–क्रि० प्रति ध्वनि होना या करना ।

गडमेळ–वि० १ गहरा, गम्भीर, घना । २ पहाड के समान, गढ के समान ।

गडवाडौ–पु० [स० गढ़वृत्ति] चारणो को जागीर मे दिया हुआ गाव ।

गडवी–पु० १ चारण कवि । २ राजा । –स्त्री० लुटिया।

गडवौ–पु० १ छोटा लोटा, कलसा, जलपात्र । २ चारण । ३ कवि ।

गडसूर (रौ)–देखो 'गडसूर' ।

गडागड–क्रि० वि० १ जगह-जगह, स्थान-स्थान पर । २ पास-पास । –पु० घनिष्ठ प्रेम ।

गडाणौ (बौ), गडावणौ (बौ)–क्रि० १ धसाना, चुभाना । २ मिट्टी के नीचे दबाना । ३ जमीन मे धसाना । ४ समवाना, पैठाना ।

गडि, गडी–क्रि० वि० पास, निकट । –स्त्री० १ गाडी । २ छोटा लोटा, जलपात्र ।

गडुग्रौ (बौ)–पु० छोटा जल पात्र विशेष ।

गडुळ–पु० कुबडा व्यक्ति ।

गडूबौ–पु० १ इन्द्रायन फल । २ विकृत तरबूज ।

गडू–वि० जीर्ण-शीर्ण, पुराना ।

गडूत्थळ, गडूथळ–देखो 'गडूथळ' ।

गडूर (रौ)–स्त्री० १ आवाज, ध्वनि । २ देखो 'गडसूर'।

गडूस (स्स)–देखो 'घडूस' ।

गडे–क्रि० वि० पास, निकट ।

गडौ–पु० [स० गड] १ हाथी का गडस्थल । २ बडा पत्थर ।

गडौत्थळ, गडौथळ, गडौथळौ–देखो 'गडूथळ' ।

गड्ड–पु० १ गड्ढा, खड्डा । २ गढ किला ।

गड्डी–स्त्री० १ एक ही प्रकार की वस्तुओ को तह करके रखा हुआ ढेर । २ ढेर, समूह, गज ।

गड्डौ–पु० १ खड्डा । २ खेलने का छोटा ककर । ३ वृद्ध व्यक्ति ।

गडढ, गढ़–पु० १ किला, दुर्ग, कोट । २ खाई । ३ एक देशी खेत । —**फिला**–पु० एक सरकारी लगान।

गढ़णौ (बौ)–क्रि० १ बनाना, निर्माण करना । २ गढकर तैयार करना । ३ कल्पित बात करना । ४ मारना, पीटना ।

गढ़त–स्त्री० बनावट, निर्माण कला, रचना ।

गढ़पत, (पति, पती, पत्ति)–पु० १ गढ का स्वामी, राजा । २ गढ रक्षक, किलादार । ३ चारण ।

गढबंध–पु० राजा ।

गढ़मर्गौ–पु० राजाओ का याचक ढोली ।

गढ़राज (राव)–पु० राजा ।

गढ़रोह (रोहऊ, रोहौ)–पु० गढ पर किया जाने वाला आक्रमण ।

गढ़व–पु० चारणो की एक उपाधि ।

गढ़वाडौ–देखो 'गडवाडौ'।

गढ़वी (वौ)–पु० १ राजा, ठाकुर । २ चारण । ३ कवि । ४ छोटा जलपात्र विशेष ।

गढ़ापति–देखो 'गढपति' ।

गढ़ाणौ (बौ)–देखो 'गडाणौ' (बौ) ।

गढ़ी–स्त्री० १ छोटा किला, गढ़ । २ गाव के चारो ओर का आहता । ३ ज्वार की फसल खाने वाला कीडा ।

गढ़ीस–पु० गढ़पति, दुर्ग रक्षक ।

गढोई–पु० मकान की नालियो का पानी एकत्र होने वाला गड्ढा ।

गण–पु० [स०] १ झुण्ड, समूह, । २ गिरोह, सघ, दल । ३ श्रेणी, कक्षा । ४ नौकारो की टोली । ५ शिव के गण । ६ संस्था । ७ एक सम्प्रदाय । ८ परिषद का सदस्य जो किसी वर्ग या क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हो । ९ सैनिको की छोटी टोली । १० सख्या । ११ कविता मे पाद । १२ गणेश का एक नाम । १३ एक ही श्रेणी के मनुष्यो का समुदाय । १४ नक्षत्रो की तीन कोटियो मे से एक । १५ छन्द शास्त्र मे तीन-तीन वर्णो के आठ गण । १६ दूत, सेवक । १७ हाथी । १८ आर्या छन्द की चार मात्रा का नाम । १९ मात्रिक छदो के पाच गण । —**ईस**–पु० गणेश, गजानन । —**तंत्र**–पु० लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र । —**धर**–पु० जैनाचार्य । महावीर स्वामी का पट्ट शिष्य । —**नाथ, नायक, पत, पति (ती)**–पु० गणेश । —**नायिका**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती । —**परवत**–पु० कैलास पर्वत । —**राज**–पु० गणेश । गणराज्य ।

गणक–पु० [स०] १ अकगणित जानने वाला । २ ज्योतिषी, दैवज्ञ । ३ गणना करने का उपकरण । ४ बनिया, वणिक । —**केतु**–पु० धूम्रकेतु ।

गणका–देखो 'गणिका' ।

गणगवर, गणगौर–स्त्री० [स० गुणगवरी] १ पार्वती, गौरी । २ राजस्थान का एक पर्व विशेष । ३ इस पर्व पर पूजी जाने वाली गौरी की मूर्ति ।

गणगोरियौ–पु० शमी वृक्ष के पुष्प के बाद होने वाले फल का नाम ।

गणग्रम, (ग्राम)–पु० [स० ग्रहग्राम] आकाश नभ ।

गणणकणौ (बौ)–क्रि० १ पक्षियो का आकाश मे मडराना। २ ध्वनि विशेष का होना।

गणण–स्त्री० ध्वनि विशेष।

गणणाक–पु० १ आकाश में पक्षियो के मडराने की क्रिया। ३ ध्वनि विशेष।

गणणाणौ (बौ)–क्रि० १ प्रतिध्वनि होना। २ व्यतीत होना, गुजरना।

गणणा–देखो 'गणना'।

गणणाट (टौ)–पु० १ चक्कर, परिभ्रमण। २ चहल कदमी। ३ जोर की ध्वनि। ४ आकाश में पक्षियो के मडराने से उत्पन्न ध्वनि।

गणणाणौ (बौ), गणणावणौ (बौ)–क्रि० १ चक्कर खाना। २ भनभनाना। ३ मडराना। ४ गुनगुनाना। ५ गणना कराना। ६ प्रतिध्वनित करना।

गणणेटो (णोटो)–देखो गणणाट'।

गणणौ (बौ)–देखो 'गिणणौ' (बौ)।

गणती–देखो 'गिणती'।

गणधर गणधार–पु० [स० गणधर] तीर्थंकर भगवान का प्रधान या मुख्य शिष्य।

गणन, गणना–स्त्री० [स०] १ गिनने की क्रिया। २ गिनती। ३ वर्गीकरण।

गणप–पु० [स०] गणेश।

गणयळ–पु० [स० गणकल] चन्द्रमा, शशि।

गणलौ–देखो 'गरणौ'।

गणव–पु० गणेश।

गणहर–देखो 'गणधर'।

गणाई–स्त्री० १ गिनने की क्रिया। २ गिनने की मजदूरी।

गणाणौ (बौ), गणावणौ (बौ)–क्रि० १ गिनती करना, गिनना। २ समझाना। ३ सख्यातय कराना। ४ जुडवाना। ५ प्रतिष्ठा कराना।

गणाधपत, (धिप, धीस, पत)–पु० १ गणेश, गणपति। २ शिव। ३ वृद्ध या प्रतिष्ठित जैन साधु। ४ सेनापति। ५ गुरु।

गणिओ (गणियो)–पु० [स० गणक] ज्योतिषी।

गणिका–स्त्री० [सं०] १ रण्डी, वेश्या। २ नर्तकी। ४ हस्तिनी। ४ पुष्प विशेष।

गणित–पु० [स०] १ सख्याओ की जोड-बाकी कर परिणाम ज्ञात करने की विद्या। २ हिसाब-किताब। ३ जोड। ४ बहत्तर कलाओ में से एक। ५ ज्योतिष।

गणितग्य–वि० [स० गणितज्ञ] १ गणित जानने वाला। २ ज्योतिषी।

गणी–पु० [स० गणिन्] आचार्य या सूरि, गच्छ का प्रधान।

गणीस, गणेस–पु० [स० गणेश] १ गणो के ईश, गजानन। २ छप्पय छन्द का बाईसवा भेद। —खूंटी–स्त्री० हाथ करघे की एक खूटी। —चतुरथी, चौथ–स्त्री० भादव कृष्णा चतुर्थी। —पुराण–पु० एक उपपुराण। —भूसण–पु० सिंदूर।

गणेसर, (सुर)–पु० [स० गणेश्वर] १ शिव। २ गणेश। ३ हाथी। ४ ईश्वर, परमात्मा। ५ चित्रकूट पर्वत।

गण्णौ–देखो 'गरणौ'।

गतड–न० [स० गताण्ड] हिजडा, नपुंसक।

गत–वि० [स०] १ बीता हुआ, विगत। २ गया हुआ। ३ मृत, मरा हुआ। ४ रहित, हीन। ५ रिक्त, खाली। ६ आया हुआ, पहुचा हुआ। ७ अवस्थित, स्थापित। ८ गिरा हुआ। ९ कम किया हुआ। १० सबधित। –स्त्री० १ समय, अवधि। २ अवस्था, हालत। ३ वाद्यों का मिलान। ४ नृत्य की मुद्रा। ५ तरह, प्रकार। ६ गति, चाल। ७ मोक्ष, मुक्ति। ८ लीला, रचना। ९ गाय। —अग–स्त्री० गगा। —तार–पु० आभूषण। —पचमी–स्त्री० मोक्ष, मुक्ति। —वत–पु० पाव, चरण। —वन्हौ–स्त्री० केसर।

गतबायरो–वि० (स्त्री० गतबायरी) १ हतप्रभ। २ बुद्धिहीन ३ नाकुछ।

गतराडो–न० १ हिजडा, नामर्द। २ कायर, डरपोक। –वि० अनाडी।

गतागत–वि० [स०] आया-गया। –स्त्री० १ आवागमन। २ जन्म-मरण। ३ गति, लीला, रचना। ४ ढग।

गति (ती, त्ती)–स्त्री० [स० गति] १ गति, चाल। २ गमन। ३ हरकत, हलचल। ४ चलने की क्रिया। ५ प्रवेश। ६ विस्तार। ७ पथ, रास्ता। ८ हालत, दशा। ९ फल, परिणाम। १० उपाय, तरकीब। ११ पहुच। १२ शरण स्थान। १३ बचाव। १४ रग, रूप। १५ उत्पत्ति, निकास। १६ कर्म फल। १७ भाग्य। १८ नक्षत्र पथ। १९ घाव, नासूर। २० ज्ञान, बुद्धि। २१ पुनर्जन्म। २२ आयु की दशा। २३ लीला, रचना, माया। २४ मुक्ति, मोक्ष। २५ तरह, प्रकार। २६ कुश्ती की चाल। २७ ग्रहो की चाल। २८ संगीत मे लय। २९ वाद्यो का मिलान। ३० पाच की सख्या*। —कार–वि० गति वाला। गति देने वाला। —वत–पु० पाव, चरण।

गतू (तू)–वि० पूर्ण, सम्पूर्ण। —क्रि० वि० पूर्ण रूप से।

गत्त–१ देखो गत'। २ देखो 'गात'।

गत्ति (त्ती)–देखो 'गति'।

गत्तौ–पु० [स० ग्रथ] १ किताब के ऊपर की दस्तरी। २ पुस्तक का आवरण। ३ मोटा कागज या दफ्ती।

गत्र–पु० [सं० गात्र] शरीर देह, तन ।

गत्वर–वि० [स०] १ गमनशील । २ नाशवान । ३ चल, चलायमान ।

गथ (थ्थ)–१ देखो 'गरथ । २ देखो गाथा' । ३ देखो 'गत' ।

गथियौ–न० [स० गत] नपु सक, नामर्द, हिंजडा ।

गद–पु० [स०] १ विष । २ एक रोग । ३ पीडा । ४ श्रीकृष्ण का छोटा भाई । ५ राम सेना का एक वदर । ६ एक असुर । ७ कवि पडित । ८ सभाषण, भाषण । ९ वाक्य । १० गर्जन, गर्जना ।

गदका–पु० नाज-नखरा ।

गदकाळ–पु० अनार, दाडिम ।

गदगद–वि० [स० गद्-गद्] १ श्रद्धा व हर्ष के आवेश मे निमग्न। २ अत्यन्त हर्षित । ३ प्रेम रस भीना ।

गदगदी–स्त्री० १ आह्लाद, उल्लास, गुदगुदी । २ हसी, ठट्ठा । ३ एक प्रकार का रोग ।

गदचाम–पु० [सं० गदचर्म] हाथी का एक रोग ।

गदपाळ–पु० अनार ।

गदफड–पु० एक मासाहारी पक्षी ।

गदबधवचनिका–स्त्री० अनुप्रास व समास युक्त राजस्थानी गद्य ।

गदबडणौ (बौ), गदबदणौ (बौ)–क्रि० घाव या फोडे मे मवाद भरना ।

गदर–स्त्री० [अ०] १ क्रान्ति, विप्लव, विद्रोह । २ उपद्रव, हगामा । ३ देव मूर्ति को पहनाने की रूईदार वगलबदी । —**गदीडी**–स्त्री० उपद्रव ।

गदरौ–पु० [फा० गद्दा] रूई से भरा मोटा विछौना, गद्दा ।

गदळ–पु० [स० गजदल] हाथियो का समूह, गजदल ।

गदहडौ–देखो 'गधौ' ।

गदहरणी–स्त्री० हर्रे, हरीतकी ।

गदहलोट–पु० कुश्ती का एक पेच ।

गदा–स्त्री० [स०] १ लोहे का बना मोटा भारी शस्त्र, गुर्ज । २ कसरत करने का एक उपकरण । —**धर, धर धारी,** —**धोस**–पु०–विष्णु । हनुमान । भीम । —**पांणि, पांणी**–पु० विष्णु, भीम, हनुमान ।–वि० जिसके हाथ मे गदा हो । —**बळवान**–पु० भीम ।

गदारौ–पु० एक प्रकार की तलवार ।

गदियौ–पु० १ तावे या चादी के मिश्रण से वना एक प्राचीन सिक्का । २ देखो 'गधौ' ।

गदी–वि० [स०] १ रोगी । २ गदा लिये हुऐ । –स्त्री० विष्णु की एक उपाधि ।

गदेडियौ, गदेडौ–पु० १ चरखे का एक डडा । २ देखो 'गधौ' ।

गदेलौ–वि० गदला, धु धला, मटमैला । –पु० १ गद्दा । २ देखो 'गादेल' ।

गद्दरौ–देखो 'गदरौ' ।

गद्दहडौ पु० सर्दी मे पशुओ की पीठ पर रखा जाने वाला वस्त्र ।

गद्दा–देखो 'गदा' ।

गद्दी–देखो गादी' ।

गद्य–पु० [स०] १ कविता या पद्य रहित लेखन, वार्तिक । २ वार्तिक काव्य का एक भेद ।

गधाचीतरी–स्त्री० छितरे हुऐ वादल ।

गधापचीसी–स्त्री० १६ से २५ वर्ष तक की अल्हड, अवस्था ।

गधामस्ती–स्त्री० ऊधम, उत्पात, धक्का–मुक्की ।

गधेड़ियौ, गधेडौ–१ देखो 'गदेडियौ' । २ देखो 'गधौ' ।

गधौ–पु० [स० गर्दभ] घोडे की जाति का कुछ छोटा चौपाया जानवर जो बोझा ढोने मे मजबूत होता है । खर । –वि० मूर्ख, नासमझ ।

गनका–देखो 'गणिका' ।

गनगौर–देखो 'गणगौर' ।

गनायत–देखो 'गिनायत' ।

गनिका–देखो 'गणिका' ।

गनीम–पु० [अ०] १ लुटेरा, डाकू । २ शत्रु, वैरी ।

गनीमत–स्त्री० [अ०] १ सतोषजनक बात या दशा । २ खैरियत । ३ लूट का माल । ४ शत्रु सेना का माल । –वि० उत्तम, अच्छा ।

गनीमाण–देखो 'गनीम' ।

गनीस, गनेस–देखो 'गणेस' । —**खू टी**–'गणेसखू टी' ।

गनौ, गन्न, गन्नौ–पु० १ सवध, रिश्ता । २ ईख, गन्ना ।

गप (प्प)–स्त्री० [सं० गल्प] १ कल्पित या झूठी बात, गप्प । २ जी वहलाने की निरर्थक बात । ३ डीग । ४ अफवाह । ५ किसी चीज को एक साथ निगलने की क्रिया । ६ कोई चीज कही घसने से उत्पन्न ध्वनि ।

गपड़चौथ–स्त्री० १ गडबडी । २ बेईमानी । ३ व्यर्थ की गोष्ठी ।

गपसप–देखो 'गप' ।

गपागप–क्रि०वि० झटाझट, जल्दी, शीघ्र ।

गपियौ, (हौ) गपी (प्पी)–वि० १ गप्प हाकने वाला । २ मिथ्याभाषी ।

गपोड, (डौ)–पु० १ कोई बडी गप्प, अफवाह, डीग । २ निरर्थक या थोथी बात ।

गप्फौ (फौ)–पु० १ खाने का वडा ग्रास । २ स्वादिष्ट भोजन या मिठाई । ३ फायदा, लाभ ।

गफलत, गफिलाई–स्त्री० [अ० गफ्लत] १ असावधानी, लापरवाही। २ भूल, भ्रम, चूक।
गफूर–वि० [अ० गफूर] दया करने वाला। –पु० ईश्वर।
गब–क्रि०वि० एकाएक अचानक, अकस्मात।
गबड़कारणौ (बौ), गबड़कावरणौ (बौ)–क्रि० फटकारना, दुत्कारना।
गबड़कौ–पु० व्यर्थ की बात।
गबन–पु० [अ०] १ चोरी। २ अमानत मे खयानत। ३ सौपा हुआ माल दबा लेने की क्रिया।
गबरू–वि० [फा० खबरू] १ उभरती जवानी का तरुण। २ भोला-भाला, सीधा। ३ बेखबर।
गबरोळौ–देखो 'गबोळौ'।
गबागब–स्त्री० गड़बड़ी, अव्यवस्था। बेईमानी।
गबीड़ौ–पु० १ नुकसान, हानि। २ धोखा। ३ चोट, आघात। ४ अफवाह।
गबूरियौ–पु० फटा हुआ वस्त्र।
गबोळणौ (बौ)–क्रि० १ गड़बड़ी मे डालना। २ उलझन मे डालना। ३ गदला करना। ४ डुबकी लगाना।
गबोळौ–पु० १ गड़बड़ घोटाला। २ उलझन। ३ विघ्न। ४ झंझट, बखेड़ा। ५ भूल।
गब्ब–पु० [सं० गर्व] १ अभिमान, गर्व। २ नासमझी। ३ देखो 'गब'। ४ देखो 'गप'।
गब्बू–वि० १ मूर्ख, नासमझ। २ भोला। ३ दब्बू।
गब्भ–पु० [स० गर्भ] १ गर्भ। २ देखो 'गब्ब'।
गब्भूती–देखो 'गव्यूति'।
गब्भौ, गभौ–पु० (स्त्री० गब्भी, गभी) १ वस्त्र, कपड़ा। २ गाय का बछड़ा।
गभ्यूति–स्त्री० [स० गव्यूति] १ चार मील की दूरी। २ चार मील की दूरी का माप।
गभु–देखो 'गरभ'।
गभेलउ–वि० [स० गर्भिल] गर्भ मे निवास करने वाला, गर्भस्थ बालक।
गम–पु० [स०] १ गमन। २ प्रस्थान। ३ आक्रामक कूच। ४ मार्ग, रास्ता। ५ अविवेक। ६ अज्ञानता। ७ स्त्री मैथुन। ८ चौपड़ का खेल। ९ प्रवेश, पहुंच। १० बुद्धि। ११ विचार शक्ति। १२ पता, इल्म। [अ०] १३ दुःख, शोक, रंज। १४ क्षमाशीलता, क्षमा। १५ पता, खबर। १६ जानने योग्य बात। १७ क्रोध। –क्रि०वि० दफा, बार। —खोर–वि० सहिष्णु। —गीन–वि० दुःखी। उदास। खिन्न।
गमक–स्त्री० १ तबले घुंघरू आदि की आवाज। २ संगीत की एक प्रणाली। ३ आनंद, मौज। ४ स्वर का कंपन। ५ पाच मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।
गमगलत–स्त्री० शोक या चिंता दूर करने का भाव या प्रयास।
गमछी–स्त्री० घोड़े के जीन की रस्सी।
गमछौ–पु० शरीर पोंछने का छोटा वस्त्र, तौलिया।
गमण–देखो 'गमन'।
गमणौ (बौ)–क्रि० १ खोना, खो जाना। २ गायब हो जाना। ३ नष्ट होना। ४ भूलना। ५ चलना। ६ जाना। ७ बिताना, गुजारना। ८ धर्म मर्यादा के अनुकूल होना। ९ मानना। १० नाश करना।
गमत–देखो 'गम्मत'।
गमन (न्न)–पु० [स०] १ चलने-फिरने या जाने की क्रिया। २ रवानगी, प्रस्थान। ३ पलायन। ४ यात्रा। ५ संभोग, मैथुन। ६ राह, रास्ता। ७ पैर। ८ नाश। ९ वैशेषिक दर्शन के अनुसार पांच प्रकार के कर्मों मे से एक।
गमर–पु० [प्रा० गय] हाथी।
गमलौ–पु० फुलवारी का पौधा लगाने का पात्र।
गमांगमां–क्रि०वि० १ चारो ओर। २ धमक या झमक के साथ।
गमा–स्त्री० १ दिशा। २ भेद, रहस्य। ३ जानकारी।
गमागम–क्रि०वि० [सं०] १ यत्र-तत्र, जहाँ-तहाँ। २ निरंतर लगातार। ३ चारो ओर। ४ एक साथ। ५ धमाधम। –पु० १ आवागमन। २ रहस्य, भेद।
गमाणौ (बौ), गमावणौ (बौ)–क्रि० १ खो देना। २ लुप्त या गायब कर देना। ३ नाश करना। ४ व्यर्थ बिताना। ५ व्यर्थ खर्च करना। ६ मिटाना।
गमार–देखो 'गवार'।
गमी–स्त्री० [अ० गम] १ मृत्यु, मौत। २ गम या शोक की अवस्था।
गमे–क्रि० वि० १ एक तरफ, एक ओर। २ अथवा, या।
गमेगमे–क्रि० वि० १ चारो ओर। २ इधर-उधर।
गमेताई–स्त्री० १ गाव के मुखिया का कार्य या पद।
गमेती–पु० १ ग्रामीण। २ गाव का मुखिया।
गमोगम–देखो 'गमागम'।
गम्मत–स्त्री० १ हंसी, दिल्लगी। २ मौज, आनन्द। ३ खेल, क्रीडा।
गम्य–वि० [स०] १ जाने योग्य। २ गमन योग्य। ३ संभोग या मैथुन योग्य। ३ सहज, सरल। ४ साध्य। ५ प्राप्य।
गयडोथळ–देखो 'गड़थळ'।
गयंद (दौ)–पु० [स० गजेन्द्र] १ हाथी, ऐरावत। २ एक प्रकार का घोड़ा। ३ दोहे का दशवा भेद।

गय–पु० [सं०]१ आकाश, गगन । २ अन्तरिक्ष । ३ घर । ४ धन । ५ प्राण । [सं० गज] ६ गज, हाथी । ७ ऊंट । ८ गति, चाल । —**गमणि, गमणी, गमणी**–स्त्री० गजगामिनी ।

गयगग, गयंगण, गयणगण, गयणगणि, गयण, (ण) गयणग्ग–देखो 'गगन' ।

गयणमण, (मणि. मिण, मिणि, मिणी)–पु० [सं० गगन-मणि] सूर्य, भानु ।

गयणाग, (गण) गयणाग, गयणि–देखो 'गगन' ।

गयणिमणी (मिणी)–देखो 'गयणमणि' ।

गयणि (णी) गयणु–पु० १ बादल, मेघ । २ सूर्य । ३ नक्षत्र । ४ नभ ।

गयदंतौ–पु० हाथी के समान दातो वाला सूअर ।

गयनाळ–स्त्री० गजनाल ।

गयन्न–देखो 'गगन' ।

गयमर–देखो 'गयवर' ।

गयराज–देखो 'गजराज' ।

गयलौ–वि० (स्त्री० गयली) पागल, मूर्ख ।

गयवर–पु० [सं० गजवर] १ श्रेष्ठ हाथी । २ इन्द्र का हाथी ।

गयसिर–पु० [सं० गयशिर] १ आकाश, अन्तरिक्ष । २ गया तीर्थ । ३ इस तीर्थ के पास का पर्वत ।

गया–पु० [सं०] बिहार का एक प्राचीन तीर्थ स्थान जहा पितरो को पिंडदान किया जाता है ।

गयोबीतौ (वीतौ)–वि० (स्त्री० गयीबीती) १ गया गुजरा, निकम्मा । २ जीर्ण-शीर्ण ।

गरंद, गरंद्र–पु० [सं० गिरींद] १ हिमालय पर्वत । २ सुमेरु पर्वत । ३ पर्वत ।

गर–पु० [सं० गर, गर] १ जहर, विष । २ वत्सनाभ । ३ रोग, बीमारी । ४ ज्योतिष का पाचवां करण । ५ पर्वत । ६ घर, गृह । ७ गर्दन । ८ समूह, झुण्ड । ९ दल, सेना । [फा०] करने वाला या बनाने वाले का अर्थ बोधक प्रत्यय ।

गरक, (काब, काव, क्काव)–वि० [अ० गर्क] १ डूबा हुआ, निमग्न । २ विभोर । ३ सलग्न, लीन । ३ सना हुआ, भीगा हुआ । ४ रगा हुआ । ५ नष्ट, बरबाद । ६ नशे आदि से मस्त, चूर । ८ गहरा, घना । ९ काला । १० आवेष्टित ।

गरकी–स्त्री० [अ० गर्की] १ डूबने या निमग्न होने का भाव । २ बाढ़ का फैलाव ।

गरक्क–देखो 'गरक' ।

गरग–पु० [सं० गर्ग] १ एक प्राचीन ऋषि । २ बैल, साड । ३ ब्रह्मा के एक मानस पुत्र । ४ सगीत मे एक ताल ।

गरगज–पु० १ किले की बुर्ज, जहा तोपें रहती हैं । २ कृत्रिम टीला । ३ फासी का तख्ता ।

गरगराट–देखो 'गिरगिराट' ।

गरगाब (गाव)–देखो 'गरकाव' ।

गरगेवड़ा–स्त्री० शमी वृक्ष की विकृत फली ।

गरड़–पु० १ बन्दूक की आवाज । २ देखो 'गरुड' ।

गरड़गामी–देखो 'गरुडगामी' ।

गरड़धज–देखो 'गरुडध्वज' ।

गरडणौ (बौ), गरडाणौ (बौ), गरडावणौ (बौ)–क्रि० १ गधे का रेंगना । २ गर्जना ।

गरडा–देखो 'गुरडा' ।

गरड़ौ–पु० १ एक रग विशेष का घोडा । २ चावल का पौधा । ३ भूरी आख का घोडा । ३ देखो 'गुरडौ' ।

गरज–स्त्री० [सं० गर्जन] १ गम्भीर व तुमुल ध्वनि, गम्भीर गर्जना । २ गडगडाहट । ३ वज्र ध्वनि । ४ क्रोध भरी आवाज । [अ०] ४ स्वार्थ, मतलब । ५ आशय प्रयोजन । ६ आवश्यकता, जरूरत । ७ इच्छा, कामना । ८ खुशामद । –क्रि० वि० १ निदान, आखिर । २ अस्तु, खैर ।

गरजण–स्त्री० [सं० गर्जन] गर्जना ।

गरजणौ–वि० गर्जने वाला ।

गरजणौ (बौ)–क्रि० १ गम्भीर व तुमुल ध्वनि होना या करना । गर्जना । २ वज्रपात होना । ३ क्रोध मे बोलना । ४ गडगडाना ।

गरजदार–वि० १ जरूरत मद । २ स्वार्थी ।

गरजदारी–स्त्री० गरज, स्वार्थ ।

गरजमंद (वांन)–वि० जरूरतमंद । इच्छुक ।

गरजापत–पु० [सं० गिरिजा-पति] शिव, महादेव ।

गरजित–पु० मस्त हाथी । –वि० गर्जा हुआ ।

गरजियौ, (जी, जू)–वि० १ स्वार्थी, मतलबी । २ इच्छुक ।

गरज्ज–देखो 'गरज' ।

गरज्जणौ (बौ)–देखो 'गरजणौ' (बौ) ।

गरझणौ (बौ)–देखो 'गरजणौ' (बौ) ।

गरट (ट्ट, ठ्ठ, ठ)–पु० [सं० घरट्ट] १ समूह, दल झुण्ड । २ सेना, फौज । ३ राशि, ढेर । ४ घेरा । ५ वृक्ष । ६ पाताल, गर्त । –वि० १ घना, गहरा । २ देखो 'गरिस्ठ' ।

गरडणौ (बौ)–देखो गरडणौ' (बौ) ।

गरडापण–पु० वृद्धावस्था ।

गरडू–पु० १ नेर व शमी वृक्ष की टहनियो की ग्रथि । २ आख की गाठ ।

गरडौ, गरडउ,(डौ)–पु० [सं० गरिष्ठ] (स्त्री० गरडी) । १ वृद्ध पुरुष । २ पुराना, वरिष्ठ ।

गरण–देखो 'गिरण' ।

गरभावास–देखो 'गरभवास'।
गरभासन–पु० [स० गर्भासन] योग के चौरासी आसनो मे से एक।
गरभासय–पु० [स० गर्भाशय] बच्चादानी।
गरभिणी–देखो 'गरभणी'।
गरभीजणौ (बौ)–क्रि० १ गर्भ धारण किया जाना। २ गर्वित होना।
गरभु–पु० [स० गर्व] १ गर्व, अभिमान। २ देखो 'गरभ'।
गरम–वि० [फा० गर्म] १ जिसमे गर्मी हो, उष्ण। २ जो उष्ण कारक हो। –वि० ३ तीक्ष्ण, तेज। ४ उग्र। ५ उत्साह व आवेग पूर्ण। ६ तपता हुआ।
गरमाळौ–पु० अमलतास वृक्ष।
गरमास (हट)–स्त्री० उष्णता, गर्मी।
गरमी–स्त्री० [फा० गर्मी] १ उष्णता, ताप, जलन। २ गर्म ऋतु। ३ हरारत। ४ तेजी, क्रोध। ५ आवेश, जोश, उत्साह। ६ गर्व घमड। ७ उपदश रोग। ८ उग्रता, प्रचण्डता। ९ शीघ्रता, त्वरा। १० हाथी घोडे आदि पशुओ का रोग।
गरमीजणौ (बौ)–क्रि० १ हाथी घोडे आदि के 'गरमी' का रोग होना। २ ताप लेना, गरम होना।
गरर–स्त्री० एक ध्वनि विशेष।
गरळ–पु० [स० गरल] १ जहर, विप। २ सर्प विष। ३ घास का गट्ठर।
गरळक–पु० [स० गरल+क] १ शेषनाग। २ सर्प।
गरळधर–पु० [स० गरलधर] १ जो विप को धारण करे, शिव। २ सर्प।
गरळस–पु० [स० गरल+स] साप, सर्प।
गरळाणौ (बौ), गरळावणौ (बौ)–क्रि० १ रुदन करना, विलाप करना। २ चिल्लाना। ३ मुह मे पानी डाल कर गरारा करना।
गरळौ–पु० गरारा।
गरव–पु० [स० गर्व] १ अभिमान, दर्प। २ ऐंठन, अकड।
गरवणियौ–पु० रहट के ऊपर बनाया जाने वाला एक चबूतरा।
गरवणौ (बौ)–क्रि० १ गर्व करना, घमड करना। २ अकडना, ऐंठना। ३ मान करना।
गरवत–पु० १ डिंगल के 'साणोर' गीत का एक भेद। २ गभीरता। –वि० गर्वित। —**निसाणी**–स्त्री० डिंगल का निसाणी नामक छन्द।
गरवर–पु० [स० गर्व] १ घमड, दर्प। [स० गिरिवर] २ पहाड, पर्वत।
गरवरणौ (बौ)–क्रि० समूह के रूप मे इकट्ठा होना।
गरवाण–देखो 'गिरवाण'।
गरवा (गरवित)–वि० [स० गर्वित] गर्विला, अभिमानी।
गरवाणौ (बौ), गरवावणौ (बौ)–क्रि० घमड करना, गर्व करना।
गरविता–स्त्री० [स० गर्विता] गर्व एव मान करने वाली नायिका।
गरवी–देखो 'गरवीं'।
गरवीलौ–वि० [स० गर्विला] (स्त्री० गरवीली) १ घमडी, अहंकारी २ गम्भीर।
गरवु, गरवौ–वि० (स्त्री० गरवी) १ गभीर। २ धैर्यवान। ३ बडा। —**राजा**–पु० दामाद के आने पर गाया जाने वाला गीत।
गरव्वणौ (बौ)–देखो 'गरभणौ' (बौ)।
गरसली–स्त्री० एक आभूषण विशेष।
गरह–देखो 'ग्रह'।
गरहणा–स्त्री० [स० गर्हणम्] १ फटकार, डाट। २ उपालभ, शिकायत। ३ निंदा, आलोचना। ४ घृणा। ५ नक्कारे की ध्वनि। ६ शब्द, ध्वनि।
गरहर–स्त्री० आवाज, ध्वनि।
गरहरणौ (बौ)–क्रि० १ रण वाद्य बजना। २ नगाडे बजना। ३ बिजली कडकना, बादल गर्जना। ४ दहाडना।
गरहा–स्त्री० [स० गर्हा] १ निंदा, भर्त्सना। २ शिकायत। ३ गाली।
गराजणी–देखो 'गुराजणी'।
गरांपत–पु० [स० गिरिपति] सुमेरु पर्वत।
गरा–देखो 'गिरा'।
गराज–पु० उपाय, तरकीब।
गराजा–स्त्री० गर्जना।
गराढ–पु० गर्व, घमड।
गराव–पु० ऊट खीच सके ऐसी छोटी तोप।
गरायरौ, गरारौ–पु० १ मुह मे पानी भर कर गल-गल करने की क्रिया। २ ढीली मोरी का पजामा।
गराळ–पु० [स० गिरि] पहाड, पर्वत।
गरासणौ (बौ)–क्रि० [स० ग्रास] १ निगलना, गुटकी भर लेना। २ ग्रस लेना, ग्रसना।
गरासिया–देखो 'ग्रासिया'।
गरासियौ–देखो 'ग्रासियौ'।
गरिट्ठ–देखो 'गरिस्ठ'।
गरिमा–स्त्री० [स०] १ महिमा, प्रतिष्ठा, विशेषता, महत्त्व। २ गौरव। ३ उत्तमता। ४ भारीपन, गुरुता, बोझ। ५ आठ सिद्धियो मे से एक। ६ गर्व, अहकार।

गरिस्ट (स्ठ)–वि० [सं० गरिष्ठ] १ अत्यन्त भारी, गुरुत्तर। २ पचने मे कठिन। ३ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण। –पु० १ एक राजा। २ एक राक्षस। ३ एक तीर्थ विशेष।

गरी–१ देखो 'गळी'। २ देखो 'गिरी'।

गरीट–देखो गरिस्ट।

गरीठ, गरीठौ–वि० [सं० गरिष्ठ] १ प्रबल, प्रचड। २ शक्तिशाली। ३ भयकर। ४ प्रभावशाली। –पु० १ हाथी। २ ऊट। ३ देखो 'गरिस्ट'।

गरीए–वि० १ दीर्घ, विशाल। २ बडा।

गरीत (ष)–देखो 'गरिस्ट'।

गरीब (डौ)–वि० [अ०] (स्त्री० गरीबण, णी) १ निर्धन, कगाल। २ दरिद्र। ३ दीन-हीन। ४ नम्र। —**खांनौ**–पु० घर। गरीब का घर। —**गुरबौ**–पु० गरीब आदमी। —**नवाज, निवाज, नेवाज**-वि० दयालु, कृपालु। –पु० ईश्वर। —**परवर**–वि० गरीबो का पालन करने वाला, ईश्वर।

गरीबी–स्त्री० १ दरिद्रता, निर्धनता। २ दीनता, नम्रता।

गरु–देखो 'गुरु'।

गरुअत–पु० बडप्पन, गौरव। –वि० बडा, महान।

गरुअडी–स्त्री० माहात्म्य, बडप्पन, मोटाई।

गरुउ, गरुग्रौ (वौ)–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ गभीर। ३ बोझिल, भारी। ४ महान, बडा।

गरुघटाळ–पु० धातु का बना बडा घटा। –वि० अत्यन्त चतुर। धूर्त, चालाक।

गरुड़–पु० [सं० गरुड] १ पक्षियो का राजा एक बडा पक्षी। २ उकाव पक्षी। ३ सेना की एक व्यूह रचना। ४ गरुड-नुमा भवन। ५ चौदहवें कल्प का नाम। ६ छप्पय छद का ५५ वा भेद। ७ देवालयो मे पूजा की घटी। ८ रग विशेष का घोडा। —**ग्रारूढ़**–पु० श्री विष्णु। —**ग्रासण (न)** –पु० चौरासी आसनों मे से एक। विष्णु, ईश्वर। —**केतु**–पु० विष्णु। —**गाम, गामी**–पु० विष्णु। —**घटौ**–पु० देवालयो मे पूजा का घटा। –**धज, ध्वज**–पु० विष्णु। गरुड की आकृति मे बना स्तम्भ। —**रक्ष**–पु० नृत्य की एक मुद्रा। —**पति**–पु० विष्णु। —**पास**–स्त्री० शत्रुओं को बाधने का फदा, पास। —**पुराण**–पु० अठारह उप पुराणो में से एक। —**वाह**–पु० विष्णु। —**वेग** –पु० अत्यन्त तीव्र गति। —**व्यूह**–पु० सेना की एक व्यूहरचना विशेष।

गरुडा–स्त्री० चमारो के गुरु, एक ब्राह्मण जाति।

गरुडो–पु० चमारो के गुरु गुरुडा जाति का व्यक्ति।

गरुत–पु० [सं०] पक्षी का पर, पख।

गरुतमांन–पु० [सं० गरुत्मत्] गरुड।

गरुवत्व–पु०[सं०] १ गौरव। २ महत्त्व, बडप्पन। ३ भारीपन, बोझ।

गरुवाई–स्त्री० १ बडाई, गौरव। २ अहकार, गर्व। ३ भारीपन, गुरुता।

गरुवौ–देखो 'गरवौ'।

गरूठ–वि० जबरदस्त, प्रचण्ड।

गरूतमान–देखो 'गरुतमान'।

गरूर (रौ)–पु०[अ० गुरूर] १ अभिमान, घमड, गर्व। २ शेखी, अहवाद। –वि० १ बडा, दीर्घ। २ प्रचडकाय, जबरदस्त। ३ भयकर।

गरूरी–वि० गर्व युक्त।

गरेडो (डौ)–पु० वृक्षो की टहनी के बीच मे होने वाली ग्रथि।

गरै–क्रि०वि० १ पास, समीप, निकट। २ देखो 'ग्रह'।

गरोळणौ (बौ)–क्रि० मिलाना, मिश्रण करना।

गरोळाणौ (बौ), गरोळावणौ (बौ)–क्रि० मिलवाना, मिश्रण करवाना।

गरोळी–स्त्री० छिपकली।

गरोह–देखो 'गिरोह'।

गरौ–पु० १ झडबेरी के पौधो का बडा गोला। २ ढेर, समूह। ३ झु ड। ४ नाश, सहार। ५ साहस, हिम्मत। ६ शक्ति, बल। ७ देखो 'गिरोह'।

गलठी–स्त्री० दूध निकालने का बर्तन (मेवात)।

गळ–पु० [सं० गल] १ गला, गर्दन, कठ। २ स्वर, आवाज। ३ वाद्ययंत्र। ४ मछली, मीन। ५ मांसपिंड। ६ फासी। ७ डाली, शाखा। –वि० मीठा, मधुर। –क्रि०वि० पास, निकट, समीप। इर्द-गिर्द।

गल–देखो 'गल्ल'।

गळकवळ–स्त्री० गाय के गले के नीचे लटकने वाला भाग।

गळकट–वि० हत्यारा।

गळका–स्त्री० १ स्वादिष्ट पदार्थ खाने की क्रिया। २ देखो 'गिळका'।

गळकाणौ (बौ), गळकावणौ (बौ)–क्रि० [सं० गलकलितम्] १ खाना, निगलना। २ हजम करना।

गळकोड़–स्त्री० बैलगाडी के जूऐ के नीचे लटकने वाली लकडी जिसके सहारे गाडी खडी की जाती है।

गलकोर–स्त्री० जट की बनी पतली रस्सी जो बैल के गले पर बाधी जाती है।

गळकौ–पु० ग्रास।

गळखोड़–स्त्री० घोडे के गले मे बांधने की चमडे की पट्टी।

गळगठ, (गंठौ, गड)–पु० [सं० गलगण्ड] गले मे होने वाला ग्रथि रोग।

गळगच्छ—वि० अधिक घृत युक्त भोजन या कौर ।
गळगळ—स्त्री० मुंह या गले मे पानी भर जाने की अवस्था, गद्गदवस्था ।
गळगळणौ (बौ)—क्रि० निगलना ।
गळगळौ—वि० [सं० गद्गद्] (स्त्री० गळगळी) १ अश्रुपूर्ण नेत्रो वाला । २ गद्गद् या आर्द्र कण्ठयुक्त । ३ भाव विभोर । ४ घी से तर । ५ मुंह तक भरा पात्र ।
गळगेटौ—पु० खिचडी घाट आदि मे पकते समय पडने वाली गाठ ।
गळगोत—स्त्री० गिलोल ।
गळग्रह—पु० गले का एक रोग ।
गळग्रहवाई—स्त्री० घोडे के गले का एक रोग ।
गळछट—वि० १ टुकड़ खोर, भिखारी । २ घृत से तर ।
गळछेदक—पु० एक प्रकार का शस्त्र ।
गळजोड (जोडौ)—पु० १ वर-वधू का गठबधन । २ दो पशुओ को गले मे रस्सी से परस्पर बाधने का ढग । ३ बाधने का उप-करण । ४ जोडा, युग्म ।
गळझप—स्त्री० हाथी के गले का कवच ।
गळझट—देखो 'गळछट' ।
गळटौ—पु० १ पशु की गर्दन के चारो ओर लपेटा जाने वाला, वस्त्र या रस्सी । २ गले का बधन ।
गळडब (डबौ)—पु० १ तलवार रखने का चमडे का पट्टा विशेष । २ हाथ मे चोट आने पर हाथ व गले से बाधने की पट्टी । ३ पशुओ के गले का पट्टा ।
गळडळ—पु० मांस पिंड ।
गळणी—स्त्री० [सं० गलनी] १ अफीम गलाने का उपकरण । २ गर्दन ।
गळणौ—देखो 'गरणौ' ।
गळणौ (बौ)—क्रि० १ किसी वस्तु का विकृत हो कर क्षय होना, रज-रज होकर गिरना । २ घुलना, सूक्ष्माणु होकर घुलना । ३ जीर्ण-शीर्ण होना । ४ नाश होना, मिटना । ५ अधिक पकने पर ठोसपना समाप्त हो जाना । ६ मिटना, नष्ट होना । ७ कृश या क्षीण होना । ८ खेल मे खिलाडी का हारना । ९ बीतना, समाप्त होना । १० ढलना । ११ निगलना, हजम करना । १२ खाना । १३ पिघलना ।
गळतग—पु० काठी कसने के लिए ऊट के गले से बाधा जाने वाला तग ।
गळत—वि० [अ० गलत] १ जो ठीक, उचित या सही न हो । २ असत्य, झूठ । ३ अशुद्ध । ४ दोष या त्रुटिपूर्ण । ५ अनुचित, नाजायज । ६ भ्रममूलक । —पु० १ एक प्रकार का कुष्ठ रोग । २ लावारिस सम्पत्ति ।
गळतकियौ—पु० १ सिरहाने का तकिया । २ मकान की पट्टियो के संधिस्थलो पर लगाया जाने वाला पत्थर ।
गळतकोढ़—पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।
गळतनामौ—पु० शुद्धि-पत्र ।
गळतफहमी, (फैंमी)—स्त्री० भ्रम भ्रामक बोध ।
गळताण (तान)—वि० १ तल्लीन, निमग्न । २ अनुरक्त । ३ मस्त, उन्मत्त । ४ नशे मे चूर ।
गळतियौ—पु० १ ऊटो का एक रोग । २ एक रोग विशेष जिससे शरीर दिन प्रति दिन क्षीण होता जाता है ।
गळती—स्त्री० १ भूल । २ अनुचित कार्य । ३ त्रुटि । ४ लापर-वाही । ५ अशुद्धि । ६ कमी ।
गळथणियौ—वि० [सं० गलस्तन] १ बकरी के गले के नीचे लटकने वाली स्तननुमा ग्रथि । २ पशुओ के गले का बधन । ३ देखो 'गळथौ' ।
गळथैली—स्त्री० बदरो के गले के नीचे की थैली ।
गळथौ—पु० [सं० गल-हस्त] १ गले को पकड कर दिया जाने वाला धक्का । २ देखो 'गळथणियौ' ।
गलथ्यण, गळथ्थियौ—पु० [सं० गलस्थाणु] गले का बधन ।
गळदाई—स्त्री० मदाग्नि के कारण होने वाला एक कठ रोग ।
गळनहौ—पु० हाथियो का एक रोग ।
गळपटियौ (पटौ)—पु० १ स्त्रियो के कंठ का आभूषण । २ कुत्तो के गले का पट्टा । ३ गर्दन के चारो ओर का वृत्ताकार भाग । ४ कुरते, कमीज आदि का वह भाग जो उक्त भाग पर रहता है ।
गळपूछियौ—पु० एक प्रकार का घास ।
गळप्रोत—पु० कठ का आभूषण ।
गळफडौ—पु० गाल का भीतरी भाग ।
गळफासी—स्त्री० १ गले की फासी । २ आफत, कष्टप्रद कार्य ।
गळबध—पु० १ कठावरोध । २ कठ का आभूषण ।
गळबत्य (बथ)—स्त्री० आलिंगन ।
गळबळ—पु० १ कोलाहल । २ गडबडी, खलबली । —वि० अस्पष्ट ।
गळबाई (बाह, बाही बाखड़ी बाथ)—स्त्री० गले मे बाहें डाल कर मिलन, आलिंगन, भेंट ।
गळबाह—पु० रहट के स्तभ पर लगा लकडी का अकोडा ।
गळबूचियौ (बूचौ)—पु० हथेली की अर्द्ध चद्राकार अवस्था जिससे गला पकड कर धक्का दिया जाता है ।
गळबोबौ—देखो 'गलथणियौ' ।
गळबौ—पु० १ गले का फदा, बधन । २ अस्पष्ट ध्वनि ।
गळमाळ—स्त्री० गले मे डालने की जयमाला ।
गळमुच्छौ—पु० गालो पर बढे बालो का गुच्छा ।

गळमुद्रा–स्त्री० [स० गल-मुद्रा] शिव पूजा मे गाल वजाने की मुद्रा, गलमदरी।

गळमेद–स्त्री० गले मे होने वाली बडी गांठ।

गलर–पु० १ वृक्ष या पौधे का रस भरा भाग। २ स्वाद या रस लेने की क्रिया।

गळळ–पु० १ निगलने की क्रिया या भाव। २ द्रव पदार्थ के निकलने से उत्पन्न ध्वनि।

गळळाटौ–पु० १ निगलने का शब्द। २ शोक का विलाप, रुदन।

गळळाणौ (बौ), गळळावणौ (बौ)–क्रि० १ रोना, विलाप करना। २ डवडबाना। ३ मुह मे पानी भरकर गल-गल ध्वनि करना।

गळवाणी–स्त्री० आटे व गुड के योग से बना मीठा पेय पदार्थ।

गळवांणौ–पु० १ गले का बधन, फंदा। २ एक प्रकार का वरसाती घास। ३ देखो 'गळवाणी'।

गळवांन–वि० नश्वर।

गळवाह–पु० गर्दन पर किया जाने वाला प्रहार।

गळसरी, (सिरी)–स्त्री० [स० गलश्री] कठश्री नामक आभूषण।

गळसाकळौ–पु० कठ का आभूषण विशेष।

गळसुंड (डी)–स्त्री० १ गले के अन्दर की उल्टी जीभ। २ तालू का एक रोग। ३ देखो 'गोम्रो'।

गळसुओ–पु० [स० गलसूती] शीतकाल मे मस्त ऊंट के मुह से निकलने वाला गुल्ला।

गळहार–पु० गले का आभूषण।

गळाछळौ गळाठौ–पु० [स० गलोच्छन] गले तक भरा हुआ वर्तन।

गळाडौ–देखो १ 'गळकोर'। २ देखो 'गळाठौ'।

गलांण–देखो 'गलानि'।

गलाणौ, गलामणौ–पु० १ किसी पात्र के गले का वधन। २ गले मे बाधने की रस्सी। ३ एक प्रकार का वर्षा ऋतु मे होने वाला घास जिसे पशु नही चरते हैं।

गलावडौ–पु० पशुओ के गले से बाधी हुई रस्सी।

गळा–क्रि०वि० पास, निकट, समीप।

गळाई–स्त्री० १ किसी धातु को पिघालने का कार्य। २ इस कार्य की मजदूरी। –पु० प्रकार, तरह, मानिंद, समान।

गळाको–पु० १ गला निकाल कर झाकने की क्रिया। २ निगलने की क्रिया।

गळागळ–स्त्री० जल्दी-जल्दी निगलने की क्रिया। –क्रि०वि० शीघ्रता से।

गळाणो (बो)–क्रि० १ पिघलाना, द्रव मान कराना। २ खिलाना। ३ हजम कराना। ४ बीताना, समाप्त कराना। ५ खेल मे किसी खिलाडी को परास्त कराना। ६ कृशकाय या क्षीण कराना। ७ मिटवाना, नष्ट कराना। ८ अधिक पकाना। ९ जीर्ण-शीर्ण कराना। १० सूक्ष्माणु करके घुलाना, घुलवाना। ११ विकृत कर रज-रज करके गिरवाना, क्षय कराना।

गलानि (नी)–स्त्री० १ ग्लानि, घृणा। २ अरुचि। ३ खिन्नता, पश्चाताप, दुख। ४ खेद, अफसोस। ५ थकान। ६ ह्रास। ७ निर्बलता बीमारी।

गळाफड़ौ–देखो 'गळफडौ'।

गलार–स्त्री० १ भेड की ध्वनि। २ गिद्ध पक्षी की ध्वनि। ३ आनन्द, मौज।

गलाळ–पु० १ मास पिंड। २ गोश्त खण्ड। ३ देखो 'गुलाल'।

गळावट–स्त्री० १ गलाने की क्रिया या भाव। २ गलने का गुण।

गळि–स्त्री० १ गर्दन, गला। २ देखो 'गळी'।

गळिचौ, गलिचौ–देखो 'गलीचौ'।

गळित्रागौ–पु० १ यज्ञोपवीत धारी ब्राह्मण। २ द्विज। ३ जनेऊ, यज्ञोपवीत।

गळियाभमर–पु० गलियो मे घूमने का शौकीन।

गळियार, (रौ)–वि० [स० गली-चार] १ गली-गली घूमने वाला, अवारा। २ आहत, घायल। ३ उन्मत्त, मस्त। –पु० गली, वीथी।

गळियौगुळसरौ–पु० गला हुआ अफीम।

गळियौ–वि० मीठा, स्वादिष्ट।

गळिलाणौ (बौ)–देखो 'गरळाणौ' (बौ)।

गळी–स्त्री० [स० गली] १ घरो के बीच का तंग व पतला रास्ता, गली। २ मुहल्ला। ३ उपाय, तरकीब। ४ सुगम रास्ता। ५ भेद, रहस्य। ६ छिद्र, छेद। —कूची–स्त्री० भेद, रहस्य। –वि० मीठी (वस्तु)।

गलीच–वि० १ मैला-कुचेला, गदा। २ घृणित। –पु० १ मल-विष्ठा। २ भूत, प्रेतादि।

गलीचौ–पु० [फा० गलीचा] मोटा बुना, रोएदार व चित्रित एक बिछौना, गलीचा।

गलीडुणियौ–पु० गुल्ली डडे का खेल।

गळु–देखो 'गळौ'।

गळेबाज–वि० अच्छी आवाज वाला, अच्छा गाने वाला।

गळेहाथ–पु० शपथ के लिए गले के लगाया जाने वाला हाथ।

गळेटौ–देखो 'गळगेटौ'।

गळै–क्रि० वि० पास, समीप, निकट।

गळोबळ (वळ)–वि० गुत्थमगुत्था। –क्रि० वि० १ चारो ओर। २ देखो 'गळवत्थ'।

गळौ–पु० १ शरीर का, मस्तक व धड जोडने, वाला अग। गर्दन। २ कठ। ३ कठस्वर। ४ टेंटुवा, लगर। ५ मुंह।

६ पहनने के वस्त्र का गले के पास रहने वाला भाग ।
७ पात्र का मुह ।

गलौ–पु० १ कोलाहल, शोरगुल । २ झुड, समूह, दल । ३ अनाज । [स० ग्लौ] ४ चन्द्रमा ।

गळौघ–पु० गाल मे सूजन आने का एक रोग ।

गल्ल (ड़ी)–स्त्री० १ छोटी कहानी या कथा । २ कल्पित बात । ३ गप्प, डीग । ४ कपोल, गाल । ४ यश, कीर्ति । ६ पुकार । ७ बात ।

गल्सका (की)–स्त्री० गडक नदी ।

गल्ल-बल्ल–पु० १ कोलाहल । २ अस्पष्ट ध्वनि ।

गल्लवर–पु० हाथी ।

गल्लवल्ली–देखो 'गल्ल-वल्ल' ।

गल्लिका–पु० डिंगल का एक वर्ण वृत्त ।

गल्लौ–पु० १ दुकानदार की पैसा रखने की पेटी, सन्दूक । २ अनाज । ३ देखो 'गलसुग्री' ।

गल्ह–देखो 'गल्ल' ।

गल्हौ–वि० १ पागल, मूर्ख । २ देखो 'गल्लौ' ।

गव–स्त्री० [स० गौ] १ गाय, गौ । २ राम सेना का एक वानर । —**गवती**–स्त्री० दुधारु गाय ।

गवड–१ देखो 'गौड' । २ देखो 'गवाड' ।

गवरण–देखो 'गमन' ।

गवणि (णी)–स्त्री० मादा भालू । –वि० १ गमन करने वाली । २ गाने वाली ।

गवणौ (बौ)–क्रि० गमन करना, जाना ।

गवतम–१ देखो 'गौतम' । २ देखो 'गोतम' ।

गवन–देखो 'गमन' ।

गवय–स्त्री० [स०] १ नील गाय । २ बैल की एक जाति । ३ गैंडा । ४ देखो 'गव' ।

गवर–वि० गौरे रग का, गौर वर्ण । –स्त्री० १ गौरी, पार्वती । २ गणगौर ।

गवरजा (ज्या)–देखो 'गोरज्या' ।

गवरमिंट (मेंट)–स्त्री० [अ०] १ सरकार, शासन, शासक मडल । २ राज्य ।

गवरल, गवरादे–स्त्री० १ पार्वती, गौरी । २ गणगौर ।

गवराणौ, (बौ) गवरावणौ, (बौ)–देखो 'गवाणौ' (बौ) ।

गवरि–देखो 'गौरी' ।

गवरिजा–देखो 'गोरज्या' ।

गवरी–स्त्री० पार्वती । —**नद, नदन, पुत्र**–पु० गौरी पुत्र गणेश ।

गवल–पु० [स०] १ जगली भैंसा । २ नील गाय ।

गवळू–पु० १ ग्वाल, गोपाल । २ देखो 'गोळू' ।

गवाई–देखो 'गवाही' ।

गवाक्ष (न) गवाख, (खि, खेस)–पु० [स० गवाक्ष] १ छोटी खिडकी । २ झरोखा । ३ राम सेना का एक सेनापति ।

गवाड–पु० १ चौक । २ बाड़ा, आहता । ३ मुहल्ला ।

गवाडी–पु० मकानो के सामने या बीच का खुला स्थान ।

गवाणौ (बौ) गवावणौ (बौ)–क्रि० गाने के लिए प्रेरित करना, गवाना ।

गवार–पु० १ ग्वार का पौधा व उसका बीज । २ देखो 'गवार' ।

गवारणी (नी)–स्त्री० १ गवार स्त्री । २ चूडी आदि बेचने वाली स्त्री ।

गवारपाठौ–पु० घी कुवार, ग्वारपाठा ।

गवारफळी–स्त्री० ग्वार की फली जिसका शाक बनाया जाता है ।

गवारिया–स्त्री० एक जन जाति विशेष ।

गवारियौ–पु० (स्त्री० गवारण) उक्त जाति का व्यक्ति ।

गवालव–पु० [सं० गवालम्भ] यज्ञोपरात किया जाने वाला गौ-दान ।

गवाळ (ळौ)–पु० [स० गोपाल] १ गाय चराने वाला, ग्वाला गोप । २ रहट का गोल चक्र जहा बैल घूमते हैं । ३ रक्षा । ४ देखो 'गोपाळ' । –वि० रक्षक ।

गवाळणी–स्त्री० ग्वालिन । गोपिका ।

गवाळणौ (बौ)–क्रि० १ गायें चराना । २ रक्षा करना ।

गवाळियौ–देखो 'गवाळ' ।

गवाळी–स्त्री० १ गाय चराने का कार्य । २ इस कार्य की मजदूरी । ३ रक्षा ।

गवास–पु० [स० गवाशन] गौ हत्यारा, कसाई ।

गवाह–पु० [फा०] १ किसी घटना या मुकद्दमे मे साक्षी देने वाला, साक्षी । २ देखो 'गवाही' ।

गवाही–स्त्री० [फा०] किसी घटना की साक्षी ।

गविल–वि० दूध का बना (मीठा) ।

गवेसा–स्त्री० [स० गवेषणा] अनुसधान, खोज ।

गवै–पु० राम सेना का एक वानर ।

गवैयौ–पु० गायक ।

गव्य–वि० [स०] १ गाय से उत्पन्न । २ गाय से प्राप्त । ३ मवेशियो के लिए उचित । –पु० १ गायो का झुण्ड, समूह । २ गोचर भूमि । ३ गाय का दूध । ४ पीला रंग । ५ पीला रोगन या पदार्थ । ६ कमान की डोरी । ७ चार मील के बराबर एक माप ।

गस–स्त्री० [फा० गश] १ मूर्च्छा, बेहोशी । २ नेत्रो मे होने वाली लाल रेखा ।

गसत, (तौ)–देखो 'गस्त' ।

गसा (सौ)–देखो 'गस' ।

गस्त—स्त्री० [फा० गश्त] १ घुमाई, भ्रमण, टहलाई । २ पहरा, चौकीदारी के लिए लगाया जाने वाला चक्कर । ३ वेश्याओं का एक नाच । ४ दौरा । —**सलामी**—स्त्री० दौरे पर आने वाले अधिकारी को दी जाने वाली भेंट ।

गस्ती—स्त्री० [फा० गश्ती] १ गश्त का कार्य, चौकीदारी । २ दौरा । ३ चौकीदार, सिपाई । —वि० १ गश्त लगाने वाला । २ सुरक्षा या चौकसी करने वाला । ३ व्यभिचारिणी कुल्टा ।

गह—पु० [सं० गर्व, गह्] १ गर्व, अभिमान, घमड । २ मस्ती, उन्माद । ३ बहादुर व्यक्ति । ४ ग्राह, घडियाल । ५ घर, गृह । ६ ध्वनि, आवाज । ७ मान, प्रतिष्ठा । ८ मकान का एक भाग । ९ शक्ति, बल । १० युद्ध । ११ मारकाट, संहार । १२ ग्रहण करने की क्रिया । —वि० १ महान, जबरदस्त, भयकर । २ गहरा, गभीर । ३ मस्त । ४ घना, सघन । ५ दुर्गम ।

गहक—स्त्री० १ कविता की लय, ध्वनि । २ एकत्रीकरण ।

गहकणौ (बौ)—क्रि० १ इकट्ठा या एकत्रित होना । २ नगाडा बजना । ३ गाना । ४ गर्व करना । ५ पक्षियो का बोलना, चहकना । ६ मडराना । ७ जोश पूर्ण आवाज करना । ८ चाह या उमग से भरना । ९ प्रफुल्लित होना, विकसित होना ।

गहकाणौ (बौ), गहकावणौ (बौ)—क्रि० १ इकट्ठा या एकत्र करना । २ नगाडा बजाना । ३ गवाना । ४ जोश पूर्ण आवाज कराना ।

गहको—पु० १ राग, तान । २ लय, ताल । ३ चहक । ४ हर्ष ध्वनि । ५ ढग प्रयास ।

गहक्कणौ (बौ)—देखो 'गहकणौ' (बौ) ।

गहगध—स्त्री० [सं० ग्रह + गंध] घ्राणेन्द्रिय, नाक ।

गहगह—वि० प्रसन्न, प्रफुल्लित, आनदमग्न । —क्रि० वि० धूमधाम से ।

गहगहणौ (बौ), गहगहाणौ, (बौ)—क्रि० १ प्रसन्न या खुश होना । २ प्रफुल्लित होना । ३ धूम मचना । ४ सघन, घना होना । ५ महकना । ६ जोश करना । ७ उत्साहित होना । ८ उत्सुक होना । ९ हर्षित होना ।

गहगीर—वि० १ वीर बहादुर । २ गभीर ।

गहगाह—पु० १ झुण्ड, समूह । २ पक्षियो का झुण्ड । ३ देखो 'गहगह' ।

गहघट्ट—पु० १ समूह, झुण्ड । २ जमघट । ३ युद्ध, समर । —वि० घना, सघन ।

गहघूमणौ (बौ)—क्रि० मडराना ।

गहड़, गहडेर—वि० १ गभीर । २ वीर बहादुर । ३ विकट, भयकर ।

गहट्ट, (ट्ठ)—पु० १ नाश, विध्वंस, सहार । २ वैभव, ऐश्वर्य । ३ समूह ।

गहडंबर, (मर, मर)—वि० घना, सघन, गहरा ।

गहण, (णि, णी)—पु० १ युद्ध, समर । २ सेना, फौज । ३ फेरा, चक्कर ४ समूह । —वि० १ गंभीर, गहरा । २ देखो 'गहन' ।

गहणौ—पु० गहना, आभूषण, अलकार ।

गहणौ (बौ)—क्रि० १ रोदना, खूदना । २ कुचलना, नष्ट करना । ३ धारण करना । ४ पकडना । ५ आच्छादित करना । ६ ध्वस करना । ७ ग्रसित करना ।

गहतंग (तंत)—वि० नशे मे चूर, उन्मत्त ।

गहन—वि० [सं०] १ गंभीर । २ गहरा । ३ दुर्गम, कठिन । ४ गुप्त । ५ सघन, गाढा ६ घना । ७ क्लिष्ट । ८ दु:खदायी । ९ प्रखर, प्रचण्ड । १० रहस्यमय । —पु० [सं० गहनम्] १ वन, जंगल । २ गुप्त स्थान । ३ कष्ट, विपत्ति । ४ बंधक, रेहन । ५ ग्रहण, पकड । ६ युद्ध लडाई । ७ सेना, फौज । ८ फेरा, चक्कर । ९ झुण्ड समूह । १० गहराई । ११ गर्त । १२ छुपने का स्थान । १३ गुफा । १४ कलक, दोष ।

गहपति—देखो 'ग्रहपति' ।

गहपूर—पु० सिंह ।

गहबरणौ (बौ)—क्रि० घबराना, व्याकुल होना ।

गहबरा—स्त्री० [सं० गह्वरी] पृथ्वी, भूमि ।

गहबळ—वि० बलवान, जबरदस्त ।

गहम—पु० गर्व, घमड ।

गहमत, (मत्त, मत्तौ)—स्त्री० सलाह, राय, सम्मति । —वि० १ गभीर । २ उन्मत्त । ३ मदोन्मत्त ।

गहमह, (गहमहाट)—स्त्री० १ भीड, समूह । २ अधिकता, बहुलता । ३ उत्सव, धूमधाम । ४ जगमगाहट । ५ ध्वनि विशेष ।

गहमहणौ (बौ)—क्रि० प्रफुल्लित होना ।

गहमातौ—वि० (स्त्री० गहमाती) मदोन्मत्त । गर्वोन्नत ।

गहम्रग—पु० [सं० गृह-मृग] श्वान, कुत्ता ।

गहर—वि० १ गभीर । २ भयंकर । ३ अथाह । ४ घना, अधिक । —पु० १ घमंड, गर्व । २ बडप्पन । ३ ध्वनि विशेष ।

गहरणौ (बौ)—क्रि० ध्वनि करना, गर्जना ।

गहराई—स्त्री० १ गहरापन, गाभीर्य । २ थाह ।

गहराणौ (बौ)—क्रि० १ गर्जना । २ गद्गद् होना । ३ अधिकार मे करना ।

गहरापण (णौ)—देखो 'गहराई' ।

गहरी–स्त्री० [स० गह्वरी] पृथ्वी ।
गहरौ–वि० [सं० गहन] (स्त्री० गहरी) १ गंभीर अथाह । २ अधिक, ज्यादा । ३ घोर, प्रचड । ४ दृढ, मजबूत । ५ भारी, कठिन । ६ पर्याप्त । ७ घना, घनीभूत ।
गहळ–स्त्री० [स० ग्रहल] नशा, उन्माद ।
गहळीजणौ (बौ)–क्रि० १ नशे मे चूर होना । २ उन्माद या उदासी छाना । ३ सर्पविष से प्रभावित होना ।
गहलोत–पु० एक राजपूत वश ।
गहलौ–वि० [स० ग्रहिल] (स्त्री० गहली) पागल, बावला ।
गहल्ल–स्त्री० १ आवड देवी की बहन, एक देवी । २ देखो 'गल्ल' ।
गहवत (तौ)–वि० १ गभीर, गहरा । २ वीर, बहादुर । ३ गर्विला । ४ अटल, स्थिर ।
गहवग–पु० मल्ल युद्ध ।
गहवर–पु० [स० गह्वर] १ गुफा, कंदरा । २ बडा छेद या खड्डा । ३ वन । ४ गहराई, अतलता । ५ अगम्य स्थान । ६ दम्भ, पाखड ।
गहवरणौ (बौ)–क्रि० १ गर्व करना । २ निडर होना । ३ घना, सघन होना । ४ उत्तेजित होना । ५ फूलना ।
गहवरा (री)–स्त्री० [स० गह्वरी] पृथ्वी, भूमि ।
गहवान–वि० १ गर्विला, अभिमानी । २ जबरदस्त ।
गहांणी–स्त्री० वेलिया गीत का एक भेद ।
गहाणौ, (बौ) गहावणौ, (बौ)–क्रि० १ सहार कराना । २ ग्रहण कराना, पकडाना । ३ धारण कराना ।
गहि–पु० [स० गृही] कुत्ता, श्वान ।
गहिर–देखो 'गहीर' ।
गहिलाणौ (बौ)–क्रि० प्रवाहित होना, बहना ।
गहिलौ (ल्लौ)–देखो 'गहलौ' । (स्त्री० गहळी) ।
गहीर (रु)–वि० [स० गम्भीर] १ गम्भीर, गहरा । २ अथाह । ३ घना, सघन । ४ जटिल, गहन । ५ भारी । ६ सौम्य, शात । ७ मधुर । –पु० १ महादेव शिव । २ हाथी । ३ समुद्र ।
गहीलौ–देखो 'गहलौ' । (स्त्री० गहीली) ।
गहु (हू)–देखो 'गेहू' ।
गहेठौ–देखो 'गाग्रटौ' ।
गहेलडौ, गहेलू (लौ)–१ देखो 'गेलौ' । २ देखो 'गहलौ' ।
गह्वर–देखो 'गहवर' ।
गह्वरी–स्त्री० [स०] पृथ्वी भूमि ।
गागडो–स्त्री० १ एक प्रकार का पौधा । २ इस पौधे के फल । ३ डूंगरपुर की एक नदी ।
गांगडौ–पु० हल का एक उपकरण ।
गागणिय (यौ)–पु० 'गागडी' का फल ।
गागनौ–वि० (स्त्री० गागनी) १ मूर्ख, विक्षिप्त । २ चचल, अस्थिरचित्त ।
गागरत, गागरौ–पु० १ व्यर्थ की टाय-टाय । २ बकवास ।
गागली–स्त्री० १ श्रावण व आषाढ मास मे चलने वाली दक्षिण पश्चिम की हवा । २ एक मन्त्रामी का नाम ।
गागवण, गांगाणी, गागौ गागुण–देखो 'गागडी' ।
गागेडौ–पु० १ किसी बर्तन के मुंह का टूटकर अलग हुआ घेरा । २ मरणोपरान्त किया जाने वाला गगाप्रसादी का भोज ।
गागेउ, गगेय गांगोय–पु० [सं० गागेय] १ भीष्म । २ स्वामि कार्त्तिकेय । ३ सोना, स्वर्ण ।
गागौ–पु० बर्तन के मुह का घेरा । –वि० विक्षिप्त ।
गांछा–स्त्री० बास की डलिया आदि बनाने वाली जाति ।
गाछउ, गांछौ–पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।
गांज (णौ)–वि० १ नाश करने वाला । २ तोडने वाला ।
गाजणौ (बौ)–क्रि० १ तोडना । २ खडित करना । ३ मिटाना, नाश करना । ४ पराजित करना ।
गांजर–स्त्री० मोट के साथ बधा रहने वाला रस्सा, वरत्रा ।
गाजरौ–वि० (स्त्री० गाजरी) ढुलमुल ।
गाजवणौ (बौ)–देखो 'गाजणौ' (बौ) ।
गाजागिर–पु० १ राजा, नृप । २ भाग्यविधाता ।
गाजीव–देखो 'गाडीव' ।
गाजेडी–वि० गाजे का नशाबाज ।
गांजौ–पु० [सं० गजा] १ भग की तरह का एक अतिमादक पदार्थ । २ भाला, बरछा ।
गाट, गाठ, गाठडी (डौ)–स्त्री० [स० ग्रथि] १ रस्सी व धागा आदि मे पडी हुई ग्रथि गिरह । २ वस्त्र के छोर मे लगाई जाने वाली ग्रथि । ३ गठरी गट्ठा । ४ ईख बास आदि की पेरी । ५ अग का जोड । ६ गाठदार जड़ । ७ एक प्रकार का गहना । ८ समूह । ९ गिल्टी, गुमड़ा । १० टेढ़ापन । ११ सूजन । —गोभी–स्त्री० एक प्रकार की गोभी ।
गाठडौ–पु० १ बडा गट्ठर । २ ऊट के पेट मे होने वाला एक रोग ।
गाठणौ (बौ)–क्रि० [सं० ग्रथनम्] १ गाठ लगाना । २ सिलाई करना टाका लगाना । ३ जूते की सिलाई करना । ४ अपने पक्ष मे करना । ५ वश मे या काबू मे करना । ६ किसी से पैसा या कोई वस्तु ऐंठ लेना । ७ प्राप्ति करना । ८ दबाना, दबोचना । ९ किसी स्त्री को सम्भोग के लिए राजी करना । १० कल्पना करना ।

गाठाई–स्त्री० गाठने का कार्य, इस कार्य की मजदूरी ।

गाठाणी–स्त्री० बुनाई के लिए सूत के धागो को साधने का कार्य।

गाठियौ–पु० १ हल्दी, सोठ आदि की जड । २ गाठ के रूप मे प्याज, लहसुन आदि । ३ एक प्रकार का घास ।

गाठी(उ)–वि० मन मे तनाव या ऐंठन रखने वाला । –पु० १ स्त्रियो का एक प्रकार का आभूषण । २ देखो 'गठियौ' ।

गाठै–क्रि०वि० पास मे, अधिकार मे ।

गाठौ–पु० १ केसर की गठरी । २ देखो 'गठौ' ।

गाड–स्त्री० [प्रा० गड्ड] १ मल-द्वार, गुदा । २ योनि । ३ पेंदी, तला ।

गांडर–स्त्री० १ किसी वस्तु की पेंदी, तला । २ एक प्रकार की घास ।

गाडीव–पु० [स०] अर्जुन का धनुष ।

गाडू–वि० १ गुदा मैथुन कराने वाला । २ कायर, डरपोक ।

गाण–देखो 'गान' ।

गाणपत–देखो 'गणपति' ।

गांणवर–पु० शिव, महादेव ।

गाती–देखो 'गाती' ।

गातौ–देखो 'गाथौ' ।

गाथणौ (बौ)–क्रि० [स० ग्रथन] १ गू थना, गु थाई करना । २ मोटी सिलाई करना, गाठना । ३ दो पशुओ को परस्पर बाधना ।

गाथौ–पु० [स० ग्रथन] १ बधन । २ दो पशुओ का परस्पर का बधन ।

गादिनी–स्त्री० [स०] १ गगा । २ अक्रूर की माता ।

गाधरव–वि०[स०गाधर्व] १ गधर्व सवधी । २ गधर्व देशोत्पन्न । –पु० १ गधर्व । २ घोडा, अश्व । ३ सामवेद का एक उपवेद । ४ आठ प्रकार के विवाहो मे से एक, प्रेम विवाह । ५ गधर्वो की कला । **—वेद**–पु० सगीत शास्त्र ।

गांधार–पु० [सं०] १ एक पश्चिमी प्रदेश, काधार । २ सगीत मे तीसरा स्वर । ३ एक राग विशेष । **—पचम**–पु० एक षाडव राग । **—भैरव**–पु० एक राग विशेष ।

गाधारी-स्त्री० [स०] १ गांधार देश की राजकन्या जो कौरवो की माता थी । २ मेघ राग की पाचवी रागिनी । ३ तत्र के अनुसार एक नाडी । ४ जैनो के एक शासक देवता ।

गांधी–पु० [स० गाधिक] (स्त्री० गाधिण गाधणी) १ तेल, इत्र का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति । २ वर्षाकालिक एक कीडा विशेष । ३ हीग । ४ राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ।

गांन (नि)–पु० [स० गान] १ गायन । २ गीत, गाना । ३ सगीत । **—गर**–पु० गायक । **—वत**–वि० गाने वाला, गाने योग्य ।

गाम, गांमडियौ (डौ)–पु० [स० ग्राम] १ गाव, देहात । २ पुरा । ३ जाति, समाज । ४ समूह, समुदाय । ५ सरगम के स्वर । ६ राग । **—खेर**–पु० गाव की गायो का समूह । **—गोचर**–पु० चारागाह भूमि । **—मासी**–पु० गाव मे हरकारे का कार्य करने वाला भावी ।

गामडी–वि० ग्रामीण, ग्रामवासी ।

गामतरौ–पु० [सं० ग्रामान्तर] एक गाव से दूसरे ग्राम की यात्रा, ग्राम यात्रा । यात्रा ।

गामाऊ–वि० गाव का, गाव सबधी ।

गामि, गामी-वि० [सं० गामिन्] १ चलने वाला, गतिमान । २ घूमने वाला । ३ सवार होने वाला । ४ सबध रखने वाला । ५ सभोग या रमण करने वाला । ६ श्रीकृष्ण ।

गामेडू–देखो 'गावेडू' ।

गामेट (ठ)–पु० मुहल्ले मे एकत्र होकर बहने वाला वर्षा का पानी ।

गामेतौ–वि० ग्राम-वासी, ग्रामीण । गाव का स्वामी ।

गामोगाम–क्रि०वि० प्रत्येक व सभी गावो मे । एक गाव से दूसरे गाव तक ।

गाव–पु० ग्राम । **—खेर**–पु० गायो का समूह । **—घाट**–पु० मरणोपरान्त किया जाने वाला भोज ।

गावडियौ गावडौ–देखो 'गाम' ।

गावेडू–पु० ग्रामीण, ग्राम का निवासी ।

गास, गासी, गासु–स्त्री० १ रोक-टोक, प्रतिरोध । २ प्रतिबध । ३ बधन । ४ ईर्ष्या, द्वेष । ५ कपट, छल । ६ वैर भाव । ७ नोक, नुकीला भाग । ८ तीर, बाण । ९ दुष्ट स्वभाव, दुष्ट प्रकृति ।

गा–स्त्री० [स०] १ पार्वती । २ लक्ष्मी । ३ गगा । ४ पृथ्वी । ५ सरस्वती । ६ शक्ति । ७ गाय । ८ नाभि । –पु० ९ बुद्ध । १० ज्ञान विवेक । ११ धनी । १२ बुद्धिमान, पडित । १२ गीत, भजन ।

गाअठौ–पु० १ खलिहान मे अनाज की बालो व डठलो का किया जाने वाला चूर्ण, रोदन, कुचलना । २ रोदने, कुचलने की क्रिया, कचूमर । ३ नाश, विध्वस ।

गाअणौ–देखो 'गायणौ' ।

गाअणौ (बौ)–क्रि० १ खलिहान मे अनाज की बालो व डठलो को रोदना, कुचलना । २ रोदना, कचूमर निकाल देना । ३ नष्ट करना । ४ देखो 'गाणौ' (बौ) ।

गाइ–स्त्री० गाय ।

गाइक–देखो 'गायक' ।

गाइडमल–देखो 'गायडमल' ।

गाइणी (णी)–देखो 'गायणी' ।

गाइब–देखो 'गायब' ।

गाई–स्त्री० गाय, गौ।

गाऊ–पु० दो मील या एक कोस की दूरी या लम्बाई।

गाग–स्त्री० घाव या चोट से पड़ने वाला खड्डा, घाव।

गागड, (डौ)–पु० कच्चा बेर, बेर।

गागडणौ, (बौ)–क्रि० दर्द भरी आवाज करना, चिल्लाना।

गागडदा–वि० अधिक गाढा, घना।

गागणौ, (बौ)–क्रि० १ चिल्लाना, कुहराम मचाना। २ विलाप करना, रोना।

गागर–स्त्री० [स० गर्गर] गगरी, घट, घडा।

गागरौ–देखो 'घाघरौ'।

गागोलिया–स्त्री० गुजराती नटो की एक शाखा।

गाघ–देखो 'घाघ'।

गाघणौ, (बौ)–क्रि० कराहना, दर्द भरी आवाज करना।

गाघराणौ–पु० पुनर्विवाह, विशेषकर देवर के साथ।

गघरियौ, गावरौ–१ देखो 'घाघरौ'। २ देखो 'गाघराणौ'।

गाछ–पु० १ दीर्घकाय वृक्ष। २ वृक्ष।

गाज–स्त्री० [सं० गर्जन] १ गर्जना। २ बादल की गर्जना। ३ बिजली, वज्र। ४ मदोन्मत्त ऊट की आवाज। ५ भारी या तेज आवाज।

गाजणौ–वि० (स्त्री० गाजणी) १ गर्जने वाला। २ दहाडने वाला। ३ बजने वाला। ४ जोर से बोलने वाला।

गाजणौ, (बौ)–क्रि० १ गर्जना, कडकना। २ दहाडना। ३ हुकार भरना। ४ जोर से बोलना। ५ बजना। ६ प्रसन्न होना। ७ चिल्लाना।

गाजनमाता–स्त्री० बनजारो की कुलदेवी।

गाजर–स्त्री० मूली की तरह का एक मीठा कदफल।

गाजरियौ–पु० १ गाजर का बना खाद्य पदार्थ। २ गेहू की फसल के साथ होने वाला घास।

गाजी, गाजीऊ–पु० [अ० गाजी] १ धर्म के लिए लडने वाला वीर पुरुष। २ एक प्रकार का ऊट। ३ घोडा। –वि० श्रेष्ठ वीर। —**मरद**–पु० बहुत बडा वीर। घोडा।

गाटक–पु० १ गुटका। २ घूट।

गाटा–पु० बैलगाडी के पाटे के नीचे लगने वाले डडे।

गाटौ (बौ)–देखो 'गाअठौ'।

गाड–पु० [स० गर्त] १ गर्त, गड्ढा। २ गाडी, बैलगाडी। ३ भय। ४ आपत्ति। ५ देखो 'गाढ'।

गाडणौ (बौ)–क्रि० [स० गर्तन] १ गड्ढा खोदकर मजबूत रोप देना। २ खड्डे मे डालकर ऊपर मिट्टी से दबा देना। दफनाना, गाडना। ३ घुसेडना, धसा देना। ४ जमाना, जमाकर स्थिर करना।

गाडर, (री)–स्त्री० भेड मेष। —**तातियौ**–पु० वर्षा ऋतु का एक घास।

गाडरियौ–पु० १ एक लता फल विशेष। २ श्वेत बादल।

गाडरौ–पु० नर मेड, मेष।

गाडलिया–देखो 'गाडोलिया'।

गाडलियौ–देखो 'गाडोलियौ'।

गाडासण–पु० गाडी या छकडे पर रखा सामान।

गाडी–स्त्री० [स० शकटी] १ बैल या घोडो से खीचा जाने वाला पहियादार यान। बैलगाडी, शकट, रथ। २ इसी तरह मशीन द्वारा चलने वाले-यान यथा रेलगाडी, मोटर गाडी, आदि। ३ अगीठी, छोटा चूल्हा। ४ बैल गाडी के अग्रभाग मे लगाया जाने वाला लकडी का गुटका।

गाडीणौ–पु० मिट्टी के बडे-बडे जल पात्रो से लदा हुआ शकट या बैलगाडी।

गाडीत, गाडीतौ–पु० १ देसवाली मुसलमानो का एक भेद। २ गाडोलिया लुहार। ३ गाडी चलाने वाला।

गाडूलौ–पु० १ छोटी बैल गाडी। २ शकट। ३ सामान लादने का ठेला। ४ तीन पहियों का, बच्चो का खिलौना जिसके सहारे बच्चा चलना सीखता है।

गाडेती–पु० १ गाडी मे ही घर रखने वाले लुहार। २ गाडीवान।

गाडेसर (हर)–पु० गाडी आने-जाने का मकान का बडा द्वार।

गाडोलिया–पु० गाडेती लुहार।

गाडोली–स्त्री० १ भूरी-छोटी चिडिया। २ छोटी गाडी।

गाडौ–पु० [स० शकट] १ बडी गाडी। २ सामान मे भरी गाडी। ३ गाडी मे एक बार में भरा जाने वाला सामान, चारा आदि। ४ बीस मन का परिमाण।

गाढ़–पु० १ शक्ति, बल। २ मान प्रतिष्ठा। ३ गर्व अभिमान। ४ कडाई, कठोरता। ५ दृढता मजबूती। ६ ठोसपना। ७ धैर्य, धीरज। ८ सहनशीलता। ९ गभीरता, गहराई। १० प्रेम, आग्रह। ११ साहस, हिम्मत। १२ वृद्धावस्था। १३ गाढापन। १४ सघनता, घनत्व। १५ कपट। १६ श्वान, कुत्ता। १७ ध्यान, सतर्कता। १८ भ्रम, डर, आतक। –वि १ अत्यधिक, ज्यादा, बहुत। २ दृढ़, मजबूत। ३ घना, गाढा। ४ कठिन विकट। ५ पूर्ण, युक्त, परिपूर्ण। —**गुर**–वि० महान, बडा। वीर, योद्धा। अहकारी, अभिमानी। —**धर**–वि० वीर। –**वाळ**–वि० धीर, गंभीर।

गाढउ–देखो 'गाढौ'।

गाढम–स्त्री० [स० गाढ़िम] १ गर्व। २ गभीरता। ३ वीरता, बहादुरी। ४ मान, प्रतिष्ठा। ५ शक्ति, बल।

गाढ़मल–देखो 'गायडमल'।

गाढागुर–देखो 'गाढ़गुर'।

गाढ़ाक–देखो 'गाढ़ौ'।

गाढामारु–पु० १ शौकीन, छैला । २ आर्य पुत्र । ३ लोक गीतो मे पति के प्रति प्रयुक्त शब्द ।

गाढ़िम–देखो 'गाढम' ।

गाढ़ीलौ, गाढ़, गाढ़राव, गाढ़ेल, गाढ़राव–वि०(स्त्री० गाढीली, गाढेली) १ धैर्यवान, गभीर । २ वीर बहादुर । ३ शक्तिशाली, बलवान ।

गाढ़ौ–वि० [स० गाढ] (स्त्री० गाढी) १ जो पतला न हो, मोटा, गाढा । २ जिसमे तरलता कम हो, पानी कम हो, गाढा द्रव । ३ गहरा, घना । ४ बहुत अधिक सख्त, मजबूत, ठोस, दृढ । ५ जिसमे घनिष्ठता हो, घनिष्ठ । ६ अत्यधिक बहुतायत मे । ७ बनावट मे मोटा । ८ धीर, गभीर । ९ जबरदस्त, शक्तिशाली । १० जोशीला, जोश वाला ।

गाणौ–पु० [स० गान] १ गायन की क्रिया । २ गाना, गीत ।

गा'णौ (बौ)–देखो 'गाश्रणो' (बो) ।

गाणौ (बौ)–क्रि० १ गायन करना । २ गीत-भजन आदि गाना । ३ मधुर ध्वनि करना । ४ स्वर ताल मे ध्वनि अलापना । ५ गुनगुनाना । ६ स्तुति करना । ७ वर्णन करना ।

गात–पु० [स० गात्र] १ शरीर, अग, तन । २ शरीर का अवयव ।

गातरियौ, गातरौ, गातौ–पु० १ कपाट के बीच लगने वाला डडा । २ निश्रेणी मे आडा लगने वाला डडा । ३ देखो 'गात' ।

गातियौ–पु० १ जवडा । २ देखो 'गाती' ।

गातरी, गाति, गाती–स्त्री० [स० गात्रिका] १ साधुओ का शरीर पर वस्त्र लपेटने का एक ढग । २ उक्त ढग से लपेटा जाने वाला वस्त्र, चादर ।

गाती–देखो 'गातरी' ।

गात्र–देखो 'गात' ।

गात्रगुप्त–पु० श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

गात्रवरण–पु० स्वर साधन की एक प्रणाली ।

गात्रसैल–पु० हाथी ।

गाथ–स्त्री० १ गाथा । २ कीर्ति । ३ दौलत, धन । ४ यश । ५ देखो 'गात' ।

गाथा (थौ)–स्त्री० १ स्तुति । २ काव्यात्मक कथा । ३ वृत्तान्त, हाल । ४ वह श्लोक जिसमे स्वर का नियम न हो । ५ छन्द । ६ गीत । ७ फारसियो के धर्म ग्र थ का एक भेद । ८ एक प्रकार का अर्द्ध मात्रिक छन्द । ९ यशगान ।

गाव–पु० शब्द, वचन ।

गावड, गावडियौ, गावडौ–पु० गीदड, सियार । –वि० कायर, डरपोक ।

गावरणी–पु० मजरी, कोपल ।

गादरणौ, (बौ)–क्रि० १ अकुरित होना । २ उत्पन्न होना । ३ गदराना ।

गादरित–वि० १ गद्गद्, प्रसन्न । २ सुडौल, पुष्ट । ३ गदराया हुआ । ४ स्थूल ।

गादह–पु० गर्दभ, गधा ।

गादी–स्त्री० १ छोटा गद्दा । २ गद्देदार बिछौना । ३ जीन पर डाला जाने वाला वस्त्र । ४ बैठक । ५ राज्य सिंहासन । ६ उत्तराधिकार मे प्राप्त पद । ७ गाय, भैंस, बकरी आदि का थन । —धर–पु० राजा । उत्तराधिकारी । —नसीन –पु० सिंहासनारूढ ।

गावेल–पु० रहट मे लगा मोटा लट्ठा जिसके एक शिरे पर बैठ कर बैल हाके जाते हैं ।

गादोतरौ–पु० [सं० गौवधोतर] १ जमीदार या शासक से ऊब कर किसी वश या जाति का गाव या देश त्याग । जाते समय ये गाव या प्रदेश की सरहद पर गौ-शिर की पत्थर की मूर्ति खडी कर जाते थे । २ भूमिदान के समय उस भूमि की सीमा पर गाय व बछडे का चित्राकित पत्थर खडा करने की क्रिया ।

गादौ–पु० १ कीचड । २ गधा ।

गाध–पु० कुत्ता, श्वान ।

गाधि–पु० [सं०] विश्वामित्र के पिता का नाम । —नंद, पुत्र, सुत, सुनद–पु० विश्वामित्र । —पुर–पु० कान्य कुब्ज ।

गाधेय–पु० [स०] विश्वामित्र ।

गाधोतरौ–देखो 'गादोतरौ' ।

गाफल, गाफिल–वि० [अ० गाफिल] १ बेखबर, असावधान । २ लापरवाह ।

गाफिली–स्त्री० असावधानी, गफलत । लापरवाही ।

गाबड (ळ)–स्त्री० ग्रीवा, गर्दन ।

गाबरू–वि० जवान, युवा (मेवात) ।

गाबलियौ, गाबौ–देखो 'गाभौ' ।

गाभ–देखो 'गरभ' ।

गाभौ–पु० १ वस्त्र, कपडा । २ हल्का भोजन ।

गाय–स्त्री० [स० गो] १ अत्यन्त सीधा सादा व दुधारु मादा चौपाया जानवर, गऊ । २ सीधा-सादा प्राणी ।

गायक (कौ)–पु० [स० गायक] १ गाने वाला, गवैया । २ ग्राहक ।

गायड–पु० गर्व, अभिमान । –वि० १ गम्भीर । २ बहादुर । ३ अभिमानी, स्वाभिमानी । —गाडौ–वि० गम्भीर । —मल–पु० लोक गीतो का नायक । वीर योद्धा ।

गायटौ, (ठौ) देखो 'गाश्रठौ' ।

गायण (न)–पु० [स० गायन] १ गाने की क्रिया, गायन। ३ गीत, भजन। ३ ईश्वर का नाम, सकीर्त्तन। ४ गायक। ५ वेश्या।

गायणी, (नी)–स्त्री० १ गाने वाली, गायिका। २ गणिका, वेश्या।

गायणौ–पु० विश्नोइयो का गुरु।

गायत्री (य)–स्त्री० [स०] १ आर्यों द्वारा उपास्य एक अत्यन्त पवित्र वैदिक मत्र। २ चौवीस अक्षरो का एक वैदिक छन्द विशेष। ३ दुर्गा। ४ गगा। ५ गाय। —**ईस**–पु० ब्रह्मा, ईश्वर।

गायब–वि० [अ०] लुप्त, गुम, अन्तर्धान। –पु० गाने की क्रिया।

गायबिट–पु० [स०] गोवर।

गार–स्त्री० [स० गाल] १ गोवर मे चिकनी मिट्टी मिला दीवार या आगन का लेपन। २ मिट्टी, रेत। ३ कीचड, पक। ४ दल-दल। ५ चिकनी मिट्टी का गारा। ६ गहरा खड्ढा। ७ गुफा, कदरा।

गारक–पु० [स० गैरिक] सोना, स्वर्ण।

गारगी–स्त्री० [स० गार्गी] १ अत्यन्त विदुषी एव ब्रह्मनिष्ठ वैदिक स्त्री। २ दुर्गा।

गारडव (डी डू)–देखो 'गारडव'।

गारट–पु० [अ० गारत] समूह, झुण्ड।

गारडव (डी, डु डू)–पु० [स० गारुडिक] १ सपेरा। २ सर्प-विष उतारने वाला।

गारत–वि० [अ०] नष्ट, बरबाद।

गारद–स्त्री० १ सेना की एक टुकडी। २ पहरा, चौकी। ३ गारदी।

गारब–देखो 'गरब'।

गारवण–स्त्री० रबी की फसल को प्रथम बार सिंचाई करने की क्रिया।

गारि (री)–देखो 'गार'।

गारुड पु० [स० गारुड] १ सोना, स्वर्ण। २ गरुड पुराण। ३ बहत्तर कलाओ मे से एक। ४ गरुड। ५ वडा, महान।

गारुड़ि (डी)–पु० [स० गारुडी] १ सपेरा। २ विष वैद्य।

गारुडिम, गारुडी–देखो 'गारडव' 'गारडी'।

गारुतमत–पु० [स० गारुत्मत] १ मरकत मणि। २ गरुडदेव का अस्त्र।

गारो–पु० १ चुनाई मे काम आने वाला चूने या मिट्टी का लेपन, गारा। २ कीचड।

गाळ–स्त्री० [स० गालि] १ अपशब्द, गाली। २ सबधियो को सम्बोधित करते हुए व्यंग वचनो मे गाया जाने वाला लोकगीत। ३ कलक। ४ दुराशीष। ५ मध्य, वीच। ६ दर्रा। ७ वडा छेद। ८ जहर, विष। ९ सहार, नाश। १० गाढ़ा द्रव पदार्थ, गाढा नमक युक्त द्रव पदार्थ जो पशुओ को 'नाळ' मे पिलाते हैं। ११ समय, काल। १२ कीचड मे खेलने से बच्चो के पैरो मे होने वाला विकार। १३ बरस चुकने वाले वादल। —**क, गर**–वि० १ गलाने वाला। २ नाश करने वाला।

गाल, गालडियौ, गालडौ–पु० कपोल।

गाळण–स्त्री० १ तपाकर पिघलाने या गलाने की क्रिया। २ मिटाने या नष्ट करने की क्रिया। –वि० १ मिटाने वाला। २ गलाने वाला।

गाळणौ (बौ)–क्रि० १ गलाना, पिघलाना। २ मिटाना, नष्ट करना। ३ मर्दन करना। ४ क्षीण करना, कृश करना।

गालफवार–पु० अर्द्ध चन्द्राकार दरवाजे के कपाट।

गाळबौ–पु० गर्व अभिमान।

गालमसूरी (रो)–पु० गले के नीचे लगने वाला नर्म तकिया।

गाळमौ–वि० (स्त्री० गाळमी) गला हुआ, तरल। –पु० गला हुआ अफीम।

गालरकोट, (गोट, पोट)–वि० १ बाले या सिट्टे निकलने की अवस्था मे। २ पूर्ण युवा। ३ योवनोन्मुखी।

गालव–पु० विश्वामित्र के शिष्य एक ऋषि।

गाला–स्त्री० १ एक वृक्ष विशेष। २ एक औषधि विशेष। —**बंध**–पु० गले के बाधने की रस्सी।

गळि–१ देखो 'गाळ'। २ देखो 'गाळी'।

गालिब–वि० [अ० गालिब] १ विजयी, जीतने वाला। २ समर्थ, बलवान। –पु० उर्दू के एक प्रसिद्ध शायर।

गाळी–स्त्री० १ कान के आभूषण का पिछला गोल भाग। २ डोरे की गोल गिर्री, गिट्टी (वासर)। ३ छोटा फदा। ४ घोडे की रकाब से लगी चमडे की रस्सी। ५ अपशब्द, गाली। —**गलोच**–पु० अपशब्दो का आदान-प्रदान।

गाळौ–पु० १ गले का ववन। २ फदा। ३ जुलाहो की ढरकी के मध्य का रिक्त स्थान। ४ घोडे के पाव का एक भाग। ५ पीसने के लिए चक्की मे एक बार मे डाला जाने वाला अनाज। ६ अनाज डाला जाने वाला चक्की का मुह। ७ ग्रास, कौर।

गावत्री–१ देखो 'गायत्री'। २ देखो 'गाय'।

गाव–पु० [स० ग्राव] १ पहाड। २ चट्टान, पत्थर। ३ वादल। ४ देखो 'गाय'।

गावकुस–स्त्री० [स० ग्रीवाकुश] लगाम।

गावकोहान–पु० पीठ पर कूवड वाला घोडा।

गावड–स्त्री० १ गर्दन, ग्रीवा। २ ग्वाला, गोप।

गावडियौ–पु० १ गायो मे रहने वाला बैल । २ गायें चराने वाला ।
गावडी–स्त्री० गाय ।
गावची–स्त्री० कलई पर का आभूषण।
गावण–देखो 'गायण'।
गावणौ (बौ)–देखो 'गाणौ' (बौ)।
गा'वणौ (बौ)–देखो 'गाहणौ' (बौ) ।
गावतकियौ–पु० वडा, गोल तकिया ।
गावत्रि, गावत्री–१ देखो 'गायत्री' । २ देखो 'गाय' ।
गावसुम्मौ–पु० फटे सुम का घोडा ।
गावाळणौ–देखो 'गवाळौ'।
गावाळणौ (बौ)–क्रि० १ गायो को चराना । २ गायो की रक्षा करना । ३ रक्षा करना ।
गावित्रि, गावित्री–१ देखो 'गायत्री' २ देखो 'गाय' ।
गावौ–वि० गाय का, गाय संबधी । —घी–पु० गाय का घी ।
गासमारी–देखो 'घासमारी' ।
गास, गासियौ–पु० [सं० ग्रास] कौर, निवाला ग्रास ।
गाह–पु० [स० गृह] १ गृह, मकान, घर । २ रक्षक । ३ विध्वंस, नाश । [स० गाथा] ४ गाथा, कथा । ५ गीत, गायन । –वि० विध्वस, सहार करने वाला ।
गाहक–पु० [स० ग्राहक] १ लेने वाला, खरीदने वाला, खरीददार क्रेता । २ चाहने वाला इच्छुक । ३ कद्रदान ।
गाहकी–स्त्री० १ बिक्री । २ देखो 'गाहक' ।
गाहड–देखो 'गायड' । —मल, मल्ल–'गायडमल' ।
गाहटणौ (बौ)–देखो 'गाहणौ' (बौ) ।
गाहटौ (ठौ)–देखो 'गाग्रटौ' ।
गाहणी–स्त्री० १ गाने वाली । २ ढोली जाति की स्त्री। ३ आर्या छन्द का एक भेद ।
गाहणौ (बौ)–क्रि० [सं० गाह] १ सहार करना, नाश करना । २ मथना । ३ कुचलना, रोदना । ४ लूटना । ५ दबाना । ६ थाह लेना । ७ अवगाहन करना ।
गाहा–देखो 'गाथा' ।
गाहिड–देखो 'गायड' । —मल, मल्ल='गायडमल' ।
गाहू–पु० ५४ मात्राओ का एक छन्द ।
गाहेणि (णी)–स्त्री० गाथा छन्द का एक भेद ।
गाहौ–देखो 'गाथा' ।
गिंजो–देखो 'गजो' ।
गिंडक–देखो 'गडक' ।
गिंडग–देखो 'गडग' ।
गिंडी–स्त्री० गेंद ।
गिंदडी–स्त्री० गदगी ।
गिंदणौ (बौ)–क्रि० [स० गधनम्] १ सडना, बदबू देना । २ गदा होना ।
गिंदफड–देखो 'गदफड' ।
गिंदाणौ (बौ), गिंदावणौ–क्रि० सडाना । गंदा करना । बदबू फैलाना ।
गिंदियौ, गिंदीयौ–१ देखो 'गंदियौ' । २ देखो 'गंदौ' ।
गिंदुक–पु० उपधान, तकिया ।
गिंमार, गिंवार–देखो 'गमार' ।
गिंवारी–देखो 'गवारी' ।
गिग–स्त्री० छुहारे की गुठली ।
गिगन (न्न)–पु० आकाश । —पत, पति–पु० सूर्य, भानु । —मडळ='गगनमडळ' ।
गिगनार–देखो 'गिरनार' ।
गिगाय–स्त्री० १ एक देवी का नाम । २ बच्चे का जोर से रुदन ।
गिडंग–देखो 'गिडकद' ।
गिडंद–पु० [स० गिरीद्र] १ पहाड, पर्वत । २ हिमालय । ३ ऊट ।
गिड–पु० १ योद्धा । २ सूअर । ३ फोडा । ४ ऊट । ५ पर्वत । ६ हिमकण । –वि० जबरदस्त, शक्तिशाली ।
गिडकद (कंध)–वि० [स० गिरिकस्कध] जिसके कधे विशाल हो । –पु० १ सूअर, वराह । २ ऊट ।
गिडकणौ (बौ)–देखो 'गुडकणौ' ।
गिड़काणौ (बौ), गिड़कावणौ (बौ)–देखो 'गुडकाणौ' (बौ) ।
गिड़गिडाणौ (बौ)–क्रि० [स० गद्गद्] १ विनम्र प्रार्थना करना । २ दया की भीख मागना । ३ गिगियाना ।
गिडगिडाहट–स्त्री० विनम्र, प्रार्थना । दयनीय अवस्था ।
गिडगिडी–स्त्री० १ कूऐ पर लगी गोल चकरी । २ पतग की डोर या डोरा लपेटने की चरखी । ३ देखो 'गडगडी' ।
गिडणौ (बौ)–देखो 'गुडणौ' (बौ) ।
गिडद–देखो 'गिडदी' ।
गिडदाव–पु० १ विस्तार । २ घेरा । ३ क्षेत्रफल ।
गिडदी–स्त्री० भीड, जमघट, झुंड ।
गिडदौ–पु० १ सिर का पिछला भाग, गुद्दी । २ देखो 'गुडदौ' ।
गिडराज–पु० १ शूकर राज, सूअर । २ ऊट ।
गिडराय–स्त्री० आवड देवी ।
गिडि (डी)–देखो 'गिड' ।
गिडौ–पु० १ ओला, हिमकण । २ बडा व बेडौल पत्थर ।
गिचणौ (बौ)–क्रि० अधिक भार से दबना, पिचकना ।
गिचपिच–वि० उलझन भरा, अस्पष्ट । –पु० हिचकिचाहट ।
गिचपिचियौ–पु० छोटे तारो का पुंज, कृत्तिका नक्षत्र ।

गिचरकौ–पु० १ नर्म वस्तु के जोर से दबने से होने वाली आवाज । २ दबाव पडने पर निकलने वाला गूदा । ३ हिचकिचाहट । ४ देखो 'गुचरकौ' ।

गिचरपिचर–स्त्री० अस्पष्ट बात, झिझक ।

गिचळाण–स्त्री० मिचलाहट, घृणा, अरुचि ।

गिचली–देखो 'गुचली' ।

गिच्चर-पिच्चर–देखो 'गिचर-पिचर' ।

गिजा–स्त्री० [अ०] १ स्वादिष्ट व पौष्टिक खाद्य पदार्थ । २ आफत ।

गिट, गिटक–स्त्री० १ ग्रथि । २ निगलने की क्रिया या भाव । ३ गोल ककर ।

गिटकिरी–स्त्री० तान लेने मे स्वर का विशेष प्रकार का कपन ।

गिटणौ (बौ)–क्रि० [स० गृ] निगलना, घुटक भरना ।

गिटपिट–स्त्री० निरर्थक शब्द या वाणी ।

गिटाणौ (बौ), गिटावणौ (बौ)–क्रि० निगलाना, निगलने के लिए प्रेरित करना ।

गिट्टक–देखो 'गिटक' ।

गिडक, गिड, गिडि–देखो 'गिड' ।

गिणगोर, गिणगौर–देखो 'गणगौर' ।

गिणणौ (बौ)–क्रि० [स० गणन्] १ गणना करना, शुमार करना । २ सख्या तय करना । ३ हिसाब लगाना, गणित करना । ४ जोडना । ५ कुछ महत्त्व या कीमत समझना । ६ प्रतिष्ठा, सम्मान या आदर करना । ७ प्रभाव मानना । ८ निगलना ।

गिणत, गिणती–स्त्री० [स० गणन्] १ गणना, गिनती । २ सख्या । ३ तादाद । ४ किसी भाषा की अक माला । ५ उपस्थिति, हाजरी । ६ लेखा-जोखा । ७ मान्यता । प्रतिष्ठा ।

गिणाणौ (बौ), गिणावणौ (बौ)–क्रि० १ गिनवाना, गणना कराना । २ सख्या तय कराना । ३ हिसाब लगवाना ।

गिद–पु० [स० गद] १ कवि । २ वक्ता । ३ एक रोग विशेष । ४ भाषण ।

गिदबदणौ (बौ)–देखो 'गदबदणौ' (बौ) ।

गिदरौ–देखो 'गदरौ' ।

गिदळणौ (बौ)–क्रि० गदला होना, गाढा होना ।

गिदावड (डौ)–स्त्री० पर्वत के पास की कटी भूमि । (मेवात)

गिद्ध (ध)–पु० [स० गृध्र] तेज उडने वाला एक मासाहारी वडा पक्षी, जिसकी दृष्टि वडी तीक्ष्ण होती है । **—पख**–पु० तीर, वाण । **—राज**–पु० जटायु । गरुड ।

गिनका–देखो 'गणिका' ।

गिनर, (त)–स्त्री० खयाल, ध्यान, परवाह ।

गिनान–देखो 'ग्यान' ।

गिनानी–देखो 'ग्यानी' ।

गिनायत (ती)–पु० १ स्वजातीय व्यक्ति । २ सबधी, रिश्तेदार । ३ लडकी या लडके के ससुराल वाला कोई व्यक्ति ।

गिनारणौ (बौ)–क्रि० १ ध्यान देना, परवाह करना । २ महत्त्व देना । ३ समझना । ४ गिनना ।

गिनी–स्त्री० सोने का एक सिक्का ।

गिनौ–देखो 'गनौ' ।

गिप्ती–स्त्री० सरस्वती ।

गियान–देखो 'ग्यान' ।

गियानी–देखो 'ग्यानी' ।

गियार–देखो 'गवार' ।

गिरडियौ–पु० सूखा गोवर ।

गिरद (दर, द्द, ध)–पु० [स० गिरीद्र] १ हिमालय । २ सुमेरु । ३ वडा पर्वत । –स्त्री० गर्द, धूलि । **—मेर**–पु० सुमेरु पर्वत ।

गिर–पु० पर्वत । **—अठार, अढार**='अढारगिर' । **—चर**–पु० पर्वतो पर विचरण करने वाला । –पु० मेर सुमेरु पर्वत ।

गिरकंद–देखो 'गिडकंध' ।

गिरक–पु० १ गर्व, घमड । २ ईर्ष्या, द्वेष, डाह ।

गिरगडी–देखो 'गिडगडी' ।

गिर-गिराट–पु० १ हिचकिचाहट । २ मिचलन । ३ पश्चाताप ४ असन्तोष ।

गिर-ग्रहण–पु० श्रीकृष्ण, गिरिधारी ।

गिरज (झ, डौ)–देखो 'गिद्ध' ।

गिरजपत, (पति, पती)–देखो 'गिरिजापति' ।

गिरजा–स्त्री० पार्वती । **—नदन**–पु० गणेश । **—पत, पति, वर**–पु० शिव ।

गिरजाघर–पु० ईसाइयो का चर्च ।

गिरजौ–पु० १ गिद्ध । २ गिरजाघर ।

गिरझ–देखो 'गिद्ध' ।

गिरट्ट–वि० [स० गरिष्ठ] १ महान् वडा । २ देखो 'गरिस्ट' (ठ) ।

गिरडू, (डौ)–पु० पेडो के रस विकार से निकलने वाला पदार्थ ।

गिरण–स्त्री० १ कराह, टीस । २ ग्रहण । ३ करुण-क्रन्दन ।

गिरणणौ, (बौ) गिरणाणौ, (बौ) गिरणावणौ, (बौ)–क्रि० १ कराहना, दर्द भरी आवाज करना । २ करुणाजनक शब्द कहना । ३ गिडगिडाना ।

गिरणौ, (बौ)–क्रि० १ गिर पडना, गिरना । २ खडी अवस्था मे न रहना । ३ ह्रास, अवनति या पतन होना । ३ नदी

आदि का समुद्र मे मिलना। ५ कही पड जाना। ६ घेरे मे आजाना। ७ जकड जाना, ग्रसित होना। ८ दुर्बल या क्षीण होना। ९ प्रतिष्ठा मे कम हो जाना। १० युद्ध मे मारा जाना। ११ विफल होना।

गिरत–पु० पर्वत।

गिरथ–देखो 'गरत्थ'।

गिरद–पु० [फा०] चारो ओर का घेरा। –क्रि० वि० चारो ओर आस-पास। देखो 'गरद'।

गिरदभ–देखो 'गरदभ'।

गिरदवाई (वाय)–पु० विस्तार, फैलाव, प्रसार।

गिरदाणौ–पु० चुननदार पहनावे के नीचे का घेर।

गिरदाणौ, (बौ)–क्रि० घेरा लगाना घेरना।

गिरदाव–पु० १ चक्कर। २ विस्तार, फैलाव।

गिरदावर–पु० [फा० गिर्दावर] भूप्रबध विभाग का कर्मचारी।

गिरदावरी–स्त्री० [फा० गिर्दावरी] १ 'गिरदावर' का पद या कार्य। २ कृषि भूमि की मौके पर जाकर की जाने वाली जाच।

गिरद्द–१ देखो 'गरद'। २ देखो 'गिरद'। ३ देखो 'गिद्ध'।

गिरध–देखो 'गिद्ध'।

गिरधर, (धरण, धरियौ)–पु० [स० गिरिधर] १ श्रीकृष्ण। ३ हनुमान। ३ ईश्वर। –स्त्री० ४ पृथ्वी। —**नागर**–पु० श्रीकृष्ण। —**लाल**–पु० श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।

गिरधरणि (णी)–स्त्री० पृथ्वी, धरती।

गिरधार (धारण, धारन, धारी)–देखो 'गिरधर'।

गिरनार–पु० १ गुजरात के एक पर्वत का नाम। २ इस पर्वत पर स्थित तीर्थ।

गिरनारी–पु० १ गिरनार का निवासी। २ सर्प को रिझाने वाली एक राग।

गिरपत (पति, पती)–देखो 'गिरिपति'।

गिरफ्तार–वि० [फा०] १ पकडा हुआ। २ हथकडी डाला हुआ। ३ कैदी। ४ ग्रसित।

गिरबाण, (ब्वांण)–देखो 'गिरवाण'।

गिरमट, (मिट)–पु० बढई का एक औजार।

गिरमा–देखो 'गरिमा'।

गिरमाथ–पु० [स० गिरि-मस्तक] १ सुमेरु पर्वत। २ पहाड की चोटी।

गिरमाळ–स्त्री० १ पर्वत श्रेणी। २ अमलतास।

गिरमास–देखो 'गरमास'।

गिरमिर–पु० [स० गिरिमेरु] सुमेरु पर्वत।

गिरमी–देखो 'गरमी'।

गिरमेर (मेरु)–पु० [सं० गिरिमेरु] सुमेरु पर्वत।

गिरयद–देखो 'गिरीद'।

गिरमणी–स्त्री० [स० गिरिमणि] पार्वती, गौरी।

गिरराक (राका)–पु० [गिरि+आरक] सुमेरु पर्वत।

गिरराज–देखो 'गिरिराज'।

गिरराय–स्त्री० १ श्री आवड देवी। २ पार्वती।

गिरवर–पु० पहाड। बडा पहाड। —**धणी, धर**–पु० श्रीकृष्ण।

गिरवाण, (न)–पु० [स० गीर्वाण] १ देव,देवता, सुर। २ ऊट की नकेल। —**पत**–पु० इन्द्र।

गिरवाणी–स्त्री० १ देवी। २ अप्सरा, सुरबाला। ३ देववाणी, सस्कृत भाष।

गिरवाणौ (बौ)–क्रि० १ गिराने का कार्य कराना, गिरवाना। २ घेरने के लिए प्रेरित करना। ३ प्रतिष्ठा कम कराना। ४ विफल कराना। ५ पटकवाना।

गिरवी (वै)–वि० [फा०] बधक, रेहन। —**नांमौ, पत्र**–गिरवी का शर्तनामा।

गिरवर, गात–वि० प्रचड शरीर धारी।

गिरव्वर–देखो 'गिरवर'।

गिरस–देखो 'गिरीस'।

गिरसर–पु० पर्वत शिखर।

गिरसार–पु० [स० गिरिसार] लोहा।

गिरसुता–देखो 'गिरिसुता'।

गिरस्ती–देखो 'ग्रहस्थी'।

गिरह–स्त्री० [फा०] १ ग्रथि, गाठ। २ गज का सोलहवा भाग, एक नाप। ३ कलाबाजी। ४ पर्वत, पहाड। ५ मुसीबत। ६ देखो 'ग्रह'।

गिरांमणी (णौ)–स्त्री० एक प्रकार की घास।

गिरा–स्त्री० [स०] १ सरस्वती। २ वाणी, बोली। ३ भाषा। ४ विद्या। ५ जिह्वा। ६ कविता, शायरी। ७ सरस्वती नदी।

गिराई–पु० १ पुलिस या आरक्षी विभाग। २ पुलिस का बडा अफसर, महानिरीक्षक।

गिराक (ग)–पु० ग्राहक।

गिराणौ (बौ)–क्रि० १ गिराना, पटकना। २ खडी दशा मे न रहने देना। ३ पतन या अवनति कराना। ४ पदावनति कराना। ५ मिलाना, समाहित करना। ६ कहीं डाल देना, खो देना। ७ प्रतिष्ठा में कमी करना। ८ युद्ध मे मार गिराना। ९ विफल करना। १० उखाडना, झाडना।

गिरापति (पितु)–पु० [स०] ब्रह्मा।

गिराव–पु० १ छर्रेदार तोप का गोला। २ ऊमरकोट क्षेत्र की भूमि।

गिरायक–देखो 'ग्राहक'।

गिरारक–पु० [स० गिरि + आरक] सुमेरु पर्वत।

गिराळ–पु० पर्वत, पहाड़।

गिराव, गिरावट—स्त्री० १ गिरने की क्रिया या भाव, पतन, कमी, ह्रास । २ उतार, घटती । ३ हीन भावना, तुच्छता । ४ घेराव ।

गिरावणौ (बौ)—देखो 'गिराणौ' (बौ) ।

गिरास—पु० १ उपाय, तरकीब । २ ग्रास ।

गिरासिया—स्त्री० अरावली पहाड के आस-पास बसने वाली एक जाति ।

गिरासियौ—पु० १ उक्त जाति का व्यक्ति । २ थोडी भूमि का मालिक ।

गिरास्रमी—पु० [स० गिराश्रमी] १ कवि । २ पडित ।

गिरिंद—देखो 'गिरीद' ।

गिरि—पु० [स०] १ पर्वत, पहाड । २ टीला । ३ चट्टान । ४ एक प्रकार का नेत्र रोग । ५ दसनामियों का एक भेद । ६ आठ की सख्या ※। ७ खेलने की गेद । ८ चूहा, मूसा । —**आर**—पु० पीतल । —**फटक**—पु० वज्र । —**गुड**—पु० कन्दुक, गेंद । —**ज**—पु० लोहा । —**जा**—स्त्री० पार्वती । —**धर, धरन**—पु० श्रीकृष्ण । हनुमान । —**धातु**—पु०गेरू —**धारन, धारी**—पु० श्रीकृष्ण । —**ध्वज**—पु० इन्द्र । —**नंदिणी**-स्त्री० पार्वती । गगा । नदी, सरिता । —**नाथ**—पु० शिव, महादेव । —**राज**—पु० बडा पर्वत, हिमालय, सुमेरु, गोवर्धन पर्वत । —**सार**—पु० शिलाजीत । लोहा । —**सुत**—पु० मैनाक पर्वत । —**सुता**—स्त्री० पार्वती । गंगा । —**स्रग**—स्त्री० पर्वत की चोटी ।

गिरिश्रौ—देखो 'गिरियौ' ।

गिरिक—पु० [स० गिरिक] १ गेंद । २ शिव, महादेव ।

गिरिज—पु० [स०] १ लोहा । २ अभ्रक । ३ शिलाजीत । ४ गेरू ।

गिरिजा—स्त्री० पार्वती, उमा । —**पत, पति, पती**—पु० शिव महादेव ।

गिरिजावीज—पु० [स०] गधक ।

गिरित्र—पु० [स०] १ शिव, महादेव । २ समुद्र ।

गिरिमा—देखो 'गरिमा' ।

गिरियाडोब—क्रि०वि० टखने तक ।

गिरियौ—पु० ऐडी के ऊपर बने हड्डी के गुटके, टखना ।

गिरिसधि—स्त्री० [स० गिरि-सनिधि] दो पहाडो के बीच की नीची भूमि, घाटी ।

गिरिस—देखो 'गिरीस' ।

गिरींद (द्र)—पु० [स०] १ हिमालय । २ बडा पर्वत । ३ सुमेरु ।

गिरी—स्त्री० १ नारियल का गूदा या उसका टुकडा । २ मिंगी, गूदा ।

गिरीश्रौ—देखो 'गिरियौ' ।

गिरीयक—देखो 'गिरिक' ।

गिरीस—पु० [स० गिरीश] १ शिव, महादेव । २ हिमालय, पर्वत । ३ कोई बडा पर्वत । ४ शिव लिंग ।

गिरुश्रौ—वि० १ सुन्दर मनोहर । २ सम्पन्न । ३ गम्भीर । ४ गुणज्ञ ।

गिरै—स्त्री० [स० ग्रह] १ आपत्ति, सकट, मुसीबत । २ देखो 'गिरह' । ३ देखो 'ग्रह' । —**गोचर**='गोचर' । —**बाज**—पु० कलाबाजी दिखाने वाला कबूतर ।

गिरोवर—देखो 'गिरवर' ।

गिलका—स्त्री० हसी, दिल्लगी ।

गिलका—स्त्री० नदी । —**सिला**—स्त्री० गडक नदी ।

गिलगचियौ—देखो 'गुळगुचियौ' ।

गिलगिली—स्त्री० १ गुदगुदी । चुनचुनाहट । २ हल्की खुजली । ३ घोडो की एक जाति ।

गिलट—पु० १ मुलम्मा । २ एक सफेद व चमकीला, हल्का धातु ।

गिलटी—स्त्री० १ ग्रथि गाठ । २ एक प्रकार का रोग । ३ एक प्रकार का छोटा कीटाणु ।

गिलण—वि० निगलने वाला । —पु० १ गला, गर्दन । २ देखो 'गिलणी' ।

गिलणी, (नी)—स्त्री० १ भोजन उतरने की गले की नलिका । २ ठुड्डी के नीचे का भाग ।

गिळणौ (बौ)—क्रि० १ निगलना, खाना । २ अधिकार मे करना । ३ संहार करना । ४ पिघलना, द्रवित होना । ५ घूट घूट कर पीना ।

गिलबिला—पु० मुसलमान ।

गिलबिलाणौ, (बौ)—क्रि० १ व्याकुल होना । २ प्रलाप करना, बकना ।

गिलबौ—पु० १ कोलाहल, शोर । २ गाने की ध्वनि । ३ शिकायत । ४ देखो 'गलबौ' ।

गिलम, गिलमौ—पु० १ मुलायम गद्दा, बिछौना । २ तकिया ।

गिलाण, (णी) गिलांन, (नी)—देखो 'ग्लानि' ।

गिलाफ—पु० १ आवरण । २ म्यान ।

गिलार—स्त्री० १ गला, गर्दन । २ देखो 'गलार' ।

गिलारी—स्त्री० गिलहरी नामक छोटा जानवर ।

गिलास—स्त्री० पानी आदि पीने का लम्बा पात्र ।

गिळित—वि० निगला हुआ ।

गिली—१ देखो 'गुल्ली' । २ देखो 'गिलगिली' ।

गिलोडी—स्त्री० १ गुड-घी के मेल से बनी मोटी रोटी । २ घी का छोटा पात्र ।

गिलोणौ (बौ)—क्रि० १ गीला करना । २ पानी डाल कर गीला करना । ३ मिश्रित करना । ४ गूदना ।

गिलोय—स्त्री० [फा०] वृक्षो पर चढने वाली लता, गुरुच ।

गिलोरी-मांडिया–स्त्री० घी युक्त रोटी।
गिलोळ–देखो 'गुलेल'।
गिलोळौ–पु० १ मिट्टी की बनी छोटी गोली। २ गुलेल से फेंका जाने वाला ककड।
गिलोवणौ, (बौ)–देखो 'गिलोणौ' (बौ)।
गिलौ–पु० १ झगडा, टटा। २ निंदा, अपकीर्ति। ३ खबर, सन्देश। ४ हसी, मजाक।
गिल्ली–स्त्री० १ गुदगुदी। २ गुल्ली।
गिवल–पु० रोझ।
गिव्वर–पु० [स० गिरिवर] पर्वत, पहाड।
गिसी–वि० [अ० गिश्श] अशुभ, भयकर।
गिस्ती–देखो 'ग्रहस्थी'।
गींऊ–देखो 'गऊ'।
गींगणी–स्त्री० पीले नेत्रो का एक छोटा पक्षी।
गींडवौ–देखो 'गीदवौ'।
गींडाळियौ, गींडाळौ, गींडोळियौ, गींडोळौ–पु० वर्षा ऋतु मे होने वाला एक मोटा कीडा।
गींदवौ–पु० [स० गेंदुक] उपधान, छोटा गोल तकिया।
गी–स्त्री० १ शोभा छबि। २ स्त्री। ३ वाणी। ४ सरस्वती। ५ अमृत। –वि० १ कठोर। २ गत।
गीआमाळती–स्त्री० एक मात्रिक छद विशेष।
गीखम–देखो 'ग्रीस्म'।
गीगलौ, गीगौ–पु० (स्त्री० गीगली, गीगी) छोटा बच्चा, शिशु।
गीगाणौ, (बौ)–क्रि० १ जोर से रोना। २ करुण क्रदन करना।
गीगोड़ी–स्त्री० बरसाती कीट विशेष।
गीजड़–पु० आख का मैल।
गीजा–स्त्री० विना नगीने की अगूठी।
गीड–पु० [सं० किट्ट] आख का मैल।
गीण–स्त्री० टीस, कसक।
गीणणौ (बौ)–क्रि० १ कराहना। २ चीखना। ३ रोना।
गीत–पु० [स० गीतम्] १ गाने योग्य कविता। २ भजन, पद। ३ लोक गीत। ४ डिंगल का छद विशेष। ५ चौसठ कलाओ मे से एक। ६ बहत्तर कलाओ मे से एक। ७ मागलिक गायन। ८ यश, कीर्ति।
गीतका–पु० १ एक मात्रिक छद विशेष। ३ बीस वर्ण का एक छद विशेप।
गीतणी–स्त्री० १ गीतो की गायिका। २ एक पक्षी विशेप।
गीता–स्त्री० [सं०] १ भगवद् गीता। २ राम गीता आदि वेदान्त ग्रथ। ३ वृत्तान्त, हाल। ४ कथा। ५ छब्बीस मात्रा का एक मात्रिक छद। ६ छबीस वर्ण का एक वृत्त।
गीतारथ–वि० [स० गीतार्थ] बहुश्रुत (जैन)।
गीतारी–स्त्री० १ झुण्ड बनाकर रहने वाला एक पक्षी। २ गायन विद्या मे प्रवीण स्त्री।
गीतिका–देखो 'गीतका'।
गीतेरण–देखो 'गीतणी'।
गीदड़–पु० सियार, शृगाल।
गीदल–स्त्री० १ आंधी निकलने के बाद आकाश पर छायी रहने वाली गर्द। २ देखो 'गिद्ध'।
गीदी–देखो 'गादी'।
गीध–देखो 'गिद्ध'।
गीया–स्त्री० एक मात्रिक छंद विशेष।
गीरद–देखो 'गिरीद'।
गीरथ–पु० [स०] १ बृहस्पति का नाम। २ जीवात्मा।
गीरदेवी–स्त्री० [सं० गीर्देवी] सरस्वती, शारदा।
गीरपति (ती)–पु० [स० गीर्पति] १ बृहस्पति। २ विद्वान, पडित।
गीलापण (पणौ)–पु० आर्द्रता, नमी, तरी।
गीलौ–वि० (स्त्री० गीली) भीगा हुआ, नम, तर।
गीलौपनौ (पन्नौ)–वि० सुकुमार, सुन्दर, नाजुक।
गील्लसणौ (बौ)–क्रि० निगलना, ग्रसना।
गीसम–देखो 'ग्रीस्म'।
गुंगट–पु० १ घू-घूं का शब्द। २ घूघट।
गुछळ–देखो 'गूछळौ'।
गुज–देखो 'गूज'।
गुंजणौ (बौ)–देखो 'गूजणौ' (बौ)।
गुजन–पु० [स०] १ भ्रमर गुजार की आवाज। २ मधुर ध्वनि।
गुंजा–स्त्री० [स०] १ घुघची नामक लता। २ इस लता का फल या बीज। ३ धीमी आवाज। ४ ढोल। ५ ध्यान। ६ खाद्य पदार्थ विशेष।
गुजाइस (ईस, यस)–स्त्री० [फा० गुजाइश] १ स्थान, जगह। २ सुभीता। ३ व्यवस्था, प्रबध।
गुंजाणौ (बौ)–क्रि० १ ढीलापन मिटाना, कसना, कसावट लाना (बढ़ई)। २ देखो 'गूजाणौ' (बौ)।
गुंजाफळ–पु० घुघची, चिरमी।
गुंजामाळ–स्त्री० घूघचियो की माला।
गुंजार–स्त्री० १ भौंरो की गूज। २ ध्वनि विशेष। [सं० गुह्यागार] ३ सामान गृह, भण्डार। ४ गोदाम। ५ तल गृह।
गुंजारणौ (बौ)–क्रि० [स० गुञ्जनम्] १ गुनगुनाना। २ गर्जना। ३ झकृत होना। ४ दहाडना।
गुजारव (रवण)–पु० १ मधुर ध्वनि। २ गर्जना।

गुंजावणौ (बौ)– १ देखो 'गूंजाणौ' (बौ) । २ देखो 'गुंजाणौ' (बौ)
गुंजाहळ–देखो 'गुंजाफळ' ।
गुंजौ–पु० एक प्रकार की मिठाई ।
गुंज्जारणौ (बौ)–देखो 'गुंजारणौ' (बौ) ।
गुंझ–देखो 'गूंज' ।
गुंठडौ–पु० [स० गुंठि] घूंघट ।
गुंठौ–पु० नाटे कद का घोडा ।
गुंड–पु० १ मल्हार राग का एक भेद । २ गुण्डा ।
गुंडी (ढी)–स्त्री० १ कमीज आदि का बटन । २ ग्रंथि ।
गुंडौ–वि० [स० गुंडक] (स्त्री० गुंडी) १ दुर्वृत्त, बदमाश । २ मन मे गाठ रखने वाला । ३ लुच्चा, लफगा, धूर्त ।
गुंढैल–देखो 'गुंडैल' ।
गुंथित–वि० [स० ग्रथित] गुंथा हुआ ।
गुंदरड़–क्रि०वि० निकट, पास, समीप ।
गुंफ–पु० [सं०] १ जाल । २ उलझन । ३ गुच्छा । ४ बधन । ५ गुंथाई । ६ एकीकरण । ७ रचना । ८ क्रम निर्धारण । ९ कराभूपण ।
गुंबज–पु० [फा० गुंबद] भवन या देवालय का गोलाकार शिखर ।
गुंमार (रौ)–पु० १ तहखाना । २ गुम्बज ।
गु–पु० [म०] १ अर्क । २ प्राण । ३ कामदेव । ४ नर । ५ गुण । ६ पय । ७ कुत्ता । ८ खर । ९ भय । १० समाज । ११ विष्टा, मल । १२ युक्ति, उपाय ।
गुआर–देखो 'गवार' ।
गुआळ (ळौ)–पु० १ गाव के बीच का चौक । २ ग्वाल, ग्वाला ।
गुख–पु० गवाक्ष, खिडकी ।
गुगर–पु० घुघरू ।
गुगळ (गुग्गळ, गुग्गुळ)–पु० [स० गुग्गुल] १ एक काटेदार वृक्ष । २ सनाई का पेड जिससे धूप या राल निकलती है । **—धूप**–पु० उक्त गोद से बना धूप ।
गुग्घर–पु० घुघरू । **—माळ**–स्त्री० घुघरू की माला ।
गुग्घस–पु० १ विना जल के बादल । २ मृगी रोग । ३ मृगी रोग से पीडित व्यक्ति के मुख के झाग ।
गुग्घी, गुघी–स्त्री० रूई या भेड की ऊन का बना वस्त्र विशेष ।
गुड–पु० १ पका कर जमाया हुआ गन्ने का रस, गुड । २ हाथी का कवच । ३ गेंद ।
गुडकणौ (बौ)–क्रि० लुढ़कना ।
गुडकाणौ (बौ) गुडकावणौ (बौ)–क्रि० १ लुढकाना । २ धमकाना, डराना ।
गुडकी–देखो 'घुडकी' ।
गुडकौ–पु० १ लुढकने की क्रिया या भाव । २ ध्वनि, शब्द ।
गुडगाठ–पु० १ एक प्रकार का खेल । २ इस खेल मे काम आने वाला गोल बडा पत्थर । ३ अत्यन्त कसी हुई गाठ ।
गुडगुड–स्त्री० १ द्रव पदार्थ मे वायु घुसने से उत्पन्न ध्वनि । २ वात विकार से पेट मे होने वाली ध्वनि या हलचल ।
गुडगुडाणौ (बौ)–क्रि० १ गुड गुड शब्द करना । २ हुक्का पीना ।
गुडगुडियौ–पु० १ हुक्का । २ हुक्के के नीचे का जल-पात्र ।
गुडगुडी–१ देखो 'गुडगुड' । २ देखो 'गुडगुडियौ' ।
गुडगुडीलौ–वि० गाठ-गठीला, ग्रंथि युक्त ।
गुडगुडौ–वि० (स्त्री० गुडगुडी) मुह या किनारे तक भरा हुआ ।
गुडणौ (बौ)–क्रि० १ लुढकना । २ गिर पडना । ३ खडी दशा मे न रहना । ४ जाना, गमन करना । ५ मरना । ६ गुजरना, बीतना । ७ सोना, सो जाना । ८ बजना । ९ झूमना, झूमकर चलना । १० कवच युक्त करना या होना । ११ गडगड शब्द करना । १२ कवच धारण करना । १३ निर्वाह होना । १४ देखो 'गुडणौ' (बौ) ।
गुडथल (थलौ)–देखो 'गडूथळ' ।
गुडद, गुडदापेच–पु० गिराने, पटकने या मारने की क्रिया या भाव ।
गुडदौ–पु० [फा० गुर्द] १ रीढ़ के अगल-बगल रहने वाला शरीर का एक अवयव । २ कान का एक आभूषण विशेष । ३ एक प्रकार की छोटी बन्दूक ।
गुड-पाखर–वि० १ सुसज्जित । २ कवच धारण किया हुआ ।
गुडफळ–पु० पीलू जाति का एक वृक्ष ।
गुडबाणियौ–पु० चीटा ।
गुडमच–स्त्री० एक ध्वनि विशेष ।
गुडवरण (णी)–स्त्री० [स० गौरवर्ण] केसर ।
गुडवाड–स्त्री० [स० गुडवाट] ईख, गन्ना ।
गुडहळ– देखो 'गुडहल' ।
गुडाकेस–देखो 'गुडाकेस' ।
गुडाणौ (बौ), गुडावणौ (बौ)–क्रि० १ लुढकाना । २ गिराना, पटकना । ३ खडा न रहने देना । ४ मारना । ५ गुजारना, बिताना । ६ सुलाना । ७ बजाना । ८ कवच युक्त कराना । ९ निर्वाह कराना । १० निभाना ।
गुडिपाखर–देखो 'गुडपाखर' ।
गुड़ियौ–वि० कवच युक्त ।
गुडी–देखो 'गुडी' ।
गुडीकेस–देखो 'गुडाकेस' ।
गुडेरक–पु० कौर, ग्रास ।

गुड्याणी–देखो 'गळवाणी'।

गुचरकौ, गुचळकियौ, गुचळकौ–पु० १ पानी मे लगाया जाने वाला गोता, डुबकी। २ डकार के साथ गले मे आने वाला पदार्थ। ३ झिझक, सकोच, हिचकिचाहट।

गुच्ची, (च्छी)–स्त्री० १ खेलने के लिए बच्चो द्वारा जमीन या आगन मे बनाया जाने वाला छोटा खड्डा। २ एक देशी खेल। ३ पानी का छोटा खड्डा।

गुच्छ–वि० १ बेहोश। २ प्रगाढ निद्रा मे। ३ देखो 'गुच्छौ'।

गुच्छौ–पु० झूमका, गुच्छा। समूह।

गुजर–पु० [फा०] १ निर्वाह, बसर। २ गमना-गमन क्रिया। ३ पहुच, पैठ। ४ कालक्षेप। ५ देखो 'गूजर'। —बसर–पु० निर्वाह।

गुजरणौ (बौ)–क्रि० १ बीतना, व्यतीत होना। २ आवागमन करना। ३ किसी रास्ते से चलना। ४ चल बसना, मरना।

गुजराण–देखो 'गुजर'।

गुजराणौ (बौ)–क्रि० १ निवेदन करना। २ गुजर कराना।

गुजरात–पु० [सं० गुर्जर गोत्रा] भारत का एक प्रान्त।

गुजराती–वि० गुजरात का, गुजरात सबधी। –पु० १ गुजरात का निवासी। २ एक प्रकार का ज्वर, नमूनिया रोग। ३ नटो का एक भेद। ४ गुजरात की भाषा। ५ छोटी इलायची। ६ ब्राह्मणो का एक वर्ग।

गुजारणौ, (बौ)–क्रि० १ बिताना, व्यतीत करना। २ निर्वाह करना, निभाना। ३ पूरा करना। ४ निवेदन करना।

गुजारिस–स्त्री० [फा० गुजारिश] प्रार्थना, अर्जी।

गुजारौ–देखो 'गुजर'।

गुजाहिक–पु० [स० गुह्यक] देवयोनि विशेष, यक्ष।

गुजी, (ज्जी)–स्त्री० [स० गो-दधि] १ छाछ का गाढा पेय पदार्थ। २ गेहू मिला जौ, यव।

गुज्जर–स्त्री० १ तीसरे विवाह की स्त्री। २ देखो 'गूजर'। ३ देखो 'गुरजर'। ४ देखो 'गुजर'।

गुज्जरी–देखो 'गूजरी'।

गुझवी–वि० जुल्म करने वाला, अत्याचारी, अन्यायी।

गुझियौ–पु० मिश्री व इलायची युक्त खोए की मिठाई विशेष।

गुटक–देखो 'गुटकी'।

गुटकणौ, (बौ)–क्रि० १ निगलना, घूट-घूट पीना। २ कबूतर, फाख्ता आदि का मस्ती मे बोलना।

गुटकी–स्त्री० १ घूट। २ जन्म घुट्टी। ३ औषधि की घूट।

गुटकौ–पु० १ काष्ठ रबर आदि का टुकडा खण्ड। २ छोटी पुस्तक, गुटका। ३ एक प्रकार की तांत्रिक सिद्धि। ४ नीम का फल या बीज। ५ घूट, गुटक। ६ गोली।

गुटरगू–पु० कबूतर आदि की बोली।

गुटिका-स्त्री० १ गोली। २ दवा की गोली। ३ घूट।

गुटियौ–पु० छोटा गोला पत्थर।

गुट्ट–पु० १ सगठन, गुट, दल। २ समूह, झुण्ड। ३ एक ध्वनि विशेष।

गुट्टौ, गुट्ठौ(ठौ)–पु० १ नीम का फल। २ नाटे कद का व्यक्ति।

गुठली–स्त्री० आम, बेर आदि का बीज जिस पर ठोस आवरण होता है।

गुड–पु० हाथी का कवच। —पाखर–देखो 'गुडपाखर'।

गुडगिरि–स्त्री० गेंद।

गुडगडीलौ–वि० १ धूर्त, चालाक। २ कपटी। ३ गाठ-गठीला।

गुडणौ, (बौ)–देखो गुडणौ (बौ)।

गुडळक, गुडळकियौ–१ देखो 'गोधूळिक'। २ देखो 'गूडालियौ'।

गुडळणौ, (बौ)–क्रि० १ गदा होना, गदलाना। २ धूल आदि घुलना। ३ धूलि से गाढा होना।

गुडळता, गुडळपण, (णौ)–स्त्री० १ गन्दलापन। २ गाढापन।

गुडळाणौ, (बौ) गुडळावणौ (बौ)–क्रि० १ गदा करना, मथना। २ धूल आदि घोलना। ३ धूलि से आच्छादित करना। ४ गाढा करना।

गुडळि–स्त्री० अधिकता।

गुडळियौ,गुडळौ–वि० (स्त्री० गुडळी) १ गंदला, गदा। २ धूल से आच्छादित। ३ धूलि मिश्रित। ४ घना। ५ गाढा। ६ देखो 'गूडलौ'।

गुडहल–पु० १ अडहर का वृक्ष या पुष्प, जया। २ एक प्रकार का छोटा पौधा विशेष।

गुडा–पु० १ कवचधारी हाथी। २ दाख। ३ कुलाछ।

गुडाकेस–पु० [सं० गुडाकेश] १ अर्जुन। २ शिव, महादेव। –वि० नीद को वश मे करने वाला।

गुडायलौ–पु० लोहे का एक पात्र।

गुडाळिया, गुडाल्या–क्रि० वि० घुटनो के बल।

गुडि–पु० १ गुड। २ देखो 'गुडी'। —पखर–वि० सुसज्जित। कवच युक्त (हाथी)।

गुडिया–स्त्री० कपडे आदि की बनी पुतली, खिलौना।

गुडियौ–पु० १ समाचार, खबर। २ गप्प, डीग। ३ कवचधारी हाथी।

गुडी–स्त्री० १ रस्सी आदि मे ऐंठन से पडने वाली ग्रथि। २ कपट, धूर्तता। ३ गुप्त या रहस्य की बात। ४ पतग, किनका। ५ ध्वजा, झडी। ६ कवच। ७ इच्छा। ८ मास।

गुडेळ–पु० काष्ठ का एक गुटका जो बुनाई आदि मे काम आता है।

गुडौ–पु० १ रुपये रखने का थैला। २ देखो 'गुढौ'।

गुड्डी–देखो 'गुडी'।

गुड़ो– १ देखो 'गुढो' । २ देखो 'गुडी' ।

गुड़ेर–पु० एक फूल विशेष ।

गुढो–पु० १ रक्षास्थल । २ छोटा गाव । ३ रहस्य ।

गुढ्ढ–१ देखो 'गूढ' । २ देखो 'गुडी' ।

गुणतर–वि० सत्तर से एक कम, उनहत्तर । –पु० साठ व नौ की सख्या, ६९ ।

गुणतरो–पु० उनहत्तर का वर्ष ।

गुण–पु० [सं०] १ किसी वस्तु या जीव का अच्छा स्वभाव धर्म या लक्षण, विशेषता । २ निपुणता । ३ कला या विद्या । ४ असर, प्रभाव । ५ सदाचार, शील । ६ एहसान । ७ उपकार, भलाई । ८ आदत, प्रकृति सिफत । ९ श्रेष्ठता । १० नामवरी प्रतिष्ठा । ११ रस्सी, डोरी । १२ धनुष की प्रत्यचा । १३ बाजे की डोरी । १४ नस । १५ साख्य के अनुसार सत्व, रज व तम तीन गुण । १६ तीन की संख्या ❀। १७ सूत की बत्ती । १८ ज्ञानेन्द्रिय । १९ नीति के अनुसार राजा के छ गुण । २० त्याग, वैराग्य । २१ भीम की उपाधि । २२ मित्र । २३ काव्य, कविता । २४ प्रशस्ति काव्य । २५ यश, कीर्ति । २६ डिंगल का गीत या छन्द । २७ दासी, परिचायिका । २८ रूप, स्वरूप, आकार । २९ लगाम, वल्गा ।–वि० १ अति तीक्ष्ण । २ बडा, गुरु । **—अतीत**–वि० गुण रहित, निर्गुण । –पु० ईश्वर, ब्रह्म । **—आकर**–पु० इन्द्रिय । **—कर कारक, कारी**–वि० लाभदायक, गुणकारी, सार तत्त्व । –पु० पाक शास्त्री । भीम ।**—गाथ, गाथा**–स्त्री० कीर्तिगान । प्रशसा । **—गाळ**–वि० कृतघ्न । **—ग्राहक, ग्राही**–वि० गुणीजनो का आदर करने वाला, कदरदान । **—चोर**–वि० कृतघ्न । **—जोडो**–पु० कवि । कीर्तिगान करने वाला । **—निधान, निधि**–वि० गुणवान सर्वगुण सम्पन्न । विद्वान । **—माळ, माळा**–स्त्री० काव्य, कविता । **—रासि**–पु० चन्द्रमा । गुणो का भण्डार । **—वत, वान**–वि० गुणी, विद्वान, पडित ।**—साण, सागर**–वि० गुणवान । श्रेष्ठ । **—हींण, हीण, हीणो**–वि० गुण रहित, निर्बुद्धि, मूर्ख । कृतघ्न ।

गुणक–पु० [स०] १ गुणा करने का अक । २ गुणा करने वाला ।

गुणगुण, गुणगुणाहट–स्त्री० गुनगुनाने की ध्वनि ।

गुणगुणाणो, (बो)–क्रि० मन ही मन कुछ बोलना, गाना, गुनगुनाना ।

गुणग्य, (ग्याता)–वि० [स० गुणज्ञ] गुणवान ।

गुणग्यान–पु० इन्द्रिय ।

गुणग्राम–वि० [स० गुणग्राम] सद्गुणो की खान । विद्वान । चतुर ।

गुणचाळी, (स)–वि० चालीस से एक कम, उनचालीस । –पु० तीस व नौ की सख्या, ३९ ।

गुणचाळीसो, गुणचाळो–पु० [स० ऊनचत्वारिंशत्] उनचालीस का वर्ष ।

गुणचास, गुणपचास–वि० [स० ऊनपचाशत] पचास से एक कम, उनपचास । –पु० चालीस व नौ की सख्या, ४९ ।

गुणचासो, गुणपचासो–पु० उनपचास का वर्ष ।

गुणणी–स्त्री० [स० गुणनी] छात्रो द्वारा बोली जाने वाली एक से सौ तक की गिनती ।

गुणणो, (बो)–क्रि० [स० गुणन्] १ समझना, समझ लेना । २ विचार करना, ध्यान करना । ३ मनन करना । ४ गुणा करना । ५ वर्णन करना । ६ बोलना । ७ गुनगुनाना । ८ बखान करना । ९ अनुभव प्राप्त करना । १० पालन करना, निभाना । ११ पुनरावृत्ति करना ।

गुणती, (स)–वि० [स० ऊनत्रिंशत्] तीस से एक कम, उनतीस । –पु० बीस व नौ की सख्या, २९ ।

गुणतीसो–पु० उनतीसवा वर्ष ।

गुणद–वि० [स०] गुणदायक ।

गुणदा–स्त्री० हल्दी ।

गुणन–पु० [स०] १ गुणा । २ गिनती । **—फल**–पु० गुणा करने पर आने वाली सख्या, परिणाम ।

गुणनिल–वि० गुणवान ।

गुणनेऊ–वि० नब्बे से एक कम । –पु० अस्सी व नौ की सख्या, ८९ ।

गुणनेवो–पु० नव्वासी का वर्ष ।

गुणपचासि–देखो 'गुणचास' ।

गुणपत (पति, पती, पत्त)–देखो 'गणपति' ।

गुणयल–पु० [स० गुणिकल] चन्द्रमा ।

गुणवणो (बो)–क्रि० विचार करना, मनन करना ।

गुणवरवान–पु० गणेश, गजानन ।

गुणवाण (न)–वि० गुणवान, गुणी ।

गुणवाचक–वि० [स०] गुणो की प्रशसा करने वाला । –स्त्री० एक प्रकार की सज्ञा ।

गुणवाद–पु० [स०] मीमासा के अर्थवाद का एक भेद ।

गुणवेलडी–स्त्री० गुणलता ।

गुणसठ–देखो 'गुणसाठ' ।

गुणसठो–देखो 'गुणसाठो' ।

गुणसाठ–वि० [स० ऊनषष्ठि] साठ से एक कम । –स्त्री० पचास व नौ की सख्या, ५९ ।

गुणसाठो–पु० उनसठ का वर्ष ।

गुणसित्तर–वि०[स० ऊनसप्तति]सत्तर से एक कम । –पु० साठ व नौ की सख्या, ६९ ।

गुणसित्तरौ–पु० उनसित्तर का वर्ष ।
गुणांक–पु० [स०] गुणा करने का अक ।
गुणांकारी (रु)–देखो 'गुणकारी' ।
गुणांगहीर–वि० गुणवान ।
गुणाणी–स्त्री० माला ।
गुणागर–वि० गुणवान ।
गुणातीत–वि० गुणो से परे । निर्गुण । –पु० ईश्वर ।
गुणानुवाद–पु० [स०] यश-स्तवन ।
गुणाढ्य–वि० गुण सम्पन्न । –पु० पैशाची भाषा का प्रसिद्ध कवि ।
गुणाधपति–पु० गणेश, गजानन ।
गुणावळ–स्त्री० सन्यासियो के गले की माला ।
गुणावळि (ळी)–स्त्री० १ प्रशसा, यश । २ हार, माला ।
गुणिंद–पु० [स० गुणइद्र] कवि ।
गुणिग्रण गुणिजण (न), गुणिमजण, गुणियण (न)–पु० [सं० गुणीजन] १ गुणवान । २ विद्वान, पंडित । ३ कवि । ४ गायक । —**खानौ**–पु० कलाकारो का विवरण रखने वाला विभाग ।
गुणित–वि० [स०] गुणा किया हुआ ।
गुणियासियौ–पु० उन्यासी का वर्ष ।
गुणियासी–वि० अस्सी से एक कम, उन्यासी । –पु० सत्तर व नौ की सख्या, ७९ ।
गुणियौ–पु० १ कमान, प्रत्यचा । २ डोर । ३ तांत । ४ शिल्पियो का एक उपकरण । ५ बढई का एक औजार ।
गुणी–वि० [स० गुणिन्] १ जिसमें कोई गुण हो, गुण युक्त, गुणवान । २ दक्ष, निपुण । ३ उत्कृष्ट । ४ सराहनीय । ५ नेक, शुभ । ६ मुख्य । –पु० १ कवि । २ विद्वान, पडित । ३ गवैया । ४ डोर, रस्सी । ५ ओझा । ६ प्रत्यचा । ७ कमान । —**अण, जण, यण**–देखो 'गुणिग्रण' ।
गुणीजनखानौ–पु० कलाकारो का विवरण रखने का विभाग या महकमा ।
गुणीयण–देखो 'गुणिग्रन' ।
गुणीस–देखो 'उगणीस' ।
गुणेस, (सर, स्वर)–देखो 'गणेश' ।
गुणौ–पु० [स० गुणन्] १ गणित की एक प्रक्रिया । २ देखो 'गुनौ' । ३ देखो 'गूणौ' ।
गुण्य–वि० [सं०] १ गुणी, गुणवान । २ श्लाघ्य, प्रशसनीय । ३ गुणा करने योग्य ।
गुत्थमगुत्थ–क्रि०वि० परस्पर लिपटे हुए, हाथा-पाई करते हुए । –स्त्री० १ हाथापाई । २ उलझन ।
गुत्थी–स्त्री० १ गाठ, गधि । २ उलझन, समस्या ।
गुथणौ (बौ)–क्रि० १ गूंथा जाना, पिरोया जाना । २ उलझना, फंसना । ३ रचना ।
गुथाणौ (बौ), गुथावणौ (बौ)–क्रि० १ गूथाना, पिरोवाना । २ उलझाना, फंसाना ।
गुद–देखो १ 'गुदा' । २ देखो 'गुद्दी' ।
गुदगुदाणौ (बौ)–क्रि० १ गुदगुदी करना, खुजलाना । २ विनोद करना ।
गुदगुदी–स्त्री० [सं० गुद् क्रीडायाम्] १ काख, तलवे आदि मे अगुली से खुजलाहट करना, चुनचुनाहट । २ उत्कण्ठा । ३ विनोद, हसी ।
गुदडियौ–पु० १ गुदडी पहनने या ओढने वाला । २ फटे पुराने वस्त्र पहनने वाला । ३ दरी, शामियाने आदि किराये पर देने वाला । ४ गुदडिया मम्प्रदाय का साधु ।
गुदडी (डौ)–स्त्री० १ फटे पुराने वस्त्रो का बनाया हुआ विस्तर, बिछौना । २ फटे पुराने वस्त्रो की कथा ।
गुदभ्रंस–पु० गुदा द्वार से काच निकलने का रोग ।
गुदरणौ (बौ)–देखो 'गुजरणौ' (बौ) ।
गुदरांण (न)–देखो 'गुजरान' ।
गुदराणौ(बौ), गुदरावणौ (बौ)–क्रि० १ पेश करना, प्रस्तुत करना, सामने रखना, उपस्थित करना । २ निवेदन करना । ३ हाल कहना ।
गुदरी–देखो 'गुदडी' ।
गुदळक (कियौ)–देखो 'गोधूलिक' ।
गुदळणौ (बौ)– देखो 'गुडलणौ' (बौ) ।
गुदळहक–देखो 'गोधूलिक' ।
गुदळाणौ (बौ) गुदळावणौ (बौ)–देखो 'गुडलाणौ' (बौ) ।
गुदळियौ, गुदळौ–देखो 'गुडळौ' । (स्त्री० गुदळी)
गुदा–स्त्री० [स० गुदं] १ मल द्वार, गुदा । २ अधोमुख ।
गुदाणौ (बौ)–क्रि० १ गोदना । २ चुभाना । ३ प्रेरित करना । ४ कुछ करने के लिए जोर देना ।
गुदावणौ (बौ)–देखो 'गुदाणौ' (बौ) ।
गुदियारौ–पु० एक प्रकार की घास ।
गुदी–स्त्री० १ पशुओ के चरने के बाद चारे का अवशिष्ट भाग । २ देखो 'एद्दी' ।
गुद्दी, गुद्धि–स्त्री० १ गूदा, सार, तत्व । २ गर्दन का पिछला भाग । ३ गर्दन के पिछले भाग के बाल । ४ हथेली का ऊपरी शिरा ।
गुधळक, गुधळकियौ–देखो 'गोधूलिक' ।
गुधळणौ (बौ)–देखो गुडळणौ' (बौ) ।
गुधळाणौ (बौ), गुधळावणौ (बौ)–देखो गुडळाणौ' (बौ) ।
गुनकळी–स्त्री० एक राग विशेष ।
गुनगुनौ–वि० [स० कदुष्ण] मामूली सा गर्म, हल्का उष्ण ।

गुनह–देखो 'गुनौ'।
गुनहगार–देखो 'गुनाहगार'।
गुनहगारी, गुनहरी–स्त्री०, [फा०] १ किसी अपराध के वदले दिया जाने वाला दण्ड। २ दोष, अपराध।
गुनागार–देखो 'गुनाहगार'।
गुनागारी–देखो 'गुनहगारी'।
गुनाढ्य–देखो 'गुणाढ्य'।
गुनाळी–स्त्री० १ प्रशसा, कीर्ति। २ गुण।
गुनाह–देखो 'गुनौ'।
गुनाहगार–वि० १ दोषी, अपराधी। २ पापी।
गुनाहगारी–देखो 'गुनहगारी'।
गुनाही–वि० १ दोषी, अपराधी। २ सजा याफ्ता।
गुनूं–देखो गुनौ'।
गुनेगारी–देखो 'गुनहगारी'।
गुनैगार–देखो 'गुनाहगार'।
गुनैगारी–देखो 'गुनहगारी'।
गुनौ–पु० [फा० गुनाह] १ अपराध, दोष। २ पाप। ३ गलती, भूल।
गुन्हगार–देखो 'गुनाहगार'।
गुन्हैगार–देखो 'गुनाहगार'।
गुन्हैगारी–देखो 'गुनहगारी'।
गुन्हौ–देखो 'गुनौ'।
गुपचुप–क्रि०वि० १ गुप्त रूप से। २ छुपे तौर पर। ३ चुपचाप। –पु० १ गुप्त वात, रहस्य की वात। २ गुप्तगू।
गुपत–वि० [स० गुप्त] १ छुपा हुआ, गुप्त। गोपनीय। २ छुपाने लायक। ३ अदृश्य। ४ ढका हुआ, ढका रहने वाला। ५ जुडा हुआ। ६ सुरक्षित। –पु० १ एक प्राचीन राजवश। २ वैश्यो के नाम के साथ लगने वाला शब्द। —**अग**–पु० अघोअग, गुप्ताग। कछुआ, कमठ। —**कासी**–पु० हरिद्वार व वद्रीनाथ के बीच का तीर्थ स्थान। —**दान**–पु० गुमनाम से किया जाने वाला दान। —**मार**–पु० आन्तरिक चोट। छल, धोखा।
गुपता–स्त्री० [स० गुप्ता] १ सुरति छिपाने वाली नायिका। २ रखैल स्त्री।
गुपतिपचअग–पु० कछुआ।
गुपती, गुपत्तिय, गुपत्ती–क्रि०वि० गुप्त रूप से। –स्त्री० शस्त्र विशेष। देखो 'गुपत'।
गुप्त–वि० अदृश्य, छुपा हुआ। —**गगा**–स्त्री० एक पौराणिक नदी। —**चर**–पु० जासूस।
गुफा–स्त्री० [स० गुहा] १ जमीन या पहाड के अन्दर का अधकार युक्त गड्ढा। कदरा। २ छिपाव दुराव। ३ हृदय। ४ बिल।
गुफतगू–स्त्री० [फा०] १ गुप्त वार्त्ता, मत्रणा। २ गोपनीय वात। ३ गुपचुप।
गुफागुथ्थ–क्रि०वि० १ दृढ आलिंगन पूर्वक। २ गुत्थमगुत्था।
गुबार, गुब्बार–पु० [अ०] १ गर्द, धूल। २ आक्रोश, आवेश, जोश। ३ मन मे दबी वात। ४ फुलाव।
गुब्बारौ–पु० [अ० गुबारा] १ हवा या गैस भरी हुई रबर की थैली। २ धूल आदि का गोट। ३ भेद, रहस्य।
गुमानणी–स्त्री० [स० गो + विभाजन] पृथ्वी के विभाग।
गुम–पु० १ गर्व, घमड। २ ज्ञान, जानकारी, पता। ३ रहस्य। –वि० १ अप्रकट, गुप्त। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ। ४ अलोप अदृश्य। —**नाम**–क्रि०वि० विना नाम के। नामरहित। —**नामखत**–पु० वह खत जिसमे ऋण दाता का नाम न हो।
गुमटी–स्त्री० १ इमारत के ऊपर का गोल गुबज, गुवद २ इसी प्रकार का श्मशान मे वना स्मारक।
गुमर–पु० १ गर्व, घमड। २ मन मे छिपा क्रोध। ३ कानाफूसी। ४ देखो 'घूमर'।
गुमराह–वि० [फा०] १ भ्रमित। २ भटका हुआ। ३ कुपथ गामी। ४ भूला हुआ।
गुमराही–स्त्री० [फा०] १ गुमराह होने की अवस्था या भाव, पथ भ्रष्टता २ भटकाव।
गुमसुम–वि० [फा० गुम+अनु. सुम] १ अवाक्, स्तब्ध। २ विना हिले डुले। ६ विल्कुल चुपचाप।
गुमान–पु० [फा० गुमान] १ गर्व, घमड। मान। २ गौरव।
गुमानी, (डौ)–वि० १ अहकारी, घमडी। २ मान करने वाला। –पु० एक प्रकार का घोडा।
गुमाणौ, (बौ)–क्रि० १ खोना, खो देना। २ गायब करना, चुराना। ३ व्यर्थ जाने देना।
गुमास्तौ–पु० [फा० गुमाश्ता] व्यापारी का मुनीम।
गुमी–स्त्री० एक प्रकार की वीणा।
गुमेज–पु० गर्व, घमड, अहम्। अभिमान।
गुम्मज–देखो 'गुबज'।
गुम्मर–१ देखो 'गुमर'। २ देखो 'घूमर'।
गुरउ–देखो 'गराडौ'।
गुरडौ–देखो 'गुडी'।
गुरमत्तर, (त्र)–देखो 'गुरुमतर'।
गुर–देखो 'गुरु'।
गुरगळ, गुरगमि–देखो 'गरगम'।
गुरमळ–पु० एक पक्षी विशेष।

गुरगावी–स्त्री० एक प्रकार का देशी जूता ।
गुरड–पु० १ रग विशेष का घोडा । २ देखो 'गरुड' । ३ देखो 'गुराडौ' ।
गुरड़धज–देखो 'गरुडध्वज' ।
गुरडा–देखो 'गरुडा' ।
गुरडासण, (न)–देखो 'गरुडासन' ।
गुरडेस–देखो 'गरुड' ।
गुरड़ौ–पु० १ गरु । २ एक रग विशेष का घोडा । ३ देखो 'गुरड' । ४ देखो 'गरुडौ' ।
गुरज–पु० [फा० गर्ज] १ गदा जैसा शस्त्र । २ सोंटा । ३ कोट या शहर की प्राचीर की बुर्ज ।
गुरजणकुत्तौ–पु० एक प्रकार का कुत्ता ।
गुरजदार, गुरजबरदार–पु० गुर्ज रखने वाला योद्धा या सिपाई ।
गुरजमार–पु० गुर्ज धारी मुसलमान फकीर ।
गुरजर–पु० [स० गुर्जर] १ गुजरात प्रान्त । २ एक राजपूत वश । ३ एक जाति या वर्ग ।
गुरजरी–स्त्री० [स० गुर्जरी] १ गुजरात प्रान्त की स्त्री । २ गुजर जाति की स्त्री । ३ एक रागिनी ।
गुरजी–वि० [फा० गुर्ज] १ जार्जिया नामक देश का कुत्ता । २ इस देश का निवासी । ३ सेवक, नौकर ।
गुरज्ज–देखो 'गुरज' ।
गुरड–१ देखो 'गुरड' । २ देखो 'गरुड' ।
गुरडि–१ देखो 'गरुड' । २ देखो 'गुडी' ।
गुरडी–स्त्री० १ गुड्डी, ऐंठन । २ कपट, छल ।
गुरड्ड–१ देखो 'गरुड' । २ देखो 'गरड्ड' ।
गुरडोदगार–पु० साभर का सीग ।
गुरणी–१ देखो 'गुणणी' । २ देखो 'गुराणी' ।
गुरभाई–पु० एक ही गुरु के शिष्य ।
गुरराणौ, (बौ)–क्रि० [स० घुरम्] १ क्रोध मे गुर्राना । २ गर्जना । ३ जोर की आवाज करना ।
गुरव–देखो 'गउरउ' ।
गुरवादित्य–पु० सूर्य और वृहस्पति एक ही राशि मे आने की दशा ।
गुरवार–देखो 'गुरुवार' ।
गुरसा–स्त्री० श्यामा चिडिया ।
गुरांजणी–स्त्री० [स० गडु अजनी] आंख की पलक पर होने वाली फुसी ।
गुरांणी–स्त्री० गुरुपत्नी ।
गुरासा–पु० [स० गुरु] १ गुरुजी । २ जैन यति ।
गुराड, (डौ)–पु० (स्त्री० गुराडी) अग्रेज, गोरा ।
गुराब, (बौ)–स्त्री० १ छोटी तोप । २ घोडे या ऊट से खीची जाने वाली तोप । ३ एक प्रकार की नाव, नौका ।
गुरावौ–देखो 'गोरावौ' ।
गुरिज–पु० [स० गुरूर्ज] १ हाथी । २ गदा । ३ गुरज ।
गुरु–पु० [स०] १ दीक्षा देने वाला आचार्य, मन्त्रदाता । २ शिक्षक, अध्यापक । ३ माता-पिता । ४ वृद्ध । ५ शासक, अध्यक्ष । ६ देवाचार्य, वृहस्पति । ७ नये सिद्धान्त का प्रचारक, प्रवर्तक । ८ पुष्य नक्षत्र । ९ ग्रह । १० दो मात्राएँ । ११ यज्ञोपवीत सस्कार कराने वाला । १२ गायत्री मन्त्र का शिक्षक । १३ गणित आदि की वह प्रणाली जिससे हल निकाला जाता है । १४ ब्रह्मा । १५ विष्णु । १६ शिव । १७ ब्राह्मणो की एक जाति जो चमारो के विवाह आदि का कार्य करवाती है । १८ तीन की सख्या※ । –वि० १ भारी, वजनी । २ महान । ३ दीर्घ । ४ श्रेष्ठ । ५ क्लिष्ट । ६ प्रचण्ड । ७ सम्मानित । ८ गरिष्ठ । ९ प्रिय । १० अहंकारी । —**कुडळी**–स्त्री० ज्योतिष के अनुसार एक चक्र । —**कुळ**–पु० शिक्षा देने का स्थान । विद्यालय । —**गधरव**–पु० इद्रजाल के छ भेदो मे से एक । —**गम**–पु० गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान, उपदेश, गुरु शिक्षा, तत्त्वज्ञान, रहस्य । —**घंटाळ**–वि० महान धूर्त, निपट मूर्ख । —**घ्न**–वि० गुरुघाती । —**जन**–पु० गुरु, माता-पिता आदि । —**दक्षिणा, दखणा, दखिणा, दछणा**–स्त्री० शिक्षा के बदले गुरु को दी जाने वाली भेंट । —**दैवत**–पु० पुष्य नक्षत्र । —**द्वारौ**–पु० गुरु गृह । —**पूनम**–स्त्री० आषाढ मास की पूर्णिमा । —**मतर, मत्र**–पु० गुरु द्वारा दी जाने वाली शिक्षा, गायत्री मत्र । —**मुख**–वि० याद कठस्थ । —**मुखी**–स्त्री० १ पजाबी भाषा । २ इस भाषा की लिपि । ३ कंठस्थ । ४ आत्मज्ञानी । —**वार, बासर**–पु० बृहस्पति वार । —**संथा**–स्त्री० गुरु से प्राप्त शिक्षा, ज्ञान ।
गुरुअत–वि० महान, बडा ।
गुरुच–स्त्री० [स० गुडूची] गिलोय ।
गुरुड–देखो 'गरूड'
गुरुदत्त–पु० दत्तात्रेय ।
गुरुभ–पु० [स० गुरुभ] १ पुष्य नक्षत्र । २ मीन राशि । ३ धन राशि ।
गुरू–देखो 'गुरु' ।
गुरूप–पु० दल, झुण्ड, समूह, सघ ।
गुलंबर–पु० द्वार पर त्रिभुजाकार बना आतरिक ताखा ।
गुळ–पु० गुड ।
गुल–पु० [फा०] १ गुलाब का पुष्प । २ चिह्न, दाग । ३ पुष्प, फूल । ४ दीपक की बत्ती का जला हुआ अश । ५ चिलम की तंबाखु की राख । ६ किसी चीज पर बना भिन्न रग का कोई गोल निशान । –वि० बद । लुप्त ।

गुलग्रनार–पु० एक प्रकार का पुष्प।
गुलग्रब्बास–पु० वर्षा ऋतु मे होने वाला लाल पीले रग के फूलो का पौधा।
गुलग्रसरफी–पु० एक प्रकार का पीले रग का फूल।
गुलकंद–पु० गुलाब के फूल व शक्कर से बनी एक ठण्डी ग्रौषधि।
गुलक–देखो 'गोलक'
गुलकागडी–स्त्री० सफेद, लाल व काले धब्बो वाली बकरी।
गुलकारस–पु० मोती। —उद्भव–पु० हीरा। मोती।
गुलक्यारी–स्त्री० फूलो की क्यारी
गुलगचियौ–देखो 'गुलगुचियौ'।
गुळगलौ–पु० १ एक प्रकार का घोडा। २ एक खाद्य पदार्थ विशेष।
गुलगांठ–स्त्री० ग्रधिक खिंची या कसी हुई गांठ।
गुलगीर–पु० चिराग का गुल काटने की कैंची।
गुलगचियौ–पु० १ चिकना गोल कंकर। २ छितराने वाला एक कटीला पौधा।
गुलगुली–देखो 'गिलगिली'।
गुलगुलौ–पु० गुड व ग्राटे का मीठा पकोडा, पूग्रा।
गुलचियौ–पु० गोता डुबकी।
गुलछुररा–स्त्री० ऐश ग्राराम। शौक-मौज।
गुलजार–पु० उद्यान, वाटिका। –वि० १ हरा-भरा। २ ग्रानन्दयुक्त। ३ चहल-पहल से परिपूर्ण। ४ ग्राबाद।
गुलजारू–पु० फूल, पुष्प।
गुलदस्तौ–पु० [फा० गुलदस्त] १ फूलो का गुच्छा। २ गमला। ३ एक प्रकार का घोडा।
गुलदान–पु० [फा० गुलदान] फूल रखने का पात्र, गमला।
गुलदाउद–पु० एक रग विशेष का घोडा।
गुलदाउदी–स्त्री० एक प्रकार की फुलवार।
गुलदार(रौ)–स्त्री० [फा०] १ एक रग विशेष का घोडा। २ सपेद कबूतर।
गुलदुपहरिया–स्त्री० एक पौधा विशेष।
गुलनरगस (गिस)–स्त्री० [फा०] एक लता विशेष।
गुलनार–पु० [फा०] १ ग्रनार का फूल। २ गहरा लाल रग।
गुलफानूस–पु० एक वृक्ष विशेष।
गुलबदन–पु० एक कीमती रेशमी वस्त्र।
गुलमड–पु० एक पौधा व उसका फूल।
गुलम–पु० [सं० गुल्म] १ झाडी, झुरमुट। २ वन, जगल। ३ जड से फलने वाला पौधा। ४ एक रक्षक दल विशेष। ५ दुर्ग, किला। ६ पुलिस चौकी। ७ घाट। ८ प्लीहा। ९ ग्राभूषणो की खुदाई का काम। १० ऐसी खुदाई का ग्रौजार।
गुळमट, (मटियौ)–पु० सीने तक घुटने समेट कर सोने का एक ढग।
गुलमवाय–पु० घोडे का एक रोग विशेष।
गुलमेहंदी–स्त्री० ग्राश्विन मास मे फलने वाला एक पौधा व इसका फूल।
गुलरगदार–वि० गुलाब के फूल के रग का।
गुळराब–स्त्री० गुड की मीठी राबडी।
गुलरि, (री)–पु० गूलर का वृक्ष।
गुळरोवाढ़–शस्त्र का पैना भाग।
गुललजा–स्त्री० सुन्दर स्त्री।
गुळवाड, (डि)–स्त्री० गन्ने की फसल, गन्ना।
गुलसन–पु० [फा० गुलशन] बाग, उद्यान, वाटिका।
गुलसफा–स्त्री० रात मे फूलने वाला एक छोटा पौधा।
गुलसरसक–पु० एक प्रकार का घोडा।
गुलहजारी–पु० १ एक फूलदार पौधा, गेंदा, हजारा। २ एक प्रकार का घोडा।
गुळांच (चौ)–स्त्री० १ कलाबाजी, कुलाच। २ छलाग।
गुलाम–पु० [ग्र० गुलाम] १ खरीदा हुग्रा नोकर। २ सेवक, दास। ३ ताश का एक पत्ता। ४ लडका, बालक। ५ परतन्त्र, पराधीन व्यक्ति।
गुलामी–स्त्री० [ग्र०] १ दासता, नौकरी। २ परतन्त्रता, पराधीनता।
गुळाच–देखो 'गुलाच'।
गुलाब–पु० [फा०] १ सुगन्धित फूलो का एक कटीला पौधा। २ पौधे का फूल। ३ तलवार की एक मूठ विशेष। —जळ–पु० गलाब के फूलो का ग्रर्क। —जामु, जामुन–पु० खोए व मेदे के योग से बनी एक मिठाई। —ताळू–पु० एक प्रकार का हाथी। —पास–स्त्री० गुलाब जल का पात्र।
गुलाबबाई–स्त्री० करनी देवी की बड़ी बहन।
गुलाबी–वि० [फा०] १ गुलाब के रग का। २ हल्का या फीका लाल। –पु० एक प्रकार का घोडा।
गुलाल–स्त्री० [फा० गुल्लाला] १ एक प्रकार का लाल चूर्ण जो होली या मागलिक ग्रवसरो पर एक दूसरे पर डाला जाता है। २ महीन धूलि, गर्द। ३ एक प्रकार का लाल पुष्प। ४ रग विशेष का घोडा।
गुलाला–स्त्री० सोने-चादी के ग्राभूषणो पर की जाने वाली खुदाई।
गुलालौ–वि० गुलाल सबधी, गुलाल के रग का।
गुलिक–स्त्री० गुटिका।

गुलियल्ल, गुली–स्त्री० १ नील का पौधा या इस पौधे से बनने वाला रग। २ बडे कान की भेड । ३ लहसुन का बीज।

गुलीडडौ–पु० [स० कीलदड] एक प्रकार का देशी खेल।

गुलीबद–पु० [स० गलबंध] १ गले का एक आभूपरा विशेष। २ सर्दी से बचाव के लिए कान पर डाला जाने वाला वस्त्र, मफलर।

गुलीबावळी–स्त्री० एक प्रकार का बबूल।

गुळेचा, गुलेंटौ–स्त्री० १ कुलाच। २ डुबकी, गोता।

गुळेडौ–पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

गुलेल–स्त्री० [फा०-गिलूल] १ छोटे पक्षियो का ककर से शिकार करने की छोटी कमान। २ गहरा आसमानी रग। —ची–पु० गुलेल से शिकार करने वाला व्यक्ति।

गुलेलौ–पु० [फा० गुलूला] गुलेल से चलाई जाने वाली मिट्टी की गोली।

गल्या–पु० बीज।

गुल्लाली–पु० [फा० गुलनाला] पोस्त के पौधे के समान एक पौधा। इस पौधे का लाल फूल।

गुल्ली–स्त्री० चार या पाच इच की काष्ठ की कीली जो खेलने के काम आती है।

गुल्लौ–पु० १ ताश का गुलाम। २ सर्दी की खीज मे ऊट के मुह से निकले वाला गुल्ला। ३ देखो 'गोलौ'।

गुवाड (ड़ी)–१ देखो 'गवाड'। २ देखो 'गवाडी'।

गुवार–१ देखो 'गवार'। २ देखो 'गवार'।

गुवारफळी–देखो 'गवारफळी'।

गुवारवा–पु० वह खेत जिसमे ग्वार बोया गया हो।

गुवाळ, गुवाळियौ, गुवाळौ–देखो 'गवाळ'।

गुवाळी–देखो 'गवाळी'।

गुवाणौ (बौ), गुवावणौ (बौ)–देखो 'गवाणौ' (बौ)।

गुविंद, (दौ)–देखो 'गोविंद'।

गुसट–देखो 'गोस्ठी'।

गुसळ–देखो 'गुस्ल'।

गुसळखांनौ–पु० [फा० गुस्लखान] स्नानागार।

गुसाई, गुसाइउ–देखो 'गोस्वामी'।

गुसैल–वि० क्रोधी स्वभाव वाला।

गुसौ–देखो 'गुस्सौ'।

गुस्ल–पु० [अ०] स्नान, मज्जन। —खांनौ–पु० स्नानागार।

गुस्साळ, गुस्सेल(स्सैल)–देखो 'गुसैल'।

गुस्सौ–पु० [अ० गुस्सा] १ क्रोध, रोष। २ जोश, आवेश।

गुह–पु० [स० गुह] १ स्वामिकार्तिकेय। २ घोडा। ३ निषादराज। ४ विष्णु। ५ कुबेर। ६ देखो 'गुहा'। ७ देखो 'गूह'।

गुहछठ–स्त्री० अगहन शुक्ला षष्ठी तिथि।

गुहराज–पु० निषादराज।

गुहाजणौ–देखो 'गुराजणौ'।

गुहा–स्त्री० गुफा, कदरा।

गुहाचर–पु० ब्राह्मण।

गुहिक–स्त्री० [स० गुह्यक] एक देव जाति, यक्ष।

गुहियण–देखो 'गुणिजण'।

गुहिर गुहिरइ (ई) गुहीर–वि० १ गहरा, गंभीर। २ भारी। ३ देखो 'गहीर'। –पु० २४ मात्रा का एक छद।

गुह्यक–पु० [स०] कुबेर के खजाने का रक्षक एक यक्ष। —ईश्वर, पति–पु० कुबेर।

गूंगट (टौ)–देखो 'घूंघट'।

गूंगल, (लियौ, लौ)–वि० (स्त्री० गूगली) गूगा, मूक। –पु० १ गोबर का एक कीड़ा, जिसके आठ पांव व दो पर होते है। २ सर्दी मे मस्ती भरा ऊट। ३ गेहूं की फसल का एक रोग। ४ एक छोटा जतु। ५ नाक का मैल।

गूगिका–स्त्री० एक देवी विशेष।

गूगियौ–देखो 'गूंगौ'।

गूगी–स्त्री० १ एक छोटा जतु। २ मूक स्त्री। ३ दो मुंहा सर्प।

गूंगौ–वि० (स्त्री० गूगी) १ मूक, गूगा। २ बोलने मे असमर्थ। -पु० १ नाक का कीट। २ इमली का बीज।

गूंघट (टौ)–देखो 'घूंघट'।

गूंघळौ–वि० १ मस्ती मे आया हुआ वह ऊट जिसका गलसुआ न निकलता हो। २ ऊट।

गूछळ (ळौ)–वि० मूर्छित। –पु० जेवडी का पुलिदा, गड्डी।

गूंछी–स्त्री० बैलो का एक रोग।

गूंज (स)–स्त्री० [स० गुंज] १ गुंजन, गुजार। २ तेज आवाज, झन्कार। ३ देर तक सुनाई देने वाली ध्वनि। ४ गुप्त रूप से बचाया या सचित धन। ५ गुप्त बात। ६ सलाह परामर्श। ७ इरादा, विचार। ८ अगूठी (मेवात)।

गूजणौ (बौ)–क्रि० [स० गुजन] १ गुनगुनाना, भनभनाना। २ तेज आवाज होना। ३ प्रतिध्वनित होना। ४ गर्जना, दहाडना। ५ जोश मे आना।

गूजा–स्त्री० दो तख्तो को जोडने के लिए लगाई जाने वाली कील।

गूजाणौ (बौ), गूजावणौ (बौ)–क्रि० १ तेज आवाज करना। २ जोर से बजाना। ३ प्रतिध्वनित करना। ४ गर्जाना। ५ जोश दिलाना।

गूजियौ–देखो 'गूजौ'।

गूंजी–स्त्री० [सं० गुह्य] १ गुप्त रूप से संचित धन । २ एक प्रकार की मिठाई ।

गूंजो, गूंझो–पु० १ जेब, पाकेट । २ सूखा मेवा । ३ एक प्रकार की मिठाई ।

गूंझ–देखो 'गूंज' ।

गूंट–देखो 'घूंट' ।

गूंठ–पु० १ मूल-स्थान । २ आधार । ३ तना ।

गूंठड़ो–पु० १ अंगुष्ठ । २ तला । ३ देखो 'घूंघट' ।

गूंड–पु० [सं० गूढ] १ पेड के तने के नीचे का भाग । २ मूल, जड । ३ मूल स्थान ।

गूंडर–पु० १ तम्बू, शामियाना । २ देखो 'गूडर' ।

गूंडळणो (बो)–देखो 'गुडळणो' (बो) ।

गूंडेळ–पु० काष्ठ का गुटका ।

गूंडो–पु० १ समूह, दल, झुंड । ३ देखो 'गुढो' । ३ देखो 'गुंडो' ।

गूंढ, (ढो)–देखो 'गूंड' ।

गूंण, (ती)–स्त्री० [सं० गोणी] १ बोरी बोरा । २ गधे या बैल की पीठ पर सामान भरकर लादा जाने वाला बोरा विशेष ।

गूंणो–पु० १ मूंग, मोठ आदि पौधों के सूखे डठल । २ देखो 'गूणो' ।

गूंत, (तो)–पु० १ गोमूत्र । २ प्रसव के बाद गाय भैंस का पहली बार निकाला जाने वाला दूध ।

गूंथणो, (बो)–क्रि० [सं० ग्रथिन्] १ कई तागों को कलात्मक ढंग से परस्पर लपेटना, गूंथना । २ बुनाई करना । ३ जोडना । ४ पिरोना, तारबद्ध करना । ५ एक सूत्र में बांधना । ६ रचना, बनाना । ७ संवारना । ८ काव्य रचना करना ।

गूंथाणो, (बो)–क्रि० १ गूंथने का कार्य करवाना । २ बुनाई कराना । ३ जुडवाना । ४ तारबद्ध कराना । ५ एक सूत्र में बंधवाना । ६ रचवाना, बनवाना । ७ संवराना । ८ काव्य रचवाना ।

गूंथाळ–पु० १ गूंथने की क्रिया या भाव । २ गूंथने में दक्ष ।

गूंथावणो, (बो)–देखो 'गूंथाणो' (बो) ।

गूंद–पु० [सं० गूथ] १ वृक्ष के तने से निकलने वाला चिपचिपा तरल पदार्थ वृक्षों का निर्यास गोंद । २ मास-पिंड । ३ एक राजपूत वंश । —गरी–पु० एक प्रकार का पौष्टिक पदार्थ । एक प्रकार का गन्ना । —दानी–स्त्री० चिपकाने का गोंद रखने का पात्र ।

गूंदडो–१ देखो 'गूदडो' । २ देखो 'गूंद' ।

गूंदणो (बो)–क्रि० आटा आदि भिगोना ।

गूंदरो–देखो 'गूदरी' ।

गूंदळणो, (बो)–देखो गुदळणो (बो) ।

गूंदाळ–पु० मांस पिंड ।

गूंदाळक–पु० मांसाहारी प्राणी ।

गूंदिया–स्त्री० छोटी गूंदी के फल ।

गूंदी–स्त्री० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ इस वृक्ष का छोटा फल ।

गूंदो–पु० १ एक वृक्ष विशेष । २ इस वृक्ष का फल, लिसोडा ।

गूंधणो, (बो)–क्रि० आटा, मिट्टी आदि में पानी डाल कर मसलना, रौंदना ।

गूंधळणो, (बो)–देखो गुडळणो (बो) ।

गूंधळियो, गूंधळो–१ वह ऊंट जो 'खीज' में आया हुआ गलसूआ न निकाले । २ एक बरसाती कीट ।

गूंधाणो, (बो)–क्रि० गूंधने का कार्य कराना ।

गूंबड, (डी, डो), गुमड, (ड़ी, ड़ो)–देखो 'गूमडो' ।

गूंबाळो–पु० घोसला ।

गूंमर–१ देखो 'गुमर' । २ देखो 'घूमर' ।

गू–पु० [सं० गू] १ मल, विष्ठा, पाखाना । २ कूडा, कचरा । ३ मैल । ४ गंदगी ।

गूगरमाळ (ळा)–स्त्री० घुंघरू की माला ।

गूगरियो–पु० १ करील का फूल । २ छोटा घुंघरू ।

गूगरी–स्त्री० १ उबाले हुए गेहूं । २ एक प्रकार का कर जो कृषकों से अनाज के रूप में लिया जाता था । ३ कृषि पैदावार की एक निश्चित राशि जो बोये हुए अनाज के हिसाब से कर के रूप में ली जाती थी ।

गूगलिया (या)–स्त्री० हाथियों की एक जाति ।

गूगलीउ, गूगलीयो–पु० गूगलिया जाति का हाथी ।

गूगळो–वि० १ मट मैला । २ धुंधला । ३ अस्पष्ट, अस्वच्छ । –पु० दो गलसुओं का ऊंट ।

गूगस, (वाड़ो)–पु० १ बादलों से आच्छादित मौसम । २ बिना जल के बादल ।

गूगू (राजा)–पु० [सं० घूक] उलूकपक्षी, उल्लू ।

गूघर–देखो 'घूघर' । —माळ='गूगरमाळ' ।

गूघरियू (यो)–देखो 'गूगरियो' ।

गूघरी–देखो 'गूगरी' ।

गूजर (डो डौ)–पु० [सं० गुर्जर] (स्त्री० गूजरी डी, डो) १ एक हिन्दू जाति जिसके व्यक्ति खेती व पशु-पालन का कार्य करते हैं । २ तीसरे विवाह की स्त्री । —गौड़–पु० ब्राह्मणों का एक भेद । —पठाण–पु० मुसलमानों का एक भेद ।

गूजरात–देखो 'गुजरात' ।

गूजरी–स्त्री० [सं० गुर्जरी] १ अहीरनी, ग्वालिन । २ कलाई का आभूषण । ३ पैर का आभूषण विशेष । ४ एक राग विशेष ।

गूझ–स्त्री० [स० गुह्य] १ गुप्त मंत्रणा, सलाह । २ गुप्त बात । –पु० ३ शामियाना, तबू । ४ सधि स्थान की हड्डी ।
गूठलो–पु० पैरो की अगूठी (मेवात) ।
गूडण–वि० १ लुढकाने वाला, गिराने वाला । २ मारने वाला ।
गूडणो (बो)–क्रि० १ लुढकाना, गिराना । २ मारना । ३ गाडना ।
गूडर–पु० १ पीठ मे कटिप्रदेश के ऊपर का भाग । २ देखो 'गूडर' ।
गूडळ, गूडळियो–पु० १ मास सहित हड्डी जो खाते समय चूसी जाती है । २ हड्डी । ३ देखो 'गुडळ' । ४ देखो 'गुडळकियो' ।
गूडळो–वि० (स्त्री० गूडली) धूल से आच्छादित ।
गूडी–देखो 'गुडी' ।
गूढ़–पु० [स०] १ छायादार बडा वृक्ष । २ छिपने का स्थान । ३ गुफा । ४ स्मृति मे पाच प्रकार की साक्षियो मे से एक । ५ एक सूक्ष्मालकार । -वि० १ गुप्त । २ छुपा हुआ । ३ ढका हुआ । ४ गहन, गभीर । ५ अस्पष्ट । ६ सार गर्भित । ७ रहस्यमय । —**चर**–पु० चोर । —**पग, पथ, पद, पाद**–पु० सर्प, साप । मन । पगडडी । —**व्यग्य**–पु० लक्षणा शैली का वचन या वाक्य ।
गूढ़ा–स्त्री० पहेली ।
गूढ़ावाच–पु० मत्री ।
गूढ़ोक्ति–स्त्री० [स०] एक अलकार विशेष ।
गूढ़ोत्तर–पु० [स०] एक काव्यालकार विशेष ।
गूढ़ो–पु० [स० गूढ] १ वृक्ष का मूल । २ रक्षा स्थान, सुरक्षित स्थान ।
गूण (ती)–देखो 'गूण' ।
गूणियो–पु० १ रहट का बडा गड्ढा जिसमे बडा चक्र घूमता है । २ इस गड्ढे के किनारे लगा बडा पत्थर । ३ दूध दूहने या जल भरने का पीतल का पात्र विशेष ।
गूणी–स्त्री० १ चरस खीचते समय बैलो के चलने का स्थान । २ देखो 'गूण' ।
गूणो–पु० १ जनाने वस्त्रो की किनार पर लगाई जाने वाली गोट । २ देखो 'गूण' । ३ देखो 'गुणो' । ४ देखो 'गूणो' ।
गूथबत्थ, (गूथाबत्थर)–वि० गुत्थमगुत्थ ।
गूथण–स्त्री० १ गूथने की क्रिया या भाव । २ गूथने का ढग ।
गूथणो, (बो)–देखो 'गूथणो' (बो) ।
गूद–पु० [प्रा० गुत्त] १ माम । २ मास का गूदा, मज्जा । ३ गर्त, गड्ढा । ४ सन्यासियो का एक भेद ।
गूदड, गूदडियो, गूदडो–पु० १ फटा पुराना वस्त्र, चिथडा । २ ऐसे चिथडो को तह कर बनाया हुआ विस्तर । ३ चिथडो को जोड कर बनाया हुआ चोगा । ४ एक मोटे छिलके का नीबू । ५ सन्यासियो का एक भेद ।
गूदर, गूदरी–पु० मणिबध के आगे का भाग । –क्रि० वि० १ पास, निकट, समीप । २ देखो 'गूदडो' ।
गूदळणो, (बो)–देखो 'गुडळणो' (बो) ।
गूदळो–देखो 'गुदळो' ।
गूदाळ–देखो 'गूदाळ' ।
गूदाळक–देखो 'गूंदाळक' ।
गूदो–पु० फूलो का गूदा, मिगी । २ मास, मज्जा । ३ भेजा, मग्ज ।
गूधळणो, (बो)–देखो 'गुडळणो' (बो) ।
गूधळियो, गूधळो–वि० (स्त्री० गूधळी) धूलि आच्छादित ।
गूधोळ–स्त्री० धूलिकण ।
गूमड, (ड़ी, डो)–पु० १ कोई बडा फोडा । २ बडी ग्रंथि, गाठ । ३ चोट लगने से आने वाली सूजन ।
गूलर–पु० १ वट या पीपल जाति का एक वृक्ष विशेष । २ इस वृक्ष का फल । —**कबाब**–पु० मसालो के साथ भुनकर बनाया हुआ मास ।
गूलरियो–पु० गूलर का फल या इस फल का कीडा ।
गूलरो–पु० एक फल विशेष ।
गूली–स्त्री० आवड देवी की बहन ।
गूह–पु० [स० गूद] १ मास पिंड । २ देखो 'गुह' । ३ देखो 'गुप्त' । ४ देखो 'गू' ।
गेआळ–देखो 'गवाळ' ।
गेडो–पु० [स० गडक] भैंसे के आकार का एक जगली पशु जिसके चमड़े की ढालें बनती थी ।
गेती–स्त्री० जमीन खोदने की कुदाल ।
गेद–स्त्री० [स० गेदुक] १ रबर, कपडे आदि की खेलने की बडी गोली, दडी गेंद, बाल । २ इसी आकार की कोई वस्तु ।
गेंदवो–देखो 'गीदवो' ।
गेवर–पु० [स० गजवर] १ हाथी । २ घोडा ।
गेवार–पु० १ गंवार । २ ग्वार ।
गेवाळ–देखो 'गवाळ' ।
गे–पु० [स० ग+ई] १ सूर्य । २ कामजन्य प्रेम । ३ यमकानुप्रास । ४ मूर्ख व्यक्ति । ५ पाप । ६ छन्द । ७ गीत । ८ हाथी । ९ मल्हार राग ।
गेऊ–देखो 'गऊ' ।
गेऊआळ–देखो 'गवाल' ।
गेगरी–स्त्री० चने के पौधे पर लगने वाला डोडा जिसमे दाने पडते हैं ।
गेगरो, गेघर–पु० १ ज्वार का सिट्टा । २ ज्वार का मीठा पौधा । ३ चना ।

गेड, (ड़ो)–पु० १ घुमाव । २ चक्कर, फेरा । ३ पारी, अवसर, नम्बर । ४ कारण । ५ परिभ्रमण । ६ समूह, झुण्ड ।

गेडणौ, (बौ)–क्रि० १ चक्कर देना, फेरना । ३ अवसर देना । ३ घेरना । ४ गिराना ।

गेड–वि० आच्छादित । –पु० सोठा ।

गेडियौ, (डौ)–पु० १ डडा, सोठा । २ लाठी । ३ गेद का वल्ला । ४ एक शिरे से कुछ मुडी हुई छडी । ५ होकी । ६ जुलाहे के काम आने वाला डडा ।

गेडी, (ढ़ी)–स्त्री० १ वस्त्र या चमडे की गेडुरी । २ ऊन या सूत की गोल चकरी । ३ रहट की एक लकडी । ४ लाठी लकडी, डंडा, सोठा । ५ स्त्रियो के शिर का आभूषण, वोर के पीछे की नलिका ।

गेम–पु० पाप, दुष्कर्म ।

गेमर–देखो 'गैमर' ।

गेमी–वि० १ पापी, दुष्कर्मी । २ वागी, विद्रोही ।

गेय–वि० [स०] १ गेय, गाने योग्य । २ जानने योग्य ।

गेर–देखो 'गै'र' ।

गेरक–देखो 'गैरक' ।

गेरकी–स्त्री० आभूषण के किनारे पर लगने वाली सोने की गोल चकरी ।

गेरणी–स्त्री० छोटी चलनी ।

गेरणौ–पु० १ लोहे की बनी वडी चलनी । २ खलिहान मे अनाज साफ करने की तीलियो बनी वडी चलनी ।

गेरणौ, (बौ)–क्रि० १ छोडना, निस्सरित करना । २ गिराना । ३ सहार करना ।

गेरमोहल–देखो 'गैरमहल' ।

गेरियौ–देखो 'गै'रियौ' ।

गेरी–स्त्री० १ फाख्ता पक्षी । २ चमड़े की चकरी ।

गेरुम्रौ, गेरुवौ–वि० गेरुवा, भगवा । –पु० गेहू की फमल का एक रोग ।

गेरू, (रु)–पु० कडी व लाल मिट्टी के रूप मे होने वाला एक खनिज पदार्थ । –वि० भगवा गैरिक ।

गेरौ–पु० कबूतर ।

गेल–देखो 'गेलौ' ।

गेलड, (ड़ो)–पु० १ लम्वे पैरो वाला एक बडा जन्तु । २ पुनर्विवाहित स्त्री की पूर्व पति की सतान । –वि० पगला ।

गेलि–देखो 'केलि' ।

गेलौ–पु० १ मार्ग, रास्ता । २ राह, उपाय । ३ देखो 'गैलौ' ।

गेल्यौ–देखो 'गै'लौ' ।

गेवाळियौ, गेवाल्यौ–पु० [स० गोपाल] ग्वाला, चरवाहा ।

गेह–पु० [स० गृह] १ घर मकान, गृह । २ समूह, झुण्ड । ३ भण्डार । ४ देखो 'गै' । –पति–पु० घर का मालिक ।

गेहणी–स्त्री० [स० गृहिणी] घर की स्त्री, पत्नी, गृहलक्ष्मी ।

गेहर–देखी 'गै'र' ।

गेहरियौ (र्‌यौ)–देखो 'गै'रियौ' ।

गेहलौ–देखो 'गै'लौ' ।

गेहा गेहि–देखो 'गेह' ।

गेही–वि० घर का, घर सवधी । गृहस्थ ।

गेहू अन–पु० भूरे रग का एक भयकर विषधर साप ।

गेहूं, (गेहूंडौ)–पु० [स गोधूम] रवी की फसल मे होने वाला प्रसिद्ध अनाज, गेहू ।

गेहूंआळ–देखो 'गवाळ' ।

गै–पु० [स० गज] हाथी ।

गैगण–देखो 'गागडी' ।

गैडौ–देखो 'गेडौ' ।

गैण, ऐणाग, (यर)–पु० [स० गगन] गगन, आकाश ।

गै'णौ–देखो 'गहणौ' ।

गैती–देखो 'गेती' ।

गैद–पु० १ हाथी । २ देखो 'गेद' ।

गैदगडा–स्त्री० हाथियो की टोली, दल ।

गैदा–स्त्री० १ गेद । २ हजारा नामक पौधा व उसका फूल । ३ तोद ।

गैवाळ–वि० वडी तोद वाला ।

गैवर–देखो 'गेवर' ।

गैवार–देखो 'गवार' ।

गै–पु० १ हाथी, गज । २ आकाश । ३ शिव । ४ सूर्य । ५ शोक । ६ पलास । ७ गति, चाल । ८ शोभा, छटा । ९ गर्व घमड । १० मजिल । ११ मकान । १२ मकान का हिस्सा । १३ मकान की ऊचाई ।

गैगमणि (णी)–देखो 'गयगमणी' ।

गैगाट, (घाट)–पु० तेज जल प्रवाह की ध्वनि ।

गैघटाळ, गैघट्ट–स्त्री० [स० गज-घटा] १ हस्ती सेना । २ गजदल । ३ वहुलता । ४ खुशी ।

गैघूबणौ, (बौ), गैधूंमणौ, (बौ)–क्रि० मडराना, उमडना, छा जाना ।

गैजुह, (जूह)–स्त्री० [स० गज-व्यूह] १ हस्ती सेना । २ हस्ती सेना की व्यूह रचना ।

गैडबर–पु० [सं० गगन-आडवर] विना जल का वादल ।

गैडसणि, (णी)–वि० वीर, वहादुर ।

गैणग (णि)–देखो 'गगन' ।

गैण, (क)–पु० १ गगन । २ देखो 'ग्रहण' ।

गै'णकियौ (कौ)–देखो 'गहणौ' ।

गैणग–देखो 'गगन' ।

गैणगडडू–वि० लम्बा और पतला, लम्बोतरा ।
गैणबटी–पु० सूर्य ।
गैणमगी–वि० आकाशचारी । –पु० आकाश मार्ग ।
गैणमणि, (मिण)–पु० सूर्य ।
गैणाग, गैणाण गैणाक, (ग, गि)–पु० गगन ।
गैणाघड–पु० स्वर्णकार ।
गैणाण, गैणारव गैणारू, गैणाळो–देखो 'गगन' ।
गैं'णू, गैं'णौ–देखो 'गहणौ' ।
गैतूळ, (ळौ)–पु० १ आंधी, तूफान । २ सेना, फौज । ३ गर्द, धूल । ४ समूह । ५ वायु, हवा ।
गैदंत–पु० १ हाथी का दांत । २ हाथी ।
गैदंतडौ, गैदंतौ–पु० सूअर ।
गैब–वि० [अ०] अप्रत्यक्ष, परोक्ष । –क्रि० वि० अचानक ।
गैबकी–क्रि० वि० सहसा, यकायक ।
गैबवाणी (वाणी)–स्त्री० अदृश्य आवाज, आकाशवाणी ।
गैबांणी गैबाऊ–वि० १ गुप्त, छुपा हुआ । २ परोक्ष, अप्रत्यक्ष । ३ अचानक होने वाला ।
गैबाबळ–पु० गुप्त गोला ।
गैबी–वि० [अ० गैब] १ गुप्त, छुपा हुआ । २ अज्ञात । ३ अबोधगम्य । ४ अपराधी । –क्रि० वि० सहसा अचानक ।
गैभूळौ–वि० (स्त्री० गैभूली) १ गाफिल । २ अस्थिरचित्त ।
गैमर–पु० [सं० गजवर] हाथी ।
गैया–स्त्री० गाय ।
गैर–वि० [अ०] १ पराया । २ अन्य, दूसरा । ३ अपरिचित । ४ विरुद्ध, खिलाफ । ५ अनुचित । –स्त्री० निन्दा । –अव्य० वगैरह, इत्यादि ।
गै'र–स्त्री० १ होली के दूसरे रोज खेला जाने वाला पानी या गुलाल आदि का खेल । २ डफली पर होली के गीत गाने वाला दल । ३ दोनो हाथो मे डडे लेकर घूमर नाचने का खेल । ४ मस्ती, उद्दण्डता ।
गैरक–देखो 'गैरिक' ।
गैरगडी–स्त्री० एक देशी खेल ।
गैरचाल–स्त्री० १ कुमार्ग । २ व्यभिचार । ३ कपट चाल, धोखा ।
गैरजबान–स्त्री० अशिष्ट भाषा । अपशब्द ।
गैरत, (थ)–पु० [सं० गीरथ] १ आकाश, गगन ।–स्त्री० [अ०] २ लज्जा, शर्म । ३ स्वाभिमान ।
गैरमनकूला–वि० [अ०] स्थिर, अचल, स्थावर ।
गैरमहल–पु० [अ०] १ पराया गृह या महल । २ केलिगृह, जनाना महल ।
गैरमामूली–वि० [अ०] १ असाधारण, विशेष । २ नित्य-नियम से विपरीत ।
गैरमुनासिब–वि० अनुचित ।
गैरमुमकिन–वि० असभव ।
गैरव–पु० [सं० गजवर] हाथी, गज ।
गैरवाजिब–वि० अयोग्य । अनुचित ।
गैरसाली–वि० १ कपटपूर्ण, गन्दी । २ देखो 'फैरसाली' ।
गैरहाजरी–स्त्री० [अ० गैरहाजिरी] अनुपस्थिति ।
गैरहाजिर–वि० अनुपस्थित ।
गैराई–स्त्री० गहरापन, थाह ।
गैरिक, (रुक)–पु० [सं० गैरिक] १ सोना । २ गेरू ।
गैं'रियौ–वि० होली खेलने वाला, होली के गीत गाने वाला ।
गैरी–पु० १ शत्रु, दुश्मन । २ दुष्ट पुरुष ।
गैं'रौ–वि० (स्त्री० गै'री) १ अथाह, गम्भीर । २ अधिक, पर्याप्त । ३ गहरा ।
गैळ–स्त्री० १ नशा, मदहोशी । २ बेहोशी । ३ नींद । ४ गफलत ।
गैल–स्त्री० १ राह, मार्ग । २ पीछा । –क्रि० वि० पीछे, बाद मे ।
गैळक–वि० १ मदहोश, बेहोश । २ लापरवाह । ३ गाफिल ।
गैलड–देखो 'गेलड' ।
गैलणी–वि० (स्त्री० गैलणी) पागल, मूर्ख, नादान ।
गैलाइत–पु० राहगीर, पथिक ।
गैलाई–स्त्री० पागलपन, नादानी ।
गैलागीर–पु० राहगीर, पथिक ।
गैलियौ–१ देखो 'गैलौ' । २ देखो 'गैं'लौ' ।
गैळीजणौ, (बौ)–क्रि० मादक पदार्थ या विष के प्रभाव से बेहोश होना ।
गैलेरी–स्त्री० [अ०] बाहरशाली ।
गैलौ–पु० १ रास्ता, मार्ग । ३ गली । ३ उपाय । ४ पीछा, अनुगमन । –क्रि० वि० पीछे ।
गैं'लौ–वि० (स्त्री० गै'ली) १ पागल, मूर्ख । २ नासमझ, नादान । ३ मदहोश ।
गैव–देखो 'गैब' ।
गैवर, (रो)–पु० [सं० गजवर] हाथी, गज ।
गैवरियौ–१ देखो 'गै'रियौ' । ३ देखो 'गैवर' ।
गैस–स्त्री० [अ०] १ वायु मण्डल मे व्याप्त एक अगोचर-सूक्ष्म द्रव्य, वाष्प । २ अपानवायु । ३ पेट का वात रोग । ४ किसी पदार्थ की तीव्रगंध । ५ घुटन ।
गैसोत–वि० वर्णसकर, दोगला ।
गैहणलियौ–देखो 'गहणौ' ।
गैहणौ–देखो 'गहणौ' ।
गैहवत–पु० गृहस्थ, गृहस्थी ।

गोंगरो–१ देखो 'गागरो' । २ देखो 'गागडौ' ।
गोंगो–पु० खिडकी पर लगने वाला अर्धचन्द्राकार पत्थर ।
गोंबळ–देखो 'कदळ' ।
गो–पु० [स०] १ पशु, मवेशी । २ जल । ३ गौ का दूध । ४ साड । ५ बैल । ६ रोम, लोम । ७ नेत्र । ८ चन्द्रमा । ९ घोडा । १० सूर्य । ११ नक्षत्र । १२ आकाश । १३ इन्द्र का वज्र । १४ स्वर्ग । १५ तीर, बाण । १६ हीरा । –स्त्री० १७ वाणी । १८ सरस्वती । १९ माता । २० गौ । २१ इन्द्रिय । २२ वृष राशि । २३ नौ की सख्या । २४ किरण । २५ दिशा । २६ पृथ्वी । –अव्य० [फा०] यद्यपि, अगरचे ।
गो'–देखो 'गोह' ।
गोअम–देखो 'गोतम' ।
गोइतरो–पु० (स्त्री० गोइतरी) १ छिपकली की जाति का एक जतु । २ गाय का बछडा ।
गोइद–पु० [स० गो + इन्द्र] १ श्रेष्ठ, हाथी, ऐरावत । २ देखो 'गोविंद' ।
गोइ–देखो 'गोई' ।
गोइडो–पु० १ विष खोपरा नामक जतु । २ पशुओ का खून चूसने वाला कीडा । ३ देखो 'गोयडौ' ।
गोइयाळ–देखो 'गोहीयाळ' ।
गोइलौ–देखो 'गोयलौ' ।
गोई तरी–स्त्री० गाय ।
गोई–पु० १ घुमाव । २ मोड । ३ चक्कर । ४ छल, कपट । ५ कूए पर चरस खाली करने वाला व्यक्ति । ६ शत्रु, दुश्मन ।
गोईडौ–देखो 'गोइडौ' ।
गोईतरी–देखो 'गोई तरी' ।
गोऊ–देखो 'गऊ' ।
गोओ–पु० १ मस्ती चढे ऊट के मुह से निकलने वाली गलसु डी । २ देखो 'गोवौ' ।
गोकन्ह गोकरण–पु० [स० गोकर्ण] १ बनास नदी के तट पर पहाडी शिखर पर स्थित शिव मदिर । २ मालाबार के पास स्थित एक शिव मूर्ति । ३ शिव का एक गण । ४ गाय का कान । ५ नृत्य मे एक प्रकार का हस्तक । ६ खच्चर । ७ साप । ८ बालिश्त । ९ अवध प्रात मे गोरखनाथ का एक तीर्थ ।
गोकळ–देखो 'गोकुळ' । —**नाथ**='गोकुळनाथ' ।
गोकळेस–पु० [स० गोकलेश] श्रीकृष्ण ।
गोकुळ–पु० [स० गोकुल] १ जमुना किनारे बसा ब्रज का एक गाव जहा श्रीकृष्ण ने बाल लीला की थी । २ गायो का समूह । ३ गोशाला । —**चद, चद्र, नाथ**–पु० श्रीकृष्ण । ईश्वर ।
गोकुळस्थ–वि० १ गोकुल मे स्थित । २ गोकुलवासी ।
गोकुळेसरजी–पु० १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।
गोखबर–पु० जालीदार वस्त्र ।
गोख (डौ)–पु० [स० गवाक्ष, गोक्ष] १ वातायन । २ झरोखा । ३ आख, का नाक की ओर का कोना । ४ कान का विवर । ५ डिंगल का एक गीत छद । ६ मीमा, हद ।
गोखरु(रू)–पु० [स० गोक्षुर] १ वर्षा ऋतु मे होने वाला एक पौधा । २ इस पौधे का कटीला फल । ३ इस फल के समान लोहे का एक काटा । ४ स्त्रियो का आभूषण विशेष । —**काटी**–स्त्री० जमीन पर छितरने वाला पौधा व इसका फल ।
गोखानौ–देखो 'गऊखानौ' ।
गोखौ–देखो 'गोख' ।
गोग–पु० १ झाग, फेन । २ साप, सर्प । —**घोडौ**–पु० वर्षा ऋतु मे होने वाला एक लबी टागो का कीट ।
गोगण–स्त्री० सर्पिणी, नागिन । –पु० गायो का झुण्ड, समूह ।
गोगरा–स्त्री० गगा की सहायक घाघरा नदी ।
गोगाआगळी–स्त्री० मध्यमा अगुली, मध्यमिका ।
गोगाजीरीमासी–स्त्री० छिपकली जाति का एक जतु ।
गोगानम–स्त्री० भादव कृष्णा नवमी तिथि ।
गोगापीर–देखो 'गोगौ' ।
गोगामेडी–स्त्री० गोगादेव का जन्म स्थान ।
गोगाराखडी–स्त्री० गोगापीर के नाम पर बाधा जाने वाला एक तान्त्रिक धागा ।
गोगी–स्त्री० १ मुह पर आने वाले झाग । २ देखो 'घुग्घी' ।
गोगोचर–पु० ईश्वर । श्रीकृष्ण ।
गोगौ–पु० १ ददोडा गाव के प्रसिद्ध गोगादेव चौहान जो पीर के रूप मे पूजे जाते हैं । २ इनके नाम का एक लोक गीत । ३ सर्प, साप ।
गोग्रास–पु० [स०] परोसी थाली मे से भोजन करने से पूर्व निकाला जाने वाला ग्रास ।
गोघड़–स्त्री० वैवाहिक रस्म के अनुसार बनाई जाने वाली पुतली ।
गोघडमिनौ (न्नौ)–पु० बडी बिल्ली ।
गोघाट–पु० जलाशयो का, पशुओ के पानी पीने का, घाट ।
गोघात–स्त्री० गौ हत्या, गौ-वध ।
गोघाती–वि० गौ हत्यारा । महापापी ।
गोघी–देखो 'घुग्घी' ।

गोघोख–पु० गोशाला ।

गोड़–पु० १ समूह, झुण्ड । २ नाश, सहार । ३ वीर हाक, ललकार । ४ प्रवाह की ध्वनि । ५ हाथी की चिंघाड । ६ मस्ती, उन्मत्तता ।

गोडणौ (बौ)–क्रि० १ हाथी का चिंघाडना । २ ललकारना । ३ प्रहार करना । ४ गिराना । ५ ध्वसकरना । ६ गुडाना । ७ मारना, संहार करना ।

गोडाण–स्त्री० लम्बे कद का एक पक्षी जिसका मास खाने मे स्वादिष्ट होता है ।

गोडारव–देखो 'गौडारव' ।

गोडींदौ–पु० [अ० गोइन्द] १ मुखबिर । २ गुप्तचर, भेदिया ।

गोडी–स्त्री० १ हाथी की चिंघाड । २ मस्ती, उन्मत्तता । ३ ध्वनि आवाज । ४ गर्जना ।

गोडीड़–वि० १ हृष्ट-पुष्ट, मोटा–ताजा । २ विशालकाय, दीर्घकाय ।

गोचणी (णौ)–स्त्री० गेहूं व चने का मिश्रण ।

गोचर–पु० [स०] १ गोचर भूमि, चारागाह । २ जिला या प्रान्त । ३ विभाग । ४ इन्द्रियो की पहुच के विषय । ५ पहुच, लक्ष्य । ६ पकड शक्ति । ७ प्रभाव, कावू । ८ दिग-मण्डल । ९ गगनमडल । १० नाम राशि के अनुसार निकाले हुऐ ग्रह योग । –वि० १ गौ का चरा हुआ । २ पृथ्वी पर घूमने वाला । ३ लक्ष्य के भीतर । ४ जानने योग्य ।

गोचरी–स्त्री० १ योग की एक मुद्रा विशेष । २ कपट से बचाया हुआ धन । ३ भिक्षावृत्ति । ४ जैन मुनियो का भिक्षार्थ भ्रमण ।

गोचार–पु० ग्वाला, गोप ।

गोछौ–पु० वस्त्र विशेष ।

गोजरौ–पु० गेहूं व जौ का मिश्रण ।

गोजीत–वि० जितेन्द्रिय ।

गोट–स्त्री० [सं० गोष्ठ] १ किनारा, छोर । २ वस्त्र की किनार । ३ किनार पर लगाया जाने वाला फीता । ४ चौसर की गोटी । ५ वातचक्र, तूफान, अधड । ६ समूह ।

गोटकौ–पु० १ सूखी कचरी । २ देखो 'गुटकौ' ।

गोटमगोट–क्रि०वि० गोट के रूप मे, बादलो की तरह । –वि० अधाधुद, वेढ़गा, अव्यवस्थित । –पु० वडी राशि, वडा समूह ।

गोटाजाय–पु० एक पुष्प विशेष ।

गोटाळौ–देखो 'घोटाळौ' ।

गोटींबौ–पु० खरबूजा ।

गोटी–स्त्री० [स० गुटिका] १ खेल का मुहरा, गोट । २ टिकिया, गोली । ३ उपाय, युक्ति । ४ देखो 'गोस्ठी' ।

गोटीजणौ (बौ)–क्रि० १ बादलो का उमड़–उमड़ कर एकत्र होना । २ दम घुटना, मूर्छित होना । ३ घुटन होना । ४ विशूचिका रोग से पीडित होना । ५ ऊट के बदहजमी का रोग होना ।

गोटेमिसुर–पु० सुनहरे वादले का फीता ।

गोटौ–पु० १ वातचक्र । २ आधी, बवडर । ३ नारियल का गोला । ४ घुटन । ५ हैजा रोग । ६ उन्माद रोग । ७ गड-वडी । ८ इन्द्रजाल । ९ रस्सी आदि का गट्टा ।

गोठ (डी)–स्त्री० [स० गोष्ठी] १ मित्र मण्डली का सामूहिक भोजन, गोष्ठी । पिकनिक । २ वन–भोजन । ३ मेजबानी । ४ दल, टोली । ५ समूह, दल । ६ छोटा गाव, खेडा । ७ प्रेम भरी वात । ८ देखो 'गोट' । —**गुगरी, गूगरी**-स्त्री० वन-भोजन ।

गोठाण–पु० [स० गौ-स्थान] गाय वाधने का स्थान ।

गोठि–देखो 'गोष्ठी' ।

गोठियौ गोठी–पु० (स्त्री० गोठण, णी) १ मित्र, साथी । २ प्रियतम, प्रेमी ।

गोठी–देखो 'गोस्ठी' ।

गोड, (उ)–पु० १ वृक्ष का तना । २ जड-मूल । ३ मूली नामक शाक की जड । ४ बाजीगर । ५ देखो 'गोडौ' । ६ देखो 'गौड' ।

गोडणौ, (बौ) गोडवणौ, (बौ)–क्रि० १ भूमि को खोद कर पोली करना । २ गिराना, पटकना । ३ देखो 'गोडणौ' (बौ) ।

गोडवाड़–पु० [सं० गोडपाटक] राजस्थान के पाली जिले का एक क्षेत्र ।

गोडवाडी–स्त्री० १ गोडवाड की बोली । २ गोडवाड का निवासी –वि० गोडवाड का, गोडवाड सबधी ।

गोडा–देखो 'गोडै' ।

गोडाण–देखो 'गोडावण' ।

गोडाकूट, (फोड, मार)–पु० १ ऊट की एक ऐब विशेष (अशुभ) २ इस ऐब वाला ऊट ।

गोडाणौ, (बौ)–क्रि० १ भूमि खुदवा कर पोली कराना । २ गिरवाना, पटकवाना ।

गोडापाही–स्त्री० एक प्रकार की सजा, दण्ड ।

गोडाळ–पु० घुटनो पर झुकने का भाव ।

गोडालकडी–स्त्री० दोनो हाथो को पावो से बाधकर बीच मे लकडी फसा कर दिया जाने का कठोर दण्ड ।

गोडाळियां, गोडाळियै–देखो 'गुडाळिया' ।

गोडावण–स्त्री० एक पक्षी विशेष जिसका मास खाने मे अच्छा होता है ।

गोडि, (य)–देखो 'गोडे' ।

गोडियौ–पु० १ बैलगाडी का एक भाग। २ रहट का एक उपकरण। ३ घुघुरू लगे चमडे की पट्टी। ४ देखो 'गोड'। ५ देखो 'गोडौ'।

गोडी–स्त्री० १ ऊट का अगला पाव समेटकर बाधने की क्रिया। २ बधन। ३ गोडा, घुटना। ४ चरखे के लगने वाला डडा। ५ उद्दण्ड गाय या बैल का घुटने के साथ सींग का बधन। ६ देखो 'गोडी'।

गोडीरव–देखो 'गौडीरव'।

गोडूंचौ–पु० विकृत तरबूज।

गोडै–क्रि० वि० १ पास मे, निकट। २ सामने, सम्मुख। ३ अधिकार मे, कब्जे मे।

गोडौ–पु० १ घुटना। २ बैलगाडी का एक भाग।

गोडौबोळावण–पु० मृतक के सबधियो के सामने सवेदना प्रगट करने की क्रिया।

गोढ़–देखो 'गोड'।

गोढ़ल (ला)–क्रि० वि० निकट, पास, समीप।

गोढ़ा, गोढ़ा, गोढ़ि, (ढ़ै)–देखो 'गोडै'।

गोण–पु० १ गमन। २ गगन। ३ पृथ्वी, भूमि। ४ प्रत्यचा।

गोणियौ–पु० १ वढई, लुहार आदि का एक समकोण औजार जिससे दीवार नापी जाती है। २ देखो 'गूणियौ'।

गोणौ–पु० [स० गमन] १ वधू की प्रथमवार सुसराल गमन की रश्म। २ गमन।

गोत–पु० [स० गोत्र] १ कुल, वश, खानदान। २ वशगत। जाति। ३ समूह, दल। ४ लुप्त होने का भाव। ५ नाम। ६ सज्ञा। ७ गोशाला। ८ वन। ९ खेत। १० मार्ग। ११ वर्ग। १२ पर्वत, पहाड। —कवम-पु० १ वश के व्यक्ति की हत्या का पाप। २ निकटतम कुल की स्त्री के साथ सभोग, मैथुन।

गोतण–स्त्री० कुल मे जन्म लेने वाली स्त्री।

गोतम, (म्म)–पु० १ गोत्र प्रवर्तक ऋषि। २ एक मत्रकार ऋषि। ३ एक क्षत्रिय वश। ४ वसा, चर्वी। ५ देखो 'गौतम'।

गोतमी–स्त्री० [स०] १ गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या। २ देखो 'गौतमी'।

गोतर–देखो 'गोत्र'।

गोतराड–देखो 'गोतार'।

गोतहत्या–स्त्री० सगोत्रीय की हत्या का पाप।

गोतार–पु० भादवशुक्ला अष्टमी, नवमी व दशमी को किया जाने वाला व्रत विशेष। मतान्तर से भादव शुक्ला १३, १४ और पूर्णिमा को किया जाने वाला व्रत।

गोतिमी–१ देखो 'गोतमी'। २ देखो 'गौतमी'।

गोतियौ, गोती–वि० [स० गोत्रीय] अपना, सगोत्रीय।

गोतीत–वि० [स०] जो इन्द्रिय ज्ञान से परे हो, अगोचर। अदृश्य। –पु० ईश्वर, विष्णु।

गोतीरथक–पु० [स० गीतर्थक] शल्य चिकित्सा की एक विधि।

गोते–वि० समान, सदृश, तुल्य।

गोतौ–पु० १ डुबकी, गोता। २ निराशाजन्य यात्रा। ३ चक्कर। ४ धोखा। ५ कष्ट।

गोत्त–देखो 'गोत्र'। —गोवाळ='गोत्र-गोवाळ'।

गोत्र–पु० [सं०] १ वश, कुल। २ कुल के अनुसार जाति। ३ सतान। ४ वर्ग। ५ कुटुम्ब। ६ समूह, झुण्ड। ७ पहाड, पर्वत। —गवाळ, गोवाळ-वि० वशरक्षक, गोत्र रक्षक। —सुता-स्त्री० पार्वती, गौरी।

गोत्रज–पु० [स०] १ एक ही गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति। २ शिलाजित। ३ पत्थर।

गोत्रभिदी (भेदी)–पु० [स०] १ इन्द्र। २ वज्र।

गोत्रहर–पु० [स०] वज्र।

गोत्रहरी–पु० इन्द्र।

गोत्रा–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी। २ गाय।

गोत्राचार–पु० विवाहादि अवसरो पर किया जाने वाला कुल का उच्चारण।

गोत्री–वि० वशज। स्वजातीय।

गोथणी–देखो 'गोस्तनी'।

गोथणौ–पु० [स० गोस्तन] हरीसा के छोर पर लगी काष्ठ की किल्ली।

गोथली–देखो 'कोथळी'।

गोदती–स्त्री [स०] १ एक प्रकार की मणि या मूल्यवान पत्थर। २ हरताल। –वि० १ कच्चा। २ श्वेत।

गोद–स्त्री० [स० क्रोड़] १ अक, गोदी, उत्सग, गोड़। २ आचल। ३ सुखप्रद स्थान।

गोदड–पु० साधुओ का एक सम्प्रदाय व इस सम्प्रदाय का साधु।

गोदणी–स्त्री० सुई या कोई नुकीला औजार।

गोदणौ (बौ)–क्रि० १ सुई या नुकीली चीज चुभाना, घुसेड़ना, गडाना। २ छेड-छाड या तग करना। ३ अनिच्छित कार्य करने के लिए बार-बार कहना।

गोदान–पु० [स० गोदान] गाय का दान।

गोदाम–पु० बडा कोठा या भागार।

गोदा, गोदावरी–स्त्री० [स०] गोदावरी, नदी।

गोदि, (दी)–देखो 'गोद'।

गोदौ–देखो 'गोधो'।

गोध–पु० [स०] १ मनुष्य। २ नर। ३ बबूल की फली।

गोधन–पु० [स०] १ गउओ के रूप मे सम्पत्ति। २ गायो का झुण्ड, समूह।

गोधम (धाम)—पु० १ झगडा, टटा, फिसाद । २ ऊधम । ३ उपद्रव, विद्रोह, । ४ उद्दण्डता, बदमाशी । ५ युद्ध, समर । ६ विद्रोह, विप्लव ।

गोधर—पु० [स०] १ पर्वत, पहाड । २ चन्द्रमा ।

गोधलियौ—पु० छोटा बैल ।

गोधार—पु० [स०] १ इन्द्र । २ गोह नामक जतु ।

गोधि—स्त्री०]स०] १ ललाट, भाल । २ मस्तक । ३ गगा का नक्र ।

गोधूळिक (ळीक)—देखो 'गोधुळिक' ।

गोधुळुक्क—पु० गायो के खुरो से उडने वाली धूल, रज ।

गोधूम—पु० [स०] गेहूँ ।

गोधूळ—पु० १ गायो के खुरो मे उडने वाली धूल । २ वह समय जब उक्त धूल उडती है ।

गोधूळक (ळिक)—स्त्री० [स० गोधूलिक] १ सूर्यास्त का ममय, जब गायें जगल से चरकर लौटती है । २ इस समय होने वाला मागलिक मुहूत ।

गोधूळकियौ (क्यौ), गोधूळिकियौ—पु० गोधूलिक समय का वैवाहिक मुहूत । –वि० गोधूलिक वेला का या उस सबधी ।

गोधेय, गोधेर (रक)—पु० [स०] गोह नामक जन्तु ।

गोधौ—पु० १ बडा बछडा । २ युवा बैल । ३ माड ।

गोनव—पु० [स०] १ स्वामिकार्त्तिकेय का एक गण । २ बछडा । ३ एक पौराणिक देश ।

गोपगण (न, ना)—स्त्री० [स० गोपागना] गोप जाति की स्त्री, गोपी ।

गोप—पु० १ गायो का पालक, ग्वाला । २ गोशाला का प्रधान । ३ राजा, भूपति । ४ श्रीकृष्ण । ५ व्रजभूमि । ६ गाय । ७ एक गधव का नाम । ८ एक स्वर्णाभूषण । ९ गाली, अपशब्द । १० उत्तेजना । ११ दीप्ति, चमक, काति । १२ छिपाव । –वि० १ गुप्त । २ रक्षक ।

गोपण—१ देखो 'गोपन' । २ देखो 'गोफण' ।

गोपत (पति)—पु० [स० गोपति] १ शिव । २ विष्णु । ३ सूर्य । ४ राजा । ५ ग्वाल । ६ श्रीकृष्ण । ७ वृषभ, साड ।

गोपथ—पु० अथर्ववेद का एक ब्राह्मण ।

गोपद—पु० गाय के खुर का चिह्न या गड्ढा ।

गोपदान—पु० गुप्तदान ।

गोपन—पु० [स०] गोपनीयता लुकाव-छिपाव ।

गोपपति—पु० श्रीकृष्ण ।

गोपांनसि—पु० कच्चे मकानो की छाजन का दीवार से बाहर निकला हुआ भाग ।

गोपाचळ—पु० १ ग्वालियर शहर का प्राचीन नाम । २ इस शहर के पास का पर्वत ।

गोपारडा—स्त्री० एक प्रकार की गोह ।

गोपायित—वि० [स०] १ गुप्त, गोपनीय । २ रक्षित ।

गोपाळ, (क)—पु० [स० गोपाल] १ गउवो का पालन करने वाला, ग्वाला, अहीर । २ श्रीकृष्ण । ३ राजा । ४ परमेश्वर । ५ इन्द्रियो का पालन करने वाला, मन । ६ एक मात्रिक छन्द विशेष । —खवास—पु०एक प्रकार का घोडा ।

गोपालिका—स्त्री० १ गिजाई या गुबरैला नामक बरसाती कीडा । २ गोपालन करने वाली ग्वालिन, ग्वालिन ।

गोपाळी—स्त्री० स्कन्द की एक मातृका ।

गोपाळु—देखो 'गोपाल'

गोपि, गापिका, गोपी—स्त्री० १ गोप की स्त्री, ग्वालिन, अहीरनी । २ व्रज-वाला । **—रास रमण (न)** —पु० श्रीकृष्ण । **—सिरमण, सिरोमणि**—पु० श्रीकृष्ण ।

गोपीचण, गोपीचद (चद्र)—पु० – एक प्राचीन राजा जिन्होंने माता के उपदेश से वैराग्य लिया था ।

गोपीचदण (न)—पु० [स०] द्वारका के सरोवर की पीली मिट्टी जिसका वैष्णव लोग तिलक लगाते हैं ।

गोपीजनवल्लभ—पु० [स०] श्रीकृष्ण ।

गोपीथ—पु०]स०] १ गउवो का. पानी पीने का, जलाशय । २ एक प्राचीन तीर्थ ।

गोपीनाथ, गोपीपत (पति) गोपीवर, (वल्लभ), गोपीस—पु० [स०] श्रीकृष्ण ।

गोपुर—पु० १ बडे किले, नगर, मदिर आदि का ऊचा द्वार । २ त्रिलोक, स्वर्ग लोक ।

गोपेंद्र—पु० [स०] १ श्रीकृष्ण । २ गोप सरदार नद ।

गोपौ—पु० १ गाय का बछडा । २ गाय बाधने का स्थान । ३ गोप ।

गोप्रवेस—पु० गायो का जगल से लौटने का समय, गोधूलि वेला ।

गोफण, गोफणियौ गोफा—स्त्री० [स० गोफण] १ चमडे की दो छोटी रस्सियो के बीच बनी फन जैसी पट्टी, जिस पर ककर रख कर घुमा कर फेंका जाता है । यह फसल की रखवाली मे काम आता है । २ स्त्री के बालो की वेणी मे गूंथा जाने वाला आभूषण ।

गोफियौ—पु० १ 'गोफण' मे रख कर फेंका जाने वाला ककर । २ देखो 'गोफण'

गोबद्धन—देखो 'गोवरधन' ।

गोबर—पु० [स० गोविट] गौ-मल, गाय का का विष्टा, भैंस का विष्टा । **—गणेश** —वि० बेडौल, भद्दा । मूर्ख, नासमझ ।

गोबरधण (धन)—देखो 'गोवरधन' ।

गोबरी–पु० कडा, उपला, गोहरा ।
गोबी– देखो 'गोभी' ।
गोब्यंद– देखो 'गोविंद' ।
गोभी–स्त्री० एक प्रकार का शाक ।
गोभ्रत–पु० [स० गोभृत] पर्वत, पहाड ।
गोमंग–पु० १ आकाश । २ पृथ्वी ।
गोमद– देखो, 'गोविंद' ।
गोम–स्त्री० [स० गो] १ पृथ्वी, भूमि । २ आकाश, नभ । ३ नगाडा । ४ मेघ । —पु० ५ वह घोडा जिसके पेट के नीचे भवरी हो । —वि० गुप्त, छुपा हुआ ।—गगा, गमरण– स्त्री० गगानदी ।
गोमठ– स्त्री० पोकरण नगर के पास का स्थान जहा के ऊट बढिया होते हैं ।
गोमठियौ–पु० गोमठ के 'टोले' का ऊट, एक जाति का ऊट ।
गोमतसर–पु० राजस्थान के भीनमाल नगर का प्राचीन नाम ।
गोमती, (त्ती)–स्त्री० [स०] १ शाहजहापुर की झील से निकल कर सैदपुर के पास गगा मे मिलने वाला एक नदी । २ गोमत पर्वत की देवी । ३ टिपरा की एक छोटी नदी । ४ ग्यारह मात्राओ का एक छद । ५ स्त्री का एक आभूषण ।
गोमय–पु० [स०] गोबर । [स० गोमायु] सियार, गीदड । —जात–पु० गुबरैला, ग्वालिन, गिजाई ।
गोमर–पु० १ आकाश, नभ । २ पृथ्वी ।
गोमरी–वि० १ भूखा । २ गवार, असभ्य । ३ ग्रामीण ।
गोमळ–पु० गोबर ।
गोमसावझडौ–पु० डिंगल का एक गीत विशेष ।
गोमान–पु० [स० गोमान] गायो का स्वामी ।
गोमा–स्त्री० गोमती नदी ।
गोमाय (यु, यू)–पु० सियार, गीदड ।
गोमाळ–स्त्री० गायो का झुण्ड ।
गोमी–पु० [स० गोमिन्] १ सियार गीदड । २ गायों का स्वामी । ३ पृथ्वी ।
गोमुख–पु० [स] १ गाय का मुख । २ मगर, घडियाल । ३ एक वाद्य यत्र । ४ एक प्रकार का शंख । ५ एक योगासन विशेष । ६ इन्द्र-पुत्र जयंत के सारथी का नाम । ७ चित्तौडगढ़ के एक तीर्थ का नाम ।
गोमुखी–स्त्री० [स] १ माला रखकर जाप करने की एक थैली । २ चित्तौड का एक तीर्थ स्थान । ३ गगोतरी का एक स्थान विशेष । ४ घोडे के ऊपरी ओठ पर होने वाली एक भवरी । –वि० गोमुख के अनुसार ।
गोमूत, गोमूत, (मूत्र)–पु० [स० गोमूत्र] गाय का मूत्र । –वि० पीला ※।
गोमूत्रिका–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य ।
गोमेद, (दक)–स्त्री० [स०] एक प्रसिद्ध मणि ।
गोमेध–पु० [स०] अश्वमेध की तरह का गो यज्ञ ।
गोमेदक–पु० १ नग । २ देखो 'गोमेद' ।
गोयंद, (दो)-पु० [फा० गोइद] गुप्तचर, जासूस ।
गोय–पु० वचन बोल ।
गोयडौ–पु० १ छिपकली जाति का, कुछ बडा, विषैला जतु । २ रहट का एक पुर्जा ।
गोयणौ–पु० १ पशुओ के शरीर से चिपक कर रक्त चूसने वाला एक कीडा । २ विश्नोइयों का पुरोहित ।
गोयणौ (बौ)–क्रि० छुपाना ।
गोयरौ–देखो 'गोयडौ' ।
गोयलौ–पु० गेहू की फसल के साथ होने वाला एक घास । –वि० (स्त्री० गोयली) द्वेष रखने वाला, नीच ।
गोयल्या–स्त्री० पक्षी विशेष ।
गोया–क्रि० वि० अगरचे, यदि ।
गोरंग–देखो 'गौरांग' ।
गोरभ–१ देखो 'गोरम' । २ देखो 'गोवरधन' ।
गोरम, (मी)–पु० १ योद्धा, वीर । २ युद्ध लडाई । ३ कलह । ४ भण्डार । ५ पृथ्वी, भूमि । ३ अरावली पर्वत का एक भाग ।
गोर–स्त्री० १ किनारा, तट । २ छोर । ३ सीमा हद । ४ कब्र, समाधि । ६ गौरी, पार्वती । ७ सुन्दर स्त्री । ८ परी । ९ देखो 'गौर' ।
गो'र–पु० १ गाव के बीच का चौक । २ गायो का झुण्ड । ३ गाव मे मवेशी रखने का बाडा, आहता ।
गोरक, (क्ख) गोरक्ष गोरख–पु० [स० गोरक्षक] १ एक देव वृक्ष विशेष । २ प्रसिद्ध हठयोगी गोरखनाथ । ३ गोरक्षक । ४ जितेन्द्रिय । —आसण, (न)–पु० योग के चौरासी आसनो मे से एक ।
गोरख आंवली–स्त्री० एक मोटे तने का वृक्ष विशेष जिसके फल व बीज औषधि मे काम आते हैं ।
गोरखघधौ–पु० १ कच्चा सूत सुलझाने का कार्य । २ निरर्थक व उलझन भरा कार्य । ३ गूढ बात ।
गोरखनाथ–पु० [स० गोरक्षनाथ] पन्द्रहवीं शताब्दी के एक सिद्ध योगी ।
गोरखपथ–पु० उक्त योगी के द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय ।
गोरखमुंडी–स्त्री० एक औषधि विशेष ।
गोरखौ–पु० उत्तर भारत के पर्वतीय प्रदेश का निवासी ।
गोरडी–देखो 'गोरी' ।
गोरज–स्त्री० गोधूलि ।
गोरजा, (ज्या)–१ पार्वती, गौरी । २ गोर वर्ण की सुन्दर स्त्री । ३ गणगौर ।

गोरजी—पु० ब्राह्मण, द्विज ।
गोरटी—देखो 'गोर' ।
गोरण—पु० १ विवाह का दूसरा दिन । —स्त्री० २ ग्वालिन ।
गोरणी—स्त्री० १ स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला व्रतोत्सव । २ इस व्रतोत्सव पर सुहागिन स्त्रियो को चौबीस पात्रो मे मेवा आदि वितरित करने की क्रिया या सकल्प ।
गोरपत, (पति)—पु० १ शिव महादेव । २ बादशाह ।
गोरबंद, (बध)—पु० १ ऊट के गले का एक आभूषण विशेष । २ एक लोकगीत विशेष ।
गोरम—पु० १ नाथ सम्प्रदाय का एक सिद्ध । २ अरावली का एक भाग विशेष जहा हिजडो का मेला लगता है । ३ हिंजडो का देवता ।
गोरमटियौ—पु० खरीफ की फसल का खेत ।
गोरमिंट—पु० १ सरकार शासन, राज्य, सत्ता । २ शासक दल ।
गोरमिंटी—स्त्री० सरकारी, सत्ता ।
गोरमौ—पु० गाव का खुला चौक ।
गोरयो, (वौ)—पु० १ एक पक्षी विशेष । २ गौरी चमडी का पुरुष । ३ मवेशियो का वाडा । ४ गौरा ।
गोरल—स्त्री० गणगौर ।
गोरवु, गौरवौ—पु० १ ग्राम के बीच का या वाहर का खुला स्थान । २ सीमा । ३ जगल । ४ देखो 'गौरव' ।
गोरस—पु० [स०] १ दूध, दुग्ध । २ दही । ३ तक्र, मट्ठा । ४ मक्खन । ५ इन्द्रिय-सुख ।
गोरस्यौ—पु० गोरस वेचने वाला ।
गोरह—देखो 'गोरस' ।
गोरहर—पु० जैसलमेर के गढ का नाम ।
गोरा—स्त्री० १ पार्वती, गौरी । २ गौर वर्णी स्त्री ।
गोराई—स्त्री० गोरापन । सुन्दरता ।
गोरायो, (वौ)—गौर वर्ण का सर्प विशेष ।
गोरि—१ देखो 'गो'र' । २ देखो 'गोर' । ३ देखो 'गोरी' ।
गोरियावर—देखो 'गोरायौ' ।
गोरियाराउ—पु० मुसलमान वादशाह ।
गोरियौ—पु० १ अग्रेज । २ पशुओ का छोटा बाड़ा । —वि० गौरा ।
गोरिलौ, (ल्लौ)—पु० १ अफ्रिका के जगलो मे पाया जाने वाला एक वनमानुष । २ छापामार सैनिक ।
गोरिसुत—पु० १ गजानन, गणेश । २ स्वामि कार्त्तिकेय ।
गोरी—पु० [फा] १ फारस के गोर प्रदेश का निवासी । २ बादशाह । ३ देखो 'गौरी' ।
गो'री—पु० [प्रा० गोहरी] गाय चराने वाला, ग्वाला ।
गोरीराय, (राव)—पु० १ शिव, महादेव । २ मुसलमान । ३ बादशाहा ।
गोरीसर—पु० हसराज नामक जडी ।
गोरीसुत—देखो 'गोरिसुत' ।
गोरुत—पु० [स गोरुत] चार मील की लवाई का नाप ।
गोरू—पु० गायो को चराने वाला, ग्वाला ।
गोरूप—पु० [स०] १ महादेव । २ पृथ्वी ।
गोरेल—पु० ढोलियो की एक शाखा ।
गोरैया—स्त्री० कृष्ण वर्ण का एक जल पक्षी विशेष ।
गोरोचन—पु० [स० गोरोचन] गाय के मस्तक से, मतान्तर से पित्ताशय से निकलने वाला सुगधित पीला पदार्थ विशेष । —वि० पीला, पीत ।
गोरौ—पु० १ गौर वर्ण का एक भैरव । २ अग्रेज, युरोपवासी । —वि० १ गौरवर्णी । २ सफेद व स्वच्छ ।
गोळटोळ—वि० विल्कुल गोल ।
गोळदाज—पु० तोपची ।
गोळ (क)—वि० [स० गोल] १ अंडाकार, सर्ववतुल । २ वृत्ताकार या चक्करदार । ३ लुप्त । —पु० १ दल, झुण्ड, समूह । २ सेना, फौज । ३ पडयत्र, जाल । ४ घेरा, घेराव । ५ सेना का रक्षक दल, चदावल । ६ सेना का केन्द्र दल । ७ दुष्काल पडने पर अन्य प्रदेश मे मवेशियो के साथ गमन या ऐसा स्थान जहा मवेशी महित ठहरा जाता हो । ८ पीपल का फल । ९ नहाने की क्रिया, स्नान । १० गडवड, गोटाला । ११ एक प्रकार का भाला । १२ मडलाकार क्षेत्र, घेरा । १३ गोलाकार पिंड, गोला । १४ अवसर, पारी, वारी । १५ फुटवाल आदि खेल मे किसी दल की हार की परिधि । १६ आकाश । १७ पृथ्वी । १८ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।
गोल—पु० [स०] १ दास, सेवक । २ गुलाम । ३ दासी पुत्र । ४ वेश्या पुत्र । ५ गुड । —वि० १ वर्णसंकर, दोगला । २ हरामी ।
गोलक—पु० [स०] १ विधवा का जारज पुत्र । २ वर्णसकर सतान । ३ पैसा बचाने का छोटे मुह का पात्र । ४ आख का डला, कोया ।
गोलकाकडी—स्त्री० एक प्रकार की ककडी ।
गोळफूंडियौ (फूडौ)—पु० वृत्ताकार चक्र ।
गोळखानौ—पु० दरबार या सभा करने का गोलाकार कक्ष ।
गोळगट (ट्ट)—देखो 'गोळमटोळ' ।
गोळची—पु० १ तोप या बन्दूक का निशाने बाज । २ खेल मे गोल की रक्षा करने वाला खिलाडी । ३ बढई का एक औजार ।
गोलणो—पु० [अ० गुलाम] दास, सेवक भृत्य ।
गोळती—वि० गोलाकार ।

गोळनी– स्त्री० मिट्टी का बडा पात्र, मटकी, घडा ।

गोळमटोळ– वि० १ बिल्कुल गोल । २ अस्पष्ट । ३ नाटा एव मोटा-ताजा ।

गोळमदाज– देखो 'गोळदाज' ।

गोळमाळ– स्त्री० १ अव्यवस्था, गडबडी । २ छल, षडयन्त्र ।

गोलर– देखो 'गूलर'

गोळवाळ (ळौ)– पु० दुष्काल मे घास-पानी वाले स्थानो पर पशु लेकर जाने वाला व्यक्ति ।

गोळविद्या– स्त्री० [स० गोलविद्या] ज्योतिष विद्या का एक अग ।

गोळवौ– पु० एक प्रकार का व्यजन ।

गोलागूल– पु० [स०] गाय की पूछ जैसी पूछ वाला बदर ।

गोळाई– स्त्री० १ गोल वस्तु की परिधि । २ वृत्त, घेरा ।

गोलाडी– स्त्री० एक बरसाती लता व उसका फल ।

गोळिया– स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

गोळियौ– पु० १ स्त्रियो के पैर की अगुलियो का आभूषण । २ गेहू की फसल मे होने वाला रोग । ३ कासी का छोटा कटोरा । ५ पीतल का छोटा जल पात्र । ६ पके हुए मास की हड्डियो का सधिस्थल । ७ एक प्रकार की तलवार ।

गोळी– स्त्री० १ काच या धातु का बना कोई बिल्कुल गोल दाना, गोली । २ औषधि की टिकिया, गुटिका । ३ बन्दूक आदि का कारतूस । ४ दही की मथनी, गोल पात्र । ५ वृक्ष का तना । ६ शरीर का गठन ।

गोली– स्त्री० १ दासी, सेविका । २ देखो 'गोलाडी' । —**जादौ**–पु० दासी पुत्र ।

गोळीढ़ाल– पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

गोलीपौ– पु० दासत्व, गुलामी ।

गोलीयो– देखो 'गोळियौ' ।

गोलीवाड– स्त्री० एक जगली लता ।

गोळू– वि० दुष्काल मे 'गोळ' जाने वाला ।

गोळे (ळै) वि० अधीन, वश मे ।

गोळोचन– देखो 'गोरोचन' ।

गोळौ–पु० धातु आदि का बडा गोल पिण्ड । २ तोप का गोला । ३ पेट मे वात विकार से होने वाला गुल्म । ४ नारियल की सावुत गिरी, गोटा । ५ कोई गोल उपकरण । ६ सूत या ऊन का समेटा हुआ गोला । ७ लालटेन या चिमनी आदि का काच का गोला, हण्डा । ८ एक प्रकार की तलवार ।

गोलौ–पु० [स० गोलक] (स्त्री० गोली) १ गुलाम, दास । २ वर्णसकर सतान ।

गोल्डौ–पु० जूए की कीली ।

गोल्यौ– १ देखो 'गोळियौ' । २ देखो 'गोलौ' ।

गोवद–देखो 'गोविंद' ।

गोवडी–स्त्री० १ पशुओ के शरीर पर चिपका रहने वाला कीडा, ईत । २ एक प्रकार की घास । ३ गौर वर्ण की स्त्री ।

गोवणियौ–पु० पीतल का मध्यम आकार का जल-पात्र, इसी मे दूध दूहा जाता है ।

गोवणौ–पु० १ खलिहान मे अनाज साफ करने की क्रिया । २ अधिक पीटने से शरीर की अवस्था । ३ नाश ध्वंस ।

गोवणौ, (बौ)–क्रि० गुप्त रखना, छिपाना ।

गोवध–पु० [स०] गाय की हत्या ।

गोवर–स्त्री० १ गाय, । २ गुफा । ३ रहस्य, गुप्तवात । ४ गोबर ।

गोवरद्धन, (धन)–पु० १ व्रज का एक प्रसिद्ध पहाड । २ श्रीकृष्ण का एक नाम । ३ दीपावली के दूसरे रोज पूजन के लिए बनाया गया गोबर का पिण्ड । —**धर धारी**–पु० श्रीकृष्ण ।

गोवळ–पु० १ गुड । २ गोप, ग्वाला । ३ गाय । –वि० १ रक्षक । २ देखो 'गोळ' ।

गोवाळ, गोवाळियौ, (ळौ)–१ देखो 'गोपाळ' । २ देखो 'ग्वाळ' ।

गोविंद (दौ)–पु० [स० गोपेन्द्र] १ श्रीकृष्ण । २ परब्रह्म, ईश्वर । ३ वेदातवेत्ता । ४ बृहस्पति । ५ शकराचार्य के गुरु । ६ सिक्खो के एक गुरु । —**देव**–पु० विष्णु का एक रूप । —**पद**–पु० मोक्ष, निर्वाण ।

गोवौ–पु० १ दो खेतो की मेढ़ो के बीच का मार्ग । २ देखो 'गोग्रौ' ।

गोव्यद–देखो 'गोविंद' ।

गोव्रत–पु० [स०] गौ हत्या के प्रायश्चित मे किया जाने वाला व्रत ।

गोस–पु० [फा० गोश] १ श्रवणेन्द्रिय, कान । २ देखो 'गौस' ।

गोसक–पु० [स० गोशक] इन्द्र ।

गोसणौ, (बौ)–क्रि० १ दुख देकर धन लेना । २ धन का अपहरण करना ।

गोसमायल–पु० पगडी का, कान पर लटकने वाला छोर, जिस पर मोती जडे हो ।

गोसमाळी–स्त्री० [फा० गोशमाली] १ प्रताडना, झिडकी । २ कान उमेठना ।

गोसळ–देखो 'गुसळ' । —**खांनौ**–देखो 'गुसळखानौ' ।

गोसवारौ–पु० [फा० गोशवारा] १ जोड योग । २ किसी मद के आय व्यय का लेखा । ३ किसी पजिका का कोष्ठक ।

गोसाई, गोसांई–देखो 'गोस्वामी' ।

गोसाला–स्त्री० [स० गोशाला] १ वृद्ध व अशक्त गायो को रखने का स्थान । २ गायो के रखने का स्थान ।

गोसियळ, (सेल)–वि० गुस्सैल, क्रोधी ।
गोसी–पु० कुए पर पानी का मोट खाली करने वाला व्यक्ति ।
गोसूक्त–पु० गोदान के समय पढा जाने वाला अथर्ववेद का अश ।
गोसो–पु० [फा० गोश] १ कोना । २ कोष्ठक । ३ कमान की नौक । ४ आख की पलको के बीच का स्थान । ५ एक रोग विशेष । ६ अण्डकोश । –वि० गुप्त ।
गोस्ठी–स्त्री० [स० गोष्ठी] १ लोगो का समूह । २ सभा । ३ मण्डली । ४ वार्त्तालाप । ५ परामर्श, सलाह । ६ सैर, सपाटे व खाने-पीने का आयोजन । ७ गुप्त मत्रणा ।
गोस्त–पु० [फा० गोश्त] मास, आमिष ।
गोस्तनी–स्त्री० [स] दाख, मुनक्का ।
गोस्रग–पु० [स० गोशृग] १ एक पौराणिक पर्वत । २ बबूल वृक्ष । ३ एक ऋषि का नाम ।
गोस्वामी–पु० [स०] १ गाय का स्वामी । २ ईश्वर । ३ सन्यासियो का एक भेद । ४ विरक्त साधु । ५ जितेन्द्रिय । –वि० श्रेष्ठ ।
गोह–स्त्री० [सं० गोधा] १ छिपकली जाति का एक बडा व विषैला जतु । २ उदयपुर राजवश का एक पूर्व पुरुष । ३ निषाद राज गुह ।
गोहणौ–देखो 'गहणौ' ।
गोहर–देखो 'गो'र' ।
गोहरी–पु० गायो को चराने वाला ग्वाला ।
गोहरौ–देखो 'गोह' ।
गोहिर–पु० १ गाव या मोहल्ले के बीच का खुला स्थान । गायो को रखने का स्थान ।
गोहिरी–देखो 'गोहरी' ।
गोहलौ–देखो 'गहलौ' । (स्त्री० गोहली)
गोही गोहीयाळ–वि० १ कपटी, धूर्त, चालाक । २ देखो 'गोई' ।
गोहूं गोहूं–देखो 'गऊ' ।
गोहूं, आळ (वाळ)-देखो 'गवाळ' ।
गोहौ–देखो 'गोवौ' ।
गौ–स्त्री० [स०] १ गाय गऊ । २ किरण । ३ सरस्वती । ४ वाणी । ५ जिह्वा । ६ पृथ्वी । ७ माता । ८ वृष राशि । ९ आख । १० दृष्टि । ११ बिजली । १२ नौका । १३ दिशा । १४ इन्द्रिय । १५ सुगध । १६ रोमावली । १७ बकरी । १८ भेड । १९ बसत । –पु० २० सूर्य । २१ चन्द्रमा । २२ घोडा । २३ बैल । २४ बदर । २५ तीर, बाण । २६ स्वर्ग । २७ कल्पवृक्ष । २८ वज्र । २९ घर । ३० वृक्ष । ३१ पक्षी । ३२ हाथी । ३३ जल । ३४ शिव का गण । ३५ अक । ३६ शब्द । ३७ केश । –अव्य० यद्यपि । अगरचे ।

गौख (डौ)–देखो 'गोख' ।
गौड़–पु० १ बग देश का प्राचीन नाम । २ कायस्थो का एक भेद । ३ एक ब्राह्मण वर्ग । ४ एक क्षत्रिय वश । ५ जलाशय की तरग या हिलोर । ६ पशुओ के गले मे होने वाला एक ग्रथि रोग । ७ देखो 'गोड' । —नट–पु० एक सकरराग । —पाद–पु० शकराचार्य के दादा गुरु । —मल्लार–पु० राग विशेष । —सारग–पु० एक राग विशेष ।
गौड़ा–स्त्री० निंदा, आलोचना ।
गौडाटी, गौडावटी–स्त्री० गौड वशीय क्षत्रियो के राज्य की भूमि ।
गौडारव, (गौड़ोरव) गौडीरव–पु० १ समुद्र, सागर । २ प्रवाह । ३ प्रवाह की ध्वनि । ४ हाथी की मस्ती की ध्वनि । ५ समुद्र की लहरो के टकराहट की ध्वनि । ६ हाथी ।
गौड़िया-बाजी–स्त्री० १ नट-विद्या । २ ऐन्द्रजालिक, जादूगरी । ३ छल, कपट ।
गौडियो–पु० [स० गारुडिकः] १ जादूगर, बाजीगर । २ सपेरा । ३ गौड रोग से पीडित पशु ।
गौड़ी–स्त्री० ओज गुण काव्य की एक रीति । २ एक रागिनी ।
गौढा, गौढे–देखो 'गोढा' ।
गौण–वि० [स०] १ जो मुख्य न हो । २ कम महत्त्व का । ३ प्रधान का उलटा । ४ गुणवाचक ।
गौणी–स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा ।
गौणौ–पु० १ खलिहान । २ गमन, विदाई । ३ देखो 'गोणौ' ।
गौतम (क)–पु० १ भरद्वाज ऋषि का नाम । २ सतानन्द मुनि का नाम । ३ द्रोणाचार्य के साले कृपाचार्य का नाम । ४ बुद्ध भगवान का नाम । ५ न्यायशास्त्र प्रवर्तक का नाम । —संभवा–स्त्री० गोदावरी नदी ।
गौती–देखो 'गोती' ।
गौदान–देखो 'गोदान' ।
गौन–पु० [स० गमन] १ गमन । २ विदाई । ३ देखो 'गौण' ।
गौम–देखो 'गोम' ।
गौमुखी–देखो 'गोमुखी' ।
गौमूत–देखो 'गोमूत' ।
गौमेद–देखो 'गोमेद' ।
गौरंगि–देखो 'गौराग' ।
गौर–वि [स०] १ सफेद, श्वेत । २ पीला । ३ लाल । ४ चमकीला, दीप्ति युक्त । ५ गौरवर्ण । ६ विशुद्ध, स्वच्छ । ७ मनोहर । –पु० १ सफेद रग । २ पीला व लाल रग । ३ चन्द्रमा । ४ एक प्रकार का हिरन । ५ एक भैसा विशेष । ६ चैतन्य महाप्रभु । ७ कमल-नाल । ८ केसर । ९ स्वर्ण, सोना ।

गो'र–देखो 'गो'र'।
गोरता–स्त्री० गोरापन, सफेदी।
गोरम–पु० १ आकाश, नभ। २ देखो 'गोरम'।
गोरव–पु०[स०]१ प्रतिष्ठा, इज्जत। २ बडप्पन। ३ कुलीनता। ४ भारीपन। ५ वजन। ६ जरूरत। ७ सम्मान, आदर। ८ कीर्ति, यश। ९ वृद्धि।
गोरवो–पु० १ चटक पक्षी, चिड़ा। २ देखो 'गो'र'।
गोरहर–देखो 'गोरहर'।
गोराग–पु०[स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ चैतन्य महाप्रभु। ४ अग्रेज। –वि० गौरवर्णी।
गौरातीज–स्त्री० चैत्र शुक्ला तृतीया तिथि।
गौरा–देखो 'गोरा'।
गौरियो (वौ)–देखो 'गोरियौ'।
गौरी–स्त्री० [स०] १ पार्वती, उमा। २ दुर्गा। ३ चौसठ योगिनियो मे से दूसरी। ४ आठ वर्ष की कन्या। ५ गौरवर्ण की व सुन्दर स्त्री। ६ युवा स्त्री। ७ लाल रग की गाय। ८ गगा नदी। ९ क्वारी कन्या। १० पृथ्वी। ११ हल्दी। १२ गोरोचन। १३ वरुण की स्त्री। १४ मल्लिका लता। १५ तुलसी का पौधा। १६ आर्या छन्द का एक भेद। १७ देखो 'गोहरी'। –वि० गौर वर्ण की, सुन्दरी।
—**सकर**–पु० शिव-पार्वती। हिमालय की एक चोटी।
—**सर**–पु० पु० शिव।
गौळ–पु० बादामी रग के तने का बडा वृक्ष विशेष।
गौळणी–स्त्री० ग्वाले की स्त्री, ग्वालन।
गौस–पु० [अ०] १ वली से बडा पद रखने वाला मुसलमान फकीर। २ गोता लगाने की क्रिया, डुबकी। ३ न्यायकर्त्ता।
गौसळ–देखो 'गुसळ'। —**खांनौ**= गुसळखानौ'।
गौह, गौहक, गौहकेसर–पु० १ एक देव जाति। २ कुबेर।
गौहव–पु० [स० गुह] निषादराज गुह जो शृगवेरपुर का राजा था।
गौहर–पु० १ जैसलमेर का किला। २ प्रासाद, महल। ३ मोती, मुक्ता। ४ देखो गोहर'।
ग्यान–पु० [स० ज्ञान] १ जानकारी, पता। २ समझदारी। ३ दक्षता, निपुणता। ४ बोध। ५ विद्वत्ता। ६ विवेक। ७ आत्मज्ञान। ८ ज्ञानेन्द्रिय। ९ विषय विशेष का अध्ययन। —**काड**–पु० वेद का एक विभाग। —**क्रत**–पु० जानबूझ कर किया हुआ कर्म। पाप। —**गोभा**–स्त्री० ज्ञान की जड, ज्ञान का गर्भ। —**जग्य**–पु० आत्मा व परमात्मा का एकीकरण। ब्रह्मज्ञान। —**व्रद्ध**–वि० अनुभवी। —**साधन**–पु० ज्ञान प्राप्ति का प्रयत्न। इन्द्रिय।
ग्यानजया–स्त्री० डिंगल के गीतो की रचना का वह नियम जिसमे अवधानो का यथा सख्य वर्णन हो।
ग्यानलक्षण–पु० [स० ज्ञान लक्षण] न्याय मे अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद।
ग्यानलिंग–पु० शिव का एक लिंग।
ग्यानसत–पु० [स० ज्ञानिषद] स्वर्ग।
ग्यानासण (न)–पु० [स० ज्ञानासन] एक प्रकार का योगासन।
ग्यानी–वि० [स० ज्ञानिन्] (स्त्री० ग्यानण) १ ज्ञानवान्, अनुभवी। २ आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी। ३ बुद्धिमान, प्रतिभावान। ४ ज्योतिषी। –पु० १ ऋषि, मुनि। २ कवि। ३ हस।
ग्यात–वि० [स० ज्ञात] विदित, जाना, हुआ अवगत।
ग्यातजोबना (जोवना)–स्त्री० [स० ज्ञान यौवना] मुग्धा नायिका जिसे यौवन का ज्ञान हो।
ग्याता–वि० [स० ज्ञातृ] १ जानने वाला, जानकार। २ अनुभवी, भुक्तभोगी। ३ कवि, पडित। ४ वेदान्ती।
ग्याति (ती)–देखो 'जाति'।
ग्याब–पु० [स० गर्भ] गर्भ।
ग्याबण (णी)–वि० गर्भवती। (मादा पशु)
ग्यारमौ (वौ)–वि० दश के बाद वाला।
ग्यारस (सि, सी)–स्त्री० [स० एकादशी] एकादशी की तिथि।
ग्यास–स्त्री० हसी, मजाक।
ग्यासी–स्त्री० वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री।
ग्येय–वि० [स० ज्ञेय] जानने योग्य। ज्ञातव्य।
ग्रंजन–पु० [स०] प्याज।
ग्रंथ–पु० [स० ग्रंथ] १ किताब, पुस्तक। २ साहित्यिक रचना। ३ धार्मिक पुस्तक। —**क, करता, कार**– ग्रथकर्त्ता, रचयिता, रचनाकार।
ग्रंथण (न)–पु० [स० ग्रन्थन्] १ दो वस्तुओ को जोडने की क्रिया या भाव। २ ग्रथि, गाठ। ३ गूथना क्रिया। ४ साहित्य रचना।
ग्रंथसाहब–पु० सिक्खो का धार्मिक ग्रथ।
ग्रंथाण–देखो 'ग्रथ'।
ग्रंथि–स्त्री० १ गाठ बधन। २ जोड, सधि। ३ फोडा।
ग्रंथीलौ–वि० [स० ग्रथिल] १ गाठदार। २ गूथा हुआ।
ग्रंधप, ग्रंधप ग्रंध्रप–१ देखो 'गधरव'। २ देखो 'गधक'।
ग्रग–देखो 'गरग'।
ग्रगाचार–पु० [स० गर्गाचार्य] गर्ग ऋषि।
ग्रझड (डौ)–देखो 'गिद्ध'।
ग्रद, ग्रद्ध, ग्रध–१ देखो गरद'। २ देखो 'गिद्ध'।
ग्रधसी–स्त्री० [स० गृध्रसी] एक प्रकार का वात रोग जो कूल्हे से उठता है।
ग्रब (ब्ब, ब्भ, भ)–१ देखो 'गरभ'। २ देखो 'गरव'। —**वास**= गरभवास'।

ग्रसण (न)–पु० [स० ग्रसन] १ निगलने व खाने की क्रिया या भाव । २ पकडने की क्रिया । ३ जकडन, कसाव । ४ ग्रहण ।

ग्रसणौ (बौ)–क्रि० [स० ग्रस] १ निगलना, खाना । २ पकडना । ३ कसना, जकडना । ४ ग्रसना ।

ग्रस्त–वि० [सं०] १ पकडा हुआ । २ पीडित । ३ ग्रसा हुआ । ४ जकडा हुआ, कसा हुआ । [स० गृहस्थ] ५ गृहस्थ ।

ग्रह–पु० [स० ग्रह] १ नक्षत्र, तारा । २ सूर्य-चन्द्रमा । ३ ग्रहण । ४ पकड । ५ मकर, नक्र । ६ भूत-पिशाच । ७ ज्ञानेन्द्रिय । ८ भेद, रहस्य । ९ कृपा । १० नौ की सख्या । [स० गृह] ११ घर, मकान । १२ आवास । १३ कुटुम्ब । १४ कैदी । **—इव**–पु० सूर्य, भानु । **—कल्लोल**–पु० राहु । **—गण**–पु० ग्रह समूह, ग्रहावली । **—गति, गोचर**–पु० ग्रहो का चालु क्रम । **—चार**–पु० सभोग, समागम, मैथुन । **—चारी**–वि० गृहस्थ, घर सवधी । **—चितक**–पु० ज्योतिषी । –वि० घर की चिंता करने वाला । **—जुध**–पु० गह कलह, झगडा । किसी राज्य का आन्तरिक विद्रोह । सौर सिद्धान्त के अनुसार एक प्रकार का ग्रहण । **— जोग**-पु० एक राशि पर दो ग्रहो का योग । **—दसा**–स्त्री० ग्रहो की स्थिति । ग्रहो के अनुसार किसी का अच्छा बुरा समय । अभाग्य । **—धारी**–पु० गृहस्थी । **—नार**–स्त्री० गृहिणी, भार्या । **—नेम, नेमि**–पु० आकाश । चन्द्रमा । चन्द्रमा की एक गति । **—प, पत, पति, पती**–पु० घर का स्वामी । श्वान, कुत्ता । पति, खाविंद, चौकीदार । सूय, भानु । **—पसु**–पु० कुत्ता । गाय । **—पाळ, पाळक**–पु० घर का चौकीदार । सेवक, दास, दासी । श्वान, कुत्ता । **—पुसु**–पु० सूर्य, भानु । **—मडण**–पु० धन, दौलत, द्रव्य । **—मणि**–स्त्री० दीपक । प्रकाश, ज्योति । सूर्य, भानु । **—मैत्र, मैत्री**–स्त्री० वर-वधू के ग्रहो की अनुकूलता । **—म्रग**–पु० श्वान, कुत्ता । **—राज, राव**–पु० सूर्य । चन्द्रमा । बृहस्पति । **—वत**–वि० भाग्यवान, सौभाग्यशाली । गृहस्थ । **—वार**–स्त्री० मछली । **—वास**–पु० किसी के घर मे रहवास, निवास । पत्नी के रूप मे आवास । सहवास, समागम । **—वेध**–पु० ग्रह की स्थिति का ज्ञान ।

ग्रहकेस्वर–पु० [स० गुह्यकेश्वर] कुबेर ।

ग्रहक्कणौ (बौ)–देखो 'गहकणौ' (बौ) ।

ग्रहण–पु० [स० ग्रहणम्] १ सूर्य या चन्द्र ग्रहण । २ लेना क्रिया, ग्रहण करना । ३ दुख, कष्ट, पीडा । ४ हाथ । ५ इन्द्रिय । **—गध, ग्र ध**–पु० भौरा, नाक । **—वैरो**–पु० भाला । **—सुगंध**–पु० नाक ।

ग्रहणि (णी)–स्त्री० [स० ग्रहणि] १ पेट मे रहने वाली एक नाडी । २ ग्रहणी रोग । ३ युद्ध । ४ ग्रहण । [स० गृहिणी] ५ घर की मालकिन । ६ पत्नी, भार्या ।

ग्रहणौं–देखो 'गहणौ' ।

ग्रहणौ (बौ)–क्रि० [स० ग्रह्य] १ लेना । २ स्वीकार करना । ३ पकडना । ४ धारण करना । ५ अधिकार मे करना ।

ग्रहमिण (मिणि)–देखो 'ग्रहमणि' ।

ग्रहसणौ (बौ)–क्रि० १ ग्रहण करना, स्वीकार करना । २ छीनना, झपटना ।

ग्रहस्थ–पु० [स० गृहस्थ] १ पत्नी व बाल बच्चो वाला, घरबारी व्यक्ति । २ ब्रह्मचर्य के बाद जीवन का दूसरा चरण । **—आश्रम**–पु० व्यक्ति के जीवन की दूसरी सीढी जब वह विवाह करके गृहस्थी बसाता है व सासरिक कर्म करता है ।

ग्रहस्थी–स्त्री० [स० गृहस्थी] १ कुटु ब, परिवार, बाल-बच्चे । २ घर का सामान । ३ गृहस्थ का कार्य । ४ गृहस्थाश्रम मे प्रविष्ठ व्यक्ति ।

ग्रहस्वर–पु० १ किसी राग का मुख्य स्वर । २ गृहस्वामी ।

ग्रहाग्रहण–पु० [स० ग्रह–ग्रहण] रावण ।

ग्रहाचोआवास, (रहण)–पु० आकाश, नभ ।

ग्रहापत, ग्रहापति–देखो 'ग्रहपति' ।

ग्रहाराज–पु० [स० ग्रहराज] सूर्य, भानु ।

ग्रहाधार–पु० [स०] ध्रुव नक्षत्र ।

ग्रहाराम–पु० [स० गृह+आराम] छोटा बगीचा, वाटिका ।

ग्रहावणौ (बौ)–क्रि० ग्रहण करना ।

ग्रहास्रमी–पु० गृहस्थी ।

ग्रहि (ही)–पु० [स० गृह] १ घर, गृह । २ श्वान, कुत्ता । [स० ग्रह+ई] ३ चन्द्रमा ।

ग्रहिणि (णी)–देखो 'ग्रहणी' ।

ग्रहित–वि० ग्रहण किया हुआ ।

ग्रहिमिणि–देखो 'ग्रहमणि' ।

ग्रहीत–वि० [स०] १ घिरा हुआ, आवृत्त । २ लिया हुआ ।

ग्रहेस–पु० [स० ग्रहेश] सूर्य ।

ग्रहेसणौ (बौ)–देखो 'ग्रहसणौ' ।

ग्रह्य–पु० [स०] १ यज्ञ का एक पात्र विशेष । २ पालतू पक्षी । –वि० ग्रहण करने योग्य । **—सूत्र**–पु० सस्कार सबधी पद्धति की पुस्तक ।

ग्राजणौ–देखो 'गुराजणौ' ।

ग्राम (डो)–पु० [स०] १ छोटी बस्ती, गाव, देहात । २ जन्म भूमि । ३ समूह, ढेर । ४ शिव । ५ स्वरो का सप्तक । **—जाचक**–पु० गाव के सभी घरो मे याचना करने वाला । **—पाळ**–पु० गाव स्वामी, जागीरदार । गाव का चौकी-

दार। —भ्रत–पु० ग्राम सेवक। —वल्लभा–स्त्री० वेश्या, रडी नगर वधू। —सिंह सीह–पु० श्वान, कुत्ता।
ग्रामीण–त्रि० गाव का, गाव सबधी, देहाती।
ग्राम्य–पु० [स० ग्राम्य] १ रतिबध, शृगार का एक आसन। २ काव्य का एक दोष। —वि० १ ग्राम सम्बन्धी। २ मूढ।
ग्रायक–देखो 'ग्राहक'।
ग्राव–पु० [स० ग्रावन्] १ पत्थर। २ ओला। ३ पर्वत। ४ मगर-मच्छ। –वि० दृढ़, मजबूत।
ग्रास(ण)–पु० [स०] १ भोजन का कौर, निवाला। २ पकडन, जकडन। ३ ग्रहण। ४ विभाग, हिस्सा। ५ आय, आमदनी। ६ खाद्य पदार्थ। ७ छोटा भू-भाग जो ग्रासिया के अधिकार मे हो।
ग्रासण–पु० खाने, निगलने, ग्रसने आदि की क्रिया।
ग्रासणौ (बौ)–क्रि० १ खाना, निगलना। २ ग्रसना। ३ पकडना।
ग्रासवेध–पु० ग्रसने, पकडने, काबू करने का मौका, अवसर।
ग्रासिया–स्त्री० एक पर्वतीय जाति विशेष।
ग्रासियौ–पु० १ ग्रास, कौर। २ छोटा भू-स्वामी। ३ लुटेरा। ४ बागी। ५ नया राज्य पाने वाला।
ग्राह–पु० [स० ग्राह] १ मगर, घड़ियाल। २ ग्रहण।
ग्राहक (ग)–पु० [स० ग्राहक] खरीददार, क्रेता। –वि० १ ग्रहण करने वाला। २ इच्छुक।
ग्राहगम–पु० भ्रमर, भौंरा।
ग्राहगू–देखो 'ग्राहक'।
ग्राहग्रह–पु० हाथी, गज।
ग्राहणौ (बौ)–देखो 'ग्रहणौ' (बौ)।
ग्राही–पु० [स०] १ ग्रहण या स्वीकार करने वाला व्यक्ति। २ पहिचान वाला।
ग्रिध्ध–देखो 'गिद्ध'।
ग्रिह–देखो 'ग्रह'।
ग्रिहवास–देखो 'ग्रहवास'।
ग्रींज (ण)–देखो 'गिद्ध'।
ग्री–स्त्री० ग्रीवा, गर्दन।
ग्रीक–पु० [अ०] १ यूनान देश। २ इस देश की भाषा।
ग्रीखम–देखो 'ग्रीसम'।
ग्रीज, ग्रीझ, ग्रीध, ग्रीधड़ (ट) ग्रीधण–देखो 'गिद्ध'। —पख=गिद्धपख'।
ग्रीधळ ग्रीधस–पु० १ गरुड। २ देखो 'गिद्ध'।
ग्रीधाणी–स्त्री० मादा गिद्ध, गिद्धनी।
ग्रीधाळ–पु० १ गिद्धो का समूह। २ बडा गिद्ध। ३ गरुड।
ग्रिध्ध–देखो 'गिद्ध'।
ग्रीव, ग्रावा–स्त्री० [स० ग्रीवा] गर्दन, गला। —रेख–स्त्री० तीन की सख्या।
ग्रीवाज–पु० हयग्रीव अवतार।
ग्रीसम, ग्रीस्म–स्त्री० [स० ग्रीष्म] १ गरमी का मौसम ग्रीष्म ऋतु। २ उष्णता, गर्मी। –वि० गर्म, उष्ण।
ग्रेवड, (ड़ी)–पु० वृक्षो के तनो मे निकलने वाला विकार।
ग्रेह–देखो 'ग्रह'।
ग्रेहणि (णी)–देखो 'ग्रहणि'।
ग्रोहणौ–देखो 'गहणौ'।
ग्रैवक–पु० एक देव विमान का नाम।
ग्रोधूळ–देखो 'गिद्ध'।
ग्लाणि (णी), ग्लानि (नी)–स्त्री० [स० ग्लानि] १ घृणा, नफरत। २ अरुचि। ३ उदासीनता।
ग्लौ–पु० [स०] चन्द्रमा। —भाळ–पु० शिव, महादेव।
ग्वाड (डो)–देखो 'गवाड'।
ग्वार–देखो 'गवार'। —पाठी='गवारपाठो'। —फळी='गवारफळी'।
ग्वालब–देखो 'गवालव'।
ग्वाळ, ग्वाळियौ, ग्वाळौ–पु० [सं० गोपाल] १ गोपालक, ग्वाला, अहीर। २ श्रीकृष्ण। ३ गडरिया। —पति–पु० श्रीकृष्ण।
ग्वाळेर–पु० [स० गोपालगिरि] ग्वालियर की रियासत व शहर।

— घ —

घ–'क' वर्ग का चौथा वर्ण।
घंघळ (ल)–स्त्री० १ झगडा, टटा। २ बेचैनी घबराहट।
घघोळणौ (बौ)–क्रि० १ पानी को हिलाना, हाथ डालकर हिलाना। २ घोलना, मथना।
घंट–पु० [स० घट] १ गला, कठ। २ देखो 'घटी'। ३ देखो 'घट'।
घटका–पु० १ घुघरू। २ देखो 'घटिका'।
घटाकरण (न)–पु० [स० घटाकर्ण] शिव का एक गण।

घंटाघर–पु० स्तभनुमा ऊची इमारत पर स्थित वडी घडी जिसकी आवाज़ दूर तक सुनाई देती है।
घंटारव–पु० घटे की आवाज।
घंटाळ घंटाळी–स्त्री० १ देवी, दुर्गा । २ एक प्रकार का मृग । –वि० जिमके घटा बधा हो । जिसके सामने घटा बजता हो।
घंटावळि (ळी)–स्त्री० घटिकाओं की पक्ति।
घंटिका, घंटीका घंटी–स्त्री० [स० घटिका] १ छोटा-घटा, घटी। २ घु घरू। ३ गले मे लटकने वाला टेंटवा, कौवा।
घंटियाळ–स्त्री० देवी का विशेषण, दुर्गा, देवी।
घंटी–पु० [स० घटा] १ टन्-टन् ध्वनि उत्पादक बडा यन्त्र, घटा। २ दिन व रात का चौवीसवा भाग या साठ मिनट की एक अवधि । ३ निर्धारित समय मे बजने वाली घडी, घडियाल। ४ लिंगेंद्रिय (बाजारू)।
घंस–पु० [सं० घर्ष] १ सहार, नाश । २ रास्ता, मार्ग। ३ दल, समूह । ४ फौज, सेना । ५ युद्ध । ६ पीछा, अनुधावन। –वि० सहारक।
घंसणौ (बौ)–क्रि० १ सहार, करना, नाश, करना। २ पीछा करना। ३ देखो 'घसणौ' (बौ)।
घंसार–देखो 'घींसार'।
घंसि (सी)–१ देखो 'घंस'। २ देखो 'घीसार'।
घ–पु० [स०] १ सुधर्म । २ हाथी । ३ शिव। ४ नरक। ५ ककरण। –स्त्री० ६ शची । ७ वसुमती। ८ राक्षसी। ९ घंटा। १० घर्घर शब्द। –वि० घातक।
घउटहुली–स्त्री० नागर वेल।
घकार–पु० 'घ' वर्ण।
घक्कौ–पु० १ होश-हवास । २ ध्यान, ख्याल । ३ चेतना। ४ व्यवस्था।
घग्घरि–दखो 'गूगरी'।
घघ (राव, राज)–पु० ऊट।
घघर–स्त्री० एक नदी का नाम।
घघरी–स्त्री० १ छोटा लहगा । २ बच्चियो की फराक। ३ छोटा घट।
घघियौ, घघौ–पु० 'घ' वर्ण।
घघ्घू–पु० उल्लू।
घड (उ)–स्त्री० [स० घट, घटा] १ सेना, फौज । २-मेघ, बादल । ३ करवट । ४ बडा घडा। ५ समूह, झुड। ६ वस्तुओ की तह। ७ शरीर, तन।
घडउथळ (ल्ल)–पु० डिंगल का एक छद (गीत) विशेष।
घडकलियौ–पु० छोटा घडा।
घड़घड़, घडघड़ाट–स्त्री० १ गाडी या भारी वाहन के चलने की आवाज । २ बादलो की गर्जन । ३ तोप आदि की आवाज।
घडघड़ाणौ (बौ)–क्रि० घडघड ध्वनि होना, गर्जना।
घडड–स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।
घड़ण (न)–स्त्री० १ शिल्प क्रिया । २ गढने की क्रिया। ३ आभूषण।
घडणौ–पु० गहना आभूषण।
घड़णौ (बौ)–क्रि० १ गढ़ना, बनाना, रचना, घडाई करना। २ कल्पना करना । ३ गप्प हाकना। ४ मारना, पीटना। ५ वस्तु बेचकर पैसा बनाना।
घडत–स्त्री० १ घडाई, कारीगरी । २ बनावट । ३ गढाई का पारिश्रमिक।
घडनाव–स्त्री० कई घडो को बाध कर बनाई हुई नाव।
घड़बद–पु० १ रहट की माल की रस्सी। २ सेनापति।
घड़मोड़–वि० शूरवीर, योद्धा।
घड़लियौ–पु० कूए पर काम आने वाली 'पजाली' मे लगने वाला डडा। २ देखो 'घडौ'।
घडली–स्त्री० [सं० घटिका] रहट की माल का जल-पात्र जिसमे पानी भर कर निकलता है।
घडलौ–देखो 'घडौ'।
घडवद–देखो 'घडवद'।
घडवौ–पु० १ गढ़ा हुआ पत्थर। २ घडा गागर।
घडस, घडा–देखो 'घड'।
घड़ाई–स्त्री० १ आभूषण, पत्थर आदि गढ़ने की क्रिया या भाव। २ गढने की मजदूरी।
घड़ाणौ (बौ)–क्रि० १ आभूषणो की घडाई कराना, बनवाना। २ पत्थर, गढाने का कार्य कराना।
घड़ामिड (मोड), घडाळ (ळौ)–वि० शूरवीर, योद्धा।
घडावणौ (बौ)–देखो 'घडाणौ' (बौ)।
घड़िय, (उ)–देखो 'घडी'।
घड़िया–स्त्री० भिश्ती का कार्य करने वाली जाति।
घड़ियाल–पु० [स० घटिकावलि] १ देवस्थान का बडा घटा। २ बडी घडी। ३ घटाघर। ४ ग्राह, मकर।
घड़ियाळौ, घडियौ–पु० १ स्वर्णकार। २ पहाडा, गिनती। ३ छोटा घडा। ४ घडे से पानी भरने वाला व्यक्ति। ५ घडाई करने वाला कारीगर, शिल्पी।
घडी–स्त्री० [सं० घटिका] १ समय सूचक यत्र। २ समय या काल का एक विभाग। ३ अवसर, मौका। ४ मुहूर्त।
घडीक–क्रि०वि० १ एक घडी के लगभग। २ कभी।
घडीभिड–देखो 'घडामिड'।
घडीयक–देखो 'घडीक'।

घड़ीसाज–पु० घड़ियो की मरम्मत करने वाला कारीगर।
घड़ूकौ–देखो 'घटोत्कच'।
घड़ूयळ–पु० डिंगल का एक गीत।
घड़ूलौ (ल्यौ)–पु० छोटा घड़ा।
घड़ूस–पु० १ गहरे बादल। २ सेना, फौज। ३ समूह, दल।
घड़ोटियौ–पु० १ छोटा घड़ा। २ मृतक के बारहवें दिन का भोज। ३ मृतक के बारहवें दिन का एक सस्कार।
घड़ौ–पु० [स० घट] १ मिट्टी का जल-पात्र, घड़ा, गगर। २ इसी के अनुरूप किसी धातु का बना पात्र। ३ कलसा।
घच–देखो 'गच'।
घचोलणौ–पु० विघ्न।
घजोंढ़–पु० पहाड़ी भागो मे होने वाला वृक्ष विशेष।
घट–पु० [स०] १ तन, देह, शरीर। २ मन, हृदय। ३ घड़ा, जल-पात्र। ४ कुभराशि। ५ हाथी का मस्तक। ६ प्राणायाम का एक भेद। ७ बीस द्रोण का एक तौल। —**कचुकी**–स्त्री० वाममार्गियो की एक तात्रिक रीति। —**करकट**–पु० सगीत मे एक ताल। —**करण**–पु० कुभकर्ण। कुम्हार। —**करतार, कार**–पु० कुम्हार। —**वक**–पु० शरीर देह। इकाई। —**ज, जात**–पु० अगस्त्य मुनि। —**जोणी, (नी)**–पु० अगस्त्य मुनि। —**सभव**–पु० अगस्त्य मुनि।
घटण–स्त्री० घटने की क्रिया या भाव। कमी। न्यूनता।
घटणौ (बौ)–क्रि० १ कम होना, क्षय होना। २ न्यून होना। ३ घटित होना। ४ उपस्थित होना। ५ सम्पन्न या पूर्ण होना।
घटत (ती)–स्त्री० १ कमी, क्षय, न्यूनता। २ हानि, घाटा।
घटना–स्त्री० [स०] वारदात, वाकया, कोई बात।
घटबढ़–स्त्री० कमी बेशी।
घटवाळियौ–पु० तीर्थ स्थान या सरोवर पर दान लेने वाला याचक।
घटांण–पु० [स० घोटक] १ घोडा, अश्व। २-देखो 'घटा'।
घटा–स्त्री० [स०] १ बादलो का समूह मेघमाला। २ झुड, समूह। ३ धूए या धूल का गुब्बारा। ४ सेना, फौज। ५ धूमधाम, समारोह। ६ सभा, गोष्ठी। ७ हाथियो का समूह। —**कास**–पु० घड़े का खाली स्थान। —**घूम**–स्त्री० घनघोर घटा। —**घोर, टोप**–वि० बादलो से आच्छादित। आच्छादित, छाया हुआ। सुसज्जित। ढका हुआ।
घटाणौ (बौ)–क्रि० १ कम करना। २ न्यून करना। ३ बाकी निकालना। ४ सम्पन्न या पूर्ण करना। ५ क्षीण करना। ६ काटना।
घटाळ–पु० सेना, फौज।
घटाव–पु० १ कमी न्यूनता। २ अवनति, पतन।
घटावणौ (बौ)–देखो 'घटाणौ' (बौ)।
घटावळी–स्त्री० १ एक देवी विशेष। २ मेघमाला।
घटि–वि० न्यून, कम।
घटिकावधान (सत)–पु० [स०] एक ही घड़ी मे अनेक कार्य करने की क्रिया।
घटित–वि० [म०] १ घटा हुआ, हुवा हुआ। २ निर्मित।
घटिया–वि० १ बढ़िया का विपर्याय। २ निम्न कोटी का, हल्का। ३ कम कीमती, सस्ता। ४ अधम, नीच, तुच्छ।
घटियाळी–स्त्री० आवडदेवी की बहन एक देवी।
घटी–देखो 'घड़ी'।
घटीजत्र–पु० १ घड़ी। २ रहट।
घटुलियौ–पु० पत्थर की छोटी चक्की।
घटूकौ, घटोत्कच–पु० भीम व हिडिम्बा का पुत्र।
घटोद्भव–पु० अगस्त्य मुनि।
घटोर, (री)–पु० [स० घटोदर] मेढा, भेड, मेष।
घट्ट–१ देखो 'घट'। २ देखो 'घाट'। ३ देखो 'घटा'।
घट्टित–पु० [स०] १ नाच मे पैर रखने की एक क्रिया। २ देखो 'घटित'।
घट्टी–स्त्री० १ अनाज पीसने की पत्थर की चक्की। २ देखो 'गट्टी'।
घड–१ गढ, किला। २ देखो 'घड'। ३ देखो 'घटा'। ४ देखो 'घट'।
घडलियौ–१ देखो 'घरळियौ'। २ देखो 'घडौ'।
घडहडौ–देखो 'घडौ'।
घण (न)–पु० [स० घन] १ लोह कूटने का मोटा हथौडा। २ लोहा। ३ मुख। ४ गदा। ५ शरीर। ६ समूह, समुदाय। ७ सख्या का गुणनफल। ८ सेना, फौज। ९ पत्थर। १० ताल देने वाला बाजा। ११ चने या मोट मे पडने वाला एक कीडा। १२ सगठन। १३ बादल, मेघ। १४ प्रथम लघु व दो दीर्घ मात्रा का नाम। –वि० १ अधिक, बहुत, ज्यादा। २ ठोस, दृढ़। ३ श्वेत-कृष्ण। ४ धूमिल। ५ सघन, घना। ६ सकीर्ण। ७ चिंता, फिक्र। —**अप**–पु० पानी, जल। —**आणद**–पु० विष्णु। आनद, हर्ष। —**उक्त**–वि० अद्‌भुत विचित्र। चमत्कार पूर्ण। अधिक उक्ति वाला। —**कठ**–पु० डिंगल का एक छद। —**कोल**–पु० लोहा। —**कोदड**–पु० इन्द्र धनुष। —**करौ, खरौ**–वि० अधिकतर। —**खाऊ**–वि० अधिक खाने वाला पेटू। —**घणा**–वि० अत्यधिक। —**घोर**–वि० घना गहरा। घटा टोप। भीषण। –पु० मेघ गर्जन। —**चक, चकर, चक्क, चक्कर, चक्र**–पु० युद्ध, रण। भीड-भाड। गर्दिश, चक्कर। मूर्ख। अवारा। —**जाण, जाणग**–वि० चतुर, बुद्धिमान, विद्वान, पडित। बहुत जानने वाला। —**जीवौ**–

वि० चिरायु। —जुग–वि० प्राचीन। —जूझौ, झूझौ–वीर, योद्धा। —जोर–पु० शक्तिशाली। —ताळ–पु० चातक। करताल। —दाता–वि० बडा दानी। ईश्वर। —दोहौ–वि० वृद्ध, बूढा। पुराना। —नामी–पु० ईश्वर। श्रीकृष्ण। श्रीराम। प्रसिद्ध, विख्यात। —नाद–पु० रावण पुत्र मेघनाद। मेघ गर्जना। मोर। —नादानळ–पु० मोर, मयूर। —पटळ–पु० बादलो का दल, समूह। —पति–पु० इन्द्र। वरुण। —पत्र–पु० अधिक पत्तो वाला वृक्ष। —पथ–पु० आकाश, नभ। —पात='घण-पत्र'। —पुसप–पु० पानी। —प्रिय–पु० मोर, मयूर। —फळ–पु० गुणनफल। —मख–पु० मोर, मयूर। —मड–पु० मेघ घटा। —माया–पु० ईश्वर। विष्णु। कृष्ण। —माळ–स्त्री० मेघमाला। घन घटा। मुड माला। —मूळ–पु० घनफल का मूल अक। —मोल मोलोह, मोलौ–वि० बहुमूल्य, कीमती। —रस–पु० पानी। हाथियो का एक रोग। राट–पु० मेघ। मेघ गर्जना। —राव–पु० मेघनाद, इद्रजीत। —रूप, वरण–पु० ईश्वर। विष्णु। बहुरूपिया। —वह, वाह–पु० हवा, पवन। —वाहण–पु० इन्द्र। पवन। —वाही–पु० लोह कूटने वाला। —सगण, सघण–वि० अत्यधिक, बहुत। —सद्द–पु० घन घटा की ध्वनि। —सहौ–वि० सहनशील। —सार–पु० जल पानी। कपूर। डिंगल का एक छद। —सुर–पु० रावण पुत्र मेघनाद। —सेड, सेढ़–वि० बहुत कार्यों का जानकार। चतुर, बुद्धिमान। उदार, दातार। अधिक दूध देने वाली। —हर–स्त्री० मेघमाला। बादल।

घणण–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ चक्र की गति।

घणस्याम–पु० [स० घनश्याम] १ श्रीकृष्ण। २ काला बादल। –वि० श्याम वर्णी।

घणाक–वि० १ ज्यादा, अधिक। २ प्राय।

घणाक्षरी–पु० [सं० घनाक्षरी] ३२ वर्णो का दण्डक छद विशेष।

घणाखर–क्रि०वि० [सं० घनकार] प्राय अधिकतर।

घणाघण–पु० [स० घनाघन] १ इन्द्र। २ बादल। ३ मस्त हाथी।

घणाघणी–स्त्री० [अनु०] १ अन्याय, गैर इन्साफ। २ अत्याचार। ३ अधिकता, आधिक्य।

घणात्यय–पु० [स०] शरद ऋतु।

घणारग–पु० साधुवाद, धन्यवाद, वाहवाही।

घणियेर, घणीक–वि० अधिक, ज्यादा।

घणीवात–स्त्री० १ विशेषता। २ मान प्रतिष्ठा।

घणु (णू)–वि० [सं० घन] बहुत, पर्याप्त।

घणूघणौ–वि० अत्यधिक।

घणेड़–वि० १ दातार, दानवीर। २ बहुधधी।

घणेरड़उ, घणेरडौ, घणेरौ–वि० (स्त्री० घणेरी) बहुत, अधिक।

घणोत्तम–पु० [स० घनोत्तम] मुख।

घणौ–वि० [स० घन] (स्त्री० घणी) १ बहुत, अधिक। २ पर्याप्त। ३ गहरा।

घतणौ (बौ)–क्रि० डाला जाना।

घताणौ (बौ), घतावणौ (बौ)–क्रि० डलवाना, अन्दर करवाना।

घनस्यांम–देखो 'घणस्याम'।

घनाक्षरी (खरी)–देखो 'घणाक्षरी'।

घबड़ाणौ (बौ), घबरावणौ (बौ)–देखो 'घबराणौ' (बौ)।

घबर, घबराट–स्त्री० १ भय। २ बेचैनी, व्याकुलता। ३ उतावली हडबडी। ४ परेशानी।

घबराणौ (बौ), घबरावणौ (बौ)–क्रि० १ भयभीत होना। २ बेचैन या व्याकुल होना। ३ उतावली या हडबडी करना। ४ परेशान होना। ४ चकित होना, हक्का-बक्का होना। ५ ऊबना।

घबराहट–देखो 'घबराट'।

घमक–स्त्री० १ आघात से उत्पन्न ध्वनि। २ धमाका। ३ गर्जन। ४ झनकार। ५ हिनहिनाहट। ६ प्रहार। ७ यथाशक्य परिश्रम। ८ घूमर नामक लोक नृत्य।

घमंकणौ (बौ)–देखो 'घमकणौ' (बौ)।

घमघम–देखो 'घमघम'।

घमड–पु० १ गर्व, अभिमान। २ बल, शौर्य। ३ शेखी। ४ सहारा, भरोसा।

घमडी–वि० १ गर्विला, अभिमानी। २ शोख।

घम–स्त्री० भारी आघात या भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

घमक–देखो 'घमक'।

घमकणौ (बौ)–क्रि० १ आघात से ध्वनि होना। २ धमाका होना। ३ नाचना। ४ तेज बरसना। ५ अचानक आना। ६ तेजी करना। ७ बजना। ८ ध्वनि होना। ९ गर्जना।

घमकाणौ (बौ), घमकावणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, मारना, पीटना। २ नचाना। ३ घुंघरू बजाना। ४ धमकी देना। ५ बजाना। ६ वेग पूर्वक बरसना।

घमकार–स्त्री० झनझन शब्द, ध्वनि विशेष।

घमकौ–पु० १ आघात या पडने की ध्वनि। २ चलने से उत्पन्न पावो की ध्वनि। ३ घुघरू की झनकार।

घमघम–स्त्री० १ घमघम। २ झनकार। –क्रि०वि० १ शीघ्र, तेजी से। २ निरतर, लगातार।

घमघमणौ (बौ)–देखो 'घमकणौ' (बौ)।

घमघमाणौ (बौ)–देखो 'घमकाणौ' (बौ)।

घमड–१ देखो 'घमक'। २ देखो 'घुमड'।

घमचाळ (चौळ)–स्त्री० [स० घर्मचाल] १ फौज, सेना। २ युद्ध। ३ शस्त्र प्रहार। ४ मिचलाहट, मितली। ५ ऊंट की एक चाल। ६ झनकार। ७ वमन, कै। ८ बौछार। ९ नशा खुमारी। १० कोलाहल, शोरगुल।

घमचोळणौ (बौ)–क्रि० १ जी मचलाना, घबराहट होना। २ आघात करना, प्रहार करना। ३ कोलाहल करना, शोर-गुल करना।

घमझोलौ–पु० झमेला, विघ्न, टटा।

घमडी–स्त्री० घुमाव, चक्कर।

घमर–स्त्री० १ ढोल, नगारे आदि की ध्वनि। २ बादलों की गर्जन। ३ गभीर ध्वनि।

घमराळ (रोळ)–१ युद्ध, रण। २ शस्त्रो की बौछार। ३ तेज महक। ४ उछल-कूद, धमा चौकडी। ५ शोरगुल, कोलाहल।

घमरोळणौ (बौ)–क्रि० १ युद्ध करना। २ सहार करना। ३ रौंदना। ४ महकना।

घमस–स्त्री० १ घोडे की टाप की ध्वनि। २ पद-चाप। ३ आवाज, ध्वनि।

घमसांण (सान)–वि० १ भयकर, भीषण। २ घनघोर, घमासान। –पु० १ भयकर युद्ध। २ संहार, नाश। ३ फौज, सेना। ४ समूह, दल। ५ भीड, समूह जमघट।

घमसाळ–वि० विशाल, बडा।

घमहम, घमंघम-देखो 'घमघम'।

घमाकौ–देखो 'धमाकौ'।

घमाघम (मी)–१ देखो 'धमाधम'। २ देखो 'घमघम'।

घमाडौ, घमोड, घमीडौ, घमीर, घमेड़, घमेडौ–पु० १ प्रहार, चोट, आघात। २ धमाका। ३ घम्म की आवाज। ४ दुःख या शोक मे छाती पीटने की क्रिया या भाव। ५ दही मथन की ध्वनि।

घमोडणौ (बौ)–क्रि० १ मारना, पीटना, आघात करना। २ प्रहार करना, वार करना। ३ दही मथना।

घमोड़ौ–देखो 'घमीडौ'।

घमोय–स्त्री० सत्यानाशी नामक पौधा।

घमोर–देखो 'घमीड'।

घम्म–देखो 'घम'।

घम्मघमतइ–क्रि०वि० १ घेरा बनाते हुए। २ घूमते हुए।

घर–पु० [स० गृह, घर] १ भवन, मकान, इमारत, बगला। २ निवास स्थान, आवास। ३ जन्म भूमि, जन्म स्थान, मातृ भूमि। ४ स्वदेश। ५ कुल, वश, घराना ६ किसी वस्तु का खोखा, चोगा। ७ खाना, कोष्ठक। ८ किसी वस्तु का निश्चित स्थान। ९ छेद, बिल। १० राग का स्वर। ११ उत्पत्ति स्थान। १२ मूल कारण। १३ गृहस्थी, परिवार। १४ घर का सामान। १५ कार्यालय कारखाना। १६ कोठरी, कक्ष। १७ चौखटा, फ्रेम। १८ भण्डार, खजाना। १९ देवालय, मदिर। २० युक्ति, दाव।

घरकणौ (बौ)–देखो 'घुडकणौ' (बौ)।

घरकूलियौ, घरकोलियौ–पु० मिट्टी का घरोदा।

घरखूंडियौ–पु० एक देशी खेल।

घरगिणती–स्त्री० जन गणना।

घरगिरस्ती–स्त्री० घर-गृहस्थी, परिवार।

घरघरांणौ–पु० वश, कुल।

घरघराट (हट)–स्त्री० घर्र-घर्र की ध्वनि।

घरघाल, घर-घालणियौ–वि० १ घर का नाश करने वाला। २ कुल मे कलक लगाने वाला।

घरघेटियौ (घोडियौ)–वि० (स्त्री० घरघेटकी) १ निरतर घर पर ही रहने का आदि। २ अत पुर मे ही रहने वाला।

घरडक–स्त्री० घर्षण।

घरडकौ–पु० १ रगड, घर्षण। २ कुरेख। ३ खरोच। ४ मृत्यु के समय कठ से निकलने वाली ध्वनि।

घरड़णौ (बौ)–क्रि० १ धिसका लगाना। २ रगडना। ३ परिश्रम करना। ४ तग करना।

घरबारी–वि० गृहस्थी।

घरचारौ–पु० १ घरबार। २ गृहस्थाश्रम। ३ पति मानना।

घरजमाई–पु० १ श्वसुर के घर मे रहने वाला व्यक्ति। २ विवाह से पूर्व, कुछ निश्चित अवधि तक अपने भावी श्वसुर के यहा रह कर कार्य करने वाला व्यक्ति।

घरजाम, (जामी) घरजायौ–वि० घर मे जन्मा। दास, गुलाम।

घरट, घरटियौ–पु० [स० घरट्ट] १ इमारती कार्य मे चूना तैयार करने का पत्थर का मोटा चक्कर। २ इस चक्कर के फिरने का घेरा। ३ बडी चक्की। ४ एक जलचर पक्षी। ५ डिंगल का एक गीत।

घरटी–देखो 'घट्टी'।

घरट्ट–देखो 'घरट'।

घरडू–स्त्री० गले मे होने वाली खराश।

घरण (णि, णी)–स्त्री० [स० गृहिणी] १ पत्नी, भार्या। २ घर की मालकिन।

घरत–देखो 'घिरत'।

घरतार–पु० गृह घर। निवास, आवास।

घरवासी–स्त्री० गृहिणी, पत्नी।

घरधणी–पु० (स्त्री० घरधणियाणी) १ घर का मालिक, गृह स्वामी। २ पति, खाविंद।

घरधारी–वि० गृहस्थी, घरबारी।

घरनायक–पु० घर का स्वामी ।
घरनाळ–स्त्री० एक प्रकार की तोप ।
घरनी (न्नी)–देखो 'घरणी' ।
घरफोड़ौ–पु० १ घर का झगडा, कलह । २ घरेलु कष्ट । ३ घर मे चोरी हेतु किया गया छेद, सेंध । ४ चोरी, नकब । ५ घर का भेदी ।
घरबतावणी–स्त्री० हाथ की प्रथम अगुली, तर्जनी ।
घरबार–पु० १ घर-गृहस्थी । २ घर का सामान । ३ परिवार ।
घरबारी–वि० घर-गृहस्थी वाला । बाल-बच्चेदार । –पु० पारिवारिक साधु ।
घरबिकरी (बिखरी)–स्त्री० मिल्कियत, जायदाद ।
घरबूडौ–वि० घर को बर्बाद करने वाला, डूबोने वाला ।
घरबोब–पु० प्रति गृह से लिया जाने वाला कर विशेष ।
घरभमतौ–पु० १ मकान मे फैलने वाला धुआ । २ अवारा घूमने वाला ।
घरभेद–पु० घर का रहस्य ।
घरभेदू–वि० घर का भेद देने वाला ।
घरमड (ण)–पु० १ धन दौलत । २ पति ।
घरम–वि० अनुरागी ।
घरमकर–पु० सूर्य ।
घरमणि (णी), घरमेढ़ी–स्त्री० १ घर का दीपक, ज्योति । २ कुल का दीपक ।
घरमपुसप–पु० महल, भवन, अटारी ।
घरर–स्त्री० १ घर्र-घर्र ध्वनि । २ मेघ गर्जन । ३ घर्षण की ध्वनि ।
घरराट–देखो 'घरघराट' ।
घरराणौ (बौ), घररावणौ (बौ)–क्रि० १ घर्र-घर्र की ध्वनि होना । २ धडकना । ३ कांपना । ४ गर्जना ।
घरळियौ (घुरळियौ)–पु० चडस खींचने के जूए का काष्ठ का डडा ।
घरलोचु–वि० १ बुद्धिमान गृहस्थ । २ घर का शुभ चिंतक ।
घरवट (वाट)–स्त्री० [स० गृह-व्रति] १ वश, कुल । २ कुल की मर्यादा ।
घरवतावणी–देखो 'घरबतावणी' ।
घरवरताऊ–वि० घर की आवश्यकताओ को पूरा करने लायक ।
घरवाळौ–पु० (स्त्री० घरवाळी) १ पति । २ गृह स्वामी ।
घरवास (सौ)–पु० १ गृहस्थाश्रम, गृहस्थी । २ पत्नी बन कर रहना । ३ गृहस्थ जीवन । ४ पति-पत्नी का सबंध ।
घरवासीवार–वि० बाल-बच्चेदार ।
घरविद (विध)–स्त्री० [स० गृहविधि] १ स्नेह, प्रेम । २ पारिवारिक सदस्यो का परस्पर स्नेह । ३ घनिष्ठता, आत्मीयता । –वि० घर सबधी, घर की ।
घर-वेध–पु० गृहकलह ।
घरसूत–पु० [स० गृहसूध] घर की व्यवस्था ।
घरस्याळ–स्त्री० पशु-पक्षियो का बसेरा ।
घरहर–स्त्री० घर्र-घर्र ध्वनि, गर्जना ।
घरहरणौ (बौ)–क्रि० १ घर्र-घर्र करना । २ गर्जना । ३ गूंजना । ४ बजना ।
घराणौ–पु० १ वश, कुल, खानदान । २ घर ।
घराघरू–वि० १ स्वय का, निजी । २ घर सबधी ।
घरिणी–देखो 'घरणी' ।
घरियौ–पु० रहट की लाट मे बना छेद ।
घरिसूतु, घरसूत्र–देखो 'घरसूत' ।
घरुवौ–पु० विवाह मे दीवार पर बनाये जाने वाले चित्र ।
घरू–वि० १ घर का, घर संबधी, घरेलु । २ निजी । —**लाग**–पु० हाकिम के घरेलु खर्चों को पूरा करने के लिए लगाया जाने वाला कर ।
घरेचौ, घरेरौ–पु० पुनर्विवाह ।
घरोचियौ (यौ)–वि० प्रति घर ।
घरोघर (घरि)–वि० प्रति घर, प्रत्येक घर से ।
घरो'घर–वि० निजी, स्वयं का, घर का । –क्रि०वि० घर-घर, एक घर से दूसरे घर ।
घलणौ (बौ)–क्रि० १ डाला जाना, डलना । २ बधना । ३ फसना । ४ लिपटना । ५ घुसना ।
घलाणौ (बौ), घलावणौ(बौ)–क्रि० १ डलवाना । २ बधवाना । ३ फसवाना । ४ लिपटवाना । ५ घुसवाना ।
घल्लणौ (बौ)–देखो 'घलणौ' (बौ) ।
घल्लाणौ (बौ)–देखो 'घलाणौ' (बौ) ।
घवकौ–पु० आख का दर्द ।
घस–पु० १ मार्ग, रास्ता, पथ । २ पथ चिह्न । –क्रि०वि० १ शीघ्र, जल्दी । २ देखो 'घस' ।
घसक–स्त्री० १ सूरत, शक्ल । २ ढाचा, ढग । ३ हैसियत । ४ गप्प, डीग । ५ ठसक । ६ शक्ति बल ।
घसकणौ (बौ), घसकाणौ (बौ), घसकावणौ (बौ)–क्रि० १ रगडना, रगडाई करना । २ धमकाना, दुत्कारना । ३ स्त्री प्रसग करना । ४ खिसकना ।
घसकौ–देखो 'घसक' ।
घसडकौ–पु० १ घर्षण, रगड । २ अव्यवस्था । ३ लापरवाही का कार्य । ४ व्यय, खर्च । ५ खरोच ।
घसटी–पु० [स० घृष्टि] सूअर ।
घसण–पु० [स० घर्षण] १ घिसने या रगडने की क्रिया या भाव । २ मार्ग, राह, रास्ता । ३ युद्ध, रण । ४ सेना फौज ।

घसणौ (बौ)–क्रि० [स० घर्षण] १ रगडना, घिसना, मलना। २ घोटना। ३ अधिक काम लेना। ४ भक्षण करना। ५ पुनरावृत्ति करना। ६ भोटा होना। ७ शस्त्र की धार निकालना।

घसर, घसरौ–पु० [स० घस्त्र] १ एक दिन। २ सूर्य। ३ केसर। –वि० हानिकारक।

घसाई–देखो 'घिसाई'।

घसाणौ (बौ), घसावणौ (बौ)–क्रि० १ रगडवाना, घिसवाना। २ घुटवाना। ३ अधिक काम लिराना। ४ भक्षण कराना। ५ पुनरावृत्ति कराना। ६ भोटा कराना। ७ धार निकलवाना।

घसि–पु० १ आहार, भोजन। २ खाद्य सामग्री। ३ देखो 'घस'।

घसियारौ–पु० घास का व्यापारी।

घसीट–स्त्री० १ घसीटने की क्रिया या भाव। २ अस्पष्ट लिखावट। ३ रगड की रेखा, लकीर। ४ खरोच। ५ लिखावट।

घसीटणौ (बौ)–क्रि० १ जमीन पर पडे प्राणी या वस्तु को खीच कर लेजाना, घसीटना। २ अस्पष्ट लिखना। ३ अपनी ओर आकर्षित करना। ४ निभाना। ५ रगडना।

घस्त–देखो 'ग्रहस्थ'।

घस्र–देखो 'घसर'।

घस्सणौ (बौ)–देखो 'घसणौ' (बौ)।

घहर-घुमेर–वि० १ घना, गहरा। २ घना पल्लवित।

घहरणौ (बौ), घहराणौ (बौ), घहरावणौ (बौ)–क्रि० १ गर्जना, गभीर गर्जन करना। २ घोर शब्द करना। ३ भारी गडगडाहट करना।

घां–पु० बादल, जलद।

घाघळ–स्त्री० कष्ट, तकलीफ।

घाघा–क्रि० वि० स्थान-स्थान, ठोर-ठोर। घर्र-घर्र।

घाची–स्त्री० दूध का व्यवसाय करने वाली हिंदू जाति व इस जाति का व्यक्ति।

घाचौ–वि० १ वीर, शक्तिशाली। २ अडियल। ३ देखो 'घोचौ'।

घांट (की टी)–स्त्री० [स० ग्रीवा] १ गर्दन, ग्रीवा। २ कठ।

घाटाळ–पु० १ हाथी, गज। २ घटा धारण करने वाली देवी।

घाटीतोडजुर–पु० एक प्रकार का ज्वर, गर्दन तोड बुखार।

घांटै–क्रि० वि० पास, समीप।

घाटौ–पु० १ गला, कठ। २ गर्दन, ग्रीवा।

घाण–पु० १ पानी की धार से भूमि के कटाव को रोकने के लिये रखा जाने वाला आधार। २ घाव, जखम। ३ युद्ध, सग्राम, लडाई। ४ ध्वस, नाश। ५ अधकचरा होने की अवस्था। ६ पिलाई। ७ समूह, झुण्ड। ८ कोल्हू। ९ सुगध। –वि० १ लथ-पथ, सराबोर। २ तर।

घाणमथांण (णौ)–पु० १ युद्ध, लडाई। २ नाश, सहार। ३ उथल-पुथल। ४ मथन। ५ अस्थिर विचार।

घाणिग्रौ–पु० १ एक ही बार मे एक साथ निकाला हुआ पदार्थ। २ कोल्हू मे एक बार मे पेरा जाने वाला पदार्थ।

घाणी (णौ)–स्त्री० १ तेल निकालने का कोल्हू। २ कोल्हू मे एक बार मे डाला जाने वाला पदार्थ। ३ नाश, सहार। —कुंतौ–पु० तिल पेरने वालो से लिया जाने वाला कर विशेष।

घातरडौ–पु० गला, कठ।

घानर, (रौ)–पु० १ बहरा, व्यक्ति। २ वकरी।

घाम–पु० १ गर्मी। २ प्रकाश। ३ धूप। ४ फौज, सेना। —कर–स्त्री० रश्मि, किरण। —घूम–वि० उदास, सुस्त, स्तब्ध, चुपचाप।

घाव–देखो 'घाम'।

घास–पु० एक प्रकार का पत्थर।

घासाड–स्त्री० सेना, फौज।

घासाडणौ (बौ)–क्रि० चीखना, चिल्लाना (बन्दर)।

घासाडौ–पु० योद्धा, वीर।

घासार, घासारु, घासाहड (हर), घासोहर–पु० १ दल समूह। २ फौज सेना। ३ देखो 'घीसार'।

घा–स्त्री० १ देवी। २ ध्वनि। ३ वसुमती। ४ राक्षसी। ५ ब्रह्मा।

घा'–देखो 'घास'।

घाअ–पु० १ नरक। २ ककण। ३ प्रहार, चोट। –स्त्री० १ शची। २ धारा।

घाइ (ई)–स्त्री० १ नकल। २ चोट, प्रहार। ३ घाव।

घाइल–देखो 'घायल'।

घाउ (र)–देखो 'घाव'।

घागडा–देखो 'गागडा'।

घाघ–वि० १ अनुभवी, सयाना। २ दक्ष, निपुण। ३ चतुर, चालाक। –पु० १ वडा जखम, घाव। २ वर्षा विज्ञान का एक पडित।

घाघडदि (बौ)–वि० गभीर, गहरा।

घाघडौ–देखो 'गागड' (डौ)।

घाघरट–पु० १ युद्ध, लडाई। २ समूह, झुण्ड। –वि० जवरदस्त, वडा।

घाघरा–स्त्री० सरयू नदी।

घाघरौ–पु० स्त्रियो का वडा लहगा, पेटीकोट, घाघर।

घाघस–वि० खराव, हल्का, न्यून।

घाट–पु० [स० घट्ट] १ नदी या जलाशय का किनारा, घाट। २ तग पहाडी रास्ता। ३ ढग, प्रकार। ४ रचना, वनावट। ५ विचार। ६ स्थान, जगह। ७ दशा, हालत, स्थिति।

८ घात, दाव । ९ समूह, झुंड, दल । १० घडो का समूह । ११ षडयत्र । १२ धोखा, कपट । १३ बनावट, गठन । १४ निंदा, बुराई । १५ शरीर । १६ गढे हुए पदार्थ । १७ सेना, फौज । १८ निंदा, बुराई । १९ तलवार की धार । २० तह किये हुए वस्त्र । २१ मार्ग, रास्ता । २२ छाछ के साथ पका हुआ दलिया । —वि० कम, थोडा । —घड़-स्त्री० सोच-विचार । —बराड़, बराळ-वि० भयकर । जबरदस्त, शक्तिशाली । —बाज-पु० शरीर की रचना, डील-डौल । —वाल-पु० घाट पर दान लेने वाला ।

घाटि—१ देखो 'घाट' । २ देखो 'घाटी' ।

घाटी—स्त्री० १ पर्वतो के बीच का रास्ता । २ पर्वतीय ढाल । ३ ढालु जमीन । ४ सकीर्ण या तग रास्ता । ५ कठिनाई, बाधा । ६ भयकर सकट ।

घाटू—वि० १ कम थोडा । २ वह जो गढा जासके (पत्थर) —पु० हानि, क्षति ।

घाटे-बराड—देखो 'घाटबराड' ।

घाटो—पु० १ कमी । २ हानि, नुकसान । ३ अरावली पर्वत । ४ पर्वतीय घाटी । ५ पहाडी रास्ता । ६ मार्ग, रास्ता । ७ व्यापारिक तोटा, घाटा । ८ देखो घाट' ।

घाठ—देखो 'घाट' ।

घाणौ (बौ)—क्रि० १ ग्रसित होना, गिराना । २ पछाडना, पटकना, मारना । ३ रोदना, कुचलना ।

घात-स्त्री० [स०] १ चोट, प्रहार । २ हत्या, वध, संहार । ३ मार । ४ नाश, विनाश । ५ कपट, छल, धूर्तता । ६ मौका, अवसर । ७ धोखा । ८ तीर । ९ गुणनफल । १० प्रवेश, सक्राति । ११ तलवार । १२ षडयन्त्र, दाव । १३ पत्थर । १४ उपला, कडा । १५ विपत्ति, सकट । १६ मृत्यु, मौत । १७ चुगली ।

घातक (की कू)—वि० [स०] (स्त्री० घातकी, णि, णी) १ घात करने वाला । २ सहारक, विनाशक । ३ मारने वाला । ४ हत्यारा । ५ शत्रु । ६ हानिकारक । ७ भयकर ।

घातणौ (बौ)-क्रि० १ घात करना । २ सहार करना । ३ डालना । ४ स्थापित करना । ५ निर्माण करना । ६ रखना । ७ मिलाना ।

घातलौ, घाता, घाती, घातीक, घातु—देखो 'घातक' ।

घाय—१ देखो 'घाव' । २ देखो 'घायक' ।

घायक (त)—वि० १ घायल । २ क्षत-विक्षत । ३ देखो 'घातक' ।

घायन—पु० प्रहार, चोट, वार ।

घायल (ल्ल)—वि० १ चोट खाया हुआ, जख्मी, आहत । २ क्षत ।

घारवाट—पु० फसल की सिंचाई का किराया ।

घालणौ—वि० सहारक, विध्वसक ।

घालणौ (बौ)—क्रि० १ डालना । २ घुसेडना । ३ किसी मे समाहित करना । ४ स्थापित करना । ५ रखना । ६ फेंकना । ७ छोडना । ८ बिगाडना । ९ नष्ट करना । १० मारना । ११ प्रहार करना । १२ प्रवेश कराना । १३ निर्माण करना । १४ मिलाना ।

घालमेल, घालामेलौ—पु० १ डालने-निकालने का कार्य । २ उखाड-पछाड । ३ कपट, छल । ४ चुगली । ५ घनिष्ठता ।

घाव—पु० [स० घात] १ आघात, चोट आदि से होने वाला जख्म । २ फोडा । ३ जख्म का गड्ढा । ४ चोट, प्रहार । ५ दो मील का फासला ।

घावक—वि० १ घाव करने वाला । २ चोट या प्रहार करने वाला । ३ घातक । ४ देखो 'घाव' ।

घावछक—वि० १ घावो से क्षत । २ घायल ।

घावड—वि० १ घातक । २ प्रहार करने वाला । ३ शूरवीर, पराक्रमी । ४ विचारशील, चतुर ।

घावणौ (बौ)—देखो 'घाणौ' (बौ) ।

घावबेल—स्त्री० समुद्र पान नामक औषधि ।

घावरियौ—पु० चिकित्सक ।

घावापूर—वि० घावो से परिपूर्ण ।

घावौ—देखो 'घाव' ।

घास—पु० [स०] १ वर्षा होने पर स्वत उगने वाले पौधे, उद्भिज, तृण, चारा । २ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

घासण—वि० १ काटने वाला । २ सहार करने वाला । —पु० घास-फूस ।

घासणौ (बौ)—देखो 'घसणौ' (बौ) ।

घासपात, (फूस, भूसौ)—पु० १ घास व पत्ते आदि का समूह । २ कूड़ा-करकट ।

घासमारी—स्त्री० १ मवेशियो की गणना । २ मवेशियो की चराई पर लिया जाने वाला कर ।

घासांण—स्त्री० घिसने की क्रिया ।

घासाहड, घासाहर—देखो 'घासाहड' ।

घासियौ—पु० गद्दा, मोटा बिस्तरा ।

घासौ—पु० पानी आदि मे घिसकर दी जाने वाली दवा ।

घाह—पु० १ वृत्त, घेरा, घेर । २ झूल ।

घिटाळ, घिटियाळ—पु० १ 'फोग' के फूल । २ फोग का फल । ३ देखो 'घटियाळ' ।

घिवड़ा—स्त्री० एक मुसलमान जाति ।

घियाळणौ (बौ)—क्रि० १ खींचना । २ घसीटना ।

घिसार—देखो 'घीसार' ।

घियाळी (योळी)—स्त्री० १ लकीर, रेखा । २ देखो 'घियोडी' ।

घि–स्त्री० १ मृगतृष्णा । २ चवर, चामर । ३ धर्म । ४ विस्तार, फैलाव ।

घिचपिच–वि० १ अस्पष्ट । २ गडबड । ३ गदगी । ४ बेतरतीव । –पु० १ स्थानाभाव । २ सकरापन, तगी । ३ भीड-भाड ।

घिटोरड़ी–स्त्री० वह भेड जिसने बच्चा न दिया हो ।

घिया–स्त्री० लौकी, आल ।

घियोडी–स्त्री० लकडी का वह उपकरण जिस पर हल रख कर खींचा जाता है ।

घिरणा–देखो 'घ्रणा' ।

घिरणी–स्त्री० १ घुमाव, मोड । २ देखो 'घरणी' ।

घिरणौ (बौ)–क्रि० १ किसी घेरे मे आना, आवृत्त होना । २ आवेष्टित होना, लपेट मे आना । ३ एकत्र होना, सगृहीत होना । ४ पुष्ट होना । ५ प्राप्त या उपलब्ध होना । ६ चारो ओर छाना । ७ देखो 'गिरणौ' (बौ) ।

घिरत (रित)–पु० [स० घृत] घृत, घी, गोरस, मक्खन ।

घिरळणौ (बौ)–देखो 'घुरळणौ' (बौ) ।

घिराई, घिराव–स्त्री० १ घेरने की क्रिया या भाव । २ घेराव । ३ आवेष्टन । ४ घेरने की मजदूरी । ५ मवेशी चराने का कार्य व इसका पारिश्रमिक ।

घिल, घिलोडियौ घिलोड़ी–स्त्री० घी रखने का छोटा पात्र ।

घिल्यौ–देखो 'घुरळियौ' ।

घिव, घिवड़ो–पु० [स० घृत] घी, घृत ।

घिस–पु० [स० घृष] भोजन ।

घिसघिस–स्त्री० १ विचारो की अस्थिरता । २ कानाफूसी । ३ गडबडी ।

घिसटणौ (बौ)–देखो 'घसीटणौ' (बौ) ।

घिसणौ (बौ)–देखो 'घसणौ' (बौ) ।

घिसपिस–देखो 'घिचपिच' ।

घिसाई–देखो 'घसाई' ।

घिसाणौ (बौ), घिसावणौ (बौ)–देखो 'घसाणौ' (बौ) ।

घिसिरपिसर–देखो घिमपिच' ।

घिस्सौ–पु० १ धोखा । २ झासा । ३ डीग ।

घींगल–पु० गोबर का कीडा विशेष ।

घींचणौ (बौ)–देखो 'घीसणौ' (बौ) ।

घींचाणौ (बौ), घींचावणौ (बौ)–देखो 'घीसाणौ' (बौ) ।

घींयो–पु० सिंचाई की नालिया साफ करने का घास आदि का गुच्छा ।

घींसणपूंछौ–पु० लवी पूछ का बैल ।

घींसणौ (बौ)–क्रि० १ घसीटना । २ खींचना, ऐंचना । ३ रगडना । ४ हाकना । ५ चलाना ।

घींसाणौ (बौ), घींसावणौ (बौ)–क्रि० १ घसीटवाना । २ खिंचवाना । ३ रगडवाना । ४ हकवाना । ५ चलवाना ।

घींसार–पु० [स० घृष्टचार] १ वड़ा मार्ग, राज पथ । २ दल, समूह । ३ सेना, फौज ।

घींसोडी–देखो 'हिंग्रोडी' ।

घी–पु० [स० घृत] १ घृत, गोरस, मक्खन । २ तत्व, सार ।

घीग्रा–देखो 'घिया' ।

घीकणौ (बौ)–क्रि० प्रहार करना । वार करना ।

घीकुआर (कुंवार, कुमार)–पु० [सं० घृत कुमार] ग्वार पाठा ।

घीघाणौ (बौ), घीघावणौ (बौ)–देखो 'गीगाणौ' (बौ) ।

घीड़–पु० एक वरसाती कीडा । वडी दीमक ।

घीतांमणियौ (तावणियौ)–पु० मक्खन को तपाकर घी निकालने का पात्र ।

घीतोरू–स्त्री० एक प्रकार की तोराई ।

घीतोळी–पु० जलाशयो मे होने वाला एक लता फल ।

घीध–देखो 'गिद्ध' ।

घीयड़–देखो 'घीड' ।

घीयाई–पु० घी उत्पादकों मे लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर ।

घीया-भाटो–पु० एक प्रकार का पत्थर । सगेजराहित ।

घीरत–देखो 'घिरत' ।

घीव–देखो 'घी' ।

घीवेल–स्त्री० वर्षा ऋतु मे होने वाली एक लता विशेष ।

घीसणपूंछौ–देखो 'घींसणपूंछौ' ।

घीसणौ (बौ)– देखो 'घींसणौ (बौ)' ।

घीसाणौ (बौ), घीसावणौ (बौ)–देखो 'घींसाणौ (बौ)' ।

घीसार–देखो 'घींसार' ।

घीसाळ–पु० दुर्ग, किला ।

घुंगची, घुंघची–स्त्री० [सं० गुंजा] चिरमी का पौधा व फल ।

घुंघट–देखो 'घूंघट' ।

घुंघराळौ घुंघरेदार–पु० घुमावदार, छल्लेदार, घुंघराला ।

घुंघरौ–देखो 'घूंघरौ' ।

घुंडी–स्त्री० १ ग्रन्थि, गाठ । २ बटन । —दार–पु० बटन वाला ।

घु–पु० [सं०] १ कबूतर की गुटरगू । २ अस्पष्ट शब्द ३ मही । –वि० १ शठ, दुष्ट । २ दयालु, कृपालु ।

घुकरी (कारी)–स्त्री० १ कौआ, काक । २ उल्लू । ३ कुत्ते आदि के बैठने का खड्डा ।

घुग्घर–पु० घुघरू ।

घग्घी–स्त्री० रूई व ऊन की घोघी ।

घुघू (घुघु)–पु० उलूक पक्षी ।

घुघ–स्त्री० झडी ।

घुघराळो–देखो 'घूंघराळो' ।

घुडकणौ (बौ)—क्रि० १ लुढ़कना। २ जोर से बोलना। ३ फटकारना, धमकाना।

घुडकाणौ (बौ), घुडकावणौ (बौ)—क्रि० १ लुढ़काना। २ फटकारना, धमकाना।

घुड़की—स्त्री० धमकी, डाट।

घुडकौ—देखो 'घुरडकौ'।

घुडचढ़ी—स्त्री० १ एक वैवाहिक रश्म। २ घोड़े पर रखकर चलाई जाने वाली तोप।

घडदौड—स्त्री० १ घोडों की दौड। २ अश्व सेना की कवायद।

घुडनाळ—स्त्री० घोड़े पर रखी जाने वाली तोप।

घुडवैहल—स्त्री० घोडागाडी, रथ।

घुडलौ (ल्लौ)—पु० १ घोडा। २ विवाह मे पुत्री की विदाई पर गाया जाने वाला एक लोक गीत। ३ गणगोर का गीत। ४ इस गीत के साथ, दीप रख कर घुमाया जाने वाला छोटा घडा।

घुडसाळ—स्त्री० अश्वशाला। अस्तबल।

घुडी—स्त्री० घोडी,

घुचरियौ—पु० कुत्ते का बच्चा, पिल्ला।

घुट—पु० १ टखना, गुल्फ, घुटना। २ गुटका।

घुटकी—देखो 'गुटकी'।

घुटक्कणौ (बौ)—क्रि० १ घूट भरना, घूंट लेना, घूंट-घूट पीना। २ निगलना।

घुटणौ (बौ)—क्रि० १ धूए आदि का कही एकत्र होना, अन्दर ही अन्दर वदना। २ सांस, दम या कोई भावना का अवरुद्ध होकर अन्दर दबना। ३ मन मे घुटन होना। ४ रगड खाकर चिकना होना। ५ अधिक मेल-जोल होना। ६ दक्षता या निपुणता प्राप्त करना। ७ क्रोध करना। ८ तद्रित होना। ९ ठडाई आदि घोटा जाना। १० माल-मसाले बनना। ११ मुडित होना।

घुटरगू—स्त्री० १ कबूतर की आवाज। २ कानाफूसी।

घुटरू—पु० १ घुटना। २ कबूतर की आवाज।

घुटाणौ (बौ), घुटावणौ (बौ)—क्रि० १ धूए को एकत्र करना, धुकाना। २ सास अवरुद्ध करना। ३ गला दबाना। ४ अनावश्यक रूप से दबाव डाल कर बोलने न देना। ५ रगडना, चिकना करना। ६ अधिक मेल-जोल कराना। ७ दक्ष व निपुण बनाना। ८ ठंडाई आदि घुटवाना। ९ माल-ताल बनवाना। १० मुडन कराना।

घुट्टी—देखो 'घूटी'।

घुणतर (रि)—वि० सत्तर से एक कम। —स्त्री० साठ व नो की सख्या, ६९।

घुण-घुण-मोंगणो—पु० एक देशी खेल।

घुण, घुणियौ—[सं० घुण] १ मोठ, मूग, चना आदि का छोटा कीडा, घुन। २ कोई आन्तरिक बीमारी।

घुत—स्त्री० चोट या आघात से होने वाली सूजन।

घुतकी, घुती—स्त्री० छोटे कानो की बकरी।

घुद—पु० घोदने का शस्त्र विशेष। —वि० पूर्ण, निपट।

घुदौ—देखो 'घोदौ'।

घुबारियौ—पु० तहखाना, तलगृह।

घुमंड—पु० १ घूमने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की मस्त चाल। ३ देखो 'घमड'।

घुमडणौ (बौ)—देखो 'घुमडणौ' (बौ)।

घुमडी—देखो 'घमडी'।

घुमड़—स्त्री० १ बादलो की घटा। २ घनघोर घटा छाने की अवस्था। ३ ध्वनि विशेष।

घुमडणौ (बौ)—क्रि० घटाएं उठना, छाना। उमडना।

घुमणौ (बौ)—देखो 'घूमणौ' (बौ)।

घुमरणौ (बौ)—क्रि० १ घमघम शब्द करना। २ घोर शब्द होना। ३ एक प्रकार का लोक नृत्य करना।

घुमाणौ (बौ), घुमावणौ (बौ)—क्रि० १ घुमाना, फिराना। २ टहलाना। ३ मोडना। ४ लौटाना। ५ चक्कर लगवाना। ६ मरोडवाना।

घुमाव—पु० १ चक्कर, फेरा। २ टहलाव। ३ मोड़। ४ बल। —**दार**—वि० चक्करदार। बलवाला।

घुम्मणौ (बौ)—देखो 'घुमडणौ' (बौ)।

घुम्मरणौ (बौ)—देखो 'घुमरणौ' (बौ)।

घुम्मौ—पु० १ घूंसा, मुष्ठिका। २ गोल ककडी।

घुर—स्त्री० नक्कारे की आवाज।

घुरक—स्त्री० १ छोटी गुफा। २ कुत्ते, सियार आदि के बैठने का गड्डा। ३ घुर्राहट।

घुरकणौ (बौ)—देखो 'घुडकणौ' (बौ)।

घुरकाणौ (बौ)—देखो 'घुडकाणौ' (बौ)।

घुरकी (कौ)—स्त्री० गुर्राहट।

घुरख, घुरखाली—देखो 'घुरक'।

घुरघुर—स्त्री० १ सूअर आदि की गुर्राहट। २ एक टक देखने की क्रिया।

घुरघुराणौ (बौ)—क्रि० १ गुर्राना। २ एक टक देखना।

घुरड—स्त्री० १ घर्षण, रगड। २ रगड का निशान, खरोच। ३ झगडा।

घुरडकौ—पु० १ कफ, सर्दी आदि से होने वाली घरघराहट। २ अतिम समय दिया जाने वाला दान। ३ अत समय की श्वास क्रिया, अतिम सास। ४ जोर से खीची जाने वाली लकीर। ५ खरोच। ६ रगड।

घुरडणौ (बौ)–क्रि० १ रगडना । २ उस्तरे से बाल साफ करना । ३ कुचर देना । ४ खरोचना ।
घुरणौ (बौ)–क्रि० १ किसी वाद्य का गुजरित होना, गूंजना । २ वजना, गर्जना । ३ देखो 'घूरणौ' (बौ) ।
घुरनाळ–देखो घुडनाळ' ।
घुररारणौ (बौ), घुररावणौ (बौ)–देखो 'गुररारणौ' (बौ) ।
घुरळणौ (बौ)–क्रि० वच्चे का वमन करना, कै करना ।
घुरळियौ–पु० १ जूए मे लगने वाला डडा । २ रस्सी या जेवडी मे वल देने का उपकरण ।
घुरळी–स्त्री० १ लगाम । २ वमन, कै ।
घुरस–स्त्री० घोडे का भूमि खोदते समय पैर रखने का ढग ।
घुरसली–स्त्री० १ मैना पक्षी । २ देखो 'घुरसाली' ।
घुरसाळ (ळी)–स्त्री० १ अश्वशाला, अस्तवल । २ उल्लू का घोसला । २ कुत्ते आदि के वैठने का गड्ढा ।
घुरसाळौ–पु० घोसला ।
घुरस्याळ–देखो 'घुरसाळ' ।
घुराणौ (बौ), घुरावणौ (बौ)–क्रि० १ घुर्राना । २ पीटना, मारना । ३ डराना, आखें निकालना । ४ घोर शब्द करना । ५ जोर से बजाना, गुंजरित करना । ६ प्रगाढ़ निद्रा लेना ।
घुरी–देखो 'घुरक' ।
घुळणौ (बौ)–क्रि० [स० घूर्णन] १ किसी पदार्थ का पानी आदि द्रव मे मिल जाना, घुल जाना । २ किसी गाठ का कसना, गाढ़ा होना । ३ निरन्तर कमजोर होना, क्षीण होना । ४ व्यतीत होना, गुजरना, व्यर्थ जाना । ५ निद्रा युक्त होना, झपकना । ६ सुस्त होना । ७ वजना । ८ अधिक प्रेम होना ।
घुळाणौ (बौ), घुळावणौ (बौ)–क्रि० १ किसी पदार्थ को पानी आदि द्रव मे मिला देना, घोलना । २ गाठ को कसना, गाढा करना । ३ क्षीण करना, कमजोर करना । ४ व्यर्थ गुजारना, व्यतीत करना । ५ नीद लेना । ६ वजाना । ७ अधिक प्रेम करना ।
घुळावट–स्त्री० १ घुलने की क्रिया या भाव । २ घुलनशीलता ।
घुसण–स्त्री० प्रवेश की क्रिया । प्रवेश का ढग । घसावट, फसावट ।
घुसणौ (बौ)–क्रि० १ घुसना, प्रवेश करना । २ धसना, फसना । ३ चुभना । ४ दखल देना । ५ पैठना । ६ ध्यान से काम करना ।
घुसाणौ (बौ), घुसावणौ (बौ)–क्रि० १ घुसना, प्रवेश कराना । २ घसाना, फसाना । ३ चुभाना । ४ दखल दिराना । ५ पैठाना । ६ ध्यान से काम करने के लिये प्रेरित करना ।
घुसाळ–देखो 'घरसाळ' ।
घुसेडणौ (बौ)–देखो 'घुसाणौ (बौ)' ।
घुसौ–पु० १ गुप्तेन्द्रिय के बाल । २ देखो 'घूसौ' ।
घुसृण (न)–स्त्री० [स०घुसृण] १ केसर, जाफरान । २ आवाज, ध्वनि ।
घुस्सर–स्त्री० सेना, फौज, दल ।
घूंगटौ, घूंघट, धूंघटयौ, घूंघटौ–स्त्री० स्त्रियो की ओढनी का वह छोर जो वे लज्जावश मुंह पर डाल देती हैं । **—पट**–पु० घूंघट निकालने का वस्त्र ।
घूंघर–पु० १ वालो की मरोड, छल्ले । २ घुंघरू । **—वाळौ**–पु० छल्लेदार वालो वाला ।
घूंघरौ–पु० घुंघरू ।
घूंघौ–पु० १ नाक का मेल । २ इमली का बीज ।
घूंची–स्त्री० कोल्हू मे लगने वाला लकडी का डंडा ।
घूंट–स्त्री० द्रव पदार्थ की गुटकी ।
घूंटणौ (बौ)–क्रि० घूंट-घूंट कर पीना, पीना, गुटकना ।
घूंटळवाळौ–पु० पाव समेट कर सोने की क्रिया । –वि० पाव समेट कर सोने वाला ।
घूंटियौ–देखो 'घूंट' ।
घूंटी–स्त्री० १ दवा की गुटकी । २ घूंट । ३ जन्म जात वच्चे को दी जाने वाली औषधि । ४ अपस्मार या मृगी रोग । ५ गुरु मत्र ।
घूंडी–देखो 'घुंडी' ।
घूंदणौ (बौ)–देखो 'गूंदणौ (बौ)' ।
घूंदरौ–पु० एक काटेदार वरसाती पौधा विशेष ।
घूंदाणौ (बौ), घूंदावणौ (बौ)–देखो 'गूंदाणौ (बौ)' ।
घूंमटणौ (बौ)–देखो 'घूमडणौ (बौ)' ।
घूंमणौ (बौ)–देखो 'घूमणौ (बौ)' ।
घूमाडणौ (बौ)–क्रि० घुमाना ।
घूंस–स्त्री० १ चूहे की जाति का बडा जतु । २ रिश्वत, उत्कोच ।
घूंसणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, चोट करना । २ मुष्ठिका प्रहार करना ।
घूंसौ–पु० १ मुक्का, मुष्ठिका । २ मुक्के का प्रहार ।
घू–पु० १ देवता । २ आकाश । ३ हाथी । ४ उल्लू । **—स्त्री०** ५ पृथ्वी । ६ गुदा । ७ मदिरा । ८ ग्यारह की सख्या ।
घूक, घूकार–पु० १ उल्लू पक्षी । २ भय, डर । **—स्त्री०** ३ उल्लू की बोली । ४ ध्वनि, घोप । ५ घुरोहट । **—अरि**–पु० कौआ ।
घूगरौ–देखो 'घूघर' ।
घूगस–स्त्री० हेमत ऋतु के वादल ।
घूघ–पु० शिर का कवच, शिरत्राण ।

घूघर, घूघरियौ, घूघरी, घूघरौ–पु० घुंघरू । छल्ला । —**माळ, माळा**–स्त्री० १ नूपुर । २ घुंघरू की माला जो पशुओं की गर्दन पर डाली जाती है ।

घूघरी–देखो 'गूगरी' ।

घूघी–देखो 'घुग्घी' ।

घूघू–पु० उलूक पक्षी, उल्लू ।

घूड़–पु० १ सूअर के मुंह का अग्र भाग । २ इस भाग से किया जाने वाला प्रहार ।

घूडिया–स्त्री० चरस की गिर्री की खूंटी ।

घूची–स्त्री० कोल्हू के ऊपर की ओर का एक उपकरण ।

घूटणौ (बौ)–देखो 'घुटणौ' (बौ) ।

घूतकार–पु० उल्लू की आवाज ।

घूत्थौ–पु० एक देशी खेल ।

घूथ–पु० घूंसा, मुष्ठिका । प्रहार ।

घूब–स्त्री० १ कूबड । २ टेढापन । ३ मोच ।

घूबौ–वि० १ कूबडा । २ मोच पडा हुआ ।

घूम–स्त्री० घुमाव, चक्कर, मोड ।

घूमघूमाळौ–वि० १ गहरे पत्ते व शाखाओं वाला । २ घेरदार । ३ घुमक्कड ।

घूमणौ (बौ)–क्रि० १ घूमना, फिरना । २ टहलना । ३ सफर, करना, यात्रा करना । ४ लौटना । ५ पीछे या दायें-बायें मुडना । ६ चक्कर खाना, गोल-गोल फिरना । ७ डोलना । ८ उन्मत्त होना, झूमना ।

घूमर–स्त्री० एक प्रकार का लोक नृत्य ।

घूमरौ–पु० १ समूह, झुण्ड । २ घेरा, वृत्त ।

घूमाळौ–देखो 'घूमघूमाळौ' ।

घूमू, घूमौ–पु० १ घूंसा, मुष्ठिका । २ देखो 'घुम्मौ' ।

घूर–पु० १ पैनी चीज के आघात से पशुओं के पेट पर होने वाला रोग । २ नाश, ध्वंस । ३ तीक्ष्ण दृष्टि, ताक ।

घूरण–स्त्री० घूरने की क्रिया या भाव ।

घूरणौ (बौ)–क्रि० १ दृष्टि गढाकर देखना, ताकना । २ क्रोध मे आखें दिखाना । २ प्रगाढ़ निद्रा में श्वास के साथ घर्र-घर्र शब्द होना । ४ 'घुरणौ' (बौ) ।

घूराणौ (बौ), घूरावणौ (बौ)–देखो 'घुराणौ' (बौ) ।

घूरौ–स्त्री० सियार आदि की माद ।

घूस–देखो 'घूंस' ।

घूसौ घूहौ-पु० गुप्तेन्द्रिय के बाल ।

घेंचणौ (बौ)–देखो 'घीसणौ' (बौ) ।

घे–स्त्री० १ गर्दन, ग्रीवा । २ घडी । ३ चौकी । ४ कीली । ५ कुत्ता ।

घेउर (ऊर)–देखो 'घेवर' ।

घेघूंबणौ (बौ)–क्रि० १ मिलना । २ आलिंगन करना ।

घेघूंबणौ (बौ)–क्रि० १ मडराना । २ लूंबना, लटकना । ३ भिडना ।

घेड़–देखो 'घडली' ।

घेचणौ (बौ)–क्रि० १ हांकना, हाक कर ले जाना । २ खदेडना । ३ घसीटना ।

घेटियौ (घेटौ)–पु० १ भेड का पुष्ट बच्चा, मेमना । २ नाटा व पुष्ट व्यक्ति ।

घेटुओ–पु० टेंटुवा ।

घेवौ–वि० मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।

घेर–पु० १ वृत्त, घेरा, परिधि । २ मोड, घुमाव । ३ चक्कर, फेरा । ४ घर, गृह ।

घेरउ–पु० १ झुंड, समूह । २ देखो 'घेरौ' ।

घेरघार–पु० १ चारो ओर से घिरने या आच्छादित होने की अवस्था । २ घेरा, परिधि । ३ खुशामद । ४ विस्तार । ५ हाकने की क्रिया या भाव ।

घेरघुमाळौ, घेरघुमेर–वि० १ सघन, घनी छाया वाला । २ विस्तृत परिधि वाला ।

घेरणी–स्त्री० १ चरखे का हत्था । २ चलनी ।

घेरणौ (बौ)–क्रि० १ घेरा लगाना, आवेष्टित करना, किसी घेरे मे लेना । २ मवेशियो को हाकना । ३ रुख पलटना, विचारधारा बदलना । ४ मोडना, घुमाना ।

घेरदार–वि० ज्यादा घेरे वाला ।

घेराई–स्त्री० घेरने की क्रिया या भाव ।

घेराणौ (बौ), घेरावणौ (बौ)–क्रि० १ घेरा लगवाना, आवृत्त कराना, किसी घेरे मे लिराना । २ हाकने के लिए प्रेरित करना । ३ विचाराधारा बदलाना । ४ मुडवाना, घुमवाना ।

घेराव–पु० १ घेरा । २ घेरने की क्रिया या भाव ।

घेरौ–पु० १ चारो ओर का विस्तार, फैलाव । २ वृत्त, आवृत्ति, परिधि । ३ गोलाई । ४ चारो ओर से सुरक्षित या अधिकृत करने के लिए की जाने वाली व्यवस्था । ५ किसी चीज का गोल चकरा ।

घेवर–पु० एक प्रकार की मिठाई जो चक्रनुमा होती है ।

घेसलौ–पु० १ हास्य रस की भिन्न तुकात कविता । २ छोटा डडा ।

घैंणी–स्त्री० धुंआ ।

घैंसाड़ (हड़, हर)–देखो 'घासाहर' ।

घैंड़ (लौ)–देखो 'घडली' ।

घैघूंबणौ (बौ)-क्रि० १ भिडना, टक्कर लेना । २ आच्छादित होना ।

घोंई–स्त्री० सिंचाई की नालिया साफ करने वाला झाडी का गुच्छा ।

घोंघो–पु० शंखनुमा एक जल कीट । –वि० १ मूर्ख, मूढ । २ जड, निर्बुद्धि । ३ निस्सार ।

घोटी–स्त्री० गर्दन, ग्रीवा ।

घोसलो–पु० पक्षियो का नीड ।

घोई–स्त्री० १ वक्रता, टेढापन । २ घुमाव, मोड ।

घोउकार–स्त्री० वाद्यो की ध्वनि ।

घोक–पु० [स० घोप] १ गर्जना, घोप । २ तेज वर्षा की आवाज । ३ किनारा, तट । ४ अहीरो की बस्ती । ५ नमस्कार, प्रणाम । ६ तीव्र प्रवाह ।

घोकणौ (बौ)–देखो 'घोखणौ' (बौ) ।

घोकाणौ (बौ)–देखो 'घोखाणौ' (बौ) ।

घोकार–स्त्री० प्रत्यचा की ध्वनि ।

घोख–पु०[स० घोप] १ तेज आवाज, भारी शब्द । २ उद्घोष । ३ गौशाला ।

घोखणौ (बौ)–क्रि० [स० घोषणम्] १ गिनती, पहाडे या मत्र रटना, याद करना । २ किसी बात को बार-बार कहना । ३ तेज आवाज होना ।

घोखाणौ (बौ), घोखावणौ (बौ)–क्रि० १ रटाना रटाकर याद कराना । २ बार-बार बोलाना । ३ तेज हाकना, दौडाना । ४ तेज आवाज करना ।

घोघ–पु० झाग, फेन ।

घोघडमिन्नी–पु० बडी बिल्ली, बिलाव ।

घोघी–स्त्री० मूर्च्छा ।

घोघौ–पु० चने की फसल खाने वाला कीडा ।

घोड (तौ)–पु० १ घोडा, अश्व । २ गधा । –वि० वयस्क एवं चचल ।

घोड़ची–पु० १ अश्वारोही, घुडसवार । २ छोटी घोडी । ३ छोटे बच्चो को सुलाने का झोलीनुमा पालना ।

घोड़राई–स्त्री० बडी राई ।

घोडरोज–पु० तेज भागने वाली नील गाय ।

घोडलियो, घोडलो–पु० (स्त्री० घोडली) १ घोडा, अश्व । २ घोडे की मुखाकृति जैसा कोई उपकरण । ३ बच्चो का झोलीनुमा पालना विशेष ।

घोड़सार, घोडसाळ–स्त्री० अस्तबल, घुडशाला ।

घोडाकरज–पु० एक वृक्ष विशेष ।

घोडाकामळ–पु० एक प्रकार का जागीरदारी कर ।

घोडागाठ–स्त्री० रस्सी की एक मजबूत गांठ ।

घोड़ाचोळी–स्त्री० वैद्यक मे एक औषधि ।

घोड़ाबमो–पु० डिंगल का एक गीत ।

घोडानस–स्त्री० मनुष्य के पैर की एक बडी नश ।

घोडामाख (माखी)–स्त्री० बडी मक्खी ।

घोडियो–१ देखो 'घोडो' । २ देखो 'घोडलियो' ।

घोडी–स्त्री० १ मादा अश्व, घोडी । २ बच्चो को सुलाने का एक प्रकार का काष्ठ का झूला । ३ काठ की पट्टी जो चढने के लिए बनाई जाती है । ४ वैशाखी । ५ छाजन मे लगने वाला काष्ठ का उपकरण । ६ लगडे व्यक्ति के चलने के लिए बना लकडी का उपकरण । ७ आटे या मेदे की सेव निकालने का उपकरण । ८ ऊट के 'पिलाण' का एक भाग । ९ एक लोक गीत । १० एक देशी खेल । ११ देखो 'घोडलियो' । —बराड–पु० मरहठो के घोडो को दूर रखने के लिए दिया जाने वाला कर जो किसानो से प्रति बीघा चार आना और दूसरो से प्रति परिवार एक रु था ।

घोडो–पु० [स० घोटक] (स्त्री० घोडी) १ सवारी के लिए सबसे अच्छा व तेज दौडने वाला चौपाया जानवर, जिसे रथ या तागे मे भी जोता जाता है, अश्व । २ बदूक का खटका । ३ शतरज का एक मोहरा । ४ चार पायो का लकडी का कुदा जो कसरत मे काम आता है । ५ चार पायो का तख्ता । ६ घोडे की मुखाकृतिनुमा बना लकडी आदि का कोई उपकरण ।

घोचियो, घोचो–पु० [स०] १ तृण तिनका । २ कोई काष्ठ खण्ड ।

घोट (क, डो)–पु० [स०] १ घोडा । २ सुपारी का वृक्ष, सुपारी । ३ युवक, जवान ।

घोटणी–स्त्री० १ दाल आदि घोटने का उपकरण । २ घुटाई करने का उपकरण । ३ बार-बार बोल कर याद करने की क्रिया रटाई ।

घोटणौ (बौ)–क्रि० १ सिल-बट्टे पर पीसना, महीन करना । २ ठीक जमाने व जमाकर चमक लाने के लिये खूब रगडना । ३ परस्पर रगडना । ४ खूब रटना । ५ बाल साफ करना, मूडना । ६ सास अवरुद्ध करना, दम घोटना ।

घोटमघोट–वि० १ खूब घुटा हुआ । २ चिकना । ३ गोल व सख्त (स्तन) । ४ हृष्ट-पुष्ट ।

घोटलियो–देखो 'घोटो' ।

घोटाई–स्त्री० १ घोटने की क्रिया या भाव, घुटाई । २ इस कार्य की मजदूरी ।

घोटाणौ (बौ)–क्रि० १ सिल वट्टे पर पिसवाना, महीन करवाना । २ रगडवाना । ३ खूब रटाना । ४ बाल साफ कराना, मुडवाना । ५ सास अवरुद्ध कराना ।

घोटाफरस–पु० एक प्रकार का शस्त्र ।

घोटाळो–पु० गडबडी अव्यवस्था ।

घोटावणौ (बौ)–देखो 'घोटाणौ' (बौ) ।

घोटू–वि० घोटने वाला ।

घोटेबरदार–पु० चेला जाति के व्यक्तियो की उपाधि ।

घोटौ–पु० १ घोटने का उपकरण। २ सिल-बट्टा। ३ बडा व मोटा डडा। ४ गदा।

घोटू–देखो 'घोडौ'।

घोण–स्त्री० [स० घ्राण] १ नाक। २ बकरी के स्तनो पर किया जाने वाला एक लेपन।

घोणा, घोणी–पु० सूग्रर।

घोदौ–पु० १ कोई नुकीली वस्तु चुभाने की क्रिया। २ धक्का। ३ बाधा, अडचन, विघ्न।

घोनौ–पु०(स्त्री०घोनी)१बकरी। २ वृद्ध बकरी। ३ वृद्ध व्यक्ति। ४ नितान्त बहरा व्यक्ति।

घोबौ–पु०१ घास के किसी पौधे का कटने के बाद जमीन मे रहा ग्रश। २ नुकीली चीज का धक्का। ३ ग्राख ग्रादि मे होने वाला शूल, पीडा। ४ वात-विकार की पीडा।

घोयणौ (बौ)–क्रि० नष्ट करना।

घोर–वि० [स०] १ भयकर, डरावना। २ जबरदस्त। ३ सघन, घना। ४ ग्रत्यधिक गहरा। ५ कठिन, दुर्गम। ६ कठोर। ७ उग्र। -स्त्री० [ग्र०गोर] १ कब्र, समाधि। २ समाधि पर ग्रकित शब्द। ३ शब्द ध्वनि। ४ गर्जना, घोष। ५ प्रगाढ निद्रा का शब्द। ६ नगाडे की ग्रावाज। [स० घोर] ७ भय, डर। ८ जहर। ९ शिव।

घोरणौ (बौ)–क्रि० १ पीटना, मारना। २ देखो 'घुरणौ' (बौ)। ३ देखो 'घूरणौ' (बौ)।

घोरमघोर–देखो 'घोर'।

घोराडबर–पु० गहरे बादलो की घटाएँ।

घोरारव–पु० १ शोक सूचक भयकर शब्द। २ घोर ध्वनि। ३ उल्लू की बोली।

घोराणौ (बौ), घोरावणौ (बौ)–१ देखो 'घुराणौ (बौ)'। २ देखो 'घूराणौ (बौ)'।

घोळ–पु० १ घुला हुग्रा पदार्थ। पानी मे घोल कर रखा हुग्रा पदार्थ। २ न्यौछावर। ३ वार कर दिया हुग्रा दान।

घोळणौ (बौ)–क्रि० १ किसी द्रव पदार्थ या पानी मे कोई वस्तु मिलाना, घोलना। २ घुल जाने के लिये हिलाना। ३ न्यौछावर करना, वारना। ४ जहरीले जंतुग्रो का घुटना। ५ क्रोधित होना। ६ ग्राखो मे नीद या नशा छाना। ७ बच्चो का वमन करना।

घोळवौ–पु० १ मास पकाने की एक प्रक्रिया। २ इस प्रक्रिया से पका हुग्रा मास।

घोळाणौ (बौ), घोळावणौ (बौ)–क्रि० घोलने का कार्य कराना।

घोळियौ–देखो 'घोळ'।

घोळी–स्त्री० न्यौछावर होने की क्रिया।

घोल्या–स्त्री० १ खैरियत, कुशल। २ ग्रस्तु। ३ देखो 'घोली'।

घोस–पु० [स० घोष] १ शब्द, ग्रावाज। २ गर्जना, भारी शब्द। ३ तालो का एक भेद। ४ शब्द-उच्चारण के ग्यारह बाह्य प्रयत्न मे से एक।

घोसणा–स्त्री० [स० घोषणा] १ सूचना, इत्तला। २ सार्वजनिक सभा मे किसी नेता या ग्रधिकारी द्वारा जारी की गई सूचना। ३ ग्रादेश। ४ सरकारी कार्यवाही का प्रकाशन या विज्ञापन। ५ गर्जना, ग्रावाज।

घोसवती–स्त्री० वीणा।

घोसी–पु० दूध बेचने वाली मुसलमान जाति या इस जाति का व्यक्ति।

घ्रणा–स्त्री० [स० घृणा] १ नफरत। २ ग्लानि। ३ दया, कृपा।

घ्रत–पु० [स० घृत] घी। —**ग्राहुतण (न)**–स्त्री० ग्रग्नि।

घ्रताची, घ्रतायची–स्त्री० १ स्वर्ग की एक ग्रप्सरा। २ ग्रप्सरा।

घ्रति–पु० घी।

घ्रस्टी–पु० [सं० घृष्टि] सूग्रर।

घ्रांण, घ्रांणा–पु० [स० घ्राण] १ नाक, नासिका। २ सुगध। ३ सूघने की शक्ति।

घ्राई–पु० भयकर प्रहार करने वाला।

घ्रित (ति, ती)–पु० १ घी। २ यज्ञ। ३ ग्रग्नि। –वि० तृप्त।

घ्रिताची, घ्रितेची–देखो 'घ्रताची'।

घ्रिसि (सी)–पु० भोजन।

घ्रिस्टी–पु० सूग्रर।

घ्रोण, घ्रोणा–देखो 'घ्राण'।

घ्रोणी (नी)–पु० सूग्रर।

–च–

च–देवनागरी वर्णमाला का छठा व्यजन।

चऊ–देखो 'चऊ'।

चक–देखो 'चक'।

चग–वि० सुदर, मनोहर।

चग (डो, ड़ो)–पु० [फा०] १ डफ। [स० च] २ पतग, गुड्डी। ३ झडी, पताका। ४ पवित्रता, शुद्धता। ५ उत्तमता, श्रेष्ठता। ६ घोडो की एक जाति व इस जाति का घोडा। ७ यवन, मुसलमान। ८ सितार पर चढा हुग्रा स्वर। ९ स्वस्थ व्यक्ति। १० डिगल का एक गीत। ११ देखो 'चंगो'।

चगांण–पु० चक्कर, घेरा, घुमाव ।
चगास–पु० गोमूत्र ।
चगासणौ (बौ)–क्रि० गाय का मूतना ।
चंगी–स्त्री० १ कीर्ति, यश । २ श्रेष्ठता । –वि० १ स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट । २ उत्तम ।
चगुल–पु० [फा०] १ जाल, फदा । २ षडयत्र । ३ हाथ की अगुलियो का फदा ।
चगेड़ी (री)–स्त्री० १ मिठाई रखने का पात्र । २ छाब, टोकरी ।
चगो–वि० [स० चग] (स्त्री० चगी) १ निरोग, स्वस्थ । २ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा । ३ साफ, पवित्र, निर्मल । ४ दृढ, मजबूत । ५ सुन्दर, सुहावना । ६ उत्तम, श्रेष्ठ । –पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ डफ ।
चचड (डी)–देखो 'चांचडली' ।
चच (न,नु)–स्त्री० [स० चचु] १ चोच । २ पार्वती, दुर्गा ।
चचरी, चचरीक–पु० [सं०] १ भ्रमर, भौंरा । २ भारत मे स्थाई रूप से रहने वाली एक प्रकार की चिडिया । ३ एक मात्रिक छद विशेष । ४ एक वर्ण वृत्त विशेष ।
चचळ (ळी)–वि० [स० चचल] १ चलायमान, गतिशील । २ कापने वाला, कपकपा । ३ अस्थिर । ४ अशान्त । ५ चचल, नटखट । ६ फुर्तीला, चुस्त । ७ उद्विग्न, व्यग्र । ८ विह्वल । ९ डावाडोल । १० कामुक, ११ क्षणिक । –पु० १ पवन । २ घोडा । ३ मन । ४ चन्द्रमा । ५ पारा । ६ देखो 'चचळा' । –क्रि० वि० तुरन्त, शीघ्र ।
चचळता (ई)–स्त्री० [स०] १ अस्थिरता । २ गतिशीलता । ३ नटखटपना । ४ स्फूर्ति ।
चचळा–स्त्री० [स० चचला] १ बिजली, विद्युत । २ लक्ष्मी । ३ माया । ४ नर्तकी । ५ मछली । ६ घोडी । ७ पिप्पली । ८ एक वर्ण वृत्त ।
चचळाई चचळाट (हट)–देखो 'चचळता' ।
चचळी–१ देखो 'चचळ' । २ देखो 'चचळा' ।
चचळौ–देखो 'चचळ' । (स्त्री० चचळी)
चचाळ–पु० १ पक्षी । २ देखो 'चचळ' ।
चचाळी–स्त्री० मासाहारी पक्षी ।
चचु–स्त्री [स०] १ पक्षी की चोच । २ तुंड । ३ अरड का पेड । ४ मृग, हिरन । —**का, पुट**–पु०– चोच, तुड । —**भ्रत, मान**–पु० पक्षी ।
चचेडण, चचेडू, चछेड़ण–पु० मक्खन को तपाने पर निकलने वाला छाछ का अश ।
चछेड़णौ (बौ)–क्रि० १ हिलाना, झकझोरना । २ छेडना, तग करना ।
चट, चटेल–वि० १ धूर्त, बदमाश । २ चतुर, होशियार ।

चड–पु० [स०] १ गर्मी, ताप । २ रोष, क्रोध । ३ एक दैत्य का नाम । ४ शिव का एक गण । ५ राम सेना का एक बदर । ६ एक भैरव । ७ कुबेर के आठ पुत्रो मे से एक । ८ कार्तिकेय । –वि० १ भयानक, उग्र । २ क्रुद्ध । ३ गर्म, उष्ण । ४ कर्मठ, फुर्तीला । ५ तेज, तीक्ष्ण । ६ कठोर । ७ कठिन, विकट । ८ घोर । ९ प्रबल । १० देखो 'चडी' ।
चडकर–पु० [स०] सूर्य भानु ।
चडका–देखो 'चडिका' ।
चडघटा–स्त्री० चौसठ योगिनियो मे से एक ।
चडडाक–पु० युद्ध का वाद्य ।
चडता–स्त्री० [स०] तीक्ष्णता, उग्रता, प्रबलता ।
चडनयर–देखो 'चडीनगर' ।
चडनायिका–स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ अष्टनायिकाओ मे से एक ।
चडमुड–पु० देवी के हाथो मारे गये दो राक्षस ।
चडमुडा (डी)–देखो 'चामुडा' ।
चडवती–स्त्री० [स०] १ देवी । २ अष्टनायिकाओ मे से एक ।
चडवारण–पु० [स०] ४९ क्षेत्रपालो मे से एक ।
चडांसु–पु० [स० चण्डाशु] सूर्य, भानु । –स्त्री० १ कोप, गुस्सा, क्रोध । २ देखो 'चडालिणी' ।
चडातक–पु० [स० चडातक] १ कुर्ती, छोटा कोट । २ लहगा ।
चडाळ–पु० [स० चाडाल] (स्त्री० चडाळण, णी) स्वपच, भगी, मेहतर । –वि० दुष्ट, पतित, नीच ।
चडाळणी–स्त्री० १ एक प्रकार का दोहा छद । २ चडाल की स्त्री ।
चडालिका–स्त्री० एक प्रकार की वीणा ।
चडाळी–स्त्री० कोप, गुस्सा ।
चडावळ–देखो 'चदावळ' ।
चडिक (का)–स्त्री० [स० चडिका] १ देवी, दुर्गा । २ कर्कशा स्त्री । –वि० कर्कशा, लडाकू ।
चडी–स्त्री० [स०] १ दुर्गा, देवी । २ महिषासुर मर्दिनी देवी । ३ चडिका । —**नगर**–पु० दिल्ली शहर का नाम । —**पति**–पु० शिव, महादेव । बादशाह । —**पुर**–पु० दिल्ली नगर । —**पुरौ**–पु० दिल्ली का बादशाह । दिल्ली निवासी । मुसलमान । चौहान राजपूत ।
चडीस (सुर)–पु० १ शिव । २ एक तीर्थ स्थान । ३ बादशाह ।
चडू–पु० अफीम व शहद के योग मे बना एक अत्यन्त नशीला अवलेह । —**खानौ**–पु० उक्त पदार्थ उपलब्ध होने का स्थान । —**बाज**–पु० चडू पीने का व्यसनी ।

चडूळ–स्त्री० खाखी रग की एक चिडिया विशेष । –वि० मूर्ख । झगडालू ।

चडेस्वर–पु० [स० चण्डेश्वर] शिव का एक गण ।

चडेस्वरी–स्त्री० [स० चण्डेश्वरी] देवी का एक रूप ।

चडोदरी–स्त्री० [स०] सीता के पास नियुक्त रावण की एक अनुचरी ।

चडोळ, चडौळ–स्त्री० १ हाथी की अवाडीनुमा एक पालकी, डोली । २ मिट्टी का एक खिलौना । ३ चदोल ।

चडौळी–१ देखो 'चदावळ' । २ देखो 'चडोळ' ।

चद (उ)–पु० [स० चदः] १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ चदन । ४ नाक का बाया छिद्र (योग) । ५ चद्रक रागिनी । ६ डिंगल के 'वेलियो साणोर' का एक भेद । ७ राजा हरिश्चन्द्र । ८ देखो 'चदौळ' । –वि० १ श्वेत, सफेद । २ काला॰ । [फा०]३ थोडा, किंचित् । ४ देखो 'चाद'॰ ।

चदक–पु० [स०] १ चन्द्रमा, चाद । २ चादनी, चद्रिका ।

चदकांत–देखो 'चद्रकात' ।

चदगो–स्त्री० १ धन, दौलत, सम्पत्ति । २ आर्थिक सहायता ।

चदण (न)–पु० [स० चदनं] १ सुगन्धित लकडी वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष । २ इस वृक्ष की लकडी का टुकडा जिसे घिसकर देव मूर्ति पर चढाया जाता है । ३ उक्त प्रकार का घिसा हुआ लेपन । ४ छप्पय छन्द का तेरहवा भेद । ५ डिंगल का एक छद विशेष । ६ डिंगल के वेलियो साणोर का एक भेद । ७ केसर । –वि० श्वेत, सफेद ॰। —**गोह**–स्त्री० मकर की जाति का एक विषैला छोटा जतु । —**धेनु**–स्त्री० चदन से अकित कर दान मे दी जाने वाली गाय ।

चदणता–स्त्री० ठडक, चन्दनत्व ।

चदणहार–पु० कीमती चन्द्रहार ।

चदणु–देखो 'चदण' ।

चदणौ–देखो 'चादणौ' ।

चदनगिरी–पु० [स०] मलयागिरी पर्वत ।

चदनाम (नामौ)–पु० १ यश, कीर्ति । २ उज्ज्वलता ।

चदनि (नी)–१ देखो 'चादनी' । २ देखो 'चदण' ।

चदपहास (प्रहास)–स्त्री० चद्रहास, तलवार ।

चदप्रभु–देखो 'चद्रप्रभु' ।

चदबाण–पु० एक प्रकार का तीर ।

चदभागा–देखो 'चद्रभागा' ।

चदमा–देखो 'चद्रमा' ।

चदमारी–स्त्री० १ घोडो का एक रोग । २ चादमारी ।

चदमुखी–देखो 'चद्रमुखी' ।

चदरगढ़–पु० चित्तौडगढ का एक नाम ।

चदरमणि–स्त्री० चन्द्रकान्त मणि ।

चदळ–पु० चन्द्रमा ।

चदळाई (लाई), चदळियौ चदळेवौ–पु० एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियो का शाक बनता है ।

चदवदण (णी), चदवदनी, चंदवमणि (णी)–देखो 'चद्रवदणी' ।

चंदवाळ–देखो 'चंदावळ' ।

चदवौ–पु० [स० चद्रातप] देवी-देवता या राजा-महाराजाओ के सिंहासन के ऊपर तना रहने वाला छोटा मण्डप । वितान ।

चदाणणि (णी)–स्त्री० चद्रवदनी, चद्रमुखी ।

चदावळ–स्त्री० सेना के पीछे का भाग ।

चदिका–देखो 'चद्रिका' ।

चदिर, चदिळ–पु० [स० चदिर] १ चद्रमा, चाद । २ हाथी ।

चदेळौ–देखो 'चदळाई' ।

चदोउ–देखो 'चदवौ' ।

चंदोळ–देखो 'चदावळ' ।

चदोळी–क्रि०वि० १ पृष्ठ भाग मे, पीछे । २ देखो 'चदावळ' ।

चदौ–पु० [स० चन्द्र] १ चन्द्रमा, चाद । [फा० चद] २ किसी धार्मिक या सामाजिक कार्य मे दान स्वरूप दिया या लिया जाने वाला धन । ३ किसी पत्र-पत्रिका का वार्षिक शुल्क । ४ किसी सस्था का निर्धारित शुल्क ।

चदौळ–देखो 'चदावळ' ।

चद्दर–१ देखो 'चदिर' । २ देखो 'चंद्र' ।

चद्या–स्त्री० छोटी रोटी ।

चद्र, चद्रई–पु० [स०] १ चंद्रमा, चाद । २ कपूर । ३ अठारह उपमहाद्वीपो मे से एक । ४ पिंगल मे टगण के दसवें भेद का नाम । ५ मृगसिरा नक्षत्र । ६ एक की सख्या । ७ मोर पख की चद्रिका । ८ जल । ९ सुवर्ण ।

चद्रउ–देखो 'चदवौ' ।

चद्रक–पु० [स०] १ चद्रमा । २ नख । ३ चन्द्राकार मण्डल । ४ मोर, मयूर ।

चद्रकन्या–स्त्री० [स०] इलायची ।

चद्रकळा–स्त्री० [स० चद्रकला] १ चन्द्र किरण । २ चादनी । ३ स्त्रियो की एक बहुमूल्य ओढनी । ४ सोलह की सख्या । ५ चन्द्रमा का एक अश । —**धर**– पु० शिव, महादेव ।

चद्रकात–पु० [स०] १ एक काल्पनिक मणि, चद्रकान्त मणि । २ एक राग विशेष ।

चद्रकाता–स्त्री० [सं०] १ चन्द्रमा की पत्नी । २ रात, रात्रि । ३ चादनी ।

चद्रका–देखो 'चद्रिका' ।

चद्रकार–पु० एक प्रकार का वाण ।

चद्रकीरति (ती)–पु० ललाट पर दो भवरियो वाला घोडा ।

चद्रकुळया–स्त्री० काश्मीर की एक नदी ।
चंद्रकूट–पु० [स०] कामरूप प्रदेश मे स्थित एक पर्वत ।
चंद्रकूप–पु० काशी स्थित एक तीर्थ स्थान ।
चद्रगुप्त–पु० [सं०] १ चित्रगुप्त का एक नामान्तर। २ मौर्य वशीय प्रथम सम्राट ।
चद्रगोळ–पु० चन्द्र मंडल ।
चंद्रघटका (घटा)–स्त्री० नव दुर्गाओ मे से एक ।
चंद्रचूड–पु० शिव, महादेव ।
चद्रज–पु० [स०] चन्द्रमा का पुत्र, बुध ।
चद्रदारा–स्त्री० [स०] १ दक्ष की २७ कन्याए जो चन्द्रमा की स्त्रिया हैं । २ सत्ताईश नक्षत्र ।
चद्रदुरंग–पु० चित्तौडगढ का नाम ।
चंद्रद्युति–स्त्री० [स०] चादनी, चन्द्र प्रकाश ।
चद्रधर, (पीड)–पु० शिव, महादेव ।
चद्रप्रभा–स्त्री० [स०] चादनी ।
चद्रप्रभु–पु० [स० चद्रप्रभु] अठारहवें तीर्थंकर का नाम ।
चद्रप्रहास–देखो 'चदपहास' ।
चद्रबधूटी–स्त्री० वीरवहूटी ।
चंद्रबाला–स्त्री० [स०] १ बडी इलायची । २ चांदनी । ३ चन्द्र किरण । ४ चन्द्रमा की स्त्री । ५ स्त्रियो के शिर का आभूषण विशेष ।
चद्रबिंदु–पु० [स०] सानुनासिक अक्षरो पर लगने वाली अर्ध-चन्द्राकार बिंदी ।
चद्रभाणु–पु० श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा का पुत्र ।
चद्रभाग–पु० [स०] १ चन्द्रमा की कला । २ हिमालय का एक शिखर । ३ सोलह की संख्या ।
चद्रभागा–स्त्री० चन्द्रभाग शिखर से निकलने वाली एक नदी ।
चद्रभाळ–पु० शिव महादेव ।
चद्रमण (मणि, मणी)–स्त्री० चन्द्रकात मणि ।
चद्रमा–पु० [स० चद्रमस] पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला एक उपग्रह, चाद । —**ललाट**–पु० शिव, महादेव । —**माळा**-स्त्री० चन्द्रहार । १९ वर्णो का वर्णिक छन्द । २८ मात्राओ का एक छन्द विशेष ।
चद्रमिण (मिणी)–स्त्री० चन्द्रकान्त मणि ।
चद्रमोळी–पु० शिव, महादेव ।
चद्रलोक–पु० चन्द्रमा का लोक ।
चद्रवस–पु० एक क्षत्रिय वश ।
चंद्रवदणी (नी, वयणि, वयणी)–स्त्री० [स० चद्रवदनी] चन्द्रमा के समान उज्ज्वल मुख वाली सुन्दर स्त्री ।
चद्रवधू–स्त्री० वीरबहूटी ।
चद्रवौ–देखो 'चदवौ' ।
चद्रव्रत–देखो 'चाद्रायण' ।
चद्रसार–पु० डिंगल का एक गीत विशेष ।
चद्रसाळ–पु० १ छत के कमरे के सामने का खुला भाग, अटारी । २ चादनी, चद्रिका ।
चद्रसूरिए–पु० ललाट पर दो भवरी वाला घोडा ।
चद्रसेखर–पु० [स० चन्द्रशेखर] १ शिव, महादेव । २ एक पर्वत । ३ सगीत की एक ताल ।
चद्रस्वारथी–पु० श्वेत-लाल वर्ण व श्वेत नेत्र का घोडा ।
चद्रहार–पु० मणियो का एक हार विशेष ।
चद्रहास–स्त्री० तलवार, खड्ग ।
चद्राणण (णि, णी), **चद्राणी**–स्त्री० १ दुर्गा का एक नाम । २ चन्द्रमुखी, सुन्दरी ।
चद्रापीड–पु० [स०]१ शिव, महादेव । २ अर्जुन का एक मित्र ।
चद्रायण (णौ)–पु० १ गौरी पूजन के समय गाया जाने वाला एक लोक गीत । २ देखो 'चाद्रायण' ।
चद्रालोक–पु० चन्द्रमा का आलोक, प्रकाश ।
चद्रावळ–पु० चान्द्रायण व्रत ।
चद्रावळी–स्त्री० श्रीकृष्ण पर अनुरक्त एक गोपी ।
चद्रिका–स्त्री० [स०] १ चादनी, ज्योत्स्ना । २ मयूर पख का सुनहरा मडल । ३ पजाब की चिनाब नदी । ४ जुही । ५ चमेली । ६ संस्कृत व्याकरण का एक ग्रथ । ७ टीका, व्याख्या ।
चद्रूओ–देखो 'चदवौ' ।
चद्रूयउ, चद्रोदय–पु० १ चन्द्रमा का उदय । २ गधक, पारा व स्वर्णभस्म के योग से बना एक रस । ३ देखो 'चदवौ' ।
चंनण–पु० १ चदन । २ प्रकाश ।
चप–पु० १ भय, डर । २ आशका, शका । ३ चपा का वृक्ष व पुष्प । ४ मार, प्रहार ।
चपई–देखो 'चपाई' ।
चपउ–देखो 'चपौ' ।
चपक–पु० १ चपा । २ सम्पूर्ण जाति का एक राग । ३ पीला, पीत वर्ण । —**कळी**–स्त्री० स्त्रियो के गले का आभूषण विशेष । —**माळा**–स्त्री० चपा के फूलो की माला । एक वर्ण वृत्त । —**वर्णी, वरणी**–स्त्री० गौर वर्ण की स्त्री ।
चपकळी–स्त्री० १ चपा की कली । २ चपा के समान नेत्र ।
चपणौ (बौ)–क्रि० १ भयभीत होना, डरना । २ छुपना । ३ शका खाना, सकोच करना । ४ पैर रखना, पैर जमाना । ५ दबाना, दाबना । ६ पकडना । ७ चौंकना । ८ लज्जित होना ।
चपत–वि० गायब, लुप्त, भगा हुआ ।
चपल, चपलौ–देखो 'चपौ' ।
चपा–स्त्री० एक प्राचीन नगरी ।
चपाई–वि० चपा के फूल के रग का, पीला ।

चंपाकळी—स्त्री० १ चपा की कली । २ स्त्रियो के गले का आभूषण विशेष ।
चपाणी (बौ)—क्रि० १ भयभीत करना । २ चौंकाना । ३ लज्जित कराना । ४ छुपाना । ५ दबवाना । ६ रखवाना, जमवाना ।
चपाधप (धिप)—पु० [स० चपाधिप] कर्ण का एक नाम ।
चपानगरी(नयरी, नरी)—स्त्री० १ चपानगरी । २ एक प्रकार की तलवार ।
चपारण्य (रन)—पु० एक प्राचीन वन ।
चपी—स्त्री० १ चापने या दबाने की क्रिया या भाव । २ शिर की मालिश । ३ चापलूसी ।
चपू—पु० [स०] १ गद्य व पद्य मिश्रित काव्य या ग्रथ । २ देखो 'चपौ' ।
चपेल, चपेली, चपेलू—पु० १ चमेली का तेल । २ चमेली ।
चपौ—पु० [स० चपक] १ हल्के पीले रग के फूलो वाला एक वृक्ष । २ इस वृक्ष का फूल । ३ चपे के पुष्प के रग का घोडा । ४ एक देशी खेल ।
चबक—देखो 'चु बक' ।
चबल—स्त्री० राजस्थान की प्रसिद्ध नदी ।
चबुक—देखो 'चु बक' ।
च बेली—देखो 'चमेली' ।
च माट—देखो 'चिमटी' ।
च म्मर—देखो 'चवर' ।
च वर—पु० [स० चामर] चामर, चवर, चौरी । —वि० श्वेत, सफेद । —**गाय**—स्त्री० सफेद वालो की पू छ वाली गाय । —**दार**—पु० चवर डुलाने वाला सेवक ।
च वरी—स्त्री० १ घोडे के पू छ के वालो का छोटा चामर । २ विवाह की वेदी । ३ विवाह के समय वर पक्ष से लिया जाने वाला एक कर । ४ एक लोक गीत । ५ सफेद पूंछ वाली गाय । —**दापौ**—पु० पाणिग्रहण सस्कार के बाद कुलगुरु को दिया जाने वाला द्रव्य ।
चंवरौ—पु० १ सफेद वालो की पू छ वाला बैल । २ छाजन । ३ स्नान करते समय मैल उतारने का उपकरण । ४ छोटा चामर ।
च वळाई—१ देखो 'चदळाई' । २ देखो 'चवळेरी' ।
च वळेरी (ळोडी)—स्त्री० चौले की दाल, चौले की फली ।
च वलौ—पु० चौला नामक द्विदल अनाज, राजभाप ।
च वार—स्त्री० मू ग, मोठ आदि के पुष्प ।
च वाळियौ—पु० वडे-वडे पत्थर ढोने वाला मजदूर ।
च—पु० [स०] १ चन्द्रमा । २ चकवा । ३ चोर । ४ दुर्जन । ५ कच्छप । ६ मुख । ७ समूह । ८ आलिगन । ९ ज्वाला । १० अग्नि । ११ सपत्ति । १२ ग्रह । —वि० १ मनोहर । २ मूर्ख । —अव्य० और, तथा ।

चउं—स्त्री० हाथी को हाकने का शब्द । —अव्य० के ।
चइलौ, चईलौ—पु० १ रेल गाडी का रास्ता, पटरी, रेखा । २ पहिया, चक्र । ३ परिपाटी, रूढ़ी ।
चउ—पु० जमीन का छोटा खड्डा जिसमे तापने के लिए आग रखी जाती है ।
चउर—देखो 'चंवर' ।
चउ—वि० [स० चतुर] १ चार । २ देखो 'चरु' । —अव्य० का ।
चउआळीस—देखो 'चमालीस' ।
चउक—देखो 'चौक' ।
चउकी—स्त्री० चौकी । —**वट, वट्ट**—पु० काष्ठ की चौकी ।
चउगठि (ट्ठि)—देखो 'चौखट' ।
चउगणउ, (गणौ, गिणउ, गुणउ, गुणौ)—देखो 'चौगुणौ' ।
चउग्गइ—स्त्री० [स० चतुर्गति] देव, मानव, नारक और तिर्यंच इस प्रकार की चार गति (मोक्ष) ।
चउघड़यउ, चउघड़िउ—देखो 'चौघडियौ' ।
चउचाळक—पु० कछुआ ।
चउडोतरसउ—देखो 'चौडोतरसौ' ।
चउतरौ—देखो 'चवूतरौ' ।
चउत्थ—पु० १ चार दिन का उपवास (जैन) । २ देखो 'चौथ' । ३ देखो 'चौथौ' ।
चउत्थौ, चउथु—देखो 'चौथौ' ।
चउत्रीस—देखो 'चौतीस' ।
चउथ, (थि, थी)—१ देखो 'चौथ' । २ देखो 'चौथी' ।
चउथउ, चउथौ—देखो 'चौथौ' ।
चउवती (तौ)—पु० [स० चतुर्दन्ती] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत । २ एक प्रकार का घोडा । —वि० चार दात वाला ।
चउदस, चउदसी—देखो 'चोदस' ।
चउदह, (द्दह)—देखो 'चवदै' ।
चउपट—क्रि०वि० १ खुले आम । २ देखो 'चौपट' ।
चउपन—देखो 'चौपन' ।
चउफळा—क्रि०वि० चारो ओर ।
चउरसउ—वि० [स० चतुस्र] १ चौसर, चौकोर । २ चार ।
चउराणू (णू)—देखो 'चौराणू' ।
चउरासियौ—देखो 'चौरासियौ' ।
चउरासी—देखो 'चौरासी' ।
चउरिअ, चउरिआ, चउरि (री, आ)—१ देखो 'चवरी' । २ देखो 'चूरी' ।
चउवीस—देखो 'चौईस' ।
चउवीसमउ—देखो 'चौईसमौ' ।
चउवीह—क्रि० वि० [स० चतुर्विधित्] चार प्रकार से ।
चउसट्ठि (ठि)—देखो 'चौसठ' ।
चउसाळउ—देखो 'चौसाळा' ।

चउहट्ट (हट्टइ)–देखो 'चौवटो' ।
चउहू गमाह–क्रि० वि० चारो ओर ।
चऊ–स्त्री० हल की नोक के नीचे लगी रहने वाली एक छोटी नुकीली लकडी ।
चऊद, चऊवह, (दै)–देखो 'चवदै' ।
चऊदमई–देखो 'चवदमौ' ।
वऊपट–देखो 'चौपट' ।
चऊरस–पु० १ छै वर्ण का एक वृत्त । २ देखो 'चौरस' ।
चक–पु० [स० चक्र] १ जमीन का वडा भाग, भू-खण्ड । २ हठ, जिद् । ३ दातो से काटने की क्रिया या भाव । ४ दातो से काटने का चिह्न । ५ दिशा । ६ पृथ्वी, जमीन । ७ देखो 'चक्र' । –क्रि० वि० ओर, तरफ । –वि० सतुष्ट, तृप्त ।
चकई–स्त्री० मादा चकवा, चकवी ।
चकडीकम–वि० १ स्तब्ध, चकित । २ प्रज्ञा शून्य ।
चकडीटोप–पु० शिरस्त्राण, लोहे का टोप ।
चकचक, (काहट)–स्त्री० १ पक्षियो का कलरव चहचाहट । २ वकवास, जनरव । ३ लोकोपवाद । ४ चर्चा । ५ निंदा ।
चकचकी–स्त्री० १ एक प्रकार की छुरी । २ देखो 'चकचक' ।
चकचक्क–देखो 'चकचक' ।
चकचाळ–स्त्री० १ चर्चा । २ वात की शुरुआत । ३ छेडछाड ।
चकचाळो–पु० १ उपद्रव, उत्पात । २ युद्ध, लडाई ।
चकचूंधियो (चूंध, चूंधियो)–पु० १ चकाचौंध । २ शाम का धुंधला वातावरण । ३ वाह्य प्रदर्शन, तड़क-भडक । ४ चू-चू करके गोल घूमने वाला झूला । –वि० आकर्षक । मनोहर, सुन्दर ।
चकचूर (ण)–पु० [स० चक्रचूर्ण] १ नाश, ध्वस, विनाश । २ मर्दन । ३ चूर-चूर, खण्ड-खण्ड । –वि० १ मदोन्मत्त, नशे मे चूर । २ मग्न, मस्त । ३ तल्लीन ।
चकचोळ–वि० १ क्रुद्ध, कुपित । २ लाल । ३ मादक, मदयुक्त । –स्त्री० १ क्रीडा । २ लाल नेत्र । ३ चपलता, चचलता ।
चकचौंध (चौंह)–देखो 'चकाचौंध' ।
चकडोळ (डोळ)–वि० १ उन्मत्त, पागल । २ मूर्ख । –स्त्री० १ पालकी डोली । २ मादकता, खुमारी । ३ शव ले जाने का उपकरण ।
चकत–१ देखो 'चगताई' । २ देखो 'चकित' ।
चकतो, (त्तो, त्थो, थो)–पु० १ दतक्षत । २ खड, टुकडा । ३ रक्त विकार के चिह्न । ४ देखो 'चगताई' ।
चकनचूर, चकनाचूर–वि० १ टूक-टूक, खण्ड-खण्ड । २ थका हुआ, क्लात ।
चकपत्त–पु० दिग्पाल ।
चकबदी–स्त्री० कृषि भूमि की सीमावदी का कार्य ।
चकवधु–पु० [सं० चक्र-वधु] सूर्य ।
चकवस्त–पु० भूमि की हदवदी ।
चकबी–देखो 'चकवी' ।
चकमक–स्त्री० [तु०] १ एक प्रकार का पत्थर जिसमे घर्षण से आग पैदा होती है । २ वह यन्त्र जिसमे उक्त पत्थर लगाकर आग जलाई जाती है; लाइटर । ३ चमक-दमक । ४ आग, अग्नि ।
चकमार–देखो 'चकमार' ।
चकमाळा (ळी)–स्त्री० छेडछाड ।
चकमौ–पु० [स० चक्र-भ्रात] १ भुलावा, भ्रम । २ धोखा । ३ हानि, नुकसान । ४ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र ।
चकर–पु० १ चक्कर, फेरा । २ चक्र-पहिया । **–अणवीठ, अवीठ, अवीठो, अवीठौ**–पु० दैवी आपत्ति या प्रकोप । **–घर, धरण**='चक्रधर' ।
चकरडी–देखो 'चकरी' ।
चकरवरती–देखो 'चक्रवर्ती' ।
चकराणौ (बो), चकरावणौ (बो)–क्रि० १ विस्मित या चकित होना । २ स्तब्ध या भौंचक्का होना । ३ वात विकार से शिर मे चक्कर आना । ४ भ्रम मे पडना । ५ वुद्धि चकरा जाना ।
चकरायत–वि० शूरवीर ।
चकरियौ–पु० १ जुलाहो का एक औजार । २ देखो 'चक्र' ।
चकरी–स्त्री० [स० चक्रिका] १ वृत्ताकार घूमने वाला कोई छोटा चक्र । २ फिरकी, फिरकनी । ३ छोटी गिर्री । ४ डोर लपेटने की चरखी । ५ आतिश वाजी । ६ ढेर, समूह । ७ एक प्रकार की लता व उसका फल । ८ देखो 'चक्री' । –वि० १ भ्रमित । २ अस्थिर, चचल ।
चकळ (ळी)–वि० भ्रमित ।
चकळोटो (ळो)–पु० [स० चक्रलोट] १ रोटी वेलने का चकला । २ चौराहा, कटला ।
चकव–देखो 'चकवौ' ।
चकवत (तो, त्ती)–देखो 'चक्रवरती' ।
चकवन–देखो 'चगताई' ।
चकवाय–देखो 'चकवौ' ।
चकवाविरह–पु० चक्रवाक पक्षी को विरह मे डालने वाला, चन्द्रमा ।
चकवे (वै)–देखो 'चक्रवरती' ।
चकवौ–पु० [स० चक्रवाक] (स्त्री० चकवी) १ चक्रवाक नामक पक्षी । २ एक प्रकार का घोडा ।
चकस्या–देखो 'चिकित्सा' ।
चका–देखो 'चक्र' ।

चकाचक–वि० १ घी-तेल आदि से तरबतर। २ चकचक।
चकाचूंध, चकाचौंध (धी)–स्त्री० १ अत्यन्त तीव्र प्रकाश। २ अत्यधिक तड़क-भड़क। ३ तीव्र प्रकाश से आंखों की अस्थिरता, चौंधापन। ४ तिलमिलाहट।
चकावध–पु० [स० चक्रबंध] सेना, फौज।
चकाव्येह, (वौ, बौह)–पु० [स० चक्रव्यूह] १ सेना, फौज। २ सैन्य संगठन। ३ आक्रमण, हमला। ४ युद्ध, समर। ५ कोलाहल, हल्ला। ६ झुण्ड, समूह।
चकार–पु० १ वर्णमाला का 'च' वर्ण। २ गोलाकृति, वृत्त। ३ चारणों की जागीरी। ४ जमघट, भीड़। ५ योनि।
चकारो–पु० १ फेरा, चक्कर, घुमाव। २ घुमाने की क्रिया। ३ दन्तक्षत। ४ समूह, ढेर। ५ वध, वधन, गाठ। ६ म्यान या शस्त्रों का आवरण।
चकावळ–पु० घोड़ो के पावों का एक रोग।
चकास–वि० [स० चकासृ दीप्तौ] १ चमकने वाला, प्रकाश युक्त। २ झगड़ालु।
चकासो–पु० १ लड़ाई, झगड़ा। २ प्रकाश, चमक।
चकित–वि० १ आश्चर्य युक्त विस्मित। २ भयभीत, स्तब्ध।
चकिवान–पु० [स० चक्रीवन्त] गधा।
चकी–देखो 'चक्की'।
चकीय–स्त्री० चकवी।
चकीलौ–वि० (स्त्री०, चकीली) १ सुन्दर, छबीला। २ चकमा देने वाला।
चकू–देखो 'चाकू'।
चकोट–पु० चन्द्रमा।
चकोतरौ–पु० बड़ा नीबू।
चकोर (डौ)–पु० [स०] १ एक प्रकार का बड़ा तीतर। २ एक वर्ण वृत्त। –वि० सावधान, सतर्क। **—बंधु**–पु०–चन्द्रमा।
चक्क–१ देखो 'चक'। २ देखो 'चक्र'। **—धरी**='चक्रवरती'।
चक्कय–देखो 'चकवो'।
चक्कर–पु० [स० चक्र] १ घूमने-फिरने या घुमाने की क्रिया। २ चक्कर, फेरा, घुमाव। ३ पहिये का घुमाव, फेरा। ४ व्यर्थ का आवागमन। ५ वात विकार से शिर की चकराहट। ६ जटिलता, उलझन। ७ पानी का भावर। ८ जजाल। ९ वलि पशु पर किया जाने वाला प्रहार। १० तलवार। ११ रास्ते का घुमाव। १२ देखो 'चक्र'। **—जीवन**–पु० कुंभकार, कुम्हार। **—दार**–वि० जिसमे चक्कर हो। उलझनपूर्ण।
चक्करवरती, चक्कवउ, चक्कवहि, चक्कवत, चक्कवै, चक्कव्रत्ति–देखो 'चक्रवरती'।
चक्की–स्त्री० [सं० चक्र] १ अनाज पीसने का यन्त्र। २ चौकोर काटी हुई मिठाई। ३ दातों से काटने का निशान। ४ तलवार। ५ आर्या छन्द का एक भेद।
चक्को–देखो 'चक्र'।
चक्ख–१ देखो 'चख'। २ देखो 'चक'।
चक्खी–देखो 'चक्की'।
चक्खेव–देखो 'चख'।
चक्यउ–वि० [स० चकित] चकित, स्तब्ध।
चक्रग–देखो 'चक्रांग'।
चक्रगी–स्त्री० [स० चक्रांकी] १ मादा हंस, हंसिनी। २ देखो 'चक्रांग'।
चक्र–पु० [स०] १ भगवान विष्णु का आयुध। २ पहिया। ३ हथियार, शस्त्र। ४ कुम्हार का चाक। ५ तेली का कोल्हू। ६ गोला, वृत्त, मण्डल। ७ दल, समूह। ८ राष्ट्र, राज्य। ९ प्रान्त। १० सेना, फौज। ११ सैनिक व्यूह। १२ युग। १३ अन्तरिक्ष। १४ भवर। १५ नदी का घुमाव। १६ चक्रवाक। १७ वायु, पवन। १८ वायु का गोला। १९ वृत्ताकार गति। २० राजा, नृप। २१ देवी का एक शस्त्र। २२ योग के षड्चक्र। २३ फेरा, चक्कर। २४ घेरा, वृत्त। २५ परिधि। २६ क्रोध, रोष। २७ सर्प। २८ विस्मय, आश्चर्य। २९ भ्रम, भूल। ३० सामुद्रिक चिह्न। ३१ शरीर पर लगाये जाने वाले चिह्न विशेष। ३२ कुत्ता। ३३ काव्य रचना का एक भेद। ३४ एक छन्द विशेष। ३५ नदी की गूंज। ३६ सभा। ३७ अनाज पीसने का यंत्र। ३८ विष्णु पूजन के समय शरीर पर लगाया जाने वाला चिह्न। ३९ फेर, दौर। ४० कुंभकार। ४१ तेली। ४२ जासूस। **—अंग**='चक्रांग'। **—कुंड**–पु० चक्रव्यूह का मध्य भाग। **—चर**–पु० तेली। कुम्हार। **—जीवक**–पु० कुम्हार। **—ताळ**–पु० संगीत की एक ताल। **—तीरथ**–पु० तुंगभद्रा नदी किनारे का एक तीर्थ। **—दंड**–पु० एक प्रकार का व्यायाम। **—दंष्ट्र**–पु० सूअर। **—धर, धरण, धारि, धारी**–पु० श्रीकृष्ण। श्रीविष्णु। सूर्य। सर्प, सांप। बाजीगर। **—पाण, (णि, णी)**–पु० श्रीविष्णु। श्रीकृष्ण। **—पाद**–पु० रथ। गाडी। **—फळ**–पु० एक अस्त्र विशेष। **—बंध**–पु० एक प्रकार का चित्रकाव्य। **—बंधु, बांधव**–पु० सूर्य। **—भ्रत**–पु० चक्रधारी भगवान। **—भेदिनी**–स्त्री० रात्री। **—भ्रमर**–पु० एक प्रकार का नाच। **—मंडळ**–पु० एक प्रकार का नृत्य। **—मंडळी**–पु० अजगर, सर्प। **—मुख**–पु० सूअर। **—मुद्रा**–स्त्री० शरीर पर लगे विष्णु आयुध के चिह्न।

चक्रणधुर–पु० [स० चक्रधुरीण] रथ।
चक्रत–देखो 'चकित'।
चक्रति–देखो 'चकित'।
चक्रवत (त्त, त्ति, त्ती)–स्त्री० १ एक वर्णिक छन्द विशेष। २ देखो 'चक्रवरती'।
चक्रवरत (ती)–पु० [स० चक्रवर्तिन्] १ आसमुद्रात भूमि का स्वामी, राजा, सम्राट। २ बायें पार्श्व मे भौंरी वाला घोडा। ३ बडा राजा। ४ राजा।
चक्रवान–पु० चौथे समुद्र मे स्थित एक पर्वत।
चक्रवाक–पु० [स०] १ चकवा पक्षी। २ वह घोडा जिसके चारो पैर सफेद, शरीर पीला व नेत्र श्याम वर्ण के हो। –वि० पीला, पीत ॐ। —**वियोग**–पु० चन्द्रमा।
चक्रवाळ–पु० १ एक प्रसिद्ध पौराणिक पर्वत। २ घेरा। ३ वृत्त, मण्डल।
चक्रवीर–पु० [स०] सूर्य।
चक्राव्युह, चक्रव्युह (व्युह, व्यूह)–पु० [स० चक्रव्यूह] युद्ध के समय सेना की व्यूह रचना विशेष।
चकवत (ति, ती)–देखो 'चक्रवरत'।
चक्रसुदसण–देखो 'सुदरसणचक्र'।
चक्राक–पु० [स०] शरीर पर लगाये जाने वाले विष्णु आयुध के चिह्न।
चक्राग–पु० [स०] (स्त्री० चक्रागी) १ हस। २ चक्रवाक। ३ रथ या गाडी। ४ कुटकी नामक औषधि।
चक्रांस–पु० [स० चक्रांश] राशि चक्र का ३६० वा अश।
चक्रा–पु० सर्प, साप।
चक्राक्रत–पु० चक्र, चक्रव्यूह। –वि० स्तभित।
चक्राय–पु० [स०] कौरव पक्ष का एक योद्धा।
चक्रायुध–पु० भगवान विष्णु।
चक्राळ–पु० रथ, गाडी।
चक्रावळ–पु० घोडो के पैरो मे होने वाला एक रोग।
चक्रि–१ देखो 'चक्र'। २ देखो 'चक्री'।
चक्रिक–वि० [स०] चक्रधारी।
चक्रित–देखो 'चकित'।
चक्रिन–देखो 'चक्री'।
चक्रियवत–पु० गधा।
चक्रियाण–वि० चक्रधारी।
चक्री–पु० [स० चक्रिन्] १ श्रीविष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ चक्रधारी। ४ देवी, दुर्गा। ५ देखो 'चक्र'। ६ देखो 'चकित'। ७ देखो 'चकरी'। ८ देखो 'चक्रवरती'। —**वान**–पु० गधा।
चक्रेस्वर (री)–स्त्री० राठौडो की कुल देवी।
चख–पु० [स० चक्षुस्] १ आख, नेत्र। २ दृष्टि, नजर। [फा०] ३ लडाई, झगडा। ४ घोडो के जबडो का एक रोग। —**एक**–पु० दैत्य गुरु शुक्राचार्य। एक आख वाला, काना। —**चख**=‘चकचक’।
चखचाधी–देखो 'चकाचौंध'।
चखचू दरी–स्त्री० छछू दर नामक जीव।
चखचू धी–देखो 'चकाचौंध'।
चखचू धौ–वि० (स्त्री० चखचू धी) १ बहुत छोटी-छोटी आखें व धु धली नजर वाला। २ धु धला व चमकीला।
चखचौंध–देखो 'चकाचौंध'।
चखचौळ–वि० १ रक्ताभ नेत्र वाला। २ क्रुद्ध, कुपित।
चखण–स्त्री० १ चखने की क्रिया या भाव, स्वाद। २ चखने का पदार्थ।
चखणौ (बौ)-देखो 'चाखणौ' (बौ)।
चखताळौ–पु० एक प्रकार का पकाया हुआ मास।
चखतौ–देखो 'चगताई'।
चखदेव–पु० [स० देवचक्षु] स्वामिकार्त्तिकेय।
चखधुसहस–पु० शेषनाग।
चखबाहर–पु० [स० द्वादश चक्षु] स्वामि कार्त्तिकेय।
चखमग–पु० [सं० चक्षुमार्ग] दृष्टि-पथ, नजर।
चखस्रवा–पु० [स० चक्षु श्रवस्] सर्प, साप।
चखामज्जीठौ–वि० लाल नेत्रो वाला, क्रोधित।
चखासरव–पु० [स० सर्व चक्षु] सूर्य, रवि।
चखाणौ (बौ), चखावणौ (बौ)–क्रि० १ किसी वस्तु को चखाना, स्वाद लेने के लिए प्रेरित करना। २ अनुभव कराना। ३ थोडा सा खिलाना।
चखि, चखु, चख्ख–देखो 'चख'।
चख्खडाई–स्त्री० चख्खडा चारण की पुत्री एक देवी।
चक्षु–देखो 'चख'।
चग–स्त्री० १ एक प्रकार की घास। २ तनु क्षुप।
चगचगाट–देखो 'चहचाहट'।
चगणौ (बौ)–क्रि० १ बूद-बूद टपकना, चूना रिसना। २ चिढना, गुस्सा करना। ३ बहकना, धोखे मे आना। ४ चूकना, भूलना।
चगत, चगताण, चगताई, चगताळ, चगताहु, चगतौ, चगत्थ, चगथ, चगथाणी, चगथा–पु० १ चगताईखा से चला मध्य एशिया का एक तुर्की वश। २ बादशाह। ३ यवन, मुसलमान। ४ चगेजखा का पुत्र।
चगदायळ–वि० घावो से पूर्ण, घायल।
चगदौ–पु० १ घाव, क्षत, चोट। २ खरोच। ३ चोट का निशान ४ कुचलने का भाव। ५ लुगदी।
चगर–स्त्री० घोडो की एक जाति।

चगाणौ (बो), चगावणौ (बो)–देखो 'चिगाणौ' (बो)।
चगाहट–पु० १ ध्वनि, ग्रावाज, जनरव, चकचक। २ कीर्तिगान।
चड'–देखो 'चडस'।
चडखणौ (बो)–क्रि० १ चूसना। २ चाटना। ३ क्रोध करना।
चडखाणौ(बो), चडखावणौ(बो)–क्रि० १ चूसाना। २ चटाना। ३ गुस्सा दिलाना।
चडड, चडचड–स्त्री० [ग्रनु] १ सूखी लकडी के टूटने या चिरने से उत्पन्न ध्वनि, चडड। २ पेय पदार्थ चूसने की ध्वनि। ३ दात भीच कर पानी ग्रादि पीने की ध्वनि।
चडणौ (बो)–देखो 'चिडणौ' (बो)।
चडबड (भड)–स्त्री० १ तकरार, वोल-चाल, लडाई, वाग्युद्ध। २ बकझक।
चड़भडणौ (बो)–क्रि० १ लडना, झगडना। २ क्रोध करना।
चडभडाणौ(बो), चडभडावणौ (बो)–१ लडाना, झगडा करना। २ क्रोध कराना। ३ ललकारना।
चडस–स्त्री० १ गाजे के पेड का गोद जो ग्रत्यन्त मादक होता है। २ कूए से पानी निकालने का चमडे या लोह का वडा पात्र, मोट।
चडसियौ–वि० १ कूए पर 'चडस' खाली करने वाला। २ 'चरस' पीने वाला। ३ देखो 'चडस'।
चडाचड–स्त्री० १ चडचड की ध्वनि। २ छोटी-छोटी ग्रातिशबाजी। ३ देखो 'चटापट'।
चडापड–देखो 'चटापट'।
चडापौ–पु० प्रहार, चोट।
चडियड़–स्त्री० चडचड ध्वनि।
चडी–स्त्री० [स० चटक] १ ग्रधिक चर्वी से उत्पन्न सिकुडन। २ ग्रधिक दवाव से होने वाली ग्रथि। ३ देखो 'चिडी'।
चडोकलौ–देखो 'चिडोकलौ'। (स्त्री० चडोकली)
चडौ–देखो 'चिडौ'।
चचपट–स्त्री० झाझ, मजीरे की ध्वनि।
चचौ–पु० १ 'च' वर्ण। २ चाचा, काका।
चचोक (क्क)–वि० [स० चकित] १ विस्मित, चकित। २ चौकन्ना। ३ भयभीत। ४ सशकित।
चच्चौ–देखो 'चचौ'।
चज–पु० १ छल, कपट। २ लक्षण। ३ बुद्धि।
चट–क्रि०वि० [स० चटुल] तुरत, शीघ्र। –पु० १ गर्मी का दाग। २ घाव, जख्म। ३ छत पर ककरीट जमाने की क्रिया। ४ पर्वतीय चौडी शिला, चट्टान। ५ किसी कडी वस्तु के टूटने की ग्रावाज। ६ देखो 'चट्ट'।
चटक–स्त्री० १ गर्व, दर्प, घमड। २ एक प्रकार की चिडिया। ३ नारियल की गिरी का टुकड़ा। ४ चालाकी। ५ चटकीलापन, चमक-दमक। ६ स्फूर्ति, शीघ्रता। –वि० १ चचल, चपल। २ नाजुक, नखरे युक्त। ३ चटपटा, चरपरा, तीक्ष्ण। ४ शीघ्र। ५ फुर्तीला, तेज।
चटकउ–देखो 'चटकौ'।
चटकणी–देखो 'चिटकणी'।
चटकणौ–वि० १ चटकने वाला, टूटने वाला। २ चलने पर चट-चट ध्वनि होने वाला। (वैल, ग्रशुभ)।
चटकणौ, (बो)–क्रि० १ चटकना, टूटना, तडकना। २ चट-चट ध्वनि होना। २ विषैला जतु का काटना, डक मारना।
चटकमटक–स्त्री० १ तडक-भडक। २ चटकीलापन। ३ नाज-नखरा। ४ चुलवुलाहट।
चटकाणौ, (बो), चटकावणौ, (बो)–क्रि० १ 'चट' करते हुए तोड देना, तडकाना। २ चट-चट ध्वनि करना। ३ विषैला जतु का काटना, डक, मारना।
चटकाहट–स्त्री० १ चटकने या तडकने की क्रिया या भाव। २ कलियो के विकसित होने का भाव।
चटकियौ–पु० वह वैल जिसके पैरो से चटचट ग्रावाज होती हो।
चटकी–स्त्री० १ छडी, वेंत। २ शीघ्रता, स्फूर्ति। ३ चट-चट ध्वनि। ४ गाय वैल ग्रादि की लात।
चटकीलौ–वि० (स्त्री० चटकीली) १ चटक-मटक से रहने वाला तड़क-भडक वाला। २ नाज-नखरा। ३ जल्दी चटकने या टूटने वाला।
चटकौ–पु० १ विच्छु द्वारा डक मारने की क्रिया। २ तडक-भडक। ३ नाज-नखरा। ४ प्रहार-चोट, मार। ५ दर्द, कसक, टीस। ३ स्वर्ण साफ करने का मसाला। ७ दो लकडियो को जोडने के लिए लगाया जाने वाला लोहे का टुकडा। ८ ग्रंगुलिया चटकाने की ध्वनि। ९ चट-चट शब्द या ध्वनि। १० टुकडा, खण्ड। ११ शीघ्रता, त्वरा। —मटकौ–पु० नाज, नखरा।
चटक्क–देखो 'चटक'।
चटक्कडौ–पु० १ प्रहार, चोट, ग्राघात। २ छडी प्रहार की ध्वनि।
चटक्कणौ, (बो)–देखो 'चटकणौ' (बो)।
चटक्कौ–देखो 'चटकौ'।
चटचट–स्त्री० [ग्रनु०] १ चटकने, तडकने या टूटने की ध्वनि। २ चटपट।
चटट्टणौ, (बो)–क्रि० १ जीभ से चाटना। २ चटचट शब्द करना।
चटणी–स्त्री० १ धनिया, पुदीना ग्रादि मसालो को पीस कर वनाया हुग्रा ग्रवलेह। २ चाटने की वस्तु। ३ किसी ग्रौषधि का ग्रवलेह।
चटपट–स्त्री० शीघ्रता। –क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त।

चटपटाणौ, (बौ)–क्रि० १ शीघ्रता करना, जल्दी मचाना। २ आतुर होना। ३ घबराना।
चटपटी–स्त्री० १ शीघ्रता, उतावली, त्वरा। २ बेचैनी। ३ आतुरता। ४ घबराहट।
चटपटौ–वि० (स्त्री० चटपटी) तेज मसालेदार, चरपरा।
चटळ–वि० [सं० चटुल] चचल, चपल।
चटसाळ, (साळा)–स्त्री० पाठशाला, विद्यालय।
चटालट–स्त्री० १ टक्कर, भिडत। २ युद्ध। ३ गुत्थमगुत्था।
चटाई–स्त्री० १ घास-तृण आदि को बुनकर बनाया हुआ बिछावन, आसन। २ आभूषण विशेष।
चटाक–क्रि० वि० चट से, शीघ्र, तुरंत।
चटाकौ–पु० चट की आवाज, चटकौ।
चटाचट–क्रि० वि० १ फटाफट, शीघ्र, तुरत। २ चटपटी।
चटाणौ, (बौ)–क्रि० १ चाटने के लिए प्रेरित करना, देना। २ अवलेह आदि पदार्थ अगुली पर लेकर किसी के मुह मे देना। ३ रिश्वत देना। ४ नाजायज ढग से किसी को कुछ खिलाना या सहायता देना।
चटापड, चटापट, (टी)–देखो 'चटपटी'।
चटावण–पु० चाटने योग्य पदार्थ।
चटावणौ, (बौ)–देखो 'चटाणौ' (बौ)।
चटियौ–देखो 'चिटियौ'।
चटी–स्त्री० १ लडाई, मुठभेड। २ कुश्ती। ३ चिड़िया। **—वाळ**–वि० लडने वाला, झगडालु।
चटु–पु० [सं०] १ प्रिय वचन। २ चापलूसी भरे शब्द। ३ पेट। ४ कनिष्ठा अगुली। ४ देखो 'चट्ट'।
चटुडी–स्त्री० कनिष्ठा अगुली।
चटुडौ–देखो चट्टु'।
चटैल–वि० धूर्त। –पु० शीघ्रता का भाव।
चटोकडौ, चटोरौ–देखो 'चट्टौ'। (स्त्री० चटोकडी, चटोरी)
चट्ट–स्त्री० १ चोटी। २ विद्यार्थी। ३ देखो 'चट'। **—साळ**='चटसाळ'।
चट्टाण–स्त्री० प्रस्तरखण्ड, शिलाखण्ड।
चट्टी–स्त्री० १ पडावस्थल। २ मजिल। ३ देखो 'चटी'। ४ देखो 'चट्टौ'।
चट्ट, चट्टौ–वि० (स्त्री० चट्टी) १ स्वादिष्ट भोजन खाने का लोभी, माल मलीदा खाने वाला, स्वादू। २ रसलोलुप, लोभी। ३ चोटो, चोटी, शिखा।
चठठ–स्त्री० बोझा लदी गाडी से चलते समय होने वाला चटचट शब्द।
चठठणौ (बौ)–देखो 'चटट्णौ' (बौ)।
चठठाक (ल)– खो 'चठठ'।
चठमठौ–वि० कृपण, कजूस।
चठ्ठौ–पु० खुशी, उत्साह।
चडणौ (बौ)–देखो 'चढणौ' (बौ)।
चडतव–पु० समुद्र, सागर।
चडमौ–वि० १ चढने योग्य। २ उन्नत। ३ सवारी योग्य।
चडवा–स्त्री० वस्त्रो की बधाई करने वाली जाति।
चडवौ–पु० इस जाति का व्यक्ति।
चडाचड–स्त्री० १ लडाई। २ आक्रमण, हमला। ३ चढने उतरने की क्रिया।
चडाणौ (बौ)–देखो 'चढाणौ' (बौ)।
चडापौ–देखो 'चढ़ापौ'।
चडावणौ (बौ)–देखो 'चढाणौ' (बौ)।
चडावौ–देखो 'चढापौ'।
चडु–देखो 'चाड'।
चढ़ण–स्त्री० १ चढने की क्रिया या भाव। २ उन्नति। ३ विकास। **—सितबारण**–पु० इन्द्र।
चढ़णौ (बौ)–क्रि० [सं० उच्चलन] १ नीचे से ऊपर या ऊचाई पर जाना। ऊपर चढना। २ ऊपर उठना। ३ बढना, विकसित होना। ४ उन्नति करना। ५ आगे बढना। ६ सिकुडना, तग होना। ७ उडकर छा जाना। ८ आवेष्टित होना, आवरण युक्त होना। ९ आक्रमण के लिए तैयार होना, लडाई के लिए तैयार होना। १० सवारी करना। ११ बाजार भावो का बढ़ना, तेजी आना। १२ नदी का पानी बढना, वृद्धि होना। १३ किसी की शरण लेना, आश्रय लेना। १४ प्रस्थान करना, रवाना होना। १५ वाद्यो मे खिचाव दिया जाना स्वर से अधिक बढना। १६ नैवेद्य आदि देव मूर्ति या मदिर मे अर्पित होना, भेंट होना, समर्पित किया जाना। १७ अंकित होना, लिखा जाना। १८ निश्चित तिथि या अवधि से अधिक समय होना। १९ देय होना, बाकी निकलना। २० ऋण आदि बढ़ना। २१ आवेश या जोश आना। २२ पकने के के लिए आच पर रखा जाना। २३ रोगन आदि का लेपन होना। २४ पसद आना, अच्छा लगना। २५ सामूहिक प्रयाण करना। २६ नशे का प्रभाव होना। २७ लदना, माल लादा जाना।
चढ़तौ–वि० (स्त्री० चढती) १ अधिक। २ उन्नत, बढ़कर। –क्रि०वि० वृद्धि या उन्नति की ओर।
चढ़मौ–देखो 'चडमौ'।
चढ़ाई–स्त्री० १ चढाई, चढने की क्रिया। २ भूमि या रास्ते की ऊचाई। ३ आक्रमण या हमले का प्रयाण। ४ चढावा। ५ उन्नति।
चढाऊपरी–स्त्री० प्रतिस्पर्धा।

चढाक–वि० चढने वाला, चढने मे दक्ष । सवारी करने मे निपुण ।

चढ़ाचढ़ी–स्त्री० प्रतिस्पर्धा । प्रतियोगिता ।

चढ़ाणौ (बौ), चढ़ावणौ (बौ)–क्रि० १ नीचे से ऊपर जाने के लिये प्रेरित करना, ऊपर चढाना । २ ऊपर उठाना । ३ बढ़ाना, विकसित करना । ४ उन्नत करना, तरक्की देना । ५ आगे बढाना । ६ सिकोडना, समेटना, ऊपर करना । ७ उडाना । ८ आवेष्टित या आवरण युक्त करना । ९ आक्रमण के लिये तैयार करना, उद्यत करना । १० सवारी कराना । ११ भावो मे तेजी लाना, बढाना । १२ वृद्धि करना । १३ किसी की शरण मे जाने के लिये प्रेरित करना । १४ रवाना करना । १५ वाद्यो को तनाव देकर स्वर युक्त करना । १६ नैवेद्य आदि भेंट करना, समर्पित करना । १७ अकित करना, लिखना । १८ अवधि से अधिक समय होने देना । १९ देय या बाकी निकालना । २० ऋण बढाना । २१ आवेश या जोश दिलाना । २२ पकने के लिये आच पर रखना । २३ रोगन आदि का लेपन करना । २४ पसद कराना, ध्यान मे लाना । २५ प्रयाण कराना । २६ लदवाना, चढवाना । २७ पीना, पी जाना । २८ वधू के लिये जेवर भेजना । २९ धनुष की प्रत्यचा कसना ।

चढ़ावौ (वौ)–पु० देव मन्दिर मे चढाया जाने वाला नैवेद्य, फल-फूल, द्रव्य आदि ।

चढ़ीरौ–पु० १ सवारी के लिये तैयार ऊट या घोडा । २ चारजामा ।

चण चणउ, चणक–स्त्री० १ शरीर मे पडने वाली मोच, लचक । २ एक ऋषि का नाम । ३ देखो 'चणौ' ।

चणकार–पु० १ चने का खेत । २ चने की बोवाई के लिये तैयार की गई भूमि । ३ ध्वनि विशेष ।

चणग–पु० १ चिनगारी । २ अग्निकण । ३ देखो 'चणक' ।

चणंक–स्त्री० १ रोमाचित होने का भाव । २ छन-छन की आवाज ।

चणणकणौ (बौ)–क्रि० जोश या भय से रोमाचित होना ।

चणणा–स्त्री० १ रोमाचित होने का भाव । २ छन–छन की आवाज । ३ तीर व गोलियो की बौछार की ध्वनि ।

चणणाट (टियौ, टौ)–पु० १ विनाश, विध्वस । २ बरबादी । ३ ध्वनि विशेष । ४ झन्नाटा ।

चणणाणौ (बौ)–क्रि० १ रोमांचित होना । २ झन्नाटा आना । ३ चिनचिनाना ।

चणणौ (बौ)–देखो 'चुणणौ (बौ)' ।

चणाई–१ देखो 'चणारी' । २ चुणाई ।

चणाखार–पु० चने के पौधे का क्षार ।

चणायका–स्त्री० १ चाणक्य नीति के श्लोक । २ इन श्लोको की पुस्तक ।

चणारी–स्त्री० १ एक प्रकार का काला जतु । २ पैर के तलवे मे होने वाला मोटा फफोला ।

चणौ–पु० [स० चणक] १ रवी की फसल मे होने वाला प्रसिद्ध द्विदल अन्न । २ इस अन्न का पौधा ।

चत–देखो 'चित' ।

चतडाचौथ–स्त्री० भादव शुक्ला चतुर्थी, गणेश चतुर्थी ।

चतमाठौ–देखो 'चितमठौ' ।

चतरग–स्त्री० १ चतुरगिनी सेना । २ शतरंज । ३ चित्तौडगढ । –वि० १ चतुर, निपुण, दक्ष । २ चालाक ।

चतरगणी–देखो 'चतुरगिनी' ।

चतर–देखो 'चतुर' । —भुज='चतुरभुज' ।

चतरणौ (बौ)–क्रि० १ चित्रकारी करना । २ चित्रण करना ।

चतराम–देखो 'चित्राम' ।

चतराई–देखो 'चतुराई' ।

चतारण–पु० [स० चतुरानन] ब्रह्मा ।

चतारौ–देखो 'चितारौ' ।

चतुरंग–पु० [स०] १ सेना के चार अंग, रथ, हाथी, घोडे और पैदल । २ सेना, फौज ।

चतुरगण (णि, णी)–देखो 'चतुरगिनी' ।

चतुरंग पत (पति)–पु० चतुरगिनी सेना का स्वामी, सेनापति या राजा ।

चतुरगिणी (नी), चतुरगी–स्त्री० रथ, हाथी, घोडे व पैदल चारो अगो से पूर्ण सेना । –वि० १ दक्ष, निपुण । २ चार अगो वाली ।

चतुरंत–वि० [स० चतुर्थ] चौथा, चतुर्थ ।

चतुर–वि० [स०] १ निपुण, दक्ष, पटु । २ तीक्ष्ण बुद्धि सम्पन्न । ३ फुर्तीला, तेज । ४ चलता पुर्जा, होशियार । ५ मनोहर, सुन्दर, प्रिय । ६ अनुकूल । ७ धूर्त, चालाक । –पु० [स० चत्वार] १ ब्रह्मा । २ चार की सख्या । ३ कवि । ४ शृगार रस का सभोग-चतुर नायक । ५ कपट ।

चतुरक–पु० चतुर व्यक्ति या नायक ।

चतुरगति–पु० कच्छप, कछुआ ।

चतुरजातक–पु० इलायची, दालचीनी, तेजपत्र व नागकेसर का मिश्रण ।

चतुरजुग–पु० चार युग ।

चतुरजोणि (जोणी)–पु० [स० चतुर्योनि] प्राणियो की चार योनि, अडज, जरायुज, स्वेदज, उद्भिज ।

चतुरथ–वि० [सं० चतुर्थ] चौथा ।

चतुरथी–स्त्री० [स० चतुर्थी] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि । –वि० चौथी, चतुर्थ ।
चतुरदत (दंती)–पु० ऐरावत हाथी ।
चतुरदस–वि० [स० चतुर्दश] दस व चार, चोदह । –स्त्री० चोदह की सख्या, १४ ।
चतुरदसी–स्त्री० [स० चतुर्दशी] प्रत्येक मास के प्रत्येक पक्ष की चोदहवी तिथि ।
चतुरद्रस्ट्र–पु० [स० चतुर्द्रंष्ट्र] १ ईश्वर । २ स्वामि कार्तिकेय । ३ एक राक्षस का नाम ।
चतुरदिक, (दिस)–स्त्री० [स०] चारो दिशाए । –क्रि० वि० चारो ओर ।
चतुरधाम–पु० चारो धाम तीर्थ ।
चतुरपणई–पु० चातुर्य, चतुराई ।
चतुरपदी–पु० १ चौपाया जानवर । २ एक मात्रिक छद विशेष ।
चतुरबाह (बाहु)–पु० [सं० चतुरबाहु] चारभुजा वाला देव ।
चतुरबूह–पु० [स० चतुर्व्यूह] १ चार पदार्थों का योग । २ चार मनुष्यो का समूह । ३ विष्णु ।
चतुरभुज–पु० [स० चतुर्भुज] १ विष्णु आदि चार भुजा वाले देव । २ मगल ग्रह । ३ सूर्य । ४ ब्रह्मा । ५ परमेश्वर । ६ दुर्गा, देवी । — **वाहण**–पु० गरुड । हस ।
चतुरभुजा–स्त्री० [सं०] गायत्री आदि चारभुजा वाली देविया ।
चतुरभुजी–स्त्री० [सं०] १ एक वैष्णव सम्प्रदाय विशेष । २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी । ३ विष्णु । ४ दुर्गा, देवी । ५ एक प्रकार की तलवार ।
चतुरमास–पु० [स०] वर्षा ऋतु के चार मास ।
चतुरमुख–पु० [स०] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ अनिरुद्ध का एक नाम । ४ सगीत मे एक ताल । –वि० चारमुख वाला ।
चतुरमुगती–स्त्री० सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य व सालोच्य चार प्रकार के मोक्ष ।
चतुरवरग–पु० [सं० चतुर्वर्ग] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष का समुच्चय ।
चतुरवरण–पु० [स० चतुर्वर्ण] १ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र चार वर्ण । २ अनिरुद्ध का एक नाम ।
चतुरविद्या–स्त्री० चारो वेदो की विद्या ।
चतुरविध–क्रि०वि० चार प्रकार से ।
चतुरवेद–पु० १ चारो वेद । २ ईश्वर ।
चतुरा–स्त्री० नृत्य की एक मुद्रा ।
चतुराई–स्त्री० १ निपुणता, दक्षता, पटुता । २ धूर्तता, चालाकी ।
चतुराणण–देखो 'चतुरानन' ।
चतुरातमक–वि० कुशाग्र बुद्धि ।
चतुरातमाविग्र–पु० अनिरुद्ध का एक नाम ।
चतुरातमा–पु० [सं०] ईश्वर । विष्णु ।
चतुरानन–पु० [स०] ब्रह्मा ।
चतुराश्रम–पु० [स० चतुराश्रम] मनुष्य जीवन की चार अवस्थाए, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ व संन्यास ।
चतुरेस–पु० [स० चतुरेश] विष्णु । –वि० दक्ष, प्रवीण, निपुण ।
चतुसकळ–वि० चार मात्रा वाला ।
चतुसपद–पु० [स० चतुष्पद] १ चार पैरो वाला प्राणी । २ चार पदो वाला एक छन्द । –वि० चार मात्राओ वाला ।
चतुसपदी–स्त्री० १ प्रत्येक चरण मे १४ मात्रा वाला एक छन्द । २ चार पद का एक गीत ।
चतुस्कोण–वि० [स० चतुष्कोण] चार कोणो वाला ।
चतुस्टय–पु० [स० चतुष्टय] १ चार वस्तुओ का समूह । २ चार की सख्या । ३ जन्म कुण्डली मे केन्द्र लग्न और लग्न से सातवा तथा दसवा स्थान ।
चतुस्पथरता–स्त्री० एक स्कन्द मातृका ।
चतुस्पद–देखो 'चतुसपद' ।
चतुस्पदा–देखो 'चतुसपदा' ।
चतुस्पदी–देखो 'चतुसपदी' ।
चतुस्पांणी-वि० [स० चतुष्पाणि] चार हाथ वाला । –पु० विष्णु, ब्रह्मा आदि देव ।
चत्ति–देखो 'चित' ।
चत्रंग–१ देखो 'चात्रंग' । २ देखो 'चतुरग' । ३ देखो 'चित्तौड़' ।
चत्र गढ़–देखो 'चित्तौड' ।
चत्र–देखो 'चतुर' ।
चत्रकोट, (कोठ, गढ़)–पु० चित्तौडगढ ।
चत्रधा–वि० चार प्रकार का ।
चत्रबांह, (बाह)–पु० योद्धा, वीर ।
चत्रभांण (न, नु)–देखो 'चित्रभाण' ।
चत्रभुज (भुज्ज, भूज)–देखो 'चतुरभुज' ।
चत्रसाळ (साळा)–देखो 'चित्रसाळा' ।
चत्रांम–देखो 'चित्राम' ।
चत्रंगु–देखो 'चतुरग' ।
चत्रु–वि० १ चार । २ देखो 'चतुर' ।
चत्वर–पु० [स०] चबूतरा या मडप ।
चत्वरबासिनी–स्त्री० एक स्कन्द मातृका ।
चत्वार–वि० [स० चत्वर] चार । –पु० १ चबूतरा । २ चौराहा ।
चदिर–पु० [स०] १ चन्द्रमा । २ हाथी । ३ साप, सर्प । ४ कपूर ।
चनण–देखो 'चदण' । –गो, गोह='चदणगोह' ।
चनणियौ–पु० १ चन्दन । २ चन्दन जैसा रग । –वि० चन्दन के रग का ।
चनरमा–देखो 'चंद्रमा' ।
चनवाई, चनवायी–स्त्री० स्वर्ण मडित हाथी दात की चूडी ।
चनाव–देखो 'चिनाव' ।

चनेयक–वि० थोड़ा, तनिक, किंचित ।

चन्नण–देखो 'चंदण' । —गो', गोह='चंदणगोह' ।

चप–क्रि०वि० १ तुरन्त, फौरन, चट । २ अकस्मात, यकायक ।

चपक–पु० सेना का वाम भाग । –क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त ।

चपकणौ (बौ)–देखो 'चिपकणौ' (बौ) ।

चपकाणौ (बौ), चपकावणौ (बौ)–देखो 'चिपकाणौ' (बौ) ।

चपकौ–पु० रोग के स्थान पर लोहे की गर्म सलाका से दग्ध करने की क्रिया ।

चपड़-चपड़–स्त्री० १ चप-चप की ध्वनि । २ बकवास, हुज्जत ।

चपड़ास–स्त्री० १ चपरासी का बिल्ला । २ मालखंभ की एक कसरत ।

चपडासी (रासी)–पु० (स्त्री० चपडासण) १ राज्य का छोटा कर्मचारी । २ अनुचर, परिचायक ।

चपडी–स्त्री० १ साफ की हुई लाख जो मुहर लगाने के काम आती है । २ तख्ती, पटिया । ३ परत ।

चपडो–पु० १ शक्कर की चासनी को जमाई हुई पत्तरनुमा मिठाई । २ अनाज का छिलका, भूसा ।

चपट–१ देखो 'चपत' । २ देखो 'चपेट' ।

चपटणौ (बौ)–देखो 'चिपटणौ' (बौ) ।

चपटाणौ (बौ), चपटावणौ (बौ)–देखो 'चिपटाणौ' (बौ) ।

चपटी–१ देखो 'चिमटी' । २ देखो 'चपटौ' । (स्त्री०)

चपटौ–वि० (स्त्री० चपटी) १ सपाट, फैला हुआ, पथराया हुआ । २ जिसमें उभार न होने, दवा हुआ, चिपका हुआ ।

चपणौ (बौ)–१ देखो 'चपणौ' (बौ)। २ देखो 'चिपकणौ' (बौ) ।

चपत–स्त्री० [स० चपट] १ थप्पड तमाचा । २ हथेली का प्रहार । ३ चोट, आघात । ४ हानि, नुकसान ।

चपदस्त–पु० सफेद पैर का घोडा विशेष ।

चपरकौ–पु० १ एक प्रकार का प्रहार । २ चुभन । ३ तीक्ष्ण स्वाद ।

चपळ–वि० [स० चपल] १ चंचल, अस्थिर । २ चुस्त, फुर्तीला । ३ कापने या थरथराने वाला । ४ आतुर, व्यग्र । ५ जल्दबाज । ६ चुलबुला, नटखट । ७ अस्थाई, क्षणिक । ८ कायर । ९ नश्वर, निर्बल । १० अविवेकी । -पु० १ कामदेव । २ पारा । ३ वेग । ४ मछली । ५ बिजली । ६ चातक पक्षी । ७ सुगध द्रव्य । –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी । —**भाव**–पु० चचलता ।

चपळता–स्त्री० १ चपल होने की अवस्था या गुण । २ चचलता, स्फूर्ति । ३ चालाकी, धूर्तता । ४ कपन, थरथराहट । ५ कायरता ।

चपळमती–वि० १ कुशाग्र बुद्धि । २ अस्थिर चित्त ।

चपळवास–पु० गरुड ।

चपळा–स्त्री० [सं० चपला] १ दुर्गा । २ लक्ष्मी । ३ बिजली विद्युत । ४ पुंश्चली स्त्री, कुल्टा स्त्री । ५ जिह्वा, जीभ । ६ पिप्पली वृक्ष । ७ मदिरा । ८ आर्या छद का एक भेद । –वि० पीला* ।

चपळाई (लात)–स्त्री० चपलता, चचलता ।

चपलाहार–पु० हार विशेष ।

चपलु–देखो 'चपळ' ।

चपळो–पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ देखो 'चपळ' ।

चपाचप–क्रि०वि० शीघ्र तुरत ।

चपेट–स्त्री० १ तमाचा, थप्पड । २ वेग पूर्ण चलती हुई वस्तु की लपेट, धक्का, झोंका, रगड़ । ३ मार करने की परिधि ।

चपेटणौ (बौ)–क्रि० १ तमाचा या थप्पड मारना, पीटना । २ वेग मे लपेटना, झोंका देना, आघात करना । ३ मार की परिधि मे लेना । ४ दबाव मे लेना ।

चपेटाणौ (बौ), चपेटावणौ (बौ)–क्रि० १ तमाचा या थप्पड लगवाना । २ वेग मे लपेटाना, झोका दिराना, आघात कराना । ३ दबाव मे लिराना ।

चप्पल–स्त्री० खुली ऐडी की पट्टीनुमा जूती ।

चबक–स्त्री० १ डर, शका । २ चुभन । ३ पीडा, कसक ।

चबकणौ (बौ)–क्रि० १ चुभन होना, कसकना । २ भय खाना, शंका मानना ।

चबकौ–पु० १ सुई आदि नोकदार वस्तु की चुभन । २ ऐसी वस्तु के आघात से होने वाला क्षत । ३ रह-रह कर उठने वाली पीडा ।

चबणौ (बौ)–१ देखो 'चावणौ (बौ)' । २ देखो 'चवणौ (बौ)' । ३ देखो 'चुभणौ' (बौ) ।

चबरक (कौ)–पु० १ विवाह मे सह भोज की प्रणाली । २ देखो 'चवकौ' ।

चबलियौ–देखो 'चबोलियौ' ।

चबाणौ (बौ), चबावणौ (बौ)–क्रि० १ दातो से कुचलना, चबाना । २ काटना, खाना । ३ नाजायज ढग से हजम कर जाना ।

चबीण (णौ)–पु० १ चबैना । २ चुरवन ।

चबूतरौ (रौ)–पु० [स० चतुरस्त, चत्वर] मकान के आगे या किसी खुले स्थान मे, बैठने हेतु बनाया हुआ चौकोर व कुछ ऊंचा स्थान ।

चबेणौ–देखो 'चबीणौ' ।

चबोलियौ–पु० छोटी डलिया ।

चब्बलियौ–पु०१ पानी से भरा छोटा गड्ढा । २ छोटी डलिया ।

चब्बू–वि० बहुत चबाने वाला, चट्टु ।

चभकौ–देखो 'चबकौ' ।

चभड़-चभड–स्त्री० १ किसी वस्तु को दातो से चबाने की क्रिया । २ चबाने से उत्पन्न ध्वनि ।

चमक (उ)–देखो 'चमक'।

चमकी–स्त्री० १ तलवार। २ डुबकी। ३ देखो 'चमक'।

चमको–देखो 'चमक'।

चमंट–क्रि० वि० शीघ्र, तुरत, चटपट।

चमठ–पु० विनाश, तट।

चमडा–देखो 'चामुडा'।

चमक–स्त्री० १ प्रकाश, ज्योति। २ काति, दीप्ति, आभा। ३ लज्जा, शर्म। ४ शंका, झेंप। ५ कमर मे पडने वाली लचक। ६ चौंकने की क्रिया या भाव। ७ भय, डर, आशका। ८ मिर्च, मसाले आदि रखने का खानेदार पात्र। —**आरती**–स्त्री० तोरणद्वार पर सासु द्वारा दूल्हे की, थाल मे दीपक रख कर की, जाने वाली आरती। —**चांदणी**–स्त्री० रह-रह कर होने वाला प्रकाश। तडक-भडक से रहने वाली कुल्टा स्त्री। —**चोट**–स्त्री० अचानक की चोट।

चमकचुडी–स्त्री० [स० चमत्कृत] आभूषण विशेष।

चमकणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकाशित होना, ज्योतिर्मय होना। २ काति युक्त या दीप्ति युक्त होना। ३ शर्म करना। ४ झेंपना, शका करना। ५ लचकना। ६ चौंकना। ७ भय खाना डरना। ८ चौकन्ना होना, सावधान होना। ९ जागृत होना। १० कौंधना, दमकना। ११ उभरना, प्रगट होना। १२ प्रसिद्ध या प्रभावशाली होना। १३ भडकना।

चमकवाय-पु० ऊटो के होने वाला एक रोग।

चमकाणौ (बौ), चमकावणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकाशित करना, ज्योतिर्मय करना। २ आभा या काति युक्त करना। ३ लज्जित करना। ४ झेंपाना। ५ लचकाना। ६ चौंकाना। ७ भयभीत करना, डराना। ८ चौकन्ना करना, सावधान करना। ९ जागृत करना। १० उभारना, प्रगट करना। ११ प्रसिद्ध करना। १२ भडकाना।

चमकीलौ–वि० (स्त्री० चमकीली) १ चमकदार, ज्योतियुक्त, आभा या काति युक्त। २ चौंकने वाला।

चमक्की–देखो 'चमकी'।

चमकूणौ (बौ)–देखो 'चमकणौ' (बौ)।

चमगादड़, चमगागुडड–स्त्री० [स० चर्मचटका] १ अधेरे, निर्जन स्थान मे उलटा लटका रहने वाला, उडने वाला एक प्राणी जो मासाहारी भी होता है। २ चमगादड के समान उडने वाला प्राणी जो मासाहारी नही होता है।

चमड–पु० चमडा।

चमडपोस–पु० एक प्रकार का हुक्का।

चमडी–स्त्री० त्वचा चर्म।

चमड़ौ–पु० १ जानवरो की खाल। २ चर्म, त्वचा।

चमचम–स्त्री० १ खोए की बनी एक प्रकार की मिठाई। २ देखो 'चमाचम'।

चमचमाट, चमचमाहट–स्त्री० १ चमक, तडक-भडक। २ ज्योति, प्रकाश।

चमचमाणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, प्रकाशमान होना। २ चमकाना, आभा युक्त करना।

चमचमौ–वि० (स्त्री० चमचमी) अधिक मिर्च मसालो वाला, तीक्ष्ण स्वादिष्ट, नमकीन।

चमचाटक–स्त्री० चमगादड।

चमची–स्त्री० १ छोटा चम्मच। २ आचमनी। ३ चापलूसी करने वाली।

चमचेड–स्त्री० चमगादड।

चमचौ–पु० [फा० चमचा] (स्त्री० चमची) १ चम्मच। २ चापलूस।

चमजुई, चमजू–स्त्री० [स० चर्म–युक] शरीर के बालो की जडो मे उत्पन्न होने वाला एक छोटा कीडा।

चमटकार–देखो 'चमत्कार'।

चमठाणौ (बौ)–क्रि० कान ऐंठना, कान खीचना।

चमठी–स्त्री० [स० मुचुटी] चुटकी।

चमट्टणौ (बौ)–क्रि० १ चुटकी मे पकडना। २ चुटकी भरना।

चमतकार–देखो 'चमत्कार'।

चमतकारी–देखो 'चमत्कारी'।

चमत्करण–पु० [स०] चमत्कार से कुछ होने की क्रिया।

चमत्कार–पु० [स०] १ अद्‌भुत घटना या कार्य। २ करामात, जादू। ३ आश्चर्य, विस्मय। ४ उत्सव, तमाशा। ५ काव्योत्सर्ग।

चमत्कारिक (री)–वि० [सं०] १ चमत्कार, प्रकट करने वाला, विलक्षण कार्य करने वाला। २ करामाती, सिद्ध। ३ विचित्र, विस्मयकारी।

चमन–पु० [फा०] १ हरि क्यारी। २ उपवन, बगीचा, फुलवारी। ३ गुलजार।

चमर–देखो 'चवर'।

चमरक (ख, खौ)–स्त्री० चरखे का एक उपकरण।

चमरबद (बध)–पु० चमरधारी व्यक्ति, राजा, सम्राट।

चमरबबाळ–वि० १ महान, शक्तिशाली। २ वीर, बहादुर। ३ योद्धा। ४ महान, तेजस्वी।

चमरसिखा–स्त्री० घोडे की किलगी।

चमराळ (ळौ)–पु० १ मुसलमान, यवन। २ घोडा। ३ देखो 'चमरबध'।

चमरी–देखो 'चवरी'।

चमस–पु० १ एक ऋषि का नाम। २ नौ योगेश्वरो मे से एक। ३ चम्मच।
चमसी–स्त्री० यज्ञ मे आहुति देने का उपकरण, चम्मच, श्रवा।
चमसोद्भव–पु० [स०] प्रभास क्षेत्र के पास का एक तीर्थ।
चमाचम–स्त्री० चमचमाहट, चमक, प्रकाश, काति तेज।
चमार–पु० [स० चर्मकार] (स्त्री० चमारी) चमडे का कार्य करने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।
चमाळ–देखो 'चमाळीस'।
चमाळियौ–पु० बडे व भारी पत्थर उठाने वाला मजदूर।
चमाळी–देखो 'चमाळीस'।
चमाळीस–वि० [स० चतुश्चत्वारिंशत्] चालीस व चार, चवालीस। –स्त्री० चालीस व चार की सख्या ४४।
चमाळीसी–स्त्री० चवालीस गावो की जागीर।
चमाळीसौ, चमाळौ–पु० ४४ का वर्ष।
चमीर, चमीरळ–देखो चामीकर'।
चमू (मू)–स्त्री० [स० चमू] १ वह सेना जिसमे ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ अश्वरोही तथा ३६४५ पैदल सिपाही हो। २ सेना, फौज। ३ चार की सख्या*।
चमूप (पत, पति)–पु० [स०] सेना नायक, सेनापति।
चमूय–देखो 'चमू'।
चमेडी–स्त्री० चमगादड।
चमेली–स्त्री० [स० चम्पकवेलि] १ झाडीनुमा एक लता जिसमे सफेद व सुगधित फूल लगते हैं। २ उक्त लता का पुष्प।
चमोटियौ–देखो 'चिरमोटियौ'।
चमोटौ–पु० [सं० चर्मपुट] १ चाबुक, कोडा। २ बेडी के नीचे लगने वाला चमडा। ३ नाई का उस्तरा साफ करने का चमडा। ४ सान को घुमाने का चमडे का फीता। ५ देखो 'चूटियौ'।
चम्मर, चम्मरौ–देखो 'चवर'।
चम्मरबबाळ–देखो 'चवरबबाळ'।
चम्माळीस–देखो 'चमाळीस'।
चम्माळीसौ–देखो 'चमाळीसौ'।
चय–पु०[स०] १ समूह, झुण्ड। २ ढेर। ३ टीला। ४ परकोटा। ५ दुर्गद्वार। ६ इमारत, भवन। ७ गढ़। ८ दिग्पाल, दिग्गज। ९ धैर्य, शाति। १० लकडी की टाल।
चयन–पु० [स०] १ चुनाव। २ संग्रह। ३ क्रमश लगाने की क्रिया, चुनाई। ४ बीनाई।
चयार (रि, री)–देखो 'चार'।
चर–पु० [स०] १ दूत। २ जासूस, भेदिया। ३ अनुचर, नौकर, सेवक। ४ खजन पक्षी। ५ मगल, भौम। ६ पैदल व्यक्ति। ७ चोर। ८ रेत, धुलि, रज। ९ सूअर। १० हाथी का अनुचर। ११ चरने की क्रिया या भाव। १२ घास, चारा। १३ किसी चीज के फटने से उत्पन्न चर्र की आवाज। १४ विचरण। १५ जूआ। १६ मंगलवार। १७ ज्योतिष का देशातर। १८ फलित ज्योतिष का एक योग। –वि० १ चलने वाला, चलायमान। २ जगम। ३ कापने वाला। ४ जीवधारी। ५ चरने वाला, खाने वाला। ६ अस्थिर।
चरक–पु० [सं०] १ अनुचर, नौकर। २ दूत। ३ वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य। ४ इस आचार्य द्वारा रचित ग्रथ। ५ रमता साधु। ६ पाखंड। —**सहिता**–स्त्री० चरक ऋषि का ग्रथ।
चरकचूडी–देखो 'चकचूधियौ'।
चरकटौ–पु० हाथियो का चरवादार। –वि० नालायक, नीच।
चरकणौ (बौ)–देखो 'चिरकणौ' (बौ)।
चरकाई–स्त्री० १ मिर्च का स्वाद, चरकापन, चरपराहट। २ तीक्ष्णता, तेजी।
चरकीकौळी–स्त्री० बलि के बकरे का मास।
चरकीन–स्त्री० [अ०] विष्ठा, मल, पाखाना। –वि० हीन, अधम, निकृष्ट।
चरकू-फरकू, चरकू-मरकू–पु० १ चरफरा या चटपटा, नमकीन पदार्थ। २ एक प्रकार की ध्वनि।
चरकूडियौ–देखो 'चकचूदियौ'।
चरकौ–वि० (स्त्री० चरकी) १ मिर्च-मसालेदार, चरका। २ तेज, तीक्ष्ण। ३ नमकीन। ४ तेज स्वभाव का।
चरकौ-फरकौ (मरकौ)–देखो 'चरकू-फरकू'।
चरक्क, चरक्ख, चरख–स्त्री० १ तोप खींचने की गाडी। २ देखो 'चरखी'।
चरखणौ (बौ)–क्रि० १ गाडी का चलते समय चर्र-चर्र करना। २ आवाज या ध्वनि होना।
चरखलियौ, चरखलौ, चरखियौ–देखो 'चरखौ'।
चरखी–स्त्री० १ तोप खीचने की गाडी। २ तोप। ३ छोटा पहिया, चकरी। ४ कुए पर लगी गिडगिडी। ५ सूत लपेटने की चकरी। ६ छोटा चरखा। ७ कुम्हार की चाक। ८ कपास की ओटनी। ९ गोल फिरने वाली आतिशबाजी। १० मस्त ऊट के दात बजने की क्रिया। ११ मूज या रस्सी बनाने का यत्र, उपकरण। १२ प्राचीन काल मे मृत्युदण्ड देने का एक यत्र। १३ पतग की डोर लपेटने की गिर्री।
चरखौ (ख्यौ)–पु० १ हाथ से सूत या ऊन आदि कातने का यत्र विशेष। २ कपास से रूई पृथक करने का औजार।

३ पानी खींचने का रहट । ४ सूत की चरखी । ५ बडा पहिया । ६ झंझट का कार्य । ७ कुश्ती का एक दाव । ८ गन्ने का कोल्हू ।

चरड़–स्त्री० एक प्रकार की ध्वनि जो बैलगाडी के चलने, नई जूती या किसी वस्त्र के फटने से उत्पन्न होती है । –वि० लाल ।

चरड़क (को)–पु० १ गर्म धातु के स्पर्श से होने वाला दाह । २ ऐसे स्पर्श से चमडी पर होने वाला दाग । ३ किसी बात पर होने वाला गुस्सा । ४ हानि, नुकसान ।

चरड़णौ (बौ)–क्रि० १ गर्म धातु से शरीर पर दाग लगाना, जलाना । २ पशु का पोखर मे पानी पीना । ३ क्रोध करना ।

चरड़ौ–पु० एक छोटा पक्षी जो झुंड बनाकर चलता है ।

चरच–पु० [स० चर्चन] १ लेपन, उबटन । २ अध्ययन, पुनरावृत्ति । [अ०] ३ गिरजाघर ।

चरकणी–स्त्री० अनामिका ।

चरकणौ (बौ)–क्रि० [स० चर्चनम्] १ उबटन करना, लेपन करना । २ अध्ययन करना । ३ समझना । ४ चरचा करना । ५ पूजा, अर्चना करना । ६ लथपथ होना ।

चरकर–स्त्री० तेज बोलने की क्रिया या भाव । २ देखो 'चराचर' ।

चरचराणौ (बौ)–क्रि० १ चर्र-चर्र करना, चरमराना । २ जलन होना, जलना । ३ पीडा या दर्द होना ।

चरचराहट–स्त्री० १ चर्र-चर्र ध्वनि । २ जलन । ३ दर्द ।

चरचरिका, चरचरी–स्त्री० [स० चर्चरी] १ वसत ऋतु का एक गीत । २ एक रागिनी । ३ होली का शोर । ४ ताल का मुख्य भेद । ५ आमोद, क्रीडा । ६ ची-ची की आवाज । ७ एक वर्ण वृत्त विशेष । ८ चापलूसी ।

चरचरौ–वि० (स्त्री० चरचरी) १ स्वाद मे चरका, तीक्ष्ण, चरफरा । २ तेज मिजाज । ३ सुन्दर, सलौना ।

चरचा–स्त्री०[स० चर्चा] १ वर्णन, बयान, जिक्र । २ वार्त्तालाप, बातचीत । ३ शास्त्रार्थ, वाद-विवाद । ४ बक-झक, प्रलाप । ५ कुबेर की नौ निधियो मे से एक । ६ पाठ, पुनरावृत्ति । ७ खोज, अनुसधान । ८ लेपन ।

चरचाणौ (बौ), चरचावणौ (बौ)–क्रि० १ लेपन कराना । २ पूजा कराना । ३ अनुमान कराना । ४ अध्ययन कराना, समझाना । ५ लथपथ कराना । ६ वर्णन या जिक्र कराना ।

चरचारी–वि० १ चर्चा करने वाला । २ निंदक ।

चरचित–वि० [स० चर्चित] १ जिसकी चर्चा की गई हो, वर्णित । २ पूजित । ३ लेपन किया हुआ ।

चरच्चणौ (बौ)–देखो 'चरचणौ' (बौ) ।

चरज–पु० एक पक्षी विशेष ।

चरजा–स्त्री० [स० चरचा] देवी की स्तुति जो लय से गाई जाती है ।

चरट–पु० [स०] खजन पक्षी ।

चरणग, चरण–पु० [स० चरण] १ पैर, पाव । २ पैर का चिह्न । ३ किसी वस्तु या कार्य का चतुर्थांश । ४ मूल, जड । ५ आवागमन । ६ चरने का कार्य । ७ भक्षण । ८ मृत पशु के आमाशय से निकलने वाला मल । ९ सहारा । १० स्तंभ । ११ श्लोक का एक पाद । १२ वेद की शाखा । १३ जाति नस्ल । १४ चाल-चलन । १५ व्यवहार, बर्ताव । —**गाठ**–स्त्री० ऐडी के ऊपर का टखना । —**गुप्त**–पु० एक प्रकार का चित्र काव्य । —**चिह्न**–पु० पैर के निशान । किसी बडे व्यक्ति या महापुरुष का आगमन । पांव की रेखाए । —**त्राण**–पु० जूती । —**दास**–पु० एक प्रसिद्ध महात्मा । सेवक, दास । —**दासी**–स्त्री० उक्त महात्मा द्वारा प्रचलित सप्रदाय का अनुयायी । जूती । सेविका । —**द्वं**–पु० गरुड पक्षी । मनुष्य । —**पादुका, पीठ**–स्त्री० खडाऊ । पत्थर पर बने चरण चिह्न । —**सेवा**–स्त्री० सेवा-शुश्रुषा, टहल-बंदगी । पाव दबाने की क्रिया ।

चरड–पु० चोर, लुटेरा, डाकू । —**राय**–पु० चोरो का राजा ।

चरणप–पु० [स०] पेड, वृक्ष ।

चरणाजुध–पु० [स० चरणायुध] मुर्गा ।

चरणाबूहो–पु० एक प्रकार का मात्रिक छन्द ।

चरणानुग–वि० अनुगामी । शरणागत ।

चरणाम्रत, (ति)–पु० [स० चरणामृत] १ किसी देव मूर्ति या महात्मा के चरण प्रक्षालन का जल, चरणोदक । २ पैरो का धोवन ।

चरणायका–स्त्री० चाणक्य नीति ।

चरणायुध, (क)–देखो 'चरणाजुध' ।

चरणारद्ध–पु० [स० चरणार्द्ध] १ किसी वस्तु का आठवा भाग । २ किसी छद या श्लोक का आधा चरण ।

चरणारवद (विंद)–पु० १ चरण कमल । २ कमल के समान सुन्दर पाव ।

चरणि–पु० १ मनुष्य, आदमी । २ देखो 'चरण' ।

चरणिया–पु० १ शिकार किये पशु के पाव । २ देखो 'चुनियौ' ।

चरणियौ–वि० १ चरने वाला । २ विचरण करने वाला । ३ राज-दरबार के सभासदो के पादत्राणो का चौकीदार ।

चरणी–स्त्री० १ चरने की क्रिया या भाव । २ चरने की वस्तु । ३ चरने वाली ।

चरणोई–स्त्री० १ घास । २ चरने का स्थान या भूमि । ३ चरने का ढग ।

चरणोदक–पु० [सं० चरण-उदक] चरणामृत ।
चरणौ–पु० चुननदार पहनावा विशेष ।
चरणौ (बौ)–क्रि० १ पशुओं का घास खाना, चारा चरना । २ दिन भर खाते रहना । ३ खाना, भक्षण करना । ४ विचरण करना, घूमना ।
चरण्यौ–१ देखो 'चरणियौ' । २ देखो 'चुनियौ' ।
चरत–देखो 'चरित्र' ।
चरतणौ (बौ)–क्रि० १ ठगना, छलना । २ निंदा करना ।
चरताळी–देखो 'चिरताळी' । (स्त्री० चरताळी)
चरन–देखो 'चरण' ।
चरनक्षत्र (नखत्र)–पु० [सं०] स्वाति, पुनर्वसु आदि नक्षत्र ।
चरनाकूळक–पु० सोलह मात्रा का एक मात्रिक छंद विशेष ।
चरनिसा–देखो 'निसाचर' ।
चरपट–पु० १ चौरासी सिद्धो मे से एक । २ एक मात्रिक छंद विशेष ।
चरपराणौ (बौ)–क्रि० मिरच आदि के स्पर्श से जलन होना । २ घाव मे जलन होना ।
चरपराट, चरपराहट, चरफराट, चरफराहट–स्त्री० १ स्वाद की तीक्ष्णता । २ घाव की जलन । ३ ईर्ष्या, डाह । ४ वाचालता ।
चरपरौ–वि० (स्त्री० चरपरी) १ तेज मसालेदार, नमकीन । २ चुस्त, फुर्तीला । ३ वाचाल ।
चरवण–पु० [सं० चर्वण] १ चना, चबैना । २ भुना हुआ या सिका हुआ खाद्य पदार्थ । ३ भोजनोपरान्त मुंह साफ करने के लिए खाये जाने वाले पान, सुपारी आदि पदार्थ । ४ चबा कर खाई जाने वाली वस्तु ।
चरबी–स्त्री० [फा०] १ शरीरस्थ सप्त धातुओं मे से एक । मेद, बसा ।
चरबेचर–पु० १ जड व चेतन, चराचर । २ ससार, सृष्टि ।
चरभ–पु० [सं०] चर राशि । चर गृह ।
चरभर–पु० एक प्रकार का खेल ।
चरभवन–पु० चर नामक राशि ।
चरम–पु० [सं०] १ अंत । २ पतन या विकास की अंतिम अवस्था । ३ सीमा । [सं० चर्म] ४ चमडी, चर्म, त्वचा । ५ छाल । ६ ढाल । –वि० १ अंतिम, आखिरी । २ हद दर्जे का । ३ सर्वोत्कृष्ट । **—कार**–पु० चमार, मोची । **—काळ**–पु० अन्त समय । **—कील**–स्त्री० एक प्रकार का रोग । बवासीर । **—चडी**–स्त्री० चमगादड । चर्मचटी । **—तित्थयर**–पु० महावीर स्वामी । (जैन) **—दळ**–पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग । **—नग**–पु० अस्ताचल पर्वत । **—फालिका**–स्त्री० कुल्हाडी, फरसा ।
चरमणवती–स्त्री० [सं० चर्मण्यवती] चबल नदी ।
चरमराट, चरमराटौ (हट)–स्त्री० १ चरमर की ध्वनि २ स्वाद की तीक्ष्णता । ३ घाव की जलन ।
चरमवस्त्र–पु० कवच ।
चरमीचोळ–वि० गुंघची के रंग का, लाल ।
चरम्म–देखो 'चरम' ।
चररासि–स्त्री० [सं० चरराशि] मेष, कर्क, तुला और मकर राशि ।
चरचराहट–स्त्री० १ सन्नाटा । २ जलन । ३ चर्र-चर्र ध्वनि ४ कटु व तीक्ष्ण वाणी ।
चरवण–देखो 'चरवण' ।
चरवाई–देखो 'चराई' ।
चरवादार–पु० १ घोडो की देख भाल करने वाला, सईस । २ चरवाहा ।
चरवौ–पु० १ तांबे, पीतल आदि का छोटा जल-पात्र । २ शिकार किये पशु का आमाशय साफ करने की क्रिया ।
चरस–स्त्री० १ रीति, रिवाज, परंपरा, रूढ़ि । २ आनन्द, उत्साह, खुशी । ३ एक प्रकार का मादक पदार्थ, चडस । ४ आख । ५ देखो 'चडस' । –वि० उत्तम श्रेष्ठ । –क्रि०वि० परपरा से ।
चराई–स्त्री० १ मवेशी चराने का कार्य । २ इस कार्य का पारिश्रमिक ।
चराक (को), चराग–देखो 'चिराग' ।
चराचर–पु० [सं०] १ चर व अचर, जड व चेतन । २ ससार, सृष्टि, विश्व । ३ आकाश अन्तरिक्ष । **–गुर, गुरु**–पु० ब्रह्मा । ईश्वर, परमेश्वर ।
चराणौ (बौ)–क्रि० १ पशुओं को घास खिलाना, चारा, चराना । २ खिलाना, खाने के लिऐ प्रेरित करना । ३ बार-बार व जोर देकर खिलाना । ४ विचरण कराना, घुमाना ।
चरावण गाय–पु० १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।
चरावणी–स्त्री० १ चराने की क्रिया या भाव । २ चराने का ढंग । ३ चराई ।
चरावणौ (बौ)–देखो 'चराणौ' (बौ) ।
चरास–पु० [सं० चर+आस] सेवक, दास, चर ।
चरिअ, चरिइ, चरिउ, चरित्त, चरिय–देखो 'चरित्र' ।
चरित (र), चरीत–देखो 'चरित्र' । **–नायक**='चरित्रनायक' । **–वान**='चरित्रवान' ।
चरितारथ–वि० [सं० चरितार्थ] १ सफल । २ पूर्ण, पूर्ण रूप मे । ३ सतुष्ट । ४ क्रिया रूप मे उचित ।

५ वह जिसके अर्थ व अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो। कृतकृत्य। ६ जो ठीक पूरा या खरा उतरा हो।

चरिताळी–पु० (स्त्री० चरिताळी) १ चरित्र करने वाला, चरित्रवान। २ अद्भुत, चरित्र वाला। ३ चकित करने वाला। ४ पाखडी, ढोंगी, धूर्त। ५ वीर।

चरित्त–देखो 'चरित्र'।

चरित्तपुरस (पुरुस)–पु० चरित्रवान व्यक्ति।

चरित्तपुलाय–पु० दोष सहित चरित्र वाला साधु (जैन)।

चरित्तबुद्ध–पु० [स० चारित्र-बुद्ध] चरित्र रूप मे प्राप्त बोध।

चरित्तबोहि–पु० चरित्र रूप मे धर्म प्राप्ति।

चरित्तमोह (मोहण)–पु० चरित्र का अटकाव।

चरित्तलोय–पु० [स० चारित्र लोक] सामायिकादि पाच चारित्र रूप लोक (जैन)।

चरित्र (य)–पु० [स०] १ स्वभाव, आचरण, चाल-चलन। २ करनी। ३ व्यवहार। ४ शील, सयम, सदाचार। ५ नैतिकस्तर। ६ लीला, माया। ७ आदत, टेव। ८ करतब, कार्य। ९ कर्त्तव्य। १० ढोंग, पाखड। ११ छल, कपट। १२ स्वाग। १३ अभिनय। १४ धूर्तता। १५ नखरा। १६ वहाना। १७ पालन, रक्षा। १८ अनुष्ठान। १९ इतिहास, वृत्तात। २० साहसिक कार्य। २१ नाटक का पात्र। २२ दीक्षा। —**नायक**–पु० किसी नाटक, कथानक या काव्य का प्रमुख नायक। —**वान**–वि० सदाचारी, नेक, कर्त्तव्यनिष्ठ।

चरी–स्त्री० १ पीतल आदि धातु का छोटा जल-पात्र। २ मवेशियो के चरने हेतु छोडी गई जमीन। ३ चरित्र।

चरिय, चरीय, चरीह, चरीतु चरितौ–देखो 'चरित्र'।

चरु–पु० [स०] १ हवन के लिये पकाई हुई सामग्री। २ ऐसी सामग्री पकाने का बडा पात्र, बडी चरी। ३ कडेदार मोटा पात्र। —**सुकाळ, सुगाळ**–वि० दानी, उदार।

चरूटियौ–देखो 'चूटियौ'।

चरू–देखो 'चरु'। —सुकाळ, सुगाळ='चरुसुकाळ'।

चरौ–पु० अबोध बछडा।

चर्या–स्त्री० क्रिया, आचरण।

चळ, चल–पु० [स० चल] १ शिव। २ विष्णु। ३ पारद, पारा। ४ शरीर। ५ सेना। ६ स्वभाव, प्रकृति। ७ चलने की क्रिया। ८ कपकपी। ९ पवन। १० घबराहट विकलता। ११ सात प्रकार के चौघडियो मे से छठा। १२ दोहे छन्द का १२वा भेद। –वि० १ अस्थिर, चचल। २ चलायमान। ३ कपित, डालता हुआ। ४ निर्बल। ५ नाशवान। ६ भयभीत।

चळकणौ (बौ)–देखो 'चिळकणौ' (बौ)।

चळकरण–पु० घोडा, अश्व।

चळकाणौ (बौ), चळकावणौ (बौ)–देखो 'चिळकाणौ (बौ)'।

चळकेतु–पु० पश्चिमोद्भवी एक पुच्छलतारा।

चळगत (ति)–स्त्री० १ चाल चलन, आचरण। २ स्वभाव। ३ चरित्र।

चळचत–वि० [स० चलचित्र] अस्थिर चित्त, चचल। विक्षिप्त।

चळचळ–वि० १ चलायमान। २ विचलित। ३ कपायमान। ४ देखो 'चळचाल'।

चळचळणौ (बौ)–क्रि० १ चलायमान होना। २ विचलित होना। ३ कपायमान होना।

चळचाळ-वि० [स० चलचाल] चचल, अस्थिर, चल।

चलचित–वि० १ अस्थिर चित्त। २ चितातुरा।

चळचूचु–पु० चकोर। –वि० अस्थिर, चलायमान।

चळच्चळ–देखो 'चळचळ'।

चलण–पु० [स०] १ चलने का भाव। २ चाल, गति। ३ पैर, चरण। ४ रस्म रिवाज। ५ प्रयोग उपयोग। ६ हरिन। ७ लहगा, घाघरा। ८ ज्योतिष मे वह गति जब दिन और रात दोनो बराबर होते है। —**सार**–वि० प्रचलित। चिर प्रचलित। वढिया लोह।

चळणी, चलणी–स्त्री० १ आटा, मेदा आदि छानने का उपकरण। २ प्रथा, परपरा। ३ प्रचलन। प्रथा, रस्म।

चळणू–देखो 'चळौ'।

चळणौ (बौ)–क्रि० १ वासी होना, सडना। २ विकृत होना। ३ छनना।

चलणौ (बौ)–क्रि० १ गतिमान होना। २ एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, गमन या प्रस्थान करना। ३ हिलना-डुलना। ४ आरभ होना, छिडना। ५ प्रवाहित होना, वहना। ६ प्रचलित होना। ७ काम मे आना व्यवहार मे आना। ८ तीर, गोली आदि छूटना। ९ मरना, अवसान होना। १० कार्य निकलना, निभना। ११ प्रयुक्त होना, व्यवहृत होना। १२ परपरा बनना। १३ आचरण करना। १४ वितरण या भेंट करना। १५ टिकना, अधिक काम देना।

चलतौ-पु० (स्त्री० चलती) १ चलने वाला। २ चुस्त, चचल। ३ प्रचलित।

चळदळ (द्ळ)–पु० [स० चलदल] पीपल का वृक्ष। –वि० १ चचल॰। २ अधीर॰।

चळपत (पत्र)–पु० [स० चलपत्र] पीपल का वृक्ष।

चळविचळ–वि० १ घबराया हुआ। २ आतुर।

चळचळ–देखो 'चळविचळ'।

चळवणौ (बौ)–देखो 'चलणौ' (बौ)।

चळवळ, (ल)–पु० [स० चलतल] १ रक्त, खून। २ देखो 'चळविचळ'।

चळवळणौ (बौ)–क्रि० १ घबराना, विचलित होना । २ सड़ना । ३ विकृत होना । ४ किलविलाना ।

चळवळौ–वि० (स्त्री०चळवळी) १ चितातुर, उदास । २ चंचल ।

चळविचळ, चळविळ–वि० १ जो विचलित हो गया हो, अस्थिर, डावाडोल । २ चलायमान । ३ ऊटपटाग । ४ कपायमान ।

चलसी–देखो 'चौरासी' ।

चलांण (न)–स्त्री० १ चलाने की क्रिया या भाव । २ रवानगी । ३ रवानगी सबंधी पत्र ।

चलांणि–पु० पिप्पल का वृक्ष ।

चळा–स्त्री० [स० चला] १ लक्ष्मी । २ भूमि, पृथ्वी । ३ नारी, स्त्री । ४ विजली । ५ पिप्पली । ६ एक सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

चलाऊ–वि० १ चलने योग्य । २ टिकाऊ । ३ काम निकालने लायक । ४ उपयोग मे लाने लायक ।

चलाक–वि० १ चलाने मे दक्ष । २ देखो 'चालाक' ।

चलाकी–देखो 'चालाकी' ।

चळाचळ–वि० १ चचल, अस्थिर । २ चलायमान, गतिमान । –पु० १ गति, चाल । २ चमचमाहट ।

चळाचळा–स्त्री० देवी, दुर्गा ।

चलाचली–स्त्री० १ चलने की शीघ्रता । २ आवागमन । ३ चलने की तैयारी । ४ तकरार, लड़ाई । ५ तनाव । ६ प्रतिस्पर्धा ।

चलाणौ (बौ)–क्रि० १ चलने के लिए प्रेरित करना, चलाना । २ रवाना करना, भेजना । ३ गतिमान करना, चालू करना । ४ हिलाना, डुलाना । ५ आरभ करना । ६ प्रवाहित करना । ७ प्रचलित करना । ८ कार्य या व्यवहार मे लाना । ९ तीर, गोली आदि छोडना । १० फेंकना । ११ काम निकालना । १२ परपरा बनाना । १३ वितरित या प्रसारित कराना । १४ निर्वाह कराना । १५ अधिक काम मे लेना, टिकाऊ करना ।

चळापळ–स्त्री० चमक-दमक, तडक-भडक ।

चलावको–देखो 'चालाक' ।

चलावणौ (बौ)–देखो 'चलाणौ' (बौ) ।

चलावौ–पु० १ चलाने की क्रिया या भाव । २ किसी कार्य विशेष को पूर्ण करने की प्रक्रिया । ३ मृतक की अर्थी आदि तैयार करने की क्रिया । ४ जौहर की तैयारी ।

चलित–वि० [स०] १ चला हुआ, प्रचलित । २ गतिमान, चलायमान । ३ चचल, चलायमान । ४ हिला हुआ, आन्दोलित । –पु० नृत्य की एक मुद्रा । —**ग्रह**–पु० भोगा हुआ ग्रह । एक अन्य ग्रह विशेष ।

चळुग्रळ–देखो 'चळवळ' ।

चळू–पु० [स० चुलक] १ भोजनोपरान्त आचमन । २ एक हाथ की हथेली मे पानी भरने की मुद्रा । अजली । ३ एक हाथ मे समाने लायक पानी की मात्रा । ४ भोजनोपरान्त हाथ प्रक्षालन की क्रिया ।

चलू–वि० चालू, प्रचलित । –क्रि०वि० प्रारभ, शुरू ।

चळूळ (ळौ)–वि० रक्त की तरह लाल । –पु० यवन, मुसलमान ।

चळोग्रळ, चळोवळ–देखो 'चळवळ' ।

चळौ–पु० भैस, गधे, घोडे आदि का पेशाव ।

चल्लणी–देखो 'चलणी' ।

चल्लणौ (बौ)–देखो 'चलणौ' (बौ) ।

चल्लौ–देखो 'चिल्लौ' ।

चवंड–देखो 'चामुडा' ।

चव–वि० १ चार, चतुर्थ । २ चारो ओर का । ३ देखो 'चऊ' ।

चवडै–देखो 'चौडै' । —**धाड़ै**='चौडेधाडै' ।

चवडौ-देखो 'चौडौ' ।

चवणौ (बौ)–क्रि० १ चूना, टपकना, रिसना । २ बूद-बूद कर गिरना । ३ कहना । ४ तर होना, लथपथ होना । ५ झरना ।

चवत्थ–१ देखो 'चौथ' । २ देखो 'चौथो' ।

चवत्थौ–वि० [स० चतुर्थ] तीन के बाद का, चौथा ।

चवथ–देखो 'चौथ' ।

चववंत–वि० प्रगट, प्रकाशित ।

चवद, (ई)–देखो 'चवदै' ।

चवदमौ–वि० (स्त्री० चवदमी) तेरह के बाद वाला, चौदहवा ।

चवदस–स्त्री० चतुर्थदशी की तिथि, चौदस ।

चवदह, चवदा, चवदे, चवदै–वि० [स० चतुर्दश] तेरह व एक, चौदह । –पु० दस व चार की सख्या, १४ ।

चवदौ–पु० चौदह का वर्ष ।

चवद्दस–देखो 'चवदस' ।

चवद्दह, चवद्दै–देखो 'चवदह' ।

चवधार–देखो 'चौधार' ।

चवरग–देखो 'चौरग' ।

चवरग, चवरण–पु० 'च' वर्ग, वर्ण ।

चवरासि (सी)–देखो 'चौरासी' ।

चवरी–देखो 'चवरी' ।

चवळौ–देखो 'चवळौ' ।

चवसट्ट (ट्ठ, ट्ठि, ठ, ठि)–देखो 'चौसठ' ।

चवहठ (ट्ठ)–वि० कठोर, शक्त ।

चवाणी–स्त्री० छत से टपकने वाला पानी ।

चवाणौ (बौ)-१ देखो 'चबाणौ' (बौ) । २ देखो 'चवणौ' (बौ) ।

चवुवहौ–वि० चौहदवा ।

चबू–देखो 'चऊ'।
चवेली–देखो 'चमेली'।
चव्य–स्त्री० पींपरामूल की डंडी।
चसक–पु० [स० चषक] १ शराब पीने का पात्र। २ द्रव पदार्थ पीने से उत्पन्न ध्वनि। ३ देवी का खप्पर। ४ जायका लेते हुऐ पीने की क्रिया या भाव। ५ शौक, आदत। ६ कसक, पीडा।
चसकरणौ (बौ)–क्रि० १ जायका लेते हुए पीना। २ शराब पीना। ३ चुस्की लेना। ४ कसकना, टसकना।
चसकौ–पु० [स० चषरण] १ स्वाद। २ शौक, आदत। ३ दर्द, पीडा।
चसरणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, दमकना। २ ज्योतिर्मय होना, प्रकाशित होना।
चसम (मारण)–स्त्री० [फा० चश्म] १ आख, नेत्र। २ दृष्टि, नजर। —**दीद**–वि० प्रत्यक्षदर्शी, आखो से देखने वाला।
चसमसारणौ (बौ)–क्रि० कसकना, दर्द करना।
चसमौ (म्म)–पु० [फा० चश्मा] १ झरना, स्रोत। २ ऐनक। –वि० स्नेहपूर्ण नेत्रो वाला।
चसळक–देखो 'चसळकौ'।
चसळकरणौ (बौ)–क्रि० १ बोझ से लदी गाडी का आवाज करना। २ मस्ती मे ऊट का दात किटकिटाना।
चसळकौ–पु० ऊट के दात किटकिटाने की ध्वनि या क्रिया।
चसावरणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना, दमकाना। २ ज्योतियुक्त करना, प्रकाशित करना।
चसीडरणौ (बौ), चसेडरणौ (बौ), चसोड्रणौ(बौ), चसोडरणौ(बौ) क्रि०–१ खूब चाव से पीना, पेट भर पीना। २ खाना भक्षरण करना। ३ दातो को भीच कर पीना। ४ चाटना।
चस्कौ–देखो 'चसकौ'।
चस्म–देखो 'चसम'। —**दीद**='चसमदीद'।
चस्मौ–देखो 'चसमौ'।
चह–स्त्री० १ चिता। २ इच्छा, चाह। ३ गड्ढा, गर्त।
चहक–स्त्री० पक्षियो की चहचाहट। कलरव।
चहकरणौ (बौ), चहक्करणौ (बौ), चहचहणौ (बौ), चहकाणौ (बौ)–क्रि० १ पक्षियो का चहचाहना। २ हर्ष पूर्ण ध्वनि करना। ३ जोश मे कोलाहल करना।
चहचाहट, चहच्चह–स्त्री० १ पक्षियो का कलरव। २ ध्वनि, शोर। ३ मुह से खीचकर पीने की क्रिया या भाव। ४ हर्ष-ध्वनि।
चहटणौ (बौ)–क्रि० चिपकना, चिमटना।
चहटारणौ (बौ), चहटावरणौ (बौ)–क्रि० चिपकाना, चिमटाना।
चहडणौ (बौ)–देखो 'चढणौ' (बौ)।
चहणौ (बौ)–देखो 'चाहणौ' (बौ)।
चहन–पु० [स० चिह्न] १ लक्षरण, चिह्न। २ सकेत। ३ ध्वजा, पताका।
चहबचौ–पु० [फा० चाहबच्चा] १ छोटा जल कुण्ड, पोखर। २ हाथी का हौदा। ३ चारजामा। ४ गुप्त रूप से धन रखने का स्थान।
चहर–पु० [स० चिकुर] १ शिर के केश, बाल। २ कलक। ३ निंदा। –वि० श्रेष्ठ, उत्तम। —**बाजी**–स्त्री० कलरव।
चहरणौ (बौ)–क्रि० १ निंदा करना, आलोचना करना। कलरव करना।
चहराणौ (बौ), चहरावरणौ (बौ)–क्रि० १ निंदा कराना। २ कलरव करना।
चहरौ–पु० १ शक्ल, सूरत, मुखाकृति। २ आकृति।
चहल–क्रि०वि० चारो ओर। –स्त्री० रौनक। —**पहल**–स्त्री० हलचल। रौनक। धूमधाम। बहुत से लोगो की उपस्थिति।
चहलम–पु० [फा० चेहलुम] मृतक का चालीसवा दिन। (मुसलमान)
चहळावहळ–स्त्री० बिजली की चमक।
चहलावरणौ (बौ)–क्रि० चमकना।
चहवचौ–देखो 'चहबचौ'।
चहि–स्त्री० चिता।
चहिजै, चहियै (यै)–देखो 'चाहिजै'।
चहिरौ–देखो 'चहरौ'।
चही–१ देखो 'चहि'। २ देखो 'चहियै'।
चहीजै–अव्य० चाहिये।
चहीलौ–देखो 'चईलौ'।
चहु–वि० चार, चारो। –क्रि०वि० चारो ओर, सर्वत्र। —**आरण**–पु० चौहान। —**ऐवळा, ओर, गमा, गमे, गम्मा, घा, चक्का, तरफ, धा, बळ, वळ, वळा**–क्रि०वि० चारो ओर, सर्वत्र।
चहुअळ, चहुळ, (वळ, वळा)–वि० चचल, अस्थिर। –क्रि०वि० चारो ओर।
चहुवा–क्रि०वि० चारो ओर। –वि० चारो।
चहुवाण–देखो 'चौहान'।
चहुवै (कका, दिस, वळ, वळ, वळा)–क्रि०वि० चारो ओर।
चहुट, चहुटौ–पु० १ बाजार। २ देखो 'चौवटौ'।
चहुर–पु० [स० चिकुर] बाल, केश।
चहुळ–देखो 'चहुल'।
चहुवा–क्रि० वि० चारो ओर।
चहुवे (वै)–देखो 'चहुवै'।
चहू–देखो 'चहु'। —**कूट, फोर, गमा, चकां, बळ, वळ**= 'चहुवळा'।

चहोडणौ (बौ)–क्रि० १ उखाडना । २ काटना । ३ मानना, चाहना । ४ देखो 'चसोडणौ' (बौ) ।

चहोतर (त्तर)–वि० सत्तर व चार । –पु० सत्तर व चार की संख्या, ७४ ।

चहोतरौ, चहौतरौ–पु० चोहत्तर का वर्ष ।

चा–अव्य० के ।

चांक–पु० १ खलियान मे अन्न की राशि पर चिह्न लगाने की क्रिया । २ चिह्न ।

चाकणौ–पु० पशुओ का पहिचान चिह्न ।

चाकणौ (बौ)–क्रि० १ आकना, चिह्नित करना । २ बोवाई के लिये खेत मे अन्न बिखेरना । ३ पशुओ के दाग लगाना । ४ अन्न की राशि पर सीमा रेखा खीचना ।

चांकाणौ (बौ), चांकावणौ (बौ)–क्रि० १ अकवाना, चिह्नित कराना । २ बोवाई के लिये खेत मे अन्न बिखरवाना । ३ पशुओ के दाग लगवाना । ४ सीमा रेखा खिचवाना ।

चांख–स्त्री० हल की रेखा, सीता ।

चांग–देखो 'छाग' ।

चागलाई–स्त्री० चचलता, शैतानी, उद्दण्डता । नटखटपना ।

चांगलौ–वि० (स्त्री० चागली) इतराया हुआ । —पु० एक रग विशेष का घोडा ।

चांगल्यौ–पु० मिट्टी के बर्तनो मे तैयार किया हुआ अवैधानिक शराब ।

चांच–देखो 'चोच ।

चाचड़–पु० १ परिपक्वावस्था मे बाजरी की बाल । २ देखो 'चोच' ।

चाचड़ली, चांचड़ी, चांचली–स्त्री० १ बाजरी की बाल । २ देखो 'चोच' ।

चांचलौ–वि० चोचवाला । (स्त्री० चाचली) –पु० १ पक्षी । २ देखो 'चांचौ' ।

चांचल्य–पु० [स०] चचलता, चपलता, नटखटपन ।

चाचवौ–पु० ऊट आदि पशुओ के शरीर पर लगा गोलाकार दाग ।

चाचाळ, चाचाळौ–वि० चोचदार, चोचवाला । (स्त्री० चाचाळी) —पु० १ पक्षी । २ गिद्ध ।

चांचियौ–पु० १ कूआ खोदने का उपकरण । २ पक्षी । ३ नीचला होठ दबा हुआ प्राणी । ४ ढेंकली से पानी निकालने का कूआ । ५ देखो 'चोचौ' ।

चाचूं–देखो 'चोच' ।

चांचौ–पु० १ वह ऊट जिसके दात बाहर दिखाई देते हो । २ देखो 'चाचियौ' ।

चाटिय, चाटी–देखो 'छाटी' ।

चांटीलौ–पु० (स्त्री० चाटीली) १ मुफ्त कार्य करने वाला व्यक्ति, बेगारी । २ शीघ्रता से काम करने वाला ।

चाटौ (ठौ)–पु० १ तमाचा, थप्पड । २ देखो 'चौवटौ' ।

चांड–देखो 'चंड' ।

चाडम–पु० आभूषण, जेवर ।

चाडाळ–देखो 'चडाल' ।

चाण–स्त्री० एक देवी का नाम ।

चाणक (क्य)–पु० [स० चाणक्य] १ चन्द्रगुप्त मौर्य का महामात्य, कौटिल्य, विष्णुगुप्त । २ चिता ।

चांणचक (क्य)–क्रि०वि० अचानक, सहसा ।

चाणूर, (णूर)–पु० [स० चाणूर] कस का एक मल्ल जो कृष्ण द्वारा मारा गया ।

चातरणौ (बौ)–क्रि० पीछे हटना ।

चांतरौ–पु० चबूतरा ।

चांद, चादड़लौ (ल्यौ), चादडौ–पु० [स० चन्द्र] १ चन्द्रमा, शशि । २ एक अर्धचन्द्राकार आभूषण । ३ ढाल के ऊपर की फुलडी । ४ चादमारी का लक्ष्य चिह्न । ५ घोडे के शिर पर होने वाली भवरी । ६ भालू की गर्दन के नीचे की श्वेत-केश-राशि । ७ मोर पख की चद्रिका । ८ चन्द्राकार कोई आकृति । ९ गजापन, टाट ।

चांदणियौ–पु० १ चन्द्रमा का प्रकाश, ज्योति । २ प्रतिबिंब ।

चांदणी–स्त्री० १ चन्द्रमा का प्रकाश, चादनी । २ प्रकाश, ज्योति, ज्योत्स्ना । ३ पर्दानशीन स्त्रियो के पर्दा करने का वस्त्र । ४ बिछाने की सफेद चद्दर । ५ चमेली की तरह सफेद फूलो वाला वृक्ष । ६ पशुओ का एक रोग । ७ श्वेत नेत्रो वाली भैंस । ८ शिर पर सफेद टीके वाली भैंस । ९ रथ या गाडी पर तानने का कपडा । १० मकान के ऊपर का खुला स्थान ।

चादणू (णौ)–देखो 'चानणौ । —पख='चानणौपख' ।

चांदतारौ–पु० १ चाद व तारो की छाप वाला वस्त्र । २ एक आभूषण विशेष ।

चांदबाळा–स्त्री० कानों का चन्द्राकार बाला ।

चांदमारी–स्त्री० १ बन्दूक आदि चलाने का अभ्यास । २ निशान, चिह्न ।

चादराइण (ईण, यण)–देखो 'चाद्रायण' ।

चादरणी–देखो 'चादणी' ।

चादळ (उ)–पु० चन्द्रमा, चाद ।

चादसलाम, चांदसलामी–पु० १ अमावस्या के बाद चन्द्रोदय के समय प्रजा से लिया जाने वाला एक प्राचीन कर । २ इस अवसर पर छोडी जाने वाली तोप ।

चांदसूरज–पु० स्त्रियो के सिर का एक आभूषण ।

चांदी–स्त्री० १ आभूषण आदि बनाने का एक श्वेत धातु, रजत, रूपा । २ मास तक पहुँचा घाव । ३ एक प्रकार की लाल मिट्टी । ४ शरीर पर घाव करते हुए किया जाने वाला सत्याग्रह ।

चांदोडी–स्त्री० मेवाड के राणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय प्रचलित एक सिक्का ।

चांदौ (चांद्यौ)–पु० [सं०चंद्र] १ चन्द्रमा । २ दूर दर्शक यंत्र लगाने का लक्ष्य-स्थान । ३ भूमि के नाप का स्थान विशेष । ४ कच्चे छाजन की दीवार का उठा हुआ भाग । ५ रेखा गणित का उपकरण । —**रांणौ**–पु० एक लोक गीत ।

चांद्र–पु० [सं०] १ चंद्रमास । २ शुक्ल पक्ष । ३ चान्द्रायण व्रत । ४ चन्द्रकांत मणि । –वि० १ चंद्रमा संबंधी । २ देखो 'चांद' । —**मसायण**–पु०– बुध ग्रह । —**मांण**– –पु० चन्द्रमा की गति के अनुसार निर्धारित समय । —**मास**–पु० वर्तमान मे प्रचिलत मास, महीना ।—**वरती व्रतिक**–पु० राजा । –वि० चान्द्रायण व्रत करने वाला ।

चांद्रायण–पु० [सं०] १ चन्द्रकला की स्थिति के अनुसार घटत-बढ़त आहार पर मास भर किया जाने वाला एक कठिन व्रत । २ एक मात्रिक छन्द विशेष ।

चांद्रिणी–देखो 'चांदणी' ।

चांद्रिणु–देखो 'चानणौ' ,

चांनणछठ–स्त्री० १ भादव मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी । २ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी ।

चानणियो–देखो 'चानणौ' ।

चांनणौ–देखो 'चांदणी' ।

चानणौ–पु० १ प्रकाश, उजाला । २ खुशहाली का प्रतीक । —**पख**–पु० शुक्ल पक्ष ।

चांनी–स्त्री० १ गहणो पर खुदाई करने का उपकरण विशेष । २ देखो 'चांदी' ।

चांप (उ)–स्त्री० १ चंपा का वृक्ष । २ चपी ।

चांपणी–स्त्री० १ चापने की क्रिया या भाव । २ सेवा, टहल । ३ डर, भय ।

चांपणौ (बौ)–क्रि० १ पांव आदि दबाना, चांपना । २ सेवा करना, बंदगी करना । ३ अधिकार या कब्जे मे करना । ४ कुचलना । ५ भडकाने वाली बात करना । ६ डराना, भयभीत करना या होना । ७ क्रोध करना । ८ जाग्रत होना, चेतन होना । ९ गिरना । १० लज्जित होना । ११ दाबना, भींचना । १२ शीघ्रता करना ।

चांपर–वि० १ दृढ़, पक्का । २ तैयार, सन्नद्ध ।

चांपलौ–पु० छोटे होठो वाला ऊंट जिसके दांत दिखाई देते हो ।

चांपाधिप–पु० दानवीर राजा का कर्ण ।

चांपेयक–पु० चंपावृक्ष ।

चांपौ–पु० १ देववृक्ष, चंपा । २ गायो का समूह । —**फूल**–पु० एक प्रकार का घोडा ।

चांब–१ हल की गहरी व मोटी रेखा, सीता । २ देखो 'चाम' ।

चांबड (उ, डौ)–देखो 'चाम' ।

चांबर–पु० एक प्रकार का घास ।

चांबळ–देखो 'चंबळ' ।

चांवळी (रा', रास, राह)–स्त्री० चर्म पटिका, चमडे की रस्सी ।

चांबोवाब–पु० पूरा खेत । –वि० सम्पूर्ण, पूर्ण । (खेत) ।

चांवौ–पु० [सं० चर्म] १ चर्म, चमडी । २ खाल ।

चांमड–देखो 'चामुंडा' ।

चांमधर–पु० [सं० चर्मधारिन्] शिव, महादेव ।

चांम–स्त्री० [सं० चर्म] १ चमडी,त्वचा, चर्म । २ खाल । ३ देखो 'चांब' । —**कस, घस**–पु० जमीन पर छितरने वाला क्षुप ।

चांमडियाळ–पु० यवन, मुसलमान ।

चांमडी (डौ)–देखो 'चाम' ।

चांमचोर–पु० व्यभिचारी व्यक्ति ।

चांमचोरी–स्त्री० व्यभिचार, दुराचार ।

चांमटी (ठी)–स्त्री० [सं० चर्म+यष्टि] चाबुक ।

चामणी–स्त्री० आंख, नेत्र ।

चांमर (रि)–पु०१ चंवर । २ पूंछ । ३ एक वर्णिक छंद विशेष । —**आळ, याळ**–पु० यवन, मुसलमान ।

चांमरढारी–स्त्री० चंवर डुलाने वाला ।

चांमरियौ–पु० चमडे का कार्य करने वाला, चर्मकार ।

चांमरी–पु० [सं० चामरिन्] घोडा, अश्व । —**याळ**= 'चामरियाळ' ।

चांमळ–देखो 'चंबळ' ।

चांमस–पु० [फा० चश्म] १ नेत्र । २ चश्मा, ऐनक ।

चांमासौ–देखो 'चौमासौ' ।

चांमिकर–देखो 'चांमीकर' ।

चांमी–स्त्री०लाल मिट्टी ।

चांमीकर चांमीग–पु० [सं० चामीकर] १ स्वर्ण, सोना । २ धतूरा । –वि०–१ उज्ज्वल उदार । २ सुंदर, मनोहर ।

चांमुंड, चांमुंडा–स्त्री० शुंभ-निशुंभ तथा चंड-मुंड नामक दैत्यो को मारने वाली देवी । २ पार्वती, गिरिजा । ३ चौसठ योगिनियो मे से एक । —**नंदन**–पु० भैरव ।

चांमोदर–पु० चमडे का बडा थैला ।

चाय-पु० शिर व दाढी-मूछ के बाल उडने का एक रोग।
चायलौ-वि० (स्त्री० चायली) उक्त रोग से पीडित।
चांवटौ-देखो 'चौवटौ'।
चावळ-वि० १ उज्जवल, श्वेत। २ देखो 'चावल'। ३ देखो 'चवल'।
चा-स्त्री० १ कार्य। २ कन्या। ३ द्रौपदी। ४ अग्नि। ५ कन्नोजिया ब्राह्मण। ६ चाह। ७ चाय। -अव्य० का।
चाअणौ (बौ), चा' णौ (बौ)-देखो 'चाहणौ (बौ)'।
चाअरौ-पु० चौपाया पशु।
चाइ-स्त्री० १ चाह, तमन्ना। २ लगन। ३ प्रकार, तरह।
चाइजे (जै), चाईजै-अव्य० चाहिये, आवश्यक है।
चाउ-पु० दान, त्याग।
चाउर (रि)-१ देखो 'चावर'। २ देखो 'चत्वर'।
चाउळ-देखो 'चावळ'।
चाऊ-वि० १ शुभचिंतक। २ चाहने वाला, प्रेमी। ३ भोजन, भट्ट। ४ चटपटा व तर पदार्थ खाने का शौकीन। ५ रिश्वत खोर।
चाक, (चाकडलौ)-स्त्री० [स० चाक्र] १ मिट्टी के बर्तन बनाने का मोटा पत्थर, चक्र, चक्कर। २ चक्र। ३ गिर्री, चकरी। ४ चक्की। ५ चाकू आदि पर धार देने की शान। ६ खडिया मिट्टी। ७ इस मिट्टी की कलम। ८ स्त्री के सिर की चोटी मे धारण करने का आभूषण। ९ वात चक्र ववडर। १० सेना, फौज। -वि० १ तैयार, सन्नद्ध। २ स्वस्थ, तदुरुस्त। ३ पूर्ण रूप से तैयार, सुसज्जित। ४ तृप्त, सतुष्ट, छका हुआ। —चाकर-पु० सेवक, दास आदि।
चाकणौ (बौ)-देखो 'चाखणौ' (बौ)।
चाकर-पु० [फा०] (स्त्री० चाकरणी) सेवक, दास, नौकर।
चाकरी-स्त्री० [फा०] १ नौकरी। २ सेवा, टहल। ३ दरबार की सेवा मे रहने वाले जागीरदारो के घोडे व सवार।
चाकलियौ-१ देखो 'चक्की'। २ देखो 'चक्कौ'। ३ देखो 'चाकलौ'।
चाकली-स्त्री० १ घोडो का एक रोग विशेष। २ देखो 'चक्की'।
चाकलौ-पु० १ कुए पर लगा रहने वाला काष्ठ का गोल चक्र। २ चक्की का पाट। ३ छोटा विछौना। ४ देखो 'चकलौ'।
चाकवौ-देखो 'चकवौ'।
चाकाबंध-पु० १ वीर पुरुष। २ योद्धा।
चाकी-देखो 'चक्की'।
चाकू-पु० [तु०] सब्जी आदि काटने का उपकरण। —चुगौ-पु० एक प्रकार का शस्त्र।
चाकोर-देखो 'चकोर'।
चाकौ-पु० १ रहट का मूल चक्र। २ देखो 'चक्र'।
चाख-स्त्री० १ व्यसन, दुर्व्यसन। [स० चक्षु] २ दृष्टिकोण। ३ दृष्टि, नजर। ४ देखो 'चाक'।
चाखड (डा, डौ)-स्त्री० १ चक्की के ऊपरी पाट के बीच में लगी काष्ठ की मुष्ठिका। २ टूटी हड्डी को जोडने के लिये बाधी जाने वाली बास की खपची। ३ खडाऊ। ४ मवेशियो के मुह मे हाथ डालते समय सुरक्षार्थ लगाया जाने वाला उपकरण। ५ मथ दड के नीचे रहने वाला उपकरण। ६ सेना।
चाखणौ (बौ)-क्रि० [स० चष] १ चखना, चख कर देखना। २ स्वाद लेना, आस्वादन करना। ३ अनुभव करना। ४ भुगतना।
चाखाळ-पु० रक्त, खून।
चागी-स्त्री० नकल, प्रतिकृति।
चाड-वि० १ चुगलखोर। २ निदक।
चाड़ी-स्त्री० १ चुगली, निंदा, आलोचना। २ शिकायत।
चाचपुट-स्त्री० ताल का एक भेद।
चाचर(रि, रो)-पु० [स० चत्वर, चर्चरी] १ मस्तक, सिर। २ ललाट भाल। ३ भाग्य। ४ होली सबधी लोक गीत। ५ उपद्रव। ६ शोरगुल। ७ युद्धस्थल, रणभूमि। ८ मैदान। ९ नगाडा। १० मात मात्राओ की तान। ११ योग की एक मुद्रा। १२ चर्चरी नृत्य विशेष।
चाचरे (रै)-क्रि० वि० १ ऊपर से, ऊपर, पर। २ अत्यन्त दूर से। ३ ललाट पर।
चाचरौ-पु० १ मस्तक। २ भाग्य। ३ योनि, भग। ४ देखो 'चाचर'।
चाचेरौ-वि० चाचा के परिवार का।
चाचौ-पु० पिता का छोटा भाई, काका।
चाट-स्त्री० १ तेज मसालेदार व दही चटनी मिला स्वादिष्ट पदार्थ। २ स्वादिष्ट पदार्थ खाने की आदत, चसका। ३ प्रबल इच्छा, कामना। ४ लत, टेव।
चाटकाणौ (बौ), चाटकावणौ (बौ)-क्रि० १ तेज भगाना। २ चाबुक मारना, फटकारना।
चाटकौ-पु० (स्त्री० चाटकी) १ शोधन द्वारा अलग किया हुआ पदार्थ। २ चाबुक आदि का प्रहार। -वि० १ रस लोलुप। २ चालाक, धूर्त।
चाटण-स्त्री० १ चाटने की क्रिया या भाव। २ चाट कर खाने योग्य पदार्थ। ३ स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ -वि० चाट खाने का शौकीन।
चाटणौ (बौ)-क्रि० १ जीभ या अगुली से रगडकर खाना। २ चट कर जाना, साफ कर जाना। ३ बार-बार जीभ फेरना, चाटना।

चाटाळ–वि० १ रसलोलुप । २ रिश्वतखोर । ३ चाटने वाला । ४ गिजा खाकर दूध देने वाला ।

चाटु, (कार)–वि० चापलूस, खुशामदी ।

चाटुकारी–स्त्री० खुशामद, चापलूसी ।

चाटू–पु०–काष्ठ का बडा चम्मच । –वि० १ खुशामदी, चापलूस । २ रसलोलुप । ३ चाटने वाला । ४ चाट खाने वाला ।

चाटौ (चा' टौ)–पु० १ चाटकर खाया जाने वाला पदार्थ । २ स्वादिष्ट वस्तु । ३ नाजायज ढग से कुछ खिलाने की क्रिया या भाव । ४ दूध देने वाले पशु को खिलाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ । ५ दाग, धब्बा ।

चाठ–१ देखो 'चाट' । २ देखो 'छाट' ।

चाठौ–पु० १ धब्बा, दाग । २ निशान, चिह्न । ३ दूध देने वाले पशु को खिलाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ ।

चाड–स्त्री० १ रक्षार्थ बुलाने की आवाज, पुकार । २ त्राहि-त्राहि का आर्तनाद । ३ रक्षा, सुरक्षा । ४ सहायता, मदद । ५ वमन, कै । ६ उन्नति, बढोतरी । ७ युद्ध, लडाई । ८ घोडे का नथूना । ९ चाह, इच्छा । १० ऊचाई, चढाई । ११ अभिप्राय, प्रयोजन । १२ घर का भेद । १३ कुए से पानी खीचने के लिये खडे होने का स्थान । १४ विपत्ति, बाधा । –वि० १ दुर्जन, कपटी (जैन) । २ चुगलखोर । ३ रक्षक ।

चाडणौ (बौ)–क्रि० [स० चडि] १ सत्ता के विरुद्ध विद्रोह करना, बगावत करना । २ कोप करना । ३ देखो 'चढाणौ (बौ)' ।

चाडव–पु० [स० चदियाचने] कवि, काव्यकार ।

चाडाउ–स्त्री० सकट के समय अपने इष्ट से की जानी वाली प्रार्थना ।

चाडापुरी–स्त्री० अप्सरा, परी ।

चाडूउ–वि० चुगली करने वाला, निंदा करने वाला ।

चाडौ–पु० १ बुद्धि या विचार शक्ति का अश । २ दही मथने का पात्र । ३ छोटी मटकी ।

चाढ–स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा । २ देखो 'चाड' ।

चाढणौ (बौ)–देखो 'चढाणौ' (बौ) ।

चातक (ग)–पु० [स०] (स्त्री० चातकी) पपीहा नामक पक्षी । —**आनदन**–पु० वर्षा ऋतु । बादल ।

चातरम, चातर, चातरक–देखो 'चतुर' ।

चातळ–पु० बडा कछुवा ।

चाती–स्त्री० फोडे, फुसी पर लगाने की मरहम-पट्टी । –वि० १ अनावश्यक रूप से चिपकने वाला । २ जबरदस्ती साथ होने वाला ।

चातुक–देखो 'चातक' ।

चातुरग–देखो 'चतुरग' ।

चातुर–स्त्री० १ गणिका, वेश्या । २ बुद्धि । ३ देखो 'चतुर' ।

चातुरई–देखो 'चतुराई' ।

चातुरज–पु० [स० चातुर्य] छल, कपट ।

चातुरजात–पु० [स० चातुर्जात] १ नाग केसर । २ इलायची । ३ तेज पात आदि का समूह ।

चातुरदस–वि० [स० चतुर्दश] १ चौदह । २ चतुर्दशी को उत्पन्न होने वाला । –पु० राक्षस ।

चातुराई, चातुरी, चातुरय–स्त्री० [स० चातुर्य्य] १ चतुराई । निपुणता, दक्षता । २ बुद्धिमानी ।

चातुरिम–देखो 'चतुराई' ।

चात्रग (गि, गी), चात्रक (क्क, ग, ग्ग)–१ देखो 'चातक' । २ देखो 'चतुर' । ३ देखो 'चतुरग' ।

चात्रण–पु० शत्रु दल का सहार ।

चात्रणौ (बौ)–क्रि० १ शत्रुओ का सहार करना । २ मारना । ३ विध्वस करना ।

चात्रिग चात्रिग–१ देखो 'चतुर' । २ देखो 'चातक' ।

चादर–स्त्री० [फा०] १ बिछाने या ओढने का वस्त्र, चद्दर । २ किसी धातु की परत, पत्तर । ३ कंधे पर रखने का छोटा वस्त्र । ४ साधुओ का वस्त्र । ५ देव मूर्ति पर चढाई जाने वाली पुष्प राशि । ६ बाध या जलाशय के ऊपर से बहने वाली पानी की परत । ७ जल की चौडी धारा । ८ शामियाना, तबू । ९ साधुओ को चद्दर के प्रतीक रूप मे दी जाने वाली धन राशि ।

चादरौ–पु० बिछाने, ओढने या पर्दा लगाने का बडा वस्त्र ।

चाप–पु० [सं०] १ धनुष । २ इन्द्र धनुष । ३ धनुष राशि । ४ अर्धवृत्त क्षेत्र, वृत्ताश । ५ पैर की आहट । ६ आहट । ७ प्रस्तर पट्टिका । ८ रस्सी की डोरी । ९ ठगण के तृतीय भेद का नाम । —**धारी**–पु०–धनुर्धारी ।

चापड–देखो 'चापडौ' ।

चापडणौ (बौ)–क्रि० [म० चपेटम्] १ दबाना, चापना । २ भयभीत होना । ३ तीतर पक्षी का बोलना । ४ भागना । ५ पीछा करना । ६ युद्ध करना ।

चापडै–क्रि० वि० १ खुले आम, प्रकट रूप मे, प्रत्यक्ष मे । २ युद्ध में ।

चापडौ–पु० १ अनाज पीसकर छानने से निकलने वाला भूसा । २ रहट के चक्र मे मजबूती के लिये लगाया जाने वाला काष्ठ खण्ड ।

चापट–स्त्री० [स० चपेट] १ चपत । २ चपेट, लपेट । ३ चोट । ४ देखो 'चापडौ' ।

चापटिया–स्त्री० कुभट की फली व बीज ।

चापटी–स्त्री० १ पतले कान वाली बकरी । २ चाबुक । ३ देखो 'चपटी' ।

चापटौ–वि० (स्त्री० चापटी) चपटा । –पु० हाकने का डडा या चाबुक ।

चापर (रि री)–स्त्री० [स० चापल, चापल्य] १ शीघ्रता, ताकीद । २ टिड्डीदल से ग्रच्छादित भूमि ।

चापळणौ(बौ)–क्रि० १ दुबक कर बैठना । २ ताक लगाकर बैठना । ३ शात किन्तु सावधान होकर बैठना ।

चापळी–स्त्री० [स० चपला] विद्युत, बिजली ।

चापलूस–वि० [फा०] १ झूठी प्रशसा करने वाला । २ हा मे हा मिलाने वाला । ३ खुशामदी ।

चापलूसी–स्त्री०[फा०] १ झूठी प्रशसा । २ खुशामद, चाटुकारी ।

चापी–वि० [स० चापिन्] धनुर्धारी । –पु० १ शिव महादेव । २ धनुराशि ।

चाफळणौ (बौ)–देखो 'चापळणौ (बौ)' ।

चाव–स्त्री० [स० चव्य] १ एक पौधा विशेष (वैद्यक) । २ वस्त्र, कपडा ।

चाबक, चाबकयौ, चाबिको, चाबख–पु० बैल, घोडा ग्रादि हाकने का चमडे का कोडा । चाबुक ।

चाबरण–स्त्री० १ चाबने या चबाने की क्रिया । २ चबाकर खाने लायक पदार्थ ।

चाबणौ (बौ)–क्रि० १ दातो से कुचलना, चबाना । २ खाना । ३ हजम करना । ४ दत क्षत लगाना ।

चाबली–स्त्री० १ एक प्रकार की खजरी, बाजा । २ इस बाजे पर गाया जाने वाला गीत । ३ छोटी डलिया ।

चाबी–स्त्री० १ ताले ग्रादि की कुजी, ताली । २ यत्र का वह पुर्जा जिसको घुमाने से यत्र चलता है । ३ किसी भेद या रहस्य को समझने की विधि, ग्राधार या सूत्र ।

चाबुक–पु० हाकने का कोडा । –**सवार**–पु० घोडे का शिक्षक । ग्रश्वचालक ।

चाबुकियौ–देखो 'चाबक' ।

चाबेदार–देखो 'चोबदार' ।

चाय–स्त्री० १ पूर्वी भारत मे होने वाला एक प्रसिद्ध पौधा । २ इस पौधे की सूखी पत्ती या पत्ती का भूसा जिसे दूध व पानी मे उबाल कर पीया जाता है । ३ इच्छा, कामना । ४ उत्साह, जोश ।

चायक–देखो 'चाहक' ।

चायगुर–पु० योद्धा, वीर ।

चायतौ–वि० (स्त्री० चायती) १ चहेता, प्रिय । २ इच्छित वाछित ।

चायना–स्त्री० १ इच्छा, ग्रभिलाषा । २ जरूरत, ग्रावश्यकता ।

चार–वि० [स० चत्वार] १ तीन ग्रौर एक । २ थोडा, कुछ । [स० चारु] ३ सुन्दर, मनोहर । ४ सुकुमार । –पु० १ चार की सख्या, ४ । २ गति, चाल । ३ बधन । ४ कारागार । ५ गुप्तचर । ६ कृत्रिम विष । ७ चारा, घास । ८ मोठ की सूखी पत्तिया । ९ भोज्य पदार्थ । —**ग्रानी**–स्त्री० चार ग्राने का सिक्का । —**ग्राइनौ**–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

चारक–पु० [स०] १ भेदिया, जासूस, गुप्तचर । २ गडरिया । ३ गोपाल ग्वाल । ४ नेता । ५ हाकने वाला, सारथी । ६ सईस । ७ घुडसवार । ८ बदी-गृह । ९ गति, चाल । १० सहचर । ११ ब्रह्मचारी ।

चारखी–देखो 'चरखी' ।

चारखाणी–स्त्री० जीव की उत्पत्ति की चार गतिया व इनसे उत्पन्न होने वाले जीव ।

चारजामौ–पु० घोडे या ऊट की पीठ पर कसा जाने वाला ग्रासन ।

चारण–पु० (स्त्री० चारणी) १ राजस्थान, मध्यप्रदेश व गुजरात मे फैली एक प्रसिद्ध जाति । २ इस जाति का व्यक्ति । ३ कवि । –**विद्या**–पु० ग्रथर्ववेद का एक ग्रश ।

चारणियाबट–पु० भूमि या जायदाद का समान बंटवारा, भाईबंट ।

चारणी–स्त्री० १ चारण जाति की स्त्री । २ चारण कुलोत्पन्न देवी । ३ चलनी । –वि० चारण सबधी, चारण का ।

चारणौ (बौ)–देखो 'चराणौ' (बौ) ।

चारदिवारी, (दीवारी)–स्त्री० किसी भवन या शहर के चारो ग्रोर की दीवार, परकोटा ।

चारलोक–पु० १ दूत, हलकारा । २ चार प्रकार के लोक ।

चाराजाई–स्त्री० [फा०] नालिश, फरियाद ।

चारि–देखो 'चार' ।

चारिणी–देखो 'चारणी' ।

चरित, (तु)–१ देखो 'चरित्र' । २ देखो चारित्र ।

चारिताळौ–वि० (स्त्री० चारिताली) विभिन्न चरित्र करने वाला ।

चारित्र–पु० [स० चारित्रम्, चारित्र] १ ग्राचरण । २ चाल-चलन । ३ ख्याति, कीर्ति । ४ साधुता । ५ चरित्र ।

चारी–वि० [स० चारिन्] १ विचरण करने वाला, भ्रमण करने वाला । २ चलने वाला, गतिमान ।

चारु–वि० [स०] सुन्दर, मनोहर । —**धारा**–स्त्री० इन्द्र की पत्नी, शची । —**विद**–पु० श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

—वेस—पु० श्रीकृष्ण व रुक्मिणी का पुत्र। —स्रवा—पु० श्रीकृष्ण का एक अन्य पुत्र।
चारू—वि० चारो।
चारू मेर—क्रि० वि० चारो तरफ, चारो ओर।
चारू—वि० चरने वाला। —वळ, वळा—क्रि० वि० चारो ओर।
चारोळी—स्त्री० १ चिरोजी मेवा। २ नारियल की गिरी का खड। ३ होली का दूसरा दिन।
चारौ—पु० १ पशुओ का घास आदि खाद्य। २ मू ग मोठ के सूखे पत्ते। ३ भोजन, खाद्य। [फा० चारा] ४ उपाय, तरकीब। ५ वश, कावू। ६ रास्ता।
चाळ—स्त्री० १ कुर्ते के अग्रभाग की झोली। २ धरा, धरती। ३ खलिहान मे अनाज साफ करने की बडी चलनी। ४ छेड छाड। ५ क्रोध, गुस्सा। ६ परगना। ७ भवन, लोक। ९ वस्त्र का छोर।
चाल—स्त्री० [स०] १ चलने की क्रिया या भाव। २ गति। ३ चलने का ढग। ४ आचरण, चरित्र। ५ आकार, आकृति। ६ रीति-रिवाज, परपरा। ७ चालाकी, कपट, धूर्तता। ८ विधि, ढग। ९ खेल मे गोटी या पत्ता चलने की पारी। १० हलचल, धूमधाम। ११ नकल, अनुकरण। १२ सर्प। १३ चर, जगम।
चाळक—पु० आवड देवी का एक नामान्तर।
चालक—वि० १ चलाने वाला गतिमान करने वाला। २ युद्ध करने वाला। ३ सचालक, निर्देशक। —पु० १ निरकुश हाथी। २ नृत्य की एक क्रिया।
चालकनाराय (नेची)—स्त्री० आवड देवी का एक नाम।
चालकरौ—वि० छेडछाड करने वाला, युद्ध प्रिय।
चालगारौ—वि० चाल करने वाला, धोखा करने वाला।
चालचलगत (चलन)—स्त्री० आचरण, व्यवहार, चरित्र।
चालढाल—स्त्री० चलने का ढग, तरीका, ऊठ-बैठ।
चालणी—देखो 'चलणी'।
चाळणौ (बौ)—क्रि० १ छानना। २ उकसाना। ३ छेडना। ४ प्रहार करना।
चालणौ (बौ)—देखो 'चलणौ' (बौ)।
चाळनेच—स्त्री० आवड़ देवी।
चाळबद (बध)—पु० १ राजा, भूपति। २ जागीरदार, भूस्वामी।
चालबाज—वि० कपटी, धूर्त।
चालबाजी—स्त्री० धूर्तता, कपट।
चाळराय—स्त्री० आवड देवी।
चाळवणौ (बौ)—देखो 'चाळणौ' (बौ)।
चालान—पु० न्यायार्थ अदालत मे अपराधी की उपस्थिति का आदेश या रवानगी। —दार—पु० रवानगी देने वाला व्यक्ति।
चालाक—वि० १ धूर्त, कपटी। २ निपुण, दक्ष। ३ चतुर, बुद्धिमान।
चालाकी—स्त्री० १ चाल, धोखा, कपट। २ धूर्तता पूर्ण व्यवहार। ३ दक्षता, निपुणता। ४ चतुराई, बुद्धिमानी।
चालाकौ—वि० गतिवान, तेज चलने वाला।
चाळागर (गारियौ, गारौ)—वि० (स्त्री० चाळागारी) १ उपद्रवी, झगडालु। २ पाखडी, आडबरी। ३ राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ। ४ वीर, योद्धा। ५ बहाने बाज।
चाळावध—वि० १ उद्दण्ड, उपद्रवी। २ पाखडी।
चाळि (ळी)—१ देखो 'चाळ'। २ देखो 'चाळीस'।
चाली—देखो 'चाल'।
चाळीस—वि० [स० चत्वारिंशत्] तीस और दश। —पु० चालीस की सख्या, ४०।
चाळीसयौ (वौं)—वि० चालीसवा, चालीस के स्थान वाला।
चाळीसौ—पु० १ चालीसवा वर्ष। २ चालीस पदो का ग्रथ। ३ चालीस वस्तुओ का सग्रह ४ मृतक के चालीसवें दिन का भोजन। ५ चालीसवा दिन। (मुसलमान)
चालुक (क्य)—पु० [स० चालुक्य] दक्षिण भारत का एक राजवश।
चालू—वि० [स० चल्] १ गतिमान, चलायमान। २ प्रचलित। ३ जो चल रहा हो। —क्रि०वि० प्रारभ, शुरू।
चालेवौ—पु० शव यात्रा, जनाजा।
चाळोरी—देखो 'चारोळी'।
चाळौ चाळहौ—पु० [स० चल] १ दैहिक या दैविक प्रकोप। २ युद्ध, झगडा, लडाई। ३ उपद्रव, विद्रोह। ४ छेडछाड। ५ चाल। ६ भूत-प्रेतादि का उपद्रव, बाधा। ७ खेल-तमाशा। ८ प्रेम। ९ उमग, उत्साह। १० आकस्मिक घटना, चमत्कार। ११ पाखड, ढोग, आडबर। १२ वस्त्र का छोर, आचल। १३ रहस्य, भेद। १४ कल्लोल क्रीडा।
चावडदे—स्त्री० चामुण्डा देवी।
चाव—पु० १ चाह, रुचि। २ इच्छा, अभिलाषा। ३ उत्साह, उमग, जोश। ४ उत्सव। ५ आनन्द, हर्ष। ६ स्वभाव। ७ मान, प्रतिष्ठा। ८ दान।
चावक—पु० एक प्रकार का बाण।
चावगर (गुर)—वि० १ कद्र करने वाला, कद्रदान। २ रुचि रखने वाला, चाहक। ३ आकाक्षी, महत्वाकाक्षी।
चावड़—स्त्री० १ चार लटिकाओ की रस्सी। २ वस्त्र की चार परतें। ३ चौडाई।
चावड़—देखो 'चौडै'।
चावणौ (बौ)—१ देखो 'चावणौ' (बौ)। २ देखो 'चाहणौ' (बौ)।

चावर–पु० जुताई के बाद भूमि को समतल करने के लिए फेरा जाने वाला मोटा पाट, हेगा ।

चावरी–स्त्री० एक रग विशेष की बकरी । –वि० ठिगनी, बौनी ।

चावळ, चावळियौ, चावल्यौ–पु० सफेद रग का एक प्रसिद्ध अन्न, भात । –वि० श्वेत, सफेद* ।

चावोडौ, चावौ–वि० (स्त्री० चावी) प्रख्यात, प्रसिद्ध । –पु० कूग्रा खोदने के लिए काटी जाने वाली भूमि की सतह ।

चास–स्त्री० [स०] १ नीलकण्ठ पक्षी । २ खवर, सन्देश । ३ शोक । ४ धरती, पृथ्वी । ५ हल से खींची रेखा, मीता ।

चासणी (नी)–स्त्री० १ चीनी या गुड का लसीला रस । २ चस्का । ३ नमूना । ४ रगत । ५ आभूषण विशेष ।

चासणौ (बौ)–क्रि० दीपक जलाना ।

चास-मास–स्त्री० खबर, सूचना ।

चासविदार–पु० १ हल । २ सूअर ।

चासू, चासौ–वि० चुस्त, फुर्तीला । –पु० १ वगाली कृपक । २ कृषक ।

चाह–स्त्री० [स०] १ इच्छा, अभिलापा । २ प्रेम । ३ लगन । ४ आवश्यकता, जरूरत । [फा०] ५ कूआ, कूप ।

चाहक-वि० चाहने वाला । प्रेमी ।

चाहण–स्त्री० चाहने का भाव, चाह, इच्छा कामना । —**देवी**–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

चाहणौ–वि० चाहने वाला ।

चाहणौ (बौ)–क्रि० १ चाहना, इच्छा करना । २ प्रेम करना, स्नेह रखना । ३ हित करना, भला करना ।

चाहरौ–देखो 'चाग्ररौ' ।

चाहल–पु० उत्सव समारोह । जलसा ।

चाहि–देखो 'चाह' ।

चाहिजे, (जै, यइ, यै)–अव्य० चाहिए, जरूरत है, उपयुक्त, अपेक्षित है ।

चाही–स्त्री० कूए के पानी से सींचित भूमि । –वि० इच्छित ।

चाहु (हू)–वि० चाहने वाला ।

चाह्यौ–वि० इच्छित, वाछित ।

चिंग्रौ–पु० इमली का बीज, चिंया ।

चिंगण–स्त्री० [स० चिंतागण] श्मशान भूमि की आग । चिता ।

चिंगरज–स्त्री० [स० चिह्नरज] भूमि, पृथ्वी ।

चिंगौ–पु० घोडा, अश्व ।

चिंघाड–स्त्री० १ हाथी की आवाज । २ चीख, चिल्लाहट ।

चिंघाडणौ (बौ)–क्रि० १ हाथी का बोलना । २ चीखना, चिल्लाना ।

चिंचडौ–देखो चीचडौ' ।

चिंचौ–देखो 'चिंग्रौ' ।

चिंजी–वि० चिरजीव ।

चिंडाळ–देखो 'चडाळ' ।

चिंडाळी–देखो 'चडाळी' ।

चिंत–१ देखो 'चिंता' । २ देखो 'चिंतण' । ३ देखो 'चित' ।

चिंतक–वि० [स०] १ चिंता करने वाला । २ चिंतन करने वाला । ३ सोच-विचार करने वाला ।

चिंतकरि–स्त्री० छल, कपट ।

चिंतण (न)–पु० [स० चिंतन] १ ईश्वर का चिंतन, स्मरण, ध्यान, भजन । २ विषय चिंतन । ३ सोच-विचार, खयाल । ४ अन्वेपण, शोध । ५ सम्मान, आदर । ६ अभ्यास, मनन ।

चिंतणीय–वि० [स० चिंतनीय] १ सोचने विचारने योग्य । २ मनन करने योग्य । ३ जिसका चिंतन या ध्यान किया जावे । ४ चिंता करने योग्य । ५ सोचनीय ।

चिंतणौ (बौ), चिंतवणौ (बौ)–क्रि० [स० चिंतनम्] १ चिंतन, मनन या ध्यान करना । २ याद करना, स्मरण करना । ३ चिंता करना, फिकर करना ।

चिंता–स्त्री० [स०] १ फिक्र, सोच । २ दुख, शोक, उदासी । ३ आशंका, भय । ४ खेद, अफसोस । ५ व्यग्रता, आकुलाई । ६ ध्यान, चिंतन । ७ याद, स्मरण । ८ परवाह । ९ करुण रस का व्यभिचारी भाव । —**आकुळ, आतुर**–वि०–चिंता से व्याकुल, व्यथित । उत्सुक ।

चिंतागियौ–पु० एक प्रकार का घोडा ।

चिंतामण, (मणि, मणी, मिणी)–स्त्री० [स० चिंतामणि] १ वाछित फल देने वाली एक कल्पित मणि । २ ब्रह्मा । ३ परमेश्वर, ईश्वर । ४ सरस्वती का एक मत्र । ५ कपिल के यहाँ जन्म लेने वाला एक गणेश । ६ घोडे के नाक या गले पर होने वाली एक भौंरी । ७ ऐसी भौंरी वाला घोडा । ८ यात्रा का एक योग ।

चिंतार–स्त्री० स्मृति, याद ।

चिंतारणौ (बौ)–देखो 'चितारणौ' (बौ) ।

चिंतावंत–वि० चिंता, सोच, फिकर, चिंतन करने वाला ।

चिंताहर–वि० चिंता का हरण करने वाला । –पु० ईश्वर, परमात्मा ।

चिंतित, चिंतिय–वि० [स० चिंतत] १ चिंता करने वाला, उदास, खिन्नचित्त । २ जिसका चिंतन किया गया हो ।

चिंती–वि० चित्तवाली, बुद्धिवाली ।

चिंतू–देखो 'चित' ।

चिंत्या–देखो 'चिंता' ।

चिंदी–स्त्री० वस्त्र की धज्जी, वस्त्र पट्टिका।

चिंध–पु० [सं० चिह्न] १ चिह्न, निशानी। २ देखो 'चीथ'।
—पट्ट–पु० खास निशान युक्त पट्टा (जैन)।

चिंम–स्त्री० आख के काले कोये पर होने वाला सफेद दाग।

चिंयो–पु० [सं० चिंचा] १ जलाशय या पानी के किनारे उत्पन्न होने वाला घास। २ अविकसित कच्चा फल। ३ इमली का बीज। ४ वणिक, बनिया। ५ व्यापारी।

चि–पु० [सं०] १ सूर्य, भानु। २ संग्रह, ढेर। ३ आवाज। ४ दीवार। ५ चित्र। ६ बकरी। ७ पिंड। ८ भय। –अव्य० की।

चिआर, (रि, रे)–वि० [सं० चत्वार] चार।

चिऊआळीस–स्त्री० चालीस और चार के योग की संख्या, ४४।

चिक–स्त्री० [तु०] १ बांस की खपचियो का पर्दा। २ गले का एक स्वर्णाभूषण। **—चिकतो**–वि० तर, चकाचक।

चिकचिकी–स्त्री० १ तर माल के प्रति अरुचि। २ पसीने से होने वाली गंदगी।

चिकछा–देखो 'चिकित्सा'।

चिकट–देखो 'चीकट'।

चिकटणी (बी)–क्रि० मैल या चिकनाई के कारण चिपचिपा होना।

चिकटाई–देखो 'चीकट'।

चिकडोर–पु० जालीदार, कपाट।

चिकणाई, चिकणाट–स्त्री० १ स्निग्धता, चिकनाई। २ घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थ। ३ खुरदरेपन का अभाव, फिसलन।

चिकणाणी (बी)–क्रि० १ चिकना करना, स्निग्ध करना। २ तर करना। ३ घिस कर चिकना करना, फिसलने योग्य करना।

चिकणाय (वट, स, हट,)–स्त्री० १ चिकनाहट, स्निग्धता। २ खुरदरेपन का अभाव, फिसलन की अवस्था। ३ शक, आशंका। ४ स्निग्ध पदार्थ।

चिकणी (बी)–क्रि० १ द्रव पदार्थ का चूना, टपकना। २ घाव से रक्त आदि उबकना। ३ देखो 'छिकणी' (बी)।

चिकतसथान–पु० चिकित्सालय।

चिकन (न)–पु० [फा० चिकिन] एक प्रकार का कसीदा।

चिकर–पु० [सं० चिकुर] १ रेंगने वाला जीव। २ छछूंदर। ३ गिलहरी। ४ चिकुर।

चिकल(लो)–पु० [सं० चिकिल] १ कीचड, पंक। २ पानी आदि फैलने से होने वाली गंदगी।

चिकाणी (बी)–क्रि० औषधियो मे पुट देना।

चिकार–पु० [सं० चिकीपति, चीत्कार] १ झुण्ड, समूह। २ चीख, पुकार। ३ चिंघाड।

चिकारो–पु० १ एक प्रकार का हरिन। २ सारंगी की जाति का एक वाद्य यंत्र।

चिकाळ–स्त्री० मदिरा, शराब।

चिकिछा–देखो 'चिकित्सा'।

चिकित्सक–पु० [सं०] रोगो का उपचार करने वाला वैद्य, हकीम, डाक्टर।

चिकित्सा–स्त्री० [सं०] १ रोग का उपचार, इलाज। २ उपाय, व्यवस्था।

चिकिल–पु० [सं०] कीचड, पंक।

चिकीरसव–स्त्री० [सं० चिकीर्षा] इच्छा, अभिलाषा।

चिकुर–पु० [सं०] १ सिर के बाल। २ पर्वत। ३ रेंगने वाला जीव। ४ केश। –वि० [सं०] १ चंचल, अस्थिर। २ कांपने वाला। ३ अविचारी, दुस्साहसी।

चिक्कट–देखो 'चीकट'।

चिक्कण, चिक्कणि, (णी)–स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की ककडी। २ एक प्रकार की सुपारी। ३ देखो 'चिकन'। –वि० १ चिकना, स्निग्ध। २ कोयल। ३ चमकीला। ४ फिसलाहट वाला।

चिक्करणी, (बी)–क्रि० १ हाथी का चिंघाडना। २ चीखना, चिल्लाना।

चिक्कस–स्त्री० [सं०] १ यव या जौ का बना भोज्य पदार्थ। २ उबटन।

चिक्खल (लो) चिखिल–देखो 'चीखलो'।

चिख–पु० [सं० चक्षु] १ नेत्र, आंख, चक्षु। २ दृष्टि, नजर। ३ देखो 'चिक'।

चिगदो–देखो 'चिगदो'।

चिग–देखो 'चिक'।

चिगचिगी–स्त्री० कमजोरी या बुखार मे होने वाला पसीना।

चिगट–देखो 'चीकट'।

चिगणी, (बी)–क्रि० चिढना, खीझना, चिढ़ाया जाना।

चिगत, चिगथळी, चिगथो–१ देखो 'चगताई'। २ देखो 'चिगथ्यो'।

चिगथ्यो–पु० वस्त्र या कागज का टुकडा।

चिगदणी, (बी)–क्रि० कुचलना, चूरा करना, रोदना।

चिगदो–पु० १ कूट-पीट कर किया गया चूरा, भूसा। २ घाव, जख्म। ३ धब्बा। ४ खंड, टुकडा। ५ खरोंच। ६ चोट, आघात या टक्कर का निशान।

चिगळणी, (बी)–क्रि० १ मुंह मे रखकर धीरे-धीरे खाना। २ दांतो से कुचलने का प्रयास करना। ३ तरसाना।

चिगाडणी (बी), चिगाणी, (बी)–क्रि० १ तरसाना। २ दिखा-दिखा कर चिढाना। ३ भुलावा देना, फुसलाना। ४ लेने के लिए प्रेरित करना मगर नही देना।

चिट्ठी–स्त्री० [स० चीठ्ठिका] १ कुशल-समाचार का पत्र, खत। २ लिखा हुआ कोई पत्र। ३ सन्देश या आज्ञा पत्र। ४ मृत्यु सदेश का पत्र। ५ हिदायत या शिक्षा का पत्र।

चिट्ठौ–पु० १ आय-व्यय का विवरण-पत्र। २ हिसाब रखने की वही। ३ किसी के खाते का ब्योरा।

चिडउ–देखो 'चिडौ'।

चिडिग–पु० [स० चिटिक] पक्षी। (जैन)

चिढ़–देखो 'चिड'।

चिण–स्त्री० चिनगारी।

चिणक (ख, ग)–स्त्री० १ बुरी लगने वाली बात। २ बात से होने वाला गुस्सा। ३ अग्निकरण। ४ ताव, जोश। ५ तुनतुनाहट। ६ देखो 'चणक'।

चिणगटी–स्त्री० १ चपत, थप्पड, तमाचा। २ छोटी जू।

चिणगार (री)–स्त्री० [स० चूर्ण-अगार] १ छोटा अग्निकण, चिनगारी। २ कलह कराने वाली बात।

चिणगियौ–पु० पेशाव मे जलन या दर्द होने का रोग।

चिणगौ–१ देखो चिणगारी'। २ देखो 'चिणक'।

चिणणौ (बौ)–देखो 'चुणणौ' (बौ)।

चिणाई–१ देखो 'चुणाई'। २ देखो 'चंणारी'।

चिणाणौ (बौ), **चिणावणौ** (बौ)–देखो 'चुणाणौ' (बौ)

चिणियाकपूर–पु० एक प्रकार का कपूर।

चिणू–देखो 'चणौ'।

चिणोठी (ठी)–स्त्री० [स० चित्रपृष्ठा] घुघची, गुजा।

चिणौ–पु० १ बन्दूक के कान पर लगाया जाने वाला उपकरण। २ तृण, तिनका। ३ चीनी कपूर। ४ देखो 'चणौ'।

चित–पु–[स० चित्त] १ मन, दिल हृदय। २ बुद्धि, अक्ल। ३ ज्ञान, चेतना, वृत्ति। ४ विचार, विचार शक्ति। ५ मनोयोग। ६ इच्छा। ७ प्रतिभा। ८ आत्मा। –वि० १ मुह ऊपर करके लेटा हुआ। २ जिसका मुख्य भाग ऊपर हो, सीधा। ३ देखो 'चित्र'। —**इलोळ**–पु०–डिंगल का एक गीत। —**कवरौ**–वि० काला व श्वेत, मिश्रित वर्ण का। —**चोजी**–वि० मन मौजी। छैला, शौकीन, उत्साही। —**पुट**–पु० एकदेशी खेल। —**धारी**–वि० उदार। —**बकौ**–वि० उदार। वीर, साहसी। —**बगौ**–वि० मति भ्रम। पागल। हीन बुद्धि। —**बाहु**–पु० तलवार का एक हाथ। मति भ्रम। —**भग, भगौ**–वि० उन्माद रोग से पडित। उदास। —**भरम, भरमियौ**–वि० चित्त भ्रम। पागल। —**मठियौ, मठौ**–वि० कृपण कजूस।

चितरगताळ–पु० सुन्दर व छोटे-छोटे ताल-तलैया।

चितरगमहळ–पु० रग महल, सुरतिमहल।

चितरणौ (बौ)–क्रि० १ चित्रित होना, चित्र बनना। २ नक्काशी किया जाना। ३ खराद उतरना।

चितरांण (णौ)–पु० चित्तौड का राणा।

चितरांम–पु० चित्र तस्वीर।

चितराणौ (बौ), **चितरावणौ** (बौ)–क्रि० १ चित्रित करना, चित्र बनाना। २ नक्काशी करना। ३ खराद उतारना।

चितळ–स्त्री० [स० चित्रल] १ मोटे आकार का चकत्तेदार सर्प। २ एक प्रकार का हिरन।

चितळती–स्त्री० चितकवरी बकरी।

चितळी-वि० मन मे बसी, चित्त चढी।

चितवण (णि, णी)–स्त्री० १ चितवन। २ दृष्टि। ३ कटाक्ष।

चितवणौ (बौ)–क्रि० [स० चितन] १ मन मे सोचना, विचार करना, चितन करना। २ इच्छा करना। ३ निश्चय करना। ४ देखना।

चितवाळौ–वि० (स्त्री० चितवाळी) १ चचल, चपल। २ सुदर, मनोहर। ३ उदार।

चितविलास–पु० डिंगल का एक गीत, छद विशेष।

चितहर (ण)–पु० [स० चित्तहर] वस्त्र। –वि० मनोहर, सुन्दर।

चितामण (णि, णी)–देखो 'चिंतामणि'।

चिता–स्त्री० १ शव दाह के लिये चुनी हुई लकडिया। २ चित्रक नामक औषधि। ३ चगतई वश का मुगल।

चिताणौ (बौ)–क्रि० १ सचेत या सावधान करना। २ स्मरण कराना, याद दिलाना। ३ आत्म-बोध कराना। ४ सुलगाना प्रज्वलित करना।

चितानळ–स्त्री० दाहसस्कार की अग्नि।

चिताभूमि–स्त्री० श्मशान भूमि। मरघट।

चितारणी–स्त्री० १ स्मृति, याद। २ स्मृति चिह्न।

चितारणौ (बौ)–क्रि० १ याद करना, स्मरण करना। २ चित्र बनाना।

चितारौ–पु० (स्त्री० चितरी) १ चित्रकार। २ नक्काशी करने वाला। ३ चित्रित करने वाला, वर्णन करने वाला। ४ याद करने वाला।

चिताळ–स्त्री० स्नान करने की शिला या पत्थर।

चितावणौ (बौ)–देखो 'चिताणौ' (बौ)।

चितावर–पु० चित्तौड।

चिति–पु० [स० चैत्य] १ समाधि स्थान। २ देखो चित' (जैन)।

चितेरण–स्त्री० १ चित्र बनाने वाली स्त्री। २ चित्रकार की स्त्री। ३ ब्योरा, वर्णन।

चितेरणौ (बौ)–क्रि० चित्र बनाना। चित्रित करना।

चितेरौ–देखो चितारौ'।

चितौड–पु० १ मेवाड की राजधानी का नगर। २ इस नगर मे स्थापित प्राचीन गढ।

चितौडी, चितौड़ौ–पु० १ चादी का एक प्राचीन सिक्का । २ सिसोदिया राजपूत ।
चित्तग–पु० [स० चित्राङ्क] एक प्रकार का कल्प वृक्ष । (जैन)
चितगो–वि० (स्त्री० चित्तगी) चित्तभ्रम,पागल । –पु०चित्तौड ।
चित्त–१ देखो 'चित' । २ देखो 'चित्र' ।
चित्तउत्त–पु० सोलहवें तीर्थंकर का नाम । चित्रगुप्त ।
चित्तकरणगा–स्त्री० [स० चित्रकनका] विद्युत्कुमारी नामक देवी विशेष (जैन) ।
चित्तकूड–१ देखो चत्रकूट' । २ देखो 'चितौड' ।
चित्तग–पु० [स० चित्रक] १ चीता । २ एक पशु विशेष (जैन)
चित्तगुत्त–पु० चित्रगुप्त ।
चित्तगुत्ता–स्त्री० [सं० चित्रगुप्ता] १ सोम नामक दिक्पाल की अग्र महिषी । २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसने वाली एक दिक्ककुमारी (जैन) ।
चित्तगो–वि० (स्त्री० चित्तगी) उज्जवल, पाक दिल ।
चित्तकावौ–वि० अभीष्ट वाछित ।
चित्तण्णु–वि० [सं० चित्तज्ञ] मन की जानने वाला । (जैन)
चित्त-पक्ख–पु० [स० चित्रपक्ष] वेणुदेव नामक इन्द्र का एक लोकपाल । (जैन)
चित्तपत्तग्र–पु० [स० चित्रपत्रक] १ चार इन्द्रियधारी जीव । २ विचित्र पंख वाला जंतु विशेष । (जैन)
चित्तप्रसादरण (न)–पु० चित्त का एक सस्कार ।
चित्तभग–देखो 'चितभग' ।
चित्तभू–पु० [स०] कामदेव ।
चित्तभूमि–स्त्री० चित्त की पाच अवस्थाएें । (योग)
चित्तभ्रम–वि० मूर्ख, पागल, मतिभ्रम ।
चित्तरस–पु० [स० चित्ररस] एक कल्प वृक्ष । (जैन)
चित्तळ–देखो 'चीतळ' ।
चित्तविक्षेप–पु० चित्त की अस्थिरता ।
चित्तविभ्रम, (विभ्रम)–पु० मतिभ्रम ।
चित्तहिलोळ–पु० डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष ।
चित्तारो–देखो 'चितारो' । (स्त्री० चितारी) ।
चित्तसाळा, (सभा)–स्त्री० चित्रशाला ।
चित्ता–स्त्री० १ चित्रा नक्षत्र । २ देखो 'चिता' ।
चित्तार–पु० चित्रकार । (जैन)
चित्ति–देखो 'चित्त' ।
चित्र–पु० [स०] १ किसी वस्तु या जीव की तसवीर, फोटो, चित्र, आकृति । २ किसी तसवीर या आकृति का ढाचा, खाका । ३ धब्बा, दाग । ४ स्वर्ग, आकाश । ५ कई प्रकार के रगो का समूह । ६ काव्य मे एक अलकार । ७ रस, अलकार युक्त कविता या काव्य । ८ कुष्ठ रोग का एक भेद । ९ चित्रगुप्त । १० दृश्य । ११ यवन मुसलमान । १२ अशोक वृक्ष । १३ शृंगार मे एक आसन । १४ चमकीला आभूषण । –वि० १ चमकीला । २ स्पष्ट, साफ । ३ विलक्षण, अद्भुत । ४ रंग-विरंगा । ५ रुचिकर, प्रिय । —**कर**–पु० चित्रकार । —**करम**–पु० बहत्तर कलाओ के अन्तर्गत एक । —**कळा**–स्त्री० चित्र बनाने की कला । —**कार**–पु० चित्र बनाने वाला । —**कारी**–स्त्री० ६४ कलाओ मे से एक । —**काव्य**–पु० चित्र के रूप मे लिखा हुआ कोई काव्य । —**मंदिर, महळ**–पु० चित्रशाला । —**योग**–पु० ६४ कलाओ मे से एक । —**विद्या**–स्त्री० चित्रकला । —**सारी, साळा, साळी**–स्त्री० चित्रशाला ।
चित्रक–पु० [स०] १ एक प्रकार का छोटा क्षुप । २ हिरन ।
चित्रकूट, (कोट)–पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध पर्वत । २ चित्तौड ।
चित्रकेतु–पु० [सं०] १ चित्रित पताका रखने वाला व्यक्ति । २ लक्ष्मण का एक पुत्र । ३ गरुड का एक पुत्र ।
चित्रगढ़–पु० चित्तौडगढ ।
चित्रगुप्त–पु० [स०] चौदह यमराजो मे से एक ।
चित्रघटा–स्त्री० नौ दुर्गाओ मे से एक ।
चित्रण–स्त्री० [स०] १ चित्रित करने का कार्य । २ वर्णन । ३ व्याख्या ।
चित्रणी–स्त्री० [सं०] चार प्रकार की स्त्रियो मे से एक ।
चित्रणौ (बौ)–क्रि० १ चित्रित करना । २ वर्णन करना ।
चित्रपदा–पु० [स०] एक प्रकार का छद । –स्त्री० मैना पक्षी ।
चित्रपुंख (पूख)–पु० [सं०] तीर, बाण ।
चित्रबिचित्र–वि० १ अद्भुत, विचित्र । २ रग विरगा ।
चित्रभाण (भाणू, भानु)–पु० [स० चित्रभानु] १ अग्नि । २ सूर्य । ३ अश्विनीकुमार । ४ भैरव । ५ मणिपुर के राजा व अर्जुन के श्वसुर । ६ साठ सवत्सरो के बारह युगो मे से चौथे युग का प्रथम वर्ष । ७ चित्रक । ८ आक का वृक्ष ।
चित्रमणि–स्त्री० घोडे के पेट पर होने वाली सीप के आकार की भौंरी ।
चित्रमद–पु० नायक का चित्र देखकर नायिका का विरह प्रदर्शन ।
चित्ररथ–पु० [स०] १ सूर्य । २ एक गधर्व । ३ श्रीकृष्ण का एक पौत्र । ४ एक यदुवशी राजा । ५ अग देश के राजा का नाम ।
चित्ररेखा–स्त्री० [स०] बाणासुर की कन्या उषा की एक सहेली ।
चित्रल–वि० [स०] चितकबरा ।
चित्रलेख–देखो 'चित्रगुप्त' ।
चित्रलेखा–स्त्री० [स०] १ एक अप्सरा । २ चित्ररेखा । ३ चित्र बनाने की कूंची । ४ एक वर्णवृत्त विशेष ।

चित्रवन–पु० [स०] गडक नदी के किनारे का वन ।
चित्रसाळा (ळी)–स्त्री० [स० चित्रशाला] १ रग महल। २ वह स्थान जहा चित्र बनाये जाते है । ३ चित्रो की सजावट का स्थान ।
चित्रसिखडी–पु० [स०] सप्त ऋषि।
चित्रसिखंडीज–पु० बृहस्पति ।
चित्रसेन–पु० [स०] १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । २ एक पुरुवशीय राजा ।
चित्राग (गद)–पु० [स०] १ राजा शातनु का एक पुत्र। २ गधर्वों के राजा का नाम ।
चित्रांगदा–स्त्री० [स०] १ अर्जुन की एक स्त्री । २ रावण की एक स्त्री ।
चित्राम–पु० १ चित्र, तस्वीर । २ नक्काशी ।
चित्रामण (मणि, मिण)–स्त्री० एक देवी विशेष ।
चित्रामि–देखो 'चित्र' ।
चित्रा–स्त्री० [स०] १ सत्ताईश नक्षत्रो मे से चौदहवा नक्षत्र । २ चितकबरी गाय । ३ एक नदी का नाम । ४ एक अप्सरा का नाम । ५ सगीत मे एक मूर्च्छना । ६ एक प्राचीन तार वाद्य । ७ एक सर्प का नाम । ८ एक छद विशेष ।
चित्रारौ–देखो 'चितारौ' ।
चित्रावेलि–स्त्री० [स० चित्रकवल्ली] चित्रकवल्ली ।
चित्रित–वि० [स०] १ वर्णित । २ चित्र द्वारा दर्शाया हुआ । ३ चित्राकित ।
चित्रु (त्रू)–पु० १ शिकार के लिए शिक्षित चीता या कुत्ता । २ चीता । ३ चित्र ।
चित्रोत्तर–पु० [सं०] एक प्रकार का काव्यालकार ।
चिथडौ (रौ)–देखो 'चीथडौ' ।
चिदाकास–पु० [स० चिदाकाश] परब्रह्म ।
चिदाणद (नद)–पु० [स० चिदानन्द] परब्रह्म, ईश्वर ।
चिदानंदी–वि० चित्त से प्रसन्न रहने वाला ।
चिदाभास–पु० [स०] जीवात्मा ।
चिद्रूप–पु० [स०] चैतन्य स्वरूप परमेश्वर ।
चिनग–देखो 'चिणग' ।
चिनकियेक, चिनकियोक, चिनकोक–वि० किंचित, अल्प,जरासा ।
चिनख–देखो 'चिणग' ।
चिनाब–स्त्री० पजाब की एक नदी ।
चिनियाकेलौ–पु० छोटी जाति का केला ।
चिनियोक–वि० किंचित, अल्प ।
चिनियोघोडौ–पु० वह घोडा जिसके चारो पाव सफेद हो ।
चिनोक–वि० अल्प, किंचित ।
चिनौ–पु० एक रग विशेष का घोडा ।
चिन्न–वि० [सं० चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित । २ विहित, कृत । ३ चिह्न, निशान । (जैन)
चिन्योक–देखो 'चिनियोक' ।
चिन्ह–पु० [सं० चिह्न] १ निशान, सकेत । २ दाग, धब्बा । ३ मोहर, निशानी । ४ लक्षण । ५ चपरास, बिल्ला । ६ राशि । ७ लक्ष्य दिशा । ८ पताका, झण्डा । ९ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम ।
चिन्हाई–पु० चीन देशोत्पन्न एक प्रकार का घोडा ।
चिपक–पु० १ शिकार मे सहायता करने वाला पक्षी विशेष । २ चिपटने या सटने की क्रिया या भाव ।
चिपकण–पु० आभूषण विशेष । (मेवात)
चिपकणौ (बौ)–क्रि० [स० चिपिट] १ गोद आदि लसीली वस्तु के योग से किन्ही दो वस्तुओ का परस्पर जुडना, सटना, चिपटना । २ प्रगाढ रूप से लिपटना । ३ संयुक्त होना । ४ आलिंगनबद्ध होना । ५ किसी काम मे लगना, सलग्न होना ।
चिपकाणौ (बौ), चिपकावणौ (बौ)–क्रि० १ लसीली वस्तु के योग से किन्ही दो वस्तुओ को परस्पर जोडना, सटाना, चिपटाना । २ गाढा लिपटाना । ३ संयुक्त करना । ४ आलिंगनबद्ध करना । ५ किसी काम मे लगाना; सलग्न करना ।
चिपडौ–देखो 'चपडौ' ।
चिपचिप चिपचिपाहट–स्त्री० १ लसीलापन । २ चिपचिपाने की अवस्था या भाव ।
चिपचिपाणौ, (बौ)–क्रि० १ लसीलापन होना । २ चिपचिप करना । ३ छूने से चिपकना ।
चिपचिपौ–वि० (स्त्री० चिपचिपी) लसीला, चेपदार ।
चिपटणौ (बौ)–देखो 'चिपकणौ' (बौ) ।
चिपटाणौ (बौ), चिपटावणौ (बौ)–देखो 'चिपकाणौ' (बौ) ।
चिपटी–१ देखो 'चपटी' । २ देखो 'चिमटी' ।
चिपटौ–देखो 'चपटौ' ।
चिपठी–देखो 'चिमठी' ।
चिपणौ, (बौ)–देखो 'चिपकणौ' (बौ) ।
चिपाणौ, (बौ), चिपावणौ, (बौ)–देखो 'चिपकाणौ' (बौ) ।
चिपिड–वि० चिपिट, चपटा । (जैन)
चिप्प–पु० नाखून के नीचे होने वाला एक फोडा ।
चिप्पिड–पु० १ एक अन्न विशेष । २ क्यारा । (जैन)
चिबटियौ–पु० १ छोटा ककड । २ अगुष्ठ मे अगुली को अटका कर झटके से की जाने वाली चोट । ३ देखो 'चिरमोटियौ' ।
चिबटी, (ठी)–स्त्री० [स० चुमुटि] १ चुटकी । २ चुटकी बजाने की ध्वनि । ३ अगुलियो के पजो मे पकडा जा सकने वाला पदार्थ । ४ अगुलियों की ऐसी ही मुद्रा ।

चिवळणौ, (बौ)–क्रि० चबाना मुंह मे डाल कर जिह्वा पर इधर-उधर करना ।
चिवुक, चिव्वुक–स्त्री० [स० चिवुक] ठोडी, ठुड्डी ।
चिव्भउ–पु० १ ककडी विशेप । (जैन) २ सूअर का बच्चा ।
चिम–स्त्री० [स० चिह्न] १ आख के काले कोये पर होने वाला, सफेद दाग । २ आख मे चोट लगने से होने वाला दर्द या चिह्न ।
चिमक–देखो 'चमक' ।
चिमकणौ (बौ)–देखो 'चमकणौ' (बौ) ।
चिमकाणौ, (बौ)–देखो 'चमकाणौ' (बौ) ।
चिमकी–स्त्री० डुबकी, गोता ।
चिमचिमाही–स्त्री० एक प्रकार का दर्द ।
चिमचिमी–स्त्री० मस्सा, भगदर आदि से होने वाली पीडा विशेष ।
चिमचौ–देखो 'चमचौ' ।
चिमटणौ, (बौ)–क्रि० १ सटना, जुडना । २ चिपकना । ३ सलग्न होना । ४ गुथना । ५ आलिंगनवद्ध होना । ६ किसी कार्य मे अधिक व्यस्त होना । ७ अधिक सम्पर्क में आना या साथ रहना ।
चिमटाणौ (बौ), चिमटावणौ (बौ)–क्रि० १ सटाना, जोडना । २ चिपकाना । ३ सलग्न करना । ४ गुंथाना । ५ आलिंगन वद्ध करना । ६ अधिक व्यस्त रखना । ७ अधिक सम्पर्क मे करना, साथ लगाना ।
चिमटी, (ठी)–स्त्री० १ तर्जनी व अगुष्ठ से पकडी जाने वाली नमक आदि की मात्रा । २ आटे की मात्रा जो भिखारियो को डाली जाती है । ३ मुरकी । ४ स्वर्णकारो का छोटा औजार । ५ चिमटे का सूक्ष्म रूप ।
चिमटौ, (ठौ)–पु० जलते अगारे आदि को पकड कर उठाने का लोहे की पत्ती का बना उपकरण, चिमठा ।
चिमठाणौ (बौ)–देखो 'चिमटाणौ' (बौ) ।
चिमतकारी–देखो 'चमत्कारी' ।
चिमनी–स्त्री० १ मिट्टी के तेल से जलने वाला छोटा दीपक । २ धूआ निकलने के लिए लगाया हुआ लम्बा पाईप या इसी तरह की कोई बनावट ।
चिमोटौ–पु० उस्तरे की धार तेज करने का चमडे का उपकरण ।
चिमोतर–वि० [स० चतुस्सप्तति] सत्तर व चार, चौहत्तर । –स्त्री० चौहत्तर की सख्या, ७४ ।
चिमोतरौ–पु० चौहत्तरवा वर्ष ।
चिय–पु० [स० चित] १ उपचय, वृद्धि । (जैन) २ जोर से उच्चारण किया हुआ शब्द ।
चियका, (गा)–स्त्री० [स० चिता] शव दाह के लिए चुनी गई चिता ।
चियत्त–वि० [स० त्यक्त] छोडा हुआ, त्यक्त । (जैन)
चिया–पु० १ कच्चे मकानो की छाजन के आजू-बाजू का भाग । २ इमली का वीज ।
चिया–स्त्री० चिता ।
चियाग, (य)–पु० [स० त्याग] त्याग । (जैन)
चियाप–स्त्री० मितव्ययता ।
चियापू–वि० मितव्ययी ।
चियावास–पु० चैत्यवास ।
चियार (इ) (रि, री)–देखो 'चार' ।
चियारं–वि० चारों । –पु० चार ।
चिरजी–पु० १ एक प्रकार का सूखा मेवा । २ देखो 'चिरजीव' ।
चिरजीत–क्रि० वि० चिरकाल तक ।
चिरजीव, (वी)–वि० [स०] दीर्घायु, चिरायु । –पु० १ सात की सख्या । २ चिरायु होने का आशीर्वाद । ३ कामदेव की उपाधि ।
चिर–वि०[स०] १ बहुत दिनो का, पुराना । २ बहुत, अधिक । –क्रि०वि० दीर्घकाल से, अधिक समय तक । –पु० दीर्घकाल । **—काळ**–पु० अधिक समय । **—जीव, जीवी, जीवौ**–पु० विष्णु । मार्कण्ेय ऋषि । सेमर का वृक्ष । कौआ ।
चिरकणौ (बौ)–क्रि० १ अपान वायु के साथ थोडा मल निकल जाना । २ बच्चो का मल त्यागना ।
चिरकौ–पु० अपान वायु के साथ निकला थोडा मल ।
चिरचणी–स्त्री० अनामिका ।
चिरचणौ (बौ)–क्रि० १ पूजन करना । २ चदन आदि लगाना । ३ चदन का लेपन करना । ४ देखो 'चरचणौ' (बौ) ।
चिरजा–देखो 'चरजा' ।
चिरट्ठिइ (ट्ठिय)–वि० दीर्घकाल तक जीवित रहने वाला ।
चिरणोटियौ–पु० सधवा स्त्रियो के ओढने का वस्त्र ।
चिरणौ (बौ)–क्रि० १ फटना, विदीर्ण होना । २ सतह मे दरार पडना । ३ लकीर की तरह का घाव बनना । ४ शस्त्र या चाकू से चीरा जाना । ५ लकडी आदि का कटना, विभक्त होना ।
चिरत, चिरतत, चिरत्त–देखो 'चरित्र' ।
चिरताळ, (ळू, ळौ)–वि० (स्त्री० चरताळी) १ चरित्र करने वाला । २ चकित करने वाला । ३ पाखडी, धूर्त । ४ अद्भुत चरित्रवाला । ५ वीर ।
चिरनाटियौ–पु० नाश, विध्वस ।
चिरपड़ौ–पु० १ रह-रह कर होने वाली वर्षा । २ ऐसी वर्षा से होने वाला कीचड ।
चिरपटी–स्त्री० १ ककडी । २ चिडप ।
चिरपोटण–स्त्री० काक माची ।

चिरपोटियो–पु० एक पौधा विशेष जिसके बीज ग्रौषधि मे काम ग्राते हैं।

चिरवरणौ (बौ)–क्रि० घाव मे जलन होना।

चिरभट–स्त्री० [स० चर्भटी] ककडी।

चिरम–देखो 'चिरमी'।

चिरमठडी, चिरमठि, चिरमही, चिरमिटी, चिरमी–स्त्री० चिरमी, घु घची या गु जाफल। **—ठो'लौ** पु०–एक देशी खेल।

चिरमेह (ही)–पु० [स० चिरमेहिन्] गधा, गर्दभ।

चिरमोटियो–पु० १ चिमठी से चलाया जाने वाला ककड। २ देखो 'चिवटियो'।

चिरळाणौ (बौ)–क्रि० चीखना, चिल्लाना।

चिरवाई, चिराई–स्त्री० १ लकडी ग्रादि चीरने का पारिश्रमिक। २ चीरने का कार्य।

चिरस्थाई (यी)–वि० [सं०] १ सदा के लिए दृढ। २ दीर्घ काल तक टिकाऊ। ३ दीर्घ काल तक चालु रहने वाला।

चिराक, चिराग–पु० १ मसाल। २ दीपक। ३ जोत।

चिराकी, चिरागी–पु० १ मसालची। २ दीपक जलाने वाला अनुचर। ३ मजार पर जोत जलाने वाला।

चिराणौ (बौ), चिरावणौ (बौ)–क्रि० १ फडवाना, विदीर्ण कराना। २ सतह मे दरार कराना। ३ शस्त्र या चाकू से चिरवाना। ४ लकडी ग्रादि कटवाना, विभक्त कराना।

चिरायत–पु० जागीर के क्षेत्रो मे कर निर्धारित करने वाला ग्रधिकारी।

चिरायतो–पु० [स० चिरतिक्त] पर्वतीय क्षेत्रो मे होने वाला एक पौधा जो ग्रौषधि मे काम ग्राता है।

चिरायु (यू)–वि० [स०] १ ग्रधिक जीने वाला, दीर्घायु। २ वहुत वर्षों तक टिकने वाला, स्थाई।

चिराळ–पु० ढगण का एक भेद जिसमे प्रथम लघु फिर गुरु हो।

चिरिताळौ–देखो 'चिरताळौ'।

चिरी–स्त्री० चिडिया।

चिरु जी, चिरौंजी–पु० एक प्रकार का सूखा मेवा।

चिळक्कत–पु० कवच।

चिलक, चिलका–स्त्री० चमक, द्युति, ग्राभा, काति।

चिळकणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, चमचमाना। २ द्युतिमान होना। ३ प्रकाशित होना। ४ सीमोल्लघन करना, मर्यादा के वाहर होना।

चिळकाणौ, (बौ) चिळकावणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना, चमचमाना। २ द्यु तिमान करना। ४ प्रकाशित करना। सीमोल्लघन करना, मर्यादा के वाहर करना।

चिलकारौ–पु० १ सूर्यास्त से कुछ पूर्व का समय। २ प्रकाश। ३ चमक। ४ झलक।

चिलकौ–पु० १ चमक, प्रकाश। २ ग्राभा, काति। ३ प्रतिविंव।

चिलगोजा–पु० एक प्रकार का मेवा, नेजा।

चिलडौ–पु० छोटा क्षुप विशेष।

चिलणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना। २ फटना। ३ चीरा जाना।

चिलत (तौ)–पु० एक प्रकार का कवच।

चिळविळौ–वि० (स्त्री० चिळवळी) नटखट, उद्दण्ड।

चिलम (डौ)–पु० १ हुक्के का ऊपरी भाग जिसमे तम्वाकू भर कर ऊपर ग्राग रखी जाती है। २ तम्वाकू पीने का उपकरण। **—गरवा**–स्त्री० हुक्के की नलिका **—चट, ची**–वि० चिलम का व्यसनी। **—पोस**–पु० धातु की जाली या पात्र जो हुक्के पर ढका जाता है।

चिलमरवौ–पु० वैलगाडी के ग्रग्र भाग मे वधी रहने वाली एक रस्सी।

चिलमियो, (म्यौ)–पु० चिलम पर रखा जाने वाला ग्रगारा।

चिलाइया–स्त्री० किरात देश की स्त्री। (जैन)

चिलाईपूत–पु० एक जैन साधु विशेष।

चिलातिया, चिलाती–स्त्री० किरात देशोत्पन्न एक दासी। (जैन)

चिलाय–पु० किरात देश।

चिलिचिल्ल, (चिचल, च्चील) चिलिरण–वि० ग्रपवित्र, ग्रशुद्ध (जैन)।

चिलिमिणी, (मिलिया)–स्त्री० १ ढकने का वस्त्र। २ पर्दा।

चिल्लग–वि० प्रकाश मान, देदीप्यमान। (जैन)

चिल्लड़–पु० १ शिकारी पशु विशेष। २ चीता। (जैन)

चिल्लाणौ (बौ)–क्रि० १ जोर से वोलना, चीखना। २ हल्ला या शोर करना। ३ करुण क्रन्दन करना। ४ वकना।

चिल्लाहट–स्त्री० १ जोर से वोलने की क्रिया या भाव। २ चीख पुकार। ३ हल्ला। ४ क्रन्दन।

चिल्लित, चिल्लिय–वि० १ प्रदीप्त, चमकयुक्त। २ देखो 'चिल्लौ'।

चिल्लौ–पु० [फा० चिल्ल] १ धनुष की प्रत्यचा। २ चमचमाहट, प्रकाश।

चिल्ही–स्त्री० चील पक्षी।

चिवटी, (ठी)–देखो 'चिमटी'।

चिह–देखो 'चहू'।

चिहउ–क्रि० वि० चारो ग्रोर।

चिहन–देखो 'चिन्ह'।

चिहर–देखो 'चिहुर'। **—वद, वध**='चिहुरवद'।

चिहु–वि० चार, चारो। –क्रि० वि० चारो ग्रोर। **—वळा**–क्रि० वि० चारो ग्रोर।

चिहुर, चिहुर–पु० [स० चिकुर] वाल, केश। **—वद, वध**–पु० वधन, वध।

चिहुवे, चिहू वं–वि० चार, चारो। –क्रि० वि० चारो ग्रोर।

चिहू वेवळा–क्रि० वि० चारो ग्रोर।

चिह्न–पु० [स० चिह्न] १ निशान, चिह्न । २ दाग, धब्बा । ३ ध्वजा, पताका । ४ मार्का । ५ सकेत ।

ची–स्त्री० १ पक्षियो की चहचाहट । २ ची की आवाज या शोर । ३ वक-झक । ४ चीख । ५ कराह ।

चींकणौ, (बौ)–क्रि० १ जानवरो का नाक से आवाज करना । २ ची-ची करना । ३ चीखना ।

चींकळमादौ–पु० गोवर का कीडा ।

चींगट–देखो 'चीकट' ।

चींगण–पु० १ आग्नेय कोण । २ देखो 'चिगण' ।

चींगराडि–स्त्री० रहट की 'पानडी' की आवाज ।

चींगौ–पु० घोडा, अश्व ।

चींवण-स्त्री० १ दाह सस्कार मे जलने से शेष रही लकडिया । २ चिता को व्यवस्थित करते रहने की लम्बी लकडी । ३ श्मशान भूमि, मरघट । ४ चीगण, चिगण ।

चींचड (डौ)–पु० (स्त्री० चीचडी) १ पशुओ के शरीर से चिपक कर रक्त पीने वाला कीडा । २ हल मे लगने वाली किल्ली ।

चींचपड़–देखो 'चीचाट' ।

चींचाड़णौ, (बौ)–देखो 'चीचाणौ' (बौ) ।

चींचाट–पु० ची-ची करने की क्रिया, शोर ।

चींचाणौ (बौ)–पु० ची-ची करना, चीखना, चिल्लाना । २ बकना, वक-झक करना । ३ चिढाना, रुलाना । ४ कष्ट देना, परेशान करना ।

चींटी–स्त्री० कीडी, चिउ टी, चीटी ।

चींटौ-पु० कीडा, चीटा ।

चींण–स्त्री० १ लहगे के ऊपर की पट्टी जिसमे नाडा डाला जाता है । २ रहट मे बधने वाली मोटी झझीर या रस्सी । ३ पत्थर की लम्बी पट्टी ।

चींत–स्त्री० चिंता । —गर–वि० चिंता करने वाला, शुभेच्छु ।

चींतणौ, (बौ)–देखो 'चितणौ' (बौ) ।

चींतरियौ, चींतरौ–देखो 'चीथडौ' ।

चींतवणौ (बौ)–देखो 'चितणौ' (बौ) ।

चींताणौ, (बौ), चींतावणौ (बौ)–देखो 'चिताणौ' (बौ) ।

चींतारौ–पु० चित्रकार, चितेरा ।

चींथड, (ड़ी, डौ)–पु० १ वस्त्र खड । २ फटा-पुराना वस्त्र ।

चींथणौ (बौ)–क्रि० १ रोदना, कुचलना । २ चलते समय किसी पर पैर रख देना ।

चींथर, (रौ, रौ)–देखो 'चीथडौ' ।

चींथाणौ (बौ), चींथावणौ (बौ)–क्रि० रोदवाना, कुचलवाना ।

चींद–देखो 'चीध' ।

चींदड, चींदड़ियौ, चींदळ, चींदळियौ–देखो 'चीधड' ।

चींदी–देखो 'चिंदी' ।

चींध–स्त्री० [स० चिह्न] १ झण्डी, पताका । २ धूल, रज ।

चींधड़, चींधड़ियौ, चींधळ, चींधळियौ–पु० अपने झडे की रक्षा करने मे समर्थ योद्धा, वीर । २ अकर्मण्य व्यक्ति । ३ भिखारी । ४ नीच-मलिन व्यक्ति ।

चींधाळ (ळौ)–पु० १ झडा बंधा रहने वाला हाथी । २ चीधड ।

चींधी–देखो 'चिंदी' ।

चींनणौ, (बौ)–देखो 'चीनणौ' (बौ) ।

चींप–१ देखो 'चीप' । २ देखो 'चीपियौ' ।

चींपड़, (ड़ी, ड़ौ)–पु० १ नाई का छोटा चिमटा जिससे नाक के बाल उखाडे जाते हैं । २ आखो का मैल । ३ जिसकी आखो मे मैल रहता हो ।

चींपटी–स्त्री० चिमटे का अत्यन्त लघु रूप ।

चींपटौ–देखो 'चिमटौ' ।

चींपियौ–देखो 'चिमटौ' ।

चींभडौ–पु० [स० चिर्भटी] १ छोटी ककडी विशेष, कचरी । २ सूअर का बच्चा ।

चींमटौ, (ठौ)–देखो 'चिमटौ' ।

चींयौ–देखो 'चियौ' ।

चींबटौ–पु० १ कच्चा फल । २ भ्रूण । ३ देखो 'चिमटौ' ।

ची–स्त्री० १ स्याही । २ कघी । ३ हस्तिनी । ४ माया । ५ शिव की जटा । –अव्य० षष्टी विभक्ति 'की' ।

चीक–देखो 'चीख' ।

चीकट–पु० १ चिकनापन, चिकनाहट, स्निग्धता । २ घी, तेल आदि चिकने पदार्थ । ३ स्निग्धता से जमा हुआ मैल ।

चीकणाई–देखो 'चिकणाई' ।

चीकणी–वि० चिकनी, स्निग्ध । —चुट्ट–वि० गहरी चिकनी ।

चीकणौ–वि० (स्त्री० चीकणी) १ चिकना, स्निग्ध । २ फिसलन युक्त । ३ सपाट व घुटा हुआ । ४ साफ, सुथरा । ५ चाटुकार, खुशामदी । –पु० चिकनी सुपारी का वृक्ष ।

चीकल–देखो 'चीखल' ।

चीकार–पु० [स० चीत्कार] १ चीख, पुकार, चिल्लाहट । २ चिघाड ।

चीकू–पु० १ एक प्रकार का मीठा फल जो गेंद की तरह होता है । २ देखो 'चीखड' ।

चीकूण–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

चीक्खल–देखो 'चीखल' ।

चीख–स्त्री० १ जोर की व तीक्ष्ण आवाज, चिल्लाहट । २ हाय-त्राय ।

चीखड–पु० एक देशी खेल, इसका दूसरा नाम 'चीखू' भी है ।

चीखणौ, (बौ)–क्रि० १ जोर से बोलना, चिल्लाना । २ जोर-जोर से वकना । ३ कराहना । ४ हाय-त्राय करना ।

चीखल, (लि, लियो, लो, ल्ल)–पु० [सं० चिकिल] १ कीचड, पंक। २ गीलापन। ३ दलदल। ४ मिट्टी का छोटा जल-पात्र। ५ सर्प का बच्चा।
चीखू–देखो 'चीखड'।
चीगट, (ड़ो)–देखो 'चीकट'।
चीगटास–पु० चिकनाई, चिकनापन।
चीगटो–देखो 'चीकणो' (स्त्री० चीगटी)।
चीघट–देखो 'चीकट'।
चीघटियो–१ देखो 'चीकणो'। २ देखो 'चीकट'।
चीड–पु० १ ऊंट का मूत्र। २ पहाडी क्षेत्रों मे होने वाला वृक्ष जिसकी लकडी मुलायम होती है। ३ बारीक मोती। ४ काच की घुंघरिया।
चीडणो, (बो)–क्रि० ऊंट का पेशाब करना।
चीं'डी–स्त्री० वस्त्र पट्टिका, लीरी।
चीं'डो–पु० चिथडा।
चीज, (ड़ो)–स्त्री० १ वस्तु, पदार्थ। २ द्रव्य। ३ आभूषण, गहना। ४ महत्वपूर्ण व विलक्षण वस्तु। ५ अच्छा गाना या गीत।
चीटल, (लो)–पु० सर्प का बच्चा।
चीठ–स्त्री० १ कजूसी। २ मैल। ३ चिपकने की अवस्था या भाव।
चीठणो, (बो)–देखो 'चैंठणो' (बो)।
चीठी–१ देखो 'चिट्ठी'। २ देखो 'चीठो'।
चीठो–वि० (स्त्री० चीठी) १ स्निग्ध, चिकना। २ आसानी से न छूटने वाला। ३ मजबूती से सटने वाला। ४ कृपण, कजूस। ५ मजबूत दृढ़। ६ सटा हुआ।
चीडोड़–पु० चित्तौडगढ।
चीढ़–देखो 'चीड'।
चीण–स्त्री० लहगे के ऊपर की पट्टी। —**दार**–पु० वह वस्त्र जिसमे 'चीण' लगी हो।
चीणसुय–पु० [सं० चीनांशुक] १ चीन देश का बना रेशमी वस्त्र (जैन)। २ चीन देश की बनावट का वस्त्र।
चीणपिट्ट, (विट्ट)–पु० चीन देश का बना उत्तम वस्त्र। (जैन)
चीणी–स्त्री० १ शक्कर। २ बारीक शक्कर। ३ चीन देश की मिट्टी। ४ देखो 'छीणी'। ५ देखो 'चीनो'। –वि० बारीक। —**चपो**–पु० एक प्रकार का केला। एक प्रकार का घोडा। —**माटी, मिट्टी**–स्त्री० सफेद माटी।
चीणोटियो–पु० [सं० चीन-पट] स्त्रियो के ओढने का वस्त्र।
चीणो–पु० १ चना, चने का दाणा। २ एक रग विशेष। ३ एक रग विशेष का घोडा। ४ सफेद रग का कबूतर। ५ घटिया किस्म का अनाज। –वि० बारीक, महीन।
चीत–१ देखो 'चित्त'। २ देखो 'चित्र'। ३ देखो 'चीता'। ४ देखो 'चिता'।
चीतकार–पु० [सं० चीत्कार] १ चीख, चिल्लाहट, हल्ला। २ करुणाक्रन्दन। ३ चित्रकार।
चीतगढ़–पु० चित्तौडगढ।
चीतणो (बो)–देखो 'चितणो (बो)'।
चीतदुरंग–पु० चित्तौड का दुर्ग।
चीतर–देखो 'चीतरो'।
चीतरी–स्त्री० १ छितरे हुए छोटे-छोटे बादलो की परत। २ गीले या द्रव पदार्थ पर जमने वाली पपडी। ३ मादा बघेरा।
चीतरो–पु० (स्त्री० चीतरी) नर बघेरा।
चीतळ–पु० १ चीते के रग का मृग। २ एक जाति विशेष का अजगर। –स्त्री० ३ शिला खण्ड। ४ खरगोश आदि का शिकार करने का लकडी का उपकरण।
चीतळती–स्त्री० चितकबरी बकरी।
चीतळो–पु० रग विशेष का घोडा।
चीतवणो (बो)–देखो 'चितणो (बो)'।
चीतवर–वि० साहसी, वीर।
चीताणो (बो)–देखो 'चिताणो (बो)'।
चीतारणो (बो)–देखो 'चितारणो (बो)'।
चीताळकी–वि० चीते के समान पतली कमर वाली।
चीताळ–स्त्री० कपडे धोने की शिला।
चीति–१ देखो 'चित्त'। २ देखो 'चीती'।
चीती–स्त्री० १ मादा चीता। २ एक सर्प विशेष जिसके विष से प्राणी सड-सड कर मरता है। ३ देखो 'चित्त'।
चीतेरण–स्त्री० चित्रकार स्त्री।
चीतेवाण–पु० चीते पाल कर शिक्षा देने वाला व्यक्ति।
चीतोडी–देखो 'चितौडी'।
चीतोड़वै–पु० चित्तौडपति, महाराणा।
चीतोडो–देखो 'चितौडो'।
चीतो–पु० (स्त्री० चीती) १ शेर की जाति का एक हिंसक जानवर। २ जामुन की पत्तियो से मिलती-जुलती पत्तियो का एक बडा पौधा।
चीत्र–पु० १ तन, शरीर, देह। २ चित्र।
चीत्रउड, (कोट, गढ़)–पु० चित्तौडगढ।
चीत्रणो (बो)–देखो 'चित्रणो' (बो)।
चीत्रस–पु० एक प्रकार का घोडा।
चीत्राम–पु० चित्राम, चित्र।
चीत्रारो–देखो 'चितारो'।
चीत्रुडो, चीत्रोड़, (ड़ि, ड़ो), चीत्रोड (डो)–पु० चित्तौडगढ।
चीयडो–देखो 'चीथडो'।

चीथाणौ (बौ)–देखो 'चीथाणौ' (बौ)।
चीद, चींवड़–देखो 'चीधड'।
चीध, चीधउ–देखो 'चीधड'।
चीनणौ (बौ)–क्रि० १ मास काट कर छोटा करना। २ पहिचानना, समझना। ३ अदाज करना। ४ चिह्नित करना।
चीनवडौ–पु० एक विशेष रग का घोडा।
चीनार–पु० एक प्रकार का घोडा।
चीनी–पु० १ चीन देश का निवासी। २ चीन की मिट्टी। —वि० १ चीन का, चीन सबधी। २ चीन मे बुना हुआ। ३ देखो 'चीणी'। —**फरोस**–पु० चीनी मिट्टी के खिलौनो का व्यापारी।
चीह्नणौ (बौ)–देखो 'चिनणौ' (बौ)।
चीप–पु० १ ऊट के चमडे का बना वडा पात्र। २ ढोल या डफ बजाते समय अतिरिक्त रूप मे काम ली जाने वाली कोई खपची। ३ चुनाई मे खाली जगह भरने के लिये दिया जाने वाला पत्थर का छोटा टुकडा। ४ सधिस्थलो पर लगाया जाने वाला पत्थर।
चीपटी, चीपटौ–पु० १ ज्वार के कच्चे पौधो का चारा। २ देखो 'चिमटौ'।
चीपडौउ चीपिडउ–पु० [स० चिपट] १ ग्राख का मैल। २ चपटी नाक वाला व्यक्ति।
चीपी–स्त्री० १ दूध दूहने का पात्र। २ चीप की खपची। ३ लडाई या द्वेष वढाने वाली वात।
चीपियौ–पु० १ चूल्हे मे रखा जाने वाला खीरा पकडने का ग्रौजार। २ काटा निकालने का छोटा ग्रौजार।
चीपूखियौ–पु० घास विशेष।
चीफाड–पु० चित्तस्फोटक।
चीव–स्त्री० १ स्वभाव, ग्रादत। २ ऐब।
चीबडी (डौ)–स्त्री० [सं० चिर्भटी] १ ककडी। २ सूग्रर का वच्चा।
चीबटौ (ठौ)–देखो 'चीपटौ'।
चीबर, चीवरी–स्त्री० चमगादड।
चीबरौ–पु० १ उल्लू जाति का, कबूतर से छोटा एक पक्षी। २ मुसलमान।
चीबी–स्त्री० १ ऊट के वच्चे की मस्ती जिसमे वह इधर-उधर कूदता है। २ मादा ऊट का ऋतुमती होने का भाव।
चीबौ–पु० १ मुसलमान। २ यवन।
चीमडवाल–पु० वहुत से वच्चो वाली मादा सूग्रर।
चीमडी–देखो 'चीवडी'।
चीमडौ–पु० १ सूग्रर या सूग्रर का वच्चा। २ चिरभट।
चीमड–स्त्री० एक देवी विशेष।
चीमडियौ (डौ)–देखो 'चीमडौ'।
चीमटौ–पु० १ प्राय लोहे की पत्ती को मोडकर वनाया हुग्रा उपकरण जो ग्रंगारे ग्रादि को पकडकर उठाने मे काम ग्राता है। २ उन्मत्त हाथी को वश मे करने का उपकरण।
चीये (यें)–स्त्री० एक देवी विशेष।
चीर–पु० १ स्त्रियो के ग्रोढने का वस्त्र। २ वस्त्र, कपडा। ३ पुराना वस्त्र, चिथडा। ४ गाय का स्तन। ५ गुग्गुल का पेड। ६ साडी। ७ वृक्ष की छाल। ८ चीर–फाड।
चीरड (ड़ी,डौ)–पु० पुराना वस्त्र, चियडा, लत्ता।
चीरणी (णौ)–स्त्री० १ चीरने की क्रिया या भाव। २ वढई का एक ग्रौजार। ३ पत्थर की खुदाई का एक ग्रौजार। ३ लोहे की छेनी।
चीरणौ (बौ)–क्रि० [स० चीर्णम्] १ फाडना, विदीर्ण करना, चीरना। २ सतह मे दरार करना। ३ लकीर की तरह का घाव करना। ४ शस्त्र या चाकू से चीर देना। ५ लकडी ग्रादि को काटना, विभक्त करना।
चीर-फाड–स्त्री० १ चीरने फाडने की क्रिया या भाव। २ शल्य चिकित्सा।
चीरतल–पु० [स०] एक पक्षी विशेष। (जैन)
चीराई–स्त्री० १ चीरने का कार्य। २ इस कार्य की मजदूरी।
चीरागुर (गुरु)–पु० नाथ सम्प्रदाय मे कान चीर कर दीक्षित करने वाला साधु।
चीराजिण (न)–पु० [स०] व्याघ्र या मृगचर्म। (जैन)
चीराणौ (बौ)–क्रि० १ फडवाना, विदीर्ण करवाना, चिराना। २ सतह मे दरार कराना। ३ लकीर की तरह का घाव कराना। ४ शस्त्र या चाकू से चीरा दिराना। ५ लकडी फडवाना।
चीरायुस–पु० देवता। —वि० दीर्घायु।
चीराळी–स्त्री० [स० चर्तल] १ किसी वस्तु की चीरी हुई फाड। २ छोटे-छोटे खण्ड। ३ लवा घाव। ४ चीख।
चीरावणौ (बौ)–देखो 'चिराणौ' (वौ)।
चीरिग, चीरिय–पु० [स० चीरिक] १ एक जैनी भिक्षु वर्ग। २ फटे कपडे पहनने वाला साधु।
चीरी–स्त्री० [स० चृ०] १ फल ग्रादि की चीरी हुई फाड, भाग। २ लम्बा घाव। ३ झीगुर। ४ मृत्यु भोज की चिट्ठी। ५ चिट्ठी, पत्री। ६ पर्दा। ७ देखो 'चीर'।
चीरो–पु० १ नश्तर ग्रादि से किया हुग्रा घाव, चीरा। २ चीरने की क्रिया। ३ चीर। ४ पगडी, उष्णी। ५ वस्त्र का टुकडा, खण्ड, धज्जी। ३ कृषकों या प्रजासे लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर। ७ मकान बनाते समय दीवार के बहार छोडी जाने वाली चार इच जगह। ८ द्वार के ऊपर लगाया जाने वाला चित्रित पत्थर। ९ कपडे की छोटी

पट्टी जो साफे या पगडी पर बांधी जाती है। १० लगान पर कर निर्धारण का क्षेत्र।

चील, (क, ख) चीलडी–स्त्री० [स० चिल्ल] १ गिद्ध की जाति का एक मादा पक्षी। २ सर्प। ३ शेषनाग। ४ मार्ग, रास्ता। ५ गेहू की फसल मे उगने वाला एक घास। ६ आभूषण विशेष।

चीलडौ–पु० [स० चिल्लीशाकम्] १ गेहूँ की फसल मे होने वाला 'चील' नामक घास। २ वेसन आदि का पराठा।

चीलझपटौ–पु० एक देशी खेल।

चीलपत (पति)–पु० शेषनाग।

चीलप्यार–पु० चंदन वृक्ष।

चीलमण (मणि)–स्त्री० सर्प की मणि।

चीलम्मौ–देखो 'चिलमियौ'।

चीलर–स्त्री० १ रेजगारी, सिक्के। २ पोखर, छोटा जलाशय।

चीलराज (सेख)–पु० शेषनाग।

चीलरियौ–देखो 'चीलर'।

चीलवौ–पु० पत्तीदार शाक।

चीलहाडी–स्त्री० एक देशी खेल।

चीलार–पु० १ देवता। २ गरुड।

चीलू–देखो 'चिल्लौ'।

चीलौ (ल्लौ)–१ देखो 'चइलौ'। २ देखो 'चिल्लौ'।

चील्ह,(णि)–१ देखो 'चील'। २ देखो 'चिलडौ'।

चील्हर–पु० १ सूअर का बच्चा। २ देखो 'चीलर'।

चील्हाराव–पु० शेषनाग।

चील्हौ–१ देखो 'चइलौ'। २ देखो 'चिल्लौ'।

चीवणी–स्त्री० कपाटो की किनारी, सजावट।

चीवर–देखो 'चीर'।

चीस–स्त्री० १ रह-रह कर होने वाली तीक्ष्ण पीडा, कसक। २ चीख। ३ क्रन्दन।

चीसणौ (बौ)–क्रि० १ रह-रह कर दर्द होना। २ कसकना, कराहना। ३ चीखना, चिल्लाना। ४ सिमकना। ५ क्रन्दन करना।

चीसल, चीसाळी, चीह–देखो 'चीस'।

चीहलौ–देखो 'चइलौ'।

चीहिटिया–स्त्री० श्मशान भूमि, श्मशान।

चीहोर–पु० एक प्रकार का घोडा।

चु–देखो 'च्'।

चुगळ–देखो 'चगुळ'।

चुगलाल–पु० १ यवन। २ मुसलमान।

चुंगाणौ (बौ), चुंगावणौ (बौ)–क्रि० १ शिशु को स्तन पान कराना। २ चुमाना।

चुंगी–स्त्री० किसी व्यापारिक वस्तु का नगर पालिका का कर।

चुघाणौ (बौ), चुघावणौ (बौ)–देखो 'चुंगाणौ (बौ)'।

चुंनड़ी–देखो 'चूंदडी'।

चुंबक–पु० १ लोहे को आकर्षित करने वाला पत्थर या धातु। २ चुंबन करने वाला या चूमने वाला व्यक्ति। ३ धूर्त व्यक्ति।

चुंबणौ (बौ)–देखो 'चूंबणौ' (बौ)।

चुंबन–पु० प्रेमातिरेक की अभिव्यक्ति के लिये ओठो से दिया जाने वाला चुम्मा, बोसा, पप्पी।

चुंबित–वि० [स०] १ चूमा हुआ। २ स्पर्श किया हुआ, छुआ हुआ।

चुंबी–वि० चूमने वाला।

चुंबौ–पु० चुंबन, बोसा।

चुंभी–स्त्री० डुबकी, गोता।

चुंवळौ–पु० चवला नामक द्विदल अन्न।

चुंहटी–स्त्री० चुटकी चिमटी।

चु–स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि। २ शब्द। ३ काल। ४ वज्र। ५ उपधान।

चुअणौ (बौ)–क्रि० १ बूंद-बूंद टपकना, रिसना। २ झरना। ३ तर होना। ४ रसमय होना।

चुआणौ (बौ), चुआवणौ (बौ)–क्रि० १ बूंद-बूंद टपकाना, रिसाना। २ झारना। ३ तर करना। ४ रसमय करना।

चुइणौ (बौ)–देखो 'चुअणौ' (बौ)।

चुई–स्त्री० कपडा बुनने का औजार।

चुकंदर–पु० [फा०] एक प्रकार की गाजर।

चुकडउ (डौ)–पु० कान का आभूषण विशेष।

चुकणौ (बौ)–क्रि० [स०चुत्क्] १ समाप्त होना। २ पूर्ण होना। ३ उऋण होना। ४ निवृत्त होना। ५ चुगता होना। ६ देखो 'चूकणौ' (बौ)।

चुकमार–देखो 'चूकमार'।

चुकळणौ (बौ)–क्रि० १ बदहवास होना, घबराना। २ चूकना।

चुकळाणौ (बौ)–क्रि० १ बदहवास करना। २ भयभीत करना। ३ भ्रमित करना। ४ क्रम भग करना। ५ गणना क्रम भग करना। ६ ध्यान भग करना।

चुकलियौ (ल्यौ)–पु० मिट्टी का छोटा घडा।

चुकली–स्त्री० १ मिट्टी की छोटी हडिया। २ मृतक के बारहवें दिन भरे जाने वाले छोटे-छोटे मिट्टी के पात्र। ३ मृतक के द्वादशे का भोज।

चुकाई–स्त्री० चुकाने का कार्य। भुगतान।

चुकाणौ (बौ), चुकावणौ (बौ)–क्रि० १ समाप्त करना। २ पूर्ण करना। ३ उऋण करना। ४ निवृत्त करना। ५ चुगता करना, चुगताना। ६ भुलाना, भ्रमित करना। ७ धोखे मे डालना। ८ लक्ष्य भ्रष्ट करना। ९ अवसर चुकाना।

चुकुमार–देखो 'चूकमार'।
चुक्कणी(बौ)–१ देखो 'चुकणी'(बौ)। २ देखो 'चूकणी (बौ)'।
चुक्खड–देखो 'चुखडी'।
चुख–पु० टुकडा, खण्ड, भाग।
चुखडो–वि० कृपण, कजूस।
चुखचुक्ख, चुखचुख, चुखच्चुख–वि० खण्ड-खण्ड।
चुग–पु० १ पक्षियो का चुग्गा। २ आहार, भोजन।
चुगणी (बौ)–क्रि० [म० चयन] १ पक्षियो द्वारा चोच से कोई वस्तु उठाना, चुगा करना। २ वीनना, एकत्र करना, चुन-चुन कर रखना। ३ चयन करना, चुनाव करना। ४ अनाज साफ करना। ५ पशुओ द्वारा चारा खाना।
चुगद–वि० [फा०] मूर्ख, वेवकूफ।
चुगल–पु० [फा०] १ चिलम के छेद मे फसाया जाने वाला ककड। २ राक्षस, असुर। ३ निंदक। ४ चुगली करने वाला। —खोर–वि० चुगली करने वाला। निंदा करने वाला। —खोरी–स्त्री० किसी की शिकायत करने का कार्य, निंदा।
चुगलणी (बौ)–क्रि० १ चूसना। २ स्वाद लेकर खाना। ३ टोकने के कारण भूलना, चूक जाना।
चुगलाल (लौ), चुगलियौ–वि० १ चुगली करने वाला। २ निंदक। –पु० १ यवन। २ मुसलमान। ३ वादशाह।
चुगली–स्त्री० १ शिकायत। २ वुराई, निंदा। ३ किसी की पीठ पीछे उसके दोष कहने की क्रिया। ४ शिखा, चोटी।
चुगवौ–पु० चुनिन्दा, चुना हुआ, छटा हुआ, वढिया।
चुगाई–स्त्री० १ चुगने का कार्य। २ इस कार्य का पारिश्रमिक। ३ वीनाई।
चुगाणी (बौ), चुगावणी (बौ)–क्रि० १ पक्षियो को अनाज आदि डाल कर चुगवाना। २ वीनवाना, एकत्र कराना,चुनवाना। ३ चयन कराना, चुनाव कराना। ४ अनाज साफ कराना। ५ पशुओ को चारा खिलाना।
चुगुलखोर–देखो 'चुगलखोर'।
चुगौ (ग्गौ)–पु० १ पक्षियो के खाने का दाना, अनाज। २ आहार, भोजन। ३ चारा ४ एक प्रकार का वाण। ५ स्वर्णकारो का एक औजार। ६ वहुत छोटी सी कैंची।
चुड–१ देखो 'चूडौ'। २ देखो 'चिडी'।
चुडकली–स्त्री० चिडिया।
चुड़खणी (बौ)–क्रि० १ पीडा या वेदना से कराहना। २ छोटा-छोटा घाम चरना, चूटना।
चुडखौ–पु० छोटा हरा घास।
चुडलियौ–देखो 'चूडौ'।
चुडली–देखो 'चूडौ'।
चुडलौ (ल्यौ)–देखो 'चूडौ'।
चुड़ैल, चुड़ैल–स्त्री० १ भूतनी, डायन, प्रेतनी, पिशाचिनी। २ क्रूर स्वभाव वाली कर्कशा स्त्री। ३ कुरूपा स्त्री।
चुचुक–पु० [स०] स्तन या कुच का अग्रभाग, कुच की घुंडी
चुज्जेण–स्त्री० चतुराई।
चुटकली–पु० १ विनोद पूर्ण वात, हसी की वात। २ चमत्कार पूर्ण उक्ति।
चुटकि (की)–स्त्री० १ अगुठे व तर्जनी से किसी चीज को पकड़ने का भाव। २ इस प्रकार से पकड़ मे आने वाली वस्तु की मात्रा। ३ अगुठे व मध्यमा को मिलाकर उत्पन्न की जाने वाली ध्वनि। ४ सम्पूर्ण अगुलियो के बीच समाने वाली वस्तु। ५ अगुठे व तर्जनी से चमडी पकड कर भरी जाने वाली चिकोटी।
चुटियौ–देखो 'चिटियौ'
चुट्टणी (बौ)–देखो 'चूटणी' (बौ)
चुडलिअ (लिय)–पु० गुरु वन्दना का एक दोष। (जैन)
चुणणी (बौ)– क्रि० १ चुन-चुन कर एकत्र करना। २ चयन करना, चुनाव करना। ३ छाट-छाट कर लेना। ४ बीनना। ५ पसद करना। ६ एक पर एक या तह पर तह रख कर सजाना, जमाना। ७ पत्थरो की दीवार वनाना, चुनाई करना।
चुणाई–स्त्री० १ चुनने का कार्य। २ चयन, चुनाव। ३ छंटाई। ४ वीनाई। ५ दीवार की चुनाई। ६ चुनने की मजदूरी।
चुणाणी (बौ)–क्रि० १ चुन-चुन कर एकत्र करना। २ चयन कराना, चुनाव कराना। ३ छंटाई कराना। ४ बीनाना। ५ पसद कराना। ६ एक पर एक या तह पर रखवा कर सजवाना, जमवाना। ७ दीवार बनवाना, चुनाई कराना।
चुणाव–पु० [स० चयन] १ वहुतो मे से कुछेक का चयन, चुनाव। २ मतदान, निर्वाचन। ३ पसद।
चुणावट–स्त्री० १ चुनने की कला। २ देखो 'चुणाई'।
चुणावणी (बौ)–देखो 'चुणाणी' (बौ)।
चुणावौ–पु० चुने हुए पदार्थ या व्यक्तियो का समूह।
चुणिंदौ–वि० १ चुना हुआ, छटा हुआ। २ खास, विशेष, मुखिया, प्रधान। ३ मन पसद, वढिया।
चुणौती–स्त्री० १ ललकार, चुनौती। २ उत्तेजना।
चुण्ण–पु० चूर्ण, मत्रित चूर्ण। (जैन)
चुण्णकोसय–पु० एक ही जातीय खाद्य पदार्थ। (जैन)
चुण्णिअ (यौ)–वि० [स० चूर्णित] चूर्ण किया हुआ। (जैन)
चुतरग–देखो 'चतुरंग'। —दळ='चतुरगदळ'।
चुतरावेळ–स्त्री० एक लता विशेष।
चुतरेस–पु० विष्णु, ईश्वर।
चुतरो–पु० ब्रह्मा, चतुरानन।

चुदक्कड–वि० १ वहुकामी, अधिक स्त्रियो से सभोग करने वाला । २ वहुत सभोग कराने वाली स्त्री, सभोग प्रिय स्त्री ।

चुदणी–वि० वहु सभोग प्रिया ।

चुदणौ (बौ)–क्रि० किसी स्त्री का सभोग किया जाना । भोगा जाना ।

चुदवाई, चुदाई–स्त्री० १ सभोग कराने का कार्य । मैथुन । २ वेश्या वृत्ति से प्राप्त धन ।

चुदाणी–स्त्री० अति कामी स्त्री ।

चुदाणौ (बौ), चुदावणौ (बौ)–क्रि० सभोग कराना, पुरुष से समागम कराना ।

चुदास–स्त्री० मैथुनेच्छा ।

चुद्रा–स्त्री० दाख, किसमिस ,

चुनडियौ–पु० एक प्रकार का घोडा ।

चुनडी–देखो 'चू दडी' ।

चुनियोगू द–पु० पलास का गू द, कमरकस ।

चुनियौ–पु० मीठा आदि खाने से वच्चो के पेट मे होने वाला श्वेत व वारीक कीडा ।

चुनी (न्नी)–स्त्री० १ रत्न कण । २ छोटा नगीना । ३ छोटी लडकियो की छोटी ओढनी ।

चुप–वि० १ मौन, शान्त, खामोश । २ अवाक् । –स्त्री० १ खामोशी, शान्ति । २ चुप्पी ।

चुपके (कै)–क्रि० वि० धीरे से, चुप-चाप । छुपे तौर पर । शान्त भाव से ।

चुपकौ–वि० मौन, शान्त ।

चुपडणौ (बौ)–क्रि० १ रोटी आदि पर घी लगाना । २ चिकना करना,स्निग्ध करना । ३ लेप करना । ४ चापलूसी करना ।

चुपड़ाणौ (बौ), चुपडावणौ (बौ)–क्रि० १ रोटी आदि पर घी लगवाना । २ चिकना कराना, स्निग्ध कराना । ३ लेपन कराना ।

चुपचाप–वि० मौन, शान्त । –क्रि० वि० १ विना कुछ वोले । २ शान्त भाव से । ३ निरुद्योग से बिना प्रयत्न किये ।

चुपट–पु० चौगान ।

चुपाखर–पु० चारो ओर, चारो वाजू । (जैन)

चुप्पक–वि० मौन शान्त ।

चुप्पालय–पु० १ विजय नामक देवता का शस्त्रागार । २ शस्त्रागार ।

चुबारौ–देखो 'चौवारौ' ।

चुभकी–स्त्री० डुवकी, गोता ।

चुभणौ (बौ)–क्रि० १ किसी काटे या नुकीली वस्तु का किसी अग मे घुम जाना, धस जाना । २ वार-वार स्पर्श होने पर कष्ट प्रद लगना । ३ मन मे खटकना । ४ व्यथा पैदा होना । ५ हृदय मे अकित होना, दिल मे वैठ जाना ।

चुभाणौ(बौ), चुभावणौ(बौ), चुभोणौ (बौ)–क्रि० १ काटा या कोई नुकीली वस्तु किसी अंग मे घुसाना, धसाना । २ स्पर्श कराकर कष्ट देना, तकलीफ देना । ३ व्यथा पैदा करना । ४ मन मे कोई वात वैठा देना ।

चुमकार (रौ)–स्त्री० १ चुम्बन आदि की क्रिया । २ लाड-प्यार से शान्त्वना देना, पुचकार ।

चुमकारणौ (बौ)–क्रि० १ चुम्बन आदि देना । २ लाडप्यार से शान्त करना, धैर्य देना पुचकारना ।

चुमाणौ (बौ), चुमावणौ (बौ)–क्रि० १ चूमने के लिये प्रेरित करना, आग्रह करना । २ चूमने के लिये प्रस्तुत करना, आगे करना । ३ चुम्बन लिराना ।

चुमासू–देखो 'चौमासौ' ।

चुम्मक–देखो 'चु वक' ।

चुम्मौ–देखो 'चु वन' ।

चुरडणौ (बौ) क्रि० १ द्रव पदार्थ को श्वास के जरिये मुंह मे खीचना । २ चूसना ।

चुरड़ौ–पु० चुल्लू, अजली ।

चुरट (ठ)–वि० १ लाल । २ हृष्ट-पुष्ट । –पु० एक प्रकार की चिलम जिसमे तम्वाखू भर कर वीडी की तरह पिया जाता है ।

चुरणाटौ (ठौ)–पु० १ एक ध्वनि विशेष । २ नाश, ध्वस ।

चुरणियौ, चुरनियौ–देखो 'चुनियौ' ।

चुरमली–स्त्री० काष्ठ की छोटी फास ।

चुररौ–पु० चूरा, चूर्ण ।

चुरस, (सि, सी)–वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ देखो 'चरस' ।

चुराई–स्त्री० चोरी का कार्य ।

चुराणौ (बौ), चुरावणौ (बौ)–क्रि० १ किसी का धन या वस्तु चुपके से उठाकर ले जाना । २ हरण करना, अपहरण करना । ३ कोई वस्तु छुपा लेना । ४ कोताई करना, निश्चित कार्य न करना । ५ किसी कार्य के प्रति उदासीन रहना, वचना, वहाने वनाना । ६ मोह लेना, आकृष्ट कर लेना ।

चुरी–स्त्री० १ लग्न मडप के चारो कोने पर चार मिट्टी के जल पात्र रखने का ढग या व्यवस्था । २ देखो 'चवरी' ।

चुरु–देखो 'चरु' ।

चुळ–स्त्री० [स० चल] १ खुजलाहट, खुजली । २ गुदगुदी । ३ मैथुनेच्छा (स्त्री०) । ४ हरकत ।

चुळकौ–पु० १ हरकत, हलचल । २ एक मात्रिक छद विशेष ।

चुळचुळाणौ (बौ)–क्रि० १ खुजली चलना । २ गुदगुदी होना । ३ मैथुनेच्छा होना । ४ हरकत करना ।

चुळचुळाहट, चुळचुळी–स्त्री० १ खुजली होने की क्रिया या भाव। २ गुदगुदी। ३ मैथुनेच्छा। ४ चचलता। ५ हरकत।
चुलणी–स्त्री० द्रुपद राजा की स्त्री। (जैन)
—पिय– पु० भगवान महावीर का एक उपासक। (जैन)
चुळणी (बौ)–क्रि० १ हिलना-डुलना। २ हरकत करना। ३ पथ भ्रष्ट होना, पतित होना। ४ कोई पदार्थ विकृत होना। ५ खुजलाहट होना।
चुळबळ, चुळबुळ–स्त्री० १ हल-चल, हरकत। २ नटखटपन। ३ चचलता। ४ रक्त खून।
चुळबुळाणी (बौ)–क्रि० १ हलचल करना, हरकत करना। २ उद्दण्डना करना। ३ चचल होना। ४ शान्त न रहना।
चुळबुळी–वि० (स्त्री० चुळबुळी) नटखट, चचल।
चुळवळ–देखो 'चुळबुळ'।
चुळसी (इ)–स्त्री० अस्सी व चार की सख्या, चौरासी। (जैन)
चुळाणी (बौ), चुळावणी (बौ)–क्रि० १ स्थान से हटाना, हिलाना, डुलाना। २ अस्थिर करना, डावाडोल करना। ३ पथ भ्रष्ट करना, पतित करना। ४ सडाना, विकृत करना। ५ हरकत कराना।
चुल्ल–पु० छोटा बच्चा, शिशु। –वि० छोटा, लघु। —सयक(ग) –पु० महावीर स्वामी का एक श्रावक। (जैन)—हिमवत– पु० एक पर्वत। (जैन)
चुल्ली–स्त्री० १ छोटा चूल्हा। २ अंजली।
चुल्लू (ल्लो)–पु० [स० चुलुक] १ एक हाथ का पात्र बनाने की मुद्रा। चुल्लू, अजली। २ अजली भर पानी। ३ चिडियो की चहचाहट (मेवात)।
चुवटी–देखो 'चौवटी'।
चुवणी (बौ)–देखो 'चुग्रणी' (बौ)।
चुवाणी (बौ)–देखो 'चुग्राणी' (बौ)।
चुवारी–पु० सुन्नत करने वाला व्यक्ति।
चुवौ–पु० मज्जा।
चुसकी–स्त्री० [सं० चषक] १ शराब पीने का पात्र। २ पेय पदार्थ की घुटकी, चुस्की। ३ चुस्की के साथ पीने की क्रिया।
चुसट–देखो 'चौसट'।
चुसणी (बौ)–क्रि० १ चूसा जाना। २ सोखा जाना। ३ निचुडना, सारहीन होना। ४ शक्तिहीन होना। ५ सूखना।
चुसाई–स्त्री० चूसने की क्रिया या भाव।
चुसाणी (बौ), चुसावणी (बौ)–क्रि० १ चूसने के लिये प्रेरित करना, आग्रह करना, प्रस्तुत करना। २ सोखाना। ३ निचुडाना, सारहीन कराना। ४ निर्बल कराना। ५ सुखाना।
चुसाळ–देखो 'चौसाळ'।
चुस्त–वि० [फा०] १ फुर्तीला, स्फूर्ति वाला। २ सावधान, चौकन्ना। ३ तत्पर, तैयार। ४ दृढ। ५ हृष्ट-पुष्ट।
चुस्ती–स्त्री० [फा०] १ स्फूर्ति। २ सावधानी। ३ तत्परता। ४ दृढता। ५ हृष्ट-पुष्टता।
चुहणी (बौ)–१ देखो 'चुग्रणी' (बौ)। २ देखो 'चूसणी' (बौ)।
चुहळ–स्त्री० १ हसी, मजाक, ठिठोली। २ छेड-छाड। ३ गदी हरकत। —बाज–वि० चुहल करने वाला। —बाजी– स्त्री० चुहल करने का कार्य, हसी, ठिठोली।
चुहियौ–पु० लोह की गर्म सलाका का दाग। २ अग्नि दग्ध की क्रिया। ४ देखो 'चूहौ'।
चुहि, चुही–स्त्री० १ खान से पत्थर तोडने के लिये सेंध लगाने की क्रिया। २ देखो 'चार'।
चुहुटली–स्त्री० च चुपुट, चोच।
चुहुटु, चुहुटौ–देखो 'चौवटौ'।
चू–पु० १ चिडिया की बोली। २ चू-चू की ध्वनि।
चूंक–देखो 'चूंप'।
चूंकणी (बौ)–क्रि० १ ऊट के छै बाद दो दात और निकलना। २ टोकना। ३ देखो 'चूकणी' (बौ)।
चूंकळणी (बौ)–क्रि० १ धसना, घुसना, चुभना। २ टोकना। ३ चूकना।
चूंकलौ–पु० १ शस्त्रादि का नुकीला भाग। २ शस्त्र का प्रहार। ३ म्यान के शिर पर लगा धातु का उपकरण।
चूंकारौ–पु० १ चू-चूं की ध्वनि। २ विरोध मे कहा शब्द। ३ आपत्ति, एतराज।
चूंकौ–पु० १ रूई या ऊन का छोटा गुच्छा। २ छोटा बादल।
चूंखणी (बौ)–क्रि० १ स्तनपान करना। २ रूई या ऊन के रेशो को अलग-अलग करना। ३ चूसना।
चूंखाणी (बौ), चूंखावणी (बौ)–क्रि० १ स्तनपान कराना। २ रूई या ऊन के गुच्छो को पृथक-पृथक कराना। ३ चूसाना।
चूंखौ–देखो 'चूंकौ'।
चूंग–पु० एक प्रकार का अस्त्र।
चूंगणी (बौ)–क्रि० १ स्तनपान करना। २ चूसना।
चूंगयणी (नौ)–पु० दूध मुहा बच्चा, शिशु।
चूंगाणी (बौ), चूंगावणी (बौ)–क्रि० १ स्तनपान कराना। २ चुसाना।
चूंगी–देखो 'चुंगी'।
चूंघणी (बौ)–देखो 'चूंगणी' (बौ)।
चूंघाणी (बौ), चूंघावणी (बौ)–देखो 'चूंगाणी' (बौ)।
चूंच–स्त्री० [स० चचु] १ पक्षी की चोच, चचु। २ चोच की तरह का कोई तीखा मुख। ३ उमग, उत्साह। ४ जोश,

आवेग । –वि० १ पूर्ण, तृप्त, परितुष्ट । २ धुत्त । ३ मदोन्मत्त ।

चूंचक (की)–पु० १ कन्या के प्रथम प्रसव के बाद विदाई के समय दिया जाने वाला सामान । २ देखो 'चूंची' ।

चूंचड़ी, चूंचाडी–देखो 'चूंची' ।

चूंचाणी (बो), चूंचावणी (बो)–क्रि० १ गाडी आदि को अधिक दौडाना । २ अधिक काम मे लेना । ३ स्त्री-संभोग करना ।

चूंची–स्त्री० १ स्तन, कुच । २ स्तन का अग्र भाग, नोक, घुंडी । ३ स्लेट पर लिखने की वर्तिका, कलम । ४ जलती हुई तीलिका । ५ आग । ६ कलह कराने वाली बात ।

चूंचौ–पु० १ आग, पलीता । २ स्तन, कुच ।

चूंट–स्त्री० १ अगुलियो से तोडने की क्रिया या भाव, बीनाई । २ फुटकर व्यय । ३ एक ही कार्य पर थोडा-थोडा व्यय । ४ शोषण ।

चूंटणौ(बौ)–क्रि०[स०चुट] १ चुन-चुन कर अगुलियो से तोडना, तोड-तोड कर एकत्र करना । २ चुनना, बीनना । ३ ऊपर से काटकर छोटा करना, छाटना । ४ नोचना, नोच कर खाना । ५ शोषण करना । ६ व्यर्थ का खर्च कराना ।

चूंटाणौ (बौ), चूंटावणौ (बौ)–क्रि० १ चुन-चुन कर तोडाना, तुडा-तुडा कर एकत्र कराना । २ चुनवाना, बीनवाना । ३ कटवाना, छटवाना । ४ नुचवाना । ५ शोषण कराना । ६ व्यर्थ का खर्च करवाना ।

चूंटियौ–पु० १ अगुष्ठ व तर्जनी की नोक से चमडी पकड कर ली जाने वाली चुटकी, कचौटी, चमोटी । २ मर्म वचन । ३ एक प्रकार का चूरमा ।

चूंटौ–पु० १ छोटा घाम । २ छोटा डठल । ३ मक्खन की टिकिया ।

चूंडणौ (बौ)–क्रि० १ बनाना । २ आकृति या डौल तैयार करना ।

चूंडाळौ–पु० (स्त्री० चूंडाली) एक पक्षी विशेष ।

चूंण–पु० १ चुग्गा, दाना । २ चूर्ण । ३ आटा, चून । ४ जौ का आटा ।

चूंणौ (बौ)–देखो 'चुग्रणौ' (बौ) ।

चूंतरी–स्त्री० चबूतरी, चौंतरी ।

चूंतरौ–पु० चबूतरा, चौतरा ।

चूंथणौ (बौ)–क्रि० १ किसी वस्तु को निरर्थक, मसलना इधर-उधर करना । २ बार-बार छूकर गदा करना । ३ कुचलना रोदना । ४ लूटना, डाका डालना ।

चूंथाणौ (बौ), चूंथावणौ (बौ)–क्रि० किसी वस्तु को व्यर्थ मसलाना, इधर-उधर कराना । २ बार-बार हाथ मे देकर गदा कराना । ३ कुचलाना, रोदाना । ४ लुटवाना, डाका डलवाना ।

चूंथी–स्त्री० छोटा कागज, छोटा पत्र ।

चूंथौ–पु० १ चूंथा हुआ पदार्थ । २ खाने के बाद अवशिष्ट बचा भाग । –वि० १ चूंथा हुआ । २ उच्छिष्ट, अवशिष्ट । ३ उलझन वाला । (कार्य)

चूंदड़ी–स्त्री० १ दुल्हिन या सधवा स्त्रियो की चमकीदार लाल, पीली ओढ़नी । २ रग विशेष की साडी या ओढनी । —**साफौ**–पु० उक्त प्रकार के रग का साफा ।

चूंदौ (धौ)–वि० (स्त्री० चूंदी) १ छोटी आखो वाला । २ कमजोर नजर वाला ।

चूंध–स्त्री० तेज प्रकाश मे होने वाली चकाचौध ।

चूंधीजणौ (बौ)–क्रि० चौंधिया जाना ।

चूंन–पु० १ आटा । २ चूर्ण । –वि० श्वेत, सफेद* ।

चूंनड (डी)–देखो 'चूंदडी' ।

चूंप–स्त्री० १ शौक, चाव, उत्साह । २ लगन । ३ उत्कठा, प्रबल इच्छा । ४ स्वच्छता । ५ चतुराई, दक्षता । ६ नग, नगीना । ७ ऊपर के दातो मे ठीक सामने फसा कर पहनने का आभूषण । ८ चतुराई, दक्षता । ९ छोटी वस्तु के चटकने या तिडकने पर, मजबूती के लिये लगाया जाने वाला तार का बद । १० शोभा, सुन्दरता । —**चाप**–स्त्री० सफाई ।

चूंपणौ (बौ)–क्रि० १ चूसना । २ श्वास से खीचकर पीना । ३ स्पर्श करना, छूना । ४ देखो 'चूंथणौ (बौ)' ।

चूंबणौ (बौ)–क्रि० १ किसी का चुंबन लेना, चूमना । २ स्नेह प्रदर्शन करना । ३ पुचकारना ।

चूंबाणौ (बौ)–क्रि० १ किसी का चुंबन दिराना । २ चूमने के लिये प्रस्तुत करना । ३ स्नेह प्रदर्शन कराना ।

चूंमणौ (बौ)–देखो 'चूंबणौ' (बौ) ।

चूंमाणौ (बौ), चूंमावणौ (बौ)–देखो 'चूंबाणौ' (बौ) ।

चूंरी–देखो 'चवरी' ।

चूंळाई–स्त्री० एक प्रकार का पत्तीवाला शाक ।

चूंळाफळी–स्त्री० चौला नामक अनाज की फली ।

चूंळौ–पु० चौंला नामक द्विदल अन्न ।

चूंवाळीस–देखो 'चमाळीस' ।

चूक–स्त्री० १ भूल, त्रुटि, गलती । २ धोखा, छल, कपट । ३ षडयत्र । ४ कमी अभाव । ५ भ्रम, गफलत, लापरवाही । ६ अद्‌भुत कार्य । ७ अमलबेत या खट्टा शाक विशेष । ८ अपराध ।

चूकणौ (बौ)–क्रि० १ भूलना, त्रुटि या गलती करना । २ अपराध करना । ३ धोखा खाना, षडयत्र मे फसना । ४ कमी, रहना । ५ असावधानी करना । ६ लक्ष्य भ्रष्ट होना ।

७ अवसर खोना। ८ क्रम तोडना। ९ निपटना, तय होना, निर्णीत होना।

चूकमार–पु० एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

चूकाणौ (बौ), चूकावणौ (बौ)–देखो 'चुकाणौ' (बौ)।

चूकौ–पु० एक प्रकार का खट्टा साग।

चूड–स्त्री० १ स्त्रियो के हाथ का आभूषण। २ शिर के बाल।

चूडलियौ (लौ, ल्यौ)–देखो 'चूडौ'।

चूडाकरण, (क्रम)–पु० [स०] बच्चे का मुण्डन सस्कार।

चूडामण, (णि, णी)–स्त्री० [स० चूडामणि] १ शीशफूल नामक आभूषण। २ प्रधान, मुखिया। ३ सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति।

चूडाळ–पु० दोहा नामक छद का एक भेद।

चूडाळी–स्त्री० १ सधवा स्त्री। २ चूडा पहनी हुई स्त्री।

चूडावण (न)–स्त्री० १ प्रेतनी, डाकनी, चुडैल। २ दुष्टा स्त्री।

चूडावळ (ळि, ळी)–स्त्री० १ सौभाग्यवती स्त्री। २ चुडैल, पिशाचिनी।

चूडी–स्त्री० १ परिधि, गोलाई, वृत्त। २ स्त्रियो के हाथ या पैर मे पहनने का गोल व पतला कगन। ३ औजार आदि पर पडी धारी जिससे उसे परस्पर कसा जाता है। ४ ग्रामोफोन की रिकार्ड। ५ तग मोरी (पजामा)। ६ सफेद पैरो वाली एक प्रकार की बकरी। —**गर**–पु० गोल चूडिया उतारने वाला कारीगर। —**दार**–वि० जिसमे चूडिया पडी हो। —**बाजौ**–पु० ग्रामोफोन नामक वाद्य।

चूडेल, चूडेलण–स्त्री० प्रेतनी, पिशाचिनी।

चूडौ–पु० १ हाथी दात आदि की चूडियो का समूह जो प्राय विवाह के समय (कुछ जातियो मे स्थाई रूप से) बांह मे पहना जाता है। २ सौभाग्य चिह्न। ३ चोटी, शिखा। ४ हरिजन, भगी।

चूचौ–देखो 'चूनौ'।

चूगौ–पु० मुर्गी का बच्चा।

चूडी–देखो 'चूडी'।

चूण, चूणि–पु० १ सौ कौडियो के योग की सख्या। २ देखो 'चूण'।

चूणौ (बौ)–देखो 'चुगणौ' (बौ)।

चूत–स्त्री० [स० च्युति] स्त्री का गुप्तांग, योनि, भग।

चून–देखो 'चून'।

चूनउ–पु० [स० चूर्णक] १ भुना हुआ या पिसा हुआ अनाज। २ चूना।

चूनगर–पु० चूने का कार्य करने वाला कारीगर।

चूनड (डी)–देखो 'चूनडी'।

चूनारो–देखो 'चूनगर'।

चूनी–स्त्री० १ रत्न कण। २ नग, नगीना। ३ देखो 'चुनी' —**रंग**–पु० एक रग विशेष का घोडा।

चूनू–वि० श्वेत*। २ देखो 'चूनौ'।

चूनेवाळियां–स्त्री० मुसलमान वेश्याऐं।

चूनौ (न्यौ)–पु० [स० चूर्णक] १ पत्थर आदि को फूक कर तैयार किया हुआ एक तीक्ष्ण क्षार। चूना। २ हीरे, जवाहरात।

चूप–देखो 'चूंप'।

चूपणौ (बौ)–देखो 'चूंपणौ' (बौ)।

चूबारा–स्त्री० रूई धुनने व चूने आदि का कार्य करने वाली एक जाति विशेष।

चूमणौ (बौ)–देखो 'चूंमणौ' (बौ)।

चूमाणौ (बौ), चूमावणौ (बौ)–देखो 'चूंमाणौ' (बौ)।

चूर–पु० [स० चूर्ण] १ चूर्ण, चूरा। २ ध्वस, विनाश। –वि० १ अत्यन्त महीन। २ नष्ट, समाप्त। ३ अत्यधिक, बेहद। ४ धुत्त, पूर्ण।

चूरण–पु० [सं० चूर्ण] १ किसी वस्तु का महीन बुरादा, आटा। २ आटे की तरह कूटी हुई कोई औषधि। ३ हाजमे आदि के चूर्ण। ४ चूर-चूर होने का भाव। ५ आर्या छन्द का एक भेद।

चूरणियौ–देखो 'चुनियौ'।

चूरणौ (बौ)–क्रि० [स० चूर्णम्] १ किसी पदार्थ को कूट-पीट कर महीन करना, आटा बनाना। २ चूरा करना। ३ रोटी या बाटी के महीन टुकडे करना। ४ नाश करना, ध्वस करना।

चूरण्यौ–पु० मल मे पडने वाले कीट।

चूरमियौ, चूरमूं (मू)–देखो 'चूरमौ'।

चूरमुर–वि० १ चूर्ण के समान महीन, बारीक। २ चूर-चूर। –क्रि० वि० चूर करके।

चूरमौ–पु० [स० चूर्ण] १ रोटी या बाटी को बारीक कर घी-शक्कर मिला कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ। २ आटे या दाल को पीस कर घी मे भुनकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

चूरी–स्त्री० प्याज, मूली आदि को छीलकर किए हुए छोटे-छोटे टुकडे।

चूरीभाटौ–पु० घीया पत्थर।

चूरौ–पु० [स० चूर्ण] १ किसी चीज का बुरादा, चूर्ण। २ बारीक टुकडो के रूप मे कोई वस्तु।

चूळ–पु० १ रहट का एक उपकरण। २ अन्य लकडी मे फसाने के लिये निकाला हुआ किसी लकडी का साल।

३ कूल्हे की हड्डी। ४ देवी की भुजाओ का एक आभूषण। ५ फरसे की तेज धार। ६ चूल्हा।

चूलडी–स्त्री० छोटा चूल्हा

चूळिका–पु० [स० चूलिका] १ स्त्रियो का कर्णफूल। २ एक भाषा विशेष।

चूळियाळ (ळौ)–पु० एक मात्रिक छद विशेष।

चूळियौ–पु० १ कपाट की नोक। २ कूल्हा।

चूलियौ–देखो 'चूल्हौ'।

चूळौ (ळौ)–१ देखो 'चूल्हौ'। २ देखो 'चुळौ'।

चूल्हडी, चूल्ही–देखो 'चूलडी'।

चूल्हौ–पु० लकडी आदि जला कर खाना बनाने का उपकरण, चूल्हा।

चूवणौ (बौ)–देखो 'चुअणौ' (बौ)।

चूवाणौ (बौ), चूवावणौ (बौ)–देखो 'चुआणौ' (बौ)।

चूसणौ (बौ)–क्रि० १ होठो या दातो के बीच दबा कर किसी वस्तु का जीभ व श्वास से रस खींचना। चूसना। २ सार तत्त्व ग्रहण करना। ३ किसी से नाजायज फायदा उठाना।

चूसमार–पु० एक प्रकार का हिंसक पक्षी।

चूसा–स्त्री० [स० चूषा] हाथी के कमर मे बाधने की पेटी।

चूसाणौ (बौ), चूसावणौ (बौ)–क्रि० १ चूसने के लिये देना, प्रस्तुत करना। २ सार वस्तु ग्रहण कराना। ३ किसी को नाजायज फायदा उठाने देना।

चूसौ–पु० १ छूता। २ सारहीन खोखला भाग। ३ किसी प्रकार का रेशा।

चूहौ–पु० चूहा, मूषा।

चें–देखो 'चीं'।

चेंठणौ (बौ)–देखो चैंठणौ' (बौ)।

चे–पु० १ रवि। २ चन्द्रमा। ३ कृष्ण। ४ मन। ५ तलवार। ६ समूह। ७ षष्टी विभक्ति, के।

चेइ–पु० [स० चेदि] १ चेदि देश। (जैन) २ चैत्य।

चेइय–देखो 'चैत्य'।

चेइयरुक्ख (रुख)–पु० [स० चैत्यवृक्ष] १ कैवल्य ज्ञान प्राप्ति का देव वृक्ष (जैन)। २ विश्रामदायक कोई वृक्ष (जैन)। ३ ऐसा वृक्ष जिसके नीचे चबूतरा हो।

चेउलेप–स्त्री० वस्त्र वृष्टि।

चेड–पु० १ बडा भोज। २ विशाल मृत्युभोज।

चेडौ–पु० १ भूत-प्रेतादि का उपद्रव। प्रेत बाधा। २ आफत, इल्लत विपत्ति। ३ वस्त्र का छोर। ४ अन, छोर।

चेचक–स्त्री० शीतला नामक रोग।

चेजारौ–पु० दीवार की चुनाई का कार्य करने वाला कारीगर।

चेजौ–पु० १ दीवार की चुनाई का कार्य। २ आहार, भोजन। ३ गुजारा, निर्वाह। ४ देखो 'चुगौ'।

चेट–पु० [स०] १ दास, सेवक, नौकर। २ पति, स्वामी। ३ अनुरागी, आशिक। ४ नायक, नायिका का मध्यस्थ।

चेटक (कौ)–पु० एक रग विशेष का घोडा। –वि० १ क्रोधी स्वभाव का, उग्र। २ उद्धत, उद्दण्ड।

चेटल–पु० सिह का बच्चा।

चेड–देखो 'चेद'।

चेढ़ीमणौ–वि० योद्धा, वीर, पराक्रमी।

चेढ़ौ–पु० १ रत्न। २ नगीना।

चेत–पु० [स० चेतस्] १ चेतना, होश, सज्ञा। २ चित्त की वृत्ति। ३ विवेक, ज्ञान। ४ बुद्धि, विचार शक्ति। ५ सावधानी। ६ तर्कना शक्ति। ७ मन, आत्मा। ८ स्मरण, याद।

चेतकी–स्त्री० १ हरीतकि, हरड। २ तीन धारियो वाली हरडे। ३ एक रागिनी।

चेतणौ (बौ)–क्रि० [स० चेतनम्] १ चेतन होना, होश मे आना, सज्ञामय होना, जागृत होना। २ सावधान होना, होशियार होना। ३ प्रज्वलित होना। ४ विचार करके सभल जाना।

चेतन–पु० [स०] १ आत्मा, जीव। २ प्राणी, जीव। ३ मनुष्य, आदमी। ४ ईश्वर, परमात्मा। –वि० १ सजीव, जीवित। २ जीवधारी, प्राणवान। ३ जो जड न हो। ४ विकासवान। ५ दृश्यमान।

चेतनता–स्त्री० चैतन्य होने की अवस्था या भाव। जागृति।

चेतना–स्त्री० [स०] १ होश, सज्ञा, सचेतावस्था। २ बुद्धि, ज्ञान। ३ याद स्मृति। ४ सावधानी, सतर्कता। ५ समझ, विवेक। ६ जीवन।

चेताचूक–वि० १ बदहवास भयभीत। २ असतुलित। ३ गाफिल, बेसुध। ४ व्याकुल। ५ भ्रमित।

चेताणौ (बौ), चेतावणौ (बौ)–क्रि० १ चेतन करना, होश मे लाना। २ जागृत करना। ३ सावधान करना। ४ प्रज्वलित करना। ५ विचार कर सभलना।

चेतावणी (नी)–स्त्री० १ सावधान या सतर्क होने के लिये दी गई सूचना। २ असावधानी करने पर दी जाने वाली हिदायत। ३ हिदायती पत्र।

चेतुरा–स्त्री० एक प्रकार की चिडिया।

चेतौ–पु० [स० चेत] १ होश, सज्ञा। २ बोध, ज्ञान। ३ स्मरण। ४ सावधानी।

चेत्रि–देखो 'चैतरी'।

चेदि–पु० एक प्राचीन जनपद। –**राज**–पु० शिशुपाल।

चेप–पु० १ चिपकने का गुण या शक्ति। २ चिपकाने की क्रिया।

चेपकी–स्त्री० १ आवरण, ढक्कन। २ चुगली, निंदा। ३ चापलूसी।

चेपणौ (बौ)–क्रि० १ चिपकाना, चेपना, गोद आदि लगा कर परस्पर जोडना। २ सलग्न करना। ३ सटाना। ४ प्रहार या आघात करना। ५ जडना।

चेपाणौ (बौ), चेपावणौ (बौ)–देखो 'चिपकाणौ' (बौ)।

चेपाचापौ–पु० १ जोड-तोड, साधारण व्यवस्था। २ निर्वाह, गुजारा। ३ समझौता।

चेपौ–पु० १ आहार, भोजन। २ गुजारा, निर्वाह। ३ किसी को मुहरबद करने के लिये द्वार या ढक्कन पर लगाई जाने वाली चिटिका। ४ सरसो की फसल का रोग। (मेवात)

चेवडौ (रौ)–पु० सूअर का छोटा बच्चा।

चेय–पु० चित्त। (जैन)

चेर–पु० सेवक, दास, नौकर। शिष्य।

चेराई–स्त्री० नौकरी, गुलामी। सेवा।

चेरियौ–पु० चरखे का एक उपकरण।

चेरी–स्त्री० [स० चेटक] १ दासी, सेविका। २ शिष्या, चेली।

चेरौ–पु० [सं० चेटक] १ दास, सेवक, नौकर। २ शिष्य।

चेळ–पु० कपडा, वस्त्र।

चेल (क, कडौ)–पु० १ बच्चा। २ चेला।

चेलकाई–स्त्री० १ बचपन। २ शिष्यत्व।

चेलकी–देखो 'चेली'।

चेलकौ–देखो 'चेलौ'।

चेलर–पु० सूअर का बच्चा।

चेला–स्त्री० एक मजदूर जाति विशेष।

चेलिय, चेली–स्त्री० १ शिष्या। २ दासी। ३ भक्तिन।

चेलुखेप–पु० [स० चेलोत्क्षेप] आकाश मे से वस्त्रो की वर्षा।

चेळौ–पु० १ तराजू का पलडा, तुला पाट। २ पक्ष, पलडा।

चेलौ–पु० (स्त्री० चेली) १ शिष्य। २ भक्त। ३ दास ४ सूअर का बच्चा।

चेल्हर–पु० सूअर का बच्चा।

चेसटा–देखो 'चेस्टा'।

चेस्टक–वि० [स० चेष्टक] चेष्टा या प्रयत्न करने वाला।

चेस्टा–स्त्री० [स० चेष्टा] १ मन के भावो को प्रगट करने वाले कायिक व्यापार। २ नायक-नायिका के प्रेम प्रदर्शन के प्रयत्न। ३ प्रयत्न, उपाय, यत्न। ४ इच्छा। ५ हाव भाव। —**बळ**–पु० गति के अनुसार ग्रहों की प्रबलता।

चेह–स्त्री० [स० चिता] १ चिता। २ मरघट, श्मशान।

चेहरणौ (बौ)–देखो 'चै'रणौ' (बौ)।

चेहरौ–देखो 'चै'रौ'।

चंकणौ (बौ)–क्रि० १ चौकना, चमकना। २ चहकना।

चंकाणौ (बौ), चंकावणौ (बौ)–क्रि० चौकाना, चमकाना।

चंचाट–स्त्री० चहचाहट।

चंचं–स्त्री० १ पक्षियो का कलरव। २ चूं-चूं। ३ बकवास।

चंट (ठ)–स्त्री० १ चिपकने की क्रिया या भाव। २ चिपकने का गुण। ३ प्रयत्न, चेष्टा। ४ लगन, लाग। ५ चिंता। ६ एक प्रकार का विकार। ७ अकुरित होने का भाव। ८ चिडचिडाहट।

चंटणौ (बौ), चंठणौ (बौ)–क्रि० १ चिपकना। २ सलग्न होना। ३ प्रयत्न करना, चेष्टा करना। ४ लगन रखना, लाग करना। ५ चिंता करना। ६ चिडचिडाना। ७ डक या दात से काटना। ८ अकुरित होना।

चंटाणौ (बौ), चंठाणौ (बौ), चंटावणौ (बौ), चंठावणौ (बौ)–क्रि० १ चिपकाना। २ संलग्न कराना। ३ प्रयत्न कराना। चेष्टा कराना। ४ लगन रखवाना। ५ चिंता कराना। ६ चिडचिडाने के लिये प्रेरित करना। ७ डक या दात से कटवाना।

चै–अव्य० सबध सूचक अव्यय 'के'। –पु० १ दूत। २ चोर। ३ युद्ध। –वि० १ प्रेरक। २ दुष्ट।

चैडौ–१ देखो 'चेरौ'। २ देखो 'छेडौ'।

चैत–पु० [स० चैत्र] फाल्गुन के बाद पडने वाला मास।

चैतन्य–वि० [स०] १ जागृत, चेतन। २ सचेत, सावधान। –पु० १ चित्त स्वरूप आत्मा। २ परमात्मा। ३ ज्ञान बुद्धि। ४ एक प्रसिद्ध धर्म प्रचारक। ५ जीवन। —**भैरवी**–स्त्री० एक भैरवी विशेष।

चैतरी–वि० चैत्र मास मे होने वाला।

चैतवाडौ–पु० वसत ऋतु।

चैती–स्त्री० रवी की फसल। –वि० चैत्र का, चैत्र सबंधी।

चैत्य–पु० [स०] १ मदिर,देवालय। २ यज्ञशाला। ३ देवमूर्ति। ४ जैनियो का धार्मिक केन्द्र। ५ शव स्मारक। ६ चिता। ७ श्मशान स्थान, मरघट। —**परवाडी**–स्त्री० अनुक्रम से मदिरो की यात्रा। (जैन)

चैत्र (क)–देखो 'चैत'।

चैत्ररथ–पु० [स०] १ कुबेर का बगीचा। २ एक प्राचीन ऋषि।

चैत्रावळि (ळी)–स्त्री० १ चैत्र मास की पूर्णिमा। २ चैत्रशुक्ला त्रयोदशी।

चैत्रि (त्री)–देखो 'चैतरी'।

चैद–वि० चेदी देश का, चेदी देश सबधी।

चैन–पु० १ आराम, सुविधा, सुख। २ शाति, तसल्ली। ३ आनन्द हर्ष। ४ कष्ट, पीडा आदि से मुक्ति। ५ ऊट का आभूषण विशेष। ६ देखो 'चहन'।

चैनाळ–देखो 'छिनाळ'।

चैबचौ–देखो 'चहबचौ'।

चैबरौ–पु० सूअर का बच्चा।

चंवास–अव्य० [फा० शाबाश] शाबाश, धन्य, साधु ।
चंवासी–स्त्री० [फा० शाबाशी] वाह-वाही । धन्यवाद ।
चंर–पु० एक मरुस्थलीय पौधा विशेष ।
चं'र–स्त्री० आलोचना, निंदा ।
चंरणौ (बौ)–क्रि० आलोचना करना । निंदा करना ।
चं'राणौ (बौ), चं'रावणौ (बौ)–क्रि० आलोचना कराना । निंदा कराना ।
चं'रौ–पु० [फा० चेहरा] १ मुह मुखाकृति, शक्ल, सूरत । २ मुखाकृति का चित्र या खिलौना । ३ सामने की हजामत ।
चंल–पु० [स०] १ वस्त्र, कपडा । २ पोशाक । ३ वस्त्र खण्ड ।
चंलक–पु० एक प्राचीन वर्णसकर जाति ।
चंहन–पु० [स० चिह्न] १ चिह्न, निशान । २ ध्वजा, पताका ।
चंहरणौ (बौ)–देखो 'चं'रणौ' (बौ) ।
चंहरौ–देखो चं'रौ' ।
चंहैन–देखो 'चंहन' ।
चो–देखो 'चू' ।
चोंगियौ–पु० खाट की बुनाई का एक ढग विशेष ।
चोच (ड़ली)–स्त्री० [स० चचु] १ पक्षी का एक मुख, चोच । २ लबा मुख । ३ कुए से पानी निकालने का उपकरण । ४ बैलगाडी का अग्रभाग । —**दार**–वि० चोच वाला ।
चोतरौ–पु० चबूतरा ।
चोंप–देख 'चूप' ।
चोपौ–देखो 'चापौ' ।
चो–पु० १ मनुष्य । २ बैल । ३ अश्व, घोडा । ४ महावत । –स्त्री० ५ गौ गाय । ६ चतुरगिनी सेना । –अव्य० षष्ठी विभक्ति का चिह्न 'का' ।
चोग्रौ–देखो चोवौ' ।
चोकड़–देखो 'चापड' ।
चोकड़ी–देखो 'चौकडी' ।
चोकी–स्त्री० १ चार कोने की तावीज, गडा । २ पुलिस का एक घटक ।
चोकौ–देखो 'चौकौ' ।
चोख–स्त्री० १ स्फूर्ति । २ तेजी । ३ उमग, जोश । ४ शौक, मौज ।
चोखळौ–देखो 'चौखळौ' ।
चोखा–पु० चावल, अक्षत ।
चोखाई–स्त्री० अच्छापन अच्छाई, गुण ।
चोखौ–वि० [स० चोक्ष] (स्त्री० चोखी) १ अच्छा । २ उत्तम, श्रेष्ठ । ३ प्रिय, मधुर । ४ स्वादिष्ट । ५ चतुर, दक्ष । ६ विशुद्ध । ७ सुन्दर । ८ सच्चा, ईमानदार । ९ भला, चगा । —**भौंठौ**–वि० भला-बुरा, अच्छा-बुरा ।
चोगड, चोगडद (द्दा)–देखो 'चौगडद' ।
चोगर–पु० उल्लू के समान आखो वाला घोडा ।
चोगान–देखो 'चौगान' ।
चोगुड़दाई–स्त्री० चौडाई । –क्रि० वि० चारो ओर, चौतरफ ।
चोगौ–पु० ढीला कुर्ता, चोला, चोगा ।
चोघडियौ–देखो 'चौघडियौ' ।
चोघणौ (बौ)–क्रि० १ ढूढना, तलाश करना । २ शोध करना । ३ देखना, गौर करना ।
चोघाणौ (बौ), चोघावणौ (बौ)–क्रि० १ ढुढवाना, तलाश कराना । २ शोध कराना । ३ दिखाना, गौर कराना ।
चोडे-धाड़ै–देखो 'चौडे-धाडै ।
चोच–स्त्री० [स०] १ चर्म, चमडी । २ खाल । ३ छाल ४ वल्कल । ५ आडम्बर । ६ छल, कपट ।
चोचळा–पु० नाज-नखरे ।
चोचळी (ळौ)–वि० नखरेबाज ।
चोचा–स्त्री० १ लडाई । २ कलह । निंदा, आलोचना । —**कारौ**–वि० झगडालु । निंदक ।
चोचाळौ–वि० (स्त्री० चोचाळी) कलह प्रिय, झगडालु ।
चोचौ–वि० १ थोड़ी अल्प । २ साधारण ।
चोचौ–पु० १ झगडा, लडाई । २ उपद्रव, दगा । ३ प्रलाप, बकवाद । ४ आडम्बर ढोग ।
चोज–पु० १ विनोद पूर्ण बात, हसी, मजाक । २ उमग, उत्साह । ३ साहस । ४ चतुराई । ५ छल, कपट, धोखा । ६ रसास्वादन । ७ आनन्द, मौज, मस्ती । ८ स्थान, जगह । ९ आभा, काति । १० प्रभाव, असर ११ उदारता ।
चोजाळौ, चोजीलौ–वि० (स्त्री० चोजाळी, चोजीली) १ हसी मजाक करने वाला, विनोदी । २ भेदिया । ३ धोखेबाज । ४ निपुण-वाक्पटु । ५ मस्त ।
चोजौ–पु० १ धोखा, छल । २ चोज ।
चोट–स्त्री० १ आघात, प्रहार । २ टक्कर । ३ जख्म, घाव । ४ वार, आक्रमण । ५ क्षति, नुकसान । ६ मानसिक आघात, दुख । ७ चाल, षडयत्र । ८ धोखा, विश्वास-घात । ९ ताना, व्यग । १० छेड-छाड । ११ झटका ।
चोटडियाळ (ळौ)–देखो चोटियाळ' ।
चोटळियौ, चोटलौ–देखो 'चोटी' ।
चोटियाळ (ळौ)–पु० (स्त्री० चोटियाळी) १ एक प्रकार का गीत । २ चोटी वाला । ३ हिन्दू । ४ दोहे का एक भेद । ५ चोटी या रेशेवाला नारियल । जटावाला नारियल ।
चोटियौ–पु० [स० चूड] १ डिंगल का एक गीत । २ राजस्थानी मे दोहे का एक भेद । ३ छोटा रस्सा । ४ एक प्रकार का घोडा । ५ घास के मेदानो मे खडी घास से बनाया विभाजक चिह्न । ६ आक के रेशो की पूणी । ७ शिखर वाली ढेरी ।

८ घास का पुग्राल । ९ चुट्टा । १० तराजू की डंडी के मध्य की डोरी ।

चोटी–स्त्री० [सं०] १ बालों की शिखा । २ स्त्रियों की वेणी । ३ शिर की किलगी । ४ ऊपरी भाग, शिखर, पर्वत शिखर । ५ कुर्नी । ६ सारंगी का ऊपरी भाग । **—ग्राल-ग्राळौ**='चोटियाळ' । **—कट**-पु० अनुयायी शिष्य । **—बध**-पु० स्त्रियों के शिर का ग्राभूषण विशेष । २ शिष्य । **—बंडियो**–पु० चोटी कटा । मुसलमान । ईसाई शिष्य विशेष कृपा पात्र । **—याळ, याळौ**='चोटियाळ' । **—वाळ, वाळौ**='चोटियाळ' ।

चोटौ–पु० १ मोटी शिखा । २ चोटा ।

चो'ट्टौ–वि० चोर ।

चोडाळ–पु० एक प्रकार की सवारी । वाहन ।

चोडी–स्त्री० कूए के मध्य का भाग, बीच का गड्ढा ।

चोडोळ (ळौ)–पु० हाथी, गज ।

चोढ़रौ–पु० सवार, सवारी करने वाला ।

चोतरफ–देखो 'चौतरफ' ।

चोताळौ–देखो 'चौताळौ' ।

चोथ–स्त्री० १ ग्राभूषण विशेष । २ देखो 'चौथ' ।

चोदक (क्कड)–वि० स्त्री संभोग करने वाला, बहुकामी ।

चोदणौ (बौ)–क्रि० संभोग करना, स्त्री प्रसंग करना ।

चोदन–स्त्री० स्त्री प्रसंग, मैथुन ।

चोदस–स्त्री० चतुर्थ दशी की तिथि ।

चोदाई–स्त्री० १ मैथुन का कार्य । २ संभोग कराने का पारिश्रमिक ।

चोदास–पु० कामेच्छा, मैथुनेच्छा ।

चोदू–वि० भीरु, डरपोक ।

चोद्दग–वि० चौदह । (जैन)

चोधरौ–देखो 'चौधरौ' ।

चोधार (रण, रौ)–देखो 'चौधार' ।

चोप–स्त्री० १ सेवा, पूजा । २ प्रार्थना, विनती । ३ ध्यान । ४ लगन । ५ भक्ति । ६ श्रद्धा । ७ कृपा, दया, अनुकम्पा । –क्रि० वि० चारों ग्रोर ।

चोपइ, चोपई–स्त्री० एक मात्रिक छन्द विशेष ।

चोपग (गौ)–देखो 'चौपगौ' ।

चोपड़–पु० १ घी ग्रादि स्निग्ध पदार्थ । २ देखो 'चौपड' ।

चोपडणौ (बौ)–क्रि० १ घी तेल ग्रादि स्निग्ध पदार्थ लगा कर चिकना करना । २ खिचडी ग्रादि पर घी डालना ।

चोपडाणौ (बौ), चोपडावणौ (बौ)–क्रि० १ घी ग्रादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर चिकना कराना । २ खिचडी ग्रादि पर घी डलवाना ।

चोपडास–देखो 'चोपड' ।

चोपडौ–पु० १ तिलहन की फसल में होने वाला एक रोग । २ देखो 'चौपडौ' ।

चोपण–स्त्री० लोहे को सुधारने का एक उपकरण । २ ग्राभूषणों की खुदाई का उपकरण ।

चोपदार–देखो 'चोबदार' ।

चोपन–देखो 'चौपन' ।

चोपाड–स्त्री० चौपाल ।

चोपायी–स्त्री० १ चौपाई छन्द । २ चारपाई ।

चोपाळौ–पु० डोली, पालकी, शिविका ।

चोप्पालग–पु० मस्त हाथी । (जैन)

चोफाड–देखो 'चौफाड़' ।

चोफाडणौ (बौ)–क्रि० १ चार भागों में विभक्त करना । २ चार फाडे करना । ३ फाटना । ४ नष्ट करना ।

चोफाड़, चोफाडा–क्रि० वि० १ चारों ग्रोर, चौतरफ । २ चार फाडों से ।

चोफेर–देखो 'चौफेर' ।

चोब–स्त्री० १ चुभने के क्रिया या भाव । २ चुभन । ३ तीक्ष्ण दर्द, पीडा । ४ कूए की खुदाई का प्रारंभ । ५ छोटे-छोटे पौधों की बुवाई, अंकुरण । ६ इस प्रकार गाडे जाने वाले पौधे । ७ तालाब के मध्य का गहरा गड्ढा । ८ शामियाने का बीच का खंभा । ९ नगाड़े का डंडा । १० सोने चांदी की मूंठ वाली छडी ।

चोबचीणी–स्त्री० दीपान्तरवचा नामक जड़ी जो रक्त शोधन करती है ।

चोबणौ–पु० जूते का कसीदा ।

चोबणौ (बौ)–क्रि० १ चुभाना, तीक्ष्ण वस्तु धंसाना । २ धार की रगड लगाना । ३ कूए की खुदाई प्रारंभ करना । ४ छोटे पौधों को ग्रलग-ग्रलग गडाना, अंकुरित करना ।

चोबदार–पु० राजा व जागीरदारों का एक ग्रनुचर ।

चोबाई–स्त्री० चोबने की क्रिया या भाव ।

चोबाणौ (बौ) चोबावणौ (बौ)–क्रि० १ चुभवाना, तीक्ष्ण वस्तु को धसवाना । २ धार की रगड लगवाना । ३ कूए की खुदाई प्रारंभ कराना । ४ छोटे पौधों को ग्रलग-ग्रलग गढवाना ।

चोबारौ–देखो 'चौबारौ' ।

चोबोलौ–पु० एक मात्रिक छंद विशेष ।

चोबौ–पु० शक सन्देह, ग्राशंका ।

चोभ–देखो 'चोब' ।

चोभको–देखो 'चभको' ।

चोभणौ–देखो 'चोबणौ' ।

चोभणौ (बौ)–देखो 'चोबणौ' (बौ) ।

चोभौ देखो 'चोबौ' ।

चोमकबीवो–पु० चार मुह का दीपक ।
चोमुखो–देखो 'चौमुखो' ।
चोय–स्त्री० १ त्वचा, चमडी । २ छाल । (जैन)
चोयग्र–पु० एक प्रकार का फल ।
चोयरा–वि० प्रेरणा करने वाला ।
चोयणा–स्त्री० प्रेरणा । (जैन)
चोयाल–स्त्री० गढ के ऊपर का स्थान । (जैन)
चोयाळा, चोयाळीसा–वि० चमालीस ।
चोरग–देखो 'चौरग' ।
चोर–पु० [स०] १ चुपके से किसी वस्तु का हरण कर लेने वाला, अपहरणकर्त्ता । उचक्का । २ ठग । ३ डाकू । ४ छिपा कर रखा ताश का पत्ता । ५ एक प्रकार का गध द्रव्य । ६ एक प्रकार का सर्प । –वि० १ जिसके वास्तविक वाह्य स्वरूप का पता न चले । २ काला, श्याम ❊ । —**आळो**–पु० गुप्त ताका । —**कार,कारी,कळी काळी**–स्त्री० चोर का कार्य, चोरी । —**खांनो**–पु० गुप्त खाना, कोष्ठक, दराज । —**खिड़की**–स्त्री० गुप्त द्वार । —**गळी**–स्त्री० गुप्त व सकरा रास्ता । —**गाय**–स्त्री० दूध दूहते समय दूध न उतारने वाली गाय । —**जमी, जमीन**–स्त्री० ऊपर से ठोस व अन्दर से पोली जमीन । —**ताळो**–पु० गुप्त ताला । —**दांत**–पु० अतिरिक्त दात । —**पहरो, पै'रो**–पु० गुप्त प्रहरा, जासूसी ।
चोरग–पु० एक सुगधित वनस्पति । (जैन)
चोरडो, चोरटो–देखो 'चोर' ।
चोरणो (बो)–क्रि० १ कोई वस्तु चुपके से लेना, उठा लेना । २ अपहरण करना । ३ आकर्षित करना । ४ मोह लेना ।
चोराकूटो–पु० चोरी-डकैती का कार्य ।
चोराचोरी–क्रि० वि० चुपके-चुपके, गुप्त रूप से ।
चोरावणो (बो)–देखो 'चुराणो' (बो) ।
चोरिय–स्त्री० १ चोरी । २ मारपीट । ३ डकैती । (जैन)
चोरियो–पु० पुताई आदि के समय रह जाने वाला धब्बा ।
चोरी–स्त्री० १ चुपके से किसी वस्तु को हथियाने की क्रिया । २ अपहरण, हरण । ३ ठगी । ४ डकैती ।
चोळ (ल)–पु० [स० चोल] १ दक्षिण भारत का एक जनपद । २ एक प्राचीन राजपूत वश । ३ लाल रग । ४ लाल रग का वस्त्र । ५ चोला । ६ मजीठ । ७ कवच । ८ आनद, उमग । ९ रति क्रिया । १० क्रीडा, विनोद । ११ रुचि, लगन । १२ कचुकी । –वि० लाल ।
चोळग–पु० रक्त ।
चोळगोळ–पु० आग से तपा लाल गोला ।
चोळचचोळ–पु० क्रोध से लाल नेत्र ।
चोळचख–पु० शेर ।
चोळचखो (खौ)–वि० क्रोध से लाल नेत्रो वाला ।
चोळबोळ–वि० १ लाल रगा हुआ, रक्ताभ । २ उन्मत्त, मस्त ।
चोळरग–पु० लाल रंग, मजीठ रंग ।
चोळवट (ट)–पु० [स० चोलपट्ट] लाल वस्त्र, टूल ।
चोळवांन (वन्न)–वि० रक्त वर्ण, गहरा लाल ।
चोळियो–देखो 'चोळो' ।
चोळणो (बो)–क्रि० मसलना ।
चोळी–स्त्री० [स० चोली] १ स्त्रियो के कुचो पर पहनने का वस्त्र, अगिया । २ मजीठ । ३ अगरखीनुमा एक स्त्रियो का वस्त्र विशेष । ४ पान रखने की डलिया —**मारग** –पु० वाममार्ग का एक भेद ।
चोळीय–पु० नौ नाथो मे से एक ।
चोळवो–वि० लाल ।
चोळो–पु० १ साधु फकीरो का चोगा । २ ढीला-ढाला कुर्ता । ३ देह, शरीर, तन । ४ इल्लत, आफत ।
चोल्यो–पु० १ टोकरा । २ देखो 'चोळो' ।
चोवखो–देखो 'चोखो' ।
चोवड़ो–देखो 'चौवड़ो' ।
चोवटियो, चोवटो–देखो 'चौवटो' ।
चोवाचदण–पु० चदनादि सगुधित द्रव्य ।
चोवो–पु० एक प्रकार का सुगधित पदार्थ ।
चोसगी–देखो 'चोसागी' ।
चोस–स्त्री० कांमी ।
चोसणो (बो)–देखो 'चूसणो' (बो) ।
चोसर–देखो 'चौसर' ।
चोसरो–देखो 'चौसरो' ।
चोसांगी, चोसींगो–पु० [स० चतु शृ गी] १ चार सीग वाला । २ एक प्रकार का कृषि उपकरण ।
चोहट (टो)–देखो 'चौवटो' ।
चोहथी–देखो 'चौहथी' ।
चोहां–वि० चारो ।
चौंकणो (बो)–क्रि० १ चमकना, भिझकना । २ सावधान होना, जागृत होना । ३ गुस्सा करना ।
चौंकलो–देखो 'चू कलो' ।
चौंकाणो (बो)–क्रि० १ चमकाना, भिझकवाना । २ सावधान करना, जागृत करना । ३ गुस्सा कराना ।
चौंगियो–देखो 'चोंगियो' ।
चौंतरो–देखो 'चबूतरो' ।
चौंतीस–देखो 'चौतीस' ।
चौंप–स्त्री० १ कीर्ति, यश । २ देखो 'चोप' ।

चौंरी—देखो 'चवरी'।
चौवटो—देखो 'चौवटो'।
चौ—पु० १ मनुष्य। २ बैल। ३ अश्व, घोडा। ४ महावत। ५ रस। ६ गौ, गाय। —वि० चार।
चोइस—वि० बीस व चार, चौवीस। —पु० चौवीस की सख्या, २४।
चौईसी—पु० २४ की सख्या का वर्ष या संवत।
चौग्रौ—१ देखो 'चोभौ'। २ देखो 'चोवौ'।
चौक—पु० [स० चतुष्क] १ मुहल्ले या मकान के बीच की खुली जगह। २ चौराहा। ३ खुला मैदान। ४ चार कोने का खुला चबूतरा। ५ पीठ। ६ काष्ठ या धातु की चौकी। ७ भूल-चूक। ८ मागलिक अवसरो पर आटे, अबीर आदि से बनाया हुआ क्षेत्र। ९ एक देशी खेल।
चौकडा—पु० मर्दों के कान के आभूषण।
चौकड़ालगाम—स्त्री० एक प्रकार की लगाम।
चौकडी—स्त्री० १ चार व्यक्तियो की मडली। २ चार का समूह। ३ चार युग। ४ चारो ओर से होने वाला तलवारो का प्रहार। ५ चारो पैरो से एक साथ भरी जाने वाली छलाग। ६ चार कोने का खड्डा। ७ बाण के पिछले शिरे पर लगने वाला उपकरण। ८ पगडी बाधने की एक विधि। ९ चार घोडो की बग्घी। १० चार व्यक्तियो द्वारा खेला जाने वाला ताश का एक खेल।
चौकडौ—पु० १ घोडे के मुह पर लगाई जाने वाली लगाम। २ एक प्रकार का आभूषण। ३ एक विषैला जन्तु विशेष।
चौकणौ (बौ)—क्रि० १ भूमि की जुताई करना। २ बुवाई के लिये खेत मे अनाज के दाने बिखेरना, छितराना। ३ चारो ओर से आवेष्टित करना, घेरना। ४ चकित होना।
चौकतोख—स्त्री० मान प्रतिष्ठा।
चौकनी—देखो 'चोसागी'।
चौकन्नौ—वि० (स्त्री० चौकन्नी) १ सतर्क, सावधान, सन्नद्ध। तत्पर, तैयार। २ चार कान वाला।
चोकळ—पु० [स० चतुष्कल] चार मात्राओ का समूह। —वि० चार कलाओ वाला।
चौकळियौ, चौकळौ—वि० १ चार कलाओ वाला। २ चार-चार मात्रा के समूह वाला छन्द। ३ देखो 'चौखळौ'।
चौकस—वि १ सचेत, सतर्क, सावधान। २ ठीक, सही। ३ पक्का निश्चित। ४ स्पष्ट। —पु० १ ढूढने का प्रयास, खोज। २ शोध। ३ जाच, पडताल। —क्रि० वि० १ प्रत्यक्ष सामने। २ निश्चय ही, अवश्य।
चौकसाई, चौकसी—स्त्री० १ सावधानी, सतर्कता। २ खोज, तलाश। ३ छान-बीन। ४ चौकीदारी। ५ सुरक्षा।
चोका—स्त्री० तलवार की मूठ का एक भाग।
चौकाणौ (बौ), चौकावणौ (बौ)—क्रि० १ भूमि की जुताई करवाना। २ बोवाई के लिये खेत मे अनाज छितरवाना, छटवाना। ३ देखो 'चौंकाणौ' (बौ)।
चौकी—स्त्री० [स० चतुष्की] १ चार पाये या चार कोनो का आसन। २ मदिर के ऊपर का चौकोर घेरा। ३ सिपाहियो का एक दल जो स्थान-स्थान पर चौकसी के लिये तैनात रहता है। इस दल का कार्य स्थान। ४ निगरानी, पहरा। ५ पडाव ठहराव। ६ चार कोनो की तावीज, गडा। ७ चार कोने का आभूषण। ८ गले का एक आभूषण। ९ सेना की टुकडी। १० चकला। ११ राजा या जागीरदार को आमत्रित कर भेंट की जाने वाली धन राशि। १२ छोटा चबूतरा। १३ खेत की चौकीदारी के बदले दिया जाने वाला लगान। १४ चार पत्तियो वाला ताश का पत्ता। —खांनौ—पु० पहरा देने का स्थान —दार—पु० पहरेदार, रखवाला। —दारी—स्त्री० पहरे का कार्य, निगरानी। चौकीदार का पद। चौकीदार का वेतन या पारिश्रमिक। —वट—पु० काष्ठ की चौकी, आसन पाट।
चौकूट—देखो 'चौकूट'।
चौकूटौ—देखो 'चौकटौ'।
चौकूणौ—वि० १ चार कोने का। २ समचौरस।
चौकोर—वि० चार कोनों का, चारो ओर से बराबर। —स्त्री० क्षत्रियो की एक शाखा।
चौकौ—पु० [सं० चतुष्क] १ चार कोने का कोई खण्ड। २ चार का अक। ३ गोबर लीप कर शुद्ध किया स्थान। ४ ब्राह्मणो का रसोईघर या रसोई के लिये निश्चित स्थान। ५ एक ही प्रकार की चार वस्तुओ का समूह। ६ चार पत्तियो का ताश का पत्ता। ७ दत-क्षत का निशान। ८ सामने का दत समूह। ९ चार की संख्या का वर्ष।
चौखड—पु० १ चार खण्ड। २ चौथी मजिल। ३ चार भाग वाला।
चौखडी—स्त्री० चौथी मजिल।
चौखड़ौ—देखो 'चौकडौ'।
चौखट—स्त्री० १ चार मोटी लकडियो का ढाचा जिसमे कपाट के पल्ले अटकाये जाते हैं। २ देहलीज। ३ ताश के पत्तो की चोकौर बूटी।
चौखटियौ (टौ)—पु० १ तस्वीर आदि की फ्रेम। २ आकृति, शक्ल।
चौखणौ—वि० चार कोष्ठक या खण्डो वाला।
चौखळौ—पु० १ किसी गाव या प्रदेश के चारो ओर का क्षेत्र या प्रदेश। २ चारो ओर का समुदाय।
चौखूट—पु० [स० चतुष्कोटि] १ चारो दिशा। २ चारो कोने।
चौखूटौ—वि० चार कोने का।

चौगड़द, चौगडदाई–क्रि०वि० चारो ओर।
चौगड़ो–वि० चार।
चौगट–देखो 'चौखट'।
चौगडो–वि० चार गुना।
चगणो–वि० [स० चतुर्गुण] चार गुणा।
चोगणो (बो)–क्रि० देखना।
चौगरद–देखो 'चौगडद'।
चौगस–देखो 'चौकस'।
चौगान–पु० [फा०] १ खुला व विस्तृत मैदान। २ खुला आगन।
चौगानियो–वि० चार तहो या परतो का। –पु० दशहरे के दिन काटा जाने वाला मस्त भैंसा।
चौगिरद, चौगुडदा–देखो 'चौगडद'।
चौगुणो–वि० (स्त्री० चौगुणी) चार गुणा।
चौगो–पु० १ चार दात वाला छोटा बैल या भैंसा। २ चोगा, चोला। ३ चार का अक। ४ चार का वर्ष।
चौगोनी–स्त्री० १ छडी, बेंत। २ गेंद का बल्ला।
चौघडियो चौघडो–पु० १ लगभग चार घडी का समय, समय का एक विभाग। २ उक्त समय के अन्त मे बजने वाला घटा। ३ मुहूर्त विशेप।
चौड़–पु० नाश, घ्वस।
चौडाई–स्त्री० चौडापन, मोटाई। अर्ज।
चौडै–क्रि० वि० खुले मे, प्रत्यक्ष मे, प्रगट रूप मे। —**धाडै**–क्रि० वि० खुले आम, दिन दहाडे।
चौडोतरसो–पु० एक सौ चार की सख्या।
चौडो–वि० (स्त्री० चौडी) १ विस्तृत, फैला हुआ। २ लम्बाई से भिन्न दिशा मे फैला हुआ।
चौज– देखो 'चोज'।
चौजुगी–स्त्री० चार युगो का समूह।
चौडोळ–पु० १ हाथी। २ पालकी।
चौतरफ–क्रि० वि० चारो ओर।
चौतरी–देखो 'चौपडी'।
चौतरो– देखो 'चबूतरो'।
चौतारो–पु० चार तारो का एक वाद्य। एक प्रकार का कपडा।
चौताळो–पु० किसी क्षेत्र के गावो का समूह।
चौतीणो–पु० चार मोट या चार रहट एक साथ चलने लायक बडा कूआ।
चौतीस–वि० [स० चतुस्त्रिंशत] तीस व चार। –पु० तीस व चार की सख्या, ३४।
चौतीसो–पु० चौतीस का वर्ष।
चौतुको–वि० चार तुको वाला।
चौत्रप–देखो 'चोतरफ'।
चौत्रीस–देखो 'चौतीस'।
चौथ–स्त्री० [स० चतुर्थी] १ चतुर्थी तिथि। २ विवाह के बाद का चौथा दिन। ३ चौथा भाग। ४ मराठो द्वारा लिया जाने वाला एक कर। ५ लुटेरो से रक्षा करने के लिये दिया जाने वाला कर। ६ आभूषण विशेष। —**पण, पणो**–पु० चौथापन, वृद्धावस्था। —**भक्त**–पु० उपवास। (जैन)
चौथड़ी–स्त्री० छोटा चबूतरा।
चौथड़ो–पु० बडा चबूतरा।
चौथाई–स्त्री० चौथा भाग।
चौथालो– देखो चौतालो'।
चौथियो–पु० १ हर चौथे रोज आने वाला ज्वर। २ चौथे भाग का हकदार। ३ 'चौथ' वसूल करने वाला व्यक्ति।
चौथोपछेवडी–स्त्री० वृद्धावस्था।
चौथो–वि० [स० चतुर्थ] (स्त्री० चौथी) तीन के बाद वाला, चौथा, चतुर्थ। —**आसरम**–पु० सन्यास आश्रम। वृद्धावस्था।
चौदत (तो)–वि० १ प्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त। २ प्रतिष्ठित। ३ चार दात वाला।
चौद–देखो 'चवदै'।
चौदस (सि, स्स)–स्त्री० चतुर्दशी की तिथि।
चौधर-स्त्री० चौधराहट, चौधराई।
चौधरण–स्त्री० चौधरी की स्त्री।
चौधराई (रात)–स्त्री० १ चौधरी का पद व कार्य। २ इस पद का या कार्य का वेतन।
चौधरी–पु० [स० चतुर्धरी] १ जागीरदार के पास गाव का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति। २ राज्य का बडा सामन्त जिसकी स्वीकृति हर महत्वपूर्ण कार्य मे जरूरी होती थी। (स्त्री० चौधरण) ३ जाट, सीरवी, पटेल आदि।
चौधरो–पु० चार दरवाजा का कमरा या कक्ष।
चौधार, चौधारण, चौधारी-पु० १ चार धारो वाला भाला। २ एक प्रकार का बाण। —**धारी**–वि० भाला रखने वाला।
चौनिजर, चौनिजरे, चौनीजर–क्रि० वि० १ आमने-सामने। २ सम्मुख, समक्ष।
चौपइया चौपई–स्त्री० एक मात्रिक छद विशेष।
चौपग (गो, ग्गो)–पु० चार पैर वाला पशु।
चौपड–पु० [सं चतुष्पट] १ चौसर से खेलने का चार पट्टियो का खेल। २ चौसर के खाने के अनुसार पलग की बुनावट। ३ चौराह। ४ देखो 'चोपड'।
चोपडी–स्त्री० १ छोटी बही। २ छोटी पजिका। ३ कोपी। ४ छोटी पुस्तक। ५ चोपड। ६ चार परतो वाली वस्तु।

चौपडी–पु० १ पचाग-पत्र। २ कुकुम पत्रिका। ३ पूजा के लिये कुकुम-चावल रखने का पात्र। ४ वशावली लिखने की बही। ५ बही। ६ चार परतो वाला पदार्थ।

चौपट–वि० १ खुला। २ चारो ओर से खुला। ३ नाश, ध्वस। ४ देखो 'चौपड'।

चौपथ–पु० [स चतुष्पथ] चौराहा, चौरास्ता।

चौपद (दी)–पु० [सं० चतुष्पद] चौपाया जानवर।

चौपदार–देखो 'चोबदार'।

चौपन–वि० पचास व चार।–पु० पचास व चार का अक, ५४।

चौपनियौ–पु० १ छोटी बही, रोजनामचा। २ चार पन्ने का।

चौपनौ–पु० ५४ का वर्ष।

चौपाई–स्त्री० एक मात्रिक छद विशेष।

चौपायौ–पु० [स० चतुष्पद] चार पैरो वाला पशु।

चौफळौ–पु० १ चारो ओर धारो वाला शस्त्र। २ चारो पावो से चौकडी भरने वाला पशु।

चौफाड–देखो 'चोफाड'।

चौफूली–स्त्री० १ एक प्रकार की परेख। २ आक के पुष्प के अन्दर का भाग।

चौफेर–क्रि०वि० चारो ओर।

चौफेरी–स्त्री० १ चारो ओर की परिक्रमा। २ विवाह की प्रथम रात्रि। (राजपूत)

चौबदी (बंधी)–स्त्री० १ छोटी व चुस्त अगिया। २ घोडो के चारो पावो मे लगाई जाने वाली नालें।

चौवगळौ–पु० कुरती, फुतही, अगे आदि का एक भाग।

चौवळ–क्रि० वि० चारो ओर।

चौबळदी–स्त्री० चार बैलो की गाडी।

चौबा–स्त्री० एक ब्राह्मण जाति।

चौबाई–स्त्री० एक प्रकार की गाठ, ग्रथि।

चौबायौ–वि० चारो ओर का।

चौबार–वि० १ चार द्वार वाला। २ प्रगट, खुले आम।

चौबारौ–पु० १ चारो ओर से खुला कक्ष। २ बैठक का कक्ष। ३ एक प्रकार की शराब।

चौबिस, चौबीस–वि० बीस और चार। –पु० बीस और चार की संख्या, २४।

चौबीसौ–पु० चौबीस का वर्ष।

चौबोली–स्त्री० १ एक मात्रिक छन्द विशेष। २ एक अन्य मात्रिक छन्द।

चौभग–वि० निर्भय, निशक।

चौभट–वि० खुला प्रकट।

चौभुजा–वि० चार भुजाओ वाला। –पु० श्रीविष्णु।

चौमक–स्त्री० हटडी।

चौमाळ, चौमाळी, चौमाळीस–देखो 'चमाळीस'।

चौमास–पु० चातुरमास, वर्षा ऋतु।

चौमासियौ–पु० वर्षा ऋतु सबधी।

चौमासी–स्त्री० वर्षा ऋतु सम्बन्धी एक लोकगीत।

चौमासौ–पु० [स० चतुर्मास] १ वर्षा ऋतु, वर्षा काल। २ वारिस का वातावरण।

चौमुडा–देखो 'चामुडा'।

चौमेळौ–पु० दृष्टि मिलन, चार आखे होना।

चौमुख (मुखौ)–पु० १ ब्रह्मा। २ चार खानो का पात्र।

चौरंग (गि गी, गौ)–पु० १ तलवार का एक वार विशेष। तलवार का हाथ। २ युद्ध, समर। ३ ससार का आवागमन। ४ प्राणियो की चार योनिया। ५ मैदान, क्षेत्र। ६ योद्धा, वीर। ७ चतुरगिनी सेना। ८ सैना, फौज। ९ एक प्रकार का शस्त्र। १० हाथ-पांव काट डालने की क्रिया। ११ बलिदान मे चार अग बाध कर लाया गया भैंसा। १२ चार प्रकार की लक्ष्मी। १३ युद्ध स्थल। –वि० १ चार। २ चार अगो वाला। ३ जिसके हाथ पैर काट दिये हो। ४ चार रगो वाला। ५ चार प्रकार का।

चौरक (ग, गौ)–पु० श्वास पी कर मारने वाला सर्प।

चौरस–वि० [स० चतुरस्र] १ चारो कोनो से समतल एव बराबर। २ वर्गाकार। –स्त्री० चौपड नामक खेल।

चौरसा–पु० एक वर्णिक छन्द विशेष।

चौरसियौ–पु० अत्यन्त छोटा हथौडा।

चौरसी–स्त्री० १ बढई का एक औजार। २ घटियो की माला।

चौरांगि–पु० १ खुला मैदान। २ युद्ध।

चौरांणवौ–वि० तराणु के बाद वाला।

चौराणु (णू)–वि० नब्बे व चार। –पु० चोराणु की सख्या, ९४।

चौरांणमौ (वौं)–वि० चौराणु के स्थान वाला। –पु० चौराणु का वर्ष।

चौरा–पु० १ चौबारा। २ महल। ३ कक्ष।

चौराई–देखो 'चौरासी'।

चौरायौ–पु० चौराहा, चौरास्ता।

चौरासियौ–पु० १ ८४ का वर्ष। २ बिना भूमि का राजपूत, भूमिहीन राजपूत।

चौरासी–वि० [स० चतुरशीति] अस्सी और चार। –पु० १ चौरासी की सख्या, ८४। २ चौरासी लाख जीव योनि। ३ पावो के घुघरू विशेष। ४ पत्थर तोडने की छैणी। ५ योग के आसन। ६ काम शास्त्र के आसन। ७ चौरासी गावो का समूह। ८ घुघरू की माला।

चौरासीबंध–पु० डिंगल का एक गीत।

चौरिंद्रय–पु० चार इन्द्रियो वाला जीव। (जैन)

चौरी– १ देखो 'चवरी'। २ देखो 'चोरी'।
चौळ–देखो 'चोळ'।
चौलड़ौ–देखो 'चोलडौ'।
चौळाई–देखो 'चोळाई'।
चौलावौ–पु० वह कूप जिसका पानी चार मोट से निकाला जाता है।
चौवड़ौ–वि० (स्त्री० चौवडी) १ चार परतो वाला। २ चार गुणा। ३ चार लडो वाला।
चौवटियौ, चौवटौ–पु० १ गाव के बीच खुला मैदान। २ चौराहा। ३ बाजार मे दुकानो के मध्य का भाग।
चौवळ, (ळी, ळै)–क्रि० वि० चारो ओर।
चौवळौ–देखो 'चौलडौ'।
चौवाळै–क्रि० वि० चारो ओर।
चौवास्या–पु० वर्षा ऋतु के चार मास।
चौवितार–पु० चार प्रकार के आहार। (जैन)
चौवीस–देखो 'चौईस'।
चौवीसटौ, चौवीसौ–देखो 'चौईसौ'।
चौवौ–पु० १ हाथ की अगुलियो का समूह। २ देखो 'चोवौ'।
चौसगी–देखो 'चौसागी'।
चौस–पु० फूलो का हार।
चौसट (टी)–देखो 'चौसठ'।
चौसठ (ठि, ठी)–वि० [स० चतुपष्टि] साठ व चार। –पु० १ साठ व चार की सख्या, ६४। २ चौसठ शक्तिया, योगनियो का समूह।
चौसठी–पु० ६४ का वर्ष।
चौसर–पु० १ केश, वाल। २ चौपड की गोटी। ३ चौथी पत्नी। ४ मूछ, श्मश्रु। ५ चौसरौ।
चौसरां (रा, रियं, रै)–क्रि० वि० चारो ओर।
चौसरियौ, चौसरौ–पु० १ पुष्प हार। २ हार, माला। ३ मुड माला। ४ अविरल अश्रु प्रवाह। ५ एक प्रकार की शराव।
चौसाकौ–पु० चार कटोरियो या खानो का पात्र।
चौसारौ–देखो 'चौसरौ'।
चौसाळा (ळी)–स्त्री० १ मकान का, चारो ओर से खुला कक्ष। २ वैलगाडी मे लगे लबे डडे।
चौसौ–पु० चार सौ तागो का ताना।
चौहट (टी)–स्त्री० १ पेड की शाखा। २ देखो 'चौवटौ'।
चौहटौ (ट्टौ)–देखो 'चौवटौ'।
चौहतर (त्तर)–वि० [स० चतुस्सप्तति] सत्तर व चार। –पु० चौहतर की सख्या, ७४।
चौहतरौ–पु० ७४ का वर्ष।
चौहथी–स्त्री० १ चार हाथ लंबी या चौडी वस्तु। २ वकरी के वालो की वनी मोटी पट्टी। ३ चार हत्थो वाली।
चौहवटौ–देखो 'चौवटौ'।
चौहांन–पु० एक क्षत्रिय वश।
चौहोतर–देखो 'चौहतर'।
च्यत, च्यात–स्त्री० चिंता, सोच।
च्यहुपरि (परी)–क्रि०वि० च्यार प्रकार से।
च्यांदणी, च्यांनणी–देखो 'चादणी'।
च्यार–देखो 'चार'।
च्यारआनी–स्त्री० चौवन्नी।
च्यारइपासइ (ई)–क्रि०वि० चारो ओर।
च्यारमौ (वौं)–वि० चौथा।
च्यार, च्यारि–पु० चार। —भुज–पु० विष्णु। ब्रह्मा।
च्यारू (रू)–वि० चारो। —मेर–क्रि० वि० चौतरफ।
च्यारे–क्रि० वि० चारो।
च्यारयामेर–क्रि० वि० चारो ओर।
च्योंरी–देखो 'चवरी'।

— छ —

छ–नागरी वर्णमाला के 'च' वर्ग का द्वितीय व्यजन।
छइ–देखो 'छै'।
छगा–वि० कटा हुआ।
छंगाणौ (बौ), छगावणौ (बौ)–क्रि० १ कटवाना। २ छटवाना, काट-छाट कराना।
छचेड, छछेड (ड्)–पु० मक्खन को गर्म करने पर निकलने वाला मैल।
छंछाळ (ळो)–पु० १ हाथी, गज। २ एक प्रकार का घोडा। –वि० मस्त, उन्मत्त।
छट–स्त्री० १ छटाई, छटनी। २ समुद्र के वीच की भूमि।

३ बदबू, दुर्गन्ध । ४ देखो 'चट' । ५ देखो 'छाटी' ।

छटणी–स्त्री० १ छटाई, छटनी । चयन । २ छितराव, बिखराव । ३ पृथक्करण ।

छटणौ (बौ)–क्रि० १ छटाई होना, छटनी होना । २ काटा जाना । ३ छितराया जाना, बिखरना । ४ पृथक होना । ५ पिछड़ना, बिछुड़ना । ६ चुना जाना, चयन होना । ७ साफ होना मैल निकलना । ८ क्षीण होना, दुबला होना, पतला होना ।

छटवाडौ–पु० हल्की वर्षा । छींटे ।

छटाई–स्त्री० १ छाटने की क्रिया । छटनी । कटाई । २ चयन । ३ सफाई । ४ ऐसे कार्यों की मजदूरी ।

छंटाणौ (बौ)–क्रि० १ छटाई करवाना, छटनी करवाना । २ कटाई कराना । ३ छितरवाना, बिखरवाना । ४ पृथक करवाना । ५ चुनवाना, चयन कराना । ६ साफ कराना, मैल निकलवाना । ७ हजामत बनवाना ।

छंटाव–पु० छटाई ।

छटेल–वि० १ धूर्त, चालाक । २ बदमाश उद्दण्ड । ३ छटा हुआ । ४ असाधारण, विशेष ।

छंडणौ (बौ)–क्रि० १ छोड़ना, त्यागना । २ बगावत करना । ३ लूटमार करना ।

छंडाणौ (बौ), छंडावणौ (बौ)–क्रि० १ छुडाना, त्यागवाना । २ बगावत कराना । ३ लुटवाना, लूटमार कराना ।

छणकणौ (बौ)–क्रि० १ छौक लगाना, छौकना । २ छन-छन करना ।

छंणाका–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

छंणेरी–स्त्री० उपले या कण्डे रखने का आलय या कोष्ठक ।

छंद–पु० [स० छदस्] १ वर्ण या मात्रा के अनुसार बना वाक्य, वृत्त, कविता, काव्य, पद्य । २ छद शास्त्र । ३ वेद । ४ अक्षरो की गणना के अनुसार वेद वाक्यो का भेद । ५ इच्छा, कामना । ६ अभिप्राय, आशय । ७ वश, काबू । ८ चालाकी, धोखा । ९ विष, जहर । १० प्रसन्नता । ११ आज्ञा, आदेश । १२ हृदय गत गुप्त भाव । १३ बहत्तर कलाओ मे से एक ।

छंदक–पु० १ श्रीकृष्ण का एक नाम । २ छल, कपट । –वि० कपटी, छलिया ।

छदगार (गारो, गाळ, गाळौ)–देखो 'छदागारौ' । (स्त्री० छदगारी, छदगाळी)

छदणा (ना)–स्त्री० [स०] जैन साधुओ की भिक्षा सबधी एक विधि ।

छदणौ (बौ)–क्रि० १ स्वच्छद होना, स्वतत्र होना । २ उच्छृखल होना ।

छंदनाच–पु० जल तरग पर नाच करने वाला, चन्द्रमा ।

छदागार, छंदागारौ (गाळौ)–वि० (स्त्री० छदागारी, गाळी) १ अपना भेद न देने वाला । कपटी, चालाक । २ सभ्य, व्यवहार कुशल । ३ आज्ञाकारी ।

छदोबद्ध–वि० १ जिसमे छन्द शास्त्र के नियमो का पालन किया गया हो । २ छन्दो से युक्त ।

छदोभग–पु० छन्द के नियम का अतिक्रमण, छन्द रचना का दोष ।

छदौ–पु० [स० छन्द] १ बाह्य प्रेम, दिखावा । २ गुप्त भेद, रहस्य । ३ छिपाव दुराव । ४ देखो 'छद' ।

छम (म्म)–वि० [स० क्षम] १ क्षमता वाला, सशक्त । २ उपयुक्त । ३ योग्य । ४ समर्थ । –स्त्री० १ वचना क्रिया । २ ध्वनि विशेष । ३ छमका ।

छयाळीस–वि० चालीस व छ । –पु० ४६ की सख्या ।

छंयाळीसौ–पु० ४६ का वर्ष ।

छंवरियौ, छवरौ–पु० १ गेहूँ की फसल का एक रोग । २ कडबी, ज्वार के पूलो को खडा रख कर बनाया जाने वाला गोल ढेर ।

छ–पु० १ केकी । २ रवि । ३ ध्वनि । ४ शशि । ५ कुज । ६ हाथ । ७ छवि । ८ कटाई । ९ खण्ड टुकडा । १० घर, कोष्ठक । –वि० १ निर्मल, स्वच्छ । [स० षट्] २ छै ।

छइ-देखो 'छै' । —**दरसण**='खटदरसण' ।

छइल्ल-देखो 'छैल' ।

छउम–पु० [स० छद्मन्] १ कपट, माया । २ आत्मा का आच्छादन करने वाले आठ कर्म । ३ छद्मस्थ अवस्था । (जैन)

छउमत्थ–वि० [स० छद्मस्थ] १ अपूर्ण ज्ञान वाला । २ राग द्वेष वाला । (जैन)

छएक–वि० छ के लगभग ।

छएल–देखो 'छैल' ।

छक–पु० १ वैभव, ऐश्वर्य । २ गर्व, अभिमान । ३ नशा, मादकता । ४ उत्साह, जोश । ५ आनन्द, बहार । ६ अवसर, मौका । ७ युवावस्था, यौवन । ८ कांति, दीप्ति, शोभा । ९ शौर्य, बहादुरी । १० बल शक्ति । ११ भय, आतक, डर । १२ दल, सेना । १३ लालसा, इच्छा । १४ हर्ष, प्रसन्नता । १५ साहस, हिम्मत । १६ मस्ती, उन्मत्तता । –वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम । २ सुन्दर । ३ मस्त, मदोन्मत्त । ४ तीव्र, तीक्ष्ण । ५ पूर्ण । ६ तृप्त । —**डाळ**–पु० कवच । —**डाळौ**–वि० कवचधारी । प्रचण्ड । बलवान । पुरुषार्थी ।

छकड–पु० [स० शकट] बैलगाडी, छकड़ा ।

छकडियौ–पु० १ कवचधारी, योद्धा । २ छकड़ा ।

छकड़ी–स्त्री० १ छ का समूह। २ तास का खेल। ३ तीव्र गति। ४ छ कहारो द्वारा उठाई जाने वाली पालकी। ५ छोटा शकट। ६ होश-हवास। ७ छ से बना हुआ।

छकडौ–पु० [स० शकट] १ बैलगाडी, शकट, छकडा। २ कवच। –वि० ढीले ढाले अस्थी पजर का, टूटा-फूटा।

छकरणौ–वि० १ तृप्त, छका हुआ। २ मस्त, मदोन्मत्त।

छकरणौ (बौ)–क्रि० [स० चक] १ तृप्त होना, अघाना। २ नशे मे चूर होना, मदोन्मत्त होना। ३ चकराना। ४ आश्चर्य करना, हैरान होना।

छकबबाळ–वि० महान शक्तिशाली। जबरदस्त।

छकसार–पु० द्वारपाल, छडीबरदार।

छकाछक–वि० १ पूर्ण रूपेण। २ तृप्त, सतुष्ट। ३ उन्मत्त, नशे मे।

छकाणौ (बौ)–क्रि० १ तृप्त करना, संतुष्ट करना। २ नशे मे चूर करना। ३ हैरान करना, परेशान करना। ४ थकाना। ५ चकित करना। ६ पूरित करना, पूर्ण करना, युक्त होना।

छकार (रो)–पु० हरिन, मृग।

छकियार–वि० मध्याह्न मे खेत मे भोजन लाने वाला।

छकी–वि० मस्त। तृप्त।

छकीलो–वि० (स्त्री० छकीली) १ मस्त, मदोन्मत्त। २ छकाने वाला।

छकेल, छकैल–वि० मद मस्त, उन्मत्त, पूर्ण तृप्त।

छको–देखो 'छक्को'।

छकोड़ो–पु० समूह, पुज।

छक्कडौ–देखो 'छकडौ'।

छक्कणौ (बौ)–देखो 'छकणौ' (बौ)।

छक्को–पु० १ छ की सख्या का अक, ६। २ ताश का छ बूटी वाला पत्ता। ३ चौपड में छ का दाव। ४ छ का समूह। ५ छ अवयवो की वस्तु। ६ पाच ज्ञानेद्रिया व मन का समूह। ७ छ अगुलियो वाला पजा। ८ छ दातो वाला पशु। ९ होश हवास। १० छ की सख्या का वर्ष।

छग, छगड़ो–पु० [स० छगल] बकरा।

छगरण–पु० सूखा गोबर।

छगनमगन–पु० छोटे व प्यारे बच्चे।

छगळ (ल, ल्ल)–पु० [स० छगल] बकरा, छाग।

छगां-छगा–स्त्री० एक चाल या गति विशेष। –क्रि०वि० विशिष्ट चाल से।

छगाळियौ–पु० १ छ दात वाला बैल। २ बकरा।

छगी (गौ)–देखो 'छक्को'।

छघलो–पु० चाबुक।

छड ग–वि० अकेला, एकाकी।

छड–पु० १ भाला, नेजा। २ लोहे की छडी, सलाका। ३ छडी। ४ भाले का डडा। ६ भाले की नोक। –स्त्री० ५ आभूषण विशेष।

छडकणौ (बौ)–देखो 'छिडकणौ' (बौ)।

छड़काणौ (बौ)–देखो 'छिडकाणौ' (बौ)।

छडछडीलो, छडछबीलो–पु० [स० शैलेय] एक लच्छेदार पौधा विशेष जो औषधियो में भी काम आता है।

छडणौ (बौ)–क्रि० १ ओखली मे कूट कर सूप से अनाज साफ करना। २ घोडे का फुदक-फुदक कर चलना।

छडबडो (बडौ)–वि० १ मुकमुखा, झुटपुटा। २ थोडा, कम। ३ समवयस्क।

छडहड, छडहडौ–पु० घोडे के टापो की ध्वनि।

छडाछड–स्त्री० १ छीक से उत्पन्न ध्वनि। २ ध्वनि विशेष। –क्रि० वि० १ शीघ्र, जल्दी। २ निरतर लगातार।

छडाळ (ळि, ळौ), छडियाळ–पु० १ भाला, नेजा, । २ भाला-धारी योद्धा।

छड़ी–स्त्री० १ सीधी व पतली लकडी। २ मजार या देवालय मे चढाई जाती झडी। ३ लात लगाने की क्रिया या भाव। ४ छेड-छाड, झगडा ५ सिलाई का एक ढग। –वि० १ अकेली, एकाकी। २ स्वतत्र, आजाद। ३ सतानहीन। –दाल, दार, बरदार–पु० राज दरबार का एक अनुचर। एक प्रकार का घोडा।

छडीलो–पु० कटीली झाडी।

छडो–पु० १ चादी या सोने की पायल। २ मोती या पोत की लडो का गुच्छा। ३ लड, लटिका। ४ रस्सी। –वि० १ अकेला, एकाकी। २ खाली हाथ, विना सामग्री का। ३ स्वतन्त्र। ४ सन्तानहीन।

छचोकियो–पु० छ चौक वाला मकान, बडा मकान।

छच्छोह, छच्छोह–देखो 'छछोह'।

छछक–स्त्री० धारा।

छछबौ (बौ)–पु० स्वेद कण।

छछवौ–वि० (स्त्री० छछवी) तीव्र, तेज। चचल।

छछहो–देखो 'छछोहौ'।

छछियार–पु० दही मथन का पात्र।

छछुंदर (री–पु० [स०] १ चूहे की जाति का एक जतु। २ एक प्रकार का यत्र या तावीज।

छछूक–वि० १ गुनहगार। २ शत्रु या घात करने वाला।

छछोरो–देखो 'छिछोरो'।

छछोह, छछोहक, छछोहौ, छछौ–पु० १ आभा, काति। २ फुहार, फव्वारा। ३ 'छ' वर्ण। ४ स्फूर्ति। –वि० १ तीक्ष्ण, तेज। २ स्वच्छ, निर्मल। ३ उत्साह युक्त, जोश पूर्ण। ४ शीघ्र-गामी। ५ योद्धा, वीर। ६ स्फूर्ति वाला। –क्रि० वि० शीघ्रता से, छलछलाता हुआ। तीव्र गति मे।

छज–पु० १ बुद्धि, अक्ल। २ व्यवहार, पटुता। ३ छाजन की सामग्री। ४ छत। ५ छाजन। –वि० मर्यादा रखने वाला।

छजणौ (बौ)–क्रि० १ छाया जाना। आच्छादित होना। २ शोभित होना। ३ जंचना, फबना।

छजेड़ी–स्त्री० कच्चे मकान की छाजन।

छज्जळ–देखो 'छाजड़ौ'।

छज्जीवणि–(नी)स्त्री० जीवों की छ योनियां। (जैन)

छज्जौ–देखो 'छाजौ'।

छटक–पु० रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक। –क्रि०वि० शीघ्र, तुरंत, फुर्ती से।

छटकणौ–वि० उड़ने वाला, उछलने वाला, चटकने वाला।

छटकणौ (बौ)–देखो 'छिटकणौ' (बौ)।

छटकाणौ (बौ), छटकावणौ (बौ)–देखो 'छिटकाणौ' (बौ)।

छटपट–क्रि० वि० शीघ्र, झटपट, तुरत। –स्त्री० बेचैनी, घबराहट, तड़फ।

छटपटाणौ (बौ)–क्रि० १ छटपटाना, तड़फना। २ बेचैन होना, घबराना। ३ व्याकुल होना, अधीर होना।

छटपटी–स्त्री० घबराहट, बेचैनी।

छटांक–स्त्री० सेर का सोलहवां भाग, एक तौल।

छटान–स्त्री० छटा, कांति, दीप्ति।

छटा–स्त्री० [सं०] १ किरण-समूह, प्रकाश, चांदनी। २ आभा, कान्ति, दीप्ति। ३ बिजली। ४ समूह, समुदाय। ५ प्रभाव, रौब। ६ शोभा। ७ सूअर के बाल। ८ अविच्छिन्न पंक्ति। **—टोप**–पु० २३वां क्षेत्रपाल। **—यत**–वि० कांतिवान।

छटाधर–पु० योद्धा।

छटाधाव–पु० शेर, सिंह।

छट्ठ,छट्ठ–स्त्री० [सं० षष्ठी] मास के प्रत्येक पक्ष की छठी तिथि। **—भत्त**–पु० लगातार दो दिनों का उपवास। (जैन)

छट्ठउ–देखो 'छट्ठौ' (स्त्री० छट्ठी)।

छट्ठी–स्त्री० [सं० षष्ठी] १ जन्म दिन से छठा दिन या रात। २ एक देवी। ३ मौत, मृत्यु। –वि० छ के स्थान वाली, छठी।

छट्ठौ–वि० [सं० षष्ठ] (स्त्री० छट्ठी) छ के स्थान वाला, छठा। –पु० छ की संख्या का वर्ष।

छठ– देखो 'छट्ठ'।

छठांरीहांण–पु० छ दांत वाला युवा ऊंट।

छठोड़ौ, छठौ, छट्ठोड़ौ, छठ्ठौ–देखो 'छट्ठौ'।

छड (छडौ)–देखो 'छट्ठौ' (स्त्री० छडी)

छडक–पु० छिड़काव।

छडणौ (बौ)–क्रि० छिड़कना।

छडणौ (बौ)–क्रि० १ छोड़ना, त्यागना। २ देखो 'छाडणौ' (बौ)।

छणक–स्त्री० १ तपे हुए पत्थर या धातु पर पानी लगने से उत्पन्न ध्वनि। २ सन-सन ध्वनि। ३ छनछनाहट।

छण–देखो 'क्षण'।

छणकणौ (बौ), छणवकणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, दमकना। २ छन-छन शब्द करना। ३ झनझनाना।

छणक-मणक–स्त्री० १ पायल की झन्कार। २ तलवार की झन्कार। ३ छनछनाहट।

छणकार–स्त्री० झनकार।

छणछणाणौ (बौ)–क्रि० झनझनाना, छनछनाना।

छणणकणौ (बौ)–देखो 'छणकणौ' (बौ)।

छणणौ (बौ)–क्रि० १ छनना, छनकर निकलना। २ छाना जाना। ३ स्वच्छ होना, साफ होना। ४ आवरण भेद कर निकलना (धूप)। ५ चूना, टपकना। ६ चोट खाना, बिंध जाना। ७ छान-बीन होना। ८ गाढ़ा प्रेम होना।

छणदा–स्त्री० [सं० क्षणदा] रात्रि, रात।

छणमण छणहण–पु० १ छनछनाहट। २ खनखनाहट। ३ ध्वनि।

छणाई–स्त्री० १ छानने का कार्य। २ छानने का पारिश्रमिक। ३ पैर के तलुवे में होने वाला फोड़ा। ४ एक प्रकार का जीव।

छणाको–पु० खन्नाटा, झन्नाटा।

छणारी–स्त्री० १ चूल्हे के पास उपले रखने का स्थान। २ देखो 'छणाई'।

छणारो–पु० १ गुदा द्वार। २ उपलों का व्यवस्थित ढेर।

छणियारो–पु० १ कांसी के बर्तनों का व्यापारी। २ एक लोक गीत। ३ देखो 'छणारो'।

छणेरी–१ देखो 'छणारी'। २ देखो 'छणाई'।

छत–स्त्री० [सं० छत्र] १ किसी मकान या कक्ष का ऊपरी आंगन। २ ऊपरी आंगन में जमाया जाने वाला चूना, ककरीट आदि का मसाला। ३ भूमि, पृथ्वी। ४ स्थान, जगह। ५ छटा, शोभा। ६ छत्र। ७ घाव, व्रण, फोड़ा। ८ खतरा, जोखिम। ९ प्रभुता, प्रधानता।

छतड़ी–देखो 'छतरी'।

छतड़ो–पु० छाता।

छतज–पु० [सं० क्षतज] रुधिर, खून। –वि० लाल।

छतप–पु० [सं० छत्रपति] राजा, नरेश।

छतर–देखो 'छत्र'। **—छिया, छीया**='छत्रछांह'। **—धर, धारण, धारी**='छत्रधारी'। **— पत**='छत्रपति'।

छतरी–स्त्री० १ छाता। २ शव दाह के स्थान पर बनाया गया छज्जेदार मण्डप, स्मारक। ३ वर्षा ऋतु में होने वाला एक उद्भिज। ४ क्षत्रिय।

छतलोट–स्त्री० एक प्रकार की कसरत।

छतां–क्रि० वि० १ होते हुए, रहते हुए । २ लिये, वास्ते । –वि० तैयार, मौजूद ।

छति (ती) –पु० [स० छत्र] १ बादशाह, राजा । [स० क्षति, क्षिति] २ हानि, नुकसान । ३ वक्षस्थल, छाती । ४ भूमि, पृथ्वी ।

छतीस–वि० [स० षट्त्रिंशत्] तीस व छ । –पु० तीस व छ की सख्या, ३६ ।

छतीसिका, छतीसी–स्त्री० १ छत्तीस छन्दों का काव्य । २ छत्तीस वस्तुओं का समूह । –वि० कुलटा, कुलक्षणा ।

छतीसो–पु० ३६ का वर्ष । –वि० मक्कार, धूर्त ।

छतै–देखो 'छता' ।

छतो–वि० (स्त्री० छती) १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ प्रकट, जाहिर । ३ मौजूद, तैयार । –क्रि० वि० होते हुए, रहते हुए ।

छत्तधारी–देखो 'छत्रधारी' ।

छत्तर–देखो 'छत्र' ।

छत्ति (त्ती)–स्त्री० १ एक शस्त्र विशेष । २ देखो 'छत्ती' । ३ देखो 'छाती' ।

छत्तो–देखो 'छतो' ।

छत्र–पु० [स०] १ छाता, छतरी । २ देव मूर्ति पर लटकाई जाने वाली सोने या चादी की छोटी छतरी । ३ राजा महाराजाओ के ऊपर तनी रहने वाली छतरी । ४ राजा, नृप । ५ क्षत्रिय । ६ चादनी, चदोवा । ७ मडप । ८ ज्योतिष का एक योग । ९ डिंगल के बेलियो साणोर का भेद । १० छाजन, आच्छादन । ११ उद्भिज, खूमी । –वि० श्रेष्ठ । —छांह–स्त्री० सरक्षण, शरण । कृपा ।

छत्रक–पु० [सं०] १ कुकुरमुता, खूमी । २ छाता । ३ स्मारक । ४ देवालय । ५ मण्डप । ६ मधुमक्खी का छाता । ७ शिवालय ।

छत्रछांगीर (छांहगीर)–पु० बादशाह का छत्र ।

छत्रधर (धरण, धार, धारी)–पु० [स०] १ राजा, नृप । २ देवता । ३ सर्प । ४ राजा, बादशाह का छत्र पकडे रहने वाला अनुचर । ५ राज्य चिह्न । ६ छाताधारी ।

छत्रधीस–पु० १ देवता । २ राजा, बादशाह ।

छत्रधोड़–पु० क्षत्रिय, धर्म ।

छत्रपत (पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती) छत्रप्पती–पु० [स० छत्रपति] १ देवता । २ राजा, बादशाह । ३ सर्प, नाग ।

छत्रबध–पु० १ राजा नृपति । २ एक प्रकार का चित्रकाव्य ।

छत्रभग–पु० [स०] १ राजा का नाशक एक योग । (ज्यो०) २ अराजकता । ३ हाथी का एक अवगुण । ४ एक प्रकार का घोडा (अशुभ) ।

छत्ररत्न–पु० १ सेना के ऊपर बनाया जाने वाला कई योजन लबा चौड़ाछत्र । (जैन) २ चक्रवर्ती के चौदह रत्नो मे से नौवा रत्न । (जैन)

छत्रांधर–देखो 'छत्रधर' ।

छत्राकार–वि० छत्र के आकार का छातानुमा ।

छत्राधीस–देखो 'छत्रधीस' ।

छत्राळ (ळो)–वि० छत्रधारी । –पु० राजा, नृप । बादशाह ।

छत्रिय (यांण)–पु० [स० क्षत्रिय] राजपूत, क्षत्रिय । —धरम पु० क्षात्र-धर्म । –वि० लाल ।

छत्री–स्त्री० [स०छत्रिन्] १ छतरी, छाता । २ स्मृति-भवन या देवालय । [सं० क्षत्रिय] ३ क्षत्रिय, राजपूत । –वि० छत्रधारी । —धरम–पु० क्षात्रधर्म । —वट–स्त्री० राजपूती क्षत्रिय गौरव । क्षात्रधर्म ।

छत्रीस–देखो 'छतीस' ।

छत्रेत–वि० छत्रधारी, छत्रपति ।

छत्रेस्वर–पु० [स०] (स्त्री० छत्रेस्वरी) १ ईश्वर । २ देवता । ३ छत्रपति । ४ राजा ।

छत्रेस्वरी–स्त्री० देवी, दुर्गा ।

छद्म–देखो 'छद्म' ।

छद, छदन–पु० [स०]१ पत्र, पत्ता । २ कागज, पत्र । ३ पख पर । ४ आवरण, आच्छादन । ५ म्यान । ६ चादर । ७ देखो 'छद्म' ।

छदम–देखो 'छद्म' ।

छदमस्ती–वि० मस्त, शौकीन ।

छदमी–देखो 'छद्मी' ।

छदर–देखो 'छिद्र' ।

छदाम–स्त्री० १ पैसे का चौथाई भाग । २ एक प्राचीन तौल ।

छदामी–पु० एक रुपये पर छदाम की दर मे लिया जाने वाला एक रियासती कर ।

छदामो–देखो 'सुदामो' ।

छद्म–पु० [सं०] १ छल, कपट । २ दुराव, छिपाव । ३ व्याज । ४ कपट वेश । ५ धोखा, बेईमानी । ६ गोपनीयता । ७ ढोंग, दिखावा । —घातक–वि० छुप कर मारने वाला ।

छद्मस्थ–पु० वह व्यक्ति जिसका अनंतज्ञान प्रकट न हुआ हो, जो सर्वज्ञ न हो । (जैन)

छद्मी–वि० [स०] १ छलिया, कपटी । २ कपट वेश धारी । ३ ढोंगी, पाखडी । ४ बेईमान । ५ भेदिया ।

छद्रम–देखो 'छद्म' ।

छनकणो (बो)–देखो 'छणकणो' (बो) ।

छन–देखो 'क्षण' ।

छनीचर–देखो 'सनिचर' ।

छन्नी–स्त्री० हाथ का आभूषण । (मेवात)

छपई–देखो 'छप्पय'।

छपको–पु० १ पानी का छपाका। २ बड़ा छींटा। ३ ध्वनि विशेष।

छपटी–स्त्री० लकड़ी का छिलका, टुकड़ा, छत्तू।

छपणौ (बौ)–क्रि० १ मुद्रित होना, छापा जाना। २ चिह्नित होना, अंकित होना।

छपद–पु० [स० षटपट] भ्रमर, भौरा।

छपन–देखो 'छप्पन'।

छपनमौ (वौं)–देखो 'छप्पनमौ'।

छपनौ–देखो 'छप्पनौ'।

छपन्न–देखो 'छप्पन'।

छपय–देखो 'छप्पय'। देखो 'छपद'।

छपर–देखो 'छपरौ'।

छपरबदी–स्त्री० छपरा बनाने का कार्य।

छपरी, छप्परी–स्त्री० १ ऊंटो की एक जाति। २ खुला मैदान।

छपरौ–पु० १ घास फूस का छप्पर। २ छपरी जाति का ऊट।

छपा–स्त्री० [स० क्षिपा] रात्रि निशा। —**कर**–पु० चन्द्रमा।

छपाई–स्त्री० १ मुद्रण, मुद्रण का कार्य। २ अकन।

छपाकौ–पु० १ बड़े छींटे की आवाज। २ पानी मे कोई वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि, छपाका। ३ बड़ा छींटा ४ चकत्ता। ५ रक्त विकार का एक रोग विशेष।

छपाणौ (बौ), छपावणौ (बौ)–क्रि० १ मुद्रित कराना। २ मुद्रांकित कराना। ३ छिपाना।

छपै, छप्पई–देखो 'छप्पय'।

छप्पन–वि० [स० षट्पचाशत्] पचास व छ। –पु० छप्पन की सख्या, ५६।

छप्पनमौ (वौं)–वि० छप्पन के स्थान वाला।

छप्पनौ–पु० ५६ का वर्ष।

छप्पय–पु० [स० पट्पद] १ छ चरणो का एक मात्रिक छन्द। २ देखो 'छपद'।

छप्पर– देखो 'छपरौ'।

छप्परडौ, छप्परियौ–देखो 'छपरौ'।

छप्पै–देखो 'छप्पय'।

छप्रभग–स्त्री० घोडे के पीठ की भौंरी।

छब–वि० [स० सर्व] सव, सर्व, समस्त। –स्त्री० छवि, शोभा, स्पर्श। —**काळ (ळौ)**–पु० डिंगल छद रचना का एक दोष। –वि० धब्बे वाला, चकत्ते वाला। —**काळी**–स्त्री० रग-विरगी।

छबकौ–पु० धब्बा, चकत्ता।

छबक्कणौ (बौ)–क्रि० धारन करना।

छबडि (डी, डौ ड्यौ)–देखो 'छाव'।

छबजांण–पु० [स० सर्वज्ञ] ईश्वर, सर्वज्ञ।

छबणौ–पु० द्वार की चौखट के ऊपर लगने वाला बड़ा पत्थर।

छबणौ (बौ)–क्रि० १ स्पर्श करना, छूना। २ छवि देना, शोभा देना। ३ छाया जाना, आच्छादित करना।

छबभुत–वि० [सं० अद्‌भुत] विचित्र, अद्‌भुत।

छबर-छबर–स्त्री० [स० शंवर] अश्रुधारा। –अव्य० सिसक-सिसक कर।

छबल (लौ, ल्यौ)–देखो 'छाब'।

छबि, छबी–स्त्री० [स० छवि] १ शोभा। २ कांति, आभा, दीप्ति। ३ प्रभा, किरण। ४ सौन्दर्य। ५ तस्वीर, चित्र। ६ रूप, स्वरूप। ७ रग वर्ण।

छबिलौ, छबीलौ–वि० १ सुन्दर, छवि वाला। २ सजा हुआ। ३ शौकीन।

छबीनौ–पु० रात्रि मे सेना के चारो ओर चक्कर लगाने वाला घुडसवार।

छबू–पु० एक प्रकार का सुगधित पुष्प।

छबोल (ड़ौ, डौ)–छबोलि (ली)–देखो 'छाव'।

छब्बीस–वि० बीस व छ, छब्बीस। –स्त्री० बीस व छ की सख्या, २६।

छब्बीसौ–पु० छब्बीस का वर्ष।

छब्बौ–पु० टोकरा।

छभट्ठिय–पु० हाथी का गंडस्थल।

छभा– देखो 'सभा'।

छमक–स्त्री० पायल की झन्कार।

छमटा–स्त्री० आग की लपट।

छम–स्त्री० घुघुरू की ध्वनि, पायल की छम-छम। झन्कार। –वि० [स० क्षम] समर्थ, बलवान।

छमकणौ (बौ)–क्रि० १ घुंघरू, पायल आदि बजना। २ झकृत होना। ३ सब्जी छोकना, छोका लगाना।

छमकाणौ (बौ), छमकारणौ (बौ), छमकावणौ (बौ)–क्रि० १ घुघरू, पायल आदि बजाना। २ झकृत करना। ३ सब्जी छोकाना, छोक लगवाना।

छमकौ–पु० १ छोका, तडका। २ नूपुर ध्वनि।

छमच्छर–पु० [स० सवत्सर] साल, वर्ष, सवत।

छमछम–स्त्री० छमछमाहट। मजीरा। –क्रि० वि० झनकारते हुए।

छमछमणौ (बौ) क्रि० छम-छम करना, झकृत होना।

छमछमाणौ (बौ)–क्रि० घुघरू या पायल बजाना, झकृत करना।

छमछरी–स्त्री० [स० सवत्सरी] १ बरसी, मृत्यु दिन। २ पर्यूषण का आखिरी दिन। (जैन)

छमा–देखो 'क्षमा'।

छमाई–देखो 'छमासी'।

छमाछम–स्त्री० छम-छम की ध्वनि ।
छमायो–पु० छ मास का गर्भ ।
छमास–पु० [स० षाण्मातुर] १ स्वामि कार्त्तिकेय । २ छ' मास की अवधि ।
छमासियो–देखो 'छमायो' ।
छमासी, छमाही–स्त्री० १ छ मास की अवधि । २ छ मास की अवधि पर्यन्त मृतक के पीछे किया जाने वाला श्राद्ध आदि कर्म । ३ अर्ध वार्षिकी परीक्षा ।
छमुख–पु० [स० षड्मुख] स्वामि कार्त्तिकेय, षडानन ।
छमौ–वि० (स्त्री० छमी) छठा ।
छम्मास–देखो 'छमास' ।
छम्माछोळ–स्त्री० उपद्रव, उत्पात ।
छयल (लु, ल्ल)–देखो 'छैल' ।
छयां–देखो 'छाया' ।
छयाणवइ (वे, वं)–वि० नब्बे तथा छ, छिनवे ।
छयांळी–वि० छियालीस ।
छयासी–वि० छियासी ।
छरडी–स्त्री० १ होली का दूसरा दिन। २ इस दिन का उत्सव ।
छर–पु० [स० क्षर] १ सिंह का अगला पजा । २ कलक, दोष । ३ किसी वस्तु के वेग से निकलने की क्रिया व आवाज ।
छरछर, छरछराहट–स्त्री० ध्वनि विशेष ।
छरणी–स्त्री० बढई का एक औजार ।
छरदी–स्त्री० [स० छर्दी] वमन, कै, उल्टी ।
छरमर–पु० वर्षा होने का शब्द, झरमर ।
छररौ–पु० १ जर्रा, कण । २ बजरी, रेत ।
छरहरौ–वि० (स्त्री० छरहरी) १ पतला-दुबला । २ चचल ।
छराळउ–वि० मस्त ।
छराळौ, छरेळ–पु० १ सिंह का बच्चा । २ सिंह । ३ योद्धा, वीर ।
छरौ–पु० १ सिंह का पजा । २ कलक, दोष । ३ हाथ । ४ तलवार । ५ इजारबन्द । ६ आक, सण आदि की छाल की रस्सी ।
छलग– देखो 'छलाग' ।
छळ (ळु)–पु० [स० छल] १ कपट, धोखा, दगा । २ ठगी । ३ चालाकी, बेईमानी । ४ बहाना । ५ दुष्टता । ६ युद्ध, रण । ७ वार, प्रहार । ८ यश, कीर्ति । ९ रक्षा, बचाव । १० कार्य, सेवा । ११ आभूषण, गहना । १२ अवसर, मौका । १३ मान, प्रतिष्ठा, मर्यादा । १४ भेद, रहस्य । १५ बहादुरी, शौर्य, पराक्रम । १६ गुस्सा, क्रोध, कोप । १७ कर्त्तव्य । –वि० १ श्याम, काला※ । २ श्रेष्ठ※ । –क्रि० वि० लिए, वास्ते ।
छळकण–स्त्री० १ छलकने की क्रिया या भाव । २ उद्गार ।
छळकणौ (बौ)–क्रि० १ द्रव पदार्थ का उबक कर बाहर आना, उबकना, छलकना । २ उछलना, उमडना । ३ अश्रु निकलना ।
छळकाणौ (बौ)–क्रि० १ द्रव पदार्थ को हिला-डुला कर बाहर निकालना, उछालना । २ उबकाना, उमडाना ।
छळगारौ–वि० (स्त्री० छळगारी) कपटी, छली ।
छलडौ–पु० १ चरखे का एक उपकरण । २ रेगिस्तान का एक जतु । –वि० छ परतो या लडो का ।
छळछद (छंद)–पु० कपट पूर्ण कार्य, ढोंग, पाखड, चरित्र ।
छळछळौ–वि० (स्त्री० छुळछळी) १ अश्रु पूर्ण, डबडबाया हुआ । २ पूर्ण । ३ लबालब भरा हुआ ।
छळछिद्र–पु० १ छल, कपट, ठगी । २ ढोंग, पाखड । ३ प्रेत लीला ।
छळण, छळणी–स्त्री० छलने की क्रिया या भाव ।
छळणौ (बौ)–क्रि० १ धोखा देकर कार्य कराना, धोखा देना, ठगना । २ भ्रमित करना, भुलावा देना । ३ षड्यंत्र मे फसाना । ४ मर्यादा का उल्लघन करना । ५ मारना, सहार करना । ६ लहलहाना ।
छळदार–वि० १ कपटी, प्रपची, धोखेबाज । २ कूटनीतिज्ञ ।
छळभोम–स्त्री० युद्ध भूमि ।
छळां–क्रि० वि० लिये, वास्ते ।
छलाग–स्त्री० पावों से कूदने की क्रिया, कुदान फलांग ।
छलागणौ (बौ)–क्रि० १ कूद कर जाना कूदना, कूद कर पार करना । २ चौकडी भरना ।
छळाई–स्त्री० छलने का कार्य ।
छळावौ–पु० छल, कपट, धोखा । –वि० फुर्तीला ।
छलास–स्त्री० किसी धातु के तार से बनी सादी अगुठी ।
छळि–१ देखो 'छळ' । २ देखो 'छळी' ।
छळियौ, छळी–वि० [स० छलिन्] १ छल करने वाला, धोखेबाज, कपटी । २ ढोंगी, पाखडी । –पु० चरखे का एक उपकरण ।
छळु (ळू)– देखो 'छळ' ।
छळौ–पु० १ घोडे, गधे या भैस का पेशाब । २ बकरा ।
छलौ–पु० १ रेगिस्तान का एक जन्तु विशेष । २ देखो 'छल्लौ' ।
छल्लेदार–वि० जिसमे छोटे-छोटे वृत्त या मण्डल हो, घुंघराला ।
छल्लौ–पु० १ कोई छोटा वृत्त या घेरा । २ अगुठी, मुदरी, छल्ला । ३ बालो का घुघरालापन ।
छव–वि० [स० षट] छ, पाच व एक । –स्त्री० १ छ की सख्या, ६ । २ छवि, शोभा ।
छवगाळ (ळौ)– देखो 'छौगाळौ' । (स्त्री० छवगाळी) ।
छवडउ– देखो 'छोडो' ।

छवणो (वो)–क्रि० १ स्पर्श करना, छूना। २ छाना, आच्छादित करना।

छवरो–पु० वृक्ष, पेड।

छवाई–स्त्री० १ छाने का कार्य। २ इस कार्य की मजदूरी। ३ ग्रंथी गाठ।

छवाणो (वो), छवावणो–(वो)–क्रि० १ छाने का कार्य कराना, आच्छादित कराना। २ स्पर्श कराना।

छवारो–पु० खजूर।

छवि–स्त्री० १ चर्म, चमडी। २ शोभा।

छवित्ताण छविह–पु० [स० छवित्राण] १ शरीर के वस्त्र। २ कवच। ३ कवच, वर्म। (जैन) ४ देखो 'छव्विह'।

छवीस– देखो 'छव्वीस'।

छवैयो–पु० छाने वाला कारीगर।

छवो–पु० १ ऊसर भूमि। २ बच्चा।

छव्विह–वि० [स० षट्विध] छ प्रकार का। (जैन)

छसि–वि० [स० षट्शतानि] छ सौ।

छह–देखो 'छै'।

छहडो–पु० कलह, झगडा, विवाद।

छहतरो–पु० छिहत्तर का वर्ष।

छहलो–वि० (स्त्री० छहली) अन्तिम, आखिरी।

छहोडणो (वो)–देखो 'चहोडणो' (वो)।

छहोतरो–देखो 'छियतरो'।

छां–अव्य० [स० अस्] है, होने का भाव। –स्त्री० छाया।

छाग–स्त्री० १ मवेशियो का दल या समूह। २ वृक्ष की कटी टहनी।

छागडो–वि० काटने वाला, सहार करने वाला।

छागणो (वो)–क्रि० [स० छजि] १ वृक्ष की टहनिया काटना। २ काट-छाट करना। ३ मारना। ४ कम करना।

छागो, छागीर–देखो 'छाहगीर'।

छाछळो–स्त्री० बडी, भयकर तोप।

छाट, छाटकलो, छाटडो–स्त्री० १ छाटने की क्रिया, छटाई। २ काट, छाट। ३ कतरन। ४ चयन, चुनाव। ५ वर्षा की बूद।

छाटणी–स्त्री० १ छाटने का काय। २ छटनी। ३ छितराना, [illegible] फैलाना आदि क्रिया।

छाटणो (बो)–क्रि० १ चयन, चुनाव करना। २ छटनी करना। ३ छितराना, बिखेरना। ४ काट-छाट करना। ५ कतराना। ६ छींटे लगाना, छिडकना। ७ कूटना, फटकना। ८ शेखी बघारना।

छाटाणो (वो)–देखो 'छटाणो' (वो)।

छाटो–स्त्री० १ छाटन, चुनने का काम। २ सेवा, नौकरी। ३ [illegible], [illegible]।

छांटो–पु० १ जल का छींटा। २ छीटा, धब्बा। ३ छोटा दाग। ४ अनुचर।

छांडणो (वो)–देखो 'छोडणो' (वो)।

छाण–स्त्री० १ छान-बीन, जाच। २ अनुसधान, शोध। ३ छानने की क्रिया या भाव। ४ सूखा गोबर।

छाणणी–स्त्री० चलनी, जरिया।

छाणणो (वो)–क्रि० १ आटे, चूर्ण या द्रव पदार्थ को बारीक वस्त्र या चलनी मे से निकालना, छानना। २ मिश्रित वस्तुओ को जुदा-जुदा करना। ३ जाच पडताल करना। ४ ढूढना, खोजना। ५ छेदना।

छांणत–स्त्री० १ कलक, दोष। २ चुभने वाली बात।

छांणबीण–स्त्री० १ जाच, पडताल। २ शोध, अनुसधान।

छाणस–पु० आटा छान कर साफ करने पर निकला हुआ भूसा।

छाणो–पु० [स० छगण] गोबर का उपला कण्डा।

छान–स्त्री० [स० छन्न] १ कच्चे छाजन वाला कक्ष। २ कच्चा छाजन। ३ गुप्त रखने का भाव। ४ गुप्त धन। ५ देखो 'छाण'।

छानउ–देखो 'छानो'।

छानके (कै)–क्रि०वि० छुपे तौर पर।

छानवण (वाण)–स्त्री० गुप्त रूप से सगृहीत सम्पति।

छांनु (नू)–देखो 'छानो'।

छानै–क्रि० वि० गुप्त रूप से, चुपके से। —छुरके (कै), सीक–क्रि० वि० गुप्त रूप से, चुपके-चुपके।

छानेउ, छानो–वि० [सं० छन्न] (स्त्री० छानी) १ गुप्त, छुपा हुआ। २ शात, चुप-चाप। ३ अप्रकट। —मानो–वि० चुपचाप, शात।

छामोदरी–वि० [स० क्षामोदरी] छोटे पेट वाली।

छाय, छायड़ी, छांया, छाव, छावडो–देखो 'छाया'।

छाया-छकडी–स्त्री० एक देशी खेल।

छावणी–देखो 'छावणी'।

छावळ (ळी)–स्त्री० १ प्रतिछाया, परछाई। २ छोटे-छोटे बादलो से होने वाली हल्की-हल्की छाया। ३ एक प्रकार का वाद्य।

छाह (ड, डो)–देखो 'छाया'।

छाहगीर–पु० राजछत्र। बडा छाता।

छाहडो–पु० छोटा कंटीला पौधा।

छांहरी, छाही–देखो 'छाया'।

छा, छा'–स्त्री० १ कान्ति। २ छाया। ३ रक्षा। ४ छाछ। ५ आवरण, ढक्कन। ६ चिन्ता या दुख के कारण चेहरे पर होने वाला काला दाग। ७ एक प्रकार का नेत्र रोग। –वि० थे, था।

छाम–देखो 'छाया'।

छाग्रण–स्त्री० १ साग-सब्जी मे दी जाने वाली खटाई । २ छाजन ।
छाई–देखो 'छाईस' ।
छाईजणौ (बौ)–क्रि० छाया जाना, आच्छादित होना ।
छाईस–वि० बीस और छ, छब्बीस ।
छाईसौ–पु० छब्बीस का वर्ष ।
छाक–स्त्री० १ नशा, मादकता । २ मस्ती । ३ हल्के नशे के लिये ली जाने वाली शराब की कुछ मात्रा । ४ शराब पीने का प्याला । ५ किसान के लिये खेत मे ले जाने वाला भोजन, पाथेय । ६ दोपहर, मध्याह्न । ७ डलिया । –वि० १ मस्त, उन्मत्त । २ लबालब, पूर्ण ।
छाकटाई–स्त्री० १ बदमाशी । २ दुष्टता । ३ चचलता । ४ नीचता । ५ धूर्तता, चालाकी ।
छाकटौ–वि० [स० साकट] (स्त्री० छाकटी) १ बदमाश, दुष्ट । २ दुश्चरित्र । ३ चतुर, चालाक । ४ चचल, नटखट । ५ कृपण, कजूस । ६ कृतघ्न ।
छाकणौ (बौ)–क्रि० १ अघाना, खा-पीकर तृप्त होना । २ शराब आदि के नशे मे मस्त होना । ३ ललचाना ।
छाकां–स्त्री० दुपहरी, मध्याह्न ।
छाकौ–वि० उन्मत्त, मस्त, मदोन्मत्त ।
छाकोटौ–वि० मग्न, मदोन्मत्त ।
छाग, (ड़, डौ)–पु० [स० छग] १ बकरा । २ मेष राशि ।
छागटाई–देखो 'छाकटाई' ।
छागटौ–देखो 'छाकटौ' ।
छागण–स्त्री० १ उपले की अग्नि । २ आग ।
छागमुख–पु० स्वामि कार्त्तिकेय का छटा मुख । स्वामि कार्त्तिकेय का एक अनुचर ।
छागर–स्त्री० बकरी ।
छागरत (थ)–पु० [स० छागरथ] अग्नि ।
छागळ–पु० [सं० छागल] १ बकरा । २ बकरे के चमडे का जल-पात्र । ३ पानी की केतली । ४ पायल, नूपुर ।
छागळियौ, छागळौ–पु० [स० छागल] १ यात्रा मे साथ रखने का जल पात्र । २ एक प्रकार का घोडा । ३ बकरा ।
छागी–स्त्री० १ बकरी । २ नकल ।
छाछ छाछड, छाछडली, छाछडलो–स्त्री० [सं० छच्छिका] १ दही मथ कर मक्खन निकाल लेने के बाद पीछे रहने वाला पानी, मट्ठा, तक्र । २ चाच देश ।
छाछण–स्त्री० साग-सब्जी मे दी जाने वाली खटाई ।
छाछरौ–वि० १ ठिगना, बौना, नाटा । २ मस्त ।
छाछि, छाछी–स्त्री० १ आवड देवी की बहन एक देवी । २ देखो 'छाछ' ।
छाछेतौ, छाछंतौ–वि० छाछ का, छाछ सबधी ।
छाछ्यौ–पु० जीरे की फसल का एक रोग ।
छाज, छाजड़यौ, छाजड–पु० [स० छाद] १ अनाज फटकने का उपकरण, सूप । २ छप्पर, छाजन । ३ छज्जा ।
छाजडकन्नौ–वि० बडे-बडे कानो वाला । (हाथी)
छाजण–पु० [स० छादन] १ छप्पर, छान । २ कच्चे मकान की छाजन, छप्पर । ३ छाने का ढग । ४ शोभित होने का भाव ।
छाजणौ (बौ)–क्रि० १ शोभा देना, फबना । २ सुशोभित होना । ३ आच्छादित होना ।
छाजन–देखो 'छाजण' ।
छाजरसि (सु)–पु० एक प्रकार का घास ।
छाजलियौ–१ देखो 'छाजलौ' । २ देखो 'छाजौ' ।
छाजली–स्त्री० डलिया, टोकरी, छबडी ।
छाजलौ–पु० अनाज फटकने का उपकरण, सूप ।
छाजारी–स्त्री० रहट मे लगने वाली घास या लोहे की बनी टट्टी ।
छाजियौ–पु० मृतक के पीछे गाया जाने वाला विरह गीत ।
छाजौ–पु० १ दरवाजे या खिडकी पर छाजन की तरह लगा पत्थर या लकडी का पाटिया । छज्जा । २ छज्जे पर बनी बालकानी । ३ टोप के आगे निकला हुआ भाग । ४ सर्प का फन ।
छाट (ण)–स्त्री० १ विपत्ति, सकट, उच्चाट । २ ऊपर से आच्छादित जलकुण्ड । ३ चट्टान, शिला । (जैन)
छाटक (कौ)–पु० प्रहार, चोट । –वि० (स्त्री० छाटकी) चतुर, दक्ष, होशियार, धूर्त, चालाक ।
छाटकाई–स्त्री० चतुरता, दक्षता, होशियारी, चालाकी, धूर्तता ।
छाटी–स्त्री० सामान लाद कर ऊट पर रखने का बकरी के बालो का बना मोटा थैला ।
छाड–स्त्री० [स० छर्दि] १ वमन, कै, उल्टी । २ वर्षा के पानी से घास उत्पन्न होने का स्थान । ३ कूए पर मोट खाली करने का स्थान । ४ त्याग ।
छाडणौ (बौ)–क्रि० [स० छर्दनम्] १ वमन, कै या उल्टी करना । २ छोडना, त्यागना । ३ बगावत या विद्रोह करना ।
छाडाणौ–वि० विद्रोही, क्रान्तिकारी । –पु० बगावत, विद्रोह ।
छाडाणौ (बौ)–क्रि० १ वमन कराना । २ छुडवाना, त्यागाना । ३ विद्रोह कराना ।
छाडाळ (ळौ)–पु० १ भाला, नेजा । २ ईडर झुका हुआ ऊट ।
छाडि (डी)–स्त्री० १ गुफा, कदरा । २ रहट मे लगी रहने वाली एक नलिका ।
छाडीणौ, छाडोणौ–देखो 'छाडाणौ' ।

छाणो (बो)–क्रि० [स० छादन] १ फैलना, पसरना । २ व्याप्त होना । ३ आच्छादित होना । ४ आच्छादित करना । ५ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना या करना । ६ बसना । ७ छिपना । ८ शोभित होना । ९ आवृत्त करना । १० तानना । ११ ढकना । १२ बिछाना, फैलाना ।

छात–स्त्री० [स० छत्र] १ छत का आगन । २ समूह । ३ राज्य । ४ घाव, क्षत । ५ विवाह मे नाई द्वारा किया जाने वाला दस्तूर विशेष व इस रस्म पर दिया जाने वाला नेग । –वि० दूल्हे की पीठ के पीछे नाई अपना वस्त्र फैला कर रखता है, तब दूल्हा ऊपर से नेग की रकम नाई के वस्त्र मे डालता है । ६ देखो 'छत्र' । –वि० श्रेष्ठ, उत्तम । —**पत, पति, पती**='छत्रपति' । —**रगी**–वि० जबरदस्त, प्रबल, चतुर, दक्ष ।

छातर–१ देखो 'छत्र' । २ देखो 'छात्र' ।

छातरको–पु० छिलका ।

छातरणो (बो)–क्रि० १ जलमग्न होना, डूबना । २ फैलना, पसरना । ३ छितरना ।

छाती–स्त्री० १ किसी प्राणी के पेट व गर्दन के बीच का भाग, सीना । २ स्त्रियो के कुच, उरोज । ३ हृदय, कलेजा । ४ चित्त, मन । ५ हिम्मत, साहस, दृढता । ६ आवेश, जोश । —**कूटो**–पु० निरर्थक श्रम । परेशानी, मगजपच्ची । कलह, लडाई, दुख, मजबूरी मे किया जाने वाला कार्य । —**छोलो** –वि० दुखदायी, कलह करने वाला । —**बद**–पु० घोडो का एक रोग ।

छातो–पु० १ छतरी, छाता । २ देशी शराब । ३ झुड, समूह । ४ मधु मक्खी का छत्ता ।

छात्र–पु० [स०] १ विद्यार्थी, शिष्य । २ छत्रपति, राजा । ३ एक प्रकार की शहद । —**पत, पति**–पु० राजा, नृप । —**वति**–स्त्री० विद्यार्थी को पुरस्कार स्वरूप या सहायतार्थ दिया जाने वाला धन ।

छाथाळ–वि० छत्र धारण करने वाला राजा, नृप ।

छादण (णो)–पु० [स० छादन] १ उल्टी, वमन, कै । २ आच्छादन ।

छादणो (बो)–क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना । २ उल्टी करना, वमन करना । ३ छा देना ।

छादन–देखो 'छादण' ।

छाप–स्त्री० १ वह वस्तु जिसका अकन किसी अन्य वस्तु पर किया जावे । २ मुद्रा, मुहर । ३ मुद्राकन, चिह्न । ४ विष्णु के आयुधो के चिह्न । ५ किसी प्रकार का साकेतिक चिह्न विशेष । ६ काव्य, गीत, पद आदि के अत मे लगा रचनाकार का नाम । ७ चित्र, तस्वीर । ८ आभूषण विशेष ।

छापणो (बो)–क्रि० १ मुद्राकित करना, ठप्पा लगाना । २ चिह्नित करना । ३ मुद्रित करना, छापना । ४ वस्त्रो पर छपाई करना । ५ झडबेरी के काटो मे आवेष्टित करना ।

छापर (रि, री)–स्त्री० १ पहाडी, डूगरी । २ पथरीली भूमि । ३ ऊसर भूमि । ४ रणक्षेत्र । ५ समतल भूमि, मैदान ।

छापरो–वि० १ ठिगना, बौना, नाटा । २ फैला हुआ, विस्तृत ।

छापाखानो–पु० मुद्रणालय, प्रेस ।

छापि (पी)–पु० जल, पानी ।

छापो–पु० १ मुद्रण । २ देखो 'छाप' ।

छाब–स्त्री० १ बास की पतली खपचियो की बनी छोटी टोकरी, डलिया । २ डलियानुमा कोई धातु का पात्र ।

छाबक–स्त्री० छिपकली ।

छाबड (ली)–देखो 'छाब' ।

छाबड़ि (डी)–स्त्री० टोकरी ।

छाबड़ो–पु० १ बडा टोकरा । २ कुकुम रखने का काष्ठ-पात्र ।

छाबल (लि, ली)–स्त्री० १ खजरी से मिलता-जुलता एक वाद्य । २ इस वाद्य के साथ गाया जाने वाला गीत । ३ देखो 'छाब' ।

छाबोलो, छाबोल्यो–देखो 'छाबडो' ।

छाय–देखो 'छाया' ।

छायल–वि० १ वीर, बहादुर । २ शौकीन, रसिक ।

छायांक–पु० [स०] चन्द्रमा, चाद ।

छाया–स्त्री० [स०] १ परछाई । २ पेड या इमारत की परछाई । ३ छोटे बादलों की प्रतिछाया । ४ प्रकाश मे व्यवधान से होने वाला अधेरा । ५ कालिमा । ६ प्रतिबिंब, प्रतिकृति । ७ साया, आकृति । ८ अनुकरण, नकल । ९ देव माया या भूत-प्रेतादिक का प्रभाव । १० प्रभाव, असर । ११ सूर्य की पत्नी का नाम । १२ शरण, रक्षा । १३ कान्ति, दीप्ति, झलक । १४ दुख या चिंता के कारण आँख के नीचे पडने वाला कुछ काला दाग । १५ समानता । १६ रग की गडबडी । १७ माया । १८ भ्रम, धोखा । १९ सुन्दरता । २० पक्ति । २१ दुर्गा देवी । २२ रिश्वत । २३ आर्या छन्द का भेद विशेष । —**जत्र**–पु० समय सूचक यन्त्र, घडी । —**टोडी**–स्त्री० एक राग विशेष । —**पथ**–पु० आकाश गगा, आकाश । —**पुत्र**–पु० शनिश्चर । —**पुरस**–पु० मनुष्य की परछाई । —**मान, वाळ**–पु० चन्द्रमा, चाद ।

छायोडो–वि० (स्त्री० छायोडी) आच्छादित, अवेष्टित ।

छारडी–स्त्री० होली का दूसरा दिन ।

छार–पु० [स० क्षार] १ राख, भस्म । २ क्षार ।

छाळ–देखो 'छाळी' ।

छाळउ–देखो 'छाळो' ।

छाल (लि, ली)–स्त्री० [स० छल्लि] १ वृक्ष का छिलका, वल्कल । २ छिलका, आवरण । ३ चर्म, त्वचा । ४ वमन, कै ।

छालणौ (बौ)–क्रि० १ छिलका उतारना, छीलना । २ छानना । ३ पूरा भर देना ।

छालवी–स्त्री० आकाक्षा, इच्छा, वासना ।

छाळी–स्त्री० [स० छागली] बकरी । —**ना'र, ना'रियौ**–पु० बकरी आदि छोटे जानवरो का शिकार करने वाला हिंसक जानवर, भेडिया ।

छाळौ, (लौ, ल्लौ)–पु० [स० छाग] (स्त्री० छाळी) १ फफोला, फोडा । २ बकरा । ३ छाज ।

छाव–देखो 'छावौ' ।

छावउ, छावक, छावड–पु० [स० शावक] १ बच्चा । २ युवक ।

छावड़ी–स्त्री० रस्सी ।

छावडौ–१ देखो छावडो' । २ देखो 'छावड' ।

छावणी–स्त्री० १ सैन्य शिविर, सेना का पडाव । २ सेना का बडा विभाग या केन्द्र । ३ छाने की क्रिया या भाव ।

छावणौ (बौ)–देखो 'छाणौ' (बौ) ।

छावळी–देखो 'छावळी' ।

छावीस–देखो 'छब्बीस' ।

छावौ–पु० [स० शावक] (स्त्री० छावी) १ बच्चा, शिशु । २ पुत्र, लडका । ३ युवक । ४ विख्यात, प्रसिद्ध ।

छासट (ठ)–वि० [स० षट्षष्टि] साठ व छ । –पु० साठ व छ की सख्या, ६६ ।

छासटौ (ठौ)–पु० ६६ का वर्ष ।

छाह (डी, डी, णी)–१ देखो 'छाया' । २ देखो 'छाछ' ।

छिंकाणौ (बौ)–क्रि० छीक लेने के लिए प्रेरित करना ।

छिंगास–देखो 'छगास' ।

छिंछ–देखो 'छीछ' ।

छिंदगारौ–देखो 'छदगारौ' ।

छिंया (डी)–देखो 'छाया' ।

छिंयाळी (स)–वि० [स० षट्चत्वारिंशत्] चालीस व छ । –पु० छियालीस की सख्या, ४६ ।

छिंयाळीसो, छिंयाळो–पु० छियालीस का वर्ष ।

छिंयासियौ–पु० ८६ का वर्ष ।

छिंयासी–वि० [स० षड्शीति] अस्सी व छ । –पु० ८६ की सख्या ।

छिंयासीमो (वौ)–वि० छियासी के स्थान वाला ।

छिंयौ–देखो चियौ' ।

छिंवरी (रौ)–स्त्री० घने पत्तो वाली वृक्ष की टहनी ।

छिंहत्तर–देखो 'छियतर' ।

छि–स्त्री० [स०] १ मर्यादा । २ नींव । ३ धिक्कार । ४ गाली । ५ घृणा सूचक ध्वनि । ६ घृणित वस्तु । ७ कुम्हार । ८ शिकारी । ९ कुठार १० समय । ११ देवता ।

छिअतर–देखो 'छियतर' ।

छिअतरौ–देखो 'छियतरौ' ।

छिकणी–स्त्री० छितराने वाली घास ।

छिकणौ–वि० १ जिसमे स्याही या रग फैलता हो । २ कम घुटा हुआ, छिनछिना ।

छिकणौ (बौ)–क्रि० १ स्याही आदि का फैलना । २ छितराना । ३ देखो 'छकणौ' (बौ) ।

छिकरौ, छिक्कर–पु० [स० छिक्कर] तीव्र गति वाला एक मृग विशेष ।

छिवकी–स्त्री० विवाह की एक रस्म विशेष । (पुष्करणा)

छिगी–स्त्री० कमजोरी की दशा मे आने वाला पसीना ।

छिडकणौ (बौ)–क्रि० १ छिडकाव करना । २ पानी आदि पदार्थ के छीटे उछालना । ३ छितराना, फैलाना, बिखेरना । ४ न्योछावर करना ।

छिड़काई–स्त्री० १ छिडकने का कार्य, छिडकाव । २ छिडकने का पारिश्रमिक ।

छिडकाणौ (बौ)–क्रि० १ छिडकाव कराना । २ छीटे उछलवाना । ३ बिखरवाना, छितरवाना । ४ न्योछावर कराना ।

छिडकाव–पु० पानी, द्रव पदार्थ आदि को छिडकने, फैलाने, छितराने की क्रिया ।

छिडकावणौ (बौ)–देखो 'छिडकाणौ' (बौ) ।

छिडणौ (बौ)–क्रि० १ प्रारभ होना, शुरू होना । २ युद्ध होना । ३ छेडा जाना । ४ कुपित होना ।

छिडाणौ (बौ), छिड़ावणौ (बौ)–क्रि० १ प्रारभ कराना, शुरू कराना । २ युद्ध कराना । ३ छेडने के लिये प्रेरित करना । ४ कुपित कराना ।

छिछ, छिछकारी, छिछका–स्त्री० १ उकसाने, जोश दिलाने का भाव । २ जोश दिलाने का इशारा, ध्वनि ।

छिछडौ–पु० १ मास का निरर्थक खण्ड, भाग, अश । २ पशुओ के मल की थैली ।

छिछलौ, छिछिलौ–वि० (स्त्री० छिछली) जो गहरा न हो, उथला ।

छिछोर (रौ)–वि० (स्त्री० छिछोरी) १ हीन विचारो वाला, ओछा । २ क्षुद्र । ३ घटिया किस्म का । —**पण, पणौ**–पु० क्षुद्रता, ओछापन ।

छिजाणौ (बौ)-क्रि० १ नष्ट होने देना, क्षय कराना। २ सोखाना। ३ कुढाना, चिढाना। ४ चिंतित करना। ५ चूर्ण करना।

छिटक-स्त्री० १ जल्दी, शीघ्रता। २ पालकी के सामने का भाग। ३ चमक, शोभा।

छिटकणौ (बौ)-क्रि० १ अलग होना। २ विछुडना। ३ गिर कर फैलना। ४ दूर-दूर रहना। ५ तितर-वितर होना। ६ अनियन्त्रित होना।

छिटका-क्रि० वि० शीघ्रता से, तुरत।

छिटकाणौ (बौ), छिटकावणौ (बौ)-क्रि० १ अलग करना। २ विछुडाना। ३ गिरा कर फैलाना। ४ दूर-दूर करना। ५ तितर-वितर करना। ६ अनियन्त्रित करना। ७ छोडना, मुक्त करना। ८ त्यागना।

छिटकौ-पु० १ छींटा, बूंद। २ धक्का, झटका, आघात। ३ किसी जीव के काटने की क्रिया।

छिण-पु० [स० क्षण] क्षण, पल।

छिणगारौ-वि० रसिक, शौकीन।

छिणगौ-पु० [स० शृंग] १ साफे के पीछे लटकने वाला छोर, पल्लु। २ तुर्रा। ३ घास की वाल।

छिणछिणौ-वि० जो गाढा या घना न हो, जालीनुमा।

छिणमिण-स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ हल्की, रुग्णावस्था। -क्रि० वि० इधर-उधर।

छिणमिणौ-वि० (स्त्री० छिणमिणी) रुग्ण, बीमार।

छिणवौ-देखो 'छनवौ'।

छिणियै-क्रि० वि० [स० क्षण] क्षण भर।

छिणी-देखो 'छीणी'।

छिणुऔ, छिणुवौ-देखो 'छिनवौ'।

छित-स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी, भूमि। —**नायक, पति**-पु० नृप, राजा।

छितरणौ (बौ)-क्रि० १ बिखरना, फैलाना। २ अलग-अलग होना।

छितराणौ (बौ)-क्रि० १ बिखराना, फैलाना। २ अलग-अलग करना।

छिता-देखो 'छिति'।

छिति-स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी, भूमि। —**कत**-पु० राजा, नृप। —**रुह**-पु० पेड, वृक्ष।

छिती-वि० १ श्वेत। २ कृष्ण※। ३ देखो 'छिति'।

छितीस-पु० [स० क्षितीश] राजा, नृप।

छिद-पु० [स० छिद्र] १ छेद, सूराख। २ घाव।

छिदणौ (बौ)-क्रि० [स० छिद्रणम्] १ छेद युक्त होना, छिद्रित होना। २ छेदा जाना। ३ बिंधना, वेधा जाना। ४ घायल होना। ५ क्षत होना।

छिदर-देखो 'छिद्र'।

छिदराळौ-वि० [स० छिद्रित] (स्त्री० छिदराळी) १ पाखंडी, ढोंगी। २ दोषी, अवगुणी। ३ छेद वाला, जालीनुमा।

छिदाणौ (बौ), छिदावणौ (बौ)-क्रि० १ छेद मुक्त कराना, छिद्रित कराना। २ विंधवाना। ३ घायल कराना। ४ क्षत कराना।

छिद्र-पु० [स०] १ छेद, सूराख। २ घाव, क्षत। ३ दोष, अवगुण। ४ कमी, कमजोरी। ५ त्रुटि, गलती। ६ पाखड। ७ दरार।

छिद्रघटिका-स्त्री० [स० क्षुद्रघटिका] करधनी।

छिद्रदरसी-वि० १ दूसरो के अवगुण देखने वाला। २ कमजोरी निकालने वाला।

छिद्रावळी-स्त्री० करधनी।

छिद्री-पु० एक प्रकार का वाण।

छिन-पु० [स० क्षण] १ क्षण, पल। २ आभूषण विशेष।

छिनक-वि० थोडा, अल्प।

छिनको (कीक)-वि० थोडी, तुच्छ, क्षणिक।

छिनगारौ-वि० १ रसिक, शौकीन, छैला। २ स्वरूपवान। ३ शृंगार युक्त।

छिनणौ (बौ)-क्रि० १ छीना जाना, छिनना। २ कोसा जाना, झपट लिया जाना। ३ हरण होना। ४ बलात् ले जाना।

छिनदा-स्त्री० [स० क्षणदा] रात्रि, निशा।

छिनवौ-पु० ९६ का वर्ष। -वि० ९६ के स्थान वाला।

छिनाणौ (बौ)-क्रि० १ छिनवाना, छीनने के लिये प्रेरित करना। २ कोसाना, झपटवाना। ३ हरण कराना। ४ वलात् लेने मे सहयोग करना।

छिनाळ-स्त्री० १ कुल्टा, कर्कशा व कुलक्षिणी स्त्री। २ व्यभिचारिणी स्त्री। ३ पर-पुरुषगामिनी स्त्री।

छिनी-१ देखो 'छिन'। २ देखो 'छीणी'।

छिनुऔ, छिनुवौ-देखो 'छिनवौ'।

छिनूं, छिनू-वि० [सं० षण्णवति] नब्बे और छ। -पु० नब्बे और छ की संख्या।

छिनेक-क्रि०वि० क्षण भर के लिये।

छिन्न-वि० [स०] १ कटा हुआ। २ निश्चित, निर्धारित। ३ खण्डित। ४ भग्न। —**गाय**-वि० स्नेहरहित। -पु० साधु, त्यागी। —**भिन्न**-वि० खण्डित, टूटा-फूटा, जीर्ण-शीर्ण, अस्त-व्यस्त। —**रुह**-स्त्री० वनस्पति। —**सोच**-वि० जिसने शोक का छेदन कर दिया हो।

छिन्नाळ-देखो 'छिनाळ'।

छिपकली-स्त्री० गोह की तरह का एक बहुत छोटा जन्तु।

छिपणौ (बौ)–क्रि० १ किसी ओट या सहारे से, सामान्यतया न दिखने की दिशा मे होना । २ अदृश्य या अलोप होना । ३ भूमिगत या गुप्त होना । ४ भेष बदल कर रहना ।

छिपलौ–पु० मुह छुपाने या गुप्त रहने का भाव ।

छिपा–स्त्री० [स० क्षपा] १ रात, निशा । २ हल्दी । ३ तम्बू, खेमा । –वि० घना, सघन । —**कर**–पु० चन्द्रमा । —**सत्र, सत्रु**–पु० सूर्य ।

छिपाणौ (बौ), छिपावणौ (बौ)–क्रि० १ सामान्यतया न दिखने की दिशा मे करना, ओट मे करना, छुपाना । २ अदृश्य या अलोप करना । ३ भूमिगत या गुप्त करना । ४ भेष बदल कर रखना । ५ गुप्त रखना ।

छिपाव–पु० १ छुपाने या गुप्त रखने का भाव । २ भेद रहस्य । ३ गोपनीयता । ४ दुराव, भेद-भाव ।

छिब–देखो 'छवि' । —**काळौ**='छवकाळौ'

छिबणौ–देखो 'छवणौ' ।

छिबणौ (बौ)–देखो 'छवणौ' (बौ) ।

छिबदार (वत)–वि० छवि युक्त कातियुक्त ।

छिबि, छिबी–स्त्री० [अ० शबी] १ माला, जयमाला । २ छबि, शोभा । –वि० १ तेज, तीक्ष्ण । २ पहली ।

छिम–देखो 'चिम' ।

छिमछिमिया–पु० मजीरे की जोडी, छोटे झाझ ।

छिमता–देखो 'क्षमता' ।

छिमा–देखो 'क्षमा' ।

छियतर–वि० [सं० षट्सप्तति] सत्तर और छ, छिहत्तर । –पु० छिहत्तर की सख्या, ७६ ।

छियतरमो (वौं)–वि० ७६ के स्थान वाला ।

छियतरो–पु० ७६ का वर्ष ।

छिया–देखो 'छाया' ।

छियांळीस–देखो 'छियाळीस' ।

छिरग (गो)–पु० [स० शृग] १ किसी वस्तु का ऊपरी शिरा या भाग । २ शिखर का ऊपरी शिरा । ३ घास की बाल ।

छिरमिर–देखो 'झिरमिर' ।

छिररौ–१ देखो 'छररौ' । २ देखो 'छेरौ' ।

छिरेंटी–स्त्री० जल जमनी लता । (वैद्यक)

छिरेबौ–पु० हाथी का प्रथम बार टपकने वाला मद ।

छिळक, छिलक–स्त्री० हल्का गुस्सा, आवेश ।

छिलकणौ (बौ)–देखो 'छलकणौ' (बौ) ।

छिलकाणौ (बौ)–देखो 'छलकाणौ' (बौ) ।

छिलकारी, छिलकारौ–पु० १ बकरे या बकरी का पेशाब । २ देखो 'चिलकारौ' ।

छिलकावणौ (बौ)–देखो 'छलकाणौ' (बौ) ।

छिलकौ–पु० १ किसी कद, मूल, फल या वृक्ष आदि के ऊपर की झिल्ली, छाल, छिलका । २ त्वचा, चर्म । ३ आवरण ।

छिलणौ (बौ)–क्रि० १ छिलका उतरना, छोला जाना । २ जोर की रगड लगने से चमडी उतरना । ३ छलकना, उमडना, उबकना । ४ सीमा या मर्यादा खोना । ५ आपे मे न रहना । ६ गले मे खराश होना । ७ पूर्ण भर जाना । ८ फैलना, विस्तृत होना ।

छिलर, छिलरियौ–देखो 'छीलर' ।

छिलिहिंडा–स्त्री० एक लता विशेष ।

छिलोडी–स्त्री० १ पाव के तले मे होने वाला फफोला । २ एक प्रकार का जतु विशेष ।

छिल्लणौ (बौ)–देखो 'छिलणौ' (बौ) ।

छिल्लर, छिल्लरू–देखो 'छीलर' ।

छिल्लौ–पु० बकरा ।

छिव–देखो 'छवि' ।

छिवणौ (बौ)–देखो 'छवणौ' (बौ) ।

छिवारौ–पु० छुआरा, खजूर ।

छिहतर–देखो 'छियतर' ।

छिहतरौ–देखो 'छियतरौ' ।

छींक–स्त्री० [स० छिक्का] १ नाक मे चुनचुनाहट होने पर झटके के साथ नाक से निकलने वाली हवा । २ इस हवा से उत्पन्न 'छू' की तीव्र ध्वनि ।

छींकणौ (बौ)–क्रि० छीक लेना, छीकना ।

छींकल (बौ)–पु० (स्त्री० छीकली) एक जाति विशेष का मृग ।

छींकाखाई–स्त्री० एक औषधि विशेष ।

छींकी–स्त्री० शीत काल मे मद चढे ऊट के मु ह पर बाधी जाने वाली जाली ।

छींको–पु० १ सींको, तारो या रस्सियो को बुन कर बनाया गया टोकरा जो छत, खू टी आदि पर लटका रहता है । २ टोकरा ।

छींछ–स्त्री० तेज धारा ।

छींट–स्त्री० [स० क्षिप्त] १ जल कण, बू द, छाट, छींटा । २ चिह्न, दाग । ३ रग-बिरगे बेल-बू टो वाला वस्त्र । ४ टुकडा, भाग ।

छींटणौ (बौ)–क्रि० १ मवेशियो द्वारा पतला गोबर करना । २ दस्त लगना । ३ छाटना, छिडकना ।

छींटौ–पु० १ छीटा, बू द, जल कण । २ पतला गोबर ।

छींण–स्त्री० पत्थर की पट्टी । चीण ।

छींतरी–स्त्री० १ वस्त्र पट्टिका । २ टूटी-फूटी डलिया । २ छोटे-छोटे बादल ।

छींपा, छींपी–देखो 'छीपा' ।

छींपो–पु० (स्त्री० छींपी) रगरेज ।

छींभड़ो–देखो 'चींभडो'।

छींया–देखो 'छाया'।

छी–ग्रव्य० [स० छी] तिरस्कार या घृणा सूचक ध्वनि। विशेष। –स्त्री० १ बच्चे का पाखाना। २ घृणित वस्तु। ३ कटि मेखला। ४ जीव। ५ मद। ६ सार। ७ काति। ८ छछूदरी।

छीकणी–स्त्री० [स० छिक्किका] एक क्षुप जो ग्रौपधि के रूप प्रयुक्त होता है।

छीछी–ग्रव्य० घृणा सूचक ध्वनि। –स्त्री० घृणित वस्तु। पाखाना।

छीज–स्त्री० १ कमी, हानि, घाटा। २ खीज, कुढन। ३ क्षय। ४ व्याकुलता, बेचैनी।

छीजणौ (बौ)–क्रि० [स० क्षीप्] १ कमी, घाटा या हानि होना। २ क्षय होना, ह्रास होना, क्षीण होना। ३ खीजना, कुढ़ना। ४ दुखी होना। ५ डरना। ६ जलना, शुष्क होना। ७ झुझलाना। ८ व्याकुल होना।

छीजत–स्त्री० [स० क्षीप] १ कमी, घाटा। २ क्षय, ह्रास। ३ कुढन, खीज। ४ चिंता, फिकर। ५ घुटन।

छीजाणौ (बौ), छीजावणौ (बौ)–क्रि० १ कमी करना, घटाना। २ क्षय करना। ३ खीजाना, कुढाना। ४ दुखी करना। ५ डराना। ६ जलाना, शुष्क करना।

छीजौ–वि० (स्त्री० छीजी) १ डाह करने वाला, कुढने वाला। २ क्रोधी।

छीडरियौ–पु० छिछला ताल, तलैया।

छीण–१ देखो 'क्षीण'। २ देखो 'चीण'।

छीणतन–वि० कृश काय, पतला-दुबला।

छीणी–स्त्री० पत्थर तोडने या गढने की लोहे की मोटी कील, टाकी।

छीणे, (णै)–क्रि०वि० टूटने से, कटने से।

छीणोटगी–स्त्री० बारीक जू।

छीणौ–देखो 'क्षीण'।

छीतर–स्त्री० १ पथरीली या पहाडी भूमि। २ एक प्रकार का पत्थर। –वि० [सं० छित्वर] कपटी, धूर्त।

छीतरी–स्त्री० पतली छाछ, अधिक पानी मिला मट्ठा, छोटे-छोटे बादल। –वि० छिछली, छितराई हुई।

छीतरौ–वि० (स्त्री० छीतरी) छिछला, बिखरा हुग्रा, छितराया हुग्रा।

छीदगत–स्त्री० कपट, धोखा, चाल, धूर्तता।

छीदरियौ, छीदरौ, छीदौ–पु० (स्त्री० छीदरी) १ तरल पदार्थ। २ अधिक पानी मिली वस्तु। –वि० १ छिछला, पतला। २ छेददार, छिद्रिन। ३ विरल, बारीक। ४ चौडा।

छीन–देखो 'क्षीण'। २ देखो 'छीण'।

छीनणौ (बौ)–क्रि० १ कोसना, लूटना, झपट कर लेना। २ बलात् ले लेना। ३ ग्रनुचित कब्जा करना।

छीनवौ–देखो छिनवौ'।

छीनाणौ (बौ), छीनावणौ (बौ)–क्रि० १ कोसाना, लुटवाना। २ बलात् लेने के लिए प्रेरित करना। ३ ग्रनुचित कब्जा कराना।

छीनौ–वि० [स० क्षीण] खिन्न, दुखी, उदास।

छीप–स्त्री० [स० क्षिप्र] शीघ्रता, जल्दी। –वि० तेज, जल्दबाज।

छीपणौ (बौ)–क्रि० स्पर्श करना, छूना।

छीपा–स्त्री० १ वस्त्र रगने का कार्य करने वाली जाति। २ गुजराती नटो की एक शाखा।

छीब–देखो 'छवि'।

छीबरी–स्त्री० १ एक पक्षी विशेष। २ पतली छाछ। ३ पतले व सपेद बादल।

छीय, छीया–स्त्री० [स० क्षुत] छींक। (जैन)

छीया–स्त्री० छाया। —**छावळी**–स्त्री० एक देशी खेल।

छीर–पु० [स० क्षीर] दूध। —**ज**–पु० दही, चन्द्रमा, कमल, शख। —**जा**–स्त्री० लक्ष्मी। —**समुद्र, सागर**–पु० क्षीर सागर।

छीरप–पु० [स० क्षीरप] बच्चा, शिशु।

छीरल–पु० [सं० क्षीरल] एक प्रकार का सर्प।

छीरोदधजा–स्त्री० लक्ष्मी।

छीलणौ (बौ)–क्रि० १ किसी वस्तु का छिलका उतारना, छीलना। २ ग्रावरण हटाना। ३ मीगी या गूदा निकालना। ४ काटना।

छीलण–स्त्री० ग्राभूषण विशेष।

छीलर–स्त्री० १ रेजगारी, रेजगी। २ देखो 'छिलरि'।

छीलरि, छीलरियउ, छीलरियौ, छीलरौ–पु० [स० छिद्रल] १ छिछले पानी का गड्ढा, तलैया। २ छोटा तालाब। ३ बेसन का नमकीन पराठा।

छीलौ–पु० पलाश वृक्ष, ढाक।

छीव–वि० मस्त, उन्मत्त।

छीवोल्लम्र–पु० निंदार्थक मुख विकार। (जैन)

छुच्छंठी–स्त्री० रूई धुनने की ग्रावाज।

छुछुमुसय–स्त्री० उत्कण्ठा। (जैन)

छुद–वि० ग्रधिक, ज्यादा। (जैन)

छु–स्त्री० १ मशक। २ जुगुप्सा। ३ तृष्णा। –ग्रव्य० कुत्ते को उत्साहित करने की ध्वनि।

छुग्राछूत–स्त्री० किसी को स्पर्श करने, साथ रखने या सम्पर्क करने ग्रादि का परहेज, ग्रस्पृश्यता।

छुआणौ (बौ)–देखो 'छुवाणौ' (बौ) ।
छुइमुई–स्त्री० लाजवंती नामक पौधा ।
छुई–स्त्री० बक पंक्ति।
छुक्कारण–स्त्री० निंदा, धिक्कार । (जैन)
छुच्छ–वि० [सं० तुच्छ] क्षुद्र, तुच्छ । (जैन)
छुच्छम–देखो 'सूक्ष्म' ।
छुच्छकार (क्कार)–पु० [स छुच्छुकार] कुत्ते को उत्साह दिलाने की क्रिया या भाव ।
छुछक, छुछक–पु० पुत्री के संतान हो जाने पर दी जाने वाली भेंट । (मेवात)
छुछम–देखो 'सूक्ष्म' ।
छुटकारौ–पु० १ बंधन, मुक्ति । २ कार्य या उत्तरदायित्व से मुक्ति । ३ कष्ट निवारण ।
छुटणौ (बौ)–देखो 'छूटणौ' (बौ) ।
छुटभई, छुटभाई–पु० १ पद या मान मर्यादा मे वश का छोटा व्यक्ति । २ लघु भ्राता, छोटा भाई ।
छुटाणौ (बौ)–देखो 'छुडाणौ' (बौ) ।
छुटियौ–पु० १ एक लोक गीत विशेष । २ गेंद खेलने की लकडी । ३ छडी ।
छुटौ–देखो 'छुट्टौ' ।
छुट्ट–पु० छुटकारा, छूट ।
छुट्टण–स्त्री० छुट्टी, मुक्ति, छोटापन ।
छुट्टणौ (बौ)–देखो 'छूटणौ' (बौ) ।
छुट्टी–स्त्री० १ अवकाश । २ कार्य या बंधन से मुक्ति । ३ छुटकारा, निस्तार । ४ फुर्सत । ५ छूट, अनुमति ।
छुट्टौ–वि० (स्त्री० छुट्टी) १ खुला, मुक्त, स्वतंत्र । २ अकेला, एकाकी । ३ खाली हाथ । ४ अवरोध या भार से मुक्त ।
छुडणौ (बौ)–देखो 'छूटणौ' (बौ) ।
छुडाई–स्त्री० छोडने की क्रिया या भाव ।
छुडाणौ (बौ), छुडावणौ (बौ)–क्रि० १ बंधन मुक्त कराना, स्वतन्त्र कराना । २ उलझन या फासी से मुक्ति दिलाना । ३ जेल से छुडवाना । ४ चिह्न मिटाना । ५ त्याग कराना । ६ रिश्ता तुडाना ।
छुडु–क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त ।
छुड्ड–वि० [सं० क्षुद्र] तुच्छ, लघु । (जैन)
छुणगौ–देखो 'छिणगौ' ।
छुद्र–वि० [सं० क्षुद्र] १ ओछे विचारो वाला । २ नीच, दुष्ट । ३ उद्दण्ड । ४ निष्ठुर । ५ गरीब । ६ कजूस ।
छुद्रघट, (घटा, घटिका, घटी)–स्त्री० करधनी, मेखला ।
छुद्रा–स्त्री० दाख, किशमिश ।
छुध, छुधा–स्त्री० [सं० क्षुधा] भूख, इच्छा ।
छुनणौ (बौ)–देखो 'छूनणौ' (बौ) ।
छुन्न–वि० [सं० क्षुण्ण] १ चूर-चूर, चूर्णित । २ नष्ट । ३ अभ्यस्त । ४ नपुंसक ।
छुपणौ (बौ)–देखो 'छिपणौ' (बौ) ।
छुपाणौ (बौ), छुपावणौ (बौ)–देखो 'छिपाणौ' (बौ) ।
छुबरणौ (बौ)–क्रि० टुकडे-टुकडे करना, काटना, छीलना ।
छुम–स्त्री० ध्वनि विशेष ।
छुयाचार–वि० [सं०क्षत्ताचार] आचार-च्युत । (जैन)
छुरगौ–देखो 'छिणगौ' ।
छुर–पु० [सं० क्षुर] १ छुरा, छुरी । २ उस्तरा । ३ पशु का नख । ४ बाण, तीर । ५ वृक्ष विशेष । ६ गोखरू । ७ तृण विशेष ।
छुरघर, (घरय)–पु० छुरे का खोल, थैला ।
छुरमड्डि–पु० हज्जाम, नापित ।
छुरि (आ, का, गा, या), छुरी (का)–स्त्री० [सं० क्षुरिका] काटने व चीरने का तेजधार का उपकरण, छुरी, चाकू ।
छुरौ–पु० [सं० क्षुर] १ तेज धार का हथियार, छुरा । २ सिंह का पंजा ।
छुळकणौ (बौ)–क्रि० १ थोडा-थोडा मूतना । २ छलकना ।
छुलणौ (बौ)–क्रि० १ वृक्ष आदि की छाल उतरना । छीला जाना । २ रगड लगाने से चमडी उतरना । ३ छिलका उतरना । ४ छाछ या पानी के साथ पके हुए पदार्थ का विकृत होना ।
छुलाणौ (बौ), छुलावणौ (बौ)–क्रि० १ वृक्ष आदि की छाल उतरवाना । २ चमडी उतरवाना । ३ छिलका उतरवाना ।
छुवाछूत–देखो 'छुआछूत' ।
छुवाणौ (बौ)–क्रि० १ स्पर्श कराना, छुआना । २ हाथ लगवाना । ३ सटाना, अडाना ।
छुहारौ–देखो 'छुहारौ' ।
छुहा–स्त्री० [सं० सुधा] १ अमृत, पीयूष । २ चूना । ३ क्षुधा ।
छुहारौ–पु० खजूर का फल ।
छुहाळु–वि० [सं० क्षुधालु] भूखा, बुभुक्षित ।
छू–स्त्री० एक ध्वनि विशेष । –क्रि० वि० हूं ।
छूकण–स्त्री० छोका, तडका ।
छूकणौ (बौ)–क्रि० छोका लगाना, छोकना ।
छूछ–स्त्री० हृदय की उमंग, भावावेश । –वि० तृप्त, अघाया हुआ ।
छूत (क, कौ), छूतरौ–पु० छिलका ।
छूरियौ, छूरौ–पु० १ फूलो का ढेर । २ पलाश वृक्ष । ३ देखो 'छवरौ' ।
छू–पु० १ बाट । २ शब्द । ३ गज । ४ खुदा, ईश्वर । ५ मंत्र पढकर फूंकने की क्रिया । ६ कुत्ते को उत्साहित करने की ध्वनि ।

छूछक–देखो 'छुछक'।

छूछौ–वि० (स्त्री० छूछी) रिक्त, खाली।

छूट–स्त्री० १ छूटने का भाव, छुटकारा, मुक्ति। २ स्वतन्त्रता, आज़ादी। ३ रियायत, किफायत। ४ अवकाश, फुर्सत। ५ अनुमति। ६ खुला या विस्तृत स्थान। ७ कारणवश न जोती हुई भूमि। ८ वि-छेद।

छूटक–वि० १ फेका हुआ। २ छोडा हुआ। –पु० १ स्फुट पद। २ मुक्तक।

छूटणौ (बौ)–क्रि० [स० चुट्, छुट] १ बधन मुक्त होना, स्वतत्र होना। २ पकड से निकल जाना। ३ अलग होना, विलग होना। ४ मुक्त होना, छुटकारा पाना। ५ अभाव या कमी रह जाना। ६ मिटना। ७ अभ्यास न रहना। ८ अपूर्ण रहना। ९ शेष या बाकी बचना। १० पीछे रह जाना। ११ बिछुडना। १२ अस्त्रादि चलना, दगना। १३ फेका जाना। १४ स्खलित होना। १५ रिस-रिस कर निकलना, चूना। १६ प्रसव पीडा से मुक्त होना। १७ घोडे का मरना।

छूटपल्लौ, छूटापौ–पु० १ दम्पति का सबध विच्छेद, तलाक। २ प्रसव से मुक्ति।

छूटी (ट्टी)–देखो 'छुट्टी'।

छूटौ (ट्टौ)–देखो 'छुट्टौ'।

छूणौ (बौ)–क्रि० [स० छुप] १ स्पर्श करना, हाथ लगाना। २ छेडना, इधर-उधर करना। ३ सटाना, अडाना। ४ आलिगन करना। ५ प्रतिस्पर्धा मे बराबर आना। ६ निश्चित ऊंचाई पर पहुँचना। ७ थोडा उपभोग करना।

छूत–स्त्री० १ छूने या स्पर्श करने का भाव। २ अपवित्र वस्तु या अस्पृश्य को छूने का दोष, अशौच। ३ भूत-प्रेतादिक का प्रभाव।

छूतकौ, छूतरौ–पु० छाल, छिलका, छूता।

छूनणौ (बौ)–क्रि० १ छोटे-छोटे टुकडे करना। (मास) २ काटना।

छूनौ–वि० (स्त्री० छूनी) बढिया, श्रेष्ठ।

छूमतर–पु० १ अकस्मात गायब होने की क्रिया या भाव। २ जादू, टोना।

छूर–स्त्री० बौछार, छूट।

छूरौ–देखो 'छुरौ'।

छूवणौ (बौ)–देखो 'छूणौ' (बौ)।

छे–स्त्री० १ ऊसर भूमि। २ फासी। ३ इन्द्रिय। ४ वेणी। ५ वसुधा। ६ सियार। ७ छै, छ। ८ ध्वनि विशेष।

छे'–देखो 'छेह'।

छेक–वि० १ छेदने वाला। २ कसकने वाला, दर्द करने वाला। ३ चतुर। –पु० १ छिद्र, सूराख। २ छेकानुप्रास।

छेकड़ (ती)–पु० छेद, सूराख। –क्रि० वि० १ अंत मे। २ एक ओर, एक तरफ।

छेकड़लौ–वि० (स्त्री० छेकडली) आखरी, अन्त का।

छेकडौ–देखो 'छेक'।

छेकणौ (बौ), छेकरणौ (बौ)–क्रि० १ छेद करना, सूराख करना। २ चीरना। ३ काटना। ४ आर-पार निकलना। ५ आगे बढना।

छेकलौ–पु० छेद, सूराख।

छेकाछेकी–स्त्री० छेद करने या पैनी वस्तु घुसाने की क्रिया।

छेकौ–वि० (स्त्री० छेकी) उतावला, आतुर।

छेड–स्त्री० १ स्पर्श करने की क्रिया। २ व्यग, उपहास। ३ हसी, ठिठोली। ४ तग करने की क्रिया। ५ झगडा, टटा। ६ किसी वाद्य का निरन्तर बजने वाला स्वर। ७ बडा भोज। ८ द्वादशे का भोज। ९ प्रारभ।

छेडणौ (बौ)–क्रि० १ स्पर्श करना, इधर-उधर करना। २ कुरेदना। ३ व्यग या उपहास करना। ४ हसी करना। ५ तग करना, दुखी करना, चिढाना। ६ झगडा करना। ७ प्रारभ करना, शुरू करना। ८ किसी कार्य के लिये कहना, प्रेरित करना। ९ चीरना, फाडना। १० छेद या सूराख करना। ११ कामोद्दीपन करना।

छेडलियौ, छेडलौ–वि० (स्त्री० छेडली) आखिरी, अन्तिम।

छेड़ाछेड़ी–स्त्री० १ दूल्हे-दुल्हिन के वस्त्रो का परस्पर बधन। २ छेड-छाड।

छेड़ियौ–पु० १ रहट की माल का अतिम छोर। २ स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष। ३ जुलाहो का एक औजार। ४ चरखे का एक उपकरण। ५ देखो 'छेडौ'।

छेड़े (डं)–क्रि० वि० १ किनारे पर, छोर पर। २ एक तरफ, एक ओर। ३ अलग, दूर। ४ तटस्थ। ५ तत्पश्चात्।

छेडौ–पु० १ छोर, किनारा। २ घूघट, पल्ला। ३ हद, सीमा। ४ अत, समाप्ति। ५ चमडे का रस्सा। ६ गठ-बधन।

छेजेआणौ–क्रि० बकरी का ऋतुमति होना।

छेजौ–पु० जीव-जतुओ का खाद्य।

छेज्ज–वि० [स० छेद्य] १ छेदने या वेधने लायक। २ खण्डन करने योग्य। –पु० छेद, सूराख।

छेटी–स्त्री० [स० छिति] १ फासला, दूरी, अन्तर। २ बीच की दरार। ३ कसर, कमी।

छेडहड–क्रि० अंत मे, आखिर मे।

छेतर (ए)–स्त्री० १ पथरीली भूमि। २ श्मशान भूमि। ३ छल, कपट। ४ क्षेत्र।

छेतरणौ (बौ)–क्रि० १ धोखा देना, छलना। २ ठगना। ३ सहार करना, मारना। ४ ढूढना, तलाश करना।

छेतरी-वि० छली कपटी।

छेताळीस-देखो 'सैंताळीस'।

छेती-देखो 'छेटी'।

छेत्त-पु० [स० क्षेत्र] १ कृषि-भूमि, खेत। २ जमीन, भूमि। ३ आकाश। ४ वस्ती, नगर। ५ स्त्री, पत्नी।

छेद-पु० [स० छिद्र] १ छेद, सूराख। २ विल, विवर। ३ ऐव, दोष, अवगुण। ४ छेदन क्रिया। ५ कटाई। ६ नाश, ध्वंस। ७ खण्ड, टुकडा। ८ छ जैनागम ग्रथ।

छेदक (ग)-वि० छेद करने वाला, छेदने वाला।

छेदणौ (बौ)-क्रि० [स० छिदिर] १ छेद या सूराख करना। २ विल या विवर करना। ३ छेदन करना। ४ काटना। ५ नाश करना। ६ दोष निकालना।

छेदन-पु० छेदने की क्रिया या भाव।

छेदनी-स्त्री० पांचवी त्वचा का नाम।

छेदाणौ (बौ), छेदावणौ (बौ)-क्रि० १ छेद या सूराख कराना। २ विल या विवर कराना। ३ छेदन कराना। ४ कटाना। ५ नाश कराना। ६ दोष निकलवाना।

छेम-देखो 'क्षेम'।

छेमकरी-देखो 'क्षेमकरी'।

छेय-वि० [स० छेक] अवसर का जानकार, होशियार, चतुर, दक्ष। (जैन) -पु० १ प्रायश्चित। २ विच्छेद।

छेयग-देखो 'छेदक'।

छेयण-देखो 'छेदन'।

छेरु-देखो 'छेरौ'।

छेरे-देखो 'छेडे'।

छेरौ-पु० १ काष्ठ खण्ड, टुकडा। २ एक प्रकार का टोकरा। ३ ऊट का पनला पाखाना।

छेल (ग)-पु० (स्त्री० छेली) १ बकरा, अज। २ देखो 'छैल'।

छेलण-वि० मर्यादा भग करने वाला।

छेलणौ (बौ)-क्रि० १ मर्यादा भग करना, सीमा तोडना। २ लाघना। ३ छल करना। ४ पूर्ण करना, भरना।

छेलिअ (य)-पु० १ छीक। २ चीख, चीत्कार।

छेलिया, छेली-स्त्री० बकरी।

छेलौ, छेल्हौ-देखो 'छेहलौ'।

छेवडौ-देखो 'छेडौ'।

छेवट-क्रि० वि० आखिरकार। अत मे।

छेवटी-स्त्री० घोडे का चारजामा विशेष।

छेवट्ट, छेवट्ठ-पु० [स० सेवार्त्त] शारीरिक रचना।

छेह(उ)-स्त्री० १ अन्त। २ किनारा, छोर। ३ सहन शक्ति की अतिम अवस्था। ४ विश्वासघात, धोखा। ५ थाह गहराई। ६ हानि, नुकसान। -क्रि० वि० १ ओर, तरफ। २ अत मे।

छेहडलौ, छेहडौ, छेहलउ, छेहलौ-वि० (स्त्री० छेहडली, छेहली) आखिरी, अतिम। -पु० अतिमस्थान, किनारा।

छेहि, छेहिं, छेहु-देखो 'छेह'।

छैताळीस-देखो 'सैंताळीस'।

छै-वि० [स० षट्] पाच व एक। -पु० १ छ की सख्या। २ देव लोक। ३ मद पात्र। ४ तीक्ष्ण वस्तु। ५ सेना। -क्रि० वि० होना क्रिया के वर्तमान काल का रूप, है।

छैबासी-देखो 'सावासी'।

छैमायौ, छैमाहियौ-वि० १ छ मास का। २ छ मासिक, छ माही।

छैर-पु० भाले की तरह का तलवार का प्रहार।

छैल-१ चतुराई, दक्षता। २ देखो 'छैलौ'। ३ देखो 'छेल'।

छैलकडी-स्त्री० कान का एक आभूषण।

छैलकडौ-पु० १ हाथ का आभूषण। २ देखो 'छैलौ'।

छैलछबीलौ (भवर)-वि० शौकीन, रगीला, रसिक। -पु० १ प्रपितामह के जीवित अवस्था मे जन्म लेने वाला बालक। २ आभूषण विशेष।

छैलौ-वि० (स्त्री० छैली) १ शौकीन, रगीला, रसिक। २ जिसका प्रपितामह जिंदा हो। ३ सजा-धजा। ४ सुन्दर। ५ प्रिय, वल्लभ। ६ चतुर, दक्ष, होशियार।

छोक-देखो 'छौक'।

छोकणौ (बौ)-देखो 'छौकणौ' (बौ)।

छोत-देखो 'छूत'।

छोतकौ (रौ), छोती-देखो 'छूतरौ'।

छो-पु० १ क्रोध। २ जोश। ३ पवन। ४ मृग। ५ शृगार। ६ भय। ७ नरक।

छोअ-पु० [स० छोद] छिलका, छाल।

छोइ (ई)-पु० १ क्रोध, गुस्सा। २ मट्ठा, छाछ।

छोकरडौ, छोकरौ-देखो 'छोरौ'।

छोग-पु० १ शोक। २ कष्ट, दुख।

छोगौ-देखो 'छौगौ'।

छोछोनीब-पु० एक प्रकार का वृक्ष।

छोछौ-वि० (स्त्री० छोछी) १ सारहीन, थोथा। २ व्यर्थ, निरर्थक।

छोट-स्त्री० लघुता।

छोटकडौ (कलौ, कियौ) छोटकौ, छोटयौ-देखो 'छोटौ'।

छोटाई-स्त्री० लघुता, ओछाई।

छोटी-वि० लघु, अल्प।

छोटीतीज–स्त्री० श्रावण शुक्ला तृतीया ।
छोटीमाता–स्त्री० हल्की चेचक ।
छोटोडो–देखो 'छोटो' (स्त्री० छोटोडी) ।
छोटोसाणोर–पु० डिंगल का एक गीत (छद) विशेष ।
छोटो–वि० (स्त्री० छोटी) १ आकार प्रकार से न्यून, छोटा, लघु । २ आयु मे कम । ३ महत्त्व के हिसाब से हल्का । ४ ओछे विचारो वाला ।
छोड (ण)–पु० १ त्याग । २ छुटकारा । ३ विच्छेद ।
छोडणो (बो), छोडवणो (बो)–क्रि० १ बधन या पकड से मुक्त करना । २ माफ करना, क्षमा करना । ३ त्यागना, त्याग करना । ४ सबध विच्छेद करना । ५ वसूली का विचार स्थगित कर देना । ६ स्थगित करना । ७ अस्वीकार करना । ८ पीछे या अलग रख देना । ९ वचित करना । १० अधूरा रख देना । ११ भूल करना । १२ शेष या बाकी रखना । १३ खुला करना । १४ डालना, पटकना ।
छोडवण–स्त्री० मुक्ति, छुटकारा, त्याग । –वि० छुटकारा दिलाने वाला, मुक्ति दिलाने वाला ।
छोडाणो (बो), छोडावणो (बो)–देखो 'छुडाणो (बो) ।
छोण–पु० [स० सुनु] (स्त्री० छोणी) १ पुत्र लडका । २ शोण, खून । २ देखो 'छोणी' ।
छोणी–स्त्री० [स० क्षोणी] पृथ्वी, धरती । —तळ–पु० पाताल ।
छोत–स्त्री० १ छिलका, छाल । २ छूत । ३ दोष, अशौच ।
छोतको, छोतरो, छोती–देखो 'छूतरो' ।
छोनिय, छोनी–देखो 'छोणी, ।
छोनीतळ–पु० पाताल ।
छोनीमडळ–पु० भू-मण्डल ।
छोनो–पु० [स० सुनु] पुत्र, लडका ।
छोभ–वि० [स० क्षोभ्य] १ खल, दुर्जन, पिशुन । २ क्षोभनीय । (जैन)
छोभ–पु० [स० क्षोभ, क्षोभ्य] १ दुख, क्षोभ । २ विकलता । ३ कष्ट । ४ क्रोध । ५ दीन, असहाय । ६ कलक, दोषारोपण । ७ वदन विशेष । ८ आघात । (जैन)
छोभणो (बो)–क्रि० १ दुखी होना, क्षोभ करना । २ क्रोध करना । ३ विचलित होना ।
छोयेलो–पु० (स्त्री० छोयली) पुत्र, लडका ।
छोर–पु० १ किनारा, कोर । २ तट । ३ सीमा, हद । ४ नोक, सिरा ।
छोरडो–देखो छोरो' ।
छोरणी–देखो 'चाळनी' ।
छोरवेड, छोरातर–पु० बाल-बच्चे ।
छोरारोळ–स्त्री० उद्दण्डता, नादानी, नटखटपन, बचपना, खिलवाड ।
छोरियो, छोरींटो–देखो 'छोरो' ।
छोरु, छोरूं, छोरू, छोरो–पु० [स० शोकहर] (स्त्री० छोरी) १ पुत्र, बेटा । २ लडका, बालक । ३ सतान, औलाद । ४ सेवक, दास ।
छोरेट–देखो 'छोरवेड' । (मेवात)
छोळ–देखो 'छौळ' ।
छोळणो–पु० जग कुचलने का उपकरण ।
छोळणो (बो)–क्रि० १ जग कुचर कर दूर करना, मैल मिटाना । २ वासना मिटाना ।
छोलणो (बो)–क्रि० १ छिलका उतारना, छीलना । २ किसी धारदार शस्त्र से कुचरना । ३ मिंगी या गुदा निकालना ।
छोलदारी–स्त्री० १ तबू, शामियाना । २ मोटा पर्दा ।
छोळवणो (बो)–क्रि० १ वासना को नष्ट करना, मिटाना । २ देखो 'छोळणो' (बो) ।
छोळवि–स्त्री० वासना, वासना की तरग, आकाक्षा ।
छोलो–पु० चने का कच्चा दाना ।
छो'ल्लो–देखो 'छोरो' ।
छोह–पु० [स० क्षोभ] १ क्रोध, गुस्सा । २ जोश, उत्साह । ३ गर्व, अभिमान । ४ प्रेम । ५ मिलन, योग, सयोग । ६ ओट, आड, पर्दा । ७ बर्छी की नोक । ८ दरवाजे के आडी लगाई जाने वाली पत्थर की शिला । ९ काति, दीप्ति । १० शोभा, कीर्ति, यश ।
छोहणो (बो)–क्रि० १ सोखना, चूसना । २ पीना ।
छोहरू (रो)–देखो 'छोरो' ।
छोहियो–वि० १ अभिमानी, गर्विला । २ क्रोधी, क्रुद्ध । ३ कातिवान ।
छौंक–स्त्री० तडका, बघार ।
छौंकणो (बो)–क्रि० साग, सब्जी आदि को छोकना, छोका लगाना ।
छौंत–देखो 'छोत' ।
छौंतको, छौंतरो, छौंतो–पु० छिलका, छाल ।
छौ–पु० १ केतकी । २ विरक्ति । ३ दुकूल । ४ पर्वत । ५ वानर ।
छौ'–अव्य० सहमति सूचक सकेत । अच्छा, ठीक ।
छौगाळ (ळो)–वि० [स० भृग-आलुच] १ श्रेष्ठ, उत्तम । २ वीर, बहादुर । ३ रसिक, शौकीन । ४ विलासी । –पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ साफा वाला व्यक्ति, साफे के पीछे लटकने वाला पल्ला । ३ श्रीकृष्ण । ४ मुर्गा । ५ मोर, मयूर ।

छोगो–पु० [स० शृंग] १ साफे का तुर्रा, पीछे लटकने वाला पल्ला। २ घोडे के सिर पर लगा तुर्रा। ३ गुच्छा। –वि० श्रेष्ठ शिरोमणि।
छोड–स्त्री० स्त्रियो के गर्भाशय का एक रोग।
छोड, छोडण, छोडियो, छोडो–पु० १ छिलका, छाल, छूता। २ नाक का सूखा मल। ३ खुरंट।
छोत–देखो 'छोत'।
छोतो–देखो 'छूतो'।
छोन–देखो 'छोण'।
छोरावो–देखो 'छोरो'।
छोळ (ळि)–स्त्री० १ पानी की लहर, तरग, हिलोर। २ बौछार। ३ उमग, उत्साह। ४ खुशी का सचार ५ क्रीडा। ६ हर्ष, खुशी। ७ धारा, प्रवाह। ८ जोश।
छोल–स्त्री० फीत।
छोळानाथ–पु० १ समुद्र। २ दानी व्यक्ति।
छयाळी–देखो 'छाळी'। **—ना'रियो**='छालीना'र'।
छयाळो–देखो 'छियालो'।
छयासठ–देखो 'छासठ'।

– ज –

ज–देवनागरी वर्णमाला के 'च' वर्ग का तीसरा वर्ण।
ज–क्रि० वि० [स० यत्] क्योकि, कारण कि। (जैन)
जंकिंचि–अव्य० [स० यत्किंचित्] १ जो कुछ। २ थोडा, न्यून।
जंखेरो–पु० १ वायु का झोंका। २ साधारण वस्तुओ का समूह।
जंग–पु० [फा०] १ लडाई, युद्ध। २ आनद का प्रसंग। ३ लोहे का मुरचा। ४ पीतल की गुरिया, छोटा घंटा। **—आवर**–पु० योद्धा। **—कालो**–वि० युद्धोन्मत्त। **—चाळ**–पु० युद्ध के लिये उपयुक्त घोडा। **—जूट**–पु० शूरवीर, योद्धा।
जगडी–स्त्री० छोटी कच्छी, जांगिया।
जगम (माण)–वि० [स० जगम] १ चलायमान, चचल। २ अस्थिर, चल। ३ जीवधारी। ४ चैतन्य। –पु० १ एक प्रकार का सन्यासी। २ घोडा। ३ छप्पय छद का एक भेद। **—काय**–पु० द्वीन्द्रिय प्राणी, त्रस जीव। **—विस**–पु० एक तीव्र विष।
जगरी–पु० योद्धा।
जगळ–पु० [स० जगल] १ वन, अरण्य। २ जन शून्य भूमि। ३ रेगिस्तान। ४ घोडा। ५ दिशा, मैदान। ६ मास। **—धर, धरा**–स्त्री० जागलू देश, बीकानेर राज्य। **—राय, राव**–पु० बीकानेर का राजा। श्री करणीदेवी। सिंह, शेर।
जगळवै–वि० [स० जगलपति] जागलू देश का, बीकानेर का। –पु० बीकानेर का राजा।
जगळायत–पु० वन विभाग।
जगळी–वि० १ जगल का, जगल सबधी। २ जगल मे रहने वाला। ३ जो पालतू न हो, स्वतत्र। ४ असभ्य, गवार। ५ मूर्ख, बेवकूफ। –पु० घोडा।
जगसारधारण–पु० वीर, योद्धा,
जगाळ–पु० १ सुहाग बिन्दी लगाने का लाल रग। २ घोडा। ३ सेना का दक्षिणी भाग। ४ युद्ध का नगाडा।
जगाळी–वि० लाल रग का।
जगिय–वि० जगम का, जगम सबधी। (जैन)
जगी (गू)–वि० [फा०] १ लडाई या युद्ध सबंधी। २ फौजी, सैनिक। ३ बडा, दीर्घकाय। ४ मजबूत, दृढ। ५ वीर, योद्धा। ६ लडाकू। **—कार**–पु० एक प्रकार का तीर। **—राग**–स्त्री० सिंधु राग। **—लाट, लाठ**–पु० फौज का अफसर। **—हरडै**–पु० काली हरड।
जगेज–स्त्री० [स० यज्ञज] अग्नि।
जगेव–पु० १ जग के लिये उत्सुक व्यक्ति। २ युद्ध, जग।
जगोळ–पु० [स० जागलु] विष उतारने की चिकित्सा।
जघ–१ देखो 'जघा'। २ देखो 'जग'। ३ देखो 'जाघ'।
जघस्थल, जघा–स्त्री० [स० जघा] १ जाघ, रान। २ ऐडी से घुटने तक का पाव, पिंडली।
जघात्र–पु० [स०] जाघ का कवच।
जघाळ–वि० [स० जघाल] १ तेज दौड़ने वाला। २ देखो 'जंगाळ'।
जघाळस–पु० [स० जगार] १ तावे का कसाव। २ एक रग विशेष।
जघाळी–देखो 'जगाळी'।
जघावरत–पु० एक प्रकार का अशुभ घोडा।
जचणो (बो)–देखो 'जचणो' (बो)।
जचा–वि० जाचा हुआ, परीक्षित।
जचाणो (बो), जचावणो (बो)–देखो 'जचाणो' (बो)।
जज–पु० [स० यजन] सन्यासी, फकीर।
जजण–पु० [स० यजन] यज्ञ।

जजर–पु० १ ताला। २ एक प्रकार का शस्त्र ।
जजळ–देखो 'जरजर'।
जजाळ,जजाल–पु० १ झझट, बखेडा, प्रपच। २ बधन, अटकाव, अवरोध। ३ उलझन, परेशानी। ४ स्वप्न। ५ एक प्रकार की बदूक। ६ बडे मुह की तोप। –वि० असत्य, झूठा।
जजाळियौ, जजाळी–वि० उपद्रवी, फिसादी, प्रपची।
जजीर, जजीरा–स्त्री० १ शृखला, साकल। २ किवाड की कुडी। ३ किसी वस्त्र की जजीरनुमा किनार। ४ जजीरनुमा कोई वस्तु।
जजीरेदार–वि० [फा०] १ जजीर की तरह सिला हुआ। २ जजीरनुमा।
जजीरौ–पु० १ एक प्रकार का मत्र। २ मोटी जजीर।
जझर–देखो 'जजीर'।
जझरी–स्त्री० एक प्रकार का वाद्य।
जझेडणौ (बौ)–क्रि० झकझोरना, छेडना, हिलाना-डुलाना।
जझौ–वि० [स० योद्धा] योद्धा, वीर।
जडे–स्त्री० जैसलमेर राज्य की भूमि।
जत–पु० [स० यत्र] १ बैलगाडी के पहियो की पैंजनी मे बधी रहने वाली रस्सी। २ यत्र, उपकरण। ३ बखतर की कडी। ४ कोई तात्रिक मत्र। ५ शासक। ६ छोटी जाति का व्यक्ति। ७ जतु। ८ जूता। ९ स्वर्णकारो का औजार।
जतर–पु० १ ताला। २ देखो 'जत्र'। –मतर–पु० जादू-टोना।
जतरडी, जतरपट्टी–देखो 'जतरी'।
जतरणौ (बौ)–क्रि० १ सजा देना, दण्डित करना। २ मारना, पीटना। ३ तत्र-मंत्र से रक्षित करना।
जतराणौ (बौ), जतरावणौ (बौ)–क्रि० १ सजा दिराना, दण्डित कराना। २ मार-पीट करना, कराना। ३ तत्र-मत्र से रक्षित कराना।
जंतरी–स्त्री० [स० यत्रि सकोचे] १ स्वर्णकारो का औजार। २ तिथि-पत्रक। ३ बाजा बजाने वाला। ४ जादूगर।
जतुफळ–पु० [स० जतुफल] गूलर, उदुबर।
जतौ–देखो 'जत्र'।
जत्र, जत्रक–पु० [स० यत्र] १ कल, यंत्र। २ तात्रिक यत्र। ३ ताबीज या गडा। ४ बाजा, वाद्य। ५ वीणा। ६ तोप, बदूकादि अस्त्र। ७ अस्त्र विद्या। ८ जन्म पत्री। –धर, धार, पांणी–पु० नारद। –बाण–पु० एक अस्त्र विशेष। –मत्र–पु० जादू-टोना। –सार–पु० तार वाद्य।
जत्रणी–देखो जतरी'।
जत्राणि (णी)–स्त्री० [स० यत्र] १ जतर-मतर। २ यत्र कला।
जत्राणौ (बौ), जत्रावणौ (बौ)–देखो 'जतरावणौ' (बौ)।
जत्रि (त्री)–पु० [स० यत्रिन्] १ नारद। २ वाद्य बजाने वाला, वादक। ३ तात्रिक। ४ देखो 'जतरी'।
जद–पु० १ पारसियो का धर्म-ग्रन्थ। २ इस ग्रन्थ की भाषा। ३ देखो 'जिंद'।
जप–पु० १ नक्कारे की आवाज। २ चैन, शाति।
जपग, जपय–वि० [स० जपन] बोलने वाला, रटने वाला।
जपणौ (बौ)–१ देखो 'जपणौ' (बौ)। २ देखो 'झपणौ' (बौ)।
जपति, जपती–पु० [स० जम्पती] १ पति-पत्नी दम्पति। २ जायापति।
जपाण–पु० एक प्रकार की डोली।
जपिर–वि० [स० जल्पित्] बोलने वाला। (जैन)
जफ–पु० युद्ध, लडाई।
जफीरौ–पु० एक प्रकार का घोडा।
जबक–देखो 'जबुक'।
जबवइ–देखो 'जाबवती'।
जबाळ–पु० [स० जबाल] १ कीचड, पक। २ काई, सिवार। ३ केतकी का पोधा। ४ जरायु।
जबाळणी (नि)–स्त्री० [स० जबालिनी] नदी।
जबीर, जबीरी–पु० एक प्रकार का नीबू।
जबु पु० १ जबुक। २ जबुद्वीप। ३ जबुस्वामी। –मद्वीप –महद्वीप–पु० जबुद्वीप। –खंड, दीव, द्दीप, द्वीप–पु० जबुद्वीप। –मत–पु० जामवत –मति–स्त्री० एक अप्सरा का नाम। –स्वामी–पु० जैन स्थविर।
जंबुक–पु० [स०] १ बडा जामुन। २ एक प्रकार का फूल। ३ सियार, गीदड। ४ कुत्ता, श्वान।
जबू–पु० [स०] १ जामुन का वृक्ष व फल। २ जंबुद्वीप। –णद, णय–पु० सोना, स्वर्ण। –दीप, दीव, द्वीप–पु० जबुद्वीप। एक शुभ रग का घोडा। –नदी–स्त्री० जबुद्वीप की एक नदी। –पीठ, पेढ–पु० एक प्रदेश का नाम। –फळ–पु० जामुन। एक सामुद्रिक चिह्न।
जबूर (क, नाळ)–स्त्री० १ ऊट पर लादी जाने वाली तोप विशेष।
जबूरची–पु० 'जबूर' नामक तोप चलाने वाला।
जबूरी–स्त्री० १ एक प्रकार का औजार। २ एक शस्त्र विशेष।
जबूरौ–पु० १ सडासीनुमा एक औजार। २ एक प्रकार का घोडा। ३ बाण का फल। ४ बाजीगर के साथ वाला लडका।
जबेरी–देखो 'जबीरी'।
जभ–पु० [स०] १ जबीरी नीबू। २ प्रहलाद का एक पुत्र। ३ डाढ, चौभड। ४ दात। ५ एक दैत्य। ६ भाग, अश। ७ तरकस, तूणीर। ८ ठोडी। ९ जमुहाई। –भेदी, राति –पु० इन्द्र।

जभणी–स्त्री० [स० जृम्भणी] एक प्रकार की विद्या ।

जंभा, (आइ, ई)–स्त्री० [स०] जम्भाई, उवासी । (जैन)

जभाणौ (बौ)–क्रि० १ गायो का बोलना, रभाना । २ जमुहाई लेना ।

जभारात, जभाराति, जंभारि–पु० [स०] जभ दैत्य का शत्रु, इन्द्र ।

जंभाळणी–स्त्री० नदी ।

जभासुरमारण–पु० इन्द्र ।

जभियौ–पु० छुरा ।

जभीरीनीबू, जभेरी–पु० एक प्रकार का नीबू ।

जंम–देखो 'जन्म' ।

जमजाळ–वि० यमराज मे प्रबल । –पु० यम का फदा ।

जमरण–देखो 'जन्म' ।

जंमले–वि० [अ० जुम्ला] सब, कुल, समस्त । एक मुश्त ।

जंम्मेरी–देखो 'जवेरी' ।

जवणावर–पु० द्रोणपुर ।

जवर–पु० १ तलवार आदि पर दिखाई देने वाली धारिया । २ जौहर । ३ यमराज, मृत्यु, मौत ।

जवरी–पु० १ जौहरी । २ जौहर ।

जवरौ–वि० १ जबरदस्त, शक्तिशाली । २ देखो 'जवर' ।

जंवहर, जंवहार–पु० जवाहरात ।

जवहरी–देखो 'जौहरी' ।

जवाइ (ई)–पु० [स० जामातृ] १ दामाद, जामाता । २ एक लोक गीत ।

जंवाडो–देखो 'जूश्रो' ।

जंवार–स्त्री० १ नमस्कार, जुहार । २ नमस्कार करने पर जमाई आदि को दिया जाने वाला धन ।

जंवारा–पु० पर्व दिनो मे बोये जाने वाले गेहूँ या जव के पौधे ।

जंवारी–देखो 'जवार' ।

जंवारु–पु० जवाहरात ।

जंवाळिनी–देखो 'जवाळनि' ।

जह्‌गम–पु० [स० अजिह्मग] तीर, बाण ।

जंही–वि० जैसा, समान ।

ज–पु० [स०] १ जन्म । २ जीव । ३ विजय । ४ योगी । ५ मृत्युञ्जय । ६ पिता । ७ विष्णु । ८ विप । ९ तेज । १० पिशाच । ११ जड, मूल । १२ उत्पत्ति । १३ आभा, काति । १४ छन्द शास्त्र का 'जगण' । –प्रत्य० उत्पन्न, जात । –अव्य० ही । –सर्व० १ जिस । २ उस ।

जइ–क्रि०वि० १ जहाँ । २ जो, यदि । ३ जब । –पु० १ साधु, सन्यासी । २ छन्दो की यति । ३ मालती । –वि० जीतने वाला, विजयी ।

जइजइकार–देखो 'जैजैकार' ।

जइण–पु० [स० जैन] जिनदेव का भक्त । –वि० १ जीतने वाला । २ वेग वाला ।

जइणा–वि० १ जितना । २ देखो 'जयणा' ।

जइ–देखो 'यदि' ।

जइत–स्त्री० जीत । –खभ–पु० विजयस्तभ । –वि० विजय करने वाला ।

जइतवादी–देखो 'जैतवादी' ।

जइतवार–वि० जीतने वाला ।

जइतेल–पु० मालती का तेल ।

जइय–पु० [स० जीव] जीव, प्राणी ।

जइयां (या)–सर्व० जिन्होने, जिसने ।

जइलच्छि–स्त्री० जयलक्ष्मी ।

जइवत–स्त्री० [स०जयवती] एक देवी का नाम । –वि० विजयी ।

जइसर–पु० [स० यतीश्वर] यतीश्वर ।

जइसौ–देखो 'जैसौ' ।

जई–वि० जीतने वाला, विजयी । –स्त्री० लकडी के दो सीगो वाला एक कृपि-उपकरण । –सर्व० जिस, उस । –क्रि० वि० जब ।

जईन–देखो 'जैन' ।

जईफ–वि० वृद्ध, बूढा ।

जईफी–स्त्री० [अ०] बुढापा, वृद्धावस्था ।

जईमैण–पु० [स० मदनजयी] महादेव, शिव ।

जउ, जउ–अव्य० [स० यत्] जो, यदि, अगर, कि । –सर्व० [स० य] जो । –पु० [स० जतु] लाख ।

जउख–देखो 'जोख' ।

जउणा–देखो 'जमना' ।

जउरांणउ–पु० [स० यमराज] यमराज ।

जउव्वेय–पु० यजुर्वेद ।

जउहर (रि)–देखो 'जोहर' ।

जऊ–देखो 'जउ' ।

जक–पु० १ चैन, आराम । २ शान्ति, तसल्ली । ३ विश्राम । ४ यक्ष । ५ कजूस व्यक्ति । ६ देखो 'झख' ।

जकड–स्त्री० कडा बधन । जोर की पकड ।

जकडणौ (बौ)–क्रि० १ कस कर बाधना । २ जोर से पकडना । ३ ऐंठन पड जाना ।

जकण–देखो 'जिकण' ।

जकणौ (बौ)–क्रि० १ चैन पडना । २ लज्जित होना ।

जकसेस–पु० [स० जक्षेन्द्र] ऊट ।

जका–सर्व० जो ।

जकात–स्त्री० [अ०] १ दान, खैरात । २ चुगी, महसूल ।

जकाती–पु० चुगी वसूल करने वाला व्यक्ति ।

जकार–पु० 'ज' वर्ण ।
जकियौ, जकीयौ–पु० वृत्तान्त, हाल ।
जकौ–सर्व० (स्त्री० जकी) १ जो । २ वह, उस ।
जक्क–देखो 'जक' ।
जक्ख–पु० यक्ष । —भद्द–पु० यक्ष द्वीप का अधिपति, देवता ।
जक्खा–देखो 'यक्षी' ।
जक्खिद–देखो 'यक्षेंद्र' ।
जक्खि (क्खी)–स्त्री० [स० याक्षी] १ एक प्रकार की लिपि । २ देखो 'जक्ष' ।
जक्खोद–पु० [स० यक्षोद] एक समुद्र का नाम ।
जक्ष–पु० [स० यक्ष] (स्त्री० जक्षरणी) एक प्रकार की देव जाति, यक्ष । —नायक–पु० कुवेर । —पत, पति–पु० कुवेर । —पुर, पुरी–पु० अलकापुरी । —रात–स्त्री० कार्त्तिक मास की पूर्णिमा की रात्रि । —लोक पु० यक्षपुर ।
जक्षप–पु० [स० यक्षप] यक्षपति, कुवेर ।
जक्षाधिप–पु० [स० यक्षाधिप] कुवेर ।
जक्षेस–पु० [स० यक्षेस] कुवेर ।
जख–वि० १ धनवान धनाढ्य । २ देखो 'जक्ष' । ३ देखो 'जक' ।
जखचेर–पु० कुवेर ।
जखण–पु० [स० जक्षणम्] १ आहार । २ देखो 'जक्ष' ।
जखणी–स्त्री० [स० यक्षिणी] १ यक्ष की पत्नी । २ दुर्गा की एक अनुचरी ।
जखन–देखो 'जखण' ।
जखम–पु० [फा० जख्म] १ घाव, क्षत । २ मर्माहत दुख । ३ सदमा ।
जखमाइल (मायल), जखमी–वि० आहत, घायल, जख्मी ।
जखराज (राट)–पु० [स० यक्षराज] यक्षराज, कुवेर ।
जखरौ–पु० सिंध का एक यादव राजा ।
जखांणी–स्त्री० १ यक्ष कन्या । २ यक्ष पत्नी, यक्षिणी ।
जखाराज–पु० [स० यक्षराज] कुवेर ।
जखाधप (धिप)–पु० कुवेर ।
जखाधी (धीस)–पु० कुवेर ।
जखि (खी)–स्त्री० [स० यक्षी] १ यक्षिणी । २ कुवेर की स्त्री । ३ यक्ष ।
जखीर (रौ)–पु० [अ०] १ वस्तुओं का सग्रह, ढेर, राशि । २ खजाना ।
जखेंद्र–देखो 'यक्षेंद्र' ।
जखेरौ–देखो 'जखीर' ।
जखेसर (सुर, स्वर)–पु० [स० यक्षेश्वर] कुवेर ।
जख्खणी–देखो 'जखणी' ।
जख्यप्रति–पु० [स० यक्ष प्रीति] शिव ।
जगनाथ–देखो 'जगन्नाथ' ।
जग–पु० [स० जगत्] १ ससार, विश्व । २ सासारिक लोग । ३ देखो 'यक्ष' । —ईस–पु० परमेश्वर, ईश्वर ।
जगइ (ई)–स्त्री० [स० जगती] पृथ्वी, भूमि ।
जगकरण (करता)–पु० १ सृष्टि कर्त्ता ईश्वर । २ ब्रह्मा, विधि ।
जगकरम–पु० १ यज्ञ कर्म । २ सासारिक कार्य ।
जगकळपत–पु० १ सहार । २ युगान्त, प्रलय काल ।
जगकारण–पु० ईश्वर ।
जगकाळ–पु० [स० यज्ञकाल] १ यज्ञ करने का समय । २ पूर्णमासी ।
जगगुर, जगगुरु–देखो 'जगद्गुरु' ।
जगघण–पु० [स० यज्ञघ्न] राक्षसादि ।
जगचक्ख (चक्ष, चक्षु, चख, चख्ख चख्य, च्चक्ष, च्चख)–पु० [स० जगचक्षु] सूर्य ।
जगजगाणौ (बौ)–क्रि० १ जगमगाना, प्रज्वलित करना । २ जगाना ।
जगजणणी, जननी–स्त्री० १ जगत की माता पार्वती । २ देवी, दुर्गा । ३ गगा नदी ।
जगजांमी–पु० ईश्वर, परमेश्वर ।
जगजा'र–वि० प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात ।
जगजीत–वि० ससार को विजय करने वाला ।
जगजीव (जीवण, जीवन)–पु० [स० जगज्जीव] १ शकर, शिव । २ ईश्वर, विष्णु ।
जगजेठ (जेठौ, ज्जेठ)–पु० [स० जगत्-जेष्ठ] १ ईश्वर । २ ब्रह्मा । ३ राजा । ४ योद्धा, शूरवीर । ५ पहलवान ।
जगजोनि–पु० ब्रह्मा ।
जगझप–पु० एक प्रकार का रणवाद्य ।
जगढाळ–पु० जगत का रक्षक, विष्णु ।
जगण–पु० १ छन्द शास्त्र मे एक गण । २ जलना, दाह ।
जगणी–स्त्री० अग्नि ।
जगणौ (बौ)–देखो 'जागणौ' (बौ) ।
जगत–पु० [स०] १ ससार, विश्व । २ सासारिक लोक । ३ शिव । ४ वायु । —अबा–स्त्री० पार्वती, दुर्गा । —उपाता–पु० ब्रह्मा । —गुरु, गुरू='जगद्गुरु' । —चख='जगचख' । —ठाम–पु० ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु । —पत, पति–पु० ईश्वर । —पिता–पु० ब्रह्मा । —प्राण–पु० वायु । —भेदण–पु० शिव, विष्णु । —मावीत्र–पु० राजा । —मोहणी–स्त्री० महामाया, दुर्गा । —रोपण–पु० विष्णु, ईश्वर । —साखी–पु० ईश्वर, सूर्य । —साधार–पु० ईश्वर । —सेठ–पु० धनी व दानी सेठ ।
जगतण–स्त्री० १ सासारिक स्त्री । २ वेश्या । (मेवात)

जगतारण–पु० ईश्वर, विष्णु ।

जगति–स्त्री० १ द्वारिका । २ देखो 'जगती' ।

जगती–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, धरती । २ मानव जाति । ३ गौ । ४ ससार । ५ जबूद्वीप का कोट । ६ एक छन्द विशेष । —**तळ**–पु० पृथ्वी, भूमि ।

जगतेस–पु० ईश्वर ।

जगतेसुर–पु० शिव, महादेव ।

जगत्ति (त्ती)– देखो 'जगती' ।

जगत्माता– स्त्री० दुर्गा ।

जगत्मोहिनी–स्त्री० महामाया दुर्गा ।

जगत्र–देखो 'जगत' ।

जगत्राता–पु० [स० जगत्त्राता] १ ससार की रक्षा करने वाला, ईश्वर । २ राजा । ३ यज्ञ की रक्षा करने वाला । ४ पडित ।

जगत्साक्षी–पु० [स०] सूर्य ।

जगदब (बा, बि, बिका, बी, भा)–स्त्री० [स० जगदम्बा] १ देवी, दुर्गा । २ पार्वती । ३ करणी देवी ।

जगद–देखो 'जगत' ।

जगदगुर (रु, रू)–पु० १ परमेश्वर, ईश्वर । २ शिव । ३ शकराचार्य । ४ पूजनीय व्यक्ति । ५ ब्राह्मण ।

जगदगौरी–स्त्री० १ दुर्गा, देवी । २ मनसा देवी ।

जगदजोणी–स्त्री० १ शिव । २ विष्णु । ३ पृथ्वी ।

जगदत–पु० [स० यज्ञदत्तक] यज्ञ के फल स्वरूप प्राप्त पुत्र ।

जगदातार–पु० [स०] १ ईश्वर । २ दानवीर ।

जगदाधार–पु० [स०] विष्णु ।

जगदानद–पु० १ ईश्वर । २ श्रीकृष्ण ।

जगदिवलौ (वीप)–पु० [स०जगदीप] १ सूर्य । २ शिव । ३ परमात्मा ।

जगदीस (सर, सवर, स्वर, स्वरू)–पु० [स० जगदीश्वर] १ परमात्मा । २ श्रीकृष्ण । ३ विष्णु । ४ शिव ।

जगदीस्वरी–स्त्री० [स०] भगवती, दुर्गा ।

जगद्धाता–पु० [स० जगद्धातृ] १ ब्रह्मा । २ विष्णु ।

जगद्धात्री–स्त्री० १ दुर्गा । २ सरस्वती ।

जगध–पु० [स० जग्धि] भोजन ।

जगधणी–पु० ईश्वर ।

जगधर (धार)–पु० १ ईश्वर । २ शेषनाग ।

जगन–देखो 'जिगन' ।

जगनराय–पु० चद्रमा ।

जगनामौ–वि० विख्यात प्रसिद्ध ।

जगनाती–पु० १ एक ही प्रकार का कपडा । २ छोटा जल पात्र ।

जगनाथ–देखो 'जगन्नाथ' ।

जगनायक–पु० विष्णु, ईश्वर ।

जगनाह–देखो 'जगन्नाथ' ।

जगनेरलेप–पु० [स० जगन्निर्लेप] विष्णु ।

जगनैण–पु० [स० जगन्नयन] सूर्य ।

जगन्नाथ–पु० [सं०] १ ससार के स्वामी, ईश्वर । २ विष्णु । ३ पुरी नामक स्थान पर स्थित विष्णु की मूर्ति ।

जगन्नप–पु० [स०] परमेश्वर ।

जगपत (ति, त्त, त्ती)–देखो 'जगतपति' ।

जगपात्र–पु० यज्ञ पात्र ।

जगपाळ (पाळक)–पु० १ विष्णु । २ राजा ।

जगपावन–स्त्री० गगा नदी ।

जगपुड–स्त्री० जमीन, पृथ्वी ।

जगपुरस–पु० [स० यज्ञपुरुष] विष्णु ।

जगप्राण–पु० वायु, हवा ।

जगफळ–पु० यज्ञ फल । —**दाता**–पु० विष्णु ।

जगबद–वि० विश्ववद्य ।

जगबदक–पु० चन्द्रमा ।

जगबधव (धु, बाधव)–पु० परमात्मा ।

जगबाहु–पु० आग, अग्नि ।

जगभल–वि० १ यशस्वी, कीर्तिमान । २ हितैषी, भला चाहने वाला ।

जगभाग–पु० यज्ञ का एक भाग ।

जगभाळण–पु० आख ।

जगभावण (न)–पु० ईश्वर, परमात्मा ।

जगभासक–पु० १ प्रकाश । २ सूर्य ।

जगभूमि, (भोम)–पु० [स० यज्ञभूमि] यज्ञ स्थल ।

जगमडळ–पु० यज्ञ मण्डल ।

जगमग–वि० तारो या दीपो आदि से प्रकाशित । २ चमकीला, प्रकाशित ।

जगमगणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, प्रकाशित होना । २ झलकना । ३ प्रज्वलित होना ।

जगमगाट (हट)–स्त्री० रोशनी, तारो या दीपों की रोशनी ।

जगमगाणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, प्रकाशित होना । २ प्रज्वलित होना ।

जगमण–देखो 'जगमिण' ।

जगमनमोहणी–स्त्री० जमीन ।

जगमाय–स्त्री० [स० जगन्मातृ] जगत की माता, दुर्गा ।

जगमिण–पु० सूर्य ।

जगमूरति–स्त्री० १ ईश्वर । २ विष्णु ।

जगमोहण (मोहन)–पु० [स० जगन्मोहन] १ ईश्वर । २ विष्णु । ३ एक ही प्रकार की शराब ।

जगय–पु० [स० यकृत] कलेजा। (जैन)
जगरजरा (न)–पु० ईश्वर।
जगर–देखो 'जिगर'।
जगरांरगी–स्त्री० १ लक्ष्मी। २ दुर्गा। ३ सरस्वती।
जगराज–पु० १ चन्द्रमा। २ ऋषि, तपस्वी।
जगराय (व)–पु० ईश्वर। शिव।
जगराया–स्त्री० देवी, दुर्गा।
जगरौ–पु० १ आग की बडी लपट। २ शीघ्र प्रज्वलित होने वाला, कचरा कूडा।
जगलिंग–पु० [स० यज्ञलिंग] श्रीकृष्ण का एक नाम।
जगळ (ळाण)–पु० कोल्हू मे अध कचरे तिल।
जगवच–वि० ससार को धोखा देने वाला ठग, धूर्त।
जगवदरा (न)–पु० [स० जगद्‌वदन] ईश्वर।
जगवलक–पु० याज्ञवल्क के पिता।
जगवारणौ (बौ)–क्रि० १ जगाने के लिये प्रेरित करना। २ जागरण दिराना। ३ उत्साह दिलाना। ४ जलवाना, प्रज्वलित कराना।
जगवाराह–पु० विष्णु का एक नाम।
जगवासग–पु० ईश्वर।
जगवीरय–पु० विष्णु का एक नाम।
जगवेल–स्त्री० सोमलता।
जगसतोख–स्त्री० नदी।
जगसत्रु–पु० असुर, राक्षस।
जगसांई (सामी)–पु० जगत का स्वामी, ईश्वर।
जगसाखी–पु० [स० जगत्साक्षी] सूर्य।
जगसाधन–पु० विष्णु का एक नाम।
जगसाधार–पु० विष्णु, ईश्वर।
जगसाळा–स्त्री० [स० यज्ञशाला] यज्ञशाला।
जगसाळौ–पु० [स० जगश्यालक] वेश्या का भाई।
जगसास्त्र–पु० यज्ञ शास्त्र।
जगसूकर, जगसेन–पु० विष्णु।
जगसेव–पु० शिव।
जगस्वामी–पु० ईश्वर, विष्णु।
जगह–देखो 'जायगा'।
जगहत्य (हथ)–पु० दिग्विजय। —पत्र–पु० दिग्विजय का चुनौती पत्र।
जगहरता–पु० ईश्वर, शिव।
जगहेत–पु० ब्रह्मा।
जगहोता–पु० यज्ञ मे देवताओ का आह्वान करने वाला।
जगा–देखो 'जायगा'।
जगचख–देखो 'जगचख'।
जगज्जोत (जोति)–स्त्री० जगमगाहट।

जगारणौ (बौ)–क्रि० १ जागृत करना, जगाना। २ नीद से उठाना। ३ होश दिलाना। ४ ठीक दशा मे लाना। ५ प्रज्वलित करना। ६ विशेष तौर से तैयार करना। ७ देव को सिद्ध करना। ८ जागरण दिराना।
जगात–स्त्री० [अ० जकात] १ दान, खैरात। २ कर, महसूल।
जगातमा–स्त्री० [स० यज्ञात्मा] विष्णु।
जगावीस–देखो 'जगदीस'।
जगामग, (मगि, मगी)–देखो 'जगमग'।
जगार (रि, री)–पु० [स० यज्ञारि] राक्षस, असुर।
जगावरणौ (बौ)–देखो 'जगारणौ' (बौ)।
जगि (गी)–पु० [स० यज्ञि, यजि] १ यज्ञ की क्रिया। २ यज्ञ करने वाला। ३ यज्ञ।
जगीस (सौ)–स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा। २ जिज्ञासा। ३ कीर्ति, यश। ४ युद्ध। ५ ईश्वर।
जगु, जगू–देखो 'जग'।
जगेसर (सुर, स्वर)–पु० [स० यज्ञेश्वर] श्रीविष्णु।
जग्ग–देखो 'जग'।
जग्गीस–देखो 'जगीस'।
जग्य, जग्यन–देखो 'यग्य'।
जग्यासेनी–स्त्री० [स० यज्ञसेनी] द्रौपदी।
जग्योपवीत पु० [स० यज्ञोपवीत] उपनयन सस्कार, जनेऊ।
जघन्य–वि० [स०] १ अतिम। २ निकृष्ट, हेय। ३ नीच, दुष्ट। ४ गर्हित। ५ शूद्र।
जघन्यभ–पु० [स०] छ नक्षत्र—आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा।
जड ग–वि० [स० जड+अग] मूर्ख, असभ्य, गंवार।
जड–स्त्री० [स० जड, जटा] १ किसी वृक्ष, पौधे, लतादि का मूल, जड। २ नीव, बुनियाद। ३ मूल तत्त्व, मूल बात। ४ असली कारण। ५ सर्दी, शीतकाल। ६ ठण्डक। –वि० १ ठण्डा, शीतल। २ निर्जीव, अचेतन। ३ गतिहीन, निश्चल। ४ मूढ, मूर्ख। ५ विवेक या ज्ञान शून्य। ६ सुन्न। ७ गू गा, मूक।
जडकरणौ (बौ), जडवकरणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना। २ मारना। ३ झटका देना। ४ फटकारना।
जडडरणौ (बौ), जडरणौ (बौ)–क्रि० [स० जटन] १ कपाट बन्द करना, सटाना। २ नगीने आदि की जडाई करना, बैठाना। ३ प्रहार करना। ४ शस्त्र-कवच से सज्जित होना। ५ कान भरना, चुगली करना। ६ जमाना, स्थिर करना। ७ प्रविष्ठ करना, जम कर रहना। ८ मजबूत बाधना, कसना। ९ सश्लिष्ट होना। १० पतन होना, गिरना।
जडत–स्त्री० पच्चीकारी, जडाई।
जडबद–वि० समूल, जड सहित।

जड़ाई–स्त्री० जडने का कार्य, इस कार्य का पारिश्रमिक।

जड़ाउ (ऊ)–वि० [स० जटित] १ जडा हुआ। २ पच्चीकारी किया हुआ।

जडाकढ़–वि० समूल नष्ट करने वाला।

जडाग–पु० १ आभूषण। २ पुत्र, बेटा। ३ घोडा।

जडाणौ (बौ)–क्रि० १ कपाट बद कराना, सटवाना। २ नगीने आदि की जडाई कराना। ३ प्रहार कराना। ४ शस्त्र कवच से सज्जित कराना। ५ जमवाना, स्थिर करवाना। ६ मजबूत बधवाना, कसवाना। ७ सश्लिष्ट कराना। ८ पतन कराना, गिरवाना।

जड़ाव (वट)–पु० १ नगीना। २ जडाई का कार्य। ३ शिर के बालो का जूडा।

जडावणौ (बौ)–देखो 'जडाणौ' (बौ)।

जडित–वि० जडा हुआ।

जडिया–स्त्री० एक स्वर्णकार जाति।

जडियाळ–वि० जिससे प्रहार किया जाय।

जड़ियौ–पु० १ आभूषणो मे नगीने जडने वाला। २ जडाई का कार्य करने वाला स्वर्णकार।

जडी–स्त्री० पौधे या वनस्पति की जड जो औषधि मे काम आती हो।

जडौ–पु० घरेलु अशिक्षित पशु।

जचणौ (बौ)–क्रि० १ जाच मे पूरा उतरना। २ ठीक या उचित लगना। ३ ठीक बैठना। ४ शोभित होने की दशा मे होना। ५ फबना। ६ कोई बात समझ मे आना, किसी विचार का मन मे निश्चय होना।

जचा–देखो 'जच्चा'।

जचाणौ (बौ), जचावणौ (बौ)–क्रि० १ जाच मे पूरा उतराना। २ ठीक या उचित लगवाना। ३ ठीक बैठाना। ४ शोभित होने की दशा मे करना। ५ फबाना। ६ कोई बात समझाना, किसी विचार का मन मे निश्चय कराना।

जच्च–वि० [स० जात्य] १ स्वाभाविक। २ प्रधान, श्रेष्ठ। ३ सजातीय।

जच्चण्णिय–वि० [स० जात्यान्वित] कुल मे श्रेष्ठ, कुलीन

जच्चणौ (बौ)–देखो 'जचणौ' (बौ)।

जच्चा–स्त्री० [फा०] प्रसूता स्त्री।

जच्चाग्रा–स्त्री० एक मागलिक लोक गीत।

जच्छ–देखो 'जक्ष'।

जज–पु० १ कठोर वधन। २ यज्ञ। ३ न्यायाधीश। ४ निर्णय।

जजक–देखो 'जिजक'।

जजकणौ (बौ)–देखो 'जिजकणौ' (बौ)।

जजटठ्ळ–देखो 'जुधिष्ठिर'।

जजण–पु० [स० यजन] यज्ञ।

जजणौ (बौ)–क्रि० १ दान करना। २ उदारता दिखाना। ३ यज्ञ करना।

जजमणौ (बौ)–क्रि० शान्ति प्राप्त करना या होना।

जजमाण (मान)–पु० [स० यजमान] १ यज्ञ करने वाला। २ दान दक्षिणा देने वाला। ३ खातिरदारी करने वाला।

जजमानता (मांनी)–स्त्री० १ यजमान का धर्म या कार्य। २ दान दक्षिणा। ३ खातिरदारी।

जजमाणौ (बौ), जजमावणौ (बौ)–क्रि० [स० यजमानन] क्रोध शात कराना, धैर्य दिलाना।

जजरग–पु० १ यमराज। २ वज्र। –वि० भयकर।

जजर–पु० १ यमराज। २ वज्र। ३ देखो 'जरजर'।

जजरबौ–देखो 'जुजरबौ'।

जजराग (राट)–वि० १ भयकर, डरावना। २ क्रुद्ध। –पु० १ यमराज। २ वज्र।

जजात (ति, ती)–पु० [स० ययाति] यादव वशी एक राजा।

जजायळ–स्त्री० ऊट पर लाद कर चलाई जाने वाली बडी बदूक।

जजार, जजाळ (ळौ)–पु० एक प्रकार की बडी बदूक।

जजियौ–पु० मुगलकालीन एक कर।

जजी–पु० यज्ञ।

जजुबेद, जजुरवेद–पु० [स० यजुर्वेद] चार वेदो मे से एक।

जजुरवेदी–वि० उक्त वेद का ज्ञाता।

जजुव्वेय–देखो 'जजुरवेद'।

जजेसर (स्वर)–पु० [स० यक्षेश्वर] कुवेर।

जजोनी–पु० [स० योनिज] किसी योनि विशेष का जीव।

जज्जर–देखो 'जरजर'।

जज्जरिय–वि० [स० जर्जरित] जीर्ण-शीर्ण, पुराना। (जैन)

जज्जीव–वि० [स० यावज्जीव] प्राणी मात्र।

जज्र, जज्रक–देखो 'जजर'।

जज्रजीव–पु० १ यम। २ काल। ३ सिंह।

जज्जर–स्त्री० १ एक प्रकार की छोटी बन्दूक। २ देखो 'जरजर'।

जज्राट–देखो 'जजराग'।

जझकणौ (बौ)–देखो 'जिजकणौ' (बौ)।

जट–स्त्री० १ ऊट व बकरी के बाल। २ देखो 'जटा' —**गग**–पु० शिव। —**जूट**–पु० जटा का समूह। —**धर, धरण, धार, धारी**–पु० शिव, महादेव। सन्यासी, फकीर। —**पख**–पु० जटाधारी सर्प। —**वाड**–स्त्री० जाटो का समूह। जाटो का मुहल्ला। —**सकरी**–स्त्री० गगा।

जटा–स्त्री० [स०] १ शिर व दाढ़ी-मूछ की केश राशि। २ अयाल। ३ उलझे हुए बाल। ४ नारियल के ऊपर की चोटी। ५ किसी प्रकार के रेशो की लटिका। ६ जूडा।

७ जटामासी । ८ जड या मूल । —चीर—पु० शिव, महादेव । —जूट—पु० जटाओं का समूह । शिव की जटा । —धर, धार, धारी—पु० शिव महादेव । सन्यासी, फकीर । एक भैरव । —माळी—पु० शिव ।

जटामासी—स्त्री० एक सुगंधित वनस्पति विशेष ।

जटाय—देखो 'जटायु' ।

जटायत—पु० शिव, महादेव ।

जटायु—पु० [सं० जटायु] एक प्रसिद्ध गिद्ध ।

जटायुज—पु० घोडा, अश्व ।

जटाळ (ळि, ळी, ळौ)—पु० [सं० जटाल, जटाल] १ शिव, महादेव । २ जटाधारी व्यक्ति । ३ २४वा क्षेत्रपाल । ४ वट वृक्ष । ५ ८८ ग्रहो मे से ५३वा ग्रह । (जैन) ६ जटा समूह । ७ शेर, सिंह । —वि० जटाधारी ।

जटासुर—पु० एक राक्षस ।

जटि—पु० [सं० जटि] १ जटाजूट । २ गूलर का वृक्ष । ३ जमाव । ४ शिव । ५ जटा । ६ वट वृक्ष ।

जटित—वि० जडा हुआ, जडित ।

जटियळ—पु० शिव ।

जटिया—स्त्री० १ चमारो की एक जाति । २ कुम्हारो की एक शाखा ।

जटिल—वि० [सं०] १ पेचीदा, दुरूह । २ क्रूर, दुष्ट । ३ परेशान करने वाला । —पु० [सं० जटिल] १ शेर, सिंह । २ बकरा । ३ ब्रह्मचारी । ४ शिव, महादेव । ५ फकीर ।

जटिला—स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मचारिणी । २ गौतमवंशीय एक ऋषि की कन्या ।

जटी—वि० [सं०] १ जटाधारी । २ देखो 'जटि' । —क्रि० वि० जहा, तहा ।

जटीधु—पु० [सं० धूर्जटि] शिव, महादेव ।

जटेत, जटेल, जटेस, जटेसर, जटेस्वर, जटैल, जटैस—पु० [सं० जटा+ईश्वर] १ सिंह, शेर । २ शिव । ३ योद्धा, वीर । ४ जटाधारी ।

जट्ट—१ देखो 'जट' । २ देखो 'जटा' । ३ देखो 'जाट' ।

जट्टा—देखो 'जटा' ।

जट्टाय—देखो 'जटायु' ।

जट्टि (ट्टी, ट्ठी)—१ देखो 'जटि' । २ देखो 'जट' । ३ देखो 'जटी' ।

जठर—वि० [सं०] १ कठोर । २ दृढ, मजबूत । ३ वृद्ध, बूढा । ४ निष्ठुर । —पु० १ उदर, पेट । २ मेदा, उदराग्नि । ३ कुक्षि, कोख । ४ गर्भाशय । ५ आन्तरिक भाग या हिस्सा । —अगनि, अग्नि, अनल—स्त्री० अन्न पचाने वाली पेट की अग्नि ।

जठराळ—देखो 'जठर' ।

जठरि—देखो 'जठर' ।

जठा—क्रि० वि० जहा, तहा, तत् । —अगनि='जठराग्नि' ।

जठै (ठे, ठै)—क्रि० वि० १ जिस ओर, जिस तरफ । २ जहा, जिधर । ३ वहाँ ।

जडवा—स्त्री० चौसठ योगिनियो मे से एक ।

जड—देखो 'जड' ।

जडचर—पु० [सं० जडश्चर] ४९ क्षेत्रपालो मे से एक ।

जडटोप—पु० शिरस्त्राण, टोप ।

जडणौ (बौ)—क्रि० १ टिड्डी दल का घनी भूत होना । २ अधिक या घना होना । ३ मोटा होना । ४ देखो 'जडणौ' (बौ) ।

जडता—स्त्री० १ मुटापा । २ देखो 'जडता' ।

जडधर (धार, धारी)—पु० [सं० जटधर] १ शिव, महादेव । २ कटारी, कृपाण ।

जडभरत (भरतरी)—पु० एक पौराणिक राजा ।

जडलक (लग)—पु० १ तलवार । २ कटार, कृपाण ।

जडलगधी—स्त्री० कटारी ।

जडलग्ग—देखो 'जडलग' ।

जडा—देखो 'जटा' । (जैन) —गि='जडाग' । —धर, धार, धारी='जटाधारी' ।

जडाई—देखो 'जडाई' ।

जडाळी—स्त्री० कटारी, कृपाण ।

जडि—देखो 'जटि' ।

जडिल—देखो 'जटिल' ।

जडीउ—देखो 'जड्यौ' ।

जडौ—देखो 'जाडौ' ।

जड्ड—पु० हाथी । (जैन)

जड्डौ—देखो 'जाडौ' ।

जण—स्त्री० १ जन्म, उत्पत्ति । २ संतान, औलाद । ३ देखो 'जन' । —वि० १ उत्पादक । २ सज्जन । —सर्व० जिस । क्रि० वि० जब ।

जणअ—देखो 'जनक' ।

जणइ—वि० [सं० जननी] उत्पन्न करने वाली । (जैन) —क्रि० वि० उसी वक्त, तुरत ।

जणइउ, जणईत्तर, जणईत्त्—पु० [सं० जनयितृ] जनक, पिता ।

जणउ—१ देखो 'जण' । २ देखो 'जन' ।

जणक—देखो 'जनक' ।

जणजण, जणज्जण—वि० प्रत्येक, हरेक ।

जणण—देखो 'जनन' ।

जणणि (णी)—देखो 'जननी' ।

जणणौ (बौ)—क्रि० १ संतान को जन्म देना, प्रसव करना । २ जानना ।

जणपथ—देखो 'जनपद' ।

जणमिळु पु० झुड, समूह, दल ।
जणवइ–देखो 'जनपति' ।
जणवय–देखो 'जनपद' ।
जणवयकल्लाणिश्रा–स्त्री० जनपद कल्याणी, चक्रवर्ती राजा की रानी । (जैन)
जणवा–स्त्री० सीरवियो की एक शाखा ।
जणा– क्रि० वि० जब । –पु० लोग, जन ।
जणाणौ (बौ)–क्रि० १ प्रजनन कराना, प्रसव कराना । २ बतलाना, प्रकट कराना, जतलाना ।
जणाव–पु० जानकारी, ज्ञान ।
जणावणौ (बौ)–देखो 'जणाणौ' (बौ) ।
जणि–स्त्री० [सं० जनि] १ माता, जननी । २ नारी, युवती ।
जणियाणी–वि० प्रजनन करने वाली, माता ।
जणिया–स्त्री० [स० यामिनी] रात्रि ।
जणियार–पु०(स्त्री० जणियारी) १ राजा । २ उत्पादक । ३ पिता ।
जणियारी–स्त्री० माता, जन्मदात्री ।
जणियो–पु० १ पुत्र, बेटा । २ संतान ।
जणी–सर्व० १ उस । २ जिस । –क्रि० वि० १ जब । २ देखो 'जणि' ।
जणीता (ती)–स्त्री० जन्मदात्री, माता ।
जणीतो–पु० पिता ।
जणुम्मि–स्त्री० [स० जनोर्मि] तरग के समान मनुष्यो की पक्ति ।
जणे (णं)–क्रि० वि० जब ।
जणेता–स्त्री० माता ।
जणो–पु० [स० जनक, जनित] १ पिता । २ जन ।
जण्ण–पु० [स० यज्ञ] १ यज्ञ । २ इष्टदेव की पूजा । ३ देखो 'जन' ।
जण्ह–अव्य० जहा, जिसलिये । (जैन)
जण्हवी–स्त्री० [स० जाह्नवी] गगा, भागीरथी ।
जतंद्र, जतंद्रीयौ–देखो 'जितेंद्रिय' ।
जत–पु० [स० यतित्व] १ जितेन्द्रिय होने की दशा । २ शील, सतीत्व । ३ जन्म । ४ एक मुसलमान कौम । —**धार**–पु० हनुमान, जितेन्द्रिय ।
जतन (ना, नि, नी)–पु० [स० यत्न] १ प्रयत्न, कोशिश । २ उपाय । ३ साधन, व्यवस्था । ४ रक्षा, हिफाजत । ५ प्रबध । ६ आदर, सत्कार । ७ प्रमाण, पुष्टि । –क्रि० वि० लिए, वास्ते ।
जतराव–वि० जितेन्द्रिय ।
जतरे (रं)–क्रि० वि० तब तक, जितने ।
जतरो–देखो 'जितरो' (स्त्री० जतरी) ।
जतळाणौ (बौ), जतळावणौ (बौ)–देखो 'जताणौ' (बौ) ।
जतलौ–देखो 'जितरो' (स्त्री०जतली) ।
जताणौ (बौ)–क्रि० १ ज्ञात कराना, जताना । २ बतलाना, दिखाना । ३ आग्रह करना ।
जतालौ–वि० [स० यतवान] १ साहसी । २ ब्रह्मचारी ।
जताव (वौ)–पु० १ बतलाने का कार्य । २ प्रकट होने का भाव । ३ असर, प्रभाव ।
जतावणौ (बौ)–देखो 'जताणौ' (बौ) ।
जतिंद्र–देखो 'यती द्र' ।
जति–देखो 'जती' ।
जतिईस–पु० [स० यतीश] १ यति । २ हनुमान ।
जतिचाद्रायण–पु० यतियो का एक व्रत विशेष ।
जती–पु० [स० यति] १ जितेन्द्रिय एव मोक्ष के लिये प्रयत्न शील व्यक्ति, विरक्त प्राणी । २ श्वेताम्बर जैन साधु । ३ योगी । ४ हनुमान । ५ लक्ष्मण । ६ संन्यासी, ऋषि । ७ ब्रह्मा का एक पुत्र । ७ नहुष का एक पुत्र । ९ ब्रह्मचारी । १० रोक, अवरोध । ११ मनोविकार । १२ छप्पय छद का एक भेद । १३ अर्धविराम । १४ विधवा । –अव्य० यदि, अगर । (जैन)
जतीवाह–पु० गरुड।
जतीसती–वि० जितेन्द्रिय, व्रती ।
जतु–पु० १ वृक्ष का गोंद । २ शिलाजीत । ३ लाख, लाक्षा ।
जतेंद्र–देखो 'जितें द्रिय' ।
जतेक–वि० जितने ।
जतै, जतै–क्रि० वि० जब तक, तब तक ।
जत्त–देखो 'जत' ।
जत्ता–स्त्री० [स० यात्रा] प्रयाण, यात्रा । (जैन) —**मयग, मयग**–पु० यात्रा मे साथ रहने वाला नौकर । —**सिद्ध**–पु० बारह बार समुद्र की यात्रा किया हुआ व्यक्ति ।
जत्तिय–वि० [स०यावत्] जितना । (जैन)
जत्ती–देखो 'जती' ।
जत्तै–क्रि० वि० जब तक ।
जत्तो–अव्य० [स० यतस्] जहा । (जैन)
जत्य, जत्थौ–पु० [स० यूथ] १ समूह, झुण्ड । २ गिरोह । –क्रि० वि० [स० यत्र] जहा ।
जत्र–क्रि० वि० [स० यत्र] जहा जहा पर । –पु० नाश सहार ।
जत्रकत्र–पु० नाश, सहार ।
जथा–अव्य० [स० यथा] जिस प्रकार, जैसे, ज्यो । –स्त्री० १ डिंगल गीत रचना की एक विधि । २ एक प्रकार का शब्दालकार । ३ मडली, समूह । ४ पूजी, सपत्ति । ५ सत्य, सच्चाई । ६ यथा । —**क्रम**–क्रि० वि० क्रमश, तरतीबवार । —**जथ**–अव्य० यथातथ्य, ज्यो का त्यो ।

—जात–वि० मद बुद्धि। मूर्ख, सुस्त, काहिल। —जोग, जोग्य–अव्य० यथायोग्य, उपयुक्त। —तथ,तथि–अव्य० ज्यों का त्यों। –वि० सत्य। —नियम–क्रि०वि० नियमानुसार। —न्याय–अव्य० यथान्याय। —रत,रथ–वि० यथार्थ सही। –अव्य० ज्यों का त्यों। —विधि–अव्य० विधि पूर्वक। —सभव–अव्य० जहाँ तक हो सके। —सकती, सक्ति, सगती–अव्य० सामर्थ्य के अनुसार। —समै–अव्य० ठीक समय। —स्थान–अव्य० निश्चित स्थान पर।

जथौ–देखो 'जत्थौ'।

जद–क्रि० वि० [स यदा] १ जब। २ देखो 'जादव'।

जदपत–पु० [स० यादवपति] श्रीकृष्ण।

जदपि(पी)–क्रि० वि० [स० यद्यपि] अगरचे, यद्यपि।

जदरथ–पु० जयद्रथ।

जदराण–पु० [स० यदुराज] श्रीकृष्ण।

जदवस–देखो 'जदुवस'।

जदि (दी)–क्रि० वि० [स० यदि] १ जब। २ अगर।

जदीक–क्रि० वि० जब भी।

जदु(दू)–पु० [स० यदु] १ राजा ययाति के सबसे बडे पुत्र। २ यदुवशी यादव। ३ श्रीकृष्ण। —कुळ–पु० यदु का वश। —णदण, नंदण, नदन–पु० श्रीकृष्ण। —नाथ, पत, पति–पु० श्रीकृष्ण। —पाळ–पु० श्रीकृष्ण। —पुर–पु० मथुरा नगरी। —राम–पु० वलराम। —राई, राज, राय –पु० श्रीकृष्ण। —वस–पु० यदुराजा का वश। —वसी–पु० यादव, श्रीकृष्ण। —वर, वीर–पु० श्रीकृष्ण।

जदूणी–क्रि० वि० जबसे।

जदे (दै, द्दं)–देखो 'जद'।

जद्द–वि० [फा० ज्यादा] १ अधिक, ज्यादा। २ प्रचड, वलवान ३ देखो 'जद'। ४ देखो 'जिद्द'।

जद्दव–देखो 'जादव'।

जद्दाणी–वि० यादव वश का, यादव वंश सबधी।

जद्दुराण–देखो 'जदुराण'।

जद्दे (द्दं)–देखो 'जद'।

जद्दोणी–देखो 'जद्दाणी'।

जद्यपि–क्रि० वि० [स० यद्यपि] अगरचे, यद्यपि।

जनकेस–पु० राजा जनक।

जनगम–पु० [स०] भगी, चाडाल।

जन–पु० [स०] १ लोक, लोग, मनुष्य। २ प्राणी, जीव। ३ प्रजा, रय्यत। ४ व्यक्ति, गण, ससार, दुनिया। ५ अनुयायी, दास। ६ झुण्ड, समूह। ७ भक्त। ८ गण। ९ जन्म, उत्पत्ति। १० सतान, औलाद। ११ सात लोकों मे से एक। १२ एक राक्षस का नाम। –वि० १ उत्पादक, उत्पन्न करने वाला। २ सज्जन। –सर्व० जिस। –क्रि० वि० जब।

जनअ–पु० [स० जनक] पिता। (जैन)

जनक (क्क)–पु० [स०] १ जन्म दाता, पिता। २ उत्पादक। ३ मिथिला के राजा निमि के पुत्र एक तत्त्व-ज्ञानी राजा। –वि० योग्य। —नदिणी–स्त्री० सीता। —महेस–पु० ब्रह्मा।

जनकता–स्त्री० उत्पादक शक्ति।

जनकाणी–स्त्री० सीता, जानकी। –वि० जनक के वंश का या वश सवधी।

जनखो–पु० [फा०] हिजडा।

जनघर–पु० [स० जनगृह] १ मडप। २ विश्राम स्थल।

जनचक्षु (चख)–पु० [स०] १ सूर्य। २ मनु।

जनचरचा–स्त्री० लोकवाद।

जनता–स्त्री० [स०] १ जन समूह। २ प्रजा। ३ उत्पत्ति। ४ मानव जाति।

जनन–देखो 'जणण'।

जननी–देखो 'जणणी'।

जनपद–पु० [स०] १ देश, प्रदेश। २ जनता, प्रजा। ३ राज्य। ४ लोक, जाति। ५ नगरी। ६ मानव जाति।

जनपाळ–पु० राजा।

जनमतर (रि)–पु० [स० जन्मान्तर] दूसरा जन्म।

जनमद (मध)–वि० [स० जन्मान्ध] जो जन्म से ही अधा हो, जन्माध।

जनम–पु० [स० जन्म] १ उत्पत्ति, पैदाइश। २ उदय, आविर्भाव। ३ निकास, उद्गम। ४ सृष्टि। ५ जीवन। ६ अस्तित्व। ७ जन्म कु डली का एक लग्न। —आठम–स्त्री० भादव कृष्णा अष्टमी। —गाठ–स्त्री० जन्मदिन। —घूटी –स्त्री० बच्चे के जन्म पर दी जाती घूंटी। —तत्र–पु० जन्म पत्री। —दिन–पु० प्रति वर्ष आने वाली जन्म की तिथि। —धरती, भोम–स्त्री० जन्म भूमि, मातृभूमि। —सघाती–पु० जन्म भर साथ रहने वाला साथी।

जनमणो (बो)–क्रि० १ जन्म लेना, पैदा होना। २ निकास होना,उद्गम होना। ३ सृष्टि होना। ४ अस्तित्व मे आना।

जनम-मरण-मेटण–पु० यौ० ईश्वर, परमात्मा।

जनमात–पु० [स० जन्मात] १ जीवन, जिदगी। २ जन्मान्तर।

जनमाणो (बो)-क्रि० प्रसव कराना, उत्पन्न कराना।

जनमेज, जनमेजय, जनमेजे–पु० [स० जन्मेजय] १ परीक्षित का पुत्र एक राजा। २ नीप का वशज एक कुल घातक राजा। ३ राजा कुरु का पुत्र एक चद्रवशी राजा। ४ अविक्षित् का वशज एक राजा। ५ एक नाग विशेष। ६ राजा कुरु का पुत्र एक अन्य राजा। ७ विष्णु।

जनमोजनम–अव्य० जन्म-जन्म तक ।

जनम्म–देखो 'जनम' ।

जनम्मणी (वी)–देखो 'जनमणी' (वी) ।

जनयती, (त्री)–स्त्री० [स० जनयित्री] माता, जननी ।

जनयता–पु० [स० जनयितृ] पिता, जनक ।

जनया–स्त्री० [स० जन्या] रात्रि ।

जनरव–पु० [स०] १ जनश्रुति । २ लोक निंदा । ३ शोर, कोलाहल ।

जनलोक–पु० सात लोको मे से पाचवा लोक ।

जनवास–पु० १ सार्वजनिक निवासस्थान, विश्रामस्थल । २ सभा । ३ देखो 'जानीवासौ' ।

जनवासौ–देखो 'जानीवासौ' ।

जनसख्या–स्त्री० [स०] किसी देश या राज्य के निवासियो की सख्या, आवादी ।

जनस–देखो 'जिनस' ।

जनस्रुति, (ती)–स्त्री० [स० जनश्रुति] १ अफवाह । २ लोको पवाद । ३ किंवदती ।

जनहरण–पु० [स०] दण्डकवृत्त का एक नाम ।

जना–सर्व० जिस ।

जनानखानौ–पु० [फा०] रनिवास ।

जनानीड्योढ़ी–स्त्री० १ रनिवास । २ रनिवास का द्वार ।

जनानौ–वि० [फा०जनान] १ नामर्द, नपुसक । २ डरपोक, कायर । ३ स्त्रियों की तरह आचरण करने वाला । –स्त्री० १ स्त्री, औरत । २ स्त्री समाज । ३ रानियों का दरबार ।

जनाख (खि)–पु० [फा० जनख] ठोडी, चिवुक ।

जनाजौ–पु० [फा०] १ शव । २ अर्थी ।

जनाद–पु० देश, राष्ट्र ।

जनारजन, जनारदन–पु० [स० जनार्दन] १ विष्णु, ईश्वर । २ श्रीकृष्ण ।

जनावर–देखो जानवर' ।

जनि–अव्य० निषेध सूचक शब्द 'नहीं' ।

जनित्री–स्त्री० [स० जनित्रि, जनितृ] १ माता, जननी । २ पिता ।

जनी–स्त्री० [स०जनि] १ माता, जननी । २ दासी, सेविका । ३ देखो 'जनि' ।

जनीयित–पु० [स० जनयितृ] पिता ।

जनु–अव्य० मानो ।

जनुख–पु० [स० जनुस्] जन्म, उत्पत्ति ।

जनुवी–स्त्री० तलवार ।

जनून–पु० [अ०] पागलपन, उन्माद ।

जनूनी–वि० [अ०] १ पागल । २ देखो 'जणणी' ।

जनूमणी–स्त्री० शरीर का श्याम, लाल व चिकना भाग जो जन्म के समय होता है ।

जनेंद्र–पु० [स०] राजा, नृप ।

जनेऊ–पु० १ यज्ञोपवीत, उपनयन सस्कार । २ इस सस्कार के उपरात शरीर पर धारण किया जाने वाला धागा । ३ जनेऊ की तरह का एक स्वर्णाभूषण । ४ यज्ञोपवीत पहनने के स्थान पर होने वाला रक्त विकार । **—उतार, कट वढ़, वाढ़, वढ़**–पु० कधे से कमर तक तिरछा निकलने वाला तलवार का वार, प्रहार ।

जनेत जनेता–स्त्री० [स० जनयित्री] माता ।

जनेती-देखो 'जानेती' ।

जनेव–स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

जनेसर(स्वर)–पु० [सं० जनेश्वर] १ जितेन्द्रिय । २ विष्णु । ३ सूर्य । ४ कुबेर । ५ बुद्ध ।

जनोई–देखो 'जनेऊ' ।

जनौ–पु० तलवार की मूठ का एक भाग ।

जन्न–पु०यज्ञ । (जैन)

जन्नक–देखो 'जनक' ।

जन्नट्ठी-वि० यज्ञ की इच्छा रखने वाला । (जैन)

जन्नत–स्त्री० [अ०] स्वर्ग ।

जन्नवाइ–पु० यज्ञवादी । (जैन)

जन्नवाड–पु० यज्ञवाट । (जैन)

जन्नसिट्ठ–पु० आध्यात्मिक यज्ञ । (जैन)

जन्नारजन–देखो 'जनारजन' ।

जन्म–देखो 'जनम' । **—अष्टमी**='जनमग्राठम' ।

जन्मकील–पु० जन्म-मरण मिटाने वाला, विष्णु ।

जन्मकुडळी–स्त्री० जन्म के समय के ग्रहो का पता लगाने वाला चक्र ।

जन्मकृत–पु० [स०] माता-पिता ।

जन्मग्रहण–पु० [स०] उत्पत्ति ।

जन्मणौ (बौ)–देखो 'जनमणौ' (वौ) ।

जन्मतिथि–स्त्री० जन्म का दिन ।

जन्मप, (पति)–पु० [स०] जन्म की राशि का स्वामी ।

जन्मपत्र (पत्री)–पु० [स०] जन्म का समय, राशि व लग्नादि के विवरण का पत्रक ।

जन्मप्रहार–पु० जन्म-मरण, आवागमन ।

जन्मभूमि (भोम)–देखो 'जनमभूमि' ।

जन्मांत, जन्मातर–पु० [स०] दूसरा जन्म ।

जन्माधिप–पु० [स०] १ शिव का एक नाम । २ जन्म लग्न का स्वामी । ३ जन्म राशि का स्वामी ।

जन्मास्टमी–देखो 'जनमग्राठम' ।

जन्मेस–पु० [सं० जन्मेश] जन्म राशि का स्वामी ।

जन्य–पु० [स०] १ साधारण मनुष्य, जन। २ राष्ट्र। ३ पुत्र। ४ पिता। ५ बराती। ६ जन्म। ७ मित्र। ८ किंवदन्ती। ९ उत्पत्ति, सृष्टि। १० शरीर। –वि० १ उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ। २ किसी कुल या वश सबधी। ३ ग्रामीण, गवारू। ४ राष्ट्रीय। ५ योग्य, अनुरूप।

जन्ह–देखो 'जह्नू'।

जन्हवी–स्त्री० [स० जाह्नवी] गगा।

जप–पु० [स०] १ किसी नाम, मत्र या श्लोक का बारबार किया जाने वाला उच्चारण। रट, पाठ। २ स्मरण, याद। ३ सेवा, बदगी। ४ साधना। ––जाप–पु० साधना, मत्र पाठ, जप-तप।

जपणी–स्त्री० १ जप करने की माला। २ ऐसी माला रखने की थैली। –वि० जप-जाप करने वाला।

जपणौ (बौ)–क्रि० [स० जप्] १ किसी नाम, मत्र या श्लोक को बार-बार जपना, रटना, पढना। २ स्मरण करना याद करना। ३ सेवा करना, बदगी करना। ४ साधना करना। ५ कथना, कहना। ६ नींद लेना, झपकी लेना। ७ शात होना।

जपत–देखो 'जब्त'।

जपतप–स०पु० [स०] पूजा-पाठ, सध्या वदन, तपस्या।

जपता–स्त्री० जटा।

जपा–स्त्री० [स०] गुलाब का फूल या पौधा, अडहुल।

जपाणौ (बौ)–क्रि० जप कराना, पाठ कराना, रट लगवाना, जपने के लिये प्रेरित करना।

जपियौ–वि० जप करने वाला।

जप्त–देखो 'जब्त'।

जफरतकिया–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

जब–क्रि०वि० जिस समय।

जबक–स्त्री० चोट, मार।

जबडौ–देखो 'जबाडौ'।

जबत–देखो 'जब्त'।

जबरग–वि० जबरदस्त।

जबर–वि० [अ०] (स्त्री० जबरी) १ बलवान, शक्तिशाली, शूरवीर। २ क्रूर, आततायी। ३ प्रबल। ४ तीव्र, तेज। ५ अधिक। ६ भयंकर। ७ बढिया, श्रेष्ठ। ८ महान्।

जबरई–देखो 'जबराई'।

जबरजगनाळी–स्त्री० एक प्रकार की तोप।

जबरण जबरणा–क्रि० वि० [अ० जब्रन] जबरदस्ती, बलात्।

जबरदस्त–वि० [अ०] १ शूरवीर, बलवान, शक्तिशाली। २ भयकर। ३ क्रूर, जुल्मी।

जबरदस्ती–स्त्री० [अ०] १ ज्यादती, अन्याय, अत्याचार। २ प्रबलता। ३ जोरावरी। –क्रि० वि० बल पूर्वक, बलात्

जबरन–क्रि० वि० [अ० जब्रन] बलात्, हठात्, दबाव डाल कर। मजबूर करके, अनीच्छा मे।

जबराई–स्त्री० [अ०] १ ज्यादती, अन्याय। २ सख्ती। ३ जबरदस्ती, जोरावरी।

जबरायल, (येल)–वि० शक्तिशाली, जबरदस्त।

जबरी–स्त्री० १ ज्यादती, अन्याय। २ कष्टप्रद कार्य। ३ जबरदस्ती।

जबरेल (रैल)–देखो 'जबरायल'।

जबरोड़ौ, जबरौ–देखो 'जबर'। (स्त्री० जबरोडी, जबरी)

जबळ–पु० [अ० जबल] पहाड, पर्वत।

जबह–देखो 'जिबह'।

जबा, जबान–स्त्री० १ जिह्वा, जीभ। २ वाणी, बोली। ३ वचन, शब्द। ४ वादा, सकल्प, प्रतिज्ञा। ५ वाचालता, तर्क-वितर्क। ६ बहस।

जबानी–वि० [फा०] १ मौखिक, मुख से कहा हुआ। २ कठस्थ। ३ जो हर समय याद रहे, जबान पर रहे।

जबाडौ–पु० [स० ज भ] मुह का दाढो वाला भाग।

जबाध–स्त्री० एक प्रकार का सुगधित पदार्थ विशेष।

जबाब–पु० [अ०] १ उत्तर। २ बदला। ३ मनाही, इन्कार। ४ जोड, बराबरी। ––तळब–पु० पूछताछ, समाधान। ––दावौ–पु० अदालत मे प्रतिवादी का प्रत्युत्तर। ––देह –वि० उत्तरदाई, जिम्मेदार। ––देही–स्त्री० जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व। ––सवाल–पु० प्रश्नोत्तर, पूछताछ, बहस।

जबाबी–वि० १ जबाब के लिये किया गया। २ जबाब सबधी।

जबाबूं–देखो 'जबाब'।

जबुफळ–पु० एक प्रकार का शुभ रग का घोडा।

जबून–वि० [फा० जबून] बुरा, खराब, नीच।

जबेह–देखो 'जिबह'।

जबोड़, जबोडौ–पु० १ प्रहार, चोट। २ देखो 'जबाडौ'।

जब्त–पु० [अ०] १ शासन द्वारा किसी वस्तु या सपत्ति का बलात् हरण, कब्जे मे लेने का कार्य या भाव। २ प्रबध, निगरानी। ३ सहनशीलता। –वि० अधिकार मे, काबू मे।

जब्ती–स्त्री० [अ०] जब्त होने की क्रिया।

जब्ब–देखो 'जब'।

जब्बर–देखो 'जबर'।

जब्बू–देखो 'जबून'।

जब्रन–देखो 'जबरन'।

जभै–देखो 'जिबह'।

जमद–पु० जामुनी रग का घोडा।

जमधर–देखो 'जमधर'।

जम–पु० [स० यम] १ एक साथ पैदा होने वाले बच्चो का जोडा, यमज। २ दक्षिण दिशा का दिक्पाल और मृत्यु का

देवता। ३ मन व इंद्रिय का निग्रह। ४ मन को धर्म की ओर उन्मुख रखने का साधन, योग के आठ अंगों में से एक। ५ कौवा। ६ शनिश्चर। ७ विष्णु। ८ वायु। ९ यमराज, १० दो की संख्या। –वि० अन्धा। –क्रि०वि० जैसे।

जमक–देखो 'यमक'।

जमकात, जमकातर–पु० १ भंवर। २ यम का खांडा। ३ एक प्रकार की छोटी तलवार।

जमग–पु० [सं० यमक] १ देव कुरु। २ उत्तर कुरुक्षेत्र के एक पर्वत का नाम। ३ एक पक्षी विशेष।

जमघट–पु० [सं० यमघट] १ यमराज का घटा। २ दीपावली का दूसरा दिन। ३ देखो 'जमघटजोग'।

जमघटजोग (योग)–पु० [सं० यमघटयोग] शास्त्रोक्त एक अशुभ मुहूर्त विशेष।

जमघट (ट्ट)–पु० १ मनुष्यों की भीड़। २ जमाव। ३ एकत्रीकरण। ४ समूह।

जमडी–देखो 'जमी'।

जमचक्र–पु० [सं० यमचक्र] यमराज का शस्त्र।

जमज–पु० एक साथ जन्मे बच्चों का युग्म।

जमजनक–पु० [सं० यमजनक] सूर्य।

जमजाळ–पु० १ यम का फंदा, यमपाश। २ वीर, योद्धा। ३ एक प्रकार की छोटी तोप, बन्दूक।

जमझमा–स्त्री० तार वाद्यों को बजाने की एक क्रिया।

जमझाळ–देखो 'जमजाळ'।

जमडंड (डो)–पु० १ यमराज द्वारा प्रदत्त दण्ड। २ यमराज का डंडा।

जमडड (ड्ढ, ड्ढ़, ड्ढा, डढ्ढ)–स्त्री० [सं० यमद्रंष्ट्रा] १ कृपाण। २ कटार।

जमडांण (डाणी)–पु० यमदूत।

जमडाड (डाढ़)–देखो 'जमडड'।

जमडाढ़ाळ–वि० यमराज के समान वीर, योद्धा।

जमण, जमणा–देखो 'जमना'।

जमणवार–देखो 'जीमणवार'।

जमणिका–देखो 'जवनिका'।

जमणिया–स्त्री० [सं० जमनिका] साधुओं का एक उपकरण विशेष (जैन)।

जमणी–देखो 'जमना'।

जमणौ (बौ)–क्रि० १ पानी का बर्फ होना। २ द्रव पदार्थ का ठोस बनना। ३ दृढ़ता पूर्वक बैठना। ४ निश्चित होकर बैठ जाना। ५ एकत्र, जमा होना। ६ दूध का दही होना। ७ चोट लगना। ८ अभ्यस्त होना, दक्ष होना। ९ टिकना, ठहरना। १० उचित प्रबंध होना। ११ घोडे का ठुमक-ठुमक चलना।

जमतात–पु० [सं० यमतात] सूर्य।

जमदत–पु० [सं० यमद्रष्ट] प्राण घातक वस्तु।

जमदढ, जमदढ्ढ (दढ्ढा)–देखो 'जमडड'।

जमदास–पु० यमदूत।

जमदिस (दिसा)-स्त्री० [सं० यमदिशा] दक्षिण दिशा।

जमदूत–पु० [सं० यमदूत] यम का दूत।

जमदेवता–पु० १ यमराज। २ भरणी नक्षत्र।

जमद्दढ़, (द्दाढ)–देखो 'जमडड'।

जमद्वार–पु० यमलोक का द्वार।

जमधर–पु० कटारीनुमा एक शस्त्र।

जमन–पु० १ यवन। २ जमुना। —भ्रात–पु० यमराज।

जमना–स्त्री० [सं० यमुना] १ उत्तर भारत की एक बडी नदी। २ दुर्गा, देवी। ३ संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक पुत्री। ४ यम की बहन, यमी।

जमनायण–पु० मुसलमान।

जमनाह–पु० यमराज।

जमनि (नी)–पु० १ एक बहुमूल्य पत्थर, रत्न। २ देखो 'जमना'।

जमनोतरी–स्त्री० गढवाल के पास का एक पर्वत।

जमन्ना–देखो 'जमना'।

जमपास–स्त्री० [सं० यमपाश] यमपाश, मृत्यु का बंधन।

जमपिता–पु० सूर्य।

जमपुर (पुरी)–पु० १ यमलोक। २ नरक। —स्यांम–पु० यमराज।

जमवाहण–पु० [सं० यम-वाहन] भैंसा।

जमबीज–स्त्री० [सं० यम-द्वितीया] १ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया। २ कार्त्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया।

जमभगनी–स्त्री० [सं० यमभगिनी] यमुना।

जमया–स्त्री० [सं० यमया] नक्षत्र संबंधी एक योग।

जमरथ–पु० [सं० यमरथ] भैंसा।

जमराण (णौ), जमराउ (राज, राव)–पु० [सं० यमराज] १ मृत्यु के देवता, यम, काल। २ भृगु ऋषि। ३ योद्धा, वीर। —पिता–पु० सूर्य।

जमरूख–पु० एक प्रकार का फल।

जमरूप–पु० कटार।

जमरौ–देखो 'जमराण'।

जमल (उ)–वि० [सं० यमल] १ युग्म, जोड़ा। २ दूसरा। ३ साथ।

जमलज्जुणभंजग–पु० [सं० यमलार्जुनभंजक] श्रीकृष्ण।

जमलपय–पु० [सं० यमलपद] आठ-आठ का एक जत्था। (जैन)

जमला–क्रि० वि० [सं०यमल] एक साथ, एक मुश्त।

जमला–स्त्री० [सं० यमला] एक प्रकार का हिक्का रोग।

जमलारजुण(न)–पु० [स० यमलार्जुन] गोकुल स्थित दो अर्जुन वृक्ष विशेष।
जमलि, जमली (लु)–देखो 'जमला'।
जमलोइय–पु० [स० यमलौकिक] यमलोकवासी देवता।
जमलोक–पु० [स० यमलोक] १ यमपुरी। २ नरक।
जमवान–देखो 'जवान'।
जमवार–स्त्री० [स० यम-बेला] १ मृत्यु का समय, अवसान काल। २ जीवन।
जमवारउ, जमवारूं (वारौ)–देखो 'जमारौ'।
जमवाहण–देखो 'जमवाहरण'।
जमसाद–पु० [स०यम-माद] प्रिय की मृत्यु पर किया जाने वाला रुदन।
जमहता–वि० [स० यमहतृ] काल का विनाश करने वाला।
जमहनक–पु० सफेद पाव व काले शरीर वाला घोडा।
जमहर–पु० [स० जन्म-हर] १ यमराज। २ चिता। ३ जौहर।
जमहार–पु० जवाहरात।
जमानत–स्त्री० [अ० जमानत] किसी अपराधी की अदालत मे उपस्थिति तथा कर्जदार के चुकारे के प्रति ली जाने वाली जिम्मेदारी। —**नांमौ**–पु० उक्त कार्यों के प्रति लिखा जाने वाला पत्र।
जमानती–वि० जमानत देने वाला, जामिन।
जमानाबाज (साज)–वि० अवसरवादी।
जमानासाजी–स्त्री० अवसरवादिता।
जमानौ–पु० [अ० जमान] १ समय, वक्त, काल। २ फसल, पैदावार। ३ ससार, दुनिया। ४ वर्ष, साल।
जमारत–देखो 'जुमेरात'।
जमा–वि० [अ०] १ एकत्र, इकट्ठा, सगृहीत। २ अमानत के तौर पर रखा हुआ। ३ प्राप्त किया हुआ। –स्त्री० १ मूल धन, पूजी। २ रुपया, धन। ३ मालगुजारी, लगान। ४ योग, जोड। ५ आय, आमदनी। ६ आय लिखने का बही का भाग। ७ यमुना नदी। ८ दक्षिण दिशा। ९ यम लोकपाल की राजधानी। १० यमराज।
जमाइ (ई)–पु० [स० जामातृ] १ दामाद, जामाता। २ एक लोक गीत विशेष। ३ जमाने की क्रिया। ४ इस कार्य की मजदूरी।
जमाउ–वि० १ अविचल निश्चल। २ अटल।
जमाखरच–पु० आय-व्यय।
जमाखातर (री), जमाखातिर–स्त्री० [अ० खातिरजमा] इतमिनान, तसल्ली।
जमाज–पु० [स० यमाद] ऊट।
जमाणौ (बौ)–क्रि० १ पानी का बर्फ करना। २ द्रव पदार्थ को ठोस बनाना। ३ दृढ़ता पूर्वक बैठाना। ४ ठीक व्यवस्था करना। ५ अपने अधिकार या प्रभुत्व मे करना। ६ एकत्र या इकट्ठा करना। ७ दूध मे छाछ मिलाकर दही बनाना। ८ चोट लगाना, आघात करना। ९ अभ्यास करना, हाथ साफ करना। १० डट कर खाना। ११ अच्छी तरह से कार्य सचालन करना। १२ घोडे का ठुमक-ठुमक चलना। १३ प्रयोग या सेवन करना।
जमात–स्त्री० [अ० जमाअत] १ बहुत से व्यक्तियो का गिरोह, जत्था। २ सेना, फौज। ३ साधुओ की मंडली। ४ कक्षा, दर्जा, वर्ग। —**दार**='जमादार'।
जमाता–पु० जवांई, जामाता।
जमातात–पु० [स० यमुना-तात] सूर्य, रवि।
जमाति (ती)–वि० जमात मे रहने वाला। –पु० १ जमाता। २ देखो 'जमात'।
जमाद–देखो 'जमाज'।
जमादार–पु० [फा०] १ कुछ सिपाहियो का प्रधान। २ बडा सिपाही। ३ पहरेदार। ४ नगरपालिका का एक कर्मचारी।
जमादारी–स्त्री० [फा०] १ जमादार का कार्य। २ जमादार का पद।
जमापिता–पु० यमुना पिता, सूर्य।
जमाबदी–स्त्री० १ कई व्यक्तियो द्वारा एक ही स्थान पर जमा कराई हुई रकम। २ लगान सबधी, पटवारी का एक प्रपत्र।
जमाभेदण–देखो 'जमुनाभेदी'।
जमामरद–देखो 'जवामरद'।
जमायत–देखो 'जमात'।
जमार, जमारइ, जमारउ–देखो 'जमारौ'।
जमारी–पु० [स० यमारि] विष्णु।
जमारीक–पु० जीवनधारी, प्राणी।
जमारौ–पु० [स० जन्म+कार] १ जीवन, जिन्दगी। २ आयु। ३ जन्म। ४ योनी, जूण।
जमालगोटौ (घोटौ)–पु० १ एक पौधे का बीज जो दस्तावर होता है। २ दन्ती पेड का फल।
जमालि–पु० [स०] महावीर स्वामी के दामाद का नाम।
जमाव (डौ, वट)–पु० १ जमाने की क्रिया या भाव। २ हुकूमत या शासन जमाने का भाव। ३ गोष्ठी। ४ जमघट, भीड। ५ पडाव, डेरा। ६ जमा होने की क्रिया या भाव। ७ सग्रह, एकत्रीकरण। ८ दूध का जावण। ९ एक उदर विकार। १० टिकाव।

जमावणियौ (णौ)–पु० दूध जमाने का पात्र । –वि० जमाने वाला ।
जमावणौ (बौ)–देखो 'जमाणौ' (बौ) ।
जमियत–देखो जमीयत' ।
जमीं–देखो 'जमीन' ।
जमींदार–देखो 'जमीदार' ।
जमी–स्त्री० [सं० यमी] १ यमुना नदी । २ जमीन ।
जमीकंद–पु० एक प्रकार का कद, सूरन ।
जमीक, जमीकरवत–पु० ऊट ।
जमीत–देखो 'जमीयत' ।
जमीयम–पु० १ योद्धा, वीर । २ राजा ।
जमीदार–पु० [फा०] भू-स्वामी, जमीन का मालिक ।
जमीदारी–स्त्री० [फा०] १ जमीदार की जमीन । २ जमीदार का हक ।
जमीदोज (दोट)–वि० [फा०] १ जमीन के बरावर, समतल । २ जमीन के अन्दर । ३ नष्ट, ध्वस्त ।
जमीन–स्त्री० [फा०] १ पृथ्वी, भूमि । २ पृथ्वी की ऊपरी सतह । ३ कृषि भूमि । ४ मैदान । ५ भू-भाग । ६ कपडे या कागज की ऊपरी सतह । —**भरतार**–पु० पृथ्वीपति, राजा । जमीदार ।
जमीयत (रत)–स्त्री० [अ० जमईयत] सेना, फौज ।
जमीरौकरोत–देखो 'जमीकरवत' ।
जमुण (णा, ना)–स्त्री० यमुना । —**अनुज**–पु० यमराज । —**भेदी**–पु० बलराम ।
जमुर, जमुरक–पु० [फा० जवूरक] एक प्रकार की छोटी तोप ।
जमुरो–पु० [फा० जबूर] घोडो के नाखून काटने का एक नालबदी का औजार ।
जमूरक, जमूरौ–देखो 'जमुरक' ।
जमेखातर (खातरी)–देखो 'जमाखातिर' ।
जमेरात–देखो 'जुमेरात' ।
जमेरी–स्त्री० १ मिश्री । २ देखो 'जबीरीनीबू' ।
जमै–देखो 'जमा' । —**खातर**='जमाखातर' । —**मरद** 'जवामरद' ।
जमौ–देखो जुमौ' ।
जम्म–पु० यम । —**घटा**–स्त्री० चौसट योगिनियो मे से एक । जमघट योग ।
जम्मण–देखो 'जमना' ।
जम्मणचरिय–पु० जीवन चरित्र ।
जम्मणभवण–पु० प्रसूती घर ।
जम्मणी–स्त्री० देवी, शक्ति ।
जम्मदूती–स्त्री० [स० यमदूती] यमदूती, दुर्गा, कालिका ।
जम्मना, जम्मन्ना–देखो 'जमना' ।
जम्मभूमि–स्त्री० [स० जन्मभूमि] मातृ भूमि ।
जम्मरांण–देखो 'जमराज' ।
जम्मा–स्त्री० [स० याम्या] दक्षिण दिशा ।
जम्माइ (ई)–देखो 'जमाई' ।
जम्मात–देखो 'जमात' ।
जम्मारौ–देखो 'जमारौ' ।
जम्मी–देखो 'जमीन' ।
जम्मु–१ देखो 'जनम' । २ देखो 'जबु' ।
जम्मुना–देखो 'जमना' ।
जम्मौ–देखो 'जुमौ' ।
जयंत–पु० [स०] १ एक रुद्र । २ इन्द्र के एक पुत्र का नाम ३ सगीत मे एक ताल । ४ स्वामि कार्त्तिकेय, स्कद । ५ अक्रूर के पिता का नाम । ६ भीम का एक नामान्तर । ७ दशरथ का एक मत्री । ८ एक पहाड । ९ यात्रा का एक योग । १० जम्मूद्वीप का पश्चिमी द्वार । ११ शिव । १२ चद्रमा । १३ एक जैन मुनि । १४ रुचक पर्वत का एक शिखर । —**पत्र**–पु० अश्वमेधीय अश्व के ललाट पर बाधा जाने वाला पत्र ।
जयता (ती)–स्त्री० [स० जयती] १ ध्वजा, पताका । २ विजयिनी । ३ इन्द्र पुत्री । ४ दुर्गा का नाम । ५ पार्वती । ६ किसी महापुरुष की जन्म तिथि का महोत्सव । ७ ज्योतिष का एक योग । ८ सातवें जिन देव की माता का नाम । ९ प्रत्येक पक्ष की नवमी रात्रि का नाम ।
जय–स्त्री० [स०] १ विजय, जीत । २ सफलता । ३ सयम, निग्रह । ४ सूर्य । ५ इन्द्र पुत्र जयत । ६ युधिष्ठिर । ७ विष्णु के द्वारपालो मे से एक । ८ अर्जुन की एक उपाधि । ९ पताका विशेष । १० मार्ग । ११ ज्योतिष मे ३, ८ व १३ की तिथिया । १२ विश्वामित्र का एक पुत्र । १३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । १४ ससार । १५ छप्पय छद का एक भेद । १६ प्रयत्न, कोशिश । —**कंकण**–पु० विजयी पुरुष को दिये जाने वाले स्वर्ण ककण (कगन) । —**करणसत्र**–पु० वीर अर्जुन । —**कार, कारौ**–पु० जयध्वनि, जयजय कार । —**गोपाळ**–पु० एक प्रकार का अभिवादन । —**घोस**–पु० जैजैकार का भारी शब्द । —**ढक**–पु० विजय सूचक वाद्य । —**माळा**–स्त्री० विजय जीत के उपलक्ष मे धारण कराई जाने वाली माला ।
जयजयकार (कारू), **जयज्जयकार**–देखो 'जैजैकार' ।
जयण–पु० [स०यजन] १ याग, पूजा । २ अभयदान । ३ विजय, जीत । ४ प्राणी की रक्षा । ५ यत्न, उद्योग । –वि० १ वेगवान । २ जीतने वाला ।
जयणट्ठ–क्रि० वि० [म० यतनार्थ] जीव रक्षार्थ ।

जयणा-स्त्री० [स० यत्ना] १ चेष्टा, प्रयत्न कोशिश । (जैन) २ प्राणी की रक्षा । (जैन) ३ हिंसा का परित्याग । ४ दया । ५ विवेक । ६ उपयोग । (जैन)

जयत-पु० १ जयघोप, जयध्वनि । २ जय-विजय ।

जयतसिरी-देखो 'जयस्री' ।

जयती-देखो 'जयती' ।

जयदेव-पु० गीत गोविन्द के रचयिता एक प्रसिद्ध सस्कृत कवि ।

जयद्दह (द्रत्थ, द्रथ, द्रथि, द्रथू, द्रथ्य)-पु० [स० जयद्रथ] दुर्योधन का बहनोई व सिंधु देश का राजा ।

जयध्वज-पु० [स०] जयध्वजा, पताका, जयंती ।

जयनी-स्त्री० [सं०] इद्र की कन्या ।

जयनेर-पु० जयपुर नगर ।

जयपत्त, जयपत्र-पु० [स०] १ पराजित राजा द्वारा विजयी राजा को लिखा जाने वाला पत्र । २ अश्वमेध यज्ञ के अश्व के ललाट पर बधा रहने वाला पत्र ।

जयपाळ-पु० [स० जयपाल] १ जमाल गोटा । २ विष्णु । ३ राजा ।

जयप्रिय-पु० [स०] एक प्रकार की ताल ।

जयमगळ-पु० [स० जयमगल] १ विजयी राजा की सवारी का हाथी । २ ताल का एक भेद । ३ शुभ रग का एक घोडा विशेष । ४ ज्वर की एक औपधि ।

जयमल्लार-पु० सम्पूर्ण जाति का एक राग ।

जयमाताजी-स्त्री० शाक्त लोगो का एक अभिवादन ।

जयमाळ (माळा)-स्त्री० [स० जयमाला] १ विजयी राजा को पहनाई जाने वाली माला । २ स्वयबर मे किसी पुरुष को वरण करके स्त्री द्वारा पहनाई जाने वाली माला ।

जयरामजी-स्त्री० एक अभिवादन विशेष ।

जयवत, जयवत-वि० [स०] विजयी, जीता हुआ ।

जयसधि-पु० [स०] पुडरीक राजा का एक मत्री । (जैन)

जयसद्द-पु० जयध्वनि ।

जयसायर-पु० [स० जयसागर] एक मुनि का नाम । (जैन)

जयस्तभ-पु० [स] विजय स्तम्भ ।

जयस्री-स्त्री० [स० जयश्री] १ विजयश्री, लक्ष्मी । २ सध्या समय की एक रागिनी । ३ ताल के साठ भेदो मे से एक ।

जयहाथ-पु० [स० जयहस्त] अर्जुन ।

जयहार-पु० विजय माला ।

जया-स्त्री० [स०] १ दुर्गा । २ पार्वती । ३ हरी दूब । ४ हरीतकी, हरड । ५ दुर्गा की एक सहचरी । ६ ध्वजा, पताका । ७ तृतीया, अष्टमी व त्रयोदशी की तिथिया । ८ माघ शुक्ला एकादशी । ९ यमुना नदी । १० सोलह मातृकाओ मे से एक । ११ भाग । १२ बारहवें तीर्थंकर की माता का नाम । (जैन) १३ चौथे चक्रवर्ती की मुख्य स्त्री । १४ एक प्रकार की मिठाई । -वि० विजय दिलाने वाली । -क्रि० वि० जब, जिस वक्त, यदा ।

जयार-सर्व० जिनका । -क्रि० वि० १ जब । २ तक, पर्यन्त । — मयार-पु० 'ज' कार 'म' कार । अपशब्द । (जैन)

जयावती-स्त्री० १ एक स्कन्द मातृका । २ एक रागिनी विशेष ।

जयी-पु० [सं० ययी] १ शिव । २ घोडा । ३ मार्ग, रास्ता । ४ अश्वमेध का घोडा ।

जयु-पु० [स० ययु] अश्वमेध का घोडा ।

जयेत-पु० [स०] एक राग विशेष । -गोरी-स्त्री० एक संकर रागिनी ।

जयोडौ-देखो 'जायोडौ' (स्त्री० जयोडी)

जयौ-पु० 'जय हो' का अभिवादन ।

जरत-पु० भैसा, महिष ।

जरद-पु० १ प्रहार, चोट । २ प्रहार की ध्वनि । ३ किसी के गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।

जरदौ-वि० हजम करने वाला । -पु० १ एक ध्वनि विशेष । २ दुसाला । ३ उपयोग ।

जर-स्त्री० १ चम्मचनुमा चलनी । २ धन,सम्पत्ति । ३ गर्भस्थ बालक पर रहने वाली झिल्ली । ४ वृद्धावस्था । ५ सोना, स्वर्ण । ६ लोहे का मुरचा । ७ ज्वर ।

जरई-स्त्री० अकुर निकले हुए धान के बीज ।

जरक-स्त्री० १ मोच, चोट । २ खरोच, घाव । ३ प्रहार की ध्वनि । ४ स्वर्ण खण्ड । ५ देखो 'जरख' ।

जरकणौ (बौ)-क्रि० १ मोच पडना, चोट लगना । २ खरोच लगना, घाव पडना । ३ प्रहार की ध्वनि होना । ४ गिरना ।

जरकस (कसिया), जरकसी (सौ, स्स)-वि० १ स्वर्ण मडित । २ स्वर्ण तारो मे से युक्त ।

जरकाणौ (बौ), जरकावणौ (बौ)-क्रि० १ मारना, पीटना । २ जमकर खाना । ३ प्रहार करना ।

जरकी-वि० १ कायर, डरपोक । २ देखो 'जरक' ।

जरकौ (क्क)-देखो 'जरक' ।

जरख (ख्ख)-पु० [स० जरक्ष] लकडबग्घा । —बाहणी-स्त्री० डाकिनी, चुडैल ।

जरखेज-वि० [फा०] उपजाऊ, उर्वरा ।

जरगारखाना-पु० राजा-बादशाह या शासक का हीरे-जवाहरात, आभूषणो का भण्डार ।

जरग्ग-वि० [स० जरत्क] १ जीर्ण, पुराना । २ देखो 'जरग्गव' ।

जरग्गव-पु० [स० जरद्गव] १ लकडबग्घा । २ बूढा बैल ।

जरघर-पु० स्वर्णकार, सुनार ।

जरड–स्त्री० १ वस्त्र के फटने या चिरने से उत्पन्न ध्वनि। २ सहसा चीरने या फाडने की क्रिया या भाव।

जरडौ–वि० १ अशिक्षित। २ स्वतत्र रहा हुआ। –पु० छेद, सूराख।

जरजर–वि० [स० जर्जर] १ जीर्ण-शीर्ण। २ पुराना। ३ टूटा-फूटा, खडित। ४ वृद्ध।

जरजराना–स्त्री० स्वामि कार्त्तिकेय की एक अनुचरी।

जरजरित–वि० [स० जर्जरित] १ पुराना, जीर्ण-शीर्ण। २ टूटा-फूटा। ३ बूढा। ४ निर्बल। ५ घिसा हुआ। ६ खण्ड-खण्ड व बिखरा हुआ। ७ निकम्मा किया हुआ।

जरजरी–स्त्री० १ एक प्रकार का आभूषण। २ एक प्रकार का जलपात्र।

जरजीत–पु० [स० जराजित] कामदेव।

जरठ, जरढ़–वि० [स० जरठ] १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना। २ वृद्ध, बूढा। ३ कर्कश। ४ कठिन।

जरण–स्त्री० [स० जरा] १ वृद्धावस्था, जरा। २ दश प्रकार के ग्रहणो मे से एक। ३ चन्द्रमा। ४ सहिष्णुता। –वि० १ हजम करने वाला, पचाने वाला। २ वृद्ध।

जरणा–स्त्री० १ सहन शक्ति। २ क्षमा। ३ वृद्धावस्था।

जरणी–स्त्री० १ वृद्धा। २ देवी, दुर्गा। ३ माता।

जरणौ (बौ)–क्रि० १ हजम होना, पचना। २ सहन होना। ३ जलना, भस्म होना। ४ लोहे के जग लगना। ५ परिपक्व होना। ६ सहार करना।

जरत–वि० [स०जरत्] १ प्राचीन, पुराना। २ वृद्ध।

जरतार (ताव)–वि० सलमे सितारे का काम किया हुआ।

जरद– पु० १ कवच २ पीला रग। –वि० पीला। **—गव**–स्त्री० एक नक्षत्र वीथि विशेष। **—पोस, बध**–पु० कवच धारी योद्धा।

जरदाउळि (दाळ दाळि, दाळू, दाळौ)–पु० १ कवच। २ कवच-धारी योद्धा। ३ खुरवानी मेवा। –वि० तबाखू का व्यसनी।

जरदी–स्त्री० १ पीलापन। २ अडे के भीतर का पीला भाग।

जरदुस्त–पु० [फा०] फारसी धर्म का प्रतिष्ठ ता।

जरदैत–पु० [फा०] कवचधारी योद्धा।

जरदोज–पु० [फा०] कपड़ो पर कलाबू ती का कार्य करने वाला कारीगर।

-**जरदोजी**–स्त्री० कपडो पर की जाने वाली दश्तकारी।

जरदौ–पु० [फा० जरदा] १ चावल व मास के योग से बना एक व्यजन। २ तम्बाकू के सूखे पत्ते जो पान बीड़ी मे डाले जाते है। ३ खाने की सुगधित सुरती। ४ कवच। ५ पीले रग का घोडा।

जरदौत–देखो 'जरदैत'।

जरद्द–देखो 'जरद'।

जरद्दाळ–देखो 'जरदाळ'।

जरब–स्त्री० [अ० जर्ब] १ चोट, आघात। २ जगल, वन। ३ तबले, मृदग आदि पर लगाई जाने वाली थाप। ४ जूता।

जरबफत (बफ्त)–पु० [फा० जरबफ्त] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। २ तारी का काम किया हुआ वस्त्र।

जरबाप (बाफ)–पु० [फा० जरबाफ] १ वस्त्रो पर सलमे आदि का कार्य करने वाला कारीगर। २ ऐसा काम किया हुआ वस्त्र।

जरबाफी–वि० जिस पर जरबफ्त किया हुआ हो।

जरमी–देखो 'जमीन'।

जरय–पु० [स० जरक] मेरु के दक्षिण का एक नरक। (जैन) **—मज्झ**–पु० उत्तर दिशा का एक नरक। (जैन)

जरयावत्त–पु० [सं० जरकावर्त] पश्चिम दिशा का एक बडा नगर। (जैन)

जररार–वि० [अ० जर्रार] बहादुर, वीर।

जरारी–स्त्री० बहादुरी, वीरता।

जरराही–स्त्री० [अ० जर्राही] शल्य चिकित्सा।

जररौ–पु० [अ० जर्राह, जर्रा] १ शल्य चिकित्सक। २ कण, दाना।

जरस–देखो 'जरख'।

जरसी–स्त्री० पूरी आस्तीन का स्वेटर।

जरहजीण–पु० एक प्रकार का कवच।

जरहर–पु० [स० जलधर] १ बादल। २ वर्षा।

जरा–क्रि० वि० जब।

जरा–स्त्री० [स०] १ वृद्धावस्था, बुढ़ापा। २ निर्बलत कमजोरी। ३ पाचन शक्ति। ४ गहरी नीद। ५ ए राक्षसी। ६ देखो 'जरायुज। –वि० कम, थोडा, किंचित

जराउअ,(उज,उय, उया)–देखो 'जरायुज'।

जराक–वि० जरासा, तनिक। –पु० चोट प्रहार।

जराकौ–पु० १ भय, आतक। २ चोट प्रहार। ३ धक्का, झटक ४ मार।

जराग्रस्त–वि० [स०] वृद्ध, बूढा।

जराजर–क्रि० वि० शीघ्रता से, लगातार। –स्त्री० प्रहा की ध्वनि।

जरादूत–पु० श्वेत बाल।

जरापाखर–वि० १ मजबूत, दृढ। २ सन्नद्ध कटिबद्ध।

जराभीर (भीरु)–पु० [स० जराभीरु] कामदेव।

जरायु–पु० [स०] १ गर्भस्थ शिशु पर रहने वाली झिल्ली २ केचुली। ३ गर्भाशय। ४ योनि, भग। ५ जटायु **—ज**–पु० गर्भ से उत्पन्न होने वाला, पिंडज।

जरारहित–पु० देवता। -वि० जो बूढा न हो।

जरासंद, (ध) जरासिंध, जरासिंधु(धि,धौ)–पु० [सं० जरासंघ] मगध देश का राजा (महाभारत) ।—**खय**–पु० भीम ।
जरासुत (सेन)–पु० जरासंध का एक नाम ।
जरि जरिश्र–वि० [सं० जरिन्, ज्वरिन्] १ जरायुक्त, वृद्ध, अतिवृद्ध ।२ बुखार से पीडित ।
जरिउ–वि० [सं० जीर्ण] पुराना ।
जरियौ–पु० [सं० जरिया] १ चम्मचनुमा छोटी चलनी । २ लगाव, संबंध । ३ साधन । ४ सहारा । ५ संबंध स्थापित करने का तत्त्व, माध्यम ।
जरींद, जरींदौ–देखो 'जरद' ।
जरी–स्त्री० [फा०] १ वस्त्रो मे लगने वाले सोने, चादी आदि के चमकीले तार । २ उक्त प्रकार के तारो से युक्त वस्त्र ।
जरीकौ–पु० १ चोट, प्रहार, आघात । २ टक्कर ।
जरीब–पु० [फा०] १ भूमि का एक माप विशेष । २ उक्त माप का उपकरण । —**कस**–पु० उक्त उपकरण को खींचने वाला व्यक्ति ।
जरीबांनौ (मानौ, वानौ)–देखो 'जुरमानौ' ।
जरु (रू)–पु० १ काबू, वश । २ इख्तियार, अधिकार । ३ अत्यधिक शीत । –वि० १ वशमे, काबू मे । २ मजबूर, विवश । ३ मजबूत, दृढ । ४ जबरदस्त, प्रबल । ५ देखो 'जरूर' ।
जरूर–क्रि० वि० [अ०] १ अवश्य, निस्संदेह । २ जब ।
जरूरत–स्त्री० [अ०] आवश्यकता, प्रयोजन ।
जरूरी–वि० [फा०] १ आवश्यक, अनिवार्य । २ खास, विशेष ।
जरूला–स्त्री० [सं० जरुला] चार इन्द्रियधारी जीवो की एक जाति । (जैन)
जरे (रै)–क्रि० वि० जब, तब ।
जरोवणीय–पु० [सं० जरोपनीत] वृद्ध पुरुप । (जैन)
जरौ–पु० १ भय, आतंक, डर । २ देखो 'जर' ।
जळंधर (धर)–पु० [सं० जलधर, जलोदर] १ नाथ सम्प्रदाय का एक सिद्ध । २ एक राक्षस । ३ जालोर नगर । ४ एक उदर रोग विशेष ।
जळंधरी (रौ)–पु० १ एक वृक्ष । २ देखो 'जळंधर' । —**पाव**=देखो 'जलधरनाथ' ।
जळनिद्ध (निध)–देखो 'जळनिधि' ।
जळंबळ-स्त्री० नदी ।
जळ–पु० [सं० जल, ज्वल] १ पानी, नीर । २ शीतलता । ३ पूर्वाषाढा नक्षत्र । ४ एक सुगंध द्रव्य । ५ किसी पदार्थ का पतला रस । ६ जन्म कुण्डली मे चौथा स्थान । ७ कोप, गुस्सा । ८ आभा कांति, दीप्ति । ९ वीरत्व, वीरता । –वि० १ सुस्त । २ शीतल, ठंडा । —**आधीन**–पु० इन्द्र । —**आसय**–पु० जलकुण्ड, सरोवर । —**ओक**–पु० जलकीट विशेष । —**कंत**–पु० मणि विशेष । दक्षिण दिशा का इन्द्र । इन्द्र का एक लोकपाल । —**कंतार, कांत,कांतार**–पु० वरुण । —**काक, काग**–पु० जल मे रहने वाला कौआ । —**कार, कारी**–पु० मेघ, बादल । चारइन्द्रिय एक जीव जाति । —**किट्ट**–पु० जल का मैल, काई । —**किड़ा, कीड़ा, कीला**–स्त्री०श्रीकृष्ण, जलक्रीड़ा । —**कुंभी**–स्त्री०जलाशयो के पानी पर फैली रहने वाली वनस्पति । —**कूंडियौ, कूंडौ**–पु० चन्द्रमा के चारो ओर दिखाई देने वाला वृत्त । —**केतु**–पु० पश्चिम मे उदय होने वाला पुच्छलतारा ।—**कौआ**= 'जळकाग' । —**क्रीड**–पु०ईश्वर, श्रीकृष्ण । —**क्रीड़ा**–स्त्री० जल विहार । —**खांनौ**–पु० पीने का पानी रखने का कक्ष । —**खार**–पु० समुद्र । —**ख्यात**–पु० नाविक, केवट । —**गंग**–पु० गंगा नदी । —**गार**–पु० जलाशय, सरोवर । —**गो**–पु० अग्नि । —**ग्रभ**–पु० मेघ, बादल । —**घड़ियौ**–पु० विष्णु पूजन मे जल लाने वाला व्यक्ति । —**घड़ी**–स्त्री० कटोरीनुमा एक पात्र जिसमे छेद होता है और जिसे जल मे छोड कर समय ज्ञात किया जाता है । —**चर**–पु० जलजंतु । —**चरी**–स्त्री० मछली । —**चारण**–वि० पानी पर चलने वाला । —**चारी**='जलचर' । —**छत्र**–पु० कमल । —**जंत्र**–पु० फव्वारा । —**जान**–पु० जलयान, जहाज । —**जनम, जात**–पु० कमल, जोंक । —**जाळ**–पु० मेघमाला, घनघटा । —**जीव, जीवि**–पु० पानी मे रहने वाले जीव । —**जेता**–पु० वरुण । —**जैत**–स्त्री० कान्ति, शोभा, यश, कीर्ति । —**जोग**–पु० वर्षा का योग । —**झूलणी**–स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी । —**ठांण**–पु० जलाशय, पानी रखने का स्थान । —**दाग**–पु०शव को नदी मे बहा देने की क्रिया । —**दुरग**–पु० चारो ओर पानी से सुरक्षित दुर्ग । —**देव, देवता**–पु० वरुणदेव, पूर्वाषाढा नक्षत्र । —**द्रव्य**–पु० मुक्ता, शंख आदि द्रव्य । —**धारी**–पु० मेघ, इन्द्र, जल पिलाने वाला । —**पवख, पक्खण**–पु० पानी में डूबने की क्रिया । (जैन) —**पत, पति (ती)**–पु० वरुण, समुद्र । —**पथ**–पु० नाली, नहर, समुद्री मार्ग । —**प्रिय**–स्त्री० मछली, चातक । —**बाळा, बाळि**–स्त्री० विद्युत, बिजली । —**मड, मडण, मंडळ**–पु० बादल, मेघ । —**मडूक**–पु० एक प्रकार का बाजा —**मारग**–पु० यात्रा का समुद्री मार्ग । —**माळ, माळयिण, माळा**–स्त्री० नदी, सरिता । —**मुक, मुच**–पु० मेघ, बादल । —**रमण (णि, णी)**–स्त्री० बिजली, विद्युत, जलक्रीडा । —**राण, राइ, राट**–पु० समुद्र । —**रुट, रुत**–पु० कमल । —**लता**–स्त्री० लहर । —**विभू**–पु० वरुण ।
जळकणौ (बौ), जळवकणौ (बौ)–देखो 'झळकणौ' (बौ) ।

जळज–पु० [स० जलज] १ कमल । २ मोती । ३ शख । ४ चन्द्रमा । ५ वरुण । –वि० शीतल । —**आसन**–पु० ब्रह्मा । —**चख**–पु०ईश्वर । —**वर**–पु० कमल । —**हर**–पु० हस, बादल ।

जळजळाकार–पु० जहा सर्वत्र जल ही जल हो ।

जळजळित–वि० [स० जाज्वल्यमान] देदीप्यमान ।

जळजळो–वि० १ सजल नयन, डबडबाया हुआ । २ द्रवित ।

जळजातव्यूह–पु० कमल के फूल के समान सेना की व्यूह रचना ।

जळजीव (वि)–पु० जलचर प्राणी ।

जळजुत–वि० कातियुक्त, दीप्तियुक्त ।

जळण–स्त्री० [स० ज्वलन] १ दाह, जलन । २ गर्मी, उष्णता । ३ अग्नि । ४ ईर्ष्या, डाह । ५ क्रोध, गुस्सा । ६ अग्निकुमार देवता ।

जळणो (बो)–क्रि० [स० ज्वलनम्] १ आग लगना । २ लपट या अगारे के रूप मे होना । ३ दग्ध होना । ४ भस्म होना । ५ झुलसना । ६ बहुत अधिक ईर्ष्या करना । ७ कोप करना, क्रुद्ध होना ।

जळतग (तरग)–पु० एक प्रकार का बाजा ।

जळतर (तरण)–पु० १ जहाज नाव । २ ७२ कलाओ मे से एक ।

जळतवाई (ताई)–स्त्री० १ तेल के दीपक व उसके आस-पास जमने वाला कीट । २ गदे स्वभाव का व्यक्ति ।

जळतोरु (रू)–स्त्री० मछली, मीन ।

जळद (द्)–पु० [स० जलद] १ मेघ, बादल, घन । २ कपूर –वि० १ जल देने वाला । २ देखो 'जल्दी' । —**काळ**–पु० वर्षा ऋतु । —**तिताळो**–पु० सगीत मे एक ताल ।

जळदि (दी)–देखो 'जल्दी' ।

जळद्र–वि० जल से भीगा हुआ, आर्द्र, नम ।

जळध–पु० समुद्र । —**आधीन**–पु० इन्द्र ।

जळधर (धरण)–पु० [स० जलधर] १ बादल, मेघ । २ समुद्र, सागर । —**केदारा**–स्त्री० एक सकर रागिनी । —**माळा** –स्त्री० मेघमाला ।

जळधरियो–पु० १ मेघ, बादल । २ जल लाने वाला व्यक्ति ।

जळधरी–स्त्री० १ पत्थर या धातु की बनी अर्घा जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है । २ देखो 'जळेरी' ।

जळधार (धारा)–स्त्री० [स० जलधारा] १ नदी । २ नहर । ३ पानी का प्रवाह । ४ तेज धार वाली कटारी या तलवार । ५ पानी की धारा के नीचे बैठकर की जाने वाली तपस्या ।

जळधि–पु० [स० जलधि] समुद्र ।

जळधिगा–स्त्री० [स० जलधिगा] १ नदी, सरिता । २ लक्ष्मी ।

जळधिज–पु० [स० जलधिज] चन्द्रमा, शशि ।

जळधिया–स्त्री० [सं० जलधिगा] १ नदी, सरिता । २ लक्ष्मी ।

जळनध–देखो 'जलनिधि' ।

जळनवास (निवास)–पु० [स० जल-निवास] १ पानी के बीच बना महल । २ जल के अन्दर निवास ।

जळनायिका–स्त्री० जलक्रीडा या स्नानागार मे साथ रहने वाली स्त्री ।

जळनिध (निधि, निधी)–पु० १ समुद्र, सागर । २ जल का भण्डार । —**राज**–पु० महासागर ।

जळनिवाण–पु० [स० जल-निपान] पाताल, रसातल ।

जळपणो (बो), जलपणो (बो)–क्रि० [सं० जल्प] १ बोलना, कहना । २ बातचीत करना । ३ आवाज करना । ४ बड-बडाना । ५ तुतलाना । ६ गप्प लगाना ।

जळपरवा (वाई)–स्त्री० ईशान कोण की वायु ।

जळपराग्धी–क्रि० वि० समुद्र पर्यन्त । (जैन)

जळपवेस–पु० [स० जलप्रवेश] पानी मे घुसने या डूबने की क्रिया ।

जळपान–पु० स्वल्पाहार, नाश्ता ।

जळपू (पो, फू)–पु० १ अभ्रक, भोडल । २ घटिया किस्म का वरक । ३ पतला व चमकीला कागज ।

जळप्पभ (ह)–पु० [स० जलप्रभ] १ इन्द्र के चौथे लोकपाल का नाम । २ एक इन्द्र विशेष । (जैन)

जळफळ–पु० बास ।

जळबब–वि० कान्ति युक्त । –पु० जल प्रलय ।

जळबटी–देखो 'जळवट' ।

जळबळजामी–पु० इन्द्र ।

जळबाळक–पु० विंध्याचल पर्वत ।

जळबिडाळ–पु० ऊदबिलाव ।

जळबेंत–पु० जलाशयो के निकट होने वाला एक वृक्ष विशेष ।

जळबोळ–देखो 'जळाबोळ' ।

जळभगरो (भांगरो)–पु० एक औषधि विशेष ।

जलम–देखो 'जनम' । २ देखो 'जुल्म' । —**पतरी**='जनम-पत्री' । —**भोम**='जनमभूमि' ।

जळमई–वि० जलयुक्त, जलपूर्ण ।

जलमणो (बो)–देखो 'जनमणो' (बो) ।

जलमातर–देखो 'जनमातर' ।

जळमानस–पु० एक कल्पित जल मानव जिसका आधा भाग मछली का होता है ।

जलमणो (बो)–देखो 'जनमणो' (बो) ।

जळमात्रका–स्त्री० [स० जलमातृका] जल मे रहने वाली मात मातृकाए ।

जलमावणो (बो)–देखो 'जनमाणो' (बो) ।

जळमित, जळमित्र–पु० [स० जलमित्र] दूध ।

जळमुरगाई–स्त्री० छोटी बतख ।

जळय–१ देखो 'जळद' । २ देखो 'जळग' ।

जळचर (री)–पु० [स० जलचर, चरी] १ जल के प्राणी । २ मछली ।
जळयान–पु० [म० जलयान] १ नाव । २ जहाज ।
जळयात्रा–स्त्री० १ समुद्रीमार्ग से की जाने वाली यात्रा । २ पवित्र जल लाने के लिये की जाने वाली यात्रा । ३ देवोत्थापिनी एकादशी का उत्सव । ४ ज्येष्ठ की पूर्णिमा का एक उत्सव ।
जळपाळ–पु० जळागार, समुद्र ।
जळरग्र–पु० [स०जलरत] इन्द्र के लोकपाल का नाम । (जैन)
जळरक्ख–पु० [स० जलराक्षस] १ राक्षसो का पाचवां भेद । २ देखो 'जलरक्षक' ।
जळरक्षक–पु० [स०] वरुण ।
जळरास (सि, सी)–पु० [स० जलराशि] १ कर्क, मकर, कुभ और मीन राशियाँ । २ समुद्र ।
जळरिप–पु० वायु, पवन ।
जळरूप, जळरूव–पु० [स० जलरूप] १ मगर घडियाल । २ उदधि कुमार के इन्द्र जलकात के तीसरे लोकपाल का का नाम । (जैन)
जळळ–वि० १ अति क्रोधी । २ भयकर । ३ भारी । –पु० १ दण्ड, सजा । २ युद्ध, सग्राम ।
जळवट (टी, ट्ट)–पु० [स० जलवाट] १ जल मार्ग । २ समुद्र । ३ द्वीप, टापू । —**राय**–पु० विष्णु ।
जळवळजामी–पु० इन्द्र ।
जळवह (वहण)–पु० [स० जलवाह] मेघ, बादल ।
जळवा–स्त्री० नव प्रसूता स्त्री द्वारा किया जाने वाला जल पूजन ।
जलवाणौ (बौ)–देखो 'जळाणौ' (बौ) ।
जळवासी–पु० जलचर जीव ।
जळवाह–पु० [स० जलवाह] मेघ, बादल ।
जळविभू–पु० [स० जलविभु] वरुण ।
जळविसुव–पु० [स० जलविषुव] तुला सक्रान्ति का योग ।
जळव्याघ्र–पु० [स० जलव्याघ्र] सील जाति का एक हिंसक जीव ।
जळव्याळ–पु० १ पानी मे रहने वाला सर्प । २ मेढक ।
जळव्रक्ष (ब्रिक्ष)–पु० [सं० जल वृक्ष] कमल आदि पौधे ।
जळसव्रत–पु० वरुण ।
जळसपर्णी–स्त्री० [सं० जलसर्पिणी] जौक ।
जळसाई (साँई)–पु० [स० जल स्वामी, जलशायिन्] १ ईश्वर । २ विष्णु । ३ इन्द्र । ४ वरुण ।
जळसीप–स्त्री० [स०] मोतीवाला सीप ।
जळसीर–स्त्री० जमीन ।
जळसुत–पु० कमल ।
जळसूग–पु० [स० जलशूक] जलकान्त इन्द्र के दूसरे लोक पाल का नाम ।
जळसोचवाइ–स्त्री० [स० जलशौचवादिन] पानी से शुद्धि मानने वाले तपस्वियो की शाखा ।
जळसौ–पु० [अ० जलसा] आनन्दोत्सव ।
जळस्तम्भिनी–स्त्री० एक प्रकार की विद्या ।
जलस्राव–पु० [स० जलश्राव] सूर्य, भानु ।
जळहड्ड–पु० मोती, मुक्ता ।
जळहर–१ सूर्य, भानु । २ पवन, वायु । ३ देखो 'जळधर' । —**जामी**–पु० इन्द्र ।
जळहळ–स्त्री० चमक, रोशनी ।
जळहळणौ (बौ)–क्रि० चमकना, झलकना ।
जळहळी–वि० आग बबूला, अतिक्रुद्ध ।
जळहस्ती–पु० सात-आठ फुट लंबा सील जाति का जल जतु ।
जळहि–देखो 'जळधि' ।
जळांजळी–स्त्री० पानी से भरी अजली ।
जळाधीस–देखो 'जळाधीस' ।
जळा–स्त्री० १ फौज, सेना । २ अपार सम्पत्ति, द्रव्य, धन । ३ लक्ष्मी । ४ माया । ५ बड़ी आपत्ति । ६ फैला हुआ सामान । ७ आभा, काति ।
जळाकाक्ष–पु० हाथी ।
जळाकार–पु० सर्वत्र जल ही जल हो जाने की अवस्था ।
जळाणौ (बौ)-क्रि० [स०ज्वलन्] १ किसी वस्तु के आग लगाना, आग मे सयुक्त करना । २ अधिक गर्मी या ताप देकर झुलसाना । ३ चिढाना, कुढाना । ४ सताना, व्यथित करना । ५ दग्ध करना, दागना । ६ जलन पैदा करना ।
जळाधर–देखो 'जळधर' ।
जळाधिप–पु० [स० जलाधिप] १ वरुण । २ सवत्सर मे जल का अधिपति ग्रह ।
जळाधीस–पु० [स० जलाधीश] १ समुद्र । २ वरुण ।
जळाबोळ–वि० १ भयकर, विकट । २ जलप्लावित । ३ वैभव पूर्ण, ऐश्वर्य पूर्ण । ४ गहरा व पूर्ण हुआ, रग से तर । ५ चमकता हुआ । ६ क्रोधपूर्ण । –पु० १ समुद्र । २ विनाश । ३ सहार । ४ बुरा समय, खराब समय ।
जलायत–देखो 'जिलायत' ।
जलाल–पु० १ प्रेमी, प्रियतम । २ पति । ३ राजस्थानी लोक गीतो का एक उदार नायक । –वि० १ प्रकाश मान । २ तेजस्वी, कान्तिमान ।
जलालियौ–पु० [अ० जलालिय] १ दरवाजे के बीच लगा रहने वाला पत्थर । २ बलवान व्यक्ति । ३ ईश्वर के जलाली रूप का उपासक । ४ एक प्रकार का फकीर ।
जलालोक–पु० [स० जलालुक] जौक ।

जलालौ (ल्यौ)–वि० १ दृढ, मजबूत । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ देखो 'जलाल' । ४ देखो 'जलालियौ' ।
जळावण–वि० जलाने वाला, भस्म करने वाला ।
जळावणौ (बौ)–देखो 'जळाणौ' (बौ) ।
जळासय–पु० [स० जलाशय] सरोवर, तालाव, जल-कुण्ड ।
जळाहळ–स्त्री० १ चमक-दमक । २ तेज प्रकाश । ३ समुद्र । –वि० १ देदीप्यमान । २ प्रज्वलित ।
जळि–देखो 'जळ' ।
जळियोतन–वि० १ ईर्ष्यालु । २ तुनक मिजाज । ३ असहिष्णु ।
जलिर–वि० [स० ज्वलिर] जलने के स्वभाववाला ।
जळिहर– १ देखो 'जळधर' । २ देखो जलहर' ।
जलील–वि० [अ०] १ तुच्छ, वेकदर । २ अपमानित । ३ लज्जित, शर्मिंदा ।
जळू (लू)–देखो 'जळ' ।
जळूक, जळूग, (गा), जलूया–देखो 'जळोक' ।
जळूस–पु० [अ० जुलूस] १ भीड, समूह । २ लोगो का समूह के रूप मे कही जाने या भ्रमण करने की क्रिया । ३ खुशी मनाने का आयोजन ।
जळूसी–स्त्री० शान, शौकत । –वि० जुलूस से सबधित ।
जळेंद्र–पु० [स० जलेन्द्र] १ वरुण । २ महासागर । ३ इन्द्र ।
जळेब, जलेब–स्त्री० [अ०] १ हाजरी, उपस्थिति । २ व्यवस्था, तैयारी । ३ राजा की सवारी निकलते समय रास्ते के इर्द-गिर्द लगाया जाने वाला मोटा रस्सा । ४ इस रस्से को पकडने वाला अनुचर । ५ आवृत्त या घेरा । —**चौक**–पु० राजमहल के आगे का चौक । —**दार**–पु० राजा का निकट-वर्ती अनुचर ।
जळेबिय, जळेबी–स्त्री० कुण्डलीनुमा बनी हुई मिठाई विशेष ।
जळेरिय, जळेरी–स्त्री० [स० जलधरी] १ सूर्य या चन्द्रमा के चारो ओर बनने वाला एक वृत्त । २ शिव लिग के नीचे बना छोटा कुण्ड । ३ छोटा जलकुण्ड ।
जलेला–स्त्री० [स०] एक स्कन्द मातृका विशेप ।
जळेस, जळेसर (स्वर)–पु० [स० जलेश, जलेश्वर] १ वरुण । २ समुद्र । ३ इन्द्र ।
जळोक (का)–पु० [स० जलुका] जौंक ।
जळोदर–पु० [स० जलोदर] एक प्रकार का उदर रोग ।
जलौ–देखो जलाल' ।
जल्द–क्रि० वि० [अ०] शीघ्र, तुरत, चटपट । —**वाज**–वि० उतावला । —**बाजी**–शीघ्रता, तेजी ।
जल्दी–स्त्री० [अ०] शीघ्रता, उतावली, फुर्ती ।
जल्प, (ण)–पु० [स०] १ कथन । २ प्रलाप । ३ वहस, तर्क ।
जल्पणौ(बौ)–क्रि०१ कहना, वोलना । २ प्रलाप करना, वकना । ३ वहस करना ।
जलफूकार–स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
जल्ल, जल्ल–पु० १ शरीर का मैल । २ एक देश का नाम । ३ प्रस्वेद ।
जल्लाद–पु० [अ०] १ हत्या करने वाला । २ प्राण दण्ड की सजा मे फासी या सूली पर चढाने वाला अनुचर ।
जल्लाल-पु० [स० जलाल] आतक, प्रभाव ।
जल्लौसहि–स्त्री० [स० जल्लौपधि] एक आध्यात्मिक शक्ति विशेप ।
जवन–देखो 'जवन' ।
जव–पु० [स०] १ वेग, गति । २ शीघ्रता, फुर्ती । ३ तेजी । ४ 'जौ' नामक अनाज । ५ अगुली का आठवां भाग । ६ अगुली का एक सामुद्रिक चिह्न । ७ कन्या को पहनाई जाने वाली चोली । –क्रि० वि० शीघ्र, तुरत । –वि० वेगवान, फुर्तीला । देखो 'जब' ।
जवख–पु० भूत, प्रेत, जिंद ।
जवखार–देखो 'जवाखार' ।
जवगुड़ायलौ–पु० आभूषण पर खुदाई करने का औजार ।
जवडौ (डौ)–वि० (स्त्री० जवडी) १ जैसा, तुल्य, समान । २ जितना । –क्रि० वि० जिस मात्रा मे ।
जवज्जव–वि० खण्ड-खण्ड, टूक-टूक ।
जवण–१ देखो 'जव' । २ देखो 'जवन' । —पुर='जवनपुर' ।
जवणपुर–'द्रौणपुर' ।
जवणा–स्त्री० [स० यापना] १ शरीर निर्वाह, जीवन निर्वाह । २ सयम ।
जवणाणिया–स्त्री० [स० यवनानिका] एक लिपि विशेप । (जैन)
जवणालिया–स्त्री० [स० यवनालिका] कन्या को पहनाई जाने वाली चोली । (जैन)
जवणि देखो 'जमना' ।
जवणिज्ज–पु० यापन, निर्वाह ।
जवणिया–देखो 'जवनिका' ।
जवणी–स्त्री० यवन स्त्री ।
जवदोस–पु० रत्नो का एक दोप ।
जवन (जवनाण)–पु० [स० यवन, जवन] १ मुसलमान, यवन । २ राक्षस, दैत्य । ३ घोडा । ४ वेग, गति । ५ पवन । ६ यूनान का निवासी, यूनानी । ७ काल यवन । –वि० वेगवान, फुर्तिला । —**पत, पति**–पु० राजा, वादशाह । —**पुर**–पु० यवनो का देश, नगर । दिल्ली ।
जवनणी–स्त्री० यवन स्त्री । –वि० यवन की ।
जवनापत, (पति, पती)–देखो 'जवनपति' ।
जवनाचारज–पु० [स० यवनाचार्य] १ यवनों का एक ज्योतिपाचार्य । २ शुक्राचार्य ।

जवनाळ–पु० [स० यवनाल] १ जुआर का पौधा। २ ज्वार नामक अन्न। ३ जौ के सूखे डठल।

जवनासव (सु)–पु० [स० यवनाश्व] एक सूर्यवंशी राजा।

जवनिका–स्त्री० [स० यवनिका] १ नाटक का पर्दा। २ कनात। ३ चिक।

जवनिस्ट–पु० [स० यवनिष्ठ] यवन।

जवनेंद्र–पु० [स० यवनेंद्र] बादशाह।

जवनेस–पु० [स० यवनेस] बादशाह।

जवन्न–देखो 'जवन'।

जवन्निय–वि० यवन की।

जवफळ–पु० [स० यवफल] १ बास। २ इन्द्र जौ।

जवर–पु० १ जवाहरात। २ जवाहरखाना। ३ देखो 'जौहर'। —दार–पु० जवाहरखाना का अधिकारी।

जवरारो–देखो 'जमराज'।

जवरी–पु० जौहरी।

जवरौभोरौ–पु० यम द्वितीया का व्रत।

जवलि–वि० [स० यमल] एक साथ, शामिल, एक मुश्त।

जवलियौ–पु० १ स्त्रियों का आभूषण। २ देखो 'झाउल्यौ'।

जववारय–पु० [स० यववारक] जव के अकुर।

जववेदी–पु० इन्द्र।

जवस–पु० [स० यवस] १ घास। २ तृण। ३ धान की बाल।

जवसट (स्ट)–पु० [सं० यविष्ट] १ छोटा भाई। २ देखो 'जविस्ट'।

जवहर–पु० जवाहरात।

जवहरडी (हरडे, हरडं)–स्त्री० छोटी हरडे।

जवहरी–स्त्री० १ जौहरी। २ जवाहरात।

जवहार–स्त्री० १ जुहार, अभिवादन। २ जवाहरात।

जवाई–पु० [सं० जामातृ] १ दामाद, जमाता। २ जमावट।

जवाण(न)–वि० [फा० जवान] युवा, तरुण। –पु० १ युवक, तरुण पुरुष। २ युवावस्था का प्राणी। ३ योद्धा, सुभट। ४ सिपाही। ५ सैनिक। ६ मुसलमान। —**पण, पणौ**–पु० युवावस्था, जवानी।

जवानियवेस–स्त्री० युवावस्था।

जवानी–स्त्री० [फा० जवानी] युवावस्था, यौवन, तरुणाई।

जवामरद–पु० [फा० जवामर्द] बहादुर व्यक्ति, युवापुरुष, सिपाई।

जवामरदी–स्त्री० [फा०जवांमर्दी] वीरता, बहादुरी, युवावस्था।

जवाहर–पु० रत्न, जवाहरात।

जवा–स्त्री० [स० जया] १ हरड, हरीतकी। २ एक प्रकार की वनस्पति। ३ जवा कुसुम। —**खार**–पु० एक प्रकार का क्षार।

जवाद–पु० घोडा, अश्व।

जवादिकस्तूरी–स्त्री० एक सुगधित द्रव्य, गौरासार।

जवादु–पु० योद्धा, वीर।

जवाद्य, जवाधि–पु० एक प्रकार का सुगधित पदार्थ।

जवाधिक–पु० बहुत तेज दौडने वाला घोडा।

जवार–स्त्री० १ सफेद दाने का एक अन्न। २ देखो 'जुहार'।

जवारड़ा(डो)–पु० जुहार।

जवारमल–पु० एक लोक गीत।

जवारात–देखो 'जवाहरात'।

जवारी–स्त्री० १ दूल्हे या जवाई द्वारा किया जाने वाला अभिवादन। २ इस अभिवादन के बदले मे दिया जाने वाला द्रव्य।

जवाल–पु० [अ०] १ जजाल, झझट। २ आफत, विपत्ति। ३ अवनति, क्षय।

जवाळाजीह–स्त्री० [स० ज्वाला-जिह्वा] अग्नि।

जवाळी–स्त्री० कायस्थो की एक वैवाहिक रश्म।

जवास (सौ)–देखो 'जवासौ'।

जवासीर–पु० [फा० जावसीर] गधाविरोजा।

जवासौ–पु० [स० यवासक] १ एक कंटीला पौधा विशेष। २ एक प्रकार की घास।

जवाहड (ड़े, ड़ै)–देखो 'जवहरडे'।

जवाहर–पु० १ जवाहिरात। २ रत्न। —**खांनो**–पु० रत्नादि रखने का स्थान, भवन।

जवाहरात, (जवाहिर, रात)–पु० [अ० जवाहरात] रत्न, मणि, नगीने, हीरे।

जवाहरी–देखो 'जौहरी'।

जवि(ण)–वि० [सं० जविन्] १ वेगवान। (जैन) २ चंचल।

जविस्ट–पु० [स०यविष्ट] अग्नि, आग। –वि० छोटा, कनिष्ठ।

जवेरी–पु० जौहरी।

जवौ–पु० १ शुभ रग का घोडा। २ एक प्रकार का कीडा।

जव्वाहर–देखो 'जवाहरात'।

जससी–स्त्री० [स०-यशस्विन्] यशस्वी।

जस–पु० [स०यश] १ कीर्ति, बडाई, ख्याति। २ प्रशसा, बडाई। ४ डिंगल का एक गीत विशेष। –सर्व० जिम। —**कर, करण**–पु० यशगान करने वाला। ऋषभदेव का ४२ वा पुत्र। —**कित्ति**–स्त्री० यश, कीर्ति। —**खाटक**–वि० यशस्वी —**गाथ, गाथा**–स्त्री० यशोगान, यश की गाथा। —**ग्राहग**–वि० यशस्वी। —**डाक, ढोल**–पु० कीर्तिवाद्य। —**धर**–वि० यशस्वी। —**नामौ**–पु० यशस्वियो मे नाम। —**बर**–वि० यशस्वी। —**माळ, माळा**–स्त्री० कीर्ति की शृंखला। एक छन्द विशेष। —**लद्ध,लुद्ध**–वि० यश लोभी, यश-लोलुप। —**वणौ, वांन**–वि० यशस्वी। —**वाउ, वाय**–पु०

यशवाद, धन्यवाद। —**वास, श्वास**—पु० यश। एक छद विशेप।

जसकळस—पु० [स० यशकलश] वह घोडा जिसके तीन पाव श्वेत हो।

जसघोस—पु० [स० यशघोष] एक जैन तीर्थंकर।

जसडो—वि० (स्त्री० जसडी) १ जैसा, वैसा। २ देखो 'जस'।

जसजोड़ो— वि० १ यशस्वी। २ उदार। —पु० कवि।

जसत—पु० [स०यपद] एक धातु, जस्ता।

जसतलक (तिलक)—पु० वह घोडा जिसके चारो पाव श्वेत हो।

जसताण—पु० एक प्रकार का घोडा।

जसथानी—स्त्री० मुसलमानो की एक जाति।

जसथूल—पु०[स० यश-स्थूल] यशस्वी।

जसद—देखो 'जसत'।

जसब—पु० [ग्र० यशब] एक प्रकार का हरे रग का पत्थर।

जसभद्द—पु० [स० यशोभद्र] १ शय्यम्भव सूरि के एक शिष्य का नाम। २ एक आचार्य। ३ एक कुल का नाम। ४ एक गणधर।

जसमगळ—पु० एक घोडा विशेप।

जसमंत—वि० यशस्वी। —पु० एक कुलकर। (जैन)

जसर—देखो 'जूसर'।

जसरुघवसी—पु० [सं०यश रघुवशी] लक्ष्मण का एक नाम।

जसवई (वती)—स्त्री० [स० यशोमति] १ सगर चक्रवर्ती की माता का नाम। २ महावीर स्वामी की दोहित्री। ३ तृतीया अष्टमी व त्रयोदशी की रात्रि। (जैन)

जसवाउ—पु० [स० यशवाद] यशवाद।

जससि्स—वि० यशस्वी।

जसहर—पु० [स० यशोधर] १ सोलहवा तीर्थंकर। २ प्रत्येक पक्ष का पाचवा दिन। (जैन) ३ दक्षिण रुचक पर्वत की चौथी दिशा कुमारी। ४ प्रत्येक पक्ष की चौथी रात्रि का नाम। ५ जम्बू सुदर्शना नामक वृक्ष। (जैन) —वि० यशस्वी।

जसा—वि० जैसा। —स्त्री० [स०यशा] १ कपिल की माता। २ भृगु पुरोहित की स्त्री। (जैन)

जसाग्रा—स्त्री० एक मागलिक लोक गीत।

जसाई—पु० यश का नगाडा, यशवाद्य।

जसियो—वि० जैसा।

जसी—वि० जैसी, यशस्वी।

जसीलो—वि० यशप्रिय, यशलोलुप।

जसु-सर्व० १ जिसकी। २ देखो 'जस'।

जसे—क्रि० वि० जैसे। —वि० जैसा।

जसोदा—स्त्री० [स० यशोदा] गोकुल के नद गोप की स्त्री, श्रीकृष्ण की एक माता। —**नंद, नदन**—पु० श्रीकृष्ण।

जसोधण (धन)—वि० [स०यशोधन] यशस्वी। —पु० एक राजा।

जसोधर—पु० [स० यशोधर] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

जसोधरा—स्त्री० [स० यशोधरा] १ गौतम बुद्ध की पत्नी। २ पक्ष की चौथी रात्रि। ३ दक्षिण रुचक पर्वत की एक दिशा कुमारी।

जसोनाम—पु० [स० यशोनामन्] नाम कर्म की एक प्रकृति जिसके उदय से यश की प्राप्ति होती है।

जसोमत (मति, मती)—देखो 'जसोदा'।

जसोमाधव—पु० [स० यशोमाधव] विष्णु।

जसोया—देखो 'जसोदा',

जसोल—वि० जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला।

जसौ—वि० जैसा।

जस्त, जस्तौ—पु० [सं० यपद] एक धातु विशेप।

जस्यौ—देखो 'जैसौ'।

जस्सुदा—देखो 'जसोदा'।

जहगम—पु० [स० जिह्मग] तीर, बाण, सर्प साप।

जहं जह—अव्य० [स० यथा] १ जिस जगह, जहा। २ जिस प्रकार, जैसे।

जहक्कम—क्रि० वि० [स० यथाक्रम] क्रमानुसार, तरतीबवार। (जैन)

जहक्खाय—पु० [स० यथाख्यात] १ यथाख्यात नाम का पाचवा चरित्र। २ निर्दोष चरित्र। (जैन)

जहडो—वि० (स्त्री० जहडी) जैसा।

जहट्ठिय—क्रि० वि० [सं० यथास्थित] यथास्थित। (जैन)

जहतह—क्रि० वि० जैसे-तैसे। (जैन)

जहत्थ—वि० [स० यथार्थ] यथार्थ (जैन)।

जहत्स्वारथा—स्त्री० [स० जहत्स्वार्था] लक्षणा का एक भेद।

जहद—स्त्री० [ग्र०] प्रयत्न, उद्योग।

जहन, जहनि—पु० [ग्र० जिह्न] १ मस्तिष्क। २ स्मरण शक्ति। ३ बुद्धि, दिमाग। ४ देखो 'जहान'।

जहन्नु—पु० [स० जह्नु] १ विष्णु। २ गगा को पी जाने वाला ऋषि। —**तनया**—स्त्री० गगा नदी, जाह्नवी।

जहन्न—देखो 'जहन'।

जहन्नुम—पु० [ग्र०] नरक, दोखज।

जहर—पु० [फा० जह्र] १ विष, हलाहल। २ आठवी वार उलट कर निकाला हुआ शराब। —**जर**—पु० शिव, महादेव। **धर, धार**—पु० सर्प, नाग। शेप नाग। जहरीले जीव। —**वाद**—पु० एक प्रकार का रक्त विकार, जहर भाव। —**वायु**—स्त्री० घोडो का एक रोग।

जहराळ—पु० शेपनाग।

जहरी (लो)—वि० (स्त्री० जहरीली) विषयुक्त, जहरीला, विषाक्त।

जहवत–वि० यशस्वी ।
जहसत्ति–अव्य० यथा शक्ति ।
जहा–अव्य० [स० यत्र] जिस स्थान पर । –पु० [फा० जहान] ससार, जगत ।
जहाण (न)–पु० [फा० जहान] ससार, विश्व ।
जहानमी (वी, नेवी, न्नवी)–देखो 'जान्हवी' ।
जहांपनाह–पु० [फ०] १ ससार का रक्षक, पालनहार । २ राजा, बादशाह । ३ ईश्वर ।
जहा–अव्य० [स० यथा] जैसे, जिस प्रकार । (जैन)
जहाच्छद–वि० [स० यथाच्छन्द] स्वच्छन्द । (जैन)
जहाजाय, (जायत्ति)–वि० [स० यथाजात] १ माता के गर्भ से निकला जैसा नग्न । २ जड, मूर्ख ।
जहाजी–वि० [अ०] जहाज से सबधित । –पु० १ तलवार बनाने का अच्छा लोहा । २ एक प्रकार की तलवार ।
जहाजेट्ठ–अव्य० [स० यथाज्येष्ठ] बडाई के क्रम से, वरिष्ठता से ।
जहाजोग–अव्य० यथायोग्य । (जैन)
जहाठांण–अव्य० यथास्थान । (जैन)
जहातच्च–वि० यथातथ्य, वास्तविक, सत्य । (जैन)
जहातह–पु० वास्तविकता, सच्चाई । (जैन)
जहाद–देखो 'जिहाद' ।
जहाभूत (भूय)–वि० [स० यथाभूत] वास्तविक । (जैन)
जहार–वि० [अ० जाहिर] १ प्रकट, विहित, जाहिर । २ प्रकाशित ।
जहालत–स्त्री० [अ०] मूर्खता, अज्ञानता ।
जहासुय–अव्य० यथाश्रुत । (जैन)
जहासुह–अव्य० यथासुख । (जैन)
जहिं(हि)–सर्व० १ जो, जिस । २ देखो 'जही' ।
जहिच्छ (च्छा), जहिच्छिय–अव्य० १ यथेच्छ । (जैन) २ यथेच्छा । (जैन)
जहीं (ही)–वि० जैसी । –अव्य० १ जैसेही, ज्यो ही । २ जब । ३ जहा ।
जहीइ–क्रि०वि० यदा-कदा । (जैन)
जहीन–वि० [अ०] समझदार, विवेकशील ।
जहूट्ठिलौ–देखो 'जुधिस्ठर' ।
जहूरी–पु० जौहरी ।
जहूर–वि० [फा० जुहूर] १ प्रगट, जाहिर । २ प्रकाशमान । –स्त्री० १ प्रगट व जाहिर करने की क्रिया या भाव, प्रकाशन । २ काति, आभा ।
जहेज–पु० दहेज ।
जहोइय-(चित्त, चिय, च्चिय)–वि० यथोचित, मुनासिब, ठीक ।
जहोवइट्ठ–अव्य० यथा उपदेश ।
जह्नवी–देखो 'जान्हवी' ।
जह्नुसप्तमी–स्त्री० [स०] वैशाख शुक्ला सप्तमी, गगा सप्तमी ।
जव्हार–देखो 'जुहार' ।
जा–सर्व० जिन, उन, जिस । –क्रि० वि० जब, जबतक, जहा । –वि० जितना ।
जाई–पु० १ जवाई, जमाता । २ देखो 'भाई' ।
जाउ–क्रि० वि० जब, जबतक ।
जाग–स्त्री० १ घोडो की एक जाति । २ जाघ, जघा ।
जागड़–देखो 'जागडौ' ।
जागडा–स्त्री० १ भाटो की एक शाखा । २ नाइयो की एक शाखा । ३ ढोलियो की एक शाखा । ४ वीर रस पूर्ण एक राग । ५ एक बढई जाति विशेष (शेखावटी) ।
जागड़ियौ–पु० 'जागडा' शाखा का व्यक्ति ।
जागडौ–पु० १ ढोली, दमामी । २ वीर रस पूर्ण राग । –वि० १ जबरदस्त, जोरदार । २ महान । ३ जागडा जाति का व्यक्ति । —साणौर–पु० डिंगल का एक छन्द विशेष ।
जागळ–पु० [स०] १ तीतर । २ सौराष्ट्र प्रदेश । ३ मरु प्रदेश । ४ मास । ५ हिरन का मास । ६ जहर, विष । –वि० १ रम्य, सुन्दर । २ जगली । ३ देहाती । ४ उजाड, सूना ।
जागळऔ–देखो 'जागळवौ' ।
जांगळवा (वै), जागळवौ, जागळू, जागळूवौ–पु० जागलू देश । बीकानेर । —राय–पु० उक्त देश का अधिपति । श्री करणीजी ।
जांगळौ–वि० योद्धा, वीर ।
जागियौ–देखो 'जाघियौ' ।
जांगी–पु० १ नगाडा, ढोल । २ ढोली, दमामी । —हरड़ै, हरडै–पु० बडी हरड ।
जागेस–पु० युद्ध का राग, सिंधुराग ।
जाघ–स्त्री० [स० जंघा] १ घुटने से कमर तक का भाग । २ देखो 'जघा' ।
जाघियौ–पु० १ जघा पर पहनने का वस्त्र, अधोवस्त्र, कच्छी । २ एक प्रकार की कसरत ।
जाच–स्त्री० १ निरीक्षण, देखभाल । २ परख, परीक्षण । ३ पूछताछ, पडताल । ४ शोध, खोज । ५ याचना ।
जाचणौ (बौ)–क्रि० १ निरीक्षण करना, देख भाल करना । २ परखना, परीक्षण करना । ३ पूछताछ करना, पडताल करना । ४ शोध करना, खोजना । ५ याचना करना ।
जाजरण–स्त्री० १ पीतल की बनी छोटी घटिका । २ घुघुरू, गुरिया ।
जाजर–देखो 'जाझर' ।
जाजरु–पु० १ बिच्छु । २ विष जंतु । ३ देखो 'जाझर' ।

जाजळी–स्त्री० पावस ऋतु मे वर्षा के अभाव का समय।

जाभा–देखो 'जादा'।

जाभ–स्त्री० [स० जभ्भा] १ वर्षा के समय चलने वाली तेज हवा। भंझावात। २ शमी वृक्ष की फली। ३ भाभर।

जाभर–पु० स्त्रियो के पैरो की पायल, नूपुर, पैंजनी।

जांभरको–पु० बडा सवेरा, तडका, ब्राह्म मुहूर्त।

जाभरियाळ, जांभरीयाळ–स्त्री० १ 'जाभर' पहनने वाली। २ देवी, दुर्गा।

जाभळी–देखो 'जाजळी'।

जांभी–वि० १ बहुत सी, अधिक। २ देखो 'जाभ'।

जाट–पु० शमी वृक्ष।

जाणग, जाणगी–वि० [स० ज्ञायक] १ जानकार, विज्ञ। २ चतुर।

जाण–स्त्री० [स० ज्ञान, यान] १ ज्ञान, जानकारी। २ जान-पहिचान, परिचय। ३ जानने की क्रिया या भाव। ४ सवारी। ५ यमुना नदी। –वि० [स० ज्ञानी] जानने वाला, विज्ञ। –अव्य० मानो, मानलो।

जाणई–देखो 'जानकी'।

जांणक–वि० जानने वाला, विज्ञ। –अव्य० मानो, जानो, जैसे।

जाणकार–वि० १ जानकार, विज्ञ। २ चतुर। ३ अनुभवी। ४ जान-पहचान वाला।

जाणकारी–स्त्री० १ जानने का गुण, विज्ञता। २ ज्ञान। ३ परिचय। ४ अभिज्ञता। ५ निपुणता।

जाणग (गर)–देखो 'जाणग'।

जाणण, जांणणा–स्त्री० १ जानने की क्रिया या भाव। २ ज्ञान।

जाणणौ (बौ)–क्रि० [सं० ज्ञानम्] १ जानकारी करना, जानना। २ परिचय करना, परिचित होना। ३ ज्ञान प्राप्त करना, अनुभव करना। ४ समझना। ५ सूचना पाना। ६ सहायता करना, मदद करना। ७ पोषण करना।

जाणपण (पणु, पणौ)–पु० [स० ज्ञान+त्वन्] ज्ञान, जानकारी।

जाणपिछाण–स्त्री० जान-पहचान, परिचय।

जाणय–वि० [स० ज्ञायक] जानकार, बुद्धिमान। (जैन)

जाणया–स्त्री० [स० ज्ञान] ज्ञान, समझ। (जैन)

जांणरह–पु० [स० ज्ञानरथ] एक प्रकार का रथ।

जाणवणौ (बौ)–देखो 'जाणणौ' (बौ)।

जांणवय–वि० [स० जानपद] देश का, देशी। (जैन)

जांणसाला–स्त्री० [स० यानशाला] वाहन कक्ष। (जैन)

जांणाणौ (बौ), जांणावणौ (बौ)–क्रि० १ जानकारी कराना, जानवाना। २ परिचय कराना, परिचित कराना। ३ ज्ञान कराना, अनुभव कराना। ४ समझाना। ५ सूचना देना।

जाणि–अव्य० मानो। –सर्व० जिस। देखो 'जाण'।

जाणिक–देखो 'जाणक'।

जाणियार–वि० विज्ञ, जानकार।

जाणी–देखो 'जाणि'।

जाणीगर–देखो 'जाणग'।

जाणीजै–अव्य० मानो।

जाणीणौ (बौ)–देखो 'जाणणौ' (बौ)।

जाणीतौ–वि० (स्त्री० जाणीती) १ प्रसिद्ध। २ जानकार।

जाणीवाण–वि० १ जानकार, ज्ञाता। २ परिचित।

जाणु–वि० ज्ञाता। (जैन) –पु० घटना। (जैन) –अव्य० मानो।

जांणे (णं)–अव्य० मानो।

जाणेउ (तौ)–वि० १ जानकर, वाकिफकार। २ देखो 'जाणीतौ'।

जांत–स्त्री० खाट, चारपाई।

जादा–स्त्री० १ इच्छा, अभिलाषा। २ मुश्किल।

जान–स्त्री० [फा०] १ प्राण, जीव। २ जीवन। ३ श्वास। ४ बल, सामर्थ्य। [स० जन्य] ५ वर यात्रा, बारात। –[स० यान] ६ सवारी, वाहन।

जानउत्र–स्त्री० [स० जन्य-यात्रा] बारात।

जांनकी–स्त्री० [स० जानकी] जनक की पुत्री, सीता। —**जीवन**–पु० श्रीराम। —**नाथ**–पु० श्रीराम। —**मगळ**–पु० सीता के विवाह सम्बन्धी काव्य। —**रमण, वरण**–पु० श्री रामचन्द्र।

जांनकीस–पु० [स० जानकी-ईश] श्रीरामचन्द्र।

जांनड, जानडली, जानडो–देखो 'जान'।

जानणी–स्त्री० बारात मे जाने वाली युवती, स्त्री।

जानदार–वि० [फा०] १ जिसमे जान, प्राण या जीव हो। सजीव। २ बलवान, शक्तिशाली,। ३ दृढ, मजबूत।

जानपदी–स्त्री० एक अप्सरा विशेष।

जानपात्र–पु० [स० यान-पात्र] नाव, नौका।

जानमाज–स्त्री० [फा० जानमाज] नमाज पढने का आसन।

जानराय–पु० राठौडो के कुल देव, विष्णु।

जानवर–पु० [फा०] १ प्राणी, जीव। २ पशु। ३ चौपाया पशु। ४ हेवान। –वि० मूर्ख, बेवकूफ।

जानसीन–पु० [फा० जानशीन] उत्तराधिकारी।

जानि, जानिडो, जानियो जानो, जानीडो–पु० [स० जन्य] बाराती, वर पक्ष का व्यक्ति। –वि० प्राण सबधी।

जानीवासउ, जानीवासौ–पु० [स० जन्य+आवासक] बारात का डेरा, जान का प्रवास।

जानु–पु० [स० जानु] १ जाघ व पिडली के मध्य का भाग। २ जाघ। ३ देखो 'जान्हो'। –सर्व० उनको। –अव्य० मानो।

जानुकीकत–पु० श्रीरामचन्द्र।

जानुविजानु–पु० तलवार का एक हाथ।

जानू–देखो 'जानु'।
जानेती–पु० बाराती।
जानेलौ–पु० एक प्रकार का घास।
जानेस–देखो 'जान'।
जानेसुरी–स्त्री० दुर्गा, महामाया।
जानोई–देखो 'जनोई'।
जानोटण–पु० बारात के प्रस्थान से पूर्व वर पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोज।
जानोली–स्त्री० विवाह के बाद लौटते समय किसी बीच स्थान पर बारात को दिया जाने वाला भोजन।
जानौ–१ देखो 'जान्हौ'। २ देखो 'जांनु'।
जान्यौ–देखो 'जानी'।
जान्हक–पु० घोडो का एक रोग।
जान्हवी–स्त्री० [स० जाह्नवी] गगा, भागीरथी।
जान्हौ–पु० [स० जानु] १ घुटने मे होने वाला एक रोग। २ देखो 'जानु'।
जाबक–पु० [स० जबुक] १ सियार, गीदड। २ कुत्ता।
जाबफळ–पु० अमरूद।
जाबवत (वत)–देखो 'जाबवान'।
जाबवती (वती)–स्त्री० [स०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी।
जाबवान–पु० [स० जाम्ववान] ब्रह्मा का पुत्र व सुग्रीव का मत्री, रीछपति।
जाबवि–पु० [स०] वज्र।
जाबुमाळी–पु० [स० जाम्बुमाली] हनुमान द्वारा मारा गया, रावण का एक राक्षस।
जाबू–पु० [सं० जाम्बू] १ जामुन। २ रक्त विकार से शरीर पर होने वाले चकत्ते। ३ एक प्रकार का घोडा।
जांबूणय–देखो 'जाबूनद'।
जाबूनद–पु० [स०] १ स्वर्ण, सोना। २ धतूरा।
जांबूफळ–पु० जामुन। –वि० काला, श्याम।
जांबौ (भौ)–पु० विश्नोई सम्प्रदाय का प्रवर्तक एक सिद्ध।
जामत–देखो 'जाबुवान'।
जामति (ती)–देखो 'जाबवती'।
जाम–पु० [फा० जाम, याम] १ प्याला। २ शराब का प्याला। ३ शराब पीने का पात्र। ४ क्षण, पल। ५ समय। ६ प्रहर, घडी। ७ पिता, जनक। ८ पुत्र, बालक। ९ वस्त्र, कपडा। १० यादवो की एक शाखा। ११ रात्रि, यामिनी। –वि० दाहिना। –क्रि० वि० जब।
जांमकी, (खी, गि, गी)–स्त्री० आतिशबाजी, बन्दूक का पलीता —दार–पु० जिसमे पलीता लगा हो।
जामघोस–पु० [स० यमघोष] मुर्गा।
जामण–स्त्री० [स० जामिन्] १ माता, जननी। २ जन्म। ३ सतान। ४ पुत्री। ५ बहिन। –पु० ६ दूध को जमाने के लिये उसमे डाली जाने वाली छाछ या खटाई। ७ किसी पदार्थ मे रासायनिक परिवर्तन के लिये किया जाने वाला अन्य पदार्थ का मिश्रण। ८ जामुन। ९ देखो 'जामणी'। —जाई–स्त्री० सहोदरा। —जायौ–पु० सहोदर। —मरण, अत–पु० जन्म-मरण।
जामणि (णी)–स्त्री० १ दूध जमाने का पात्र। २ जननी, माता। ३ रात्रि, यामिनी। —चर–पु० निशाचर, असुर।
जामणौ–पु० प्रथम प्रसव के उपरान्त कन्या को दिया जाने वाला वस्त्र आभूषणादि।
जामणौ (बौ)–क्रि० [स० जनि] जन्म लेना, जन्मना, पैदा होना।
जामदगनि (नी)–पु० [स० जामदग्न्य] परशुराम के पिता, एक ऋषि।
जामदांनी–स्त्री० चमडे की सन्दूकची विशेष।
जामदेवासुरां–पु० ब्रह्मा, विधि।
जामन–देखो 'जामण'। देखो 'जामिन'।
जामनि (नी)–स्त्री० [स० यामिनी] १ रात्रि, निशा। २ देखो 'जामिन'।
जामनीस–पु० [स० यामिनीश] चन्द्रमा, शशि।
जामनेमी–पु० इन्द्र।
जामन्न–देखो 'जामिन'।
जामफळ–पु० १ एक देव वृक्ष विशेष। २ अमरूद नामक फल।
जामय–स्त्री० रात्रि, निशा।
जामळ (ली)–वि० [स० यामल] १ अतुल्य। २ मिला हुआ। ३ युग्म। ४ दोनो। ५ साथ-साथ। –पु० १ जोडा, युग्म २ जन्म। ३ जुडवा बच्चे।
जामळणौ (बौ)–क्रि० १ मिलना, शामिल होना। २ एकाकार होना। ३ मिश्रित होना।
जामवत (वत)–देखो 'जाबवान'।
जामवती–देखो 'जाबवती'।
जामाइण–पु० यमराज।
जामात(ता)–पु० [स० जामातृ] जवाई, दामाद।
जामामस्जिद–स्त्री० मुख्य मस्जिद।
जामि–स्त्री० [स० जामि] १ बहिन। २ लडकी। ३ पुत्र-वधू। ४ नातेदार स्त्री। ५ सती, साध्वी।
जामिए–पु० योगी।
जामिक–पु० [स० यामिक] १ चौकीदार, पहरेदार। २ रक्षक। —पण–पु० चौकीदारी। रक्षा।
जामित्र–पु० [स०जामित्र] १ लग्न से सातवा स्थान। २ जन्म से सातवा लग्न। —वेध–पु० ज्योतिष का एक योग।

जामिन–वि० [अ० जामिन] १ जमानत देने वाला, साख भरने वाला, साक्षी। २ गवाह। ३ जिम्मेदारी लेने वाला। —**दार**–वि० जमानत देने वाला।
जामिनी–स्त्री० [फा०] १ जमानत, जिम्मेदारी। [स० यामिनी] २ रात्रि, निशा।
जामिप–पु० [स० जामिप] वहिन का पति, वहनोई।
जामिय, जांमी–पु० १ पिता। २ स्वामी, मालिक। ३ योगाभ्यासी, योगी। ४ यमराज, यम।
जामीत–पु० पिता।
जामु, जांमु–क्रि० वि० [स० यावत्] जव, जब तक। –पु० १ दन्तक्षत, दाग। २ जामुन। ३ देखो 'जान्हौ'।
जामुण (न)–पु० [स० जवु] १ जामुन का पेड। २ जामुन का फल।
जामुणी (नी)–वि० जामुन के फल के रग का, जामुनी।
जामेत–पु० योद्धा, वहादुर।
जामोपत्त–पु० सन्तानोत्पत्ति। –वि० जन्मा हुआ।
जामौ–पु० [फा० जाम] १ एक प्रकार का घेरदार पहनावा। २ पुत्र, वेटा। ३ जन्म।
जाम्य–वि० [स० याम्य] १ यमराज सवधी, यमराज का। २ दक्षिण का। –स्त्री० १ दक्षिण। २ विष्णु। ३ शिव। ४ यमदूत। ५ चदन वृक्ष। ६ अगस्त्य मुनि।
जाम्या–स्त्री० [स० याम्या] १ दक्षिण दिशा। २ रात्रि, निशा। ३ भरणी नक्षत्र।
जांबळणौ (बौ)–क्रि० साथ होना, शामिल होना।
जावळि(ळी)–देखो 'जामळ'।
जावौ–पु० एक सरकारी कर।
जासारी–स्त्री० जूवा, द्यूत का खेल।
जाहनवी–देखो 'जान्हवी'।
जा–स्त्री० १ माता, जननी। २ योनि। ३ फासी। –वि० १ वृद्ध। २ चतुर। ३ उत्पन्न। –सर्व० जो, जिस, जिन।
जाइ–वि० [सं० यायिन] १ जाने वाला (जैन)। २ जितना। ३ देखो 'जाति'। –सर्व० जिन, जिस।
जाइग्राजीव–पु० [सं० जात्याजीव] जाति जान कर आहार लेने वाला साधु (जैन)।
जाइग्रासीविस–पु० [स० जात्याशीविप] जन्म से ही विषैला प्राणी।
जाइगइ (ह) जाइगा, जाइगाइ (ई)–देखो 'जायगा'।
जाइतिग–पु० [म० जातित्रिग] ग्यारह प्रकृति का समुदाय।
जाइथेर–पु० [स० जातिस्थिविर] साठ वर्ष से अधिक आयु वाला जैन साधु।
जाइधम्मय–देखो 'जातिधरम'।
जाइपह–पु० [स० जातिपथ] आवागमन का स्थान, ससार।
जाइफळ–देखो 'जायफळ'।
जाइय–वि० [स० याचित] मांगा हुआ। (जैन)
जाइवझा–स्त्री० [स० जातिवध्या] वाझ स्त्री। (जैन)
जाई दौ–वि० [फा० जाईद] (स्त्री० जाइंदी) जन्मा हुआ, उत्पन्न।
जाई–स्त्री० [स० जाया] १ स्त्री। २ कन्या, पुत्री। ३ देखो 'जानि' –सर्व० उस।
जाउ–पु० [स० जायु] दवा, औपधि।
जाऊडौ–पु० एक प्रकार का वृक्ष।
जाकजमाळा–वि० मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट।
जाकेडौ, जाकोडौ–देखो 'जाखोडौ'।
जाखत–पु० एक प्रकार का वृक्ष व इसका फल।
जाखमानि–पु० यक्ष।
जाखळ–पु० [स० यक्ष] १ यक्ष। २ देखो 'जाखी'।
जाखाणपट्टी–स्त्री० वीकानेर राज्य का एक क्षेत्र।
जाखी–वि० १ दुष्ट, आततायी। २ पापी। –पु० १ वलि का वकरा, वलिपशु। २ ऊट।
जाखेडौ, जखोडौ–पु० ऊट।
जागगी–पु० [स० यज्ञाग] १ उदुवर वृक्ष। २ देखो 'जोगगी'।
जाग–पु० [स० याग] १ यज्ञ। २ विवाह। ३ जागरण। ४ अग्नि। –स्त्री० ४ घोडी की योनि। ५ घोडी का ऋतुमती होने का भाव। ६ देखो 'जायगा'।
जागण–१ देखो 'जागरण'। २ देखो 'जाग'।
जागणौ–वि० (स्त्री० जागणी) जगने वाला।
जागणौ (बौ)–क्रि० [स० जागरणम्] १ जागते रहना, नींद न लेना। २ नीद से उठना। ३ सावधान होना, जागरुक होना। ४ प्रज्वलित होना, चेतन्य होना। ५ उत्तेजित होना। ६ जगमगाना। ७ उन्नति करना।
जागतारण–पु० [स० यागत्रातृ] यज्ञ का उद्धार करने वाला देव।
जागती–देखो 'जगती'।
जागतीकळा (जोत)–१ दीपक, ज्योति। २ दैवी चमत्कार। –वि० १ प्रभावशाली। २ कुछ करने योग्य।
जागवत्ती–पु० [स० याज्ञदत्ति] कुवेर।
जागवळिक–पु० याज्ञवल्क्य ऋषि।
जागर–पु० [स०] १ श्वान, कुत्ता। २ कवच। ३ जागृति। –वि० जागने वाला। जागृत।
जागरण–पु० [स०] १ रात भर जगते रहने की क्रिया या भाव। २ रात भर जागकर ईश्वर भजन करने की क्रिया या भाव। ३ निद्रा का अभाव। ४ जागृति। ५ मावधानी, सतर्कता।
जागरि–पु० १ जागरण, जागृति। २ देखो 'जागरी'।
जागरिका–स्त्री० जागृति।

जागरिया–स्त्री० [स० जागर्या] १ चिन्तन । २ विचार ।
जागरी–स्त्री० एक जाति विशेष ।
जागरुक (रूक)–वि० [स०] १ जागृत, जगा हुआ । २ सतर्क सावधान । ३ चैतन्य ।
जागळ-स्त्री० एक मछली विशेष ।
जागवणौ (बौ)–देखो 'जागणौ' (बौ) ।
जागवलक देखो 'जागबळिक' ।
जागवी–स्त्री० अग्नि, आग ।
जागसेनी–स्त्री० [स० याज्ञसेनी] द्रौपदी ।
जागा–देखो 'जायगा' ।
जागीर-स्त्री० १ राजा या बादशाह की ओर से दिया जाने वाला गाव या क्षेत्र, अपने शासन का गाव या भूमि । २ जोतने के लिए दी गई लगान मुक्त भूमि । —दार–पु० किसी जागीर का मालिक ।
जागीरी-स्त्री० [फा०] जागीरदार का गाव, क्षेत्र या भूमि । शासन हुकूमत ।
जागेवी–स्त्री० [स० जागृवी] अग्नि, आग ।
जागेसर (स्वर)–देखो 'जोगीस्वर' ।
जग्गै–स्त्री० ऋतुमती घोडी ।
जाग्या–देखो 'जायगा' ।
जाग्रत–वि० [स० जागृत] १ जो जग रहा हो, जागृत, जगा हुआ । २ सतर्क, सावधान । ३ चैतन्य । –स्त्री० जगते रहने की अवस्था । चेतना, सतर्कता की अवस्था ।
जाग्रति–स्त्री० [स० जागृति] १ जगे रहने की अवस्था । २ उत्तेजना । ३ चेतना । ४ होश ।
जाग्रवी–स्त्री० [स० जागृवि] अग्नि, आग ।
जाड–१ देखो 'जाडो' । २ देखो 'झाड' ।
जाड़ी–स्त्री० १ दाढी के बालो पर बांधी जाने वाली पट्टी । २ दाढी, जबडा ।
जाडो–पु० १ शीतकाल, सर्दी । २ ठडा मौसम । ३ जबाडा । ४ समूह । ५ समाज । ६ देखो 'झाडो' ।
जाचक (ग, रा)–वि० [स० याचक] १ याचना करने वाला, २ भिखारी, मगता । ३ जाच करने वाला ।
जाचणौ (बौ)–[स० याचनम्] १ याचना करना, मागना । २ भिक्षा वृत्ति करना । ३ जाच करना ।
जाचा–देखो 'जच्चा' ।
जाचिक (ग)–देखो 'जाचक' ।
जाचेल–पु० तिल्ली का तेल ।
जाज, जा'ज–स्त्री० [अ० जहाज] १ पानी मे चलने वाला यान, जलयान, जहाज । २ बैलगाडी का थाटा ।
जाजग्री–स्त्री० एक शस्त्र विशेष ।

जाजम–स्त्री० [फा०] १ जमीन पर बिछाने का लंबा चौडा व मोटा वस्त्र, दरी । २ गलीचा, कालीन ।
जाजमलार–पु० [तु० जाजामलार] सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
जाजमाज (माट, माठ)–वि० कम थोडा ।
जाजरउ–वि० [स० जर्जर] (स्त्री० जाजरी) १ जीर्ण-शीर्ण । २ वृद्ध, बूढा । ३ क्षीण, कमजोर ।
जाजरणौ (बौ)–क्रि० १ संहार करना, मारना । २ नष्ट करना ।
जाजरु (रू)–पु० १ शौचालय, टट्टी । २ शौचालय का कूआ ।
जाजरौ–वि० (स्त्री० जाजरी) फटा पुराना ।
जाजळ–पु० १ स्नान का पानी गर्म करने का वर्तन । २ देखो 'जाजुळ' । —मान='जाजुळमान' ।
जाजळी-देखो 'जाजुळ' ।
जाजामलार–स्त्री० सम्पूर्ण जाति की एक राग ।
जाजी–वि० [स० याजि] १ यज्ञ करने वाला, याज्ञिक । २ देखो 'जाजौ' ।
जाजीव–अव्य० [स० यावज्जीवनम्] जब तक जिये, जीवन पर्यन्त ।
जाजुळ (ळि)–वि० [स० जाज्वली, जाज्वल्य] १ भयंकर, जबरदस्त । २ क्रुद्ध, क्रोधित । ३ तेजस्वी जाज्वल्यमान । ४ शक्तिशाली, बलवान । —मान–वि० तेजस्वी ।
जाजौ–वि० (स्त्री० जाजी) १ अत्यधिक, बहुत । २ सघन, घना गहन । ३ गाढा ।
जा'झ-देखो 'जा'ज' ।
जाझेरा–वि० पर्याप्त, बहुत ।
जाट (व)–पु० (स्त्री० जाटरा, जाटणी) १ उत्तर, पश्चिम व मध्य भारत मे बसने वाली एक प्रसिद्ध जाति व इस जाति का व्यक्ति । इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि है । २ कोल्हू का एक उपकरण ।
जाटाबाभी (भाभी)–स्त्री० चमारो की एक शाखा व शाखा का व्यक्ति ।
जाटाळिका–स्त्री० एक स्कन्द मातृका विशेष ।
जाटू–वि० १ जाटो सबधी, जाटो जैसा । २ देखो 'जाट' ।
जाठर–वि० [स०] १ पेट सबधी । २ गर्भज । ३ पाचन शक्ति ।
जाठरागनी–देखो जठराग्नि' ।
जाड(उ)–स्त्री० १ शक्ति, सामर्थ्य । २ मोटापा । ३ मूर्खता । ४ जडता । ५ कठोरता । ६ झुंड, समूह । ७ एक देश का नाम । ८ अकर्मण्यता । ९ सुस्ती । –वि०१ जड । २ देखो 'जाडो' । –अव्य० चाहे, भले से ।
जाडा–स्त्री० जबरदस्ती, ज़ोरावरी ।
जाडायती–क्रि० वि० हठात्, जबरदस्ती से ।

जाडीजणी (बो)–क्रि० १ मोटा होना, मोटाई ग्राना। २ घना होना, गहरा होना। ३ अधिक होना। ४ गाढा होना।

जाडौ–वि० १ जिसकी मोटाई अधिक हो, मोटा। २ हृष्टपुष्ट, तगडा। ३ अधिक, बहुत। ४ ठोस। ५ दृढ, मजबूत। ६ सघन, घना। ७ मोटे-मोटे ताने या ततु वाला।

जाणी (बो)–क्रि० १ जन्म देना, पैदा करना, प्रजनन करना। २ देखो 'जावणी' (बो)।

जात–वि० [स०]१ जन्मा हुआ, उत्पन्न। २ कुलीन। ३ निकला हुआ। –स्त्री० १ जीव, प्राणी। [स० यात्रा] २ मनौती। ३ वर-वधू या दम्पति का किसी तीर्थ या देवस्थान पर जाकर अभिवादन करने की क्रिया या भाव। ४ तीर्थ यात्रा। ५ देखो 'जाति'।

जातक–पु० [स०] १ फलित ज्योतिष का एक भेद। २ बौद्ध, कथानक। ३ बच्चा। ४ भिक्षुक। ५ जात कर्म। ६ समान वस्तुओ का जोड।

जातकम्म, जातकरम, जातक्रमय–पु० [स० जातकर्म्म] हिन्दुओ के दश सस्कारो मे से चौथा सस्कार।

जातण–पु० यात्री। सती, सेवक।

जातणा–देखो 'यातना'।

जातणी (बो)–क्रि० [स० यात्रण] यात्रा करना।

जातधान–देखो 'जातुधान'।

जातना–देखो 'यातना'।

जातपात–देखो 'जातिपाति'।

जातबेद (बेध)–स्त्री० [स० जातवेदस्] अग्नि।

जातरा–स्त्री० [सं० यात्रा] १ यात्रा। २ तीर्थाटन।

जातरी (रू)–पु० [स० यात्री] १ यात्री, पथिक। २ तीर्थयात्री।

जातरूप जातरूपक (रूव)–पु० [स० जातरूपम्] १ सोना, स्वर्ण। २ धतूरा। ३ चादी। –वि० सुन्दर। कातिवान।

जातविरुद्ध (विरूद्ध)–पु० १ डिंगल गीतों मे एक दोष। २ जाति परपरा के विपरीत कर्म।

जातवेद–स्त्री० [स० जातवेदस्] अग्नि, आग।

जातसिखडी–पु० [स० शिखडी-जात] बृहस्पति।

जातसख, जातासख–वि० मूर्ख, बेवकूफ।

जाति–स्त्री० [स०] १ जीवो या प्राणियो की श्रेणी, वर्ग योनि। २ वर्ग, समूह, समुदाय। ३ समाज। ४ वश परम्परा के अन्तर्गत होने वाला कोई एक वर्ग। ५ समान धर्म या सस्कृति वाला वर्ग। ६ कुल, गौत्र। ७ वश। ८ जन्म, उत्पत्ति। ९ एक ही कर्म करने वाला समुदाय। १० क्षेत्र विशेष के निवासी। ११ चमेली का पौधा या फूल। १२ मालती का पौधा या फूल। १३ मनुष्यो के चार विभागो मे से कोई एक। **—कम्म, करम**–पु० एक सस्कार विशेष। **—धरम**–पु० किसी जाति या वर्ण का कर्त्तव्य, धर्म।

जातिका-भरण–पु० ज्योतिष का एक ग्रथ।

जाति-पांति–स्त्री० जात-बिरादरी, जाति व वर्ग, श्रेणी।

जातिफळ–पु० [स०] जायफल।

जातिब्राह्मण–पु० केवल जन्म से ब्राह्मण, कर्म से नही।

जातिसकर–वि० वर्णसकर, दोगला।

जाती–देखो 'जाति'।

जातीफळ–देखो 'जातिफळ'।

जातीयता–स्त्री० जातीत्व, जाति गत भावना।

जातीलौ–वि० जाति सबधी।

जातीसमर, जातीस्मर–वि० पूर्व जन्म का ज्ञान रखने वाला। –पु० पूर्व जन्म का ज्ञान।

जातुधान–पु० [स० यातुधान] असुर, राक्षस।

जातू–पु० बैलगाडी के 'माकडे' मे खडा लगने वाला मोटा डडा।

जात्र–देखो 'जातरा'।

जात्रणि–स्त्री० [स० यात्रिणी] स्त्री यात्री।

जात्ररू–१ देखो 'जातरी'। २ देखो 'जातू'।

जात्रा–देखो 'जातरा'। **—वाळ**='जातरी'।

जात्रिगु, जात्री–देखो 'जातरी'।

जाद–पु० [स० याद] १ पानी। २ यादव। **—पत, पति**–पु० समुद्र। श्रीकृष्ण। –प्रत्य० [अ० जाद] उत्पन्न, पैदा हुआ।

जादर (रु)–पु० १ एक प्रकार का सफेद रेशमी वस्त्र। २ रेशमी माला।

जादरियौ–पु० गेहूँ या चने के कच्चे दानो का हलुवा।

जादव–पु० [स० यादव] १ यदु के वशज यादव। २ श्रीकृष्ण। –वि० (स्त्री० जादवण, जादवणी, जादवी) यदु सबधी। **—पत, पति**–पु० श्रीकृष्ण। **—राइ, राई, राऊ, राज, राजा राव**–पु० श्रीकृष्ण। **—वसउजाळ**–पु० श्रीकृष्ण।

जादवापत (पति)–देखो 'जादवपति'।

जादवेद्र–पु० [स० यादवेन्द्र] श्रीकृष्ण।

जदवौ (व्व)–देखो 'जादव'।

जादस–पु० [स० यादस] १ मछली। २ जलजतु। **—पत, पति, पती**–पु० वरुण। समुद्र।

जादा–वि० [अ० जियाद] १ अधिक, बहुत। २ तुलना मे अधिक, बढकर। ३ अति।

जादु–पु० [स० यादस्] १ जल, पानी। २ यादव। ३ देखो 'जादू'। **—नाथ**–पु० श्रीकृष्ण। समुद्र। **—पत, पति**–पु० श्रीकृष्ण। समुद्र। **—राण**–पु० श्रीकृष्ण।

जादू–पु० [फा०] १ इन्द्रजाल। २ चमत्कारी घटना। ३ अमानवीय कार्य। ४ कुछ तात्रिक क्रियाये जिनका किसी

पर प्रयोग किया जाता है । ५ वशीकरण । ६ यादववशी क्षत्रिय । —गर-पु० ऐन्द्रजालिक । जादूई खेल दिखाने वाला । —गरी-स्त्री० जादू के खेल । ऐसे खेल करने की वृत्ति । —नजर-वि० आकर्षित करने की शक्ति वाला ।

जादौ-वि० [स० जात फा० जाद] (स्त्री० जादी) १ उत्पन्न, पैदा हुआ । २ वशज । -पु० १ पुत्र, बेटा । २ यादव । —**राय**-पु० यादवपति श्रीकृष्ण ।

जाप-देखो 'जप' ।

जापक-वि० जाप करने वाला ।

जापजप-पु० जप-तप । साधना ।

जापरणौ (बौ)-देखो 'जपरणौ' (बौ) ।

जापत-स्त्री० [अ० जियाफत] १ भोज, दावत । २ व्यवस्था, प्रवन्ध ।

जापताई-देखो 'जापतौ' ।

जापतौ-पु० [अ० जाबित] १ प्रवध, इन्तजाम । २ सुरक्षा, हिफाजत । ३ कानून । ४ कानूनी न्याय ।

जापाघर-पु० प्रसूती घर ।

जापायती-वि० प्रसूता । जच्चा ।

जापी-वि० जप करने वाला ।

जापूनौ-वि० (स्त्री० जापूनी) अशक्त व निर्बल । निकम्मा ।

जापैलेदिन, जापैलैदिन-पु० पाचवा या छठा दिन ।

जापौ-पु० प्रसव, प्रसवकाल ।

जाप्य-पु० [स०याप्य] १ दुस्साध्य रोग । २ असाध्य रोग जिसमे पथ्य व साधन रख कर ही जिन्दा रहा जा सकता है ।

जाफ-स्त्री० [अ० जोफ] वेहोशी, मूर्च्छा, गश ।

जाफत-स्त्री० [अ० जियाफत] १ भोज, दावत । २ अतिथि सत्कार । ३ जावत ।

जाफरा (रांन)-स्त्री० [अ० जाफरान] १ केसर । २ फूल, पुष्प ।

जाफरांनी-वि० १ केसर का, केसर सवधी । २ केसर युक्त । ३ केसरिया । —**तांब**-पु० उत्तम क्षेरगी का तावा ।

जाफरी-स्त्री० [अ० जाफरान] १ केसर । २ जाली लगा बरामदा । ३ जाली का दरवाजा ।

जाब-पु० १ हिसाव, लेखा । ३ जवाब, उत्तर । ३ प्रश्न, सवाल । ४ आज्ञा, आदेश ।

जाबक-वि० १ सव, समस्त । २ मूर्ख । -क्रि० वि० कतई, विल्कुल ।

जाबडौ-देखो 'जवाडौ' ।

जाब-ज्वाब-क्रि० वि० [फा० जा-व-जा] १ स्थान-स्थान पर, जगह-जगह । २ यदा-कदा ।

जाबताई-देखो 'जापतौ' ।

जाबतौ-देखो 'जापतौ' ।

जाबर-वि० [स० जर्जर] वृद्ध, वुड्ढा ।

जाबसाल-पु० सवाल-जवाव, प्रश्नोत्तर ।

जाबाडौ-देखो 'जवाडौ' ।

जाबाळ-पु० [स० जावाल] सत्यकाम नामक ऋषि ।

जाबालि-पु० [स० जाबालि] राजा दशरथ के गुरु व मत्री एक कश्यप वशी ऋषि ।

जाब्तौ-देखो 'जापतौ' ।

जामात-देखो 'जमाता' ।

जाय-स्त्री० [स० यूथिका] १ सफेद जूही । [स० याग] २ यज्ञ । ३ देखो 'जायौ' ।

जायउ-देखो 'जायौ' ।

जायक-स्त्री० १ जूही । २ लौंग ।

जायकम्म-पु० [स० जातकर्मन्] १ प्रसूती कर्म । २ जातकरम ।

जायकेदार-वि० [अ०] स्वादिष्ट, मजेदार, सरस ।

जायकौ-पु० [अ० जायका] स्वाद, मजा, आनन्द, लज्जत ।

जायग-पु० [अ० याजक] यज्ञ करने वाला । (जैन)

जायगा-स्त्री० [फा० जायगाह] १ स्थान, जगह, । २ पद, ओहदा, । ३ मौका, अवसर । ४ भवन ।

जायघरण-पु० [स० जायाघ्न] ज्योतिष का एक अशुभ योग ।

जायज-वि० [अ०] १ उचित, ठीक, वाजिब । २ नियमानुसार । ३ अपेक्षित ।

जायरण-स्त्री० [सं० यातना] १ कष्ट, पीडा । २ याचना ।

जायतेय-स्त्री० [स० जाततेजस्] अग्नि, आग ।

जायद-वि० [फा०] अधिक, ज्यादा ।

जायदाद-स्त्री० [फा०] सम्पत्ति, धन । —**गैरमनकूला**-स्त्री० अचल सम्पत्ति । —**जोजियत**-स्त्री० स्त्री के अधिकार की सम्पत्ति । —**मकफूला**-स्त्री० गिरवी रखी सम्पत्ति । —**मनकूला**-स्त्री० चल सम्पत्ति । —**मुतनाजिआ**-स्त्री० विवाद ग्रस्त सपत्ति । —**सौहरी**-स्त्री० पति की सम्पत्ति ।

जायनमाज-पु० [फा०] नमाज पढते समय विछाने का वस्त्र ।

जायपत्री-स्त्री० [स० जातिपत्री] जायफल का छिलका ।

जायफळ-पु० [स० जातिफल] वेर के आकार की एक सुगधित औषधि जो खाद्य पदार्थों मे भी डाली जाती है ।

जायरूव-पु० [स० जातरूप] सोना, स्वर्ण । (जैन)

जाया-स्त्री० [स०] १ स्त्री, महिला । २ पत्नी । ३ जन्म कुण्डली का एक योग । ४ यात्रा । ५ शरीर निर्वाह । —**जीव**-पु० पत्नी की कमाई पर जीने वाला ।

जायाइ (ई)-पु० [स० यायाजिन्] यज्ञकर्त्ता, याजक ।

जायी-स्त्री० [स० जायिन] १ सगीत मे एक ताल । २ वेटी, पुत्री ।

जायोडौ, जायौ-वि० [स० जात] (स्त्री० जायोडी, जायी) १ जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ । २ उत्पन्न, जन्मा हुआ । -पु० १ पुत्र, लडका । २ वच्चा ।

जारंग–वि० हजम करने वाला ।

जार–वि० [स०] १ परस्त्री गामी । २ आशिक, प्रेमी । ३ व्यभिचारी । –पु० १ रूस के सम्राट की उपाधि। २ ध्वस, सहार । —**करम**–पु० व्यभिचार, परस्त्रीगमन। —**ज**–वि० पर पुरुष या यार की सतान ।

जारजजोग–पु० [स० जारजयोग] फलित ज्योतिष मे कुण्डली का एक योग ।

जारटो–देखो 'जार' ।

जारठ–वि० वृद्ध, बूढा ।

जारण–पु० [स०] १ जलाने या भस्म करने की क्रिया या भाव । २ पारे का ग्यारहवा सस्कार । ३ नाश, ध्वस ।

जारणौ–वि० (स्त्री० जारणी) १ मारने वाला, सहार करने वाला । २ नाश करने वाला । ३ जलाने वाला । ४ पचाने वाला ।

जारणौ (बौ)–क्रि० [स० जॄ] १ जलाना, भस्म करना । २ पचाना, हजम करना । ३ मारना, सहार करना। ४ सहन करना । ५ शात करना ।

जारत, जारता–स्त्री० [अ० जियारत] तीर्थयात्रा ।

जारदबी (वी)–स्त्री० [सं०] ज्योतिष मे मध्य मार्ग की एक वीथी ।

जारां–क्रि० वि० जब ।

जारिणी–स्त्री० [स०] छिनाल औरत, व्यभिचारिणी स्त्री । दुश्चरित्रा ।

जारिसि (सी)–वि० [स० यादृश] जैसे (जैन) ।

जारी–क्रि० वि० [अ०] बहता हुआ, चलता हुआ । –स्त्री० १ बदमाशी, बेईमानी । २ व्यभिचार, पर स्त्री गमन । ३ देखो 'झारी' ।

जारोबकस (बगस)–पु० [फा० जारूबकश] झाड लगाने वाला, भगी ।

जालग–पु० बकरी के बालो से बना मोटा वस्त्र ।

जाळंधरा–स्त्री० एक देवी विशेष ।

जाळंधरी, जाळधरीविद्या–स्त्री० १ माया, इन्द्रजाल । २ एक प्रकार की विद्या ।

जाळधरीनाथ, जाळध्री–देखो 'जळधरनाथ' ।

जाळ–पु० [स० जाल] १ एक प्रकार का बडा वृक्ष । २ एक प्रकार की बदूक । ३ डोरी या तारो का बना फदा, जाल । ४ मकडी का जाल, जाली । ५ षडयत्र । ६ किसी बात का ताना-बाना । ७ मछली पकडने का फदा । ८ रोशन दान । ९ कवच । १० खिडकी । ११ माया । १२ भ्रम । १३ जादू । १४ झुण्ड, समूह । १५ सासारिक प्रपच । १६ कर्मबधन । १७ मोतियो का गुच्छा । १८ पाखड । १९ आख की पुतली पर की झिल्ली । २० प्याज की परत की भीतरी झिल्ली । २१ नीबू की जड मे होने वाला एक एक रोग । २२ चासनी या बगार की परिपक्वावस्था । २३ देखो 'झाळ' ।

जाळउर–पु० [स० ज्वालापुर] जालौर नगर का प्राचीन नाम ।

जाळक–वि० जलाने वाला ।

जाळकार–वि० जाल रचने वाला, जाली, षडयत्रकारी, पाखडी । –स्त्री० मकडी ।

जाळकिरच–स्त्री० परतला मिली वह पेटी जिमके साथ तलवार भी हो ।

जाळकोसी–स्त्री० किसी वस्तु मे बने छोटे-छोटे छेदो का समूह ।

जालग–पु० [सं० जालक] द्विन्द्रिय जीव समूह (जैन) ।

जाळजीवी–पु० [सं० जालजीवी] मछुआ, धीवर ।

जाळण–वि० [स० ज्वलन] जलाने वाला । –स्त्री० अग्नि ।

जाळणौ–पु० जालीदार झरोखा ।

जाळणौ (बौ)–देखो 'जळाणौ' (बौ) ।

जाळदार–वि० १ जिसमे जाली लगी हो । २ कपटी, षडयत्रकारी, धोखेबाज ।

जाळपादेवी–स्त्री० एक देवी विशेष ।

जाळप्राया–पु० [स० जालप्राया] कवच ।

जाळव–पु० बलराम द्वारा मारा गया एक दैत्य ।

जालवउणौ (बौ)–देखो 'झालणौ' (बौ) ।

जाळवणौ (बौ)–क्रि० १ जलाना । २ सुरक्षित रखना, सभालना ।

जाळसाज–वि० धोखेबाज, षडयत्रकारी ।

जाळसाजी–स्त्री० धोखाधडी । धूर्तता । षडयत्र, कुचक्र ।

जाळा (जाला)–स्त्री० [स० ज्वाला] १ अग्नि, आग । २ अग्नि की लपट, लौ ।

जालाउ–पु० [स० जालायुप] एक प्रकार का द्विन्द्रियजीव।

जाळानळ–स्त्री० [स० ज्वालानल] अग्नि, आग ।

जाळाहळ–पु० [स० ज्वालन] १ ज्वाला, अग्नि । २ एक प्रकार का घोडा । ३ जलाशय, तालाब ।

जाळि–१ देखो 'जाळी' । २ देखो 'जाळ' ।

जाळिक–पु० [स० जालिक] १ मछुवा, केवट । २ जाल बनाने वाला । ३ जाल बिछाने वाला । ४ बाजीगर । ५ मकडी । ६ चिडी मार, बहेलिया । ७ गुण्डा, बदमाश ।

जाळिका–स्त्री० [स० जालिका] १ जाली, फदा । २ मकडी । ३ समूह । ४ कपट, छल । ५ एक जाति विशेष । ६ जौक । ७ कवच । ८ लोहा । ९ घू घट ।

जाळिधर–पु० जालोर का एक नाम ।
जालिम–वि० [अ०] १ गुण्डा, बदमाश । २ क्रूर, निर्दयी । ३ आततायी, जुल्मी । ४ झूठा । ५ जबरदस्त, जोरदार । ६ वीर, योद्धा ।
जालिय–पु० [सं० जालिक] गले का एक आभूषण विशेष ।
जाळियल–स्त्री० अग्नि, आग ।
जाळिया–पु० जाल वृक्ष के फल, पीलू ।
जाळियौ–वि० जालसाज, धोखेबाज ।
जाळी–स्त्री० [सं० जालिका] १ डोरो या तारो की बनी कोई चादरनुमा वस्तु । २ एक प्रकार का कसीदा । ३ छिद्रित वस्त्र । ४ झरोखा, गवाक्ष । ५ जालीनुमा कवच ।६ ऊंट के मुंह पर बाधने का उपकरण । ७ लट्टू चलाने की डोरी । ८ चासनी या छौक के मसालो की परिपक्वावस्था । –वि० १ कपटी, जालसाज, धूर्त । २ नकली, झूठा, फर्जी ।
जाळीका–स्त्री० १ एक प्रकार का कवच । २ जाली ।
जाळीदार, जाळीबंद (बंध)–वि० जिसमे जाली लगी हो । –पु० डिंगल मे एक प्रकार का चित्रकाव्य ।
जाळीयळ–देखो 'जाळियळ' ।
जाळोट्ट ट–पु० फोग वृक्ष का एक रोग विशेष ।
जाळोकुसालौ–पु० एक लोग गीत ।
जाळोवळि (ळी)–स्त्री० अग्नि, आग ।
जाळौ–पु० [सं० जाल] १ मकडी का जाल । २ आख की पुतली पर पडने वाली झिल्ली । ३ जाल । ४ अवेरा । ५ किसी पात्र मे जमाया हुआ कडो का ढेर ।
जावत–वि० [सं० यावत] जितने । (जैन)
जाव–पु० १ कुए के पास की कृषि भूमि । २ मेहदी । ३ देखो जाव' । –क्रि० वि० [सं० यावत्] जब तक । (जैन)
जावक–पु० [सं० यावक] महावर ।
जावजीव, जावज्जीव–अव्य० [सं० यावज्जीव] जीवन पर्यन्त ।
जावण–पु० [सं० यापन] १ निर्वाह । (जैन) २ दूध को जमाने के लिए डाली जाने वाली छाछ या खटाई ।
जावणौ (बौ)–क्रि० [सं० यानम्] १ एक स्थान से चलकर कही दूसरे स्थान पर जाना । २ प्रस्थान करना, रवाना होना । ३ यात्रा करना । ४ चलना, फिरना । ५ अलग होना, दूर होना । ६ स्थान छोड कर कही अन्यत्र होना । ७ अधिकार या काबू से बाहर होना । ८ चोरी होना । ९ गुम होना, गायब होना । १० व्यतीत होना, गुजर जाना बीतना । ११ नष्ट होना, विगडना । १२ मरना, अवसान होना । १३ बहना, जारी होना । १४ अकर्मण्य होना । १५ मिटना, शान्त होना । १६ भागना । १७ किसी बात या प्रसग को छोड देना ।
जावत–अव्य० जब तक, यावत् ।
जावतीग्र–वि० [सं० यावत्] जितना । (जैन)
जावती, जावत्री–स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल का सुगंधित छिलका ।
जावनी–स्त्री० यवन भाषा ।
जावय–वि० [सं० यापक] १ व्यतीत करने वाला (जैन) । [सं० जापक] २ राग-द्वेष को जीतने वाला (जैन) । –पु० [सं० यावक] लाख का रग (जैन) ।
जावरी (रौ)–वि० १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना । २ वृद्ध (जैन) ।
जावालि–स्त्री० अग्नि ।
जावेल–पु० [सं० जात्यतैलम्] चमेली का तेल ।
जावौ–पु० पशुओ की मंदाग्नि मिटाने की औषधि ।
जास–क्रि०वि० जिससे, जैसे । –सर्व० जिस । जिन । –पु० [सं० जाष] १ एक प्रकार का पिशाच (जैन) । २ समूह । ३ देखो 'ज्यास' ।
जासती–वि० अधिक, अति । –स्त्री० अत्याचार । ज्यादती ।
जासु (सू, सू)–सर्व० जिस, जिन ।
जासूल–स्त्री० चमेली ।
जासूस–पु० [अ०] गुप्तचर, भेदिया ।
जासूसी–स्त्री० [अ०] जासूस का कार्य, गुप्तचरी ।
जाह–स्त्री० [सं० ज्या]धनुष की डोरी, प्रत्यचा । –सर्व० जिस । –वि० सकोची, शर्मीला ।
जाहर–देखो 'जाहिर' ।
जाहरा–क्रि०वि० १ जब, तब । २ देखो 'जाहिरा' ।
जाहरात–१ देखो 'जाहिरा' । २ देखो 'जवाहरात' ।
जाहरी–स्त्री० प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा ।
जाहरु (रू)–देखो 'जाहिर' ।
जाहिर–वि० [अ०] १ प्रकट, विदित । २ प्रसिद्ध, मशहूर ।
जाहिरा (रा)–क्रि०वि० प्रत्यक्ष मे, प्रकट मे ।
जाहिल–वि० [अ०] १ मूर्ख, बेवकूफ । २ अज्ञानी, अनाडी, असभ्य । ३ नादान ।
जाही–स्त्री० [सं० जाति] चमेली, जूही ।
जि–सर्व० जिस ।
जिंद–पु० [अ० जिन] १ प्रेत, भूत । [फा० जिन्द] २ जीव, प्राण । ३ शरीर ।
जिंदगाणी (गानी), जिंदगी–स्त्री० [फा० जिंदगानी, जिंदगी] १ जीवन । २ जीवन काल, आयु ।
जिंदडी–स्त्री० १ फूहड व अनाडी स्त्री । २ काया, शरीर । ३ प्रेतनी ।
जिंदवांरोभात–पु० दामाद को परोसा जाने वाला चावल-भात ।
जिंदु, जिंदौ–वि० [फा० जिन्द'] १ जीवित, जीता-जागता । २ जी उठने वाला । –पु० १ मुल्ला । २ देखो 'जिंद' ।

जिम्राळी–पु० जभासुर राक्षस।
जिस–स्त्री० [फा०] १ वस्तु। २ सामान, सामग्री। ३ अदद, नग। —**वार**–क्रि०वि० वस्तु वार, अलग-अलग।
जिह–सर्व० १ जो। २ जिस।
जिही–क्रि०वि० जैसे।
जि–सर्व० १ जो, जिस। २ उस, वह। –अव्य० निश्चय सूचक, ही।
जिअती–स्त्री० [स० जीवती] एक प्रकार की लता (जैन)।
जिअ–वि० [स० जित] १ जीतने वाला। २ देखो 'जीव'। —**ट्ठांण**–पु० जीव का स्थान भेद। (जैन)
जिआ–सर्व० जो, जिन, जिन्होंने। –क्रि०वि० जैसे, ऐसे, इस प्रकार।
जिआर–क्रि० वि० जव।
जिआरी–देखो 'जीवारी'।
जिउ–अव्य० ज्यो, जैसे।
जिउ–देखो 'जीव'।
जिए (ऐ)–सर्व० जो, जिस।
जिकरण–सर्व० जो, जिस। उस।
जिकां, जिका–सर्व० देखो 'जिकण'।
जिकिर, जिक्र–पु० [अ० जिक्र] बातचीत। प्रसग। चर्चा।
जिके (कै)–सर्व० वे उस।
जिको–सर्व० [स० य + कोऽपि] जो, वह। उस।
जिखयांणी–स्त्री० यक्षिणी।
जिगन, जिग (न, नि,नी)–पु० [स० यज्ञ] १ यज्ञ। २ विवाह। ३ मागलिक जलसा, समारोह। उत्सव। ४ यज्ञाग्नि।
जिगर–पु०[फा०] १ कलेजा, हृदय। २ यकृत। ३ दिल, चित्त, मन। ४ हौसला।
जिगरी–वि० [फा०] १ अत्यन्त प्रिय, खास प्रेमी। २ दिल सबधी, दिली।
जिगवासपत–पु० [स० यज्ञाशिपति] इन्द्र।
जिगसाळ–स्त्री० [स० यज्ञशाला] यज्ञशाला।
जिगान–पु० [स० यज्ञ] यज्ञ।
जिगि, जिगिन–देखो 'जिग'।
जिगिर–देखो 'जिगर'।
जिगीसा–स्त्री० [स० जिगीषा] जय प्राप्ति की इच्छा।
जिग्ग–देखो 'जिग'।
जिग्यास, जिग्यासा-स्त्री० [स० जिज्ञासा] १ जानने की इच्छा। २ उत्सुकता उत्कण्ठा।
जिग्यासु जिग्यासू–वि० [स० जिज्ञासु] उत्सुक, इच्छुक।
जिच्चमाण–क्रि० वि० [स० जीयमान] हारता हुआ (जैन)।
जिजक–देखो 'झिझक'।
जिजमान–देखो 'जजमान'।
जिट्ठ–वि० [स० ज्येष्ठ] १ बडा। २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ। (जैन)
जिट्ठा–वि० बडी। –स्त्री० १ बडी बहन। २ जिठानी। ३ भगवान महावीर की पुत्री। ४ ज्येष्ठा नक्षत्र। —**मूळ**–पु० ज्येष्ठ मास।
जिठाणी–स्त्री० जेष्ठ की स्त्री, पति की भाभी।
जिडौ–वि० जितना।
जिणद (दक, राय) जिणदू–पु० [स० जिनेद्र] जैनियो के तीर्थंकर।
जिण–सर्व० जिन, जिस। –वि० [स० जिन] १ जीतने वाला। २ राग द्वेष से परे। ३ चौदह वर्ष पूर्व के ग्रंथो को जानने वाला। ४ अतीद्रिय ज्ञान वाला। –पु० १ जन, भक्त। २ सतान। ३ जिनदेव। ४ देखो 'जिन'। —**कप्प, कप्पिय**–पु० उत्कृष्ट आचार वाला जैन साधु।
जिणक्खाय–वि० [स० जिनाख्यात] जिनेन्द्र का कहा हुआ।
जिणगी–क्रि० वि० जिस जगह, जिस तरफ।
जणचद–पु० अर्हन् देव। एक जैनाचार्य।
जिणणी–देखो 'जननी'।
जिणणौ (बौ)–देखो 'जणणौ' (बौ)।
जिणविट्ठ–वि० [स० जिनद्रष्ट्र] जिनेन्द्र द्वारा अनुभूत।
जिणदेव–पु० जैन तीर्थंकर।
जिणदेसिअ (देसिय)–वि० [स० जिनदेशित] जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित।
जिणधम्म–पु० जैन धर्म। (जैन)
जिणपडिमा–स्त्री० [स० जिनप्रतिमा] १ अर्हंन्देव की मूर्ति। २ वृषभ, वर्द्धमान, चन्द्रानन आदि के नाम से पहिचानी जानी वाली शाश्वती प्रतिमा।
जिणभद्द–पु० एक जैन आचार्य, ग्रथकार।
जिणमय–पु० [स० जिनमत] जैन दर्शन।
जिणवय–पु० जिनपति।
जिणवयण–पु० जिन वचन।
जिणवर (वरू)–पु० [स० जिनवर] जिनदेव, अर्हन्देव।
जिणिआर–वि० प्रसिद्ध, विख्यात। –स्त्री० जननी माता।
जिणिणि, जिणिणी–स्त्री० [स० जननी] माता।
जिणु–१ देखो 'जिण'। २ देखो 'जिन'। —**त्तम**= 'जिणोत्तम'।
जिणेसर(सरु, सरू, सरो)–देखो 'जिनेसर'।
जिणोत्तम–पु० जैन तीर्थंकर।
जिणोवइट्ठ–पु० [स० जिनोपदिष्ट] जिनदेव द्वारा प्रतिपादित।
जिण्ण–१ देखो 'जिण'। २ देखो 'जिन'। ३ देखो 'जीरण'।
जिण्णकुमारी–स्त्री० वृद्धा स्त्री।
जिण्णास–स्त्री० [स० जिज्ञासा] इच्छा, अभिलाषा, उत्सुकता।

जित–वि० [स०] १ जीता हुआ, वशवर्ती । २ प्राप्त । ३ कब्जिकृत । ४ जल्दी स्मरण आने वाला । (जैन) ५ जीतने वाला । –क्रि०वि० जहा, जहा पर । देखो 'जीत' । —इद्रिय, इद्री='जितेद्रिय' ।

जितणा–वि० जितना ।

जिततित–क्रि० वि० जहा-तहा, यत्र-तत्र ।

जितरै–क्रि० वि० जब तक, तब तक, इतने मे ।

जितरौ–वि० (स्त्री० जितरी) १ जिस मात्रा मे जितना । २ परिमाण विशेष का ।

जिताणौ (बौ)–देखो 'जीताणौ' (बौ) ।

जितिदिय, (द्रिय)–देखो 'जितेद्रिय' ।

जितू –देखो 'जितौ' (स्त्री० जिती) ।

जितेंद्र, जितेंद्रि (द्रिय, द्री)–वि० [स० जितेन्द्रिय] १ इन्द्रियो को वश मे रखने वाला, सयमी । २ समवृत्ति, शात ।

जिते (तै)–क्रि०वि० जब तक, तब तक ।

जितोक, जितौ, जितौक, जित्तौ–वि० (स्त्री० जिती, जितीक, जित्ती) जितना, परिमाण विशेष के बराबर ।

जिद, जिद्द–स्त्री० [अ० जिद] १ शत्रुता, वैर । २ हठ, दुराग्रह ।

जिद्दी–वि० [अ० जिद्दी] १ हठी, दुराग्रही । २ शत्रु, वैरी ।

जिन–पु० [स०] १ विष्णु । २ सूर्य । ३ अर्जुन । ४ बुद्ध । ५ जैनो के तीर्थंकर । ६ जैन साधु । ७ भूत-प्रेत । –सर्व० जिस का बहुवचन रूप । –अव्य० निषेध सूचक ध्वनि, मत ।

जिनकल्पी–पु० उत्कृष्ट आचार वाला साधु । (जैन)

जिनचद–देखो 'जिणचद' ।

जिनपति, जिनपाल–पु० जैनो के तीर्थंकर ।

जिनमत–पु० [स०] जैन दर्शन ।

जिनराइ(राज, राजौ, राय, रायौ, रिस,रिसी, वर, वरु वरौ)– –पु० [स० जिनराज, जिनऋषि, जिनवर] जैनो के तीर्थंकर ।

जिनस–स्त्री० [अ० जिन्स] १ कोई वस्तु, चीज, पदार्थ । २ सामग्री । ३ खाद्य पदार्थ । ४ चित्र, नक्शा । ५ तरह, प्रकार, किस्म ।

जिना–पु० [अ०] व्यभिचार ।

जिनाकार–वि० [फा०] व्यभिचारी ।

जिनाकारी–स्त्री० व्यभिचार ।

जिनावर–देखो 'जानवर' ।

जिमिस–देखो 'जिनस' ।

जिनेवा–१ देखो 'जनेता' । २ देखो 'जनेत' ।

जिनेसर (राय), जिनेसरु, जिनेस्वर–[स० जिन+ईश्वर] जिन देव, अर्हन् ।

जिनोई–देखो 'जनेऊ' ।

जिन्न–वि० [स० जीर्ण] १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना । २ देखो 'जिण्ण' । ३ देखो 'जिन' ।

जिन्ना–देखो 'जिन' ।

जिन्नावर–देखो 'जानवार' ।

जिन्ह–देखो 'जिन' ।

जिबह, जिबा–स्त्री० [अ० जिबह] गला काट कर मारने की क्रिया ।

जिब्भ, जिब्भा–स्त्री० जीभ, जिह्वा । —दंत–वि० जिह्वा का दमन करने वाला ।

जिब्भिया–स्त्री० [स० जिह्विका] १ पानी निकालने की नाली । २ देखो 'जीभ' ।

जिब्भिदिय–पु० जिह्वा, रसना ।

जिभँ–देखो 'जिबह' ।

जिभ्या–देखो 'जीभ' ।

जिभ्याप–पु० [स० जिह्वाप] कुत्ता, श्वान ।

जिम–अव्य० [स० यिव] १ जिस प्रकार, जैसे । २ देखो 'जम' ।

जिमणउ (णु)–१ देखो 'जीवणौ' । २ देखो 'जीमण' ।

जिमणवार, जिमणार–देखो 'जीमणवार' ।

जिमतिम–क्रि०वि० जैसे-तैसे ।

जिमाणौ (बौ), जिमावणौ (बौ)–देखो 'जीमाणौ' (बौ) ।

जिमि (मी)–१ देखो 'जिम' । २ देखो 'जमी' ।

जिम्मग–पु० [स० अजिह्मग] तीर, बाण ।

जिम्मावार, जिम्मेवार–देखो 'जिम्मेवार' ।

जिम्मेदारी–देखो 'जिम्मेवारी' ।

जिम्मेवार–वि० [अ०] १ किसी कार्य या बात का उत्तर-दायित्व रखने वाला ।

जिम्मेवारी–स्त्री० [अ०] १ उत्तरदायित्व, जवाबदेही । २ गभीरता ।

जिम्मौ–पु० [अ० जिम] उत्तरदायित्व, भार ।

जिम्हग, जिम्हग–पु० [स० जिह्मग] सर्प, साप ।

जियतग, जियतय–पु० [स० जीवान्तक] एक प्रकार की वनस्पति ।

जियती–स्त्री० [स० जीवती] एक प्रकार की लता विशेष ।

जिय–पु० [स० जीव] १ जीव, प्राणी । २ जीवन, प्राण । ३ हृदय, मन, दिल । ४ ध्वन्यात्मक शब्द । –स्त्री०[स०जित] ५ विजय, जीत ।

जियसत्तु (त्तू)–वि० [स० जितशत्रु] जीतने वाला । –पु० अजीतनाथ के पिता (जैन) ।

जियसेण–पु० [स० जितसेन] भरत क्षेत्र के तृतीय कुलकर का नाम । (जैन)

जिया (न)–क्रि०वि० जैसे । –सर्व० जिन, जिन्होने ।

जियाग–पु० यज्ञ, हवन ।

जियावती–देखो 'ज्यादती' ।

जियादा–देखो 'ज्यादा' । —तर='ज्यादातर' ।

जियाफत-स्त्री० [अ०] १ मेहमानदारी । [अ० हिफाजत] २ हिफाजत, देखरेख, रक्षा ।
जियार--क्रि०वि० जिस समय, जब । -पु० जीवन ।
जियारत-स्त्री० [अ०] १ तीर्थ यात्रा । २ दर्शन, दीदार ।
जियारती-पु० १ तीर्थ यात्री । २ दर्शनार्थी ।
जियारा-क्रि०वि० जिस समय, जब ।
जियारि-पु० [स० जितारि] तीसरे तीर्थंकर के पिता (जैन) ।
जियारी-देखो 'जीवारी' ।
जिरह-स्त्री० [अ० जुरह] १ सच्ची बात उगलवाने के लिए घुमा फिरा कर की जाने वाली पूछताछ । २ वकीलो की बहस । ३ तर्क-वितर्क । [फा० जिरह] ४ कवच ।
जिरही-वि० १ कवचधारी । २ बहस करने वाला ।
जिराफ-पु० [अ० जुर्राफ] अत्यन्त लबी गर्दन व ठिगनी पीठ का एक जानकार विशेष, जरख ।
जिलवत-स्त्री० [अ० जिल्वत] स्वय को प्रगट करने की क्रिया या भाव ।
जिलह-देखो 'जिलै' । —**दार**='जिलैदार' ।
जिलहरी-पु० एक रग विशेष का घोडा ।
जिलाइयत-देखो 'जिलायत' ।
जिलाणो (बो)-देखो 'जीवाणो' (बो) ।
जिलादारी-स्त्री० [फा०] १ जिलेदार या जिलायत का पद । २ इस पद के कर्त्तव्य ।
जिलायत-पु० [फा०] १ जिलाधीश, जिले का अधिकारी । २ छोटा जागीरदार ।
जिलासाज-पु० सिकलीगर ।
जिली-वि० १ कमजोर, निर्बल । २ पतला, क्षीण । ३ देखो 'झिल्ली' ।
जिलेदार-देखो 'जिलायत' ।
जिळेबी-देखो 'जळेबी' ।
जिलै-स्त्री० [अ० जिला] १ आभा, काति । २ शोभा छबि । —**दार**-वि० चमकदार, काति युक्त । बडे जागीरदार के अधीनस्थ छोटा जागीरदार ।
जिलौ-पु० [अ० जिला] १ किसी एक जिलाधीश या प्रशासक के अधिशासन मे रहने वाला क्षेत्र, प्रान्त । २ किसी बडे जागीरदार के अधीन छोटे-छोटे जागीरदारो का एक निश्चित क्षेत्र । ३ सेना, फौज । [तु०] ४ अधिकार, वश, काबू । ५ लगाम । ६ राजाओ की सवारी का कोतल घोडा ।
जिल्द-स्त्री० [अ०] १ ऊपर का चमडा । २ पुस्तक का आवरण । ३ दफ्ती लगाकर किसी पुस्तक के आवरण की मजबूत सिलाई । ४ किसी ग्रथ की एक कृति, भाग या उपखण्ड । —**गर, बद**-वि० जिल्द बनाने वाला । —**बदी**-स्त्री० जिल्द बनाने का कार्य । —**साज**-पु० जिल्द बनाने वाला कारीगर । —**साजी**='जिल्दबदी' ।
जिल्लायत-देखो 'जिलायत' ।
जिल्लौ, जिल्हौ-देखो 'जिलौ' ।
जिवडो-वि० १ जैसा, वैसा, समान । २ देखो 'जीव' । (स्त्री० जीवडी) ।
जिवणो (बो)-देखो 'जीवणो' (बो) ।
जिवतसिंभ-देखो 'जीवतसिभ' ।
जिवाणी-देखो 'जीवाणी' ।
जिवाई-स्त्री० जीने की क्रिया या भाव । जीवन । आयु ।
जिवाणो (बो)-देखो 'जीवाणो' (बो) ।
जिवारी-देखो 'जीवारी' ।
जिव्हा-स्त्री० [स० जिह्वा] जीभ, रसना ।
जिस (उ)-वि० विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ 'जो' का रूप । -क्रि०वि० जैसे, जिस प्रकार । -सर्व० विभक्ति लगने के पहले 'जो' का रूप ।
जिसउ, जिसडो-देखो 'जिसौ' ।
जिसन (नु)-पु० [स० जिष्णु] १ अर्जुन । २ इन्द्र । ३ विष्णु । ४ सूर्य । -वि० जीतने वाला, विजयी ।
जिसम, जिसिम-पु० [फा० जिस्म] शरीर, देह, तन ।
जिसौ-वि० (स्त्री० जिसिइ, जिसी) जैसा, वैसा ।
जिस्णु (स्णू)-देखो 'जिसन' ।
जिस्यान-क्रि०वि० जैसे, जिस प्रकार । -वि० जैसा ।
जिस्यू, जिस्यौ-क्रि०वि० जैसे । -वि० जैसा ।
जिह-सर्व० जिस । -क्रि० वि० जहा ।
जिह-देखो 'जीभ' ।
जिहग-पु० [स० जिह्मग] सर्प । तीर, बाण ।
जिहडो-देखो 'जिसौ' ।
जिहा-क्रि०वि० जहा, जिस जगह । -सर्व० जिन ।
जिहांनी-वि० ससार, सबधी, सांसारिक ।
जिहाद-पु० [अ०] मुसलमानो का धार्मिक युद्ध । धार्मिक आन्दोलन ।
जिहाळत-स्त्री० [अ० जहालत] मूर्खता । अज्ञानता ।
जिहि जिहि-सर्व० जिस । -क्रि०वि० जैसे । -वि० जैसा ।
जिह्म ग, जिह्मग-वि० [स० जिह्मग] १ धीमा, मद । २ टेढा-मेढा चलने वाला । -पु० सर्प ।
जिह्मगति-पु० सर्प, साप ।
जिह्वामूळ-पु० जीभ का पिछला भाग ।
जिह्वामूळी, (मूळीय)-वि० जिह्वामूल से सबधित ।
जिह्वालिट्ट-पु० [स०] श्वान, कुत्ता ।
जिह्वास्तभ-पु० [स०] एक प्रकार का वात रोग ।

जीं–सर्व० जिस ।

जींका (ळी)–स्त्री० १ ईट व खपरैल का महीन चूर्ण । २ बारीक बूंदें ।

जींगडो–पु० (स्त्री० जीगडी) छोटा बछडा । (मेवात)

जींजणियाळ–स्त्री० देवी शक्ति ।

जींजणी–स्त्री० एक कटीली झाडी विशेष ।

जीजो जींझ, जींझो–पु० १ कासी या पीतल का बना एक वाद्य, झाज । २ एक कटीली झाडी विशेष । ३ एक वृक्ष विशेष ।

जींमणी–देखो 'जीवणी' ।

जींमणी (बौ)–देखो 'जीमणी' (बौ) ।

जींवणी–वि० (स्त्री० जीवणी) १ दाहिना, दाया । २ दक्षिणी पार्श्व का । –पु० दाहिना हाथ ।

जी–पु० १ पिता । २ पितामह । ३ हा का आदर सूचक रूप । [स० जीव] ४ प्राण, जीव, आत्मा । [स० आज्य] ५ घृत, घी । –अव्य० १ एक सयोजक शब्द, कि । २ किसी के नाम के अन्त मे या किसी बात के प्रत्युत्तर मे बोला जाने वाला शब्द ।

जीउ, जीऊ–१ देखो 'जिउ' । २ देखो 'जीव' ।

जीकार, जीकारौ–पु० बोलते समय 'जी' शब्द का प्रयोग करने की क्रिया ।

जीकाळी–देखो 'जीका' ।

जीखेस–पु० [स० ऋषभेष] शिव का बैल, नदी ।

जीजा, जीजी–स्त्री० बडी बहन ।

जीजासा, जीजोसा, जीजो–पु० बहनोई, बडी बहन का पति ।

जीण–स्त्री० १ एक प्रकार का मोटा व मजबूत सूती वस्त्र । २ घोडे का चारजामा । ३ देखो 'जीवन' । ४ देखो 'जूण' । ५ देखो 'जीरण' । ६ देखो 'जिण' । —**गर**–पु० चारजामा बनाने वाला मोची । —**माता**–स्त्री० एक देवी विशेष । सीकर जिले मे स्थित इस देवी की अष्टभुजी प्रतिमा । –**पोस** –पु० चारजामे पर बिछाने का वस्त्र विशेष । –**सवारी**-स्त्री० चारजामा रखकर की गई सवारी । —**साज**–पु० चारजामा बनाने वाला । —**साल, सालियौ**–पु० एक प्रकार का कवच ।

जीणी–१ देखो 'जिण' । २ देखो 'झीणी' ।

जीणौ (बौ)–देखो 'जीवणौ' (बौ) ।

जीत–स्त्री० [स० जिति] १ विजय, जय । २ सफलता । ३ लाभ, फायदा ।

जीतणी–वि० (स्त्री० जीतणी) विजयी ।

जीतणौ (बौ)–क्रि० १ विजय प्राप्त करना, जीतना, विजयी होना । २ सफल होना । ३ अधिकार मे करना, पक्ष मे करना । ४ लाभ प्राप्त करना ।

जीतव (व)–पु० [स० जीवीतव्य] जीवन, जिन्दगी ।

जीतरणताळ–पु० [स० रणतालजित] तलवार, खड्ग ।

जीताडणौ (बौ), जीताणौ (बौ), जीतावणौ (बौ)–क्रि० १ विजय प्राप्त कराना, जीताना । २ सफलता प्राप्त कराना । ३ अधिकार या वश मे कराना । ४ लाभ कराना, फायदा कराना ।

जीनत–स्त्री० [फा०] १ तैयारी । २ शोभा ।

जीनोई–देखो जनेऊ ।

जीनौ–पु० सीढी, जीना ।

जीप–स्त्री० १ जीत, विजय । २ एक प्रकार की मोटरगाडी ।

जीपणौ (बौ)–देखो 'जीतणौ' (बौ) ।

जीपल–वि० जीतने वाला, विजयी ।

जीब (बी)–स्त्री० [स० जिह्वा] १ बढई का एक औजार । २ जीभ का मैल उतारने की चिप्पी । ३ जीभ, जिह्वा । ४ जिह्वानुमा कोई उपकरण ।

जीभ, जीभडली, जीभडी–स्त्री० [स० जिह्वा] १ मुह के अन्दर स्थित एक मुख्य अग जो खाने-पीने व बोलने की क्रिया करता है, जिह्वा । २ वाणी, बोली, जबान । ३ कलम की नोक ।

जीभप–पु० कुत्ता, श्वान ।

जीमण(न)–पु० [स० जेमनस] १ खाना, भोजन । २ मिष्ठान्न, मिठाई । ३ भोज, भोज का खाना —**वार**–पु० बडा भोज । कई व्यक्तियो का सामूहिक भोजन ।

जीमणियाळ–वि० दक्षिणी पार्श्व का या भाग का, दाहिना ।

जीमणौ (बौ)–क्रि० [स० जिम्] १ खाना, भोजन करना । २ हजम करना ।

जीमाडणौ (बौ), जीमाणौ (बौ), जीमावणौ (बौ)–क्रि० भोजन कराना, खाना खिलाना ।

जीमूत–पु० [स०] १ बादल, मेघ । २ इन्द्र । ३ एक मल्ल विशेष । ४ एक ऋषि । ५ शालमली द्वीप का एक देश । —**रिखि**–पु० एक ऋषि । —**वाहण (न)**–पु० शालि वाहन राजा का पुत्र । इन्द्र ।

जीम्हणौ (बौ)–देखो 'जीमणौ' (बौ) ।

जीय–पु० १ परम्परा, प्रथा, रीति । २ व्यवस्था । ३ कर्त्तव्य, धर्म । ४ देखो 'जीव' । —**कप्प**–पु० परम्परागत आचार । —**कप्पीय**–वि० उक्त प्रकार के आचार वाला ।—**निंदा** –स्त्री० पाप की निंदा । पापी के स्थान पर पाप की निंदा करने वाला । स्वल्प निद्रा लेने वाला । —**परिखह, परिसह** —वि० परिसहो को जीतने वाला । —**माण**–वि० नियम से मान को पराजित करने वाला । —**माय**–वि० माया को पराजित करने वाला । —**लोह**–वि० लोभ को पराजित करने वाला ।

जीयापोती–स्त्री० एक प्रकार की जडी, पुत्रजीवक ।

जीयै–सर्व० जो, जिस ।

जीर, जीरउ, जीरक, जीरय–देखो 'जीरौ' ।

जीरण–वि० [स० जीर्ण] १ पुराना, प्राचीन । २ पुराना होने से फूटा-टूटा, जर्जर । ३ कमजोर, निर्बल । ४ बुड्ढा, वृद्ध । ५ घिसा हुआ । ६ पचा हुआ । ७ नष्ट किया हुआ । —**ज्वर**–पु० एक प्रकार का बुखार । —**ता**–स्त्री० पुरानापन, बुढापा ।

जीरणा–स्त्री० चार गुरु वर्णं का एक वृत्त विशेप ।

जीरणोद्धार–पु० मरम्मत, सुधार ।

जीरवणा–स्त्री० १ धैर्य, धीरज । २ सहनशक्ति । ३ पाचन क्रिया ।

जीरवणौ (बौ)–क्रि० १ हजम करना, पचाना । २ धैर्य रखना ।

जीराण–पु० श्मशान, मरघट । –वि० जीर्ण-शीर्ण ।

जीरुय–पु० एक प्रकार की वनस्पति ।

जीरौ–पु० [स० जीरक] १ सौंप के आकार का एक पदार्थ जो छौंक मे डाला जाता है, जीरा । २ एक लोक गीत विशेष । ३ शून्य का अक, गोला ।

जील–स्त्री० सारगी के तार ।

जीवंजीवक (जीवग, जीव)–पु० [स० जीवज्जीवक] १ चकोर पक्षी । २ जीवन । ३ जीव का आधार, आत्म पराक्रम । ४ एक वृक्ष विशेष । ५ एक प्रकार की वनस्पति ।

जीवंती–स्त्री० १ संजीवनी । २ हरडे, हरीतकी । ३ एक लता विशेष ।

जीवंवौ–वि० जो जिंदा हो, जीवित, सजीव ।

जीव–पु० [सं०] १ प्राणियो का चेतन तत्त्व, जीवात्मा, आत्मा । २ प्राण, जान । ३ प्राणी, प्राणधारी । ४ मन, दिल, तबियत । ५ शरीर का मर्मस्थल । ६ वृहस्पति । ७ कर्ण का एक नाम । ८ सात द्रव्यो मे से एक (जैन) । ९ नौ तत्त्वो मे से प्रथम तत्त्व । (जैन) १० खाट की बुनाई के मुख्य ताने । ११ बल, पराक्रम । १२ श्वास । १३ कटने से रहा हुआ सूक्ष्म अश । १४ खाद्य पदार्थ आदि मे पडने वाला कीडा ।

जीवक–पु० [स० जीविक] १ जीवधारी, प्राणी । २ जीव, प्राण । ३ सेवक । ४ सूदखोर । ५ नौका । ६ बौद्धभिक्षुक । ७ सपेरा, गारुडी । ८ वृक्ष, पेड । ९ एक काष्ठौधि ।

जीवका–स्त्री० [स० जीविका] १ जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, रोजी । २ निर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य व आमदनी ।

जीवकाय–पु० [स०] जीवलोक, जीवराशि ।

जीवगाह–वि० [सं० जीवगाह] जीवो का भ्रमन करने वाला ।

जीवडलो, जीवड़ो–देखो 'जीव' ।

जीवजनावर, जीवजानवर–पु० जीव-जन्तु ।

जीवजूण–देखो 'जीवाजूण' ।

जीवजोग–वि० विश्वसनीय, विश्वस्त ।

जीवट्ठांण–पु० [स० जीवस्थान] गुप्त-स्थान । मर्म । (जैन)

जीवण–पु० [सं० जीवन] १ जीवित रहने की अवस्था, अस्तित्व । २ आयु, उम्र । ३ प्राण रहने की अवस्था या भाव । ४ जीने का आधार । ५ जल-पानी । ६ रक्त । ७ पवन । ८ पुत्र । ९ प्राणधारी जीव, प्राणी । १० पेशा, जीविका । ११ सजीवनी शक्ति । १२ हड्डी के भीतर का गूदा, मज्जा । १३ मक्खन, घी । १४ परमेश्वर । –वि० १ परमप्रिय, प्यारा । २ जीवनी शक्ति देने वाला ।

जीवणसाल–देखो 'जीणसाल' ।

जीवणिकाय–पु० [स० जीव-निकाय] जीव राशि (जैन) ।

जीवणिज्ज–वि० [स० जीवनीय] जीने योग्य ।

जीवणी–वि० १ दायी, दाहिनी । २ देखो 'जीवनी' ।

जीवणौ–वि० (स्त्री० जीवणी) १ जीने वाला । २ दाया, दाहिना ।

जीवणौ (बौ)–क्रि० [स० जीवनम्] १ जिंदा रहना, सजीव रहना । २ प्राण युक्त होना, जीना । ३ जीवन का समय निकालना, जिंदगी काटना । ४ निर्वाह करना । ५ होश मे आना, चैतन्य होना ।

जीवत–देखो 'जीवित' ।

जीवतत्त (तत्त्व)–पु० [सं० जीवतत्व] १ शरीरस्थ चेतन तत्त्व, आत्मा, जीव, प्राण । २ जीवन, जिंदगी ।

जीवतसभ (सिभ), जीवतासभ (सिभ)–पु० [स०जीवित+शु भ] युद्ध मे घावो से क्षत हुआ वीर ।

जीवतौ–देखो 'जीवित' । (स्त्री० जीवती)

जीवतौसभ (सभू)–देखो 'जीवतसभ' ।

जीवत्थिकाय–पु० [स० जीवास्तिकाय] १ चैतन्य उपयोग लक्षण वाला छ द्रव्यो मे से एक द्रव्य । २ जीव समूह । ३ कर्म के करने व फल भोगने वाला । ४ सम्यक् ज्ञानादि के वश से कर्म समूह का नाश करने वाला ।

जीवद–पु० [स०] १ वैद्य, चिकित्सक । २ शत्रु । ३ जीवनदाता ।

जीवदव्व–पु० [स० जीवद्रव्य] छ द्रव्यों मे मे एक, जीवद्रव्य ।

जीवदान (दानु, दानू)–पु० [सं० जीवदान] प्राण रक्षा, प्राण दान । मृत्यु से बचाव ।

जीवधन–पु० [स०] १ पशु धन । मवेशी । २ जीवनधन ।

जीवधारी–वि० [स०] प्राणवान, चेतन प्राणी, जानवर ।

जीवन–देखो 'जीवण' ।

जीवनचरित (चरित्त, चरित्र)–पु०[स० जीवन चरित्र] १ किसी के जीवन के अच्छे कार्यो का विवरण, वृत्तान्त । २ ऐसे वृत्तान्त की पुस्तक ।

जीवनद–पु० १ कमठ। २ बादल मेघ।

जीवनधन–पु० [स०] १ परमप्रिय, जीवनसर्वस्व। २ प्राणाधार, प्राणप्रिय।

जीवनबूंटी–स्त्री० सजीवनी।

जीवनवतत (व्रतात)–पु० [स० जीवनवृत्त] किसी आदर्श पुरुष के जीवन चरित्र का विवरण। जीवनी।

जीवनव्रत्ति–स्त्री० [स० जीवनवृत्ति] आजीविका, रोजी।

जीवना–स्त्री० हिम्मत, साहस।

जीवनि, जीवनी–स्त्री० [स० जीवनी] १ किसी व्यक्ति विशेष के जीवन का परिचय। २ किसी व्यक्ति के आदर्श पूर्ण कार्यो का विवरण।

जीवनीय–पु० [स०] १ पानी। २ दूध। –वि० १ जीवन सबधी। २ जीने योग्य। —**गण**–पु० बलवर्धक औषधि।

जीवन्मुक्त–वि० [स०] सासारिक मायाजाल से मुक्त।

जीवण्णसिय–पु० विष्णुगुप्त आचार्य के मत का अनुयायी।

जीवपति–पु० [स०] धर्मराज।

जीवबधु (बधू)–[स०] जीव बधु, वधुजीव, वधूक।

जीवभासा–स्त्री० जीव जन्तुओ, जानवरो की भाषा।

जीवमाता, (मात्रका)–स्त्री० [सं० जीवमातृका] जीवो का पालन करनेवाली सप्त देविया।

जीवरखी–स्त्री० एक प्रकार का सन्नाह, कवच।

जीवरखौ–पु० १ बड़े दुर्ग की रक्षार्थ चारो ओर वने छोटे-छोटे दुर्गों मे से एक, गढी। २ जीवन रक्षा का उपाय। ३ कवच सन्नाह। ४ प्राण रक्षक।

जीवरि (खि) –देखो 'जिमूतरिखि'।

जीवलोक–पु० [स०] भूलोक, मृत्युलोक।

जीवसभ–देखो 'जीवतसभ'।

जीवसम (समौ)–वि० (स्त्री० जीवसमी) परम प्रिय, प्यारा।

जीवहत्या, (हिंसा)–पु० [स०] १ जीवो को मारने की क्रिया जीववध। २ इस कार्य के करने से लगने वाला पाप। ३ शिकार।

जीवाण–पु० जलाशय, तालाव।

जीवाणी–पु० जल छानने से बचे जल जीव, जीव।

जीवाणुसासण–पु० [स० जीवाणुशासन] १ जीव की शिक्षा एव समझ। २ इससे सम्बन्धित ग्र थ। (जैन)

जीवातक–वि० [स०] जीवो का हत्यारा, वधक, व्याध।

जीवा–स्त्री० [स०] १ सजीवनी। २ पृथ्वी। ३ धनुप की डोरी। ४ जीवन। ५ जल, पानी। ६ जीवनवृत्ति। ७ झकार, ध्वनि। ८ वृत्ताशो को मिलाने वाली रेखा।

जीवाउणौ (बौ), जीवाडणौ (बौ)–देखो 'जीवाणौ' (बौ)।

जीवाजीव–पु० [स०] १ जीव और अजीव पदार्थ। २ जीव अजीव समझने का उत्तराध्ययन का ३६वा अध्ययन।

जवाजूण (जोण)–पु० [सं०] जीवयोनि। प्राणी मात्र।

जीवाणौ (बौ)–क्रि० १ जिदा रखना सजीव, रखना। २ प्राण युक्त करना, जिलाना। ३ जिदगी कटवाना। ४ निर्वाह कराना। ५ होश मे लाना, चैतन्य करना। ६ चिताओं से मुक्त करना। ७ आराम देना। ८ कष्ट निवारण करना।

जीवात्मा–स्त्री० [सं०] किसी जीव की आत्मा, प्राण, चैतन्य तत्त्व।

जीवाद–पु० [स० जीव-आदि] जीव जतु, प्राणी।

जीवाधार–वि० प्राणो का अवलम्बन, परमप्रिय।

जीवापोतौ–पु० [स० पुत्र जीवक] पुत्र जीवक।

जीवारी–स्त्री० [स० जीव] १ जीविका, रोजी। २ जीवन, प्राण। ३ जिदा रहने का साधन। ४ निर्वाह, गुजारा।

जीवाळु(ळौ)–वि० [सं० जीव+आलुच्] (स्त्री० जीवाळी) १ साहसी, हिम्मतवर। २ जानदार, दमवाला। ३ तेज चलने वाला। –पु० प्राण, जीवन।

जीवावणौ (बौ)–देखो 'जीवाणौ' (बौ)।

जीवाहन–देखो 'जीमूतवाहन'।

जीवि–देखो 'जीवी'।

जीवित–वि० [स०] जो जिदा हो, जिसमे प्राण हो, जो जी रहा हो, सजीव चैतन्य।

जीवितेस–पु० [सं० जीवितेश] १ सूर्य। २ इन्द्र। ३ यम। ४ देह की इडा-पिंगला नाडी। ५ प्राण प्रिय।

जीविय–देखो 'जीवित'।

जीवियट्ठ–क्रि० वि० जीवन के लिये, जीवनार्थ। (जैन)

जीवियत–पु० जीवन का अन्त, जीवितान्त। (जैन)

जीवी–वि० [स०जीविन्] जीने वाला, प्राणवान, प्राणी, जीव। –पु० जीवन।

जीवेस–पु० [स० जीवेश] ईश्वर, परमात्मा।

जीवोपाधि–स्त्री० [स०] जीव की तीन अवस्थाएँ।

जीसा–पु० पिता, पिता के बड़े भाई के लिए उच्चारण किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द।

जीह–क्रि० वि० जहा।

जीहडा–स्त्री० घोडो की एक जाति।

जीहाळ–पु० १ बकरा। २ वकरे के रूप मे लिया जाने वाला कर।

जीहिंदिय–स्त्री० [स० जिह्वेन्द्रिय] जीभ, रसना। रसनेन्द्रिय

जीहूं, जीहूँ–क्रि० वि० जिस प्रकार, जैसे।

जीहे (हैं)–सर्व० जो, जिस।

जीहो–क्रि०वि० जैसा, जिस प्रकार।

जु–क्रि० वि० जैसे, ज्यो, जिस तरह।

जुंग्राड़ो–देखो 'जुग्रो'।
जुंग,जुंगडो,जुंगलो, जुंगु, जुंगो–१ देखो 'जग'। २ देखो 'जूंग'।
जुंजण–पु० [स० योजन] १ जोड़ने, सलग्न करने की क्रिया। २ योजन।
जुंजाउ (ऊ)–देखो 'जूंझाऊ'।
जुंजार–देखो 'जूंझार'।
जुंजावाण–वि० जूझने वाला, वीर।
जुंटो–पु० १ ग्राहता बनाने के लिए खडा किया हुग्रा पत्थर। २ एक छोटा पौधा विशेष।
जुंवाड़ो–देखो 'जुग्रो'।
जुंवारी–१ देखो 'जवारी'। २ देखो 'जुग्रारी'।
जुंही–क्रि०वि० जैसे, ज्योंही।
जु–ग्रव्य० १ सयोजक ग्रव्यय, कि, जो। २ पाद पूरक ग्रव्यय। ३ ग्रवधारण सूचक ग्रव्यय। –पु० [स० द्यूत] जुवा, द्यूत। –सर्व० जो।
जुग्र–१ देखो 'जुग'। २ देखो 'जुग्रो'। ३ देखो 'जो'।
जुग्रति (ती)–देखो 'जुवती'।
जुग्रळ (ळइ, ळि)–देखो 'जुगल'।
जुग्रांणी (नी)–देखो 'जवानी'।
जुग्रा–स्त्री० [स० द्यूत] १ द्यूत का खेल, द्यूत। २ छाछ मे ग्रगूठी डाल कर वर-वधू को खेलाया जाने वाला एक खेल। ३ जोखम। ४ देखो 'जुदा'।
जुग्राड़ो–पु० १ जेष्ठा नक्षत्र। २ देखो 'जुग्रो'।
जुग्राजुई–देखो 'जूवाजूवी'।
जुग्रार–१ देखो 'जुहार'। २ देखो 'जुग्रारी'। ३ देखो 'जवार'।
जुग्रारी–पु० [स० द्यूत-कारक] १ द्यूत का खिलाडी, जुग्रा खेलने वाला। [स० युगन्धर] २ बैल वृषभ। ३ देखो 'जवारी'।
जुग्राळी–वि० जुवान, युवा।
जुइ (ई)–स्त्री० [स० द्युति] १ शोभा, काति। २ ज्योति। ३ देखो 'जुही'। –वि० १ भिन्न, जुदा। २ देखो 'जुग्रो'।
जुग्रो-जुग्रा–देखो 'जुदाजुदा'।
जुग्रो–पु० [स० युग] १ बैलगाडी, हल ग्रादि का वह भाग जिसमे बैल जोते जाते है। [स० द्यूत] २ द्यूत का खेल। –वि० जुदा, पृथक, ग्रलग।
जुकत–१ देखो 'जुक्त'। २ देखो 'जुकती'।
जुकति (ती)–स्त्री० [स० युक्ति] १ उपाय, तरकीब। २ विधि, तरीका। ३ मार्ग दर्शन।
जुकाम–देखो 'जुखाम'।
जुक्त–वि० [स० युक्त] १ जुडा हुग्रा, मिला हुग्रा। २ सहित, संयुक्त।
जुखाम–पु० [ग्र०] ग्रधिक सर्दी या सर्द-गर्म से छाती मे कफ या श्लेष्मा जमने का रोग, जुखाम।
जुगत–देखो 'जुगांत'।
जुगतर–देखो 'जुगातर'।
जुग–पु० [स० युग] १ पुराणानुसार सृष्टि के चार युगो मे से कोई एक। २ ससार, विश्व। ३ समय, काल। ४ बृहस्पति का पाच वर्ष तक एक राशि मे रहने का समय। ५ पुश्त। ६ पीढी। ७ दो वस्तुग्रो का जोडा, युग्म। ८ यजुर्वेद। ९ पुरुष। १० एक वाद्य विशेष। ११ चार की सख्या॰। –वि० जुडा हुग्रा, युग्म। २ दो। ३ युक्त, सयुक्त। —ग्रंत–पु० प्रलयकाल, युगान्त। —ग्रंसक–पु० वर्ष साल युग का विभाजक। —पति (ती)–पु० चन्द्रमा।
जुगणी–देखो 'जोगणी'।
जुग(ति, ती)–स्त्री० [सं० युक्ति] १ विधि, ढग। २ उपाय, तरकीब। ३ कौशल, चतुराई। ४ मेल, योग। ५ तर्क, दलील। ६ तरह, भाति प्रकार। ७ यथार्थ, सत्य। ८ देखो 'जगत'।
जुगनी–स्त्री० विष्णु मूर्ति के शिर का ग्राभूषण।
जुगनू–पु० एक पतगा विशेष, खद्योत।
जुगपवर–पु० [सं० युग-प्रवर] किसी समय या काल विशेष का महान् व्यक्ति।
जुगपहांण–पु० [स० युग-प्रधान] ग्रपने युग का प्रधान पुरुष।
जुगपसा–स्त्री० [स० जुगुप्सा] निंदा, बुराई, घृणा।
जुगबाहु–पु० [स० युग-बाहु] जैनियों का नौवा तीर्थंकर। –वि० ग्राजानबाहु। (जैन)
जुगमधर–पु० एक जिनदेव।
जुगम–पु० [स० युग्म] १ दो वस्तु या प्राणियों का जोडा, युग्म। २ सम्मिलन, सगम। ३ यमज सतान। ४ दो की संख्या। ५ मिथुन राशि। –वि० १ दो, युग्म। २ यमज। –क्रि०वि० जोडे से।
जुगमित्त–पु० [स० युगमात्र] क्षेत्र से चार हाथ प्रमाण देखने वाला (जैन)।
जुगरांणि (णी)–स्त्री० १ नगर वधू, वेश्या। २ ससार की स्वामिनी, देवी, शक्ति।
जुगराज–पु० [सं० युवराज] युवराज।
जुगळ–वि० [स० युगल] १ दो, दोनो। २ पृथक, भिन्न, ग्रलग। –पु० १ जोडा, युग्म। २ दम्पति का जोडा। ३ चरण, पैर। ४ वस्त्र।
जुगळी–स्त्री० १ मित्र-मडली। २ जोडा, युगल। ३ समूह, झुण्ड।

जुगव, जुगव–ग्रव्य० [स० युगपत्] एक ही साथ, एक ही समय मे।
जुगवर–वि० [स० युगवर] युग मे श्रेष्ठ, उत्तम।
जुगात (क)–पु० [स० युगात] १ किसी युग का ग्रन्त। २ प्रलय काल। ३ ४९ क्षेत्रपालो मे से एक।
जुगातर–पु० [स० युगातर] दूसरा युग, दूसरा जमाना।
जुगावाळी–स्त्री० ग्रनादि काल से बाल्यावस्था मे रहने वाली देवी।
जुगाड–पु० १ व्यवस्था, प्रवध। २ साधन जुटाने की मुश्किल।
जुगात–स्त्री० श्राद्ध पक्ष की चतुरदशी की तिथि।
जुगाद(दि, दी, दु)–पु० [स० युगादि] १ युग का ग्रादि, प्रारभ। २ सृष्टि का ग्रारभ। ३ ग्रतिप्राचीन। ४ युग के प्रारभ की तिथि। –क्रि०वि० परम्परा से, ग्रनादि काल से।
जुगाळ–१ देखो 'जुगळ'। २ देखो 'जुगाळी'।
जुगाळणौ (बौ)–क्रि० [स० उद्गिलन्] मवेशियो द्वारा जुगाली करना, उगालना।
जुगाळी–स्त्री० [स० उद्गाली] मवेशियो द्वारा निगले हुए चारे को धीरे-धीरे चबाने की क्रिया, रोमथ, पागुर।
जुगि–देखो 'जुग'।
जुगेस–पु० [स० युग-ईश] १ ईश्वर, परमात्मा। २ देखो 'जोगेस'।
जुगोजुग–ग्रव्य० [स० युगोयुग] प्रतियुग, युग-युग।
जुग्ग–देखो 'जुग'।
जुग्गादि–देखो 'जुगादि'।
जुड, जुड़ण (णि, णी)–पु० युद्ध, सग्राम।
जुडणौ (बौ)–क्रि० १ होना। २ सबध होना, बनना। ३ भिडना, टक्कर लेना। ४ ग्रडना, सटना। ५ सलग्न होना। ६ जोड मे ग्राना। ७ एकत्र होना। सम्मिलित होना। ८ शामिल होना, सरीक होना। ९ जमा होना। १० चिपकना, चिमटना। ११ ग्रालिगनवद्ध होना। १२ परस्पर वधना। १३ मिलकर एकाकार होना। १४ बद करना। सटाना, भिडाना। १५ युद्ध करना। १६ सभोग करना, मैथुन करना। १७ धारण करना, पहनना। १८ व्यवस्था होना, प्रबध होना। १९ उपलब्ध होना। २० गाडी मे बैलो का जुतना। २१ ग्रभिसधित होना, एक मत होना।
जुडवाई–देखो 'जोडाई'।
जुडवौ–वि० युग्म, मिला हुग्रा। –क्रि०वि० जोडे से।
जुडाई–देखो 'जोडाई'।
जुडाणौ (बौ), जुडावणौ (बौ)–क्रि० १ सबध बनवाना, करवाना। २ भिडाना, टक्कर लिराना। ३ ग्रडाना, सटाना। ४ सलग्न कराना। ५ जोड मे लाना। ६ एकत्र कराना। ७ सम्मिलित कराना, शामिल कराना, सरीक कराना। ८ जमा कराना। ९ चिपकवाना, चिमटवाना। १० ग्रालिगनबद्ध कराना। ११ परस्पर वधवाना। १२ मिलवाना, एकाकार कराना। १३ बद कराना, सटवाना। १४ युद्ध कराना। १५ धारण कराना, पहनवाना। १६ व्यवस्था कराना, प्रवध कराना। १७ गाडी मे बैलो को जुतवाना। १८ मतैक्य कराना, ग्रभिसधित कराना।
जुज–स्त्री० १ जिल्दवधी मे एक प्रकार की सिलाई। २ छपे कागजो का फर्मा। ३ शतरज की एक चाल विशेष। —बदी, बंधी–स्त्री० पुस्तको की जिल्द बाधने की एक विधि।
जुजटळ, जुजठर, जुजठळ, (राग्रो) जुजठिर (ठिळ, ठिल्ल),
जुजयर (थिर)–देखो 'जुधिस्ठर'।
जुजमाण–देखो 'जजमान'।
जुजरवौ–पु० १ तोपनुमा एक ग्रस्त्र। २ छोटी तोप।
जुजवळ, जुजवौ–वि० जुदा, ग्रलग, पृथक्।
जुजसटळ (स्टळ, स्ठळ)–देखो 'जुधिस्ठर'।
जुजांण–पु० युद्ध।
जुजायळची–पु० 'जजायल' नामक वदूक धारी।
जुजिठळ, जुजिठिळ (ठिळि) जुजिस्टळ, जुजिस्तर, जुजीठळ, जुजीस्टर, जुजीस्टळ, जुजुठळ, जुजुठल्ल–देखो 'जुधिस्ठर'।
जुजुधान–पु० [स० युयुधान] १ सात्यकि का एक नाम (महाभारत)। २ इन्द्र। ३ क्षत्रिय। ४ योद्धा।
जुंज्ज–१ देखो 'जुज'। २ 'जजुरवंद'।
जुज्जर, जुज्जुर–देखो 'जजुरवेद'।
जुज्झ–देखो 'जुध'।
जुज्झण–वि० [स० योधन] युद्ध मे जू झने वाला।
जुज्झणौ (बौ)–देखो 'जू झणौ' (बौ)।
जुज्झाइजुज्झ–पु० [स० यद्धातियुद्ध] द्वन्द्वयुद्ध (जैन)।
जुज्रबौ–देखो 'जुजरवौ'।
जुज्राट–देखो 'जजराट'।
जुझक–स्त्री० स्फूर्ति, फुर्ती।
जुझाऊ–देखो 'जु झाऊ'।
जुझार–देखो 'जू झार'।
जुट–स्त्री० १ परस्पर जुडी या बधी दो वस्तु। २ जोडी। ३ मडली, गुट। ४ समूह। ५ ग्रति मेल वाले दो मनुष्य। ६ जोड का ग्रादमी या वस्तु। ७ साथ। ८ मेल-जोल।
जुटणौ (बौ)–देखो 'जूटणौ' (बौ)।
जुटाडणौ (बौ), जुटाणौ (बौ)–क्रि० १ किसी कार्य मे रत करना, सलग्न करना, लगाना। २ परस्पर मजबूती से

जोडना। ३ सटाना, सटा कर रखवाना। ४ भिडाना। ५ युद्ध कराना। ६ आलिंगन कराना, लिपटाना। ७ संभोग के लिए प्रेरित करना। ८ शामिल करना, बातचीत कराना, मिलाना। ९ एकत्र करना, इकट्ठा करना। १० व्यवस्था व प्रबंध करना। ११ जमा करना, जुटाना। १२ प्राप्त व उपलब्ध करना। १३ अभिसंधि कराना, मतैक्य कराना। १४ भीड जमा करना।

जुटाळ (ळौ)–वि० युद्ध मे जूझने या भिडने वाला।

जुटावणौ (बौ)–देखो 'जुटाणौ' (बौ)।

जुटी–स्त्री० बैलो की जोडी।

जुटैत–वि० जूझने वाला।

जुतणौ (बौ)–क्रि० [सं० युज्] १ बैल, घोडे, ऊट आदि का किसी वाहन, हल आदि के आगे जुडना। २ कार्य मे पूर्ण मनोयोग से लगना। ३ सहयोग मे लगना। ४ भिडना, लडना। ५ भूमि का जोता जाना।

जुतबेध–पु० [स० युतवेध] ज्योतिष का एक योग।

जुताई–देखो 'जोताई'।

जुताडणौ (बौ), जुताणौ (बौ), जुतावणौ (बौ)–क्रि० १ बैल, घोडे, ऊट आदि को किसी वाहन, हल आदि के आगे जुडवाना। २ किसी कार्य मे लगाना, संलग्न कराना। ३ सहयोग मे लगाना। ४ लडाना, भिडाना। ५ भूमि या खेत जुतवाना, जुताई कराना।

जुति–स्त्री० [सं० द्युति] १ कांति, आभा। २ शोभा। (जैन) ३ देखो 'जुक्त'।

जुत्त–देखो 'जुक्त'।

जुत्तसेण, जुत्तिसेण–पु० [स० युक्तिषेण] जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र का आठवा तीर्थंकर।

जुत्थ, जुथ, जुथ्थ–देखो 'जूथ'।

जुथप–देखो 'जूथप'।

जुद–देखो 'जुध'।

जुदाई, जुदायगी–स्त्री० [फा०] १ मिलने का विपर्याय। २ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव। ३ विछोह, वियोग। ४ पार्थक्य।

जुदासिध–पु० [स० युद्धसिद्ध] बलदेव।

जुदौ–वि० [फा० जुदा] (स्त्री० जुदी) १ पृथक, अलग, भिन्न। २ अतिरिक्त, अलावा। ३ विरक्त, मुक्त, तटस्थ।

जुद्ध–देखो 'जुध'।

जुद्धल–वि० युद्ध मे प्रवृत्त।

जुद्धस्थिर–देखो 'जुधिस्ठर'।

जुद्धाइजुद्ध–पु० [स० युद्धातियुद्ध] दारुण व भयकर युद्ध। (जैन)

जुध–पु० [स० युद्ध] संग्राम, लडाई, युद्ध, समर। —**जय**–पु० हाथ। —**बध**–पु० युद्ध के नियमो को जानने वाला योद्धा। —**बाहु**–पु० मल्लयुद्ध। —**राव**–पु० योद्धा, वीर। —**विद्या**–स्त्री० रणविद्या।

जुधसटर, (स्टर)–देखो 'जुधिस्ठर'।

जुधाजित–पु० [स० युधाजित] कैकेयी के भाई का नाम।

जुधिठळ(ठिळ), जुधिस्टर, जुधिस्ठर (स्थिर)–पु० [स०युधिष्ठिर] पाच पाडवो मे से सबसे बडा पाण्डव। युधिष्ठर।

जुन–स्त्री० झूल, चारजामा।

जुनाळी–वि० प्राचीन, पुरानी।

जुनीक्रपीठ–स्त्री० [स० कृपीटयोनि] अग्नि, आग।

जुनीगुजरात–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

जुन्हा, जुन्हाई–स्त्री० [स० ज्योत्स्ना] १ चादनी, ज्योत्स्ना। २ प्रकाश, रोशनी।

जुपणौ (बौ)–क्रि० १ दीपक का प्रज्वलित होना। २ सुलगना, जलना। ३ देखो 'जुतणौ' (बौ)।

जुपाणौ (बौ), जुपावणौ (बौ)–क्रि० १ दीपक को प्रज्वलित कराना। २ सुलगवाना, जलवाना। ३ देखो 'जुताणौ' (बौ)।

जुबती–स्त्री० [स० युवती] तरुण या युवा स्त्री, युवती।

जुबान–१ देखो 'जवान'। २ देखो 'जबान'।

जुबानी–१ देखो 'जवानी'। २ देखो 'जबानी'।

जुब्बन–देखो 'जोबन'।

जुमले (लै)–वि० एक मुश्त। –पु० कुल योग।

जुमल्ला–वि० साथ।

जुमामसजित (मस्जिद)–देखो 'जामामस्जिद'।

जुमालि (ली)–पु० एक प्रकार का घोडा।

जुमेरात–पु० वृहस्पतिवार (मुसलमान)।

जुमै (म्मै)–क्रि० १ अधीन, वश मे। २ उत्तरदायित्व मे, जिम्मेवारी मे।

जुमो (म्मो)–पु० १ शुक्रवार (मुसलमान)। २ उत्तरदायित्व। ३ किसी पीर के नाम पर किया जाने वाला रात्रि जागरण।

जुय–पु० [स० युग] पाच वर्ष का समय। (जैन)

जुर–पु० [सं० ज्वर] १ निरन्तर रहने वाला हल्का बुखार, ज्वर। २ देखो 'जर'।

जुरक्क–स्त्री० १ चोट, आघात, प्रहार। २ झटका।

जुरडी–पु० काटो की बाड के बीच बना रास्ता। २ देखो 'सेरी'।

जुरठ–देखो 'जरठ'।

जुरणौ (बौ)–क्रि० १ याद करना। २ याद मे रोना, विरह करना। ३ देखो 'जुडणौ' (बौ)।

जुरती–स्त्री० आवश्यकता, जरूरत।

जुरम–पु० [अ० जुर्म] १ अपराध, दोष, गलती। २ चोरी, डकैती आदि के कार्य। —**पेसा**–पु० चोर, डकैत, गुण्डा अपराधी।

जुरमानौ–पु० [फा० जुर्माना] सजा के रूप मे वमूल किया गया धन, अर्थ दण्ड ।
जुररौ–पु० [अ० जर्राह] १ शल्य चिकित्सक । २ बाज या शिकारी पक्षी।
जुरा–देखो 'जरा' ।
जुराधीस-पु० [स० जराधीश] कामदेव।
जुराफ–देखो 'जिराफ' ।
जुरारि (री)–पु० [स० ज्वर+अरि] १ ताप या ज्वर नाशक औषधि । २ ईश्वर ।
जुराळ–वि० १ गहरा । २ बहुत ।
जुरासद (सध, सिंध, सिंधि, सींद)–देखो 'जरासध' ।
जुळ–वि० पृथक, भिन्न, अलग । –स्त्री० हल्की खुजली ।
जुळकरणौ (बौ)–क्रि० टकटकी लगाकर देखना ।
जुळख–वि० व्याकुल, आतुर ।
जुळगौ–पु० जलाशय के आस-पास का घास का मैदान ।
जुळणौ(बौ)–क्रि० १ मदगति से चलना, विचरण करना । २ गमन करना, जाना । ३ सयोग होना, योग बनना । ४ मिलना । ५ हलचल करना, हरकत करना । ६ प्रज्वलित होना । ७ स्पर्श होना । ८ हल्की सी खुजली होना, गुदगुदी होना ।
जुलफ-स्त्री० बालो की लट, अलक ।
जुलफकार–स्त्री० [स० जुल्फिकार] हजरत अली की तलवार का नाम ।
जुलम–पु० [स० जुल्म] १ अत्याचार । २ अपराध । ३ अन्याय अनीति । ४ जघन्य कार्य ।
जुलमांणौ,जुलमी–वि० अत्याचारी, आततायी, जुलमी ।
जुळाणौ (बौ)–क्रि० १ मदगति से चलाना, विचरण कराना । २ गमन कराना, भेजना । ३ सयोग बैठाना । ४ मिलाना । ५ हलचल कराना । ६ प्रज्वलित करना । ७ स्पर्श कराना । ८ सहलाना ।
जुलाब–पु० [अ० जुल्लाब] १ दस्तावर दवा । २ दस्त, रेचन ।
जुलाळ–स्त्री० एक प्रकार की बडी बन्दूक ।
जुलाहा (ल्लाहा)–स्त्री० [फा०जौलाह] कपडे बुनने का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति ।
जुलाहौ (ल्लाहौ)–पु०उक्त जाति का व्यक्ति ।
जुळूस–देखो 'जळूस' ।
जुल्फ–देखो 'जुलफ' ।
जुवगव–पु० [स युवगव] तरुण बैल । (जैन)
जुव–वि० [स० युवन्] युवा, तरुण । (जैन)
जुवइ–देखो 'जुवती' ।
जुवक–पु० [स युवक] नौजवान, युवक, तरुण ।
जुवति (ती)–स्त्री० [स० युवती] युवा स्त्री, युवती, तरुणी ।
जुवनासव–पु० [स० युवनाश्व] एक सूर्यवशी राजा का नाम ।
जुवरज्ज–पु० [स० यौवराज्य] १ राजा के मरणोपरान्त युवराज का अभिषेक होने तक का समय । २ युवराज का राज्याभिषेक होने मे दूसरे युवराज की नियुक्ति होने तक का समय । ३ युवराजत्व । ४ देखो 'जुवराज' ।
जुवराज, जुवराजकुमार, जुवराय–पु० [सं० युवराज] किसी राजा का ज्येष्ठ पुत्र व राज सिंहासन का उत्तराधिकारी ।
जुवळ–१ 'जूआ' । २ देखो 'जुगळ' ।
जुवलिय–क्रि०वि० [स० युगलित] युग्य रूप से, युग्म से ।
जुवाण (न)–१ देखो 'जवान' । २ देखो 'जवान' ।
जुवाणी (नी)–स्त्री० १ छलाग, कुलाच । २ देखो 'जवानी' । ३ देखो 'जवानी' ।
जुवाडौ–देखो 'जुओ' ।
जुवाब–देखो 'जवाब' ।
जुवारी–१ देखो 'जुआरी' । २ देखो 'जंवारी' ।
जुसिअ, जुसिय–वि० [स० जुष्ट] प्रसन्न (जैन) ।
जुसोई–स्त्री० [स० सेवायाम] आज्ञा, आदेश ।
जुहर–देखो 'जोहर' ।
जुहल–पु० युद्ध ।
जुहविडार–वि० सेना का संहार करने वाला ।
जुहार–पु० [स० युगधार] १ अभिवादन, नमस्कार । २ हीरा, पन्ना आदि जवाहरात । ३ जौहरी । ४ नैवेद्य । ५ पूजा, अर्चना, विनय । ६ मनौती, मानता । ७ जवाहिर । ८ वीरगति प्राप्त योद्धा जो पीर माना जाता हो । ९ देखो 'जवारी' । १० देखो 'जवार' ।
जुहारडा (डौ)–देखो 'जुहार' ।
जुहारणौ (बौ)–क्रि० १ अभिवादन करना, नमस्कार करना । २ पूजा करना, अर्चना करना । ३ प्रसाद चढाना । ४ मनौती मनाना ।
जुहारा–१ देखो 'जंवारा' । २ देखो 'जुहार' ।
जुहारि (री)–१ देखो 'जवारी' । २ देखो 'जुहार' ।
जुहिय, जुही–स्त्री० [स० यूथिका] सुगधित सफेद फूलो वाला एक पौधा व इसका फूल ।
जू–स्त्री० [स० यूका] १ मैल व पसीने से बालो मे उत्पन्न होने वाला एक कीडा जो कपडो मे भी फैल जाता है । २ देखो 'जुओ' ।
जूंअडौ–देखो 'जुओ' ।
जूंअरो–पु० १ घास का मैदान । २ देखो 'जुओ' ।
जूंआड़ौ–देखो 'जुओ' ।
जूंग, जूंगडौ, जूंगालौ, जूंगौ–पु० [स० जाधिक] १ ऊट, उष्ट्र । २ श्रावक ।

जूंजणौ (बौ)–देखो 'जूंझणौ' (बौ)।

जूंजळ–देखो 'जूंझळ'।

जूंजळी–स्त्री० एक प्रकार की घास जिसकी बुहारी बनती है। –वि० मद गति से काम करने वाली।

जूंजळौ–पु० गोवर आदि मे पैदा होने वाला एक भृंग-कीट। –वि० (स्त्री० जूंजळी) धीमी गति से काम करने वाला।

जूंजाऊ–देखो 'जूंझाऊ'।

जूंजार–देखो 'जूंझार'।

जूंझ–देखो 'जुध'।

जूंझणौ (बौ)–क्रि० [स० युद्ध] १ युद्ध करना, युद्ध मे जूंझना। २ किसी महान् कार्य के करने मे कठोर परिश्रम करना। ३ कोई महान कार्य करना।

जूंझमड, जूंझमल्ल–वि० योद्धा, वीर, सुभट।

जूंझळ, जूंझळाट–स्त्री० झुंझलाहट, क्रोध का आवेग।

जूंझाऊ–वि० [स० यौद्धिक] १ युद्ध सबधी, युद्ध का। २ वीर रस पूर्ण। ३ कठोर परिश्रम का।

जूंझार–वि० [स० युद्धकार] १ परोपकार के लिए युद्ध मे वीर गति प्राप्त करने वाला। २ पीर। ३ शक्तिशाली। ४ वीर योद्धा।

जूंट–देखो 'जूट'।

जूंठौ–पु० १ ज्वार बाजरे आदि का जड सहित उखाडा हुआ पौधा। २ उक्त पौधे की जड।

जूंण (न)–स्त्री० [स० योनि] १ जन्म। २ योनि, जीव योनि। ३ जीवन, जिन्दगी। ४ शरीर, देह। [देशज] ५ मूंज या घास की बनी छोटी रस्सी। ६ कच्चे मकान की छाजन मे ऐसी रस्सी से लगाया हुआ बध। ७ ऊंट को खिलाया जाने वाला मास। ८ ऊंट के पैरो का ऊपरी भाग। ९ ऊंट के बैठने का एक ढग। १० खाट की बुनाई के मध्य के ताने। ११ मरुस्थल मे होने वाला खीप नामक पौधा। १२ इस पौधे से बनी रस्सी।

जूंनौ–देखो 'जूनौ'। (स्त्री० जूंनी)

जूंबरिक–पु० [स० जवूरक] छोटी, तोप।

जूंवाड़ौ–देखो 'जुऔ'।

जूंसर (रू), जूसहरी, जूसारी–देखो 'जूसर'।

जूंहर–देखो 'जौहर'।

जू–पु० १ हरिभक्त, हरिजन। २ मित्र। ३ राक्षस। ४ आकाश। ५ वाक्य। ६ साप, नाग। ७ देखो 'जुआ। –वि० जीर्ण-शीर्ण, पुराना, अति प्राचीन। –क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी। जो कि। –सर्व० १ जो। २ देखो 'जुऔ'।

जूअउट्टम (उ)–देखो 'जूवटु'।

जूअडौ–देखो 'जुऔ'।

जूअळ–पु० १ कदम, डग, पैंड। २ पाव, पैर। ३ देखो 'जुगल'।

जूआड़ौ–देखो 'जुऔ'।

जूआर–१ देखो 'जुहार'। २ देखो 'जवार'।

जूआरउ (रत, री)–देखो 'जुवारी'।

जूआरीपणौ–पु० [स० द्यूतकरित्व] जुआ खेलने का कार्य।

जूई–देखो 'जुई'।

जूउ–देखो 'जुऔ'।

जूउ–वि० [स०युत] १ सहित, साथ। २ सम्पन्न।

जूऔ–पु० १ हस। २ देखो 'जुऔ'। ३ देखो 'जुदौ'।

जूड़णौ (बौ)–१ देखो 'जुडणौ' (बौ)। २ देखो 'जोडणौ' (बौ)

जूडाजूड़–वि० सघन, घना।

जूडियौ–पु० ऊट या बकरी के बालो की बनी रस्सी।

जूडी–स्त्री० १ तबाखू के पत्तो का छोटा पूआल। २ शीत लगकर आने वाला ज्वर।

जूडौ–पु० १ स्त्रियो के शिर के बालो की मोटी गाठ। २ एक साथ बधे दो पशु। ३ पशुओ के पैर बाधने की रस्सी। ४ देखो 'जुऔ'। ४ देखो 'जोडौ'।

जूज–१ देखो 'जुध'। २ देखो 'जुज'।

जूजओ (वौ)–देखो 'जूजुओ'।

जूजाऊ–देखो 'जूंझाऊ'।

जूजार–देखो 'जूंझार'।

जूजिआर (यार), जूजीयार–पु० [सं० युद्धकार] योद्धा, सुभट, बहादुर।

जूजुओ जूजुवो, जूजूउ (ओ, यौ, वौ)–वि० [स० युतायुत] (स्त्री० जूजुइ, जूजुई, जूजुवी जूजूइ जूजूई, जूजूवी) पृथक, भिन्न, अलग।

जूझ–देखो 'जुध'।

जूझणौ (बौ)–देखो 'जूंझणौ' (बौ)।

जूझार–देखो जूंझार'।

जूट–पु० [स०] १ समूह। २ समुदाय। ३ पटसन, वस्त्र। ४ बैलो की जोडी। ५ जोडी, युग्म।

जूटणौ (बौ)–देखो 'जूटणौ' (बौ)।

जूठउ–देखो 'जूठौ'।

जूठन–स्त्री० १ खाते-खाते छोडा हुआ पदार्थ। २ उच्छिष्ट भाग। –वि० व्यवहार या काम मे लिया हुआ। भुक्त।

जूठलौ, जूठिलु, जूठिलौ (ल्लु)–१ देखो 'जुधिस्ठर'। २ देखो 'जूठौ'।

जूठौ–वि० [स० जुप् जुष्ठ] (स्त्री० जूठी) १ खाने से बचा हुआ, खाते-खाते छोडा हुआ। २ व्यवहार मे लाया हुआ, भोगा हुआ। –पु० १ खाते समय छोडा हुआ खाना, अवशिष्ट खाना। २ देखो 'झूठौ'।

जूण, जूणिम–देखो 'जू ण'।
जूत, जूतड़– १ देखो 'जूतौ'। २ देखो 'जुत'।
जूतणौ (बौ)–देखो 'जुतणौ' (बौ)।
जूताखोर–वि० १ जूतो से मार खाने का आदि। २ बेशर्म, निर्लज्ज।
जूती, जूतीड़, जूतौ–पु० [स० युक्त] पावो मे पहने की चमडे आदि की पगरक्षकी, उपानह पादत्राण, बूंट, जूता। –वि० युक्त, साथ, सहित।
जूथग, जूथ–पु० [स० यूथ] १ समूह, झुण्ड, यूथ। २ समुदाय। ३ दल, सेना। —नाथ, प, पत, पति, पती, पाळ—पु० सेनापति, दल-नायक।
जूथका–स्त्री० [स० यूथिका] सोन जुही।
जूथप–पु० [स० यूथप] १ समूह, दल। २ सेनापति।
जूथार–पु० हाथी।
जूनउ, जूनु–देखो 'जूनौ'। (स्त्री० जूनी)
जूनेजा–स्त्री० सिंधी मुसलमानो की एक शाखा।
जूनोड़ौ, जूनौ–वि० [स० जीर्ण] १ पुराना, प्राचीन। २ जीर्ण-शीर्ण, टूटा-फूटा, जर्जर। ३ बुड्ढा, वृद्ध। —देव—पु० महादेव, शिव।
जूप–पु० [स० यूप] पशु बलि करने का स्थान।
जूपणौ–वि० (स्त्री० जूपणी) १ जुतने वाला। २ प्रज्वलित होने वाला।
जूपणौ (बौ)–१ देखो 'जुतणौ' (बौ)। १ देखो 'जुपणौ' (बौ)।
जूय–पु० [स० यूप] १ यज्ञ-स्तभ। २ हाथ-पावो का सामुद्रिक चिह्न विशेष।
जूयढइ–पु० [स० द्यूत] जूआ, द्यूत (जैन)।
जूया–पु० [स० यूका] १ जू, यूका (जैन)। २ देखो 'जूवा'।
जूर–देखो 'हजूर'।
जूल–देखो 'झूल'।
जूलसाई–स्त्री० १ सामग्री। २ तैयारी।
जूवटउ, जूवटु, जूवट्ट (टौ)–पु० [सं० द्यूत-वृत्तकम्] १ द्यूत, जुआ। २ देखो 'जुऔ'।
जूवण, (णु, णू)–देखो 'जोबन'।
जूवताइ (ई)–स्त्री० १ युवती। २ युवापन, जवानी।
जूवळ–पु० [स० युगल] पैर, चरण। –वि० दोनो, युगल।
जूवाण, जुवान–देखो 'जवान'।
जूवा–वि० [स० युवा] १ युवा, जवान। २ पृथक, अलग। भिन्न। ४ देखो 'जूवाजूवी'।
जूवाछवी–स्त्री० परात मे छाछ भरकर उसमे चादी का छल्ला डाल कर वर-वधू को खेलाया जाने वाला एक खेल।
जूवाडो–देखो 'जुऔ'।
जूवारी–देखो 'जुवारी'।
जूसण (णौ)–पु० [सं०युध, फा० जोशन] १ कवच। २ आवरण। –वि० १ लिपटा हुआ, चिपका हुआ। २ आवेष्टित।
जूसणा–स्त्री० १ सेवा (जैन)। २ देखो 'जूसर'।
जूसर–पु० [स० युग-सर] १ जूआ। २ कवच।
जूसरणौ (बौ)–क्रि० १ कवच पहनना। २ बैलो के कधो पर जुआ रखना।
जूहणौ (बौ)–क्रि० युद्ध करना, जूझना।
जूहवइ–पु० [स० यूथपति] १ यूथपति (जैन)। २ गौ वर्ग का स्वामी (जैन)।
जूहार–देखो 'जुहार'।
जूहारणौ (बौ)–क्रि० अभिवादन करना।
जूहारी–१ देखो 'जुआरी'। २ देखो 'ज वारी'। ३ देखो 'जवार'।
जूहिय, जूहिया–देखो 'जूही'।
जूही–देखो 'जुही'।
जे–पु० १ बेटा, पुत्र। २ समूह। ३ सिंह। ४ टाड। –क्रि०वि० [सं० यदि] १ यदि, अगर, जो। २ सयोजक अव्यय। ३ क्योकि। –सर्व० १ वह, वे, जो। २ जिस।
जेई–स्त्री० मोटी लकडी के एक शिरे पर लकडी के दो सींग लगाकर बनाया हुआ एक कृषि उपकरण।
जेउ–सर्व० जिस। –अव्य० षष्ठी विभक्ति, के।
जेखल–पु० [सं० ज्यास्खल] सूअर, शूकर।
जेखाधीस–पु० [स० यक्षाधीश] कुबेर।
जेज–स्त्री० १ विलम्ब, देरी। २ समय, अवधि। ३ किसी कार्य की पूर्णता के लिए अवशिष्ट समय।
जेजैकार–देखो 'जैजैकार'।
जेझ–देखो 'जेज'।
जेझळ–स्त्री० ज्वाला, आग।
जेट–स्त्री० १ तह पर तह किया हुआ वस्तुओ का ढेर, समूह, राशि। २ गड्डी। ३ आवृत्ति। ४ देखो 'जेठ'।
जेटणौ (बौ)–क्रि० १ तह पर तह लगाकर रखना। २ खूब खाना। ३ जमाना।
जेटौ–पु० समूह, ढेर।
जेट्टा, जेट्ठा–देखो 'जेस्ठा'।
जेट्ठामूल, जेट्ठामूळमास–पु० ज्येष्ठ मास।
जेट्ठामूळी–स्त्री० ज्येष्ठमास की पूर्णिमा।
जेठ (ठौ)–पु० [सं० ज्येष्ठ] (स्त्री० जेठाणी, नी) १ पति का बडा भाई। २ ज्येष्ठ मास। ३ ज्येष्ठा नक्षत्र। –वि० बडा, ज्येष्ठ, अग्रज।
जेठळ (ल)–पु० [स० ज्येष्ठ] १ ज्येष्ठ भ्राता, बडा भाई। २ देखो 'जेठ'। ३ देखो 'जुधिस्ठर'।
जेठा–देखो 'जेस्ठा।

जेठाई–स्त्री० १ बडाई, बडप्पन। २ ज्येष्ठता। ३ बडे भाई का वशज।

जेठि, जेठिय, जेठी–वि० [स० ज्योष्ठिन्] १ बडा, ज्येष्ठ। २ ज्येष्ठ मास सवधी। –पु० १ ज्येष्ठ भ्राता, बडा भाई। २ पहलवान, मल्ल।

जेठीपाथ, (पारथ, पाराथ)–पु० अर्जुन का बडा भाई युधिष्ठिर, भीम।

जेठीमधु–स्त्री० [स० यष्टिमधु] मुलैठी, मीठी-काठी।

जेठीमल–पु० [स० जेष्ठमल्ल] योद्धा, वीर, पहलवान।

जेठूतौ–देखो 'जेठूतौ'।

जेठूत, जेठूतरौ, जेठूतौ (त्रौ)–पु० [स० ज्येष्ठ+पुत्र] (स्त्री० जेठूतरी, जेठूती, जेठूत्री) पति का भतीजा, जेठ का पुत्र।

जेडणौ (बौ)–क्रि० विलवकरना, देरी करना।

जेण, जेणि, जेणी–सर्व० [स० य, येन] १ जो, जिस, जिससे, जिसने। २ उन, उन्होंने, वे –क्रि० वि० जहा।

जेत–देखो 'जेथ'।

जेतळइ (लई, लइ, लई)–क्रि० वि० जव तक, तब तक, इतने में। –वि० (स्त्री० जेतळी) इतना, जितना।

जेतलउ जेतळु (ळू, लौ)–वि० (स्त्री० जेतली) जितना।

जेति–देखो 'जेथ'।

जेतिय, जेती–वि० १ जितनी। २ देखो 'जेथ'।

जेते (तै)–क्रि० वि० १ जब तक। २ देखो 'जेथ'।

जेत्राई–देखो 'जैत्राई'।

जेथ, (थि, थी, थे, थै)–क्रि० वि० [सं० यत्र] जहा, जिस जगह। वहा।

जेब–स्त्री० [अ०] १ सिले हुए वस्त्र आदि मे वनी छोटी थैली, खीसा। [फा०] २ शोभा, सौंदर्य। —**कट**–पु० जेव कतरा, चोर। —**खरच**–पु० निजी खर्च, हाथ खर्च। —**घड़ी**–स्त्री० जेव मे रखने की छोटी घडी।

जेबि (बी)–वि० [अ०] १ जेव का, जेव संववी। २ जेव मे रहने लायक, छोटा। ३ सुन्दर।

जेम–क्रि० वि० [स० येम] १ ऐसे, इस प्रकार, जैसे, जिस प्रकार। २ ज्यो, ज्योहि। –वि० समान, तुल्य।

जेमण–देखो 'जीमण'।

जेमिणि (णी)–देखो 'जैमिनी'।

जेयार–वि० [स० जेतृ] जीतने वाला। –क्रि० वि० जव।

जेर–वि० [फा०] १ परास्त, पराजित। २ मजवूर, विवश। ३ वश व कावू मे। ४ बहुत तग किया हुआ। ५ मजवूत बाधा हुआ। –स्त्री० गर्भस्थ शिशु पर रहने वाली झिल्ली।

जेरणौ (बौ)–क्रि० १ परास्त करना, पराजित करना। २ मजवूर करना विवश करना। ३ वश मे करना। ४ अत्यधिक तग करना। ५ मजवूत बाधना।

जेरदस्त–वि० [फा०] १ अधीन, वशवर्ती। २ परास्त, पराजित।

जेरपाई–स्त्री० [फा०] स्त्रियो के पैर की हल्की जूती।

जेरबद (बध)–पु० [फा०] घोडे के अगले पावो में बाधा जाने वाला कपडे या चमडे का तस्मा।

जेरबाद–पु० [फा०] घोडे का एक रोग विशेष।

जेरबार–वि० [फा०] १ विपत्तिग्रस्त। २ तग, परेशान, दुखी। ३ क्षतिग्रस्त।

जेरबारी–स्त्री० [फा०] दुखी होने की क्रिया।

जेरांणी–स्त्री० मृत व्यक्ति के पीछे गाया जाने वाला शोक सूचक लोकगीत।

जेराजेर–पु० १ हाकी का खेल। २ देखो 'जेर'।

जेरीबरिया–पु० एक प्रकार का पका हुआ मास।

जेळ–स्त्री० १ कैद, वदीगृह। २ कैद मे रखने की सजा। ३ इस सजा की अवधि। ४ खेल के मैदान की सीमा। ५ अतिम छोर। ६ लक्ष्यस्थान। ७ एक प्रकार का खेल। —**खानौ**–पु० वदीगृह।

जेलड–पु० एक प्रकार का आभूषण।

जेळणौ (बौ)–क्रि० १ भेजना। २ बरावर करना।

जेळवड़ी–स्त्री० हाकी की तरह का एक प्रकार का देशी खेल।

जेळियौ–पु० १ एक शिरे से मुडा हुआ खेलने का डडा। २ खेल के मैदान का छोर। —**वोटौ**–पु० उक्त खेल मे गोल की तरफ गेंद फेंकने की क्रिया।

जेवड़ी–स्त्री० रस्सी। –वि० जैसी।

जेवड़ौ, जेवडउ, जेवडौ–पु० १ वडा रस्सा। २ तोरण पर सासु द्वारा दूल्हे को आचल से बाधने की एक रस्म। –वि० [स०यावत] जैसा। जितना।

जेवर–पु० [फा०] आभूषण, गहना, अलकार।

जेवलौ–देखो 'जेई'।

जेवहो–वि० (स्त्री० जेवही) जैसा।

जेवा–क्रि० वि० जैसे, जिम प्रकार।

जेवाल्यौ–देखो 'जेई'।

जेवौ–वि० (स्त्री० जेवी) जैसा।

जेस–पु० वारहवीं वार उलट कर तैयार किया हुआ शराव।

जेसटास्रम, जेसठास्रम–देखो 'जेस्ठास्रम'।

जेसौ–क्रि० वि० १ इस, प्रकार, ऐसे। २ देखो 'जैसौ'।

जेस्टसुर–देखो 'जेस्ठसुर'।

जेस्टा–देखो 'जेस्ठा'।

जेस्टास्रम–देखो 'जेस्ठास्रम'।

जेस्टी, जेस्टौ, जेस्ठ–वि० [स० ज्येष्ठ] वडा, अग्रज । –पु० वडा भाई । पति का वडा भाई । —सुर–पु० ब्रह्मा ।

जेस्ठा–स्त्री० [स० ज्येष्ठा] सत्ताईश नक्षत्रो मे से अठारहवा नक्षत्र । —स्रम–पु० गृहस्थ आश्रम, श्रेष्ठ आश्रम ।

जेह–स्त्री० [फा० जिह] १ प्रत्यचा । २ प्रत्यचा का मध्य भाग । –वि० जैसा । –सर्व० १ वे । २ देखो 'जे' ।

जेहऊ (जेहऊ)–वि० जैसा ।

जेहडि (डी)–क्रि०वि० जैसे ही ज्योही । –वि० जैसी ।

जेहडौ–वि० (स्त्री० जेहडी) जैसा ।

जेहनउ (उ)–वि० (स्त्री० जेहनवी) जिसका ।

जेहर–पु० पाव का एक आभूषण ।

जेहरात–पु० आभूषण, जेवरात ।

जेहरि (री)–वि० १ जैसी । २ देखो 'जेहर' ।

जेहरौ, जेहवउ, जेहवौ–वि० (स्त्री० जेहरी, जेहवी) जैसा ।

जेहाण (न)–देखो 'जहान' ।

जेहा–स्त्री० [स० जिह्वा] १ जीभ, रसना । २ देखो 'जैसा' ।

जेहि (हि)–देखो 'जेही' ।

जेहिर–१ देखो 'जेवर' । २ देखो 'जेहर' ।

जेहिळ–पु० [स०] वशिष्ठ गोत्रोत्पन्न आर्य नाग का शिष्य, एक मुनि । (जैन)

जेही–सर्व० जिस । उसी । –क्रि०वि० जैसे, ज्यो । –वि० जैसी ।

जेहु, जेहौ–वि० (स्त्री० जेही) १ जैसा । २ समान, तुल्य, सदृश । ३ एक निश्चित रूप-रंग या आकृति जैसा । ४ जो ।

जेंगड़ौ-पु० वछडा । (मेवात)

जेंट–पु० १ शमी वृक्ष । २ देखो 'जेट' ।

जै–पु० १ वृहस्पति । २ पुष्य नक्षत्र । ३ सूर्य । ४ ब्रह्मा । ५ पतगा । ६ अग्नि । ७ जय-विजय । ८ जयकार शब्द, घोष । ९ देखो 'जे' ।

जैई–देखो 'जेई' ।

जैकरी–स्त्री० [स० जयकारी] चौपाई छन्द का एक भेद ।

जैकार–देखो 'जयकार' ।

जैकारणौ (बौ)–क्रि०वि० जयध्वनि का उद्घोष करना, जय वोलना ।

जै'ड–क्रि०वि० जव तक । तव तक ।

जै'डौ–वि० (स्त्री० जै'डी) जैसा ।

जैजय, जैजेकार–वि० १ विजय का घोष । २ विजय की मगल कामना ।

जैजैवती–स्त्री० भैरव राग का एक भेद ।

जैढक–पु० [स० जय-ढक] विजय के उपलक्ष मे वजाया जाने वाला ढोल ।

जैत–स्त्री० जीत, विजय । –कारी–वि० विजयी, विजय दिलाने वाला । —खम–पु० विजयस्तम्भ । –वि० अजेय । —पत्र–पु० जीत की सनद । —वंत, वान, वादी, वार, वारू–वि० जीतने वाला, विजयी ।

जैतरति (ती)–वि० [स० जैत्र+रति] शक्तिशाली, वलवान ।

जैतस्री–स्त्री० एक रागिनी विशेष ।

जैतहत्थ, (हथ, हथौ)–वि० [स० जेत्र-हस्त] जिसके हाथ मे विजय हो, विजयी ।

जैता–स्त्री० एक पतिव्रता क्षत्रिय स्त्री ।

जैताई–वि० १ विजयी । २ जीतने वाला ।

जैतार–वि० १ जीतने वाला । २ उद्धार करने वाला ।

जैतून–पु० [अ०] एक सदावहार वृक्ष ।

जैत्र–स्त्री० [स०] विजय, जीत, जय । —वादी, वार–वि० विजयी । —साद–पु० जयघोष । —हथ, हथौ= 'जैतहथ' ।

जैत्राई–स्त्री० जीत, विजय । –वि० १ विजयी । २ जितने ही ।

जैथहथ (हथौ)–पु० देखो 'जैतहथ' ।

जैदरथ (थी, थ्यी)–जयद्रथ ।

जैन–पु० [स०] १ अहिंसा को परम धर्म मानने वाला एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय । २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।

जैनगर, जैनेर, जैपर–पु० जयपुर नगर ।

जैपरियौ–पु० १ जयपुर का निवासी । २ जयपुर की रंगाई का साफा ।

जैपरी–वि० जयपुर का, जयपुर संवंधी । –स्त्री० १ जयपुर की वोली, भाषा । २ देखो 'जैपरियौ' ।

जैपाळ–स्त्री० एक दस्तावर औषधि ।

जैपुर–देखो 'जैपर' ।

जैपुरियौ–देखो 'जैपरियौ' ।

जैपुरी–देखो 'जैपरी' ।

जैपैलैदिन–क्रि०वि० वर्तमान से पाचवें या छठे दिन को ।

जैवौ–जैसा ।

जैमगळ–देखो 'जयमगळ' ।

जैमती–स्त्री० [स० जयमती] १ ईहडदेव चालुक्य की दुश्चरित्रा पुत्री । २ दुश्चरिया स्त्री ।

जैमाळ (माळा)–स्त्री० [सं० जयमाला] १ विजय के उपलक्ष मे पहनाई जाने वाली माला । २ वरण करने लिये पहनाई जाने वाली माला ।

जैमिनि (नी)–पु० [स] पूर्व मीमासा का प्रवर्तक, व्यासजी का एक शिष्य ।

जैयौ–पु० १ पशुओं के शरीर से चिपकने वाला एक कीडा । २ जवा ।

जै'र–देखो 'जहर' ।

जं'रमो'रो (जं'रीमो'रो)– १ सर्प का विष सोखने वाला एक काला पत्थर । २ औषधि मे काम आने वाला एक हरा पत्थर ।

जं'रबाय–स्त्री० जहरवायु ।

जं'री (लौ)–वि० विष युक्त विषैला, जहरीला ।

जैवत, जैवत–वि०विजयी ।

जैसळगर, जैसळमेर–पु० राजस्थान की पश्चिमी सीमा स्थित एक ऐतिहासिक नगर जहा भाटी राजपूतो का राज्य था ।

जैसळमेरी–स्त्री० जैसलमेर की भाषा या बोली । २ देखो 'जैसेलमेरौ ।

जैसलमेरौ–वि० जैसलमेर का, जैसलमेर संबधी । –पु० जैसलमेर का निवासी ।

जैसौ–वि०वैसा । —**राणौ**–पु० एक लोक गीत ।

जैहर–पु० १ साप, सर्प । २ देखो 'जहर' ।

जैहरी–वि० जहरी ।

जों–वि० ज्यो, समान । –क्रि० वि० ज्यो, जैसे ।

जोंईड़ौ–स्त्री० यूका का वच्चा ।

जोज, जोट–पु० शमी वृक्ष व इसका फल ।

जो–सर्व० [स० य] सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, वह । –क्रि० वि [स० यत्] यदि, अगर । –पु० जौ, जव ।

जोअण– १ देखो 'जोवण' । २ 'जोगण' । ३ देखो 'जोजण'

जोअणौ (बौ)–देखो 'जोवणौ' (बौ) ।

जोइ–स्त्री० [स० जोषित्, ज्योति] १ स्त्री, महिला । २ अग्नि । ३ ज्योति, प्रकाश । (जैन)

जोइजणौ (बौ)–क्रि० आवश्यक होना, जरूरी होना । जरूरत महसूस करना ।

जोइठाण–पु० [स० ज्योति-स्थान] अग्नि-कुण्ड । (जैन)

जोइण–स्त्री० १ जोशी की स्त्री, जोशण । २ देखो 'जोवण', जोगण, जोजण' ।

जोइणि (णी)–देखो 'जोगणी' ।

जोइणौ (बौ)–देखो 'जोवणौ' (बौ) ।

जोइय–वि० [स० योजित] जोता हुआ ।(जैन)

जोइयणौ (बौ)–देखो 'जोवणौ' (बौ)।

जोइयांणी–स्त्री० 'जोइया' वश की स्त्री या कन्या ।

जोइया–पु० एक प्राचीन क्षत्रिय वश । –**वटी, वार**–स्त्री० सतलज नदी व वहावलपुर के पास का क्षेत्र ।

जोइस–पु० [स० ज्योतिष्क] १ ज्योतिषी । २ ज्योतिष । ३ ज्योतिषीदेव ।

जोइसम–वि० [स० ज्योतिसम] अग्नि के समान । (जैन)

जोइसवत–वि० ज्योतिषवान ।

जोइसालय–पु० ज्योतिष देवो का आलय ।

जोइसी–पु० [स० ज्योतिषी] ज्योतिष विद्या का जानकार, ज्योतिषी ।

जोईजणौ (बौ)–देखो 'जोइजणौ' (बौ) ।

जोईजे–अव्य० चाहिये, आवश्यक है, उचित है, मुनासिब है ।

जोक–देखो 'जळोक' ।

जोख–स्त्री० [स० योषा] १ स्त्री, महिला, नारी । २ इच्छा, अभिलाषा, ख्वाहिश । ३ रुचि । ४ खुशी, मौज । ५ वैभव, ऐश्वर्य । ६ तोलने का कार्य । ७ वजन । ८ तोलने के उपकरण, वाट । ९ दावत । १० कामक्रीडा । ११ जेवर । १२ भय, डर । १३ देखो 'जळोक' ।

जोखणौ (बौ)–क्रि० १ किसी वस्तु को तोलना । २ वजन ज्ञात करना । ३ भयभीत करना, आतकित करना ।

जोखत (ता)–स्त्री० [स० योषिता[१ स्त्री, औरत । २ वेश्या, गणिका ।

जोखम–स्त्री० १ धन, दौलत, अधिक रुपया । २ मूल्यवान वस्तु । ३ सभाल कर रखने लायक कोई अमानत । ४ कोई बडी जिम्मेदारी । ५ आपत्ति, सकट । ६ खतरा, भय ।

जोखमणौ (बौ), जोखमिणौ (बौ)–क्रि० १ वीर गति को प्राप्त करना । २ टूटना । ३ भागना । ४ मरना ।

जोखमी–वि० 'जोखम' माना जाने वाली, विपत्ति लाने वाली वस्तु ।

जोखसोख–पु० १ धन, दौलत । २ ऐश्वर्य, वैभव । ३ विषय-विलास ।

जोखहारी–वि० १ आमोद-प्रमोद का कार्य करने वाला । २ हास्यास्पद वेश-भूषा व क्रियाऐं करने वाला । ३ हानिकारक। –पु० १ मजाकिया । २ हास्य अभिनेता । ३ योद्धा । ४ शत्रु ।

जोखा–स्त्री० [स० योषा] स्त्री, नारी, महिला ।

जोखाई–स्त्री० तोलने या वजन ज्ञात करने की क्रिया ।

जोखारा–स्त्री० [स० योषा] चूमने वाली स्त्री, वेश्या ।

जोखित, जोखिता–देखो 'जोखता' ।

जोखिया–स्त्री० मौज, खुशी, मस्ती ।

जोखौ–पु० १ हानि, नुकसान । २ खतरा, भय । ३ उत्तर-दायित्व, जिम्मेदारी । ४ पीडा, दर्द । ५ दु ख, कष्ट । ६ धन, दौलत । ७ जोखम । ८ अमानत । ९ आशका । १० आपत्ति, विपदा, सकट । ११ हिसाव, लेखा । १२ भविष्य मे विपदा लाने वाली वस्तु या कार्य ।

जोगगी–पु० [स० योगागी] योगाभ्यास करने वाला ।

जोगद (द्र)–देखो 'जोगेंद्र' ।

जोगधर–पु० शत्रु के प्रहार से वचने की युक्ति ।

जोग–पु० [स० योग, युजिर] १ अवसर, मौका । २ समय, वक्त । ३ शिव, महादेव । ४ चन्द्रमा । ५ सयोग, मेल ।

मिलाप। ६ शुभ अवसर, शुभ काल । ७ उपाय, युक्ति। ८ औषधि, दवा । ९ ध्यान, तप, वैराग्य । १० प्रेम। ११ मुक्ति या मोक्ष के उपाय । १२ यौगिक क्रियाऐं, योगाभ्यास । १३ ईश्वर भक्ति मे चित्त की एकाग्रता। १४ सगति । १५ धोखा, छल । १६ धन, दौलत। १७ साम, दाम, दण्ड, भेदादिक उपाय । १८ वशीकरण क्रिया। १९ लाभ, फायदा । २० सुभीता । २१ भजन करने की विधि। २२ सम्बन्ध । २३ लेख, प्रारब्ध। २४ सन्यास। २५ आज्ञा। २६ गणित मे दो या अधिक राशियो का जोडा। २७ फलित ज्योतिष के अनुसार वार व नक्षत्रो का एक समय विशेष । २८ सूर्य व चन्द्रमा के राशि, अश, कला और विकला के योग के काल का मान। २९ सबध, ससर्ग। ३० प्रयोग, उपयोग। ३१ परिणाम, नतीजा। ३२ पेशा, धधा। ३३ कवच। ३४ उत्साह। ३५ नियम। ३६ निर्भरता। ३७ वाहन, सवारी। ३८ चिकित्सा, इलाज। ३९ जादू टोना, इन्द्रजाल। ४० जासूस, भेदिया। ४१ पवार वंशोत्पन्न एक देवी। –वि० १ योग्य, काबिल, लायक। २ उचित, योग्य। **—अठग**='अस्टागजोग'। **–अधीस**–पु० योगाधीश, ब्रह्म। **—क्षेम, खेम**–पु० योगक्षेम, कुशल-क्षेम। **—जोगी**–पु० योगासन पर बैठा योगी। **—धाता**–पु० महादेव, शिव। **नद्रा, निंद्रा**–स्त्री०योगनिद्रा। निर्विकल्प समाधि। युगान्त मे विष्णु की नीद। तद्रा, झपकी। देवी, दुर्गा, शक्ति। **—निंद्राळु, निद्राळु**–पु० प्रलय के समय योग निद्रा लेने वाले भगवान विष्णु। **—निधान**– पु० योग का खजाना, योगस्थान। **–पथ**-पु० योग का रास्ता। **–पत,पति,पती**–पु० योगपति महादेव, शिव, विष्णु। योगी **—परिणाम**–पु० जीव के परिणाम का एक प्रकार। (जैन) **—परिव्वाइया**– स्त्री० समाधि वाली परिव्राजिका, सन्यासिनी। **—पारग, पारगत**–पु० शिव। –वि० योग विद्या मे पारगत। **–पीठ**– –पु० देवताओ का योगासन। **—बळ**–पु० योग साधना से प्राप्त शक्ति, योगबल, तपोबल। **—भ्रस्ट**–वि० योग साधना से च्युत। **—माता, माय, माया**–स्त्री० देवी शक्ति, दुर्गा। महामाया, पार्वती, विष्णु की माया भगवती। जसोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या। श्रीकरणी। **—मुद्दा, मुद्रा**–स्त्री० योग साधना की कोई मुद्रा। **—राणी**–स्त्री० पार्वती, देवी, रणचण्डी। **—राज**–पु० शिव, विष्णु। **—राया**= 'जोगराणी'। **—वत, वत**–पु० शुभ प्रवृत्ति वाला योगी, सन्यासी। **—वट**–पु० योगाभ्यास। **—वटउ**–पु० प्राचीन कालिक एक वेशभूषा। योगपट्ट। **—वाण, वाई**–स्त्री० वैभव, सम्पत्ति, दौलत, योग्यता, स्थिति, ढग। अवसर, मौका, व्यवस्था, प्रबध। **—विसोही**–स्त्री० योग शुद्धि। **–सया, सस्या**–स्त्री० योग मत्र, योग शिक्षा। **—सकति, सकती, सक्ति, सक्ती, सगति, सगती, सग्ती**–स्त्री० योगबल, तपोबल। **—समाउत्त**–वि० योगो से युक्त। (जैन) **–साधन**–पु० योग साधना, तपस्या। **–सास्त्र**='योगशास्त्र'। **—साहण**='जोगसाधन'। **—सिधी**='योग सिद्धि'।

जोगडो (टो)–देखो 'जोगी'। (स्त्री० जोगडी, जोगटी)

जोगण(णि,णी)–स्त्री० [स०योगिनी] १देवी, शक्ति, योगमाया। २ रण चण्डी। ३ विधवा। ४ सन्यासिनी। ५ तपस्विनी। ६ योगाभ्यासिनी। ७ भिखारिन। ८ आठ विशिष्ट देवियो मे से कोई एक। ९ ज्योतिष की आठ देवियो मे से कोई एक। १० पार्वती। ११ तिथि विशेष को किसी दिशा विशेष मे स्थित योगिनी। १२ रण प्रिय चौसठ योगिनिया। १३ ज्वार की फसल का एक रोग। १४ आषाढ कृष्णा एकादशी। १५ दिल्ली नगर का एक नाम। **–नगर,नग्गर,पीठ, पुर, पुरी**–स्त्री० दिल्ली नगर का एक नाम। **—पुरौ** –पु० बादशाह, दिल्ली, निवासी, मुसलमान, यवन। चौहान राजपूत, दिल्ली नगर।

जोगणेस–पु० [स०योगिनीश] १ दिल्लीपति, बादशाह। २ योगेश। ३ शिव, महादेव।

जोगतत (तत, तत्त तत्व) –पु० [स० योग-तत्त्व] योग रहस्य, योगत्व।

जोगत–स्त्री० [सं० योगतत्त्व] योग विद्या।

जोगता–स्त्री० योग्यता, कुशलता, काबलियत।

जोगती–वि० योग्य।

जोगतीजोत–देखो 'जागतीजोत'।

जोगदोस–पु० [स० योगदोष] पैर के ऊपर लेप करने से जो सिद्धि होती है उससे आहार आदि लेना। (जैन)

जोगरभ–देखो 'जोगारभ'।

जोगराज गुगळ (गुग्गळ, गूगळ)–देखो 'योगराजगुग्गळ'।

जोगव–पु० [स० योगवान] योग वाला, स्वाध्यायी। (जैन)

जोगाण–पु० महादेव, शिव।

जोगातराय–देखो 'योगातराय'।

जोगातिक–पु० [स० योगान्तिक] बुध ग्रह की चाल विशेष।

जोगाग्नि–स्त्री० योगाग्नि।

जोगाणद–पु० [स० योगानन्द] शिव, महादेव।

जोगानळ–स्त्री० योगानल, योगाग्नि।

जोगाभास (भ्यास)–देखो 'योगाभ्यास'।

जोगारंब, (रभ, रम)–पु० [स० योग + आरम्भ] १ योग क्रिया, साधना, योगाभ्यास। २ योग।

जोगासन–देखो 'योगासन'।

जोगिंद, जोगिंद्र—पु० [सं० योगीन्द्र] १ बडा योगी, तपस्वी, महायोगी । २ महादेव, शिव । ३ श्रीकृष्ण । —वि० संयमी ।

जोगि, जोगिय—१ देखो 'जोगी' । २ देखो 'जोग' ।

जोगिया—स्त्री० एक रागिनी विशेष । —वि० १ गेरू रंग का । २ योगी संबंधी । ३ मटमैले रंग का ।

जोगिया-भाट्या—पु० स्वादिष्ट मांस वाला एक पक्षी विशेष ।

जोगियौ—१ देखो 'जोगी' । २ देखो 'जोगिया' ।

जोगींद (द्र)—देखो 'जोगिंद्र' ।

जोगी (ड़ी)—पु० [सं० योगिन्] (स्त्री० जोगण, जोगणि, जोगणी) १ ईश्वर । २ शिव, महादेव । ३ श्रीकृष्ण । ४ अलौकिक शक्ति सम्पन्न सिद्ध पुरुष । ५ बाजीगर, मदारी । ६ योगदर्शन का अनुयायी । ७ संन्यासी । ८ एक जाति विशेष । —वि० १ वैरागी, जितेन्द्रिय, आत्मज्ञानी । २ योग द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वाला । ३ योग्य, उपयुक्त । —कुंड='योगीकुंड' । —नाथ='योगीनाथ' । —राज='योगीराज' ।

जोगीस (सर, स्वर), जोगेंद्र, जोगेस (वर सर, सुर, स्वर)—पु० [सं०योगीश, योगीश्वर, योगेंद्र, योगेश, योगेश्वर] १ शिव, महादेव । २ श्रीकृष्ण । ३ ईश्वर । ४ योगियों के स्वामी । ५ याज्ञवल्क्य मुनि का नाम । ६ बडा सिद्ध, महात्मा । ७ सन्यासी । ८ स्वरूप । (नाथ, योगी)

जोगेसरी (स्वरी)—देखो 'योगीस्वरी' ।

जोगौ—वि० [सं० योग्य] १ योग्य, लायक, काबिल । २ उपयुक्त, ठीक । ३ उचित, वाजिब । ४ अधिकारी । ५ सम्माननीय ।

जोग्ग—देखो 'जोग' ।

जोग्गया—स्त्री० [सं० योग्यता] योग्यता, लायकी (जैन) ।

जोग्य—देखो 'योग्य' ।

जोग्यअजोग्यजथा—स्त्री०यौ० [सं० योग्यायोग्ययथा] योग्य-अयोग्य पदार्थों के साथ-साथ वर्णन की काव्य की एक शैली ।

जोग्याभास (भ्यास)—पु० [सं० योगाभ्यास] योगाभ्यास ।

जोड—वि० [सं० युज] १ समान, तुल्य, बराबर । २ मुकाबले का । —स्त्री० १ जोडी, युग्म । २ टोली, मंडली, दल, समूह । ३ काव्य रचना । ४ अंकों का योग । ५ योगफल । ६ संधिस्थल । ७ संधि । ८ जोडा जाने वाला भाग । ९ समानता, बराबरी । १० परस्पर आश्रित दो प्राणी । ११ साथ काम आने वाली समानधर्मी दो वस्तुएं । १२ जोडने की क्रिया या भाव ।

जोडग (गर)—वि० १ रचनाकार, रचयिता । २ कवि । ३ समान शक्ति या क्षमता वाला । ४ संग्रहकर्ता ।

जोड़ण—स्त्री० १ जोडने की क्रिया या भाव । २ योग, जोड । ३ जोडने वाला पदार्थ ।

जोडणौ (बौ)—क्रि० [सं० जुड-बंधने] १ दो या दो से अधिक वस्तुओं को परस्पर संबंधित करना, जोडना । २ टूट-फूट ठीक करना । ३ इकट्ठा करना, एकत्र करना । ४ संग्रह करना, जमा करना । ५ कविता करना । ६ किसी से संबद्ध करना । ७ परस्पर बांधना । ८ मिलाना । ९ क्रमश रखना । १० अंकों का योग करना । ११ यथा स्थान स्थापित करना । १२ प्रार्थना या विनय करना । १३ संयुक्त या संश्लिष्ट करना । १४ बनाना, रचना । १५ जोतना । १६ सभा बनाकर बैठना । १७ दीप जलाना । १८ संबंध स्थापित करना । १९ अनुरक्त या लीन करना । २० मन लगाना ।

जोडली—वि० १ पास की, समीप वाली । २ बराबर की । ३ देखो 'जोडी' ।

जोडलौ—वि० (स्त्री० जोडली) १ एक ही समय मे होने वाला । सम-सामयिक । २ पास का । ३ बराबर का । ४ जोडी से होने वाला, यमज । ५ जोडी का । ६ जुडा हुआ । ७ देखो 'जोडौ' ।

जोड़वां—स्त्री० रबी की फसल की अंतिम जुताई । —वि० जुडे हुए, युग्म ।

जोडवाई—देखो 'जोडाई' ।

जोडवाळ (वाळौ)—देखो 'जोडलौ' ।

जोडा—स्त्री० १ मिरासियों की एक शाखा । २ सारंगी के मुख्य दो तार ।

जोडाअत (इत)—देखो 'जोडायत' ।

जोडाई—स्त्री० १ जोडने की क्रिया या भाव । २ जोडने की मजदूरी । ३ चुनाई ।

जोडाउ (ऊ)—वि० संग्रहकर्ता, जमा करने वाला, जोडने वाला ।

जोडागुण—पु० काव्यकार, कवि ।

जोडाजोडी—क्रि०वि० १ जोडे से । २ आसपास । ३ निकट से । —स्त्री० १ पति-पत्नी, दम्पति । २ जोडने की क्रिया या भाव ।

जोडाणौ(बौ)—क्रि० १ दो या दो से अधिक वस्तुओं को परस्पर संबंधित कराना, जुडवाना । २ टूट-फूट ठीक कराना । ३ इकट्ठा या एकत्र कराना । ४ संग्रह कराना, जमा कराना । ५ कविता कराना । ६ किसी से संबद्ध कराना । ७ परस्पर बंधवाना । ८ मिलवाना । ९ क्रमश रखवाना । १० अंकों का योग कराना । ११ यथास्थान स्थापित कराना । १२ प्रार्थना या विनय कराना । १३ संयुक्त या संश्लिष्ट कराना । १४ बनवाना, रचवाना । १५ जुतवाना । १६ सभा कराना ।

१७ दीप जलवाना । १८ सबध स्थापित कराना । १९ अनुरक्त या लीन कराना । २० मन लगवाना ।

जोडायत–स्त्री० पत्नी, अर्धागिनी । –वि० जोड का, तुल्य, बराबर ।

जोडाळ (ळौ)–पु० मुसलमान, यवन । –वि० जोडी का, जोड का ।

जोडावणौ (बौ)–देखो 'जोडाणौ' (बौ) ।

जोडावौ–पु० युग्म, जोडा ।

जोड़ियाळ–वि० जोडी का, बराबर का, साथ रहने वाला, साथी ।

जोडी–स्त्री० १ एक ही प्रकार की दो वस्तु या प्राणिश्रो का जोडा, युग्म । २ परस्पर आश्रित समानधर्मी दो प्राणी । ३ पति-पत्नी, दम्पति । ४ नर व मादा । ५ जूती, पादरक्षी । ६ ताल, मजीरा । ७ युग्म, सेट । ८ बराबरी, समानता । —**दार, वाळ, वाळौ**–वि० बराबरी का, समानधर्मी । साथी, पति-पत्नी ।

जोड़ीक–देखो 'जोडग' ।

जोडीगर–पु० जूती बनाने वाले मोची । कवि, काव्यकर्ता, कवि ।

जोडे, जोडै–क्रि०वि० १ साथ-साथ, पास मे, बगल मे । २ दोनो ओर ।

जोडौ–पु० १ युग्म, जोडा । २ समानता, बराबरी । ३ पुनर्वसु नक्षत्र का नाम । ४ देखो 'जोडी' ।

जोज–पु० [अ० जोज] १ सेवक, दास, चाकर । २ पत्नी ।

जोजदान–पु० एक प्रकार की सन्दूकची ।

जोजन (नि, न्न)–पु० [स० योजन] १ लगभग आठ मील की दूरी का एक माप । २ सयोग । ३ मेल-मिलाप ।

जोजनगधा–स्त्री० [स० योजन गधा] १ वेदव्यास की माता सत्यवती । २ सीता । ३ कस्तूरी । —**जात**–पु० वेदव्यास ।

जोजरी–स्त्री० १ लूनी नदी की एक सहायक नदी । २ वृद्धावस्था । –वि० १ वृद्ध । २ जीर्ण-शीर्ण । ३ खोखली । ४ बेसुरी ।

जोजरू–पु० वर्षा ऋतु मे होने वाला घास का एक पौधा ।

जोजरौ–वि० [स० जर्जर] (स्त्री० जोजरी) १ पोपला, थोथा, खोखला । २ दरार खाया हुआ । ३ बेसुरा । ४ जीर्णशीर्ण, जर्जर । ५ शिथिल । ६ वृद्ध ।

जोजा–स्त्री० स्त्री, पत्नी ।

जोजिया–स्त्री० [स० योधिक] योद्धाओ की नकल ।

जोजे (जै)–स्त्री० [अ० जोज] स्त्री, पत्नी ।

जोट–पु० [स० योटक] १ जोडा, युग्म । २ समूह, ढेर, राशि । ३ दम्पति । ४ भैसा । –वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ हृष्ट-पुष्ट । ३ दो ।

जोटे (टै)–अव्य० साथ-साथ, शामिल ।

जोटौ–पु० १ तेज प्रवाह, हिलोल । २ रोक, बध । ३ रुकावट । ४ जोडा ।

जोड, जोडलियौ (लौ)–पु० १ घास का मैदान । २ तलैया, पोखर । ३ एक प्रकार का सरकारी लगान । ४ एक क्षेत्र विशेष । —**आळ**–पु० एक प्राचीन कर । —**दरी**–स्त्री० एक वस्त्र विशेष ।

जोडी–देखो 'जोडी' ।

जोण–देखो 'जूण' ।

जोणअ–पु० उत्तर भारत का एक प्रान्त (जैन) ।

जोणग–पु० एक प्राचीन देश, प्रान्त ।

जोणि (णी)–पु० [स० योनि] १ पन्नवण सूत्र के नौवें पद का नाम । २ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र । ३ योनि । —**पद**–पु० पन्नवण सूत्र का एक पद ।

जोणिय–वि० जन्म लेने वाला ।

जोणिविहाण–पु० [स० योनिविधान] उत्पत्ति शास्त्र ।

जोणिसूळ–पु० [सं० योनिशूल] योनि का एक रोग ।

जोणींद–देखो 'जोगेंद्र' ।

जोणौ (बौ), जो'णौ (बौ)–देखो 'जोवणौ' (बौ) ।

जोत–स्त्री० [स० ज्योति] १ ज्योति, प्रकाश, उजाला । २ दीप, दीपक । ३ दीप शिखा । ४ अग्नि, ज्वाला । ५ अग्नि शिखा । ६ दीपक की वत्ती । ७ देवी-देवताओं को किया जाने वाला धूप-दीप । ८ आख । ९ दृष्टि नगर । १० किरण । ११ काति, दीप्ति । १२ तारा । १३ सगीत मे अष्टताल का एक भेद । १४ यज्ञ की अग्नि । १५ सूर्य । १६ नक्षत्र । १७ विष्णु । १८ ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म । १९ ब्रह्म का प्रकाश । २० जूए के दोनो ओर बंधी रहने वाली छोटी रस्सिया । –वि० सुन्दर ।

जोतक (ख, ग)–देखो 'जोतिस' ।

जोतकी (खी, गी)–देखो 'जोतिसी' ।

जोतणी–स्त्री० १ जोतने की क्रिया या भाव । २ भूमि की जुताई ।

जोतणौ (बौ)–क्रि० १ घोडे, बैल आदि को गाडी आदि मे जोडना । २ वाहन आदि के आगे बाधना । ३ भूमि की जुताई करना । ४ बल पूर्वक लगाना ।

जोत-बळ–पु० [स० ज्योतिर्बल] पानी ।

जोतर–देखो 'जोत' ।

जोतरणौ (बौ)–देखो 'जोतणौ' (बौ) ।

जोतरियो, जोतरु (रू, रौ)–वि० जोतने योग्य। –स्त्री० हल की आडी रेखा। देखो 'जोत'।
जोतलिंग–पु० ज्योतिर्लिंग, शिव।
जोतलो–पु० (स्त्री० जोतली) कृषक, किसान।
जोतवंत–वि० ज्योतिवान।
जोतसरूप (सरूपी)–देखो 'जोतिसरूप'।
जोतसिंघाळ–पु० ज्योति बढाने वाला, ईश्वर।
जोतसि (सी)–देखो 'जोतिसी'।
जोतसुम्र–पु० वज्र।
जोताई–देखो 'जुताई'।
जोताड़णो (बो), जोताणो (बो)–क्रि० १ घोडे, बैल आदि को गाडि आदि मे जुडवाना, जुतवाना। २ वाहन आदि के आगे बधवाना। ३ भूमि की जुताई कराना। ४ बलात् कार्य मे लगवाना।
जोतात–स्त्री० खेत की मिट्टी की ऊपरी सतह।
जोतावणो (बो)–देखो 'जोताणो' (बो)।
जोति–देखो 'जाति'।
जोतिक (ख, ग)–देखो 'जोतिस'।
जोतिप्रकास (प्रकासी)–पु० [सं० ज्योति प्रकाश] ईश्वर।
जोतिलिंग–देखो 'जोतलिंग'।
जोतिवत–देखो 'जोतवत'।
जोतिव्रक्ष (व्रिक्ष)–पु० [स० ज्योतिवृक्ष] रात को सूर्य के समान प्रकाशित रहने वाला वृक्ष। (जैन)
जोतिस–पु० [स० ज्योतिष] १ ग्रह, नक्षत्रो की स्थिति बताने वाला छ वेदागो मे से एक। २ ज्योतिष विद्या। ३ प्रकाश, प्रभा। ३ सूर्य।
जोतिसप्रकासी–देखो 'जोतिप्रकास'।
जोतिसरूप (स्वरूप)–पु० [स०ज्योतिस्वरूप] १ ईश्वर परमात्मा। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ सूर्य।
जोतिसिखा–स्त्री० [स० ज्योतिशिखा] दीपक, लौ, बत्ती।
जोतिसी–पु० [स० ज्योतिषी] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, ज्योतिषी। २ नक्षत्र, तारा। ३ डक ऋषि की सतान एक जाति, डाकौत।
जोती–देखो 'जोत'।
जोतीवत (वत, वती)–देखो 'जोतवत'।
जोतीसरूप (स्वरूप)–देखो 'जोतिसरूप'।
जोत्रणो (बो)–देखो 'जोतणो' (बो)।
जोत्राणो (बो), जोत्रावणो (बो)–देखो 'जोतणो (बो)।
जोत्रु–देखो 'जोत'।
जोत्सणा (ना)–देखो 'ज्योत्स्ना'।
जोदो–देखो 'जोधो'।
जोद्धार–देखो 'जोधार'।
जोध–पु० [स० योध] १ योद्धा, शूरवीर, सुभट, वीर। २ पुत्र बेटा। ३ भैरव। –वि० १ जवान, युवा। २ शक्तिशाली, बलवान। —गुर, गुरु(रू)–पु० मत्री, महावीर। —जवाण (न)–वि० पूर्ण युवा। शक्तिशाली, बलवान। —जूझार–पु० एक प्रकार का घोडा। —जूग्रांण (न) जूवान='जोध-जवान'।
जोधण–पु० [स०योधनम्] १ युद्ध। २ सैनिक, सिपाई।
जोधपुरी (रौ)–वि० जोधपुर का, जोधपुर सबधी। –स्त्री० १ जोधपुर की बोली। २ एक प्रकार की तलवार। –पु० ३ जोधपुर का निवासी। ४ राठौड राजपूत।
जोधविद्या–स्त्री० [स० युद्ध-विद्या] अस्त्र-शस्त्रो की विद्या, युद्ध कौशल।
जोधाण–पु० जोधपुर नगर।
जोधाणा–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
जोधाणो, जोधानेर–पु० जोधपुर नगर।
जोधारभ–पु० युद्ध, समर।
जोधार, जोधाळो–पु० योद्धा, शूरवीर।
जोधो–पु० [स० योद्धा] सुभट, वीर।
जोन–देखो 'जूण'।
जोनक्रपीट–पु० [स० कृपीटयोनि] अग्नि।
जोनि (नी)–देखो 'जूण'।
जोनिकद–पु० योनि का एक रोग।
जोनै–क्रि०वि० जिसको,
जोन्ह–देखो 'जूण'।
जोपणी–स्त्री० शोभा। आभा, कांति।
जोपणो (बो)–क्रि० १ जोश मे आना। २ उत्साहित होना। ३ शोभित होना। ४ देखो 'जोतणो' (बो)।
जोपे (पै)–अव्य० [स० यद्यपि] यदि, अगर, यद्यपि।
जोबण–देखो 'जोबन'।
जोबणेरी–स्त्री० एक देवी का नाम।
जोबन, जोबनियो–पु० [स० यौवन] १ युवा होने का भाव, यौवन, जवानी, तरुणाई। २ युवावस्था। ३ विकास की चरम सीमा। —वत, वत—वि० यौवनयुक्त, तरुणाई लिए हुए, जवान।
जोबरलो–देखो 'जेबरलो'। (स्त्री० जोबरली)
जोबराज–देखो 'जुवराज'।
जोमग (गी)–वि० जोशीला, उत्साही। –पु० योद्धा।
जोमड (डी)–वि० बलवान, शक्तिशाली।
जोम–पु० [अ०] १ जोश, उत्साह। २ बल, शक्ति। ३ आवेश, क्रोध। ४ मस्ती, मदमस्तता। ५ गर्व, अभिमान। –अगी= 'जोमंगी'।
जोमधराज, जोमायत (तौ)–वि० जोश पूर्ण, जोशीला।

जोय–स्त्री० [स० जाया] १ पत्नी, स्त्री, जोरू। २ देखो 'जोग'।
जोयण(ण)–पु० १ नेत्र, आख। २ दर्शन। ३ देखो 'जोजन'।
जोयणौ (बौ)–देखो 'जोवणौ' (बौ)।
जोयस (सी)–पु० ज्योतिषी।
जोयळ–स्त्री० १ दृष्टि, नजर। २ आख, नेत्र।
जोयीजै–देखो 'जोईजै'।
जोयीणौ (बौ)–देखो 'जोवणौ' (बौ)।
जोर–पु० [फा०] १ शक्ति, बल, ताकत। २ अधिकार, वश काबू। ३ परिश्रम, मेहनत। ४ तेजी, प्रबलता। ५ आवेश, वेग। ६ आसरा, सहारा। –वि० प्रबल, तेज।
जोरजट–पु० एक प्रकार का उत्तम रेशमी वस्त्र।
जोरजुलम–पु० [फा०] अत्याचार, ज्यादती।
जोरतळब–वि० आसानी से आज्ञा न मानने वाला।
जोरदार–वि० शक्तिशाली, बलवान।
जोरवत (वर, वांन)–देखो 'जोरावर'।
जोरसिह–पु० एक मारवाड़ी लोक गीत।
जोरसोर–पु० [फा० जोर-शोर] अत्यधिक प्रबलता, प्रचण्डता।
जोराजोरी–क्रि०वि० बलपूर्वक, जबरन। –स्त्री० ज्यादती।
जोरावर–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ प्रबल, प्रचण्ड। –पु० सुभट, सैनिक।
जोरावरी–स्त्री० [फा०] १ जबरदस्ती, ज्यादती। २ शक्ति, बल, ताकत। ३ बलात्कार। ४ अत्याचार, अन्याय। –क्रि०वि० बलात्, बलपूर्वक, जबरदस्ती से।
जोरावळ, जोरावार–देखो 'जोरावर'।
जोरिंगण (न)–पु० जुगनू।
जोरी–स्त्री० जोरावरी।
जोरीजपती–स्त्री० १ हुज्जत, तकरार। २ आनाकानी। ३ बकवाद। ४ लडाई। ५ अत्याचार। ६ छीना-झपटी। ७ खींचातान।
जोरु, जोरू–स्त्री० [फा०] पत्नी, स्त्री।
जोरौ–पु० १ जुल्म, अत्याचार। २ जवानी। ३ देखो 'जोर'।
जोल–पु० [स० युगल] पैर।
जोलहा–पु० जुलाहा।
जोवत–वि० [स० ज्योतिवत] प्रकाशवान, आभावान, कांतिवान।
जोवण–स्त्री० १ देखने की क्रिया या भाव। २ तलाश, खोज। –वि० १ देखने वाला, ढूढने वाला। २ देखो 'जोबन'।
जोवणौ (बौ)–क्रि०वि० १ तलाश करना, ढूढना। २ देखना। ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना। ४ जलाना, प्रज्वलित करना। ५ देखो 'जोतणौ' (बौ)।
जोवन, जोवनराय, जोवनियौ, जोवन्न–देखो 'जोबन'।
जोवरळौ–देखो 'जेवरळौ'। (स्त्री० जोवरळी)।
जोवराज–देखो 'युवराज'।
जोवाड़णौ (बौ), जोवाणौ (बौ), जोवावणौ (बौ)–क्रि० १ तलाश, कराना, ढुढवाना। २ दिखाना, देखने को प्रेरित करना। ३ प्रतीक्षा कराना, राह देखाना। ४ जलवाना, प्रज्वलित कराना। ५ देखो 'जोताणौ' (बौ)।
जोव्वण (न)–देखो 'जोबन'।
जोव्वणिया–स्त्री० [स० यौवनिका] युवावस्था (जैन)।
जोसगो–पु० शूरवीर, योद्धा।
जोस–पु० [फा० जोश] १ मनोवेग, आवेश। २ क्रोध, तेजी। ३ उफान, उबाल। ४ उमग, उत्साह। ५ बल, शक्ति। ६ रक्त, खून।
जोसण (न)–स्त्री० [स० जोषा] १ ज्योतिषी की स्त्री। २ ब्राह्मणी। ३ प्रीति (जैन)। ४ सेवा (जैन)। –पु० [फा० जोशन] ५ जिरह-वख्तर, कवच।
जोसणियौ–वि० कवचधारी।
जोसा, जोसिया, जोसित, जोसिता–स्त्री० [स० जोषा, जोषित] स्त्री, औरत।
जोसियौ, जोसी, जोसीड़ौ–पु० [स० ज्योतिषी] १ ज्योतिषी। २ जोशी ब्राह्मण।
जोसीलौ, जोसेल–वि० (स्त्री० जोसीली) १ आवेश युक्त, क्रोध युक्त। २ उमग भरा, उत्साही ३ तेजमिजाज।
जोह–पु० [स० योष] १ योद्धा, सुभट। २ देखो 'जोस'। ३ देखो 'जोम'।
जोहट्ठण–पु० [सं० योधस्थान] युद्ध के समय का शरीर विन्यास।
जोहण (न)–पु० [स० योधन] १ योद्धा, वीर। २ देखो 'जोवण'।
जोहर–१ देखो 'जौहर' २ देखो 'जवाहिर'।
जोहरी–देखो 'जौहरी'।
जोहल्ल–पु० मध्य लघु की पाच मात्रा का नाम।
जोहार–पु० [स० योधकार] १ युद्ध करने वाला, योद्धा (जैन)। २ देखो 'जुहार'।
जोहि–पु० [स० योधिन] योद्धा (जैन)।
जोहिया–देखो 'जोइया'।
जोहौ–देखो 'जोधौ'।
जौबत, जौबती–स्त्री० [फा० नौबत] नगाडा, नौबत।
जौहरी–देखो 'जौहरी'।
जौ–देखो 'जो'।
जौक–पु० १ सच्च, सत्य। २ देखो 'जळौक'।
जौख–देखो 'जोख'।
जौखार–पु० यवाक्षार।
जौड़–पु० १ कवच। २ देखो 'जोड'।
जौचणी–स्त्री० जौ व चने का मिश्रण। (मेवात)
जौजा–देखो 'जोसा'।

जौतुक–पु० [स० यौतुक] दहेज, यौतुक ।
जौधिक–पु० [स०] तलवार के ३२ हाथो मे से एक ।
जौबन–देखो 'जोवन' ।
जौ'र–देखो 'जौहर' ।
जौळा–वि० युक्त, सहित । –क्रि०वि० साथ-साथ ।
जौवन–देखो 'जोवन' ।
जौहर–पु० १ जवाहिरात, रत्न । २ अच्छे लोहे की तलवार की धारिया । ३ विशेषता, खूबी, गुण । ४ राजपूत स्त्रियो द्वारा अपनी सेना की हार व आततायियो से अपने धर्म की रक्षार्थ किया जाने वाला सामूहिक आत्म-दहन । ५ इस प्रकार के आत्मदहन हेतु बनाई गई चिता । ६ आततायी शासन के विरुद्ध किया जाने वाला आत्म-दहन ।
जौहरि (री)–पु० [फा०] १ जवाहिरात, रत्न, हीरो का व्यापारी । २ रत्न परीक्षक । ३ गुण ग्राहक । पारखी ।
जौहारि, जौहारी–१ देखो 'जवारी' । २ देखो 'जुहार' ।
ज्झाण–पु० ध्यान (जैन) ।
ज्यउ, ज्यउ, ज्यऊ, ज्यऊ–देखो 'जिउ' ।
ज्यां–१ देखो 'ज्या' । २ देखो 'जा' ।
ज्यान–पु०[फा० जियान] हानि नुकसान । –क्रि० वि० १ जैसे, जिस तरह । २ देखो 'जैन' । ३ देखो 'जान' । ४ देखो 'जाण' ।
ज्यांनकी (खी)–देखो जानकी' ।
ज्या–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, धरती । २ प्रत्यंचा ।
ज्याग–देखो 'जाग' ।
ज्याद–देखो 'ज्यादा' ।
ज्यादती–स्त्री० [अ० जियादती] १ प्रचुरता, बाहुल्य,अधिकता । २ अत्याचार, अन्याय ।
ज्यादा–वि० [अ० जियादा] अधिक, बहुत ।
ज्यार–क्रि० वि० १ जब । २ देखो 'जार' ।
ज्यारत (ता)–देखो 'जारता' ।
ज्यारां–क्रि० वि० जब । –वि० जिनका ।
ज्यास–पु० [स० जयाश] १ विश्वास, भरोसा । २ आशा । ३ विश्राम शान्ति । ४ धैर्य, धीरज । ५ गरमास, निवास ।
ज्यासती–देखो 'जासती' ।
ज्यु, ज्यू–देखो 'जिउ' ।
ज्येस्ट (स्ठ)–देखो 'जेठ' ।
ज्येस्ठता–स्त्री० [स० ज्येष्ठता] बडाई, श्रेष्ठता ।
ज्येस्ठा–स्त्री० [स० ज्येष्ठा] १ गंगा नदी का एक नाम । २ १८वा नक्षत्र । ३ समुद्र मथन पर प्रथम निकलने वाली लक्ष्मीदेवी । ४ मध्यमा अगुली । –वि० बडी ।
ज्येस्ठास्रमी–पु० [स० ज्येष्ठाश्रमी] गृहस्थी ।
ज्येस्ठिकासण (न)–पु० [स० ज्येष्ठकासन] योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन ।
ज्यो–क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकार ।
ज्यो–देखो 'जो' ।
ज्योत–देखो 'जोत' ।
ज्योतखी–पु० १ तारा । २ नक्षत्र । ३ देखो 'जोतिसी' ।
ज्योति–देखो 'जोत' ।
ज्योतिक(ख)–देखो 'जोतिस' ।
ज्योतिकी (खि,खी)–देखो 'जोतिसी' ।
ज्योतिधारी–वि० द्युतिवत ।
ज्योतिरलिंग–पु० [स० ज्योतिर्लिंग] १ शिव, महादेव । २ शिव के प्रधान बारह लिंग ।
ज्योतिरूप–पु०[सं० ज्योतिस्वरूप] परब्रह्म, परमात्मा ।
ज्योतिस–देखो 'जोतिस' ।
ज्योतिसी–देखो 'जोतिसी' ।
ज्योतिस्पथ–पु०[स० ज्योतिष्पथ] आकाश, व्योम ।
ज्योतिस्पुंज–पु० [सं० ज्योतिष्पुंज] नक्षत्रो का समूह ।
ज्योतिस्वरूप–देखो 'जोतिसरूप' ।
ज्योतसना, ज्योत्स्ना–स्त्री० [स० ज्योत्स्ना] चन्द्रमा का प्रकाश; चादनी ।
ज्यौं–क्रि०वि० जैसे, जिस तरह ।
ज्रिम्राळो–पु० पर्वत, पहाड ।
ज्रिम्रित–पु० शृंगार का एक आसन ।
ज्वर–पु० [स०] १ बुखार, ताप । २ एक प्रकार का रत्न ।
ज्वळत (तौ)–वि० [स० ज्वलत] (स्त्री० ज्वळती) १ ,जलता हुआ, प्रकाशमान, दीप्त । २ प्रत्यक्ष, दिखता हुआ ।
ज्वळणौ (बौ)–देखो 'जळणौ' (बौ) ।
ज्वाब–देखो 'जवाब' ।
ज्वाब-ज्वाब–क्रि०वि० स्थान-स्थान, जहा-जहा ।
ज्वार–पु० १ समुद्री लहरो का उफान । २ देखो 'ज्वार' ।
ज्वार-भाटौ–पु०समुद्र के जल का विशेष चढाव ।
ज्वाळ–देखो 'ज्वाळा' ।
ज्वाळका–स्त्री० [स० ज्वालिका] १ ज्वालाग्नि । २ क्रोधाग्नि ।
ज्वाळजीह–स्त्री० [स० ज्वालजिह्वा] अग्नि ।
ज्वाळ-ज्वाळा–स्त्री० [स० ज्वाला-ज्वाला] १ अग्नि । २ आग की लपट । ३ ज्वालामुखी । ४ दुर्गा का एक रूप ।
ज्वाळमयाळ–स्त्री० १ ज्वाला । २ बिजली ।
ज्वाळमाळा–स्त्री० अग्नि, आग ।
ज्वाळमाळी–पु० [स० ज्वालमालिन्] सूर्य ।
ज्वाळा–स्त्री० [स०ज्वाला] १ ताप, जलन । २ विष आदि के ताप का प्रभाव । ३ अग्नि, आग । ४ आग की लपट । ५ क्रोध, क्रोधाग्नि । ६ एक देवी का नाम । —कार–वि० अग्निमय ।

—देवी–स्त्री० शारदापीठ स्थित एक देवी। —नल–स्त्री० आग की लपट। —माळिणी (नी)–स्त्री० एक तान्त्रिक देवी। —मुख–पु० सुदर्शन चक्र। —मुखी–पु० वह पर्वत जिसमे से आग की ज्वाला फूटती रहती हो। ज्वालादेवी।

ज्वाळामुखी-जोग–पु० एक अशुभ योग।

ज्वाळिका–स्त्री० [स० ज्वालिका] १ अग्नि, आग। २ ज्वाला मुखी। ३ एक जडी विशेष।

ज्हांनू–देखो 'जान्ही'।

ज्हाज–देखो 'जा'ज'।

ज्होड–देखो 'जोड'।

—झ—

झ–देवनागरी वर्णमाला के 'च' वर्ग का चौथा वर्ण।

झ–स्त्री० ध्वनि विशेष।

झक–पु० १ सताप, उलझन। २ देखो 'झख'।

झकण (न)–पु० समुदाय, झुण्ड।

झकणौ (बौ)–देखो 'झंखणौ' (बौ)।

झकार–स्त्री० [स०] १ भ्रमर गुजार, भौंरे की आवाज। २ किसी धातु खण्ड का 'छन्' शब्द। ३ पायल, घुघरू आदि की आवाज। ४ छनछनाहट, झनझनाहट। ५ तार वाद्यो की आवाज।

झकारणौ (बौ)–क्रि० [स० झकार] १ किसी धातु खण्ड से छन्-छन् आवाज कराना, बजाना। २ पायल, घुघरू आदि बजाना। ३ तार वाद्य बजाना, झकृत करना।

झकारतन–पु० स्त्रियो के पैर का आभूषण, नूपुर।

झकारी–पु० भ्रमर, भौरा, मधुप।

झकाळ (ळौ)–पु० पत्ते विहीन या सूखा पेड।

झकि–पु० एक वाद्य विशेष।

झंकौ–वि० (स्त्री० झंकी) १ गर्द आदि से आच्छादित, धुधला। २ नीरस। ३ उदास, खिन्न।

झंकौळणौ (बौ)–देखो 'झकोळणौ' (बौ)।

झख–पु० १ धुधला दिखने का भाव या अवस्था। २ दीप शिखा पर पतगो का गिरना। ३ मोहित या आशक्त होने का भाव। ४ चमक, आभा। ५ उदासी खिन्नता।

झखड–पु० १ ग्रीष्मकाल की गर्म हवा, लू। २ देखो 'झखर'।

झखणौ (बौ)–क्रि० १ झलकना, चमकना। २ प्रकाशित या रोशन होना। ३ झलक दिखना। ४ दुखी होना, परेशान होना। ५ चौंकना। ६ देखना। ७ धूमिल होना, धुधला होना। ८ शर्माना। ९ बोलना, बकना।

झखर (रौ), झंखाड–पु० १ सूखा वृक्ष या सूखी झाडी। २ वृद्ध, बूढ़ा। ३ झाडी।

झखरौ, झखेरौ–पु० १ बरसाती आधी, तूफान, वातचक्र। २ जखीरा, सामान।

झगर–पु० १ घने वृक्षो का समूह, झाडी। २ वन, जगल।

झंगरी–स्त्री० १ कब्रिस्तान। २ कब्र। ३ देखो 'झगर'।

झगार, झगी–स्त्री० १ एक जगली जाति। २ देखो 'झगर'।

झगीव–पु० [स० झगव] ४९ क्षेत्रपालो मे से २५ वा क्षेत्रपाल।

झगो–पु० छाछ, मट्ठा।

झजीर–देखो 'जजीर'।

झझ–पु० १ सर्प, नाग। २ देखो 'झाझ'।

झझट–पु० १ व्यर्थ का झगडा, बखेडा। २ परेशानी, आफत।

झंझर, झझरा–देखो 'जाझर'।

झझरी–वि० १ ढीला-ढाला, जर्जरी भूत। २ देखो 'जाझर'।

झझा–स्त्री० [स०] १ वर्षा के साथ आधी, तूफान। २ इस तूफान का शब्द, झन्-झन् शब्द।

झझावत (वात, वातू)–पु० [सं० झझावात] १ बरसाती तूफान। २ बरसाती शीतल वायु। ३ वातचक्र।

झझेडणौ (बौ), झंझेरणौ (बौ), झझोड़णौ (बौ), झझोरणौ (बौ)–क्रि० हिलाना, झकझोरना। छेडना।

झडाळ–वि० १ झडा रखने वाला। २ देखो 'झडौ'।

झडी, झडौ–पु० १ किसी धातु या लकडी के डडे पर बाध कर फहराया जाने वाला विविध रगीय वस्त्र, पताका। २ राष्ट्रीय ध्वज। ३ देवालय पर लगी ध्वजा।

झनीकार–पु० ध्वनि या शब्द विशेष।

झप–देखो 'झपा'।

झंपटाळ (ताळ)–पु० १ चौदह मात्रीय एक छन्द विशेष। २ सगीत मे एक ताल।

झपणौ (बौ)–क्रि० १ दीपक की लौ का हिलना। २ अस्थिर रहना। ३ आग का बुझना। ४ छलाग भरना, कूदना।

५ झपटना, टूट पडना । ६ पकडना, झापना । ७ नींद लेना, झपकी लेना । ८ शर्माना, झेंपना ।

झंपा–स्त्री० [स०] १ छलांग, कुदान । २ गिरते समय किसी को पकडने का भाव, झपटी ।

झंपाणौ (बौ), झपावणौ (बौ)–क्रि० १ दीपक की लौ को हिलाना । २ अस्थिर रखना । ३ आग को बुझाना । ४ छलांग भराना, कुदाना । ५ झपटाना, छिनवाना । ६ पकडवाना । ७ निद्रा या झपकी लिराना । ८ लज्जित करना ।

झपौ–देखो 'झापौ' ।

झफणौ (बौ)–देखो 'झपणौ' (बौ) ।

झब–स्त्री० १ पेड की शाखा, टहनी । २ वृक्ष समूह, झुंड । ३ आश्रय, सहारा । ४ शरण, पनाह ।

झभ–स्त्री० १ दीपक की वत्ती । २ प्रकाश ।

झबरौ–पु० १ पत्तियां युक्त वृक्ष की टहनी । २ टहनियो का गुच्छा । ३ शरीर का मैल उतारने का एक मिट्टी का उपकरण ।

झ–पु० [स०] १ हाथ । २ मछली, मच्छ । ३ ग्राम । ४ निदान । ५ नाश । ६ मैथुन । ७ बरसाती तूफान, झंझावात । ८ वृहस्पति । ९ दैत्यराज । १० ध्वनि ।

झईवर–पु० [स० धीवर] नाविक ।

झउड़ौ–१ देखो 'जुग्रौ' । २ देखो 'जाऊडौ' ।

झक–स्त्री० १ सनक, धुन, तरग । २ देखो 'जक' । ३ देखो 'झक्क' । ४ देखो 'झख' ।

झकक–स्त्री० छाया, प्रतिबिंव ।

झककेतु (तू)–पु० [स० झषकेतु] अनग, कामदेव ।

झकड़–स्त्री० १ वर्षा के पूर्व की आधी । २ तूफान । ३ लू ।

झकडौ–वि० रहस्यपूर्ण, गुप्त । –पु० दूध दूहने का वर्तन ।

झकड़ौ–पु० जुग्रा ।

झकझक–स्त्री० वकवाद ।

झकझकाहट–स्त्री० १ चमक, दीप्ति, काति । जगमगाहट । २ वकवास ।

झकझोर–स्त्री० १ हिलाने की क्रिया या भाव, छेड-छाड । २ झटका । ३ क्रीडा । –वि० १ तेज, तीव्र, झौंकेदार । २ रक्ताभ, लाल ।

झकझोरणौ (बौ)–क्रि० १ पकड कर जोर से हिलाना । २ झटका देना । ३ छेडछाड करना, परेशान करना ।

झकझोरौ–पु० झौंका, झटका ।

झकझोळ–देखो 'झकझोर' ।

झकट–पु० [स०] मारकाट, युद्ध ।

झकणौ (बौ)–क्रि० १ व्यर्थ की वकवास करना, वकना । २ क्रोध मे वडबडाना ।

झकबोळ–वि० भीगा हुआ, तर । लथ-पथ, सना हुआ ।

झकबोळणौ (बौ)–क्रि० १ पानी या अन्य तरल पदार्थो मे भिगोना, तरबतर करना। २गहरा रगना ।

झकाझक–वि० उज्ज्वल, स्वच्छ ।

झकाणौ (बौ)–क्रि० आग सुलगाना, जलाना ।

झकाळ–स्त्री० वकवास, वक-वक ।

झकी–स्त्री० १ लडखडाने की क्रिया या भाव । २ झौंका, हिलोर । ३ देखो 'झक्की' ।

झकोडी–स्त्री० पश्चाताप ।

झकोर (ळ)–पु० १ वायु का झौंका । २ क्रीडा, केलि । ३ युद्ध, लडाई । ४ उत्सव, झलसा । ५ प्रक्षालन ।

झकोरणौ (बौ), झकोळणौ (बौ)–क्रि० १ मुलम्मा या गिलट चढ़ाना । २ भिगोना, तर करना । ३ वायु का झौंका लगाना । ४ क्रीडा करना । ५ प्रक्षालन करना, धोना ६ स्नान कराना । ७ गाना ।

झकोळी–स्त्री० १ झकोलने की क्रिया या भाव । २ स्नान ।

झकोळौ–पु० १ लहर, तरग, हिलोर । २ आघात, टक्कर, झटका । ३ अस्थिरता का भाव । ४ देखो 'झकोळी ।

झक्क (ड़)–वि० १ स्वच्छ, उज्ज्वल । २ अतिश्वेत । ३ चमकदार, चमकीला । ४ मस्त, मुग्ध । ५ देखो 'झक' ।

झक्की–वि० १ व्यर्थ वकने वाला, वकवादी । २ सनकी । ३ धुन का पक्का ।

झख–पु० [स० झष] १ जगल, निर्जन वन । २ रेगिस्तान । ३ मत्स्य, मछली, मीन । ४ मीन राशि । ५ गर्मी, ताप । ६ इच्छा, आशा । ७ देखो 'झक' । **—केत, केतु (तू)**= 'झककेतु' । **—कूर**–वि० चूर-चूर, नाश, ध्वंस । **—ध्वज**–पु० कामदेव । **—निकेत**–पु० समुद्र, जलाशय । **—बोळ**='झकबोळ' । **—वधक**–पु० मछली पकडने का यत्र ।

झखणौ (बौ)–क्रि० इच्छा करना, आकाक्षा करना ।

झखोरणौ (बौ)–देखो 'झकझोरणौ' (बौ) ।

झगडणौ (बौ)–क्रि० [सं० झकट] १ झगडा करना, लडाई करना । २ विवाद, तकरार करना । ३ कलह करना ।

झगड़ालू, झगडी, झगड़ेल–वि० [स० झकट+आलुच] १ युद्ध प्रिय, कलह गारा । २ विवाद करने वाला । ३ दुष्ट ।

झगडौ–पु० [स० झकट] १ लडाई, युद्ध । २ टटा, फिसाद । ३ विवाद । ४ मन-मुटाव, वैमनस्य ।

झगझग, झगझगा'ट, झगझगाहट–स्त्री० १ प्रज्वलित होने की क्रिया या भाव । २ दहकन । ३ तग मुह के पात्र से द्रव पदार्थ के निकलने की ध्वनि ।

झगझगणौ (बौ)–क्रि० प्रकाशित होना, प्रज्वलित होना, दहकना ।

झगणौ (बौ)–देखो 'जागणौ' (बौ)।

झगमग (मगि)–देखो 'जगमग'।

झगमगणौ (बौ)–देखो 'जगमगणौ (बौ)।

झगर–स्त्री० १ सूर्य की गर्मी। २ लू।

झगरौ–पु० १ जलने के लिये एकत्र किया हुआ, घास-फूस आदि का ढेर। २ उक्त ढेर के जलने से प्रज्वलित अग्नि।

झगिया–पु० झाग, फेन।

झगौ–पु० १ छोटा, बच्चा। २ छोटे बच्चे की अंगिया।

झघाट–वि० [स० झकट] १ झगडालु, युद्ध प्रिय। २ जबरदस्त, जोरदार।

झड–पु० १ समूह, ढेर। २ पद्य, छन्द या गीत का चरण, पक्ति। ३ देखो 'जड'। ४ देखो 'झडी'।

झडउलट–पु० 'कु डलिया' छद का एक भेद।

झडक–स्त्री० झटका।

झडकणौ (बौ) झड़काणौ(बौ) झडकावणौ (बौ)–क्रि० १ झटका देना, झटकना। २ फटकारना, तिरस्कृत करना।

झड़क्कौ–पु० १ झटका प्रहार। २ प्रहार की ध्वनि।

झड़ज्झड़–स्त्री० शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

झड झड़ाट–स्त्री० शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

झड़-झांकड, (झांकळ, झांकौ)–स्त्री० निरन्तर होने वाली हल्की बारिस, बू दा-बादी, फूहार।

झडणौ (बौ)–क्रि० वि० १ पत्ते, फल आदि की तरह टूट कर गिरना, टूटना। २ खण्ड-खण्ड, कण-कण होना। ३ ढह पडना, गिरना। ४ टपकना। ५ प्रहार होना, वार होना। ६ टूटना। ७ कट कर गिरना, कटना। ८ वीरगति को प्राप्त होना। ९ मरना। १० वीर्य का स्खलित होना। ११ शस्त्रादि की धार टूटना। १२ चेचक रोग से मुक्ति पाना। १३ दुर्बल होना, कृशकाय होना। १४ कम होना। १५ मिटना। १६ निर्धन होना, कगाल होना।

झडप–स्त्री० १ छत मे लटकने वाला कपडे का बडा पखा। २ लडाई, झगडा, मुठभेड। ३ विवाद, तकरार, हुज्जत। ४ गलफदार खिडकी के अन्दर की बाजू का पत्थर। ५ लकडी को घिसने का औजार। ६ झपटने या पकडने की क्रिया। ७ टक्कर, झपट। ८ हवा झलने की क्रिया या भाव। ९ सहसा किसी प्रकार के धन की उपलब्धि। १० आग की लौ, लपट।

झडपणौ (बौ)–क्रि० १ स्थान से अलग होना, गिरना, टूटना। २ द्रुतगति से भागना। ३ आक्रमण या हमला करना। ४ झगडा करना, उलझना। ५ झपट कर ले लेना। ६ छीनना। ७ किसी तरकीब से प्राप्त कर लेना। ८ हवा करना। ९ काटना, मारना, सहार करना। १० द्रुतगति से भागना। ११ झटके से गिराना, झटकना। १२ काबू या अधिकार मे करना।

झडपा-झडपी–स्त्री० १ गुत्थमगुत्था, हाथापाई। २ छीना झपटी।

झडपौ, झडफ (फौ)–देखो 'झडप'।

झड़फड़णौ (बौ)–क्रि० रोग विशेष के कारण निर्बल होना, दुर्बल होना।

झडफडाणौ (बौ)–क्रि० १ पीटना, मारना। २ कष्ट देना, तकलीफ देना। ३ छीनना, लूटना। ४ पक्षियो द्वारा परो को फडफडाना। ५ झटका देना।

झडफणौ (बौ), झडप्फणौ (बौ)–देखो 'झडपणौ' (बौ)।

झडबेरी–स्त्री० छोटे-छोटे बेरो की काटेदार झाडी।

झडबोर–पु० उक्त झाडी का फल, बेर।

झड़मुगट–पु० खुडद साणोर गीत के अन्तर्गत एक गीत (छद) विशेष।

झडलपत, (लुपत)–पु० डिंगल का एक गीत विशेष।

झडवाण(वाणी)–स्त्री० १ एक प्रकार की तोप। २ वर्षा की झडी।

झड़वायौ–वि० वर्षा सबधी।

झड़ाकौ–पु० १ तिरछी, चितवन, कटाक्ष। २ मुठभेड, लडाई, झडप।

झडाझड़, झडाझडी–क्रि० वि० लगातार, विना रुके, निरन्तर। –स्त्री० झडने की क्रिया या भाव।

झडापड, (पडि, फड, फड़ि)–स्त्री० १ फडफडाहट। २ छीना-झपटी। ३ फिसाद-टटा।

झडियाळ–वि० वीरगति प्राप्त करने वाला।

झड़ी–स्त्री० [स० झटि] १ लगातार होने वाली वर्षा। २ छोटी-छोटी बू दो की बारिस। ३ लगातार गिरने या झडने की क्रिया। ४ लगातार कहने या करने की क्रिया या भाव। ५ निरन्तर प्रहार। ६ निरन्तर काव्य पाठ। गायन। ७ डिंगल का एक छद विशेष।

झडयळ, झड ूयळ–पु० डिंगल का एक गीत (छद) विशेष।

झड ूलौ–पु० [स० चूडा, चूडाल] १ बच्चे के जन्म के समय के बाल। २ इन बालो का मुण्डन सस्कार, चूडाकरण संस्कार।

झडोफड–वि० गुत्थागुत्थी, आलिंगनबद्ध।

झडोलौ–देखो 'झडूलौ'।

झझक–देखो 'झिझक'।

झझकाडणौ (बौ), झझकाणौ (बौ), झझकावणौ (बौ)–देखो 'झिझकाणौ' (बौ)।

झझणण–स्त्री० १ वाद्य ध्वनि। २ झनझन का शब्द, झन्कार। ३ झन्झनाहट।

झझारौ–पु० स्वर्णकारो का एक औजार।

झझियौ, झझौ–पु० 'झ' वर्ण। झकार।

झट-क्रि०वि० [सं० झटिति] तत्काल, तत्क्षण, तुरत, शीघ्र। -पु० १ वेग, गति। २ देखो 'झाट'।

झटक-स्त्री० झटका देने की क्रिया या भाव, झटका।-क्रि०वि० तुरत, शीघ्र।

झटकणो (बो), झटकारणो (बो)-क्रि०१ झटका देना। २ झटक कर अलग करना। ३ वस्त्रादि को फटकारना। ४ झाड़ना, बुहारना। ५ जोर से हिलाना। ६ गिराना पटकना। ७ तिरस्कृत करना, भर्त्सना करना। ८ ठगना। ९ कोई वस्तु बलात् लेना। १० मंत्रादि से प्रेत बाधा हटाना। ११ डावाडोल होना। १२ देखो 'झडणो' (बो)।

झटके (कै)-क्रि० वि० [सं० झटिति] १ तत्काल, शीघ्र। २ द्रुत गति से। ३ फटाफट। ४ झटकते हुए।

झटको-पु० [सं० झटिति] १ धक्का, झटका। २ चोट आघात। ३ प्रतिघात। ४ शस्त्र प्रहार। ५ वार। ६ सदमा, मानसिक, आघात। ७ कुश्ती का दाव। ८ इधर-उधर झोंका खाने की क्रिया या भाव। ९ आर्थिक हानि। ११ विद्युत का झन्नाटा।

झटक्कणो (बो)-देखो 'झटकणो' (बो)।

झटक्कै-देखो 'झटकै'।

झटप्पो-देखो 'झटको'।

झटपख-पु० गरुड पक्षी।

झटपट-क्रि० वि० तुरन्त, तत्काल, शीघ्र।

झटपटो-स्त्री० १ शीघ्रता। २ देखो 'झटपट'।

झटपटो-पु० १ बड़ा सवेरा, तड़का, उषाकाल। २ देखो 'झटपट'।

झटसार-स्त्री० तलवार।

झटा-स्त्री० झपट, चोट, प्रहार।

झटाको-पु० १ विवाद, तकरार। २ बहस। ३ देखो 'झटको'।

झटाछ-क्रि० वि० [सं०झटिति] शीघ्र, तुरन्त, झटपट।

झटाझट-क्रि०वि० शीघ्र ही, तुरन्त, फुर्ती से। -स्त्री० शस्त्र प्रहारों की ध्वनि।

झटापत-पु० योद्धा, वीर, बहादुर।

झटारो-पु० प्रहार, आघात।

झटित-देखो 'जटित'।

झटैस-क्रि० वि० शीघ्र, तुरत।

झटोझट-देखो 'झटाझट'।

झट्ट-१ देखो 'झट'। २ देखो 'झाट'।

झट्टाक, झठाक-क्रि० वि० [illegible] तुरत।

झठाऊो (ओ)-क्रि० १ [illegible]। २ [illegible]।

झणक (को)-देखो '[illegible]'।

झणका, झणंकार-स्त्री० १ [illegible]। २ [illegible]। ३ ध्वनि।

झणक-स्त्री० १ झन्‌झन् शब्द, ध्वनि। २ झंकार, मधुर ध्वनि। ३ वीणा आदि की ध्वनि। ४ भ्रमर गुंजार। ५ तन्त्री की ध्वनि।

झणकणो (बो)-क्रि० १ झंकृत होना, झनझनाना। २ वाद्य वाद्य का बजना। ३ भौंरे आदि का गुंजार करना। ४ शस्त्रों का शब्द होना।

झणकवात-पु० घोड़े का एक रोग।

झणकाणो (बो)-क्रि० १ झंकृत करना, झनझनाना। २ वाद्य वाद्य बजाना। ३ शस्त्रों का शब्द कराना।

झणकार (कारो)-देखो 'झंकार'।

झणकारणो (बो), झणकावणो(बो)-देखो 'झणकारणो' (बो)।

झणक्कणो (बो)-देखो 'झणकणो' (बो)।

झणझण-स्त्री० झंकार, झन्‌-झन् शब्द।

झणझणा'ट, झणझणाहट-स्त्री० १ झंकार। २ झुन्-झुनाहट।

झणझणो, झणझ्झण-देखो 'झणझण'।

झणण-स्त्री० [अनु०] झंकार, छुन्-छुनाहट।

झणहण-देखो 'झणझण'।

झणाट, झणाहट, झण्णाट, झण्णाहट-देखो 'झणझणाहट'।

झत्ति-क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

झनकार-देखो 'झणकार'।

झप-स्त्री० १ दीपक की लौ भभकने की क्रिया। २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि। ३ देखो 'झब'।

झपक-१ देखो 'झपकी'। २ देखो 'लपक'।

झपकणो (बो)-क्रि० १ नींद की झपकी लेना। ऊंघना। २ पलकें गिराना। ३ प्राण भागना। ४ झपना, लज्जित होना। ५ झपटना, झपट पड़ना, हमला करना। ६ चौंकना। ७ डरना, सहम जाना।

झपकाणो(बो), झपकावणो (बो)-क्रि० १ पलकें [illegible] करना। २ पलकें गिराना। ३ लज्जित करना। ४ झपटाना। ५ चौंकाना। ६ डराना।

झपको-स्त्री० १ [illegible], ऊंघ। २ पलकों की [illegible] की क्रिया। ३ [illegible]।

झपकै (कै)-क्रि०वि० शीघ्र [illegible]।

झपट-स्त्री० १ [illegible] की क्रिया या भाव, चोट। २ [illegible], मुठभेड़। ३ विवाद, तकरार। ४ [illegible]। ५ [illegible]। [illegible]। ७ [illegible]। ८ [illegible] की क्रिया या भाव। ९ [illegible]। १० [illegible] की क्रिया। ११ [illegible] की क्रिया या भाव।

झपटणो (बो)-क्रि० १ [illegible]। २ [illegible] करना। ३ [illegible]। ४ [illegible]। ५ [illegible] करना।

६ भागना । ७ उलझना, झगडना । ८ छीना-झपटी करना । ९ आघात या प्रहार करना । १० टक्कर या धक्का मारना । ११ काटना मारना ।

झपटाडणौ (बौ), झपटाणौ (बौ), झपटावणौ (बौ)–क्रि० १ तेज भगाना, दौडाना । २ दौडा कर आगे बढाना । ३ हमला या आक्रमण कराना । ४ परस्पर लडाना, झगडा कराना । ५ काबू मे कराना, पकडवाना । ६ छिनवाना । ७ झपट कर ले लेना । ८ हवा कराना । ९ टक्कर लगवाना । १० चोट करवाना, प्रहार करवाना । ११ सहार करवाना, मरवाना ।

झपटी–देखो 'झपट' ।

झपटैत–वि० १ झपटने वाला । २ प्रहार करने वाला । ३ आक्रामक । ४ तेज भागने वाला । ५ लडने वाला । ६ विवादी । ७ पकडने वाला । ८ मारने वाला ।

झपटौ–पु० १ झपाटा, हमला । २ प्रहार, चोट । ३ फटकारा । ४ झटका । ५ चपेट ।

झपट्ट–देखो 'झपट' ।

झपट्टणौ (बौ)–देखो 'झपटणौ' (बौ) ।

झपट्टौ–देखो 'झपटौ' ।

झपणौ (बौ)–१ देखो 'झपणौ'(बौ) । २ देखो 'जपणौ' (बौ) ।

झपताळ–स्त्री० सगीत मे एक ताल विशेष ।

झपां–स्त्री० टहनी, शाखा ।

झपांण (न)–स्त्री० पहाडी सवारी विशेष ।

झपाणी (नी)–पु० 'झपाण' उठाने वाला, कहार ।

झपाक (को)–क्रि० वि० तुरत, शीघ्र, फौरन । –स्त्री० शीघ्रता, जल्दी ।

झपाझप–क्रि०वि० द्रुतगति से, शीघ्रता से ।

झपाटौ–देखो 'झपटौ' ।

झपीड–पु० १ चोट, प्रहार । २ झपट, चपेट ।

झपेट (टौ)–देखो 'झपटौ' ।

झपोझप–देखो 'झपाझप' ।

झफसमुद्र–पु० समुद्र लाघने वाला, हनुमान ।

झब, झबक–पु० १ समय का कोई अश । २ बार, दफा, मर्तबा । २ रह-रह कर चमकने की क्रिया, चमक । ३ झिलमिलाहट । –क्रि०वि० शीघ्र, तुरत ।

झबकइ (ई)–क्रि० वि० शीघ्र ही, तुरत ।

झबकणौ (बौ)–क्रि० १ रह-रह कर कौंधना, चमकना । २ झलकना दिखाई, देना । ३ झिलमिलाना, टिमटिमाना । ४ भभकना ।

झबकाणौ (बौ), झबकावणौ (बौ)–क्रि० १ रह-रह कर कौंधाना, चमकाना । २ झलकाना, दिखाना । ३ झिलमिल कराना, टिमटिमाना । ४ भभकाना ।

झबकारौ–देखो 'झबकौ' ।

झबकौ–पु० १ क्षण भर दिखाई देकर ओझल होने की क्रिया या भाव, झाकी । २ क्षणिक प्रकाश, दमक । ३ झलक, प्रकाश । ४ किसी वस्तु के होने का आभास । ५ कभी-कभी धु धलासा दिखने की अवस्था या भाव ।

झबक्कणौ (बौ)–देखो 'झबकणौ' (बौ) ।

झबझब–क्रि० वि० चमक-दमक के साथ, चमकता हुआ ।

झबझबणौ (बौ)–देखो 'झबकणौ (बौ) ।

झबरक–स्त्री० १ झिलमिलाहट, टिमटिमाहट । २ चमक-दमक । –वि० चमकता हुआ, प्रकाशित ।

झबरकणौ (बौ)–क्रि० हिलना-डुलना, झूमना । २ हिलोरें खाना, झौंके खाना । ३ देखो 'झबकणौ' (बौ) ।

झबरकौ–पु० १ शस्त्र की नोक । २ देखो 'झबकौ' ।

झबरखणौ (बौ)–देखो 'झबरकणौ' (बौ) ।

झबरखौ–देखो 'झबरकौ' ।

झबळक–स्त्री० १ जल आदि का विलोडण । २ विलोडण से उत्पन्न ध्वनि । ३ वस्त्र को पानी मे डाल कर हिलाने की क्रिया या भाव । ४ छलकन, उफान । ५ देखो 'झबरक' ।

झबळकणौ (बौ)–क्रि० १ देदीप्यमान होना, चमकना । २ जल आदि विलोडित होना । ३ विलोडन से ध्वनि होना । ४ छलकना, छलक कर बाहर आना । ५ झिलमिलाना, टिम-टिमाना । ६ हिलना-डुलना, झूमना । ७ देखो 'झबळणौ' (बौ) ।

झबळकौ–पु० १ स्नान के लिये लगाई जाने वाली डुबकी । २ देखो 'झबकौ' ।

झबळणौ (बौ)–क्रि० वस्त्र को पानी मे भिगोना, भिगोकर हिलाना, मसलना ।

झबाक–क्रि० वि० शीघ्र, तुरत ।

झबाकौ–पु० १ छपाकौ । २ छपाके की ध्वनि । ३ देखो 'झबकौ' ।

झबाझारी–स्त्री० एक प्रकार का दीपक ।

झबू–पु० १ ऊट के चमडे का एक बर्तन विशेष । २ ताश का काला रग । ३ काले रग का इक्का ।

झबूकडौ, झबूक्कडौ–देखो 'झबकौ' ।

झबूकणौ (बौ)–क्रि० १ लटकना, लूबना, पकड कर झूलना । २ अटकना । ३ देखो 'झबकणौ' (बौ) । ४ देखो 'झबरकणौ' (बौ) ।

झबूकु, झबूकौ–देखो 'झबकौ' ।

झबोळ–स्त्री० १ शरीर पर वस्त्र की लपेट । २ पानी मे वस्त्र डालकर हिलाने की क्रिया । ३ तरल पदार्थ मे वस्तु डालने की क्रिया ।

झबोळणौ (बौ)–क्रि० १ शरीर पर वस्त्र लपेटना। २ पानी मे वस्त्र भिगोकर हिलाना । ३ तरल पदार्थ मे कोई वस्तु डुवाना ।

झबोळौ–पु० १ विघ्न, बाधा। २ कोई बडा काम । ३ देखो 'झबळको' ।

झबौ–पु० १ स्त्रियो की चोली । २ वच्चो के पहनने का वस्त्र । ३ अनाज वोने की बीजणी का ऊपरी मुह। ४ चमक, प्रकाश । ५ देखो 'झावौ'।

झबोळी–देखो 'झबोळौ'।

झब्बौ–पु० १ गुच्छा । २ समूह । ३ आभूषण विशेष (मेवात) । ४ देखो 'झबौ' । ५ देखो 'झावौ' ।

झमकणौ (बौ)–देखो 'झमकणौ' (बौ) ।

झम–स्त्री० १ छम-छम ध्वनि । २ देखो 'झब' ।

झमक–स्त्री० १ छमक, झन्कार । २ घुघुरू की घोर । ३ चमक, प्रकाश । ४ नखरे से चाल, ठसक । ५ यमक अलकार । ६ मजाक हँसी । ७ शस्त्रो की खनक ।

झमक-झमक–क्रि०वि० छम-छम ध्वनि करते हुए ।

झमकणौ (बौ)–क्रि० १ छमकना, झन्कृत होना । २ घुंघरू का वजना । ३ चमकना, प्रकाशित होना । ४ ठसक से चलना। ५ मजाक करना, हँसना । ६ शस्त्र खनकना । ७ चेचक रोग का विकृत होना ।

झमकाणौ (बौ), झमकावणौ (बौ)–क्रि० १ छमकाना, झन्कृत करना । २ घुघरू वजाना । ३ चमकाना, प्रकाशित करना । ४ ठसक से चलाना । ५ मजाक कराना । हँसाना । ६ शस्त्र खनकाना ।

झमकीलौ–वि० (स्त्री० झमकीली) १ ठसक या नखरे से चलने वाला । २ छैल-छवीला । ३ चमकने वाला ।

झमके (कै)–क्रि०वि० शीघ्रता से, तुरत ।

झमकौ–पु० १ पायल या घुघरू का शब्द, ध्वनि, ठमका । २ देखो 'झूमकौ' ।

झमझम–स्त्री० छमाछम की ध्वनि, झन्कार । –क्रि०वि० छमाछम करते हुए ।

झमझमा'ट–स्त्री० छमाछम की ध्वनि, झन्कार ।

झमझमाणौ (बौ)–क्रि० छमाछम करना, ध्वनि करना, झन्कारना ।

झमझमौ–पु० एक प्रकार का वाद्य ।

झमर–पु० वालो का गुच्छा ।

झमरतळी–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।

झमाकौ–पु० घुघरू या आभूषणो का घोर, शब्द, ध्वनि । जोर की झकार ।

झमाळ–स्त्री० डिंगल का एक छन्द विशेष ।

झमाल (लि, ली)–स्त्री० १ किरण-जाल । २ गुच्छा, समूह । ३ मच्छर जाति का एक पतगा । –वि० चमकदार, चमकता हुआ ।

झमेल–पु० १ एक उपकरण विशेष । २ देखो 'झमेलौ' ।

झमेलियौ–वि० झमेला या उलझन डालने वाला, विघ्नकारक । झगडालू ।

झमेलौ, झमोलौ–पु० १ झगडा, टटा, वखेडा । २ उलझन, पेचीदगी । ३ पेचीदा कार्य । ४ विघ्न, वाधा ।

झर–स्त्री० १ किसी द्रव पदार्थ के रिसने या टपकने की क्रिया, स्राव । २ जलपात्र, वडा घडा (मेवात) ।

झरडक–स्त्री० १ शस्त्र का प्रहार । २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ३ दधि मन्थन का घोष । ४ खरोच या रगड लगने की क्रिया या भाव ।

झरडकणौ (बौ)–क्रि० १ रगड लगाना, खरोच लगाना । २ फाडना, चीरना । ३ प्रहार करना । ४ प्रहार की ध्वनि होना ।

झरडकौ–पु० १ खरोच, रगड । २ खरोच पडने का स्थान । ३ दधि मथन का घोष । ४ प्रहार, आघात । ५ प्रहार की ध्वनि ।

झरडणौ (बौ)–क्रि० १ खरोचना, रगडना । २ दधि मथना । ३ नोचना । ४ चीरना, फाडना ।

झरडमरड–पु० दही मथने की ध्वनि ।

झरझर, झरझरकंतौ (कयौ), झरझरौ–वि० १ फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण । २ तर-वतर, टपकता हुआ ।

झरणा'ट, झरणाटौ, झरणाहट–स्त्री० १ घुघुरू, आभूषण, शस्त्रादि की तीव्र झकार । २ किसी वाद्य या धातु की वस्तु पर आघात पडने से होने वाली झन्-झन् ध्वनि । ३ विच्छु के काटने या विद्युत के स्पर्श आदि से शरीर मे होने वाली सनसनाहट । ४ पीडा, दर्द ।

झरणि, झरणी (णौ)–क्रि० [स० क्षरण] १ जल प्रपात, सोता, चश्मा । २ वहाव, प्रवाह । ३ क्षरण, पतन । –वि० १ झरने वाला, झरने योग्य । २ असहिष्णु ।

झरणौ (बौ)–स्त्री० [स० क्षरणम्] १ किसी तरल पदार्थ का रिसना, टपकना, स्राव होना । २ गिरना, पतन होना । ३ प्रपात होना, उपर से निरन्तर गिरना । ४ टुकडे-टुकडे होकर पडना । ५ वरसना । ६ स्खलित होना ।

झरपट–स्त्री० १ साधारण सी चोट या घाव । २ खरोच । ३ झपट, चपेट ।

झरमर–१ देखो 'झिरमिर' । २ देखो 'झरडमरड' ।

झरी–स्त्री० १ भूमि खोद कर वनाई गई भट्टी, भाड । २ दीवार की दरार । ३ झरना, चश्चा, प्रपात । ४ एक प्रकार

का ज्वर। ५ एक प्रकार का रोग । ६ देखो 'जरी'। ७ देखो 'झडी'।

झरूंटियो–पु० खरोंच, रगड।

झरूंको (खो), झरोक, झरोकडो झरोको, झरोख, झरोखो–पु० मकान के द्वार या खिडकी के ऊपर बना जालीदार गवाक्ष, मोखा, गौखा। जालियो से आच्छादित बालकानी।

झलब–स्त्री० १ चमक, आभा, काति । २ देखो 'झिलम'। –वि० कातिवान, चमकदार।

झळ–स्त्री० १ झडी, झागी । २ आग की लपट, अग्नि शिखा ज्वाला। ३ गरमी, ताप। ४ अग्नि, आग। ५ उग्रकामना, उत्कट इच्छा । ६ काति, दीप्ति । ७ चमक-दमक। ८ खुजलाहट, खुजली । ९ स्त्री की कामेच्छा, चुल। १० उष्ण वायु, लू। ११ मृगशिरा नक्षत्र का उदय-स्थान, पूर्व दिशा।

झल–स्त्री० १ पकडने की क्रिया या भाव । २ धारण करने की क्रिया या भाव। –वि० १ पकडने वाला । २ धारण करने वाला। ३ पूर्ण।

झळक–स्त्री० [स० ज्वलन्] १ आभा, काति, द्युति। २ चमक-दमक, प्रकाश । ३ प्रतिबिंब । ४ आभास। ५ तरग, उमग। ६ क्षणिक, प्रकाश।

झळकणो–वि० आभावान, कातिवान, चमकीला।

झळकणो (बो), झलकणो (बो)–क्रि० १ आभा देना, चमकना, प्रकाशित होना । २ हल्का दिखाई देना, स्फुटित होना। ३ दीखना, दृष्टिगोचर होना। ४ आभास होना। ५ कुछ-कुछ प्रगट होना। ६ प्रतिबिंब पडना, प्रतिबिंबित होना। ७ शोभा देना। ८ क्रोधित होना, क्रोध करना। ९ मर्यादा तोडना । १० छलकना, छलक कर बाहर होना। ११ हिलना-डुलना।

झळकाणो (बो)–क्रि० १ आभा या द्युति युक्त करना, चमकाना, प्रकाशित करना । २ हल्कासा दिखाना, स्फुटित करना। ३ दिखाना, दृष्टि गोचर करना। ४ आभास देना। ५ कुछ कुछ प्रगट करना । ६ प्रतिबिंब पटकना । ७ शोभित करना । ८ क्रोधित करना, क्रोध दिलाना । ९ मर्यादा, तुडाना । १० छलकाना, छलका कर बाहर करना। ११ हिलाना-डुलाना।

झळकारो–वि० (स्त्री०, झळकारी) १ जगमगाता हुआ। २ चमकदार, द्युतिवान। ३ देखो 'झळको'।

झळको (क्को)–पु० १ चमक-दमक, झलक । २ आकृति, आभास, प्रतिबिंब। ३ प्रकाश, कौंध। ४ लपट, लौ।

झलको–पु० गाडी में एक साथ भरे हुए घास या बाजरी आदि के सूखे डठल।

झळजीहा–स्त्री० [स० ज्वाला-जिह्वा] अग्नि, आग।

झळझळणो (बो), झळझळाणो (बो)–क्रि० जगमगाना, चमकना।

झळझळा'ट, झळझळाहट–स्त्री० जगमगाहट, चमक-दमक।

झळझाखसउ–स्त्री० [स० चलद्ध्वाक्षम्] उडती हुई या काल्पनिक बात, अविश्वसनीय बात।

झळझळि–स्त्री० अग्नि, आग।

झळण (न)–देखो 'जळन'।

झळणो (बो)–क्रि० १ पकडना। २ झपट कर ग्रहण करना। ३ देखो 'जळणो' (बो)।

झलणो (बो)–क्रि० १ सहन या बर्दाश्त करना । २ फैलना, छितराना। ३ पकडा जाना, पकड मे आना। ४ शोभित होना।

झळवकार–वि० ज्वालामय।

झळपट–स्त्री० अग्नि की ज्वाला, आग की लौ। आच।

झलम–देखो 'झिलम'। —टोप='झिलमटोप'।

झळमळणो (बो)–देखो 'झिळमिळणो' (बो)।

झळमळाणो (बो)–देखो 'झिळमिळाणो' (बो)।

झळमाळा–स्त्री० अग्नि, आग।

झलर–पु० एक प्रकार का पेय पदार्थ।

झळळ–स्त्री० १ जगमगाने या चमचमाने की क्रिया या भाव। २ चमक-दमक । ३ जलने की क्रिया या भाव। ४ आग की लपट। ५ सूर्य । ६ देखो 'झळहळ'।

झळसो–देखो 'जळसो'।

झळहर–पु० डिंगल मे वेलियो साणोर छद का एक भेद विशेष।

झलहळ–स्त्री० १ अग्नि, आग । २ काति, दीप्ति, ३ चमक-दमक। –वि० १ देदीप्यमान, आभा युक्त । २ तेजस्वी। ३ चमक-दमक वाला। ४ धधकता हुआ, प्रज्वलित।

झळहळणो (बो)–क्रि० [स० झलज्झला] १ देदीप्यमान होना, चमकना । २ प्रकाश फैलाना, प्रकाशित होना। ३ चमकना, कौंधना। ४ फहरना। ५ जाज्वल्यमान होना। ६ जगमगाना । ७ शोभित होना । ८ उमडना, सीमा बाहर होना। ९ प्रज्वलित होना, धधकना।

झळा–स्त्री० अग्नि, आग।

झळाझळ–देखो 'झळाहळ'।

झळाझळी–वि० चमकदार, चमकीला।

झलाणो (बो)–क्रि० १ लौटाना, वापस करना । २ पकडाना। ३ देना । ४ फैलाना, छितराना । ५ शोभित करना। ६ सहन कराना।

झळाबोळ–वि० १ जाज्वल्यमान, तपा हुआ । २ आग-बबूला, अतिकुपित । ३ देदीप्यमान । जगमगाता हुआ । ४ भयकर । ५ जबरदस्त ।

झळामळ–स्त्री० १ चमक-दमक । २ एक प्रकार का घोडा । –वि० चमकदार, चमकीला । —**आरती**–स्त्री० तोरण द्वार पर दीपको मे की जाने वाली दूल्हे की आरती ।

झळामाळा–स्त्री० सघनतायुक्त काति, दीप्ति ।

झलार–वि० पकडने वाला ।

झळाळ–वि० चमकयुक्त, तेज ।

झळाळो–वि० धारण करने वाला, ग्रहण करने वाला ।

झलावणो (बो)–देखो 'झलाणो' (बो) ।

झळास, झळाहळ–स्त्री० १ ज्वाला, आग । २ आग की लपट । ३ अग्नि शिखा । ४ काति दीप्ति । –वि० १ तेजस्वी । २ तीव्र, तेज । ३ भयकर । ४ देदीप्यमान, जगमगाता हुआ । ५ चमचमाता हुआ । ६ जलता हुआ ।

झलू–वि० जिम्मेदारी लेने वाला ।

झळूस–वि० १ चमक-दमक युक्त । २ देखो 'जळूस' ।

झळेब–वि० १ कातियुक्त । २ देखो 'जलेब' ।

झळोझळ–देखो 'झाळोझाळ' ।

झलोझल–वि० पूर्ण ।

झलो–पु० टक्कर, आघात, आक्रमण ।

झल्ल–पु० रोकने या थामने की क्रिया या भाव ।

झल्लण (णो)–वि० १ झेलने, पकडने या धारन करने वाला । २ उत्तरदायित्व लेने वाला । ३ चमकने वाला ।

झल्लणो (बो)–देखो 'झलणो' (बो) ।

झल्लरि (री) झल्लिय–स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का वाद्य । २ हाथी को पहनाई जाने वाली घु घरू की माला ।

झवकणो (बो)–देखो 'झबकणो' (बो) ।

झवाडी–देखो 'जुओ' ।

झवेरी–देखो 'जौहरी' ।

झसडक (को, क्क)–पु० १ शस्त्र,प्रहार । २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

झसणो (बो)–क्रि० १ चबाना । २ काटना ।

झसोयर–वि० [स० झषोदर] मत्स्य के सामन उदर तथा विशाल वक्ष वाला (जैन) ।

झाइ (ई)–स्त्री० १ धु धला दिखाई देने की अवस्था या भाव । २ महसूस, प्रतीत या आभास होने की अवस्था या भाव । ३ प्रतिबिब, छाया । ४ हलका प्रकाश, रोशनी । ५ झलक । ६ अत्यन्त मद दृष्टि । ७ आभा । ८ आखो के नीचे पडने वाला काला दाग ।

झाक–स्त्री० १ झलक, झाई । २ आधी । ३ झाकने की क्रिया या भाव ।

झाकणो (बो)–देखो 'झाखणो (बो)' ।

झाकळी, झाकली–स्त्री० लड-खडाना क्रिया ।

झाकी–देखो 'झाखी' ।

झांको–देखो झाखो' ।

झाख, झाखड (डी)–स्त्री० तेज आधी, झझावात ।

झाखणो–वि० (स्त्री० झाखणी) उदासीन, म्लान, निस्तेज ।

झाखणो (बो)– क्रि० १ किसी ओट, खिडकी या किसी माध्यम से देखना, ताकना । २ देखना, दृष्टि डालना । ३ लुक-छिप कर देखना । ४ ताक-झाख करना । ५ झलकना, दिखाई देना । ६ सहसा कही देखना । ७ मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना । ८ दु खी होना, पछताना ।

झाखळ–पु० नाश्ता, अल्पाहार, कलेवा ।

झांखी–स्त्री० १ झाखने या देखने की क्रिया या भाव । २ दर्शन, अवलोकन । ३ झलक, आभास । ४ झरोखा, गवाक्ष । ५ प्रकाश चमक । ६ दर्शनार्थ किया गया देवमूर्तियो का शृ गार । ७ झझावात, आधी । ८ मंद प्रकाश, रोशनी । ९ एक देवी का नाम । –वि० १ उदास, खिन्न । २ धु धली, मैली ।

झाखो–पु० १ मद प्रकाश, ज्योति । २ बहुत कम दिखने की अवस्था या भाव । ३ झलक, झाई, आभास । ४ दर्शन, अवलोकन । ५ मद दृष्टि । –वि० धु धला, अस्पष्ट ।

झांगरिया–पु० झिगुर ।

झागी–स्त्री० एक पौधा विशेष । –वि० घना, गहरा घनीभूत ।

झाझ–पु० १ अनाज बोने के पश्चात अधिक समय तक वर्षा न होने की अवस्था । २ तेज हवा, आधी तूफान, झझावात । ३ वर्षा के उपरान्त शीतल वायु । ४ वायु के साथ वर्षा ५ मजीरा नामक वाद्य । ६ स्त्रियो की पैजनी । ७ छडी । —**दार**–पु० छडीदार ।

झाझर–पु० १ घोडो के घुटनो का आभूषण । २ देखो 'जाझर' ।

झाझरको–देखो 'जाझरको' ।

झाझरि–देखो 'झाझरी' ।

झाझरियाळ–स्त्री० झाझर धारण करने वाली देवी ।

झाझरी–स्त्री० १ एक प्रकार का वाद्य । २ देखो 'जाझर' ।

झाट (ठ)–पु० १ गुप्तेन्द्रिय पर होने वाले बाल । २ तुच्छ, हेय वस्तु ।

झांण–पु० [स० ध्यान] ध्यान ।

झाती–वि० अन्तर्मु खी ।

झांप–स्त्री० [स० झप, झपा] १ छलाग, कुदान, उछाल । २ छीना-झपटी । ३ श्वास या आराम न लेने देने की अवस्था । —**भैरव**'=भैरवझाप' ।

झापणो (बो)–देखो 'झपणो' (बो) ।

झापरो–देखो झाफरो' ।

झांपो–वि० [स झपा] १ लुटेरा, डाकू । २ छीना-झपटी करने वाला । ३ बलवान, जबरदस्त । –पु० झापने की क्रिया भाव । २ झाडी की सूखी टहनी ।

झाफ–१ देखो 'झाप' । २ देखो 'जाफ' ।
—**भैरव**='भैरव-झाप' ।

झांफरी (रो)–वि० घु घरू या छल्लेदार ।

झांब–स्त्री० वृक्ष की टहनी, शाखा ।

झामडी–देखो 'झाब' ।

झामरझोळ (झोळो)–पु० १ उलझन, इन्द्रजाल । २ ढीला वस्त्र ।

झामलउ–पु० [स० ध्यामन्] तेज प्रकाश ।

झांय-झाय–स्त्री० १ व्यर्थ की बकवाद । २ हवा का मन्नाटा, साय-साय ध्वनि ।

झावडी–स्त्री० १ वृक्ष, पेड । २ एक साथ उगने वाला वृक्ष समूह ।

झांवळी–१स्त्री० आख की कनखी । २ झलक । ३ देखो'झावळो' ।

झांवळो–पु० [स० ध्याम] कमजोरी या मद ज्योति के कारण आखो के आगे अंधकार छा जाने की अवस्था ।

झास–स्त्री० झाडी, गुल्म ।

झासणो (बो)–क्रि० १ झासा देना, ठगना । २ धोखा देना । ३ किसी स्त्री को व्यभिचार के लिये प्रवृत्त करना ।

झासाबाज झासियो, झासू, झासेबाज–वि० १ धोखेबाज, ठग । २ गप्पी । ३ झूठा आश्वासन देने वाला । ४ डीग हाकने वाला ।

झासो–पु० [स० अध्यास] १ बहकाने की क्रिया, छल, वुत्ता । २ झूठा आश्वासन । ३ छल धोखा । ४ डीग । ५ झूठा वादा ।

झा–पु० [स० उपाध्याय] १ मैथिली ब्राह्मणो की उपाधि २ मैथुन । ३ मुर्गा । ४ मत्स्य । ५ झरना । ६ पानी, जल ।

झाई–पु० न्याय ।

झाउलियो झाउलो, झाउल्यो–पु० काटेदार व गेंद के समान शरीर वाला एक जतु ।

झाऊ–पु० १ छोटा झाड विशेष । २ देखो 'झाउलियो' । –वि० मूर्ख, नासमझ ।

झाओलियो, झाओलो–पु० १ मिट्टी का बना पात्र । २ देखो झाउलियो' ।

झाक-झमाळ (झमाळ)–वि० १ उत्साह के साथ विजय घोष करने वाला । २ चमकदार, देदीप्यमान । ३ तेज, तीव्र । ४ चचल । ५ चमक-दमक ।

झाकझमाला–स्त्री० १ जोर की ध्वनि । २ शोर गुल, हल्ला । ३ हो-हा । ४ देखो 'जाकजमाला' । ५ देखो 'झाक-जमाल' ।

झाकझोक–स्त्री० १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । २ झक-झक ।

झाकझोळ–वि० पसीना से तर, लथपथ ।

झाकरो–पु० घी रखने का पात्र ।

झाकळ, झाकल–पु० ओस की बूंद, छोटी बूंद ।

झाकाझोको–पु० १ छोटे-बडे जेवर, आभूषण । २ टूटा-फूटा सामान ।

झाको–देखो 'झाखो' ।

झाखणो (बो)–देखो 'झाखणो' (बो) ।

झाखळ–देखो 'झाकळ' ।

झाग–पु० पानी आदि पर उठने वाला फैन, गाज ।

झागड़णो (बो)–देखो 'झगडणो' (बो) ।

झागड़ू–वि० [स० झकट] १ लडाई करने वाला, झगडा करने वाला । २ उद्दण्ड, बदमाश । ३ मुकद्दमेबाज ।

झागड–पु० ऊपर के बोल से सबधित वाद्य का एक बोल ।

झागणो (बो)–क्रि० जगना, प्रज्वलित होना ।

झागनाग–पु० अफीम ।

झागला, झागू ड, झागूड–पु० १ झाग, फैन । २ पानी का बुदबुदा ।

झाड़–पु० [स० झाट] १ छोटी झाडी । २ झाडीनुमा कोई पौधा या वृक्ष । ३ वृक्ष, पेड । ४ झाडीनुमा रोशनदान । ५ एक प्रकार की आतिशबाजी । ६ लोक देवी या देवता का शाप या वरदान । ७ जुलाब, रेचन । ८ वध, हत्या । ९ पछाड, झटका । १० झाड-पोछ या फटकार । ११ झाडी का चित्र या चिह्न । १२ बेर का पेड । –वि० १ तमाम, समस्त । २ बिलकुल ।

झाडकियो, झाडको, (क्यो)–पु० १ जड बेरी का पौधा या वृक्ष । २ झाडी ।

झाडखड–पु० अधिक झाडियो वाला जगल ।

झाडझखाड–पु० १ काटेदार झाडियो का समूह । २ वन । ३ घने वृक्षो का समूह ।

झाडण (न) झाडणो–पु० १ झाड-पोछ करने का उपकरण । २ झाड-पोछ कर उतारा जाने वाला गदा पदार्थ ।

झाडणो (बो)–क्रि० १ वार करना, प्रहार करना । २ काटना । ३ सहार करना, मारना । ४ दागना, छोडना । ५ झाड फटकार कर गर्द आदि उतारना । ६ झाड फटकार कर सफाई करना । ७ डाटना, फटकारना । ८ गिराना, ढहाना । ९ बूंद-बूद या कण-कण के रूप मे गिराना, टपकाना । १० मत्रादि से रोग या प्रेत बाधादि

दूर करना। ११ हटाना, पृथक करना। १२ तोडना। १३ कम करना। १४ मिटाना। १५ निर्धन करना, कगाल करना। १६ सब कुछ ले लेना। १७ बधन खोलना। १८ वृक्ष या पौधे को हिलाकर फल-फूल नीचे गिराना।

झाड़दार–वि० १ बेल-बूटेदार। २ कटीला।

झाडपूंछौ–पु० १ झाडू के समान पूछ वाला हाथी। २ वह बैल जिसकी पूछ जमीन से स्पर्श करती हो।

झाडफाणूस (फानूस)–पु० काच के बने झाड, हडिया और ग्लास जो छत मे टागे जाते हैं।

झाडफूंक (फूकी)–पु० मत्रो द्वारा रोग या प्रेतबाधा निवारण की क्रिया।

झाड़बट, (बड)–पु० झडबेरी के पौधे काटने का फरसा।

झाडबुहार–पु० सफाई की क्रिया।

झाडबोर (बोरडी)–पु० १ छोटा बेर। २ झडबेरी का पौधा।

झाडसाही–पु० जयपुर राज्य का एक प्राचीन सिक्का।

झाडाणौ (बौ)–क्रि० १ छुडाना। २ सफाई कराना।

झाड़ि, झाडी–स्त्री० १ कटीले पौधो का समूह, झुरमुट। २ छोटा व घना पौधा। ३ सूअर के बालो की कूची।

झाड़ीगर–पु० मत्रोपचार करने वाला।

झाडीदार–वि० १ जहा झाडी हो। २ देखो 'झाडीगर'।

झाडीबोर–देखो 'झाडबोर'।

झाडू–पु० फूस बुहारने का उपकरण, बुहारी, झाडन। —दुमौ='झाडपूछौ'।

झाडूबरदार, (वाळौ)–पु० झाडू देने वाला, मेहत्तर।

झाड़ोलौ–पु० चमडे का मोजा।

झाडौ–पु० १ मत्रोपचार, झाडफूक। २ मल, पाखाना। ३ सफाई का कार्य। —झपटौ, झपाटौ–पु० मत्रोपचार।

झाझउ, झाझुं, झाझेरडौ, झाझौ–वि० (स्त्री० झाझी) १ अधिक, ज्यादा। २ गहरा, घना। ३ तेज, तीव्र। ४ बढिया, श्रेष्ठ। ५ सुन्दर। ६ अप्रिय, कटु। ७ बडा, महान्। ८ दृढ, मजबूत। ९ सुहाना, मनमोहक।

झाट–स्त्री० [स० झट] १ चोट, प्रहार। २ भिडत, टक्कर। ३ फटकार। ४ मुकाबला। ५ झडप, झपट। ६ चपेट। ७ लडाई। ८ चपत, तमाचा। ९ झडी। १० डसना क्रिया। ११ ध्वनि आवाज।

झाटक–वि० [स० झट + इति] १ प्रहार व वार करने वाला। २ योद्धा। ३ देखो 'झाट'।

झाटकणौ–पु० झटकने या झाडने का उपकरण।

झाटकणौ (बौ)–क्रि० १ झटका लगा कर अलग करना। २ चिपकी वस्तु को झटके से हटाना। ३ गर्द साफ करना। ४ सफाई करना। ५ प्रहार या चोट करना। ६ मारना, पीटना। ७ फटकारना, डाटना, झिडकना। ८ घोडा दौडाना। ९ वेग से खीचना। १० अपहरण करना। ११ देखो 'झटकणौ' (बौ)।

झाटकपट–पु० राजपूताने के प्रतिष्ठित सरदारों को मिलने वाली ताजीम।

झाटकौ–पु० १ चवर डुलाने की क्रिया या भाव। २ देखो 'झटकौ'।

झाटक्क–देखो 'झाटक'।

झाटक्कणौ (बौ)–'झाटकणौ' (बौ)।

झाटझडी–स्त्री० १ शस्त्र प्रहरो की ध्वनि। २ शस्त्र प्रहरो की शृखला।

झाटणौ (बौ)–क्रि० १ सहार करना, मारना। २ साप का डसना। ३ देखो 'झाटकणौ' (बौ)।

झाटी (टौ)–स्त्री० १ काटेदार वृक्ष की टहनी। २ काटेदार छोटा वृक्ष। ३ जिद्द, हठ। ४ कष्ट, दु:ख, आपत्ति। ५ कटीली झाडियो का बना फाटक।

झात्कारि (री)–स्त्री० झल्लरी नामक वाद्य की ध्वनि।

झापड, झापट–स्त्री० [म० चपट] तमाचा, चपत, थप्पड।

झापणौ (बौ)–देखो 'झपणौ' (बौ)।

झापाझूपौ–पु० छीना-झपटी।

झाफ–स्त्री० १ झपकी। २ देखो 'जाफ'।

झाब–स्त्री० मिट्टी का एक पात्र विशेष।

झाबकि (की)–क्रि० वि० १ एकाएक, सहसा। २ शीघ्र, तुरत।

झाबरौ–वि० घने बालो वाला।

झाबी–स्त्री० कोल्हू से तेल निकालने का लकडी का छोटा पात्र।

झाबूकणौ (बौ)–देखो 'झबकणौ (बौ)।

झाबोलियौ, झाबोलौ, झाबौ–पु० १ घी तेल आदि रखने का ऊट के चमडे का पात्र। २ चियडो आदि को कूट कर बनाया हुआ पात्र। ३ सुरणाई वाद्य का खुला मुह। ४ बच्चे के पहनने का वस्त्र। ५ चौडे मुह का बरतन। ६ किसी वस्तु के आगे का चौडा भाग। ७ सिर, मस्तक। ८ आड, रोक।

झायणौ (बौ)–क्रि० [स० ध्यै] १ ध्यान लगाना, मन लगाना। २ चिन्तन करना। मनन करना।

झार—पु० १ समूह, झुण्ड यूथ। २ देखो 'जार'।

झारणी–वि० मिटाने वाली, नष्ट करने वाली।

झारणौ (बौ)–क्रि० १ टपकाना, चवाना। २ निचोडना। ३ द्रव पदार्थ को बूद-बूद कर गिराना। ४ टुकडे-टुकडे करके गिराना। ५ बरसाना। ६ स्खलित करना। ७ छिडकना। ८ प्रहार करना, वार करना। ९ मारना।

झारा–पु० व व सारगी के छोटे सात तार।

झारिया–स्त्री० छनी हुई भग।

झारी–स्त्री० १ टोटीदार पात्र। २ चम्मचनुमा छेददार एक उपकरण विशेष। —**बरदार**–पु० पानी की झारी रखने वाला व्यक्ति।

झारोळी–स्त्री० वर्षा की धारा।

झारो–पु० १ टोटीदार एक जल-पात्र विशेष। २ नाश्ता, कलेवा। ३ कन्दोइयो का एक उपकरण। ४ छोटा झरिया। ५ घाव आदि की सफाई के लिए गर्म जल या द्रव पदार्थ की डाली जाने वाली धारा। ६ द्रव पदार्थ को झारने की क्रिया।

झाळ–स्त्री० [स० ज्वलन] १ अग्नि, आग। २ अग्नि शिखा, ज्वाला, लौ। ३ क्रोधाग्नि, क्रोध। ४ सूर्य किरण, रश्मि। ५ तीव्र कामेच्छा। ६ चरपराहट, तीखापन। ७ देखो 'झाळण'। ८ देखो 'झाल'। —**बबाळ**–वि० अत्यन्त क्रोधी।

झाल–स्त्री०१स्त्रियो का एक कर्णाभूषण। २ भूसा आदि भरने के लिए बैलगाडी पर खींप, कपास की टहनियो या बकरी के बालो के पट्टु की बनाई गई कनात। ३ उक्त प्रकार की बैलगाडी मे एक बार मे आने वाला सामान। ४ पकडना, क्रिया, पकड। ५ एक प्रकार का बडा जल-पात्र। ६ देखो 'झाळ'।

झालड–१ देखो 'झाल'। २ देखो 'झालर'। ३ देखो 'झालरी'।

झाळण–स्त्री० धातु की वस्तुओ को जोडने का टाका, जोड।

झालण–पु० १ अनाज ढोते समय गाडी पर बिछाया जाने वाला वस्त्र। २ पकडना क्रिया, पकड।

झाळणौ (बौ)–क्रि० १ धातु की वस्तुओ के टाका लगाना। २ जलाना, भस्म करना।

झालणौ (बौ)–क्रि० १ पकडना, थामना। २ सहन करना। ३ स्वीकार करना। ४ धारण करना। ५ ग्रहण करना। ६ प्राप्त करना, लेना। ७ थामना, रोकना। ८ उत्तर-दायित्व लेना। ९ आश्रय देना। १० बधन मे डालना।

झाळपूळो–वि० १ अत्यन्त क्रुद्ध, आग बबूला। २ तेजस्वी, तेजवान।

झालर (डी)–स्त्री० [स० झल्लरी] १ पूजा या आरती के समय बजाया जाने वाला थालीनुमा वाद्य। २ एक अन्य वाद्य विशेष। ३ एक लोक गीत। ४ जल-पात्र विशेष। ५ देखो 'झालरी'। ६ देखो 'झालरौ'। –वि० मूर्ख, पागल। —**दार**='झालरीदार'। —**बाव, वाव**। –पु० एक सरकारी कर विशेष।

झालरियो–पु० १ फेन युक्त छाछ। २ झल्लरीदार वस्त्र। ३ पुराना कपडा। ४ देखो 'झालरौ', 'झालर', 'झालरी'।

झालरी–स्त्री० [स० झल्लरी] १ वस्त्र या किसी वस्तु की शोभा के लिए नीचे लगाया जाने वाला हाशिया, झल्लरी। २ देखो 'झालर'। —**दार**–वि० जिसमे झल्लरी लगी हो।

झाळहळ–देखो 'झळाहळ'।

झालरौ–पु० १ बडा कूप जिसमे चारो ओर सीढिया बनी हो। २ स्त्रियो के गले का एक आभूषण विशेष।

झाळांमुख–पु० भाला।

झाळा–देखो 'झाळ'।

झाला–स्त्री० तार वाद्य बजाने की एक विधि विशेष।

झालाळौ–वि० १ झल्लरीदार। २ सकेत करने वाला, हाथ का इशारा देने वाला।

झालि–देखो 'झाल'।

झालियौ–पु० बैलगाडी की 'झाल' मे लगने वाली लम्बी व मोटी लकडी।

झाळोझाळ–स्त्री० १ क्रोधाग्नि। २ कलहाग्नि। ३ अग्नि की पूर्ण रूपेण प्रज्वलित होने की अवस्था।

झालौ–पु० १ सकेत, इशारा। २ हाथ का इशारा। २ दोहो के बोल मे गाया जाने वाला एक लोक गीत।

झावलियौ, झावल्यौ–देखो 'झाओलियौ'।

झावी–स्त्री० स्त्रियो के पहनने का आभूषण।

झावू–देखो 'झाऊ'।

झाबौ–पु० १ मिठाई परोसने का मिट्टी का पात्र विशेष। २ एक प्रकार की जडी विशेष जो नदी के किनारे मिलती है।

झिगर, झिगार–पु० १ वृक्ष व लताओ का झुरमुट, घनी झाडी। २ देखो 'झिगोर'।

झिगुर, झिगोर–पु० १ एक छोटा जतु जो रात मे झीं-झी की आवाज करता है। झिगुर, कसारी। २ मस्ती मे झूमने की क्रिया या भाव, कल्लोल। ३ झिगुर की आवाज।

झिगोरणौ (बौ)–क्रि० १ मस्ती करना, मौज करना। २ कल्लोल करना। ३ झी-झी शब्द करना।

झिगोर–देखो 'झिगोर'।

झिझोटी–स्त्री० सम्पूर्ण जाति की एक राग।

झिकाड़णौ (बौ), झिकाणौ (बौ), झिकावणौ (बौ)–देखो 'झकाणौ' (बौ)।

झिकाळ–स्त्री० बकवास, बकझक।

झिकोळणौ (बौ)–देखो 'झकोळणौ' (बौ)।

झिखणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकाशित होना। २ शोभा देना। ३ क्रोध करना। ४ टिमटिमाना। ५ चमकना। ६ बक-झक करना।

झिगझिग, झिगझिगा'ट, झिगझिगाहट–स्त्री० १ चमक-दमक। २ जगमगाहट। ३ व्यर्थ की बकवाद।

झिगणौ (बौ)–क्रि० १ प्रकाशित होना, जगमगाना, चमकना। २ मथना, विलोडना। ३ कुचलना, मसलना।

झिगमिग–देखो 'जगमग'।

झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट–देखो 'जगमगाहट'।

झिडकणौ (बौ)–क्रि० १ फटकारना, तिरस्कार करना, क्रोध करके बात कहना। २ देखो 'झडकणौ' (बौ)।

झिड़की–स्त्री० १ डाट, फटकार, प्रताडना। २ अवज्ञा भरे शब्द, तिरस्कार।

झिझक–स्त्री० १ सहसा चौंकने की क्रिया या भाव। २ कुछ करते हुए सहसा रुकने की क्रिया या भाव, ठिठक। ३ शका; सकोच, हिचक। ४ शर्म, लज्जा। ५ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव, झिडकी। ६ सनक, पागलपन।

झिझकणौ (बौ)–क्रि० १ सहसा, चौंकना। २ कुछ करते हुए सहसा रुकना, ठिठकना। ३ संकोच करना, हिचकना। ४ शर्म करना, लज्जा करना। ५ क्रोध से बोलना, झिडकना। ६ चमकना, भडकना।

झिझकाणौ (बौ)–क्रि० १ सहसा चौंकाना। २ सहसा रोकना, ठिठकाना। ३ सकोच कराना, हिचकाना। ४ शर्म कराना, लज्जित करना। ५ झिड़काना। ६ चमकाना, भडकाना।

झिझकारणौ (बौ)–क्रि० १ किसी को दुत्कारना, तिरस्कार करना। २ डाटना, फटकारना। ३ गर्व करना, अहकार करना। ४ चौंकाना, भडकाना।

झिझकार–स्त्री० १ डाट, फटकार। २ तिरस्कार, अवज्ञा। ३ चौंकाने या भडकाने की क्रिया या भाव। ४ अभिमान, घमण्ड। ५ झिडकी।

झिझिम–स्त्री० वाद्य का एक बोल विशेष।

झिझौटी–स्त्री० एक राग विशेष।

झिण–पु० १ दलिया आदि खाद्य पदार्थ। २ पतली छाछ, मट्ठा।

झिणकार–देखो 'झणकार' (बौ)।

झिणकारणौ (बौ)–देखो 'झणकारणौ' (बौ)।

झिवळ, झिवळक–देखो 'झवळक'।

झिवळणौ (बौ)–१ देखो 'झवळणौ' (बौ)। २ देखो 'झवळकणौ' (बौ)।

झिरणौ (बौ)–देखो 'झरणौ' (बौ)।

झिरमट, झिरमटियौ–पु० १ बालिकाओ का एक खेल विशेष। २ वृक्ष समूह, कुज। ३ एक लोक गीत विशेष। ४ एक प्रकार का घास।

झिरमिर–स्त्री० १ धीरे-धीरे होने वाली वर्षा, वर्षा की झडी। २ इस प्रकार की वर्षा से होने वाली ध्वनि।

झिलब–देखो 'झिलम'।

झिल–वि० १ पूर्ण, परिपूर्ण। २ ठीक।

झिळकाणौ (बौ), झिळकावणौ (बौ)–देखो 'झळकाणौ' (बौ)।

झिलकौ–देखो 'झलकौ'।

झिलणौ(बौ)–क्रि० १ चमकना, देदीप्यमान होना तपना। २ ऐश्वर्य प्रकट करना, प्रभाव दिखाना। ३ पूर्ण होना। ४ शोभा देना, शोभित होना। ५ समृद्ध होना, वैभवयुक्त होना। ६ मस्त होना। ७ देखो 'झलणौ' (बौ)।

झिलम (टोप)–पु० युद्ध के समय पहनने का लोहे का टोप, शिरत्राण।

झिळमिळ–स्त्री० १ मद व क्षीण ज्योति। २ हल्की चमक, झिलमिलाहट। ३ टिमटिमाहट। ४ चमक-दमक। ५ लोह-कवच। –वि० रह-रह कर चमकने वाला।

झिळमिळणौ (बौ), झिळमिळाणौ (बौ)–क्रि० १ दीपक का मद-मद प्रकाश होना, मद-मद दीपक जलना। २ टिमटिमाना, झिलमिलाना। ३ चमकना। ४ रह-रह कर चमकना। ५ हिलना, कापना। ६ अस्थिर होना।

झिळमिलाहट–स्त्री० झिलमिलाने की क्रिया या भाव।

झिलमिल्ल–देखो 'झिळमिळ'।

झिलम्म–देखो 'झिलम'।

झिलाडणौ (बौ), झिलाणौ (बौ), झिलावणौ (बौ)–१ देखो 'झलाणौ' (बौ)। २ देखो 'झुलाणौ' (बौ)। ३ देखो 'झीलाणौ' (बौ)।

झिळोमिळ–देखो 'झिळमिळ'।

झिलोरौ (ळौ)–पु० लहर, तरग, हिलोरा। छोल।

झिल्लणौ(बौ)–१ देखो 'झिलणौ' (बौ)। २ देखो 'झूलणौ'(बौ)।

झिल्ली–स्त्री० [स०] १ चमडे या रब्बर का अत्यन्त पतला आवरण या तह। २ बहुत पतला छिलका। ३ आख का जाला। ४ झिंगुर। —**दार**–वि० जिस पर झिल्ली लगी हो।

झींक–देखो 'झीक'।

झींकरौ–पु० कूए को गहरा करने के लिए तोडा हुआ पत्थर।

झींखणौ–देखो 'झीकणौ'।

झींखणौ (बौ)–देखो 'झीकणौ' (बौ)।

झींखा, झींखाळी–देखो 'जीका'।

झींगडि (डी)–स्त्री० १ नौबत वाद्य की ध्वनि। २ वाद्य बजाने के लिए किया जाने वाला आघात।

झींगर–पु० [स० धीवर] १ मछुवा, धीवर, केवट। २ देखो 'झिंगोर'।

झींगर निसाणी (णी)–स्त्री० निसानीछद का एक भेद।

झींगोर, झींगौर–देखो 'झिंगोर'।

झींझो–पु० १ एक पहाडी वृक्ष विशेष। २ देखो 'जीजो'।

झींट–पु० १ बाल, केश । २ देखो 'झीप' । —झींटाळी–पु० घने बालो वाला ।
झींण, झींणउ, झींणी–देखो 'झीणौ' ।
झींत, झींथ–स्त्री० १ अनाज या कपडे भर कर पीठ पर लादने की गठरी, बोरा । २ कपडे का एक झोला विशेष ।
झींपरौ, झींफरौ–वि० (स्त्री० झीपरी, झीफरी) जिसके शरीर पर घने बाल हो, घने बालो वाला ।
झींवर–पु० [स० धीवर] मछुवा, मछेरा ।
झीक–स्त्री० १ झीखने की क्रिया या भाव, बकवाद । २ शस्त्र प्रहार । ३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ४ ध्वस, सहार । ५ युद्ध । ६ वर्षा की झडी ।
झीकणौ–पु० १ दुख वर्णन, अपना दुख रोने की क्रिया या भाव । २ बकना ।
झीकणौ (बौ)–क्रि० १ इच्छा करना, लालायित होना, तरसना । २ दुखी होकर पछताना । ३ खीजना । ४ कुढना । ५ अपना दुख व्यक्त करना, दुखडा रोना । ६ शस्त्र प्रहार करना । ७ युद्ध करना । ८ बकना ।
झीख–देखो 'झीक' ।
झीखणौ (बौ)–देखो 'झीकणौ' (बौ) ।
झीखा–देखो 'जीका' ।
झीखाळणौ (बौ)–क्रि० १ खपरैलो को परस्पर रगडकर महीन चूर्ण बनाना । २ पढने की तख्ती पर उक्त चूर्ण छितराना ।
झीण–स्त्री० [स० ध्वनि] १ आवाज, ध्वनि । २ देखो 'जीण' । ३ देखो 'झीणौ' ।
झीणउ, झीणोडौ, झीणौ–वि० [स० क्षीण] (स्त्री० झीणी) १ जो मोटा न हो महीन, पतला, बारीक । २ हल्का, पारदर्शक । ३ मधुर, सुरीला । ४ कर्ण प्रिय । ५ जो स्थूल न हो, छरहरा । ६ कृशकाय । ७ सुकुमार, कोमल, लचीला । ८ नर्म, मुलायम, मृदुल । ९ धीमा, हल्का, मद । १० अधिक छितराने से पतली सतह का । ११ जिसमे वेग न हो, धीमा । १२ जो भारी न हो, हल्का । १३ सूक्ष्म । १४ गूढ । १५ दुर्गम, कठिन । १६ सकरा, तग । १७ अगम्य, दुर्बोध । १८ अत्यन्त छोटा । १९ सूक्ष्माणु युक्त । २० जिसमे प्रखरता न हो, क्षीण, मद । २१ जिसमे उग्रता न हो, सरल, सहज । २२ धुधला । २३ अधिक तरल । २४ फैला हुआ । –पु० १ घूघट निकालने का एक ढग । २ महीन वस्त्र । —मोरियौ–पु० एक लोक गीत विशेष ।
झीपरौ–पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ देखो 'झीपरौ' ।
झीनातिझीन–वि० अत्यन्त बारीक, महीनतम ।
झीमर–पु० [स० धीवर] १ कहार जाति का एक भेद । २ मछुवा, धीवर ।
झीरोकौ, झीरोख, झीरोखौ–देखो 'झरोकौ' ।
झीरोहर–वि० चूर-चूर ।
झील, झीलडी (डौ)–स्त्री० १ कुदरतन बना बडा तालाब, सरोवर । २ एक छोटा पौधा ।
झीलणौ (बौ)–क्रि० १ नदी या तालाब आदि मे नहाना । २ पानी मे तैरना । ३ डुबकी लगाना । ४ मग्न होना, मस्त होना ।
झीलाणौ (बौ), झीलावणौ (बौ)–क्रि० १ स्नान कराना । २ पानी मे तैरने के लिए प्रेरित करना । ३ मग्न या मस्त करना । ४ डुबकी लगवाना ।
झीवर–देखो 'झीमर' ।
झुकार–स्त्री० ध्वनि, हुकार ।
झुझलाणौ (बौ)–क्रि० १ चिडचिडाना, खिजलाना । २ परेशान होना ।
झुझाऊ–देखो 'जूझाऊ' ।
झुझार, झुझारि–देखो 'जूझार' ।
झुंड–पु० प्राणियो का समूह, गिरोह ।
झुपडी–देखो 'झूपडी' ।
झुंब–देखो 'झूब' ।
झुबाडणौ (बौ), झुंबाणौ (बौ), झुबावणौ (बौ)– देखो 'झूबाणौ' (बौ) ।
झुबिखौ–देखो 'झूबौ' ।
झुकणौ (बौ)–क्रि० [स० युज्] १ किसी खडी वस्तु का नीचे की ओर मुडना, नवना । २ समानान्तर बनी वस्तु का बीच या किसी सिरे से नीचे धसना, दबना, नीचे की ओर झुकना । ३ नीचे की ओर उन्मुख होना । ४ किसी विशेष दिशा या अक्षाश की ओर उन्मुख होना । ५ बादल, तारे आदि का पृथ्वी के अधिक पास आना या पास दिखाई देना । ६ मजबूर होना, हारना, विवश होना । ७ प्रवृत्त होना, मुखातिब होना, रुजू होना । ८ तल्लीन होना । ९ ढीला या शिथिल होना । १० मडराना । ११ शोभित होना । १२ व्यापक होना, चारो ओर फैलना । १३ हरा-भरा या सजनता युक्त होना । १४ नत मस्तक होना, विनीत होना । १५ प्रणाम करना । १६ मोहित होना । १७ सीधे खडे रहने की अवस्था मे न रहना ।
झुकवाई, झुकाई–स्त्री० १ झुकने की क्रिया या भाव । २ इस कार्य की मजदूरी ।
झुकाडणौ (बौ), झुकाणौ (बौ)–क्रि० १ किसी खडी वस्तु को नीचे की ओर मोडना नवाना । २ समानान्तर बनी वस्तु को नीचे धसाना, दबाना, झुकाना । ३ नीचे की ओर उन्मुख करना । ४ किसी विशेष दिशा या अक्षाश की ओर

उन्मुख करना। ५ मजबूर करना, विवश करना, हराना। ६ प्रवृत्त करना, मुखातिब करना। ७ रजू करना। ८ तल्लीन करना। ६ ढीला या शिथिल करना। १० शोभित करना। ११ व्यापक करना, चारो ग्रोर फैलाना। १२ नत मस्तक करना, विनीत करना। १३ प्रणाम कराना। १४ मोहित करना। १५ सीधे खडे न रहने देना।

झुकाव-पु० १ झुकने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ प्रवृत्ति। ३ मोड, दवाव। ४ झुका हुआ भाग। ५ ढाल-उतार।

झुकावट-स्त्री० १ झुकने की क्रिया या भाव। २ प्रवृत्ति, इच्छा, चाह। ३ मुडी या दबी हुई अवस्था।

झुकावणी (बो)-देखो 'झुकाणी' (बो)।

झुकेडो-पु० धक्का।

झुक्कणो (बो)-देखो 'झुकणी' (बो)।

झुखण-पु० झडबेरी के काटो का समूह।

झुज्झमल (मल्ल)-वि० [सं० युद्ध+मल्ल] वीर, योद्धा।

झुटपटियो, झुड्पटो झुड्पुटियो, झुटपुटो-पु० सध्या या बडे सवेरे का समय, मुह अधेरे का समय।

झुटाळक-वि० उत्पाती, उपद्रवी।

झुठाई-स्त्री० १ असत्यता। २ शरारत, बदमाशी।

झुणकणो (बो)-देखो 'झणकणो' (बो)।

झुणझुण-देखो 'झणझण'।

झुणण-स्त्री० झन-झन की ध्वनि, ध्वनि विशेष।

झुणि-स्त्री० [सं० ध्वनि] आवाज, ध्वनि।

झुबझुब-पु० १ स्त्रियो की कलाई का आभूषण विशेष। २ देखो 'झबझब'।

झुब्बी-स्त्री० पिछडी जाति की स्त्रियो का एक आभूषण विशेष।

झुमाड़णो (बो), झुमाणो (बो) झुमावणो (बो)-क्रि० झूमने के लिए प्रेरित करना, मस्त करना।

झुरट-स्त्री० खरोच।

झुरकण-स्त्री० १ झाडी का सूखा चूरा। २ ईंधन की पतली लकडिया।

झुरको-पु० ऊट की एक चाल।

झुरडणो (बो)-क्रि० १ खुजली मिटाना, खुजलाना। २ खरोच, लगाना, कुरेदना। ३ वृक्ष की टहनी के पत्ते सूत लेना। ४ किसी को तग करना। ५ कष्ट पहुचाना।

झुरणी-देखो 'झुरनी'।

झुरणो-पु० १ वियोग जनित दुख, विरह। २ विलाप, रुदन।

झुरणो (बो)-क्रि० १ दुखी होना, शोक करना। २ वेचैन होना, विकल होना। ३ विलखना, सुवकना। ४ रुदन करना, विलाप करना। ५ तरसना, ग्रासू वहाना। ६ रोग, चिंता या अधिक श्रम से दुर्बल होना। ७ घुलना, घुटना। ८ झूमना, लटकना। ९ याद करना, स्मरण करना।

झुरनी-स्त्री० १ वृक्ष की शाखाओ से लटक कर खेला जाने वाला खेल। २ उक्त खेल मे काम आने वाला लकडी का डडा।

झुरमट, झुरमटियो, झुरमुट, झुरमुटियो-पु० १ झाडी या लताओ का कुज। २ झुड, समूह। ३ वस्त्रादि से शरीर को पूरा ढक लेने की क्रिया या भाव। ४ सिकोड कर वैठने का ढग।

झुररी-स्त्री० शरीर की चमडी की सिकुडन, सिकन, सलवट।

झुररो-पु० आसुओ की झडी।

झुराडणो (बो), झुराणो (बो)-क्रि० १ दुखी करना, शोकाकुल करना। २ वेचैन करना, विकल करना। ३ विलखाना। ४ रुदन कराना, विलाप कराना। ५ तडफाना, तरसाना। ६ अधिक चिंता ग्रस्त करना। ७ घुलाना, घुटाना। ८ झूमाना लटकवाना। ९ याद या स्मरण कराना।

झुरापो-पु० वियोग का दुख, विलाप, रुदन।

झुरावो-देखो 'झुरापो'।

झुळक-स्त्री० १ आसू ढलकाने की क्रिया या भाव। २ चमक-दमक।

झुळकणो (बो), झुलझुळणो (बो)-क्रि० १ जगमगाना, चमकना। २ आसू ढलकाना।

झुळणो (बो)-क्रि० खुजलाहट होना, गुदगुदी होना।

झुलर-देखो 'झूलर'।

झुलराणो (बो), झुलरावणो (बो)-क्रि० झूला झुलाना, हिंडोला देना।

झुळसणो (बो)-क्रि० १ अधिक ताप या गर्मी के कारण काला पड जाना। २ अधजला होना। ३ जल जाना। ४ कुम्हलाना, मुरझाना। ५ अधिक ताप से लाल हो जाना। ६ तपाना। ७ जलाना।

झुलसाडणो (बो), झुलसाणो (बो), झुलसावणो (बो)-क्रि० १ अधिक ताप या गर्मी से काला पटक देना, तपाना। २ अधजला करना। ३ जलाना। ४ तपा कर लाल करना।

झुलाडणो (बो) झुलाणो, (बो) झुलावणो (बो)-क्रि० १ स्नान कराना, नहलाना। २ लटका कर हिलाना, झोका देना। ३ भरोसे पर रखना। ४ झूला झुलाना। ५ झुमाना, डोलाना। ६ मोहित करना। ७ जल में विचरण कराना। ८ अग्नि कुण्ड के पास वैठा कर तपस्या कराना।

झुल्ल, झुल्लो-वि० १ वृद्ध, वुड्ढा। २ देखो 'झूलो'।

झुसाण-देखो 'झूसाण'।

झूंझणो (बो)-देखो 'जूझणो' (बो)।

झूंझळ-स्त्री० १ झटपटी, असहनीय दशा। २ दुख व क्रोध मिश्रित खिजलाहट। ३ झलकी, तेजी। ४ देखो 'जाजळी'।

झूझार (रि)–देखो 'जूझार'।
झूझो–पु० [म० योद्धा] १ योद्धा, वीर। २ देखो 'जुध'।
झूट–देखो 'झूठ'।
झूंटण, झूटणियो–१ देखो 'झूटणो'। २ देखो 'जूठण'।
झूटणो–पु० स्त्रियो के कान का एक आभूषण विशेष।
झूट-साच–पु० झूठ-सच्च।
झूटि–स्त्री० झपटी।
झूटिणो (बो)–क्रि० १ झपटने की चेष्टा करना, झपटना। २ हमला करना, आक्रमण करना।
झूंठ, झूठण–१ देखो 'जूठण'। २ देखो 'झूठ'।
झूठणियो, झूठणो–देखो 'झूटणो'।
झूठो–१ देखो 'झूठो'। २ देखो 'जूठो'।
झूंथरा–पु० घने बाल।
झूंथरियो, झूथरो–वि० घने बालो वाला।
झूप, झूपकी, (को)–देखो 'झूपडो'।
झूपड, झूपडको, झूपडली, झूपडलो, झूपडियो, झूपड़ी, झूपडो, झूपली, झूपलो, झूपियो–पु० लकडिया खडी करके घास-फूस से छा कर बनाया हुआ कक्ष, कुटिया, पर्णशाला, झोपडी।
झूपी–स्त्री० १ झोपडी, कुटिया। २ एक प्राचीन कर।
झूंपो–पु० १ बडी कुटिया, झोपडा। २ झोपडियो वालो की बस्ती या मुहल्ला।
झूफ, झूफकी–देखो 'झूपी'।
झूफको, झूफड़, झूंफड़ो, झूफो–देखो 'झूपो'।
झूब–स्त्री० १ झूबने की क्रिया या भाव। २ गुच्छा। ३ देखो 'झूबो'।
झूबड (को)–देखो 'झूबो'।
झूंबडो, झूबडो–देखो 'झूबो'।
झूबणो (बो)–क्रि० १ आलिंगनबद्ध होना, गले मिलना, अक मे भरना, लिपटना। २ युद्ध करना, भिडना। ३ धावा बोलना, झपटना। ४ लूटना, लूट-पाट करना। ५ लटकना, झूलना। ६ हाथापाई करना। ७ जीव जतुओ अथवा पशुओ का काटना।
झूबर, (री, रो)–पु० एक प्रकार का कर्णाभूषण।
झूबाडणो (बो), झूबाणो (बो), झूबावणो (बो)–क्रि० १ आलिंगनबद्ध कराना, गले मिलाना, अक मे भराना, लिपटाना। २ युद्ध कराना, भिडाना। ३ धावा बोलाना। झपटवाना। ४ लुटवाना, लूट-पाट कराना। ५ लटकाना, झूलाना। ६ हाथापाई कराना। ७ जीव जतुओ या पशुओ से कटवाना।
झूबियो, झूबी, झूबो, झूंबो, झूम (क, को), (ख, खी, खो), (डी, डो)–पु० १ छोटी-छोटी वस्तुओ का समूह। २ फलो-फूलो आदि का गुच्छा। ३ समूह, झुण्ड। ४ दल, टोली। ५ पौधा।
झूंमणो (बो)–देखो 'जूंबणो' (बो)।
झूमल, झूमलड़ो (लियो), झूमलो, झूमियो, झूमो, झूमो–देखो 'झूबो'।
झूसणो (बो)–देखो 'जुळसणो' (बो)।
झूसाडणो (बो), झूसाणो (बो), झूसावणो (बो)–देखो 'जुळसाणो' (बो)।
झूड–पु० १ झाडने की क्रिया या भाव। २ लूटने की क्रिया या भाव।
झूडणी–स्त्री० घास मद्दीन करने का लोहे का लबा छड।
झूड़णो (बो)–क्रि० १ एकत्र करना, बटोरना। २ काटना। ३ पीटना। ४ लूटना।
झूडो–स्त्री० १ ऊट के तग मे लटकने वाला फुदा। २ बच्चे के पालने के बंधा चीयड़ो का खिलौना। ३ समूह, झुण्ड। ४ स्त्रियो के बालो को बाधकर बनाया जूडा।
झूज्झ, झुझ–देखो 'जुध'।
झूझणो (बो)–देखो 'जूझणो' (बो)।
झुझवारो–पु० युद्ध, लड़ाई।
झूझार–देखो 'जूझार'।
झूझाडणो (बो), झूझाणो (बो), झूझावणो (बो)–देखो 'जूझाणो' (बो)।
झूटण–१ देखो 'जूठण'। २ देखो 'झूटणो'।
झूटणियो, झूटणो–देखो 'झूटणो'।
झूठ–वि० [स० द्यूतस्य] १ सत्य का विपर्याय, असत्य। २ अवास्तविक, निराधार। कल्पित। –पु० १ असत्य कथन, झूठी बात। २ गप्प, कल्पित बात। ३ क्रोध, कोप। ४ उत्पात, शैतानी। ५ चचलता नटखटपन। ६ देखो 'जूठ'।
झूठण–१ देखो 'जूठण'। २ देखो 'झूटणो'।
झूठणियो, झूठणो–देखो 'झूटणो'।
झूठमी–वि० क्रोध युक्त, क्रोध वाली, क्रोधी।
झूठ-मूठ (मूठो)–क्रि०वि० बिना किसी आधार से, झूठ के आधार पर। व्यर्थ ही।
झूठिय, झूठो–वि० [स० द्यूतस्थ] (स्त्री० झूठी) १ असत्य वक्ता, असत्यवादी, झूठा। २ असत्य पर आधारित, झूठ। ३ जो असली न हो, नकली। ४ जिसमे सच्चाई न हो। ५ जबरदस्त, बलवान। ६ प्राण लेने वाला, खूंख्वार। ७ क्रोध युक्त, क्रोधी। ८ चचल। ९ उत्पात करने वाला, शैतानी करने वाला, उद्दण्ड। १० देखो 'जूठो'। ११ देखो 'झूठ'।

झूप(की को) झूपड (ड़ी, डौ) झूपलौ, झूपियौ झूपी, झूपौ, झूफ, झूफड (डी, डौ) झूफली (लौ) झूफियौ, झूफी, झूपौ–देखो 'झूपौ'।

झूब (कु, कौ)–देखो 'झूबौ'।

झूम–पु० १ झूमने की क्रिया भाव। २ गायन विशेष। ३ देखो 'झूबौ'।

झूमकडी(डौ), झूमकियौ झूमकौ (कौ)–देखो 'झूबौ'।

झूमख, (डी, डौ), झूमखियौ, झूमखौ (खौ), झूमड़ (की, कौ) झूमड़ली (लौ) झूमडियौ, झूमडी (डौ)–देखो 'झूबौ'।

झूमणू (णू, णौ)–पु० १ एक प्रकार का कर्णाभूषण। २ गुच्छा, झूमखा। ३ कठ का एक प्रकार का हार।

झूमणौ (बौ)–पु०१ झोका खाना। २ मस्ती मे घूमना, मदोन्मत्त होना। ३ हवा से हिलना, लहराना। ४ लटकना, लूमना। ५ किसी आधार के सलग्न होना।

झूमर–स्त्री० १ स्त्रियो द्वारा गाने के साथ, वृत्ताकार किया जाने वाला सामूहिक लोक नृत्य। २ इस नृत्य मे गाया जाने वाला गीत। ३ संगीत मे एक ताल। ४ काष्ठ का एक खिलौना विशेष। ५ स्त्रियो के शिर का आभूषण विशेष। ६ देखो 'झूमरौ'।

झूमरदे (दै)–पु० एक रग विशेष का वस्त्र।

झूमरियौ–पु० १ एक कर्णाभूषण विशेष। २ देखो 'झूमरौ'।

झूमरी–स्त्री० १ स्त्रियो के कान का आभूषण। २ हाथी के कान का आभूषण। ३ मोटी लकडी की मोगरी। ४ देखो 'झूमर'। ५ देखो 'झूमरौ'।

झूमरौ–पु० १ लोहे का मोटा व भारी हथौडा। २ सडक जमाने का उपकरण।

झूमौ (मौ)–देखो 'झूबौ'।

झूरटियौ–पु० खरोच, रगड, नखक्षत।

झूर, झूरडियौ–स्त्री० १ कटीली झाडी की सूखी टहनिया। २ बारीक लकडियो का ढेर। ३ महीन चूर्ण। ४ किसी पदार्थ के छोटे-छोटे टुकडे। ५ झुण्ड समूह। ६ देखो 'जुर'।

झूमर, झूर (झूरौ)–पु० १ महीन चूर्ण। २ नाश, ध्वस।

झूरियौ–देखो 'झूर'।

झूरी–स्त्री० किसी मकान या खेत के चारो ओर खोदी हुई खाई।

झूळ–पु० १ झुण्ड यूथ, समूह। २ सेना, फौज, दल।

झूल–स्त्री० १ कवच पाखर। २ चौपाये जानवरो की पीठ पर पहनाया जाने वाला वस्त्र। ३ चारजामा। ४ चारजामे के नीचे शोभा के लिये बिछाने का वस्त्र।

झूळकियौ, झूळकौ–पु० १ मथने का थोडा व साधारण दही। २ दही का विलोडन। ३ देखो 'झूळौ'।

झूलड, झूलडकौ, झूलडियौ–१ देखो 'झूल'। २ देखो 'झूलौ'।

झूलण (णी)–स्त्री० १ झूलने की क्रिया या भाव। २ झोल, ढीलापन। ३ स्नान। ४ तैरना क्रिया। ५ डुबकी। ६ ऊट का एक अवगुण।

झूलणि (णी)–स्त्री० १ ३७ मात्राओ का एक छन्द विशेष। २ ४० मात्राओ का एक अन्य छन्द विशेष। ३ २४ वर्णो का एक वर्णिक वृत्त। ४ जलने की क्रिया या भाव।
—**इग्यारस**–स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी। इस दिन देवमूर्तियो को सरोवर स्नान कराने का उत्सव।

झूलणौ–वि० (स्त्री० झूलणी) १ विचरण करने वाली। २ देखो 'जलौ'।

झूलणौ (बौ)–क्रि० १ हिंडोले खाना, झूले मे बैठकर झूलना। २ हिलना, डोलना। ३ झौंके खाना। ४ मस्ती मे घूमना। ५ लटकना, लहराना। ६ मंडराना। ७ किसी कार्य का अधूरा पडा रह जाना। ८ मोहित होना। ९ स्नान करना, तैरना। १० जल विहार करना। ११ अग्नि कुण्ड के पास बैठकर तपस्या करना। १२ देखो 'झीलणौ' (बौ)।

झूलरियौ–वि० १ झुण्ड मे रहने वाला। २ देखो 'झुलरौ'।

झूलरौ–पु० झुण्ड, समूह, टोली।

झूला–स्त्री० पृथ्वी, धरती।

झुलाळ–वि० १ हिंडोले खाने वाला, झूलने वाला। २ हिलने-डुलने वाला। ३ लटकने वाला। ४ झूमने वाला। ५ भरोसे रहने वाला। ६ अनिर्णित रहने वाला। ७ स्नान करने वाला। ८ जल विहार करने वाला। ९ तपस्या करने वाला। १० मडराने वाला। ११ कवचधारी योद्धा। १२ मग्न, मस्त रहने वाला। १३ देखो 'झूलौ'।

झूलि–स्त्री० एक प्रकार का झूलानुमा पलग।

झूळौ–पु० १ अस्त्र-शस्त्रो को खडे व सीधे जमा कर बनाया हुआ ढेर। २ कडबी आदि के पूआलो को खडे व गोलाकार रखकर बनाया हुआ ढेर। ३ सूखने के लिए अलग-अलग रखे घास के गट्ठर। ४ झुण्ड, टोला, समूह। ५ जटाजूट। ६ पहनने का एक वस्त्र विशेष।

झूलौ–पु० १ हिंडोला, पालना। २ बडी-बडी रस्सियो का झूला। ३ रस्सियो या तारो का पुल। ४ श्रावण शुक्ला तृतीया से पूर्णिमा तक होने वाला देव झुलाने का उत्सव। ५ श्रावण मास मे गाया जाने वाला एक लोक गीत। ६ देखो 'झून'।

झूस, झूसण–पु० १ कवच, बख्तर। २ तलवार, खडग। ३ जूआ'।

झूसणौ (बौ)–क्रि० १ कवच आदि पहनना। २ शस्त्रों से सुसज्जित होना। ३ जोतना।

झूसर, (री, रौ), झूसाण–देखो 'झूस'।

झूसिय–वि० [स० जूषित] युक्त, सहित। (जैन)

झें-झें–ग्रव्य० झन्-झन्।

झे–पु० १ राम। २ लक्ष्मण। ३ वन। ४ शशि मण्डल। ५ चमार। ६ मर्यादा। ७ ग्रग्नि।

झें–ग्रव्य० मवेशियो को पानी पिलाते समय की जाने वाली ग्रव्यय ध्वनि।

झेडणौ (बौ)–क्रि० १ प्राप्त करना। २ देखो 'झाडणौ' (बौ)।

झेडर–पु० एक लोक गीत विशेष।

झेर–स्त्री० १ नीद का झौंका, तद्रा। २ झरना, चश्मा। ३ देखो 'जेर'।

झेरण. झेरणियौ, झेरणू झेरणौ–पु० १ मथने का उपकरण, मथ दण्ड, मथानी। २ एक प्रकार का घास।

झेरणौ (बौ), झेरवणौ (बौ)–क्रि० १ काटना, मारना। २ तग या परेशान करना। ३ प्राप्त करना। ४ देखो 'जेरणौ' (बौ)।

झेल, झेलण–स्त्री० १ झेलने की क्रिया या भाव। २ खुले द्वार, झरोखे ग्रादि के कमानदार पत्थरो पर लगा पत्थर।

झेलणौ (बौ)–देखो 'झालणौ' (बौ)।

झेलमौ, झेलवौ–पु० १ हाथ से पकड कर खाली किया जाने वाला कूए का मोट। २ उक्त प्रकार का मोट चलने वाला कूग्रा। –वि० हाथ से पकडने योग्य।

झेला–स्त्री० बैलो के शिर पर बाधी जाने वाली रस्सी। (मेवात)

झेलाजोड (जोडी)–स्त्री० एक कर्णाभूषण विशेष।

झेली–स्त्री० १ काटा उठाने की चिमटानुमा लकडी। २ उत्तरदायित्व लेने वाला।

झेलू–वि० १ झेलने, पकडने या थामने वाला। २ रक्षक मददगार। ३ सहायक।

झेलौ–पु० १ एक कर्णाभूषण विशेष। २ स्त्रियो के ललाट व सिर का ग्राभूषण। ३ हाथी के गर्दन मे डाली जाने वाली घटियो की माला। ४ सहारा, मदद। ५ कूए पर लगा पत्थर जहा मोट खाली की जाती है। ६ मकान के ग्रागे का ग्राहता। ७ करघे पर लगी एक लकडी विशेष। ८ जल भरी चडस बाहर ग्राने पर लाव से कील निकालने का स्थान।

झै–देखो 'झै'।

झैकणौ (बौ), झैकवणौ (बौ)–क्रि० ऊट को वैठाना, वैठने के लिए प्रेरित करना।

झैकाड़णौ (बौ), झैकाणौ (बौ), झैकारणौ (बौ), झैकावणौ (बौ)–क्रि० ऊट को बिठवाना, बैठाने के लिए प्रेरित करना।

झैपणौ (बौ)–क्रि० लज्जित होना, सकपकाना।

झैपाडणौ (बौ), झैपाणौ (बौ), झैपावणौ (बौ)–क्रि० लज्जित करना।

झै–पु० १ वृहस्पति। २ गुरु। ३ नाक, नासिका। ४ मैथुन ५ स्वर्ग। ६ कृतिका। ७ ग्रात्मा। –ग्रव्य० ऊट बैठाने की साकेतिक ग्रव्यय ध्वनि।

झैकाडणौ(बौ), झैकाणौ (बौ), झैकारणौ(बौ), झैकावणौ (बौ) देखो 'झैकाणौ' (बौ)।

झैपाडणौ (बौ), झैपाणौ (बौ), झैपावणौ (बौ)–देखो 'झैपाणौ' (बौ)।

झोंक–देखो 'झोक'।

झोंकौ–देखो 'झोकौ'।

झोपड़ी–स्त्री० कुटिया, पर्णकुटी।

झोपडौ–देखो 'झूपडौ'।

झोक–स्त्री० १ ऊट के वैठने का स्थान, बाडा। २ ऊट के वैठने लायक भूमि। ३ मादा ऊट के प्रसव करने की क्रिया। ४ जोश, उत्साह, साहस। ५ तराजू के पल्डे का झुकाव। ६ झुकाव, प्रवृत्ति। ७ झुकना क्रिया का भाव। ८ तिरछी चितवन, कटाक्ष। ९ तरंग, लहर। १० इधर-उधर हिलने-डुलने की क्रिया। ११ शोभा। १२ शाबासी, प्रशसा।

झोकडी–स्त्री० १ मस्ती, झूम। २ नींद की झपकी।

झोकणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, वार करना। २ जोश पूर्वक ग्रागे बढाना। ३ जबरदस्ती ग्रागे बढाना, ढकेलना, ठेलना। ४ प्रवृत्त करना। ५ किसी वस्तु को झटके के साथ ग्रागे फेंकना। ६ अधाधुध व्यय करना। ७ ग्राहुति देना। ८ किसी कार्य मे सलग्न करना, लगाना। ९ ग्रापत्ति मे डालना, बुरी जगह ढकेलना, भेजना। १० डालना, पटकना। ११ ग्रत्यधिक कार्य भार डालना। १२ बन्दूक दागना। १३ देखो 'झैकणौ' (बौ)।

झोका–ग्रव्य० वाह शाबास।

झोकाइत, झोकाई, झोकाऊ–वि० १ वीर, बहादुर। २ लुटेरा, डाकू।

झोकाडणौ (बौ), झोकाणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार कराना, वार कराना। २ जोश पूर्वक ग्रागे बढवाना। ३ जबरदस्ती ग्रागे बढवाना, ढकेलाना, ठेलाना। ४ प्रवृत्त कराना। ५ किसी वस्तु को झटके के साथ ग्रागे फिंकवाना। ६ ग्रधाधुंध व्यय कराना। ७ ग्राहुति दिराना। ८ किसी कार्य मे सलग्न कराना, लगवाना। ९ ग्रापत्ति मे डलाना, बुरी जगह भिजवाना। १० डलवाना, पटकवाना। ११ ग्रत्यधिक कार्य भार डलवाना। १२ बन्दूक दगवाना। १३ देखो 'झैकाणौ' (बौ)।

झोकायत (तो)–देखो 'झोकाइत' ।

झोकावणौ (बौ)–देखो 'झोकाणौ' (बौ) ।

झोकौ–पु० १ झपट्टा, धक्का । २ झटका, आघात । ३ हवा का प्रवाह झकोरा । ४ रेला । ५ हिलने-डुलने की क्रिया । ६ प्रवाह । ७ लहर, तरग ।

झोखणौ(बौ)–१ देखो 'झँकणौ'(बौ) । २ देखो 'झोकणौ'(बौ) ।

झोखाइत, झोखाई, झोखाऊ–देखो 'झोकाइत' ।

झोखाणौ (बौ) झोखावणौ (बौ)–देखो 'झोकाणौ' (बौ) ।

झोड–स्त्री० १ टक्कर, आघात । २ देखो 'झोड' ।

झोट–१ देखो 'झोटी' । २ देखो 'झोटौ' ।

झोटी–स्त्री० युवा भैंस ।

झोटौ–पु० १ झूले का झोका । २ धक्का, टक्कर । ३ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव । ४ युवा भैंस । –वि० हृष्ट-पुष्ट ।

झोतिखिक, झोतिसिक–देखो 'ज्योतिसी'

झोबा-झोब–वि० पसीने से तरबतर ।

झोर–पु० समूह झुण्ड ।

झोरौ–पु० १ गुच्छा, झूमका । २ देखो 'झोरौ' ।

झोळ–पु० १ धातुओ पर चढाया जाने वाला मुलम्मा, निकल, कलाई । २ तरकारी का द्रव भाग, शोरबा । ३ वह घोल जो अन्न के आटे मे मसाले मिलाकर पकाया जाता है । ४ परदा, ओट । ५ हाथी की चाल का दुर्गुण । ६ देखो 'झोळौ' । —**दार**–वि० जिसमे झोल हो, रसदार, शोरवेदार ।

झोल–स्त्री० १ रस्सी आदि का तनाव कम होने के कारण ढीलेपन का झुकाव । २ बीच मे से मुडकर झुक जाने की दशा । ३ शिथिलता । ४ लटकाव । ५ दुख । ६ देखो 'झोलौ' । —**दार**–वि० जिसमे झोल हो, ढीला-ढाला ।

झोलउ–देखो 'झोलौ' ।

झोळणौ–पु० यात्रा मे साथ ले जाने का कपडे का थैला ।

झोळणौ (बौ)–क्रि० १ हिलाना-डुलाना । २ झक-झोरना, मथना ।

झोलणौ–पु० लोहे का बना दीपक ।

झोळायत–पु० गोद लिया पुत्र, दत्तकपुत्र ।

झोळि–स्त्री० १ तलहटी । २ देखो 'झोळी' ।

झोळियां–क्रि० वि० अक मे, गोद मे ।

झोळियौ–पु० १ दही का मट्ठा, पतला दही । २ बच्चे का पालना । ३ बच्चो को सुलाने की कपडे की झोली ।

झोळी–स्त्री० १ किसी वस्त्र के चारो कोणो को रस्सी से बाधकर बनाया हुआ झोला । २ वस्त्र के चारो शिरो को परस्पर बाधकर बनाया हुआ थैला । ३ वस्त्र को शरीर से ऐसे बाधना कि पीछे थैलानुमा बन जाय । ४ थैली । ५ घायलो को ले जाने के लिये प्रयोग किया जाने वाला बडा थैला, झोला, उपकरण । ६ बच्चो को हिंडाने की झोली । ७ याचना के लिये फैलाया जाने वाला दामन । ८ अक, गोद । —**झडौ, डडौ**–पु० साधुओ की झोली व डडा ।

झोळौ–पु० १ बडा थैला । २ कपडे के चारो छोर मिला कर बनाई गई गठरी । ३ ढीला-ढाला आवरण । ४ साधुओ का चोला । ५ गोद, अक । ६ पहनने के वस्त्र का कोई वस्तु डालने के लिये बनाया हुआ झोला ।

झोलौ–पु० १ वायु का प्रवाह, झौंका टक्कर, आघात । २ वायु-प्रकोप । ३ प्रवाह । ४ तरग, हिलोर । ५ झूलने की क्रिया या भाव । ६ जल-विलोडन । ७ वात रोग विशेष । ८ आश्विन मास मे सप्तर्षि के अस्त होने के स्थान से चलने वाली वायु जो फसल के लिये हानि-कारक होती है । ९ आपत्ति, सकट । १० पीडा, दुख । ११ विक्षेप, बाधा । १२ सग, सोहबत । १३ शोभित होने का भाव । १४ चितवन, दृष्टि । १५ आक्रमण, झपट । १६ उलझन, फदा । १७ प्रभाव, असर ।

झोवरी–स्त्री० एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

झोवौ–पु० मिट्टी का एक पात्र विशेष ।

झौंक–स्त्री० १ ध्वनि, आवाज । २ देखो 'झोक' ।

झौंप–पु० शमी वृक्ष की टहनियो का बना उपकरण ।

झौक–१ देखो 'झोक' । २ देखो 'झौंक' ।

झौका–देखो 'झोका' ।

झौड–स्त्री० १ झझट, प्रपच । २ कलह, झगडा, टटा । ३ राड, तकरार । ४ बहस । ५ युद्ध । ६ विवाद । —**झपाड, झपोड**–पु० टटा, फिसाद ।

झौडौ–पु० विवरण, हाल, वृत्तान्त ।

झौर–देखो 'झौरौ' ।

झौरापौ (बौ)–देखो 'झुरापौ' ।

झौरौ–पु० खुजलाहट, खुजली ।

झ्यकारतन–पु० स्त्रियो के पैरो का आभूषण विशेष ।

झ्याझ–देखो 'जा'ज' ।

झ्रग–पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

—ट—

ट—देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवा व्यजन वर्ण।

ट—पु० [स० टम्] १ अकुश। २ पुत्र। —स्त्री० ३ आख। ४ पृथ्वी। ५ भौंह। —वि० १ गभीर। २ वीर।

टक(उ)—पु० [स० टकि, टक] १ भोजन का समय। २ तलवार की नोक। ३ सिक्का। ४ तलवार। ५ कुदाली। ६ छैनी। ७ म्यान। ८ पहाडी की ढलान। ९ एक ओर से टूटा हुआ पर्वत। १० क्रोध। ११ अहकार। १२ टाग। १३ सुहागा। १४ चारमाशे का एक तौल। १५ टकसाल मे सिक्को का धातु तोलने का एक मान। १६ धनुष की डोरी पर लटकाया जाने वाला एक मान। १७ सम्पूर्ण जाति का एक राग। **—अठार, अढार**= 'अढारटकी'।

टकण—पु० [स० टकणम्] १ सुहागा। २ घोडे की जाति विशेष व इस जाति का घोडा। ३ एक मानव जाति विशेष। ४ टकित करने की क्रिया।

टकणौ—देखो 'टाकणौ'।

टकणौ(बौ)—क्रि० १ टकित करना, टाईप करना। २ टाका जाना। ३ देखो 'टाकणौ' (बौ)। ४ देखो 'टगणौ' (बौ)।

टकपरीक्षा—स्त्री० बहत्तर कलाओ में से एक।

टंकसाळ—स्त्री० १ धनुष विद्या सिखाने का स्थान। २ देखो 'टकसाल'।

टकाई—स्त्री० १ टाकने का कार्य। २ टाकने की मजदूरी।

टकाआळि, टकाउळि—देखो 'टकावली'।

टकाळिलौ—वि० बहुमूल्य, कीमती।

टकार—स्त्री० १ धनुष की डोरी की ध्वनि। २ कमी हुई डोरी या तार से निकलने वाली ध्वनि।

टकारणौ (बौ)—क्रि० १ प्रत्यचा से आवाज करना। २ आघात से ध्वनि करना। ३ गिनना। ४ मानना, समझना।

टकारव, टकारौ—देखो 'टकार'।

टकावळ (ळि,ळी)—वि० बहुमूल्य,कीमती। —पु० हार,कठाहार।

टकी—स्त्री० १ लोहे आदि का बडा पात्र, कोठी। २ पानी के लिए बनाया छोटा जल-कुण्ड। ३ धनुष।

टकेत—वि० खडगधारी, कृपाणधारी।

टकोर—देखो 'टकार'।

टकोरियो, टकोरौ—पु० १ देवपूजन के समय बजाया जाने वाला छोटा घटा। २ ऐसा ही छोटा घटा जो किसी स्थान या पशु के गले मे लटकाया जाता है।

टकौ—१ देखो 'टकौ'। २ देखो 'टंक'। ३ देखो 'टाकौ'।

टग, टगडी—देखो 'टाग'।

टगणौ (बौ)—क्रि० टाका जाना, लटकना, अटकना।

टगपाणी—पु० [स० टकपाणि] ४९ क्षेत्रपालो मे से २७ वा क्षेत्रपाल।

टगलौ—वि० (स्त्री० टगली) पैरो से चलने मे असमर्थ।

टच—वि० १ तैयार। २ पूर्ण। ३ प्रस्तुत। ४ कृपण, कजूस।

टचणौ (बौ)—क्रि० टाचा जाना।

टचर—पु० शिर, शीश।

टंट, टटी—स्त्री० घुटने से नीचे का भाग।

टटेर—पु० १ मरे पशु का अस्थिपजर। २ दुर्बल प्राणी।

टटेरणौ (बौ)—क्रि० लटकाना, लटकाये हुए फिरना।

टटोळणौ (बौ)—क्रि० १ ढूढना, खोजना। २ सभालना, देखना। ३ स्पर्श करना, छूना। ४ थाह लेना। ५ परखना, आजमाना। ६ सहलाना।

टंटौ—पु० १ झगडा, लडाई। २ कलह, तकरार। ३ परेशानी, दिक्कत। ४ उलझन।

टडीरौ, टडेरौ—पु० घरेलू सामान, व्यर्थ सामान।

टपणौ (बौ)—क्रि० छलाग, भरना, कूदना।

टपाघोडी—पु० बच्चो का एक खेल विशेष।

टंपाडणौ (बौ), टपाणौ (बौ), टपावणौ (बौ)—क्रि० छलाग भराना, कुदाना।

टंमकौ—पु० १ ध्वनि। २ शब्द, आवाज। ३ नगाडा। ४ चमक। ५ हल्का प्रकाश।

ट—पु० १ योद्धा। २ देवदार। ३ पीपल। ४ चादी।

टओबौ—पु० पैदा, तल।

टक—स्त्री० १ बिना पलक झपके देखने की क्रिया या भाव। २ नजर, दृष्टि। ३ तक, पर्यन्त। ४ स्थिति। ५ क्षण, पल। ६ देखो 'टक'। ७ देखो 'ठक'। ८ देखो 'ठाक'।

टकएक, टकेक—क्रि०वि० १ पलभर, क्षणेक। २ निरन्तर।

टकटकणौ (बौ), टकटकाणौ (बौ)—क्रि० १ निरन्तर देखना, टकटकी लगाना। २ टक-टक शब्द करना।

टकटकी (क्की)—स्त्री० १ बिना पलक झपके निरन्तर एक ही जगह देखने की क्रिया या भाव। २ स्थिर दृष्टि।

टकटक्कौ—वि० (स्त्री० टकटक्की) चकित, स्तभित।

टकर—देखो 'टक्कर'।

टकरणौ (बौ)–क्रि० १ टकराया जाना । २ टक्कर होना । ३ मिलना, साक्षात्कार होना ।

टकराणौ(बौ), टकरावणौ (बौ)–क्रि० १ परस्पर भिड़ना, टकराना । २ ठोकर लगना । ३ धक्का लगाना । ४ लड़ना, तकरार करना । ५ सम्पर्क मे आना । ६ मिलना । ७ स्वार्थ सिद्धि के लिए मारा-मारा फिरना । ८ मिलान करना, जाच करना ।

टकसाळ–स्त्री० [स०टकशाला] वह सस्था, विभाग या कारखाना जहा राज्य द्वारा प्रचलित मुद्रा व सिक्को का निर्माण किया जाता है ।

टकसाळी, टकसाळीक–वि० १ टकसाल का, टकसाल सबधी । २ सर्वमान्य, प्रामाणिक । ३ पठित । –पु० टकसाल का कर्मचारी ।

टकांणी–स्त्री० बैलगाडी का एक उपकरण ।

टकाणौ (बौ)–देखो 'टिकाणौ' (बौ) ।

टकार–पु० 'ट' अक्षर ।

टकियाई, टकियारी–स्त्री० टके-टके के लिए व्यभिचार करने वाली स्त्री ।

टकियारौ–वि० अत्यधिक लालची, नीच, धन-लोलुप, शूद्र ।

टकोर–देखो 'टकोर' ।

टकोरौ–देखो 'टकोरौ' ।

टकौ–पु० [स० टक] १ दो पैसे का सिक्का, दो पैसे । २ आधी छटाक का एक तौल । ३ कर, टेक्स ।

टक्कदेस–पु० एक प्राचीन देश ।

टक्कर–स्त्री० १ दो वस्तुओ की वेग से होने वाली परस्पर भिडत । टकराव । २ धक्का, झटका । ३ ठोकर । ४ मुकाबला । ५ घाटा, हानि ।

टक्कूणौ, टक्कूण्यौ टखणौ–पु० एडी के ऊपर पाव के जोड की हड्डी । पाद ग्रथि । गट्टा, टखना ।

टग–स्त्री० किसी वस्तु के सहारे के लिए या ऊचा रखने के लिए नीचे लगाया जाने वाला खण्ड । सहारा ।

टगटगो–क्रि०वि० मदगति से, धीरे-धीरे ।

टगटगणौ (बौ)–क्रि० निरन्तर देखना, ताकना, टकटकी लगाना ।

टगटगाट (टौ)–पु० एक प्रकार की ध्वनि विशेष ।

टगटगाणौ (बौ)–देखो 'टकटकाणौ' (बौ) ।

टगटगी (ग्गी)–देखो 'टकटकी' ।

टगण–पु० छ मात्रा का एक मात्रिक गण ।

टगमग–स्त्री० विशेप प्रकार से देखने की क्रिया ।

टगौ–पु० घोडे आदि का चलते-चलते अचानक रुक जाने की क्रिया ।

टगौ–पु० विशेष अवसर, समय ।

टचटच–स्त्री० मुह से निकाली जाने वाली एक ध्वनि विशेष ।

टचरकौ–पु० १ झगडा, कलह । २ व्यग, ताना ।

टचली–स्त्री० कनिष्ठा अगुली, छगनिया ।

टच्च–क्रि०वि० तुरत, शीघ्र ।

टटपूजियौ–वि० कम पूजी वाला । तुच्छ । साधारण ।

टटोळणौ (बौ)–देखो 'टटोळणौ' (बौ) ।

टट्टी–स्त्री० १ मल, पाखाना, शौच । २ पाखाना करने का स्थान । ३ पाखाना करने की क्रिया । ४ देखो 'टाटी' ।

टट्टू–पु० १ छोटे कद का घोडा विशेप । २ शिश्न ।

टट्टौ–पु० 'ट' वर्ण ।

टडौ, टड्डौ–पु० स्त्रियो के भुजा का आभूषण विशेप ।

टण–स्त्री० १ घण्टा ध्वनि । २ टन्-टन् ध्वनि । २ देखो 'टणौ' ।

टणकबद (बदजी, सींग, सींघ)–वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ विशेष प्रभाव या मान-मर्यादा वाला ।

टणकाई–स्त्री०१ जोर-जबरदस्ती । २ शक्ति का गर्व ।

टणकार–स्त्री० घटे या किसी धातु की वस्तु पर आघात पडने से होने वाली 'टन्' ध्वनि ।

टणकेल, टणकैल, टणकौ–वि० १ बलवान, शक्तिशाली, जबरदस्त । २ विशाल, बडा । ३ महान्, भारी । –पु० स्त्रियो के पाव का चादी का एक आभूषण ।

टणटणाणौ (बौ)–क्रि० टन्-टन् ध्वनि होना, टनटनाना ।

टणणंक–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

टणणकणौ (बौ)–क्रि० टन्-टन् ध्वनि होना ।

टणमण–स्त्री० घटियो की ध्वनि ।

टणमणणौ (बौ)–क्रि० टन्-टन् ध्वनि होना ।

टणियौ, टणौ–पु० स्त्रियो की योनि के मध्य का उभरा हुआ भाग ।

टप–स्त्री० १ बूद टपकने की ध्वनि । २ बूद पडने की क्रिया । ३ तागे के ऊपर मोटे कपडे का बना सायबान । ४ छोटी झोपडी । ५ पानी रखने का चौडा पात्र ।

टपक–स्त्री० १ बूद-बूद टपकने की क्रिया या भाव । २ शीघ्र, जल्दी ।

टपकणौ (बौ)–क्रि० १ बूद-बूद कर गिरना । २ टूट कर गिरना (फलादि) । ३ प्रतीत होना, आभास होना । ४ सहसा प्रकट करना ।

टपकाणौ (बौ)–क्रि० १ बूद-बूद कर गिराना । २ फलादि गिराना । ३ प्रतीत कराना, आभास कराना । ४ सहसा प्रकट करना ।

टपकार–स्त्री० नजर, कुदृष्टि । दृष्टि दोष ।

टपकावणौ (बौ)–देखो 'टपकाणौ' (बौ) ।

टपकौ–पु० १ बूद, छींटा । २ टपकी हुई वस्तु ।

टपटप–क्रि०वि० टप-टप ध्वनि के साथ ।

टपर, टपरियौ, टपरी, टपरौ–पु० १ छोटासा छप्पर, छान। २ झोपडी, कुटिया। ३ देखो 'टापरौ'।
टपली–स्त्री० १ छोटी खाट। २ शिर, टाट।
टपसियौ, टपसौ–पु० छोटी झोपडी।
टपाक–क्रि०वि० तुरत शीघ्र। सहसा।
टपाटप–क्रि०वि० १ जल्दी-जल्दी, शीघ्र। २ टप-टप करते हुए। ३ बूद-बूद कर। –पु० बूद-बूद गिरने का भाव।
टपूकडौ–पु० १ तरल या द्रव पदार्थ। २ सिंह, शेर।
टपौ–१ देखो 'टिप्पौ'। २ देखो टपकौ'।
टप्प–क्रि०वि० १ तुरत, शीघ्र, झट। २ सहसा।
टप्पर–देखो 'टपर'।
टब–पु० १ नाद के आकार का खुला पात्र। २ उपाय, तरकीब।
टबकियौ–पु० १ छोटी डलिया। २ मिट्टी का छोटा बर्तन।
टबक्क–पु० शब्द, ध्वनि, रव।
टबक्कडौ टबरकौ–देखो 'टबूकौ'।
टबारौ–पु० १ गृहस्थी का कार्य, गुजर-बसर। २ साधारण धधा, उद्योग।
टबूकौ, टबूक्कौ–पु० १ सगीत की ध्वनि। २ बूद।
टब्बर–पु० [स० तर्पर] कुटुंब, परिवार।
टब्बा–स्त्री० राजस्थानी मे सक्षिप्त भाषानुवाद।
टमकणौ(बौ)–१ देखो 'टमकणौ'(बौ)। २ देखो 'तमकणौ'(बौ)।
टमकणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, दमकना। २ झलकना। ३ प्रगट होना, मालूम होना। ४ सर्दी आना। ५ नगाडे आदि की ध्वनि होना। ६ कापना, कंपन होना। ७ टमटमाना।
टमकाडणौ(बौ), टमकाणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना, दमकाना। २ झलकाना। ३ प्रकट करना। ४ नगाडे की ध्वनि करना। ५ कपाना। ६ टमटमाना। ७ पलकें हिलाना। आख मीचना।
टमकार–देखो 'टमकारौ'।
टमकारणौ (बौ)–देखो 'टमकाणौ' (बौ)।
टमकारौ–पु० १ आख मीचकर किया जाने वाला इशारा। २ घडियाल का शब्द।
टमकावणौ (बौ)–देखो 'टमकाणौ' (बौ)।
टमकीलौ–वि० (स्त्री० टमकीली) बनावटी शृगार वाला, नखरे वाला।
टमकौ–पु० साज-शृगार, नाज-नखरा।
टमचरौ–पु० मस्तक, शिर, खोपडी।
टमटम–पु० १ एक प्रकार की घोडा गाडी। २ ध्वनि विशेष।
टमटमाणौ (बौ)–देखो 'टिमटिमाणौ' (बौ)।
टमरकटू–स्त्री० फाख्ता पक्षी की बोली।
टमरियौ–पु० वृक्ष विशेष।
टमरु (रू)–पु० एक प्रकार का वस्त्र।
टमाटर–पु० लाल या हरे रग का, खट्टा फल व इसका पौधा।
टमोरौ–पु० आख का इशारा, मटरका।
टर–पु० १ अप्रिय या कटु शब्द। २ बकवाद। ३ ऐंठन भरी बात। ४ अक्कड, घमड। ५ तुच्छ बात। ६ मेढक की आवाज।
टरकणौ (बौ)–क्रि० १ धीरे से चला जाना, खिसकना। २ कही से टलना।
टरकाणौ(बौ), टरकावणौ(बौ)–क्रि० १ किसी को रवाना करना, खिसकाना। २ कही भेजना। ३ टालना, हटाना।
टरड–स्त्री० १ ऐंठ, गर्व। २ भेड। ३ अपान वायु की आवाज। —**पच**–पु० स्वत बना पच।
टरडकौ–पु० १ क्रोध करने का भाव। २ कराहट। ३ घोडे की एक दौड। ४ अपान वायु की ध्वनि।
टरटराणौ (बौ), टरणाणौ(बौ)–क्रि० १ मेढक का बोलना। २ बकना, बकवाद करना।
टळकणौ (बौ)–क्रि० १ कंपायमान होना। २ चीरना फाडना। काटना, विभाजित करना। ३ डिगना। ४ टरकना, खिसकना। ५ धीरे-धीरे चलना। ६ स्थान से दूर होना। ७ लुढकना। ८ देखो 'टरकणौ' (बौ)।
टळकाणौ (बौ)–क्रि० १ कपायमान करना, डिगाना। २ टरकाना, खिसकाना। ३ धीरे-धीरे चलाना। ४ स्थान से दूर करना। ५ लुढकाना। ६ देखो 'टरकाणौ' (बौ)।
टळवकणौ (बौ)–देखो 'टळकणौ' (बौ)।
टळटळणौ (बौ)–टळट्टळणौ (बौ)–क्रि० १ बुल-बुलाना, छटपटाना, तडपना। २ कपायमान होना। ३ रेंगना टालमटोल करना।
टळणौ (बौ)–क्रि० [सं० टल] १ स्थान से अलग हटना, खिसकना। २ पृथक, होना, अलग होना। ३ दूर होना। ४ मिटना, निवारण होना। ५ मर्यादा से हटना। ६ कर्त्तव्य विमुख होना। ७ डोलना, कापना। ८ अस्थिर होना। ९ नाश होना, मिटना, क्षय होना। १० बचना, वचित रहना। ११ व्यतीत होना, समाप्त होना। १२ अनुपस्थित होना। १३ स्थगित होना, गुजरना, चला जाना। १४ विपत्ति आदि का टलना। १५ लागू न होना, प्रभावशील न होना। १६ ऊट का रोग विशेष से पीडित होना। १७ गाय, भैंस व बकरी का दूध देना बद कर देना।
टलन–स्त्री० आघात, टक्कर।

टळवळणौ (बौ)–क्रि० १ हिलना, डुलना। २ अस्थिर होना, चचल होना। ३ छटपटाना, तडपना, कुल बुलाना। ४ व्याकुल होना, परेशान होना। ५ लालायित होना, इच्छुक होना। ६ रेंगना, चलना।

टळवळा'ट टळवळाहट–स्त्री० १ बेचैनी, घबराहट। २ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। ३ हरकत।

टळवळाणौ (बौ), टळवळावणौ (बौ)–क्रि० १ हिलाना, डुलाना। २ अस्थिर या चचल करना। ३ तडपाना। ४ व्याकुल करना। ५ लालयित करना, इच्छा कराना। ६ रेंगाना, चलाना।

टळवाडणौ (बौ)–क्रि० खीचकर निकालना।

टलौ, टल्लौ–पु० हल्कासा धक्का, टक्कर, झटका।

टवरग–पु० [सं० ट वर्ग] ट ठ ड ढ ण इन वर्णों का समूह।

टवाली–स्त्री० १ खेत की रखवाली। २ चौकीदारी।

टवौ–पु० भाले का अग्र भाग।

टस–स्त्री० १ अत्यन्त भारी वस्तु के खिसकने की क्रिया। २ खिसकने से उत्पन्न शब्द।

टसक–स्त्री० १ दर्द, कसक, टीस। २ देखो 'ठसक'।

टसकणौ (बौ)–क्रि० १ दर्द से कराहना, दर्द मे टसकना। २ खिसकना, हिलना। ३ कब्ज की दशा मे मलत्याग के लिए जोर करना। ४ चरमराना।

टसकाई–स्त्री० टसकने की क्रिया या भाव।

टसकीलौ–वि० (स्त्री० टसकीली) १ अधिक कराहने वाला। २ देखो 'ठसकीलौ'।

टसकौ–पु० १ कराहने का शब्द। २ टसकने की क्रिया या भाव। २ देखो 'ठसकौ'।

टसणौ (बौ)–देखो 'ठसणौ' (बौ)।

टसर–स्त्री० [स० तसर] एक प्रकार का मोटा व मजबूत वस्त्र।

टसरियौ, टसरीओ, टसरीयौ, टसर्‌यौ–पु० १ ऊट की एक चाल विशेष। २ अफीम रखने का पात्र। ३ एक प्रकार का वस्त्र।

टहकणौ(बौ)–१ देखो'टसकणौ' (बौ)। २ देखो'टहूकणौ'(बौ)।

टहकाणौ (बौ)–क्रि० १ बजाना। २ ध्वनि करना।

टहकौ–पु० १ वाद्य ध्वनि। २ देखो 'टहुकौ'।

टहटह–स्त्री० १ हसने की क्रिया। २ अट्टहास। ३ ध्वनि विशेष।

टहटहणौ (बौ)–क्रि० १ वाद्य ध्वनि होना, नगारा बजना। २ खिलखिलाना।

टहनी–स्त्री० वृक्ष या पौधे की छोटी शाखा।

टहल–स्त्री० १ सेवा, खिदमत, चाकरी। २ देखभाल। ३ घूमने-फिरने की क्रिया या भाव। —**दार**–पु० खिदमतगार, चाकर। कमाई।

टहिटी–स्त्री० एक वाद्य विशेष।

टहुकडौ–देखो 'टहुकौ'।

टहुकणौ (बौ)–क्रि० १ कोयल, मोर आदि पक्षियो का बोलना। २ ऊची व लम्बी आवाज करना। ३ ध्वनि करना।

टहुकौ–पु० १ कोयल, मोर आदि पक्षियो की बोली। २ ऊची व लम्बी आवाज। ३ ध्वनि, शब्द। ४ लबी व तेज आवाज देने का ढग। ५ ताना, व्यग। ६ ऊट की बोली।

टहूकणौ (बौ)–देखो 'टहुकणौ' (बौ)।

टाक–स्त्री० १ धनुष। २ देखो 'टक'। ३ देखो 'टाकी'।

टाकडौ–देखो 'टाकणौ'।

टाकणौ–पु० १ शुभाशुभ अवसर, विशेष अवसर, मुहूर्त। २ ऐसे अवसर पर पडने वाला कार्य, घर का विशेष कार्य। ३ समय। ४ स्त्री के मासिक धर्म का समय। ५ शिल्पी का एक औजार विशेष। ६ ऊपर लटकता हुआ मास। ७ लटकाने या अटकाने की क्रिया या भाव।

टाकणौ (बौ)–क्रि० १ ऊपर लटकाना, अटकाना, टेरना। ३ सिलाई करना। ३ बटन आदि लगाना। ४ चिपकाना, चस्पा करना।

टाकमौ–वि० (स्त्री० टाकमी) १ लटकाया हुआ, टाका हुआ। २ लटकता हुआ।

टाकरौ–पु० एक तोले का वजन।

टाकल–वि० कुपुत्र।

टाकलउ टाकलौ–१ देखो 'टाकणौ'। २ देखो 'टक'।

टाकी–स्त्री० १ पत्थर गढने का लोहे का उपकरण। २ सोना, जवाहिरात आदि तोलने का तराजू। ३ देखो 'टाकी'। —**बद**–पु० इमारत मे लगे पत्थर के टुकडो या आमने-सामने की कीलो की मजबूत जुडाई। उक्त प्रकार से बनी इमारत।

टांकोली–पु० पुनर्वसु नक्षत्र का एक नाम।

टांकौ–पु० [स० टकि-बधने] १ भूमि को खोदकर अथवा ऊपर दीवार उठाकर बनाया हुआ जलकुण्ड। २ सोने चादी के आभूषणो मे मिलाया जाने वाला विजातीय धातु। ३ कपडे या किसी घाव की सिलाई। ४ चोर के पद चिह्नो की खोज। ५ भूमि सबधी एक प्राचीन कर।

टाग (डी डौ)–स्त्री० [स० टगा] १ पैर, पाव, पग। २ रहट के कूए के भीतर लगने वाली लकडी।

टागण–देखो 'टैंगण'।

टागणौ (बौ)–देखो 'टाकणौ' (बौ)।

टागर–पु० भैंस।

टागरियौ, टागरौ–पु० १ फेरी लगाकर सौदा बेचने वाला व्यापारी। २ किसी बात की रट।

टांगाटोळी–स्त्री० १ दोनों हाथ व दोनों पांव पकड़कर ले जाने की क्रिया या भाव । २ खींचातान ।

टाघण–देखो 'टँगण' ।

टांचणौ (बौ)–क्रि० १ पीसने की चक्की आदि की टचाई करना, टाचना । २ चोंच का प्रहार करना । ३ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना । ४ धोखे से ले लेना, हड़पना ।

टांचाणौ (बौ), टांचावणौ (बौ)–क्रि० १ पीसने की चक्की आदि की टचाई कराना । टचवाना । २ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार कराना । ३ हड़पवाना, धोखा कराना ।

टांची (जी)–स्त्री० आमदनी का धंधा, रोजी ।

टांट–स्त्री० १ पैर, टांग । २ टांट । –वि० १ दुबला-पतला । २ अशक्त, कमजोर । ३ अयोग्य ।

टांटणौ–पु० मांस ।

टांटळ–देखो टांट' ।

टांटियौ–पु० १ पाट व पलंग के पायों की मजबूती के लिए लगाई जाने वाली लोहे की शलाख । २ बरं नामक पतंगा । ३ टेढ़े मुख का व्यक्ति । –वि० दुबला-पतला, अशक्त ।

टांटौ, टांटौ–वि० अपाहिज, अपंग ।

टांड–पु० १ किसी दीवार के सहारे सामान रखने के लिये लगाया जाने वाला लम्बा पत्थर । २ मचान । ३ मकान के बीच लगा शहतीर । ४ शोभा । ५ देखो 'टांडौ' ।

टांडी–वि० [सं० तुण्डकम्] शोभा युक्त, सौभाग्य युक्त ।

टांडौ–पु० १ अंगारा, अग्निकण । २ बनजारे के बैलों का समूह । ३ गांव के बाहर का, पशुचर्म निकालने का स्थान । ४ अधिक संतान के लिये प्रयुक्त शब्द ।

टांणू, टांणौ–पु० १ विवाहादि विशेष कार्य । २ वह समय जब विशेष कार्य हो । ३ उत्सव का दिन । ४ त्यौहार । ५ समय, वक्त । ६ अवसर, मौका ।

टांनर-टूनर–देखो 'टामण-टूमण' ।

टांपी–स्त्री० १ शमी वृक्ष । २ छोटा वृक्ष । ३ झोंपड़ी ।

टांमक, टामक–पु० १ नगाड़ा । २ नगाड़े पर प्रहार या चोट ।

टामकी–स्त्री० ढोलक ।

टामटीम, टामटूम–देखो 'टीपटाप' ।

टामण-कामण, टामण-टूमण–पु० जादू-टोना, वशीकरण मंत्र ।

टांमेर–पु० एक प्राचीन राजपूत वंश व उसका व्यक्ति ।

टांय-टांय–स्त्री० १ पक्षियों की अप्रिय या कर्कश बोली । २ बकवाद, बकझक । ३ टिट्टिभ पक्षी की बोली । ४ चिड-चिडाने की क्रिया या भाव ।

टांस–स्त्री० धैर्य, धीरज । –वि० तृप्त ।

टांसणौ–वि० १ मजबूत, दृढ़ । २ ताकतवर, शक्तिशाली ।

टांसणौ (बौ)–वि० १ खूब खाना-पीना । २ तृप्त होना । ३ वस्त्रादि जबरदस्ती धारण करना, पहनना । ४ देखो 'ठासणौ' (बौ) ।

टा–स्त्री० १ वड़वानल । २ मच्छी । –पु० ३ देवता । ४ वस्त्र । ५ तोता । ६ भजन । ७ मित्र । ८ यश ।

टाक–पु० [सं० तक्षक] १ नाग क्षत्रिय वंश की एक शाखा व उस शाखा का सदस्य । [सं० टाक] २ सिंधु व व्यास नदी के बीच का प्रदेश ।

टाकर–स्त्री० १ टक्कर, झपट । २ घाव, चोट । ३ जख्म पर जमने वाली पपड़ी । ४ रगड़ या घर्षण के कारण सख्त पड़ने वाली चमड़ी । ५ धूल, रेणु ।

टकाद–स्त्री० ऊंटों की एक जाति विशेष व इस जाति का ऊंट ।

टाकरी–पु० १ भूमि का ऊंचा उठा हुआ भाग । २ ऊसर भूमि । ३ देखो 'टाकर' ।

टाकी–स्त्री० १ जखम, घाव, दाग । २ जखम का निशान । ३ खरबूज या तरबूज का काटा जाने वाला चौकोर छोटा खण्ड ।

टाचकणौ (बौ)–क्रि० १ आक्रमण या हमला करना । २ आक्रमण के लिये तैयार होना । ३ हमले के लिये उछलना । ४ उछल कर आगे आना ।

टाचरकौ–पु० १ विशेष अवसर, मौका । २ देखो 'टचरकौ' ।

टाचरणौ (बौ)–क्रि० १ दूर करना । २ पृथक या अलग करना ।

टाचरौ–पु० सिर, मस्तक । –वि० शक्तिशाली ।

टाट–स्त्री० १ बकरी, अजा । २ बिना बालों की खोपड़ी । ३ कपाल । ४ सिर के बाल उड़ने का एक रोग । ५ बोरी, बारदाना । –वि० १ कायर, डरपोक । २ मूर्ख, अयोग्य ।

टाटर–पु० घोड़े की झूल । –वि० विवस्त्र, नंगा, वस्त्रहीन ।

टाटलौ, टाटियौ–वि० (स्त्री० टाटली) गंजा ।

टाटी–स्त्री० १ बांस की खपचियों से बनी कोई आड़ । २ पत्थर की पट्टियों की दीवार । ३ छोटी दीवार ।

टाटौ–पु० १ खस या कांटों की बनी टट्टी । २ बकरी, अजा । ३ बकरा । ४ देखो 'टाटो' ।

टाड–पु० आभूषण विशेष ।

टाडूकणौ (बौ)–देखो 'ताडूकणौ' (बौ) ।

टाढ–स्त्री० सरदी, ठंड ।

टाढौ–देखो 'ठाडौ' ।

टाप–स्त्री० १ घोड़े का खुर । सुम । २ इस खुर का बना चिह्न । ३ घोड़े के पांव की आवाज । ४ घोड़े के अगले पांव का प्रहार । ५ छान, छप्पर । ६ टाटा । ७ फिट किया हुआ किसी का ढक्कन । ८ खिड़की या आलय के पीछे लगा पत्थर ।

टापदार–वि० जिसमे टाप लगी हो।

टापर–स्त्री० १ घोडे की झूल । २ घोडे की जीन का एक उपकरण । ३ सर्दी मे पशुओ को ओढाया जाने वाला मोटा वस्त्र।

टापरियौ, टापरी, टापरौ–पु० १ घास-फूस का मकान, कच्चा मकान। २ झोपडी। ३ पुराना मकान। ४ घर। –वि० आगे से मुडा हुआ, छोटा (कान)।

टापी–स्त्री० १ पतली, सीधी व नरम लकडी। २ खेत मे बनी झोपडी।

टापू–पु० चारो ओर से जल से घिरा हुआ भू-खण्ड, द्वीप।

टापौ–पु० १ टक्कर। २ आघात। ३ टापरौ।

टाबर, टाबरियौ–पु० [स० तर्प] १ बालक, लडका, बच्चा-बच्ची, शिशु । २ सतान, औलाद । ३ नादान प्राणी। —टींगर–पु० सतान । —दार–वि० बाल-बच्चो वाला। —पण–पु० बचपना, नादानी।

टाबरीदार–वि० बाल-बच्चो वाला।

टार (ड़ी, डौ)–पु० [स० टार] दुबला-पतला या छोटे कद का घोडा।

टाळ–स्त्री० १ कघी से बनाई गई बालो के बीच की रेखा। २ गहराई। ३ बैल के गले मे बधी घटी। ४ पृथक करने की क्रिया या भाव । –क्रि०वि० १ सिवाय, अलावा। २ अलग करने पर।

टाल–स्त्री० १ ईंधन की लडकियो की दुकान। २ बूढी गाय।

टाळणौ (बौ)–क्रि० १ पृथक करना, अलग करना । २ दूर करना, निवारण करना । ३ मिटाना, दूर करना, नाश करना। ४ बचाना, छिपाना । ५ रक्षा करना, बचाना। ६ चुनना, छाटना । ७ स्थगित करना, आगे तय करना। ८ इन्कार करना, उल्लघन करना । ९ सबके साथ न रखना। १० किसी स्थान से हटाना, दूर करना।

टाळमटूळ, टाळमटोळ–स्त्री० हीला, हवाला-इन्कार करने का भाव। बहाना।

टाळमौ (वौ)–वि०(स्त्री० टाळमी, टाळवी) १ चुनिंदा, विशिष्ट। २ छाटा हुआ।

टाळापोळी–देखो 'टाळमटोळ'।

टाळी–स्त्री० १ पशुओ के गले मे बाधी जाने वाली घटी। २ देखो 'टाळौ'।

टाली–स्त्री० १ गिलहरी। २ वृद्ध गाय।

टालउ, टाळौ–पु० १ टालने की क्रिया या भाव। २ निवारण करने की क्रिया या भाव । ३ व्यतीत करने की क्रिया या भाव। ४ इन्कार । ५ रुकावट या बचाव की क्रिया या भाव । ६ निवारण करना । ७ दूर रहने या बचने की क्रिया या भाव। ८ अलगाव। ९ चमत्कार पूर्ण एक खेल। १० देखो 'डाळौ'।

टालौ–पु० १ वृद्ध व निर्बल बैल । २ ऊट पर लदा ईंधन का गट्ठर।

टावळ–स्त्री० घोडी।

टावाटेवौ–पु० विशेष अवसर।

टावौ–पु० १ विशेष अवसर। २ समय, मौका। ३ मृत्यु भोज।

टाहुली–स्त्री० टहल करने वाली, परिचायिका, दासी।

टिंचर–पु० १ पत्थर गढ़ने का औजार । २ घाव पर लगाने की एक तरल औषधि।

टिंमची टिंवची–देखो 'तिमची'।

टि–स्त्री० १ पैंदा । २ देवता । ३ हथिनी । ४ पुतलीघर। ५ पृथ्वी। ६ क्षमा। –वि० १ जिद्दी। २ बहुत।

टिकड़ियौ–१ देखो 'टिक्कड'। २ देखो 'टिकडौ'।

टिकड़ी–स्त्री० टिकिया।

टिकडौ–पु० एक आभूषण विशेष।

टिकटिक–स्त्री० १ घडी आदि के चलने की आवाज। २ देखो 'किचकिच'।

टिकटिकी–देखो 'टकटकी'।

टिकणौ (बौ)–क्रि० १ किसी आधार पर ठहरना, टिकना । २ ठहरना, रुकना । ३ बसना । ४ सतह या आधार को छूना। ५ बना रहना। ६ थमना, रुकना, ठहरना । ७ पैंदे मे जमना। ८ दृढ रहना। ९ मार पडना।

टिकाई–स्त्री० १ टिकाने की क्रिया या भाव । २ टिकाने की मजदूरी।

टिकाउ (ऊ)–वि० कई दिन काम मे आने लायक, मजबूत, दृढ।

टिकाणौ (बौ)–क्रि० १ किसी आधार पर ठहराना, टिकाना। २ ठहराना, रोकना, थमाना । ३ बसाना । ४ सतह या आधार को छुआना । ५ बनाये रखना । ६ दृढ रखना। ७ मारना, पीटना ।

टिकाव–पु० १ ठहराव, पडाव । २ टिकने की क्रिया या भाव। ३ धैर्य। ४ रुकने का स्थान। ५ स्थाइत्व । ६ स्पर्श। ७ दृढता, मजबूती।

टिकैत–देखो 'टीकायत'।

टिकोर, टिकोरियौ–पु० १ वाद्य ध्वनि । २ देखो 'टकोरौ'।

टिकोरी–स्त्री० १ बढ़ई का एक औजार । २ देखो 'टकोरौ'।

टिकोरौ–देखो 'टकोरौ'।

टिक्कड–पु० १ मोटी रोटी । २ मोटा वस्त्र। –वि० मोटा, दृढ, मजबूत ।

टिगटी–स्त्री० जल पात्र रखने की तिपाई।

टिगस–पु० [स० टिकट] यात्री टिकट।

टिचकारणौ (बौ)—क्रि० १ मुह से टिच या किच की ध्वनि करना । २ इसी ध्वनि से पशुश्रो को हाकना, इन्कार करना, आश्चर्य व्यक्त करना, पर्दानशीन औरतो द्वारा सकेत देना ।
टिचकारी, टिचकारौ, टिचटिच—पु० मुह से की जाने वाली टिच या किच की ध्वनि, सकेत ।
टिचागळी—स्त्री० हाथ की सबसे छोटी अगुली कनिष्ठा ।
टिपिभ, टिटिहो, टिट्टिभ—देखो 'टीटोडी' ।
टिड्डी—देखो 'तीड' ।
टिणण—स्त्री० चिंता, जिम्मेदारी ।
टिप—देखो 'टप' ।
टिपको—देखो 'टपको' ।
टिपटिप—स्त्री० १ बूद-बूद टपकने की क्रिया । २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।
टिपण (णी)—स्त्री० काव्य आदि की टीका, व्याख्या ।
टिपली, टिपलो—पु० मस्तक, खोपडी ।
टिपस—स्त्री० उपाय, युक्ति ।
टिपूडो, टिपूड़ो—पु० (स्त्री० टिपूडी) छोटा बच्चा, बालक ।
टिपो—पु० १ गायन । २ देखो 'टिप्पो' ।
टिप्पस—देखो 'टिपस' ।
टिप्पो—पु० १ अदाज से कही हुई बात । २ सकेत । ३ याददाश्त के लिए लिखकर रखी जाने वाली इबारत । ४ साकेतिक लिखावट । ५ गेंद आदि को जमीन से टकराकर उछलने की क्रिया । ६ शुभ सयोग । ७ एक रागिनी । ८ बूंद, कतरा । ९ झोंका, झूला ।
टिमकी—स्त्री० बिन्दी ।
टिमची—स्त्री० तिपाई । जल पात्र रखने की तिपाई ।
टिमठिमाणौ (बौ)—क्रि० मन्द प्रकाश देना, झिलमिलाना ।
टिरडो—वि० १ घमडी, अभिमानी । २ सनकी । —स्त्री० १ सनक । २ गर्व ।
टिरणौ (बौ)—क्रि० लटकना, लूबना ।
टिलायत—देखो 'टीकायत' ।
टिलो, पिल्लो—पु० धक्का, टक्कर, झटका ।
टिवची—देखो 'टिमची' ।
टींगण टींगणियो, टींगणो—देखो 'टेंगणो' ।
टींगणौ (बौ)—क्रि० किसी चीज के लिए खडे-खडे तकना, लालायित होना । दीन होना ।
टींगर, टींगरियो—पु० बाल-बच्चे, सतान । —**टोळी**—स्त्री० बाल-बच्चो का समूह ।
टींगा-टोळी—देखो 'टांगाटोळी' ।
टींगाणौ (बौ), टींगावणौ (बौ)—क्रि० कोई वस्तु दिखा-दिखा कर ललचाना, लालायित करना ।
टींच—स्त्री० लडाई, युद्ध ।
टींचणौ—पु० पशु के पिछले पैर का सधिस्थान ।
टींचणौ (बौ)—क्रि० लडना, युद्ध करना ।
टींट—स्त्री० पक्षी का विष्ठा, बीट ।
टींटोडी, टींटोळी, टींटोहड़ी—स्त्री० [स० टिट्टिभः] जल के पास रहने वाली बडी चिडिया, टिटहरी ।
टींडरौ, टींडसी, टींडसो, टींडी, टींडो—पु० सब्जी बनाने का गेंद के आकार का एक लता फल ।
टींडू—पु० काले रंग का एक वृक्ष विशेष ।
टींवणौ (बौ)—देखो 'टीगणौ' (बौ) ।
टींवाणौ (बौ)—देखो 'टीगाणौ' (बौ) ।
टी—पु० १ आकाश । २ बादल । ३ पर्वत । —स्त्री० ४ पृथ्वी । ५ गर्दन । ६ हानि ।
टीकडी—१ देखो 'टिकडी' । २ देखो 'ठीकरी' ।
टीकणौ (बौ)—क्रि० टीका लगाना, तिलक करना ।
टीकम (मो)—पु० [स० त्रिविक्रम] १ वामनावतार । २ विष्णु । ३ एक राजा विशेष । ४ श्रीकृष्ण ।
टीकर—पु० बबूल का वृक्ष ।
टीकली-कमेड़ी—स्त्री० १ मुखिया व्यक्ति । २ दक्ष, प्रवीण । ३ पच ।
टीकलो—पु० (स्त्री० टीकली) १ शिर पर टीके वाला बैल । २ सफेद चिह्नो वाला पशु । —वि० तिलकधारी ।
टीका—स्त्री० किसी काव्यादि की व्याख्या, भाषा, सरल भावार्थ, अर्थ ।
टीकाइत, टीकाई, टीकाईत—देखो 'टीकायत' ।
टीकाकार—पु० टीका करने वाला, व्याख्या करने वाला ।
टीका-दौड़—स्त्री० नए राजा के गद्दी पर बैठते ही पडोसी राज्य पर हमला करने की रश्म ।
टीकायत—पु० १ राज्य का उत्तराधिकारी । २ ज्येष्ठ पुत्र । ३ पट्ट शिष्य, महत का उत्तराधिकारी । ४ तिलकधारी । ५ मुखिया, प्रधान, नेता ।
टीकाळ—वि० १ जिसके भाल मे तिलक हो । २ देखो 'टीकायत' ।
टीकी—स्त्री० १ गोल बिन्दु, बिंदी । २ भाल का छोटा गोल टीका । ३ ललाट पर गोल टीके वाली गाय या भैंस । ४ एक लोक गीत विशेष । ५ स्त्रियो के ललाट पर धारण करने का एक आभूषण विशेष ।
टीकैत—देखो 'टीकायत' ।
टीको—पु० १ ललाट या शरीर पर चदन, गोली आदि का चिह्न, तिलक । २ मगनी के समय कन्या पक्ष की ओर से दूल्हे को दी जाने वाली भेंट । ३ राजतिलक । ४ राज सिंहासन । ५ ललाट का मध्य भाग । ६ स्त्रियो का एक आभूषण ।

७ पुरुषो की पगडी मे बाधने का आभूषण विशेष। ८ घोडे का भाल जहा भवरी या चिह्न होता है। ९ हैजे आदि रोगो के बचाव हेतु लगाई जाने वाली औषधि की सुई। १० मृतक के पीछे बारहवें दिन को संबंधियो द्वारा दिया जाने वाला रुपया, वस्त्रादि सामान। ११ राजा, अधिपति। १२ राज सिंहासन पर बैठने पर पडोसी राजा द्वारा दिया गया बधाई का सदेश।

टीचियो–पु०१ हल्का घाव। २ घाव, चोट आदि का निशान।

टीटण–स्त्री० एक प्रकार का छोटा जानवर।

टीटम, टीटौं, टीटूडी–देखो 'टीटोडी'।

टीड, टीडी–देखो 'तीड'।

टीडी-मळको–पु० स्त्रियो के भाल का एक आभूषण विशेष।

टीप–स्त्री० १ दीवार आदि मे पत्थरो को जोडने के लिये लगाया जाने वाला चूने, सीमेंट का मसाला। २ पुराने मकान की मरम्मत। ३ चूने की पिटाई। ४ गाने का ऊचा स्वर तान, अलाप। ५ चदे का धन। ६ चदा देने वालो की नामावली। ७ खर्च का ब्योरा। ८ याददाश्त के लिये की जाने वाली लिखावट। ९ सगीत का स्वर विशेष। १० वाद्य ध्वनि। –वि० अत्यधिक ठण्डा। —टाप–स्त्री० तैयारी, सजावट। दिखावटी शृगार। मरम्मत। –वि० सजा हुआ, तैयार, पूर्ण।

टीपणी–स्त्री० १ चदे की सूची। २ देखो 'टिपणी'।

टीपणो–पु० [स० टिप्पनकम्] तिथि-पत्रक, पचाग।

टीपणो(बो)–क्रि० लिखना, अकित करना। टाकना।

टीपर, टीपरियो, टीपरी, टीपरो–पु० घी, तेल दूध आदि लेने का उपकरण जिसके खडा डंडा बना होता है।

टीपाटीप–वि० १ पूर्ण भरा हुआ, लबालब। २ शौकीन।

टीबर, टीबरण, टीबरणी–स्त्री०१ एक वृक्ष विशेष जिसके पत्तो की बीडिया बनती हैं। २ एक पौधा जिसकी पत्तिया औपधि के काम आती हैं।

टीबरो–पु० १ फूटा हुआ मिट्टी का जल पात्र। २ देखो 'टीबर'।

टीबो–स्त्री० १ क्षय रोग। २ छोटा टीवा। ३ एक देश का नाम।

टीबो–पु० १ वालू का पहाडनुमा ढेर। २ रेगिस्तानी पहाडी।

टीमक–स्त्री० खरगोश के शिकार मे काम आने वाली कावड।

टीमरु, टीमरुओ–पु० लक्कडबग्घा।

टीमल–पु० कार्य, काम कृत्य।

टीली–स्त्री० १ बिन्दी, तिलक। २ एक प्रकार का आभूषण। ३ गिलहरी।

टीलु (लू)–देखो 'टीलो'।

टीलोडी–स्त्री० गिलहरी।

टीलो–पु० १ ढेर, टीबा। २ वालू का ढेर। ३ राजतिलक। ४ अगवानी। ५ तिलक, टीका। ६ एक प्रकार का आभूषण।

टीवणो (बो)–देखो 'टीगणो' (बो)।

टीस–स्त्री० १ तीव्र दर्द, कसक, पीडा। २ दर्द भरी आवाज, चीख।

टीसणो (बो)–क्रि० १ तीव्र दर्द, होना, कसकना। २ दर्द मे चीखना, कराहना।

टीसी–स्त्री० १ चोटी, शिखर, शिरा। २ टहनी। ३ नाक का अग्रभाग।

टुकार–देखो 'टोकार'।

टुगरी, टुंगारी–वि० तुनक मिजाज, चिडचिडा।

टुंटी–देखो 'टू टी' (स्त्री० टु टी)।

टुंडी–स्त्री० [स० तुण्डी] १ ठोडी। २ नाभि। ३ देखो 'तू डी'।

टु–पु० १ हाथ। २ सुहागा। ३ मुर्गा। ४ मुकुट। ५ चोटी। ६ सुदर्शन चक्र।

टुक–वि० १ किंचित, थोडा, न्यून। २ देखो 'टक'। ३ देखो 'टूक'। ४ देखो 'टुकी'।

टुकड़–१ देखो 'टिक्कड'। २ देखो 'टुकडो'।

टुकडगदाई–स्त्री० भीख मागने का कार्य।

टुकडगदो, टुकडतोड–पु० १ भिखारी। २ रिश्वतखोर। ३ केवल उदर पूर्ति का ध्यान रखने वाला। ४ मुफ्त की खाने वाला।

टुकडी–स्त्री० १ करघे से बुना एक मोटा कपडा। २ मास रखने का बर्तन। ३ सेना का एक दल, भाग। ४ छोटा खेत।

टुकडेल, टुकडैल–वि० १ भिखारी। २ रिश्वतखोर। ३ खिलाने वाले का पक्षधर।

टुकडो–पु० [स० स्तोक] १ खण्ड, टुकडा। २ अश, भाग। ३ रोटी का कोर। ४ रिश्वत का पैसा।

टुकइक, टुकियक–वि० १ थोडासा, तनिक। २ क्षण या निमिष मात्र।

टुकरी–स्त्री० रोटी।

टुकिया, टुकी–स्त्री० स्त्रियो के उरोज पर रहने वाला चोली का भाग।

टुक्कड–१ देखो 'टिक्कड'। २ देखो 'टुकडो'।

टुग–देखो 'टुक'।

टुगटुग–क्रि०वि० धीरे-धीरे चलते हुए।

टुगमुग–क्रि०वि० एक टक देखते हुए।

टुगर–स्त्री० स्थिर दृष्टि से देखने की क्रिया या भाव।

टुचकार–देखो 'टिचकारी'।

टुचकारणो (बो)–देखो 'टिचकारणो' (बो)।

टुचको, टुचियो–वि० १ छोटे कद का, नाटा । २ तुच्छ साधारण । ३ ओछे स्वभाव का ।

टुच्चापण (पणो)–पु० ओछापन, नीचता, धूर्तता ।

टुच्चो–वि० चालाक, धूर्त, नीच ।

टुटरूटू–स्त्री० फाख्ता नामक पक्षी की बोली ।

टुणटुणाट, टुणटुणाहट, (टो)-स्त्री० १ बकवाद । २ टन्-टन् ध्वनि । ३ तुनतुनाहट ।

टुणटुणी–स्त्री० एक वाद्य विशेष ।

टुणियो–देखो 'टणो' ।

टुबकियो–पु० १ मिट्टी का छोटा जल-पात्र । २ छोटी डलिया, टोकरी ।

टुरण–स्त्री० आवेग, क्रोध ।

टुरणो (बो)–क्रि० १ रवाना होना, जाना । ३ लालायित होना, तकना । ३ चलना । ४ गिरना, ध्वस्त होना । ५ खिसकना ।

टुराणो (बो)–क्रि० १ रवाना करना, भेजना । ३ लालायित करना, तकाना । ३ चलाना । ४ गिराना, ध्वस्त करना । ५ खिसकाना ।

टुळ-वि० पृथक, अलग, विलग ।

टुळक-स्त्री० गुदगुदी (मेवात) ।

टुळकणो (बो)–क्रि० १ मद गति से चलना । २ धीरे से खिसकना, जाना । ३ इधर-उधर घूमना, फिरना । ४ टपकना, छलकना । ५ अस्थिर या चचल होना ।

टुळकाणो (बो)–क्रि० १ मदगति से चलाना । २ धीरे से खिसकाना, भेजना । ३ इधर-उधर घुमाना, फिराना । ४ टपकाना, छलकाना । ५ अस्थिर या चचल करना ।

टुळणो (बो)–क्रि० १ पीछे-पीछे जाना । २ देखो 'टुळकणो' (बो) ।

टुळाणो (बो)–क्रि० १ पीछे-पीछे रवाना करना । २ देखो 'टुळकाणो' (बो) ।

टुसो-स्त्री० स्त्रियो के गले का एक आभूषण ।

टू–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

टूक–पु० १ पर्वत की चोटी । २ शिखर । ३ छोटा टाका, सिलाई ।

टूंककनो–पु० एक जाति विशेष का घोडा ।

टूंकली–स्त्री० छोटी पहाडी ।

टूकियो, टूक्यो–पु० १ निगरानी करने के लिए बैठने का ऊचा स्थान । २ ऐसे स्थान पर बैठकर निगरानी करने वाला व्यक्ति । ३ इस कार्य का पारिश्रमिक । ४ भालू, रीछ ।

टूच–स्त्री० [स० त्रोटि] १ चोच । २ नोक, अणी । ३ देखो 'टूचको' ।

टूचको-पु० १ किसी वस्तु का तीक्ष्ण भाग । २ छोटा काष्ठ खण्ड । ३ फल या पत्ते के साथ लगा डण्ठल ।

टूचणो (बो)–देखो 'टाचणो' (बो) ।

टूंवरी–स्त्री० हथौडे के समान एक औजार विशेष ।

टूंट–स्त्री० १ हाथ-पावो मे होने वाला एक वात रोग । २ इस रोग के कारण हाथ-पैरो मे होने वाला मोड । ३ एहसान, आभार । ४ फोग वृक्ष का एक रोग । ५ नकल ।

टूंटउ–१ देखो 'टूटो' । २ देखो 'टूठो' ।

टूटी–स्त्री० [स० त्रोटी] १ पानी के नल के आगे लगा उपकरण । २ जल-पात्र आदि के लगी नलिका ।

टूटो, टूंट्यो–वि० (स्त्री० टूटी) १ वात रोग से मुडे हुए हाथ-पाव वाला । २ हाथों से अशक्त । ३ विना हाथो का ।

टूड–देखो 'तुड' ।

टूडाळ, टूडाहळ–पु० [स० तुण्डम्] सूअर, वराह ।

टूडी–१ देखो 'टुंडी' । २ देखो 'तूडी' ।

टूडो–पु० पैदा, तल ।

टूपणो (बो)–क्रि० १ गला घोटना । २ फासी देना । ३ गले मे फदा डाल कर कसना । ४ किसी कार्य के लिए मजबूर करना ।

टूपियो टूपो–पु० १ फासी । २ गला घोटने की क्रिया या भाव । ३ गला घोट कर की जाने वाली आत्महत्या । ४ खाते समय गले मे खाना अटकने से होने वाला कष्ट । ५ एक कंठाभरण विशेष । ६ श्वास अवरोधन ।

टूम–स्त्री० १ आभूषण, गहना । २ हसी-मजाक । ३ नकल ।

टू–पु० १ वाहन । २ गणेश । ३ डर, भय । ४ भार, बोझा । –स्त्री० ५ दौड । ६ मारवाड । ७ छाया ।

टूक–पु० [स० स्तोक] १ खण्ड, टुकडा । २ देखो 'टूक' । –क्रि०वि० टूटता हुआ ।

टूकड़–१ देखो 'टुकडो' । २ देखो 'टूक' ।

टूकियो, टूकीयो, टूक्यो–पु० १ जोर से पुकारने के लिए किया जाने वाला शब्द । २ देखो 'टूकियो' ।

टूकू–एक प्रकार का वस्त्र ।

टूट–स्त्री० १ खण्डन, खण्डित होने की क्रिया । २ टूटा हुआ भाग, खण्ड । ३ विच्छेद । ४ जब कोई क्रम न हो । ५ टूटन ।

टूटणो (बो)–क्रि० [स० त्रुट] १ खण्ड-खण्ड या टुकडे होना । २ खण्डित होना । ३ विभक्त होना । अलग होना । ४ विच्छेद होना । ५ क्रम भग होना । ६ शरीर का अग उखडना । ७ जोड ढीला पडना । ८ निष्क्रिय होना, वेकार होना । ९ शरीर मे दर्द होना । १० कमजोर या अशक्त होना । ११ झपट कर आक्रमण करना । १२ दरिद्र होना । १३ क्षय होना । १४ विक्षेप होना, व्यवधान पडना । १५ स्थानच्युत होना ।

टूटोड़ो, टूटो–वि० (स्त्री० टूटोडी) १ भग्न, खण्डित, उखडा हुआ। २ अशक्त। ३ क्षत। —**फूटो**–वि० भग्न, खण्डित।

टूपो–देखो 'टूपो'।

टूर–पु० १ अधिक बच्चे। २ बहुत अधिक अफीम खाने वाला, अफीमची। –वि० १ अतिवृद्ध। २ मूर्ख।

टूळियो, टूळो–पु० तनेदार करील का वृक्ष।

टॅ–स्त्री० १ एक ध्वनि। २ तोते की बोली। ३ बकवाद, बकझक।

टॅकिका–स्त्री० [सं०] ताल का एक भेद।

टॅकी–स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का नृत्य। २ शुद्ध राग का एक भेद।

टॅगण–पु० १ ऊट। २ देखो 'टॅगण'।

टॅट–पु० १ गर्व, अभिमान। २ करील वृक्ष का फल।

टॅटवो, टॅटुग्रो, टॅटुवो–पु० गर्दन के आगे उभरी हुई ग्रथि। स्वरयंत्र।

टॅलओ, टॅलवो–देखो 'टॅलवो'।

टे–स्त्री० १ स्त्री। २ पक्षी।

टेक–स्त्री० १ हठ, जिद्द। २ प्रण, प्रतिज्ञा, मर्यादा। ३ मान, प्रतिष्ठा। ४ गीत या पद की टेर। ५ आश्रय, अवलम्बन।

टेकणो (बो)–क्रि० १ तन्मय करना, मग्न करना। २ स्थित करना, टिकाना। ३ अन्दर डालना, घुसाना, पैठाना। ४ हाथ की वस्तु गिराना, फेंकना। ५ एक वस्तु मे दूसरी डालना, छोडना। ६ कार्य भार डालना, जिम्मे छोडना थोपना। ७ लगाना, उपयोग करना। ८ सहारा लेना, आश्रय लेना। ९ आधार पर रखना, ठहराना। १० देखो 'टिकाणो' (बो)।

टेकर, टेकरी–स्त्री० छोटी पहाडी।

टेकळो–वि० १ दृढ प्रतिज्ञ। २ प्रण निभाने वाला। ३ आन-बान वाला। –पु० बडी जूं।

टेको–पु० १ बडा व मोटा रस्सा। २ आवेष्टन, बधन। ३ साहस, सहारा। ४ देखो 'टाको'। ५ देखो 'ठेको'।

टेगडियो, टेगडो–पु० (स्त्री० टेगडी) कुत्ता, श्वान।

टेटुवो–देखो 'टॅटुवो'।

टेटूणी–पु० वर्तन विशेप।

टेडो–वि० (स्त्री० टेडी) १ जो सीधा न हो, टेढा, वक्र। २ कुटिल। ३ किसी ओर झुका हुआ। ३ तिरछा। ४ मुश्किल, कठिन, पेचीदा। ५ अडियल, उद्दण्ड, उग्र।

टेढ़–स्त्री० १ वक्रता टेढापन। २ तिरछापन। ३ कुटिलता। ४ मुश्किल, कठिनाई। ५ उद्दण्डता, उग्रता। —**विडगो, वेढ़गो**–वि० टेढा-मेढा, बेढगा, बेडौल।

टेढाई, टेढ़ापण–स्त्री० टेढ़ापन, वक्रता।

टेढ़ो–देखो 'टेडो'। (स्त्री० टेढी)

टेणो (बो)–क्रि० चूल्हे पर चढाना।

टेपो–वि० मुडा हुआ (कान)।

टेमो–पु० सूअर का बच्चा, छोटा सूअर।

टेर–स्त्री० १ शब्द, आवाज। २ बुलाने की ऊची आवाज। ३ गाने का ऊचा स्वर। ४ पुकार, प्रार्थना। ५ रट। ६ गाने या पद की पहली पक्ति जो बार-बार गाई जाती हो।

टेरणो (बो)–क्रि० १ शब्द करना, आवाज करना। २ ऊची आवाज से किसी को पुकारना। ३ बुलाना। ४ प्रार्थना करना। ५ रटना, रट लगाना। ६ ऊचा स्वर लगाना, तान लगाना। ७ लटकाना।

टेरो–पु० गाढे द्रव पदार्थ की बूद। –वि० १ मूर्ख, मूढ़। ऐंचाताना, भैंगा।

टेव–स्त्री० [स० स्थापयति] १ आदत, बान। २ अभ्यास। ३ प्रकृति, स्वभाव। ४ प्रथा, रीति। ५ देखो 'टेक'।

टेवकी–स्त्री० १ एक मात्र सहारा। २ मदद, सहायता। ३ प्रोत्साहन का भाव। ४ द्वार के चौडे पत्थर के नीचे का पत्थर। ५ किसी वस्तु के लिये लगाया जाने वाला सहारा।

टेवको–पु० सहारा।

टेवटियो, टेवटो–देखो 'तेवटो'।

टेवाटेऊ–पु० आश्रय, सहारा।

टेवो–पु० [स० टिप्पन] जन्म, लग्न, राशि आदि का पत्र, जन्म-पत्रिका।

टेसू–पु० [स० किंसुक] पलाश या ढाक का फूल।

टेंगण, टेंगणियो–पु० १ टट्टू। २ देखो 'टेंगणो'।

टेंगणो–वि० (स्त्री० टेंगणी) १ छोटे कद का, ठिगना, नाटा, बौना। २ देखो 'टेंगण'।

टेंगार–स्त्री० मद, अहकार, गर्व।

टेंगारी–वि० अहकारी, गर्विला।

टेंघण–देखो 'टेंगण'।

टेंटो–पु० १ वट वृक्ष या पीपल वृक्ष का फल। २ कच्ची ककडी।

टैं–पु० १ भाई का लडका, भतीजा। २ आकाश, नभ। ३ धन, द्रव्य। ४ भोजन, भक्षण। ५ शत्रु, दुश्मन। ६ अधा प्राणी। ७ पुत्र का पुत्र, पौत्र।

टेंणियो–पु० १ वर्तन विशेप। –वि० १ नाटा, बौना। २ देखो 'टेंगणो'।

टें'णी–स्त्री० पेड आदि की टहनी, शाखा।

टें'णो–वि० (स्त्री० टें'णी) १ बौना, नाटा, ठिगना। २ देखो 'टणो'। ३ देखो 'टेंगणो'।

टेंर–पु० १ शिर, मस्तक (मेवात)। २ देखो 'टेर'।

टैरकौ—पु० १ किसी विशेष बात का संकेत । २ नखरा । ३ चमक-दमक । ४ व्यंग्य वाक्य, कटु शब्द । ५ गर्व, अभिमान । ६ गुस्सा, क्रोध । ७ ठसक ।

टै'ल—देखो 'टहल' ।

टै'लणौ (बौ)—क्रि० १ वायु सेवन के लिए घूमना । २ शौकिया घूमना, फिरना ।

टै'लदार—देखो 'टहलदार' ।

टैलवौ टैलियौ—पु० नौकर, चाकर, सेवक, टहलुवा ।

टोक—पु० तलवार का सबसे नीचे का नुकीला भाग ।

टो—पु० १ नारियल । २ लगन । ३ चंपक । ४ चोटी । ५ दांत । ६ गुरु ।

टो'—देखो 'टोह' ।

टोक—स्त्री० रोक, मनाही, नियंत्रण, चौकसी ।

टोकणी, टोकणौ—पु० धातु का बना एक बर्तन विशेष ।

टोकणौ (बौ)—क्रि० १ मना करना, निषेध करना । २ कुछ करने से रोकना । ३ विरोध करना । ४ चौकसी करना ।

टोकर—पु० १ आभूषण विशेष । २ देखो 'टोकरौ' ।

टोकरियौ—पु० १ आरती करने का छोटा घंटा, वीर घंटा । २ देखो 'टोकरौ' ।

टोकरी—स्त्री० १ बड़े तालाब के समीपस्थ थोड़ी सी जमीन । २ खपचियों की डलिया, छाब । ३ डलिया ।

टोकरौ—पु० १ बांस आदि की खपचियों का बना डलियानुमा बड़ा पात्र । टोकरा । छबड़ा । २ देखो 'टकोरौ' ।

टोकळ (ळौ)—पु० १ बड़ी जूं । २ किसी विशिष्ट व्यक्तित्व के प्रति व्यंग । —वि० मूर्ख ।

टोकार—स्त्री० कुदृष्टि, नजर । दृष्टिदोष ।

टोकी—स्त्री० शिखर, चोटी ।

टोगड, टोगडियौ, टोगडौ, टोघड, टोघडियौ, टोघड़ौ—पु० [सं० तोक] (स्त्री० टोगडी) गाय का बछड़ा । —वि० मूर्ख, गंवार ।

टोचकौ—पु० १ अंगुलियों के जोड़ पर किया जाने वाला प्रहार । २ व्यंग, टोंट । ३ शिर, मस्तक । ४ देखो 'टूंचकौ' ।

टोट—वि० १ हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली । २ देखो 'टोटौ' ।

टोटकौ—पु० १ किसी व्याधि की रोकथाम के लिए किया जाने वाला तांत्रिक प्रयोग । २ जादू-टोना ।

टोटरु—पु० पक्षी विशेष (मेवात) ।

टोटलौ—पु० भुना हुआ चना ।

टोटी—स्त्री० [सं० त्रोटि] स्त्रियों का कर्णाभूषण । —**झूमर झूमरी**—स्त्री० उक्त आभूषण में संलग्न करने का अन्य आभूषण । —**साकळी**-स्त्री० आभूषण विशेष ।

टोटौ—पु० [सं० त्रोट] १ घाटा, हानि । २ अभाव, कमी । ३ शहनाई से मिलता-जुलता एक वाद्य विशेष ।

टोड—पु० १ ऊंट । २ युवा मादा ऊंट ।

टोडकी, टोडडी—स्त्री० १ मादा, ऊंट । २ ऊंट का मादा बच्चा ।

टोडडौ—पु० १ युवा ऊंट । २ ऊंट का बच्चा । ३ देखो 'टोडौ' ।

टोडती—स्त्री० ऊंट का मादा बच्चा ।

टोडर—पु० १ हाथी । २ पुरुष के पांवों के स्वर्णाभूषण विशेष ।

टोडरमल (ल्ल)—पु० एक लोक गीत ।

टोडरू—पु० पक्षी विशेष (मेवात) ।

टोडरौ—पु० स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष ।

टोडियौ—पु० ऊंट का बच्चा ।

टोडी—स्त्री० १ एक रागिनी विशेष । २ कूए पर लगा पत्थर विशेष । ३ दीवार आदि में चुने पत्थर का बाहर निकला हिस्सा । ४ देखो 'टोड' ।

टोडौ—पु० १ छज्जे से सहारे का ऊंचा उठा हुआ भाग । २ कच्चे मकान की दीवार का ऊंचा उठा हुआ भाग । ३ मकान के द्वार पर आड के लिये बनाई गई दीवार । ४ जमीन की सरहद का पत्थर । ५ घोड़े के मुख के आकार का बना लकड़ी का उपकरण ।

टोणौ (बौ)—क्रि० १ आंखों में अंजन डालना । २ संवारना । ३ देखो 'टोहणौ' (बौ) ।

टोनौ—पु० जादू-टोना, तान्त्रिक क्रिया ।

टोप—पु० [सं० स्तुप्] १ शिरत्राण । २ शिर की टोपी । ३ तरल पदार्थ की बूंद ।

टोपरौ—पु० फल विशेष ।

टोपली—स्त्री० १ डलिया, टोकरी । २ देखो 'टोपी' ।

टोपलौ—पु० १ बड़ा टोकरा । २ देखो 'टोप' ।

टोपसी—देखो 'टोपाळी' ।

टोपाळी—स्त्री० नारियल की जटा के नीचे के शक्त भाग की कटोरी ।

टोपियौ—पु० १ वर्तन विशेष । २ देखो 'टोपौ' ।

टोपी—स्त्री० १ शिर पर धारण करने का टोपा, छोटा टोपा । २ अनाज के दानों पर होने वाला छिलका । ३ कटोरी नुमा कोई आवरण । ४ बन्दूक का पटाखा । ५ लिंग का अग्र भाग । ६ विष्णु मूर्ति के शिर का आभूषण, मुकुट ।

टोपौ—पु० १ शिर पर से कान तक ढकने का वस्त्र विशेष, टोप । २ शिरत्राण । ३ रहट के स्थंभ के नीचे लगा लोहे का टुकड़ा । ४ तरल पदार्थ की बूंद । ५ देखो 'टोयौ' । ६ खण्ड, टुकड़ा

टोय—स्त्री० १ आंख का पिछला छोर । २ चोटी, शिखर । २ देखो टोह' ।

टोयौ–पु० १ स्त्री की योनि के मध्य का उभरा भाग। २ खैराद की लकडी मे लगी लोहे की कील। ३ ऊपरी शिरा।

टोर–स्त्री० कटारी।

टोरडियौ, टोरडौ–देखो 'टोडियौ'।

टोरणौ (बौ)–क्रि० १ पद चिह्नों को पहचानना। २ पद चिह्नो के आधार पर चोर का पीछा करना। ३ देखो 'टोळणौ' (बौ)।

टोराबाज–वि०डीग हाकने वाला गप्पी।

टोरियौ, टोरौ–पु० १ डीग, गप्प। २ भावावेश मे कही बात। ३ असत्य बात। ४ गेद आदि के लगाई जाने वाली चोट।

टोळ (ल)–पु० [स० प्रतोली] १ निवास स्थान, घर। २ बडा पत्थर। ३ सम्पूर्ण जाति का एक राग। ४ पिशाच। ५ देखो 'टोळी'।

टोळगइ–स्त्री० [स० टोलगति] वदना संबधी एक दोष। (जैन)

टोळणौ (बौ)–क्रि० चलने के लिए प्रेरित करना, हाकना।

टोळाटोळ–स्त्री० भीड-भाड।

टोळी–स्त्री० १ दल, झुण्ड, समुदाय। २ पक्ति, कतार।

टोळू, टोळौ–पु० १ झुण्ड, समूह। २ संघ, गुट। ३ एक ही जाति के पशुओ का झुण्ड। ४ घर। ५ बडा पत्थर। –वि० मूर्ख, गवार।

टोवण–स्त्री०ऊट की नाक मे लगी लकडी के बधा सूत का फदा।

टोवारव–पु० ध्वनि विशेष।

टोवाळी–देखो 'टवाळी'।

टोह–स्त्री० १ ध्यान। २ सजगता। ३ तकन, ताक। ४ खोज, तलाश। ५ पता, खबर। ६ स्रोत।

टोहणौ (बौ)–क्रि० १ दर्द के स्थान पर सेक करना। २ गर्म पानी का सेक करना। ३ दर्द वाले स्थलो पर आक का दूध लगाना।

टौंस–स्त्री० [स० तमसा] अयोध्या के पास की छोटी नदी।

टौ–पु० १ छत्र। २ बैल। ३ समुद्र। ४ पुरुष। ५ दावानल। ६ नीति।

ट्ठियास–वि० [स० स्थितिका] स्थिति वाली। (जैन)

—ठ—

ठ–देव नागरी वर्णमाला का बारहवा वर्ण।

ठ–पु० १ शरद। २ पानी। ३ मदिरा। ४ अमृत। ५ बसत। ६ छिद्र। –वि० निर्मल, स्वच्छ।

ठठ–वि० [स० स्थाणु] सूखा हुआ, शाखाओ रहित। –पु० सूखा पेड।

ठठण–स्त्री० मूर्खता। **—पाल**–वि० मूर्ख, गवार।

ठठाणौ (बौ)–क्रि० १ दूसरे का माल हड़पना। २ वस्त्रादि धारण करना।

ठठारी–स्त्री० जुखाम, ठड, सर्दी।

ठठियौ–पु० सूखी लकडी, पेडी मात्र।

ठठेरणौ (बौ)–क्रि० १ झटकना। २ हल्की-हल्की, चोटें मारना, प्रहार करना। ३ हिलाना।

ठठेरौ–देखो 'ठठारी'।

ठठोरणौ (बौ)–देखो 'ठठेरणौ' (बौ)।

ठठौ–देखो 'ठठ'।

ठड–स्त्री० १ शीत, सर्दी, जाडा। २ शीतकाल।

ठडक–स्त्री० १ शीतलता। २ तृप्ति। ३ सतोष। ४ उष्णता की शाति। ५ तरी। ६ महामारी या उपद्रव शान्त होने की अवस्था। ७ क्रोध की समाप्ति।

ठडकार–पु० ठडा मौसम, सर्दी।

ठडाई–स्त्री० १ शरीर में तरी या ठडक लाने वाला पेय। २ शीतलता।

ठडी–स्त्री० १ शीतला, चेचक। २ देखो 'ठड'।

ठडोड़ौ, ठडौ–वि० [स० स्तब्ध] (स्त्री० ठडी) १ शीतल, ठडा। २ सर्द। ३ शीतलता देने वाला। ४ उष्णता रहित। ५ बुझा हुआ। ६ शात। ७ नामर्द, नपुसक। ८ उत्साह रहित। ९ अचचल। १० सुस्त, कमजोर। ११ मरा हुआ, प्राण रहित। १२ पूर्व का बना, बासी। –पु० बासी खाना। **—ठरियौ, बासी**–पु० शीतलाष्टमी के समय खाया जाने वाला ठडा खाना, बासी भोजन। **—ताव**–पु० शीतल ज्वर। **—पौ'र**–पु० सूर्योदय या सूर्यास्त का काल जब गर्मी कम होती है।

ठढ़–देखो 'ठड'।

ठढ़ाई–स्त्री० १ विश्रान्ति। २ देखो 'ठडाई'।

ठढ़ि–देखो 'ठडी'।

ठढ़ौ–देखो 'ठंडौ' (स्त्री० ठढी)।

ठ–पु० [स०] १ चन्द्रमा। २ बृहस्पति। ३ ज्ञानी। ४ महादेव। ५ श्रीकृष्ण। ६ वेग। ७ बादल, मेघ।

८ वाचाल, वक्ता । ९ रव । १० सूर्य या चन्द्र मण्डल । ११ वृत्त । १२ शून्य । १३ पवित्र स्थान । १४ मूर्ति । १५ देव ।

ठइत–पु० [स० स्थापित] साधु के निमित्त पृथक रखा पदार्थ । (जैन)

ठइय–वि० [स० स्थगित] ढका हुआ (जैन) ।

ठउडणौ (बो)–क्रि० अपमान करना ।

ठक–स्त्री० १ आघात या टक्कर मे उत्पन्न ध्वनि । २ सकेतात्मक ध्वनि ।

ठकठकाणौ (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु पर चोट कर ठक-ठक ध्वनि पैदा करना । २ बजाना, ठक-ठक करना । ३ खट-खटाना, ठोकना । ४ बजा कर देखना, जाच करना ।

ठकठोळी–स्त्री० हसी, मजाक, ठिठौली ।

ठकराणी–स्त्री० १ ठाकुर की पत्नी । २ मालकिन, स्वामिनी । ३ लक्ष्मी ।

ठकराई–देखो 'ठकुराई' ।

ठकांणौ–देखो 'ठिकाणौं' ।

ठकार–पु० 'ठ' अक्षर ।

ठकावळ–स्त्री० टक्कर, धक्का ।

ठकुर–देखो 'ठाकर' ।

ठकुराणी–स्त्री० ठाकुर की पत्नी ।

ठकुराई–स्त्री० १ शासन, हुकूमत । २ राज्य, जागीर । ३ स्वामित्व, अधिकार, कब्जा । ४ धाक, रोब । ५ घमण्ड, गर्व ।

ठकुरात, ठकुरायत–स्त्री० ठकुराई । हुकूमत ।

ठक्कुर–देखो 'ठाकर' ।

ठग–वि० [स० ठक] (स्त्री० ठगरण, ठगणी) १ छल या धोखे से लूटने वाला । २ छलिया, धूर्त । ३ भ्रम या भुलावे मे डालने वाला ।

ठगठगतउ–वि० स्तभित ।

ठगठगी–स्त्री० स्तब्धता, विस्मय ।

ठगठगौ–वि० (स्त्री० ठगठगी) १ चकित, स्तब्ध, ठगासा । २ अस्थिर, डावाडोल ।

ठगण–पु० छद शास्त्र मे ५ मात्राओ का एक गण ।

ठगणी–स्त्री० १ ठगने की क्रिया या भाव । २ ठगी करने वाली स्त्री ।

ठगणौ (बो)–क्रि० १ छल या भुलावे मे डालकर धन लूटना । २ दगा देना, धोखा करना । ३ व्यापार मे बेईमानी करना । ४ भ्रम मे डालकर अनुचित कार्य कराना ।

ठगपणौ, ठगबाजी, ठगविद्या–पु० १ धूर्तता, छल, चालाकी । २ ठगने की क्रिया या भाव ।

ठगाण, ठगाई–स्त्री० १ धोखा, नुकसान, हानि । २ ठगने का कार्य ।

ठगाठगी–स्त्री० धूर्तता, धोखेबाजी ।

ठगारौ–वि० ठग, धूर्त ।

ठगी–देखो 'ठगाई' ।

ठगोरी–स्त्री० ठगो की विद्या । –वि० धोखा देने वाली ।

ठगोरौ–देखो 'ठग' ।

ठगोसरौ–वि० (स्त्री० ठगोसरी) ठग, छलिया ।

ठडड़, ठड़हड–स्त्री० १ घोडे के नाक की ध्वनि । २ बदूक की आवाज ।

ठ'डणौ (बो)–देखो 'ठरडणौ' (बो) ।

ठट–पु० [स० स्थाता] १ बहुत से लोगो का समूह, भीड, झुण्ड । २ ढेर, समूह ।

ठटरी–स्त्री० अस्थिपजर, हड्डियो का ढाचा ।

ठट्ठो–पु० १ हसी, विनोद । २ 'ठ' अक्षर ।

ठठकणौ (बो)–देखो 'ठिठकणौ' (बो) ।

ठठकार–स्त्री० १ दुत्कार, डाट-फटकार । २ शाप, बद्दुआ । ३ अत्यधिक शीत, सर्दी । –वि० पापी, दुष्ट ।

ठठकारणौ (बो)–क्रि० १ दुत्कारना, डाटना, फटकारना । २ शाप देना, बद्दुआ देना । ३ तिरस्कार या अपमान करना ।

ठठणौ (बो)–क्रि० घुसना, पैठना, प्रविष्ठ होना ।

ठठर–वि० सिकुडा हुआ । –स्त्री० तलवार ।

ठठळणौ (बो)–क्रि० बेकार होना, अनुपयोगी होना ।

ठठार, ठठियार–देखो 'ठठारौ' ।

ठठारा–स्त्री० धातु के बर्तन बनाने वाली जाति ।

ठठारौ–पु० (स्त्री० ठठारण, ठठारी) १ उक्त जाति का व्यक्ति । २ घरेलु सामान । ३ घर की दशा । ४ आर्थिक स्थिति ।

ठठुरी–स्त्री० तोप का ठाठा ।

ठठेरणौ (बो)–देखो 'ठंठेरणौ' (बो) ।

ठठेरौ–देखो 'ठठारौ' ।

ठठोरणौ (बो)–देखो 'ठठेरणौ' (बो) ।

ठठोळ(ळी)–स्त्री० हसी, दिल्लगी ।

ठठौ, ठठियौ–पु० १ 'ठ' अक्षर । २ विनोद ।

ठठ्ठोळ (ळी)–देखो 'ठठोळ' ।

ठढ्ढौ, ठढ्ढौ–वि० खडा, स्थिर ।

ठणकणौ (बो)–क्रि० १ किसी धातु की वस्तु पर आघात से ठन्-ठन् ध्वनि होना । २ वाद्य, बजना । ३ अनिष्ट का मन मे आभास होना । ४ दर्द, पीडा होना, कसकना । ५ भागना ।

ठण, ठणक–स्त्री० १ धातु की वस्तु से होने वाली ठन् ध्वनि । आवाज । २ वाद्य ध्वनि ।

ठणकाणौ (बौ)क्रि० १ किसी वस्तु पर आघात से टन्-टन् ध्वनि पैदा करना । २ वाद्य बजाना । ३ अनिष्ट का आभास देना । ४ भगाना ।

ठणकार–स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ टणकार ।

ठणको–पु० १ बल, शक्ति । २ संदेह, आशका । ३ ऐश्वर्य, ठाट-बाट । ४ ध्वनि, शब्द । ५ रोने का भाव । ६ गर्व, घमण्ड । ७ देखो 'ठुणकौ' ।

ठणण, ठणणण, ठणणाहट–स्त्री० टन्-टन् ध्वनि ।

ठणणौ (बौ)–क्रि० १ सज्जित होना तैयार, होना । २ बनना, रूप लेना । ३ निश्चित होना, तय होना । ४ ठहरना, स्थिर होना । ५ युद्ध, प्रतियोगिता आदि की स्थिति आना ।

ठणहणणौ (बौ)–देखो 'ठणकणौ' (बौ) ।

ठणाको–देखो 'ठणकौ' ।

ठ'णो (बौ)–देखो 'ठहणौ (बौ)' ।

ठपकाणौ (बौ) ठपकारणौ(बौ)–क्रि० १ कील आदि ठोकना । २ ढीले हुए कल पुर्जो को ठोक-ठाक कर मजबूत करना । ३ हल्की चोट कर बजाना ।

ठप्प–पु० [स० स्थाप्य] एकाएक रुक जाने की दशा । –वि० १ पूर्ण रूप से रुका हुआ, बद, क्रियाहीन । २ अवरोधित । ३ अनुपयोगी । (जैन)

ठप्पो–पु० १ गत्ता । २ कोई मुद्रा या मोहर । ३ ऐसी मुद्रा का चिह्न । ४ वस्त्र छापने का उपकरण । ५ साचे से बनाया हुआ बेल-बूंटा, छाप ।

ठबक,ठबको–पु० १ दोष, कलंक, दाग । २ उपालभ । ३ हानि, नुकसान ।

ठभणौ (बौ)–क्रि० १ स्तब्ध, दग, चकित होना । २ देखो 'थमणौ' (बौ) ।

ठमको (क्कौ)–देखो 'ठमकौ' ।

ठम–स्त्री० चलते समय पाव रखने की क्रिया ।

ठमक–स्त्री० १ चलते समय एडी की लचक, ठसक । २ मद एव सुन्दर चाल । ३ किसी धातु की वस्तु से होने वाली ध्वनि ।

ठमकणौ (बौ)–क्रि० १ डग रखना, पैर रखना । २ चलना, गतिमान होना । ३ मद गति से गमन करना । ४ बजना ।

ठमकाणौ (बौ), ठमकावणौ (बौ)–क्रि० १ चलाना, गतिमान करना । २ बजाना, ध्वनि करना ।

ठमको–पु० १ चलने का सुन्दर ढंग । २ चलते समय पायल की ध्वनि । ३ चटक-मटक, नखरा । ४ नृत्य का एक ढग । ५ चलते समय पाव की आवाज । ६ धमका ।

ठमणी–देखो 'ठवणी' ।

ठमणौ (बौ)–देखो 'थमणौ' (बौ) ।

ठमाणौ (बौ)–देखो 'थमाणौ' (बौ) ।

ठयो-ठायो–वि० [स० स्थापित] बना-बनाया तैयार, स्थापित ।

ठरक–स्त्री० १ हानि, नुकसान । कमी । २ देखो 'ठसक' ।

ठरकणौ (बौ)–क्रि० १ होना । २ पीटा जाना । ३ देखो 'टरकणौ' (बौ) ।

ठरकाणौ (बौ), ठरकावणौ (बौ)–क्रि० १ करना । २ पीटना, मारना । ३ देखो 'टरकाणौ' (बौ) ।

ठरकियोड़ौ–वि० (स्त्री० ठरकियौ) १ मूर्ख, गवार, अयोग्य । २ चोट खाया हुआ ।

ठरकेत–वि० 'ठरका' रखने वाला । ठाट-बाट वाला । क्षमता वाला, सक्षम ।

ठरकेल–वि० १ हीन । २ अयोग्य । ३ निर्बल । ४ निर्धन, कगाल ।

ठरकैल–देखो 'ठरकेल' ।

ठरको–पु० १ वैभव, सम्पत्ति । २ ठाट-बाट । ३ क्षमता, औकात । ४ गर्व, घमण्ड, ठसक । ५ चोट, प्रहार । ६ बलि पशु को काटने के लिए दिया जाने वाला शस्त्र का झटका । ७ बल, शक्ति । ८ प्रतिष्ठा, गौरव ।

ठरड–स्त्री० पाव या किसी वस्तु को घीसने या रगडने की ध्वनि ।

ठरडणौ (बौ)–क्रि० १ घसीटना, खीचना । २ पाव रगड कर चलना ।

ठरडौ–पु० १ घटियास्तर का शराव । २ पथरीली, समतल भूमि । ३ पोकरण (राजस्थान) के समीप का एक भू-भाग ।

ठरठिम–वि० ऐंठन युक्त ।

ठरणौ (बौ)–क्रि० १ शीतल पडना, ठडा होना । २ उष्णता हीन होना । ३ सर्दी से जकडना, ठिठुरना । ४ क्रोध शात होना । ५ जोश समाप्त होना । ६ शात होना । ७ निर्बल होना ।

ठळ–स्त्री० सेना, दल ।

ठळक–स्त्री० १ आसू छलकने की क्रिया या भाव । २ रुलाई ।

ठळकणौ (बौ)–क्रि० १ आसू बहना, रोना । २ द्रव पदार्थ का छलकना । ३ प्रहार होना, आघात पडना ।

ठळकाणौ (बौ)–क्रि० १ आसू बहाना । २ द्रव पदार्थ का छलकाना । ३ प्रहार कराना ।

ठळको–पु० ठेस, आघात । चोट ।

ठळणौ (बौ)–क्रि० १ तय किया जाना । २ निश्चित होना । ३ चुना जाना ।

ठळळाड़णौ (बौ), ठळळाणौ (बौ), ठळळावणौ (बौ)–क्रि० हुक्का गुडगुडाना ।

ठळोकडी–स्त्री० हसी, दिल्लगी ।

ठल्ल–स्त्री० १ धकेलने की क्रिया या भाव । २ देखो 'ठालौ' ।

ठल्लणौ (बौ)–१ देखो 'ठेलणौ'(बौ)। २ देखो 'ठाळणौ' (बौ) ।

ठवणा–देखो 'ठवणा' ।

ठवड़–देखो 'ठौड' ।

ठवण -पु० [सं० स्थापन] सस्थापन (जैन) ।

ठवणा–स्त्री० [स० स्थापना] स्थापना, स्थापित करने की क्रिया । (जैन) —कम, कम्म–पु० उक्त प्रकार का कर्म ।

ठवणी–स्त्री० [सं० स्थापनी, स्थापिका] १ न्यास रूप मे रखा हुआ द्रव्य, न्यास । २ पुस्तक रखने का काष्ठ का उपकरण । ३ चार तीलियो का ढाचा, आसन (जैन) ।

ठवणुछव–पु० स्थापनोत्सव ।

ठवणौ (बौ)–क्रि० १ रखना, टेकना । २ सजाना । ३ स्थापित किया जाना । ४ कहना, कथना । ५ होना ।

ठविय–पु० [सं० स्थापिन] साधु-साध्वी के लिए रखा पदार्थ, भोजन ।

ठविया–स्त्री० [स० स्यापिता] भविष्य मे प्रायश्चित करने का निश्चय (जैन) ।

ठस–वि० १ अपने स्थान पर जमा हुआ, दृढ, मजबूत । २ जो हिल न सके, खिसक न सके । ३ कठोर, कडा । ४ अडा हुआ । ५ पूर्ण भरा हुआ । ६ ठूसा हुआ । ७ कजूस, कृपण । ८ सुस्त, निष्क्रिय । ९ पूर्ण, परिपूर्ण ।

ठसक–स्त्री० १ स्वाभिमान, आन, शान । २ अहकार, गर्व । ३ ऐंठ, अकड । ३ चटक-मटक, नखरा । ४ ठेस, धक्का । ५ वनावटी शृगार । ६ शेखी, गल्ल । ७ टीस दर्द, कसक । —दार–वि० स्वाभिमानी । गौरवशाली । गर्विला । ऐंठीला ।

ठसकाळौ, ठसकीलौ–वि० (स्त्री० ठसकीली) १ स्वाभिमानी, गौरवशाली, गर्विला, आन-वान वाला । २ नखरे वाला । ३ शेखी वघारने वाला ।

ठसकौ–पु० १ ठेस, धक्का । २ ठोकर, टक्कर । ३ शान । ४ नखरा । ५ घमड । ६ रह-रह कर चलने वाली खासी ।

ठसणौ (बौ)–क्रि० [सं० स्तब्ध] १ घी आदि तरल पदार्थ का ठडक पाकर जमना, तरल न रहना । २ तरल धातु का ठोस होना । ३ रुकना, गतिहीन होना । ४ प्रविष्ठ होना पैठना । ५ फमना, फस कर रुक जाना ।

ठसाठस–वि० ठूस-ठूस कर भरा हुआ । –क्रि० वि० १ अधिक सटकर या भिडाकर । २ ठूस-ठूस कर, खचाखच । ३ गुंजाइश से अधिक डालकर ।

ठसाणौ (बौ)–क्रि० १ घी आदि तरल पदार्थ को ठडा करना, जमाना । २ तरल धातु को ठोस करना । ३ रोकना, गति हीन करना । ४ फसाना । ५ प्रविष्ठ कराना, पैठाना । ५ कोई वस्त्र जवरदस्ती पहनना ।

ठसौ, ठस्सौ–पु० १ विशेपता, खासियत । २ वोल-वाला । ३ प्रभाव । ४ विशेष महत्व । अभिमान, गर्व मे झूमने की क्रिया ।

ठह–वि० १ कटिवद्ध, सन्नध, तैयार । २ सुसज्जित । ३ देखो 'ठँ' ।

ठहक–स्त्री० १ नगारे की ध्वनि, ठहका । २ प्रहार या चोट की ध्वनि । ३ हसी की आवाज । ४ स्तब्धता ।

ठहकणौ (बौ)–क्रि० १ नगाडा, वाद्य आदि वजना । २ ध्वनि होना । ३ चोट या आघात करने से ध्वनि होना । ४ कोयल, मोर आदि का बोलना ।

ठहकाणौ (बौ)–क्रि० १ नगाडा वाद्य आदि वजाना । २ ध्वनि करना । ३ चोट या आघात से ध्वनि करना । ४ बजा कर जाचना ।

ठहकौ–देखो 'ठँकौ' ।

ठहक्कणौ (बौ)–देखो 'ठहकणौ' (बौ) ।

ठहक्काणौ (बौ)–देखो 'ठहकाणौ' (बौ) ।

ठहठहणौ (बौ)–क्रि० १ उचित ढग से कार्य होना । २ युद्ध होना । ३ होना ।

ठहठहाणौ (बौ)–क्रि० १ उचित ढग से कार्य कराना । २ युद्ध कराना ।

ठहणौ (बौ)–क्रि० [स० स्था] १ निश्चित होना, निर्धारित होना । २ उचित व्यवस्था होना । ३ स्थिर होना, ठहरना । ४ लगना, पडना (चोट) । ५ स्थापित होना, जमना । ६ शोभित होना । ७ आघात पहुँचना । ८ बजना । ९ ठोस होना, जमना, ठसना । १० धारण करना ।

ठहरणौ (बौ)–क्रि० १ रुकना, ठहरना । २ गतिहीन होना । ३ रहना, मानना, मान जाना । ४ साथ देना, अडिग रहना, अटल रहना । ५ दृढ़ रहना, पक्का रहना । ६ स्थिर रहना, टिका रहना । ७ स्थान पर रहना, डेरा देना, विश्राम करना । ८ वना रहना । ९ स्थिर रहना, अविचलित रहना, धैर्य रखना । १० थमना, रुकना । ११ निश्चित होना, तय होना । १२ एकत्र होना, जमा होना । १३ गर्भ धारित होना । १४ प्रतीक्षा करना । १५ वद होना ।

ठहराण–देखो 'ठहराव' ।

ठहराई–स्त्री० १ ठहराने की क्रिया या भाव । २ मजदूरी, पारिश्रमिक ।

ठहराणौ (बौ)–क्रि० १ रोकना, ठहराना । २ गतिहीन करना । ३ रखना, मनवाना । ४ साथ दिराना । अडिग रखना, अटल रखना । ५ दृढ रखना, पक्का रखना । ६ स्थिर रखना । टिकाये रखना । ७ स्थान पर रखना, डेरा दिराना, विश्राम कराना । ८ वनाये रखना । ९ स्थिर रखना, अविचलित रखना । १० थमाना, रोकना । ११ निश्चित करना । तय करना । १२ एकत्र करना, जमा करना ।

१३ गर्भवती करना । १४ प्रतीक्षा कराना । १५ पक्का जमाना । १६ ज्ञात करना, जानना । १७ बद कराना । १८ धैर्य देना ।

ठहराव–पु० १ स्थिरता, विश्राम । २ ठहरना क्रिया या भाव । ३ निश्चय, निर्धारण । ४ विश्रामस्थल । ५ धैर्य शाति । ६ छन्द शास्त्र मे यति ।

ठहरावणौ (बौ)–देखो 'ठहराणौ' (बौ) ।

ठहाणौ (बौ)–क्रि० १ निश्चित करना, तय करना । २ उचित बैठाना, जमाना । ३ रोकना, ठहराना । ४ लगाना । ५ मारना । ६ स्थापित करना । ७ शोभित करना । ८ प्रहार करना । ९ नगारा बजाना । १० ध्वनि करना । ११ ठसाना । १२ स्थिर करना । १३ ठोस करना । १४ धारण कराना ।

ठहोक–स्त्री० १ प्रहार करने का भाव । २ ध्वनि, आवाज ।

ठहोडणौ(बौ)–१ पीटना, मारना । २ बजाना । ३ ध्वनि करना ।

ठहोड़ौ–पु० १ आवाज, ध्वनि । २ प्रहार, चोट, आघात । ३ प्रहार की ध्वनि । ४ सहसा उठने वाला दर्द ।

ठहोडणौ (बौ)–देखो 'ठहीडणौ' (बौ) ।

ठा'–पु० [स० स्था] १ स्थान, जगह । २ घनीभूत झाडियो का स्थान ।

ठागर–स्त्री० सुगमता से दूध न दूहने देने वाली गाय ।

ठांगळणौ (बौ)–क्रि० १ मारना, पीटना । २ दण्ड देना । ३ अधीन करना, काबू मे करना ।

ठागळौ–पु० १ कैदी, बदी । २ वश, काबू ।

ठाठ, ठांठर–स्त्री० बाझ मवेशी, वध्या मादा पशु । –वि० १ सूखा, नीरस । २ अत्यन्त ठडा ।

ठाठरणौ (बौ)–क्रि० १ सूखना, नीरस होना । २ ठंडा पडना । ३ ठडा होना ।

ठाठराणौ (बौ)–१ नीरस करना, सुखाना । २ ठडा करना ।

ठांठी–स्त्री० वध्या ऊटनी ।

ठाठौ–वि० तौल मे कम ।

ठांण (उ)–स्त्री० [स० स्थान] १ मवेशियो को नियमित बाध कर रखने का स्थान । २ ऐसे स्थान पर बना खाना, कुण्ड आदि जिसमे चारा चराया जाता है । ३ उत्पत्ति का स्थान, जन्म भूमि । ४ स्थान । ५ गति की निवृत्ति, स्थिति, अवस्थान (जैन)। ६ कारण, निमित्त । ७ स्वरूप प्राप्ति (जैन) । ८ आसन (जैन) । ९ निवास, आवास । १० स्थान, पद (जैन) । ११ प्रकार, भेद (जैन) । १२ धर्म, गुण (जैन) । १३ आश्रय, मकान, घर, बस्ती, आधार (जैन) । १४ 'ठाणाग' सूत्र (जैन) । १५ कायिक क्रिया, ममत्व आदि का त्याग (जैन) ।

ठाणगुण–पु० [स० स्थानगुण] अधर्मास्तिकाय (जैन) ।

ठाणठिय–वि० स्थानास्थित (जैन) ।

ठाणणौ (बौ)–क्रि० १ विचार करना । २ निश्चय करना । तय करना । ३ जर्जरित करना, ढीला करना । ४ रखना, स्थापित करना । ५ करना । ६ दृढ सकल्प करना ।

ठाणपूर–वि० १ स्थान की प्रतिष्ठा रखने वाला, मान-मर्यादा वाला । २ प्रतिष्ठित । ३ गभीर ।

ठाणबंधु–पु० [स० ठाणबधु] ४९ क्षेत्रपालों मे से २८ वा क्षेत्रपाल ।

ठाणभट (भट्ट, भिस्ट)–वि० [स० स्थानभ्रष्ट] पदच्युत ।(जैन)

ठाणसणगार–वि० केवल स्थान की शोभा बढाने वाला (व्यग्य) ।

ठांणाग–पु०[स० स्थानागम] १ सूत्र का अध्ययन । २ एक सूत्र का नाम ।

ठाणा–पु० व्यक्ति (जैन) ।

ठांणाइय–वि० [स० स्थानातिग] भौतिक तत्वो से विरक्त एव ध्यानावस्थित ।

ठाणाओठांण–वि० स्थानान्तरित ।

ठाणायंग–पु० एक सूत्र-ग्र थ । (जैन)

ठाणायय–पु० [स० स्थानायय] ऊ चा स्थान (जैन) ।

ठांणि–वि० [स० स्थानिन्] स्थान वाला (जैन) ।

ठांणियौ–पु० १ अस्तबल की सफाई करने वाला । २ देखो 'ठाण' ।

ठाबणौ (बौ), ठाभणौ (बौ)–क्रि० १ चलते क्रम को रोकना, बद कर देना । २ रोकना, ठहराना । ३ गिरते हुए को पकडना, सभालना, बचाना । ४ पकडे रहना, पकडना । ५ मदद या सहायता करना । ६ कार्यभार संभालना, उत्तरदायित्व लेना । ७ चौकसी या पहरे मे रखना ।

ठाम (डौ)–पु० [सं० स्थाम] १ स्थान, जगह । २ पात्र, वर्तन । ३ मकान का भीतरी कक्ष । ४ कमरा ।

ठामडी–स्त्री० कूए पर लगे चक्र की गति को नियन्त्रित करने की रस्सी ।

ठामणौ (बौ)–देखो 'ठाभणौ' (बौ) ।

ठामी–वि० स्थान पर रहने वाला ।

ठांय–स्त्री० १ बन्दूक आदि के चलने की ध्वनि । २ देखो 'ठाम' ।

ठाव (डौ)–देखो 'ठाम' ।

ठासण–स्त्री० एक प्रकार की घास ।

ठासणी–स्त्री० सहारा ।

ठासणौ–देखो 'टासणौ' ।

ठासणौ (बौ)–१ देखो 'ठू सणौ' (बौ)। २ देखो 'टासणौ' (बौ) ।

ठासौ–पु० १ फैला हुआ केर का पेड । २ धव्वा ।

ठाह–देखो 'ठा' ।

ठा–पु० १ शून्य । २ ऋषि । –स्त्री० ३ पृथ्वी । ४ पीठ । ५ ज्ञान, इल्म, पता । –वि० धनवान ।

ठा'–देखो 'ठाह' ।

ठाइ (ई)–स्त्री० जगह, स्थान । –वि० [स० स्थायिन्] १ स्थिर रखने वाला । २ देखो 'ठावौ' ।

ठाउ (ऊ)–देखो 'ठाव' ।

ठाग्रोठा–क्रि०वि० उपयुक्त स्थान पर, यथास्थान । –वि० १ यथायोग्य । २ जहा जैसा ग्रावश्यक हो ।

ठाग्रौ–१ देखो 'ठावौ' । २ देखो 'ठायौ' ।

ठाक–स्त्री० १ प्रतिज्ञा, प्रण, नियम । २ बुनाई मे काम ग्राने वाला लकडी का उपकरण । ३ पीटने या मारने का भाव । ४ पत्थर का टुकडा ।

ठाकणौ (बौ)–क्रि० १ पत्थर गढना । २ पत्थर तोड़ना ।

ठाकर (ड़ौ)–पु० [स० ठक्कुर] (स्त्री० ठकराणी) १ किसी भू-भाग का ग्रधिष्ठाता । २ गाव का मालिक, जमीदार । ३ स्वामी, मालिक । ४ क्षत्रियों की उपाधि । ५ प्रतिष्ठित व्यक्ति, माननीय व्यक्ति । ६ ईश्वर, भगवान, विष्णु । ७ देव-मूर्ति, प्रतिमा । ८ राजपूतो के लिए सम्बोधन विशेष । ९ नाइयो की उपाधि ।
—**दवारौ, दुवारौ**–पु० देवालय, देवस्थान । विष्णु मदिर ।

ठाकराइ (ई), ठाकरि (री)–देखो 'ठकुराई' ।

ठाकुर–देखो 'ठाकर' । —**दवारौ, दुवारौ**='ठाकरदवारौ' ।

ठाकुराइ (ई), ठाकुरी–देखो 'ठकुराई' ।

ठागौ–पु० १ ग्राडबर, ढोग । २ कपट, छल । ३ धूर्तता ।

ठाडौ–पु० स्थान, जगह ।

ठाट–पु० १ सजावट । २ साज-शृंगार । ३ शोभा । ४ शान-शौकत । ५ तडक-भडक, ग्राडम्बर, दिखावा । ६ ग्राराम, चैन । ७ ग्रायोजन-तैयारी । ८ वैभव । ९ सितार का तार । १० समूह, झुण्ड । ११ देखो 'थाट' । —**बाट**–पु० सजावट । शृगार । तडक-भडक । शान-शौकत ।

ठाटियौ–१ देखो 'ठाटौ' । २ देखो 'थाठियौ' ।

ठाटौ–पु० १ बैलगाडी के ऊपर का तख्ता, थाटा । २ भीगे कागज की लुगदी का बना गोल व चौडा पात्र ।

ठाठडौ–१ देखो 'ठाठौ' । २ देखो 'ठाठी' ।

ठाठर–पु० ग्रस्थिपजर, हड्डियो का ढाचा ।

ठाठरणौ (बौ)–१ देखो 'ठाठरणौ' (बौ) । २ देखो 'ठिठरणौ' (बौ) ।

ठाठी–स्त्री० बाधा, ग्रडचन, रोक, विघ्न ।

ठाठीया–स्त्री० एक प्रचीन जाति ।

ठाठौ–पु० १ ऊट के चमडे का तरकस । २ देखो 'ठाटौ' ।

ठाड–स्त्री० १ सीढी या जीने के बीच-बीच लगने वाला पत्थर । २ सर्दी, ठडक ।

ठाडी–स्त्री० १ लम्बी लकडी का रहट मे लगा एक उपकरण । २ चूल्हे की राख । –वि० १ ठण्डी, शीतल । २ बासी । ३ खडी, सीधी ।

ठाडोळ–स्त्री० शीतलता, ठण्डक ।

ठाडौ–पु० १ दर्द वाले ग्रंग पर दिया जाने वाला ग्रग्नि दग्ध । २ जाडा, सर्दी, ठंड । –वि० (स्त्री० ठाडी) १ शीतल, ठण्डा । २ बासी । ३ उष्णता रहित । ४ बलवान, शक्तिशाली । ५ खडा, ठहरा, रुका हुग्रा । ६ शान्त । ७ सुस्त । ८ गंभीर ।
—**ठरियौ**–पु० शीतलाग्रष्टमी को बनाया जाने वाला बासी भोजन ग्रादि । —**पौ'र**–पु० सूर्योदय या सूर्यास्त के समय का ठण्डा मौसम ।

ठाढ़–देखो 'ठाड' ।

ठाढ़ेसर (सरी, स्वर, स्वरी)–पु० [स० स्तब्ध+ईश्वर] निरन्तर खडा रह कर तपस्या करने वाला तपस्वी ।

ठाढ़ौ–देखो 'ठाडौ' ।

ठा'णौ (बौ)–क्रि० १ करना, कर देना । २ निश्चित करना, तय करना । ३ ठहराना, रोकना । ४ लगाना (चोट) । ५ स्थापित करना, जमाना । ६ थोप देना । ७ कल्पित बात कहना । ८ रखना । ९ सुशोभित करना ।

ठायौ–पु० [स० स्थान] १ स्थान, जगह । २ निश्चित स्थान विशिष्ट स्थान । ३ देखो 'ठावौ' । ४ देखो 'ठियौ' ।

ठार–स्त्री० १ स्थान, जगह, ठौर । २ ठडक, सर्दी । ३ ग्राराम, शाति । ४ पता, इल्म, ठिकाना । ५ देखो 'ग्रठारह' ।

ठारक–वि० १ शीतल करने वाला । २ शान्त करने वाला । ३ संतोष दिलाने वाला ।

ठारणौ (बौ)–क्रि० १ ठडा करना, शीतल करना । २ गर्मी या उष्णता मिटाना । ३ ग्राग ग्रादि बुझाना । ४ भट्टी ग्रादि के भोग लगाना । ५ शान्त करना, तृप्त करना । ६ संतुष्ट करना ।

ठारौ–स्त्री० १ सर्दी, ठण्डक । २ शीतलता ।

ठाळ–स्त्री० १ खोज तलाश । २ छलाग । ३ चुनाव, चयन ।

ठाल–स्त्री० १ रिक्तता, खालीपन । २ ग्रभाव, कमी ।

ठालउ–देखो 'ठालौ' ।

ठाळणौ (बौ)–क्रि० [स० ष्ठल] १ तलाश करना, खोजना, ढूढना । २ चुनना, चयन करना । ३ निश्चित करना, तय करना । ४ देखना । ५ स्थापित करना ।

ठालप (फ)–स्त्री० १ बेकार या निकम्मा रहने का भाव । २ रिक्तता, ग्रभाव ।

ठाळवरौ–वि० चुनिन्दा ।

ठाली–वि० १ खाली, रिक्त । २ केवल, सिर्फ । ३ गर्भ रहित, गर्भ हीन ।

ठालु—देखो 'ठालौ'।
ठालेड़—स्त्री० १ रिक्तता, खालीपन । २ विना गर्भ की मादा पशु । ३ चोर, उचक्का । ४ देखो 'ठालौ'।
ठालौ—वि० (स्त्री० ठाली) १ रिक्त, खाली । २ रहित, हीन । ३ निकम्मा, वेकार, निष्फल । ४ अवकाश में—। ५ निर्जन एकान्त । ६ केवल, मात्र । —पु० १ सोने या चादी की देव मूर्ति । २ एक प्रकार का आभूषण । —**भूलौ**—वि० हृत भाग्य । निकम्मा । दुष्ट ।
ठावग्र—पु० [सं० स्थापक] १ पक्ष का स्थापन (जैन) । २ देखो 'ठावौ'।
ठावकौ—देखो 'ठावौ' (स्त्री० ठावकी)।
ठावड—स्त्री० ठौर, जगह, स्थान । (जैन)
ठावणौ (बौ)—क्रि० [स० स्था] १ स्थिर करना, रखना । २ स्थापित करना । ३ बनाना । ४ करना । ५ समझना । ६ सुसज्जित करना, सजाना । ७ शोभित करना । ८ निवास करना । ९ चुनना । १० मनोनीत करना ।
ठावीलौ—वि० निपट, निश्चित, मुकर्रर ।
ठावौ—वि० (स्त्री० ठावी) १ प्रतिष्ठित, मान्य । २ विश्वसनीय । ३ ईमानदार, जिम्मेदार । ४ फैला हुआ, व्यापक । ५ प्रसिद्ध, विख्यात । ६ महान्, श्रेष्ठ । ७ उपस्थित, हाजिर । ८ योग्य, होशियार, चतुर । ९ पक्का, दृढ़ । १० प्रकट, जाहिर । ११ खास, विशेष । १२ मुखिया, अग्रगण्य । १३ गभीर, धैर्यवान । १४ वुद्धिमान । १५ सुरक्षित ।
ठाह—स्त्री० [सं० स्था] १ स्थान, जगह । २ पता, ठिकाना । ३ खवर, मालूम । ४ खोज, जानकारी ।
ठाहर—स्त्री० [स० स्था] १ स्थान, जगह । २ निवास स्थान, जगह, डेरा । ३ कदम, डग ।
ठाहरूपक—पु० [सं० स्था-रूपक] मृदग की एक ताल ।
ठाहोकणौ (बौ)—क्रि० १ ठोकना, पीटना, मारना । २ खटकाना ।
ठाहौ—पु० १ पात्र । २ देखो 'ठायौ'।
ठिंगणौ— देखो 'ठिगणौ' (स्त्री० ठिंगणी)।
ठिइकम्म—पु० [स० स्थिति-कर्मन्] १ कर्म की स्थिति । २ स्थिति कर्म, जन्म सस्कार । (जैन)
ठिइकल्लाण—वि० [स० स्थिति-कल्याण] उत्कृष्ट स्थिति वाला । (जैन)
ठिइक्खय—पु० [स० स्थितिक्षय] आयु का क्षय, मरण । (जैन)
ठिइपद—पु० [स० स्थितिपद] प्रज्ञापन सूत्र के चतुर्थ पद का नाम । (जैन)
ठिइबंध—पु० [स० स्थितिबध] कर्मबंध की काल मर्यादा । (जैन)
ठिइया—स्त्री० [सं० स्थितिका] स्थिति । (जैन)
ठिई—स्त्री० [स० स्थिति] स्थिति । (जैन)
ठिग्रौ—वि० [स० स्थित] १ ठहरा हुआ । २ देखो 'ठियौ'।
ठिकरी—देखो 'ठीकरी'।
ठिकांणौ—पु० [स० स्था] १ स्थान, जगह । २ निवास-स्थान, आवास । ३ रहने की जगह, पता; ठिकाना । ४ खोज, खवर, पता । ५ प्रवध, इन्तजाम । ६ सहारा, आश्रय, आलबन । ७ उपयुक्त स्थान । ८ भरोसा । ९ यथार्थता, प्रमाण । १० अत, हद, सीमा । ११ परिवार, वश, घराना । १२ किसी जागीरदार का मकान, निवास स्थान । १३ जागीरदार की जागीरी का प्रदेश । १४ वश गौरव, मर्यादा ।
ठिठकणौ (बौ)—क्रि० [स० स्थिति-करणम्] १ चलते-चलते यकायक रुकना । २ झिझकना, चौंकना । ३ चकित होना, आश्चर्य मे पडना ।
ठिठरणौ (बौ) ठिठुरणौ (बौ)—क्रि० [स० स्थित] १ सर्दी मे अधिक ठरना । २ अधिक सर्दी के कारण ऐंठना, सिकुडना ।
ठिठोराई—स्त्री० १ तग करने की क्रिया या भाव । २ ढिठाई ।
ठिणकणौ (बौ), ठिणगणौ (बौ)—क्रि० रोना, विलखना ।
ठिमर—वि० १ गंभीर । २ धैर्यवान । ३ वुद्धिमान ।
ठियौ—पु० १ शौच क्रिया करते समय वैठने का पत्थर । २ चूल्हे का एक भाग । ३ स्थान, जगह । ४ वस्त्र विशेष ।
ठिलणौ (बौ)—वि० १ दूर होना । २ पीछे हटना । ३ धक्का खाना । ४ गतिमान होना, चलना । ५ डाला जाना ।
ठिल-ठिल, ठिलाठिल—क्रि० वि० लबालव । —स्त्री० हसने की क्रिया या । भाव खिलखिलाहट ।
ठिवणौ (बौ)—क्रि० १ चलना । २ डग भरना ।
ठींगणौ—वि० (स्त्री० ठींगणी) १ छोटा कद का, नाटा । २ वौना । ३ अन्य की अपेक्षा छोटा ।
ठींगळ, ठींगळियौ, ठींगळौ—पु० टूटे मटके का वडासा भाग खण्ड ।
ठींगा-ठोळी—देखो टींगाटोळी'।
ठींगौ—वि० (स्त्री० ठींगी) १ जवरदस्त, जोरदार । २ वलवान शक्तिशाली । —पु० १ धौस धमकी डाट-फटकार । २ प्रभाव ।
ठींचौ—पु० वारहवें दिन का मृत्यु भोज ।
ठींडौ—पु० छेद, छिद्र ।
ठींभर, ठींमर—देखो 'ठिमर'।

ठी–स्त्री० १पौत्री । २ घुध । -पु० ३ क्षय । ४ कुल । ५ कुटुंब ।

ठीक–वि० [स० स्थितक] १ उचित, वाजिव । २ अच्छा, बढिया । ३ योग्य, उपयुक्त । ४ यथार्थ, प्रामाणिक । ५ दुरुस्त, सुधरा हुआ । ६ शुद्ध । ७ आवश्यकता अनुसार । ८ प्राकृतिक । ९ नम्र, विनयी, सरल । १० निश्चित, उपयुक्त । ११ पक्का, स्थिर । १२ अखण्ड, कायम । –क्रि०वि० १ अच्छी तरह । २ उचित ढंग से । ३ पूर्ण रूप से, निश्चित रूप से । –स्त्री० १ दृढ बात । २ निश्चय । ३ ठिकाना, पता । ४ पता, इल्म, खवर । ५ स्थिर प्रवध । —**ठाक**–क्रि०वि० उचित रूप से, वाजिव ढग से । –वि० व्यवस्थित । निश्चित । –पु० प्रवध, व्यवस्था ।

ठीकर–देखो 'ठीकरौ' ।

ठीकरी–स्त्री० मिट्टी के पात्र का छोटा टुकडा ।

ठीकरौ–पु० १ बर्तन, पात्र (व्यग) । २ टूटा-फूटा बर्तन, पुराना बर्तन । ३ मिट्टी के पात्र का वडा खण्ड । ४ तुच्छ या निकम्मी वस्तु । ५ भीख मागने का पात्र । ६ ब्रह्माण्ड । ७ शरीर, देह । ८ खाली पात्र ।

ठीठी–स्त्री० हसी की ध्वनि ।

ठीडौ–वि० खडा ।

ठीडौ–पु० [स० स्था] खवर, पता, ठिकाना ।

ठीणणौ (बो)–क्रि० उपालभ देना, बुरा भला कहना ।

ठीणौ–वि० [सं० स्तब्ध] सर्दी के कारण जमा हुआ, ठसा हुआ । गाढा ।

ठीमर–देखो 'ठिमर' ।

ठीयौ–देखो 'ठियौ' ।

ठु–पु० १ कदम । २ यमदूत । –स्त्री० ३ मक्खी । ४ रज । ५ त्वचा । –वि० १ रोगी । २ दरिद्री ।

ठुकणौ (बो)–क्रि० पीटा जाना, मारा जाना, पिटना, कुटना ।

ठुकरांणी–देखो 'ठकराणी' ।

ठुकराणौ (बो)–क्रि० १ पाव की ठोकर मारना । २ तिरस्कार करना । ३ नामजूर करना । ४ त्यागना, छोड देना ।

ठुणकाणौ (बो)–क्रि० १ अगुलियो या किसी वस्तु से हल्की चोट पहुँचाना । २ ऐसी चोटें मस्तक मे दिराना (स्त्री) ।

ठुण, ठुणक–स्त्री० १ रोने की ध्वनि । २ बच्चे का रुदन ।

ठुणकी–स्त्री० दो अगुलियो को चटका कर मस्तक पर की जाने वाली हल्की चोट (स्त्री) ।

ठुणकौ–पु० १ बच्चे की रह-रह रोने की ध्वनि । २ रुदन ।

ठुमक–स्त्री० १ उमग भरी चाल । २ चलने का सुन्दर ढग । ३ चलने से एडी से होने वाली ध्वनि ।

ठुमकणौ (बो)–क्रि० १ उमग से चलना । २ ठसक से चलना । ३ बच्चे का धीरे-धीरे चलना ।

ठुमकार–स्त्री० ठुमक चाल से होने वाली ध्वनि ।

ठुमराई–स्त्री० मद-मद व मस्त चाल ।

ठुमरी–स्त्री० एक ही अतरे का एक गीत विशेष । —**झझोटी**–स्त्री० एक राग विशेष ।

ठुरणौ (बो)–क्रि० १ पिटना, मारा जाना । २ हल्की चोट से फसना, धसना, गढना ।

ठुरियौ–पु० ऊट की चाल विशेष ।

ठुळियौ–पु० लकडी का छोटा डडा ।

ठुसकणौ (बो)–क्रि० सुवक-सुवक कर रोना ।

ठुसकी–स्त्री० १ रोने की सुवकी । २ धीरे से अपान वायु निकलने की ध्वनि ।

ठुसणौ (बो)–क्रि० १ ठूस-ठूस कर भरा जाना । २ मुश्किल से घुसा जाना । घुसना, पैठना ।

ठुसी–स्त्री० स्त्रियो के गले का आभूषण विशेष ।

ठूंक–स्त्री० [स० तुंड] १ चोच, चंचु । २ चोच की चोट, प्रहार ।

ठूंग–स्त्री० शराव के साथ खाया जाने वाला चुर्वन ।

ठूंगार–स्त्री० १ भाग के नशे को शात करने के लिए खाया जाने वाला खाद्य पदार्थ । २ छौंक, वघार ।

ठूठ–वि० १ मूर्ख, गंवार । २ देखो 'ठूठौ' ।

ठूंठा–स्त्री० पवारो की एक शाखा ।

ठूठियौ–पु० १ वैलगाडी के पहिये मे लगने वाला एक उपकरण । २ देखो 'ठूठौ' ।

ठूंठौ–पु० १ सूखा पेड । २ जमीन मे धसा कर खडा किया सूखे पेड का खूटा ।

ठूडणौ (बो)–देखो 'ठूसणौ' (बो) ।

ठूढ, ठूंढियौ, ठूढौ–देखो 'ठूंठौ' ।

ठूसणौ (बो)–क्रि० १ दवा-दवा कर या ठूंस-ठूस कर भरना । २ जवरदस्ती धसाना । ३ जोर से घुसाना, चोट मार कर घुसाना । ४ अधिक खाना । ५ छीनना, हडपना । ६ सजोना, सजाना ।

ठूंसियौ–पु० ऊटो का एक रोग विशेष ।

ठू–पु० १ विष्णु । २ वुध । ३ प्रेम । ४ धैर्य । ५ धर्म । –स्त्री० ६ लक्ष्मी ।

ठूमरौ–पु० सिंध व वलोचिस्तान की पहाडियो के बीच पाया जाने वाला पत्थर कण ।

ठूळ–पु० जड सहित निकाला हुआ पौधा या झाडी । –वि० १ मूर्ख । २ अल्हड, गवार । ३ मजबूत ।

ठूसणौ (बो)–देखो 'ठूसणौ' (बो) ।

ठेण–पु० कठोर व समतल भूमि ।

ठे–पु० १ वामन । २ शेष । ३ स्थान । ४ मन । ५ सक्षेप । ६ शिखा ।

ठेक–स्त्री० १ मजाक, हसी । २ छलाग ।
ठेकणौ–वि० (स्त्री० ठेकणी) छलाग लगाने वाला ।
ठेकणौ (बौ)–क्रि० छलाग लगाना, कूदना ।
ठेकागाडी–स्त्री० एक प्रकार का सरकारी लगान ।
ठेकाळौ–वि० (स्त्री० ठेकाळी) छलाग लगाने वाला ।
ठेकी–स्त्री० छलाग ।
ठेकेदार–वि० १ किसी कार्य को करने का एक मात्र अधिकारी । २ किसी कार्य का जिम्मेवार । ३ किसी कार्य का ठेका लेने वाला । –पु० १ भवन निर्माण आदि कार्यों को एक निश्चित खर्च मे पूरा करके देने वाला व्यक्ति । २ इसी प्रकार किसी कार्य को कुछ निश्चित शर्तों पर पूरा करने का अनुबध करने वाला व्यापारी ।
ठेकौ–पु०१किसी कार्य का जिम्मा, उत्तरदायित्व । २ किसी कार्य को करने व उसमे आय करने का अधिकार । ३ ऐसे कार्यों के प्रति कुछ निश्चित शर्तों पर किया जाने वाला अनुबध, इकरार, इजारा । ४ तबले का बाया । ५ तबले आदि पर बजाई जाने वाली कोई ताल । ६ छलाग ।
ठेगड़ौ–पु० (स्त्री० ठेगडी) कुत्ता, श्वान ।
ठेगण–स्त्री० सहारे की लकडी ।
ठेचरी–स्त्री० १ मखौल, मजाक । २ हसी, दिल्लगी ।
ठेट, ठेठ–पु० १ सीमा, हद । २ छोर । ३ पार, अत । ४ तल । ५ प्रारभ, शुरू ।
ठेठर, ठेठरियौ, ठेठरौ–पु० १ पुराना व सूखा जूता । २ पशुओ के क्षुरो की कठोरता ।
ठेठी–स्त्री० कानो के अन्दर का मैल । कर्णमल । **–काढ़णियौ** –पु० उक्त मैल निकालने का उपकरण । –वि० दण्ड-दाता, सुधारक ।
ठेप–स्त्री० १ टक्कर । २ चोट, आघात ।
ठेपाड़–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।
ठेरणौ (बौ)–देखो 'ठहरणौ' (बौ) ।
ठेळ–वि० १ निर्भय, निडर । २ प्रभावशाली । ३ देखो 'ठेळौ' ।
ठेल–पु० १ टक्कर, धक्का । आघात, चोट । २ डालने या झोकने की क्रिया या भाव ।
ठेलण–पु० बैलगाडी के अग्रभाग मे लगाया जाने वाला लकडी का डडा ।
ठेलणौ (बौ)–स्त्री० [स० स्थलपति] १ पीछे हटाना । २ धक्का देना, धकेलना । ३ प्रहार से दूर करना । ४ टालना, दूर करना । ५ आगे बढाना । ६ झोकना, डालना । ७ व्यतीत करना, गुजारना । ८ खदेड देना, निकाल देना । ९ पराजित करना । १० उडेलना, डालना । ११ मिटाना, नाश करना । १२ खूब खिलाना-पिलाना ।
ठेलमठेल, ठेलाठेल–स्त्री० १ अत्यधिक भीड । २ अधिक भीड की खस्साखसी, धक्कमधक्का । ३ रेलमपेल । –वि० बहुत अधिक, पूर्ण, परिपूर्ण ।
ठेलियौ–देखो 'ठेलौ' ।
ठेळौ–पु० १ कूडे करकट का ढेर । २ घास-फूस का ढेर । ३ छोटी लाठी, डडा । ४ डडे से गिल्ली पर चोट करने की क्रिया ।
ठेलौ–पु० १ आदमी द्वारा ठेल कर चलाई जाने वाली सामान वाहक, गाडी । २ छोटी बैलगाडी । ३ झोका ।
ठेस–स्त्री० चोट, आघात, धक्का ।
ठेहरणौ (बौ)–देखो 'ठहरणौ' (बौ) ।
ठंठाणौ (बौ)–देखो 'ठंठाणौ' (बौ) ।
ठै–पु० १ शास्त्र । २ आकाश । ३ शिष्य । –वि० मूर्ख ।
ठैं'–स्त्री० किसी वस्तु पर चोट करने से उत्पन्न ध्वनि, ठक ।
ठैअकौ, ठैकौ–पु० १ तबला आदि के बजने की आवाज । २ ऐसे वाद्यो को बजाने की विशेष विधि, ताल । ३ नगाड़े पर डके की चोट । ४ हल्का आघात ।
ठैं'रणौ (बौ)–देखो 'ठहरणौ' (बौ) ।
ठैरांण–देखो 'ठहराव' ।
ठैराणौ (बौ)–देखो 'ठहराणौ' (बौ) ।
ठैं'राव–देखो 'ठहराव' ।
ठो–पु० १ रक्त । २ शिर, मस्तक । –स्त्री०३ पीडा । ४ मूर्खता, गवारपन ।
ठोकणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, चोट करना, मारना, पीटना । २ लात, घूसे, डडे आदि से मारना, पीटना । ३ चोट मारकर घुसाना, फसाना । ४ हाथ के प्रहार से ध्वनि करना । ५ जडना, बद करना । ६ खट-खट करना । ७ सभोग या मैथुन करना । ८ आहार करना । ९ रिश्वत, चोरी आदि का कार्य करना ।
ठोकर–स्त्री० १ चलते समय किसी वस्तु से पाव टकराने की क्रिया । २ इस प्रकार टकराने से पाव मे लगने वाली चोट । ३ रास्ते मे पडी वस्तु जिससे चलते समय पाव टकरा जाय । ४ जूते पहने हुए पाव के अग्र भाग से किया जाने वाला प्रहार । ५ तेज प्रहार, चोट, धक्का । ६ जूते का अग्र भाग । ७ एक सवारी की बैलगाड़ी । ८ कुश्ती का एक दाव । ९ एक आभूषण विशेष ।
ठोकाक–वि० १ खाने का इच्छुक, खाने वाला, अधिक खाने वाला । २ इच्छुक । ३ पीटने वाला ।
ठोकाबाटी–स्त्री० मैथुन, सभोग ।
ठोट, ठोठ–वि० १ मूर्ख, गवार । २ मद बुद्धि । ३ अपठित । ४ अनभिज्ञ, अज्ञ ।

ठोड–स्त्री० वैलगाडी का अग्रभाग ।

ठोडी–स्त्री० [स० तुड] १ मुह के नीचे का भाग, चिवुक । २ पशुग्रो के मुह का अग्रभाग, तुड। ३ साप का फन ।

ठोवरौ–पु० फूटा हुग्रा बर्तन ।

ठोर (ड)–स्त्री० १ प्रहार करने की क्रिया या भाव । २ ध्वनि, ग्रावाज । ३ धाक, रौब । ४ एक प्रकार की मिठाई । ५ देखो 'ठौड' । –वि० स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

ठोरणौ (बौ)–क्रि० १ पीटना, मारना । २ ऊपर से चोट मार कर धसाना, गाडना । ३ प्रहार करना, चोट मारना। ४ चोट मार कर फसाना ।

ठोर-पाखर–वि० १ कटिबद्ध, तैयार, सन्नद्ध । २ पूर्ण स्वस्थ ।

ठोरमठोर–वि० हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, मजबूत ।

ठोरियौ–पु० स्त्रियो के कान का ग्राभूषण ।

ठोरौ–पु० लाठी, लकड़ी ।

ठोळी–स्त्री० हसी, मजाक ।

ठोलौ–पु० १ हाथ की ग्रगुली को समेटने पर पीछे उभरने वाला तीक्ष्ण भाग । २ इस तीक्ष्ण भाग से किया जाने वाला प्रहार ।

ठोस–वि० १ जो नर्म, द्रव रूप मे या खोखला न हो, कठोर, शक्त । २ जमा हुग्रा । ३ दृढ, मजबूत ।

ठौ–पु० १ गौतम ऋषि । २ समुद्र । ३ कुल-धर्म । –स्त्री० ४ तरग, लहर । ५ मर्यादा ।

ठौड–स्त्री० [स० स्थान] १ स्थान, जगह । २ रहने का निश्चित स्थान ।

ठौड-ठौड–क्रि० वि० १ यथा स्थान, उचित जगह पर । २ स्थान-स्थान पर ।

ठौर–१ देखो 'ठोर' । २ देखो ठौड' ।

ठौळ–स्त्री० हसी-मजाक, दिल्लगी ।

–ड–

ड–देव नागरी वर्णमाला का तेरहवा वर्ण ।

ड–पु० १ दात । २ दूध । ३ जल । ४ मृत्यु । ५ ग्राख । ६ चमेली ।

डक–पु० [स० दंश] १ विच्छु का काटा । २ किसी पतगे के मुह का जहरीला काटा । ३ सर्प दश । ४ नगाडा । ५ नगाडे की ध्वनि । ६ नखक्षत । ७ दंश का स्थल । भाग । ८ साप का विष दत । ९ ग्रनाज मे लगने वाला कीडा । १० कलम की जिह्वा । ११ राजस्थान का एक प्रसिद्ध ज्योतिषी । १२ इस ज्योतिषी का वश । १३ देखो 'डकी' । –वि० ग्रभिमुख । —**दार**–वि० जिसके डक हो ।

डकणौ (बौ)–क्रि० १ विच्छु का डक मारना, । २ सर्प ग्रादि विषैले जतुग्रो का डसना, दश मारना । ३ ग्रनाज मे कीडा लगना । ४ नगाडा बजना ।

डकरणौ (बौ)–क्रि० १ ध्वस करना । २ क्रोध करना, क्रुद्ध होना ।

डका-री-पछेवडी–स्त्री० एक वस्त्र विशेष ।

डकि–वि० १ विध्वसक, सहारक । २ जिसमे डक लगा हो । ३ देखो 'डकी' ।

डकिणी–देखो 'डाकणी' ।

डकी–पु० १ छोटा मच्छर । २ योद्धा, वीर । ३ सहार करने वाला ।

डकीलौ–वि० जिसके डक लगा हो ।

डकोळौ–पु० [स० ढक्का] ज्वार, वाजरी ग्रादि के पौधे का डठल ।

डकौ–पु० [स० ढक्का] १ नगाडा । २ नगाडा बजाने का डडा । ३ नाम, प्रभाव, प्रसिद्धि ।

डंग–स्त्री० १ टोहनी । २ देखो 'डाग' ।

डटकडौ–पु० भुजा पर धारण करने का कडा, ग्राभूषण ।

डंठळ–पु० सूखा पौधा । टहनी ।

डड–पु० [स० दण्ड] १ किसी ग्रपराध के वदले मिलने वाली सजा । २ जुर्माना, हर्जाना । ३ डडा । ४ व्यायाम की एक प्रक्रिया । ५ सेना की एक व्यूहरचना । ६ साष्टाग प्रणाम । ७ ध्वज दण्ड । ८ डडे जैसी कोई वस्तु । ९ तराजू की डडी । १० इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रो मे से एक । ११ चौवीस मिनट का एक समय ।

डडकार, डडकारन–पु० [स० दण्डकारण्य] एक प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से गोदावरी तक फैला हुग्रा था ।

डडणौ (बौ)–क्रि० १ दण्ड देना, सजा देना, सजा के रूप मे मारना, पीटना । २ जुर्माना तय करना ।

डडभ्रत–पु० [सं० दण्डभृत] १ यमराज । २ कुम्हार, कुभकार ।

डडव्यूह–पु० सेना की एक व्यूहरचना ।

डडाकार–वि० १ दण्ड के आकार का । २ निर्जन, शून्य ।

डंडाणी (बो)–क्रि० १ दण्ड दिराना, सजा दिराना । २ जुर्माना भरवाना, हर्जाना भरवाना ।

डडारोपण–स्त्री० माघ शुक्ला पूर्णिमा को गाव मे रोपा जाने वाला लकडा जो होली पर्यन्त रहता है ।

डडाळ–वि० जिसके डडा लगा हो, डडेदार । –पु० वह शस्त्र जिसमे डडा लगा हो ।

डडाळी–वि० डडे के बल से कार्य करने वाला ।

डडाळौ–वि० १ डडा रखने वाला, दण्डधारी । २ डडेदार । –पु० दण्डधारी साधु, दण्डीस्वामी ।

डंडाहड,(हडि, हळ)–पु० १ नगाडा, दुंदुभि । २ देखो 'डडियौ' ।

डंडि–पु० [स० दण्डिन्] दण्डधारी, दण्डी स्वामी । **—खड**–पु० चीथडो को जोड कर बनाया हुआ वस्त्र ।

डडिअळ, (अळि)–पु० एक मात्रिक छन्द विशेष ।

डंडिया-गैर, डंडियानाच–स्त्री० होली के पर्व पर, हाथो मे लकडिया लिए रात भर किया जाने वाला गोल नृत्य ।

डडिऔ–देखो 'डडौ' ।

डंडी (ड)–पु० [स० दण्डिन्] १ द्वारपाल, ड्योढीदार । २ सन्यासियो का एक भेद । ३ दण्ड देने वाला ।

डंडूकळी–स्त्री० काष्ठ का छोटा डडा ।

डडूर, डडूळ, डडूळौ–पु० १ हवा से छितराई हुई वर्षा की बूंदे । २ वातचक्र, ववडर । ३ एक दैत्य का नाम । ४ देखो 'डडाळौ' ।

डडेहड़, डडेहडि, (डडोहड़)–देखो 'डंडाहड' ।

डडोत–स्त्री० [स० दडवत्] पृथ्वी पर उल्टा सोकर किया जाने वाला प्रणाम, साष्टाग प्रणाम ।

डडोतियौ–वि० दडवत् करने वाला ।

डडोळ, डंडोळी–पु० १ नगारा, दुदुभि, डूडी । २ किसी वात का प्रचार ।

डंडौ–पु० [सं० दण्ड] १ लकडी का छोटा टुकडा, डडा । २ वास का टुकडा । ३ छडी । ४ डंडे की मार । ५ अहाते की छोटी दीवार । ६ देखो 'डाडौ' ।

डफर, डब–पु० आडवर, ढोग, पाखण्ड । बाह्य उपाग ।

डबक–वि० वेडौल, वेतुका । **—डौल**–वि० वेडौल शरीर वाला । **—डोळौ**–वि० उभरा हुआ ।

डबणौ (बो)–क्रि० लटकना ।

डबर–पु० [स०] १ वैभव, गौरव । २ वादल, घटा । ३ धूआ । ४ सेना, दल । ५ समूह, यूथ । ६ उमग, जोश । ७ वन, जगल । ८ ध्वनि, आवाज । ९ प्रवाह । १० चकाचौंध । ११ सुगध, महक । १२ शान-शौकत, ठाट-बाट । १३ सडक पर बिछाने का काला पदार्थ, कोलतार । १४ जमाव । १५ चटक-मटक । १६ समानता । १७ अभिमान, अहकार । १८ लाली । १९ आच्छादन । २० तबू । –वि० १ सजल, अश्रुपूर्ण । २ आच्छादित । ३ लाल । ४ घना, सघन । ५ तरवतर ।

डबाणौ (बौ), डंबावणौ (बौ)–वि० लटकाना ।

डंभ–१ देखो 'डिभ' । २ देखो 'डाम' ।

डभण–वि० [स० दभन] १ ठग, धोखाबाज । २ पाखण्डी, ढोगी । (जैन)

डमणया, डमणा–स्त्री० [स० दभना] १ ठगाई । २ माया । ३ कपट, छल (जैन) ।

डंमरणौ (बौ)–क्रि० १ आनन्दित होना । २ उमगित होना । ३ प्रफुल्लित होना, खिलना ।

डंमर–पु० १ जोश, उमग । २ ऐश्वर्य, वैभव, ठाट । ३ देखो 'डवर' ।

डंस–पु० [स० दश] १ सर्पादि विषैले जीवो के काटने की क्रिया, दश । २ ईर्ष्या, द्वेष । ३ देखो 'डास' ।

डसण–पु० [स० दशन] विषैले जीवो का डसन, दश ।

डसणौ (बौ)–देखो 'डसणौ' (बौ) ।

ड–पु० १ महादेव । २ महादेव का गण । ३ डमरू । ४ अर्जुन । ५ ताड वृक्ष । –स्त्री० ६ वृद्धावस्था । ७ ध्वनि । ८ गाय । ९ बडवाग्नि ।

डक–स्त्री० १ नगाडे की ध्वनि । २ एक प्रकार का वाद्य । ३ एक प्रकार का मोटा कपडा । ४ देखो 'डाकौ' । ५ देखो 'डग' । **—चूक**='डाकचूक' । **—डक**–स्त्री० हसने की क्रिया । हसने की ध्वनि । छोटे मुह के पात्र से द्रव पदार्थ के निकलने से उत्पन्न ध्वनि । द्रव पदार्थ के पीने से उत्पन्न ध्वनि ।

डकडकणौ (बौ)–क्रि० १ हसने की क्रिया, ध्वनि । २ ध्वनि विशेष ।

डकडकि (की)–स्त्री० १ कपकपी, थर्राहट । २ हसने की ध्वनि । ३ देखो 'डकडक' ।

डकडक्क–देखो 'डकडक' ।

डकणौ (बौ)–क्रि० कूदा जाना, लाघा जाना ।

डकर–स्त्री० [स० डात्कार] १ जोश, आवेश । २ आतकपूर्ण आवाज । ३ जोशीली आवाज । ४ वीर ध्वनि । ५ दहाड । ६ धाक, भय, आतंक । ७ धमकी । ८ ध्वनि, आवाज । ९ दवाव, रौव ।

डकराणौ (बौ), डकरावणौ (बौ)–क्रि० भयभीत करना, डराना, धाक जमाना ।

डकरेल, (रेल)–वि० बलवान, वीर, बहादुर । –पु० सिंह ।
डकळ-डकळ–स्त्री० १ जल्दी-जल्दी पीने की क्रिया व इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि । २ हसने की क्रिया व ध्वनि ।
डकाणौ (बौ), डकावणौ (बौ)–क्रि० १ कूदने, फादने या लाघने के लिए प्रेरित करना । २ क्रमश न बढाकर बीच मे कुछ छोडते हुए आगे बढाना । लघाना ।
डकार–स्त्री० १ कुछ खाने के बाद पेट की वायु गले से निकलने की क्रिया, ऊर्ध्ववायु । २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।
डकारणौ (बौ)–क्रि० १ पेट की वायु गले से निकालना । २ खाना, हजम करना । ३ अनुचित तरीके से आय करना ।
डकैत–देखो 'डाकू' ।
डकौ–पु० १ वाद्य विशेष । २ देखो 'डाकौ' ।
डक्क–देखो 'डक' ।
डक्कण, डक्कणी–देखो 'डाकणी' ।
डक्कर–पु० १ छोटे बच्चो के खेलने का डडा । २ देखो 'डकर' ।
डक्का–स्त्री० [स०] शिव का वाद्य, डमरू ।
डग–स्त्री० १ हाथी के पिछले पैरो मे बाधने की रस्सी । २ हथकडी । ३ कदम, पैंड । ४ कदम रखने की क्रिया । ५ एक कदम का स्थान । ६ पाव, पैर ।
डगडगाणौ (बौ)–क्रि० हिलना, डगमगाना । विचलित होना ।
डगडगारौ–पु० बकवास, झकझट ।
डगडगि (गी)–स्त्री० १ एक वाद्य विशेष । २ ध्वनि विशेष । ३ कपन ।
डगडोलणौ (बौ)–क्रि० हिलना-डुलना, डगमगाना ।
डगमगणौ-(बौ)–क्रि० १ कापना, थर्राना । २ डरना, भयभीत होना । ३ विचलित होना, अस्थिर होना । ४ स्थान छोडना, खिसकना । ५ हिलना-डुलना । ६ डावा-डोल होना ।
डगमगा'ट–स्त्री० १ कपन, अस्थिरता । २ हिलने-डुलने या डावाडोल होने की क्रिया या भाव ।
डगमगाणौ (बौ), डगमगावणौ (बौ)–देखो 'डगमगणौ' (बौ) ।
डगर–पु० १ पथ, मार्ग, रास्ता । २ निरन्तर चलने से रास्ते में बनने वाली लकीर, चिह्न । ३ चाकर, सेवक ।
डगरियौ, डगरौ–पु० १ वृद्ध या दुर्बल ऊट । २ अघटित पत्थर, बेडौल पत्थर । ३ लडकी का चौकोर या गोल खण्ड । ४ मिट्टी का एक पात्र विशेष । ५ देखो 'डगर' ।
डगळ–वि० १ शून्य । २ निर्जन । ३ देखो 'डगळौ' ।
डगलग–पु० कंकड, पत्थर (जैन) ।
डगळियौ–देखो 'डगळौ' ।
डगलौ (लू)–स्त्री० रुई भरकर बनाया हुआ पहनने का वस्त्र विशेष, अगरक्षिका ।
डगळू, डगळौ–पु० १ मिट्टी का ढेला । २ किसी पदार्थ का ढेला । ३ देखो 'डगरौ' ।
डगाणौ (बौ), डगावणौ (बौ)–देखो 'डिगाणौ' (बौ) ।
डग्ग–देखो 'डग' ।
डचकण–पु० १ दिन भर शिर हिलाता रहने वाला घोडा । –स्त्री० २ कफ से खासने की क्रिया या भाव ।
डचकणौ (बौ)–देखो 'डचक्कणौ' (बौ) ।
डचकौ–पु० १ खासी के साथ निकला कफ । २ देखो 'डाचौ' ।
डचक्कणौ (बौ)–क्रि० १ निगलना । २ खास कर कफ गिराना ।
डचळ-डचळ–स्त्री० जल्दी-जल्दी भोजन करने की क्रिया ।
डचळी–स्त्री० १ खाने पर टूट पडने की क्रिया, झपटी । २ जल्दी-जल्दी खाने की क्रिया ।
डचाडच–स्त्री० १ अत्यन्त तेजी से खाने की क्रिया । २ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।
डचियौ–पु० १ झपट कर खाने वाला कुत्ता । २ देखो 'डाचौ' । ३ देखो 'डचकौ' । –वि० १ जल्दी-जल्दी खाने वाला । २ क्षीण ।
डटणौ (बौ)–१ रुकना, ठहरना । २ दबना, काबू में आना । ३ जमकर खडा होना, टिकना, दृढ़ रहना । ४ भिडना, डटना । ५ अडिग होना । ६ अवरुद्ध होना ।
डटाणौ (बौ), डटावणौ (बौ)–क्रि० १ रोकना, ठहराना । २ दावना, काबू मे करना । ३ जमकर खडा करना, टिकाना, दृढ रखना । ४ भिडाना, डटाना । ५ अडिग करना । ६ अवरुद्ध करना ।
डडियौ–१ देखो 'दादौ' । २ देखो 'डडौ' ।
डडौ, डड्डौ–पु० १ 'ड' अक्षर । २ दादौ ।
डड्ढ, डढ–वि० [स० दग्ध] १ जला हुआ (जैन) । २ देखो 'दादौ' ।
डढ़ियळ–वि० दाढीवाला, बडी दाढी वाला ।
डणडणणौ (बौ)–क्रि० हसना, खिल-खिलाना ।
डपटणौ (बौ)–क्रि० १ डाटना, फटकारना । २ वस्त्र मे लपेट कर सुरक्षित करना । ३ पखा झलना, हवा करना । ४ तेज दौडना । ५ जम कर खाना ।
डपोरसख–वि० दिखने मे अच्छा पर मूर्ख, मूढ ।
डप्फौ–वि० मूर्ख, गंवार ।
डफ–पु० [अ० दफ] १ लकडी के घेरे पर चमडा मढ़ कर तैयार किया वाद्य, डफ । २ मूर्ख, मूढ ।
डफणौ (बौ), डफळणौ (बौ)–क्रि० १ भौचक्का होना, स्तभित होना । २ घबराना । ३ भूलना, चूकना । ४ भ्रमित होना, चूकना ।
डफळाणौ (बौ), डफळावणौ (बौ)–देखो 'डफणौ' (बौ) ।

डफली–स्त्री० छोटा डफ।

डफांण, डफान–स्त्री० १ आडंबर, ढोंग, पाखण्ड। २ गर्व, अभिमान।

डफाणी–वि० १ धूर्त, कपटी। २ पाखंडी, ढोंगी। ३ अभिमानी।

डफाणौ (बौ), डफावणौ (बौ)–क्रि० १ भौचक्का करना, स्तंभित करना। २ भयभीत करना। ३ भुलाना, चुकाना। ४ भ्रमित करना, चुकाना।

डफाली–पु० १ खंजरी बजाने वाला। २ एक मुसलमान जाति।

डफोळ, डफोळियौ–वि० मूर्ख, नासमझ। —**पण, पणौ**–पु० मूर्खता, नासमझी। —**सख**= डपोरसख'।

डब–स्त्री० द्रव पदार्थ मे किसी वस्तु के डूबने की ध्वनि। –वि० पूर्ण, लबालब।

ड'ब–पु० एक प्रकार की घास।

डबक (क्क)–१ देखो 'डबकौ'। २ देखो 'डुबकी'।

डबकणौ (बौ)–क्रि० १ इधर-उधर भटकना, फिरना। २ पानी मे डूबना, पैठना। ३ द्रव पदार्थ मे कोई वस्तु डुबाना।

डबकाणौ (बौ), डबकावणौ (बौ)–१ इधर-उधर भटकाना, फिराना, घुमाना। २ पानी मे डुबाना, पैठाना। ३ द्रव पदार्थ मे कोई वस्तु डुबाना।

डबकी–देखो 'डुबकी'।

डबकौ–पु० [सं० दब एव दबक.] १ डूबने का भाव। २ तरल पदार्थ मे कोई वस्तु पडने से उत्पन्न ध्वनि। ३ डब-डब ध्वनि। ४ मानसिक आघात। ५ वस्त्रो पर फूल-पत्तियो का छापा।

डबगर–पु० ढोल, नगाडे, तबले आदि पर चमडा मढ़ने का कार्य करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति।

डबड़ी–स्त्री० १ एक लोक गीत विशेष। २ छोटी डिबियो का बच्चो का एक खेल। ३ दीवार मे लगा सुन्दर पत्थर। ४ बडे पात्र का छोटा ढक्कन। ५ तरबूज आदि फलो के बीच से काटा हुआ छोटा खण्ड। ६ आलय के पीछे लगा पत्थर। ७ देखो 'डबी'।

डबडबणौ (बौ)–क्रि० १ अश्रु पूर्ण होना, सजल नेत्र होना। २ छोटे मुह के पात्र को जल में डुबाकर भरते समय डब-डब ध्वनि होना। ३ डमरू बजना।

डबडबाणौ (बौ)–क्रि० १ सजल नेत्र करना। २ छोटे मुह के पात्र को जल मे डुबाना। ३ डमरू बजाना।

डबडबौ–वि० अश्रुपूर्ण, सजल।

डबर–पु० १ आडम्बर, तडक-भडक। २ गंभीर शब्द। ३ बडा ढोल। ४ तम्बू।

डबरौ–पु० १ एक पात्र विशेष। २ पलाश के पत्तो का दोना।

डबाक–पु० १ किसी वस्तु के टपकने की ध्वनि। २ वमन की अवस्था, उबकाई। ३ वमन, कै।

डबाडब–स्त्री० १ वस्तु की अपूर्णता, समाप्ति। २ अव्यवस्था। ३ देखो 'डबोडब'।

डबी–स्त्री० १ ढक्कनदार छोटा पात्र। २ डिबिया। ३ शीशे आदि पर लगने का धातु का ढक्कन।

डबोडब–वि० लबालब, पूर्ण भरा हुआ।

डबोडणौ (बौ), डबोणौ (बौ), डबोवणौ (बौ)–देखो 'डुबाणौ' (बौ)।

डबौ–पु० १ सामान डालने का ढक्कनदार पात्र। २ रेलगाडी की बोगी। ३ बच्चो का एक रोग। ४ पानी का बुदबुदा। ५ वस्त्रो पर फूल-पत्तियो की छपाई। –वि० मूर्ख, नासमझ।

डम–स्त्री० ध्वनि विशेष।

डमकणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना। २ डमरू आदि का बजना। ३ ध्वनि होना।

डमकलौ–पु० वाद्य विशेष।

डमकाडणौ (बौ), डमकाणौ (बौ), डमकावणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना। २ डमरू आदि बजाना। ३ ध्वनि करना।

डमडम–स्त्री० डमरू आदि वाद्यो की ध्वनि।

डमडेर–देखो 'ढमढेर'।

डमडोळणौ (बौ)–क्रि० १ चंचल होना। २ डावाडोल होना।

डमर–पु० [सं०] १ कोलतार। २ डमरू। ३ उपद्रव। ४ शासन संबंधी उपद्रव। ५ शान-शौकत, आडम्बर, ठाट-बाट। ६ देखो 'डबर'।

डमरु (अ,क,ग,य), डमरू–पु० [सं० डमरु] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष। २ शिव का प्रिय वाद्य। ३ कापालिक शैवोका वाद्य यंत्र। ४ बालक। ५ बायें घुटने मे होने वाला क्रोष्टु वात रोग। ६ डमरू के आकार की कोई वस्तु। —**कर**–पु० शिव, महादेव। —**जंत्र**–पु० अर्क निकालने, सिंगरफ का पारा, कर्पूर, नौसादर आदि उडाने का यंत्र। —**धरण, नाथ**–पु० शिव, महादेव। —**मध्य**–पु० जल या स्थल का पतला-संकरा मार्ग।

डमामौ–पु० १ वाद्य विशेष। २ दमामी।

डम्मरी–स्त्री० १ लडाई। २ प्रतिस्पर्धा। –वि० १ बहुत, अधिक। २ भयानक, विकट।

डम्मरु(रू)–देखो 'डमरु'।

डम्माडम्मा–वि० १ भयभीत। २ कंपायमान,

डर–पु० [सं० दर] १ भय, खौफ, त्रास। २ आतंक। ३ अनिष्ट की आशंका। ४ ध्वनि विशेष। ५ मेंढक के बोलने की ध्वनि। ६ संकोच। –वि० सघन, गहरा, काना।

डरकडौ–देखो 'टरडकौ'।
डरकरण–वि० कायर, डरपोक।
डरडौ–पु० बूढा ऊट।
डरणी–स्त्री० भय, त्रास।
डरणौ(बौ), डरपणौ (बौ)–क्रि० १ भय खाना, घबराना त्रसित होना। २ आतकित होना। ३ अनिष्ट की आशका करना। ४ मेढक का बोलना। ५ सकोच करना।
डरपाणौ (बौ), डरपावणौ (बौ)–देखो 'डराणौ' (बौ)।
डरपोक–वि० कायर, भीरु। —**पणौ**–पु० कायरता।
डरमछ–पु० शुभ माना जाने वाला एक प्रकार का घोडा।
डरर–स्त्री० १ जोशीली आवाज। २ मेढक के बोलने की ध्वनि।
डररा'ट–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ मेढक की आवाज। ३ क्रोध-पूर्ण ध्वनि।
डरामणौ–देखो 'डरावणौ'।
डराणौ (बौ)–क्रि० १ भयभीत करना, त्रसित करना। २ आतकित करना। ३ अनिष्ट की सूचना देना। ४ संकोच कराना।
डरावणौ–वि० भयानक, डरावना, खौफनाक।
डरावणौ (बौ)–देखो 'डराणौ (बौ)।
डरू-फरू–वि० भयभीत, शंकित।
डळणौ (बौ)–क्रि० १ गिरना, पडना। २ देखो 'डुळणौ' (बौ)
डळी–स्त्री० १ घोडे की जीन के नीचे रहने वाला गद्दीनुमा उपकरण। २ गुड़ आदि पदार्थो का छोटा खड।
डळौ–पु० १ किसी पदार्थ का बेडौल खण्ड। टुकडा। २ लोदा, पिंड। ३ देखो 'ढळौ'।
डल्लौ–पु० ऊचे पायो की चारपाई।
डवरू–देखो 'डमरू'।
डस–स्त्री० १ तराजू की डाडी के मध्य बाधी जाने वाली डोरी। २ ताले आदि का अवयव। ३ डाह, ईर्ष्या। ४ नेत्र मे होने वाली लाल रेखा। ५ नक्कारा।
डसकौ–देखो 'डुसकौ'।
डसण–पु० [स० दशन] १ दात, दंत। २ दश करने की क्रिया या भाव। ३ देखो 'डसणि'।
डसणि (णी)–स्त्री० १ कटार। २ डसने की क्रिया या भाव।
डसणौ (बौ)–क्रि० [स० दशन] १ सर्पादि जहरीले जतुओ का काटना, दश करना, डसना। २ दातो से काटना, चबाना। ३ डक मारना।
डसा–स्त्री० [स० दष्ट्रा] १ दाढ़, डाढ। २ सिंह के आगे के दात।
डसी–स्त्री० १ कष्ट निवारणार्थ किसी देवस्थान पर, पहनने के वस्त्र की लगाई जाने वाली ध्वजा। धज्जी। २ देखो 'डस'।

डहक–स्त्री० १ नगाडे की ध्वनि। २ आडम्बर, ढोग। ३ कपट, छल। ४ देखो 'डहक्क'।
डहकणौ (बौ)–क्रि० १ नगाडा आदि बजना, ध्वनि होना। २ डमरू बजना। ३ भौचक्का होना, स्तब्ध होना। ४ धोखा खाना, ठगा जाना। ५ बहकना। ६ हसना। ७ मेढक का बोलना। ८ लहलहाना, हराभरा होना। ९ खिलना, प्रफुल्लित होना। १० सुगधित होना, महकना। ११ सतर्क होना, चौकन्ना होना। १२ पक्षियो का मस्ती मे बोलना। १३ मस्ती मे चलना। १४ उमगित होना, उल्लसित होना। १५ रुक-रुक कर रोना, सिसकना।
डहकाणौ–वि० जो चमकाता हो, चमकाने वाला।
डहकाणौ (बौ), डहकावणौ (बौ)–क्रि० १ गुमराह करना, बहकाना। २ भ्रम मे डालना। ३ सशकित करना। ४ नगाडा, डमरू आदि बजाना। ५ भौचक्का करना। ६ धोखा देना, ठगना। ७ खुश करना। ८ हरा-भरा करना। ९ सुगध फैलाना, महकाना। १० सतर्क करना। ११ हंसाना। १२ खिलाना, प्रफुल्लित करना। १३ उमगित करना। १४ सिसकाना।
डहक्क–स्त्री० १ प्रस्फुटन, विकास। २ ध्वनि, आवाज। ३ देखो 'डहक'।
डहक्कणौ (बौ)–देखो 'डहकणौ' (बौ)।
डहक्काणौ (बौ), डहक्कावणौ (बौ)–देखो 'डहकाणौ' (बौ)।
डहचक्क–क्रि०वि० १ निरन्तर, लगातार। २ चिल्लाते हुए।
डहडह–स्त्री० १ हसने की ध्वनि। २ वाद्य ध्वनि।
डहडहणौ (बौ)–क्रि० १ प्रफुल्लित होना, खिलना। २ भयातुर होना, भयभीत होना। ३ प्रसन्न, हर्षित होना। ४ नगाडा, डमरू आदि बजना। ५ लहलहाना, हरा-भरा होना। ६ मेढ़क का बोलना।
डहडहाट–देखो 'डै'डा'ट'।
डहडहाव–पु० हरापन, ताजगी।
डहडहौ–वि० हरा-भरा, प्रफुल्लित, ताजगी युक्त।
डहणौ (बौ)–क्रि० १ सभाले रखना, उठाये हुए रखना। २ स्थापित करना, रखना। ३ धारण करना। ४ पहनना। ५ ग्रहण करना, पकडना। ६ ध्वनि करना, बजाना। ७ आरूढ होना। ८ शोभित होना। ९ होना, बनना। १० सुसज्जित होना, सजना। ११ दुखी होना।
डहर (उ)–पु० [स० दहर] १ बालक (जैन)। २ जानवर का बच्चा। ३ तरुण, युवक (जैन)। ४ छोटा भाई, अनुज। ५ चूहा। ६ शख्त जमीन (मेवात)। ७ देखो 'डैरी'।
डहरी–स्त्री० १ प्रेतिनी, डाकिनी। २ देखो 'डैरी'।
डहरौ–१ देखो 'डहर'। २ देखो 'डैरौ'।
डहलणौ (बौ), डहलाणौ (बौ)–क्रि० हाथी का चिंघाडना।

डहळौ–वि० गदला, मैला ।

डहाणौ (बौ), डहावणौ(बौ)–क्रि० १ निर्मित करना, बनाना । २ शोभित करना । ३ सुसज्जित करना । ४ दु खी करना, सतप्त करना । ५ देखो 'डहणौ' (बौ) ।

डहाल–स्त्री० तलवार ।

डहिकणौ (बौ)–देखो 'डहकणौ' (बौ) ।

डहिडहणौ (बौ)–देखो 'डहडहणौ' (बौ) ।

डहोळौ–पु० १ भय, डर । २ उपद्रव, आदोलन । ३ खलबली, आकुलता । ४ अव्यवस्था । ५ क्षोभ ।

डहोलौ–पु० १ काठ का वडा चम्मच । २ देखो 'डोलौ' ।

डांक, डाकळ–स्त्री० १ सोने चादी के आभूषणो मे लगाया जाने वाला जोड । २ देखो 'डाखळौ' ।

डांकळौ–देखो 'डाखळौ' ।

डाकियौ–देखो 'डाखियौ' ।

डांखणौ (बौ)–देखो 'डाखिणौ' (बौ) ।

डाखरौ–वि० धुंधळा ।

डाखळ, डाखळियौ, डाखळी, डाखळौ–पु० १ डठल । २ तिनका । ३ टहनी आदि का छोटा व पतला टुकडा ।

डांखिणौ (बौ)–क्रि० १ क्रोधित होना । २ आकाश मे विचरण करना, उडना । ३ चोच से कुरेदना ।

डाखियौ–पु० भूखा व क्रुद्ध सिंह । –वि० क्रुद्ध, कुपित ।

डाग, डांगडकी, डागडी–स्त्री० १ लाठी । हाथ में रखने की कोई लकडी । २ खेत या खुली भूमि का आहता । ३ वैलगाडी के पाटो से लगने वाली लकडी । —**रात**–पु० तीर्थादि से लौटकर करावाया जाने वाला रात्रि जागरण ।

डांगड़ियौ–पु० सीरवियो की देवी की पूजा करने वाला साधु ।

डागपटेलाई–स्त्री० १ मारपीट । २ डराने धमकाने की क्रिया । ३ क़िसी को वेवकूफ वनाने की क्रिया ।

डांगर–पु० पशु, मवेशी । –वि० मूर्ख, गवार । —**जत्र**–पु० एक प्रकार की तोप ।

डांगरु (रू)–वि० १ घोपणा करने वाला । २ देखो 'डागर' ।

डागरौ–देखो 'डागर' ।

डागौ–पु० हसिया लगा लवा वास ।

डाचौ–पु० ऊचे पायो का पलग ।

डांजी, डांझी–स्त्री० रेगिस्तान की खुली भूमि जहा पेड पौधे आदि कुछ न हो ।

डाटणौ (बौ)–देखो 'डाटणौ' (वौ) ।

डाड–पु० १ नाव खेने का वल्ला, चप्पू । २ सीधी लकडी, डडा । ३ अकुश का हत्था । ४ देखो डडौ' । –वि० १ मूर्ख, गवार । २ जवरदस्त ।

डाडणौ (बौ)–१ देखो 'डडणौ' (वौ) । २ देखो 'डाडणौ (वौ) ।

डाडहड़ि (ड़ी)–१ देखो 'डड्डाहड' । २ देखो डडौ ।

डाडि–१ देखो 'डाडी' ।

डाडियौ–देखो 'डडियौ' । २ देखो 'डड़ौ' ।

डाडी–स्त्री० [स० दण्डिका] १ पगडडी । २ सकरा व पतला रास्ता । ३ नाक का ऊपरी भाग । ४ तराजू की लकडी, डडी । ५ सीधी लकीर । ६ चम्मच या किसी उपकरण का हत्था, दस्ता । ७ पालकी के डडे ।

डाडीउ–१ देखो 'डाडौ' । २ देखो 'ड़ाडी' ।

डाडीयौ–देखो 'डडियौ' ।

डाडेमीढ–वि० क्रोधी ।

डांडौ–पु० १ फाल्गुन मास के प्रारभ मे रोपा जाने वाला होली का डंडा । २ औजार का हत्था, दस्ता । ३ डडा । ४ पालकी का डडा ।

डाण–पु० [स० दान] १ चौपड आदि का खेल, दाव । २ दाव । ३ कर, टेक्स । ४ दण्ड, जुर्माना, सजा । ५ सिंह, हाथी तथा ऊट की गर्दन के वाल । ६ सिंह, हाथी व ऊंट की गर्दन से झरने वाला मद । ७ गर्व, अभिमान । ८ जोश । ९ जुलूस । १० मचान, मच । ११ खाता, मद । १२ विभाग । १३ मस्ती । १४ उपाय, युक्ति, तरीका । १५ ऐश, आराम, मौज । १६ ऊट की पीठ पर सवारी के लिए कसी जाने वाली गद्दी । १७ घोडे की जीन । १८ छलाग, चौकडी । १९ डग, कदम । २० सीमा, हद । २१ सजावट । २२ युद्ध के लिए सेना की तैयारी । २३ पारी, वारी । –वि० १ स्वस्थ, निरोग । २ समान, तुल्य । ३ तीव्र, तेज ।

डाणणौ (बौ)–क्रि० ऊट की पीठ पर गद्दी कसना ।

डाणबळरोजगार–पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।

डाणहूलौ–वि० वीर, योद्धा ।

डांणी–वि० लगान वसूल करने वाला ।

डाणे, (णै)–क्रि०वि० आनन्द से, मौज से ।

डाणौ–पु० कूए पर लगी शिला ।

डाफर–स्त्री० १ वाह्याडंबर, दिखावटी ठाट । २ वातचक्र, आधी । ३ अत्यन्त ठडी हवा । ४ शीतकाल की तेज वर्फीली हवा ।

डांफी–स्त्री० १ शीतल वायु । २ देखो 'डाफी' ।

डाब–देखो 'डाम' ।

डांवियौ–पु० एक काटेदार वृक्ष विशेप ।

डाभणौ (बौ)–देखो 'डामणौ' (वौ) ।

डाम–पु० १ तपी हुई सलाई से किसी प्राणी के शरीर पर लगाया जाने वाला दाग, अग्नि-दग्ध । २ इस प्रकार दग्ध करने से वनने वाला चिह्न ।

डांमडौ–पु० १ मचान । २ देखो 'डाम' ।

डांमणौ (बौ)–क्रि० अग्नि दग्ध करना, दाग लगाना ।

डामर–वि० [स० डामर] १ भयानक, भयकर । २ विप्लवकारी, उपद्रवी । ३ मनोहर, सुन्दर । –पु० १ कोलाहल, हल्ला । २ उपद्रव । ३ चीत्कार । ४ कोलतार । ५ काति, चमक । ६ भव्यता । ७ वैभव, शान । ८ ४९ क्षेत्रपालो मे से २९ वा क्षेत्रपाल । ९ एक प्रकार का तत्र । १० डमरू नामक वाद्य । ११ इस वाद्य की ध्वनि ।

डामरी–स्त्री० १ अवेरा । २ धुधलापन ।

डांमाणौ (बौ), डामावणौ (बौ)–क्रि० अग्नि दग्ध कराना, दाग लगवाना ।

डालवणौ (बौ)–क्रि० मेढक का बोलना ।

डाव–१ देखो 'डाम' । २ देखो 'दाव' ।

डांवणौ (बौ)–देखो 'डामणौ' (बौ) ।

डावाडोळ, डावाडोळ–वि० १ हिलने-डुलने वाला, अस्थिर । २ झूलता हुआ । ३ चलचित्त, भ्रमित । ४ विचलित । ५ अनिश्चित, अव्यवस्थित ।

डांस, डासर–पु० [स० दश] १ बडा मच्छर । २ पशुओ को काटने वाली एक मक्खी, पतंगा । –वि० १ जवरदस्त, जोरदार । २ बहुश्रुत, वयोवृद्ध ।

डासरियौ–पु० १ मझोले कद का एक पहाडी वृक्ष व उसका फल । २ देखो 'डासर' ।

डासू–पु० दश ।

डा–पु० १ सूर्य । २ भूत । ३ समूह । –स्त्री० ४ पृथ्वी । ५ उमा । ६ रमा । ७ डायन ।

डा'–१ देखो 'आवडी' । २ देखो 'डाह' । ३ देखो 'डाव' ।

डाइआळ–देखो 'डाइयाळ' ।

डाइचउ, डाइचौ–देखो 'दायजौ' ।

डाइण, डाइणि, डाइणी, डाइन–देखो 'डायण' ।

डाइयाळ–वि० १ बायी तरफ चलने वाला । २ कुछ बडा ।

डाई–स्त्री० १ वारी, पारी, नम्बर, क्रम । २ बच्चो के खेल मे हार की दशा । ३ देखो 'डाकी' । –वि० सीधी-सादी, विनम्र ।

डाउडौ–देखो 'डावडौ' ।

डाक–स्त्री० १ ध्वनि, आवाज । २ वाद्यो की ध्वनि । ३ रणवाद्य । ४ विजयी दुंदुभि, नगाडा । ५ शिव का डमरू । ६ युद्ध प्रिय देवता का बाजा । ७ उल्लू की आवाज । ८ तग लेकिन लम्वा भू-भाग । ९ हाथी को वश मे करने का छोटा भाला । १० हाथी के शरीर मे उक्त भाले का घाव । ११ डग, कदम । १२ डाकुओ का दल । १३ पत्र, चिट्ठी । १४ चिट्ठियो-पत्रों को यथा-स्थान भेजने की व्यवस्था करने वाला विभाग । १५ सरकारी पत्र, चिट्ठी । १६ डाक लेजाने वाली व बडे स्टेशनो पर ही रुकने वाली द्रुतगामी गाडी । १७ दूरी, फासला । १८ हाथियो का हैजा रोग । १९ शिव का गण-समूह । २० देखो 'डाकौ' । —**खरच**–पु० पत्र या किसी वस्तु को डाक द्वारा भेजने का खर्च । —**खानौ**–पु० डाक विभाग । —**गाड़ी**–स्त्री० डाक ले जाने वाली द्रुतगामी गाडी । —**घर**='डाकखानौ' । —**बंगळौ**–पु० पर्यटको के ठहरने का सरकारी आवास गृह ।

डाकचूक–वि० घवराया हुआ, डावाडोल ।

डाकडमाळ (डमाळी)–स्त्री० १ आडम्वर, ढोग दिखावा । २ एक प्रकार की लता ।

डाकण, डाकणि, (णी)–स्त्री० [स० डाकिनी] १ बच्चो को नजर लगाने वाली स्त्री, डायन । २ चूडैल, प्रेतिनी । ३ राक्षसी । ४ काली देवी की एक सहचरी । —**घोड़ौ**–पु० लक्कडवग्घा ।

डाकणौ (बौ)–क्रि० १ कूदना, फादना । २ कूद कर पार करना, लाघना । ३ छलाग लगाना । ४ दुधारू मवेशी का दूध देना वद कर देना ।

डाकदार–पु० १ मस्त हाथी को कावू मे करने वाला महावत । २ सरकारी डाक ले जाने वाला कर्मचारी । ३ डाकिया, चिट्ठी रसा ।

डाकमुसी–पु० किसी डाक घर का प्रभारी ।

डाकर–देखो 'डकर' ।

डाकरडोर–पु० भय, डर ।

डाकरणौ (बौ)–क्रि० १ सिंह या सूअर का क्रोध मे बोलना, गर्जना । २ डाटना, फटकारना ।

डाकळी–स्त्री० एक प्रकार का वाद्य ।

डाकवेल–स्त्री० नीव खोदने या क्यारी वनाने के लिए वनाई जाने वाली सीधी रेखा ।

डाकापाचम–स्त्री० फाल्गुण कृष्णा पंचमी की तिथि ।

डाकाबध–वि० १ जिसके यहा नगारे-निशान बजते रहते हो । २ योद्धा, वीर ।

डाकिणी (नि, नी)–देखो 'डाकण' ।

डाकियौ–पु० चिट्ठी रसा, पोस्टमेन ।

डाकी, डाकीड़–वि० (स्त्री० डाकण) १ बच्चो को नजर लगाने वाला । २ अधिक खाने वाला, पेटू । ३ महान् शक्तिशाली, जवरदस्त । ४ भयानक डील-डौल वाला । ५ नरभक्षी, असुर, दैत्य । ६ दुष्ट, आततायी । ७ वीर, बहादुर । –स्त्री० १ वृद्ध मादा ऊट । २ सोलकी वश की एक शाखा ।

डाकू–पु० १ लुटेरा, धाडायत । २ पेटू ।

डाकोत, डाकोतियौ–पु० 'डाक' नामक ज्योतिषी के वशजो की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

डाको–पु० १ लुटेरो का आक्रमण, धाडा, लूट का कार्य। २ भय, आतंक। ३ ढोल, नगाडा आदि बजाने का डंडा। ४ देखो 'डंको'। ५ देखो 'डागौ'।

डाग–स्त्री० १ वृद्ध मादा ऊट। २ टहनी, शाखा, डाली। ३ साग, भाजी, तरकारी। (जैन)

डागड़, डागडियौ, डागड़ो–देखो 'डागौ'।

डागळ–वि० १ जो आकार मे बडा हो। २ देखो 'डागळौ'।

डागळियौ- देखो 'डागळौ'।

डागळी–स्त्री० १ बैलगाडी का थाटा। २ देखो डागळे'। ३ देखो 'डागळौ'।

डागळे (ळै)–क्रि० वि० छत पर।

डागळौ–पु० छत, मकान के ऊपर का आगन।

डागाळ–पु० एक प्रकार का भाला।

डाच–देखो 'डाचौ'।

डाचकौ–पु० मिचली, मतली, ओकाई।

डाची–पु० मादा, ऊट।

डाचौ–पु० १ मुंह, मुख। २ बडा ग्रास। ३ मुह से काटने की क्रिया। ४ मुह से काटने का निशान।

डाट–स्त्री० १ घुडकी, क्रोध पूर्वक फटकार। २ रोक। ३ शीशी आदि के मुह मे कुछ फसा कर दिया जाने वाला ढक्कन, कार्क। ४ दबाव। ५ शासन। ६ देखो 'डाटौ'।

डाटउ–देखो 'डाटौ'।

डाटकिया–स्त्री० घोडो की एक जाति।

डाटकियौ–पु० एक जाति विशेष का घोडा।

डाटणौ (बौ)–क्रि० १ फटकारना, प्रताडना देना, डाटना। २ क्रोध पूर्ण स्वर मे बोलना। ३ गाडना। ४ दबाना, दबा कर रखना। ५ बद करना, ढकना। ६ छेद या मुह बद करना, फसाना। ७ किसी वस्तु को भिडाकर ठेलना। ८ खूब पेट भर खाना, कसकर खाना। ९ ठाट से पहनना।

डाटी–देखो 'डाट'।

डाटौ–पु० १ शीशी आदि को मुह या किसी छेद को बद करने के लिये फसाया जाने वाल ढक्कन, डाट। २ रोक। ३ मस्तक।

डाड, डाडडी–स्त्री० [स० दंष्ट्रा] १ चबाकर खाने वाला बडा दात, दाढ। २ रहट मे लगने वाला एक उपकरण। ३ रुदन, विलाप। ४ क्रूर दृष्टि।

डाडणौ (बौ)–क्रि० १ जोर मे रोना, गला फाडकर रोना, कूकना। २ चिल्लाना।

डाडर, डाडरौ–पु० १ वक्षस्थल, सीना। २ पीठ। ३ मेढक।

डाढाळ (ळी)–देखो 'डाढाळी'।

डाढाळौ–देखो 'डाढाळौ'।

डाडी–देखो 'डाढी'।

डाढ (डी)–देखो 'डाड'।

डाढ़णौ (बौ)–देखो 'डाडणौ (बौ)'।

डाढ़वाळ, डाढ़ाळ, डाढ़ाळी–स्त्री० १ देवी, दुर्गा, शक्ति। २ वह स्त्री जिसके चिबुक पर दाढी हो। ३ बडी-बडी दाढो वाली कोई मादा।

डाढ़ाळौ–पु० १ वराह अवतार। २ सूअर, शूकर। ३ सिंह; शेर। ४ बडी-बडी डाढो वाला प्राणी। ५ यवन, मुसलमान।

डाढी–स्त्री० १ ठोडी, चिबुक। २ चिबुक पर के बाल, हजामत। ३ चिबुक के बाल काटने की क्रिया।

डाढ़ेराव–वि० बडे-बडे दातो वाला।

डाढ़्याळी–देखो 'डाढाली'।

डाल्कार–पु० डमरू की ध्वनि। शब्द।

डाफर–देखो 'डाफर'।

डाफळ–वि० १ छितराया हुआ। २ बडा।

डाफी–स्त्री० १ मति, बुद्धि। २ अति शीघ्रता से पानी पीने से पेट मे बनने वाला वायु का गोला।

डाफौ–पु० चक्कर, व्यर्थ की भटकन।

डाब, डाबड़ी–पु० [स० दर्भ] १ कुश जाति की घास, कुश। २ बन्दूक मे लगा चमडे का तस्मा। ३ देखो 'दाव'।

डाबड़ौ–पु० १ रहट का घरा। २ देखो 'डाव'।

डाबर–पु० १ आखो का सौन्दर्य। २ बडे व गोल नेत्र। ३ छोटा तालाब, पोखर।

डाभ–देखो 'डाब'।

डायचौ- देखो 'दायजौ'।

डायजावाळ–पु० दहेज मे दिया हुआ व्यक्ति या सामान।

डायजौ–देखो 'दायजौ'।

डायण, (णि, णी, नि, नी)–स्त्री० १ एक प्रकार की लता। २ देखो 'डाकण'।

डायल–देखो 'डाहल'।

डायलौ–वि० (स्त्री० डायली) १ जबरदस्त, जोरदार। २ समर्थ। ३ देखो 'डावौ'।

डाया–स्त्री० बैलगाडी के अग्रभाग मे लटकने वाली दो लकडिया।

डायौ–वि० [स० दक्ष] (स्त्री० डाई, डायी) १ चतुर, दक्ष, समझदार। २ छटा हुआ, धूर्त, चालाक। ३ सीधा, सरल, सहज। ४ कुछ बडा। ५ बाया।

डार (ड), डारड़ियौ (डौ)–पु० १ झुण्ड, समूह। २ पंक्ति, अवली। ३ दल, टोली।

डारण–वि० १ योद्धा, वीर। २ शक्तिशाली, बलवान जबरदस्त। ३ दीर्घकाय, भीमकाय।

डारणौ (बौ)–क्रि० १ भयभीत करना, डराना । २ देखो 'डालणौ' (बौ) ।

डारपत, (पति, पतौ) पु० सूअर, शूकर ।

डारो–पु० १ सूअर । २ देखो 'डार' । ३ देखो 'डारण' ।

डाळ (ल)–स्त्री० १ तलवार की मूठ के ऊपर का भाग । २ तलवार का फल । ३ दरार, शिगाफ । ४ द्वार पर कमान की तरह लगे दो पत्थर । ५ शाखा, टहनी ।

डालणौ (बौ)–क्रि० १ किसी मे कुछ डालना, घुसाना, गिराना, मिलाना । २ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैलाना । ३ पहनना ।

डाळाअग–पु० केवट, नाविक ।

डाळामाथौ–पु० सिंह, शेर ।

डाळि, डाळी–स्त्री० वृक्ष आदि की शाखा, टहनी ।

डाळौ–पु० [स० दार] वृक्ष आदि की बडी शाखा ।

डालो–पु० [स० डल्ल] १ वास की खपचियो का वडा टोकरा, डलिया । २ ट्रक के पीछे का भाग, जहा सामान भरा जाता है ।

डाव–पु० १ नृत्य, नाच । २ एक बार मे किया जाने वाला नृत्य । ३ देखो 'दाव' ।

डावडियौ–देखो 'डावडौ' ।

डावडी–स्त्री० १ पुत्री, वेटी । २ कन्या, वालिका । ३ दासी, सेविका ।

डावडौ–पु० (स्त्री० डावडी) १ वालक, लडका । २ पुत्र, वेटा ।

डावरी–देखो 'डावडी' ।

डावरौ–देखो 'डावडौ' ।

डावलियौ, डावलौ–वि० १ वायें हाथ से अधिक कार्य करने वाला । २ देखो 'डावौ' ।

डावांडोळ, डावाडोळ–देखो 'डावाडोळ' ।

डावु, डावू, डावौ–वि०[स० वाम](स्त्री०डावी)१ वाया, वाम । २ प्रतिकूल, विरुद्ध । ३ उल्टा । ४ देखो 'डायौ' । –पु० १ वाया हाथ । २ वाया अग ।

डाह–स्त्री० [स० द'ह] ईर्ष्या, द्वेष, जलन ।

डाहणौ (बौ)–क्रि० धारण करना, पहनना ।

डाहर–पु० एक जाति विशेष ।

डाहळ–स्त्री० १ एक वाद्य विशेष । २ देखो 'डाळौ' ।

डाहल–पु० [सं०] १ शिशुपाल । २ एक देश । ३ इस देश के अधिवासी । ४ देखो 'डाहलौ' ।

डाहळौ–देखो 'डाळौ' ।

डाहलौ–वि० (स्त्री० डाहली) १ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु । २ देखो 'डायौ' । ३ देखो 'डावौ' । ४ देखो 'डाहल' ।

डाहापणौ–पु० चतुरता, दक्षता, सरलता, सीधापन ।

डाहिणि (णी)–स्त्री० छत्तीस प्रकार के शस्त्रो मे से एक ।

डाही–देखो 'डाई' ।

डाहुउ–पु० एक देश का नाम ।

डाहुलियौ, डाहुलौ–देखो 'डायलौ' ।

डाहूआर–देखो डाइयाळ' ।

डाहेरौ, डाहौ–देखो 'डायौ' । (स्त्री० डाही) ।

डिंगळ–स्त्री० राजस्थान या मरुप्रदेश की एक प्राचीन काव्य भाषा ।

डिंगळियौ, डिंगळ्यौ–वि० डिंगल का जानकार, 'डिंगल' का पडित ।

डिंडिम, डिंडिम, (मि, मी)–स्त्री० [स० दु दुभी] एक प्रकार का वाद्य ।

डिंडीर–पु० फेन, झाग ।

डिंब, डिंभ, डिंभक–पु० [स०] १ पुत्र, वेटा । २ युद्ध, लडाई । ३ जानवर का वच्चा ।

डिंभककरास्त्र–पु० एक प्रकार का अस्त्र ।

डिकामाळी–स्त्री० दक्षिण या मध्य भारत मे पाया जाने वाला वृक्ष ।

डिगबर, डिगंमर–देखो 'दिगवर' ।

डिगणौ (बौ)–क्रि० १ खडे या चलते हुए का सतुलन बिगडना । २ सतुलन बिगडने से गिर पडना । ३ हिलना-डुलना । ४ डगमगाना । ५ स्थान छोडना, हटना । ६ नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना । ७ प्रण पर दृढ न रहना, उसूलों से गिरना । ८ विचलित होना । ९ चारित्रिक कमजोरी आना ।

डिगपाळ–देखो 'दिगपाल' ।

डिगमिग–देखो 'डगमग' ।

डिगमिगाहट–देखो 'डगमगाहट' ।

डिगर–पु० [स० डिंगर] नौकर, चाकर, परिचायक ।

डिगाणौ (बौ), डिगावणौ (बौ)–क्रि० १ खडे या चलते हुए का संतुलन बिगाडना । २ नीचे गिराना । ३ धक्का या टक्कर लगाना । ४ हिलाना-डुलाना । ५ डगमगाना । ६ स्थान छुडाना, हटाना । ७ नीचे की ओर प्रवृत्त करना, झुकाना । ८ प्रण पर दृढ न रहने देना, उसूलो से गिराना । ९ विचलित करना । १० चरित्र से गिराना ।

डिचकारी–देखो 'टिचकारी' ।

डिचडिच–देखो 'टिचटिच' ।

डिढ–देखो 'द्रढ़' ।

डिमर–देखो 'डमरू' ।

डिलि–देखो 'डील' ।

डिल्लौ–पु० १ एक मात्रिक छद विशेष । २ एक वर्णिक छद विशेष ।

डींग–स्त्री० शेखी, गप्प । अतिशयोक्ति पूर्ण वात ।
डींगड़–देखो 'डीगौ' ।
डींगर, डींगरौ–पु० १ एक शिरे मे छेद कर या रस्सी वाध कर वदमाश पशु के गले मे लटकायी जाने वाली लकडी । २ मूर्ख प्राणी ।
डींगळ–देखो 'डिंगळ' ।
डींगळियौ–देखो 'डिंगळियौ' ।
डींगलौ–देखो 'ठींगलौ' ।
डींगाड़, डींगार–देखो 'डीगाड' ।
डींगोड, डींगोड़ियौ, डींगोडौ–देखो 'डीगौ' ।
डींगौ–पु० १लकडी का ठूंठा । २ मूर्ख व्यक्ति । ३ देखो 'डीगौ' ।
डींघड़, डींघल, डींघोड़–देखो 'डीगौ' ।
डींच–पु० पत्ती या फूल के पीछे का डंठल ।
डींडू–पु० जल मे रहने वाला सर्प ।
डींडोळियौ–१देखो 'डंडोळौ' । २ देखो 'डडियौ' ।
डींबु (बू), डींभू–पु० भिंड नामक कीट,ततैया, वरै ।
डींया–स्त्री० [सं० दृष्टि] १ नजर, दृष्टि । २ नेत्र, नयन ।
डी–पु० १ आसन । २ आमला । ३ आकाश । ४ समुद्र । ५ फेन, झाग । –स्त्री० ६ हरीतकी । ७ जजीर ।
डीकर, डीकरडी–देखो 'डीकरी' ।
डीकरड़ौ, डीकरियौ–देखो 'डीकरौ' ।
डीकरी–स्त्री० १ पुत्री, वेटी । २ लडकी, वालिका ।
डीकरौ–पु० [सं० दीप्तिकर] (स्त्री० डीकरी) १ पुत्र, वेटा । २ लडका, वालक ।
डीकामळी–स्त्री० गाडी ।
डीगड़, डीगड़ियौ, डीगड़ो, डीगळ, डीगलियौ, डीगलौ–देखो डीगौ' ।
डीगाड़, डीगार–पु० रहट मे लगने का लकडी का एक डडा ।
डीगोड़, डीगोडियौ, डीगोड़ौ–देखो 'डीगौ' ।
डीगौ, डीघड़, डीघड़ियौ डीघड़ौ,डीघल, डीघलियौ,डीघलौ,डीघोड़, डीघोडियौ, डीघोड़ौ, डीघौ–वि० [सं० दीर्घ] (स्त्री० डीगी) ऊचे या लवे कद का, लवा ।
डीठ–देखो 'दीठ' ।
डीबसियौ–देखो 'ढीवसियौ' ।
डीबौ, डीभू, डीमौ, डीम, डीमौ–पु० १ मानसिक कष्ट, आघात, सदमा । २ ईर्ष्या, डाह, जलन । ३ फोडा ।
डीर–पु० वृक्षो की मौर, वोर । मजरी ।
डीरा–स्त्री० ढोलियो की एक शाखा ।
डील–पु० १ शरीर, देह, तन । २ व्यक्ति, मनुष्य, प्राणी । ३ योनि, भग । —**भागौ**–पु० व्यापार या कृषि मे श्रम के वदले मिलने वाला भाग । —**डौल**–पु० शरीर का आकार, ढाचा, वनावट, विस्तार । —**वड़ी**= हाड़-वडी' ।
डीलायती, डीलायतौ–वि० १ शरीर या देह सवधी । २ भीमकाय, दीर्घकाय ।
डीलि–देखो 'डील' ।
डीली–देखो 'दिल्ली' ।
डीलोडील–पु० अग-उपाग ।
डीवा पाणत–पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।
डीसा-मूळी–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती ।
डुंगर-जीवी–देखो 'डूंगरजीवी' ।
डुंगरि (री)–देखो 'डूंगरी' ।
डुंडि, (डी)–देखो 'डूंडी' ।
डुंब, डुंबड़यौ, डुंबड़ौ–देखो 'डूम' ।
डुंविलय–स्त्री० एक अनार्य जाति एव इस जाति का व्यक्ति ।
डुंहकलि, (लो)–स्त्री० एक वनस्पती विशेष ।
डु–पु० १ रक्त । २ स्तभ । ३ समुद्र । ४ कवूतर । –स्त्री० ५ पार्वती । ६ शक्ति । ७ लता । ८ आख ।
डुकलियौ, डुकलौ–पु० जीर्ण-शीर्ण या ढीली-ढाली खाट ।
डुकौ, डुक्कौ–पु० १ मुक्का, मुष्ठिका । २ मुष्ठिका प्रहार ।
डुखलियौ, डुखलौ–देखो 'डुकलौ' ।
डुगडुगाणौ (बौ), डुगडुगावणौ (बौ)–क्रि० डुगडुगी वजाना ।
डुगडुगी, डुगी–स्त्री० चमडा मढा एक छोटा वाद्य, डुग्गी ।
डुडंव, डुडद, डुडियंद–पु० सूर्य, रवि ।
डुपटी–देखो 'दुपटी' ।
डुपटौ, डुपट्टौ–देखो 'दुपट्टौ' ।
डुबकी–स्त्री० १ पानी मे पैठने की क्रिया, गोता । २ अवगाहन ।
डुबाणौ (बौ), डुबावणौ (बौ), डुबोणौ (बौ), डुबोवणौ (बौ)–क्रि० १ पानी आदि द्रव पदार्थ मे पैठा देना, घुसाना, गोता लगवाना । २ गहरे पानी मे ऐसे घुसाना कि सही सलामत वापस न निकल सके । ३ भिगोना, तरवतर करना । ४ नष्ट करना, वरवाद करना । ५ लीन या मग्न करना । ६ गलत हाथो मे दे देना । गलत जगह रखना । गलत जगह भेजना । ७ मिटाना ।
डुरकी–स्त्री० करुणरस प्रधान एक गीत विशेष ।
डुरगलियौ, डुरगली, डुरगलौ–पु० स्त्रियो का कर्णाभूषण विशेष ।
डुळणौ (बौ)–क्रि० १ विचलित होना, अस्थिरचित्त होना २ हिलना-डुलना, डोलना । ३ तरसना, लालायित होना ।
डुलणौ (बौ)–देखो 'डोलणौ' (बौ) ।
डुलहर–देखो 'डोलर' ।

डुळाणौ (बौ), डुळावणौ (बौ)–क्रि० १ विचलित करना, अस्थिरचित्त करना। २ हिलाना-डुलाना। ३ लालायित करना। तरसाना।
डुलाणौ (बौ), डुलावणौ (बौ)–देखो 'डोलाणौ' (बौ)।
डुळियौ–वि० विचलित, अधीर, आतुर, अस्थिर।
डुलीसुत–पु० कछुआ।
डुसकणौ (बौ), डुसकाणौ (बौ), डुसकावणौ (बौ)–क्रि० १ सुबक-सुबक कर रोना, सिसकना। २ हिचकिया भरना।
डुसकी डुसकौ, डुसक्यौ–पु० १ सुबक कर रोने की क्रिया, सिसकी, हिचकी। २ रुकती हुई लम्बी सास। ३ मरणासन्न अवस्था मे आने वाली हिचकी।
डूख डूंखळ, डूंखळियौ, डूंखळी, डूंखळौ–पु० १ पौधे का सूखा डठल। २ सूखी जड।
डूगर (डौ)–पु० [स० तुग] पहाड, पर्वत। —**जीवौ**–वि० पर्वत के समान दीर्घायु वाला। पर्वतो मे रहने वाला।
डूंगरडी, डूगरि–देखो 'डूगरी'।
डूगरियौ–देखो 'डूगर'।
डूंगरी–स्त्री० छोटी पहाडी, पहाड की चोटी।
डूगरेची–स्त्री० आवड देवी का एक नाम।
डूंगळौ–पु० एक प्रकार का घास।
डूंगी–वि० गहरी, अधिक गहरी। –पु० तबले का वाया।
डूंच–१ देखो 'डूचकौ'। २ देखो 'डूज'।
डूंचकौ–पु० १ डठल। २ पौधा कटने के बाद पीछे रहने वाला भाग। २ देखो 'डाचकौ'।
डूंचणौ (बौ)–क्रि० १ ज्वार, बाजरे आदि की फसल की बालें तोडना। २ काटना। ३ इकट्ठा करना। ४ डाट, लगाना, रोकना।
डूचियो–१ देखो 'डूचकौ'। २ देखो 'डूजौ'।
डूचोड़, डूचौ–पु० १ खेत मे बना मचान। २ देखो 'डूजौ'।
डूज–पु० १ तूफान, अंधड, तेज हवा। २ देखो 'डूजौ'।
डूजियौ, डूंजौ–पु० १ शीशी आदि के संकरे मुह या छेद को बद करने के लिए फसाई जाने वाली वस्तु, कार्क, डाट। २ श्वास अवरोध की अवस्था, वेहोशी। ३ खाते समय गले मे ग्रास अटकने से होने वाला कष्ट।
डूंड–पु० १ तेज वायु के साथ उडने वाली गर्द। २ वात चक्र।
डूंडळी–स्त्री० १ बिना सीग की गाय या भैंस। २ देखो 'डूडी'।
डूंडि, डूडी–स्त्री० १ नगाडा। २ नगाडा आदि वाद्य बजा कर गली-गली मे दी जाने वाली सूचना। ३ नाव।
डूंडौ–पु० १ नाव, नौका। २ वृद्ध भैंस।
डूव डूवडियौ, डूवडौ–देखो 'डूम'।
डूबी–देखो 'डूमी'।
डूमो–पु० रहट को उल्टा घूमने से रोकने वाला उपकरण।
डूकण, डूकणियौ, डूकणौ–पु० कूल्हे की हड्डी जो रीढ से जुडी रहती है।
डूकळ, डूकळियौ, डूकळौ–पु० खलिहान मे पडा वह भूसा जिसमे थोडा-थोडा अनाज हो।
डूगलौ–पु० [स०दोल दोलिका] एक विशिष्ट प्रकार की पालकी।
डूचकौ–१ देखो 'डूचकौ'। २ देखो 'ठोली'।
डूचणौ (बौ)–देखो 'डूचणौ' (बौ)।
डूचियौ, डूचोड़, डूचौ–देखो 'डूजौ'।
डूव, डूवड़ियौ, डूवडौ–देखो 'डूम'।
डूबणौ (बौ)–क्रि० १ पानी आदि तरल पदार्थ मे घुस जाना, वूडना, पैठना। २ गहरे पानी मे वूड कर मरना। ३ विचार मग्न या लीन होना। ४ किसी कार्य मे पूर्ण मनोयोग से लगना। ५ बुरे स्थान पर चला जाना। ६ गलत हाथो मे पड जाना। ७ वरवाद या नष्ट होना। विगडना। ८ मिटना। ९ हानि या घाटा लगना। १० ऋण या व्यवसाय का धन प्राप्त न होना। ११ सूर्य, ग्रहो आदि का अस्त होना। १२ भीगना।
डूबांण–स्त्री० १ वर्षा का पानी रुकने की नीची भूमि। २ गहराई, गभीरता। ३ डूबना क्रिया या भाव।
डूवोड़ौ–वि० डूवाहुआ, भीगा हुआ, लीन, मग्न, अस्त।
डूम, डूमड, डूमल, डूमलियौ, डूमलौ–पु० [स० डम] (स्त्री० डूमण, डूमणी) १ एक जाति व इस जाति का व्यक्ति, डोम। २ ढोली।
डूमी–पु० गौर-वर्ण व काले मुह का भयकर विषैला सर्प।
डूर–पु० १ वाजरी का दाना निकलने के वाद वचा हुआ फूमदा तुतडा। २ देखो 'दूर'।
डूळ–पु० वडी हड्डी।
डूल–स्त्री०१ भ्रान्ति, गलतफहमी, भ्रम। २ भूमि पर लिया जाने वाला एक कर्ज। –वि० चलायमान, डोलता हुआ, चलित।
डूलाणौ (बौ), डूलावणौ (बौ)–देखो 'डोलाणौ' (बौ)।
डे–पु० १ धर्मराज। २ धर्म। ३ मृग। ४ जिह्वा, वाणी।
डेग, डेगड, डेगडियौ, डेगडी, डेगड़ौ, डेगचौ–१ देखो 'देगडौ'। २ देखो 'देगचौ'।
डेडण (णी)–स्त्री० ढाढी जाति की स्त्री।
डेडर, डेडरडौ, डेडरियौ, डेडरौ–पु० [स० दर्दुर] (स्त्री० डेडरी) १ मेढक, दादुर। २ मेढक की तरह आवाज करने वाला एक मिट्टी का खिलौना। ३ दोहे छन्द का एक भेद।
डेडौ–पु० आख, आख का डोला।
डेणकी–स्त्री० घडियाल के टूटने पर बचा हुआ नीचे का भाग।
डेर–स्त्री० १ एक वाद्य विशेष। २ देखो 'डेरो'।
डेरउ, डेरकियौ, डेरड़, डेरडौ, डेरियौ, डेरौ–पु० १ धन, द्रव्य। २ ठहरने के लिए फैलाया हुआ सामान। ३ यात्रा मे साथ

रहने वाला सामान । ४ यात्रा के बीच का विश्राम । ५ प्रवास मे रहते समय ठहरने का स्थान । ६ निवास स्थान । ७ किसी सामत का निवास स्थान । ८ तवू शामियाना, खेमा । ९ कैंप, अस्थाई आवास । १० नाच-गाने वालो की मडली । ११ फौज का पडाव । १२ दल ।

डेळ–वि० १ पथ भ्रष्ट, भ्रष्ट । २ सुस्त ।

डेलटो–पु० १ वह स्थान जहा नदी समुद्र मे गिरती है । नदी का मुहाना । २ इस स्थान पर वने रेत आदि के टीबे जो नदी को कई धारा मे विभक्त करते हैं ।

डेळही, डेळी, डेल्ही–स्त्री० १ नियत । २ देखो 'देहरी' ।

डेवणौ (बौ)–देखो 'देणौ' (वौ) ।

डेण–वि० अति वृद्ध, बूढा सठिया वुद्धि का ।

डैं–पु० १ वृक्ष । २ कान । ३ एक प्रकार का घास, कास । –स्त्री० ४ कोयल । –वि० सफेद, श्वेत ।

डैंकाणौ (बौ), डैंकावणौ (बौ)–१ देखो 'डहकाणौ' (वौ) । २ देखो 'डकाणौ' (वौ) ।

डैंडाट–पु० १ हरापन, ताजगी । २ गाय, भैंस आदि के बच्चे की चिल्लाहट ।

डैंढो–देखो 'डौढो' ।

डैंण–देखो 'डैंण' ।

डैंर–१ देखो 'डेरो' । २ देखो 'डैरो' ।

डैंरी–स्त्री० १ काली व चिकनी मिट्टी वाली भराव की कृषि भूमि । २ आस-पास के धरातल से कुछ नीची भूमि । ३ जगल, वन । ४ देखो 'डैरौ' । —**माता**–स्त्री० गुर्जरो की एक देवी विशेष ।

डैंरु, (रू रू)–पु० १ डमरू नामक एक वाद्य । २ बायें घुटने का एक वात रोग, घुटने का क्रोष्टुशीर्ष ।

डैंरो–पु० धातु का चौडे मुह का गोल-पात्र जिसके खडा दस्ता लगा हो ।

डैंळको–पु० मानसिक आघात, दु ख ।

डैंलाण–पु० द्वार के ऊपर बना खिडकी व झरोखे वाला कक्ष ।

डैंहकाणौ (बौ), डैंहकावणौ(बौ)–देखो 'डहकावणौ' (वौ) ।

डो–पु० १ पाप । –स्त्री० २ प्रौढा । –वि० १ पापी । २ मुग्ध ।

डोइलउ, डोइलियौ–देखो 'डोई' ।

डोइलौ, डोई, डोईलौ–पु० १ पात्र विशेष । २ देखो 'डोई' । –स्त्री० [स० दारुहस्त] ३ काष्ठ का बना वडा चम्मच ।

डोक–पु० १ घोडे, गधे आदि के लोटने से भूमि पर बना चिह्न । २ देखो 'डोकौ' ।

डोकर (ड़ो)–१ देखो 'डोकरो' । २ देखो 'डोकरी' ।

डोकरड़ी, डोकरि, डोकरी–वि० वृद्ध, वृद्धा । बूढी । –स्त्री० १ वृद्ध स्त्री । २ अधिक पानी मे रहने से हाथ की अ गुली मे पडने वाली झुर्री ।

डोकरियौ, डोकरू, डोकरौ–पु० [स० डोलत्कर·] वृद्ध पुरुष, बूढा आदमी । –वि० (स्त्री० डोकरडी, डोकरी) वृद्ध, बूढा ।

डोकी, डोकौ–पु० १ ज्वार, वाजरी के पौधे का डठल, गोचा । २ गाय व भैंस के स्तनो की प्रसव के पूर्व की अवस्था ।

डोगौ–पु० मधुर स्वर वाला एक तार वाद्य विशेष ।

डोटकिया–स्त्री० घोडो की एक जाति विशेष ।

डोटी–स्त्री० ओढने का वस्त्र, चादर ।

डोड–पु० [सं० द्रोण] १ एक प्रकार का वडा कौआ । २ पवार वश की एक शाखा । ३ देखो 'डोडो' । ४ देखो 'डौड' ।

डोड खुरकीय–स्त्री० घोडे की एक चाल विशेष ।

डोडकी–स्त्री० एक प्रकार की लता ।

डोडर–स्त्री० कमर, कटि ।

डोडळ–स्त्री० सूजन, शोथ ।

डोडिक डोडीकौ–पु० एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

डोडिया–स्त्री० एक राजपूत वश ।

डोडियौ–पु० १ जैसलमेर राज्य का प्राचीन सिक्का । २ 'डोडिया' वश का राजपूत । ३ देखो 'डोडौ' ।

डोडी–स्त्री० १ भुजा के चूडे के नीचे पहना जाने वाला आभूपण । २ पुरुषो की भुजा का आभूषण विशेष । ३ देखो 'डौडी' ।

डोडौ–पु० १ भुट्टा, वाल । २ आक या मदार का फूल । ३ इलायची, खशखश, कपास आदि का फल । ४ गोखरू तथा काटी नामक घास का काटेदार गोल फल । ५ आख का कोया । ६ वडा कौआ । ७ 'डोड' शाखा का पंवार राजपूत । ८ देखो 'डौडो' ।

डोफाई–स्त्री० मूर्खता, नासमझी ।

डोफौ–वि० मूर्ख, नासमझ ।

डोब–स्त्री० १ गहराई, थाह । २ डुबाने की क्रिया या भाव । ३ डुवकी, गोता । ४ नीची भूमि । ५ सदमा । ६ एक देश का नाम ।

डोवणौ (बौ)–देखो 'डुबाणौ' (वौ) ।

डोबरौ–पु० १ दरार वाला मिट्टी का बर्तन । २ फटा वास । ३ फटे बास की ध्वनि ।

डोबळ–पु० १ गड्ढा, खड्डा । २ देखो 'डोबौ' ।

डोबळी–स्त्री० १ किसी बडे पत्थर या दीवार मे किया जाने वाला छोटा छेद । २ उक्त छेद मे फसाने का लकडी का गुटका । ३ देखो 'डोबी' ।

डोबी–स्त्री० वृद्ध भैंस ।

डोबौ–पु० (स्त्री० डोबी) १ वृद्ध भैंसा, पाडा । २ वृद्ध भैंस । ३ आख । ४ आख का डोला । ५ देखो 'डोब' ।

डोम (डौ)–देखो 'डूम' ।

डोयठौ–पु० [स० द्वयुत्थ] एक प्रकार की मिठाई ।

ढंगी–पु० १ खेल या प्रतियोगिता मे हारा हुआ खिलाडी या कलाकार। २ भगी, हरिजन।

ढगो-ढंग–देखो 'ढगसर'।

ढंढ़–स्त्री० १ कृषि मे काम आने वाला पुराना तालाब। २ कीचड, पक। ३ सूखा कूप। –वि० मूर्ख, मूढ।

ढढ़ण–पु० एक जैन मुनि।

ढढेर–पु० १ मरे पशु का अस्थिपजर। २ खण्डहर।

ढढेरी, ढढोरौ–पु० १ किसी बात की सार्वजनिक तौर पर दी जाने सूचना। डुडी। २ प्रचार, विज्ञापन। ३ ऐसी सूचना देते समय बजाया जाने वाला ढोल।

ढढेरची–वि० 'ढढेरा' पीटने वाला, प्रचारक।

ढढोळणी–वि० १ घुमाने वाला, फिराने वाला। २ तलाश करने वाला, ढूंढने वाला। ३ लूटने वाला। ४ सहार करने वाला। ५ पीटने वाला। ६ नगाड़ा, ढोल आदि बजाने वाला। ७ सहलाने वाला। ८ टटोलने वाला।

ढढोळणौ (बौ)–क्रि० १ लूटना। २ घुमाना, फिराना। ३ सहार करना, मारना। ४ पीटना, मारना। ५ बजाना, पीटना। ६ तलाश करना, ढूढना। ७ ढूढना, टटोलना। ८ सहलाना।

ढढोळौ–देखो 'ढंढोरौ'।

ढंपणौ (बौ)–क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना। २ लपेटना, आवेष्टित करना।

ढळक–स्त्री० सेना, फौज।

ढ–पु० १ ढोल। २ भैरव। ३ यत्र। ४ ढक्कन। ५ मृग। ६ दात। ७ गधा। ८ स्वाद। ९ शब्द। १० बिल्ली। –वि० निर्गुण।

ढक–पु०[स० ढक्का]१ बडा, ढोल। २ मूली नामक तरकारी। ३ ढक्कन।

ढकचाळ (चाळौ)–देखो 'धकचाळ'।

ढकण–स्त्री० १ ढकने की क्रिया या भाव, ढक्कन लगाने या पर्दा डालने की क्रिया। २ ढक्कन। —**सरीर**–पु० वस्त्र।

ढकणउ–देखो 'ढकणौ'।

ढकणी–स्त्री० १ छाते की तरह बना मिट्टी का ढक्कन। २ घुटने के ऊपर की गोल हड्डी, जावील।

ढकणौ–पु० १ ढक्कन। २ आवरण। ३ आच्छादन।

ढकणौ (बौ)–क्रि० १ ढक्कन लगाना, ढकना। २ पर्दा डालना, छुपाना, बात दबाना। ३ आच्छादित करना। ४ आवेष्टित करना। ५ मुह या सूराख बद करना।

ढकवत्थुल–पु० [स० ढकवास्तुल] एक प्रकार की हरी तरकारी (जैन)।

ढकेलणौ (बौ)–देखो 'धकेलणौ' (बौ)।

ढकोळी–स्त्री० पलाश वृक्ष का फल।

ढकोसळौ–पु० [स० ढग-कौशल] आडम्बर, पाखण्ड।

ढकौ, ढक्क–देखो 'ढक'।

ढक्कण–देखो 'ढकणौ'।

ढक्काराव–पु० ४९ क्षेत्रपालो मे से ३० वा क्षेत्रपाल।

ढक्कियण–वि० आच्छादित करने वाला।

ढगण–पु० [स०] तीन मात्राओ का एक गण।

ढगमगणौ (बौ)–देखो 'डगमगणौ' (बौ)।

ढगळ–१ देखो 'ढळौ'। २ देखो 'ढगळौ'।

ढगळणौ (बौ)–क्रि० प्रहार करना।

ढगली–देखो 'ढिगली'।

ढगळौ–पु० १ मिट्टी का ढेला, ढेला। २ देखो 'ढिगलौ'। –वि० १ अचचल, शान्त। २ सुस्त, आलसी।

ढगास–पु० ढेर, राशि।

ढचकौ–पु० १ खासी चलने की क्रिया या भाव। २ देखो 'धचकौ'।

ढचरकौ–पु० १ लगडा कर चलने की क्रिया या भाव। २ एक चाल विशेष।

ढचरी–स्त्री० डाकिनी, डायन, प्रेतिनी। –वि० वृद्धा। अशक्त।

ढचरौ–पु० १ ढग, तरीका। २ परपरा, प्रथा। –वि० (स्त्री० ढचरी) वृद्ध, अशक्त।

ढड्ढ, ढड्ढर–पु० [सं० ढड्ढर] १ वक्षस्थल। २ राहुदेव का नाम (जैन)। ३ एक प्रकार की ध्वनि विशेष (जैन)।

ढणणक–स्त्री० ध्वनि विशेष।

ढणहण–स्त्री० किसी पदार्थ के चूने, रिसने, टपकने की क्रिया या भाव।

ढपणौ (बौ)–क्रि० १ ढकना, आच्छादित करना। २ आवेष्टित करना।

ढपला–पु० ढोग, आडम्बर, बहाना, चरित्र।

ढपलागारौ, ढपलाळौ–वि० (स्त्री० ढपलागारी) ढपला करने वाला, ढोगी, बहानेबाज।

ढप्पणौ (बौ)–देखो 'ढपणौ' (बौ)।

ढफ–वि० मूर्ख, नासमझ।

ढफल (ला)–पु० पाखण्ड, आडम्बर।

ढफलागारौ, ढफलाळौ–देखो 'ढपलागारौ'।

ढबदौ–पु० किसी भारी वस्तु के पानी मे गिरने से उत्पन्न शब्द, धमाक।

ढब–पु० १ मौका, अवसर। २ सहारा, मदद। ३ तरकीब, उपाय, युक्ति। ४ ढग, रीति, तौर। ५ व्यवस्था, प्रबध, इतजाम। ६ मेल-जोल। ७ डफ, डफली।

ढबक–स्त्री० १ पानी मे कोई पात्र डूबने या कोई वस्तु गिरने से उत्पन्न ध्वनि । २ पात्र मे पानी हिलने से उत्पन्न ध्वनि । ३ झपकी, निद्रा । ४ कलंक, दोष ।

ढबकरण–स्त्री० कूए के पानी को समान सतह पर बताने वाला माप दण्ड ।

ढबणौ (बौ)–क्रि० १ रुकना, ठहरना । २ वद होना ।

ढबू–पु० १ तावे का एक प्राचीन सिक्का । २ गुब्बारा । ३ गुब्बारे की तरह फूला हुआ कोई प्राणी या वस्तु ।

ढबूसौ–पु० हाथ की अर्द्धचन्द्राकार मुद्रा मे गर्दन पकड कर धक्का देने की क्रिया या भाव ।

ढबोढब–क्रि०वि० १ ठीक ढग से, उचित रीति से । २ क्रम पूर्वक ।

ढब्बरण, (न)–वि० १ अटल, अडिग, दृढ । २ देखो 'ढबरण' ।

ढब्बर–पु० गंदे पानी का खड्डा (मेवात) ।

ढब्बू–देखो 'ढबू' ।

ढमंक–स्त्री० नगाडा आदि वाद्य की ध्वनि ।

ढमकरणौ (बौ)–देखो 'ढमकरणौ' (बौ) ।

ढमकारौ–पु० नगाडा, ढोल आदि की ध्वनि ।

ढमंकौ–देखो 'ढमकौ' ।

ढमंक्कणौ (बौ)–देखो 'ढमकणौ' (बौ) ।

ढम, ढमक–पु० १ नगाडे की ध्वनि । २ गति या चाल विशेष ।

ढमकणौ (बौ)–क्रि० १ वाद्य का वजना, ध्वनि होना । २ ढोल की ध्वनि होना ।

ढमकाणौ (बौ), ढमकावणौ (बौ)–क्रि० ढोल नगाडा आदि वाद्य वजाना ।

ढमकौ–पु० १ वाद्य ध्वनि । २ शोभा, चमक-दमक ।

ढमक्कणौ (बौ)–देखो 'ढमकणौ' (बौ) ।

ढमढमकार–स्त्री० ढोल आदि की ध्वनि ।

ढमढमणौ (बौ)–क्रि० ढोल को वजाना, वजाने के लिए ढोल पर प्रहार करना, डका लगाना ।

ढमढेर–पु० १ सूना व बडा भवन । २ बडे भवन का खण्डहर । ३ मलवे का ढेर । ४ लवा-चौडा घेरा हुआ क्षेत्र ।

ढमल्लौ–पु० मिट्टी का कटोरा (मेवात) ।

ढमाढम–स्त्री० ढम-ढम ध्वनि ।

ढयोडो–वि० ढहा हुआ, गिरा हुआ, पडा हुआ ।

ढर–स्त्री० भेड, बकरी आदि के सकेत के लिए मुह से की जाने वाली ध्वनि, टर्र ।

ढरकाणौ (बौ), ढरकावणौ (बौ)–देखो 'ढळकाणौ' (बौ) ।

ढरक्कणौ (बौ)–देखो 'ढळकणौ' (बौ) ।

ढरडकौ–पु० ध्वनि विशेष ।

ढरडौ–देखो 'ढररौ' ।

ढरणौ (बौ)–क्रि० १ गिरना, पडना । २ लुढकना । ३ ढहना ।

ढररौ–पु० १ शैली, प्रणाली, तरीका ढग । २ पथ, मार्ग, रास्ता । ३ परम्परा प्रथा । ४ उपाय, युक्ति । ५ चाल चलन, आचरण ।

ढळ–स्त्री० १ शासक या सरकार द्वारा रक्षित नीची व ढालू भूमि । २ देखो ढळौ' ।

ढल–स्त्री० ढाल ।

ढळकंतौ–पु० हाथी, गज ।

ढळक–स्त्री० १ ढीला चलने की क्रिया या भाव । २ ढालू या ढलवा भूमि । ३ लुढकने की क्रिया या भाव । ४ आसू गिरने का भाव । ५ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव ।

ढळकणौ (बौ)–क्रि० १ इधर-उधर हिलना-डुलना । २ झलकना, चमकना । ३ नीचे की ओर घुडकना, लुढकना । ४ लटकना । ५ फहराया जाना, फहरना । ६ खिसकना, सरकना । ७ वृत्ताकार घूमना, फिरना । ८ एक ओर से क्रमश सूक्ष्म या पतला होना ।

ढळकाणौ (बौ), ढळकावणौ (बौ)–क्रि० १ इधर-उधर हिलाना-डुलाना । २ झलकाना, चमकाना । ३ नीचे की ओर लुढकाना, घुडकाना । ४ लटकाना । ५ फहराना । ६ खिसकाना, सरकाना । ७ वृत्ताकार घुमाना । ८ एक ओर से क्रमशः पतला करना ।

ढळकौ–पु० नेत्रो का एक रोग ।

ढळक्कणौ (बौ), ढळखणौ (बौ)–देखो 'ढळकणौ' (बौ) ।

ढळखाणौ (बौ), ढळखावणौ (बौ)–देखो 'ढळकावणौ (बौ) ।

ढळणौ (बौ)–क्रि० [स ध्वरित] १ पानी आदि तरल पदार्थ का नीचे की ओर वहना, ढरकना । २ गिरना, पडना । ३ सरकना, खिसकना । ४ मेंट धरना, रखना । ५ विछना । ६ डेरा या पडाव डाला जाना । ७ जाना, खिसकना । ८ लौटना । ९ मवेशी का चरने के लिये दूर जाना । १० किसी निश्चित स्थान से आगे वढना । ११ एक निश्चित ऊचाई पर जाने के वाद नीचे की ओर वढना । १२ अस्ताचल की ओर वढना । १३ गुजरना, वीतना । १४ निर्मित होना, वन कर उतरना । १५ गला कर सचे मे जमाया जाना । १६ किसी मयादी रोग की प्रचण्डता कम होने की अवधि आना । १७ वीर गति को प्राप्त होना । १८ अवसान होना, मरना । १९ कट कर गिरना । २० प्रवृत्त होना, झुकना । २१ आकर्षित होना । २२ रीझना, आकर्षित होना । २३ अनुकूल होना । २४ चवर आदि डुलाया जाना ।

ढळपति–पु० दिल्लीपति, वादशाह ।

ढळहळणौ (बौ)–क्रि० शिथिल होना ।

ढळाख, ढळात–स्त्री० १ ढालू भूमि । २ रास्ते मे कही-कही पर होने वाला ढलाव, उतार ।

ढळाई–स्त्री० १ ढालने की क्रिया या भाव । २ ढालने की मजदूरी । ३ उतार ।

ढळावौ–पु० गिरती दशा, बुरा समय ।

ढलैत, ढलैती–पु० ढाल बाधने या रखने वाला योद्धा ।

ढळौ–वि० [स० ढलि] १ अचचल, शात । २ सुस्त, आलसी । ३ मूर्ख, गवार । –पु० ढेला ।

ढल्ल–१ देखो 'ढाल' । २ देखो 'ढल' । ३ देखो 'ढोल' ।

ढल्लीप, ढल्लीस–देखो 'ढळपति' ।

ढल्लौ–वि० (स्त्री० ढल्ली) मुक्त ।

ढसणौ (बौ)–१ देखो 'ढहणौ' (बौ) । २ देखो 'घसणौ' (बौ) ।

ढसाणौ (बौ), ढसावणौ (बौ)–१ देखो 'ढहाणौ' (बौ) । २ देखो 'घसाणौ' (बौ) ।

ढहकणौ (बौ)–क्रि० १ गिरना, पडना । २ धसना, गडना । ३ देखो 'डहकणौ' (बौ) ।

ढहकाणौ (बौ), ढहकावणौ (बौ)–क्रि० १ गिराना, पटकना । २ धसाना, गाडना, गडाना । ३ देखो 'डहकाणौ' (बौ) ।

ढहणौ (बौ)–क्रि० १ गिरना, पडना । २ मकान, दीवार आदि की कोई चुनाई या चुनाई कर रखी वस्तुओ का नीचे गिरकर विखरना, ढह जाना । ३ ध्वस्त होना । ४ नष्ट होना । ५ वीर गति प्राप्त होना । ६ कटना । ७ मिटना । ८ दूर होना । ९ दमन होना ।

ढहाणौ (बौ), ढहावणौ (बौ)–क्रि० १ गिराना, पटकना । २ मकान, दीवार या कोई चुनाई को नीचे गिराकर विखेरना । ३ ध्वस्त करना । ४ नष्ट करना । ५ वीर गति प्राप्त कराना । ६ काटना । ७ मिटाना । ८ दूर करना । ९ दमन करना ।

ढाक–स्त्री० १ वदनामी, कलक । २ देखो 'ढाक' ।

ढाकण, ढाकणउ–देखो 'ढाकणौ' ।

ढाकणी–देखो 'ढकणी' ।

ढाकणौ (बौ)–देखो 'ढकणौ' (बौ) ।

ढागो–देखो 'ढोगी' ।

ढागौ–वि० (स्त्री० ढागी) १ आपत्तिजनक । २ बुरा, खराव ।

ढाच–स्त्री० १ पालना लटकाने का लकडी का उपकरण । २ देखो 'ढाचौ' ।

ढाचियो, ढाचौ–पु० १ सामान भरकर पशुओ की पीठ पर लादने का लकडी का उपकरण । २ ठठरी, पजर । ३ किसी वस्तु की आकृति, शक्ल, डौल, नमूना । ४ देखो 'टूचौ' ।

ढाढ (ढाढियो)–देखो 'ढाढौ' ।

ढाढकौ–देखो 'ढाढी' ।

ढांढवाड़ (वेड़)–स्त्री० मवेशी, पशुधन, चौपाये पशु ।

ढांढापणौ–पु० पशुता, पशुत्व ।

ढांढी–स्त्री० १ बूढी गाय । २ छोटी तलैया, पोखरी । –वि० मूर्खा, गवार ।

ढाढौ–पु० चौपाया पशु, मवेशी । –वि० (स्त्री० ढाढी) १ मूर्ख, नासमझ । २ अनाडी, उज्जड ।

ढांण–स्त्री० १ऊंट की एक चाल विशेष । २ मार्ग, रास्ता । ३ नाश, संहार । ४ युद्ध, लडाई । ५ ढग प्रकार, भाति । ६ गढ । ७ समूह । ८ ढेर । ९ प्रहार । १० कूए पर बैल जोतने का स्थान । ११ स्थान, आवास । १२ डेरा, खेमा, पडाव ।

ढाणी–स्त्री० [स० स्थान] १ खेत मे रहने के लिए बनाई गई झोपडी । २ कच्चे मकानो की बस्ती, जो गाव से कुछ दूर बनी हो । ३ रेतीले टीबो वाली भूमि ।

ढांणौ–पु० १ कूए से निकला पानी खाली करने का स्थान । २ 'ढाणियो' का समूह । ३ डेरा, पडाव ।

ढांपणौ (बौ)–देखो 'ढकणौ' (बौ) ।

ढांमक–पु० १ ढोल । २ नगाडा । ३ ढोल नगाडे आदि की आवाज ।

ढाहर–स्त्री० काटेदार वृक्ष या झाडी की टहनी ।

ढा–स्त्री० १ सरस्वती, शारदा । २ वाणी, बोली । ३ नाभि । ४ गदा । –पु० ५ ब्रह्मा । ६ सुमेरु पर्वत । ७ पलाश वृक्ष ।

ढाई–वि० [सं० अर्द्ध-द्वितीय] दो और आधा, अढाई । –पु० १ उक्त मान की सख्या व अक २॥ । २ कौडियो से खेलने का बच्चो का एक खेल ।

ढाक–पु० १ पलाश वृक्ष । २ कुम्हार का चाक । ३ कूल्हे की हड्डी । ४ ढोल । ५ रणचण्डी का वाद्य । ६ देखो 'ढकणौ' ।

ढाकण–देखो 'ढकणौ' ।

ढाकणपूंछौ–पु०आधे मे श्वेत व काले बालो वाले पूछ का वैल ।

ढाकणउ, ढाकणियौ–देखो 'ढकणौ' ।

ढाकणी–देखो 'ढकणी' ।

ढाकणौ–वि० १ ढकने वाला । २ आच्छादित करने वाला । ३ छुपाने वाला । ४ वन्द करने वाला । ५ रक्षा करने वाला । ६ मर्यादा रखने वाला । ७ देखो 'ढकणौ' ।

ढाकणौ (बौ)–देखो 'ढकणौ' (बौ) ।

ढाग–१ देखो ढाक' । २ देखो 'ढागी' । ३ देखो 'ढागौ' ।

ढागी–स्त्री० १ वृद्ध गाय । २ वृद्ध मादा ऊट ।

ढागीड़, ढागौ–पु० (स्त्री०-ढागी) १ वृद्ध बैल । २ वृद्ध ऊट ।

ढाडणौ (बौ)–क्रि० देना, अर्पण करना, सौंपना ।

ढाड, ढाडी, ढाडीडौ–देखो 'ढाडी' ।

ढाढ़स–पु० [स०दृढ] धैर्य, सान्त्वना ।

ढाढ़ी, ढाढ़ीड़ (ड़ौ)—पु० (स्त्री० ढाढण) एक शूद्र या अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

ढा'णौ—देखो 'ढाहणौ' ।

ढा'णौ (बौ)—देखो 'ढाहणौ' (बौ) ।

ढाप—पु० मिट्टी का बना वर्तन (मेवाड़) ।

ढाब—पु० छोटी तलैया ।

ढाबणौ (बौ)—क्रि० १ ठहराना, रोकना । २ थामना, पकडना, झेलना । ३ निभाना । ४ सहारा या आश्रय देना । ५ पकडना ।

ढाबौ—पु० १ भोजन की दुकान, भोजनालय, होटल । २ पिंजरा । ३ पक्षियो को पकडने का उपकरण । ४ चीथडे या कागजो आदि की लुग्दी का बना वर्तन । ५ भैंस का का पाव बाधने की लोह की साकल, शृंखला । ६ रगीन ओढनी के बीच लगने वाली बडी छाप । ७ अरावली पर्वत ।

ढारौ—पु० घास-फूस रखने का पक्का मकान । —वि० मूर्ख ।

ढाळ—स्त्री० १ भूमि आदि की नीचाई, उतार । २ गाने की तर्ज, टेर । ३ संगीत मे नाच, गायन व वाद्यो का मेल । ४ रीति, ढग । ५ पडाव, डेरा । ६ तरह, भाति, प्रकार । —वि० घटिया किस्म का, हल्का ।

ढाल—स्त्री० १ युद्ध आदि मे शस्त्रास्त्रो के प्रहारो को रोकने का थालीनुमा शस्त्र । २ युद्ध के समय हाथी की ललाट पर बाधने का उपकरण । ३ बडा झंडा । ४ रक्षक । —गर—पु० ढाल बनाने वाला शिल्पी ।

ढालडियौ, ढालड़ौ—पु० १ कागज, वस्त्रादि की लुग्दी का बना वर्तन विशेष । २ कोई पौधा विशेष । ३ देखो 'ढाल' ।

ढाळणौ(बौ)—क्रि० [स० ध्वर] १ पानी आदि द्रव पदार्थ को धीरे से बहा देना, बहाना । २ ढरकाना, गिराना, प्रवाहित करना । ३ अभिसिंचन करना । अभिषेक करना । ४ डेरा डालना । ५ लौटाना, भेजना । ६ मवेशी को चरने के लिये खुला छोडना । ७ व्यतीत करना, गुजारना । ८ किसी सचे आदि मे जमाना । ९ उडेलना । १० गिराना, पटकना । ११ रखना । १२ बिछाना । १३ यत्र आदि से निर्मित करना । १४ अर्पण करना, चढाना । १५ दूर करना । १६ मारना, सहार करना, काटना । १७ आच्छादित करना, ढकना । १८ ओढाना । १९ नीचे करना, झुकाना । २० निगलना । २१ देखो 'ढोळणौ' (बौ) ।

ढाळमौ (बौं)—वि० किसी सचे मे ढलकर बना हुआ ।

ढालाळ, ढालाळौ—पु० ढालधारी योद्धा ।

ढाळियौ—पु० १ लोहे की चद्दर या घास-फूल की छाजन वाला खुला कक्ष । २ छप्पर । ३ सिंचाई के खेत का एक भाग । ४ छोटा ढालु घास ।

ढाळू—पु० उतार वाला, ढलवा ।

ढालू—पु० करील का पका फल ।

ढालेत (ती)—पु० ढालधारी योद्धा ।

ढाळै—क्रि० वि० ढंग से, तरीके से । —वि० ठीक, अच्छा । देखो 'ढोळै' ।

ढाळोढाळ—क्रि० वि० १ उतार की ओर, नीचाई की तरफ । २ क्रमश । —वि० यथोचित ।

ढाळौ—पु० १ पडाव, डेरा । २ तरह, भाति, प्रकार । ३ ढग । ४ दशा, हालत । ५ रूप, शक्ल, आकृति । ६ व्यवस्था । ७ देखो 'ढाळियौ' ।

ढावणौ (बौ)—देखो 'ढाहणौ (बौ) ।

ढावौ—पु० १ तट, किनारा । २ छोटा टीबा ।

ढाहढह, ढाहढोह—पु० हाथी, गज ।

ढाहणौ—वि० (स्त्री० ढाहणी) १ मकान, दीवार आदि गिराने वाला, ध्वस्त करने वाला । २ गिराने, पटकने वाला । ३ मारने वाला । सहार करने वाला । ४ नष्ट, बर्बाद करने वाला । ५ काटने वाला । ६ मिटाने वाला । ७ निशाना लगाने वाला । ८ दूर करने वाला । ९ दमन करने वाला । १० कहने वाला ।

ढाहणौ (बौ), ढाहवणौ (बौ)—क्रि० १ मकान, दीवार आदि गिराना, ध्वस्त करना । २ गिराना, पटकना । ३ मारना । ४ नष्ट करना, उजाडना । ५ सहार करना । ६ मिटाना । ७ दूर करना । ८ दमन करना । ९ कहना । १० निशाना लगाना । ११ देखो 'ढहणौ (बौ) ।

ढाही—स्त्री० गाय ।

ढाहौ—पु० (स्त्री० ढाही) १ बैल । २ देखो 'ढावौ' ।

ढिंक, ढिंकण, ढिंकुण—पु० १ खटमल । २ एक पक्षी विशेष ।

ढिंढोरणौ (बौ)—क्रि० १ तलाश करना, ढूंढना । २ विज्ञापित करना ।

ढिंढोरौ—देखो 'ढढोरौ ।

ढि—स्त्री० १ पतग । २ मोरनी । ३ निंदा । ४ गदा । ५ भूख । ६ लिंग ।

ढिकडियौ—देखो 'ढीकडौ' ।

ढिकोर—स्त्री० मिट्टी का पात्र विशेष ।

ढिग—क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ पास, निकट । ३ देखो 'ढिगलौ' ।

ढिगलियौ—देखो 'ढिगलौ' ।

ढिगली—स्त्री० छोटी ढेरी ।

ढिगलौ, ढिगास—पु० १ किसी वस्तु का ढेर, समूह । २ राशि, पुंज । ३ अधिक मात्रा ।

ढिग्ग—१ देखो 'ढिग' । २ देखो 'ढिगलौ' ।

ढिरलणौ (बौ)—क्रि० घसीटना, खींचना ।

ढिलगो–वि० १ सुस्त, आलसी । २ ढीला-ढाला ।
ढिलाई–स्त्री० १ ढीलापन । २ सुस्ती, आलस्य ।
ढिलाणो (बो) ढिलावणो (बो)–क्रि० १ ढीला करवाना । २ शिथिल करवाना ।
ढिली– १ देखो 'दिल्ली' । २ देखो ढीली' । ३ देखो ढील' ।
ढिल्लिय, ढिल्ली, ढिल्लीउ–देखो दिल्ली' । —**पत, पत्ती, पह**='दिल्लीपति' ।
ढिल्लौ–देखो 'ढीलौ' । (स्त्री० ढिल्ली)
ढिस्सौ–पु० सख्त मिट्टी का टीबा । कठोर टीबा ।
ढींक–पु० १ लाल मुह का एक पक्षी विशेष । २ मुष्ठिका प्रहार ।
ढींकडजी, ढींकडौ–वि० (स्त्री० ढीकडी) अमुक । ढिमका ।
ढींकणौ–वि० (स्त्री० ढीकणी) रभाने वाला ।
ढींकणो (बो)–क्रि० रंभाना, रेकना ।
ढींकाळी–स्त्री० एक प्रकार की लता विशेष ।
ढींकेळ–स्त्री० रहट के स्तम्भ को स्थिर रखने वाले डडो को जोडने वाली कील ।
ढींगळ, ढींगळियौ, ढींगळौ, ढींगोळ, ढींगोळियौ, ढींगोळी, ढींगोळौ–पु० १ मिट्टी के टूटे बर्तन का बेडौल भाग । २ बडा छेद ।
ढींगौ–वि० (स्त्री० ढीगी) १ जबरदस्त, जोरदार । २ बडा ।
ढींच, ढींचाळ, ढींचाळौ–पु० १ जलाशयो के किनारे रहने वाला पक्षी । २ कक पक्षी । ३ कूप, कूआ । ४ ऊट, भैसे आदि से पानी ढोने का काठ का उपकरण । ५ हाथी । –वि० १ बडे डीलडौल वाला । २ प्रभावशाली ।
ढींव, ढींवड़, ढींवडियौ, ढींबड़ौ–देखो 'ढीमडौ' ।
ढींम, ढींमड, ढींमड़ियौ, ढींमड़ौ–देखो 'ढीमडौ' ।
ढी–पु० १ विल्व वृक्ष । २ ब्रह्मचर्य । ३ शिष्य । ४ गधा । ५ वृक्ष । –स्त्री० ६ पृथ्वी । ७ मति, बुद्धि ।
ढीक–पु० १ अनाज मे पडने वाला एक कीडा विशेष । २ गरीब । ३ अमीर, धनाढ्य । ४ देखो 'ढींक' ।
ढीकडजी, ढीकड़ियौ–देखो 'ढीकडौ' ।
ढीकड़ी–१ देखो 'ढीकली' । २ देखो 'ढीकडौ' । (स्त्री०)
ढीकडौ–देखो 'ढीकडौ' ।
ढीकणौ (बो)–देखो 'ढीकणौ' (बो) ।
ढीकली–स्त्री० १ पत्थर फेंकने का तोप-नुमा एक प्रचीन यत्र । २ देखो 'ढेकली' ।
ढीकुली–देखो 'ढीकली' ।
ढीकोळ–पु० युद्ध, सग्राम ।
ढीगाळ–वि० [स० दीर्घाल] महान्, बडा ।
ढीच–देखो 'ढींच' ।
ढीचकनळियौ–पु० एक पक्षी विशेष ।
ढीचाळ, ढीचाळौ–देखो 'ढींच' । (स्त्री० ढीचाळी)
ढीठ–वि० [स० धृष्ट] १ जिद्दी, हठी । २ हठधर्मी, दुराग्रही । ३ निष्ठुर, धृष्ट । ४ अशिष्ट ।
ढीठता–स्त्री० [स० धृष्टता] १ जिद्द, हठ । २ दुराग्रह । ३ धृष्टता, निष्ठुरता । ४ अशिष्टता ।
ढीठौ–देखो 'ढीठ' । (स्त्री० ढीठी)
ढीब, ढीवड़, ढीवडियौ, ढीबडौ–देखो 'ढीमडौ' ।
ढीबस, ढीबसियौ, ढीबसौ–पु० मिट्टी का नन्हा दीपक ।
ढीम, ढीमउ–पु० वडा फोडा या गाठ । –वि० १ मूर्ख, नासमझ । २ देखो 'ढीमडौ' ।
ढीमडियौ, ढीमडौ–पु० १ शरीर के किसी अग मे होने वाली ग्रथि, फोडा । २ रहट का कूआ । ३ बालू का टीबा । –वि० मूर्ख, नासमझ ।
ढीमर–पु० [स० धीवर] मछुआ, मल्लाह ।
ढीर, ढीरकियौ, ढीरकी, ढीरकौ, ढीरडौ, ढीरियौ, ढीरी, ढीरौ–पु० १ काटेदार वृक्ष या झाडी की टहनी । २ सूखी झाडी का पुज ।
ढील–स्त्री० १ विलम्ब, देरी । २ छूट । ३ समय, अवसर । ४ सुस्ती । ५ सुविधा । ६ स्थिति ठीक करने का विशेष अवसर । ७ बंधन का ढीलापन । ८ रस्सी के खिचाव मे कमी । ९ यूका, जू । १० पतग को वढाने की क्रिया । –वि० जिसके ठहरे या बधे हुए छोरो के बीच झोल हो ।
ढीलउ–देखो 'ढीलौ' ।
ढीलडी–१ देखो 'दिल्ली' । २ देखो 'ढेलडी' । ३ देखो 'ढील' ।
ढील-ढालौ–पु० हाथी, गज ।
ढीलणौ–वि० (स्त्री० ढीलणी) १ सुस्त, आलसी । २ ढीला ।
ढीलणौ (बो), ढीलवणौ (बो)–क्रि० १ बन्धन मुक्त करना । २ ढीला छोडना । ३ डोरी आदि आगे वढाना । ४ छोडना, नियत्रण मे न रखना ।
ढीलिणौ–पु० (स्त्री० ढीलिणी) दिल्लीवासी ।
ढीलिपति (पती)–पु० दिल्लीपति, वादशाह ।
ढीली–१ देखो 'दिल्ली' । २ देखो 'ढीलौ' (स्त्री०) । —**पति, पती**='दिल्लीपति' ।
ढीलु, ढीलू, ढीलौ–वि० [सं० शिथिलक] (स्त्री० ढीली) १ मंद, धीमा । २ जिसका बधन शिथिल हो । ३ शिथिल । ४ सुस्त, आलसी । ५ कमजोर, निर्बल, अशक्त । ६ जिसमे तनाव या खिचाव न हो । ७ जिसकी पकड ढीली हो । ८ अतत्पर, असावधान । ९ नाप आदि मे कुछ बडा हो । १० जो अडिग व दृढ न हो । ११ जो भली प्रकार न जुडा हो, असलग्न । १२ स्वभाव मे शान्त, नर्म । १३ रिक्त, खाली । १४ अपने नियत्रण से मुक्त ।

१५ नपुंसक । १६ अस्थिर । १७ जो कडा या सख्त न हो, नर्म । १८ गीला ।
ढीह, (हौ)-पु० [स० दीर्घ] बडा टीवा, ढूहा ।
ढुई-देखो 'ढुई' ।
ढुंढ-देखो १ 'ढूंढ' । २ देखो 'ढूंढौ' । —वेस='ढूंढाड' ।
ढुंढराव-पु० सिंह, पचानन ।
ढुंढा-स्त्री० १ हिरण्य कश्यपु की बहन एक राक्षसी । २ देखो 'ढूंढाड' ।
ढुंढाड़ ढुंढार, ढुंढाहड़-देखो 'ढूंढाड' ।
ढुंढि-[स०] गणेश का एक नाम ।
ढु-पु० १ कर्म । २ दुष्ट । ३ हाथी । ४ सर्प । ५ सूर । ५ बन्दर ।
ढुई-स्त्री० १ रीढ की हड्डी का नीचला भाग । २ पीठ के नीचे का कूल्हे पर्यन्त भाग । ३ वाजरी के सूखे डठलो का महीन चारा । ४ रीढ के नीचले भाग मे होने वाला दर्द ।
ढुओ-देखो 'ढुवौ' ।
ढुकाणौ (बौ), ढुकावणौ (बौ)-क्रि० १ काम मे लगाना । २ कार्य प्रारंभ कराना । ३ किसी कार्य विशेष से किसी स्थान विशेष पर जाने को प्रवृत्त करना ।
ढुक्कणौ (बौ)-देखो 'ढूकणौ' (बौ) ।
ढुगली-देखो 'ढिगली' ।
ढुचकौ-पु० धीरे-धीरे दौडते हुए चलने की क्रिया ।
ढुचरौ-वि० (स्त्री० ढुचरी) १ वृद्ध, बूढा । २ अशक्त, निर्बल ।
ढुरियौ-पु० ऊंट की एक चाल विशेष ।
ढुळकणौ (बौ)-देखो 'ढळकणौ' (बौ) ।
ढुळकाणौ (बौ), ढुळकावणौ (बौ)-देखो 'ढळकाणौ' (बौ) ।
ढुळढुळ-स्त्री० १ नगाडे आदि वाद्य की निरन्तर होने वाली आवाज । २ ऐसे वाद्य बजने की क्रिया ।
ढुळणौ (बौ)-क्रि० १ गिर जाना, ढुलक जाना, बहजाना । २ वीर गति प्राप्त होना । ३ छितराया या फैलाया जाना, फैलना, बिखरना । ४ अधिक स्नेह से द्रवित होना । ५ कृपालु, दयालु या तुष्टमान होना । ६ चवर आदि ऊपर से घुमाया जाना । ७ झुकना, प्रवृत्त होना ।
ढुळवाई, ढुळाई-देखो 'ढोळाई' ।
ढुलार, ढुलारौ-पु० झुण्ड, समूह ।
ढुवारौ-पु० एक प्रकार का कीडा ।
ढुवौ-पु० १ झुण्ड, समूह । २ मिट्टी का छोटा टीवा । ३ ढेर । ४ पीठ के नीचे का भाग । ५ सेना, दल । ६ आक्रमण, हमला ।
ढुही-देखो 'ढुई' ।
ढुहौ-देखो 'ढुवौ' ।
ढूकणौ (बौ)-क्रि० १ घुसना, प्रवेश करना (मेवात) । २ देखो 'ढूकणौ' (बौ) ।
ढूंग, ढूंगड-देखो 'ढूंगौ' ।
ढूंगरी-स्त्री० सूखे घास का व्यवस्थित रखा ढेर ।
ढूंगलियौ ढूंगलौ, ढूंगियौ, ढूंगोड़, ढूंगौ-पु० १ कूल्हा, नितम्ब । २ गुप्तांग ।
ढूंचौ-पु० साढे चार की संख्या का पहाडा ।
ढूंड, ढूंडड-१ देखो 'ढूंढ' । २ देखो 'ढूंढौ' ।
ढूंडौ-देखो 'ढूंढ़ौ' ।
ढूंढ-स्त्री० १ खोजने, तलाश करने की क्रिया या भाव । २ अन्वेषण, शोध । ३ नितम्बों वाला भाग । ४ बच्चे के जन्म की प्रथम होली पर किया जाने वाला एक संस्कार । ५ पूर्वी राजस्थान की एक नदी । ६ देखो 'ढूंढौ' । ७ देखो 'ढूंढियौ' ।
ढूंढड़, ढूंढड़ियौ-१ देखो 'ढूंढ़ियौ' । २ देखो 'ढूंढौ' ।
ढूंढणौ (बौ)-क्रि० १ खोजना तलाश करना, ढूंढना । २ नवजात शिशु का प्रथम होली पर संस्कार करना । ३ अन्वेषण या शोध करना । ४ पीटना ।
ढूंढाड-स्त्री० जयपुर व उसके आस-पास का प्रदेश ।
ढूंढाडी-वि० 'ढूंढ़ाड' का, ढूंढाड संबंधी । -स्त्री० १ इस प्रदेश का निवासी । २ इस प्रदेश की बोली ।
ढूंढाडौ-वि० (स्त्री० ढूंढाडी) 'ढूंढाड' का, ढूंढाड संबंधी । -पु० १ इस प्रदेश का व्यक्ति । २ कच्छवाहा राजपूत ।
ढूंढाहड (हर)-देखो 'ढूंढाड' ।
ढूंढाहडौ(हरौ)-देखो 'ढूंढाडौ' ।
ढूंढियौ-पु० १ जैन साधु, भिक्षु । २ देखो 'ढूंढौ' । ३ देखो 'ढूंढ' ।
ढूंढी-स्त्री० मरे पशु का अस्थिपंजर ।
ढूंढौ-पु० १ पुराना, मकान । २ बडा भवन (गढ, किला) । ३ किसी इमारत का खण्डहर । ४ शरीर का पृष्ठ भाग, पीठ ।
ढू-पु० १ सेतु । २ अधर्म । ३ शरीर । -स्त्री० ४ हथिनी । ५ हरिताल । -वि० स्थिर ।
ढूक-स्त्री० पहुंच ।
ढूकडौ (डौ)-वि० [स० ढौकति] (स्त्री० ढूकडी, डी) समीप, निकट, पास ।
ढूकढ़ाक-क्रि०वि० कुछ नही ।
ढूकणौ (बौ)-क्रि० १ किसी काम पर लगना, सलग्न होना । २ कई कार्यकर्त्ताओं के साथ काम मे सम्मिलित होना । ३ सम्मिलित होना । ४ झुकना । ५ पहुंचना । ६ आरंभ होना, शुरू होना ।

ढूकवौ–वि० (स्त्री० ढूकवी) समीप, निकट ।
ढूढी–स्त्री० रीढ की हड्डी के नीचे का भाग । त्रिकास्थि ।
ढूब, ढूबड–स्त्री० १ कूबड । २ धातु के बर्तन मे पडी मोच । ३ एक ओर अधिक निकला भाग । ४ देखो 'ढूबौ' ।
ढूबडियौ, ढूबडौ, ढूबल, ढूबलियौ, ढूबलौ, ढूबियौ, ढूबौ–पु० (स्त्री० ढूबी) १ वह प्राणी जिसकी पीठ मे कूबड हो । कुबडा । २ झुकी हुई पीठ वाला व्यक्ति । ३ मोच पडा बर्तन ।
ढूमरी–स्त्री० रसोई मे काम आने वाला बर्तन (मेवात) ।
ढूमलियौ, ढूमलौ–पु० कागज आदि की लुग्दी का बना पात्र ।
ढूळ, ढूल, ढूळकियौ, ढूलकियौ, ढूलकौ–पु० १ झुण्ड, समूह । २ देखो 'ढूलौ' ।
ढूलड ढूलडौ–देखो 'ढूली' ।
ढूली–स्त्री० १ गुडिया । २ देखो 'दिल्ली' ।
ढूलौ–पु० [स० दुर्लभ] १ गुड्डा । २ बच्चो या स्त्रियो जैसी आदतो वाला पुरुष ।
ढूवौ–देखो 'ढुवौ' ।
ढूसर–पु० बनियो की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
ढूह, ढूहौ–पु० १ ढेर, टीला । २ देखो 'ढुवौ' ।
ढेंकली–देखो 'ढेकली' ।
ढेंकौ–पु० मादा मोर की बोली का शब्द ।
ढेंचाळ–देखो 'ढैंचाळ' ।
ढे–पु० १ मन । २ मृग । ३ गढ । ४ चर्म । ५ हीग ।
ढेक, ढेकड़, ढेकल, ढेकलियौ–देखो 'ढेकौ' ।
ढेकली–स्त्री० कम गहरे कूए से पानी सींचने का उपकरण ।
ढेकियौ, ढेकोड़, ढेकौ–पु० १ चूतड, कूल्हा । २ गुदा ।
ढेखळ–पु० पवार वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।
ढेटौ–वि० [स० धृष्ट] ढीट, हठी, जिद्दी, दुराग्रही ।
ढेढ–पु० (स्त्री० ढेढ़णी) १ चमार । २ कौआ । –वि० मूर्ख, नासमझ ।
ढेढ़मींग, ढेढ़मींगी, ढेढ़ळमींगी–स्त्री० [स० भृग] टिड्डी के आकार का एक पतगा, भृग ।
ढेढ़वाड (वाड़ौ)–स्त्री० १ चमारो का समूह । २ चमारो का मुहल्ला । ३ गदी वस्तुओ वाला स्थान । ४ हेय कर्म, हेय भावना ।
ढेढियानट–पु० नट क्रिया करने वाले नट ।
ढेढी–देखो 'ढेढ' ।
ढेण–स्त्री० १ सख्त, कठोर भूमि । २ समतल भूमि ।
ढेणियालग, ढेणियालिया–स्त्री० [स० ढेणिकालक] एक पक्षी विशेष । (जैन)
ढेपाळौ–वि० (स्त्री० ढेपाळी) तहवाला, तहयुक्त ।
ढेपौ–पु० १ किसी पदार्थ का ढेले की तरह जमा हुआ खण्ड । २ अधिक रेत वाला ऊपला । ३ शरीर के अन्दर बनी कोई वडी ग्रथि । –वि० १ मूर्ख, नासमझ । २ आलसी सुस्त ।
ढेबरी–स्त्री० १ तरवूज आदि फल का काटा जाने वाला छोटा चौकोर खण्ड । २ दीवार या पत्थर मे खड्डा करके फसाया जाने वाला का काष्ठ खण्ड । ३ लकडी का गोल या चौकोर खण्ड । ४ देशी कपाटो के नीचे लगने वाला काष्ठ, धातु या पत्थर का गुटका । ५ बच्चो का वडा पेट । –वि० वडे पेट वाली
ढेबरौ–देखो 'ढेवौ' ।
ढेबल, ढेबलियौ, ढेबलौ, ढेबियौ, ढेबोड़, ढेबौ–वि० (स्त्री०ढेबी) १ वडे पेट वाला । २ देखो 'ढेपौ' ।
ढेमकी–स्त्री० छोटी ढोलक ।
ढेर(ड़ौ)–पु० राशि, समूह । सग्रह ।
ढेरणौ (बौ), ढेरवणौ (बौ)–क्रि० १ शिथिल या ढीला करना । २ निष्क्रिय होकर बैठना ।
ढेरियौ–पु० १ डोरे से वधा ककड । २ देखो 'ढेरौ' ।
ढेरी–देखो 'ढेर' ।
ढेरौ–पु० १ डोरा, रस्सी आदि वनाने का छोटा उपकरण । २ इस उपकण से एक बार मे काती हुई ऊन, सूत आदि की मात्रा । ३ वडी जूं, यूका । ४ देखो ढेर' । –वि० मूर्ख नासमझ ।
ढेल, ढेलडी, ढेलणी–स्त्री० मादा मोर, मोरनी ।
ढेलौ–पु० मिट्टी का ककड, ढेला ।
ढेंक–पु० एक मासाहारी पक्षी ।
ढेंकणौ (बौ)–क्रि० १ रम्भाना । २ मोरनी का बोलना ।
ढैंचाळ, ढैंचाळौ–पु० हाथी, गज । –वि० मोटा, ताजा । हृष्ट-पुष्ट ।
ढेंरा–देखो 'ढीरा' ।
ढैं–पु० १ मेघ, बादल । २ कामदेव । स्त्री० ३ दामिनी । ४ बक पक्ति । ५ वीर वहूटी । ६ आशा ।
ढैंणौ (बौ)–देखो 'ढहणौ' (बौ) ।
ढैमक (की), ढैमक (की)–स्त्री० ढोलक के आकार-का एक वाद्य विशेष ।
ढैर–१ देखो 'ढेर' । २ देखो 'डैरी' ।
ढैहणौ (बौ)–देखो 'ढहणौ' (बौ) ।
ढोग–पु० पाखण्ड, आडम्बर ।
ढौ–पु० १ सुख । २ साधन । ३ धनवान । ४ प्रधान । ५ बाल । ६ आदत, स्वभाव । ७ अभ्यास ।

ढोग्रो–पु० 'ढोकली' यत्र से फेंका जाने वाला पत्थर।

ढोउ–पु० प्रहार, ग्राघात, टक्कर।

ढोक–देखो 'धोक'।

ढोकरणौ (बौ)–देखो 'ढोकरणौ' (बौ)।

ढोकळ–देखो 'धोकळी'।

ढोकळियौ, ढोकळी, ढोकळौ–पु० १ चना, गेहूं, बाजरी आदि के चून की वनी, बद बर्तन मे वाष्प से सीकी वाटी। २ वडी जूं। ३ डलिया, छबडी। ४ दही नापने का पात्र (मेवात) –वि० मूर्ख, नासमझ।

ढोटी–स्त्री० पुत्री, वेटी।

ढोटौ–पु० (स्त्री० ढोटी) पुत्र, लडका, वेटा।

ढोरणौ (बौ)–क्रि० [सं० ढौक] १ मेंट धरना, चढ़ाना। २ वोझा लाद कर चलना। ३ कोई सामान उठा कर इधर-उधर रखना। ४ चलाना। ५ प्रवृत्त करना।

ढोबलो, ढोबौ–पु० वडे जल पात्र का मिट्टी का ढक्कन।

ढोमनिया–स्त्री० गाने का व्यवसाय करने वाली जाति।

ढोमनियौ–पु० उक्त जाति का व्यक्ति।

ढोमरी–स्त्री० मिट्टी का बना पात्र (मेवात)।

ढोर–पु० [स० धुर्य] १ पशु, मवेशी। २ किसी व्यक्ति को ससुराल से मिली गाय। –वि० मूर्ख, गवार, ग्रनाडी। —**बाल, बाळ**–पु० मवेशियो की पूंछ के वाल।

ढोरी–देखो 'डोरी'।

ढोरु (रू)–देखो 'ढोर'।

ढोल–पु० [सं० ढोल] १ लकडी या लोहे के गोल घेरे के दोनो ग्रोर चमडा मढ कर तैयार किया वाद्य। २ लोहे ग्रादि का गोल वडा पात्र, टकी।

ढोलक(की)–स्त्री० [स० ढोल]ढोल के ग्रनुरूप वना छोटा वाद्य।

ढोलकियौ–पु० 'ढोलक' बजाने वाला कलाकार।

ढोलकौ–देखो 'ढोली'।

ढोलड़ी–स्त्री० १ बच्चो की छोटी खाट। २ देखो 'ढोलक'।

ढोलड़ौ–देखो 'ढोल'।

ढोलण, ढोलणी–स्त्री० १ ढोली जाति की स्त्री। २ देखो 'ढोलडी'।

ढोलणौ–देखो 'ढोलौ'।

ढोळणौ (बौ)–क्रि० [स० दोलन] १ किसी पदार्थ को गिराना, विखेरना, वहाना। २ कोई द्रव पदार्थ किसी के ऊपर उडेलना। ३ मकान की पुताई करना। ४ चवर ग्रादि डुलाना।

ढोलर–स्त्री० खडी फसल से धान खाने वाली बडी चिडिया।

ढोळाई–स्त्री० १ ढोलने की क्रिया या भाव। २ ढोलाई पोताई की मजदूरी।

ढोलि–१ देखो 'ढोल'। २ देखो 'ढोली'।

ढोलियौ–पु० सूत या निवार से बुनी सुन्दर खाट, पलंग।

ढोली–स्त्री० विवाह ग्रादि ग्रवसरो पर ढोल वजाने व गाने का कार्य करने वाली एक गायक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

ढोलीड–देखो 'ढोलियौ'।

ढोळौ–पु० सफेदी, कली।

ढोलौ–पु० [स० दुर्लभ] १ पति, खाविद। २ दूल्हा। ३ लोक गीतो का नायक। ४ नरवरगढ का राजकुमार। ५ वालक, बच्चा। ६ रहट मे लगने वाली एक लकडी विशेष। ७ सडक के पुल के नीचे वना मोरा, नाला। ८ सीमा चिह्न।

ढोल्यौ–देखो 'ढोलियौ'।

ढोवणौ (बौ)–क्रि० १ लाना। २ देखो 'ढोणौ' (बौ)।

ढोवाई–स्त्री० १ ढोने का कार्य। २ ढोने की मजदूरी।

ढोवौ–पु० १ ग्राक्रमण, हमला, चढ़ाई। २ युद्ध, लडाई। ३ रण क्षेत्र।

ढोसरी–स्त्री० एक प्रकार की घास।

ढोहणौ(बौ)–१ देखो 'ढोणौ'(बौ)। २ देखो 'ढोवणौ' (बौ)।

ढोहौ–देखो 'ढोवौ'।

ढौ–पु० १ चंपक। २ देवता। –स्त्री० ३ पक्ति। ४ सुगध। ५ पृथ्वी। –वि० १ सज्जन। २ दुष्ट।

ढौळौ–पु० पशु की ग्रशक्त ग्रवस्था जिसमें वैठने के बाद उठना मुश्किल होता है।

—ण—

ण–पु० १ देवनागरी लिपि का पन्द्रहवां व्यंजन। २ कुआ। ३ बबूल। ४ प्रचण्ड शरीर। –स्त्री० ४ विजय। ५ मेघा। ६ वक्रगति।

णगरा–पु० [स०] दो मात्राग्रो का एक मात्रिक गण।

—त—

त—देवनागरी वर्णमाला का सोलहवा वर्ण।

त—पु० १ पुण्यफल। २ युग। ३ सुर, देवता। ४ चरण। ५ भ्रमण। —सर्व० [स० तद्] उस, [स० युस्मद] तुम, आप।

तंइयासियो—पु० तेरासी का वर्ष।

तइयासी—वि० [स० त्र्यशीति] अस्सी व तीन, तेरासी। —स्त्री० अस्सी व तीन की सख्या, ८३।

तंई—क्रि० वि० [स० तंत्र] लिये, निमित्त। —सर्व० [स०त्वम्] तुम, तु।

तंउडो—देखो 'तसतूवो'।

तग—पु० १ घोडे, ऊट आदि का चारजामा बाधने का पट्टा। २ शरीर का कमर के नीचे का या ऊपर का भाग। ३ पशुओ के शरीर का पिछला भाग। —वि० १ दु.खी, विकल, हैरान। २ संकुचित, सकरा। ३ चुस्त। ४ छोटा। ५ अभाव, कमी। ६ अकडा हुआ, ऐंठा हुआ।

तंगड—देखो 'तागड'।

तंगडो—स्त्री० १ कच्छी, जागिया। २ गुजराती नटो का कच्छा विशेष।

तगली—स्त्री० चार से अधिक मीगो वाली जेई, कृषि उपकरण।

तगाइ, तगी—स्त्री० [फा० तगी] १ तग या संकरा होने की अवस्था या भाव। २ निर्धनता, गरीबी। ३ कमी, न्यूनता, अभाव। ४ तकलीफ, दु ख, कष्ट।

तगोटी—स्त्री० छोलदारी, छोटा तंबू।

तजेब—स्त्री० [फा०] बढिया मलमल।

तट्र—पु० [स० तट] किनारा, कूल, तट।

तंड—पु० ताडव नृत्य।

तडण—पु० १ मंथन। २ नृत्य नाच। ३ उछल कूद।

तडणो (बो)—क्रि० १ नृत्य करना, नाचना। २ ताडव नृत्य करना। ३ उछल-कूद करना। ४ मंथन करना। ५ बैल आदि का जोश मे बोलना।

तंडळ—पु० [स० तड] १ ध्वस, नाश। २ सहार। ३ टुकडा हिस्सा, खण्ड। [स० तडुल] ४ चावल।

तडव (वि)—स्त्री० १ जोश भरी आवाज, दहाड। २ देखो 'ताडव'।

तडिळ—पु० एक वृक्ष विशेष।

तडोर, तडोरव—पु० तरकस, तुणीर।

तडुळ—पु० [स० तदुल] १ चावल, धान। २ खण्ड, टुकडा भाग। ३ शरीरका कटा हुआ कोई भाग। ४ तमाल-पत्र।

तडुळकुसुमावळीविकार—पु० [स० तडुल कुसुमावली विकार] ६४ कलाओ मे से एक।

तडेव देखो 'ताडव'।

तढमल—वि० वीर, युद्ध।

तंण—देखो 'तण'।

तंणो—देखो 'तणो'।

तत—पु० [स० तत्त्व] १ सत्यता, असलियत। २ ओज, तेज। ३ शक्ति। ४ मौका, अवसर। ५ समय। ६ रहस्य, भेद। ७ सार, तत्त्व, साराश। ८ तथ्य। ९ शीघ्रता, आतुरता। [स० तत्री] १० सारगी, सितार। ११ तार। १२ तार वाद्य। १३ निश्चय। १४ देखो 'तत्र'। —बायरो, वायरो —वि० तत्व या सारहीन, निस्सार। शक्तिहीन, क्षमता रहित। तेजहीन।

ततर (रो)—देखो 'तंत्र'।

तंतसपत—पु० [स० सप्ततत्तु] यज्ञ।

तंताळ—पु० [सं० ततु] जल-जतु।

तंति (ती)—स्त्री० [स० तत] १ तारवाद्य। २ देखो 'तंत्री'।

ततु—पु० [स०] १ सूत। २ तागा, डोरा। ३ रेशा। ४ घास का तृण। ५ तात। ६ देखो 'तातो'।

ततुण—पु० [स०] १ मत्स्य, नक्र। २ मकडी का जाला।

तंतुनाग—पु० नक्र, मगर।

ततुल—स्त्री० कमलनाल।

ततुसत—पु० [स०सप्त तंतु] यज्ञ, होम।

ततूवाय—पु० [स० ततुवाय] बुनकर, जुलाहा।

तत्र—पु० [स०] १ तागा, डोरा, धागा। २ सूत, सूत। ३ तात। ४ मकडी का जाला। ५ सेना। ६ वस्त्र। ७ चौसठ कलाओ मे से एक। ८ जादू, टोना। ९ तार वाद्यो का तार। १० मत्र। ११ करघा। १२ ताना। १३ वश। १४ परपरा। १५ सिद्धात, नियम। १६ मुख्य विषय। १७ विज्ञान शास्त्र। १८ अध्याय, पर्व। १९ तत्र शास्त्र। २० किसी कार्य की उचित पद्धति। २१ राजकीय परिवार। २२ प्रात, प्रदेश। २३ शासन। २४ ढेर, समूह। २५ घर। २६ धन, सम्पत्ति। २७ यज्ञ। —नाळी—स्त्री० तोप। —वाद—पु० ७२ कलाओ मे से एक। —वादी—वि० जादू टोना जानने वाला।

तत्रणी–पु० तत्र शास्त्र का ज्ञाता, तान्त्रिक ।

तत्रिक–देखो 'तांत्रिक' ।

तत्री–पु० [सं०] १ सारंगी, सितार आदि तारवाद्य । २ इन वाद्यों को बजाने वाला कलाकार । ३ तान्त्रिक, जादूगर । ४ वाद्यों का तार । ५ तांत । ६ डोर, डोरी । ७ नस । ८ पूंछ ।

तदरा–देखो 'तंद्रा' ।

तदळ–देखो 'तदुळ' ।

तदुख–पु० श्वान, कुत्ता ।

तदुरस्ती, तदुरुस्ती–स्त्री० [फा० तदुरुस्ती] १ स्वस्थता, आरोग्यता । २ स्वास्थ्य ।

तदुळ–पु० [सं० तण्डुल] १ चावल, धान । २ मस्तक, शिर ।

तदुलवेयाली (सूत्र)–पु० [सं० तण्डुल वैकालिक] जैनों का एक सूत्र ग्रंथ, वैकालिक सूत्र ।

तदूर–पु० [फा० तनूर] १ रोटी पकाने का एक मटकीनुमा चूल्हा विशेष । २ बडी वीणा ।

तदूरौ–पु० १ वीणा से मिलता-जुलता एक तारवाद्य । २ देखो 'तदूर' ।

तद्रा–स्त्री० [सं०] १ हल्की सी निद्रा, ऊंघ, झपकी । २ हल्की मूर्छा । ३ एक रोग विशेष । ४ सुस्ती, आलस्य ।

तनै–देखो 'तनय' ।

तपा–स्त्री० [सं० तवा] सींगो वाली गाय ।

तब–पु० [सं०] १ बैल । २ अभिमान, गर्व । ३ देखो 'अंब' । ४ देखो 'तांबौ' । ५ देखो 'तंबू' ।

तबक, तबक्क–देखो 'अंबक' ।

तबपत्र–देखो 'तांबापतर' ।

तबा–स्त्री० [सं०] १ गाय । [फा० तबान] २ चौडी मोरी का पाजामा ।

तबाकू (खू)–देखो 'तमाकू' ।

तबाळ–देखो 'अंबाळ' ।

तबी–स्त्री० १ नगाडा । २ भय । ३ जोश पूर्ण आवाज ।

तबुक्क–देखो 'त्र्यंबक' ।

तबू–पु० १ शिविर, डेरा, खेमा । २ शामियाना ।

तबूर (रौ)–पु० [फा० तबूर] १ युद्ध में बजने वाला छोटा ढोल । २ तानपुरा । ३ एक तार का वाद्य ।

तबेरण, तबेरम, तबेरव, तबोरम–पु० [सं० स्तबेरम] हाथी, गज ।

तबोळ–पु० १ मुंह से निकलने वाला झाग, फेन । २ क्रोध, आवेश । [सं० ताम्बूल] ३ पान, बीडा । ४ देखो तबोळी' । –वि० १ लाल, रक्ताभ । २ अधिक, बहुत । —खानौ–पु० पान की दुकान । पान भण्डार । —नित–स्त्री० नागरबेल ।

तबोळि, तबोळी–पु० [सं० ताम्बूलिक] (स्त्री० तंबोलण) १ पान का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति । २ पान का व्यापारी, पनवाडी ।

तमाकू–देखो 'तमाकू' ।

तमारौ–सर्व० तुम्हारा, तुम्हारे ।

तमे–सर्व० तुमको, तुझे ।

तयाळीस–वि० [सं० त्रिचत्वारिंशत्] चालीस व तीन, तेंतालीस । –पु० चालीस व तीन की संख्या, ४३ ।

तयाळीसमौ (वौं)–वि० तेतालीसवा ।

तयाळीसौ, तयाळौ–पु० ४३ का वर्ष ।

तयासी–देखो 'तइयासी' ।

तयासीमौं (वौं)–वि० तेरासी के स्थान वाला ।

तयासीयौ–देखो 'तइयासियौ' ।

तवर–पु० १ एक राजपूत वंश व इस वंश का व्यक्ति । २ 'सिलावटों' की एक शाखा । ३ वह व्यक्ति या बालक जिसका प्रपितामह जीवित हो ।

तवरावटी–स्त्री० 'तवर' राजपूतों की जागीरी का प्रदेश ।

तवळाटी–स्त्री० मूर्च्छा, चक्कर, बेहोशी ।

तवाई–स्त्री० १ मूर्च्छा, बेहोशी । २ घबराहट, खलबली । ३ भय, आतंक ।

तस–वि० [सं० त्र्यस्र] त्रिकोण, तिकोना । (जैन)

तह, तहीं–क्रि०वि० १ वहां, तहां । २ उसी स्थान पर, वहीं ।

त–पु० [सं० त] १ पुण्य । २ चोर । ३ झूठ । ४ गर्भ । ५ रत्न । ६ सुख । ७ तीर्थ । ८ पाप । ९ मोक्ष । १० चित्त, हृदय । ११ स्थान । १२ सगुन, शकुन । १३ नाव । १४ दुम । १५ आत्मा । –अव्य० [सं० तत] १ उस दशा या अवस्था में । २ तब । ३ पादपूरक अव्यय । –सर्व० [सं० तुभ्यम्] १ तू, तुझ । २ तुम । ३ उस, वह ।

तइ, तइ–सर्व० [सं० त्वम् तुभ्यम्, तद्] १ तू, तुम । २ तुझ । ३ तेरे । ४ उस । –प्रत्य० [सं०] १ करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति, से । २ देखो 'तई' ।

तइनात (नाय)–देखो 'तैनात' ।

तइय–वि० [सं०तृतीय] तीसरा । –सर्व० उस, उन । –क्रि०वि० तभी, तब ।

तइया–सर्व० उन्होंने ।

तइया–वि० [सं० तृतीया] तीसरी (जैन) । –क्रि०वि० [सं० तदा] तब (जैन) ।

तइयार–देखो 'तैयार' ।

तइयौ–देखो 'तीयौ' ।

तइसं–क्रि०वि० वैसे ।

तई–क्रि०वि० तब, उस समय । –वि० [सं० आतताई] १ शत्रु, दुष्ट । २ देखो 'तइ' ।

तईनात–देखो 'तैनात' ।

तईनाती–स्त्री०[अ०तअय्युनात] १ तैनाती, नियुक्ति । २ प्रवन्ध ।

तईयासी–देखो 'तइयासी' ।

तईयार–देखो 'तैयार' ।

तउ, तउ–अव्य० [स० तत] पाद पूरक अव्यय । –क्रि०वि० १ तो, तब । २ तो भी । ३ यदि । ४ तब । ५ इत्यादि । –वि० [स० त्रीणि] तीन (जैन) । सर्व० [स० त्वम्] तुम, आप ।

तउणि (णी)–देखो 'तपणी' ।

तउय–पु० [स० त्रपुअ] रागा, कलई ।

तउस–पु० [स० त्रपुस] एक प्रकार की लता ।

तउसमिजगा, तउसमिंजिया–स्त्री० [स० त्रपुषमिजिका] तीन इन्द्रियो वाला एक जीव विशेष ।

तऊ–देखो 'तउ' ।

तकजी–स्त्री० विष्णु मूर्ति के शिर का एक आभूषण ।

तक–स्त्री० १ तकने की क्रिया या भाव, टकटकी । २ शक्ल, सूरत । ३ प्रकृति, स्वभाव । ४ प्रकार, ढग । ५ वकरो को उत्तेजित करने का शब्द । –अव्य० [स० अत + क] पर्यन्त । –क्रि०वि० तरह, भाति ।

तकख–देखो 'तक्षक' ।

तकडतम–वि० तना हुआ, खीचा हुआ ।

तकण–वि० तकने वाला । –सर्व० वह, उस ।

तकणौ (बौ)–क्रि० १ लगातार एक ओर देखना, टकटकी लगाना । २ गौर से देखना । ३ ताक मे रहना । ४ आश्रय लेना ।

तकत–देखो 'तखत' ।

तकतूबौ–पु० १ विकृत कलिन्दा या हिन्दवानी । २ इन्द्रायण लता का फल ।

तकतौ–पु० तकुआ ।

तकदीर–स्त्री० [अ०] भाग्य, किस्मत, प्रारब्ध ।

तकबीर–स्त्री० [अ०] अल्ला हो अकवर की आवाज़ ।

तकमीनौ–देखो 'तखमीनौ' ।

तकरार–स्त्री० [अ०] १ वाद-विवाद, वहस । २ लडाई, वाग् युद्ध । ३ शीघ्रता ।

तकरीर–स्त्री० [अ०] बातचीत । भाषण, सभाषण ।

तकली–स्त्री० सूत कातने का छोटा उपकरण ।

तकलीणौ–वि० (स्त्री० तकलीणी) १ सुलभ, सहज, सुगम । २ दुर्वल, कृश ।

तकलीफ, तकलीब–स्त्री० [अ० तकल्लुफ] १ कष्ट दुख । २ पीडा वेदना । ३ परेशानी ।

तकलौ, तकवौ–देखो 'ताकळी' ।

तकसीम–स्त्री० [अ०] वाटने की क्रिया, वंटाई, वितरण ।

तकसीर–स्त्री० [अ०] १ अपराध, गुनाह, दोष । २ त्रुटि, गलती ।

तका–देखो 'तिका' ।

तकाई–स्त्री० तकने की क्रिया या भाव, ताक-झाक ।

तकाजौ–पु० [अ० तकाज] १ वार-वार मागने की क्रिया या भाव । २ ताकीद, शीघ्रता । ३ कोई वस्तु लौटाने के लिए किया जाने वाला आग्रह ।

तकात–अव्य० १ तक, पर्यन्त । २ भी ।

तकादौ–देखो 'तकाजौ' ।

तकावी (वी)–स्त्री० [अ० तकावी] कृषको से सरकारी ऋण की वसूली ।

तकार–पु० १ छद शास्त्र का 'तगण' । २ 'त' वर्ण ।

तकियाकलाम–पु० [अ०] वात करते समय व्यर्थ मे, वार-वार प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

तकियौ–पु० [फा० तकिय] १ सोते समय शिर के नीचे रखी जाने वाली रुई की मोटी थैली, उपधान, सिरहाना । २ छज्जे के सहारे मे लगाई गई पत्थर की पट्टी । ३ मुसलमान फकीरो का निवास स्थान । ४ कब्र का पत्थर विशेष ।

तक्क–स्त्री० १ तर्क । २ देखो 'तक' ।

तक्कड–स्त्री० शीघ्रता, ताकीद, तकाजा, आग्रह ।

तक्कणौ (बौ)–देखो 'तकणौ' (वौ) ।

तक्कर–पु० [स० तस्कर] १ चोर । २ गैर कानूनी व्यापार करने वाला । ३ चोर वाजारी ।

तक्ख–१ देखो 'तक्षक' । २ देखो 'तारक' ।

तक्खण (णि, णी)–अव्य० [स० तत्क्षण] तत्काल, तत्क्षण ।

तक्र, तक्रि–पु० [स०] छाछ, मट्ठा । —मड–पु० दही, दधि । —सार–पु० नवनीत, मक्खन ।

तक्ष–पु० [स०] भरत का वडा पुत्र ।

तक्षक–पु० [स०] १ आठ प्रमुख नागो मे से एक । २ सर्प, नाग । ३ एक अनार्य जाति । ४ विश्वकर्मा । ५ बढई । –वि० लाल, रक्ताभ ।

तक्षण–पु० [स०] १ वढई का कार्य, चौसठ कलाओ मे से एक । २ देखो 'तक्खण' ।

तक्षसिला–स्त्री० [स०] भरत पुत्र 'तक्ष' की राजधानी, एक प्राचीन नगर ।

तखग (गि, गी)–पु० [स० तक्षक] १ शेषनाग । २ तक्षक सर्प । ३ सर्प । –वि० तीक्ष्ण, पैना, तेज ।

तख-वि० १ अफीमची । २ मूर्ख, मूढ ।

तखक्र–पु० [स० तक्ष-तनू] सुदर्शनचक्र ।

तखड़–१ देखो 'तखडौ' । २ देखो 'तक्कड' ।

तखडीतुमडीका–स्त्री० गुजराती नटो की एक शाखा।

तखड़ौ–वि० (स्त्री० तखडी) १ द्रुतगामी। २ तेज गति वाला।

तखण, तखणइ–पु० गरम पानी से ग्राखो का सिकताव।

तखत–पु० [फा० तख्त] १ सिंहासन, राजगद्दी। २ चौकी, पाट। –वि० चकित, विस्मित दग। —**ताऊस**–पु० शाहजहा का मयूर सिंहासन। –**नसीन**–वि० सिंहासनारूढ। —**पोस**–पु० तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। —**बदी**–स्त्री० तख्तो की दीवार। –**रबुल-ग्रालमीन**–पु० मुसलमानो का एक तीर्थ स्थान।

तखतखी–इन्द्र।

तखति–(**ती**)–स्त्री० [फा० तख्त] १ छोटा तख्ता। २ लकडी की चौकी। ३ छोटे विद्यार्थियो के लिखने की काष्ठ पट्टिका। ४ कठ का एक ग्राभूषण विशेष।

तखतौ–पु० [फा० तख्त] १ बडा पाट, बडी चौकी। २ लकडी का चौकोर खण्ड, गत्ता। ३ खण्ड भाग। ४ दर्पण, ग्राईना।

तखत्त–देखो 'तखत'।

तखफीक–स्त्री० [स० तख्फीफ] ग्रभाव, कमी, न्यूनता।

तखमख–स्त्री० सज-धज। शृ गार।

तखमीनन–क्रि० वि० [ग्र० तख्मीनन] ग्रदाज से, ग्रनुमान से।

तखमीनौ–पु० [ग्र०तख्मीन] १ ग्रदाज, ग्रनुमान। २ ग्रनुमानित ब्योरा।

तखिक–देखो 'तक्षक'।

तखिण–देखो 'तत्क्षण'।

तखिसला–देखो 'तक्षसिला'।

तखौ–देखो 'तक्षक'।

तख्ख–पु० शस्त्र का पैनापन, तीखापन, तीक्ष्णता।

तख्यक–देखो 'तक्षक'।

तगग–स्त्री० १ तीव्र गति। २ तीव्रता। –क्रि० वि० तीव्रगति से, तेजी से।

तगड़–स्त्री० १ सोने या चादी की पतली चद्दर। –स्त्री० २ ग्रधिक चलने या कार्य करने से होने वाली थकान। ३ तीव्र गति। ४ देखो तक्कड'।

तगड़णौ (बौ)–क्रि० हाकना, चलाना दौडाना।

तगडौ–वि० १ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। २ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

तगण–पु० [स०] दो गुरु एक लघु का वर्णिक गण ऽऽ।।

तगतगई–स्त्री० स्त्रियो के कण्ठ का ग्राभूषण।

तगतगाणौ (बौ)–क्रि० १ प्रेरित करना। २ उत्तेजित करना। ३ देखो 'तिगतिगाणौ' (बौ)।

तगतागु–स्त्री० सुन्दरता।

तगतौ–देखो 'तखतौ'।

तगदमा–पु० [ग्र० तकद्दुम] ग्रनुमान, ग्रदाज।

तगदीर–देखो 'तकदीर'।

तगमौ–देखो 'तुकमौ'।

तगर–पु० [स०] १ सुगंधित लकडी वाला पेड। २ इस पेड की लकडी।

तगरौ–देखो 'तिगरौ'।

तगस (सि)–पु० [स० तार्क्ष्य] १ ग्रग्नि, ग्राग। २ गरुड़। ३ देखो 'तक्षक'।

तगसणौ (बौ)–क्रि० उडना।

तगसीर, (सीरौ)–देखो 'तकसीर'।

तगस्सेस–देखो 'तक्षक'।

तगागीर–वि० तकाजा करने वाला।

तगादौ–देखो 'तकाजौ'।

तगारी–स्त्री० १ लोह की चद्दर का बना कुण्ड या डलियानुमा पात्र। २ बडा पात्र।

तगी–स्त्री० १ सण ग्रादि का रेशा। २ देखो 'तागौ'। ३ देखो 'तिगी'।

तगीर, तगीरी–पु० [ग्र० तग्य्युर] १ निकालना क्रिया, निष्कासन। २ परिवर्तन, बदलाव, हेर-फेर। ३ क्राति। ४ जब्ती। –वि० १ निष्कासित, बाहर। २ जब्त। ३ परिवर्तित।

तगौ–पु० १ ब्राह्मण के लिए ग्रपमान सूचक शब्द। २ देखो 'तागौ'।

तग्ग–देखो 'तागौ'।

तग्गड़–१ देखो 'तक्कड'। २ देखो 'तगड'।

तग्य, तग्यौ–वि० [स० तज्ञ] १ तत्त्वज्ञ, ज्ञानी। २ दर्शन शास्त्र का ज्ञाता, दार्शनिक।

तड़ग–वि० १ नंगा, वस्त्र-हीन। २ लम्बा।

तडगौ–पु० झुण्ड, समूह।

तडबौ–पु० १ बेंत की चोट। २ चोट की ग्रावाज, ध्वनि। –वि० लम्बा, लम्बायमान।

तड–पु० १ प्रातःकाल, सवेरा। २ वंश, कुल। ३ बेंत मारने की क्रिया। ४ प्रहार या वर्षा की ध्वनि। ५ वास। ६ वश या कुल की शाखा। ७ सेना, फौज। ८ दल, पार्टी। –वि० समान, तुल्य।

तडक–स्त्री० १ चमक-दमक। २ फटने, चिरने की क्रिया। ३ फटने की ग्रावाज। ४ दरार। ५ तालाव, सरोवर। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी। चट-चट।

तडकउ–देखो 'तडकौ'।

तडकण–वि० फटने, चिरने, चटकने वाला। –स्त्री० फटने या चटकने की क्रिया या भाव।

तडकणो (बो)–क्रि० १ 'तड़' शब्द करते हुए फटना । २ क्रोध या आवेश मे बोलना । ३ क्रोधित होना । ४ चमकना । ५ दरार पडना, चटकना ।
तडक-भडक–स्त्री० चमक-दमक ।
तडकली–स्त्री० स्त्रियो का एक कर्णाभूषण ।
तडकलौ–देखो 'तडकौ' ।
तडकी–देखो 'तिडकी' ।
तडके, तडकै–क्रि०वि० १ बडे, सवेरे । २ शीघ्र, जल्दी । ३ धूप मे । ४ अगले दिन ।
तडकौ, (क्को)–पु० १ प्रात काल, सवेरा । २ धूप गर्मी । ३ आगामी प्रात काल ।
तडच्छ, तडछ–स्त्री० १ तडफडाट, छटपटाहट । २ देखो 'तडाट' । ३ देखो 'तडाछ' ।
तडछणौ(बौ)–क्रि० १ तडफना, छटपटाना । २ व्याकुल होना । ३ मूर्च्छित होना । ४ संहार करना । ५ काटना ।
तडछाणौ (बौ)–क्रि० १ तडफाना । २ व्याकुल करना । ३ मूर्च्छित करना । ४ सहार कराना । ५ कटवाना ।
तडण–स्त्री० दरार । –वि० 'तड' करके फटने वाला ।
तडणौ (बौ)–क्रि० १ 'तड' की ध्वनि के साथ फटना । २ चटकना, दरार पडना । ३ क्रोध करना । ४ पशु का पतला मल करना ।
तडत, तडित, तड़िता, तडिताळ, तडिति, तडिंयळ, तडियाळ–स्त्री० [स० तडिता] बिजली, विद्युत । —**देह**–पु० ४९ क्षेत्रपालो मे से ३२ वा क्षेत्रपाल । —**वान**–पु० मेघ, बादल । जल ।
तडियौ–पु० १ एक ही बैल अथवा ऊट से खीचे जाने वाले हल की दो हरिसाओ मे से एक । २ देखो 'तडौ' ।
तड़िल्लता–स्त्री० [स० तडिता] बिजली, विद्युत ।
तडी–स्त्री० १ वृक्ष की पतली टहनी । २ छोटी हंसिया लगा लबा बास । ३ डडा, छोटी लकडी । ४ छोटी लकडी का हाथ पर प्रहार ।
तडीत–पु० १ ऊट के वक्षस्थल का कठोर स्थान । २ देखो 'तडित' ।
तडीतवान–देखो 'तडितवान' ।
तड़बड–वि० समान, तुल्य, सदृश । –क्रि० वि० करीब, लगभग ।
तडल–पु० योद्धा, वीर ।
तडोवड (बडी, वडि, वडी)–स्त्री० समानता, बराबरी ।
तडौ–पु० १ हसिया लगा लम्बा बास । २ डडा ।
तडयोवडयौ–वि० बराबरी वाला, समानता वाला ।
तंचणौ (बौ)–क्रि० १ कष्ट सहना । २ सतप्त होना । ३ गर्म होना, तप्त होना । ४ काया को कष्ट देना ।

तचा–स्त्री० [सं० त्वचा] चमडी ।
तचाणौ (बौ)–क्रि० १ तपाना, गर्म करना । २ दुर्बल करना । ३ कष्ट देना ।
तचोळ–स्त्री० कपायमान होने की क्रिया या भाव ।
तच्च–स्त्री० १ किसी पैने शस्त्र आदि का किसी मे सहसा घुसने की क्रिया या भाव । २ त्वचा । –वि० [सं० तथ्य] सत्य, यथार्थ । (जैन)
तच्छ–देखो 'तक्ष' ।
तच्छक–देखो 'तक्षक' ।
तच्छणि–स्त्री० लकड़ी छीलने का उपकरण विशेष ।
तच्छन, तच्छिन–क्रि० वि० [स० तत्क्षण] तत्काल तुरत ।
तछणौ (बौ)–क्रि० १ सहार करना, मारना । २ काटना ।
तछेक–क्रि० वि० शीघ्र, द्रुतगति से ।
तज–पु० १ एक वृक्ष विशेष की छाल जो औषधि मे काम आती है । २ एक वृक्ष । ३ त्यागने की क्रिया ।
तजणौ (बौ)–क्रि० [स० त्यज्] १ त्यागना, छोडना । २ कृश होना, क्षीण होना ।
तजबीज–स्त्री० [अ०] १ निर्णय, फैसला । २ प्रबन्ध, व्यवस्था । ३ उपाय, युक्ति ।
तजबीर–पु० [अ० तज्रिब] अनुभव ।
तजरबौ–पु० [अ० तज्रिब] अनुभव, ज्ञान ।
तजवीज–देखो 'तजबीज' ।
तजोरी–देखो 'तिजोरी' ।
तज्जणा–स्त्री० [स० तर्जन] तिरस्कार, भर्त्सना । (जैन)
तज्जणौ (बौ)–देखो 'तजणौ' (बौ) ।
तट–पु० [स०] १ किनारा, तीर, कूल । २ सीमा, हद । ३ खेत । ४ ढालू स्थान । ५ आकाश । ६ महादेव । –क्रि० वि० १ पास, निकट, समीप । २ नीचे ।
तटक–स्त्री० ध्वनि विशेष । –क्रि० वि० तत्क्षण, तुरन्त ।
तटकणौ (बौ), तटक्कणौ (बौ)–क्रि० १ टूटना । २ देखो 'तडकणौ' (बौ) ।
तटणी (नी)–स्त्री० [सं० तटिनी] नदी ।
तटस्थ–वि० [स०] १ अलग दूर । २ किनारे वाला । ३ निर्लिप्त, उदासीन ।
तटा–स्त्री० [स० तट] १ नदी, सरिता । २ किनारा, कूल । –क्रि०वि० १ पास, समीप, निकट । २ ऊपर ।
तटाक–पु० [स० तडाग] १ तालाब, सरोवर, जलाशय । –स्त्री० २ झटके से टूटने की क्रिया । ३ इस प्रकार टूटने से होने वाला शब्द । –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी, तुरत ।
तटारी, तटी–स्त्री० [स० तट] किनारा, कूल ।
तटिनी–देखो 'तटणी' ।

तटी–देखो 'तटा'।

तटे (टै)–देखो 'तठे'।

तठा–सर्व० [स० तत्] उस । –क्रि०वि० [स० तत्र] १ वहा। २ तत्र।

तठी–क्रि०वि० [सं० तत्र] १ वहा । २ उधर, उस ओर।

तठे (ठै)–क्रि०वि० वहा।

तड–१ देखो 'तट'। २ देखो 'तड'।

तडकस–वि० तग, कसा हुआ, दृढ।

तडक्करणौ (बौ)–देखो 'तडकणौ' (बौ)।

तडफडणौ (बौ)–देखो 'तडफणौ' (बौ)।

तडरकौ–पु० जल्दबाजी, शीघ्रता।

तडळ–पु० अग्निकरण, चिनगारी।

तडा–स्त्री० [स० तट] तट, किनारा, कूल।

तडूकु, तडूकौ–पु० [स० ताटक] स्त्रियो के कान का आभूषण।

तडौ–देखो 'टड्डौ'।

तणक (कौ)–पु० तार वाद्यो की झकार।

तण–पु० [स० तनय] १ पुत्र, लडका। [स० तनु] २ काया, शरीर, तन । –वि० तीन । –सर्व० उस, उन। –प्रत्य० सबध या षष्ठी विभक्ति का चिह्न का, की, के। –क्रि०वि० लिये, इसलिए। देखो 'तिरण'।

तणइ, तणउ–प्रत्य० १ षष्ठी विभक्ति का चिह्न, का, के। २ देखो 'तनय'।

तणकणौ (बौ)–क्रि० १ खिचाव मे आना, तनना । २ ढील निकलना। ३ वाद्यो के तार झनझनाना। ४ गुस्सा होना।

तणकार (कारौ)–स्त्री० १ तार वाद्यो की झन्कार । २ तनाव, खिचाव। ३ तनाव देने की क्रिया या भाव।

तणकारौ–पु० १ खीचने या तानने की क्रिया या भाव। २ तार वाद्यो की झन्कार । ३ झटका।

तणकासप–पु० [स० कश्यपतनय] सूर्य।

तणकौ–वि० १ तना हुआ खिचा हुआ । २ देखो 'तिणकौ'।

तणक्कणौ (बौ)–देखो 'तणकणौ' (बौ)।

तणखा–देखो 'तनखा'।

तणच (च्छ, छ)–स्त्री० नरम व लचीली लकडी वाला वृक्ष विशेष।

तणणौ (बौ)–क्रि० १ खिचना, तनाव खाना । २ ऐंठना, अकडना। ३ शामियाना आदि, ऊपर फैलाया जाना, ताना जाना । ४ गर्व करना, शेखी बघारना । ५ बल पूर्वक बढना, प्रवृत्त होना । ६ खिचाव मे आना । ७ जोश मे आना। ८ युद्धार्थ तत्पर होना । ९ रूठना, गुस्सा करना। १० चित्रित होना। ११ उभरना।

तणतणाणौ (बौ)–क्रि० १ तनना, तनाव मे आना । २ क्रोध करना, कुपित होना।

तणय–पु० [सं० तनय] पुत्र, लडका।

तणया–देखो 'तनया'।

तणस–स्त्री० वृक्ष विशेष।

तणहस्तक–पु० [स० तृणहस्तक] घास का पुआल।

तणाव–पु० १ मादा ऊट की ऋतुमती होने की अवस्था या भाव। २ खिचाव, तनाव । ३ तम्बू आदि का फैलाव । ४ मन मुटाव, वैमनस्य। ५ किसी वस्तु की ऐसी दशा जब उसमे शिथिलता या ढीलापन न हो । ६ जोश या क्रोध पूर्ण अवस्था।

तणियर–पु० [स० त्रिनयन] शिव, महादेव।

तणीं, तणी–स्त्री० १ मागलिक अवसरो पर चौक या मण्डप मे, ऊपर बाधी जाने वाली मूज की डोरी । २ दीवार के सहारे या खुले मैदान मे बाधी जाने वाली डोरी। ३ तराजू की डोरी। ४ किसी वस्त्रादि की कस। ५ पुत्री, लडकी। ६ देखो 'तिरणी' । –प्रत्य० षष्ठी विभक्ति का चिह्न, की। —बध-पु० पाणिग्रहण सस्कार।

तणु–प्रत्य० षष्ठी विभक्ति का चिह्न, का । –पु० [स० तनय] १ पुत्र। २ देखो 'तन' । –वि० अत्यन्त निकट के रिश्ते वाला, अत्यन्त प्रिय।

तणुयरी–वि० [स० तनुतरी] बहुत पतली।

तणुया–स्त्री० [सं० तनुजा] १ पुत्री, बेटी। २ सर्प की कैंचुल।

तणुवाय–स्त्री० स्वर्ग के तल की वायु। (जैन)

तणू–देखो 'तणु'।

तणे–प्रत्य० षष्ठी विभक्ति का चिह्न, के । –क्रि० वि० १ पास, समीप, निकट। २ देखो 'तनय'।

तणौ–प्रत्य० षष्ठी विभक्ति का चिह्न, का। –पु० [स० तनय] १ पुत्र, बेटा। २ पेट की आत । ३ पेट का खाली भाग। ४ आश्रय, सहारा बल।

तत–१ देखो 'तत'। २ देखो 'तत्व'।

ततग–वि० निर्वस्त्र, नग्न।

तत–सर्व० [स० तद्] वह, उस । –क्रि०वि० [स० तत्र] १ वहा, तहा । २ देखो 'तत्व'।

ततकार–पु० नृत्य का बोल। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

ततकारणौ (बौ)–क्रि० १ बैलो आदि को उकसाना, उत्तेजित करना। २ तेज गति से चलाना। ३ दौडाना, भगाना।

ततकाळ (ळि, ळी ळौ)–देखो 'तत्काळ'।

ततक्षण, ततक्षणि, ततक्षिण, ततखण, ततखिण, ततखिणी, ततखिन, ततखेव, ततख्यण–देखो 'तत्क्षण'।

ततग्यान–देखो 'तत्वग्यान'।

तततायेई, ततत्थी, ततथेई, ततथेयव–पु० नृत्य का बोल विशेप।

ततपर–देखो 'तत्पर'।

ततबाउ–पु० [स० ततुवाय] जुलाहा, बुनकर।

ततबीर–देखो 'तदबीर'।
ततरे–क्रि०वि० इतने मे।
ततवादी–पु० तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञानी।
ततवितत–पु० तार वाद्य विशेष।
ततवीर–देखो 'तदबीर'।
ततवेग–क्रि०वि० तुरत, शीघ्र, तत्काल।
ततवेता–देखो 'तत्त्ववेत्ता'।
ततसार–पु० ११ वर्ण का एक छन्द विशेष।
तताथेई–स्त्री० नृत्य का बोल।
ततारी–पु० तातार देश का घोडा। –वि० तातार देश का, तातार सबधी।
ततियौ–देखो 'तत्तौ'।
तती–वि० १ क्रोध पूर्ण, क्रोध से लाल। २ तेज, तीक्ष्ण। ३ तप्त, उष्ण। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी, तुरत।
ततैया–स्त्री० दौड, गति, चाल।
ततैयौ–पु० वर्र।
ततौ–क्रि०वि० १ तत्पश्चात। २ देखो 'तत्तौ'।
तत्काळ–क्रि०वि० [स० तत्काल] तुरन्त, उसी समय, शीघ्र।
तत्कालीन–वि० [स०] उसी समय का।
तत्काळौ–देखो 'तत्काळ'।
तत्क्षण–क्रि०वि० [स०] उसी क्षण, उसी समय, शीघ्र।
तत्त–वि० [स० तप्त] पीडित, दुखी, सतप्त। –क्रि०वि० [स० तत] तत्पश्चात्, तदनन्तर। देखो 'तत्त्व'। देखो 'तातौ'।
ततकाळु (ळू)–देखो 'तत्काळ'।
तत्तवेत्ता–देखो 'तत्त्ववेत्ता'।
तत्तौ–वि० (स्त्री० तत्ती) १ तीक्ष्ण, तेज। २ तीव्र, तेज। ३ क्रुद्ध, कुपित। ४ देखो 'तातौ'। –पु० 'त' वर्ण।
तत्त्व–पु० [स०] १ पृथ्वी, जल, वायु आदि पच भूत। २ परब्रह्म। ३ जगत का मूल कारण। ४ ब्रह्माण्ड रचना के २५ पदार्थ, तत्त्व। ५ सार वस्तु। ६ यथार्थता, असलियत। ७ स्वरूप। ८ निष्कर्ष। ९ मन। १० यथार्थ का सिद्धान्त। ११ वस्तु। १२ नृत्य विशेष।
तत्त्वग्य–पु० [स० तत्त्वज्ञ] तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञाती, दार्शनिक।
तत्त्वग्यान–पु० [स० तत्त्वज्ञान] आत्म ज्ञान, ब्रह्म सबंधी यथार्थ ज्ञान।
तत्त्वग्यांनी–वि० [स० तत्त्वज्ञानी] १ आत्मज्ञानी, तत्त्ववेत्ता। २ जीव, ब्रह्म, माया के प्रति यथार्थ ज्ञान वाला दार्शनिक।
तत्त्वता–स्त्री० [स०] सत्यता, यथार्थता।
तत्त्वदरसी–वि० [स० तत्त्वदर्शिन] ब्रह्म जीव का ज्ञान रखने वाला, दार्शनिक।
तत्त्वद्रस्टी–स्त्री० [स० तत्त्वदृष्टि] दिव्य दृष्टि, सूक्ष्म दृष्टि।
तत्त्ववाद–पु० [स०] ब्रह्म जीव सबधी दर्शन।
तत्त्वविद्या–स्त्री० [स०] तत्त्वज्ञान, दर्शनशास्त्र।
तत्त्ववेत्ता–वि० [स०] तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक।
तत्थ–वि० [स० ग्रस्त] त्रास-युक्त, त्रसित। –क्रि० वि० [स० तद्] वहा। –सर्व० [स० तद] १ उस। २ देखो 'तथ्य'।
तत्थथेई–पु० नृत्य का बोल।
तत्पर–वि० [स०] तैयार, उद्यत, सन्नद्ध। होशियार, सावधान।
तत्परता–स्त्री० [स०] तत्पर होने की दशा या भाव। होशियारी सावधानी।
तत्पुरस–पु० [स० तत्पुरुष] १ परमेश्वर। २ एक रुद्र। ३ छः समासो मे से एक।
तत्र–क्रि० वि० [स०] वहा, उस जगह। –पु० लोहे का तार।
तत्सम–पु० [स०] किसी भाषा मे प्रयुक्त सस्कृत का शब्द।
तथ–देखो 'तथ्य'। देखो 'तिथि'।
तथख्यण–देखो 'तत्क्षण'।
तथा–अव्य० [स०] और, एव। उसी प्रकार, वैसेही। –पु० ध्यान।
तथागत–पु० [स०] भगवान बुद्ध का एक नाम।
तथापि–अव्य० [स०] यद्यपि, तो भी, तवभी।
तथासतू, तथास्तू–अव्य० [स० तथास्तु] एवमस्तु, ऐसा ही हो।
तथि–देखो 'तथ्य'। देखो 'तिथि'।
तथुंग–पु० नृत्य की एक ताल।
तथोपणौ (बौ)–क्रि० जोश दिलाना, उत्तेजित करना, पीठ ठोकना।
तथ्य, तथ्य–पु० [स०] यथार्थ, सच्चाई, सार, तत्त्व।
तदतर–क्रि० वि० [स] इसके उपरात, उसके बाद, तत्पश्चात्।
तददा–क्रि० वि० तब।
तद–क्रि० वि० [स० तदा] १ उस समय, तब। २ उसके बाद।
तदगुण–पु० [स० तद्गुण] १ अगली वस्तु का गुण। २ अर्थालकार का एक भेद।
तदग्ग–क्रि० वि० उसके आगे।
तदपि (भी)–अव्य० [स०] तिस पर भी, तो भी।
तदबीर–स्त्री० [अ०] उपाय, युक्ति, तरकीब।
तदरा–क्रि० वि० तब से, उस समय से।
तदा–क्रि० वि० तब।
तदारुक, तदारूक–पु० [अ० तदारुक] १ खोई वस्तु की जाच। २ सजा दण्ड। ३ दुर्घटना की रोकथाम।
तदि, तदी–देखो 'तद'।

तवीक–क्रि० वि० तभी ।

तवीय–सर्व० उसके ।

तद्धित–पु० १ सज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण के अन्त मे लगने वाला प्रत्यय । २ प्रत्यय लग कर बना शब्द ।

तद्भव–पु० [स०] सस्कृत शब्द का अपभ्रश रूप । परिवर्तित रूप ।

तद्रूप–वि० [स०] समान, सदृश, तुल्य । –पु० रूपक अलकार का एक भेद ।

तन–पु० [स० तनु] १ शरीर, तन, देह । २ मन । ३ सबधी, रिश्तेदार । ४ वशज, संतान । ५ पुत्र, लडका ।

तनक–वि० [म० तनिक] तनिक, थोडा, किंचित । –स्त्री० १ नाज, नजाकत । २ दिखावा । —**मिजाजी**–स्त्री० चिड चिडाने का स्वभाव । –वि० चिड-चिडे स्वभाव का ।

तनकळानिध–पु० चन्द्रमा ।

तनकीह–स्त्री० जाच, तहकीकात ।

तनखा, तनखाह–स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन, तलब ।

तनगणौ (बौ)–क्रि० अप्रसन्न होना, रुष्ट होना । रूठना ।

तनड़ौ–देखो 'तन' ।

तनजा–देखो 'तनुजा' ।

तनताप–पु० शरीर का कष्ट, व्याधि ।

तनत्राण, (न)–पु० [स० तनुत्राण] कवच, बख्तर ।

तनदीवाण–पु० अगरक्षक ।

तनधय–पु० [स० स्तनधय] शिशु, बच्चा ।

तनधर–पु० [सं० तनु धारिन्] शरीरधारी कोई प्राणी ।

तनापटाट–पु० तर्क-वितर्क, उद्दण्डता, नखरा ।

तनपात–पु० देहावसान, मृत्यु ।

तनबगसी–पु० अग रक्षक ।

तनबीचि, तनमध–स्त्री० कटि, कमर ।

तनमय–वि० [स० तन्मय] लवलीन, तल्लीन, मग्न ।

तनमात्रा–स्त्री० [स० तन्मात्रा] साख्य के अनुसार पच भूतों का आदि, अमिश्र व सूक्ष्म रूप ।

तनय–पु० [स०] १ पुत्र, सुत । २ नर सतान ।

तनयतू (त्नू)–पु० [स० स्तनयित्नु] १ मेघ, वादल । २ सबधी । –स्त्री० ३ बिजली । ४ बिजली की चमक । –वि० रक्षा करने वाला ।

तनया–स्त्री० [स०] १ पुत्री वेटी । २ मादा सतान ।

तनराग–पु० [स० तनुराग] १ सुगधित द्रव्यो का उवटन । २ उवटन के सुगधित द्रव्य ।

तनरुह (रूह)–पु० [स० तनुरुह] रोम, लोम ।

तनवार–पु० [स० तनुवार] कवच ।

तनविड–पु० [स० तनु-व्याध] शत्रु, वैरी ।

तनव्रण–पु० [स० तनुव्रण] मुहासे ।

तनसणगार–पु० [सं० तनु-शृ गार] वस्त्र, वसन ।

तनसर–पु० [स० तनुसर] पसीना ।

तनसाच–पु० कामदेव ।

तनसार–पु० [स० तनुसार] १ मनुष्य । २ देखो 'तनुसार' । –वि० शरीर को छेदने वाला ।

तनसुख–पु० १ फूलदार वस्त्र । २ शारीरिक सुख ।

तनसोर–पु० मनुष्य ।

तनहस–पु० [स० तनु-हस] १ हंसावतार, विष्णु । २ आत्मा ।

तनहा–वि० [फा०] अकेला, एकाकी । –क्रि०वि० बिना साथ से ।

तनहाई–स्त्री० [फा०] एकाकीपन, अकेलापन । एकान्त ।

तनाजान–वि० अकेला, एकाकी ।

तनाजौ–पु० [अ० तनाअाज] १ झगडा, टटा, बखेडा । २ वैर, शत्रुता ।

तनाती–पु० १ ईश्वर । २ निकट का सबधी । ३ शरीर संबधी ।

तनायत–पु० स्वजन, निकट सबंधी ।

तनारसौ–पु० धनुष ।

तनिक–वि० थोडा, अल्प, किंचित ।

तनिया–देखो 'तनया' ।

तनु–पु० [सं०] १ शरीर, देह, तन । २ जन्म कु डली का प्रथम स्थान । –वि० १ पतला-दुबला, कृशकाय । २ महीन, सूक्ष्म । ३ कोमल, मुलायम । ४ कम, थोडा । ५ तुच्छ । ६ छिछला । ७ प्रिय, प्यारा ।

तनुज–पु० [स०] पुत्र, बेटा ।

तनुजा (ज्जा)–स्त्री० [स०] पुत्री, बेटी ।

तनुत्राण–देखो 'तनत्राण' ।

तनुधारी–देखो 'तनधर' ।

तनुनपात, तनुनिपात–स्त्री० [सं० तनुनपात्] अग्नि, आग ।

तनुबध–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

तनुमझ्या–स्त्री० [स० तनुमध्या] पतली कमर की स्त्री ।

तनुमझ्यौ–पु० एक वर्ण वृत्त ।

तनुराग–देखो 'तनराग' ।

तनुरौ–देखो 'तदूरौ' ।

तनुसार–पु० [स० तनु + सृ] १ शरीर मे व्याप्त होकर रहने वाला । २ कामदेव, मदन । ३ बलवान शरीर वाला ।

तनू, तनू–पु० [स०] शरीर, देह । –वि० १ अत्यन्त प्रिय । २ अत्यन्त निकट का । —ज='तनुज' । —जा='तनुजा' ।

तनूवर, तनूवरी–स्त्री० स्त्री, महिला ।

तनूर–देखो 'तदूर' ।

तनेयक–देखो 'तनिक' ।

तनै, तनै–सर्व० १ तुझ, तुझको । २ देखो 'तन्य' ।

तनेरुह–देखो 'तनरुह' ।

तन्न–देखो 'तन' ।

तन्नु–पु० १ निकट सम्बन्धी, स्वजन । २ आत्मीयजन । ३ देखो 'तन' ।

तन्मात्रा–देखो 'तनमात्रा' ।

तप–पु० [स० तपस्] १ तन व मन की शुद्धि के लिये किया जाने वाला व्रत, नियम पालन आदि । २ मन व इन्द्रियो को वश मे रखने का धर्म । ३ साधना, तपस्या । ४ ताप, गर्मी, उष्णता । ५ ग्रीष्म, ऋतु । ६ माघ का महीना । ७ बुखार, ज्वर । ८ अग्नि, आग । ९ शीतकाल मे तापने के लिये जलाई जाने वाली साधारण आग । १० सूर्य । ११ तेज, ओज, कान्ति । १२ पीडा, कष्ट । १३ ध्यान । १४ पुण्य कर्म । १५ शिशिर व हेमन्त ऋतु । १६ शास्त्र विहित कर्मानुष्ठान । **–कण, करण, घण**–पु० सूर्य । **–धर, धार, धारी**–वि० तपस्या करने वाला । ऐश्वर्य भोगने वाला । –पु० ऋषि, तपस्वी । राजा, बादशाह । **–नासी**–वि० तपस्या मे बाधा डालने वाला । **–बळी, वत**–वि० तपस्वी । तेजस्वी, ओजस्वी । ऐश्वर्यशाली, योगी । **–साळी, सील**='तपवत' ।

तपई–पु० एक प्रकार का कपडा ।

तपण–स्त्री० [स० तपन] १ ताप, गर्मी । २ जलन । ३ सूर्यकात मणि । ४ वियोगाग्नि । ५ सूर्य । ६ शिव । ७ मदार या आक । ८ एक नरक विशेष ।

तपणी–स्त्री० १ सन्यासी या योगी के अग्निकुण्ड की अग्नि । २ योगियो के तपस्या का स्थान । ३ अग्निकुण्ड । ४ तापने की अग्नि रखने का पात्र । ५ देखो 'तपण' । [स० तपनी] ६ गोदावरी, ताप्ती नदी ।

तपणीय–वि० तपाने योग्य । –पु०[स० तपनीय] सोना, स्वर्ण ।

तपणौ (बौ)–क्रि० [स० तप्] १ गर्मी या आच पर गर्म होना, तपना । २ उमस होना, अधिक गर्मी पडना । ३ सूर्य की किरणें तेज होना । ४ दग्ध होना, जलना । ५ सतप्त होना, दुखी होना । ६ तपस्या करना, तप करना । ७ कष्ट सहना । ८ जलना । [स० तपऐश्वर्यदीप्तौ] ९ चमकना । १० शासन करना । ११ प्रताप या शौर्य फैलाना । १२ ऐश्वर्य या सुख भोगना ।

तपत–स्त्री० [सं० तप्त] १ गर्मी, उष्णता, ताप । २ जलन । ३ कष्ट, पीडा । ४ मौसम की गर्मी । ५ तपस्या । ६ तेज, कान्ति । ७ वेदना, व्यथा, सताप । ८ ग्रीष्म ऋतु ।

तपतकी, (खी)–पु० [सं० तपतक्ष] इन्द्र ।

तपती–स्त्री० [स०] १ ताप्ती नदी । २ देखो 'तपत' ।

तपन–देखो 'तपण' ।

तपनी–स्त्री० गोदावरी नदी, मतान्तर से ताप्ती नदी ।

तपनीय–देखो 'तपणीय' ।

तपरस–पु० [स० तत्परस] कुत्ता, श्वान ।

तपस–पु० [स०] १ तपस्वी, सन्यासी । २ चंद्रमा । ३ सूर्य । ४ शंकर । ५ पक्षी ।

तपसा–स्त्री० [स० तपस्या] १ तपस्या, तप । २ ताप्ती नदी का नाम ।

तपसिण–स्त्री० [स० तपस्विनी] १ सन्यासिनी, तपस्विनी योगिनी । २ तपस्वी की स्त्री । ३ सती स्त्री, पतिव्रता । ४ कष्टमय जीवन यापन करने वाली स्त्री ।

तपसी–पु० [सं० तपस्वी] (स्त्री० तपसण, तपसिण) १ ऋषि सन्यासी, तपस्वी, योगी । २ तपस्या व साधना किया हुआ साधु । ३ ऐश्वर्यवान व भाग्यशाली व्यक्ति । ४ दीन, कगाल । ५ सात्विक पुरुष ।

तपसील–देखो 'तफसील । **—वार**='तफसीलवार' ।

तपस्य–पु० [स० तपस्य] फाल्गुन मास ।

तपस्या–स्त्री० [स०] तप, व्रत, ब्रह्मचर्य, साधना ।

तपस्विण (न)–देखो 'तपसिण' ।

तपस्वी–देखो 'तपसी' ।

तपा–पु० [स०] १ तपस्वी । २ जेष्ठ मास के प्रारभ के दस दिन ।

तपाइ–स्त्री० एक वस्त्र का नाम ।

तपाक–पु० [फा०] १ आवेग, जोश । २ वेग, तेज । –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी, तुरत । सहसा ।

तपाणौ (बौ)–क्रि० [स० तप्] १ तपाना, गर्म करना । २ सतप्त करना, कष्ट देना । ३ जलाना, दग्ध करना । ४ क्रोध दिराना, क्रुद्ध करना । ५ उमस अधिक पैदा करना । ६ अधिक गर्मी देना । ७ चमकाना । ८ शासन कराना ।

तपावत–पु० तपस्वी ।

तपाव–देखो 'तपावस' ।

तपावणौ (बौ)–देखो 'तपाणौ' (बौ) ।

तपावस, तपास–पु० १ कृपा, महरबानी । २ न्याय, निर्णय, फैसला । ३ पूछताछ, छानबीन । ४ खोज-खबर, तलाश । ५ जाच-पडताल ।

तपिस–स्त्री० [फा० तपिश] गर्मी, उष्णता, तपन, उमस ।

तपी–वि० तप करने वाला, तपस्वी ।

तपीस–पु० [स० तप-ईश] १ तपस्वी । २ देखो 'तपिस' ।

तपु–देखो तप' ।

तपेदिक–पु० [फा० तप + अ० दिक] राजयक्ष्मा, क्षय रोग ।

तपेस, तपेसर, तपेसुर–पु० [स० तपेश्वर] १ तपस्वी । २ महादेव, शिव ।

तपोअण–देखो 'तपोधन' ।

तपोतम–पु० [सं० तप-उत्तम] १ श्रेष्ठ, तपस्वी । २ उत्तम तपस्या ।

तपोधन–पु० [सं०] १ तपस्यारूपी धन वाला । २ ऋषि, मुनि, महात्मा । ३ ऐश्वर्यवान, भाग्यशाली ।

तपोनिध (निधि)–पु० [सं० तपोनिधि] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ सन्यासी, ऋषि ।

तपोबळ–पु० [सं० तपोबल] १ तपस्या से उपार्जित शक्ति । २ सिद्धि । ३ राज्यबल । ४ ऐश्वर्यबल, वैभव ।

तपोभूमि–पु० [सं०] १ तपस्वियो का स्थान । २ तपस्या करने का स्थान, तपोवन । ३ ऋषियो का आश्रम ।

तपोमूरति–पु० [सं० तपोमूर्ति] १ महातपस्वी । २ परमेश्वर ।

तपोरति–वि० [सं०] तपस्या मे लीन, मग्न । तपस्या का अनुरागी ।

तपोरासि (सी)–पु० [सं० तपोराशि] तपस्वी, मुनि ।

तपोलोक–पु० [सं०] जन लोक से ऊपर एक लोक ।

तपोवन–देखो 'तपोभूमि' ।

तपोव्रद्ध–वि० १ जो बहुत तप कर चुका हो । २ तपस्वियो से वृद्ध । ३ महामुनि । ४ तपस्या मे श्रेष्ठ ।

तप्त–वि० [सं०] १ तपा हुआ, उष्ण, गर्म । २ आग मे तपाया हुआ । ३ जला हुआ, दग्ध । ४ तप कर लाल हुआ । ५ सतप्त, पीडित । ६ तपस्या मे तपा हुआ । ७ दक्ष । **—कुंड**–पु० गर्म जल का कुण्ड । एक तीर्थ स्थान । **—मुद्रा**–स्त्री० विष्णु आयुधो के चिह्न ।

तप्प–देखो 'तप' ।

तप्पना–स्त्री० तपस्या ।

तफरीह–स्त्री० [अ०] १ आमोद-प्रमोद, मनोरजन । २ प्रसन्नता खुशी । ३ हसी, दिल्लगी । ४ सैर, भ्रमण ।

तफसीर–स्त्री० [अ० तफसील] १ विस्तृत विवरण, व्योरा । २ व्योरेवार विवरण । ३ टीका । ४ सूची, फहरिस्त, फर्द । **—वार**–क्रि०वि० व्योरेवार ।

तफावज, तफावत–पु० [अ० तफावुत] १ अन्तर, भेद, फर्क । २ दूरी, फासला ।

तर्फ–पु० वश, अधिकार ।

तर्फो–पु० १ दल, समूह । २ वजन, बोझा । ३ कलक, दोष ।

तब–अव्य० [सं० तदा] १ उस समय । २ इस कारण ।

तबक–पु० [अ०] १ ब्रह्माण्ड के कल्पित खण्ड । लोक । तल । २ सोने या चादी का वरक । ३ परत, तह । ४ मेढक की चाल । ५ घोडो का एक रोग । ६ थाली । **—गर**–पु० सोने-चादी के वरक बनाकर बेचने वाला ।

तबकिया-हडताळ (हरताळ)–स्त्री० एक प्रकार की हडताल ।

तबकौ–पु० [अ० तबक] १ सोने या चादी का वरक । २ किसी नुकीले या पैने औजार या शस्त्र के चुभने का भाव । ३ रह-रह कर उठने वाला दर्द, टीस । ४ दल, पार्टी या सघ ।

तबड–पु० अल्यूमूनियम की बडी तश्तरी (मेवात) ।

तबडक–स्त्री० १ दौड-भाग या कूद-फाद करने की क्रिया या भाव । २ देखो 'तबडकौ' ।

तबडकणौ (बौ)–क्रि० १ उछलते हुए दौडना । २ चारो पैरो को उठाते हुए दौडना, चौकडी भरना ।

तबडकौ–पु० १ छलाग लगा कर दौडने की क्रिया या भाव । २ पैने शस्त्र या औजार की चुभन ।

तबज्या–स्त्री० [अ० तवज्जुह] १ ध्यान, देख-रेख । २ कृपा-दृष्टि ।

तबदील–वि० [अ०] १ बदला हुआ, परिवर्तित । २ तबदीली ।

तबदीली–स्त्री० परिवर्तन, बदलाव ।

तबर–पु० [फा०] १ बडी कुल्हाडी । २ परशु । ३ कुल्हाडीनुमा हथियार । ४ देखो 'तबरौ' ।

तबरक–पु० बारूद आदि रखने की कमर-पेटी ।

तबरियौ, तबरौ–पु० १ कुछ बडा व चौडा पात्र । २ बडा कटोरा ।

तबल–पु० [फा०] १ बडा ढोल । २ नगाडा । ३ कुल्हाडी नुमा बडा शस्त्र । ४ खाने पकाने का वर्तन । ५ देखो 'तबलौ' । **—बध**–पु० रणवाद्य बजाने वाला । 'तबल' शस्त्रधारी । **—बाज**–पु० तबला बजाने वाला, 'तबल' बजाने वाला । 'तबल' शस्त्रधारी ।

तबली–स्त्री० १ सारगी वाद्य के नीचे का भाग । २ मल-मूत्र करने की थाली, पाला ।

तबलीयौ, तबलौ, तबल्ल–पु० [अ० तबल] १ ढोलक की सी आवाज करने वाला वाद्य जिसके नर मादा अलग-अलग होते हैं । २ चूतड ।

तबाक–पु० [अ०] १ बडा थाल, परात । २ तश्तरीनुमा मिट्टी का पात्र (मेवात) ।

तबाह–वि० [अ०] नष्ट-बर्बाद । तहस-नहस ।

तबियत–स्त्री० [अ० तबीयत] १ चित्त, मन, जी । २ स्वास्थ्य । ३ मिजाज, मानसिक दशा । ४ इच्छा, कामना । ५ प्रकृति, स्वभाव । ६ बुद्धि, समझ भाव । **—दार**–वि० मनचला, रसिक । समझदार । खुशमिजाज ।

तबी–देखो 'तभी' ।

तबीअत–देखो 'तबियत' ।

तबीड (डौ)–देखो 'तबकौ' ।

तबीब, तबीव–पु० [अ० तबीब] चिकित्सक, वैद्य, हकीम ।

तबेलौ–पु० अश्वशाला, अस्तबल ।
तवोड़ी–स्त्री० चोट आदि लगने पर आख मे बढने वाला फूला, मास ।
तवोडौ–देखो 'तबकौ' ।
तब्बर–१ देखो 'तवर' । २ देखो 'तवरौ' ।
तब्बळ–१ देखो 'तवळ' । २ देखो 'तबलौ' ।
तब्वी, तभी–अव्य० १ उसी समय, उसी वक्त । २ इसीलिये, इसी कारण ।
तमक–पु० क्रोध, कोप ।
तमकणौ (बौ)–क्रि० १ क्रोध करना, चिढना । २ आवेश दिखाना । ३ चमकना, चौंकना ।
तमचय, तमचौ–पु० [फा० तमचा] १ छोटी बन्दूक । २ पिस्तौल । ३ दीपावली पर बारूद छोडने का उपकरण । ४ मजबूती के लिए दरवाजे की चौखट के पास लगाया जाने वाला पत्थर ।
तमस–पु० १ श्यामता, कालिमा । २ अधकार, अधेरा ।
तम–पु० [स०] १ अधकार, अंधेरा । २ तमाल वृक्ष । ३ राहु । ४ पाप । ५ क्रोध । ६ अज्ञान । ७ कलक । ८ नरक । ९ साख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण, तमोगुण । १० पैर की नोक । ११ नरक का अधकार । १२ भ्रम । १३ क्लेश, दु ख । १४ पाप । –सर्व० तुम, आप । -वि० काला, श्याम । –क्रि०वि० वैसे, तैसे ।
तमक–स्त्री० १ आवेश, जोश, तेजी । २ क्रोध । ३ चिढन । —**सास**–पु० दमा रोग विशेष ।
तमकणौ (बौ), तमक्कणौ (बौ), तमखणौ (बौ)–देखो 'तमकणौ' (बौ) ।
तमगण–देखो 'तमोगुण' ।
तमगौ–देखो 'तुकमौ' ।
तमड–स्त्री० कूए मे पत्थर ले जाने के लिए लकडी की बनी टोकरी । (मेवात)
तमचर–देखो 'तमीचर' ।
तमचररिपु–पु० [स० तमीचररिपु] सूर्य ।
तमचार–पु० सध्याकाल ।
तमचारी–स्त्री० रात्रि, निशा ।
तमचुर (चूर)–पु० [सं० ताम्रचूड] मुर्गा, कुक्कुट ।
तमछीर–वि० श्वेत-श्याम* ।
तमजा–स्त्री० १ पार्वती । २ दुर्गा ।
तमजारण–पु० सूर्य ।
तमजाळ–पु० अधेरा, तिमिर ।
तमणियो, तमण्यो–देखो 'तिमणियो' ।
तमतमाणौ (बौ)–क्रि० १ धूप या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, गुस्सा होना । २ चमकना । ३ क्रोध करना ।
तमतमाहट–स्त्री० क्रोध, आवेश या गर्मी के कारण चेहरे पर आने वाली लाली, सुर्खी ।
तमतमौ–वि० १ स्वाद मे तीक्ष्ण । २ चरपरा, चटपटा । ३ क्रोध युक्त ।
तमता–स्त्री० [स०] तम का भाव, अंधेरा ।
तमनास–पु० [स०] दीपक, ज्योति ।
तमनीत–स्त्री० [स० तमोनीत] रात्रि, निशा ।
तमप्रभ–पु० [स०] एक नरक का नाम ।
तममात्री–स्त्री० रात्रि, निशा ।
तममाळ–पु० राहु ।
तमरग–पु० एक प्रकार का नीबू ।
तमर–देखो 'तिमिर' ।
तमरार–पु० [स० तिमिर-अरि] सूर्य ।
तमरिप (रिपि, रिपु)–पु० [स० तम-रिपु] प्रकाश । सूर्य ।
तमवाळी–स्त्री० रात्रि ।
तमस–पु० [स०] १ अधेरा । २ कूप । ३ अज्ञान । ४ तमोगुण ।
तमसा–स्त्री० [स०] १ एक नदी, टौंस नदी । २ रात्रि ।
तमसि (सी)–स्त्री० रात्रि, निशा ।
तमस्र–देखो 'तमिस्र' ।
तमस्वनी, तमस्विनी–स्त्री० [सं० तमस्विनी] १ रात्रि, रात । २ हल्दी ।
तमस्सुक–पु० ऋण-पत्र, ऋण का दस्तावेज ।
तमहडी–स्त्री० हडिया के आकार का एक ताम्र पात्र ।
तमहर–देखो 'तमोहर' ।
तमा–सर्व० तुम ।
तमांम–वि० [अ० तमाम] सब, सम्पूर्ण ।
तमा–स्त्री० [स० तम] १ रात्रि, निशा । २ अंधेरा ।
तमाकु, तमाकू, तमाखू–स्त्री० [पूर्त० टवैको] प्राय. तीन से छ फुट की ऊंचाई का एक पौधा जिसकी पत्तिया धूम्र पान व पान आदि मे खाने के काम आती हैं । तम्बाखू ।
तमाचरी–देखो 'तमीचर' ।
तमाचौ–पु० [फ० तवानच] १ चाटा, थप्पड । २ तमाशा, खेल ।
तमादी–स्त्री० [अ०] किसी लेन-देन की अवधि गुजरने की अवस्था या भाव ।
तमार–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
तमरा (रु, रो)–सर्व० तुम्हारा ।
तमारि–पु० [स० तम+अरि] सूर्य, रवि ।

तमाळ–पु० [स० तमाल] १ करीब २०-२५ फुट ऊचा एक वृक्ष जिसकी छाल व पत्तिया खाने के मसाले मे काम आती हैं। २ वरुण वृक्ष। ३ करम नामक छन्द का एक नाम। ४ एक अन्य मात्रिक छन्द। ५ तिलक, टीका। –स्त्री० ६ तलवार। ७ मूर्छा, वेहोशी।

तमाळक–पु० १ तमाल वृक्ष। २ तेज-पात्र। (पत्ता) ३ बास की छाल।

तमाळी–स्त्री० १ ताम्रवल्ली नाम की लता। २ वरुण वृक्ष। ३ तमाल वृक्ष।

तमास, तमासय–पु० [अ० तमाश] तमाशा, खेल, क्रीडा। —**गीर, बीन**–वि० खिलाडी। मजाकिया। तमाशा देखने वाला।

तमासाई–वि० तमाशा देखने वाला।

तमासू, तमासौ–पु० [अ० तमाश] १ लोगो के मनोरज के लिये किया जाने वाला खेल, तमाशा। २ नौटकी का खेल।

तमास्ती–सर्व० तुम तुम्हरा। अन्य, अमुक।

तमि, तमी–स्त्री० [स० तमी] रात्रि, निशा।

तमिनाथ–पु० [सं०] चन्द्रमा, निशानाथ।

तमियौ–पु० मिट्टी का पात्र विशेष।

तमिस्र–पु० [स०] १ अधेरा, अधकार। २ क्रोध, गुस्सा। ३ एक नरक। ४ भ्रम। ५ द्वेष। ६ एक अविद्या का नाम। —**पक्ष**–पु० प्रत्येक मास का कृष्णपक्ष।

तमिस्रा–स्त्री० [स०] १ अंधेरी रात, निशा। २ गहरा अधेरा।

तमी–स्त्री० [स०] रात्रि, निशा। —**चर**–पु० राक्षस, असुर, निशाचर। उल्लू पक्षी। चन्द्रमा। चोर।

तमीज–पु० [अ०] १ ज्ञान, विवेक। २ शिष्टता। ३ अदव, कायदा।

तमीणौ–सर्व० (स्त्री० तमीणी) तुम्हारा।

तमीपति (पती)–पु० चन्द्रमा।

तमीस–पु० चन्द्रमा।

तमु–देखो 'तम'।

तमुक्काय–पु० [स० तमस्काय] अन्धकार।

तमूरौ–देखो 'तबूरौ'।

तमे–सर्व० तुम।

तमेळौ–पु० १ भवन की तीसरी मजिल की छत। २ सबसे ऊपरी छत।

तमोगण–देखो 'तमोगुण'।

तमोगणी–देखो 'तमोगुणी'।

तमोगुण–पु० [स०] १ साख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण। २ मनुष्य की तामसी वृत्ति।

तमोगुणी–वि० १ जिसके स्वभाव मे तमोगुण की प्रधानता हो। २ तामसी वृत्ति या स्वभाव वाला। ३ अहकारी, क्रोधी।

तमोघण(घन)–पु० [स० तमोघ्न] १ अग्नि, आग। २ चन्द्रमा। ३ सूर्य। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ ज्ञान। ७ वुद्ध देव।

तमोटी–स्त्री० १ ओढने की चद्दर। २ चद्दर ओढ कर सोने की क्रिया।

तमोतम–पु० गहन अधकार।

तमोदरसन–पु० [स० तमोदर्शन] पित्त प्रधान ज्वर।

तमोनुद–पु० [सं०] १ ईश्वर। २ चन्द्रमा। ३ अग्नि।

तमोभिद–पु० [सं०] १ जुगनू। २ दीपक। ३ सूर्य। ४ चद्रमा। –वि० अधकार को दूर करने वाला।

तमोमणि–पु० [स०] जुगनू।

तमोमय–वि० [स०] १ तमोगुणी। २ क्रोधी। ३ अज्ञानी। ४ अधकार युक्त। –पु० [सं०] राहु।

तमोरी–देखो 'तबोळी'।

तमोळ–पु० १ ताबूल, पान, बीडा। २ उमग। ३ क्रोध, गुस्सा।

तमोळी–स्त्री० १ मूर्च्छा। २ क्रोध। ३ देखो 'तंबोळी'।

तमोविकार–पु० [स०] तमोगुण से होने वाला विकार।

तमोहंत–पु० [स०] १ ग्रहण के दश भेदो मे से एक। २ सासारिक मोह-माया को नाश करने वाला।

तमोहपह–पु० [स० तम + अप-हन्] १ सूर्य। २ चद्रमा। ३ अग्नि। ४ ज्ञान। –वि० अधकार को दूर करने वाला।

तमोहर, तमोहरि–पु० [स०] १ सूर्य। २ चद्रमा। ३ अग्नि। ४ ज्ञान। –वि० अंधकार व अज्ञान मिटाने वाला।

तम्माकू–देखो 'तमाकू'।

तम्माम–देखो 'तमाम'।

तम्ह–सर्व० तेरे, तुम्हारे, तुझे।

तम्हा–सर्व० तुम।

तम्हारा–सर्व० तुम्हारा, तेरा।

तम्हीण, तम्हीणा (णौ)–सर्व० तुम्हारा, आपका।

तम्हे, तम्है–सर्व० तुम।

तय–वि० [अ०] १ निश्चित, स्थिर। २ पूरा किया हुआ; निर्णीत। –पु० निश्चय, निर्णय।

तयांळी, तयाळीस–देखो 'तयाळीस'।

तयांळीसौ–देखो 'तयाळीसौ'।

तयांसी–देखो 'तइयासी'।

तयार–देखो 'तैयार'।

तयारी–देखो 'तैयारी'।

तयाळीसौ, तयाळौ–देखो 'तयाळीसौ'।

तय्यार–देखो 'तैयार'।

तरग–पु० [स०] १ तालाब, सरोवर । २ लहर, हिलोर । ३ ग्रथ का अध्याय । ४ घोडा । ५ वस्त्र । ६ छलाग । ७ शुभ रग का घोडा विशेष । ८ हवा का झोका, लहर । ९ मन की मौज, उमग । १० स्वरो का उतार-चढाव । ११ हाथो मे पहनने की चूडी विशेष । —**बाज**–वि० मनमौजी । सनकी ।

तरगक–पु० [स०] १ पानी की लहर । २ स्वर-लहरी ।

तरगण, (णी, नि, नी)–स्त्री० [स० तरगिणी] नदी, सरिता ।

तरग-भ्राजण–पु० [स० तरग-भ्राजन] जल, पानी ।

तरगवती–स्त्री० [स०] नदी ।

तरगाळि (ळी)–स्त्री० नदी, सरिता ।

तरगित–वि० [स०] १ तरगो वाला । २ बाढ़ ग्रस्त । ३ शकित, त्रस्त । ४ उमगित ।

तरगी, तरगीलो–वि० (स्त्री० तरगिली) १ तरग युक्त । २ मनमौजी । ३ लापरवाह । ४ सनकी ।

तरज–स्त्री० लाख की बनी चूडी ।

तरजणप्रथी–पु० लोहा ।

तरड–पु० [स०] १ नाव । २ बेडा । ३ डाड । ४ वृक्ष ।

तरत–क्रि०वि० १ जोर से, तेजी से । २ देखो 'तुरत' । –पु० [स० तरन्त] १ समुद्र । २ अतिवृष्टि । ३ मेढक । ४ दैत्य या राक्षस ।

तरती–स्त्री० [स०] नाव । बेडा ।

तरद–पु० [स० तरु-इन्द्र] कल्पवृक्ष ।

तर–पु० [स०] १ तिरछा, टेढा गमन । २ चौराहा । ३ मार्ग । ४ सडक । ५ उतारा । ६ तैरने की क्रिया या भाव । ७ पार होने की क्रिया या भाव । ८ अग्नि । [स० त्वरा] ९ शीघ्रता, उतावली । १० वेग, तेजी । ११ देखो 'तरु' । –वि० [फा०] १ भीगा हुआ, गीला, नम । २ हरा-भरा, सर-सब्ज । ३ घी, दूध आदि से परिपूर्ण । ४ गहरा हरा । ५ सम्पन्न, मालदार । –अव्य० [स० तर्हि] तो । –क्रि०वि० १ तले, नीचे । २ शीघ्र, तुरंत । –प्रत्य० गुणवाचक प्रत्यय ।

तरअरि–पु० [स० तरुअरि] हाथी, गज ।

तरई–स्त्री० [स० तारा] नक्षत्र ।

तरक–स्त्री० [स० तर्क] १ विचार-विमर्श, सोच-विचार । २ किसी बात या विषय के पक्ष-विपक्ष सबधी विचार । ३ बहस । ४ विचार । ५ कल्पना, अनुमान । ६ अदाज, अटकल । ७ वाद-विवाद । ८ सदेह । ९ कारण, हेतु । १० आकाक्षा । ११ तर्क शास्त्र । १२ न्याय शास्त्र । —**वितरक**–पु० वाद-विवाद । सोच विचार ।

तरकक–पु० [स० तार्किक] १ तर्क करने वाला, तार्किक । २ याचक ।

तरकणौ (बो)–क्रि० [स० तर्क] १ वाद-विवाद करना, तर्क करना । २ विचार-विमर्श करना । ३ चमकना । ४ बोलना । ५ देखो 'तडकणौ' (बो) ।

तरकस–पु० [फा० तरकश] तीरो का भाथा, तूणीर । —**बध**–पु० तीर-तरकश धारी योद्धा ।

तरकाभास–पु० [स० तर्काभास] कुतर्क ।

तरकारी–स्त्री० [फा०] १ शाक, साग-पात, भाजी, सब्जी । २ कुछ पौधो के पत्ते, फल, मूल आदि जिनकी सब्जी बनती है । ३ खाने योग्य पका हुआ मास ।

तरकी–स्त्री० [स० ताटकी] १ फटे वस्त्र के लगाई जाने वाली कारी, जोड । २ कर्ण-फूल नामक आभूषण । ३ देखो 'तरक्की' । –वि० तर्क करने वाला ।

तरकीब–स्त्री० [अ०] १ युक्ति, उपाय । २ शैली, प्रणाली, तरीका । ३ संयोग मेल । ४ चतुराई, होशियारी ।

तरकुंज–पु० तरु कुंज ।

तरक्क–देखो 'तरक' ।

तरक्कणौ (बो)–क्रि० १ जोर से आवाज करना । २ जोर से बोलना । ३ देखो 'तरकणौ' (बो) ।

तरक्की–स्त्री० [अ०] उन्नति, वृद्धि, बढोतरी ।

तरक्ष–पु० [स०] हरिण, मृग ।

तरक्षु–पु० [स०] १ लकड बग्घा । २ सेई नामक काटो वाला जीव ।

तरखांसी–स्त्री० बलगम की खासी ।

तरखा–स्त्री० [स० तृषा] १ प्यास । २ इच्छा । ३ लोभ ।

तरगस, तरगस्स–देखो 'तरकस' । —**बध**='तरकसबध' ।

तरडणौ (बो)–क्रि० १ पशु का पतला मल करना । २ बार-बार दस्त करना । ३ क्रोध करना ।

तरड़ौ–पु० १ पशु का पतला मल । २ झिडकी, चिडचिडाहट । ३ गर्म पानी का सेक ।

तरच्छ, (च्छु)–पु० [स० तार्क्ष्य] १ गरुड । २ अरुण । ३ गाडी । ४ घोडा । ५ सर्प । ६ पक्षी ।

तरच्छौ–देखो 'तिरछौ' ।

तरछणौ–(बो)–देखो तरसणौ' (बो) ।

तरछाणौ (बो), तरछावणौ (बो)–देखो 'तरसाणौ' (बो) ।

तरछौ–देखो 'तिरछौ' ।

तरछौळ–वि० १ तरगी, सनकी । २ मनमौजी । ३ चालक, धूर्त ।

तरज–स्त्री० [अ० तर्ज] १ गीत या पद की लय, टेर । २ राग । –पु० [स० तर्ज्ज] ३ बादल, मेघ ।

तरजणी–स्त्री० [स० तर्जनी] १ अगुठे के पास की, हाथ की अगुली । २ डाट, फटकार । —**मुद्रा**–स्त्री० हाथ की एक तान्त्रिक मुद्रा ।

तरजणौ (बौ)–क्रि० [स० तर्जनम्] १ डाटना, फटकारना। २ धमकाना, डराना। ३ सकेत करना।

तरजमौ–देखो 'तरजुमौ'।

तरजुई–पु० [फा० तराजू] छोटा तराजू।

तरजुमौ–पु० [अ० तरजुमा] अनुवाद, भाषानुवाद, भाषातर।

तरझगर–पु० १ वृक्ष समूह। २ झाडी समूह। ३ कुज। ४ वन, जगल।

तरझणौ (बौ)–देखो 'तरजणौ (बौ)।

तरण–पु० [स०] १ नाव, वेडा। २ डाड। ३ विजय, जीत। ४ स्वर्ग। ५ सूर्य। ६ प्रकाश, उजाला। [स० तरुण] ७ युवक। ८ बछडा। ९ देखो 'तरुणी'। –वि० १ युवा, वयस्क। २ तैरने वाला। —जा='तरणिजा'। —सुत, सुतण= तरणिसुत'।

तरणाई–देखो 'तरुणाई'।

तरणाट (टौ, टो)–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ तार वाद्यो की ध्वनि। ३ क्रोध की तरग। ४ कोप, गुस्सा।

तरणापउ (पौ)–पु० तरुणाई, युवावस्था।

तरणाय, तरणि (णी)पु० [स० तरणि] १ सूर्य। २ आक, मदार। ३ किरण। ४ नौका, नाव। ५ प्रकाश किरण। –कुमार–पु० यमराज। कर्ण। शनिश्चर। —जा–स्त्री० यमुना नदी। —तनय='तरणिकुमार'। —तनूजा= 'तरणिजा'। —सूद='तरणिकुमार'।

तरणौ–पु० तृण, तिनका।

तरणौ (बौ)–देखो 'तिरणौ' (बौ)।

तरत–पु० १ पेड का पत्ता, तरुपत्र। २ देखो 'तुरत'।

तरतम–स्त्री० फल देने की न्यूनाधिक शक्ति।

तरतर–पु० [अनु०] ध्वनि विशेष। –क्रि० वि० धीरे-धीरे।

तरतात–पु० [स० तरु-तात] जल, पानी।

तरतीब–स्त्री० [अ०] १ क्रम, सिलसिला। २ प्रक्रिया। ३ व्यवस्था।

तरतोज–पु० उपाय।

तरत्तड–क्रि०वि० जल्दी-जल्दी, तुरत।

तरदीद–स्त्री० [अ० तर्दीद] १ काटने या खण्डन करने की क्रिया। निरस्तीकरण। २ किसी वात को प्रमाणित करने की क्रिया या भाव।

तरदोज–पु० धोखा, पडयत्र।

तरन–देखो 'तरण'।

तरनिजा–देखो 'तरणिजा'।

तरनी–देखो तरणि'।

तरप–स्त्री० १ तडपने की क्रिया या भाव। २ चमक-दमक। ३ सारगी के मुख्य तारो के नीचे कसे तार। ४ देखो 'तरफ'।

तरपण–पु० [स० तर्पण] १ प्रसन्न या सतुष्ट करने की क्रिया या भाव। २ कर्मकाण्ड मे देव, पितरो आदि को जल-अजलि देने की क्रिया। ३ पितृयज्ञ। ४ समिधा। ५ ईधन। ६ तृप्ति।

तरपणी–स्त्री० [स० तर्पणी] १ गगा नदी। २ खिरनी का वृक्ष। –वि० १ तृप्ति देने वाली। २ तर्पण देने वाली।

तरपत–देखो 'तिरपत'।

तरपी–वि० [स० तर्पिन्] १ तर्पण करने वाला। २ तृप्त करने वाला।

तरपोख–स्त्री० [स० तरुपोष] नदी।

तरफ–स्त्री० [अ०] १ दिशा। २ पार्श्व, बगल। ३ पक्ष, पक्षदारी। ४ ओर। ५ पास। —दार–वि० पक्षधर। समर्थक। —दारी–स्त्री० पक्षपात। मदद। हिमायत।

तरफणौ (बौ)–क्रि० १ विजली का चमकना, दमकना। २ पक्षपात करना। ३ देखो 'तडफणौ' (बौ)।

तरफळणौ (बौ)–देखो 'तडफणौ' (बौ)।

तरफांणू–क्रि०वि० ओर से, तरफ से।

तरब–देखो 'तरप'।

तरबतर–वि० [फा०] खूब भीगा हुआ, सराबोर।

तरबहणौ–पु० पीतल या ताबे का परातनुमा पात्र।

तरबूज (जौ)–पु० [फा० तर्बुज] खरबूजे से कुछ बडा एक लता फल।

तरभव–पु० [स० तरुभव] पुष्प, सुमन।

तरमदार–पु० [स० मदार-तरु] कल्पतरु, कल्पवृक्ष।

तरमीम–स्त्री० [अ०] सशोधन। दुरुस्ती। त्रुटि निवारण।

तरय–क्रि०वि० [स० त्वरया] शीघ्र, जल्दी।

तरर–स्त्री० १ कांतिहीन या निस्तेज होने की क्रिया या भाव। २ रेंगने की क्रिया या भाव।

तररा–स्त्री० चावुक की डोरी या फीता।

तरराज–पु० [स० तरुराज] कल्पवृक्ष।

तरराट (टौ, टो)–स्त्री० १ तर शब्द की ध्वनि। २ कोप, गुस्सा। ३ नशे आदि की सुर्खी।

तरलग–पु० [स० तरल-अग] घोडा, अश्व। –वि० चचल, चपल।

तरळ–वि० [स० तरल] १ जो सूखा या ठोस न हो, द्रव। २ चंचल। ३ अस्थिर, क्षणभंगुर। ४ तेज, तीव्र। ५ सजल। –पु० १ वृक्ष, तरु। २ दोहे छद का एक भेद। ३ छप्पय छद का एक भेद। ४ चन्द्रमा। ५ घोडा। ६ ततु।

तरळकौ–पु० सनक, तरग, गुस्सा।

तरळता–स्त्री०[स० तरलता] १ द्रवत्व। २ चचलता, चपलता। ३ सजलता।

तरळनयण (न)–पु० [स० तरल-नयन] १ एक वर्ण वृत्त विशेष। २ सजल नयन।

तरळभाव–पु० [स० तरल-भाव] १ पतलापन, द्रवत्व। २ चाचल्य, चपलता। ३ सहृदयता।

तरळा–वि०[स० तरल, तरला] १ चचल, चपल। २ चमकीला। –स्त्री० १ चावलो की माड। २ लस्सी। ३ घोडो की एक जाति।

तरळाई–स्त्री० १ चचलता, चपलता। २ द्रवत्व।

तरवक्र–पु० सुदर्शन चक्र।

तरवण–पु० १ निरगुडी का पौधा। २ पर-दार एक जगली जतु।

तरवर–देखो 'तरु'।

तरवरय–क्रि०वि० [स० त्वरयैव] शीघ्र, जल्दी, तुरत।

तरवरी, तरवाडौ–देखो 'तरवाळौ'।

तरवार (रि)–स्त्री० [स० तरवारि] १ लोहे की पत्ती का धारदार शस्त्र, तलवार, असि। २ तलवारनुमा दोव काटने का औजार। —**पिधान**–स्त्री० म्यान।

तरवारियौ–पु० तलवार चलाने वाला योद्धा।

तरवाळी, तरवाळौ–पु० १ पानी आदि पर तैरने वाली चिकनाई, स्निग्धता। २ काष्ठ की बनी तिपाई।

तरविसतार–पु० [स० स्तरविस्तार] भूमि, पृथ्वी, धरा।

तरसग–पु० [स० तरु-सग] पक्षी।

तरस–स्त्री० [स० त्रस्] १ करुणा, दया, रहम। २ ढाल। ३ डर, भय। [स० तर्ष] ४ तृष्णा, प्यास। ५ इच्छा, अभिलाषा। ६ लालच, लोभ। ७ समुद्र, सागर। ८ नाव। ९ सूर्य। [स० तरसम्] १० गोश्त, मास। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

तरसणा–स्त्री० १ दया, रहम, करुणा। २ देखो 'तरस'।

तरसणौ (बौ)–क्रि० [स० तर्षणम्] १ किसी वस्तु के लिए लालायित होना, तरसना। २ व्याकुल होना, आतुर होना। ३ छीलना। ४ बढना।

तरसळणौ (बौ)–देखो 'तिरसळणौ' (बौ)।

तरसा–क्रि०वि० [स० तरस्] शीघ्र, जल्दी। –स्त्री०[स० तृषा] प्यास, तृषा।

तरसाणौ (बौ), **तरसावणौ** (बौ)–क्रि० १ किसी वस्तु के लिये लालायित करना, तरसाना। २ व्याकुल करना। ३ दिखा-दिखा कर चिढाना। ४ तडपाना।

तरसाळौ–पु० घोडे की गर्दन का एक बधन।

तरसि–देखो 'तरस'।

तरसित–वि० [स० तृषित] प्यासा, तृपातुर।

तरसींग–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ प्रभावशाली।

तरसुतर–पु० १ चन्दन का वृक्ष। २ इस वृक्ष की लकडी।

तरसुर–पु० [स० सुर-तरु] कल्पवृक्ष।

तरस्यौ–वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषित।

तरस्स–देखो 'तरस'।

तरस्सणौ (बौ)–देखो 'तरमणौ' (बौ)।

तरस्सी–क्रि०वि० [स० तरस्] जल्दी, शीघ्र।

तरह–स्त्री० [अ०] १ भाति, प्रकार। २ बनावट, रचना, डौल। ३ हाल, दशा।

तरहटी–देखो 'तळहटी'।

तरहवार–वि० [फा०] १ सुन्दर, सुडौल। २ शौकीन।

तरहर–क्रि०वि० तले, नीचे। –वि० निकृष्ट, नीच।

तरा–क्रि०वि० १ तत्र। २ तरह से, प्रकार से।

तराणि–देखो 'तरणि'।

तराई–स्त्री० १ पर्वत के नीचे का मैदान। २ तरी वाला क्षेत्र।

तराछ–देखो 'तरास'।

तराछणौ (बौ)–देखो 'तरासणौ' (बौ)।

तराज–वि० १ समान, तुल्य, सदृश। २ देखो 'तराजू'।

तराजू–स्त्री० [फा०] तुला, तकडी।

तराजै–वि० समान, बराबर, तुल्य, सदृश।

तराड़णौ (बौ), **तराणौ** (बौ)–देखो 'तिराणौ' (बौ)।

तरायळ–वि० १ वीर, योद्धा। २ जबरदस्त।

तराळ–वि० १ भयकर, भयानक। २ समान तुल्य। –पु० वृक्ष, तरु, पेड।

तरावट–स्त्री० [फा०] १ नमी, तरी, गीलापन। २ ठडक, शीतलता। ३ घी, मावा आदि से तर पदार्थ। ४ तर माल खाने पर आने वाली तृप्ति। ५ सम्पन्नता। –वि० वैभवशाली, सम्पन्न।

तरास–स्त्री० [फा० तराश] १ पत्थर, गहने आदि मे की जाने वाली काट-छाट। २ गडाई। ३ प्रहार, चोट। ४ ढग, तर्ज। [स० त्रास] ५ भय, आतंक। ६ कष्ट, पीडा। —**खरास**–स्त्री० काट-छाट। कतर-व्यौंत।

तरासणौ (बौ)–क्रि० [फा० तराशना] काटना, करतना।

तराहि, (ही)–देखो 'त्राहि'।

तरिंद–पु० तरुराज, कल्पवृक्ष।

तरि–स्त्री० [स०] १ नाव, नौका। [स० तरणि] २ सूर्य। [स० तरु] ३ वृक्ष, पेड।

तरिण–पु० [सं० तरणि] १ सूर्य, रवि। –स्त्री० [स० तरुणि] २ युवा स्त्री, युवती।

तरियल–पु० मस्त हाथी को काबू मे करने वाला।

तरिया–देखो 'तिरिया'।

तरियौ–पु० १ पतली, लबी व लचकीली लकडी। २ तर ककडी। –वि० प्यासा, तृषातुर।

तरी–स्त्री०[सं०]१ नाव, नौका । २ नमी, आर्द्रता । ३ शीतलता ठडक । ४ तरावट । ५ महगाई । ६ अधिकता । ७ पर्वत की तलहटी ।

तरीको–पु० १ ढन, विधि । २ उपाय, युक्ति । ३ चाल, व्यवहार ।

तरीख–स्त्री० [स० तरीष] १ नाव, नौका । २ समुद्र ।

तरु, तरुअर, तरुअरि, तरुग्रो–पु० [स० तरु] पेड, वृक्ष ।

तरुआर, तरुआरई, तरुआरि–देखो 'तरवार' ।

तरुकाम–पु० [स० कामतरु] कल्प वृक्ष ।

तरुण–पु० [स०] युवा व्यक्ति, युवक । –वि० १ जवान, युवा । २ वयस्क । ३ छोटा । ४ कोमल, मुलायम । ५ नवीन, ताजा । —ज्वर–पु०सात दिन का ज्वर । —तरणि–पु० मध्याह्न का सूर्य ।

तरुणाई, तरुणापो–स्त्री० १ युवावस्था, जवानी । २ वयस्कता । ३ नवीनता, ताजगी ।

तरुणि, तरुणी, तरुणीय–स्त्री० [सं० तरुणि] १ युवा स्त्री, युवती । २ स्त्री, औरत ।

तरुणीपरिकरम्म–पु० [स० तरुणीपरिकर्म्म] ७२ कलाओ मे से एक ।

तरुतूलिका–स्त्री० [स०] चमगादड ।

तरुपच–पु० पाच की सख्या* ।

तरुपत–पु० [स० तरुपति] कल्प वृक्ष ।

तरुयर (यरु)–देखो 'तरु' ।

तरुराज–पु० [स०] १ कल्प वृक्ष । २ ताड-वृक्ष ।

तरुवर–देखो 'तरु' ।

तरुवारि, तरुवारी–देखो 'तरवार' ।

तरुसार–पु०[स०] कपूर ।

तरू, तरूग्रर–देखो 'तरु' ।

तरूआर, तरूआरि–देखो 'तरवार' ।

तरूणो–देखो 'तरुण' ।

तरूनावत–स्त्री० घोडे के कान के पीछे होने वाली भवरी ।

तरूयारि–देखो 'तरवार' ।

तरे–देखो 'तरै' ।

तरेपन–देखो 'तिरेपन' ।

तरेस–पु० [स० तरु-ईश] कल्प वृक्ष ।

तरै–क्रि० वि० तब । –वि० जैसा, समान, तुल्य । देखो 'तरह' ।

तरैवार–वि० १ होशियार, चतुर । २ शौकीन, मस्त । ३ अच्छे ढग का, सुन्दर, मनोहर ।

तरोवर, तरोहर–पु० [स० तरु+वर] १ कल्प वृक्ष । २ वृक्ष, पेड ।

तळ–पु० [स० तल] १ नीचे का भाग । २ किसी वस्तु के नीचे आने वाला भाग । ३ तला, पैदा । ४ कूआ, कूप । ५ जल के नीचे का भाग । ६ नीचे की सतह, धरातल । ७ हथेली । ८ तलवा । ९ बाह । १० थप्पड । ११ ताड-वृक्ष । १२ आधार, सहारा । १३ सप्त पातालो मे से प्रथम । १४ एक नरक का नाम । १५ तलहटी, तराई । १६ नीचता । १७ बाण चलाते समय बाधा जाने वाला पट्टा । –क्रि० वि० नीचे, पास मे ।

तल–देखो 'तिल' ।

तळई–देखो 'तळै' ।

तलक–पु० १ ऊट के पैर की ध्वनि । २ देखो 'तिलक' । –स्त्री० ३ इच्छा, चाह । –क्रि० वि० तक, पर्यन्त ।

तलकणो (बो)–देखो 'तलक्कणो (बो)' ।

तळका–पु० चक्कर, फेरा, भ्रमण ।

तलकार–स्त्री० राजलोक, पौरलोक ।

तलक्कणो (बो)–क्रि० १ शीघ्र चलना, दौडना । २ झपटना, झपट पडना ।

तलग–क्रि० वि० तक पर्यन्त ।

तळगटी–स्त्री० चरखे मे लगी एक लकडी की पट्टी ।

तलगु–स्त्री० तैलग देश की भाषा ।

तळघरो–पु० [स० तल-गृह] तहखाना ,

तळछट–स्त्री० पानी आदि तरल पदार्थों के नीचे जमने वाला मैल ।

तळछणो (बो)–क्रि० मारना, काटना, सहार करना ।

तळछ-मळछ–पु० तडपडाहट, बेचैनी (मेवात) ।

तळणो (बो); तळतळणो (बो)–क्रि० १ खौलते हुए घी या तेल मे कोई पदार्थ डाल कर पकाना, तलना, भुनना । २ कष्ट देना, सताना ।

तळतळाट (टो)–पु० १ खौलने की क्रिया या भाव । २ कलह ।

तलप–स्त्री० [स० तल्प] १ शय्या । २ चारपाई, खाट । ३ महिला, स्त्री । ४ स्त्री, भार्या । ५ गाडी मे बैठने का स्थान । ६ मकान के ऊपर की गुम्मठ ।

तलपकाउ–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

तलपकीट–पु० [स० तल्पकीट] खटमल, मत्कुण ।

तळपट–पु० १ नाश, विनाश, बरबादी । २ वर्ष भर के आय-व्यय का विवरण-पत्र ।

तळफ–वि० [अ०] १ नष्ट, बरबाद । २ देखो 'तडफ' ।

तळफणो (बो)–देखो 'तडफणो' (बो) ।

तळफाणो (बो)–देखो 'तडफाणो' (बो) ।

तळफी–स्त्री० बरबादी, नाश, खराबी ।

तळफ्फणो (बो)–देखो 'तडफणो' (बो) ।

तळब, तलब–स्त्री० [अ० तलब] १ खोज, तलाश । २ इच्छा, ख्वाहिश । ३ नशीली वस्तु खाने की तीव्र इच्छा । ४ आवश्यकता, माग । ५ वेतन । ६ बुलावा, बुलाहट । ७ सरकार का कर लगने वाली जमीन ।
तळबगार–वि० [फा०] १ चाहने वाला, इच्छुक । २ मागने वाला । ३ बुलाने वाला ।
तळबजात–स्त्री० स्वय अधिकारी का वेतन ।
तळबळाट (टो)–पु० व्याकुलता बेचैनी ।
तळबाणौ–पु० [फा० तलबाना] १ गवाहो को बुलाने के लिए अदालत को दिया जाने वाला खर्चा । २ सरकारी बकाया जमा कराने का आदेश । ३ एक प्रकार का सरकारी कर ।
तळबियौ–वि० १ माग करने वाला, मागने वाला । २ चाहने वाला, इच्छुक । ३ बुलाने का काम करने वाला । ४ रकम वसूल करने वाला । –पु० सरकारी बकाया वसूल करने वाला कर्मचारी ।
तळबी–देखो 'तळब' ।
तळमळ–पु० [स० तलमल] १ पानी या तरल पदार्थ के नीचे जमने वाला मैल । –स्त्री० २ तिलमिलाहट ।
तळमळणौ(बौ), तळमळाणौ(बौ)–देखो 'तिळमिळाणौ' (बौ) ।
तळमळाहट–देखो 'तिळमिळाहट' ।
तळमीरोटी–स्त्री० पराठा । तली हुई रोटी ।
तलवर–पु० १ नगर रक्षक, कोतवाल । २ राजा द्वारा सम्मानित व्यक्ति । ३ अटक, अवरोध ।
तळवाणौ–देखो 'तलबाणौ' ।
तळवा–स्त्री० बैलो के खुरो मे होने वाला एक रोग ।
तळवाईजणौ (बौ)–क्रि० अधिक चलने से पैरो मे विकार होना ।
तळवार–देखो 'तरवार' ।
तळवौ–पु० [स० तल] १ पैर का तल, तलवा । २ जूते का तला ।
तळसारणौ (बौ)–क्रि० सजा देना, दण्ड देना ।
तळसीर–पु० भूमि के अन्दर से स्फुटित होने वाली जल धारा, स्रोत ।
तळहटी (ट्टी)–स्त्री० [स० तल-घट्ट] १ पहाड के नीचे की भूमि, तराई, तलहटी । २ किसी ऊचे स्थान के नीचे की भूमि । ३ अधीनस्थ भाग ।
तळहासणौ (बौ)–देखो 'तळासणौ' (बौ) ।
तळावां–पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।
तळाई–स्त्री० १ छोटा तालाव । २ तलने का कार्य । ३ तलने की मजदूरी । ४ रुई आदि से भरा गद्दा ।
तळाउ–देखो 'तळाव' ।
तलाक–स्त्री० [अ०] १ पति-पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद । २ त्याग । ३ प्रण, प्रतिज्ञा । ४ अवरोध, निषेध, रोक । ५ शपथ ।
तलाकणौ (बौ)–क्रि० १ पति-पत्नी का कानूनन सबध विच्छेद होना । २ छोडना, त्यागना । ३ प्रण लेना ।
तलाची–पु० [स०] चटाई ।
तळातळ–पु० [स० तलातल] सात पातालो मे से एक ।
तळाब, तळाय–देखो 'तळाव' ।
तलार, तलारक्ष–पु० १ नगर-रक्षक, कोतवाल । २ कोतवाल के खर्च संबधी कर ।
तलारु–स्त्री० सेवा, चाकरी ।
तलाल–पु० एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
तळाव–पु० [स० तडाग] जलाशय, सरोवर, तालाव ।
तळावड़ी–स्त्री० छोटा तालाव, तलाई, पोखर ।
तळावट–स्त्री० एक प्रकार का जागीरदारी बिक्री कर ।
तळावटियौ–पु० १ उक्त कर वसूल करने वाला कर्मचारी । २ उक्त कर देने वाला ।
तळावरत–पु० एक प्रकार का घोडा ।
तळावळी–देखो 'तळाव' ।
तळावौ–पु० बैलगाडी के पहिये मे लगने वाला डडा ।
तळास, तलास–स्त्री० [तु० तलाश] १ खोज, अनुसधान । २ आवश्यकता, चाह । ३ पगचपी ।
तळासणौ (बौ)–क्रि० पाव चापना ।
तलासणौ (बौ)–क्रि० खोजना, अनुसंधान करना, शोध करना । ढू ढना ।
तलासी–स्त्री० [फा० तलाशी] १ खोज का कार्य । २ खोई या छुपी वस्तु के प्रति देखभाल । ३ सामान आदि का निरीक्षण ।
तळि–देखो 'तळी' ।
तळिछणौ (बौ)–क्रि० १ सहार करना, मारना । २ प्रहार करना ।
तलिन–वि० [सं०] १ दुर्बल, क्षीण । २ थोडा, कम, अल्प । ३ साफ, स्वच्छ । ४ पृथक । –स्त्री० १ सेज, शय्या । २ पलग ।
तळियौ–पु० १ भवन निर्माण के लिए निश्चित भू-खण्ड । २ देखो 'तळौ' । —**तोरण**–पु० एक प्रकार का तोरण ।
तलींगण–पु० [स० तलेंगत] 'चूल्हे आदि पर चढने वाले' बर्तनो के बाहरी पैंदे पर किया जाने वाला मिट्टी का लेप ।
तळी–स्त्री० [स० तल] १ किसी वस्तु का पैंदा । २ सतह, धरातल । ३ जलाशय या गड्ढे आदि का तल । ४ ऊट के पाव का तलुवा । ५ हथेली की गहराई । ६ जूते का तला ।

७ खलिहान का निचला भाग । ८ रहट की लाट मे लगने वाली चन्द्राकार पत्ती । ९ मकान की पक्की छत । १० मोट खाली करने के स्थान पर जमाया हुआ पत्थर । ११ तलहटी, तराई । –क्रि०वि० नीचे ।

तळीकढ़–पु० बैठते समय पाव का तलुवा बाहर रखने वाला ऊंट ।

तळुओ–देखो 'तळवौ' ।

तळूजी–स्त्री० पैंदी, तल, तली ।

तळे–देखो 'तळै' ।

तळेक्षण–पु० [स० तलेक्षण] शूकर, सूअर ।

तळेचौ–पु० चौखट के नीचे का डडा ।

तळेटी–देखो 'तळहटी' ।

तळेम–देखो 'तसलीम' ।

तळै–क्रि०वि० १ नीचे । २ तल के नीचे ।

तळैचौ–देखो 'तळेचौ' ।

तळैटी–देखो 'तळहटी' ।

तळोट–पु० घोडे के अगले पाव का एक भाग ।

तळोदरी–स्त्री० [स० तलोदरी] स्त्री, भार्या ।

तळोवा–स्त्री० नदी, दरिया ।

तळोसणौ (बौ)–देखो 'तलासणौ' (बौ) ।

तळौ–पु० [स० तल] १ कूप, कुआ । २ पैंदा । ३ सतह, धरातल । ४ तलुवा । ५ जूते का तला ।

तलौ–पु० १ सबध । २ छुटकारा, विच्छेद । **—बलौ**–पु० रिश्ता, सबंध । **—मलौ**–पु० सबध, वास्ता ।

तल्क–पु० [स०] वन, जगल ।

तल्प–स्त्री० [स०] १ चारपाई । २ पलग । ३ सेज, शय्या । ४ स्त्री, भार्या । **—क**–पु० शय्या बिछाने वाला परिचायक । **—ज**–पु० क्षेत्रज पुत्र ।

तल्पिका–देखो 'तलप' ।

तल्ल–पु० [स०] १ बिल, गड्ढा । २ ताल । ३ नाश ।

तल्लड़–पु० लम्बा डडा, लाठी ।

तल्ली–स्त्री० [स०] १ जवान स्त्री । २ देखो 'तली' ।

तल्लीण, तल्लीन–वि० १ चिन्तन, मनन या अध्ययन मे लीन, मग्न । २ किसी कार्य मे पूर्ण मनोयोग से लगा हुआ ।

तव–सर्व० [स०] १ तेरा, तुम्हारा । २ देखो 'तव' । ३ देखो 'तप' ।

तवकिया–स्त्री० एक प्रकार की हरताल ।

तवक्षीर–पु० [स०] तव शीर, तीखुर नामक पदार्थ ।

तवक्षीरी–स्त्री० कनकचूर लता की जड से निकलने वाला तीखुर पदार्थ ।

तवज्जा, तवज्जै–स्त्री० [अ० तवज्जह] ध्यान, गौर, देखभाल ।

तवण, तवणु–१ देखो 'तपण' । २ देखो 'स्तवन' ।

तवणौ (बौ)–क्रि० [स० स्तवन] १ कहना, उच्चारण करना । २ वर्णन करना, विस्तार पूर्वक कहना । ३ स्तुति करना, प्रार्थना करना । ४ देखो 'तपणौ' (बौ) ।

तव-तेण–वि० [स० तप +स्तेन] तपस्या का चोर । (जैन)

तवन–पु० [स० स्तवन] १ स्तुति, प्रार्थना । २ स्तोत्र । ३ स्तोत्र गायन ।

तवलता–स्त्री० इलायची की लता ।

तवसमायारी–स्त्री० [स० तप समाचारी] चार प्रकार के तप अनुष्ठान । (जैन)

तवह–स्त्री० वेल, वल्लरी, लता ।

तवाइफ–देखो 'तवायफ' ।

तवाखीर–पु० [स० त्वक्क्षीर] वश लोचन ।

तवायफ–स्त्री० [अ०] १ वेश्या रडी । २ वेश्याओ की मडली ।

तवारां–क्रि० वि० उस समय, तब ।

तवारीख–स्त्री० [अ०] इतिहास ।

तविखि (सि)–पु० [स० तविष] स्वर्ग ।

तवी–स्त्री० १ भट्टी पर औंधा रखा जाने वाला वडा तवा । २ मिट्टी का छोटा तवा । ३ सपाट तली वाली कढाई ।

तवोकम्म–पु० [स० तप कर्मन्] तपकर्म, तपोनुष्ठान । (जैन)

तवोधन–देखो 'तपोधन' ।

तवौ–पु० [स० तप] १ रोटी सेकने का तवा । २ चिलम पर रखने का मिट्टी का गोल ठीकरा । ३ वक्षस्थल या पीठ का कवच । ४ ललाट का मध्य भाग । ५ हाथी के मस्तक पर लगाया जाने वाला कवच । ६ वख्तर का ऊपरी भाग ।

तस–पु० १ हाथ, हस्त । २ द्वीन्द्रियादि प्राणी । ३ प्यास । ४ इच्छा । –सर्व० उस । –क्रि० वि० तैसे-वैसे ।

तसकर–देखो 'तस्कर' ।

तसटा–पु० [स० तष्टृ] १ वस्तु को छील-छाल कर गढने वाला, विश्व कर्मा । २ एक आदित्य का नाम ।

तसटौ–देखो 'तसळौ' ।

तसण–देखो 'तिसण' ।

तसतरी–स्त्री० [फा० तश्तरी] थालीनुमा पात्र, रकाबी ।

तसतूंबौ–पु० इंद्रायण का फल ।

तसदीक–स्त्री० [अ० तस्दीक] १ प्रमाणीकरण । २ किसी प्रमाण से की गई पुष्टि । ३ समर्थन । ४ गवाही ।

तसदीह–स्त्री० पीडा, दर्द ।

तसफियौ–पु० निर्णय, फैसला ।

तसबी–देखो 'तसबीह' ।

तसबीर–देखो 'तसवीर' ।

तसबीह, तसब्बी–स्त्री० [अ० तस्बीह] माला, जाप की माला, सुमरनी ।

तसमाह–क्रि० वि० [सं० तस्मात्] इसलिये ।
तसमो–पु० [फा० तस्मः] चमडे का फीता । कस्सा, तसमा ।
तसरीफ–स्त्री० [अ० तशरीफ] १ इज्जत प्रतिष्ठा । २ बडप्पन । ३ महत्व । ४ व्यक्तित्व । ५ स्वागत सबधी शब्द । ६ पदार्पण, शुभागमन ।
तसळियो–पु० मित्र, साथी, दोस्त ।
तसळी–स्त्री० १ मित्र मण्डली । २ छोटा तसला । ३ देखो 'तसल्ली' ।
तसलीम–पु० [अ० तस्लीम] १ प्रणाम, अभिवादन । सलाम । २ स्वीकार, कबूल । ३ अनुपालना ।
तसळो–पु० १ बडा कटोरा । २ भाल पर पडने वाली तीन सलवटें ।
तसल्ली–स्त्री० [अ०] धैर्य, धीरज, सान्त्वना, शाति, सतोष ।
तसवीर–स्त्री० [अ० तस्वीर] १ कागज, वस्त्र, पट्टी आदि पर अकित कोई चित्र, फोटो । २ काच आदि में मढा उक्त प्रकार का चित्र । ३ प्रतिकृति । ४ मूर्ति, प्रतिमा, बुत ।
तसस–देखो 'तस' ।
तसा–क्रि०वि० उसी ओर, उसी दिशा मे, उसी तरह ।
तसियो–पु० १ सकट, कष्ट । २ छेह, अन्त । –वि० १ तृषातुर, प्यासा । २ लालची, लोभी । –सर्व० वैसा, ऐसा ।
तसु–सर्व० [स० तद्] १ उस । २ उसके, अपने ।
तसू–पु० इमारती गज का २४ वा भाग, एक माप ।
तसो–सर्व० (स्त्री० तसी) तैसा, वैसा ।
तस्कर–पु० [स०] १ चोर, दस्यु । २ चोर बाजारी । ३ अनैतिक व्यापार करने वाला ।
तस्करता–स्त्री० १ चोरी, डकैती । २ काला-बाजार का व्यापार ।
तस्करस्तायु–पु० [स०] काकनासा नामक लता ।
तस्करी–स्त्री० [स०] १ चोरी का कार्य । २ काला व्यापार । ३ चोर स्त्री । ४ चोर की स्त्री । ५ व्यभिचारिणी स्त्री ।
तस्गार–देखो 'तस्कर' ।
तस्दीक–देखो 'तसदीक' ।
तस्बीर–देखो 'तसवीर' ।
तह–क्रि०वि० १ तहा, वहा । २ तथा, एव । –सर्व० वह, उस ।
तह–स्त्री० १ यथार्थ, ज्ञान । २ चेतना, सज्ञा । ३ सतह गहराई । ४ पैंदी । ५ परत । ६ सलवट । ७ देखो 'तह' ।
तहक–देखो 'अहक' ।
तहकणो (बो)–क्रि० १ चलना । २ नगाडे का वजना । ३ भयभीत होना ।
तहकाणो (बो)–क्रि० १ चलाना । २ नगाडे वजाना । ३ भयभीत करना ।
तहकीक–स्त्री० [अ०] १ सच्चाई, यथार्थता । २ जाच-पडताल, छान-बीन । ३ निरीक्षण । ४ तलाश, ढू ढाई । ५ जिज्ञासा । ६ खोज, शोध ।
तहकीकत, तहकीकात–स्त्री० [अ०] १ किसी घटना की जाच-पडताल, छान-बीन । २ सच्चाई जानने का प्रयास । ३ निरीक्षण ।
तहखानो–पु० [फा० तहखाना] मकान के नीचे भूमि मे बना कक्ष, तलगृह ।
तहड़–स्त्री० करीब, अनुमान, अदाज ।
तहजीब–स्त्री० [अ०] शिष्टता, सभ्यता, शिष्ट-आचरण । शिष्टाचार ।
तहत–वि० [अ० तहत] १ नीचे, अधीन । २ अधिकृत । ३ अपेक्षा मे । ४ देखो 'तहत्त' ।
तहतावणो (बो)–क्रि० १ आग्रह करना, अनुरोध करना । २ हठ करना ।
तहतीक–देखो 'तहकीक' ।
तहत्त–पु० १ तथ्य, सत्य । २ देखो 'तहत' । (जैन)
तहत्ति–अव्य० [स० तथेति] ठीक है, ऐसा ही, तथेति ।
तहबरज–वि० [फा०] जिसकी तह न खुली हो, तहबध । तहशुदा ।
तहना–सर्व० तुम ।
तहनारी–सर्व० तुम्हारी ।
तहनाळ–स्त्री० १ तलवार की म्यान का सोने या चादी का बद । २ तलवार के नीचे का भाग ।
तहपेच–पु० [फा०] पगडी के नीचे का कपडा ।
तहबद, तहमत, तहमद, तहमद्द–पु० [फा० तहबद] कमर पर बाधने का अधोवस्त्र, लु गी ।
तहमल–पु० [अ० तहम्मुल] १ धैर्य, सब्र, सतोष । २ शान्ति ।
तहरउ–सर्व० तेरा, तुम्हारा ,
तहरि–सर्व० तुझको, तुमको ।
तहरीर–स्त्री० [अ० तह्रीर] १ लिखित मजबून । २ लिखित आदेश । ३ लिखावट । ४ शैली, लेखन । ५ प्रमाण । ६ लिखने की मजदूरी । ७ लेख-पत्र, दस्तावेज । ८ हाथ की लिखावट ।
तहलको–पु० [अ० तहल्क] १ हगामा, हो हल्ला । २ भगदड, खलवली । ३ उपद्रव, विप्लव । ४ किसी बात का सहसा फैलाव । ५ नाश, बरबादी । ६ मौत, मारकाट ।
तहवि–देखो 'तथापि' ।
तहवील–स्त्री० १ धरोहर, अमानत । २ किसी मद विशेष की आय की जमा । ३ खजाना, कोष । ४ रोकड, नगद राशि । ५ प्रवेश । ६ हस्तान्तरण । ७ पोते बाकी । –दार–पु० कोषाध्यक्ष, खजाची ।

तहस-नहस, तहस-महस–वि० नष्ट, बरबाद । ध्वस्त ।

तहसील–स्त्री० [अ०] १ प्रशासन के अनुसार जिले का एक भाग । २ इस भाग की भूमि का लगान वसूल करने वाला कार्यालय । ३ राजस्व विभाग का एक कार्यालय । —**दार**–पु० तहसील' का अधिकारी । —**दारी**–स्त्री० 'तहसीलदार' का पद । तहसीलदार का कार्य ।

तहा–क्रि० वि० उस जगह, वहा ।

तहारत–पु० १ शौचालय । २ शुद्धता, पवित्रता ।

तहावि–देखो 'तथापि' ।

तहिं, तहि–क्रि० वि० १ तब, तो । २ वहा ।

तहीम–सर्व० तुम्हारा ।

तहु–सर्व० उस ।

तह्मी–सर्व० तुम । तुमने ।

ता–सर्व० उन । –क्रि० वि० १ तब । २ वहा । [स० तावत्] ३ तो । ४ देखो 'ता' ।

ताई–अव्य० [स० तावत्] १ तक, पर्यन्त । २ वास्ते, निमित्त, लिए । ३ पास, समीप । –सर्व० १ उस । २ देखो 'ताईं' ।

ताउ–क्रि० वि० तो, तब ।

तांग–पु० पतला व विषैला एक सर्प विशेष ।

तागड़–पु० १ ऊट के गले से बाध कर हल के बाधा जाने वाला रस्सा । २ हाथी को बाधने का रस्सा । ३ एक देशी खेल ।

तागलो–पु० एक छोटा सिक्का ।

तागी–स्त्री० [स० तग, त्वग] १ पैरो की लडखडाहट । २ एक देशी खेल ।

तागो–पु० १ एक घोडे की घोडागाडी । २ छोटी बैलगाडी । ३ असफल यात्रा, चक्कर । ४ यात्रा की थकान ।

ताजो–सर्व० (स्त्री० ताजी) तुम्हारा तेरा ।

ताड (ड़)–पु० १ धधकता अग्नि कण, बडी चिनगारी । २ सतान, पुत्र । [सं० ताडव] ३ नृत्य, नाच । ४ बैल या साड की दहाड । [स० तुण्डकम्] ५ मुख, थूथन । ६ शिर, मस्तक ।

ताडणौ (बौ)–क्रि० वि० १ बैल या साड का दहाडना । २ गरजना । ३ दहाड मारना । ४ नृत्य करना, नाचना ।

ताडळ–पु० १ बडा सर्प । २ देखो 'तडळ' । ३ देखो तडुळ' ।

ताडव–पु० [स०] १ पुरुषो का नाच, नृत्य । २ शिवजी का नृत्य । ३ एक प्रकार की घास । ४ तीनो लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम ।

ताडवो–पु० [स०] सगीत की एक ताल ।

ताडि, ताडी–पु० १ ताडि मनु का नृत्य शास्त्र । २ सामवेद की ताडव शाखा का अध्ययन करने वाला । ३ यजुर्वेद का एक कल्पसूत्रकार ।

ताडीर–पु० बडा व काला सर्प ।

तांडीस–पु० [स० ताड] नृत्य ।

ताडौ–पु० १ झुण्ड, समूह । २ कूए के पास का खुला मैदान । ३ फौज के तबू आदि का सामान । ४ अग्नि कण, अगारा । ५ बनजारे के बैलो का झुण्ड ।

ताण–स्त्री० [स० तनु] १ दबाव शक्ति । २ खिचाव, तनाव । ३ जिद्द, हठ । ४ विवाद । ५ आग्रह । ६ खीचातान । ७ ऐंठन । ८ वात रोग से होने वाली ऐंठन । ९ धनुषाकार पत्थर की जुडाई विशेष । १० गर्व, अहकार । ११ लोहे की छड या लकडी जो मजबूती के लिये किसी उपकरण मे लगाई जाती है । १२ पतग की डोरी । [स० त्राण] १३ रक्षा, शरण ।

तांणणौ–पु० गिरासिया जाति मे विवाह का एक ढग । –वि० [स० त्राण] रक्षक ।

तांणणौ, (बौ)–क्रि० [स०तनु] १ खीचना, खीचाव देकर बांधना । २ धनुष पर तीर चढाना । ३ कसना । ४ ताव देना, ऐंठन देना, मरोडना । ५ घसीटना । ६ जोर देना, आग्रह करना । ७ बलपूर्वक किसी तरफ करना । ८ प्रवृत्त करना ।

ताणाव–देखो 'तणाव' ।

तांणि, तांणी–१ देखो 'तणी' । २ देखो 'ताई' । ३ देखो 'ताणौ' ।

ताणौ–पु० [स० तनु] १ कपडा बुनाई मे सूत का ताना । २ ऐसे ताने मे लगाई जाने वाली लकडी ।

तात–स्त्री० [स० ततु] १ भेड, बकरी की आत । २ मैस के चमडे की पतली डोरी । ३ धनुप की प्रत्यचा । ४ डोरा । धागा । ५ तार वाद्यो का तार । ६ जुलाहो का एक औजार । ७ मगरमच्छ आदि के थूयन का ततु । ८ सुधि, खबर, परवाह । [स० तत्र] ९ सेना । १० देखो 'तातौ' ।

तातण–पु० तागा, धागा, सूत का तार ।

तातणियौ–पु० १ गले का एक आभूषण विशेष । २ देखो 'तातण' ।

तातळ, तातळि (ळी)–स्त्री० १ शीघ्रता, त्वरा । २ बकझक । ३ कलह ।

तातवौ–पु० [सं० ततुण] मगरमच्छ, मत्स्य ।

तातिं (तौ)–पु० [स० तन्तु] १ तंतु नुमा स्नायु रोग का कीडा । २ पैर का एक आभूषण विशेष । ३ तान्त्रिक मूत्र, गडा, तावीज । ४ सतान । [स० तति] ५ खलियान मे अनाज की बालें कुचलने वाले बैलो की पक्ति । ६ पशुओ के क्रय-विक्रय के लिए लगी अस्थाई हाट । ७ देखो 'तात' ।

तातियौ–पु० लम्बे ततुओ का घास ।

ताछणो (बो)–क्रि० १ बलिदान करना, बलिदेना। २ सोने आदि के जेवरो को कुरेद कर साफ करना। ३ वार करना, प्रहार करना।

ताज–पु० [अ०] १ राज मुकुट। २ मुकुट। ३ किलगी, तुर्रा। ४ मोर, मुर्गा आदि की चोटी। ५ मकान की शोभा के लिये उस पर बनी बुर्ज। ६ मुख्यद्वार पर वनी वालकानी। ७ ताज महल। ८ अरबी घोडा। ९ एक देश का नाम –वि० उच्च, श्रेष्ठ।

ताजक–स्त्री० १ घोडी। २ एक ईरानी जाति। –पु० ३ यवनाचार्य कृत ज्योतिष का एक ग्रथ।

ताजगी–स्त्री० [फा०] १ ताजापन, चुस्ती, प्रफुल्लता। २ शुष्कता एव सूखेपन का अभाव, तरी।

ताजण–स्त्री० १ घोडी। २ एक लोक नृत्य विशेष। ३ चावुक, कोडा।

ताजणियौ, ताजणौ–पु० [फा० ताजियाना] चावुक, कोडा, हंटर।

ताजणौ (बौ)–क्रि० [सं० तर्ज्जन] १ डाटना, फटकारना। [स० त्यक्त] २ छोडना, तजना।

ताजदार–वि० [फा०] १ ताजधारी, मुकुटधारी। २ ताज के ढग से बना। –पु० राजा, वादशाह।

ताजपोसी–स्त्री० [फा० ताजपोशी] राज्याभिषेक का उत्सव। राज्याभिषेक।

ताजमहल–पु० आगरे मे यमुना किनारे बना इतिहास प्रसिद्ध महल।

ताजिणौ–देखो ताजणौ'।

ताजियौ–पु० [अ० तअजिय] मोहर्रम, ताजिया।

ताजी–पु० (स्त्री० ताजण) १ अरबी घोडा। २ ताज देशोत्पन्न एक विशेष जाति का कुत्ता। –स्त्री० ३ अरब की भाषा। –वि० १ अरव का, अरब सबधी। २ देखो 'ताजौ' (स्त्री०)।

ताजीम–स्त्री० [अ० तअजीम] सम्मान, आदर, सत्कार।

ताजीमी-सरदार–पु० दरवार का प्रतिष्ठित सामत।

ताजीर–स्त्री० [अ० ताजीर] १ दण्ड, सजा। २ ईर्ष्या।

ताजौ–वि० [फा० ताज] (स्त्री० ताजी) १ तुरत का वना। २ जो पुराना न हो। नवीन। ३ हरा-भरा, तर। ४ स्वस्थ प्रसन्न चित्त, प्रफुल्लित। ५ हृष्ट-पुष्ट। ६ सद्य उत्पन्न। ७ सद्य प्रस्तुत।

ताटक–पु० [स०] १ कर्ण फूल, कान का आभूषण। २ लावणी से सवधित एक छद। ३ छप्पय का २४ वा भेद। ४ डिंगल का एक गीत। ५ आर्या या स्कधक का एक भेद। ६ प्रथम गुरु के गणगण के प्रथम भेद का नाम। ७ कान का वाला।

ताट–स्त्री० १ मिट्टी के पात्र में पडी दरार। २ आक की छाल की रस्सी जो लकडी के वाध कर घुमाने पर आवाज करती है।

ताटकणौ (बौ)–क्रि० १ बादलो का गर्जना। २ मूसलाधार वर्षा होना। ३ बिजली का जोर से कडकना। ४ आक्रमण करना। ५ झपटना।

ताटाबरड़–वि० जबरदस्त। जोरदार।

ताटियौ–पु० रहट के पानी गिरने की कुण्डी के वाजू मे लगाई जाने वाली आड।

ताटी–देखो 'टाटी'।

ताटीसेवी–पु० १ नौकर, दास। २ आश्रित।

ताटी–देखो 'टाटी'।

ता'टौ–पु० १ चौडे पैंदे व छोटी दीवार का धातु का पात्र। २ वृक्ष, पेड। ३ देखो 'टाटौ'।

ताठणौ (बौ), ताठसकणौ (बौ)–क्रि० १ छीनना, खोसना, झपटना। २ अधिकार मे कर लेना।

ताडंक–देखो 'ताटक'।

ताड–देखो 'ताड'।

ताडणौ (बौ)–क्रि० १ पहनना, धारण करना। २ तमतमाना, क्रुद्ध होना। ३ देखो 'ताडूकणौ' (बौ)। ४ देखो 'ताडणौ' (बौ)।

ताडियौ–पु० स्वर्णकारो के कार्य का कासी का छोटा डडा।

ताडूकणौ (बौ)–क्रि० सांड या बैल का दहाडना।

ताढ़–देखो 'ताढक'।

ताढ़उ–देखो 'ताढौ'।

ताढ़क–स्त्री० १ शीत, ठड, सर्दी। २ शीतलता, ठडक।

ताढ़ौ–वि० (स्त्री० ताढि, ढी) ठडा, शीतल।

ता'णौ (बौ)–देखो 'तावणौ' (बौ)।

ताण्यू–पु० कोपीन।

तात–पु० [स०] १ पिता। २ पूज्य व्यक्ति, गुरु। ३ पति। ४ ईश्वर। ५ स्वामी। ६ प्रिय वाची सम्बोधन। –स्त्री० ७ चिंता। ८ पीडा, कष्ट।

तातउ (उ)–देखो 'तातौ'।

तातर–पु० समुद्र, सागर।

तातायई–स्त्री० नृत्य, नाच। नृत्य का बोल।

तातार–पु० [फा०] भारत व फारस के उत्तर मे स्थित एक देश।

तातारी–वि० तातार देश का, तातार देश सबधी। –पु० तातार देश का निवासी।

ताताळ–वि० तेज चलने वाला, उतावला।

ताति (ती)–स्त्री० १ रटन। २ देखो 'तात'। ३ देखो 'तातौ' (स्त्री०)। —वेळा–स्त्री० बाल्यावस्था।

तातील–स्त्री० [अ०] १ अवकाश, छुट्टी। २ छुट्टी का दिन।
तातेडखानो–पु० १ स्नानागार, हमाम। २ भडार।
तातै–क्रि०वि० इससे, इसलिये। इस कारण।
तातो–वि० [स० तप्त] (स्त्री० ताती) १ गर्म, उष्ण। २ तपा हुआ। ३ तृप्त पूर्ण। ४ उतावला, जल्दबाज। ५ चचल, नटखट। ६ तीव्रगामी। शीघ्रगामी। –क्रि०वि० शीघ्र, तुरत।
तात्परज–पु० [स० तात्पर्य्य] तात्पर्य, अभिप्राय, मतलब।
तात्त्विक–वि० [स०] तत्त्व सबधी, तत्त्व ज्ञान सबधी।
ताथेइ–देखो 'ताताथेई'।
तावागळ, तादात्म्य–पु० [स० तादात्म्य] १ एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सबध। २ अभिन्नता, एकता। ३ आत्मसात होने का भाव। ४ तत्त्व रूपता।
तादाद–स्त्री० [अ० तअदाद] १ सख्या, गिनती। २ कुल योग। ३ मात्रा, परिमाण।
तादृस–वि० [स० तादृश] उसके समान, ठीक वैसा।
ताप (उ)–पु० [स०] १ उष्णता, गर्मी। २ अग्नि, आग। ३ ज्वाला, लपट, आच। ४ कष्ट, पीडा। ५ दुख। ६ ज्वर, बुखार। ७ भय, आतक। ८ प्रताप, तेज। ९ जोश, साहस।
तापड़–पु० [स० ताप+पट] १ बिछाने का, जूट का वस्त्र। २ मैले कुचेले वस्त्र। ३ ऊट के चारजामे के नीचे बिछाने का वस्त्र। ४ ऊंट की चाल विशेष। ५ किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके परिवार वालो द्वारा शोक मे बैठने के लिये बिछाया जाने वाला वस्त्र।
तापडणो (बो)–क्रि० १ भागना, दौडना। २ दुखी होना, कष्ट पाना। ३ तडपना। ४ ऊट का चारो पावो से दौडना।
तापडधिन, तापडधिन्न–पु० तबला आदि के बजने की ध्वनि।
तापडाणो (बो)–क्रि० घोडे, ऊट आदि को दौडाना।
तापडणो (बो)–देखो 'तापडणो (बो)'।
तापण–देखो 'तापन'।
तापणो (बो)–क्रि० १ चेचक के व्रण निकलना। २ आग या आच से गर्माना, गर्मी लेना। ३ धूप सेवन करना। ४ देखो 'तापणो' (बो)।
तापतिल्ली–स्त्री० तिल्ली बढ़ने का एक रोग।
तापती–स्त्री० [स०] १ सूर्य की कन्या, तापी। २ दक्षिण भारत की एक नदी।
तापत्रय–पु० [स०] तीन प्रकार के ताप।
तापन–पु० [स०] १ ताप देने वाला सूर्य। २ काम के पाच बाणो मे से एक। ३ सूर्यकान्त मणि। ४ एक नरक का नाम। ५ एक तान्त्रिक प्रयोग। ६ ग्रीष्म ऋतु। ७ जलन। ८ कष्ट। ९ दण्ड।
तापमानजत्र (यत्र)–पु० ताप मापने का यत्र, थर्मामीटर।
तापल–पु० [स० ताप] १ क्रोध। २ श्वास रोग से पीडित पशु।
तापस–पु० [स०] १ तपस्वी। २ तेज पत्ता। ३ एक प्रकार की ईख। ४ शिव। ५ साधु।
तापसक–पु० [स०] सामान्य श्रेणी का तपस्वी।
तापसतरु (द्रुम)–पु० [स०] हिंगोट वृक्ष, ईंगुदी वृक्ष।
तापस्वेद–पु० [स०] १ गर्मी से उत्पन्न पसीना, स्वेद। २ गर्म बालू-कण। ३ नमक।
तापहरी–स्त्री० एक पकवान या व्यजन का नाम।
तापाड़ी–स्त्री० चोट के कारण आख की पुतली मे बना सफेद चिह्न।
तापी–वि० [स० तापिन्] १ ताप देने वाला, उष्णता देने वाला। २ दुख देने वाला, सताने वाला। –पु० १ बुद्ध देव। २ तपस्वी, मुनि। ३ देखो 'तापती'।
तापु–देखो 'ताप'।
तापेंद्र–पु० [स०] सूर्य।
तापैलेदिन, तापैलैदिन–पु० आज से पाचवा या छठा दिन।
तापो–पु० १ ऊट की, चारो पावो से उछलने की क्रिया। २ ऊट का पदाघात।
ताप्ती–देख 'तापती'।
ताफतो–पु० [स० तापत] १ एक प्रकार का चमकदार रेशमी वस्त्र। २ उक्त वस्त्र के रग जैसा घोडा।
ताब–स्त्री० [फा०] १ ताप, गर्मी, उष्णता। २ आभा कान्ति चमक। ३ शक्ति, सामर्थ्य। ४ हिम्मत, साहस। ५ सहिष्णुता, धैर्य। ६ आतक, रौब। ७ ज्योति।
ताबडतोड–क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी, झट-पट, लगातार। –स्त्री० उतावली, शीघ्रता।
ताबची–स्त्री० प्रकार की बन्दूक।
ताबदान–पु० [फा० ताबदान] १ ताख, आला, आलय। २ कमरे के द्वार पर 'सिलदरो' पर गोलाकार स्थान जहाँ झरोखे भी होते हैं। ३ रोशनदान, खिडकी।
ताबादार–देखो 'ताबेदार'।
ताबावारी–देखो 'ताबेदारी'।
ताबि–देखो 'ताब'।
ताबीज–देखो 'ताबीज'।
ताबीत–पु० [अ० ताबईत] १ अधीनता, मातहती। २ देखो 'ताबीज'।
ताबीन–वि० अधीन, मातहत। —दार–पु० नौकर, सेवक, परिचायक। सिपाही।

ताबूत–पु० १ जनाजा, अर्थी । २ लाश रखने की सदूक । ३ मकबरा, मजार । ४ ताजिया । ५ ताजिया की तरह बना कोई ढाचा ।

ताबे–वि० [अ० ताब ऽ] १ वशीभूत, अधीन, आज्ञानुवर्ती । २ अनुयायी ।

ताबेदार–वि० [अ०] १ आज्ञाकारी । २ अधीन, वशवर्ती । ३ अधीन, मातहत । –पु० १ सेवक, चाकर । २ अनुयायी ।

ताबेदारी–स्त्री० [अ०] १ अधीनता । २ आज्ञापालन । ३ अनुयायित्व ।

ताबै–देखो 'तावे' ।

ताबैदार–देखो 'तावेदार' ।

ताबैदारी–देखो 'तावेदारी' ।

ताय–पु०[स० तात] १ पिता । २ रात्रि, रात । –सर्व० १ उस । २ किस । –वि० समान, तुल्य । –क्रि०वि० १ तब । २ लिए, वास्ते । ३ वैसे ही, ज्यो ।

तायक (ग)–वि० १ वीर, योद्धा । २ सहारक, नाश करने वाला । ३ शीघ्रता युक्त, त्वरायुक्त । ४ शत्रु । ५ एक देश का नाम । –सर्व० तेरा, तेरी ।

तायत, तायतियौ–देखो 'ताईत' ।

तायतीसग–पु०[स०त्रायस्त्रिशक] इन्द्र के स्थानीय देवता । (जैन)

तायफ–पु० [अ०] १ चारो ओर घूमने का भाव, परिक्रमा । २ चौकीदार । ३ चौकीदारी । ४ देखो 'तवायफ' ।

तायफौ–पु०[फा०] १ वेश्याओ का समूह या मण्डली । २ नाच गान करने वाली मण्डली ।

तायल–वि० १ वीर, शक्तिशाली, समर्थ । २ उग्र, तेज । ३ सहारक । ४ शत्रु ।

तायलौ–सर्व० (स्त्री० तायली) १ तेरा, तुम्हारा । २ देखो 'तायल' ।

तायां–पु० [स० आततायी] अत्याचारी, आतताई ।

तायोड़ौ–वि० (स्त्री० तायोडी) १ सताया हुआ । २ तपाया हुआ । ३ पिघलाया हुआ । ४ कष्टो से सतप्त ।

तायौ–वि० चचल ।

तारंग–देखो 'तारक' ।

तारगमत्र–देखो 'तारकमत्र' ।

तारगसिला–स्त्री० चौसठ योगिनियो के सामूहिक नृत्य करने की सिला ।

तार–पु० [स०] १ सूत, तागा, ततू । २ धातु का तागा । ३ चादी, रौप्य । ४ बिजली आदि का तार । ५ यान्त्रिक सहायता से भेजी खबर या सदेश, टेलीग्राम । ६ सिलसिला, क्रम । ७ हल्का मादक पदार्थ । ८ संयोग, अवसर । ९ सार, तत्त्व, निष्कर्ष । १० वश, परपरा । ११ सुभीता, व्यवस्था । १२ युक्ति, उपाय, तरकीब । १३ राम की सेना का एक वानर । १४ तारकासुर । १५ मय दानव का एक साथी । १६ परिणाम, नतीजा । १७ ध्यान लगन । १८ तार वाद्य । १९ शुद्ध मोती । २० सगीत मे स्वरो का सप्तक । २१ प्रकाश, आभा । २२ शक्कर की चासनी बनने की अवस्था । २३ आख की पुतली । २४ पर्याप्त भोजन से होने वाली तृप्ति । २५ मूर्च्छा, बेहोशी । २६ क्रोध, गुस्सा । २७ ईश्वर । २८ शिव । २९ मोती की स्वच्छता । ३० नदी तट । ३१ उच्चस्वर । ३२ देखो 'तारौ' । –वि० १ निर्मल, स्वच्छ । २ थोडा, किंचित, अल्प ।

तारक–पु० [स०] १ नक्षत्र, तारा । २ आख की पुतली । ३ इन्द्र का शत्रु, तारकासुर । ४ चादी, रौप्य । ५ वह जो पार उतारे,तारने वाला । ६ मृतक के पीछे क्रिया कर्म कराने वाली व दान लेने वाली जाति । ७ ईश्वर । ८ कर्णधार, मल्लाह । ९ तेरह वर्ण का एक छन्द । [स० तार्क्ष्य] १० गरुड । ११ घोडा । **—असवारी**–पु० ईश्वर । **—गाह, जित**–पु० स्वामि कार्त्तिकेय । **—टोडी**–पु० ऋषभ व कोमल स्वरो से गाया जाने वाला एक राग । **—तीरथ**–पु० गया के पास का एक तीर्थ । **–ब्रह्म, मंत्र**–पु० राम का षडाक्षरी मन्त्र ।

तार-कमांणी–स्त्री० [स०] नगीने काटने का धनुषाकार एक औजार ।

तारकस–पु० १ धातु का तार बनाने वाला । २ धातु के पतले तारो से युक्त वस्त्र ।

तारकसी–स्त्री० १ पतले तार खीचने का कार्य । २ इस कार्य की मजदूरी ।

तारका–स्त्री० १ वाली की पत्नी, तारा । २ इन्द्र वारुणी । ३ नक्षत्र, तारा । ४ ज्योति, प्रकाश । ५ घोडो की एक जाति विशेष । ६ आख की पुतली । ७ धूमकेतु ।

तारकाक्ष–पु० [स०] तारकासुर का ज्येष्ठ पुत्र ।

तारकायण–पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

तारकार, तारकारि–पु० [सं० तारक-अरि] स्वामि कार्त्तिकेय, षडानन ।

तारकासुर–पु० [स०] स्वामि कार्त्तिकेय द्वारा वधित एक असुर ।

तारकिक–पु० [स० तार्किक] १ तर्क शास्त्र का पडित । २ तर्क करने वाला ।

तारकिणी, तारकित–वि० [स०] तारों से युक्त, तारो भरी ।

तारकी–वि० [स० तारकित] १ तारकित । २ थोडा, किंचित । ३ देखो 'तारक' ।

तारकूट–पु० [स०] चादी व पीतल के योग से बना धातु ।

तारकेस, तारकेस्वर-पु० [स०] १ शिव, महादेव । २ कलकत्ते के पास का एक शिव लिंग । [स० तार्किक] ३ तर्क शास्त्र । ४ तर्क करने वाला ।

तारकौ–देखो 'तारक'।

तारक्खी, तारक्ष, तारख, तारखी, तारिख, तारिग–देखो 'तारक'। —मत्र='तारकमत्र'।

तारगा–स्त्री० १ यक्षो के इन्द्र पूर्ण भद्र की चतुर्थ पटरानी। २ नक्षत्र।

तारघर–पु० [स० तार-गृह] बिजली के तारो व यत्रो से सदेश भेजने का कार्यालय।

तारच्छ–देखो 'तारक'।

तारजोड़–पु० कसीदाकारी का कार्य।

तारण–वि० [स०] (स्त्री०, तारणी) उद्धार करने वाला, तारने वाला। –पु० १ उद्धार करने की क्रिया, उद्धार, निस्तार। २ पार उतारने का कार्य। ३ ईश्वर। ४ सोने के बदले लिया ऋण न चुकने व ब्याज बढ जाने पर रखा जाने वाला अतिरिक्त सोना। ५ नौका, बेडा। ६ बचाव, छुटकारा। —पारण–पु० आश्विन की पूर्णिमा से प्रारभ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलता रहने वाला एक व्रत।

तारणी–स्त्री० [स०] १ देवी, दुर्गा। २ वेडा, नाव। ३ उद्धार करने वाली। ४ कश्यप की एक पत्नी। —तेरस–स्त्री० बुधवार की त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत।

तारणौ (बौ)–क्रि० [सं०तॄ] १ पार लगाना। २ उद्धार करना, मुक्त करना। ३ बचाना, रक्षा करना। ४ तिराना।

तारत, तारतखानौ, तारथ–पु० [अ० तहारत] पाखाना, शौचालय।

तारवी–स्त्री० एक प्रकार का काटेदार पेड।

तारन–देखो 'तारण'।

तारपीन–पु० चीड के पेड का तेल।

तारवणौ (बौ)–देखो 'तारणौ' (बौ)।

तारसार–पु० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

तारहौ–सर्व० तेरा।

तारा–क्रि०वि० १ तब। २ देखो 'तारा'।

ताराण–देखो 'तारायण'।

तारा–पु० १ युद्ध का एक वाद्य। २ सुरणाई वाद्य के छेदो का नाम। –स्त्री० ३ बालि नामक वानर की स्त्री। ४ राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी। ५ ज्योति, प्रकाश। ६ वृहस्पति की स्त्री। ७ आख की पुतली।

ताराइण–देखो 'तारायण'।

ताराई–स्त्री० एक घास विशेष।

ताराक्ष–पु० एक असुर का नाम।

ताराग्रह–पु० [सं०] मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ग्रहो का समूह।

ताराज–देखो 'तराज'।

तारादूती–स्त्री० चुगली करने वाली स्त्री।

ताराधिप, ताराधीस, तारानाथ–पु० १ चन्द्रमा, शशि। २ शिव। ३ वृहस्पति। ४ बालि। ५ सुग्रीव। ६ राजा हरिश्चन्द्र।

तारापत–स्त्री० [स० तारा + पक्ति] तारावली, तारो की पक्ति।

तारापत (पति)–देखो 'ताराधिप'।

तारापथ, तारापह–पु० [स० तारापथ] १ आकाश। २ आकाश गगा।

तारापीड़–पु० [स०] १ चद्रमा। २ अयोध्या का एक राजा। ३ काश्मीर का एक प्राचीन राजा।

तारापेसानी–पु० ललाट पर सफेद तिलक वाला घोडा।

तारामडळ–पु० [स० तारामण्डल] १ तारागण, नक्षत्र-समूह। २ एक प्रकार की आतिशबाजी। ३ खगोल। ४ आख की पुतली।

तारामडूर–पु० [स०] अनेक द्रव्यो के योग से बनी एक औषधि।

ताराम्रग–पु० [स० तारामृग] मृगशिरा नक्षत्र।

तारायण–पु० [स०] १ आकाश। २ मस्तक, कपाल। ३ अधिक चोट आदि के कारण आखो के आगे छा जाने वाला अधेरा। –स्त्री० ४ तारो की पक्ति। ५ नेत्र-ज्योति, दृष्टि। ६ देखो 'तारण'।

तारायणी–स्त्री० नक्षत्र-समूह। तारागण।

तारिक–वि० [अ०] १ तर्क करने वाला, तर्क छेडने वाला। २ त्यागी। ३ देखो 'तारक'। [सं०] ४ किराया, उतराई।

तारिका–स्त्री० [स०] १ एक देवी (जैन)। २ आख की पुतली।

तारिक्ख, तारिख–देखो 'तारक'।

तारिया–देखो 'तारिका'।

तारिस–क्रि०वि० [स० तादृश] वैसा ही।

तारी–स्त्री० १ चावलो मे आलु आदि मसाले डाल कर बनाई गई खिचडी, चटपटा व्यजन। २ तार का बना उपकरण। ३ देखो 'ताडी'।

तारीक–वि० [फा०] १ काला, स्याह। २ धुधला।

तारीकी–स्त्री० [फा०] १ कालापन, स्याही। २ धुंधलापन। ३ अधेरा।

तारीख–स्त्री० [फा०] १ चौबीस घटे की एक अवधि विशेष, दिन। २ तिथि, दिनाक। ३ घटना विशेष की प्रसिद्ध तिथि। ४ कार्य विशेष के लिए निश्चित किया हुआ दिन। ५ इतिहास।

तारीफ–स्त्री० [अ०] १ प्रशसा, श्लाघा। २ प्रशसा मे कहे जाने वाले शब्द। सराहना ३ परिचय। ४ वर्णन, बखान।

तारु–देखो 'तारू'।

तारुण–पु० [स० तारुण्य] १ युवावस्था। २ वयस्कता। ३ देखो 'तरुण'।

तारुणी–देखो 'तरुणी'।

तारुण्ण, तारुण्य, तारुन्न–देखो 'तारुण'।

तारु–वि० १ उद्धार करने वाला, मुक्त करने वाला। २ पार करने वाला। ३ देखो 'तेरु'। ४ देखो 'ताहरा'।

तारेक–क्रि०वि० यदा-कदा, कभी-कभी।

तारें–क्रि०वि० तब।

तारौ–पु० [स० तारा] १ नक्षत्र, सितारा, तारा। २ आख की पुतली। ३ अश्विनी नक्षत्र। ४ भाग्य। ५ प्रकाश। ६ नैचे के मध्य मे लगाये जाने वाले धातु के फूल। ७ मोती।

ता'रौ–सर्व० तेरा, तुम्हारा।

तारौ-राणी–पु० एक लोक गीत विशेष।

तालक–पु० छप्पय छद का २४ वा भेद।

ताळ–स्त्री० १ वेला, समय, अवधि। २ करतल, हथेली। ३ करतल ध्वनि। ४ जाघ आदि पर करतल के आघात से उत्पन्न ध्वनि। ५ घोडे की टाप की ध्वनि। ६ टहनी। ७ हरताल। ८ हाथियो के कान फडफडाने की ध्वनि। ९ तलवार की मूठ। –पु० १० भाल, ललाट। ११ खडे मनुष्य के हाथ ऊचे करके लिया जाने वाला ऊचाई या गहराई का माप। १२ तालाव, जलाशय। १३ सलाह, राय। १४ उपाय, तरकीब। १५ दाव, पेच। १६ लय, धुन। १७ झाझ वाद्य, मजीरा। १८ ताड वृक्ष। १९ तालीश-पत्र। २० बिल्व फल, बिला, बेल। २१ महादेव। २२ खजूर का वृक्ष। २३ सगीत मे लय का समय। २४ तबले का वर्गीकृत कोई बोल। २५ ढगण के दूसरे भेद का नाम। २६ देखो 'ताळौ'।

ताल–स्त्री० १ शिर के मध्य से बाल उड जाने की अवस्था। २ नाच-गाने के लय का समय। –पु० ३ ऊसर भूमि का समतल विस्तृत मैदान। ४ कठोर भूमि। ५ देखो 'ताळ'। ६ तमाल-पत्र। ७ पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक।

ताळउ–पु० १ तमाल-पत्र। २ देखो 'ताळौ'।

तालउड–पु० [स० तालपुट] तालपुट नामक प्राण नाशक विष।

तालकर–स्त्री० १ करताल, वाद्य। –पु० २ प्रथम गुरु के ढगण के भेद का नाम।

तालके–क्रि०वि० १ अधीन, कब्जे मे। २ हवाले, सुपुर्द। ३ जिम्मेदारी मे। ४ हिस्से मे, पक्ष मे।

तालकेतु–पु० [स०] १ भीष्म पितामह। २ बलराम। ३ जिसकी पताका पर ताड वृक्ष का चिह्न हो।

तालकेस्वर–पु० [स० तालकेश्वर] एक औषधि विशेष।

तालकौ–पु० [अ० तअल्लुक] बहुत से गावो की जमीदारी, बडी रियासत।

ताळजघ–पु० [स० तालजघ] एक यदुवशी राजा।

ताळताळी–स्त्री० दोनो हाथो की करतल ध्वनि। ताली। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

ताळधर (धारी)–वि० ताल प्रगट करने वाला।

तालपत्र–पु० ताडवृक्ष के पत्ते।

ताळपळब–पु० [स० तालप्रलब] गौशाला का एक श्रावक।

ताळपिसाय–पु० [स० तालपिशाच] ताड वृक्ष के समान लम्बे कद का राक्षस।

ताळपुडगविस–पु० [स०तालपुटकविष] शीघ्र प्राण नाशक विष।

ताळपुत्र–पु० १ ताल-फल। २ पखी, पखा।

तालबखानौ–पु० [फा०] १ अन्त पुर। २ अन्त पुर की सुरक्षा व्यवस्था।

तालबेइल्म–पु० [अ० तालिबेइल्म] १ शिक्षार्थी, विद्यार्थी। २ जिज्ञासु।

ताळबेताळ–पु० राजा विक्रमादित्य के सेवक, दो वेताल।

तालमकाणा (मखाणा)–पु० एक औषधि विशेष।

तालमान–पु० ६४ कलाओ मे से एक।

ताळमेळ–पु० १ स्वर-ताल का सयोग। २ मेल-मिलाप। ३ परस्पर निर्वाह होने की अवस्था।

ताळयर–पु० [स० तालचर] १ एक मानव जाति (जैन)। २ नट या नृत्यकारो का एक वर्ग। ३ ताल देने वाला।

तालरग–पु० एक प्रकार का बाजा।

तालर, तालरौ–पु० १ ककरीली ऊसर भूमि, मैदान। २ छोटा गड्ढा, पोखरा।

ताळलक्षण (लखण, लखन)–पु० [स० ताललक्षण] तालध्वजी, बलराम, भीष्म।

तालवन–पु० [स०] ताड वृक्षो वाला जगल।

ताळवाही–पु० [स० तालवाही] झाझ, मजीरा आदि वाद्य।

ताळविमाळ–वि० नष्ट-भ्रष्ट, लुप्त।

ताळवी–वि० [स० तालव्य] तालु सबधी। –पु० तालु से उच्चरित होने वाला वर्ण।

तालविलब–पु० नारियल।

ताळवौ–पु० [स० तालु] मुह के अन्दर की ऊपरी सतह, तालु।

ताळसम–पु० ताल के अनुसार स्वर।

तालाक–पु० [स०] बलराम।

ताळा–स्त्री० १ करताल, ताली। २ देखो 'ताळ'। —चर– –स्त्री० नाच गान करने वाली जाति।

ताळातोड–पु० चोर।

ताळाधारी–वि० भाग्यशाली।

ताळाव–देखो 'तळाव'।

ताळाबिळद (बुळद)–देखो 'ताळविलद'।
ताळाबेली–स्त्री० बेचैनी, परेशानी।
ताळायर–देखो 'ताळयर'।
ताळायरकम्म–पु० [स० तालचर कर्म] ताल क्रिया (जैन)।
ताळावग्घाडणी–स्त्री० [स० तालोद्घाटनी] ताल प्रगट करने वाली विद्या (जैन)।
ताळाविळद–वि० भाग्यशाली, धनी।
ताळि–स्त्री० १ समय। २ देखो 'ताळी'।
तालिब–वि० [अ०] १ चाहने वाला, जिज्ञासा करने वाला। २ ढू ढने वाला, तलाश करने वाला।
तालिस–वि० [स० तादृश] समान, वैसा, उसी प्रकार का।
ताळी–स्त्री० [स० ताली] १ ताले की कु जी, चाबी। २ हथेली करतल। ३ करतल ध्वनि। ४ ध्यानावस्था, समाधि। ५ छोटा तालाब। ६ छोटा ताला। ७ ताड़ी वृक्ष। ८ समय, वेला। ९ छ मात्रा का एक छन्द।
ताली–स्त्री० १ खलिहान के लिये तैयार की गई भूमि। २ खलिहान मे पडा अनाज का ढेर। ३ जागीरदार द्वारा खलिहान मे अनाज के रूप मे लिया जाने वाला कर। ४ गिलहरी।
ता'ळी–देखो 'तासळी।
तालीको–पु० १ सनद, पट्टा, जागीरनामा। २ देखो 'तालुको'।
ताळीतड़–स्त्री० करतल ध्वनि।
ताळीपत्र–देखो 'ताळीसपत्र'।
तालीमखानो–पु० शिक्षण सस्था और पाठशालाओ की देख-भाल करने वाला विभाग।
ताळीहर–पु० महादेव।
तालु–पु० १ मजीरा, झाझ। २ तालु, तालव्य।
ताळुकटक–पु० बच्चो के तालु का एक रोग।
तालुक–पु० [अ० तअल्लुक] १ सम्बन्ध, रिश्ता। २ लगाव, सम्पर्क। ३ बडा इलाका। —दार–पु० बडे इलाके का अधिपति, अधिकारी। —दारी–पु० उक्त अधिकारी का पद।
तालुको–पु० [अ० तअल्लुक] बहुत से मोजो की जमीन, बडा इलाका।
ताळुय (यो)–देखो 'ताळवो'।
ताळुसोख–पु० [स० तालुशोष] तालु सूखने का एक रोग।
ताळू ताळूइ, ताळूग्रो–देखो 'ताळवो'।
ताळूकठ–पु० पुरुषो के तालु में होने वाला एक रोग विशेष।
ताळूफाड–पु० हाथियो के तालु का एक रोग।
ताळूरव्यव–पु० छप्पय छद का एक भेद।
ताळेवर–वि० १ भाग्यशाली। २ धनी, ऐश्वर्यवान।
तालोटा–पु० एक वैवाहिक लोक गीत (पुष्करणा)।
ताळोवळी, ताळोचोळी–स्त्री० १ व्याकुलता, बेचैनी। २ उत्सुकता।
ताळो–पु० [सं० तालक] १ लोहे, पीतल आदि का बना उपकरण, ताना, कुल्फ। [अ० तालअ] २ भाग्य। ३ ललाट।
ता'ळो–देखो 'तामळो'।
ताव–पु० [स० ताप] १ गर्मी, उष्णता। २ ताप, प्रान। ३ गुस्सा, क्रोध। ४ जोश, आवेश। ५ उत्साह, उमग। ६ ज्वर, बुखार। ७ कष्ट, पीडा, सताप। ८ तेज, ओज। ९ पराक्रम। १० सूर्य का ताप, धूप। ११ जोर, दबाव। १२ प्रकाश, चमक। १३ शीघ्रता, तेजी। १४ भय, आतंक। १५ गति चाल। –क्रि० वि० १ तब, तब तक। २ तरह से।
तावखेत–पु० [स० ताप क्षेत्र] सूर्य के प्रकाश का क्षेत्र। (जैन)
तावख–देखो 'ताविखि'।
तावड, तावड़ियो–देखो 'तावडो'।
तावड़ो, तावडि, तावडो, तावडू–स्त्री० [सं० ताप] १ सूर्य का प्रकाश, धूप, गर्मी। २ ज्वर, बुखार।
तावणियो–पु०[सं० ताप] घी तपाने या साग बनाने का मिट्टी का छोटा पात्र।
तावणी–१ देखो 'तपणी'। २ देखो 'तावणियो'।
तावणीय–वि० [स० तापनीय] तापने योग्य, तपाने योग्य।
तावणो (बो)–क्रि० [स० तापन] १ तापना, गर्म करना। २ कष्ट देना, सताना।
तावत–क्रि० वि० [स० तावत्] १ उतने काल तक, तब तक। २ उतनी दूरी तक, वहा तक।
तावतप–पु० ज्वर, बुखार आदि बीमारी।
तावदान–देखो 'तावदान'।
ताव-भाव–पु० उपयुक्त अवसर, मौका। –वि० थोडा सा, जरासा।
तावलणो(बो)–क्रि० ज्वर होना, बुखार आना।
तावलियो–वि० ज्वर पीडित, बुखार से पीडित।
तावळो–देखो 'उतावळो'।
तावलो–वि० ज्वर ग्रस्त।
तावस–देखो 'तापस'।
तावसा–स्त्री० जैन मुनियो की एक शाखा।
तावह–स्त्री० नौकरी, सेवा।
तावान–पु० [फा० तावान] दण्ड स्वरूप, क्षति-पूर्ति मे दी जाने वाली वस्तु।
ताविख, ताविखि, (खी)–[स० ताविषी] स्त्री० १ देव कन्या। २ पृथ्वी।
ताविच्छ–स्त्री० [स० तापिच्छ] तमाल वृक्ष।

तावीज–पु० [अ० तअवीज] १ तंत्र-मत्र लिखित कागज, गडा। २ सोने, चादी आदि धातु की छोटी डिबिया जिसमे उक्त गडा डाल कर बाधा या पहना जाता है।

तावीतो–पु० १ एक प्रकार का आभूपरण। २ देखो 'तावीज'।

तावुरि, तावुरी–पु० वृप राशि।

तावै–क्रि० वि० विपय मे, सवध मे।

तावो–देखो 'तवो'।

तास–स्त्री० [अ०] १ पतले गत्ते पर छपे हुए खेलने के बावन पत्ते, ताश। २ एक प्रकार का जरदोजी कपडा। [अ० तासीर] ३ प्रभाव, असर। [स० त्रास] ४ कष्ट, पीडा, सताप। ५ भय, आतक। ६ मोह, तृष्णा। —सर्व० [स० तस्य] उस, वह। –क्रि०वि० इस प्रकार, इस तरह।

तासक–देखो 'तासळी'।

तासकारी–वि० [स० त्रास-कारी] १ नाश करने वाला, मिटाने वाला। २ सताने वाला। ३ असर या प्रभाव डालने वाला।

तासतु, तासतो–पु० [अ० तास] एक प्रकार का जरदोजी वस्त्र।

तासनां–स्त्री० [स० त्रास] पीडा, कष्ट, सताप।

तासळी–स्त्री० थालीनुमा छोटा पात्र। तश्तरी, रकावी।

तासळो–पु० कासी या पीतल का, चौडे मुंह का बडा कटोरा।

तासि–वि० [स० त्राशिन] जीओ और जीने दो वाली भावना रखने वाला।

तासिय–वि० [स० त्रासित] कष्ट प्राप्त, सतप्त।

तासियाळो, तासियो–वि० [स० तृषित] १ प्यासा, तृपातुर। २ लोभी। –पु० दो दिन प्यासा व तीसरे दिन पानी पीने वाला पशु।

तासीर–स्त्री० [अ०] १ असर, प्रभाव। २ गुण। ३ शारीरिक प्रकृति।

तासीसा–पु० एक छन्द विशेष।

तासु–सर्व० उस, उसको।

तासू, तासो–पु० [अ० तास] १ चमडे से मढा एक वाद्य विशेप। २ कासी का वना एक झीझा। ३ तावे आदि मिश्र धातु का वना वडा कटोरा। ४ अभाव, कमी। ५ प्यासा पशु। ६ जल-सकट।

ताह–स्त्री० १ तेज गर्मी, उष्णता। २ देखो 'ताह'।

ताहजा–सर्व० तेरा, तेरे, तुम्हारे।

ताहम–अव्य० [फा०] तो भी, तिस पर भी।

ताहरइ–सर्व० तेरे।

तारहउ–देखो 'ताहरो'।

ताहरां, ताहरि–क्रि० वि० तव।

ताहरु (रु, रू, रू)–देखो 'ताहरो'।

ताहरे (रें)–क्रि० वि० तव, तदुपरात।

ताहरो–सर्व० (स्त्री० ताहरी) तेरा।

ताही–सर्व० उस, वह। –क्रि० वि० तहा।

ताहे–क्रि० वि० तव।

तितिड, तितिडि, तितिडिका, तितिडीका–स्त्री० [स०] इमली।

तितिरिणअ, तितिरिणयो–वि० १ पतला-दुवला, क्षीण काय। २ तुनक मिजाज।

तिंदुकतीरथ–पु० [स० तिंदुकतीर्थ] व्रज मडल के अतर्गत एक तीर्थ।

तिदुय–पु० [स० तिंदुक] १ ग्यारहवें तीर्थ कर का चैत्य वृक्ष। २ एक प्रकार का वृक्ष।

तिंदू–पु० तेंदू का पेड।

तिमचो–स्त्री० १ तीन पायो की मेज। २ छोटी तिपाई। ३ तीन पायो का किसी पात्र के लिये बनाया गया आधार।

तिंय–सर्व० उस।

तियाळी (स)–देखो 'तंयाळीस'।

तियाळो–पु० ४३ वा वर्ष।

तियासी–देखो 'तइयासी'।

तिंवरी–पु० एक छोटा जीव, झिगुर।

तिंवार–पु० त्योहार, पर्व, मागलिक दिवस।

तिंवारी–स्त्री० त्योहार का भोजन या अन्न जो मेहत्तर आदि को दिया जाता है।

तिंवारीक-मरजावीक–पु० पौशाक एव शस्त्रादि से सज्जित होकर दरवार मे जाने की एक प्रथा।

तिंवाळ(ळी)–देखो 'तंवळाटी'।

तिंह–क्रि० वि० वहा, उसमे।

तिंहा–क्रि० वि० वहां।

तिंही–क्रि० वि० वैसे, तैसे। –सर्व० उसने।

तिंहु, तिंहु (हुं, हू)–वि० तीन, तीनो।

ति–सर्व० १ उस, वह। २ देखो 'तीन'। ३ देखो 'ती'।

तिअ–देखो 'तिय'।

तिअतर–वि० तिहत्तर, सत्तर व तीन।

तिअतरो–पु० तिहत्तर का वर्ष।

तिअसिंद–पु० [स० त्रिशेद्र] इन्द्र।

तिआर–देखो 'तयार'।

तिआळ–वि० तयाळीस।

तिइंदिया–पु० तीन इन्द्रिय जीव।

तिइक्खा–स्त्री० [सं० तितिक्षा] १ क्षमा। २ सहिष्णुता।

तिउण(उ)–वि० [स० त्रिगुण] १ तिगुणा। २ देखो 'त्रिगुण'।

तिउल–वि० [स० त्रितुल] मन, वचन और काया इन तीनो की तुलना कर जीतने वाला ।
तिऊ–क्रि० वि० वैसे, उस प्रकार ।
तिऊड–देखो 'त्रिकूट' ।
तिकडम–पु० उपाय, तरकीब ।
तिकरण–सर्व० उस, वह । उसने ।
तिकत–वि० [स० तिक्त] १ तीक्ष्ण, तेज । २ चुस्त । ३ चरपरा ।
तिकम–देखो 'टीकम' ।
तिकर–स्त्री० कटारी ।
तिकरि–सर्व० उस, वह । –क्रि० वि० के लिये, वास्ते ।
तिका–सर्व० वे, उन ।
तिका–स्त्री० वह, उस ।
तिकाळ–देखो 'त्रिकाळ' ।
तिकावरवतक–पु० १ कटि पर तीन भौंरी वाला घोडा ।
तिकी–सर्व० १ वह, उस । २ देखो 'तिगी' ।
तिकु , तिकूं–सर्व० वह, उस ।
तिकूणौ–वि० [स०त्रिकोण] तीन कोण वाला । –पु० जैसलमेर के दुर्ग का नाम ।
तिकू–देखो 'तिकु' ।
तिकूड–देखो 'त्रिकूट' ।
तिके(कै)– सर्व० वे, उन ।
तिकोरी–पु० १ तीन कोनो का एक छोटा लंबा औजार । २ वढई का एक औजार ।
तिकौ–सर्व० (स्त्री० तिकी) वह, उस ।
तिक्की–१ देखो 'तिकी' । २ देखो 'तिगी' ।
तिक्ख–वि० [स० तीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज । २ वेगवान । ३ कठोर । ४ देखो 'तीखौ' ।
तिक्खुतौ–पु० [स० त्रिकृत्वस्] तीन बार ।
तिक्खुत्ता–पु० [स० त्रिकृत्वस्] तीन प्रदक्षिणा देकर वन्दना करने की क्रिया । (जैन)
तिक्त–वि० [स०] तीता, कडुआ । –पु० [स०] १ पित पापडा २ कुटज ।
तिखग–पु० [स० तक्षक] सर्प, नाग ।
तिखडौ–वि० तीन मजिल का, तिमजला । –पु० तीसरी मजिल ।
तिख–वि० १ तीक्ष्ण, तीखा । २ देखो 'तक्षक' ।
तिखट–पु० तराने के समान गाया जाने वाला एक गीत ।
तिखण–स्त्री० [स० तीक्ष्ण] १ मिर्च, मिरची । २ देखो 'तीक्ष्ण' । (जैन)
तिखता–स्त्री० [सं० तीक्ष्ण] काली मिर्च ।
तिखनख–पु० तीखे पैरो वाला घोड़ा ।
तिखराव–पु० [स० तक्षक-राज] १ शेषनाग, नागराज । २ तक्षक, नाग । ३ कद्रु पुत्र कालिय नाग ।
तिखूटौ, तिखूणौ–पु० १ सोने-चादी के आभूषणो पर खुदाई करने का आभूषण । २ देखो 'तिकूणौ' ।
तिख्खणौ–वि०[स०तीक्ष्ण] १ तीखा, तीक्ष्ण । २ देखो 'तकूणौ' ।
तिग–स्त्री० १ कमर, कटि । २ कमर के नीचे का भाग । ३ हिलने-डुलने की क्रिया । ४ लडखडाने की क्रिया । ५ तीन मार्ग का सगमस्थल ।
तिगता–स्त्री [स० तिकतम्] काली मिर्च ।
तिगतिगणौ (बौ)–क्रि० १ लडखडाना, डगमगाना । २ लटकना । ३ देखो 'तगतगाणौ' (बौ) ।
तिगतिगाणौ (बौ), तिगतिगावणौ (बौ)–क्रि० १ लटकाना । २ धक्का मार कर सतुलन विगाडना ।
तिगम–पु० [स० तिग्म] १ वज्र । २ पिप्पली । ३ प्रत्येक चरण मे २६ मात्रा का छद विशेष । ४ गर्मी । [सं० तिग्मकर] ५ सूर्य । –वि० [स० तिग्म] तीक्ष्ण, तेज ।
तिगमअस, (अभीसु) तिगमांसु, तिगमहर–पु० [स० तिग्माशु] १ सूर्य, रवि । २ अग्नि । ३ शिव ।
तिगरण–पु० [स० त्रिकरण] मन, वचन और काया । (जैन)
तिगरी–स्त्री० [स०तुग्रही] १ सकट कष्ट, पीडा । २ जल सकट ।
तिगरौ–पु० १ फूटे हुए मिट्टी के पात्र का वडा खण्ड । २ खण्ड, भाग ।
तिगिंच्छकूड–पु० [स० तिगिंच्छकूड] पर्वत विशेष ।
तिगिंछिद्दह–पु० [स० त्रिगिच्छद्रह] निषेध पर्वत के ऊपर का भाग ।
तिगिच्छ, तिगिच्छग–पु० चिकित्सक । (जैन)
तिगिच्छा–स्त्री० चिकित्सा । (जैन)
तिगी–स्त्री० १ तीन बूटिया छपा ताश का पत्ता । २ अत्यन्त पतली टहनी ।
तिगुडय–स्त्री० [सं० त्रिकटुक] सूठ, कालीमिर्च, पीपर ।
तिगुत्त(त्ती)–पु० [स० त्रिगुप्ति] मन, वचन और काया से गुप्त, सुरक्षित । (जैन)
तिगुमिगु–पु० सूर्यास्त से ठीक पहले का सयम ।
तिगौ–पु० १ तीन का वर्ष । २ तीन का अक ।
तिग्गी–देखो 'तिगी' ।
तिग्म–देखो 'तिगम' ।
तिग्मकर–पु० [स०] सूर्य ।
तिग्मता–स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता, तेजी ।
तिग्मदीधिति–पु० [स०] सूर्य ।
तिग्मन्यु–पु० [स०] शिव, महादेव ।
तिग्मरस्मि–पु० [स० तिग्मरश्मि] सूर्य ।
तिघट–देखो 'तिवट' ।

तिड़-पु० १ निवास स्थान। २ जलाशय। ३ भाग, हिस्सा। ४ शाखा।
तिड़कणौ (बौ)-देखो 'तडकणौ (बौ)।
तिड़की-स्त्री० तेज धूप, धूप की प्रखरता।
तिड़कौ-देखो तडकौ'।
तिडणौ (बौ)-देखो 'तडणौ' (बौ)।
तिड़ोतरसउ, तिड़ोतरसौ-वि० एक सौ तीन, एक सौ व तीन। -पु०एक सौ तीन का अक, १०३।
तिचक्खु-पु० [स० त्रिचक्षु] चक्षु ज्ञान, परमश्रुत ज्ञान रखने वाला साधु। (जैन)
तिजड, तिजडा-स्त्री १ तलवार। २ कटार।
तिजणौ (बौ)-देखो 'तजणौ' (बौ)।
तिजरौ-देखो 'तिजारौ'।
तिजाव-पु० [फा०] किसी क्षार पदार्थ का तरल रूप मे अम्ल सार।
तिजावी-वि० [फा० तेजावी] तेजाब सबधी।
तिजारत-स्त्री० [अ०] व्यापार या रोजगार।
तिजारती-वि० [अ०] व्यापार या रोजगार सबधी।
तिजारसी-पु० अफीम।
तिजारौ-पु० १ खस-खस, पोस्त। २ पोस्त के बारीक दाने। ३ तीसरी बार निकाला हुआ शराब।
तिजीणौ(बौ)-देखो 'तजणौ' (बौ)।
तिजोडी, तिजोरी-स्त्री० लोहे की मोटी चादर या फौलाद की बनी मजबूत सदूक, जिसमे गहने या रुपये रखे जाते हैं।
तिड, तिडु-पु० १ पक्ष। २ देखो 'तीड'।
तिणग-स्त्री० १ चिनगारी। २ बुरा मानने का भाव।
तिण-पु० [स० तृण] १ तिनका, तृण, ततु। २ घास। ३ घास फूस की बनी वस्तु। -वि० [स० त्रिणि] तीन। -सर्व० १ वह, उस। २ इस। -क्रि० वि० इसलिये। इससे।
तिणकलौ, तिणकौ, तिणखलौ, तिणखौ-पु० [स० तृण] १ घास का तृण, ततु। २ घास।
तिणग, तिणगार (गारी)-देखो 'तिणग'।
तिणगौ-देखो 'तिणकलौ'।
तिणावत-पु० [स० तृणावत] श्रीकृष्ण द्वारा वधित एक दैत्य।
तिणि (णी)-१ देखो 'तिण'। २ देखो 'तिरणी'।
तिणै-प्रत्य० के। -सर्व० उन।
तिणौ-वि० दुबला, पतला, कृश। —पु० [स० तृण] १ तिनका, तृण। २ छेद, सूराख।
तिण्णि-वि० तीन।
तिण्हा-स्त्री० तृष्णा।
तित-क्रि० वि० १ वहा, तहां। २ देखो 'तिथि'।
तितकार-स्त्री० नृत्य के बोल।
तितरइ-देखो 'तितरै'।
तितरउ-क्रि० वि० इतने मे, तब तक। —वि० इतना, उतना।
तितर-तितर-वि० १ बिखरा हुवा, छिन्न-भिन्न। २ अव्यवस्थित।
तितरै-क्रि० वि० तब तक। इतने मे।
तितरौ-वि० (स्त्री० तितरी) उतना, जितना।
तितली-स्त्री० रग-बिरगे पखो वाला एक छोटा पतगा।
तितलौ-देखो 'तितरौ'।
तितिकसा-स्त्री० [स० तितिक्षा] १ क्षमता, सहिष्णुता, धैर्य। २ त्याग की भावना।
तितिख-वि० [स० तितिक्षु] १ धैर्यवान, सहनशील। २ त्यागी।
तितिक्खा-देखो 'तितिक्षा'।
तितिक्षा-स्त्री० [स०] १ सहनशीलता, धैर्य, क्षमता। २ त्याग।
तितिक्षु-वि० [स०] १ सहनशील, धैर्यवान। २ त्यागी। -पु० पुरुवशीय एक राजा।
तितै-क्रि० वि० १ तब तक, उस समय पर्यन्त। २ वहा, उधर।
तितौ-वि० (स्त्री० तिती) उतना, उस परिमाण मे।
तित्त-देखो 'तिरपत'।
तित्तणाम-पु० [स० तित्मनामन्] नाम और कर्म की एक प्रकृति।
तित्तरि (री)-१ देखो 'तीतर'। २ देखो 'तितरौ'।
तित्तौ-१ देखो 'तितौ'। २ देखो 'तित'।
तित्थकर-देखो तीरथकर'।
तित्थ-पु० [सं० त्रिस्थ] १ श्रावक-श्राविकाओ का समूह। २ देखो 'तीरथ'। ३ देखो 'तिथ'।
तिथत्कर, तित्थगर-देखो 'तीरथकर'।
तित्थनाह-देखो 'तीरथनाथ'।
तित्थयर-देखो 'तीरथ कर'।
तित्थाहिव-पु० [स० तीर्थाधिप] चार प्रकार के तीर्थों के अधिपति। (जैन)
तित्थी-क्रि० वि० १ वहा। २ देखो 'तिथ'।
तित्थीय-वि० [स० तीर्थीय] दर्शन शास्त्र सबधी। दार्शनिक
तित्थु-देखो 'तीरथ'।
तित्थुगाळीय-वि० [स० तीर्थोद्गालित] दर्शन का ज्ञाता, दार्शनिक।
तिथ कर-देखो 'तीरथकर'।
तिथ, तिथि-स्त्री० [स० तिथि] १ चन्द्र दिवस, तारीख, दिनाक। २ शक या विक्रमी सवत के अनुसार प्रति मास के पूर्वार्द्ध या उत्तरार्द्ध का कोई दिन। ३ वृतान्त, गाथा, हाल, खबर। ४ समय। ५ पन्द्रह की संख्या —पति-पु० प्रत्येक तिथि का स्वामी देवता। —प -पु० पचाग, कलेण्डर।

तिथिए–क्रि० वि० कहा। वहा।
तिथी–देखो 'तिथ'।
तिये (थै)–क्रि० वि० कहा।
तिदड–पु० [स० त्रिदण्ड] सन्यासियों का एक उपकरण।
तिदडि (डी)–पु० [स० त्रिदण्डिन्] तिदंडधारी सन्यासी।
तिदिस, तिदिसा–देखो 'त्रिदिस'।
तिदुळ–वि० [स० त्रिदोल] मन, वचन व काया को डुलाने वाला। (जैन)
तिद्र–स्त्री० हल्की नीद, तन्द्रा।
तिधारी–स्त्री० बढ़ई का एक ओजार।
तिधारीकटारी–स्त्री० आभूषणो मे खुदाई करने का एक ओजार।
तिधारो–पु० [स० त्रिधार] १ थूहर जाति का एक वृक्ष। २ एक प्रकार का भाला।
तिन–सर्व० १ उन। २ देखो 'तिण'।
तिनका–स्त्री० नथनी।
तिनकळो, तिनको–देखो 'तिणकलो'।
तिनगनी–स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
तिनवइ–स्त्री० [सं० त्रिनवति] ९३ की सख्या। (जैन)
तिना–पु० एक छन्द विशेष।
तिनि–वि० [स० त्रीणि] तीन।
तिन्न–वि० १ नम, तर, आर्द्र। २ देखो 'तिन'।
तिन्नांण–पु० [सं० त्रिज्ञान] मति, श्रुति, और अवधि के तीन ज्ञान (जैन)।
तिन्नि–वि० [स० त्रिणि] तीन। (जैन)
तिन्ह, तिन्ह, तिन्हा–सर्व० उन।
तिपच–वि० [स० त्रिपच] पन्द्रह, १५।
तिपड़ो–पु० १ भवन की तीसरी मजिल। २ दूसरी मजिल की खुली छत।
तिपति–स्त्री० [स० तृप्ति] सतोष, तृप्ति।
तिपनी–स्त्री० एक प्रकार की घास। –वि० [स० त्रि+पन्नी] तीन पत्तो वाली।
तिपाई–स्त्री० [स० त्रि—पाद] १ तीन पायो की मेज। २ तीन पायो का कोई आधार।
तिपाट–पु० क्रम से तीसरी वार लिया जाने वाला अफीम।
तिपाटो–पु० वह स्थान जहा तीन गावो की सीमा लगती है। –वि० १ तीन तह या परत वाला। २ तीन हिस्सो वाला।
तिपुंज–पु० [स० त्रिपुज] शुद्ध, अशुद्ध व मिश्र तीन प्रकार के पुद्गलो का समूह। (जैन)
तिपुर–देख' त्रिपुर'।
तिपुरारि(री)–देखो 'त्रिपुरारि'।
तिपोकड़–पु० तीन लडकियो के वाद जन्मने वाला लड़का या लडकी।
तिपोळियो–पु० [स० त्रि-प्रतोली] १ वह स्थान जहा एक साथ तीन वडे द्वार या पोलें वनी हो। २ राजमहल का प्रथम प्रवेश द्वार।
तिफास–पु० [स० त्रिस्पर्श] तीन स्पर्श दोप। (जैन)
तिबणो–देखो 'तिवणो'।
तिणो (वो)–देखो 'तीवणो' (वो)।
तिबर–देखो 'तीव्र'।
तिबरसो–पु० [स० त्रि-वर्ष] ऊटो का एक रोग।
तिबारियो–देखो 'तिवारो'।
तिबारी–स्त्री० [स० त्रिद्वार] १ तीर, बन्दूक आदि चलाने के, दीवार मे वने छेद। २ तीन द्वार या खिडकी का खुला बरामदा या कक्ष। ३ व्यापारियो से लिया जाने वाला कर।
तिवारो–पु० १ तीन वार लिया जाने वाला अफीम। २ तीसरी वार निकाला हुआ मद्य। ३ तीन द्वार या खिडकी वाला कक्ष।
तिब्बत–पु० हिमालय के उत्तर मे स्थित एक देश।
तिब्बती–पु० १ तिब्वत का निवासी। २ इस देश की भाषा। –वि० तिब्वत का, तिब्बत सबधी।
तिब्र–देखो 'तीव्र'।
तिभवण–देखो 'त्रिभुवन'।
तिमगळ–पु० [स० तिमिगल्] १ वडा मत्स्य। २ बडी मछली। ३ ठाट-बाट, आडम्बर।
तिमजळ (ळो)–वि० तीन खण्ड का, तीन मजिल का।
तिम–क्रि० वि० १ तैसे, वैसे। २ त्योही, तैसेही। –स्त्री० [सं० तिमि] १ एक बडी मछली। २ देखो 'तम'।
तिमग–पु० [स० तिग्माशु] सूर्य।
तिमची–देखो 'तिमची'।
तिमणियो–पु० स्त्रियो के गले का आभूषण।
तिमणो–वि० (स्त्री० तिमणी) तिगुणा।
तिमतिमाट–स्त्री० १ क्रुद्ध होने का भाव, तमतमाहट। २ प्रबल चमक।
तिममगळ–देखो 'तिमगळ'।
तिमर–पु० [स० तिमिर] १ अधेरा, अधकार। २ तैमूरलग, वादशाह। ३ गुफा, खोह, कन्दरा।
तिमरखतैन, तिमरत, तिमरहर–पु० सूर्य, भानु।
तिमरांण–पु० अधेरा, अधकार।
तिमरार, तिमरारि–पु० सूर्य।
तिमरि–देखो 'तिमर'।
तिमहर–पु० सूर्य।
तिमहुर–पु० [स० त्रिमधुर] घी, शक्कर और शहद।

तिमासिय (यो)–वि० [स० त्रैमासिक] तीन मास का। –पु० तीन मास का गर्भ।

तिमासियभत्त–पु० [स० त्रिमासिकभक्त] तीन मास का उपवास।

तिमिंगळ, (गिळ)–देखो तिमगळ'।

तिमि–देखो तिम'।

तिमिकोस–पु० समुद्र।

तिमिज–पु० [स०] तिमि मछली से प्राप्त होने वाला मोती।

तिमिध्वज– पु० शवर नामक दैत्य।

तिमिर–देखो 'तिमर'।

तिमिरनुद (भिद, रिपु, हर) तिमिरार, तिमिरारि, तिमिरारी –पु० सूर्य।

तिमिरास्त्र–पु० एक प्रकार का अस्त्र।

तिमिसा (स्सा)–स्त्री० [स० तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा।

तिमीस–पु० [स० तिमीश] १ समुद्र। २ बड़ा मत्स्य, तिमिंगल।

तिय, तिय–स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री, औरत। २ पत्नी, भार्या ३ देखो 'त्रिक'। –वि० [स० तृतीय] तीन। –सर्व० उस, वह।

तियउ–सर्व० उस।

तियलोय–देखो 'त्रिलोक'।

तियस–पु० [स० त्रिदश] देव, देवता।

तियह–पु० [स० त्रि-अहन्] तीन दिन।

तिया–क्रि० वि० १ तैसे, इस प्रकार। २ वहा, उस जगह। –सर्व० उन, वे।

तिया–देखो 'तिय'।

तियाग–देखो त्याग'।

तियागी–देखो 'त्यागी'।

तियार–क्रि० वि० १ उस समय, तब। २ देखो 'तैयार'।

तियाळीस–देखो 'तयाळीस'।

तियै–सर्व० उस, उसकी।

तियोतर–देखो 'तिहोतर'।

तियोतरौ–देखो 'तिहोतरौ'।

तियौ–पु० १ तीन। २ देखो 'तीयौ'। –वि० १ तीसरा। २ प्यासा, तृषातुर। –सर्व० उस।

तिरंगौ–वि० (स्त्री० तिरगी) तीन रगों वाला। –पु० भारत का राष्ट्रीय-ध्वज।

तिरवौ–वि० तैरने वाला, तैराक।

तिर–देखो 'तिरस'।

तिरक्ष–वि० [स० तिर्यक] पशु, पक्षी आदि।

तिरकाळ–पु० [स० त्रिकाल] १ भूत, भविष्य और वर्तमान काल। २ प्रात, मध्याह्न व सायकाल। –वि० मूर्ख, पागल।

तिरख (खा)–देखो 'तिरसा'।

तिरगस–देखो 'तरगस'।

तिरगुण–देखो 'त्रिगुण'।

तिरछउड़ी–स्त्री० मालखभ की एक कसरत।

तिरछाई–स्त्री० तिरछापन, वक्रता।

तिरछी बैठक–स्त्री० मालखभ की एक कसरत।

तिरछोळ–वि० १ दुष्ट, बदमाश। २ कठोर हृदय।

तिरछौ–वि० [स० तिरश्चीन] (स्त्री० तिरछी) १ टेढा, वक्र, तिरछा जो सीधा न हो। बाका। २ कुटिल।

तिरजच, तिरजचौ–पु० [स० तिर्यञ्च, तिर्यक] १ पशु, पक्षी। २ सर्प। ३ मृत्यु लोक। ४ मध्य।

तिरजक–वि० तिरछा, टेढ़ा।

तिरणी–स्त्री० १ पेट मे वायु के बढने या अधिक पानी पीने से होने वाला तनाव, फुलाव। २ तैराकी।

तिरणूं (णौ)–पु० तृण, तिनका।

तिरणौ (बौ)–क्रि० [स० तृ] १ पानी पर तैरना। २ पानी आदि द्रव पदार्थ पर ऊपर-ऊपर बहना या चलना। ३ पानी पर ठहरना, न डूबना। ४ उद्धार, होना, मोक्ष होना। ५ क्षुद्र प्राणियो का ऊपर-ऊपर हिलना-डुलना।

तिरथ–देखो 'तीरथ'।

तिरप–स्त्री० [स० त्रि] १ नृत्य मे एक प्रकार की ताल। २ नृत्य की मुद्रा, भगिमा।

तिरपण–१ देखो 'तिरेपन'। २ देखो 'तरपण'।

तिरपत–वि० [स० तृप्त] १ तृप्त, तुष्ट। २ सतुष्ट, आश्वस्त। ३ प्रसन्न, खुश।

तिरबड–वि० बदमाश, धूर्त।

तिरबेणी (बेनी)–देखो 'त्रिवेणी'।

तिरमाळौ–देखो 'तरवाळौ'।

तिरमिरा–पु० [स० तिमिर] १ कमजोरी के कारण दृष्टि मदता। २ चकाचौंध।

तिरमिराणौ (बौ)–क्रि० चकाचौध होना, चौंधियाना।

तिरयण–पु० [स० त्रिरत्न] मोक्ष के तीन रत्न-सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन व सम्यग् चरित्र।

तिरलोई, तिरलोक–पु० [स० त्रिलोक] त्रिलोक, तीन लोक। —**मणि**–पु० सूर्य।

तिरलोकि (की)–स्त्री० [स० तिर्यलोक] १ तीनो लोक। २ तिर्यकलोक।

तिरबाळौ–देखो 'तरवाळौ'।

तिरवाळौ–पु० १ मूर्च्छा, बेहोशी, गश। २ देखो 'तरवाळौ'।

तिरवेणा (वेणी)–देखो 'त्रिवेणी'।
तिरस, (इ,ई)–देखो 'तिरसा'।
तिरसठ–देखो 'तिरेसठ'।
तिरसठो–देखो 'तिरेसठो'।
तिरसणो (बो)–देखो 'तरसणो'। (बो)।
तिरसलणो (बो)–क्रि० फिसलना।
तिरसा–स्त्री० [स० तृपा] तृषा, प्यास।
तिरसाणो (बो), तिरसावणो (बो)–देखो 'तरसाणो' (बो)।
तिरसालु–वि० तृपावान, प्यासा।
तिरसिंघ–१ देखो 'तरसींग'। २ देखो 'त्रसींघ'।
तिरसू–क्रि० वि० तीसरे दिन।
तिरसूळ–देखो 'त्रिसूल'।
तिरसूळियाळीलगाम–स्त्री० उद्दण्ड घोडे को वश मे करने के लिये मुह मे डाली जाने वाली कीलदार लगाम।
तिरसौ–वि० [स० तृपित] प्यासा तृपित।
तिरस्कार–पु० [स०] अपमान, अनादर।
तिरस्यो–देखो 'तिरसौ'।
तिरहुत–पु० [स० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश।
तिरहुतियो–वि० तिरहुत प्रदेश का।
तिरा–क्रि० वि० १ तब। २ पास, निकट।
तिराणवे–देखो 'तेराणू'।
तिराणवो–देखो 'तेराणवो'।
तिराणू–देखो 'तेराणू'।
तिराई–देखो 'तैराई'।
तिराक–देखो 'तैराक'।
तिराणो (बो), तिरावणो (बो)–देखो 'तैराणो' (बो)।
तिरास–देखो 'त्रास'।
तिराह–अव्य० त्राहि-त्राहि। –पु० एक स्थान विशेष।
तिराही–स्त्री० तिराह नामक स्थान की बनी कटारी, तलवार।
तिरि, तिरिअ, तिरिक्ख, तिरियच–देखो 'तिरजत'।
तिरिय–१ देखो 'तिरजच'। २ देखो 'तिरिया'।
तिरियलोग, (लोय)–पु० [स० तिर्यग्लोक] मृत्यु लोक।
तिरिया–स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री, औरत। २ पत्नी, भार्या।
तिरीड–पु० [स० किरीट] मुकुट। (जैन)
तिरीडी–वि० [स० किरीटी] मुकुटधारी।
तिरुडि–स्त्री० १ उपजाऊ भूमि। २ तीर की पहुँच तक की दूरी या भूमि।
तिरेपन–वि० [स० त्रिपचाशत्] पचास व तीन, त्रेपन। –पु० पचास व तीन की सख्या, ५३।
तिरेपनमो (वों)–वि० ५३ के स्थान वाला, ५२ के बाद वाला।
तिरेपनेक–वि० त्रेपन के लगभग।
तिरेपनो–पु० ५३ का वर्ष।
तिरेसठ–वि० [स० त्रिषष्टि] साठ व तीन। त्रेसठ। –पु० साठ व तीन की सख्या, ६३।
तिरेसठमो (वों)–वि० त्रेसठ के स्थान वाला, ६२ के बाद वाला।
तिरेसठेक–वि० त्रेसठ के लगभग।
तिरेसठो–पु० ६३ का वर्ष।
तिरेह–वि० [स० त्रिरेख] तीन रेखा वाला।
तिरेहण–वि० १ पार करने वाला, उद्धारक। २ रक्षक।
तिरै–क्रि०वि० तब। –पु० हाथियो के लिये बोला जाने वाला एक शब्द।
तिरोभाव–पु० [स०] अदृश्यता, अदर्शन, गोपन।
तिरोभूत–वि० [स०] गुप्त, अदृष्ट।
तिरोहित–वि० [स०] १ छिपा हुआ, अंतर्हित, गुप्त। २ आच्छादित, ढका हुआ। ३ अस्त, डूबा हुआ। –पु० मुजफ्फरपुर व दरभंगा जिलो का एक प्रदेश।
तिलग–पु० १ अंग्रेजी सेना का भारतीय सिपाही। २ देखो 'तैलग'।
तिलगणी–स्त्री० तिलपपडी।
तिल–पु० [स०] १ डेढ, दो फुट का पौधा जिसके डोडे लगकर उसमे दाने पकते हैं। २ उक्त पौधे का बीज, तिल। [स० तिलक] ३ शरीर पर होने वाला बारीक काला मस्सा। ४ तिल के समान कोई छोटा टुकडा। ५ स्त्रियो के अंगो पर गोदी हुई काली बिंदी। ६ आख की पुतली के बीच की बिंदी। ७ तिलक। ८ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से ३१ वा ग्रह। –क्रि० वि० तिलमात्र।
तिलउ–देखो 'तिलक'।
तिलकठ–पु० एक प्रकार का घास।
तिलक–पु० [स०] १ ललाट पर लगाया जाने वाला केसर, चदन आदि का टीका। २ राज्याभिषेक, राजतिलक। ३ वैवाहिक सबध स्थिर होने पर वस्त्राभूषण एव अन्य भेंट के साथ वर के किया जाने वाला टीका। ४ स्त्रियो का एक आभूषण। ५ श्रेष्ठ व्यक्ति या चरित्र। ६ एक जाति विशेष का घोडा। ७ शरीर पर छोटा काला चिह्न। ८ वृक्ष विशेष। ९ दो सगण का एक वृत्त विशेष। १० मुसलमान स्त्रियो का एक पहनावा। **–कामोद**–स्त्री० एक रागिनी विशेष।
तिलकडो–पु० १ एक घोडा विशेष। २ तिलक।
तिळकणो (बो)–क्रि० १ फिसलना, रपटना। २ सुलगना, प्रज्वलित होना।
तिलकणो (बो)–क्रि० १ टीका लगाना तिलक करना। २ राज्याभिषेक करना।

तिलक-पछेवड़ो—पु० भेंट स्वरूप दिया जाने वाला वस्त्र विशेष।
तिलकमग (मारग)—पु० नासिका, नाक।
तिलकमणी—स्त्री० चूडामणि, शिरोभूषण।
तिलकमुद्रा—स्त्री० [स०] चदन आदि के, विष्णु आयुधो के चिह्न।
तिलका—पु० एक वर्णिक छन्द विशेष।
तिलकायत—पु० १ वल्लभसम्प्रदाय का पीठाधीश। २ देखो 'टीकायत'।
तिलकारक—पु०[स० तिल-कालक] देह पर तिल का काला चिह्न।
तिलक्क—देखो 'तिलक'।
तिलगाण—देखो 'तिलग'।
तिलडी—१ देखो 'तील'। २ देखो 'तलडी'।
तिलड़ो—१ देखो 'तेलडो'। २ देखो 'तिल'।
तिलचावळी—स्त्री० तिल व चावलो की खिचडी।
तिलट—पु० तिलहन, तिल।
तिलतांम—स्त्री० [स० तिलोत्तमा] १ एक अप्सरा विशेष। २ कोई अप्सरा।
तिलपपड़ी(पापडी)—स्त्री० गुड या शक्कर की चासनी मे तिल मिला कर बनाई पपडी।
तिलभंगक—पु० एक आभूषण विशेष।
तिलम—वि० १ अमूल्य। २ अद्भुत, विचित्र।
तिलमडेस्वरी—स्त्री० १ प्रयाग वट के पास शिवजी का स्थान।
तिलमिलाट—स्त्री० १ क्रोध पूर्ण अवस्था। २ सनकीपन।
तिलमिलाणी (बौ)—क्रि० १ क्रुद्ध होना। २ क्रोध मे तमतमाना।
तिलवट्ट(वठ)—पु० १ नाश, सहार। २ तिलो के योग से वना खाद्य विशेष।
तिलवडी—स्त्री० एक वृक्ष विशेष।
तिलवा—स्त्री० १ तिलो की बोवाई। २ तिलो की बोवाई का खेत।
तिलवाडा—स्त्री० १६ मात्रा की एक धीमी ताल।
तिलवाड़ो—देखो 'निलवा'।
तिलवाय—वि० भीगा हुआ, तर, सराबोर।
तिलवास—पु० एक प्रकार का वस्त्र।
तिलसकरात (सकरांति, ती)—स्त्री० मकर सक्राति का पर्व।
तिलसाकळी—स्त्री० तिल डालकर आटे की बनाई हुई मीठी पपडी।
तिलांगणि—स्त्री० [सं० तिलाग्नि] तिल के पौधो की आग।
तिलाजळी—स्त्री० [स० तिलाजलि] मृतक को पीछे तर्पण आदि मे तिल, डाभ आदि के साथ दी जाने वाली अजलि।
तिलाकारी—स्त्री० सोने का मुलम्मा चढ़ाने का कार्य।
तिलाकूटी—स्त्री० तिलो को कूट कर बनाया खाद्य पदार्थ।
तिलार—पु० एक पक्षी विशेष।
तिलिक—देखो 'तिलक'।
तिलिम, तिलिमा—पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष।
तिलियक—वि० किंचित, जरा।
तिलियौ—वि० १ दुर्बल, क्षीण, कृश। २ तिल सबधी।
तिली—१ देखो 'तिल'। २ देखो 'तिल्ली। ३ देखो 'तीली'।
तिलुक्क—पु० [स० त्रैलोक्य] स्वर्ग, पाताल व मृत्युलोक।
तिलू—पु० १ तृण, तिनका। २ घास का तिनका।
तिलेक—वि० किंचित, थोडा।
तिलोअ—देखो 'त्रिलोक'।
तिलोइ (ई)—देखो 'त्रिलोकी'।
तिलोक—देखो 'त्रिलोक'। —**पति**='त्रिलोकपति'।
तिलोकी—देखो 'त्रिलोकी'।
तिलोड़ी—स्त्री० [स० तैलकुटी] तेल रखने का पात्र।
तिलोट—स्त्री० तिलकुटी।
तिलोतमा, तिलोत्तमा—स्त्री० [स०] अत्यन्त सुन्दरी एक अप्सरा। २ अप्सरा।
तिलोर—स्त्री० उत्तरी एशिया से शीतकाल मे आने वाला एक पक्षी।
तिलौ—१ देखो 'तिल्लौ'। २ देखो 'तिलक'।
तिल्ला—पु० एक वर्णिक छन्द विशेष।
तिल्ली—स्त्री० १ पेट के अन्दर का एक अवयव, प्लीहा। २ देखो 'तिल'।
तिल्लोतमा—देखो 'तिलोत्तमा'।
तिल्लोर—देखो 'तिलोर'।
तिल्लौ—पु० १ कलावतू या बादले का कार्य। २ लिंगेंद्रिय पर मलने का एक तेल। ३ एक जगली वृक्ष।
तिवग्ग—देखो 'त्रिवरग'।
तिवट (ठ)—देखो 'त्रिवट'।
तिवट्ठ—पु० १ भरत खण्ड के नौवें भावी वासुदेव। २ देखो 'त्रिवट।
तिवडो—पु० एक प्रकार का वृक्ष।
तिवणौ—वि० तिगुना।
तिवरस—पु० [सं० त्रिवर्ष] १ तीन वर्ष की दीक्षा वाला साधु, साध्वी। २ देखो 'तिवरसौ'।
तिवरसौ, तिवरस्यौ—वि० तीन वर्ष का।—पु० ऊटो का एक रोग।
तिवरारि—देखो 'त्रिपुरारि'।
तिवल (ळि, ळी)—पु० १ एक प्रकार का वाद्य। २ स्त्रियो की पोषाक विशेष। ३ देखो 'त्रिवलि'।
तिवाअ—पु० [स० त्रिपात] मन, वचन और काया तीनो को गिराना।
तिवाड़ी—पु० त्रिपाठी।

तिवायरण, तिवायरणा–पु० [सं० त्रिपातन] मन, वचन और काया का विनाश।
तिवारां–क्रि० वि० तब।
तिवारी–देखो 'तिवाडी'।
तिवारौ–देखो 'तिबारौ'।
तिवाव–पु० [स० त्रिपाद] बडी तिपाही।
तिविल–देखो 'तिवल'।
तिविह–देखो 'त्रिविध'।
तिव्व–देखो 'तीव्र'।
तिव्हार–देखो 'तिवार'।
तिसज्झ, तिसझ, तिसझा–स्त्री० [स० त्रिसध्या] त्रिकाल सध्या।
तिसधि–स्त्री० [स० त्रिसन्धि] आदि, मध्य व अन्त।
तिस–स्त्री० [स० तृषा] १ प्यास, तृषा। २ तीव्र अभिलाषा।
तिसउ–सर्व० उस, वह।
तिसइं–क्रि० वि० तब।
तिसडौ–वि० (स्त्री० तिसडी) १ वैसा, तैसा। २ तिसौ।
तिसटणौ (बौ)–क्रि० १ स्थिर रहना। २ अनुकूल होना। ३ तुष्टमान होना। ४ अनुग्रह करना।
तिसटाणौ (बौ)–क्रि० १ स्थिर करना। २ अनुकूल बनाना। ३ तुष्टमान करना। ४ अनुग्रह करना।
तिसणा (ना)–स्त्री० [स० तृष्णा] १ प्यास, तृषा। २ तीव्र इच्छा, लालसा। ३ लोभ, लालच।
तिसमारी–स्त्री० प्यास, तृषा।
तिसयतिडुत्तर–देखो 'तिडोतरसौ'।
तिसर–देखो 'त्रिसर'।
तिसळणौ (बौ)–क्रि० १ फिसलना, रपटना। २ फिसल कर गिरना।
तिसला–स्त्री० भगवान महावीर की माता।
तिसळाणौ (बौ)–क्रि० १ फिसलाना, रपटाना। २ फिसला कर गिराना।
तिसाइयउ, तिसाइयौ, तिसायौ–वि० तृषित, प्यासा।
तिसाळवौ, तिसाळु, तिसाळुवौ–वि० प्यासा, तृषित।
तिसालौ–पु० १ तीन साल से इकट्ठा लिया जाने वाला लगान। २ ऊंट का एक रोग।
तिसाहियौ, तिसियौ–वि० [स० तृषित] प्यासा, तृषित।
तिसै–क्रि० वि० तब।
तिसोतरी–स्त्री० तृषा, प्यास।
तिसोता–स्त्री० [स० त्रिस्रोता] गगा नदी।
तिसोवण–पु० [स० त्रिसोपन] जीने की तीन सीढियो का समूह।
तिसौ–वि० (स्त्री० तिसी) १ तैसा, वैसा, जैसा। २ वही। ३ प्यासा।
तिस्टौ–वि० [सं० तुष्ट] सतुष्ट, खुश।
तिस्णा–देखो 'तिसणा'।
तिस्या–क्रि० वि० वैसे, उसी प्रकार, जब तक।
तिस्रनाक–पु० एक आभूषण विशेष।
तिह–क्रि० वि० वहा। –सर्व० उन।
तिह–सर्व० उस।
तिहतरि (त्तर)–देखो 'तिहोतर'।
तिहवर, तिहवार–देखो 'तिंवार'।
तिहवारी–देखो 'तिंवारी'।
तिहा–क्रि० वि० वहा।
तिहारइ–क्रि० वि० तब।
तिहारडो, तिहारौ–सर्व० (स्त्री० तिहारी) तेरा, तुम्हारा।
तिहिं, तिहि, तिही–सर्व० १ उन। २ देखो 'तिथि'।
तिहु–देखो 'तिह'।
तिहुअण, तिहुमण, तिहुयण–पु० [स० त्रिभुवन] त्रिभुवन, तीन लोक।
तिहूं, तिहू–देखो 'तिहु'।
तिहूअण (अणि, यण, यणि)–देखो 'तिहुअण'।
तिहोतर, तिहोत्तर–वि० [सं० त्र्यमप्तति] सत्तर और तीन। –पु० सत्तर व तीन की सख्या का अक, ७३।
तिहोत्तरौ–पु० ७३ का वर्ष।
तीं–सर्व० १ उस। २ इस।
तींखोळी–स्त्री० १ शिखर, शृंग। २ वृक्ष की चोटी।
तींछे–क्रि० वि० वहा।
तींण–देखो 'तीण'।
तींवुळौ, तींवूलौ–पु० सिह की जाति का एक हिंसक पशु। ते दुआ।
तींमण–देखो 'तीवण'।
तींय–सर्व० उस।
तींयाळौ–पु० ४३ का वर्ष।
तींयासी–देखो 'तइयासी'।
तींवण–[स० तेमनम्] १ पकी हुई साग-सब्जी। २ पकवान, व्यजन।
ती–स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री, नारी, औरत। २ पत्नी, भार्या। ३ नदी। ४ भ्रमरावली। ५ नट। ६ मित्र, दोस्त। ७ समुद्र, सागर। –वि० १ तीन। २ तीसरी। –प्रत्य० तृतीया और पचमी विभक्ति का वाचक शब्द, 'से'।
तीअ–वि० [स० तृतीय] तीसरा।
तीऊ–क्रि० वि० जैसे, तैसे।
तीक–देखो 'तीख'।
तीकम–पु० [स० त्रिविक्रम] १ श्रीकृष्ण। २ विष्णु। ३ ईश्वर ४ वामन अवतार।

तीकोरी–देखो 'तिकोरी'।

तीको–देखो 'तीखो'।

तीक्ष–देखो 'तीक्ष्ण'।

तीक्षण, तीक्षन–देखो 'तीक्ष्ण'।

तीक्षणसंग–पु० लवग।

तीक्ष्ण–वि० [सं०] १ तेज धार या नोक वाला, पैना, नुकीला। २ प्रखर, तीव्र, तेज। ३ प्रवल, प्रचड, उग्र। ४ चरपरा, तीखा। ५ गर्म, ताता। ६ कडा दृढ। ७ कर्कश। ८ हानिकर। ९ विषैला। १० कुशाग्र। ११ बुद्धिमान, चतुर। १२ त्यागी, भक्त। –पु० १ लोहा। २ इस्पात। ३ विष। ४ युद्ध। ५ हथियार। ६ मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा व अश्लेषा नक्षत्र। –स्त्री० १ गर्मी, ताप। २ मृत्यु। ३ लाल मिर्च। ४ काली मिर्च। ५ राई। ६ शीघ्रता।

तीक्ष्णरस्मि–पु० [सं० तीक्ष्णरश्मि] सूर्य, रवि। –वि० तेज किरणो वाला।

तीक्ष्णांसु, तीखसक्रम, तीखस–पु० [स तीक्ष्णाशु, तीक्ष्णाशक्रम] सूर्य।

तीख–स्त्री० १ तीक्ष्णता, तीखापन। २ श्रेष्ठता, विशेषता। ३ महत्व, वडप्पन। ४ गुरुता। ५ मान, प्रतिष्ठा। ६ अधिकता। ७ कटाक्ष। ८ उत्कठा, जिज्ञासा। ९ शिखर, चोटी। १० तीव्रता, तेजी। ११ काली मिर्च। -वि० १ तेज, चरपरा। २ विशेष। ३ श्रेष्ठ।

तीखमस–देखो 'तीक्ष्णासु'।

तीखडो–पु० १ द्वार पर अन्दर की ओर बना त्रिभुजाकार आलय। ताख।

तीखचोख–स्त्री० १ विशेषता, अधिकता। २ मर्यादा, प्रतिष्ठा। ३ स्पर्द्धा। ४ आदर, मान। ५ वडप्पन।

तीखण–देखो 'तीक्ष्ण'।

तीखाचव–पु० एक प्रकार का देशी खेल।

तीखोड़ो–देखो 'तीखो'।

तीखोळी–देखो 'तीख'।

तीखो–वि [स० तीक्ष्ण] (स्त्री० तीखी) १ तेज नोक या धार वाला। २ तीव्र, तेज। ३ विशेष, अधिक। ४ अच्छा बढिया। ५ नोकदार, सुन्दर (नेत्र)। –पु० एक प्रकार का पक्षी।

तीड़ोतरो–पु० १ एक सरकारी लगान। २ तीन का वर्ष। ३ एक सौ तीन की सख्या।

तीछण (न)–देखो 'तीक्ष्ण'।

तीज–स्त्री० [स० तृतीया] १ माह के प्रत्येक पक्ष की तृतीया। २ श्रावण शुक्ला तृतीया का पर्व दिन। ३ भादव कृष्णा तृतीया को, विवाहित कन्या के पिता द्वारा भेजा जाने वाला वस्त्र, मिठाई आदि। ५ वीरबहूटी, इन्द्रवधू।

तीजण (णी)–स्त्री० १ तीज का पर्व मनाने वाली कन्या या स्त्री। २ देखो 'तीज' (५)।

तीजबर (वर)–पु० [स० तृतीय-वर] तीसरी बार विवाह करने वाला व्यक्ति।

तीजियाण(न)–स्त्री० तीन बच्चे वाली मादा पशु।

तीजोड़ो, तीजो–वि० [स० तृतीय] (स्त्री० तीजी, तीजोडी) १ तीसरा, तृतीय। २ अन्य। —**पो'र**–पु० तीसरा प्रहर।

तीठ–स्त्री० [स० तृष्टि] १ अभिलाषा, इच्छा। २ दया।

तीठो–वि० निर्मोही, रूखा।

तीड–पु० [स० टिट्टिभ] फसल को खाने वाला एक बडा पतगा। टिड्डी।

तीडीभळको–पु० स्त्रियो का एक आभूषण।

तीडो–पु० १ पेड पौधो पर पाया जाने वाला बडा पतंगा। २ देखो 'तीड'।

तीण–पु० १ कूए का पानी खाली करने का स्थान। २ कूए या जलाशय के पानी का उपभोग करने का अधिकार। ३ कूए से पानी निकालने की क्रिया। ४ आय का स्रोत।

तीणी–सर्व० उसी।

तीणो–पु० छिद्र, छेद, सूराख।

तीतो–पु० बच्चा, बालक। –वि० [सं० अतीत] १ बीता हुआ, अतीत। २ विरक्त, निर्लिप्त।

तीतआगीउ–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

तीतर–पु० [स० तित्तर] कबूतर के आकार का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

तीतरी–स्त्री० १ छितराये हुए छिछले बादल। २ दूध आदि पर आने वाली पतली मलाई। ३ तितली। ४ कागज का टुकड़ा, चिट। ५ झिंगुर।

तीती–स्त्री० योनि, भग।

तीतुल–पु० तीतर।

तीतो–वि० [स० तिक्त] १ स्वाद मे तीक्ष्ण, चरपरा, तिक्त। २ कडवा। ३ देखो 'तीती'।

तीथकर–देखो 'तीरथं कर'।

तीथ (थि)–देखो 'तीरथ'।

तीधर–क्रि० वि० कहां, किधर।

तीन–वि० [स० त्रि] दो से एक अधिक, तीन। –पु० तीन की संख्या, ३। —**काळ**– पु० भूत, भविष्य व वर्तमान काल। प्रात, मध्याह्न व सायकाल। —**नयन, नेयन**–पु० शिव, महादेव। —**लडी**–वि० तीन लटिकाओ वाली। —**सिर**–पु० कुबेर, अलकेश्वर।

तीनधूमो–पु० आभूषणो की खुदाई का एक औजार।

तीनरेख–पु० शख ।
तीना–क्रि० वि० तैमे ।
तीनी–देखो 'तीन' ।
तीने'क वि० तीन के करीब, तीन के लगभग ।
तीन्हौ–पु० एक प्रकार का घोडा विशेष ।
तीब–स्त्री० १ टूटी वस्तु के लगाया गया जोड । २ ऐसे जोड पर लगाया जाने वाला धातु का छोटा तार । ३ छोटा टाका । ४ लोहे, पीतल आदि की वारीक कील, पिन । ५ दातो पर लगाई जाने वाली स्वर्ण मेख ।
तीबगट्टी–स्त्री० सुहागिन स्त्रियो का एक शिरोभूषण ।
तीबणौ (बौ)–क्रि० १ नुकीले औजार से बारीक छेद करना । २ किसी वस्तु के तार का जोड लगाना । ३ वस्त्र मे टाका लगाना ।
तीबारौ–देखो 'तिबारौ' ।
तीमण–देखो 'तीवण' ।
तीमणियौ–देखो 'तिमणियौ' ।
तीमारदारी–स्त्री० [फा०] सेवा-शुश्रूषा, चाकरी ।
तीय–पु० त्रैतायुग । (जैन)
तीय–देखो 'तिय । २ देखो 'तीत' ।
तीयल–देखो 'तील' ।
तीया–सर्व० उन ।
तीयाग– देखो 'त्याग' ।
तीयार–देखो 'तैयार' ।
तीये (यै)–सर्व० उस, वह । –वि० तीसरा, तृतीय ।
तीयौ–पु० [स० त्रि] १ तीन का अक । २ तीन बूटी का ताश का पत्ता ३ मृतक का तीसरा दिन व इस दिन को किया जाने वाला सस्कार ।
तीरदाज–वि० [फा०] तीर चलाने मे निपुण, दक्ष ।
तीरदाजी–स्त्री० [फा०] तीर चलाने की कला ।
तीर–पु० [स०] १ नदी या जलाशय का तट, किनारा । २ छोर किनारा, हाशिया । ३ बाण, शर । ४ बाण जैसा चिह्न । ५ सीसा । ६ जस्ता, टीन । ७ बन्दूक की नाल का छेद । ७ जहाज का मस्तूल । ९ रहट से चक्र के बीच खडे रहने वाले लट्ठे के नीचे का नुकीला भाग । –क्रि० वि० पास निकट, समीप ।
तीरइ–देखो 'तीरे' ।
तीरकस–पु० १ द्वार पर बना धनुषाकार आलय । २ दीवार मे बने तीर चलाने के छेद ।
तीरकारी–स्त्री० तीर चलाने की क्रिया ।
तीरगर–पु० [फा०] तीर बनाने का व्यवसाय करने वाली जाति ।
तीरत–देखो 'तीरथ' ।
तीरथकर–पु० [स० तीर्थंकर] जैनियो के उपास्यदेव जो २ माने गये हैं ।
तीरथ–पु० [स० तीर्थ] १ वह पवित्र स्थान जहा श्रद्धालु ज यात्रा, स्नान, पूजा आदि के लिये जाते है । २ धार्मिक व पुण्य क्षेत्र । ३ हाथ के कुछ विशिष्ट स्थान । ४ शास्त्र । ५ दशनामी सन्यासियो की एक शाखा । ६ माता-पिता । ७ ब्राह्मण । ८ अतिथि, मेहमान । ९ साधु-साध्वी । १० तर्थ कर का शासन । ११ जिन तीर्थंकर का नाम । १२ यज्ञ-क्षेत्र । १३ रोग का निदान । १४ घाट । १५ घाट की सीढी । १६ गुरु, उपाध्याय । १७ दर्शन, आगम । १८ अग्नि । १९ स्त्री का रज । २० योनि । २१ उद्गम स्थान । २२ माध्यम । २३ उपाय । २४ सचिव, पुरोहित । २५ उपदेश निर्देश । २६ उपयुक्त स्थान या काल । २७ रास्ता, मार्ग । २८ जल स्थान । २९ श्रेष्ठ पुरुष । ३० पुण्यात्मा । —**जात्रा**–स्त्री० तीर्थयात्रा । —**देव**–पु० शिव, महादेव । जिन, तीर्थ कर । —**नायक**–पु० तीर्थाधीश, तीर्थ कर । —**पति**–पु० तीरथ राज । —**पाद**–पु० श्रीविष्णु । —**यात्रा**–स्त्री० पवित्र स्थानो की यात्रा, तीर्थाटन । —**राई, राज, राजी, राव**–पु० तीर्थों का राजा प्रयाग, काशी ।
तीरथाटण (टन)–पु० [स० तीर्थाटन] पवित्र स्थानो की यात्रा, तीर्थयात्रा ।
तीरथायौ–पु० १ तीर्थों का निवासी । २ तीर्थो पर भेंट लेने वाला ।
तीरथु, तीरथ्थ–देखो 'तीरथ' ।
तीरदार–पु० तीर चलाने के लिये बने, दीवार के छेद ।
तीरभुक्ती–स्त्री० [स०] गगा, गडक और कौशिकी नदियो से घिरा प्रदेश ।
तीरमदाज–देखो 'तीर दाज' ।
तीरवरती–वि० [स०तीरवर्ती] १ तटवर्ती, किनारे या समीप रहने वाला । २ पडोसी ।
तीरा–क्रि० वि० पास, निकट, नजदीक ।
तीरांण–स्त्री० तैरने की क्रिया या ढग ।
तीराई–स्त्री० तीर चलाने की क्रिया ।
तीराव–स्त्री० तिपाई ।
तीरी–पु० तट, किनारा । –क्रि० वि० पास, समीप ।
तीरीया–स्त्री० १ रहट मे लगी एक लकडी विशेष । २ देखो 'तिरिया' ।
तीरीयौ–वि० १ तीर चलाने वाला । २ तीर पर या तीर के पास रहने वाला । ३ देखो 'तीर' ।
तीरें, तीरे, तीरै, तीरैं–क्रि० वि० निकट, पास, समीप ।
तीरौ–देखो 'तीर' ।

तील–पु० १ एक आभूषण विशेष । २ एक पौशाक विशेष । ३ देखो 'तिल' ।
तीलक–देखो 'तिलक' ।
तीली–स्त्री० १ वडा तृण, सीक । २ धातु का पतला तार । ३ जुलाहे के करघे के उपकरण (ढरकी) की सीक । ३ देखो 'तूळी' ।
तीवण, तीवणियौ, तीवणौ–स्त्री० १ कूए से पानी निकालने की क्रिया । २ देखो 'तीवण' ।
तीवणौ(बौ)–१ देखो 'तीवणौ' (बौ) । २ देखो 'तेवणौ' (बौ) ।
तीव्र–वि० [स०] १ तेज । २ तीक्ष्ण । ३ अत्यन्त, अतिशय । ४ गर्म, उष्ण । ५ वेहद, नितात । ६ उग्र, प्रवल, प्रचण्ड । ७ वेगयुक्त । ८ असह्य । ९ ध्वनि व स्वर के विचार से ऊँचा । १० अनन्त, असीम । ११ चमकीला । १२ व्यापक । १३ मात्रा से अधिक । –पु० लोहा, इस्पात ।
तीव्रकंठ–पु० [स०] जमीकद ।
तीव्रगति–स्त्री० [स०] वायु, हवा ।
तीव्रता–स्त्री०[स०] १ तेजी, उतावली । २ तीक्ष्णता, अधिकता । ३ प्रखरता ।
तीव्रतेज–पु० लवग, लौंग ।
तीव्रा–स्त्री० [स०] पड्ज स्वर की चार श्रुतियो मे से प्रथम श्रुति ।
तीव्रानुराग–पु० [स०] एक प्रकार का अतिचार । (जैन)
तीस–वि० [स० त्रिंशति] दश का तीन गुना, वीस और दश । –पु० तीस की सख्या, ३० ।
तीसटकी–पु० एक प्रकार का मजबूत धनुष ।
तीसमार–वि० डीग मारने वाला, डीग हाकने वाला । दिखावटी वहादुर ।
तीसमौ (वौं)–वि० (स्त्री० तीसमी) तीस के स्थान वाला, तीसवा ।
तीसरौ–वि० (स्त्री० तीसरी) १ तीन के स्थान वाला, दो के वाद वाला । २ तृतीय, अन्य ।
तीसळणौ (बौ)–देखो 'तिसळणौ' (बौ) ।
तीसी–वि० तैसी, वैसी ।
तीसे'क–वि० तीस के लगभग ।
तीसौ–पु० ३० का वर्ष । –वि० वैसा, तैसा ।
तीह–पु० १ वृक्ष । २ पक्षी । –सर्व० वे, उन ।
तीहु–क्रि० वि० तैसे, वैसे, उस प्रकार ।
तु, तुअ–देखो 'तू' ।
तुंकार–देखो 'तुंकारौ' ।
तुंकारणौ (बौ)–क्रि० १ 'तू-तू' कर हल्के शब्दो मे सबोधन करना । २ उलाहना देना, प्रताडना देना ।
तुंकारौ–पु० [स० त्वंकार] १ तू या तुम का सबोधन, अपने से छोटे या बराबरी वाले का सबोधन, । २ प्रतिष्ठित व्यक्ति के प्रति हल्का बोल ।
तुंग–पु० [स०] १ सेना, फौज । २ दल टुकडी । ३ झुण्ड, समूह । ४ पर्वत । ५ शिखर, चोटी । ६ नारियल । ७ ऊचाई । ८ बुध ग्रह । ९ गेंडा । १० शराब का पात्र । ११ एक वर्ण वृत्त । १२ बावन वीरो मे से एक । –वि० १ ऊचा, उन्नत । २ प्रचड, प्रबल । ३ लबा । ४ प्रधान, मुख्य । ५ दृढ़ । ६ देखो 'तूंग' ।
तुंगक–पु० [स०] १ नाग केसर । २ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ ।
तुंगणौ (बौ)–क्रि० फटे वस्त्र के टाका लगाना, तुनना ।
तुंगता–स्त्री० [स०] उग्रता, ऊचाई ।
तुंगधज(ध्वज)–पु०[स०तुंग-ध्वज] १ पर्वत । २ एक राजा ।
तुंगनाथ–पु० [स०] हिमालय पर्वत स्थित एक शिवलिंग जो तीर्थस्थान है ।
तुंगनाभ–पु० [स०] एक कीडा विशेष ।
तुंगबाहु–पु० [स०] तलवार के ३२ हाथो मे से एक ।
तुंगभद्र–पु० [स०] मतवाला हाथी ।
तुंगभद्रा–स्त्री० [स०] दक्षिण भारत की कृष्णा नदी की सहायक नदी ।
तुंगळ–देखो 'तुगल' ।
तुंगवेणा–स्त्री० तुंगभद्रा नदी ।
तुंगरी–पु० १ सफेद कनेर का पेड । २ देखो 'तूंग' ।
तुंगिनी–स्त्री० [स०] महाशतावरी, वडी सतावर ।
तुंगी–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, भूमि । २ रात्रि । ३ हल्दी । ४ वन तुलसी ।
तुंगीपति, तुंगीस, तुंगेस–पु० [स० तुङ्गीपति] १ चद्रमा । २ राजा, नृप ।
तुंगौ–देखो 'तुंग' ।
तुंजाळ–पु० मक्खी, मच्छर आदि के बचाव के लिये घोडे की पीठ पर डाला जाने वाला जाल ।
तुंड–पु० [स०] १ मस्तक, शिर । २ मुख, मुंह । ३ सूअर की थूथन । ४ हाथी की सूंड । ५ पक्षी की चोच । ६ तलवार का अग्रभाग । ७ औजार की नोक ।
तुंडकेसरी–पु० मुंह का एक रोग ।
तुंडि, तुंडिका–स्त्री० [स०] १ बिवाफल । २ नाभि । ३ तुंड । ४ चोंच ।
तुंडिकेसी–स्त्री० [सं० तुण्डिकेशी] कुदरू ।
तुंडिळ–वि० [स० तुंडिल] १ वडी तोद वाला । २ जिसकी नाभि निकली हुई हो । ३ बकवादी, वाचाल ।

तुडी–वि० [स० तुडिन्] १ मुंह वाला २ चोच वाला। ३ सूंड वाला। –स्त्री० ४ नाभि।
तुतुम–पु० सरसो।
तुंद–वि० [फा०] १ तेज, प्रचंड। २ 'तूंद'।
तुंदिक–वि० [स०] बडे पेट वाला, तोंद वाला।
तुंदिका–स्त्री० [स०] नाभि।
तुंदिम–स्त्री० तोंद, उदर।
तुंदी–स्त्री०[स०]१ नाभि। २ देखो 'तुंद'। ३ देखो 'तुंदिक'।
तुंदैल, तुंदैलौ–वि० तोंद वाला, बडे पेट वाला।
तुंब, तुंबक, तुंबग–देखो 'तुंबुक'।
तुंबडी–देखो 'तूंबी'।
तुंबर, तुंबरि (री), तुंबरु (रू)–पु० [स० तुंबर] १ एक देव जाति, इस जाति का देव। [स० तुंबरम्] २ एक वाद्य यंत्र। ३ एक गंधर्व जाति। ४ प्रथम लघु ढगण का एक भेद।
तुंबिका, तुंबी–स्त्री० [म० तुंबी] १ छोटी व कडवी घीया। २ सूखे कद्दू व घीया का बना पात्र। इसको संस्कृत मे इक्ष्वाकु कहते हैं।
तुंबुक–पु० [स०] कडवे कद्दू का फल, घीया, लौकी।
तुंबुरी, तुंबुरु–देखो 'तुंबरु'।
तुंबेरब–पु० [स०स्तंबेरम्] हाथी।
तुंवर–देखो 'तुवर'। २ देखो 'तुंबर'।
तुंवरावटी–स्त्री० तुंवर क्षत्रियो के शासन का क्षेत्र।
तुंवेरौ–पु० दोहा छन्द का एक भेद।
तुंह–देखो 'तूं'।
तुंहनि–सर्व० तव, तेरा।
तुंहारौ–सर्व० (स्त्री० तुंहारी) तुम्हारा।
तुंही–सर्व० तुम।
तु–पु० १ कमल। २ सुरपुर। ३ रक्त। ४ कष्ट। ५ रमा। ६ देखो 'तूं'। –सर्व० तेरा, तेरे। –क्रि०वि० तब। –प्रत्य० करण और अपादान कारक चिह्न।
तुम्र–सर्व० तव, तेरा, तुम्हारा। –क्रि०वि० तब।
तुअर–पु० [स० तुवरी] अरहर।
तुआळौ–सर्व० (स्त्री० तुआळी) तुम्हारा, तेरा।
तुइ, तुई–स्त्री० १ वस्त्रो के किनारे पर लगाई जाने वाली पट्टी, गोट, किनार। २ धोंकनी के आगे लगने वाली नलिका। ३ एक प्रकार की चिडिया।
तुईजणौ (बो)–देखो 'तूईजणौ' (बो)।
तुक–स्त्री० १ किसी पद, गीत आदि की कडी। २ पद्य के दोनो चरणो के अंतिम अक्षरो का परस्पर मेल। ३ एक प्रकार की चिड़िया। ४ जोड़, मेल।
तुकणौ (बो)–देखो 'तकणौ' (बो)।
तुकबंदी–स्त्री० १ काव्य के तुकात का मेल। २ तुक मिलाने लायक साधारण कविता।
तुकम–तेखो 'तुख्म'।
तुकमौ–पु० पदक, तगमा। मेडल।
तुकांत–पु० १ पद्य के चरणो के अंतिम अक्षर। २ इन अक्षरो का परस्पर मेल। ३ अंत्यानुप्रास।
तुकार–देखो 'तुंकारौ'।
तुकारणौ (बो)–देखो 'तुंकारणौ' (बो)।
तुकारौ–देखो 'तुंकारौ'।
तुकौ–देखो 'तुक्कौ'।
तुक्कड–वि० तुक मिलाने वाला।
तुक्कौ–पु० [फा० तुका] १ छोटा तीर। २ तुकबंदी। ३ जोड, मेल।
तुख–पु० [स० तुष] १ भूसी, छिलका। २ अंडे का छिलका। ३ देखो 'तुक'।
तुखाट–देखो 'तुरासाट'।
तुखानळ–पु० [स० तुषानल] भूसी की आग।
तुखार–पु० [फा० तोखार] १ एक प्रचीन देश का नाम। २ घोडा, अश्व। [स० तुषार] ३ हिमकण, हिम। ४ कोहरा। ५ ठंड, सर्दी।
तुखारी, तुखारू–पु० [फा०] १ तुखार देश का निवासी। २ इस देश का घोडा।
तुख्म–पु० [फा०] १ बीज। २ वीर्य, शुक्र।
तुगम–पु० १ किसी देवता या पीर के पद चिह्न। २ घोडा। [फा० तगमा] ३ पदक।
तुगल–स्त्री० १ कानो का बाला, आभूषण। २ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायियो द्वारा कान मे पहनने की मुद्रा।
तुगा, तुगाक्षिरी–स्त्री० [स० तवक् क्षीरी] वंशलोचन।
तुगौ–देखो 'तुक्कौ'।
तुगस–देखो 'तरगस'।
तुग्र–पु० [स०] वैदिक कालीन एक ऋषि।
तुड़कणौ(बो)–क्रि०१थोडा-थोडा व रुक-रुक कर पेशाब करना। २ मादा मवेशी का रुक-रुक कर थोडा-थोडा दूध देना।
तुड़कौ–पु० १ टुकडा, खण्ड। २ चुल्लू भर, अल्प मात्रा।
तुड़च्छौ–वि० [स० तुच्छ] निम्न, नीच।
तुड़णौ (बो)क्रि० मारना, संहार करना।
तुड़तांण–वि० १ वंश गौरव बढ़ाने वाला। २ योद्धा, वीर।
तुड़वाणौ (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु को खंडित कराना, तुडाना। ३ खण्ड-खण्ड कराना। ३ नष्ट कराना। ४ मरवाना, संहार कराना। ५ बीताना, व्यतीत कराना।

६ क्षीण या कमजोर कराना । ७ तोड-फोड़ करने के लिये प्रेरित करना । ८ क्रम भग कराना । ९ विच्छेद कराना ।

तुड़ाई–स्त्री० १ तोडने की क्रिया या भाव । २ इस कार्य का पारिश्रमिक ।

तुड़ाणौ (बौ), तुडावणौ (बौ)–देखो 'तुडवाणौ' (बौ) ।

तुड़ि–पु० योद्धा, वीर ।

तुड़िताण–देखो 'तुडतांण' ।

तुच, तुचा, तुची–स्त्री० [स० त्वच्, त्वचा] १ शरीर की चमडी चर्म, त्वचा । २ छाल । ३ आवरण । ४ स्पर्श ज्ञान । —**मैल**–पु० रोम ।

तुचीसार–पु० [सं० त्वचिसार] बास ।

तुच्छ–वि० [स०] १ अत्यन्त थोडा, किंचित, अल्प, न्यून । २ छोटा, लघु । ३ हीन, नीच, क्षुद्र, अकिंचन । ४ हल्का । ५ खाली, रहित । ६ व्यर्थ, निरर्थक । ७ त्यक्त । ८ कमीना, नीच, हीन विचारो का । ९ अभागा, गरीब । १० निकम्मा । –स्त्री० भूसी, छाल ।

तुच्छता–स्त्री० [स०] १ अल्पता, न्यूनता । २ लघुता, छोटापन । ३ हीनता, नीचता, क्षुद्रता । ४ हल्कापन । ५ खालीपन । ६ व्यर्थता, निरर्थकता । ७ त्याग की भावना । ८ कमीनापन । ९ गरीबी । १० निकम्मापन ।

तुच्छौ, तुछ, तुछय–देखो 'तुच्छ' ।

तुज–देखो 'तुझ' ।

तुजक–पु० [अ० तुजुक] १ शोभा, वैभव । २ आत्मचरित्र (लिखित) । ३ प्रबंध, व्यवस्था ।

तुजकधार–पु० सैन्य-सज्जा करने वाला ।

तुजकमीर–पु० [अ०] अभियान या उत्सव आदि का व्यवस्थापक ।

तुजमात–स्त्री० पार्वती, गौरी ।

तुजी, तुजीह–पु० [स० त्रिजिह्व] धनुप ।

तुज्ज–वि० [स० तृतीय] १ तीसरा । (जैन) –[स० तुर्य] २ चौथा । ३ देखो 'तुझ' ।

तुज्झ, तुज्झौ, तुझ, तुह्म–सर्व० तुझे, तेरा, तेरी, तेरे ।

तुझे–सर्व० तुम्हें, तुमको ।

तुट–वि० १ तनिक, जरासा, टुक । २ देखो 'टूट' ।

तुटण–स्त्री० १ फूट, विरोध । २ कलह, झगडा । –वि० कलह करने वाला ।

तुट्टणौ (बौ)–देखो 'टूटणौ' (बौ) ।

तुट्ठ–देखो 'तुस्ट' ।

तुट्टणौ (बौ)–१ देखो 'टूटणौ' (बौ) । २ देखो 'तुस्टणौ' (बौ) ।

तुट्टि–देखो 'तुस्टि' ।

तुठणौ (बौ), तुठ्ठणौ (बौ)–१ देखो 'तुस्टणौ' (बौ) । २ देखो 'टूटणौ' (बौ) ।

तुड–वि० १ वीर, योद्धा । २ हृष्ट-पुष्ट । ३ तृप्त ।

तुडि–स्त्री० [स० तेलित] स्पर्धा, बराबरी ।

तुडिकार–पु० मल्लयुद्ध करने वाला ।

तुडियाण–पु० [सं० तूर्याण] एक प्रकार का वाद्य । (जैन)

तुडुम–पु० [स० तुरम्] तुरही, बिगुल ।

तुणकौ–वि० तुच्छ, अकिंचन । –पु० १ किसी कार्य मे आनाकानी । २ तनका, नखरा । [स० तृण] ३ तृण, तिनका ।

तुणगार (गारी)–देखो 'तिणगारी' ।

तुणणौ (बौ)–क्रि० [स० तुण्] फटे वस्त्र को सीना, तुनना, तुनाई करना ।

तुणि–पु० [सं०] तुन का वृक्ष ।

तुणीर–देखो 'तुणीर' ।

तुतकारौ–पु० कुत्ते को बुलाने का तू-तू शब्द ।

तुतळाणौ (बौ)–क्रि० १ तुतला कर बोलना, तोता बोलना, हकलाना । २ अस्पष्ट बोलना ।

तुतळौ–देखो 'तोतलौ' । (स्त्री० तुतळी)

तुत्थ, तुत्थक–पु० [स०] नीला थोथा, तुतिया ।

तुदन–पु० [स०] व्यथा या कष्ट देने की क्रिया, पीडन, पीडा ।

तुन–पु० [स० तुन्न] मजबूत लकडी वाला एक वृक्ष विशेष ।

तुनतुनियौ, तुनतुनी–पु० बैंजो नामक वाद्य ।

तुनवाय–पु० [स० तुन्नवाय] दरजी ।

तुनी–देखो 'तुन' ।

तुनीर–देखो 'तूणीर' ।

तुन्न–देखो 'तुन' ।

तुन्नवाय–देखो 'तुनवाय' ।

तुन्नीर–देखो 'तुणीर' ।

तुन्ह–सर्व० तुझे, तुझको ।

तुपक, तुपक्ख–स्त्री० [स० तुपक] १ छोटी तोप । २ बन्दूक ।

तुपाणौ (बौ), तुपावणौ (बौ)–क्रि० बीज बोना, बुवाई करना ।

तुफग–स्त्री० [फा० तोप] तोप ।

तुबणौ (बौ)–देखो 'तिबणौ' (बौ) ।

तुभणौ (बौ)–क्रि० १ स्तब्ध रहना, अचंभित रहना । २ स्थिर रहना । ३ चुभना ।

तुभ्यौ–सर्व० [स० तुभ्य] तुम्हे, तुमको ।

तुम–सर्व० [स० त्वम्] द्वितीय पुरुष का संबोधन, तू का बहुवचन, तूं, आप ।

तुमडी–देखो 'तुंबी' ।

तुमण–पु० चरखे के मध्य का डडा ।

तुमणी–सर्व० तुम्हारी ।

तुमतडाक–स्त्री० [फा० तूमतडाक] १ तडक-भडक, ठाट-बाट । २ गाली-गलोच, बोल-चाल ।

तुमती–स्त्री० एक प्रकार का शिकारी पक्षी।
तुमर–देखो 'तोमर'।
तुमरा, तुमरौ–सर्व० (स्त्री० तुमरी) तुम्हारा।
तुमल–देखो 'तुमुल'।
तुमा–देखो 'तुम'।
तुमार–पु० [अ० तूमार] १ जाच, परीक्षा। २ अनुमान, अंदाज। ३ परिमाण। ४ हद, सीमा। ५ बात का बवंडर, विस्तार। ६ व्यर्थ बातो का ढेर। ७ पुलिंदा।
तुमारू, तुमारौ–देखो 'तुम्हारौ'।
तुमुर–स्त्री० १ एक क्षत्रिय जाति। २ देखो 'तुमुल'।
तुमुल–पु० [स०] १ ध्वनि, शब्द। २ शोर, कोलाहल, युद्ध का शोर। ३ भीषण युद्ध। ४ द्वन्द्व युद्ध। –वि० १ भयकर, घोर। २ भयानक क्रोधी। ३ व्याकुल। ४ परेशान।
तुम्मर–देखो 'तुंबर'।
तुम्यौ–सर्व० तुम्हे, तुमको, तुझे।
तुम्ह–सर्व० तुम, तुमको, आपको। तुम्हारा।
तुम्हां, तुम्हाण–सर्व० तुम, तुमको, तुझे, आपका, तुम्हारा।
तुम्हारइ, तुम्हारउ, तुम्हारड़ू, तुम्हारड़ौ, तुम्हारडौ–देखो 'तुम्हारौ'।
तुम्हारौ–सर्व० (स्त्री० तुम्हारी) आपका, तुम्हारा।
तुम्हि, तुम्ही–सर्व० तुम, तुम ही, तुम से।
तुम्हीणौ–सर्व० तुमको, तुझे, तुम्हारा।
तुम्हें, तुम्हैं–सर्व० तुमको, तुझे।
तुय–सर्व० तेरा।
तुरग–पु० [स०] (स्त्री० तुरगण) १ घोडा, अश्व। २ चित्त, मन। ३ सात की सख्या।
तुरगगौड–पु० [स०] गौड राग का एक भेद।
तुरगण–स्त्री० घोडी, मादा अश्व।
तुरगप्रिय–पु० [स०] जौ, यव।
तुरगवदण, (मुख, वदन)–पु० [स०] एक देव जाति, किन्नरगण।
तुरगम–देखो 'तुरग'।
तुरगमसिक्षा–स्त्री० [स०] १ शालीहोत्र सबधी ज्ञान। २ बहत्तर कलाओ मे से एक।
तुरगलक्षण–पु० [स०] ७२ कलाओं में से एक।
तुरगसाळ (साळा)–स्त्री० [सं० तुरंग+शाला] घुडशाला, अस्तबल।
तुरगाण–देखो 'तुरगण'।
तुरगारि–पु० [स०] कनेर।
तुरगी–स्त्री० १ घोडी। २ अश्वगधा।
तुरंगु–१ देखो 'तरग'। २ देखो 'तुरंग'।
तुरज–पु० [फा० तुर्ज] १ चकोतरा नीबू। २ बिजौरा नीबू।
तुरजका–स्त्री० हड, हरीतकी।
तुरजबीन–स्त्री० [स०] नींबू का शर्बत।
तुरंजिया–पु० बैल गाडी के थाटे मे लगने वाला कीला।
तुरंड–पु० एक प्राचीन देश।
तुरंत, तुरतउ, तुरंतौ–क्रि०वि० [स० त्वरितम्] शीघ्र, तत्क्षण, त्वरित।
तुर–क्रि० वि० [स० त्वर्] शीघ्र। –वि०–शीघ्रगामी, वेगवान। –स्त्री० [स० तुरी, तुरग] १ कपडा बुन कर लपेटने की जुलाहे की लकडी। २ घोड़ा, अश्व। ३ तूरान देश का निवासी।
तुरई–देखो 'तुररी'।
तुरक, तुरकड़ौ–पु० [स० तुरुष्क] (स्त्री० तुरकडी, तुरकण, तुरकणी, तुरकाणी) १ मुगल। २ तुर्किस्तान। ३ तुर्किस्तान का निवासी। ४ देखो 'तुरग'।
तुरकांण–पु० १ यवनो का राज्य। २ देखो 'तुरक'।
तुरकांणी–स्त्री० १ तुर्क की स्त्री। २ इस्लाम धर्म। ३ तुर्कों का राज्य, तुर्कों का क्षेत्र। –वि० तुर्क सबंधी, तुर्कों की।
तुरकाबडौ–पु० करघे की तुर मे लगा काष्ठ का कीला।
तुरकिया बोहरा–पु० एक व्यावसायिक मुसलमान जाति।
तुरकिस्तान–पु० पश्चिमी एशिया का एक देश। तुर्की।
तुरकी–वि० [तु० तुर्क] तुर्किस्तान का, तुर्क का –पु० १ घोडो की एक जाति व इस जाति का घोडा। –स्त्री० २ तुर्किस्तान की भाषा।
तुरकीय–स्त्री० घोडे की एक चाल।
तुरक्क–देखो 'तुरक'।
तुरक्की–देखो 'तुरकी'।
तुरखूटौ–पु० करघे का एक खडा डडा।
तुरग–वि०[स०] शीघ्रगामी, द्रुतगामी। –पु० १ घोडा। २ मन विचार।
तुरगगधा–स्त्री० [स०] अश्वगधा।
तुरगदानव–पु० [स०] केशी नामक दैत्य।
तुरगबदन (वदन)–पु० [स०] किन्नर।
तुरगलीलक–पु० [स०] सगीत मे एक ताल।
तुरगवैद्य–पु० [स०] अश्वचिकित्सक।
तुरगसाळा–स्त्री० [सं० तुरग + शाला] अश्वशाला।
तुरगसिक्षा–स्त्री० ७२ कलाओ मे से एक।
तुरगांण–स्त्री० घोड़ी।
तुरगारोहण–पु० [स०] घुडसवारी।
तुरगि (गी)–पु० [स० तुरगिन्] १ घुड सवार, अश्व चालक। २ घोड़ों की एक जाति। ३ देखो 'तुरग'।
तुरगु–देखो 'तुरग'।

तुरजका-स्त्री० हरड, हर्रे।
तुरजाळ-पु० घोडा, अश्व।
तुरजिका-देखो 'तुरजका'।
तुरण-क्रि०वि० [स० तूर्णम्] तुरन्त, शीघ्र।
तुरणी-देखो 'तरुणी'।
तुरत-देखो तुरत'।
तुरतबुद्धि-वि० हाजिर जवाब।
तुरता-देखो 'तुरत'।
तुरताण-देखो 'तुरत'।
तुरती-स्त्री० १ गली। २ देखो 'तुरत'।
तुरतुरियो-पु० दाल या बेमन का वडा, पकोडा। -वि० जल्दबाज। उतावला।
तुरपग-पु० नृत्य का एक भेद।
तुरप-देखो 'तुरुप'।
तुरपण-स्त्री० हाथ की मजबूत सिलाई। तुरपाई।
तुरपणी (बी)-क्रि० हाथ से सिलाई करना, तूनना। तुरपाई करना।
तुरपाई-स्त्री० महीन व मजबूत, हाथ की सिलाई।
तुरफ-देखो 'तुरुप'।
तुरफरी स्त्री० अकुश का एक भाग।
तुरमती-स्त्री०[स० तुरमता] शिकार करने वाली एक चिडिया।
तुरमनामो-पु० एक अग्रेजी वाद्य।
तुरय्या-पु० [स० तुर्य्या] १ मुक्ति प्राप्त होने का ज्ञान, तुरीय ज्ञान। २ एक प्रकार की सब्जी।
तुररी-स्त्री० [स० तुरम्] मुह से फूक कर बजाने का बाजा।
तुररो-पु० [अ० तुर्रा] १ घुघराले बालो की लट, अलक। २ टोपी, पगडी आदि पर लगने वाली कलगी। ३ दूल्हे के सिर पर लगाने की सुनहरी कलगी। ४ पुष्प विशेष, गुलतुर्रा। ५ फूलो का गुच्छा। ६ श्मश्रु, मूछ। -वि० श्रेष्ठ, शिरमौर।
तुरळ-पु० प्रचण्ड वायु, बवण्डर।
तुरवसु-पु० [स० तुर्वसु] राजा ययाति का एक पुत्र।
तुरस-वि० [फा० तुर्श] खट्टा। -स्त्री० ढाल।
तुरसाई तुरसाही-स्त्री० १ खटाई, खट्टापन। २ जायका, स्वाद।
तुरस्स-देखो 'तुरस'।
तुरह-क्रि० वि० [स० त्वर] शीघ्र, जल्दी।
तुरहो-देखो 'तुररी'।
तुराण-पु० [स० तुरग] घोडा, अश्व।
तुरान-पु० मध्य एशिया का एक भाग।
तुरानी-पु० उक्त भाग मे बसने वाला, मुगल।
तुरा-स्त्री० [स० त्वरा] शीघ्रता, जल्दबाजी।
तुराखाट, तराखाड-पु० [स० तरापाट्] इन्द्र, सुरराज।
तुराट-पु० घोडा।
तुराटी-स्त्री० हलका नशा, नशे की लहर।
तुरातुर-क्रि०वि० अतिशीघ्र, झटाझट।
तुरापाचम-स्त्री० माघ शुक्ला पचमी, वसत पचमी।
तुरायण-पु० [स०] चैत्र शुक्ला पचमी व वैशाख शुक्ला पचमी को किया जाने वाला यज्ञ।
तुरावत-वि०[स० त्वरावत्] (स्त्री० तुरावती)वेगवान, वेगयुक्त।
तुरासाट, तुरासाह-पु० [स० तुरापाट्] इन्द्र।
तुरि, तुरिउ, तुरिए-क्रि०वि० [स० त्वरित्] १ शीघ्र, जल्दी। २ देखो तुरी'।
तुरित-देखो 'तुरत'।
तुरियव-देखो 'तुरग'।
तुरिय-१ देखो 'तुरत'। २ देखो 'तुरी'।
तुरिया-स्त्री० [स० तुरीय] १ मोक्ष ज्ञान। ज्ञान की चतुर्थावस्था। २ चौथा भाग। ३ घोडा। -वि० चतुर्थ, चौथा।
तुरियो-देखो 'तुरग'।
तुरी-स्त्री० [स०] १ चित्रकार की कूची। २ लडकी, नारी। ३ जुलाहो का एक औजार। [स० तुरग] ४ घोडी। ५ लगाम, बाग। ६ तुरही नामक वाद्य। ७ छोटी कलगी। ८ घोडा।
तुरीजत्र-पु० [सं० तुरीयत्र] सूर्य की गति बताने वाला यत्र।
तुरीय-देखो 'तुरिय'।
तुरीयतरग-पु० दो नलियो का एक वाद्य विशेष।
तुरीया-देखो 'तुरिया'।
तुरीस-क्रि०वि० शीघ्र, तुरत। -पु० घोडा।
तुरुक-देखो तुरक'।
तुरुप-पु० ताश के खेल मे रग की चाल।
तुरुपणी (बी)-देखो 'तुरपणी' (बी)।
तुरुपाई-देखो 'तुरपाई'।
तुरुही-देखो 'तुररी'।
तुरेस-पु० [स० तुरगेश] श्रेष्ठ घोडा।
तुरैया-देखो 'तुररी'।
तुरौ-देखो तुररो'।
तुळ तुल-पु० [स० तल] १ एक लग्न। २ घास। ३ तुला राशि। ४ तराजू तुला। -वि० [स० तुल्य] समान।
तुळछ, तुळछा तुळछी-देखो 'तुळसी'। —दळ='तुळसीदळ'।
तुळछातेला-पु० कार्तिक शुक्ला अष्टमी से ग्यारस तक किये जाने वाले तीन व्रत।
तुळजा, तुळजाउ, तुळज्जा, तुलज्या-स्त्री० [स० तुल्य-ज्या] पार्वती। दुर्गा। एक देवी का नाम। -वि० वृद्धा, बूढी।

तुलणौ (बौ)–क्रि० [स० तुल्] १ तराजू आदि से तोला जाना, तुलना, वजन किया जाना। २ किसी तौल के बराबर होना। तुल्य होना। ३ वजन देखने के लिये हाथ मे लेना। ४ सधना। ५ तैयार होना। ६ समझ मे आना जचना। ७ आधार पर सतुलित होना। ८ उद्यत होना, उतारू होना। ९ समान व तुल्य होना।

तुलना–स्त्री० [स०] १ समता, समानता, मुकाबला, बराबरी। २ मेल, ताल-मेल। ३ उपमा। ४ परीक्षा, जाच।

तुलनी–स्त्री० [स० तुला] तराजू की डडी।

तुलवाई–देखो 'तुलाई'।

तुळसी–स्त्री० [स० तुलसी] १ दो-तीन फुट की ऊचाई का झाडीनुमा पौधा जिसकी पत्तियां देव-पूजन व औषधियो मे काम आती हैं। वृन्द्रा, वैष्णवी। २ प्रसिद्ध कवि तुलसीदास। ३ एक लोक गीत। —**ठांण, ठाणौ, ठांवणौ**–पु० वह चबूतरी या स्थान जहा तुलसी का पौधा उगाया जाता है। –**तेला**='तुळछातेला'। –**थाणौ**='तुळसीठाणौ'। —**दळ**— —**पत**–पु० तुलसी के पत्ते।

तुळसीदाणौ–पु० एक स्वर्णाभूषण।

तुळसीदास–पु० 'रामचरित मानस' के रचयिता प्रसिद्ध कवि तुलसी।

तुळसीपतियौ–पु० स्त्रियो के गले का आभूषण विशेष।

तुळसीमजर (मजरी)–स्त्री० तुलसी के पौधे की बाले, मजरी।

तुळसीवन–पु० तुलसी के पौधो की अधिकता वाला वन खण्ड।

तुला–स्त्री० १ तराजू, तकडी। २ छोटा तराजू, काटा। ३ गुजा। ४ ज्योतिष की एक राशि। ५ तौल, मान।

तुलाई–स्त्री० १ तौलने की क्रिया। २ इस कार्य की मजदूरी। ३ देखो 'तूली'।

तुलाकोट, तुलाकोटि–पु० एक आभूषण, नूपुर।

तुलाजत्र–पु० [स० तुलायत्र] तराजू, काटा।

तुलाडड–देखो 'तुलादड'।

तुलाणौ (बौ)–क्रि० १ तौल कराना, तुलवाना, वजन कराना। २ खरीदना। ३ समता कराना। ४ तुलना कराना।

तुलादड–पु० तराजू का डडा।

तुलादान–पु० [स०] स्वय के तौल के बराबर द्रव्य का दान।

तुलाधार–पु० [स०] १ वणिक, वणिया। २ माता-पिता का भक्त काशी का एक व्याध। –स्त्री० ४ तुलाराशि। ५ तराजू की डोरी, रस्सी।

तुलामान–पु० [स०] १ तौल का अभ्यास, अदाज। २ बाट, तौल।

तुलावट–वि० तौलने वाला। –स्त्री० तौलने की क्रिया।

तुलावणौ (बौ)–देखो 'तुलाणौ' (बौ)।

तुलि–वि० [स० तुल्य] समान, सदृश, तुल्य। –स्त्री० १ तराजू, २ तुलाराशि।

तुलौ–पु० १ तराजू। २ तराजू का पलडा।

तुल्य–वि० [स०] १ समान, बराबर। २ उपयुक्त।

तुल्यता–स्त्री० [स०] बराबरी, समता।

तुल्यप्रधानव्यग–पु० [स०] समान वाच्यार्थ एव व्यग्यार्थ वाला व्यग्य।

तुल्ययोग, तुल्ययोगिता–स्त्री० [स०] एक अलकार विशेष।

तुल्ययोगी–वि० समान सबध रखने वाला।

तुल्ल–देखो 'तुल्य'।

तुव–सर्व० १ तुम। २ तेरा तुम्हारा। ३ तुझे, तझको।

तुवर–पु० १ अरहर। २ कसेला। ३ देखो 'तवर'।

तुवाळौ–सर्व० तुम्हारा, तेरा।

तुसडा–सर्व० तेरा, तुम्हारा।

तुसडौ–पु० अपराध गुनाह। –सर्व० तेरा, तुम्हारा।

तुस–पु० [स० तुष] १ अन्न के दाने के ऊपर का छिलका, भूसी। २ आटा छानने पर निकलने वाला फूस। ३ सोने, चादी आदि का छोटा कण जर्रा। ४ देखो 'तुच्छ'।

तुसग्रह–पु० [स० तुषग्रह] अग्नि।

तुसर–पु० तृण, तिनका।

तुसल्यौ–पु० अशुभ रग का एक घोडा विशेष।

तुसाग–देखो 'तुसानल'।

तुसाड, तुसाडो, तुसाड (डौ)–सर्व० (स्त्री० तुसाडी, तुसाडी) तेरा, तुम्हारा।

तुसानळ–पु० [स० तुषानल] भूसी या घासफूस की आग।

तुसार–पु० [स० तुषार] १ अधिक शीत के कारण वस्तुओ पर जमने वाली हिम की परत। २ हिम, बर्फ। ३ ठडक, सर्दी, शीत। ४ एक प्राचीन देश। ५ इस देश का घोडा। –वि० अत्यन्त ठडा, शीतल। —**कर, काति**–पु० हिमकर, चन्द्रमा। —**पाखांण, पासाण**–पु० हिमकण, ओला। —**मूरति रसमि, रस्मि**–पु० चन्द्रमा।

तुसारासु–पु० [स० तुषाराशु] चन्द्रमा।

तुसाराद्रि–पु० [सं० तुषाराद्रि] हिमालय पर्वत।

तुसिणीअ–स्त्री० [स० तूष्णीक] मौन भाव, मौन वृत्ति (जैन)।

तुसित–पु० [स० तुषिताः] १ एक प्रकार के गणदेव जो १२ माने जाते हैं। २ विष्णु। ३ एक स्वर्ग का नाम।

तुसियौ–देखो 'तुस'।

तुसी–१ देखो 'तुस'। २ देखो 'तस'।

तुसे (सै)–सर्व० तुम्हारा, तेरा।

तुस्ट–वि० [स० तुष्ट] १ सतुष्ट, तृप्त। २ प्रसन्न, खुश। ३ वीतराग।

तुस्टणौ (बो)–क्रि० १ सतुष्ट होना, तृप्त होना। २ प्रसन्न होना, खुश होना। ३ वीतराग होना। ४ देखो 'तूठणौ' (बौ)।
तुस्टता–स्त्री० [स० तुष्टता] १ सतोष, तृप्ति। २ प्रसन्नता, खुशी।
तुस्टमांन–वि० [स० तुष्टमान] १ प्रसन्न, खुश। २ अनुकूल। ३ किसी पर मेहरबान, अनुग्रह करने वाला।
तुस्टि–स्त्री० [स० तुष्टि] १ सतुष्टि, सतोप। तृप्ति। २ अनुकूलता। ३ प्रसन्नता।
तुस्णि–वि० [स० तूषीण] शात, मौन।
तुस्ततुरग–पु० घोडा।
तुस्सांडौ–देखो 'तुसाडौ'।
तुह–सर्व० तुझ। –क्रि०वि० [स० तत खलु] तदपि, तो भी।
तुहइ–अव्य० तदपि, तो भी।
तुहफौ–देखो 'तोफौ'।
तुहमत–देखो 'तोहमत'।
तुहा–सर्व० आप, तूं।
तुहाइळौ–देखो 'तुहाळौ'।
तुहार, तुहारइ, तुहारौ–सर्व० (स्त्री० तुहारी) तेरा, तुम्हारा।
तुहाळ, तुहाळोय, तुहाळौ–सर्व० (स्त्री० तुहाळी) तेरा, तुम्हारा।
तुहि–सर्व० तु।
तुहितउ–क्रि०वि० [स० तथापि] तथापि, तो भी।
तुहिन–पु० [स०] १ पाला, हिमकण। २ हिम, बरफ। ३ चादनी। ४ शीतलता। —**गिरि**–पु० हिमालय पर्वत।
तुहिनासु, तुह्निासु–पु० [स० तुहिनाशु] चद्रमा।
तुहुंजि–क्रि०वि० केवल तव।
तुहें–सर्व० तुम्हे।
तुह्मारडौ–देखो 'तुम्हारौ'।
तुह्य–सर्व० तुम्हारा, तेरा।
तू–सर्व० [स० त्वम्] तुम, तू, द्वितीय पुरुष।
तूंग्र–सर्व० तू पण, तू भी।
तूग्रर–देखो 'तवर'।
तूग्ररइ, तूग्ररि–देखो 'तुवरि'।
तूकार, तूकारघउ, तूंकारौ–देखो 'तुकारौ'।
तूंग–स्त्री० १ आग की चिनगारी। २ देखो 'तुंग'।
तूंगणौ (बौ)–देखो 'तुगणौ' (बौ)।
तूगिम–स्त्री० [स० तुग] १ महिमा, माहात्म्य। २ प्रतिष्ठा, गौरव। ३ उच्चता, श्रेष्ठता। ४ ऊचाई।
तूगियरो, तूगियौ–पु० फौज का एक भाग, दल, टुकडी।
तूंगी–स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि। २ नाव, नौका।
तूंगौ–पु० सैन्य दल, फौज की टुकडी।
तूंछणौ (बौ)–क्रि० [स० तृष्ट] १ तृषित होना, प्यासा होना। २ प्यासा रहना।
तूंज–पु० एक प्रकार का बर्तन।
तूजी–देखो 'तुजीह'।
तूझ–सर्व० १ तुझको, तुझे। २ तुम्हारा। ३ देखो 'तुझ'।
तूड–देखो 'तुड'।
तूडी–स्त्री० १ नाव, नौका। २ पेंदा। ३ मध्य भाग।
तूडौ–पु० पेंदा, तल।
तूण–देखो 'तूणीर'।
तूणणौ (बौ)–देखो 'तुणणौ' (बौ)।
तूंणी–स्त्री० कमर, कटि।
तूंणौ–पु० समय से पूर्व गिरा हुआ गर्भ (पशु)।
तूतड, तूतडौ, तूंतड़चौ–पु० १ बाजरी के दाने के ऊपर की टोपी, फूमदा। २ बाजरी की बाल या भुट्टा। ३ बाल के अन्दर का कच्चा दाना। ४ निकम्मी वस्तु। ५ घास विशेष। ६ लडका पुत्र। –वि० दुर्बल, पतला, क्षीण।
तूतळौ–पु० १ बाजरी या ज्वार के भुट्टे का वह भाग जिसमे दाना रहता है, भूसी। २ काटेदार फलो वाली एक लता विशेष।
तूंद–स्त्री० बड़ा पेट, उदर, तोद।
तूंना–सर्व० तेरा, तुम्हारा।
तूंबड़ियाळौ–पु० १ 'तूबडी' वाद्य वजाने वाला। २ साधु, फकीर।
तूबड़ियो, (ड़ौ)–देखो 'तूंबौ'।
तूबडी–देखो 'तुबी'।
तूबर–देखो 'तोमर'।
तूबिणि–स्त्री० एक प्रकार की लता व इसका फल, कद्दू।
तूबी–देखो 'तुबी'।
तूबु–देखो 'तूबौ'।
तूबेल–पु० १ चारणो की एक शाखा व इस शाखा का चारण। २ दोहा छद का एक भेद।
तूबौ–पु० [स० तुम्ब] १ कद्दू की जाति का एक फल। २ इस फल के मुह को काटकर बनाया हुआ खोखला पात्र, तुम्बा।
तूर, तूंवर–पु० गौड राजपूतो की एक शाखा।
तूराटी–देखो 'तवरावटी'।
तूंहइ–सर्व० तेरा।
तूहळि–सर्व० तेरी।
तू–पु० १ कुत्ते को पुकारने का शब्द। २ युद्ध। ३ अगुली। ४ हाथ। ५ कटाक्ष। –वि० १ अशुद्ध। २ तुच्छ।
तूग्रर–पु० अरहर नामक द्विदल अनाज, तूवर।

तूईजणौ (बौ)–क्रि० मादा पशु का गर्भस्राव होना ।
तूकार–देखो 'तुकारौ' ।
तूकारणौ (बौ)–क्रि० [स० त्वकार] १ कुत्ते को पुकारना । २ देखो तूकारणौ' (बौ) ।
तूख–देखो 'तुस' ।
तूंडौ–देखो 'तसतूंबौ' ।
तूछ–देखो 'तुच्छ' ।
तूछरेळ–वि० तुच्छ ।
तूज–देखो 'तुझ' ।
तूजी–देखो 'तुजीह' ।
तूझ, तूझ्झ–देखो 'तुझ' ।
तूटणी–स्त्री० नसो मे होने वाला दर्द ।
तूटणौ (बौ)–देखो टूटणौ' (बौ) ।
तूठ–देखो 'तुस्ट' ।
तूठणौ (बौ)–देखो 'तुस्टणौ' (बौ) ।
तूण–पु० [स०] तूणीर, तरकस, भाता ।
तूणियउ–वि० [स० तूणित] बुना हुआ ।
तूणी, तूणीर–स्त्री० [स०] तरकस, निषग ।
तूणौ–वि० तिगुना ।
तूणौ (बौ)–देखो 'तूईजणौ' (बौ) ।
तूत–पु० १ स्तम्भ, खभा । [स० तूद] २ शहतूत ।
तूनक–वि० १ मूर्ख, अज्ञानी । २ लम्बा ।
तूतड, तूतडौ–देखो 'तूतड' ।
तूताडियौ–पु० भेड-बकरी के छोटे बच्चे को रखने का स्थान ।
तूताडी–स्त्री० १ फूक कर बजाने का एक बाजा । २ मूत्र आदि पदार्थ की छोटी धारा ।
तूतियौ–पु० नीला थोथा, मोर थोथा ।
तूती–स्त्री० १ मुह से बजाने का एक वाद्य विशेष । २ मटमैले रग की एक चिडिया । ३ हाहाकार, चीत्कार । ४ कीर्ति, प्रसिद्धि ।
तूदाग्र–पु० [स०] पेट का अग्र भाग, तोद ।
तून–देखो 'तूण' ।
तूना तूना–देखो 'तूना' ।
तूनारा–स्त्री० तुनाई का व्यवसाय करने वाली एक जाति रफूगर ।
तूनारौ–पु० रफूगर ।
तूनी–स्त्री० १ एक रोग विशेष । २ देखो 'तूणी' ।
तूनीर–देखो 'तूणीर' ।
तूप–पु० [स० स्तुप] घृत, घी ।
तूफान–पु० [अ०] १ वायु का तीव्र वेग, वातचक्र । २ उपद्रव, उत्पात । ३ डुबाने वाली बाढ । ४ प्रलय । ५ विपत्ति सकट ।
तूफानी–वि० [अ०] १ तूफान जैसा, तूफान-की तरह का । २ उत्पाती, उपद्रवी । ३ प्रलयंकारी ।
तूबणौ (बौ)–देखो 'तीवणौ' (बौ) ।
तूमडी–देखो 'तूंबी' ।
तूमडौ–देखो 'तूंबौ' ।
तूमा–सर्व० तुम ।
तूमार–देखो 'तुमार' ।
तूमौ–देखो 'तूंबौ' ।
तूरग, तूरगम–देखो 'तुरंग' ।
तूर–पु० [स० तूर्य] १ मुंह से बजाने का एक बाजा । २ देखो 'तूअर' । ३ देखो 'तुर' ।
तूरण–क्रि०वि० [स० तूर्णम्] शीघ्र तुरत ।
तूरही–स्त्री० एक बाजा ।
तूरांन–देखो 'तुरान' ।
तूरानी–देखो 'तुरानी' ।
तूरी–स्त्री० १ भाटो की एक शाखा । २ देखो 'तुरी' । ३ देखो 'तोरू' ।
तूरीउ–देखो 'तुरिय' ।
तूरुय, तूरू–देखो तूर' ।
तूळ, तूल–पु० [स० तूल] १ कदम का वृक्ष । २ शहतूत का वृक्ष । ३ रुई । [अ० तूल] ४ लम्बाई, विस्तार । ५ किसी बात को दिया जाने वाला महत्व या बढ़ावा ।
तूळक–स्त्री० रुई ।
तूलता–स्त्री० [स० तुल्यता] समता, समानता, बराबरी ।
तूळिका, तूळी, तूली–स्त्री० [स० तूलि] १ चितेरे की कूची । २ सीक, तीली । ३ तार आदि का छोटा टुकडा । ४ आग जलाने की काडी, माचिस ।
तूस, तूसण–पु० १ इन्द्रायण का फल । २ भय, डर । ३ खुरासान का एक प्रदेश व शहर । ४ देखो 'तुस' ।
तूसणौ (बौ)–क्रि० [स० तूष] १ प्रसन्न होना, खुश होना । २ सतुष्ट होना । ३ अनुग्रह करना । ४ तुष्टमान होना ।
तूसी–वि० १ तूस देश का, तूस देश सबधी । २ देखो 'तूस' ।
तूह–१ देखो तूस' । २ देखो 'तू' ।
तूहिन, तूहीन–पु० [स० तुहिन] १ शीत, जाडा, सर्दी । २ देखो 'तुहिन' ।
तं–देखो 'ते' ।
तेंण–सर्व० उस । उन । –क्रि०वि० उसमे । उनके ।
तेंतीस–देखो 'तेतीस' ।
तेंतीसौ–देखो 'तेतीसौ' ।
तेंदूग्रौ–पु० चीते की जाति का एक हिंसक पशु ।
तेंदिय, तेंद्रिय–देखो 'त्रीद्रिय' ।

तेंहवार-देखो 'तिवार'।

ते (तें)-पु० १ यमुना का जल। २ नासिका, नाक। ३ देवता। ४ राक्षस। ५ पुत्र। ६ ज्ञान। [फा० तह] ७ कृषि भूमि की आर्द्रता, नमी। ८ परत। [फा० तय] ९ निश्चित। -सर्व०[स० एप] १ तू, तुम, आप। २ इस। ३ वह, वे। ४ उन। ५ अपने। -क्रि०वि० इसलिये। -प्रत्य० तृतीय या पचमी विभक्ति का चिह्न, से।

तेअ-१ देखो 'तेज'। २ देखो 'ते'।

तेइदिय, तेइंद्रिय-देखो 'त्रीद्रिय'।

तेइयौ-देखो 'तीयौ'।

तेइस-देखो 'तेईस'

तेइसमौ (वौं)-देखो 'तेईसमौं'।

तेईस-वि० [स० त्रयोविंशति] वीस और तीन। -पु० वीस व तीन की सख्या, २३।

तेईसमौ (वौं)-वि० तेईस के स्थान वाला, वाईस के वाद वाला।

तेईसे'क-वि० तेवीस के लगभग।

तेईसौ-पु० तेवीस का वर्ष।

तेउ, तेऊ-सर्व० १ उस, वह। २ देखो 'तेज'।

तेओतर-देखो 'तिहोतर'।

तेओतरौ-देखो 'तिहोतरौ'।

तेख-पु० १ मान, प्रतिष्ठा, आदर। २ इज्जत, आवरू। [स० तीक्ष्ण] ३ क्रोध, गुस्सा। ४ घमड, अभिमान। -स्त्री० ५ वढई की तेज धार की पत्ती विशेप।

तेखट, तेखटियौ-पु० आभूपणों की खुदाई करने का एक औजार।

तेखडियौ-वि० १ क्रुद्ध, कुपित। २ विगडा हुआ। ३ नाराज, अप्रसन्न।

तेखणौ (बौ)-क्रि० १ क्रुद्ध होना, कोप करना। २ नाराज होना, अप्रसन्न होना। ३ विगडना। ४ गर्व करना।

तेखळ, तेखळौ-पु० [स० त्रिशृखल] १ घोडे या गधे के दोनो पैर आगे के व एक पिछला वाधने की क्रिया। २ ऊट के पाव वाधने की क्रिया। ३ एक दिन छोडकर दो दिन किया जाने वाला दधि मथन।

तेखानौ-पु० [फा० तहखाना] भूमिगत कक्ष, तलगृह, तहखाना।

तेखा-स्त्री० ढोलियो की एक शाखा।

तेखियौ-वि० पापी, दुराचारी।

तेखौ तेखीयौ, तेखीलौ-वि० क्रुद्ध, कुपित।

तेग-स्त्री० [अ०] तलवार, कृपाण। **—झाट**-स्त्री० तलवार का वार। युद्ध। **—धर**-वि० खड्गधारी योद्धा। **—बध**= तेगधर'।

तेगाळ-पु० १ तलवारधारी योद्धा। २ देखो 'तेग'।

तेगिच्छ-पु० रोग का निदान, चिकित्सा।

तेगून-स्त्री० तलवार।

तेगौ-पु० १ तलवार की धार। २ देखो तेग'।

तेघड-स्त्री० स्त्रियो के पैर का विशेप आभूपण।

तेड-स्त्री० १ किसी वस्तु मे होने वाली दरार। २ वडे भोज का आयोजन। ३ भोज के लिए आमत्रित जाति वधुओं का समूह। ४ योनि, भग। ५ वुलावा।

तेडणौ (बौ), तेडवणौ (बौ)-क्रि० १ वुलाना, पुकारना। २ वच्चे को गोद मे उठाना।

तेडाणौ (बौ), तेडावणौ (बौ)-क्रि० १ वुलवाना पुकार लगवाना। २ वच्चे को गोद मे उठवाना।

तेडियौ-पु० स्त्रियो के गले का स्वर्णाभूषण।

तेडी-स्त्री० घोडो की एक जाति।

तेडौ-पु० १ वुलाने की क्रिया या भाव, वुलावा। २ वुलाने के लिए जाने वाला। ३ वाजरे या ज्वार की फसल के शामिल वोये जाने वाले मूग, मोठ आदि द्विदल अन्न। ४ घाटा, कमी, अन्तर।

तेजगी-वि० [स० तेजोऽग्रगी] तेजस्वी, जोशीला पराक्रमी।

तेज, तेजइ-पु० [स० तेजस्] १ दीप्ति, काति, चमक। २ शौर्य, पराक्रम। ३ ओज, वीर्य। ४ पच भौतिक तत्त्वो मे से तीसरा, अग्नि। ५ प्रकाश ज्योति। ६ वस्तु का सार, तत्त्व, पदार्थ। ७ गर्मी ताप। ८ सूर्य। ९ किरण। १० स्वर्ण, सोना। ११ तारा। १२ सत्वगुण से उत्पन्न लिंग शरीर। १३ प्रताप, रौब। १४ तेजी। १५ प्रचडता, प्रवलता। १६ घोडा। १७ पित्त। १८ मक्खन। १९ घोडे की चाल का वेग। २० दीपक। २१ सौन्दर्य। २२ चरित्रवल। २३ स्फूर्ति। २४ आध्यात्मिक शक्ति। २५ ब्रह्म। २६ तीक्ष्ण धार। -वि० १ तेज या तीक्ष्ण धार का। २ तीक्ष्ण, तेज। ३ वेगवान, फुर्तिला। ४ चचल, चपल। ५ महगा। ६ उग्र, प्रचड। ७ कातियुक्त। ८ सुन्दर। ९ शीघ्र व तेज प्रभावशाली। १० कुशाग्र वुद्धि। ११ अधिक। **—आनूप**-पु० राजा, नृप। **—काय**-पु० अग्नि, आग। तेजस्वी व्यक्तित्व वाला। **—किरण**-पु० सूर्य। **—ग्रह**-पु० दीपक, प्रकाश ज्योति। **—चड**-पु० सूर्य। **—धार धारी**-वि० तेजस्वी, ओजस्वी। -पु० सूय। **—पुज**-पु० सूर्य। -वि० अप्रतिहत तेजस्वी। **—वळ**-पु० प्रताप पराक्रम। एक काटेदार जगली वृक्ष। **—वत, वत, वान**-वि० तेजस्वी। प्रतापी। -पु० घृत, घी। -स्त्री० आग्नेय दिशा का नाम।

तेजगळ-वि० तेज गति से चलने वाला तीव्रगामी।

तेजण-स्त्री० घोडी।

तेजपत्ती, तेजपात-पु० [स० तेजपत्र] दाल चीनी वृक्ष के पत्ते।

तेजरौ-पु० [स० त्रिज्वर] १ प्रति तीसरे दिन आने वाला ज्वर। २ वृद्धावस्था मे ललाट पर पडने वाली तीन सिलवटें।

तेजळ–पु० चातक, पपीहा ।

तेजस–वि० [स० तेजस्वी] १ बहादुर, पराक्रमी, ओजस्वी । २ प्रतापी । ३ तपस्वी, आत्म तेज वाला । ४ तेज धार वाला, तीक्ष्ण । ५ शीघ्रगामी, फुर्तीला । ६ महंगा । –पु०सूर्य । —**पुंज**–वि० प्रकाशवान, तेजस्वी ।

तेजसवती, तेजसवी–देखो 'तेजस्वी' ।

तेजस-सरीर–पु० सूक्ष्म शरीर (जैन) ।

तेजसी–पु० १ सूर्य । २ देखो 'तेजस्वी' ।

तेजस्व–पु० [स०] १ महादेव, शिव । २ देखो 'तेजस्वी' ।

तेजस्वत्–वि० [स०] तेजस्वी ।

तेजस्विनी–स्त्री० [स०] मालकागनी ।

तेजस्वी–वि० [सं०] १ तेजवान, प्रतापी, ओजस्वी । २ कांतिवान, प्रकाशवान । ३ वेगवान । ४ तपस्वी । –पु० इन्द्र के एक पुत्र का नाम ।

तेजागळ–देखो 'तेजगळ' ।

तेजाब–देखो 'तिजाब' ।

तेजारत–देखो 'तिजारत' ।

तेजारौ–देखो 'तिजारौ' ।

तेजाळ, तेजाळू, तेजाळौ–पु० १सूर्य । २ तेज, प्रताप । ३ घोडा । –वि० १ तेजस्वी । २ तेज गति वाला ।

तेजि–१ देखो 'तेज' । २ देखो 'तेजी' ।

तेजिउ–वि० उत्तेजित ।

तेजिय–पु० घोडा, अश्व ।

तेजी–स्त्री० [फा०] १ तेज होने की अवस्था या भाव, तीव्रता । २ उग्रता, प्रचडता । ३ प्रबलता । ४ गुस्सा, क्रोध, जोश, आवेश । ५ महगाई । ६ शीघ्रता । ७ तीव्र गति । ८ एक प्रकार का घोडा ।

तेजेयु–पु० [स०] रौद्राक्ष राजा के एक पुत्र का नाम ।

तेजोमंडळ–पु० सूर्य चन्द्रमा के चारो ओर बना प्रकाश का घेरा ।

तेजोमई, तेजोमय–वि० १ तेजस्वी, प्रतापी । २ वेगवान । –पु० सूर्य ।

तेजो-लेस्या–स्त्री० [स० तजोलेश्या] तपोबल से उत्पन्न तेज, काति, ज्वाला ।

तेजो–पु० १ राजस्थान का एक प्रतिज्ञापालक एव सत्यनिष्ठ जूझार, जाट । २ उक्त जाट की याद मे गाया जाने वाला लोक गीत ।

तेजोवितान–पु० सूर्य ।

तेटलि–क्रि०वि० [स० ततुल्य] वहा ।

तेटलौ–वि० उतना ।

तेडणौ (बौ)–देखो 'तेड़णौ' (बौ) ।

तेडौ–देखो 'टेडौ' ।

तेढ़, तेढ़क–स्त्री० १ टेढापन, वक्रता । २ ऐंठन । ३ देखो 'तेढौ' ।

तेढ़ीमणौ तेढ़ौ–वि० १ टेढ़ा, वक्र । २ बांका, बहादुर । ३ कठिन, दुर्गम ।

तेण, तेणि–सर्वं० [सं० तस्मिन्] १ उस । २ वह । ३ उसके । –क्रि०वि० उससे । –पु० [स० स्तेन] चोर, तस्कर ।

तेतउ–वि० उतना ।

तेतजुग–देखो 'त्रेतायुग' ।

तेतळइ (ई)–क्रि०वि० १ वहा, तहा । २ तब तक ।

तेतलउ–देखो 'तेतलौ' । (स्त्री० तेतली)

तेतला–वि० उतना, उतने ।

तेतलु तेतलौ–वि० [स० तत्रत्य] (स्त्री० तेतली) १ वहा का । २ उतना ।

तेता–१ देखो 'त्रेता' । २ देखो 'तेतै' ।

तेताळीस–देखो 'तयाळीस' ।

तेतीस–वि० [स० त्रयस्त्रिंशत्] तीस व तीन, तेंतीस । –पु० तीस व तीन की सख्या, ३३ ।

तेतीसमौ (वौ)–वि० तेतीसवा, बत्तीस के बाद वाला ।

तेतीसू–वि० पूरे तेतीस ।

तेतीसे'क–वि० तेतीस के लगभग ।

तेतीसौ–पु० ३३ का वर्ष ।

तेतै–वि० (स्त्री० तेती) उतने । उतना । –क्रि०वि० तब तक ।

तेत्रिस, तेत्रीस–देखो 'तेतीस' ।

तेथ, तेथि, तेथी, तेथौ–क्रि०वि० [स० तत्र] तहा, वहा ।

तेन–पु० [स० स्तेन] चोर ।

तेनाळ–देखो 'तहनाळ' ।

तेनेता–पु० [स० त्रिनेत्र] शिव, महादेव ।

तेपन–वि० पचास व तीन ।–पु० पचास व तीन की सख्या, ५३ ।

तेपनौ तेपन्नौ–पु० ५३ का वर्ष ।

तेपरार–देखो 'तैपरार' ।

तेपलेदिन–देखो 'तैपलेदिन' ।

तेम–क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे । तैसे ।

तेमड़ा, तेमडाराय–स्त्री० आवड देवी का एक नाम ।

तेमड़ौ–पु० जैसलमेर का एक पर्वत ।

तेमण–देखो 'तीवण' ।

तेमरू–पु० आबनूस का वृक्ष ।

तेमा–क्रि०वि० तैसा ।

तेयंसी–देखो 'तेजस्वी' । (जैन)

तेय–देखो 'तेज' । (जैन)

तेयलेस्सा–देखो 'तजोलेस्या' ।

तेयौ–देखो 'तीयौ' ।

तेर, तेरइ–देखो 'तेरै' ।

तेरतेरम, तेरमुउ, तेरमू, तेरमौ–वि० [सं० त्रयोदशम.] तेरहवां, बारह के बाद वाला ।

तेरस, तेरसि, तेरसी–स्त्री० [स० त्रयोदशी] प्रत्येक मास के प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी तिथि।

तेरह–वि० दश व तीन।

तेरहमौ (वौं)–वि० (स्त्री० तेरहमी, वी) तेरह के स्थान वाला, बारह के बाद वाला।

तेरही–स्त्री० १ मृतक का तेरहवा दिन। २ इस दिन किया जाने वाला पिंडदान, ब्राह्मण भोजन आदि।

तेराणमौ (वौं)–वि० तिराणु के स्थान वाला, ९३ वा, बराणु के बाद वाला। –पु० ९३ का वर्ष।

तेरा–देखो 'तेरै'।

तेराताळी–स्त्री० १ शरीर पर तेरह स्थानों पर बधे मजीरो को बजाने की क्रिया। २ उक्त प्रकार से मजीरे बजाने से उत्पन्न ध्वनि। ३ उक्त प्रकार के वाद्य बजाने वाली मडली।

तेरापथ–पु० जैन श्वेतावर शाखा की एक प्रशाखा।

तेरापथी–पु० उक्त शाखा का अनुयायी।

तेरायळ–वि० १ बदमाश, दुष्ट। २ क्रोधी। ३ दोगला।

तेराहियौ–पु० [स० त्र्यहिक] प्रति तीसरे दिन आने वाला ज्वर।

तेरिंदी–पु० तीन इन्द्रियो वाला जीव या प्राणी।

तेरिमू–देखो 'तेरमउ, तेरमौ'।

तेरीर–देखो 'तहरीर'।

तेरुडी–पु० मकर सक्राति के दिन किया जाने वाला विभिन्न प्रकार की तेरह-तेरह वस्तुओ का कन्याओ को दान।

तेरु, तेरुडौ, तेरू–वि० तैरने की कला मे प्रवीण, तैराक।

तेरे–देखो 'तेरै'।

तेरे'क–वि० तेरह के लगभग या करीब।

तेरै–वि० [स० त्रयोदश] दश और तीन। –पु० दश और तीन की सख्या, १३। –सर्व० तुम्हारे। –क्रि०वि० तब।

तेरोडौ, तेरौ–सर्व० (स्त्री० तेरी, तेरोडी) तेरा, तुम्हारा।

ते'रौ–पु० तेरह का वर्ष।

तेलंग–देखो 'तैलग'।

तेल–पु० [स० तैल] १ तिल, बीजो व वनस्पतियो से निकलने वाला स्निग्ध व तरल पदार्थ। तेल। २ मिट्टी का तेल व इसी प्रकार के अन्य तेल।

तेलकार–पु० [स० तैलकार] १ तेल का व्यापारी। २ तेली।

तेलगू–देखो 'तिलगी'।

तेलडी–स्त्री० तीन लडिकाओ की माला। –वि० तीन परत की। तीन लडी।

तेलडौ–वि० (स्त्री० तेलडी) १ तीन परत का। २ तीन लडो का। ३ तीन पक्ति का।

तेलण–स्त्री० तेली की स्त्री।

तेलपाल–पु० तेलियो से लिया जाने वाला कर।

तेल-फुलेल–पु० पुष्पसार, इत्र।

तेला, तेलास–स्त्री० ऊट पर सवार तीन व्यक्ति।

तेलायौ–पु० तीन व्यक्तियो की सवारी वाला ऊट।

तेलार–पु० तेली।

तेलिण–देखो 'तेलण'।

तेलियौ–वि० १ तेल की तरह चिकना, चमकीला। २ तेल के रग का मटमैला। –पु० १ तेल के रग का एक ऊट विशेष। २ उक्त रग का घोडा। ३ एक प्रकार का बबूल। ४ सीगिया नामक विष। ५ श्याम रग का भैरव। ६ एक तरह का साप। ७ तेल मे भीगा वस्त्र। ८ एक प्रकार का सिंह। ९ वर्षा ऋतु मे होने वाला एक कीडा। —**कद**–पु० एक प्रकार का जमीकद। —**कत्थौ**–पु० एक प्रकार का काला कत्था। —**कुमैत**–पु० कुमैत या काले रग का घोडा। —**पाणी**–वि० तेल की चिकनाई वाला पानी। —**सुरग**–पु० एक प्रकार का घोडा। —**सुहागौ**–पु० चिकना व श्याम रग का सुहागा।

तेली–पु० [स० तैलिक] (स्त्री० तेलण) कोल्हू मे सरसो या तिल पेर कर तेल निकालने का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। —**वाडौ**–पु० तेलियो का मुहल्ला।

तेलू–स्त्री० चिकनाई, स्निग्धता।

तेळौ, तेलौ–पु० १ तीन दिन तक लगातार किया जाने वाला उपवास, व्रत। २ भादव शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक का गौ सेवा का व्रत। ३ एक साथ उत्पन्न होने वाले तीन बच्चे। ४ देखो 'तेलियौ'।

तेवड–स्त्री० १ तैयारी। २ तीन तार या लड की रस्सी। –पु० ३ विचार। ४ निश्चय, इरादा। ५ प्रबन्ध। –वि० तीन तह वाला, तिगुना, तिहरा।

तेवडणौ (बौ)–क्रि० [स० त्रिगुणाकरणम्] १ विचार करना, सोचना। २ निश्चय करना, तय करना। ३ दृढ़ निश्चय करना।

तेवडौ–वि० (स्त्री० तेवडी) १ तीन परत का, तीन तह का। २ तीन गुना।

तेवट–स्त्री० १ तवले की एक ताल। २ देखो 'तेवटियौ'।

तेवटियौ, तेवटौ–पु० १ स्त्रियो के गले का एक आभूषण विशेष। २ तीन पाट का ओढने का वस्त्र, चादर।

तेवडउ–वि० इतना, उतना।

तेवण–देखो 'तीवण'।

तेवणियौ–पु० कूए से पानी निकालने वाला।

तेवणौ (बौ)–क्रि० कूए से चरस द्वारा पानी निकालना।

तेवर, तेवरौ–स्त्री० १ क्रोध भरी चितवन, त्यौरी। २ भौह भृकुटी।

तेवाणो (बो), तेवावणो (बो)–क्रि० चरस द्वारा कूए से पानी निकलवाना ।
तेवारी–देखो 'तिवारी' ।
तेवीस–देखो 'तेईस' ।
तेवीसो–देखो 'तेईसो' ।
तेस–क्रि०वि० १ वहा । २ देखो 'तैस' ।
तेसठ–देखो 'तिरेसठ' ।
तेसठो–देखो 'तिरेसठो' ।
तेसौ-सर्व० वैसा, तैसा ।
तेह–पु० [स० तैक्ष्ण्य] १ क्रोध, गुस्सा । २ अहकार, गर्व । ३ देखो 'ते' ।
तेहखानो–देखो 'तहखानो' ।
तेहड़ो–वि० (स्त्री० तेहडी) तैसा, वैसा ।
तेहत्त–देखो 'तहत' ।
तेहथी–स्त्री० बकरी के बालो का बना, आगन मे बिछाने का मोटा वस्त्र ।
तेहनि–सर्व० उसे, उसको ।
तेहरो–देखो 'तेहडो' । (स्त्री० तेहरी)
तेहवइ–वि० तैसी, वैसी । –क्रि०वि० तब ।
तेहवउ–वि० तैसा, वैसा । –क्रि०वि० तब ।
तेहवि (वी)–वि० तैसी, वैसी । –क्रि०वि० तब, उस समय ।
तेहवै–क्रि०वि० तब ।
तेहवो–वि० [स० तादृश] (स्त्री० तेहवी) वैसा, तैसा ।
तेहस्यू–क्रि०वि० उससे ।
तेहि–क्रि०वि० वहां, तहा । –सर्व० उस ।
तेही–वि० [स० तीक्ष्ण] १ गुस्सैल, क्रोधी । २ तैसा, वैसा । –क्रि०वि० उसी प्रकार ।
तेहोतर–देखो 'तिहोतर' ।
तेहोतरो–देखो 'तिहोतरो' ।
तेहो–वि० (स्त्री० तेही) तैसा, वैसा । –सर्व० वह ।
तै–देखो 'तै' ।
तैडो–सर्व० (स्त्री० तैडी) तेरा ।
तैनाळ–देखो 'तहनाळ' ।
तैयासियो–देखो 'तइयासियो' ।
तैयासी–देखो 'तइयासी' ।
तै–पु० [अ०] १ निर्णय, निश्चय, फैसला । २ नमी आर्द्रता । ३ मोह । ४ हित । –स्त्री० ५ काति । ६ ध्वनि । ७ तह, परत । ८ पूर्णता । –वि० निर्णीत, निर्धारित । निश्चित, तयशुदा । पूर्ण, पूरा । –सर्व० जिसको, उसको । तू, तुम, आप । वह, उस । –अव्य० किसी शब्द पर जोर देने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय । –प्रत्य० तृतीय व पंचम विभक्ति, से ।
तैई–सर्व० तेरी ।
तै'कीकत, तै'कीकात, तै'कीगात–देखो 'तहकीकात' ।
तै'खानो–देखो 'तहखानो' ।
तैगधारी–देखो 'तेगधारी' ।
तैडी–वि० तैसी, वैसी ।
तैडो–वि० (स्त्री० तैडी) तैसा, वैसा ।
तैजस–देखो 'तेजस' ।
तैडो–देखो 'तैडो' । (स्त्री० तैडी)
तैण–वि० तैसा, वैसा । –सर्व० उस, वह ।
तैतळ, तैतिळ–पु० [स० तैतिल] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणो मे से चौथा । २ देवता ।
तैत्तिरि–पु० [स०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम ।
तैत्तिरीय–स्त्री० कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा । —आरण्यक–पु० उक्त शाखा का एक अग ।
तैत्तिरीयक–पु० [स०] तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी ।
तैत्तिल–देखो 'तैतिल' ।
तैथु, तैथू–क्रि०वि० [स० तत्र] वहा । तहा ।
तैनात–वि० १ नियुक्त, मुकर्रर । २ तत्पर, तैयार ।
तैनाती–स्त्री० नियुक्ति ।
तैनाळ–देखो 'तहनाळ' ।
तैपरार–पु० [स० तत्परारि] विगत तीसरा वर्ष ।
तैपैलैदिन–पु० आगामी पाचवा या छठा दिन ।
तैम–वि० तैसे ।
तैयाळी, तैयांळीस–देखो 'तयाळीस' ।
तैयांळीसो–देखो 'तयाळो' ।
तैयार–वि० [अ०] १ तत्पर, उद्यत, तैयार । २ कार्य के लिए उपयुक्त, ठीक । ३ मौजूद, उपस्थित । ४ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा । ५ बनकर पूरा, पूर्ण । ६ प्रयोग मे आने लायक । ७ कटिबद्ध, सन्नद्ध । ८ सजा हुआ, व्यवस्थित ।
तैयारी–स्त्री० १ तैयार होने की क्रिया या भाव । २ तत्परता मुस्तैदी । ३ धूमधाम । ४ सजावट । ५ व्यवस्था, प्रबध ।
तैयो–पु० मिट्टी का छोटा पात्र विशेष ।
तैरणो (बो)–देखो 'तिरणो' (बो) ।
तैराई–स्त्री० १ तैरने की क्रिया या भाव । २ तैरने की कला । ३ तैरने के कार्य से मिलने वाला धन ।
तैराक–वि० तैरने के कार्य मे दक्ष, निपुण ।
तैराणो (बो), तैरावणो (बो)–देखो 'तिराणो' (बो) ।
तैरायळ–देखो 'तेरायळ' ।
तैरीख–देखो 'तारीख' ।
तैलग–पु० १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश । २ इस प्रदेश का निवासी ।
तैलगी–स्त्री० उक्त प्रदेश की भाषा । –वि० उक्त प्रदेश सबधी ।

तैलगी–पु० उक्त प्रदेश का निवासी ।
तैलकार–देखो 'तेलकार' ।
तैं'लकौ–देखो 'तहलको' ।
तैलिंग–पु० ब्राह्मणो का एक भेद विशेष ।
तैवडौ–देखो 'तेवडौ' ।
तैवार, तैवार–देखो 'तिवार' ।
तैंस–पु० १ आवेश, जोश । २ क्रोध, गुस्सा ।
तैं'स-नैं'स–देखो 'तहस-नहस' ।
तैं'सील–देखो 'तहसील' । —दार='तहसीलदार' ।
तैसौ–वि० (स्त्री० तैसी) उस प्रकार का, वैसा ।
तैहरू–पु० हाथी की पीठ पर चारजामे के नीचे रखा जाने वाला वस्त्र ।
तैहौ–देखो 'तैसौ' । (स्त्री० तैही)
तो–देखो 'तो' ।
तोगड–देखो 'तागड' ।
तोद–स्त्री० वडा पेट, उदर ।
तोदल–वि० वडे पेट वाला, तोदू । (स्त्री० तोदली)
तोदी–स्त्री० [स० तुडी] नाभी ।
तोदीलौ, तोदेल–वि० वडे पेट वाला, तोदू । (स्त्री० तोदीली)
तो–सर्व० [स० तत्त] १ तुम्हारा, तेरा । २ तुझ । ३ 'तू' का कर्म और सम्प्रदान कारक रूप, तुझको । ४ तेरे, तुम्हारे । –अव्य० [स० तद्] १ उस दशा मे, तब । २ किसी शब्द पर जोर देने के लिए प्रयुक्त अव्यय ।
तोइ (ई)–पु० [स० तोय] १ तेज, काति, आभा, दीप्ति । २ देखो 'तोय' । –सर्व० १ तेरी । २ तुमसे, तुझसे, तुझे । –अव्य० इस पर भी, तो भी, तब भी ।
तोईद–देखो 'तोयद' ।
तोक–पु० [अ० तौक] १ हसुली के आकार का गले का एक आभूपण विशेप । २ हसुली के आकार का अपराधी के गले का फदा । ३ पक्षियो के गले का वृत्ताकार चिह्न । ४ देखो 'तोख' । –वि० [स० स्तोकम्] थोडा, कम, तुच्छ ।
तोकणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार के लिए शस्त्र उठाना । २ प्रहार या वार करना । ३ सभालना, थामना, पकडना ।
तोकायत–वि० १ शस्त्र उठाने वाला । २ शस्त्रधारी ।
तोख–पु० [स० तोप] १ सतोप, तृप्ति । २ मान, प्रतिष्ठा । ३ देखो 'तोक' ।
तोखणौ(बौ)–क्रि० १ सतुष्ट करना । २ देखो 'तोकणौ'(बौ) ।
तोखार–देखो 'तुखार' ।
तोखारी–पु० अश्व, घोडा ।
तोखारी–देखो 'तोक' ।

तोग–पु० [स० तूग] १ मुगल शासनकाल मे मनसवदारो को सम्मान के लिए दिया जाने वाला ध्वज । २ सेना का झडा या निशान ।
तोड–पु० १ तोडने की क्रिया या भाव । २ नदी, बाघ आदि का टूटा हुआ भाग । ३ टूटा हुआ कोई भाग । ४ कुश्ती का एक दाव । ५ रोग से शारीरिक क्षीणता । ६ वजन उठाने से शरीर के सधिस्थलो की क्षति । ७ चौसर खेल का एक दाव । ८ सगीत मे ताल का मान । ९ पहले-पहल निकाला हुआ शराव । १० युवती का कौमार्य खण्डन । ११ जवाव । १२ मुकावले मे ठहरने वाली वस्तु । १३ समाधान । १४ काट । १५ कमी, घटत ।
तोडकौ–वि०(स्त्री० तोडकी) १ काटने वाला । २ तोडने वाला ।
तोडजोड–पु० १ चाल, युक्ति । २ दाव, पेच । ३ अपना मतलब या स्वार्थ सिद्धि ।
तोडणौ (बौ)–क्रि० १ झटका या आघात लगा कर किसी वस्तु को खडित करना, टुकडे-टुकडे करना । २ वारीक करना, कूटना । ३ विभक्त करना, अलग करना । ४ नष्ट करना । ५ मारना, सहार करना । ६ काटना । ७ विताना, व्यतीत करना । ८ क्षीण या कमजोर करना । ९ भाव आदि घटाना, कम करना । १० तोड-फोड करना । ११ कूए का पानी खारी कर देना । १२ किसी युवती का कौमार्य भग करना । १३ सेंध लगाना । १४ क्रम भग करना, वद करना । १५ मर्यादा का उल्लघन करना । १६ मिटाना । १७ निर्धन करना । १८ पृथक करना, दूर करना ।
तोड़ादार–स्त्री० पलीते से छोडी जाने वाली एक प्रकार की वन्दूक ।
तोड़ायत–देखो 'तोटायत' ।
तोडासाट–पु० स्त्रियो के पैरो का आभूपण, नूपुर ।
तोडियौ–देखो 'तोडौ' ।
तोड़ेदार–देखो 'तोडादार' ।
तोडौ–पु० १ स्त्रियो के पाव का आभूपण । २ हाथी के पैर का आभूपण । ३ रुपये रखने की थैली । ४ नदी का किनारा । ५ घाटा, कमी । ६ न्यूनता, अभाव । ७ वन्दूक या तोप का पलीता । ८ सोने-चादी के तारो की रस्सी । ९ रस्सी का टुकडा । १० चकमक लगाने से आग निकलने वाला लोहा । ११ कष्ट, तकलीफ । –वि० १ काटने वाला । २ मारने वाला ।
तोच, तोचौ, तोछ–वि० १ थोडा, कम, न्यून । २ अल्प, तुच्छ । ३ छिछला । ४ क्षुद्र । —बुद, बुध–वि० अल्प बुद्धि, अल्पमति ।
तोछड़ी–देखो 'तोच, तोचौ' ।

तोछौ–देखो 'तोचौ'। (स्त्री० तोछी)

तोजड–स्त्री० अधूरा गर्भ गिराने वाली गाय।

तोजी–स्त्री० १ उपाय, तरकीब, युक्ति। २ विकल्प।

तोट–स्त्री० १ कगाली, निर्धनता। २ कमी, घाटा, अभाव।

तोटक–पु० [सं०] १ शकराचार्य के चार प्रधान शिष्यो मे से एक। २ एक वर्ण वृत्त।

तोटकियौ–पु० दस-बारह क्यारियो का समूह।

तोटकौ–देखो 'टोटकौ'।

तोटणौ–वि० टूटने वाला, खड-खड होने वाला।

तोटायत–वि० १ निर्धन, दरिद्र। २ दु खी, सतप्त। ३ अभाव ग्रस्त।

तोटौ–देखो 'टोटौ'।

तोठौ–वि० [स० तुष्ट] १ प्रसन्न खुश। २ सतुष्ट, तृप्त।

तोड–देखो 'टोड'।

तोडडली–स्त्री० १ एक मारवाडी लोक गीत। २ देखो 'टोड'।

तोडडौ–देखो 'टोडियौ'।

तोडर–पु० १ स्त्रियो के पाव का एक आभूषण। २ देखो 'टोडर'।

तोडरौ–१ देखो 'टोडरौ'। २ देखो 'तोडियौ'।

तोडारू–पु० ऊट, छोटा ऊट।

तोडियो–पु० १ ऊट का बच्चा। २ एक लोक गीत विशेष।

तोडी–स्त्री० एक प्रकार की सरसो। २ मकानो व दीवारो मे लगने वाला अश्वमुखी पत्थर। ३ देखो 'टोडी'।

तोडूकणौ (बौ)–देखो 'ताडूकणौ' (बौ)।

तोडौ–देखो 'टोडौ'।

तोत, तोतक–पु० १ धोखा, छल, कपट। २ षडयत्र। ३ ढोग, पाखड। ४ झूठ, असत्य। ५ हकलाहट।

तोतळा–स्त्री० १ पार्वती। २ दुर्गा देवी।

तोतळौ–वि० (स्त्री० तोतळी) हकला कर बोलने वाला।

तोतापुरी–स्त्री० आमो की एक किस्म व इस किस्म का आम।

तोतीवलाय–वि० मूर्ख।

तोतौ–पु० [फा० तोता] १ हरे रग का एक प्रसिद्ध पक्षी, कीर, शुक। २ बन्दूक की कल। –वि० (स्त्री० तोती) तुतला कर बोलने वाला, हकलाने वाला।

तोत्र–पु० [स०] १ बरछा, भाला। २ अकुश। ३ कीलदार चाबुक। ४ मवेशी हाकने की छडी। —**महानट**–पु० शिव, महादेव।

तोद–पु० [स०] कष्ट, पीडा, व्यथा। –वि० कष्ट देने वाला, सताने वाला।

तोदन–पु० १ तोत्र, चाबुक। २ कष्ट, पीडा।

तोदरी–स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष।

तोप–स्त्री० [तु०] युद्धादि मे गोला चलाने का बडा यत्र, बडी बन्दूक। —**खानौ**–पु० उक्त यत्र व इसका सामान रखने का कक्ष।

तोपची–पु० [तु०] तोप चलाने वाला व्यक्ति, गोलंदाज।

तोफ–देखो 'तोप'।

तोफगी–स्त्री० [फा० तुहफा] १ अच्छापन, खूबी, विशेषता। २ नमूना।

तोफान–देखो 'तूफान'।

तोफौ–पु० [अ० तुहफ] १ उपहार, भेंट। २ भेंटस्वरूप दी जाने वाली वस्तु। ३ बनाव, आडबर। –वि० बढिया, सुन्दर, अच्छा।

तोब–देखो 'तोबा'।

तोबड, तोबडियौ, तोबडौ–वि० १ मोटा, ताजा, हृष्ट-पुष्ट। २ देखो 'तोबर'। ३ देखो 'थोबडौ'।

तोबची–देखो 'तोपची'।

तोबणौ (बौ)–देखो 'चोबणौ' (बौ)।

तोबर–पु० [फा०] १ घोडे को दाना खिलाने का थैला। २ गैब।

तोबरदार–वि० रौबदार।

तोबराळ–पु० घोडा, अश्व।

तोबरौ–१ देखो 'तोबर'। २ देखो 'थोबडौ'।

तोबा–स्त्री० [अ० तौब] १ अपने कुकृत्यो या गलतियो के प्रति किया जाने वाला, पश्चाताप। २ प्रायश्चित। ३ खेद, अफसोस। ४ आश्चर्यजनक खेद। ५ घृणा व भर्त्सना सूचक शब्द। ६ त्याग। ७ बुरे कार्यों के त्याग का सकल्प।

तोबाकू–देखो 'तमाकू'।

तोम–पु० [स० स्तोम] १ यज्ञ, हवन। २ अधकार। ३ दल। ४ सेना। ५ झुण्ड, समूह। –वि० १ सब, समस्त। २ अधिक, बडा।

तोमडी–देखो 'तु बी'।

तोमर–पु० [स०] १ लोहे का बडा फल लगा भाले के आकार का शस्त्र। २ बरछा। ३ बाण, तीर। ४ एक प्राचीन देश। ५ एक छन्द विशेष। ६ देखो 'तवर'।

तोमरार–पु० शस्त्र।

तोय–पु० [स०] १ जल, पानी। २ पूर्वाषाढा नक्षत्र। –क्रि०वि० तो भी, तथापि। –सर्व० तेरा, तुम्हारा।

तोयचौ–पु० एक नृत्य विशेष।

तोयद–पु० [स०] १ बादल, मेघ। २ घृत, घी। ३ नागर मोथा। –वि० जलदान करने वाला। जल देने वाला।

तोयदागम–स्त्री० [स०] वर्षा ऋतु।

ोयध, (धर, धार)–पु० [सं० तोय-धर] १ बादल, मेघ। २ देखो 'तोयधि'।

ोयधि (धी, निध, निधी)–पु० [स०] समुद्र, सागर।

ोयनीवी–स्त्री० [स०] पृथ्वी, भूमि।

ोयेस–पु० [स० तोयेश] समुद्र।

ोर–पु० [स० तुवर] १ अरहर। २ देखो 'तौर'। –सर्व० तेरा, तुम्हारा।

ोरइ (ई)–१ देखो 'तोरू'। २ देखो 'तोरे'।

ोरउ–सर्व० तेरा, तुम्हारा।

तोरकी, तोरकू, तोरको–१ देखो 'तुरकी'। २ देखो 'तुरक'।

ोरडो–पु० (स्त्री० तोरडी) १ ऊट का बच्चा। २ शतरज का एक मोहरा। –सर्व० तेरा, तुम्हारा।

ोरण (णि)–पु० [स०] १ किसी नगर या भवन का मण्डपाकार व सजा हुआ मुख्य प्रवेश द्वार। २ मेहरावदार द्वार। ३ विवाहादि मागलिक अवसरो पर बनाया हुआ अस्थाई द्वार। ४ बास की खपचियो व काठ की चिडियो का बना उपकरण जो कन्या के विवाह के समय पिता के द्वार पर बाधा जाता है। ५ सजावट की मालायें, बदरवार आदि। ६ हथेली मे होने वाला एक सामूद्रिक चिह्न विशेप। ७ ऊट की नकेल का फदा। ८ विशाखा नक्षत्र का एक नाम। —**घोडो**-पु० जिस घोडे पर बैठकर दूल्हा तोरण वदना करता है। —**छडी**-स्त्री० तोरण के अभिवादन की कोई हरी टहनी। —**थब, थभ, थाभ**-पु० कन्या के विवाह पर घर मे स्थापित किया जाने वाला काष्ठ का छोटा स्तभ विशेष। —**पूठी**-स्त्री० विवाह के अवसर पर ब्राह्मण द्वारा किया जाने वाला एक मत्रोचार। —**वार**-स्त्री० वदनवार। —**स्तम**='तोरण-थाभ'।

तोरणदारलगाम–स्त्री० पैनी व छोटी कीलें लगी घोडे की लगाम।

तोरणमाल (ळ)–स्त्री० [स०] अवतिकापुरी।

तोरणियो–पु० १ मध्य ललाट पर भौंरी वाला बैल। २ देखो 'तोरण'।

तोरणो–पु० १ गेहूँ आदि की फसल काटने का क्रम। २ क्रमश काटा जाने वाला फसल का भाग। ३ एक प्रकार का घोडा। ४ देखो 'तोरण'।

तोरणो (बो)–देखो 'तोड़णो' (बो)।

तोरी–सर्व० १ तेरी, तुम्हारी। २ देखो 'तोरू'।

तोरु, तोरु–सर्व० १ तुम्हारा, तेरा। २ देखो 'तोरू'।

तोरुव–स्त्री० तुरई से मिलती-जुलती एक देवदाली नामक लता।

तोरू, तोरू–स्त्री० १ चौडे पत्ते व पीले फूलो की एक लता। २ इस लता का पतला व लबा फल जिसकी सब्जी बनती है, तुरई।

तोरे–क्रि०वि० तव। –सर्व० तेरे, तुम्हारे।

तोरो–सर्व० (स्त्री० तोरी) तेरा, तुम्हारा। –पु० १ रग-ढग, चाल-ढाल। २ प्रभाव। ३ सीमा, किनारा। ४ देखो 'तोडो'।

तोल–पु० [स० तौल] १ तराजू। २ तोलने का उपकरण। ३ वजन, भार। ४ परिमाण का अदाज, अनुमान। ५ थाह। ६ स्थिरता, दृढता, अटलता। ७ मान, प्रतिष्ठा, बडप्पन। ८ अधिकार, कब्जा, वश। ९ शक्ति, बल। १० विपदा, विपत्ति। ११ इज्जत। १२ स्वभाव, प्रकृति। १३ विचार। १४ ध्वज। –वि० समान, तुल्य।

तोलड़ी–स्त्री० मिट्टी का छोटा पात्र।

तोलणो–वि० तोलने वाला।

तोलणो (बो)–क्रि० [स० तोलनम्] १ तराजू या तकडी मे रख कर किसी वस्तु का वजन या भार ज्ञात करना। २ कुछ निश्चित वजन के लिए वस्तु को तराजू मे डाल कर सतुलन करना। ३ सौदा वेचने के लिए वस्तुओ का तौल-जोख करना। ४ तुलना करना, मिलान करना। ५ प्रहार के लिए शस्त्रादि को हाथ मे लेकर साधना। ६ युद्ध करना, मुकाबला करना, सामना करना। ७ सहार करना, मारना। ८ चिन्तन करना, विचार करना, मनन करना। ९ अनुमान या अदाजा लगाना। १० समझ मे बैठाना। ११ उचित-अनुचित का ध्यान करना।

तोलरिण–पु० युद्ध का झण्डा, पताका।

तोलाई–देखो 'तुलाई'।

तोलाछपाई–पु० एक प्रकार का प्राचीन सरकारी कर।

तोलाणो (बो), तोलावणो (बो)–देखो 'तुलाणो' (बो)।

तोलायत–पु० १ खलिहान मे अनाज तौलने का कार्य करने वाला अनुचर। २ तौलने वाला। ३ उक्त नाम से लिया जाने वाला कर।

तोलियो–देखो 'तौलियो'।

तोले, तोलै–वि० [स० तुल्य] समान, सदृश, बराबर।

तोळो–पु० [स० तोलक] १ बारह माशे भर का एक तौल। २ इस तौल का बाट या सिक्का। ३ ऊटो का एक रोग। ४ इस रोग से पीडित ऊट।

तोलो–पु० [स० तौल] १ तौलने का उपकरण, बाट। २ अण्ड-कोश। ३ देखो 'तोल'। ४ देखो 'तोळो'।

तोवो–देखो 'तवो'।

तोस–पु० [स० तोष] १ सतोष, तृप्ति। २ प्रसन्नता। [फा० तोश] ३ भोज्य पदार्थ, खाने का सामान। ४ वस्त्र, कपडा। ५ सफर का सामान। ६ शक्ति, बल।

तोसक–स्त्री० [फा० तोशक] १ गद्देदार, बिछौना, बिस्तर। २ गद्दी-तकिया। ३ गृहस्थी का सामान। ४ खाने-पीने का

मामान । –वि० [स० तोषक] सतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला ।

तोसण–पु० [स० तोपण] तृप्ति, सतोष । प्रसन्नता । –वि० मतुष्ट, प्रसन्न ।

तोसणौ (बौ)–क्रि० स० [स० तोपणम्] सतुष्ट करना, तृप्त करना । सतुष्ट होना ।

तोसदान–पु० [फा० तोशादान] १ यात्रा आदि मे भोजन सामग्री साथ ले जाने का थैला । २ रुपये पैसे रखने का थैला । ३ सिपाहियो की, कारतूस की कमर पेटी ।

तोसल–पु० [स० तोषल] १ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया कस का एक मल्ल । २ मूसल ।

तोसाखानौ–पु० [फा० तोश खान] १ खाद्य सामग्री रखने का कक्ष, रसोईघर । २ अमूल्य वस्त्राभूपण रखने का कक्ष ।

तोसित–वि० [स० तोषित] सतुष्ट, तृप्त ।

तोहफौ–देखो 'तोफौ' ।

तोहमत–स्त्री० [अ०] १ मिथ्या अभियोग । २ झूठा कलक, झूठी वदनामी ।

तोहारौ, तोहाळौ–सर्व० तेरा, तुम्हारा ।

तोहि, (ही)–देखो 'तोई' ।

तोहीन–देखो 'तौहीन' ।

तौ–देखो 'तो' ।

तौइ, तौई–देखो 'तोइ' ।

तौक, तौख–देखो 'तोक', 'तोख' ।

तौडौ–देखो 'तोडौ' ।

तौछ–देखो 'तोछ' ।

तौदार–वि० ओजस्वी, तेजस्वी ।

तौबत–स्त्री० [अ०] १ अपमान, अनादर । २ देखो 'तोहमत' ।

तौम–देखो 'तोम' ।

तौमर–देखो 'तोमर' ।

तौर–पु०[अ०]१ चाल-चलन । चाल-ढाल । २ मान, प्रतिष्ठा । ३ ऐश्वर्य, वैभव । ४ प्रभाव, रौब । ५ तेज, पराक्रम । ६ अवस्था, दशा । ७ गर्व, अभिमान । ८ इरादा, रुख । ९ रग-ढग । १० शैली, पद्धति, तरीका । ११ लक्षण ।

तौरणौ (बौ)–क्रि० १ जोश पूर्वक आगे वढना । बढाना । २ देखो 'तोडणौ' (बौ) ।

तौरा–क्रि०वि० वहा, तहा ।

तौरात–देखो 'तौरेत' ।

तौरावटी (वाटी)–देखो 'तवरावटी' ।

तौरौ–पु० १ मोट की लाव का एक भाग । २ देखो 'तोरौ' ।

तौल–देखो 'तोल' ।

तौलणौ (बौ)–देखो 'तोलणौ' (बौ) ।

तौलाई–देखो 'तुलाई' ।

तौलाणौ (बौ), तौलावणौ (बौ)–देखो 'तुलाणौ' (बौ) ।

तौलियौ–पु० [अ० टावल] स्नान करके शरीर पौंछने का छोटा वस्त्र, अगोछा ।

तौहि तौही–देखो 'तोई' ।

तौहीन, तौहीनी–स्त्री० [स० तौहीन] अपमान, अनादर, अप्रतिष्ठा ।

त्रौ–अव्य० ऊट आदि को पानी पिलाते समय बोला जाने वाला शब्द ।

त्यहार–देखो 'तिवार' ।

त्यउ–क्रि०वि० वैसे, तैसे ।

त्यजउ–वि० [स० त्यक्त] छोडा हुआ, त्यक्त ।

त्यजणौ (बौ)–देखो 'तजणौ' (बौ) ।

त्या–सर्व० १ उन । २ उसके, उनके । ३ उनका । ४ उनको । ५ उन्होने । –क्रि०वि० १ वहा, तहा । २ तैसे । ३ देखो ता' । –अव्य० तक पर्यन्त ।

त्याही–सव० उसी । वैसे ही ।

त्या–सर्व० वह, उस ।

त्याग–पु० पु० [स०] १ छोडने की क्रिया या भाव । २ किसी बात, आदत या वस्तु को हमेशा के लिए छोड देने की अवस्था । ३ परहेज । ४ किसी वस्तु आदि से अपना स्वत्व हटा लेने की अवस्था । ५ उत्सर्ग, दान । ६ विरक्ति, तटस्थता । ७ दान स्वरूप दिया जाने वाला द्रव्य । ८ उदारता । ९ विरक्ति, उदासीनता । १० पसेव । ११ विच्छेद ।

त्यागण–पु० परित्याग, उत्सर्ग आदि की क्रिया । –वि० त्याग करने वाला ।

त्यागणौ (बौ)–क्रि० १ तजना, छोड देना । २ हमेशा के लिए छोड देना । ३ परहेज करना । ४ सबध न रखना । ५ विरक्त होना । ६ तटस्थ होना । ७ उत्सर्ग करना, दान करना । ८ उदारता करना ।

त्यागधारी–वि० [स०] १ जिसने त्याग किया हो । २ उदासी, विरक्त । ३ दानी, उदार । ४ त्यागी ।

त्याग-पत्र–पु० [स०] १ इस्तीफा । २ तलाकनामा ।

त्यागी–वि० १ त्याग करने वाला । २ उदासी, विरक्त । ३ उदार, दानी, दातार । ४ वीर, बहादुर । ५ फल की आशा न रखने वाला ।

त्यार–देखो 'तैयार' ।

त्यारणी–देखो 'तारणी' ।

त्यारा–क्रि०वि० तव । –सर्व० उनका ।

त्यारी–देखो 'तैयारी' ।

त्यारु (रू)–देखो 'तारू' ।

त्याव–पु० [स० त्रिपाद] बडी तिपाई ।

त्याहार–क्रि०वि० तव ।
त्युं, त्यू–क्रि०वि० १ तैसे, जैसे । २ वैसा ।
त्यू हार–देखो 'तिवार' ।
त्यो–क्रि०वि० १ उस, भांति, उस प्रकार, उस तरह । २ वैसा ।
त्योरी–स्त्री० चितवन, दृष्टि, अवलोकन । भृकुटि ।
त्योहार–देखो 'तिवार' ।
त्यौं, त्यौ–सर्व० १ तेरे । २ उनके । ३ देखो 'त्यो' ।
त्यौणी–वि० तिगुणा ।
त्यौर, त्यौरी–देखो 'त्योरी' ।
त्यौहार–देखो 'तिवार' ।
त्रंब–स्त्री० [स० अम्बिका] १ देवी । २ देखो 'तव' । ३ देखो 'त्रंबक' ।
त्रंबक–पु० [स० त्र्यंबक] १ महादेव, रुद्र । २ नगाडा ।
त्रंबगळ, त्रंबट, त्रंबटौ, त्रंबयळ–पु० नगाडा ।
त्रंबा–स्त्री० १ घोडी । २ देखो 'तव' ।
त्रंबाक, त्रंबाकियो, त्रंबागळ, त्रंबागळो, त्रंबाट, त्रंबाळ त्रंबाळो, त्रंबोक, त्रंमक, त्रंमाट, त्रंमाळ, त्रंमाळो–पु० [स० ताम्रिक] नगाडा, रणवाद्य ।
त्रंवट त्रंवठ–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।
त्रंवाट–देखो 'त्रबाट' ।
त्रंवाळ–स्त्री० १ मूर्छा, बेहोशी । २ देखो 'त्रंबाळ' ।
त्र–वि० तीन ।
त्रइ, त्रई–वि०[स०]तीन । —लोक–पु० तीनो लोक, त्रिलोकी । —लोकनाथ='त्रिलोकनाथ' ।
त्रईतन–पु० [स० त्रयीतनु] सूर्य, भानु ।
त्रईविक्रम–देखो 'त्रिविक्रम' ।
त्रकाळ–देखो 'त्रिकाळ' ।
त्रकाळग्य–देखो 'त्रिकालग्य' ।
त्रकाळदरसी–देखो 'त्रिकालदरसी' ।
त्रकुकुत–पु० [स० त्रिककुद्] पहाड, पर्वत ।
त्रकुट–पु० १ एलची । २ लका का एक पर्वत । —वासो, वासी–पु० लकावासी । रावण ।
त्रकुटाण–पु० लका का पर्वत ।
त्रकुटाचल–पु० त्रिकूट पवत ।
त्रकुटी–देखो 'त्रिकुटी' ।
त्रकूण–देखो 'त्रिकोण' ।
त्रकूटबध–पु० डिंगल का एक छन्द या गीत ।
त्रकूणौ–पु० १ जैसलमेर के गढ़ का नाम । २ देखो 'त्रिकोण' ।
त्रक्ख, त्रख, त्रखा–स्त्री० [स० तृषा] १ प्यास । २ तृष्णा । ३ अभिलाषा, इच्छा । ४ लोभ, लालच । ५ कामदेव की कन्या ।
त्रखातुर, त्रखावत, त्रखित–वि० [स० तृषार्त, तृषावान, तृषित] प्यासा, तृषातुर । अभिलाषी । लोभी ।
त्रखूणौ–१ देखो 'त्रकूणौ' । २ देखो 'त्रिकोण' ।
त्रख्यण–देखो 'त्रखा' ।
त्रगुट–देखो 'त्रिकूट' ।
त्रगुण–देखो 'त्रिगुण' । —नाथ='त्रिगुणनाथ' ।
त्रघाई–स्त्री० ढोल या नगाडे की ध्वनि ।
त्रड–देखो 'तड' ।
त्रडत्रडणौ (बौ)–देखो 'तडतडणौ' (बौ) ।
त्रजड–देखो 'त्रिजड' ।
त्रजडाहत (हथ, हाथ)–देखो 'त्रिजडाहथ' ।
त्रजडी–देखो 'त्रिजड' ।
त्रजट–पु० १ शिव, महादेव । २ देखो 'त्रिजटा' ।
त्रजमा, त्रजामा–स्त्री० [स० त्रियामा] रात्रि, निशा ।
त्रटक–देखो 'ताटक' ।
त्रट–स्त्री० १ प्यास । २ लोभ । ३ देखो 'तट' ।
त्रटकणौ (बौ)–देखो 'तडकणौ' (बौ) ।
त्रटकौ–पु० १ नाज-नखरा । २ तडक-भडक ।
त्रट्ट–देखो 'तट' ।
त्रण–देखो 'त्रिण' ।
त्रणकाळ–पु० [स० तृण-अकाल] १ घास का अभाव । २ घास के अभाव वाला वर्ष । ३ देखो 'त्रिकाल' ।
त्रणकेतु (केतुक)–पु० [स० तृणकेतु] १ वास । २ ताडवृक्ष ।
त्रणदीठ–पु० [स० त्रिदृष्टि] शिव, महादेव ।
त्रणद्रुम–पु० [स० तृण-द्रुम] खजूर ।
त्रणधज, त्रणधुज–स्त्री० [स० तृण-ध्वज] वास ।
त्रणनेण–देखो 'त्रिनयन' ।
त्रणराज (राजक)–पु० [स० तृणराज] १ ताड वृक्ष । २ बास ।
त्रणवाळ–वि० [स० त्रिण-वाल] नीला, आसमानी ।
त्रण्य–देखो 'त्रिण' ।
त्रताप–देखो 'त्रिताप' ।
त्रताळीस–देखो 'तयाळीस' ।
त्रती, त्रतीस–वि० [स० तृतीय] १ तीन, तीसरा । २ देखो 'तेतीस' ।
त्रतीया–देखो 'त्रितीया' ।
त्रत्रडणौ (बौ)–क्रि० टपकना, झरना ।
त्रदस, त्रदव–देखो 'त्रिदव' ।
त्रदवसा–देखो 'त्रिदवेसा' ।
त्रदस–वि० १ तेरह । २ देखो 'त्रिदस' । —तप='त्रिदसतप' ।
त्रदसा–देखो 'त्रिदस' ।
त्रदसाविभू–पु० [स० त्रिदश विभु] इन्द्र ।
त्रदोख, त्रदोस–देखो 'त्रिदोस' ।

त्रधा–देखो 'त्रिधा'।

त्रधार, त्रधारौ–पु० १ एक प्रकार का तीर। २ तीन तीक्ष्ण धारो का एक शस्त्र। ३ थूहर।

त्रन–देखो 'त्रिण'।

त्रनयण–देखो 'त्रिनयन'।

त्रनया–स्त्री० दुर्गा, भवानी, देवी।

त्रनेत्र, त्रनैत्र–देखो 'त्रिनेत्र'।

त्रप–पु० पलाश वृक्ष।

त्रपट–वि० [स० त्रपया] नीच, दुष्ट। पापी।

त्रपण–पु० [स० तर्पणकम्] १ तर्पण। २ तृप्ति।

त्रपणौ (बौ)–क्रि० तृप्त होना, सतुष्ट होना।

त्रपत, त्रपतक, त्रपत्त–वि० [स० तृप्त] तृप्त, सतुष्ट। प्रसन्न, खुश।

त्रपति–स्त्री० [स० तृप्ति] सतोष, तुष्टि, तृप्ति।

त्रपथा–स्त्री० [स० त्रिपथगा] गगानदी।

त्रपरार–देखो 'त्रिपुरारि'।

त्रपा–स्त्री० [स०] १ लज्जा, शर्म। २ सकोच, लिहाज। ३ ख्याति, प्रसिद्धि। ४ छिनाल स्त्री। —वत, वत–वि० लज्जालु, शर्मीला। उष्ण, गर्म।

त्रपु–पु० रागा नामक धातु।

त्रपुर–देखो 'त्रिपुर'।

त्रपुरात–पु० [स० त्रिपुर-अतक] महादेव, शिव।

त्रपुर–देखो 'त्रिपुरा'।

त्रपुरार, त्रपुरारि–देखो 'त्रिपुरारि'।

त्रपुरा-सुर-स्यांमणी–स्त्री० पार्वती।

त्रपुरी–स्त्री० छोटी इलायची।

त्रप्त–वि० [स० तृप्त] सतुष्ट, तृप्त।

त्रबक, त्रबकडो–पु० १ डिगल का एक गीत या छद। २ देखो 'त्रबक'।

त्रबाक–देखो 'त्रबागळ'।

त्रभड–देखो 'त्रभाड'।

त्रभगी–देखो 'त्रिभगी'।

त्रभाड–वि० कुख्यात, वदनाम, निन्दित।

त्रभाग, त्रभागी, त्रभागौ–पु० १ भाला। २ त्रिशूल। –वि० तीन भागो मे विभक्त, तीन भाग वाला।

त्रभुयण–देखो 'त्रिभुवन'। —नाथ='त्रिभुवननाथ'।

त्रमक, त्रमक–देखो 'त्रबक'।

त्रमागळ–देखो 'त्रबागळ'।

त्रमाट–देखो 'त्रमाट'।

त्रमाळ, त्रमाळौ–देखो 'त्रबाळ'।

त्रम्मक–देखो 'त्रबक'।

त्रय–वि० १ तीन। २ तीसरा, तृतीय।

त्रयदस, (दस्स)–वि० [म० त्रयोदश] तेरह।

त्रयनयण–देखो 'त्रिनयण'।

त्रयरूप–पु० १ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर। २ दत्तात्रेय।

त्रयलोक–देखो 'त्रिलोक'।

त्रयाळौ–देखो 'तयाळौ'।

त्रयानेता–पु० ब्रह्मा, विष्णु, महेश। –वि० तीन, तीसरा।

त्रयासियौ–देखो 'तइयासियौ'।

त्रयी–पु० [स०] १ तीन वस्तुओ का समूह। २ तीनो वेद।

त्रयीतन–पु० सूर्य।

त्रयोदस–वि० [स० त्रयोदश] तेरह।

त्रयोदसी–स्त्री० तेरह की तिथि, तेरस।

त्रयोसळ–देखो 'त्रिसळौ'।

त्ररेख–पु० [सं० त्रिरेख] १ शख। २ ललाट पर पडने वाली तीन रेखाएँ।

त्रलोक–देखो 'त्रिलोक'। —पति='त्रिलोकपति'। —राव='त्रिलोकराव'।

त्रलोचण–देखो 'त्रिलोचन'।

त्रलोचणा–देखो 'त्रिलोचना'।

त्रवक, त्रवकडौ, त्रवकौ–वि० १ वीर, योद्धा, वहादुर। २ सहारक, नाश करने वाला। ३ देखो 'त्रबक'।

त्रवळ–वि० टेढा-मेढा चलने वाला, वाका।

त्रवळि (ळी)–देखो 'त्रिवळि'।

त्रववेसा–देखो 'नदम'।

त्रवाळौ–पु० १ चक्कर। २ देखो 'तिरवाळौ'।

त्रविक्रम–देखो 'त्रिविक्रम'।

त्रवेणी–देखो 'त्रिवेणी'।

त्रवेळू–वि० तीन समय का।

त्रसझा–स्त्री० [स० त्रिसध्या] सध्या।

त्रस–पु० [स०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की शक्ति रखने वाला जीव। २ जगल, वन। ३ त्रास, भय। ४ तृपा, प्यास।

त्रसकत–पु० १ हाथ। २ देखो 'त्रिसकनि'।

त्रसगति, त्रसगती–स्त्री० [स० त्रिशक्ति] देवी, शक्ति।

त्रसटणौ (बौ)–देखो 'तिसटणौ' (बौ)।

त्रसणा–देखो 'त्रिसणा'।

त्रसणौ (बौ)–क्रि० १ डरना, भय खाना। २ फटना।

त्रसत–वि० [स० तृषित] प्यासा।

त्रसन–पु० भय, डर।

त्रसनां, त्रसना–देखो 'त्रिसना'।

त्रसर–स्त्री०–ललाट पर कोप के कारण होने वाली तीन सलवटें।

त्रसरी–स्त्री० तीन रेखायें।

त्रसळ, त्रसळी–पु० १ जोश, आवेग। २ भय। ३ घोडा, अश्व। ४ ललाट। ५ देखो 'त्रिसळी'।
त्रसा–देखो 'त्रिसा'।
त्रसाकी–वि० प्यासा।
त्रसाणो (बो)–क्रि० भय दिखाना, डराना।
त्रसावत–वि० [स० तृषावत] १ प्यासा। २ अतृप्त, असतुष्ट।
त्रसिंघ, त्रसींग, त्रसींघ–वि० बहादुर, जबरदस्त।
त्रसुर–वि० [स०] भीरु, डरपोक।
त्रसुळ, त्रसूळ–१ देखो 'त्रिसळी'। २ देखो 'त्रिसूळ'।
त्रस्त–वि० [स०] १ डरा हुआ, भयभीत। २ सताया हुआ, पीडित। ३ जिसे त्रास दी गई हो। ४ दु खी।
त्रस्सरा–देखो 'त्रिसिरा'।
त्रह–पु० १ भय, डर। ३ नगाडे की ध्वनि। –वि० तीन।
त्रहक–स्त्री० नगाडे की ध्वनि। वाद्य ध्वनि।
त्रहकणो (बो), त्रहकाणो (बो)–क्रि० १ नगाडा बजना, बजाना। २ रण भेरी बजना, बजाना।
त्रहणो (बो)–क्रि० नगाडा बजना, वाद्य बजना।
त्रहत्रहणो (बो)–देखो 'त्रहकणो' (बो)।
त्रहत्रहाटि–स्त्री० नगाडे की ध्वनि।
त्रहळकणो, (बो) त्रहळकाणो (बो)–देखो 'त्रहकणो' (बो)।
त्रहाक–देखो 'त्रहक'।
त्रहासणो (बो)–क्रि० नगाडा बजाना।
त्रहु, त्रहूँ–वि० तीन, तीनो।
त्रागड–देखो 'तागड'।
त्रागड़ी–स्त्री० एक प्रकार का शाक।
त्राण–पु० [स० त्राण] १ कवच। २ ढाल। ३ रक्षा, सुरक्षा। ४ राहत, सतोष। ५ शरण, पनाह। ६ सहायता। ७ छुटकारा, मुक्ति।
त्राणपत्र–पु० [स० त्राणपत्र] एक वृक्ष विशेष।
त्राणपोरस–पु० गर्व, अभिमान।
त्राणी–वि० [स० त्राण] १ रक्षक। २ शरण देने वाला। ३ देखो 'त्राण'।
त्रान–देखो 'त्राण'।
त्रापणो (बो)–क्रि० ऊट का उछलना, कूदना।
त्रावगळ–देखो 'त्रवागळ'।
त्रांवाक–देखो 'त्रबाक'।
त्रावाट–देखो 'त्रवाट'।
त्रावा-त्रासिया–स्त्री० ताम्र-पात्र मे उबाली हुई भाग।
त्रावाळ, त्रावाळो–देखो 'त्रबाळ'।
त्रावौ–देखो 'तावौ'।
त्रामाड–देखो 'तावाड'।
त्रामाडणो (बो)–देखो 'तावाडणो' (बो)।
त्रामाडौ–देखो 'तावाडौ'।
त्रामागळ–देखो 'त्रवाळ'।
त्रामाळ, त्रामळो–देखो 'त्रवागळ'।
त्राकडि–देखो 'ताकडी'।
त्राकळउ–देखो 'ताकळी'।
त्रागौ–देखो 'तागौ'।
त्राड–पु० १ भय, आतक, डर। २ ताड वृक्ष। –स्त्री० ध्वनि विशेष।
त्राचणो (बो)–क्रि० मारना, नष्ट करना, सहार करना।
त्राछटणो (बो)–देखो 'ताछटणो' (बो)।
त्राछण–स्त्री० [स० त्रासन] काटने की क्रिया या भाव।
त्राछणो (बो)–देखो 'ताछणो' (बो)।
त्राजु–स्त्री० तराजू, तकडी।
त्राट–स्त्री० १ एक प्रकार की तश्तरी। २ शस्त्र प्रहार। ३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि। ४ चोट, आघात, वार। ५ देखो 'ताट'।
त्राटक–पु० १ योग के षट्कर्मो मे से छठा कर्म या साधन क्रिया। २ देखो ताटक'।
त्राटकौ–पु० १ डिंगल का एक गीत या छन्द। २ देखो 'ताटक'।
त्राटि त्राटी–देखो 'टाटी'।
त्राटीहर–पु० टहनियो से बनाया हुआ मकान, घर।
त्राठ्ठौ–वि० (स्त्री० त्राठ्ठी) १ भयभीत डरा हुआ। २ पीडित।
त्राठउ–वि० [स० त्रस्त] भयभीत डरा हुआ।
त्राठणो (बो)–क्रि० [स० त्रसि] १ भागना, दौडना। २ भयभीत होना, डरना। ३ पीडित होना, सतप्त होना।
त्राड–स्त्री० दहाड, गर्जना।
त्राडकणो (बो)–क्रि० १ सिंह का गर्जना। २ साड या बैल का दहाडना।
त्राडणउ–वि० दहाडने या गर्जने वाला।
त्राडणो (बो)–क्रि० दहाडना, गर्जना।
त्राडूकणो (बो)–देखो 'ताडूकणो' (बो)
त्राता त्रातार–वि० [स० त्रातृ] १ रक्षा करने वाला, सुरक्षा करने वाला। २ बचाने वाला। ३ सरक्षक। ४ सुरक्षित।
त्राप–देखो 'ताप'।
त्रापडणो (बो)–देखो 'तापडणो' (बो)।
त्रापा–स्त्री० टपरी, झोपडी।
त्रामाडणो (बो)–देखो 'तामाडणो' (बो)।
त्रायणो (बो)–क्रि० १ भयभीत होना, डरना। २ भागना, दौडना।
त्रायमाण, त्रायमाणा, त्रायमाणिका–स्त्री० [स० त्रायमाण] वनफशे की लता। –वि० रक्षक।

त्रास-स्त्री० [सं०] १ डर, भय । २ पीड़ा, कष्ट, वेदना । ३ सताने की क्रिया । ४ किसी रत्न का दोष । ५ प्यास, तृषा ।
त्रासणौ (बौ)-क्रि० [सं० त्रासनम्] १ डरना, भयभीत होना । २ कष्ट देना, पीड़ा देना । ३ सताना । ४ दूर भागना ।
त्रासन-वि० आतंकित, भयभीत ।
त्रासमाण-वि० १ आतंकित, भयभीत । २ त्रस्त । ३ दुःखी ।
त्रासवणौ (बौ)-क्रि० १ भयभीत करना, डराना । २ देखो 'त्रासणौ' (बौ) ।
त्रासा-देखो 'त्रास' ।
त्रासो-वि० १ प्यासा, तृषायुक्त । २ त्रस्त, दुःखी । ३ भयभीत डरा हुआ ।
त्राहि-अव्य० [सं०] बचाओ-बचाओ की पुकार, करुण क्रन्दन ।
त्राहिमाण-देखो 'त्रायमाण' ।
त्रिंबागळ-देखो 'त्रबागळ' ।
त्रिंसास-पु० [सं० त्रिंशांश] १ किसी वस्तु का तीसवां अंश । २ तीसवां भाग ।
त्रि-वि० [सं०] तीन । -स्त्री० नारी, त्रिया ।
त्रिआ-देखो 'त्रिया' ।
त्रिकंटक-पु० [सं०] १ त्रिशूल । २ गोखरू नामक लता । -वि० तीन कांटे या नोक वाला ।
त्रिक-पु० [सं०] १ तीन का समूह । १ तिराहा । ३ त्रिफला । ४ त्रिकुट । ५ कमर । ६ रीढ़ का नीचला भाग । ७ शोक, खेद । -वि० १ तीन गुणा, तिगुना । २ तिहरा । ३ तीन शत ।
त्रिककुद-पु० [सं०] १ त्रिकूट पर्वत । २ विष्णु ।
त्रिकटबध-देखो 'त्रिकूटबध' ।
त्रिकरण-पु० १ मन, वचन व काया (जैन) । २ एक प्रकार का घोडा । —सुद्धि-पु० मन, वचन व काया की शुद्धि ।
त्रिकळ-पु० १ तीन मात्राओं का शब्द २ दोहे छन्द का एक भेद ।
त्रिकळस-पु० विशेष प्रकार का भवन या कक्ष ।
त्रिकळाचळ-पु० त्रिकूट पर्वत ।
त्रिकळाचळयितगति-पु० रावण ।
त्रिकलिंग-देखो 'तैलंग' ।
त्रिकसूळ-पु० रीढ़ व कमर का दर्द, एक रोग ।
त्रिकांड-पु० [सं०] १ अमर कोश का दूसरा नाम । २ निरुक्त का दूसरा नाम । -वि० तीन काण्ड या अध्याय वाला ।
त्रिकांडी-वि० तीन काण्ड वाला । -पु० कर्म, उपासना तथा ज्ञान संबंधी ग्रंथ ।
त्रिकाल-पु० [सं० त्रिकाल] १ भूत, भविष्य व वर्तमान तीनों काल । २ प्रातः, मध्याह्न व संध्या, तीनों समय । -वि० पागल, उन्मत्त ।
त्रिकाळग्य-पु० [सं० त्रिकालज्ञ] १ तीनों काल व समय की जानकारी रखने वाला, सर्वज्ञ । २ ईश्वर ।
त्रिकाळदरसी-पु० [सं० त्रिकालदर्शी] तीनों कालों की जानकारी रखने वाला ।
त्रिकाळनरेस-पु० परब्रह्म, परमात्मा ।
त्रिक्रिम-पु० [सं० त्रिविक्रम] श्रीकृष्ण, विष्णु ।
त्रिकुट-पु० १ कालीमिर्च, सोंठ व पीपर का मिश्रण । २ देखो 'त्रिकूट' । —गढ़='त्रिकूटगढ़' । —बध='त्रिकूटबध' ।
त्रिकुटा-देखो 'त्रिकूटा' ।
त्रिकुटि, तिकुटी-स्त्री० [सं० त्रिकूट] १ ललाट का मध्य भाग । २ ललाट, भाल ।
त्रिकुटी-पु० सोंठ, काली मिर्च व पीपल के मिश्रण से बनी औषधि ।
त्रिकूट-पु० [सं०] १ तीन चोटियों वाला लंका का एक पर्वत । २ लंका । ३ लंका गढ । ४ पर्वत, पहाड़ । ५ सेंधा नमक । ६ मेवाड़ का एक पर्वत । ७ मेवाड़ का एकलिंग महादेव के आस-पास का प्रदेश । ८ मस्तक के कल्पित छः चक्रों में से पहला चक्र । ९ जैसलमेर के किले का नाम । १० जैसलमेर का एक पहाड़ । —गढ़-पु० लंका । —बध= 'त्रकूटबध' ।
त्रिकूटा-स्त्री० १ तान्त्रिकों की एक भैरवी । २ मेवाड़ की एक नदी ।
त्रिकूटी-देखो त्रिकुटी' ।
त्रिकोण-पु० [सं०] १ तीन कोण, त्रिभुज । २ तीन कोण का क्षेत्र, त्रिभुज क्षेत्र । ३ तीन कोनों की वस्तु । ४ योनि, भग । ५ जन्म कुण्डली में लग्न से पांचवां या नौवां स्थान । ६ तीन धारा, तीन पक्ष । -वि० तीन कोण वाला । —घटी-स्त्री० तीन कोण का बडा घटा ।
त्रिकोणा-वि० तीन कोने वाला, तिकोना ।
त्रिकोणासन-पु० योग का एक आसन ।
त्रिक्षार-पु० [सं०] जवा, सज्जी व सुहागा, तीन क्षार ।
त्रिख-देखो 'त्रखा' ।
त्रिखत-वि० [सं० तृषित] १ प्यासा, तृषित । २ अभिलाषी । -स्त्री० तलवार ।
त्रिखनहो-पु० एक प्रकार का घोडा ।
त्रिखा-देखो 'त्रखा' । —वत='त्रखावत' ।
त्रिगग-पु० एक तीर्थ विशेष ।
त्रिगड-पु० एक राक्षस का नाम ।
त्रिगडो, त्रिगड़ो-पु० तीन दीवारों से घिरा स्थान, उपदेश स्थल ।

त्रिगरत (त्त, थ)–पु० १ उत्तर भारत का एक प्राचीन प्रदेश। २ हर्ष, खुशी।
त्रिगुट–देखो 'त्रिकूट'।
त्रिगुण–पु० [स०] १ सत, रज, तम तीनो गुण। २ इन्ही तीन गुणो की प्रकृतियो का समूह। ३ शीतल, मद व सुगध युक्त पवन। –वि० तिगुणा। —नाथ, पति–पु० परमात्मा।
त्रिगुणा–स्त्री० १ देवी, दुर्गा। २ माया।
त्रिगुणी–पु० [स०] बेल का वृक्ष। –वि० तीन गुनी।
त्रिगुणु, त्रिगुणौ–वि० १ तीनो गुणो से युक्त। २ तीन गुना।
त्रिगूढ़–पु० स्त्री वेश मे पुरुषो का नृत्य।
त्रिडणौ (बौ)–देखो 'तिडणौ' (बौ)।
त्रिचक्र–पु० अश्विनी कुमारो का रथ।
त्रिचक्षु, त्रिचख–पु० [स० त्रिचक्षुस्] शिव, महादेव।
त्रिजच–देखो 'तिरजच'।
त्रिजग–पु० तीनो लोक। त्रिलोकी।
त्रिजड, त्रिजड–स्त्री० १ शस्त्र। २ तलवार।
त्रिजडाहथ–पु० खड्गधारी योद्धा।
त्रिजटा–स्त्री० [स०] विभीषण की बहिन एक राक्षसी।
त्रिजाम, त्रिजामा–स्त्री० [स० त्रियामा] रात्रि, निशा।
त्रिजात–वि० १ वर्ण सकर, जारज। २ त्रिजातक।
त्रिजातक–पु० [स०] इलायची, दाल चीनी व तेजपत्र का मिश्रण।
त्रिजुग–देखो 'त्रिजग'।
त्रिजोणी–वि० [स० त्रियोनि] तृतीय योनिज, तमोगुण से उत्पन्न।
त्रिजौ–देखो 'तीजौ'।
त्रिज्झड–देखो 'त्रिजड'।
त्रिडोरियौ–पु० एक वाद्य विशेष।
त्रिण, त्रिणउ–पु० [स० तृण] १ घास। २ घास का तन्तु। ३ रेशा। –वि० १ अत्यन्त तुच्छ, साधारण। २ देखो 'तिण'।
त्रिणकाळ–देखो 'त्रणकाळ'।
त्रिणता–स्त्री० [स०] धनुष।
त्रिणधज–देखो 'त्रणधज'।
त्रिणपद–पु० तीन कदम, तीन डग।
त्रिणवडि–वि० तिगुनी।
त्रिणि–देखो 'तिण'।
त्रिणिय–वि० तीन।
त्रिणी–वि० १ तीन। २ देखो 'तिण'।
त्रिणौ–पु० तिनका, तृण। घास।

त्रिण्ण, त्रिण्णि, त्रिण्ह, त्रिण्हि, त्रिण्है, त्रिण्हौ–१ देखो 'तिण'। २ देखो 'त्रिण'।
त्रितत्री–स्त्री० [स०] तीन तार की वीणा।
त्रिताप–पु० देहिक, दैविक व भौतिक, तीन प्रकार के दुख।
त्रिताल–स्त्री० १६ मात्रा की एक ताल।
त्रितिय, त्रिती, त्रितीय–वि० [स० तृतीय] तीसरा।
त्रितीया–स्त्री० तीसरी तिथि, तीज। –वि० तीसरी।
त्रित्र–वि० [स० त्रि] तीन। –पु० तृण, तिनका।
त्रिदड–पु० [स०] १ सन्यास आश्रम का चिह्न। २ सन्यासियों का डडा।
त्रिदंडी, त्रिदडधउ–पु० [स०] १ मन, वचन और कर्म पर नियन्त्रण रखने वाला साधु। २ एक साधु सम्प्रदाय विशेष। ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ।
त्रिदख–पु० [स० त्रिदिव] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ सुख।
त्रिदळ–पु० [स० त्रिदल] १ बेल का वृक्ष। २ बेल-पत्र।
त्रिदव–देखो 'त्रिदिव'।
त्रिदवेस–पु० [स० त्रिदिवेश] देवता, सुर।
त्रिदस–पु० [सं० त्रिदश] देवता, सुर। —गुरु–पु० बृहस्पति।
त्रिदसतप–पु० [सं० त्रिदश-तप] स्वर्ग।
त्रिदसपति–पु० इन्द्र।
त्रिदसवधु–स्त्री० १ अप्सरा। २ वीर बहूटी।
त्रिदसांकुस–पु० वज्र।
त्रिदसाधिप–पु० इन्द्र।
त्रिदसायन–पु० विष्णु।
त्रिदसायुध–पु० वज्र।
त्रिदसारि–पु० राक्षस, असुर।
त्रिदसालय, त्रिदसासवन–पु० १ स्वर्ग। २ सुमेरु पर्वत। ३ देव मन्दिर।
त्रिदसाहार–पु० अमृत।
त्रिदसेस्वर–पु० इन्द्र।
त्रिदसेस्वरी–स्त्री० दुर्गा, भवानी।
त्रिदिव–पु० [स०] देवलोक, स्वर्ग।
त्रिदिवाधीस–पु० देवराज इन्द्र।
त्रिदिवेस–पु० इन्द्र।
त्रिदेव–पु० [स०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
त्रिदोख, त्रिदोस–पु० [स० त्रिदोष] १ वात, पित्त व कफ तीन शारीरिक दोष। २ सन्निपात। —ज–पु० सन्निपात।
त्रिधज–पु० [स० तृण-ध्वज] बास।
त्रिधन्वा–पु० [स०] एक सूर्यवशी राजा।
त्रिधा–वि० [स०] तीन प्रकार का। –क्रि०वि० तीन प्रकार से, तीन तरह से।

त्रिधाई–स्त्री० १ ताल वाद्य का बोल । २ तीन 'धा' की एक ताल ।

त्रिधार–देखो 'त्रिधारी' ।

त्रिधारा–स्त्री० [स०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक मे बहने वाली गगा ।

त्रिधारी–पु० १ एक प्रकार का भाला । २ थूहर । –वि० तीन धार वाला ।

त्रिधासी–पु० [स० त्रिघ्वशिन्] यमराज ।

त्रिनयण (न)–पु० [सं० त्रिनयन] शिव, महादेव, रुद्र ।

त्रिनाम–पु० [स०] विष्णु ।

त्रिनेत्र, त्रिनैत्र–पु० [स०] १ शिव, महादेव । २ एक भैरव का नाम । ३ सोना, स्वर्ण ।—**रस**–पु० एक रसौषधि विशेष ।

त्रिन्न–वि० फैला हुआ ।

त्रिपख, त्रिपखौ–पु० डिंगल का एक गीत या छद ।

त्रिपट–वि० १ दुष्ट, नीच । २ पागल, मूर्ख ।

त्रिपण, त्रिपणउ–देखो 'तरपण' ।

त्रिपत–वि० [स० तृप्त] सतुष्ट, तृप्त । प्रसन्न, खुश ।

त्रिपति–स्त्री० [सं० तृप्ति] १ संतोष, तृप्ति । २ प्रसन्नता ।

त्रिपथ–पु० [स०] १ तीन मार्गों का समूह, तिराहा । २ पृथ्वी, आकाश व पाताल । ३ कर्म, ज्ञान व उपासना ।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी, त्रिपथा–स्त्री० [स०] तीनो लोको मे बहने वाली गगा ।

त्रिपद–पु० [स०] १ तीन चरण, तीन डग । २ यज्ञ की वेदी मापने का उपकरण । ३ त्रिभुज । ४ घोडा । ५ तिपाई । –वि० तीन चरण का ।

त्रिपदा–स्त्री० [स०] १ गायत्री । २ एक लता का नाम, हस पदी ।

त्रिपदिका–स्त्री० [स०] १ देव-पूजन मे शख रखने की तिपाई । २ तिपाई ।

त्रिपदी–स्त्री० १ हाथी का जेर-बद । २ तीन पक्ति का पद । ३ देखो 'त्रिपदा' ।

त्रिपरण–पु० [स० त्रिपर्ण] पलास का पेड ।

त्रिपाठी–पु० ब्राह्मणो की एक शाखा । -वि० तीन वेदो का ज्ञाता ।

त्रिपाद–पु० [स०] १ ज्वर, बुखार । २ परमेश्वर ।

त्रिपादी–देखो 'त्रिपदिका' ।

त्रिपाप–पु० [स०]किसी व्यक्ति के, किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जानने का चक्र ।

त्रिपिंड–पु० कर्मकाण्ड के अनुसार तीनो पिडो का दान ।

त्रिपिटक–पु० [स०] बुद्ध के उपदेशो का सग्रह ।

त्रिपुड, त्रिपुड्र–पु० [स०] ललाट पर तीन आडी रेखाओ का तिलक ।

त्रिपुटी–स्त्री० [स०] १ दृश्य और दर्शन का समाहार करने की क्रिया । २ दुर्गा ।

त्रिपुर–पु० [स०] १ तीन लोक, त्रिलोक । २ मयदानव के द्वारा निर्मित, स्वर्ण, रजत व लोहमय नगर । ३ बाणासुर का एक नाम । ४ एक दानव । ५ महादेव, शिव । ६ चदेरी नगरी का एक नाम । ७ तीन की सख्या* । —**अघ्न, वहन**–पु० शिव, महादेव । —**भैरव**–पु० एक रसौषधि विशेष । —**भैरवी**–स्त्री० एक देवी । –**मल्लिका**–स्त्री० एक प्रकार की चमेली ।

त्रिपुरातक–पु० महादेव, शिव ।

त्रिपुरा–स्त्री० [स०] १ पार्वती । २ कामाख्या देवी ।

त्रिपुरार, त्रिपुरारि–पु० [स० त्रिपुर+अरि] महादेव ।

त्रिपुरारिरस–पु० [स०] एक रसौषधि विशेष ।

त्रिपुरारी–देखो 'त्रिपुरारि' ।

त्रिपुरासर, त्रिपुरासुर–पु० [स० त्रिपुरासुर] त्रिपुर नामक असुर ।

त्रिपुसी–स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष ।

त्रिपुस्कर–पु० [स० त्रिपुष्कर] फलित ज्योतिष मे एक योग ।

त्रिप्त–वि० [स० तृप्त] सतुष्ट, प्रसन्न ।

त्रिप्रस्न–पु० [स० त्रिप्रश्न] दिशा व देश-काल सबधी प्रश्न ।

त्रिप्रस्नुत–पु० [स०] मस्तक, कपोल व नेत्रो से मद बहने वाला हाथी ।

त्रिफळा (ळौ)–पु० [स० त्रिफला] हड, बेहडा व आवला का मिश्रण ।

त्रिबक–पु० [स० त्र्यबक, ताम्रक] १ महादेव, शिव । २ नगाडा । –वि० तीन बलवाला, टेढा ।

त्रिबळि, त्रिबळी–देखो 'त्रिवळि' ।

त्रिबळीक–पु० १ वायु । २ मल द्वार, गुदा ।

त्रिबाहु–पु० [स०] १ तलवार के ३२ हाथो मे से एक । २ रुद्र का एक अनुचर ।

त्रिबेणी (नी)–देखो 'त्रिवेणी' ।

त्रिभग–वि० तीन जगह बल खाया हुआ, टेढा, तिरछा । –पु० तिरछा खडे होने की एक मुद्रा ।

त्रिभगी–पु० [स०] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु । ३ ईश्वर, परमात्मा । ४ शुद्ध राग का एक भेद । ५ ताल का एक भेद । ६ एक मात्रिक छद विशेष । ७ देखो 'त्रिभग' ।

त्रिभ–वि० [स०] तीन नक्षत्रो से युक्त ।

त्रिभग–पु० [स०] भाला, सेल ।

त्रिभवण (न)–देखो 'त्रिभुवन' । —**नाथ**='त्रिभुवननाथ' ।

त्रिभागौ–पु० भाला, सेल । –वि० तीन धार वाला ।

त्रिभुंइओ, त्रिभुंईयौ–वि० [स० त्रि-भूमि] तीन मजिला, तीन खण्डो वाला ।

त्रिभुग्रण–देखो 'त्रिभुवन' । —**धणी**='त्रिभुवनधणी' ।

त्रिभुज–पु०[स०] १ तीन रेखा या कोणो का आकार, त्रिकोण। २ तीन दिशाओ या रेखाओ से घिरा हुआ स्थान या क्षेत्र।

त्रिभुवण, (न), त्रिभुवन्न, त्रिभोयण–पु० [स० त्रिभुवन] स्वर्ग पृथ्वी, पाताल, तीनो लोक। ब्रह्माण्ड। —**धणी, नाथ**–पु० रुद्र, महादेव। विष्णु। ईश्वर, परमात्मा। —**सुंदरी**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती।

त्रिभोलग्न–पु० [स०] क्षितिज पर पडने वाले कांतिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रिभोवण (न)–देखो 'त्रिभुवन'।

त्रिमद–पु० [स०] १ विद्या, धन व कुटु ब के कारण होने वाला गर्व। २ मोथा, चीता व वायविडग, इन तीनो का समूह।

त्रिमधु, त्रिमधुर–पु०[स०] शहद, चीनी व घी, तीनो का समूह।

त्रिमात, त्रिमात्रिक–वि० [सं० त्रिमात्रिक] तीन मात्राओ का, प्लुत।

त्रिमारगगामिनी, त्रिमारगी–स्त्री० [स० त्रिमार्गगामिनी, त्रिमार्गी] गगा, सुरसरी।

त्रिमासिक–देखो 'त्रैमासिक'।

त्रिमुकुट–पु० [स०] तीन चोटियो वाला पहाड।

त्रिमुख–पु० १ गायत्री जाप की चौवीस मुद्राओ मे से एक। २ शाक्य मुनि।

त्रिमुखी–स्त्री० बुद्ध की माता, माया देवी।

त्रिमुनि–पु० [स०] पाणिनी, कात्यायन व पतजलि मुनि।

त्रिमूरति–पु० [स० त्रिमूर्ति] ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनो देव।

त्रियच–देखो 'तिरजच'।

त्रिय–वि० [स० त्रि] १ तीन। २ तीसरा। ३ देखो 'त्रिया'।

त्रियामा–देखो 'त्रिजामा'।

त्रिया–स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री, औरत। २ पत्नी, भार्या।

त्रियूह–पु० [स०] एक रग विशेष का घोडा।

त्रियौ–वि० [स० तृतीय] १ तीसरा, तृतीय। २ देखो 'तीयौ'।

त्रिरसक–पु० [स०] तीन प्रकार के रस या स्वाद वाली मदिरा।

त्रिरासिक–पु० [स० त्रैरासिक] गणित की एक क्रिया।

त्रिरूप–पु० [स०] अश्वमेध यज्ञ का विशिष्ट घोडा।

त्रिरेख–वि० [स०] तीन रेखाओं वाला। –पु० शख।

त्रिल, त्रिलघु–पु० [स] १ तीन लघु वाला 'नगण'। २ छोटी, गर्दन, जाघ या मूत्रेंद्रिय वाला पुरुष।

त्रिलवण–पु० [स०] सेंधा, साभर व काला नमक।

त्रिलोक–पु० [स०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। — **नाथ, पत, पति, पती**–पु० ईश्वर। विष्णु। शिव। —**मणि, मिण**–पु० सूर्य। —**राव**–पु० ईश्वर।

त्रिलोकी–स्त्री० [स०] तीनो लोको का समूह। तीनो लोक। –वि० तीनो लोको का। —**तात, तारण, नाथ**–पु० परमात्मा। विष्णु। इन्द्र। शिव।

त्रिलोकेस–पु० [स० त्रिलोक-ईश] १ सूर्य। २ तीनो लोको का स्वामी, ईश्वर।

त्रिलोचण–देखो 'त्रिलोचन'।

त्रिलोचणा–देखो 'त्रिलोचना'।

त्रिलोचन–पु० [स०] शिव। रुद्र।

त्रिलोचना–स्त्री० [स०] १ पार्वती। २ अप्सरा।

त्रिलोत्तमा–देखो 'तिलोत्तमा'।

त्रिवड़–पु० *डिंगल का एक गीत या छन्द।*

त्रिवट–पु० [स०] दोपहर मे गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग।

त्रिवरग–पु० [स० त्रिवर्ग] १ तीन प्रधान जातिया-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। २ तीन प्राकृतिक गुण-सत, रज व तम। ३ अर्थ, धर्म व काम का समूह। ४ वृद्धि, स्थिति और क्षय तीन दशाएें। ५ एक प्रकार का काव्य।

त्रिवळि, त्रिवळी–स्त्री० [स० त्रिवलि] १ सुन्दर स्त्री के पेट पर पडने वाली तीन सलवटें। २ उक्त प्रकार की स्त्री। ३ योनि, भग। ४ देखो 'तिवल'।

त्रिवस्ट, त्रिवस्टप–पु० [स० त्रिविष्टप] स्वर्ग, देवलोक।

त्रिवायउ–वि० [स० त्रिपाद] १ तिपाईनुमा। २ तीन पावो वाला। ३ तीन चौथाई।

त्रिविक्रम–पु० [स०] १ विष्णु, ईश्वर। २ वामन अवतार।

त्रिविद्ध–देखो 'त्रिविध'।

त्रिविध, (ध्ध, ध्धी)–वि० [स०] १ तीन प्रकार का, तीन तरह का। २ तिगुना। –क्रि०वि० तीन तरह से, तीन प्रकार से।

त्रिविस्टप–देखो 'त्रिवस्टप'।

त्रिविस्तीरण–पु० [स० त्रिविस्तीर्ण] विशाल सीने, ललाट व कमर वाला, भाग्यशाली पुरुष।

त्रिवेणी–स्त्री० [स०] १ गगा, यमुना व सरस्वती का सगम, प्रयाग। २ तीन नदियो का सगम। ३ तीन विचारो का समन्वय। ४ इडा, पिंगला व सुषुम्ना नाडियो का सगम। ५ तीन की सख्या ※।

त्रिवेदी–पु० ब्राह्मणो की एक उपशाखा। –वि० तीन वेदो का ज्ञाता।

त्रिवेनी–देखो 'त्रिवेणी'।

त्रिसक, त्रिसकु, त्रिसघ–पु० [स० त्रिशकु] १ हरिश्चद्र का पिता एक सूर्यवंशी राजा। २ इसी नाम का एक तारा। ३ सत्य व्रत नामक एक पराक्रमी राजा। ४ चातक पक्षी। ५ पतगा। ६ जुगनू, खद्योत। –वि० [स० त्रिशक] १ तीस की सख्या वाला। २ तीस के मूल्य का।

त्रिसकूज–पु० [स० त्रिशकुज] राजा हरिश्चन्द्र।

त्रिसयिड–पु० एक प्रकार का आभूषण।

त्रिसध्या–स्त्री० [स०] १ प्रात, मध्याह्न व मायकाल को की जाने वाली सध्या। २ दिन का तीसरा प्रहर।

त्रिस–स्त्री० [स० तर्ष] प्यास, तृषा।

त्रिसकत, त्रिसकति, त्रिसकती, त्रिसकत्त–स्त्री० [स० त्रिशक्ति] १ पार्वती। २ देवी, दुर्गा। ३ गायत्री। ४ इच्छा, ज्ञान व क्रिया, तीन ईश्वरीय शक्तिया। ५ तान्त्रिको की तीन देविया-काली, तारा और त्रिपुरा।

त्रिसखरमुड–पु० तीन शिखर का पहाड।

त्रिसणा (ना)–देखो 'तिसणा'।

त्रिसपरसा–स्त्री०[सं० त्रिस्पृशा] वह एकादशी जिसके अत मे त्रयोदशी पडती हो।

त्रिसम–पु० [सं०] सोठ, गुड और हड तीनो का समूह।

त्रिसर–पु० [स० त्रिशिर] १ चिपटी फलियो वाला एक मटर। २ कुबेर। ३ एक प्रकार का आभूषण। ४ देखो 'त्रिसिर'।

त्रिसरकरा–स्त्री० [स० त्रिशर्करा] गुड, चीनी और मिश्री।

त्रिसरण–पु० [स० त्रिशरण] १ बुद्ध। २ एक जैनाचार्य।

त्रिसरनायक–पु० एक प्रकार का आभूषण।

त्रिसरी–स्त्री० तीन लड की।

त्रिसळा–स्त्री० महावीर स्वामी की माता।

त्रिसळौ–पु० १ त्रिशूल। २ क्रोध के कारण ललाट पर पडने वाली तीन रेखायें।

त्रिसाझ-व्यापणी–वि०[सं० त्रिसध्यव्यापिनी] सूर्योदय से सूर्यास्त तक बराबर रहने वाली।

त्रिसा–स्त्री० [स० तृषा] प्यास।

त्रिसाख–वि० १ तीन शाखा वाला। २ तीन फसलो वाला।

त्रिसिउ–देखो 'तिरसौ'।

त्रिसिख–पु० [स० त्रिशिख] १ मुकुट। २ त्रिशूल। ३ रावण का एक पुत्र।

त्रिसिखर–पु० [स० त्रिशिखर] १ तीन चोटियो का पर्वत। २ त्रिकूट पर्वत।

त्रिसियउ, त्रिसियौ–देखो 'तिरसौ'।

त्रिसिर–पु० [स० त्रिशिरस्] १ कुबेर। २ रावण का भाई एक राक्षस। –वि० तीन शिरो वाला।

त्रिसींध–वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ देखो 'त्रिसकु'।

त्रिसीरस–पु० [स० त्रिशीर्ष] तीन शिखर वाला पहाड़।

त्रिसीरसक–पु० [स० त्रिशीर्षक] त्रिशूल।

त्रिसीस–पु० तीन फल का भाला।

त्रिसुगधि–स्त्री० [स०] दाल चीनी, इलायची व तेज पत्र, तीनो की खुशबू।

त्रिसूळ, त्रिसूळ–पु० [स० त्रिशूल] १ शिव का आयुध, तीन शूल का शस्त्र। २ दैहिक, दैविक व भौतिक दुख। ३ हाथ की अगुलियो की एक मुद्रा। ४ तीन की सख्या। —घात–पु० एक तीर्थ विशेष। —धर–पु० शिव, महादेव।

त्रिसूळउ–१ देखो 'त्रिसळौ'। २ देखो 'त्रिसूळ'।

त्रिसूळि, तिसूळी(लो)–वि० त्रिशूल धारी। –स्त्री० १ देवी, दुर्गा। २ देखो 'त्रिसूळ'।

त्रिसौ–देखो 'तिरसौ'।

त्रिस्कध–पु० [स०] ज्योतिष शास्त्र।

त्रिस्टुप त्रिस्टुभ–पु० [स० त्रिष्टुप] सस्कृत का ग्यारह वर्ण का एक वृत्त।

त्रिस्णा–देखो 'तिसणा'।

त्रिस्तभासन–पु०[स०]योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक।

त्रिस्थळी–स्त्री०[स० त्रिस्थली] गया, प्रयाग व काशी तीन तीर्थ।

त्रिस्नान-पु० [स०] प्रात मध्याह्न व सायकाल की तीन स्नान।

त्रिस्रग–पु० [स० त्रिशृग] त्रिकूट पर्वत।

त्रिह (उ)–वि० [सं० त्रि] तीन।

त्रिहत्तर–देखो 'तिहोतर'।

त्रिहलोचन–देखो 'त्रिलोचन'।

त्रिहु, त्रिहु–वि० [स० त्रि] १ तीन, तीनो। २ देखो 'त्रिधा'।

त्रिहुतरौ–देखो 'तिहोतरौ'।

त्रिहू–देखो 'त्रिहु'।

त्रिहोतरौ–देखो 'तिहोतरौ'।

त्रिह्लोचन–देखो 'त्रिलोचन'।

त्रींगडौ, त्रींगडौ–वि० तीक्ष्ण।

त्रींदिय, त्रींद्रिय–पु० [स० त्रीन्द्रिय] तीन इन्द्रियो वाला जीव।

त्री–देखो 'त्रि'।

त्रीकम, त्रीकमौ, त्रीक्रम–देखो 'त्रिविक्रम'।

त्रीखण–देखो 'तीक्ष्ण'।

त्रीखौ–देखो 'तीखौ'।

त्रीछण–देखो 'तीक्ष्ण'।

त्रीज–देखो 'तीज'।

त्रीजउ, त्रीजड–देखो 'तीजौ'।

त्रीजळी, (लो)–देखो 'तीजौ'।

त्रीजाम, त्रीजामा–देखो 'त्रिजामा'।
त्रीजो–१ देखो 'तीजो'। २ देखो 'तीज।
त्रीठ–देखो 'तीठ'।
त्रीठणी (बौ)–क्रि० प्यासा होना।
त्रीणि, त्रीणी, त्रीन–१ देखो 'तिण'। २ देखो 'त्रिन'। ३ देखो 'तीन'।
त्रीनेण, त्रीनेयण, त्रीनैण–देखो 'त्रिनयन'।
त्रीपत्रक–पु० पलास वृक्ष।
त्रीय–वि० [स० तृतीय] १ तीसरा। २ तीन। ३ देखो 'त्रिया'। —लोक='त्रिलोक'।
त्रीवझ्या–स्त्री० बाझ स्त्री, वध्या।
त्रीसटकी–देखो 'तीसटकी'।
त्रीसमउ, त्रीसमौ–देखो 'तीसवौं'।
त्रीहायन–वि० [स०] तीन वर्ष का।
त्रुक, त्रुको–पु० एक प्रकार का तीर।
त्रुगट–देखो 'त्रिकूट'।—गढ='त्रिकूटगढ'। —बध='त्रिकूटबध
त्रुटि, त्रुटी–स्त्री० [स०] १ भूल, चूक। २ कमी, कसर। ३ न्यूनता, अल्पता। ४ अभाव। ५ दोष, अवगुण। ६ हानि, नुकसान। ७ तोड-फोड। ८ छोटा हिस्सा, अणु।
त्रुपरार–देखो 'त्रिपुरारि'।
त्रुरकी–देखो 'तुरकी'।
त्रुरहडी–पु० एक प्रकार का घोडा।
त्रुळ–देखो 'तुरळ'।
त्रूटणी (बौ), त्रूठणी (बौ)–देखो 'टूटणी' (बौ)।
त्रूठि, (ठी)–देखो 'त्रुटि'।
त्रेख–देखो 'तेख'।
त्रेखळणी (बौ)–क्रि० १ रोकना। २ बाधना।
त्रेगडि, त्रेगति–पु० त्रिकाण्ठिका।
त्रेता–पु० [स०] १ जूए (द्यूत) का एक दाव। २ त्रेतायुग।
त्रेताग्नि–स्त्री० तीन प्रकार की अग्निया।
त्रेताजुग–पु० त्रेतायुग।
त्रेताजुगाद–पु० [स० त्रेतायुगाद्य] कार्त्तिक शुक्ला नवमीतिथि।
त्रेतायुग–पु० [स०] चार युगो मे से दूसरा युग।
त्रेतीस–देखो 'तेतीस'।
त्रेपन–देखो 'तिरेपन'।

त्रेभवण, त्रेभुयण, त्रेभूग्रण, त्रेभूवण, त्रेभोयण–देखो 'त्रिभुवन'।
त्रेवड (डि, डी)–देखो 'तेवड'।
त्रेवडो, (डी)–पु० १ काव्य छन्द का एक भेद। २ देखो 'तेवडो'।
त्रेवीस–देखो 'तेवीस'।
त्रेवीसो–देखो 'तेईसो'।
त्रेसठ (ठि)–देखो 'तिरेसठ'।
त्रेसठो–देखो 'तिरेसठो'।
त्रेह–देखो 'ते'।
त्रै–देखो 'त्रि'।
त्रैगुण–देखो 'त्रिगुण'।
त्रैमासिक, त्रैमासीक–वि० [स०] हर तीसरे महीने होने वाला। –पु० हर तीसरे मास प्रकाशित होने वाला पत्र, पत्रिका।
त्रैयबीका–स्त्री० [स०] गायत्री।
त्रैलोक–देखो 'त्रिलोकी'।
त्रैलोकनाथ, (पति, राव)–देखो 'त्रिलोकनाथ'।
त्रैलोकी–देखो 'त्रिलोकी'।
त्रोटक–देखो 'तोटक'।
त्रोटि, त्रोटी–स्त्री० [स० त्रोटि] १ चोच। २ देखो 'टोटी'।
त्रोटो–देखो 'टोटो'।
त्रोडणी (बौ), त्रोडणी (बौ)–देखो 'तोड़णी' (बौ)।
त्रोण–पु० [स०] तरकस।
त्र्यबक–देखो 'त्रबक'।
त्र्यबका–स्त्री० [स०] देवी, दुर्गा, शक्ति।
त्र्यबाट–देखो 'त्रबाट'।
त्र्यस्रतयोग–पु० फलित ज्योतिष मे एक योग।
त्र्याणू–देखो 'तेराणू'।
त्र्यासी–देखो 'तेरासी'।
त्र्यूखण, त्र्यूसण–पु० [स० त्र्यूषण] १ सोठ, पीपल व मिर्च का समूह, त्रिकूटा। २ चरक के अनुसार एक प्रकार का घृत।
त्वतरात–स्त्री० एक प्रकार की पुष्पलता।
त्वक, त्वग, त्वचा–स्त्री० [स० त्वचा] चर्म, चमडी।
त्वरित–क्रि० तुरत, शीघ्र।
त्वस्टा–पु० [स० त्वष्टा] एक महाग्रह जो बिना पर्व के ही सूर्य-चद्र पर ग्रहण करता है।
त्वा, त्वौ–सर्व० तुम, तू।
त्हारो–सर्व० तेरा, तुम्हारा।

—थ—

थ—देवनागरी वर्णमाला का सत्रहवा व्यजन।

थड—पु० १ समूह, दल। २ सेना, फौज। ३ सघनता। ४ ढेर, राशि। ५ देखो 'ठड'। —वि० घना, सघन।

थडणौ (बौ)—क्रि० १ पराजित करना, हराना। २ खदेडना, निकालना, भगाना। ३ ठूस-ठूस कर भरना। ४ एकत्र करना।

थडाक—देखो 'थंड'।

थडिल, थडिल्ल—पु०[स० स्थडिल]१ जैनियोके 'सथारा' करने का स्थान। २ वेदी, वेदिका। ३ ढेलो,का ढेर। ४ सीमा, हद। ५ क्रोध, गुस्सा। ६ शौचादि का स्थान। ७ शौच, मल, विष्टा। (जैन)

थडी, थडीस—पु० १ सर्प, नाग। २ शेप नाग।

थंडौ—१ देखो 'ठडौ'। २ देखो 'थड'।

थथ—पु० अनर्गल प्रलाप, वकवाद।

थथायलो, थथो, थथ्यो—वि० प्रलाप करने वाला, बकवादी।

थब—पु० [स० स्तभ] १ राजपूतो का एक भेद। २ सहारा, आश्रय। ३ रक्षक, सरक्षक। ४ देखो 'थबौ'। ५ देखो 'थावौ'।

थबजग—पु० योद्धा, सुभट, वीर।

थबणौ (बौ)—देखो 'थभणौ' (बौ)।

थबली—१ देखो 'थबौ'। २ देखो 'थोबली'।

थबियो, थबो, थबोड, थबो, थभ—पु० [स० स्तम्भ] १ पत्थर या लकडी का स्तभ, खभा। २ पेड का तना। ३ सहारा, अवलब। ४ रोक। ५ योद्धा, वीर। ६ अहकार (जैन)। ७ मान, प्रतिष्ठा (जैन)। —जमी—पु० योद्धा वीर।

थभण-वि० [स० स्तम्भन] १ थामने या रोकने वाला। २ रक्षक, सहायक। —पु० १ रोकने, ठहराने आदि की क्रिया। २ रुकावट, ठहराव। ३ पकड-धकड। ४ रक्त, वीर्य, मल-मूत्र आदि के स्राव पर नियत्रण। ५ कामदेव के पांच वाणो मे से एक।

थभणौ(बौ)—क्रि०[स० स्तम्भनम्]१ चलते हुए रुकना, ठहरना। २ क्रम या गति न रहना, ठहरना। ३ बद हो जाना, जारी न रहना। ४ धैर्य रखना। ५ पकडा जाना, सभाले रखना। ६ टिकना,टिके रहना। ७ स्राव या बहाव न रहना।

थभली—१ देखो 'थोबली'। २ देखो 'थबौ'।

थंभवाय—पु० घोडो का एक रोग।

थंभाणौ (बौ), थंभावणौ (बौ)—क्रि० १ चलते हुए को रुकवाना, ठहराना। २ क्रम या गति न रखना। ३ जारी न रखना, बद करना। ४ धैर्य दिलाना। ५ पकडना, सभालना। ६ टिकाना। ७ स्राव या बहाव रोकना।

थभियौ, थभी, थभीड़, थभौ—देखो 'थबौ'।

थ—स्त्री० १ सरस्वती। २ छाक। —पु० ३ गणेश। ४ गरुड। ५ ऊपर का ओठ। ६ पहाड। ७ देखो 'त'।

थइ, थइ—देखो 'थई'।

थइग्रायत—पु० पान-बीडा लिए साथ रहने वाला नौकर।

थइणौ (बौ)—देखो 'थावणौ' (बौ)।

थइली—देखो 'थैली'।

थई—स्त्री० [स० स्था] १ ढेर, राशि। २ एक प्रकार की चमडे की थैली। ३ पान की डिबिया। ४ देखो 'थेई'।

थईग्राइतु, थईग्रायतु—देखो 'थइग्रायत'।

थईधर—पु० [स० स्थगीधर] राजा का ताम्बूल-वाहक।

थईयात, थईयायत, थईयार—देखो 'थइग्रायत'।

थक—देखो 'थोक'।

थकइ (ई)—अव्य० से।

थकणौ (बौ)—देखो 'थाकणौ' (बौ)।

थका, थकाई—क्रि०वि० [स० स्था] १ होते हुए, रहते हुए। २ मौजूदगी मे। ३ तक, पर्यन्त। ४ होकर। ५ ही। ६ पर, से।

थकाण, थकान—देखो 'थकावट'।

थका—देखो 'थका'।

थकाणौ (बौ)—क्रि० १ अधिक परिश्रम या मेहनत कराना। २ शिथिल या श्रान्त करना। ३ सास फूलने लायक करना। ४ मदा या धीमा करना। ५ हैरान करना, ऊबाना। ६ उत्साह, जोश आदि को ठडा करना। ७ आवेग कम करना। ८ कमजोर या अशक्त करना। ९ मुग्ध करना, मोहित करना, लुभाना।

थकार–पु० 'थ' वर्ण ।

थकाव, थकावट–स्त्री० १ थक जाने की अवस्था या भाव । २ शिथिलता, कमजोरी । ३ आवेग, उत्साह आदि की कमी । ४ मदी, धीमापन ।

थकावणौ (बौ)–देखो 'थकाणौ' (बौ) ।

थकित–वि० [स० स्थकित] १ थका हुआ, शिथिल । २ मुग्ध, मोहित । ३ आश्चर्य चकित, भौंचक्का ।

थकियौ–देखो 'थकौ' ।

थकी–प्रत्य० [स० स्थित] से । –क्रि०वि० १ लिए, वास्ते । २ के समय, मे । ३ कारण से । ४ पर । ५ होते हुए । –वि० ६ स्थित, विद्यमान ।

थकेलौ–देखो 'थाकेलौ' ।

थकै–देखो 'थकी' ।

थकौ–वि० [सं० स्थित] (स्त्री० थकी) १ होता हुआ, रहता हुआ, स्थित । २ हुवा हुआ । ३ वाला, का । –क्रि०वि० १ से । २ ही । ३ होकर । ४ रूप से ।

थक्करणौ (बौ)–देखो 'थाकणौ' (बौ) ।

थक्यौ–देखो 'थकौ' ।

थग–पु० १ हद, सीमा । २ तट, किनारा । ३ थाह । ४ ढेर, समूह ।

थगणा–स्त्री० [स० स्थगणा] पृथ्वी, भूमि ।

थगवगणौ (बौ)–क्रि० लडखडाना, डगमगाना ।

थड–देखो 'थडौ' ।

थडक्क–स्त्री० धडकन, कपन, थर्राहट ।

थडक्कणौ (बौ)–क्रि० धडकना, कापना, थर्राना ।

थडणौ (बौ)–क्रि० १ भीड होना, समूह बनना । २ धक्का-मुक्की होना । ३ पचना, खपना । ४ देखो 'धुडणौ' (बौ) ।

थडबड–स्त्री० लडखडाने की क्रिया या भाव ।

थडियौ–देखो 'थडौ' ।

थडी–स्त्री० १ छोटे बच्चे के खडे होने की अवस्था । २ अनाज का छोटा ढेर । ३ पचायत भवन (मेवात)

थडौ–पु० [स० स्थल] १ मृत व्यक्ति के दाह सस्कार के स्थान पर बनाया हुआ भवन, स्मारक । २ बैठने की जगह, बैठक । ३ दुकान की गादी, गद्दी । ४ दुकान का अग्र भाग । ४ ऊट के चारजामे के साथ लगी गद्दी ।

थच्च–पु० किसी गाढे पदार्थ के गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।

थट–पु० [स० स्थात] १ ढेर, राशि । २ समूह, दल । ३ देखो 'थाट' ।

थटक, थटक्क–देखो 'थाट' ।

थटणौ (बौ)–क्रि० १ शोभित, होना, शोभायमान होना । २ सुसज्जित होना । ३ तैयार होना, उद्यत होना, कटिबद्ध होना । ४ इकट्ठा होना । ५ डटना । ६ प्रकट होना, उत्पन्न होना । ७ प्रविष्ट होना, घुसना । ८ अवस्थित होना । ९ हटना, मिटना, प्रभाव समाप्त होना । १० सगृहीत या एकत्र होना । ११ खदेडा जाना, पराजित होना ।

थटा–स्त्री० सेना, फौज ।

थटाथट–देखो 'थटोथट' ।

थटीलौ–वि० (स्त्री० थटीली) १ ठाट-बाट से रहने वाला । २ शौकीन । ३ मस्त, प्रसन्न ।

थटेत, थटेल, थटैत, थटैल–वि० १ योद्धा, वीर । २ ठाट-बाट से रहने वाला, ऐश्वर्यवान ।

थटोथट–वि० पूर्ण, पूर्ण भरा हुआ । –क्रि० वि० लबालब ।

थट्ट–वि० १ बहुत अधिक, अत्यधिक । २ देखो 'थाट' ।

थट्टणौ (बौ)–देखो 'थटणौ' (बौ) ।

थट्टौ–१ देखो 'थट' । २ देखो 'थाट' ।

थड–१ देखो 'थड्डौ' । २ देखो 'थडौ' ।

थडउ, थडियौ, थडौ, थड्ड, थड्डौ–पु० १ कधे आदि से दिया गया धक्का, टक्कर, आघात । २ देखो 'थडौ' ।

थढकणौ (बौ) थढकणौ (बौ) थढणौ (बौ)–क्रि० १ सहार करना, मारना । २ गिराना, पटकना । ३ धक्का देना ।

थण, थणचौ–पु० [स० स्तन] १ स्त्री या मादा पशुओ के कुच, दूध वाले अग, स्तन । २ पुरुषो के वक्षस्थल के स्तन चिह्न । ३ स्तनो का दूध । —**अतर**–पु० हृदय । —**कढ**–पु० ताजा दूध, धारोष्ण ।

थणिय–वि० [स० स्तनीय, स्तन्य] स्तन का, स्तन सबधी । –पु० स्तन का दूध । —**सद्द**–पु० अत्यधिक रति सुख से उत्पन्न शब्द ।

थणी–स्त्री० १ बकरी के गले मे स्तन की तरह लटकने वाला मास । २ हाथियो के कान के पास तथा घोडे के लिंग के पास लटकने वाला मास । ३ देखो 'थण' । –वि० स्तन वाली ।

थणैलौ–देखो 'थण' ।

थणौ (बौ)–देखो 'थावणौ' (बौ) ।

थत–पु० [स० स्थिति] वैभव, ठाट ।

थताथेइ, (ई)–देखो 'ताताथेई' ।

थथोपणौ (बौ)–क्रि० १ धैर्य देना, धीरज बधाना । सान्त्वना देना । २ हिम्मत बधाना, आश्वस्त करना ।

थथोबाबाज, थथोबेबाज–वि० फुसलाने वाला, चकमा देने वाला ।

थथोवौ–पु० १ झूठा विश्वास, धोखा, झासा । २ धैर्य, आश्वासन, सान्त्वना ।

थद्ध–वि० [स० स्तब्ध] १ अहकार युक्त, अहकारी (जैन) । २ रोका हुआ । ३ आश्चर्यमय ।

थन्न–१ देखो 'थान' । २ देखो 'थरण' ।

थपउथप–देखो 'थापउथाप' ।

थपकणौ(बौ)–१ देखो 'थपकाणौ'(बौ) । २ देखो 'थापणौ'(बौ) ।

थपकाणौ, (बौ) थपकारणौ, (बौ) थपकावणौ, (बौ)–क्रि० १ थपकी देना, थपकी देकर सुलाना । २ पीठ ठोक कर उत्साह वर्धन करना, प्रेरित करना । ३ दिलासा देना, पुचकारना । ४ सहलाना । ५ थपथपाना ।

थपकियौ–पु० १ एक प्रकार की रोटी । २ मिट्टी के बर्तन वाला कुम्हार ।

थपकी–स्त्री० थापी ।

थपड–देखो 'थप्पड' ।

थपडी–क्रि० १ ताली बजाने की क्रिया, ताली, थापी । ३ ताली का शब्द । ३ देखो 'थेपडी' ।

थपणौ–वि० १ स्थापन करने वाला, प्रतिष्ठित करने वाला । २ स्थापित होने वाला । ३ मुकर्रर करने वाला ।–पु० पत्थर या लकडी का, पिटाई करने का उपकरण ।

थपणौ (बौ)–क्रि० १ स्थापित या प्रतिष्ठित होना । २ निश्चित होना, तय होना । ३ स्थिर होकर रहना । ३ देखो 'थापणौ' (बौ) । ५ देखो 'थापलणौ' (बौ) ।

थपथपियौ–देखो 'थपकियौ' ।

थपथपी–स्त्री० १ हल्की सी थपकी । २ देखो 'थापी' ।

थपेड, थपेट–स्त्री० १ टक्कर, आघात, झपट । २ थप्पड, चाटा । ३ लपेट । ४ थपकी ।

थपेटणौ (बौ)–क्रि० १ थपकी देना, थपथपाना । २ टक्कर, आघात या चाटा लगाना । ३ पीटना, मारना । ४ थप्पड लगाना ।

थप्पड–स्त्री० १ हथेली का प्रहार चोट । तमाचा, झापट । २ चोट, नुकसान, हानि । ३ आघात, धक्का । ४ व्यय भार । अनावश्यक व्यय ।

थप्पणिय–देखो 'थापण' (णी) ।

थप्पणौ(बौ)–१ देखो 'थपणौ'(बौ) । २ देखो 'थापणौ' (बौ) ।

थप्पलणौ (बौ)–देखो 'थापलणौ' (बौ) ।

थप्पी–देखो 'थापी' ।

थबोळौ–पु० हिलोर, लहर, तरंग ।

थमणौ (बौ)–देखो 'थभणौ' (बौ) ।

थमाणौ (बौ) थमावणौ (बौ)–देखो 'थभाणौ' (बौ) ।

थय–देखो 'थै' ।

थयणौ (बौ)–क्रि० १ होना । २ रहना ।

थर–पु० [स० स्तर] १ चुनाई का स्तर, परत, तह । २ ढेर, राशि । ३ ठडा होने पर, गर्म दूध या लोहे पर जमने वाली परत । ४ कापने की क्रिया या भाव । [स० स्थल] ५ शेर की माद, गुफा । ६ स्थल, जगह । ७ देखो 'थिर' ।

थरक–स्त्री० १ भय, डर, शका । २ कंपकपी, थर्राहट । –वि० १ कपायमान, कपित । २ देखो 'थिरक' ।

थरकण (न)–स्त्री० १ दूध पर जमने वाली मलाई । २ द्रव पदार्थ पर जमने वाली परत ।

थरकणौ (बौ), थरक्कणौ (बौ)–क्रि० १ डरना, भय खाना, शका मानना । २ कापना, थर्राना । ३ हिलना-डुलना, विचलित होना । ४ धीरे-धीरे चलना, खिसकना । ५ गिरना, पडना । ६ देखो 'थिरकणौ' (बौ) ।

थरकाणौ (बौ), थरकावणौ (बौ)–क्रि० १ गिराना, पटकना । २ ऊपर से नीचे डालना, ढकेलना । ३ डराना, धमकाना । ४ कपाना । ५ हिलाना-डुलाना, विचलित करना । ६ खिसकाना ।

थरखणौ (बौ)–देखो 'थरकणौ' (बौ) ।

थरणा–पु० [स० स्थैर्य] १ हृदय, दिल । २ धैर्य ।

थरथरणौ (बौ)–देखो 'थरथराणौ' (बौ) ।

थरथरा'ट, थरथराहट–स्त्री० कपकपी, थर्राहट ।

थरथराणौ (बौ)–क्रि० १ कापना, थर्राना । २ अत्यधिक डरना, घबराना ।

थरथरी–देखो 'थरथराहट' ।

थरपड–स्त्री० लडखडाहट ।

थरपणौ (बौ), थरप्पणौ (बौ)–क्रि० १ रचना, बनाना । २ स्थापित करना । ३ देखो 'थापणौ' (बौ) ।

थरमौ–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र । २ अगुठी के ऊपर नगीने का घेरा ।

थररा'ट–देखो 'थरथरा'ट ।

थरसळणौ (बौ), थरसल्ळणौ (बौ)–क्रि० १ कापना, थर्राना । २ भयभीत होना, घबराना ।

थरहर (थरहरी)–स्त्री० १ भय के कारण होने वाली घबराहट, कपकपी । २ कपन, धडकन ।

थरहरणौ (बौ), थरहराणौ (बौ)–क्रि० १ भय से कापना, घबराना । २ हिलना-डुलना ।

थरावणौ (बौ)–देखो 'थरथराणौ' (बौ)।
थरु, थरू–वि० [स० स्थिर] १ अटल, स्थिर। २ अनादि, सनातन। ३ चिर स्थायी।
थळ–पु० [स० स्थल] १ स्थान, जगह। २ पृथ्वी, भूमि, जमीन। ३ धरातल। ४ वैभव, सम्पत्ति, धन, दौलत। ५ वालू रेत का टीवा। ६ मरु प्रदेश। ७ भवन, घर। ८ भाव। ९ देखो 'थळी'।
थळकण–देखो 'थळगट'।
थळकणौ (बौ)–क्रि० १ स्थूल शरीर के मास का हिलना। २ तनाव या खिचाव न रहना, ढीला पडना, झोल खाना। ३ पिचकना।
थळगट, थळगटी–स्त्री० [स० स्थल-स्कभ] द्वार की चौखट के नीचे वाली आडी लकडी।
थळगामी–वि० [स० स्थलगामी] भूमि पर रहने व विचरण करने वाला।
थळचट–वि० १ पराया माल खाने वाला, चटोरा। २ द्वार-द्वार भीख मागने वाला।
थळचर,थळचारी–पु०[स० स्थल-चर]पृथ्वी पर रहने वाला जीव।
थळथळणौ (बौ), थळथळाणौ (बौ)–क्रि० स्थूल शरीर के मास का हिलना-डुलना।
थळपति–पु० [स० स्थल-पति] १ राजा, नृपति। २ भू-स्वामी।
थळभारी–पु० कहारो का एक सकेत।
थळयर–देखो 'थळचर'।
थळवट, (वटी, वट्ट, वट्टो)–देखो 'थळी'।
थळाथूणी–स्त्री० मुठभेड, युद्ध, टक्कर।
थळि–देखो 'थळी'।
थळियामारू–पु० एक लोक गीत विशेष।
थळियो–पु० मरु प्रदेश या रेगिस्तान का निवासी। –वि० मरुस्थल या रेगिस्तान सबधी।
थळी–स्त्री० [स० स्थल] १ मरुस्थल, रेगिस्तान। २ रेगिस्तानी इलाका। ३ देखो 'थळगट'।
थळू–देखो 'थळ'।
थळेचौ–देखो 'थळियौ'।
थळेरी–देखो 'थळगट'।
थळेस्वरी–स्त्री० [स० स्थल-ईश्वरी] देवी, शक्ति, दुर्गा।
थवक्क, थवक्कौ–पु० [स० स्तवक] समूह।
थवणी–स्त्री० [स० स्तवनिका] सुस्मृति, स्मृति-चिह्न।
थवणौ (बौ)–क्रि० होना। हो जाना।
थविर–वि० [स० स्थविर] १ वृद्ध, बुड्ढा। २ स्थिर व परिपक्व वुद्धि वाला। ३ अनुभवी। ४ स्थविर कल्पी साधु (जैन)।
थह, थहक–स्त्री० [स० स्था] सिंह आदि की माद, घुरसाली। गुफा।
थहण–स्त्री० [स० स्था] स्थान, जगह।
थहरणौ (बौ)–क्रि० १ ठहरना, टिकना, रुकना। २ कापना, थर्राना।
थहराणौ (बौ), थहरावणौ (बौ)–क्रि० १ ठहराना, टिकाना। २ कापना, थर्राना।
था–सर्व० आप, तुम।
थाअळो–देखो 'थाहरो'। (स्त्री० थाअळी)
थाण–देखो 'थान'।
थाणगिद्धि–स्त्री० [स० स्त्यानगृद्धि] छ मास तक का शयन।
थाणथप–देखो 'थाणाथप'।
थाणबध–देखो 'थाणावध'।
थाणाथप–वि० एक ही स्थान पर स्थाई रहने वाला। –पु० चलने फिरने मे असमर्थ साधु (जैन)।
थाणावार–देखो 'थाणेदार'।
थाणादारी–देखो 'थाणेदारी'।
थाणावध–पु० [स० स्थानवध] डिंगल का एक गीत या छद।
थाणायत–पु० १ चौकीदार। २ पुलिस या सेना का एक कर्मचारी। ३ देखो 'थाणैत'। ४ देखो 'थाणाथप'।
थाणु (णू)–पु० [स० स्थाणु] १ शिव, महादेव। २ सूखा वृक्ष। ३ देखो 'थाणौ'।
थाणेत, थाणैत–पु० १ किसी स्थान का अधिपति। २ चौकी या अड्डे का मालिक। ३ पुलिस थाने का प्रभारी। ४ चुगी वसूल करने वाला अधिकारी। ५ किसी स्थान का देवता।
थाणेदार, थाणैदार–पु० [स० स्थान + फा० दार] १ पुलिस थाने का प्रभारी। २ जकात या चुगी वसूल करने वाला अधिकारी।
थाणेदारी, थाणैदारी–स्त्री० थानेदार का पद या कार्य।
थाणौ–पु० [स० स्थान] १ आस-पास के क्षेत्र की सुरक्षार्थ स्थापित सैनिक चौकी। २ पुलिस विभाग का एक उप खण्ड। पुलिस स्टेशन। ३ टिकने या ठहरने का स्थान। ४ स्थान, जगह। ५ समूह। ६ वृक्ष या पौवे के चारो ओर वनाया हुआ घेरा। थाला, थावला। ७ एक प्रकार का सरकारी लगान। –सर्व० (स्त्री थाणी) आपका, तुम्हारा।
थान–पु० [स० स्थान] १ कोई देव-स्थान या चबूतरा। २ स्थान, जगह, ठिकाना। २ एक निश्चित लबाई का कपडे का वडा टुकडा या भाग। ४ देखो 'थण'। —मनाद–पु० देवालय।

थानक–पु० [स० स्थानक] १ श्वेताम्बर जैन साधुग्रो का उपाश्रम। २ देखो 'थान'। **—वासी**–पु० श्वेताम्बर जैन साधु।

थांनकवळ–पु० [स० स्थान-वलि] पाताल।

थांन-वदावणौ–पु० विवाह के लिये प्रस्थान करते समय दूल्हे को मा का स्तन पान कराने की रस्म।

थानिक–स्त्री० १ राजधानी। २ देखो 'थांनक'।

थांपण, थापणि (णी)-देखो 'थापण'।

थाव थावड–देखो 'थबौ'।

थावणौ (बौ)–देखो 'थाभणौ' (बौ)।

थांवली, थावलो, थांबियौ, थांबौ–देखो 'थबौ'।

थाम–१ देखो 'थब'। २ देखो 'तोरणथाभ'।

थांभउ-देखो 'थबौ'।

थाभणौ (बौ)–क्रि० १ रोकना, ठहराना। २ पकडना, पकड रखना, सभाले रहना। ३ जारी न रखना, वद कर देना। ४ धैर्य रखना। ५ कोई कार्य ग्रपने नियत्रण मे रखना।

थामलियौ–देखो 'थबौ'।

थामली, थाभलौ–देखो 'थबौ'।

थाभायत–पु० वश या कुल की शाखा या उपशाखा का प्रमुख पुरुष।

थामियौ–देखो 'थबौ'।

थाभोड, थांभु, थाभौ–पु० [स० स्तम्भ] १ वश या कुल की शाखा या उपशाखा। २ देखो 'थंबौ'।

थाम–१ देखो 'थबौ'। २ देखो 'तोरणथाभ'।

थामणौ (बौ), थांम्हणौ (बौ)–देखो 'थाभणौ' (बौ)।

थारउ, था'रौ, था'ळौ–देखो 'थाहरौ'।

थावळौ–देखो 'थाणौ'।

थाहरौ–सर्व० (स्त्री० थाहरी) ग्रापका, तुम्हारा,।

था–स्त्री० १ गगा। २ पृथ्वी, भूमि। ३ द्युति। ४ मृदग। –सर्व० तुझ, तुम। –वि० 'है' का भूत कालिक रूप। –प्रत्य० करण ग्रौर ग्रपादान कारक चिह्न, तृतीया ग्रौर पचमी विभक्ति का चिह्न, से।

थाक–स्त्री० १ थकावट। २ देखो 'थाग'।

थाकउ, थाकड़ो–देखो 'थाकौ'।

थाकणौ–वि० (स्त्री० थाकणी) जल्दी थक जाने वाला, जल्दी शिथिल होने वाला। –पु० १ विश्राम, ठहराव। २ थकावट।

थाकणौ (बौ)–क्रि० १ चलते या श्रम करते-करते थकना, थक जाना। २ शिथिल पडना, जोश ठडा होना। ३ श्रान्त होना, क्लान्त होना। ४ ग्रशक्त होना, शक्तिहीन होना। ५ दुर्वल होना, कृश होना। ६ निर्धन होना। ७ कम पडना, घटना। ७ हैरान होना, ऊबना। ९ मद पडना, धीमा पड़ना। १० रुकना, वद होना। ११ मन्त्र मुग्ध होना, मोहित होना।

थाकल–वि० १ थका हुग्रा, श्रान्त, क्लान्त। २ शिथिल, धीमा, मद। ३ ग्रशक्त, कमजोर। ४ दुर्वल, कृश। ५ निर्धन, कगाल।

थाकी–देखो 'थकी'।

थाकेलौ–पु० १ थकान, थकावट। २ दुर्वलता, कृशता। ३ हैरानी। ४ सुस्ती, उदासी। ५ हरारत।

थाकोड़ो, थाकौ–वि० [स० स्थकित] (स्त्री० थाकोडी) १ थका हुग्रा, श्रान्त, क्लान्त। २ शिथिल, मद, धीमा। ३ ग्रशक्त, कमजोर। ४ दुर्वल, कृश। ५ निर्धन, कंगाल।

थाग–स्त्री० [सं० ष्ठा] १ गहराई, थाह। २ गहराई का ग्रन्त, नीचला तल। ३ गहराई का नाप, ग्रदाज। ४ पार, ग्रत, परिमिति। ५ सीमा, हद। ६ पता, इल्म। ७ रोक, सहारा। ८ गूढार्थ की जानकारी। ९ गभीरता। १० नदी पानी के कटाव के खड्डे। ११ फूलो के हार के वीच मे लगाये गये विभिन्न रगीन फूल। १२ गणना।

थागड़, थागडौ–वि० १ निडर, निर्भीक। २ थाह लेने वाला।

थागणौ (बौ)–क्रि० १ गहराई की जाच करना। २ थाह लेना, तल तक पहुचना। ३ ग्रदाज करना, ग्रनुमान करना। ४ गभीरता को समझना।

थागत–स्त्री० थाह।

थागिडदा–पु० ढोल का वोल।

थागियळ–पु० समुद्र, सागर।

थागौ–वि० १ कम गहरा, उथला। २ देखो 'थाग'।

थाघ–देखो 'थाग'।

थाघौ–१ देखो 'थाग'। २ देखो 'थागौ'।

थाट–पु० [स० स्थात] १ समूह, दल। २ सेना, फौज। ३ सैन्य दल। ४ साज-सामान, सामग्री। ५ सपत्ति, वैभव, ऐश्वर्य। ६ ग्रानन्द, प्रसन्नता, हर्ष। ७ मनोरथ, मनोकामना। ८ बाहुलता, प्रचुरता। ९ चादर, पतरा, परत। १० किसी राग का स्वर समूह। ११ हाथी, गज। १२ देखो 'ठाट'। **—थभ**–पु० योद्धा विशेष जिस पर सेना का दारोमुदार हो। ग्रकेला फौज रोकने वाला वीर। **—नाथ, पति, पती**-पु० सेनापति।

थाटणौ–वि० (स्त्री० थाटणी) १ शोभा वढाने वाला, वैभव वढाने वाला। २ प्राप्त कराने वाला। ३ सजाने वाला। ४ तय करने वाला, निश्चित करने वाला।

थाटणौ(बौ)–क्रि० १ शोभित करना। २ सुसज्जित होना। ३ तैयार करना, तैयार रखना। ४ एकत्र करना, सग्रह करना। ५ प्रगट करना, उत्पन्न करना। ६ धारण करना। ७ स्थापित करना। ८ तय करना, निश्चित करना। ९ प्राप्त कराना।

थाट-पाट, थाट-बाट–पु० १ वैभव, ऐश्वर्य । २ सजावट, शोभा । ३ शृंगार । ४ तडक-भडक । ५ आडम्बर । ६ शान शौकत ।
थाट-पाटौ–वि० १ हृष्ट-पुष्ट । २ सम्पन्न, वैभवशाली ।
थाटव–पु० कवि । –वि० ठाट-बाट से रहने वाला ।
थाटवी–पु० युवराज का छोटा भाई ।
थाटि–देखो 'थाट' ।
थाटियौ–पु० गाडी मे गाडीवान के बैठने का स्थान । अधारिया, मोढ़ा ।
थाटेसरी–पु० सन्यासियो का एक भेद ।
थाटौ–पु० १ गाडी की छत, थाटा । २ खाद या धूल भरी गाडी । ३ एक गाडी खाद या धूल की मात्रा । ४ वक्ष-स्थल । –वि० ठहरा हुआ, स्थिर ।
थाडौ–देखो 'ठाडौ' । (स्त्री० थाडी)
थाढ़–पु० १ सहारा, रोक । २ स्तभ । ३ सर्दी, शीतलता ।
थाढ़ौ–पु० [स० स्थातृ] (स्त्री०थाठी) १ सहारा, आश्रय । २ रुकावट । –वि० १ खडा, सीधा । २ देखो 'ठाडौ' ।
थाणौ (बौ)–देखो 'थावणौ' (बौ) ।
थात–पु० पैर का तलुवा, पाद-तल । –वि० [स० स्थात] बैठा हुआ, ठहरा हुआ, स्थित ।
थाप–स्त्री० १ हस्त-तल, थप्पड, तमाचा । ३ हस्त-तल का आघात । ३ तवले आदि पर हाथ का आघात । ४ विचार मत्रणा । ५ कार्यक्रम, व्यवस्था । –वि० स्थापित करने वाला । —**उथाप**–पु० निर्णय फैसला । –वि० स्थापित करने या उखाडने मे समर्थ ।
थापडी–१देखो 'थाप' । २ देखो 'थेपडी' ।
थापट–देखो 'थाप' ।
थापण (णि)–स्त्री० [स० स्थापन, स्थापनिका] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव । २ धरोहर, अमानत । –वि० स्थापित करने वाला ।
थापणा-उथापणा–देखो 'थाप-उथाप' ।
थापणी–देखो 'थापण' ।
थापणौ (बौ)–क्रि० [स० स्थापना] १ स्थापित करना, स्थापना करना, बैठाना । २ जमाना । ३ प्रतिष्ठित करना । ४ मुकर्रर करना, तय करना, निश्चित करना । ५ मानना । ६ रखना । ७ एकत्र करना । ८ सौंपना । ९ प्रहार करना, आघात करना ।
थापन–देखो 'थापण' ।
थापना–स्त्री० [स० स्थापन] १ किसी देव मूर्ति या देवताओ के किसी चिह्न को किसी स्थान पर स्थापित करने की क्रिया, स्थापना, प्रतिष्ठा । २ नवरात्रि मे दुर्गा पूजा के लिए घट-स्थापना । ३ नवरात्रि का प्रथम दिन । ४ अधिकार, कब्जा । ५ वास्तविक वस्तु के अभाव मे कल्पित वस्तु की परिकल्पना । (जैन) ६ आकार चित्र, मूर्ति । ७ स्थापन, न्यास । ८ अनुज्ञा, सम्मति । ९ जैन साधु को भिक्षार्थ रखी हुई वस्तु व इस वस्तु के रखने से होने वाला दोष । —**करम**–पु० स्थापना कर्म । (जैन) । —**चारज**–पु० स्थापनाचार्य (जैन) । —**चारिज**–पु० आचार्य सबधी वस्तु (जैन) । —**पुरस**–पु० स्थापित की हुई मूर्ति, आकृति, चित्र । —**सच, सच्च, सत्य, साच**–पु० कल्पित वस्तु को सत्य मानने की अवस्था ।
थापल–देखो 'थापी' ।
थापलणौ (बौ)–क्रि० १ पीठ थपथपाना । २ थपकी देना । ३ उत्साहित करना ।
थापिणि, (णी)–देखो 'थापण' ।
थापोटणौ (बौ)–देखो 'थापलणौ' (बौ) ।
थापौ–पु० १ रगादि पोत कर चिह्न अकित करने का साचा । २ रगादि से अकित किया जाने वाला हथेली का चिह्न । ३ किसी वस्तु को ढालने का साचा । ४ खलिहान मे अनाज के ढेर पर गीली मिट्टी या गोबर का किया जाने वाला चिह्न । ५ ढेर राशि । ६ खलिहान मे साफ अनाज का ढेर । ७ झडवेरी के पत्तो का ढेर । ८ रहट के चक्र मे लगाई जाने वाली लकडी । ९ विवाह के समय देवी, देवताओ के लिए निश्चित किया हुआ स्थान । १० दोनो बाहुमूलो के बीच का वक्षस्थल । ११ विवाह सम्पन्न होने पर सातु द्वारा दामाद की पीठ पर अकित किया जाने वाला हाथ का चिह्न । १२ किसी वस्तु या किसी स्थान पर जमने वाला मिट्टी का ढेर । १३ किसी वस्तु पर एकत्र होने वाला चीटी आदि जीवो का समूह ।
थाबोजणौ (बौ)–क्रि० अर्थ सकट पडना, अर्थाभाव से दुखी होना ।
थाबौ–पु० १ कष्ट, पीडा । २ निष्फल जाने की क्रिया या भाव ।
थायणौ (बौ)-देखो 'थावणौ' (बौ) ।
थायी–देखो 'स्थाई' ।
थारउ–देखो 'थारौ' ।
थारोडौ–देखो 'थारौ' । (स्त्री० थारोडी)
थारौ–सर्व० (स्त्री० थारी) तेरा, तुम्हारा । आपका ।
थाळ–पु० [सं० स्थालम्] १ किसी धातु की बनी बडी थाली, तश्तरी, छिछला गोल पात्र । २ पगत । ३ झालर नामक वाद्य ।
थाल–पु० १ अपने गाल चाटने वाला घोडा । २ पार्श्व बदलने की क्रिया या भाव । ३ किसी भारी वस्तु को घुडकाने की क्रिया या भाव । –वि० ठीक, उचित ।
थाळकडौ, थाळकली–देखो 'थाळी' ।
थाळकियौ–पु० १ छोटी थाली । २ देखो 'थाळी' ।

थाळकी–देखो 'थाळी'।

थालणौ (बौ)–क्रि० १ पार्श्व पलटना। २ सीधा करना। ३ स्थापित करना, रखना। ४ भारी वस्तु को घुडकाना। ५ देखो 'ठालणौ' (बौ)।

थाळि–देखो 'थाळी'।

थाळियौ–पु० १ गाडी पर बना गाडीवान के बैठने का स्थान। २ देखो 'थाळी'। ३ देखो 'थाळ'।

थाळी–स्त्री० [स० स्थाली] १ धातु का बना छिछला गोल-पात्र, तश्तरी। २ बडी तश्तरी। ३ थालीनुमा वाद्य, झालर। ४ घोडो के घेरे के बीच किया जाने वाला नृत्य। ५ पाटल वृक्ष।

थालीड–१ देखो 'थाळ'। २ देखो 'थाळी'।

थाळौ–पु० [स० स्थल] १ मकान बनाने की खाली जमीन, आवासीय भू-खण्ड। २ दृढ व सूखी भूमि, जमीन। ३ नदी या समुद्र का तट। ४ स्थान, जगह। ५ खेत। ६ सोने या चादी की बनी देवमूर्ति। ७ देवमूर्ति युक्त गले का आभूषण विशेष। ८ गाडी की छत। ९ कूए के पास मवेशियो के पानी पीने का स्थान। १० वृक्ष या पौधे के चारो ओर किया गया गड्ढा। ११ देखो 'थाळ'।

थावणौ–देखो 'थाणौ'।

थावणौ (बौ)–क्रि० १ होना। २ रहना। ३ खडा होना। ४ देखो 'ठावणौ' (बौ)।

थावर–वि० [स० स्थावर] १ स्थिर, अचल। स्थावर। २ जड, अक्रियाशील। ३ गति रहित, गतिहीन। ४ निर्जीव। ५ अटल, अडिग। ६ मूर्ख, नासमझ। ७ पागल। ८ ढीठ, निर्लज्ज। ९ पुश्तैनी, पूर्वजो से मिला हुआ। –पु० १ पर्वत, पहाड। २ कोई निर्जीव वस्तु। ३ धनुष की डोरी, कमान। ४ शनिवार। ५ शनि ग्रह। ६ बपौती का माल, जायदाद।

थावरियौ–पु० १ शनिदेव की पूजा करने वाला ब्राह्मण। २ शनिदेव के पूजन का दान लेने वाला ब्राह्मण।

थावस–पु० [स० ध्येयस] १ धैर्य, विश्वास। सतोष। २ ठहराव, स्थिरता। ३ देखो 'थावर'।

थावी–वि० स्थिर, दृढ।

थाह–देखो 'थाग'।

थाहणौ–वि० [सं० ष्ठा] १ थाह लेने वाला। २ रोकने वाला।

थाहर–पु० [स० ष्ठा] १ सिंह की माद, गुफा, कदरा। २ स्थान, जगह। ३ रिक्त स्थान। ४ नगर, शहर। ५ गढ, किला। ६ भवन, मकान। –वि० १ कम गहरा, छिछला। २ योद्धा।

थाहरणौ (बौ)–क्रि० [स० ष्ठात्] १ थोडा रुकना, ठहरना। २ खिसकना। ३ गिरना पडना। ४ स्थिर होना।

थाहरै–सर्व० तेरे, तुम्हारे।

थाहरौ–सर्व० (स्त्री० थाहरी) तुम्हारा, तेरा।

थि–स्त्री० १ यमुना। २ गोदावरी। ३ नींद, निद्रा। ४ बैल।

थिकत–देखो 'थकित'।

थिका, थिका–देखो 'थका'।

थिकु, थिकौ–देखो 'थकौ'।

थिग–स्त्री० [स० स्थगित] १ ढेर, समूह, राशि। २ नृत्य का बोल। ३ लडखडाहट। –क्रि०वि० पास, ढिग।

थिगणौ (बौ)–क्रि०वि० [स० स्थगितम्] १ लडखडाना, डगमगाना। २ ठहरना, रुकना। ३ स्थिर होना।

थिगली–स्त्री० रुपये रखने की थैली।

थिड़णौ (बौ)–देखो 'घुडणौ' (बौ)।

थिडी–देखो 'थडी'।

थिडणौ (बौ)–देखो 'थुडणौ' (बौ)।

थिणौ (बौ)–देखो 'थावणौ' (बौ)।

थित–वि० [स० स्थित] १ स्थित, कायम। २ ठहरा हुआ, खडा हुआ। ३ अटल, अचल, दृढ। ४ मौजूद, विद्यमान। ५ स्थिर। ६ तैयार। ७ नित्य, हमेशा। ८ केन्द्रित। –स्त्री० [स० स्थिति] १ स्थिरता। २ धन, दौलत, लक्ष्मी। ३ ठहराव, पडाव, डेरा। ४ देखो 'थिति'।

थिति–स्त्री० [स० स्थिति] १ स्थिति, दशा, हालत, अवस्था। २ वैभव, ऐश्वर्य। ३ अस्तित्व। ४ क्षमता। ५ रहाव, मौजूदगी। ६ ग्रहण की अवधि। [स० क्षिति] ७ पृथ्वी। ८ गृह, निवास स्थान। ९ हानि। १० नाश, प्रलय।

थितिभव–पु० स्थायी भाव।

थितियौ–वि० स्थिर, अटल, स्थाई-भूत। –क्रि०वि० निरन्तर, लगातार। स्थाई रूप से। हमेशा।

थिती–देखो 'थिति'।

थिमिय–वि० [स० स्तमित] १ भय रहित, निर्भय। २ स्थिर। –पु० अतगड सूत्र के प्रथम वर्ग के पाचवें अध्ययन का नाम।

थियणौ (बौ)–देखो 'थवणौ' (बौ)।

थिर–स्त्री० [स० स्थरा, स्थिर] १ पृथ्वी। २ ४९ क्षेत्र-पालो मे से ३३ वा क्षेत्रपाल। ३ ज्योतिष मे वृष, सिंह, वृश्चिक व कुभ राशिया। ४ ज्योतिष मे एक योग। ५ वृक्ष, पेड। ६ जीव को स्थिर अवयव प्राप्त कराने वाला कर्म। –वि० १ ठहरा हुआ, रुका हुआ, स्थिर। २ स्थाई। ३ चिर स्थाई। ४ अचल, निश्चल। ५ शात। ६ दृढ, अटल। ७ मजबूत, दृढ। ८ मुकर्रर, नियत। ९ सदा बना रहने वाला। १० निश्चित, निर्धारित। ११ सख्त, ठोस। १२ दृढ प्रतिज्ञ।

थिरक–स्त्री० १ चचल गति, नृत्य की गति। २ चमक।

थिरकणौ (बौ)–क्रि० १ नृत्य मे पैरो का गतिमान होना।

२ नाचना, अग मटकाना । ३ देखो 'थरकणौ' (बौ) ।

थिरकस–पु० १ चित्त वृत्तियो के निरोध का चिन्तन, चित्त की एकाग्रता । २ परब्रह्म ।

थिरचर–पु० [स० स्थिरा-चर] भूमि पर विचरण करने वाले प्राणी, स्थल चर ।

थिरता, थिरताई–स्त्री० [स० स्थिरता] १ धैर्य, धीरज, शाति । २ स्थायित्व । ३ स्थिर रहने की अवस्था, ठहराव, निश्चलता । ४ मजबूती, दृढता । ५ अचचलता । –वि० स्थिर, अटल ।

थिरथाप, थिरथोप–वि० अटल, दृढ, स्थिर ।

थिरपणौ(बौ)–१ देखो 'थापणौ'(बौ) । २ देखो 'थरपणौ' (बौ) ।

थिरमौ–पु० उत्तम श्रेणी का एक वस्त्र विशेष ।

थिरवत, थिरवतौ–वि० [स० स्थिरवत] स्थिर, अटल, दृढ़ ।

थिरा–स्त्री० [स० स्थिरा] पृथ्वी, वसुधा ।

थिरौ–देखो 'थडी' ।

थिरु (रू)–वि० [स० स्थिर] स्थिर, अटल, दृढ़ ।

थिवर–देखो 'थविर' ।

थी–स्त्री० १ निद्रा । २ रेवा नदी । ३ स्त्री, औरत । –पु० ४ समुद्र, सागर । ५ घाव । –प्रत्य० तृतीया या पचमी विभक्ति का चिह्न, से । –अव्य० 'है' का भूत कालिक स्त्री रूप ।

थीणौ–वि० [स० स्थास्नु] १ जमा या ठसा हुआ (घी) । २ गाढा । ३ दृढ ।

थीतकर–देखो 'तीरथकर' ।

थीमडौ–पु० बछडे के मुह पर बाधने की, सूलें लगी चमडे की पट्टी ।

थीवर–देखो 'थविर' ।

थीवळि (ळी)–देखो 'त्रिवळि' ।

थु ग–पु० नृत्य का एक बोल ।

थु डी–स्त्री० स्त्रियो के शिर का आभूषण विशेष ।

थु भ, थु भी–पु० [स० स्तूप] १ स्तूप । २ देखो 'थू भी' ।

थु–पु० १ विष्णु । २ त्याग । ३ झूठ । –स्त्री० ४ कोयल । ५ अविद्या, मूर्खता । ६ जूठन । –वि० १ मैला, कुचैला । २ जूठा, उच्छिष्ट ।

थुइ, थुई–स्त्री० १ ऊट के पीठ पर उभरा हुआ भाग । २ बैल या साड के अगले पैरो के ऊपर का उभरा भाग, डिल्ला, कोहान । ३ पुष्टता । ४ आगे निकला हुआ पेट, तोद । [स० स्तु] ५ स्तुति, प्रशसा ।

थुओ–देखो 'थूओ' ।

थुकणौ (बौ)–देखो 'थूकणौ' (बौ) ।

थुकाई–स्त्री० थूकने की क्रिया या भाव ।

थुकाणौ, (बौ), थुकावणौ (बौ)–क्रि० [स० थूत्करण] १ थूकने के लिये प्रेरित करना, थुकवाना । २ उगलवाना ।

थुड–पु० १ वृक्ष का तना । २ वृक्ष । –वि० मूर्ख, नासमझ ।

थुडणौ(बौ)–क्रि० १ लडना, भिडना, टक्कर लेना । २ जूझना । ३ किसी काय मे क्षमता से अधिक श्रम करना, जोर लगाना । ४ गुत्थमगुत्था होना । ५ डगमगाना, लड़खडाना ।

थुडि–देखो 'थुड' ।

थुडि–पु० एक प्रकार का व्यजन ।

थुडणौ (बौ)–क्रि० [स० थुड्] १ आच्छादित होना, छाना, फैलना । २ देखो 'थुडणौ' (बौ) ।

थुणणौ (बौ)–क्रि०[स० ष्टुम] १ स्तुति करना, प्रशसा करना । २ ऐहसान मानना, गुणगाना । ३ स्मरण करना, याद करना ।

थुतकारणौ (बौ)–देखो 'थुथकारणौ' (बौ) ।

थुतकारियौ, थुतकारौ–देखो 'थुथकारौ' ।

थुतकी, थुतकौ–देखो 'थुथकौ' ।

थुथकारणौ (बौ)–क्रि० [स० थूत्करणम्] १ दोष दृष्टि से बचाने के लिये मुह से थू-थू करना, टोना करना । २ सराहना, नजर लगने योग्य बताना ।

थुथकारी, थुथकारौ, थुथकी, थुथकौ–पु० [स० थूत्कार] १ दोष दृष्टि बचाने के लिये मुह से थू-थू करने की क्रिया । २ मुह से हल्कासा थूकने की क्रिया ।

थुर–देखो 'थर' ।

थुरन–स्त्री० [स० स्फुरणम्] १ फडकन, स्फुरण । २ हिलने की क्रिया या भाव ।

थुरमौ–देखो 'थिरमौ' ।

थुली, थुल्ली, थुल्लौ–देखो 'थूली' ।

थुवणौ (बौ)–देखो 'थावणौ' (बौ) ।

थुवौ, थुहौ–देखो 'थूओ' ।

थू–देखो 'तू' ।

थूक–देखो 'थूक' ।

थूकणौ (बौ)–देखो 'थूकणौ' (बौ) ।

थूकमथूड–पु० धक्का-मुक्की, फसाफस्सी । धीगा मस्ती ।

थूड, थूडर–स्त्री० थूयन ।

थूणी–स्त्री० [स० स्थूणा] १ बिल्ली, खभ । २ घास-फूस की छाजन, खपरैल । ३ मथदड का फदा अटकाने की गडी हुई लकडी ।

थूथकौ–देखो 'थुथकारौ' ।

थूथी–स्त्री० छोटे कानो वाली बकरी ।

थूंब–देखो 'थू बौ' ।

थूंबडी–देखो 'थुई' ।

थूंबड़ो–देखो 'थूंबौ' ।

थू बली, थू बी–देखो 'थुई'।
थू वो–पु० १ टीवा, भीडा। २ देखो 'थुई'।
थू भ–१ देखो 'थुई'। २ देखो 'थू वो'। ३ देखो 'थु भ'।
थू भडो–देखो 'थुई'।
थू मलो–१ देखो 'थुई'। २ देखो 'थोबली'।
थू भी–देखो 'थुई'।
थू भो–देखो १ थू वो'। २ देखो 'थुई'।
थू–स्त्री० १ दासी। २ पगडी। ३ पराशर। ४ दास। ५ देखो 'तू'। –अव्य० १ थूकने का शब्द। २ भर्त्सना सूचक ध्वनि।
थूई–देखो 'थुई'।
थूओ–पु० १ आभूषण, जेवर। २ सम्पत्ति, जायदाद। ३ ककुद डिल्ला।
थूक–पु० [स० थूत्कृतम्] १ मुह से निकलने वाला गाढा, लसीला पानी, लार। २ बलगम, खखार, ष्ठीवन।
थूकणो (बो)–क्रि० [स० थूतकरणम्] १ मुह से गाढा लसीला पानी गिराना, थूकना। २ बलगम निकालने के लिये खास कर थूकना।
थूड–पु० [स० तुड] १ सूअर का थूथन। २ भुजा का आभूषण, भुजबंध।
थूणी–देखो 'थू णी'।
थूथउ–देखो 'थूथो'।
थूथण, थूथणी–पु० [स० तु ड] १ सूअर आदि का लबा मुंह, तुण्ड, थूथन। २ हाथियो का एक रोग।
थूथो–वि० [स० तुच्छम्] १ तुच्छ। २ मूर्ख, नासमझ। ३ छोटे कानो वाला। –पु० छोटे कानो वाला बकरा।
थूम–देखो 'थु भ'।
थूर–वि०[सं० स्थूल] १ मोटा, बडा। २ हृष्ट-पुष्ट। ३ राक्षस, असुर। ४ देखो 'थो'र'।
थूरणो (बो)–क्रि० [सं० थुर्वणम्] १ नाश करना, सर्वनाश करना। २ सहार करना, मारना। ३ ध्वस्त या तहस-नहस करना।
थूळ–पु० [स० स्थूल] १ डेरा, खेमा, तबू। २ समूह। ३ असुर, राक्षस। ४ साधारणतया इन्द्रियो द्वारा ग्रहण करने योग्य पदार्थ। गोचर पदार्थ। ५ अन्नमय कोष। ६ पर्वत शिखर। ७ ईख। ८ विष्णु। –वि० १ जो यथेष्ट स्पष्ट हो। २ नष्ट होने वाला, नाशवान। ३ मूर्ख, जड। ४ दृढ, मजबूत। ५ मोटा, स्थूल, सूक्ष्म का विपर्याय। ६ मोटा, पीन। ७ विस्तृत, अधिक। ८ गाढा, मोटा। ९ सुस्त। १० असत्य झूठ। ११ रिक्त, खाली।
थूळनास, थूळीनास–पु० [स० स्थूलनासिका] सूअर, शूकर।
थूली–स्त्री० १ गेहूं का दलिया। २ इस दलिये का पकाया हुआ खाद्य पदार्थ।
थूळु–देखो 'थूळ'।
थूही–देखो 'थुई'।
थूहो–देखो 'थूओ'।
थें–सर्व० १ आप, तुम। २ देखो 'थे'। ३ देखो 'थै'।
थे–पु० १ ताल। २ सबोधन। ३ निवास। ४ देखो 'थें'। ५ देखो 'थै'।
थेइ, थेइय, थेई–पु० १ नृत्य व ताल के बोल। २ छोटे बच्चे के खडे होने की क्रिया या अवस्था।
थेईकार–पु० कत्थक नृत्य के बोलों का आधार।
थेईयात–देखो 'थइआयत'।
थेगड–पु० सहारा।
थेगड़ो–पु० १ कटि मेखला या हार मे लगाया जाने वाला चपटा फूल या चौकी। २ देखो 'थाग'।
थेगल, थेगली, थेगलो–स्त्री० फटे वस्त्र पर लगाई जाने वाली कारी, पैबद।
थेगा–पु० एक प्राचीन राजवंश।
थेगो–पु० सहारा, आश्रय।
थेघ–पु० १ एक पर एक चुनने की क्रिया, तह, परत। २ सहारा आश्रय।
थेघल, थेघली–देखो 'थेगल'।
थेच–देखो 'थेचो'।
थेचाकूटो–वि० मार खाने का आदी, पिटने का आदी, ढीठ। –पु० १ कुम्भकार का औजार विशेष। २ परेशानी का कार्य।
थेचो–पु० १ भैंस का एक बार किया गोबर। २ किसी पदार्थ का लोदा। ३ ढेर।
थेट–वि० १ निरा, निपट। २ बिल्कुल, एकदम। ३ समस्त, सब। ४ शुद्ध। ५ वास्तविक, सही। ६ देखो 'ठेट'।
थेट-लग–क्रि० वि० १ अन्त-तक। २ परपरा से, सदा से।
थेटू–क्रि० वि० १ प्रारभ से, परपरा से, अनादिकाल से। २ हमेशा से, नित्य से। –वि० हमेशा, नित्य।
थेपडणो (बो)–क्रि० [स० तेस्तीरणम्] १ बाढे पदार्थ को किसी आधार पर छितराना, थोपना। २ मल्हम आदि का लेपन करना।
थेपड–१ देखो 'थेपडी'। २ देखो 'थेपडो'।
थेपड़की–देखो 'थेपडी'।
थेपडियो–देखो 'थेपडो'।
थेपडी–स्त्री० ईधन के लिये गोबर को थोप कर बनाई हुई गोल टिकिया, उपला।

थेपडौ–पु० १ छाजन के लिये मिट्टी का बनाया गया चौडा खपडा, खपरैल। २ देखो 'थेपडी'।

थेबौ–पु० १ गाढे व गीले पदार्थ का लोदा। २ सहारा। ३ दीवार के बडे पत्थर के सहारे के लिये लगाया गया छोटा पत्थर। ४ देखो 'थोबौ'।

थेर–देखो 'थविर'।

थेरू–देखो 'थिर'।

थेलकी, थेलियौ, थेली, थेलीड़–देखो 'थैली'।

थेलौ–देखो 'थैलौ'।

थेवर–देखो 'थविर'।

थेवौ–पु० १ सहारा, मदद। २ देखो 'थूग्रौ'।

थेह–देखो 'थह'।

थै, थै–पु० १ ताल। २ देवता। ३ विरुद कीर्ति। ४ कील। –वि० १ पूर्ण। २ ऊर्ध्व। –सर्व० आप, तुम। –प्रत्य० तृतीया व पचमी विभक्ति, से।

थैई–स्त्री० [स० स्थिति] १ बारूद रखने की चमडे की एक थैली विशेष। २ देखो 'थेई'।

थैलकी–देखो 'थैली'।

थैलियौ–देखो 'थैलौ'।

थैली–स्त्री० [स० स्थल] १ कपडे, टाट आदि को तीन तरफ से सी कर, सामान डालने के लिये बनाया गया उपकरण। २ रुपये डालने का कपडे आदि का उपकरण। ३ कागज आदि का लिफाफा।

थैलीड़, थैलौ–पु० [स० स्थल] १ कपडे आदि की बडी थैली, थैला, बोरा। २ रुपये डालने का थैलीनुमा पात्र। ३ पायजामे का घुटने से जघा तक का भाग। ४ मकान के दरवाजो के ऊपरी हिस्से पर लगाये जाने वाले चौडे पत्थर के नीचे का पत्थर।

थैह–देखो 'थह'।

थो–पु० १ तरु, वृक्ष। २ मन। ३ पुत्र। ४ नर्सिह। ५ चालाक।

थोक, थोकडौ–पु० [सं० स्तोमक] १ आनन्द, खुशी। २ वैभव ऐश्वर्य। ३ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। ४ पदार्थ, चीज। ५ घटना, बात। ६ व्यग्य, ताना। ७ तरह, प्रकार, भाति। ८ इकट्ठी वस्तु, कुल। ९ खुदरा या फुटकर का विपर्याय, समूह व्यापार। १० व्यापारिक वस्तु का ढेर, राशि, समूह। ११ झुण्ड, मण्डली, यूथ। १२ अटाला, ढेर। १३ तना।

थोकायती–पु० १ झुण्ड या दल का नायक। २ थोक व्यापारी।

थोगणौ–वि० (स्त्री० थोगणी) थाह लेने वाला।

थोगणौ (बौ)–क्रि० थाह लेना।

थोगौ–पु० १ सहारा। २ सहारे के लिये लगाया गया उपकरण, वस्तु। ३ आश्रय अवलबन।

थोड़उ–देखो 'थोडौ'।

थोड-थाड़–वि० किंचित, कुछ-कुछ।

थोडलौ, थोड़ेरौ, थोड़ौ–वि० [सं० स्तोक] (स्त्री० थोडी) १ अल्प, न्यून, कम। २ किंचित, तनिक। ३ अपेक्षित से कम।

थोटक–वि० कर विशेष।

थोड, थोडउ–पु० [सं० तुंड] १ बैलगाड़ी का सब से आगे का भाग, जो जमीन पर नीचे झुका रहता है। २ देखो 'थोडौ।

थोडलउं, थोडलउ, थोडलौ–देखो 'थोडौ'।

थोडिउ–देखो 'थोडौ'।

थोडी–स्त्री० [स० तुण्ड] १ सर्प का मुंह, फण। २ दाढी।

थोडेरु, थोडेरू, थोडेरौ–वि० [स० स्तोक] अपेक्षाकृत कम, थोडा।

थोती–स्त्री० थूथन। –वि० पोपली। खोखली।

थोथ–स्त्री० १ खोखलापन, पोपलापन। २ शून्य स्थान, खाली जगह, बीच मे रही खाली जगह। ३ निर्जन भूमि। ४ व्यर्थता।

थोथरौ, थोथौ–वि० (स्त्री० थोथरी, थोथी) १ खोखला, पोपला। २ खाली, रिक्त, जिसके बीच मे पोल हो। ३ निर्धन, कगाल। ४ अनुपजाऊ। ५ सारहीन, निकम्मा, बेकार। ६ व्यर्थ, फिजूल। ७ मूर्ख, नासमझ।

थोपणौ (बौ)–क्रि० [स० स्थापन] १ जमाकर रखना। २ आरोपित करना, मथना, लगाना। ३ कोई कार्य किसी पर डालना। ४ गीला व गाढा पदार्थ किसी पर लगाकर छितरा देना।

थोब–देखो 'थोभ'।

थोबड–देखो 'थोबडौ'।

थोबडियौ, थोबडौ–पु० [फा० तोब्रा] मुह, शक्ल, सूरत।

थोबणौ (बौ)–देखो 'थोपणौ' (बौ)।

थोबली–स्त्री० लकडी का स्तभ, चाड।

थोबौ–पु० १ गाय के स्तनो मे बछडे द्वारा मुह से दिया जाने वाला झटका, आघात, टक्कर। २ आश्रय, सहारा। ३ स्तम्भ, खबा।

थोभ–पु० [स० स्तम्भ] १ स्तभ, खबा। २ रुकावट, रोक। ३ सीमा, हद।

थोभणौ (बौ)–क्रि० [स० स्तम्भ] १ रोकना, रुकावट डालना। २ गिरती वस्तु को सभालना, सहारा देना। ३ पकडना, ठहराना। ४ सहारा देना। ५ डटना, अडना, ठहरना।

थो'र–स्त्री० जड से उत्पन्न एक गुल्म जिसके तना न होकर डठल होते हैं और डठलो के काटे व छोटी-छोटी पत्तिया लगती हैं, थूहर।

थोरणौ (बौ)–क्रि० १ आग्रह, अनुरोध करना। २ गरज करना, मनुहार करना, मनाना। ३ देखो 'थूरणौ' (बौ)।

थोरियो–पु० थूहर का फल ।
थोरी–पु० एक अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति ।
थोरू–देखो 'थो'र' ।
थोरो–पु० १ आग्रह, अनुरोध । २ गरज, मनुहार ।
थोलउ–देखो 'थोडो' ।
थोलो–पु० तलवार की मूठ का एक भाग ।
थोवो–वि० थोडा, कम ।
थोहर, थोहरि, थोहरी–१ देखो 'थो'र' । २ देखो 'थोरी' ।
थौ–पु० १ सग, साथ । २ गमन । ३ मन । ४ मोह, प्रेम । ५ अष्टसिद्धि । –वि० 'है' का भूतकालिक रूप ।
थौकौ–देखो 'थोक' ।
थ्यावस–देखो 'थावस' ।
थ्यु, थ्यौ–वि० [स० स्था] १ स्थित । २ हुवा हुआ, ३ बना हुआ ।

–द–

द–देवनागरी वर्णमाला का अठारहवा व्यजन ।
द–पु० १ इन्द्र । २ युग । ३ अभिमान । ४ दण्ड । ५ दैत्य की स्त्री ।
दग–वि० [फा०] १ हैरान, विस्मित, आश्चर्यान्वित । २ किंकर्त्तव्य विमूढ । –पु० १ भय, घबराहट । २ अग्नि-कण, चिनगारी । ३ देखो 'दगो' ।
दगइ–वि० १ दगा करने वाला, फिसादी । २ उपद्रवी, आततायी । ३ उग्र, प्रचड ।
दंगणो (बो)–देखो 'दगणो' (बो) ।
दंगर–पु० शत्रु, वैरी ।
दगळ–पु० [फा० दगल] १ पहलवानो की कुश्ती, मल्ल-युद्ध । २ युद्ध, लडाई । ३ अखाडा । ४ खेल, तमाशा । ५ समूह, जमात, मण्डली ।
दगो–पु० [फा० दगल] १ उपद्रव, दगा, हुल्लड । २ झगडा । ३ शोरगुल, हल्ला । ४ विद्रोह, बगावत ।
दंठेल–वि० १ जबरदस्त, जोरदार । २ बडा, मोटा ।
दड–पु० [स० दण्ड] १ छोटी लकडी, डडा । २ राजदण्ड, आत्तदण्ड, संन्यासियो का दण्ड । २ हाथी का दात । ३ नाव की बल्ली । ४ मथानी । ५ अर्थ दण्ड, जुर्माना । ६ सजा । ७ चार हाथ का एक माप । ८ लिंग । ९ शरीर । १० यम की उपाधि । ११ शिव । १२ विष्णु । १३ सूर्य का सहचर । १४ समय का एक विभाग, अश, घडी । १५ घोडा । १६ हल की हरिस । १७ दो गणण के दूसरे भेद का नाम । १८ काव्य छन्द का एक भेद विशेष । १९ ३६ प्रकार के दण्डायुधो मे से एक ।
दडक–पु० [स०] १ डडा । २ दड देने वाला अधिकारी, शासक । ३ ध्वज दण्ड । ४ एक अरण्य विशेष । ५ छदो का एक वर्ग विशेष । ६ दो छदो से मिलकर बनने वाला छन्द । ७ इक्ष्वाकु राजा का एक पुत्र । ८ एक प्रकार का वात रोग । ९ शुद्ध राग का एक भेद । १० कर्म दण्ड भोगने वाले प्राणी या उनके स्थानो का समूह । (जैन)
दडकळ–देखो 'दडकळा' ।
दडकळस–पु० ध्वजदंड और कलस ।
दडकळा–स्त्री० [स०] एक छन्द विशेष ।
दंडकार, (कारण, कारण्य, कारो)–पु० [स० दण्डकारण्य] विंध्य पर्वत से गोदावरी तट तक फैला एक प्राचीन वन ।
दंडगौरी–स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम ।
दडजात्रा–स्त्री० [स० दड यात्रा] १ सेना का प्रयाण, चढाई । २ दिग्विजय के लिये किया जाने वाला प्रयाण । ३ वर यात्रा, बरात ।
दडण–पु० [स०] दड देने की क्रिया या भाव ।
दडणी–स्त्री० दण्ड देने वाली ।
दडणो (बो)–देखो 'डडणो' (बो) ।
दडताम्री–स्त्री० [स०] ताबे की कटोरियो वाला जल तरग नामक वाद्य ।
दडधर–पु० [स०] १ यमराज । २ सन्यासी । ३ शासनकर्त्ता । –वि० दण्डधारी ।
दडनायक, (नायिक)–पु० [स०] १ दण्ड या सजा का निर्धारण करने वाला न्यायाधीश । २ सेनापति । ३ सूर्य के एक अनुचर का नाम ।
दडनीति–स्त्री० [स०] दण्ड विधान से शासन चलाने की नीति ।
दडपात–पु० [स०] एक प्रकार का सन्निपात रोग ।
दडपाळक–पु० [स० दण्डपालक] द्वारपाल, ड्योढीदार ।
दडपासक–पु० [स० दण्डपाशक] १ सजा भुगताने वाला कर्मचारी । २ जल्लाद, घातक ।
दडबाळधि–पु० [स० दण्डबालधि] हाथी ।
दडमुद्रा–स्त्री० [स०] हाथ की एक तान्त्रिक मुद्रा ।
दडयाम–पु० [स०] १ यमराज । २ दिन, दिवस । ३ अगस्त्य मुनि ।
दडलक्षण–पु० [स०] ७२ कलाओ मे से एक ।

दडवत–देखो 'डडोत'।

दडवासी–पु० [स०] १ गाव का मुखिया। २ हाकिम। ३ द्वारपाल।

दडविधि–स्त्री० अपराधो के बदले मे दण्ड निर्धारित करने का नियम, कानून।

दडव्यूह–देखो 'डडव्यूह'।

दडव्रत–देखो 'डडोत'।

दडा–स्त्री० ७२ कलाओ मे से एक।

दडाक्ष–पु० [स०] चपा नदी के किनारे का एक तीर्थ।

दडाधिपति–पु० मुख्य न्यायाधीश।

दडापतानक–पु० एक प्रकार का वात रोग।

दडायुध–पु० [स०] दण्ड देने का आयुध, शस्त्र।

दडाहड़ि–पु० होली के दिनो मे हाथ से डडे बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य।

दडिका–स्त्री० [स०] १ छडी। २ पक्ति। ३ रस्सी। ४ मोतियो की माला। ५ बीस अक्षरो की एक वर्ण वृत्ति।

दडित–वि० [स०] जिस पर दण्ड निर्धारित किया गया हो, सजायाप्ता।

दडी–देखो 'डडी'।

दडीहड़, दडेहड, दडेहलि–देखो 'दडाहडि'।

दड्यौ–१ देखो 'दडित'। २ देखो 'डडौ'।

दत–देखो 'दात'।

दतक–पु० [स०] १ पहाड की चोटी। २ दांत। ३ पहाड की चोटी का आगे निकला पत्थर। ४ दीवार मे लगी खूटी।

दतकथा–स्त्री० [स०] जनश्रुति पर आधारित, अप्रमाणित व अलिखित वार्ता।

दतकरम–पु० [स० दन्त कर्म्म] ७२ कलाओ मे से एक।

दतकास्ट–पु० [स० दतकाष्ठ] दातून, मुखारी।

दतकुळी–पु० [स०दत-कुली] १ दातो का समूह। २ हाथी, गज।

दतड़, दतडौ–देखो 'दात'।

दतच्छव–पु० [स०] ओष्ठ, ओठ।

दतदरसण–पु० [स० दतदर्शन] क्रोधादि मे दात दिखाने की क्रिया या भाव।

दतधावण–पु० [स० दनधावन] १ दातुन करने की क्रिया। २ दांतुन। ३ करज का पेड। ४ मौलसिरी। ५ खैर का वृक्ष।

दतपुप्पुट–पु० [स० दतपुष्पुट] मसूडे का एक रोग।

दतमूळ–पु० [स०] १ मसूडा। २ दात का एक रोग। ३ दात की जड।

दतल, दतली–स्त्री० १ आभूषणो पर खुदाई करने का एक औजार। २ छोटा हसिया। ३ देखो 'दात'। –वि० बडे दातो वाली।

दतलू, दतलौ–१ देखो 'दानलौ'। २ देखो 'दात'।

दतवा–पु० दातो के बाहर गाल पर होने वाला फोडा।

दतवाळौ–पु० [स० दतावल] हाथी गज।

दतसकु–पु० [स० दतशकु] चीर-फाड करने का एक औजार विशेष।

दतसकट–पु० [स० दतशकट] हाथी दात का बना रथ।

दताजुध–पु० [स० दतायुध] जगली सूअर।

दताळ–पु० १ गणेश, गजानन। २ देखो 'दतावळ'। –वि० १ बडे बडे दातो वाला। २ दतेदार।

दताळद्रप–पु० [स० दतावल-दर्पक] गजासुर को मारने वाले, महादेव।

दताळपत्र–पु० किसी गाव का, कविता के रूप मे सनद पत्र।

दताळय–स्त्री० [स० दतालय] दातो का स्थान, मुख।

दताळिका–स्त्री० [स० दतालिका] लगाम।

दताळियौ–१ देखो 'दताळौ'। २ देखो 'दतावळ'।

दताळी–स्त्री० १ दातेदार या कगूरेदार काष्ठ का बना फावडा। २ लगाम। –वि० बडे-बडे दातो वाला।

दताळौ–वि० (स्त्री० दताळी) १ बडे-बडे दांतो वाला। २ देखो 'दतावळ'। ३ देखो 'दताळी'।

दतावळ, दताहळ–पु० [स० दतावळ] हाथी, गज।

दतियौ–पु० १ स्वर्णकारो का एक औजार। २ देखो 'दांतलौ'।

दती–पु० [सं० दतिन्] १ हाथी, गज। २ अडी जाति का एक पेड। ३ जमाल गोटा। ४ प्रथम लघु की पाच मात्रा का नाम। ५ देखो 'दात'। –वि० [स० दत्य] १ दातो का, दातो सबधी। २ दातो की सहायता से उच्चरित होने वाला। ३ दातो वाला। ४ दातो का हितकारी। —उडांण–पु० हाथियो का सहार करने वाला, भीम। —धावक–पु० इन्द्र। —भख–पु० पीपल का वृक्ष।

दतील–देखो 'दती'।

दतीलौ–१ देखो दातलौ'। २ देखो 'दती'।

दतुर, दतुल, दतुली–पु० [स०] १ ४९ क्षेत्रपालो मे से ३४ वा क्षेत्रपाल। २ हाथी। ३ सूअर, वराह। –वि० जिसके दात आगे निकले हो, दतुलौ।

दतुलौ–देखो 'दातलौ'।

दतुसळ, दतुसळि, दतूसळ, दतूसळि–पु० [स० दत मूसल] हाथी या सूअर आदि का मुह के बाहर निकला लंबा दांत।

दतेरू–पु० बच्चो के मुह ललाट आदि पर होने वाला एक फोडा।

दद–देखो 'दुद'।

ददभ, ददब–देखो 'दु दुभि'।

ददसुक, ददसूक–पु० [स० दतशूक] १ सर्प, नाग। २ राक्षस। ३ जहरीला जतु। –वि० १ जहरीला। २ काटने वाला। ३ उत्पाती।

ददोळी–वि० उत्पाती, उपद्रवी।

ददो–पु० १ ताल देने वाला वाद्य। २ देखो 'दु द'।

दधभ–देखो 'दु दुभि'।

दपत, दपति, दपती–पु० [स० दपती] पति-पत्नी का जोडा। स्त्री-पुरुष।

दबु–पु० पाटल वृक्ष।

दभ–पु० [स०] १ गर्व, अहकार, अभिमान। २ आडवर, पाखण्ड। ३ कपट, छल। ४ झूठी शान-शौकत। ५ इन्द्र का वज्र। ६ शिव। ७ स्त्रियो की ६४ कलाओ मे से एक। ८ देखो डाम'। ९ देखो 'दभी'।

दभणो (बो)–पु० [स० दम्भन्] १ गर्व या अहकार करना। २ आडंबर या ढोग करना। ३ देखो 'डामणो' (बो)।

दभी–वि० [स० दभिन्] १ अभिमानी, अहंकारी, घमडी। २ पाखण्डी, ढोगी। ३ छलिया, कपटी।–पु०[स० दम्भोलि] १ सुदर्शन चक्र। २ दोनो तरफ मुह वाला सर्प।

दभोळ, दभोळि–पु० [स० दम्भोलि] इन्द्र का वज्र।

दस–पु० [स० दश] १ मुह से काटने की क्रिया, दशन। २ दातो से काटने का घाव, दत-क्षत। ३ विषैले जन्तुओ का डक। ४ दात। ५ चीर-फाड। ६ सर्प का विष दत। ७ दोष, त्रुटि। ८ तीखापन। ९ कवच। १० जोड। ११ एक राक्षस का नाम। १२ वनैली मक्खी। –वि० दुष्ट, पापी।

दसक–पु० [स० दशक] १ डास नाम की मक्खी, मच्छर। २ कुत्ता। –वि० काटने वाला, डक मारने वाला।

दसटरी, दसटरीर–देखो 'दंस्ट्री'।

दसण–१ देखो 'दरसण'। २ देखो 'दसन'।

दसणो (बो)–क्रि०१ दातो से काटना। २ डसना, काटना। ३ विष दत या डक मारना।

दसन–पु० [स० दशन] काटने या डसने की क्रिया। दश।

दसी–वि० [स० दशिन्] काटने या डसने वाला, काट खाने वाला। –स्त्री० छोटी गो मक्खी, डास।

दस्टरी–देखो 'दस्ट्री'।

दस्ट्र–पु० [स० दष्ट्र] दांत।

दस्ट्रायुध–पु० [स० दष्ट्रायुध] शूकर, वराह।

दस्ट्राळ–वि० [स० दष्ट्राल] बडे-बडे दातो वाला।

दस्ट्री–वि० [स० दष्ट्रिन] बडे-बडे दातो वाला। –पु० १ सूअर, वराह। २ सर्प, नाग।

द–पु० १ देवगण। २ खग। ३ साधु। ४ सार।

दइत–स्त्री० दया। –वि० अपार, असीम। देखो 'दैत्य'।

दइ– १ देखो 'दई'। २ देखो दैव'।

दइगपाळ–देखो 'दिकपाल'।

दईणो (बो)–देखो दैणो (बो)।

दइत–देखो'दैत्य'।—**निकद, निकदण**='दैत्य निकदण'।

दइतडी–स्त्री० एक प्रकार की मिठाई, पकवान।

दइतागुर–पु० [स दैत्य गुरु] १ शुक्राचार्य। २ रावण, दशासन।

दइत्त–देखो 'दैत्य'।

दइत्यद्र–पु० [स० दैत्य-इन्द्र] १ वलिराजा। २ दैत्य।

दइबांण–१ देखो 'दीवाण'। २ देखो 'दइवाण'।

दइवत–देखो 'दैव'। —**गति**= दैवगति'।

दइव–देखो 'दैव'। —**राय, रायो**= 'दईवराय'।

दइवाण (न)–वि० १ विशालकाय, भीमकाय। २ महान, जबरदस्त। ३ वीर, योद्धा। ४ शक्तिशाली, समर्थ। ५ देखो 'दीवाण'।

दइवी–देखो 'दैवी'।

दई–पु० [स० दधि] १ गर्म दूध मे खटाई डालकर तैयार किया हुआ खाद्य पदार्थ, दधि, दही। [सं० दैवी] २ आश्चर्य, विमस्य। ३ प्यारा, प्रिय। ४ देखो 'दैव'।

दईगत–देखो दैवगति'।

दईतद्र– देखा 'दइत्यद्र'।

दईत–पु० [स० दैत्य] १ यवन। २ देखो 'दैत्य'।

दईतेंद्रवर–पु० [स० दैत्य-इन्द्र-वर] महादेव, शिव।

दईत्यारी–पु० [स० दैत्य-अरि] देवता।

दईब, दईय, दईव–देखो दैव'।

दईवगत–देखो 'देवगत'।

दईवराय, (रायो)–वि० [स० देव+राट्] १ महान, बडा, शक्तिशाली। २ देखो 'देवराज'।

दईव-सजोग–देखो 'देवजोग'।

दईवांण–१ देखो 'दइवाण'। २ देखो 'दीवाण'।

दउडणो (बो)–देखो 'दौडणो' (बो)।

दउड–देखो 'डौड'।

दउढो–देखो 'डौढो'।

दउलत–देखो 'दौलत'।

दउलेय–पु० [स० दौलेय] कछुआ।

दक–पु० [स०] पानी, जल।

दकसीर–स्त्री० [स० दकशिरा] नदी।

दकार, दकारियो–पु० [स०दकार] त वर्ग का तीसरा वर्ण 'द'।

दकाळ–स्त्री० १ फटकार। २ ललकार।

दकाळणौ–वि० (स्त्री० दकाळणी) १ उत्साहित करनेवाला, जोश दिलाने वाला। २ ललकारने वाला। ३ फटकारने वाला।

दकाळणौ (बौ) क्रि० १ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना। २ ललकारना। ३ फटकारना।

दकूळ–देखो 'दुकूळ'।

दक्काळौ–देखो 'दकाळणौ'।

दक्ख–१ देखो 'दक्ष' २ देखो 'दुख'।

दक्खण–देखो 'दक्षिण'।

दक्खणा–देखो 'दक्षिणा'।

दक्खणौ (बौ)–देखो 'दाखणौ' (बौ)।

दक्खि–देखो 'दुखी'।

दक्खिण–देखो 'दक्षिण'।

दक्ष–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध प्रजापति। –वि० १ किसी कार्य मे निपुण, कुशल। २ चतुर, होशियार। ३ योग्य। ४ विशेषज्ञ ५ उपयुक्त, उपयोगी। ६ सावधान, तत्पर। ७ फुर्तीला। ८ सच्चा, ईमानदार। ९ दाहिना।

दक्षण–वि० [स० दक्ष] १ चतुर, दक्ष, होशियारी, २ देखो 'दक्षिण'। –**पथी**='दक्षिणपथी'।

दक्षणा–देखो 'दक्षिणा'।

दक्षता–स्त्री० [स०] निपुणता, कुशलता, योग्यता। होशियारी, चतुराई।

दक्षन–देखो 'दक्षिण'।

दक्षसावरणी–पु० [स० दक्षसावर्णि] नौवें मनु का नाम।

दक्षा–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी भूमि। २ देखो 'दक्ष'।

दक्षिण–वि० [स०] १ दाहिना। २ वाम का विपर्याय। ३ दक्षिण की ओर अवस्थित। ४ प्रिय, मधुर। ५ शिष्ट, सभ्य, भद्र। ६ आज्ञाकारी। ७ अवलम्बित। ८ देखो 'दक्ष' –स्त्री० १ उत्तर के सामने की दिशा। २ दक्षिण देश की भाषा। -पु० ३ दक्षिण प्रदेश। ४ सभी नायिकाओ पर समान अनुराग रखने वाला नायक। ५ विष्णु। ६ तत्रोक्त एक मार्ग या आचार।

दक्षिणगोळ–पु० [स० दक्षिण गोल] विषुवत रेखा के दक्षिण मे पडने वाली राशिया।

दक्षिणचतुरथांसपादासण (न)–पु० एक प्रकार का योगासन।

दक्षिणजान्वासण. (न)–पु० [स०] एक प्रकार का योगासन।

दक्षिणतरकासण (न)–पु० [स०] एक प्रकार का योगासन।

दक्षिण-पथ, दक्षिणपथौ–पु० [स० दक्षिणपथ[१ दक्षिण प्रदेश। २ इस प्रदेशोत्पन्न घोडा। ३ दक्षिण मार्गी।

दक्षिणपादअपानगमनासण–पु० [स०] योग के चौरासी आसनो मे से एक।

दक्षिणपाद सिरासण–पु० योग के चौरासी आसनो मे से एक।

दक्षिण वक्रासण–पु० योग के चौरासी आसनो मे से एक।

दक्षिण साखासण–पु० योग के चौरासी आसनो मे से एक।

दक्षिणा–स्त्री०[स०]१ यज्ञ कथादि शुभ कार्य करवाने के उपरात व्यास, ब्राह्मण या पुरोहित को दी जाने वाली भेंट। २ दक्षिण दिशा। ३ दान, भेंट। ४ यज्ञ पुरुष की स्त्री। ५ पुरस्कार, पारिश्रमिक। ३ दुधारु गौ। ७ दक्खिनी भारत। ८ एक प्रकार की नायिका।

दक्षिणाचल–पु० [स० दक्षिणाचल] मलयगिरि, मलयाचल।

दक्षिणाचारी–पु०[स०] विशुद्धाचारी, सदाचारी।

दक्षिणापथ–पु० [स०] दक्षिण भारत का प्रदेश।

दक्षिणायण–पु० [स० दक्षिणायन] १ सूर्य की दक्षिण दिशा मे गमन करने की क्रिया या अवस्था। २ कर्क सक्राति से मकर सक्राति तक की अवधि जब सूर्य दक्षिणायन मे रहता है। –वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर, दक्षिण की ओर का।

दक्षिणावरत–पु० [स दक्षिणावर्त] १ दाहिनी ओर घुमाव वाला शख। -वि० दक्षिणी या दाहिनी ओर मुडा हुआ।

दख–१ देखो 'दक्ष'। २ देखो 'दुख'।

दखण–देखो 'दक्षिण'। –**पथौ**='दक्षिणपथौ'।

दखणपति (पती)–पु० [स० दक्षिणपति] १ चन्द्रमा, चाद। २ यमराज।

दखणांण–स्त्री० १ दक्षिण दिशा। २ देखो 'दक्षिणायण'।

दखणा–देखो 'दक्षिणा'।

दखणाद–वि० दक्षिण दिशा का। –स्त्री० १ दक्षिण दिशा। २ देखो 'दक्षिण'। ३ देखो 'दखणी'।

दखणादि दखणाधि, (धी,धू)–स्त्री० [स० दक्षिण-ध्रुव] दक्षिण दिशा की वायु। –क्रि० वि० दक्षिण मे, दक्षिण की ओर।

दखणायण–देखो 'दक्षिणायण'।

दखणी–पु० [स० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का निवासी। २ दक्षिण देश की भाषा। ३ दक्षिण दिशा। ४ दक्षिण दिशा की वायु। –वि० दक्षिण का।

दखणीचवळा–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति।

दखणौ (बौ)– १ देखो 'दाखणौ'(बौ)। २ देखो 'देखणौ'(बौ)।

दखन–देखो'दक्षिण'।

दखमा–पु० फारसियो का मुर्दे रखने का स्थान।

दखल(ळ)–स्त्री०[अ दखल]१ हस्तक्षेप। २ पहुच। २ अधिकार कब्जा। –**नामौ**–पु० शासक द्वारा प्रदत्त अधिकार पत्र।

दखसावरणी–देखो 'दक्षसावरणी'।

दखा–देखो 'दक्ष'।

दखिण–देखो 'दक्षिण'।

दखिणा–देखो 'दक्षिणा'।

दखिणाद, (ध)–देखो 'दखणाद'।

दखिणाधी (धू)–देखो 'दखणाद'।

दखिणानिळ–पु० [स० दक्षिण-अनिल] दक्षिण की ओर से चलने वाली वायु। मलयानिल।

दखिणाव्रत–देखो 'दक्षिणावरत'।

दखियाणी–स्त्री० राजा दक्ष की पुत्री, सती।

दखोडी–स्त्री० पतगा विशेष।

दख–१ देखो 'दक्ष'। २ देखो 'दाख'

दखणी–देखो 'दखणी'।

दख्यण–देखो 'दक्ष'।

दख्यणा–देखो 'दक्षिणा'।

दख्यणो–वि० कहने वाला। दिखाने वाला। प्रगट करने वाला।

दख्यणौ (बो)–देखो 'दाखणौ' (बो)।

दख्याणी–देखो 'दखियाणी'।

दगत–देखो 'दिगत'।

दगंतर–देखो 'दिगतर'।

दगंबर–देखो 'दिगवर'।

दगबरी–देखो 'दिगबरी'।

दगमर–देखो 'दिगबर'।

दग–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ बूद। ३ देखो 'दाग'। ४ देखो 'दक'।

दगग–देखो 'दग'।

दगड–पु० १ लडाई मे वजाया जाने वाला वडा ढोल। २ वडा पत्थर। ३ अनगढा पत्थर। ४ खुला स्थान। ५ मुसलमान। ६ वडा मार्ग, चौडा मार्ग। —**बार**–पु० वडा दरवाजा। खुला मैदान।

दगणौ (बो)–क्रि० १ तोप-बन्दूक आदि का छूटना, दागा जाना। २ जलना, दग्ध होना, झुलसना। ३ चिह्न दागा जाना। ४ धोखा खाना, ठगा जाना। ५ देखो 'दाखणौ' (बो)।

दगदगी–स्त्री० [सं० दगदगा] १ एक प्रकार की कडील। २ डर, भय। ३ कपन, कपकंपी। ४ शक, सदेह।

दगदगणौ (बो)–क्रि० १ भयभीत होना, डरना। २ कापना, थर्राना।

दगध–देखो 'दग्ध'। —**अखर, अखिर**='दग्धाक्षर'। —**मत्र**='दग्धमत्र'।

दगधाजीरण–पु० [स० दग्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

दगपाळ–देखो 'दिकपाळ'।

दगमग–स्त्री० १ चमक-दमक। २ देखो 'डगमग'।

दगली–देखो 'डगली'।

दगलो–पु० एक प्रकार का कवच।

दगाणौ (बो)–क्रि० १ तोप, बन्दूक आदि का छुड्वाना, दगवाना। २ जलवाना, दग्ध कराना, झुलसाना। ३ दग्ध कराकर चिह्नित कराना। ४ ठगवाना, धोखा दिराना।

दगादार–वि० [फा०] धोखावाज, छली।

दगावाज–वि० [फा०] १ कपटी, छली, धोखावाज। २ मक्कार।

दगावाजी–स्त्री० [फा०] १ छल, कपट, धोखा। २ मक्कारी।

दगावणौ (बो)–देखो 'दगाणौ' (बो)।

दगंल–देखो 'दागल'।

दगो–पु० [फा० दगा] १ धोखा, छल, कपट। २ ठगी। ३ विश्वासघात।

दग्ग–देखो 'दाग'।

दग्गड़–देखो 'दगड'।

दग्गणौ (बो)–देखो 'दगणौ' (बो)।

दग्गाज–देखो 'दिग्गज'।

दग्गो–देखो 'दगो'।

दग्ध–वि० [स०] १ जला हुआ। २ जला कर दागा हुआ। ३ दुखी, सतप्त। ४ भस्म हुवा हुआ। ५ भूखो मरा हुआ। ६ शुष्क, फीका। –पु० १ दुःख। २ दग्धाक्षर।

दग्धमंत्र–पु० [सं०] एक तान्त्रिक मत्र।

दग्धा–स्त्री० [स०] १ कुछ विशिष्ट राशियो वाली तिथि। २ कुरु नामक वृक्ष विशेष। ३ सूर्यास्त की दिशा।

दग्धाक्षर, दग्धाखर–पु० [स० दग्धाक्षर] छन्द के प्रारभ मे वर्जित माना जाने वाला वर्ण।

दडद, दडदो–पु० १ किसी वस्तु के गिरने का शब्द। २ देखो 'दिनद'।

दड़–स्त्री० १ उर्वरा शक्ति बढाने के लिये छोडी हुई कृषि भूमि। २ छत पर सदला करने के ककर आदि। ३ शब्द करते हुए गिरने वाला पदार्थ। ४ वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि। ५ विवर, बिल।

दड़अड–देखो 'दडी'।

दडक–स्त्री० १ अत्यल्पकालिक वर्षा की झडी। २ दौड। –क्रि०वि० शीघ्र, अचानक, सहसा।

दडकणौ (बो)–क्रि० १ भागना, दौडना। २ दीवार मे गोबर की लिपाई करना। ३ कट कर दूर पडना। ४ लुढ़कना।

दडकली–देखो 'दडी'।

दडकाणौ (बो)–क्रि० १ भगाना, दौडाना। २ दीवार को गोबर से लिपवाना। ३ उडेलना। ४ मारना, काटना।

दडके, दड़कै–क्रि० वि० शीघ्र, तुरत। तेज गति से।

दडको–पु० १ दौड। २ द्रुतगति। ३ ध्वनि विशेष। ४ गोबर की लिपाई। ५ वर्षा की हल्की झडी।

दडवकणौ (बौ)–देखो 'दडकणौ' (बौ)
दडगल–देखो 'दडघल' ।
दडगली–देखो 'दडी' ।
दडघल–पु० १ एक औषधि विशेष । २ वर्षा ऋतु मे होने वाला पौधा विशेष ।
दडड–स्त्री० वर्षा की बूदें या वस्तुओ के निरन्तर गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।
दडड़णौ (बौ)–क्रि० १ बरसना या लगातार गिरना । २ दड-दड ध्वनि होना । ३ गूजना ।
दडणौ (बौ)–क्रि० १ किसी विवर या दरार को गोबर आदि से बद करना । २ दीवार मे गोबर लीपना ।
दडदड, दडद्दड़–देखो 'दडड' ।
दडपणौ (बौ)–क्रि० १ आच्छादित होना । २ लीपना ।
दडवड–देखो 'दडड़' ।
दडवडणौ (बौ)–देखो 'दडवडणौ' (बौ) ।
दडवडाट–देखो 'दडवडाट' ।
दडवडाणौ (बौ)–देखो 'दडवडाणौ' (बौ) ।
दड़वौ–पु० १ छोटा टीबा । २ रेत का जमा हुआ ढेर । ३ ढेर, राशि । ४ धन, द्रव्य । ५ अनगढ़ पत्थर । ६ छोटा बद कमरा ।
दडवक–स्त्री० [स० द्रव] द्रुतगति से भागने की क्रिया या भाव ।
दडवड–स्त्री० १ दौड-भाग । २ देखो 'दडड' ।
दडवडणौ (बौ)–क्रि० [स० द्रव] १ दौडना, भागना । २ शरीर पर हल्का मुष्टि प्रहार करना ।
दडवडाट–स्त्री० वाहनो के चलने, दौडने आदि से उत्पन्न ध्वनि ।
दडवडाणौ (बौ)–क्रि० [स० द्रव] दौडाना, भगाना ।
दडाक–क्रि०वि० अचानक, शीघ्र, सहसा, तुरत । –स्त्री० किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि ।
दडाछट (छट)–वि० निर्भय, नि शक, निडर । –क्रि०वि० निडरता से, विना अटके ।
दडिंवक–देखो 'दिनद' ।
दड़ियड–१ देखो 'दडी' । २ देखो 'दडड' ।
दडींदौ–पु० १ प्रहार, चोट । २ ध्वनि विशेष ।
दडी–स्त्री० गेंद ।
दडूकणौ–वि० जोश मे बोलने वाला, दहाडने या गरजने वाला ।
दडूकणौ (बौ)–क्रि० दहाडना, गर्जना, ताड़ूकना ।
दडौ–पु० १ बडी गेंद । २ देखो 'घडौ' ।
दचकौ–देखो 'डचकौ' ।
दच्छ–देखो 'दक्ष' ।
दच्छणा–देखो 'दक्षिणा' ।
दछ–देखो 'दक्ष' ।
दछा–देखो 'दसा' ।
दछि–देखो 'दक्ष' ।
दछिणा–देखो 'दक्षिणा' ।
दजोण, दज्जोण–देखो 'दुरयोधन' ।
दझणौ (बौ), दझळणौ (बौ)–देखो 'दाझणौ' (बौ) ।
दझाडणौ(बौ), दझाणौ (बौ) दझाळणौ(बौ), दझावणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्ध] १ जलाना । २ दग्ध कराना । ३ झुलसाना । ४ दु खी करना, कुढाना ।
दट–पु० फलादि किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि । –वि० [स० दुष्ट] दुष्ट । –क्रि०वि० शीघ्र, झट ।
दटणौ (बौ)–क्रि० १ दबना, फीका पडना, मिटना । २ नष्ट, होना, कटना । ३ किसी विवर, सूराख आदि का बद होना । ४ नियत्रण या काबू मे आना । ५ रुकना । ६ देखो 'डटणौ (बौ) ।
दटपट–पु० [स० दृढपद] एक मात्रिक छद विशेष ।
दटाक–देखो 'दट' ।
दठि–१ देखो 'द्रस्टि' । २ देखो 'दट' ।
दडउ–देखो 'दडौ' ।
दडवडी–स्त्री० तवला नामक वाद्य ।
दडवड–देखो 'दडवड' ।
दडवडणौ (बौ)–देखो 'दडवडणौ' (बौ) ।
दडवडाट, (टि)–देखो 'दडवडाट' ।
दडवडी– देखो 'दडदडी' ।
दडिंदक–देखो 'दिनद' ।
दडूकणौ (बौ)–देखो 'दडूकणौ' (बौ) ।
दडूलु, (लौ)–देखो 'दडौ' ।
दडौ–देखो 'दडौ' ।
दड्ढणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्धनम्] जलना, भस्म होना ।
दढ–देखो 'द्रढ' ।
दढ़णौ (बौ)–देखो 'दड्ढणौ' (बौ) ।
दढि–देखो 'दाढी' ।
दढियळ–देखो 'डढियाळ' ।
दढ्ढा–देखो 'डाढ' ।
दणयर–१ देखो 'दिनकर' । २ देखो 'दुनिया' ।
दणी–स्त्री० धनुष ।
दणीयर–देखो 'दिनकर' ।
दणु (णू)–देखो 'दनु' ।
दत–पु० [स० दत्त] १ दान, भेंट । २ जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक । ३ सन्यासी । ४ पौष्टिक पदार्थ । ५ देखो 'दत्त' । —दायजौ–पु० दहेज सबधी भेंट ।
दतक–देखो 'दत्तक' ।
दतचाळ–पु० दानवीर राजा कर्ण ।
दतणौ (बौ)–क्रि० १ दान देना । २ पौष्टिक पदार्थ खिलाना ।

दतदेव–पु० दत्तात्रेय मुनि ।
दतवर–पु० शिव, महादेव ।
दता–देखो 'दाता' ।
दतात्रय–देखो 'दत्तात्रेय' ।
दतावरी–देखो 'दातावरी' ।
दति–१ देखो 'दत' । २ देखो 'दत्त' । ३ देखो 'दिति' ।
दतिसुत-पु० [स० दितिसुत] असुर, दैत्य, राक्षस ।
दती–वि० दातार, उदार । –पु० १ दत्तात्रेय ऋषि । २ देखो 'दत' । ३ देखो 'दिति' ।
दतुण–देखो 'दातण' ।
दत्त–वि० [स०] १ दिया हुआ । भेंट किया हुआ । २ सौंपा हुआ । ३ रखा हुआ । ४ पसारा हुआ । –पु० १ बारह प्रकार के पुत्रो मे से एक । २ वैश्य की उपाधि । ३ दत्तात्रेयी । ४ सन्यासी । ५ दान, भेंट ।
दत्तक-पु० [स०] गोद लिया हुआ पुत्र ।
दत्तचित्त–वि० [स०] पूर्ण मनोयोग से लगा हुआ, लीन, मग्न ।
दत्तणौ (बौ)–देखो 'दतणौ' (बौ) ।
दत्तति–देखो 'दत्तात्रेय' ।
दत्ततीरथक्रत–पु० [स० दत्ततीर्थंकृत्] जैन मतानुसार गत उत्सर्पिणी के आठवें अरिहत ।
दत्तदायजौ–पु० दहेज ।
दत्तव (व)–पु० [स० दत्त] दान ।
दत्ता, दत्तात्रेय–पु० [स०] अत्रि व अनुसूया के पुत्र एक ऋषि ।
दत्तावरी–देखो 'दातावरी' ।
दत्ती–स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शक्ति ।
दत्तोपनिसद–पु० [स० दत्तोपनिषद्] एक उपनिषद् का नाम ।
दत्तोलि–पु० [स०] पुलस्त्य मुनि का एक नाम ।
दत्तौ–वि० दानी, उदार ।
दद–देखो 'उदधि' ।
ददगम्रखंनिधदांन–पु० कल्पवृक्ष ।
ददराज–पु० [स० उदधि-राज] सागर, समुद्र ।
ददांमौ–पु० एक वाद्य विशेष ।
ददौ–पु० १ 'द' अक्षर । २ देने को कहने का शब्द । ३ देखो 'दादौ' ।
दद्धीच–देखो 'दधीचि' ।
दद्दौ–देखो 'दादौ' ।
दध–स्त्री० [स० द्वेष] १ डाह, ईर्ष्या । २ देखो 'उदधि' । ३ देखो 'दई' । —खीर='उदधिखीर' । —जा–स्त्री० लक्ष्मी, रमा ।
दधणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्ध] भस्म होना, जलना ।
दधधाम–पु० [स० उदधि-धाम] वरुण ।
दधपुरी–पु० [स० उदधि-पुरी] द्वारकापुरी ।
दधभेदी–पु० [स० उदधि-भेदिन्] केवट, मल्लाह ।
दधमुख–पु० [स० दधि-मुख] सुग्रीव का मामा एक बन्दर ।
दधविधी–पु० [स० उदधि + विध] केवट ।
दधसार–पु० [स० दधि + सार] १ मक्खन, नवनीत । [स० उदधि + सार] २ मदिरा ।
दधसुत–पु० [स० उदधि + सुत] १ शख । २ अमृत । ३ चन्द्रमा । ४ प्रवाल मूगा । ५ मोती । ६ विष । ७ कमल । ८ जालधर दैत्य ।
दधसुतनी (सुता)–स्त्री० [स० उदधि-सुता] १ लक्ष्मी, पद्मा । २ सीप ।
दधाणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्ध] १ दग्ध करना, जलाना । २ दुखी करना, सतप्त करना ।
दधि–पु० १ वस्त्र, कपडा । २ देखो 'उदधि' । ३ देखो 'दई' ।
दधिकर–पु० [स०] ३६ राजवशो मे से एक ।
दधिगामणी, दधिगामिनी–स्त्री०[स० उदधिगामिनी]सरिता नदी ।
दधिजात–पु० [स०] १ मक्खन, नवनीत । [स० उदधिजात] २ चन्द्रमा । ३ लक्ष्मी, पद्मा ।
दधिभव–पु० [स० उदधि-भव] विष्णु ईश्वर ।
दधिमडोद–पु० [स०] १ दही का समुद्र । (पौराणिक) २ पृथ्वी के सात खण्डो मे से एक ।
दधिमती–देखो 'दधिमथी' ।
दधिमथणी–स्त्री० [स० दधि-मथन] दही मथने की लकडी, मथ-दण्ड, मथानी ।
दधिमथी–स्त्री० दाधीच ब्राह्मणो की उपास्य देवी, विष्णु शक्ति । मोहिनी ।
दधिमुख–देखो 'दधमुख' ।
दधिसार–देखो 'दधसार' ।
दधिसुत–देखो 'दधसुत' ।
दधिसुता–देखो 'दधसुतनी' ।
दधी–१ देखो 'दधि' । २ देखो 'उधदि' ।
दधीच–देखो 'दधीचि' ।
दधीचास्थी–पु० [सं० दधीच + अस्थि] १ वज्र । २ हीरा ।
दधीचि (ची)–पु० [स०] एक पौराणिक ऋषि जिनकी हड्डियो से इन्द्र का वज्र बना ।
दधीलौ–वि० (स्त्री० दधीली) द्वेष करने वाला, ईर्ष्यालु ।
दधीस–पु० [स० उदधि-ईश] १ समुद्र, सागर । २ वरुण ।
दधूण–पु० वृक्ष विशेष ।

दधेस–देखो 'दधीस'।
दध्न–पु० [स०] चौदह यमो मे से एक यम।
दन–१ देखो 'दान'। २ देखो 'दिन'। ३ देखो 'दनु'।
दनइस (ईस)–देखो 'दिनेस'।
दनकर–देखो 'दिनकर'।
दनमण, दनमणि–देखो 'दिनमणि'।
दनमान–देखो 'दिनमान'।
दनादन–क्रि० वि० १ गोलियो की बौछार की तरह, दन-दन शब्द करते हुए। २ तीव्रवेग से। ३ लगातार।
दनि–१ देखो 'दिन'। २ देखो 'दनु'। ३ देखो 'दुनिया'।
दनिया–देखो 'दुनिया'।
दनीस–देखो 'दिनेस'।
दनु–स्त्री० [स०] १ दानवो की माता जो दक्ष की पुत्री थी। २ श्री दानव का पुत्र एक राक्षस। ३ दैत्य, दानव राक्षस।
दनुज–पु० [सं०] दनु की सन्तान दनुज। असुर। —वळणी, दलनी–स्त्री० दुर्गा, शक्ति। —राय–पु० राजा वलि। हिरण्य कश्यप। रावण।
दनुजेंद्र–पु० [स० दनुज-इन्द्र] दानवो का राजा, बलि, हिरण्य कश्यप।
दनुजेस–पु० [स० दनुजईश] दानवो का राजा, रावण, बलि, हिरण्य कश्यप।
दनुपत, (पति)–पु० [सं० दनु-पति, दानव-पति] १ कश्यप। २ राजा वलि, असुर राज।
दनुसभव–पु० [स०] दनु से उत्पन्न, दानव।
दनूज–देखो 'दनुज'।
दनेस–देखो 'दिनेस'।
दन्न, दन्नि–स्त्री० १ गति से उत्पन्न ध्वनि। २ देखो दांन' ३ देखो 'दिन'।
दन्या–देखो 'दुनिया'।
दप–पु० मृदग के बोल।
दपट–स्त्री० १ छलाग, कुदान। २ आग की लौ, लपट। ३ आक्रमण, धावा। ४ झपट। ५ गति की तीव्रता, त्वरा। ६ विशेष खाने की क्रिया या भाव। ७ वस्त्र की लपेट, आवेष्टन। ८ डाट, फटकार। –वि० अधिक तेज।
दपटणो (बो)–क्रि० १ खूब खाना, जमकर खाना। २ कैंची से दाढी काटना। ३ आक्रमण करना, धावा बोलना। ४ आवेष्टन करना, लपेटना। ५ छलांग भरना, कूदना। ६ तेज भागना। ७ सहार करना, मारना। ८ अधिक खर्च करना। ९ डांटना, फटकारना। १० दौडना।
दपटाणो (बो), दपटावणो (बो)–क्रि० १ खूब खिलाना, जम कर खिलाना। २ कैंची से दाढ़ी कटवाना। ३ आक्रमण कराना। ४ आवेष्टन कराना, लिपटवाना। ५ छलाग भरवाना, कुदवाना। ६ तेज भगवाना, दौडाना। ७ सहार कराना, मरवाना। ८ अधिक खर्च कराना। ९ डाट फटकार, दिराना। १० दौडाना।
दपट्ट–देखो 'दपट'।
दपट्टणो (बो)–देखो 'दपटणो' (बो)।
दपट्टाणो (बो) दपट्टावणो (बो)–देखो 'दपटाणो' (बो)।
दपणो(बो)–देखो 'दीपणो' (बो)।
दपेटणो(बो)–देखो 'दपटणो (बो)'।
दप्पण–देखो 'दरपण'।
दफण–पु० [अ० दफन] मृतक के शरीर को जमीन मे गाड़ने की क्रिया या भाव।
दफणाणो(बो)–क्रि० [अ०दफन] मृत शरीर को जमीन मे गाड़ना, दफनाना।
दफतरी–देखो 'दफ्तरी'।
दफती–स्त्री० [अ०दफ्तीन] कागज का गत्ता, बोर्ड।
दफा–स्त्री [अ० दफअ] १ किसी कानून की धारा, उपकानून, उप नियम। २ वार, मर्तबा। ३ नाश, विनाश। –वि० [अ० दफा]१ दूर किया हुआ, हटाया हुआ। २ तिरस्कृत।
दफादार–पु० [फा०] १ फौज का एक कर्मचारी। २ पुलिस का जमादार। ३ तहसील का एक कर्मचारी।
दफादारी–स्त्री० [फा]० दफादार का पद व कार्य।
दफै–देखो दफा'।
दफ्तर–पु० [फा०] कार्यालय, आफिस, विभाग, महकमा।
दफ्तरी–पु० [फा०] १ कार्यालय का एक कर्मचारी। २ जिल्द साज। —खांनो–पु०-दफ्तरी के बैठने का स्थान। जिल्द बधी का कक्ष।
दबग–वि० १ निडर, निर्भीक। २ प्रभावशाली।
दब–वि० गुप्त।
दबक–स्त्री० [स० दमन] १ दबने या छुपने की क्रिया या भाव, दबाव पिचकन। २ धातु की पिटाई। ३ सिकुडन, शिकन। ४ भय, डर।
दबकगर–पु० धातु आदि को पीटकर तार बनाने वाला।
दबकणो (बो)–क्रि० [स० दमन] १ डर जाना, डरना, डरकर बैठ जाना, छुप जाना। २ छुप कर बैठ जाना, टोह लेना। ३ क्षुब्ध होना। ४ धातु को पीटना। ५ शात होना। ६ घुडकाना, डाटना, डपटना।
दबकाणो, (बो)दबकावणो(बो)–क्रि० १ डराना, डराकर बैठा देना। २ छुपाकर बैठाना, दुबकाना। ३ क्षुब्ध करना। ४ शात करना। ५ घुडकाना, डाटना। ६ धातु को पिटवाना।

दबकी–स्त्री० [स०दमन] १ छुपने या दुबकने की क्रिया या भाव। ३ डाट, फटकार, घुड़की। ४ टोह लेने की क्रिया या भाव।

दबकै–त्रि० वि० झट मे, तुरन्त।

दबको–पु० कामदानी का सुनहरा या चमकीला तार।

दबगर–पु० १ माम पकाने की एक विधि। २ देखो 'डबगर'।

दबडकाणौ (बौ)–देखो 'दड़बड़ाणौ' (बौ)।

दबणी–स्त्री० [स दमन] १ सकट कालीन दशा या अवस्था। २ असहाय होने की अवस्था। ३ विवशता।

दबणौ (बौ)–क्रि० [स दमन] १ बोझ, भार आदि के नीचे आना, दबना। २ बोझ, भार या चोट से पिचकना। ३ किसी का दबाव या प्रभाव मानना, आतक मानना। ४ विवश या मजबूर होना। ५ शका खाना, भय खाना, लिहाज करना। ६ तुलना मे फीका या मद पड़ना। ७ किसी के आगे जमने ठहरने या टिकने की अवस्था मे न रहना। ८ हारना। ९ शान्त रहना, उभड न सकना। १० अप्रकाशित या अप्रचलित होना। ११ नियत्रण मे रहना। १२ गुप्त रक्खा जाना। १३ झेंपना। १४ परिस्थितियो से घिर जाना, अर्थ सकट मे पडना, कमजोर पडना।

दबदबौ–पु० [अ दबदबा] रौब, प्रभाव, आतक।

दबमौ–पु० [स० दमन] लकडी की छत पर रेत, ककड आदि डालकर बनाया हुआ मकान।

दबवार–वि० [स० दमन] दबने वाला, दर्बल, कमजोर।

दबाऊ–वि०[स०दमन] १ दबाने वाला। २ अधिक दबाव या भार वाला। ३ दब्बू, कमजोर।

दबाडणौ, (बौ), दबाणौ (बौ)–क्रि० १ बोझ, भार आदि के नीचे करना, दबाना। २ बोझ, भार या चोट देकर पिचकाना। ३ दबाव डालना, आतकित करना, भय दिखाना, धमकी देना। ४ विवश या मजबूर करना। ५ शका या लिहाज कराना। ६ तुलना मे फीका या मद पटकना। ७ अपने सामने जमने, टिकने या ठहरने न देना। ८ हराना। ९ शान्त रखना, उभडने न देना। १० प्रकाशित या प्रचलित न होने देना। ११ गुप्त रखना। १२ नियत्रण मे रखना। १३ झेंपाना। १४ परिस्थितियों मे जकडना, अर्थ सकट मे डालना, कमजोर पटकना। १५ दुखते अगो पर हाथो का हल्का दबाव देना।

दबादब–क्रि० वि० अतिशीघ्र। एक के बाद एक। झटाझट।

दबाबौ–पु०शत्रु के किले मे तोड-फोड़ या गुप्तचरी करने के लिये आदमी डाल कर उतारने का सदूक।

दबाव–पु० [स० दमन] १ दबाव या भार, बोझ डालने की क्रिया या भाव। २ रौब, धाक। ३ आतक, डर, भय। ४ प्रभाव ५ लिहाज। ६ बोझ, भार।

दबावणौ(बौ)–देखो 'दबाणौ (बौ)।

दबियारी–स्त्री [स०दमन] दबाव।

दबीफळ–पु० साप, सर्प।

दबू–देखो 'दब्बू'।

दबेल, दबैल–वि० [स० दमन] १ दबने वाला। २ दुर्बल, अशक्त। ३ असमर्थ।

दबोचणौ(बौ)–क्रि०[स०दमन]१ गर्दन पकडकर दबाना, दबाना, धर पकडना, पकडकर काबू मे करना। २ छुपाना।

दबौ–पु० छुपने की क्रिया या भाव।

दब्बणौ (बौ)–देखो 'दबणौ' (बौ)।

दब्बुनी–वि० कपाने वाली, दबाने वाली, दहलाने वाली।

दब्बू–वि० १ दबने वाला, डरने वाला। २ दुर्बल, अशक्त। ३ असमर्थ, हीन।

दभगजळ–पु० युद्ध, सग्राम, समर।

दभ्र–वि० [स०] थोड़ा कम, अल्प। –पु० सागर, समुद्र।

दमक–देखो 'दमक'।

दमकणौ (बौ)–देखो 'दमकणौ' (बौ)।

दमग–स्त्री० [स० दावाग्नि] १ अग्निकण, चिनगारी। २ जगल की आग। ३ देखो 'दमक'। ४ देखो 'दबग'।

दमगळ–पु० [फा० दगल] १ युद्ध, समर, लडाई। २ उपद्रव, उत्पात, बखेडा।

दम–पु०[स०]१ लालन-पालन। २ आश्रय, सहारा। ३ इन्द्रिय शमन, दमन, नियत्रण। ४ मन की दृढता। ५ सजा, दण्ड। ६ कीचड। [फा०] ७ श्वास, सास। ८ श्वास रोग, दमे का रोग। ९ प्राण, जीव, जान। १० अस्तित्व मे रहने की शक्ति, काम लायक रहने की अवस्था। ११ रक्त, खून, लहू। १२ प्राण वायु। १३ व्यक्तित्व। १४ क्षमता, शक्ति। १५ चिलम, हुक्के आदि का कश, फूक। १६ जात। १७ छल, धोखा। १८ शेखी, डीग। १९ तेजी, तीक्ष्णता। २० समय का अश, क्षण, पल। २१ अल्प विश्राम। २२ मत्र, टोटका।

दमक–स्त्री० १ द्युति, आभा, कान्ति, चमक। २ तपन, गर्मी, उष्णता, ताप। ३ वाद्य ध्वनि। –वि०दमन करने वाला।

दमकणौ (बौ)–क्रि० १ चमकना, चमचमाना। दमकना। २ वाद्य बजना, ध्वनि करना।

दमकाणौ (बौ), दमकावणौ (बौ)–क्रि० १ चमकाना, दमकाना। २ वाद्य बजाना।

दमकीलौ–वि० (स्त्री० दमकीली) चमकीला, द्युतिवान।

दमक्कणौ (बौ)–देखो 'दमकणौ (बौ)।

दमक्काणौ (बौ), दमक्कावणौ (बौ)–देखो 'दमकाणौ' (बौ)।

दमगळ–देखो 'दमगल'।

दमचूल्हौ–पु० एक प्रकार का चूल्हा।

दमजोड़ौ–पु० तलवार।

दमडी–स्त्री० १ पैसे का आठवा भाग, एक सिक्का। २ पैसा, पाई।

दमडो–पु० रुपया, धन, द्रव्य।

दमरण–वि० [स० दमन] १ दमन करने वाला, दबाने वाला। २ नाश करने वाला। ३ देखो 'दमन'।

दमरणक, दमरणो–पु०[सं० दमनक] १ एक वर्णिक छन्द विशेष। २ एक पौधा विशेष। ३ देखो 'दमरण'।

दमणो (बो)–क्रि० [स० दम्] १ रोकना, वश मे करना। २ दमन करना। ३ पीडित करना, दबाना। ४ निग्रह करना। ५ जीतना। ६ शान्त करना।

दमदमो–पु० [फा० दमदम] १ थैलो मे मिट्टी भरकर की जाने वाली मोर्चा वदी। मोर्चा। २ छत पर जाने की सीढियो पर बना कक्ष।

दमदार–वि० [फा०] १ दृढ मजबूत। २ जीवन वाला। ३ शक्तिशाली, क्षमता वाला, जीवट वाला।

दमन–पु०[स०] १ बलात् किसी को दबाने की क्रिया या भाव। २ किसी की आवाज या माग को बल पूर्वक ठुकराना। ३ दण्ड या सजा। ४ इन्द्रिय निग्रह, शमन। ५ विद्रोहियो को दबाने का कार्य, बल-प्रयोग। ६ एक ऋषि। ७ एक पौधा दमनक। [स० थन] ७ ४९ क्षेत्रपालो मे से २१ वां क्षेत्रपाल ८ देखो 'दमरण'।

दमनक, दमनकि–वि० [स०] १ दमन करने वाला, सहारक। २ देखो 'दमरणक'।

दमनी–स्त्री० [स० दामिनी] विद्युत, विजली।

दमबंधो–पु० एक प्रकार का घूप।

दमबाज–वि० [फा०] १ धोखा देने वाला, फुसलाने वाला। २ दम लगाने वाला। ३ धूम्र पान करने वाला।

दमबाजी–स्त्री० [फा०] १ धोखा-धडी या फुसलाने का कार्य। २ धूम्र पान।

दमयती–स्त्री० [सं०] निषध देश के राजा नल की पत्नी।

दमल–देखो 'दगल'।

दमसाज–पु० [फा०] १ मित्र, सखा, दोस्त। २ सहायक। ३ गाने मे साथ देने वाला।

दमांम–पु०[फा०दमाम]१ एक प्रकार का वडा नगाडा। २ एक प्रकार का रण वाद्य।

दमामी–पु० [फा०] १ नगाडा वजाने वाला ढोली, नक्कारची। २ देखो 'दमाम'।

दमामो–देखो 'दमाम'।

दमाक (ग)–देखो 'दिमाग'।

दमाज–पु०ऊट, उष्ट्र।

दमाद–१ देखो 'दामाद'। २ देखो 'दमाज'।

दमादम–क्रि० वि० १ दमदम करते हुए। २ लगातार, निरन्तर। ३ एक के वाद एक।

दमि–वि० [स दम्] १ दमनशील। २ देखो 'दम'।

दमिरण–१ देखो 'दामरणी'। २ देखो 'दमरण'। ३ देखो 'दमन।

दमिल–पु० अनार्य देश का मनुष्य।

दमिस्क–पु० १ एक देश का नाम। २ यवनो का एक तीर्थ स्थान।

दमी–वि० [स० दम्] १ दमनशील। २ देखो 'दम'। –स्त्री० [फा० दम] १ दम लगाने का नेचा। २ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

दमीदौ दमेदौ–पु० बडा बतासा।

दमोइ–स्त्री० दो मुखी सर्प, बोगी। –वि० दो मुख वाला।

दमौ–पु० १ 'दमा' नामक रोग। २ देखो 'दम'।

दम्म–पु० [अ० दिरम] १ सोने चादी का एक प्राचीन सिक्का। २ देखो 'दम'।

दम्माम, दम्मांमो–देखो 'दमाम'।

दयत–वि० १ देने वाला। २ देखो 'दैत्य'।

दय–स्त्री० [स०] दया, कृपा, करुणा।

दयण–वि० [स०दान]देने वाला, दातार।

दयत–देखो 'दैत्य'।

दयता-दम, दयतादव–पु० [स० दैत्य-दमन] दैत्यो का दमन करने वाला, ईश्वर।

दयानत–स्त्री० [अ० दियानत] १ सत्य निष्ठा, ईमान। २ नियत। **—दार**–वि० ईमानदार। सच्चा। **—दारी**-स्त्री० ईमानदारी, सच्चाई।

दया–स्त्री० [स०] १ करुणा, कृपा, रहम। २ दक्ष की कन्या व धर्म की पत्नी। **—कर**-वि० दयालु, कृपालु। **—दृस्टी**-स्त्री० दया करने का भाव। **—निध, निधांन, निधि**-वि० कृपालु दयालु। -पु० ईश्वर। **—पात्र**-वि० जिस पर दया करनी चाहिये। **—मय**-वि० दयालु। ईश्वर। **—वत**-वि० दयालु। कृपालु। **—वत, वांन**-वि० दयालु, कृपालु। **—वीर**–वि० दूसरो पर दया करने मे समर्थ, परोपकारी।

दयारणौ–वि० [स० दक्षिरण](स्त्री० दयाणी) १ दाहिना, दाया। २ देखो 'दयावरणौ'।

दयानद–पु० [स०] आर्य समाज के प्रवर्तक एव सत्यार्थ-प्रकाश के रचियता एक ऋषि।

दयामरणउ, दयामणौ–देखो 'दयावरणौ'।

दयारास–पु० ईशान व पूर्व के मध्य की दिशा।

दयाळ–पु० १ विष्णु, ईश्वर। २ देखो 'दयाळु'। **—मन**-वि० उदार, दयालु।

दयाळु, दयाळू, दयाळौ–वि०[सं०दयालु] जिसके हृदय मे दूसरो के प्रति दया हो, दयावान। **–ता**-स्त्री० दया करने की भावना।

दयावणउ, दयावरणो–वि० (स्त्री० दयावरणी) १ जिससे दया उत्पन्न हो । २ उदास, दीन ।

दयावती–स्त्री० [स०] ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियो मे से पहली । –वि० दया करने वाली ।

दयिता–स्त्री० [स०] १ पत्नी, भार्या । २ प्रेयसी, प्रेमिका । ३ स्त्री, ओरत ।

दरग–पु० [स० दुर्ग] १ टीबा, टीला । २ देखो 'दुरग' ।

दर–पु० [स० दर] १ शख । २ गुफा, कदरा । ३ रध्र, बिल । ४ दरार । ५ गड्ढा । ६ तीर, बाण । ७ आभूषण विशेष । ८ भय, डर । [फा०] ९ द्वार, दरवाजा । १० स्थान, जगह । ११ दरबान, छडीदार । १२ हृदय, अन्तरात्मा । १३ ध्यान । १४ भाव । –वि० किंचित, थोडा, न्यून । –अव्य० [फा०] मे, भीतर ।

दरअसल–क्रि० वि० वास्तव में ।

दरक–पु० ऊट, उष्ट्र ।

दरकणो (बो)–क्रि० [स० द्री] विदीर्ण होना, फटना ।

दरकाणो (बो)–क्रि० विदीर्ण करना, फाडना ।

दरकार–स्त्री० [फा०] १ आवश्यकता, जरूरत । २ इच्छा, अभिलाषा । –वि० आवश्यक, अपेक्षित ।

दरकूच, दरकूचां, दरकूच, दरकूचा–क्रि० वि० [फा०] मजिल-दर-मजिल, क्रमश आगे बढते हुए ।

दरको–देखो 'दरक' ।

दरक्क–देखो 'दरक' ।

दरक्कणो(बो)–देखो 'दरकणो' (बो) ।

दरखत, दरखतियो–पु० [फा० दरख्त] वृक्ष, पेड ।

दरखास्त–स्त्री० [फा० दरख्वास्त] १ अर्जी, प्रार्थना, निवेदन । २ आवेदन-पत्र प्रार्थना-पत्र ।

दरगह, दरगा, दरगाह, दरग्गह–स्त्री० [फा० दरगाह] १ दरबार । २ न्यायालय, कचहरी । ३ सभा । ४ तीर्थ स्थान, मठ । ५ मदिर । ६ किसी सिद्ध पुरुष का समाधि स्थल, मकबरा, मजार । ७ दहलीज चौखट ।

दरड–पु० १ किसी वस्तु के निरन्तर गिरने की ध्वनि । २ बहुतायत । ३ देखो 'दरडो' ।

दरडकरणो (बो)–क्रि० १ दड-दड करके गिरना । २ प्रवाहित होना, बहना । ३ ध्वनि करना ।

दरडणो (बो)–देखो 'दडणो (बो)' ।

दरड़ियो–देखो 'दरडो' ।

दरड़ो–पु० १ आंगन या जमीन मे बना विवर, बिल, गड्ढा । २ बिना बधा कूआ ।

दरज–वि० [अ० दर्ज] लिखित, अकित । प्रविष्ट । फटा हुआ । –स्त्री० दरार । फटन ।

दरजण–स्त्री० १ बारह नगो या वस्तुओ का समूह । २ दर्जी की स्त्री ।

दरजी–पु० [फा०] (स्त्री० दरजण) १ कपडो की सिलाई करने वाला कारीगर । २ ऐसा व्यवसाय करने वाला वर्ग, जाति ।

दरजोण दरजोधन–देखो 'दुरयोधन' ।

दरणो (बो)–देखो 'डरणो (बो)' ।

दरद–पु० [फा० दर्द] १ कष्ट, दुःख । २ दर्द, पीडा । ३ बीमारी, रोग । ४ तकलीफ मुसीबत । ५ यातना । ६ करुणा, दया, तरस ७ टीस कसक । —वत, वद–वि० पीडित, दुःखी । दयालु कृपालु ।

दरदराणो (बो)–क्रि० [स० दरण] १ किसी वस्तु को दलना, दलिया बनाना, रवे या कण बनाना । २ आख आदि मे खटका होना, दर्द होना पीडा होना, खटकना ।

दरदरी–स्त्री० [स० धरित्री] पृथ्वी, भूमि । –वि० रवेदार, कणदार ।

दरदरो–वि० [स० दरण] कण के रूप मे, रवेदार ।

दरदी–वि० [फा० दर्द] १ दूसरो के दुःख दर्द को समझने वाला, सहानुभूति या दया करने वाला । २ जिसके किसी बात का दर्द हो, पीडित ।

दरदु–पु० [स० दद्रु] १ दाद नामक रोग । २ देखो 'दरदी' ।

दरदुर–देखो 'दादुर' ।

दरद्द–देखो 'दरद' ।

दरप–पु० [स० दर्प] १ गर्व, घमड, अभिमान । २ दुस्साहस । ३ चिडचिडापन, तुनकमिजाजी । ४ गर्मी, ताप । ५ मुश्क, मृगमद ।

दरपक–पु० [स० दर्पक] १ कामदेव । २ प्रद्युम्न ।

दरपण (णी)–पु० [स० दर्पण] १ मुह या प्रतिबिंब देखने का शीशा, काच, आरसी, आईना । २ आख । ३ जलाने वाला । ४ प्रतिबिंब । ५ आदर्श ।

दरपणो (बो) क्रि० १ गर्व करना, अभिमान करना । २ देखो 'डरपणो' (बो) ।

दरप्प–देखो 'दरप' ।

दरप्पण–देखो 'दरपण' ।

दरबधी–स्त्री० [फा०] किसी वस्तु की कीमत, दर या भाव का निर्धारण, दर ।

दरबर–देखो 'दडबड' ।

दरबांन–देखो 'दरवान' ।

दरबानी–देखो 'दरवानी' ।

दरबार–पु० [फा०] १ बादशाह, राजा आदि की सभा, राज्य-सभा । २ कचहरी । ३ किसी ऋषि मुनि या वली का आश्रम । ४ सिक्खो का धर्म ग्रथ रखने का स्थान ।

—आम–पु० आम सभा। —खास–पु० विशिष्ट सभा। —दारी–स्त्री० दरबार मे उपस्थिति। खुशामद, जी हजूरी।

दरबारी–पु० [फा०] १ राज सभा का सभासद। २ द्वारपाल, छडीदार। ३ एक राग विशेष। –वि० दरबार का, दरबार सबधी। —कान्हडो–पु० एक राग विशेष।

दरबो–पु० १ कबूतर या मुर्गी पालने की संदूक। कोष्ठक। २ काल कोठरी। ३ भूत-प्रेतो का निवास स्थान।

दरब्ब–देखो 'द्रव्य'।

दरब्बार–देखो 'दरबार'।

दरभ–पु० [स० दर्भ] कुश, डाभ नामक घास।

दरमजल–देखो 'दरकूच'।

दरमाहो–पु० [फा० दरमाहा] मासिक वेतन।

दरम्यान–पु० [फा० दरमियान] मध्य, बीच। –क्रि०वि० मध्य मे, बीच मे, दौरान।

दरम्यानी–वि० [फा० दरमियानी] बीच का, मध्यवाला। बीच मे पडने वाला। –पु० मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति।

दरयाई–स्त्री० [फा०दाराई] साटन नामक रेशमी वस्त्र। –वि० [फा० दरियाई] समुद्र सबधी, समुद्र का। –पु० एक प्रकार का घोडा।

दरयाव–देखो 'दरियाव'।

दररो–पु० [फा० दर्र] १ पहाडो के बीच का सकरा मार्ग। २ दरार। –वि० [स०दरण] दरदरा, कणो या रवो वाला

दरव–पु० [स० दर्व] १ हिंस्रजन। २ उपद्रवी या उत्पाती व्यक्ति। ३ राक्षस, दैत्य। ४ कलछी। ५ देखो 'द्रव्य'।

दरवरता–स्त्री० [स० द्रवता] द्रवत्व, तरलता।

दरवांण (न)–पु० [फा० दरवान] १ द्वारपाल। २ राजदूत। ३ छडीदार।

दरवांनी–स्त्री० द्वारपाल का कार्य।

दरवाजो–पु० [फा० दरवाजा] १ द्वार, दरवाजा। २ कपाट, किवाड।

दरवायो–पु० हल का एक उपकरण।

दरवी–स्त्री० [स० दर्वी] १ कलछी, चमचा। २ साप का फन।

दरवीकर–पु० [स० दर्वीकर] १ फन वाला सर्प। २ साप।

दरवेस–पु० [फा० दरवेश] १ फकीर। २ साधु, महात्मा। ३ बादशाह। ४ मुसलमान। ५ भिखारी, भिक्षुक।

दरस–पु० [स०-दर्श] १ दर्शन, दीदार। २ दृश्य, तमाशा। ३ यज्ञ विशेष। ४ अमावस्या की तिथि। ५ छवि, रूप, सुन्दरता।

दरसण–पु० [स० दर्शन] १ साक्षात्कार, भेंट, मुलाकात। २ देखना क्रिया, चाक्षुक ज्ञान। ३ अवलोकन। मुआयना। ४ आख। ५ पर्यवेक्षण, सर्वेक्षण। ५ रूप, वर्ण, आकार। ७ समझ, परख, बुद्धि। ८ आईना, दर्पण। ९ धर्म या किसी विषय का तात्त्विक विवेचन, सिद्धान्त। १० नाथ सम्प्रदाय के साधुओ के कानो के कुण्डल। ११ राजस्थान की छ जातियो का समूह। १२ ७२ कलाओ मे से एक।

दरसणी, दरसणीक, दरसणीय–वि० [स० दर्शनीय] १ सुन्दर, मनोहर। २ देखने योग्य, दर्शन लायक। ३ मिलने, भेंट करने योग्य। –पु० 'खट दरसण' के अन्तर्गत आने वाला व्यक्ति।

दरसणी-हुडी–स्त्री० एक प्रकार की हुडी।

दरसणौ (बो)–क्रि० [स दर्शन] १ दिखाई पडना, दिखना। २ महसूस होना, प्रतीत होना, अनुभव होना। ३ सभावना होना।

दरसन–देखो 'दरसण'।

दरसनी, दरसनीक, दरसनीय–देखो 'दरसणीय'।

दरसाणौ (बो), दरसालणौ (बो)–क्रि० [स० दर्शन] १ दिखाना, दृष्टि गोचर करना, बताना। २ दिखाई देना। ३ नजर आना। ४ मालूम पडना। ५ प्रगट होना। ६ अनुभव होना। ७ स्पष्ट करना, समझाना।

दरसाव–पु० [स० दृश] १ दृश्य, नजारा, २ दिखने की क्रिया या भाव, प्रगटन।

दरसावणौ (बो)–देखो 'दरसाणौ' (बो)।

दरस्स–देखो 'दरस'।

दरस्सण–देखो 'दरसण'।

दरहरणौ (बो)–क्रि० हवा का चलना।

दरहाल–क्रि० वि० पल-पल, प्रतिक्षण। हर वक्त। बार-बार।

दराती–स्त्री० [स० दात्र] दातेदार एक उपकरण विशेष।

दराड–देखो 'दरार'।

दराज–वि० [फा०] (स्त्री० दराजी) १ बडा, महान। २ दीर्घ, चिर। ३ अच्छा बढिया। ४ अधिक, बहुत। –स्त्री० मेज के नीचे का खन, ड्राअर।

दराणौ (बो)–देखो 'दिराणौ' (बो)।

दरार (रो)–स्त्री० [स० दर] १ किसी चीज के फटने की जगह, फटाव, शिगाफ। २ छिद्र, छेद।

दरावणौ (बो)–देखो 'दिराणौ' (बो)।

दरि–पु० १ दरबार, राज-सभा। २ दरवाजा। ३ दरियाव, सागर।

दरिआउ, दरिआव–देखो 'दरियाव'।

दरिद, दरिद्र–वि० [स० दरिद्र] १ निर्धन, कगाल, गरीब। २ भिखारी। –स्त्री० [स० दारिद्र्य] निर्धनता, कगाली।

दरिद्रता–स्त्री० [स०] निर्धनता, कंगाली।
दरिद्री-वि० १ गरीब, कंगाल। –स्त्री० गरीबी, कगाली।
दरिया–देखो 'दरियाव'।
दरियाई–देखो 'दरयाई'।
दरियाईघोडौ–पु० गैंडे की तरह का एक जानवर विशेष।
दरियाईनारियळ–पु० तूबे की तरह का एक नारियल।
दरियाखीर–पु० क्षीर सागर।
दरियादासी–स्त्री० निर्गुण भक्ति धारा के अन्तर्गत एक सम्प्रदाय।
दरियाफत, दरियापत–वि० [फा० दरियाफ्त] मालूम, ज्ञात। –स्त्री० जानकारी, पता।
दरियाव–पु० [फा० दरिया] समुद्र, सागर।
दरियावजी–पु० रामस्नेही सम्प्रदाय के एक प्रमुख महात्मा।
दरिसण–देखो 'दरसण'।
दरी–स्त्री० [स०] १ गुफा, गह्वर। २ घाटी ३ तलगृह, तहखाना। ४ मोटे सूत का बना बडा बिछौना।
दरीखानौ–पु० [फा० दर+खाना] १ दरबार लगाने का स्थल। २ दरबार। ३ घर की मरदानी बैठक।
दरीपट्टी–स्त्री० १ जुलाहो का एक औजार। २ सकरी व लबी दरी।
दरीबौ–पु० [फा० दर] १ बाजार। २ कोठार। ३ ढेर। ४ पान का बाजार।
दरीभुत, दरीभ्रत–पु० [स० दरीभूत] पर्वत, पहाड।
दरीमुख–पु० [स०] राम की सेना का एक बन्दर।
दरीयाखाना–पु० कोई वस्तु विशेष।
दरीयाव–देखो 'दरियाव'।
दरून–पु० १ स्तुति, दुआ। २ हृदय, चित्त; आत्मा।
दरेवाण, दरेवाण–देखो 'दरवाण'।
दरोग–वि० [अ०] असत्य, मिथ्या, झूठ। –हलफी–स्त्री०-झूठी सौगध, झूठी गवाही।
दरोगी–वि० समीप रहने वाला, निकटवर्ती। –स्त्री० दासी, सेविका।
दरोगौ–पु० (स्त्री० दरोगण, दरोगी) १ दास, सेवक। २ देखो 'दारोगौ'।
दरोबोस्त–वि० [फा०] कुल, पूरा, पूर्ण।
दरोळ दरोळ–पु० १ विघ्न, बाधा। २ उत्पात, उपद्रव, बखेडा, विद्रोह। ३ खलबली।
दळ–पु० [स०दल] १ सेना, फौज। २ दल, टोली, गुट। ३ समूह, झुण्ड। ४ ढेर, राशि। ५ जुडी हुई वस्तु का एक भाग। ६ तह या परत की मोटाई। ७ फल का गूदा। ८ वृक्षादि के पत्ते। ९ फूल की पखुडी। १० भोज्य पदार्थ। ११ तमाल-पत्र। १२ पत्र, चिट्ठी। १३ शस्त्र का आवरण, म्यान। १४ भौंरा। १५ नशा, मद। १६ लड्डू। १७ शरीर।
दल–१ देखो 'दिल'। २ देखो 'दळ'।
दळ-अभग–पु० [स० दल अभग] बलभद्र।
दळ-आगळ–पु० सेना का अग्रभाग, हरावल।
दलक–पु० [अ०दल्क] १ रोजगीरो का एक औजार। २ भिखारी की गुदडी। ३ सूफियो का लिबास। ४ अग मर्दन।
दळकणौ (बौ)–क्रि० १ फटना, चिरना। २ थर्राना, कापना। ३ चौंकना।
दलगीर–देखो 'दिलगीर'।
दळण–स्त्री० [स० दलन] १ दलिया बनाने या दलने का कार्य। २ मारने या सहार करने की क्रिया या भाव। –वि० सहार करने वाला, पीसने वाला, नाश करने वाला।
दळणी–स्त्री० चक्की।
दळणौ–वि० १ दलने वाला। २ काटने वाला। ३ मारने वाला, सहार करने वाला।
दळणौ (बौ) दलणौ (बौ)–क्रि० [स० दलन] १ दरदरा करना, दलिया बनाना। २ सहार करना मारना। ३ नष्ट करना, बर्बाद करना।
दळथभ, दळथभण–पु० [स०दल-स्तम्भ] १ सेना का श्रेष्ठ वीर। २ बादशाहो द्वारा दी जाने वाली उपाधि।
दळद–देखो 'दाळद'।
दळदरी–देखो 'दरिद्री'।
दळदळ–पु० [सं० दलाढ्य] १ कीचड, पक। २ घने कीचड वाला भू-भाग। ३ अधिक कचरे वाला सामान। ४ बहुत ही हल्के दर्जे की वस्तु। ५ मैल। ६ बुड्ढी स्त्री।
दळदार–वि० मोटी परत या अधिक गूदे वाला।
दलद्र–देखो 'दालद'।
दलद्री–देखो 'दरिद्र'।
दलनाथ, (नायक), दलप, दलपति (प्पति)–पु० १ सेनापति। २ समुदाय या दल का नेता, सरदार। ३ वीर, योद्धा।
दळबट–पु० मच्छर आदि के काटने से शरीर पर होने वाला चकत्ता, ददोरा।
दलबलियौ–वि० १ खिन्न चित्त, उदास। २ दु खी। ३ भूखा।
दलबादल–देखो 'दलवादल'।
दलभजण (न)–वि० [सं० दल+भजन] सेना का सहार करने वाला, महावीर। –पु० काले या लाल, दाग वाला एक घोडा विशेष।
दलभ–देखो 'दुरलभ'।
दलम–पु० [स० दलिम] इन्द्र।
दलमट्ठौ, दलमठौ–देखो 'दिलमठौ'।

दळमळणौ (बौ)–क्रि० १ कुचलना, रौंदना, मसल डालना। २ मारना, सहार करना।
दलमि–देखो 'दलम'।
दलमोड़–वि० श्रेष्ठ वीर।
दळवइ (दलवइ)–देखो 'दळपति'।
दळवादल–पु० [स० दलवारिद] १ बडा भारी खेमा, बड़ा शामियाना। २ बडी सेना। ३ मुलायम व कीमती सेज।
दळसणगार–देखो 'दळसिणगार'।
दळसाह–पु० १ सूग्रर, वराह। २ सेनापति।
दळसिणगार–पु० [स० दल-शृ गार] १ सेना की शोभा बढ़ाने वाला वीर। २ सेनापति।
दळांथभ–देखो 'दलथभ।
दळानाथ–देखो 'दळनाथ'।
दळापति, दळापती–देखो 'दळपति'।
दळांमुकट–पु० [स० दल+मुकुट] सर्वश्रेष्ठ योद्धा, महावीर।
दळाणौ (बौ)–क्रि० १ अनाज का दलिया कराना। २ दरदरा या रवादार कराना। ३ सहार कराना। ४ नष्ट कराना, नाश कराना।
दलाल–पु० [अ० दल्लाल] १ वस्तुओ के क्रय-विक्रय मे मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति। २ दो पक्षो मे समझौता कराने वाला व्यक्ति। –वि० उदार, विशाल हृदय।
दलाली–स्त्री० [अ० दल्लाली] १ वस्तुओ के क्रय-विक्रय मे मध्यस्थता करने पर मिलने वाला द्रव्य। २ दलाल का कार्य।
दळावणौ (बौ)–देखो 'दळाणौ (बौ)।
दळि–देखो 'दळ'।
दळित–वि० [स० दलित] १ दला हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ। २ कुचला हुआ, रौदा हुआ। ३ मसला हुआ, मर्दित ४ विनष्ट किया हुआ।
दळिद, दळिदर दळिद्द, दळिद्र–देखो 'दरिद्र'।
दळियौ–पु० १ अनाज का दलिया। दला हुआ अनाज। २ ऐसे अनाज का पका हुआ खाद्यान्न।
दळी–क्रि० वि० चारो ओर, चौतरफ।
दली–देखो 'दिल्ली'।
दलीप–देखो 'दिलीप'।
दलीपत, दलीपति–देखो 'दिल्लीपति'।
दलील–स्त्री० [स०] १ तर्क, बहस, वाद-विवाद। २ युक्ति।
दलीस–देखो 'दिल्लीस'।
दळूत–वि० [स० दलन] नाश करने वाला, सहार करने वाला।
दलेचौ–स्त्री० मकान के बाहर चबूतरी पर बना खुला कक्ष।
दलेल–वि० १ विशाल हृदय, उदार। २ बहादुर (मेवात)।
दलेस–देखो 'दिल्लीस'।
दलेसुर–देखो 'दिल्लीस्वर'।
दलैं–अव्य० हाथियो के लिये एक सांकेतिक शब्द।
दळौ–देखो 'दळ'।
दलौ, दल्लौ–पु० कपाटो के बीच-बीच मे बनी चौकी।
दवंग–१ देखो 'दबग'। २ देखो 'दमंग'।
दव–पु० [स० दव] १ दावाग्नि, दावानल। २ अग्नि, आग। ३ वन, जंगल। ४ देखो 'दावौ'।
दवखण, दवखणप–[स० दवक्षणप] यमराज।
दवटणौ(बौ)–देखो 'दपटणौ' (बौ)।
दवण–देखो 'दमन'।
दवणौ (बौ)–क्रि० १ जलना, भस्म होना। २ विकृत होना। ३ देखो 'दबणौ' (बौ)।
दवद ति, गवदंती–देखो 'दमयती'।
दवना–पु० [सं० दमुनस्] अग्नि।
दवनौ–देखो 'दमणौ'।
दवर–पु० [स० द्वार] दरवाजा, द्वार।
दवांगीर–देखो 'दवागीर'।
दवा–स्त्री० [अ०] १ रोग की औषधि। २ चिकित्सा, उपचार। ३ उपाय, तदबीर। [अ० दुआ] ४ अभिवादन। ५ दुआ। —खांनौ–पु० औषधालय, अस्पताल। औषधि कक्ष।
दवाइती–देखो 'दवायती,।
दवाई–१ देखो 'दवा'। २ देखो 'दुहाई'। –खांनौ='दवाखानौ'।
दवाग–१ देखो 'दावाग्नि'। २ देखो 'दुवागौ'। ३ देखो 'दुहाग'।
दवागण–देखो 'दुहागण'।
दवागि, दवागिन, दवाग्नि–देखो 'दावाग्नि'।
दवागीर, दवागीरु–वि० [अ० दुआ-गो] १ दुआ देने वाला, आशीर्वाद देने वाला। २ शुभचिंतक। ३ याचक।
दवाजौ–पु० १ धावा, आक्रमण। २ देखो 'दवागीर'।
दवात–पु० [अ०] स्याही रखने का पात्र। —पूजा–स्त्री० दीपावली का तीसरा दिन। इस दिन की जाने वाली दवात-पूजा आदि।
दवादस–देखो 'द्वादस'।
दवादसौ–देखो 'द्वादसौ'।
दवावस–देखो 'द्वादस'।
दवानळ–देखो 'दावानळ'।
दवावैत–देखो 'दवावैत'।
दवायती–स्त्री० अनुमति, स्वीकृति, आज्ञा।
दवार–देखो 'द्वार'।
दवारका–देखो 'द्वारका'।
दवारी–स्त्री० [स० दव-अरि] दावाग्नि।

दवारौ– १ देखो 'द्वार' । २ देखो 'द्वारौ' ।
दवाळ–देखो 'द्वाळौ' ।
दवाल–१ देखो 'दीवार' । २ देखो 'दुवाळ' ।
दवाळी–स्त्री० तलवार बाधने का उपकरण ।
दवाळौ–१ देखो 'देवाळौ' । २ देखो 'द्वाळौ' ।
दवावैत–स्त्री० [अ० वैत] राजस्थानी भाषा की एक गद्य रचना ।
दवासु, दवासू, दवासौ–पु० नगाडा ।
दवि–स्त्री० [स० दव] दावाग्नि, दावानल ।
दवीयण–देखो 'दुरवचन' ।
दवैया–पु० एक छन्द विशेष ।
दव्व–१ देखो 'द्रव्य' । २ देखो 'दव' ।
दस–वि० [सं० दश] नौ और एक । –पु० दश की सख्या व अक, १० । देखो 'दिसा' ।
दसकठ, (कंद कध, कधर)–पु०[स० दशकंठ, स्कध] रावण ।
दसक–पु० [सं० दशक] दश का समूह । –वि० दश गुना, दश युक्त ।
दसकत, दसकत्त–पु० [फा० दस्तखत] हस्ताक्षर ।
दसकरम–पु० [स० दशकर्म] स्त्री के विवाह से गर्भाधान तक के दश सस्कार ।
दसकातर–पु० मृतक के पीछे दशवें दिन के पिण्डदान आदि ।
दसकोसी–स्त्री० [स० दशकोषी] रुद्रताल के ग्यारह भेदों मे से एक ।
दसखीर–पु० [स० दशक्षीर] गाय, भैंस, बकरी, स्त्री आदि दश मादा प्राणियो का दूध ।
दसग्रीव–पु० [स० दशग्रीव] रावण ।
दसचरण–पु० [स० दशचरण] रथ ।
दसजोगभग–पु० [स० दशयोगभंग] ज्योतिष मे एक नक्षत्रवेध ।
दसण–पु० [स० दशन] १ दात, दत । २ पर्वत, शिखर ।
दसणाण–पु० [स० दशानन] रावण ।
दसत–१ देखो 'दस्त' । २ देखो 'दहसत' ।
दसतगीर–देखो 'दस्तगीर' ।
दसतान (नौ)–देखो 'दस्तानौ' ।
दसतावेज–देखो 'दस्तावेज' ।
दसतावेजी–देखो 'दस्तावेजी' ।
दसतूर–देखो दस्तूर' ।
दसतोवर–पु० [स० दस्तोदर] कुबेर ।
दसतौ–१ देखो 'दस्तौ' । २ देखो 'दस्तानौ' ।
दसत्तूर–देखो दस्तूर' ।
दसदिनेस–पु० [स० दिनेश] सूर्य ।
दसदोस–पु० [स० दशदोष] राजस्थानी काव्य मे माने गये दशदोष ।

दसद्वार–पु० [स० दशद्वार] कान, नाक आदि शरीरस्थ दश छिद्र, द्वार ।
दसधा–वि० [स० दशधा] दश प्रकार का ।
दसधू–पु० [स० दशधू] रावण, दशानन ।
दसन–देखो 'दसण' ।
दसनच्छद–पु० [सं० दशनच्छद] ओठ । अधर ।
दसनबीज–पु० [स० दशनबीज] अनार ।
दसनरोग–पु० [स० दशन रोग] दातो का रोग ।
दसनाम (नामी)–पु० [स० दशनामी] सन्यासियो का एक भेद ।
दसप–पु० [स० दशप] दश गावो का अधिपति ।
दसपधण (धन)–पु० [स० दशापधन] दीपक ।
दसभूतवर–पु० [स० दश भूतवर] सत्य, साच ।
दसम–वि० [स० दशम] दशवा । –स्त्री० दशवी तिथि ।
दसमउ–देखो 'दसमौ' ।
दसमथ, दसमथ्थ–देखो 'दसमाथ' ।
दसमि, दसमी–स्त्री० माह के प्रत्येक पक्ष की दशवी तिथि । –वि० दशवी ।
दसमुख, दसमुखि, दसमुखौ–पु० [स० दशमुख] रावण ।
दसमुदरा–स्त्री० [स० दशमुद्रा] योग की दश मुद्रायें ।
दसमुद्रिका–स्त्री० [स० दशमुद्रिका] एक आभूषण विशेष ।
दसमूळ–पु० [स० दशमूल] एक औषधि विशेष ।
दसमौ–वि० [स० दशम्] (स्त्री० दसमी) १ नौ के बाद वाला, दशवा । २ दश के स्थान वाला । –पु० १ मृतक का दशवा दिन । २ इस दिन के सस्कार । —दुआर, द्वार–पु० ब्रह्म रध्र । —साळगराम–पु० श्रेष्ठ योद्धा की एक उपाधि ।
दसमौळि (ळी)–पु० [स० दशमौलि] रावण ।
दसरग–पु० माल खभ की एक कसरत ।
दसरथ (थि, थी)–पु० [स० दशरथ] अयोध्या के एक सूर्य वशी राजा, श्रीराम के पिता । —तण, रावउत, सुत–पु० श्रीराम ।
दसरात्र–पु० [स० दशरात्र] दश रात्रियो तक चलने वाला यज्ञ ।
दसरावौ, दसराहौ–पु० १ दशहरा । २ विजयादशमी को भेंट दिया जाने वाला द्रव्य । ३ चैत्र शुक्ला दशमी का दिन । ४ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी का दिन ।
दसळौ (लौ)–पु० ताश का एक पत्ता ।
दसवन–पु० [स० दुश्चयवन] इन्द्र ।
दसवाजी–पु० [स० दशवाजिन्] चन्द्रमा ।
दसवाहु–पु० [स० दशवाहु] शिव, महादेव ।
दसवीर–पु० [स० दशवीर] एक सत्र या यज्ञ का नाम ।
दसवौं–देखो 'दसमौ' । —द्वार='दसमौद्वार' ।
दससतकमळ–पु० [स० दशशतकमल] सहस्राजुॅन ।

दससिर, दससीस–पु० [स० दशशिर] रावण दशानन।
—**घर**–पु० रावण।

दसस्यदन–पु० [स० दशस्यदन] राजा दशरथ।

दसांग–पु० [स० दशाग] एक प्रकार का धूप।

दसाण–देखो 'दसारण'।

दसा–स्त्री० [स० दशा] १ अवस्था, स्थिति, हालत। २ मानव जीवन की अवस्था। ३ साहित्य की दश अवस्थाऐं। ४ दीपक की बत्ती। ५ ग्रह योग, भोग काल। ६ काल, अवधि। ७ परिस्थिति हालत। ८ मन की प्रकृति। ९ कपडे की झालर। १० उम्र।

दसाअवतार–पु० [स० दशावतार] १ प्रकाश, ज्योति। २ दीपक।

दसाइअां, दसाइयां–स्त्री० लग्न के बाद वर-वधू को दिये जाने वाले दश भोज।

दसाकरख (करस)–पु० [स० दशाकर्ष] दीपक।

दसाणण (णि, णी)–पु० [स० दशानन] रावण।

दसातीर–पु० फारसी लोगों की एक धार्मिक पुस्तक।

दसावहाडो, दसावा' डो–देखो 'दसारोदाडो'।

दसाधिपति–पु० [स० दशाधिपति] १ ज्योतिष का ग्रह। २ दश सैनिको का प्रभारी।

दसापत–देखो 'दिशापति'।

दसापवित्र–पु० [स० दशापवित्र] दिक्पाल, दिग्पाल।

दसापोत–पु० [स० दशापोत] १ प्रकाश। २ दीपक।

दसभव–पु० [स० दशाभव] १ दीपक। २ प्रकाश।

दसार–पु० [स०दशार्ह] १ धष्ट राजा का पुत्र। २ राजा वृष्णि का पौत्र। ३ वृष्णि वशीय राजाओ का अधिकृत देश।

दसारण–पु० [स० दशार्ण] १ विंध्य पर्वत के पूर्व का एक प्रदेश। २ इस प्रदेश का निवासी या राजा। ३ तत्र का एक दशाक्षरी मत्र।

दसारोडोरो–पु० दश तारों का एक सूत्र विशेष।

दसा-रो-दा'डो–पु० होली के दशवें दिन किया जाने वाला एक व्रत विशेष।

दसावळ–क्रि० वि० दशो दिशाओ मे, चारो ओर।

दसावहारी–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

दसावीसी–पु० एक प्रकार का खेल।

दसासुत–पु० [सं० दशा-सुत] दीपक।

दसासूळ–देखो 'दिसासूळ'।

दसास्वमेध–पु १ काशी का एक तीर्थ। २ प्रयाग मे त्रिवेणी का एक घाट।

दसियो–वि० १ नो के बाद वाला, दश के स्थान वाला। २ दश नबरी। बदमाश, लोफर, अवारा। ३ उपद्रवी। ४ धोखेबाज। ५ गुडा। –पु० १ दशवां भाग। २ देखो 'दसो'।

दसी–१ देखो 'दमा'। २ देखो 'दिमा'।

दसुटण–देखो दसोटण'।

दसू द, दसू दी, दसू ध–स्त्री० [स० दशमाधस्] १ ब्रह्म भटो को प्रदत्त की जाने वाली एक उपाधि। २ इस उपाधि के उपलक्ष मे दिया जाने वाला द्रव्य। ३ ऐसी उपाधि धारी ब्रह्मभट। ४ कृषि उपज का दशवा भाग। –वि० 'दसू द' लेने वाला।

दसू–पु० [स० दस्यु] १ चोर, डाकू। २ शत्रु।

दसूट्ठण, दसूठ्ठण–देखो 'दसोटण'।

दसेंधण–पु० [स० दशा-इधनम्] दीपक।

दसे'क–वि० [स० दश+एक] दश के लगभग।

दसैयां–देखो 'दसाइया'।

दसोटण–पु० [स० दशोत्थाने] पुत्र जन्म के दश दिन या दश मास बाद किया जाने वाला उत्सव।

दसोतरी–स्त्री० [स० दशोत्तर शतम्] सौ के बाद वाले दश।

दसोंठण–देखो 'दसोटण'।

दसो–पु० [स० दशम्] १ दसवा वर्ष। २ दश का अक, १०। ३ वर्ण संकर। ४ अपनी जात या गोत्र मे नीचा।

दस्ट, दस्टी–देखो 'द्रस्टि'।

दस्तदाजी–स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप, दखल।

दस्त–स्त्री० [फा० दस्त] १ हाथ। २ पतला विरेचन। —**गीर** –वि० हाथ पकड कर सहारा देने वाला, सहायक। —**ताळ** –स्त्री० भुजाओ पर करतल मारने की क्रिया। —**पनाह** –पु० चिमटा हाथो के दस्ताने व कवच —**पोसी**–स्त्री० हाथ चूमने के क्रिया। —**फोती**–पु० मारने के लिये किया जाने वाला हस्त-प्रहार। —**बद, बंध**–पु० कलई का एक आभूषण विशेष। नृत्य का एक भेद। हाथ जोडने की क्रिया। कोष्ठ बद्धता।—**बुगचो**–पु०हाथ मे रखने का थैला।

दस्तरि, दस्तरी–स्त्री० १ कागज का मोटा गत्ता। २ मारवाड शासन का एक विभाग।

दस्तान–१ देखो 'दास्तान'। २ देखो 'दस्तानो'।

दस्तांनी, दस्तांनो–स्त्री० [फा० दस्तांन] १ हाथ का कवच, हस्तत्राण। २ हाथ का मोजा।

दस्तार–स्त्री० [फा०] पगडी।

दस्तावर–वि० [फा०] विरेचक, दस्तकारक।

दस्तावेज–पु० [फा०] लिखित पत्र, व्यवस्था पत्र, ऐसा लिखित पत्र जो भविष्य मे साक्षी के रूप मे माना जा सके।

दस्तावेजी–वि० [फा०] दस्तावेज सबधी।

दस्ती–वि० [फा०] हाथ सबधी, हाथ का।

दस्तूर–पु० [फा०] १ नियम, कायदा। २ रश्म, रिवाज। ३ कानून, विधि। ४ व्यवहार, परपरा। ५ रियायत, कटौती। ६ भेंट लेने का हक। ७ फारसियो का पुरोहित।

वस्तूरी–स्त्री० [फा०] कटौती, ढूंक, कमीशन। –वि० वैधानिक, कानूनी।

दस्तो–पु० [फा० दस्त] १ किसी औजार आदि का हत्था, मूठ, बेंट। २ किसी पात्र का हेंडिल। ३ फूलो का गुच्छा, गुलदस्ता। ४ सिपाहियो का छोटा दल। ५ चौबीस खाली कागजो का समूह। ६ झगडा, टटा, फिसाद। –वि० हाथ मे रहने या आने लायक।

वस्यावड–स्त्री० बुने हुए कपडे के छोर का आधा बुना भाग।

वस्सरण–देखो 'दरसरण'।

वस्सा–देखो 'दसा'।

दस्सी–देखो 'दसी'।

वह–पु० [स० ह्रद] १ नदी का गहराई वाला स्थान। २ पोखर, गड्ढा। ३ बडा खड्डा। ४ कुण्ड, हौज। [स० दह] ५ ज्वाला, लपट। ६ अग्नि, आग। ७ दावाग्नि। –वि० [स० दश] दश।

वहकध, दहकधर–देखो 'दसकठ'।

वहक वहकरण–स्त्री० [स० दहन] १ अग्नि का प्रज्वलन। २ ज्वाला, लपट। ३ लज्जा, शर्म। ४ ताप।

दहकणो(बो)–क्रि० [स० दहन्] १ अग्नि का जलना, धधकना। २ प्रदीप्त होना, सुलगना। ३ तप्त होना। ४ डरना, भयभीत होना। ५ कापना।

वहकमळ–पु० रावण, दशानन।

वहकाणो (बो), वहकावणो (बो)–क्रि० [स० दहन्] १ अग्नि को जलाना, धधकाना। २ प्रदीप्त करना, सुलगाना। ३ तप्त करना, तपाना। ४ डराना, भयभीत करना। ५ कपाना।

वहक्कणो (बो), वहक्कवणो (बो)–देखो 'दहकणो' (बो)।

वहण–स्त्री० [स० दहन] १ जलन, दाह। २ प्रज्वलन, धधकन। ३ अग्नि, आग। ४ कुढन, जलन। ५ एक रुद्र का नाम। ६ ज्योतिष में एक योग। ७ ज्योतिष मे एक वीथी। ८ तीन की सख्या।※। –वि० १ जलने योग्य। २ जलाने वाला, भस्म करन वाला। ३ नाश करने वाला।

वहणो–देखो 'दाहिणो'।

वहणो(बो)–क्रि० [स० दहन] १ जलना, भस्म होना। २ धधकना, प्रज्वलित होना। ३ सतप्त होना, दुखी होना, कुढना। ४ नष्ट होना, मारा जाना। ५ भस्म करना, जलाना। ६ नाश करना, विनाश करना। ७ दूर करना, मिटाना। ८ दाह सस्कार करना। ९ सतप्त करना।

वहदहणो (बो)–क्रि० कापना, थर्राना, डरना।

दहन, वहन–देखो 'दहण'।

दहबट्ट, वहबाट–देखो 'दहवट'।

दहमग, दहमग–पु० [स० दश-मार्ग] १ ध्वस, तहस-नहस। २ विनाश, सहार।

वहमथ (माथ)–देखो 'दसमाथ'।

वहमुख, वहमुखी–देखो 'दसमुख'।

वहल–स्त्री० [स० दर] १ डर, भय, आतक, त्रास। २ सताप, दुख। ३ भय से कपन। ४ धाक, रौब, प्रभाव।

दहलणो (बो)–क्रि० [स० दर] १ डरना, भय खाना। २ सतप्त होना, दुखी होना। ३ भय से कापना। ४ धाक या रौब पडना।

दहलाणो (बो), वहलावणो(बो)–क्रि० १ डराना, भय दिखाना। २ सतप्त करना, दुखी करना। ३ भय से कपाना। ४ धाक जमाना, रौब लगाना।

वहली–देखो 'दिल्ली'।

दहलोत–वि० भयभीत करने वाला, आतकित करने वाला।

दहल्ळ–देखो 'दहल'।

वहल्लणो (बो)–देखो 'दहलणो' (बो)।

वहवट, (वटि, वट्ट, वाट, वाटो)–पु० [स० दश-वाट] १ सहार, विनाश। २ ध्वस, नाश। ३ आतक, डर, भय। ४ दशो दिशाओ के मार्ग।

दहव्रन–स्त्री० [स० दधिवर्णा] गाय।

दहसत वहसति, वहसत्त–स्त्री० [फा० दहशत] १ आतक, डर, भय, खौफ। २ धाक, रौब।

दहसोत–देखो 'देसोत'।

वहाई–स्त्री० [स० दह] दश के मान की सख्या, इकाई के पीछे का अक।

वहाड–स्त्री० १ जोर की आवाज, भारी या घोर शब्द। २ शेर आदि की गर्जना। ३ घन-घोर गर्जन।

वहाडणो (बो)–क्रि० १ जोर का शब्द करना। २ गर्जना। ३ क्रोध मे जोर से बोलना। ४ देखो दहाणो' (बो)।

वहाडो–वि० १ आतक व रौब वाला, आतकित करने वाला। २ जबरदस्त। ३ गर्जने वाला। ४ वयोवृद्ध, अनुभवी। ५ पुराना, प्राचीन।

दहाडो–देखो 'दिवस'।

वहाणो(बो), वहावणो (बो)–क्रि० [स० दहन] १ भस्म करना, जलाना। २ सतप्त करना, कुढाना। ३ प्रज्वलित करना। ४ नष्ट करना, मारना। ५ दूर करना, मिटाना। ६ दाह-सस्कार कराना।

दहावन–स्त्री० [स० दीर्घ+अवत] गाय।

दहि, वही–देखो 'दस'। २ देखो 'दई'।

वही-कोरडो–पु० एक देशी खेल।

वहीयो–देखो 'दई'।

वहूँ–देखो 'दहू'।

दहुंए, दहुऐ, दहुधा, दहुंवां–क्रि० वि० दोनो ओर, दोनो तरफ। –वि० दोनो।

दहूं, दहू–वि० दोनो।

दहेज–पु० [अ० दहेज] कन्या का विवाह कर विदाई के समय दिया जाने वाला सामान, द्रव्य आदि।

दहेलो–वि० दुर्लभ, कठिन।

दहोड़णो (बो)–क्रि० सहार करना, मारना।

दहोतरसौ–वि० [स० दशोत्तरशत] एक सौ दश।

दा–स्त्री० [फा०] दफा, बार। –वि० जानने वाला, ज्ञाता, सर्वज्ञ।

दाइवो–वि० (स्त्री० दाइ दी) समवयस्क, हम उम्र।

दाइ, दाई–स्त्री० १ आयु, उम्र। २ बार, दफा, मर्तबा। ३ तरफ, प्रकार, भ्राति।

दागड़ी–स्त्री० कपाट के पिछले भाग मे लगा काष्ठ का छोटा डण्डा या पट्टी।

दागी–स्त्री० १ बाल, मुट्टा। २ जुलाहो की कघी मे लगी रहने वाली लकडी। ३ एक वाद्य विशेष।

दागो–वि० हृष्ट-पुष्ट, मजबूत।

दांडाजिनिक–पु० पाखण्डी या ढोंगी साधु। –वि० छलिया, कपटी।

दाडी–देखो 'डाडी'।

दाडू–देखो 'दाडम'।

दांण–पु० [स० दान] १ शतरज, चौपड आदि मे चाल, दाव। २ चाल के लिए पाशा या कौडी फेंकने की क्रिया। ३ दाव पर रखा जाने वाला द्रव्य या सामान। ४ समय, वक्त। ५ बार, दफा। ६ ऊट के अगले पैरो का बधन। ७ देखो 'डाण'। ८ देखो 'दान'।

दाणउ–१ देखो 'दाणो'। २ देखो 'दान'।

दांण-दपांण, दाण-दापो–पु० १ सरकारी कर। २ जगात।

दाणदार–देखो 'दाणेदार'।

दांणपुरधांण–पु० मत्री।

दाणमडही–स्त्री० दान देने का स्थान।

दाण-लीला–देखो 'दानलीला'।

दांणव–पु० [स० दानव] १ असुर, राक्षस। २ दुष्ट। ३ यवन —गुर, गुरु–पु० शुक्राचार्य। —राई, राय, राह–पु० हरिण्य कश्यप, राजा बलि, रावण, बादशाह।

दाणवत–पु० [स० दानव-पुत्र] अफीम।

दाणवि, दाणवी–वि० [स० दानवीय] दानव सम्बन्धी, आसुरी। –स्त्री० राक्षसी।

दांणव्व–देखो 'दाणव'।

दांणादार–देखो 'दाणेदार'।

दांणापांणी–पु० १ अन्न-जल। २ जीविका। ३ रहने का सयोग।

दाणी–पु० १ कर लेने वाला कर्मचारी। २ दाख।

दांणू–१ देखो 'दानव'। २ देखो 'दाणो'।

दाणेदार–वि० जिसमे दाने या रवे हो, रवादार। –पु० १ बढिया लोहे की तलवार। २ एक प्रकार का बढिया फौलाद।

दाणो–पु० [फा० दान] १ अनाज, अन्न। २ अनाज या किसी पदार्थ का कण। ३ रवा। ४ घोडे, सूअर आदि को खिलाने का अनाज। ५ बीज। ६ नग, खण्ड, टुकडा। ७ किसी वस्तु की सतह का रवादार उभार। ८ शरीर पर किसी रोग के कारण होने वाले दाने। ९ एक प्रकार की शक्कर। १० देखो 'दाणव'।

दात, दातडलो–पु० [स० दन्त] १ प्राणियों के मुह मे बना, खाना चबाने का ठोस व तीक्ष्ण अवयव, दत, दशन, रदन। २ दात की तरह बना किसी उपकरण का भाग। [सं० दात] ३ पालतू या सीधा बैल। ४ दाता। ५ दमनक वृक्ष। –वि० १ पालतू। २ वशवर्ती। ३ उदार। ४ त्यक्त। ५ इन्द्रियजित। —कथ, कथा='दंतकथा'।

दातड़ल–पु० सूअर, शूकर।

दातण, (णि, णी,) दातणियो–पु० [स० दत-मज्जन] १ दांत साफ करने की क्रिया, दत मजन। २ दात साफ करने मे काम आने वाला पदार्थ, मजन। ३ नीम, बबूल आदि की हरि टहनी। ४ एक लोक गीत।

दांतवसन–पु० [स० दत-वसनम्] ओष्ठ, अधर।

दातळी–वि० १ बडे दातों वाली। २ बिना बात हंसने वाली। –स्त्री० छोटी हसिया।

दातळैल–देखो 'दातडैल'।

दातळो–वि० [स० दतुर] (स्त्री० दातळी) १ बडे दातो वाला। २ बिना बात हसने वाला। –पु० हसिया।

दांताळी–देखो 'दताळी'।

दाताळो–पु० [स० दतावल] १ हाथी, गज। २ देखो 'दातळो'।

दांति–देखो 'दाती'।

दातियो–पु० [स० दातिक] १ खरगोश। २ सियार। ३ ढोली। –वि०-दात का बना।

दांतिळउ–देखो 'दातळो'।

दाती–स्त्री० [स० दत] १ हाथी दात आदि के चूडे बनाने का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। २ कघी। ३ कघी से बाल साफ करने के लिये डोरा लपेटने की क्रिया या ढग। ४ कघीनुमी कुदाली। ५ दातो की पक्ति, बत्तीसी। ६ एक वृक्ष विशेष। ७ आत्म सयम। ८ वशीकरण। ९ देखो 'दातो',

दातीळ–पु० [स० दतुर] चार दात वाला ऊट।

दातूसळ–देखो 'दतूसळ'।

दांतेरू–देखो 'दंतेरू'।

दांतौ–पु० [स० दत] १ दातनुमा कगूरा। २ नुकीला भाग, बीच मे निकली कोई नोक। ३ 'कुळी' नामक कृषि उपकरण का एक अवयव। –वि० दात का।

दात्पुणी–स्त्री० जमाल घोटे की जड।

दात्यौ–१ देखो 'दातियौ'। २ देखो 'दातौ'।

दांदड–देखो 'दानड'।

दान–पु० [स० दान] १ धर्म या पुण्य अर्जन करने के लिये याचको को कुछ देने की क्रिया। २ याचको को उदारता पूर्वक बाटा जाने वाला द्रव्य या पदार्थ। ३ भेंट, पुरस्कार। ४ देना क्रिया, सुपुर्दगी। ५ बटाई, वितरण। ६ घूस, रिश्वत। ७ हाथी का मद। ८ बैठक, आसन। ९ देखो 'दाण'। –**अयन**–पु० दाता, दानी। –**गुर, गुरु**–पु० महादानी, दानवीर। –**पति**–पु० सदा दान करने वाला दानी। अक्रूर। —**पत्र**–पु० दान की हुई सम्पत्ति के सबध मे लेख्य पत्र। —**पात्र**–पु० दान के लिये उपयुक्त याचक। —**लीला**–पु० श्रीकृष्ण की एक बाल लीला। —**वारि**–पु० हाथी का मद। —**वीर**–पु० साहस पूर्वक दान करने वाला, महादानी। —**साळा**–स्त्री० याचको को दान देने का स्थान। —**सील**–वि० दान करने की भावना वाला।

दानक, दांनख–पु० [स० दानक] बुरा व कुत्सित दान।

दानड़–पु० कूडा करकट।

दानव–देखो 'दाणव'। —**गुर, गुरु**='दाणवगुरु'।

दानवज्र–पु० [स० दानवज्र] देवताओ की सवारी के अत्यन्त वेगवान अश्व।

दानवी–स्त्री० [स० दानवी] दानव स्त्री, राक्षसी। –वि० [स० दानवीय] आसुरी, दानव सवधी।

दानवू–देखो 'दाणव'।

दानवेंद्र–पु० [स० दानवेंद्र] १ राजा वलि। २ रावण। ३ हरिण्य कशिपु।

दानसागर–पु० [स० दानसागर] एक प्रकार का महादान।

दांनाई–स्त्री० [फा० दानाई] १ बुद्धिमता, अक्लमदी। २ वृद्धावस्था।

दांनावकी–स्त्री० [स० दान] दान लेने का अधिकार।

दांनाध्यक्ष–पु० [स० दानाध्यक्ष] वह जिसके द्वारा दान किया हुआ द्रव्य बाटा जाय।

दांनापण–पु० १ अक्लमदी, बुद्धिमता। २ बुढापा।

दांनि–१ देखो 'दानी'। २ देखो 'दान'।

दानिसमद–वि० [फा० दानिशमद] बुद्धिमान।

दानी–वि० [स० दानिन्] १ दान करने, पुण्य करने, धर्मादा करने वाला। २ भेंट करने वाला। ३ दाता, उदार। –पु० १ राजा कर्ण। २ दानी व्यक्ति।

दानीक–वि० [फा०] १ बुद्धिमान, अक्लमद। २ दान करने वाला, उदार। ३ वृद्ध।

दानीरिप–पु० [सं० दानिन्-रिपु] अर्जुन, पार्थ।

दानेसरी, दानेसबर, दानेसुर–वि० [स० दानीश्वर] दान देने मे श्रेष्ठ।

दांनौ–पु० [फा० दाना] (स्त्री० दानी) १ अक्लमंद, बुद्धिमान। २ वयोवृद्ध, अनुभवी। ३ सज्जन। ४ हितैषी, शुभचिन्तक। ५ देखो 'दाणौ'। ६ देखो 'दाणव'।

दापत्य–वि० [स०] दम्पती संवधी, पति-पत्नी सवधी। –पु० पति-पत्नी का प्रेम सवध व व्यवहार।

दामिक–वि० [सं०] १ पाखण्डी, आडम्बरी। २ घमण्डी, अहकारी। ३ धोखेवाज, ठग।

दाम, दामडियौ, दामडौ–पु० [स०द्रम्म] १ एक रुपये का ४०वा भाग, एक सिक्का। २ पैसे का पच्चीसवा भाग। ३ पैसे के बराबर एक प्राचीन सिक्का। ४ द्रव्य, धन। ५ वस्तु की कीमत, मूल्य। [स० दाम] ६ एक प्रकार की नीति। ७ माला, हार, लडी। ८ रज्जु, रस्सी। ९ डोरा, धागा। १० कमर वद। ११ रेखा, धारी। १३ वधन। –वि० किंचित, जरा, कम।

दामट्ठी–पु० [स० दामिट्ठी] इन्द्र की रथ सेना का सेनापति।

दांमण–पु० [फा० दामन] १ वस्त्र का छोर। २ ओढ़णी। ३ ओढणी का पल्ला। ४ पहाड के नीचे की भूमि। ५ बधन। ६ घन घटा। ७ देखो 'दामणी'। ८ देखो 'दामणौ'। ९ देखो 'दावण'। १० देखो 'दामौ'। –वि० १ वधन मे डालने वाला। २ चचल।

दामणणौ (बौ)–क्रि० ऊंट, वैल, घोडे आदि के पैर वाधना।

दामणगीर–वि० [फा० दामन-गीर] दामन पकडने वाला।

दामणि–देखो 'दामणी'।

दामणियौ–वि० [स० दमन] १ दमन करने वाला। २ देखो 'दामणौ'।

दामणी–स्त्री० [स०दामिनी] १ बिजली, विद्युत। [स० दामनी] २ रस्सी, रज्जु। [स० दाम] ३ विधवा स्त्रियो के शिर की एक ओढनी विशेष। ४ शिर का एक आभूषण विशेष।

दांमणेस–देखो 'दामणी'।

दामणौ–पु० [सं० दाम, दामनी] १ दुहते समय गाय के पीछे के पैर बाधने की छोटी रस्सी। २ ऊट, घोडे आदि के अगले पैर बाधने की रस्सी। –वि० बाधने वाला।

दामणौ (बौ)- क्रि० [स० दमन] १ बधन मे डालना, बाधना। २ दमन करना।

दामाद–पु० [फा० दामाद] पुत्री का पति, जमाता।

दामाळौ–वि० १ धन का लोभी। २ धनवान, अमीर।

दांमिण, दामिणी, दामिन–देखो 'दामणी'।

दामोदर–पु० [स० दामोदर] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु । ३ ईश्वर । ४ एक जैन तीर्थंकर का नाम । ५ रुपया, पैसा रखने की लबी थैली ।

दामोदाम–वि० पूर्ण ।

दामौ–पु० [स० दाम] परस्पर जुडा अगूठियो का जोडा ।

दाय–१ देखो 'दाम' । २ देखो 'दाव' ।

दांवण–१ देखो 'दामण' । २ देखो 'दामणौ' । ३ देखो 'दावड' । ४ देखो 'विदावण' ।

दावणणौ (बौ)–देखो 'दामणणौ (बौ)' ।

दावणि (णी)–१ देखो 'दामण' । २ देखो 'दामणी' ।

दावणियौ, दावणौ–१ देखो 'दामणौ' । २ देखो 'दामणियौ' ।

दावणौ (बौ)–देखो 'दामणौ' (बौ) ।

दावा–स्त्री० रहट की माल मे लगे रस्सी के टुकडे ।

दाहिण–देखो 'दाहिणौ' । —**वरत**='दक्षिणावरत' ।

दाहिणौ–देखो 'दाहिणौ' । (स्त्री० दाहिणी) ।

दा–पु० १ दान । २ प्रेम । ३ पर्वत । ४ शुभ । ५ लक्ष्मी । –वि० दातार । –अव्य० का ।

दाइ–१ देखो 'दाई' । २ देखो 'दाय' ।

दाइज, दाइजउ, दाइजौ–देखो 'दायजौ' ।

दाई–स्त्री० [स० धात्री] १ प्रसव कराने वाली स्त्री । धात्री । २ दूसरे के बच्चे को दूध पिलाकर पालन करने वाली स्त्री, धाय । ३ आया । ४ तरह, भांति । –वि० १ समान, तुल्य । २ देखो 'दाय' ।

दाईजौ–देखो 'दायजौ' ।

दाउ–पु० १ आक्रमण, हमला । २ अचानक फेंका पदार्थ । ३ देखो 'दाव' ।

दाउदी–देखो 'दाऊदी' ।

दाउमू–पु० आभूषणो पर खुदाई करने का औजार ।

दाऊ, दाऊजी–पु० [स०देव] १ श्रीकृष्ण के बडे भाई बलराम । २ बडा भाई । ३ देखो 'दाव' । ४ एक लोक गीत ।

दाऊदखानी–पु० [फा० दाऊदखानी] १ अच्छी जाति का सफेद गेहूं । २ एक प्रकार का चावल ।

दाऊदी–पु० श्वेत पुष्पो वाला एक पौधा व उसका फूल ।

दाग्रौ–देखो 'दावौ' ।

दाकल–देखो 'धाकल' ।

दाकळणौ (बौ)–क्रि० ललकारना, फटकारना, धमकाना ।

दाक्षिण–पु० [स०] १ एक होम का नाम । २ यज्ञीय दक्षिणा की वस्तुओ का समुच्चय । –वि० १ यज्ञीय दक्षिणा संबधी । २ दक्षिण दिशा सबधी ।

दाक्षिणात्य–वि० [स०] दक्षिण का, दक्षिण सबधी । –पु० १ दक्षिण देश । २ भारत का दक्षिणी भाग । ३ दक्षिण का निवासी । ४ नारियल ।

दाक्षिणिक–पु० [स०] १ एक प्रकार का कर्म बधन । २ यज्ञ की दक्षिणा सबधी वस्तु ।

दाक्षी–स्त्री० [स०] १ राजा दक्ष की कन्या । २ पाणिनी की माता ।

दाख–पु० [स० द्राक्षा] १ सूखा अगूर, द्राक्षा, किशमिश । २ मुनक्का । ३ अगूर ।

दाखणौ–वि० [स० दृश] १ दिखाने वाला । २ प्रकट करने वाला । ३ कहने वाला । ४ वर्णन करने वाला, कथने वाला ।

दाखणौ (बौ)–क्रि० [स० दृश] १ दिखाना । २ कहना, बोलना । ३ वर्णन करना, कथना । ४ देखना ।

दाखल–देखो 'दाखिल' । —**खारिज**='दाखिल-खारिज' । —**दफ्तर**='दाखिल-दफ्तर' ।

दाखलौ–पु० [अ० दाखिल] १ प्रवेश, भर्ती पैठ । २ किसी मे घुसना, सम्मिलित होना आदि क्रिया । ३ हवाला, उल्लेख । ४ लिखावट । दर्ज । ५ लिखित-पत्र । ६ अधिकार ।

दाखवणौ (बौ)–देखो 'दाखणौ' (बौ) ।

दाखिण–देखो 'दाक्षिण' ।

दाखिणात्य–देखो 'दाक्षिणात्य' ।

दाखिणिक–देखो 'दाक्षिणिक' ।

दाखिल–वि० [अ०] १ प्रविष्ठ । २ मिला हुआ, सम्मिलित, शरीक । ३ भर्ती । ४ अन्दर पहुचा हुआ । —**खारिज**–पु० जायदाद के कागज पर पूर्व मालिक का नाम काट कर वारिस का नाम लिखने की क्रिया । अन्दर-बाहर होने की क्रिया । —**दफ्तर**–वि० प्रतिवेदन या पत्र अस्वीकृत होकर मिसल मे नत्थी ।

दाखिलौ–देखो 'दाखलौ' ।

दाखी–देखो 'दाक्षी' ।

दाखीण–पु० [स० दाक्षिण्य] अनुकूलता ।

दाग–पु० [फा० दाग] १ पशुओ के शरीर पर अग्नि दग्ध करके किया गया निशान । २ वस्त्रादि पर लगा धव्वा । ३ दग्ध होने का निशान । ४ चिह्न । ५ कलक, दोष, लाछन । ६ पाप, अघ । ७ अपराध । [स० दग्ध] ८ अग्नि । ९ जलन । १० दाह । ११ दाह, सस्कार । १२ दुख । १३ शोक ।

दागडियौ–वि० १ धूर्त, बदमाश । २ ठग, लुटेरा ।

दागडौ–देखो 'धागडौ' ।

दागणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्ध] १ पशुओ के दाग लगाना, दग्ध करना । २ दाह क्रिया करना । ३ जलाना । ४ चिह्नित करना, निशान लगाना । ५ तोप, बन्दूक आदि छोडना ।

दागभाव–पु० हाथी का एक रोग ।

दागल–वि० १ जिस पर दाग लगा हो, दागी । २ धब्बो वाला । ३ चिह्नित । ४ कलक या दोष युक्त । ५ दण्डित, सजा पाया हुआ ।

दागीणौ–पु० १ वस्तु, चीज, पदार्थ । २ किसी वस्तु के नग, अदद । ३ आभूषण, जेवर । –वि० १ दाग लगा हुआ । २ चिह्नित । ३ दोष युक्त । ४ कलकित ।

दाघ–स्त्री० [स० दाघ] १ गर्मी, ताप । २ दाह, सताप । ३ पीडा, क्लेश, दुख । ४ पित्त प्रकोप का एक रोग । ५ अतिम सस्कार । ६ देखो 'दाघौ' ।

दाघउ–देखो 'दाघौ' ।

दाघणौ (बौ), दाघवणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्ध] जलाना ।

दाघु, दाघौ–वि० [स० दग्ध] १ जलाने वाला, भस्म करने वाला । २ शव को दाह सस्कार के लिए श्मशान भूमि ले जाने वाला ।

दाड–देखो 'डाड' ।

दाडकली–पु० १ दाढ़ी के वाल । २ देखो 'दाढ़ी' ।

दाडम, दाडमियौ, दाडमी–स्त्री० [स० दाडिम] अनार ।

दाडव–पु० काशी से दो योजन दूर एक गाव ।

दाड़िम, दाड़िमी–देखो 'दाडम' ।

दा'डौ–पु० १ सूर्य । २ देखो 'दिवस' ।

दाछट–वि० निर्भय, नि शक ।

दाजणौ (बौ)–देखो 'दाझणौ' (बौ) ।

दाझ, दाझण–स्त्री० [सं० दह] १ जलन, दाह । २ ईर्ष्या, डाह ।

दाझणौ (बौ)–क्रि० [स० दग्ध] १ जलना, तप्त होना । २ जल कर विकृत होना । ३ झुलसना । ४ दुखी होना, सतप्त होना । ५ विरह मे झुरना । ६ ईर्ष्या करना, कुढना, जलना ।

दाट–पु० [स० दान्ति] १ वोतल आदि का मुह वन्द करने की वस्तु, डाट, कॉर्क । २ प्रतिवध, रोक । ३ नाश, ध्वस । ४ फटकार, प्रताडना, डाट ।

दाटक–वि० १ बडा, महान । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ समर्थ । ४ शक्तिशाली, जबरदस्त । ५ भयकर । ६ दमन करने वाला ।

दाटणौ–वि० [स० दम] १ दमन करने वाला । दबाने वाला । २ नाश करने वाला । ३ काटने वाला । ४ वश मे करने वाला । ५ गाडने वाला, दबाने वाला ।

दाटणौ (बौ)–क्रि० [स० दम्] १ दमन करना, दबाना । २ कब्जा करना, अधिकार करना । ३ वश मे करना, काबू करना । दवाना । ४ गाडना, छुपाना । ५ देखो 'डाटणौ' (बौ) ।

दाटी–देखो 'दाटक' ।

दाटीक–देखो 'दाटक' ।

दाटौ–देखो 'डाटौ' ।

दाठीक, दाठीकर–वि० [स० दृष्टिकर] १ धैर्यवान्, बुद्धिमान । २ गभीर । ३ देखो 'दाटक' ।

दाड–देखो 'डाड' ।

दाडाळ–देखो 'डाढाळ' ।

दाडिम–देखो 'दाडम' ।

दाडिम-कुसुम–वि० [स०] लाल ।

दाडिम-सार–पु० वस्त्र विशेष ।

दाडिमहूलौ–पु० एक प्रकार का कीमती वस्त्र ।

दाडिमास्टक–पु० [स० दाडिमाष्टक] एक प्रकार का अनार का चूर्ण ।

दाडिमि (मी)–देखो 'दाडम' ।

दाडू दाडघा, दाडयुम, दाडयू–देखो 'दाडम' ।

दाढ–१ देखो 'डाड' । २ देखो 'डाढी' ।

दाढणौ (बौ)–क्रि० [स० दशन] १ दातो से चबाना, कुचलना । २ देखो 'डाडणौ' (बौ) ।

दाढाळ–देखो 'डाढ़ाळौ' ।

दाढाळी–देखो 'डाढ़ाळी' ।

दाढाळौ–देखो 'डाढाळी' ।

दाढी–देखो 'डाडी' ।

दाढेची–स्त्री० जिसके दाढ़ी हो, दाढी वाली, देवी, दुर्गा ।

दात–पु० [सं० दत्त] १ दहेज । २ पुष्य नक्षत्र का एक नाम । [स० दात्र] ३ फसल काटने का औजार, हसिया । [स० दंत] ४ सूअर का दात, खग । ५ दाता ।

दातडियाळ–देखो 'दात्रडियाळ' ।

दातडी–१ देखो 'दात' । २ देखो 'दातौ' ।

दातण–देखो 'दातण' ।

दातर, दातरडी, दातरडौ, दातरली, दातरलौ, दातरियौ–१ देखो 'दातौ' । २ देखो 'दात' ।

दातरी–स्त्री० १ पक्षी विशेष । २ देखो 'दातौ' ।

दातरौ–देखो 'दातौ' ।

दातल–१ देखो 'दातौ' । २ देखो 'दात' ।

दातली–१ देखो 'द ताळी' । २ देखो 'दात' ।

दातलौ–पु० १ हसिया । २ देखो 'दातौ' ।

दाता, दातार–वि० [स० दातृ, दाता] १ देने वाला । २ दान करने वाला, दानी । ३ उदार । ४ कर्ज देने वाला । ऋण-दाता । –पु० १ शिव, महादेव । २ कुटुब के वृद्ध पुरुष के लिए सम्मान सूचक शब्द । ३ छप्पय छंद का एक भेद ।

दातारगी, दातारी–स्त्री० [स० दातृ] उदारता, दानशीलता।

दातारु–देखो 'दातार'।

दातावरी–वि० [स० दात्री] देने वाली, उदारहृदया। –स्त्री० दानशीलता।

दाति–पु० दान।

दातिब–पु० [स० दातव्य] १ दान, पुण्य। २ देने योग्य पदार्थ।

दाती–१ देखो 'दाति'। २ देखो 'दात'। ३ देखो 'दातो'।

दातुण–देखो 'दातण'।

दातो–पु० [स० दात्र] हसिया।

दात्र–स्त्री० [स० दातु, दात्र] १ देने वाली। २ हसिया।

दात्रडियाळ, दात्रिडिआळ, दात्रीडीयाळ, दात्रीयाळ–पु० [स० दात्र-पाल] १ सूअर, वराह। २ वराहावतार।

दात–पु० [स० दद्रु] एक चर्म रोग विशेष। –स्त्री० [फा०] १ तारीफ, प्रशसा, वाहवाही। २ धन्यवाद। ३ न्याय, इन्साफ।

दादनी–पु० [फा० दादन] देने योग्य।

दादर, दादरियो–पु० १ एक प्रकार का वाद्य। २ देखो 'दादुर'।

दादरो–पु० १ सगीत मे एक ताल, इक ताला। २ देखो 'दादुर'।

दादाण, दादाणो–पु० १ दादा का घर, गाव या प्रदेश। २ पिता का ननिहाल।

दादाई–स्त्री० उद्दण्डता। –वि० दादा के वश का।

दादागिरी–स्त्री० बदमाशी, जोरावरी, उद्दण्डता।

दादागुर, दादागुरु, दादागुरू–पु० गुरु का गुरु।

दादाभाई–पु० वडा भाई।

दादारग–वि० पागल।

दादि–१ देखो 'दाद'। २ देखो 'दादी'।

दादी–स्त्री० पिता की माता। **—सासू**–स्त्री० सासु की सासु। **—सुसरो**–पु० श्वसुर का पिता।

दादुर, दादुरियो, दादुरो–पु० [स० दर्दुर] (स्त्री० दादुरी) १ मेढक। २ बादल। ३ शहनाई। ४ पर्वत। ५ दक्षिण भारत का एक पर्वत। **—वाजउ, वाजो**–पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष।

दादू–पु० १ श्रीदादूदयाल। २ दादूपथी।

दादूदयाल–पु० अकबरकालीन एक प्रसिद्ध निर्गुणी साधु। महात्मा।

दादूद्वारो–पु० दादूपथी महात्माओ का निवास स्थान।

दादूपथ–पु० श्रीदादूदयाल द्वारा चलाया गया सम्प्रदाय।

दादूपथी–पु० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

दादेरो–देखो 'दादाणो'।

दादो–पु० १ पिता का पिता, दादा, पितामह। २ बडे भाई का सम्बोधन। ३ वृद्ध पुरुष का सम्बोधन। ४ दादागिरी करने वाला। ५ पण्डित, ब्राह्मण।

दाध–१ देखो 'दाद'। २ देखो 'दाह'। ३ देखो 'दाघ'।

दाधजोग–पु० वार तिथि सबंधी पाच योगो मे से दूसरा योग।

दाधणो (बो)–क्रि० [स० दग्ध] १ नष्ट होना। २ भस्म होना। ३ जलना। ४ दग्ध होना, विकृत होना। ५ पीड़ित होना, सतप्त होना। ६ जलाना, भस्म करना। ७ दग्ध करना। ८ पीडित करना, सतप्त करना। ९ अधिकार करना, कब्जा करना।

दाधलो–पु० सताप, कष्ट।

दाधावडो–पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

दाधिच–पु० [स० दाधीच] १ एक राजपूत वंश। २ एक ब्राह्मण वर्ग।

दाधीच (चि, ची)–पु० [स० दधिची] दधिची ऋषि की सतान, एक ब्राह्मण वर्ग।

दाधो, दाध्यो–वि० दुखी, संतप्त। दग्ध।

दाप–पु० [सं० द्राव] १ वेग। २ देखो 'दरप'।

दापक–पु० [स० दर्पक] १ कामदेव। २ दबाने वाला।

दापड़–देखो 'दाफड'।

दापटणो (बो)–क्रि० [स० दाप्] १ सहार करना, मारना। २ देखो 'दपटणो' (बो)।

दापणो (बो)–क्रि० [स० दाप्] १ सहार करना। २ दवाना, दावना।

दापिक–पु० एक राजवश।

दापो–पु० १ मागलिक अवसरो पर ब्राह्मणो को बाटा जाने वाला द्रव्य। २ कन्या के पिता द्वारा वर के पिता को दिया जाने वाला द्रव्य।

दाफड़–पु० मच्छर आदि के काटने से शरीर पर उभरने वाला चकत्ता।

दाब–स्त्री० १ दबने, दबाने की क्रिया या भाव। २ दबाव, बोझ, भार। ३ जकडन। ४ घास का चौकोर ढेर। ५ बगल काख। ६ शक्कर और घी का मिश्रण, एक पथ्य। ७ कलेजे का मास, कलेजी। ८ शराब पीने का प्याला, जाम।

दाबडियो–पु० सिचाई के पानी की नाली के मुंह पर लगाया जाने वाला घास, फूस, मिट्टी आदि।

दाबडो, दाबडउ–पु० १ कपूर आदि रखने की डिबिया। २ देखो 'डाबडो'।

दाबणो (बो)–क्रि० [स० दमन] १ दबाना, दबाकर रखना। २ बोझ-भार रखना। ३ आचरण व बोलने की स्वतन्त्रता न रहने देना। ४ किसी कार्य के लिए मजबूर या विवश करना। ५ विशेष गुण या प्रभाव के कारण तुलना मे मद, फीका या बेअसर कर देना। ६ नीचा दिखाना, मात देना।

७ प्रतिभा को उभरने न देना । ८ शिकस्त देना, हराना । ९ शांत करना, उभडने न देना । १० अफवाह आदि फैलने न देना । ११ बलपूर्वक अधिकार मे करना । १२ हडपना, ठगना । १३ दबोचना, घर-दबाना । १४ मद या धीमा करना । १५ शर्मिदा करना, झेंपाना । १६ गुप्त रखना, छुपाना । १७ बेवश करना । १८ जमीन मे गाढना, दफन देना । १९ ठूसना, दबाना ।

दाबदी–देखो 'दाऊदी' ।

दाबेडौ–पु० कुए पर चडस खाली करने का स्थान ।

दाबोतरौ–पु० एक प्रकार का सरकारी लगान ।

दाबौ–पु० [स० दमन] १ दबाने की क्रिया या भाव । २ किसी वस्तु को दबाये रखने के लिए रखा जाने वाला भार । ३ सीमा सुरक्षार्थ तैनात योद्धा । ४ धोखा, ठगी । ५ घी-शक्कर का पथ्य ।

दाभ-देखो 'डाव' ।

दायदार–देखो 'दावेदार' ।

दाय–पु० [स० दाय] १ विभाजन योग्य पैतृक सपत्ति । २ दान भेंट । ३ दहेज । ४ भाग । [स० धं] ५ तरह, भाति, प्रकार । ६ हानि, विनाश । ७ दुर्भाग्य । [स० ध्यं] ८ इच्छा, मशा । ९ पसद, रुचि । –वि० १ इच्छित । २ रुचिकर । ३ पसद का । –क्रि०वि० १ इच्छानुसार । २ तरह से । ३ लिये, वास्ते ।

दायक–वि० [स०] देने वाला, दाता ।

दायचौ, दायज, दायजउ–देखो 'दायज' ।

दायजवाळ, दायजाळ, दायजावाळ–पु० दहेज मे दिया जाने वाला प्राणी, दास-दासी ।

दायजौ–पु० [स० दाय] विवाहोपरान्त विदाई के समय कन्या को दिया जाने वाला सामान, द्रव्य आदि । दहेज ।

दायण–देखो 'दाई' ।

दायणौ–पु० एक प्रकार की लगाम ।

दायभाग–पु० [स०] १ पैतृक सम्पत्ति के वितरण का विधान । २ पैतृक सपत्ति का भाग ।

दायम–क्रि०वि० [अ०] सदा, हमेशा, नित्य ।

दायमा–देखो 'दाहिमा' ।

दायमौ–देखो 'दाहिमौ' ।

दायर–वि० [अ०] १ जारी, चालू, गतिमान । २ चलता-फिरता । ३ पेश, प्रस्तुत ।

दायरौ–पु० [अ० दाएर] १ गोल घेरा । २ मडल । ३ वृत्त, कक्षा । ४ क्षेत्र । ५ सीमा । ६ फकीरो के रहने का स्थान ।

दाया–देखो 'दाई' ।

दायाद–वि० [स० दाय-आद] सम्पत्ति या जायदाद का उत्तराधिकारी, दावेदार । –पु० १ पुत्र । २ रिश्तेदार, भाई बन्धु । ३ दूर का सबधी ।

दायादी–स्त्री० [सं०] कन्या, पुत्री ।

दायिणी (नी)–स्त्री० [स० दायिनी] देने वाली ।

दायेंदार, दायेदार–देखो 'दावेदार' ।

दायौ–पु० [अ० दावा] अधिकार, हक, कब्जा ।

दार–स्त्री० [स० दारा] १ पत्नी, भार्या । २ स्त्री, औरत । [स० दारु] ३ काष्ठ, लकडी । ४ अग्नि, आग । ५ दरार । –प्रत्य० [फा०] वाला ।

दारक, (क्क)–पु० [स० दारक] १ पुत्र लडका । २ देखो 'दरक'। –वि० चीरने वाला, फाडने वाला, तोडने वाला ।

दारण–देखो 'दारुण' ।

दार-मदार–पु० [फा०] १ अवलबन, निर्भरता । २ आश्रय, ठहराव ।

दारा–स्त्री० [स०] १ स्त्री, पत्नी, भार्या । २ एक प्रकार की मछली ।

दाराज–देखो 'दराज' ।

दारिद (द्र)–पु० १ गरीबी । २ देखो 'दाळद' ।

दारियौ–पु०[स० दारक] १ वेश्या पुत्र । २ पुत्र । ३ सोलकी वश की दारिया शाखा का व्यक्ति ।

दारी–स्त्री [स० दारिका] १ वेश्या, रंडी । २ पुत्री । **–वाडउ**–पु० वेश्याओ का घर, मुहल्ला ।

दारु–स्त्री० [स०] १ काष्ठ, लकडी । २ डडी । ३ चटकनी । ४ देवदारु का वृक्ष । ५ पीतल । ६ कच्चा लोहा । ७ देखो 'दारू'

दारुक–पु० [सं०] १ देवदारु का वृक्ष । २ श्रीकृष्ण का एक सारथी ।

दारुकदळी–पु० [सं०] जगली केला ।

दारुका–स्त्री० [स०] कठपुतली ।

दारुकाबन–स्त्री० [स०] एक वन विशेष ।

दारुडी, दारुडौ–देखो 'दारू' ।

दारुजोखित–स्त्री० [स० दारुयोषित] कठपुतली ।

दारुण–वि० [स०] १ भयकर, भीषण, घोर । २ दु सह, कठिन, विकट । ३ प्रचड, शक्तिशाली । ४ योद्धा वीर ।

दारुणारि–पु० [स०] श्रीविष्णु ।

दारुणी–स्त्री०[स०]१ एक महाविद्या का नाम । २ देखो'दारुण' ।

दारुन–देखो 'दारुण' ।

दारुनटी, दारुनारी–स्त्री० [स०] कठपुतली ।

दारुपात्र–पु० [स०] काष्ठ-पात्र ।

दारुयोखित–स्त्री० [स० दारुयोषित] कठपुतली ।

दारुहळदी–स्त्री० [स० दारुहरिद्रा] १ आल जाति का एक सदाबहार वृक्ष। २ एक औषधि।
दारू–पु० [फा०] १ शराब, मद्य। २ दवा औषधि। ३ बारूद। ४ देखो 'दारु'। —**कार**–पु० शराब बनाने वाला। —**खारियौ, खोरौ**–पु० शराब पीने का आदी।
दारूडी, दारूडौ–देखो 'दारू'।
दारूदडबौ–पु० नशा-पता, नशा।
दारूफूल–पु० पुष्पो से निकला हुआ शराब।
दारूहळदी, दारूहळद्र–देखो 'दारुहळदी'।
दारोगाई–स्त्री० १ दारोगा का कार्य। २ दारोगा का पद। ३ दारोगा का वेतन।
दारोगौ–पु० [फा० दारोग] १ निगरानी रखने वाला अफसर। २ पुलिस का अधिकारी।
दारोमदार–देखो 'दारमदार'।
दाळ–स्त्री० [स० दालि] १ चने, मूग आदि के दाने का आधा भाग। २ दला हुआ पदार्थ। ३ दाल की तरह की कोई वस्तु। ४ चेचक या फोडे फुसी पर जमने वाली काली पपडी।
दाळचिणी,दाळचीणी–स्त्री०[स०दारु चीन]१ एक वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष की छाल जो औषधि व गरममसालो में काम आती है।
दाळद, दाळद्द, दाळद्र, दाळध–पु० [सं० दारिद्र्य] १ गरीबी, दरिद्रता, निर्धनता। २ कूडा-करकट। ३ बेकार वस्तु। —**हरण**–पु० शिव, शकर। ईश्वर। –वि० गरीबी दूर करने वाला।
दालदरी, (द्री)–वि० निर्धन, कगाल।
दालाण, दालान–पु० [फा० दालान] मकान के आगे बना खुला कक्ष, बरामदा।
दाळि–देखो 'दाळ'।
दाळिउत (द्द)–पु० [सं० दलपति] लघु दल का पति।
दाळिद, दाळिदर, दाळिद्र–देखो 'दाळद'।
दाळियालाडु–पु० पदार्थ विशेष के लड्डू।
दाळियौ–पु० १ पीतल की एक छोटी कडी। २ दालनुमी कोई वस्तु।
दाळीदर–१ देखो 'दरिद्र'। २ देखो 'दाळद'।
दाळीदरी–देखो 'दरिद्री'।
दालिम–पु० [स०] इन्द्र, सुरपति।
दाव, दाव–पु० [स० दा] १ उपयुक्त अवसर, मौका। २ घात-प्रतिघात। ३ उपाय, युक्ति। ४ खेल आदि का पेच, कला। ५ छल, कपट, धोखा। ६ विचार। ७ प्रहार, चोट। ८ प्रभाव। ९ वार, दफा, मर्तबा। १० पारी, बारी, अवसर क्रम। ११ चौपड, जूआ आदि मे पासा चलाने की क्रिया। १२ कुश्ती का पेच। १३ देखो 'दाब'। –स्त्री० [स० दाव] १४ दावाग्नि।
दावड़–स्त्री० १ सूत की पतली डोरी। २ देखो 'द्राविड'।
दावडी–देखो 'डावडी'।
दावटण–वि० दबाने वाला, दबोचने वाला।
दावटणौ (बौ)–क्रि० [स० दमन] करना, दबोचना।
दावण–पु० १ स्त्रियो का एक वस्त्र विशेष। –[स० दामन्] २ खाट के पायताने मे लगी रस्सी। ३ देखो 'दामण'।
दावणगीर–देखो 'दामणगीर'।
दावणौ–देखो 'दामणौ'।
दावणौ (बौ)–क्रि० [स०-दह] १ विरह मे जलाना, पीडित करना। २ जलाना दग्ध, करना।
दावत–स्त्री० [अ० दअवत] १ भोज, ज्योनार। २ निमत्रण।
दावदी–स्त्री० १ एक प्रकार की लता। २ देखो 'दाऊदी'।
दावा–स्त्री० रहट की माल मे बधे रस्सी के टुकड़े।
दावाअगन–देखो 'दावाग्नि'।
दावागर, दावागिर, दावागीर, दावागीरु–पु० १ शत्रु। २ प्रतिवादी।
दावाग्नि–स्त्री० [स०] वन की अग्नि।
दावात–देखो 'दवात'।
दावादार–देखो 'दावेदार'।
दावानळ (ल)–स्त्री० [स० दावानल] वन की अग्नि, दावाग्नि।
दावावध–पु० हकदार, भागीदार।
दावामुदी–वि० [अ० दावामुद्दई] विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी।
दावायत, दावायतौ–पु० विरोध करने वाला शत्रु।
दावेदार–पु० [अ० दा' वीदार] १ हकदार, हिस्सादार। २ भागीदार। ३ दावा रखने वाला, दावा करने वाला।
दावै–पु० कारण, हेतु। –क्रि० वि० अवसर पर, मौके पर। –वि० समान, तुल्य।
दावोदार–देखो 'दावेदार'।
दावौ–पु० [अ० दावा] १ किसी वस्तु या जायदाद पर बताया जाने वाला अधिकार, हक, कब्जा। २ स्वत्व। ३ अपना अधिकार पुष्ट कराने निमित्त न्यायालय मे प्रस्तुत किया गया आवेदन, मुकद्दमा। ४ शत्रुता, वैर। ५ प्रतिकार, बदला। ६ स्पर्धा, होड। ७ युद्ध। ८ ऐश्वर्य, वैभव। ९ प्रभाव, जोर, प्रताप। [स० दर्व] १० दृढतापूर्वक कथन। ११ दावाग्नि, दावानल।
दा'वौ–पु० फसल व वनस्पतियो के लिए हानिकारक तेज व शीतल वायु।

दास–पु०[सं०] (स्त्री० दासी) १ सेवक, चाकर नौकर। २ गुलाम। ३ मछवा। ४ शूद्र। ५ भक्त [सं० दाश] ६ धीवर, मछुवा।

दासडली, दासडी, दासडली, दासडी–देखो 'दासी'।

दासतान–देखो 'दास्तान'।

दासता–स्त्री० [सं०] १ गुलामी, परतन्त्रता। २ सेवावृत्ति। ३ सेवक का कार्य। ४ नौकरी। ४ भक्ति।

दासदासान–देखो 'दासानुदास'।

दासवीकोळा–पु० एक वर्ग विशेष।

दासनदणी, दासनदिनी–स्त्री० [सं० दाशनदिनी] धीवर की पुत्री, सत्यवती, मत्स्यगधा।

दासपण (णौ)–पु० [सं० दासत्वन] १ दासत्व, गुलामी। २ सेवाकर्म।

दासरत्थ, दासरथ (थि, थी, थ्यी)–पु० [सं० दाशरथ] १ श्रीराम। २ दशरथ।

दासातन–पु० [सं० दासत्वन] दासता, गुलामी।

दासानुदास–पु० [सं०] १ भक्तों का भक्त। २ गुलामो का गुलाम। ३ छोटा, तुच्छ।

दासि–देखो 'दासी'।

दासिक–देखो 'दास'।

दासी–स्त्री० [सं०] १ सेवा करने वाली स्त्री, सेविका। २ परिचायिका। ३ नौकरानी। ४ वेश्या, गणिका। ५ गुलाम स्त्री। [सं० दाशी] ६ धीवर की स्त्री। ७ शूद्र की स्त्री। —**जावौ**–पु० दासीपुत्र।

दासेर, दासेरक–पु० [सं० दासेरक] १ ऊट। २ मछुआ।

दासौ–पु० १ देहलीज या किसी द्वार के नीचे लगा पत्थर। २ बाहर निकली किनार वाला, दीवार मे लगा लम्बा पत्थर। ३ देखो 'दास'।

दास्तांन–स्त्री० [फा०] १ वृत्तान्त, हाल। २ कथा, कहानी। ३ वर्णन। ४ इतिहास।

दाह–स्त्री० [सं०] १ भस्मीकरण, जलाना क्रिया। २ जलन। ३ दाह सस्कार। ४ ताप। ५ सताप। ६ आग। ७ लालिमा। ८ ईर्ष्या, द्वेष। ९ दुख, पीडा। १० देखो 'दाव'।

दाहक–पु० [सं०] अग्नि, आग। –वि० जलाने वाला।

दाहकता–स्त्री० [सं०] जलने का भाव, गुण।

दाहकरम–पु० [सं० दाहकर्म] शव जलाने का कार्य, दाह सस्कार।

दाहकास्ट–पु० [सं० दाहकाष्ठ] अगर की लकडी।

दाहक्रम–देखो 'दाहकरम'।

दाहक्रिया–स्त्री० [सं०] दाह-सस्कार।

दाहजनक–वि० [सं०] ताप या अग्नि उत्पन्न करने वाला। ताप देने वाला।

दाहज्वर–पु० [सं०] अधिक ताप वाला ज्वर।

दाहण–पु० [सं० दाहन] अग्नि, आग।

दाहणौ–वि० [सं० दाह] (स्त्री० दाहणी) १ नाश करने वाला, सहार करने वाला। २ जलाने वाला, भस्म करने वाला। ३ सतप्त करने वाला। ४ देखो 'दाहिणौ'।

दाहणौ (बौ)–क्रि० [सं० दाह] १ जलना। २ जलकर भस्म होना। ३ सतप्त होना, दुखी होना। ४ जलाना। ५ जलाकर भस्म करना। ६ सतप्त करना, दुखी करना। ७ सहार करना, नाश करना। ८ तपाना।

दाहनौ–१ देखो 'दाहणौ'। २ देखो 'दाहिणौ'।

दाहा–स्त्री० १ दाह क्रिया। २ देखो 'दाव'।

दाहिणउ–देखो 'दाहिणौ'।

दाहिणे (णं, नं)–क्रि० वि० [सं० दक्षिण] दाहिनी ओर।

दाहिणौ (बौ)–वि० [सं० दक्षिण] (स्त्री० दाहिणी) १ बाया का विपर्याय दाया। २ दाहिनी ओर का।

दाहिमा–पु० [सं० दाधीच] १ दाधीच ब्राह्मण। २ एक राजपूत वश।

दाहु–देखो 'दाह'।

दाहौ–पु० [सं० दाह] १ उष्णता प्रकट करने वाला ज्वर। २ देखो 'दाव'। ३ देखो 'दा'वौ'।

दिकनखत्र, दिगनक्षत्र–पु० [सं० दिङ् नक्षत्र] विशिष्ट दिशाओ सबधी नक्षत्र।

दिगमूढ–देखो 'दिगमूढ'।

दिड–पु० एक प्रकार का नृत्य।

दिडी–पु० (सं०) एक छन्द विशेष।

दि–स्त्री०१ आख। २ दशो दिशाएँ। –वि० १ दातार, उदार। २ पालने वाला, पालक।

दिअण–वि० (स्त्री० दिअणी) देने वाला, दाता।

दिक–स्त्री० [सं० दिक्] –पु० १ दिशा। २ युवा हाथी। ३ क्षय रोग। –वि० (अ० दिक) १ तग, हैरान। २ अस्वस्थ, बीमार।

दिककन्या–स्त्री० [सं०] दिशा रूपी कन्या।

दिककुमार–पु० [सं०] एक देवता।

दिकचक्र–पु० [सं०] १ आठो दिशाओ का समूह। २ १६ दिशाओ का समूह।

दिकपति–पु० [सं०] दिशाओ का पति। दिक्पाल।

दिकपाळ–पु० [सं० दिक्पाल] १ दिशाओ के स्वामी देवता। २ हाथी, गज।

दिकमूढ–देखो 'दिगमूढ'।

दिकरी–देखो 'दीकरी'।

दिकरेखा–स्त्री० [स०] क्षितिज ।
दिकसाधन–पु० [स० दिक्साधन] दिशाओ का ज्ञान करने का साधन ।
दिकसूळ–देखो 'दिसासूळ' ।
दिकस्वामी–पु० [स० दिक्स्वामी] दिक्पाल ।
दिक्कण–देखो 'दक्षिण' ।
दिक्कत–स्त्री० [अ०] १ समस्या, परेशानी । २ बाधा, अडचन । ३ तगी । ४ कठिनाई, मुश्किल ।
दिक्का–देखो 'दीक्षा' ।
दिक्कुमारिका–स्त्री० [स०] तीर्थंकर के जन्म काल मे प्रसूति कार्य मे सेवा करने वाली कुमारिका ।
दिक्खण–देखो 'दक्षिण' ।
दिक्षणडी–स्त्री० दक्षिण दिशा की, दक्षिण दिशा सबधी ।
दिक्षा–देखो 'दीक्षा' ।
दिक्षागुरु–देखो 'दीक्षागुरु' ।
दिख–देखो 'दक्ष' ।
दिखण–देखो 'दक्षिण' ।
दिखणचीर–देखो 'दिखणीचीर' ।
दिखणाण–वि० [स० दक्षिणायन] १ दक्षिण का । २ दक्षिण स्थित । –पु० दक्षिण का निवासी ।
दिखणा–देखो 'दक्षिणा' ।
दिखणाद–देखो 'दखणाद' ।
दिखणादू, ढिगणादौ–देखो 'दिखणाधु' ।
दिखणाध–देखो 'दखणाद' ।
दिखणाधि, (धी)–देखो 'दखणाधि' ।
दिखणाधु (धौ)–देखो 'दखणाधू' ।
दिखणि, दिखणी–पु० [सं० दक्षिणीय] १ दक्षिण देश का अधिपति । २ दक्षिण देश । ३ देखो 'दखणी' ।
दिखणी-चीर–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
दिखद–पु० [स० दृषद्] पत्थर ।
दिखलाई–देखो 'देखाई' ।
दिखलाणौ (बौ), दिखलावणौ (बौ)–देखो 'देखाणौ' (वौ) ।
दिखाई–देखो 'देखाई' ।
दिखाउ(ऊ)–वि० १ केवल देखने या दिखाने योग्य । २ बनावटी ३ दिखावटी ।
दिखाडणौ(वौ),दिखाडणौ(वौ),दिखाणौ(बौ), दिखाळणौ(बौ)–देखो 'देखाणौ' (वौ) ।
दिखाव–पु० १ देखने की क्रिया या भाव । २ दर्शन, दीदार । ३ दृश्य । ४ दृष्टि की सीमा, नजर । ५ तडक-भडक, आडम्बर ।
दिखावट–स्त्री० १ दिखाने की क्रिया या भाव । २ ऊपरी तड़क-भडक, बनावट, आडम्बर ।
दिखावटी–वि० १ जो केवल देखने योग्य हो । २ बनावटी । ३ अवास्तविक । ४ तडक-भडक वाला ।
दिखावणौ (बौ)–देखो 'देखाणौ' (वौ) ।
दिखावौ (हौ)–पु० १ बाह्याडबर । २ तडक-भडक । ३ ढोग, पाखण्ड ।
दिखिण–देखो 'दक्षिण' ।
दिखयाणी–देखो 'दखियाणी' ।
दिगत–पु० [स०] १ आकाश का छोर, क्षितिज । २ दिशा का अत या छोर । ३ दशो दिशाएँ । ४ चारो दिशाएँ ।
दिगतर–पु० [स०] दिशाओ के बीच का स्थान, दो दिशाओ का अन्तर ।
दिगबर–पु० [स०] १ निर्वस्त्र रहने वाला जैन साधु, क्षपणक । २ एक जैन सम्प्रदाय । ३ शिव, महादेव । ४ दिशाओ का वस्त्र, अधेरा, अधकार । ५ सिद्धि प्राप्त महात्मा । –वि० नग्न, नंगा ।
दिगंबरता–स्त्री० [स०] नग्नता, नगापन ।
दिगंबरी–पु० [स०] दिगबर सम्प्रदाय का साधु या अनुयायी ।
दिगस–पु० [स०] क्षितिज वृत्त का ३६० वा अश । एक डिग्री ।
दिग–१ देखो 'द्रग' । २ देखो 'दिक' ।
दिगज–देखो 'दिग्गज' ।
दिगदत–पु० दिशा गज, आशा गज ।
दिगदाह–स्त्री० [स० दिग्दाह] सूर्यास्त के समय दिशाओ मे होने वाली लाली ।
दिगदेवता–देखो 'दिग्देवता' ।
दिगपति–देखो 'दिग्पति' ।
दिगपाळ–वि० [स० दिग्पाल] १ समर्थ, वीर, शक्तिशाली । २ देखो 'दिकपाळ' ।
दिगमूढ–वि० [स० दिङ्मूढ]आश्चर्य चकित, दग ।
दिगर–वि० [फा० दीगर] दूसरा, अन्य ।
दिगरेखा–देखो 'दिकरेखा' ।
दिगवास–पु० [स० दिकवास] शिव, महादेव ।
दिगविजई–देखो 'दिग्विजयी' ।
दिगविजय, दिगविजेय, दिगविजै, दिगि–देखो 'दिग्विजय' ।
दिगि–स्त्री० ध्वनि विशेष । ढोल की ध्वनि ।
दिगी–वि० आठवी* ।
दिगीस–पु० [स० दिक्-ईश] दिशा का स्वामी, दिक्पाल ।
दिगीस्वर–पु० [स० दिगीश्वर] दिशा का स्वामी, दिक्पाल ।
दिगेस–देखो 'दिगीस' ।

दिग्गज–पु० [स०] आठो दिशाओ के हाथी । –वि० १ दिग्विजयी । २ प्रमुख, मुख्य । ३ बड़ा, महान । ४ जबरदस्त ।

दिग्गयंद–पु० [स० दिग्गेन्द्र] दिग्गज ।

दिग्गीस–देखो 'दिगीस' ।

दिग्दाह–देखो 'दिगदाह' ।

दिग्देवता–पु० [स०] दिशाओ का स्वामी, देवता, दिक्पाल ।

दिग्पति–पु० [स०] दिशापति, दिक्पाल ।

दिग्बळ–पु० [स० दिग्बल] लग्नादि केन्द्रो पर स्थित ग्रहो का बल ।

दिग्बळी–पु० [स० दिग्बलिन्] किसी दिशा मे बली ग्रह ।

दिग्भरम, दिग्भ्रम–पु० [सं० दिग्भ्रम] दिशा-भ्रम । दिशा का अज्ञान ।

दिग्मडळ–पु० [स० दिग्मडल] १ दिशाओ का समूह । २ क्षितिज वृत्त ।

दिग्राज–पु० [स०] दिशा का राजा, दिक्पाल ।

दिग्वसन, दिग्वस्त्र–पु० [स०] १ शंकर, शिव । २ नगा यती । ३ सन्यासी । ४ क्षपणक ।

दिग्वारण–पु० [स०] दिक्पाल ।

दिग्विजय–स्त्री० १ आठो दिशाओ पर की जाने वाली विजय, विजय यात्रा । २ दशो दिशाओ मे ज्ञान आदि की होने वाली ख्याति, प्रभाव ।

दिग्विजयी–वि० आठो दिशाओ का विजेता । चक्रवर्ती ।

दिग्विजे (जै)–देखो 'दिग्विजय' ।

दिग्व्यापी–वि० [स०] जो दिशाओ मे व्याप्त हो ।

दिग्व्रत–वि० [स०] जैनियो का एक व्रत ।

दिग्सिधुर–पु० [स०] दिग्गज ।

दिग्सिखा–स्त्री० [स० दिग्शिखा] पूर्व दिशा ।

दिच्छा–१ देखो 'दीक्षा' । २ देखो 'दिसा' ।

दिच्छिण–देखो 'दक्षिण' ।

दिज–१ देखो 'दुज' । २ देखो 'द्विज' ।

दिट्ठ ती-देखो 'द्रस्टात' ।

दिट्ट–१ देखो 'द्रस्ट' २ देखो 'द्रस्टि' ।

दिट्ठणो (बो)–देखो 'देखणो' (बो) ।

दिट्ठि, दिठ–देखो 'द्रस्टि' ।

दिठाळो–देखो 'देठाळो' ।

दिठोण, दिठोणो–पु० द्दष्टि दोष से बचाने के लिये लगाई गई काली बिंदी ।

दिढ़–देखो 'द्रढ' ।

दिढक–पु० [स० द्दढ़] स्वामि कार्त्तिकेय ।

दिढ़वत–पु० [स० द्दढवान] मरूड ।

दिढ़ाणो (बो), दिढ़ावणो (बो)–क्रि० [स० द्दढ] दृढ़ करना, मजबूत करना ।

दिणकर–देखो 'दिनकर' ।

दिणत, दिणदो–देखो 'दिनद' ।

दिणयर, दिणयरु–देखो 'दिनकर' ।

दिणयरो–देखो 'दिनकर' ।

दिणिंद–देखो 'दिनद' ।

दिणि–देखो 'दिन' ।

दिणिअर, दिणियर–देखो 'दिनकर' ।

दिणु–देखो 'दिन' ।

दित–देखो 'दैत्य' ।

दितवार–देखो 'अदीतवार' ।

दिति, दिती–स्त्री० [स० दिति] १ कश्यप ऋषि की पत्नी व दैत्यो की माता । २ उदारता । ३ काट-छाट । —**पुत्र**–पु० दैत्य, असुर ।

दितेस–पु० [स० दैत्येश] १ असुर, राक्षस । २ राजा बलि । ३ रावण ।

दिदार–देखो 'दीदार' ।

दिधा–देखो 'द्विधा' ।

दिनकर–देखो'दिनकर' ।

दिनद–पु० [स० दिनेन्द्र] १ सूर्य, रवि । २ दिन ।

दिन–पु० [स०]१ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय । २ चौबीस घटे की एक अवधि । ३ समय, काल । ४ निश्चित समय । ५ तिथि,तारीख ।६ सूर्य । ७ जीवन का अच्छा बुरा समय । —**अर**='दिनकर' । —**अवसाण**–पु० सूर्यास्त, संध्याकाल । —**कत**–पु० सूर्य । –**कर**–पु० सूर्य । —**क्षय**–पु० तिथि का अभाव, तिथिक्षय । —**चरया**–स्त्री० नित्य कर्म, दिन का कार्यक्रम । —**दसा**='दिनमांन' । —**दीप**–पु० सूर्य । —**नाथ, नाह, प, पति**–पु० सूर्य । —**पात**–पु० तिथि क्षय । —**पाळ**–पु० सूर्य । —**मण, मणि, मणी**–पु० सूर्य । —**मान**–पु० रात व दिन का मान । भाग्य । —**माळी**–पु० सूर्य । —**रत्न, राई, राउ, राव**–पु० सूर्य ।

दिनकर,दिनकरण, दिनकरन–पु० [सं०] १ सूर्य । २ एक मात्रिक छद विशेष । —**कन्या**–स्त्री० यमुना । —**सुत**–पु० कर्ण, यम, शनि, सुग्रीव, अश्विनी कुमार ।

दिनडो–देखो 'दिन' ।

दिनत–देखो 'दिनद' ।

दिनदुलह (हो)–पु० [स० दिन दुर्लभ] कामदेव । –वि० वीर, बाकुरा ।

दिनबळ– पु० [स०] दिन के समय प्रबल रहने वाली राशि ।

दिनाई–पु० [स० दिनस्थायी] सूर्य, दिनकर । –क्रि० वि० प्रतिदिन, नित्य ।

दिनातक–पु० [स०] अधकार, अधेरा।
दिनाध–वि० दिन मे भी अंधा। –पु० उल्लू।
दिनास–पु० [स० दिनांश] दिन के तीन भागो में से एक।
दिनागम–पु० [स०] प्रभात, तडका।
दिनाधीस–पु० [स० दिन-अधीश] सूर्य।
दिनि–पु० [स० दान] १ दान, पुण्य। २ भेंट। ३ देखो 'दिन'।
दिनियर–देखो 'दिनकर'।
दिनी–वि० बहुत दिनो का पुराना।
दिनेस, दिनेसर–पु० [स० दिनेश] सूर्य, रवि।
दिनेसातमज–पु०[स०दिनेशातमज] १ शनि। २ यम। ३ सुग्रीव। ४ कर्ण। ५ अश्विनीकुमार।
दिनेस्वर–पु० [स० दिनेश्वर] सूर्य, दिनकर।
दिन्न–वि० [स० दत्त] दिया हुआ, दत्त (जैन)।
दिन्न, दिन्नि, दिन्नी–देखो 'दिन'।
दिपणौ (बौ), दिपव्वणौ (बौ)–देखो 'दीपणौ' (बौ)।
दिपह्–देखो 'दीपक'।
दिपाणौ (बौ), दिपावणौ (बौ)–क्रि० [स० दीपी] १ चमकाना, प्रकाशित करना। २ प्रज्वलित करना। जलाना। ३ आभा या कातियुक्त करना, देदीप्यमान करना। ४ लावण्य युक्त करना। ५ प्रगट करना, प्रकाश में लाना। ६ प्रसिद्ध करना।
दिब–१ देखो 'दिव'। २ देखो 'दिव्य'।
दिबस–देखो 'दिवस'।
दिम–देखो 'दिव'।
दिमसु–देखो 'दिवस'।
दिमाणियो–पु० [स० द्विमान] अनाज का एक माप।
दिमाक–देखो 'दिमाग'। —दार='दिमागदार'।
दिमाग–पु० [अ०] १ मस्तिष्क। २ समझ, बुद्धि। ३ ज्ञान ४ अहंकार, गर्व। —दार–वि० अच्छे ज्ञान या बुद्धिवाला, बुद्धिमान। अभिमानी।
दिमागी–वि० [अ०] दिमाग का, दिमाग सबधी।
दियण–वि० [स० दा] देने वाला, दाता।
दियर–देखो 'देवर'।
दियासण, दियासणी–स्त्री० [स० दीपक-आसन] दीपक रखने का स्थान, दीवार मे लगा दीपक रखने का पत्थर।
दियासळाई–स्त्री० [स० दीपशलाका] आग लगाने की तूलिका।
दियो–देखो 'दीपक'।
दिर–पु० १ सितार का एक बोल। २ हाथी। ३ दुर्योधन का एक भाई। ४ देखो 'दर'।
दिरक (ख)–पु० [स० दक्ष] राजा दक्ष।
दिरव–देखो 'द्रव्य'।
दिरस–देखो 'दरस'।
दिराणौ (बौ), दिरावणौ (बौ)–क्रि० दिलवाना, दिलाना, देने के लिये प्रेरित करना।
दिल–पु० [फा०] १ हृदय। २ मन, चित्त, जी। ३ कलेजा। ४ इच्छा, प्रवृत्ति।
दिलगीर–वि० [फा०] १ खिन्नचित्त, उदास। २ शोकाकुल दुखी।
दिलगीराई, दिलगीरी–स्त्री० [फा०] १ उदासी, खिन्नता। २ रज, दुख।
दिलड़ो–देखो 'दिल'।
दिलचलो–वि० [फा०] १ उदार, दानी। २ खुशमिजाज, मौजी। ३ पागल। ४ साहसी। ५ शूरवीर।
दिलचस्प–वि० [फा०] १ चित्ताकर्षक। २ मनोहर, सुन्दर। ३ रुचिकर। ४ आनन्ददायक।
दिलचस्पी–स्त्री० [फा०] १ रुचि, चाव, लगाव। २ आकर्षण।
दिलजमई–स्त्री० इतमिनान, तसल्ली।
दिलजळो–वि० अत्यन्त दुखी, सतप्त।
दिलदराज–वि० [फा०] उदार चित्त, दातार।
दिलदार–वि० [फा०] १ रसिक, रसिया। २ प्रेमी। ३ मौजी। ४ मजाकिया। ५ उदार, दाता।
दिलदारी–स्त्री० [फा०] १ उदारता। २ रसिकता। ३ प्रेम पात्रता।
दिलदूठ–वि० दृढ, मजबूत।
दिलपसद–वि० [फा०] मन पसद, रुचिकर। –पु० बेलबूटेदार एक वस्त्र विशेष।
दिलपाक–वि० [फा०] निष्कपट, पवित्र, स्पष्ट।
दिलप्यास–पु० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष।
दिलबर–वि० [फा०] जिससे प्रेम हो, प्रेमी, प्रिय, प्यारा।
दिलबहार–पु० [फा०] खशखशी रग का एक भेद।
दिलमट्ठो, (ठो)–वि० [फा० दिल+स० मष्ट] कृपण, कजूस।
दिलरखी–स्त्री० दासी।
दिलरुबा–वि० [फा०] १ मनमोहक। २ प्रिय, प्यारा। ३ प्रेमी।
दिलाणौ (बौ), दिलावणौ (बौ)–देखो 'दिराणौ' (बौ)।
दिलावर–वि० [फा०] १ शूरवीर, बहादुर। २ साहसी, उत्साही। ३ उदार, दानी।
दिलावरी–स्त्री० [फा०] बहादुरी, साहस।
दिलासा (सो)–स्त्री० १ ढाढस, धैर्य, तसल्ली। २ आश्वासन।
दिली–वि० [फा०] १ दिल का, दिल सबधी। २ देखो 'दिल्ली'। —छात, छातपत='दिल्ली छातपत'। —नाथ='दिल्लीनाथ'। —पत, पति, पती, पत्ति='दिल्लीपति'। —मडळ='दिल्लीमडल'। —स, सर, —स्वर='दिल्लीस्वर'।

दिलीप–पु० [स०] १ भगीरथ के पिता इक्ष्वाकुवशीय एक राजा। २ देखो 'दिल्लीपति'।

दिलीस–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक।

दिलेदार–पु० एक प्रकार का कपाट।

दिलेर–देखो दिलावर'।

दिलेरी–देखो 'दिलावरी'।

दिलेस–देखो दिल्लीस'।

दिलेसर, दिलेसुर दिलेस्वर–देखो 'दिल्लीस्वर'।

दिलो–देखो 'दिल्लो'।

दिल्लगी–स्त्री० [फा०] १ हसी, मजाक मखौल। २ दिल लगाने की क्रिया या भाव। —**बाज**–वि० मसखरा। मजाकिया। —**बाजी**–स्त्री० हसी-मजाक करने की क्रिया।

दिल्ली–स्त्री० भारत का एक प्रमुख नगर। —**छात छातपति**–पु० दिल्ली का बादशाह। —**नाथ**–पु० दिल्ली का स्वामी। —**पत, पति**–पु० दिल्ली सम्राट। —**मडळ** –पु० भारतवर्ष हिन्दुस्तान। दिल्ली का क्षेत्र। —**वई** ='दिल्लीपति'। —**वाळ**–वि० दिल्ली का, दिल्ली सबधी –पु० दिल्ली का निवासी। —**स, सर, सुर, स्वर**–पु० दिल्ली का स्वामी, सम्राट।

दिल्लेदार–पु० एक प्रकार का कपाट।

दिल्लेस–देखो 'दिल्लीस'।

दिल्लेसुर–देखो 'दिल्लीस्वर'।

दिल्लो–देखो 'दल्लो'।

दिव–पु० [स० दिवम्] १ आकाश। २ स्वर्ग। ३ वन, जगल। ४ सूर्य, रवि। ५ दिन, दिवस। ६ दीपक। ७ प्रकाश, चमक। ८ देखो 'दिव्य'। —**उकद, ओकस, खद**–पु० देवता, सुर। चातक पक्षी। —**दिस्द, द्रस्टी**='दिव्यद्रस्टी'। —**पुर**–पु० स्वर्ग, देवलोक।

दिवराट–१ देखो 'देवराज'। २ देखो 'दिनमपति'।

दिवराणो (बो), दिवरावणो (बो)–देखो 'दिराणो' (बो)।

दिवली–देखो 'दिवि'।

दिवलो–देखो 'दीपक'।

दिवस–पु० [स०] १ दिन, वासर। २ सूर्य, रवि। —**अध**–पु० उलुक पक्षी। –वि० जिसे दिन मे दिखाई न दे। –**कर नाथ, प, पति, पती, मरिण**–पु० सूर्य, रवि। —**मुख**–पु० सवेरा, प्रातःकाल। —**मुद्रा**–स्त्री० एक दिन का वेतन।

दिवसेस–पु० [सं० दिवस-ईश] सूर्य, भानु।

दिवःपति–पु० [सं०] १ इन्द्र। २ दिवसपति, सूर्य।

दिवस्स–देखो 'दिवस'।

दिवाण–देखो 'दीवाण'। —**ग्राम**='दीवाणग्राम'। —**खास**= दीवाणखास'।

दिवांणगी–देखो 'दीवाणगी'।

दिवाणी–देखो 'दीवाणी'।

दिवाध–पु० [स०] १ उल्लू। २ दिनौंधी का रोग। –वि० दिन मे अंधा रहने वाला।

दिवांन–देखो 'दीवाण'।

दिवांनगिरी–देखो दीवाणगी'।

दिवानी–स्त्री० १ एक प्रकार का पेड। २ देखो 'दीवाणी'। ३ देखो 'दीवानी'।

दिवानो–पु० १ दरबार। २ देखो 'दीवानो'।

दिवा–पु० [स०] दिन, दिवस। –अव्य० दिन के समय, दिन में।

दिवाकर–पु० [स०] १ सूर्य, रवि। २ आक, मदार।

दिवाकीरती–पु० [स० दिवाकीर्ति] १ नाई, हज्जाम। २ चाण्डाल। ३ उल्लू।

दिवाकसा–देखो 'दिवोकस'।

दिवाचर–पु० [स०] १ चिडिया। २ पक्षी। ३ चाण्डाल।

दिवजउ–पु० शोभा।

दिवाजो–देखो 'दवाजो'।

दिवाटन–पु० [स०] काक, कौआ।

दिवाणो (बो)–देखो 'दिराणो' (बो)।

दिवानाथ–पु० [स०] सूर्य, भानु।

दिवाप्रस्ट–पु० [स० दिवापृष्ठ] सूर्य, भानु।

दिवाभिसारिका–स्त्री० [सं०] अपने प्रेमी से दिन मे मिलने वाली नायिका।

दिवामरण, दिवामरिण–पु० [स०] सूर्य, रवि।

दिवायर, दिवायरु (रू)–देखो 'दिवाकर'।

दिवारणो (बो)–देखो 'दिराणो' (बो)।

दिवारूप–पु० [स० दिव्रूप] आकाश, व्योम।

दिवाळ–देखो 'देवाळ'।

दिवाळगी–स्त्री० देने की क्रिया या भाव।

दिवालय–देखो 'देवालय'।

दिवावणो (बो)–देखो 'दिराणो' (बो)।

दिवि, दिवी–पु० [स०] १ नीलकठ पक्षी। २ देवी। ३ राणी, राजमहिषी।

दिवीओक–देखो 'दिवोकस'।

दिवीरथ–पु० [सं०] पुरुवशीय एक राजा।

दिवीसत–पु० [स० दिविषत्] देव, देवता।

दिवीस्ठी–पु० [स० दिविष्ठ] १ देव, देवता। २ स्वर्ग में रहने वाला, स्वर्गवासी। ३ ईशानकोण के एक देश का नाम।

दिवेस–पु० [स० दिवेश] १ सूर्य। २ दिग्पाल।

दिवोकस(कसा)–पु०[स० दिवोकस]१ देवता। २ चातक पक्षी।

दिवोदास–पु० [स०] चद्रवशी राजा भीमरथ का पुत्र।

दिवोल्का—स्त्री० [स०] दिन मे गिरने वाली उल्का ।
दिवो—देखो 'दीपक' ।
दिवोका—देखो 'दिवोकस' ।
दिव्य—वि० [स०] १ अद्भुत, अनोखा, चमत्कारपूर्ण । २ स्वर्ग से सबधित, स्वर्गीय । ३ अच्छा, बढ़िया । ४ पवित्र, उत्तम । ५ दैवी । ६ सुन्दर, मनोहर । ७ अलौकिक । ८ प्रकाशमान, चमकीला ।—पु० १ अलौकिक पुरुष । २ यम । ३ स्वर्गीय जीव । ४ यव, जव । ५ लौंग । ६ चन्दन । —**कवच**—पु० अगरक्षक मंत्र या स्तोत्र । —**गध**—पु० लौंग । गधक । —**गंधा**—स्त्री० बडी इलायची । एक शाक विशेष । —**गायन**—पु० गधर्व । —**चक्षु**—पु० ज्ञान चक्षु । अधा । बन्दर । ऐनक, चश्मा । —**द्रस्टी**—स्त्री० सूक्ष्म या अतरिक्ष मे देखने की शक्ति । ज्ञान दृष्टि । —**धरमी**—वि० स्वभाव व आचरण से पवित्र, शीलवान । —**नगर**—पु० ऐरावती नगरी । —**नदी**—स्त्री० एक नदी विशेष । —**नारी**—स्त्री० देवागना । अप्सरा । —**पचाम्रत, पचाम्रित**—पु० घी, दूध, दही, मक्खन और चीनी । —**यमुना**—स्त्री० एक नदी का नाम । —**रत्न**—पु० चितामणि रत्न । —**सरिता**—स्त्री० आकाश गगा । —**सानु**—पु० एक विश्वदेव । —**सार**—पु० साल वृक्ष । —**सूरि**—पु० रामानुज सम्प्रदाय के एक आचार्य । —**स्त्री**—स्त्री० अप्सरा । —**स्रोत**—पु० सब कुछ सुनने वाला कान ।
दिव्यवाह—स्त्री० [सं०] वृष भानु गोप की छ कन्याओ मे से एक ।
दिव्यागणा (ना)—स्त्री० [स० दिव्यागना] १ देव वधू । २ अप्सरा ।
दिव्यासु—पु० [स० दिव्याशु] सूर्य ।
दिव्या—स्त्री० [स०] १ स्वर्गीय नायिका विशेष । २ वाभ । ३ महामेदा । ४ सफेद दूब । ५ हड, हर्र । ६ कपूरकचरी । ७ ब्राह्मी जडी । ८ शतावर । ९ बडाजीरा । १० आवला ।
दिव्यादिव्य—पु० [स०] देवत्व गुणो वाला नायक विशेष ।
दिव्यादिव्या—स्त्री० [स०] देवत्व गुणो वाली नायिका विशेष ।
दिव्यासन—पु० [स०] तत्र मे एक आसन ।
दिव्यास्त्र—पु० [स०] देवता से प्रदत्त आयुध ।
दिसतर—पु० [स० देशातर] १ दूर का देश, प्रदेश । २ विदेश परदेश ।
दिसतरी—वि० १ परदेशी, विदेशी । २ दिशा सबधी । ३ दिशातरी ।
दिस—देखो 'दिसा' ।
दिसउ—क्रि० वि० [स० दिशा] ओर, तरफ ।
दिसडी, दिसडो—देखो 'दिसा' ।
दिसट—१ देखो 'दुस्ट' । २ देखो 'द्रस्टी' ।
दिसटात—देखो 'द्रस्टात' ।
दिसटाळ(ळो)—देखो 'देठाळी' ।
दिसपति—पु० [स० दिशापति] दिक्पाल । दिग्गज ।
दिसली—क्रि० वि० १ तरफ से, ओर से । २ तरफ, ओर । ३ दिशा को ।
दिसलो—वि० (स्त्री० दिसली) दिशा सबधी, दिशा का ।
दिसांतरी—पु० १ इक ऋषि के वशज एक जाति । २ इस जाति का व्यक्ति ।
दिसा—स्त्री० [स० दिशा] १ क्षितिज वृत्त के चार भागो मे से एक भाग । दिशा, क्षितिज अचल । २ चार की सख्या* । ३ दश की सख्या* । ४ देखो 'दसा' । ५ देखो 'दीक्षा' । —क्रि० वि० ओर तरफ ।
दिसागज—पु० [स० दिशागज] दिग्गज, दिक्पाल ।
दिसाचक्षु—पु० [स० दिशाचक्षु] गरुड के एक पुत्र का नाम ।
दिसाजय—पु० [स० दिशाजय] दिग्विजय ।
दिसाटो—देखो 'देसोटो' ।
दिसादिसो—क्रि० वि० चारो ओर ।
दिसापाळ—पु० [स० दिशापाल] दिक्पाल ।
दिसाबर—पु० १ एक वैश्य जाति । २ देखो 'दिसावर' ।
दिसाभूल, (भ्रम)—पु० [स० दिशाभ्रम] दिशा का भ्रम, भूल ।
दिसावड—पु० कपडा बुनने का अन्तिम छोर ।
दिसावर—पु० [स० दिसापर] १ दूर का देश, पराया प्रदेश । २ विदेश ।
दिसावरी (रू)—वि० दूर देश का, दूर देश सबधी । विदेशी ।
दिसावळ (ळो)—वि० दिशा भ्रमित ।
दिसासूळ—पु० [स० दिशाशूल] यात्रा का अनिष्टकारी मुहूर्त ।
दिसि—देखो 'दिसा' ।
दिसिदुरद—पु० [स० दिशा द्विरद] दिग्गज ।
दिसिनायक—पु० [स० दिशानायक] दिक्पाल ।
दिसिनियम—पु० जैन साधुओ का एक नियम ।
दिसिप—देखो 'दिसपति' ।
दिसिराज—पु० [स० दिशाराज] दिक्पाल ।
दिसी—देखो 'दिसा' ।
दिसोटो—देखो 'देसोटो' ।
दिसो—देखो 'दिसा ।
दिस्ट—देखो 'द्रस्टि' ।
दिस्टात—देखो 'द्रस्टात' ।
दिस्टि, दिस्टी—देखो 'द्रस्टि' ।
दिस्तो—देखो दस्तो' ।
दिस्सा—देखो 'दिसा' ।
दिहवा—वि० [फा०] देने वाला दाता ।

दिह–१ देखो 'दीह'। २ देखो 'देह'।
दिहड़ौ(डौ)–देखो 'दिवस'।
दिहरौ–देखो 'देवरौ'।
दिहानगी–देखो 'दैनगी'।
दिहाडउ–देखो 'दिवस'।
दिहाडि (डी)–क्रि० वि० [स० दिवस] १ नित्य हमेशा। २ दिन मे। ३ देखो 'दीहाडी'।
दिहाडौ, दिहाडउ, दिहाडि, (डी, डौ)–१ देखो 'दिवस'। २ देखो 'दीहाडी'।
दिहात–देखो 'देहात'।
दिहाती–देखो 'देहाती'।
दिहि–देखो 'दस'।
दी–पु० १ अमृत। २ सूर्य। ३ स्वामिकार्त्तिकेय। ४ दिन। ५ देखो 'दई'। –वि० दानी, उदार। –प्रत्य० षष्ठी या सबध का चिह्न, की।
दीग्रट–देखो 'दीवट'।
दीग्रण–वि० [स० दा] देने वाला, दाता।
दीग्राळी–देखो 'दीवाळी'।
दीग्रौ–देखो 'दीपक'।
दीकरी–देखो 'डीकरी'।
दीकरौ, दीकिरउ–देखो 'डीकरौ'।
दीकोडी, दीकोळी–स्त्री० दासी।
दीक्षक–पु० [स०] दीक्षा देने वाला गुरु।
दीक्षात–पु० [स०] १ शिक्षा-दीक्षा की समाप्ति, पूर्णता। २ अवभृत यज्ञ।
दीक्षा–स्त्री० [सं०] १ गुरु या आचार्य का नियम पूर्वक मत्रोपदेश। २ गुरु द्वारा उपदेशित मत्र। ३ गायत्री मत्र का उपदेश। उपनयन सस्कार। ४ पूजन। ५ यज्ञ का अनुष्ठान, यज्ञ कर्म। ३ सस्कार। ७ आत्म समर्पण। —**गुरु**–पु० मत्रोपदेश करने वाला गुरु। —**पति**–पु० यज्ञ का रक्षक, सोम।
दीक्षित–वि० [स०] १ दीक्षा प्राप्त, उपदेशित। २ जिसने सकल्प पूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान किया हो। ३ यज्ञ के लिए उद्यत। ४ सस्कारित। –पु० एक ब्राह्मण वर्ग।
दीख–१ देखो 'दीक्षा'। २ देखो द्रस्टि'।
दीखणौ (बौ)–क्रि० [स० दृश्] १ दृष्टि गोचर होना, दिखाई देना। २ समझ मे आना। ३ आभास होना, पूर्वाभास होना। ४ दीक्षा देना।
दीगेस–पु० [स० दिक्-ईश] दिक्पाल।
दीठ–स्त्री० [स० दृष्टि] १ नेत्र ज्योति, दृष्टि, नजर। २ आख, नेत्र। ३ दोष दृष्टि, कुदृष्टि। –अव्य० १ प्रत्येक पर, प्रति व्यक्ति या वस्तु के अनुसार। २ देखो 'दीठौ'।
दीठउ–देखो 'दीठौ'।
दीठि–स्त्री० [स० दृष्टि] १ नेत्र, नयन। २ देखो 'दीठ'।
दीठूणौ–पु० [स० दृश्] नजर लगने से बचाने के लिए मुह पर लगाया जाने वाला काला टीका।
दीठोड़ौ, दीठोडौ, दीठौ–वि० [स० दृष्ट] (स्त्री० दीठोडी, डी) देखा हुआ।
दीण–देखो 'दीन'।
दीत, दीता–पु० [सं० आदित्य] १ सूर्य, भानु। २ रविवार।
दीद–१ देखो 'दीदार'। २ देखो 'दीन्हौ'।
दीदनी–अव्य० [फा०] देखकर।
दीदम–स्त्री० [फा०] १ दृष्टि। २ दर्शन, दीदार।
दीदवान–पु० निशाना मिलाने का, बन्दूक पर लगा लोहे का गुटका।
दीदा–स्त्री० [फा०] दृष्टि, नजर।
दीदार–पु० [फा०] १ दर्शन। २ छवि। ३ मुख, मुखाकृति। ४ अवलोकन। ५ भेंट, साक्षात्कार।
दीदारु (रू)–वि० दर्शनीय, देखने योग्य।
दीदी–स्त्री० बडी बहन।
दीध–देखो 'दीन्हौ'।
दीधति(ती)–स्त्री० [स०दीधिति] १ किरण। २ चमक, काति।
दीधल–वि० [स० दा] दिया हुआ, दत्त।
दीधु, (धु, धू), दीधोड़ौ, दीधौ–देखो 'दीन्हौ'।
दीन–वि० [स०] १ हीन दशा का, गरीब, दरिद्र। २ दुःखी, कातर। ३ नम्र, विनीत। ४ दयनीय। ५ उदास, खिन्न। ६ कायर। ७ भाग्यहीन, अभागा। ८ विवश। –पु० [अ०] १ धर्म, मजहब। २ मत। ३ विश्वास। ४ वर पक्ष की ओर से कन्या के पिता को दिया जाने वाला धन। ५ तगर पुष्प। ६ देखो 'दीन्हौ'। —**दयाळ, दयाळु, दयाळौ**–वि० दीन पर दया करने वाला। ईश्वर। —**दार**–वि० धार्मिक। —**दारी**–स्त्री० धर्म पर विश्वास। —**बधु बधू, बंधौ**–पु० ईश्वर। गरीबो का सहायक, प्याज।
दीनता, (ई)–स्त्री० १ नम्रता, अजीजी। २ कातरता, आर्त भाव। ३ उदासी, खिन्नता। ४ दरिद्रता गरीबी। ५ प्रार्थना। ६ करुणा, दया।
दीनती–स्त्री० [स० दीनता] विनती, प्रार्थना।
दीनदुनी–स्त्री० [अ० दीन-दुनिया] लोक-परलोक।
दीनानाथ–पु० [स० दीन-नाथ] १ ईश्वर का एक नाम। २ दीनो का स्वामी या रक्षक।
दीनार–पु० [फा०] १ सोने या चादी का सिक्का। २ स्वर्ण मुद्रा।
दीनोडौ, (डौ) दीनौ–देखो 'दीन्हौ'।
दीन्ह, दीन्हउ, दीन्होड़ौ, दीन्हौ–वि० दत्त, दिया हुआ, प्रदत्त।

दीपतौ–वि० [स० दीप्त] प्रकाशित, चमकता हुग्रा। दीप्तिमान।

दीप–पु० [स०] १ दीपक, चिराग। २ ज्योति। ३ इन्द्र। ४ छन्द विशेष। ५ एक अन्य छन्द विशेष। ६ छप्पय छद का ६८ वा भेद। ७ देखो 'द्वीप'।

दीपक–पु० [स० दीपक] १ चिराग, दीप, ज्योति। २ एक अलकार विशेष। ३ एक राग विशेष। ४ एक ताल का नाम। ५ एक मात्रिक छद विशेष। ६ एक डिंगल गीत विशेष। ७ वेलियौ साणोर का एक भेद। ८ केसर। ९ पीला※। १० रोशनी, प्रकाश। ११ कामदेव की उपाधि। १२ बाज पक्षी। **—माळा**–स्त्री० दीप पक्ति। दीपक अलकार का एक भेद। एक वर्ण वृत्त। **—सुत**–पु० काजल। कज्जल।

दीपकामाळ–स्त्री० [स० दीपमालिका] १ दीपावली। २ दीपो की पक्ति।

दीपकाळ–पु० [स० दीप + काल] सध्या का समय, सध्याकाल।

द्वीपक्क–देखो 'दीपक'।

द्वीपक्को, दीपग–देखो 'दीपक'।

दीपगर (घर)–पु० [स० दीप गृह] १ दीपको का समूह। २ दीपक रखने का कक्ष।

दीपचदी–स्त्री० एक ताल विशेष।

दीपण–देखो 'दीपन'।

दीपणौ–वि० [स० दीपी] (स्त्री० दीपणी) १ चमकने वाला। २ जग जमगाने वाला, रोशन होने वाला। ३ देदीप्यमान होने वाला। ४ प्रज्वलित होने वाला। ५ शोभित होने वाला। ६ लावण्य युक्त होने वाला। ७ प्रसिद्ध होने वाला। ८ प्रगट होने वाला।

दीपणौ (बौ)–क्रि० [स० दीपी] १ चमकना, जगमगाना, प्रकाशित होना। २ रोशन होना, प्रकाशित होना। ३ देदीप्यमान होना। ४ प्रज्वलित होना। ५ शोभित होना, शोभा देना। ६ लावण्ययुक्त होना, नूर चढ़ना। ७ प्रसिद्ध होना, ख्याति प्राप्त करना। ८ प्रकट होना।

दीपत–वि० [स० दीप्तिकर] १ रमणीय, सुन्दर, अच्छा। २ देखो 'दीप्ति'।

दीपति(ती)–देखो 'दीप्ति'।

दीपतौ–वि० [स० दीपी] (स्त्री० दीपती) १ चमकता हुग्रा। २ कातिमान, दीप्तिमान। ३ प्रकाशित, रोशन। ४ प्रज्वलित। ५ शोभित। ६ प्रसिद्ध।

दीपदध–स्त्री० [स० उदधिदीप] जमीन।

दीपदान–पु० [स० दीप दान] १ दीप रखने का स्थान। दीपगृह। २ लकडी या धातु का, दीप जलाने का उपकरण। ३ देवता के सामने दीप जलाने का कार्य। ४ दीप मालिका विशेष।

दीपदानी–स्त्री० दीपक का सामान रखने की डिबिया।

दीपधुज (ध्वज)–पु० [स० द्वीपध्वज] कज्जल, काजल।

दीपन–पु० [स०] १ प्रकाशित या प्रज्वलित करने का कार्य। २ भूख उभारने की क्रिया। ३ केसर। ४ तगर की जड। ५ मयूर शिखा का वृक्ष। ६ प्याज। –वि० जठराग्निवर्धक।

दीपनगण–पु० जठराग्नि बढाने वाला पदार्थ।

दीपनभ–पु० [स०] तारा, नक्षत्र।

दीपनी–स्त्री० [स०] १ मेथी। २ अजवाइन।

दीपमाळ, (माळका, माळा, माळिका, माळी)–स्त्री० [स० दीप मालिका] १ दीप पक्ति। २ दीपावली, दीवाली।

दीपवती–स्त्री० [स० द्वीपवती] १ पृथ्वी। २ नदी।

दीपवरतिक–पु० [स० दीपवर्तिक] दीपक सभालने वाला।

दीपसुत–पु० [स०] काजल, कज्जल।

दीपसुरलोक–पु० [स० सुरलोक दीप] इन्द्र।

दीपाऊ–वि० [स० दीपी] १ चमकने वाला। २ सुन्दर, मनोहर।

दीपाणौ (बौ)–देखो 'दिपाणौ' (बौ)।

दीपायण, दीपायन–देखो 'द्वैपायन'।

दीपारती–स्त्री० दीप आरती।

दीपावणौ (बौ)–देखो 'दिपाणौ' (बौ)।

दीपावती–स्त्री० [स०] १ एक रागिनी विशेष। २ दीपावली। [स० द्वीपवती] ३ जिस पर द्वीप स्थिर हो।

दीपावळि (ळी)–स्त्री० [स० दीप+अवली] १ दीप पक्ति या श्रेणी। २ दीवाली त्यौहार।

दीपिका–स्त्री० [स०] १ मसाल, पलीता। २ एक रागिनी विशेष। –वि० उजाला करने वाली।

दीपित–वि० [स०] १ चमकता हुग्रा, प्रकाशित, दीप्त। २ उत्तेजित।

दीपोत्सव–पु० [स०] दीवाली त्यौहार।

दीप्त–वि० [स०] १ चमकता हुग्रा, जगमगाता हुग्रा। प्रकाशित। २ जलता हुग्रा, प्रज्वलित। ३ उत्तेजित। –पु० १ सुवर्ण, सोना। २ सिंह। ३ नीबू का पेड।

दीप्ताग्नि–वि० [स०] १ प्रबल पाचन शक्ति वाला। २ तेज भूख वाला, भूखा।

दीप्ति–स्त्री० [स०] १ आभा, चमक, काति। २ उजाला प्रकाश, रोशनी। ३ छवि, शोभा। ४ किरण, रश्मि। ५ सुन्दरता। ६ चपडी, लाख। **—मान**–वि० प्रकाशमान कातियुक्त। प्रकाशित।

दीवाळी–स्त्री० [स० दीप-अवली] १ दीप पंक्ति, दीप मालिका। २ कार्तिक की अमावस्या को होने वाला प्रसिद्ध त्योहार। ३ इस त्योहार पर की जाने वाली दीपकों की रोशनाई।
दीवाळौ–१ देखो 'देवाळौ'। २ देखो 'दीवाळी'।
दीवी–स्त्री० [स० दीपिका] १ दीपक जलाकर रखने का, लकड़ी या धातु का बना उपकरण। २ मशाल, पलीता। ३ देखो 'दीपक'। —**झाड़**–पु० झाड़नुमा रोशनदान।
दीवौ–देखो 'दीपक'।
दीस–पु० [स० दिवस] १ दिन, वासर। २ सूर्य रवि।
दीसणौ (बौ)–क्रि० [स० दृश्] १ दिखाई देना, दृष्टि गोचर होना। दीखना। २ पूर्वाभास होना। ३ समझ मे आना।
दीसा–क्रि० वि० १ लिए, वास्ते, बाबत। २ देखो 'दसा'।
दीसौ–देखो 'दिसा'।
दीसोटौ, दीसोटौ–देखो 'देसोटौ'।
दीह–पु० [स० दिवस] १ सूर्य। २ देखो 'दिवस'। ३ देखो 'दीरघ'। ४ देखो 'द्रस्टि'।
दीहड, दीहडउ, दीहडौ–देखो 'दिवस'।
दीहणौ (बौ)–देखो 'दीसणौ' (बौ)।
दीहपत (पति, पती)–देखो 'दिवसपति'।
दीहर–देखो 'दीरघ'।
दीहाडी–पु० [स० दिवस] दिन, वासर। –क्रि० वि० नित्य, प्रतिदिन, रोजाना।
दीहाड़ौ (डौ)–देखो 'दिवस'।
दीहि, दीहु, दीहूँ, दीहू–देखो 'दिवस'।
दीहौ–देखो 'दिवस'।
दुंकारव–पु० दहाड, गर्जना।
दुंग–स्त्री० चिनगारी।
दुंडवुंडी (दुंडी)–पु० ढोलनुमा एक वाद्य विशेष।
दुंद–पु० [स० द्वन्द्व] १ युद्ध। २ मल्ल युद्ध। ३ दो योद्धाओ का युद्ध। ४ युग्म जोडा। ५ कलह। ६ गुप्त बात, रहस्य। ७ उपद्रव, उत्पात, विद्रोह। ८ एक प्रकार का समास। ९ जानवरो का समूह। १० सन्देह। ११ दुंदुभी। १२ तोद।
दुंदभ, दुंदभि, दुंदभी–देखो 'दुंदुभि'।
दुंदळौ–देखो 'धूंधळौ'।
दुंदव–देखो 'दुंदुभि'।
दुंदाळ–स्त्री० १ दुनाली बन्दूक। २ देखो 'धूंधाळौ'।
दुंदुभ (भि, भी)–स्त्री० [स० दुंदुभि] १ नगाडा, धौंसा। २ एक राक्षस का नाम।
दुंदुमार–पु० [स० धुंधुमार] राजा त्रिशकु का पुत्र।
दुंदुह, दुंदुहि–पु० [स० डुंडुभ] १ पानी का साप। २ देखो 'दुंदुभि'।
दुंधभी–देखो 'दुंदुभि'।
दुंधमार–देखो 'दुंदुमार'।
दुंधु–पु० मधु दैत्य का पुत्र।
दुंधुबी–देखो 'दुंदुभि'।
दुंब–पु० [फा० दुंब] मेद पुच्छ वाला मेढा।
दुंबायत–पु० मुवाजा देने वाला भूस्वामी।
दुंबी–देखो 'दुंब'।
दुंबौ–पु० १ सामंतो द्वारा सरकार को दिया जाने वाला कर। २ लूट के माल का, बादशाह को दिया जाने वाला भाग। ३ टीबा, भीडा।
दुंहु–वि० [स० द्वि] दोनो।
दु–पु० [स० द्यु] १ दिन, दिवस। २ पुत्र। ३ हाथ। ४ हाथी। ५ सूड। ६ दुख। –वि० १ दरिद्र। २ प्रचड। ३ प्रधान। ४ दो।
दुअगम–वि० [स० दुर्गम्य] कठिन।
दुअट्ठ–देखो 'दुस्ट'।
दुअसपाह, दुअसपौ–देखो 'दोसपौ'।
दुआ–स्त्री० [अ०] प्रार्थना, विनती, याचना।
दुआइती–स्त्री० दवायती।
दुआई–१ देखो 'दवाई'। २ देखो 'दुहाई'।
दुआगोई–स्त्री० प्रार्थना करने की क्रिया या ढग।
दुआपर–देखो 'द्वापर'।
दुआर–देखो 'द्वार'।
दुआरामती–देखो द्वारामती'।
दुआरी–१ देखो 'द्वार'। २ देखो 'दूवारी'।
दुआळी–स्त्री० [फा० द्वाल] चमडे का तस्मा, पट्टा।
दुआळौ–पु० १ एक प्रकार का वेलन। २ देखो 'द्वालौ'।
दुइ–वि० [स० द्वि] दो।
दुइज–देखो 'दूज'।
दुइण–देखो 'दुरजण'।
दुई–१ देखो 'द्वैत'। २ देखो 'दुइ'।
दुउ–वि० [स० द्वि, द्वै] उभय, दोनो।
दुऔ–पु० [स० द्वि] १ दो का अक। २ दो की सख्या। ३ अपने पूर्वज के समान गुणो वाला व्यक्ति। ४ देखो 'दूवौ'। –वि० दूसरा, द्वितीय।
दुकड़हा–वि० तुच्छ, नीच, कमीना।
दुकडियौ–पु० दो कडो वाला पात्र।
दुकडौ–पु० १ तबला। २ तबले के समान ही एक अन्य वाद्य। ३ दो दमडी, छदाम।
दुकट, (ट्ट)–वि० भयकर, विकट।

दुकडो–देखो 'दुकडी'।

दुकणियो–देखो 'दूखणो'।

दुकणी–पु० [स० द्विकण] एक साथ दो दाने निकालने वाली ज्वार।

दुकर–वि० [स० दुष्कर] १ कठिन, मुश्किल। २ दुष्ट।

दुकळ–वि० [स० द्वि-कलि] १ आततायी, दुष्ट। २ देखो 'द्विकळ'। ३ देखो 'दुकूळ'।

दुकान–स्त्री० [फा० दुकान] वस्तुओं के क्रय-विक्रय का स्थान केन्द्र। हाट। —दार–पु० व्यापारी। वनिया। —दारी–स्त्री० दुकान पर बैठकर सामान बेचने का कार्य।

दुकाणो (बो)–देखो 'दुखाणो' (बो)।

दुकार–देखो 'दुत्कारणो' (बो)।

दुकारणो (बो)–देखो 'दुत्कारणो' (बो)।

दुकाळ–पु० [स० दुष्काल] १ दुर्भिक्ष, अकाल। २ अभाव, कमी ३ बुरा समय। ४ प्रलयकाल। ५ शिवजी की उपाधि।

दुकाळी–वि० [स० दुष्काली] १ दुखी संतप्त। २ अभावग्रस्त।

दुकावणो (बो)–देखो 'दुखाणो' (बो)।

दुकिस्त–स्त्री० दो तरफी हार।

दुकूळ–पु० [स० दुकूल] १ स्वच्छ रेशमी वस्त्र। २ दुपट्टा, ओढनी।

दुक्कर, दुक्कर–देखो 'दुकर'।

दुक्कार–देखो 'दुत्कार'।

दुक्काळो–देखो 'दकाळणो'।

दुक्की–स्त्री० [स० द्विक्] दो बूटी वाला ताश का पत्ता।

दुक्को–वि० [स० द्विक्] १ दो, दूसरा। २ जो अकेला न हो।

दुक्ख–देखो 'दुख'।

दुक्खित–देखो 'दुखित'।

दुकृत–पु० [स० दुष्कृत] १ पाप। २ कुकर्म, कुकृत्य।

दुकृति, दुकृती, दुक्रिती–वि० [स० दुष्कृति] १ पापी। २ कुकर्मी। ३ देखो 'दुकृत'।

दुखड, दुखडो–वि० [स० द्विखण्ड] १ दो खण्डो वाला, दो भागो वाला। २ दो मजिला। –पु० दो भाग या खण्ड।

दुख–पु० [स० दुःख] १ मानसिक या शारीरिक कष्ट, पीडा। २ शोक, रज। ३ तकलीफ, परेशानी,। ४ आफत, व्याधि। ५ क्लेश। ६ ससार। ७ पाप। ८ असुविधा। -वि० १ पीडा कारक, कष्टदायक। २ अप्रिय। ३ कठिन। ४ प्रतिकूल। ५ तप्त, गर्म। ६ काला, श्याम ※। —घाती–वि० दुःखो को मिटाने वाला।

दुखडो–पु०[स० दुःख]१ दुःखभरी गाथा,वृत्तान्त। २ अपने कष्ट का बखान। ३ देखो 'दुख'।

दुखण–पु० दुःखने की क्रिया या भाव।

दुखणखाई–स्त्री० [स० दुःख-खाद्] एक पतगा विशेष।

दुखणियो–देखो 'दूखणो'।

दुखणो (बो)–देखो 'दूखणो' (बो)।

दुखतर–स्त्री० [सं० दुख्तर] बेटी, कन्या।

दुखतो–वि० [सं० दुःखत्] दर्द देने वाला, दुःखदायी।

दुखत्यो–वि० दुःख पाने वाला, दुःख भोगने वाला।

दुखथळ–पु० [स० दुःख-स्थल] १ दुःखदाई या कष्टप्रद स्थल या स्थान। २ शरीर का दुःखने वाला अग। दर्द स्थल।

दुखद–वि० [स०] दुःख उत्पन्न करने वाला, कष्टदायी।

दुखदाई–देखो 'दुःखदायी'।

दुखदायक, दुखदायण, दुखदायी–वि० [स० दुःखदायी] १ दुःख देने वाला, कष्टप्रद। २ शत्रु, वैरी।

दुखपाळ–पु० [स० दुःख-पाल] सोना, स्वर्ण।

दुखम–पु० [स० दुःख] अवसर्पिणी काल का पाचवा भाग, दुःखों का विभाग (जैन)। —दुख–पु० अत्यन्त दुःखों वाले काल का छठा विभाग (जैन)। —सुख–पु० काल का चतुर्थ एव दुःख के पश्चात सुखो वाला विभाग (जैन)।

दुखर–देखो 'दूखण'।

दुखवारण–वि० [स०] दुःखो को मिटाने वाला, दुःख दूर करने वाला।

दुखात–वि० [स० दुःखात] जिसके अत मे दुःख हो, अत मे दुःखदायी।

दुखातरा–पु० [सं० दुःखांत्र] एक मूत्र रोग विशेष।

दुखाणो (बो)–क्रि० [स० दुःख] १ पीड़ा देना, कष्ट पहुचाना। २ दुःखी करना, व्यथित करना। ३ घाव या दुःखते अग को छेड देना।

दुखारो–वि० [स० दुःख] पीडित, दुःखी।

दुखावणो (बो)–देखो 'दुखाणो' (बो)।

दुखिणी–देखो 'दुखियो'।

दुखिओ, दुखित, दुखियारो, दुखियारो, दुखियो–वि०[स०दुःखित] दुःखी, परेशान, पीड़ित।

दुखी–वि० [स० दुःखी] १ दुःख पाने वाला, कष्ट उठाने वाला। २ शोक सतप्त, व्यथित। ३ परेशान, तग। ४ अभागा। ५ अपाहिज। ६ बीमार, रोगी। ७ शत्रु।

दुखीलो, दुखीवत–देखो 'दुखी'।

दुग–देखो 'दुरग'।

दुगड़ियो–पु० [स० द्विघटिकम्] १ राजमहल की जनानी ड्योढी पर प्रातः-साय बजने वाला नगाडा। २ मुहूर्त। ३ दो घडी दिन रहने का समय। ४ इस समय किया जाने वाला भोजन।

दुगडी, दुगडो–स्त्री० [स०] स्त्रियो के हाथ का आभूषण विशेष।

दुगण–वि० [स० द्विगुण] दुगुना, दो गुना ।
दुगणित, दुगणौ–वि० [स० द्विगुणित] दुगुना ।
दुगदुगी–स्त्री० गले का एक आभूषण विशेष ।
दुगध–पु० [स० दुग्ध] दूध ।
दुगधा–स्त्री० [स० दुग्धा] १ दूध देने वाली गाय । २ जमीन भूमि ।
दुगम–पु० १ सिंह, शेर । २ सूअर । ३ देखो 'दुरगम' ।
दुगमी–पु० १ सूअर । २ देखो 'दुगाम' । ३ देखो 'दुरगम' ।
दुगम्म–१ देखो 'दुगम' । २ देखो 'दुरगम' ।
दुगह–१ देखो 'दुरग' । २ 'दुर्ग' ।
दुगांणी–स्त्री० एक प्रकार का छोटा सिक्का ।
दुगाम–वि० [स० दुर्गम] १ वीर, योद्धा । २ जबरदस्त । ३ असह्य । ४ विकट । ५ दुरगम ।
दुगाय–स्त्री० [स० दुर्गा] एक देवी का नाम ।
दुगाळ–पु० [सं० द्वि-गड] शीतकाल मे मस्ती से गलसुआ निकालने वाला ऊट ।
दुगाह–वि० जो जीता न जाय, अजय ।
दुगी–स्त्री० १ एक प्रकार का वाद्य । २ देखो 'दुक्की' ।
दुगुंदुग–पु० [स० दौगुन्दक] समृद्धिशाली देव विशेष ।
दुगुच्छा–स्त्री० [स० जुगुप्सा] १ निंदा बुराई । २ अश्रद्धा, घृणा ।
दुगे–वि० १ दो भागो वाला । २ दो मजिला ।
दुगौ–पु० दो दातो वाला बैल या भैंसा ।
दुग्ग–देखो 'दुरग' ।
दुग्गम, दुग्गमी–१ देखो 'दुगाम' । २ देखो 'दुरगम' ।
दुग्गय–१ देखो 'दुरगति' । २ देखो 'दुर्ग' ।
दुग्गाह–वि० दोहरा ।
दुग्गी–देखो 'दुक्की' ।
दुग्घ–पु० [स०] दूध ।
दुग्धर–वि० भयकर, विकट, भयावह ।
दुग्धसमुद्र–पु० [स०] क्षीरसागर ।
दुग्धाक्ष–पु० [स०] एक प्रकार का नग ।
दुग्धाब्धि–पु० [स०] क्षीरसागर ।
दुघट–पु० दो वार । –वि० विकट, जबरदस्त ।
दुघडियौ–देखो 'दुगडियौ' ।
दुड्द–देखो 'दिनद' ।
दुड्इंद–देखो 'दिनद' ।
दुडकी–स्त्री० १ घोडे की एक चाल । २ घोडे की चाल की सी दौड, झपटी ।
दुडणौ (बौ)–क्रि० १ ओट मे होना, ओट लेना । २ छुपना, दुबकना । ३ देखो 'धुडणौ' (बौ) ।
दुडबडणौ (बौ)–देखो 'दडवडणौ' (बौ) ।
दुडबडी, दुडबुडी–स्त्री० १ दौड । २ शरीर पर हल्का मुष्ठि प्रहार ।
दुडयद–देखो 'दिनद' ।
दुडवडी–देखो 'दुडवडी' ।
दुडिंद, दुडियंद–देखो 'दिनद' ।
दुडी–स्त्री० स्त्रियो के कलाई पर धारण करने का आभूषण ।
दुचत–देखो 'दुचित' ।
दुचताई–स्त्री० [स० द्विचित] १ खिन्नता, उदासी । २ चिन्ता ।
दुचतौ–देखो 'दुचित' । (स्त्री० दुचती)
दुचन–पु० [स० दुश्च्यवन] इन्द्र ।
दुचाव–पु० एक प्रकार की घास ।
दुचित, दुचितौ–देखो 'दुचित' ।
दुचित–वि० [स० द्विचित] १ खिन्न, उदास । २ चिंतित । ३ नाराज, नाखुश ।
दुचितई, दुचिताई–देखो 'दुचताई' ।
दुचितौ, दुचित्तौ, दुचीतौ–देखो 'दुचित' ।
दुच्चित–देखो 'दुचित' ।
दुच्छरा–स्त्री० [स० द्वि-क्षुरिका] खड्ग, तलवार ।
दुछण–पु० सिंह ।
दुछर, दुछरेल, (रैल)–पु० १ सिंह । २ वीर, योद्धा ।
दुज–पु० [स० द्विज] १ ब्राह्मण । २ यज्ञोपवीतधारी व्यक्ति । ३ ज्योतिषी । ४ परशुराम । ५ बृहस्पति । ६ चन्द्रमा । ७ अण्डज प्राणी । ८ पक्षी । ९ गिद्धिनी । १० दात । ११ भ्रमर । १२ सर्प, साप । १३ चार मात्रा का नाम । १४ देखो 'दूज' । १५ देखो 'द्विज' ।
दुजड–स्त्री० १ तलवार, खड्ग । २ कटार । —**झल, हत, हथौ**–पु० सुभट, वीर ।
दुजडी–स्त्री० कटारी ।
दुजण–देखो 'दुरजण' ।
दुजणसाळ–देखो 'दुरजणसाळ' ।
दुजणसाही–स्त्री० एक प्रकार की धातु ।
दुजन्मौ–वि० [स० द्वि-जन्म] जिसका जन्म दो वार हुआ हो, द्विज ।
दुजपख–पु० [स० द्विज-पक्ष] १ पक्षी २ गरुड । ३ भ्रमर, भौंरा ।
दुजपत, दुजपति (ती)–पु० [स० द्विज-पति] १ ब्राह्मण । २ परशुराम । ३ चन्द्रमा । ४ कर्पूर । ५ गरुड ।
दुजबर–देखो 'दुजवर' ।
दुजमडण–पु० [स० द्विज-मडण] तांबूल, पान ।
दुजराण, दुजराम–पु० [स० द्विज-राम] परशुराम ।

दुजराज (राजा), दुजाराज–पु० [स० द्विजराज] १ ब्राह्मण। २ परशुराम। ३ ऋषि। ४ चन्द्रमा। ५ गरुड। ६ इन्द्र। ७ कर्पूर।

दुजवर–पु० [स० द्विजवर] १ ब्राह्मण। २ छंद शास्त्र में चार लघु मात्रा का नाम।

दुजाण–पु० [स०द्विजन्] १ ब्राह्मण। २ ऋषि, मुनि। ३ बृहस्पति ४ पक्षी। ५ देखो 'दूजियाण'।

दुजाराज (राय)–देखो 'दुजराज'।

दुजाई–वि० [स० द्वि] दूसरा।

दुजात–पु० [स० द्विजाति] १ ब्राह्मण, भूदेव। २ देखो 'दुजाति'।

दुजाति–पु० [स० द्विजाति] १ यज्ञोपवीत धारन करने का अधिकारी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। २ पक्षी। ३ अण्डज प्राणी। ४ दांत।

दुजायगी–स्त्री० १ भिन्नता, भेद। २ परायापन।

दुजिंद–पु० [स० द्विजेन्द्र] १ ब्राह्मण। २ चन्द्रमा। ३ गरुड। ४ कर्पूर।

दुजि–१ देखो 'दुज'। २ देखो 'द्विज'।

दुजीभ, दुजीह, दुजीह, दुजीहौ–वि० [स० द्विजिह्व] १ दो जीभ वाला। २ चुगल खोर। ३ दुष्ट। ४ चोर। ५ झूठा, मिथ्याभाषी। ६ दु साध्य। –पु० १ सर्प, सांप। २ तीर। ३ एक रोग। ४ नगाड़ा।

दुजेस–पु० [स० द्विजेश] १ ब्राह्मण। २ चन्द्रमा। ३ गरुड। ४ कर्पूर। ५ महर्षि। ६ परशुराम।

दुजेसर–पु० [स० द्विजेश्वर] १ महर्षि। २ परशुराम।

दुजोडियौ–पु० एक साथ दो चडसों से पानी सींचने लायक कुआ।

दुजोडो–देखो 'दूजो'।

दुजोण, दुजोधण, दुजोधन–देखो 'दुरयोधन'।

दुजोयण–वि० [स० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच। २ देखो 'दुर्योधन'।

दुजो–देखो 'दूजो'। (स्त्री० दुजी)

दुज्ज–१ देखो 'दुज' व 'द्विज'। २ देखो 'द्वि'।

दुज्जड–१ देखो 'दुज'। २ देखो 'दुजड'।

दुज्जण, दुज्जणो–देखो 'दुरजण'।

दुज्जय–१ देखो 'दुज'। २ देखो 'दुरजय'। ३ देखो 'द्विज'।

दुज्जराम–देखो 'दुजरांम'।

दुज्जोड, दुज्जोध, दुज्जोहण–देखो 'दुरयोधन'।

दुज्यु–क्रि० वि० अन्यथा।

दुझल, दुझल्ल दुझाल, दुझेल–वि० १ वीर योद्धा। २ जबरदस्त। ३ पंडित, विद्वान।

दुपटी–वि० दोनो ओर की, दुतरफी, दोरुखी।

दुट्ट, दुठ–१ देखो 'दुस्ट'। २ देखो 'दूठ'।

दुट्ठत्तणी–स्त्री० दुष्ट प्रकृति।

दुट्ठमण–वि० दुष्ट मन या स्वभाव वाला।

दुठर–देखो 'दुस्तर'।

दुठाणी (बो)–क्रि० कोप करना।

दुठाळो–वि० (स्त्री० दुठाळी) १ जबरदस्त, शक्तिशाली। २ दोहरे व्यक्तित्व वाला।

दुठ्ठ, दुठ्ठि–१ देखो 'दुस्ट'। २ देखो 'दूठ'।

दुडद–देखो 'दिनद'।

दुड–वि० खाया-पिया तृप्त, अघाया हुआ।

दुडवडी, दुडदुडी–स्त्री० वाद्य ध्वनि विशेष।

दुण–देखो 'दूणो'।

दुणियर–देखो 'दिनकर'।

दुणेटो–पु० १ औरों से दुगुना हिस्सा। २ देखो 'दूणो'।

दुणो–देखो 'दूणो'

दुतग, दुतगर–पु० घोड़े की जीन का तस्मा।

दुत–पु० [स० द्युति] १ कांति, प्रभा, आभा, चमक। २ ज्योति, प्रकाश। ३ किरण। ४ शोभा। ५ दीपक। [स० द्रुत] ६ वेग। –अव्य०हठ, धत् ध्वनि। घृणास्पद ध्वनि, तिरस्कार सूचक ध्वनि। —आगम–पु० आभूषण।

दुतकार–देखो 'दुत्कार'।

दुतकारणो (बो)–देखो 'दुत्कारणो' (बो)।

दुतभाव–पु० [स० द्वैत भाव] १ ऐक्यता का अभाव, अनेकता। २ भिन्नता। ३ अज्ञान।

दुतमूरति–पु० [सं० द्युति-मूर्ति] सूर्य, भानु।

दुतर, दुतरणि–देखो 'दुस्तर'।

दुतरफ, दुतरफो–वि० (स्त्री० दुतरफी) १ दोनो ओर का, दोनो ओर रहने वाला, दो तरह के आशय वाला। २ दो तरह के काम का।

दुतलाल–पु० [स० द्युति-लाल] मंगल।

दुतवीस–वि० द्युतिवान, प्रकाश युक्त।

दुतार, दुतारो–पु० १ दो तार का वाद्य। २ देखो'दुस्तर'।

दुति–स्त्री० [स० द्युति] १ आभा, कांति, शोभा, छवि। २ सुन्दरता। ३ किरण। —कर–वि० प्रकाशवान, चमकदार —धर–वि० प्रकाशवान चमकदार —मांन–वि० आभावान, सुन्दर। —माळा–स्त्री० विजली।

दुतियक–देखो 'दुतिवत'। देखो 'दुतीय'।

दुतिया–देखो 'दुतीया'।

दुतियो–देखो 'दुतीय'।

दुतिवत–वि० [स० द्युति-वत] १ आभा व कांति युक्त। २ चमकदार, प्रकाशवान। ३ सुन्दर।

दुती–१ देखो दुति'। २ देखो 'दुतीय'।

दुतीतेज–पु० [स० द्युति-तेज] सुदर्शन चक्र।

दुतीय–वि० [स० द्वितीय] (स्त्री० दुतीया) १ दूसरा । २ अन्य । –पु० १ दूसरा पुत्र । २ भागीदार, हिस्सेदार ।
दुतीया–स्त्री० [सं० द्वितीया] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज । –वि० दूसरी ।
दुतीयो–देखो 'दुतीय' ।
दुतीवान–देखो 'दुतिवत' ।
दुत्कार–स्त्री० १ फटकार, प्रताडना, तिरस्कार, अवहेलना । २ धिक्कार, भर्त्सना ।
दुत्कारणो (बो)–क्रि० १ फटकारना, प्रताडना देना, तिरस्कार करना । २ धिक्कारना ।
दुत्तर, दुत्तरि–देखो 'दुस्तर' ।
दुत्ती, दुत्तिय–१ देखो 'दुति' । २ देखो 'दूती' । ३ देखो 'दुतीय' ।
दुत्थ–वि० [स० दुस्थ] १ दु खी । २ दरिद, कगाल । —**भाव**–पु० दु ख, दरिदता, कगाली ।
दुत्थिय–पु० [स० दुस्थ] दारिद्र्य, निर्धनता ।
दुथडियो–पु० [स० द्वि+स्तर] सूत का एक चारजामा विशेष ।
दुथणी, दुथन, दुथनी, दुथ्थणी (नी)–वि० [स० द्वि+स्तनी] दो स्तनो वाली । –स्त्री० १ स्त्री । २ बकरी, अजा ।
दुदंती–पु० १ हाथी, गज । २ दो दातो का युवा बैल ।
दुदळ–देखो 'द्विदळ' ।
दुदाम, (मो)–देखो 'ददाम' ।
दुदीयटो–पु० सूअर, शूकर ।
दुदेली–देखो 'दूधी' ।
दुद्द, दुद्धो, दुध–१ देखो 'दु द' । २ देखो 'दूध' ।
दुधार–वि० [स० दोग्ध्री] १ दूध देने वाली । २ दो धारा वाली। –स्त्री० [स० द्वि+धार] १ दोनो ओर धार वाला शस्त्र । २ तलवार । ३ कटार, बरछी । ४ भाला । ५ रथ ।
दुधारी–वि० [स० द्वि+धार] दो धार वाली । दुधार । –स्त्री० कटार, बरछी, तलवार ।
दुधारु (रू)–१ देखो 'दुधाळु' । २ देखो 'दुधार' ।
दुधारो–पु० [स० द्विधार] १ बढई का एक ओजार । २ देखो 'दुधार' ।
दुधाळ (ळु)–वि० [स० दोग्ध्री] दूध देने वाली, अधिक दूध देने वाली ।
दुनड–पु० शत्रु ।
दुना–वि० दोनो, दो ।
दुनाळ (ळि, ळी)–स्त्री० [स० द्वि+नाल] दो नालो वाली वदूक ।
दुनाळो–वि० 'दुनाली' बन्दूक धारी । –पु० दो जीनो वाला मकान ।
दुनि–देखो 'दुनिया' ।
दुनियण–पु० [स० दिनकर] १ सूर्य । २ देखो 'दुनिया' ।

दुनिया (दुनिया)–स्त्री० [अ० दुनिया] १ ससार, जगत । २ ससार के लोग । सासारिक प्रपच । —**दार**–वि० सासारिक । गृहस्थी । —**दारी**–स्त्री० जगत के कार्य । गृहस्थी के कार्य।
दुनियांण (णी, न)–देखो 'दुनिया' ।
दुनियाई–वि० ससार का, ससार सबधी ।
दुनियादार–पु० सासारिक व्यक्ति । गृहस्थ । –वि० व्यवहार कुशल ।
दुनियादारी–स्त्री० १ सासारिक प्रपच । २ गृहस्थी के कार्य । ३ रीति-रिवाज, रूढिया । ४ दिखावटी व्यवहार ।
दुनियासाज–वि० १ चापलूस । २ स्वार्थ साधने वाला ।
दुनियासाजी–स्त्री० १ चापलूसी । २ स्वार्थ सिद्धि के प्रयत्न । ३ व्यवहार कुशलता ।
दुनीं, दुनी–स्त्री० [अ० दुनिया] १ पृथ्वी । २ देखो 'दुनिया' । —**पत, पति**–पु० बादशाह । राजा । ईश्वर ।
दुनीय–देखो 'दुनिया' ।
दुनुप्रोहित–पु० [सं० दनुज प्रोहित] असुरो का गुरु, शुक्राचार्य ।
दुनै–वि० [स० द्वि] दोनो ।
दुन्नि, दुन्नी–वि० [स० द्वीनि] १ दो । २ देखो 'दुनी' ।
दुप–देखो 'द्विप' ।
दुपड़ती–वि० [स० द्विवर्ती, द्विअर्थी] १ दो परत या पट वाली २ दो अर्थ रखने वाली, श्लेषात्मक ।
दुपटी–स्त्री० १ दो पाट का वस्त्र, ओढनी । २ देखो 'दुपडती' ।
दुपटो–पु० ओढने का वस्त्र ।
दुपट्टी-देखो 'दुपटी' ।
दुपट्टो–देखो 'दुपटो' ।
दुपडु–वि० [स० द्वि+वर्ती] १ दो परत वाला । २ दो अर्थवाला ।
दुपदी–पु० १ एक मात्रिक छन्द विशेष । २ दो पावो वाला ।
दुपराणो (बो), दुपरावणो (बो)–क्रि० [स० दुष्प्रराव] रुदन करना, विलाप करना ।
दुपहर, दुपहरा, दुपहरी, दुपार–देखो 'दोपहर' ।
दुपारो–देखो 'दोपारो' ।
दुपियारो–वि० [स०दुष्प्रिय] (स्त्री०दुपियारी)बुरा लगने वाला ।
दुपी–देखो 'द्विप' ।
दुपेरी–१ देखो 'दोपहर' । २ देखो 'दोपारी' ।
दुपेरो–देखो 'दोपारो' ।
दुपैर–देखो 'दोपहर' ।
दुपैरो–देखो 'दोपारो' ।
दुप्याज, दुप्याजो–पु० एक प्रकार का मास ।
दुप्रब्ब–वि० [स० दुष्प्रभ] १ अत्यन्त तेजोमय । २ चकाचौंध करने वाला ।
दुफसली–स्त्री० वर्ष मे दो फसल होने वाली भूमि ।

दुबकणौ (बौ)-देखो 'दबकणौ (बौ)।
दुबकी-स्त्री० [सं० द्वि-पदी] १ घोडे या गधे के अगले पावो का बंधन। २ पीछे की ओर छलाग लगाने की क्रिया। ३ लकडी के जोड पर लगाई जाने वाली पत्ती। ४ देखो 'दवकी'।
दुवगळी-स्त्री० मालखभ की एक कसरत।
दुबडा दुवध्या दुवधा दुबध्या-देखो 'दुविधा'।
दुबराळगोळौ-पु० तोप का लबा गोला।
दुबळापण-पु० क्षीणता, कृशता।
दुबळौ-वि० [स० दुर्बल] (स्त्री० दुबळी) १ कमजोर, क्षीण। २ दुरबल।
दुबाक-क्रि० वि० एकाएक अचानक, सहसा।
दुबाट-देखो 'दुवाट'।
दुबारा-क्रि० वि० [स० द्विवार] दूसरी बार। दो बार।
दुबारौ-पु० [सं० द्विवार] एक प्रकार की तेज शराब।
दुबाह, दुबाहियौ, दुवाहौ-वि० [स० दुर्वाह] १ दोनो हाथो से प्रहार करने वाला योद्धा। २ जबरदस्त। -पु० १ तुरंग, घोडा। २ सेना, फौज।
दुबे-पु० [स० द्विवेदी] एक ब्राह्मण वर्ग।
दुबौ-वि० [स० द्वि] दूसरा, भिन्न।
दुव्बल-देखो 'दुरबल'।
दुव्बाधि-पु० १ एक वानर का नाम। २ देखो 'दुविधा'।
दुब्बार-देखो 'दुवारौ'।
दुभर-देखो 'दूभर'।
दुभांत-स्त्री० [स० द्वि-भाति] १ भेदभाव। २ कपट। ३ भिन्नता। ४ दुराव।
दुभाखी-देखो 'दुभासी'।
दुभाखीयौ, दुभासियौ, दुभासी-वि० [स० द्वि-भासी] १ दो भाषाएँ जानने वाला। २ दो भाषाएँ बोलने वाला।
दुभितियौ-पु० दो दीवारो का मकान।
दुमजलौ-देखो 'दोमजलौ'।
दुमनउ-देखो 'दुमनौ'।
दुम-स्त्री० [फा०] १ पुच्छ, पूछ। २ पीठ का निम्न भाग।
दुमकड़ौ-देखो 'दमकडौ'।
दुमगा-स्त्री० एक प्रकार का अशुभ घोडा।
दुमची-स्त्री० [फा०] १ घोडे के पुट्ठे का आभूषण। २ घोडे के साज का तस्मा विशेष। ३ पुट्ठो के बीच की हड्डी।
दुमणापण(णौ)-पु० [स० दुर्मनस्+त्व] उदासीनता, खिन्नता।
दुमत, (त्त)-वि० [स० द्वि+मत] १ दूसरे मत वाला, विरुद्ध। २ भिन्न मति या विचार का।
दुमदार-वि० [फा०] १ पूछ वाला। २ पूंछ जैसे अग वाला।
दुमन-देखो 'दुमनौ'।
दुमनू, दुमनौ, दुमन्नौ-वि० [स० दुर्मनस्] उदास मन, खिन्न-चित्त। खिन्न।
दुमाम-देखो 'दमाम'।
दुमामी-पु० १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। २ देखो 'दमामी'।
दुमात, दुमाता-स्त्री० [स० द्वि+मातृ] सौतेली मा। विमाता।
दुमायौ-वि० [सं० द्वि+मातृ] सौतेली मा का, सौतेला।
दुमार-स्त्री० [सं० दुःमार] १ कष्ट, तकलीफ, तग़ी। २ अभाव कमी।
दुमाळौ-पु० एक प्रकार का कर विशेष।
दुमिला-पु० एक वर्ण वृत्त विशेष। —निसाणी-स्त्री० एक निसाणी छद विशेष।
दुमी-वि० १ दो मुख वाला। २ दुमुंहा। (सर्प विशेष) (मेवात)।
दुमुखि-वि० [स० द्विमुखी] कपटी, धूर्त। -पु० दो मुख वाला सर्प।
दुमेण, दुमेण, दुमेणियौ, दुमेणौ-पु० मोम मिला मोटा कपडा, बरसाती।
दुमेळ-वि० १ असमान। २ भिन्न प्रकार का। -पु० १ शत्रुता, दुश्मनी। २ डिंगल का एक छन्द विशेष।
दुमेळसावझड़ौ-पु० एक डिंगल गीत विशेष।
दुयगम-पु० योद्धा, वीर।
दुय-वि० [स० द्वि] दो।
दुयण-देखो 'दुरजण'।
दुयेण-वि० [स० द्विगुन] १ दो। २ दुगुना, द्विगुन।
दुरग (गि, गी)-पु० [स० दुर्ग] १ दुर्ग, गढ़, किला। २ वन, कानन। -वि० १ दो रगो वाला, दुरगा। २ अप्रिय, कटु। ३ खराव, बुरा। ४ बुरी आकृति का।
दुरनीयज-पु० एक प्रकार का वस्त्र।
दुरगौ-वि० [स० द्वि-रग] (स्त्री० दुरगी) १ दो रंगो वाला, दुरगा। २ दो प्रकार का। ३ अप्रिय, कटु। ४ बुरा, खराब। ५ भिन्न प्रकृति या स्वभाव का। ६ दोनो पक्षो की ओर रहने वाला। ७ दोहरी नीति वाला। ८ वर्ण सकर।
दुरड-वि० कटा हुआ।
दुरंत-वि० [स० दुर-अत] १ शत्रु, दुश्मन। २ भीषण, भयकर। ३ अनन्त, अपार। ४ दुर्गम, कठिन, दुस्तर। ५ अशुभ, कुत्सित, बुरा।
दुरतक-पु० [सं०] शिव, महादेव।
दुरततक-पु० ऊट।
दुरतर-वि० [स० दुर-अतर] अति दूर, बहुत दूर।
दुरद-देखो 'दुरत'।
दुर-अव्य० [स० दुर] १ बुरा या कठिन अर्थ बोधक एक उपसर्ग। [स० दूर] २ दूर, अलग, पृथक। -पु० छुपने

का या गुप्त रहने का भाव। —करम-पु० बुरा कार्य, दुष्कर्म।

दुरइ-अव्य० [स० दूर] दूर, अलग, पृथक।

दुरकारणौ (बौ)-देखो 'दुत्कारणौ' (बौ)।

दुरखी-स्त्री० [फा० दुरुख] दो तह या परत।

दुरगध (ध, धि, धी)-स्त्री० [स० दुर्गन्ध] बुरी गध, बदबू। दूषित वायु।

दुरग-पु० [सं० दुर्ग] १ गढ, किला। २ महल। ३ सुरक्षित स्थान। ४ सकीर्ण मार्ग। ५ ऊबड-खाबड भूमि। ६ दुर्गम मार्ग। ७ ऊट। ८ देखो 'दुरगम'।

दुरगत-स्त्री० [स० दुर्गति] १ निर्धनता, कगाली। २ बुरी गति, दुर्दशा, बुरा हाल। ३ नरक गति। ४ बेइज्जती।

दुरगतरणी-स्त्री० [स० दुर्गतरणी] एक नदी का नाम।

दुरगति, (ती, त्त)-देखो 'दुरगत'।

दुरगदास-पु० इतिहास प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौड।

दुरगपाळ-पु० गढ का रक्षक, किलेदार।

दुरगम-वि० [स० दुर्गम्] १ कठिन, विकट, दुस्तर। २ जहा पहुचना कठिन हो। औघट। ३ दुर्बोध, सूक्ष्म, गूढ़। ४ भयावह, डरावना। -पु० १ किला। २ वन, जगल। कठिन मार्ग। ४ सकटमय-स्थान। ५ विष्णु।

दुरगमता-स्त्री० [सं०] कठिनाई। विकटता। दुरूहपन।

दुरगरक्षक-पु० [स० दुर्गरक्षक] किलेदार।

दुरगलघण (न)-पु० [स० दुर्गलघन] ऊट।

दुरगामी-वि० कुमार्गी, पापी।

दुरगा-स्त्री० [स० दुर्गा] १ आदि शक्ति, देवी। २ पार्वती। महामाया। ३ नौ वर्ष की कन्या।

दुरगाधिकारी-पु० [स० दुर्गाधिकारी] गढ का स्वामी, अधिपति।

दुरगाध्यक्ष-पु० [स० दुर्गाध्यक्ष] गढ का प्रधान, किलेदार।

दुरगानवमी-स्त्री० [स० दुर्गानवमी] १ चैत्र व आश्विन शुक्ला, नवमी। २ कार्त्तिक शुक्ला, नवमी।

दुरगास्टमी-स्त्री० [स० दुर्गाष्टमी] चैत्र या आश्विन शुक्ला अष्टमी।

दुरगुण-पु० [सं० दुर्गुण] बुरा गुण या आदत। अवगुण।

दुरगेस-पु० [स० दुर्गेश] १ दुर्गाध्यक्ष, दुर्गरक्षक, किलेदार। २ शिव।

दुरगोत्सव-पु० [स० दुर्गोत्सव] दुर्गा पूजन का उत्सव।

दुरग्ग-देखो 'दुरग'।

दुरग्रह-पु० [स०] १ दुष्ट ग्रह। २ देखो 'दुराग्रह'।

दुरघट-वि० [स० दुर्घट] १ कष्ट साध्य, कठिन साध्य। २ बुरा, खराब। ३ भयकर, डरावना।

दुरघटना-स्त्री० [स० दुर्घटना] १ बुरी घटना। २ जान माल की हानि वाली घटना। ३ अशुभ स्थिति। ४ कष्ट प्रद स्थिति। ५ विपदा, मुसीबत।

दुरघोस-पु० [स० दर्घोष] १ भारी या तीक्ष्ण स्वर। २ भारी आवाज। ३ भालू।

दुरड़ी-स्त्री० मिट्टी का बना गोल घेरा।

दुरडो-पु० छेद, सूराख।

दुरचारि, (री)-देखो 'दुराचारी'।

दुरजण (न)-वि० [स० दुर्जन] १ दुष्ट, नीच, खल। २ शत्रु, दुश्मन। —साळ-वि० दुष्टो का नाश करने वाला।

दुरजनता-स्त्री० [स० दुर्जनता] दुष्टता। खोटापन।

दुरजनि-देखो 'दुरजन'।

दुरजय-वि० [स० दुर्जय] जिसे जीतना कठिन हो। अजेय। -पु० १ विष्णु। २ एक राक्षस का नाम।

दुरजाति-स्त्री० [स० दुर्जाति] नीच या बुरी जाति। -वि० नीच कुल या जाति।

दुरजीव-पु० [स० दुर्जीव] १ क्षुद्र प्राणी। २ दुष्ट प्राणी।

दुरजोण, दुरजोध, दुरजोधण, दुरजोधनौ-देखो 'दुर्योधन'।

दुरज्जटा-स्त्री० [स० दुर्ज्जटा] बिखरे केशो वाली एक देवी।

दुरज्योधण (न)-देखो 'दुर्योधन'।

दुरणौ (बौ)-क्रि० अ० १ गुप्त होना, लुप्त होना। २ छुपना, ओट मे होना, आड लेना। ३ दूर होना। ४ समाप्त होना, मिटना।

दुरत, दुरतेस-वि० [स० दुरित] १ भयकर, भयावह। २ जबरदस्त। ३ पापी, दुष्ट। ४ जो कठिनता से सहा जा सके। ५ गुप्त। -पु० १ क्रोध। २ पाप, पातक। ३ उप पातक, छोटा पाप। ४ शत्रु।

दुरतौ-पु० श्वेत-श्याम रग का घोडा।

दुरत्त-देखो 'दुरत'।

दुरद, दुरदन-देखो 'द्विरद'।

दुरदम, दुरदमन-वि० [स० दुर्दम] दुर्दमनीय, प्रबल, प्रचड।

दुरदर-वि० दुःख से उत्तीर्ण।

दुरदरस-वि० [स० दुदर्श] १ जो कठिनता से दिखाई दे। २ अत्यन्त सूक्ष्म। ३ जो भयकर दिखाई दे।

दुरदरसन-पु० कौरवो का एक सेनापति।

दुरदसा-स्त्री० [स० दुर्दशा] बुरी दशा, दुर्गति।

दुरदान-पु० [स० दुर्दान] ऋादी।

दुरदाळ-पु० [स० दुर्दलम] हाथी।

दुरदिन, दुरदीह-पु० [स० दुर्दिन, दुर्दिवस] दुर्दशा का समय, बुरा दिन। बुरा वक्त। मुसीबत के दिन।

दुरवच, दुरवचन–पु० [स०दुर्वचन] कटु वचन, अपशब्द। –वि० १ अति तीक्ष्ण। २ तप्त, गरम।

दुरवरण, दुरवरणक–पु० [सं० दुर्वर्ण] चादी, रजत।

दुरवसनी–देखो 'दुरव्यसनी'।

दुरवस्था–स्त्री [स० दुरावस्था] बुरी हालत या अवस्था।

दुरवा–देखो 'दूरवा'।

दुरवाचकजोग (योग)–पु० [स० दुरवाचक योग] ६४ कलाओ मे से एक

दुरवाद–स्त्री० दीवार मे लगने का एक पत्थर विशेष।

दुरवाचाप–पु० [स० दुर्वाद] १ अनुचित विवाद। २ अपवाद, निंदा, बदनामी।

दुरवादी–वि० [स० दुर्वादिन] १ कुतर्की, बकवास करने वाला। २ बुरा बोलने वाला।

दुरवार–देखो 'दरबार'।

दुरवासना–स्त्री० [स० दुर्वासना] १ न पूर्ण होने लायक कामना। २ खोटी आकाक्षा। ३ बुरी नीयत।

दुरवासा–पु० [स० दुर्वासस्] अत्रि ऋषि के पुत्र एक मुनि।

दुरविध–वि० [स० दुर्विध] दरिद्र, कंगाल, निर्धन। –स्त्री० १ निर्धनता, कगाली। २ भूख। —भाव–पु० निर्धनता, कगाली।

दुरविनीत–वि० [स० दुर्विनीत] अशिष्ट, अविनीत।

दुरविवाह–पु० [स० दुर्विवाह] निंदित विवाह।

दुरविस–पु० [स० दुर्विष] महादेव, शिव।

दुरविसन–देखो 'दुरव्यसन'।

दुरविसनी–देखो 'दुरव्यसनी'।

दुरवेसी–वि० १ दरवेश सबधी। २ बादशाह का, बादशाही। ३ देखो 'दरवेस'।

दुरव्यवस्था–स्त्री० [स० दुर्व्यवस्था] अव्यवस्था, कुप्रबध।

दुरव्यसन–पु० [स० दुर्व्यसन] बुरी आदत, ऐब।

दुरव्यसनी–वि० [स० दुर्व्यसनी] जिसकी आदतें बुरी हो। बुरे व्यसनवाला।

दुरव्रत–पु० [स० दुर्वृत्त] नीच ख्यालात, बुरी नीयत। –वि० बुरी नीयत वाला।

दुरस (सि)–वि० [फा०दुरुस्त] १ सीधा। २ उचित। ३ ठीक। ४ श्रेष्ठ। ५ सत्य, यथार्थ। ६ जो टूटा-फूटा न हो। ७ सुधरा हुआ। ८ स्वस्थ।

दुरसीस–देखो 'दुरासीस'।

दुरसौ–पु० एक प्रसिद्ध चारण कवि।

दुरस्त–देखो 'दुरस'।

दुरहित–पु० [स० दुर्हित] शत्रु, दुश्मन।

दुराक–पु० [स०] १ एक देश का नाम। २ एक म्लेच्छ जाति।

दुराग्रह–पु० [स०] १ कुतर्क, बकवास। व्यर्थ की बहस। २ हठ धर्मी। जिद्द।

दुराग्रही–वि० [स०] कुतर्क करने वाला, जिद्दी, बकवादी।

दुराचरण–पु० [स०] खोटा या बुरा आचरण। अनैतिक आचरण।

दुराचार–पु० [स०] १ अत्याचार, अनाचार। २ दुष्टता।

दुराचारी–वि० [स०] १ अत्याचारी, आततायी। २ दुष्ट, नीच। ३ बुरे आचरण वाला।

दुराज–पु० [स० दुराज्य] १ बुरा शासन। २ दो राजाओ का शासन।

दुराजी–वि० दो राजाओ वाला।

दुराजौ–पु० [स० द्वि+राजा] वैमनस्य, द्वेष।

दुराणौ (बौ)–क्रि० १ आड मे होना, छुपना। २ दूर हटना, टलना। ३ त्यागना। ४ पराजित करना।

दुरातसत्य–पु० [स०] इन्द्र।

दुरात्मा–वि० [स०] दुष्ट, बुरा, खोटा।

दुराधन–पु० [स०] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दुराधरस–वि० [स० दुराधर्ष] १ जिसका दमन कठिन हो, दुर्दमनीय। २ उग्र, प्रचण्ड। –पु० १ पीली सरसो २ विष्णु।

दुराधार–पु० [स०] शिव, महादेव।

दुराप (य)–वि० [स० दुराप] दुर्लभ्य, अप्राप्य।

दुराराध्य–वि० [स०] १ जिसकी आराधना कठिन हो, कठिन साध्य। २ देर से प्रसन्न होने वाला।

दुरालभ, दुरालभ–वि० [स० दुर्लभ] १ कठिनाई ने मिलने वाला, दुष्प्राप्य। २ देखो 'दुरालभा'।

दुरालभा–स्त्री० [स०] १ जवासा। २ धमासा।

दुरालाप–पु० [स०] १ बुरा वचन, गाली, अपशब्द। २ तू-तू मैं मैं। –वि० दुर्वचन कहने वाला।

दुराव–पु० १ कोई बात गुप्त रखने का स्वभाव। २ भेद-भाव। ३ द्वेष, ईर्ष्या। ४ छल, कपट।

दुरावणौ (बौ)–देखो 'दुराणौ' (बौ)।

दुरास–वि० [स० दुराशा] १ जिससे अच्छी आशा न हो। २ निराश करने वाला। ३ विकराल, भयकर।

दुरासद–वि० [स० दुर+आसद] १ कठिनता से वश मे होने वाला २ दु साध्य, कठिन। ३ दुष्प्राप्य। –पु० दुष्कर्म, पाप।

दुरासय–पु० [स० दुराशय] बुरी नीयत। –वि० बुरी नीयत वाला।

दुरासा–स्त्री० [स० दुराशा] व्यर्थ की आशा, झूठी उम्मीद।

दुरासीस–स्त्री० [स० दुराशिष] १ बददुआ, शाप। २ उलाहना। ३ बुरा होने की कामना।

दुराह दुराहौ–पु० दोराहा, दो रास्तो का सधिस्थल।

दुरि–देखो 'दूरी'।
दुरिउ–देखो 'दुरत'।
दुरिजण(जन्न, ज्जण)–देखो 'दुरजण'।
दुरित–देखो 'दुरत'।
दुरितारि–पु० [स०] ५२ वीरो मे से एक।
दुरिति–देखो 'दुरत'।
दुरिस्ट–पु० [स० दुरिष्ट] १ एक प्रकार का यज्ञ। २ पाप, पातक।
दुरी–वि० [स० दुर्] १ दुख देने वाला, दुखदायी। २ शत्रु। –स्त्री० १ शत्रुता। २ निधनता, कगाली। ३ गुफा, खोह।
दुरीउ–देखो 'दुरत'।
दुरीय–देखो 'दुरत'।
दुरीस–पु० [स० दु + ईश] दुष्ट राजा।
दुरीह–वि० [स० दुर्-ईहा] बुरी नीयत वाला, दुष्ट।
दुरुग, दुरुंग–देखो 'दुरग'।
दुरुख, दुरुखौ–वि० [स० द्वि+फा० रुख] १ दोनो ओर मुह वाला। २ जिसके दोनो ओर चिह्न हो। ३ जिसका झुकाव दोनो पक्षो की ओर हो।
दुरुग–देखो 'दुरग'।
दुरुत्तर–वि० [स०] जिसका पार पाना कठिन हो। दुस्तर। –पु० दुष्ट उत्तर।
दुरुधरा, दुरुधुरा–स्त्री० जन्म कुण्डली का एक योग।
दुरुपयोग–पु० [स०] अनुचित उपयोग। बुरे कामो मे उपयोग।
दुरुफ–पु० फलित ज्योतिष का एक योग।
दुरुस्त–देखो 'दुरस'।
दुरुस्ती–स्त्री० सुधार, सशोधन।
दुरुह, दुरूह–वि० [स० दुरूह] १ गूढ, कठिन। २ मुश्किल। ३ भयकर, जबरदस्त, प्रचण्ड। –क्रि० वि० दोनो ओर, दोनो तरफ।
दुरेफ–देखो 'द्विरेफ'।
दुरोदर–पु० जूआ, द्यूत।
दुर्योधन–पु० [स० दुर्योधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र। —पुर–पु० दिल्ली।
दुलकी–देखो 'दुडकी'।
दुलड, दुलडौ–वि० [स० द्वि-लटिक] (स्त्री० दुलडी) १ दो लडो का। २ दोहरा।
दुलट्ठ–पु० हाथी के पैर का बधन।
दुलती–स्त्री० घोडे, गधे आदि द्वारा पिछले पावो से मारने की क्रिया।
दुलदुल–पु० [अ०] मुहम्मद साहब की खच्चरी विशेष।
दुलभ–देखो 'दुरलभ'।
दुलह–१ देखो 'दूल्हौ'। २ देखो 'दुरलभ'।

दुलहण (हणि, हन) दुलहि, दुलही–स्त्री० [स० दुर्लभ] १ नव विवाहिता युवती। २ विवाह के लिये तैयार युवती, दुल्हिन। ३ नव वधू।
दुलहौ–देखो 'दूल्हौ'।
दुलात–देखो 'दुलत्ती'।
दुलार–पु० [स० दुर्लालन] १ प्यार, प्रेम पूर्ण क्रिया, चेष्टा। २ ममत्व।
दुलारणौ (बौ)–क्रि० [स० दुर्लालन] प्रेम पूर्ण चेष्टा करना, प्यार करना।
दुलारौ–वि० [स० दुर्लालन] (स्त्री० दुलारी) प्रिय, प्यारा, लाडला।
दुलावौ–पु० दो चडस वाला कुआ।
दुलिचौ, दुलीचौ–पु० कालीन, गलीचा।
दुलोही–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ, दुल्लह–१ देखो 'दुरलभ'। २ देखो 'दुलहौ'।
दुल्लीच–देखो 'दुलीचौ'।
दुव–वि० [स० द्वि] १ दूसरा। २ दो।
दुवकी–देखो 'डुबकी'।
दुवजीह–पु० [स० द्विजिह्व] १ कटार। २ साप, नाग।
दुवणौ (बौ)–देखो 'दूमणौ' (बौ)।
दुवद्या–देखो 'दुविधा'।
दुवध–क्रि० वि० [स० द्विविध] दोनो प्रकार से।
दुवधा–देखो 'दुविधा'।
दुवधार–देखो 'दुधार'।
दुवधारी–देखो 'दुधारी'।
दुवधारौ–देखो 'दुधार'।
दुवयण–देखो 'दुरवचन'।
दुवळ–क्रि० वि० दूसरी ओर।
दुवा–स्त्री० [अ० दुआ] १ आशीर्वाद। २ देखो 'दुआ'। –वि० दूसरा।
दुवाई–१ देखो 'दवा'। २ देखो 'दुहाई'। ३ देखो 'दूवारी'।
दुवाग–देखो 'दुहाग'।
दुवागण–देखो 'दुहागण'।
दुवागौ–पु० घोडे की लगाम विशेष।
दुवाघ–वि० [सं० दु –व्याघ्र] दुष्ट व्याघ्र।
दुवाड़णौ (बौ)–देखो 'दुवाणौ' (बौ)।
दुवाट–वि० [स० दु वाट] बुरा मार्ग, कुमार्ग।
दुवाणौ (बौ)–क्रि० १ दूध दुहाना, दूध निकलवाना। २ सार निकलवाना।
दुवाती–देखो 'दुवायती'।
दुवादसौ–देखो 'द्वादसौ'।
दुवापुर–देखो 'द्वापर'।

दुवाय–देखो 'दुग्रा'।
दुवायति (ती)–देखो 'दवायती'।
दुवायी–१ देखो 'दवा'। २ देखो 'दुहाई'। ३ देखो 'दूवारी'।
दुवार–देखो 'द्वार'।
दुवारका (जी)–देखो 'द्वारका'।
दुवारि–देखो 'द्वार'।
दुवारिका–देखो 'द्वारका'।
दुवारी–देखो 'दूवारी'।
दुवारो–पु० १ दो वार उलट कर निकाला हुआ शराव। २ द्वार। ३ देखो 'द्वारौ'।
दुवाळ–पु० १ धधा, प्रपच, झंझट। २ देखो 'द्वाळौ'।
दुवावणौ (बौ)–देखो 'दुवाणौ' (बौ)।
दुवाह (हौ)–देखो 'दुवाह'।
दुविधा, (ध्या)–स्त्री० [स० द्विविधा] १ एक साथ आने वाली दो उलझनें। २ दोहरी विचारधारा। ३ अनिश्चितता की स्थिति। ४ चिंता, दु ख। ५ सदेह, सशय। ६ असमंजस। पशोपेश। धर्म सकट।
दुविहार–पु० [स० द्वि-आहार] दो प्रकार का आहार।
दुवीयण–देखो 'दुरवचन'।
दुवै–वि० [स० द्वि] १ दोनो, दो। २ दूसरा, द्वितीय।
दुवो–१ देखो 'दूवो'। २ देखो 'दूजो'।
दुसत–वि० १ दुष्ट, असाधु। २ देखो 'दुस्यत'। –पु० सधि स्थल, जोड।
दुस–पु० [स० द्विज] १ ब्राह्मण। २ पडित, ज्ञानी।
दुसक्रत, दुसक्रित–देखो 'दुस्क्रत'।
दुसट–देखो 'दुस्ट'। (स्त्री० दुसटा)
दुसटसासना–पु० [स० दुष्ट-शासन] दुष्टोचित दण्ड।
दुसटादळ–वि० [स० दुष्ट-दलन्] दुष्टो का नाश करने वाला। –पु० ईश्वर, परमात्मा।
दुसटी–देखो 'दुस्ट'। (स्त्री० दुसटण, दुसटणी)
दुसतर–देखो 'दुस्तर'।
दुसम–वि० १ बुरा। २ कठिन। ३ देखो 'दुखम'।
दुसमण–पु० [फा० दुश्मन] १ शत्रु, वैरी। २ विरोधी, प्रतिपक्षी।
दुसमणायगी, दुसमणी–स्त्री० [फा० दुश्मनी] १ शत्रुता, वैर। २ विरोध। ३ वदले की भावना।
दुसराणौ (बौ), दुसरावणौ (बौ)–क्रि० त्रुटि निकालना, कमी निकालना। निंदा करना।
दुसरावण–पु० भोज्य सामग्री का सजा हुआ थाल।
दुसवार–वि० [फा० दुशवार] १ कठिन, दुरूह। २ दु सह।
दुसवारी–स्त्री० [फा० दुशवारी] कठिनाई, असुविधा।
दुसह–वि० [स० दु सह] १ भयकर, भयावह। २ असह्य, दु खदायी। ३ कठिन, दुस्तर। –पु० १ शत्रु, वैरी। २ अग्नि। ३ क्रोध। –क्रि० वि० दूर, पृथक।
दुसही–वि० [स० दु सह] १ जो कठिनता से सह सके, दुस्सह। २ ईर्ष्यालु।
दुसहो–पु० [स० दु सह्य] शत्रु, वैरी।
दुसाकियौ–देखो 'दुसाकौ'।
दुसाकौ, दुसाखियौ, दुसाखौ, दुसाख्यौ–पु० [सं० द्वि+शाक] १ दो कटोरियो का जुडा हुआ पात्र विशेष। २ दो फसलो वाला खेत, भूमि या क्षेत्र।
दुसार, दुसारक, दुसारण–क्रि० वि० आरपार। –स्त्री० १ तलवार। २ आरपार छेद। ३ शस्त्र का दोनो ओर का पैना भाग। ४ भाला।
दुसारा–क्रि० वि० इस ओर से उस ओर, आर-पार।
दुसाल–पु० १ आर-पार का छेद। २ देखो 'दुसालौ'।
दुसालापोस–वि०[फा०दोशाल-पोश] जो दुशाला ओढे हो,अमीर।
दुसालाफरोस–पु० [फा० दोशाल फिरोश] दुशाला वेचने वाला।
दुसालो–पु० [फा० दोशाल] १ ओढ़ने का रेशमी वस्त्र विशेप। २ दो परत जुडी चादर। ३ एक सर्प विशेष।
दुसासण, (सु न)–पु० [स० दु शासन] धृतराष्ट्र का एक पुत्र। –वि० निरकुश।
दुसील–वि० [स० दु शील] शील रहित, दुष्ट।
दुसुपन–पु० [स० दु स्वप्न] बुरा स्वप्न, अशुभ स्वप्न।
दुसूती–स्त्री० [स० द्वि-सूत्र] दो तारो से बुना वस्त्र।
दुसेन्या–स्त्री० [स० द्वि-सेना] दोनो ओर की सेना।
दुस्कर–वि० [स० दुष्कर] १ जो सरलता से न किया जा सके। २ दुस्साध्य। –पु० आकाश।
दुस्करण–पु० [स० दुष्कर्ण] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुस्करम–पु० [स० दुष्कर्म] बुरा कार्य, पाप।
दुस्करमी (मौ)–वि० [स० दुष्कर्मी] १ बुरे काम करने वाला। २ पापी, नीच। ३ दुष्ट।
दुस्काळ–पु० [स० दुष्काल] १ बुरा समय। २ अकाल, दुर्भिक्ष। ३ महादेव। ४ प्रलयकाल।
दुस्कीरति–स्त्री० [स० दुष्कीर्ति] अपयश, कुकीर्ति, बदनामी।
दुस्कुळ–वि० [स० दुष्कुल] नीच कुल का, तुच्छ घराने का। –पु० नीच कुल। बुरा खानदान।
दुस्कुळीन–वि० [स० दुष्कुलीन] नीच कुल का, निम्न वश का।
दुस्क्रत, दुस्क्रति(ती), दुस्क्रित, दुस्क्रिति, दुस्क्रिती–१ देखो 'दुक्रत'। २ देखो 'दुक्रति'।
दुस्खदिर–पु० [स० दुष्खदिर] एक वृक्ष विशेप।
दुस्चिवय–पु० [स० दुश्चिक्य] ज्योतिप मे जन्म लग्न से तीसरा स्थान।

दुस्ट-पु० [स० दुष्ट] १ शत्रु। २ चोर। ३ कुष्ठ रोग। -वि० १ दुर्जन, दुराचारी, आततायी। २ पापी। ३ भ्रष्ट, कलंकित। ४ बिगडा हुआ। ५ दुष्ट। ६ जुल्मी, अपराधी। ७ नीच, ओछा। ८ दोष पूर्ण। ९ कष्टदायी। १० निकम्मा।

दुस्टता-स्त्री० [स० दुष्टता] १ बुराई, खराबी। २ बदमाशी। ३ ऐब, दोष। ४ शत्रुता। ५ नीचता, ओछापन। ६ जुल्म, अपराध।

दुस्टौ-देखो 'दुस्ट'।

दुस्तर-वि० [स०] १ कठिनता से पार होने वाला। २ कठिन, विकट।

दुस्फोट-पु० [स० दुष्फोट] शस्त्र विशेष।

दुस्मरण-देखो 'दुसमरण'।

दुस्मणी-देखो 'दुसमणी'।

दुस्यत-पु० [स० दुष्यन्त] पुरुवशीय एक राजा।

दुस्यासन, दुस्सासण, दुस्सासेण-देखो 'दुसासन'।

दुहडणौ (बौ)-क्रि० सहार करना, मारना, नाश करना।

दुह-देखो 'दुख'।

दुहडउ, दुहडौ-देखो 'दूहौ'।

दुहण-देखो 'दुहिण'।

दुहणौ (बौ)-देखो 'दूवणौ' (बौ)।

दुहत्थ-वि० [स० द्वि-हस्त] १ दो हाथ वाला। २ दो मूठ वाला। ३ देखो 'दोहत्थौ'।

दुहत्थि (त्थी)-स्त्री० माल खभ की एक कसरत।

दुहत्थौ-वि० [स० द्वि+हस्त] दो हाथ लम्बा।

दुहथि,(थी)-स्त्री० [स० द्वि+हस्त] तलवार।

दुहरौ-१ देखो 'दोरौ'। २ देखो 'दोहरौ'।

दुहवणौ (बौ)-क्रि० [स० दु खापन] नाराज करना, कष्ट पहुंचाना। पीडित करना।

दुहवै-वि० [स० द्वि] दोनो। -क्रि० वि० दोनो ओर।

दुहाई-स्त्री० १ घोषणा, मुनादी। २ राजाज्ञा। ३ प्रताप, तेज। ४ बचाव पक्ष की पुकार। ५ सहायता की याचना। ६ सौगध, कसम। ७ देखो 'दुवारी'।

दुहाग-पु० [सं० दुर्भाग्य] १ वैधव्य। २ पति परित्यक्तता की अवस्था। ३ वियोग, विछोह। ४ दुर्भाग्य, बदनसीबी। ५ दु ख, कष्ट।

दुहागण (गणि, गिण, गिणी, गिन, गिनी)-स्त्री० [स० दुर्भागिन्] १ पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री। २ भाग्य हीन स्त्री। ३ विधवा। ४ दु.खी व पीडित स्त्री।

दुहागियौ, दुहागी-वि० [स० दुर्भागिन्] (स्त्री० दुहागण) १ दु खी, पीडित। २ दुर्भागी, अभागा।

दुहातीकरोतो-पु० [स० द्वि-हस्त-कर पत्रक] आरी, करौती।

दुहाथळ-पु० [सं० द्वि-हस्त] सिंह के अगले पाव का पजा।

दुहारौ-पु० दुहने वाला।

दुहावणी-स्त्री० १ गाय, भैंस आदि का दूध दूहने का कार्य। २ दूध दूहने का पारिश्रमिक।

दुहावणौ (बौ)-देखो 'दूहाणौ' (बौ)।

दुहिण-पु० [स० द्रुहण, द्रुहिण] ब्रह्मा।

दुहिता-स्त्री० [स०दुहितृ] कन्या, लडकी। —पति-पु० जमाता, दामाद।

दुहिलउ, दुहिलौ-१ देखो 'दोहिलौ'। २ देखो 'दूल्हौ'।

दुही-देखो 'दुखी'।

दुहु-वि० [सं० द्वि] दोनो।

दुहुवां-क्रि० वि० १ दोनो ओर। २ दोनो से। -वि० दोनो।

दुहुवै-वि० दोनो।

दुहू-वि० दोनो।

दुहुभ्रत-पु० [स० द्वि+भत्य] स्वामिकार्त्तिकेय।

दुहूं, दुहू-देखो 'दुहु'।

दुहेल-पु० [स० दुर्हेल] दु ख, विपत्ति, मुसीबत।

दुहेलउ, दुहेलु (लू)-देखो 'दोहिलौ'। (स्त्री० दुहेली)।

दुहेलौ-वि० [सं० दुर्हेला] १ सकटयुक्त। २ सकटग्रस्त। [स० दुर्लभ] ३ दुष्प्राप्य। ४ दुर्लभ। ५ देखो 'दोहिलौ'।

दुहोतरी-देखो 'दोहिती'।

दुहौ-देखो 'दूहौ'।

दुह्य-पु० [स०] राजा ययाति का एक पुत्र।

दुह्लिद, दुरह्लिद-पु० [स० दु हृदयिन्] शत्रु, दुश्मन।

दूंग-देखो 'दु ग'।

दूंण, दुंणू-देखो 'दूणौ'।

दूंद-१ देखो 'तू द'। २ देखो 'दुंद'।

दूंदवाळ, दूंदाळु, दूंवाळौ-वि० बडे उदर वाला, पेटू।

दूंदुह-देखो 'दूदुह'।

दूंब, दूंबलियौ-देखो 'दू बौ'।

दूंबाइत, दूबायत-पु० छोटा जागीरदार।

दूंबौ-पु० १ छोटे गाव के राजस्व का राज्य मे दिया जाने वाला अश। २ भूमि के बीच उभरा हुआ भाग। ३ धूल का ढेर।

दूअगम-वि० [स० दुर्गम] १ कठिनता से पार करने योग्य। २ दुर्गम, कठिन। ३ भारी असह्य।

दूआर, दूआरि (री)-देखो 'द्वार'।

दूआसर-पु० एक आभूषण विशेष।

दूइज-देखो 'दूज'।

दूउ-पु० [स० दौत्य] सदेश, पैगाम। समाचार।

दूऔ-१ देखो 'दुआ'। २ देखो 'दूवौ'। ३ देखो 'दूहौ'।

दूकणियौ, दूकणौ-देखो 'दूखणौ'।

दूकणौ(बौ)–देखो 'दूखणौ' (बौ) ।
दूख, दूखड़, दूखड़ौ–देखो 'दुख' ।
दूखण–देखो 'दूसण' ।
दूखणावणौ–पु० [स० दुःख] दर्द, पीडा ।
दूखणावणौ (बौ)–देखो 'दुखाणौ' (बौ) ।
दूखणियौ–देखो 'दूखणौ' ।
दूखणौ–पु० १ फोडा, फुसी । २ घाव, क्षत ।
दूखणौ, (बौ)–क्रि० [स० दुःख] १ पीडित होना, दुखना, दर्द होना । २ असह्य लगना, बुरा लगना । ३ दोष लगाना, कलकित करना ।
दूखर, (रौ)–देखो 'दूसण' ।
दूखाणौ (बौ), दूखावणौ(बौ)–देखो 'दुखाणौ' (बौ) ।
दूखियौ–देखो 'दूखणौ' ।
दूछर–देखो 'दुछर' ।
दूछरल, दूछरेल, दूछरैल–देखो 'दुछर' ।
दूज–स्त्री० [स० द्वितीया] १ मास के प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि । द्वितीया । २ देखो 'दुज' ।
दूजउ–देखो 'दूजौ' । (स्त्री० दूजी) ।
दूजड़–देखो 'दुजड' ।
दूजण–पु० [स० द्विजन] १ गृहस्थ, विवाहित । दपती । २ देखो 'दुरजण' ।
दूजणी–देखो 'दूझणी' ।
दूजणौ (बौ)–देखो 'दूझणौ' (बौ) ।
दूजबर, दूजवर–पु० [स० द्वितीयवर] दूसरा विवाह करने वाला व्यक्ति ।
दूजाण–पु० [स० द्विज-जन] ब्राह्मण, विप्र । –वि० दूसरा ।
दूजियाण–स्त्री०दूसरी वार बच्चा देने वाली गाय व मादा पशु ।
दूजोडौ–देखो 'दूजौ' । (स्त्री० दूजोडी) ।
दूजौ–वि० [स० द्वितीया] (स्त्री० दूजी) १ दूसरा, दो के स्थान वाला, एक के बाद वाला । २ गौण, अन्य । ३ गैर, पराया । ४ स्थान या एवजी वाला । –पु० १ अपने पूर्वज के समान गुण वाला व्यक्ति । २ पौत्र ।
दूज्यू, दूज्यू–देखो 'दुज्यू' ।
दूझ–१ देखो 'दूज' । २ देखो 'दोझ' ।
दूझड–देखो 'दुझड' ।
दूझडी–वि० [स० दोहनी] दूध देने वाली । –स्त्री० गाय, गौ ।
दूझणौ (बौ)–क्रि० [स० दोहन] १ दूध देना । २ आमदनी होना ।
दूझल्ल–देखो 'दुझल' ।
दूझार, दूझाळ, दूझाळी–वि० [स० दुग्ध+आलुच] १ अधिक दूध देने वाली । २ देखो 'दुभाळ' ।
दूट–१ देखो 'दुस्ट' । २ देखो 'दूठ' ।
दूटी–स्त्री० ऊट की आख मे होने वाली एक ग्रथि ।
दूठ–वि० [स० दुष्ट] १ शीघ्र नाराज होने वाला, उग्र, क्रूर । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ वीर, बहादुर । ४ देखो 'दुष्ट' ।
दूठणौ, (बौ)–क्रि० क्रोध करना, कोप करना ।
दूठमल–वि० [स० दुःस्थ-मल्ल] योद्धा, वीर ।
दूण–पु० [स० द्विगुण] १ दुगुना भाग, हिस्सा या मात्रा । २ देखो 'दूणौ' ।
दूणता–स्त्री० दुगुनी मात्रा ।
दूणभुजगी–स्त्री० आठ 'य' गण का छद विशेष ।
दूणगिर (गिरि, गिरी)–देखो 'द्रोणगिरि' ।
दूणू–देखो 'दूणौ' ।
दूणेटौ, दूणैटौ–पु० १ दुगुना अश, भाग या मात्रा । २ दुगुना भाग लेने का हक । ३ देखो 'दूणौ' ।
दुणौ–वि० [स० द्विगुण] (स्त्री० दूणी) दुगुना, द्विगुण । –पु० एक डिंगल गीत विशेष ।
दू'णौ (बौ)–देखो 'दूवणौ' (बौ) ।
दूण-अट्टौ-सावझड़ौ–पु० एक डिंगल गीत ।
दूत–पु० [स०] (स्त्री० दूती) १ सदेश वाहक, चर, पत्रवाहक । २ इधर की वात उधर ले जाने वाला व्यक्ति । ३ राजा का दूत । ४ यमदूत । —**पाळक**–पु० एक राज्याधिकारी ।
दूतर–पु० १ चन्द्रमा । २ देखो 'दुस्तर' ।
दूति, दूतिका, दूती–स्त्री० [स० दूती] १ प्रेमी-प्रेमिका या नायक-नायिका के बीच सम्पर्क कराने वाली स्त्री । २ चुगली करने वाली स्त्री । ३ चुगली । ४ दासी, नौकरानी । ५ कुटनी । ६ सदेशा ले जाने वाली स्त्री, परिचायिका । –[स० द्वि+हस्त] ७ जुलाहे का उपकरण विशेष ।
दूतीय–देखो 'दुतीय' ।
दूतीयौ–पु० [स० द्वितीय] १ द्वैधी भाव, द्विधा भाव । २ देखो 'दुतीयौ' ।
दूथ–वि० [स० दुष्ट] योद्धा, वीर ।
दूथी–पु० [स० द्वित्थ] १ चारण, कवि । २ कवि ।
दूद–१ देखो 'दूध' । २ देखो 'दूदौ' ।
दूदड–देखो 'दूध' ।
दूदडलौ, दूदड़ियौ, दूदडौ–१ देखो 'दूध' । २ देखो 'दूदौ' ।
दूदांण-दूदा–पु० राव दूदा के वशज मेडतिया राठौड ।
दूदियौ–१ देखो 'दूध' । २ देखो 'दूधियौ' ।
दूदी–देखो 'दूधी' ।
दूदु–पु० पत्तो का वना दोना, पात्र ।
दूदुह–पु० निर्विष सर्प ।

दूदौ–पु० १ राव जोधा का एक पुत्र व मेडता का अधिपति। २ देखो 'दूध'।
दूद्यौ–देखो 'दूध'।
दूध, दूधड़–पु० [स० दुग्ध] १ मादा प्राणियो के स्तनो का रस, दूध। २ क्षीर वृक्षो का रस। ३ अनाज के कच्चे दानो का रस। ४ वश, गोत्र।
दूधका–पु० पाटल वृक्ष।
दूधकोसी–स्त्री० नेपाल राज्य के अन्तर्गत एक नदी।
दूधगिलारी, दूधगिलासडी–स्त्री० छिपकली की जाति का एक जीव।
दूधडलौ दूधडियौ, दूधडौ–देखो 'दूध'।
दूधचढ़ी–वि० [स० दूध-उच्चलन] १ जिसके स्तनो मे दूध बढ़ गया हो। २ गर्भवती (मादा पशु)।
दूधडियौ–पु० १ दो बराबर खण्डो वाला। २ दूध।
दूध-बैं'न–स्त्री० एक ही माता का दूध पीकर पलने से लगने वाली बहन।
दूध-भाई–पु० एक ही माता का दूध पीकर पलने से लगने वाला भाई।
दूध-मु हौ–पु० [स० दुग्ध-मुख] अबोध बच्चा।
दूधसेराह–पु० दूधिया रग का घोडा।
दूधा–स्त्री० ब्राह्मणो की एक शाखा।
दूधाधारि (री)–वि० [स० दुग्धाहारी] केवल दूध का आहार लेने वाला।
दूधापाणी–पु० एक प्रकार का टोना।
दूधार, दूधारू, दूधाळ, दूधाळू, दूधाळौ–वि० १ दूध वाला। २ दूध जैसे रग का गाढा।
दूधाहारी–वि० [स० दुग्धाहारी] दूध पीकर निर्वाह करने वाला
दूधिया पत्थर–पु० दूध के रग का मुलायम पत्थर विशेष।
दूधियादात–पु० दूध पीती अवस्था मे ही आजाने वाले बच्चो के दात।
दूधियौ–पु० १ एक प्रकार का रत्न। २ सफेद व मुलायम पत्थर। ३ हल्की सफेदी। ४ लकडी का कोयला। ५ लौकी। ६ एक जगली फल। –वि० १ दूध का, दूध सबधी। २ दूध के रग का, श्वेत। ३ दूध के योग से बना।
दूधी–स्त्री० [स० दुग्धिका] १ छितराने वाला एक पौधा। २ एक लता विशेष।
दूधीउ–पु० एक प्रकार का वृक्ष।
दूधीगिडोळियौ–पु० १ लौकी। २ एक प्रकार का कीडा।
दूधेलि (ली)–स्त्री० १ एक प्रकार की लता विशेष। २ देखो 'दूधी'।
दूधौ–देखो 'दूध'।
दूनौ–पु० [स० द्रोण] पत्तो का कटोरा, दोना।
दून्या–वि० [स० द्वि] १ दोनो। २ देखो 'दुनिया'।
दूपराणौ (बौ)–क्रि० १ रोना, रुदन करना, विलाप करना। २ करुण क्रन्दन करना।
दूपरी–स्त्री० रुदन, विलाप, करुण क्रन्दन।
दूब–देखो 'दोब'।
दूबक–देखो 'दबक'।
दूबड, दूबडी–देखो 'दोब'।
दूबळउ–देखो 'दूबळौ'।
दूबळती–देखो 'दोब'।
दूबळौ–वि० [सं० दुर्बल] (स्त्री० दूबळी) १ कमजोर, अशक्त, निर्बल। २ पतला दुबला, कृशकाय। ३ गरीब, निर्धन।
दूबारौ–पु० [स० द्वि+वार] १ दो बार उलट कर निकाला हुआ शराब। २ दूसरी बार। ३ दो द्वार का कक्ष।
दूबौ–पु० दो मुह का सर्प।
दूभ–देखो 'दोब'।
दूभर–वि० [स० दुर्भर] १ दु ख पूर्ण, आपत्तिजनक। २ असह्य दु सह्य। ३ कष्ट कर, कठिन, दुस्तर। ४ जो आसान न हो, कठिन। –स्त्री० गर्भहीन मादा ऊट।
दूमणउ, दूमणौ–देखो 'दुमनौ'। (स्त्री० दूमणी)।
दूमणौ (बौ)–क्रि० १ बलि किये बकरे के शिर व पैरो के बाल जलाना। २ कष्ट देना, पीडित करना।
दूमळा–पु० आठ सगण का एक छन्द विशेष।
दूय–देखो 'दूत'।
दूयभावि–पु० [स० दूत+भावेन] दूत भाव।
दूरतरी–क्रि० वि० [स० दूर+अन्तर] दूर ही से।
दूरदाज–वि० १ दूर से निशाना लगाने वाला। २ दूरदर्शी।
दूरदाजी–स्त्री० १ दूर से निशाना लगाने की क्रिया। २ दूरदर्शिता।
दूरदेस–देखो 'दूरअदेस'।
दूरदेसी–वि० १ दूर देश का, विदेशी, परदेशी। २ देखो 'दूरअदेसी'।
दूर–क्रि० वि० [स०] १ फासले पर, अतर पर। २ हट कर, अलग रह कर। –वि० १ नजर से ओझल, अलग, पृथक। २ जो पास न हो।
दूर-अदेस–वि० [फा० दूर अदेश] दुरदर्शी, आगे की सोचने वाला।
दूर-अदेसी–स्त्री० [फा०] दूरदर्शिता।
दूर-तेरी–पु० [स० दूर+तारी] केवट, नाविक।
दूर-दरसक, दूरदरसी–वि० [स० दूरदर्शक] १ दूर तक देखने वाला। २ दूर की सोचने वाला, दूरदर्शी।
दूरनैण–पु० [स० दूर+नयन] गिद्ध।
दूरपलौ–पु० १ दूरी का छोर। २ बहुत दूर की सीमा।
दूरबा–देखो 'दूरवा'।

दूरभावी–वि० [स०] भविष्य मे होने वाला।
दूरस–देखो 'दुरस'।
दूरा–वि० [स० अर्द्ध+पूरा] १ कम, थोडा। २ अपूर्ण।
—**पारी**–वि० दूर से वार करने वाला, मारने वाला।
दूरि–१ देखो 'दूर'। २ देखो 'दूरी'।
दूरिट्ठ–वि० [स० दूर+स्थ] दूर रहने वाला, दूरी पर स्थित, दूरस्थ।
दूरितारवीर–पु० [स०] बावन वीरो मे से एक।
दूरिपारवीर–पु० [स०] बावन वीरो मे से एक।
दूरी–स्त्री० १ दो स्थानो या दो पदार्थों के बीच का अन्तर, फासला। २ यात्रा का मार्ग।
दूरू तर–क्रि० वि० [स० दूर+अन्तर] दूर से, फासले पर।
दूरे-अमित्र–पु० [स०] उनचास मरुतो मे से एक।
दूरौ–देखो 'दूर'।
दूलह, दूलौ–देखो 'दूल्हौ'।
दूलहण, (णी), दूल्ही–देखो 'दुलहण'।
दूल्हौ–पु० [स० दुर्लभ] (स्त्री० दूल्हण, दूल्ही) १ विशेष वेश भूषा मे, विवाह के लिये उद्यत युवक। २ नवविवाहित युवक।
दूवणौ (बौ)–क्रि० [सं० दोहनम्] १ गाय, भैंस के स्तनो से दूध निकालना। २ सार निकालना, दोहन करना।
दूवाई (यी)–१ देखो 'दूवारी'। २ देखो 'दुवायी'। ३ देखो 'दवाई'।
दूवारी–स्त्री० १ दूध दूहने की क्रिया या भाव। २ दोहन। ३ दूध निकालने के कार्य का पारिश्रमिक। ४ दूध निकालने वाली स्त्री।
दूवौ–पु० [अ० दुवा] १ आज्ञा, हुक्म। २ प्रारब्ध, भाग्य। ३ देखो 'दुओ'। ४ देखो 'दूजौ'। ५ देखो 'दूहौ'।
दूव्य, दूव्वय–देखो 'द्रौपदी'।
दूस–पु० [स० दूष्य] १ कपडा, वस्त्र। २ छत्तीस प्रकार के दण्डायुधो मे से एक।
दूसण–पु० [स० दूपण] १ दोप, कलक। २ अवगुण, ऐब। ३ बुराई, खराबी। ४ दोप लगाने की क्रिया या भाव। ५ 'खर' का भाई एक राक्षस। ६ सामयिक व्रत मे त्याज्य वातें (जैन)।
दूसणारि–पु० [स० दूपणअरि] श्रीरामचन्द्र।
दूसम–देखो 'दुखम'।
दूसय–पु० [स० दूष्यम्] डेरा, खेमा, शामियाना, तबू।
दूसर, दूसरौ–वि० [स० द्वितीय] (स्त्री० दूसरी) १ एक के बाद वाला, दो के स्थान वाला, द्वितीय। २ अन्य, गैर। ३ पूर्वजो के गुण वाला। ४ स्थानापन्न।
दूसार (रौ)–देखो 'दुसार'।

दूसित–वि० [स०दूषित] १ अभिशप्त। २ दोप युक्त। ३ खराब, बुरा। ४ अशुद्ध। ५ भ्रष्ट। ६ विगडा हुआ।
दूसीविस–पु० [स० दूषी-विष] विकार के कारण शरीर मे पैदा होने वाला विष।
दूहउ, दूहड़ौ–देखो 'दूहौ'।
दूहणौ (बौ), दूहवणौ (बौ)–१ देखो 'दूवणौ' (बौ)। २ देखो 'दूमणौ' (बौ)। ३ देखो 'दुहवणौ' (बौ)।
दूहेलौ–१ देखो 'दुहेलौ'। २ देखो 'दोहेलौ'। (स्त्री० दूहेली)।
दूहौ–पु० [स० दोधक] एक प्रसिद्ध मात्रिक लघु छद।
दे–पु० [स०देव] १ धार्मिक ग्रथ, पुराण। [स० देवी] २ शिवा, भवानी। ३ एक प्रकार की चिड़िया। ४ स्त्री। –अव्य० १ सज्ञा शब्दो के आगे लगने वाला एक प्रत्यय। २ पाद पूरक अव्यय। ३ से। ४ देखो 'देव'।
देअणौ–वि० [स० दा] देने वाला।
देअणौ (बौ)–देखो 'देणौ' (बौ)।
देअराणी–देखो 'देरांणी'।
देई–१ देखो 'दई'। २ देखो 'देवी'।
देउ–१ देखो 'देव'। २ देखो 'देवी'।
देउ़र–देखो 'देवर'।
देउराणी (नी)–देखो 'देरांणी'।
देउळ, देउळि–देखो 'देवळ'।

देख, देखण, देखणी, देखणौ–स्त्री० [स० दृश्] १ देखने की क्रिया या भाव, अवलोकन। २ निगाह, नजर। ३ ध्यान। ४ दृष्टि। ५ आख, नेत्र।
देखणौ (बौ)–क्रि० [स० दृश] १ आखो से देखना, दृष्टि डालना। अवलोकन करना। २ जाच करना, निरीक्षण करना। ३ तलाश करना, ढूढना। ४ निगरानी रखना, ध्यान रखना। ५ परीक्षा करना। ६ सोचना, विचार करना। ७ पढना। ८ अनुभव करना। ९ भोगना, भुगतना। १० शुद्ध करना, सुधार करना।
देखभाळ, देखरेख–स्त्री० १ निगरानी, चौकसी। २ रख-रखाव, सभाल। ३ साक्षात्कार, दर्शन। ४ निरीक्षण, जाच।
देखाई–स्त्री० १ दिखाने की क्रिया या भाव। २ दिखाने का पारिश्रमिक। ३ दिखाने का इनाम।
देखाऊ–पु० १ घोडो की एक जाति। २ देखो 'दिखाऊ'।
देखाणौ(बौ)–क्रि० [स० दृश्] १ देखने के लिये प्रेरित करना। २ नजर के सामने करना, आखो के आगे रखना, दिखाना। ३ अवलोकन कराना। ४ जाच कराना। ५ तलाश कराना, ढुढवाना। ६ निगरानी कराना, ध्यान कराना। ७ परीक्षा कराना, जाच कराना। ८ पढ़वाना। ९ सुधरवाना, शुद्ध कराना। १० भोगाना, भुगतवाना।

देखादेख देखादेखी–स्त्री० [स० दृश्] १ नकल, अनुकरण। २ देखने की क्रिया या भाव। अवलोकन। –क्रि०वि० देख-देख कर, दूसरो की देखादेखी।
देखाळणौ (बौ)–देखो 'देखाणौ' (बौ)।
देखाव–देखो 'दिखाव'।
देखावट–देखो 'दिखावट'।
देखावटी- देखो 'दिखावटी'।
देखावणौ (बौ)–देखो 'देखाणौ' (बौ)।
देखावौ (हौ)–देखो 'दिखावौ'।
देग, देगड, देगड़ियौ–पु० १ भोजन पकाने का बडा पात्र। २ देखो देगचौ'।
देगडौ–पु० १ पानी ढोने का पात्र। २ देखो 'देगचौ'।
देगच, देगचियौ, देगचौ–पु० भोजन पकाने का वडा पात्र, देग।
देगची–स्त्री० साग-सब्जी पकाने का पात्र।
देगवड–पु० अतिथि सत्कार, आतिथ्य।
देगहत–वि० दानी, दातार।
देज–पु० १ देना क्रिया। २ दहेज।
देठाळउ, देठाळौ–पु० [सं० दृश्] दिखने की अवस्था या भाव, दर्शन, क्षणिक दर्शन।
देतर–देखो 'दैत्य'।
देतादुयण–पु० [सं० दैत्य+दुर्जन] ईश्वर।
देदीप्यमान–वि० [स० देदीप्यमान] १ अत्यन्त प्रकाश युक्त, तेजोमय। २ चमकदार, जगमगाता हुआ।
देबी–देखो 'देवी'।
देयणहार–वि० देने योग्य।
देर–स्त्री० [फा०] १ विलंब, अतिकाल, निर्धारित समय के वाद। २ समय, वक्त।
देराणी–स्त्री० देवर की पत्नी।
देराडी–स्त्री० मु डन सस्कार की एक रश्म (पुष्करणा ब्राह्मण)।
देराणौ (बौ)–देखो 'दिराणौ' (बौ)।
देराळी–स्त्री० लडके का ब्रह्मचर्य वेश त्याग कराने की रश्म विशेष।
देरावणौ (बौ)--देखो 'दिराणौ' (बौ)।
देरी–देखो 'देर'।
देरुतरी (ती, त्री)–स्त्री० [सं० देवर+पुत्री] देवर की पुत्री।
देरुतरौ (तौ, त्रौ)–पु० [स० देवर+पुत्र] देवर का पुत्र।
देळी–स्त्री० [स० देहली] १ देहलीज, देहली। २ मकान के द्वार पर लगी पट्टी।
देव (उ)–पु० [स०] १ दिव्य शरीरधारी व स्वर्ग का निवासी अमर प्राणी, सुर। २ उक्त प्राणियो की जाति। ३ इन्द्र। ४ ब्राह्मण। ५ राजा, शासक। ६ दिव्य शक्तियो से युक्त प्राणी। ७ पूज्य व्यक्ति। ८ आदर सूचक सबोधन। ९ ब्राह्मणो की उपाधि। १० देवर। ११ पारा। १२ देवदार। १३ ज्ञानेन्द्रिय। १४ ऋत्विज। १५ सूर्य, भानु। १६ महेश, रुद्र। १७ घोड़ा। १८ कोचरी। १९ तेतीस की सख्या*। –[फा०] २० असुर, दैत्य, राक्षस। २१ हिन्दू। २२ देखो 'दैव'। २३ देखो 'देवी'। **—अंसी**–वि० किसी देवता के अंश से उत्पन्न। **—उठणी, ऊठणी**–स्त्री० कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। **—करम**–पु० देवता को प्रसन्न करने का कर्म। **—कुंड**–पु० श्मशान भूमि मे बना पवित्र जलाशय। प्राकृतिक जलाशय। **—कुल्या**–स्त्री० मरीचि और पूर्णिमा की एक कन्या। गगा नदी। **—कृच्छ**–पु० एक प्रकार का व्रत। **—गगा**–स्त्री० एक छोटी नदी का नाम। गगा। **—गण**–पु० देवता लोग, देव समाज, नक्षत्र समूह। **—गत, गति**–स्त्री० भाग्य की गति, प्रारब्ध, मरने के वाद प्राप्त होने वाली देवयोनि। सयोग। **—गरभ**–पु० देवता के गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुरुष। **—गाधार**–पु० एक राग विशेष। **—गाधारी**–स्त्री० एक रागिनी। **—गायक**–पु० गधर्व। **—गायन**–पु० गधर्व। **—गुरु**–पु० वृहस्पति। देवताओ के पिता कश्यप। **—गुही**–स्त्री० सरस्वती। **—ग्रह**–पु० देवालय। **—चाली**–पु० एक प्रकार का इन्द्रजाल। **—चिकित्सक**–पु० अश्विनी कुमार। दो की सख्या*। **—जुण**–स्त्री० देवयोनि। **—जोग**–पु० सयोग, भाग्य। देवयोग। **—जोणी**='देवजूण'। **—झूलणी**–स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी तिथि। **—ठणी**='देवऊठणी'। **—दसम, दसमी**–स्त्री० दशमी तिथि। विशेष। **—दासी**–स्त्री० मदिरो मे नृत्य करने वाली दासी, नर्तकी, वेश्या। **—द्रुम**–पु० कल्पवृक्ष, पारिजात, देवदार। **—धन**–पु० गाय। **—धांम**–पु० स्वर्ग। देवस्थान, मदिर। **—धुनि, धुनी**–स्त्री० गगा नदी। **—धुप**–पु० गुग्गुल। **—धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **—नदी**–पु० इन्द्र का द्वारपाल। **—नदी**–स्त्री० गगा, सुरसरि। सरस्वती नदी। **—नाथ**–पु० शिव। विष्णु, इन्द्र। **—नायक**–पु० इन्द्र, सुरपति। **—निहग**–पु० सूर्य, रवि। **—पत, पति**–पु० विष्णु, इन्द्र। **—पदमणी (नी)**–स्त्री० आकाश गगा। **—पसु**–पु० बलि पशु। देव उपासक। **—पुत्री**–स्त्री० देवता की पुत्री। इलायची। कपूरी साग। **—पुर, पुरी**–स्त्री० इन्द्रपुरी; अमरावती। स्वर्ग। **—पुस्का**–स्त्री० सोनजुही। **—पोढणी-एकादशी**–स्त्री० आषाढ शुक्ला एकादशी। **—प्रयाग**–पु० हिमालय का एक तीर्थ विशेष। **—प्रसाद**–पु० देवता का प्रसाद। अनुग्रह। **—बाळ, बाळा**–स्त्री० सुरवाला। अप्सरा। **—ब्रह्म**–पु० नारद। **—ब्राह्मण**–पु० पुजारी। **—भाग**–पु० देवता का भाग। **—भासा**–स्त्री० सस्कृत भाषा। **—भिसक**–पु० अश्विनी कुमार। **—भूमि**–पु०

स्वर्गलोक। —भूरख-पु० स्वामि कार्त्तिकेय। —मंदिर-पु० देवालय। —मरिण-स्त्री० कौस्तुभमरिण। एक औषधि विशेष। सूर्य। घोडे की भवरी। —मांन-पु० देवताओ का काल, समय। —माया-पु० ईश्वर या देवता की रचना, क्रिया, प्रभाव, इच्छा। —मास-पु० देवताओ का मास। गर्भ का आठवा मास। —मुनि-पु० नारद। —मूरत, मूरति-स्त्री० देव प्रतिमा। —यजन-पु० यज्ञ की वेदी। —यजनी-स्त्री० पृथ्वी। —रथ, रथ्य-पु० देवताओ का विमान। —राज, राजा, राट-पु० इन्द्र। —रिख, रिख='देवमुनि'। —रूप-पु० ईश्वरीय रूप, दैवी रूप। —लोक-पु० स्वर्ग लोक। —वधू-स्त्री० देवागना। अप्सरा। —वांणी-स्त्री० सस्कृत भाषा। आकाश वाणी। —वाहन-स्त्री० अग्नि। —विहाग-स्त्री० एक रागिनी। —व्रक्ष-पु० कल्पवृक्ष। मंदार। गूगल। सतिवन। —सजोग-पु० सयोग। भावी। इत्तफाक। —सची-पु० शचिपति इन्द्र। —सवन-पु० देवालय। स्वर्ग। —सभा-स्त्री० देवताओ की सभा। राज सभा। —सरि-स्त्री० गगा। —साक-स्त्री० एक सकर राग विशेष। —सिंधु-पु० मान सरोवर। —सुनी-स्त्री० देवलोक की कुतिया, सरमा। —सुरह-स्त्री० कामधेनु गाय। गाय। —स्थान-पु० मदिर, देवालय। —स्रेणी-स्त्री० देवताओ की पक्ति। मरोरफली, मूर्वा। —हस-पु० एक प्रकार की बतख।

देवउकस-पु० [स० देवौकस] देवता, सुर।

देवक-पु० [स०] १ श्रीकृष्ण के नाना एक यदुवशी राजा। २ देवता, सुर।

देवकाळौ-पु० [स० देव-काल] एक देव, भैरव।

देवकी-स्त्री० [स०] श्रीकृष्ण की माता। —नदरण(न)पुत्र-पु० श्रीकृष्ण, ईश्वर।

देवकुरु-पु० [स०] जम्बूद्वीप के ६ खण्डो मे से एक।

देवकूट-पु० [स०] १ कुबेर का एक पुत्र। २ एक पवित्र आश्रम।

देवगरण-पु० [स०] १ देव वर्ग, समाज। २ देवो के अनुचर। —वद-पु० विष्णु।

देवगर-देखो 'देवगिरि'।

देवगरणौ-पु० [स० देव-करण] राज्याधिकारी विशेष।

देवगरौ-पु० एक जाति विशेष का घोडा।

देवगिर-देखो 'देवगिरि'।

देवगिरा-स्त्री० [सं०] देववारणी, आकाशवारणी।

देवगिरि (री)-पु० [स०] १ सुमेरु पर्वत। २ गिरनार पर्वत। ३ देवगिरि पर्वत का पत्थर। ४ एक प्राचीन नगर। ५ सम्पूर्ण जाति की एक राग। ६ घोडो की एक जाति।

देवगिरौ-पु० एक प्रकार का घोडा।

देवड़ौ-देखो 'देव'।

देवचौ-पु० १ प्रतिज्ञा। २ देखो 'देगचौ'।

देवज-वि० [स०] देवताओ से उत्पन्न।

देवजस-पु० [स० देवयश] भक्ति रस के गीत, भजन, स्तुति।

देवजसा-देखो 'देवयसा'।

देवजी-पु० एक इतिहास प्रसिद्ध बगडावत वीर, देवजी।

देवजीभि-पु० एक प्रकार का चावल।

देवजीरोटौ-पु० मसालेदार एक मोटा रोटा।

देवण-पु० [स० देवता] १ देवता। २ देने की क्रिया या भाव। -वि० देने वाला।

देवणौ-देखो 'देणौ'।

देवणौ (बौ)-देखो 'देणौ' (बौ)।

देवत, देवतडौ-पु० [स० दैवत] १ स्वर्ग का अमर प्राणी, देव। सुर। २ देव समूह। ३ मूर्ति। —पणौ-पु० देवबल, देवत्व।

देवतर-देखो देवतरु'।

देवतरपण-पु० [स० देवतर्पण] देवता के नाम पर किया जाने वाला तर्पण।

देवतरु-पु० [सं०] मदार, पारिजात आदि देव वृक्ष।

देवतरेसर-पु० [स० देवतरु-ईश्वर] कल्प वृक्ष।

देवता-पु० [स०] १ स्वर्ग वासी दिव्य एव अमर प्राणी, सुर। २ ब्राह्मण। ३ चारण। -वि० १ सीधा-सादा, सरल। २ गरीब। ३ शांत एव गभीर। —धिप-पु० इन्द्र।

देवतावसर-वि० देवताओ के समान।

देवतियौ-देखो 'देवता'।

देवतीरथ-पु० [स० देवतीर्थ] १ अगुलियो का अग्र भाग। २ देव पूजन का उचित समय।

देवत्रयी-पु० [स०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

देवदत्त-पु० [स०] १ अर्जुन का शख। २ अष्ट कुल नागो मे से एक। ३ देवता के निमित्त दी हुई वस्तु। ४ शरीरस्थ पाच वायु मे से एक। -वि० १ देवता द्वारा प्रदत्त। २ देव निमित्त प्रदत्त।

देवदार-पु० [स० देवदारु] पहाडी स्थानो मे होने वाला वृक्ष विशेष। देवदारू।

देवदारादि-पु० [स० देवदार्वादि] एक क्वाथ।

देवदाळि, (ळी)-पु० [स० देवदाली] एक लता विशेष।

देवदिवाळी, देवदीवाळी-स्त्री० [स० देवदीपमालिका] कार्त्तिक शुक्ला पूर्णिमा का दिन।

देवदुस्य, देवदुस्यवस्त्र, देवदूसितवस्त्र, देवदूस्य, देवदूस्यवस्त्र-पु० वस्त्र विशेष।

देवदेव-पु० [स०] ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, इन्द्र।

देवदेवाधि-पु० [स०] विष्णु, शिव, इन्द्र।

देव देवाळा–पु० देवालय ।

देवधुनि (धुनी)–स्त्री० [स० देवधुनि] गगा नदी ।

देवनगा–स्त्री० चारण वशीय एक देवी विशेष ।

देवनामा–पु० [स०देवनामन्] १ कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम । २ कुश द्वीप के राजकुमार का नाम ।

देवनागरी–स्त्री० [स०] भारतीय भाषाओ की प्रसिद्ध लिपि ।

देवनीक–वि० [स० देव+नीक] १ देव तुल्य । २ इन्द्र ।

देवपर–पु० [स०] आपात्काल मे भी निष्क्रिय रहने वाला पुरुष ।

देवबद–पु० [स०] घोडे के छाती पर की भवरी ।

देवमीढ़–पु० [स०] १ एक यदुवशी राजा । २ मिथिला का एक प्राचीन राजा ।

देवयसा–पु० [स० देवयशस्] एक जैन मुनि ।

देवयाण (यांन)–पु० [स० देवयान] मरणोपरान्त जीवात्मा के ब्रह्म लोक जाने का मार्ग ।

देवयानी–स्त्री० [स० देवयानी] १ शुक्राचार्य की पुत्री व राजा ययाति की पत्नी का नाम । २ साभर का एक तीर्थ ।

देवर–पु० [स०] पति का छोटा भाई । —वट–पु० पति की मृत्यु के पश्चात् देवर की पत्नी बनकर रहने की प्रथा । —व्याह–पु० देवर के साथ किया जाने वाला पुनर्विवाह ।

देवरांणी–देखो 'देराणी' ।

देवरारिवीर–पु० [स०] बावनवीरो मे से एक ।

देवरियौ–१ देखो 'देवर' । २ देखो 'देवरौ' ।

देवरौ–पु० [स० देवगृह] १ देवालय, मदिर । २ जैन मदिर । ३ राजा महाराजाओ का स्मृति भवन ।

देवळ, देवल–पु० [स० देवालय] १ देवस्थान, देव मदिर । २ स्मृति-भवन । ३ प्रतिहार वश की एक शाखा । ४ देवल ऋषि की सतान । -स्त्री० ५ सिढायच चारण कुलोत्पन्न एक देवी । ६ आणद मीसण की पुत्री एक देवी । ७ देखो 'देवळी' ।

देवळथभौ–पु० हाथी ।

देवळी–स्त्री० १ खडे पत्थर पर बनी मूर्ति या प्रतिमा । २ मूर्ति, प्रतिमा । ३ समाधि ।

देवलोक–पु० देवताओ का निवास स्थान, स्वर्ग ।

देवळौ–देखो 'देवळ' ।

देववसी–स्त्री० दर्जियो की एक शाखा ।

देववर्णिनी–स्त्री० [स० देववर्णिनी] कुबेर की माता ।

देववरधन–पु० [स० देववर्द्धन] १ श्रीकृष्ण के मामा । २ राजा देवक का पुत्र ।

देववलभा, देववल्लभा–स्त्री० [स० देव-वल्लभा] केसर ।

देववायु–पु० [स०] बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम ।

देवसावरणि–पु० [स०] तेरहवें मनु का नाम ।

देवसुयांनी–देखो 'देवयानी' ।

देवसेन–स्त्री० [स०] १ बावन वीरों मे से एक । २ एक तीर्थंकर का नाम ।

देवसेना–स्त्री० [स०] १ देवो की सेना । २ प्रजापति की कन्या । —पति–पु० स्कद ।

देवस्रवा–पु० [स० देवश्रवस्] १ विश्वामित्र का एक पुत्र । २ वसुदेव का भाई ।

देवस्व–पु० [स०] १ देवसेवा मे समर्पित धन, सम्पत्ति । २ यज्ञशील मनुष्य का धन ।

देवहर–देखो 'देवरौ' ।

देवहालि (ली)–स्त्री० एक प्रकार की लता ।

देवहूति–स्त्री० [स०] स्वायभुव मनु की पुत्री व कर्दम मुनि की पत्नी ।

देवह्राव–पु० [स० देवह्रद] श्रीपर्वत का एक सरोवर ।

देवाग्रागीवाण, देवा-ग्रागेवाण–पु० [सं० देव-अग्रगण्य] गणेश, गजानन ।

देवाग, देवागचीर–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

देवागणा, (ना)–स्त्री० [सं० देवागना] १ स्वर्ग की स्त्री । २ अप्सरा ।

देवाण–पु० १ ब्रह्मा । २ देवता । ३ पूज्य पुरुष ।

देवातक–पु० [स०] रावण का एक पुत्र ।

देवादेव–पु० [स० देवाधिदेव] १ श्रीकृष्ण । २ श्रीविष्णु ।

देवांपत (पति, पती)–देखो 'देवपति' ।

देवाराज–देखो 'देवराज' ।

देवासी–१ देखो 'देवअसी' । २ देखो 'देवासी' ।

देवा–पु० देवर ।

देवाई–स्त्री० देवत्व ।

देवाकर–देखो 'दिवाकर' ।

देवागिर–देखो 'देवगिरि' ।

देवाट–पु० हरिहर क्षेत्र नामक तीर्थ ।

देवातणो–पु० देवत्व, देवी बल ।

देवातन–पु० दैवी शक्ति, दैवी बल ।

देवातिथि–पु० [स०] एक पुरुवशीय राजा का नाम ।

देवानिदेव–पु० विष्णु ।

देवात्मा–पु० [स०] १ देव स्वरूप । २ अश्वत्थ, पीपल ।

देवादिदेव–देखो 'देवाधिदेव' ।

देवाधण–स्त्री० [स० दैव-धन] गाय ।

देवाधिदेव, देवाधिप–पु० [स०] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ विष्णु । ३ इन्द्र ।

देवानीक–पु०[स०] १ एक सूर्यवशी राजा । २ देवो की सेना ।

देवानुज–पु० [स०] दैत्य, असुर ।

देवाभख–पु० [स० देवभक्ष्य] अमृत, सुधा।

देवायु–स्त्री० [स० देवायुस्] देवताओ की आयु।

देवारय्य–पु० [स० देवार्य] अर्हंत का एक गरण (जैन)।

देवारि–पु० [स०] १ बावन वीरो मे से एक। २ असुर, राक्षस।

देवाळ–वि० [स० दा] देने वाला, दाता।

देवाळय, देवालय–पु० [स० देवालय] १ देवता का मन्दिर। २ मन्दिर की तरह बना कक्ष। ३ स्वर्ग।

देवाळि–स्त्री० देनदारी

देवाळियौ–वि० [स० दा] १ जिसकी पूजी समाप्त हो चुकी, हो अपना ऋरण चुकाने मे असमर्थ, कगाल। २ जिसके व्यापार मे बडा भारी घाटा लग गया हो।

देवा-लेई–स्त्री० लेने-देन की क्रिया।

देवाळै–देखो 'देवाळय'।

देवाळौ–पु०[स० दा] १ अत्यधिक ऋरण। २ अधिक ऋरण के कारण व्यापारी की साख उठ जाने की अवस्था। ३ घाटे के कारण पूजी समाप्त हो जाने की स्थिति। ४ ऋरण न चुकाने व आगे व्यापार न करने की घोषणा। ५ देखो 'देवालय'।

देवावास–वि० [स०] १ मन्दिर। २ स्वर्ग। ३ पीपल वृक्ष।

देवासी–पु० १ गडरिया जाति का व्यक्ति। २ देव अशी।

देवास्व–पु० [स० देवाश्व] इन्द्र का घोडा, उच्चैश्रवा।

देवि–देखो 'देवी'।

देविका–स्त्री० [स०] १ एक पौराणिक नदी। २ घाघरा नदी।

देवी–स्त्री० [स०] १ देव पत्नी, देवता की स्त्री। २ पार्वती, उमा। ३ दुर्गा, शक्ति। ४ सरस्वती, शारदा। ५ ब्राह्मण स्त्री। ६ राजमहिषी। ७ नव प्रसूता गाय, भैंस या बकरी। ८ दिव्य गुणो वाली स्त्री। ९ मरोर फली, मूर्वा। १० हर्र, हरीतकी। ११ श्यामा पक्षी। १२ कोचरी। १३ आर्या छद का एक भेद।

देवीक–वि० दैवी चमत्कार वाला।

देवीकवच–पु० तलवार विशेष।

देवीपुराण–पु० देवी के अवतारो के वर्णन वाला पुराण।

देवीभागवत, (भागोत)–पु० एक उप पुराण विशेष।

देवु–देखो 'देव'।

देवेंद्र–पु० [स०] देवताओ का राजा इन्द्र।

देवेस–पु० [स० देवेश] १ परमेश्वर, ईश्वर। २ शिव। ३ विष्णु। ४ देवराज इन्द्र।

देवेसय–पु० [स० देवेशय] १ ईश्वर, परमेश्वर। २ विष्णु।

देवेसी–स्त्री० [स० देवेशी] १ पार्वती, उमा। २ दुर्गा, देवी।

देवेस्ट–पु० [स० देवेष्ट] गुग्गल, महामेदा। –वि० देवताओं का प्रिय।

देवैयौ–वि० देने वाला।

देवौकस–पु० [स० देवौकस] देवताओ का स्थान, सुमेरु पर्वत।

देसतर–देखो 'देसातर'।

देसतरि (री)–१ देखो 'दिसांतरी'। २ देखो 'देसातर'।

देस, देसडउ, देसडलो, देसड़ी, देसड़ौ–पु० [स० देश] १ राष्ट्र, देश। २ एक ही शासन के अधीन माना जाने वाला भू-भाग। ३ स्थान, जगह। ४ प्रान्त। ५ राज्य। ६ जन्म भूमि के आस-पास का क्षेत्र। ७ विभाग, हिस्सा। ८ राग विशेष। **—कत**–पु० राजा। **—काळी**–स्त्री० एक रागिनी। **—कार**–स्त्री० एक राग विशेष। **—कारी**–स्त्री० एक रागिनी विशेष। **—गाधार**–पु० एक राग विशेष। **—धणी, पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पह**–पु० राजा। राष्ट्रपति।

देसचारित्र–पु० श्रावक द्वारा किया जाने वाला आशिक त्याग।

देसज–पु० [स० देशज] किसी भाषा का मूल शब्द। –वि० देश मे उत्पन्न।

देसण, देसणा(ना)–स्त्री० [स० देशना] १ उपदेश। २ व्याख्यान।

देसणोक–पु० [स० देश-नाक] राजस्थान मे बीकानेर के पास का एक गाव या कस्बा, जहा करणी माता का मदिर है।

देसथळी–वि० मरु प्रदेश, रेगिस्तानी भू भाग।

देसनिकाळौ–पु० [स० देश निष्कासन्] देश मे रहने न देने का दण्ड।

देसभासा–स्त्री० [स० देश-भाषा] १ किसी देश की भाषा, राष्ट्रभाषा। २ बहत्तर कलाओ में से एक।

देसभासाग्यांन–पु० [स० देश-भाषाज्ञान] १ प्राकृतिक बोलियो का ज्ञान। २ चौसठ कलाओ में से एक।

देसमडप–पु० [स० देशमण्डप] रास्ते मे बने विश्राम स्थल।

देसमल्लार–पु० [स०] सम्पूर्ण जाति की एक राग।

देसराज–पु० [स० देशराज] १ राजा, नृप। २ आल्हा व ऊदल के पिता।

देसडलो–देखो 'देस'।

देसवट (टौ)–देखो 'देसूटौ'।

देसवरति–स्त्री० [स० देशविरति] हिंसा आदि का आशिक त्याग। (जैन)

देसावळ–पु० [स० देश-आलुच] स्वदेश का।

देसवाळी, देसवाळीपठाण–स्त्री० राजपूतो से मुसलमान बनी एक जाति।

देसवासी–पु० [स० देश-वासिन्] देश का निवासी, स्वदेशी।

देसविरति–देखो 'देसवरति'।

देसाण (णो)–देखो 'देसणोक'।

देसातर–पु० [स० देशातर] १ अन्य देश, विदेश। २ दूर देश। ३ स्वदेश से दूर। ४ पूर्व-पश्चिम की दूरी, लवाश।

देसातर-विसेस–स्त्री० ७२ कलाओ मे से एक ।
देसातरी–वि० [स० देशातरिक] १ विदेशी, परदेशी । २ देखो 'दिसातरी' । ३ देखो 'देसातर' ।
देसाउर देसाउरि–देखो 'दिसावर' ।
देसाखी–स्त्री० [स० देशाखी] वसत ऋतु की एक रागिनी ।
देसाचार–पु० [स० देशाचार] किसी देश के आचार-व्यवहार ।
देसाटण–पु० [स० देशाटन] देश भ्रमण ।
देसाधिप, देसाधिपति (पत्ति)–पु० [स० देशाधिप] राजा, नृप, राष्ट्रपति ।
देसार–स्त्री० ढोली जाति की एक शाखा ।
देसालिक–पु० [स० दिशाआलिक] दिशा-दर्शक, मार्ग-दर्शक ।
देसाळी–स्त्री० एक जाति विशेष ।
देसावर–देखो 'दिसावर' ।
देसि देसी–वि० [स० देशी] १ देश का, देश सबधी । २ स्वदेश का बना । ३ स्वदेश मे उत्पन्न हुआ । –पु० १ एक प्रकार का घोडा । २ एक रागिनी विशेष । ३ देखो 'देस' ।
देसीगोखरू–पु० [स० देशी + गोक्षुर] जमीन पर फैलकर होने वाली एक काटेदार बूटी ।
देसूटौ, देसोट, देसोटु, देसोटौ–पु० [स० देशात्+उत्थानम्] देश निकाले का दण्ड ।
देसोत–पु० [स० देशपति] १ देशपति, राजा । २ राजपुत्र, राजकुमार । ३ जागीरदार, सामत, सरदार । ४ ऊटो के झुण्ड के साथ रहने वाला व्यक्ति । –वि० १ वीर, योद्धा । २ सुन्दर, रूपवान ।
देसौटौ–देखो 'देसोटौ' ।
देसौत–देखो 'देसोत' ।
देह–स्त्री० [स०] शरीर, तन ।
देहकरण–पु० ७२ कलाओ मे से एक ।
देहडलौ, देहडी, देहडौ–देखो 'देह' ।
देहचिंता–स्त्री० [स०] मल त्याग की इच्छा ।
देहज–वि० [स०] (स्त्री० देहजा) १ देह से उत्पन्न । २ देह सबधी ।
देहतती–पु० [स० देहतत्वी] मनुष्य ।
देहत्याग–पु० [स०] मृत्यु, मौत ।
देहधारण–पु० [स०] १ जन्म, उत्पत्ति । २ जीवन रक्षा ।
देहधारी–वि० [स० देह धारिन्] शरीरधारी ।
देहनायक–पु० [स०] १ देह का निर्माता । २ ब्रह्मा ।
देहयात्रा–स्त्री० [स०] १ पालन पोषण । २ भोजन । ३ मृत्यु मरण ।
देहरइ, देहरइरउ, देहरउ–देखो 'देवरौ' ।
देहरापथी, देहरापयी–वि० [स० देव गृह-पथ] मदिर मार्गी, मूर्ति-पूजक ।
देहरासर, देहरासरु–पु० [स० देवता वसर] देवता का उत्सव ।
देहरियौ–देखो 'देवरौ' ।
देहरी–देखो 'देहळी' ।
देहरु, (रू, रौ)–देखो 'देवरौ' ।
देहळ–देखो 'देहळी' ।
देहळी–स्त्री० [स० देहली] १ मकान के द्वार की देहलीज । २ देखो 'देह' ।
देहवत (वान)-वि० देह धारी । –पु० सजीव प्राणी ।
देहात–पु० [स०] मृत्यु, प्राणात ।
देहातर–पु० [स०] १ जन्मान्तर, दूसरा शरीर । २ पुनर्जन्म । ३ मरण ।
देहा–देखो 'देह' ।
देहाड़ौ–देखो 'दिवस' ।
देहात–स्त्री० [फा०] गाव, ग्राम ।
देहाती–वि० १ गाव का, ग्रामीण । २ गवार । –पण-पणौ-पन–पु० गवारू पन । ग्रामीणो का सा व्यवहार ।
देहारी–वि० [स० देह] देह सबधी, शरीर का, दैहिक ।
देहिका–स्त्री० [स०] एक प्रकार का कीडा ।
देही–पु० [स० देह] १ शरीरधारी प्राणी । २ जीवात्मा । ३ देवता । ४ दही । ५ देखो 'देह' । –वि० १ शरीर का, शरीर सबधी । २ देने वाला, दाता ।
देहीपच–पु० [सं० पच देही] शरीर ।
देहु, देहुडी–देखो 'देह' ।
देहुरौ–देखो 'देवरौ' ।
दैंण–देखो 'दैंण' ।
दैंत, दैत्य–देखो 'दैत्य' ।
दैण–स्त्री० [सं० दा] १ देने की क्रिया या भाव । २ प्रदत्त वस्तु दी हुई वस्तु । ३ दान । –वि० देने वाला ।
दैंण–स्त्री० [स० दहन] १ दुख, कष्ट, पीडा । २ जलन । ३ परेशानी, झझट ।
दैणदार–वि० [स० दा] १ देने वाला । २ ऋणी, कर्जदार ।
दैणदारी–स्त्री० १ ऋणी होने की अवस्था । २ चुकाने योग्य राशि । ३ ऋण ।
दैण-लैण–पु० लेने-देने की क्रिया या भाव । व्यवसाय ।
दैणवर–पु० स्वामि कार्त्तिकेय ।
दैणायत, दैणायत–वि० १ देने वाला । २ ऋण चुकाने वाला । ३ कर्जदार, ऋणी ।
दैणी–अव्य० से ।
दैणौ–वि० [स० दा] (स्त्री० दैणी) देने वाला । –पु० ऋण, कर्ज ।
दैणौ (बौ)–क्रि० [स० दा] १ कोई वस्तु या धन किसी को देना, दे देना । २ दूसरो को सौंपना, सभलाना । ३ देखने या अवलोकनार्थ हाथ मे थमाना । ४ देखने या

अवलोकनार्थ हाथ मे पकडना। ५ पास मे रखना। ६ लगाना, प्रयोग मे लाना। ७ निर्धारित करना। ८ मारना, प्रहार करना। ९ भुगताना,भोगाना। १० उत्पन्न करके देना। ११ प्रजनन करना। १२ लगाना, वद करना, जडना १३ आज्ञा करना, कहना, करना।

दैत–देखो 'दैत्य'। —**अरि**='दैत्यारि'। —**पत, पति, पती**–'दैत्यपति'।

दैतार–पु० [स० दैत्यारि] १ अर्जुन। २ दैत्यारि।

दैत्य–पु० [स०] १ कश्यप व दिति के पुत्र, असुर, राक्षस। २ *विशाल डील-डौल व डरावनी शक्ल का व्यक्ति।* ३ दुराचारी, पापी। —**अरि**–पु० विष्णु। देवता। इन्द्र। दैत्यो का शत्रु। —**गुरु**–पु० शुक्राचार्य। —**जुग**–पु० मानवीय चार युगो के वरावर दैत्यो का युग। —**दैव**–पु० विष्णु, पवन। वरुण। —**निकंदण**–पु०विष्णु। —**पति**–पु० रावण। वलि। हिरण्य कश्यप। —**सेना**–स्त्री० दैत्यो की सेना। प्रजापति की एक कन्या।

दैत्यधूमिणी (नी)–स्त्री० [स० दैत्यधूमिनी] एक तान्त्रिक मुद्रा विशेष।

दैत्यारि–पु० [स०] १ विष्णु। २ देवता। ३ इन्द्र। ४ विष्णु।

दैत्येंद्र, दैत्येस–पु० [स०] १ राजा वलि। २ रावण। ३ हिरण्य कश्यप।

दैधाण–पु० समुद्र, सागर।

दैनकी–देखो 'दैनगी'।

दैनगण, (णी)–स्त्री० [स० दैनिकी] मजदूर स्त्री, मजदूरनी।

दैनगियो–पु० [स० दैनिकी] (स्त्री० दैनगण, दैनगणी) दैनिक मजदूरी पर कार्य करने वाला व्यक्ति, श्रमिक।

दैनगी–स्त्री० [स० दैनिकी] १ मजदूरी। २ एक दिन के श्रम का निर्धारित द्रव्य।

दैन्य–पु० [स०] १ दरिद्रता, गरीवी। २ दीनता व तुच्छता का भाव। ३ कातरता। ४ काव्य मे एक सचारी भाव।

दैबाड़णौ (बौ), दैवाडणौ (वौ), दैवाणौ (बौ), दैवावणौ (वौ)–देखो 'दिराणौ' (वौ)।

दैव–पु० [स०] १ भाग्य, प्रारब्ध। २ विधाता। ३ विष्णु। ४ एक प्रकार का विवाह। –वि० १ देवता सवधी। २ नैसर्गिक, स्वर्गीय। ३ राजकीय।

दैवगत, (गति)–देखो 'देवगति'।

दैवग्य–पु० [स० देवज्ञ] ज्योतिषी।

दैवचिंता–स्त्री० भाग्य के विषय मे चिंतन या चिंता।

दैवजोग–देखो 'देवजोग'।

दैवत–पु० [स० दैवत] ईश्वर।

दैवतपति–पु० [स०] इन्द्र।

दैवतीरथ–पु० [स० दैवतीर्थ] अगुलियो की नोक।

दैववस–क्रि० वि० [स० दैववश] सयोग से, अकस्मात्। कुद्रतन।

दैववादी–वि० [स०] भाग्य वादी। निरुद्यमी। आलसी।

दैवविवाह–पु० [स०] स्मृति के अनुसार एक विवाह।

दैवसजोग–देखो 'देव सजोग'।

दैवाण–देखो 'दीवाण'।

दैवाकारी–स्त्री० [स०] यमुना नदी।

दैवात–देखो 'दैववस'।

दैविच्छा–स्त्री० [स० दैवेच्छा] १ ईश्वरेच्छा। २ भवितव्यता, होनी।

दैवी–वि० [स०] १ देवकृत। २ देव सवधी। ३ सयोग से होने वाला। ४ सात्विक। –स्त्री० दैव विवाह से वनी पत्नी।

दैवु–देखो 'दैव'।

दैसत्त–स्त्री० [फा० दहशत] भय, डर, आतक।

दैसाळिक–देखो 'देसाळिक'।

दैसिक–पु० [स० देशिक] १ गुरु। २ उपदेशक। ३ राहगीर।

दैसोटौ–देखो 'देसोटौ'।

दैसोत, दैसौत, दैसौतडौ–देखो 'देसोत'।

दो, दोकार, दोकारि–स्त्री० नगाड़े, तवले आदि वाद्य की ध्वनि।

दोगडा–पु० कभी-कभी होने वाली वर्षा (मेवात)।

दो–वि० [सं० द्वि] १ एक का दुगुना, एक तथा एक। २ अतिरिक्त। ३ दोनो। –पु० [स० द्यौ] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ वृषभ। ४ दैत्य। ५ स्त्रियो के वालो की अलक। ६ सिंह। ७ दान। ८ लिंग। ९ हाथ १० पाव। –स्त्री० ११ रात्रि। १२ ७२ कलाओ मे से एक। १३ दो की सख्या।

दो'–पु० [स० दोष] दैवी कोप, अभिशाप।

दोआनी–स्त्री० [स० द्वि+आणक] १ रुपये का आठवा भाग। २ इस मान का सिक्का।

दोइण–देखो 'दुरजन'।

दोइतरी, दोइती–देखो 'दोहिती'।

दोइतरो, दोइतो–देखो 'दोहितो'।

दोई–वि० [स० द्वि] १ दोनो। २ दो।

दोईतरी, दोईती, दोईत्री–देखो 'दोहिती'।

दोईतरौ, दोईतौ, दोईत्रौ–देखो 'दोहितौ'।

दोईरद–पु० [स० द्विरद] हाथी।

दोउ, दोऊ–वि० [स० द्वि] दोनो।

दोकडो–पु० रुपये का सौवा अश, एक प्राचीन सिक्का।

दोकद–पु० *एक प्रकार का वस्त्र विशेष।*

दोकी–स्त्री० [सं० द्वि] १ दो की सख्या। २ दो का जोडा। ३ दो अगुलियो का सकेत। –वि० १ दो। २ देखो 'दोखी'।

दोखंभा–पु० [स० द्वि-स्तभ] एक प्रकार का नैचा ।
दोख–पु० [स० दोष] १ कोप, गुस्सा, क्रोध । २ देखो 'दोस' ।
दोखण–१ देखो 'दूसरा' । २ देखो 'दोस' ।
दोखादोगदक, दोगंधक–पु० [स० दौगुन्दुक] अतिशय रति क्रीडा करने वाली एक देव जाति ।
दोखियो दोखी, दोखीलो–वि० [स० दोषिन्] १ शत्रु, दुश्मन । २ बुरा चाहने वाला । ३ ईर्ष्या करने वाला ।
दोगड–स्त्री० [स० द्वि+घट] १ दो मत, दो विचार । २ असमजस । ३ देखो 'दोघड' ।
दोगणो–वि० दुगुना ।
दोगलो–पु०[फा०दो-गुल्ला] १ वर्णसकर सतान । २ जारज पुत्र । –वि० (स्त्री० दोगली) १ वर्ण सकर । २ चुगलखोर ।
दोगी–स्त्री० १ नार-कंकरी नामक खेल । २ पीडा, दर्द, कष्ट । ३ सकट, आपत्ति । ४ दुविधा । ५ रोग । ६ शत्रु, दुश्मन ।
दोघड–पु० [स० द्विघट] १ शिर पर रखे दो जल पात्र, दो घट । २ देखो 'दोगड' ।
दोघडो–वि० [स० द्वि–घट] उदास, चिन्तित, खिन्न ।
दोघणो–पु० अहित, बुराई । हानि ।
दोड–पु० [स० द्वि-पट] १ दो सूत का बना वस्त्र, दो सूती वस्त्र । २ देखो 'दौड' ।
दोचोखट, दोचौखट–स्त्री० आभूषणो पर खुदाई करने का औजार विशेष ।
दोज–देखो 'दूज' ।
दोजक–देखो 'दोजख' ।
दोजकी–देखो 'दोजखी' ।
दोजख (ग)–पु० [फा०] १ इस्लाम धर्म के अनुसार 'नरक' । २ दुख, कष्ट ।
दोजखी (गी)–वि० [फा०] १ नरकगामी, पापी, दुरात्मा । २ दुखी ।
दोजाणो–देखो 'दोजो' ।
दोजिक (ख, ग)–देखो 'दोजख' ।
दोजियायती, दोजीयायती, दोजीवाती, दोजीवायती–स्त्री० [स० द्विजीवा] गर्भवती स्त्री या मादा पशु ।
दोजो, दोझाणो–पु० [० सदोग्ध] १ दूध देने वाले मादा पशु का स्तन । २ दूध व दूध से मिलने वाले पदार्थ । ३ दूध देने वाले पशु ।
दोझाळ–वि० १ वीर योद्धा, बहादुर । २ क्रुद्ध, कुपित । –पु० दूध देने वाला मादा पशु ।
दोट–पु० [स० धाव] १ आधी, तूफान । २ हवा का तेज झोंका, बवडर । ३ टक्कर, आघात, धक्का । ४ प्रहार, वार । ५ ठोकर, ठेस । ६ मार, घाव । ७ मवेशी । ८ मूर्ख, नासमझ । ९ बाल, केश । १० आक्रमण, हमला । ११ व्यथा, शोक, सताप । १२ समूह, गुब्बार । १३ दौडने की क्रिया या भाव । १४ देखो 'दोटो' ।
दोटणो (बो)–क्रि० [स० धाव्] १ पैरो से रौंदना, कुचलना । २ सहार करना, मारना । ३ ठुकराना, ठोकर मारना । ४ गेंद आदि के चोट लगाना । ५ दबाना । ६ दौडना, भागना । ७ वेग से उठ कर गिरना । ८ तेजी से प्रवाहित होना । ९ झोंके लगाना, झटके मारना । १० लपेट मे लेते हुए चलना ।
दोटियो–१ देखो 'दोटी' । २ देखो 'दोट' ।
दोटी–स्त्री० [स० द्विपटी] १ बच्चो के खेलने का कपडे, रब्बर या चमडे का गोला, गेंद । २ एक प्रकार का वस्त्र ।
दोटो–पु० १ देहलीज पर लगी लकडी । २ वायु का बवडर । ३ गेंद पर लकडी का प्रहार । ४ झोंका, झटका । ५ तेज, प्रवाह । –वि० १ नष्ट करने वाला । २ देखो 'दोट' ।
दोठो–पु० खाद्य पदार्थ विशेष, व्यजन ।
दोडगो–पु० एक प्रकार का फल विशेष ।
दोणकियो, दोणको–१ देखो 'दोवणियो' । २ देखो 'दोणियो' ।
दोणातार–पु० आभूषणो की खुदाई करने का एक औजार ।
दोणियो–वि० दुहने वाला, दुहारा । –पु० १ दूध दूहने का पात्र । २ देखो 'दोवणियो' ।
दोणो (बो)–देखो 'दूवणो' (बो) ।
दोत–१ देखो 'दवात' । २ देखो 'दुतिया' ।
दोतड–पु० [स० द्वि + तट] दुविधा ।
दोतडि (डी)–स्त्री० [स० दुस्तरी] दुष्ट नदी ।
दोति–देखो 'दवात' ।
दोधक–पु० [स०] १ एक वर्ण वृत्त विशेष । २ एक मात्रिक छद विशेष ।
दोधार–देखो 'दुधार' ।
दोधारी–स्त्री० १ आभूषणो पर खुदाई का एक औजार विशेष । २ देखो 'दुधारी' ।
दोधारो–देखो 'दुधार' ।
दोधो–पु० १ दुधिया रस वाला एक पौधा विशेष । २ देखो 'दूध' ।
दोन–१ देखो 'दोनो' । २ देखो 'दूण' ।
दोनब–देखो 'दानव' ।
दोनाळी–देखो 'दुनाळी' ।
दोनु, दोनू, दोनू, दोनों–वि० [स० द्वि] उभय, दोनो ।
दोनो–पु० १ कलक, दोष । २ ताना, व्यग । ३ देखो 'दूनो' । ४ देखो 'दोनों' ।
दोन्या–१ देखो 'दुनिया' । २ देखो 'दोनों' ।
दोन्यु, दोन्यूं–देखो 'दोनों' ।
दोपइ–स्त्री० [स०] एक मात्रिक छन्द विशेप ।
दोपहर–पु० [स० द्वि-प्रहर] दिन का मध्य समय, मध्याह्न ।

दोपहरियो–देखो 'दोपारियो'।

दोपहरी–१ देखो 'दोपारी'। २ देखो 'दोपहर'।

दोपार–देखो 'दोपहर'।

दोपारियो–पु० १ एक वृक्ष जिसके फूल दुपहर मे खिलते हैं। २ देखो 'दोपारी'।

दोपारी, दोपारो–स्त्री० १ मध्याह्न का स्वल्पाहार। २ देखो 'दोपहर'।

दोपाहर, दोपैर–देखो 'दोपहर'।

दोपेरो–देखो 'दोपारो'।

दोफसळी–देखो 'दुफसली'।

दोफारी (रो)–देखो 'दोपारी'।

दोब, दोबड़, दोबडी–स्त्री० [स० दूर्वा] दूर्वा घास, दूब।

दोबारो–पु० [स० द्वि-द्वार] १ दो द्वार का कक्ष। २ देखो 'दूवारो'।

दोबै–पु० छुपकर या मोर्चा लगाकर बैठने की क्रिया।

दोबैत–देखो 'दवावैत'।

दोभ, दोभडो–देखो 'दोब'।

दोभाग–पु० [स० दुर्भाग्य] १ मद भाग्य, दुर्भाग्य। २ दुहाग।

दोभो–वि० सुस्त, आलसी। ढीला-ढाला।

दोमजलो, दोमजिलो–वि० [स० द्वि+फा० मजिल] दो मजिल का, दो मजिल वाला।

दोमज, दोमजि, दोमझि–पु० [स० द्वि+मध्य] युद्ध, सग्राम।

दोमल–पु० एक वर्णिक छन्द विशेष।

दोमिण–पु० [स० द्यो+मणि] सूर्य, भानु।

दोमी–पु० डूम, ढोली।

दोय–देखो 'दो'।

दोयक–देखो 'दोयेक'।

दोयककुत–पु० [स० द्वि-कुकुद] ऊट।

दोयजीह–देखो 'दुजीह'।

दोयण–पु० [स० दुर्जन] १ राक्षस, दानव। २ देखो 'दुरजण'।

दोयतरी, दोयती (त्री)–देखो 'दोहिती'।

दोयतरो, दोयतो (त्रो)–देखो 'दोहितो'।

दोयथणी–देखो 'दुथणी'।

दोयम–वि० [फा०] दूसरे नंबर का, दूसरा।

दोयरण–देखो 'दुरजण'।

दोयलो–देखो 'दोहिलो'। (स्त्री० दोयली)।

दोयसपो (पो)–पु० [फा० दो-अस्प] १ दो घोडो का मालिक सैनिक। २ दो घोडो की डाक।

दोयसे'क–वि० दो सौ के लगभग।

दोयेक–वि० [स० द्वि-एक] दो के लगभग।

दोरगी(गो)–देखो 'दुरगो'।

दोर–पु० १ एक प्रकार का आभूषण विशेष। [दोस्] २ हाथ, कर। ३ शक्ति, बल। ४ देखो 'दौर'।

दोरउ–१ देखो 'डोरो'। २ देखो 'दो'रो'।

दोरडी–स्त्री० डोरी।

दोरडो–पु० डोरो।

दोरवंडण (न)–पु० दृढ व मजबूत भुजा।

दोरप, दोरम–स्त्री० १ तकलीफ, कष्ट, पीडा। २ वियोग। ३ अभाव जन्य दुःख।

दोराणी–देखो 'देराणी'।

दोराई–स्त्री० तकलीफ, कष्ट, पीडा। असुविधा।

दो'राणो (बो)–क्रि० १ किसी कार्य या बात की पुनरावृत्ति करना। २ कोई बात समझा कर पुन कहना। ३ दो तह करना।

दोरायतो–पु० एक प्रकार का घोडा।

दोरावणो (बो)–देखो 'दो'राणो' (बो)।

दोरी–१ देखो 'डोरो'। २ देखो 'दो'रो'।

दोरीओ–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

दोरुखो–वि० [फा०] (स्त्री० दोरुखी) १ दोनो पक्षो की ओर रुख रखने वाला। २ दोनो ओर समान स्थिति वाला। ३ दो तरह की विचार-धारा वाला। ४ दोनो ओर भिन्न रगो वाला। –पु० स्वर्णकारो का एक औजार।

दो'रो–वि० [स० दु खधर] (स्त्री० दो'री) १ पीड़ित, दु खी, कष्ट मे। २ व्याकुल, विकल, बेचैन। ३ असुविधा या परेशानी की स्थिति मे। ४ असह्य, दुष्कर। ५ कठिन, मुश्किल। ६ उदास, खिन्न, दु'खी, अप्रसन्न। ७ अप्रिय, कटु कर्कस। ८ नाराज। ९ अधिक मेहनत या श्रम वाला। १० जिसे साधना या काबू करना कठिन हो। ११ सकट पूर्ण। –क्रि० वि० निरुत्साही-होकर।

दोलक–देखो 'ढोलक'।

दोलड़ो (डो)–वि० [स० द्वि+लटिक] १ दो लडो वाला। २ दोहरा। ३ मोटा।

दोळलो–वि० (स्त्री० दोळली) पास का, इर्द-गिर्द का।

दोळा–क्रि० वि० चारो ओर, इर्द-गिर्द।

दोळाजत्र–पु० अर्क निकालने का एक यत्र विशेष। (वैद्यक)

दोळाजुध–पु० [स० दोलायुद्ध] हार-जीत का निर्णय शीघ्र न हो सके, ऐसा युद्ध।

दोळी–क्रि० वि० चारो ओर, इर्द-गिर्द। –वि० समीप, निकट, पास।

दोळीकियो–पु० १ आभूषणो मे खुदाई करने का एक औजार। २ पैर की अगुली का एक आभूषण विशेष।

दोळू, दोळू–पु० १ दात, दत। २ देखो 'दोळो'।

दोळै–क्रि० वि० इर्द-गिर्द, चारो ओर।
दोलोत्सव–पु० [स०] फाल्गुण मास की पूर्णिमा का, वैष्णवो का एक त्यौहार।
दोळौ–वि० (स्त्री० दोळी) समीप, पास, निकट। –क्रि० वि० इर्द-गिर्द, चारो ओर।
दोवड, दोवडियौ–स्त्री० [स० द्वि-पट] १ दो पट की चादर दोहरी चादर। २ देखो 'दोवडौ'। —**चौवड**–पु० दो या चार तह वाला। दुगुना-चौगुना।
दोवडी–वि० १ दो तह की। २ दुहरी। ३ दो लडोवाली। ४ दो प्रकार की। ५ दुगुनी। –स्त्री० दो तह किया हुआ वस्त्र। —**ताजीम**–स्त्री० सरदारो या सामन्तो को दिया जाने वाला सम्मान (जोधपुर)।
दोवडौ–वि० [स० द्वि+पट] (स्त्री० दोवडी) १ दो तह का, दोहरा। २ जिसमे दो लडे हो। ३ दो प्रकार का। ४ द्वि, दो। ५ दोनो ओर का। ६ दुगुना। –पु० दो तह को सी कर तैयार किया वस्त्र।
दोवडो-कुरब, (कुरव)–देखो 'दोवडी-ताजीम'।
दोवटी–स्त्री० [स० द्वि-पट] १ दो पट का वस्त्र। २ दुपट्टा। ३ धोती। ४ एक प्रकार का बिछौना, आसन (मेवाड)। ५ एक प्रकार की मिठाई।
दोवणिया–पु० व व मृतक के बारहवें दिन अशौच निवारणार्थ पानी से भरे जाने वाले बारह घटक।
दोवणियौ–पु० १ दूध दूहने का पात्र। २ मृतक के बारहवें दिन अशौच निवारणार्थ जल भर कर कुटुम्बी को दिया जाने वाला मिट्टी का छोटा घडा। –वि० दूहने वाला।
दोवणौ (बौ)–देखो 'दुहणौ' (बौ)।
दोवळी–त्रि० वि० १ इर्द-गिर्द, चारों ओर। २ दो ओर। ३ दो बार।
दोवा, दोवाई–वि० [स० द्वि] दोनो।
दोवाई–देखो 'दूवारी'।
दोवाणौ (बौ), दोवावणौ (बौ)–देखो 'दुवाणौ' (बौ)।
दोवारी–देखो 'दूवारी'।
दोवै–वि० [स० द्वि] दोनो।
दोस–पु० [स० दोष] १ अवगुण, ऐब। २ बुराई, खराबी। ३ कलक, लाञ्छन। ४ आरोप, अभियोग। ५ अपराध, कसूर। ६ कमी। ७ अशुद्धि। ८ पाप। ९ दुष्परिणाम। १० रोग। ११ त्रिदोष। १२ खण्डन। १३ साहित्यिक अवगुण। १४ नव्य न्याय की त्रुटि। १५ आठ वसुओ मे से एक। १६ तीन की सख्या*। १७ दश की सख्या*। १८ देखो 'दो'। —**ग्राही**–पु० दुष्ट, दुर्जन। —**जांण**–पु० वैद्य, हकीम, चिकित्सक। दोषो का ज्ञाता।
दोसण–वि० [स० दोपण] १ दोष उत्पन्न करने वाला। दोष-जनक। २ देखो 'दूसण'। ३ देखो 'दोस'।
दोसत–पु० [फा० दोस्त] १ मित्र, सखा। २ प्रेमी, स्नेही। —**दार**–पु० मित्र, स्नेही। —**दारी**–स्त्री० दोस्ती, मित्रता।
दोसतानौ–वि० [फा० दोस्ताना] मित्रता का, दोस्ती का। मित्रता जैसा। –पु० १ मित्रता, दोस्ती। २ मित्रता जैसा व्यवहार।
दोसती–स्त्री० [फा० दोस्ती] १ मित्रता, दोस्ती। २ प्रेम सबध।
दोसपौ–देखो 'दोयसपी'।
दोसहटी–स्त्री० [स० दौष्यिक+हट्ट] कपडा बाजार।
दोसा–स्त्री० [स० दोषा] १ रात्रि, रात। २ सध्या। ३ भुजा, बाहु। —**कर**–पु० चन्द्रमा, शशि।
दोसी–पु० [स० दौष्यिक] कपडे का व्यापारी। –स्त्री० सखी, सहेली (मेवात)। –वि० [स० दोषिन्] १ जिसमे ऐब या बुराई हो, ऐबी। २ कसूरवार, अपराधी। ३ पापी। ४ मुजरिम, अभियुक्त। ५ दुष्ट। ६ भ्रष्ट। ७ अपवित्र।
दोसूती–स्त्री० [स० द्वि+सूत्र] दुहरे ताने का बना वस्त्र।
दोसौ–देखो 'दोस'।
दोस्त–देखो 'दोसत'।
दोस्तदार–देखो 'दोसतदार'।
दोस्तदारी–देखो 'दोसतदारी'।
दोस्ती–देखो 'दोसती'।
दोह–१ देखो 'दो'। २ देखो 'दोस'। ३ देखो 'दोख'।
दोहखी–देखो 'दोखी'।
दोहग (ग्ग, ग्गु, ग्गू)–पु० [स० दौर्भाग्य] १ वियोग जनित दुःख। २ दुर्भाग्य। ३ वैधव्य। ४ सकट, विपत्ति।
दोहडउ–वि० [स० द्रोहाट] द्रोह रखने वाला, ईर्ष्यालु द्रोही, शत्रु।
दोहण–पु० [स० दोहनम्] १ दूहने की क्रिया या भाव। २ दोहन। ३ दुश्मन।
दोहणी–स्त्री० [स० दोहनी] १ दूहने की क्रिया या भाव। २ दूध दूहने का पात्र। ३ हडिया। ४ मृतक के बारहवें दिन भरा जाने वाला छोटा घटक। ५ देखो 'दूवणी'।
दोहणौ (बौ)–देखो 'दूवणौ' (बौ)।
दोहती–देखो 'दोहिती'।
दोहतौ–१ देखो 'दोहयौ'। २ देखो 'दोहितौ'। (स्त्री० दोहती)
दोहथीकरौती–स्त्री० दो व्यक्तियो द्वारा चलाई जाने वाली बडी आरी।
दोहथौ–वि० [स० द्वि-हस्त] १ दो हाथो वाला। २ दो हत्थो वाला।
दोहर-कूटौ–पु० सासियो का एक जातीय दण्ड विधान।

दोहरीपट–स्त्री० कुश्ती का एक पेच।

दोहरीसखी–स्त्री० कुश्ती का एक पेच।

दोहरौ–वि० [स० द्वि-हर] (स्त्री० दोहरी) १ दो परत का, दो पटका। २ दुगुना। ३ दोनो पक्ष का, दोनो ओर का। ४ दोनो ओर झुकने वाला। ५ देखो 'दो'रौ'।

दोहलउ–पु० [स० दोहल] इच्छा, अभिलाषा, चाह।

दोहलौ–देखो 'दूहौ'।

दोहा–वि० [स० द्वि] दोनो, उभय।

दोहाई–१ देखो 'दुहाई'। २ देखो 'दूवारी'।

दोहाग–देखो 'दुहाग'।

दोहागण, दोहागिण, दोहागिणि–देखो 'दुहागण'।

दोहाणौ (बो), दोहावणौ (बो)–देखो 'दुवाणौ' (बो)।

दोहारी–देखो 'दूवारी'।

दोहाळ-कुडळियौ–पु० कुंडलिया छंद का एक भेद।

दोहाळौ–१ देखो 'दुआळौ'। २ देखो 'दोहिलौ'। ३ देखो 'दुहेलौ'। ४ देखो 'द्वालौ'।

दोहि–वि० दोनो।

दोहिता–देखो 'दुहिता'।

दोहिती (त्री)–स्त्री० [स० दोहित्री] पुत्री की पुत्री, नातिन।

दोहितौ (त्रौ)–पु० [स० दोहित्र] पुत्री का पुत्र, पुत्री का वेटा।

दोहिलउ दोहिलु, दोहिलु, वोहिलू, दोहिलू दोहिलौ–वि० [स० दुःख] (स्त्री० दोहिली) १ दुःखी, पीडित। २ कठिन, मुश्किल। ३ खिन्न, उदास। ४ दुष्कर। ५ विकट, भयकर। ६ नाराज।

दोही–वि० [स० द्वि] दोनो।

दोहीत, दोहीतरौ, दोहीतौ, दोहीअउ, दोहीत्रौ–देखो 'दोहितौ'।

दोहुवै,– दोहू–वि० [स० द्वि] दोनो।

दोहौ–देखो 'दूहौ'।

दौं–स्त्री० [स० दावाग्नि] दावाग्नि।

दौंनौं–पु० १ कूए की खुदाई। २ देखो 'दोनौं'।

दौ–पु० १ योद्धा, सुभट। २ युद्ध। ३ प्राण। ४ काम, कार्य। –वि० १ दरिद्र। २ देखो 'दो'।

दौड–स्त्री० [स० धोरू] १ भागना क्रिया। २ भग-दड। ३ द्रुतगति, वेग। ४ पहुच। ५ प्रयत्न, कोशिश। ६ परिश्रम, मेहनत। ७ आक्रमण, धावा। ८ देखो 'दौर'। —**धपाड, धूप, भाग**–स्त्री० दौडने भागने की क्रिया। कोशिश प्रयत्न।

दौडकौ–वि० (स्त्री० दौडकी) दौडने वाला, धावक।

दौडणौ (बौ)–क्रि० [स० धोरणम्] १ द्रुतगति से चलना, भागना। २ झपट कर जाना, आना। ३ कोशिश व प्रयत्न करना। ४ परिश्रम करना। ५ व्याप्त होना, छा जाना, फैलना। ६ चढ़ाई करना, आक्रमण करना। ७ लूटमार करना। ८ अपनी ओर से खूब काम करना। ९ जल्दी मचाना।

दौडा-दौड, दौडा-दौडी–स्त्री० १ दौडने भागने की क्रिया। २ भग-दड। ३ दौड-धूप। ४ हड वडी, आतुराई।

दौड़ाणौ (बौ) दौड़ावणौ(बौ)–क्रि० १ द्रुतगति से चलाना, भगाना। २ झपट कर जाने-आने के लिये प्रेरित करना। ३ प्रयत्न या कोशिश कराना। ४ परिश्रम कराना। ५ व्याप्त करना, फैलाना। ६ चढाई कराना, आक्रमण कराना। ७ लूटमार कराना। ८ जल्दी मचवाना। ९ खदेडना, निकाल वाहर करना।

दौडी–स्त्री० घोडे की टापो की ध्वनि।

दौड़ौ–पु० [अ० दौर] १ आक्रमण, धावा। २ समय-समय पर आना-जाना। ३ यात्रा, प्रवास। ४ निरीक्षण हेतु की जाने वाली यात्रा। ५ दिल पर पडने वाला वायु का दवाव, दिल का दौरा। ६ गश्त, फेरी। ७ रोग का आवर्तन, प्रभाव।

दौढ़–देखो 'डौढ'।

दौढ़ी–देखो 'डौढी'। —**दार**='डौढीदार'।

दौढौ–पु० [स० द्वि-अर्द्ध] १ एक डिंगल गीत विशेष। २ राजस्थानी का एक अन्य गीत। ३ देखो 'डौढौ'। —**कुडळियौ** –पु० कुडलिया छद का एक भेद।

दौनौं,दौनौ–१ देखो 'दूनौ'। २ देखो 'दोनौ'।

दौफार–देखो 'दोपहर'।

दौफारौ–देखो 'दोपारौ'।

दौयरद–देखो 'द्विरद'।

दौर–पु० [अ०] १ फेरा, चक्कर, भ्रमण। २ कालचक्र, दिनो का फेर। ३ प्रताप, प्रभाव, हुकूमत। ४ शान-शौकत। ५ आकार, ढग। ६ वढती का समय, अभ्युदय काल। ७ पहुंच। ८ पुरुषो की वेशभूषा। ९ वारी, पारी। १० देखो 'दोर'। ११ देखो 'दौड'। १२ देखो 'दौडौ'।

दौर-दौरौ–पु० [अ० दौर] अत्यधिक प्रभाव।

दौराणी–देखो देराणी'।

दौरान–पु० [अ०दौरान] १ चक्कर, फेरा। २ सिलसिला, क्रम। ३ फेरा, वारी। ४ कालचक्र। ५ दौरा। ६ वीच, मध्य। –क्रि० वि० वीच मे, दरम्यान।

दौरौ–देखो दौडौ'।

दौळ–क्रि० वि० चारो ओर, पार्श्व या वगल मे।

दौलत दौलति–स्त्री० [अ०] १ धन, सपत्ति। २ शासन, हुकूमत ३ जायदाद। ४ परिभ्रमण। ५ भाग्य, नसीव। —**खानौ**–पु० खजाना, कोप। निवासस्थान, घर। —**मद**–वि० धनवान। —**मदी**–स्त्री० सम्पन्नता। —**वंत, वान**–वि० धनवान, रईस, धनी, भाग्यशाली।

दौलती–वि० १ धनी, दौलतवाला। २ भाग्यशाली। ३ देखो 'दौलत'।
दौलेय–पु० [स०] १ कुमुद नामक एक दिग्गज। २ कछुआ।
दौवारिक–पु० [स०] द्वारपाल।
दौस्यिकापण–पु० [स० दौष्यिकापण] कपडे की दुकान, बजाज हाट, कपडा बाजार।
दौहित्र (त्रौ)–देखो 'दोहितौ'।
दौहित्री–देखो 'दोहिती'।
द्यउ–वि० [स० द्वि] एक और एक। दो, दोनो।
द्यणौ, (बौ)–देखो 'दैणौ' (बौ)।
द्याणू, द्याणौ–देखो 'दाहिणौ'। (स्त्री० द्याणी)
द्यामणौ–देखो 'दयावणौ'।
द्याडौ, द्याढ़ि–देखो 'दिवस'।
द्याळ, द्याळु–देखो 'दयालु'।
द्यावड–स्त्री० रहट के बीच बाधी जाने वाली डोरी, जतनी।
द्यु–पु० [स०] १ दिन। २ आकाश। ३ स्वर्गलोक। ४ सूर्य लोक। ५ अग्नि। ६ चमक।
द्युगण–पु० [स०] ग्रहो की मध्यगति के साधक अग, दिन।
द्युचर–पु० [स०] १ ग्रह। २ पक्षी।
द्युजा (ज्या)–स्त्री० [स०] अहोरात्र वृत्त की व्यास रूप ज्या।
द्युत–स्त्री० [स०] किरण।
द्युति–देखो 'दुति'।
द्युतिधर–देखो 'दुतिधर'।
द्युतिमत (मान)–देखो 'दुतिमान'।
द्युतिमा–स्त्री० प्रकाश, तेज, प्रभा।
द्युन–पु० [स०] लग्न से सातवा स्थान।
द्युनिस–पु० [स० द्युनिश] अहर्निश, रातदिन।
द्युपति–पु० [स०] सूर्य, इन्द्र।
द्युम–पु० [स०] आकाशचारी पक्षी।
द्युमण–पु० [स० द्युम्न] धन, द्रव्य।
द्युमणि–पु० [स०] १ सूर्य, रवि। २ मदार। ३ शुद्ध ताबा।
द्युलोक–पु० [स०] स्वर्ग लोक।
द्यूत–पु० [स०] जुआ।
द्यूतभेद–पु० [स०] ७२ कलाओ मे से एक।
द्यूतविसेस–पु० ६४ कलाओ मे से एक।
द्यून–पु० [स०] लग्न स्थान से सातवी राशि।
द्योढ़–पु० [स०] १ स्वर्ग। २ आकाश, व्योम। ३ शत पथ ब्राह्मण।
द्योरांणी–देखो 'देराणी'।
द्योस–देखो 'दिवस'।
द्यौ–वि० [स० द्वि] दो, दोनो।

द्रग द्रगड़ौ–पु० [स० द्रग] १ नगर, शहर। २ देखो 'दुरग'। ३ देखो 'द्रग'।
द्रंगी–पु० एक प्रकार का घोडा।
द्रउडणौ, (बौ)–देखो 'दौडणौ' (बौ)।
द्रकक्षेप (खेप)–पु० [स० दृक् क्षेप] १ दृष्टिपात, अवलोकन २ दशम लग्न के नताश की भुजज्या।
द्रकनति–स्त्री० [स० दृङ् नति] एक याम्योत्तर सस्कार विशेष।
द्रकपथ–पु० [स० दृक पथ] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुच।
द्रकपात–पु० [स० दृक्पात] दृष्टि पात, अवलोकन।
द्रकस्रति–पु० [स० दृक् श्रुति] साप, सर्प।
द्रखद–पु० [स० दृषद] पत्थर, पाषाण।
द्रग–पु० [स० दृश्] १ आख, नेत्र, लोचन। २ दृष्टि, नजर। ३ बोध, ज्ञान। ४ दो की सख्या※।
द्रगपाळ–देखो 'दिग्पाळ'।
द्रगगोचर–वि० [स० दृग्गोचर] आख से दिखने वाला, दृष्टि मे आने वाला।
द्रग्गोळ-पु० [स० दृग्गोल] ग्रह सबधी एक वृत्त विशेष।
द्रग्ज्या–स्त्री० [स० दृग्ज्या] ज्योतिष मे एक 'ज्या' विशेष।
द्रगलवण (न)–पु० [स० दृग्लम्बन] ग्रहण सबधी एक सस्कार।
द्रजीत–देखो 'इद्रजीत'।
द्रजोण–देखो 'दुर्योधन'।
द्रठा–स्त्री० [स० दृश्य] आख, नयन।
द्रठि–देखो 'द्रस्टि'।
द्रढ़–वि० [स० दृढ] १ कसकर बधा हुआ, कसा हुआ, प्रगाढ। २ पक्का, मजबूत। ३ कडा, ठोस, कठोर। ४ बलवान, बलिष्ठ, पुष्ट। ५ अविचलित, अटल। ६ स्थाई, चिर-स्थायी। ७ निडर, साहसी। ८ ध्रुव, निश्चित। ९ ढीठ। १० स्थापित। ११ अचचल। १२ घना। १३ टिकाऊ। १४ विश्वस्त। १५ आन पर अडने वाला। –पु० १ विष्णु। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३ लोहा। ४ तेरहवा मनु। —**करमौ**–वि० धैर्यवान। साहसी। —**मूठी**–वि० कजूस, कृपण।
द्रढ़णौ (बौ)–क्रि० [स० द्रढ्] १ मजबूत करना, पक्का करना। २ गाढा करना। ३ पुष्ट होना, मोटा होना। ४ कड़ा होना।
द्रढ़तरु–पु० स० [स० दृढतरु] धव का पेड।
द्रढ़ता–स्त्री० [स० दृढता] १ दृढ होने की अवस्था या भाव। २ पक्कापन। ३ मजबूती। ४ स्थिरता, अटलता। ५ धैर्य।
द्रढ़नाम–पु० [स० दृढ नाम] अस्त्रो की एक रोक।
द्रढ़नेत्र–पु० [स०] विश्वामित्र का एक पुत्र।
द्रढ़नेमि–वि० [स०] जिसकी धुरी मजबूत हो।
द्रढ़न्वौ–वि० [सं० दृढ धन्वन्] धनुष चलाने मे निपुण।

द्रढ़ब्रत्ती–पु० [स० दृढव्रती] भीष्म पितामह ।
द्रढ़भूमि–स्त्री० [स० दृढ भूमि] एक योगाभ्यास विशेष ।
द्रढ़मन्न–वि० [स० दृढ मन] स्थिर चित्त का, दृढ ।
द्रढ़लोम–वि० [स० दृढ लोमन्] कड़े लोम वाला –पु० सूअर ।
द्रढ़वत–वि० [स० द्रढवत] १ दृढ, स्थिर । २ वीर, सुभट ।
द्रढ़वरमा–पु० [स० दृढ वर्म्मन] धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
द्रढ़वाळी–स्त्री० दृढता स्थिरता ।
द्रढ़व्य–पु० [स० दृढ़व्य] १ एक ऋषि । २ दृढता ।
द्रढ़व्रत–पु० [स० दृढव्रत] स्थिर सकल्प ।
द्रढस्यु–पु० [स० दृढ़स्यु] अगस्त्य ऋषि का एक पुत्र ।
द्रढ़ाग–वि० [स० दृढाग] हृष्ट-पुष्ट, पुष्ट अगी । मोटा-ताजा ।
द्रढ़ा–वि० [स० दृढा] शक्तिशाली, बलवान, मोटी-ताजी ।
द्रढ़ाणो–क्रि० [स०द्रढ] १ दृढ़ करना, मजबूत करना । २ पक्का, करना, निश्चित करना ।
द्रढ़ाव–पु० [स०दृढ] १ दृढता, स्थिरता,मजबूती । २ अडिगता ।
द्रढ़ावणो (बो)–देखो 'द्रढाणो' (बो) ।
द्रढ़ासण (न)–पु० [स० दृढासन] एक योगासन विशेष ।
द्रढासु–पु० [स०] एक सूर्यवशी राजा ।
द्रढ़ै–क्रि० वि० [स० दृढ] दृढ़ता से ।
द्रतहर–पु० [स० द्रतिहरि] १ बैल । २ पानी ढोने वाला पशु ।
द्रप–वि० [स० दर्प] घमडी ।
द्रपक–पु० [स० दर्पक] कामदेव ।
द्रपतयौ–पु० काव्य छद का एक भेद ।
द्रब–१ देखो 'द्रव्य' । २ देखो 'द्रव' ।
द्रबउझेळ–वि० दातार ।
द्रबकणो (बो)–क्रि० कापना ।
द्रबडणो (बो)–देखो 'दौडणो' (बो) ।
द्रबडाणो (बो), द्रबडावणो (बो)–देखो 'दौडाणो' (बो) ।
द्रबत्रिया–स्त्री० [स० द्रव्य स्त्री] वेश्या, गणिका ।
द्रब्ब–देखो 'द्रव्य' ।
द्रब्बघर–पु० [स० द्रव्य-गृह] खजाना, भण्डार, कोष ।
द्रमकणो (बो)–देखो 'दमकणो (बो) ।
द्रमको–पु० धमाका, गर्जना ।
द्रम–पु० १ प्रचण्ड वायु । २ वायु का झोका । ३ मरु प्रदेश । ४ मरु प्रदेश की बालू रेत । [स० द्रम्भ] ५ एक तौल या नाप विशेष । ६ देखो 'द्रुम' ।
द्रमकणो (बो)–देखो 'दमकणो' (बो) ।
द्रमणारजुन–पु० [स० द्रुम-अर्जुन] अर्जुन नामक वृक्ष ।
द्रमद्रमणो (बो)–देखो 'दमकणो' (बो) ।
द्रमद्रमाटि–स्त्री० नगाडे आदि वाद्यो की ध्वनि ।
द्ररोळ–देखो 'दरोल' ।
द्रव–पु० [स० द्रव] १ पानी आदि की तरह पतला तरल पदार्थ । २ भ्रमण । ३ गति । गमन । ४ द्रवत्व । –वि० १ दौडने वाला । २ टपकने या चूने वाला । ३ बहने वाला । ४ तरल । ५ पिघला हुआ ।
द्रवड–देखो 'द्रविड' ।
द्रवण–पु० १ बहाव गति, द्रवत्व । [स० द्रुम] २ कल्पवृक्ष । –वि० १ देने वाला । २ दया करने वाला । ३ देखो 'द्रविण' ।
द्रवणो (बो)–क्रि० १ द्रवीभूत होना, पसीजना, दया करना । २ विनम्र होना । ३ पिघलना ।
द्रविड–पु० [स०] १ दक्षिण भारत का एक प्रान्त । २ उक्त प्रान्त का निवासी । ३ आर्यों की तरह भारत की एक प्राचीन मानव जाति । ४ अनार्य ।
द्रविण–पु० [स०] १ धन, सपत्ति । २ सोना, हेम । ३ शक्ति, बल, पराक्रम । ४ काम के पाच बाणो मे से एक । ५ वस्तु, पदार्थ ।
द्रविणो (बो)–देखो 'द्रवणो' (बो) ।
द्रवेण–देखो 'द्रविण' ।
द्रव्य–पु० [सं०] १ गुण एवं क्रिया वाला पदार्थ, वस्तु । २ धन, दौलत, सम्पत्ति । ३ सामान, सामग्री । ४ औषधि, दवा । ५ पीतल । ६ गोद । ७ शराब, मदिरा । ८ गुणो का समूह । ९ शील । १० कासा, फूल । ११ दाव, होड । १२ नौ की सख्या* । —उनोदरी–स्त्री० वर्तन, उपकरण —निक्षेप–पु० किसी पदाथ का व्यवहार विशेष । —पति –पु० धनवान व्यक्ति । पदार्थ का अधिपति । —वत, वान –वि० धनी, धनाढ्य ।
द्रव्याधीश–पु० [स०] १ कुबेर । २ कोषाधिकारी ।
द्रव्व–देखो 'द्रव्य' ।
द्रसट–पु० [स० दृष्ट] १ नेत्र, नयन, आख । २ दृष्टि, नजर । –वि० १ देखा हुआ । २ जाना हुआ । ३ प्रकट, ज्ञात ।
द्रसद–देखो 'द्रखद' ।
द्रस्टकूट–पु० [स० दृष्ट कूट] पहेली ।
द्रस्टात, द्रस्टाति–पु० [स० दृष्टात] १ उदाहरण, नमूना । २ उदाहरण, मिसाल । ३ स्वप्न, सपना । ४ ऋतुस्नाता स्त्री का पुरुष दर्शन । ५ शास्त्र । ६ मरण । ७ एक अर्थालकार विशेष । ८ विज्ञान ।
द्रस्टा–वि० [स० दृष्टा] १ देखने वाला । २ साक्षात्कार करने वाला । ३ दर्शक । ४ प्रकाशक ।
द्रस्टि–स्त्री० [स० दृष्टि] १ आख की ज्योति, देखने की शक्ति, नजर । २ देखने की क्रिया या वृत्ति, अवलोकन । ३ ध्यान देखने की तत्परता । ४ देखने मे प्रवृत्त आख । ५ दृष्टि प्रसार, दृक् पथ । ६ पहचान, परख । ७ अदाज अनुमान । ८ कृपादृष्टि । ९ उम्मीद, आशा । १० टकटकी ।

११ नीयत, उद्देश्य । १२ दृष्टि दोष, कुदृष्टि । —गोचर–पु० देखने लायक । जो देखा जा सके, दिखने वाला । —फळ–पु० ग्रहो का प्रभाव । —मान–वि० ग्राख वाला । दृष्टि वाला । —वत–वि० दृष्टा । ज्ञानी । सूझवाला । नजर वाला । —वाद–पु०प्रत्यक्ष प्रमाण की प्राधनता वाला सिद्धान्त । जैनियो के बारह ग्रगो में से एक । —स्थान–पु० ज्योतिप मे कु डली का एक स्थान ।

द्रह–पु० [स० ह्रद] १ गहरे जल वाला स्थान, दह । २ नदी या जलाशय का मध्य भाग । ३ नदी के बीच गहरा गड्ढा । ४ ताल, झील, ह्रद ।

द्रहद्रहणौ (बौ)–क्रि० वाद्य का वजना, ध्वनि होना ।

द्रहद्रहवार–स्त्री० [स० जयद्रथ वेला] सध्या काल ।

द्रहद्रहणौ (बौ)–क्रि० वाद्य ध्वनि होना, वजना ।

द्रदद्रहाट (टि)–स्त्री० वाद्य ध्वनि ।

द्रदवट्ट (बट्टा), द्रहवाट, द्रहवट, (वाट)–वि० १ पराजित । २ तितर-वितर । ३ देखो 'दहवाट' ।

द्राक–ग्रव्य० [स० द्राक्] १ शीघ्र, तुरत । २ देखो 'दाख' ।

द्राक्ष, द्राक्षा, द्राख–देखो 'दाख' ।

द्राखणौ (बौ)–देखो 'दाखणौ' (बौ) ।

द्रागडौ–पु० चोरी या डाका डालने वाला, मीणाग्रो का दल ।

द्राव–पु० [स० द्राव] १ पलायन, प्रस्थान । २ दौड-भाग । ३ देखो 'ध्राव' ।

द्रावक–वि० [स०] (स्त्री० द्रावकी) १ द्रव रूप मे करने वाला । २ पिघलाने या गलाने वाला । ३ बहाने वाला । ४ लपट, लवार । –पु० १ चन्द्रकान्त मणि । २ तरल रूप करने वाला पदार्थ । ३ चोर । ४ चतुर व्यक्ति । ५ सुहागा । ६ चुम्बक पत्थर । ७ मोम ।

द्रावड, (ड)–देखो 'द्राविड' ।

द्रावण–पु० [स०] १ भगाने का कार्य । २ द्रवीभूत करने का काम । ३ कामदेव के पांच बाणो मे से एक । ४ पिघलाने का कार्य ।

द्राविड–पु० [स०] १ द्रविड देश का वासी । २ द्रविड देश ।

द्राविडगौड–पु० [स०] एक राग विशेष ।

द्राविडी–स्त्री० [स०] १ छोटी इलायची । २ द्रविड स्त्री । –वि० द्रविड सवधी ।

द्रासक–देखो 'दहसत' ।

द्रिग,द्रिगन–स्त्री० १ वहत्तर कलाग्रो मे से एक । २ देखो 'द्रग' ।

द्रिगपाळ–देखो 'दिग्पाल' ।

द्रिठ, द्रिठी–देखो 'द्रस्टि' ।

द्रिढ़–देखो 'द्रढ' ।

द्रिढता–देखो 'द्रढता' ।

द्रियाव–देखो 'दरियाव' ।

द्रिव–१ देखो 'द्रव्य' । २ देखो 'द्रव' ।

द्रिस्टद्यु मन, द्रिस्टद्यु मनि–देखो 'ध्रस्टद्यु म्न' ।

द्रिस्टात-देखो 'द्रस्टात' ।

द्रिस्टि वंध विद्या–स्त्री० [स० दृष्टि वंध-विद्या] नजर वंदी की विद्या ।

द्रिस्टियुद्ध–पु० [स० दृष्टियुद्ध] ७२ कलाग्रो मे से एक ।

द्रिस्टिसूळ–पु० [स० दृष्टिशूल] नेत्रो का एक रोग ।

द्रिस्य–वि० [स० दृश्य] १ देखने लायक, देखने योग्य । २ दिखने वाला, जो सहज ही दिखाई दे । ३ जानने योग्य, ज्ञेय । ४ सुन्दर, मनोहर । –पु० १ देखी जाने वाली वस्तु । २ दिखने वाला वातावरण । ३ प्राकृतिक सौन्दर्य का स्थल ४ मनोरजक व्यापार, तमाशा । ५ नाटक ग्रादि का कोई दृश्य । ६ ज्ञात या दी गई सख्या ।

द्रिहंग द्रिहगसि–स्त्री० ढोल की ग्रावाज ।

द्रीयौ–पु० ऊट को पुकारने सवधी शब्द ।

द्रीवछड–स्त्री० ढोल ग्रादि की ग्रावाज ।

द्रीह–स्त्री० वाद्यो की भयकर ध्वनि ।

द्रु ग–देखो 'दुरग' ।

द्रु–पु० [स०] १ वृक्ष, पेड । २ वृक्ष की शाखा । ३ लकडी । ४ लकडी का उपकरण ।

द्रु घण–पु० [स०] १ लोहे का मुग्दर । २ परशु या फरशे के ग्राकार का एक शस्त्र । ३ कुठार, कुल्हाडी । ४ देखो 'दुहिण' ।

द्रु ण, द्रु णा, द्रु णि (णी)–पु० [स० द्रुण] १ धनुप, कमान । २ खड्ग । ३ विच्छु । ४ भृ गी कीट । ५ धनुप की डोरी । ६ कछुवी । ७ वाल्टी । ८ डोल । ९ कनखजुरा । १० कातर ।

द्रु त द्रु ति(ती)–वि० [स०]१ वेगवान, तेज, फुर्तीला । २ शीघ्र-गामी । ३ भागा हुग्रा । ४ द्रवीभूत । ५ तरल । ६ वहा हुग्रा । –क्रि० वि० जल्दी, तुरन्त, शीघ्र । तेजी से । –पु० १ कुछ तेज गति, लय । २ ताल की एक मात्रा का ग्राधा । ३ हल्की शराव । ४ विच्छु । ५ वृक्ष, पेड । ६ विल्ली । —गति–स्त्री० तेजचाल । –वि० शीघ्रगामी । —गामी–वि० शीघ्रगामी । —रासी–स्त्री० घटिया शराब । —विलबित–पु० एक वर्ण वृत्त । एक ताल विशेष ।

द्रु पद–पु० [सं०] १ उत्तर पाचाल का राजा । २ एक राग । ३ देखो 'ध्रु पद' ।

द्रु पदी–स्त्री०१ एक मात्रिक छद विशेष । २ पाडवों की धर्मपत्नी द्रौपदी ।

द्रु मडळ (ळि)–देखो 'ध्रु वमडल' ।

द्रु मग, द्रु म–पु० [स०द्रुम] १ वृक्ष,पेड । २ स्वर्ग का एक वृक्ष । —पत, पति–पु० कल्पवृक्ष । —पाळ–पु० पर्वत, पहाड ।

द्रुमग्रह–पु० देवल ।
द्रुमची–देखो 'दुमची' ।
द्रुमधूप–पु० [स०] वसत ।
द्रुमसार–पु० [स०] फूल ।
द्रुमामय–स्त्री० लाख, लाक्षा ।
द्रुमारि–पु० [स०] हाथी, गज ।
द्रुमालय–पु० [स०] जगल, वन ।
द्रुमिल–पु० [स०] १ नौ योगेश्वरो मे से एक। २ एक छन्द विशेष ।
द्रुमिला–पु० [स०] एक मात्रिक छन्द विशेष ।
द्रुम्म–देखो 'द्रुम' ।
द्रुयमणि–स्त्री० रुक्मिणी ।
द्रुहिण–देखो 'दुहिण' ।
द्रेठ, (ठि,ठी)–देखो 'द्रस्टि' ।
द्रेहड–देखो 'द्रह' ।
द्रोगी–वि० हतभागिनी, अभागिन ।
द्रोण–पु० [स० द्रोण] १ चार सौ वास लबी झील । २ जल से भरा वादल । ३ वनकाक । ४ विच्छु । ५ वृक्ष । ६ सफेद फूलो का पेड । ७ गुरु द्रोणाचार्य । ८ एक तौल विशेष । ९ कटौता । १० टव । ११ देखो 'द्रोण' ।
द्रोण (णु)–पु० [स०] १ पत्तो का दोना । २ लकडी का पात्र । ३ डोम कौआ । ४ एक प्रकार का रथ । ५ मेघो के नायक का नाम । ६ द्रोणाचल पर्वत । ७ द्रोणाचार्य । –वि० भयकर, भयावह । —**कळ**–पु० लकडी का एक पात्र । —**काक**–पु० वडा कौआ । —**गिर, गिरि**–पु० एक पर्वत का नाम । —**गुरु**='द्रोणाचारज' । -**धार**–पु० हनुमान । —**पुर**–पु० द्रोणाचार्य का शहर ।
द्रोणमी–स्त्री० धनुष की प्रत्यचा ।
द्रोणमुख–पु० [स०] ४०० ग्रामो की राजधानी ।
द्रोणागरद, (गिर, गिरि, गिरी)–देखो 'द्रोणगिरि' ।
द्रोणारिख, द्रोणाचारज, द्रोणाचारय–पु० [स० द्रोण ऋषि] द्रोणाचार्य ।
द्रोणि–पु० [स०द्रौणि] अश्वत्थामा का एक नाम ।
द्रोणी–स्त्री०[स०]१ द्रोणाचार्य की स्त्री, कृपी । २ नाव,नौका ।
द्रोणु–देखो 'दोणाचारय' ।
द्रोपत–१ देखो 'द्रुपद' । २ देखो 'द्रौपद' । ३ देखो 'द्रौपदी' ।
द्रोपता– देखो 'द्रौपदी' ।
द्रोपद–१ देखो 'द्रुपद' । २ देखो 'द्रौपद' । ३ देखो 'द्रौपदी' ।
द्रोपदजा, द्रोपदी–देखो 'द्रौपदी' ।
द्रोपदि–देखो 'द्रौपदी' ।
द्रोपां–देखो 'द्रौपदी' ।
द्रोव, द्रोवड, द्रोवडी–देखो 'दोव' ।

द्रोह–पु० [स०] १ प्रतिहिसा, वैर । २ ईर्ष्या, जलन, द्वेष । ३ अहित चिंतन । ४ उत्पात, उपद्रव, विप्लव । ५ विद्रोह । ६ अपराध । ७ विरोध ।
द्रोही–वि० [स० द्रोहिन] विद्रोह करने वाला, उत्पात मचाने वाला । ईर्ष्या करने वाला । –पु० शत्रु, वैरी ।
द्रौणि–देखो 'द्रोणि' ।
द्रौपत, द्रौपद–पु० [स० द्रौपद] १ राजा द्रुपद का पुत्र । २ देखो 'द्रौपदी' ।
द्रौपदी (अ)–स्त्री० [स०] राजा द्रुपद की पुत्री व पाडवो की स्त्री, कृष्णा । –वि० कृष्ण, काली, श्याम ।
द्रौपदेय–पु० [स०] द्रौपदी का पुत्र ।
द्रौह–देखो 'द्रोह' ।
द्वद, द्वद्व–देखो 'दुद' ।
द्वद्वचारी–पु० [स०] चकवापक्षी ।
द्वद्वज–पु० [स०] १ राग द्वेष से उत्पन्न मनोवृत्ति । २ त्रिदोष से उत्पन्न रोग ।
द्वद्वर, द्वंध–देखो 'दुद' ।
द्वद्वजुध–पु० दो योद्धाओ का युद्ध, कुश्ती ।
द्वजराज–देखो 'दुजराज' ।
द्वाई–देखो 'दुहाई' ।
द्वाज–पु० [स०] जारज पुत्र ।
द्वात–देखो 'दवात' ।
द्वादस–वि० [स०] १ दश व दो, वारह । २ ग्यारह के वाद वाला । —**आतम, आत्मा**–स्त्री० सूर्य, आदित्य । —**कर**– –पु० स्वामि कार्त्तिकेय । गुरु वृहस्पति । —**चख, लोचन** । –पु० स्वामि कार्त्तिकेय ।
द्वादसक–वि० [स० द्वादशक] वारह का ।
द्वादसतूरय निनाद–पु० वारह वाद्यो की ध्वनि ।
द्वादसभाव–पु० [स० द्वादशभाव] जन्म कुडली मे एक स्थान ।
द्वादसवारसिक–पु० [स० द्वादशवार्षिक] ब्रह्म हत्या के प्रायश्चित मे वारह वर्ष तक किया जाने वाला व्रत ।
द्वादससुद्धि–स्त्री० [स० द्वादश शुद्धि] तत्रोक्त वारह प्रकार की शुद्धिया ।
द्वादसाग–पु० [स० द्वादशाग] जैनियो का एक ग्रथ सग्रह । २ वारह द्रव्यो का एक धूप विशेष ।
द्वादसि (सी)–स्त्री० [स० द्वादशी] मास के प्रत्येक पक्ष की वारहवी तिथि ।
द्वादसो–पु० १ मृतक का वारहवा दिन । २ इस दिन का सस्कार व भोज ।
द्वापर, द्वापुर (रि)–पु० [स० द्वापर] सतयुग आदि चार युगो मे से एक ।

द्वार–पु० [स०] १ दरवाजा, द्वार। २ दरवाजे के कपाट। ३ मुख, छिद्र, मुहाना। ४ इन्द्रियो के मार्ग। ५ उपाय, साधन, जरिया। ६ रास्ता, निकास।

द्वारका–स्त्री० [स०] गुजरात की एक प्राचीन नगरी। —**धीस**–पु० श्रीकृष्ण।

द्वारकेस–पु० [स०] श्रीकृष्ण।

द्वारपाळ (पाळक)–पु० [स० द्वारपाल] १ द्वाररक्षक, ड्योढीदार, दरबान। २ द्वार पर स्थित देवता। ३ सरस्वती के तट का एक तीर्थ।

द्वाररोकाई–स्त्री० एक वैवाहिक रस्म।

द्वारवती, द्वारामत, (मती,मत्त,मत्ति,वत्ति,वत्ती)–देखो 'द्वारका'।

द्वा॑र–देखो 'द्वार'।

द्वारिक–पु० [स०] द्वारपाल।

द्वारिका–देखो 'द्वारका'।

द्वारी–स्त्री० छोटा द्वार, बारी, खिडकी।

द्वारौ–पु० १ छोटा द्वार, दरवाजा। २ साधुग्रो का स्थान।

द्वाळौ–पु० गीत के चार चरण का समूह।

द्वि–वि० [स०] दो। दोनो। –स्त्री० दो की सख्या।

द्विक–पु० [स०] कौग्रा, काक।

द्विकरमक–वि० [स० द्विकर्मक] जिसके दो कर्म हो।

द्विकळ–स्त्री० [स० द्विकला] दो मात्रा का समूह।

द्विगु–पु० [स०] एक प्रकार का समास भेद।

द्विगुण–वि० [स०] १ दुगुना, दूना। २ दो गुणो वाला।

द्विज–पु० [स०] १ ब्राह्मण। २ नारद। ३ वशिष्ठ। ४ पक्षी। ५ सर्प। ६ दात। ७ दो बार उत्पन्न हुग्रा जीव। ८ डगण के पाचवें भेद का नाम। ९ दो की सख्या॰। १० देखो 'दुज'। –वि० दो बार जन्मा हुग्रा। —**पति**='दुजपति'। —**राज, राय**='दुजराज'।

द्विजन्म–पु० [स०] १ दूसरा जन्म, पुनर्जन्म। २ ब्राह्मण। ३ यज्ञोपवीत धारण करने वाला। –वि० दो बार जन्मा हुग्रा।

द्विजवाहन–पु० [स०] विष्णु।

द्विजा–स्त्री० [स०] ब्राह्मणी।

द्विजाग्रज–पु० [स०] ब्राह्मण।

द्विजाति–देखो 'दुजाति'।

द्विजेद्र–देखो 'दुजेम'।

द्वितीय, (यौ)–वि० [स०] दूसरा। –पु० दूसरा पुत्र। भागीदार साझीदार।

द्विदळ–वि० [स० द्विदल] १ दो दल वाला। २ दो पत्तो वाला ३ दो खण्डो का जुडा हुग्रा। –पु० दो दल का ग्रन्न, दाल।

द्विदेह–पु० [स०] गणेश, गजानन।

द्विद्वादस–पु० राशियो का मेल।

द्विधा–क्रि० वि० [स०] दो प्रकार से, दो तरह से, दो भागो मे।

द्विधातु–वि० [स०] दो धातु का बना। –पु० गणेश।

द्विप–पु० [स०] हाथी, गज।

द्विपदी–वि० [सं०] दो पावो वाला। –पु० १ एक प्रकार का चित्र काव्य। २ दो पदो का छन्द या गीत।

द्विपादपारस्वासन–पु० [स० द्विपाद पार्श्वासन] योग के चौरासी ग्रासनो मे से एक।

द्विपायी–पु० [स०] हाथी।

द्विपास्य–पु० [स०] गणेश।

द्विपुस्कर–पु० [स० द्विपुष्कर] ज्योतिष का एक योग।

द्विप्प–देखो 'द्विप'।

द्विभासी–देखो 'दुभासी'।

द्विभुज–वि० [स०] दो भुजा वाला। –स्त्री० दो भुजाएँ।

द्विभूमिक–पु० [स०] दो मजिला। दो तल्ला।

द्विमात्र–पु० [स०] दो मात्राग्रो का वर्ण। दीर्घ वर्ण।

द्विमात्रज, द्विमात्रिज–पु० [स०] १ गणेश। २ जरासध।

द्विरद–पु० [स०] १ हाथी, गज। २ दुर्योधन का एक भाई। ३ पुरुषो की ७२ कलाग्रो मे से एक। –वि० दो दातो वाला।

द्विरदासन–पु० [स० द्विरदाशन] सिंह।

द्विरसन–पु० [स०] सर्प, साप।

द्विरागमन–पु० [स०] १ पुनरागमन। २ वधू का दुबारा ग्रागमन।

द्विरेफ–पु० [स०] १ भौरा, भ्रमर। २ वर्र।

द्विविद–पु० [स०] राम की सेना का एक सेनापति।

द्विसरीर–पु० [स० द्विशरीर] १ ज्योतिष मे कन्या, मिथुन, धनु, ग्रौर मीन राशिया। २ गणेश।

द्वीप–पु० [स०] १ चारो ग्रोर जल से गिरा भू भाग, टापू। २ समुद्र के बीच बसा देश, प्रदेश। ३ पृथ्वी के सात बडे विभाग। ४ देश, प्रदेश। ५ सात की सख्या॰। ६ देखो 'दीप'।

द्वेख–पु० [स० द्वेष] १ ईर्ष्या, डाह। २ विरोध, वैर,। ३ क्रोध गुस्सा। —**क**–पु० शत्रु।

द्वेमातर–देखो 'द्विमात्रिज'।

द्वेस–पु० [स० द्वेष] १ ईर्ष्या, डाह, जलन। २ मन की ग्ररुचिकर बात, ग्रप्रिय घटना। ३ विरोध, वैर। ४ क्रोध, गुस्सा।

द्वेसी–वि० [स० द्वेषी] १ ईर्ष्यालु। २ विरोधी। ३ क्रोधी।

द्वै–वि० [स० द्वे] दो, दोनो। —**ग्रक्खरी, ग्रखरी**='वेग्रखरी'

द्वैत–पु० [स०] १ भेद-भाव । अन्तर । २ परायेपन का भाव । ३ दो का भाव, जोडा युग्म । ४ दुविधा, भ्रम । ५ अज्ञान, जडता । ६ द्वैतवाद । **—भाव, वाद**–पु० ईश्वर व जीव को अलग-अलग समझने का भाव, भेदभाव ।

द्वैतवण (णि, न)–पु० [स० द्वैतवन] पाडवकालीन एक तपोवन ।

द्वैतवाद–पु०[स०]१ ब्रह्म से जीव को भिन्न मानने का सिद्धान्त । २ शरीर व आत्मा को भिन्न-भिन्न मानने का सिद्धान्त ।

द्वैतवादी, द्वैती–वि० [स०] उक्त सिद्धान्त को मानने वाला ।

द्वैपायण,(न)–पु० [स०] वेदव्यास ।

द्वैमातुर–पु० [स०] १ गणेश । २ जरासध ।

द्वैरद–देखो 'द्विरद' ।

— ध —

ध–देवनागरी वर्ण माला का उन्नीसवा व्यंजन ।

ध–पु० १ दान । २ मान । ३ द्रव्य । ४ सुखासन । –स्त्री० ५ धाय ।

धक, धका–स्त्री० [स० धाक, धीक्षा] १ इच्छा, अभिलाषा, लालसा । २ दृढ निश्चय, सकल्प । ३ धक्का, टक्कर । ४ आघात, चोट । ५ भय, डर, आशका ।

धंकी–वि० १ इच्छा, अभिलाषा करने वाला । २ सकल्प करने वाला ।

धख, धखा–पु० १ क्रोध, रोप । २ जोश, आवेश । ३ देखो 'धफ' ।

धखी–वि० [स०द्वेषिन्] १ वैरी, शत्रु । २ क्रोधी । ३ जोशीला, ४ देखो 'धकी' ।

धगौ–देखो 'दगौ' ।

धण–१ देखो 'धण' । २ देखो 'धन' । ३ देखो 'धनु' ।

धणी–१ देखो 'धणी' । २ देखो 'धनी' । ३ देखो 'धनु' ।

धतर–पु०१ धनेर पक्षी । २ देखो 'धनतर' । ३ देखो 'धतरजी' ।

धतरजी–वि० १ जबरदस्त, जोरदार, बलवान शक्तिशाली । २ देखो 'धनतर' ।

धतरु, (रो)–देखो 'धतूरौ' ।

धद–१ देखो 'धध' । २ देखो 'धधौ' ।

धदउ, धदव, धदौ–देखो 'धधौ' ।

धध–पु० [स० द्वन्द्व] १ उपद्रव, उत्पात । २ कष्ट, दुख । ३ अधकार । ४ धुधलापन । –वि० १ व्यर्थ, फालतू । २ आकाशगामी, नभचर । ३ देखो 'ध धौ' ।

धधइ, धधउ–देखो 'धंधौ' ।

धधक–पु० १ एक प्रकार का ढोल । २ काम धधे का ढोग, आडम्बर ।

धधव–देखो 'धधौ' ।

धधागर, (गिर)–वि० काम करने वाला, परिश्रमी, क्रियाशील ।

धधारथी (थू)–वि० कार्य मे सलग्न, कार्यरत । परिश्रमी ।

धधाळी (ळू)–वि० १ कार्य मे व्यस्त अधिक काम वाला । २ क्रियाशील ।

धधीगर, धधीयर–१ देखो 'धंधीगर' । २ देखो 'धधागर' ।

धधूणणौ (बौ)–देखो 'धधूणणौ' (बौ) ।

धधूणी–देखो 'धधुणी' ।

धधोळणी–स्त्री० १ वृक्ष विशेष । २ देखो 'धधुणी, ।

धधोळणौ (बौ)–क्रि० [स० द्रुतम्] १ हराना, पराजित करना। २ झकझोरना, जोर से हिलाना । ३ बाधा डालना, विघ्न डालना ।

धधोळी–स्त्री० १ परास्त करने की क्रिया या भाव । २ देखो 'धधुणी' ।

धधौ–पु० [स० द्वन्द्व] १ काम कार्य । २ उपार्जन सम्बन्धी कार्य । ३ उद्योग, परिश्रम । ४ व्यवसाय, व्यापार । ५ सासारिक प्रपच । ६ पेशा, वृत्ति ।

धन(नु)–१ देखो 'धन' । २ देखो 'धन्य' ।

धमजगर–देखो 'धमजगर' ।

धमण (णौ)–१ देखो 'धमण' । २ देखो 'धमणी' ।

धमळ–देखो 'धवळ' ।

धव–स्त्री० तेज हवा की ध्वनि ।

धवण–देखो 'धमण' ।

धवणौ (बौ)–देखो 'धमणौ' (बौ) ।

धवळ–देखो धवळ' ।

ध–पु० [स०] १ गणेश, गजानन । २ विष्णु । ३ स्वामी, नाथ । ४ वचन । ५ कुबेर । ६ स्वामि कार्तिकेय । ७ व्याख्यान । ८ कुम्हार । ९ शिर कटी धड । १० धर्म । ११ सदाचार, सद्गुण । १२ धन, द्रव्य । १३ सगीत मे सरगम का छठा स्वर । धैवत ।

धईडणौ (बौ)–क्रि० धमाधम पीटना, मारना ।

धईवत (**वत**)–देखो 'धैवत'।
धउळ **धउळउ, धउळउ** (**ऊ**)–देखो 'धवळ'।
धउळणौ, (**बौ**)–देखो 'धौळणौ' (बौ)।
धउळहर–देखो 'धवळहर'।
धउळौ–देखो 'धवळ'।
धउसणौ (**बौ**)–क्रि० [स० ध्वस] १ सहार करना। २ ध्वस करना। ३ नष्ट करना, बर्बाद करना।
धऊकार–देखो 'धाऊकार'।
धऊस–वि० [स० ध्वस] १ मूर्ख, जड। २ असभ्य, जगली। ३ ध्वस्त। ४ बर्बाद।
धक–स्त्री० १ अग्नि, आग। २ ताप जलन। ३ क्रोध, गुस्सा। ४ उमग, उत्साह। ५ साहस, हिम्मत। ६ वेग। ७ जोश, आवेश। ८ दिल की धडकन। ९ तग रास्ते से द्रव पदार्थ के निकलने से उत्पन्न ध्वनि। १० आश्चर्य, विस्मय, स्तब्धता। ११ भाला। १२ देखो 'धक'।
धकडी–स्त्री० लडखडाने की क्रिया या भाव।
धकचाळ, (**चाळण, चाळौ**)–पु० १ युद्ध, लडाई, समर। २ उपद्रव, उत्पात।
धकण–देखो 'धुकड'।
धकणौ (**बौ**)–क्रि० १ किसी तरह काम चलना, निभना। २ काम निकलना, बनना। ३ धक्का खाकर चलना, धकना। ४ क्रुद्ध होना,कुपित होना। ५ देखो 'धुकणौ'(बौ)।
धकधकणौ (**बौ**)–क्रि० १ उबक कर निकलना। २ वेग मे बहना। उमडना। ३ कापना,थर्राना,धडकना। ४ प्रज्वलित होना, धधकना। ५ दु खी होना पीडित होना।
धकधकाणौ (**बौ**), **धकधकावणौ** (**बौ**)–क्रि० १ उबका कर निकालना। २ वेग से बहाना, उमडाना। ३ प्रज्वलित करना, धधकाना। ४ दु खी या पीडित करना।
धकधकाहट, धकधकी–स्त्री० १ धडकने की क्रिया या भाव, धडकन। २ कपन, थर्राहट। ३ प्रज्वलन।
धकधार–स्त्री० १ आवेग, वेग। २ धारा प्रवाह।
धकधू ण, धकधूण–स्त्री० [स० धक्क] १ जोर से हिलाने या झकझोरने की क्रिया या भाव। २ नाम जपने की ध्वनि, जाप। ३ धुनकी की आवाज। ४ कपन।
धकधू णणौ (**बौ**), **धकधूणणौ** (**बौ**)–क्रि० [स० धक्क] १ जोर से हिलाना झकझोरना। २ नाम जपना, ध्वनि लगाना। ३ धुनकी चलाना। ४ कम्पायमान करना। ५ गिराना। ६ ध्वस करना।
धकपख (**पखो**)–देखो 'धखपख'। **—धज, धज्ज, ध्वज**= 'धखपखध्वज'।
धकपेल–स्त्री० धक्कमधक्का, रेलापेल।
धकमधका, धकमधया–देखो 'धक्कमधक्का'।
धकरूल, धकरोळ–स्त्री० १ तेज आधी से उडी हुई धूल, गर्द। २ धूआ धोर। ३ धूए या गर्द का जोर से उठने वाला प्रवाह। ४ धारा, प्रवाह।
धकाणौ (**बौ**)–क्रि० १ किसी तरह काम चलाना, निभाना। २ काम निकलवाना बनवाना। ३ धक्का मारकर चलाना, धकाना। ढकेलना। ४ क्रुद्ध करना, कुपित करना। ५ पीछे हटाना खदेडना। ६ भगाना। ७ पराजित करना, हराना। ८ चलाना, हाकना। ९ देखो 'धुकाणौ' (बौ)।
धकाधम–स्त्री० १ धक्का पेल, लडाई। २ धक्कामुक्की।
धकार–पु० 'ध' अक्षर।
धकावणौ (**बौ**)–देखो 'धकाणौ (बौ)।
धके–देखो 'धकै'।
धकेलणौ (**बौ**)–क्रि० [स० धक्क] १ धक्का देना ठेलना पेलना। २ धक्का देकर आगे बढाना। ३ प्रवृत्त करना। ४ देखो 'धकाणौ' (बौ)।
धकै–क्रि० वि० १ आगे, अगाडी। २ पूर्व मे पहले। ३ भविष्य मे ४ मुकाबले या अपेक्षा मे, तुलना मे। ५ सामने, सम्मुख। ६ ओर, तरफ। ७ सीधे। ८ अनन्तर, तदनन्तर।
धकौ–पु० [स० धक्क] १ टक्कर, धक्का, आघात। २ झोका झटका। ३ चोट, आघात। ४ ढकेलने की क्रिया या भाव। ५ मुठभेड, भिडत, लडाई, युद्ध। ६ हमला, आक्रमण। ७ मानसिक आघात। ८ दु ख सकट। ९ घाटा। १० हानि, नुक्सान। ११ मुकाबला।
धक्क–देखो 'धक'।
धक्कमधक्की, धक्कमधक्का–पु० १ अत्यन्त भीड मे होने वाली परस्पर टक्कर। २ रेलापेल।
धक्कामुक्की–स्त्री० मारपीट, घू सो की चोट, धक्का।
धक्के–देखो 'धके'।
धक्कौ–देखो 'धकौ'।
धख–१ देखो 'धक'। २ देखो 'धक'।
धखडौ–पु० एक प्रकार की घास।
धखचाळ, (**चाळौ**)–देखो 'धकचाळ'।
धखणी–स्त्री० [स० धिषणा] बुद्धि।
धखणौ (**बौ**)–देखो 'धकणौ' (बौ)।
धखपख–पु० [स० धकपक्ष] गरुड। **—धज, धज्ज, ध्वज**–पु० विष्णु। श्रीकृष्ण।
धखाणौ (**बौ**), **धखावणौ** (**बौ**)–देखो 'धकाणौ' (बौ)।
धखूण–वि० [स० धिषण] १ पण्डित। २ कवि। ३ बृहस्पति।
धखे (**ख**)–देखो 'धकै'।
धखौ–देखो 'धकौ'।
धख्यपख–देखो 'धखपख'।
धग–१ देखो 'धागौ'। २ देखो 'दग'।

धगग–देखो 'दग'।

धगड़–१ देखो दगड। २ देखो 'धगड़'।

धगड–पु० १ खड्ग तलवार। २ देखो 'दगड'।

धगणौ (बौ)–क्रि० जलना, प्रज्वलित होना। धधकना।

धगधगणौ (बौ)–क्रि० १ कंपित होना, कांपना। थर्राना। २ प्रज्वलित होना, जलना। ३ तपना, गर्म होना। ४ चमकना, दमकना।

धगधगी–स्त्री० १ कपकपी, कंपन थर्राहट। २ धडकन।

धगारौ–पु० १ आसमान, आकाश। २ जोश।

धगौ–देखो 'दगौ'।

धड़ंग–वि० वस्त्रहीन, नंगा।

धडंदौ, धंडिदौ–पु० १ नगाडे की ध्वनि। २ वस्तु के गिरने की ध्वनि। ३ डके की चोट।

धड–स्त्री० [स०धर] १ गर्दन व पावों के बीच का भाग। शरीर का मध्य भाग। २ कबंध। ३ खण्ड, टुकडा, भाग। ४ दल, पार्टी। ५ गेहूं के भूसे का ढेर। ६ पेड का तना। ७ वस्तु के गिरने का धमाका। ८ बन्दूक, तोप आदि की आवाज ९ धडकन। १० देखो 'धडौ'।

धडक––स्त्री० १ भय, डर, आशका। २ हृदय का स्पदन, धडकन ३ भय आदि से होने वाली कम्पन, थर्राहट। ४ धडकन की आवाज।

धडकण–स्त्री० हृदय का स्पदन, धडकन।

धडकणौ (बौ)–क्रि० १ हृदय मे स्पदन होना, दिल धडकना। २ भयभीत होना, कांपना, थर्राना। ३ हिलना-डुलना। ४ धड-धड की ध्वनि होना। ५ बन्दूक, तोप आदि का छूटना।

धडकन (न) देखो 'धडकण'।

धडकाणौ (बौ), धडकावणौ (बौ)–क्रि०१ हृदय मे स्पदन कराना दिल मे गति देना। २ भयभीत करना, डराना। ३ हिलाना, डुलाना। ४ धड-धड ध्वनि करना। ५ बन्दूक, तोप आदि छोडना।

धडकै–क्रि० वि० जल्दी से, अकस्मात् यकायक।

धडकौ–पु० १ गाडी चलने से लगने वाला धक्का, हिलोरा। २ हृदय का स्पदन, धडकन। ३ डर, भय, अदेशा। ४ धडकन का शब्द। ५ वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।

धडक्क–देखो 'धडक'।

धडक्कणौ (बौ)–देखो 'धडकणौ' (बौ)।

धड़क्काणौ (बौ), धडक्कावणौ (बौ)–देखो 'धडकाणौ' (बौ)।

धडक्कौ–देखो 'धडकौ'।

धड़ड–स्त्री० बन्दूक आदि छूटने या दीवार आदि ढहने से उत्पन्न ध्वनि।

धड़डणौ (बौ)–क्रि० १ बन्दूक आदि का छूटना। २ दीवार आदि ढहना। ३ ध्वनि होना। ४ कांपना, थर्राना। ५ धडकना। ६ गर्जना। ७ गुर्राना।

धड़ड़ाणौ (बौ), धड़डावणौ (बौ)–क्रि० [अनु] १ बन्दूक आदि छोडना। २ दीवार आदि ढहाना। ३ ध्वनि करना। ४ कपाना। ५ धडकाना।

धडच–स्त्री० [स० दृ] १ तलवार। २ चीरने-फाडने की क्रिया या भाव। ३ देखो 'धडचौ'।

धड़चणौ (बौ)–क्रि० [स० दृ] १ सहार करना, मारना। २ चीरना, फाडना। ३ काटना। ४ टुकडे-टुकडे करना।

धड़चाळी–वि० फटी हुई।

धड़चियौ, धडचौ–पु० १ फटा हुआ वस्त्र। २ वस्त्र का खण्ड, टुकडा। ३ धोती।

धडच्छणौ (बौ)–देखो 'धडचणौ' (बौ)।

धडच्छौ–देखो 'धडचौ'।

धडछ–देखो 'धडच'।

धडछणौ (बौ)–देखो 'धडचणौ' (बौ)।

धड़छियौ, धडछौ–देखो 'धडचौ'।

धडधडणौ (बौ)–देखो 'धडडणौ' (बौ)।

धडधडा'ट–स्त्री० १ बन्दूक आदि छूटने, दीवार ढहने या गाडी आदि के चलने से उत्पन्न ध्वनि। २ धडकन। ३ धक्का। ४ कंपन।

धडधडाणौ (बौ), धडधडावणौ (बौ)–देखो 'धडडाणौ' (बौ)।

धडधडी–स्त्री० १ भय या सर्दी के कारण शरीर मे होने वाली कंपन। २ पशु-पक्षियो द्वारा शरीर को जोर से हिलाने की क्रिया या भाव। ३ अरुचि, उबकाई।

धडवाई-देखो 'धाडवी'।

धडहड–देखो 'धडड'।

धडहडणौ (बौ)–देखो 'धडडणौ' (बौ)।

धडहडाट–देखो 'धडधडाट'।

धडाम–स्त्री० १ सहसा गिरने, कूदने आदि की क्रिया या भाव। २ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

धडाकौ–पु० धमाका। गडगडाहट।

धडाधड–क्रि० वि० १ फटाफट, शीघ्रता से। २ धड-धड करते हुए। ३ निरन्तर, लगातार।

धड़ाबदी–स्त्री० १ युद्ध से पूर्व किया जाने वाला सेना का सतुलन। २ गुट बदी। ३ धडा बाधने का कार्य।

धडायत, (ती)–देखो 'धाडायत'।

धडाळ–पु० शरीर। –वि० देहधारी।

धडी–स्त्री० १ स्त्रियो के कान का एक आभूषण विशेष। २ पाच सेर का एक तौल। ३ रेखा, लकीर।

धड़ूकणौ (बौ)—क्रि० १ मेघ का गर्जना। २ सिंह का दहाड़ना ३ बैल, साड आदि का जोश मे बोलना, ताड़ूकना। ४ वाद्य बजना। ५ गर्व या जोश मे बोलना।

धड़ूकौ—पु० जोश पूर्ण आवाज, जोर का शब्द।

धड़ूड—वि० अधिक, ज्यादा विशेष।

धडॆ—क्रि० वि० तरफ, ओर।

धडौ—पु० [स० घट] १ तराजू या तराजू का पलडा। २ किसी पात्र का सतुलन करने के लिये रखा जाने वाला पदार्थ। ३ समूह। ४ एक ही गोत्र या जाति का समूह या पक्ष। ५ वश, कुटुब। ६ पक्ष, समूह, दल। ७ विचार। ८ टीबा भीडा। ९ ढेर, राशि। १० हिस्सा, भाग। ११ योग, जोड।

धच—स्त्री० १ किसी गीली वस्तु के गिरने का शब्द। २ किसी गीले पदार्थ मे कुछ धसने की क्रिया व उससे उत्पन्न शब्द। ३ धक्का झटका।

धचकचाणौ (बौ)—क्रि० डराना, धमकाना, दहलाना।

धचकणौ, (बौ)—क्रि० १ झटका खाना। २ दलदल मे धसना। ३ चोट खाना।

धचकाणौ (बौ), धचकावणौ (बौ)—क्रि० १ झटका देना। २ दलदल मे धंसाना। ३ चोट लगाना।

धचकौ—पु० १ धक्का, झटका। २ टक्कर। ३ चोट, आघात।

धचाक— क्रि० वि० धच की ध्वनि करते हुए। अकस्मात।

धचीड (डौ)—पु० १ प्रहार। २ प्रहार की ध्वनि। ३ टक्कर।

धच्च—देखो 'धच'।

धज—पु० [स० ध्वज.] १ घोडा, अश्व। २ योद्धा, वीर। ३ भाला। –वि० १ अग्रणी, अग्रगामी। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ सत्य। ४ देखो 'ध्वज'। —कूत—स्त्री० भाले की नोक। —डड, दड—पु० ध्वज दण्ड। —धर—पु० देवालय, मन्दिर, रथ। —बद, बदी, बध, बधी—वि० वीर, योद्धा। पूर्ण विश्वसनीय। सीधा। ध्वजधारी। —पु० राजा, नृप। अश्व, घोडा। मन्दिर। ध्वज दण्ड रखने वाला व्यक्ति। —स्त्री० दुर्गा, देवी। —राज, राळ—पु० घोडा, अश्व। —रूप—पु० बरछी। —रेळ, रेंळ—पु० घोडा, अश्व। –वि० ध्वजा धारण करने वाला। ध्वजाधारी।

धजकजळ—पु० [स० कजलध्वज] दीपक, चिराग।

धजनी—स्त्री० [स० ध्वजिनी] सेना।

धजबड, धजब्बड—देखो 'धजवड'।

धजभग—देखो 'ध्वजभग'।

धजमोर—देखो 'मोरधज'।

धजरग—वि० [स० ध्वजरग] १ ध्वज के समान। २ नोकदार।

धजर—स्त्री० १ शक्ति, बल। २ शेखी, शान। ३ कीर्ति, यश। ४ मान, प्रतिष्ठा। ५ ध्वजा, पताका। ६ कटारी, बरछी। ७ भाला। ८ देवालय, मन्दिर। ९ आसमान, आकाश। –वि० सुन्दर, मनोहर।

धजराज—देखो 'धजाराज'।

धजवड (बडा, बड़ि, बडी, बड, बढ़, ब्बड)—स्त्री० १ खड्ग, तलवार। २ मान, प्रतिष्ठा। —हत, हतौ, हत्थ, हत्थौ, हथ, हथौ—पु० खड्गधारी योद्धा।

धजसड—पु० [स० ध्वज-षण्ड] महादेव, शिव।

धजाराज—पु० घोडा।

धजा—१ देखो 'धज'। २ देखो 'ध्वज'।

धजाखगेस—पु० [स० ध्वज-खगेश] १ श्रीकृष्ण। २ विष्णु।

धजाबद (बध)—स्त्री० [स० ध्वजाबन्ध] १ देवी, दुर्गा। २ देवता। ३ देखो 'धजबध'।

धजारौ—पु० आकाश, आसमान।

धजाळी—स्त्री० ध्वज धारण करने वाली देवी, शक्ति।

धजाळौ, धजीळौ—वि० १ ध्वज धारी। २ सुन्दर ढंग का, तडक-भडक वाला।

धज्ज—१ देखो 'धज'। २ देखो 'ध्वज'।

धज्जी—स्त्री० १ कपडे, कागज आदि की पट्टी, लबा खण्ड। २ लम्बी पट्टी या पत्ती। ३ जगह-जगह से फटे वस्त्र के खण्ड।

धट—पु० १ बक पक्षी, बगुला। २ देखो 'धाट'। —पख= 'धखपख'।

धटी—स्त्री० [स०] १ वस्त्र, चीर। २ वर-वधू के गठबन्धन का वस्त्र। ३ गर्भाधान के बाद स्त्रियो के पहनने का एक वस्त्र। ४ देखो 'धाटी'।

धट्ट—देखो 'धट'।

धड—देखो 'धड'।

धडकणौ—(बौ)—देखो 'धडकणौ' (बौ)।

धडहड—देखो 'धडड'।

धडहडणौ (बौ)—देखो 'धडडणौ' (बौ)।

धडूकणौ (बौ)—देखो 'धड़ूकणौ' (बौ)।

धण—स्त्री० [स० धनिका] १ पत्नी, स्त्री। २ चमडे की धोकनी के आगे लगी लोहे की नली। ३ देखो 'धन'।

धणक—१ देखो 'धण'। २ देखो 'धनक'। ३ देखो 'धनुस'।

धणख—पु० १ एक प्रकार का पौधा। २ देखो 'धनक'। ३ देखो 'धनुस'।

धणदाण— वि० दान देने वाला, दाता। –पु० द्रव्य का दान।

धणि—१ देखो 'धण'। २ देखो 'धणी'।

धणिआप—देखो 'धणियाप'।

धणिउ—१ देखो 'धन्य'। २ देखो 'धनु'।

धणिय—वि० [स० धनित] १ अस्थिर। २ देखो 'धणी'।

धणियप—देखो 'धणियाप'।

धणियाणी–स्त्री० [सं० धनिका] १ स्वामिनी। २ अधिष्ठातृ, देवी। ३ माता। ४ स्त्री, गृहिणी।
धणिया–देखो 'धाणा'।
धणियाप (पण,पौ)– स्त्री० [सं० धनिक] १ स्वामित्व, मालिकाना हक। २ अधिकार, वश। ३ कृपा, दया, महरवानी।
धणियाळी–वि० सौभाग्यवती।
धणी–पु० [सं० धनिक] (स्त्री० धणियाणी) १ ईश्वर, परमात्मा। २ स्वामी,मालिक। ३ पति, खाविंद। ४ राजा नृप। ५ शासक। ६ देखो 'धनु'। ७ देखो 'धनी'। —चोधार–पु० राजा, नृप। —धोरी–पु० स्वामी, मालिक कर्ता-धर्ता।
धणीप–देखो 'धणियाप'।
धणीमाळ–पु० [सं० धनिक-माल] राजा, नृप।
धणीमो–वि० [सं० धन्यवया] बढिया, उत्तम।
धणीयाणी–देखो 'धणियाणी'।
धणीयाप–देखो 'धणियाप'।
धणीवउ–वि० [सं० धन्यवया] १ दीर्घजीवी। २ जिसका जीवन सफल एव धन्य हो।
धणीव्रत–पु० [सं० धनिक-व्रत] स्वामित्व, मालिकपन।
धणु, धणु, धणुह–१ देखो 'धनु'। २ देखो 'धाणा'।
धणुहर–पु० [सं० धनुर्धर] धनुर्धर।
धणुहि(ही)–देखो 'धनु'।
धणूं–पु० १ देखो 'धाणा'। २ देखो 'धनु'।
धणौ–पु० [सं० धान्या] धनिया का पौधा व उसका बीज।
धत–स्त्री० १ हठ, जिद्द। २ बुरी बान, आदत। ३ कोई बात जो दिमाग मे जम जाय। ४ देखो 'दुत'। –अव्य० १ दुत्कारने का शब्द। २ हाथी का एक सबोधन। –वि० मस्त, उन्मत्त। नशे मे चूर।
धतकार–देखो 'दुतकार'।
धतकारणौ (बौ)–देखो 'दुत्कारणौ' (बौ)।
धतराठ, धतरासट, धतरास्ट–पु० [सं० धृतराष्ट्र] कौरवो का पिता, धृतराष्ट्र।
धता–स्त्री० १ हाथी को उत्साहित करने का शब्द। २ एक मात्रिक छन्द विशेष।
धतानद–पु० एक मात्रिक छन्द विशेष।
धती–वि० दुराग्रही, जिद्दी।
धतूरो–देखो 'धतूरौ'।
धतूर–पु० १ एक लोक गीत विशेष। २ देखो 'धतूरौ'।
धतूरउ–देखो 'धतूरौ'।
धतूरौ–पु० जहरीले एव नशीले बीजो वाला एक पौधा विशेष।
धतौ–पु० १ धोखा, छल। २ झासा, झूठा आश्वासन। ३ अविश्वास।
धत्त–देखो 'धत'।
धत्ता–देखो 'धता'। —नद='धतानद'।
धत्तूर, धत्तूरउ, धत्तुरियउ, धत्तूरौ–देखो 'धतूरौ'।
धत्तौ–देखो 'धत्तौ'।
धधक–स्त्री० १ अग्नि का प्रज्वलन, आग की लौ, लपट। २ क्रोध। ३ आवेश, जोश। ४ दुर्गन्ध, बदबू।
धधकणौ (बौ)–क्रि० १ अग्नि का प्रज्वलित होना, लपट या लौ उठना। २ क्रुद्ध होना। ३ आवेश या जोश आना। ४ सडना, दुर्गंध या बदबू देना।
धधकाणौ (बौ)–क्रि० १ आग को प्रज्वलित करना, जलाना। २ क्रोध दिलाना। ३ जोश दिलाना। ४ सडाना, बदबू फैलाना।
धधकारणौ (बौ)–क्रि० १ उत्तेजित करना। २ प्रेरित करना। ३ हाकना। ४ देखो 'दुत्कारणौ' (बौ)।
धधकावणौ (बौ)–देखो 'धधकाणौ' (बौ)।
धधक्कणौ (बौ)–देखो 'धधकणौ' (बौ)।
धधमा–वि० १ बेडौल, बिडरूप। २ मोटी-ताजी।
धधियौ–पु० 'ध' वर्ण।
धधूकणौ, (बौ)–क्रि० कापना, थर्राना।
धधूकाणौ (बौ), धधूकावणौ (बौ)–क्रि० कपाना, थरथराना।
धधूणणौ (बौ)–क्रि० १ जोर से हिलाना, झकझोरना, झटका देना। २ हराना, पराजित करना।
धधूणी–स्त्री० १ पकड कर जोर से हिलाने की क्रिया या भाव। २ हार, पराजय। ३ झटका।
धधौ–पु० [सं० ध] 'ध' अक्षर, धकार।
धनक–देखो 'धनुस'।
धनककध–पु० [सं० धनुप+स्कध] धनुपाकार कधे वाला घोडा।
धनकी–देखो 'धानकी'।
धनख–देखो 'धनुस'।
धनजय, (धनजै)–पु० [सं०] १ अर्जुन का एक नामान्तर। २ अर्जुन नामक वृक्ष। ३ अग्नि की एक उपाधि। ४ अग्नि, आग। ५ विष्णु। ६ जलाशयो का अधीश्वर एक नाग। ७ शरीरस्थ दश वायुओं मे से एक। ८ पवन। –वि० धन को जीतने वाला। धन प्राप्त करने वाला।
धनतर–पु० [सं० धन्वतरि] १ देवताओ का वैद्य। २ चौवीस अवतारो मे से एक। ३ चिकित्सा का अधिष्ठाता देव। ४ देखो 'धनेर'।
धनतरजी–१ देखो 'धतरजी'। २ देखो 'धनतर'।

धनद–पु० [स० धनद] धनपति कुबेर।

धनधर–देखो 'धनुधारी'।

धन, धनउ–पु० [स० धनम्] १ धन-दौलत, द्रव्य। २ लक्ष्मी। ३ सम्पत्ति, जमीन, जायदाद। ४ पशु धन, गौ-धन। ५ गणित मे जोड का चिह्न। ६ जोड की सख्या। ७ मूल धन, पू जी। ८ जन्म कु डली मे जन्म लग्न से दूसरा स्थान ९ बहुमूल्य वस्तु। १० प्रिय वस्तु। ११ लूट का माल। १२ शिकार। १३ खेल मे जीता हुआ खिलाडी। १४ पुरस्कार। १५ प्रतियोगिता। १६ देखो 'धनु'। १७ देखो 'धन्य'। १८ देखो 'धरण'। १९ देखो 'ध्वनि'। —**ईस**–पु० कुबेर। धनपति। —**कर**–पु० धन पैदा करने वाला। —**कुबेर**–वि० कुबेर के समान धनवान। —**केळि**–पु० कुवेर। —**गेलौ**–वि० आवश्यकता से अधिक पूंजी होने से बना उन्मादी। गर्विला, घमडी। —**देव**–पु० कुबेर। —**धारी**–पु० सेठ, साहूकार। धनवान। —**नाथ**–पु० कुवेर, धनेश। —**पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्तौ**–पु० कुवेर। —**पाळ**–पु० धन का रक्षक। —**राज**–पु० कुवेर, धनेश। —**वत, वती, वतौ**, वान–वि० धनी, धनवान।

धनक–पु० [स०] १ स्त्रियो के ओढने का वस्त्र विशेष। २ लालच, लोभ। ३ एक प्रकार का पतला गोटा। ४ हृथेली मे होने वाला सामुद्रिक चिह्न। ५ देखो 'धनुस'।

धनकरणौ–वि० इन्द्र धनुष के समान।

धनकधर–देखो 'धनुरधर'।

धनकार–स्त्री० [स० धनुष्टङ्कार] धनुष की प्रत्यचा से की जाने वाली ध्वनि।

धनख–१ देखो 'धनक'। २ देखो 'धनुस'।

धनखधारण–१ देखो 'धनुरधर'। २ देखो 'धनुस-धारण'।

धनतेरस–स्त्री० [स० धन-त्रयोदशी] कार्त्तिक कृष्णा त्रयोदशी।

धनद–पु० [स० धनद] १ कुबेर, धनेंद्र। २ अग्नि, आग। ३ चित्रक वृक्ष। ४ ४९ क्षेत्रपालो मे से एक। –वि० धनदाता। —**तीरथ**–पु० व्रज का कुबेर तीरथ।

धनदा–स्त्री० [स०] आश्विन कृष्णा एकादशी का नाम। –वि० धन देने वाली।

धनदि–देखो 'धनद'।

धनदिहि–पु० कुबेर।

धनबाद–देखो 'धन्यवाद'।

धनरसभाव–पु० हाथियो का एक रोग।

धनव–देखो 'धनु'।

धनवती–स्त्री० [स०] धनिष्ठा नक्षत्र। –वि० धनवान, धनी।

धनवाद–देखो 'धन्यवाद'।

धनवाळ–पु० पशु-पालन कर निर्वाह करने वाला।

धनस–देखो 'धनुस'।

धनसपुरी–स्त्री० स्त्रियो के ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

धनसारथवाह–पु० [स० धन-सार्थवाह] तेवीसवें तीर्थंकर को प्रथम वार भिक्षा देने वाला धन नामक सेठ।

धनस्वामी–पु० [स०] कुवेर।

धनागार (उ)–पु० [स० धान्य+आगार] १ अन्न का भण्डार। २ कोष, खजाना।

धनाड्य, (ढ्य)–वि० [स० धनाढ्य] धनवान, लक्ष्मीवान, मालदार।

धनाधन–क्रि० वि० लगातार, बिना रुके, दनादन, वौछार की तरह। –वि० तेज मसालो से युक्त, चटपटा।

धनाधिप, धनाधेप–पु० [सं० धनाधिप] १ कुवेर, धनेश। २ यक्ष।

धनाध्यक्ष–पु० [स०] १ कुवेर। २ कोषाध्यक्ष।

धनारथी–वि० [सं० धनार्थिन्] धन चाहने वाला।

धनावसी–पु० रामानन्दजी के शिष्य धन्ना जाट के वशज।

धनास–स्त्री० [स० धन+आशा] धन की आशा।

धनासरी, धनासी, धनास्री–स्त्री० [स० धनाश्री] एक रागिनी विशेष।

धनि–१ देखो 'धन्य'। २ देखो 'धनी'।

धनिक–वि० [स०] धनवान, धनाढ्य। –पु० १ धनी पुरुष। २ महाजन। ३ पति। ४ ईमानदार व्यापारी। ५ प्रियगु वृक्ष। ६ स्वामी, मालिक।

धनिसा, धनिस्ठा–स्त्री० [सं० धनिष्ठा] सत्ताईस नक्षत्रों मे से तेईसवा नक्षत्र।

धनीं, धनी–वि० [स० धनिन्] १ धनवान, मालदार। २ किसी विशिष्ट गुण वाला। –पु० धनवान पुरुष।

धनीसा–देखो 'धनिसा'।

धनु–पु० [स०] १ धनुष, चाप। २ ज्योतिष की वारह राशियो मे से नौवी। ३ फलित ज्योतिष मे एक लग्न। ४ हठयोग के एक आसन का नाम। ५ देखो 'धन'। ६ देखो 'धेनु'।

धनुओ–देखो 'धनुस'।

धनुक–१ देखो 'धनुस'। २ देखो 'धनक'।

धनुकबाई–स्त्री० [स० धनुर्वात] लकवे की तरह का एक वात रोग।

धनुख (खि, खौ)–देखो 'धनुष'।

धनुद–देखो 'धनद'।

धनुधर, धनुधारी–देखो 'धनुरधर'।

धनुभ्रत–[स० धनुर्भृत] धनुर्धारी योद्धा।

धनुरजग–पु० [स० धनुर्यज्ञ] धनुष की पूजा कर धनुर्विद्या की परीक्षार्थ किया जाने वाला यज्ञ।

धनुरद्धर, धनुरधर, धनुधारी–पु० [स० धनुर्धर] १ धनुषधारी योद्धा। २ तीरदाज। –वि० जिसने धनुष धारण किया हो।
धनुरवात–स्त्री० [स० धनुर्वात] एक भयकर वात रोग।
धनुरविद्या–स्त्री० [स० धनुर्विद्या] धनुष चलाने की विद्या।
धनुरवेद–पु० [स० धनुर्वेद] १ धनुष विद्या का शास्त्र। २ धनुर्विद्या।
धनुवासर–पु० पुष्प, सुमन, फूल।
धनुस–पु० [स० धनुष] १ तीर चलाने का अस्त्र, कमान, धनुष। २ इन्द्र धनुष। ३ ज्योतिष की एक राशि। ४ हठयोग का एक आसन। ५ हाथ का एक माप। ६ एक वात रोग विशेष। –वि० कुटिल, वक्र*। –धर, धरण–पु० श्रीराम। अर्जुन। –वि० धनुर्धारी।
धनुसाकार–वि० [स० धनुषाकार] धनुष की तरह टेढ़ा।
धनुसासन–पु० [स० धनुषासन] योग के चौरासी आसनो मे से एक।
धनुस्तम–पु० [स०] एक प्रकार का वात रोग।
धनुहडी–देखो 'धनु'।
धनूख–देखो 'धनुस'।
धनेर–पु० एक पक्षी जिसका मास प्रसूती रोग मे काम आता है।
धनेरु–देखो 'धनेर'।
धनेस–पु० [स० धनेश] १ धनपति कुबेर। २ लग्न से दूसरा स्थान।
धनेसरी–देखो 'धनेस्वरी'।
धनेस्ठा–देखो 'धनिस्ठा'।
धनेस्वर–पु० [स० धनेश्वर] १ धनपति कुबेर। २ धन का स्वामी।
धनौ–वि० १ धनाढ्य, धनवान। २ देखो 'धन्य'। —**सेठ**–पु० धनाढ्य व्यक्ति।
धन्नतरि–देखो 'धनतर'।
धन्न–१ देखो धन्य'। २ देखो 'धनु'। ३ देखो 'धान'।
धन्नाट–क्रि० वि० १ अति शीघ्रता से, तेजी से। २ दनदनाता हुआ। –स्त्री० धन-धन की ध्वनि, सन्नाटा।
धन्नासिका–स्त्री० [स०] एक रागिनी विशेष।
धन्नेस–देखो 'धनेस'।
धन्य–वि०[स०] १ पुण्यवान, भाग्यशाली। २ धन्यवाद का पात्र। श्लाघ्य, प्रशसायोग्य। ३ सफल। ४ सुखी।
धन्यबाद, धन्यवाद–पु० [स० धन्यवाद] १ वाह-वाही, प्रशसा। २ आभार प्रदर्शन।
धन्यवादता–स्त्री० [स०] १ साधुवाद, शावासी। २ आभार प्रदर्शन की क्रिया।
धन्या–स्त्री० [स०] १ माता, माँ। २ विमाता, उप माता। ३ वन देवी। ४ मनु की एक कन्या।
धन्यासिरी, धन्यासी–देखो 'धनास्त्री'।
धन्व–पु० [स०] १ मरुप्रदेश। २ कमान। —ज–पु० मरु प्रदेश मे उत्पन्न। —दुरग–पु० जिसके चारो ओर पाच-पाच योजन तक जल का अभाव हो वह दुर्ग। —देस–पु० मरु प्रदेश, मारवाड। निर्जल देश, रेगिस्तान।
धन्वय–पु० [स० धन्वस्] १ इन्द्र, देवेन्द्र। २ धनुष। ३ मारवाड।
धन्वी–वि० [स० धन्विन्] धनुर्धारी, कमनैत।
धन्वौ–पु० [स० धन्वन्] १ धनुष, चाप। २ सूखी जमीन, रेगिस्तान, स्थल। ३ मरु भूमि। ४ अतरिक्ष, आकाश।
धप–पु० १ आभूषणों पर खुदाई करने का एक औजार विशेष। २ बालक। ३ हस्त-प्रहार, थप्पड, तमाचा। –स्त्री० ४ वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि। ५ आग की लपट। ६ सहसा लौ उठने से उत्पन्न ध्वनि।
धपड़–स्त्री० १ अनाज पीसने की चक्की को तेज चलाने की क्रिया या भाव। २ देखो 'धापड'।
धपड़णौ (बौ)–क्रि० सतुष्ट करना, तृप्त करना।
धपटणौ (बौ)–क्रि० १ उत्साह पूर्वक दौडना, झपटना। २ कोई चीज लेकर भाग जाना। ३ लूटना। ४ देखो 'दपटणौ'(बौ)
धपटमौ (वौं)–वि० १ अत्यन्त उदारता पूर्ण। २ तृप्त होने लायक बहुतायत मे।
धपळ–स्त्री० १ आग की लपट, ज्वाला। २ आग से उत्पन्न ध्वनि। –क्रि० वि० १ लपटो के रूप मे। २ धप-धप ध्वनि करते हुए।
धपळकौ–पु० लपट, ज्वाला।
धपाऊ–वि० [स० ध्रै] तृप्त व सतुष्ट होने लायक। इच्छानुसार प्राप्त करने लायक।
धपाणौ (बौ), धपावणौ (बौ)–क्रि० [स० ध्रै] १ भरपेट खिलाना, धपाना। २ तृप्त करना, सतुष्ट करना। ३ इच्छा, अभिलाषा पूर्ण करना। ४ तग करना, परेशान करना। ५ प्रसन्न करना, खुश करना।
धफणौ, (बौ)–क्रि० १ गिरना, पडना। २ देखो 'धापणौ' (बौ)
धबक–पु० धक्का, प्रहार।
धबळौ–देखो 'धावळौ'।
धबसौ–पु० १ अजली। २ दोनो हाथो मे समाने लायक पदार्थ। ३ देखो 'धोवौ'।
धबाक–देखो 'धमाक'।
धबूड़णौ (बौ), धबोडणौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, मारना। २ फेंकना, उछालना। ३ देखो 'धमोडणौ (बौ)।
धबौ (ब्बौ)–पु० १ दाग, निशान। २ कलक, दोष। ३ रग आदि का कही पर पडा हुआ छींटा, धब्बा।
धमार–स्त्री० चौदह मात्राओ की एक ताल।

धमकरणौ (बौ)–देखो 'धमकरणौ' (बौ)
धमद–देखो 'धमक'
धमळ-मगळ–देखो 'धवळ-मगळ'।
धम–पु० १ सहसा कूदने या भारी वस्तु के गिरने की क्रिया। २ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि। – क्रि० वि० १ सहसा, अचानक कूद कर या लपक कर। ३ धम्म की आवाज से साथ।
धमक–स्त्री० १ 'धम्म' की ध्वनि। २ भारी चाल या तेज गति से होने वाली कम्पन, थर्राहट। ३ आघात, चोट। ४ ओखली आदि मे वस्तु को कूटने की ध्वनि।
धमकरणौ (बौ)–क्रि० १ धम-धम ध्वनि करना। २ आघात या चोट करना। ३ सहसा आकर उपस्थित होना।
धमकाणौ(बौ), धमकावणौ (बौ)–क्रि०१ धम-धम ध्वनि करना। २ ओखली आदि मे कुछ कूटना। ३ आघात या प्रहार करना। ४ डराना, डाटना, फटकारना। ५ आतकित या भयभीत करना।
धमकी–स्त्री०१ डाट, फटकार। २ आतकित करने के लिये कही जाने वाली बात। ३ चुनौती।
धमकौ–पु० धम्म की आवाज, धमाकौ।
धमक्कणौ (बौ)–देखो 'धमकरणौ' (बौ)।
धमक्कौ–देखो 'धमकौ'।
धमगजर, धमगज्ज, धमगज्र–पु० [स० धर्म+झकट] १ युद्ध, लडाई। २ उत्पात, उपद्रव, ऊधम।
धमड–पु० १ चक्की की चाल। २ जोर से पीसने की क्रिया या भाव। ३ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।
धतचक, (चक्क, चख) धमचाक–पु० १ युद्ध, लडाई। २ ऊधम, उत्पात, उपद्रव। ३ शोरगुल, हो हल्ला। ४ उछल-कूद। ५ छलाग, फलाँग।
धमचाळ–पु० १ युद्ध सग्राम। २ देखो 'धमगजर'।
धमण–स्त्री० [सं० धमन] १ भट्टी फू कने की चमडे की धोकनी। २ मसकनुमा थैला, मसक।
धमणि (णी)–स्त्री० [स० धमनि] १ शरीरस्थ नाडी, रक्त सचार नलिका, धमनी। २ देखो 'धमण'।
धमणौ (बौ)–क्रि० [स० ध्मा] १ धोकनी से हवा करना। २ भट्टी मे लोह तपाना। ३ पीटना, मारना। ४ शीघ्र प्रस्तान करना।
धमधमणौ (बौ)–क्रि० [अनु०] १ धम-धम शब्द करना। २ प्रतिध्वनित होना। ३ कुढना, जलना। ४ रोदना।
धमधमौ–देखो 'दमदमौ'।
धमधम्मणौ (बौ)–देखो 'धमधमणौ' (बौ)।
धमनि (नी)–देखो 'धमणि'।
धमरूळ, धमरोळ–स्त्री० १ झडी, बौछार। २ वर्षा। ३ आसमान मे प्रसार, फैलाव। ४ प्रवाह। ५ फैलाव, विस्तार। –पु० खुशी व उत्साह के कार्य। –वि० आनन्दमय।
धमरोळणौ (बौ)–क्रि० १ सहार करना, मारना। २ तहस-नहस करना, ध्वस्त करना। ३ हिलाना, घुमाना, झकझोरना। ४ मथना, विलोडना।
धमरोळी–वि० १ व्यस्त, लीन, मग्न। २ प्रयत्नशील।
धमळ–पु० १ डिंगल का एक गीत या छद। २ देखो 'धवळ'।
–आरोहण='धवळआरोहण'। –गर, गिर='धवळगिरी'। —धुज='धवळधुज'। —मगळ='धवळमगळ'। —हर='धवळहर'।
धमळगिरवाहणी (वाहणी)–देखो 'धवळगिर-वासणी'।
धमळागर, धमळागिर (गिरी)–देखो 'धवळगिरी'।
धमळागिर-आरोहणी–स्त्री० [स० धवलागिरि-आरोहणी] सरस्वती-शारदा।
धमळागिरीदेवी–स्त्री० [स० धवलागिरि देवी] शारदा, सरस्वती।
धमस–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ पायल या घु घुरू की झकार। ३ महीन गर्द जिससे खासी उठती हो।
धमसणौ (बौ)–क्रि० १ ध्वनि होना। २ पायल या घु घुरू की झकार होना। ३ महीन गर्द का उडना।
धमसी–स्त्री० पीसने की चक्की जोर से घुमाने की ध्वनि।
धमस्स–देखो 'धमस'।
धमहमणौ (बौ)–क्रि० १ बजना, ध्वनित होना। २ आवाज करना।
धमाक–१ देखो 'धमक'। २ देखो 'धमाकौ'।
धमाकौ–पु० १ बन्दूक आदि छूटने या भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि। धमाका। २ आघात, टक्कर। ३ सनसनी खेज बात, खबर। ४ जोर की आवाज, ध्वनि। ५ एक प्रकार की बन्दूक।
धमाचौकडी–स्त्री०१ ऊधम, उपद्रव, हल्ला-गुल्ला। २ कूद-फाद।
धमाणौ, (बौ)–क्रि० १ पीटना, मारना। २ द्रुतगति से चलाना ३ धोकनी से हवा भराना।
धमाधम–क्रि० वि० १ धम-धम शब्द के साथ। २ धम-धम करते हुए। ३ फटाफट, खटाखट। ४ निरन्तर, लगातार –स्त्री० १ प्रहार, चोट, आघात, मारपीट। २ युद्ध, लडाई, झगडा। ३ उत्पात, उपद्रव।
धमार–स्त्री० १ होली का गीत। २ चौदह मात्राओ की एक ताल विशेष। ३ उपद्रव, उत्पात।
धमारी–वि० उपद्रवी, उत्पाती।

धमाळ–स्त्री० १ डिंगल का एक छन्द, गीत विशेष । २ होली का गीत विशेष । ३ एक ताल विशेष । ४ एक राग विशेष । ५ एक पौधा विशेष ।

धमावणौ (बौ)–देखो 'धमाणौ' (बौ) ।

धमासौ–पु० [स० धन्वयास] एक प्रकार का काटेदार छोटा क्षुप, दुलाह ।

धमीड़, धमीड़ौ–पु० १ जोर का धमाका । २ मुक्के आदि का जोरदार प्रहार । ३ भारी वस्तु के गिरने का शब्द ।

धमूकौ–पु० १ घूंसा, मुक्का । २ घूसे या मुक्के का प्रहार । ३ देखो 'धमाकौ' ।

धमोड–देखो 'धमीडौ' ।

धमोड़णौ (बौ)–क्रि० १ प्रहार करना, चोट करना । २ कूटना-पीटना । ३ मारना, पीटना । ४ डटकर खा लेना ।

धमोड़ौ–देखो 'धमीडौ' ।

धमोळी, धमौळी–स्त्री०१ भादव कृष्णा तृतीया की पूर्व रात्रि मे व्रत करने वाली स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला भोजन । २ इस अवसर पर कन्या के ससुराल से आने वाला सामान ।

धम्म–देखो 'धम' ।

धम्मकौ–१ देखो 'धमाकौ' । २ देखो 'धमकौ' ।

धम्मचक्क–१ देखो 'धमचक' । २ देखो 'धरमचक्र' ।

धम्मपुत्र–देखो 'धरमपुत्र' ।

धम्मळ–देखो 'धवळ' ।

धम्मळा–देखो 'धवळा' । **—गिर, गिरी, गिरी** = 'धवळगिरी' ।

धम्मस–देखो 'धमस' ।

धम्मिल्ल–पु० [स०] केशो की वेणी, जूडा ।

धम्मीड–देखो 'धमीड' ।

धम्मीडौ–देखो 'धमीडौ' ।

धम्मु–देखो 'धरम' । **—पुत्त** = 'धरमपुत्र' ।

धम्मोळी–देखो 'धमोळी' ।

धम्मौ–देखो 'धरम' ।

धय–स्त्री० [स० ध्वज] ध्वजा, पताका ।

धयर–देखो 'धीरज' ।

धयरठ (ठ्ठ) धयराठ–देखो 'धतराठ' ।

धयवड–पु० [स० ध्वज-पट] ध्वज-पट, ध्वजा ।

धयाग–देखो 'धियाग' ।

धयौ–पु० १ कलह, टटा । २ कष्टदायक कार्य । ३ अनिच्छा का कार्य । ४ ईर्ष्या, द्वेष । ५ ऊधम, उपद्रव ।

धरमी–देखो 'धरमी' ।

धर–वि० [स०] १ ग्रहण करने वाला, रखने वाला, धारण करने वाला । २ सभालने वाला, थामने वाला । ३ पकडने वाला । –पु० १ पर्वत, पहाड । २ विष्णु । ३ श्रीकृष्ण ४ रूई का ढेर । ५ कच्छपावतार । ६ एक वसु का नाम । ७ देखो 'धड' । ८ देखो 'धुर' । ९ देखो 'धरा' । **—कोट**–पु० लकडियो की चहार दिवारी । **–छाया**–स्त्री० अधेरा, अधकार ।

धरज–पु० ताम्र, तावा ।

धरड़–स्त्री० वस्त्र फटने या चुनी हुई वस्तुऐं ढहने की ध्वनि ।

धरडणौ (बौ)–क्रि० १ फटना, विदीर्ण होना । २ ढहना, पडना ३ ध्वनि होना । ४ फाडना, विदीर्ण करना । ५ ढहाना, पटकना । ६ ध्वनि करना ।

धरजहर–पु० [स० धर-फा० जह्र] सर्प, साप ।

धरट्ठ–देखो 'धीरठ्ठ' ।

धरण–वि० [स०] १ धारण करने वाला । २ ग्रहण करने वाला, रखने वाला । ३ थामने, पकडने वाला, सभालने वाला । ४ वहन करने वाला । ५ रक्षक । –पु०१ एक नाग का नाम । २ खभा । ३ बाध, पुल । ४ संसार । ५ सूर्य । –स्त्री० [स० धरणी] ६ नाभि के नीचे की नश जो श्वास के साथ उछलती रहती है । ७ एक तौल विशेष । ८ स्त्री के स्तन । ९ चावल । १० हिमालय । ११ देखो 'धारण' । १२ देखो 'धारणा' । १३ देखो 'धरणी' । **–धर** = 'धरणी धर' **—नाग**–पु० शिव, महादेव । **—पीतंबर**–पु० ईश्वर, विष्णु ।

धरणिंद–पु० [स० धरण-इन्द्र] नागराज, शेषनाग ।

धरणि–देखो 'धरणी' **—धर** = 'धरणीधर' ।

धरणी–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, धरती । २ नाभि । ३ नश, नाडी ४ सेमर का वृक्ष । ५ शहतीर । **–तळ**–पु० धरातल, पृथ्वी तल । **—धर, धरि,धरी**–पु० ईश्वर, परमात्मा । विष्णु । शिव । कच्छप । शेषनाग । पर्वत, पहाड । एक प्रसिद्ध तीर्थ । –वि० पृथ्वी को धारण करने वाला । **—सुत**–पु० मगल । नरकासुर । **—सुता**–स्त्री० सीता, जानकी ।

धरणु (णू)–पु० [स० धरणम्] १ गिरवी, रेहन । २ धरोहर अमानत । ३ देखो 'धरणौ' ।

धरणौ–पु० [स० धरण] १ शासक या प्रशासक से अपनी मागें मनवाने के लिये उसके द्वार पर की जाने वाली बैठक । २ उत्सर्ग । ३ सत्याग्रह । ४ किसी देवता के आगे किया जाने वाला अनशन ।

धरणौ (बौ)–क्रि० [स० धरणम्] १ रूप बनाना, देह धारण करना । २ आरोपित करना । ३ व्यवहार के लिये लेना, काम के लिये रखना । ४ लेना ग्रहण करना । ५ रखना, कही पर धर देना । ६ निश्चय करना, निर्धारित करना । ७ महसूस करना, अनुभव करना । ८ बैठना, ग्रहण करना ।

९ विचार करना। १० पास मे रखना, रक्षा मे रखना। ११ स्वीकार करना। १२ चौकन्ना होना, सावधान होना। १३ ध्यान देना। १४ सकल्प करना, दृढ निश्चय करना। १५ पहनना, धारण करना। १६ स्थापित करना, ठहराना। १७ प्रगट करना। १८ सलग्न होना, काम मे लगना। १९ चौकीदारी करना, देखभाल करना। २० वहन करना। २१ अवस्थित होना, ठहरना, रहना। २२ गिरवी या बधक रखना। २३ जोर से पकडना, थामना। २४ डींग मारना, कहना। २५ प्रहार करना, मारना। २६ वश मे करना, काबू करना, रोकना।

धरती–स्त्री० [सं० धरित्री] १ पृथ्वी, भूमि। २ जमीन, धरातल, भू खण्ड। ३ आगन। ४ कृषि भूमि। ५ जागीर, राज्य। —**थम**–पु० योद्धा, वीर। राजा, नृप।

धरती-री-करोत–पु० ऊट।

धरतौ, धरत्ती, धरत्तौ, धरत्री–देखो 'धरती'।

धरथम, धरथभरा–पु० [स० धरा-स्तभ] १ राजा, नृप। २ वीर योद्धा।

धरधर–१ देखो 'धराधर'। २ देखो 'द्रहद्रहवार'।

धरधरण–पु० [स० धरा-धरण] शेषनाग।

धरधरवेळा–स्त्री० सध्या।

धरधारक–पु० [स० धरा-धारक] शेषनाग।

धरधीस–पु० [सं० धराधीस] १ राजा नृप। २ जागीरदार।

धरधुख–पु० [स० धरा धुक्ष] पृथ्वी की गर्मी, उष्णता।

धरधूस–वि० जमीदोज। भूमिसात।

धरन–१ देखो 'धरणी'। २ देखो 'धरण'।

धरपत, (पति, पता, पत्त, पत्ती)–देखो 'धरापति'।

धरपाडौ–पु० भूमि छीनने वाला, आततायी।

धरपुड–पु० धरणी तल, धरातल।

धरवार–देखो 'दरवार'।

धरभार उतारण–पु० ईश्वर परमेश्वर।

धरमडण–पु० [स० धरा-मण्डन्] इन्द्र।

धरमडळ, धरमडळि–पु० [स० धरा-मण्डल] भू मण्डल, पृथ्वी मण्डल।

धरम–पु० [स० धर्म] १ ईश्वराधना की कोई विशिष्ट प्रणाली या सिद्धान्त, मजहव, धर्म। २ स्वच्छ सामाजिक व्यवस्था के लिये निर्मित वृत्ति, आचरण या व्यवहार। ३ सदाचार, सत्कर्म। ४ पुण्य, दान। ५ सदाचार सबधी सिद्धान्त। ६ पारलौकिक सुख या मोक्ष प्राप्ति सवधी कर्म। ७ उच्च चरित्र, ईमान। ८ वस्तु का मूल गुण, प्रकृति, स्वभाव। ९ सन्मार्ग वताने का सिद्धान्त या उपदेश। १० कर्त्तव्य, फर्ज। ११ गुण, समान गुण। १२ युधिष्ठिर का एक नाम। १३ यमराज। १४ वर्तमान अवसर्पिणी के १५ वें अरिहत का नाम। १५ यज्ञ। १६ सत्सग। १७ ढगण की छ मात्राओ के वारहवें भेद का नाम। १८ जन्म लग्न से नौवें स्थान का नाम। १९ अटल व दृढ निश्चय। —**आतमज**–पु० युधिष्ठिर। —**करम**–पु० धार्मिक कर्म, दान पुण्य। ७२ कलाओ मे से एक। —**क्षेत्र, खेत, खेत्र**–पु० कुरु क्षेत्र भारतवर्ष। —**ग्य**–वि० धर्म को जानने वाला। धार्मिक। —**ग्रथ**–पु० किसी धर्म विशेष के निरुपण सवधी ग्रथ। —**घट**–पु० काशी खण्ड। हेमाद्रि दान खण्ड। —**चक्र**–पु० जिन देव का चक्र। —**चर्या**–स्त्री० धर्माचरण। —**ज**–पु० युधिष्ठिर। नर नारायण। -**जिहान**–पु० सूर्य, भानु। —**जीवन**–पु० धार्मिक कर्म कराकर निर्वाह करने का कार्य। —**जुद्ध**–पु० कपट रहित युद्ध। —**दान**–पु० ग्रहो की शान्ति हेतु किया जाने वाला दान। —**धकौ, धक्कौ**–पु० धर्म की आड, दुहाई। —**धरा**–स्त्री० पुण्य भूमि। भारतवर्ष। —**ध्यान**–पु० धर्म कर्म तथा ईश्वर चिंतन। —**धारी**–पु० धर्म निभाने वाला। -**धुज**–पु० राजा, नृप। धर्म ध्वज। —**धूरीण**–वि० धर्म मे अग्रणी। —**ध्वज**–पु० पाखडी, ढोंगी। —**नाथ**–पु० जैनो के १५ वें तीर्थंकर का नाम। —**नाभ**–पु० विष्णु। —**निस्ठ**–वि० धर्मज्ञ, धार्मिक धर्म पर दृढ। —**निस्ठा**–स्त्री० धर्म मे विश्वास। —**नीति**–स्त्री० धर्म पूर्ण नीति। ७२ कलाओ मे से एक। ६४ कलाओ मे से एक। —**पण**–पु० धर्म स्थिति। धर्म परायणता। —**पतनी, पत्नी**–स्त्री० शास्त्र रीति से विवाहता स्त्री, धर्मपत्नी। —**पथ**–पु० शास्त्र के अनुसार आचरण, धर्माचरण। —**पाळ**–पु० धर्म रक्षक। धर्म पालक। दड। राजा दशरथ का एक मत्री। —**पुत्त, पुत्र**–पु० युधिष्ठिर। नर नारायण। पुत्र रूप मे मान्यता —**पुरी**–स्त्री० यमपुर। वैकुण्ठ। न्यायालय, कचहरी। —**पुरौ**–पु० दान-पुण्य एवं धार्मिक कार्यों की व्यवस्था करने वाला विभाग। —**पूत, पूतु**='धरमपुत्र'। —**फूल**–पु० स्वर्ग। —**बुद्धि**–पु० अच्छे-बुरे का ज्ञान। —**भाई**–पु० भाई के रूप मे मनोनीत विजातीय व्यक्ति। —**भिक्षुक**–पु० धर्मार्थ भिक्षा मागने वाला। —**भीरु**–वि० धार्मिक रूढियो से डरने वाला। —**मढ**–पु० विवाह मण्डप, वेदी। —**राज**–पु० यमराज। युधिष्ठिर। राजा। धर्म पर चलने वाला। —**लाभ**–पु० जैन साधुओ का आशीर्वाद। —**लेस्या**–स्त्री० तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या का समूह। —**वत, वत**–वि० धार्मतमा, धार्मिक। —**वप**–पु० एक सूर्य वशी राजा। —**वाहन**–पु० भैंसा। —**विचार**–पु० ६४ कलाओ मे से एक। —**विवाह**–पु० वैदिक रीति से किया जाने वाला विवाह। कन्या के बदले कुछ न लेकर किया गया विवाह।

—वीर–वि० धार्मिक विषयो मे साहसी । —व्याध–पु० मिथिला निवासी एक तत्वज्ञानी व्याध । —व्याह= 'धरमविवाह' । —व्रता–स्त्री० मरीचि ऋषि की पत्नी । —सभा–स्त्री० न्यायालय । धार्मिक कार्यों के लिये आयोजित सभा, बैठक । —साळा–स्त्री० यात्रियो की सुविधा के लिये स्थान-स्थान पर बने भवन । दान पुण्य के लिये चलाया गया सत्र । —सावरणी–पु० ग्यारहवा मनु । —सासतर, सास्त्र–पु० नीति, आचार, सदाचार के नियमो का ग्रथ । —सास्त्री–वि० धर्मशास्त्र का ज्ञाता, पडित । —सीळ–वि० धर्माचरण करने वाला । —सुभाव–पु० तालाव । सरोवर ।

धरमणदेवी– स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

धरमांग–पु० [स० धर्मांग] वगुला । सारस ।

धरमातमा, धरमात्मा–वि० [स० धर्मात्मा] धर्म पर दृढ रहने वाला । धर्म के अनुसार आचरण करने वाला ।

धरमादे (दै)–क्रि० वि० धर्म हेतु, धर्म के नाम पर, परोपकार निमित्त ।

धरमादौ–पु० [स० धर्म] धर्म, पुण्य, दान । —**खातौ**–पु० दान पुण्य में व्यय हेतु निर्धारित रकम । दान पुण्य मे खर्च का लेखा-जोखा ।

धरमाधिक, धरमाधिकरणिक–पु० [स० धर्माधिकर्णिक] १ न्यायाधीश । २ न्यायालय, कचहरी । —**सभा**–स्त्री० न्यायाधीशो की सभा । धार्मिको की सभा ।

धरमाधिकारी–पु० [स० धर्माधिकारी] १ न्यायाधिकारी । २ पुण्य खाते का प्रबन्धक । ३ धर्मराज । ४ धर्म की व्यवस्था के लिए अधिकृत व्यक्ति ।

धरमाधिगरण–देखो 'धरमाधिकरणिक' ।

धरमारण–पु० [स० धर्मारण्य] १ तपोवन । २ गया के अन्तर्गत एक तीर्थ । ३ ऋषि आश्रम । ४ पुराणानुसार एक पुण्य भूमि ।

धरमारथ–वि० [स० धर्मार्थ] धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये ।

धरमावतार–पु० [स० धर्मावतार] १ धर्मराज का अवतार २ युधिष्ठिर । ३ न्यायाधीश । ४ धर्म के मामले मे निर्णय देने वाला अधिकृत व्यक्ति ।

धरमासन–पु० [स० धर्मासन] न्याय का सिंहासन, न्यायाधीश की कुर्सी ।

धरमास्तिकाय–पु० [स० धर्मास्तिकाय] गति परिणाम वाले जीव (जैन) ।

धरमियोवीर–देखो 'धरमभाई' ।

धरमी–वि० [स० धर्म्मिन्] १ धर्मात्मा, पुण्यात्मा । २ किसी धर्म या गुण से युक्त । ३ धर्म को मानने वाला । –पु० १ विष्णु । २ यम । ३ युधिष्ठिर । ४ धर्म का आश्रय । ५ धर्म पर दृढ़ व्यक्ति ।

धरमुरळी–देखो 'मुरळीधर' ।

धरमेलौ–पु० धर्म के आधार पर बना पारिवारिक सबध ।

धरमोपदेस–पु० [स० धर्मोपदेश] १ धर्म का उपदेश, धर्म सिद्धान्तो की व्याख्या । २ धर्मशास्त्र ।

धरम्म–देखो धरम' । —**सभा** = 'धरमसभा' ।

धरम्माधिकरणसभा–देखो 'धरमाधिकरणिकसभा' ।

धरम्माधिकरण (गरण)–देखो 'धरमाधिकरणिक' ।

धरम्मी–देखो 'धरमी' ।

धरर–स्त्री० यन्त्र आदि के चलने की ध्वनि ।

धरराट–पु० १ धर्-धर् ध्वनि । २ कपन, थर्राहट ।

धरवजर–पु० [स० वज्र-धर] इन्द्र, देवराज ।

धरवणौ (बौ)–क्रि० [स० धृ] १ तृप्त करना, अघाना । २ पीटना, मारना । ३ रखना । ४ धर-धर ध्वनि करना । ५ देखो 'धरणौ' (बौ) ।

धरवर–पु० [स० धरा-वर] राजा, नृप ।

धरवाणौ (बौ)–क्रि० १ तृप्त कराना, अघवाना । २ पिटवाना, मरवाना । ३ रखवाना । ४ धर-धर ध्वनि कराना । ५ देखो 'धराणौ' (बौ) ।

धरसडौ–देखो 'धरसूडौ' ।

धरसण (णी)–स्त्री० [स० धर्षिणी] १ दुश्चरित्रा, दुष्टा स्त्री । २ वेश्या, रण्डी ।

धरसधर–पु० [स० धराधर] पर्वत, पहाड ।

धरसुता–स्त्री० [स० धरा-सुता] सीता ।

धरसूंडौ–पु० बैलगाडी का अग्र भाग जो नीचे झुका रहता है ।

धरहड़णौ (बौ), धरहडणौ (बौ)–क्रि० १ थर्राना, कापना । २ ध्वनि करते हुए हिलना । ३ देखो 'धरहरणौ' (बौ) ।

धरहर–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

धरहरणौ (बौ)–क्रि० १ बरसना । २ जल प्लावित होना । ३ गर्जना । ४ तोप आदि का छूटना ध्वनि करना । ५ धड-धड शब्द होना । ६ नगाडे का बजना । ७ देखो धडहडणौ (बौ) ।

धरांपती–देखो 'धरापति' ।

धरा–स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, भूमि । २ जमीन, भू-भाग । ३ ससार, दुनिया । ४ राज्य, जागीर । ५ गर्भाशय । ६ योनि । ७ एक वर्ण वृत्त । —**आतमज**–पु० मगल ग्रह । —तळ–पु० पृथ्वी की सतह । सतह । लबाई-चौडाई का गुणनफल । भूमि, पृथ्वी । —**धव, धम**–पु० राजा, नृप ।

योद्धा, वीर। —धर-पु० शेषनाग। पर्वत। विष्णु। —धव-पु० राजा, नृप। —धार-पु० शेषनाग। —धिपति, धीस-पु० राजा, नृप। ईश्वर, विष्णु। —नायक-पु० राजा, नृप। —पति, पती-पु० राजा, नृप। —पुत्र-पु० मगल ग्रह। —विधूसण-पु० तलवार।

धराउ (ऊ)-देखो 'धुराऊ'।

धराज-पु० १ बढई का एक औजार। २ देखो 'धिराज'।

धराणौ (बौ)-क्रि० १ रूप बनवाना, देह धारण कराना। २ आरोपित कराना। ३ व्यवहार के लिए लिवाना, काम के लिये रखाना। ४ लिवाना, ग्रहण कराना। ५ रखवाना, धरवाना। ६ निश्चित कराना, निर्धारित कराना। ७ महसूस या अनुभव कराना। ८ बैठाना, ग्रहण, कराना। ९ पास मे रखाना, रक्षा मे देना। १० स्वीकार कराना। ११ चौकन्ना व सावधान करना। १२ ध्यान दिराना। १३ सकल्प कराना, दृढ-निश्चय कराना। १४ पहनाना, धारण कराना। १५ स्थापित कराना। १६ प्रगट कराना। १७ सलग्न कराना, काम मे लगवाना। १८ देखभाल कराना। १९ वहन कराना। २० अवस्थित करना। २१ गिरवी या बधक रखवाना। २२ मजबूती से पकडाना, थमवाना। २३ डीग मरवाना। २४ प्रहार कराना, मरवाना। २५ वश मे कराना, काबू मे कराना, रुकवाना।

धराधारधारी-पु० [स०] महादेव, शिव।

धरापूर-वि० पूर्ण, सम्पूर्ण।

धरारण-स्त्री० भूमि, पृथ्वी।

धरारूप-वि० पर्वत तुल्य।

धरा-रो-थम-देखो 'धराथभ'।

धराळ-पु० १ स्थलचर प्राणी। २ देखो 'धाराळो'। ३ देखो 'धुराळ'।

धराव-पु० १ पशु, मवेशी। २ पशु धन। ३ देखो 'धाव'। -वि० मूर्ख।

धरावणौ-पु० रखवाने या ठहराने की क्रिया या भाव।

धरावणौ (बौ)-देखो 'धराणौ' (बौ)।

धरावू-देखो 'धुराऊ'।

धराही-स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

धरि-अव्य० प्रारभ मे।

धरिती, धरित्री-देखो 'धरती'।

धरि-धारण-पु० [स० धुर-धारण] बैल, वृषभ।

धरू-पु० [स० ध्रुपद] १ एक राग विशेष, ध्रुपद। २ देखो 'ध्रू'।

धरेट-स्त्री० [स० दृष्टि] कुदृष्टि, नजर।

धरेस-पु० [स० धरा-ईश] १ राजा, नृप। २ शेषनाग। ३ ईश्वर।

धरैती-स्त्री० १ हैरानी, परेशानी। २ तगी। ३ देखो 'धरती'।

धरोड, धरोहर-स्त्री० [स० धरण] १ अमानत, थाती। २ गिरवी, रेहन। ३ अमानत या गिरवी रखी वस्तु।

धरौ-पु० [स० ध्रं] १ सतोप। २ तृप्ति। ३ ढोलक आदि का भारी आवाज वाला भाग।

धळ-धूधळ-स्त्री० रेतीली भूमि। मरुस्थल।

धव-पु० [स०] १ पति, स्वामी। २ मनुष्य। ३ सूर्य। ४ धूर्त व्यक्ति। ५ एक वृक्ष विशेष। ६ कपन, थर्राहट। ७ देखो 'धाव'।

धवई-देखो 'धाय'।

धवडी-स्त्री० वीरागना।

धवणि (णी)-१ देखो 'धमण'। २ देखो 'धमणी'।

धवणौ (बौ)-क्रि० १ स्तन पान करना। २ देखो 'धमणौ' (बौ)।

धवभग-पु० [स०] पति या स्वामी का अवमान, मृत्यु। वैधव्य।

धवर-पु० एक पक्षी विशेष। -वि० उजला, श्वेत।

धवरहर-देखो 'धवळहर'।

धवराडणौ (बौ), धवराणौ (बौ)-देखो 'धवाणौ (बौ)।

धवरानळ-पु० सूर्य, भानु।

धवरावणौ (बौ)-देखो 'धवाणौ' (बौ)।

धवळग-वि० [स० धवल-अग] श्वेत, उज्ज्वल। -पु० १ हस। २ प्रासाद, महल।

धवळगा-स्त्री० एक वर्ण वृत्त।

धवळ-पु० [स० धवल] १ बैल, वृषभ। २ हस। ३ एक लोक गीत विशेष। ४ सुभट, योद्धा। ५ छप्पय छद का एक भेद। ६ मागलिक गायन। ७ देखो 'धमळ'। ८ श्वेत पत्र। ९ एक वृक्ष। -वि० १ श्वेत, उज्ज्वल। २ विशुद्ध, स्पष्ट। ३ सुन्दर। —**आरोहण**-पु० शिव, महादेव। —**धुज**-पु० शिव। —**पक्ष, पख**-पु० शुक्ल पक्ष। हस। —**मदिर**-पु० बडा भवन। राज्य प्रासाद। —**मिण**-स्त्री० दीपक। -**हर, हरि**-पु० बडा भवन। राज्य प्रासाद। मीनार।

धवळगर, (गिर, गिरी)-१ हिमालय की सर्वोच्च चोटी। २ कैलाश पर्वत। ३ हिमालय पर्वत। ४ एक प्रकार की तलवार। ५ दुर्गा देवी। —**वासिनी**-स्त्री० सरस्वती देवी।

धवळग्रह (ग्रिह, ग्रेह)-पु० [स० धवल गृह] १ चूने से पुता सफेद भवन। २ देखो 'धवळहर'।

धवळचित-वि० [स०] निष्कपट स्पष्टवादी।

धवळणौ (बौ)-क्रि० [स० धवलम्] १ उज्ज्वल करना, सफेद करना। २ चमकाना। ३ प्रकाशित करना।

धवळता-स्त्री० [स० धवलता] सफेदी, उज्ज्वलता।

धवळधन्यासी-स्त्री० [स० धवल-धन्याश्री] एक रागविशेष।

धवळमगळ-पु० [स० धवल-मगल] १ मागलिक अवसरो पर गाया जाने वाला एक लोक गीत विशेष। २ मागलिक कार्य, उत्सव। ३ आनन्द, हर्ष। -वि० मागलिक, शुभ।

धवळस्री-स्त्री० [स० धवलश्री] एक रागिनी विशेष।

धवळहर (रो)-पु० १ वडा भवन। २ महल कोठी।

धवळाग-देखो 'धवळग'।

धवळा-स्त्री० [स० धवला] १ श्वेत गाय। २ पार्वती, उमा। ३ महामाया। ४ एक नदी का नाम। ५ गौरवर्णा स्त्री।

धवळागिरि-देखो 'धवळगिरी'। —**वासिनी**='धवलगिरी-वासनी'।

धवळित-वि० [स० धवलित] १ सफेद किया हुआ। २ चूने से पोता हुआ। ३ उज्ज्वल, शुभ्र।

धवळी-स्त्री० [स० धवली] १ श्वेत गाय। २ श्वेत मिर्च। -वि० १ श्वेत, सफेद। २ उज्ज्वल, शुभ्र।

धवळेरण-स्त्री० मागलिक गीत गाने वाली स्त्री।

धवळौ-१ देखो 'धवळ'। २ देखो 'धोळौ'।

धवान-देखो 'ध्वान'

धवा-स्त्री० [स० धवला] महामाया, शक्ति।

धवाणौ(बौ)-क्रि०१ स्तनपान कराना। २ देखो' धमाणौ' (बौ)।

धवावण-स्त्री० स्तन पान कराने की क्रिया

धवावणी-वि० स्तन पान कराने वाली।

धवावणौ (बौ)-देखो 'धवाणौ' (बौ)।

धवी-स्त्री० स्त्रियो के कान का आभूषण विशेष।

धस-स्त्री० १ घुसने या प्रविष्ठ होने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ घुसने या फसने से उत्पन्न ध्वनि। ३ डुबकी, गोता। ४ दहाड, गर्जना।

धसक, धसकरण-स्त्री० १ धाक। २ ललकार। ३ खिसकने या ढहने की क्रिया या भाव। ४ फिसलाव।

धसकणौ (बौ)-क्रि० [स० दशनम्] १ नीचे खिसकना। २ ढहना। ३ नीचे दबना। ४ फिसलना। ५ देखो 'धसणौ' (बौ)।

धसकाणौ (बौ), धसकावणौ (बौ)-क्रि० १ नीचे खिसकाना। २ ढहाना। ३ नीचे दबाना। ४ फिसलाना। ६ देखो 'धसाणौ' (बौ)।

धसकौ-पु० १ टक्कर, धक्का, आघात। २ दुत्कार, फटकार। ३ भय आतक, डर। ४ झटका।

धसक्कणौ (बौ)-देखो 'धसकणौ' (बौ)।

धसड़-स्त्री० १ प्रहार की ध्वनि। २ देखो 'धसळ'।

धसटी-१ देखो 'धिस्टी'। २ देखो 'धस्ट'।

धसणौ (बौ)-क्रि० १ बलात् प्रविष्ठ होना, घुसना, बलात् आगे बढना। २ प्रवेश करना। ३ चुभना, फसना, गडना। ४ ध्वस्त होना, नष्ट होना। ५ नीचे खिसकना, उतरना। ६ नीचे बैठना सतह से नीचे होना। ७ मिलना, मिल जाना। ८ देखो 'धसक्णौ' (बौ)

धसमस-स्त्री० १ धसने की क्रिया या भाव। २ डावाडोल होने की अवस्था या भाव। ३ धीर व गभीर चाल। ४ खीचा-तान, धसामस।

धसमसणौ (बौ)-क्रि० १ धीर व गभीर चाल से चलना। २ सतर्कता से चलना। ३ आक्रमण करना, हमला करना। ४ तेज चलना। ५ रुक-रुक कर चलना। ६ नीचे दबना, धसना। ७ सतह से नीचे होना, दबना। ८ खीचातान होना, कसमसाना।

धसळ, धसळक-स्त्री० [स० धर्षण] १ धमकी, डाट-फटकार। २ ललकार, चुनौती। ३ आक्रमण, हमला। ४ क्रोध या जोश मे बोलना। ५ गर्जना, दहाड। ६ रीव, जोश। ७ मस्ती की आवाज। ८ जोश व मस्ती। ९ हाका दखबड, हो-हल्ला।

धसळणौ (बौ)-क्रि० १ डाटना, फटकारना। २ क्रोध मे बोलना जोश मे बोलना। ३ दहाडना, गर्जना। ४ धमकाना, ललकारना।

धसान-स्त्री० १ धसने की क्रिया या भाव। २ सतह से नीचे बैठा हुआ हिस्सा। ३ दाब का चिह्न, गड्ढा। ४ डाह, जलन। ५ बुन्देल खण्ड की एक नदी।

धसाक-स्त्री० ध्वनि, आवाज। कोलाहल।

धसाणौ (बौ)-क्रि० १ सतह से नीचे दबाना, नीचे बैठाना। २ घुसाना, चुभाना, गड़ाना। ३ बलात् प्रविष्ठ कराना पैठाना। ४ मिलाना। ५ ध्वस्त करना, नष्ट करना। ६ नीचे खिसकाना, उतारना। ७ प्रवेश कराना। ८ देखो 'धसकाणौ' (बौ)।

धसाव-पु० १ धसना क्रिया। २ दबाव। ३ प्रवेश, फसाव।

धसावणौ (बौ)-देखो 'धसाणौ' (बौ)।

धसुण-पु० [स० धिषण] १ कवि। २ पडित, विद्वान। ३ वृह-स्पति, सुरगुरु।

धसुरसरी-स्त्री० दक्षिण की नदी, कावेरी।

धह-देखो 'दह'।

धहचाळ-देखो 'धंचाळ'।

धहळ-देखो 'दहळ'।

धहळणौ (बौ)-देखो 'दहळणौ' (बौ)।

धा-अव्य० १ एक प्रकार का अव्यय शब्द। २ देखो 'धाय'।

धाअंत-देखो 'ध्वांत'।

धाक–स्त्री० १ चिह्न। २ देखो धक'।
धाकणी (बौ)–क्रि० [स० द्राक्षि, ध्वाक्ष] इच्छा करना, चाहना।
धाकळ–देखो 'धूकळ'।
धाख–देखो 'धक'।
धाखणौ (बौ)–देखो 'धाकणौ' (बौ)।
धागडि धागडी–देखो 'दागड़ी'।
धागौ–पु० एक प्रकार की सवारी, तागा, रथ।
धाण–पु० नाश, विध्वस
धांणका–स्त्री० [स० धनुप] १ राजस्थान की एक पिछडी जाति। २ श्वपच, चाडाल।
धाणको–पु० १ उक्त जाति का व्यक्ति। २ चाण्डाल, हरिजन।
धांणा–पु० [सं० धान्यक] धनिया नामक पदार्थ जिसकी खेती रबी की फसल के साथ होती है। इसके पत्ते व बीज मिर्च मसाले व औषधि मे काम मे आते हैं। —पचक–पु० धनिया के योग से बना पाच औषधियो का मिश्रण। —पुणछी–स्त्री० स्त्रियो के हाथ का आभूषण विशेष।
धाणी–स्त्री० अत्यन्त गर्म बालू मे सेका हुआ अनाज या जौ का दाना।
धाणुक–पु० [स० धानुष्क] धनुर्धर, धनुप चलाने वाला योद्धा।
धाणौ–पु० [स० धान्यक] धनिया का पौधा या बीज।
धात–देखो 'ध्वात'।
धाधळि (ळी)–स्त्री० १ अव्यवस्था, गडबडी। २ बखेडा, फिसाद ३ विवाद, तकरार। ४ उत्पात, उपद्रव। ५ मनमानी। ६ नियम विरुद्ध कार्य।
धाधळबाज–वि० गडबडी करने वाला, मनमानी करने वाला। उपद्रवी।
धाधळबाजी–देखो 'धाधळी'।
धांधाधपसु–स्त्री० तबले की ध्वनि, तबले का बोल।
धाधी–स्त्री० नगाडे की ध्वनि।
धाधु–स्त्री० १ शीघ्रता, जल्दी। २ तकरार।
धानक–देखो 'धनुस'।
धांनकी–देखो 'धानखी'।
धांनख, धांनख–देखो 'धनुस'। —धर, धारी 'धनुसधर'।
धानखर–पु० धनुर्धारी योद्धा।
धानखी–पु० [स० धानुषक] धनुर्विद्या मे प्रवीण।
धांनतर–देखो 'धनतर'।
धान–पु० [स० धान्य] अन्न, अनाज, नाज।
धानक–देखो 'धनुस'।
धानकी-फूल–पु० [स० पुष्प-धन्वा] कामदेव, मदन।
धानख–देखो 'धनुस'।
धानड, धानडलो, धानडियो, धानडो–देखो 'धान'।

धानमडी–स्त्री० [स० धान्य-मण्डप] धान (अनाज) के क्रय-विक्रय का केन्द्र, अनाज-बाजार।
धानमाळी–पु० एक असुर का नाम।
धांनी–स्त्री० [स० धानी] १ स्थान, जगह। २ बासुरी। ३ एक राग विशेष। ४ एक वर्ण वृत्त। ५ एक रग विशेष।
धानुक, धानुख–देखो 'धनुम'। —धर = 'धनुसधर'।
धानुकी–पु० धनुप चलाने वाला।
धान्य–पु० [स० धान्य] केवल अन्न मात्र। —धेनु–स्त्री० दान स्वरूप दी जाने वाली गाय। एक दान विशेष। —पंचक–पु० पाच विशिष्ट धानो का समूह, एक औपधि। —पाळ–पु० एक प्राचीन राजवश।
धाम–पु० [स० धामन्] १ गृह, मकान, घर। २ निवास स्थान। ३ स्थान जगह। ४ देवस्थान, देवालय। ५ तीर्थ स्थान। ६ परलोक वैकुण्ठ, स्वर्ग। ७ देह, शरीर। ८ तेज, प्रकाश। ९ ज्योति, किरण। १० आभा, चमक, काति। ११ बल, प्रताप। १२ दल, समूह। १३ दशा, परिस्थिति। १४ चार की संख्या*। —उजासी–पु० दीपक।
धामजग्र–देखो 'धमगजर'।
धामण (णि, णा)–पु० १ एक प्रकार का घास। २ एक वृक्ष विशेष। ३ एक सर्प विशेष। ४ मास पकाने की हडिया। ५ मोल-भाव करने की क्रिया। ६ स्वीकार करने के लिये कोई वस्तु किसी के आगे करने की क्रिया।
धामणौ (बौ)–क्रि० १ भेंट आदि सामने रखना, आगे करना, स्वीकारार्थ आग्रह करना। २ निश्चित मोल पर कोई वस्तु मागना, वस्तु की कीमत आकना।
धामधूम–वि० वात विकार से फूला हुआ, वात विकार युक्त। —पु० १ मार-काट। २ युद्ध। ३ वात विकार। ४ देखो 'धूम-धाम'।
धामनीर–पु० [सं० नीर धाम] १ समुद्र, सागर। २ सरोवर।
धामस्री–स्त्री० [स० धामश्री] एक रागिनी विशेष
धामहर–पु० [स० धामगृह] देवल
धामहरि–पु० [स० धामहरि] वैकुण्ठ, स्वर्ग
धामाजागर–देखो 'धमगजर'
धामिणी–स्त्री० कन्या या बहन को दी जाने वाली गाय या भैस।
धामिणौ–पु० बहन या भूवा के पास रहने वाला बच्चा या लडका
धामिय–वि० [स० धार्मिक] धर्माचरण करने वाला, धार्मिक
धामौ–पु० चौडे मुह का गोल पात्र, बडा प्याला।
धाय–स्त्री० १ बन्दूक आदि के छूटने की ध्वनि। २ आग की तेज लपटो की ध्वनि। ३ तेज लपटो मे जलने की क्रिया।

धास–स्त्री० १ आभूपणो के बीच लगने वाली एक कील विशेप। २ दातो का आभूपण विशेप। ३ किसी पदार्थ की बारीक गर्द। ४ देखो 'धासी'। ५ देखो 'धूंस'। ६ देखो 'धासौ'

धासणो (बौ)–क्रि० १ खासना, खासी होना। २ रगडना, घिमना।

धासारौ–पु० झडवेरी के सूखे काटे जो एक बार मे वैलगाडी मे भरे जाय।

धासी–स्त्री० कास रोग, खासी

धासौ–पु० १ भाला २ देखो 'धूंसौ'

धाहणौ (बौ)–देखो 'धासणौ' (बौ)।

धा–स्त्री० १ पृथ्वी, धरती। २ लक्ष्मी ३ सरस्वती, शारदा ४ उमा, पार्वती। ५ धाय। ६ तवले का एक बोल। ६ धैवत स्वर का सकेत। ८ बूढी स्त्री या दादी आदि के लिये प्रयुक्त सबोधन। –वि० धारण करने वाला। –क्रि० वि० ओर, तरफ।

धाई–१ देखा 'धाय'। २ देखो 'धा'।

धाईउ–वि० [स० धावितः] दौडा हुआ।

धाईधूपी–वि० [स० ध्रै] १ खाई-पी, तृप्त, अघाई हुई। २ स्वच्छ, निर्मल। ३ स्नान की हुई।

धाउ–पु० १ धातु। [स० धाव] २ नाच का एक भेद।

धाउधप–वि० १ प्रचुर मात्रा मे, तृप्त होने लायक, भर पेट खाने लायक। २ अधिक, बहुत।

धाऊ–पु० [स० धावन] कार्य के लिये दौडने वाला व्यक्ति। धावक। –क्रि० वि० ओर, तरफ।

धाऊकार–पु० [स० ध्वसकार] विध्वस, नाश।

धाऊडौ–देखो 'धाव'।

धाऊधप–देखो 'धाउधप'।

धाक–स्त्री० [सं० धक्क] १ आतक, भय, डर। २ रौब, प्रभाव ३ प्रसिद्धि, ख्याति। ४ शौर्य, पराक्रम।

धाकळ–स्त्री० [स० धक्क] १ जोश या रौब भरी आवाज। २ डांट, फटकार प्रताडना। ३ धमकी।

धाकळणौ (बौ)–क्रि० [स० धक्क] १ डाटना, फटकारना। २ जोश या रौब मे बोलना। ३ धमकाना। ४ हाकना, चलाना।

धाकाधीकौ, धाकाधेकौ–क्रि०वि० जैसे, तैसे, किसी तरह। –पु० १ काम चलाऊ व्यवस्था। २ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

धा'काळ–पु० भयकर दुर्भिक्ष, अकाल।

धाकौ–पु० [स० धाखृ] १ निर्वाह, गुजारा। २ काम चलाऊ व्यवस्था। [स० धक्क] ३ धाक, रौब। ४ भय, डर, आतक। ५ शका, सशय।

धाख–देखो 'धाक'।

धाखा-धीखौ, धाखाधेखौ–देखो 'धाकाधेखौ'।

धाग–स्त्री० [स० दाह] १ तेज अग्नि, अनल। २ अति क्रोध। ३ देखो 'दाग'।

धागौ–पु० [स० तार्कव] १ सूत का तागा, ताना। २ डोरा, धागा। ३ यज्ञोपवीत। ४ श्वेत पाग पर बाधने का काला सूत्र। ५ ध्यान, लगन।

धाड–स्त्री० [स०धाटी] १ लुटेरो का दल, समूह। २ आक्रमण-कारियो का दल, शत्रुदल। ३ शत्रुओ का हमला। ४ आतक, डर। ५ विपत्ति, सकट। ६ जत्था, समूह। ७ डाका, धाडा। ८ करुणक्रन्दन, रुदन। ९ अशुभ समाचार। –अव्य० धन्य, वाह।

धाड़णौ(बौ)–क्रि० १ डाका डालना, लूटना। २ रुदन करना, ३ आक्रमण या हमला करना। ३ डरना, भय खाना।

धाडती–देखो 'धाडायती'।

धाड-फाड–वि० साहसी, निडर। होशियार, सावधान।

धाड़यत, धाडव, धाडवी–देखो 'धाडायत'।

धाडा–स्त्री० १ आभार या कृतज्ञता सूचक शब्द। २ प्रशसा।

धाड़ात–देखो 'धाडायत'।

धाडामरद–पु० १ लुटेरा, डाकू। २ शक्तिशाली व्यक्ति।

धाडायत, धाडायती, धाड़ायत्त, धाड़ावी–पु० [स० धाटी] १ डाकू लुटेरा। २ लूट-मार करने वाला। ३ आक्रामक।

धाड़ि–देखो 'धाडौ'।

धाडी, धाडीत, धाडीतौ, धाडेत, धाडेत, धाडेती–देखो 'धाडायती'।

धाडौ–पु० [स० धाटी] धन-माल के बलात् अपहरण की क्रिया, लूट। डाका, बटमारी।

धाट–पु० ऊमर कोट राज्य का एक नाम।

धाटि, धाटी–पु० [स० धाटी] १ डाकू। २ डाकुओ का दल। ३ 'धाट' देश का घोडा। ४ सिंधी मुसलमानो का एक भेद। ५ घोडे की एक चाल विशेष। ६ कान का आभूपण। ७ देखो 'घटी'। –वि० 'धाट' देश का, 'धाट' देश सम्वन्धी।

धाड–देखो 'धाड'।

धाडणौ (बौ)–देखो 'धाडणौ (बौ)।

धाडव (वौ)–देखो 'धाडायत'।

धाडि–देखो 'धाडौ'।

धाडी, धाडीत, धाडीतौ, धाडेत, धाडेत,धाडेती–देखो 'धाडायत'।

धाणौ (बौ)–क्रि० [स० ध्रै] १ पूर्ण तृप्त होना, अधाना। २ सन्तुष्ट होना। ३ परेशान होना। ४ इच्छा न रहना। अरुचि होना। ५ गिरना पडना। ६ देखो 'धावणौ' (बौ)।

धात-पु० [स० धातृ] १ कामदेव। २ सूर्य। ३ पत्थर, पाषाण। ४ तलवार। ५ स्वभाव, प्रकृति। ६ देखो 'धाता'। ७ देखो 'धातु'। —धर-पु०-पर्वत, पहाड। —बीज-पु० कामदेव, मदन। —स्वायु-वि० धातु का स्वाद लेने वाला।

धातरि-स्त्री० एक प्रकार की सब्जी।

धातासार-पु० [स० धातु-सार] सोना, स्वर्ण।

धाता-पु० [स० धातृ] १ ब्रह्मा, विधाता, विधि। २ विष्णु। ३ शिव, महेश। ४ शेषनाग। ५ बारह आदित्यों मे से एक ६ रक्षा। ७ ठगण के आठवें भेद का नाम (।।ऽ।)। -वि० १ रक्षा करने वाला, रक्षक। २ धारण करने वाला, धारक। ३ पालन करने वाला, पालक।

धातु-स्त्री० [स०] १ लोहा, तावा, सोना आदि मूल द्रव्य, अपारदर्शक पदार्थ। २ शरीर को बनाए रखने वाले पदार्थ। ३ शुक्र, वीर्य। ४ शब्द का मूल रूप। —करम-पु० ७२ कलाओं मे से एक। -क्षय-पु० शरीर से वीर्य पात का रोग, प्रमेह। खासी। —थभक='धातुस्तभक'। —पुस्ट-वि० वीर्य को गाढ़ा व पुष्ट करने वाला। —प्रधान-पु० प्रधान धातु, वीर्य। —भ्रत-पु० पर्वत, पहाड। —माक्षिक-पु० एक उपधातु, सोनामक्खी। —रेचक-वि० वीर्य को वहाने वाला। —वरद्धक, वरधक-वि० वीर्यवर्द्धक। —वाद--पु० कच्ची धातुओं को साफ करने की क्रिया। ६४ कलाओं मे से एक। —वादी-पु० धातुओं को साफ करने वाला। —वैरी-पु० गधक। —स्तमक-वि० वीर्य का स्तभन करने वाला।

धातोपम-पु० [स० धातु-उपमा] सोना।

धात्रवादी-देखो 'धातुवाद'।

धात्री-स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, भूमि। २ माता। ३ गगा। ४ सेना, फौज। ५ आवले का वृक्ष या फल। ६ आर्या छन्द का एक भेद। ७ देखो 'धाय'। —फळ-पु० आवला।

धात्रिग-पु० पुरुषों की बहत्तर कलाओं मे से एक।

धाधू-स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ शीघ्रता से कार्य करने की क्रिया या भाव। ३ मार-पीट। ४ प्रहार, चोट, आघात।

धाप-स्त्री० [स०ध्रा] अघाने की अवस्था या भाव, तृप्ति। सतोष। -क्रि०वि० पेट भर कर, तृप्त होकर। जी भरकर। इच्छानुसार।

धापड-पु० [स० ध्रपक] १ मोट का पानी गिराने का स्थान। लिलारी, छिउलारा। २ थप्पड, तमाचा, चपत।

धापणौ (बौ)-क्रि० [स०ध्रा] १ पेट भरना, भूख शात होना। २ तृप्त होना, अघाना। ३ सतुष्ट होना तुष्ट होना। ४ तर होना, सरावोर होना, दृढ निश्चय करना। ५ सम्पन्न होना।

धापभौ (वौ)-देखो 'धपाऊ'।

धाफड-देखो 'धापड'।

धाव-पु० कटे घास का ढेर।

धावडिया-स्त्री० गेहूँ बोने की एक क्रिया विशेष।

धावळ-पु० १ ऊनी वस्त्र विशेष। २ कपडा विशेष, वस्त्र। ३ देखो 'धावळौ'।

धावळपाळ (ळी), धावळवाळ (ळी), धावळियाणी, धावळियाळ (ळी)-स्त्री० १ श्रीकरणी देवी। २ देवी, दुर्गा। ३ 'धावळा' पहनने वाली स्त्री।

धावळियौ-देखो 'धावळौ'।

धावळी, धावळीयार-देखो 'धावळयाळ'।

धावळौ-पु० १ स्त्रियों का अधोवस्त्र, घाघर। २ लहगा, घाघरा।

धावौ-देखो 'दावौ'।

धामाई-पु० [स० धात्रेय-भ्राता] धाय का पुत्र।

धाय-स्त्री० [स० धात्री] १ अन्य के बच्चे को स्तनपान कराके पालने वाली स्त्री। २ लालन-पालन करने वाली स्त्री। उप माता। ३ एक वृक्ष विशेष। ४ वार, दफा। ५ देखो 'धा'।

धायक-देखो 'धावक'।

धायडेती-देखो 'धाडायत'।

धायन-क्रि० वि० निरन्तर, लगातार।

धायमाई-देखो 'धाभाई'।

धायरट्ठ, धायराठु-देखो 'धतराठ'।

धायोडौ, धायौ वि० [स० ध्रा] १ तृप्त, अघाया हुआ। २ जो भूखा न हो। ३ धनी, सम्पन्न। ४ गिरा हुआ, पडा हुआ।

धार-स्त्री० [स०] १ चाकू, शस्त्र आदि का तीखा फल, तीक्ष्ण शिरा। २ तलवार। ३ द्रव पदार्थ की पतली धारा। ४ प्रवाह, वेग। ५ मूसलाधार वृष्टि। ६ किनारा, तट, छोर। ७ क्रम, सिलसिला। ८ पृथ्वी, इला। ९ सीमा, हद। १० एक प्रदेश का नाम जिसे नल राजा ने विजय किया था। ११ देखो 'धारा'।

धारक-वि० [स०] १ धारण करने वाला। २ निभाने वाला। ३ वहन करने वाला। —धरा-पु० शेषनाग।

धारकसुरत-वि० [स० श्रुत-धारक] पडित, ज्ञानी।

धारकोर-स्त्री० द्वार या खिडकी के सामने पडने वाला दीवार का किनारा।

धारक्क-देखो 'धारक'।

धारजळ-देखो 'धारूजळ'।

धारण-स्त्री० [स०] १ एक वार तोलने की क्रिया। २ पाच सेर का एक तौल विशेष। ३ तराजू का पलडा। ४ ग्रहण करने की क्रिया या भाव। ग्रहण। ५ अवलवन, सहारा। ६ देखो 'धारणा'। —पितबर,पितावर-पु० परमेश्वर। श्रीकृष्ण।

—मात्रिका—स्त्री० ६४ कलाओं मे से एक। —वज्र—पु० इन्द्र।

धारणा—स्त्री० [सं०] १ समझने की वृत्ति, अक्ल, बुद्धि, समझ। २ पक्का विचार, दृढ निश्चय। ३ स्मृति, याद। ४ विचार-धारा, खयाल, भावना। ५ विश्वास। ६ मर्यादा। ७ योग के आठ अगो मे से एक। ८ चेहरे की मुद्रा। ९ धारण करने की क्रिया।

धारणो—वि० [सं० धारण] (स्त्री० धारणी) धारण करने वाला, वहन करने वाला, पहनने वाला।

धारणौ (बौ)—क्रि० [सं० धारणम्] १ ग्रहण करना, धारण करना। २ स्वीकार करना, मानना। ३ सभालना, थामना ४ मानना, पालन करना, निभाना। ५ विचार करना, निश्चय करना। ६ पहनना। ७ वहन करना। ८ सेवन करना, खाना-पीना। ९ दया, सहानुभूति दिखाना।

धारधर—पु० [सं० धाराधर] १ इन्द्र। २ बादल, घन।

धारधूस—पु० डाकुओं का दल।

धारमिक—वि० [सं० धार्मिक] १ धर्म को मानने वाला, धर्मात्मा २ धर्म करने वाला। ३ धर्म सबन्धी। ४ किसी धर्म विशेष का अनुयायी। ५ न्यायप्रिय। —ता—स्त्री० धर्म की भावना। धर्माचरण।

धारवौ—पु० [सं० धारा] प्रवाह। धारा।

धारसु—पु० [सं० सुधार] मत्री, सचिव।

धारांग—पु० [सं०] १ एक प्राचीन तीर्थ। २ तलवार, खड्ग।

धारा—स्त्री० [सं०] १ पानी आदि द्रव पदार्थ का प्रवाह, बहाव धार। २ सोता, झरना, चश्मा। ३ निरन्तर बहने वाला द्रव पदार्थ। ४ शृखला। ५ अनवरत गति। ६ घोडे की पच विध गतियो का समूह। ७ घोडे की चाल या गति। ८ तलवार। ९ रथ का पहिया। १० पहिये पर लगने वाली धनुषाकार लकडी। ११ सेना का अग्र भाग। १२ वृष्टि, वर्षा। १३ मालवा की प्राचीन राजधानी। १४ सिरा। १५ पहाड का किनारा। १६ समूह। १७ कीर्ति। १८ रात। १९ हल्दी। २० समानता। २१ कान का अग्र भाग। २२ देखो 'धार'।

धाराक—वि० [सं० धारक] १ तीक्ष्ण व पैनी धार वाला। २ धारण करने वाला।

धारागळ—वि० लबा चौडा, विस्तृत।

धाराट—पु० [सं०] १ बादल, मेघ। २ चातक पक्षी। ३ मस्त हाथी। ४ घोडा।

धराधर—पु० [सं०] १ बादल, मेघ। २ इन्द्र, देवराज। ३ राजा, नृप। ४ पर्वत। ५ तलवार, खड्ग।

धाराधाम—पु० [सं० धाराधरित] वीरगति प्राप्त करने की क्रिया या भाव।

धाराधार—वि० [सं०] खड्गधारी, वीर। योद्धा।

धारायणी—वि० [सं० धारणी] धारण करने वाली।

धारायसचियाय—स्त्री० एक देवी का नाम।

धारारव—पु० [सं०] १ शस्त्रो की ध्वनि, खन-खन। २ प्रवाह की ध्वनि, कल-कल।

धाराळ—पु० १ वीर, योद्धा। २ वर्षा की धारा के चिह्न। ३ देखो 'धाराळी'।

धाराळा, धाराळी—स्त्री० १ कटार। २ बरछी। ३ तलवार, खड्ग। ४ नदी, प्रवाहिनी। —वि० धारावाली।

धारावर—पु० [सं०] बादल।

धारावाही—वि० १ धारा की तरह आगे बढने वाला, शृखलाबद्ध। २ निरन्तर चलने वाला।

धाराविस—पु० [सं० धाराविष] खड्ग, तलवार।

धाराहर—देखो 'धाराधर'।

धारि—देखो 'धारी'।

धारिणी—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती। —वि० धारण करने वाली।

धारियौ—पु० एक प्रकार का शस्त्र।

धारी—वि० [सं० धारिन्] (स्त्री० धारणी) १ धारण करने वाला। २ याद रखने वाला। ३ मानने वाला। —पु० १ पीलू का वृक्ष। २ रेखा, पक्ति। —गंग—पु० शिव, महादेव। —गदा—पु० विष्णु। श्रीकृष्ण। हनुमान। भीम। —दार—वि० जिसमे कोई धारी या लकीर हो।

धारीचोपण—पु० आभूषणो पर खुदाई करने का औजार।

धारीजणी—स्त्री० मवेशी के मूल्य मे की जाने वाली कमी।

धारीजनोई—पु० द्विज ब्राह्मण। जनेऊधारी।

धारूजळ—देखो 'धारूजळ'।

धारू—वि० [सं० धारिन्] धारण करने वाला। —जळ—पु० समुद्र, सरोवर। तलवार।

धारू-वारू—वि० अत्यधिक प्रिय।

धारेचणौ (बौ)—क्रि० विधवा स्त्री द्वारा किसी पुरुष को पति बनाना। नाता करना।

धारेचौ—पु० विधवा स्त्री द्वारा किसी पुरुष से पति के रूप मे किया जाने वाला सबध। नाता।

धारोळौ—पु० १ क्वार मास मे कभी-कभी होने वाली वर्षा। २ वर्षा का चिह्न। ३ दूर से दिखने वाली वर्षा की धाराएँ। ४ अश्रु धारा।

धारोस्ण—पु० [सं० धारोष्ण] ताजा दुहा हुआ दूध।

धारौ—पु० प्रथा, परम्परा, रीति-रिवाज। रूढी।

धारयौ—देखो 'धारियौ'।

धाव—स्त्री० १ मानसिक कल्पना। २ हमला, आक्रमण। ३ दूरी, फासला। ४ गति, चाल। ५ दौड, भाग। ६ दौड की क्षमता। ७ वेग प्रवाह। ८ विचार। ९ निश्चय।

१० घास विशेष । ११ धाय, धात्री । १२ पेड़ विशेष । १३ देखो 'ध्राव'।
धावक–वि० [स०] १ दौडने वाला । २ जाने वाला । –पु० १ दूत, हरकारा । २ धोबी ।
धावड़–पु० १ धाय का पति । २ पल्लीवाल ब्राह्मणों की एक शाखा ।

धावड़ो, धावड्यौ, धावडो, धावड्यौ–देखो 'धाव'।
धावणौ (बौ)–क्रि० [स०धाव्] १ दौडना, भागना । २ जाना । ३ स्नान करना, नहाना । ४ प्रवाहित होना, बहना । ५ ध्यान, स्मरण या भजन करना । ६ पूजा करना, ईष्ट मानना । ७ स्तन पान करना । ८ देखो 'धाणौ' (बौ) ।
धावन–पु० [स०] १ सदेश वाहक, दूत । २ दौड-भाग की क्रिया या भाव । ३ आक्रमण, हमला । ४ बहाव, प्रवाह । ५ सफाई । ६ रगडन ।
धावना–स्त्री० [स०] १ प्रार्थना, स्तुति, ध्यान । २ पूजा । ३ ईष्ट मानने की क्रिया या भाव ।
धावळ, धावळियौ–देखो 'धावळौ'।
धावौ–पु० [स० धावन] १ आक्रमण, हमला । २ दौड-भाग । ३ झपटी ।
धासक–देखो 'दहसत'।
धासतौ–स्त्री० १ महामारी । २ प्लेग ।
धाह–स्त्री० १ रुदन, क्रन्दन । २ चीख, चीत्कार । ३ हाहाकार, त्राहि-त्राहि । ४ कोलाहल, शोरगुल । ५ सामूहिक रुदन । ६ पुकार । ७ विलाप ।
धाहड़णौ (बौ)–क्रि० १ भस्म करना, जलाना । २ गरजना । ३ देखो 'दहाडणौ' (बौ) ।
धाहडी (डी)–स्त्री० १ धव का फूल । २ एक प्रकार की झाडी । ३ देखो 'धाह'।
धाहि, (ही)–देखो 'धाह'।
धाहु, (हू)–स्त्री० १ आग की लपट । २ देखो 'धाह'।
धिंग–१ देखो 'धीक'। २ देखो 'धींगौ'।
धिंगाणौ–देखो 'धींगौ'।
धिंगाई–देखो 'धींगाई'।
धिंगौ–देखो 'धींगौ'।
धि–पु० १ धर्म । २ सतोष । ३ धिक्कार । ४ आश्रय । –स्त्री० ५ पृथ्वी, धरती । ६ देखो 'धी'।
धिक–अव्य० [स० धिक्] १ तिरस्कार सूचक ध्वनि । २ लानत, धिक्कार । –वि० १ निरर्थक, व्यर्थ । २ निंदनीय । ३ भर्त्सना योग्य ।
धिकक–स्त्री० [स० धिक्षक] आग, अग्नि ।
धिकणौ (बौ)–देखो 'धुकणौ' (बौ) ।
धिकत–देखो 'दिकत'।
धिकता–स्त्री० [स० धिक्] धिक्कार, फटकार, निंदा ।
धिकार–देखो 'धिक्कार'।
धिकै–देखो 'धकै'।
धिक्कार–स्त्री० [स०] १ तिरस्कार, अनादर । २ फटकार, भर्त्सना, निंदा । ३ अपकीर्ति ।
धिक्कारणौ (बौ)–क्रि० [स० धिक्] १ तिरस्कार करना, अनादर करना । २ फटकारना । ३ निंदा करना ।
धिखण–देखो 'धिसण'।
धिखणा–देखो 'धिसणा'।
धिखणौ(बौ)–१ देखो 'धुकणौ' (बौ) । २ देखो 'धकणौ' (बौ) ।
धिग–देखो 'धिक'।
धिगाणौ–देखो 'धींगौ'।
धिठाई–देखो 'धीठाई'।
धिणाप–देखो 'धणियाप'।
धिणियाणी–देखो 'धणियाणी'।
धिणी–देखो 'धणी'।
धित्रासट–देखो 'धतराठ'।
धिधक–स्त्री० १ आग, अग्नि । २ बदबू ।
धिधिकट–स्त्री० तबले की ध्वनि या बोल ।
धिन–स्त्री० १ तबले की ध्वनि या बोल । २ देखो 'धन्य'।
धिनयाणी–देखो 'धणियाणी'।
धिनौ–देखो 'धन्य'।
धिनियाणी–देखो 'धणियाणी'।
धिन्न, धिन्नौ–देखो 'धन्य'।
धिन्नवाद–देखो 'धन्यवाद'।
धिप–स्त्री० दीवार, भीति ।
धिमिद्धमिद्ध–स्त्री० तबले आदि वाद्य की आवाज ।
धिय–देखो 'धी'।
धियग्गि–देखो 'धियाग'।
धियान–देखो 'ध्यान'।
धिया–देखो 'धी'।
धियाग, (गि, गी, ग्गि)–स्त्री० १ क्रोधाग्नि । २ क्रोध, गुस्सा । ३ आकाश, आसमान । –वि० असीम, अपार ।
धियारी–देखो 'धी'।
धियावणौ, (बौ)–देखो 'धावणौ' (बौ) ।
धियौ–पु० [स० धृत] १ पौत्र, प्रपौत्र । २ पुत्र, बेटा ।
धिरकार (गार)–देखो 'धिक्कार'।
धिरकारणौ (बौ)–देखो 'धिक्कारणौ' (बौ)
धिरट–देखो 'धीरट'।
धिराणी–देखो 'धणियाणी'।
धिराज–पु० [स० अधिराज] राजाओं की एक पदवी ।

धिरि–देखो 'धीरज'।
धिव–देखो 'धी'।
धिवडी–देखो 'धी'।
धिसट–देखो 'धिस्टि'।
धिसण–पु० [स० धिष्णय, धिषण] १ तारा, नक्षत्र। २ ग्रह, घर। ३ बृहस्पति, गुरु। ४ ब्रह्मा। ५ अग्नि।
धिसणा–स्त्री० [स० धिषणा] १ बुद्धि, अक्ल। २ विवेक, धैर्य। ३ पृथ्वी।
धिसन, धिसनु–देखो 'धिसण'।
धिस्टडंड–पु० [स० धृष्ट-दण्ड] यम।
धिस्टि–पु० [स० द्वयष्ट] ताम्र, तावा।
धिस्ण–देखो 'धिसण'।
धींक–स्त्री० १ प्रहार हेतु तैयार मुष्ठिका, घूसा। २ मुष्ठिका, प्रहार। ३ शरीर के दर्द स्थलो पर धीरे-धीरे चोट करने की क्रिया या भाव। ४ वृक्ष विशेष।
धींग, धींगउ–१ देखो 'धीक'। २ देखो 'धीगौ'।
धींगड–१ देखो 'द्रग'। २ देखो 'धीगौ'।
धींगडमल (मल्ल)–देखो 'धीगौ'।
धींगडौ, धींगण धींगणियौ, धींगल—१ देखो 'द्रग'। २ देखो 'धीगौ'। ३ देखो 'धीगलौ'।
धींगलौ–पु० १ गोवर मे पैदा होने वाला भृग जाति का कीडा। २ मेवाड का एक प्राचीन सिक्का। ३ देखो 'धीगौ'।
धींगाण (णी, णै)–क्रि० वि० १ वलपूर्वक, जवरदस्ती से। २ देखो 'धीगाई'। ३ देखो 'धीगौ'।
धींगाणौ–पु० (स्त्री० धीगाण, धीगाणी) १ अत्याचार, अन्याय, ज्यादती, जबरदस्ती। २ देखो 'धीगौ'।
धींगाई–स्त्री० जवरदस्ती, ज्यादती।
धींगागणगौर–स्त्री० गणगौर का त्यौहार विशेष (उदयपुर)।
धींगाधींगी, धींगामस्ती, धींगामुस्ती–स्त्री० १ शरारत, वदमाशी २ उद्दण्डता, ऊधम। ३ हाथापाई, मस्ती। ४ जवरदस्ती ज्यादती।
धींगौ–वि० (स्त्री०धीगी) १ जबरदस्त, जोरदार। २ वीर, साहसी। ३ शक्तिशाली, वलवान। ४ समर्थ, सक्षम। ५ धनाढ्य, धनी। ६ हट्टा-कट्टा, स्वस्थ। ७ आकार मे वडा, वृहत्।
धींणौ–देखो 'धीणौ'।
धी, धीअडी–स्त्री० [स०धी] १ दीपक, दीया, ज्योति। २ चित्त, मन। ३ मेधा। ४ चित्रक। ५ बुद्धि, अक्ल। ६ पुत्री, वेटी। ७ विचार, इरादा। ८ कल्पना। ९ भक्ति, प्रार्थना। १० यज्ञ।
धीक, धीकडी–देखो 'धीक'।
धीकणौ (बौ)–देखो 'धुकणौ' (वौ)।

धीगडौ–१ देखो 'द्रग'। २ देखो 'धीगौ'।
धीज–स्त्री० [स० धीड्, धैर्यम्] १ दृढता। २ विश्वास। ३ धैर्य, धीरज। ४ प्रतिज्ञा, प्रण। ५ प्रतिस्पर्द्धा, होड। ६ न्याय की एक प्राचीन परिपाटी। ७ शर्त। ८ शका, सशय।
धीजणौ–वि० [स० धीड्] (स्त्री० धीजणी) १ विश्वास करने वाला। २ धैर्य धारण करने वाला। ३ प्रतिस्पर्द्धा करने वाला। ४ प्रसन्न होने वाला, सतुष्ट होने वाला। ५ प्रण करने वाला।
धीजणौ, (बौ)–क्रि० [स० धीड्] १ विश्वास करना, आश्वस्त होना। २ सतुष्ट होना। ३ धैर्य रखना। ४ प्रसन्न होना। ५ प्रण करना। ६ प्रतिस्पर्द्धा करना।
धीजाणौ (बौ), धीजावणौ (बौ)–क्रि० १ विश्वास कराना, आश्वस्त करना। २ सतुष्ट करना। ३ धैर्य वधाना। ४ प्रसन्न करना। ५ प्रण कराना। ६ प्रतिस्पर्द्धा कराना।
धीजौ–पु० [स० धीड्] १ विश्वास, भरोसा। २ देखो 'धीरज'।
धीट–देखो 'धीठ'।
धीठ–वि० [स० धृष्ट] १ निलज्ज, वेशर्म। २ मूर्ख, जड। ३ नीच। ४ वीर, जवरदस्त। ५ शक्तिशाली, बलवान। ६ अटल, दृढ। ७ जिद्दी, हठी, दुराग्रही। ८ लापरवाह, वेपरवाह। ९ क्रोधी। १० कामचोर। ११ कपटी, धूर्त। १२ देखो 'दीठ'। –स्त्री० तोप छूटने की ध्वनि।
धीठम–पु० [स० दशनम्] १ सर्प, साप। २ देखो 'धीठ'।
धीठाई–स्त्री० १ निर्लज्जता, वेशर्मी। २ मूर्खता, जडता। ३ नीचता। ४ दृढता। ५ हठ, जिद्द, दुराग्रह। ६ लापरवाही। ७ वीरता, वहादुरी।
धीठियौ, धीठौ–देखो 'धीठ'।
धीण–पु० ऊन के धागे का आकार, बनावट।
धीणकियौ, धीणकौ–देखो 'धीणौ'।
धीणु, धीणू–वि० १ दूध देने वाली। २ देखो 'धीणौ'।
धीणूडी, धीणोड़ी–स्त्री० दूध देने वाली गाय या भैंस।
धीणौ–पु० १ दूध देने वाली गाय या भैंस की व्यवस्था। २ दूध देने वाली गाय या भैंस।
धीन–पु० लोहा।
धीप, धीपत, धीपति–पु० [स० धी–पति, अधीप] १ दामाद। २ बृहस्पति। ३ राजा, नृप।
धीब–स्त्री० १ प्रहार, चोट। २ प्रहार की ध्वनि। ३ ध्वनि आवाज।
धीबणौ, (बौ)–क्रि० १ प्रहार या चोट करना, आघात करना। २ सहार करना, मारना। ३ भोजन करना खाना।

धीबि–देखो 'धीव'।
धीमर–देखो 'धीवर'।
धीमान–पु० [स० धीमत्] १ कवि। २ वृहस्पति। –वि० बुद्धिमान।
धीमैं–क्रि० वि० [स० मध्यम्] १ धीरे से, शनै शनै। २ चुपके से, ग्राहट किये विना। ३ हल्की ग्रावाज या नीचे स्वर से। ४ मन्द गति से। ५ सुस्ती से।
धीमो–वि० [स० मध्यम] (स्त्री० धीमी) १ जिसकी चाल तेज न हो, मद गति वाला। २ जो उतावला न हो, धैर्य वाला, गभीर। ३ सुस्त, ग्रालसी। ४ दीर्घसूत्री। ५ जिसमे उत्तेजना न हो, शान्त। ६ हल्का, मन्द।
धीमौनिताळौ–पु० एक ताल विशेष।
धीय, धीयड, धीयडी, धीयवी, धीया, धीयारी–देखो 'धी'।
धीयौ–पु० [स० धीत] पुत्र, लडका।
धीर–वि० [स०] १ धैयवान, धीरजवाला। २ विवेकशील। ३ गभीर। ४ सहनशक्ति वाला। ५ बलवान, शक्तिशाली। ६ विनीत, नम्र। ७ सुन्दर, मनोहर। ८ मन्द, धीमा। ९ ग्रटल, दृढ। १० ध्यानावस्थित। ११ उत्साहवान। १२ चतुर, बुद्धिमान। १३ सुस्त। –पु० [स० धैर्यम्] १ धैर्य, धीरज। २ सतोष, सब्र। [स० धीर] ३ सूर्य रवि। ४ कवि। ५ एक प्रकार का नायक। ६ बालि। –स्त्री० [स० धीरम्] ७ केसर।
धीरच्छ–१ देखो धीरट'। २ देखो धीरज'।
धीरज(ज्ज)–पु० [स० धैर्यम्] १ विपत्ति, सकट, बाधा ग्रादि से विचलित न होने वाली ग्रवस्था या भाव, धैर्य। २ सतोष, सब्र। ३ शाति, तसल्ली। ४ विवेक। —**दार, धर, मानवत, वान**–वि० धैर्यवान, धीर-वीर-गम्भीर।
धीरट (ठ)–पु० १ हस पक्षी। २ मासाहारी पक्षी, पलचर। ३ देखो 'धीरज'।
धीरट्ठ–वि० [स० धृष्ट] १ धैर्यवान। २ देखो 'धीरट'।
धीरणौ, (बौ)–क्रि० [स० धीर] १ धैर्य रखना। २ सब्र या सतोप करना। ३ ढाढस देना।
धीरत–१ देखो 'धीरज'। २ देखो 'धीरट'।
धीरता–स्त्री० [स०] चित्त की स्थिरता, धैर्य सतोष, सब्र। सहनशीलता, सहिष्णुता।
धीरप–क्रि० वि० [स० धैर्यम्] १ शनै-शनै, धीरे से। २ देखो 'धीरज'।
धीरपण–पु० धैर्य, धीरज।
धीरपणौ (बौ)–क्रि० १ धैर्य बधाना, ढाढस देना सान्त्वना देना। २ सतोप रखना, सतुष्ट होना। ३ दृढ रहना, ग्रटल रहना।
धीरललित–पु० एक प्रकार का नायक।
धीरवणौ (बौ)–देखो 'धीरपणौ' (बौ)।
धीरसात–पु० [स० धीरशात] शीलवान व पुण्यवान नायक।
धीरस्ट–देखो 'धीरट'।
धीरा–क्रि० वि० [स०] १ धीरे से, ठहर कर, शनै शनै। २ चुपके से। ३ दृढता से। –स्त्री० १ एक प्रकार की नायिका। २ मालकगनी।
धीराणौ (बौ), धीरावणौ (बौ)–क्रि० १ धैर्य रखाना। २ सब्र या सतोष कराना। ३ ढाढस दिराना।
धीरासन–पु० योग के चौरासी ग्रासनो मे से एक।
धीरिम–देखो 'धीरज'।
धीरी–स्त्री० ग्राख की पुतली। –वि० मद, धीमी।
धीरु (रू)–देखो 'धीर'।
धीरूजळ–देखो 'धारूजळ'।
धीरे, धीरैं–क्रि० वि० १ मद गति से, ग्राहिस्ता से। २ चुपके से, शाति से।
धीरोज–देखो 'धीरज'।
धीरोदात्त, धीरोद्धत–पु० एक प्रकार का नायक।
धीरौ–वि० १ धैर्यवान। २ मद, धीमा।
धीरय–देखो 'धीरज'।
धीव, धीवड, धीवडली, धीवड़ी–देखो 'धी'।
धीवर–पु०[स०]१ मछुवा, नाविक। २ काला मनुष्य। ३ सेवक। ४ लोहा।
धीस–पु० [स० ग्रधीश] १ राजा, नृप। २ स्वामी, मालिक।
धीसव्याळ–पु० [स० व्याल-ग्रधीश] शेषनाग।
धीहड, धीहडली, धीहडी–देखो 'धी'।
धु–देखो 'धू'।
धुग्रर–देखो 'धू र'।
धुग्राधार (धोर)–पु० [स० धूम] १ धूए का समूह। २ धूम्र-धारा। ३ धूलि मिश्रित हवा। –क्रि० वि० १ ग्रत्यन्त तीव्र गति से। २ धूंग्रा या धूल उडाते हुए, जोरशोर से। ३ प्रचण्डता से। ४ निरन्तर। –वि० १ प्रचण्ड, तीव्र, तेज। २ धूग्रा युक्त। ३ काला स्याह। ४ ग्रधकार युक्त।
धुग्राळ–वि० १ धूंए से भरा। २ धूए जैसा।
धुई–स्त्री० [स० धौमी] १ किसी वस्तु को धुकाने की क्रिया या भाव। २ धूए से ताप देने की क्रिया या भाव।
धुग्रौ–देखो 'धुवौ'।
धुंकार–स्त्री० १ जोर का शब्द। २ गर्जना, गरज। ३ धूग्रा फैलाने की ग्रवस्था। ४ देखो 'धोकार'। ५ देखो 'धुगार'।
धुंकारणौ (बौ)–क्रि० १ जोर का शब्द करना। २ गर्जना करना। ३ देखो 'धुंगारणौ' (बौ)।

धुंगार-पु० [स धूम+अगार] १ अगारे पर घी, तेल आदि डालने पर उठने वाला धूंआ, भाप। २ ऐसी भाप से शाकादि पदार्थ मे दिया जाने वाला बघार, छौंक। ३ धुकाने की क्रिया या भाव।

धुंगारणौ (बौ)-क्रि० १ रायते, शाक आदि मे घी के धूंए का बघार देना। २ किसी वस्तु को धुका देना। ३ जलाना, सुलगाना।

धुंद, धुंध-स्त्री० [स० धूम-अंध] १ धूंए या ओस के बादलो से होने वाला अधेरा। २ गर्द का अधेरा। ३ कुहरा। ४ अज्ञान। ५ आख का एक रोग। ६ देखो 'दुंद'।

धुंधक-वि० नशे मे चूर, मद मस्त।

धुंधकार-पु० १ आकाश मे छाया हुआ धूंआ या कुहरा। २ गर्द या आधी का अधेरा।

धुंधट-स्त्री० रूई की धुनकी की ध्वनि।

धुंधमार-पु०[स०धुंधुमार] १ राजा वृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व का नामान्तर। २ एक राक्षस।

धुंधळ-स्त्री० धुंधलापन, अधेरा।

धुंधळणौ (बौ)-देखो 'धूंधळणौ' (बौ)।

धुंधळौ-देखो 'धूंधळौ' (स्त्री० धुंधळी)।

धुंधाणौ (बौ)-देखो 'धूंधाणौ' (बौ)।

धुंधु-पु० [स०] मधु राक्षस का पुत्र एक राक्षस।

धुंधुकार, धुंधूकार-पु० १ नगाडे का शब्द, धुंकार। २ देखो 'धुंधकार'।

धुंन-स्त्री० [स० ध्वनि] १ निरन्तर होने वाली ध्वनि, रट। २ चित्त की एकाग्रता।

धुंवाकस, धुंवाकांस-पु० [स० धूम +आकाश] धूंआ निकलने की चिमनी।

धुंवाधार-देखो 'धुंआधार'।

धुंवाधुज-देखो 'धूमधजा'।

धुंवाधोर-देखो 'धुंआधार'।

धुंवापराड-पु० जलाने की लकडी पर लिया जाने वाला कर।

धुंवौ-पु० [स० धूम्र] कोयले की भाप, आग के ऊपर या जलते पदार्थों से निकलने वाली भाप। धुंआ, धूम।

धु-पु० १ शरीर, तन। २ पवन, हवा। ३ दौड। ४ धोबी। -वि० १ अधिक ज्यादा। २ कपायनमान, कपित। ३ देखो 'धुंवौ'। ४ देखो 'ध्रुव'। ५ देखो 'धू'।

धुकट-पु० मृदग आदि का शब्द, ध्वनि।

धुकण-स्त्री० [स० धुक्ष] १ अग्नि, आग। २ धूंए के रूप मे ही जलने की अवस्था। ३ जलन। ४ आतुरता, व्यथा।

धुकणौ (बौ)-क्रि० [स० धुक्ष] १ धूंए के रूप मे धीरे-धीरे जलना। धूंआ उठना। २ जलना। ३ क्रुद्ध होना, कुपित होना। ४ दुखी होना, कुढना। ५ पीडित या सतप्त होना। ६ धक्का खाकर नीचे झुकना। ७ लुढकना।

धुकधुकी-स्त्री० १ कलेजा, हृदय। २ कलेजे की धडकन। ३ डर, भय, खौफ। ४ देखो 'धुगधुगी'।

धुकळणौ (बौ)-क्रि० १ नाश करना, सहार करना, मारना। २ युद्ध करना। ३ मारना पीटना।

धुकाणौ (बौ)-क्रि० १ धूंए के रूप मे धीरे-धीरे जलाना। सुलगाना, जलाना। २ भभकाना, धूंआ निकालना। ३ क्रोधित करना, कुपित करना। ४ दुखी करना, सताना। ५ पीडा देना, कष्ट देना। ६ नीचे धसाना, बैठाना। ७ लुढकाना।

धुकार-१ देखो 'धुंकार'। २ देखो 'धोंकार'।

धुकावणौ (बौ)-देखो 'धुकाणौ' (बौ)।

धुकुस-पु० [स० धुक्ष] आग, अग्नि।

धुक्कणौ (बौ)-देखो 'धुकणौ' (बौ)।

धुखणौ (बौ)-क्रि० [स० धुक्ष-सदीपने] १ उग्र रूप से रहना। २ तनाव बढना। ३ मन मे खटकना। ४ देखो 'धुकणौ' (बौ)।

धुखाणौ (बौ), धुखावणौ (बौ)-क्रि०१ जारी रखना, चलाना। २ तनाव बढाना। ३ मन मे खटकाना। ४ देखो 'धुकाणौ' (बौ)।

धुग-पु० मजबूत व मोटा लट्ठ, सोठा।

धुगधुगी-स्त्री० १ शरीर को जोर से हिलाने या कपाने की क्रिया या भाव। २ गले का एक आभूषण विशेष। ३ देखो 'धुकधुकी'।

धुगधुगौ-वि० (स्त्री० धुगधुगी) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

धुगळी-स्त्री० समूह, झुण्ड।

धुडकी-देखो 'दुडकी'।

धुडकौ-पु० १ किसी वस्तु के गिरने का शब्द। २ श्वास लेने का शब्द, धडकन।

धुडडणौ (बौ)-क्रि० १ गर्जना, ध्वनि करना। २ गिरना, ढह पडना।

धुडणौ (बौ)-क्रि० गिरना, ढहना।

धुडहडणौ (बौ)-क्रि० १ ढोल, नगाडे आदि का बजना। ध्वनि करना। २ देखो 'धुडणौ' (बौ)।

धुडौ-देखो 'धुड'।

धुड़कणौ(बौ)-१देखो'धड़कणौ'(बौ)। २ देखो'धडकणौ'(बौ)।

धुड़ (धुड)-वि० १ दबा-दबा कर भरा हुआ। २ पेट भर खाया हुआ, तृप्त, अघाया हुआ।

धुज–पु०[स०ध्वज] कलाल जाति व इस जाति का व्यक्ति। –वि० श्रेष्ठ पूज्य। देखो 'धज। देखो 'ध्वज'। —असमाण–पु० सूर्य। —डड='ध्वजदड। —धोम–स्त्री० आग, अग्नि।

धुजट्टिय, धुजट्टी–देखो 'धूरजटी'।

धुजा–स्त्री० १ प्रथम लघु के ढगण का एक भेद। २ देखो 'ध्वज।

धुजागडौ–वि० कपाने वाला, थर्राहट पैदा करने वाला।

धुजाणौ (बौ), धुजावणौ (बौ)–क्रि० [स० धू] १ कपाना, कपित करना, थर्राहट पैदा करना। २ डराना, आतकित करना। ३ जोर से हिलाना। ४ डोलाना।

धुजी–देखो ध्रुव'।

धुज्जणौ (बौ)–देखो 'धूजणौ' (बौ)।

धुज्जाणौ (बौ), धुज्जावणौ (बौ)–देखो 'धुजाणौ' (बौ)।

धुण (ह)–१ देखो 'धुन'। २ देखो 'धनु'।

धुणकणौ (बौ)–देखो धुणणौ (बौ)।

धुणकी–देखो 'धुनकी'।

धुणणौ (बौ)–क्रि० [स० धुञ्] १ धुनकी से रूई साफ करना, पीनना। २ जोर से हिलाना, झकझोरना। ३ खूब पिटाई करना, मारना। ४ विलोडित करना। ५ ध्वनि करना। ६ शस्त्र घुमाना। ७ पश्चाताप करना।

धुणियाळ–वि० धनुर्धारी, धनुर्धर। –पु० १ भील। २ वीर पाबू का एक नामान्तर।

धुणी–१ देखो धुनी'। २ देखो 'ध्वनि'। ३ देखो धूणी'।

धुतकार–देखो 'दुत्कार'।

धुतकारणौ (बौ)–देखो 'दुत्कारणौ' (बौ)।

धुताइय, धुताई–देखो 'धूरतता'।

धुतारण–पु० [स० ध्रुवतारण] ध्रुव का उद्धारक, विष्णु, ईश्वर।

धुतारी–वि० [स० धूर्ता] १ माया रचने वाली, मायावी। २ छल करने वाली। ३ दूती, कुटनी। ४ देखो 'धूतारी'।

धुतारौ–वि० [स० धूर्त] (स्त्री० धुतारी) १ बदमाश। २ ठग, कपटी।

धुत्त–वि० १ नीद या नशे मे चूर। २ मस्त, पागल। ३ देखो 'धूरत'।

धुधकट–देखो 'धुधुवट'।

धुधकार–देखो 'दुत्कार'।

धुधकारणौ (बौ)–देखो 'दुत्कारणौ' (बौ)।

धुधड–वि० सीधा, सरल।

धुधुकट–पु० तबले का एक बोल विशेष।

धुधुकार–स्त्री० १ धू-धू शब्द का शोर। २ आग की लपटो की ध्वनि। ३ भयकर झझावात। ४ झझावात का शोर।

धुनकणौ (बौ)–क्रि० १ ध्वनि करना। २ धुनना।

धुंन–स्त्री०[स०ध्वनि] १ रट, जाप। २ ईश्वर के नाम का जप। ३ मन की तरग, मौज। ४ लगन। ५ बुद्धि। ६ गीत या पद की लय। ७ स्वरावली, तान।

धुनवेत्ता–पु० [स० ध्वनि वेत्ता] साहित्य मे ध्वनि को जानने वाला।

धुंनि–स्त्री० [स० ध्वनि] १ ईश्वर के नाम का जप, रट, माला। २ देखो 'ध्वनि'। ३ देखो 'धुनी। —ग्रह='ध्वनिग्रह'।

धुनिया–स्त्री० [स० धुञ] रूई धुनने वाली जाति, पिंजारा।

धुनियौ–पु० उक्त जाति का व्यक्ति।

धुनी–स्त्री० [स०] १ नदी, सरिता। २ देखो 'धुनि'। ३ देखो 'ध्वनि। ४ देखो 'धुन'। —ग्रह='ध्वनिग्रह'।

धुनौ–वि० श्रेष्ठ, उत्तम, वढिया। (स्त्री० धुनी)

धुपघटी–स्त्री० धूपदानी।

धुपटणौ (बौ)–देखो 'धूपटणौ' (बौ)।

धुपणौ (बौ)–क्रि० [स० धूप-सतापे] १ पानी आदि से धोया जाना, धुलना। २ साफ होना, निर्मल होना। ३ मिटना। ४ दूर होना। ५ क्रुद्ध होना। ६ कमजोर होना, क्षीण होना। ७ व्यर्थ एव अधिक व्यय होना।

धुपाणौ (बौ)–क्रि० १ पानी आदि से धुलाना, धुपवाना। २ साफ कराना, निर्मल कराना। ३ मिटवाना। ४ दूर कराना ५ क्रोध दिलाना। ६ कमजोर कराना। ७ व्यर्थ एव अधिक खर्च कराना।

धुपारणौ–देखो 'धूपियौ।

धुपावणौ (बौ)–देखो धुपाणौ (बौ)।

धुपियौ, धुपेडौ, धुपेरणौ–देखो 'धूपियौ।

धुब–पु० १ क्रोध, कोप। २ क्रोधाग्नि।

धुबचाळ–स्त्री० [स० धूप-सतापे] कपन, थर्राहट।

धुबणौ (बौ)–क्रि० [स० धूप-सतापे] १ नगाडा, ढोल आदि वजना। २ वाद्य ध्वनि होना। ३ तोप बन्दूक आदि छूटना व उसकी ध्वनि होना। ४ क्रोध करना, क्रोधाग्नि मे जलना। ५ जलना, प्रज्वलित होना। ६ युद्ध होना, सग्राम होना। ७ नष्ट होना, कटना। ८ तीव्र होना, तेज होना। ९ प्रचण्डता आना। १० जोश मे आना। ११ प्रहार करना, वार करना।

धुबाक, (ख)–स्त्री०[देश०] १ नीची जगह। २ देखो 'धमाक'।

धुबाणौ (बौ), धुबावणौ (बौ)–क्रि० १ नगाडा ढोल आदि वजाना। २ वाद्य ध्वनि करना। ३ तोप बन्दूक आदि छोडना। ४ क्रोध कराना। ५ जलाना, प्रज्वलित करना। ६ युद्ध करना सग्राम करना। ७ नष्ट करना, काटना। ८ तीव्र करना, तेज करना। ९ प्रचण्डता लाना। १० जोश में लाना। ११ प्रहार कराना।

धुव्वणौ, (बौ)–देखो 'धुवणौ' (बौ)।
धुमची–देखो 'दुमची'।
धुमाळ–स्त्री० मुण्डमाल।
धुमाळौ–पु० एक प्रकार का कर।
धुम्मदोस–पु० भोजन की निन्दा का दोष (जैन)।
धुरडी–देखो 'धूळेरी'।
धुरधर–वि० [स०] १ उठाने वाला धारण करने वाला। २ प्रवल, जवरदस्त। ३ महान्, श्रेष्ठ। ४ प्रधान, मुख्य। ५ निपुण, दक्ष। ६ सद्गुण सम्पन्न।
धुर–पु० [स० धुर्] १ बोझ, भार। २ कर्जदार व्यक्ति, ऋणि। ३ आरभ, प्रारभ। ४ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। ५ कर्त्तव्य, कार्य। ६ चोटी, शिरा। ७ वव। ८ निश्चय। ९ यान मुख १० जुआ। ११ देखो 'धुरी'। १५ देखो 'धुराऊ'। १३ देखो 'ध्रुव'। –वि० १ प्रथम, पहला। २ प्रारम्भिक शुरू का। ३ मुख्य, प्रधान। –क्रि० वि० १ पूर्व में, पहले। २ आगे। ३ पास, समीप।
धुरकारणौ (बौ)–देखो 'दुत्कारणौ' (बौ)।
धुरज–देखो 'धूरज'।
धुरजटी–देखो 'धूरजटी'।
धुरजी–देखो 'ध्रुव'।
धुरज्ज–देखो 'धूरज'।
धुरणौ (बौ)–देखो 'धरणौ' (बौ)।
धुरधमळ–वि० [स० धुर-धवल] १ अगुवा, मुखिया, नेता। २ सद्गुण सम्पन्न। ३ कत्तव्य परायण। ४ महान्, उच्च। ५ उदार, दानी।
धुरधर–पु० [स०] १ शुरूआत, प्रारभ। २ बोझ ढोने वाला प्राणी। ३ काम पर लगा मनुष्य।
धुरपट–देखो 'धूपट'।
धुरपद–देखो 'ध्रुपद'।
धुरळ–देखो 'दुरळ'।
धुरवहौ–वि० [स० धुर्वह] १ वोझा या भार ढोने वाला। २ आगे चलने वाला। ३ रथ खीचने वाला। –पु० गाडी खीचने वाला बैल।
धुरा–क्रि० वि० [स० धुर] १ प्रथम, पहले। २ शिरे पर, मुह पर, आगे।
धुरा, धुराई–क्रि० वि० १ अन्त मे, आखिर। २ अन्त तक। ३ प्रारम्भ मे। –स्त्री० बैलगाडी का जुआ।
धुराउ, (ऊ)–पु० [स० ध्रुव] ध्रुव तारे की दिशा, उत्तर। –वि० उत्तर की ओर का, उत्तर दिशा का।
धुराद–क्रि० वि० १ आदि काल से, प्रारम्भ से। २ देखो 'धुराउ'।
धुराळ–वि० १ प्रथम, पहला, पूर्व का, आदि का। २ आगे से अधिक भारी (गाडी)।

धुरि–वि० [स० धुर] १ प्रथम, पूर्व। २ मुख्य, प्रधान। ३ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम। ४ विशेष। ५ दीर्घ, लम्बा। –क्रि०वि प्रारम्भ मे –पु० सिरहाना।
धुरिया–स्त्री० एक रागिनी विशेष।
धुरियामलार, धुरीयामलार–स्त्री० मलार राग का एक भेद।
धुरियौ–१ देखो 'धुर'। २ देखो 'धुरी'।
धुरी–१ देखो 'धुरि'। २ देखो 'धुरौ'।
धुरीण–वि० [स०] १ वोझा ढोने वाला। २ काम सम्भालने वाला। ३ प्रधान, मुख्य। ४ पण्डित, विद्वान।
धुरू–देखो 'ध्रुव'।
धुरेडी–देखो 'धूळेरी'।
धुरौ–पु० [स० धुर] १ किसी वाहन या यन्त्र के चक्र के बीच लगी कील जिस पर वह चक्र घूमता हे। अक्ष, धुरी। २ जुआ।
धुलडी–देखो 'धूळेरी'।
धुलणौ (बौ)–क्रि० १ पानी आदि से धोया जाना, धुलना। २ स्वच्छ व निर्मल होना। ३ निर्विकार होना।
धुलहडी, धुलहडी–स्त्री० [स० धुलिपटिका] एक त्यौहार विशेष, धूलेरी।
धुलाई–स्त्री० १ धोने का कार्य। २ धोने की मजदूरी।
धुलाणौ (बौ)–क्रि० १ पानी आदि से धुलाना, साफ कराना। २ स्वच्छ निर्मल कराना। ३ निर्विकार कराना।
धुलावट–देखो 'धुलाई'।
धुलावणौ (बौ)–देखो 'धुलाणौ' (बौ)।
धुलियौ–देखो 'धूल'।
धुळी–देखो 'धूड'।
धुलेंडी, धुलेडी, धुलेरी–देखो 'धूळेरी'।
धुव–पु० १ कोप, क्रोध। २ देखो 'ध्रुव'।
धुवड–देखो 'धुड'।
धुवणौ (बौ)–१ देखो 'ध्रुवणौ'(बौ)। २ देखो 'धुपणौ'(बौ)।
धुवमडळ–देखो 'ध्रुवमडळ'।
धुवराज–देखो 'ध्रुव'।
धुवळ–देखो 'धवळ'।
धुवसधि–देखो 'ध्रुवसधि'।
धुवाकस–देखो 'धुवाकस'।
धुवान–देखो 'ध्वनि'।
धुवाणौ (बौ), धुवावणौ (बौ)–१ देखो 'ध्रुवाणौ' (बौ)। २ देखो 'धुपाणौ' (बौ)।
धुवौ–देखो 'धुवौ'।
धुसणौ (बौ)–क्रि० [स० ध्वस] १ ध्वस होना सहार होना। २ विनाश होना नाश होना। ३ देखो 'धसणौ' (बौ)।

धूंसरो-वि० [म० धूसलि] (स्त्री० धूसरी) मटमैला, धुंधला ।
धूसाळो-पु० [देश०] १ गप्प, डींग । २ देखो 'धूंसौ' ।
धूसो-पु० [स० धूस्] १ धातु का बना नगाडा । २ नगाडा । ३ नगाड़े पर होने वाला प्रहार । ४ नगाडा बजाने का डंडा । ५ एक राजस्थानी लोक गीत । ६ सामर्थ्य । ७ ओढ़ने का ऊनी वस्त्र विशेष ।
धूंहर (रि, री)-देखो 'धूंर' ।
धूहौ-देखो 'धुवौ' ।
धू, धूग्र-पु० १ शिव, महादेव । २ हाथी, गज । ३ भार, बोझ । ४ विचार । ५ चित्त, मन, हृदय । ६ हाथ, कर । ७ शिर, मस्तक [स० ध्रुव] ८ निश्चय । ९ दिन, दिवस । १० तवले का बोल -स्त्री० ११ शब्द, ध्वनि । १२ उत्तर दिशा, ध्रुव दिशा । १३ चिंता, फिक्र । १४ आग, अग्नि । १५ दुत्कार, फटकार । १६ शीघ्रता करने की क्रिया या भाव । १७ जोश दिलाने की क्रिया । -वि०१ वीर, बहादुर । २ निश्चल, स्थिर, अटल । ३ कापने वाला, डरने वाला, कायर । ४ धूर्त, कपटी । ५ प्रथम, पहला । -क्रि० वि० १ पहले, पूर्व मे । २ ओर, तरफ । ३ शीघ्र, तुरंत । ४ देखो 'धी' । ५ देखो 'ध्रुव' ।
धूग्रउ-देखो 'धुवौ' ।
धूअर (रि, री)-देखो 'धूंर' ।
धूम्रा-देखो 'धू' ।
धूई-१ देखो धूणी' । २ देखो धुई' ।
धूओ-१ देखो 'धू' । २ देखो धुवौ' ।
धूक-देखो 'धाक' ।
धूकणौ (बौ)-क्रि०१ध्वनि करना,बजना । २ देखो'धूंकणौ'(बौ) ।
धूकळ-देखो 'धूंकळ' ।
धूकळणौ (बौ)-देखो 'धौंकळणौ' (बौ) ।
धूकार-देखो 'धुंकार' ।
धूकारणौ (बौ)-क्रि० ध्वनि करना, बजाना ।
धूकारव-१ देखो 'धोकार' । २ देखो 'धुंकार' ।
धूखण, धूखळ-देखो 'धूंकळ' ।
धूखळणौ (बौ)-देखो 'धौंकळणौ' (बौ) ।
धूड, धूडि, धूड़िया, धूडीड, धूडोड, धूडोडौ, धूडौ-स्त्री० [स० धूलि] १ मिट्टी, रेणु । रज, गर्द । २ निरर्थक वस्तु । -कोट-पु० मिट्टी का बना कच्चा किला । -गढ-पु० मोर्चे के लिये बनी धूल की दीवार । धूल का गढ ।
धूज-स्त्री० [म० धू] कंपन, थर्राहट ।
धूजट (टि, टी)-देखो 'धूरजटी' ।
धूजण (णि,णी)-स्त्री०कापने, थर्राने की क्रिया या भाव, कंपन ।
धूजणौ (बौ)-क्रि० [स० धू] १ कापना, थर्राना । २ भय खाना, डरना । ३ हिलना-डुलना । ४ आन्दोलित होना ।
धूजाणौ (बौ), धूजावणौ (बौ)-देखो 'धुजाणौ' (बौ) ।
धूजी-देखो 'ध्रुव' ।
धूण-देखो 'धूंण' ।
धूणणौ (बौ)-देखो 'धुणणौ' (बौ) ।
धूणियण, धूणियाळ-पु० १ सुमेरू पर्वत । २ देखो 'धुणियाळ' ।
धूणी, धूणौ-देखो 'धूंणी' ।
धूणौ (बौ)-देखो 'धोणौ' (बौ) ।
धूत-वि० [स० धूर्त, अवधूत] १ उन्मस्त मस्त । २ पागल । ३ योद्धा, वीर । ४ देखो 'धूरत' । ५ त्यागी, वैरागी ।
धूतडंळ, धूतडंळ-देखो 'धूत' ।
धूतणौ (बौ)-क्रि० [स० धूत] धूर्तता करना, ठगना ।
धूतताप-स्त्री० [स०] काशी की एक छोटी प्राचीन नदी ।
धूतारण-पु० [स० ध्रुव +तारण] विष्णु, ईश्वर, परमेश्वर ।
धूतारणौ (बौ)-क्रि० [स० धूर्तम्] भडकाना, सिखाना ।
धूतारी-स्त्री० [स० धूर्तम्] पृथ्वी, धरती । -वि० ठगने वाली, ठगोरी । चालाक, दुष्टा ।
धूतारो-१ देखो 'धूत' । २ देखो 'धूरत' ।
धूती-स्त्री० शाक विशेष । -वि० ठगने वाली, चालाक, दुष्टा ।
धूतौ, धूत्यौ-१ देखो 'धूत' । २ देखो 'धूरत' ।
धूधडाक-वि० निडर, निर्भय ।
धूधड़, धूधडं, धूधडे, (ड़ै)-वि० [सं० ध्रुव-घट] १ अटल, दृढ । २ निडर, निशंक । ३ चौडे मे, खुले आम ।
धूधर-पु० शरीर, देह ।
धूधळ-देखो 'धुंधळ' ।
धूधळणौ (बौ)-देखो 'धुंधळणौ' (बौ) ।
धूधारण-वि० [स० ध्रुव-धारण] अटल, स्थिर, दृढ ।
धूधूग्रार-पु० जोर से चिल्लाने की क्रिया ।
धूधूकट-देखो 'धुधुकट' ।
धूधूकार-अव्य० १ अधिकता बोधक अव्यय शब्द । २ देखो 'धुधुकार' ।
धून-स्त्री० [म० धून] १ धुनने की क्रिया या भाव । २ देखो 'धुंन' । ३ देखो 'ध्रुन' ।
धूनी-१ देखो 'ध्रुन' । २ देखो 'धूणी' ३ देखो 'धूंन' ।
धूनौ-पु० १ जाति विशेष का घोडा । २ देखो 'धुंन' ।
धूप-पु० [स०] १ देव मूर्ति आदि के सम्मुख जलाने का अगर-चदन आदि सुगंध द्रव्य । २ सुगंध द्रव्यो का मिश्रण, धुप । ३ सूर्य का प्रकाश, आतप । -स्त्री० ४ तलवार, खड्ग । -घडी स्त्री० धूप के आधार पर समय का ज्ञान कराने वाला यंत्र । -घटी-स्त्री० धूपदानी । -छाया-स्त्री० कहीं पर हल्का व कहीं गहरा दिखने वाला वस्त्र ।
धूपट-स्त्री० आनन्द, मौज व खाने-पीने की मस्ती की अवस्था ।

धूपटणौ (बौ)–क्रि० १ खूब खर्च करना, वितरण करना। २ अधिकार मे करना। ३ लूटना। ४ आनन्द मनाना, खुशी मनाना, मौज करना।

धूपणौ–देखो 'धूपियौ'।

धूपणौ (बौ)–क्रि० [स० धूप] १ धूप आदि सुगधित द्रव्य जलाना। २ सूर्य के आतप में रखना, धूप देना।

धूपत–पु० [स० ध्रुव-पति] ध्रुव के स्वामी, विष्णु।

धूपदान (दानी, धाणउ)–पु० १ धूप रखने का पात्र। २ धूप जलाने का पात्र।

धूपधारकौ–वि० तलवारधारी योद्धा। –पु० सूर्य, भानु।

धूपवत्ती–स्त्री० [स० धूपवर्ती] धूप द्रव्यो की बनी वत्ती, अगरबत्ती।

धूपहट–देखो 'धूपघटी'।

धूपा–देखो 'धूप'।

धूपारणौ–देखो 'धूपियौ'।

धूपियौ, धूपेड़ौ, धूपेणौ–पु० १ धूप दान, धूप करने का पात्र। २ धूप-दीप।

धूपेरण–पु० सलई या गुग्गुल का वृक्ष।

धूपेरणौ–देखो 'धूपियौ'।

धूपेल–पु० गुग्गल का तेल।

धूब–स्त्री० १ पानी मे डुबकी लगाने की क्रिया या भाव। २ घोडे की पीठ पीछे का भाग जहा दुमची बधती है। ३ देखो 'दोब'।

धूबक–स्त्री० १ मानसिक आघात, धक्का। २ बन्दूक छूटने का शब्द।

धूबकौ–पु० १ भारी वस्तु के गिरने का शब्द, धमाका। २ देखो 'धूबक'।

धूबड-नाथ–पु० नाथ सम्प्रदाय का एक सिद्ध।

धूबणौ (बौ)–देखो धुबणौ' (बौ)।

धूबाक–स्त्री० १ नीचे की ओर कूदने, छलाग लगाने की क्रिया या भाव। २ देखो 'धूबक'।

धूबौ–वि० १ सहारक, विध्वंसक। २ मारने वाला। ३ देखो 'धोबौ'।

धूमगर–पु० [स०] आग, अग्नि।

धूमंडळ–पु० [स० ध्रुव मडल] १ एक पौराणिक लोक विशेष। २ समार। ३ ध्रुव तारा की दिशा, उत्तर।

धूम पु० [स० धूम.] १ धुआ, धूम्र। २ युद्ध। ३ उछल-कूद, उत्पात। ४ शरारत, उद्दण्डता। ५ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। ६ कोलाहल, जनरव। ७ कोई वडा ममारोह। ८ ख्याति, चर्चा, प्रमिद्धि। ९ आहार-दाता की निंदा करने का एक दोप। (जैन) १० देखो 'धोम'। –वि० १ धुए के ममान। २ काला, श्याम। –क्रि०-वि० जोर-शोर से, धूम-धाम से।

धूमआलम–पु० [स० धूमअलि] भौंरा, भ्रमर।

धूमकधैया–स्त्री० १ उछल-कूद, वदमाशी, उद्दण्डता। २ शोर गुल हल्ला-गुल्ला। ३ लडाई, टटा।

धूमकेतन, धूमकेतु–पु० [स० धूमकेतु] १ आग, अग्नि। २ उल्का, पुच्छलतारा। ३ केतु-ग्रह। ४ शिव, महादेव। ५ रावण की सेना का एक राक्षस। ६ पूंछ पर भवरी वाला घोडा।

धूमडौ–देखो 'धूमडौ'।

धूमज–पु० [सं०] १ वादल, मेघ। २ नागरमोथा।

धूमडौ–पु० मारवाड की एक पर्वत श्रेणी।

धूमधडक्कौ धूमधडाकौ–पु० धूम-धाम।

धूमधज–स्त्री० [स० धूमध्वज] अग्नि, आग।

धूमधर–पु० [स०] आग, अग्नि।

धूम-धाम–स्त्री० १ खुशी प्रसन्नता की चहल-पहल। ठाट-वाट, गाजे-बाजे। २ कोई वडा समारोह, मेला।

धूममारग–पु० आम रास्ता, चहल-पहल वाला रास्ता।

धूमर–पु० [स० धुर्] १ शिर, मस्तक। २ एक असुर का नाम। ३ देखो 'धूम्र,। –स्त्री० ४ विशेष रग की गाय। –वि० काला, श्याम।

धूमरक–पु० [स० धूम्र] अधेरा।

धूमरतन–पु० [स० धूम्र-तन] धुआ उत्पादक, अग्नि, आग।

धूमराई–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेप।

धूमलोचन, (न्न)–पु० [स० धूम्रलोचन] १ शुभ नामक दैत्य का सेनापति। २ कबूतर, कपोत।

धूमविराळ–स्त्री० उच्छवास, आह।

धूमसौ–पु० धुआ, धूम।

धूमाळौ–पु० सर्दी मे ओढने का मोटा वस्त्र। –वि० मोटा-ताजा।

धूमावती–स्त्री० [स०] दश तान्त्रिक महाविद्याओ मे से एक।

धूमोरण, (प)–पु० यमराज।

धूमौ–पु० गोल ककडी विशेप।

धूम्र–पु० [स०] १ धुआ, धूम। २ फलित ज्योतिष का एक योग। ३ पाप गुनाह। ४ धूप। ५ राम की सेना का एक भालू। ६ दुष्टता। ७ नगीनो का एक दोष। ८ अधकार। –वि० १ धुए के रग का, भूरा। २ काला। ३ वैंगनी। —**केतु**='धूमकेतु'। —**पांन**–पु० औषधि का धुआ सास से खीचने की क्रिया या भाव। बीडी-तम्बाखू आदि सेवन करने की क्रिया।

धूम्रक–पु० [स० धूम्रक] ऊट, उष्ट्र, क्रमेलक।

धूम्राक्ष–पु०[स०] वार व नक्षत्रो मवधी २८ योगो मे से तीसरा योग।

धूय, धूयर–१ देखो 'धू'। २ देखो 'धी'।

धूर–देखो 'धूड' ।
धूरज–पु० [स० धूर्य] १ यज्ञ । २ घोडा, वाजि ।
धूरजट, (टि, टी, टू, ट्टी)–पु० [स० धूर्जटि] १ शिव, महादेव २ वट वृक्ष ।
धूरणौ (बौ)–क्रि० [स० ध्वरति] १ उदास होना, खिन्न होना । २ विरह करना ।
धूरत–वि० [स० धूर्त] १ धोखेबाज, वचक । २ ठग, चालाक । ३ पाखडी, ढोगी । ४ मायावी । ५ दुष्ट, खल, नीच । ६ उत्पाती, उपद्रवी । ७ जुआरी । ८ दाव-पेच लगाने वाला । ९ गुण्डा, दादा । -पु० १ धतुरा । २ चोर नामक गध द्रव्य । ३ साहित्य मे एक प्रकार का नायक । —चरित–पु० धूर्तो का चरित्र । ढोग ।
धूरतक–पु० [स० धूर्तक] १ धूर्तता करने वाला व्यक्ति । जुआरी । २ गीदड, शृगाल ।
धूरतता, धूरतताई–स्त्री० [स० धूर्तता] १ वचकता, चालबाजी, चालाकी । २ माया । ३ धोखा । ४ पाखड । ५ गुण्डागर्दी ।
धुरतसबळ–पु० [स० धूर्त-सबल] बहत्तर कलाओ मे से एक ।
धूरती–वि० १ धूर्तता करने वाला । २ देखो 'धूरतता' ।
धूरधर–पु० [स० धूर्धर] बोझा ढोने वाला मजदूर, भारवाही, कुली ।
धूर्रा–क्रि०वि० ऊपर, ऊचाई पर ।
धूरा–देखो 'धूरा' ।
धूरि (री), धूळ, धूल–देखो 'धूड' ।
धूळकोट–देखो 'धूडकोट' ।
धूळधोया–स्त्री० [स० धूलि-धौत] स्वर्णकारो की एक शाखा ।
धूळपाचम–स्त्री० [स० धूलि-पचमी] चैत्र कृष्णा पचमी ।
धूळरोट–पु० नाथ सम्प्रदाय के योगी की मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला एक भोज विशेष ।
धूळहडी, धूळहरी–देखो 'धूळेरी' ।
धूळि–देखो 'धूड' ।
धूळिधूसा–स्त्री० १ एक प्राचीन जाति विशेष । २ गेहूँ की बोवाई का एक ढग ।
धूळिभात–पु० [सं० धवल-भक्त] पाणिग्रहण के पूर्व बरात को दिया जाने वाला भोज ।
धूळियालुहार–स्त्री० लुहारो की एक शाखा ।
धूळिहडी–देखो 'धुळेरी' ।
धूळी–देखो 'धूड' ।
धूळीयो–पु० एक वृक्ष विशेष ।
धूळेडी, धूळेटी, धूळेरी–स्त्री० [स० धूलि] होली के दूसरे दिन का त्योहार, इस दिन को खेला जाने वाला फाग । २ फाल्गुन मास की शुक्ल प्रतिपदा ।
धव–१ देखो 'धूप' । २ देखो 'ध्रुव' ।
धूवणौ (बौ)–क्रि० आलोकित होना, प्रकाशित होना ।
धूवाधार, धूवाधोर–देखो 'धु आधार' ।
धूवेल–स्त्री० एक लता विशेष ।
धूवौ–देखो 'धु वौ' ।
धूस–स्त्री० [स० ध्वमिनी] १ सेना, फौज । २ समूह, झुण्ड । ३ देखो 'धू सौ' । ४ देखो 'धू स' ।
धूसकौ–पु० ध्वनि, आवाज ।
धूसर–वि० [स०] १ मटमैले या धूल के रग का । २ धूल से भरा, धूल सना । ३ धु धला । ४ भूरा । –पु० १ मटमैला या भूरा रग । २ इस रग का घोडा । ३ गधा । ४ ऊट । ५ कबूतर । ६ तेली ।
धूसरी–स्त्री० [स० धूसर] धूलि, रज । –वि० धूसर रग की ।
धूसळ–पु० [देश०] लडाई, टटा ।
धूसली–स्त्री० [स० धूसर] धूलि, रज ।
धूहकार–देखो 'धोऊकार' ।
धूहड–देखो 'धूड' ।
धेंकट–पु० तबले का एक बोल ।
धेंग–देखो 'धैंग' ।
धे–पु० [स०] १ पारसनाथ । २ वृक्ष, पेड । ३ धर्म । ४ पति । ५ कार्यक्रम । –स्त्री० ५ धरती, भूमि ।
धेग्रभाग–पु० [स० धेयभाग] धर्म ।
धेऊ–वि० [देश०] १ सहायक, मददगार । २ उत्तरदायित्व लेने वाला ।
धेक–देखो 'धेख' ।
धेकियौ, धेकी–देखो 'धेखी' ।
धेख–स्त्री० [स० द्वेष] १ शत्रुता, वैर । २ द्वेष, डाह, ईर्ष्या । ३ प्रतिस्पर्धा, होड ।
धेखियौ–देखो 'दोखी' ।
धेखी–देखो 'दोखी' ।
धेग–देखो 'देगचा' ।
धेटाई–देखो 'धीटाई' ।
धेटौ, धेठ– देखो 'धीठ' । (स्त्री०धेटी)
धेठाई–देखो 'धीटाई' ।
धेठौ–देखो 'धीठ' ।
धेणु–देखो 'धेनु' ।
धेधगर, धेधिगर, धेधींग, धेधींगड, धेधींगर धेधीग, धेधीगर–देखो 'धेंधीगर' ।
धेनजय–देखो 'धनजय' ।
धेन–पु० [स०] १ समुद्र । २ नद । ३ देखो धेनु' ।
धेनक–देखो 'धेनुक' ।
धेनडियौ–पु० १ गोवत्स, बछडा । २ पुत्र, बेटा ।

धेनु–स्त्री० [सं०] १ गौ, गाय। २ दुधारु गाय। ३ पुरुष वाची शब्द को स्त्री वाची बनाने वाला एक प्रत्यय। ४ पृथ्वी। ५ देखो 'धनु'।
धेनुक–पु० [सं०] १ एक तीर्थ का नाम। २ एक असुर। ३ सोलह रति वधों में से एक।
धेनू–देखो 'धेनु'।
धेम–पु० [देश०] ढेर।
धेय–वि० [सं०] १ धारण करने योग्य, धार्य्य। २ ध्यान देने योग्य, ध्यान करने योग्य। –स्त्री० [सं० धीता] १ पुत्री, लड़की। २ उद्देश्य, लक्ष्य।
धेर–अव्य० हाथी को संकेत देने का अव्यय शब्द। –पु० [देश०] एक जाति विशेष।
धेली–देखो 'अधेली'।
धेलो–देखो 'अधेलो'।
धैंग–स्त्री० १ पानी में कूदने या छलांग लगाने की क्रिया। डुबकी, गोता। २ एक जाति विशेष का घोड़ा।
धैंड, धैंडियो–स्त्री० १ बड़ी रोटी। २ देखो 'धैंड'।
धैं–पु० १ रावण, दशानन। २ गर्दन, ग्रीवा। ३ सुग्रीव। ४ आश्रय।
धैं'–देखो 'द्रह'।
धैंईड़णौ (बौ)–क्रि० मारना, पीटना।
धैंकाळ–पु० [सं० द्रह-काल] भयंकर दुर्भिक्ष।
धैंड, धैंडियो, धैंडो–स्त्री० [सं० द्रह] १ नदी में अधिक गहराई वाला स्थान। २ पानी का गड्ढा, पोखर। ३ बड़ा व गहरा खड्डा। ४ कच्चा, कुआ। ५ कूए का खड्डा। ६ पशुओं का खाद्य पकाने का मिट्टी का बना बड़ा बर्तन।
धैंचाळ–वि० १ बहुत गहरा। २ असीम, अपार (जल)।
धैंड, धैंडियो, धैंडो–देखो 'धैंड'।
धैंधगर, धैंधिगर, धैंधींग, धैंधींगड, धैंधींगर, धैंधीग, धैंधीगर–पु० [देश०] १ हाथी, गज। २ सांप, नाग। ३ ऊंट। –वि० १ बड़े डील-डौल का, विशालकाय, भीमकाय। २ प्रचण्ड, जबरदस्त।
धैनव–वि० गाय से उत्पन्न, गाय का। –स्त्री० गाय।
धैंळ–देखो 'धैंळियो'।
धैंल–देखो 'दहल'।
धैंलणौ (बौ)–देखो 'दहलणौ' (बौ)।
धैंळियो–पु० [देश०] मिट्टी आदि का बना बड़ा जल पात्र।
धैवत–पु० [सं०] संगीत में सरगम का छठा स्वर।
धैह–देखो 'द्रह'।
धोंकार, धोंकारि–स्त्री० १ ढोलक आदि वाद्यों की ध्वनि। २ धनुष की डोर की ध्वनि, टंकार।
धोंधीगर–देखो 'धैंधीगर'।
धो–पु० १ धर्म। २ सागर, समुद्र। ३ शकट। ४ अर्थ। ५ वृषभ, बैल। –वि० सुखद।
धोअणौ (बौ)–देखो 'धोणौ' (बौ)।
धोऊकार–देखो 'धोकार'।
धोक–पु० १ नमस्कार, प्रणाम। २ धव वृक्ष।
धोकड़–पु० तराजू का झुकाव।
धोकडी, धोकड़ौ–देखो 'धोक'।
धोकणौ (बौ)–क्रि० [सं० ढौक्] नमस्कार करना, प्रणाम करना।
धोकरणौ (बौ)–क्रि० १ गरजना। २ दहलाना, दहाड़ना।
धोका-धडी–स्त्री० धोखा देने का कार्य, धूर्तता, विश्वासघात।
धोकायती धोकेबाज–वि० धोखा देने वाला, कपटी, धूर्त।
धोकार–देखो 'धोकार'।
धोकेबाजी–स्त्री० छल, कपट, धूर्तता।
धोकौ–पु० [सं० धूकता] १ भ्रम, भुलावा। २ छल, कपट। ३ चालाकी, धूर्तता। ४ विश्वासघात, धोखा। ५ पश्चाताप। ६ मानसिक आघात। ७ चिंता, सोच, फिक्र। ८ मिथ्याभास। ९ माया, दिखावटी वस्तु। १० अज्ञान। ११ अनिष्ट की आशंका। १२ शंक, संशय, संदेह। १३ भय, डर। १४ त्रुटि, चूक।
धोख–देखो 'धोक'।
धोखणौ (बौ)–देखो 'धोकणौ' (बौ)।
धोखेबाज–देखो 'धोकेबाज'।
धोखेबाजी–देखो 'धोकेबाजी'।
धोखौ–देखो धोकौ'।
धोड–१ देखो 'धोड'। २ देखो 'धोडौ'।
धोडौ–वि० [सं० धाटी] १ वीर, बहादुर। २ डाकू, लुटेरा। ३ देखो 'धोडौ'।
धोटी–देखो 'ढोटी'।
धोटौ–देखो 'ढोटौ'।
धोडौ–पु० १ प्रवाह, धारा। २ बड़ा कौआ, काला कौआ।
धोणौ (बौ)–क्रि० [सं० धावनम्] १ पानी आदि से धोना, प्रक्षालन करना। २ स्वच्छ व निर्मल करना। ३ मिटाना, दूर करना।
धोत, धोतड–देखो 'धोती'।
धोतपडणौ–पु० जलाशय में कूदने की क्रिया या भाव।
धोतपट्ट–पु० [सं० अधोपट] पुरुषों के पहनने का अधोवस्त्र विशेष, धोती।
धोति, धोतियो, धोती, धोतीड, धोतौ–स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] १ पुरुषों का अधोवस्त्र विशेष। २ साड़ी। [सं० धौति] ३ शरीर शुद्धि के लिए हठयोग की एक क्रिया। ४ योगिक क्रिया में काम आने वाली वस्त्र पट्टिका।

धोधर–पु० ठोडी ।
धोधींगर–देखो 'धंधींगर' ।
धोप–देखो 'धौप' ।
धोपटौ–पु० दावत का खाना ।
धोपणौ(बौ)–क्रि० १ डराना, धमकाना । २ देखो 'धोणौ'(बौ)
धोपाणौ (बौ), धोपावणौ (बौ)–क्रि० १ डरवाना, धमकवाना । २ देखो 'धुपाणौ' (बौ) ।
धोब–स्त्री० १ धोने की क्रिया, धुलाई । २ देखो 'दोब' ।
धोबण–स्त्री० १ धोबी जाति की स्त्री । २ कपड़े धोने का व्यवसाय करने वाली स्त्री । ३ एक पक्षी विशेष ।
धोबी–पु० [स० धावक] (स्त्री० धोबण) कपड़े धोकर जीविका कमाने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति । —**घटौ, घाट, घाटौ**–पु० जलाशय का वह किनारा जहा धोबी कपड़े होते हैं । कपड़े धोने का स्थान । —**पछाड**–स्त्री० कपड़े को पछाडने की क्रिया । कुश्ती का एक पेच ।
धोबौ–पु० १ दोनो हथेलियो को मिलाकर बनाई गई मुद्रा, अजलि । २ अजलि मे समाने लायक पदार्थ ।
धोमग–देखो 'धूमगर' ।
धोम–पु० [स० धूम] १ अग्नि, आग । २ वायु, हवा । ३ तोप । ४ तोप की आवाज । ५ क्रोध, कोप । ६ देखो 'धूम' । –वि० १ बडा, महान् । २ जबरदस्त, जोरदार । ३ तेज, तीव्र । ४ प्रचण्ड, भयकर । —**झळ, झाळ**–पु० अग्नि, आग । ताप । —**पात्र**–पु० धूपदान । —**बांण**–स्त्री० एक प्रकार की तोप । —**मारग**= धूममारग' ।
धोमर–पु० १ भस्मासुर नामक राक्षस । २ धूम, धुआ ।
धोमरिख–पु० [स० धूम-ऋषि] पराशर ऋषि का एक नामान्तर ।
धोमानळ–स्त्री० [स० धूमानल] आग, अग्नि ।
धोमारिकव–देखो 'धोमरिख' ।
धोयण–पु० [स० धावनम्] १ धोना, साफ करने की क्रिया । २ देखो 'धोवण' ।
धोयौ-धायौ–वि० १ साफ सुथरा, स्वच्छ । २ निष्कलक, निर्मल ।
धोरमनाथ–पु० १ विष्णु का एक नाम । २ एक तीर्थ विशेष ।
धोर, धोरडौ, धोरडौ–देखो 'धोरौ' ।
धोरण, धोरणि (णी)–स्त्री० [स० धोरणम्] १ घोड़े की चाल विशेष । २ सवारी, यान । ३ पक्ति, कतार । ४ श्रेणी । ५ परपरा ।
धोरणौ–देखो 'धोरण्यौ' ।
धोराऊ–देखो 'धुराऊ' ।
धोराळौ–पु० [स० धोरणि] १ कोर, गोटे आदि से सज्जित वस्त्र । २ गोटे की बनी पट्टी ।
धोरिउ–देखो 'धोरी' ।
धोरियौ–पु० [स० धुर्] १ करघे का एक उपकरण । २ देखो 'धोरौ' ।
धोरींधर–देखो 'धुरधर' ।
धोरी–पु० [स० धौरेय] १ बैल, वृषभ । २ देखो 'धोरौ' । –वि० १ मुखिया, अगुवा, प्रधान । २ भार उठाने वाला ।
धोरीथाप (थापौ)–पु० [स० धुर्-स्थाप] खलिहान मे प्रथम बार साफ किये अनाज का ढेर । –वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।
धोरीधर–पु० [स० धूर्धर] बैल, वृषभ ।
धोरीभाव–पु० [स० ध्रुव-भाव] सामान्य तौर पर स्थिर दर ।
धोरे (रै)–क्रि०वि० [देश०] निकट, समीप, पास ।
धोरौ–पु० [स० धोरणि] १ स्त्रियो के वस्त्रो पर शोभा के लिए लगने वाली कोर, गोट आदि । २ मार्ग, रास्ता । ३ प्रवाह । ४ लहर । ५ लपट । ६ झोका । ७ परिस्थिति, वातावरण । ८ धूल का टीबा, भीटा, ढूह । ९ खेत के किनारे-किनारे बनी मिट्टी की पाज । मेढ । १० जल प्रवाह रोकने का बांध । ११ क्यारियो मे पानी देने की नाली । १२ तट, किनारा ।
धोवण–पु० [स० धावनम्] १ पात्र मे चिपकी वस्तु को धोकर निकाला हुआ पानी । २ पानी या तरल पदार्थ, जिसमे कुछ धोया गया हो । ३ धोने की क्रिया या भाव । ४ मृतक की भस्मी नदी या तीर्थ स्थान मे डाल कर सबधियो को दिया जाने वाला भोज ।
धोवणी–स्त्री० [स० धावनिका] १ धोने की क्रिया या भाव । २ धोने की कला । ३ धोने का उपकरण ।
धोवणौ (बौ)–देखो 'धोणौ' (बौ) ।
धोवती–देखो 'धोती' ।
धोवन (नु, नू)–देखो 'धोवण' ।
धोह–पु० [स० द्रोह] १ धोखा, दगा । २ देखो 'द्रोह ।
धौंकणी–स्त्री० [स० ध्मा] १ फूक कर आग सुलगाने की नलिका भाथी । फूकनी । २ देखो 'धमणी' ।
धौंकणौ (बौ)–क्रि० १ नली द्वारा फूक लगाकर आग सुलगाना, फूकना । २ फूक मारना ।
धौंकळ–देखो 'धूकळ' ।
धौंकळणौ (बौ)–देखो 'धोकळणौ' (बौ) ।
धौंकार–देखो 'धोकार' ।
धौंखळ–देखो 'धूकळ'
धौंखळणौ (बौ)–देखो 'धोकळणौ' (बौ) ।
धौंचक (क्क)–देखो 'धमचक' ।
धौंस–देखो 'धूस' ।
धौंसर, धौंसौ–देखो 'धूसौ' ।

धौ-पु० १ देवता। २ धर्म। ३ तट, किनारा। —स्त्री० ४ धरती। ५ धन्ना।

धौर-पु० [illegible]।

धौरळ-देखो 'धवळ'।

धौकणौ (बौ)-क्रि० [देश०] १ युद्ध करना, लड़ाई करना। २ दमन करना, नाश करना। ३ प्रहार करना, मारना। ४ उत्पात करना, उत्पन्न करना।

धौकार-देखो 'धोकार'।

धौगळ-देखो 'धवळ'।

धौगळणौ (बौ)-देखो 'धौकळणौ' (बौ)।

धौड-वि० [सं०] १ रक्षा करने वाला, रक्षक। २ देखो 'दौड'। —स्त्री० १ जिद्द, हठ। २ ध्वनि विशेष।

धौडेय, धौडेय-पु० वेग।

धौत धौति (ती)-वि० [सं०] १ धुला हुआ। २ देखो 'धोती'।

धौप-स्त्री० १ जोश भरी व डरावनी आवाज। २ आतंक, भय, रौब। ३ तलवार, खड्ग। ४ धुलाई।

धौपटणौ (बौ) धौपट्टणौ (बौ)-क्रि० [देश०] १ उपद्रव करना, लूटना। २ अधिकार या कब्जा करना। ३ खूब खर्च करना। ४ आनन्द मनाना।

धौफ-देखो 'धौप'।

धौम देखो 'धूम'।

धौमधुज-देखो 'धूमधज'।

धौमाळ स्त्री० अग्नि, आग।

धौम्य-पु० [सं०] एक ऋषि।

धौरण-वि० [देश०] लहू-लुहान व क्षत-विक्षत।

धौरितक-पु० [सं० धौरितकम्] घोड़े की पांच चालों में से एक।

धौळ-पु० [देश०] १ शिर, मस्तक। २ देखो 'धवळ'। ३ देखो 'धौळो'। ४ देखो 'धौळप'।

धौल-पु० हाथ के पंजे का भारी आघात, थप्पड़।

धौळख-देखो 'धौळप'।

धौलक, धौलकी-देखो 'ढोलक'।

धौळरो-देखो 'धवळ'।

धौळप स्त्री० [सं० धवल] मकानों पर पुताई करने की श्वेत मिट्टी।

धौळगिर (गिरि, गिरी)-देखो 'धवळगिर'। —वासी० 'धवळगिरवासी'।

धौळजामो-पु० सफेद जामे का बैल।

धौळप-स्त्री० [सं० धवल] १ मकान पोतने की श्वेत मिट्टी, [illegible]। २ मकान पोतने की क्रिया।

धौळणौ (बौ)-देखो 'धवळणौ' (बौ)।

धौळा[illegible] [illegible]।

धौळपूछियौ-पु० [सं० धवल-पुच्छ] १ एक प्रकार का घास। २ वह बैल जिसकी पूछ के बाल श्वेत हो।

धौळहर-देखो 'धवळहर'।

धौळा-स्त्री० [सं० धवल] ढोलियो की एक शाखा।

धौळागर (गिर, गिरि)-देखो 'धवळगिरि'।

धौळहार-देखो 'धवळहर'।

धौळियौ-वि० १ नीर तेजा जाट का एक विशेषण। २ देखो 'धौळो'

धौळेरण-देखो 'धवळेरण'।

धौळेहर, धौळेंहर-देखो 'धवळहर'।

धौळौ-पु० [सं० धवल] १ एक प्रकार का श्वेत पत्थर। २ श्वेत बाल। ३ श्वेत प्रदर, सोम रोग। —वि० (स्त्री० धौळी) १ श्वेत, सफेद। २ देखो 'धवळ'। ३ देखो 'धौळख'।

धौल्यौ-पु० [सं० धवल] १ सफेद धव के समान छोटा वृक्ष। २ देखो 'धौळो'। ३ देखो 'धवळ'।

ध्यान-पु० [सं० ध्यान] १ अन्त करण मे उपस्थित करने की क्रिया या भाव। २ मन व इन्द्रियो को केन्द्रित करने की क्रिया या भाव। ३ ईश्वर या किसी ईष्ट का एकाग्रचित्त से चिन्तन। ४ चिन्तन, मनन। ५ मानसिक प्रत्यक्ष। ६ खयाल, विचार, चेतना। ७ दिव्य अन्तर्ज्ञान। ८ बुद्धि, समझ। ९ प्रगाढ, चिन्ता। १० स्मृति, याद। ११ मनोयोग से देखने व समझने की क्रिया या भाव। १२ योग के आठ अगो मे से एक। १३ बहत्तर कलाओ मे से एक।

ध्यान-जाग-पु० [सं० ध्यानयोग] १ वह योग जिसमे ध्यान मुख्य हो। २ एक तान्त्रिक क्रिया।

ध्यान-धारण-पु० [सं० ध्यानधारिन्] १ शिव, महादेव। २ योगी।

ध्यानवत-वि० [सं० ध्यानवत्] जो किसी का ध्यान कर रहा हो।

ध्यानी-वि० [सं० ध्यानिन्] १ ध्यान लगाने वाला, ध्यान करने वाला। २ ध्यानयुक्त, समाधिस्थ।

ध्यानु-देखो 'ध्यान'।

ध्याग (गि)-देखो 'धियाग'।

ध्याणौ (बौ)-क्रि० १ ईश्वर या किसी देव का ध्यान करना, मानना, ईष्ट रखना। २ सेवा-पूजा करना। ३ देखो 'धाणौ' (बौ)।

ध्याता-वि० ध्यान करने वाला।

ध्यावणौ (बौ)-देखो 'ध्याणौ' (बौ)।

ध्यावना-देखो 'धावना'।

ध्येय-वि० [सं०] १ ध्यान करने योग्य। २ जिसका ध्यान किया जाय।

ध्रखळ-देखो 'धखळ'।

ध्रग, ध्रंगडौ–देखो 'द्रग' ।
ध्रंम–देखो 'धरम' ।
ध्र–देखो 'ध्रुव' ।
ध्रग(ग्ग)–वि० १ बडा । २ देखो 'धिक' ।
ध्रगध्रगी–देखो 'धगधगी' ।
ध्रतकेतु–पु० [सं०] वसुदेव का बहनोई ।
ध्रतदेवा–स्त्री० [सं० धृतदेवा] देवक की एक कन्या का नाम ।
ध्रतराष्ट्री–स्त्री० [सं० धृतराष्ट्री] १ धृतराष्ट्र की पत्नी । २ कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओं में से एक ।
ध्रति, ध्रती–स्त्री० [सं० धृति] १ धरने, धारण करने की क्रिया । २ पकड़ने की क्रिया या भाव । ३ स्थिरता, ठहराव । ४ धीरता, धैर्य । ५ संतोष । ६ मन की दृढ़ता । ७ आनन्द, खुशी । ८ चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक । ९ फलित ज्योतिष के सताईश योगों में से एक । १० राजा जयद्रथ का पौत्र । ११ देखो 'धरती' ।
ध्रत्–वि० [सं० धृत] १ ग्रहण किया हुआ, धारित । २ पकड़ा हुआ, धरा हुआ । ३ गिरा हुआ, पतित । ४ स्थिर, निश्चित ।
ध्रपण–पु० तृप्ति, संतोष ।
ध्रब–पु० नक्कारे का शब्द, आवाज ।
ध्रमकणौ, (बौ)–देखो 'धमकणौ' (बौ) ।
ध्रम–१ देखो 'धरम' । २ देखो 'धम' । —आतमा='धरमात्मा' ।
ध्रमक–देखो 'धमक' ।
ध्रमजगर, ध्रमजघड–देखो 'धमगजर' ।
ध्रमपाळ–देखो 'धरमपाळ' ।
ध्रमराज, (राय)–देखो 'धरमराज' ।
ध्रमलाभ–देखो 'धरमलाभ' ।
ध्रमसील–देखो 'धरमसील' ।
ध्रमी–देखो 'धरमी' ।
ध्रम्म–देखो 'धरम' ।
ध्रवण–पु० [सं० द्रव] मेघ, बादल ।
ध्रवणौ (बौ)–क्रि० [सं० द्रव] १ तृप्त करना, संतुष्ट करना । २ बूंदों की तरह टपकना । ३ बरसना । ४ द्रवित होना । ५ अधिक उदार होना । ६ मारना, संहार करना ।
ध्रवान–देखो 'ध्वान' ।
ध्रसडी–वि० जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली ।
ध्रसकणौ (बौ)–देखो 'धसकणौ' (बौ) ।
ध्रसकाणौ (बौ), ध्रसकावणौ (बौ)–देखो 'धसकाणौ' (बौ) ।
ध्रसक्कणौ, (बौ)–क्रि० १ भयभीत होना, कांपना । थर्राना । २ देखो 'धसकणौ' (बौ) ।
ध्रसटी–१ देखो 'ध्रिस्टी' । २ देखो 'ध्रिस्ट' ।
ध्रसहसणौ, (बौ)–देखो 'धसकणौ' (बौ) ।
ध्रसुडणौ (बौ)–क्रि० हांकना, चलाना ।
ध्रसूकणौ (बौ)–क्रि० १ ढोल आदि वाद्यों का बजना । २ भयभीत होना, कांपना । ३ देखो 'धसकणौ' (बौ) ।
ध्रसूकाणौ (बौ), ध्रसूकावणौ (बौ)–क्रि० १ ढोल बजाना । २ भयभीत करना, कंपित करना ।
ध्रस्ट–पु० [सं० द्रयष्ट, धृष्ट] १ ताम्र, तांबा । २ बेवफा पति या प्रेमी । –वि० १ निर्लज्ज, बेशर्म । २ बार-बार अपमान सह कर भी नायिका से लगा रहने वाला नायक । ३ बेवफा । ४ दुराग्रही, हठी । ५ अभिमानी । ६ लंपट ।
ध्रस्टकेतु–पु० [सं० धृष्टकेतु] शिशुपाल का पुत्र ।
ध्रासाड़णौ (बौ)–क्रि० गर्जना, दहाड़ना ।
ध्रापणौ (बौ)–देखो 'धापणौ' (बौ) ।
ध्राव–पु० [देश०] पशु, मवेशी ।
ध्रासक, ध्रासकौ–पु० १ धक्का, आघात । २ प्रघात, सदमा ।
ध्रासकणौ (बौ)–देखो 'ध्रसक्कणौ' (बौ) ।
ध्राह–देखो 'धाह' ।
ध्राहुरणौ (बौ)–क्रि० भयंकर आवाज करना, गर्जना ।
ध्रिक, ध्रिक्क, ध्रिग–देखो 'धिक' ।
ध्रित, ध्रिति–१ देखो 'ध्रति' । २ देखो 'धरती' ।
ध्रिबणौ (बौ)–देखो 'धीबणौ' (बौ) ।
ध्रियाग–देखो 'धियाग' ।
ध्रिसट–देखो 'ध्रिस्टी' ।
ध्रिस्टी–पु० [सं० घृष्टि] सूअर, वराह । –वि० [सं० धृष्ट] नीच, दुष्ट, ढीट ।
ध्रींगां–स्त्री० नगाड़े आदि की ध्वनि ।
ध्री–देखो 'ध्रीह' ।
ध्रीब, ध्रीबछड–अव्य० १ नृत्य के समय नगाड़े, ढोल आदि बजने की ध्वनि । २ देखो 'धीब' ।
ध्रीबणौ (बौ)–देखो 'धीबणौ' (बौ) ।
ध्रीया–देखो 'धी' ।
ध्रीयाग–देखो 'धियाग' ।
ध्रीवणौ (बौ)–देखो 'धीवणौ' (बौ) ।
ध्रीह–स्त्री० नक्कारे की ध्वनि ।
ध्रुपद–पु० [सं० ध्रुवपद] उत्तरी भारत की एक विशिष्ट गायन शैली ।
ध्रुव–पु० [सं०] १ उत्तर दिशा स्थित एक प्रसिद्ध तारा । २ राजा उत्तानपाद का पुत्र । ३ वट वृक्ष । ४ आठ वसुओं में से एक । ५ पर्वत, पहाड़ । ६ ध्रुवक, ध्रुपद । ७ ब्रह्मा । ८ ज्योतिष के सताईस योगों में से एक । ९ फलित ज्योतिष में एक नक्षत्रगण । १० नाक का अग्र भाग । ११ टगण की छ मात्राओं के ग्यारहवें भेद का नाम (ऽ।।) । १२ भूगोल के अनुसार पृथ्वी का अक्ष स्थान ।

— न —

न–देवनागरी वर्णमाला का बीसवा वर्ण।

न–पु० १ सुख। २ आख। ३ ससार। ४ शृगार। ५ कान। ६ हर्ष। ७ हाथी। ८ पति। ९ स्वामी।

नखी–देखो 'मखी'।

नग–पु० [स० अनग] १ कामदेव। मनोज। २ नगा। ३ देखो 'नग'।

नगर–स्त्री० [देश०] कुलींच।

नगळियौ–पु० शव-यात्रा मे साथ ले जाने का मिट्टी का एक जल पात्र।

नगाती–वि० खुले वक्षस्थल वाली।

नगारची–देखो 'नगारची'।

नगारौ–देखो 'नगारौ'।

नगोडौ–देखो 'नगोडौ'।

नगौ–देखो 'नागौ'।

नचणी–देखो 'नाचणा'।

नद–पु० [स०] १ गोकुल के गोपो का मुखिया। २ मगध देश के राजाओ की उपाधि। ३ पुत्र, लडका। ४ आनन्द, हर्ष। ५ विष्णु, परमेश्वर। ६ एक नाग का नाम। ७ वीणा विशेष। ८ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ९ आदि गुरु, त्रिकल (ऽ।)। १० एक प्रकार का मृदग। ११ एक रागिनी विशेष। १२ एक प्रकार की वासुरी विशेष। १३ नौ निधियों मे से एक। १४ देखो 'नदन'। —**कवर, किसोर, किसौर, कुअर, कुवार, कुमार, कुमार**–पु० श्रीकृष्ण। —**गांव, ग्राम**–पु० गोकुल। नदिग्राम। —**नद, नदन**–पु० श्रीकृष्ण। विष्णु। ईश्वर। —**नदिनी**–स्त्री० नद की कन्या। योग माया। —**रांणी**–स्त्री० यशोदा। —**लाल**–पु० श्रीकृष्ण। —**लोक**–पु० वृदावन। —**वस**–पु० मगध का प्रसिद्ध राजवंश।

नदक–वि० [स०] १ आनन्ददायक। २ कुलपालक। ३ देखो 'निदक'। –पु० १ मेढक। २ तलवार। ३ श्रीकृष्ण का खड्ग। ४ प्रसन्नता।

नदगर, नदगिर, (गिरि, गिरी)–पु० [स० नदगिरि] १ आबू पर्वत की एक चोटी का नाम। २ आबू पर्वत।

नदण (णु, णौ)–देखो 'नदन'।

नदणी–देखो 'नदनी'।

नदणौ (वौ)–देखो 'निदणौ' (वौ)।

नदन–पु० [स०] १ इन्द्र का उपवन, देवलोक का उद्यान। २ महादेव, शिव। ३ विष्णु। ४ लडका, पुत्र। ५ मेढक। ६ चदन की लकडी। ७ हर्ष, प्रसन्नता। –वि० मूर्ख, पागल। —**वन, वन**–पु० इन्द्र का उद्यान।

नदनी–पु० [स० नदिनी] १ पुत्री। २ कामधेनु। ३ वसिष्ठ के आश्रम मे रहने वाली कामधेनु की पुत्री।

नदप्रयाग–पु० [स०] वदरिकाश्रम के समीप एक तीर्थ।

नदरबारी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

नदसेण–देखो 'नदिसेण'।

नदा–स्त्री० [स०] १ मास के प्रत्येक पक्ष की षष्ठी व एकादशी तिथि। २ अवसर्पिणी के दशवें अर्हत की माता का नाम। ३ सगीत की एक मूर्च्छना। ४ देखो 'निदा'। ५ प्रसन्नता, हर्ष। ६ धन, दौलत।

नदातीरथ–पु० [स० नदातीर्थ] हेमकूट पर्वत का एक तीर्थ और वहां बहने वाली नदी।

नदादेवी–स्त्री० [स०] दक्षिण हिमालय की एक चोटी।

नदावरत–देखो 'नद्यावरत'।

नदिकर–पु० [स०] शिव, महादेव।

नदिकुड–पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ।

नदिकेस–पु० [स० नदिकेश] १ शिव का द्वारपाल, गण। २ शिव।

नदिकेस्वर–पु० [स० नदिकेश्वर] १ शिव का द्वारपाल, गण। २ शिव।

नदिग्राम–पु० [स० नदिग्राम] अयोध्या के समीप एक गाव।

नदिघोस–पु० [स० नदिघोष] १ अग्निदेव द्वारा प्रदत्त अर्जुन का रथ। २ शुभ व मांगलिक घोषणा।

नदिमुख–पु० [स०] १ पक्षी विशेष। २ शिव।

नदिरुद्र–पु० [स०] शिव।

नदिवरधन–पु० [स० नदिवर्द्धन] शिव, महादेव। –वि० आनन्ददायक।

नदिसेण–पु० [स० नन्दिसेन] वर्तमान अवसर्पिणी के चतुर्थ तीर्थंकर।

नदी–पु० [स० नदिन्] १ शिव का द्वारपाल व सवारी का बैल, गण। २ एक सूत्र ग्रथ। ३ उडद। ४ विकार के कारण शरीर पर मास के लोथे लटकने वाला बैल। ५ पुत्र। ६ देखो 'नदी'। —**गण**–पु० शिव का द्वारपाल व वाहन। साड, विणजार। —**गिर**='नदगिरि'।

—धमळ–पु० श्वेत बैल । नंदी । —पति–पु० शिव, महादेव ।

नदीवन–देखो 'नंदनवन' ।

नदीस–पु० [स० नदीश] १ शिव । २ संगीत में ताल का एक भेद । [स० नदीश] ३ समुद्र ।

नदीस्वर–पु० [स० नदीश्वर] १ शिव । २ नदीश ताल । ३ शिव का गण, नंदी ।

नदी–देखो 'नंदी' ।

नद्यावरत (क)–पु० [स०] पश्चिम की ओर द्वार व चारों ओर बरामदे वाला भवन ।

नद्रा–देखो 'निद्रा' ।

नबर–पु० [अ०] संख्या अंक, क्रम, पारी ।

नबरदार–पु० मालगुजारी वसूल करने वाला कर्मचारी ।

नबरी–वि० [अ०] १ जिस पर नंबर या अंक लगा हो । २ श्रेष्ठ, प्रसिद्ध । ३ कुख्यात । ४ पंजिकृत ।

नह, नह–देखो 'नहीं' ।

नहकार–देखो 'नकार' ।

न–पु० [स०] १ वृक्ष । २ पंडित । ३ प्रभु । ४ बंधन । ५ अहमेव । ६ नौका । ७ गणेश । ८ मोती । –वि० १ प्रसन्न, खुश । २ दूसरा, अन्य । ३ निषिद्ध । ४ रिक्त । –अव्य० नहीं, निषेध ध्वनि । देखो 'नी' । देखो 'नै' ।

नअण–देखो 'नयण' ।

नइ, नइ–अव्य० १ चतुर्थी विभक्ति का प्रत्यय । २ देखो 'नदी' । ३ देखो 'नाई' । ४ देखो 'नै' । ५ देखो 'नहीं' । ।

नइडो, नइडउ, नइडो–पु० १ हाथ की अंगुली में नाखून के बीच होने वाला फोड़ा । २ देखो 'निकट' ।

नइण–देखो 'नयण' ।

नइति–देखो 'नैरत' ।

नइर–देखो 'नगर' ।

नई–१ देखो 'नदी' । २ देखो 'नहीं' । ३ देखो 'नवौ' (स्त्री०) ।

नईडो–पु० १ नाखून के अंदर होने वाला फोड़ा । २ देखो 'निकट' ।

नईयौ–पु० १ बढई का एक छोटा औजार विशेष । २ सूनगर का छोटा औजार ।

नईस–देखो 'नदीस' ।

नउ–देखो 'नै' ।

नउ–प्रत्य० १ संबंध सूचक विभक्ति, का । २ देखो नवौ' । ३ देखो 'नै' । ४ देखो 'नव' ।

नउकार–देखो 'नवकार' ।

नउकारवाळ–देखो 'नवकार-वाळी' ।

नउतणौ (बौ)–देखो 'निमंत्रणौ' (बौ) ।

नउद–स्त्री० [स० नवत] १ हाथी की झूल विशेष । २ ऊनी वस्त्र, झूल । ३ पर्दा ।

नउय–पु० [स० नयुत] काल का एक विभाग (जैन) ।

नउरता–देखो 'नौरता' ।

नउल–देखो 'नकुळ' ।

नऊ–स्त्री० १ नवमी तिथि । २ देखो 'नव' ।

नक–देखो 'नाक' ।

नकचूंटी–देखो 'नखचूंटी' । (मेवात)

नकछींकणी–स्त्री० [स० नासिका-छिक्कती] महीन पत्तियों वाली एक घास जिसकी गंध से छींक आती है ।

नकटाई–स्त्री० [स० नक्र-कर्त्तनम्] १ नाक काटने की क्रिया या भाव । २ निर्लज्जता, धृष्टता । ३ हठ, दुराग्रह । ४ बेहयापन ।

नकटियौ, नकटौ–वि० [स० नक्र-कर्त्तन] (स्त्री० नकटी) १ कटी हुई नाक का । २ निर्लज्ज, ढीट, दुष्ट । ३ हठी, दुराग्रही । —कोट–पु० ताश का एक खेल ।

नकतोड–पु० ऊंट की नकेल ।

नकद–देखो 'नगद' ।

नकदी–देखो 'नगदी' ।

नकफूल, नकफूली–पु० नाक का एक आभूषण विशेष ।

नकबेसर–पु० [स० नक्र-वेसर] स्त्रियों की नाक की बाली में लगा लंबा मोती ।

नकम–पु० मन (मेवात) ।

नकर–देखो 'नक्र' ।

नकराकृत–वि० [स० नक्र-आकृति] मगर की आकृति वाला ।

नकळक–देखो 'निकळंक' ।

नकल–स्त्री० [अ०] १ प्रतिलिपि, प्रतिकृति । २ देखा-देखी, अनुकरण, अनुसरण । ३ स्वांग, अभिनय । ४ हास्य-अभिनय के लिए बनाई आकृति । ५ मजाक । ६ मुंह से की जाने वाली विशेष आवाज । ७ एक बही । —ची–वि० नकल करने वाला । —नवीस–पु० अदालत का एक कर्मचारी । प्रतिलिपिकर्ता । —नवीसी–स्त्री० प्रतिलिपि का कार्य ।

नकलियौ–देखो 'नखलियौ' ।

नकली–वि० १ किसी की नकल कर बनाया हुआ । २ कृत्रिम, बनावटी । ३ जाली, झूठा, खोटा ।

नकल्यौ–देखो 'नखलियौ' ।

नकवाळ–पु० [स० नक्र-बाल] नाक के भीतर के बाल ।

नकवेसर–देखो 'नकबेसर' ।

नकस–पु० [अ० नक्श] १ किस वस्तु पर बेल-बूंटे खोदकर की गई चित्रकारी । २ आकृति । —दार–पु० उक्त प्रकार की चित्रकारी किया हुआ पदार्थ ।

नकसबदिया–स्त्री० सूफियों की एक शाखा, एक सम्प्रदाय विशेष ।

नकसानवीस–पु० [अ० नक्शा-नवीस] नक्शा या खाका बनाने वाला ।

नकसानवीसी–स्त्री० नक्शा बनाने का कार्य ।

नकसीर–पु० [स० नक्र-शिरा] नाक से बहने वाला रक्त ।

नकसौ–देखो 'नक्सौ' ।

नकांम–१ देखो 'निकाम' । २ देखो 'निकम्मौ' ।

नका-देखो 'निका' ।

नकाब–पु० मुह छुपाने के लिए गर्दन तक पहनने की जाली या वस्त्र । —**पोस**–वि० नकाब पहना हुआ ।

नकार–पु० [स०] १ निषेध सूचक शब्द । २ अस्वीकृति । ३ 'न' वर्ण । ४ छद शास्त्र का एक 'नगण' गण । –वि० १ कृपण, कजूस । २ देखो 'नगारौ' । ३ देखो 'निकार' ।

नकारखानौ–देखो 'नगारखानौ' ।

नकारची–देखो 'नगारची' ।

नकारणौ (बौ)–देखो 'नाकारणौ' (बौ) ।

नकारौ–१ देखो 'नकार' । २ देखो 'निकारौ' । ३ देखो 'नगारौ' ।

नकाळ, नकाळौ–१ देखो निकाळ' । २ देखो 'निकाळौ' ।

नकास–१ देखो 'निकास' । २ देखो 'निकाळ' ।

नकासणौ (बौ)–क्रि० [स० निष्कासन्] १ निकलना, बाहर होना । २ प्रस्तान करना, बाहर आना ।

नकासी–स्त्री० [अ० नक्काशी] १ आभूषण आदि पर खोदकर बनाये बेल-बूटे आदि । २ खुदाई । ३ देखो 'निकासी' । —**दार**–वि० जिस पर नक्काशी या खुदाई की गई हो ।

नकासौ- देखो 'निकाळ' ।

नकी–वि० १ निश्चित, निर्धारित । २ सही, ठीक । ३ दृढ, खरा । ४ पूर्ण । ५ चुकता । –क्रि०वि० १ निश्चित ही, नि सदेह । २ अवश्य, जरूर । ३ देखो 'नकू' ।

नकीतळाब, (ताळाब)–पु० आबू पर्वत पर स्थित एक तालाब ।

नकीब–पु० [अ०] १ राजाओ की सवारी के आगे चलने वाला चोबदार । २ दरबार मे बादशाह से भेंट करने वालो का नाम पुकारने वाला कर्मचारी ।

नकीर–देखो 'नकसीर' ।

नकुळ–पु० [स० नकुल] १ पाच पाडवो मे से एक । २ नेवला नामक जीव ।

नकुलाध–पु० [स०] नेत्र का एक रोग ।

नकुळीस–पु० [स० नकुलीश] तान्त्रिको के एक भैरव का नाम ।

नकू–अव्य० [स० नखलु] १ कुछ भी नही, नहीं । २ कुछ, कुछ भी ।

नकेर–देखो 'नकसीर' ।

नकेल–स्त्री० [स० नक्रम्] १ ऊट की नाक मे डाला जाने वाला उपकरण । २ नथ ।

नकेवळ, नकेवळौ–देखो 'निकेवळौ' ।

नकै–अव्य० [स० कर्ण] निकट, पास, समीप ।

नकौ–देखो 'नकू' ।

नक्क–देखो 'नाक' ।

नक्कस–पु० कठ का आभूषण (मेवात) ।

नक्कारची–देखो 'नगारची' ।

नक्काल-वि० [अ०] १ नकल करने वाला । २ बहुरूपिया । ३ भाड ।

नक्काली–स्त्री० १ नकल करने का काम । २ बहुरूपिया या भाड का कार्य । ३ हास्य अभिनय ।

नक्कासी–१ देखो 'निकासी' । २ देखो 'नक्कासी' ।

नक्कीब–देखो 'नकीब' ।

नक्कू–पु० नोक, शिरा ।

नक्कौ–पु० [देश०] स्वर्णकारो का एक औजार विशेष ।

नक्खत्त–देखो 'नक्षत्र' ।

नक्र, नक्रण–पु० [स०] १ मगरमच्छ, घडियाल । २ नाक, नासिका । ३ चौखट के ऊपर का भाग । –वि० काला, श्याम। —**केतन**–पु० मगर की ध्वजा वाला, कामदेव ।

नक्सौ–पु० [अ० नक्श] १ रेखा चित्र । २ रेखाओ द्वारा बनाई गई कोई आकृति । ३ किसी भवन, जमीन या क्षेत्र आदि का नाप लेकर बनाया गया मानचित्र । ४ ढाचा । ५ डौल ।

नक्षत्र–पु०[स०] १ आकाश मे स्थित तारकपुज या गुच्छ जिनके मध्य क्रातिवृत्त या पृथ्वी का भ्रमणपथ है । २ क्राति वृत्त के प्रत्येक १३ अश २० कला के विभाग का नाम । ३ पचाग का तृतीय अग । ४ तारा । ५ ग्रह । ६ मोती । ७ चन्द्रमा । ८ विष्णु । –**गण**–पु० फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट नक्षत्रो का पृथक-पृथक समूह । —**चक्र**–पु० क्राति वृत्त के आस-पास स्थित नक्षत्र समूह । —**दरस**–पु०ज्योतिषी । —**दान**–पु० नक्षत्रो की स्थिति के अनुसार दान का विधान । —**धारी**–वि० भाग्यशाली । —**नाथ**–पु० चन्द्रमा, राकेश । —**प, पति, पती**–पु० चन्द्रमा । —**पथ**–पु० आकाश । —**पुरुस**–पु० भिन्न-भिन्न नक्षत्रो के भिन्न-भिन्न अगो वाला कल्पित पुरुष । —**भोग**–पु० प्रत्येक नक्षत्र के परिभ्रमण का समय । —**माळा**–स्त्री० नक्षत्रो की पक्ति । सत्ताईस मोतियो का हार । —**याजक**–पु० नक्षत्रो के दोषो की शाति कराने वाला ब्राह्मण । —**योग**–पु० नक्षत्रो के साथ ग्रह का योग । —**योनि**–स्त्री० फलित ज्योतिष मे विशिष्ट नक्षत्रो के अनुसार प्राणियो की कल्पित योनि विशेष । —**राज**–पु० चन्द्रमा । —**लोक**–पु० नक्षत्र मडल, आकाश

—वीथि-स्त्री० शुक्रग्रह द्वारा क्रमश तीन-तीन नक्षत्रो को पार किये जाने वाले विभाग या मार्ग का नाम। वीथिया नौ है। —व्यूह-पु० विशिष्ट प्राणियो और पदार्थों के समूह का अधिपति नक्षत्र। —व्रत-पु० किसी विशिष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जाने वाला व्रत। —सधि-स्त्री० पूर्व नक्षत्र मास मे से उत्तर नक्षत्र मास मे चद्रादि ग्रहो का सक्रमण। —साधन-पु० नक्षत्र विशेष व ग्रह विशेष का समय जानने की विधि।—सूचक, सूचो-पु० साधारण ज्ञान वाला ज्योतिषी। —सूळ-पु० यात्रा के लिये निषिद्ध माना जाने वाला योग।

नक्षत्रावळी-स्त्री० [स०] १ नक्षत्रो की पक्ति, श्रेणी। २ सताईश मोतियो की माला।

नक्षत्री-पु० [स० नक्षत्रिन्] १ विष्णु। २ चन्द्रमा। -वि० भाग्यशाली।

नक्षत्रेस, नक्षत्रेस्वर-पु० [स० नक्षत्रेश] १ चन्द्रमा, चाद। २ कर्पूर।

नक्सानवीस-देखो नकसानवीस'।

नक्सानवीसी-देखो 'नकसानवीसी'।

नख-पु० [स०] १ मनुष्य के हाथ-पावो की अगुलियो के सिरो पर तथा कुछ प्राणियो के पजो पर बने नाखून। नाखून। २ सीप या घोघे आदि के मुखावरण का गन्ध द्रव्य। ३ कुछ जातियो या वर्गों के वश। ४ लाल रग या वर्ण। ५ नाखून का घाव, खरोच। ६ बीस की सख्या॰। ७ देखो 'नक्षत्र'। —आवध='नखायुध'। —क्षत-पु० नाखून की खरोच। नख चिह्न। —घात-पु० नाखून काटने का औजार। नखाघात। —छीकणी-स्त्री० नखछिकनी।

नखचख-देखो नखसिख'।

नखचूटी-स्त्री० लोहे की बनी चिमटी (मेवात)।

नखच्छेद्य-स्त्री० [स०] ७२ कलाओ मे से एक।

नखत-देखो 'नक्षत्र'। —चकर='नक्षत्रचक्र'। —जोग='नक्षत्रयोग'। —जोणी='नक्षत्रयोनि'। —धारी='नक्षत्रधारी'। —दान='नक्षत्रदान'। —नाथ='नक्षत्रनाथ'। —वीथी='नक्षत्रवीथी'। —माळ, माळा='नक्षत्रमाळा'। —व्यूह='नक्षत्रव्यूह'। —सूळ='नक्षत्रसूळ'।

नखत-नामी-वि० [स० नक्षत्र-नामिन्] १ विशिष्ट नक्षत्र मे जन्म लेने वाला। २ भाग्यशाली।

नखतर-देखो 'नक्षत्र'। —गण='नक्षत्रगण'। —धारी='नक्षत्रधारी'। —पुरस='नक्षत्रपुरस'। —राज, राय='नक्षत्रराज'।

नखतवत-वि० [स० नक्षत्र-वत्] भाग्यशाली।

नखतसमाज-पु० [स० नक्षत्र-समाज] चन्द्रमा।

नखतावळी-देखो 'नक्षत्रावळी'।

नखतैत, नखतैो-वि० [स० नक्षत्र-एत] सुनक्षत्र मे जन्मा, भाग्यशाली।

नखत्री-देखो 'नक्षत्री'।

नखत्र-देखो 'नक्षत्र'। —गण='नक्षत्रगण'। —चक्र='नक्षत्रचक्र'। -प='नक्षत्रपति'। —माळ, माळा='नक्षत्रमाळा'। —साधन='नक्षत्रसाधन'। —सूचक='नक्षत्रसूचक'।

नखत्रमरण-स्त्री० [स० नक्षत्रमणि] सूर्य।

नखत्रावळी-देखो 'नक्षत्रावळी'।

नखत्री-देखो 'नक्षत्री'।

नखत्रेस-देखो 'नक्षत्रेस'।

नखनिवायो, नखन्यायो-वि० [स० नख निर्वात] मामूली उष्ण, गुनगुना।

नखबिंदु-पु० [स०] नख पर बनाया जाने वाला चिह्न।

नखर-पु० [स०] १ नख, नाखून। २ पजा।

नखरादार (बाज)-वि० नखरे वाला।

नखराळ (ळी)-वि० (स्त्री० नखराळी) १ नखरे करने वाला, नखरेदार। २ छैल-छबीला, शौकीन। ३ बदचलन। ४ नाखून वाला। -पु० सिह, चीता।

नखरेखा-स्त्री० [स०] नाखून की खरोच। नखक्षत।

नखरेबाज-वि० [फा०] नखरे वाला, नखराला।

नखरेबाजी-स्त्री० [फा०] नखरा करने की क्रिया या भाव।

नखरो-पु० [फा० नखर] १ बनावटी हाव-भाव व क्रियायें। २ चचलता, चुलबुलापन। ३ ऊपरी मन से किया गया इन्कार। -वि० १ बुरा, अशुभ। २ खोटा।

नखलियो, नखल्यो-पु० १ स्त्रियो के पाव की अगुलियो का आभूषण विशेष। २ बढई का एक औजार विशेष। ३ सितार आदि बजाने के लिए अगुलियो मे पहनने का उपकरण विशेष। ४ देखो 'नख'।

नखविस-पु० [स० नखविष] १ जिसके नखो मे विष हो। २ नख की खरोंच से उत्पन्न होने वाला विष।

नखसिख-पु० [स० नखशिख] १ पाव के नखो से चोटी तक के अग। २ पैर से चोटी तक पहनने के वस्त्राभूषण। -वि० सब अगो का। -क्रि०वि० सब अगो से।

नखसी-देखो 'नकासी'।

नखहरणी-स्त्री० [स०] नाखून काटने का औजार।

नखाघात-पु० [स०] नख का क्षत, खरोच, घाव।

नखाजुध-देखो 'नखायुध'।

नखानुराग-स्त्री० [स०] मेहदी, महावर।

नखायुध-पु० [स०] १ जिसके आयुध नख हो, सिंह आदि। २ नख का शस्त्र। ३ मुर्गा।

नखि-देखो 'नखी'।

नखितंत–देखो 'नखतंत' ।
नखित्र–देखो 'नक्षत्र' । —माळ, माळा='नक्षत्रमाळा' ।
नखिद–पु० [स० निषिद्ध] १ वर्जित कार्य, रोक । २ बुरा कार्य । –वि० १ वर्जित, रोक लगा हुआ । २ बुरा ।
नखी–वि० [स० नखिन्] नखोवाला, नाखून युक्त । –पु० १ सिंह, चीता । २ नख नामक गध द्रव्य ।
नखीयुध–देखो 'नखायुध' ।
नखीर–देखो 'नकसीर' ।
नखेद,नखेध–वि० [स० न खेद] १ जिसे खेद न हो, दु ख रहित, विरक्त । प्रसन्न । २ बेशर्म, शरारती । ३ कुल्टा । ४ मूर्ख । –पु० [स० निषेध] १ वर्जन, मनाई, रोक । २ अस्वीकृति, इन्कार । ३ निषेधवाची नियम । ४ नियम का अपवाद । –स्त्री० ५ मृतक के पीछे सवेदना प्रगट करने की क्रिया या भाव ।
नखेर–देखो 'नकसीर' ।
नखै, नखैं–देखो नकै ।
नख्ख–देखो 'नख' ।
नख्यत–देखो 'नक्षत्र' ।
नग–पु० [स०] १ पर्वत, पहाड । २ चरण, पैर । ३ वृक्ष, पेड । ४ पुत्र (व्यग) । ५ सतान, औलाद । ६ मोती । ७ रत्न, जवाहर । ८ नगीना । ९ इकाई, सख्या । १० अदद । ११ पौधा । १२ साप । १३ सूर्य । १४ नागौर शहर का नाम । १५ सात की सख्या*। –वि० अचल, स्थिर । —ज–पु० हाथीगज । —जा–स्त्री० पार्वती । नदी । —धर–पु० श्रीकृष्ण, हनुमान, गरुड । —नदनी–स्त्री० पार्वती । गगा । नदी । —नायक–पु०–पर्वतो का नेता हिमालय । कैलाश पर्वत । —पति–पु० पर्वतराज हिमालय, चन्द्रमा । शिव, सुमेरू । —भिद–पु० पवत भेदने वाला इन्द्र ।
नगटाई– देखो 'नकटाई' ।
नगटौ– देखो 'नकटौ' ।
नगण–पु० [सं०] तीन लघु मात्रा का एक गण ।
नगणी–स्त्री० एक छद विशेष ।
नगदती–स्त्री० [स०] विभीषण की स्त्री का नाम ।
नगद–पु० [अ० नकद] १ सिक्के व मुद्रा के रूप मे धन । मुद्रा । २ सौदा लेते समय किया जाने वाला भुगतान, रोकड । –वि० १ तैयार, भुगतान के लिये प्रस्तुत । २ वर्तमान, मौजूद । ३ खास ।
नगन– १ देखो 'लग्न' । २ देखो 'नागौ' । ३ देखो 'नगण' ।
नगमणिप्रभा–पु० [स० नगमणिप्रभा] सुमेरू पर्वत ।
नगरप्रकर–पु० [स०] कार्त्तिकेय ।
नगर–पु० [म०] शहर, कस्बा । —कीरतन–पु० नगर मे फिर-फिर कर किया जाने वाला ईश्वर का कीर्त्तन । —तीरथ–पु० गुजरात का एक तीर्थ । —नाइका, नायका, नायिका, नारी–स्त्री० नगरवधू वेश्या, रडी, गणिका । —पाळ–पु० शहर का रक्षक, कोतवाल । —मारग–पु० शहर का राजपथ । —सेठ–पु० नगर का सबसे बडा सेठ । राजाओ द्वारा दी जाने वाली उपाधि, ऐसी उपाधि प्राप्त व्यक्ति ।
नगराध्यक्ष–पु० [स० नगर-अध्यक्ष] किसी शहर का प्रभारी अधिकारी, नगर का स्वामी ।
नगरि, नगरी (रू, रौ)–देखो 'नगर' ।
नगवार–पु० १ मकान बनाने के लिये विशेष अवसर पर रखा जाने वाला आधार का पत्थर ।
नगापति–देखो 'नगपति' ।
नगाडौ–देखो 'नगारौ' ।
नगारखानौ–पु० [फा० नक्कार-खाना] १ नगाडे रखने का स्थान । २ नगाडे बजाने का स्थान ।
नगारची–पु० [फा० नक्कारची] १ राजाओ व सामन्तो के द्वार पर नगाडे बजाने वाला व्यक्ति । २ उक्त कार्य करने वाला वर्ग, जाति ।
नगारबद (ध), नगाराबद (बध) नगारियौ–पु० १ राजा या सामत जिनके द्वार पर नगाडे बजते हो । २ उक्त प्रकार का अधिकार प्राप्त वीर ।
नगारी–स्त्री० १ छोटा नगाडा । २ देखो 'नगारची' ।
नगारौ–पु० [फा० नक्कार] वायें तबले के आकार का एक बडा वाद्य ।
नगीन–पु० १ प्रवाल, मूगा । २ देखो 'नग' । –वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।
नगीनासाज–पु० [फा० नगीना-साज] नगीना बनाने वाला या जडने वाला कारीगर ।
नगीनौ–पु० [फा० नगीन] १ रत्न, जवाहरात । २ राजस्थान का शहर, नागौर ।
नगेंद्र–पु० [स०] पर्वतराज हिमालय ।
नगेम–वि० [स० निस्-गम] निष्पाप, निष्कलक ।
नगेस–पु० [स० नग-ईश] पर्वतो का स्वामी, हिमालय ।
नगोडौ (डो)–वि० [स० नक्र] (स्त्री० नगोडी, नगोडी) १ निर्लज्ज, बेशर्म । २ दुराग्रही, हठी । ३ निकम्मा, बेकार । ४ कम्बख्त, नीच । ४ हतभाग्य ।
नगोदर (र, रू)–देखो 'निगोदर' ।
नगोरौ–देखो 'नगारौ' ।
नग्गर–देखो 'नगर' ।
नग्गौ, नग्न–देखो 'नागौ' ।
नग्र, नग्री–देखो 'नगर' । —सेठ='नगरसेठ' ।
नग्रोध–देखो 'न्यग्रोध' ।
नघर–पु० [देश०] बैल को नाथ ।

नघात–देखो 'निघात'।

नड–पु० [स० नल] १ नदी, नाला। २ फूक कर बजाने का एक वाद्य। ३ बन्दूक की नली पर बनी रेखायें व बिंदिया। ४ देखो 'नौडिया'। ५ देखो 'नड'। ६ देखो 'नाडी'। ७ देखो 'नळ'। –वि० बधन मे आने वाला, कायर।

नडण–पु० [स० नड] योद्धा, वीर। –वि० बधन मे डालने वाला।

नडणौ (बौ)–क्रि० [स० नड] १ बाधना। २ बदी बनाना। ३ रुकावट डालना, रोकना। ४ कष्ट पाना, दुखी होना।

नडी–देखो 'नाडी'।

नचत–देखो 'निश्चित'।

नचणौ (बौ)–देखो 'नाचणौ' (बौ)।

नचनची–स्त्री० [स० नृत्] नाचने की प्रबल इच्छा। उत्कण्ठा।

नचाणौ (बौ), नचावणौ (बौ)–क्रि० [स० नृत्] १ नाचने का काम कराना, नचाना। २ नृत्य कराना नृत्य का आयोजन करना। ३ नाचने के लिए प्रेरित करना, आग्रह करना, सहयोग देना। ४ गोल-गोल फिराना। ५ इधर उधर घुमाना, फिराना। ६ परेशान या तग करना, हैरान करना।

नचित, नचितौ–देखो 'निश्चित'। (स्त्री० नचिती)

नचिकेता–पु० [स० नचिकेतस] १ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। २ अग्नि।

नचींत, नाचींतड़ो, नचींतौ–देखो 'निश्चित'।

नचीताई–देखो 'निश्चितता'।

नचीतौ–देखो 'निश्चित'। (स्त्री० नचीती)

नचीयण–वि० [स० नृत्] नाचने वाला।

नच्चणौ (बौ)–देखो 'नाचणौ' (बौ)।

नच्चन–पु० [सं० नर्तनम्] नाच, नृत्य।

नच्यत–देखो 'निश्चित'।

नछत्र–देखो 'नक्षत्र'।

नछत्री–१ देखो 'नक्षत्री'। २ देखो 'निक्षत्री'।

नजदीक–वि० [फा०] पास, निकट।

नजदीकी–स्त्री० [फा०] निकटता, सामीप्य। –वि० निकटका, पास का।

नजर–स्त्री० [अ०] १ दृष्टि, निगाह। २ ध्यान। ३ चितवन। ४ आख, नेत्र। ५ कुदृष्टि, दृष्टि-दोष। ६ कृपा दृष्टि, शुभ-दृष्टि। ७ ध्यान, खयाल। ८ देखरेख, निगरानी। ९ पहचान, परख। [अ० नज्र] १० उपहार, भेंट। ११ राजा के दरबार में जाने पर राजा को भेंट स्वरूप दिया जाने वाला नकद रुपया आदि। —कैद–स्त्री० कैदी को निश्चित सीमा में रहने का आदेश। —बद–वि० कड़ी निगरानी मे रखा हुआ। –पु० इंद्रजाल का खेल। —बदी = 'नजर-कैद' –स्त्री० इन्द्रजाल का खेल।

नजरदौलत–पु० [अ०] राजा या बादशाह की सवारी के आगे नकीब द्वारा बोला जाने वाला शब्द।

नजरबाग–पु० [अ०] बगले के आहते मे बना छोटा बगीचा।

नजरसानी–स्त्री० [अ०] पुनर्विचार, पुनरावलोकन।

नजरांण, नजराणौ–पु० १ भेंट, उपहार। २ भेंट मे दी जाने वाली वस्तु।

नजरि, नजरिया–देखो 'नजर'।

नजरीजणौ (बौ)–क्रि० दृष्टि-दोष से प्रभावित होना, कुदृष्टि से ग्रसित होना।

नजळौ–पु० [अ० नजलः] १ उष्णता के कारण शिर मे होने वाला एक रोग। २ जुकाम।

नजाकत–स्त्री० [फा०] १ कोमलता, सुकुमारता। २ सूक्ष्मता, बारीकी। ३ क्षीणता। ४ नखरा, लटका।

नजामत–स्त्री० [अ०] नाजिम का पद।

नजारत–स्त्री० [अ०] नाजिर का पद, नाजिर का कार्यालय।

नजारेबाजी–स्त्री० [अ० नज्जार-फा० बाजी] स्त्री-पुरुष मे परस्पर चार-आखें होने की क्रिया, ताक-झाक।

नजारौ–पु० [अ० नजार] १ दृश्य। २ दृष्टि, चितवन। ३ वातावरण। ४ दर्शन, दीदार। ५ सैर। ६ तमाशा। ७ स्त्री-पुरुष मे होने वाली परस्पर चार-आंखे।

नजिक, नजीक (ग)–देखो 'नजदीक'।

नजीकी–देखो 'नजदीकी'।

नजीर–स्त्री० [अ०] १ उदाहरण, मिसाल, दृष्टान्त। २ किसी पूर्व निश्चित बात का उल्लेख।

नज्र–देखो 'नजर'।

नट–पु० [स०] (स्त्री० नटणी, नटी) १ नर्तक। २ अभिनेता। ३ शारीरिक कलाबाजी, बास-रस्सी आदि पर चलकर तमाशा दिखाने वाला एक वर्ग व इस वर्ग का व्यक्ति। ४ अशोक वृक्ष। ५ एक प्रकार का नरकुल। ६ महादेव, शिव। ७ श्रीकृष्ण। ८ नाच-नृत्य। ९ एक राग विशेष।

नट-खट–वि० १ चचल। २ उपद्रवी, उद्दण्ड। ३ चालाक, चालबाज।

नट-खटी–स्त्री० १ बदमाशी, शरारत, उद्दण्डता। २ देखो 'नटखट'।

नटणौ (बौ)–क्रि० [स० नष्ट] १ मना करना, इन्कार करना। २ मुकरना। ३ अस्वीकार करना। ४ दुख पाना, दुःखी होना।

नटन–पु० [स० नर्तन] नृत्य, नाच

नटनागर–पु० [स०] श्रीकृष्ण।

नटनारायण–पु० [स०] १ श्रीकृष्ण। २ एक राग विशेष।

नट-पट्टी, नटबट, नटबट्ट, नटबट्टी—देखो 'नटवट'।

नटबाजी—स्त्री० १ 'नट' द्वारा दिखाये जाने वाले खेल, कलाबाजी। २ जादू, इन्द्रजाल।

नट-भूखण, नट-मडण (न)—पुं० हरताल।

नट-मल्लार—स्त्री० एक राग विशेष।

नटराज—पु० [स०] श्रीकृष्ण।

नटवट, (वट्ट)—स्त्री [स० नट-वर्तनम्] १ नट क्रिया। [स० नट-वटक्] २ नट का गोला या गेंद। —वि० [स०नट+वत् ३ नट के समान।

नटवर—पु० [स०] १ नटो मे प्रधान या मुखिया। २ श्रीकृष्ण। ३ श्रीविष्णु। ४ सूत्रधार। —नागर—पु० श्रीकृष्ण।

नटवी—देखो 'नट'।

नटसाळ, नटसाळा—देखो 'नाटमाळा'।

नटारभ—देखो 'नाटारभ'।

नटेस्वर—पु० [स० नटेश्वर] महादेव, शिव।

नट्ट—देखो 'नट'।

नट्टारभ—देखो 'नाटारभ'।

नट्ठणौ(बो), नठणौ(बो), नठुणौ (बो)—१ देखो 'नटणौ' (बो) २ देखो 'नस्ठणौ' (बो)। ३ देखो 'न्हाठणौ' (बो)।

नड—पु० [देश०] १ कवध, धड। २ कुबेर का पुत्र नल-कूबर। ३ देखो 'नाडौ'। ४ देखो 'नट'।

नडणौ (बो)—देखो 'नडणौ' (बो)।

नडर—देखो 'निडर'।

नडि—देखो 'नेडौ'।

नड्डो—देखो 'नाडौ'।

नद्धणौ (बो)—क्रि० [स० नद्ध] जडाई करना, जडना। पच्चीकारी करना।

नणद, नणदर, नणदल, नणदलडी, नणदली, नणदिया, नणदी —स्त्री० [स० ननान्दृ] पति की वहिन ननद।

नणदूतरी, नणदूत्री—स्त्री० [स० ननान्द-पुत्री] पति की बहिन की पुत्री, ननद की पुत्री।

नणदूतरो, नणदूतो, नणदूत्रो—पु० [स० ननान्द-पुत्र] पति की वहिन का पुत्र।

नणदूली—देखो 'नणद'।

नणदोई (ई)—पु० [स० ननान्दृ-पति] ननद का पति। पति का बहनोई।

नणदोतरी, नणदोती, नणदोत्री—देखो 'नणदूतरी'।

नणदोतो, नणदोत्रो—देखो 'नणदूतरो'।

नत—वि० [स०] १ झुका हुआ। २ नम्र, विनम्र, शिष्ट। ३ अभिवादन या प्रणाम में झुका हुआ। ४ उदास। ५ टेढा ६ देखो 'नित'।

नत-प्रति—देखो 'नितप्रति'।

नतास—पु० [स० नताश] ग्रहो की स्थिति जानने मे काम आने वाला एक वृत्त।

नता—वि० [स० अनृत] असत्य, झूठा। —स्त्री० झूठ, मिथ्या बात।

नति—पु० [स०नति] १ नम्रता, विनय। २ झुकाव। ३ नमस्कार, प्रणाम। ४ टेढ़ापन, घुमाव।

नतीजौ—पु० [फा० नतीजा] परिणाम, निष्कर्ष, फल।

नतीठ (ठौ)—देखो 'नत्रीठ'।

नत्त—१ देखो 'नत'। २ देखो 'नित'।

नत्ताल—देखो 'निगताळ'।

नत्तिकांत—पु० [स० नत्तिक्रांत] ४९ क्षेत्रपालो मे से एक।

नत्थ—१ देखो 'नथ'। २ देखो 'नाथ'।

नत्थणौ—देखो 'नथणौ'।

नत्थणौ (बो)—देखो 'नथणौ' (बो)।

नत्थि, नत्थी, नत्थीय—स्त्री० [स० नाथ] १ साथ मे जोडने, बाधने या सलग्न करने की क्रिया या भाव। २ जोडी या सलग्न की हुई वस्तु। —वि० १ साथ जुड़ा हुआ, सलग्न। २ देखो 'नथी'।

नत्रीठ, नत्रीठि, नत्रीठौ—पु० [स० न+तृष्टि] १ योद्धा, वीर। २ प्रहारो की झडी, बौछार। ३ घोड़ा। —वि० १ नि शक, निर्भय। २ वेगवान, तीव्र। ३ भयकर, प्रबल।

नथ, नथडी, नथणी—स्त्री० १ नाक मे पहनने की बाली, आभूषण। २ तलवार की मूठ का छल्ला। ३ बेधने की क्रिया या भाव।

नथणौ—पु० [स० नस्त] नाक का अग्रभाग। नथूना।

नथणौ (बो)—क्रि० [स० नस्त्] १ नत्थी किया जाना। २ नथ आदि नाक मे डाला जाना।

नथ-बिजळी—स्त्री० नाक का आभूषण विशेष।

नथली—देखो 'नथ'।

नथि—१ देखो 'नथी'। २ देखो 'नत्थी'।

नथियळ, नथियाळ—पु० १ काली नाग। २ शेषनाग।

नथी, नथीय—क्रि० [स० नास्ति] १ नही, ना। २ देखो 'नत्थी'।

नथुणी—देखो 'नथ'।

नद—पु० [स० नद्ध, नंद] १ स्त्रियो का एक आभूषण विशेष। २ बडी नदी। ३ नाला। ४ जल प्रवाह। ५ समुद्र। ६ देखो 'नाद'।

नदारत, नदारद–वि० [फा०] लुप्त, गायब।

नदि–देखो 'नदी'।

नदिपति–पु० सागर, समुद्र।

नदी–स्त्री० [सं०] १ निरन्तर बहता रहने वाला प्राकृतिक जल प्रवाह, नदी सरिता। २ तेरह की संख्या ※। —ईसवर–पु० समुद्र सागर। —कूळ–पु० नदी, तट। दो की संख्या ※। —नाथ–पु० समुद्र, सागर। —निवास, पति–पु० समुद्र। —मुख–पु० नदी का मुहाना। —राज–पु० समुद्र।

नदीन–पु० [सं० नदीन] सागर, समुद्र।

नदृ–१ देखो 'नद'। २ देखो 'नाद'।

नदा–देखो 'नाद'।

नद्दी–१ देखो 'नदी' २ देखो 'नाद'।

नद्ध–वि० [सं०] १ बंधा हुआ, [illegible]। २ नधा हुआ। ३ अटका हुआ। ४ जुटा हुआ। ५ गुंथा हुआ।

नध–पु० [सं० जलनिधि] १ समुद्र सागर। २ देखो 'निध'। ३ देखो 'निधि'। —पुर–पु० नन्दन नगर।

नधान–देखो 'निधान'।

नधि (धी)–देखो 'निधि'।

नधुस–देखो '[illegible]'।

ननग–पु० [सं० नग] १ वृक्ष, पेड़। २ देखो 'निनग'।

नन–क्रि० वि० [सं०] कठिनता से, मुश्किल से। –अव्य० नहीं।

ननसार, ननसाळ–स्त्री० नाना का घर, ननिहाल।

ननियो–१ देखो 'नन्नो'। २ देखो 'नैनो'।

ननिहाल ननीहाल–स्त्री० नाना का घर।

ननु, नन्नो, नन्नौ–पु० [सं० न] १ 'न' अक्षर या वर्ण। २ अस्वीकृति, इन्कार। ३ मनाही, रोक। ४ इन्कार सूचक शब्द। –अव्य० नहीं, ना।

नपणो (बो)–क्रि० [सं० मापनम्] १ लम्बाई-चौड़ाई के अनुसार, नापा जाना। नाप लिया जाना। २ किसी आधार से परिमाण निश्चित किया जाना।

नपाई–स्त्री० [सं० मापनम्] नापने का कार्य।

नपाप–वि० [सं० निष्पाप] पाप रहित, निष्कलंक।

नपित–देखो 'नापित'।

नपुतो–देखो 'निपूतो'। (स्त्री० नपुती)

नपुंसक–वि० [सं०] १ पुरुषत्व या वीर्यहीन, नामर्द, हिजड़ा। २ जिसमें पराक्रम या संभोग शक्ति का अभाव हो। ३ कायर, [illegible]।

नपूतो–देखो 'निपूतो'। (स्त्री० नपूती)

नफर–पु० [फा०] १ व्यक्ति, प्राणी। २ दास, सेवक, नौकर। ३ [illegible]। ४ मजदूर श्रमिक।

नफरत–स्त्री० [अ०] १ [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible]।

नफरी–स्त्री० १ मजदूर का एक दिन का श्रम। २ एक दिन की मजदूरी। ३ एक हाजरी। ४ सूची। ५ सेना का एक दल।

नफस–पु० [अ० नफ्स, नफस] १ विषय वासना। २ लिंग, शिश्न। ३ सत्यता। ४ अस्तित्व। ५ प्राण वायु। ६ रूह। ७ श्वास, सांस। ८ दम, पल, क्षण।

नफीरी, नफेर नफेरि, नफेरिय, नफेरी–स्त्री० [अ० नफीरी] शहनाई नामक वाद्य।

नफो, नफ्फो, नफ्फो–पु० [अ० नफा] १ फायदा, लाभ। २ व्यापार का लाभांश। ३ बचत।

नबध–देखो 'निबध'।

नबधणो (बो)–१ देखो 'निबधणो' (बो)। २ देखो 'निमधणो' (बो)।

नबरंगो–देखो 'नवरंगो'।

नबळ–देखो 'निरबळ'।

नबाब–पु० [अ० नव्वाब] बादशाह का नाइब, किसी रियासत का शासक। —जादो–पु० नबाब का पुत्र।

नबी–पु० [अ०] १ ईश्वर का दूत। २ पैगंबर। ३ ईश्वर, भगवान। ४ मुखिया, पंच। ५ मुसलमान। ६ ईश्वर का अंशावतार।

नबेड़णो (बो)–देखो 'निबेड़णो' (बो)।

नबेड़ो–देखो 'निबेड़ो'।

नब्ज–स्त्री० [अ०] १ नाड़ी, धमनी। २ नियंत्रक तत्त्व। ३ जानकारी का सूत्र।

नब्ब–देखो 'नब'।

नब्बाब–देखो नबाब'।

नब्बिय, नब्बी–देखो 'नबी'।

नब्बे–देखो 'नेऊ'।

नब्यासी–देखो 'निवियासी'।

नभ–पु० [सं० नभस्] १ आकाश, आसमान। २ अन्तरिक्ष। ३ वायु मण्डल। ४ मेघ, बादल। ५ कोहरा, वाष्प। ६ जल। ७ वर्षा ऋतु। ८ जल वृष्टि। ९ वय, उम्र। १० गंध। ११ नासिका। १२ श्रावण मास। १३ जन्म कुण्डली में लग्न से दशवां स्थान। १४ सूर्यवंशी राजा निषध के पुत्र का नाम। —गामी–पु० सूर्य। चन्द्रमा। पक्षी। देवता, सुर। तारा, आकाशचारी। —चक–पु० आकाश, गगन। —चर, चार–पु० पक्षी, खग। पवन, वायु। बादल, मेघ। देव, गंधर्व, ग्रहादि आकाशचारी। —धज, धुज–पु० बादल, मेघ। —नीरप–पु० पपीहा, चातक। —पंत, पथ–पु० आकाश मार्ग। —मंडळ–पु० आकाश-मण्डल। —मण, मणि, मणी, मिण–पु० सूर्य।

रवि। —राट-पु० बादल; मेघ। —वांणी-स्त्री० आकाश वाणी। देववाणी। —वैण-पु० आकाशवाणी। —सगम-पु० पक्षी। —सरणी-स्त्री० आकाश गगा। —सास-पु० पवन, हवा।

नभग-पु० [स०] पक्षी, खग। —नाथ-पु० गरुड।

नभगेस-पु० [स० नभगेश] गरुड।

नभवटी-पु० [स० नभवर्तिन] पखेरु, पक्षी, खग।

नभवणौ (बौ)-क्रि० निभाना।

नभस्य-पु० [स०] भाद्रपद मास।

नभोग, नभोगति-पु० [स०] १ जन्म कुण्डली मे लग्न से दशवा स्थान। २ आकाशचारी, देव, पक्षी आदि।

नभोद्रुह (द्वीप)-पु० [स०] मेघ, बादल।

नभोनदी-स्त्री० [स०] आकाश गगा।

नमत-देखो 'निमित्त'।

नमध-देखो 'निबध'।

नमधणौ (बौ)-देखो 'निबधणौ' (बौ)।

नम-वि० [फा०] १ भीगा हुआ, आर्द्र, तर, गीला। -पु० [स० नमस्] १ नमस्कार, प्रणाम। २ झुकना क्रिया। ३ देखो 'नवमी'।

नमक-पु० [फा०] रोटी, सब्जी आदि भोज्य पदार्थों मे डाला जाने वाला क्षार, लवण। —सार-पु० एक प्रकार का कर। —हराम-वि० कृतघ्न, नीच। किसी का अन्न खाकर बुरा करने वाला। —हरामी-स्त्री० कृतघ्नता। नीचता। —हलाल-वि० कृतज्ञ। स्वामिभक्त। उपकार मानने वाला। —हलाली-स्त्री० स्वामिभक्ति। उपकार। ऋण चुकाने का भाव।

नमकीन-वि० [फा०] १ नमक के योग मे बना। २ चटपटा, चरपरा।

नमख-१ देखो 'नमक'। २ देखो 'निमिस'।

नमठणौ (बौ)-देखो 'निपटणौ' (बौ)।

नमठाणौ (बौ), नमठावणौ (बौ)-देखो 'निपटाणौ' (बौ)।

नमण, नमणि, नमणी-स्त्री० [स० नमन] १ नमस्कार, प्रणाम। २ झुकने का भाव। ३ नम्रता, विनीतता। ४ नीचा स्थान, झुकाव। ढाल।

नमणौ-वि० [स० नमन] (स्त्री० नमणी) १ विनयशील, विनीत, नम्र। २ जिसमे झुकने का गुण हो। ३ शिष्ट।

नमणौ (बौ)-क्रि० [स० नमनम्] १ झुकना। २ नम्र होना, विनीत होना। ३ प्रणाम करना। ४ शिष्टता दिखाना।

नमत-पु० [स० नमत] १ नीचा स्थान, ढालु जगह। २ अभिनेता, नट। ३ धूम। ४ स्वामी, प्रभु। ५ मेघ बादल। -वि० १ नम्र, विनीत। २ झुकने वाला। ३ टेढा, तिरछा। ४ देखो 'निमित्त'।

नमदौ-पु० [फा० नमदा] जमाया हुआ ऊनी वस्त्र।

नमन-देखो 'नमण'।

नमसकार-देखो 'नमस्कार'।

नमसक्रत-पु० [स० नमस्कृति] नमस्कार, प्रणाम।

नमस्कार-पु० [स०] नमस्कार, अभिवादन।

नमस्ते-पु० [स०] अभिवादन के लिए प्रयुक्त शब्द।

नमाम-पु० [स० नम्] १ नमस्कार। २ देखो 'नमामी'।

नमामी-पु० [स० नमनम्] १ नमस्कार। २ अभिवादन। -वि० बुरा खराब।

नमाज-स्त्री० [फा०] मुसलमानो की प्रार्थना। —गाह-स्त्री० नमाज पढने की जगह।

नमाजी-पु० [फा०] १ नमाज पढने वाला मुसलमान। २ नमाज पढते समय बिछाने का वस्त्र।

नमाणौ (बौ), नमावणौ (बौ)-क्रि० १ प्रणाम कराना, अभिवादन कराना। २ झुकाना, नीचा करना। ३ मोडना, घुमाना। ४ बाध्य करना, मजबूर करना।

नमि-पु० [स०] १ चालु अवसर्पिणी के इक्कीसवें तीर्थंकर का नाम। २ देखो 'नमी'। ३ देखो 'नवमी'।

नमियौ-पु० [स० नवम्] १ मृतक का नौवा दिन। २ इस दिन का सस्कार।

नमिस्कार-देखो 'नमस्कार'।

नमी-स्त्री० [फा०] १ गीलापन, आर्द्रता। २ देखो 'नवमी'।

नमीयौ-देखो 'नमियौ'।

नमुकार-१ देखो 'नवकार'। २ देखो 'नमस्कार'।

नमुचि-पु० [स०] १ कामदेव, अनग। २ एक ऋषि का नाम। ३ इन्द्र द्वारा वधित एक दैत्य। ४ शुभ-निशुभ का भाई एक अन्य दैत्य। —सूदन-पु० इन्द्र।

नमूनौ-पु० [फ़ा० नमूना] १ किसी पदार्थ का थोडासा अश। २ निर्माणाधीन वस्तु का तैयार किया गया ढौल (मॉडल)। ३ किस्म, प्रकार। ४ मिसाल, आदर्श। ५ बानगी। ६ ढग, ढब।

नमेडणौ (बौ)-देखो 'निवेडणौ' (बौ)।

नमोकार-१ देखो 'नवकार'। २ देखो 'नमस्कार'।

नमो-अव्य० [स० नम] अभिवादन सूचक शब्द। नमस्ते। -वि० आठ के बाद वाला, नवमा। -पु० नौ का अक, ९।

नम्म-१ देखो 'नम'। २ देखो 'नवमी'।

नम्मणौ (बौ)-देखो 'नमणौ' (बौ)।

नम्माज-देखो 'नमाज'।

नम्र-वि० [स०] १ विनीत, नम्रता करने वाला। २ झुका हुआ नत। ३ शिष्ट। ४ टेढा। ५ पूजा करने वाला। ६ भक्त।

नम्रता-स्त्री० [स०] १ विनय। २ शिष्टता। ३ झुकाव। ४ टेढापन। ५ पूजा, भक्ति।

नय-पु० [सं०] १ नीति, राजनीति। २ दूरदर्शिता, विवेक। ३ न्याय, नीति विद्या। ४ व्यवहार, बर्ताव। ५ समानता। ६ [illegible]। ७ [illegible], [illegible]। ८ मार्ग, राह। ९ मत, राय। १० दार्शनिक सिद्धान्त विशेष। ११ देखो 'नदी'। १२ देखो 'नै'।

नयडौ, नयड्ड, नयडो, नयड्डो-देखो 'निकट'। (स्त्री० नयडी)

नयण, नयणडौ-देखो 'नयन'। —गोचर='नयनगोचर'। —पट='नयनपट'।

नयणी-स्त्री० आंख की पुतली।

नयणौ-देखो 'नयन'।

नयन, नयनडौ-पु० [सं०] १ आंख, नेत्र, चक्षु। २ नेत्र ज्योति, दृष्टि। —गोचर-वि० आंख के सामने, सम्मुख। —पट-पु० आंख की पलक।

नयर (रि)-वि० [सं० निकट] (स्त्री० नयरी) नजदीक, पास, समीप। -पु० १ आर्या गीति या स्कंध का एक भेद। २ देखो 'नगर'।

नयरी-१ देखो 'नगर'। २ देखो 'नयर'।

नयशील-वि० [सं० नयशील] १ विनीत, नम्र। २ नीतिज्ञ।

नयसेन-पु० [सं०] वीर अर्जुन।

नयौ-देखो 'नवौ'।

नरंग-स्त्री० [सं० नरांग] १ नारी, स्त्री। २ पुरुष का लिंग।

नरंजण-देखो 'निरंजन'।

नरंजणी-देखो 'निरंजनी'।

नरंद्र-देखो 'नरेंद्र'।

नरंम-देखो 'नरम'।

नर-पु० [सं०] (स्त्री० नारी) १ पुरुष, व्यक्ति, आदमी। २ प्रत्येक जाति के प्राणियों में पुंसत्व गुण व चिह्नों वाला प्राणी। ३ साहस, पौरुष व बल वाला व्यक्ति, प्राणी। ४ विष्णु। ५ शिव, महादेव। ६ अर्जुन, पार्थ। ७ ईश्वर के अवतारानुसार नारायण के भाई एक ऋषि। ८ राजा सुधृति के पुत्र का नाम। ९ मय राक्षस के पुत्र का नाम। १० सेवक, दास। ११ जल, पानी। १२ एक मात्रिक छंद। १३ दोहा छंद का एक भेद। १४ छप्पय छंद का एक भेद विशेष। १५ आर्या, गीति या स्कंध का एक भेद। १६ नौबत आदि वाद्य का भारी आवाज वाला भाग। -वि० १ मादा का विपर्याय, पुंसत्व गुण वाला। २ वीर, योद्धा। —आसण-पु० पालकी, डोली। —इंद्र='नरेंद्र'।

नरक, नरकस-पु० [सं० नरक, नरकम्] १ शास्त्र, पुराणानुसार वह स्थान जहां पापी जीवात्माओं को अपने दुष्कर्मों का फल भुगतना होता है। दोजख। २ अत्यधिक पीडा या कष्टदायक स्थान। ३ बहुत गंदा स्थान। ४ मल। ५ एक असुर का नाम। —गति-स्त्री० नरक भोगने की दशा। —गामी-वि० नरक में जाने योग्य। —चतुरदसी, चवदस-स्त्री० कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी।

नरकातकत-पु० [सं० नरकातकृत] श्रीकृष्ण।

नरकार-देखो 'निराकार'।

नरकासुर-पु० [सं०] पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक असुर।

नरकुटक-पु० [सं० नर्कुटकम्] नाक, नासिका।

नरकेसरी-पु० [सं०] १ नृसिंह भगवान। २ नरक में गिरने वाली पापात्मा।

नरख-देखो 'निरख'।

नरखणौ (बौ)-देखो 'निरखणौ' (बौ)।

नरखयकार-पु० [सं० नरक्षयकर] असुर, दैत्य, राक्षस।

नरग-देखो 'नरक'।

नरगण-पु० [सं०] फलित ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण।

नरगत-पु० [सं० नरगति] १ मनुष्य योनि। २ मनुष्य की चाल-ढाल रंग-ढंग।

नरगस-देखो 'नरगिस'।

नरगियो-कोट-पु० ताश का खेल विशेष।

नरगिस-पु० [फा०] १ एक पौधा विशेष। २ इस पौधे के सफेद फूल।

नरगौ-पु० [देश०] एक प्रकार का वाद्य।

नरडियौ, नरडौ-पु० [देश०] चमड़े या सूत की रस्सी।

नरजंत्र-पु० [सं० नरयंत्र] सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक प्रकार का शंकु यंत्र।

नरज-पु० [देश०] १ बड़ा तराजू। २ चन्द्रमा, चांद।

नरजान-पु० [सं० नर-यान] पालकी, डोली।

नरजू-पु० [देश०] खपरैल की छाजन को थामे रखने वाली लकड़ी।

नरझर-देखो 'निरझर'।

नरणेजक-पु० [सं० निर्णेजक] रंगरेज।

नरणौ-देखो 'निरणौ'।

नरत-देखो 'निरत'।

नरतक-पु० [सं० नर्तक] (स्त्री० नरतकी) १ नाचने वाला। २ नट। ३ शिव, महादेव। ४ हाथी। ५ राजा। ६ मयूर।

नरतकी-स्त्री० [सं० नर्तकी] नाचने वाली, वेश्या, रंडी।

नरतन-पु० [सं० नर्तन] १ नृत्य, नाच। [सं० नर-तन] २ मानव-देह। —साळ, साळा-स्त्री० नृत्यशाला, नाचघर।

नरतात-पु० [सं०] राजा, नृपति।

नरति-स्त्री० [सं० निरुक्ति] सुधि, खबर।

नरतू-वि० छोटा, छोटा।

नरतौ–वि० [सं० न-रत्त] (स्त्री० नरती) १ हीन, नीच। २ कम थोड़ा।
नरत्तक–देखो 'नरतक'।
नरत्तकी–देखो 'नरतकी'।
नरत्तन–देखो 'नरतन'। —**साळ, साळा** = 'नरतनसाळ'।
नरत्राण–पु० [सं० नरत्राण] १ श्रीकृष्ण। २ नरपाल, राजा।
नरदणौ (बौ)–क्रि० [सं० नर्द] भीषण शब्द करना, भयकर आवाज करना, जोर से शब्द करना।
नरदेव–पु० [सं०] १ ब्राह्मण, विप्र। २ राजा, नृप।
नरदौ–पु० [फा० नावदान] मैला पानी बहने की नदी।
नरधरम, नरधरमौ–पु० [सं० नरधर्मन्] कुबेर।
नरनरणौ (बौ)–क्रि० चिल्लाना, शोर मचाना, पुकारना, चीखना, पुकारना।
नरनराणौ (बौ), नरनरावणौ (बौ)–क्रि० बडबडाना।
नरनाथ(थौ), नरनायक–पु० राजा, नृप।
नरनारण, नरनारायण–पु० [सं० नरनारायण] विष्णु के अशावतार नर-नारायण दो ऋषि।
नरनारि–स्त्री० [सं०] द्रौपदी, पाचाली।
नरनाह–देखो 'नरनाथ'।
नरनाहर–पु० [सं० नर-नाहरि] नृसिंहावतार।
नरप–देखो 'न्रप'।
नरपत (पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती)–पु० [सं० नृपति] १ राजा, नृप। २ बादशाह, सम्राट।
नरपसु–पु० [सं० नरपशु] नृसिंह।
नरपाळ–पु० [सं० नृपाल] प्रजापालक राजा।
नरपीठ–पु० [सं०] विशेष बनावट का भवन।
नरपुर–पु० [सं०] मृत्युलोक, भूलोक।
नरबदा–स्त्री० [सं० नर्मदा] मध्य भारत की एक नदी।
नरबहिबु–पु० [सं०] निर्वाह।
नरबांण–देखो 'निरवांण'।
नरबाह–देखो 'निरवाह'।
नरबाहण–देखो 'नरवाहण'।
नरबाहणौ (बौ)–देखो 'निरवाहणौ' (बौ)।
नरभक्षी–पु० [सं० नरभक्षिन्] मनुष्यों को खाने वाला दैत्य, असुर या हिंसक पशु।
नरभव–पु० [सं०] मनुष्य योनि, मनुष्य-जन्म।
नरभुवण (न)–पु० [सं० नर-भवन] मर्त्यलोक। पृथ्वी।
नरभै–देखो 'निरभय'।
नरम, नरमउ–वि० [फा० नर्म] १ मुलायम, कोमल। २ सुकुमार, नाजुक। ३ लचकदार, लचीला। ४ सख्त या कड़े का विपर्याय। ५ तेज का उल्टा मंदा। ६ सुस्त, आलसी। ७ सरल, सीधा, विनीत। ८ शीघ्र द्रवित होने वाला। ९ धीमा, मद, मद्धिम। १० जो गरिष्ठ न हो, पाचक। ११ हल्का फारिक। १२ आलसी, सुस्त। १३ जो रूखा न हो। १४ कम वजनी। १५ कमजोर, निर्बल। १६ पौरुषहीन। –पु० [सं० नर्मन्] १ हसी, परिहास। २ देखो 'नरमौ'।
नरमखरब–पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
नरमदा–देखो 'नरबदा'।
नरमदेस्वर–पु० [सं० नर्मदेश्वर] नर्मदा से निकलने वाला शिव लिंग, शिव।
नरमयद–पु० नृसिंह अवतार।
नरमळ–देखो 'निरमळ'।
नरमांनौ–देखो 'नरमौ'।
नरमाई, नरमी–स्त्री० १ नम्रता विनम्रता। २ विनय। ३ कोमलता, मृदुलता। ४ स्वभाव से धीमापन। ५ लाचारी।
नरमु–देखो 'नरमौ'।
नरमेध–पु० [सं०] चैत्र मे होने वाला एक यज्ञ विशेष जिसमे नर बलि दी जाती थी।
नरमौ–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
नरम्म–१ देखो 'नरम'। २ देखो 'नरमौ'।
नरम्मी–देखो 'नरमी'।
नरयद–पु० [सं० नर-इन्द्र] १ विष्णु। २ शिव, महादेव। ३ देखो 'नरेंद्र'।
नरय–देखो 'नरक'।
नरलग–देखो 'निरलग'।
नरलोक, नरलोग–पु० [सं० नरलोक] मृत्युलोक, भूलोक।
नरलोभ–देखो 'निरलोभ'।
नरलोय–देखो 'नरलोक'।
नरवस–देखो 'निरवस'।
नरवइ–देखो 'नरपति'।
नरवदा–देखो 'नरबदा'।
नरवय, नरवहि–पु० १ निर्वाह। २ देखो 'नरपति'।
नरवर (रु)–पु० राजा, नरेश। –वि० नरो मे श्रेष्ठ।
नरवाघ–पु० [सं० नरव्याघ्र] ऊपर सिंह व नीचे मनुष्य देह वाला जल जतु विशेष। –वि० मनुष्यो मे श्रेष्ठ।
नरवाहण (न)–पु० [सं० नरवाहन] कुबेर, धनेश।
नरवाहणौ (बौ)–देखो 'निरवाहणौ' (बौ)।
नरविंदौ–देखो 'नरेंद्र'।
नरवैद्य–पु० [सं०] मनुष्यो का चिकित्सक।
नरसग (घ)–देखो 'नरसिंह'।

नरसळ–पु० [देश०] ईख से मिलता-जुलता नरकट का पौधा विशेष ।

नरसाह–पु० राजा, बादशाह ।

नरसिका–स्त्री० एक प्रकार की कटार ।

नरसिंग (घ)–देखो 'नरसिंह' ।

नरसिंघो–पु० [देश०] १ तुरहीनुमा एक वाद्य विशेष । २ देखो 'नरसिंह' ।।

नरसिंह, नरसींग, नरसींघ–पु० [स० नृसिंह] १ विष्णु का चौथा अवतार जिसमे आधा शरीर सिंह व आधा मनुष्य का था । २ राजा, नृप । ३ एक रतिबध । –वि० मनुष्यो मे श्रेष्ठ । —चवदस–स्त्री० वैशाख शुक्ला चतुर्दशी । —पुराण–पु० नृसिंहावतार । सबधी एक उप पुराण ।

नरसी–पु० श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध भक्त, नरसी मेहता ।

नरसीह, नरस्यध–देखो 'नरसिंह' ।

नरहर (हरि, हरी)–पु० [स० नरहरि] नृसिंह भगवान ।

नरही–पु० [देश०] तलवार की मूठ का निचला छोर ।

नरहीरो–पु० [स० नर-हीरक] एक प्रकार का वडा हीरा ।

नराअतक–देखो 'नरातक' ।

नराइद–देखो 'नरेंद्र' ।

नराण–देखो 'नारायण' ।

नरांतक–पु० [स०] रावण का एक पुत्र ।

नरांनाथ–देखो 'नरनाथ' ।

नरांनायक–पु० [स० नरनायक] १ श्रीकृष्ण । २ देखो 'नरनायक' ।

नरांनाह–देखो 'नरनाथ' ।

नरांपत (पति, पती, पत्त)–देखो 'नरपति' ।

नरायद–देखो 'नरेंद्र' ।

नरायण–देखो 'नारायण' ।

नराकार–१ देखो 'नकार' । २ देखो 'निराकार' ।

नराच–देखो 'नाराच' ।

नराज–१ देखो 'नाराज' । २ देखो 'नाराच' ।

नराजगी, नराजा–देखो 'नाराजगी' ।

नराट, नराठ–पु० [स० नरराट्] १ राजा, नृप, नरेन्द्र । २ देखो 'निराट' ।

नराताळ, नराताळा, नराताळी, नराताळो–देखो 'निराताळ' ।

नराधिप–पु० [स०] राजा, नृप ।

नराळ–१ देखो 'निराळ' । २ देखो 'निराताळ' ।

नराळो–देखो 'निराळो' । (स्त्री० निराळी)

नराहिव, नराहिवु–देखो 'नराधिप' ।

नरिंद, नरिंदर, नरिंदि, नरिंदु नरिंदो, नरिंद्र, नरिंद्रंव–पु० १ प्रथम लघु की पांच मात्रा का नाम । २ देखो 'नरेंद्र' ।

नारक, नारग–देखो 'नरक' ।

नरिवाहणो (बो)–देखो 'निरवाहणो' (बो) ।

नरियद–देखो 'नरेंद्र' ।

नरियण–पु० १ राजा, नृप । २ देखो 'नारायण' ।

नरियो–पु० परिपक्वावस्था की ककडी ।

नरींद–देखो 'नरेंद्र' ।

नरी–देखो नारी' ।

नरीयद–देखो 'नरेंद' ।

नरीस–देखो 'नरेस' ।

नरु, नरूं, नरू–देखो 'नर' ।

नरूका–स्त्री० कछवाहो की एक शाखा ।

नरूको -पु० उक्त शाखा का व्यक्ति ।

नरेंद्र–पु० [स०] १ राजा नृप । २ विषैले जीवो के काटने पर इलाज करने वाला चिकित्सक, विष वैद्य । ३ अत मे दो गुरु वाला एक छद विशेष ।

नरेण–देखो 'नरेहण' ।

नरेस, नरेसर, नरेसरु, नरेसरू, नरेसरो, नरेसुर नरेस्वर–पु० [स० नरेश, नरेश्वर] १ राजा, नृप । २ ईश्वर, परमात्मा । ३ श्रीकृष्ण, वासुदेव ।

नरेह–१ देखो 'नरेहण' । २ देखो 'नरेस' ।

नरेहण–वि० [स० निर + आइहन] १ पवित्र, उज्ज्वल, निष्कलक । २ निष्पाप । ३ निष्कपट, शुद्ध । ४ देखो 'नरेंद्र' ।

नरेहर–१ देखो 'नरहरि' । २ देखो 'नरेहण' ।

नरोतम, नरोत्तम–पु० [स० नरोत्तम] ईश्वर, भगवान ।

नरोवर–पु० [स० नराम्वर] समुद्र, सागर ।

नरच व–देखो 'नरेंद्र' ।

नलप–पु० [स० निलिम्प] देवता, सुर ।

नलपिका–स्त्री० [स० निलिम्पिका] गाय, गौ ।

नळ–पु० [स० नल] १ निषध देश के चन्द्रवशी राजा । २ श्रीराम की सेना का एक वानर । ३ यदु के एक पुत्र का नाम । ४ एक दानव विशेष । [स० नाल] ५ एक नद का नाम । ६ युद्ध का एक वाद्य विशेष । ७ सिंह का अगला पाव । ८ एक प्रकार का आयुध । ९ तलवार का एक भाग । १० तलवार पर होने वाली एक लकीर विशेष । ११ नरकट, नरसल । १२ कमल, पद्म । १३ वह हड्डी जिसके अन्दर नरसल के समान सीधा छेद हो । १४ जानवर का नथुना । १५ नलिका, नाली । १६ पेशाब की नलिका ।

नळकी, नळकीनी–देखो 'नळी' ।

नळकूबर–पु० [स० नलकूबर] १ कुबेर का एक पुत्र । २ ताल के साठ भेदो में से एक ।

नळणी–देखो 'नलिनी' ।

नळणौ (बौ)–क्रि० जानवर द्वारा पिछले पांवो पर खडा होकर हमला करना ।
नळपुर–पु० [स० नलपुर] राजा नल की राजधानी का नगर ।
नळवट (टि)–देखो 'निलै' ।
नळवार–पु० बछडा ।
नळव्रन–पु० तलवार ।
नळसेतु–पु० [स० नलसेतु] रामेश्वर के निकट बधा एक पुल ।
नळाध–पु० रात्रि मे न दिखने का एक रोग, रतोंधी ।
नलाड–देखो 'निलाट' ।
नळि–देखो 'नळ' ।
नळिका–स्त्री० [स० नलिका] १ वैद्यक मे एक प्रकार का प्राचीन यत्र । २ बंदूक से मिलता-जुलता एक प्राचीन अस्त्र । ३ बाणो का तरकश । ४ पुदीना । ५ देखो 'नळी' ।
नलिन–पु० [स०] १ कमल, पद्म । २ सारस पक्षी । ३ जल । ४ नील का पौधा ।
नलिनि, नलिनी–स्त्री० [स०] १ कमलिनी, कमल । २ एक प्रकार की सब्जी । ३ नदी, सरिता । ४ नारियल की शराब । ५ नाक का बायां नथुना । ६ गगा की एक धारा का नाम । ७ कमल का ढेर । ८ अधिक कमलो वाला जलाशय । –वि० नीले रग का, नीला । —नवन–पु० कुबेर का एक उपवन ।
नळियौ–देखो 'नळ ।
नळी–स्त्री० [स० नली] १ पैर के घुटने के नीचे से पजे तक की सामने की हड्डी । २ नलिका नाम का गध द्रव्य । ३ एक प्रकार का वाद्य विशेष । ४ रब्बर, धातु आदि की बारीक भोगली, नलिका । ५ एक वाद्य विशेष । ६ सुरणाई नामक वाद्य का एक भाग । ७ बुनकरो के काम आने वाली काष्ठ की छोटी नलिका । ८ देखो 'नळ' । ९ देखो 'नाळ' ।
नळीआरइ–स्त्री० पेट पर पडने वाली त्रिवली ।
नलै–देखो 'निलै'
नळौ–पु० [स० नाल] १ बुनकरो की सूत लपेटने की आक आदि की नलिका । २ भवन निर्माण मे काम आने वाला एक औजार विशेष । ३ सिह, घोडे आदि जानवरो के अगले पांव के घुटने के नीचे की हड्डी । ४ देखो 'नळ' । ५ देखो 'नाळौ' ।
नल्लौ–वि० बुरा, खराब ।
नववर–पु० [अ०] ईसा सन् का ग्यारहवां मास ।
नव (उ)–वि० [स० नवन्] १ नया, नूतन, नवीन । २ ताजा, तुरन्त का । ३ आधुनिक । ४ दश मे एक कम । –पु० १ नौ की सख्या व अक । २ काक, कौआ ।
नवका–देखो 'नौका' ।
नवकार, नवकारु–पु० [स० नमस्कार] जैन उपासना का प्रसिद्ध मत्र । —वळी–स्त्री० उक्त मत्र का जाप, माला ।
नवकारसी–पु० दश प्रत्याख्यानो मे से प्रथम ।
नवकुमारी–स्त्री० [स०] नवरात्र मे पूजी जाने वाली नौ कुमारियां ।
नवकुळी–पु० नाग वश के नवकुल ।
नवकोट, नवकोटी–पु० नौ कोट या गढो वाला मारवाड ।
नवकोटौ–पु० १ मारवाड का अधिपति । २ राठौड ।
नवखड–पु० [स०] जबू द्वीप के नौ खण्ड ।
नवगड्ढ़ौ, नवगढ़ौ–पु० [स० नवगढ] राठौडो का एक सम्बोधन ।
नवगढ़–पु० [स०] मारवाड का एक नाम ।
नवगरी, नवगिरै, नवगीय–देखो 'नवग्रह' ।
नवगुण–पु० [स०] यज्ञोपवीत, जनोई ।
नवग्रह–पु० [स०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार नौ विशेष ग्रह । २ देखो 'नवग्रही' —बध–पु० नौ ग्रहो को बाधने वाला, रावण ।
नवग्रही–स्त्री० ग्रहो के रूप मे नौ नगो से युक्त एक आभूषण विशेष । –वि० नवग्रहो का सूचक ।
नवड–देखो 'निपट' ।
नवडियौ–देखो 'नौडियौ' ।
नवचवौ–वि० १ सावधान, होशियार । २ देखो 'नवसदौ' ।
नवछावर–देखो 'निछरावळ' ।
नवछावरेस, नवछाहर–देखो 'निछरावळ' ।
नवजण, नवजणियौ, नवजणी, नवजणौ–देखो 'नू जणौ' ।
नवजणौ (बौ)–देखो 'नू जणौ' (बौ) ।
नवजरी–स्त्री० हाथ में पहनने का आभूषण विशेष ।
नवजवान–पु० [स० नवयुवक] नवयुवक, युवक ।
नवजोगेसर–पु० [स० नवयोगेश्वर] १ नौ योगेश्वर । २ युवा योगी ।
नवजोबन–देखो 'नवयौवन' ।
नवजोबना–देखो 'नवयौवना' ।
नवड–देखो 'निपट' ।
नवणीय–देखो 'नवनीत' ।
नवणौ (बौ)–देखो 'नमणौ' (बौ) ।
नवतन–देखो 'नूतन' ।
नवतर–स्त्री० [देश०] उर्वर होने के लिये छोडी गई कृषि भूमि ।
नवदुरगा–स्त्री० [स० नवदुर्गा] नवरात्र मे पूजी जाने वाली नौ दुर्गायें । दुर्गा के नौ रूप ।
नवद्वार–पु० [स०] प्राणी के शरीर के नाक, कान आदि के नौ छिद्र ।

नवधा-क्रि०वि० [स०] नौ प्रकार से । -वि० नौ गुणा —**भक्ति**-स्त्री० भक्ति की नौ विधिया ।
नवनध-देखो 'नवनिधि' ।
नवनवड-वि० बिलकुल नवीन, नया । नवीन ।
नवनाडी-स्त्री० [स०] योग विद्या की, शरीरस्थ नौ नाडिया ।
नवनाथ-पु० [स०] नाथ सम्प्रदाय के सिद्धि प्राप्त नौ महायोगी ।
नवनिद्धि, नवनिद्धी, नवनिध, नवनिधि, नवनिधी-स्त्री० [स० नवनिधि] कुबेर की नौ निधिया ।
नवनीत-पु० [स०] १ मक्खन । २ श्रीकृष्ण । —**धेनु**-स्त्री० दान के लिए कल्पित गौ ।
नवपचम-पु० [स०] जेष्ठ मास के कृष्ण पक्ष का; धनिष्ठा नक्षत्र से रोहिणी नक्षत्र तक का नौ दिन का समय ।
नवपण (न)-पु० [स० नव + त्व] १ यौवन, जवानी । २ नवीनता ।
नवपत्रिका-स्त्री० [स०] नवदुर्गा पूजन मे काम आने वाले नौ वृक्षो के पत्र ।
नवपद-पु० [स०] जैन मतानुसार माने जाने वाले नौ पद ।
नवबत, नवबती, नवबत्ती, नवब्बती-देखो 'नौबत' ।
नवबहारी-नगरी-स्त्री० [स० नव + द्वार + नगरी] नौ दरवाजे वाला नगर ।
नवम-वि० [स० नवम्] नौ के स्थान वाला, नौवां ।
नवमइ, नवमइ-स्त्री० [स० नवमति] १ सहसा सोचने की शक्ति । २ शुद्ध बुद्धि या मति । ३ देखो 'नवमौ' ।
नवमहानिधान-पु० नौ प्रकार के महान् कोष ।
नवमासियौ-वि० नौ मास मे होने वाला ।
नवमि, नवमी-स्त्री० [स०] मास के प्रत्येक पक्ष की नौवी तिथि । -वि० नौ के स्थान वाली, नौवी ।
नवमोहरौ-पु० नव मुद्रायें अकित शाही फरमान ।
नवमौ-वि० [स० नवम्] (स्त्री० नवमी) नौ के स्थान वाला, नौवा ।
नवयराजलखमण, नवयराजलखमा-पु० [स० नव्यराज लक्ष्मण] युधिष्ठिर ।
नवयोवन-पु० [स०] १ युवावस्था का प्रारभ, तरुणाई । २ नवयुवक, तरुण ।
नवयोवना-स्त्री० [स०] युवती, तरुणी ।
नवरंग-पु० [स०] १ छप्पय छद का ५९ वा भेद । २ एक वर्णिक छंद विशेष । ३ कामदेव, अनग । ४ लावण्य, सौन्दर्य । -वि० १ नये ढंग का, नया । २ सुन्दर, रूपवान ।
नवरंगी, नवरंगौ-वि० [स० नवरग] १ अनोखा, अद्भुत, विचित्र । २ नित्य नये आनन्द वाला ।
नवरतन-पु० [स० नवरत्न] १ नौ प्रकार के बहुमूल्य रत्न । २ नौ ग्रहो के प्रतीक, नौ रत्न जडा आभूपण । ३ विशिष्ट गुणो वाले नौ सभासद ।
नवरता, नवरती, नवरत्ती-देखो 'नवरात्र' ।
नवरस-पु० [स०] काव्य मे होने वाले शृ गार, करुण आदि नौ रस ।
नवरा-देखो 'नौरा' ।
नवरात (रात्र, रात्रि)-पु० [स० नवरात्र] १ चैत्र व आश्विन के शुक्ल पक्ष के दुर्गा पूजन के, नौ पर्व दिन । २ इन दिनो मे किया जाने वाला व्रत, पूजन आदि ।
नवरोज, नवरोजौ-पु० ईरानियो व मुसलमानो का एक वार्षिक महोत्सव ।
नवरौ-वि० (स्त्री० नवरी) १ जिसके पास कोई काम न हो, फुरसत वाला । २ सभी कामो से मुक्त । ३ निकम्मा, बेकार । ४ निष्क्रिय । ५ देखो 'नौ'रौ' ।
नवल-वि० १ नवीन, नया । २ नवयुवा, नवयौवना ।
नवलअनगा-स्त्री० मुग्धा नायिका का एक भेद ।
नवलउ-देखो 'नवल' ।
नवलकिसोर-पु० [सं० नवलकिशोर] १ श्रीकृष्ण, घनश्याम । २ युवक, युवा पुरुष ।
नवलकिसोरी-स्त्री० [स० नवलकिशोरी] १ युवा स्त्री, युवती । २ राधा ।
नवलक्ख-स्त्री० [स० नवलक्ष] नौ लाख देवियो का समूह । -वि० १ नौ लाख । २ नौ लाख का ।
नवलखी-स्त्री० [स० नवलक्ष] जुलाहो की ताने दबाने की एक लकडी विशेष । -वि० नवलक्ष की । नौलखी ।
नवलखौ-वि० [स० नवलक्ष] (स्त्री० नवलखी) १ नौ लाख का । २ मूल्यवान, बहुमूल्य । —**दरग**-पु० मारवाड का कोटडा नामक नगर । —**हार**-पु० नौ लाख की कीमत वाला हार ।
नवलबनी (वनी)-स्त्री० १ दुल्हन, वधू । २ नवोढा, नववधू । ३ नवयुवती ।
नवलबनौ (वनौ)-पु० १ दूल्हा, वर । २ नवपरिणीता युवक । ३ तरुण ।
नवलासी-वि० नवीन, नूतन ।
नवलियौ-देखो 'नकुल' ।
नवळी-देखो 'नौळी' ।
नवली-वि० [स० नव्य] नयी, नवीन । -स्त्री० नवयुवती ।
नवलौ-पु० [देश०] खलिहान में पडा साफ अनाज का लम्बा ढेर ।
नवलौ-वि० [स० नव्य] नया, नवीन । -पु० नवयुवक, तरुण ।
नवल्ल-देखो 'नवल' ।
नवल्ली (य)-देखो 'नवली' ।

नवल्लो–देखो 'नवलो' ।
नववासुदेव–पु० [सं०] जैन मतानुसार नौ वासुदेव ।
नवविस–पु० [स० नव-विष] नौ प्रकार के विष ।
नवसगम–पु० [स०] १ पति-पत्नी या स्त्री-पुरुष का प्रथम समागम । २ प्रथम भेंट ।
नवसदौ–पु० [फा० नवीसिन्द] लेखक, अहलकार, कर्मचारी ।
नवसक्ति–स्त्री० [स० नवशक्ति] नौ प्रकार की शक्तिया ।
नवसदी–स्त्री० [स० नव + फा० सदी] शाही अहलकारो का विभाग ।
नवसर–वि० [स० नवसर] नौ लडी का, नौ लड वाला । –पु० १ नौ लडी का हार । २ मारवाड का एक किला । —हार–पु० नौ लडियो या डोरो का हार ।
नवसहस, नवसहसउ, नवसहसौ, नवसहस, नवसहसो, नवसाहसो–पु० [स० नवसहस्र] राठौडो की उपाधि का शब्द । राठौड ।
नवसूज–पु० [स० नवसृज] कामदेव, अनग ।
नवहत्थ, नवहत्थौ, नवहथ, नवहथौ, नवहथ्थ–वि० [स०नवहस्त] (स्त्री० नवहत्थी) १ नौ हाथ लबा, नौ हाथ का २ वीर बहादुर । –पु० सिंह, शेर ।
नवांकोट, नवांकोटि (टी)–देखो 'नवकोटी' ।
नवाणियो–वि० [स०नव-उष्ण] ताजा दूहा दूध, धारोष्ण दूध ।
नवाणु (णू)–देखो 'निनाणू' ।
नवाणौ–वि० [स० नवीन] (स्त्री० नवाणी) नवीन, नया, नूतन ।
नवास–पु० [सं० नवांश] किसी राशि का नौवां भाग ।
नवाई–देखो 'निवाई' ।
नवाडणौ (बौ)–देखो नवाणौ' (बौ) ।
नवाज–१ देखो 'नमाज' । २ देखो 'निवाज' ।
नवाजणौ (बौ)–देखो 'निवाजणौ' (बौ) ।
नवाणौ (बौ)–क्रि० १ स्नान कराना, नहलाना । २ देखो 'नमाणौ' (बौ) ।
नवात–स्त्री० [देश०] मिश्री ।
नवादी–स्त्री० [स० नव-आदि] १ नववधू, नवोढा । २ तरुणी । –वि० नयी, नूतन ।
नवादो–वि० [स० नव-आदि] (स्त्री० नवादी) नया, नूतन ।
नवाब–देखो 'नव्वाब' । —जादौ='नव्वाबजादौ' ।
नवाबी–देखो 'नव्वाबी' ।
नवायौ–देखो 'निवायौ' ।
नवार–देखो 'निवार' ।
नवारण–देखो 'निवारण' ।
नवारणमत्र–पु० [स० निर्वाण मत्र] नौ अक्षर का मत्र विशेष ।
नवारी–स्त्री० नौ हाथ का सूती वस्त्र विशेष ।
नवाळ (ळौ)–देखो 'निवाळौ' ।
नवावणौ (बौ)–१ देखो 'नवाणौ' (बौ) । २ देखो 'नमाणौ' (बौ) ।
नवास–देखो 'निवास' ।
नवासौ–पु० [फा० नवास] (स्त्री० नवासी) पुत्री का पुत्र, दोहित्र ।
नवाह–वि० [स०] नौ दिन का, नौ दिवसीय ।
नवि–अव्य० [स० न + अपि] १ न, नहीं । २ नही तो । ३ देखो 'नवी' ।
नवियो–१ देखो 'नमियो' । २ देखो 'नव' ।
नवी–वि० [स० नव] १ नवीन, नूतन । २ देखो 'नवि' । ३ देखो 'नमी' ।
नवीन–वि० [स०] १ नया, नूतन । २ हाल का, ताजा । ३ अद्भुत, अपूर्व । ४ आधुनिक ।
नवीनता–स्त्री० [स० नवीनत्व] १ नयापन, नूतनता । २ ताजगी । ३ अद्भुतता, विचित्रता । ४ आधुनिकता ।
नवीना, नवीनी–स्त्री० [स० नवीना] १ नव वधू, दुल्हन । २ नवयौवना । –वि० नयी, नवीन ।
नवीनू–देखो 'नवीन' ।
नवीनौ–पु० [स० नवीन] (स्त्री० नवीनी) १ नवयुवक, २ देखो 'नवीन' ।
नवीसदौ–देखो नवसदौ' ।
नवीस–पु० [फा०] लेखक, लिखने वाला कर्मचारी ।
नवीसी–स्त्री० [फा०] लिखने का कार्य । लिखाई ।
नवे–देखो 'नेऊ' ।
नवे'क–वि० [स० नव-एक] नौ के लगभग ।
नवेक्षेत्र–पु० नया क्षेत्र, नई जगह, स्थान ।
नवेखड–देखो 'नवखड' ।
नवेडो–देखो 'निवेडो' ।
नवेद–देखो 'निवेद' ।
नवेनाथ–पु० श्रीकृष्ण ।
नवेनिद्धि, नवेनिधि–देखो 'नवनिधि' ।
नवेरु, नवेरौ–वि० [स० नवतर] नवीन, नया, नूतन ।
नवेली–स्त्री० [स० नवीन] १ नवयौवना, तरुणी । २ नववधू । –वि० नूतन, नवीन ।
नवेलो–पु० [स० नवीन] (स्त्री० नवेली) १ नौजवान, तरुण । २ देखो 'नवीन' ।
नवै–१ देखो 'नेऊ' । २ देखो 'नव' । —ग्रह='नवग्रह' । —निध, निधि='नवनिधि' ।
नवोडो–देखो 'नवो' ।

नवोढ, नवोढ़ा–स्त्री० [सं० नव + ऊढा] १ साहित्य मे ज्ञात मुग्धा नायिका का एक भेद। २ नव विवाहिता, नववधू। ३ जवान स्त्री तरुणी।

नवोतरौ–पु० नौवा वर्ष।

नवौ नवो, नव्य–वि० [सं० नव, नव्य] (स्त्री० नवी) १ नवीन, नया। २ हाल का, ताजा। ३ आधुनिक। ४ अपूर्व, विचित्र। ५ पुनः प्रचलित। ६ क्रमश आने वाला। ७ प्राचीन का स्थानापन्न। ८ नौ के स्थान वाला। –पु० १ नौ वा वर्ष। २ देखो 'नव'।

नव्याणु–देखो 'निनाणु'।

नव्यासी–देखो निवियासी'।

नव्व–१ देखो 'नव'। २ देखो नवौ'। —**नाथ**= नवनाथ'। —**नीद्धि** = 'नवनिधि'।

नव्वाब–पु० [अ०] १ बादशाह द्वारा नियुक्त किसी बड़े प्रदेश का शासक। २ मुसलमानो की एक उपाधि विशेष। ३ अमीर मुसलमान। —**जादी**–स्त्री० किसी नवाब की पुत्री। —**जादौ**–पु० नवाब का पुत्र।

नव्वाबी–स्त्री० [अ०] १ नवाब का पद, उपाधि। २ नवाबो जैसा रहन-सहन। ३ अमीरायत।

नसक–देखो निसक'।

नस–स्त्री० [सं० स्नस्] १ प्राणियो के शरीर की रक्त वाहिनी शिरा, नाडी, नली, धमनी। २ गर्दन, ग्रीवा। ३ शरीर की मास -पेशियो को परस्पर जोडने वाले तंतु, रग। ४ पत्तो के बीच दिखने वाले रेशे, तंतु। ५ मूत्रेन्द्रिय, लिंगेन्द्रिय। ६ कुंजी, नियंत्रक तत्त्व। ७ देखो 'नासा'। ८ देखो 'निस'।

नसचर–देखो 'निसाचर'।

नसचार, नसचारी–देखो निसाचरी'।

नसणौ (बौ)–क्रि० [सं० नश्] नष्ट होना, नाश होना।

नसतरंग–पु० [सं० स्नस् + तरंग] पीतल का बना एक वाद्य विशेष।

नसतर–पु० [फा० नश्तर] १ शल्य चिकित्सा का चाकू विशेष। २ चाकू।

नसतार–देखो 'निसतार'।

नस-दरबी–स्त्री० [सं० स्नस् + दर्वी] साप का फन।

नसर्यबिब–देखो 'निसाबिब'।

नसलब, नसलंबड–पु० [सं० स्नस् + लव] ऊंट, उष्ट्र।

नसल–स्त्री० [अ० नस्ल] १ वंश, कुल। २ संतान, औलाद। ३ प्राणियों का वर्ग या जाति विशेष। ४ किसी क्षेत्र या प्रदेश विशेष का प्राणी या मवेशी। –वि०१ निर्लज्ज, बेशर्म। २ नीच, दुष्ट।

नसलांबड–देखो 'नसलव'।

नसवार–स्त्री० नाक मे सूंघने की पिसी हुई तम्बाखू।

नसाखोर वि० [अ०] अधिक नशा करने वाला, नशाबाज।

नसाडणौ (बौ)–देखो 'नसाणौ' (बौ)।

नसाचर–१ देखो निसाचर'। २ देखो 'नासाचार'।

नसाणौ (बौ)–क्रि० [सं० नश्] १ भगाना, दूर करना, मिटाना। २ नष्ट करना, बरबाद करना। ३ बिगाडना, खराब करना। ४ मिटाना।

नसाप (फ)–देखो 'इंसाफ'।

नसापत–देखो 'निसापत'।

नसाबाज–देखो 'नसेबाज'।

नसावणौ (बौ)–देखो 'नसाणौ' (बौ)।

नसि–देखो 'निसा'।

नसिया–स्त्री०[सं०निषया] १ एकान्त मे बना देवस्थान। (जैन) २ समाधि स्थान। ३ तीर्थ स्थान।

नसीजणौ (बौ)–क्रि० कंकरीली भूमि मे गाडी आदि खीचने से बैल के कंधे मे सूजन आना, घाव पडना।

नसीत–देखो 'नसीहत'।

नसीन–वि० [फा० नशीन, नशी] १ बैठा हुआ। २ बैठने वाला। ३ रखने वाला। ४ किसी से युक्त।

नसीनी–स्त्री० [फा० नशी] बैठने या रखने की क्रिया या भाव।

नसीब–पु० भाग्य, किस्मत।

नसीयत–देखो 'नसीहत'।

नसीलौ–वि० (स्त्री० नसीली) १ नशा उत्पन्न करने वाला, नशीला, मादक। २ जिस पर नशे का प्रभाव हो, मदमस्त।

नसीहत–स्त्री० [अ०] १ उपदेश, शिक्षा, सुसम्मति। २ बुद्धि, अक्ल।

नसे-सालार–पु० [फा०] पारसी मजहब के अनुयायी, मुर्दा उठाने वाले व्यक्ति।

नसैणी–देखो 'नीसरणी'।

नसे-बाज, नसैल–वि० [फा०] मादक पदार्थो का सेवन करने वाला, किसी नशे का आदी।

नसौ–पु० [अ० नश्श] १ मादक पदार्थ के सेवन से उत्पन्न उन्माद की अवस्था, उन्मत्तता। २ मादक पदार्थ।

नस्चित–देखो 'निस्चित'।

नस्ट–पु० [सं० नष्ट] पिंगल शास्त्र की एक क्रिया विशेष। –वि० १ जो बरबाद हो चुका हो, नाश हुवा हुआ। २ खराब, बेकार। ३ वंचित, मुक्त। ४ अदृश्य। ५ खोया हुआ, गुम। ६ अधम, नीच। —**देव**–पु० दुष्ट देव। —**बुद्धि**–वि० मूर्ख।

नस्टचंद्र–पु० [सं० नष्ट-चन्द्र] भादव मास के दोनो पक्षों की चतुर्थी को दिखने वाला चांद।

नस्टजातक–पु० [स० नष्ट-जातक] जन्म कुण्डली बनाने की एक क्रिया विशेष।

नस्ट-भ्रस्ट–वि० [स० नष्ट-भ्रष्ट] जो भ्रष्ट या अछूता होकर नष्ट हो गया हो, बरबाद। –पु० नाश, ध्वस।

नस्टात्मा–वि० [स० नष्टात्मा] दुरात्मा, नीच, खल।

नस्तर–देखो 'नसतर'।

नस्तरणौ (बौ)–क्रि० [स० निस्तरणम्] १ समाप्त होना, नष्ट होना। २ नस्तर लगा कर चीरना। ३ देखो 'निस्तरणौ' (बौ)।

नस्तार–देखो 'निस्तार'।

नस्या–देखो 'नसिया'।

नस्वर–वि० [स० नश्वर] १ नाश होने वाला, मिटने वाला, नष्ट होने लायक, क्षणिक। २ उपद्रवकारी।

नस्वरता–स्त्री० [स० नश्वरता] नाश होने की अवस्था, गुण या भाव।

नह–देखो 'नही'।

नहकार–देखो 'निहकार'।

नहग–१ देखो 'निहग'। २ देखो 'नैग'। —**राज, राजा** = 'निहगराजा'।

नहचं–देखो 'निश्चय'।

नहचौ–देखो 'नहचौ'।

नह–१ देखो 'नख'। २ देखो 'नभ'। ३ देखो 'नही'। ४ देखो 'नस'।

नहकुण–देखो 'निहकुण'।

नहकोड–पु० योद्धा, वीर।

नहच, पहचय–देखो 'निस्चय'।

नवचळ–देखो 'निस्चळ'।

नहचे, नहचेण, नहच–देखो 'निस्चय'।

नहचौ, नहच्चौ–पु० [स० निश्चय] १ धीरज, धैय। २ विश्वास, यकीन। ३ शांति, सतोष।

नहच्यत–देखो 'निस्चित'।

नहच्यौ–देखो 'नहचौ'।

नहणौ (बौ)–क्रि० १ धारण करना, उठाना। २ सभालना, सभाले रखना। ३ पकडना, थामना। ४ आवेष्टित करना। ५ बनाना।

नहफूलण–स्त्री० पुष्प की कली।

नहरणी–देखो 'नखहरणी'।

नहराळ (ळौ)–पु० १ सफेद पीठ वाला घोडा। २ देखो 'नखराळी'।

नहलाणौ (बौ), नहलावणौ (बौ)–देखो 'नहाणौ' (बौ)।

नहसणौ (बौ)–देखो 'निहसणौ' (बौ)।

नहाणौ (बौ) क्रि० [स० निमज्जनम्] १ स्नान करना, नहाना। २ डुबकी लगाना। ३ तीथ स्नान करना। ४ धुलना। ५ भीगना।

नहाळ (ल)–पु० [स० नख-आलुच्] १ सिंह शेर। २ देखो 'निहाल'।

नहालणौ (बौ)–क्रि० [देश०] १ निहारना, देखना। २ लखना, पहिचानना।

नहावण पु० १ स्नान करने की क्रिया या भाव। मज्जन। २ देखो 'न्हावण'।

नहावणौ (बौ)–देखो 'न्हाणौ' (बौ)।

नहींतरि–अव्य० नही तो।

नहिं, नहि नहीं, नही, नहू, नहू–अव्य० [स० नहिं] निषेधात्मक ध्वनि, नकार।

नहूतारउ–वि० निमत्रण, आमत्रण।

नहूस–पु० [स० नहूष] १ इक्ष्वाकुवशीय एक प्रसिद्ध राजा जो अगस्त्य ऋषि के शाप से सर्प बना। २ एक नाग का नाम। ३ मनुष्य, व्यक्ति। –वि० १ मूर्ख, जड। २ नीच, दुष्ट।

ना–अव्य० [स० न] निषेधात्मक ध्वनि, नही। –प्रत्य० १ षष्ठि विभक्ति या सबधकारक का चिह्न, का। २ कर्म व सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को।

नांई–वि० [देश०] १ समान, तुल्य, जैसा। २ देखो 'नाई'।

नांउ, नांऊ–देखो 'नाम'।

नाकणौ (बौ)–देखो 'नाखणौ' (बौ)।

नांख–पु० [देश०] उर्वर होने के लिए छोडी गई कृषि भूमि।

नाखणौ (बौ)–क्रि० [स० निक्षिपणम्] १ ऊपर से नीचे डालना, फेंकना, नीचे पटकना। २ किसी पदार्थ मे कुछ अन्य वस्तु डालना, मिलाना, समिश्रण करना। ३ जोश मे आगे बढ़ाना, झोकना। ४ भिडाना। ५ किसी पर कोई चीज पटकना, फेंकना। ६ परित्याग करना, छोडना। ७ टपकाना, चूआना, गिराना। बहाना। ८ उछालना, फेकना। ९ खडी वस्तु को गिराना। १० पास मे पटकना। ११ लटकाना। १२ भेजना, पहुँचाना। १३ सहार करना। १४ पटकना, गिराना, पछाडना। १५ उखाडना।

नांगर–पु० [स० नागरम्] १ सोठ। २ लगर।

नागरी–१ देखो 'नवग्रही'। २ देखो 'नोगरी'।

नांगळ–स्त्री० [स० नाग + वलि] १ गृह प्रवेश का महोत्सव, प्रतिष्ठा, पूजन। २ देखो 'नांगळी'।

नागळणौ (बौ)–क्रि० [देश०] १ बाधना। २ स्थापना करना, प्रतिष्ठा करना।

नांगळियौ, नागळौ–पु० [देश०] १ मोट की ऊपरी किनारो पर बधा मजबूत रस्सा। २ रस्सा, रस्मी। ३ फदा।

नांडियो–देखो 'नौडियो'।
नांज–देखो 'नौज'।
नाजरण, नांजणियो, नाजणो–देखो 'नू जणो'।
नाड, नांढ़–वि० [देश०] १ मूर्ख, गवार। २ अपठित। ३ जो व्यवहार कुशल न हो।
नाण, नाणि–पु० [स० ज्ञान] ज्ञान।
नाणउ–देखो 'नाणो'।
नांणणो (बो)-क्रि० [स० ज्ञान] जानना।
नांणदउ–देखो 'नाणदो'।
नाणदी–स्त्री० [स० ननदृ] ननद की पुत्री, पति की भानजी।
नाणदो–पु० [स० नानान्द्र] पति का भानजा, ननद का पुत्र।
नांणवत–वि० [स० ज्ञानवत] ज्ञानवान।
नाणिदउ–देखो 'नाणदो'।
नांणी–वि० [स० ज्ञानी] ज्ञानवान, ज्ञानी।
नाणु–देखो 'नाणो'।
नाणुटी–स्त्री० [स० नाणक + हट्ट] १ रेजगारी व नोटो का व्यापार करने वाला व्यापारी। २ रेजगारी व नोटो का व्यापार।
नाणू, नाणो–पु० [स० नाणक] १ रुपया, पैसा, नगदी। २ धन, द्रव्य। ३ कर, टेक्स।
नाद–स्त्री० [स० नदक] मवेशियो को चारा आदि खिलाने का बडा पात्र।
नादियो, नादी–देखो 'नदी'।
नादीमुख–पु० [स०] मागलिक कार्यों से पूर्व किया जाने वाला एक श्राद्ध विशेष।
नांन–देखो 'नंनप'।
नानक–पु० सिख सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक, गुरु नानक।
नानकड़ो–देखो 'नंनो'।
नांनकसाही–वि० गुरु नानक मे सबध रखने वाला। –पु० गुरु नानक का शिष्य या अनुयायी।
नांनकियो–१ देखो 'नंनो'। २ देखो 'नानो'। **—साही**= 'नानकसाही'।
नानडियो, नानड़ो–१ देखो 'नंनो'। २ देखो 'नानो'।
नांनत, नाननी–देखो 'लांणत'।
नांनपारचा–पु० [देश०] रोटी कपडा।
नांनसराव–पु० नाना के लिये किया जाने वाला श्राद्ध विशेष।
नांनसरो–पु० १ नांनी-सासरो। २ नानी ससुर।
नानाणियो–वि० ननिहाल का, ननिहाल सबधी।
नानांणो–पु० ननिहाल।
नांना–वि० [स० नाना] १ अनेक बहुत। २ विभिन्न, विविध। ३ विविध भाति के।
नांनियो–१ देखो 'नंनो'। २ देखो 'नानो'।
नानी–स्त्री० १ मां की माता, नानी। २ देखो 'नंनी'। **—बाई**='नेनीबाई'।
नानीसासरो–पु० पति या पत्नी का ननिहाल।
नानीसासू–स्त्री० पति या पत्नी की नानी।
नानीसुसरो–पु० पति या पत्नी का नाना।
नानु, नानू–१ देखो 'नंनो'। २ देखो 'नानो'।
नानेरो–पु० ननिहाल।
नांनो–पु० (स्त्री० नानी) १ माता का पिता। २ देखो 'नंनो'।
नांन्यो, नान्हउ, नान्हकडो, नान्हकियो, नान्हडियउ, नान्हडो, नान्हडियउ, नान्हरियो, नान्हियो, नान्होयो, नान्हू, नान्हो–देखो 'नंनो'। (स्त्री० नान्ही)
नांबरी–देखो 'नामवरी'।
नांमजूर–वि०[फा०] १ न कबूला हुआ, नकारा हुआ, अस्वीकृत। २ अमान्य।
नाम, नामउ–पु० [स० नामन्] १ वह शब्द या शब्द समूह जिससे किसी व्यक्ति, प्राणी, समूह आदि का बोध हो, सज्ञा, अभिख्या। २ ख्याति, प्रतिष्ठा, कीर्ति। ३ बकाया रकम का इन्द्राज। ४ यादगार, स्मृति।
नामक–वि० [स० नामक] १ नाम वाला। २ नाम से प्रसिद्ध।
नामकम्म–देखो 'नामकरम'।
नामकरण–पु० [स० नामकरण] १ जन्म के पश्चात् बच्चे का नाम निश्चित करने का सस्कार। २ कोई नाम तय करने की क्रिया।
नांमकरम–पु० [स० नामकर्म] १ नामकरण सस्कार। २ कर्म का एक भेद (जैन)।
नामकीरत्तन–पु० [स० नामकीर्त्तन] ईष्ट के नाम का जप, कीर्त्तन, भजन।
नामको, नांमगो, नांमड़ियो, नामडो–देखो 'नाम'।
नामजद, नामजदीक, नांमजद्दी, नांमजाद, नामजादो, नांमजादीक–वि० [फा० नामजद] १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ मनोनीत।
नांमणो–वि० (स्त्री० नामणी) नमाने वाला, झुकाने वाला।
नामणो (बो)–क्रि० १ नमवाना, नमस्कार कराना। २ झुकाना, झुकवाना। ३ अधीनस्थ करना, मातहत करना। ४ तरल पदार्थ को पात्र मे डालना, उडेलना।
नामवार–वि० [फा०] १ नाम वाला। २ प्रसिद्ध, विख्यात।
नामदेव–पु० दर्जी जाति के एक प्रसिद्ध संत जिनका उल्लेख भक्तमाल मे आता है।
नांमद्वादसी–स्त्री० [स० नामद्वादशी] बारह देवियो के पूजन का एक व्रत।
नामधन–पु० [स० नामधन] १ एक सकर राग विशेष। २ ईश्वर भक्ति की पूजी।

नामधारक–वि० [स० नामधारक] १ केवल नाम वाला ही, नाम के अनुसार गुण वाला नही। २ नाम धरने वाला।
नामधारी–वि० [स० नामधारिन्] १ जिसका कोई नाम हो, नाम वाला। २ प्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त।
नामधेई, नामधेय–पु० [स० नामधेय] नाम निर्देशक शब्द।
नामनिक्खेब, नामनिक्षेप, नामनिक्षेपौ, नामनिखेव–पु० [स० नामनिक्षेप] गुण के अनुसार नामकरण।
नाममाळका, नाममाळा, नांममाळिका–स्त्री० [स० नाममालिका] १ नामो की सूची, कोश। २ बहत्तर कलाओ मे से एक।
नामरद–वि० [फा० नामर्द] १ पु सत्वहीन, नपु सक। २ हिजडा। ३ कायर, भीरु।
नामरदी–स्त्री० [फा० नामर्दी] १ पु सत्वहीनता, नपु सकता २ हिजडापन। ३ कायरता, भीरुता।
नामरूप–पु० [स० नामरूप] नाम से ही जानी जाने वाली अगोचर वस्तु।
नामवर–वि० [फा० नामवर] ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध, नामी।
नामवरी–स्त्री० [फा० नामवरी] ख्याति, प्रसिद्धि। कीर्ति।
नामवाळौ, नांमसाद–वि० [स० नाम-साद] १ नाम वाला, नामी। २ प्रसिद्ध, कीर्तिवान।
नामसेस–वि० [सं० नामशेष] १ नाम मात्र। २ मृत प्राय।
नामा–वि० [स० नामा] १ नाम धारी, नाम वाला। २ नामी, प्रसिद्ध। –स्त्री० कीर्ति, प्रशसा।
नामाकूळ–वि० [फा० ना-माकूल] १ अनुचित। २ अयोग्य। ३ नालायक।
नामाजोड, नामाजोडौ–पु० विवाह से पूर्व वर-वधू की जन्म कुण्डलियो को मिलाने की क्रिया या भाव।
नांमाणौ (बौ)–देखो 'नमाणौ' (बौ)।
नांमारूम–वि० [देश०] बेचैन, व्याकुल, विकल।
नामालय–पु० [स० नामालय] बहत्तर कलाओ मे से एक।
नामालूम–वि० [फा०] जो मालूम न हो, जिसकी खबर न हो। अज्ञात।
नामावणौ (बौ)–देखो 'नमाणौ' (बौ)।
नामावळी–स्त्री० [स० नामावली] १ नामो की सूची। २ राम नाम छपा ओढने का वस्त्र।
नामि–देखो 'नामी'।
नांमित–देखो 'निमित्त'।
नांमी–वि० [स० नामिन्] १ नामवाला, नामधारी। २ प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर। ३ उत्तम, श्रेष्ठ, बढिया। ४ जबरदस्त, महान्, बडा। ५ सुन्दर। ६ जो ठीक न हो, बुरा। ७ उचित, यथावत। –पु० [स० नमि] विष्णु, नारायण। **—गिरामी, गामी, ग्रामी**–वि० मशहूर, प्रसिद्ध।
नांमु–१ देखो 'नाम'। २ देखो 'नामी'।
नामू, नामू–१ देखो 'नाम'। २ देखो 'नामी'।
नांमूद, नामून–पु० [स० नामन्] नाम, प्रसिद्धि, यश। –वि० प्रसिद्ध, विख्यात।
नामे'क–वि० [स० नामन्-एक] किंचित् थोडा। जरासा।
नांमेदार–वि० हिसाब रखने वाला।
नांमोसी–स्त्री० [फा० नामूसी] १ बदनामी, अपकीर्ति, निंदा। २ अनादर, बेइज्जती। ३ नासमझी, मूर्खता।
नांमौ–पु० [स० नामन्] १ अभिलेख, लिखावट। २ लेन-देन का लेखा। बही खाते का कार्य। ३ देखो 'नाम'।
नारतौ–देखो 'नवरात्र'।
नारा–देखो 'नौरा'।
नारौ–देखो 'नौहरौ'।
नाळी–देखो 'नौळी'।
नांव, नांवडौ–देखो 'नाम'।
नावजाद, नावजादी, नावजादीक–देखो 'नामजद'।
नांवणौ, (बौ)–क्रि० १ चलाना, खेना। २ उडेलना, डालना। ३ देखो 'नामणौ (बौ)।
नावदेव–देखो 'नामदेव'।
नाह, नाहि, नांही–देखो 'नही'।
ना–पु० [स० नृ] १ मनुष्य, नर। २ मुख। –स्त्री० ३ वनिता। ४ अस्वीकृति, मनाही, इन्कारी। –अव्य० १ निषेध सूचक ध्वनि। २ द्वितीया विभक्ति या कर्मकारक का चिह्न, को।
ना'–१ देखो 'नाथ'। २ देखो 'नाभि'। ६ देखो 'नाह'।
नाअर–देखो 'नाहर'।
नाइ–देखो 'नाई'।
नाइक–देखो 'नायक'।
नाइतफाकी–स्त्री० [फा० नाइत्तिफाकी] १ विरोध, फूट। २ असयोग।
नाइन–देखो 'नायण'।
नाइब–देखो 'नायब'।
नाइबी–देखो 'नायबी'।
नाई–पु० [स० नापित] (स्त्री० नायण) १ बाल काटने, हजामत बनाने आदि का कार्य करने वाला वर्ग व इस वर्ग का व्यक्ति। हज्जाम। –स्त्री० २ हल के बांध कर बीज बोने का उपकरण विशेष। बीजनी। ३ बैलगाडी के पहिये पर लगने वाला डडा। ४ देखो 'नाई'। **—बधणौ**–स्त्री० हल से बीजनी बांधने की रस्सी।
नाउ, नाउ, नाऊ, नाऊ–१ देखो 'नाम'। २ देखो 'नाई'।
नाओलाद, नाऔलाद–वि० [फा०] जिसके कोई सतान न हो, निस्सन्तान।
नाकद–वि० [फा० ना-कद] अशिक्षित, अल्हड।

नाक, नाकडलो–पु० [स० नक्रम्] १ सूघने व सास लेने की इन्द्रिय, नासिका । २ इज्जत, प्रतिष्ठा । [स० नाक] ३ स्वर्ग । ४ आकाश । —**नटी**–स्त्री० स्वर्ग की अप्सरा । —**पत, पति**–पु० स्वर्ग का राजा, इन्द्र । —**फूली**–स्त्री० नाक का आभूषण विशेष ।

नाक्दर–वि० [फा० ना+कद्र] १ जिसकी कद्र या इज्जत न हो । २ जो किसी की कद्र न करता हो ।

नाक्दरी–स्त्री० [फा० नाकद्री] १ बेइज्जती, अनादर । २ अप्रतिष्ठा ।

नाकबूल–वि० [फा०] अस्वीकार, नामजूर ।

नाकबूली–स्त्री० अस्वीकृति ।

नाकवा'–स्त्री० नौका, नाव ।

नाकाम–वि० [फा०] असफल, बेकार, निरर्थक ।

ना'का–देखो 'नामका' ।

नाकादार–देखो 'नाकेदार' ।

नाकाबदी–स्त्री० १ किसी क्षेत्र विशेष के रास्तों पर की जाने वाली रोक । २ उक्त प्रकार की रोक के लिए तैनात सिपाही । ३ चौकीदारी ।

नाकाबिल–वि० १ अयोग्य । २ अनुपयुक्त । ३ अशिक्षित ।

नकार, नाकारउ–वि० १ कृपण, कजूस । २ बुरा, खराब । ३ निकम्मा । ४ देखो 'नकार' ।

नाकारणौ, (बौ)–क्रि० १ इन्कार, करना, नामजूर या अस्वीकार करना । २ वर्जना, मना करना ।

नाकारो–देखो 'नकार' ।

नाकासरण–पु० [स०] १ इन्द्र का आसन । २ नाक का मल ।

नाकी–पु० [स० नाकिन्] १ देवराज, इन्द्र । २ देव, सुर । ३ देव जाति विशेष । –स्त्री० ४ इज्जत, प्रतिष्ठा । ५ मर्यादा । ६ डोरे या रस्सी का छोटासा फदा । ७ बटन लगाने का छेद । –वि० इज्जत रखने वाला ।

नाकूडियो, नाकूडो–पु० [स० नाक कुडिक] १ गौवत्स के नाक मे पहनाने का काष्ठ का चन्द्राकार उपकरण । २ पशुओ के नाक का एक रोग विशेष । ३ देखो 'नाक' ।

नाकू–पु० दीमक द्वारा निर्मित मिट्टी का ढेर ।

नाकेदार–पु० [फा०] १ मुख्य द्वार पर तैनात चौकीदार । २ चुगीकर वसूल करने वाला कर्मचारी । ३ सीमा का रक्षक । –वि० जिसमे नाका या छेद हो ।

नाकेबदी–देखो 'नाकाबदी' ।

नाकेल, नाकेलियो, नाकोलियो–१ देखो 'नकेल' । २ देखो 'नाको' ।

नाको–पु० [देश०] १ किसी नगर, वस्ती या राज्य की सीमा मे प्रवेश करने के रास्ते का छोर, शिरा । २ किसी वस्तु का छोर, शिरा । ३ किनारा, छोर । ४ रास्ते का अन्तिम भाग । ५ सीमा, हद । ६ किसी आभूषण या उपकरण मे डोरा आदि डालने का नुक्का या छेद । ७ रस्सी का छोटा, फदा । ८ साहस, हिम्मत, शक्ति । ९ देखो 'नाक' ।

नाखणौ (बौ)–देखो 'नाखणौ' (बौ) ।

नाखत, नांखत्र, नाखित्र–देखो 'नक्षत्र' । —**माळा**='नक्षत्रमाळ' ।

नाखून–पु० [फा० नाखून] नख, नाखून ।

नागंद, नागद्र–पु० [स० नाग-इन्द्र] १ इन्द्र, देवराज । २ उत्कृष्ट या श्रेष्ठ हाथी । ३ ऐरावत । ४ शेषनाग । ५ देखो 'नागेंद्र' । ६ देखो 'नागद्रह' ।

नाग–पु० [स०] (स्त्री०नागण, नागणी) १ सर्प, साप । २ कश्यप व कद्रू की सतान । ३ शेषनाग । । ४ सर्प की एक जाति विशेष जो ऊपर से मानव व नीचे सर्प होता है । ५ हाथी, गज । ६ ऐरावत । ७ काजल । ८ जल जीव, शार्क । ९ ज्योतिष के चार स्थिर करणो मे से तीसरे करण का नाम । १० शरीरस्थ दश प्रकार के वायु मे से छठा वायु । ११ सीमा नामक धातु । १२ एक प्राचीन राज वश । १३ नाग केसर । १४ एक मानव जाति विशेष । १५ अश्लेषा नक्षत्र । १६ नौ की सख्या* । १७ आठ की सख्या* । १८ कालीद्रह का नाग । १९ नागौर शहर का नामान्तरण । २० निष्ठुर व्यक्ति । २१ कोई प्रसिद्ध पुरुष । २२ बादल । २३ खूटी । २४ ग्यारह की संख्या* । —**कन्या**–स्त्री०–नाग जाति की लडकी ।

नागउर–देखो 'नागौर' ।

नागकद–पु० [स०] हस्तिकद ।

नागकुळसंकेत–पु० नागवश की विरुदावली ।

नागकेसर, (केसरी)–पु० [स०] एक सदाबहार वृक्ष जिसके पुष्प औषधि मे काम आते हैं ।

नागखंड–पु० भारत का एक उप खण्ड जहा प्राचीन काल मे नागो का राज्य था ।

नागड, नागड़ियो, नागडो– १ देखो 'नाग' । २ देखो 'नागो' ।

नागचपो–पु० [स० नागचपक] नाग चपा ।

नागचूड–पु० [स०] शिव; महादेव ।

नागछतरी–स्त्री० कुकुरमुत्ता नामक पौधा ।

नागछोर–पु० अफीम ।

नागज–पु० [स०] १ सिंदूर । २ वग ।

नागजादी–स्त्री० नागकन्या ।

नागझाग–पु० अफीम ।

नागड–पु० १ एक वाद्य विशेष । २ देखो 'नागो' ।

नागण, (णि, णी)–स्त्री० [स०नागिनी] १ मादा सर्प, नागिन । २ नाग जाति की स्त्री । ३ कुल्टा एवं दुष्ट स्त्री ।

४ नाग की तरह बनी रोमावली । ५ बैल, घोडे आदि की पीठ पर होने वाली भौंरी । ६ एक प्रकार की तलवार ।

नागरोच, नागरोचियां, नागणेची–स्त्री० राठौडो की कुल देवी, चक्रेश्वरी ।

नागदमरण, नागदमनी–स्त्री० [स० नागदमनी] १ नागदौने का पौधा जो औषधि मे काम आता है । २ एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

नागदह, नागदहो, नागदो, नागद्रह नागद्रही, नागद्रहो, नागद्रेह–पु० [सं० नागहृद] । १ मेवाड मे एकलिंगजी के स्थान के पास का एक जलाशय । २ इस जलाशय के पास बना बापा रावल का समाधि स्थान । ३ इसके पास बसा एक गाव ४ इस गांव से निकला एक ब्राह्मण वर्ग । ५ प्राचीन भारत का एक प्रदेश । ६ यमुना मे काली नाग के रहने का स्थान । ७ सिसोदियो की एक उपाधि ।

नागद्वीप–पु० [स०] प्राचीन भारत के नौ भागो मे से एक ।

नागधर–पु० [स०] शिव, महादेव ।

नागध्रह, नागध्रहो–देखो 'नागद्रह' ।

नागनाथ–पु० [स०] १ नाग को नाथने वाले श्रीकृष्ण । २ जोगियो के रावलो के आदि पुरुष ।

नागपचमी–स्त्री० [स०] श्रावण शुक्ला पंचमी ।

नागपति (त्ति)–पु० [स०] १ सर्पराज वासुकि । २ ऐरावत हाथी ।

नागपतिफेरण–पु० [स नागपतिफेन] एक मादक द्रव्य, अफीम ।

नागपाचम–देखो 'नागपचमी' ।

नागपा'ड–पु० [स० नाग-पाषाण] अरावली पहाड का एक भाग ।

नागपास–स्त्री० [स० नाग पाश] शत्रुओं को बाधने का, वरुण का एक अस्त्र, फदा ।

नागपुत्री–स्त्री० [सं०] नागकन्या ।

नागपुर–पु० [स०] १ नागलोक । २ मध्य भारत का एक नगर । ३ नागौर का एक नाम ।

नागपुरी–स्त्री० [स०] १ पाताल का नागलोक, भोगवती । २ देखो 'नागपुर' ।

नागपोलरी–स्त्री० एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

नागफरणी–स्त्री० १ एक शाक विशेष । २ थूहर जाति का एक पौधा विशेष ।

नागफूली–पु० स्त्रियो का एक आभूषण विशेष ।

नागफेरण (न)–पु० [स०] अफीम ।

नागबला–पु० [स०] एक वृक्ष विशेष ।

नागबाई–स्त्री० चारण-कुलोत्पन्न एक देवी ।

नागबेच–पु० बढई द्वारा लकडी में किया गया एक छेद विशेष ।

नागबेरणी–स्त्री० एक देवी का नाम ।

नागभगिनी–स्त्री० [स०] सर्पराज वासुकि की बहन ।

नागभाखा–स्त्री० [स०] एक प्राचीन भाषा ।

नागभुवरण (न)–पु० [स० नाग भवन] नागलोक, पाताल ।

नागम–पु० [फा०] १ अज्ञानावस्था । २ छुट्टी, अवकाश ।

नागमरोड–पु० [स०] कुश्ती का एक पेच विशेष । दाव ।

नागमाता–स्त्री० [स०] १ नागो की माता कद्रू । २ सुरसा ।

नागमुख–स्त्री० [स०] गजानन, गणेश ।

नागरग–स्त्री० नारगी नामक फल ।

नागर–पु० [स०] १ सभ्य, शिष्ट व्यक्ति । २ चतुर व्यक्ति । ३ स्वामी, मालिक । ४ ईश्वर, प्रभु । ५ नगर का निवासी ६ नागर मोथा । ७ सोठ । ८ गुजराती ब्राह्मणो की एक जाति । ९ देवर –स्त्री० १० पनिहारी । ११ नारगी । १२ थकावट । १३ अज्ञानता । –वि० १ नगर सबधी, नगर का । शिष्ट । ३ चतुर । ४ चालाक, धूर्त । ५ बुरा, खराब ।

नागरता–स्त्री० [स०] १ चतुराई, निपुणता । २ शिष्टता । ३ व्यवहार कुशलता । ४ नागरिकता ।

नागरबेळ, नागरबेलडी, नागरबेलि, नागरबेली–स्त्री० [स० नागवल्ली] ताम्बूल की बेल, लता ।

नागरमुस्ता, नागरमोथा–पु० [स० नागर मुस्ता] एक प्रकार की घास या तृण जिसकी जडें औषधि मे काम आती हैं ।

नागरवेल, (वेलडी, वेलि, वेली)–देखो नागरवेल' ।

नागराइ, नागराज, नागराव–पु० [स० नागराज] १ शेषनाग । सर्पराज वासुकि । ३ बडा व शक्तिशाली सर्प । ४ हाथियो मे बडा व श्रेष्ठ हाथी । ५ ऐरावत । –वि० १ श्वेत, सफेद* । २ काला, श्याम* ।

नागरिक–पु० [स०] १ नगर का निवासी । २ सभ्य पुरुष । ३ किसी देश या राष्ट्र का मूल निवासी । ४ वह व्यक्ति जिसे किसी देश की नागरिकता व मताधिकार प्राप्त हो । ५ कारीगर । ६ पुलिस का प्रधानाध्यक्ष । –वि० १ नगर का, नगर सबधी । २ चतुर, सभ्य, शिष्ट । ३ जिसमे नगर के समस्त गुण-दोष आ गये हो ।

नागरी–स्त्री० [स०] १ सस्कृत व हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध लिपि, देवनागरी लिपि । २ नगर मे रहने वाली स्त्री । ३ चतुर स्त्री । ४ चालाक व धूर्त स्त्री । ५ स्नुही का पौधा, थूहर । ६ देखो 'नगरी' ।

नागरी मासी–स्त्री० एक प्रकार का जीव ।

नागलता–स्त्री० [स०] पान की वेल, ताम्बूल की वेल ।

नागला–स्त्री० एक प्रकार का आभूषण ।

नागलोक–पु० [स०] पाताल ।

नागवट–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

नागवल्लरी, नागवल्ली–स्त्री०[स०]१ पान, ताम्बूल । २ ताम्बूल की लता ।

नागवाड–देखो 'नागपा'ड' ।

नागवार–वि० [फा०] अप्रिय, असह्य ।

नागवी–देखो 'नागबाई' ।

नागवीथी–स्त्री० [स०] शुक्र-ग्रह की चाल मे वह मार्ग जो स्वाती, भरणी और कृतिका नक्षत्रो मे हो ।

नागवेल–देखो 'नागवल्ली' ।

नागसुद्धि–स्त्री० [स० नागशुद्धि] भवन की नीव लगाते समय नाग की स्थिति का विचार ।

नागहथ–पु० स्त्रियो का एक आभूषण विशेष ।

नागहारी–वि० [स०] सर्पों का हार पहनने वाला । –पु० रुद्र, महादेव ।

नागांण (णौ)–पु० १ हाथी, गज । २ मारवाड का एक कस्बा, नागौर ।

नागांणण–पु० [स० नागानन] हाथी के मुह वाला, गणेश, गजानन ।

नागाणराइ (राय)–स्त्री० राठौडो की कुलदेवी, नागणेची ।

नागातक–पु० [स०] १ रावण का एक पुत्र । २ गरुड, खगेश । ३ सिंह ।

नागापति–पु० [सं० नागपति] १ शिव, महादेव । २ शेषनाग । ३ ऐरावत ।

नागा–स्त्री० [अ० नाग, स० लघा] १ अनुपस्थिति, गैर हाजरी । २ नियमित चलने वाले कार्य का क्रम भग, अन्तर । ३ एक जंगली जाति । ४ दादूपथी साधुओ की एक शाखा ।

नागाई–स्त्री० १ शरारत, बदमाशी, उद्दण्डता । २ नटखटपना, चचलता । ३ ज्यादती । ४ बुरी वृत्ति, खोटाई । ५ देखो 'नागबाई' ।

नागाणद–पु० [स० नग्न-आनन्द] शिव, महादेव ।

नागाणण–देखो 'नागांणण' ।

नागारजण, नागारजुण (न)–पु० [स० नागार्जुन] एक प्रसिद्ध बौद्ध महात्मा ।

नागारो–१ देखो 'नगारो' । २ देखो 'नकार' ।

नागासन–पु० [स० नागाशन] १ गरुड, खगेश । २ मयूर, मोर । ३ सिह, शेर ।

नागास्त्र–पु० [स०] एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

नागिंद, नागिंद्र–देखो 'नागेंद्र' ।

नागिणी–देखो 'नागण' ।

नागींद, नागींद्र–देखो 'नागेंद्र' ।

नागी–वि० [स० नग्ना] १ वस्त्रहीना, निर्वसना, नग्न, नगी । २ कुल्टा व्यभिचारिणी । ३ बेशर्म, निर्लज्ज । ४ स्वभाव से क्रूर, उग्र । ५ निरावरण, खुली ।

नागीगायत्री–स्त्री० एक वैदिक छन्द ।

नागीणौ–पु० मारवाड के नागौर शहर का नाम ।

नागु–देखो 'नागो' । (स्त्री० नागी)

नागुड–पु० [देश०] नक्कारची के साथ रहने वाला व्यक्ति ।

नागेंदर, नागेंदु, नागेंद्र–पु० [स० नागेंद्र] १ सर्प राज वासुकि । २ शेषनाग । ३ बडा सर्प । ४ ऐरावत । ५ बडा हाथी । ६ शिव, महादेव ।

नागेस, नागेसर, नागेस्वर–पु०[सं० नागेश नागेश्वर] १ शेषनाग । २ सर्पराज वासुकि । ३ लक्ष्मण । ४ ऐरावत । ५ देखो 'नाग' । ६ नागकेसर । ७ देखो 'नागो' ।

नागोद–पु० [स०] १ उदर पर पहनने का कवच । उदरत्राण । २ मीनबद कवच ।

नागोर–पु० राजस्थान का एक कस्बा । —**पटी, पट्टी**–स्त्री० नागोर का क्षेत्र, आस-पास का भू-भाग ।

नागोरण–स्त्री० दक्षिण व पश्चिम के मध्य चलने वाली वायु । –वि० नागोर की, नागोर सबधी ।

नागोरियौ, नागोर्यो–देखो 'नागोरी' ।

नागोरी–वि० नागोर का, नागोर सबधी । –स्त्री० १ बैलो की एक उत्तम नस्ल । २ मुसलमानो का एक भेद । —**गहणौ, गं'णौ**–पु० हथकडी ।

नागो–वि० [स० नग्न] (स्त्री० नागी) १ वस्त्रहीन, नगा । २ चालाक, धूर्त । ३ उद्दण्ड, बदमाश । ४ नटखट, चचल । ५ जिसने अधोवस्त्र नही पहना है । ६ लडाकू, कलहप्रिय । ७ निर्लज्ज, बेशर्म । ८ निरावरण । ९ जबरदस्त, जोरदार । –पु० १ शैव साधुओ का वर्ग विशेष व इस वर्ग का साधु । २ आसाम के पूर्व मे रहने वाली एक मानव जाति विशेष । ३ गुरु नानक साहिब के पुत्र का अनुयायी साधु । ४ नाथ सम्प्रदाय का वह व्यक्ति जो अविवाहित हो । ५ दशनामी सम्प्रदाय का अविवाहित रहने वाला व्यक्ति । ६ दादूपथी सम्प्रदाय के नागा शाखा का साधु । —**तडग**–वि० बिल्कुल नग्न । –**बूचौ**–वि० परिवारहीन । साधनहीन । —**भूगौ, भूगो**–वि० दरिद्र, कगाल । नगा ।

नागोद्रहो–देखो 'नागद्रहो' ।

नागौर–देखो 'नागोर' । —**पटी, पट्टी**='नागोरपट्टी' ।

नागौरण–देखो 'नागोरण' ।

नागौरी, नागौरो–देखो 'नागोरी' ।

नाग्रंद–१ देखो 'नागेंद्र' । २ देखो 'नागद्रह' ।

नाघा–देखो 'नागा'।

नाड–स्त्री० [स० नाडी] १ ग्रीवा, गर्दन। २ देखो 'नाडी'।

नाडकियौ–देखो 'नाडौ'।

नाडकी–१ देखो 'नाडी'। २ देखो 'नाड'।

नाडा-टाकरण–स्त्री० [देश०] आषाढ व श्रावण मास मे दक्षिण व पश्चिम के मध्य से चलने वाली वायु।

नाडाली–स्त्री० १ बैलगाडी के अग्र भाग मे लगने वाली कील विशेष। २ चमडे का रस्सा।

नाडि–देखो 'नाडी'। —**व्रण**='नाडीव्रण'।

नाड़ी–स्त्री० [स० नाडि] १ रक्त धमनी, नस, रग। २ हठ योग की इडा, पिंगला व सुषुम्ना नाडिया। ३ चमडे की रस्सी। ४ हाथी की अवारी बाधने का रस्सा। ५ नौ की सख्या*। ६ वर-वधू की गणना बैठाने मे कल्पित चक्रो मे स्थित नक्षत्र समूह। ७ देखो 'नाड'। —**चक्र**–पु० नक्षत्रो के भेदो को सूचित करने वाला चक्र। सभी नाडियो का केन्द्र एक अडाकार ग्रथि। —**जत, जोत**–वि० दृढ, मजबूत। —**तोड**–वि० शक्तिशाली, बलवान। —**धमण**–स्वर्णकार, सुनार। —**व्रण**–पु० नासूर, भगन्दर। —**नक्षत्र**–पु० वर-वधू की गणना बैठाने का नक्षत्र।

नाडौ–पु० [स० नाडि] १ पाजामा आदि अधोवस्त्र बाधने की डोरी। २ हल की हरिसा पर भूसर बांधने का चमडे का रस्सा। ३ डोरा। ४ देखो 'नाळौ'।

नाच–पु० [स० नृत्य] नृत्य। —**कूद**–पु० नृत्य, तमाशा। उद्दण्डता। —**घर, महल**–पु० नृत्यशाला। —**रग**–पु० हसी-खुशी, आमोद-प्रमोद के कार्य।

नाचक–वि० [स०] नर्तक, नाचने वाला।

नाचण (णि, णी)–स्त्री० [स० नर्तन] १ नाचने की क्रिया या भाव, नृत्य। २ नाचने वाली, नर्तकी। ३ वेश्या, रडी। ४ कुल्टा व वेशर्म स्त्री।

नाचणौ–पु० [स० नर्तन्] नाचने की क्रिया या भाव, नृत्य। –त्रि० (स्त्री० नाचणी) नाचने वाला।

नाचणौ (बौ), नाचवणौ (बौ)–क्रि० [स० नृत्] १ ताल-स्वर व वाद्य पर नृत्य करना, नाचना। २ अत्यन्त खुशी मे उछलना, कूदना, उमगित होना। ३ कापना, थर्राना। ४ निरन्तर घूमना या हिलना-डुलना। ५ चचल होना, उद्विग्न होना। ६ कार्य सिद्धि के लिए भाग-दौड करना। ७ उद्दण्डता करना, बदमाशी करना।

नाचिकेता–पु० [स० नाचिकेत] १ अग्नि, आग। २ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र।

नाचीज–वि० [फा०] निकृष्ट, तुच्छ।

नाचेली–देखो 'नाचण'।

नाछत्री–वि० क्षत्रियत्वहीन।

नाज–पु० [फा०] १ गर्व, घमड। २ स्वाभिमान। ३ नखरा, ठसक। ४ चोचला। ५ देखो 'अनाज'।

नाजक, नाजकड़ौ–देखो 'नाजुक'।

नाजकता–देखो 'नाजुकता'।

नाजम–पु० [अ० नाजिम] १ बादशाह का एक कर्मचारी विशेष। २ प्रवन्धक। ३ मत्री, सचिव।

नाजर, नाजिर–पु० [अ० नाजिर] १ एक प्रकार का सरकारी कर। २ एक कर्मचारी। ३ दर्शक। ४ खोजा, हिजडा। ५ कार्यालय का प्रधान लिपिक। ६ निरीक्षक। ७ रडियो का दलाल।

नाजुक, नाजुकड़ौ–वि० [फा०] १ सुकुमार, कोमल। २ मृदुल, मुलायम, नर्म। ३ हल्का-फुल्का, फारिक। ४ महीन, बारीक, पतला। ५ सूक्ष्म। ६ अपरिपक्व, कच्चा। ७ कठिन, दुरूह। ८ अधिक तकनीकी। ९ जल्दी टूटने या नष्ट होने लायक। १० क्षीण, कमजोर। ११ तीव्र, तेज। १२ उलझन भरा। —**दिमाग**–वि० घमण्डी, गर्विला, चिडचिडा, तुनक मिजाज।

नाजुकता–स्त्री० [फा०] १ सुकुमारता, कोमलता। २ मृदुलता, मुलायमी, नर्मी। ३ हल्कापन। ४ महीनता, बारीकी। ५ सूक्ष्मता। ६ कच्चापन। ७ कठिनता। ८ दृढता की कमी। ९ क्षीणता।

नाजुक-बदन–वि० [फा०] १ सुकुमार, कोमल। २ दुबला, कृश। ३ नर्म, मुलायम।

नाजुकबदनी–स्त्री० [फा०] १ कोमलता, सुकुमारता। २ दुबलापन। ३ नर्मी, मुलायमी।

नाजुक-मिजाज–वि० [फा०] १ स्वभाव से चिडचिडा, तुनक मिजाज। २ असहिष्णु। ३ घमण्डी, अभिमानी। ४ कोमल।

नाजुकमिजाजी–स्त्री० [फा०] १ चिडचिडापन, तुनक मिजाजी। २ सुकुमारता, कोमलता। ३ घमण्ड, अभिमान।

नाजोग, नाजोगौ–वि० अयोग्य, निकम्मा।

नाजोर, (रौ)–वि० [फा०] शक्तिहीन, निर्बल।

नाजोरी–स्त्री० [फा०] कमजोरी, निर्बलता।

नाट–पु० [देश०] १ इन्कारी, निषेध, मनाही। २ नृत्य, नाच ३ एक राग विशेष। ४ देखो 'नट'।

नाटईउ–पु० [देश०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

नाटक–पु० [स०] १ किसी कथानक का रगमच पर किया जाने वाला अभिनय। २ हाव-भाव प्रदर्शन। ३ विचित्र लीला, क्रीडा। ४ नृत्य, नाच। ५ दृश्य काव्य। ६ अभिनय ग्र थ। ७ अभिनेता, नट। ८ बहत्तर कलाओ मे से एक।

९ स्वाग। १० ढोग, पाखण्ड। —**साळा**—स्त्री० जहा पर नाटक की व्यवस्था होती है, नाट्यशाला।

नाटकणी, नाटकिणी—स्त्री० नाटक या अभिनय करने वाली स्त्री।

नाटकी—वि० नाटक करने वाला, नाटक करके जीवन यापन करने वाला।

नाटणौ (बौ)—१ देखो 'नटणौ'(बौ)। २ देखो 'नाटणौ' (बौ)।

नाटरभ—देखो 'नाटारभ'।

नाटवसत—स्त्री० एक राग विशेष।

नाटवाळ—वि० [देश०] कृपण, कजूस, सूम।

नाटसल, (सल्ल, साळ)—वि० [स०नृष्टि-शल्य] १ खटकने व चुभने वाला। २ वीर, योद्धा। ३ बलवान, शक्तिशाली। —पु० भय, आतक।

नाटारभ, नाटारभि—वि० [स० नाट्य-आरभ] नृत्य, नाच।

नाटी—वि० १ जबरदस्त, बलवान। २ छोटे कद की। —पु० एक प्रकार का वस्त्र।

नाटेसर—पु० [सं० नटेश्वर] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ ईश्वर। ४ नृत्य करने वाला, नर्तक। ५ देखो 'नटेस्वर'।

नाटौ—वि०[स०नत](स्त्री०नाटी) छोटे कद का, ठिगना। बौना।

नाट्य—पु० [स०] १ नाटक, अभिनय। २ नटो का कार्य। ३ नाच, सगीत। ४ चौसठ कलाओ मे से एक। —**अलंकार**—पु० नाटक का सौन्दर्य बढाने वाला अलकार।

नाठक—देखो 'नाटक'।

नाठणौ, (बौ)—देखो 'न्हाठणौ' (बौ)।

नाड, नाडकियौ, नाडकौ—देखो 'नाडौ'।

नाडकी—देखो 'नाडी'।

नाडणौ, (बौ)—देखो 'नडणौ' (बौ)।

नाडिका—स्त्री० एक घडी। एक घडी का समय।

नाडियौ—देखो 'नाडौ'।

नाडी—स्त्री० १ तालाब, जलाशय। २ देखो 'नाडी'। —**तोड**='नाडीतोड'।

नाडूलो नाडोलौ—देखो 'नाडौ'।

नाडौ—पु० [देश०] १ छोटा तालाब, पोखर। २ पानी से भरा खड्डा।

नां'णौ (बौ)—देखो 'न्हाणौ' (बौ)।

नात—देखो 'न्यात'।

नातणौ—पु० पानी छानने का वस्त्र, रूमाल, गमछा।

नातर—पु० [देश०] रक्त प्रदर।

नातरउ—देखो 'नातौ'।

नातरायत—स्त्री० १ वह जाति जिसमे स्त्रियो के पुर्नविवाह की प्रथा हो। २ पुर्नविवाह करने वाली स्त्री।

नातरिया—१ देखो 'नातरायत'। २ देखो 'चौरासिया'।

नातरूनातरौ—देखो 'नातौ'।

नातालाग—पु० विधवा विवाह पर लिया जाने वाला कर।

नाती—वि० [स० ज्ञाती] १ सबधी, रिश्तेदार। २ जाति का, न्यात का।

नातेदार—वि० १ रिश्तेदार, सबधी। २ पुर्नविवाह करने वाली जाति का।

नातेलौ—देखो 'नाती'।

नातौ, नात्र, नात्रौ—पु० [स० ज्ञाति] १ सबंध, रिश्ता। २ घनिष्ठता। ३ विधवा स्त्री द्वारा किसी पुरुष से पति के रूप मे किया जाने वाला सबध, रिश्ता। ४ उक्त कार्य पर लगने वाला सरकारी कर।

नाथ—पु० [स०] १ श्रीकृष्ण, गोपाल। २ विष्णु। ३ ईश्वर। ४ स्वामी, प्रभु, मालिक। ५ पति। ६ रक्षक, सरक्षक। ७ नेता। ८ पथ प्रदर्शक। ९ राजा। १० मत्स्येंद्रनाथ द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय। ११ इस सम्प्रदाय का साधु। १२ सन्यासी, योगी। १३ एक जाति। १४ इस जाति का व्यक्ति। —स्त्री० १५ बैल आदि के नाक मे डाली जाने वाली रस्सी, नकेल। १६ धुरी मे पहिया डाल कर आडी लगाई जाने वाली कील। १७ नौ की सख्या*। देखो 'नथ'। —**अनाथ**—पु० अशरण-शरण, ईश्वर। —**कढौ**—पु०नाथ निकाला हुआ बैल आदि। -**चिडिया**='चिडियानाथ' —**पूत**—पु० कामदेव, मदन। —**वाळ**—वि० नाथ डाला हुआ। अधीन, वशवर्ती। —**हर**—पु० वृषभ, बैल। हैवान।

नाथक—पु० [स०] स्वामी, राजा।

नाथण—वि० १ नाथ डालने वाला। २ वश मे करने वाला। —**काळी**—पु० श्रीकृष्ण।

नाथणौ (बौ)—क्रि० [स० नाथ्] १ बैल आदि के नाक मे छेद कर रस्सी डाल देना। २ काबू मे करना, वश मे करना। ३ किसी वस्तु को छेदकर डोरा डालना। ४ पिरोना, पोना। ५ उद्दण्ड व बदमाशो को सीधा करना।

नाथता, नाथत्व—पु० [स०] प्रभुता, स्वामित्व।

नाथदवारौ (दुवारौ, दूवारौ, द्वारौ)—पु० [स० नाथ-द्वार] उदयपुर के पास, बनास नदी पर बना श्रीनाथजी का एक प्रसिद्ध मदिर।

नाथावत—पु० [स० नाथ-पुत्र] १ सोलकी वश की एक शाखा व इसका व्यक्ति। २ कछवाहा वश की एक शाखा व इसका व्यक्ति।

नाथियउ, नाथियोड़ो–वि० १ नाथा हुआ, नकेल डाला हुआ। २ नत्थी किया हुआ, छेदा हुआ।

नाथी-रो-बाड़ो–पु० वेश्याओं का अड्डा, चकला।

नाथोत–पु० राठौडों की एक उप शाखा।

नाथो–वि० [सं० नाथ] १ नाथा हुआ। २ देखो 'नाथ'।

नादग–देखो 'नाद'।

नाद–पु० [सं०] १ ध्वनि, आवाज, शब्द। २ गर्जन, चीत्कार, चिल्लाहट। ३ सानुनासिक स्वर। ४ वर्णों के उच्चारण की क्रिया। ५ सगीत। ६ उद्घोष। ७ योनि, भग। ८ हरिण के सींग का बना बाजा। ९ गुरु मत्र। १० अनाहत शब्द। ११ अहकार, गर्व। १२ देखो 'न्याद'।

नादणबण, नादबण–पु० कपास।

नादमुद्रा–पु० [सं०] तत्र मे हाथ की एक मुद्रा।

नादर–१ देखो 'नाजर'। २ देखो 'नादिरसाह'।

नादरणो (बो)–क्रि० आदर, सत्कार नही करना।

नादरसा (साह)–देखो 'नादिरसाह'।

नादली–स्त्री० [अ० नाद-ए-अली] कुरान की आयत खुदी, तावीज या गडा।

नादांण, नादाणियो, नादाणी–देखो 'नादान'।

नादान–वि० [फा०] १ नासमझ, अबोध। २ मूर्ख। ३ अनजान।

नादानी–स्त्री० [फा० नादानी] नासमझी, मूर्खता।

नादार–वि० [फा०] १ निर्धन, गरीब। २ कायर, डरपोक। ३ देखो 'नाजर'।

नादारगी, नादारी–स्त्री० [फा० नादारी] १ निर्धनता, गरीबी। २ कायरता।

नादि–देखो 'नाद'।

नादिर–वि० [अ०] १ अनोखा, अद्भुत। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ देखो 'नाजर'।

नादिरसा, नादिरसाह–पु० [फा० नादिरशाह] फारस का एक क्रूर व शक्तिशाली बादशाह।

नादिरसाही–स्त्री० [फा० नादिरशाही] १ निरकुशता, क्रूरता। २ अत्याचार। ३ नादिरशाह की नीति व कार्य।

नादी–वि० [सं० नादिन्] ध्वनि करने वाला।

नादु–देखो 'नाद'।

नादेसुर–पु० [सं० नदीश्वर] १ शिव, महादेव। २ नदी।

नादैत–वि० आसुरी वृत्ति से रहित।

नादोत–पु० सिसोदिया वश की एक शाखा व इसका व्यक्ति।

नाप–स्त्री० [सं० मापनम्] १ किसी वस्तु या क्षेत्रादि की लबाई-चौडाई का परिमाण। २ नाप करने का उपकरण। ३ मापने की क्रिया या भाव।

नापणो (बो)–क्रि० [सं० मापन्] १ लबाई-चौडाई आदि का मान निकालना, परिमाण निकालना। २ परिमाण का अदाज करना, निर्धारित करना। [सं० न – अर्पणम्] ३ नहीं देना, नही अर्पण करना।

नाप-तौल–पु० १ नापने या तोलने की क्रिया या भाव। २ नाप या तौल का परिमाण।

नापसद–वि० १ जो अच्छा न लगे, पसद न हो। २ अरुचिकर, अप्रिय। ३ जो ठीक न लगे।

नापाक–वि० [फा०] १ अपवित्र, अशुद्ध। २ मैला-कुचैला।

नापाकी–स्त्री० [फा०] अपवित्रता, अशुद्धता।

नापित–पु० [सं०] नाई, हज्जाम।

नाफ–स्त्री० [फा०] नाभि, तोंदी।

नाफरम, नाफुरम–पु० [फा० ना'-फरमान] एक प्रकार का पौधा।

नाफेरी–देखो 'नफेरी'।

नाफो–पु० [फा० नाफ] मृग-नाभि मे होने वाली कस्तूरी की थैली।

नाबाळक–देखो 'नाबालिग'।

नाबाळकी–देखो 'नाबाळिगी'।

नाबाळग–देखो 'नाबाळिग'।

नाबाळगी–देखो 'नाबाळिगी'।

नाबाळिग–वि० [फा०] १ अवयस्क, अबोध। २ कानून द्वारा वयस्क होने के लिए निश्चित उम्र से कम।

नाबाळिगी–स्त्री० [फा०] १ अवयस्क या अबोध अवस्था। २ कानूनी वयस्कता से कम उम्र।

नाबी–स्त्री० [देश०] मानवी चित्र चित्रित करने का उपकरण।

नाबूद–वि० [फा०] १ ध्वस्त, बर्बाद, नष्ट। २ लुप्त, गायब। ३ नश्वर।

नाबेडो–पु० [देश०] हाथ की अगुली के नाखून का फोडा।

नाभग–देखो 'नाभाग'।

नाभ–देखो 'नाभि'।

नाभकज–पु० [सं० नाभि कज] जिसकी नाभि मे कमल है, विष्णु।

नाभकवळ (कमळ, कवळ)–पु० [सं० नाभि कमल] तंत्र के अनुसार शरीरस्थ छ चक्रों मे से एक, मणिपुर।

नाभनद–पु० [सं० नाभिनद] जैनियो के प्रथम तीर्थ कर।

नाभाग–पु० [सं०] १ राजा भगीरथ का पौत्र एक सूर्यवशी राजा। २ मार्कण्डेय पुराण के कारुप वश के राजा, जो दिष्ट के पुत्र थे।

नाभादास–पु० डूम जाति के प्रसिद्ध सत, जिन्होंने भक्तमाल की रचना की थी।

नाभारत–स्त्री० [स० नाभ्यावर्त] घोडे की नाभि के नीचे होने वाली भौंरी ।

नाभि (नाभी)–स्त्री० [स०] १ जरायुज प्राणियो के पेट के बीच का छोटा गड्ढा या चिह्न, तुदी । २ पहिये का मध्य भाग । ३ कस्तूरी । ४ प्रधान, नेता । ५ समीप की नातेदारी । ६ क्षत्रिय । ७ घर । ८ जैनियो के ग्रादि तीर्थकर के पिता । —**कवळ, कमळ, कवळ**='नाभकवळ' । —**नरिंद**–पु० ऋषभदेव के पिता का नाम । —**पाक**–पु० बालको की नाभि मे होने वाला एक रोग । —**राय**='नाभिनरिंद' । —**वरस**–पु० भारतवर्ष का एक नाम । —**सभव**–पु० ब्रह्मा । —**सुत**–पु० ऋषभदेव ।

नाभो–देखो 'नाभादास' ।

नाय–१ देखो 'न्याव' । २ देखो 'नाई' । ३ देखो 'नही' । ४ देखो 'न्याय' ।

नायए–पु० [स० ज्ञातक] ज्ञातपुत्र श्रीमहावीर (जैन) ।

नायक–पु० [स०] (स्त्री० नायका, नायिका) १ नेता, मुखिया, प्रधान । २ सेनापति । ३ स्वामी, नाथ, मालिक । ४ अधिपति, शासक । ५ प्रभु, ईश्वर । ६ पति । ७ श्रेष्ठ पुरुष । ८ सरदार । ९ किसी काव्य या कथा का मुख्य पात्र, चरित्रनायक । १० सगीत कला मे प्रवीण पुरुष, कलावत । ११ हार के बीच का रत्न । १२ मुख्य दृष्टान्त । १३ मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम (।ऽ।) । १४ मरहम पट्टी करने वाला । १५ एक मुसलमान जाति व इसका व्यक्ति । १६ थोरी जाति या इस जाति का व्यक्ति । १७ भील जाति व इसका व्यक्ति । १८ शिकारी, ग्राखेटक । १९ बनजारा जाति के व्यक्ति का एक सबोधन ।

नायका–स्त्री० [स० नायिका] १ किसी कथा या काव्य की मुख्य पात्री, चरित्रनायिका । २ मुख्य अभिनेत्री । ३ भार्या । ४ स्वामिनी । ५ देखो 'नासका' ।

नायकामल्लार–स्त्री० [स० नायक-मल्लार] सम्पूर्ण जाति की एक राग ।

नायण (णि, णी)–स्त्री० [स० नापित] नाई जाति की स्त्री, नाइन ।

नायत–पु० [देश०] १ वैद्य, हकीम । २ देखो 'नायतो' ।

नायता–स्त्री० नाइयो की एक शाखा ।

नायतो–पु० [देश०] उक्त शाखा का व्यक्ति ।

नायपुत्त–पु० [स० ज्ञातपुत्र] जिनेन्द्र श्रीवर्द्धमान स्वामी (जैन) ।

नायब–पु० [ग्र० नाइब] १ कार्य की देख-रेख करने वाला कर्मचारी, व्यक्ति, मुख्तार । २ मुख्य कर्मचारी का सहायक । ३ प्रतिनिधि ।

नायबी–स्त्री० १ 'नायब' का कार्य या पद । २ प्रतिनिधित्व ।

नायला–पु० गेहूँ की बीजनी से बोवाई ।

नायी–देखो 'नाई' ।

नायो–पु० [स० नाभि] बैलगाडी के पहिये का मध्य भाग ।

नारग–पु० १ रक्त, खून, शोणित । २ तीर, बाण । ३ देखो 'नारगी' । ४ तलवार । ५ देखो 'नारगिया' । —**फळ**–पु० स्तन, कुच ।

नारगिया–वि० १ नारगी के रग जैसा, पीला । २ पीलापन लिए लाल ।

नारगी–स्त्री० [स० नारङ्ग] १ पीले छिलके वाला नीबू जाति का रसीला फल । २ देव वृक्षो मे से एक । ३ देखो 'नारगिया' ।

नारज–स्त्री० [फा० नारगी] ग्रप्सरा ।

नार–पु० [स०] १ जल । २ जन समूह । ३ जल मे रहने वाला नारायण । ४ देखो 'नारी' । ५ देखो 'नाड' ।

ना'र–देखो 'नाहर' ।

नारक–पु० १ नरक । २ नरकवासी । –वि० १ नरक सबधी, नरक का । २ नरक मे गिरा हुआ ।

ना'रककरी–स्त्री० [स० नरहरि+कर्कर] सात छोटी ककरी व दो बडे ककरो मे खेला जाने वाला एक देशी खेल ।

ना'रकाटो–पु० [देश०] एक लता विशेष जिसकी जड व बीज ग्रोषधि मे काम ग्राते हैं ।

ना'रकियो–१ देखो 'ना'रो' । २ देखो 'नाहर' ।

नारकी, नारगी–वि० [स० नारकिन्] १ नरक मे जाने योग्य । २ पापी, अधम । ३ देखो 'नरक' ।

ना'रडी–स्त्री० १ तरुण गाय । २ देखो 'नाहरी' ।

ना'रडो–१ देखो 'नाहर' । २ देखो 'ना'रो' ।

नारद–पु० [स०] ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ऋषि । –वि० १ चुगलखोर । २ कलहप्रिय । ३ श्वेत* । —**पणो**–पु०–चुगलखोरी । —**पुराण**–पु०–ग्रठारह पुराणो मे से एक । —**रख, रिख, रिखि, रिखी**–पु०–नारदमुनि, देवर्षि ।

नारदा–स्त्री० एक देवी का नाम ।

नारदियो–देखो 'नारद' ।

नारदी–पु० [स० नारदिन्] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

नारदो–पु० [स० नालि-द्वार] १ मकान के गदे पानी का नाला, मोरी । २ गदा पानी, मैला । ३ पेशावघर ।

नारद्द–देखो 'नारद' ।

नारमद–वि [स० नार्मद] नर्मदा सबधी, नर्मदा का ।

ना'रसिंह–देखो 'नरसिंह' ।

नारसिंही–वि० नृसिंह सबंधी । –स्त्री० १ एकदेवी । २ देवी का एक रूप ।

नारसींग, नारसींघ, नार'सी–देखो 'नरसिंह' ।
नारातक–पु० [स०] रावण का एक पुत्र ।
नारा-री-ग्रोलाद–स्त्री० घोडो की एक जाति विशेष ।
नाराइण–देखो 'नारायण' ।
नाराइणि, नाराइणी, नाराईणी–देखो 'नारायणी' ।
नाराच–पु० [स०] १ लोहे का बना तीर । २ तीर, बाण । ३ छत्तीस प्रकार के ग्रायुधों मे से एक । ४ तलवार । ५ जल हस्ती, शिशुमार । ६ सोलह वर्ण का एक छन्द विशेष । ७ एक ग्रन्य वर्णवृत्त विशेष । ८ चौबीस मात्राग्रो का एक छन्द विशेष । ९ भाला । १० देखो 'नाराज' ।
नाराज, नाराजक–वि० [फा० नाराज] १ ग्रप्रसन्न, नाखुश । २ देखो 'नाराच' ।
नाराजगी–स्त्री० [फा०] ग्रप्रसन्नता, रुष्टता ।
नाराजी–१ देखो 'नाराज' । २ देखो 'नाराजगी' ।
नाराट, नाराय–पु० [स० नाराच] तीर, बाण ।
नाराधणौ (बौ)–क्रि० ग्राराधना न करना ।
नारायण–पु० [स०] १ ईश्वर, परमेश्वर । २ विष्णु । ३ श्रीकृष्ण । ४ पौष का महीना । ५ जल मे निवास करने वाला । ६ 'ग्र' ग्रक्षर का नाम । ७ देखो 'नारायणास्त्र' । ८ एक ऋषि का नाम । —क्षेत्र खेत–पु० गगा के प्रवाह मे ४ हाथ तक की भूमि । —तेल, तैल–पु० ग्रायुर्वेद का प्रसिद्ध तेल । —प्रिय–पु० महादेव, शिव, सहदेव ।
नारायणास्त्र–पु० [स०] एक प्रकार का ग्रति विनाशकारी ग्रस्त्र ।
नारायणी–स्त्री० [सं०] १ ज्योतिष शास्त्र की ग्राठ देवियो मे से एक । २ गौड क्षत्रियो की इष्ट देवी । ३ दुर्गा, शक्ति । ४ लक्ष्मी, श्री । ५ गगा । ६ सतावर । ७ दुर्योधन की सहायता मे भेजी श्रीकृष्ण की सेना ।
नारिंग–देखो 'नारगी' ।
नारि–देखो 'नारी' ।
नारिग्रण–देखो 'नारायण' ।
नारिकेर, नारिकेल–पु० [स० नालिकेर] नारियल ।
नारिद–देखो 'नारद' ।
नारियळ–पु० [स० नारिकेल] श्रीफल ।
ना'रियौ–पु० [देश०] १ कूए से पानी निकालने के रस्से (लाव) के मुह पर लगा उपकरण । २ हल का जुग्रा बाधने का रस्सा । ३ देखो 'ना'रौ' । ४ देखो 'नाहर' ।
नारिसिंघ–देखो 'नरसिंघ' ।
नारी–स्त्री० [स०] १ ग्रौरत, स्त्री । २ पत्नी, भार्या । ३ मादा । ४ तवले ग्रादि का बाया, डुग्गी । ५ छ मात्राग्रो का एक छन्द विशेष । ६ पुरुषो की ७२ कलाग्रो मे से एक । ७ तीन लघु ढगण के तृतीय भेद का नाम (।।।) । ८ देखो 'नाडी' ।
ना'री–देखो 'नाहरी' ।
नारीकवच–पु० [स०] एक सूर्यवशी राजा ।
नारीकुंजर–पु० [स०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
नारीतीरथ–पु० [सं० नारीतीर्थ] महाभारत के ग्रनुसार एक तीर्थ ।
नारीयण–देखो 'नारायण' ।
नारीव्रत–पु० [स०] एक 'पत्नी व्रत' ।
नारू–पु० [देश०] जाघ व पावो मे होने वाला एक रोग जिसमे एक लम्बा सफेद कीडा निकलता है ।
नारेळ, नारेळियौ–देखो 'नारियळ' ।
नारेळी–स्त्री० १ नारियल की जटा के नीचे के सख्त भाग की कटोरी । २ देखो 'नारियळ' । —पूनम–स्त्री० श्रावण की पूर्णिमा ।
नारेळौ–देखो 'नारियळ' ।
नारौ–पु० १ 'जिन्दाबाद' ग्रादि की ग्रावाज । २ देखो 'ना'रौ' । ३ देखो 'न्यारौ' ।
ना'रौ–पु० [स० नाथ हरि] १ युवा, बैल । २ बैल, वृषभ । ३ देखो 'नाहर' ।
नाळग–स्त्री० [देश०] १ किंवदती, जनश्रुति । २ ग्रफवाह ।
नालदा–पु० [स०] बौद्धो का एक प्राचीन मठ ।
नाळ–स्त्री० [स० नाल, नालि] १ बन्दूक । २ तोप । ३ बन्दूक या तोप की लम्बी नलिका । ४ कमल का डठल । ५ किसी प्रकार की नलिका । ६ नहर । ७ नलिका, नाली । ८ धमनी, नाडी । ९ पोला या पोपला डठल । १० जल मे होने वाला एक पौधा विशेष । ११ जल बहने का स्थान । १२ लिंग, शिश्न । १३ ग्राभूषण की नलिका । १४ पहाडी रास्ता, तंग रास्ता । १५ सीढ़ी, जीना । १६ मकान के ग्रन्दर कोई तग या सकरीला भाग । १७ कूए की एक प्रकार की बधाई । १८ कूग्रा बाधने के लिए ग्रन्दर जाने का तिरछा रास्ता । १९ सुनारो की फूकनी । उपकरण । २० जुलाहो का एक उपकरण विशेष । २१ लता का ग्रग्र भाग । २२ बैलो को घी-तेल ग्रादि पिलाने का उपकरण । २३ चीटियो की पक्ति । २४ चीटियो का रास्ता । २५ वश परपरा । २६ बैल ग्रादि पशुग्रो के नाक का ऊपरी भाग । २७ जगल मे पशुग्रो के खुरो से बनी डगर । २८ दशनामी सन्यासियो को दफनाने का खड्डा । २९ घोडे की टाप के नीचे लगने वाला ग्रर्ध चद्राकार लोहा । ३० खपरेलो की जोड पर लगाया जाने वाला नरिया । ३१ म्यान की नोक पर मढी जाने वाली माम । ३२ कूए की जोडाई के लिए नीचे डाला जाने वाला लकडी का चक्र । ३३ सगीत एक की मूर्च्छना । ३४ मृदग

से मिलता जुलता एक वाद्य । ३५ देखो 'नळी' । ३६ देखो 'नाळी' । –क्रि० वि० १ आपस मे, परस्पर । –अव्य० २ साथ, सहित, से ।

नाळक–पु० [देश०] उडद । –वि० परम्परा प्राप्त, प्राचीन ।

नाळकटाई–स्त्री० [स० नालि + कत्र] १ नवजात शिशु के नाभि से लगी नाल को काटने की क्रिया । २ उस कार्य का पारिश्रमिक ।

नाळकाजन्त्र–पु० [स० नलिकायन्त्र] १ बदूक । २ तोप ।

नाळकी–देखो 'नाळ' ।

नाळकेर–देखो 'नारिकेल' ।

नाळखीसी–स्त्री० [देश०] तलवार डालने की चमडे की छोटी नाकी ।

नाळग–देखो 'नाळक' ।

नाळगूगरी–स्त्री० [देश०] किसानो से ली जाने वाली कृए सबधी एक लाग ।

नाळछेद (छेदक)–पु० डिंगल गीतो मे एक दोष ।

नाळणौ (बौ)–क्रि० [देश०] १ देखना, अवलोकन करना । २ निहारना । ३ तलाश करना, खोजना । ४ टालना, गिराना । ५ समझना ।

नाळवद (वध)–पु० १ घोडे की टाप मे लोहा जडने वाला । २ मवेशी रखने वालो से लिया जाने वाला एक कर । ३ एक प्रकार की 'रेख' ।

नाळवदी (बधी)–स्त्री० १ घोडे की टाप मे लोहा जडने का काम । २ इस कार्य की मजदूरी । ३ देखो 'नाळवद' ।

नाळव–पु० [स० नाल] पानी निकलने का स्थान ।

नाळस–देखो 'नालिस' ।

नाळा–स्त्री० तोप ।

नालायक–वि० [फा०] अयोग्य, निकम्मा, मूर्ख ।

नाळि–देखो 'नाळ' ।

नाळिकेर–देखो 'नारिकेल' ।

नालिनी–स्त्री० एक प्रकार का जलयान ।

नाळियर–देखो 'नारिकेल' ।

नाळियो–पु० [स० नालः] १ गदे पानी का नाला, मोरी । २ देखो 'नाळ' । ३ देखो 'नाळो' ।

नालिस–स्त्री० [फा० नालिश] किसी के विरुद्ध अभियोग, फरियाद ।

नाळी–स्त्री० [स० नालि] १ गदे पानी के बहने का रास्ता, नाली । २ मोरी । ३ नली, नलिका । ४ नाडी, धमनी । ५ पतला या सकरा जल मार्ग । ६ नदी । ७ सारगी के बीच का मुख्य अग । ८ देखो 'नळी' । ९ देखो 'नाळ' ।

नाळीअर–देखो 'नारिकेल' ।

नाळीक–पु० [स० नालिक] १ कमान । २ गूतदार कमल नाल । ३ कमल के फूल का डठल । ४ तीर । ५ एक प्रकार का छोटा तीर ।

नाळीयर–देखो 'नारिकेल' ।

नाळू नाळूं, नाळू–देखो 'नाळो' ।

नाळेकेर, नाळेर–पु० [स० नालिकेर[१ देववृक्षो मे से एक, सुरवृक्ष । २ देखो 'नारिकेल' ।

नाळेरगरो–वि० [स० नालिकेर] नारियल जैसा ।

नाळेरियो–देखो 'नारिकेल' ।

नाळेरी–देखो 'नारेळी' । —पूनम='नारेळी-पूनम' ।

नाळेरो–पु० १ नारियल के कडे भाग को साफ करके बनाया हुआ हुक्का । २ कलेजी (मांस) । ३ देखो 'नारिकेल' ।

नाळो–पु० [स० नालि, नाल] १ नवजात शिशु की नाभि से जुडी नलिका, जिसको शीघ्र ही काट दिया जाता है । [स० नालकम्] २ मकान से गंदा पानी निकलने की मोरी, नालि । ३ बरसाती पानी बहने का छोटा सोता, नाला । ४ छोटा जल स्रोत । ५ देखो 'नाळ' । [फा० नाला] ६ रोना-धोना, वावेला ।

नाव–स्त्री० [स० नौ, फा. नाव] १ छोटा जलयान, किश्ती, नौका । २ शव यान, रथी, अर्थी । ३ देखो 'न्याव' ।

नावक–पु० [फा०] १ छोटा बाण विशेष । २ देखो 'नाविक' ।

नावघाट–पु० नदी या समुद्र तट, जहा नावें ठहरती हैं ।

नावट–स्त्री० पहुँच । क्षमता ।

नावडणौ (बौ)–क्रि० १ पीछे से आकर साथ कर लेना, पहुँचना । २ दौडकर पकड लेना । ३ आना पहुँचना । ४ मुकाबला करना । ५ अधिकार करना, कब्जा करना । ६ कार्य निपटाना, पूर्ण करना ।

नावडियो–पु० केवट, मल्लाह ।

नावडो (डौ)–देखो 'नाव' ।

नावण–स्त्री० १ दौडने भागने की क्रिया या भाव । २ देखो 'न्हावण' ।

नावणौ (बौ)–क्रि० [स० ज्ञापयति] १ बताना, ज्ञात कराना । २ नही आना । ३ देखो 'न्हाणौ' (बौ) ।

ना'वणौ (बौ)–क्रि० १ उडेलना, डालना । २ देखो 'न्हाठणौ' (बौ) । ३ देखो 'न्हाणौ' (बौ) ।

नावाहाकण–पु० केवट, मल्लाह ।

नावाकिफ–वि० [अ०] अनजान, अपरिचित ।

नावाजिब–वि० [फा०] अनुचित, अनुपयुक्त ।

नावादौड़–स्त्री० भाग-दौड, दौड-धूप ।

नाविग्र, नाविक–पु० [सं० नाविक] १ नाव चलाने वाला, मल्लाह, केवट। २ जहाज का यात्री। ३ जल मार्ग से यात्रा करने वाला। ४ कर्णधार।

नावी–देखो 'नाई'।

नास–पु० [स० नासा] १ नाक, नासिका। २ सूंड। ३ चौखट का ऊपरी बाजू। ४ सूंघने की क्रिया या भाव। ५ सूंघने का पदार्थ। [स० नाश] ६ नाश, ध्वस, बरबादी। ७ लोप, समाप्ति। ८ सहार। ९ मृत्यु, मौत। १० हानि, नुकसान। ११ दुर्भाग्य। १२ विपत्ति। १३ त्याग। १४ असफलता।

नासक–वि० [स० नाशक] १ नाश करने वाला, मारने वाला। २ ध्वस्त करने वाला। –पु० १ दीवार के कोने मे चुना जाने वाला पत्थर। २ देखो 'नासिका'।

नासका–स्त्री० [स० नासिका] १ नाक। २ घ्राणेन्द्रिय। ३ सूंघनी, तवाखू। ४ सूंघने की दवा।

नासकारी–वि० [स० नाशकारिन्] १ नाश करने वाला। २ विनाशकारी।

नासण–वि० १ नाश करने वाला। २ भागने वाला। ३ देखो 'नास'।

नासणउ, नासणौ–वि० [स० नश्] (स्त्री० नासणी) १ दौडने वाला, भागने वाला। २ नष्ट होने वाला, समाप्त होने वाला। ३ नाश करने वाला, विध्वसक।

नासणौ (बौ)–क्रि० १ भाग जाना, दौड़ जाना। २ मिट जाना। नष्ट होना।

नासत, नासति–१ देखो 'नास्ति'। २ देखो 'नासती'।

नासतिक–देखो 'नास्तिक'।

नासती–स्त्री० [स० नास्ति] १ असत्यता। २ मनाही, इन्कार। ३ अभाव, कमी। –वि० १ बुरा, खराब। २ अनुपयुक्त। –अव्य० नहीं, ना।

नासतीक–देखो 'नास्तिक'।

नासपती, नासपाती–स्त्री० [तु० नाशपाती] १ मझौले कद का फलदार पेड विशेष। २ इस पेड का फल, सेव।

नासफरिम–वि० [स० नाश -फा० फर्मा] वह जिसकी आज्ञा का उलघन होता हो।

नासमझ–वि० जिसमे समझ न हो, निर्बुद्धि, अबोध, मूर्ख।

नासवती–स्त्री० [स० नाश] १ घोडे की नाक के नथूने पर होने वाली भवरी। २ देखो 'नासवांन'।

नासवान–वि० [स० नाशवान्] नष्ट होने लायक, नश्वर। अनित्य।

नासा–स्त्री० [स०] १ नाक, नासिका। २ नासारध्र, नथना। ३ घ्राणेंद्रिय। ४ चोच, तुड। ५ देखो 'नस'। —**चर**–पु० चोंच से खाने वाले, पक्षी।

नासानुगी–पु० [स०] नाक के बल चलने वाले प्राणी, जानवर।

नासापुट–पु० [स०] नाक के अन्दर का पर्दा।

नासारोग–पु० नाक का रोग।

नासिक–स्त्री० [स० नासिक्य] महाराष्ट्र प्रान्त का एक तीर्थ।

नासिका–स्त्री० [स०] १ नाक, नासा। २ देखो 'नासका'।

नासिणउ, नासिणौ–देखो 'नासणौ'।

नासिणौ (बौ)–देखो 'नासणौ' (बौ)।

नासूर–पु० [अ०] मवाद वाला फोडा, नाडी व्रण।

नासेट्ट–वि० [स० नष्टैषिन्] खोये हुए मवेशी की तलाश करने वाला।

नास्ति–देखो 'नासती'।

नास्तिक–वि० [स०] धर्म व ईश्वर मे आस्था न रखने वाला। —**दरसन, वाद**–पु० उक्त भावना पर आधारित मत, सिद्धान्त।

नास्तिकता–स्त्री० [स०] धर्म व ईश्वर मे आस्था न रखने की भावना, बुद्धि।

नास्ती–देखो 'नासती'।

नास्तौ–पु० [फा० नाश्ता] सुबह का अल्पाहार, कलेवा।

नाह–अव्य० १ निषेधात्मक ध्वनि, नही। २ देखो 'नाथ'। ३ देखो 'नाभि'।

नाहकध (कधो)–पु० [स० नाभि-स्कध] पहिये की धुरी के ऊपर के अवयव। –वि० १ नाभि के समान कधो वाला। २ बलवान, शक्तिशाली।

नाहक–क्रि० वि० [फा०] बिना मतलब के, व्यर्थ मे, फालतू मे।

नाहण–पु० [स० स्नान] स्नान, मज्जन।

नाहणौ (बौ)–क्रि० स्नान करना, नहाना।

नाह-दुनियाण–पु० १ राजा, नृप। २ बादशाह, सम्राट।

नाहर–पु० [स० नखर] (स्त्री० नाहरी) १ सिंह, शेर। २ चीता। ३ भेडिया। ४ योद्धा, वीर। ५ मक्खीमार एक जीव विशेष। –वि० दुष्ट, आततायी।

नाहरकाटौ–देखो 'ना'रकाटौ'।

नाहर-मस्तक–पु० मयूर के समान नील वर्ण का घोडा।

नाहरसांस–पु० घोडो की सास फूलने की बीमारी।

नाहरी–स्त्री० मादा सिंह, शेरनी।

नाहरू, नाहरौ–पु० १ मोट खीचने का रस्सा। २ चमडे का टुकडा। ३ देखो 'नारू'। ४ देखो 'नाहर'।

नाहलउ–देखो 'नाथ'।

नाहला–स्त्री० एक म्लेच्छ जाति।

नाहलियौ, नाहलू–देखो 'नाथ'।

नाहळी–देखो 'नाळी'।

नाहलौ–पु० १ नाहला जाति का म्लेच्छ। २ देखो 'नाथ'।

निकांम–वि० [स० निष्काम] १ कामना, लालसा व इच्छा रहित। २ स्वार्थ रहित, निस्वार्थी। ३ निकृष्ट, बुरा। ४ नीच, दुष्ट। ५ व्यर्थ, बेकार। ६ देखो 'निकम्मौ'।

निकामी–वि० [स० निष्कामिन्] १ वीतराग, वेरागी, निस्वार्थी। २ देखो 'निकम्मौ'।

निकांमु–१ देखो 'निकम्मौ'। २ देखो 'निकाम'।

निकारी-श्रोरी–स्त्री०राजा महाराजाग्रो का वस्त्रागार(उदयपुर)।

निका–स्त्री० [ग्र० निकाह] इस्लाम धर्म के ग्रनुसार विवाह, पाणि-ग्रहण।

निकाइय–देखो 'निकाचित'। (जैन)

निकाई–स्त्री० [फा० नेकी] १ भलाई, ग्रच्छापन। २ सुदरता, सौंदर्य, खूबसूरती।

निकाचित, निकाचिय (करम)–पु० [स० निकाचित-कर्म] जैन शास्त्रानुसार शुभाशुभ कर्म।

निकाज–वि० [स० नि + कार्य] निकम्मा, बेकार।

निकाय–पु० [स०] १ समूह, झुण्ड। २ श्रेणी, दल। ३ सभा, समाज। ४ स्कूल। ५ सस्था। ६ घर, निवासस्थान। ७ शरीर। ८ लक्ष्य, निशाना। ९ परमात्मा, ईश्वर।

निकार–पु० [सं०] १ हार, पराभव। २ तिरस्कार, ग्रनादर। ३ ग्रपकार। ४ मान हानि, ग्रपमान। ५ ग्रपशब्द, गाली। ६ दुष्टता। ७ विरोध। ८ खण्डन।

निकारौ–पु० [स०नि कार्य] (स्त्री० निकारी) १ निकम्मा, ग्रयोग्य। २ व्यर्थ, वेकार। ३ स्वार्थी, मतलबी।

निकाळ–पु० [स० निष्कासन्] १ निकलने की क्रिया या भाव। २ निकलने का ग्रवसर, मौका। ३ निकलने का द्वार, छेद, रास्ता। ४ उद्गम। ५ वश का मूल। ६ मूल। ७ ग्रामदनी स्रोत। ८ छुटकारा, मुक्ति। ९ मार्ग, रास्ता। १० किसी दाव का तोड, काट। ११ कुश्ती का पेच। १२ निकलाने की क्रिया या भाव।

निकाळणौ (बौ)–क्रि० [स० निष्कासन्] १ भीतर से बाहर लाना, निर्गम करना। २ निश्चित करना, ठहराना। ३ समस्या का हल निकालना, समाधान करना। ४ ग्राविष्कार करना, ईजाद करना। ५ जुडी हुई वस्तु को ग्रलग करना, पृथक करना। ६ श्रेणी मे ग्रागे बढाना, उत्तीर्ण करना। ७ गमन कराना, गुजराना। ८ एक ग्रोर से दूसरी ग्रोर लेजाना, ग्रतिक्रमण कराना। पार कराना। ९ स्पष्ट करना, प्रकट करना, खोलना। १० उपस्थित करना, दिखाना। ११ चुनकर निकालना, छाटना। १२ किसी एक तरफ ग्रधिक वढाना, ग्रागे करना। १३ सर्वसाधारण के सामने लाना, प्रकाशित करना। १४ मीमा से ग्रधिक करना। १५ बेचना, खपाना। १६ बरामद करना, उपलब्ध करना। १७ बाकी या नाम बताना, बकाया रखना। १८ व्यतीत करना, गुजार देना। १९ दूर करना, मिटाना। २० प्रचलित करना, परपरा बनाना। २१ काम बनाना, मतलब साधना। २२ निर्माण करना, बनाना। २३ प्रारभ करना, शुरू करना। २४ उत्पन्न करना। २५ मुक्त करना, छोडना। २६ साबित करना, सिद्ध करना। २७ ग्रलग करना, तटस्थ करना। २८ भगाना, भागने का मौका देना। २९ चोरी करना, गायब करना। ३० प्रगट करना, चौडे करना। ३१ कम करना, घटाना। ३२ मार्यादा छोडना, सीमा छोडना। ३३ हटाना, बर्खास्त करना। ३४ दूर करना, हटाना। ३५ निर्वाह करना, काम चलाना। ३६ सकट से बचाना, उबारना। ३७ प्राप्त करना, लेना। उठाना।

निकाळौ–पु० [स० निष्कासन्] १ एक प्रकार का मयादी बुखार, ग्रात्रिक ज्वर। २ निकालने की क्रिया या भाव। ३ वहिष्कार, निष्कासन। ४ देखो 'निकाळ'।

निकावळौ–वि० [देश०] (स्त्री० निकावळी) १ निर्दोष। २ निकालने वाला।

निकास–पु० निकलने का द्वार, निकलने का स्थान।

निकासणौ (बौ)–देखो 'निकाळणौ' (बौ)।

निकासी–स्त्री० [स० निष्कासनम्] १ प्रस्थान, रवानगी। २ पलायन, प्रयाण।

निकाह–देखो 'निका'।

निकियावरौ–पु० ग्रप्रतिष्ठित वश, कुल या घर।

निकुचणौ (बौ)–क्रि० [स० निकुंचनम्] सकुचित होना, सिकुडना।

निकुज–पु० [स०] १ लता ग्राच्छादित मण्डप। २ कुज। ३ उपवन, वाटिका।

निकुप–पु० एक प्राचीन राजवश व इस वंश का व्यक्ति।

निकुभ–पु० [स०] १ राजा हर्यश्व का पुत्र। २ कुभकरण का पुत्र एक ग्रसुर। ३ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक ग्रसुर राजा। ४ कौरवो का एक सेनापति। ५ प्रह्लाद के पुत्र का नाम। ६ एक क्षत्रिय वश। ७ चौहान वश की एक शाखा। ८ दती वृक्ष। ९ शिव का एक गण। १० स्वामि कार्त्तिकेय का एक गण। ११ सुन्द व उपसुन्द के पिता।

निकुंभी–स्त्री० [स०] कुभकर्ण की कन्या।

निकुटणौ (बौ)–क्रि० [स० नि + कृतम्] १ पत्थर ग्रादि पर खुदाई करना। २ गढना।

निकुटी–पु० [स० निष्कुट्टी] १ पत्थर तोडने व पत्थर पर खुदाई करने वाला कारीगर। २ बडी इलायची।

निकुळ–पु० शराव के साथ लिया जाने वाला चर्वण। –वि० (स्त्री० निकुळी) विना कुल या वश का, निर्वंशी।

निकुळी–पु० १ एक प्रकार का वृक्ष। २ देखो 'नकुळ'।

निकुळौ–देखो 'निकुळ'।

निकूप–वि० [स०] १ विना किसी कमी के, परिपूर्ण। २ दृढ, ठोस। ३ देखो 'निकुप'।

निकूळ–देखो 'नकुळ'।

निकेत (न)–पु० [स०] १ मकान, घर। २ जगह, स्थान। ३ भण्डार, निधि। ४ निवास स्थान। ५ प्याज।

निकेद–पु० युद्ध, सग्राम।

निकेय–देखो 'निकेत'।

निकेवळ (ळौ)–वि० [सं० निष्कैवल्य] (स्त्री० निकेवळी) १ नितान्त, विल्कुल। २ अकेला, केवल एक। ३ कार्य, उत्तरदायित्व व ऋण से मुक्त, निवृत्त। ४ बधन मुक्त। ५ रोग मुक्त। –पु० सात वर्णों का एक छन्द विशेष।

निकौ–वि० [देश०] श्रेष्ठ, उत्तम, वढिया।

निक्ख–देखो 'निकस'।

निक्खेप–देखो 'निक्षेप'।

निक्र–पु० [स० निकर] समूह।

निक्रत–वि० [स० निकृत] १ कपटी, धूर्त। २ छलिया, ठग। ३ नीच, अधम, पतित। ४ तुच्छ, ओछा। ५ दुष्ट, वदमाश।

निक्रस्ट–वि० [स० निकृष्ट] १ नीच, अधम, पतित। २ कमीना, दुष्ट। ३ घृणित। ४ तुच्छ, क्षूद्र। ५ मद।

निक्रस्टता–स्त्री० [सं० निकृष्ट-ता] १ नीचता, अधमाई। २ कमीनापन, दुष्टता। ३ बुराई, खरावी। ४ तुच्छता। ५ मदता।

निक्षत्री–वि० [सं० नि-क्षत्रिय] १ क्षत्रियत्वहीन। २ क्षत्रियहीन।

निक्षेप–पु० [स०] १ छोडने की क्रिया या भाव, त्याग। २ फेंकने की क्रिया या भाव। ३ प्रतिपाद्य वस्तु को समझाने की क्रिया या भाव (जैन)। ४ गिरवी, रेहन। ५ पोछने की क्रिया या भाव।

निखग–पु० [स० निषग] १ तरकस, तूणीर, भाथा। २ तलवार, खड्ग। ३ एक वाद्य विशेष। ४ आलिगन। ५ एकता।

निखगी (गौ)–वि० [स० निषगिन्] १ तरकसधारी, धनुर्धर। २ वाण चलाने वाला। ३ खड्गधारी। ४ शक्तिशाली, वलवान। –पु० [स० निषगी] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

निखंड–वि० [स० नि खण्ड] अखण्ड, पूर्ण।

निखकुटी–स्त्री० [स० निष्कुटी] इलायची।

निखट्टू–वि० १ इधर-उधर फिरने वाला। २ टिक कर या जमकर न रहने वाला। ३ निष्क्रिय, निकम्मा। ४ आलसी, सुस्त।

निखणौ (बौ)–देखो 'निरखणौ' (बौ)।

निखत–वि० १ जवरदस्त। २ देखो 'नक्षत्र'।

निखतेत–देखो 'नखतेत'।

निखद–वि० [स० निषध] १ वुरा, नीच, अधम, निकृष्ट। –पु० १ एक प्राचीन देश। २ इस देश का राजा। ३ एक पर्वत का नाम। ४ देखो 'निसाद'। ५ देखो 'निखेद'।

निखदणौ (बौ)–देखो 'निसेधणौ' (बौ)।

निखध, निखधि–देखो 'निखद'।

निखरणौ (बौ)–क्रि० [स० निक्षरणम्] १ स्वच्छ होना, निर्मल होना। २ आभा, काति या शोभा युक्त होना। ३ सुन्दर होना। ४ अच्छी स्थिति या रगत मे आना।

निखरब (व)–वि० [स० निखर्व] दश हजार करोड, दश खरव। –पु० उक्त मान की सख्या।

निखरौ–वि० [देश०] (स्त्री० निखरी) खराव, बुरा। नापाक।

निखल–पु० १ गरुड। २ देखो 'निखिल'।

निखाख–देखो 'निसाद'।

निखात–पु० [स० खन् व.का.] खजाना, निधि।

निखाद–पु० १ लुटेरा, डाकू। २ देखो 'निसाद'।

निखार–पु० १ स्वच्छता, निर्मलता। २ कांति, दीप्ति, आभा।

निखारणौ (बौ)–क्रि० [स० निक्षरणम्] १ स्वच्छ करना, निर्मल करना। २ आभा, कांति या शोभा युक्त करना। ३ सुन्दरता लाना। ४ अच्छी स्थिति लाना।

निखालस, निखालिस–वि० १ शुद्ध, खालिश, विना मिलावट का। २ स्वच्छ साफ, निर्मल।

निखिल–वि० [स०] पूर्ण, सपूर्ण। तमाम, सब, समस्त।

निखूती–वि० [स० नि-क्षुत] निमग्न, मग्न, डूवा हुआ।

निखेत, निखेद–वि० [स० निषेध] १ दुष्ट, पाजी, वदमाश। २ पतित, हीन। –पु० रोक, मनाही।

निखेध–वि० [देश०] १ मूर्ख, गंवार। २ देखो 'निखेद'। ३ देखो 'निसेध'।

निखेधणौ (बौ)–देखो 'निसेधणौ' (बौ)।

निखोटौ–वि० [स० नि-क्षोट] (स्त्री० निखोटी) १ जिसमे खोट न हो, खरा, शुद्ध। २ खालिश, साफ।

निगड, निगड–पु० [सं० निगड] १ हाथी के पैर के बांधने की जजीर, वेडी। २ एक प्रकार का देव वृक्ष। ३ कैद, कारागार, वधन।

निगडित–वि० [स०] वधन मे डाला हुआ, वद्ध, कैद किया हुआ।

निगद–पु० [स० निर्गद] चन्द्र, चन्द्रमा ।

निगध–पु० [स० निषध] निषधराजा ।

निगम–पु० [स०] १ ईश्वर, परमात्मा । २ वेद । ३ वेद संहिता । ४ वेद का कोई अश । ५ शास्त्र । ६ वेद का भाष्य । ७ धातु । ८ निश्वास । ९ निश्चय । १० न्याय । ११व्यापार । व्यवसाय । १२ हाट मडी । बाजार । १३ मेला । १४ सौदागर । १५ मार्ग, रास्ता । १६ नगर, शहर । १७ झुण्ड, समूह । १८ किसी कार्य विशेष के लिए बनाया हुआ विभाग, सस्था या मण्डल । –वि० जहा पहुचना सभव न हो, अगम्य । —**निवासी**–पु० विष्णु, नारायण ।

निगमणौ (बौ)–देखो 'नीगमणौ' (बौ) ।

निगमी–वि० [स० नि-गम्य] जो पहुँच के बाहर हो, अगम्य ।

निगम्म–देखो 'निगम' ।

निगम्मी–देखो 'निगमी' ।

निगर–पु० [देश०] एक पौधा विशेष ।

निगरगठ (ठौ)–वि० (स्त्री० निगरगंठी) जो किसी के काम न आ सके ।

निगरब (भ, व)–वि० [स० निगर्व] गर्व व अभिमान रहित । –पु० [सं० निगर्भ] जो गर्भ मे न आवे, ईश्वर, परमात्मा ।

निगर-भर–वि० [स० नि-गह्वर] भरपूर, सघन ।

निगरांणी (नी)–स्त्री० देख-रेख, निरीक्षण, जाच ।

निगरियौ–देखो 'निगर' ।

निगरु–वि० जबरदस्त, जोरदार ।

निगळणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्गलनम्] १ बिना चबाये गले के नीचे उतार देना, गटक लेना । २ खा जाना । ३ बलात् हड़प लेना ।

निगल्लिका–स्त्री० चार वर्णो का एक वृत्त विशेष ।

निगस–देखो 'निघस' ।

निगहणौ (बौ)–क्रि० [स० निगृहीत] नियत्रण करना ।

निगामसिज्जाए–पु० [स० निगम-सैय्या] अधिक लबा चौडा बिस्तर । (जैन)

निगा, निगाह–स्त्री० [फा०] १ नजर, दृष्टि । २ ध्यान । ३ विचार । ४ पहचान,परख । ५ समझ । ६ तलाश,खोज । ७ सुधि, देखभाल ।

निगुडि–पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

निगुण–वि० १ कृतघ्न । २ कायर, डरपोक । ३ देखो 'निरगुण' ।

निगुणी (णौ)–१ देखो 'निरगुण' । २ देखो 'निगुण' ।

निगुर, निगुरु, निगुरू, निगुरौ–१ देखो 'नुगरौ' । २ देखो 'निरगुण' ।

निगूढ़–वि० [स०] १ अत्यन्त गुप्त । २ मजबूत, दृढ ।

निगूढ़ारथक–वि० जिसका अर्थ गुप्त हो । गूढार्थी ।

निगे–देखो 'निगाह' ।

निगेम–वि० १ पवित्र, शुद्ध । २ कल्याणकारी, मगलमय । ३ उज्ज्वल, शुभ्र । ४ निष्कलक, बेदाग । ५ जबरदस्त, शक्तिशाली । ६ देखो 'निगम' ।

निगै–देखो 'निगाह' ।

निगैदारी, निगैदास्त, निगैदास्ती–स्त्री० [फा०] निगरानी, देख-रेख, जाच ।

निगोट–वि० [स०निघोट] १ जो खोखला न हो, ठोस । २ नया, जो पहले काम मे न लिया गया हो । ३ शुद्ध, पवित्र ।

निगोद–पु० [स०] अनन्त जीवो के पिण्ड-भूत का एक शरीर । (जैन)

निगोदर, निगोदरी–पु० [देश०] कठ पर धारण करने का आभूषण विशेष ।

निगोदि–वि० १ 'निगोद' मे रहने या निवास करने वाला । २ देखो 'निगोद' ।

निग्गथ, निग्गथी–देखो 'निरग्रथ' ।

निग्गत, निग्गय–वि० [स० निर्गत] १ निकलने वाला, दूर होने वाला । २ निकला हुआ, दूरस्थ । (जैन)

निग्गही–वि० [स० निग्राही] निग्रह करने वाला (जैन) ।

निग्गुणी–देखो 'निगुणी' ।

निग्न–वि० [स० निघ्न] आज्ञाकारी, अनुगत, अधीन ।

निग्रह–पु० [स०] १ मन की एकाग्रता, सयम । २ मन को नियत्रित करने की क्रिया या भाव । ३ दमन । ४ रोक, अवरोध । ५ रोकने का उपाय । ६ बधन । ७ पकड, कैद । ८ दण्ड । ९ नाश, विनाश । १० चिकित्सा, इलाज । ११ हार,पराजय । १२ अधीन करने की दशा । १३ भर्त्सना, डाट, फटकार । १४ अरुचि, घृणा । १५ तर्क सबधी एक दोष । १६ सीमा, हद । १७ दस्ता, वेंट ।

निग्रहण–वि० [स०] रोकने वाला, रोक-थाम करने वाला । –पु० १ दमन करने का कार्य । २ दण्ड देने का कार्य ।

निग्रहणौ (बौ)–क्रि० [स० निग्रहणम्] १ दमन करना, रोकना, थामना । २ निग्रह करना, सयम करना । ३ दण्ड देना । सजा देना ।

निग्रहि–पु० १ युद्ध । २ देखो 'निग्रही' ।

निग्रही–वि० [स० निग्रहिन्] १ दमन करने वाला । २ रोकने वाला, अवरोध करने वाला । ३ दण्ड देने वाला ।

निग्रोध–देखो 'न्यग्रोध' ।

निघंट, निघटु–पु० [स० निघटु] १ वैदिक कोश । २ शब्द सग्रह मात्र ।

निघटणौ (बौ)–क्रि० [स० निघटन] १ कम होना, थोड़ा होना, घटना । २ देखो 'निघट्टणौ' (बौ) ।

निघट्टणौ (बौ)–क्रि० १ उत्पन्न होना, लगना। २ देखो 'निघटणौ' (बौ)।

निघनक–वि० [स० निघ्नक] पराधीन, अधीन।

निघस–पु० [स० निघस] १ भोजन, खाना। २ खाने की क्रिया या भाव।

निघात–पु० [स०] १ प्रहार, चोट, आघात। २ घात। ३ उच्चारण के लहजे का अभाव। ४ मर्म, भेद, रहस्य। ५ भेद की वात। –वि० १ विशेष, खास। २ अधिक। ३ भयकर। ४ जवरदस्त। –क्रि०वि० १ विशेषतया, विशेषत। २ वहुत तेजी से।

निघास–देखो 'निघस'।

निघिण–वि० [स० निर्घृण] निर्दयी, कठोर।

निघुट–वि० दृढ, अटल।

निघै–देखो 'निगाह'।

निघोट–वि० [देश०] १ खाली पेट, निराहार। २ पूर्ण, पूरा। ३ दृढ़, मजवूत।

निघोस–स्त्री० [स० निघोष] आवाज, ध्वनि।

निचत (तौ), निचत (तौ)–देखो 'निस्चित'।

निचलौ–वि० [स० नीच] (स्त्री० निचली) १ नीचे वाला, नीचे का, निम्न। २ देखो 'निस्चल'।

निचाई–स्त्री० १ नीचापन, ढाल। २ नीचे की ओर विस्तार या दूरी। ३ ओछापन, कमीनापन, नीच भावना।

निचारौ–पु० [देश०] भोजन आदि के वर्तन साफ करने, माजने का स्थान।

निचिंत–देखो 'निस्चित'।

निचिंता, निचिताई, निचिती–देखो 'निस्चितता'।

निचिंतौ–देखो 'निस्चित'। (स्त्री० निचिंती)

निचिताई–देखो 'निस्चितता'।

निचींत–देखो 'निस्चित'।

निचीताई–देखो 'निस्चितता'।

निचीतौ–देखो 'निस्चित' (स्त्री० निचीती)

निचुडणौ (बौ)–क्रि० [स० नि-च्यवन] १ रसदार वस्तु का रस निकाला जाना, रस निकलना। २ गीले कपडे में ऐंठन देकर पानी निकाला जाना। ३ कस व सार निकलना। ४ शोषण किया जाना। ५ आर्थिक दृष्टि से शोपित होना। ६ शक्ति या तेजहीन होना।

निचोड़–पु० [स० नि-च्यवन] १ रस। २ सार, तत्त्व। ३ निचोडने से निकलने वाला द्रव पदार्थ। ४ साराश, तात्पर्य। आशय। ५ मूल वात। ६ गूढार्थ।

निचोडणौ (बौ)–देखो 'निचोणौ' (बौ)।

निचोणौ (बौ), निचोवणौ (बौ)–क्रि० [स० नि-च्यवनम्] १ रसदार वस्तु का रस निकालना, रस निकालने के लिए दबाना। २ गीले कपडे का पानी निकालने के लिए ऐंठन देना। ३ कस व सार निकालना। ४ शोषण करना। ५ शक्तिहीन करना, तेज विहीन करना।

निच्च–१ देखो 'नित'। २ देखो 'नीच'।

निच्चय–देखो 'निस्चय'।

निच्चळ–देखो 'निस्चळ'।

निच्चु–१ देखो 'नित'। २ देखो 'नीच'।

निछटणौ (बौ)–देखो 'नीछटणौ' (बौ)।

निछटणौ (बौ), निछट्टणौ (बौ)–देखो 'नीछटणौ' (बौ)।

निछत्र, निछत्री–वि० [स० नि छत्र] १ छत्रहीन, राज चिह्न से रहित। २ देखो 'निक्षत्री'।

निछमाळी–वि० [स० निमिष + रा० आळी] हिलती हुई पलको वाली।

निछरावळ (ळि, ळी)–स्त्री० [स० न्यास-आवर्त] १ न्यौछावर करने की क्रिया या भाव। २ न्यौछावर किया हुआ द्रव्य, वस्तु आदि। —**खानौ**–पु० न्यौछावर करने का स्थान। न्यौछावर करने की प्रथा।

निछळ–वि० [स० निश्छल] १ कपट व छल रहित। २ देखो 'निस्चळ'।

निछावर, निछावळ–देखो 'निछरावळ'।

निछोह–वि० [स० निः क्षोभ] १ जिसे प्रीति या प्रेम न हो। २ प्रिय भाव से रहित। ३ निर्दयी, कठोर, निष्ठुर।

निजत्रणौ (बौ)–पु० [स० नियत्रणम्] नियत्रण करना, कावू मे करना।

निज–सर्व० [स०] स्वय, खुद। –वि० १ स्वकीय, अपना। २ प्राकृतिक, स्वाभाविक। ३ विलक्षण। ४ सदैव बना रहने वाला, स्थाई। ५ खास, मूल। —**मदिर**–पु० देवालय का खास भाग जहा देवमूर्ति स्थापित हो।

निजघास–पु० [स०] पार्वती के क्रोध से उत्पन्न एक गण।

निजडणौ (बौ)–क्रि० टूटना, कटना।

निजर (रि)–देखो 'नजर'। —**कैद, कैद**='नजर-कैद'। –**दौलत**='नजर-दौलत'। –**बंद**='नजर-बद'। —**वदी**='नजर-वदी'। —**वाग**='नजर-बाग'। —**सांनी**='नजर-सानी'।

निजर-बाज–वि० [फा०] तिरछी नजर से देखने वाली।

निजरांण (णौ)–देखो 'नजराणौ'।

निजराणौ (बौ), निजरावणौ (बौ)–क्रि० १ दिखाई देना, दिखना। २ नजर मे आना। ३ ध्यान मे आना। ४ दृश्य दिखना। ५ नजर लगना। ६ देखना। ७ लखना।

निजरि–देखो 'नजर'।

निजरीजणौ (बौ)—देखो 'नजरीजणौ' (बौ)।
निजळ—वि० [स० नि जल] १ जल रहित, सूखा, शुष्क। २ निर्बल, अशक्त। ३ निर्लज्ज।
निजवा—वि० [स० नि यव] बिलकुल, स्वच्छ, निखालिश।
निजाम—पु० [अ० निजाम] १ प्रबन्ध, इतजाम। २ नवाबो की पदवी।
निजामत—स्त्री० [अ० निजामत] १ नाजिम का कार्यालय। २ नाजिम का कार्य। ३ नाजिम का पद। ४ प्रबध, व्यवस्था।
निजायक—वि० [अ० निजाअक] शत्रु, वैरी, दुश्मन।
निजार—वि० [फा०] १ गरीब, दरिद्र। २ दुबला-पतला। ३ असमर्थ, कमजोर।
निजारणौ (बौ)—क्रि० [फा० नजर] १ देखना, निरखना, लखना। २ नजर फेंकना।
निजारौ—देखो 'नजारौ'।
निजिक, निजीक, निजीकौ, निजीख—देखो 'नजदीक'।
निजुगति—देखो 'निरयुक्ति'।
निजूम—पु० [अ०] ज्योतिषी।
निजोख—वि० मस्त, बेफिक्र, निशक।
निजोग—देखो 'नियोग'।
निजोडणौ—वि० १ मारने या सहार करने वाला। २ काटने वाला। ३ नाश करने वाला।
निजोडणौ (बौ)—क्रि० [स० नि-जुड] १ काटना। २ मारना, सहार करना। ३ नाश करना। ४ पृथक करना, अलग करना।
निजोरौ—वि० (स्त्री० निजोरी) अशक्त, कमजोर।
निज्जणौ (बौ)—क्रि० १ विजय करना, जीतना। २ काबू करना, नियत्रण करना।
निज्जर—१ देखो 'निरजर'। २ देखो 'नजर'।
निज्जिणौ (बौ)—देखो 'निज्जणौ' (बौ)।
निज्जुत्ति—देखो 'निरयुक्ति'।
निज्झोडणौ (बौ)—देखो 'निजोडणौ' (बौ)।
निझख—पु० बासुरी, वशी।
निझर, निझरण—देखो 'निरझर'।
निझरणी—देखो 'निरझरणी'।
निझरणौ—देखो 'निरझरण'।
निझोडणौ (बौ)—देखो 'निजोडणौ' (बौ)।
निटोळ, (ल, लि)—वि० १ कटु, तीक्ष्ण। २ जो भला न हो, बुरा। ३ असुहावना। ४ गवार, मूर्ख। ५ उद्दण्ड, बदमाश। ६ अहकारी, घमडी।
निट्ट, निठ—देखो 'नीठ'।
निठणौ (बौ)—क्रि० १ समाप्त होना, खत्म होना। २ कम होना। घटना। ३ हमेशा के लिए खत्म होना। ४ खप जाना।
निठल्लू, नीठल्लौ—वि० [स० नि स्थल] (स्त्री० निठल्ली) १ जो कोई काम धधा न करे, निकम्मा। २ जिसके पास कोई काम न हो, खाली, फुर्सत वाला। ३ बेरोजगार, बेकार।
निठाणौ, (बौ) निठावणौ (बौ)—क्रि० १ समाप्त करना, खत्म करना। २ कम करना, घटाना। ३ हमेशा के लिए खत्म करना। ४ खपाना।
निठि—देखो 'नीठ'।
निठुर—देखो 'निस्ठुर'।
निठुरई, निठुरता, निठुराई—देखो 'निस्ठुरता'।
निठुराव—पु० निर्दयता कठोरता, निष्ठुरता।
निठोड—स्त्री० [स० नि स्थल] बुरी जगह, कुठौर।
निठोळ, नीठोल—देखो 'निटोळ'।
निडर—वि० [स०] १ भयमुक्त, भय रहित। २ साहसी, वीर। ३ निशक, दबग।
निडरता, निडराई—स्त्री० १ निर्भयता, साहस। २ भय का अभाव।
निडार, निडुर निड्डुर—देखो 'निडर'।
नितब—पु० [स० नितम्ब] १ कटिपश्चाद्भाग, चूतड। स्त्रियो के कटि के पीछे जाघो के ऊपर का ऊभरा हुआ भाग। २ पर्वत का ढलवा भाग। ३ पहाड के बीच का भाग। ४ नदी का ढलुवा तट। ५ कधा। ६ खडी चट्टान। ७ पर्वत। —वि० १ बडा*। २ अति तीक्ष्ण*।
—**जा**—स्त्री० पार्वती, नदी।
नितबणी, नितविणी—स्त्री० [स० नितबिनी] १ बडे व सुडौल नितबो वाली स्त्री, कामिनी। २ सुन्दरी। —वि० सुन्दर नितबो वाली।
नित—अव्य० [स० नित्य] १ सदा, सर्वदा, हमेशा, नित्य। २ प्रतिदिन, रोजाना। —वि० जो नित्य रहे, अविनाशी, शाश्वत। अनश्वर। —पु० श्रीकृष्ण। देखो 'नित्य'।
—**कृत**—पु० देवालय। —वि० नित्य किया जाने वाला।
—**नेम**='नित्यनेम'। —**प्रत, प्रति**='नित्यप्रति'।
नितरणौ (बौ)—देखो 'नीतरणौ' (बौ)।
नितळ—पु० [स०] सात पातालो मे से एक।
नितात—वि० [स०] १ सर्वथा, बिल्कुल, निरा, एकदम। २ अतिशय, अत्यन्त। ३ असाधारण।
निता—पु० [स० नेतृ] १ प्रजापति। २ राजा, नृप। ३ मुखिया।
नितार—देखो 'नीतार'।
नितारणौ (बौ)—देखो 'नीतारणौ' (बौ)।
निताळौ—पु० [देश०] योद्धा, वीर।

निति–स्त्री० [स० न्यात] १ जाति, समुदाय। २ देखो 'नित'। ३ देखो 'नीति'।

नितीठ, नितीठौ–देखो 'नत्रीठ, नत्रीठौ'।

नितु–देखो 'नित'।

नितुर–वि० [स० नि स्तुल] नीच।

नितेई–स्त्री० [स० नि-तत्त्व] वह गाय या भैंस जिसके दूध मे घी कम हो।

नित्त–देखो 'नित'।

नित्ततायी, नित्तोतायी–वि० [स० नित्यतूर] (स्त्री० नित्तताई, नित्तोताई, नित्तोतायी) १ अधिक प्यार से उद्दण्ड एव इतरा हुआ। २ अधिक गर्व या अहकार वाला।

नित्य–वि० [स०] १ रोजाना, प्रतिदिन, हमेशा। २ सदा, सर्वदा, शाश्वत। –पु० नित्य कर्म, नित्य नियम। —**करम, क्रिया**–स्त्री० स्नान, ध्यान आदि नित्य के काम। —**चरया**–स्त्री० दिनचर्या। प्रतिदिन का कार्य।—**नियम, नेम**–पु० नियमपूर्वक किये जाने वाले नित्य के कार्य। —**प्रति**–क्रि०वि० रोजाना, प्रतिदिन।

नित्यपिंड–स्त्री० [स०] प्रतिदिन एक ही घर से लिया जाने वाला आहार। (जैन)

नित्यप्रळय (प्रळै)–पु० [स० नित्य प्रलय] एक प्रकार का प्रलय।

नित्यांन–अव्य० [स० नित्य] हमेशा, प्रतिदिन, रोजाना। –पु० प्रात काल किया जाने वाला दान।

नित्या–स्त्री० [स०] १ उमा, पार्वती। २ एक शक्ति का नाम। ३ मनसादेवी।

नित्याभियुक्त–पु० [स०] स्वल्पाहारी योगी।

नित्यासी–पु० [स० नित्याशी] भोजन।

नित्रीठ, नित्रीठौ–देखो 'नत्रीठ'।

निदडली–देखो निद्रा'।

निदरसना–स्त्री० [स० निदर्शना] एक अर्थालकार विशेष।

निदरसी–वि० [स० निदर्सिन्] प्रकट करने वाला, बताने वाला।

निदांण–पु० [स० निदाप] १ फसल या पौधो के बीच उगी घास साफ करने की क्रिया, निराई। २ देखो 'निदांन'।

निदांणणौ (बौ)–क्रि० [स० नि-दाप=लवने] १ फसल मे उगे घास को साफ करना, निराई करना। [स० निर्दलनम्] २ नाश करना, सहार करना, मारना।

निदांणी–देखो 'निदांण'।

निदांन–पु० [स० निदान] १ रोग की पहिचान, रोग का निर्णय। २ रोग लक्षण। ३ रोग की जाच। ४ मूल कारण। ५ अन्त छोर। ६ बाधने की रस्सी। ७ बागडोर। ८ पवित्रता। ९ कारण। १० परिणाम, फल, नतीजा। ११ प्रधानता। १२ अत, नाश। १३ देखो 'निधान'। १४ देखो 'नियाण'। –वि० अधिक, बहुत। –अव्य० १ आखिरकार, अत मे। २ अच्छी तरह से। ३ निश्चित रूप से।

निदानि, निदांनिइ, निदानी–वि० अतिम, आखिरी। –पु० रोग परीक्षक, वैद्य। –स्त्री० रोग परीक्षण विद्या। देखो 'निदान'।

निदाळु, निदाळुवौ–देखो 'निद्राळु'।

निदाग–वि० बेदाग, निष्कलक।

निदाघ–पु० [स०] १ गर्मी, आतप, ताप, उष्णता। २ धूप, घाम। ३ ग्रीष्मकाल। ४ पुलस्त्य ऋषि का एक पुत्र। ५ पसीना। —**कर**–पु० सूर्य, रवि। ताप। —**काळ**–पु० ग्रीष्म ऋतु।

निदाडियौ, निदाढ़ियौ–वि० [स० नि-द्रष्ट्रा] १ विना दाढी, मूछ का। २ पुरुषत्वहीन।

निदिध्यास, निदिध्यासन–पु० [स० निदिध्यास] ध्यान, स्मरण, जाप।

निदेस, निदेसण–पु० [स० निदेश] १ आज्ञा, आदेश, हुक्म। २ मार्ग दर्शन, निर्देश। ३ शासन। ४ कथन।

निद्दळणौ (बौ)–क्रि० [सं० निर्दलनम्] १ सहार करना, मारना। २ नाश करना, नष्ट करना।

निद्दा–देखो 'निद्रा'।

निद्देस–देखो 'निदेस'।

निद्ध–वि० १ स्निग्ध, चिकना (जैन)। २ देखो 'निधि'।

निद्धधस–पु० [स० निद्धन्धस] निद्धन्धस।

निद्धडणौ (बौ)–क्रि० १ परास्त करना, हराना। २ अधीन करना।

निद्धनव–देखो 'नवनिधि'।

निद्धि–देखो 'निधि'।

निद्र–देखो 'निद्रा'।

निद्रा–स्त्री० [स०] १ नीद, सुप्ति। २ सुस्ती। ३ मूर्छित अवस्था। —**लखउ**–वि० निद्रासक्त। —**लुद्ध, लुध, लुधी**–वि० निद्रा के वशीभूत।

निद्राळु ,निद्रालु, निद्राळौ–वि० निद्रावस्था मे, नीद के वशीभूत।

निधक–वि० १ दृढ, मजबूत, अटल। २ देखो 'निधडक'।

निध–वि० अटल, अडिग। –पु० १ सतान, औलाद। २ गाय, धेनु। ३ देखो 'निधि'।

निधईसवर–देखो 'निधीस्वर'।

निधगुण–पु० [स० गुणनिधि] गणेश, गजानन।

निधडक–क्रि०वि० [देश०] १ विना किसी भय या डर के, निर्भय होकर। २ विना किसी सोच या चिंता मे, नि सकोच होकर। ३ विना किसी रोक-टोक के, वेरोक। –वि० १ चिंता रहित, निर्भय। २ दृढ, अटल।

निधरणीको–वि० (स्त्री० निधरणीकी) १ स्वतन्त्र, आजाद। २ महान्, बडा। ३ जबरदस्त, शक्तिशाली। ४ असहाय, गरीब, दीन। ५ बिना स्वामी का, अनाथ, लावारिस।

निधत्तकरम–पु० [स० निधत्तकर्म] अयोग्य कर्मों को रखने की क्रिया विशेष। (जैन)

निधनद–पु० नवनिधि।

निधन–पु० [स०] १ मृत्यु, अवसान। २ नाश, विनाश। ३ समाप्ति। ४ जन्म नक्षत्र से सातवा, सोलहवा व तेईसवा नक्षत्र। ५ फलित ज्योतिष मे लग्न से आठवा स्थान। ६ कुटुंब, जाति। -वि० गरीब, धनहीन। —पति–पु० शिव। गरीव, कगाल।

निधनव -देखो 'नवनिधि'।

निधपत–देखो 'निधिपति'।

निधवन–देखो 'निधुवन'।

निधवाणी–स्त्री० [स० वाणीनिधि] शारदा।

निधस–देखो 'नीधस'।

निधसणो (बो)–देखो 'नीधसणो' (बो)।

निधसुजळ–पु० [स० निधिमुजल] समुद्र, सागर।

निधान (नु)–पु० [स० निधान] १ खान, खजाना, आगार। २ कोष, खजाना। ३ सग्रह कक्ष। भण्डार। ४ निधि, धन। ५ आश्रय, आधार। ६ जहा कोई वस्तु लीन हो जाय, लय स्थान। ७ मुक्ति, मोक्ष। ८ सागर।

निधाडणो (बो), निधाड़णो (बो)–क्रि० [स० निर्घटित] परास्त करना।

निधि–स्त्री० [स०] १ कुबेर की नौ निधिया। २ गडा हुआ द्रव्य। ३ खजाना। ४ धन, द्रव्य सम्पत्ति। ५ लक्ष्मी। ६ समुद्र। ७ आगार, घर। ८ भण्डार, खजाना। ९विष्णु। १० अनेक सद्गुणो से भूषित पुरुष। ११ आर्या या स्कधाण का भेद विशेष। १२ नौ की सख्या※। –नाथ–पु० कुबेर। —प, पति, पाळ–पु० कुवेर। सेठ, साहूकार। खजाची

निधिध्यासन–देखो 'निदिध्यासन'।

निधिजळ–देखो 'जळनिधि'।

निधी–देखो 'निधि'।

निधीस्सर–पु० [सं० निधीश्वर] निधियो का स्वामी, कुवेर।

निधुख–देखो 'नहुप'।

निधुवन–पु० [स० निधुनम्] मैथुन, सभोग।

निधू–पु० १ इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र। २ निश्चय। –वि० १ अटल। २ अमर।

निधूम–वि० [स० निर्धूम] १ धूम रहित। धूए से रहित। २ विना धूमधाम का।

निधूवर–पु० [स० निधिवारि] समुद्र, जलधि।

निध्यमी–वि० [स० निधि + मि] नवमी।

निध्यान–देखो 'निधान'।

निध्यासन–देखो 'निदिध्यासन'।

निध्रस–देखो 'नीध्रस'।

निध्रसणो (बो)–देखो 'नीधसणो' (बो)।

निध्रू–देखो 'निधू'।

निनग–पु० [स० निम्नाग] १ वृक्ष, पेड। २ डिंगल गीतो मे एक दोष।

निनद–पु० [स०निनद] १ शब्द, आवाज, ध्वनि। २ कोलाहल।

निनाण–देखो 'निदाण'।

निनांणओ–देखो 'निनाणवौ'।

निनाणणो, (बो)–देखो 'निदाणणो' (बो)।

निनाणवे (वै)–देखो 'निनाणू'।

निनांणवों–पु० ९९ का वर्ष -वि० (स्त्री० निनाणवी) सौ से पहले वाला, ९८ के बाद वाला।

निनाणु (णू)–वि० [स० नवनवति] सौ से एक कम, नब्बे व नौ -पु०नब्बे व नौ की सख्या, ९९।

निनाणूक–वि० निन्नाणवें के लगभग।

निनाणूमौ–देखो 'निनाणवौ'।

निनाम, निनांमों–वि० (स्त्री० निनामी) नाम रहित।

निनाअ, निनाद, निनादि–पु० [स० निनाद] १ नाद, शब्द, आवाज। २ एक प्रकार का वाद्य। ३ कोलाहल, रव। ४ भिन्न-भिन्न शब्द।

निनिखुणि, निनिखुणी–स्त्री० वाद्य विशेष की ध्वनि।

निन्नांणवै–देखो 'निनाणू'।

निन्नेह–वि० [स० नि स्नेह] स्नेह रहित (जैन)।

निन्यांणवें, निन्यांनवै–देखो 'निनांणू'।

निन्हव–पु० [स० निन्हव] १ सत्य को छिपाने वाला (जैन)। २ अप्रलाप। (जैन)

निपग–वि० [स० नि+पगु] हाथ-पावो से लाचार, अपाहिज, निकम्मा।

निप–पु० [स०निप] १ घडा, गगरी, कलश। २ कदम का वृक्ष।

निपगाई–स्त्री० [स० नि - पद] अविश्वास।

निपगो–वि० [स० नि - पद] (स्त्री० निपगी) १ हाथ पावो से हीन, अपाहिज, निकम्मा। २ अविश्वनीय।

निपज–देखो 'नीपज'।

निपजणो (बो)–देखो 'नीपजणो' (बो)।

निपजाणो, (बो), निपजावणो (बो)–क्रि० [स निष्पादनं] १ उत्पन्न करना, पैदाकरना। २ उगाना, बोना। ३ बढाना,

बडा करना। ४ घटित करना, सम्पन्न करना। ५ परिपक्व करना, पकाना। ६ तैयार करना, बनाना।

निपट–वि० [स० निविड] १ बहुत, अधिक। २ केवल, एक मात्र, निरा, बिल्कुल। ३ खाली, विशुद्ध। ४ अद्वितीय, श्रेष्ठ। -क्रि० वि० बिल्कुल, सरासर, नितान्त। -स्त्री० निवृत्ति की क्रिया या भाव।

निपटणौ, (बौ)–क्रि० [स निवर्तन] १ रह जाना, खत्म होना, चुकना। २ निवृत्त होना, फारिक होना। ३ पूर्ण होना। ४ कार्य से छुटकारा पाना, अवकाश पाना। ५ शौचादि से निवृत्त होना। ६ निर्णीत होना, तय होना। ७ देखो 'निवडणौ' (बौ)। ८ देखो 'नीमडणौ' (बौ)।

निपटाणौ, (बौ)–क्रि० [स० निवर्तन्] १ खत्म करना, चुकाना। २ निवृत्त करना, फारिक करना। ३ पूर्ण करना। ४ कार्य से मुक्त करना, अवकाश देना। ५ निर्णय करना, तय करना। ६ देखो 'निवडणौ' (बौ)।

निपटारौ–देखो 'निवेडौ'।

निपटावणौ (बौ)–देखो 'निपटाणौ' (बौ)।

निपटेरौ–देखो 'निवेडौ'।

निपण–देखो 'निपुण'।

निपतन- पु० [स०] अध पतन, पतन।

निपत्त,(त्तौ,त्र,त्रौ)–वि० [स० निष्पत्र] (स्त्री०निपत्ती, निपत्री) पत्रहीन, जिसके पत्ते न हो।

निपन,(न्न)–देखो 'निस्पन्न'।

निपराट–वि० [देश०] निकृष्ट, नीच।

निपाडणौ, (बौ)– १ देखो 'निपाणौ' (बौ)। २ देखो 'निपजाणौ' (बौ)।

निपाणौ (बौ)–क्रि० १ लीपाना, लेपन कराना। २ कच्चे आगन पर गोवर आदि का लेपन कराना। ३ देखो 'निपजाणौ' (बौ)। ४ देखो 'निपजणौ' (बौ)।

निपात–पु० [स०] १ पतन, गिराव। २ मृत्यु, मौत। ३ सहार, विनाश, नाश। ४ प्रहार, आघात। ५ अध पतन। ६ व्याकरण के नियमो से बाहर बना शब्द। –वि० सहार या विनाश करने वाला।

निपातण (न)–पु० [स० निपातनम्] १ गिराने की क्रिया या भाव। २ मारने का कार्य। ३ विनाश ध्वस। ४ वध, हत्या। ५ नियम विरुद्ध शब्द का रूप।

निपातणौ (बौ)–क्रि० [स० निपातन्] १ गिराना, पतन करना। २ वध करना, मारना। ३ विनाश करना, ध्वस करना। ४ प्रहार, आघात करना।

निपाप (पौ)–वि० [स० निष्पाप] १ पाप रहित, निष्पाप। २ पवित्र। ३ श्रेष्ठ, उत्तम। ४ कमी या अभाव रहित। ५ निष्कलक।

निपावट–वि० [स० निष्प्रवंत] १ बेडौल, भद्दा। २ बुरा, खराब। ३ अशक्त, कमजोर।

निपावणौ (बौ)–देखो निपाणौ' (बौ)।

निपीडक–वि० [स० निपीडक] १ कष्टदायक, दु खदायक। २ निचोडने वाला। ३ पेरने वाला। ४ मलने या दलने वाला।

निपीडण–स्त्री०[स० निपीडना]१ चोट, आघात। २ अत्याचार। ३ कष्ट, दु ख।

निपीडणौ (बौ)–क्रि० [स०निपीडनम्] १ कष्ट देना, दु ख देना। २ निचोडना। ३ पेराई करना। ४ मलना, दलना। ५ घायल करना।

निपुण–वि० [स०] १ किसी कार्य या कला मे प्रवीण, दक्ष। २ चतुर, होशियार। ३ कवि। ४ पडित। ५ योग्य, काबिल। ६ दयालु। ७ तीक्ष्ण, सूक्ष्म। ८ कोमल। ९ सम्पूर्ण। १० ठीक-ठाक। –पु० चारण।

निपुणता, निपुणाई–स्त्री० १ दक्षता, प्रवीणता। २ चतुराई, होशियारी। ३ योग्यता। ४ सूक्ष्मता।

निपुन–देखो 'निपुण'।

निपूत, निपूतौ–वि० [स० निष्पुत्र] (स्त्री० निपूती) जिसके सतान या पुत्र न हो, नि सतान।

निपोचियौ, निपोचौ–वि० (स्त्री० निपोचण, निपोची) १ पुरुषार्थहीन, अशक्त, निर्बल। असमर्थ। २ निकम्मा। ३ आलसी, सुस्त।

निप्पट–देखो 'निपट'।

निफळ–देखो 'निस्फळ'।

निफेरी–देखो 'नफेरी'।

निबध–पु० [स०] १ लिखित प्रबध, लेख। २ रचना करने की क्रिया या भाव। ३ साहित्य व काव्य। ४ रचना। ५ वाक्य रचना। ६ टीका, भाष्य। ७ आधार, नीव। ८ प्रबध, व्यवस्था। ९ उद्देश्य, कारण। १० स्थान। ११ अवलम्ब, सहारा। १२ बधन। १३ बेडी। १४ रोक-थाम। १५ बनावट। १६ सद्वृत्ति। १७ वीणा की खू टी।

निबधणौ (बौ)–क्रि० १ रचना करना, लेखबद्ध करना। २ बनाना, सर्जन करना। ३ टीका करना। ४ प्रबध या व्यवस्था करना। ५ बाधना। ६ रोकथाम करना। ७ देखो 'निमधणौ' (बौ)। ८ सकल्प करना, निमित्त करना। ९ रखना। १० बध तैयार करना।

निबधु–वि० [स०] १ बधु रहित, जिसके भाई न हो। २ देखो 'निबध'।

३ क्षण, पल। ४ आख फडकने का रोग। ५ एक यक्ष का नाम।

निमोळी–देखो 'निंबोळी'।

निमोही–वि० [स० निर्मोही] १ प्रेम न करने वाला, निर्मोही। २ उदासीन, विरक्त। ३ बेदर्दी।

निमौ–देखो 'नमौ'।

निम्मळ–देखो 'निरमळ'।

निम्मांण (न)–देखो 'निरमांण'।

निम्माज–देखो 'नमाज'।

निम्हणौ (बौ)–देखो 'निभणौ' (बौ)।

निम्हाणौ (बौ), निम्हावणौ (बौ)–देखो 'निभाणौ' (बौ)।

नियठ–१ देखो 'निग्गथ'। २ देखो 'निरग्रथ।

नियता–पु० [स० नियतृ] १ विष्णु। २ शासक, प्रशासक। ३ मालिक, स्वामी। ४ सारथी, रथवान, परिचालक। ५ व्यवस्थापक।

निय–देखो 'निज'।

नियक, नियक, नियग, नियग–वि० [स० निजक] खुद का, अपना।

नियड–स्त्री० [स० निकट] १ नदी तट के आस-पास का भू भाग। २ देखो 'निकट'।

नियट्ट–वि० [स० निवृत्त] निपटा हुआ, निवत्त।

नियत–पु० [स०] शिव, महादेव। –वि० १ तय किया हुआ, मुकर्रर। २ स्थिर, निश्चित। ३ नियम से बधा हुआ, नियमबद्ध। ४ तैनात, नियोजित। ५ स्थापित, प्रतिष्ठित। ६ देखो 'नियति'। ७ देखो 'नीयत'।

नियति–स्त्री० [स०] १ भवितव्यता, होनहार। २ नियत बात, अवश्य होने वाली बात। ३ दैविक योग। ४ भाग्य। ५ अदृष्ट। ६ ठहराव, स्थिरता। ७ पूर्व वृत्त कर्मों का फल। ८ जड प्रकृति, स्वभाव। ९ नीति। १० बधन बद्धता। ११ प्रकृति, स्वभाव। —**वत**–वि० जिसका स्वभाव ठीक हो। ईमानदार।

नियत्तण–क्रि०वि० [स० निवर्तन] निवृत्ति के लिये।

नियत्ति–स्त्री० [स० निवृत्ति] १ निवृत्ति, मुक्ति। २ देखो 'नियति'।

नियम–पु० [स०] १ निश्चित किया हुआ कोई विधान, रीति, तरीका। विधि-विधान। २ कानून, विधि। ३ परम्परा, रूढी। ४ क्रम, दस्तूर। ५ रीति, रिवाज। ६ शासन, दबाव। ७ ऐसी व्यवस्था का निर्धारण जिस पर अन्य बातें निर्भर हो। ८ कार्य प्रणाली। ९ प्रतिज्ञा, व्रत, सकल्प। १० प्रतिबध, नियत्रण। ११ एक अर्थालकार विशेष। १२ विष्णु। १३ महादेव। —**बद्ध**–वि० नियमो मे बधा हुआ।

नियमी–वि० [स०] १ जो नियमो का पालन करे। २ जो नियम पूर्वक आचरण करे। ३ सदाचारी, व्रती।

नियय–१ देखो 'नियक'। २ देखो 'नियत'।

नियरि (री)–देखो 'नगरी'।

नियरू–देखो 'निकर'।

नियाण, नियांण, नियाणु–पु० [स० निदान] भौतिक इच्छाओ की पूर्ति हेतु की जाने वाली याचना।

नियाई–देखो 'न्यायी'।

नियाग–पु० [स०] मोक्ष। (जैन)

नियागट्ठी–वि० [स० नियागार्थी] मोक्ष चाहने वाला।

नियाज–स्त्री० [फा०] १ प्रेम, प्रदर्शन। २ दीनता-आजीजी। ३ बडो का प्रसाद। ४ इच्छा, कामना। ५ गरीबो को दिया जाने वाला मृत्यु भोज। ६ बडो से परिचय, सम्पर्क, सबन्ध। ७ उपहार, भेंट।

नियात–देखो 'न्यात, न्याति'।

नियाब–पु० [अ० नियाबत] प्रतिनिधित्व।

नियामकगण–पु० [स०] औषधि समूह विशेष।

नियामत–स्त्री० [अ० नेअमत] उत्तम व स्वादिष्ट भोजन।

नियायौ–पु० १ धन-दौलत। २ दुर्लभ वस्तु, अलभ्य पदार्थ। ३ देखो 'न्यायौ'।

नियार–पु० स्वर्णकारो की दुकान व दुकान का सामान।

नियारिया–स्त्री० सुनारो की दुकान की राख आदि छानने वाली एक जाति।

नियारियौ–पु० (स्त्री० नियारी) १ उक्त जाति का व्यक्ति। २ उक्त प्रकार का काम करने वाला व्यक्ति। ३ मिली हुई वस्तुओ को अलग करने वाला व्यक्ति। –वि० चतुर, चालाक।

नियारौ–देखो 'न्यारौ'।

नियाव–१ देखो 'न्याव'। २ 'न्याय'।

नियुंजणौ (बौ)–क्रि० [स० नियुनक्ति] १ प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना। २ नियोजन करना।

नियुत, नियुक्त–वि० [स० नियुक्त] १ किसी पद या कार्य पर नियोजित। २ लगाया हुआ, तैनात। ३ लगा हुआ, सलग्न। ४ ठहराया हुआ, स्थिर। ५ प्रेरित किया हुआ, तत्पर।

नियोग–पु० [स०] १ तैनाती, नियुक्ति। २ उपयोग। ३ आज्ञा। ४ बन्धन, सलग्नता। ५ अहसान। ६ उद्योग, प्रयत्न। ७ निश्चय। ८ प्रेरणा। ९ अवधारणा, विचार। १० अपने पति से नि सतान रहने पर स्त्री द्वारा अन्य पुरुष से किया जाने वाला सयोग।

नियोडी–स्त्री० [देश०] नाइयों का एक उपकरण।

निरकार–देखो 'निराकार'।

निरकारी–पु० नानक (सिख) सम्प्रदाय की एक शाखा।

निरकुस–वि० [स० निरंकुश] १ परम स्वतन्त्र, मुक्त, आजाद। २ जिस पर कोई रोक, दबाव या बन्धन न हो। ३ निर्भय निडर। ४ जो किसी नियम को न माने। ५ उद्दण्ड, आततायी।

निरग–वि० [स०] १ बिना रग का, जिसका कोई रग न हो। २ बदरग। ३ बेरौनक, फीका। ४ उदासीन, विरक्त। ५ जिसमे कुछ न हो, खाली। ६ अग रहित। -पु० रूपक अलकार का एक भेद।

निरजरा–देखो 'निरजन'।

निरजरा–स्त्री० [स०निरजरा] १ दुर्गा एक नाम। २ पूर्णिमा।

निरजरणी–देखो 'निरजनी'।

निरजन–वि०[स०] १ दुनिया से विरक्त। २ माया से निर्लिप्त। ३ दोष रहित, निष्कलक। पवित्र, शुद्ध। ४ मिथ्या से रहित। ५ सीधा-साधा। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ शिव, महादेव, शकर। ३ विष्णु। –**राय**–पु० परब्रह्म, ईश्वर।

निरजनी–पु० १ साधुओ का एक सम्प्रदाय। २ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद।

निरंत, निरतर, निरतरि, निरत्र–क्रि० वि० [सं० निरतर] लगातार, हमेशा, सदा। –वि०१ लगातार बना रहने वाला, सदा रहने वाला। २ स्थाई, अचल। ३ अखण्ड, अविचल ४ अन्तर रहित। ५ जिसमे भेद न हो। ६ निविड, घना, गहरा।

निरद–देखो 'नरेंद्र'।

निर–अव्य० [स० निर्] बाहर, दूर, बिना, रहित।

निरकाम–देखो 'निकाम'।

निरकांमी–देखो 'निकामी'।

निरकार, निरकारि–देखो 'निराकार'।

निरकार-रूपी–वि० लगातार अच्छा काम करने वाला। –पु० अर्जुन।

निरकुरणी (बौ)–क्रि० [देश०] खिन्न होना, उदास होना।

निरकुरो–वि० [देश०] (स्त्री० निरकुरी) उदास, खिन्न।

निरक्करणी (बौ)–क्रि० [स० निराकृत] १ पराजित करना, हराना। २ देखो 'निरखणी' (बौ)।

निरक्खणी (बौ), निरक्षणी (बौ)–१ देखो 'निरखणी' (बौ)। २ देखो 'निरक्करणी' (बौ)।

निरख–स्त्री० १ देखने की क्रिया या भाव। २ नेत्र, नयन। ३ राज्य द्वारा निर्धारित भाव। ४ देखभाल। ५ जांच। ६ ताक-झांक।

निरखणी (बौ)–क्रि० [स० निर-ईक्षणम्] १ देखना, अवलोकन करना। २ ताकना-झाकना। ३ ध्यान पूर्वक देखना। ४ परीक्षा करना, जाच करना। ५ देखभाल करना।

निरखदरोगो–पु० बाजार के भावो की निगरानी करने वाला दारोगा।

निरखनांमो–पु० बाजार भावो की सूची।

निरखबद (बदी)–स्त्री० बाजार भाव निर्धारण की क्रिया।

निरखर–वि० [स० निरक्षर] अनपढ, निरक्षर। –पु० ब्रह्मा।

निरगध–वि० [स० निर्गंध] जिसमे कोई गध न हो, गधहीन। —**ता**–स्त्री० गधहीन होने की दशा।

निरगम–पु० [स० निर्गम] निकास, रवानगी।

निरगमण (न)–पु० [सं० निर्गमन्] १ निकलना क्रिया। २ निकास द्वार, रास्ता। ३ प्रस्थान।

निरगात–वि० [स० निर्गात] देह रहित, आकार रहित। –पु० श्रीविष्णु।

निरगुडी–स्त्री० [स० निर्गुंडी] १ एक औषधि विशेष। २ इस औषधि का क्षुप। —**कल्प**–पु० निगुंडी के योग से बनी औषधि। —**तैल, तेल**–पु० वैद्यक मे एक तेल।

निरगुण–वि० [स० निर्गुण] १ जो सत्त्व, रज और तम तीन गुणो से परे हो। २ रूप, गुण व आकार से रहित। ३ जिसमे अच्छा गुण न हो। ४ बुरा, खराब। ५ मूर्ख, नासमझ। ६ निकम्मा। ७ जिसमे डोरी न हो। ८ बिना नाम का। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ श्रीविष्णु। —**गारु, गारो**–पु० गुण न मानने वाला, गुणचोर। कृतघ्न। गुण रहित, मूर्ख। —**ता**–स्त्री० गुण रहित होने की अवस्था या दशा। आकारहीनता।

निरगुणियौ, निरगुणी–वि० १ निराकार ब्रह्म का उपासक। २ गुण रहित। ३ अवगुणी। ४ मूर्ख।

निरगुणो–देखो 'निरगुण'।

निरगेह–वि० [स० निर्गृहिन्] १ सर्वत्र निवास करने वाला, सर्वव्यापी। २ गृहहीन, बिना घर का।

निरगुरख–देखो 'निरगुण'।

निरग्रंथ–वि० [स० निर्ग्रंथ] १ जिसका कोई मददगार न हो। नि सहाय। असहाय। अकेला। २ गरीब, निर्धन। ३ नासमझ, बेवकूफ, मूर्ख। ४ बधन रहित। –पु० १ एक प्राचीन मुनि का नाम। २ बौद्ध क्षपणक। ३ दिगबर। ४ राग, द्वेष से रहित साधु। (जैन)

निरघात–पु० [स० निर्घात] १ तेज वायु से उत्पन्न शब्द, आवाज। २ प्राचीनकालिक एक अस्त्र।

निरघोख, निरघोस–पु० [स० निर्घोष] ध्वनि, शब्द, आवाज। –वि० ध्वनि रहित।

निरछेह–वि० जिसका अन्त हो, अनन्त। –पु० ईश्वर।

निरजणो (बो)–क्रि० [स० निर-जयति] अजय पद प्राप्त करना, विजय करना, जीतना।

निरजर–पु० [स० निर्जर] १ देवता, सुर। २ अमृत, सुधा। –वि० १ जरा मुक्त। कभी बुड्ढा न होने वाला। २ देखो 'निरझर'। ३ युवा, जवान। ४ अनश्वर।

निरजरां-नायक–पु० [स० निर्जर-नायक] इन्द्र, देवराज।

निरजरा–पु० [स० निर्जर] देवता, सुर। [स० निर्जरा] तपस्या द्वारा कर्मफल का विच्छेद होने की क्रिया। (जैन)

निरजळ–पु० [स० निर्जल] १ वह भूमि या क्षेत्र जहा जल का अभाव हो। २ रेगिस्तान, मरु प्रदेश। ३ जल का अभाव। –वि० १ बिना जल का, जल रहित। २ जिसमे जल सेवन का निषेध हो। —व्रत-पु० बिना अन्न-जल लिये किया जाने वाला व्रत।

निरजळा, निरजळा इग्यारस (एकादसी)–स्त्री० [स० निर्जल-एकादशी] ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, जिस दिन बिना अन्न-जल लिये व्रत रखा जाता है।

निरजळि (ळो)–देखो 'निरजळ'।

निरजित निरजीत–वि० [स० निर्जीत] १ वश मे किया हुआ, काबू मे किया हुआ। २ जीता हुआ। ३ अधीन किया हुआ। ४ अजेय।

निरजीव–वि० [स० निर्जीव] १ प्राण रहित, बेजान। २ मृत। ३ अशक्त, कमजोर।

निरजीवण–वि० १ साहस व पुरुषार्थहीन। २ नपुसक। ३ निर्बल, कमजोर, अशक्त। ४ बेजान, जीव रहित। ५ मृत।

निरजुकति, निरजुगति–देखो 'निरयुक्ति'।

निरजुर–देखो 'निरजर'।

निरजोर–वि० १ निर्बल, अशक्त। २ दुर्बल, कृशकाय।

निरज्जरा–देखो 'निरजरा'।

निरझर, निरझरण–पु० [स० निर्झर, (ण)] १ बादल, मेघ। २ झरना, सोता, चश्मा। ३ देखो 'निरजर'। –वि० श्वेत, सफेद। —नदी-स्त्री० गगा नदी।

निरझरणी–स्त्री० [स० निर्झरिणी] सरिता, नदी।

निरडर–देखो 'निडर'।

निरणय–पु० [स० निर्णय] १ फैसला, निपटारा। २ निश्चय। ३ परिणाम, नतीजा, फल। ४ समाधान, हल। ५ न्यायालय का आदेश। ६ साराश।

निरणयोपमा–स्त्री० [स० निर्णयोपमा] एक अर्थालकार विशेष।

निरणीत–वि० [स० निर्णीत] १ जिसका निर्णय हो गया हो, फैसला शुदा। २ निश्चित, निर्धारित। ३ आदेशित।

निरणै, निरणौ–देखो 'निरणय'।

निरणौ–वि० [स० निरन्न] (स्त्री० निरणी) १ खाली, भूखा। २ देखो 'निरणय'।

निरतत–स्त्री० [स० नर्तकी] १ अप्सरा, परी। २ नर्तकी। ३ वेश्या, नगरवधू। ४ देखो 'निरत'।

निरत–पु० [स० नृत्य] १ नाच, नृत्य। २ चौसठ कलाओं मे से एक। ३ बहत्तर कलाओं में से एक। ४ दृष्टि, निगाह। –वि० [स० निरत] १ कार्य मे व्यस्त, लीन, तत्पर। २ आसक्त, अनुरक्त। ३ देखो 'निरति'। ४ देखो 'नैरित्य'।

निरतक–देखो 'नरतक'। (स्त्री० निरतकी)

निरतकर, निरतकार–वि० [स० नृत्यकार] नाचने वाला, नृत्य करने वाला। नर्तक।

निरतकी–देखो 'नरतकी'।

निरतणो (बो)–क्रि० [स० नृती] १ नृत्य करना, नाचना। २ उछल-कूद करना।

निरतत निरतति–देखो 'निरतत'।

निरतन–देखो 'नरतन'। —साळ, साळा='नरतनसाळा'।

निरतप्रिय–पु० [स० नृत्यप्रिय] १ शिव, महादेव। २ स्कन्द का एक अनुचर। –वि० नृत्य का शौकीन।

निरतसाळ, निरतसाळा–स्त्री० [स० नृत्यशाला] नाचघर। नृत्यशाला।

निरताई–स्त्री० [देश०] १ कायरता। २ नीचता, क्षुद्रता। ३ दरिद्रता, गरीबी। ४ अनुराग।

निरताणो (बो)–क्रि० १ लीन होना, मन लगाना। २ अनुरक्त होना। ३ द्रव पदार्थ का बहना।

निरताळ–देखो 'निराताळ'।

निरताळौ–वि० [स० नृत्य-आलुच] (स्त्री० निरताळी) १ नाचने वाला, नर्तक। २ उछल कूद करने वाला।

निरतावणो (बो)–क्रि० १ नाक का बहना। २ देखो 'निरताणो' (बो)।

निरति–स्त्री० १ समाचार, खबर, सुध। २ जानकारी, मालूम। ३ धैर्य, सान्त्वना। ४ शकुन। ५ रिक्तता। ६ देखो 'निरत'। ७ देखो 'नैरित्य'। —कुण='नैरित्यकोण'।

निरतिचार–वि० [स०] बिना अतिचार का, विशुद्ध।

निरती, निरतु–वि० [स० निरुक्त] १ स्पष्ट, निश्चित। २ प्रकट, खुला। ३ व्याख्या किया हुआ, समझाया हुआ। –पु० १ व्याख्या। २ व्युत्पत्ति। ३ वेद के छ अगो में से एक। ४ यास्क द्वारा, निघण्टु पर की गई एक प्रसिद्ध व्याख्या। ५ देखो 'निरत'।

निरतौ–वि० (स्त्री० निरती) १ कम, न्यून। २ हल्का, पोचा, कदु। ३ नीच, पतित।

निरत्त–देखो 'निरत'।

निरत्तारणौ (बौ)–क्रि० उद्धार करना, मोक्ष देना ।
निरत्याव–पु० [स० नृत्य] नृत्य नाद ।
निरयक–देखो 'निररथक' ।
निरथौ–वि० खराव, वुरा, नीच ।
निरदड–वि० [स० निर्दण्ड] सब प्रकार के दण्ड का भागी, शूद्र, नीच ।
निरदद–देखो 'निरद्व द' ।
निरदम–वि० [स० निर्दम्भ] जिसे दभ न हो, निर्भिमानी ।
निरदय, निरदयी–वि० [स० निर्दयी] १ दयाहीन, क्रूर, निष्ठुर । २ हिंसक वृत्ति वाला । —**ता**–स्त्री० क्रूरता, निष्ठुरता ।
निरदळण–वि० [स० निर्दलनम्] १ सहार करने वाला, मारने वाला । २ कष्ट, पीडा या दु ख देने वाला ।
निरदळणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्दलनम्] १ सहार करना, मारना । २ कष्ट देना, दु ख देना ।
निरदाई, निरदायी, निरदायौ–वि० बिना, रहित । विहीन ।
निरदावं–क्रि०वि० १ विना ग्रापत्ति या उज्र के । २ देखो 'निरदायौ' ।
निरदावौ–वि० ग्रधिकारहीन, ग्रनधिकृत । –पु० दावा हटाने का लेख । राजीनामा ।
निरदिस्ट–वि० [स० निर्दिष्ट] १ बताया हुग्रा, सुझाया या समझाया हुग्रा । २ पूर्व निश्चित । ३ जिसके प्रति निर्देश जारी किया जा चुका हो ।
निरदूख, निरदूखण, निरदूस, निरदूसण–देखो 'निरदोस' ।
निरदेई–देखो 'निरदयी' ।
निरदेस–पु० [स० निर्देश] १ किसी वात का सकेत, इगन । २ निश्चित करने या ठहराने की क्रिया या भाव । ३ नाम सज्ञा । ४ उल्लेख, जिक्र । ५ कथन । ६ सुझाव, सलाह । ७ हुक्म, ग्राज्ञा, ग्रादेश । ८ मार्ग दर्शन । ९ वर्णन । १० उपदेश ।
निरदेसक–वि० [सं० निर्देशक] १ सकेत देने वाला । २ सुझाव देने वाला । ३ ग्राज्ञा देने वाला । ४ मार्ग दर्शक, उपदेशक ।
निरदेह–वि० [स०] निराकार ।
निरदोख–देखो 'निरदोस' ।
निरदोखी, निरदोखौ–देखो 'निरदोस' ।
निरदोस–वि० [स० निर्दोष] (स्त्री० निरदोसण) १ जिसमे कोई दोप न हो, वुराई न हो । २ जो ग्रपराधी या दोषी न हो, वेकसूर । ३ निष्कलक, वेदाग । ४ त्रुटि रहित ।
निरदोसता–स्त्री० [स० निर्दोषत्व] दोषहीनता, ग्रपराध निष्कलकता । शुद्धता ।
निरदोसी–देखो 'निरदोस' ।
निरदोह, निरदोही–देखो 'निरदोस' ।
निरद्दय–देखो 'निरदय' ।
निरद्धाटणौ (बौ)–देखो 'निरधाटणौ' (बौ) ।
निरद्वंद, निरद्व द्व–वि० [स० निर्द्वन्द्व] १ जो राग-द्वेष या सुख-दु ख के झगडो से परे हो । २ जिसके कोई झगडा न हो, जो लडाई न करता हो । ३ जिसका कोई विरोधी न हो, निर्विरोध । ४ विकार रहित । ५ वाधा रहित, स्वच्छन्द ।
निरधण, निरधणियौ–वि० १ पत्नी रहित, कुवारा, विधुर । २ स्वामी रहित । लावारिस । ३ देखो 'निरधन' ।
निरधन–वि० [स० निर्धन] धन हीन, गरीब । दरिद्र, कगाल । –पु० वूढा वैल ।
निरधनता–स्त्री० गरीवी, कगाली ।
निरधनियौ–देखो 'निरधन' ।
निरधरम, निरधरम्म–वि० [स० निर्धर्म्म] १ जो धार्मिक न हो, धर्म रहित, धर्महीन । २ वेईमान, भ्रष्ट ।
निरधाटणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्धाटनम्] १ पराजित करना, हराना, ग्रधीन करना । २ नियत्रण मे करना, दवाना ।
निरधार, निरधारण–पु० [स० निर्धारण] १ निश्चित या तय करने की क्रिया या भाव । २ निश्चय । ३ निर्णय । ४ विश्वास । ५ गुण व कर्म ग्रादि के विचार से एक जाति के पदार्थों मे से कुछ की छटनी । –वि० १ पक्का दृढ । २ देखो 'निराधार' ।
निरधारणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्धारणम्] निश्चय करना, तय करना ।
निरधारौ–देखो 'निरधार' ।
निरधु द–देखो 'निरद्व द्व' ।
निरधू म, निरधूम–पु० [स० निर् + धूम्र] १ धुग्रा रहित । २ बिना शका या सदेह के, निस्सदेह । ३ रुकावट या वाधा रहित, निर्वाध ।
निरध्धण–१ देखो 'निरधन' । २ देखो 'निरधण' ।
निरध्रम्म–देखो 'निरधरम' ।
निरनउ–देखो 'निरणय' ।
निरपक्क (पक्ष, पख)–वि० [स० निर्पक्ष] १ पक्षहीन, दलहीन । २ पक्षपात रहित, निष्पक्ष । ३ मातृ-पितृ पक्ष रहित । ४ मित्र रहित । ५ जिसका कोई समर्थक न हो । –पु० ईश्वर ।
निरफळ–देखो 'निस्फळ' ।
निरबद (बध, बधन)–वि० [स० निर्वन्ध] वधन रहित, मुक्त, स्वतत्र । खुला ।
निरबस–देखो 'निरवस' ।
निरबद–वि० [स० निर्वद्य] दोप रहित, निर्दोप, विशुद्ध ।
निरबरणन–पु० [स०] देखने की क्रिया ।
निरबळ–वि० [स० निर्बल] वलहीन, कमजोर, ग्रशक्त ।

निरवळता–स्त्री० [स० निर्वलता] कमजोरी, अशक्तता।
निरवहणौ (बौ)–देखो 'निरवहणौ' (बौ)।
निरवाण, निरवाणी–पु० १ तीर, वाण। २ पाताल। ३ देखो 'निरवांण'।
निरवाचन–देखो 'निरवाचन'।
निरवाह–देखो 'निरवाह'।
निरवाहणौ (बौ)–देखो 'निरवाहणौ' (बौ)।
निरविकार–देखो 'निरविकार'।
निरबीज–वि० [स० निर्वीज] १ जिसका वश चलाने वाला कोई न हो, निर्वंश, नि सतान। २ जिसमे वीज न हो, वीज रहित। ३ जो कारण रहित हो।
निरबुद्धि (बुधी)–वि० [स० निर्बुद्धि] बुद्धिहीन, नासमझ, मूर्ख।
निरबोध–वि० [स० निर्वोध] जिसे वोध न हो, अवोध। अनजान।
निरबोह (बोह)–वि० गध रहित, वासना रहित।
निरभै–देखो 'निरभय'।
निरब्रती–पु० [स०] सुख।
निरभय–वि० [सं० निर्भय] १ जिसे भय न हो, जो डरता न हो, निडर, निर्भीक। २ निश्चित।
निरभयता–स्त्री० [स० निर्भयता] १ भय रहित होने की अवस्था या भाव, निडरता। २ निश्चितता।
निरभर–वि० [स० निर्भर] १ आश्रित, अवलवित। २ भरा हुआ, पूर्ण। ३ मिला हुआ युक्त।
निरभागी–वि० (स्त्री० निरभागण) भाग्यहीन।
निरभाणौ (बौ), निरभावणौ (बौ)–देखो 'निभाणौ' (बौ)।
निरभीक–वि० [स० निर्भीक] निडर, साहसी, भयमुक्त।
निरभीकता–स्त्री० [स० निर्भीकता] १ निडरता, साहस। २ भय से मुक्ति।
निरभीत–वि० [स० निर्भीत] निडर, निर्भय।
निरभै निरभ्भै, निरभ्भय–देखो 'निरभय'।
निरभ्रम–वि० [स० निर्भ्रम] १ भ्रम व सदेह रहित। २ निश्चित, नि शक। -क्रि०वि० वेखटके, नि सकोच होकर, स्वच्छदता से।
निरभ्रांत–वि० [स० निर्भ्रान्त] १ जिसको कोई शका न हो। २ भ्रांति रहित।
निरभ्रांतता–स्त्री० शका, भ्रांति या अशांति का अभाव।
निरमणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्मनम्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना। २ निर्मित होना, वनना।
निरमद–वि० [स० निर्मद:] विना मद का, नशा रहित।
निरमदा–देखो 'नरमदा'।
निरमन–वि० [स० निर्मन] मन या इच्छा रहित।
निरमळ–वि० [स० निर्मल] १ मल रहित, स्वच्छ साफ। २ शुद्ध, पवित्र। ३ निष्पाप। ४ निर्दोष, निष्कलक। ५ चमकदार। ६ श्वेत, सफेद।# -पु० १ नेत्र, नयन। २ अभ्रक।
निरमळा–स्त्री० [स० निर्मला] १ एक नदी का नाम। २ आख। ३ नानकशाही साधुओ की शाखा।
निरमळी–स्त्री० [स० निर्मली] १ एक सदा वहार वृक्ष विशेष। २ देखो 'निरमळ'।
निरमळौ–देखो 'निरमळ'।
निरमांण–पु० [स० निर्माण] १ वनाने का कार्य। २ वनावट रचना। ३ सृष्टि, सर्जन। ४ शक्ल, आकृति। वनावट। ५ इमारत।
निरमांस–वि० [स० निर्मांस] जिसके शरीर का मास सूख गया हो, कृशकाय, दुवला।
निरमाणौ(बौ)–क्रि० १ उत्पन्न करना, पैदा करना। २ निर्माण करना, रचना करना। ३ सृष्टि करना, सर्जन करना। ४ वनाना।
निरमाया–वि० [स० निर्माया] माया रहित।
निरमावणौ (बौ)–देखो 'निरमाणौ' (बौ)।
निरमित–वि० [स० निर्मित] वना हुआ, रचा हुआ, उत्पादित।
निरमुकत, निरमुगत–वि० [स० निर्मुक्त] वधन रहित, वधन मुक्त। स्वतन्त्र व आजाद। -पु० तुरत की केंचुल उतारा हुआ सर्प।
निरमुकती, निरमुगती–स्त्री० [स० निर्मुक्ति] १ स्वतन्त्रता, आजादी, मुक्ति। २ छुटकारा।
निरमूळ–वि० [स० निर्मूल] १ जिसकी जड या मूल न हो। २ वेवुनियाद, निराधार। ३ जिसकी वुनियाद या जड समाप्त हो चुकी हो। ४ सर्वथानष्ट।
निरमूळण(न)–स्त्री० निर्मूल करने की क्रिया या भाव।
निरमोक–पु० [स० निर्मोक] १ साप की केंचुल। २ देखो 'निरमोख'।
निरमोक्ष (मोख)–पु० [स० निर्मोक्ष] पूर्ण मोक्ष, मुक्ति।
निरमोल–वि० [स० निर्मूल्य] १ जिसका मूल्य असीम हो, अमूल्य, अनमोल। २ विना मूल्य का।
निरमोई, निरमोयौ–देखो 'निरमोही'।
निरमोह–पु० [स० निर्मोह] १ मोह, ममता आदि का अभाव २ विरक्ति, वैराग्य। ३ देखो 'निरमोही'।
निरमोही, निरमोहियौ, निरमोही–वि० [स० निर्मोहि] १ जिसे कोई मोह या ममता न हो। मोह, ममता से परे। २ विरक्त, उदासीन। ३ मूढ़, मूर्ख। ४ निर्भ्रांत।
निरम्मळ (ळौ)–देखो 'निरमळ'।
निरम्मळी–देखो 'निरमळी'।

निरय–स्त्री० [स०] नरक, दोजख।

निरयांण–पु० [स० निर्याण] १ आख की पुतली। २ यात्रा, रवानगी, प्रस्थान।

निरयात–पु० [स० निर्यात] १ देश या क्षेत्र से वाहर सामान वेचने की क्रिया या भाव। २ निकास।

निरयुक्ति–स्त्री० [स० निर्युक्ति] १ वह ग्रथ जो युक्ति सहित सूत्र का अर्थ वताता है। २ व्याख्या, टीका।

निररथ, निररथक–वि० [स० निरर्थक] १ विना मतलव का, व्यर्थ, फालतू। २ अर्थशून्य। ३ जिससे कोई लाभ न हो, कार्य सिद्धि न हो। ४ न्याय मे निग्रह स्थान।

निररबुद–पु० [स० निरर्बुद] एक नरक का नाम।

निररूप–वि० [स० निरूप] रूप व आकार रहित, निराकार।

निरळग, निरलग–वि० [देश०] १ निर्लिप्त, तटस्थ। २ अलग, पृथक, दूर। ३ कटा हुआ। –पु० खण्ड, टुकडा।

निरलज, निरलजौ, निरलज्ज–वि० [स० निलज्ज] जिसे लज्जा न आती हो, वेशर्म, वेहया।

निरलज्जता–स्त्री० [स० निर्लज्जता] वेशर्मियत, वेहयाई।

निरलाज–देखो 'निरलज्ज'।

निरलिप्त–वि० [स० निर्लिप्त] १ तटस्थ, पृथक, अलग। २ युक्त। ३ विरक्त।

निरलेखण, (न)–पु० [स० निर्लेखन] १ सुश्रुत के अनुसार मैल खुरचने का एक उपकरण। २ मैल खुरचने की क्रिया।

निरलेप–वि० [स० निर्लेप] राग द्वेषादि गुणो से मुक्त, अनासक्त, विरक्त।

निरलोइ, निरलोई, निरलोभ, निरलोभी–वि० [सं० निर्लोभी] जिसे लोभ या स्वार्थ न हो, निस्वार्थी।

निरवस–वि० [स० निर्वंश] जिसका वश न हो, जिसका वश समाप्त हो गया हो।

निरवसता–स्त्री० वश मिटने की अवस्था।

निरवद्य–वि० [स०] निर्दोष।

निरवपण–पु० [स० निर्वपण] दान।

निरवलब–वि० [स०] १ जिसका कोई आश्रय या आधार न हो। २ जिसका कोई सहायक न हो।

निरवह–वि० [सं० निर् वहनम्] १ निभाने वाला। २ वहन करने वाला, सहने वाला। ३ पूरा करने वाला। ४ धारण करने वाला। –पु० १ निर्वाह, गुजारा। २ समाप्ति। ३ वहन करना क्रिया।

निरवहणौ, (बौ)–क्रि० [स०निर् वहनम्] १ निभाना। २ वहन करना, सहन करना। ३ पालन करना। ४ पूरा करना। ५ धारण करना। ६ निभना।

निरवांण–पु० [स० निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष। २ शुद्ध चेतन, परब्रह्म। ३ समाप्ति। पूर्णता। ४ शून्य। ५ शाति। ६ मृत्यु। ७ छुटकारा। ८ प्रथम गुरु के ढगण के द्वितीय भेद का नाम। –वि० १ बिना बाण का। २ मुक्त। ३ शून्यता को प्राप्त। ४ निश्चय। ५ स्वगदाता। ६ मरा हुआ, मृत। ७ वुझा हुआ। ८ अदृश्य, लुप्त। ९ अस्त। १० शान्त।

निरवांणि (णी)–क्रि०वि० अवश्य, जरूर। –वि० वाणी रहित, मूक। देखो 'निरवाण'।

निरवाणु, (णौ)–देखो 'निरवाण'।

निरवांनी–१ देखो 'निरवाण'। २ देखो 'निरवांणि'।

निरवाचक–वि० [स० निर्वाचक] निर्वाचन करने वाला, चुनने वाला।

निरवाचन–पु० [स० निर्वाचन] चुनाव। चयन।

निरवात–वि० [स० निर्वात] १ स्थिर, शान्त, अचचल। २ हवा या वायु रहित।

निरवासन–पु० [स० निर्वासन] १ देश निकाला। २ निकाल देने की क्रिया या भाव। ३ निर्गमन। ४ विसर्जन, समाप्ति, भग। ५ वध, हत्या।

निरवाह–पु० [स० निर्वाह] १ गुजारा, पालन, निर्वाह। २ पूर्णता, समाप्ति। ३ पालन, अनुसरण। ४ परपरा की रक्षा। ५ प्रचलन। ६ देखो 'निभाव'।

निरवाहण (न)–वि० निर्वाह करने वाला, निभाने वाला।

निरवाहणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्वाहनम्] १ गुजारा करना, निभाना। २ पालन करना। ३ पूर्ण करना, समाप्त करना। ४ अनुसरण करना। ५ परपरा निभाना। ६ जिम्मेदारी सभालना।

निरविकल्प–पु० [स० निर्विकल्प] १ ज्ञाता एवं ज्ञेय के एक होने की अवस्था। २ बौद्ध शास्त्रो मे प्रामाणिक माना जाने वाला ज्ञान। –वि० १ विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदो से रहित। २ जो दृढ़ विचारो वाला न हो। ३ जो पारस्परिक सबध न रख सके।

निरविकार–वि० [स०निर्विकार] १ विकार या विकृति रहित। २ निस्वार्थी। ३ अपरिवर्तनीय स्थिर।

निरविघन, निरविघ्न–वि० [स० निर्विघ्न] विघ्न या वाधा रहित। —क्रि० वि० निर्बाध गति से।

निरविचार–पु० [स० निर्विचार] वुद्धि को सर्व प्रकाशक और चित्त को निर्मल करने वाली सवसे उत्तम सवीज समाधि। –वि० जिसमे कोई विचार न हो। विचारहीन।

निरविधि–वि० [स० निर्विधि] बिना विधि के, विधि रहित।

निरविवाद–वि० [स० निर्विवाद] विवाद या तर्क रहित, बिना किसी समस्या या झगडे का। —क्रि० वि० बिना तर्क या विवाद किये।

निरविवेक–वि० [स० निर्विवेक] विवेकहीन, विवेकशून्य ।
निरवृं–वि० [स० निर्वृत्त] प्रसन्न, खुश ।
निरवेग–वि० [सं० निर्वेगम्] वेग या गति रहित ।
निरवेर–वि० [स० निर्वैर] राग, द्वेष या वैर रहित ।
निरव्रती–देखो 'निरव्रसी' ।
निरसंक–देखो 'निसक' ।
निरसध, निरसधी–वि० सधि रहित, सधिविहीन ।
निरससे (सै)–वि० [स० निर्संशय] सशय रहित ।
निरस–वि० [स०] १ निम्न, हल्का । २ तुच्छ, छोटा, लघु । ३ रसहीन । ४ सूखा, शुष्क । ५ जो रमिक न हो, विरक्त । ६ जिममे मार न हो, असार । ७ फीका । ८ स्वादहीन ।
निरसण–पु० [स० निरसन] हटाना क्रिया, दूर करना क्रिया ।
निरसहाय–देखो 'निसहाय' ।
निरसिंध–देखो 'निरसध' ।
निरसिंह–देखो 'नरसिंध' ।
निरसौ–देखो 'निरम' ।
निरस्त–पु० [स०] १ समाप्ति, पूर्णता । २ विनाश, नाश । ३ मिटना क्रिया । –वि० १ नष्ट, वर्बाद । २ त्यक्त, छोडा हुआ । ३ फेंका हुआ । ४ रहित, हीन । ५ रद्द किया हुआ, स्थगित । ६ उगला या थूका हुआ । ७ दवाया हुआ । ८ अलग, पृथक । ९ विकृत, विगडा हुआ ।
निरस्स–देखो 'निरस' ।
निरस्साअ, निरस्साय–वि० [स० नि स्वाद] स्वाद रहित, फीका ।
निरहार–देखो 'निराहार' ।
निरांत, निराति–देखो 'नैरात' ।
निराउध–देखो 'निरायुध' ।
निराकरण–पु० [सं०] १ समाधान, हल । २ दलील या युक्ति द्वारा खण्डन । ३ निवारण, परिहार, शमन । ४ दूर करने की क्रिया । ५ तिरस्कार । ६ निर्वासन । ७ छटनी ।
निराकरणौ (बौ)–क्रि० १ समाधान करना, हल करना । २ खण्डन करना, तर्क देना । ३ शमन करना । ४ दूर करना । ५ तिरस्कार करना । ६ निर्वासित करना । ७ छटनी करना ।
निराकार (रौ)–वि० [स०] १ आकार या रूप रहित । २ शक्ल या सूरत रहित । ३ बदशक्ल, कुरूप । ४ भद्दा । ५ कपटवेशी, छद्म वेशी । ६ विनम्र, लज्जालु । –पु० १ परब्रह्म, ईश्वर । २ ब्रह्मा । ३ विष्णु । ४ शिव । ५ शून्य, आकाश ।
निराक्रद–वि० [स०] १ रक्षा या सहायता न करने वाला । २ फरियाद या पुकार न सुनने वाला । ३ असहाय, विवश, निराश्रित ।
निराखर–वि० [स० निरक्षर] १ जिसे अक्षर ज्ञान न हो, अनपढ अपठित । २ वर्ण या अक्षर रहित । ३ विना शब्द का, मौन ।
निराट (ठ)–वि० १ अत्यन्त, बहुत । २ सूक्ष्मतम, अतिसूक्ष्म । ३ केवल, मात्र । ४ जबरदस्त, महान् ।
निराणद–वि० [स० निरानन्द] आनन्द रहित ।
निरातक–वि० [सं०] १ भय रहित, निर्भय, निडर । २ मृत्यु रहित । ३ रोग रहित, निरोग । –पु० रावण का एक पुत्र, नरातक ।
निरात–देखो 'नैरित्य' ।
निरातप–वि० [स०] आतप रहित, शीतल, ठडा ।
निराताळ, निराताळा, निराताळा–वि० १ वहुत, अत्यन्त, अधिक । २ भयकर ।
निराताळी, निराताळौ–क्रि०वि० १ निर्भयता से, वेखटके । २ वहुत देर तक ।
निरादर–पु० [स०] अनादार, तिरस्कार ।
निरादेह–वि० [स०] देह रहित, निराकार, अव्यक्त ।
निराधार–वि० [स०] १ आधार रहित, आश्रय या अवलब रहित । २ वेबुनियाद । ३ अप्रामाणिक । ४ कल्पित । ५ झूठा, मिथ्या । ६ खाली पेट । ७ आजीविकाहीन । ८ मायिक विषयो के आश्रय रहित । ९ जिसे किसी आश्रय की जरूरत न हो । १० व्यर्थ, निरर्थक ।
निरानद–पु० [स०] १ आनन्द का अभाव । २ कष्ट, पीडा, दुख । ३ वैराग्य, विरक्ति । –वि० १ आनन्द रहित, खुशी रहित । २ जहां आनन्द न हो ।
निरापद–वि० [सं०] १ जहा पर खतरा या डर न हो । २ जिसे भय न हो, निर्भय । ३ सुरक्षित । ४ नि शंक, चिंता रहित ।
निरापेक्ष, निरापेक्षी, निरापेखी–वि० [स० निर-पक्ष] १ तटस्थ, अलग, पृथक । [स० निरपेक्ष] २ चाह व इच्छा रहित । ३ कामना शून्य, निष्कामी । ४ निस्वार्थी । ५ लापरवाह, असावधान । ६ अनुराग रहित ।
निराव–वि० [स० निर्-आभा] १ काति रहित, आभा रहित । २ मद, धीमा । ३ प्रकाश रहित, चमक रहित ।
निरामय–वि० [स०] स्वस्थ, तंदुरुस्थ । –पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ सूअर । ३ जगली वकरा ।
निरामिस–वि० [स० निरामिष] १ जिसमे मांस न हो, मास रहित । २ जो मांसाहारी न हो । ३ धन-धान्य से रहित ।
निरामूळ–पु० [स० निर्मूल] १ ईश्वर, परमात्मा । २ देखो 'निर्मूल' ।

निरामोह–वि० मोहरहित ।
निरायुध–वि० [स०] अस्त्र-शस्त्र रहित ।
निरालब–वि० [स०] १ अवलब या आधार रहित । २ विना ठिकाने या आश्रय का । –पु० परब्रह्म ।
निराळ, निराल–वि० [स० निर्-आहार] भूखा, खाली पेट, बिना कुछ खाया-पिया । –क्रि०वि० विना कुछ खाये-पिये, खाली पेट के । देखो 'निराळौ' ।
निराळस–वि० [स० निरालस] आलस्य व प्रमाद रहित, चुस्त, फुर्तीला ।
निराळ, निरालु, निराळौ, निरालौ–वि० [सं० निरालय] (स्त्री० निराळी) १ अनोखा, अद्‌भुत, विचित्र । २ अद्वितीय, अपूर्व । ३ अलग, पृथक, तटस्थ । ४ निर्जन, एकान्त । –पु० निर्जन स्थान ।
निरावर–पु० [स० निर्-रव] शब्द, ध्वनि, आवाज । –वि० शब्द रहित ।
निरावलब–वि० [स०] अवलब या आधार रहित । निराधार ।
निरास–वि० [स० निराश] १ आशाहीन, उम्मीद रहित । २ निरुत्साह, हताश । ३ देखो 'निरासा' ।
निरासा–स्त्री० [स० निराशा] १ आशा या उम्मीद न रहने की अवस्था या भाव । २ उदासी ।
निरासिस–वि० [स० निराशिष] १ जिसे कोई आशीर्वाद या वरदान प्राप्त न हो । २ तृष्णा या इच्छा रहित ।
निरासी–वि० [स० निराशिन्] आशा व तृष्णा से रहित ।
निरास्रय–वि० [स० निराश्रय] आश्रय या सहारे से रहित ।
निराहपण–पु० निराशापन ।
निराहार–वि० [स०] १ जिसने कुछ खाया-पिया न हो, खाली पेट, भूखा । २ जो विना भोजन के रहे । ३ जिसे भोजन का निषेध हो । –क्रि०वि० विना कुछ खाये-पिये, खाली पेट से ।
निरीक्षक–पु० [स०] १ जाच व देख-भाल करने वाला अधिकारी । २ परीक्षक ।
निरीक्षण, निरीक्षिण–पु० [स० निरीक्षण] १ देख-रेख, निगरानी । २ जाच, परीक्षा । ३ दर्शन, अवलोकन । –वि० रक्षा से रहित ।
निरीखणौ (बौ)–देखो 'निरखणौ' (बौ) ।
निरीति–वि० अतिवृष्टि से रहित, अनावृष्टि ।
निरीस–वि० [स० निरीश] १ अनीश्वरवादी, नास्तिक । २ विना स्वामी का, लावारिस । –पु० [स० निरीष] हल का हरीस ।
निरीह–वि० [स०] १ विरक्त, उदासीन । २ तटस्थ, अलग, पृथक । ३ जिसे कोई चाह न हो । संतोषी । ४ शांति प्रिय । ५ चेष्टा रहित, निश्चेष्ट । ६ निर्दोष । ७ असमर्थ ।
निरीहा–स्त्री० [स०] १ विरक्ति, उदासी । २ तटस्थता, अलगाव । ३ इच्छा का अभाव । ४ सतोष, शाति । ५ चेष्टा, प्रयत्न ।
निरीहौ–देखो 'निरीह' ।
निरुकत, निरुकती, निरुक्त–पु० [स० निरुक्त] वेद के छ अगों मे से एक ।
निरुर्जसिह–पु० [स०] एक प्रकार का तप (जैन) ।
निरुतउ, निरुत्तउ–देखो 'निरतु' ।
निरुत्तर–वि० [स०] १ जिसका कोई उत्तर या जवाब न हो । २ जो कोई उत्तर न दे सकता हो । ३ कसूरवार ।
निरुत्साह–वि० [स०] उत्साह रहित ।
निरुद्ध-पु० [स०] योग मे पांच प्रकार की मनोवृत्तियो मे से एक । –वि० अवरुद्ध, रुका हुआ ।
निरुद्यम–वि० [स०] १ जिसके पास कोई उद्यम या धंधा न हो । २ निकम्मा, अयोग्य । अकर्मण्य ।
निरुद्यमता–स्त्री० [स०] १ उद्यम का अभाव । बेरोजगारी । २ निकम्मापन, अकर्मण्यता ।
निरुद्योग, निरुद्योगी–वि० [स०] उद्योगहीन, निकम्मा ।
निरुपक्रम–वि० [स०] १ पलायन रहित । २ ठप्प ।
निरुपद्रव, निरुपद्रवी–वि० [स०] १ उपद्रव व उत्पात रहित, शान्त । २ जो उपद्रवी या उत्पाती न हो ।
निरुपम–वि० [स०] जिसकी कोई समता या उपमा न हो, अद्वितीय, अद्‌भुत ।
निरुपवाद–वि० त्रुटि रहित, अपवाद रहित ।
निरुपाधि–पु० [स०] ब्रह्म । –वि० १ विना उपाधि का । २ बाधा रहित । ३ माया रहित ।
निरुपाय–वि० [स०] १ जिसके लिये कोई उपाय या उक्ति न हो । २ जो युक्ति लगाने मे असमर्थ हो ।
निरूंखौ–वि० (स्त्री० निरूंखी) जहा वृक्ष न हो ।
निरूढ़लक्षणा–स्त्री० [स०] वह शब्द शक्ति जिसमे शब्द का गृहीत अर्थ रूढ हो गया हो ।
निरूप–वि० [स०] जिसका कोई रूप या आकार न हो । निराकार । –पु० ब्रह्म ।
निरूपण–पु० [स०] १ विवेचनापूर्वक विचार, निर्णय । २ व्याख्या । ३ दर्शन । ४ प्रकाश । ५ शोध, खोज । ६ परिभाषा ।
निरूपम (मौ)–देखो 'निरुपम' ।
निरूपित–वि० [स०] जिसकी विवेचना करदी गई हो, परिभाषित, व्याख्या किया हुआ ।
निरूहवस्ति–स्त्री० [स०] चिकित्सा की एक विधि ।
निरेखणौ (बौ)–देखो 'निरखणौ' (बौ) ।

निरेजम–वि० [देश०] १ साहसहीन, कायर, डरपोक। २ नामर्द, नपुंसक।
निरेण–देखो 'नरेहण'।
निरेह, निरेहण–वि० १ पतला, कृश। २ देखो 'नरेहण'।
निरेहणा–वि० [स० निरेषण] कामना रहित, इच्छा रहित।
निरोग–पु० १ चन्द्रमा, चाद। २ देखो 'नीरोग'।
निरोगता–देखो 'नीरोगता'।
निरोगी–देखो 'नीरोगी'।
निरोगौ–देखो 'नीरोग'।
निरोध–पु० [सं०] १ अवरोध, बाधा, रुकावट। २ बधन। ३ चित्त वृत्तियो को एकाग्र करने की क्रिया। ४ घेरा, वृत्त। ५ नाश, ध्वस।
निरोधणौ, (बौ)–क्रि० [स० निरोधनम्] १ रोकना अवरुद्ध करना। २ बाधना। ३ चित्त को एकाग्र करना। ४ घेरना। ५ नाश करना।
निरोधन–पु० [स०] १ वैद्यक मे पारे का छठा सस्कार। २ अवरोध, निरोध।
निरोधपरिणाम–पु० योग मे चित्त वृत्ति की एक अवस्था।
निरोप–देखो 'निरोळ'।
निरोपम–देखो 'निरुपम'।
निरोळ, निरोल, निरोव–पु० आज्ञा, आदेश।
निरोवर–पु० [स० नीरधर] समुद्र, सागर।
निरोस–वि० [स० नि-रोष] जिसे रोष न हो, जो क्रोधी न हो, शान्त।
निरोह–पु० १ युद्ध स्थल। २ देखो 'निरोध'। ३ देखो 'निरोस'।
निरोहर–पु० [स० नीरधर] समुद्र, सागर।
निरौ–वि० (स्त्री० निरी) १ बहुत, अधिक। [स० निरालय] २ जिसके साथ और कुछ न हो, केवल, मात्र। ३ विना मेल का, विशुद्ध, खालिश। ४ बिल्कुल, निपट, नितांत।
निलपका–देखो 'नलपिका'।
निल– १ देखो 'निलै'। २ देखो 'नीलौ'।
निलई, निलउ– १ देखो 'निलै'। २ देखो 'निलय'। ३ देखो 'नीलौ'।
निलखरणउ, निलखणौ–वि० [स० निर्लक्षण] लक्षण या गुण रहित।
निलखणौ, (बौ)–क्रि० [स नि+लिख्] अकित करना, लिखना
निलज–देखो 'निरलज्ज'।
निलजई, निलजता, निलजताई–देखो 'निरलज्जता'।
निलजौ, निलज्ज, (ज्जौ)–देखो 'निरलज्ज'।
निलन–देखो 'नलिन'।
निलय–पु० [स०] १ स्थान, जगह। २ घर मकान। ३ समूह, पुंज। ४ ललाट, भाल।
निलवट, निलवटि, निलवट्ट–देखो 'निलै'।
निलांबर–पु० [स०] १ बलराम २ आसमान।
निलाम–देखो 'लीलाम'।
निलागर–पु० रग विशेष का घोडा।
निलाड, (डी, डौ) निलाट, (टी, टौ) निलाड, निलाडि–देखो 'ललाट'।
निलाव–वि० स्वच्छ, निर्मल।
निली–देखो 'नील'।
निलीह–वि० गुप्त।
निलै–पु० [स निटल, निटिल] १ ललाट, भाल। २ देखो 'निलय'।
निलोह, निलोही, निलोहौ–वि० जिसे शस्त्र या लोह का घाव न लगा हो, अक्षत।
निलौ– १ देखो 'निलय'। २ देखो 'निलै'। ३ देखो 'नीलौ'।
निल्लाट–देखो 'ललाट'।
निव–देखो 'नृप'।
निवड़–वि० [स निविड] १ दृढ, मजबूत। २ बहादुर, वीर पराक्रम। ३ जबरदस्त। ४ अद्वितीय। ५ देखो 'निपट'। ६ देखो निविड'।
निवडणौ, (बौ)–क्रि० [स०निवर्तन] १ फलीभूत होना। २ तैयार होना। ३ निवृत्त होना। ४ देखो 'निपटणौ' (बौ)।
निवछावळ, (ळि)–देखो 'निछरावळ'।
निवड–वि० [स०निविड] १ प्रगाढ, गहरा, घना,। २ दृढ, मजबूत। ३ भयकर। ४ देखो 'निपट'। ५ देखो 'निविड'।
निवणौ, (बौ)–देखो 'नमणौ' (बौ)।
निवतणौ, (बौ), निवतरणौ, (बौ)–देखो 'निमत्रणौ' (बौ)।
निवतरौ–१ देखो 'निमत्रण'। २ देखो 'नैंत'।
निवतेरौ, निवतैरौ–वि० [स० नमनम्] १ ढलती उम्र का। २ हल्का।
निवतौ–१ देखो 'निमत्रण'। २ देखो 'नैंत'।
निवरत्ती–वि० [स० निवर्तिन्] १ निर्लिप्त। ३ युद्ध से भागा हुआ। ३ पीछे हटने वाला।
निवरौ–वि० [स० निवृत्त] (स्त्री० निवरी) १ काम-काज या उत्तरदायित्व से मुक्त, निवृत्त। २ अवकाश या फुर्सत वाला ३ खाली, निठल्ला। ४ व्यर्थ, बेकार। ५ तटस्थ, उदास।
निवळ, निवलोडौ, निवळौ–देखो 'निरबळ'।
निवसणौ, (बौ)- क्रि० [स० निवसनम्] निवास करना, रहना।
निवसथ–पु० [स० निवसथ] १ गाव ग्राम। २ मकान, घर। ३ डेरा। ४ निवास, आवास।
निवसन–पु० [स० निवसन] १ स्त्रियो का अधोवस्त्र। २ नीचे पहनने का वस्त्र। ३ देखो 'निवसथ'।

निवह–पु० [स०] १ समूह, यूथ। २ सात प्रकार के पवनो मे से एक।

निवहणौ, (बौ)–देखो 'निभणौ' (बौ)।

निवांण, निवाणणौ–पु० [स० निपान] १ जलाशय, सरोवर, तालाव। २ कूप, कूग्रा। ३ वापिका। ४ समुद्र, सागर। ५ गड्ढा, खड्डा। ६ पोखर। ७ नीची भूमि। ८ देखो 'निरवाण'। –वि० नीचा। –भर-पु० बादल, घन।

निवांणियौ–वि० [स० निवात] धारोष्ण (दूध)।

निवाणू, निवाणौ–वि० [स० निवात] १ साधारण उष्ण, गुनगुना। २ देखो 'निवांण'।

निवान–देखो 'निवांण'।

निवा–देखो 'न्याव'।

निवाग्र–देखो 'निपात'।

निवाई–वि० [स० निवात] १ बिना वायु की, वायु रहित। २ साधारण उष्ण, गुनगुनी। ३ देखो 'न्याव'।

निवाज–वि० [फा० नवाज] दयालु, कृपालु। –पु० १ घोडा, अश्व। २ देखो 'नमाज'।

निवाजण–वि० प्रसन्न होकर दान करने वाला।

निवाजणौ, (बौ)–क्रि० १ खुश होना, प्रसन्न होना। २ कृपा; दया या अनुग्रह करना। ३ तुष्टमान होना।४ दान देना। ५ पुरस्कार देना।

निवाजस–स्त्री० [फा० निवाजिश] १ पारितोषिक, पुरस्कार इनाम। २ कृपा, महरबानी, अनुग्रह। ३ दान।

निवाजियौ–वि० नमाज पढने वाला।

निवाजिस–देखो 'नवाजस'।

निवाजौ–देखो 'निवाज'।

निवाणौ, (बौ)–देखो 'नमाणौ' (बौ)।

निवात–स्त्री० मिश्री।

निवाब–देखो 'नव्वाब'।

निवाबजादौ–देखो 'नव्वावजादौ'।

निवाबी–देखो 'नव्वावी'।

निवायौ–वि० [स० निर्वात] (स्त्री० निवाई) १ साधारण उष्ण, गर्म, गुनगुना। २ वायु रहित।

निवार–स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का अनाज। [फा० नवार] २ पलग, खाट आदि बुनने की सूत आदि की चौडी पट्टी।

निवारक–वि० [स०] १ दूर करने वाला, मिटाने वाला। २ रोकने वाला, अवरोधक। ३ समाधान करने वाला।

निवारण-पु०[स०]१ रोक, वचाव। २ हटाना क्रिया। ३ वर्जन, निषेध। ४ बाधा, रुकावट। ५ छुटकारा, निवृत्ति।

निवारणौ,(बौ)–क्रि० [स० निवारणम्] १ दूर करना, मिटाना, हटाना। २ रोकना, अवरुद्ध करना। ३ समाधान करना। ४ छोडना, निवृत्त करना। ५ नाश करना। ६ अलग करना, पृथक करना। ७ अतिक्रमण करना।

निवारन–देखो 'निवारण'।

निवारस–वि० लावारिस, बिना स्वामी का।

निवाळ–देखो निवाळौ'।

निवाळौ–पु० [फा० निवाला] १ ग्रास, कौर। २ इष्ट मित्रो को दिया जाने वाला गोष्ठी भोज।

निवावणौ, (बौ)–देखो 'नमाणौ' (बौ)।

निवास–पु० [स०] १ रहने की क्रिया या भाव, आवास। २ रहने का स्थान, जगह। ३ घर, मकान। ४ डेरा, विश्रामस्थल। ५ रात्रि विश्राम। ६ साधारण उष्णता। ७ आश्रय, सहारा। ८ आराम, चैन। [स नियऽऽस] ९ घडे मे रहने वाला जल। १० दक्षिण दिशा का एक नाम।

निवासणौ, (बौ)–क्रि०[स०निवासनम्] १ निवास करना, रहना। २ विश्राम लेना, ठहरना। ३ रात बिताना। ४ आश्रय लेना, सहारा लेना।

निवासस्थान–पु० १ घर, मकान। २ रहने का स्थान। ३ विश्राम स्थल।

निवासी–वि० [स०] १ रहने वाला, निवास करने वाला। २ देश या किसी क्षेत्र विशेष का रहने वाला। ३ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सवधी। ४ सर्वत्र व्यापक। ५ देखो 'निवियासी'।

निवाह–पु० [स० निर्वास] १ नगाडे की ध्वनि, आवाज। २ देखो 'निभाव'। ३ देखो 'निरवाह'।

निवाहण, निवाहणौ–वि० १ निबाहने वाला। २ निर्वाह करने वाला। ३ काय साधने वाला।

निवाहणौ, (बौ)–देखो 'निभाणौ' (बौ)।

निवाहव–वि० [स० निर्वास] वजाने वाला।

निविड़–देखो 'निविड'।

निविडता–देखो 'निविडता'।

निविड–वि० [स०] १ महान्, बडा। २ घना, घनघोर, गहरा। ३ देखो 'निपट'। ४ देखो 'निवड'।

निविडता–स्त्री० [स०] १ सघनता, गहरापन, घनापन। २ वशी आदि वाद्य के स्वर की गभीरता।

निविद्धणौ (बौ)–क्रि० [स०] निवधनम् रचना, वनाना, निर्मित करना।

निवियासिमौ, (वौ)–(स्त्री० निवियसिमी, वी)–वि० इठियासी के वाद वाला, नवासी के स्थान वाला। -पु० ८९ की सख्या का वर्ष या साल।

निवियासी–वि० [स० नवाशीति] अस्सी और नौ, नव्वे से एक कम। - स्त्री० अस्सी व नौ की सख्या, ८९।

निविरड–वि० [स० निर्वृत्त] प्रसन्न, खुश।

निवेड़–स्त्री० [सं० निवर्तनम्] १ समाप्ति, पूर्णता । २ तय करने की क्रिया या भाव । ३ मुक्ति, छुटकारा, रिहाई । ४ निवृत्ति । ५ निर्णय, फैसला ।

निवेड़णौ, (बौ)–क्रि० [सं० निवर्तनम्] १ फलीभूत, करना, तैयार करना । २ देखो 'निपटाणौ (बौ) ।

निवेड़ो–पु० [सं० निवर्तनम्] १ फैसला, निर्णय । २ निपटारा । ३ पूर्णता, समाप्ति । ४ छुटकारा, मुक्ति । ५ निश्चय ।

निवेदण–देखो 'निवेदन' ।

निवेदणौ, (बौ)–क्रि० [सं० निवेदन] १ विनय करना, प्रार्थना करना । २ आवेदन पेश करना । ३ नैवेद्य चढ़ाना । ४ नजर करना, भेंट करना, चढाना । ५ सुनाना, कहना । ६ सहायता के लिये कहना ।

निवेदन–पु० [सं० निवेदनं] १ विनय, प्रार्थना, अर्जी । २ अनुनय, आजीजी । ३ प्रस्तुतीकरण । ४ भेंट, चढावा । ५ समर्पण, अर्पण । ६ कहने की क्रिया । ७ सौंपना क्रिया ।

निवेदित–वि० [सं०] १ प्रार्थना या विनय किया हुआ, प्रार्थित । २ अर्पित, भेंट । ३ कथित । ४ श्रुत । ५ समर्पित ।

निवेद्य, निवेध (धौ)–देखो 'नैवेद्य' ।

निवेधणौ, (बौ)–क्रि० १ मारना, संहार करना । २ देखो 'निवेदणौ' (बौ) ।

निवेस–पु० [सं० निवेश] १ घर, मकान । २ स्थान, जगह पड़ाव, छावनी, डेरा । ४ नगर, शहर । ५ निवास, रहवास । ६ प्रवेश द्वार । ७ धरोहर । ८ विवाह । ९ सजावट । १० भूषण । ११ नियोजन ।

निवेसण–देखो 'निवेसन' ।

निवेसणौ (बौ)–क्रि० [सं० निवेसनम्] रखना, नियोजित करना ।

निवेसन–पु० १ रख-रखाव, नियोजन । २ देखो 'निवेस' ।

निवे–देखो 'नव्वे' ।

निव्रिति (ती)–स्त्री० [सं० निवृत्ति] १ मुक्ति, मोक्ष । २ छुटकारा । ३ विदाई । ४ प्रवृत्ति का उलटा ।

निव्रित्त–वि० [सं० निवृत्त] १ मुक्त, स्वतन्त्र । २ अवकाश प्राप्त । ३ राज्य सेवा आदि से मुक्त । ४ लौटा हुआ । ५ विरक्त, तटस्थ । ६ रुका हुआ, बंद । ७ निपटा हुआ ।

निव्वत्तण–स्त्री० [सं० निर्वर्तन] तलवार बरछी आदि शस्त्रों की बनावट ।

निव्वाण–१ देखो 'निरवाण' । २ देखो 'निवाण' ।

निव्वाणगुणावह–वि० निर्वाण के गुण धारण करने वाला ।

निव्वाणमग्ग–पु० मोक्ष मार्ग ।

निव्वावार–वि० [सं० निर्व्यापार] व्यापार रहित (जैन) ।

निव्वाह–देखो 'निभाव' ।

निव्विज–वि० [सं० निर्विद्य] विद्या रहित (जैन) ।

निव्विणकाम–वि० [सं० निर्विण्णकाम] निवृत्त होने का इच्छुक ।

निव्विसय–वि० [सं० निर्विषय] विषय रहित (जैन) ।

निव्वुयय–वि० [सं० निवृत्तहृदय] जिसका हृदय चिन्ता रहित हो ।

निव्वेय–पु० [सं० निर्वेद] १ वैराग्य, विरक्ति । २ तटस्थता की भावना । ३ खेद, दुःख । ४ अनुताप । ५ अपमान ।

निसंक–वि० [सं० निःशंक] १ डर, भय व संकोच रहित, निर्भय । २ संदेह रहित । ३ चिंता रहित, निश्चिंत । ४ लज्जा व संकोच रहित ।

निसंकोच–क्रि० वि० [सं० निःसंकोच] बिना संकोच के, बेहिचक ।

निसंको–देखो 'निसंक' ।

निसंग (गौ)–वि० [सं० निःसंग] १ निर्लिप्त, तटस्थ । २ अकेला, एकाकी । ३ स्वार्थ रहित । –पु० १ तरकस, तूणीर । २ आलिंगन । ३ एकता, मेल । ४ जो संग न करे । ५ देखो 'निसंक' ।

निसंटो–वि० [देश०] (स्त्री० निसंटी) ढीठ, निर्लज्ज धृष्ट ।

निसंतत, निसंतति–वि० [सं० निःसंतति] निःसंतान, औलाद रहित ।

निसंतान–देखो 'निस्संतान' ।

निसंदेह–देखो 'निस्संदेह' ।

निसंबळ, निसंबळउ–वि० [सं० निःसंबल] १ बिना भोजन का । भूखा । २ बेसहारा, निराश्रय ।

निसंभ–वि० १ भय रहित, निर्भय । २ देखो 'निसुंभ' ।

निस–स्त्री० [सं० निशा] १ रात्रि, निशा, रात । २ हल्दी । —कर–पु० चन्द्रमा, चांद । —काम–पु० निस्वार्थ । —कामी–वि० निस्वार्थी । —कारण–वि० सकारण, व्यर्थ । —चर–पु० राक्षस, असुर, चोर । —चरण–पु० चन्द्रमा, चांद । –चारी, नाथ, नाथौ, नायक —पु०–चांद, चन्द्रमा । –नेत, नेत्र–पु० चन्द्रमा, राकेश । —नैण–पु० चन्द्रमा, चांद । —पत, पति, पती–पु० चन्द्रमा ।

निसकरस–पु० [सं० निष्कर्ष] १ निर्णय, सारांश, नतीजा, परिणाम । २ स्वर साधन की एक प्रणाली ।

निसकारो–पु० [सं० निस्कार] निराशा सूचक श्वास, निश्वास ।

निसकासित–वि०–[सं० निष्कासित] निकाला हुआ ।

निसकुट–वि० [सं० निष्कुट] घर के पास का छोटा बगीचा, वाटिका ।

निसग्गरुइ–स्त्री० [सं० निसर्ग रुचि] बिना उपदेश के उत्पन्न होने वाली धर्म के प्रति रुचि । श्रद्धा ।

निसचय–देखो 'निस्चय' ।

निसचरत्रास–पु० [सं० निशचरत्रास] प्रकाश, उजाला ।

निसचळ, निसचल–पु० १ निश्चित धारणा । २ निश्चय, निर्णय । ३ निसाचर, राक्षस । ४ देखो 'निस्चल' ।
निसचारी–पु० [स० निश्-चारिन्] राक्षस, असुर ।
निसचै, निसचौ–देखो 'निस्चय' ।
निसठ्या–स्त्री० [देश०] एक म्लेच्छ जाति विशेष ।
निसड्ड–देखो 'निसडो' ।
निसणात–वि० [स० निष्णात] १ प्रवीण, निपुण । २ चतुर, होशियार । ३ पडित, विज्ञ । –पु० क्षेत्र ।
निसणौ, (बौ)–क्रि० [स० निशनम्] श्रवण करना, सुनना ।
निसतस- देखो 'निसत्रंस' ।
निसत–वि० [स० नि-सत्य] असत्य, झूठ ।
निसतर–देखो 'नसतर' ।
निसतरण, निसतरणौ–पु० [स० निस्तरणम्] मोक्ष, उद्धार ।
निसतरणौ, (बौ) क्रि० [स० निस्तरणम्] १ उद्धार होना, मुक्ति होना । २ देखो 'नस्तरणौ (बौ) ।
निसतार–देखो 'निस्तार' ।
निसतौ–वि० १ कायर, भीरु । २ चरित्रहीन ।
निसतेयस, निसतेस–देखो 'निसत्र स' ।
निसत्रस–स्त्री० [स० नीस्त्रिंश] तलवार ।
निसत्व- वि० [स० नि सत्व] सारहीन, तत्त्वहीन ।
निसदीन, (दीह, दीहा)–क्रि० वि० [स० निशदिन, दिवस] नित्य प्रति, रोजाना, रात-दिन । हर समय ।
निसद्द–पु० [स० नि शब्द] ध्वनि रव, शोर, आवाज ।
निसध–पु० [स० निषध] १ श्रीराम के प्रपौत्र का नाम। २ विंध्याचल पर्वत के समीप का एक प्राचीन देश । ३ इस देश का राजा । ४ एक पर्वत का नाम । ५ देखो 'निसाद' । –वि०कठिन ।
निसफध–वि० [स० निस्-वध] सांसरिक उलझनो से रहित ।
निसफजर, निसफज्जर–क्रि० वि० नित्य प्रति, हमेशा, रात-दिन ।
निसफळ–देखो 'निस्फळ' ।
निसवत–१ देखो 'निस्वत' । २ देखो 'रिस्वत' ।
निसबळ–वि० [स० निस्-बल] निर्बल, कमजोर ।
निसमडण–पु० [स० निश्-मडन] चन्द्रमा, चाद ।
निसमुख–पु० [स० निश्-मुख] सध्या, साझ ।
निसम्यणौ, (बो)–क्रि० [स० निशमनम्] श्रवण करना, सुनना ।
निसरग–पु० [स० निसर्ग] १. स्वभाव, आदत । २ प्रकृति । ३ रूप, आकृति । ४ सृष्टि । ५ दान ।
निसरडो–देखो 'निसडो' । (स्त्री० निसरडी)
निसरण–पु० [स० नि सरण] १ निकलने का मार्ग, निकास । उपाय, तरकीब । ३ निर्वाण । ४ मरण, मृत्यु । ५ निकलने की या क्रिया भाव ।
निसरणी–स्त्री० [स० निश्रेणी] १ शरीर की बनावट, ढाचा । २ देखो 'नीस्रे णी' ।
निसरणी-बध–पु० [स०निस्रे णी-बध] छप्पय छन्द का एक भेद ।
निसरणौ, (बो)–देखो 'नीसरणौ' (बौ) ।
निसरम, (मौ)–वि० बेशर्म, निर्लज्ज ।
निसल–देखो 'नसल' ।
निसलाक–वि० [स० नि शलाक] निर्जन, एकात, सुनसान ।
निसवाद–वि० [स० नि वाद] रहित ।
निसवादी–वि० [स० नि-स्वाद] १ स्वाद रहित, बिना स्वाद का । २ वाद रहित ।
निसवासर, निसवासुर–क्रि०वि० [स० निश्-वासर] १ रात-दिवस । २ नित्य प्रति । ३ हर समय ।
निसहर–पु० [स० निश्-घर] १ यवन । २ निशाचर ।
निसहाय–वि० [स० निस्-सहाय] जिसका कोई सहायक या मदद-गार न हो, बेसहारा ।
निसा–पु० [फा० निशा] आदर, सम्मान । –क्रि०वि० लिए, वास्ते । —**खातर, खातिर**–पु० आव-भगत, स्वागत ।
निसाण–पु० [फा० निशान] १ चिह्न, निशान । २ अगुठे या अगुली का निशान जो अपढ़ व्यक्ति के हस्ताक्षर का प्रतीक होता है । ३ पहचान का लक्षण । ४ शरीर आदि पर पडा दाग या धब्बा । ५ अवशेष । ६ स्मृति, चिह्न । ७ यादगार। ८ झडा, ध्वजा, पताका । [स० नि स्वान] ९ नगारा ।
निसांणची–पु० १ सेना के आगे झडा लेकर चलने वाला । २ निशाना लगाने वाला । ३ नगाडा बजाने वाला ।
निसाण-देही–स्त्री० आसामी की पहचान कराने का कार्य ।
निसाण-बरदार–देखो 'निसांणची' ।
निसांणि, निसाणी–स्त्री० [फा० निशानी] १ स्मृति चिह्न, यादगार । २ पहचान, चिह्न । ३ देखो 'निसांण' । ४ देखो 'नीसाणी' ।
निसाणौ–पु० [फा० निशाना] १ वार या घात करने का लक्ष्य, निशाना । २ लक्ष्य साधने का कार्य । ३ किसी को व्यग करके कही बात, व्यग ।
निसात–पु० [स० निशात] रात्रि का अत, तडका, प्रभात । –वि० शात एव गभीर ।
निसाध–वि० [स० निशाध] जिसे रात को न दिखाई दे ।
निसान–देखो 'निसाण' ।
निसानची–देखो 'निसाणची' ।
निसान-देही–देखो 'निसाण-देही' ।
निसान-बरदार–देखो 'निसाणची' ।
निसानी–१ देखो 'निसाणी' । २ देखो 'नीसाणी' ।
निसांनौ–देखो 'निसाणौ' ।
निसांसो–१ देखो 'निस्वास' । २ देखो 'निसासौ' ।

निसा–स्त्री० [सं० निशा] १ रात्रि, रात । २ हल्दी । –वि० काला, श्याम* । —**कर**–पु० चन्द्रमा, चाद । शिव । मुर्गा । कर्पूर । —**चर**–पु० राक्षस, असुर । गीदड, शृगाल । उल्लू । भूत, प्रेत । चोर । रात मे विचरण करने वाला । —**चरम**–पु० घोर अधकार । अर्ध रात्रि का समय । —**चरी**–स्त्री० राक्षसी, पिशाचिनी । कुल्टा । अभिसारिका, नायिका । —**धीस**–पु० चन्द्रमा । —**नाथ**–पु० चन्द्रमा । —**पत, पति, पती**–पु० चन्द्रमा । —**पुसव, पुस्प**–पु० कुमुदिनी । —**मण, मणि**–स्त्री० चन्द्रमा, चांद । कर्पूर । —**मुख**–पु० सध्या, साझ । —**रिप, रिपु**–पु० सूर्य । —**सरोज**–पु० चन्द्रमा ।

निसाचरपति–पु० [सं० निशाचरपति] १ रावण । २ वलि । ३ शिव, महादेव ।

निसाचरी–वि० राक्षस सवधी, राक्षसी आसुरी ।

निसाचारी–पु० [सं० निशाचारिन्] शिव, महादेव । राक्षस, पिशाच ।

निसाट–पु० [सं० निशाट] १ राक्षस, असुर । २ मुसलमान, यवन । ३ उल्लू ।

निसातक–पु० [सं० निशान्तक] दीपक ।

निसाद–पु० [सं० निषाद] १ एक प्राचीन अनार्य जाति । २ मेहत्तर, भगी, हरिजन । चाण्डाल । ३ यवन । ४ सगीत के सात स्वरो मे सबसे ऊचा स्वर ।

निसादिन–देखो 'निसदिन' ।

निसादियत–पु० [सं० निषादित] महावत के पैर हिलाने की क्रिया ।

निसादी–पु० [सं० निषादिन्] महावत, हाथीवान ।

निसानन–पु० [सं० निशा-आनन] सायकाल, साझ ।

निसापाळ–पु० एक वर्णिक वृत्त विशेष ।

निसाफ–पु० इन्साफ, न्याय ।

निसाबळ–पु० [सं० निशावल] रात मे बलवती मानी जाने वाली राशि ।

निसार–पु० [अ०] १ रुपये के चौथाई भाग के बराबर का एक प्राचीन सिक्का । २ न्यौछावर करने की क्रिया या भाव । ३ निर्यात । ४ निकलने की क्रिया या स्थान । –वि० १ न्यौछावर किया हुआ । २ देखो 'निस्सार' ।

निसारण–पु० [सं० निःसारण] १ निकास का मार्ग । २ निकालना क्रिया ।

निसारुक–पु० [सं०] सात प्रकार के रूपक तालो मे से एक ।

निसाळ, निसाळा–देखो 'नेसाळा' ।

निसास, निसासउ–देखो 'निस्वास' ।

निसासणौ, (बौ)–क्रि० [सं० निःश्वासनम्] निश्वास डालना, दुःखी होना, चिंतित या खिन्न होना ।

निसासौ–वि० (स्त्री० निसासी) १ दुःखी, चिंतित । २ खिन्न, बेचैन । ३ देखो 'निस्वास' ।

निसि–स्त्री० [सं० निशि] १ रात्रि, रजनी । २ हल्दी । –क्रि०वि० निश्चय पूर्वक । —**नाथ, नायक, पति, पाळ**–पु० चन्द्रमा, राकेश ।

निसिचर–पु० [सं० निशिचर] राक्षस, असुर । —**राज**–पु० राजा बलि । रावण । विभीषण । हरिण्यकश्यप ।

निसित–पु० [सं० निशित] लोहा । वि०–तीक्ष्ण, तेज ।

निसिदीस–पु० [सं० निशा+दिवस] रात-दिन ।

निसिद्ध–वि० [सं० निषिद्ध] १ जिस पर रोक लगी हो, जिसका निषेध हो, मनाही हो । २ वर्जित । ३ बुरा, खराब ।

निसीअ–पु० [सं० निषीद] बैठने की क्रिया या भाव ।

निसीवान, निसीवानि–पु० [सं० निस्वान] शब्द, आवाज ।

निसीत, निसीथ, निसीथिणी, निसीथीणी–पु० [सं० निशीथ] १ रात, रजनी । २ अर्द्धरात्रि, आधी रात ।

निसीनर–पु० [सं० निशि-नर] राक्षस, असुर ।

निसीनेत्र–पु० [सं० निशि-नेत्र] चाद, चन्द्रमा ।

निसीम–वि० [सं० निःसीम] १ असीम, अपार । २ अत्यन्त, अत्यधिक ।

निसुंभ–पु– [सं० निशुंभ] कश्यप एव दनु से उत्पन्न एक पराक्रमी असुर । —**मरदिनी**–स्त्री० दुर्गा, देवी ।

निसुणणौ, (बौ)–क्रि० [सं० नि+श्रु] १ सुनना, श्रवण करना । २ ध्यान देना । ३ कान लगाना ।

निसुर–वि० [सं० नि-स्वर] स्वर, आवाज, शब्द रहित, मूक, मौन ।

निसूरण–वि० [सं० निषूदन] विनाश करने वाला, विनाशक ।

निसेजा, निसेज्ज–स्त्री० [सं० निषद्या] १ किसी वस्तु के बिकने का स्थान, हाट । २ खाट, चारपाई । ३ शय्या ।

निसेणी–देखो 'निस्रेणी' ।

निसेद, निसेध–पु० [सं० निषेध] १ वर्जन, मनाही, रोक । २ अवरोध, रुकावट । ३ बाधा । ४ अस्वीकृति । ५ निषेधवाची नियम । ६ अपवाद, खण्डन ।

निसेधक–पु० [सं० निषेधक] रोकने वाला, निषेध करने वाला ।

निसेधणौ (बौ)–क्रि० [सं० निषेधनम्] १ निषेध करना, रोकना । २ बाधा देना, अवरोध खडा करना । ३ अस्वीकृत करना । ४ अपवाद करना, खण्डन करना ।

निसेवीय–वि० [सं० निषेवित] परिसेवित (जैन) ।

निसेस–पु० [सं० निशीश] चन्द्रमा ।

निसैनी–देखो 'निस्रेणी' ।

निसोग, निसोच–वि० [सं० निःशोक] १ निश्चित । २ प्रसन्न, खुश ।

निसोत, निसोय–स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता ।

निस्कटक–वि० [स० निष्कटक] १ काटो से रहित । २ विघ्नो से रहित । ३ दुखों से रहित ।

निस्कठ–पु० [स० निष्कठ] वरुण नामक पेड ।

निस्कप–वि० [स० निष्कप] कपन रहित, अचवल, स्थिर ।

निस्कभ–पु० [स० निष्कभ] गरुड के एक पुत्र का नाम ।

निस्क–पु० [स० निष्क] एक प्रकार की स्वर्ण मुद्रा ।

निस्कपट–वि० [स० निष्कपट] छल रहित, कपट रहित । सीधा, सरल । —ता–स्त्री० कपट रहित होने का भाव, सरलता, सीधापन ।

निस्कपटी–वि० [स० निष्कपटी] कपट रहित, छल रहित । सीधा, सरल ।

निस्करम, निस्करमी–वि० [स० निष्कर्म्मन्] जो कर्मो मे लिप्त न हो, अकर्मा, कर्म रहित ।

निस्करुण–वि० [स० नि करुण] जिसमे करुणा न हो, निष्ठुर, वेरहम ।

निस्कळक–वि० [स० निष्कलक] विना कलक वाला, वेदाग, निर्दोष । —तीरथ–पु० एक पौराणिक तीथ ।

निस्कळ–वि० [स० निष्कल] १ कला रहित । २ पूरा, समस्त । ३ नपुंसक । ४ वृद्ध, वूढा । –पु० ब्रह्मा ।

निस्काम–देखो 'निकाम' ।

निस्कामी–देखो 'निकामी' ।

निस्कारण–वि० [स० निष्कारण] अकारण, व्यर्थ ।

निस्क्रमण–पु० [स० निष्क्रमण] वाहर निकलने की क्रिया या भाव । निकास ।

निस्क्रिय–वि० [स० निष्क्रिय] क्रियाहीन, उद्यमहीन, कर्मशून्य, निश्चेष्ट ।

निस्क्रीयता–वि० [स० निष्क्रियता] क्रियाहीनता, उद्यमहीनता, कर्मशून्यता, निश्चेष्टता ।

निस्क्लेस–वि० [स० निष्क्लेश] क्लेशो से मुक्त ।

निस्चइ, निस्चय–पु० [स० निश्चय] १ निर्णय, फैसला । २ स्थिर विचार, इरादा । ३ अवश्य घटित होने वाली स्थिति । ४ तय करने की क्रिया या भाव । ५ यकीन, विश्वास । ६ सकल्प । ७ शोध, खोज ।

निस्चयांतर-भ्रांति-जथा–स्त्री० सदेह अलकार के योग से रचित डिंगल गीत ।

निस्चर–पु० [स० निश्चर] एकादश मन्वन्तर के सप्त ऋषियो मे से एक ।

निस्चळ (ल)–वि० [स० निश्चल] १ अचल, स्थिर । २ अविचल, दृढ, अटल । ३ शान्त, अचचल । ४ अपरिवर्तनीय । ५ परब्रह्म । ६ देखो 'निसचळ' ।

निस्चळता–स्त्री० [स० निश्चलता] १ स्थिरता, दृढता । २ अचपलता, शाति ।

निस्चित–वि० [स० निश्चित] चिंता रहित, बेफिक्र, मस्त ।

निस्चितता–स्त्री० [स० निश्चितता] वेफिक्री, मस्ती । चिताओ से मुक्ति ।

निस्चित–वि० [स० निश्चित] १ तय किया हुआ, तयशुदा । २ निर्णीत । ३ पक्का, दृढ । ४ अवश्यभावी ।

निस्चिळ–देखो 'निस्चळ' ।

निस्टि–स्त्री० [स० निष्टि] असुरो की माता दिति का एक नाम ।

निस्ठा–स्त्री०[स० निष्ठा]१ ईश्वर, धर्म या गुरु जनो के प्रति होने वाली श्रद्धा, भक्ति । २ दृढ विश्वास । ३ प्रगाढ, अनुराग । ४ अत्यन्त आदर की भावना । ५ जीव और ब्रह्म की एकता की स्थिति, चरम स्थिति । ६ चित्त की स्थिरता, मन की एकाग्रता । ७ दृढ निश्चय । ८ अवस्था, स्थिति । ९ निर्वाह । १० ठहराव । ११ प्रतिष्ठा । १२ उत्कृष्टता । १३ निपुणता । १४ इति, समाप्ति । १५ नाश, विनाश । १६ प्रलय के समय विष्णु की समस्त भूतो मे होने वाली स्थिति । —वान–वि० जो निष्ठा रखता हो, श्रद्धालु ।

निस्ठुर–वि० [स० निष्ठुर] १ दया, करुणा आदि कोमल भावनाओ से रहित । रूखा । २ क्रूर, निर्दयी । ३ कटु, अप्रिय । ४ सख्त, कठोर ।

निस्ठुरता, निस्ठुराई–स्त्री० १ क्रूरता, वेरहमी, निर्दयता । २ कठोरता, कड़ाई ।

निस्तरण–पु० [स० निस्तरणम्] १ तरना, पार होना क्रिया । २ उद्धार, मुक्ति, छुटकारा ।

निस्तरणौ (बौ)–क्रि० [स० निस्तरणम्] १ तरना, पार होना । २ मुक्त होना, छूटना । ३ देखो 'नस्तरणौ' (बौ) ।

निस्तरियउ–वि० [स० निस्तीर्ण] मुक्त, छूटा हुआ । उद्धरित ।

निस्तार–पु० [स०] १ छुटकारा, मुक्ति । २ मोक्ष, निर्वाण । ३ पार होना क्रिया । ४ वचाव । ५ उपाय जरिया, माध्यम । ६ ऋण से छुटकारा ।

निस्तारण–वि० [स० निस्तार] १ उद्धार करने वाला । २ तारने वाला, पार करने वाला । ३ मुक्त करने वाला, छोडने वाला । ४ वचाने वाला । ५ देखो 'निस्तार' ।

निस्तारणौ (बौ)–क्रि० [स० निस्तरणम्] १ तारना, पार करना । २ उद्धार करना, मुक्त करना । ३ छुडाना ।

निस्तारौ–देखो 'निस्तार' ।

निस्तेज–वि० [स०] १ तेज, आभा या कांति रहित । २ मद, फीका । ३ मलिन । ४ अग्निहीन । ५ उष्णता शून्य । ६ नपुसक । ७ सुस्त, आलसी । ८ धुधला ।

निस्पक्ष (ख)–वि० [स० निष्पक्ष] १ पक्षपात रहित। २ तटस्थ। ३ सही कहने वाला।

निस्पक्षता निस्पखता–स्त्री० [स० निष्पक्षता] १ पक्षपात हीनता। २ तटस्थता। ३ स्पष्टवादिता।

निस्पन्न–वि० [स० निष्पन्न] १ पूर्ण, पूरा। २ समाप्त, पूर्ण।

निस्प्रभ–वि० [स० निष्प्रभ] १ कांति, आभा व तेज रहित। २ मद, धुधला। ३ अशक्त।

निस्प्रयोजन—वि० [स० निष्प्रयोजन] १ प्रयोजन, कारण या मतलब रहित। २ व्यर्थ, निरर्थक। ३ जिसमे अर्थसिद्धि न हो। –क्रि० वि० अकारण से व्यर्थ मे।

निस्प्राण–वि० [स० निष्प्राण] प्राण रहित मृत।

निस्प्रिय–वि० [स० निस्पृह] लोभ या कामना रहित।

निस्फळ–वि० [स० निष्फल] १ फल, रहित, परिणाम रहित। २ उपलब्धि रहित। ३ व्यर्थ, निरर्थक।

निस्फीवटाई–स्त्री० जागीरदार व किसान के बीच फसल का आधा-आधा बटवारा, विभाजन।

निस्बत, निस्वत–स्त्री० [अ०] १ अपेक्षा, आशा। २ तुलना, मुकाबला। ३ सबध, लगाव। ४ समता, बराबरी। ५ नारी, औरत। ६ देखो 'रिस्वत'।

निस्रेणका निस्रेणिका, निस्रेणी–स्त्री० [स० निश्रेणी] १ सीढी, जीना। २ मुक्ति। ३ खजूर का पेड। ४ एक मात्रिक छद विशेष।

निस्रेय–पु० [स० निश्रेय] अपयश, कलक, बदनामी।

निस्रेयस–पु० [स० निश्रेयस] मोक्ष, कल्याण।

निस्वास–पु० [स० नि श्वास] १ प्राण वायु नाक से निकलने का कार्य व्यापार। २ उसास, निश्वास। ३ तडफ, आह। –वि० मृत प्राय, वेदम।

निस्वासन–पु० [स० नि स्वासन] चौरासी आसनो मे से एक।

निस्सक–वि० [स० नि. शक] निर्भय, शका रहित, बेधडक।

निस्सतान–वि० [स० नि सन्तान] सतति रहित, नाऔलाद।

निस्सदेह, निस्सस–क्रि० वि० [स० नि सदेह] विना सदेह के, बेशक। –वि० १ सदेह रहित। २ पूर्णतया मान्य।

निस्सार–वि० [स० नि सार] सारहीन, तत्वहीन। व्यर्थ।

निस्सेस–पु० [स० नि श्रेयस] मोक्ष, कल्याण (जैन)। –वि० [स० नि शेष] सम्पूर्ण, समूचा। बिना बचा।

निस्स्रत–पु० [सं० निस्सृत] तलवार के ३२ हाथो मे से एक।

निस्स्वादु–वि० [स०] बिना स्वाद का, स्वाद रहित।

निस्स्वारथ–वि० [सं० निस्वार्थ स्वार्थ] की भावना से रहित।

निहग–वि० [सं० नि सग] १ निर्लिप्त। २ वस्त्रहीन, नग्न। ३ विरक्त, उदास। ४ पृथक, अलग। ५ जो किसी पर अनुरक्त न हो। [फा०] एकाकी, अकेला। –पु० [देश०] १ घोडा, अश्व। २ आकाश, आसमान। ३ स्वर्ग। ४ शिव, महादेव। ५ पक्षी, खग। ६ घडियाल, मगर। ७ देखो 'नग'। —राज–पु० सूर्य।

निहंगसावझडो–पु० डिंगल का एक छन्द विशेष।

निहगि–देखो 'निहग'।

निहटो–वि० योद्धा, वीर।

निहस–देखो 'निहस'।

निहसणो (बो)–देखो 'निहसणो' (बो)।

निहकट, निहकटक–देखो 'निस्कटक'।

निहकप–देखो 'निस्कप'।

निहकरम (मो)–देखो 'निस्करम'।

निहकाम (मो)–१ देखो 'निमकाम'। २ देखो 'निकाम'।

निहकुण, निहकुण–पु० [स० निक्वाण] शब्द, आवाज।

निहखरणो (बो)–क्रि० [स० नि खेटन] खूब तेज दौडाना, हाकना।

निहघोख–पु० [स० निर्घोष] शब्द, घोष।

निहचत–देखो 'निश्चित'।

निहचळ निहचल–देखो 'निस्चळ'।

निहचै, निहचौ–देखो 'निस्चय'।

निहटणो (बो)–देखो 'निहट्टणो' (बो)।

निहणणो (बो)–क्रि० [स० निहननम्] १ मारना, सहार करना। २ दमन करना।

निहतरणो (बो)–देखो 'निमत्रणो' (बो)।

निहतारथ–पु० [स० निहतार्थ] एक साहित्यिक दोष विशेष।

निहत्त–पु० [स० निघत्त] स्थापित करने की क्रिया (जैन)।

निहत्थो, निहथ, निहथो–वि० [स० नि हस्त] १ जिसके हाथ मे अस्त्र-शस्त्र न हो, निहत्था। २ खाली हाथ। ३ निधन।

निहरवाळणो (बो)–क्रि० [देश०] खड्डे मे डालकर दबा देना।

निहलो, निहल्ल–वि० [स०नि-हल्लनम्] (स्त्री०निहली,निहल्ली) १ निष्फल, बेकार। २ गतिहीन।

निहस–स्त्री० [देश०] १ प्रहार, चोट। २ ध्वनि, घोष।

निहसणो (बो), निहस्सणो (बो)–क्रि० [देश०] १ वाद्य आदि बजना, ध्वनि करना। २ गरजना। ३ भयानक आवाज करना। ४ हसना। ५ जोश मे आना, जोश खाना। ६ बरसना, बौछार होना। ७ चमचमाना, चमकना। ८ वीर गति प्राप्त करना मरना। ९ सहार करना, मारना। १० प्रहार करना।

निहाण–देखो 'निधान'।

निहाइ, निहाइ, निहाई–स्त्री० [स० निघात] १ प्रहार। २ ध्वनि, आवाज। ३ शोरगुल, हल्ला। ४ स्वर्णकार या लोहारो का अहरन।

निहाउ (ऊ)–देखो 'निहाव'।

निहाज–स्त्री० [स० निह्व. निर्ह्राद] १ नगाडे की ध्वनि, आवाज। २ नाद, शब्द, ध्वनि।

निहायत–वि० [अ०] अत्यन्त, वहुत। –स्त्री० सीमा, हृद।

निहार–पु० [स० निभालन] देखना क्रिया, अवलोकन।

निहारणो (बो)–क्रि० [स० निभालनम्] १ देखना, अवलोकन करना। २ दर्शन करना। ३ चाव से देखना। ४ ध्यान से देखना, झाकना। ५ ध्यान देना। ६ जानना, महसूस करना।

निहारी–वि० पृथक, अलग, दूर।

निहाळ, निहाल–वि० [फा०निहाल] १ मालामाल, धन दौलत से परिपूर्ण। २ सफल,कृत-कृत्य,कृतार्थ। ३ जिसकी मनोकामना पूर्ण होगई हो। ४ अत्यन्त प्रसन्न, खुश। ५ देखो 'निहार'।

निहाळणो, (बो), निहालणो, (बो)–क्रि० [स० निभालनम्] १ खोजना,ढूंढना। २ सतुष्ट करना। ३ प्रसन्न,खुश करना। ४ कृत-कृत्य करना। ५ देखो 'निहारणो' (बो)।

निहाव–पु० [स० निघाति] १ ध्वनि, शब्द, आवाज। २ प्रहार। ३ लोहे का घन, हथौडा। ४ आकाश, आसमान।

निहावणो, (बो)–क्रि० [स० निभालनम्] १ शोभित होना, शोभा देना। २ सुन्दर लगना। ३ देखो 'निहारणो' (बो)।

निहिचळ, निहिचल–देखो 'निस्चळ'।

निहिवास–देखो 'निवास'।

निहीं,निही–देखो 'नही।

निहुतणो, (बो)–देखो 'निमन्त्रणो' (बो)।

निहुरा– देखो 'नो'रा'।

निहेरणो, (बो)–क्रि० [स०निभालनम्] १ खोजना, ढूंढना २ देखो 'निहारणो' (बो)।

निहोर, निहोरडा–देखो 'नो'रा'।

निहोरणो,(बो)–क्रि० [स०निछोरणम्] १ मनौती करना, प्रार्थना करना। २ आग्रह करना,अनुरोध करना। ३ गरज करना, खुशामद करना। ४ देखो 'निहारणो' (बो)।

निहोरा–देखो 'नो'रा'।

नीं–देखो 'नी'।

नींखणो,(बो)–देखो 'नाखणो' (बो)।

नींगमणो (बो)–क्रि० [स० निर्गमयति] १ व्यतीत करना, गुजारना २ जाना, निकलना।

नींगळणो (बो)–देखो 'निगळणो' (बो)।

नींगा–देखो 'नंगी'।

नींगाळणो (बो)–देखो 'निगाळणो' (बो)।

नींगाह–देखो 'नंगी'।

नींछटणो (बो)–देखो 'नीछटणो' (बो)।

नींछारडी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता।

नींजामा–देखो नीजामा'।

नींझर–देखो 'निरझर'।

नींठ–देखो 'नीठ'।

नींठणो (बो)–देखो 'निठणो' (बो)।

नींठर–देखो 'निस्ठुर'।

नींडो–देखो 'निसडो'।

नींत्रडी–वि० अनुपयुक्त, वेकार।

नींद–स्त्री० [स० निद्रा] १ जमाई को गाया जाने वाला गीत, लोक गीत। २ देखो 'निद्रा'।

नींदक–देखो निंदक'।

नींदडली, नींदडी–देखो 'निद्रा'।

नींदणो (बो)–देखो 'निंदणो' (बो)।

नींदळ–वि० १ अधिक नीद लेने वाला। २ आलसी, सुस्त। ३ निकम्मा।

नींदव–वि० [स० निन्द] १ निंदनीय। २ निंदक।

नींदवणो (बो)–१ देखो 'नीदाणो' (बो)। २ देखो 'निंदणो' (बो)।

नींदवो–देखो 'नीदव'।

नींदाणो (बो)–क्रि० [स० निद्रा] १ निद्रित करना, सुलाना। २ निंदा कराना, बुराई कराना। [स० नदि] ३ दीपक बुझाना।

नींदाळ–वि० १ जिसकी निंदा होती हो, निंदित। २ निद्रित।

नींदाळको, नींदाळु–देखो 'निद्राळु'।

नींदाळुद्ध, नींदाळू (ळो)–वि० निद्रा मे मग्न, निद्रित।

नींद्र, नींद्रडो नींद्रा–देखो 'निद्रा'।

नींप–देखो 'निप'।

नींपणो (बो)–देखो 'नीपणो' (बो)।

नींब–देखो 'नीम'।

नींबगोळ–वि० [स० नेम-गोल] जिसका आधा भाग गोल हो।

नींबडली (लो), नींबडी, नींवडो–देखो 'नीम'।

नींबज–स्त्री० झालरा पाटण क्षेत्र मे बहने वाली एक नदी।

नींबू नींबूडो–पु० [स० निम्बूक] १ मध्यम कद का एक झाडी नुमा वृक्ष व इसका फल, नीवू। २ एक लोक गीत।

नींबो–१ देखो 'निंवारक'। २ देखो 'नीम'।

नींम–१ देखो 'नीव'। २ देखो 'नीम'।

नींमजणो(बो)–१देखो 'निरमणो'(बो)। २ देखो'नीपजणो'(बो)

नींमजर–देखो 'नीमजर'।

नींमजाणो(बो), नींमजावणो (बो)–१ देखो 'निपजाणो' (बो)। २ देखो 'निरमाणो' (बो)।

नींमणो (बो)–देखो 'निरमणो' (बो)।

नींमेड़णो (बो)–देखो 'निवेडणो' (बो)।

नींव–स्त्री० [स० नेमि] १ दीवार बनाने के लिए खोदा जाने वाला लम्बा और गहरा खड्डा । २ इस खड्डे मे बनी दीवार । ३ आधार । ४ स्थिति । ५ जड, मूल ।

नींवडणौ(बौ)-१ देखो 'निपटणौ' (बौ)। २ देखो 'निवडणौ' (बौ)।

नींवत–देखो 'नीयत' ।

नींवेडणौ (बौ)–१ देखो 'निपटाणौ' (बौ) । २ देखो 'निवेडणौ' (बौ) ।

नींसरणौ (बौ)–देखो 'नीसरणौ' (बौ) ।

नींसाण–पु० [स० निस्वन] नगाडा ।

नी–पु० [स०] १ प्रेम, स्नेह । २ नृप, राजा । ३ शासक । –स्त्री० ४ अनन्य भक्ति । ५ दवा, औषधि । –वि० १ अत्यधिक, ज्यादा । २ निरोग, स्वस्थ । –प्रत्य० सम्बन्ध या पष्ठी विभक्ति के 'ना' का स्त्री रूप; की । –अव्य० एक भारदर्शक या अनुरोध सूचक अव्यय । देखो 'नहीं' । देखो 'नि' ।

नीइ–देखो नीति' ।

नीक–स्त्री० [स० नीका] १ सिंचाई के लिये बनी पानी की नाली । २ देखो 'नीकौ' ।

नीकउ–पु० [स० निष्क] १ स्वर्ण का हार । २ सोना, स्वर्ण । ३ सोने का एक तौल विशेष । ४ देखो 'नीकौ' ।

नीकळक–देखो 'निकळक' ।

नीकळणौ (बौ)–देखो 'निकळणौ' (बौ) ।

नीका–क्रि०वि० ठीक तरह से, अच्छी प्रकार से ।

नीकाळ–देखो 'निकाळ' ।

नीकाह–देखो 'निकाह' ।

नीकौ–वि० [स० निरक्त] (स्त्री० नीकी) १ अच्छा, ठीक । २ श्रेष्ठ, बढिया, उत्तम । ३ सुन्दर, भला । ४ सम्मान योग्य । ५ स्वस्थ, दुरुस्थ ।

नीखर–वि० [स० निक्षरण] स्वच्छ, निर्मल, साफ ।

नीखरणौ (बौ)–देखो 'निखरणौ' (बौ) ।

नीखाखा–पु० [देशज] केवट ।

नीगम–देखो 'निगम' ।

नीगमणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्गमनम्] १ गमन करना, जाना । २ निकलना, निकास होना । ३ खोना, गमाना । ४ व्यतीत करना, बिताना । ५ प्रदान करना, देना । ६ साबित होना, प्रमाणित होना, सिद्ध होना । ७ प्रसार करना, फैलाना ।

नीगळणौ (बौ)–देखो 'निगळणौ' (बौ) ।

नीगवणौ (बौ)–क्रि० १ पसारना फैलाना । २ देखो 'नीगमणौ' (बौ) ।

नीघरियौ–वि० [स० नि–गृह] जिसके घेर न हो, गृहहीन ।

नीघात–देखो 'निघात' ।

नीड–पु० [सं० नीड] १ पक्षियो का घोसला । २ रहने का स्थान, निवासस्थान । ३ विश्राम स्थल । ४ स्थान, जगह । ५ गुफा, माद । ६ शय्या । ७ नदी किनारे बसा नगर, ग्राम । ८ कूए से सीचा जाने वाला भू-भाग । –स्त्री० ९ नदी, सरिता । –वि० १ स्तुति योग्य । २ देखो 'निकट' ।

नीडे, नीडै–देखो 'निकट' ।

नीड़ौ–देखो 'निकट' ।

नीचग, नीचघ–पु० [स० नीचग] पानी, जल ।

नीच, नीचउ–वि० [स०] १ निकृष्ट, बुरा, अधम । २ कर्म जाति व गुणो से न्यून, तुच्छ । ३ अल्प, थोडा । ४ हेय घृणित । ५ निकम्मा । ६ दुष्ट, कमीना, क्षुद्र । ७ छोटा, बोना । ८ मद । –पु० १ ओछा आदमी, क्षुद्र मनुष्य । २ किसी ग्रह के भ्रमण वृत्त का वह स्थान जो पृथ्वी के अधिक निकट हो । ३ फलित ज्योतिष मे किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवा स्थान । ४ चोर नामक गध द्रव्य । ५ दशार्ण देश के एक पर्वत का नाम । ६ शूद्र वर्ण । ७ देखो 'नीचौ' । **–कमाई**–स्त्री० बुरे कामो से अर्जित धन । घृणित धधा । **—गामी**–वि० नीचे जाने वाला । नीच कर्मी ।

नीचग–पु० [स०] १ अपने उच्च स्थान से सातवें स्थान पर पडने वाला ग्रह । २ पानी, जल । –वि० १ नीच, पामर । २ नीचे जाने वाला ।

नीचगा–स्त्री० [स०] नदी, सरिता ।

नीचगिर, नीचगिरी–पु० दशार्ण देश का एक पर्वत ।

नीचग्रह–पु०[स० नीचग्रह] किसी ग्रह के उच्च स्थान से गिनती मे सातवा स्थान ।

नीचता–स्त्री० [स०] १ क्षुद्रता, नीचा कार्य । २ ओछापन, तुच्छता । ३ दुष्टता, कमीनापन । ४ दुष्कर्म ।

नीचधूणियौ–वि० नीची गर्दन करके चलने वाला ।

नीचरलौ, नीचलौ–देखो 'निचलौ' । (स्त्री० नीचली)

नीचांत–स्त्री० नीची भूमि, ढलुवा स्थान किसी स्थान या वस्तु की नीचाई ।

नीचाई–देखो 'निचाई' ।

नीचिंत, नीचीत–देखो 'निश्चित' ।

नीचे, नीचै–क्रि०वि०[स०नीचै.] १ निम्न भाग मे । २ दबकर । ३ अधीनता में । ५ तुलना मे, निम्न स्थिति मे । ५ ऊपर से विपरीत दशा मे । ७ घटी हुई या न्यूनतर दशा मे ।

नीचोड–देखो 'निचोड' ।

नीचोड़णौ (बौ), नीचोणौ (बौ), नीचोवणौ (बौ)–देखो 'निचोड़णौ' (बौ) ।

नीचौ–वि० [स० नीच] (स्त्री० नीची) १ जो न्यूनता, झुकाव, उतार या तल के पास की स्थिति मे हो। २ उच्चता की तुलना मे कम। ३ झुका हुआ, नत। ४ ढलुवा, ढालू। ५ निश्चित सीमा से नीचे आया हुआ। ६ नीच, निकृष्ट। ७ क्षुद्र, ओछा। ८ मध्यम, धीमा। –क्रि०वि० नीचे की तरफ।

नीछटणौ (बौ), नीछटणौ (बौ), नीछट्टणौ (बौ)–क्रि० १ फेंकना, छोडना। २ प्रहार करना।

नीजण, नीजणि (णी)–देखो 'निरजण'।

नीजामा–पु० [देश०] मल्लाह, केवट।

नीजुडणौ (बौ)–देखो 'निजोडणौ' (बौ)।

नीझणि (णी)–वि० [स० निर्ध्वनि] ध्वनि रहित, शान्त, चुप।

नीझर, नीझरण–१ देखो 'निरझरण'। २ देखो 'नीझरणौ'।

नीझरणौ–पु० [स० निर्झर] १ आसू, अश्रु। २ देखो 'निरझर'।

नीझरणौ (बौ)–क्रि० [स० निर्झर] १ टपकना, झरना, चूना। २ आसू बहना।

नीझावणौ (बौ)–क्रि० पार पहुँचाना।

नीठ–क्रि०वि० [स० निष्ठा] १ मुश्किल से, कठिनाई से। २ बहुत प्रतीक्षा के बाद। –वि० मुश्किल, कठिन।

नीठणौ (बौ)–देखो 'निठणौ' (बौ)।

नीठर–देखो 'निस्ठुर'।

नीठा, नीठांनीठ, नीठानीठि–क्रि०वि० बडी मुश्किल से, कठिनाई से। जैसे-तैसे।

नीठाणौ (बौ)–देखो 'निठाणौ' (बौ)।

नीठानीठ, नीठानीठि–देखो 'नीठांनीठि'।

नीठावणौ (बौ)–देखो 'निठाणौ' (बौ)।

नीठि, नीठो–देखो 'नीठ'।

नीठोनीठ–देखो 'नीठानीठ'।

नीडज–पु० [स०] पक्षी।

नीत–१ देखो 'नीयत'। २ देखो 'नीति'। ३ देखो 'नेती-धोती'।

नीतचारी–वि० [स० नीति-चारिन्] नीति के अनुसार आचरण।

नीतरणौ (बौ)–क्रि० [स० निस्तरणम्] १ पानी या द्रव पदार्थ मे घुली वस्तु का पेंदे या तल मे बैठना। २ उक्त क्रिया से द्रव पदार्थ का स्वच्छ होना। ३ सारहीन होना, तत्त्व रहित होना।

नीतवत, नीतवान–देखो 'नीतिवान'।

नीतसास्त्र–देखो 'नीतिसास्त्र'।

नीतार–पु० १ पानी या द्रव पदार्थ मे घुली वस्तु पेंदे मे बैठ जाने पर पदार्थ मे होने वाली स्वच्छता। २ इस तरह स्वच्छ हुआ द्रव पदार्थ। ३ तल मे बैठी हुई वस्तु। ४ सार, साराश।

नीतारणौ (बौ)–क्रि० [स० निस्तरणम्] १ पानी आदि मे घुले पदार्थ को तल मे बैठने देना। २ ऐसी व्यवस्था करके द्रव पदार्थ को स्वच्छ करना। ३ स्वच्छ हुए द्रव पदार्थ को धीरे-धीरे दूसरे पात्र मे लेना। ४ सारहीन करना, तत्त्वहीन करना।

नीति, नीती–स्त्री० [स० नीति] १ समाज की बुराई न करते हुए अपनी भलाई करने की क्रिया। २ लौकिक व शास्त्रोक्त मर्यादा के अनुसार आचरण। ३ अच्छा आचरण, सदाचार। ४ व्यवहार की रीति, पद्धति। ५ कार्य सिद्धि या स्वार्थ सिद्धि के लिये प्रयुक्त युक्ति। ६ चाल-चलन, व्यवहार। ७ अनुशासन। ८ उपयुक्तता। ९ राज्य या शासन चलाने की प्रमुख चार पद्धतिया। १० राजनीति। ११ सिद्धान्त। १२ उपयुक्त कार्य या व्यवहार। **—ग्य**–वि० नीतिकुशल। **—मांन, वत, वांन**–वि० नीति को मानने वाला, नीति परायण, सदाचारी। **—सास्त्र**–पु० वह ग्रथ या शास्त्र जिसमे आचार-व्यवहार तथा शासन के विधान का वर्णन हो।

नीतीतायौ, नीत्ततायौ, नीत्तीतायौ–देखो 'नित्तीतायौ'।

नीद, नीदडली, नीदड़ी–देखो 'निद्रा'।

नीदाळ, नीदाळु, नीदाळू–देखो 'निद्राळु'।

नीद्र, नीद्रइ, नीद्रलडी–देखो 'निद्रा'।

नीधणि, नीधणिकौ, नीधणियौ, नीधणौ–वि० बिना मालिक का, लावारिस।

नीधनौ–देखो निरधन'।

नीधस–स्त्री० नगाडे या वाद्य की ध्वनि।

नीधसणौ (बौ)–क्रि० [देश०] १ नगाडे की ध्वनि होना, बजना। २ बाजे बजना।

नीध्रस–देखो 'नीधस'।

नीध्रसणौ (बौ)–देखो 'नीधसणौ' (बौ)।

नीप–देखो 'निप'।

नीपक–पु० [देश०] १ याचक। २ कवि। ३ पडित।

नीपज–स्त्री० [स० निष्पदनम्] १ उपज, पैदावार। २ उत्पत्ति।

नीपजणौ (बौ)–क्रि० [स० निष्पदनम्] १ उपजना, पैदा होना। २ अकुरित होना। ३ उत्पन्न होना। ४ बढना, बडा होना। ५ वृद्धि होना, बढना। ६ पकना। ७ तैयार होना बनना।

नीपजाणौ (बौ), नीपजावणौ (बौ)–देखो 'निपजाणौ' (बौ)।

नीपण–पु० [स० लेपनम्] १ आगन मे गोबर आदि का लेपन। २ लेपन क्रिया। ३ देखो 'निपुण'।

नीपणौ (बौ)–क्रि० [स० लेपनम्] १ आंगन मे लेपन करना, लीपना। २ थोपना। ३ पोतना। ४ देखो 'नीपजणौ' (बौ)।

नीपनणो (बो)–देखो 'नीपजणो' (बो)।

नीपवरण (न)–वि० उत्पन्न करने वाला, उत्पादक।

नीपाणो (बो), नीपावणो (बो)–क्रि०१ आगन मे लेपन कराना। २ थोपाना। ३ पोताना। ४ देखो 'निपजाणो' (बो)।

नीपियो-पोतियो–वि० लिपा-पुता।

नीब, नीबड़, नीबडलो, नीबडियो, नीबडो, नीबडो–देखो 'नीम'।

नीबाण–स्त्री० नीबू का वृक्ष।

नीबात–पु० [स० नवनीत] १ मक्खन, नवनीत। २ मिश्री। –वि० १ कायर, डरपोक। २ कमजोर, अशक्त।

नीबाब–देखो 'नवाब'।

नीबी–स्त्री० [स० निर्विकृतिक] विकृति पैदा करने वाले पदार्थों के त्याग का नाम (जैन)।

नीबीजो–देखो 'निरबीज'।

नीबू, नीबूडो, नीबूडो–देखो 'नीबू'।

नीबोळी–देखो 'निबोळी'।

नीभर–१ देखो 'निरभय'। २ देखो 'निरभर'।

नीमत–देखो 'निमित्त'।

नीम–पु० [स० निम्ब] १ एक प्रसिद्ध व बडा वृक्ष जिसके पत्ते, छाल व मजरी ओषधि मे काम आते हैं। २ गहराई। ३ तालाब के मध्य स्थान की गहराई व कठोरता। ४ देखो 'नियम'। –वि० [फा०] आधा, अर्द्ध। देखो 'नीव'।

नीमगिलोय–स्त्री० गिलोय नामक लता।

नीमड–देखो 'नीम'।

नीमड़णो (बो)–क्रि० [स० निवर्तनम्] १ नष्ट होना, बर्बाद होना। २ समाप्त होना। ३ मर्यादा छोडना। ४ उत्तरदायित्व निभाना। ५ देखो 'निपटणो' (बो)। ६ देखो 'निवडणो' (बो)।

नीमडली (लो), नीमडियो, नीमडो, नीमडो–देखो 'नीम'।

नीमचमेली–स्त्री० सफेद फूलो वाला एक वृक्ष।

नीमचा–स्त्री० [फा०] एक प्रकार की तलवार।

नीमजणो (बो)–क्रि० [स० निष्पदन] १ ठानना, तय करना। [स० निमज्जनम्] २ घुसना, प्रविष्ठ होना। ३ देखो 'नीपजणो' (बो)।

नीम-जमीर–स्त्री० [स० निम्ब-जमीर] एक प्रकार का वृक्ष।

नीमजर–स्त्री० [स० निम्ब + रा० जर] नीम पर आने वाली बोर।

नीमटणो (बो), नीमडणो (बो)–१ देखो 'निवडणो' (बो)। २ देखो 'निपटणो' (बो)।

नीमड़ो–देखो 'नीम'।

नीमण–वि० [स० निर्मन] १ जो थोथा या पोपला न हो, ठोस। २ निरोग। ३ पुष्ट। ४ दृढ, मजबूत। ५ अच्छा, भला।

नीमणायत–वि० [देश०] मजबूत, दृढ।

नीमणो (बो)–क्रि० [स० निर्मित] १ संकल्प करना। २ दृढ निश्चय करना। ३ प्राप्त करना, पाना। ४ बनाना, निर्मित करना।

नीमतणो (बो)–क्रि० [स० निमितम्] १ किसी के निमित्त करना, किसी के लिए करना। २ देखो 'निमत्रणो' (बो)।

नीमवण–वि० [स० निर्मनम्] रचने वाला, रचयिता।

नीमवर–पु० [फा०] कुश्ती का एक पेच।

नीमसारण्य–देखो 'नेमिसारण्य'।

नीमाणो (बो), नीमावणो, (बो)–देखो 'नमाणो' (बो)।

नीमावत–पु० १ निम्बकाचार्य का अनुयायी। २ वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद। ३ रामावत साधुओ की एक शाखा। ४ इस शाखा का अनुयायी।

नीमियो–वि० १ नियम या व्रतधारी। २ सकल्पित।

नीमोळी–देखो 'निमोळी'।

नीमो–देखो 'नमो'।

नीयता–देखो 'नियता'।

नीय–१ देखो 'निज'। २ देखो 'नीचे'। ३देखो 'नीच'।

नीयत–स्त्री० [अ०] १ आन्तरिक इच्छा, मनोवृत्ति। २ भावना, विचारधारा। ३ उद्देश्य, लक्ष्य। ४ सकल्प। ५ नीति।

नीयति–देखो 'नियति'।

नीयाणा–देखो 'नियाण, नियाणु'।

नीयाळ–देखो 'निहाल'।

नीरग, नीरगु–देखो 'निरग'।

नीर–पु० [स० नीरम्] १ जल, पानी। २ रस। ३ ओज। ४ शोभा, काति, दीप्ति। ५ गौरव, मान, प्रतिष्ठा। ६ आसू, अश्रु। ७ अर्क। ८ द्रव। -वि० १ श्वेत-श्याम। २ कृष्ण, काला*।

नीरअ–देखो 'नीरज'।

नीरखणो, (बो)–देखो 'निरखणो' (बो)।

नीरज, (ज्ज)–पु० [स० नीरज] १ कमल, पुडरीक। २ मोती। ३ पानी मे जन्म लेने वाला। ४ मल रहित कर्म (जैन)। –वि० रज रहित।

नीरण, नीरणी–स्त्री० [स० नीरणं] १ मवेशियो के आगे चारा आदि डालने की क्रिया। २ मवेशियो के आगे चरने के लिये एक बार मे डाला जाने वाला चारा।

नीरणो (बो)–क्रि० [स० नीरण] मवेशियो के आगे चरने का चारा डालना।

नीरद, नीरध–पु० [स० नीरद] १ बादल, घन । २ मोर, मयूर । -नादानुळ–पु० मोर, मयूर । –वध–पु० समुद्र, सागर ।
नीरधर–पु० [स०] १ बादल, मेघ । २ समुद्र ।
नीरधारा–स्त्री० [स०] १ नदी, सरिता । २ जल धारा ।
नीरधि, नीरनिध, नीरनिधि–पु० [स०] समुद्र, सागर ।
नीरनिवास–पु० [स०] तालाव, जलाशय ।
नीरनेता–पु० [स०] वरुण ।
नीरपत, (पति)–पु० [स० नीरपति] वरुण ।
नीरबहणी, (वहणी)–स्त्री० [स० नीर-वह] नाव, नौका ।
नीरभव–पु० [स०] कमल ।
नीरभै–देखो 'निरभय' ।
नीरवाली–स्त्री० एक लता विशेष ।
नीरस–देखो 'निरस' ।
नीरसमीप–पु० [स०] वरुण ।
नीरस्त–पु० [स० निस्त्रिंश] तीर, बाण ।
नीरांत–देखो 'नैरात' ।
नीरातर–वि० [स० निर–अतक] शात, चुप ।
नीरायत–देखो 'नैरात' ।
नीराग, नीरागी–वि० [स०] १ राग-द्वेष से रहित, विरक्त, उदास । २ आनन्द रहित । –पु० जिन-देव । (जैन)
नीराजण (न, ना)–स्त्री० [स० नीरजन] आरती उतारने की क्रिया । दीप-दान । परछन ।
नीराळौ–देखो 'निराळौ' ।
नीरास–पु० १ नि श्वास । २ देखो 'निरास' ।
नीरासइ–पु० [स० नीराश्रय] तालाव, सरोवर ।
नीरि–देखो 'नीर' ।
नीरु, नीरू–देखो 'नीर' ।
नीरोअर–देखो 'नीरोवर' ।
नीरोग–वि० जिसे रोग न हो, तन्दुरुस्त, स्वस्थ ।
नीरोगता–स्त्री० स्वस्थता । आरोग्यता । तन्दुरुस्ती ।
नीरोगी–वि० [स० निरोगिन्] स्वस्थ । तन्दुरुस्त ।
नीरोगौ–देखो 'निरोग' ।
नीरोपम, नीरोपमी–देखो 'निरुपम' ।
नीरोवर, (रि, री)–पु० [स० नीरवर] १ समुद्र, सागर । २ वरुण । ३ पानी, जल ।
नीरौ–पु० [देश०] १ भूसा, चारा, घास । २ देखो 'नीर' ।
नीलक, निलग, नीलगु–पु० १ एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र । २ शरीर का एक कीडा विशेष ।
नीलजण–पु० [स०] १ इन्द्र की सेना का एक सेनापति । २ विद्युत, विजली ।
नीलठ, नीलठौ–पु० [देश०] जल, पानी ।
नीलमणी–देखो 'नीलमणि' ।
नील–पु० [स० नीलिका, नील] १ एक पौधा जिससे नीला रग निकलता है । २ नीला रग । ३ लाछन, कलक । ४ श्रीराम की सेना का एक बन्दर । ५ पवन, वायु । ६ इलावृत्त खण्ड का एक पर्वत । ७ मगल घोष । ८ नृत्य के १०८ करणो मे से एक । ९ एक प्रकार घोडा । १० एक नाग का नाम । ११ दस हजार अरब की सख्या । १२ एक प्रकार का सरकारी कर । १३ एक प्रकार का फल । १४ महिष्मती के राजा का नाम । १५ विष, जहर । १६ एक यम का नाम । १७ आर्या गीति या स्कधाण का एक भेद । १८ एक वर्णिक वृत्त विशेष । १९ वर्षा के पानी से मकानो पर जमने वाली पपडी, कालिमा । २० पानी पर जमने वाली काई । २१ कपडो पर दी जाने वाली नील । २२ नीलापन, नीलाई । २३ चोट के कारण शरीर पर पडने वाला दाग । २४ नवनिधियो मे से एक । २५ इन्द्र नीलमणि, नीलम । २७ काले स्तनो वाली गाय । २७ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से एक । –वि० नीले रग का, आसमानी ।
नीलअजनी–पु० शरीर पर नीले धब्बो वाला घोडा ।
नीलउनेत्र, नीलउनेत्र–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
नीलऊ–देखो 'नीलौ' ।
नीलकठ–वि० [स०] जिसका कठ नीला हो । –पु० १ मोर, मयूर । २ मूली । ३ एक चिडिया । ४ शिव, महादेव । ५ गोरा पक्षी ।
नीलकठी–स्त्री० [स०] १ हिमालय क्षेत्र में पाई जाने वाली एक चिडिया विशेष । २ एक पौधा विशेष । ३ देखो 'नीलकठ' ।
नीलक–वि० नीला, आसमानी । –पु० १ आसमानी या नीला रग । २ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । ३ नीले रग का घोडा । ४ काला घोडा । ५ नीला थोथा, तूतिया । ६ नीला इस्पात, वीदरी लोहा । ७ काला नमक ।
नीलकांत–पु० [स०] १ हिमालय क्षेत्र मे रहने वाली एक चिडिया । २ एक मणि, नीलम ।
नीलक्क–देखो 'नीलक' ।
नीलक्रौंच–पु० [स०] काला वगुला ।
नीलगर–पु० [फा०] १ रगरेजो की एक जाति । २ देखो 'नीलगिरि' ।
नीलगाय–स्त्री० गाय से मिलता-जुलता भूरे रंग का वडा हिरण ।
नीलगिरि, नीलगिरी–पु० [स० नीलगिरि] दक्षिण देश का एक पर्वत ।
नीलग्रीव–पु० [स०] १ शिव, महादेव । २ मोर, मयूर ।

नुहालो, नुहेलो–१ देखो 'नवेलो' । २ देखो 'नवीन' । (स्त्री० नुहेली)

नू–प्रत्य० १ कर्म और सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय, को । २ तृतीया या करण तथा पचमी या अपादान का विभक्ति प्रत्यय, से । ३ चतुर्थी या सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय, लिए । ४ देखो 'नही' । ५ देखो 'नख' ।

नूंई–देखो 'नवी' ।

नूंजण–देखो 'नूंजणो' ।

नूंजणियो–देखो 'नूंजणो' ।

नूंजणो, नूंजणो–पु० [स० न्युब्जन] १ दुहते समय गाय के पिछले पाव बाधने की छोटी रस्सी । २ गाय दुहते समय उसके अगले पाव से बछडे को बाधने की रस्सी ।

नूंजणो (बो)–क्रि० [स० न्युब्जनम्] १ दुहते समय गाय के पिछले पाव बाधना । २ दुहते समय गाय के अगले पाव से बछडा बाधना । ३ बाधना ।

नूंत–देखो 'नैत' ।

नूंतणो–देखो 'निमत्रण' ।

नूंतणो (बो)–देखो 'निमत्रणो' (बो) ।

नूंतार–पु० [स० निमत्रणम्] १ निमत्रण देने वाला । २ निमंत्रित व्यक्ति ।

नूंतारो–वि० [स० निमन्त्रित] (स्त्री० नूंतारी) निमन्त्रित ।

नूंतो–१ देखो 'निमत्रण' । २ देखो 'नैत' ।

नूंथर, नूंथोर–स्त्री० नाखून मे गडी फास ।

नूंद, नूंदडली–स्त्री० १ हाथी के लिये भोजन रखी सामग्री । २ सामान । ३ भोज, गोठ । ४ याददाश्ती की लिखावट ।

नूंदणो (बो)–क्रि० [देश०] १ स्मरणार्थ बही मे लिखना । २ दर्ज करना, अकित करना । ३ नकल उतारना । ४ 'नूंद' की सामग्री तोलना ।

नूंद-री-बही–स्त्री० याददाश्त या नकल उतारने की बही ।

नूंन, नूंनी–१ देखो 'नूनी' । २ देखो 'न्यून' ।

नूंनता–देखो 'न्यूनता' ।

नूंपुर–देखो 'नूपुर' ।

नूंर–देखो 'नूर' ।

नूंवो–देखो 'नवो' । (स्त्री० नूंवी)

नूंहतणो (बो)–देखो 'निमंत्रणो' (बो) ।

नू–पु० १ स्त्रियो के पाव का आभूषण, नूपुर । २ कठ । ३ बाण, तीर, शर । ४ नित्य । ५ पति-पत्नी, दम्पति । ६ स्त्री, नारी । ७ देखो 'नू' । ८ देखो 'नही' ।

नूजण, नूजणियो, नूजणो, नूजणो–देखो 'नूंजणो' ।

नूजणो (बो)–देखो 'नूंजणो' (बो) ।

नूत–पु० [स० चूत्] १ आम्र, आम । २ देखो 'नैत' ।

नूतणो (बो)–देखो 'निमत्रणो' (बो) ।

नूतन–वि० [स०] १ नवीन, नया । २ ताजा, हाल का । ३ अनोखा, विलक्षण, अपूर्व ।

नूतरणो (बो)–देखो 'निमत्रणो' (बो) ।

नूतारा–स्त्री० एक जाति विशेष ।

नूतारो–स्त्री० (स्त्री० नूतारी) 'नूतारा' जाति का व्यक्ति ।

नूतो–१ देखो 'निमत्रण' । २ देखो 'नैत' ।

नून–१ देखो 'नूनी' । २ देखो 'न्यून' ।

नूनकडी, नूनकी–देखो 'नूनी' ।

नूनता, नूनताई–देखो 'न्यूनता' ।

नूनवायो–देखो 'नियायो' ।

नूनी–स्त्री० छोटे बच्चे की मूत्रेन्द्रिय ।

नूप–वि० [स० अनूप] अद्भुत, अनोखा, अपूर्व ।

नूपर, नूपुर–पु० [स० नूपुर] १ स्त्रियो के पावो का आभूषण, पायल । २ एक प्रकार का बाजा । ३ प्रथम गुरु सगण के प्रथम भेद का नाम ।

नूर–पु० [अ०] १ काति, दीप्ति । २ श्री, शोभा, आभा । ३ प्रकाश, रोशनी । ४ तेज । ५ शौर्य । ६ जोश । ७ सच्चिदानन्द, ईश्वर । ८ सौंदर्य, सुन्दरता, लावण्य । ९ रूप, स्वरूप, शक्ल । १० नेत्र की वह शक्ति जिससे दिखाई देता है । नेत्र ज्योति । ११ प्रतिबिंब, बिंब । १२ कीर्ति, प्रतिष्ठा, सुयश ।

नूरतो–देखो 'नवरात्र' ।

नूरबाणी, नूरांणो–स्त्री० [अ० नूरानी] १ प्रकाश, चमक, दमक । २ रूप, सौंदर्य, लावण्यता । ३ मुख की आकृति, भाव ।

नूरी–वि० प्रकाशमान, उज्ज्वल ।

नूरो–१ देखो 'नूर' । २ देखो 'नोहरो' ।

नूवी–१ देखो 'नवमी' । २ देखो 'नवी' ।

नूवो–देखो 'नवो' ।

नूह–पु० [अ०] एक पैगम्बर ।

नेंडो–देखो 'निसडो' ।

ने–पु० १ कुत्ता, स्वान । २ अयन, मार्ग । ३ नेत्र, चक्षु । ४ छडी । ५ देखो 'नै' ।

ने'–देखो 'नेस' ।

नेअटो–पु० [देश०] १ जलाशय से अनावश्यक पानी निकालने की मोरी, नाला । २ उक्त नाले से निकलने वाला पानी ।

नेअर–देखो 'नेवर' ।

नेउमों–वि० [सं० नवति] नब्वे के स्थान वाला ।

नेउर, नेउरी–देखो 'नेवर' ।

नेउल–देखो 'नकुल' ।

नेउ, नेऊ–वि० [स० नवति] सौ से दश कम, नब्बे । –पु० नब्वे की संख्या, ९० ।

नेऊंक–वि० नव्वे के लगभग ।

नेऊमौ–वि० (स्त्री० नेऊमी) नव्वे के स्थान वाला । –पु० नव्वे का वर्ष ।

नेऊर–देखो 'नेवर' ।

नेक–वि० [फा०] १ शिष्ट, सभ्य, सज्जन । २ अच्छा, भला । ३ उत्तम, श्रेष्ठ । ४ ईमानदार, सच्चा । —चलरा, चलन–वि० अच्छे चाल-चलन वाला, सदाचारी । —चलनी–स्त्री० सदाचारिता । —नाम–वि० यशस्वी । ख्यातिवान । —नामी–स्त्री० यश, ख्याति ।—नीयत–स्त्री० ईमानदारी की भावना । अच्छी नीयत –वि० ईमानदार । —नीयती–स्त्री० अच्छी नीयत । अच्छा सकल्प ।

नेकर, नेकरियौ–स्त्री० १ कमर से घुटनो तक बना पुरुषो या बच्चो का अधोवस्त्र । २ हल मे हरीसा फमाकर लगाई जाने वाली कील ।

नेकाळ–देखो 'निकाळ' ।

नेकाळौ–देखो 'निकाळौ' ।

नेकी–स्त्री० [फा०] १ सज्जनता, सौजन्यता । २ भलाई सद्व्यवहार । ३ ईमानदारी । —बध–वि० भला, ईमानदार, सज्जन ।

नेखम–वि० १ दृढ, स्थिर । २ पक्का, स्थाई । ३ सीमा पर गडा पत्थर ।

नेखवा–वि० [अ० नेक-ख्वाह] शुभचिंतक ।

नेग–पु० [स० रिगजिर्] १ शुभ कार्यों के साथ जुडे कुछ रीति-रिवाज, प्रथाऐ । २ शुभ कार्यों मे प्रथा के अनुसार सबधितो, आश्रितो आदि को दी जाने वाली भेट, पुरस्कार आदि । —दार–पु० 'नेग' पाने का हक रखने वाला । —धर–पु० 'नेग' पाने का अधिकारी ।

नेगट–पु० [देश०] 'तरवरा' नामक पौधे के बीज ।

नेगवीन–देखो 'नैगवीन' ।

नेगायरा, नेगी–वि० (स्त्री० नेगरा) नेग लेने वाला, नेग पाने का अधिकारी ।

नेगू–स्त्री० रस्सी (मेवात) ।

नेडी–देखो 'नेहडी' ।

नेचा–देखो 'नीचे' ।

नेचौ–देखो 'नैचौ' ।

नेज–देखो 'नेजौ' ।

नेजबध, (धी)–वि० भाला नामक शस्त्रधारी ।

नेजबाज–स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बन्दूक । –वि० भाला रखने वाला, भाला चलाने वाला ।

नेजम–देखो 'नेजौ' ।

नेजरूप–पु० बरछी ।

नेजाइल–देखो 'नेजायल' ।

नेजादाऊदी, नेजादावदी–स्त्री० एक प्रकार का पुष्प ।

नेजावरदार–पु० [फा० नैज बरदार] १ राजा-महाराजाओ की ध्वजा आदि लेकर चलने वाला । २ भाला लेकर चलने वाला ।

नेजायत–वि० १ अपना खुद का झण्डा रखने वाला योद्धा । २ भालाधारी योद्धा ।

नेजाळ (ळौ)–वि० १ भालाधारी वीर । २ अपना झण्डा रखने वाला वीर । ३ देखो 'नेजौ' ।

नेजौ–पु० [फा० नैज] १ झडा, पताका । २ ध्वज दण्ड । ३ भाला । ४ बरछा । ५ देखो 'नोजा' ।

नेट, नेटि, नेठ–पु० [देश०] १ मर्म, भेद, थाह । २ निश्चय । –क्रि०वि० १ अन्त मे, आखिर मे । २ निपट, बिल्कुल । ३ नही तो । ४ देखो 'नीठ' ।

नेठवरगौ (बौ)–क्रि० [स० निष्ठान्] १ प्रगट करना, दिखलाना । २ प्रदर्शन करना ।

नेठाउ, नेठाव, नेठाह–पु० [स० निष्ठा] धीरज, धैर्य, सतोष । [स० निस्थात] स्थान, जगह ।

नेंठौ–पु० [स० नष्ट] १ अन्त, समाप्ति, पूर्णता । २ छोर, शिरा, सीमा ।

नेठौ–देखो 'नेठाव' ।

नेत–पु० १ भाला । २ झडा, ध्वज, पताका । ३ मर्यादा । ४ देखो 'नियति' । ५ देखो 'नीयत' । ६ देखो 'नीति' । ७ देखो 'नेत्र' । ८ देखो 'नेतरौ' ।

नेतई–क्रि०वि० निश्चय ही ।

नेतत्रण–पु० [स० त्रि-नेत्र] शिव, महादेव ।

नेतबध, नेतबधी–पु० १ मर्यादा रखने वाला, मर्यादा बाधने वाला । २ अपना झडा रखने वाला योद्धा । ३ राजा, नृप ।

नेतर–१ देखो 'नेत्र' । २ देखो 'नेतरौ' ।

नेतरौ–पु० [स० नेत्र] १ मथदण्ड घुमाने की रस्सी । २ दुहते समय गाय के पाव बाधने की रस्सी ।

नेता–वि० [स० नेतृ] १ नायक, अगुवा, अग्रगण्य । २ स्वामी, प्रभु । ३ निर्वाहक । ४ देखो 'नित्य' ।

नेति, नेती–वि० [स० नेति] जिसकी इति न हो, अनन्त । –पु० १ परमात्मा, ब्रह्म । २ अनन्तता सूचक शब्द । ३ राजा, नृप । ४ देखो 'नेत' । ५ देखो 'नीति' ।

नेती-धोती–स्त्री० हठयोग की एक क्रिया ।

नेतौ–१ देखो 'नेतरौ' । २ देखो 'नेता' ।

नेत्त, नेत्र, नेत्रउ–पु० [स० नेत्र] १ आख, चक्षु, लोचन । २ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । ३ एक प्रकार की लता व उसका फल । ४ देखो 'नेतरौ' ।

नेत्रज–पु० [स०] आसु, अश्रु ।

नेत्रजगदीस्वर–पु० [स० नेत्रजगदीश्वर] ईश्वर का नेत्र, सूर्य ।
नेत्रजळ–पु० [स० नेत्रजल] आसु, अश्रु ।
नेत्रजूरा, नेत्रजोनी–पु०[स०नेत्रयोनि] १ इन्द्र । २ चन्द्रमा,चाद ।
नेत्रपट्ट–पु० [स०] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
नेत्रपालबणी–स्त्री० डिंगल का एक । गीत ।
नेत्रवध, नेत्रबघण, नेत्रबधी–देखो 'नेतबध' ।
नेत्रवाळौ–पु० [स० बाल] एक क्षुप विशेष ।
नेत्रभाव–पु० [स०] सगीत या नृत्य सबधी, नेत्रो द्वारा प्रगट किये जाने वाले भाव ।
नेत्रमडळ–पु० [स०] १ नेत्रो का वृत्त घेरा । २ आख का डेला ।
नेत्रमळ–पु० [स० नेत्रमल] नेत्रो से निकलने वाला मेल ।
नेत्रमूढ़–वि० [स०] मिलित नेत्रो वाला, बन्द नेत्रो वाला ।
नेत्रवाळौ–देखो 'नेत्रवालौ' ।
नेत्रौ–देखो 'नेतरौ' ।
नेदांण,(णो)–देखो 'निदाण' ।
नेपत, नेपति, नेपती, नेपत्ति–१ देखो 'नेपै' । २ देखो 'नेपथ्य' ।
नेपथ्य–पु० [स] १ नृत्य अभिनय आदि के पर्दे के पीछे का स्थान । २ रग भूमि, रगशाला । ३ पार्श्व । —**करम**–पु० ७२ कलाओ मे से एक । —**योग**–पु० ६४ कलाओ मे से एक ।
नेपुर–देखो 'नूपुर' ।
नेपै–पु० [स निष्पदनम्] १ उपज, पैदावार । २ उत्पत्ति क्षेत्र । ३ प्रचुरता, वृद्धि ।
नेफादार, नेफेदार–वि० जिसमे नेफा लगा हो ।
नेफौ–पु० [फा०नेफ] लहगे, पायजामे आदि मे बना, नाडा डालने का स्थान ।
नेम–पु० [स० नियम] १ व्रत, उपवास । २ सकल्प, प्रतिज्ञा । ३ व्रत, उपवास का नियम । ४ देखो 'नियम' । ५ देखो 'निमित्त' । ६ देखो 'नेमिनाथ' ।
नेमणायत, नेमणियायत–वि० [स० नियम] दृढ प्रतिज्ञ, अपनी बात पर पक्का ।
नेमणौ, (बौ)–क्रि० [स० नियमनम्] १ निश्चय करना, दृढ विचार करना । २ नियम बनाना । ३ गर्भ धारण करना ।
नेमप्रात–पु० [स० नियम + प्रात] दान वीर राजा कर्ण ।
नेमा–देखो 'नियम' ।
नेमि–स्त्री० [स०] १ चक्र की परिधि, पहिए का वृत्त । २ भूमि, धरती । ३ देखो 'नेमिजन' । ४ देखो 'नेमिनाथ' ।
नेमिजन, (जिन)–पु० [स०] १ महाविदेह क्षेत्र मे होने वाले २० विरहमानो मे से १३ वा । २ नेमिनाथ ।
नेमिनाथ पु० [स० २२] वें तीर्थंकर । (जैन)
नेमी–पु० [स०] १ चन्द्रमा । २ नियम पूर्वक नित्य कर्म आदि करने वाला । ३ नियम पर दृढ रहने वाला । ४ देखो 'नेमि' ।
नेमीसर–देखो 'नेमिनाथ' ।
नेर–देखो 'नगर' ।
नेरउ–देखो 'निकट' ।
नेरणौ–देखो 'नैरणौ' ।
नेरतियौ–वि० नैऋत्य कोण वाला । -पु० नैऋत्य कोण से बहने वाला पवन ।
नेरू–पु० १ नाखूनो से चीर-फाड कर खाने वाला मासाहारी एक जानवर । २ एक रोग विशेष ।
नेरे–देखो 'नैरै' ।
नेलियौ, नेलौ–१ देखो 'नैरणौ' । २ देखो 'नै'लौ' ।
नेव–पु० [देश०]१ मकान या छप्पर का ढलुवा भाग । २ देखो 'न्याव' । ३ देखो 'नैव' ।
नेवग– देखो 'नेग' ।
नेवगी, (गौ)–पु० [स्त्री० नेवगण] १ नाई, हज्जाम । २ देखो 'नेगी' ।
नेवड–पु०आंख, नयन ।
नेवछावर–देखो 'निछरावळ' ।
नेवज, (ज्ज)–देखो 'नैवेद' ।
नेवतणौ, (बौ)–देखो 'निमत्रणौ' (बौ) ।
नेवर–पु० [स० नूपुर] १ स्त्रियो के पावो का आभूषण विशेष, पायल । २ घोडे के पैर मे पहनाने का आभूषण । ३ घोडे के पैरो की परस्पर रगड से होने वाला रोग विशेष । ४ मनुष्य के टखने की हड्डी ।
नेवरा –स्त्री० १ सात मात्राओ की एक ताल । २ देखो 'नो'रा' ।
नेवरिया–देखो 'नौरा' ।
नेवरियौ–पु०वह घोडा जिसके पाव चलते समय परस्पर रगड खाते हैं ।
नेवरी–देखो 'नेवर' ।
नेवलियौ, नेवळौ, नेवलौ–देखो 'नकुळ' ।
नेवारी–स्त्री० जुही जाति की एक लता ।
नेवासी–देखो 'निवासी' ।
नेवुर–देखो 'नेवर' ।
नेस, नेसड़, नेसडौ,–वि० बना हुआ ।
नेसड़, नेसडौ–पु० [स०निवेश] १ निवास स्थान, घर । २ चारणों की जागीर का गाव । ३ नगर, शहर । ४ जगली जानवरो के नुकीले दात । ५ ऊट के मुह के सामने के दांत । ६ असुर, राक्षस । ७ एक प्रकार की तेज शराब । ८ देखो 'निसा' ।

नेसन–पु० [अ० नेशन] १ जाति, वर्ण । २ देश, राष्ट्र ।
नेसला–स्त्री० [देश०] ऊट के चारजामे की रस्सी विशेष ।
नेसार, नेसारू–देखो 'नेसावर' ।
नेसाळ, नेसाळा, नेसाळि–स्त्री० [स० लेखशाला] १ पाठशाला, विद्यालय । २ देखो 'नेसाळी' ।
नेसाळियौ–पु० १ विद्यार्थी । २ देखो 'नेसाळी' ।
नेसाळी, नेसावर, नेसावरियौ–पु० चौमड के पूरे दातो वाला ऊट ।
नेसास, नेसासौ–देखो 'निस्वास' ।
नेस्ती–पु० जाति विशेष ।
नेह, नेहडलु, नेहड़लौ–पु० स्नेह, प्यार, प्रेम ।
नेहडी–स्त्री० मथनी के साथ जुडने वाली लकडी ।
नेहडौ– देखो 'नेह' ।
नेहचै, नेहचौ–देखो 'निस्चय' ।
नेहडौ (ढ़ौ)–देखो 'निसडौ' ।
नेहणौ–१ देखो 'नैरणौ' । २ देखो 'नैणौ' । ३ देखो 'नयन' ।
नेहणौ, (बौ)–क्रि० [स० स्नेहनम्] स्नेह करना, प्रेम करना ।
नेहप्रिय, (प्रीय)–पु० [स० स्नेहप्रिय] दीपक ।
नेहरू, नेहरौ–देखो 'नेरू' ।
नेहलउ, नेहलु,नेहलौ–देखो 'नेह' ।
नेहवाळ, नेहवाळौ–वि० (स्त्री० नेहवाळी) सतान के प्रति स्नेह युक्त, वत्सल । ममता वाला ।
नेहवी–वि० प्रेमिका, प्रेयसी ।
नेहानेह, नेहानेह–पु० [सं० स्नेहा] दीपक ।
नेहा–देखो 'नेह' ।
नेहालदी–वि० [स० स्नेहानदिनी] प्रेयसी, प्रेमिका ।
नेहाळ,नेहाळू, नेहाळौ–वि० (स्त्री० नेहाळी) प्रेमी, प्रिय ।
नेही–वि० स्नेह वाला, प्रेम वाला ।
नेहु, नेहौ–देखो 'नेह' ।
नै–देखो 'नै' ।
नैग–पु० [स० न्यङ्ग] अविवाहित साधु या सन्यासी ।
नैगी–स्त्री० [स०न्युङ्क] घास का चूरा बनाने के काम आने वाला काष्ठ का एक उपकरण । अहुटन ।
नैज–पु० [देश०] प्रवध ।
नैण–देखो 'नयन' ।
नैणी–देखो 'नखहरणी' ।
नैतणौ,(बौ)–देखो 'निमत्रणौ' (बौ) ।
नैरांत–देखो 'नैरात' ।
नैसार–देखो 'निसार' ।
नै–अव्य० [स० कर्ण] एक सयोजक अव्यय । और, एवं । -क्रि०वि० ओर, तरफ । लिये, वास्ते । -प्रत्य०१ कर्मकारक विभक्ति प्रत्यय, को । २ पूर्वकालिक क्रिया के साथ जुडने वाला प्रत्यय । ३ उत्तर कालिक क्रिया के साथ जुडने वाला प्रत्यय । -स्त्री० [फा०] १ हुक्के की निगाली । २ देखो 'नदी' ।
नैकाळ–देखो 'निकाळ' ।
नैगवीन–पु० [स० नवगव्य] नवनीत, मक्खन ।
नैंडी–स्त्री० मथनी के सहारे का उपकरण ।
नैड़ , नैडरौ, नैडौ–वि० [स० निकट] (स्त्री० नैडी) पास समीप, निकट ।
नैचाबद–वि० [फा०] हुक्के का नैचा बनाने वाला ।
नैचौ–पु० [फा० नैच] हुक्के की निगाली ।
नैंचौ–देखो 'नहचौ' ।
नैछै–क्रि० वि० [स०निश्चय] १ निश्चिंतता से, तसल्ली से, धैर्य से, आराम से । २ धीरे से ।
नैछौ–पु० [स० निश्चय] धैर्य, तसल्ली, आराम । सब्र ।
नैजण, नैजणियौ, नैजणौ–देखो 'नूजणौ' ।
नैजणौ (बौ)–देखो 'नूंजणौ' (बौ) ।
नैठाव–देखो 'नेठाव' ।
नैड–देखो 'नाड' ।
नैण–पु० [स० नयन] १ आख, नयन । २ दो की सख्या* । —झर–पु० आख का एक रोग । —सुख–वि० जो आखो को भला लगे । –पु० एक प्रकार का वस्त्र । —हजार –पु० इन्द्र ।
नैणसघण–पु० [स० नयन-सघन] मेघ, बादल ।
नैंणौ-[पु०देश०]मूग, मोठ,घास आदि, के पोधो का छोटा ढेर ।
नैत–स्त्री० [स० निमत्रण] १ विवाहादि मागलिक अवसरो पर कुटुबियो व रिश्तेदारो द्वारा दिया जाने वाला द्रव्य । २ भेंट, उपहार ।
नैतणौ (बौ)–क्रि० [स० निमत्रणम्] १ मागलिक अवसरो पर द्रव्यादि भेंट करना । २ देखो 'निमत्रणौ' (बौ) ।
नैतवध (बधी)–देखो 'नेतवध' ।
नैतरौ–देखो 'निमत्रण' ।
नैतियार–देखो 'निमत्रीहार' ।
नैतौ–पु० [स० निमत्रण] १ मागलिक अवसरो पर प्रजा से लिया जाने वाला कर । २ देखो 'निमत्रण' ।
नैन–१ देखो 'नैण' । २ देखो 'नैनम' ।
नैनकडौ, नैनकियौ–देखो 'नैनौ' । (स्त्री० नैनकडी, नैनकी)
नैनणौ–देखो 'नूजणौ' ।
नैनणौ (बौ)–देखो 'नूजणौ' (बौ) ।
नैनप, नैनम–स्त्री० [स० न्यच्] अवयस्कता, नाबालिगी, लडकपन ।
नैनियौ, नैनौ, नैन्यौ, नैन्हौ–वि० [स० न्यच्] (स्त्री० नैनी) १ छोटा, न्यून, अल्प । २ अल्पायु । ३ लघु । ४ कम

महत्व का । ५ जिसमे कुछ सार न हो । ६ ओछा, शूद्र, नीच । –पु० बच्चा, शिशु ।

नैपत्ति–देखो 'नेपै' ।

नैमखार, नैमसार, नैमसारण्य–देखो 'नैमिसारण्य' ।

नैमित्य–क्रि०वि० [सं०] नियमपूर्वक, नियम से ।

नैमिस–स्त्री० [स० नैमिष] १ यमुना के दक्षिण तट पर बसने वाली एक जाति । २ नैमिषारण्य तीर्थ ।

नैमिसारण्य–पु० [स० नैमिषारण्य] एक प्राचीन तीर्थ ।

नैयरण–देखो 'नैरण' ।

नैरति–देखो 'नैरित्य' ।

नै'र–स्त्री० [फा० नह्र] नहर, कृत्रिम नदी ।

नैर–देखो 'नगर' ।

नैरणी–देखो 'नखहरणी' ।

नैरणौ–पु० [देश०] बढई का एक औजार ।

नैरत–देखो नैरित्य' ।

नैरता–देखो 'नैरित्य' ।

नैरात–स्त्री० [स० निर्-अतक] १ शाति, चैन । २ चित्त की स्थिरता, धैर्य, धीरज । ३ सतोष, तृप्ति । ४ आवेश या वेग का अभाव । ५ तदुरुस्ती, स्वस्थता ।

नैरावौ–पु० [स० नीराज] १ ब्राह्मण को भिक्षा मे दिया जाने वाला अन्न । २ पूजा, अर्चना । ३ स्वागत, सम्मान ।

नैरित, नैरिती, नैरित्य–स्त्री० [स० नैऋत्य] १ दक्षिण पश्चिम के मध्य की दिशा । २ इस दिशा का देवता । –वि० दक्षिण-पश्चिम के मध्य का । —**कोण**–पु० इस दिशा का कोना ।

नै'री–वि० [फा० नह्र] १ नहर से सिंचित । २ नहर सबधी ।

नैरूं, नैरू–देखो 'नेरू' ।

नैरै–पु० [स० निरहर] शव ढोने की क्रिया ।

नैरौ–१ देखो 'न्यारौ । २ देखो 'नेंडौ' ।

नैव–क्रि०वि० [स०] बिल्कुल नही, कतई नही ।

नैवेद, नैवेद्य, नैवेद्ध, नैवंध, नैवेध्य–पु० [स० नैवेद्य] मदिर या देव मूर्ति के आगे रखा जाने वाला प्रसाद, मिष्ठान्न, भोग ।

नैसक–देखो 'निसक' ।

नैसकौ–देखो 'निसक' ।

नैस्टिक, नैस्ठिक–वि० [स० नैष्ठिक] उपनयन काल से मृत्यु पर्यन्त ब्रह्मचर्य रखने वाला ।

नैहचै–देखो 'निस्चय' ।

नैहचौ–देखो 'नहचौ' ।

नैहठौ–देखो 'निसडौ' ।

नैहतणौ (बौ)–देखो 'निमत्रणौ' (बौ) ।

नैहतौ–१ देखो 'नैत' । २ देखो 'निमत्रण' ।

नैहराई–स्त्री०[देश०]१ विलम्ब, देरी । २ शिथिलता । ३ धैर्य ।

नोऊ–देखो 'नव' ।

नोंक–स्त्री० [फा० नोक] १ किसी वस्तु का अत्यन्त पतला व तीक्ष्ण शिरा, छोर । अग्र भाग । २ सूई आदि की अणी । ३ चीप । —**दार**–वि० नुकीला, अणीदार, चुभने लायक, पैना । शानदार ।

नोंखचोख, नोंकझोक–स्त्री०१बनाव-शृगार, सजावट, ठाट-बाट । २ टीका-टिप्पणी ।

नोरा–देखो 'नौ'रा' ।

नो–पु० १ स्वामिकार्त्तिकेय । २ नमस्कार । ३ निषेध । –अव्य० १ सबध या षष्ठी का चिह्न, का । २ नही । –वि० ३ प्रसिद्ध, विख्यात । ४ देखो 'नव' ।

नोऊं, नोऊ–देखो 'नव' ।

नोऊनिध, नोऊनिधि–देखो 'नवनिधि' ।

नोक–देखो 'नोक' ।

नोकारमत्र–देखो 'नवकारमत्र' ।

नोकीरदौ–पु० बढई का एक औजार विशेष ।

नोखगी–वि० [स० नवखागी] अनोखा, विलक्षण ।

नोख–१ देखो 'अनोखौ' । २ देखो 'नोक' ।

नोखीलौ–वि० (स्त्री० नोखीली) १ अनोखा, अद्भुत । २ नुकीला ।

नोखौ–देखो 'अनोखौ' ।

नोचणौ (बौ)–क्रि० [स० लुंचन] १ नख या पजे आदि से चीरना, विदीर्ण करना, फाडना । २ लुंचन करना । ३ खरोचना, कुचरना । ४ खीच कर उखाडना ।

नोछावर–देखो 'निछरावळ' ।

नोजा–पु० चिलगोजा नामक सूखा मेवा ।

नोट–पु० [अ०] १ सरकार द्वारा प्रचलित कागजी मुद्रा । २ टिप्पणी । ३ लिखावट । ४ याददाश्त के लिये लिखने की क्रिया ।

नोता–पु० [स० ज्ञाति] सबधी, रिश्तेदार, नातेदार ।

नोतौ–पु० निमत्रण, नैत । न्यौता ।

नोपत, नोवत, नोवति, नोवती–देखो 'नौबत' ।

नोम–देखो 'नवमी' ।

नोमाळी–स्त्री० [स० नव मालिका] नव मालिका ।

नोप–देखो 'नव' ।

नो'रा–देखो 'नौ'रा' ।

नो'रौ–देखो 'नोहरौ' ।

नोळखणौ (बौ)–क्रि० नहीं पहिचानना ।

नोहर–पु० [स० नख-घर] मासाहारी पक्षी विशेष ।

नोहरा–देखो 'नौ'रा' ।

नोहली–स्त्री० [स० नव फलिका] नवीन-निष्पावी, नवीन-फलिका ।

नोहानी–पु० [देश०] १ एक मुस्लिम सम्प्रदाय विशेष। २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी।

नौंजण, नौंजणियौ, नौंजणी, नौंजणौ–देखो 'नू जणौ'।

नौंजणौ (बौ)–देखो 'नू जणौ' (बौ)।

नौक–देखो 'नोक'।

नौकर–पु० [फा०] (स्त्री० नौकराणी) १ वेतन आदि पर नियुक्त कोई व्यक्ति। २ अनुचर, दास, परिचायक। ३ सरकार या सस्था का कर्मचारी। —साही–पु० नौकरो के हाथ मे रहने वाली राजसत्ता, सत्ता पर नौकरो का नियत्रण होने की अवस्था।

नौकराणी–स्त्री० दासी, सेविका, परिचायिका।

नौकरी–स्त्री० १ वेतन लेकर किया जाने वाला कार्य। २ राज्य सेवा। —पेसौ–पु० नौकरी करके अर्जित की गई आजीविका।

नौका–स्त्री० [स०] नाव, जहाज, तरणि।

नौकार, नौकारमत्र–देखो 'नवकार'।

नौकोट, नौकोटी–देखो 'नवकोटी'।

नौख–१ देखो 'अनोखौ'। २ देखो 'नोक'।

नौखीलौ–देखो 'नोखीलौ'। (स्त्री० नौखीली)

नौखौ–देखो 'अनोखौ'। (स्त्री० नौखी)

नौगरी, नौग्रही–स्त्री० [स० नवग्रह] १ स्त्रियो की कलाई पर धारण करने का आभूषण विशेष। २ देखो 'नवग्रही'।

नौगुण–देखो 'नवगुण'।

नौघण (न)–वि० [स० नवघन] अतिवृष्टि वाला, अधिक वर्षा वाला। –पु० नवलडियो का हार। (मेवात)

नौडियौ–पु० [देश०] 'खींप' नामक क्षुप-तृणो या सिणिये के ततुओ की बनी रस्सी।

नौछावर, नौछावरि, नौछाहर–देखो 'निछरावळ'।

नौज–अव्य० [स० नवद्य] १ ईश्वर न करे, ऐसा न हो। २ नही।

नौजण, नौजणौ–देखो 'नू जणौ'।

नौजणौ (बौ)–देखो 'नू जणौ' (बौ)।

नौजवान–देखो 'नवजवान'।

नौतन–देखो 'नूतन'।

नौतौ–१ देखो 'निमत्रण'। २ देखो 'नैत'।

नौधाभगति–देखो 'नवधाभक्ति'।

नौधारियौ–पु० [स० नवम्-धारा] स्वर्णकारो का एक औजार।

नौनिध, नौनिधि–देखो 'नवनिधि'।

नौनीत–देखो 'नवनीत'।

नौपत, नौवत, नौबतडी–स्त्री० [फा० नौबत] १ शहनाई के साथ बजने वाला वाद्य जो नगाडे जैसा होता है। २ दशा, हालत। ३ स्थिति, परिस्थिति। ४ गति। ५ सयोग। —खानौ–पु० नौबत रख कर बजाने का स्थान।

नौबति, नौबती–पु० १ नौबत बजाने वाला, नक्कारची। २ बिना सवार का सज्जित घोडा, कोतल। ३ राजा की सवारी का घोडा। ४ देखो 'नौबत'।

नौमि, नौमी–देखो 'नवमी'।

नौरग–पु० [देश०] १ एक प्रकार का पुष्प विशेष। २ देखो 'नवरग'।

नौरतौ–देखो 'नवरात्र'।

नौ'रा–पु० [स० निधोरण] १ विनती, प्रार्थना। २ आग्रह, अनुरोध।

नौरियौ–पु० [देश०] १ नख, नाखून। २ देखो 'नोहरौ'।

नौ'रौ–देखो 'नोहरौ'।

नौळ–पु० [देश०] ऊट के पैरो मे, ताला लगाकर डालने की जजीर।

नौलखी–देखो 'नवलखी'।

नौलखौ–देखो 'नवलखौ'।

नौलासी–देखो 'नवलासी'।

नौळियौ–देखो 'नकुळ'।

नौळी–स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की घास। २ रुपये डाल कर कमर मे बाधने की, चमडे आदि की थैली। ३ योग साधना की एक क्रिया। ४ अस्थिपजर, धड। ५ साप की कैंचुल। ६ सर्प, साप। ७ देखो 'नौळ'।

नौवत (ति, ती)–देखो 'नौबत'।

नौवौं–वि० [स० नवम्] आठ के बाद वाला, नौ के स्थान वाला। –पु० नौ की सख्या का अक।

नौसर–देखो 'नवसर'।

नौसरहार–देखो 'नवसरहार'।

नौसरी–वि० [स० नव-सर] नौ लड का, नौ माला का।

नौसादर–पु० [स० नरसार] एक प्रकार का क्षार।

नौसौ–पु० दूल्हा (मेवात)।

नौहतेस–देखो 'नवहत्यौ'।

नौहतौ–१ देखो 'निमत्रण'। २ देखो 'नैत'। ३ देखो 'नवहत्यौ'।

नौहत्येस, नौहयेस, नौहथौ, नौहथ्यौ–देखो 'नवहत्थौ'।

नोहरौ–पु० १ दीवार आदि से घिरा खुला स्थान, आहता। २ सामतो आदि के निजी कर्मचारियो के रहने का स्थान। मकान। ३ मवेशी आदि रखने का स्थान, बाडा।

न्यग्रोध–पु० [स०] वट वृक्ष। —गण–पु० वृक्ष वर्ग।

न्यच्छ–पु० एक रोग विशेष।

न्यजर–देखो 'नजर'।

न्यहाळणौ (बौ)–देखो 'निहाळणौ' (बौ)।

न्याई–१ देखो 'नाई'। २ देखो 'न्यायी'।

न्याण–देखो 'न्यान'।

न्यांणू, न्यांणौ–देखो 'नाणौ'।
न्यान–पु० [स० ज्ञान] ज्ञान।
न्याइ, न्याई–१ देखो 'नाई'। २ देखो 'न्यायी'।
न्यात–देखो 'न्याति'।
न्यातगंगा–स्त्री० जाति समूह।
न्यात-पात–देखो 'न्याति-पाति'।
न्यातरौ–देखो 'नातौ'।
न्याति–स्त्री० [स० ज्ञाति] एक ही जाति के मनुष्यो का समूह जिसमे कई गोत्र या कुल होते हैं। जाति-समूह, वर्ग, वर्ण।
न्याति-पाति–स्त्री० जाति की श्रेणी, जाति मे समता होने की अवस्था।
न्याती–१ देखो 'न्याति'। २ देखो 'नाती'।
न्यातीलौ–वि० न्यात सबधी, न्यातिका।
न्याद–पु० [स०] भोजन।
न्याय–पु० [स०] १ इसाफ, उचित एव व्यावहारिक निर्णय। २ सच्ची बात। ३ विवाद का उचित हल। समाधान। ४ उचित विचारो को निरूपित करने वाला शास्त्र, तर्क, दृष्टान्त आदि से युक्त वाक्य। –क्रि०वि० १ निश्चय ही, अवश्य। २ देखो 'नाई'। **—कारी**–वि० न्यायकर्ता। **—छांणी**–वि० छानबीन कर न्याय करने वाला। **—धामी**–वि० न्यायकर्ता। **—पथ**–पु० उचित मार्ग, उचित रीति। **—परता**–स्त्री० न्यायशीलता। **—वट**–पु० न्याय मार्ग, न्याय पथ। **—व्रत, व्रति**–पु० न्याय करने का सकल्प। **—व्रती**–वि० न्याय का व्रत रखने वाला। न्यायशील। **—सभा**–स्त्री० न्याय करने के लिए जुडी सभा, बैठक।
न्यायाधीस–पु० [स०] न्याय करने वाला अधिकारी, जज।
न्यायालय–पु० [स०] न्याय करने का स्थान, अदालत, कचहरी।
न्यायास–देखो 'निवास'।
न्यायी–वि० [स० न्यायिन्] न्याय का पक्ष लेने वाला, उचित बात कहने वाला।
न्यायौ–देखो 'निवायौ'।
न्यार–पु० १ घास, चारा। २ देखो 'न्यारियौ'।
न्यारिया–स्त्री० स्वर्णकारों का एक भेद।
न्यारियौ–पु० उक्त जाति का स्वर्णकार।
न्यारौ–वि० (स्त्री० न्यारी) १ अलग, पृथक, जुदा, तटस्थ। २ अद्भुत, विलक्षण, विचित्र। ३ दूर, दूरस्थ। ४ अन्य, भिन्न।
न्याल–देखो 'निहाल'।
न्याळणौ (बौ)–देखो 'निहाळणौ' (बौ)।
न्याळस–देखो 'नारियल'।
न्याळौ–देखो 'नवाळौ'।
न्याव–पु० [स० निर्वात] १ मिट्टी के कच्चे वर्तन पकाने का स्थान, खड्डा, आवा। २ पकाने के लिये चुने हुए वर्तन। ३ देखो 'न्याय'। ४ देखो 'नाव'।
न्यावडौ (डौ)–पु० १ पानी का वर्तन। २ देखो 'न्याय'।
न्यावपत्याव–पु० [स० न्याय] १ न्याय, इन्साफ। २ न्याय करके निर्णय करने की तारीख।
न्यास–पु० [स०] १ स्थापन क्रिया, स्थापना। २ धरोहर, अमानत, थाती। २ ट्रस्ट।
न्यासस्वर–पु० [सं०] किसी राग को समाप्त करने का स्वर।
न्यूंजणउ, न्यूंजणौ–देखो 'नूंजणौ'।
न्यूंत–देखो 'नेंत'।
न्यूंतणौ (बौ)–देखो 'निमंत्रणौ' (बौ)।
न्यूंतौ–देखो 'निमंत्रण'।
न्यून–वि० [स०] १ कम, थोडा। २ नीच, क्षुद्र। ३ डिंगल मे वयण सगाई का एक भेद।
न्यूनजथा–स्त्री० [स० न्यून-यथा] डिंगल गीत रचना की एक विधि।
न्यूनता–स्त्री० १ कमी, अल्पता। २ शूद्रता, नीचता। ३ बदनामी, अपयश।
न्योळ–देखो 'नोळ'।
न्योळयौ–देखो 'नकुळ'।
न्योछावर, न्योछावरि–देखो 'निछरावळ'।
न्योतणौ, (बौ)–देखो 'निमंत्रणौ' (बौ)।
न्योतिहार–देखो 'निमंत्रीहार'।
न्योतौ–देखो 'निमंत्रण'।
न्यो'रा–देखो 'नो'रा'।
न्रमळ–देखो 'निरमळ'।
न्रकासुर–देखो 'नरकासुर'।
न्रग–देखो 'ग्रिध'।
न्रगुण–देखो 'निरगुण'।
न्रग–देखो 'नरग'।
न्रजान–पु० [स० नृ+यान] पालकी, डोली।
न्रतग–देखो 'निरत'।
न्रतत–देखो 'निरतत'।
न्रत–देखो 'निरत'।
न्रतकार–देखो 'निरतकार'।
न्रताण–देखो 'निरत'।
न्रति–१ देखो 'निरति'। २ देखो 'न्रती'।
न्रती–स्त्री० वेश्या, गणिका, नर्तकी।
न्रत्त–देखो 'निरत'। **—कार**='निरतकार'।
न्रत्तणौ, (बौ)–देखो 'निरतणौ' (बौ)।

न्रत्य–देखो 'निरत' । —**कारी**='निरतकारी' । —**प्रिय**= 'निरतप्रिय' । **साळ, साळा**='निरतसाळा' ।
न्रत्यकी–देखो 'नरतकी' ।
न्रत्यकारी–स्त्री० [स० नर्तकी] नाचने वाली, नर्तकी ।
न्रधोम–वि० [स० निर्धूम] धूम्र रहित ।
न्रप–पु० [स० नृप] राजा, नरेश ।
न्रपत–देखो 'न्रपति' ।
न्रपता–स्त्री० [स० नृपता] राजा का गुण, राजत्व ।
न्रपति–पु० [स० नृपति] १ राजा, नरेश । २ कुबेर ।
न्रपथान–पु० [स० नृप-स्थान] १ राजधानी । २ राजा का नगर ।
न्रपद्रोही–पु० [स० नृप-द्रोही] राजा का शत्रु, परशुराम ।
न्रपवास–पु० [स० नृप-वास] १ नगर, शहर । २ राजधानी ।
न्रपाळ–पु० [स० नृ-पालनम्] प्रजापालक राजा ।
न्रपेस–पु० [स० नृ-पेश] राजाओ मे श्रेष्ठ राजा ।
न्रफळ–देखो 'निस्फळ' ।
न्रबळ- देखो 'निरबळ' ।
न्रभै–देखो 'निरभय' ।
न्रभै-मण–वि० [स० निर्भयमन] जिमके मन मे भय न हो, निडर, नि शक, वीर ।
न्रमळ, न्रम्मळ (ळौ)–देखो 'निरमळ' ।
न्रमळा–देखो 'निरमळा' ।
न्रलेप–देखो 'निरलेप' ।
न्रवाण–देखो 'निरवाण' ।
न्रसिंह, न्रसींग–१ देखो 'नरसिंह' । २ देखो 'नरसींघो' ।
न्रिग, न्रिघ, न्रिघु–पु० [स० नृग] १ दानशीलता के लिये प्रसिद्ध एक राजा । २ मनु के एक पुत्र का नाम ।
न्रित, न्रित्य–देखो 'निरत' । —**कार, कारी**='निरतकार' । —**साळ**='निरतसाळा'
न्रिप–देखो 'न्रप' ।
न्रिपत (ति, ती)–देखो 'न्रपति' ।
न्रिपसेवन–पु० [स० नृप सेवन] ७२ कलाओ मे से एक ।
न्रिब्बीज–देखो 'निरबीज' ।
न्रिभै–देखो 'निरभय' ।
न्रिमळ, (ळौ) न्रिम्मळ, (ळौ)–देखो 'निरमळ' ।
न्रिलक्ष्मी–पु० [स० नृलक्ष्मी] ७२ कलाओ मे से एक ।
न्रिसस–वि० [स० नृशस] १ कष्ट दायक, दुखदायी । २ निर्दय, क्रूर । ३ अत्याचारी, जालिम । —**ता**–स्त्री० निर्दयता, क्रूरता । अत्याचार, जुल्म । कष्ट ।
न्रीजण, (न)–देखो 'निरजन' ।
न्हखणौ, (बौ)–देखो 'नाखणौ' (बौ) ।
न्हलाणौ, (बौ), न्हलावणौ, (बौ)–देखो 'न्हाडणौ' (बौ) ।
न्हवण–देखो 'सनान' ।
न्हवाणौ, (बौ), न्हवावणौ, (बौ)–देखो 'न्हाडणौ' (बौ) ।
न्हाकणौ, (बौ) न्हाखणौ, (बौ)–देखो 'नाखणौ' (बौ) ।
न्हाण–देखो 'सनान' ।
न्हाणी–स्त्री० स्नानघर, स्नानागार ।
न्हान–देखो 'सनान' ।
न्हानडको, न्हानडियो, न्हानड़ो, न्हानू, न्हानो–१ देखो 'नैनो' । २ देखो 'नानो' ।
न्हाडणौ, (बौ)–क्रि०[स०स्नानम्]१ स्नान कराना । २ दौडाना, भगाना ।
न्हाटणौ (बौ), न्हाठणौ (बौ)–क्रि० १ दौडना, भागना । २ मैदान से हटना । ३ कही चला जाना । ४ नष्ट होना ।
न्हाणौ (बौ)–क्रि०१ स्नान करना, नहाना । २ भागना, दौडना ।
न्हार, न्हारियौ–देखो 'नाहर' ।
न्हारौ–१ देखो 'न्यारौ' । २ देखो 'ना'रौ' ।
न्हाळणौ (बौ)–१देखो'नाळणौ'(बौ) । २ देखो'न्हाडणौ'(बौ) ।
न्हावण, (णु)–पु० १ प्रसूता का प्रथम स्नान व उस दिन का सस्कार । २ स्नान ।
न्हावणौ (बौ)–देखो 'न्हाणौ' (बौ) ।
न्हासणौ (बौ)–१ देखो'नासणौ (बौ) । २ देखो'न्हाटणौ'(बौ) ।
न्ही–देखो 'नही' ।
न्होरा–देखो 'नो'रा' ।
न्हौरौ–देखो 'नोहरौ' ।